

जैनाचार्य-जैनधर्मविद्या-पूज्यश्री-नामोलालजी-महागज-

विग्नित प्रकाशितान्यथा व्याख्या समष्ट्यनम्

हिन्दी-गुर्जर-भाषाज्जुवादमहितम्-

जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिः

(प्रथमो भागः)

नियोजक

संस्कृत-प्राकृतज्ञ-जैन-गमनिष्णात-प्रियव्याख्यान-
पण्डितमुनि-श्रीकन्हैयालालजी महागज.

प्रकाशक

अ० भा० श्वे० स्था० जैनशास्त्रोद्धार समिति प्रमुग्य श्रेष्ठि-
श्री बलदेवभाई डोसाभाई पटेल महोदय मु अहमदाबाद

प्रथम-आवृत्तिः
प्रति १२००

वीरसंवत्
२५०६

विक्रमसंवत्
२०३६

इस्वीसन
१९८०

मूल्यम्-रु० ४०-००

श्री जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्र भाग १ की विषयानुक्रमणिका

अनुक्रमांक

विषय

पृष्ठाङ्क

प्रथम वक्षस्कार

१	मङ्गलचरण	१—३
२	प्रस्तावना	३—८
३	नमस्कार निक्षेप	९—११
४	गौतमस्त्रामी का वर्णन	१२—१६
५	जम्बूद्वीपके सम्बन्धमे प्रश्नोत्तर	१७—२२
६	जम्बूद्वीप का प्राकारभूतजगतीका वर्णन	२२—३४
७	पद्मवरवेदिका के बहिर्भागस्थ वनपण्ड का वर्णन	३५—४३
८	वनखण्ड की भूमि भाग का वर्णन	४४—४९
९	जम्बूद्वीप की द्वारसख्या एवं द्वारों के स्थान विशेष का वर्णन	४९—५५
१०	भरतक्षेत्र के स्वरूपका वर्णन	५५—६४
११	दक्षिणार्ध भरतवर्षका निरूपण	६४—७५
१२	दक्षिणार्धभरत का सीमाकारी वैताढ्य पर्वत कहाँ है? उसका कथन	७५—८२
१३	वैताढ्य पर्वतके पूर्व पश्चिम भागमे आगत दो गुफाओंका वर्णन	८२—९२
१४	आभियोग दो भेणीका निरूपण	९२—१०६
१५	सिद्धायतनकूटका वर्णन	१०७—११७
१६	दक्षिणार्ध भरतकूटका निरूपणम्	११७—१३०
१७	वैताढ्य नाम होनेके कारण का कथन	१३०—१३२
१८	उत्तरभरतार्द्ध का स्वरूप वर्णन	१३३—१३९
१९	उत्तरार्धभरतमे ऋषभकूटपर्वतका निरूपण	१४०—१४८

दूसरावक्षस्कार—प्रथमारक

२०	कालके स्वरूपका निरूपण	१४९—१८३
२१	सुषमासुषमानामकी अवसर्पिणी का निरूपण	१८४—१९८
२२	कल्पवृक्षके स्वरूपका कथन	१९९—२२२
२३	सुषमसुषमाकालमे उत्पन्न मनुष्यों के स्वरूपका कथन	२२२—२४०
२४	सुषमसुषमाकालमावि मनुष्यके आहारादिका कथन	२४१—२५४
२५	युगलियों के निवास का निरूपण	२५४—२५७
२६	सुषमसुषमा कालमे गृहादिके होने के संबन्धमे प्रश्नोत्तर	२५८—२६३
२७	सुषमसुषमाकालमे राजादिके विषयमे प्रश्नोत्तर	२६४—२७०
२८	उसकालमें आवाह विवाहादि विषयमें प्रश्नोत्तर	२७१—२७५
२९	उसकालमे शकटादिके अस्तित्वसंबन्धी प्रश्नोत्तर	२७५—२८०
३०	उसकालमे गर्तादिके सम्बन्धमे प्रश्नोत्तर	२८१—२८४

३१	उमसमयमें लिख्य उपद्रवग्रन्थों प्रश्नोत्तर	२१०-२११
३२	उमसालके मनुष्योंकी भाग्यविधा का निरूपण	२११-२१२

दूसरा आरक

३३	सुपमानामके दूसरे आरेख निरूपण	२१२-२१३
३४	सुपमानामके आरेखे भविष्यविधा का निरूपण	२१३-२१४

तीसरा आरक

३५	तीसरे आरकके स्वरूप का कथन	२१४-२१५
३६	सुपमदुष्पमासालके अग्रिम विभागमें लोक व्यवस्था का कथन	२१५-२१६
३७	कुलकर्ता के प्रकार का स्थान	२१६-२१७
३८	ऋषभस्वामी के त्रिजगत्जनपदनीत्या का कथन	२१७-२१८
३९	ऋषभस्वामीके शिशुगृहण के अनन्तर अन्तर्गत कथन	२१८-२१९
४०	भगवान की भामण्यायत्था का कथन	२१९-२२०
४१	भगवानका देवत्वान प्राप्ति का कथन	२२०-२२१
४२	ऋषभस्वामी को देवत्वानोत्पत्तिके अनन्तर अन्तर्गत कार्य का निरूपण	२२१-२२२
४३	भगवान के जन्मकल्याणसदिका निरूपण	२२२-२२३
४४	भगवानके निर्वाणके बाद के देवकृत्य का निरूपण	२२३-२२४
४५	भगवानके निर्वाणके अनन्तर ईशानेन्द्रके कर्तव्य का कथन	२२४-२२५
४६	६४ इन्द्रके आगमनानन्तर देवेन्द्र शक्रके कार्य का कथन	२२५-२२६
४७	भगवान आदिके कलेवरके स्तम्भनादि का निरूपण	२२६-२२७
४८	भगवान आदिके कलेवर चिन्तामें रखनेके बादका शक्रादिके कार्य का निरूपण	२२७-२२८
४९	अस्थिसंचयके बाद की विधी का निरूपण	२२८-२२९

चतुर्थ आरक

५०	चतुर्थ आरक के स्वरूप का कथन	२२९-२३०
----	-----------------------------	---------

पांचवां आरक

५१	पंचम आरक के स्वरूप का कथन	२३०-२३१
----	---------------------------	---------

छठा आरक

५२	छठे आरेख के स्वरूपनिरूपण	२३१-२३२
५३	वत्सर्पिणी के दुष्पमा आरकमें अवसर्पिणीके दुष्पमा आरकसे विशिष्टता का कथन-२३२-२३३	२३२-२३३
५४	वत्सर्पिणी दुष्पमाकालके मनुष्यों के कर्तव्य एवं आकार भावप्रत्यक्षतार का कथन-२३३-२३४	२३३-२३४
५५	दुष्पमसुपमा कालको वर्णन-	२३४-२३५

तीसरा वक्षस्कार

५६	भरतवर्ष नाम होने के कारण का कथन-	२३५-२३६
५७	भरत चक्रवर्ती के उत्पत्त्यादिका निरूपण-	२३६-२३७
५८	भरत चक्रवर्ती के दिग्विजयादिका निरूपण-	२३७-२३८

श्री जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति सूत्र भाग १ की विषयानुक्रमणिका

अनुक्रमिका

विषय

पृष्ठांक

प्रथम वक्षस्कार

१ मङ्गलाचरण	१—३
२ प्रस्तावना	३—८
३ नमस्कार निषेप	९—११
४ गौतमस्वामी का वर्णन	१२—१६
५ जम्बूद्वीपके सम्बन्धमे प्रश्नोत्तर	१७—२२
६ जम्बूद्वीप का प्राकारभूतजगतीका वर्णन	२२—३४
७ पद्मवरवेदिका के बहिर्भागस्थ वनपण्ड का वर्णन	३५—४३
८ वनखण्ड की भूमि भाग का वर्णन	४४—४९
९ जम्बूद्वीप की द्वारसख्या एव द्वारों के स्थान विशेष का वर्णन	४९—५५
१० भरतक्षेत्र के स्वरूपका वर्णन	५५—६४
११ दक्षिणार्ध भरतवर्षका निरूपण	६४—७५
१२ दक्षिणार्धभरत का सीमाकारी वैतादय पर्वत कहाँ है? उसका कथन	७५—८२
१३ वैतादय पर्वतके पूर्व पश्चिम भागमे आगत दो गुफाभोंका वर्णन	८२—९२
१४ आभियोग दो श्रेणीका निरूपण	९२—१०६
१५ सिद्धायतनकूटका वर्णन	१०७—११७
१६ दक्षिणार्ध भरतकूटका निरूपणम्	११७—१३०
१७ वैतादय नाम होनेके कारण का कथन	१३०—१३२
१८ उत्तरभरतार्द्ध का स्वरूप वर्णन	१३३—१३९
१९ उत्तरार्धभरतमें ऋषभकूटपर्वतका निरूपण	१४०—१४८

दूसरा वक्षस्कार—प्रथमारक

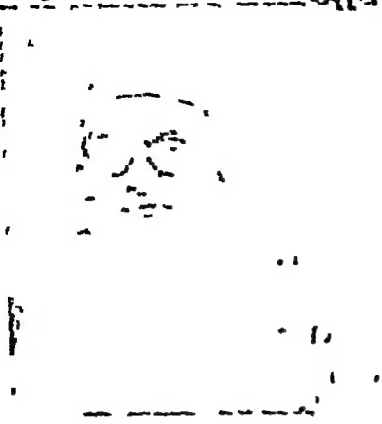
२० कालके स्वरूपका निरूपण	१४९—१८३
२१ सुषमासुषमानामकी अवस्पर्पिणी का निरूपण	१८४—१९८
२२ कल्पवृक्षके स्वरूपका कथन	१९९—२२२
२३ सुषमसुषमाकालमे उत्पन्न मनुष्यों के स्वरूपका कथन	२२२—२४०
२४ सुषमसुषमाकालमात्र मनुष्यके आहारादिका कथन	२४१—२५४
२५ युगलियों के निवास का निरूपण	२५४—२५७
२६ सुषमसुषमा कालमें गृहादिके होने के संबन्धमें प्रश्नोत्तर	२५८—२६३
२७ सुषमसुषमादिकालमे राजादिके विषयमे प्रश्नोत्तर	२६४—२७०
२८ उसकालमें आवाह विवाहादि विषयमें प्रश्नोत्तर	२७१—२७५
२९ उसकालमे शकटादिके अस्तित्वसंबन्धी प्रश्नोत्तर	२७५—२८०
३० उसकालमें गर्तादिके संबन्धमें प्रश्नोत्तर	२८१—२८४

नामाश्चर्यकरो रसो येषां ते तथाभूताः नाम द्रुमगणाः प्रज्ञप्ताः । तान् द्रुमगणान् सदृष्टान्तं वर्णयति तान् वर्णयितुं दृष्टान्तमाह—‘जहा से’ इत्यादि । यथा येन प्रकारेण तत् प्रसिद्धं सुगन्धवरकलमशालितण्डुलविशिष्टनिरुपहतदुग्धराजं सुगन्धाः उत्तमगन्धयुक्ताः वगः—प्रधानाः निर्दोषक्षेत्रकालादिसामग्रीभिः प्राप्ततण्डुलभावाः, ये कलमशालितण्डुलाः कलमशालेः तण्डुलास्ते सुगन्धवरकलमशालितण्डुलाः तथा विशिष्टं—नीरोग—गवादिभयत्वा—दुत्तमगुणसम्पन्नं निरुपहतं—पाकादिभिरनुपहतं च यद् दुग्धं तद् विशिष्टनिरुपहतदुग्धम्, उभयो ईन्द्वे सुगन्धवरकलमशालितण्डुल—विशिष्ट निरुपहत दुग्धानि तैः राजं—पकम्, उत्तमशालितण्डुलैर्विशुद्धदुग्धेन च पाकनिपुणेन निष्पादितमिति भावः, तथा—शारदघृतगुडखण्डमधुमैलितम् शारदघृतगुडखण्डमधुभिः तत्र—शारदघृतं—शारदघृतं घृतं गुडः प्रसिद्धः खण्डः—‘खॉड’ इति प्रसिद्धम्, मधु—शहद इति प्रसिद्धं तैर्मैलितं योजितम् अतएव अतिरसम्—प्रशस्तरससम्पन्नम्, उत्तमवर्णगन्धवत्—प्रकृष्टवर्णगन्धसम्पन्नं परमान्नं पायसं भवेत्, अथवा—इव यथा राज्ञश्चक्रवर्तिनो निपुणैः पाककुशलैः सूपपुरैः पाककारिपुरैः सज्जितः—निष्पादितः चतुष्कल्पसेकनसित इव चत्वारः कल्पाः पाकशास्त्रोक्तविधयो यत्र स चतुष्कल्पः स चासौ सेकश्चेति चतुष्कल्पसेकस्तेन सितः युक्तः पाकशास्त्रविदो हि ओदनेषु कोमलतोत्पादनयै चतुरः सेककल्पान् कुर्वन्तीति बोध्यम् । तथा—कलमशालिनिर्वर्तितः—कलमशालितण्डुलनिष्पादितः तथा विप्रमुक्तः—पाकदोषरहितः सुपक्वः तथा सबाष्पमृदुविशदसकलसिक्थः सबाष्पाणि—वाष्पसहितानि निःसरद्वाष्पयुक्तानि मृदुनि कोमलानि विशदानि—सर्वथा तुपादिमलापगमाद्विशुद्धानि सकलानि—पूर्णानि सिक्थानि कणा यत्र स तथा—अनेकशालनकसंयुक्तं अनेकानि बहूनि यानि शालनकानि निष्ठानकानि तैः संयुक्तः ओदनो भवेत्, अथवा इव यथा परिपूर्णद्रव्योपस्कृत—परिपूर्णानि—मोदकाद्रभूतानि सर्वाणि यानि द्रव्याणि केसरैलावातद्राक्षादीनि तैरुपस्कृतं परिष्कृतं—यद्वा तानि उपस्कृतानि निश्चितानि यत्र स तथा, तथा—सुसंस्कृतं यथामात्राग्नि तापादिनोत्तमस्कार सम्पन्नीकृत, तथा—वर्णगन्धरसस्पर्शयुक्तः वर्णादयोऽत्राऽतिशायिनो गृह्यसमणावसो—इत्यादि । सातवें कल्पवृक्ष का नाम चित्ररस है । प्रथम काल में ये कल्पवृक्ष

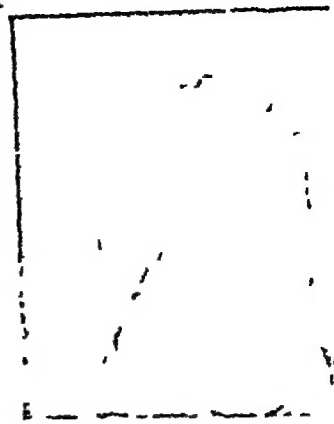
इस भरतक्षेत्र में जगह २ पर अनेक होते हैं । जैसा इनका नाम है उसी के अनुसार ये गुणोपेत हैं । मधुर आम्लादि रस इनका अनेक प्रकार का होता है । अथवा—आत्वादक जनों को वह रस आश्चर्यकारी होता है । इसलिये भी इन कल्पवृक्षों का नाम चित्ररस हो गया है । ये कल्पवृक्ष इस मधुरादि मेद से अनेक प्रकार के रसादि को किसी के द्वारा किये जाने पर

नहीं देते हैं किन्तु इनका ऐसा ही स्वभाव है कि ये स्वभावतः ही उस प्रकार के परिणमनवाले ठेकेकाष्ठे पुष्कल अथवा भां होय छे जेवु अमरु नाम तेवा ज शुद्धोत्थी जे युक्त छे मधुर आत्वादिक रस जेमना अनेक प्रकारना होय छे अथवा आत्वादिकेना भांटे ते रस आश्चर्यकारी होय छे जेथी पणु आ कल्पवृक्षो चित्ररस नामथी प्रसिद्ध थई गया छे जे कल्पवृक्षो मधुर वगेरे रसोने ठाई बडे नहि पणु स्वत स्वभावत. ज आ प्रभावे परि

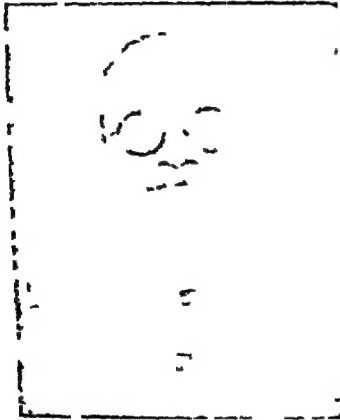
५९	भरत चक्रवर्ती के गमन के बाद उनके अनुचर वर्ग के कार्यका निरूपण-	५४८-५६८
६०	अष्टाण्डिका समाप्त करके आगेके कार्य का निरूपण	५६८-५८४
६१	भरतचक्रीके स्नानादिसे निवृत्त होनेके अनन्तर कार्यका निरूपण	५८४-५९८
६२	मागधतीर्थाधिपतिका भरतचक्री को भेटप्रदान का निरूपण	५९९-६०९
६३	भरतचक्रीका बरदामतीर्थ के प्रतिगमनका निरूपण-	६१०-६१९
६४	वर्धकीरत्नको आवसथादिबनानेकी आज्ञा करने पर वर्द्धकीरत्न के कौशल्यका वर्णन-	६१९-६२७
६५	रथवर्णन पूर्वक भरत महाराजा के रथावरोहणका निरूपण	६२७-६४३
६६	सिंधूदेवी को साधने का निरूपण	६४३-६५४
६७	वैताढ्यगिरिकुमादेव के साधने का कथन	६५४-६६३
६८	सुषेणसेनापति के विजय का वर्णन	६६३-६८८
६९	तमिस्सा गुहा के द्वार को उद्घाटन करने का निरूपण-	६८८-७२१
७०	उन्मत्त निमग्ननाम की महानदी के जलाशयका निरूपण-	
	एव उत्तरार्धभूत जितनेका निरूपण-	७२१-७४०
७१	भरत महाराजाके सैन्यकी स्थितिका कथन—	७४०-७५९
७२	आपातचिलातके देवों के उपासना का निरूपण—	७६०-७७२
७३	वर्षा हो जाने के बाद भरतमहाराजा के कार्य का वर्णन—	७७३-७८०
७४	भरतमहाराजाके सैन्य की स्थिति का वर्णन-	७८१-७८८
७५	सातरात्रि के बादका घृत्तांत वर्णन-	७८९-८०६
७६	उत्तरदिशाके निष्कूटजितनेका एव ऋषभकूट को जितनेका वर्णन-	८०६-८२०
७७	नमी एव विनमी नामके विद्याधरों के विजयका वर्णन-	८२०-८३४
७८	भरत महाराजा के दिग्गन्त्रा तथा दक्षिणार्ध में भरत के कार्यका वर्णन-	८३४-८६५
७९	राज्यों के जितने के बादका भरतमहाराजा-के कार्य का वर्णन-	८६५-८८९
८०	अपनी राजधानी में आये हुए भरत महाराजा के कार्य का निरूपण-	८९०-९०८
८१	भरतमहाराजाके राज्याभिषेक विषयका निरूपण—	९०९-९५७
८२	भरतमहाराजाके रत्नोत्पत्तिके स्थान का निरूपण-	९५७-९५९
८३	छहोखंडों के पालन करते हुए भरतमहाराजा की प्रवृत्ति करने का निरूपण-	९५९-९७७
८४	प्रकारान्तर से भरतनामकी अन्वर्थताका कथन-	९७८-९८०



શ્રી ગાનિલાલ ભગતભાઈ
અમદાવાદ



(સ્વ) શ્રી ગામજીભાઈ વેલજીભાઈ
વીનાળી-ગજકોટ



શ્રી પાપરલાલ ભાવજીભાઈ-મહેતા
જામજોધપુર



(સ્વ) શ્રી જાનલાલ શામળદાસ
લાવગાર-અમદાવાદ.

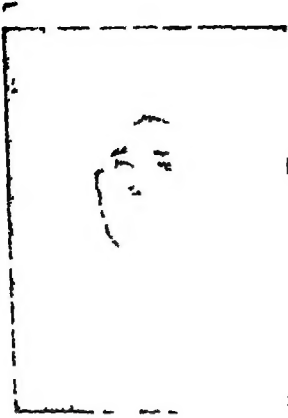


શ્રી રામજીભાઈ શામજીભાઈ
વીરાણી-રાજકોટ.



મચ્ચે વેટેલ-લાલાજી-કિશનચંદજી સા.જોહરી
ઝમેલા-સુપુત્ર વિ. મહેતાચંદજી સા.
નાના-અનિલકુમાર જૈન દોયસા દિલ્હી

આવમુરખીશ્રીઓ



માનવતા આથ
મુરખી શ્રી
માણેકલાલભાઈ
અમુલખભાઈ મહેતા
ઘાટકોપર-મુખઈ

(સ્વ.) ગેઠશ્રી હરખચદ કાલીદાસ વારિઆ
લાણુવડ



(સ્વ) શેઠશ્રી દિનેશભાઈ કાંતિલાલ શાહ
અમદાવાદ.



(સ્વ) ગેઠ રંગજીભાઈ મોહનલાલ શાહ
અમદાવાદ

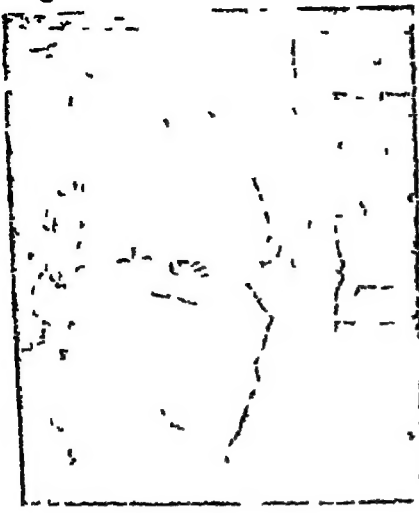


ગેઠશ્રી જેસિંગભાઈ પાચાલાલભાઈ
અમદાવાદ

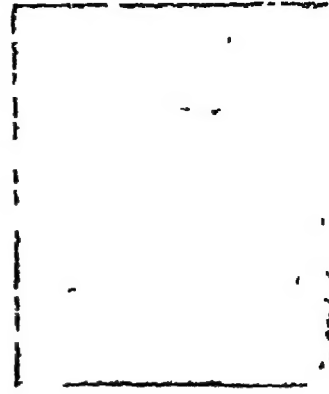


સ્વ. ગેઠશ્રી આત્મારામ માણેકલાલ
અમદાવાદ

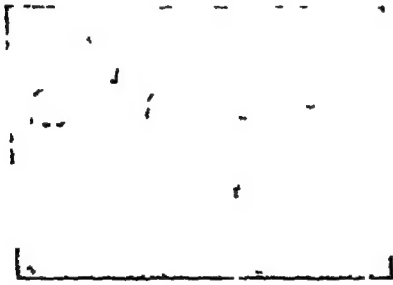
આધ્યમુરતીશ્રીઓ



૨૧. શેઠશ્રી હરિલાલ અનોપચંદ શાહ
અંભાત.



૨૨. શેઠ શ્રી તાગચંદજી સાહેવ ગેલડા
મદ્રાસ.



શેઠશ્રી ચીમનલાલજી કલ્પમચંદજી
મજીતવાલે સપરિવાર



શેઠ શ્રી કીશનલાલજી ફુલચંદજી લુણિયા
બેંગલોરવાલે

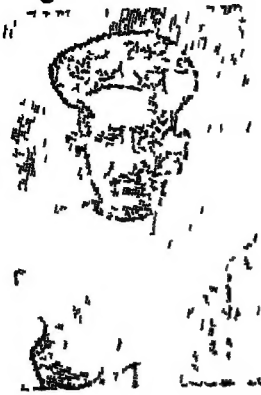


૨૩. વચ્ચે વેટેલા-મોટામાઈ શ્રીમાન્ મૂલચંદજી -
જવાહીરલાલજી ચરડિયા
વાલુમા વેટેલા-માઈ મિશ્રીલાલજી ચરડિયા
ડમેલા-માઈ પૂનમચંદજી ચરડિયા

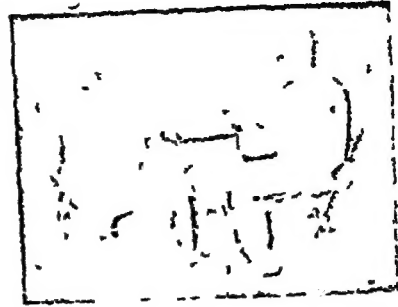


શ્રીમાન્ શેઠશ્રી
શ્રીવરાજજી સા. ચોરડિયા
મું મદ્રાસ

આદ્યમુરખીશ્રીઓ



પટેલ ડાસાભાઈ ગોપાલદાસ
મુ. સાહુદ (જ. અમદાવાદ)



૧ અમીચ દલાઈ તથા
૨ ગીરધરભાઈ બાટવિયા મુ. બે ગલોર



શાહજી શ્રી મોહીલાલજી ગલુન્ડિયા
મુ. હદયપુર



મદ્રાસવાલા સ્વર્ગસ્થ ન્યાયમર્તિ
રતીલાલભાઈ લાયચ દલાઈ મહેતા

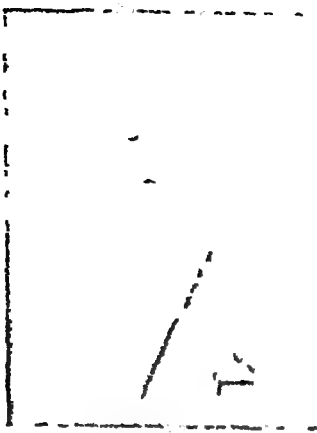


સ્વ. શેઠ માણેકચંદ નેમચંદલાઈ
મુ. માગસોલ

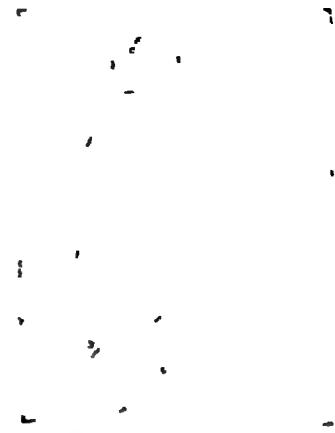


અમલનેર
પારસી હોમમલજી મુલતાનમલજી
શેઠ રઘુનાથમલજી, શેઠ વાલુલાલજી
પંજાલાલજી, શેઠ મુગનચંદજી

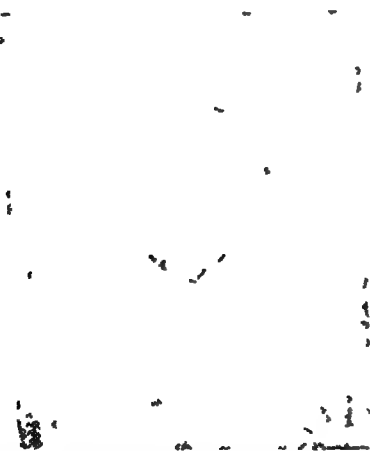
આવમુચ્ચીશ્રીનો



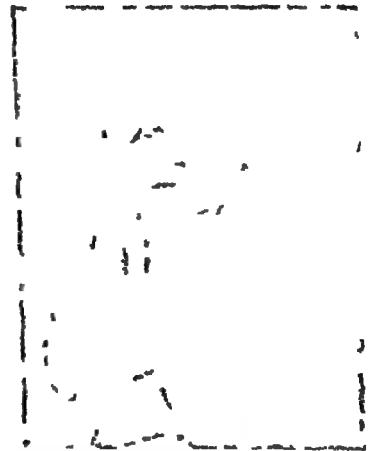
શ્રીમાન્ જેઠ મણીલાલ પોપટલાલ વોરા
અમદાવાદ.



ધીમાન્ શેઠ લાલાજી કપૂરચંદ્રની
નાટ્યા, મું. દેતલી



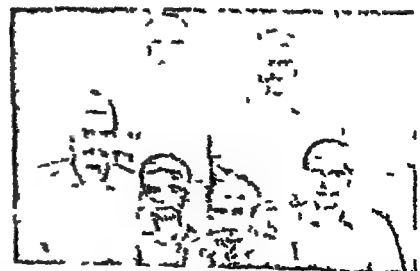
શ્રી પ્રજલાલ દુર્લભભાઈ પારેખ
રાજકોટ.



કોઠારી હરગોવિંદ બેથંદલાઈ
રાજકોટ.

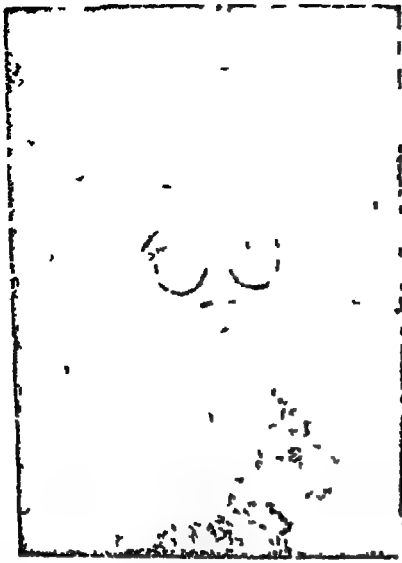


શ્રીમતી મણીલાલ જેઠુભાઈ
પાલનપુરવાળા



શ્રીમાન્ લાલાજી પન્નાલાલજી નાટ્યા
સપરિવાર-દિલ્લી

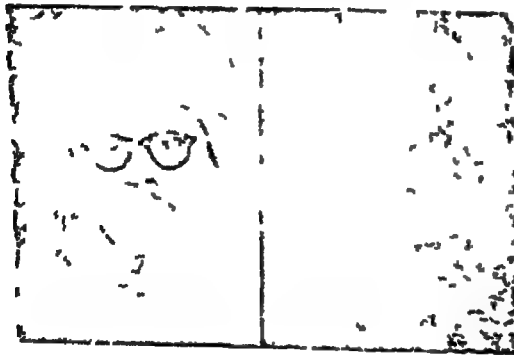
આદ્યમુસ્ત્રીઓ



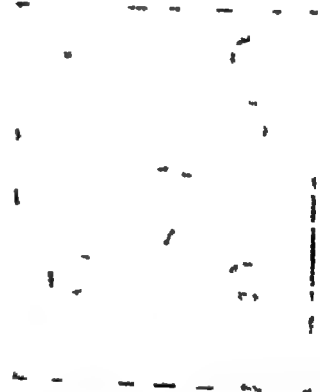
શ્રીમાન્ ગેઠ કાનુગા ધિ ગડમલ્હજી-અમદાવાદ



श्रीमान् गेट धनराजजी पद्मालालर्ज
जागडा, मु. जालना (महाराष्ट्र)



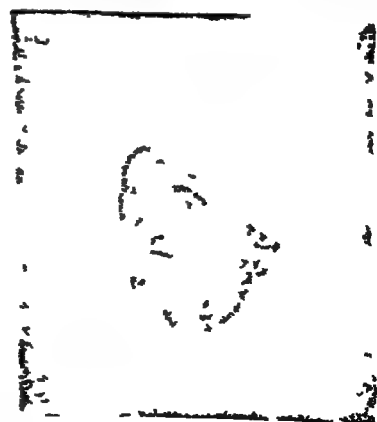
**शेठ श्री मिश्रीलालजी लालचंदजी सा. लुणिया
तथा शेठश्री जेवंतराजजी-अमरावाड**



શ્રી પ્રભુદાસભાઈ મૂલજીભાઈ દોશી
રાજકોટ

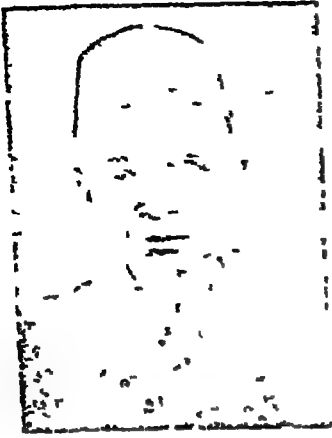


જવેરી રસીકજ્ઞાણ મણીલાલ મહેતા
મદ્રાસ

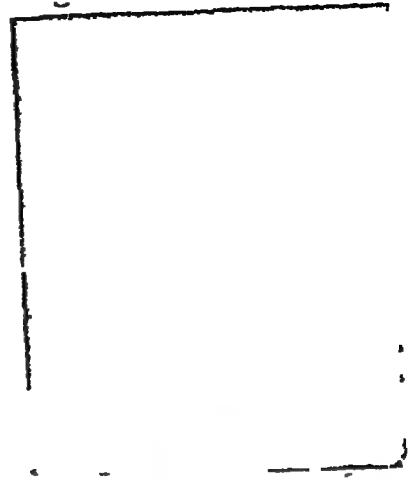


**स्व. श्रीमान् शेठश्री मुकनचंदजी सा०
बालिया-पाली मारवाड़**

આદ્યમુખ્યીશ્રીઓ



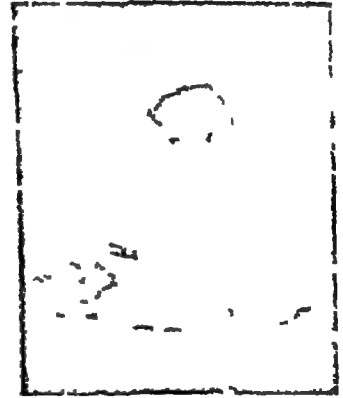
(સ્વ.) શેઠશ્રી ધારજીભાઈ જીવજીલાલ
ભારસી



સ્વ શેઠશ્રી જીવરાજભાઈ મૂલચંદભાઈ
ધ્રંગધ્રા



શેઠશ્રી લક્ષ્મીચંદભાઈ જશકરજીભાઈ
પાલજીપુર નિવાસી



શ્રી વીનોદકુમાર વિરાણી રાજકોટ

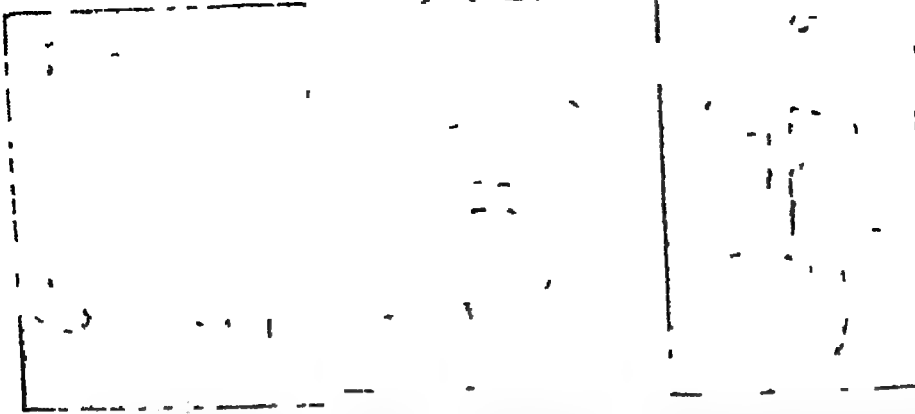


શેઠશ્રી દેવચંદભાઈ દાલલાલભાઈ
વલાણી-સુરત



સ્વ. સુધીરભાઈ જયંતીલાલ ડાવેરી
મુંબઈ.

આધ્યમુરુખીશ્રીઓ



પાલનપુરવાલા શેઠશ્રી કચ્છલાલજી ભાનુભાઈ દેગવલાલ ભાણુસાલી
કોહારી અમુલખત્રદ મહુકચ્છ દરહા-મુ. ચિયાલા પાલનપુર-મુ. ગાઈ

શેઠ જગજીવનભાઈ રતનસીભાઈ
બગડિયા-દામનગર

શેઠ ભોગીલાલ જીગનલાલ લાવસાર
સરસપુર-અમદાવાદ



શ્રીમાન લાલાજી હજારી લાલજી
જવેરી-દેહલી

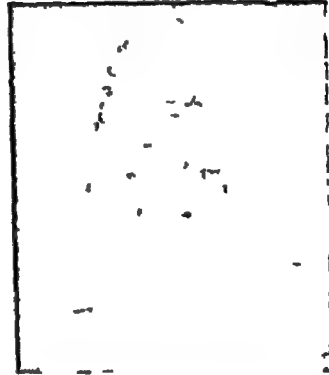


શેઠ શ્રી મોહનજી ભગચંદલી
શેઠિયા વીકાનેર

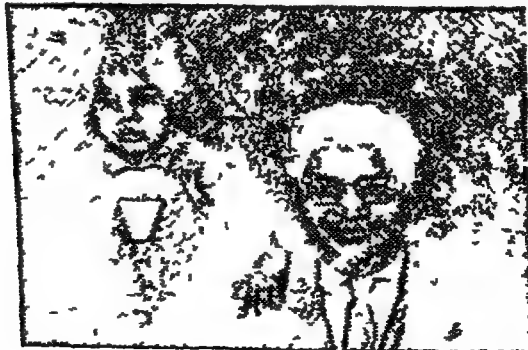
આવમુરખખીશ્રીઆ

શ્રી પન્નાલાલજી ડાંગમલજી પારખ
નગરપાલીકા અધ્યક્ષ અમલનેર

શ્રીમાન લીકમચદજી એસ. ચુતર
ખી એ એસ એસ ખી
મુ નેવાયા જી અદમનગર



શ્રી શાંતિલાલ ટી. અબમેરા સર. મૂલચંદલાઈ જેઠાલાલલાઈ મહેતા
અમલવાદ (કેટડાવાલા) રાજકોટ



શ્રીમાન જિનેન્દ્રકુમારજી જૈન
વી. ઇ. એલ. એલ. વી.
જોધપુર-રાજસ્થાન

श्री वीतरागाय नमः ॥
श्रीजैनाचार्य जैन धर्मदिवाकर पूज्य श्रीघासीलालव्रतिविरचितया
प्रकाशिकाख्यया व्याख्यया समलङ्कृतं

॥ श्रीज ू द्व पप्रज्ञप्ति सूत्रम् ॥

मङ्गलाचरणम्

श्रीसिद्धराजं स्थिर सिद्धिराज्यं,
प्रदं गतं सिद्धिगति विशुद्धम् ।
निरञ्जनं शाश्वतसौधमध्ये,
विराजमानं सततं नमामि ॥१॥
चतुर्ज्ञानोपेतं जिनवचनपीयूषमतुलं,
पिबन्तं कर्णाभ्यामविरति पुटाभ्यां गुणगृहम् ।
अघौषं भिन्दन्तं सकलजनकल्याणसदनं,
भजे तं श्रीमन्तं गुणिषु गुणिनं गौतममिनम् ॥२॥

जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति सूत्र का हिन्दी अनुवाद

मङ्गलाचरण का हिन्दी अनुवाद—

मौलिकरूप स्थिर सिद्धिराज्य को देने वाले एवं सिद्धिगति को प्राप्त किये हुए अत्यन्त विशुद्ध निरञ्जन और शाश्वत कैवल्य धाम में हमेशा विराजमान श्री सिद्धराज भगवान् को मैं नमस्कार करता हूँ ॥१॥

चार प्रकार के ज्ञानों से युक्त, अनुपम जिन वचनमृत को सतत दोनों कर्णपुटों से पान करने वाले गुणों के आकार, सारे ही पापपुण्य को भेदन करने वाले सकलजन भङ्गलालय, गुणिगण श्रेष्ठ श्री गौतम गणधर को भजना हूँ ॥२॥

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्तिनो गुजराती अनुवाद

मङ्गलाचरण

मौलिकरूप स्थिर सिद्धि-राज्यने आपनारा, सिद्धि-गति-प्राप्त, अत्यन्त विशुद्ध निर-
ञ्जन अने शाश्वत सुधना धाममां सर्वदा विराजमान श्रीसिद्धराज भगवानने हूँ नमस्कार
करे छुँ ॥१॥

चार प्रकारना ज्ञानाशी समलङ्कृत, अनुपम जिन वचनमृतने सतत पातानां अन्ने कष्टु
पुत्राशी पानकरनारा, सुधोना आकर, समस्त पापपुणेने विनष्ट करनारा, सकलजनभङ्गला-
लय, सुखिगण श्रेष्ठ श्रीगौतम गणधरने हूँ अशुँ छुँ ॥२॥

षट्काय प्रतिपालकं च करुणा धर्मोपदेशोत्सुकं,
 यत्नार्थं मुखवस्त्रिका विलसितास्यन्दु प्रसन्नाननम् ।
 अन्तर्ध्वान्त विनाशकाद्घ्नि नखरज्योतिश्चयं चिन्तयन् ,
 संस्तौम्युग्रविहारिणं गुरुवरं पञ्चव्रताऽऽराधकम् ॥३॥

सर्वानुयोग विज्ञान वृद्धान् श्रीगुरु परम्परामुख्यान् ।
 हुकुमचन्द्रजी पूज्यान् भजे जैनागमविशारदान् ॥४॥
 पूज्य तत्पट्टशिष्यान् श्रीशिवलालजी वाचकप्रमुखान् ।
 अर्हद् दीक्षादक्षान् निदधेज्ञान वैराग्यसम्पन्नान् ॥५॥
 पूज्यान् गुरुनुदयसागर पूज्यवर्यान् ज्ञानप्रकाशमिहिराहत जाड्यराशीन् ।
 मान्यान् प्रणम्य विहिताञ्जलि रेप घासीलालोऽनुयोगविशदामुखमातनोति ॥६॥

पृथिवीकायादि षट्काय जीवो का प्रतिपालक दया धर्मोपदेश में तत्पर एव यतना के लिये मुखवस्त्रिका से अलंकृतमुखचन्द्र, एवं प्रसन्न वदन, उग्र विहारी पांच महाव्रतो का आराधक आन्तरिक मोहान्धकार का विनाशक चरणनखज्योतिःपुञ्ज से विराजमान गुरुवर को चिन्तन करते हुए स्तुति करता हू ॥३॥

सर्वानुयोग विज्ञान वृद्ध श्री गुरुपरम्परा प्रमुख जैनागम विशारद पूज्य श्री हुकुमचन्द्र जी को भजता हूँ ॥४॥

तत्पट्टशिष्य अर्हद्दीक्षादक्ष ज्ञान वैराग्य सम्पन्न पूज्य श्री शिवलाल जी महाराज वाचक प्रमुख को हृदय में धारण करता हूँ ॥५॥

ज्ञानप्रकाशरूप सूर्य से जाड्यानधकार को दूर करने वाले पूज्यमान्य उदयसागर गुरुवर्य को प्रणाम कर बद्धाञ्जलि घासीलाल मुनि अनुयोग की विशद प्रस्तावना को पल्लवित करता हूँ ॥६॥

पृथिवीकायादि षट्काय जीवो का प्रतिपालक, दयाधर्मोपदेशमा तत्पर, यतनाभाटे मुख वस्त्रिकाधी समलंकृत, अन्द्रवत् मुखवाणा, प्रसन्नवदन, उग्रविहारी, पांचमहाव्रतोना आराधक, आन्तरिक मोहान्धकारने विनष्ट करनारी अरक्ष नखरज्योतिः पुणेधी सुशोभित जीवा गुरुवरनु ध्यान करते हू तेमनी स्तुति करु छु ॥३॥

सर्वानुयोगविज्ञान वृद्ध श्रीगुरुपरम्पराप्रमुख जैनागम विशारद पूज्य श्रीहुकुमचन्द्रजीने हं भजुं छु ॥४॥

तत्पट्टशिष्य, अर्हद्दीक्षादक्ष, ज्ञान-वैराग्य सम्पन्न पूज्य श्रीशिवलालजी महाराज वाचक प्रमुखने हू हृदयमा धारणु करु छु ॥५॥

ज्ञान प्रकाशरूप सूर्यधी जाड्यानधकारने दूर करनारा पूज्य, मान्य उदयसागर गुरुवर्यने प्रणाम करी बद्धाञ्जलियेवे हू घासीलाल मुनि अनुयोगनी विशद प्रस्तावनाने पल्लवित करुं छु ॥६॥

आर्हतीं भारतीं नत्वा घासीलालो मुनिव्रती ।

श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिव्याख्यां कुर्वे प्रकाशिकाम् ॥७॥

जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्रस्य प्रस्तावना ॥

इह हि परमासारविकरालससारकान्तारपर्यटनजन्य नानाविधदुःखदावदन्द्यमानान्तः-
करणा उच्चावच्चाः प्राणिनो जिहासितमपि तद् दुःखं समूलघातमपहन्तुमपारय-
न्तोऽकामनिर्जरायोगतः संजात दुःखनिदानकर्मलाघवास्तज्जिहासया निखिलकर्म-
मलक्षयलक्षणं निरतिशयसुखस्वरूपमोक्षपदमभिवाञ्छन्ति, तच्च मोक्षयदं परमपुरु-
षार्थरूपतया सम्यग्ज्ञानसम्यग्दर्शनसम्यक्चारित्रलक्षणरत्नत्रयविषयकपरमपुरुषकारलक्षण-
परमयत्नैरुपार्जनीयम्, स च पुरुषकारः इष्टसाधनताज्ञानेन जन्यते, ममेद मिष्टसाध-
नम्, इति इष्ट साधनता ज्ञानश्चाप्तोपदेशात् भवति, आप्तश्च यथार्थवक्ता केवलज्ञानावलो-
कित सकलजीवाजीवपदार्थसार्थो निरुपाधिक परोपकारपरायणः करुणावरुणालयोऽनुभूय-

अर्हद् भगवान् श्री भारती वाणी को नमस्कार कर मुनि व्रती घासीलाल जी श्री जम्बू-
द्वीप प्रज्ञप्ति की प्रकाशिका व्याख्या करता हूँ ॥७॥

प्रस्तावना का हिन्दी अनुवाद

इस परम असार ससाररूप घोर जगल में इधर उधर भटकने से उत्पन्न नाना प्रकार के
दुःख दावानलों से अत्यन्त सन्तप्त छोटे बड़े सभी प्राणी सर्वथा छोड़ने के लायक उन दुःखों
को समूल विनाश करने में असमर्थ होकर अकाम निर्जरा योग से दुःखों के मूल निदानमूल-
कर्मों को हलका कर उसको छोड़ने की इच्छा से सारे ही कर्मों का क्षय लक्षण निरतिशय
सुख स्वरूप मोक्षपद की अभिलाषा करते हैं उस मोक्ष पद को परम पुरुषार्थस्वरूप होने से
सम्यग् ज्ञान, सम्यग् दर्शन, सम्यक् चारित्र लक्षण रत्नत्रय विषयक परम पौरुषलक्षण परम
यत्नो से उपार्जित करना चाहिये वह पौरुष इष्ट साधनताज्ञान से उत्पन्न होता है, "मम
इदमे इष्ट साधनम्" इस प्रकार का इष्टसाधनताज्ञान आप्त पुरुषों के उपदेश से होता है

अर्हद् भगवान् श्री भारती वाणीने नमस्कार करीने मुनिव्रती हूँ घासीलाल श्रीजम्बू-
द्वीप प्रज्ञप्ति की प्रकाशिका व्याख्या प्रारंभ करे छु ॥७॥

प्रस्तावनानो गुजराती अनुवाद

आ परम असार ससार रूप घोर जगलमां आम-तेम भटकवार्थी उत्पन्न थयेल अनेक
जातना दुःख दावानलार्थी अत्यंत सन्तप्तथयेला नाना-मोटा भधां प्राणीओ सर्वथा त्याग्य
जे दुःखोने, समूण विनष्ट करवामा असमर्थ थयने अकाम निर्जरायोगार्थी दुःखोना मूल
निदानमूल कर्मोने छुणवा करीने तेमने त्यजवानी इच्छार्थी समस्त कर्मोना क्षय-लक्षण निर-
तिशय सुखस्वरूप मोक्षपदनी अभिलाषा करे छे, ते मोक्षपदतुं परम पुरुषार्थ स्वरूप होवार्थी
सम्यग् ज्ञान, सम्यग् दर्शन, सम्यक् चारित्र लक्षण रत्नत्रय विषयक परमपौरुष लक्षण
परमयत्नोर्था इ देकने उपार्जन करवु जेछे ते पौरुष इष्ट साधनताज्ञानार्थी उत्पन्न थाय
छे, "मम इदं इष्ट साधनम्" आजातनु इष्ट साधनता ज्ञान आप्त पुरुषोना उपदेशार्थी थाय

मानतीर्थकृन्नामकर्मा कोऽपि विलक्षणो विचक्षणः परमः पुरुष एव भवति, तदुपदेशश्च गण-
धर स्थविरादिभिरङ्गोपाङ्गादि शास्त्रेषु प्रपञ्चितो विशदीकृतश्च वर्तते, तत्र आचाराङ्गा-
दीनि द्वादशाङ्गानि प्रतीतान्येव, उपाङ्गान्यपि अङ्गैरुद्देशविस्तररूपाणि प्रत्यङ्गमेकैकसत्त्वात्
द्वादशैव सन्ति, तत्राचाराङ्गस्य औपपातिकमुपाङ्गम्, १, सूत्रकृदङ्गस्य राजप्रश्रीयम् २,
स्थानाङ्गस्य जीवाभिगमः ३, समवायाङ्गस्य प्रज्ञापना ४, भगवत्याः सूर्यप्रज्ञप्तिः ५, ज्ञाता-
धर्मकथाङ्गस्य जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिः ६, उपासकदशाङ्गस्य चन्द्रप्रज्ञप्तिः ७, अन्तकृद्दशाङ्गा-
दीनां दृष्टिवादपर्यन्तानाम् पञ्चानामप्यङ्गानां निर्यावलिक्ता श्रुतस्कन्धगतकल्पिकादिपञ्च-
वर्गाः पठन्च उपाङ्गानि सन्ति, तत्र अन्तकृद्दशाङ्गस्य कल्पिका ८, अनुत्तरौपपातिकदशा-
ङ्गस्य कल्पावतंसिका ९, प्रश्नव्याकरणस्य पुष्पिता १०, विपाकश्रुतस्य पुष्पचूलिका ११,

यथार्थवक्ता को आप्त कहते है । जो कि केवलज्ञान के द्वारा सकल जीवाजीव पदार्थ समूह
को जानने वाले निर्व्याज परोपकार परायण, करुणावरुणालय, तीर्थकृद् नामकर्मा का
अनुभव करने वाले कोई विलक्षण विचक्षणविरहे ही परम पुरुष होते है उन आप्त पुरुषों के
उपदेशों को गणधर स्थविरादि महामुनियों ने अङ्गोपाङ्गादि शास्त्रों में विशदरूप से पल्लवित
किया हुआ है । उनमें भी आचाराङ्गादि द्वादशाङ्ग प्रसिद्ध ही है । अङ्गैरुद्देश विस्तररूप
उपाङ्ग भी प्रत्यङ्ग एक एक होने से द्वादश ही माने जाते हैं । उनमें आचाराङ्ग का औप-
पातिक उपाङ्ग है १, सूत्रकृताङ्ग का राजप्रश्रीय २, स्थानाङ्ग का जीवाभिगम ३, समवायाङ्ग
का प्रज्ञापना ४, भगवतीसूत्रका सूर्यप्रज्ञप्ति ५, ज्ञाताधर्मकथाङ्ग का जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति ६, उपासक
दशाङ्ग का चन्द्रप्रज्ञप्ति ७, अन्तकृद् दशाङ्गादि दृष्टिवादपर्यन्त पांचो भी अङ्गों का निर्यावलिक्ता
श्रुतस्कन्धगत कल्पिकादि पांच वर्ग पांच उपाङ्ग माने जाते हैं । उनमें अन्तकृद् दशाङ्ग का
कल्पिका ८, अनुत्तरौपपातिक दशाङ्ग का कल्पावतंसिका ९ प्रश्नव्याकरण का पुष्पिता १०,
विपाकश्रुत का पुष्पचूलिका ११, दृष्टिवाद का वृष्णिदशा १२, उपाङ्ग है । उनमें प्रस्तुत जम्बू-

छे. यथार्थवक्ता ने आप्त कहे छे केवल ज्ञान वटे सकल जीवाजीव पदार्थ समूह ना ज्ञाता,
निर्व्याज परोपकार परायण, करुणावरुणालय, तीर्थकृद् नाम कर्माने अनुभवनास केछ
विलक्षण-विचक्षण विरहा परम पुरुषोत्तम आप्त होय छे ते आप्त पुरुषोत्तम उपदेशोने
गणधर स्थविरादि महामुनियोने अङ्गोपाङ्गादि शास्त्रोमा विशदरूपी पल्लवित कर्थो छे.
ते सर्वमा आचाराङ्गादि द्वादशाङ्गो प्रसिद्ध छे अङ्गैरुद्देश विस्तार रूपउपाङ्ग पञ्च
प्रत्यङ्ग ज्येष्ठ-ज्येष्ठ होवाथी द्वादशङ्ग मानवामा आवेल छे तेमा आचार्याङ्गनु औपपातिक
उपाङ्ग छे १, सूत्रकृताङ्ग नु राजप्रश्रीय २, स्थानाङ्गनु जीवाभिगम ३, समवायाङ्गनु प्रज्ञापना
४, भगवती सूत्रनु सूर्यप्रज्ञप्ति ५, ज्ञाताधर्मकथाङ्गनु जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति ६, उपासक दशा-
ङ्गनु चन्द्रप्रज्ञप्ति उपाङ्ग गल्याय छे ७ तमज अन्तकृद्दशाङ्गादि दृष्टिवाद पर्यन्त पांचे अङ्गो,
निर्यावलिना श्रुतस्कन्धगत कल्पिकादि पांच वर्गो पञ्च पांच उपाङ्गो गल्याय छे तेमा अन्त-
कृद्दशाङ्गनु कल्पिका ८, अनुत्तरौपपातिकदशाङ्गनु कल्पावतंसिका-९, प्रश्नव्याकरणनु पुष्पिता-

દષ્ટિવાદસ્ય વૃષ્ણિદશા ૧૨, તત્ર પ્રસ્તુતોપાદ્ગમ્ જમ્બૂદ્વીપપ્રજ્ઞપ્તિરૂપગમ્ભીરાર્થતયાડત્તિ-
ગહનત્વાદનુયોગરહિતં મુદ્રિતરાજકીય કમનીય કોશાગારમિવ ન તદર્થાર્થિનામમીષ્ટફલ-
દાયકં ભવતીતિ વિમાન્ય કોશાધ્યક્ષાજ્ઞયા પ્રેખ્યેણ કોશાગારસ્યોન્મુદ્રણમિવવિદુપા તદનુ-
યોગઃ કૃતઃ, સચાનુયોગશ્ચતુર્વિધો ભવતિ, ધર્મકથાનુયોગઃ, ગણિતાનુયોગઃ, ચરણકરણાનુ-
યોગશ્ચ, તત્ર ધર્મકથાનુયોગઃ-ઉત્તરાધ્યયનાદિકઃ, ગણિતાનુયોગઃ-સૂર્યપ્રજ્ઞપ્ત્યાદિકઃ,
દ્રવ્યાનુયોગઃ પૂર્વાણિ સમ્મત્યાદિકશ્ચ, ચરણકરણાનુયોગશ્ચ આચારાદિકઃ તત્રાનુયોગ-
શબ્દાર્થસ્તુ યુજ્યતે સમ્વધ્યતે ભગવદુક્તાર્થેન સહેતિ યોગઃ-કથનલક્ષણો વ્યાપારઃ અનુ-
રૂપોડ્નુકૂલો વા યોગઃ અનુયોગઃ ભગવદુક્તાર્થાનુરૂપઃ પ્રતિપાદનલક્ષણો વ્યાપારોડ્નુયોગ
इति निष्कर्षः, તત્ર યથા ગણધરેણ સુધર્મસ્વામિના જમ્બૂસ્વામિનં પ્રતિ ભગવદુક્તાર્થાનુરૂપ-

દ્વીપ પ્રજ્ઞપ્તિ રૂપ ઉપાદ્ગમ્ભીરાર્થક હોને સે અત્યન્ત ગહન હૈ ફસલિયે અનુયોગ રહિત હોકર
યહ ઉપાદ્ગમ્ બન્દ કિયે હુપ કમનીય રાજકીય કોશાગાર કો તરહ તદર્થાર્થી કા અમીષ્ટ ફલ-
દાયક નહીં હો સકતા એસા સમજકર કોશાધ્યક્ષ કો આજ્ઞા સે નોકર દ્વારા કોશાગાર
કા ઉદ્ઘાટન કે સમાન વિદ્વાનો ને ઉસકા અનુયોગ કિયા, વહ અનુયોગ ચાર પ્રકાર કા હૈ-ધર્મ-
કથાનુયોગ ૧, ગણિતાનુયોગ ૨, દ્રવ્યાનુયોગ ૩, ઓર ચરણ કરણાનુયોગ ૪, ઉનમેં ઉત્તરાધ્ય-
યનાદિ ધર્મકથાનુયોગ કહલાતા હૈ, સૂર્યપ્રજ્ઞપ્ત્યાદિ ગણિતાનુયોગ, પૂર્વ ઓર સમ્મત્યાદિ દ્રવ્યાનુયોગ
ઓર આચારાદિકચરણ કરણાનુયોગ કહલાતા હૈ, ઉનમેં અનુયોગ શબ્દ કા અર્થ ભગવાન વોતરાગ
કે દ્વારા ઉક્ત અર્થ કે સાથ અનુરૂપ યા અનુકૂલ કથન રૂપ વ્યાપાર કો અનુયોગ કહાજાતા હૈ
ફસ પ્રકાર ભગવદુક્તાર્થાનુરૂપ પ્રતિપાદનરૂપ વ્યાપાર હો અનુયોગ શબ્દ કા નિષ્કર્ષ હોતા હૈ।
ઉસ મેં જૈસે ગણધર સુધર્મસ્વામી ને જમ્બુસ્વામી કે પ્રતિ ભગવદુક્તાર્થાનુરૂપ કથનરૂપ અનુયોગ

૧૦ વિપાક શ્લોકનુ પુષ્પચૂલિકા-૧૧, દષ્ટિવાદનુ વૃષ્ણિદશા-૧૨ ઉપાંગ છે તે સર્વમા પ્રસ્તુત
'જમ્બૂદ્વીપ પ્રજ્ઞપ્તિ રૂપ ઉપાદ્ગમ્ભીરાર્થક હોવાથી અત્યન્ત ગહન છે. એટલામા ટે અનુયોગ
રહિત થઈને આ ઉપાદ્ગમ્ કરવામાં આવેલા કમનીય રાજકીય કોશાગારની જેમ તદ-
ર્થાર્થિને અમીષ્ટ ફળદાયક થઈ શકે નહિ આમ વિચારીને કોશાધ્યક્ષની આજ્ઞાથી નોકર વડે
કોશાગારને ઉદ્ઘાટિત કરાવવાની જેમ વિદ્વાનો એ તેનો અનુયોગ કર્યો તે અનુયોગ ચાર
પ્રકારનો છે—

(૧) ધર્મકથાનુયોગ (૨) ગણિતાનુયોગ (૩) દ્રવ્યાનુયોગ અને (૪) ચરણકરણાનુયોગ.

તેમા ઉત્તરાધ્યયનાદિ ધર્મકથાનુયોગ' કહેવાય છે સૂર્યપ્રજ્ઞપ્ત્યાદિ ગણિતાનુયોગ, પૂર્વ
અને સમ્મત્યાદિ દ્રવ્યાનુયોગ અને આચારાગાદિ ચરણકરણાનુયોગ કહેવાય છે. એમાં જે
'અનુયોગ' શબ્દ છે, તેનો અર્થ થાય છે-ભગવાન વોતરાગ વડે ઉક્ત અર્થની સાથે અનુ-
રૂપ યા-અનુકૂલ કથન રૂપ વ્યાપાર. આ પ્રમાણે ભગવદ્ ઉક્તાર્થાનુરૂપ પ્રતિપાદન રૂપ વ્યા-
પારજ અનુયોગ શબ્દનો નિષ્કર્ષ થાય છે તેમા જેમ ગણધર સુધર્મા સ્વામીએ જમ્બૂ સ્વામી
પ્રતિ ભગવદ્દુક્તાર્થાનુરૂપ કથન રૂપ અનુયોગનો એટલે કે-ઉપક્રમ-નિષ્કેપ-અનુગમ-નયલક્ષણ

कथनरूपोऽनुयोगः उपक्रमनिक्षेपअनुगम-नयलक्षणानि चत्वारि द्वाराणि आश्रित्य कृत्तस्तथा अन्येनाप्याचार्येण शिष्येभ्यः सूत्रार्थरूपोऽनुयोगः कर्तव्यः, यद्यपि सर्वेषामागमानामनुयोगः कर्तव्यस्तथाप्यत्र सूत्रे जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ते रनुयोगस्यैव प्रस्तुतत्वेन तस्या अनुयोगकरणे समर्थो हि सर्वेषामागमानामनुयोगकरणे समर्थो भवति, तस्मादनुयोगविधि जिज्ञासुना मुनिनाऽनुयोगद्वारसूत्रमभ्येतव्यम्, अतएव—

“चूर्णीकृत्य पराक्रमान्मणिमयं स्तम्भं सुरः क्रीडया,
मेरौ सन्नलिक्रासु वायुवशतः क्षिप्त्वा रजो दिक्षु तत् ।
स्तम्भस्तैः परमाणुभि सुमिलितैर्लंकि यथा दुष्करः,
संसारे भ्रमतो मनुष्यजननं जन्तोस्तथा दुर्लभम्”

इत्युक्तिभणितमतिदुर्लभं मानुषं जन्म सम्प्राप्य मिथ्यात्वतिमिरविनाशक श्रद्धा ज्योतिः प्रकाशक तत्त्वातत्त्वविवेचकं सुधाधाराऽऽमारमिवामरत्वप्रदायकं चञ्चच्चन्द्रचन्द्रिकाविव चकोरचेतसो हृदयाह्लादकं स्वप्नदृष्टवस्तुनः पुनर्जाग्रदवस्थायां तल्लभवत् प्रमोदसन्दोहजनकं भूमिगत प्राप्तनिधिमिव सुखजनकं सकलसन्तापहारकं धर्मश्रवणं समुप-

मो उपक्रम-निक्षेप-अनुगम-जयलक्षण चार द्वारो का आश्रय कर किया है, वैसे ही अन्य आचार्यों ने भी शिष्यों के लिये सूत्रार्थ कथन रूप अनुयोग करना चाहिये, यद्यपि सभी आगमो का अनुयोग करना चाहिये तथापि इस सूत्र में जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति के अनुयोग को ही प्रस्तुत होने से उसके अनुयोग करने में समर्थ पुरुष सभी आगमो के अनुयोग करने में समर्थ होते हैं इस लिये अनुयोग विधिका जिज्ञासु मुनि को अनुयोग द्वार सूत्र पढना चाहिये, अत एव ‘चूर्णीकृत्य पराक्रमान्मणिमयः’, इस उक्ति भणिति के अनुसार अत्यन्त दुर्लभ मनुष्य जन्म को प्राप्त कर मिथ्यात्वरूप तिमिर का विनाशक, श्रद्धारूप ज्योतिः प्रकाशक, तत्त्वातत्त्व का विवेचक, सुधाधारा मुशलधारवर्षा के समान अमरत्व का प्रदान करने वाला चञ्चत् चन्द्र चन्द्रिका के समान चकोर चित्त सहृदय जनो का हृदयाह्लादजनक, स्वप्नदृष्ट वस्तु का जाग्रद् अवस्था में फिर से

जो चार द्वारेना आश्रय कर्छे तेमज अन्य आचार्योञ्छे पञ्च शिष्योनाभाटे सूत्रार्थ कथनरूप अनुयोग करवे। जेध अथ अपि अथा आगमोना अनुयोग करवे। जेध अथ तथापि आ सूत्रमा जम्बू द्वीप प्रज्ञप्तिना अनुयोग ज प्रस्तुत होवाथी जेना अनुयोग करवासा समर्थ पुरुषो। सर्व आगमोना अनुयोग भाटे समर्थ होय छे जेथी अनुयोग विधि भाटे जिज्ञासा धरावनार मुनिने जेध अथ ते ‘अनुयोगद्वार’ सूत्रनु’ अध्ययन करे जेथी ‘चूर्णीकृत्य पराक्रमान्मणिमयम्’ आ उक्ति मुज्ज अत्यन्त दुर्लभ मनुष्य जन्म प्राप्त करीने मिथ्यात्व रूप तिमिर ने विनाशकरनार, श्रद्धारूप ज्योतिना प्रकाशक, तत्त्वातत्त्वने विवेचक, सुधाधारा-मुशलधार वर्षानी जेम अमरत्व प्रदान करनार, चञ्चत् चन्द्र-चन्द्रिकानी जेम चकोर चित्त, सहृदयोना मनने आह्लादित करनार, स्वप्न दृष्ट वस्तु जगतावस्थासा पुन प्राप्त थाय तेम, अत्यन्त प्रमोदानन्द जनक, भूमिगत प्राप्त निधिनी जेम सुख जनक,

लभ्य अपारसंसारसागरतरणतरणि मिथ्यात्वकषायतिमिरहरण द्युमणि स्वर्गापवर्गसुखचिन्ता-
मणि क्षणकश्रेणिसरणि कर्मरिपुदमनीं केवलज्ञानकेवलदर्शनजननीं श्रद्धामवाप्य, कर्मरजः
प्रक्षालने जलमिव भोज भुजङ्गनिवारणे गारुडमन्त्रमिव कर्मघनाघनविकरणे पवनमिव
केवलज्ञानभास्करप्रकटने प्राचीं दिशामिव साधनन्तमुक्तिसाम्राज्याभिलषितप्राप्तौ कल्पतरु
मिव संयमं लब्ध्वा हेयोपादेय वस्तु स्वरूपनिरूपकाणि अव्यावाधसुखजनकानि आचारा-
ङ्गादि सूत्राणि विधिवदधीत्य, संसारवारिधिमहातरणि शिवपदसरलसरणि सिद्धिपददायकं
सकलगुणनायकम् अनादि संचिताष्टाविधकर्म बन्धनोच्छेदकं मिथ्यात्वग्रन्थिभेदकं सम्य-
ग्ज्ञानवर्षण समर्थं सूत्र परमार्थं स्वपर समयरहस्यं च विज्ञाय तथाविधकर्मक्षयोपशमसम्भा-

लभ के समान, अत्यन्त प्रमोदानन्दजनक भूमिगत प्राप्त निधिकी तरह सुखजनक सकल
सन्तापहारक धर्मश्रवण को प्राप्त कर अपारससार सागर को तैरने की नौका के समान,
मिथ्यात्वकषाय रूप अन्धकार का विनाशक सूर्यके समान, स्वर्गापवर्गसुख का प्रदान कर्त्ता
चिन्तामणिवत् क्षणक श्रेणि को सरणिरूप, कर्मरिपु का दमन करने वाली केवलज्ञान और केवल-
दर्शन की जननी श्रद्धा को प्राप्तकर कर्मरज के प्रक्षालन में जल के समान भोगरूप भुजङ्ग
को दूर करने में गारुड मंत्र के समान, कर्मरूप घन घोर घटा को तितर बितर करने में पवन
आंधी की तरह केवलज्ञानरूप सूर्य को प्रगट करने में पूर्व दिशा की तरह सादि अनन्त मुक्ति-
रूप अभिलषित साम्राज्य प्राप्ति में कल्पवृक्ष के समान संयम को प्राप्तकर हेयोपादेय वस्तुओं
के स्वरूप का निरूपक, बाधरहितसुख का जनक आचाराङ्गादिसूत्रोंको विधी पूर्वक अध्ययन
कर ससाररूप समुद्र की बड़ी नौका के समान शिवपद मोक्ष की सरल सरणि “मार्ग” के समान
सिद्धिपद का दायक, सकल गुण का नायक, अनादिमव द्वारा संचित (उपार्जित) अष्टविध
कर्मबन्धन का उच्छेदक मिथ्यात्व रूप ग्रन्थि का भेदक सम्यग्ज्ञान वर्षण समर्थ सूत्र के

सकल सन्तापहारक, धर्मश्रवणने प्राप्तकरीने अपार ससार सागरने तरी जवा भाटे
नौका समान मिथ्यात्व कषाय रूप अन्धकारने विनाश करनार सूर्य सद्देश स्वर्गापवर्ग सुखने
आपनार चिन्तामणिवत्, क्षणक श्रेणिनी सरणिरूप, कर्मरिपुने दमन करनारी केवलज्ञान
अने केवलदर्शनने जननी श्रद्धाने भेगवीने कर्मरजना प्रक्षालन भाटे जल समान, भोज रूप
भुजङ्गने दूर करवा भाटे गारुडमन्त्रवत्, कर्मरूप घनघोर घटाने छिन्न-विच्छिन्न करवाभां
आधीनी जेम, केवल ज्ञान रूप सूर्यने प्रकट करवाभां पूर्व दिशानी जेम सादि, अनन्त
मुक्तिरूप अभिलषित साम्राज्य प्राप्तिभां कल्पवृक्षनी जेम संयमने प्राप्त करीने हेयो-
पादेय वस्तुओंना स्वरूपने निरूपण करनाश, बाधरहित सुखने उत्पन्न करनारा आचारा-
ङ्गादि सूत्रोंनु यथाविधि अध्ययन-मनन करीने ससार रूप समुद्रनी महान् नौका सद्देश
शिवपद मोक्षनी सरल सरणि “मार्ग”नी जेम सिद्धिपद दाता, सकल गुण नायक, अनादि
मव द्वारा संचित (उपार्जित) अष्टविध कर्मबन्धनोच्छेदक मिथ्यात्वरूप ग्रन्थि-भेदक, सम्यग्
ज्ञान वर्षण समर्थ सूत्रना परम-अर्थने तेमच स्वपर सिद्धान्त रहस्यने लक्ष्मीने पूर्वोक्ति

विनीं सकलतत्त्वस्वरूपनिदर्शिनीं द्रव्यगुणपर्यायविषयविज्ञां विशदप्रज्ञां समधिगत्य, प्रवचनानुयोगकरणे यतिभिर्यतितव्यम्, अनुयोग द्वारसूत्रमिदमावश्यकस्य अनुयोगतया द्रव्यानुयोगान्तर्गतमवसेयम्, प्रस्तुतशास्त्रस्य जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिरूपस्य क्षेत्रप्ररूपणात्मकत्वात्, तस्याश्च गणितसाध्यत्वात् गणितानुयोगेऽन्तर्भावोऽवसेयः अथैवमस्याः जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः गणितानुयोगतया साक्षात् मोक्षमार्गभूत रत्नत्रयानुपदेशकत्वात् चरणकरणात्मकाचारादि शास्त्राणामिव न मोक्षाद्भूतत्वमिति चेत् अत्रोच्यते—साक्षान्मोक्षमार्गानुपदेशकत्वेऽपि तदुपकारितया परम्परया शेषाणामपि त्रयाणामनुयोगानां मोक्षाद्भूतत्वे विरोधाभावात् ।

चरणपडिवत्ति हेऊ धम्मकहा कालि दिक्खमादीया ।

दविण दंसण सोही दंसण सुद्धस्स चरणं तु ॥१॥

छाया-चरणप्रतिपत्तिः हेतुः धर्मकथानुयोगः काले गणितानुयोगे दीक्षादीनि ।

व्रतानि शुद्ध गणितसिद्धे प्रशस्ते काले गृहीतानि प्रशस्त फलानि स्युः ॥१॥

परमार्थ को और स्वपर सिद्धान्त रहस्य को जानकर पूर्वोक्त अष्टविध कर्मक्षयोपशम के द्वारा उत्पन्न होने वाली सकल तत्त्व स्वरूप को बतलाने वाली द्रव्यगुण पर्यायो के विषयो को जानने वाली विशदप्रज्ञा को प्राप्त कर प्रवचन अनुयोग करने में यतियों को प्रयत्नकरना चाहिये, इस अनुयोग द्वारसूत्र को आवश्यक का अनुयोगरूप होने से द्रव्यानुयोग के अन्तर्गत समझना चाहिये, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिरूप प्रस्तुत शास्त्र को क्षेत्र प्ररूपणात्मक होने से गणित साध्य क्षेत्र प्ररूपण की तरह गणितानुयोग में अन्तर्भाव समझना चाहिये, यह जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति गणितानुयोगात्मक होने से साक्षात् मोक्षमार्गभूत रत्नत्रय का अनुपदेशक है इसलिए चरण करणात्मकाचारादि शास्त्रों की तरह यह मोक्ष का अङ्ग नहीं माना जा सकता ऐसी शङ्का नहीं करनी चाहिये क्योंकि साक्षात् मोक्षमार्गका उपदेशक नहीं होने पर भी तदुपकारी होने से परम्परया शेष तीन अनुयोगों को भी मोक्षका अङ्ग मानने में कोई विरोध नहीं माना जा

अष्टविध कर्मक्षयोपशम द्वारा उपलब्ध बनारी सकल तत्त्व स्वरूपने अतावनारी, द्रव्यगुण पर्यायाना विषयेने ज्ञानुनारी, विशद प्रज्ञाने प्राप्तिकरीने प्रवचन-अनुयोग करवाभाटे यति-जोओ प्रयत्नो करवा जेधोओ आ 'अनुयोगद्वार सूत्र' आवश्यकनाओ अनुयोग रूप छे, जेवु भानीने—'द्रव्यानुयोग'नी अहर ओओने। अन्तर्भाव मानवो जेधोओ जम्बूद्वीप प्रज्ञप्तिरूप प्रस्तुत शास्त्र क्षेत्र प्ररूपणात्मक होवाथी, गणित साध्य क्षेत्र प्ररूपणानी जेम गणितानुयोगमा अन्तर्भाव समजवो जेधोओ आ 'जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति' गणितानुयोगात्मक होवाथी साक्षात् मोक्षमार्गभूतरत्ननी अनुपदेशक छे, जेथी यरषु करणात्मकाचारादि शास्त्रानी जेम आ मोक्षाद्भूत नथी जेवी शङ्का करवी योअ न गणुय। हेमके आ साक्षात् मोक्षमार्गोपदेशिका न होवा छानो, तदुपकारी होवाथी, परम्परया शेष त्रय अनुयोगोने पवु मोक्ष भाटे अङ्ग रूप गणुवाभा होध पवु मतने विरोध होध शके नहि कहु पवु छे—“चरणपडिवत्ति हेऊ” इत्यादि धर्मकथानुयोग यरषु प्रतिपत्तिने हेतु

मूलम्—णमो अरिहंताणं तेणं कालेणं तेणं समएणं मिहिला-
णामं णयरी होत्था, सिद्धिस्थिमिय समिद्धा वण्णओ, तीसे णं मिहि-
लाए णयरीए बहिया उत्तरपुरस्थिमे दिसीभाए एत्थ णं माणिभदे
णामं चेइए होत्था वण्णओ । जियसत्तूराया, धारिणी देवी, वण्णओ
तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे, परिसा णिग्गया,
धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया ॥सू० १॥

छाया—नमोऽर्हद्भ्यः तस्मिन् काले तस्मिन् समये मिथिला नाम नगरी आसीत् ।
ऋद्धस्तिमितसमृद्धा वर्णकः । तस्याः खलु मिथिलाया नगर्याः, वहिः उत्तरपौरस्त्ये
दिग्भागे अत्र खलु माणिमद्रनाम चैत्यम् अभवत्, वर्णकः (जितशत्रु राजा) धारिणी देवी,
वर्णकः । तस्मिन् काले तस्मिन् समये स्वामी समवस्रतः परिपद् निर्गता, धर्मः कथित,
परिषत् प्रतिगता ॥सू० १॥

टीका—‘णमो अरिहंताण इत्यादि—

नमोऽर्हद्भ्यः अर्हद्भ्यः अर्हन्त्यशोकाद्यष्ट प्रकाराणि परममक्ति भरभरितसु-
रासुरसमूहविरचितानि जन्मान्तरसंजातानवच्छिन्नसम्यक्त्वमहालवालविरुद्धार्हद्गुणग्राम-
गानप्रभृति विंशतिस्थानक समाराधनजलाभिषिक्त तीर्थङ्करत्वमहातरुकल्पानि
महाप्रातिहार्याणि, निखिलकर्मनिविडनिगडबन्धनबन्धापगमात् सिद्धिसौधशिखराऽऽ-
रोपणं चैत्यर्हन्तः, अष्टमहाप्रातिहार्ययोग्या मुक्तियोग्याश्चेत्यर्थः, तेभ्योऽर्हद्भ्यो नमः

सकता । कहा भी है के “चरणपडिवत्तिहेऊ” इत्यादि, धर्मकथानुयोग चरणप्रतिपत्ति का हेतु होता
है गणितानुयोग काल में दीक्षा प्रभृतिवत् शुद्धगणित सिद्ध प्रशस्त काल में गृहीत हो पर प्रशस्त
फलवाले होते हैं ।

“णमो अरिहंताणं—तेणं कालेणं तेणं समएणं” इत्यादि ।

अर्हन्त भगवन्तो को नमस्कार हो, जो अष्ट प्रातिहार्यों से सुशोभित होते हैं वे अर्हन्त
हैं, ये प्रातिहार्य अशोक वृक्ष आदि के मेद से आठ प्रकार के होते हैं—अर्हन्तो के सिवाय और
किसी के ये नहीं होते हैं—इनके करने वाले परममक्ति के भार से भरे हुए सुर और असुर होते

होय छे गणितानुयोगकालमा दीक्षा प्रभृति वत् शुद्ध गणित सिद्ध प्रशस्तकालमा गृहीत
थधने प्रशस्त कूलवान् होय छे.

अभ्युद्धीप प्रज्ञमिनु गुजराती भाषान्तर

णमो अरिहंताण—तेणं कालेणं तेणं समएणं—इत्यादि सूत्र—१ ।

अर्हन्त भगवन्तोने नमस्कार के जेओ अष्ट प्रातिहार्योंथी सुशोभित होय छे तेओ
अर्हन्त छे आ प्रातिहार्यों अशोकवृक्ष वगेरेना बेटथी आठ प्रकारना होय छे. अर्हन्तो
सिवाय भीज कोधने पबु आ होता नथी. जेभने कस्नारा परममक्तिना भारथी युक्त सुर

નમસ્કારઃ, 'તેણં કાલેણં' તસ્મિન્ કાલેઅવસર્પિણી ચતુર્થારકલક્ષણે ભગવચ્છ્રી મહાવીરસ્વામીવિહરણકાલે, 'તેણં સમણં' તસ્મિન્સમયે હીયમાનલક્ષણે, 'મિહિલા ણામં નયરી હોત્થા' મિથિલાનામ્ની નગરી આસીત્ । નન્નુ સૂત્રનિરૂપણકાલેઽસ્યાઃ સત્ત્વેઽપિ 'હોત્થા' ઇતિ ભૂતકાલનિર્દેશઃ કથમુચિતઃ ? ઇતિ ન શઙ્કનીયમ્, અસ્મિન્નવસર્પિણીકાલે શુભાભાવાઃ પ્રતિક્ષણં હાનિમુપગચ્છન્તીતિદેતોસ્તાદ્દશવિશેષણ વિશિષ્ટાયા અસ્યા ડદાનીમ-સમ્મવાદ્ ભૂતકાલનિર્દેશો ન દોષાવહ ઇતિ । સા કીદૃશી ? ઇતિ જિજ્ઞાસાયામાહ—

હૈં । જન્માન્તર-પૂર્વભવ મેં જિન્હોને અનર્વાચ્છન્ન સમ્યક્ત્વ પૂર્વક વીમસ્થાનો કી આરાધના સે તીર્થ-કર નામકર્મ કો પ્રકૃતિ કા વન્ધ કર લિયા હોતા હૈ એસે મનુષ્ય હો ડસ ભવ મેં ડન અષ્ટ મહા પ્રાતિહાયો કે યોગ્ય હોતે હૈં, અથવા જો મુક્તિ પ્રાપ્તિ કે યોગ્ય હોતે હૈં વે અર્હન્ત હૈં, એસે અષ્ટ મહાપ્રાતિહાયો કે યોગ્ય ઔર મુક્તિ પ્રાપ્તિ કે યોગ્ય અર્હન્ત ભગવન્તો કો યહા સૂત્રકાર ને નમસ્કાર કિયા હૈ. ।

“તેણં કાલેણ” હસ અવસર્પિણી કે ચૌથે આરે મેં જવ કિ ભગવાન્ શ્રી મહાવીર સ્વામી કા વિહાર હો રહા થા “તેણં સમણ” ઔર ડસ સમય મેં—જો કિ હીયમાન સ્વરૂપ થા—આયુ આદિ કી જિસમેં પ્રતિસમય હીનતા હો રહી થી—“મિહિલા ણામં નયરી હોત્થા” મિથિલા નામ કી નગરી થી, શંકા—જવ હસ સૂત્ર કા નિરૂપણ હુઆ હૈ ડસ કાલ મેં હસ નગરી કા સદ્ભાવ તો થા હો—તો ફિર યહાં પર “હોત્થા” એસા ભૂત કાલ કા નિર્દેશ ક્યોં કિયા ગયા ? ઉત્તર—હસ અવસર્પિણી—કાલ મેં શુદ્ધ ભાવ પ્રતિક્ષણ હીનતા કી ઓર સે હી વઢતે રહતે હૈં—અતઃ જૈસે વિશેષણો કા હસમેં નિર્દેશ કિયા ગયા હૈ વૈસે વિશેષણોવાલી યહ નગરી હસ સૂત્ર નિરૂપણ કે અવસર મેં નહોં

અને અસુર હોય છે જન્માન્તર-પૂર્વભવમાં જેમણે અનર્વાચ્છન્ન સમ્યક્ત્વપ્રાપ્તિ પૂર્વક વીશ સ્થાનોની આરાધનાથી તીર્થ કર નામકર્મની પ્રકૃતિને બન્ધ કરેલ છે એવા માણુસોજ આ ભવમાં આ અષ્ટ મહાપ્રાતિહાયો માટે યોગ્ય હોય છે અથવા જેઓ મુક્તિને પ્રાપ્ત કરવા યોગ્ય હોય છે, તેઓ અર્હન્ત છે એવા અષ્ટ મહાપ્રાતિહાયોના યોગ્ય અને સુક્ત પ્રાપ્તિ માટે યોગ્ય અર્હન્ત ભગવન્તોને અહીં સૂત્રકારે નમસ્કાર કરેલ છે

“તેણં કાલેણ” આ અવસર્પિણીના ચોથા આરામાં જ્યારે ભગવાન્ મહાવીર સ્વામીનો વિહાર થઈ રહ્યો હતો, “તેણં સમણ” અને તે સમયે—જો કે હીયમાન સ્વરૂપ હતું—આયુ-વગેરેની જેમાં ફરકે ફરકે સંણે હીનતા થઈ રહી હતી—“મિહિલા ણામં નયરી હોત્થા” મિથિલા નામે એક નગરી હતી

શંકા—જ્યારે આ સૂત્રનું નિરૂપણ થયું છે, તે કાલે તે નગરીનો સદ્ભાવ તો હતો જ, તો પછી અહીં હોત્થા આરીતે ભૂતકાળ નો નિર્દેશ થા માટે કરવામાં આવેલ છે ?

ઉત્તર—આ અવસર્પિણી કાળમાં શુભ ભાવો પ્રતિક્ષણ હીનતા તરફ જ વધતા રહે છે તેથી જેવા વિશેષણો આમાં નિર્દિષ્ટ કરવામાં આવેલ છે, તેવા વિશેષણોથીયુક્ત આ નગરી આ સૂત્રના નિરૂપણ વખતે રહી નહીં—એથી અહીં ભૂતકાળનો નિર્દેશ દોષયુક્ત નથી.

‘रिद्धत्थिमिय समिद्धा’ इति, ऋद्धस्तिमितसमृद्धा तत्र-ऋद्धा-विभव-भवनादिभिः पौरजनैश्च वृद्धि प्राप्ता, स्तिमिता-स्वचक्रपरचक्रमयरहिता स्थिरेत्यर्थः, समृद्धा-धनधान्यादि समृद्धियुक्ता ऋद्धाचासौ स्तिमिता चासौ समृद्धा चेति पदत्रयकर्मधारयः । ‘वण्णओ’ अस्याः वर्णकः-वर्णनकारकः पदसमूह औपपातिकसूत्रे प्रथमसूत्रगत चम्पानगरी वर्णनवद्बोधयः । ‘तीसेणं मिहिलाए णयरीए वहिया’ तस्याः-ऋद्धत्वादि सम्पन्नायाः खलु मिथिलाया नगर्याः बहिः-बहिः प्रदेशे, ‘उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए’ उत्तरपौरस्त्ये उत्तरपूर्वान्तरालरूपे दिग्भागे ईशानकोणे, ‘एत्थणं’ अत्र खलु ‘माणिमहे णाम चेइए होत्था’माणिभद्रं-मणिभद्रनामकं चैत्यं व्यन्तरायतनम् आसीत् । ‘वण्णओ’ वर्णकः अस्यापि वर्णनपदसमूह औपपातिकसूत्रे द्वितीयसूत्रगतपूर्णभद्रचैत्यवर्णनवद् विज्ञेयः, ‘जियसत्तूराया जितशत्रुनामा राजा आसीत् । ‘धारिणी देवी’ तस्य जितशत्रुराजस्य धारिणी-धारिणी नाम्नी देवी पट्टराज्ञी आसीत् । ‘वण्णओ’ वर्णकः-राज राज्ञीवर्णनपदसमूह औपपातिकसूत्र एकादश द्वादश सूत्रगत कूणिकराजधारिणीदेवी वर्णनवद्बोधयः ।

रही-इसलिये इसके निरूपण में भूतकाल का निर्देश दोषावह नहीं है । “रिद्धत्थिमियसमिद्धा” उस समय यह नगरी ऋद्ध-विभव, भवन एवं पौर-जनो से वृद्धि को प्राप्त थी, स्तिमित-स्वचक्र और परचक्र के भय से रहित थी, समृद्ध धन धान्यादि रूप समृद्धि से परिपूर्ण थी “वण्णओ” इसका वर्णन कारक पदसमूह औपपातिक सूत्र में प्रथमसूत्र में चम्पा नगरी के वर्णन में जैसा कहा गया है वैसा ही है “तीसेण मिहिलाए णयरीए वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थ णं माणिमहे णामं चेइए होत्था” इस मिथिला नगरी के बाहर ईशान कोण में माणिभद्र नाम का एक व्यन्तराय-तन था “वण्णओ” इसका वर्णन औपपातिक सूत्र के द्वितीयसूत्र में वर्णित पूर्णभद्र चैत्य के जैसा ही है “जियसत्तू राया धारिणी देवी वण्णओ” इस नगरी का राजा जितशत्रु था और इसकी पट्टरानी का नाम धारिणी था, इन दोनों का वर्णन औपपातिक सूत्र के ११वें और १२ वे सूत्र में वर्णित कूणिक राजा और उसकी देवी धारिणी के जैसा ही है ‘तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी

‘रिद्धत्थिमियसमिद्धा ते सभये आ नगरी ऋद्ध-विभव, भवन अने परिभनो थी वृद्धि-गत હતી. સ્તિમિત-સ્વચક્ર અને પરચક્રના ભયથી મુક્ત હતી સમૃદ્ધ-ધન ધાન્યાદિ ૩૫ સમૃદ્ધિથી પરિપૂર્ણ હતી “વણ્ણઓ” આ નગરીનું વર્ણન ઔપપાતિક સૂત્ર ના પ્રથમ સૂત્રમાં વર્ણિત ચ પાનગરીનાવર્ણન ની જેમ જ છે. ત્રીસેણ મિહિલાપ ણયરીપ વહિયા ઉત્તરપુરત્થિમે દિસીમાપ પથ્થણં માણિમહે ણામ ચેइए होत्था આ મિથિલા નગરીની બહાર ઇશાન કોણમાં મણિમદ્રનામનું એક વ્યન્તરાયતન હતું “વણ્ણઓ” આનું વર્ણન ઔપ પાતિક સૂત્ર ના બીજા સૂત્રમાં વર્ણિત પૂર્ણમદ્ર ચૈત્ય જેવું જ છે “જિયસત્તૂરાયા ધારિણી દેવી વણ્ણઓ આ નગરીને. રાજા જિતશત્રુ હતો અને તેની પટ્ટરાણી નું નામ ધારિણી હતું આ બંનેનું વર્ણન ઔપપાતિક સૂત્રના ૧૧ અને ૧૨ સૂત્રોમાં વર્ણિત કુણિક નરેશ અને તેમની દેવી ધારિણી જેવું જ છે “તેણં કાલેણં તેણં સમएणं સામી સમોસહે” તે કહે

‘तेणं कालेणं’ तस्मिन्काले ‘तेणं समएणं’ — तस्मिन् समये खलु ‘सामी समो-
सदे’ स्वामी श्रीमहावीरप्रभुः समवसृतः-समवासरत् । समवसरणवर्णनमप्यौप-
पातिकसूत्रस्य पीयूषवर्षणी टीकातो ग्राह्यम् । ‘परिसा णिग्गया’ परिपत् जनमंहतिः
निर्गता नगरान्निस्सृता । ‘धम्मो कहिओ’ सदेवामुरमानुपपरिपदि भगवता श्रीमहा-
वीरेण धर्मः—अगारधर्मोऽनगारधर्मश्च कथितः प्ररूपितः । सच ‘अत्थिलोए अत्थिअलोए’
इत्यादि औपपातिकसूत्रे षट्पञ्चाशत्तमसूत्रतो बोध्यः । ‘परिसा पडिगया’ परिपत् ज-
नसंहतिः यामेव दिश समाश्रित्य प्रादुर्भूता समागता तामेव दिशमाश्रित्य प्रतिगता-
परावृत्य गता ॥ सू० १॥

अथ परिपदि प्रतिगतायां सत्यां यज्जातं तदाह—

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स
जेट्ठे अंतेवासी इंदभूर्इ णामं अणगारे गोयमगोत्तेणं सत्तुस्सेहे सम-
चउरंससंठाणसंठिए जाव तिखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ वंदइ
णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी ॥ सू० २॥

१—तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य ज्येष्ठोऽन्तेवासी
इन्द्रभूतिर्नामानगारो गौतमोगोत्रेण सप्तौत्सेचः समचतुरस्त्रसंस्थानसंस्थित यावत् त्रिगुण-
आदक्षिणं प्रदक्षिणं करोति वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा पवमवादीत् ॥ सू० २॥

टीका—‘तेणं कालेणं’ इत्यादि—

‘तेणं कालेणं तेणं समएणं’ तस्मिन् काले तस्मिन् समये एतद् व्याख्या प्रथम-
सूत्रवद्बोद्ध्या । ‘समणस्स भगवओ महावीरस्स’ श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य ‘जेट्ठे’
समोसदे” उस काल में और उस समय में वहा पर भगवान् महावीर स्वामी समवसृत हुए—
आये समवसरण का वर्णन भी औपपातिक सूत्र की पीयूष वर्षिणी टीका से जान लेना चाहिये
“परिसा निग्गया” नगर से जनमेदिनी निकली “धम्मो कहिओ” भगवान् ने गृहस्थ धर्म और
मुनिधर्म की प्ररूपणा की यह उपदेश “अत्थिलोए अत्थिअलोए” इत्यादि रूप से औपपातिक
सूत्र मे ५६ वें सूत्र से जान लेना चाहिये, “परिसा पडिगया” धर्म सुनकर वह जन सहति
जिस दिशा से आई थी उसी दिशा की तरफ वापिस चली गई ॥ १॥

अने ते समये त्या भगवान् महावीर स्वामी समवसृत थ्या—पधार्था समवसरणु
वर्णन पणु औपपातिकसूत्रनी पीयूषवर्षिणी टीका परथी जणुी लेवुं नेधअे “परिसा
णिग्गया” नगरथी जनमेदिनी नीकणी “धम्मो कहिओ” भगवाने गृहस्थधर्म अने मुनि-
धर्मनी अइपणुा करि आ उपदेश “अत्थिलोए अत्थिअलोए” इत्यादि रुपभा औपपातिकसूत्र
ना पठेना सूत्रथी जणुी लेवो नेधअे “परिसा पडिगया” धर्म साभणीने ते जनपरिपदा ने
दिशा तरइथी आवेदइती ते तश्च पाछी जती रही ॥ १॥

જ્યેષ્ઠઃ—સર્વતઃ પ્રથમઃ ‘અંતેવાસી’ અન્તેવાસી—શિષ્યઃ ‘ઈંદ્રભૂઈનામં અળગારે’ ઇન્દ્રભૂતિઃ
 ઇન્દ્રભૂતિનામા અનગારઃ—અગારં—ગૃહં તત્ અવિદ્યમાન યસ્ય સોડનગારઃ—શ્રમણઃ । સ
 કીદ્દશઃ ? इत्याह—‘ગોયમગોત્તેણ’ ગોત્રેણ ગૌતમઃ—ગૌતમગોત્રોત્પન્નઃ ‘સત્તુસ્સેહે’ સપ્તો-
 ત્સેધઃ—સપ્તહસ્તપ્રમાણોચ્ચશરીરઃ ‘સમચરસંસઠાણસંઠિપ્’ સમચતુરસ્રસંસ્થાનસંસ્થિતઃ—
 સમાઃ—તુલ્યાઃ—અન્યૂનાધિકાઃ ચત્તસોડસ્યયો—હસ્ત—પાદ—પર્ય ધોરૂપાશ્ચત્વારોડપિ વિભાગા
 યસ્ય તત્ સમચતુરસ્રં—તુલ્યારોહ—પરિણાહં, તચ્ચ સસ્થાનમ્ આકાર વિશેષ इति સમચતુ-
 રસ્ર—સંસ્થાનં, તેન સંસ્થિતઃ યુક્તઃ સમચતુરસ્રસંસ્થાનસંસ્થિતઃ । ‘જાવ’ યાવત્ યાવત્પદેન—
 વજ્રઋષભ—નારાચસંહનનઃ, કનકપુલકનિકપપદ્મગૌરઃ, તથા—ઉગ્રતપાઃ, દીપ્તતપાઃ, તપ્તતપાઃ
 મહાતપાઃ, ઉદારઃ, ધોરઃ, ધોરવ્રતઃ, ધોરગુણઃ, ધોરતપસ્વી, ધોરબ્રહ્મચર્યવાસીક ઉચ્છૂ-
 હશરીરઃ, સંક્ષિપ્તવિપુલતેજોલેશ્યઃ, ચતુર્જ્ઞાનોપગતઃ, સર્વાક્ષરસન્નિપાતી इत्येषां પદાનાં
 સદ્ગ્રહો बोध्यः । तत्र चतुर्दशपूर्वी वज्रऋषभनाराचसंहननः वज्र—कीलिकाकारमस्थि, ऋषभः

“તેણં કાલેણં તેણં સમણં સમણસ્સ ભગવઓ મહાવીરસ્સ” इत्यादि ।

“તેણં કાલેણં તેણં સમણં” उस काल में और उस समय में ‘समणस्स भगवओ महावी-
 रस्स,, श्रमण भगवान् महावीर के ‘जेट्ठे अतेवासी” ज्येष्ठ-प्रधान-अन्तेवासी शिष्य कि “इंद्रभूई
 णामं अणगारे” कि जिनका नाम इन्द्रभूति अनगार था “गोयम गोत्तेण” और जो गौतम गोत्रो-
 त्यन्त थे “सत्तुस्सेहे” तथा जिनका उत्सेध ७ हाथ का था “समचउरंस सठाणसठिप” सस्थान
 जिनका समचतुरस्र था अर्थात्—हाथ पैर, ऊपर और नीचे ये चार अस्त्रिया—विभाग शरीर के
 प्रमाणानुरूप थे न कमये और न अधिक थे; यावत्पद के अनुसार—सहनन इनका वज्रऋषभना-
 राच था जिसके द्वारा शरीर पुद्गल दृढ किये जाते हैं उसका नाम सहनन हैं ये सहनन शास्त्र-
 कारों ने ६ विभागों में विभक्त किये हैं इनमें यह प्रथम सहनन है इस सहनन वाले जीव की जो
 अस्थि होती है वह कीलिका के आकार की होती है और इसके ऊपर परिवेष्टनपट्टी के जैसी

તેણં કાલેણં તેણં સમણં સમણસ્સ ભગવઓ મહાવીરસ્સ—ઇત્યા. ૦ સૂત્ર-૧૧૨।

ટીકાર્થ—તેણ કાલેણં તેણં સમણં ‘તે કાળમાં અને તે સમયમાં ‘સમણસ્સ
 ભગવઓ મહાવીરસ્સ’ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરના ‘જેટ્ઠે અંતેવાસી’ જ્યેષ્ઠ-પ્રધાન-અંતેવાસી-
 શિષ્ય ‘ઈંદ્રભૂઈ’ નામ અળગારે’ કે જેમણું નામ ઇન્દ્રભૂતિ અણગાર હતું ‘ગોયમગોત્તેણ’
 અને જેઓ ગૌતમ ગોત્રમાં ઉત્પન્ન થયેલ હતા “સત્તુસ્સેહે” તથા જેમનો ઉત્સેધ બીસાઈ ૭
 હાથ જેટલો હતો—

‘સમચરસંસઠાણસંઠિપ્’ સસ્થાન જેમણું સમચતુરસ્ર હતું કમ પણ હતા નહીં
 તેમજ વધારે પણ ન હતા—યાવત્પદ સુજ્ઞાન-સહનન-વજ્ર ઋષભ નારાચ રૂપ-હતું જેના
 વડે શરીર પુદ્ગલો સુદૃઢ કરવામાં આવે છે, તેનું નામ સહનન છે એ સહનનો શાસ્ત્રકારો
 એ ૬ વિભાગો માં વિભક્ત કરેલ છે આમાં આ પ્રથમ સહનન છે. આ સહનનવાળા
 જીવની જે અસ્થિ હોય છે તે કીલિકાના આકાર જેવી હોય છે અને તેની ઉપર પરિવેષ્ટન

एक और विशेष हड्डी होती है इस का नाम ऋषभ है उभयतो मर्कटबन्ध का नाम नाराच है तथाच दोनों हड्डियों के दोनों ओर से मर्कट बन्धन से बद्ध करके और पट्टाकृति के जैसी एक तृतीय हड्डी से परिवेष्टित करके पुनः इन तीनों हड्डियों को बहुत ही अधिकरूपसे मजबूत करने के लिये वे आपस में विधटित न हो जावें इस रूप से उन्हें दृढ़ बनाने के लिये जिस सहनन में की-लिका के आकार जैसी वज्र नामकी हड्डी हुकी रहती है उग सहनन का नाम वज्र ऋषभ नाराच सहनन है शाण के ऊपर—कसोटी पर कसे गये सुवर्ण की रेल, एँ जैसी चाकचिक्य से युक्त होती है—बमकीली होती हैं और गौरवर्ण की प्रतीत हैं—ठीक इसी प्रकार का इन गौतम का शरीर भी था ये उग्रतपस्वी थे पारणादि के समय ये विचित्र प्रहार के अभिग्रह को धारण करते रहते थे क्योंकि चारित्र विशुद्धि के प्रति इनके परिणाम सदा जागृति सपन्न बने रहते थे किसीमे भी ऐसी शक्ति नहीं थी जो इन्हें अनशनादि के भेद से १२ प्रकार के तप से च्युत कर सके इस तरह से ये तीव्र तप की आराधना में अपने आपको विसर्जित किये हुए थे जिस प्रकार अग्नि वन को

પટ્ટી ના જેવી એક બીજી વધારાની અસ્થિ હોય છે તેનું નામ ઋષભ છે હમયતો મર્કેટ
જાણ્યું નામ નારાય છે તથા-અન્ને અસ્થિઓને અન્ને તરફથી મર્કેટ બંધનથી બંધ
કરીને અને પટ્ટાકૃતિ જેવી એક ત્રીજી અસ્થિ વડે પરિવેષિત કરીને ફરી આ ત્રણે અસ્થિઓ
ને બહુજ સુદૃઢ કરવામાટે-તેઓ એક બીજીથી વિઘટિત થઈ ન જાય-આ પ્રમાણે તેમને
સુદૃઢ બનાવવા માટે જે સંહનનમા કીલિકાના આગાર જેવી વજ્ર નામની અસ્થિ પડેવા,
ઈને રહેલ છે તે સંહનનનું નામ વજ્ર ઋષભનારાય સંહનન છે શાણુ પર-કસોટી પર-
કસવામા આવેલ સુવર્ણની રેખાઓ જેમ ચમકતી હોય છે અને ગોરવર્ણની પ્રતીત થાય છે,
તેમ આ ગૌતમનું શરીર પણ હતું' એઓ ઉચ્ચતપરવી હતા પારણાદિના સમયે એઓ
વિચિત્ર પ્રકારના અભિગ્રહો ધારણ કરતા રહેતા હતા કેમકે ચરિત્ર વિશુદ્ધિના પ્રત્યે એમના
પરિણામે સર્વદા જાગૃતિ સ પક્ષ રહેતા હતા. કેઈમા પણ એવી તાકાત નહોતી કે જેથી
એમને અનશનાદિના ભેદથી ૧૨ પ્રકારના લપથી વિચલિત કરી શકે. આ પ્રમાણે તીવ્ર

कत्वेन, ज्वलत्तेजस्वीत्यर्थः, तप्ततपाः—येन तपसा ज्ञानावरणीयाद्यष्टकर्म भस्मी भवति तादृशं तपस्तप्त येन स तथा, कर्म निर्जरणार्थं तपस्यावान् । महातपाः—आशंसा-
दोषरहितत्वात् प्रशस्ततपाः, उदारः—सकलजीवैः सह मैत्रीकरणात् प्रधानः, घोरः परीष-
होपसर्गकषायशत्रुप्रणाशनविधौ भयानकः, घोरव्रतः—घोरं कानरैर्दुश्चरं व्रतं सम्यक्त्व शीला-
दिकं यस्य स तथा, घोरगुणः—घोराः—अन्यैर्दुरनुचरा गुणाः—मूल गुणादयो यस्य स
तथा । घोरतपस्वी घोरैस्तपोभिस्तपस्वी—कठिनतपोधारीत्यर्थः, घोरब्रह्मचर्यवासी घोरं—
दारुणं—कठिनम् अन्यैरल्प सचैर्दुष्करत्वादयद् ब्रह्मचर्यं तत्र वस्तुं स्थातुं शीलवान् , उच्छ्र-

दग्ध करने में कसर नहीं रखती है ठीक इसी प्रकार से इनका उग्रतप भी कर्मरूप कान्तार को सर्वथा क्षपित करने में समर्थ था यही बात दीप्ततप विशेषण से सूत्रकार ने प्रकट की है 'तप्ततपाः' पद से यह समझाया गया है कि तपस्या की आराधना ये किसी लौकिक कामना के वशवर्ती होकर नहीं कर रहे थे किन्तु कर्मों की निर्जरा होने के निमित्त से ही करते थे "महातपाः" इन्हें इसलिये कहा गया है कि जैसी तपस्या ये करते थे—वैसी तपस्या अन्य साधारण तप-
स्विजनों से होनी अशक्य थी ये बड़े उदाराशयवाले थे क्यों कि सकल जीवों के साथ इनका व्यवहार मैत्री भावसे युक्त था घोर ये इसलिये प्रकट किये गये हैं कि परीषह और उपसर्ग के आजाने पर ये विचलित नहीं होते थे तथा कषोयादि आत्मा के विकारी भावों को ये अपने पास तक नहीं आने देते थे ये विकारीभाव उनके समीप तक आने में भय खाते थे घोर व्रत-
कातरों से दुश्चर इनके व्रत—सम्यक्त्व शीलादिव्रत थे घोरगुण—मूलगुणादिक जो इनके गुण थे वे अन्य जनों द्वारा दुरनुचर थे घोरतपस्वी ये इसलिये थे कि ये कठिन से कठिन तपो की आरा-

तपनी आराधनामां तेजो तद्वतीन होता. जेम अग्नि पनने दग्ध करवामां कथाश राभती नथी, तेम जेमनुष्ठित तप पशु कर्म इप कांतार (वन) ने सर्वथा क्षपित (विनष्ट) करवामा समर्थ हुंतु जेज वात 'दीप्ततप' विशेषणथी सूत्रकारे प्रकट करी छे 'तप्ततपा' पदथी आम समभववामां आयु छे के तपस्यानी आराधना जेजो केरि लौकिक कामना भाटे करता न होता परंतु कर्मोनी निर्जरा भाटे जे जेजो करता होता "महातपाः" जेमने जेटला भाटे कडेवामा आवेल छे के जे जतनी तपस्या जेजो करता होता तेवी तपस्या भील साधारण तपस्वीजो भाटे जेकदम अशक्य जे होती. जेजो जहुंज उदार आशय युक्त होता. केभके सकलजिवोनी साथे जेमनो व्यवहार मैत्री भावपूषु होता. जेजो ने 'घोर' जेटलाभाटे कडेवामा आवेल छे के परीषह अने उपसर्गथी जेजो विचारित थता नही तेमज कषाय आदि आत्माना विकारी भावो ने जेजो जहुंज दूर राभता होना. जो सर्व विकारो जेमनी पास आवतां बाधणीत थता होता 'घोरव्रत' कातराथी दुश्चर जेमना मतो—सम्यक्त्व शीलादि मतो होता 'घोरगुण'—मूलशुण्णादिक जे जेमना शुषोहता ते अन्यलोको वडे दुरनुचर होता घोरतपस्वी जेजो जेटलाभाटे होता के जेजो कठणु मां कठणु तपोनी आराधनामा तद्वतीन होता जेजो घोर ब्रह्मचर्यवासी जेटलाभाटे होता के भील अद्वयसत्त्व

दशरीरः—उच्छृङ्खल्यक्तमिवत्यक्तं शरीरं तत्संस्कारपरिहाराद् येन स तथा । संक्षिप्तविपु-
लतेजोलेख्यः—संक्षिप्ता-शरीरान्तर्गतत्वेन संकुचिता, विपुला विस्तीर्णा अनेक योजन परि-
मितक्षेत्रगतवस्तु भस्मीकरणसमर्था, तेजोलेख्या—विशिष्टतपोजनितलब्धिविशेषसमुत्पन्न-
तेजोज्वाला यस्य स तथा चतुर्दशपूर्वी-चतुर्दशपूर्वाण्यस्य सन्तीति चतुर्दशपूर्वी-चतुर्दशपूर्वधारी
स चावध्यादि त्रिकल्पोऽपि भवेदित्याह—चतुर्ज्ञानोपगतः—मति-श्रुत्य-वधि-मनःपर्यवज्ञान-
सम्पन्नः चतुर्दशपूर्वि चतुर्ज्ञानोपगतेति विशेषणद्वयविशिष्टोऽपि कश्चिन्न समस्तश्रुतगतवि-
षयव्यापि ज्ञानवान् भवति चातुर्दश पूर्वधराणां पङ्कगुणहानिर्बुद्धिलक्षण पटस्थानपतितत्वेन
श्रूयमाणत्वात्, अतस्तन्निरासार्थमाह—सर्वाक्षरसन्निपाती सर्वे च ते अक्षरसन्निपाता अक्षर
संयोगा, यद्वा सर्वेषामक्षराणां सन्निपाताः—संयोगाः सर्वाक्षरसन्निपाताः ते ज्ञेयत्वेन
सन्त्यस्येति सर्वाक्षरसन्निपाती सर्वाक्षरार्थज्ञानसम्पन्नः, एतादृश इन्द्रभूतिः, 'तिखुत्तो'
श्रीमहावीर स्वामिनं त्रिकृत्वः—चारत्रयम्, 'आयाहिण पयाहिण करेइ' आदक्षिणं प्रदक्षिणं
करोति 'वंदइ णमंसइ' वन्दते स्तौति, नमस्यति-नमस्करोति, 'वंदिता णमंसिता' वन्दित्वा
नमस्यित्वा च 'एवं वयासी' एवम्-अनुपदं वक्ष्यमाणं वचनम् अवादीत्—उक्तवान् ॥६०॥ २॥

घना में अपने आप को लगाये हुए थे घोर ब्रह्मचर्यवासी ये इसकारण थे कि ये अन्य अल्प
सत्त्व वाले जीवों द्वारा जिसका पालन करना असंभव है उस कठिनातिकठिन ब्रह्मचर्य व्रत की
नव कोटि से आराधना करते थे इन्होंने अपने शरीर का संस्कार आदि करना बिल्कुल छोड़
रक्खा था इसलिये ये उच्छृङ्खल शरीर थे इन्हे जो तेजोलेख्या प्राप्त थी उसमें ऐसी शक्ति थी कि
वह अनेक योजनो तक की वस्तु को भस्मसात् कर सकती थी पर वह उन्हो ने अपने भीतर
ही संकुचित करके दबा रखी थी उसे कभी भी कार्यान्वित नहीं किया था यह तेजो विशिष्ट
तपस्या से जनित लब्धिविशेष से उत्पन्न होती है ये चतुर्दशपूर्वों के पाठी थे साथ में मतिज्ञान
श्रुतज्ञान अवधिज्ञान और मन पर्यय ज्ञान के धारी थे और सर्वाक्षरार्थज्ञान संपन्न थे ऐसे इन
इन्द्रभूति गणघरने भगवान् महावीर का तीन बार आदक्षिण प्रदक्षिण किया वन्दना की, नमस्कार
किया, वन्दना नमस्कार करके फिर उन्होने प्रभु से ऐसा पूछा ॥२॥

शुक्रत एवो वडे जेमनु पालन अशक्य जेमहुतु ते कठिनातिकठिन ब्रह्मचर्यव्रतानी जेओ
नवकौटिथी आराधना करता हुना. जेमछे पोताना शरीरना संस्कारो वगेरे करवा त्यल्ल
दीधा हुता जेथी तेओ उच्छृङ्खल शरीर हुता जेमने जे तेजोलेख्या प्राप्त हुती तेमां जेवी
शक्ति हुती हे ते बल्लु येजने। इरनी वस्तुने पल्लु बरम करी शके तेम हुती पल्लु ते तेजो
लेख्याने तेमछे पोताना शरीरनी अहर ज संकुचित करीने ह्यावी राभी हुती. ते लेख्याने
तेमछे केध पल्लु द्विपसे कार्यान्वित करी न हुती, आ तेजो विशिष्ट तपस्याथी जनित लब्धिवि
शेषथी उत्पन्न होय छे जेओ चतुर्दश पूर्वना पाठी हुता जेने जेनी साथे मतिज्ञान,
श्रुत अवधिज्ञान जेने मन पर्ययज्ञानना धारी हुता जेने सर्वाक्षरार्थज्ञान संपन्न हुता जेवा
आ इन्द्रभूत गणघरे भगवान् महावीरनी पल्लु बार आदक्षिण प्रदक्षिण करी वन्दना करी
नमस्कार करी वडना नमस्कार करीने पछी तेमछे प्रभुने आ प्रभाछे निवेदन कथुं ॥सू.२॥

કિમુક્તવાનિતિ પ્રદર્શયિતુમાહ—

મૂલમ્—કહિણં મંતે ! જમ્બુદ્વીવેદીવે ? કે મહાલણં મંતે ! જંબુ-
દ્વીવે દીવે ? ૨ કિં સંઠિણં મંતે ! જંબુદ્વીવે દીવે ૩ કિમાયોરભાવ-
પઢોયરેણં મંતે ! જંબુદ્વીવે દીવે ૪ પણ્ણત્તે ? ગોયમા ! અયણ્ણં જંબુ-
દ્વીવે દીવે સંવ્વદીવસમુદ્ધાણં સંવ્વઞ્મંતરાણ ? સંવ્વસુદ્ધાણ વટ્ટે તૈલ્લા
પૂયસંઠાણસંઠિણ વટ્ટે રહચક્કવાલસંઠાણસંઠિણ વટ્ટે પુક્કરકણિયા
સંઠાણસંઠિણ વટ્ટે પઢિપુણ્ણચંદસંઠાણસંઠિણ વટ્ટે ૩ ઇમં જોયણસય-
સહસ્સં આયામવિક્કંભેણં તિણ્ણિ જોયણસયસહસ્સાઈં સોલસ સહ-
સ્સાઈં દોણિય સત્તાવીસે જોયણસણ તિણ્ણિય કોસે અઢ્ઢાવીસં ચ
ધણુસયં તેરસ અંગુલાઈં અઢ્ઢંગુલં ચ કિંચિ વિસેસાહિયં પરિક્કેવેણં
પણ્ણત્તે ॥સૂ. ૩॥

છાયા—જ્વ જલુ ભદન્ત ! જમ્બુદ્વીપો દ્વીપ: ૧, કિં મહાલય: ? જલુ ભદન્ત ! જમ્બુ-
દ્વીપો દ્વીપ: ૨, કિં સંસ્થિત: ? જલુ ભદન્ત ! જમ્બુદ્વીપો દ્વીપ: ૩, વિ આકારભાવપ્રત્યય:
તાર: ? જલુ ભદન્ત ! જમ્બુદ્વીપો દ્વીપ: ૪, પ્રજ્ઞપ્ત: ? ગોતમ ! અયં જલુ જમ્બુદ્વીપો દ્વીપ
સર્વદ્વીપસમુદ્ધાણં સર્વાભ્યન્તરક' સર્વશુલ્લક વૃત્ત: તૈલાપૂપસંસ્થાનસંસ્થિત વૃત્ત: રથ
ચક્કવાલસંસ્થાનસંસ્થિત: વૃત્ત, પુક્કરકણિકા સંસ્થાનસંસ્થિત: વૃત્ત પરિપૂર્ણચન્દ્રસંસ્થાન
સંસ્થિત: વૃત્ત ૩, ઇમં યોજનશતસ્રાણિ દ્વેચ સપ્તવિશે યોજનશતે ત્રય: કોશા. અષ્ટાવિંશં
ચ ધનુ: શતં ત્રયોદશ અઙ્ગુલાનિ અઘોઙ્ગુલં ચ કિંચિદ્વિશેષાધિકં પરિક્ષેપેણ પ્રજ્ઞપ્ત: ॥સૂ. ૩॥

ટીકા—‘કહિ ણં મંતે !’ इत्यादि । इन्द्रभूति: श्रीमदावीरं प्रति पृच्छति- हे
‘भदन्त ! हे सुख कल्याणकारक ! भदन्त ! शब्दस्य विस्तरतो व्याख्याऽऽवश्यक-

“કહિ ણં મંતે ! જંબુદ્વીવે દીવે ? इत्यादि ।

ટીકાર્થ—हे भदन्त । हे सुख कल्याण कारक । “कहि ण मंते । जंबुद्वीवे दीवे १, किस
स्थान परजम्बुद्वीप नाम का द्वीप कहा गया है ? यहां “ण” शब्द खलु शब्द के अर्थ में प्रयुक्त हुआ
है और यह इस वाक्य का मलकृत करने के लिये आया है, इसी प्रकार से अन्य प्रश्न वाक्यों को

કહિણં મંતે ! જંબુદ્વીવે દીવે । इत्यादि सूत्र-३॥

ટીકાર્થ—હે ભદન્ત । હે સુખકલ્યાણ કારક ! ‘કહિ ણં મંતે જમ્બુદ્વીવે દીવે’
કયા સ્થાન પર જમ્બુદ્વીપ નામક દ્વીપ કહેવામાં આવેલ છે ? અહીં ‘ણ’ શબ્દ
‘જલુ’ શબ્દના અર્થમાં પ્રયુક્ત થયેલ છે અને આ શબ્દ આ વાક્યને અલંકૃત
કરવો માટે પ્રયુક્ત કરવામાં આવેલ છે. આ પ્રમાણે બીજા પ્રશ્ન વાક્યો માટે

સૂત્રસ્ય મત્કૃતાયાં મુનિતોષિણીટીકાયાં વિલોકનીયા । ક કસ્મિન્ સ્થાને 'જંબૂદ્વીવે
 દીવે' ૧ જમ્બૂ દ્વીપઃ—જમ્બૂદ્વીપનામકો દ્વીપઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ૧ इत्यग्रेऽपि खलु शब्दो वाक्या-
 लङ्कारे । अनेन जम्बूद्वीपस्य स्थानं पृष्ठवान् १, 'के महालणं भंते ! जंबूद्वीवे दीवे
 २' तथा—हे भदन्त जम्बूद्वीपो द्वीप किं महालयः किं प्रमाणो महान् आलयः आश्रयो
 व्याप्यक्षेत्ररूपो यस्य स तथा कियत्प्रमाणकमहत्त्वविशिष्टाऽऽश्रयसम्पन्नः अनेन जम्बू-
 द्वीपस्य प्रमाणं पृष्ठवान् । २। 'किं संतिष्ठ णं भंते ! जंबूद्वीवे दीवे ३' हे भदन्त !
 जम्बूद्वीपो द्वीपः किं संस्थितः ? किं कीदृशं सस्थानम्-आकारो यस्य स किं संस्था-
 नोऽस्ति ? एतेन जम्बूद्वीपस्य संस्थानं पृष्ठवान् । ३। 'किमायारभावपडोयारेणं भंते !
 जंबूद्वीवे दीवे ४' तथा—हे भदन्त ! जम्बूद्वીपो द्वीपः किमाकारभावप्रत्यवतारः—कः
 कीदृशः आकारभावप्रत्यवतारः—तत्राऽऽकारः—स्वरूपं भावाः पृथिवीवर्षवर्षधर प्रभृतय-
 स्तदन्तर्गताः पदार्थाः, तेषां प्रत्यवतारः—अवतरणं प्रकटीभावः इति यावत् यस्मिन्
 स तथा 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तः—कथितः । अनेन जम्बूद्वीपरय स्वरूपं तदन्तर्वर्ति पदार्थाश्च
 पृष्ठवान् । ४। इत्येवं प्रश्नचतुष्टये कृते तदुत्तर श्रवणपरायणतामुत्पादयितुं तस्य जग-
 त्सिद्ध गोत्रनामोच्चारण पूर्वकामन्त्रणेन क्रमेण भगवानुत्तरयति—'गोयमा' इत्यादि ।
 'गोयमा' हे गौतम ! गौतमगोत्रोत्पन्न ! इन्द्रभूते ! 'अयणं जंबूद्वीवे दीवे' अयम्

મી એસા હી જાનના ચાહિયે, "ભદન્ત" શબ્દ કી વિસ્તૃત વ્યાખ્યા આવશ્યક સૂત્ર કી મુનિ
 તૌષિણી ટીકા મેં કી જા ચુકી હૈ, અત વહા સે હસે દેખ લેના ચાહિયે, "કે મહાલણ ણં ભંતે !
 જંબુદ્વીવે દીવે ૧", તથા હે ભદન્ત ! જંબુ દ્વીપ, નામ કા દ્વીપ કિતના વિશાલ કહા ગયા હૈ ૨, "કિં
 સંતિષ્ઠ ણં જંબુદ્વીવે દીવે ?" તથા—હે ભદન્ત ! હસ જમ્બૂદ્વીપ કા સસ્થાન કૈસા કહા ગયા હૈ :
 "કિમાયાર ભાવપડોયારે ણં ભંતે ! જંબુદ્વીવે દીવે ૪", ૨ તથા હસ જમ્બૂદ્વીપ કા આકાર-સ્વરૂપ
 કૈસા કહા ગયા હૈ : ઓર હસમેં કૌન સે પદાર્થ કહે ગયે હૈં : હસપ્રકાર સે યે ચાર પ્રશ્ન ગૌતમ
 ને પ્રશ્ન સે યહાં પૂછે હૈ હસકે ઉત્તર મેં પ્રશ્ન કહેતે હૈં—"ગોયમા ! હે ગૌતમ ગોત્રોત્પન્ન : ઇન્દ્રભૂતે !"
 'અયણ જંબુદ્વીવે દીવે સર્વદ્વીવસમુદાણ સર્વવન્મતરાપ,, યહ જો પ્રત્યક્ષ સે દ્રશ્યમાન દ્વીપ હૈ કિ
 જહાં પર હમ સબ રહેતે હૈ હસો કા નામ જમ્બૂદ્વીપ હૈ યહ જમ્બૂદ્વીપ નામ કા દ્વીપ સમસ્તદ્વીપ

પણ એવી રીતે જ સમજવું નોંધ્યે ભદન્ત શબ્દની વિસ્તૃત વ્યાખ્યા આવશ્યક
 સૂત્રની મુનિતોષિણી ટીકામાં કરવામાં આવેલ છે તેથી તે ત્યાંથી સમજી લેવી 'કે મહાલણ ણં
 ભંતે જંબુદ્વીવે દીવે ૧" તથા હે ભદન્ત ! આ જંબૂદ્વીપ નામે દ્વીપ કેટલો વિશાળ
 કહેમાં આવેલ છે ? "કિં સંતિષ્ઠ ણં જંબુદ્વીવે ૨ ? તેમજ હે ભદન્ત ! આ જંબૂદ્વીપનું
 સસ્થાન કેવું કહેવામાં આવેલ છે ? "કિમાયારભાવપડોયારે ણં ભંતે ! જંબુદ્વીવે
 દીવે ૪" તેમજ આ જંબૂદ્વીપનો આકાર-સ્વરૂપ કેવો છે ? અને એમાં કઈ કઈ
 બીજાના પદાર્થો છે ? આરીને આ ચાર પ્રશ્નો ગૌતમે પ્રશ્નને અહીં પૂછ્યા છે, એનાં

प्रत्यक्षतो दृश्यमानः अस्मदादीनां निवासभूतः, जम्बूद्वीपो द्वीपः जम्बूद्वीप नामको द्वीपः 'सन्वहीवसमुद्राणं सन्वन्मंतराप' १, सर्वद्वीपसमुद्राणाम्-सर्वेषां द्वीपानां-धातको-खण्डप्रभृतीनां तथासर्वेषां समुद्राणां लवणोदादीनां च सर्वाभ्यन्तरकः सर्वात्मना अभ्यन्तरः सर्वाभ्यन्तरः स एव सर्वाभ्यन्तरकः सर्वतिर्यग्लोकमध्यवर्तीत्यर्थः । इति प्रथम-प्रश्नस्योत्तरम् १। 'सन्वखुड्वाए वट्टे २' तथा-सर्वक्षुल्लकः सर्वेभ्यो द्वीपेभ्यः समुद्रेभ्यश्च क्षुल्लकः घृतः-गोलाकारः । इति द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम् २। तथा घृतः वर्तुलः, स च छिद्रसहित घृतोऽपि स्यादित्यत आह-'तेल्लापूयसंठाणसंठिप वट्टे' इति ३, तैलापूप-संस्थानसंस्थितः तैलापूपः तैलेन पकोऽपूपस्तैलापूपः तैरुपकापूपोहि प्रायः परिपूर्ण-घृतो भवति न तु घृतपकोऽपूपस्तथेव तैलविशेषणम् । तद्वत् यत् संस्थानम्-आकारः

और समुद्रों के बीच में रहा हुआ सब से पहला द्वीप है इस प्रकार के कथन से प्रसुने प्रथम प्रश्न का उत्तर दिया है तात्पर्य इसका यहो है कि धातकी खण्ड आदिक जितने भी और अस-ख्यात द्वीप है, तथा-लवण समुद्रादिक जितने असख्यात समुद्र है उन सब के बीच में यह जम्बू-द्वीप नाम का द्वीप है । इस तरह यह जम्बूद्वीप नामका द्वीप समस्त तिर्यग्लोक के मध्य में रहा हुआ है । इसका विस्तार धातकी खण्ड आदिको एव लवण समुद्र आदिको की अपेक्षा कम है जितने भी इसके सिवाय द्वीप और समुद्र है वे सब बल्य के आकार जैसे गोल है-अतः इसकी गोलाई सब द्वीप और समुद्रों से कम है ऐसा यह द्वितीय प्रश्न का उत्तर दिया गया है इसीलिये "सन्व खुड्वाए वट्टे" ऐसा सूत्रकार ने कहा है "तेल्लापूयसंठाण संठिप वट्टे" रहचक्कवाल संठाण संठिप वट्टे,, इसका आकार जैसा तैल में तले हुए पुये का होता है वैसा है घृत में तले गये पुये का आकर पूर्णरूप से गोल नहीं हो पाता है इसलिये यहां तैल में तले पुये के साथ में

उत्तरमां प्रभु कहे छे-"गोयमा ।" हे गौतम गोत्रोत्पन्न धर्मश्रुत । "अथर्णं जंबूद्वीवे द्वीवे सन्वहीवसमुद्राणं सन्वन्मंतराप" आ जे आभारी साथे प्रत्यक्ष दृश्यमान द्वीप छे, त्या अमे अर्धां रहोये छीये तेनु नाम ज जम्बूद्वीप छे आ जम्बूद्वीप नामक द्वीप अर्धां द्वीपो तेमज समुद्रोनी वन्थे अवस्थित सौधी पड़ेवे। द्वीप छे आ रीते प्रभुजे प्रश्नो जवाब आव्यो छे तात्पर्य आ प्रभावे छे हे धातकी अंड वगेरे जेटला भीम असंख्यात द्वीपो छे तथा लवण समुद्रादिक जेटला असंख्यात समुद्रो छे, ते सर्वानी मध्ये आ जम्बूद्वीप नामक द्वीप आवेल छे आ प्रभावे आ जम्बूद्वीप नामको द्वीप समस्त तिर्यग्लोकना मध्यमा आवेल छे आनो विस्तार धातकोअंड वगेरे तेमज लवण समुद्र वगेरेनी अपेक्षा स्वल्प छे जेना सिवाय भीम जेटला द्वीपो छे तेमज समुद्रो छे तेजो सवे बल्यना आकार जेवा गोण आकृतिवाणा छे आ द्वीप पण गोण छे जेथो जेनी गोण आकृति सर्व द्वीपो अने समुद्रो करता स्वल्प छे आभ भीम प्रश्नो जवाब आपवामां आव्यो छे जेथो ज 'सन्व खुड्वाए वट्टे' आ प्रभावे कहु छे "तेल्लापूय संठाणसंठिप वट्टे रहचक्कवालिसंठाणसंठिप वट्टे, पुक्करकणिया संठाणसंठिप वट्टे "आनो आकार तेवभा तणेला अपूप जेवे छे धीमां तणेला अपूप नो आकार संपूर्ण पण गोण थतो नथो जेथो अही तेल भा तणेला अपूपनी साथे तेना गोण

તેન સંસ્થિતઃ एतत्तुर्यो वृत्तः । 'रथचक्रवाल संस्थाण संठिण वट्टे' पुनः कोटशो वृत्तः ?
 रथचक्रवालसंस्थानसंस्थितः रथशब्दोऽत्र रथाङ्ग (चक्र) परः तेन रथम्य-रथाङ्ग (चक्र)
 स्य यत् चक्रवाल-मण्डलं तद्वत् यत् संस्थानं तेन सस्थितः वृत्तः-वर्तुलः, तथा 'पुष्कर
 कर्णिका संठाणसंठिण वट्टे' पुष्करकर्णिका संस्थानसंस्थितः पुष्करं रुमलं तस्य या
 कर्णिका-चीजकोशी तद्वत् यत् संस्थानं तेन सस्थितः-कमलम-उभागाकारसंस्थितः
 एतादृशो वृत्तः, तथा 'पडिपुण्णचंद संठाणसंठिण वट्टे ३' परिपूर्णचन्द्रसंस्थानसंस्थितः-
 परिपूर्णः षोडशकलासम्पन्नो यश्चन्द्रः तद्वत् यत् संस्थानं तेन संस्थितः अखण्डचन्द्र-
 मण्डलाकारसंस्थानसंस्थितः एवं वृत्तः । वृत्तत्व प्रदर्शनेनानोपमापदकथन नानादे-
 शीय विनयेनानां बुद्धिवैशद्यार्थम् । इति संस्थानविषयक तृतीयप्रश्नस्योत्तरम् ३।

अथ सामान्यतः प्रागुक्तमेव प्रमाणं विशेषतो दर्शयितुमा- 'एगं इत्यादि । 'एगं
 जोयण सयसहस्सं आयामविक्खंमेण' एकं योजनगतसहस्रमायाम-विष्कम्भेण-आयामो
 दैर्घ्य-विष्कम्भः-विस्तारश्चेत्यनयोः समाहारद्वन्द्व आयाम-विष्कम्भं तेन-एकं योजन
 गतसहस्रं योजनलक्षम् एकलक्षसख्यकयोजनप्रमाणं दैर्घ्यविस्तारयुक्तो जम्बूद्वीप इति ।

इसके गोल आकार को उपमित किया गया है क्योंकि तैल में तले हुए पुये का आकार गोलाई
 परिपूर्ण होता है अथवा-रथ के पहिये का चक्र वाला जैसा गोल होता है उसी तरह की गोलाई
 इसकी है यहा रथ से रथ का चक्रप्रहीत हुआ है । अथवा पुष्कर- रुमल कर्णिका जैसी पूर्णरूप
 गोल होती है तैसी गोलाई इसका है अथवा "पडिपुण्ण चंद संठाणमठिण" अपनी १६ कलाओं
 से परिपूर्ण चंद्रमा की जैसी गोलाई होता है वैसी ही गोलाई इस जम्बूद्वीप नाम के द्वीप की
 है इस तरह गोलाई के दिखाने में जो ये नाना उपमान पदों का कथन किया है वह
 नानादेशीय विनेय जानों की बुद्धि को विशदता के निमित्त किया गया है इस कथन से तृतीय
 प्रश्न का उत्तर सूत्रकार ने दिया है "एगं जोयण सयसहस्सं आयामविक्खंमेण तिण्णि जोयणसय
 सहस्साइं सोलससहस्साइ दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसप तिण्णि य कोसे अट्ठावीस च धणुसय

આકાર ને ઉપમિત કરવામા આવેલ છે કેમ કે તેલમા તળેલા અપૂય નો આકાર ગોલા-
 કૃતિમા પરિપૂર્ણ હોય છે અથવા રથના પૈડાનો ચક્રવાલ જે પ્રમાણે ગોળ હોય છે તેમજ
 તે પણ ગોળ છે, અહીં રથથી રથનું ચક્ર ગ્રહીત થયેલ છે અથવા પુષ્કર-કમળ-ની કર્ણિકા
 જેમ પૂર્ણરૂપથી ગોળ હોય છે તેવી ગોલાકૃતિ એની છે અથવા 'પડિપુણ્ણચંદ્રસંઠાણ
 સંઠિણ' પોતાની ૧૬ કળાઓથી પરિપૂર્ણ ચંદ્રમા ની જેવી ગોલ આકૃતિ હોય છે તેવી જ
 ગોલાકૃતિ આ જમ્બૂદ્વીપ નામના દ્વીપની છે આ પ્રમાણે અહીં ગોલાકૃતિ થી સબદ્ધ અનેક
 ઉપમા પદોનું કથન કરવામાં આવ્યું છે ને નાનાદેશીય વિનેય (શિષ્ય) જનોની બુદ્ધિની
 વિશદતા માટે કરવામાં આવેલ છે આ કથન થી ત્રીજા પ્રશ્નનો જવાબ સૂત્રકારે આપ્યો
 છે "एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंमेण तिण्णि जोयणसयसहस्साइं सोलस सह-
 स्साइ दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसप तिण्णि कोसे अट्ठावीस च धणुसय तेरसं अ.

નનુ જમ્બૂદ્વીપસ્ય પૂર્વતઃ પશ્ચિમં યાવત્ યોજનલક્ષં પ્રમાણમભિહિતં, તત્ર પૂર્વ પશ્ચિમ-
દિગ્વર્તિ જગતી મૂલયોઃ પ્રત્યેકં વિષ્કમ્મો દ્વાદશયોજનપ્રમાણ, તતશ્ચ પૂર્વોક્ત
લક્ષપ્રમાણે પૂર્વપશ્ચિમદિગ્વર્તિ જગત્યો ડ્વાદશ દ્વાદશ યોજનાત્મકં મૂલવિષ્ક-
મ્મપ્રમાણં સંયોજિતં તત્ત્વતુર્વિંશત્યધિકૈકલક્ષયોજનં જમ્બૂદ્વીપપ્રમાણં વત્તવ્યમ્, एवं
ચ પૂર્વોક્ત માનં વિરુદ્ધયતે इति चेदाह-जम्बूद्वीपस्य यत् प्रमाणमभिहितं तज्जगती
મૂલવિષ્કમ્મપ્રમાણાપેક્ષયૈવ । एवं लवणसमुद्रस्यापि यन्लक्षद्वयं प्रमाणमभिहितं तद् लव-
णसमुद्र जगती मूलविष्कम्ममादायैव । एवमन्यान्य द्वीप समुद्रविषयेऽपि विज्ञेयम् ।
यदि द्वीपसमुद्रमानाज्जगतीमानं पृथग् भण्येत, तदा मनुष्यक्षेत्रप्रमाणं यत् पञ्च-
चत्वारिंशल्लक्षयोजनप्रमाणमभिहितं तद् विरुद्ध्येत । अतो जगतीविष्कम्मप्रमाणमादा-

तेरस अंगुलाह अद्वंगुल च किंचि विसेसाहिय परिक्लेवेणं पणत्ते” इसकी लम्बाई चौड़ाई एक
लाख योजन की है

શંકા-જમ્બૂદ્વીપ કા જો પૂર્વ પશ્ચિમ તક એક લાખ યોજન કા પ્રમાણ કહા ગયા હૈ વહાં
પૂર્વ પશ્ચિમ દિગ્વર્તી જગતી ઔર મૂલ કા પ્રત્યેક કા વિષ્કમ્મ પ્રમાણ ૧૨-૧૨ યોજન કા હૈ
અતઃ એક લાખ યોજન મેં ૨૪ યોજનાત્મકુ इस प्रमाण को मिलाने से एक लाख २४ योजन
કા પ્રમાણ इसका कहना चाहिये था सो केवल इसकी लम्बाई का यह १ एक लाख
યોજન કા પ્રમાણ વિરુદ્ધ પડતા હૈ ।

उत्तर-यहां जो जम्बूद्वीप का प्रमाण कहा है वह जगती और मूल के विष्कम्भ प्रमाण
को अपेक्षा से ही कहा है, इसी तरह लवण समुद्र का जो दो लाख योजन का प्रमाण
कहा गया है वह लवण समुद्र की जगती और मूल विष्कम्भप्रमाण को लेकर ही कहा
गया जानना चाहिये इसी तरह का कथन अन्य द्वीप और समुद्रों के सम्बन्ध में भी
समझना चाहिये यदि द्वीप समुद्रों के प्रमाण पृथक् कहा जाता तो मनुष्यक्षेत्र का जो
प्रमाण ४५ लाख योजन का कहा गया है उसमें विरोध आता है’ अतः जगती विष्कम प्रमाण

अद्वंगुलं च किंचि विसेसाहिय परिक्लेवेणं पणत्ते” आनी લંબાઈ, ચોડાઈ એક યોજન
જેટલી છે

શંકા.—જ જમ્બૂદ્વીપનું પ્રમાણ પૂર્વ પશ્ચિમ સુધીનું એક લાખ યોજન જેટલું કહેવામાં
આવેલ છે ત્યાં પૂર્વ પશ્ચિમ દિગ્વર્તી જગતી અને મૂલનું પ્રત્યેકનું વિષ્કલ પ્રમાણ ૧૨-૧૨
યોજન જેટલું છે એવા એક લાખ યોજનમાં ૨૪ યોજનાત્મક આ પ્રમાણને એકત્ર કરવાથી
એક લાખ ૨૪ યોજન નું પ્રમાણ આવું છે તેમ કહેવું ભેદથી પરતુ અહીં તો ફક્ત આની
લંબાઈ પહોળાઈનું એક લાખ યોજન પ્રમાણ નિરૂપિત કરવામાં આવેલ છે તે
ઉપરોક્ત રીતે એક લાખ યોજનનું કથન વિરુદ્ધ પડે છે ઉત્તર-અહીં જમ્બૂ દ્વીપનું
પ્રમાણ કહેવામાં આવેલ છે તે જગતી અને મૂલના વિષ્કલ પ્રમાણની અપેક્ષાથી જ કહેવામાં
આવેલ છે આ પ્રમાણ લવણ સમુદ્રનું જે એ લાખ યોજન જેટલું કહેવામાં આવેલ
છે તે લવણ સમુદ્રની જગતી અને મૂલવિષ્કલ પ્રમાણના આધારે જ કહેવામાં આવેલ છે
જે આ પ્રમાણે ધીળ દ્વીપો અને સમુદ્રોના વિશે પણ બાળી લેવું ભેદથી જે દ્વીપ સમુદ્રના
પ્રમાણ થી જગતીનું પ્રમાણ અલગ કહેવામાં આવે તો મનુષ્યક્ષેત્રનું જે પ્રમાણ ૪૫ લાખ
યોજન જેટલું કહેવામાં આવેલ છે, તેમાં વિરોધ લાગે છે એથી જગતીના વિષ્કલ પ્રમાણ

યૈવ દ્વીપસમુદ્રાણાં પ્રમાણં વિવક્ષિતમિતિવિજેયમિતિ । તથા 'તિણિજોયણ સયસહ-
સ્સાઈ' ત્રીણિ યોજનશતસદસ્રાણિ ત્રીણિ લક્ષાણિ 'સોલસસદસ્રાઈ' પોહથ સદસ્રાણિ
યોજનાનિ 'દોન્નિય સત્તાવીસે જોયણસર્' દ્વે યોજનશતે સપ્તવિશે સપ્તવિંગત્યધિકે
'તિણિયકોસે' ત્રયઃ—ત્રિસહ્યકાઃ ક્રોશાઃ, 'અદ્ધાવીસં ચ ધણુસય' અષ્ટાવિંગમ્—અષ્ટા-
વિંગત્યધિકં ધનુઃ શત 'તેરસ અંગુલાઈ' ત્રયો, શાઙ્ગુલાનિ 'અદ્ધંગુલં ચ કિંચિવિસે-
સાહિય પરિક્ષેવેણ પળ્લણ્ણે' અઘાઙ્ગુલં ચ કિઞ્ચિદ્વિશેષાધિકમિત્યેતાવાન્ પરિક્ષેપેજ
પરિધિના જમ્બૂદ્વીપો દ્વીપઃ પ્રશ્નઃ ॥૬૦૩॥

અથાઽઽકારભાવપ્રત્યવતારવિષયકપ્રશ્નસ્યોત્તરમાહ—

મૂલમ્—સે ણં ઇગાઈ વર્ડરામર્ડાઈ જગર્ડાઈ સવ્વઓ સમંતા સંપરિ-
ક્ષિત્તે । સા ણં જગર્ડાઈ અદ્ધ જોયણાઈ ઉદ્ધં ઉચ્ચત્તેણં, મૂલે વારસ
જોયણાઈ વિક્કલંમેણં, મજ્ઞે અદ્ધ જોયણાઈ વિક્કલંમેણં, ઉવરિ ચત્તારિ-
જોયણાઈ વિક્કલંમેણં, મૂલે વિત્થિન્ના મજ્ઞે સંખિતા ઉવરિ તણુયા
ગોપુચ્છસંઠાણસંઠિયા સવ્વવર્ડરામર્ડાઈ અચ્છા સળ્હા લળ્હા ઘટ્ટા મટ્ટા
ળીરયા નિમ્મલા ણિપ્પંકા ણિક્કંકટચ્છાયા સપ્પમા સમરીઈયા સં-
જ્જોયા પાસાઈયા દરિસણિજ્જા અમિરુવા પઢિરુવા । સા ણં જગર્ડાઈ
ઈગેણં મહંતગવક્કલકઢાઈ સવ્વઓ સમંતા સંપરિક્ષિત્તે । સે ણં ગવ-
ક્કલકઢાઈ અદ્ધજોયણં ઉદ્ધં ઉચ્ચત્તેણં પંચ ધણુસયાઈ વિક્કલંમેણં સવ્વ-
રયણામર્ડાઈ અચ્છે જાવ પઢિરુવે । તીસેણં જગર્ડાઈ ઉપ્પિ વહુમજ્ઞદે-
સમાઈ ઇત્થણં મહર્ડાઈ ઇગા પડમવરવેઈયા પળ્લણ્ણા, અદ્ધજોયણં ઉદ્ધં
ઉચ્ચત્તેણં પંચ ધણુસયાઈ વિક્કલંમેણં જગર્ડાઈ સમિયા પરિક્ષેવેણં સવ્વ-
રયણામર્ડાઈ અચ્છા જાવ પઢિરુવા । તીસેણં પડમવરવેઈઆઈ અયમે

કો લેકર હી દ્વીપ સમુદ્રો કા પ્રમાણ કહા હૈં એસા જાનનાં ચાહિયે इस जम्बू द्वीप की परिधि
का प्रमाण ३ लाख १६ हजार दो सौ २७ योजन एवं ३ कोश २८ धनुष १३॥ अंगुल से
कुछ अधिक हैं ॥३॥

ને લઈને જ દ્વીપ સમુદ્રીનું પ્રમાણ કહેવામાં આવેલ છે, આમ સમજવું બેઠકોએ આ
જમ્બૂદ્વીપની પરિધીનું પ્રમાણ ૩૩ લાખ ૧૬ હજાર બસો ૩૭ (૩૩૧૬૨૩૭) યોજન અને
૩ કોશ ૨૮ ધનુષ ૧૩૥ અંશુલ કરતાં કંઈક વધારે છે ॥૩૥

યારૂવે વળ્ણાવાસે પળ્ણત્તે, તં જહા વહ્રામયા નેમા એવં જહા જીવા-
મિગમે જાવ અટ્ટો જાવ ધ્રુવા ણિયયા સાસયા જાવ ણિચ્ચા ॥સૂ.૦ ૪॥

છાયા—સ જલુ એકયા વજ્રમય્યા જગત્યા સર્વતઃ સમન્તાત્ સંપરિક્ષિત્ત । સા જલુ
જગતો અષ્ટયોજનાનિ ઉર્ધ્વમુચ્ચત્વેન, મૂલે દ્વાદશ યોજનાનિ વિષ્કમ્મેણ, મધ્યે અષ્ટયોજ-
નાનિ વિષ્કમ્મેણ, ઉપરિ ચત્ત્વારિ યોજનાનિ વિષ્કમ્મેણ, મૂલે વિસ્તીર્ણા મધ્યે સંક્ષિપ્તા
ઉપરિ તનુકા ગોપુચ્છસસ્થાનસસ્થિતા સર્વવજ્રમયી અચ્છા પ્રલક્ષણા ઘૃષ્ટા મૃષ્ટા નીરજાઃ
નિર્મલા નિષ્પદ્મા નિષ્કદ્વદ્વચ્છાયા સપ્રમા સમરીચિકા સોદ્યોતા પ્રાસાદીયા દર્શનીયા અભિ-
રૂપા પ્રતિરૂપા, સા જલુ જગતી એકેન મહાગવાક્ષકટકેન સર્વતઃ સમન્તાત્ સંપરિક્ષિપ્તા
સ જલુ ગવાક્ષકટક' અર્ધયોજનમ્ ઊર્ધ્વમ્ ઉચ્ચત્વેન પચ્ચધનુઃ શતાનિ વિષ્કમ્મેણ, સર્વ-
રત્નમય અચ્છા' યાવત્ પ્રતિરૂપ', તસ્યા જલુ જગત્યા ઉપરિ વહુમધ્યદેશભાગે અત્ર જલુ
મહતી એકા પદ્મવરવેદિકા પ્રજ્ઞપ્તા, અર્ધયોજનમ્ ઊર્ધ્વમ્ ઉચ્ચત્વેન, પચ્ચધનુઃ શતાનિ
વિષ્કમ્મેણ જગતીસમિતા પરિક્ષેપેણ સર્વરત્નમયી અચ્છા યાવત્ પ્રતિરૂપાઃ । તસ્યાઃ જલુ
પદ્મવરવેદિકાયાઃ અયમેતદ્વુપો વર્ણાવાસઃ પ્રજ્ઞપ્ત. તદ્વથા—વજ્રમયા નેમાઃ એવં યથા જીવા-
મિગમે, યાવત્ અર્થઃ ધ્રુવા નિયતા શાશ્વતી યાવત્ નિત્યા ॥ સૂત્ર. ૪ ॥

ટીકા—“સે ણં એગાએ” ઇત્યાદિ—‘સે ણં એગાએ વહ્રામઈએ જગઈએ’ સઃ—અન-
ન્તરોક્તો જમ્બૂદ્વીપ નામા દ્વીપઃ જલુ વક્યાલક્ષારે, એકયા એકસંખ્યયા વજ્રમય્યા વજ્રરત્ન-
મય્યા જગત્યા—જમ્બૂદ્વીપપ્રાકારરૂપયા દ્વીપસમુદ્રસીમાકારિણ્યા, ‘સવ્વઓ સમંતા સંપ-
રિક્ષિત્તે’ સર્વતઃ સર્વદિશુ સમન્તાત્—સર્વદિશુ સંપરિક્ષિત્તઃ—સમ્યક્ પરિવેષ્ટિતઃ । ‘સા
ણં જગઈ અટ્ટ જોયણાઈં ઉદ્દઢ ઉચ્ચત્તેણં’ સા ચ જગતી અષ્ટયોજનાનિ ઊર્ધ્વમ્ ઉપરિ
ઉચ્ચત્વેન—ઉચ્છ્રયેણ પ્રજ્ઞપ્તેત્યગ્રેણ સમ્બન્ધઃ એવમગ્રેડપિ । ‘મૂલે વારસ જોયણાઈં વિક્કલં-
મેણં’ મૂલે—મૂલભાગે વિષ્કમ્મેણ—વિસ્તારેણ દ્વાદશ યોજનાનિ’ મજ્ઞે અટ્ટજોયણાઈં વિક્કલં-

“સે ણં એગાએ વહ્રામઈએ જગઈએ” ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—યહ જમ્બૂદ્વીપ નામ કા દ્વીપ એક વજ્રમયી જગતી સે—દ્વીપ સમુદ્ર કી સીમાકારી
કોટ સે— “સવ્વઓ સમંતા” ચારો ઓર સે અચ્છી તરહ સે ઘિરા હુઆ હૈ ‘સા ણં જગઈ અટ્ટ
જોયણાઈં ઉદ્દઢ ઉચ્ચત્તેણ મૂલે વારસ જોયણાઈં વિક્કલમેણ, મજ્ઞે અટ્ટ જોયણાઈં વિક્કલમેણ” યહ
પ્રાકાર રૂપ જગતી આઠ યોજન કી ઊંચી હૈ મૂલ મેં વારહ યોજન કી વિષ્કમ્ભવાલી હૈ મધ્ય મેં આઠ

સે ણં એગાએ વહ્રામઈએ જગઈએ સવ્વઓ સમંતા, ઇત્યાદિ ॥ સૂત્ર ૪॥

ટીકાર્થ—આ જ જમ્બૂદ્વીપ નામક દ્વીપ વજ્રમયી જગતી થી—દ્વીપ સમુદ્રની સીમાકારી કોટથી -
“સવ્વઓ સમંતા” ચોમેર સારી રીતે આવૃત્ત છે “સા ણં જગઈ અટ્ટ જોયણાઈં ઉદ્દઢ ઉચ્ચ-
ત્તેણ મૂલે વારસ જોયણાઈં વિક્કલમેણ, મજ્ઞે અટ્ટજોયણાઈં વિક્કલમેણ” આ પ્રકાર રૂપ
જગતી આઠ યોજન જેટલી ઊંચી છે. મૂલમા આર યોજન જેટલી વિષ્કમ્ભવાળી છે મધ્યમાં
આઠ યોજન જેટલા વિસ્તારવાળી છે, “ઉપરિ ચત્તારિ જોયણાઈં વિક્કલમેણ” ઉપરમાં આ

મેળ' મધ્યે-મધ્યમાગે વિષ્કમ્મેણ અષ્ટયોજનાનિ 'ઉવરિં ચત્તારિ જોયણાં વિક્કમ્મેણ, ઉપરિ
 ઊર્ધ્વમાગે વિષ્કમ્મેણ ચત્તારિ યોજનાનિ । અતएવાહ-‘મૂલે વિત્થિન્ના’ મૂલે ત્રિસ્તીર્ણા-
 દ્વાવશયોજનવિષ્કમ્મસમ્પન્નત્વાત્, ‘મજ્ઞે સંખિત્તા, મધ્યે-સંક્ષિપ્તા-મૂલાપેક્ષયાડ્ડપ-
 પ્રમાણા અષ્ટયોજનપ્રમાણવિષ્કમ્મસમ્પન્નત્વાત્, ઉવરિ ‘તણુયા’ ઉપરિ-ઉર્ધ્વમાગે તનુકા
 -મૂલમધ્યાપેક્ષયા હ્રસ્વા ચતુર્યોજનપ્રમાણવિષ્કમ્મસમ્પન્નત્વાત્, અતएવ” ‘ગોપુચ્છ
 સંઠાણસંઠિયા’ ગોપુચ્છ સંસ્થાનસંસ્થિતા ગોપુચ્છમ્ ઊર્ધ્વીકૃત ગોપુચ્છં ક્રમશઃ વહુમધ્ય-
 માલ્પપ્રમાણં ભવતિ તદ્વત્ યત્ સસ્થાનમ્-આકારઃ તેન સંસ્થિતા, ‘સવ્વવડરામઈ’ સર્વ-
 વજ્રમયી-સર્વાત્મના-સામસ્ત્યેન વજ્રરત્નમયો સા કીદશીતિ વર્ણયતે-“અચ્છા” ત્યાદિ,
 ‘અચ્છા’ અચ્છા આકાશ સ્ફટિકવત્ સ્વચ્છા ‘સળ્હા’ શ્લક્ષ્ણા-શ્લક્ષણ પુદ્ગલસ્કન્ધનિષ્પન્ના
 શ્લક્ષણસૂત્રનિષ્પન્નપટવત્, પુનઃ ‘લળ્હા’ શ્લક્ષ્ણ-ચિવક્કણા ધુણિતપટવત્, ‘ઘટ્ટા’ ઘટ્ટા-
 ઘટ્ટેડવઘટ્ટા સ્વરશાણનિધુષ્ટપાપાણણ્ડવત્ ‘મટ્ટા’ મટ્ટા-મટ્ટેવ મટ્ટા-કોમલશાણ-
 ઘટ્ટપાપાણણ્ડવત્, ‘ળીરયા’ નીરજાઃ-સ્વામાવિકરજોવર્જિતા, ‘નિમ્મલા’ નિર્મલા-

યોજન કી વિસ્તાર વાલી હૈ “ઉવરિં ચત્તારિ જોયણાં વિક્કમ્મેણ” ઉપર મેં યહ ચાર યોજન કી
 વિસ્તાર વાલી હૈ ઇસ તરહ યહ મૂલ મેં વિસ્તીર્ણ હૈ, મધ્ય મેં સક્ષિત હૈ ઓર ઉપર મેં પતલી
 હો ગઈ હૈ અત एવ ઇસ જગતી કા આકાર ‘ગોપુચ્છ’ કે આકાર જૈસા હો ગયા હૈ યહ જગતી
 “સવ્વવડરામઈ અચ્છા, મળ્હા, લળ્હા ઘટ્ટા, મટ્ટા, ળીરયા, નીમ્મલા, ણિપ્પકા, ણિક્કકઢચ્છાયા,
 સપ્પમા, સમરીહયા, સઝજ્જોયા, પાસાઈયા દરિસણિજ્જા, અભિરુવા પઢિરુવા” સર્વાત્મના વજ્ર-
 રત્ન કી બની હુઈ હૈ, તથા યહ આકાશ ઓર સ્ફટિક મણિ કે જૈસી અતિસ્વચ્છ હૈ, શ્લક્ષ્ણ સૂત્ર સે
 નિર્મિત પટ કિ તરહ યહ શ્લક્ષ્ણપુદ્ગલ સ્કન્ધ સે નિર્મિત હુઈ હૈ. અત एવ યહ સબ સે શ્રેષ્ઠ હૈ તથા
 ઘુટે હુપ વજ્ર કી તરહ યહ ચિક્રની હૈ, સ્વરશાણ સે વિસે ગયે પાપાણ કી તરહ યહ ઘટ્ટ હૈ, કોમલ
 શાણ સે વિસે ગયે પાપાણણ્ડ કી તરહ યહ મટ્ટ હૈ સ્વામાદિક રજ સે રહિત હોને સે યહ નીજર
 હૈ આગતુક મૈલ સે રહિત હોને સે યહ નિર્મલ હૈ, કર્દમરહિત હોને સે યહ નિષ્પક્ક હૈ, આવરણ

આર યોજન જેટલી વિસ્તારશુક્ત છે આ પ્રમાણે આ મૂલમા (વસ્તીર્ણ) છે, મધ્યમા સંક્ષિપ્ત
 છે, અને ઉપરમા પાંતળી થઈ ગઈ છે એથી આ જગતીનો આકાર “ગોપુચ્છસંઠાણ-
 સંઠિયા” ગોપુચ્છના આકાર જેવો થઈ ગયો છે આ જગતી “સવ્વ વડરામઈ અચ્છા
 સળ્હા, લળ્હા, ઘટ્ટા, મટ્ટા, નીરયા, નિમ્મલા, ણિપ્પંકા ણિક્કકઢચ્છાયા સપ્પમા સમરીહયા,
 સઝજ્જોયા, પાસાઈયા દરિસણિજ્જા, અભિરુવા, પઢિરુવા,” સર્વાત્મના વજ્ર રત્નની બનેલી
 છે, તેમજ આ આકાશ અને સ્ફટિકમાણિ જેવી અતિ સ્વચ્છ છે, શ્લક્ષ્ય સૂત્ર નિર્મિત પટની
 જેમ આ શ્લક્ષ્ય પુદ્ગલ સ્કન્ધથી નિર્મિત થયેલી છે એથી આ લઘુ-શ્રેષ્ઠ-છે તેમજ
 ઘૂટેલ વસ્ત્રની જેમ આ મુચ્છિવણ છે ધાર કાઢવાના પથ્થરથી ઘસેલા પાપાણની જેમ આ
 ઘટ્ટ છે. કોમળ શાણથી ઘસેલા પાપાણ બંડની જેમ આ મટ્ટ છે સ્વામાવિકર રજથી રહિત
 હોવા બદલ આ નીરજ છે. આગ તુક મેકથી રહિત હોવા બદલ આ નિર્મળ છે. કર્દમ

આગન્તુકમલરહિતા, 'ણિપ્પકા' નિપ્પકા-પક્ક-રહિતા નિપ્પકદમા, તથા 'ણિવ્વકકટચ્છાયા' નિવ્વકકટચ્છાયા આવરણ રહિતત્વાદ્યાહત પ્રકાશા 'સપ્પમા' સપ્રમા-સ્વરૂપતઃ પ્રમા-સમ્પન્નાઃ, પ્રકાશમાનેત્યર્થઃ, 'સમગોડયા' સમરીચિકા-કિરણસમ્પન્ના વસ્તુજાનપ્રકાશિ-કેત્યર્થઃ, 'સુહજોયા' સોદ્ધોતા નિરન્તરદિગ્વિદિક્ પ્રકાશિકા, તથા 'પાસાર્ટયા' પ્રાસાદીકા-પ્રસાદો-મનઃ પ્રસન્નતા, સ પ્રયોજનં યસ્યા ઇતિ પ્રાસાદીયા હૃદયોલ્લાસ-કારિણી । 'દરિસણિજ્જા' દર્શનીયા-રમણીયતયા ક્ષણે ક્ષણે દ્રષ્ટુ યોગ્યા, 'અભિરૂવા' અભિરૂપા-અભિમતમનુકૂલં રૂપં યસ્યાઃ સા તથા-સર્વથા દર્શકજનમનમનોહારિણી । 'પહિરૂવા' પ્રતિરૂપા-અપૂર્વ ચમત્કારસમુત્પાદિકા । અસાધારણરૂપ સમ્પન્નેત્યર્થઃ । યદ્વા પ્રતિ પ્રતિક્ષણં નવં નવમિવ રૂપ યસ્યાઃ સા તથા ।

'સા ણ જગઈ' સા ચ ખલુ જગતી 'એગેણ મહંત ગવક્ષ્ણ કહણં' એકેન અનુ-પમેન મહાગવાક્ષકટકેન-વિશાલ જાલક સમૂહેન 'સવ્વઓ સમંતા સંપરિક્ષિત્તા' સર્વતઃ સમન્તાત્ સંપરિક્ષિત્તા-સમ્યક્ પરિવેષિતા વિવિધવિશાલગવાક્ષસમ્પન્નેત્યર્થઃ । 'સે ણ ગવક્ષ્ણકહણં' સ ખલુ ગવાક્ષકટકઃ અદ્વજોયણ ઉદ્ધવ ઉચ્ચત્તેણ' અર્ધયોજનમ્ ઊર્ધ્વમ્ ઉપરિ ઉચ્ચત્વેન-ઉચ્છ્રયેણ 'પંચધણુસયાઙ્ગ વિક્ષંભેણ' પંચધનુઃ શતાનિ વિષ્કમ્ભેણ વિસ્તારેણ, પ્રગ્ભૂતઃ । કીદશઃ પુનઃ સ ગવાક્ષકટકઃ ? ઇત્યાહ-'સવ્વરયણામણં' ઇત્યાદિ ।

રહિત હોને સે નિપ્પકકટચ્છાયા વાલી હૈ- અવ્યાહત પ્રકાશયુક્ત હૈ- સ્વરૂપ સે પ્રમાસંપન્ન હૈ-ત્વતઃ પ્રકાશમાન હૈ, કિરણયુક્ત હૈ- વસ્તુ સમૂહ કી પ્રકાશક હૈ, નિરન્તર દિશાઓ મેં હસકા પ્રકાશ ફેલા રહતા હૈ, હસલિયે સોધોત હૈ હૃદય મેં ઢલાસ જનક હોને સે યહ પ્રાસાદીય હૈ. અધિક રમણીય હોને સે ક્ષણ ક્ષણ મેં યહ દેખને કે યોગ્ય હૈ હસલિયે દર્શનીય હૈ, સર્વથા દર્શકજનો કે નેત્ર ઓર મન કો હરણ કરનેવાલી હોને સે યહ અભિરૂપ હૈ ઓર અસાધારણરૂપસપન્ન હોને સે યહ પ્રતિરૂપ હૈ । અથવા-ક્ષણ ક્ષણ મેં હસકા રૂપ નવીન નવીન જૈસા પ્રતીત હોતા હૈ હસલિયે પ્રતિરૂપ હૈ । "સા ણ જગઈ" વહ જગતી "એગેણ મહંતગવક્ષ્ણકહણં સવ્વઓ સમંતા સંપરિક્ષિત્તા" એક વિશાલ ગવાક્ષજાલ સે-અનેક બઢી ૨ સિદ્ધક્રિયો સે યુક્ત હૈ "સે ણ ગવક્ષ્ણકહણં" વહ ગવાક્ષ જાલ "અદ્વજોયણ ઉદ્ધવઉચ્ચત્તેણ" આધે યોજન કા ઝેંચા હૈ "પંચ

રહિત હોવાથી આ નિપ્પક છે આગરણુ રહિત નિપ્પક ધ્યાવાણી છે અવ્યાહત પ્રકાશ-યુક્ત છે, વસ્તુ સમૂહની પ્રકાશિકા છે નિરન્તર દિશાઓમા અને વિદિશાઓમા આને પ્રકાશ વ્યાપ્ત રહે છે એથી આ સોધોત છે, હૃદયમા ઉલ્લાસજનક હોવાથી આ પ્રાસાદીય છે અધિક રમણીય હોવાથી આ દર્શનીય છે સર્વથા દર્શકોના નેત્ર અને મનને આકર્ષનારી હોવાથી આ અભિરૂપ છે અથવા ક્ષણ ક્ષણમા આનું રૂપ નવનવીત જેવું લાગે છે એથી આ પ્રતિરૂપ છે "સા ણ જગઈ" તે જગતી "એગેણ મહંતગવક્ષ્ણકહણં સવ્વઓ સમંતા સંપરિક્ષિત્તા" એક વિશાળ ગવાક્ષ અણથી-અનેક મોટા મોટા અર્ધાઓથી યુક્ત છે. "સે ણ ગવક્ષ્ણકહણં" ગવાક્ષ જાલ "અદ્વજોયણ ઉદ્ધવઉચ્ચત્તેણ" અર્ધા યોજન જેટલો ઊંચો

સર્વરત્નમયઃ—સર્વાત્મના—સામસ્ત્યેન રત્નમયઃ ‘અચ્છે’ અચ્છઃ—આકાશસ્ફટિકવદતિ
 સ્વચ્છઃ ‘જાવ પઢિરૂવે’ યાવત્—યાવત્પદેન—“શ્લક્ષ્ણઃ ઘૃષ્ટઃ, મૃષ્ટઃ, નીરજઃ,
 નિર્મલઃ નિષ્પદ્મઃ, નિષ્કદ્મદ્વચ્છાયઃ સપ્રભઃ, સમરીચિકઃ, સોદ્યોતઃ, પ્રાસાદીયઃ દર્શ-
 નીયઃ અભિરૂપઃ” એતેષાં સદ્ગ્રહો બોધ્યઃ । તથા—પ્રતિરૂપઃ એવાં શ્લક્ષ્ણાદિ પ્રતિરૂપા-
 ન્તાનાં વ્યાખ્યાઅસ્મિન્નેવ સૂત્રે ગતા કેવલં સ્ત્રીપુંસકૃતો વિશેષઃ । इत्येवं जगतीवर्णन
 મુક્ત્વા જગત્યા ઉપરિમાગવર્ણનમાહ—‘તીસેણં’ इत्यादि । ‘तीसेणं जगईए उप्पि’ तस्याः—
 અનન્તરોક્તાયા વલયાકારેણ વ્યવસ્થિતાયાઃ खलु जगत्या उपरि—चतुर्योजनविस्तारात्मके
 ઉપરિતને ભાગે ‘વહુમજ્જદેસમાપ’ यो बहुमध्यदेशभागः—चतुर्योजनविस्तारात्मकस्य
 જગત્યુપરિતનભાગસ્ય લવણદિશિ देशोनयोजनद्वये त्यक्ते जम्बूद्वीपदिशि च देशोनयो-
 जनद्वये त्यक्तेऽवशिष्टः पञ्चधनुश्शतात्मके बहुमध्यदेशभागः अस्ति, ‘एत्थ णं महई एगा-
 पउमवरवेइया पणत्ता’ अत्र अस्मिन् स्थले महती—वृहती एका पञ्चवरवेदिका श्रेष्ठकमल-
 प्रधाना वेदिका देवभोगभूमिः प्रहस्ता—कथिता । किं प्रमाणा ? इत्याह—“अद्धजोयणं”
 इत्यादि, ‘अद्धजोयणं उद्धं उच्चत्तेणं पञ्चधनुसयाहं विक्खंमेणं’ अर्द्धयोजनमूर्ध्वमुच्च

धनुसयाहं विक्खंमेणं’ एवं पांचसौ धनुष का इसका विस्तार है “सत्वरयणामप” यह सर्वात्मना
 सर्वरत्नमय है, तथा “अच्छे जाव पडिरूवे” अच्छ से लेकर प्रतिरूप तक के विशेषणों वाला है,
 “तीसेणं जगईए उप्पि” वलयाकार वाली इस जगती के ऊपर के भाग में जो कि चार योजन के
 विस्तार वाला है “बहुमज्जदेषमाप” ठीक मध्य में-५०० योजन विस्तार वाले बीच के भाग में
 लवण समुद्र की दिशा की ओर कुछ कम दो योजन को और जम्बूद्वीप की दिशा की ओर
 कुछ कम दो योजन को - छोड़कर बाकी बचे हुए ५०० योजन के विस्तार वाले बहुमध्य
 देश में—“ एत्थ ण महई एगा पउमवरवेइया पणत्ता” एक विशाल पञ्चवरवेदिका है यह श्रेष्ठ
 —कमलों की प्रधानतावाली है , इसलिये इसका नाम पञ्चवरवेदिका कहा गया है यह देवों का
 भोगों को भोगने का एक स्थान रूप है. यह पञ्चवरवेदिका ‘अद्ध जोयणं उद्धं उच्चत्तेणं पंचधनु-

છે. “પંચ ધનુ સયાહં વિક્ખંમેણ” પાચસૌ ધનુષ જેટલો આને વિસ્તાર છે “સત્વરયણામપ” આ સર્વાત્મના સર્વરત્નમય છે, તથા “અચ્છે જાવ પઢિરૂવે” અચ્છથી માંડીને પ્રતિરૂપ સુધીના આ વિશેષણોથી યુક્ત છે તીસેણં જગઈંપ ઉપ્પિ” વલયાકારવાળી આ જગતીના ઉપરના ભાગમાં કે જે ચાર યોજન જેટલા વિસ્તારવાળો છે “બહુમજ્જદેસમાપ” ઠીક મધ્યમાં ૫૦૦ યોજન વિસ્તારવાળા વચ્ચેના ભાગમાં લવણ સમુદ્રની દિશાની તરફ કંઈકેકંઈ જે યોજન અને જમ્બૂદ્વીપની દિશાની તરફ કંઈકે સ્વદેષ જે યોજન ને બાદ કરતા શેષ ૫૦૦ યોજન જેટલા વિસ્તારવાળા બહુ મધ્યદેશમાં “एत्थ ण महई एगा पउमवरवेइया पणत्ता” એક વિશાળ પંચવરવેદિકા છે આ શ્રેષ્ઠ કમળોની પ્રધાનતાવાળી છે. એથી આનું નામ પંચવરવેદિકા કહેવામાં આવેલ છે આ દેવોને ભોગઅને ઉપભોગ કરવાના એકે સ્થાન રૂપ છે. આ પંચવરવેદિકા “अद्ध जोयणं उद्धं उच्चत्तेणं पंच धनुसयाहं

ત્વેન પઠ્ચુધનુઃ શતાનિ વિષ્કમ્બેળ-વિસ્તારેળ, 'જગઈ સમિયા પરિક્ષેવેળ' જગતી સમિકા-જગત્યા સમા સમાના જગતી સમા સૈવ જગતી સમિકા પરિક્ષેપેળ-પરિધિના, યાવાન્ જગત્યાઃ પરિધિસ્તાવાનેવાસ્યા અપીતિ ભાવઃ । સા કીદશી ? इत्याह-“सम्बरयणामई” इत्यादि । सर्वरत्नमयी सर्वात्मना रत्नमयी ‘अच्छा जाव पडिरुवा’ अच्छा यावत् प्रतिरूपा इत्येतस्य विवरणं प्राग्वत् । ‘तीसे णं पउमवरवेइयाए’ तस्याः अनन्तरोक्तायाः खलु पद्म-वरवेदि कायाः ‘अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते’ अयमेतद्रूपः-वक्ष्यमाणस्वरूपः वर्णावासः वर्णनषट्तिः, प्रज्ञप्तः ‘तं जहा’ तद्यथा-‘वइरामया नेमा’ नेमाः भूमिभागादूर्ध्वं निष्क्रा-मन्तः प्रदेशाः वज्रमयाः-वज्रमणिमयाः ‘एवं जहा जीवाभिगमे’ एवम्-अनेन प्रकारेण यथा जीवाभिगमे जीवाभिगमसूत्रे पद्मवरवेदिकावर्णनविस्तर उक्तः तथाऽत्रापि सर्वो बोध्यः स च कियत्पर्यन्तः ? इत्याह-“जाव अट्ठो” यावदर्थः-वज्रमया नेमा इत्यारभ्य अर्थ इत्यन्तः पाठो बोध्यः, तत आरभ्य कियत्पर्यन्तः पाठो ग्राह्यः ? इत्याह-“जाव धुवा णिय-या सासया” यावद् ध्रुवा नियता शाश्वती” इति, ततोऽपि कियत् पर्यन्तः पाठो ग्राह्यः ? इत्याह-“जाव णिच्चा” यावदन्तित्या, इति, स च सर्वः पाठ एवम्-“वइरामया नेमा

સયાહ વિક્સમેળ” ઝૈંચાઈ મે આવે યોજન કી હૈ ઓર વિસ્તાર મેં અર્થાત્ ચૌહાઈ મેં પાચસૌ ધનુષ કી હૈ “જગઈ સમિયા પરિક્ષેવેળ” હસકા પરિક્ષેપ જગતી કે પરિક્ષેપ બરાબર પદ્મવરવેદિકા “સમ્બરયણામઈ” સમ્પૂર્ણરૂપ સે રત્નમયી હૈ ઓર અચ્છ આદિ પ્રતિરૂપાન્તત્તક કે વિશેષણો વાલી હૈ “તીસેળ પડમવરવેइयाए अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते” હસ પદ્મવરવેદિકા કે વર્ણન કે સમ્બન્ધ મેં એસા કહા ગયા હૈ-“તં જહા-વइरामया नेमा” હસકે નેમ-ભૂમિભાગ સે ઊપર કી ઓર નિકલે હુપ પ્રદેશ વજ્રમણિ કે બને હુપ હૈ “एवं जहा जीवाभिगमे” હસ તરહ સે વર્ણન જૈસા હસકા જીવાભિગમ સૂત્ર મેં ક્રિયા ગયા હૈ વૈસા હો યહાં પર સમજના ચાહિયે, ઓર યહ વહાં કા સબ વર્ણન વેદિકા કે સમ્બન્ધ કા “जाव अट्ठो जाव धुवा णियया सासया” હસ સૂત્ર પાઠ તક કા યહાં પર કહલેના ચાહિયે ક્યો કિ વેદિકા કા વર્ણન વહાં હસી સૂત્ર પાઠ તક

વિક્સમેળ” જી ચાઈમા અર્ધયોજન જેટલી છે અને વિસ્તારમાં એટલે કે ચૌહાઈમાં પાચસૌ ધનુષ જેટલી છે ‘જગઈ સમિયા પરિક્ષેવેળ’ આનો પરિક્ષેપ જગતીના પરિક્ષેપ બરાબર છે આ પદ્મવરવેદિકા “સમ્બરયણામઈ” સ પૂર્ણપણે રત્નમયી છે અને અચ્છ વગેરેથી પ્રતિરૂપા ત્તક સુધીના વિશેષણોથી યુક્ત છે “તીસેળ પડમવરવેइयाए अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते” આ પદ્મવરવેદિકાના વર્ણન માટે આમ કહેવામાં આવ્યું છે “तं जहा वइरामया” આના નેમ ભૂમિ ભાગથી ઉપરની તરફ નીકળેલા પ્રદેશ વજ્રમણિના અનેલા છે “एवं जहा जीवाभि-गमे” આ પ્રમાણે આનું વર્ણન ‘જીવાભિગમ’માં જે રીતે કરવામાં આવ્યું છે, તેમ અહીં પણ સમજવું જોઈએ અને વેદિકા વિષેનું બધું વર્ણન ‘जाव अट्ठो जाव धुवा णियया सासया’ આ સૂત્રપાઠ સુધી અહીં સમજવું જોઈએ કેમ કે વેદિકાનું વર્ણન ત્યાં એ જ સૂત્રપાઠ

रिद्धामया पइंठाणा वेरुलियामया खंमा मुवणमया पल्लगा लोहियवत्तमईओ सईओ वडगमई
 संधि णाणामणिमया कलेवरा णाणामणिमया कलेवमघाडा णाणामणिमया रुवा
 णाणामणिमया रुवसंघाडा अकामया पक्खा पम्बगादाओ य जोडग्गामया वंमा वम-
 कवेल्लुया य रययामईओ पट्टियाओ जायरुवमईओ ओहाडणीओ वडगमईओ उवरि पुंछ-
 णीओ सव्वसेए रययामए छायेणे साणं पउमवरवेइया एगमेगेणं हेमजालेणं एगमेगेण
 कणगवक्खजालेणं एगमेगेणं खिखिणीजालेण एगमेगेणं वंटाजालेण एगमेगेण मुत्ताजा-
 लेणं एगमेगेणं मणिजालेणं एगमेगेणं कणगजालेणं एगमेगेणं रयणजालेणं एगमेगेणं पउ-
 मजालेणं सव्वरयणामएणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता, ते णं जान्ता तवणिज्जलं वूसगा
 सुवण्णपयरमडिया णाणामणिरयणहारद्धहार उवसोभियममुदया ईसिअणमणसंपत्ता पुच्चा-
 वरदाहिणुत्तरागएहि वाएहि मंदाय मंदाय एडज्जमाणा एडज्जमाणा पलंवमाणा पलवमाणा
 पल्लमाणा पल्लमाणा ओरालेण मणुण्णेणं मणहरेणं कणमणिव्वुडकरेणं सहेणं ते पएसे
 सव्वओ समंता आपूरेमाणा सीरिए अईव २ उवसोभेमाणा २ चिद्वंति । तीसेणं पउम-
 वरवेइयाए तत्थ तत्थदेसे तहि तहि वडवे इयसंघाडा गयसंघाडा णरसंघाडा किंनरसंघाडा-
 किंपुरिससंघाडा महोरगसंघाडा गंधव्वसंघाडा वसडसंघाडा सव्वरयणामया जाव पडि-
 रुवा, एवं पंतीओवि विहीओवि मिहुणगाइवि च तीसे णं पउमवरवेइयाए तत्थ तत्थदेसे
 तहि २ वहुईओ पउमलयाओ नागलयाओ असोगलयाओ चंपगलयाओ वणलयाओ वासं-
 तीलयाओ अइमुत्तलयाओ कुंदलयाओ सामलयाओ णिच्चं कुसुमियाओ णिच्चं मउलि-
 याओ णिच्चं लवइयाओ णिच्चं थवइयाओ णिच्चं गुलइयाओ णिच्चं गुच्छियाओ णिच्चं
 जमलियाओ णिच्चं जुयलियाओ णिच्चं विणमियाओ णिच्चं पणमियाओ णिच्चं सुवि-
 भत्तपडिपिडमंजरिर्वडिसगधरीओ णिच्चं कुसुमियमउलियलवइयथवइय गुलइयगुच्छिय-
 जमलिय जुयलिय विणमिय पणमिय सुविभत्तपडिपिडमजरीर्वडिसगधरीओ सव्वरयणाम-
 ईओ अच्छा जाव पडिरुवा, तीसेणं पउमवरवेइयाए तत्थ तत्थ देसे तहि २ वडवे
 अक्खयसोत्थिया पणत्ता सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरुवा, से केणट्ठेणं मंते ! एवं
 वुच्चइ-पउमवरवेइया २१, गोयमा ! पउमवरवेइयाए तत्थ तत्थ देसे तहि तहि वेइयासु
 वेइयाबाहासु वेइयापुडंतरेसु खंमेसु खंमबाहासु खंमसीसेसु खंमपुडंतरेसु सईसु सइसु-
 हेसु सईफलएसु सईपुडंतरेसु पक्खेसु पक्खवाहासु बहूई उप्पलाइ पउमाई कुमुयाई सुभ-
 गाई पौडरीयाई महापौडरीयाई सयवचाइ सहस्सवचाई सव्वरयणामयाई अच्छाई जाव
 पडिरुवाइ महावासिक्कलत्तसमाणाइ पणत्ताइ समणाउसो ? से एणट्ठेणं गोयमा ! एवं
 वुच्चइ-पउमवरवेइया २, अदुत्तर च णं गोयमा । पउमवरवेइयाए सासए णामघेज्जे
 पणत्ते । पउमवरवेइयाणं मंते ! किं सासया असासया ? गोयमा ! सिय सासया सिय-
 असासया, से केणट्ठेणं ० ? गोयमा दव्वट्ठयाए सासया वण्णपज्जवेहि गंधपज्जवेहि रस-
 पज्जवेहि फासपज्जवेहि असासया, से तेणट्ठेणं एवं वुच्चइ सिय सासया सिय असा-
 सया । पउमवरवेइयाण मंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! ण कयाइ णासी ण क-

याइ ण भवइ ण कयाइ ण भविस्सइ भुवि च भवई य भविस्सइ य धुवा णियया सासया
अक्खया अव्वया अबट्ठिया णिच्चा'

छाया-वज्रमया नेमाः रिष्टमयानि प्रतिष्ठानानि, वैडूर्यमयाः स्तम्भाः, सुवर्णमयानि
फलकानि, लोहिताक्षमय्यः, सूचयः, वज्रमयाः सन्धयः, नानामणिमयानि कलेवराणि
नानामणिमयाः कलेवरसङ्घाटाः, नानामणिमयानि रूपाणि, नानामणिमयाः रूपसङ्घाटाः
अङ्कमयाः पक्षाः, पक्षवाहाश्च, ज्योतिरसमयाः वशाः, वंशकवेल्लुकानि च, रजतमय्यः
पट्टिकाः, जातरूपमय्यः अवघाटिन्यः, वज्रमय्यः उपरि पुच्छन्यः, सर्वश्वेत रजतमयं छाद-
नम् । सा खलु पद्मवरवेदिका । एकैकेन हेमजालेन एकैकेन कनकजालेन, एकैकेन किङ्कि-
णीजालेन एकैकेन घंटाजालेन, एकैकेन मुक्ताजालेन एकैकेन मणिजालेन एकैकेन रुक्म-
जालेन, एकैकेन रत्नजालेन एकैकेन पद्मजालेन सर्वरत्नमयेन सर्वतः समन्तात् संपरि-
क्षिता । तानि खलु जालानि तपनीय लम्बूसकानि सुवर्णप्रतरकमण्डितानि नानामणिरत्न
हारार्द्धहारोपशोभित समुदयानि ईषदन्योऽन्यमसंप्राप्तानि, पूर्वापरदक्षिणेत्तराऽऽगतैर्वातैर्मन्दं
मन्दमेजमानानि एजमानानि प्रलम्बमानानि प्रलम्बमानानि शब्दायमानानि शब्दायमानानि
उदारेण मनोज्ञेन मनोहरेण निर्वृत्तिकरेण शब्देन तान् प्रदेशान् सर्वतः समन्तात् आपूरयन्ति
२ श्रिया अतीव २ उपशोभमानानि २ तिष्ठन्ति । तस्याः खलु पद्मवरवेदिकायाः

किया गया है इसके आगे नहीं, वह पाठ सब इस प्रकार से है—'वहरामया नेमा, रिष्टमयापट्ट-
ट्टाणा, वेरुलियामया खंभा, सुवर्णमया फलगा, लोहियक्खमईओ सुईओ, वईरामई संधी, णाणा-
मणिमया कलेवर सघाडा, णाणामणिमया रूवा, णाणामणिमया रूवसघाडा, अक्रामया वक्खा-
पक्खवाहाओ य, जोहरसमया वंसा वंसकवेल्लुगा, य रययामईओ पट्टियाओ, जायरूवमईओ
ओहाडणीओ, वहरामईओ उवरि पुच्छणीओ, सब्बसेए रययामए छायेणे, सा ण पडमवरवेइया
एगमेगेण हेमजालेण, एगमेगेण कणगवक्खजालेण, एगमेगेण खिखिणीजाले णं एगमेगेण घंटाजालेण,
एगमेगेण मुक्ताजालेण, एगमेगेण मणिजालेण, एगमेगेण कणगजालेण, एगमेगेण रयणजालेण, एग-
मेगेण पडमजालेण 'इत्यादि, इस सब पाठ के पदों की व्याख्या बिलकुल स्पष्ट है और यह

सुधी कश्चाभा आवेव छे येना पछी नही ते सब पाठ आ प्रभाणे छे—वईरामया नेमा,
रिष्टमया पट्टट्टाणा, वेरुलियामया खंभा, सुवर्णमया फलगा, लोहियक्खमईओ, सुईओ, वईरा-
मई, संधी णाणा मणिमया कलेवरा, णाणामणिमया कलेवरसघाडा, णाणामणिमया रूवा,
णानामणिमया रूवसघाडा अक्रामया पक्खा, पक्खवाहाओ य, जोहरसमया, वंसा
वसकवेल्लुगाय, रययामईओ पट्टियाओ, जायरूवमईओ ओहाडणीओओ, वहरामईओ उवरि
पुच्छणीओ, सब्बसेए रययामए छायेणे, सा ण पडमवरवेइया, एगमेगेण हेमजालेण
एगमेगेण कणगवक्खजालेण एगमेगेण खिखिणीजालेण एगमेगेण घंटाजालेण
एगमेगेण मुक्ताजालेण एगमेगेण मणिजालेण एगमेगेण कणगजालेण एगमेगेण रय
णजालेण एगमेगेण पडमजालेण' इत्यादि आ सब पाठनी पढोनी व्याख्या साव २५८ ७

तत्र तत्र देशे तत्र तत्र बहवो ह्यसङ्घाटा गजसङ्घाटाः नःसङ्घाटाः किन्नरसङ्घाटाः
 किपुरुषसङ्घाटाः महोरगसङ्घाटाः गन्धर्वसङ्घाटाः वृषभसङ्घाटाः सर्वरत्नमयाः यावत्
 प्रतिरूपाः, एवं पंक्तयोऽपि वीथयोऽपि मिथुनकान्यपि । च तस्याः खलु पद्मवरवेदिकाया
 तत्र तत्र देशे तत्र तत्र बह्व्यः पद्मलताः नागलताः अशोकलताः चम्पकलताः वनलताः
 वासन्तीलताः अतिमुक्तलताः कुन्दलता इयामलता नित्यं कुसुमिताः नित्यं मुकुलिताः
 नित्यं लवङ्गिताः नित्यं स्तवङ्गिताः नित्यं गुल्मिताः नित्यं गुच्छिताः नित्यं यमलिताः
 नित्यं युगलिताः नित्यं विनमिताः नित्यं प्रणमिताः नित्यं सुविभक्तप्रतिपिण्डमञ्जर्य-
 वतंसकधराः नित्यं कुसुमित मुकुलित लवङ्गितस्तवङ्गित गुल्मित यमलितयुगलित विनमित
 प्रणमित सुविभक्तप्रतिपिण्डमञ्जर्यवतंसकधराः सर्वरत्नमय्यः अच्छाः यावत् प्रतिरूपाः ।
 तस्याः खलु पद्मवरवेदिकायाः तत्र तत्र देशे तत्र २ अक्षय स्वस्तिकानि प्रज्ञप्तानि सर्वर-
 त्नमयानि अच्छानि यावत् प्रतिरूपाणि । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते—पद्मवरवे-
 दिकः ? २ गौतम ! पद्मवरवेदिकायास्तत्र तत्र देशे तत्र २ वेदिकामु वेदिकावाहानु वेदिका-
 पुटान्तरेषु स्तम्भेषु स्तम्भवाहासु स्तम्भशीर्षेषु स्तम्भपुटान्तरेषु सूचीषु सूचीमुखेषु सूची-
 फलकेषु सूचीपुटान्तरेषु पक्षेषु पक्षवाहासु बहूनि उत्पलानि पद्मानि कुमुदानि सुभगानि
 सौगन्धिकानि पुण्डरीकाणि महापुण्डरीकाणि शतपत्राणि सहस्रपत्राणि सर्वरत्नमयानि
 अच्छानि यावत् प्रतिरूपाणि महावार्पिकृच्छवसमानानि प्रज्ञप्तानि श्रमणाऽऽयुष्मन् !
 सा एतेनार्थेन गौतम ! एवमुच्यते—पद्मवरवेदिका २ ‘अदुत्तरं वा णं’ अथ च खलु
 गौतम ! पद्मवरवेदिका इति शाश्वतं नामधेयं प्रज्ञप्तम् । पद्मवरवेदिका खलु भदन्त कि
 शाश्वती अशाश्वती ? गौतम स्यात् शाश्वती स्यादशाश्वती अथ केनार्थेन स्यात् शाश्वती
 स्यादशाश्वती ? गौतम ! द्रव्यार्थतया शाश्वतीवर्णपर्यायैः गन्धपर्यायैः रसपर्यायैः स्पर्श-
 पर्यायैः अशाश्वती सा तेनार्थेन एवमुच्यते स्यात् शाश्वती स्यादशाश्वती । पद्मवरवेदिका
 खलु भदन्त ! कालतः कियच्चिरं भवति ? गौतम ? न कदाचित् नाऽऽसीत् न कदा-
 चिन्नं भवति न कदाचिन्नं भविष्यति, अभूच्च भवति च भविष्यति च ध्रुवा नियता
 शाश्वती अक्षया अव्यया अवस्थिता नित्या ” इति ।

अथ व्याख्याः— तस्याः पद्मवरवेदिकायाः वज्रमयाः—वज्ररत्नमयाः नेमाः—
 भूमिभागादूर्ध्वं निःसृताः प्रदेशाः रिष्टमयानि—रिष्टरत्नमयानि प्रतिष्ठानानि मूलपादाः
 वैडूर्यमयाः—वैडूर्यरत्नमयाः स्तम्भाः, सुवर्णमयानि—फलकानि—पद्मवरवेदिकावयवभू-
 तानि, लोहिताक्षमय्यः—लोहिताक्षरत्नमय्यः सूचयः—फलकद्वयसंयोगकारि पादूत्था-
 नीयाः, वज्रमय्याः—वज्ररत्नमयाः, सन्धयः—फलकानां मेलनानि वज्ररत्नलेपापूरिताः
 फलकसन्धय इति भावः । नानामणिमयानि—विविधमणिमयानि कलेवराणि—मनुष्या-
 काररूपाणि, तथा—नानामणिमयाः कलेवरसङ्घाटाः—मनुष्ययुग्मकरूपाणि, तथा—नानाम-
 णिमयानि रूपाणि गजाश्वादीनामाकाराः नानामणिमयाः रूपसङ्घाटाः—गजाश्वादिरूपयु-

गमानि, अङ्गमयाः-अङ्गरत्नमयाः, पक्षाः-वेदिकावयवाः, पक्षवाहाः वेदिकावयवकवि-
शेषाश्च, ज्योतिरसमयाः-ज्योतिरस-नामकरत्नमयाः-वंशाः-पृष्ठवंशाः महान्तो म-य-
वलका इत्यर्थः, वंशकवेल्लुकानि-तत्र वंशाश्च-महतां पृष्ठवंशानामुभयपार्श्वयोस्तिर्यक्
स्थाप्यमानाः वंशाः कवेल्लुकानि-तदुपरि आच्छादनविशेषाश्च एतान्यापि ज्योती-
रसमयानि रजतमय्यः- रूप्यमय्यः पट्टिकाः-वंशानामुपरि कम्बा स्थानीयाः प्रतगाः,
जातरूपमय्यः-सुवर्णविशेषमय्यः. अवघाटिन्यः-कम्बोपरिस्थाप्यमानाच्छादनभूतमहा-
प्रमाणकिलिञ्चस्थानीयाः, वज्रमय्यः- वज्ररत्नमय्यः, उपरि-अवघाटिनीनामुपरि पुठ्छन्यः-
निविडतराऽऽच्छादनभूतचिकणतरतृणविशेषस्थानीयाः, सर्वश्वेतं सर्वात्मना श्वेतं-श्वेत-
वर्णं रजतमयं रूप्यमयं छादनम्-आच्छादनम् । सा पूर्वोक्ता खलु पमवरवेदिका एकैकेन हेम
जालेन-स्वर्णमयमालासमूहेन 'संपरिक्षिप्ता' इति परेण सम्बन्धः, एवमग्रेऽपि, एकैकेन
कनकजालेन- पीतवर्णस्वर्णविशेषमयमालासमूहेन, एकैकेन किङ्किणीजालेन-सुद्वयण्टिका-
समूहेन, एकैकेन घण्टाजालेन-घण्टासमूहेन एकैकेन मुक्ताजालेन-मुक्ताफलमयमालासमू-
हेन, एकैकेन कनकजालेन मणिजालेन-मणिमयमालासमूहेन, एकैकेन कनकजालेन
पीतसुवर्णमयमालासमूहेन एकैकेन रत्नजालेन-हीरकादिरत्नमयमालासमूहेन, एकैकेन
पद्मजालेन सर्वरत्नमयेन कमलमालासमूहेन सर्वतः सर्वदिक्षु समन्तात् सर्वविदिक्षु संप-
रिक्षिप्ता-सम्यक् परिवेष्टिता तानि-हेमजालादीनि जालानि-दामानि मालाः, तपनीय-
लम्बूसकानि तपनीय- रक्तवर्णं स्वर्णं तन्मयोलम्बूसकाः- मालाग्रभागस्थमण्डनविशेषो
येषां तानि तथा, तथा-सुवर्णप्रतरकमण्डितानि-सुवर्णमयपत्रभूषितानि तथा नाना मणिरत्न
हाराऽर्द्धहारोपशोभितसमुदयानि, तत्र-नाना- अनेक प्रकारकाणि यानि मणिरत्नानि मणया-
मरकतादयः रत्नानि-कर्केतनादीनिच तेषां -तत्सम्बन्धिनः- तद्रचिता ये विविधा हारा-
र्द्धहाराः तत्र हाराः - अष्टादशसरिकाः, अर्द्धहारा- नवसरिकाश्च हारविशेषाः, तैरुपशोभितः
अलङ्कृतः समुदयः समूहो येषां तानि तथा, तथा- ईषदन्योऽन्यमसम्प्राप्तानि-ईषत्
किञ्चित् अन्योऽन्यं -परस्परम्, असम्प्राप्तानि- असंलग्नानि, तथा-पूर्वापरदक्षिणोत्तरा-
ऽऽगतैः पूर्वपश्चिमदक्षिणोत्तरदिग्भ्यः समागतैः वातैः वायुभिः मन्दं मन्दम् अतिमन्दम्
किञ्चिदित्यर्थः एजमानानि एजमानानि पुनः पुनः कम्पमानानि, प्रलम्बमानानि प्रल-
म्बमानानि इतस्ततः किञ्चिच्चलनेन पुनः पुनः लम्बितानि भवन्ति तथा 'पक्षं
झमाणाई' इति शब्दायमानानि २ परस्परं संघर्षवशात् पुनः पुनः शब्दं कुर्वाणानि, तथा
-उदारेण- विशालेन व्यापकेनेत्यर्थः, अस्य 'शब्देने' ति परेण सम्बन्धः एवमग्रेऽपि,
मनोज्ञेन - मनोऽनुकूलेन, मनोऽनुकूलत्वं लेशतोऽपि स्यादत आह-मनोहरेण-श्रोतृज-
नमनोहरणकारकेण अतएव कर्णमनोनिवृत्तिकरेण प्रतिश्रोतृकर्णमनःसुखोत्पादकेन शब्देन
तान् पद्मवरवेदिकाऽऽसन्नान् सर्वतः सर्वदिक्षु आपूरयमाणानि २ वारंवारपूरितान्
कुर्वाणानि, श्रिया- शोभया 'अतीव २' अत्यधिकं यथा स्थात्तथा उपशोभमानानि २-

तत्र तत्र देशे तत्र तत्र बह्व्यो ह्यसङ्घाटा गजसङ्घाटाः नःसङ्घाटाः किन्नरसङ्घाटाः
 किपुरुषसङ्घाटाः महोरगसङ्घाटाः गन्धर्वसङ्घाटाः वृषभसङ्घाटाः सर्वरत्नमयाः यावत्
 प्रतिरूपाः, एवं पंक्तयोऽपि वीथयोऽपि मिथुनकान्यपि । च तस्याः खलु पद्मवरवेदिकाया
 तत्र तत्र देशे तत्र तत्र बह्व्यः पद्मलताः नागलताः अशोरुलताः चम्पकलताः वनलताः
 वासन्तीलताः अतिमुक्तलताः कुन्दलता इयामलता नित्यं कुमुमिताः नित्यं मुकुलिताः
 नित्यं लवकिताः नित्यं स्तर्वाकिताः नित्यं गुल्मिताः नित्यं गुच्छिताः नित्यं यमल्लिताः
 नित्यं युगलिताः नित्यं विनमिताः नित्यं प्रणमिताः नित्यं सुविभक्तप्रतिपिण्डमञ्जर्य-
 वतंसकधराः नित्यं कुमुमित मुकुलित लवकितस्तवकित गुल्मित यमलितयुगलित विनमित
 प्रणमित सुविभक्तप्रतिपिण्डमञ्जर्यवतंसकधराः सर्वरत्नमय्यः अच्छाः यावत् प्रतिरूपाः ।
 तस्याः खलु पद्मवरवेदिकायाः तत्र तत्र देशे तत्र २ अक्षय स्वस्तिकानि प्रज्ञप्तानि सर्वर-
 त्नमयानि अच्छानि यावत् प्रतिरूपाणि । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते—पद्मवरवे-
 दिकः ? २ गौतम ! पद्मवरवेदिकायास्तत्र तत्र देशे तत्र २ वेदिकायु वेदिकावाहामु वेदिका-
 पुटान्तरेषु स्तम्भेषु स्तम्भवाहासु स्तम्भशीर्षेषु स्तम्भपुटान्तरेषु सूचीषु सूचीमुखेषु सूची-
 फलकेषु सूचीपुटान्तरेषु पक्षेषु पक्षवाहासु बहूनि उत्पलानि पद्मानि कुमुदानि सुभगानि
 सौगन्धिकानि पुण्डरीकाणि महापुण्डरीकाणि शतपत्राणि सहस्रपत्राणि सर्वरत्नमयानि
 अच्छानि यावत् प्रतिरूपाणि प्रहावार्पिरुच्छयसमानानि प्रज्ञप्तानि श्रमणाऽऽयुष्मन् !
 सा एतेनार्थेन गौतम ! एवमुच्यते—पद्मवरवेदिका २ ‘अदुत्तरं वा णं’ अथ च खलु
 गौतम ! पद्मवरवेदिका इति शाश्वतं नामधेयं प्रज्ञप्तम् । पद्मवरवेदिका खलु भदन्त कि
 शाश्वती अशाश्वती ? गौतम स्यात् शाश्वती स्यादशाश्वती अथ केनार्थेन स्यात् शाश्वती
 स्यादशाश्वती ? गौतम ! द्रव्यार्थतया शाश्वतीवर्णपर्यायैः गन्धपर्यायैः रसपर्यायैः स्पर्श-
 पर्यायैः अशाश्वती सा तेनार्थेन एवमुच्यते स्यात् शाश्वती स्यादशाश्वती । पद्मवरवेदिका
 खलु भदन्त ! कालतः कियच्चिर भवति ? गौतम ? न कदाचित् नाऽऽसीत् न कदा-
 चिन्न भवति न कदाचिन्न भविष्यति, अभूच्च भवति च भविष्यति च ध्रुवा नियता
 शाश्वती अक्षया अव्यया अवस्थिता नित्या ” इति ।

अथ व्याख्याः— तस्याः पद्मवरवेदिकायाः वज्रमयाः—वज्ररत्नमयाः नेमाः—
 भूमिभागादूर्ध्वं निःसृताः प्रदेशाः रिष्टमयानि—रिष्टरत्नमयानि प्रतिष्ठानानि मूलपादाः
 वैदूर्यमयाः—वैदूर्यरत्नमयाः स्तम्भाः, सुवर्णमयानि—फलकानि—पद्मवरवेदिकावयवभू-
 तानि, लोहिताक्षमय्यः—लोहिताक्षरत्नमय्यः सूचयः—फलकद्वयसयोगकारि पादूत्था-
 नीयाः, वज्रमय्याः—वज्ररत्नमयाः, सन्धयः—फलकानां मेलनानि वज्ररत्नलेपापूरिताः
 फलकसन्धय इति भावः । नानामणिमयानि—विविधमणिमयानि कलेवराणि—मनुष्या-
 काररूपाणि, तथा—नानामणिमयाः कलेवरसङ्घाटाः—मनुष्ययुग्मकरूपाणि, तथा—नानाम-
 णिमयानि रूपाणि गजाश्वादीनामाकाराः नानामणिमयाः रूपसङ्घाटाः—गजाश्वादिरूपयु-

गमानि, अङ्गमयाः-अङ्गरत्नमयाः, पक्षाः-वेदिकावयवाः, पञ्चवाहाः वेदिकावयवकवि-
शेषाश्च, ज्योतिरसमयाः-ज्योतिरस-नामकरत्नमयाः-वंशाः-पृष्ठवंशाः महान्तो म-य-
वलका इत्यर्थः, वंशकवेल्लुकानि-तत्र वंशाश्च-महतां पृष्ठवंशानामुभयपार्श्वयोस्तिर्यक्
स्थाप्यमानाः वंशाः कवेल्लुकानि-तदुपरि आच्छादनविशेषाश्च एतान्यापि ज्योती-
रसमयानि रजतमय्यः-रूप्यमय्यः पट्टिकाः-वंशानामुपरि कम्बा स्थानीयाः प्रतराः,
जातरूपमय्यः-सुवर्णविशेषमय्यः अवधाटिन्यः-कम्बोपरिस्थाप्यमानाच्छादनभूतमहा-
प्रमाणकिलिञ्चस्थानीयाः, वज्रमय्यः-वज्ररत्नमय्यः, उपरि-अवधाटिनीनामुपरि पुठञ्जन्यः-
निविडतराऽऽच्छादनभूतचिकणतरतृणविशेषस्थानीयाः, सर्वश्वेतं सर्वात्मना श्वेतं-श्वेत-
वर्णं रजतमयं रूप्यमयं छादनम्-आच्छादनम् । सा पूर्वोक्ता खलु पमवरवेदिका एकैकेन हेम
जालेन-स्वर्णमयमालासमूहेन 'संपरिक्षिप्ता' इति परेण सम्बन्धः, एवमग्रेऽपि, एकैकेन
कनकजालेन-पीतवर्णस्वर्णविशेषमयमालासमूहेन, एकैकेन किङ्किणीजालेन-क्षुद्रयण्टिका-
समूहेन, एकैकेन घण्टाजालेन-घण्टासमूहेन एकैकेन मुक्ताजालेन-मुक्ताफलमयमालासमू-
हेन, एकैकेन कनकजालेन मणिजालेन-मणिमयमालासमूहेन, एकैकेन कनकजालेन
पीतसुवर्णमयमालासमूहेन एकैकेन रत्नजालेन-हीरकादिरत्नमयमालासमूहेन, एकैकेन
पद्मजालेन सर्वरत्नमयेन कमलमालासमूहेन सर्वतः सर्वदिक्षु समन्तात् सर्वविदिक्षु संप-
रिक्षिप्ता-सम्यक् परिवेष्टिता तानि-हेमजालादीनि जालानि-दामानि मालाः, तपनीय-
लम्बूसकानि तपनीयं-रक्तवर्णं स्वर्णं तन्मयोलम्बूसकाः-मालाग्रभागस्थमण्डनविशेषो
येषां तानि तथा, तथा-सुवर्णप्रतरकमण्डितानि-सुवर्णमयपत्रभूषितानि तथा नाना मणिरत्न
द्वारार्द्धहारोपशोभितसमुदयानि, तत्र-नाना-अनेक प्रकारकाणि यानि मणिरत्नानि मणया-
मरकतादयः रत्नानि-कर्केतनादीनि च तेषां-तत्सम्बन्धिनः-तद्रचिता ये विविधा हारा-
र्द्धहाराः तत्र हाराः-अष्टादशसरिकाः, अर्द्धहारा-नवसरिकाश्च हारविशेषाः, तैरुपशोभितः
अलङ्कृतः समुदयः समूहो येषां तानि तथा, तथा-ईषदन्योऽन्यमसम्प्राप्तानि-ईषत्
किञ्चित् अन्योऽन्यं-परस्परम्, असम्प्राप्तानि-असंलग्नानि, तथा-पूर्वापरदक्षिणोत्तरा-
ऽऽगतैः पूर्वपश्चिमदक्षिणोत्तरदिग्भ्यः समागतैः वातैः वायुभिः मन्दं मन्दम् अतिमन्दम्
किञ्चिदित्यर्थः एजमानानि एजमानानि पुनः पुनः कम्पमानानि, प्रलम्बमानानि प्रल-
म्बमानानि इतस्ततः किञ्चिच्चलनेन पुनः पुनः लम्बितानि भवन्ति तथा 'पक्षं
ज्ञमाणाहं' इति शब्दायमानानि २ परस्परं संघर्षवशात् पुनः पुनः शब्दं कुर्वाणानि, तथा
-उदारेण-विशालेन व्यापकेनेत्यर्थः, अस्य 'शब्देने' ति परेण सम्बन्धः ॥ २ ॥
मनोज्ञेन-मनोऽनुकूलेन, मनोऽनुकूलत्वं लेशतोऽपि रयादत्त
नमनोहरणकारकेण अतएव कर्णमनोनिर्वृत्तिकरेण प्रतिश्रोतृकर्णम-
नान् पद्मवरवेदिकाऽऽसन्नान् सर्वतः सर्वदिक्षु आपूरयमाणाः-
कुर्वाणानि, श्रिया-शोभया 'अतीव २' अत्यधिक प्रभा ॥ १ ॥ ॥ ॥

सर्वदा सर्वथा शोभां धारयमाणानि तिष्ठन्ति । तस्याः अनन्तरोक्तायाः खलु पद्मवरवे-
दिकायाः तत्र तत्र - तस्मिन्स्मिन् देशे तत्र तत्र तस्य देगस्य तस्मिन्स्मिन् अवान्त-
रदेशे बहवः-बहुसंख्या अनेके ह्यसंघाटकाः-अश्वसघाताः-अश्वसमूहाः एवं गजनर-
किन्नर-किंपुरुष-महोरग-गन्धर्व-वृषभानां-संघाटा बोध्याः, ते च हयादिसंघाटाः
सर्वरत्नमयाः-सर्वात्मना रत्नमयाः, यावत्-यावत्पदेन-अञ्छाः-श्लक्षणाः, घृष्टाः,
मृष्टाः, नीरजसः, निर्मलाः, निष्पङ्काः, निष्कङ्कटच्छायाः, सप्रभाः, समरीचिकाः सोद-
द्योताः, प्रासादीयाः, दर्शनीयाः, अभिरूपाः, इत्येषा सङ्ग्रहो बोध्यः, तथा प्रतिरूपाः
एषां पदानां व्याख्याऽस्मिन्नेव सूत्रे पूर्वं जगतो वर्णनप्रसङ्गे कृता, केवलं स्त्रीपुंसत्व
बहुवचनकृतो विशेषः, एवम्-इत्यादि सगटवत् पङ्क्तयोऽपि-हयादीनां श्रेणयोऽपि
बोध्याः, तथा हयादीनां वीथयः उमयोः पार्श्वयोरेकैश्रेणिभावेन यत् श्रेणियुगलं
तत् वीथि पदवाच्यम् तद्वहुत्वे वीथयः अनेकश्रेणी हयानि पङ्क्तिस्तु एकस्यां दिशि
अथवा श्रेणिः सा व्यवह्रियते अतो न पङ्क्ति-वीथ्योरेकार्थकताशङ्का । एतेषामेव ह्यगज-
नरकिन्नरकिंपुरुष महोरगगन्धर्ववृषभानामष्टानां स्त्री पुंसयुग्म प्रतिपादनार्थमाह मिथुन-
कान्यापि स्त्रीपुंसयुग्मान्यपि हयादिसङ्घाटवदेव वक्तव्यानि ८ ।

तस्याः पूर्वोक्तायाः खलु पद्मवरवेदिकायाः तत्र तत्र तस्मिन्स्मिन् देशे तत्र तत्र
तद्देशैकदेशे बह्व्यः पद्मलताः पद्मिन्यः नागलताः नागाः वृक्षविशेषाः तद्रूपाः लताः
तिर्यक्शाखा विस्तार रहितत्वाल्लता इवेति नागलताः एवम् अशोकलताः अशोकवृक्षरूप-
लताः चम्पकलताः चम्पकपुष्पवृक्षविशेषरूपलताः वनलताः वननार्थकवृक्षविशेषरूपलताः,
वासन्तीलताः वासन्तीपुष्पविशेषलताः अतिमुक्तकलताः अतिमुक्तकः तिनिशनामको वृक्ष-
विशेषः स्तद्रूपलताः कुन्दलताः-कुन्दनामक पुष्पविशेषलताः श्यामलताः श्यामा वनस्पति-
विशेषः शारिवेति प्रसिद्धा तद्रूपा लताः ताःअनन्तरोक्ताः पद्मलतादयो लताः कीदृशः ?
इत्याह-नित्यं-सदा कुमुमिताः पुष्पिताः पुष्पसम्पन्नाः नित्यं मुकुलिता कुम्भलिता ईष-
द्विकासोन्मुखकालिका सम्पन्नाः नित्यं लवकिताः सञ्जातपल्लवलताः नित्यं स्तवकिता
विकासोन्मुखकालिका सम्पन्ना नित्यं गुल्मिताः स्तम्बिताः काण्डरहितावयव सम्पन्नाः ।
नित्यं गुच्छिताः पत्रपुष्पगुच्छसमूहसम्पन्नाः नित्यं यमलिताः सजातीयलतायुग्मपरि-
वेष्टिताः नित्यं युगलिताः सजातीय विजातीयलताद्वयपरिवेष्टिताः नित्यं विनमिताः
फलपुष्पादिसारेण विशेषेण नम्रभावं प्रापिताः, नित्यं प्रणमिताः फल पुष्पादिभारेण-
नम्रभावं प्रापयितुमारब्धाः नम्रभावोन्मुखा इति भावः, नित्यं सुविभक्तप्रतिपिण्डमञ्ज-
र्यवतंसकधराः सुविभक्तः सम्यग् विभागयुक्तो यः प्रतिमञ्जर्यवतंसकः प्रतिमञ्जरी प्रति-
गता प्रतिपल्लवस्थिता या मञ्जरी-पुष्पमञ्जरी सैवावत संकः शिरोभूषणविशेषः तस्य
धराः धारिकाः, एवं सति ताः पद्मलतादयो लताः नित्यं कुमुमितमुकुलित-
लवकित स्तवकितगुल्मितयमलितयुगलितविनमितप्रणमितसुविभक्तप्रतिमञ्जर्यवतंसकधराः

एतद्व्याख्याऽनुपद गता । पुनस्ताः पद्मलतादयः सर्वाः लताःसर्वरत्नमय्यः सर्वात्मना-
कर्केतनादिरत्नमय्यः पुन अच्छा यावत् प्रतिरूपाः—अच्छादि प्रतिरूपान्तानां संग्रहोऽर्थ-
श्चास्मिन्नेव, सूत्रे पूर्वं कृतः । तस्याः पूर्वोक्तायाः खलु पद्मवरवेदिकायाः तत्र तत्र, देशे
तस्मिन् तस्मिन् देशे तत्र तत्र तस्यैव देशस्यैकदेशे अक्षय स्वस्तिकानि प्रज्ञप्तानि कथितानि
तानि अक्षय स्वस्तिकानि कीदृशानि ? इत्याह—सर्वरत्नमयानि सर्वात्मना रत्नमयानि,
अच्छानि यावत् प्रतिरूपाणि अच्छादि प्रतिरूपपर्यन्तपदानां संग्रहो विवरणं च प्राग्वत् ।
पूर्वतोऽत्र नपुंसककृतो विशेषः । सम्प्रति पद्मवरवेदिकाशब्दार्थं गौतमः पृच्छति—

अथ केन अर्थेन कारणेन भदन्त ! एवम् इत्थम् उच्यते कथ्यते यत् पद्मवरवे-
दिका २ इति ? किमर्थमादायास्याः पद्मवरवेदिकेति शब्दप्रवृत्तिर्जातेत्यर्थः । इति पृष्ठो
भगवान् गौतमं प्रत्याह—हे गौतम ! पद्मवरवेदिकायाः तत्र तत्र—तस्मिन् तस्मिन् देशे
तत्र तत्र तस्यैव देशस्यैकदेशे वेदिकासु—उपवेशनार्थमत्तगजाकाररूपासु वेदिका वाहासु
वेदिकायाः वाहासुः पार्श्वेषु वेदिकापुटान्तरेषु वेदिकयोर्द्वयोरेव पुटं-परस्परमेलन
तदन्तरेषु तन्मध्येषु स्तम्भेषु प्रसिद्धेषु स्तम्भवाहासु स्तम्भपार्श्वेषु, स्तम्भशीर्षेषु
स्तम्भाग्रभागेषु, स्तम्भपुटान्तरेषु द्वयोः स्तम्भयोः सन्धिमध्येषु सूचीषु फलकद्वय-
संधानार्थप्रतनुकीलकरूपासु सूचीषु सूचीमुखेषु सूचीनां फलकान्तः प्रवेशासन्नप्र-
देशेषु सूचीफलकेषु सूचीसंयोजित फलकप्रदेशेषु सूचीपुटान्तरेषु सूचीद्वयमेलनमध्येषु
पक्षेषु वेदिकाया अवयवविशेषेषु तथा पवसाहासु वेदिका पार्श्वेषु, बहूनि—प्रचुराणि
उत्पलानि—चन्द्रविकाशीनि कमलानि पद्मानि—सूर्यविकाशीनि कमलानि कुमुदानी
कैरावाणि, तान्यपि चन्द्रविकाशीनि श्वेतरक्तादिवर्णानि भवन्ति, तानि सुमगानि सुन्द-
राणि, सौमन्धिकानि—कहलाराणि, श्वेतवर्णानि सुगन्धीनि कमलानि, पुण्डरीकाणि—श्वेत
कमलानि, तान्येव महान्ति महापुण्डरीकाणि, शतपत्राणि—पत्रशतविशिष्टानि कमलानि
सहस्रपत्राणि पत्रसहस्रयुक्तानि कमलानि एतानि सर्वाणि सर्वरत्नमयानि, सर्वात्मना कर्के-
तनादि रत्नमयानि, अच्छानि यावत् प्रतिरूपाणि अच्छादिप्रतिरूपपर्यन्तपदानां संग्रहो
विवरणं च प्राग्वत् । पुनस्तानि कथम्भूतानि ? इत्याह—महावार्षिकच्छत्रसमानानि महा-
न्ति विशालानि यानि वार्षिकानि वर्षाकालिकानि जलधारानिवारणार्थानि च्छत्राणि तै-
समानानि—समाकाराणि प्रज्ञप्तानि—कथितानी हे श्रमण आयुष्मन् ! गौतम ! सा पद्मवर
वेदिका एतेन अनन्तरोक्तेन अर्थेन समुचितेनार्थेन एवम् इत्थम्—उच्यते कथ्यते यत् पद्म
वरवेदिका पद्मवरवेदिकेति । अथ च खलु अत एवास्याः पद्मवर वेदिका पद्मवर वेदि-
केति शाश्वतं नामधेयं प्रज्ञप्तमिति । पुनर्गौतमः पृच्छति—हे भदन्त पद्मवरवेदिका
खलु किं शाश्वती उत अशाश्वती ! इति पृष्ठो भगवानाह—हे गौतम स्याच्छाश्वती स्याद-
शाश्वती । अत्र स्याच्छब्दः कथञ्चिदर्थको निपातः तेन कथञ्चिच्छाश्वती कथञ्चिदशा-
श्वती विद्यते । पुनर्विशेषजिज्ञासया गौतमः पृच्छति—“से केणद्वेण” इत्यादि । अथ केना-

થેન કેન પ્રકારેણ શાશ્વતી કેન પ્રકારેણ ચ અશાશ્વતીતિ પ્રશ્નઃ । મગવાનાહ હે ગૌતમ ! દ્રવ્યાર્થતયા—દ્રવ્યાર્થિકનયેન શાશ્વતી નિત્યા પર્યાયાર્થિકનયેન પ્રાહ—વર્ણપર્યાયૈઃ કૃષ્ણાદિભિઃ તથા ગન્ધપર્યાયૈઃ સુરમિ પ્રભૃતિઃ, રસપર્યાયૈઃ તિક્તાદિભિઃ સ્પર્શપર્યાયૈઃ કઠિનત્વાદિભિઃ અશાશ્વતો અનિત્યા તેપાં વર્ણાદીનાં પ્રતિક્ષણં ક્રિયત્ કાલાન્તર વાડન્યથાડન્યથા સંભવાત્ । एवं च नित्यत्वानित्यत्वयोर्विरुद्धयोरपि धर्मयोर्द्रव्यार्थिकपर्यायार्थिकन्याभ्यामेकस्मिन्नधिकरणेऽवस्थानं सम्भवतीति पर्यवसितम् ।

एवमुपसंहरति —

सा तेनार्थेन एवम् इत्यमुच्यते स्याच्छाश्वती स्यादशाश्वतीति । एतद्व्याख्या निगदसिद्धा ।

इह द्रव्यास्तિકनयवादी स्वमतं द्रढयितुमाह

“नात्यन्तासत् उत्पादो नापि सतो विद्यते विनाशो वा” अपि च—

“नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः” इति,

ततश्च सर्वं वस्तु नित्यमेवेति । इत्थંતન્મते સન્દેહઃ—

સા પદમવરવેદિકા કિં ઘટાદિવત્ દ્રવ્યાર્થત્વેન શાશ્વતી । આહોસ્વિત્—સર્વદા શાશ્વતીતિ । ઇમે સન્દેહં ગૌતમો નિરાકર્તુ મગવન્તં પુનઃ પૃચ્છતિ કાલતઃ ક્રિયચ્ચિરમિતિ, પદમવરવેદિકા ખલ્લુ હે મદન્ત ! કાલત કાલ માશ્રિત્ય ક્રિયચ્ચિરં ક્રિયન્તં કાલ યાવદવતિષ્ઠતે : અન્ન મગવાનાહ હે ગૌતમ ન કદાચિદ્ નાસીત્ નવ્દ્વયસ્ય પ્રકૃતાર્થં દ્વઢીકારકત્વાત્ સદૈવાસીદિતી તથા ન કદાચિર ન ભવતિ અપિ તુ સદૈવ ભવતિ તથા ન કદાચિદ્ ન ભવિષ્યતિ—અપિ તુ સદૈવ ભવિષ્યતિ । एवं सर्वमुपसंहरति-अमुच्च भवति च भविष्यति कालत्रयेऽपि अवस्थिति शीलत्वात् । अत एव ध्रुवा—मेरु पर्वतादिवत्स्थितत्वात् नियता—निश्चितत्वात् जीवद्रव्यवत् अत एव शाश्वतो समयावलिकादिषु कालवचनवच्छाश्वतत्वात् अतएव अक्षया पुद्गलपुञ्जविघटनेऽपि नवीनपुद्गलपुञ्जसंक्रमणेन स्वरूपाधिनाशात्, गङ्गा सिन्धु प्रवाहेऽपि पद्मद्रवत्, अतएव अव्यया कदाचिदपि स्वरूपचलनस्यासम्भवत् मातृबोचापर्वताद् बहिः समुद्रवत् अत एव अवस्थिता स्वप्रमाणे सम्यक् स्थिता जम्बूद्वीपादिवत् एवं च स्वप्रमाणावस्थायितया नित्या धर्मास्तिकायादिवत् इति ॥ सू० ४॥

જીવામિગમ સૂત્ર મે પદમવરવેદિકા કે વર્ણન મેં જ્યો કી ત્યો લિખી જા ચુકો હૈ અતઃ વહા સે હસે દેસલેના ચાહિયે યહ વિસ્તૃત વ્યાખ્યા વજ્રમય પદ સે લગાકર અન્ત કે નિત્યપદ તક કી ગઈ હૈ અતઃ યહા પુનઃ ડસે વિસ્તાર હો જાને કે મય સે નહીં લિખા હૈ । હસો અમિપ્રાય કો હૃદય મેં

છે અને જીવામિગમ સૂત્રમાં પદમવરવેદિકાના વર્ણનમાં આજેહૂં બ નિર્ણય કરવામાં આવી છે એથી લિખાસુઓએ ત્યાથી વાંચી લેવી આ સવિસ્તૃત વ્યાખ્યા ત્યાં વજ્રમય પદમાં માડીને અન્તના નિત્યપદ સુધી કરવામાં આવી છે એથી વિસ્તાર બચથી અહીં થીજી વખત બચે .

અથ જગત્યા ઉપરિ પદ્મવરવેદિકાયા વહિર્યદસ્તિ તદાહ—

મૂલમ્—ત્રીસેણં જગર્હૈ ઉપિં બાહિ પડમવરવેદ્યાૈ એત્થ ણં મહં
એગે વણસંઢે પણ્ણત્તે દેસૂણાં દો જોયણાં વિક્કલમેણ જગર્હૈસમ્
પરિક્કલ્લેવેણં વણસંઢવણ્ણઓ ણેયવ્વો ॥સૂ.૦૫॥

છાયા—તસ્યા ચ્છલુ જગત્યા ઉપરિ વહિઃ પદ્મવરવેદિકાયાઃ અત્ર ચ્છલુ મહાનેકો
વનવણ્ણઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, દેશોને દ્વે યોજને ત્રિષ્કલ્મેણ જગતી સમકઃ પરિક્ષેપેણ વનવણ્ણવર્ણકો
નેતવ્યઃ ॥સૂ.૦૫॥

ટીકા—‘ત્રીસેણં જગર્હૈ’ इत्यादि ‘तृतीये णं जगर्है’ तस्याः पूर्वोक्तायाः खलु-
जगत्याः ‘उपिं बाहिं पडमवरवेद्याए’ उपरि ऊर्ध्वभागे पद्मवरवेदिकायाः प्राग्दर्शि-
ताया देव भोगभूमि विशेषरूपायाः वहिः परतः ‘एतथ णं महं एगे वणसंढे पण्णत्ते’ अत्र
अस्मिन् प्रदेशे खलु एको महान् बृहत् वनवण्डः—अनेकविधवृक्षसमूहः प्रज्ञप्तः ।
स च वनवण्डः कीदृशः ? — इत्याह—‘देसूणां दो जोयणां विल्लमेणं’ देशोने देशतो
न्युने द्वे योजने त्रिष्कलमेण—विस्तारेण प्रज्ञप्तः देशश्चात्र सार्धधनुःशतद्वयरूपो बोध्यः
तथाहि चतुर्योजनविस्तृतशिरस्काया जगत्या बहुमध्यभागे पञ्चधनुः शतव्यासा
धारण करके सूत्रकार ने “ एवं जहा जीवामिगमे जाव अट्ठो जाव धुवा, णियया, सासया, जाव
णिच्चा” ऐसा सूत्र पाठ कहा है ॥४॥

जगती के ऊपर वर्तमान पद्मवर वेदिका के बाहर विद्यमान वनवण्ड का वर्णन—

“तृतीयेणं जगर्है उप्पिं बाहि” इत्यादि ।

उस जगती के ऊपर जो पद्मवरवेदिका है उस पद्मवरवेदिका के बाहर “ एतथ णं महं एगे
वणसंढे पण्णत्ते ” एक बहुत विशाल वनवण्ड है—अनेक प्रकार के वृक्षों का समूह है “ देसूणां
दो जोयणां विल्लमेणं ” इस का त्रिष्कल - विस्तार—कुछ कम दो योजन का है यहां देश से
२५० धनुष लिया गया है इसका विचार इस तरह से करना चाहिये जगती के मध्यभाग में
ऊरवाभा आवी नथी એ બે અભિપ્રાય ને સૂત્રકારે હૃદયમાં ધારણ કરીને ‘એવં જહા જીવમિગમે
જાવ અટ્ટો જાવ ધુવા ણિયયા સાસયા જાવ ણિચ્ચા’, એવો સૂત્રપાઠ કહેલો છે. ॥૪॥

જગતીની ઉપર વિદ્યમાન પદ્મવરવેદિકાની બહાર વર્તમાન વનવણ્ણ વર્ણન :—

‘ત્રીસેણં જગર્હૈ ઉપિં બાહિ’ इत्यादि सूत्र ॥५॥

આ જગતીની ઉપર જે પદ્મવરવેદિકા છે તે પદ્મવરવેદિકાની બહાર “એત્થણં મહં એગે
વણસંઢે પણ્ણત્તે” એક બહુ જ વિશાળ વનવણ્ણ છે અનેક પ્રકારના વૃક્ષસમૂહો છે “દેસૂણાં
દો જોયણાં વિક્કલમેણ” આનો વિષ્કલ—વિસ્તાર—કંઈક ૨૫૦ યોજન જેટલો છે અહીં
દેશથી ૨૫૦ ધનુષ ગ્રહણ કરવામાં આવેલ છે. આ સળધમાં આ પ્રમાણે વિચાર કરવો
જોઈએ. જગતીના આ શિખરનો વિસ્તાર ચાર યોજન જેટલો કહેવામાં આવેલ છે આ

પશ્વરવેદિકા એતસ્ય બહિર્ભાગે એકો વનપણ્ડઃ અપરશ્ચાધ્યન્તરભાગે અતો જગતી શિરો વિસ્તારો વેદિકા વિસ્તારશ્ચ ધનુઃશતપશ્ચઋન્યૂનોઽર્ધો ક્રિયતે તતો યથોક્તં માન સ્પષ્ટ ભવતિ । તથા સ વનપણ્ડઃ 'જગદ્ સમપ્ પરિક્ષેવેણં' જગતો સમપ્તઃ જગતી તુલ્યઃ પરિક્ષેપેણ પરિધિના પ્રજ્ઞપ્તઃ 'વણસંઢવણઓ જેયન્તો' વનપણ્ડવર્ણકઃ વનપણ્ડવર્ણનકારકઃ સર્વોઽપિ પદસમૂહોઽત્ર જ્ઞાતવ્યઃ । સ ચૈવમ્—'કિણ્દે કિણ્દોભામે નીલે નીલો ભાસેહરિપ્ હરિઓભાસે સીપ્ સીઓભાસે ણિદ્દે ણિદ્દોભાસે તિવ્વે તિવ્વો ભાસે કિણ્દે કિણ્દહચ્છાપ્ નીલે નીલચ્છાપ્ હરિપ્ હરિયચ્છાપ્ સીપ્ સીયચ્છાપ્ ણિદ્દે ણિદ્દચ્છાપ્ તિવ્વે તિવ્વચ્છાપ્ ઘણકહિઅચ્છાપ્ રમ્મે મહામેહણિકુરંવભૂપ્ તેણં પાયવા મૂલમંતો કદમંતો સ્વધમંતો તયામંતો સાલમંતો પવાલમંતો પત્તમંતો પુપ્ફમંતો ફલમંતો વીયમંતો અણુપુવ્વિસુજાયરુદ્ધલવટ્ટુભાવપરિણયા એગસંધી અણેગસાહપ્પ-સાહવિહિમા અણેગણરવામસુપ્પસારિયા જેઙ્ઘણવિહિલવટ્ટુસથા અચ્છિદ્ધપત્તા અવિરલ-પત્તા અવાઈણપત્તા અણઈઈપત્તા ણિદ્ધૂયજરદપહુરપત્તા ણવ હરિયમિસંતપત્તમારધ-યારગંમીરદરિસણિજ્ઞા ઉવવિણિમાય નવતરુણપત્તપલ્લવકોમલુજ્જલચલંત કિમલ્લયસુકુમાલ પવાલ સોમ્મિય ચરંકુરમ્મસિહરા ણિચ્ચં કુસુમિયા ણિચ્ચં મણિયા ણિચ્ચં લઘ્વયા ણિચ્ચં થવડયા ણિચ્ચં ગુલડયા ણિચ્ચં ગુલ્લિયા ણિચ્ચં જમલિયા ણિચ્ચં જુઞ્ઞલિયા ણિચ્ચં વિણ-મિયા ણિચ્ચં પળમિયા ણિચ્ચં કુસુમિયમણિયલવડયથવડયગુલડયગોચ્છિયજમલિયજુય-

૫૦૦ ધનુષ કી વ્યાસવાલી એક પશ્વરવેદિકા કહી ગઈ છે , હસ પશ્વરવેદિકા કે બહિર્ભાગ મેં એક વનપણ્ડ છે ઓર મીતર કે ભાગ મેં મો એક વનપણ્ડ છે જગતી કે ઊપર કે ભાગ કા વિસ્તાર ૪ યોજન કા છે ઓર વિદિશાઓ મેં જો હસકા વિસ્તાર છે વહ ૫૦૦ ધનુષ કા છે સો હસ વિસ્તાર કો ઊપર કે વિસ્તાર મેં સે કમ કરને પર એવ અવશિષ્ટ પ્રમાણ કો આધા કરને પર વનપણ્ડ કા યથોક્ત પ્રમાણ નિકલ આતા છે, હસ વનપણ્ડ કા પરિક્ષેપ “ જગદ્ સમપ્ પરિક્ષેવેણં ” પ્રમાણ , જગતી કે પરિક્ષેપ પ્રમાણ જૈસા હી છે “ વણસંઢવણઓ જેયન્તો ” વનપણ્ડ કા વર્ણન યહા પર કર લેના ચાહિયે જો અન્ય સૂત્રો મેં હસ પ્રકાર સે ક્રિયા ગયા છે “કિણ્દે કિણ્દોભાસે નીલે નીલોભાસે, હરિપ્ હરિઓભાસે, સીપ્ સીઓભાસે, ણિદ્દે, ણિદ્દોભાસે”

જગતીના મધ્યભાગમાં ૫૦૦ ધનુષ જેટલી વ્યાસ યુક્ત એક પશ્વરવેદિકા છે. આ પશ્વર-વેદિકાના બહારના ભાગમાં એક વનપણ્ડ છે જગતીના ઉપરના ભાગનો વિસ્તાર ૪ યોજન જેટલો છે અને વિદિશાઓમાં જે આનો વિસ્તાર છે તે ૫૦૦ ધનુષ જેટલો છે તેા આ વિસ્તારને ઉપરના વિસ્તારમાથી બાદ કરવાથી તેમજ અવશિષ્ટ પ્રમાણને અર્ધો કરવાથી વનપણ્ડનું યથોક્ત પ્રમાણ આવી જાય છે આ વનપણ્ડનો પરિક્ષેપ “જગદ્ સમપ્ પરિક્ષે-વેણં” પ્રમાણ જગતીના પરિક્ષેપ પ્રમાણ જેવું જ છે “વણસંઢવણઓ જેયન્તો” વન-પણ્ડનું વર્ણન અહીં કરી લેવું બેઠ્યો જે બીજા સૂત્રોમાં આ પ્રમાણે કરવામાં આવેલ છે “કિણ્દે કિણ્દોભાસે નીલે નીલોભાસે, હરિપ્ હરિઓભાસે, સીપ્ સીઓભાસે ણિદ્દે”.

लियविणमिय पणमियसुविभक्तपडिमजरिवडिसयधरा मुयवरहणमयणसलागकोडल कोर-
गमिगारगकोडलकजीवजीवग णंदोमुहकविलपिगलक्खगकारंडव चक्कवायकलहंस सारस
अणेग सउणगणमिहुण विटय सद्धुन्नय महुरसग्गाडया मुरम्मा संपिडिय दरिय
ममरमहुयरिय पडकरपरिलितमत्तछपयकुसुमासवलोलमहुरगुमगुमेत गुंजत देसभागा
अभिंमतरपुप्फफला बाहिरपत्तच्छन्ना पुप्फेहि फलेहिय उच्छन्न पलिच्छन्ना नीरोयरा
अकंटया साउफला णाणाविहग्गुच्छगुम्ममडवगसोहिया विचित्तसुहकेउभूया वावि पुक्ख-
रिणी दीहिया सुनिवेशियरम्मजालघरगा पिडिमनीहारिम सुगन्धी सुहसुरभिमणहरं
च महया गंधदाणि मुयता सुहसाउकेउबहुला अणेगरह जाणजुग्ग मिविय संदमाण्या
पविमोयणा पासाईया जाव पडिरुवा" इति ।

कृष्णः, कृष्णावभासः, नीलः, नीलावभासः, हरितः, हरितावभासः, शीतः,
शीतावभासः स्निग्धः, स्निग्धावभासः, तीव्रः, तीव्रावभासः, कृष्णः, कृष्णच्छायः,
नीलः, नीलच्छायः, हरितः, हरितच्छायः, शीतः, शीतच्छायः, स्निग्धः स्निग्ध-
च्छायः, तीव्रः तीव्रच्छायः, घनकटितटच्छायः, रम्यः, महामेघनिकुरम्बभूतः । ते खलु
पादपाः, मूलवन्तः, कन्दवन्तः, रक्त्थवन्तः, त्वग्बन्तः शालवन्तः, प्रवालवन्तः पत्रव-
न्तः, पुष्पवन्तः, फलवन्तः, बीजवन्तः, आनुपूर्वीं सुजातरुचिर वृत्तभावपरिणताः, एक
स्कन्धिनः, अनेक शाखाप्रशाखाविटपाः, अनेक नर व्यामसुप्रसारिताग्राह्यघनविपुल-
वृत्तस्कन्धाः, अच्छिद्रपत्राः-अविरलपत्राः, अवातीन पत्राः, अनीतिपत्राः निर्धूतजरठपाण्डु-
पत्राः नव हरितावभासमानपत्रमारान्धकारगम्भीरदर्शनीयाः, उपविनिर्गत नवतरुणपत्रपल्लव
कोमलोज्ज्वलचलत्किसलयसुकुमारप्रवालशोभितवराङ्कुराग्रशिखराः नित्यं कुसुमिताः,
नित्यं मृकुलिताः नित्यं लवकिता नित्यं स्तवकिताः, नित्यं गुल्मिता नित्यं गुच्छिताः,
नित्यं यमलिताः, नित्यं युगलिताः, नित्यं विनमिताः, नित्यं प्रणमिताः नित्यं सुवि-
भक्त प्रतिमञ्जर्यवतसकधराः, । नित्यं कुसुमितमृकुलितलवकितस्तवकितगुल्मितगुच्छित-
यमलित युगलितविनमितप्रणमितसुविभक्तप्रतिमञ्जर्यवतंसकधराः शुकबर्हिण-मदनश-
लाका-कोकिल-कोरक-भृङ्गारक-कोण्डलक जीवञ्जीवक-नन्दीमुख कपिञ्च-पिङ्गला-
क्षक-कारण्डव-चक्रवाक-कलहंस-सारसानेकशकुनगणमिथुनविरचित शब्दोन्नतमधुरस्वर-
नादिताः सुरम्याः सम्पिण्डितदृष्टभ्रमरमधुकरीप्रकर परि लीयमानमत्तषट्पदकुसुमास-
वलोलमधुरगुमगुमायमानगुञ्जदेशभागाः, अभ्यन्तरपुष्पफलाः, बहिःपत्रावच्छन्नाः पुष्पैः
फलैश्चावच्छन्नप्रतिच्छन्नाः स्वादुफलाः नीरोगकाः अकण्टकाः नानाविध गुच्छगुल्म-
मण्डपकशोभिताः विचित्रशुभकेतुभूताः वापीपुष्करिणीदीर्घिकासु निवेशितरम्यजाल-
शृङ्गाः पिण्डमनिहारिम सुगन्धिशुभसुरभिमनोहरां च महागन्धघ्राणिमुत्तवन्तः शुभ-
सैतुकेतुबहुलाः अनेकरथशकटयानयुग्म गिल्लिथिल्लिस्यन्दमानिका शिविका प्रविमो
चनाः सुरम्याः प्रासादीयाः दर्शनीयाः, अभिरूपाः प्रतिरूपाः, इति ।

एतद्व्याख्या चैवम्—कृष्णः मध्यमावस्थायां कृष्णवर्णपत्रसम्पन्नत्वाद् वन
पण्डोऽपि कृष्णवर्णः न चोपचारमात्रेण कृष्ण इति व्यवह्रियते । किन्तु कृष्णतया प्रति-
भासनात् । तथाऽऽह—कृष्णावभासः—यावत्तिवनपण्डभागे कृष्णदलानि सन्ति नावन्ति
तद्भागे स वनपण्डोऽतीव कृष्णः कृष्णवर्णोऽवभासः कान्तिर्यस्य वनपण्डस्य स तथा-
कृष्णवर्णावभाससम्पन्नः एवमग्रेऽपि । तथा—नीलः प्रदेशान्तरे नीलवर्णपत्रयुक्तः
मयूरकण्ठवत् एव नीलावभासः नीलवर्णावभाससम्पन्नः तथा—हरितः—प्रदेशान्तरे
हरितवर्णपत्रयुक्तः एवं हरितावभासः हरितवर्णपर्णानां प्राचुर्यान्लुप पक्षवदवभासमानः
इदानीं स्पर्शापेक्षया वर्ण्यते-शीतः—शीतलस्पर्शवान् आर्द्रलतापुञ्जपिहितान्तगलतल-
तया सूर्य किरणाप्रवेशात् अतएव शीतावभासः क्रीडार्थसमागतानां वनपण्डतन्वर्तिव्यन्त-

મધ્યમાવસ્થા મેં પત્તો કા વર્ણ કૃષ્ણ હો જાતા હે અને એ પત્તો સે યુક્ત હોને ક કારણ યદો
વનકો મી કૃષ્ણવર્ણવાલા કહ દિયા ગયા હે ઇમ તમ્હ યદ વનપણ્ડ કિસા ૨ પ્રદેશ મ કાલે
વર્ણ વાલા હે યહ કથન ઉપચાર માત્ર સે કહા ગયા નહીં જાનના ચાહિયે ક્યોનિ ઉમ રૂપ
સે હી ઇસકા અવભાસ હોતા હે ઇસી વાત કો સ્પષ્ટ કરને કે લિયે “કિન્હે કિન્હોમાસે ” ઇન
દો પદો કા પ્રયોગ કિયા ગયા ? ઇસી તરહ કિસી ૨ પ્રદેશ મેં યહ વન નીલવર્ણ વાલે પત્તો સે
યુક્ત હોને કે કારણ સ્વયં નીલવર્ણ વાલા હે ઓર ઇસી રૂપ સે ઇસકા અવભાસ હોના હે તથા
કિસી ૨ પ્રદેશ મેં યહ વન પત્રો કી હરીતિમા કો લેકર —અર્થાત્ હરે ૨ પત્રો સે યુક્ત હોને કે
કારણ—સ્વયં હરિત વર્ણવાલા હે ઓર ઇસીરૂપ સે ઇસકા અવભાસ હોતા હે. યહ વનપણ્ડ કિસો
સ્થાન વિશેષ મેં શીતલસ્પર્શવાલા હે. ક્યો કિ આર્દ્રલતાપુજ્જો સે ઇસકા તર સદા પિહિત-દલા-
રહતા હે, તથા સૂર્યકિરણો કા પ્રવેશ વહા નહીં હો સકતા હે. અતઃપર વહા પર ક્રીડા કે
લિયે સમાગત વ્યન્તર દેવ ઓર દેવિયો કો ઇસકા સ્પર્શ શીતલ રૂપ સે પ્રતીત હોતા હે । ‘ક્યો’

માસે” મધ્યમાવસ્થામા પાદડાઓનો વર્ણ કૃષ્ણ થઈ જાય છે એથી એ પદડાઓથી યુક્ત
હોવા બદલ અહીં વનને પણ કૃષ્ણ વર્ણ યુક્ત કહેવામા આવેલ છે આ પ્રમાણે આવનખંડ
કોઈ કોઈ પ્રદેશમા શ્યામવર્ણ યુક્ત છે. આ કથન ઉપચાર માત્રથી જ કહેવામાં આવેલ છે
એવું સમજવું ન જોઈએ કેમ કે તે રૂપથી જ આનો અવભાસ થાય છે આ વાતને
સ્પષ્ટ કરવા માટે “કિન્હે કિન્હોમાસે” આ બે પદોનો પ્રયોગ કરવામાં આવેલ છે આ રીતે
કોઈ કોઈ પ્રદેશમા આ વન નીલવર્ણ યુક્ત પાદડાઓથી યુક્ત હોવા બદલ સ્વયં નીલ-
વર્ણ યુક્ત છે અને આ રૂપથી જ એનો અવભાસ થાય છે તેમજ કોઈ કોઈ પ્રદેશમા આ
વનો પત્રોની હરીતિમાને લઇને એટલે કે લીલા લીલા પાદડાઓથી યુક્ત હોવા બદલ
સ્વયં હરિત યુક્ત છે અને આ રૂપથી આનો અવભાસ થાય છે આ વનખંડ કોઈ સ્થાન
વિશેષમા શીતલ સ્પર્શવાળો છે કેમ કે આર્દ્રલતા પુજેથીઆનું તળિયું સદા પિહિત-
આપ્છાદિત રહે છે, તેમજ સૂર્યકિરણો ત્યાં પ્રવેશી શકતા નથી એથી જ ત્યાં ક્રીડા મંટે
આવેલ વ્યતરદેવ અને દેવીઓને આનો સ્પર્શ શીતલ રૂપથી પ્રતીત થાય છે કેમ કે તેઓ

રદેવદેવીનાં તથાવિધ શીતસ્પર્શેન પ્રમોદદર્શનાત્ શીતાવભામો વનપણ્ડઃ, તથા-સ્નિગ્ધઃ ચિવ્રકણઃ સ્નિગ્ધ કૃષ્ણાદિ વર્ણયુક્તત્વાદ્ વનપણ્ડોપિ સ્નિગ્ધ इत्युच्यते, एवं સ્નિગ્ધાવભાસઃ વાસ્તવિક સ્નિગ્ધત્વેન પ્રતિભાસમાનો ન તૂપચારમાત્રતઃ एवं તોત્રઃ-ઈદાવભાસો મરુમરીચિકાયા જલાવભાસવદ્ ભ્રમવિપયોઽપિ ભવત્યતો યથાવસ્થિતસ્વરૂપજ્ઞાનાય વિશેષાન્તરમાહ-કૃષ્ણ इत्यादિકૃષ્ણવર્ણો વનપણ્ડઃ, કુતઃ? इत्याह-કૃષ્ણચ્છાયાઃ-કૃષ્ણવર્ણચ્છાયા વિશિષ્ટઃ. एतद्विशेषणद्वयं गाढकृष्णतां प्रकटयति । एवं नीलઃ નીલચ્છાયા इत्याद्यपि । घन कटितटच्छायः-ઘના-નિવિઢા કટિતટચ્છાયા મધ્યભાગચ્છાયા यस्य स तथा, अत

કિ જે 'વહાં' ક્રોડા કરતે ૨ ઝકતાતે નહીં હૈ . પ્રત્યુત અધિક પ્રમોદભાવ સે મરિત અન્તઃકરણ વાંકે બંનતે રહતે હૈ . તથા યહ વનવણ્ડ કિસી ૨ સ્થાન મેં સ્નિગ્ધ-ચિકના હૈ ઓર ચિકને રૂપ સે હોં હિસકા અવભાસ હોતા હૈ . કહીં પર યહ વનવણ્ડ " તીવ્ર " તોવ્ર પ્રભાવાલા હૈ ઓર હિસો રૂપ સે હિસકા અવભાસ હોતા હૈ . યદિ યહાં પર હેસો આગકા કી જાવે કિ સમી અવભાસ સત્ય નહીં હોતે હૈ અતઃ ડસ રૂપ કે અવભાસ કો લેકર જો યહાં વનવણ્ડ મેં તદ્રૂપતા સિદ્ધ કી જા રહી હૈ વહ કૈસે સિદ્ધ હો સકતી હૈ યદિ કહા જાવે કિ નહીં તદ્રૂપ સે જો અવભાસ હોતા હૈ વહ તો સત્ય હો હોતા હૈ સો હિસ પર હેસા કહા જા સકતા હૈ કિ મરુમરીચિકા મે જો જલાવભાસ હોતા હૈ વહ અવભાસ મી સત્ય માનના પહેગા. પરન્તુ વહ તો સત્ય નહીં માના ગયા હૈ-અતઃ, યહાં જો અવભાસ હોતા હૈ વહ હેસા નહાં હૈ હિસો વાત કો સૂત્રકાર હન વિશેષ-ણાન્તરોં સે સુસ્પષ્ટ કર રહે હૈં કિ યહ વન કૃષ્ણવર્ણવાલા હિસસે સાગિત હોતા હૈ કિ યહ વન કૃષ્ણવર્ણ કાલી છાયા સે વિશિષ્ટ હૈ . હિસો તરહ યહ વન નીલવર્ણવાલા હિસલિયે હૈ કિ યહ નીલ-વર્ણવાલી છાયા સે યુક્ત હૈ "વનકટિતટચ્છાય" હિસકે મધ્યભાગ મેં જો છાયા રહતી હૈ વહ બહુત

ત્યાં 'ક્રોડા' કરતાં કરતા કટાણી જતા નથી પરંતુ વધારે ને વધારે પ્રમોદ ભાવથી યુક્ત અંતઃકરણવાળા થઈને રહે છે તેમજ આ વનવણ્ડ કોઈ સ્થાનમાં સ્નિગ્ધ-ચુચિકકણુ-છે અને ચિકકણુરૂપથી જ આને અવભાસ થાય છે કોઈ કોઈ સ્થળે આ વનવણ્ડ "તીવ્ર" તીવ્ર પ્રભાવાળો છે અને આ રૂપથી જ આને અવભાસ થાય છે. જો અહીં આ જાતની આ શકા કરવામાં આવે કે સર્વ અવભાસો સત્યરૂપમાં હોતા નથી એથી તે રૂપના અવભાસને લઈને જે અહીં વનવણ્ડમાં તદ્રૂપતા સિદ્ધ કરવામાં આવી રહી છે તે કેવી રીતે સિદ્ધ થઈ શકે છે, જો કહેવામાં આવે કે આમ નહિ તદ્રૂપથી જે અવભાસ થાય છે તે સત્યરૂપમાં જ હોય છે તો આ સંબંધમાં આમ કહી શકાય કે મરુમરીચિકામાં જે જલાવભાસ હોય છે તે અવભાસ પણ સત્ય માનવામાં આવશે પણ ખરેખર તે તો સત્ય માનવામાં આવતો નથી એથી અહીં જે અવભાસ હોય છે તે એવો નથી જો જ વાતને સૂત્રકાર આ વિશેષણાન્તરોથી સુસ્પષ્ટ કરી રહ્યા છે કે આ વન કૃષ્ણવર્ણુ યુક્ત એટલા માટે સાગિત થયું છે કે આ વન કૃષ્ણવર્ણુની છાયાથી વિશિષ્ટ છે આ રીતે આ વન નીલવર્ણુવાળું એટલા માટે છે કે આ નીલવર્ણુ યુક્ત છાયાથી યુક્ત છે "વનકટિતટચ્છાય" આના મધ્યભાગમાં

एव-रम्यः-रमणीयः तथा महामेघ निकुरम्बभूतः-महामेघममृहतुरन्त्य-ते खलु पादपाः
 मूलवन्तः-दूरावगाढमूलसहिताः, कन्दवन्तः प्रशस्त मूत्रोपरिवर्ति-भागरूपकन्दयुक्ताः,
 तथा-स्कन्धवन्तः-स्कन्धः शाखाप्रभवप्रदेशः, स प्रशस्तोऽस्त्येषामिति स्कन्धवन्तः-प्रशस्त
 स्कन्धयुक्ताः, तथा-प्रवालवन्तः-प्रशस्तपल्लवाङ्कुरयुक्ताः तथा पत्रवन्तः-प्रशस्तपत्रसम्पन्नाः
 एवं पुष्पवन्तः, फलवन्तः, बीजवन्तः प्रशस्त पुष्पफलबीजयुक्ता इति, तथा आनुपूर्वीं सुजा-
 तरुचिरवृत्तभावपरिणताः आनुपूर्व्यां-यथाक्रमं सुजाताः सुसमुत्पन्नाः अतएव रुचिराः सुन्द-
 राश्च ते वृत्तभाव परिणताः-वृत्तभावेन वर्तुलत्वेन परिणताः परिणामप्राप्ताः, एकस्क-
 न्धिनः-एकस्कन्धवन्तः, अनेकशाखाप्रशाखाविटपाः-अनेके शाखा प्रशाखा विटपाः-तत्र
 शाखाः-प्रधानशाखाः, प्रशाखाः-अवान्तरशाखाः, विटपाः-विस्तारा येषां ते तथा बहु

હી સાન્ન્ર હોતી હૈ , હસોસે યહ “ રમ્ય. ” બહુનરમણીય હૈ “ મહામેઘનિકુરમ્બમૂત ” જિસ
 પ્રકાર જલ સે ભરે હુણ મેઘ પ્રતીત હોતે હૈ । ડસી પ્રકાર સે યહ વનપણ્ડ મી પ્રતીત હોતા હૈ “
 મૂલવન્ત ” યહા જો વૃક્ષ હૈ વે પ્રશસ્ત મૂલ વાલે હૈ । અર્થાત્ ઇનકી જડે બહુત હી દૂરતક
 જમીન કે મોનર ગર્દે હુર્ડે હૈ । પ્રશસ્ત કન્દવાલે હૈ । મૂઝ કે ડપરિ વર્તી ભાગરૂપ પ્રશસ્ત કન્દ
 સે યુક્ત હૈ । પ્રશસ્તસ્કન્ધ - વાલે હૈ- શાખાઁ જિસ સ્થાન સે ઉત્પન્ન હોતી હૈ ડસ સ્થાનકા
 નામ સ્કન્ધ હૈ , પ્રશસ્ત પ્રવાલ વાલે હૈ । પ્રશસ્ત પલ્લવાઙ્કુરો સે યુક્ત હૈ । પ્રશસ્ત પત્રો વાલે હૈ,
 પ્રશસ્ત પુષ્પો વાલે હૈ , પ્રશસ્ત ફલો વાલે હૈ , પ્રશસ્ત બીજ વાલે હૈ । હસતરહ પ્રશસ્ત પુષ્પ ,
 ફલ ઓર બીજ સે યુક્ત યહાં કે વૃક્ષ હૈ “ આનુર્વી સુજાતરુચિરવૃત્ત ભાવ પરિણતા. ” તથા
 યે વૃક્ષ ક્રમ ૨ સે અઙ્છી તરહ સે ઉત્પન્ન હુણ હૈ અતઁવ યે રુચિર - સુન્દર હૈ ઓર વૃત્ત ભાવ
 કો પરિણન હુણ હૈ , છતે કા જૈસા આકાર હોતા હૈ વૈસા ઇનકા આકાર હૈ । ઇનમ્ ઇનેક
 સ્કન્ધ નહીં હૈ કિન્તુ ઇક હી સ્કન્ધ હૈ , “ ઇનેક શાખા પ્રશાખાવિટપા ” યે ઇનેક પ્રધાન

જે છાયા રહે છે તે ખૂબ જ સારૂ હોય છે એથી આ “રમ્ય,” ખૂબ જ રમણીય છે.
 “મહામેઘનિકુરમ્બમૂત” જેમ જલધારિન મેઘ માલૂમ પડે છે તેમજ આ વનખંડ પણ માલૂમ
 પડે છે “મૂલવન્તઃ” અહીં જે વૃક્ષો છે તે પ્રશસ્તમૂલવાળા છે એટલે કે એમની જડો
 ખૂબ જ દૂર સુધી જમીનની અંદર પહોંચેલી છે તેઓ પ્રશસ્ત કંદવાળા છે મૂળના
 ઉપરિવર્તી ભાગ રૂપ પ્રશસ્ત કન્દોથી યુક્ત છે પ્રશસ્ત સ્કન્ધવાળા છે શાખાઓ જે સ્થાનેથી
 ઉત્પન્ન થાય છે તે સ્થાનનું નામ સ્કન્ધ છે પ્રશસ્ત પ્રવાલવાળા છે. પ્રશસ્ત પલ્લવાઙ્કુરોથી
 યુક્ત છે પ્રશસ્ત પત્રોવાળા છે પ્રશસ્ત પુષ્પોવાળા છે પ્રશસ્ત ફલોવાળા છે પ્રશસ્ત બીજ-
 વાળા છે. આ પ્રમાણે પ્રશસ્ત પુષ્પ ફલ અને બીજોથી યુક્ત અહીંના વૃક્ષો છે “આનુ-
 પૂર્વીસુજાતરુચિરવૃત્તભાવપરિણતા” તેમજ આ વૃક્ષો અતુલ્ય સારી રીતે ઉત્પન્ન થયેલા
 છે. એથી આ મધ્ય રુચિર સુદર છે મધ્યપૂજાનો જેવો આકાર હોય છે તે જાતનો આકાર એમનો
 છે. આમા ધણા સ્કન્ધો નથી પરંતુ એક જ સ્કન્ધ છે “અને શાખાપ્રશાખાવિટપા” એઓ
 ધણી પ્રધાન શાખાઓ અને અવાન્તર શાખાઓના વિરૂપ-વિસ્તાર-થી યક્ત છે એઓ

शाखाप्रशाखाविस्तारयुक्ताः अनेक नरव्यामसुप्रसारिताग्राह्यघनविपुलवृत्तस्कन्धाः
 अनेकेषां बहूनां मनुष्याणां व्यामैः—प्रसारितशुजान्तरालैः अग्राह्यः—अतिस्थूलतया—
 ग्रहीतुमशक्यः घनः—सान्द्रः विपुलः—विशालः वृत्तः—वर्तुलः स्कन्धो येषां ते तथा भूताः
 अतिस्थूलसघनविशालतया प्रसारितपाणिभिर्नरैर्दुर्ग्राह्य वर्तुलस्कन्धाः इति यावत् । तथा
 अच्छिद्रपत्राः अच्छिद्राणि सूर्यकिरणैरपि दुष्प्रवेशानि पत्राणि येषां ते तथापरस्परमि-
 लितपत्राः, अतएव अविरलपत्राः—निरन्तरपत्राःअवातीनपत्राः—वातीनानि वातोपहतानि
 न वातीनानि अवातीनानि तादृशानि पत्राणि येषां ते तथा अत्र अतिसघनत्वाद्वायोर-
 प्रवेशेनाकम्पित पत्रा इत्यर्थः । तथा—अनीतिपत्राः इतयः पट्—अतिवृष्टिः १, अनावृष्टिः
 २, मूषिकः ३, शूलभः ४, शुकः ५, अत्यासन्नो राजा ६ चेति, अविद्यमाना इतयो
 येषां तानि अनीतिनि—षड्विधेति रक्षितानि निरुपद्रवाणि पत्राणि येषां ते तथा ।
 तथा निर्धूत जरठपाण्डुपत्राः—निर्धूतानि नष्टानि जरठानि जीर्णानि पाण्डुपत्राणि—
 पाण्डुवर्णपत्राणि येषां ते तथा । तथा नव हरितभासमान पत्र भारान्धकारगम्भीर
 दर्शनीयाः नवेन सद्योजातेन हरितेन शुकपिच्छाभेन भासमानः स्निग्धत्वचा दीप्यमानो
 यः पत्रभारः—पत्रसमूहः तेन अन्धकारा, अन्धकारव्याप्ता अत एव गम्भीराः—इदमी
 दृगिति विवेक्तु मशक्या यथा तथा दृश्यन्त इति गम्भीरदर्शनीयाः तथा—
 उपविनिर्गतनवतरुणपत्रपल्लवकोमलोज्ज्वलचलत्किसलयमुकुमारप्रवालशोभितवराङ्कुराग्र-
 शिखराः—उपविनिर्गतानि—सद्यः प्रकटितानि नवतरुणानि—नवीनाऽऽगततरुणता सम्पन्नानि
 यानि पत्र पल्लवानि—पत्रगुच्छरूपाणि तैः, तथा—कोमलोज्ज्वलैः मृदु निर्मलैः चलद्भिः—
 कम्पमानैः, किसलयैः—सद्योजातैः पत्रविशेषैः मुकुमारप्रवालैः—कोमलपल्लवैः शोभितानि
 वराङ्कुराग्रशिखराणि—मुन्दराङ्कुरयुक्तोपरितनभागाः येषां ते तथा । अत्र विशेषणे—
 अङ्कुरः—प्रवाल—पल्लव—किसलय—पत्राणि स्वल्पतर स्वल्पबहु चिरतरादि कालकृतावस्था-
 भेदाद् भिन्नानीति भावः । नित्यं कुसुमिताः—सदा सर्वर्तुसंजातपुष्पोपेताः, न तु ऋतु
 प्रतिबद्धपुष्पाः, नित्यं—सदा मुकुलिताः, नित्यं लवकिताः—सदा पल्लविताः, नित्यं सदा-
 स्तवकिताः विकासोन्मुखकलिका सम्पन्नाः, नित्यं गुल्मिताः—सदा प्रतानसम्पन्नाः,
 नित्यं गुच्छिताः—कलिकादि समूहसम्पन्नाः, नित्यं यमलिताः—समपंक्तितया स्थिताः,
 नित्यं युगलिताः—सदा युगलतया स्थिताः, नित्यं विनमिताः—फल पुष्पादिभिर्विनम्री-
 कृताः, नित्यं प्रणमिताः केचित् प्रकर्षेण नम्रीकृताः, नित्यं सुविभक्त प्रतिमञ्जर्यवतं-
 सकधराः, नित्यं—सर्वकालं सुविभक्तः सुविच्छिन्नप्रतिविशिष्टो मञ्जरीरूपो योऽवतं-
 सकः शिरोभूषणस्तद्धरा—तद्धारिणः । नित्यं कुसुमित मुकुलितलवकित स्तवकित गुल्मित-
 गुच्छितयमलितयुगलितविनमितप्रणमितसुविभक्तप्रतिमञ्जर्यवतंसकधराः, अत्र स्थानि
 कुसमितादिपदानि पूर्व पृथक् पृथक् व्याख्यातानि । शुकबर्हिण मदनशलाका
 कोकिल कोरक भृङ्गारक कोण्डलकजीवञ्जीवकनन्दीमुखकपिल पिङ्गलाक्षक कारण्डव-
 चक्रवाककलहससारसानेकशकुनगणविरचितशब्दोन्नतमधुरस्वरनादिताः—तत्र शुकाः—

प्रसिद्धाः, बर्हिणाः मयूराः मदनशलाकाः-सारिकाः कोकिलाः-प्रसिद्धाः, कोरकाः-
 पक्षविशेषाः, भृङ्गारकाः भृङ्गाराः पक्षिविशेषास्त एव भृङ्गारकाः कोण्डलकाः पक्षिविशेषाः,
 जीवञ्जीवकाः-जीवञ्जीवाः चकोरास्त एव जीवञ्जीवकाः, नन्दीमुखाः-पक्षिविशेषाः,
 कपिलाः-पक्षिविशेषाः, पिङ्गलाक्षकाः-पिङ्गलवर्णनेत्राः पक्षिविशेषाः, काण्डवाः-पक्षि-
 विशेषाः, चक्रवाकाः-केकाः 'चकवे'ति भाषाप्रसिद्धाः, कलहंसाः 'वतक' इति प्रसिद्धाः,
 सारसाः-प्रसिद्धाः पक्षिविशेषाः, एते ये अनेके शकुनाः पक्षिणस्तेषां ये गणाः-
 समूहा स्तेषां यानि मिथुनानि स्त्रीपुंसयुग्मानि तैर्विरचिताः-कृता ये शब्दोन्नताः-उन्नत
 शब्दाः-उच्चै रवाः ते मधुरस्वरा मधुरालापयुक्तास्तैर्नादिताः कलरुलरवयुक्ता-विविध
 पक्षिगण मिथुन कृतमधुरध्वनियुक्ता इत्यर्थः, अतएव सुरम्या अतीव रमणीयाः, तथा
 सम्पिण्डित द्रुप्तभ्रमर मधुकरी प्रकरपरिलीयमानमत्तपदपद कुसुमासवलोल मधुरगुमगुमाय-
 मानगुञ्जदेशभागाः, तत्र सम्पिण्डिताः कुसुमासवधानार्थं परस्पर सम्मिलिताः ये द्रुप्तानां
 मदमत्तानां भ्रमराणां मधुकरीणां भ्रमरीणां च प्रकराः समूहास्तैः सह परिलीयमानाः
 श्लिष्यन्तः-परिमिलन्तो ये मत्तपदपदाः, त एव पुनः कुसुमाऽऽसवलोलाश्च पुष्परसाऽऽ
 स्वादलोलुपाश्च तेषां मधुरं यथा तथा गुमगुमायमानैः गुमगुमेति मधुर भृङ्गसङ्गीतैः
 गुञ्जन् मधुरमव्यक्तं शब्दायमानो देशभागो येषु ते तथा । अत्र मधुकरगुञ्जनं देश-
 भागे आरोपितम् । तथा अभ्यन्तरपुष्पफलाः अभ्यन्तरे पुष्पफलैः सम्भृताः,
 वहिः पत्रावच्छन्नाः-वहिः सजात पत्रसमूहमच्छन्नाः पुष्पै फलैश्च अवच्छन्न्
 प्रतिच्छन्नाः सर्वथाऽऽच्छादिताः, तथा स्वादुफलाः-स्वादयुक्तफलसम्पन्नाः नोरोगकाः
 वृक्षचिकित्साशास्त्रप्रदर्शितरोगवर्जिताशोत-विद्यु-दातर्पादजनितोपद्रवरहिता वा, अकण्टकाः
 कण्टकरहिता नानाविध गुच्छगुल्ममण्डपकशोमिताः नानाविधैः बहुप्रकारैः गुच्छैः-पुष्प-
 स्तवकैः गुल्मैः लताप्रतानैः मण्डपकैः मण्डपाकारलतामण्डलैश्च शोमिताः शोभा-
 सम्पन्नाः, विचित्रशुभकेतुभूताः विचित्रशुभध्वजरूपाः वापी पुष्करिणी दीर्घिका सुनि-
 वेशितरम्यजालगृहकाः, तत्र वाप्यः चतुष्कोणाः, पुष्करिण्यः-वृत्ता वाप्य एव दीर्घिका
 ऋजु सारिण्यः, तासु सुनिवेशितानि सुष्ठुतया स्थापितानि रम्याणि-रमणीयानि
 जाल गृहकाणि सच्छिद्रगवाक्षा यत्र ते तथा पिण्डिमनिर्हारिमसुगन्धि सुरभिमनोहरा
 सम्मिलितां सतीं शुभपुद्गलसमूहरूपेण दूरदेशगामिनीं सुगन्धि शोभनगन्धवतीं
 शुभसुरभिमनोहरां-श्रेष्ठसुगन्धमनोहारिणीम्, महागन्धघ्राणि-महती चापी गन्ध एव
 घ्राणिः तृप्तिस्तद्धेतुत्वाद् घ्राणिः गन्धघ्राणिः तां महागन्धघ्राणिं-महागन्धतृप्तिम्,
 मुञ्चन्तः-प्रसारयन्तः तथा-शुभ सेतुकेतु बहुलाः गुभा प्रधानाः ये सेतवःमार्गाः आल
 चालपाल्यो वा, केतवः पत्ताकाश्च तैर्बहुलाः-न्यासाः, अनेक रथ शकटयान युग्य गिल्लि
 थिल्लि स्थन्दमानिकाशिविका प्रविमोचनाः-अनेकेत्यस्य रथादि शिविकान्त उन्मृष्टकेषु

प्रत्येकेषु सम्बन्धः, तेन तत्र अनेके ये रथाः अनेकानि यानि शकटानि, अनेकानि यानि यानानि अश्वादीनि, अनेकानि यानि युग्यानि गोल्लदेशप्रसिद्धानि द्विहस्तप्रमाणानि चतुरस्राणि वेदिकोपशोभितानि जम्पानानि 'गिल्लि' इति देशीयः शब्द आसन विशेषार्थकः तेन इस्तिनः पृष्ठोपर्यासनानि 'अम्वाडी' इति प्रसिद्धानि गिल्लिपदवाच्यानि । 'थिल्ली' इत्यपि देशीयः क्रीडारथार्थकः, तेन लाट्देशप्रसिद्धाः क्रीडारथाः थिल्लिपदवाच्याः, स्यन्दमानिकाः—पुरुषप्रमाणजम्पानविशेषा, एनम् अनेकाः या शिविकाः—पुरुषवाहयानविशेषाः 'पालखी' इति प्रसिद्धाः, तासामनेकरथाद्यनेक शिविकान्तानाम् अधोऽतिविस्तीर्णत्वात् प्रविमोचनं स्थापनं यत्र ते तादृशाः । क्रीडार्थ-मागतानां जनानामनेकरथादयस्तत्र रथाप्यन्त इति भावः । तथा—सुरम्याः, अतिरमणीयाः प्रासादीयाः—दर्शकानां हृदयप्रसादकराः, यावत्पदेन "दर्शनीयाः द्रष्टुं योग्याः, तथा अभिरूपाः—सर्वथा दर्शकजनमनोनयनहारिणः" इति पदद्वयं बोध्यम् । तथा—प्रतिरूपाः—असाधारणरूपयुक्ता, इति ॥ सू० ५ ॥

शाखाओ और अवान्तर शाखाओ के बिटप— विस्तार से युक्त हैं ये इतने मोटे हैं कि अनेक पुरुष एक साथ हाथ पसारे तब भी इनके स्तम्भ को अपने अङ्ग में नहीं भर सकते हैं । इनका जो स्तम्भ है वह मोटे होने के साथ सान्द्र है— मजबूत है, पोला नहीं है । गोल है— आड़ा टेढ़ा नहीं है । सरल है इनके पत्र ऐसे हैं कि जिनमें छिद्र का नामतक भी नहीं है । अथवा— वृक्षों की डालियों आपस में इस रूप से मिली हुई हैं कि उनके पत्र आपस में एक दूसरे पत्रों के साथ सलग्न होते गये हैं । अतः छिद्र वहां नहीं होता है । इसलिये सूर्य की किरणों को वहां प्रवेश करने के लिये स्थान नहीं प्राप्त होता है, " इत्यादि रूप से इस सूत्रपाठ में आगत यह वनपण्ड का वर्णन जीवाभिगम सूत्र में व्याख्यात किया जा चुका है । अतः वहीं से इस पाठ की व्याख्या जान लेनी चाहिये ॥५॥

એટલા વિશાળ છે કે અનેક પુરુષો એકી સાથે હાથ પહોળા કરે છતાં એ એમના થડોને પોતાના બાહુઓમા સમાઈી કરી શકતા નથી એમના બે સ્તંભો છે તે એટલા ઢોલાથી સાન્દ્ર છે, મજબૂત છે, પોલા નથી ગોળ છે, આડા-વાકા નથી, સરળ છે એમના પાદકા-ઓ એવા છે કે એમનામા છિદ્ર નથી અથવા વૃક્ષોની શાખાઓ એક બીજાથી એવી રીતે સન્નિલિન થયેલી છે કે તેમના પાદકાઓ પરસ્પર સંલગ્ન થઈ ગયાં છે એથી ત્યાં છિદ્રો રહ્યા નથી, એથી સૂર્યના કિરણોને ત્યાં પ્રવેશવા માટે અવકાશ નથી. ઇત્યાદિરૂપમા આ સૂત્ર પાઠમા વર્ણિત આ વનપણ્ડુ વર્ણન જીવાભિગમ સૂત્રમા વ્યાખ્યાત કરવામા આવેલ છે. જિજ્ઞાસુઓએ ત્યાથી આ પાઠની વ્યાખ્યા બાધી લેવી બેઈ એ. ॥૫॥

अथ वनखण्डस्य भूमिभागं वर्णयितुमुपक्रमते —

मूलम्—तस्स णं वणसंडस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते से जहा नामए आलिगपुक्खरेइ वा जाव णाणाविह पंचव-
ण्णेहिं मणिहिं तणेहिं उवसोभिए, तं जहा किण्णेहिं ? एवं वण्णो गंधो
रसो फासो सदा पुक्खरिणीओ पव्वयगा घग्गा मंडवगा पुदविसिलोव-
द्वया गोयमा ! णेयव्वा, तत्थ णं बहवे वाणमंतरा देवा य देवोओ य
आसयंति सयंति चिंढंति णिसीयंति तुअट्ठंति रमंति ललंति कीलंति
किट्ठंति मोहंति पुरा पौराणाणं सुचिण्णाणं सुपरिक्कंताणं सुभाणं कल्याणा
णं कडाणं कम्माणं कल्लोण फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणा विहरंति ।
तीसेणं जगईणं उप्पि अंतो पउमवरवेइयाए एत्थणं एगं महं वणसंडे
पण्णत्ते देसूणाइं दोजायणाइं विक्खंमेण वेदियासमए परिक्खेवेणं
किण्हे जाव तणविहूणे णेयव्वे ॥ सू० ६ ॥

छाया—तस्य खलु वनखण्डस्य अन्तः बहुसमरमणीयो भूमिभागः प्रज्ञप्तः तत्
यथा नामक आलिङ्गपुष्करमिति व यावत् नानाविधपञ्चवर्णैर्मणिभिः तृणैरुपशोभितः, तद्यथा
-कृष्णः एवं वर्णो गन्धो रसः स्पर्शः शब्दः पुष्करिण्यः पर्वतका वृद्धकाणि मण्डपकाः पृ-
थिवी शिलापट्टकाः गोतम ! नेतव्याः । तत्र खलु बहवो वानव्यन्तरा देवाश्च देव्यश्च आ-
सते क्षेरते तिष्ठन्ति निषीदन्ति त्वग्वर्त्तयन्ति रमन्ते ललन्ति कीडन्ति कीर्तयन्ति मोहन्ति
पुरापुराणानां सुचीर्णानां सुपरीक्रान्तानां शुभानां कल्याणानां कृतानां कर्मणां कल्याणफल-
वृत्तिविक्षेपं प्रत्यनुभवन्तस्तिष्ठन्ति । तस्याश्च खलु जगत्या उपरि अन्तः पञ्चवरवेदिकाया
अत्र खलु एको महान् वनखण्डः प्रज्ञप्तः देशोने द्वे योतने विक्कम्मेण वेदिका समयः परि-
क्षेपेण, कृष्णो यावत् तृणविहीनो ज्ञातव्यः ॥ सू० ६ ॥

टीका—‘तस्स णं वणसंडस्स’ इत्यादि ।

‘तस्स णं वणसंडस्स अतो’ तस्य पूर्वोक्तस्य खलु वनखण्डस्य अन्तः मध्यभागे

वनखण्ड के भूमिभाग का वर्णन—

“ तस्स ण वणसंडस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते ” इत्यादि ।

उस वनखण्ड का भीतरी भूमिभाग अत्यन्त-समतलवाला होने से बहुत सुन्दर है “ से

वनभूना भूमिभागानु वर्णनः—

तस्स ण वणसंडस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते—इत्यादिसूत्र— ६”
ते वनखण्डना अ इरने। भूमि भाग अतीव समतल होवाधी भइ ७ अ इर ने

‘વહુસમરમણિજ્જે ભૂમિમાગેપણ્ણત્તે’ વહુસમરમણીયઃ અત્યન્ત સમતલોડત્તેવ રમણીયઃ સુન્દરો ભૂમિભાગઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ કથિતઃ । ‘આલિગપુક્કરેદ્વા’ તત્ પ્રસિદ્ધ યથા ડિનિ દૃષ્ટાન્તોપદર્શનાર્થમ્ નામેતિ કોમલામન્ત્રણે ‘એ’ ડિતિ વાક્યાલક્ષ્ણે, આલિગપુક્કરમિતિ વા-આલિગ્-મૃદ્ગસ્તસ્ય યત્પુષ્કરં-મુખોપરિ ચર્મપુટકમ્ તદત્યન્તં સમતલં ભવતીતિ તદ્વત્સમતલ મિતિ તેન સાદૃશ્ય દર્શયિતુમિતિશબ્દઃ પ્રયુક્તઃ, વા મમુચ્ચયે, એવમગ્રેડપિ ‘જાવ’ યાવત્ યાવત્પદેન ભૂમિભાગસ્થાત્યન્ત સમતલતાવર્ણન રાજપ્રશ્નીયસૂત્રસ્ય પઞ્ચદશસૂત્રે વિલોકનીયમ્ । તદર્થસ્તત્રૈવ મત્કૃતસુબોધિની ટીકાતોડવસેયઃ । પુનઃ સ ભૂમિભાગઃ કીદૃશઃ ! ડિત્યાદિ “નાળાવિહપંચવર્ણેહિ” ડિત્યાદિ, નાનાવિધ પઞ્ચવર્ણેઃ કૃષ્ણાદિપંચવર્ણયુક્તેઃ “મણિહિ તણેહિ ઉવસોમિએ” મણિમિસ્તૃણૈશ્વોપશોમિતઃ ‘તં જહા’ ડિત્યાદિ, તં જહા’ તદ્વથા-તદેવ દર્શયતિ ‘કિણ્હેહિ’ કૃષ્ણઃ-કૃષ્ણવર્ણયુક્તેઃ “ત્ર વર્ણો” એવં નીલલોહિતહારિદ્ર-શુક્લ વર્ણયુક્તર્મણિમિસ્તૃણૈશ્વેતિ સર્વવર્ણવિપયકં વર્ણનં તથા ‘ગંધો રસો ફાસો’ ગન્ધરસસ્પર્શવર્ણનં ચ રાજપ્રશ્નીયસૂત્રે પંચદશસૂત્રાદારભ્યૈકોન-

જહા નામએ આલિગ પુક્કરેદ્વા વા જાવ નાળાવિહ પંચવર્ણેહિ મણિહિ તણેહિ ઉવસોમિએ” જૈસા મૃદગ્ધ કે મુક્લ પર મહા હુઆ ચર્મ પુટ સમતલ વાલા હોને સે સુન્દર હોતા હૈ । યહા યહ દૃષ્ટાન્ત સમતલતા કી સાદૃશ્યતા પ્રકટ કરને કે લિયે કહા ગયા હૈ યહા જો યાવત્પદ કા પ્રયોગહુઆ હૈ વહ યહ પ્રકટ કરતા હૈ કિ ભૂમિભાગ કી અત્યન્ત સમતલતા કા વર્ણન યદિ દેખના હો તો રાજપ્રશ્નીય સૂત્ર કે ૧૫ વે સૂત્ર કો દેહો-વહાં પર હસ વાત કા અઞ્ઠી તરહ સે સ્પષ્ટીકરણ કિયા ગયા હૈ રાજપ્રશ્નીય સૂત્ર કી મૈ ને સુબોધિની ટીકા લિખી હૈ । ડસમેં પદ વ્યાખ્યા હસ સમ્બન્ધ મેં મૈને કી હૈ । યહ ભૂમિભાગ અનેક પ્રકાર કે પાંચવર્ણ વાલે રત્નો સે એવ તૃણો સે લ્લચિત હૈ -ઉપશોમિત હૈ । વે પાંચ વર્ણ કૃષ્ણ, નીલ, લોહિત, હારિદ્ર-ઔર શુક્લ હૈ વહાં જૈસે યે પાંચ વર્ણો કે રત્ન હૈ ડસી પ્રકાર સે વહા પાંચ વર્ણો કે તૃણ મી હૈં હનકે ગંધ, રસ એવ સ્પર્શ કિસ પ્રકાર કે હૈ-હન સમ્બન્ધ કા વર્ણન રાજપ્રશ્નીય સૂત્ર મેં ૧૫

જહા નામએ આલિગ પુક્કરેદ્વા વા જાવ નાળાવિહ પંચવર્ણેહિ મણિહિ તણેહિ ઉવસોમિએ” મૃદગ્ધના સુખ ઉપરનેા ચર્મપુટ જેવો સમતલ હોવાથી સુહર હોય છે અહીં આ દૃષ્ટાન્ત સમતલતાની સાદૃશ્યતા પ્રકટ કરવા માટે જ કહેવામા આવેલ છે અહીં જે યાવત્ પદનો પ્રયોગ થયેલ છે તે આ પ્રકટ કરે છે કે ભૂમિભાગની અત્યન્ત સમતલતા વિષે બહુવુ હોય તો રાજપ્રશ્નીય સૂત્રના ૧૫ મા સૂત્રને બુઝો ત્યાં આ વિષે બધુ સારી રીતે સ્પષ્ટીકરણ કરવામા આવ્યું છે રાજ પ્રશ્નીયસૂત્રની મે સુબોધિની ટીકા લખી છે તેમા આ વિષેની પદવ્યાખ્યા મેં કરી આ ભૂમિભાગ. અનેક છે બતના પાંચવર્ણોવાળા રત્નોથી તેમજ તૃણોથી બચિત છે. તે ઉપશોભિન પાંચ વર્ણો કૃષ્ણ, નીલ, લોહિત, હારિદ્ર, અને શુક્લ છે ત્યાં જેમ આ પાંચ વર્ણોવાળા રત્નો છે તેમજ ત્યાં પાંચવર્ણોવાળા તૃણો પણ છે એમના ગંધ, રસ અને સ્પર્શ દેવા પ્રકારના છે ? આ મળધમા રાજપ્રશ્નીય સૂત્ર ના ૧૫ મા સૂત્ર થી લખેને

વિંશતિતમસૂત્રપર્યન્તં વિલોકનોયમ્ । અર્થોઽપિ તત્રૈવ સુવોચિની ટીકાતો વિજ્ઞેયઃ ।
તદેવાહ—“एवं” इत्यादि । “सहो चि” शब्दवर्णनमपि तस्यैव राजप्रश्नीयसूत्रस्य त्रिरष्टि-
तम चतुष्पष्टितमेमि सूत्रद्वये विलोकनोयम् । अर्थोऽपि तत्रैव सुवोचिनी टीकायां
द्रष्टव्यः । “पुक्खरिणीओ च्ति, तत्र वनपण्डस्य बहुसमरमर्णाय भूमिभागे पुष्करिण्यः—
क्षुद्रा क्षुद्रिकाः, वाप्यः, पुष्करिण्यादयश्च सन्ति तासां वर्णनं राजप्रश्नीयसूत्रस्य पञ्च-
पष्टितमसूत्रे, “पव्वयणा इति पर्वतकाः, तासां पुष्करिण्यादीनां तत्र तत्र देशे उत्पातादि
पर्वताः सन्ति, एषां वर्णनं पट्पष्टितमसूत्रे ‘घरगा इति ‘आलियघरगा’ तेषु वनपण्डेषु-
तत्र तत्र देशे बहूनि आलिका गृहकाणि कदली गृहकाणीत्यादि गृहवर्णनं सप्तपष्टि-
तमसूत्रे, ‘मंडवगा’ इति मण्डपकाः तत्रैव तत्र तत्र देशे बहवो जाति मण्डपका यूथिका
मण्डपकाः, इत्यादि मण्डपकवर्णनं, तथा ‘पुढविसिलापट्टया’ इति पृथिवीशिलापट्टका

વે સૂત્ર સે લેકર ૨૧વે સૂત્ર તક ક્રિયા ગયા હૈ—સો વહી સે ટસ વર્ણન કો જાન લેના ચાહિયે,
તથા પદો કી અર્થ વ્યાખ્યા સુવોધિની ટીકા મે કી ગઈ હૈ—સો યહ મી ડમી સે દેવ લેના ચાહિયે
જબ યે તુળ વાયુ કે કોકો સે મન્દ ૨ રૂપ મેં યા વિશેષરૂપ મે પ્રકમ્પિત હોતે હૈ—તબ ઇનમેં સે
પરસ્પર કે સઘટ્ટન સે કિસ પ્રકાર કા શબ્દ નિકલતા હૈ યહ સબ યદિ દેખના હો તો રાજ
પ્રશ્નીય કે ૬૩વેં જીર ૬૪વે સૂત્ર કી વ્યાખ્યા કો દેખના ચાહિયે । વહીં પર યહ સબ બહુત
હી સુન્દર ઢગ સે સમજાયા ગયા હૈ “પુક્કરિણીઓચ્છિ” બહુસમરમણીય મધ્યભૂમિભાગ મેં અનેક
છોટી ૨ વાપિકાઈ હૈ—ઇનકા વર્ણન મી રાજપ્રશ્નીયસૂત્રકે ૬૫વે સૂત્ર મે આયા હૈ’ ઇન પુષ્કરિણીયો
કે બીચ મેં “પવ્વયા” ઉત્પાત આદિ પર્વત હૈ તથા ડસ વનપણ્ડ મે અનેક “ઘરગા” કદલી-
ગૃહ હૈ, અનેક “મંડવગા” મણ્ડપ-લતાકુળ્જ-આદિ હૈ એવં “પુઢવિસિલાપટ્ટયા” અનેક હસાસન
આદિ જૈસે પૃથિવીશિલાપટ્ટક હૈ જીર યે સબ પ્રતિરૂપાન્ત તક કે વિશેષણો વાલે હૈ—યહ સબ

૨૧ મા સૂત્ર સુધી વર્ણન કરવામા આવ્યું છે તે ત્યાથી જ આ વર્ણન વિષે જાણી
લેવું જોઈએ. તેમ જ પહેલા અર્થની વ્યાખ્યા સુવોધિની ટીકામા કરવામા આવી છે
તો આ વિષે પણ ત્યાથી જોડેલું જોઈએ જ્યારે આ તુણે પવનના અપાટાએથી
ધીમે ધીમે અથવા વિશેષ રૂપમાં પ્રકમ્પિત થાય છે ત્યારે એમનામાંથી પરસ્પરના સઘટ્ટ-
નથી કંઈ જાનના ચબ્દ ઉત્પન્ન થાય છે આ વિષે જે જાણતું હોય તે ‘રાજ-
પ્રશ્નીય’ના ૬૩મા અને ૬૪ મા સૂત્રની વ્યાખ્યાવાચવી જોઈએ તથા આ વિષે ક્રિતમ રૂપમા
રૂપક કરવામા આવેલ છે, “પુક્કરિણીઓ “ચ્છિ” તે બહુસમરમણીય મધ્યભૂમિભાગમા ઘણી
નાની વાપિકાઓ છે તેમજ વર્ણન પ્રજુ ‘રાજપ્રશ્નીયસૂત્રના ૬૫ મા સૂત્રમા કરવામા
આવેલ છે આ પુષ્કરિણીઓની વચ્ચે “પવ્વયા” ઉત્પાત વગેરે પર્વતો છે તેમજ તે
વનખંડમા અનેક “ઘરગા” કદલી ગૃહો છે અનેક ‘મંડવગા મંડપ-લતાકુળ-વગેરે છે.
તેમજ “પુઢવિસિલાપટ્ટયા” અનેક હસાસન ઇત્યાદિ જેવા પૃથિવી શિલા-પટ્ટકો છે અને
આ સર્વ પ્રતિરૂપાન્ત સુધીના વિશેષણોથી શુદ્ધ છે આ બધું વર્ણનપણ અનુક્રમે ત્યા

હંસાસન સંસ્થિતા યાવત્પ્રતિરૂપાઃ, इत्यादि वर्णनं च राजप्रश्नीयसूत्रस्याष्टपष्टितमसूत्रे
द्रष्टव्यं तदर्थोऽपि तत्रैव सुबोधिनी टीकायां विलोकनीयः, 'गोयमा' गौतम । 'जेयञ्वा'
इति नेतव्याः एते पदार्था ज्ञातव्या इत्यर्थः । 'तत्थ णं' इत्यादि । तत्र पूर्वोक्तेषु हंसा-
सनादि सस्थानसंस्थितेषु पृथिवीशिलापट्टकेषु खलु 'बहवे वाणमंतरा देवा य देवीओ
य बहवः—अनेकसंख्या' वानमन्तराः—व्यन्तरदेवाश्च देव्यश्च व्यन्तर देवा व्यन्तर
देव्यश्च 'आसयंति' आसते, यथासुखं सामान्यत म्तिष्ठन्ति, 'सयति शेरते—दोर्घकाय
प्रसारणेन वर्तन्ते न तु निद्राति देवानां निद्राया अभावात्, 'चिद्वंति' तिष्ठन्ति ऊर्ध्वा-
वस्थानेन 'णिसीयंति' निपोदन्ति—उपविशति, 'तुयद्वंति' त्वग्वर्त्तयन्ति—पार्श्वपरिवर्तनं
कुर्वन्ति, 'रमंति' रमन्ते—रतिमाध्वन्ति, 'ललन्ति' ललन्ति—विलसन्ति, 'कीलन्ति' क्रीडन्ति
क्रीडां कुर्वन्ति 'किद्वंति' कीर्तयन्ति 'मोहन्ति' मोहन्ति—विलासं कुर्वन्ति, 'पुरा पोरा-
णाणं' पुरा-प्रारभवे पुराणानां—पूर्वजन्मजातानां कर्मणामिति, 'परेण सम्बन्धः', एवं 'सुचि-
ष्णाणं' सुचीर्णानां—सुचीर्णानां सुविधिकृतानां, 'सुपरिकंताणं' सुपरिक्रान्तानां शोभनपरा-
क्रमसम्पादितानाम्, अतएव 'सुमाण' शुभानां शुभफलानां 'कल्लाणं' कल्याणानां—

વર્ણન મી ક્રમશઃ વહીં રાજપ્રશ્નીય સૂત્ર મેં ૬૬વે ૬૭વે ૬૮ સૂત્ર મેં બાયા છે અતઃ હસકે હિપ્
ઁસકી સુબોધિની ટીકા દેસના ાહિયે “તત્થ ણં બહવે વાણમન્તરા દેવા ય દેવીઓ ય આસયતિ
સયંતિ, ચિદ્વતિ, ણિસીયંતિ, તુયદ્વંતિ, રમતિ લલંતિ, કીલંતિ, કિદ્વંતિ, મોહંતિ” ઁન હંસાસનાદિ
કે જૈસે આકાર ાલે પૃથિવી શિલાપટ્ટકોં કે ઁપર અનૈક વાનવ્યન્તરદેર ઁર દેવિયાં સુસ્પર્વક
ઁઠતી બૈઠતી રહતી હૈ, લેટતી રહતો હૈ, આરામ કરતી રહતો હૈ, કહીં સહી રહતી હૈ, પાર્શ્વ-
પરિવર્તન કરતી રહતી હૈ, ઁર કરવટબદલતી હુઈ વિશ્રામ કરતી રહતી હૈ રતિસુસ્થભોગા કરતી
હૈ, નાના પ્રકાર કી ક્રીડાઈ કરતી રહતી હૈ, ગાને ગાતો રહતો હૈ, આપસ મેં ઁક દુસરે કો
મુઘ કરતી રહતો હૈ, મિલ ૨ પ્રકાર કે વિલાસો સે દેવો કે ચિત્ત કો હુમાતી રહતી હૈ, હસ
પ્રકાર સે ઁ દેવ ઁર દેવિયાં “પુરા પોરાણાણ સુચિષ્ણાણ સુપરિકંતાણ સુમાણ કલ્લાણાણં

‘રાજપ્રશ્નીય સૂત્રના ૬૬ મા અને ૬૭ મા તેમજ ૬૮ મા સૂત્રમા કરવામા આવેલ છે.
એથી આ વિષેનાણુ ડોય તો તેની સુબોધિની ટીકા બેથી જોઈએ “તત્થ ણં બહવે વાણ-
મંતરા દેવાય દેવોઓ ય આસયંતિ સયંતિ ચિદ્વંતિ ણિસીયંતિ, તુયદ્વંતિ રમંતિ, લલંતિ,
કીલંતિ, કિદ્વંતિ મોહંતિ” તે હંસાસનાદિના જેવા આકારવાળા પૃથિવીશિલાપટ્ટકોની
ઉપર ઘણા વાનવ્યન્તર દેવ દેવીઓ સુખેથી ઉઠતા બેસતા રહે છે, લેટતા રહે છે, આરામ
કરતા રહે છે, ક્યાક ક્યાક બેસા રહે છે પાર્શ્વ પરિવર્તિત કરતાં રહે છે એટલે કે
પાશુ ફેરવીને વિશ્રામ કરતા રહે છે રતિસુખ ભોગવતા રહે છે અનેક પ્રકારની ક્રીડાઓ
કરતા રહે છે ગીતો ગાતા રહે છે, પરસ્પર એક બીજાને મુઘ કરતા રહે છે. બિન્ન બિન્ન
પ્રકારના વિલાસોથી દેવોના ચિત્તને દેવીઓ હુમ્મ કરતી રહે છે. આ રીતે આ સર્વ દેવ
અને દેવીઓ “પુરાપોરાણાણ સુચિષ્ણાણ સુપરિકંતાણ સુમાણ કલ્લાણાણ કલ્હાણં કમ્માણં

વાસ્તવિક કલ્યાણ ફલાનાં 'કઢાણ' કૃતાનાં કર્મણાં-પુણ્યકર્મણાં 'કલ્લાણફલવિત્તિ-વિસેસં પચ્ચણુભવમાણાવિહરંતિ' કલ્યાણ-કલ્યાણરૂપં ફલવૃત્તિવિશેષં ફલવિપાકે પરિણામ ફલં પ્રત્યજ્ઞુભવન્તઃ ઇકૈકશોઽનુભવવિપયં કુર્વન્તઃ સન્તો વિહરન્તિ ।

ઇત્યેવં પદ્મવરવેદિકાયા વઢિઃ સ્થિતવનપણ્ડવર્ણનમુક્તમ્ । અધુના તસ્યા ઇવ મધ્ય-વર્તિ પ્રદેશાન્તર્ગત મહાવનપણ્ડવર્ણનં ચિકીર્ણગઢ-‘તીસેણં ઇત્યાદિ-‘તીસેણં જગઢપ ડર્પિ’ તસ્યાઃ પૂર્વોક્તાયાઃ યલ્લુ જગત્યાઃ ડપરિ-ઝર્ધ્વભાગે ‘અંતો પડમવરવેડ્યાપ’ સ્થિતાયાઃ પદ્મવરવેદિકાયાઃ અન્તઃ મધ્યે યઃ પ્રદેશઃ, ‘ઇત્થ ણં ઇગં મહં વણસંઢે પણ્ણત્તે’ અત્ર-અસ્મિન્પ્રદેશે યલ્લુ ઇકો મહાન્ વિશાલો વનપણ્ડઃ પ્રપ્તઃ, ‘દેસુણાઢ્ ઢો જોયણાઢ્ વિક્લમેણં’ સવ દેશેને ઢે યોજને વિષ્કમ્મેણ વિસ્તારેણ, ‘વેદિયાસમપ્પ પરિક્લેવેણં, વેદિકાસમકઃ-વેદિકયા પદ્મવરવેદિકયા સમઃ તુલ્યઃ વેદિકાસમઃ સ ઇવ વેદિકા સમકઃ પરિક્ષેપેણ-પરિધિના, પદ્મવરવેદિકાપરિક્ષેપયુક્ત ઇત્યર્થઃ, અસ્ય વર્ણનં પદ્મવરવેદિ-

કઢાણં કમ્માણં કલ્લાણફલવિત્તિવિસેસ પચ્ચણુભવમાણા વિહરંતિ” પૂર્વ મેં આચરિત ક્રિયે ગયે જુમાધ્યવસાય સે સવિધિ શોભનપરાક્રમપૂર્વક ડલ્લાસ કે સાથ સેવિત ક્રિયે-ઇસે જુમકલ્યાણકારી ફલવાલે પુણ્યકર્મો કે કલ્યાણરૂપ ફલ કો ડનકે ડદયકાલ મેં મોગતે હુપ્પ અપને સમય કો વ્યતીત કરતે રહતે હૈ ।

હસ પ્રકાર સે પદ્મવરવેદિકા કે વાહર કે વનપણ્ડ કા વર્ણન કર-અવ સૂત્રકાર ડસકે મધ્યવર્તી મહાવનપણ્ડ કા વર્ણન કરતે હુપ્પ કહતે હૈ-

“તીસેણ જગઢપ ડર્પિ અંતો પડમવર વેડ્યાપ” ડસ જગતી કે ડપર જો પદ્મવરવેદિકા કહી ગઈ હૈ ડસ પદ્મવરવેદિકા કે મીતર “ઇત્થ ણં ઇગં મહં વણસંઢે પણ્ણત્તે” ઇક બહુન વિશાલ વનપણ્ડ કહા ગયા હૈ યહ વનપણ્ડ “દેસુણાઢ્ ઢો જોયણાઢ્ વિક્લમેણં વેદિયા સમપ્પ પરિક્લેવેણં કિણ્હે જાવ તણવિહ્ણે ણેયવ્વે” ચોઢાઈ મેં કુલ્લ કમ ઢો યોજન કા હૈ તથા હસકી પરિધિ કા

કલ્લાણફલવિત્તિવિસેસં પચ્ચણુમ ણા વિહરંતિ” પૂર્વમા આચરિત જુમાધ્ય-વસાયથી સવિધિ શોભન પરાક્રમપૂર્વક ડલ્લાસની સાથે સેવન કરેલા-અવા જુમકલ્યાણકારી ફળવાળા પુણ્ય કર્મોના કલ્યાણ રૂપ ફળ ને તેમના ડિદ્યકાળમા લોગવતા પોતાના સમયને પસાર કરે છે

આ પ્રમાણે પદ્મવર વેદિકાની બહારના વનપણ્ડનુ વર્ણન કરીને હવે સૂત્રકાર તેના મધ્યવર્તી મહાવનપણ્ડનુ વર્ણન કરતાં કહે છે —“તીસેણ જગઢપ ડર્પિ અંતો પડમવરવેડ્યાપ” તે જગતીની ડપર બે પદ્મવરવેદિકા છે તે પદ્મવર વેદિકાની અહર “ઇત્થ ણં ઇગં મહં વણસંઢે પણ્ણત્તે” એક બહુજ વિશાળ વનપણ્ડ કહેવામા આવેલ છે આ વનપણ્ડ “દેસુણાઢ્ ઢો જોયણાઢ્ વિક્લમેણં વેદિયાસમપ્પ પરિક્લેવેણં કિણ્હે તણ વિહ્ણે ણેયવ્વે” ચોઢાઈમા કે ઇક સ્વરૂપ બે યોજન બેટલો છે તેમજ આની પરિધિ નો વિસ્તાર વેદિકાની પરિધિ

काया बहिर्गतवनषण्डवत् केवलं तृणशब्दवर्णनमत्र न कार्यमित्याह—‘कण्ठं जाव तण-
विहूणे जेयव्वो’ कृष्णो यावत् तृण विहीनो ज्ञातव्य इति—कृष्णः कृष्णावभासः नीलो
नीलावभासः, इत्यादि, अत्रस्थ पञ्चमसूत्रोक्त वर्णनमत्र बोध्यम् । तृणविहीनः तृण-
शब्दोऽत्र तृणजन्य शब्दपरः, तेन तृणजन्य शब्दविहीन इत्यर्थः अस्योपलक्षणत्वा-
न्मणिशब्द विहीनोऽपि स वनषण्डो बोध्यः, यतः पञ्चवरवेदिका मध्यवर्त्ति वनषण्डस्य
पञ्चवरवेदिका परिवेष्टिततया तत्र वायुप्रवेशाभवाच्चूणानां मणीनां च चलनासम्भवा-
त्परस्परं संघर्षाभावात् शब्दो न सम्भवति ॥ सू० ६ ॥

अधुना जम्बूद्वीपस्य द्वारसंख्याप्ररूपणार्थमाह—

मूलम्—जम्बूद्वीवस्स णं भंते । दीवस्स कइ दारा पणत्ता !
गोयमा ! चत्तारि दारा पणत्ता. तं जहा-विजए १ वेजयंते २ जयंते
३ अपराजिए ४ ॥ सू० ७ ॥

छाया जम्बूद्वीपस्य खलु भदन्त कस्ति द्वाराणि प्रज्ञप्तानि, गौतम ! चत्वारि द्वाराणि
प्रज्ञप्तानि, तद्यथा विजयं १ वेजयन्तं २ जयन्तं ३ अपराजितम् ४ ॥ सू० ७ ॥

टीका—‘जम्बूद्वीवस्स ण इत्यादि । व्याख्या स्पष्टा ॥ सू ७ ॥

विस्तार वेदिका की परिधि के ही बराबर है इस महावनषण्ड का वर्णन जैसा अभी पञ्चवरवेदिका के
बाहर का वनषण्ड वर्णित हुआ है वैसा ही है परन्तु बाहर के वनषण्ड के वर्णन में वह वनषण्ड
कृष्ण है और कृष्णरूप से उसका अवभास होता है इत्यादि रूप से जो कहा गया है सो वह सब
पंचम सूत्रोक्त वर्णन यहां पर भी कर लेना चाहिये परन्तु उस वर्णन में जो तृण और मणियों के
शब्दों का वर्णन किया गया है वह वर्णन यहां पर इसलिये नहीं करना चाहिए कि यह वनषण्ड
पञ्चवर वेदिका से परिवेष्टित है अतः इसमें वायु का प्रवेश न हो सकता है और वायुप्रवेश के
अभाव से वहां के मणियों का एव तृणों का परस्पर में संचलन नहीं हो सकता है इसलिये वे
आपस में सघट्टित नहीं होते हैं टकराते नहीं हैं अतः संघर्ष के अभाव में शङ्कोत्थान नहीं
होता है ॥६॥

नेटवो ज छे. आ २-हावनषंडनु वरुणं उपर पञ्चवरवेदिकानी गहारना वनषंडनु वरुणं कर-
वाभां आण्णु छे तेनु ज छे गहारना वनषंडना वरुणंमां ते वनषंड कृष्णु छे अने कृष्णु
इपथी तेना अवभास थाय छे वगेरे इगमा जे कहेवाभा आवेल छे ते सर्व पंचम सूत्रोक्त
वरुणं अही पञ्च गारुणी देवु जेधंजे पन्तु ते वरुणंमां जे तृण अने मणिओना शण्डोनु
वरुणं करवाभा आवेल छे ते वरुणं अही नेटवो माटे नही करवु जेधंजे के आ वनषंड
पञ्चवर वेदिकाथी परिवेष्टित छे जेथी आभा वायुप्रवेश थर्धं शकते नथी. अने वायु-प्रवेश
ना अभावथी त्याना मणिओ तेमज तृणोनु परस्पर संचलन थर्धं शकतु नथी जेथी तेओ
परस्परमां सघट्टित थतां नथी-अथकता नथी जेथी संघर्षना अभावमां शण्डोत्थान थतु
नथी ॥६॥

एषां द्वाराणां स्थानविशेषनियमनाय प्राह—

मूलम्—कहि णं मंते ! जंबुद्वीवस्स दीवस्स विजए णामं दारे पणत्ते ! गोयमा ! जंबुद्वीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं पणयालीसं जोयण सहस्माइं वीइवइत्ता जंबुद्वीवदीवपुरत्थिमपेरंते लवणसमुद्दपुरत्थिमद्धस्स पच्चत्थिमेणं सीयाए महानईए उप्पि एत्थ णं जंबुद्वीवस्स दीवस्स विजए णामं दारे पणत्ते. अट्ठ जोयणाइं उइहं उच्चत्तेणं चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं तावइयं चेव पवेसेणं सेए वरकणगथूभियाए. जाव दारस्स वण्णओ जाव रायहाणी ॥सू०८॥

छाया—क्व खलु भदन्त ! जम्बूद्वीपस्य द्वीपस्य विजयं नाम द्वारं प्रज्ञप्तम् ? गौतम । जम्बूद्वीपे द्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्य पौरस्त्ये पञ्चसत्त्वारिंशत्तं योजनसहस्राणि व्यति व्रज्य जम्बूद्वीप द्वीप पौरस्त्यपर्यन्ते लवणसमुद्रपौरस्त्यार्द्धस्य पाश्चात्ये सीताया महानद्या उपरि अत्र खलु जम्बूद्वीपस्य विजय नाम द्वारं प्रज्ञप्तम् अष्ट योजनानि ऊर्ध्वमुच्चत्वेन चत्वारि योजनानि विक्कम्भेण तावदेव प्रवेशेन, श्वेत वरकनकस्तूपिकाकं यावद् द्वारस्य वर्णको यावद् राजधानी ॥सू०८॥

‘कहि णं मंते’ इत्यादि ।

टीका—‘कहि णं मंते ! जंबुद्वीवस्स दीवस्स विजए णामं दारे पणत्ते’ हे भदन्त ! जम्बूद्वीपस्य द्वीपस्य विजयं नाम द्वारं क्व-कस्मिन् प्रदेशे प्रज्ञप्त कथितम् ?’ इति गौतमेन पृष्ठो भगवान् महावीर आह—‘गोयमा’ गौतम ! ‘जंबुद्वीवे दीवे

“जंबુદ્વીપ કી દ્વારસહ્યા કા વર્ણે—

જંબુદ્વીવસ્સ ણ મંતે ! દીવસ્સ કઈ દારા પણત્તા”

इस सूत्र की व्याख्या स्पष्ट है ॥७॥

ये द्वार कहाँ है ? इसका कथन —

“कहि णं मंते ! जंबुद्वीवस्स दीवस्स विजए णामं दारे पणत्ते” इत्यादि ।

हे भदन्त ! जंबूद्वीप नाम के द्वीप का विजय द्वार कहाँ पर कहा गया है ? इसके उत्तर में

જમ્બુદ્વીપની દ્વાર સહ્યાનુ વર્ણન —

‘જંબુદ્વીવસ્સ ણ મંતે ! દીવસ્સ કઈ દારા પણત્તા’

આ સૂત્રની વ્યાખ્યાસ્પષ્ટ છે

આ દ્વારો કયા કયા છે ? તેનું વર્ણન આ પ્રમાણે છે—

“કહિણં મંતે ! જંબુદ્વીવસ્સ દીવસ્સ વિજય ણામં દારે પણત્તે—

इति भदन्त ! जम्बूद्वीपनामक द्वीपनु विजय द्वार कथा कडेवाभा आवेसु

मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं जम्बूद्वीपे द्वीपे स्थितस्य मन्दरस्य पर्वतस्य पौर-
स्त्ये पूर्वदिशि 'पणयालीसं जोयणसहस्साइं वीइवइत्ता, पञ्चचत्वारिंशत् पञ्चचत्वारिंश-
त्संख्यकानि योजनसहस्राणि व्यतिव्रज्य अतिक्रम्य 'जंबुद्वीव दीवपुरत्थिमपेरंते जम्बू-
द्वीप' द्वीपपौरस्त्यपर्यन्ते-जम्बूद्वीपाभिधद्वीपपूर्वपर्यन्तं 'लवणसमुद्रपुरत्थिमद्वस्स
पच्चत्थिमेणं' लवणसमुद्रपौरस्त्यार्द्धस्य पाश्चात्ये पाश्चात्यभागे 'सीयाए महाणईए
उप्पि' सीतायाः महानद्याः उपरि यं प्रदेशोऽस्ति, 'एत्थ णं जंबुद्वीवस्स दीवस्स' अत्र
अस्मिन् प्रदेशे खलु जम्बूद्वीपस्य द्वीपस्य 'विजए णाम दारे पणत्ते' विजयं नाम द्वारं
प्रज्ञप्तम् । तच्च 'अट्ट जोयणाइं उइह उच्चत्तेणं' अट्ट-अट्ट संख्यानि योजनानि ऊर्ध्वम्
उपरि उच्चत्वेन उच्छ्रयेण-अनन्तत्वेनेत्यर्थः, तथा-'चत्तारि जोयणाइं विक्खंमेणं' चत्वारि-
योजनानि विष्क्रमेण चतुर्योजनपरिमाणविस्तारयुक्तमित्यर्थः, 'तावइए चेव पवे-
सेणं' तावदेव-चतुर्योजनपरिमाणमेव प्रवेशेन प्रवेशमार्गावच्छेदेन प्रज्ञप्तम्, तत्पुनः कीदृश
मित्याह-'सेए' इत्यादि । 'सेए' इवेतं-इवेतवर्णयुक्तम्, तथा 'वर कणगथूमियाए' वरकनक

प्रभु कहते है-"गोयमा । जंबुद्वीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेण पणयालीसं जोयणसहस्साइं
वीइवइत्ता" हे गौतम । जम्बूद्वीप नामके इस द्वीप में स्थित मन्दर पर्वत की पूर्वदिशा में ४५ हजार
योजन आगे जाने पर "जंबुद्वीवेदीवे पुरत्थिमपेरंते लवणसमुद्रपुरत्थिममद्वस्स पच्चत्थिमेण
सीयाए महाणईए उप्पि" जम्बूद्वीप के पूर्व के अन्त में और लवण समुद्र से पूर्वदिशा के पश्चिम
विभाग में सीता महानदी के ऊपर "एत्थ णं जंबुद्वीवस्स दीवस्स विजए णाम दारे पणत्ते"
जम्बूद्वीप का विजय नाम का द्वार कहा गया है "अट्टजोयणाइउइह उच्चत्तेणं" इस द्वार की
ऊँचाई आठ योजन की है तथा "चत्तारि जोयणाइ विक्खंमेणं" इसका विस्तार ऊँचाई से आधा
है-चार योजन का है "तावइयं चेव पवेसेणं" और प्रवेश भी-प्रवेश मार्ग भी इतने ही योजन
का अर्थात् चार योजन का है "सेए वरकणगथूमियाए" यह द्वार धवल वर्ण वाला है और
शिखर इसकी उत्तम स्वर्ण की बनी हुई है "जाव दारस्स वण्णओ जाव रायहाणी" इस विजय

उत्तरमा प्रभु कहे थे-"गोयमा । जंबुद्वीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेण पणयाली
सं जोयणसहस्साइ वीइवइत्ता "हे गौतम । जम्बूद्वीप नामके आ द्वीपमा स्थित मन्दर
पर्वतानी पूर्व दिशाभा ४५ हजार योजन आगेण जावथी "जंबुद्वीव दीव पुरत्थिमपेरंते
लवणसमुद्र पुरत्थिमद्वस्स पच्चत्थिमेण सीयाए महाणईए उप्पि "जम्बूद्वीपानी पूर्व दिशाने
अतो अने लवण समुद्राधीपूर्व दिशाना पश्चिमविभागमा सीता महानदीनी उपर "एत्थ णं
जंबुद्वीवस्स दीवस्स विजए णाम दारे पणत्ते" जम्बूद्वीपनु विजय नामके द्वार कहेवामा
आवेत्तं । "अट्टजोयणाइं उइह उच्चत्तेणं" आ द्वारानी अथाए आठ योजन ओटली छे
तेमज "चत्तारि जोयणाइ विक्खंमेण" आने विस्तार ओ आध करता अपेा छे ओटली छे
आर योजन ओटली छे "तावइयं-चेव पवेसेण" अने प्रवेश पण-प्रवेशमार्ग पण आर
योजन ओटली छे. "सेए वरकणगथूमियाए" आ द्वार धवलवर्णवाणु छे अने आनु शिखर

સ્તૂપિકાકમ્ ઉત્તમસ્વર્ણમયશિખરયુક્તમ્, 'જાવ દારસ્સ વણ્ણઓ' યાવત્ દારસ્ય વર્ણકઃ પદસમૂહોઽત્ર बोध्यः कियदवधिः । इत्याह—'जाव रायहाणी' यावत् राजधानी विजय देव-स्य या विजयाभिधा नाम राजधानी सो यावद् वर्ण्यते तावत्पर्यन्ते सर्व पदजातं व्याख्यासहितं सर्वमत्र जीवाभिगमसूत्रस्य तृतीयप्रतिपत्तौ विलोकनीयमिति ॥ सू ८ ॥

अधुना विजयादि द्वाराणां परस्परमन्तरं दर्शयितुमाह—

मूलम्—जंबुद्वीवस्म भंते दीवस्स दारस्स य दारस्स य केवइए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमो । अउणासीइं जोयणसहस्साइं वावण्णं च जोयणाइं देसुणं च अउजोयणं दारस्स य दारस्स य अबाहाए अंतरे पण्णत्ते अउणासोइ सहस्सा, वावण्णं चैव जोयणा हुंति । उणं च अउजोयणं. दारंतरे जंबुद्वीवस्स ॥सू०९॥

છાયા—જમ્બૂદ્વીપસ્ય ચલુ મદન્ત ! દ્વીપસ્ય દારસ્ય ચ દારસ્ય ચ કિયત્ અવાધયા અન્તરં પ્રશ્નમ્ । ગૌતમ, ઇકોનાશીતિર્યોજનસહસ્રાણિ દ્વિપઞ્ચાશ્ચચ યોજનાનિ દેશેનં ચ અર્દ્ધયોજનં દારસ્ય ચ દારસ્ય ચ અવાધયા અન્તર પ્રશ્નમ્ । ઇકોન, અશીતિઃ સહસ્રાણિ દ્વિપઞ્ચાશ્ચદેવ યોજનાનિ ભવન્તિ । ઋનચ અર્દ્ધયોજનં દારાન્તરં જમ્બૂદ્વીપસ્ય ॥ ૯ ॥

‘જંબુદ્વીવસ્સ ણં મંતે’ इत्यादि ।

टीका—गौतमः पृच्छति ‘जंबुद्वीवस्स णं मंते दीवस्स दारस्स य दारस्स य’ हे भदन्त ! जम्बूद्वीपस्य खलु द्वीपस्य सम्बन्धिनो दारस्य च दारस्य च चतुर्णां द्वाराणाम् एकस्माद् द्वाराद् द्वितीयस्य दारस्य परस्परं ‘केवइए’ कियत्—कि प्रमाणकम् ‘अबाहाए’

દાર કા બર્ણન વિજયા નામક રાજધાનીતક કા જૈસા જીવાભિગમ સૂત્ર મેં ક્રિયા ગયા હૈ જૈસા હી વહ સબ વર્ણન યહાં પર મી કહ લેના યાહિયે યહ સબ વર્ણન જીવાભિગમ સૂત્ર મેં તૃતીય પ્રતિપત્તી મેં ક્રિયા ગયા હૈ ॥૮॥

विजयादि द्वारो का पारस्परिक अन्तर कथन—

“जंबुद्वीवस्स णं मंते ! दीवस्स दारस्स य दारस्स य इत्यादि ।

टीकार्थ—गौतमस्वामी ने अब प्रश्न से ऐसा पूछा है—हे भदन्त ! जम्बूद्वीप के एक द्वार से दूसरे

ઉત્તમ સ્વર્ણ નિર્મિત છે. “જાવ દારસ્સ વણ્ણઓ જાવ રાય ની” આ વિજયદારસ્ય વર્ણન વિજયા નામક રાજધાની સુધીનું જેમ ‘જીવાભિગમ’ ‘સૂત્ર’ માં કરવામાં આવેલ છે તેવું જ વર્ણન અહીં પણ સમજવું જોઈ એ આ સર્વ વર્ણન ‘જીવાભિગમ સૂત્રની તૃતીય પ્રતિપત્તિમાં કરવામાં આવેલ છે ॥૮॥

विजयादि द्वारोऽनु पारस्परिके अन्तर कथन—

‘जंबुद्वीवस्स णं मंते ! दीवस्स दारस्स य दारस्स य’ इत्यादि सूत्र ॥९॥

टीकार्थ—गौतमस्वामीએ પ્રશ્નને પ્રશ્ન કર્યો કે કે બહત ! જંબુદ્વીપ ના એક દ્વારથી બીજા દ્વાર

અવાધયા—પરસ્પર સંઘર્ષાભાવેન ‘અંતરે’ અન્તર-વ્યવધાનં ‘પણ્ણત્તે’ પ્રજ્ઞપ્તમ્ ? મગવાનાદ—
‘ગોયમા !’ હે ગૌતમ ! ‘અઝણાસીહં જોયણસહસ્સાઈ’ વાવણ્ણં ધ જોયણાઈ’ ઇકોના-
શીતિઃ યોજનસહસ્રાણિ દ્વિપઠ્ઠાશચ્ચ યોજનાનિ ‘દેસૂણ’ દેશેનં દેશેન કિઞ્ચિદેશેન
ઝનં ન્યૂનં ચ ‘અદ્ધજોયનં’ અદ્ધયોજનં ‘દારસ્સય દારસ્સય’ દ્વારસ્સ ચ દ્વારસ્સ ચ
‘અવાહાપ્ અંતરે’ અવાધયા અન્તર ‘પણ્ણત્તે’ પ્રજ્ઞપ્તમ્ । તદેવ વિશદયતિ તથાહિ—
જમ્બૂદ્વીપપરિધિપ્રમાણમ્ સપ્તવિંશત્યુત્તરશતદ્વયાધિક પોહશસહસ્રાધિકલક્ષત્રય (૩૧
૬૨૨૭) મિતાનિ યોજનાનિ ક્રોશત્રયમ્ ૩ અષ્ટાવિંશત્યધિકં ધનુઃ શતમ્ ૧૨૮ ત્રયો-
દશાઙ્ગુલાનિ ૧૩ અર્દ્ધાઙ્ગુલં ચેતિ । અસ્માત્ વિજયાદિદ્વારચતુષ્ટસ્યાષ્ટાદશ યોજનરૂપ
વિસ્તારઃ પૃથક્ ક્રિયતે, પ્રતિદ્વારં વિસ્તારસ્તુ ચત્વારિ યોજનાનિ ૪ દ્વારશાઘાદ્ય
વિસ્તારચ્ચ ક્રોશદ્વયમ્ ૨ ક્રોશદ્વયસ્ય ચતુર્ણુ દ્વારેણ સત્ત્વેન ચતુર્ભિગુણનેન ક્રોશાષ્ટકં
ભવતિ તત્ત્વ દ્વે યોજને તયો પોહશમિર્યોજનૈઃ સહ યોજનયાઽષ્ટાદશયોજનાનિ ૧૮
સમ્પન્નાનિ । તસ્માત્ પૂર્વોક્તપરિધિપરિમાણાદષ્ટાદશાપનયને શેપપરિધિપરિમાણસ્ય

દ્વાર તક કા અવ્યવહિત અન્તર કિતના હૈ ? હસકે ઉત્તર મેં પ્રમુ કહતે હૈ—“ગોયમા । અઝ-
ણાસીહં જોયણસહસ્સાઈ વાવણ્ણં ધ જોયણાઈં દેસૂણં ધ અદ્ધજોયણં દારસ્સ ય દારસ્સ ય અવા-
હાપ્ અંતરે પણ્ણત્તે” હે ગૌતમ । જમ્બૂદ્વીપ કે એક દ્વાર સે દૂસરે દ્વાર તક અવ્યવહિત અન્તર
૭૯ હજાર ૫૨ યોજન તથા કુલ કમ આધે યોજન કા હૈ યહ અન્તર હસ પ્રકાર સે નિકાલા
ગયા હૈ—જમ્બૂદ્વીપ કી પરિધિ કા પ્રમાણ ૩૧૬૨૨૭ ત્રીન લાલ્ સોલ્હ હજાર દો સૌ સત્તાઈસ
યોજન ૩ ત્રીન કોશ ૧૨૮ ધનુષ ઓર ૧૩॥ અંગુલ કા હૈ હસ પ્રમાણ મેં સે વિજયાદિ
ચાર દ્વાર કા ૧૮ યોજનરૂપ જો વિસ્તાર હૈ વહ અલગ કર દેના ચાહિયે હર એક દ્વાર કા વિસ્તાર
ચાર યોજન કા હૈ દ્વાર શાઘાદ્ય કા વિસ્તાર ૨ કોશ કા હૈ ૪ કોશો મેં ક્રોશદ્ય કે સઘાવ
સે ચાર સે ગુણા કરને પર ૮ કોશ હોતે હૈ ૮ કોશ કે ૨ યોજન હૈ હન દો યોજનો કો ૧૬
યોજનો કે સાથ મિલાને સે ૧૮ યોજન હો જાતે હૈ પૂર્વોક્ત પરિધિ પ્રમાણ મેં સે ૧૮ યોજન

અવ્યવહિત અંતર કેટલું છે ? આના જવાબમાં પ્રભુ કહે છે કે ‘ગોયમા ! અઝણાસીહં જોયણ
સહસ્સાઈ વાવણ્ણં ધ જોયણાઈં દેસૂણં ધ અદ્ધજોયણં દારસ્સ ય દારસ્સ ય અવાહાપ્
અંતરે પણ્ણત્તે” હે ગૌતમ । જમ્બૂદ્વીપના એક દ્વારથી બીજાદ્વાર સુધીનું અવ્યવહિત અંતર
૭૯ હજાર ૫૨ યોજન તેમજ કઈક સ્વલ્પ અર્ધાં યોજન જેટલું છે આ અંતર આ રીતે બાણ-
વામા આવે છે કે જમ્બૂદ્વીપની પરિધિનું પ્રમાણ ૩૧૬૨૨૭ યોજન ૩ ગાઉ ૧૨૮ ધનુષ
અને ૧૩॥ અશ્લ જેટલું છે, આ પ્રમાણમાંથી વિજયાદિ ચારદ્વાર ના ૧૮ યોજનનો જે વિસ્તાર
છે તે જુદો જ રાખવો બેઠોએ દરેકે દરેક દ્વારનો વિસ્તાર ચાર યોજન જેટલો છે દ્વાર-
શાઘાદ્યનો વિસ્તાર ૨ ગાઉ જેટલો છે, ૪ ગાઉમાં ક્રોશદ્યના સઘાવથી ચારથી શુષ્ક
કરવાથી ૮ ગાઉ થાય છે ૮ ગાઉના ૨ યોજન થાય છે આ બે યોજનોને ૧૬ યોજનોની
સાથે એકત્ર કરવાથી ૧૮ યોજન થઈ બાય છે પૂર્વોક્ત પરિધિના પ્રમાણમાંથી ૧૮ યોજન

નવોત્તરદ્વિશતાધિકપોઢશસહસ્રપદ્ધિતલક્ષત્રયપરિમિતસ્ય (૨૧૬૨૦૯) ચતુર્ભિર્ભાગે હ્રતે લબ્ધાનિ દ્વિપઠ્ચાશદધિકાનિ ઇકોનાશીતિ સહસ્રાણિ ક્રોશશ્ચૈકઃ । પરિધિ સત્કસ્ય ક્રોશત્રયસ્ય ચતુર્ભિર્ભાગે હ્રતે લબ્ધઃ પાદોન ઇકઃ ક્રોશઃ પૂર્વલબ્ધક્રોશૈકેન સયોજને જાતં પાદોનં ક્રોશદ્વયમ્ (૧૧૧) પરિધિ સત્કાનામષ્ટાવિશત્યધિકશ્ચૈક (૧૨૮) ધનુષાં ચતુર્ભિર્ભાગે હ્રતે લબ્ધાનિ દ્વાત્રિશદ્ ધનૂપિ (૩૨) પરિધિસત્કાનાં ત્રયોદશાંગુલાનાં ચતુર્ભિર્ભાગે હ્રતે લબ્ધાનિ ત્રીણ્યગુલાનિ ૩ અવશિષ્ટમેકાંગુલમ્ ઇતદેવાંગુલં પરિધિ-સત્કેનાર્દ્ધાંગુલેન સહ મીલને જાત સાદૈકમંગુલમ્ , ઇકાંગુલસ્યાષ્ટૌ યવાં ઇતિ સાદૈકાંગુલસ્ય યવકરણે જાતા દ્વાદશ યવાઃ, ઇપાં ચતુર્ભિર્ભાગે હ્રતે લબ્ધાઃ પૂર્ણાસ્ત્રયો યવાઃ । ઇત્યેકૈકસ્ય દ્વારસ્યાન્તરં જાત-દ્વિપઠ્ચાશદધિકૈકોનાશીતિ સહસ્ર યોજનાનિ (૭૯૦૫૨) પાદોન ક્રોશદ્વયં (૧૧) દ્વાત્રિશદ્ધનૂપિ (૩૨) ત્રીણ્યગુલાનિ ત્રયો યવાશ્ચ (૬૯૦૫૨ યો , ૧૧૧ ક્રો૦, ૩૨ ધનુ, ૩ અ, ૩ યવ) ઇત્યેવમાયાતમેકૈક દ્વારાન્તરમ્ ઇકોનાશીતિસહસ્રાણિ દ્વિપઠ્ચાશદધિકાનિ યોજનાનિ કિઞ્ચિદ્નમર્ધયોજન ચેતિ । ઇત્યેવ દૃઢીકર્તુ ઇકા ગાથામાહ—“અડળાસીહ સહસ્તા, વાવળ્ણ ચેવ જોયળા હુંતિ ।

ક્રમ કરને પર શેષ રહે હુપ ૨૧૬૨૦૯ કો ૪ સે માજિત કરન પર ૫૨ અધિક ૭૯ હજાર યોજન ઔર ૧ કોશ લબ્ધ હોતા હૈ અર્થાત્ ૭૯ હજાર ૫૨ યોજન ઇવ ૧ કોશ આતા હૈ પરિધિ સબધી ત્રીન કોશ કો ૪ સે માજિત કરને પર' ૧૧૧ કોશ લબ્ધ હોતા હૈ ઇસમેં પૂર્વલબ્ધ ઇક કોશ મિલને સે ૧૧૧ હો જાતે હૈ અવ ૧૨૮ ધનુષ મેં ૪ કા માગ દેને પર ૩૨ ધનુષ હોતે હૈ પરિધિ કે જો ૧૨ અંગુલ હૈ ડનમેં ૪ કા માગ દેને રપ ૩ અંગુલ લબ્ધ હોતે હૈ ઔર ૧ અંગુલ બચતા હૈ ઇસ ઇક અંગુલ કો પરિધિ કે આધે અંગુલ કે સાથ જોડ દેને સે ૧૧ અંગુલ હો જાતા હૈ આઠ જો કા ઇક અંગુલ હોતા હૈ ૧૧ અંગુલ કે ૧૨ જો હોતે હૈ । ૧૨ મેં ૪ માગ દેને સે ૩ અંગુલ આતે હૈ, ઇસ તરહ ઇક ઇક દ્વાર કા અતર ૭૯૦૫૨ યોજન ૧૧૧ કોશ, ૩૨ ધનુષ ૩ અંગુલ ઔર ૩ જો કા નિકલ આતા હૈ । યહી જાત “અડ-

ક્રમ કરવાથી અવશિષ્ટ ૭૯૬૨૦૬ ને નથી ભાજિત કરવાથી પર અધિક ૭૬ હજાર યોજન અને ૧ ગાઉ લબ્ધ થાય છે એટલે કે ૭૬ હજાર પર યોજન અને ૧ કોશ આવે છે. પરિધિ સંબધી ત્રણ કોશને ૪ થી ભાજિત કરવાથી ૧૧૧ કોશ લબ્ધ થાય છે આમા પૂર્વ લબ્ધ એક કોશનો સરવાળો કરવાથી ૧૧૧ થઈ જાય છે હવે ૧૨૮ ધનુષમા ૪ નો ભાગાકાર કરવાથી ૩૨ ધનુષ થાય છે પરિધિના જે ૧૨ અંગુલો છે તેમા આર નો ભાગાકાર કરવાથી ૩ અંગુલ લબ્ધ થાય છે અને ૧ અંગુલ શેષ રહે છે આ એક અંગુલ ને પરિધિના અર્ધા અંગુલની સાથે સરવાળો કરવાથી ૧૧ અંગુલ થઈ જાય છે આઠ જવનો એક અંગુલ થાય છે ૧૧ અંગુલના ૧૨ જવ હોય છે ૧૨ મા ૪ નો ભાગાકાર કરવાથી ૩ અંગુલ આવે છે આ પ્રમાણે એક એક દ્વારનું અતર ૭૬૦૫૨ યોજન ૧૧૧ ગાઉ ૩૨ ધનુષ ૩ અંગુલ અને ૩ જવ જેટલું થાય છે એજ વાત ‘અડળાસીહ સહસ્તા વાવળ્ણ ચેવ જોયળા હુંતિ ક્રુણ ચ મદ્ધ જોયળા દ્વારંતરં જંબુદીવસલ’ આ ગાથા વડે પ્રકટકરવામા આવી છે ૧૬૧

ऊर्णं च अद्भुतजोयणा दारतरं जंबुद्वीवस्स ॥ छाया-एकोन, अशोतिः सहस्राणि
द्विपञ्चाशदेव योजनानि भवन्ति । ऊर्णं च अर्द्धयोजनं द्वारान्तरं जम्बूद्वीपस्य ॥
व्याख्या स्पष्टा ॥सू० ९।

इत्थं जम्बूद्वीपविषये स्वपृष्ठ सकलप्रश्नानामुत्तरं निश्चय्य गौतमः स्वापेक्षया
ऽऽसन्नभरतक्षेत्रस्वरूपं जिज्ञासुस्तृतीयसूत्रोक्तं चतुर्विधप्रश्नवर्तिनम् आकारभावरूपं चतुर्थ
प्रश्नमाश्रित्य पृच्छति —

मूलम्—कहि णं भंते ! जंबुद्वीवे दीवे भरहे णामं वासे
पण्णत्त गोयमा! चुल्लहिमवंतस्स वोसहरपव्वयस्स दाहिणेणं दाहिणलवण-
समुदस्स उत्तरेणं पुरत्थिमलवणसमुदस्स पच्चत्थिमेणं पच्चत्थिमलवण-
समुदस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं जंबुद्वीवे दीवे भरहे णामं वासे पण्णत्ते
खाणु बहुले कंटगबहुले विसमबहुले दुग्गबहुले पव्वयबहुले पवायबहुले
उज्झरबहुले णिज्झरबहुले खड्डाबहुले दरिबहुले णईबहुले दहवबहुले
रुक्खबहुले गुच्छबहुले गुम्भबहुले लयाबहुले वल्लीबहुले अडवीबहुले
सावयबहुले तणबहुले तक्खबहुले डिबहुले डमरबहुले इब्भिक्ख बहुले
इकालबहुले पासंडबहुले किवणबहुले वणीमगबहुले ईतिबहुले माखिबहुले
कुबुद्धिबहुले अणावुद्धिबहुले रायबहुले रोगबहुले संकिलेसबहुले अभि-
क्खणं अभिक्खणं संखोह बहुले पाईणेपडीणायए उदीणदाहिणवित्थिण्णे
उत्तरओ पलिअंकसंठाणसंठीए दाहिणओ धणुपिड्डसंठिए तिधा लवण-
समुदं पुट्ठे गंगा सिंघुहिं महाणईहिं वेयड्ढेण य पव्वएण छम्भागप-
विमत्ते जंबुद्वीव दीव णउयसयभागे पंचछव्वीसे जोयणसए छच्च
एगूणवीसइभाए जोयणस्स विक्खंमेण । भरहस्स णं वोसस्स बहु मज्ज-
देसभाए एत्थणं वेयड्ढे णामं पव्वए पण्णत्ते जे णं भरहं बासं दुहा विभय-
माणे २ चिट्ठइ, तं जहा—दाहिणद्धभरहं च उत्तरद्धभरहं च ॥सू० १०॥

छाया क खलु भवन्त ! जम्बूद्वीपे द्वीपे भरतं नाम वर्षं प्रवृत्तम्, गौतम ! क्षुल्ल-
हिमवतो वर्षधरपर्वतस्य दक्षिणे दक्षिणलवणसमुद्रस्य उत्तरे पौरस्त्यलवणसमुद्रस्य पश्चिमे
णासोइ सहस्रा बावणं चैव जोयणा हुंति ऊर्णं च अद्भुतजोयणा दारंतरं जंबुद्वीवस्स” इस
गाथा द्वारा प्रकट की गई है ॥९॥

पाश्चात्यलवणसमुद्रस्य पौरस्त्ये, अत्र खलु जम्बूद्वीपे द्वीपे भरतं नाम वर्षं प्रज्ञप्तम् स्थाणुबहुलं कण्टकबहुलं विषमबहुलं दुर्गंबहुलं पर्वतबहुलं प्रपातबहुलम् अवग्नरबहुलं निर्झरबहुलं गर्तबहुलं दरीबहुलं नदीबहुलं हृदयबहुलं वृक्षबहुलं गुच्छबहुलं गुरुमबहुलं लताबहुलं वल्लोढबहुलम् अटवीबहुलं श्वापदबहुलं तृणबहुलं तस्करबहुलं डिम्बबहुलं उमरबहुलं दुर्भिन्नबहुलं दुष्कालबहुलं पाषण्डबहुलं कृपणबहुलं वनीपकबहुलम् इतिवहुलं मारिवहुलं कुर्वृष्टबहुलम् अनावृष्टिबहुलं राजबहुलं रोगबहुलं संकलेशबहुलम् अभीष्टणमभीक्षणं संक्षोभबहुलं प्राचीनप्रतीचीनायतम् उदीचीनदक्षिणविस्तोर्णम् उत्तरतः पत्यङ्गसंस्थानसंस्थितं दक्षिणतो घनुषृष्टसंस्थितम् त्रिधा लवणसमुद्रं स्पृष्टः गङ्गासिन्धुभ्यां महानदीभ्यां वैताढ्येन च पर्वतेन पद्मभागरविभक्तं जम्बूद्वीपद्वीपं नवतिशतभागं पञ्चपड्विंशं योजनशतं षट् च एकोनविंशति भागान् योजनस्य विष्कम्भेण । भरतस्य खलु वर्षस्य बहुमध्यदेशभागे अत्र खलु वैताढ्यो नाम पर्वतः प्रज्ञप्तः, य खलु भरतं वर्षं द्विधा विभजमानो विभजमानस्तिष्ठति, तद्यथा-दक्षिणार्द्धभरतं च उत्तरार्द्धभरतं च ॥ सू० १० ॥

टीका—‘कहि णं भंते’ इत्यादि गौतमस्वामी पृच्छति—‘कहि णं भंते ! जंबुद्वीवे दीवे भरहे णामं वासे पण्णत्ते’ हे भदन्त ! जम्बूद्वीपे द्वीपे भरतं नाम वर्षं क्व-कस्मिन् प्रदेशे प्रज्ञप्तं कथितम्, भगवानाह-गोयमा !’ हे गौतम ! ‘खुल्लहिमवंतस्स’ खुल्लहिमवत-लघुहिमवतः, ‘वासहरपव्वयस्स’ वर्षधरपर्वतस्य भरतादिक्षेत्रसीमा कारिणः पर्वतविशयस्य, ‘दाहिणेणं’ दक्षिणे-दक्षिणदिग्भागे ‘दाहिणलवणसमुद्रस्स’ दक्षि-

इस प्रकार से जम्बू द्वीप के विषय में अपने द्वारा पूछे गये सकल प्रश्नोका उत्तर सुनकर गौतम स्वामी अपनी स्थिति की अपेक्षा आसन्नवर्ती भरतक्षेत्रके स्वरूप को जानने का इच्छा से प्रेरित होकर तृतीय सूत्रगतचतुर्विधप्रश्न के अन्तर्गत आकारभावस्वरूप चतुर्थ प्रश्न को लेकर के प्रभु से ऐसा पूछने हैं—“कहि णं भंते ! जंबुद्वीवे दीवे भरहे णामं वासे पण्णत्ते ?” इत्यादि ।

टीकार्थ—“कहि णं भंते ! जंबुद्वीवे दीवे भरहे णामं वासे पण्णत्ते !” हे भदन्त ! जम्बूद्वीप नाम के द्वीप में भरत नाम का वर्ष-क्षेत्र कहा पर कहा गया है ! इसके उत्तरमें प्रभु कहते हैं—“गोयमा ! खुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणेण दाहिणलवणसमुद्रस्स उत्तरेण पुरथिम

आ प्रभाणे जंभूद्वीपना सण्णधमा पोताना खवं प्रश्नोना जवाणे सांभणीने इवे गौतम स्वामी पोतानी स्थितानी अपेक्षा आसन्नवर्ती भरत क्षेत्रना स्वरूपने लघुपानी ध्वच्छाशी प्रेरित यर्धने तृतीयसूत्रगत चतुर्विध प्रश्नानी अतर्गत आकारभाव रूप चतुर्थ प्रश्नने लधने प्रभु ने आ प्रभाणे पूछे छे हे—

‘कहिण भंते ! जंबुद्वीवे दीवे भरहे णामं वासे पण्णत्ते ?’ इत्यादि सूत्र-१०

टीकार्थ—हे भदन्त ! जंभूद्वीप नामक द्वीपमा भरतनामक वर्ष-क्षेत्र-कथा कहेवाभा आवेछ छे ? आना जवाणमा प्रभु कहे छे—‘गोयमा ! खुल्लहिमवंतस्स वास-

ળવણસમુદ્રસ્ય 'ઉત્તરેણ' ઉત્તરે-ઉત્તરદિગ્ભાગે, 'પુરત્થિમલવણસમુદ્રસ્સ પચ્ચત્થિમેણ' પૌરસ્ત્યલવણસમુદ્રસ્ય પશ્ચિમે-પશ્ચિમદિગ્ભાગે 'પચ્ચત્થિમલવણસમુદ્રસ્સ' પાશ્ચાત્યલવણસમુદ્રસ્ય, 'પુરત્થિમેણ' પૌરસ્ત્યે-પૂર્વદિગ્ભાગે, 'एत्थ णं जंबूद्वीवे दीवे भरहे णाम वासे पणत्ते' અત્ર ચલ્લ જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે ભરતં નામ વર્ષ પજ્ઞાપ્તમ્ । તત્ કીદ્દશમ્ ? इति जिज्ञासायामाह-'स्त्राणु बहुले' स्थाणुबहुलम्-स्थाणुभिः पल्लवादिरहितशुष्कवृक्षैः 'ढूठा' इति प्रसिद्धैः, बहुलम् व्याप्तम् यद्वा-बहुलाः स्थाणवो यस्मिन्स्तत्तथा, एवमग्रे ऽपि 'कंटगबहुले' कण्टकबहुलं बर्बुरवदरीखदिरादि कण्टकव्याप्तम्, 'विसमबहुले' विषमबहुलम् निम्नोच्चस्थानव्याप्तम्, 'दुग्गबहुले' 'दुर्गबहुलम्' दुष्प्रवेशस्थानव्याप्तम्

લવણસમુદ્રસ્સ પચ્ચત્થિમેણ પચ્ચત્થિમ લવણસમુદ્રસ્સ પુરત્થિમેણ एत्थण जम्बुद्वीवे दीवे भरहे णामं वासे पणत्ते" हे गौतम । भरतादि क्षेत्रो को सीमा करने वाले लघुहिमवान् पर्वत के दक्षिणदिग्भाग में, दक्षिणदिग्वर्ती लवण समुद्र के उत्तरदिग्भाग में पूर्वदिग्भागवर्ती लवण समुद्रकी पश्चिम दिशामें एव पश्चिमदिग्भागवर्ती लवण समुद्रकी पूर्वदिशा में यह जम्बूद्वीपगत भरतक्षेत्र है, यह भरत क्षेत्र-"स्त्राणुबहुले, कंटगबहुले, विममबहुले, दुग्गबहुले पव्वयबहुले, पवायबहुले, उज्जर बहुले" स्थाणु बहुल है अर्थात् इसमें स्थाणुओं की-टूठों की अधिकता है. ये टूठ पत्र पुष्पादि से रहित होते हैं और निरस-शुष्क होते हैं-अर्थात् जो वृक्ष उखट जाते है वे पत्र पुष्पादि से रहित होते हुए सूख जाते है और जमीन में ही गढे रहते है इन्हें ही स्थाणु कहा गया है । ऐमे टूठों से यह भरतक्षेत्र व्याप्त है. अथवा ऐसे टूठों की इस भरतक्षेत्र में बहुलता-अधिकता है-तथा ऐसे ही वृक्षों की यहां बहुलता है जो कण्टको वाले है-जैसे-बबूल, बेर और खैर आदि के वृक्ष यहां पर होते है यहां की जमीन का भाग अधिकांश ऐसा ही है कि जो नीचाऊँचा है सर्वथा सम नहीं है बहुत से स्थान

एपव्वयस्स दाह्णिणं दाह्णिणलवणसमुदस्स उत्तरेणं पुरत्थिमलवणसमुदस्स पच્चत्थिमेण पच્चत्थिमलवणसमुदस्स पुरत्थिमेण एत्थणं जम्बुद्वीवे दीवे भरहे णामं वासे पणत्ते" हे गौतम । भरतादि क्षेत्रोनी सीमा करनार लघु हिमवान् पर्वतना दक्षिण दिग् भागभा दक्षिण दिग्वर्ती लवण समुद्रना उत्तरदिग्भागभा पूर्व दिग् भागवर्ती लवण समुद्रनी पश्चिम दिशाभां अने पश्चिम दिग् भागवर्ती लवण समुद्रनी पूर्व दिशाभां आ जम्बूद्वीपगत भरत क्षेत्र छे. आ भरत क्षेत्र "स्त्राणु बहुले, कंटग बहुले, विसम बहुले दुग्ग बहुले पव्वय बहुले पवायबहुले उज्जरबहुले" स्थाणु बहुल छे, ओटवे के आभा स्थाणुओनी-हुंठाओनी-अधिकता छे आ स्थाणु ओ पत्र पुष्पादिथी रहित डोय छे अने नीरस-शुष्क डोय छे ओटवे के जे वृक्षो जियडी जाय छे ते अथा पत्र-पुष्पादि रहित थर्ध ने शुष्क थर्ध जाय छे अने जमीनभा ज जिला रहे छे. ओमने ज स्थाणु हुंठे-वाभा आवेल छे. ओवा हुंठाओयी आ भरतक्षेत्र व्याप्त छे अथवा ओवा हुंठाओनी आ भरत क्षेत्रभा बहुलता अधिकता-छे तेमज्झ कंटवाणा वृक्षोनी पणु अही अधिकता छे जावण, गोरडी, जेर वगेरे अनेक वृक्षो अही पुष्कण प्रमाणुभां छे अहीनी जमीनना अधिकांश भाग

‘પવ્વયવહુલે’ પર્વતવહુલં અનેકપર્વતવ્યાપ્તમ્ ‘વચાય વહુલે’ પ્રપાતવહુલમ્ પ્રપાતા ધૃગવઃ પર્વતતઃ પતનસ્થાનવિશેષાઃ, યત્ર મુમૂર્ષવો જનાઃ પ્રાણાન પરિત્યક્તું નિપતન્તિ, તૈર્વહુલમ્, ‘ઉજ્જરવહુલે, અવજ્જરવહુલમ્ પર્વતતટતો જલાધઃપતનવ્યાપ્તમ્, ‘ગિજ્જરવહુલે’ નિર્ઝરવહુલમ્ પર્વતતટાત્ સદાતનજલક્ષરણવ્યાપ્તમ્, ‘સ્વહ્વાવહુલે’ ગર્તવહુલમ્ સ્વહ્વા ઇતિ પ્રસિદ્ધાઃ તૈર્વહુલમ્, ‘દરિવહુલે’ દરીવહુલમ્ ગુહાવહુલમ્ ‘ળઈવહુલે’ નદીવહુલમ્, ‘દહવહુલે’ દ્વદવહુલમ્, ‘રુક્ષવહુલે’ વૃક્ષવહુલમ્, ‘ગુચ્છવહુલે’ ગુચ્છવહુલમ્ ગુચ્છાઃ—સ્તવક્ષાઃ, તૈર્વહુલમ્, ‘ગુમ્મવહુલે’ ગુલ્મવહુલ ગુલ્માઃ નવમાલિકાદયસ્તૈર્વ-

યહાં એસે હૈં કિ જહા પર પ્રવેશ પાના અશક્ય હૈ-યા કષ્ટ સાધ્ય હૈ. યહા પર્વતોં કી અધિકતા હૈ તથા ઓન પર્વતોં પર એસે હી વિશેષ સ્થાન હૈ કિ જહા સે ગિરને પર મનુષ્ય કા શરીર ચૂર ર હો જાતા હૈ યહાં અવજ્જર વહુત હૈ—જિન પર્વતીય સ્થાનોં સે નોચે જલ ગિરતા હૈ ઓન સ્થાનોં કા નામ અવજ્જર હૈ જૈસે જબલપુર કા—મેઢાઘાટ આદિ, યહા નિર્ઝર વહુત હૈ—પર્વત કે જિન સ્થાનો સે સદા જલ શરતા રહતા હૈ—એસે સ્થાનોં કા નામ નિર્ઝર હૈ—એસે સ્થાન હસ ભરતક્ષેત્ર મેં અધિકાંશ હૈં । હમી પ્રકાર યહ ભરતક્ષેત્ર “સ્વહ્વા વહુલે” જગહ ર જિસ મેં પ્રાય ગઢે હૈં એસે સ્થાનો વાલા હૈ—અર્થાત્ જગહ ર ગઢો વાલા હૈં “દરિ વહુલે” પહાડો પર જિસકે જગહરપ્રાયઃ ગુફાપેં હૈ એસે સ્થાનો વાલા હૈ—અર્થાત્ ગુફાઓ કી અધિકતા વાલા હૈં “ળઈ વહુલે” જગહ ર જિસમેં પ્રાય નદિયાં હૈ એસા હૈ “દહવહુલે” જગહ ર જહાં પ્રાય દ્રહ—પાની કે કુહ હૈં એસા હૈ “રુક્ષ વહુલે” જગહ ર જહા પ્રાયઃ વૃક્ષ હૈં એસા હૈ “ગુચ્છ વહુલે” પ્રાય જગહ ર જહાં ગુચ્છે હૈં, એસા હૈ જગહ ર જહા પર “ગુમ્મ વહુલે”

૭. ચો—નીચો છે—સર્વથા સમન્વિત, અહીં ઘણા સ્થાનો એવા પણ છે કે ત્યાં પ્રવેશવું અશક્ય છે—અથવા તે કષ્ટ સાધ્ય છે, અહીં પર્વતોની અધિકતા છે તેમજ તે પર્વતોની ઉપર એવાં એવાં વિશેષ સ્થાનો છે કે જ્યાંથી પડી જવાય તો મનુષ્યના શરીરના ભુકંડે ભુક્ષ્ણ થઈ જાય છે અહીં અવજર પુષ્કળ છે જે પર્વતીય સ્થાનો પરથી નીચે જળ પડે છે તે સ્થાનોને અવજર (પ્રપાત) કહે છે જેમકે જબલપુરનો લોહાઘાટ વગેરે અહીં નિર્ઝર પુષ્કળ છે, પર્વતના જે સ્થાનોથી સર્વદા જળ ઝરતુ રહે છે એવા સ્થાનોને નિર્ઝર કહે છે એવાં સ્થાનો આ ભરતક્ષેત્રમાં અધિકાંશ છે. આ પ્રમાણે આ ભરતક્ષેત્ર “સ્વહ્વા વહુલે” ડગલે ને પંગલે જ્યાં ખાડાઓ પુષ્કળ છે એવા સ્થાન વાળુ છે એટલે કે સ્થાન સ્થાન પર ઘણા ખાડાઓ છે “દરિ વહુલે” કુપરે પર ઠેકઠેકાણે ઘણી શુકાઓ વાળુ છે એટલે કે અહીં શુકાઓ ખૂબજ વધારે છે “ળઈ વહુલે” સ્થાન સ્થાન પર જેમાં નદીઓ છે એવુ આ ક્ષેત્ર છે “દહ વહુલે” ઠેકઠેકાણે જ્યાં પ્રાય દ્રહપાણીના કુડા છે એવુ આ ક્ષેત્ર છે “રુક્ષ વહુલે” ઠેકઠેકાણે જ્યાં ઘણા વૃક્ષો છે એવું છે “ગુચ્છ વહુલે” પ્રાય ઠેકઠેકાણે જ્યાં શુભ્રાઓ છે એવું છે. ઠેકઠેકાણે જ્યાં “ગુમ્મ વહુલે” શુદ્ધો અધિકાંશ રૂપમાં ઘણા છે એવુ આ ક્ષેત્ર છે.

હુલમ્, 'લયા વહુલે' લતાવહુલમ્ પદ્મલતાદિવ્યાપ્તમ્, 'વલ્લીવહુલે' 'વલ્લીવહુલમ્' કૂખ્માળ્યાદિલતાવ્યાપ્તમ્, યદ્યપિ લતાવલ્લ્યોરેકાર્યકત્વં તથાપીહ લતાપદેન વિસ્તાર રહિતા વલ્લીપદેન વિસ્તારસહિતા લતા ગૃહ્યત્ત્વેતિ તયો મેદઃ। 'અડવીવહુલે' અટવીવહુલમ્, 'સાવયવહુલે' શ્વાપદવહુલમ્-હિંસકજન્તુવ્યાપ્તમ્, 'તળવહુલે' તળવહુલમ્, 'તવરુરવહુલે' તસ્કરવહુલમ્-ચોર વ્યાપ્તમ્, 'દિંબવહુલે' દિમ્બવહુલમ્-સ્વદેશોત્પન્નોપદ્રવવ્યાપ્તમ્, 'હમરવહુલે' હમરવહુલમ્-પરદેશીરાજકૃતોપદ્રવવ્યાપ્તમ્, 'દુર્ભિક્ષવહુલે' દુર્ભિક્ષવહુલમ્, 'દુર્લભા મિષ્ણા યત્ર તે દુર્ભિક્ષાઃ કાલવિશેષાઃ તૈર્વહુલં વ્યાપ્તમ્, 'દુષ્કાલવહુલે' દુષ્કાલવહુલમ્-ધાન્યમદ્યાર્થતાદિના યે દુષ્ટાઃ કાલાસ્તૈર્વહુલમ્, 'પાસંડવહુલે' પાસંડવહુલમ્-પાસંડાઃ મિથ્યાવાદાસ્તૈર્વહુલમ્, 'કિવણવહુલે' કૃપણવહુલમ્ કૃપણાઃ-કદર્યાઃ-મિતમ્પચાસ્તૈ 'વહુલમ્' 'વળીમગવહુલે' વળીપકવહુલમ્-વળીપકાઃ-યાચકાસ્તૈર્વહુ-

ગુલ્મ અધિકાંશ હૈ એસા હૈ "લયા વહુલે" જગહ ૨ જહાં પર લતામો કી-વિસ્તાર રહિત પદ્મલતાદિ કો કી-પ્રધાનતા હૈ એસા હૈ "વલ્લી વહુલે" વિસ્તાર વાલી કૂખ્માળ્યાદિ વેલો કી પ્રધાનતા જહાં પર હૈ એસા હૈ "અડવી વહુલે" જંગલોં કી જહાં પર પ્રધાનતા હૈ એસા હૈ "સાવય વહુલે" જંગલો હિંસક જાનવરો કી જહાં પર પ્રધાનતા હૈ એસા હૈ "તળ વહુલે" ઘાસકી જહા કે જંગલો મેં પ્રધાનતા હૈ એસા હૈ 'તવરુર વહુલે' તસ્કરો-ચોરો કી જહાં પર વહુલતા હૈ એસા હૈ "દિંબ વહુલે" સ્વદેશોત્પન્ન જનોં સે હી જહા પર ઉપદ્રવોં કી વહુલતા હૈ એસા હૈ "હમર વહુલે" પરદેશી રાજા કે દ્વારા કિયેગયે ઉપદ્રવો કી જહાં વહુલતા હૈ એસા હૈ "દુર્ભિક્ષ વહુલે" દુર્ભિક્ષ કી જહાં વહુલતા હૈ એસા હૈ "દુષ્કાલ વહુલે" દુષ્કાલ કી-ચીજોં કો જહાં પર વહુલ હો અધિક કીમત વદગઈ હો એસે કાલકી વહુલતા વાલા હૈ "પાસંડ વહુલે" પાસંડો-મિથ્યા વાદિયો કી જહાં વહુલતા હૈ એસા હૈ "કિવણ વહુલે" કૃપણજનો કી જહા પર વહુલતા હૈ એસા હૈ "વળીમગ વહુલે" યાચક

'લયા વહુલે' ઠેકઠેકાણે જ્યા લતાઓની વિસ્તારરહીત પદ્મલતાદિકોની પ્રધાનતાએ એવું આ ક્ષેત્ર છે 'વલ્લી વહુલે' વિસ્તાર પ્રધાન કૂખ્માળ્યાદિ લતાઓ વધારે પડતી છે એવું આ ક્ષેત્ર છે. "અડવી વહુલમ્" જંગલોની જ્યાં પ્રધાનતા છે એવો આ પ્રદેશ છે. "સાવય વહુલે" જંગલના હિંસક જાનવરોની જ્યાં બહુલતા છે એવું આ ક્ષેત્ર છે. "તળ વહુલે" તળુની જ્યાં જંગલોમાં પ્રધાનતા છે એવું આ ક્ષેત્ર છે "તવરુર વહુલે" તસ્કરોની-ચોરોની જ્યાં બહુલતા છે એવું આ ક્ષેત્ર છે "દિમ્બ વહુલે" સ્વદેશોત્પન્નજનોથી જ્યાં ઉપદ્રવો ઘણા થાય છે એવો આ પ્રદેશ છે. "હમર વહુલે" પરદેશી રાજાઓ જ્યાં ઉપદ્રવો કરતા રહે છે એવો આ પ્રદેશ છે "દુર્ભિક્ષવહુલે" દુર્ભિક્ષની જ્યાં બહુલતા છે એવો આ પ્રદેશ છે. "દુષ્કાલ વહુલે" દુષ્કાલની-એટલે કે જ્યાં ચીજ વસ્તુઓની કીમતમાં ખૂબજ વધારે વૃદ્ધિ થઈ ગઈ હોય-એવા કાળની બહુલતાવાળો આ પ્રદેશ છે. "પાસંડ વહુલે" પાસંડા મિથ્યા વાદીઓની જ્યાં બહુલતા છે એવો આ પ્રદેશ છે "કિવણ વહુલે" કૃપણજનોની જ્યાં બહુલતા છે એવો આ પ્રદેશ છે. "વળીમગ વહુલે" યાચકોની જ્યાં બહુલતા છે એવો આ

લમ્ 'ઈતિવહુલે' ઈતિવહુલમ્-ઈતયઃ-અતિવૃષ્ટિચનાવૃષ્ટિ-મૂપક-શલમ-શુકાત્યાસન્ન-
 રાજાઃ ષડુપદ્રવાઃ તામિર્વહુલમ્ 'મારિવહુલે' મારિ વહુલમ્ મારયો વિપૂચિકાદયઃ,
 તામિર્વહુલમ્ 'કુબુદ્ધિવહુલે' કુવૃષ્ટિવહુલં કુવૃષ્ટયઃ-કુત્સિતાઃ કર્પકનનાનમિલ્લપનીયા
 વૃષ્ટયો વર્ષાસ્તામિર્વહુલમ્, 'અણાવુદ્ધિવહુલે' અનાવૃષ્ટિવહુલમ્-અનાવૃષ્ટયઃ-વર્ષણસ્યામાત્રાઃ
 તામિર્વહુલમ્ 'રાયવહુલે' રાજવહુલમ્-રાજાનઃઆધિપત્યકર્તાંરો જનાસ્તૈર્વહુલમ્ 'રોગવહુલે'
 રોગવહુલમ્ રોગાઃ-વાત-પિત્ત-કફ વિષમતાજન્યાઃ જ્વરાદયસ્તૈર્વહુલમ્, 'સંકિલેસ-
 વહુલે' સંકલેશવહુલં-સંકલેશાઃ-શારીરિકમાનસિકાસમાધયસ્તૈર્વહુલમ્ 'અમિવક્ષણં અમિ-
 વક્ષણં' અમીક્ષણમમીક્ષણમ્ વારંવારમ્ 'સંસ્ખોહવહુલે' સંસ્ખોભવહુલમ્ સંસ્ખોભાઃ પ્રજાનાં
 દણ્ડપારુષ્યાદિના ચિત્તવૈકલ્યાનિ તૈર્વહુલમ્ ર્થં સ્વરૂપતઃ પ્રદર્શ્ય સમ્પ્રતિ પ્રમાણત
 આહ-પાર્શ્વણ્યહીનાયણ' પ્રાચીનપ્રતીચીનાઽઽયતં પ્રાચીનપ્રતીચીનયોઃ પૂર્વપશ્ચિમદિશોઃ,
 આયતં દીર્ઘમ્ અત્ર પ્રાક્ પ્રત્યક્લબ્દાભ્યાં સ્વાર્થે સ્વઃ પ્રત્યયસ્તસ્યેનાદેશઃ સ ચ સ્વઃ,

જનો કી જહાં પર બહુલતા હૈ પેસા હૈ "ઈતિ બહુલે" મારી બહુલે કુબુદ્ધિ બહુલે અણાવુદ્ધિ બહુલે
 રાયવહુલે રોગ બહુલે સંકિલેસ બહુલે" અતિવૃષ્ટિ અનાવૃષ્ટિ મુષિક શલમ શુક એવ અત્યાસન્નરાજા
 યે છહ ઈતિયાં હોતી હૈં હન છહ ઈતિયોકો ઉપદ્રવો કે બહુલતા જહાં પર હૈ પેસા હૈ હનકી બહુલતા
 મરત ઔર ઇંરવત ક્ષેત્રમેં હી હોતી હૈ, મારી હૈજા આદિ કી હૈ બહુલતા જિસમેં 'પેસા હૈ કર્પક-
 કિસાન જનો કો અનમિલ્લપનીય વર્ષાકી બહુલતા જિસમે હૈ પેસા હૈ અનાવૃષ્ટિ વર્ષા કે
 અભાવ કા જહા પ્રાયઃ સદ્ભાવ હૈ પેસા હૈ અધિપતિત્વ કરને વાલે રાજા જનોં કી જહાં પર
 બહુલતા હૈ પેસા હૈ વાત પિત્ત કફ કી વિષમતા જન્ય રોગો કા સદ્ભાવ જહા પર હૈ પેસા
 હૈ શારીરિક ઔર માનસિક અસમાધિયાં કી બહુલતા જહાં પર હૈ પેસા હૈ 'અમિવક્ષણં
 અમિવક્ષણં સંસ્ખોહ બહુલે પાર્શ્વણ્યહીનાયણ ઉદીણદાહિણ વિત્થિયણે ઉત્તરઓ પલ્લિઅક સઠાણ સઠિય
 ઔર નિરન્તરવાર વાર જહાં પર પ્રજા જનોં કે ચિત્તકો ક્ષુભેત કરને વાલે દણ્ડકી કઠોરતાપૈં

પ્રદેશ છે "ઈતિ બહુલે, મારિ બહુલે, કુબુદ્ધી બહુલે, અણાવુદ્ધિ બહુલે, રાય બહુલે, રોગ
 વહુલે, સંકિલેસવહુલે" અતિ વૃષ્ટિ, અનાવૃષ્ટિ, મૂષક, શલમ, શુક તેમજ અત્યાસન્ન
 રાજાઓ આમ ૬ ઈતિઓ હોય છે આ ૬ ઈતિઓના ઉપદ્રવોની જેમાં બહુલતા છે એવો
 આ ભરત પ્રદેશ છે ઔરવત પ્રદેશમા પણ એવુ જ થાય છે મારિ-કાલેરા વગેરે જ્યાં
 વિશેષ રૂપમાં થાય છે એવો આ પ્રદેશ છે. કર્પક-ખેરૂનો ના માટે અનિશ્ચિત વર્ષા જ્યાં
 થતી રહે છે એવો આ પ્રદેશ છે અનાવૃષ્ટિ-વર્ષાના અભાવનો જ્યા પ્રાયઃ સદ્ભાવ છે એવો
 આ પ્રદેશ છે અધિપતિત્વ કરનારા રાજાઓની જ્યાં બહુલતા છે એવો આ પ્રદેશ છે વાત,
 પિત્ત, કફની વિષમતાથી જ્યા રોગો વધારે પડતા ફાટી નીકળે છે એવો આ પ્રદેશ છે
 શારીરિક, અને માનસિક અસમાધીઓની બહુલતા જ્યા છે એવો આ પ્રદેશ છે "અમિ
 વક્ષણં ૨ સંસ્ખોહવહુલે, પાર્શ્વણ્યહીનાયણ ઉદીણદાહિણવિત્થિયણે ઉત્તરઓ પલ્લિઅક સઠાણ
 સઠિય" અને નિરન્તર-વાર વાર જ્યાં પ્રજાજનોના ચિત્તને કષ્ટ આપનારા કંડની-શિક્ષાની

‘આર્ષત્વાત્ એવમ્ ‘ઉદીણ દાહિણવિત્થિણે’ ઉદીચીન દક્ષિણવિસ્તીર્ણમ્ ઉત્તર-દક્ષિણ-
 દિશોર્વિસ્તારયુક્તમ્, તદેવ સસ્થાનતો વર્ણયતિ- ‘ઉત્તરઓ’ ઉત્તરનઃ-ઉત્તરસ્યાં
 દિશિ ‘પલિયંકસંઠાણસંઠિષ્’ પલ્યઙ્કસંસ્થાનસંસ્થિતં=પર્યઙ્કાકારસંસ્થિતમ્,
 ‘દાહિણઓ’ દક્ષિણતઃ-દક્ષિણસ્યાં દિશિ ‘ઘણુપિઠ્ઠ સંઠીષ્’ ઘનુષ્પૃષ્ઠ સંસ્થિતં-ઘનુપઃ
 પૃષ્ઠં પાશ્ચાત્યભાગસ્તસ્યેવ સંસ્થિતં-સસ્થાનં યસ્ય, યદ્વા-ઘનુપઃ પૃષ્ઠમિવ સંસ્થિતં
 યત્ તત્તથા, તથા ‘તિધા’ ત્રિધા-ત્રિભિઃ પ્રકારૈ સ્પૃષ્ટં-પૂર્વકોટયા ‘લવણસમુદ્રં’ પૂર્વ
 લવણસમુદ્રં, ઘનુષ્પૃટેન દક્ષિણલવણસમુદ્રમ્ અપરકોટયા પશ્ચિમલવણસમુદ્રં, ‘પુઢે,
 પ્રાપ્તમ્ । इह धातूनामनेकार्थत्वात् स्पृशेः प्राप्त्यर्थः, कत्तरिक्तः, तेन कर्मणि द्वि-
 तीया । तथा ‘गंगासिंधुहि’ गङ्गासिन्धुभ्यां ‘महाणईहि’ महानदीभ्यां ‘वेयइढेणय’वैताढये-
 न च ‘पव्वएण’ पर्वतेन’ छन्नाभागपविभक्ते’ षड्भागप्रविभक्तं-षड्भिर्भागैः प्रविभक्तं-

મૌજદ હૈ; એસા યહ ભરત ક્ષેત્ર હૈ, યહ ભરત ક્ષેત્ર પૂર્વસે પશ્ચિમ તક લમ્બા હૈ, ઔર “ઉદીણ-
 દાહિણવિત્થિણે” ઉત્તર સે દક્ષિણતક ચૌડા હૈ । “ઉત્તરઓ” યહ ભરતક્ષેત્ર ઉત્તરદિશામેં
 “પલિયંક સઠાણસઠિષ્” પલંગ કા જૈસા સસ્થાન-આકાર હોતા હૈ વૈસે આકાર વાલા હૈ,
 “દાહિણઓ ઘણુપિઠ્ઠસઠિષ્” દક્ષિણ દિશા મેં ઘનુષ્પૃષ્ઠ કા જૈસા સસ્થાન હોતા હૈ વૈસે
 સસ્થાન વાલા હો ગયા હૈ. યહ “તિધા લવણસમુદ્ર પુઢે” ભરત ક્ષેત્ર ત્રીન પ્રકાર સે લવણ
 સમુદ્ર કો છૂરહા હૈ-પૂર્વકોટિ સે પૂર્વલવણ સમુદ્ર કો, ઘનુષ્પૃષ્ઠ સે દક્ષિણ લવણ સમુદ્ર કો
 ઔર અપર કોટિ સે પશ્ચિમલવણ સમુદ્ર કો । ઇસ તરહ સે યહ ત્રીન પ્રકાર સે લવણસમુદ્ર કો
 છૂ રહા હૈ “ગંગા સિંધૂઈ મહાણઈઈ વેઅઙ્કદેણ ય પવ્વણ છન્નાભાગપવિભક્તે જંબુદીવ દીવ ણયડ
 સયમાગે પંચ છન્નોસે જોયણસણ છન્ન ઇગૂણવીસઙ્કમાણ જોયણસ્સ વિક્કંમેણ” યહ ભરત
 ક્ષેત્ર ગંગા ઔર સિન્ધુ ઇન દો મહાનદિયો સે ઔર વિજયાર્ધ પર્વત સે વિભક્ત હુઆ ૬ સહોં

કોટારતાઓ જ્યાં વિદ્યમાન છે એવો આ પ્રદેશ છે. આ ભરતક્ષેત્ર પૂર્વથી પશ્ચિમ સુધી લાંબુ
 છે. અને “ઉદીણદાહિણવિત્થિણે” ઉત્તરથી દક્ષિણ સુધી પહોંલું છે. “ઉત્તરઓ” આ
 ભરત ક્ષેત્ર ઉત્તર દિશામાં “પલિયંકસંઠાણસંઠિષ્” પલંગનું જેવું સંસ્થાન (આકાર)
 હોય છે એવા આકારવાળું છે. “દાહિણઓ ઘણુપિઠ્ઠ સંઠિષ્” દક્ષિણ દિશામાં ઘનુષ્ પૃષ્ઠનું
 જેવું સંસ્થાન હોય છે તેવા સંસ્થાનવાળું થઈ ગયું છે. આ “તિધા લવણસમુદ્ર પુઢે”
 ભરતક્ષેત્ર ત્રણ રીતે લવણ સમુદ્રને સ્પર્શી રહ્યું છે. પૂર્વકોટિથી પૂર્વ લવણ સમુદ્રને ધનુ-
 ષ્પૃષ્ઠથી દક્ષિણ લવણ સમુદ્રને અને અપરકોટિથી પશ્ચિમ લવણ સમુદ્રને આ સ્પર્શી રહ્યું
 છે. આમ આ ત્રણે બાજુએથી લવણ સમુદ્રને સ્પર્શી રહ્યું છે. “ગંગા સિંધૂઈ મહાણઈઈ વે
 અઙ્કદેણ ય પવ્વણ છન્નાભાગપવિભક્તે જંબુદીવદીવ ણયડ સય માગે પંચ છન્નોસે જોયણસણ
 છન્ન ઇગૂણવીસઙ્ક માણ જોયણસ્સ વિક્કંમેણ” આ ભરતક્ષેત્ર ગંગા અને સિંધુ એ
 બન્ને મહાનદીઓથી અને વિજયાર્ધ પર્વતથી વિભક્ત થઈને છ ખંડોથી યુક્ત થઈ ગયેલ

खण्डितम्, उत्तरस्यां दिशि खण्डत्रयं दक्षिणस्यां दिशि च खण्डत्रयमिति पदधा खण्डितमिति भावः ।

इदं च भरतक्षेत्रम् जम्बू द्वीपस्यैकदेशभूतं तदिदम् आयामविष्कम्भतो जम्बू द्वीपस्य कतितमे भागे भवति ? इति जिज्ञासानिवृत्त्यर्थमाह—‘जंजु दीव दीवणउयसयभागे, इत्यादि । तदिदं भरतक्षेत्रं ‘जंबुद्वीप दीवणउयसयभागे’ जम्बूद्वीप द्वीप नवतिशतभागे—जम्बूद्वीपनामको यो द्वीपस्तस्य यो नवति शतभागो=नवत्यधिकैकशततमो भागस्तत्र वर्तते, जम्बूद्वीपापेक्षया आयामविष्कम्भेणेदं नवत्यधिकैकशतभागतो न्यूनमिति भावः । ननु जम्बूद्वीपापेक्षया भरतक्षेत्रं नवत्यधिकैकशतभागतो न्यूनमिति पर्यवसितं, तर्हि भरतक्षेत्रस्यायामविष्कम्भतः प्रमाणं कियद् भवति ? इति जिज्ञासायामाह—‘पंचछन्वीसे’, इत्यादि । इदं भरतक्षेत्र ‘पंच छन्वीसे’ पञ्चषड्विंशं ‘जोयणसए’ योजनशतम्—पद्द्विंशत्यधिकानि एकशतयोजनानि

વાળા હો ગયા હૈ. હસકા વિસ્તાર ૫૨૬ ૬/૧૯ યોજન પ્રમાણ હૈ અર્થાત્ જમ્બૂદ્વીપ કિ જિસકા વિષ્કમ્ભ ૧ ઇક લાલ્લ યોજન કા હૈ ડસકે ૧૯૦ ટુકડે કરને પર ભરત ક્ષેત્ર કા વિસ્તાર ૧૯૦ વાં ટુકડા કે રૂપ મેં આતા હૈ. ઔર વહ ૧૯૦ વા ટુકડા ૫૨૬ ૬/૧૯ રૂપ પડતા હૈ. યહ હસ પ્રકાર સે સમજના યાહિય જમ્બૂદ્વીપ લંબાઈ ચૌડાઈ મે ૧ લાલ્લ યોજન કા કહ્વા ગયા, ૧ ઇક લાલ્લ મેં ૧૯૦ કા ભાગ દેને પર ૫૨૬ આવે હૈ ઔર નીચે ૬૦ વચ્તે હૈ, અબ ૬૦ કો ૧૦ સે ભાજિત કરને પર ૬ આવે હૈ, ભાજક રાશી જો ૧૯૦ હૈ ડસે મી ૧૦ દસ સે ભાજિત કરને પર ૧૯ આવે હૈ । હસ તરહ કરને સે “પંચ છન્વીસે જોયણસપ છન્ચ ઇગૂળવીસહમાપ જોયણસ્સ,” યહ સૂત્રકાર કા કથન સ્પષ્ટ હો જાતા હૈ ।

શકા—જમ્બુદ્વીપ કે ૧૯૦ વે ભાગરૂપ યહ ભરત ક્ષેત્ર હૈ હસમેં યુક્તિ કયા હૈ—સુનો—હસ વિષય મેં યુક્તિ યહ હૈ—ભરત ક્ષેત્ર કા ૧ ઇક ભાગ હૈ હસકી અપેક્ષા દ્વિગુણિત વિસ્તારવાળા હોને સે હિમવત્ પર્વત કે દો ભાગ હૈ, હસક્રમ સે પૂર્વ પૂર્વ કી અપેક્ષા દૂને ૨ વિસ્તાર વાળે

છે. આનો વિસ્તાર ૫૨૬ ૬/૧૯ યોજન પ્રમાણ છે એટલે કે જમ્બૂદ્વીપ કે જોનો વિષ્કભ ૧ લાખ યોજન એટલે છે તેના ૧૬૦ કકડા કરવાથી ભરત ક્ષેત્ર નો વિસ્તાર ૧૬૦ મા કકડા એટલે થાય છે અને તે ૧૬૦ મા કકડો ૫૨૬ ૬/૧૯ એટલે થાય છે જમ્બૂદ્વીપ લંબાઈ-થોડાઈમા ૧ લાખ યોજન પ્રમાણ છે. ૧ લાખમાં ૧૬૦ નો ભાગાકાર કરવાથી ૫૨૬ આવે છે અને શેષ ૬૦ વધે છે હવે ૬૦ ને ૧૦ ભાજિત કરીએ તો ૬ આવે છે ભાજક રાશી જે ૧૬૦ છે તેને પણ ૧૦ ભાજિત કરીએ તો ૧૬ આવે છે. આ પ્રમાણે કરવાથી “પંચછન્વીસે જોયણસપ છન્ચ ઇગૂળ વીસહમાપ જોયણસ્સ” આ સૂત્રકાર હું કથન સ્પષ્ટ થઈ ગય છે.

શંકા:—જમ્બૂદ્વીપના ૧૬૦ મા ભાગ રૂપ આ ભરતક્ષેત્ર છે આમા યુક્તિ શી છે ? સાંભળો આ સંબંધમાં યુક્તિ આ પ્રમાણે છે કે ભરતક્ષેત્રનો ૧ ભાગ છે, તેની અપેક્ષા દ્વિગુણિત વિસ્તારવાળો હોવાથી હિમવત્ પર્વતના બે ભાગ છે. આ કમથી પૂર્વની અપેક્ષા બમણા

‘छच्च एगूणवीसइभागे’ पट्च एकोनविंशतिभागान् ‘जोयणस्स’ योजनस्य—
एकोनविंशतिभागविभक्तस्य योजनस्य पट्चभागान् ‘विक्खंमेण’ विष्कम्भेण—विस्तारेण
इदमायामस्याप्युपलक्षणम्, आयामेन=दैर्घ्येण च भवतीति । भरतक्षेत्रस्येदमायाम-
विष्कम्भमानमनया दिशाऽवगन्तव्यम् । तथाहि—जम्बूद्वीपो हि आयाविष्कम्भतो लक्ष-
योजनप्रमाणः । अयमङ्कुराशि नवत्यधिकैकशतसंख्यकेन राशिना भाजितः, लब्धोऽ-
ङ्कुराशिःषड्विंशत्यधिकपञ्चशतानि (५२६) भाज्यराशितोऽवशिष्टः पष्टिरूपोऽङ्क-
राशिः । अयं दशभिरपहतो लब्धः पट्चरूपोऽङ्कुराशिः । भाजकराशिश्च नवत्यधिकैक-
शतरूपः । अयमपि दशभिरपहतो लब्ध एकोनविंशतिरूपोऽङ्कुराशिः । अनया रीत्या
‘पञ्चछब्बोसे जोयणसप छच्च एगूणवीसइभाए जोयणस्सं’ इति संगमनीयम् ।

ननु भरतक्षेत्रं जम्बू द्वीपस्य नवत्यधिकैकशततमभागे वर्तते इति यदुक्तं तत्र
का युक्तिः ? इति चेत्, उच्यते—भरतक्षेत्रस्यैको भागः, तदेपेक्षया द्विगुणत्वाद् हिम-
वतो द्वौ भागौ, एवं क्रमेण पूर्वपूर्वापेक्षया उत्तरोत्तरस्य द्विगुणत्वात् हैमवत क्षेत्रस्य
चत्वारो भागाः महाहिमवतोऽष्टौ भागाः हरिवर्षस्य षोडश भागाः निषधस्य द्वात्रिं-
शद् भागः, सर्वसंकलनया जाताः त्रिषष्टिर्भागाः । एते भागा मेरोर्दक्षिणतः । एवं
मेरोरुत्तरतोऽपि त्रिषष्टिर्भागाः । उभयसंकलनया जाताः षड्विंशत्यधिकैकशत-
भागः । विदेहवर्षस्य तु चतुष्षष्टिर्भागाः इत्येतेषां पूर्वराशौ निक्षेपे जाता नवत्यं-
धिकैकशतभागः इति भरतक्षेत्रं जम्बू द्वीपस्य नवत्यधिकैकशततमभागे वर्तते इति
यदुक्तं तत्समीचीनमेवेति ।

होते जाने से हैमवत क्षेत्र के ४ भाग हो गये हैं, महाहिमवान् पर्वत के ८ भाग हैं हरि-
वर्ष के १६ भाग हो गये हैं, निषधपर्वत के ३२ भाग हैं, ये सब भाग जोड़ने पर ६४
होते हैं ये ६४ भाग मेरु की दक्षिणदिशा की ओर वर्तमान क्षेत्र और पर्वतों के हैं इसी तरह के
भाग मेरु की उत्तर- दिशा में वर्तमान क्षेत्र और पर्वतों के हैं इन दोनों के भागों का जोड़
१२८ आता है. विदेह क्षेत्र के ६४ हैं. सो ये ६४ भाग १२८ में जोड़ने पर १९२ भाग होते
हैं, इस तरह यह भरत क्षेत्र जम्बूद्वीप के १९२ वें भाग रूप है यह बात स्पष्ट हो जाती है ।

अथ विस्तार युक्त होवाही हैमवतक्षेत्रना आर बागो यध गया छे मडा हिमवान् पर्वतना
८ बागो छे हरिवर्षना १६ बागो यध गया छे निषध पर्वना ३२ बागो छे. आ सर्व
भागोना सरवागो कवराथी ६४ यध जाय छे. आ ६४ बागो मेरुनी दक्षिण दिशा तरङ्ग
वर्तमान क्षेत्र अने पर्वतोना छे. आ अतना बागो-मेरुनी-उत्तर दिशाभा वर्तमान क्षेत्र
अने पर्वतोना छे आ अन्ने बागोना सरवागो १२८ थाय छे. विदेहक्षेत्रना ६४ बागो छे.
तो आ ६४ बागो १२८ भा उमेरवाथी १९२ बाग थाय छे. आभ आ भरतक्षेत्र जम्बू-
द्वीपना १९२ भा बाग इय छे. आ बात स्पष्ट यध जाय छे. भरतक्षेत्रना गंगा सिंधु

અથ 'ગઙ્ગાસિન્ધુભ્યાં મહાનદીભ્યાં વૈતાલ્યપર્વતેન પદ્મભાગપ્રવિભક્તમ્' इत्युक्तम् तत्र
 वૈતાલ્યપર્વતઃ કિં સ્વરૂપઃ ? इति जिज्ञासायां तत्स्वरूपं निरूपयितुमाह—'भरहस्स णं
 वासस्स' इत्यादि । 'भरहस्स णं वासस्स' भरतस्य खलु वर्षस्य—क्षेत्रस्य 'बहुमज्झ-
 देसभाए' बहुमध्यदेशभागे—अत्यन्तमध्यदेशभागे 'एत्थ णं वेयइडे णामं पव्वए पण्णत्ते'
 अत्र इह खलु वૈતાલ્યો नाम पर्वतः प्रज्ञप्तः । 'जे ण' यः वૈताल्यः पर्वतः खलु 'भरहं
 वासं दुहा' भरतं वर्षं द्विधा—द्वाभ्यां प्रकाराभ्यामनुपदं वक्ष्यमाणाभ्यां 'विभयमाणे'
 २, विभजन् विभजन्—विभक्तं कुर्वन् कुर्वन् 'चिट्ठइ, तिष्ठति—वर्तते 'तं जहा' तद्यथा
 'दाहिणद्ध भरहंच' दक्षिणार्द्धं भरतंच 'उत्तरद्धभरहंच' उत्तरार्द्धभरत चेति ॥६०॥

તત્ર પ્રથમમાસન્નત્વેન દક્ષિણાર્દ્ધભરતવર્ષસ્થાનં વર્ણયતિ —

મૂલમ્—કહિ ણં મંતે જંબુદીવે દીવે દાહિણદ્ધે ભરહે ણામં વાસે
 પણ્ણત્તે ગોયમા ! વેયહ્હુસ્સ પવ્વયસ્સ દાહિણેણં દાહિણલવણસમુદ્દસ્સ
 ઉત્તરેણં પુરત્થિમલવણસમુદ્દસ્સ પચ્ચત્થિમેણં પચ્ચત્થિમલવણસમુદ્દસ્સ
 પુરત્થિમેણં એત્થ ણં જંબુદ્દીવે દીવે દાહિણદ્ધભરહે ણામં વાસે
 પણ્ણત્તે પાર્ણપહીણાયણ ઉદીણદાહિણવિત્થિણે અદ્ધચંદસંઠાણસંઠિણ
 તિહા લવણસમુદ્દે પુઢે ગંગા સિંધુહિં મહાણઈહિં તિમાગ
 પવિભક્તે દોણિણ અદ્ધતીસે જોયણસણ તિણિણ ય ણગૂણવીસઙ્ગમાગે
 જોયણસ્સ વિક્કલંમેણં તસ્સ જીવા ઉત્તરેણં પાર્ણપહીણાયયા દુહા

भरत क्षेत्र के गंगा सिन्धु नदियों से और वૈताल्य पर्वत से ६ खंड हो गये हैं ऐसा जो
 कहा गया है सो वૈताल्य पर्वत का क्या है ! इस जिज्ञासा को शान्त करने के निमित्त-
 सूत्रकार उसका स्वरूप प्रतिपादन करते हैं "भरहस्स णं वासस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ ण
 वेयइडे णामं पव्वए पण्णत्ते जे णं भरह वास दुहा विभयमाणे २ चिट्ठइ" वताल्य पर्वत भरत
 क्षेत्र के बिल्कुल मध्यभाग में पड़ा हुआ है. इसने भरत क्षेत्र को दो विभागों में विभक्त
 कर दिया है वे उसके दो विभाग दक्षिणार्द्धभरत और उत्तरार्द्ध भरत हैं ॥ १० ॥

નદીઓથી અને વૈતાલ્ય પર્વત થી છ ખંડો થઈ ગયા છે આમળે કહેવામાં આવ્યું છે
 તે વૈતાલ્ય પર્વત વિષે શું છે આ જિજ્ઞાસા ને શાંત કરવા માટે સૂત્રકાર
 તેના સ્વરૂપનું પ્રતિપાદન કરતાં કહે છે કે "ભરહસ્સણ સ્સ બહુમજ્ઞદેસમાય એત્થણ
 વેયહ્હુદં નામં પવ્વય પણ્ણત્તે જે ણ વાસં દુહા વિ જે ૨ ચિટ્ઠઈ" વૈતાલ્ય પર્વત
 ભરત ક્ષેત્રના એકદમ મધ્યભાગમાં આવેલ છે આ પર્વતે ભરતક્ષેત્રને બે ભાગોમાં વિભક્ત
 કરેલ છે, આના તે બે વિભાગો દક્ષિણાર્દ્ધ ભરત અને ઉત્તરાર્દ્ધ ભરત છે. ॥૧૦॥

लवणसमुद्रं पुढा पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं लवणसमुद्रं
पुढा, पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिल्लं लवणसमुद्रं पुढा
णव जोयणसहस्साइं सत्तय अडयाले जोयणसए दुवालस य
एगूणवीसइभाए जोयणस्स आयोमेणं तीसे धणुपुट्ठे दाहिणेणं णव
जोयणसहस्साइं सत्तच्छावडे जोयणसए इक्कं च एगूणवीसइभागे
जोयणस्स किचिविसेसाहिए परिकखेवेणं पण्णत्ते । दाहिणद्ध भरहस्स
णं भंते ! वासस्स केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा !
बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहाणामए आलिंगपुक्खरेइ
वा जाव णाणाविह पंचवण्णेहिं मणीहिं तणेहिं उवसोभिए, तं जहा-
कित्तिमेहिं चेव अकित्तिमेहिं चेव । दाहिणद्ध भरहेणं भंते वासे मणुयाणं
केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! ते णं मणुया बहुसंघ-
यणा बहुसंठाणा बहुउच्चत्त पज्जवा बहु आउ पज्जवा बहुइं वासाइं आउं
पालेति. पालित्ता अप्पेगइया निरयगामी अप्पेगइया तिरियगामी
अप्पेगइया मणुयगामी अप्पेगइया देवगामी अप्पेगइया सिज्झंति
ज्झंति मुच्चंति परिणिब्बायंति सच्चदुक्खाणमंतं करेइ ॥सू० ११॥

छाया—क्व खलु मदन्त ? जम्बूद्वीपे द्वीपे दक्षिणार्धभरतं नाम वर्षं प्रज्ञप्तम् ?
गौतम ! वैताल्यस्य पूर्वतस्य दक्षिणे दक्षिणलवणसमुद्रस्य उत्तरे पौरस्त्यलवणसमु-
द्रस्य पाश्चात्ये पाश्चात्यलवणसमुद्रस्य पौरस्त्ये अत्र खलु जम्बूद्वीपे द्वीपे दक्षिणार्ध-
भरतं नाम वर्षं प्रज्ञप्तम्, प्राचीनप्रतीचीनायतम् उदीचीनदक्षिणविस्तीर्णम् अर्द्धचन्द्रसंस्था-
नसंस्थितं त्रिधा लवणसमुद्रं स्पृष्टं, गङ्गा सिन्धुभ्यां महानदीभ्यां त्रिभागप्रविभक्तं द्वे
अष्टात्रिंशं योजनशतं त्रींश्वैकोनविंशतिभागान् योजनस्य विष्कम्भेण । तस्य जीवा
उत्तरे प्राचीन प्रतीचीनाऽऽयता द्विधा लवणसमुद्रं स्पृष्टा पौरस्त्यया कोटया पौरस्त्यं लव-
णसमुद्रं स्पृष्टा पाश्चात्यया कोटया पाश्चात्यं लवणसमुद्रं स्पृष्टा । नव योजन सहस्राणि
सप्त च अष्ट सत्वारिंशानि योजनशतानि द्वादश च एकैकोनविंशतिभागान् योजनस्य आया
मेन, तस्याः धनुस्पृष्ट दक्षिणे नव योजनसहस्राणि सप्त षट् षष्ट्यधिकानि योजनशतानि
एकैकोनविंशति भागान् योजनस्य किचिद्विशेषाधिकं परिक्षेपेण प्रज्ञप्तम् । दक्षिणार्धं

મરતસ્ય યલુ મદન્ત ! વર્ષસ્ય કીદશક' આકાભાવપ્રત્યવનાર પ્રજ્ઞતઃ ? ગૌતમ ! બહુસમરમણીયો ભૂમિભાગઃ પ્રજ્ઞત, સ યથાનામક, આલિહપુષ્કર ઇતિ વા યાવદ્ નાનાવિધ પચ્ચવર્ષેમણિભિઃ તૃણૈરુપશોભિતઃ તદ્યથા-કૃત્રિમૈશ્ચેવ અકૃત્રિમૈશ્ચેવ । દક્ષિણાર્દ મરતે યલુ મદન્ત ! વર્ષે મનુજાનાં કીદશકઃ આકારભાવપ્રત્યવતારઃ પ્રજ્ઞતઃ ગૌતમ ! તે યલુ મનુજાઃ વહુસંદનનાઃ વહુસંસ્થાનાઃ વહુચ્ચત્વર્યવાઃ વહ્યાયુ. પર્યવાઃ વહુનિ વર્ષાણે આયુઃ પાલયન્તિ, પાલયિત્વા અપ્યેકકે નિરયગામિન. અપ્યેકકે તિર્યગામિનઃ અપ્યેકકે મનુજગામિનઃ અપ્યેકકે દેવગામિનઃ અપ્યેકકે સિધ્યન્તિ વુધ્યન્તે મુચ્યન્તે પરિનિર્વાન્તિ સર્વ-દુઃખાનામન્તં કુર્વન્તિ ॥સૂ૦૧૧॥

ટીકા—‘કહિ ણં મંતે’ ઇત્યાદિ ।

‘કહિ ણં મંતે ! જંબૂદ્વીવેદીવે દાહિણદ્વે મરહે ણામં વાસે પળ્લણ્ણે’ જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે વવ—કસ્મિન્પ્રદેશે યલુ દક્ષિણાર્દ મરત નામ વર્ષ પ્રજ્ઞપ્તમ્ ? ઇતિ ગૌતમેન પૃષ્ઠો મગવાંસ્ત સમ્બોધયન્નાહ—‘ગોયમા વેયદ્દસ્સ પવ્વયસ્સ દાહિણેણ’ હે ગૌતમ ! વૈતાલ્યસ્ય પર્વતસ્ય દક્ષિણે=દક્ષિણદિગ્ભાગે ‘દાહિણ લવણસમુદ્દસ્સ ઉત્તરેણ’ દક્ષિણલવણસમુદ્દસ્ય ઉત્તરે=ઉત્તરદિગ્ભાગે ‘પુરત્થિમલવણસમુદ્દસ્સ’ પૌરસ્ત્યલવણસમુદ્દસ્ય-પૂર્વદિગ્ભવલવણસમુદ્દસ્ય ‘પચ્ચત્થિમેણં’ પશ્ચિમે=પશ્ચિમદિગ્ભાગે ‘પચ્ચત્થિમલવણસમુદ્દસ્સ’ પાશ્ચાત્યલવણસમુદ્દસ્ય=પશ્ચિમદિગ્ભવલવણસમુદ્દસ્ય ‘પુરત્થિમેણં’ પૌરસ્ત્યે=પૂર્વદિગ્ભાગે ‘પ્તથળં’ અત્ર=અસ્મિન્

દક્ષિણાર્દ મરત કહા પર હૈ ? ઇસકા કથન—

“કહિણં મંતે ! જંબૂદ્વીવે દીવે દાહિણદ્વે” ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—હે મદન્ત ! જમ્બૂદ્વીપ નામ કે ઇસ દ્વીપ મેં દક્ષિણાર્ધ “મરહે” મરત “નામં વાસે” નામ કા ક્ષેત્ર “કહિણ પળ્લણ્ણે” કિસ સ્થાન પર કહા ગયા હૈ ? ઇસકે ઉત્તર મેં પ્રશ્ન કહતે હૈ—“ગોયમા । વેયદ્દસ્સ પવ્વયસ્સ દાહિણેણ દાહિણલવણસમુદ્દસ્સ ઉત્તરેણ પુરત્થિમલવણ સમુદ્દસ્સ પચ્ચત્થિમેણ પચ્ચત્થિમલવણસમુદ્દસ્સ પુરત્થિમેણ” હે ગૌતમ ! વૈતાલ્ય પર્વત કી દક્ષિણદિશામેં દક્ષિણદિગ્વર્તી લવણ સમુદ્ર કી ઉત્તર દિશા મેં, પૂર્વદે-ગ્વર્તી લવણસમુદ્ર કી પશ્ચિમદિશા મેં એવં પશ્ચિમદિગ્વર્તી લવણસમુદ્ર કી પૂર્વદિશા મેં “પ્તથળં”

દક્ષિણાર્દ મરત કથા આવેલ છે ? આ વિશે કથન—

‘કહિણં મંતે જંબૂદ્વીવે દીવે દાહિણદ્વે’—ઇત્યાદિ સુત્ર-૧૧॥

ટીકા—હે મદન્ત જંબૂદ્વીપ નામક આ દ્વીપમા દક્ષિણાર્દ “મરહે નામં વાસે” મરત નામક ક્ષેત્ર “કહિણ પળ્લણ્ણે” કયા સ્થળ પર આવેલ છે. આના ૪ વાખમા પ્રશ્ન કહે છે કે “ગોયમા । વેયદ્દસ્સ પવ્વયસ્સ દાહિણેણ દાહિણલવણ સમુદ્દસ્સ ઉત્તરેણ પુરત્થિમ લવણ સમુદ્દસ્સ પચ્ચત્થિમેણ પચ્ચત્થિમ લવણસમુદ્દસ્સ પુરત્થિમેણ” હે ગૌતમ ! વૈતાલ્ય પર્વતની દક્ષિણ દિશામા દક્ષિણદિગ્વર્તી લવણ સમુદ્રની ઉત્તર દિશામા, પૂર્વવર્તી લવણ સમુદ્રની પશ્ચિમદિશામા અને પશ્ચિમદિગ્વર્તી લવણ સમુદ્રની પૂર્વદિશામા “પ્તથળં જંબૂદ્વીવે દીવે

પ્રદેશે સ્વલુ' જંબુદીવેદીવે' જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે 'દાહિણદ્વ મરહે નામં વાસે પળ્લત્તે' દક્ષિણાર્ધ-
ભરતં નામ વર્ષ પ્રજ્ઞસમ્ । તત્ત્વ 'પાઈણ પહીણાય' પ્રાચીનપ્રતિચીનાઽઽયત=પૂર્વ-
પશ્ચિમયોર્દિશો રાયતં=દીર્ઘમ્. 'ઉદીણદાહિણવિત્થિળ્ણે' ઉદીચીનદક્ષિણવિસ્તીર્ણમ્
'ઉત્તરદક્ષિણયોર્દિશો વિસ્તીર્ણ-વિસ્તારયુક્તમ્ 'અદ્ધચંદસંઠાણસંઠી' અર્ધચન્દ્રસંસ્થાન-
સંસ્થિતમ્-અર્ધચન્દ્રસ્ય સંસ્થાનેન-અવયવસંનિવેશેન આકારેણ સંસ્થિતમ્ 'તિહા' ત્રિધા
-ત્રિભિઃ પ્રકારૈઃ 'લવણસમુદ્ધં પુદ્ધે' લવણસમુદ્રં સ્પૃષ્ટમ્ તથાહિ આરોપિતજ્યધનુ-
સ્તુલ્યતયેદં પૂર્વકોટયા પૂર્વલવણસમુદ્રં ધનુઃ પૃષ્ઠેન દક્ષિણલવણસમુદ્રં પશ્ચિકોટયાચ
પશ્ચિમલવણસમુદ્રં સ્પૃષ્ટમિતિ । તથા 'ગંગા સિંધુર્હિ' ગદ્ગાસિન્ધુભ્યાં 'મહાણર્હિ' મહાનદીભ્યાં
'તિભાગપવિમત્તે' ત્રિભાગપ્રવિમત્તં=ત્રિભિર્ભાગૈઃ પ્રવિમત્તં ત્રિભાગી-
કૃતમ્ । તત્રૈવ ભાગત્રયં ષોઘ્યં પૂર્વભાગો લવણસમુદ્રં સંગતયા ગદ્ગામહાનદ્યા કૃતઃ, પશ્ચિ-

જંબુદીવે દીવે દાહિણદ્વમરહે નામ વાસે પળ્લત્તે' જમ્બૂદ્વીપાન્તર્ગત દક્ષિણાર્ધ ભરત નામ કા
ક્ષેત્ર કહા ગયા હૈ, "પાઈણપહીણાય ઉદીણદાહિણવિત્થિળ્ણે અદ્ધચંદસંઠાણસંઠિ" યહ દક્ષિ-
ણાર્ધ મરતક્ષેત્ર પૂર્વ સે પશ્ચિમતક લખ્તા હૈ ઓર ઉત્તર સે દક્ષિણતક ચોડા હૈ ઇસકા આકાર
જૈસા અર્ધચન્દ્ર કા હોતા હૈ વૈસા હૈ "તિહા લવણસમુદ્ધ પુદ્ધે" યહ તોન તરફ સે લવણ સમુદ્ર
કો સ્પર્શ કરતા હૈ, પ્રત્યંચા જિસકે ઉપર ચઢાઈ ગઈ હૈ એસે ધનુષ્ય કે આકાર વાલા હો
જાને સે યહ મરતક્ષેત્ર પૂર્વકોટી સે પૂર્વમલવણ સમુદ્ર કો, ધનુ પૃષ્ઠ સે દક્ષિણ લવણસ-
મુદ્ર કો એવં પશ્ચિમ કોટી સે પશ્ચિમલવણસમુદ્ર કો સ્પર્શ કરતા હૈ. "ગંગા સિંધુર્હિ મહા-
ણર્હિ તિભાગપવિમત્તે દોણિણ મદ્દતીસે જોયણસપ્પ તિણિય ય પગૂણવીસહમાગે જોયણસ્સ વિક્કલ્લ-
મેળં" ગંગા ઓર સિન્ધુનામકી દો મહા નદિયો કે દ્વારા યહ ત્રીન ભાગો મેં વટ ગયા હૈ.
પૂર્વ લવણસમુદ્ર મેં મિલ્લી હુઈ ગંગા નદી કે દ્વારા પૂર્વભાગ ઇસકા ક્રિયા ગયા હૈ, પશ્ચિમલવણસમુદ્ર
મેં મિલ્લી હુઈ સિન્ધુ મહાનદી કે દ્વારા ઇસકા પશ્ચિમભાગ ક્રિયા ગયા હૈ, તથા ગંગા ઓર

દાહિણદ્વમરહે નામ વાસે પળ્લત્તે" જમ્બૂદ્વીપાન્તર્ગત દક્ષિણાર્ધ ભરત નામ ક્ષેત્ર કહેવાય
છે. 'પાઈણપહીણાય ઉદીણદાહિણવિત્થિળ્ણે અદ્ધચંદસંઠાણસંઠિ' આ દક્ષિણાર્ધ
ભરતક્ષેત્ર પૂર્વથી પશ્ચિમ સુધી લાગે છે અને ઉત્તરથી દક્ષિણ સુધી પહોંચે છે આને આકાર
અર્ધ ચન્દ્ર જેવો છે 'તિહા લવણસમુદ્ધ પુદ્ધે' આ ત્રણ ખાબુએથી લવણ સમુદ્રને સ્પર્શે
છે પ્રત્યંચા જે ધનુષની ઉપર ચઢાવવામાં આવી છે એવા ધનુષના આકારવાળો આ પ્રદેશ
થાય છે, તેથી આ પૂર્વકોટીથી પૂર્વ લવણ સમુદ્રને ધનુ પૃષ્ઠથી દક્ષિણ લવણ સમુદ્રને
અને પશ્ચિમકોટીથી પશ્ચિમલવણ સમુદ્રને સ્પર્શે છે "ગંગાસિંધુર્હિ મહાણર્હિ તિભાગ
પવિમત્તે દોણિણ મદ્દતીસે જોયણસપ્પ તિણિય પગૂણવીસહમાગે જોયણસ્સ વિક્કલ્લમેળં"
ગંગા અને સિંધુ નામક બે મહાનદીઓ વડે આ ત્રણ ભાગોમાં સંવિભક્ત થયેલ છે. પૂર્વ
લવણ સમુદ્રમાં મળતી ગંગાનદી વડે આને પૂર્વ ભાગ બુદ્ધે થાય છે પશ્ચિમ સમુદ્રમાં
મળતી સિન્ધુ મહાનદી વડે આને પશ્ચિમ ભાગ પુદ્ધે તરી આવે છે તેમજ ગંગા અને

માગો લવણસમુદ્રં સંગતયા સિન્ધુ મહાનદ્યા કૃતઃ મધ્યમમાગો ગદ્ધાસિન્ધુકૃત ઇતિ ।

અથ વિષ્કમ્ભમાહ—‘દોન્નિ અદ્વતીસે’ ઇત્યાદિ દ્વે અષ્ટાત્રિંશે ‘જોયણસપ્’ યોજનશતે =અષ્ટાત્રિંશદધિકાનિ દ્વિશતયોજનાનિ, ‘તિણિ ય ઇગૂળવીસઈમાગે જોયણસ્સ’ ત્રીન્ ઇકોનવિંશતિમાગાન્ યોજનસ્ય—ઇકોનવિંશતિમાગવિમ્કત્સ્યૈકસ્ય યોજનસ્ય ત્રીન્ માગાંશ્ચ ‘વિક્કમ્ભેણ’ વિષ્કમ્ભેણ વિસ્તારેણ પ્રજ્ઞસમિનિ । અથ દક્ષિણાર્દ્ધભરતસ્ય જીવાં નિરૂપયતિ—‘તસ્સ જીવા’ ઇત્યાદિ । ‘તસ્સ જીવા’ તસ્ય—દક્ષિણાર્દ્ધભરતસ્ય જીવા-જીવેવ—ધનુર્જ્યેવ જીવા—ધનુર્જ્યાઽઽકારઃ ક્ષેત્રવિભાગવિશેષઃ ‘ઉત્તરેણ’ ઉત્તરે—ઉત્તરદિ-ગમાગે ‘પાઈણપહીણાયયા’ પ્રાચીનપતોચીનાઽઽયતા પૂર્વપશ્ચિમયોર્દિશોર્દ્ધૈર્યયુક્તાઃ ‘દુહા’ દ્વિધા=દ્વાભ્યાં પ્રકારાભ્યાં ‘લવણસમુદ્દં પુટ્ટા’ લવણસમુદ્ર સ્પૃષ્ટા તત્ર ‘પુર-ત્થિમિલ્લાપ કોહીપ્પુરત્થિમિલ્લ લવણસમુદ્દં પુટ્ટા’ પૌરસ્ત્યયા—પૂર્વદિગ્ભવયા કોટયા=અગ્રમાગેન પૌરસ્ત્યં=પૂર્વદિગ્ભવં લવણસમુદ્રં સ્પૃષ્ટા ‘પન્ચત્થિમિલ્લાપ કોહીપ્પુરત્થિમિલ્લ લવણસમુદ્દં પુટ્ટા’ પાશ્ચાત્યયા—પશ્ચિમદિગ્ભવયા કોટયા—અગ્રમાગેન પાશ્ચા-ત્યં=પશ્ચિમદિગ્ભવં લવણસમુદ્રં સ્પૃષ્ટા । અથ જીવાયાઃ પ્રમાણમાહ—‘નવજોયણ સહ-સ્સાઈ’ ઇત્યાદિ । ‘નવજોયણ સહસ્સાઈ, નવ યોજન સહસ્સાણિ=નવ સહસ્ર યોજનાનિ ‘સત્તય અહયાલે જોયણસપ્’ સપ્ત ચ અષ્ટચત્વારિંશદ્યોજનશતાનિ=અષ્ટચત્વારિંશ-દધિકાનિ સપ્તશતયોજનાનિ, ‘દુવાલસ ય ઇગૂળવીસઈમાપ્ જોયણસ્સ આયામેણ’

સિન્ધુ હન દોનો નદિયોં કે દ્વારા ટસકા મધ્યમાગ ક્રિયા ગયા હૈ. ‘દોન્ની અદ્વતીસે જોય-ણસપ્ તિણિ ય ઇગૂળવીસઈમાગે જોયણસ્સ વિક્કમ્ભેણ’ હમ દક્ષિણાર્ધ ભરતક્ષેત્ર કા વિસ્તાર

૨૩૮ $\frac{૩}{૧૯}$ યોજન કા હૈ, “તસ્સ જીવા ઉત્તરેણ પાઈણપહીણાયયા દુહા લવણસમુદ્દં પુટ્ટા”

ઉસ દક્ષિણાર્દ્ધભરતકી જીવા—ધનુષ કો ઝ્યાકે જૈસા ક્ષેત્ર વિભાગવિશેષ ઉત્તર દિશા મેં પૂર્વ સે પશ્ચિમદિશાતક લમ્બી હૈ ઔર દો પ્રકાર સે લવણ સમુદ્ર કો છૂ રહી હૈ, પૂર્વદિશાકી કોટિ સે પૂર્વદિશા કે સમુદ્ર કો છૂતી હૈ, ઔર પશ્ચિમ દિશા કી કોટી સે પશ્ચિમ દિશા કે સમુદ્ર કો છૂતિ હૈ । જીવા કા પ્રમાણ કથન—“નવજોયણસહસ્સાઈ સત્તય

અહયાલે જોયણસપ્ દુવાલસ ય ઇગૂળ વીસઈમાપ્ જોયણસ્સ આયામેણ” ૧૭૪૮ $\frac{૧૨}{૧૯}$

સિન્ધુ આ બન્ને નદીઓ વડે આનેા મધ્ય ભાગ ધર્ધ બધ છે “દોન્નિ અદ્વતીસે જોય-ણસપ્ તિણિય ઇગૂળ વીસઈમાગે જોયણસ્સ વિક્કમ્ભેણ” આ દક્ષિણાર્દ્ધ ભરતક્ષેત્રનેા

વિસ્તાર ૨૩૮ $\frac{૩}{૧૯}$ યોજન જેટલો છે “તસ્સ જીવા ઉત્તરેણ પાઈણ પહીણાયયા દુહા લવણ-

સમુદ્દં પુટ્ટા” તે દક્ષિણાર્દ્ધ ભરતની જીવા—ધનુષની બધા જેના ક્ષેત્ર વિભાગવિશેષ—ઉત્તર દિશામાં પૂર્વથી પશ્ચિમ દિશા સુધી લાખી છે અને એ રીતે લવણ સમુદ્રને સ્પર્શી રહી છે પૂર્વદિશાની કોટિથી પૂર્વ દિશાના સમુદ્રને અને પશ્ચિમ દિશાની કોટિથી પશ્ચિમદિશાના સમુદ્રને સ્પર્શી રહી છે જીવાના પ્રમાણ વિષે કથન—“નવજોયણસહસ્સાઈ સત્તય અહયાલે

જોયણસપ્ દુવાલસ ય ઇગૂળવીસઈ માપ જોયણસ્સ આયામેણ” ૧૭૪૮ $\frac{૧૨}{૧૯}$ યોજન જેટલું

દ્વાદશ ચ एकोनविंशतिभागान योजनस्य—एकोनविंशतिभागविभक्तस्य एकस्य योज-
नस्य द्वादशभागान् सा जीवा आयामेन—दैर्घ्येण प्रज्ञप्ता । इत्थ जीवायाः स्वरू-
पं प्रमाणं चाभिधाय सम्प्रति धनुष्पृष्ठप्रमाणमाह—‘तीसे, इत्यादि । ‘तीसे धनु
पुट्टे दाहिणेण’ तस्या जीवायाः दक्षिणे=दक्षिदिग्भागे धनुष्पृष्ठं =धनुष्पृष्ठाऽऽका-
रक्षेत्रविशेषो ‘णव जोयण सहस्साइ’ नवयोजनसहस्राणि—नवसहस्रयोजनानि ‘सत्त-
च्छावट्टे जोयणसए, सप्तषट्पण्ठि योजनशतानि=पट् पण्ठ्यधिकानि सप्त शतयोज-
नानि ‘इक्कं च एगूणवीसइ भागे जोयणस्स’ एकं च एकोनविंशतिभागं योजनस्य
‘किंचि विसेसाहिए’ किंचिद् विशेषाधिकम्—एकोनविंशतिभागविभक्तस्य योजनस्य
किंचिद्विशेषाधिकम् एकं भागं च ‘परिक्खेवेणं’ परिक्षेपेण—परिधिना ‘पण्णत्ते’ प्रज्ञप्तम् ।

अथ दक्षिणार्द्धभरतस्वरूपं प्रश्नोत्तराभ्यां निरूपयितुमाह—‘दाहिणद्धे’ त्यादि,
‘दाहिणद्धभरहस्स णं मंते ! वासस्स केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते ? , हे
मदन्त ! दक्षिणार्द्धभरतस्य वर्षस्य क्षेत्रस्य खलु कीदृशः—कीदृशः ? आकारभाव
प्रत्यवतारः—आकारस्य—स्वरूपस्य भावाः—पर्यायाः आकारभावास्तेषां प्रत्यवतारः—
प्रकटीभावः प्रज्ञप्तः, दक्षिणार्द्धभरतस्य वर्षस्य कीदृशः स्वरूपविशेष—इति भावः’
इति गौतमेन पृष्ठो भगवानाह—‘गोयमा’ ! ‘हे गौतम ! दक्षिणार्द्ध भरतस्य ‘बहु-
समरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते’ बहुसमरमणीयः बहुसमः—अत्यन्त समतलोऽ

योजन का प्रमाण जीवा का लम्बाई की अपेक्षा से है, धनुष्पृष्ठ के प्रमाण का कथन—“तीसे
धनुपुट्टे दाहिणेण णवजोयणसहस्साइ सत्तच्छावट्टे जोयणसए इक्कं च एगूणवीसइभागे जोयणस्स
किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते” उस जीवा का धनुष्पृष्ठ नौ हजार सात सौ ६६
योजन और एक योजन के १९ भागों में से कुछ अधिक एक भाग है यह परिधि की
अपेक्षा दक्षिणार्ध भरत के स्वरूप का कथन—“दाहिणद्ध भरहस्स ण मंते ! वासस्स
केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते” हे मदन्त ! दक्षिणार्धभरतक्षेत्र का स्वरूप कैसा कहा
गया है ? इस प्रकार से जब गौतम स्वामी ने प्रश्न से पूछा—तब प्रश्न ने उनसे कहा—
“गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते—जहानामए आलिगपुक्खरेइ वा जाव णाणा-

પ્રમાણુ ૯વાતુ ૯ બાઈની અપેક્ષાએ છે ધનુષ્પૃષ્ઠનુ પ્રમણુ—કથન—“તીસે ધનુપુટ્ટે દાહિ-
ણેણ ણવજોયણ સહસ્સાઈ સત્તચ્છાવટ્ટે જોયણસપ્પે ઈક્કં ચ ઇગૂણવીસઈભાગે જોયણસ્સ
કિંચિ વીસેસાહિપ્પે પરિક્ખેવેણં પણ્ણત્તે” તે ૯વાતુ ધનુષ્પૃષ્ઠ ૯ હજાર ૭ સો ૬૬ યોજન
અને એક યોજનના ૧૯ ભાગમાથી કંઈક વધારે એક ભાગનું છે. આ પરિધિની અપેક્ષાએ છે
દક્ષિણાર્ધ ભરતના સ્વરૂપનુ કથન—

‘દાહિણદ્ધ મરહસ્સ ણ મંતે વાસસ્સ કેરિસપ આયારભાવપડોયારે પણ્ણત્તે’ હે
ભદ્રંત ! દક્ષિણાર્ધ ભરત ક્ષેત્રનુ સ્વરૂપ કેવુ કહેવાય છે આ પ્રમાણે બ્યારે ગૌતમે પ્રશ્નને
પ્રશ્ન કર્યો ત્યારે પ્રશ્નએ તેમને જવાબ આપતા કહ્યું “ગોયમા ! વહુસમરમણિજ્જે ભૂમિ-

ત એવ રમણીયઃ સુન્દરઃ ભૂમિભાગઃ પ્રગ્નપ્તઃ 'સે જહાનામપ્, સ યથાનામકઃ—આલિ-
જ્ઞપુષ્કર ઇતિ વા તત્ર 'આલિંગપુષ્કરેઈ વા' આલિંગપુષ્કરઃ—મૃદજ્ઞમુખપુટ!' ઇતિ
શબ્દઃ સ્વરૂપનિર્દેશે વા શબ્દો વિકલ્પે, મૃદજ્ઞમુખપુટવદ્—વહુસમરમણીયડત્યર્થઃ ।
યાવચ્છબ્દેન— આલિંગપુષ્કર ઇતિ વા ઇત્યન્તં રાજપ્રશ્નીયસૂત્રસ્ય પઠ્વદશ સૂત્રાદાર
ભ્યૈકોનવિંશતિતમસૂત્રસ્થ નાનાવિધ પશ્ચવર્ણેઃ ઇત્યન્તઃ પૂર્વ યાનિ પદાનિ તાનિ સક-
લાનિ સંગ્રાહ્યાણિ । તદર્થશ્ચ તત્રૈવ મત્કૃતાયાં સુવોધિનીટીકાયાં દ્રષ્ટવ્ય ઇતિ । તથા
'જાણાવિહપંચવર્ણેહિ' નાનાવિધપઠ્વવર્ણેઃ—અનેકપ્રકારકપશ્ચવર્ણે 'મણીહિ તણેહિ ઉવ-
સોમિપ્' મણિમિરતૃણૈશ્ચ ઉપશોભિત ઇતિ । એનાનિ પદાનિ તદર્થશ્ચ ક્રીદ્વશેષતૈર્મણિમિ-
સ્તૃણૈસ્સ ભૂમિભાગ ઉપશોભિત ઇતિ જિજ્ઞાસાયામાહ 'તં જહા' તથથા 'કિત્તિમેહિં ચેવ'
કૃત્રિમૈઃ શિલ્પિકર્ષકાદિપ્રયોગનિષ્પન્નૈઃ 'અકિત્તિમેહિંચેવ' અકૃત્રિમૈઃ રત્ન સ્વનાં ભૂમી
ચ સ્વતઃ સંજાતૈરિતિ ।

વિહ પચ વર્ણેહિ મણીહિ તણેહિ ઉવસોમિપ્—તં જહા કિત્તિમેહિં ચેવ અકિત્તિમેહિંચેવ" હે
ગૌતમ । દક્ષિણાર્ધભરત કા બહુસમહોને સે ભૂમિભાગ રમણીય કહા ગયા હૈ. વહુ એસા
બહુસમ હૈ જૈસા કિ આલિંગ—મૃદજ્ઞ કા મુખપુટ હોતા હૈ. યહાં પર ઇતિ શબ્દ સ્વરૂપ-
નિર્દેશ મેં ઔર "વા" શબ્દ વિકલ્પ મેં પ્રયુક્ત હુઆ હૈ યહાં યાવત્ શબ્દ રાજપ્રશ્નીય
સૂત્ર કે "આલિંગપુષ્કરેઈ" હિસ ૧૫વેં સૂત્ર સે લગાકર ૧૯ વે સૂત્ર કે "નાનાવિહ
પંચવર્ણેહિ" યહાં તક કે પાઠ મેં જિતને મી પદ આયે હૈં વે સબ યહાં ગૃહીત કિયે
ગયે હૈં હિન સમસ્ત પદો કી વ્યાખ્યા વહીં પર મૈને ડસકી સુવોધિની ટીકા મેં કર
દી હૈ—અતઃ વહીં સે યહુ સબ કથન જાનલેના ઇચ્છિય વહીં પર કા જો અનેક પ્રકાર
કે પચવર્ણોં વાલે મણિયો સે ઔર તૃણો સે ભૂમિભાગ ઉપશોભિત કહા ગયા હૈ સો યે
મણિ ઔર તૃણ કૃત્રિમ શિલ્પિયોં દ્વારા એવ કર્ષકોં દ્વારા પ્રયોગ સે નિષ્પન્ન હુય મી હૈ ।

મણે પળણસે—સે જહાનામપ્ આલિંગપુષ્કરેઈવા જાવ જાણાવિહપંચવર્ણેહિ મણિહિ
તણેહિ ઉવસોમિપ્ તંજહા કિત્તિમેહિં ચેવ અકિત્તિમેહિં ચેવ 'હે ગૌતમ । દક્ષિણાર્ધ' ભરતને
ભૂમિભાગ બહુસમ હોવાથી રમણીય લાગે છે તે આલિંગ મૃદ ગના મુખ પુષ્ક જેવો બહુ
સમ છે. અહીં ઇતિ શબ્દ સ્વરૂપ નિર્દેશમાં અને 'વા' શબ્દ વિકલ્પ માટે પ્રયુક્ત થયેલા
છે અહીં યાવત્ શબ્દથી રાજપ્રશ્નીય સૂત્રના "આલિંગ પુષ્કરેઈ વા" આ ૧૫ માં સૂત્રથી
માંડીને ૬મા સૂત્રના 'નાનાવિહ પંચવર્ણેહિ' અહીં સુધીના પાઠમાં જેટલા પદો આવેલા
છે તે સર્વે અહીં ગૃહીત થયેલા છે આ સર્વ પદોની વ્યાખ્યા મેં ત્યાજ તેની સુવોધિની
ટીકામાં કરી છે તેથી ત્યાથીજ આ બધુ કથન બાણી દ્વારા બોલ્યો ત્યાંનો ભૂમિ ભાગ જે
અનેક પ્રકારના પાંચ વર્ણોવાળા મણિઓ તેમજ તૃણોથી ઉપશોભિત કહેવાય છે તે આ
સર્વ મણિ અને તૃણો કૃત્રિમ શિલ્પિઓ વડે તેમજ કર્ષકો વડે પ્રયોગથી નિષ્પન્ન પશુ
થયેલા છે અને અકૃત્રિમ રત્નપ્રાણુમાં તેમજ ભૂમિમાં સ્વતઃ સ્વભાવથી જનિત પશુ થયેલા છે

નજુ સામાન્યતો ભરતવર્ણનસૂત્રે 'સ્થાણુવહુલ' વિષમવહુલ ક્ષણકવહુલમ્ ઇત્યાદિ યદુક્તં તેન સહ बहुसमरमणीयत्ववर्णनपरेऽस्मिन् સૂત્રે વક્ષ્યમાણોત્તરાર્દ્ધ ભરતવર્ણકસૂત્રેચ વિરોધઃ આયાતિ વિષમત્વસમત્વયોસ્તેજસ્તિમિરયોરિવ ધર્માધર્મયોરિવ સુરાસુરયો રિવ પરસ્પરં વિરોધાત્ ? ન ચારકવિશેષાપેક્ષમિદં સૂત્રદ્વયં, સામાન્યતો વર્ણકભરત સૂત્રં તુ અવસર્પિણ્યાં તૃતીયારકાન્તાદારભ્ય વર્ષશતન્યૂન દુષ્પમારક પર્યન્તરૂપ પ્રજ્ઞાપક કાલાપેક્ષમિતિ ન વિરોધાવકાશ ઇતિ વાચ્યમ્ । મળીનાં તૃણાનાં કૃત્રિમત્વાકૃત્રિમ-ત્વોભયપ્રતિપાદનેનૈતત્સૂત્રદ્વયસ્યાપિ પ્રજ્ઞાપકકાલાપેક્ષત્વસ્યૈવોચિત્યાત્ કૃત્રિમમણિતૃણાનાં

શંકા—સામાન્ય સે જો ભરતક્ષેત્ર કે વર્ણન કરને વાલા સૂત્ર કહા ગયા હૈ ઉસમેં વહોં કા ભૂમિભાગ સ્થાણુવહુલ, વિષમપ્રદેશવહુલ एवं ક્ષણકવહુલ આદિ રૂપ સે કહા ગયા હૈ પરંતુ હસ દક્ષિણાર્ધ-ભરતક્ષેત્ર કે વર્ણન મેં યહોં કા ભૂમિભાગ बहुसमरमणीय કહા ગયા હૈ સો ઉસ વર્ણન સે હસ વર્ણન મેં વિષમતા ઓર સમતા કે વિરોધ કો ઢેકર તેજ ઓર તિમિર કી તરહ ધર્મ ઓર અધર્મ કી તરહ एवं સુર ઓરઅસુર કી તરહ પરસ્પર વિરોધ સ્પષ્ટ હી હૈ. યદિ હસ વિરોધ કો હટાને કે લિખે એસા કહા જાવે કિ દક્ષિણાર્દ્ધભરત एवं વક્ષ્ય-માણ ઉત્તરાર્ધ ભરત ક્ષેત્ર કે પ્રતિપાદક સૂત્રદ્વય તો—આરક વિશેષ કી અપેક્ષા ઢેકર કહે ગયે હૈ ઓર ભરત ક્ષેત્ર કા જો સૂત્ર હૈ વહ સામાન્યસે ભરતક્ષેત્ર કા વર્ણન કરનેવાલા કહા ગયા હૈ સો વહ અવસર્પિણી કાલ મેં તૃતીય આરક કે અન્તર સે ઢેકર વર્ષ શતન્યૂન દુષ્પમારક પર્યન્તરૂપ પ્રજ્ઞાપક કાલ કો અપેક્ષા સે કહા ગયા હૈ અતઃ વિરોધ આને કી કોઈ વાત હી નહીં ડઠતી હૈ. સો એસા કહના મી ડચિત નહીં હૈ—ક્યોંકિ દક્ષિણાર્ધ एवं વક્ષ્યમાણ ઉત્તરાર્ધ ભરત સંબંધી જો સૂત્ર હૈં વે મી મણિ ઓર તૃણો મેં કૃત્રિમતા ઓર અકૃત્રિમતા કે પ્રતિપાદન સે

શંકા—ભરતક્ષેત્રના વિષે વર્ણન જે સૂત્રમાં પહેલાં કરવામાં આવ્યું છે તેમાં સામાન્યરૂપમાં આમ કહેવામાં આવ્યું છે કે ત્યાંના ભૂમિભાગ સ્થાણુ બહુલ, વિષમ પ્રદેશ બહુલ તેમજ કંટક બહુલ યુક્ત છે પરંતુ દક્ષિણાર્દ્ધ ભરતક્ષેત્રના વર્ણનમાં ત્યાંના ભૂમિભાગ बहुसमरमणीય કહેવામાં આવેલ છે તો તે વર્ણનમાં અને આ વર્ણનમાં વિષમતા અને સમતાના વિરોધને લઈને, તેજ અને તિમિરની જેમ, ધર્મ અને અધર્મની જેમ તેમજ સુર અને અસુરની જેમ પરસ્પર વિરોધ સ્પષ્ટરીતે તરી આવે છે જો આ વિરોધના પરિહાર માટે આમ કહેવામાં આવે કે દક્ષિણાર્દ્ધ ભરત તેમજ વક્ષ્યમાણ ઉત્તરાર્ધ ભરતક્ષેત્રના પ્રતિપાદક સૂત્રાર્થે તો આરક વિશેષણની અપેક્ષાએ કહેવામાં આવેલ છે અને ભરતક્ષેત્ર વિષે જે સૂત્ર છે તે સામાન્યની અપેક્ષાએ ભરતક્ષેત્રનું વર્ણન કરનાર છે. તો આ અવસર્પિણી કાલમાં તૃતીય આરકના અતર્થી લઈને વર્ષ શતન્યૂન દુષ્પમારક પર્યન્તરૂપ પ્રજ્ઞાપક કાળની અપેક્ષાએ કહેવામાં આવેલ છે. એથી વિરોધ જેવી સ્થિતિ ઉત્પન્ન થતી નથી. તો વિરોધ છે એવું કથન યોગ્ય ન કહેવાય કેમકે દક્ષિણાર્ધ તેમજ વક્ષ્યમાણ ઉત્તરાર્ધ ભરતક્ષેત્ર બંને જે સૂત્ર છે તે પણ મણિ અને તૃણોમાં કૃત્રિમતા અને અકૃત્રિમતાના પ્રતિપાદનથી પ્રજ્ઞાપક

ત એવ રમણીયઃ સુન્દરઃ भूमिभागः प्रवृत्तः ‘સે જહાનામણ , સ યથાનામકઃ—આલિ-
જ્ઞપુન્કર ઇતિ વા તત્ર ‘આલિંગપુન્કરેઈ વા’ આલિજ્ઞપુન્કરઃ—મૃદજ્ઞમુખપુટઃ’ ઇતિ
શબ્દઃ સ્વરૂપનિર્દેશે વા શબ્દો વિકલ્પે, મૃદજ્ઞમુખપુટવદ્—વહુસમરમણીયઇત્યર્થઃ ।
યાવચ્છબ્દેન— આલિજ્ઞપુન્કર ઇતિ વા ઇત્યન્તં રાજપ્રશ્નીયસૂત્રસ્ય પઠ્ચદશ સૂત્રાદાર-
મ્યૈકોનર્વિશતિતમસૂત્રસ્થ નાનાવિધ પશ્ચવર્ણેઃ ઇત્યન્તઃ પૂર્વ યાનિ પદાનિ તાનિ સક-
લાનિ સંગ્રાહ્યાણિ । તદર્થશ્ચ તત્રૈવ મત્કૃતાયાં સુબોધિનીટીકાયાં દ્રષ્ટવ્ય ઇતિ । તથા
‘જાણાવિહપંચવર્ણેઈ’ નાનાવિધપઠ્ચવર્ણેઃ—અનેકપ્રકારકપશ્ચવર્ણે ‘મણીઈ તણેઈ ઉવ-
સોમિણ’ મણિમિસ્તૃણૈશ્ચ ઉપશોભિત ઇતિ । એતાનિ પદાનિ તદર્થશ્ચ કીદશસ્તૈર્મણિમિ-
સ્તૃણૈસ્સ ભૂમિભાગ ઉપશોભિત ઇતિ જિજ્ઞાસાયામાહ ‘તં જહા’ તદ્યથા ‘કિત્તિમેઈ ચેવ’
કૃત્રિમૈઃ શિલ્પિકર્પકાદિપ્રયોગનિષ્પન્નૈઃ ‘અકિત્તિમેઈચેવ’ અકૃત્રિમૈઃ રત્ન સ્વનાં ભૂમૌ
ચ સ્વતઃ સંજાતૈરિતિ ।

વિહ પચ વર્ણેઈ મણીઈ તણેઈ ઉવસોમિણ—તં જહા કિત્તિમેઈ ચેવ અકિત્તિમેઈચેવ” હે
ગૌતમ । દક્ષિણાર્ધભરત કા બહુસમહોને સે ભૂમિભાગ રમણીય કહા ગયા હૈ. વહ એસા
બહુસમ હૈ જૈસા કિ આલિજ્ઞ—મૃદજ્ઞ કા મુખપૃષ્ઠ હોતા હૈ. યહાં પર ઇતિ શબ્દ સ્વરૂપ-
નિર્દેશ મેં ઔર ‘વા’ શબ્દ વિકલ્પ મેં પ્રયુક્ત હુઆ હૈ યહાં યાવત્ શબ્દ રાજપ્રશ્નીય
સૂત્ર કે ‘‘આલિંગપુન્કરેઈ’’ હસ ૧૫વેં સૂત્ર સે લગાકર ૧૯ વે સૂત્ર કે ‘‘નાનાવિહ
પંચવર્ણેઈ’’ યહાં તક કે પાઠ મેં જિતને મી પદ આયે હૈં વે સબ યહાં ગૃહીત કિયે
ગયે હૈં इन समस्त पदों की व्याख्या वहीं पर मैंने उसकी सुबोधिनी टीका में कर
दी है—अतः वहीं से यह सब कथन जानलेना चाहिए वहाँ पर का जो अनेक प्रकार
के पंचवर्णों वाले मणियों से और तृणों से भूमिभाग उपशोभित कहा गया है सो ये
मणि और तृण कृत्रिम शिल्पियों द्वारा एवं कर्षको द्वारा प्रयोग से निष्पन्न हुए भी है ।

મને પળણ્ણે—સે જહાનામણ આલિંગપુન્કરેઈવા જાવ જાણાવિહપંચવર્ણેઈ મણિઈ
તણેઈ ઉવસોમિણ તંજહા કિત્તિમેઈ ચેવ અકિત્તિમેઈ ચેવ ‘હે ગૌતમ । દક્ષિણાર્ધ ભરતને
ભૂમિભાગ બહુસમ હોવાથી રમણીય લાગે છે તે આલિંગ મૃદગના મુખ પૃષ્ઠ જેવો બહુ
સમ છે. અહીં ઈતિ શબ્દ સ્વરૂપ નિર્દેશમાં અને ‘વા’ શબ્દ વિકલ્પ માટે પ્રયુક્ત થયેલ
છે અહીં યાવત્ શબ્દથી રાજપ્રશ્નીય સૂત્રના ‘‘આલિંગ પુન્કરેઈ વા’’ આ ૧૫ મા સૂત્રથી
માંડીને ૬મા સૂત્રના ‘‘નાનાવિહ પંચવર્ણેઈ’’ અહીં સુધીના પાઠમા જેટલા પદો આવેલ
છે તે સર્વે અહીં ગૃહીત થયેલા છે આ સર્વ પદોની વ્યાખ્યા મેં ત્યાજ તેની સુબોધિની
ટીકામા કરી છે તેથી ત્યાથીજ આ બધુ કથન બાબી લેવું જોઈએ ત્યાનો ભૂમિ ભાગ જે
અનેક પ્રકારના પાંચ વર્ણોવાળા મણિઓ તેમજ તૃણોથી ઉપશોભિત ઠકેવાય છે તે આ
સર્વ મણિ અને તૃણો કૃત્રિમ શિલ્પિઓ વડે તેમજ કર્ષકો વડે પ્રયોગથી નિષ્પન્ન પદ્ધ
થયેલા છે અને અકૃત્રિમ રત્નઆણ્યમાં તેમજ ભૂમિમા સ્વતઃ સ્વભાવથી જનિત પદ્ધ થયેલા છે.

નનુ સામાન્યતો ભરતવર્ણનસૂત્રે 'સ્થાણુવહુલે' વિષમવહુલં કણ્ટકવહુલમ્ इत्यादि यदुक्तं तेन सह बहुसमरमणीयत्ववर्णनपरेऽस्मिन् सूत्रे वक्ष्यमाणोत्तरार्द्धे भरतवर्णकसूत्रेच विरोधः आयाति विषमत्वसंगत्यायोस्तेजस्तिमिरयोरिव धर्माधर्मयोरिव सुरासुरयो रिव परस्परं विरोधात् ? न चारकविशेषापेक्षमिदं सूत्रद्वयं, सामान्यतो वर्णकभरत सूत्रं तु अवसर्पिण्यां तृतीयारकान्तादारभ्य वर्षशतन्यून दुष्पमारक पर्यन्तरूप प्रज्ञापक कालापेक्षमिति न विरोधावकाश इति वाच्यम् । मणीनां तृणानां कृत्रिमत्वाकृत्रिम-त्वोभयप्रतिपादनेनैतत्सूत्रद्वयस्यापि प्रज्ञापककालापेक्षत्वस्यैवोचित्यात् कृत्रिममणितृणानां

શકા-સામાન્ય સે જો ભરતક્ષેત્ર કે વર્ણન કરને વાલા સૂત્ર કહા ગયા હૈ ઉસમેં વહાં કા ભૂમિભાગ સ્થાણુવહુલ, વિષમપ્રદેશવહુલ એવં કણ્ટકવહુલ આદિ રૂપ સે કહા ગયા હૈ પરંતુ હસ દક્ષિણાર્ધ-ભરતક્ષેત્ર કે વર્ણન મેં યહાં કા ભૂમિભાગ બહુસમરમણીય કહા ગયા હૈ સો ઉસ વર્ણન સે હસ વર્ણન મેં વિષમતા ઔરે સમતા કે વિરોધ કો ઠેકર તેજ ઔરે તિમિર કી તરહ ધર્મ ઔરે અધર્મ કી તરહ એવં સુર ઔરે અસુર કી તરહ પરસ્પર વિરોધ સ્પષ્ટ હી હૈ. યદિ હસ વિરોધ કો હટાને કે લિયે એસા કહા જાવે કિ દક્ષિણાર્ધે ભરત એવં વક્ષ્ય-માણ ઉત્તરાર્ધે ભરત ક્ષેત્ર કે પ્રતિપાદક સૂત્રદ્વય તો-આરક વિશેષ કી અપેક્ષા ઠેકર કહે ગયે હૈ ઔરે ભરત ક્ષેત્ર કા જો સૂત્ર હૈ વહ મામાન્યસે ભરતક્ષેત્ર કા વર્ણન કરનેવાલા કહા ગયા હૈ સો વહ અવસર્પિણી કાલ મેં તૃતીય આરક કે અન્તર સે ઠેકર વર્ષ શતન્યૂન દુષ્પમારક પર્યન્તરૂપ પ્રજ્ઞાપક કાલ કો અપેક્ષા સે કહા ગયા હૈ અતઃ વિરોધ આને કી કોઈ વાત હી નહીં ઉઠતી હૈ । સો એસા કહના મી ઉચિત નહીં હૈ-ક્યોંકિ દક્ષિણાર્ધ એવં વક્ષ્યમાણ ઉત્તરાર્ધે ભરત સંબંધી જો સૂત્ર હૈં વે મી મણિ ઔરે તૃણો મેં કૃત્રિમતા ઔરે અકૃત્રિમતા કે પ્રતિપાદન સે

શંકા-ભરતક્ષેત્રના વિષે વર્ણન જે સૂત્રમાં પહેલા કરવામાં આવ્યું છે તેમાં સામાન્યરૂપમાં આમ કહેવામાં આવ્યું છે કે ત્યાંના ભૂમિભાગ સ્થાણુ બહુલ, વિષમ પ્રદેશ બહુલ તેમજ કંટક બહુલ યુક્ત છે પરંતુ દક્ષિણાર્ધે ભરતક્ષેત્રના વર્ણનમાં ત્યાંના ભૂમિભાગ બહુસમરમણીય કહેવામાં આવેલ છે તો તે વર્ણનમાં અને આ વર્ણનમાં વિષમતા અને સમતાના વિરોધને લઈને, તેજ અને તિમિરની જેમ, ધર્મ અને અધર્મની જેમ તેમજ સુર અને અસુરની જેમ પરસ્પર વિરોધ સ્પષ્ટરીતે તરી આવે છે જો આ વિરોધના પરિહાર માટે આમ કહેવામાં આવે કે દક્ષિણાર્ધે ભરત તેમજ વક્ષ્યમાણ ઉત્તરાર્ધે ભરતક્ષેત્રના પ્રતિપાદક સૂત્રદ્વય તો આરક વિશેષણની અપેક્ષાએ કહેવામાં આવેલ છે અને ભરતક્ષેત્ર વિષે જે સૂત્ર છે તે સામાન્યની અપેક્ષાએ ભરતક્ષેત્રનું વર્ણન કરનાર છે. તો આ અવસર્પિણી કાલમાં તૃતીય આરકના અંતથી લઈને વર્ષ શતન્યૂન દુષ્પમારક પર્યન્તરૂપ પ્રજ્ઞાપક કાળની અપેક્ષાએ કહેવામાં આવેલ છે. એથી વિરોધ જેવી સ્થિતિ ઉત્પન્ન થતી નથી. તો વિરોધ છે એવું કથન યોગ્ય ન કહેવાય કેમકે દક્ષિણાર્ધ તેમજ વક્ષ્યમાણ ઉત્તરાર્ધે ભરતક્ષેત્રની જે સૂત્ર છે તે પણ મણિ અને તૃણોમાં કૃત્રિમતા અને અકૃત્રિમતાના પ્રતિપાદનથી પ્રજ્ઞાપક

પ્રજ્ઞાપક કાલ એવ સમ્ભવાત્ ‘ ઇતિ ચેચ્છૂયતામ્ સ્થાણુવહુલં વિષમવહુલમ્ ઇત્યાદિ સૂત્રં ભરતસ્ય વહુસ્થલે સ્થાણુસમ્પન્નં વૈષમ્યસમ્પન્નં ચેતિ પ્રતિપાદકં વહુસમરમણીયો ભૂમિભાગ’ ઇત્યેતત્પદગર્ભિતં ચ સૂત્રદ્વયં ભરતસ્ય કચિદ્દેશવિશેષે પુરુષવિશેષસ્ય પુણ્યફલમોગાર્થમત્યન્તસમો ભૂમિભાગે । રમણીયોઽસ્તીત્યેતત્પ્રતિપાદકમિતિ ન વિરોધ શક્ત્વા મોક્તૃવૈચિત્ર્યે સતિ મોગ્યવૈચિત્ર્યસ્ય નિયમેન સત્ત્વાત્ । एतेन भरतवर्षस्यैकान्त शुभैकान्ताशुभमिश्ररूपकालत्रयाधारत्वं सूचितम् । तत्रैकान्तशुभे काले सर्वे क्षेत्रभावाः शुभा एव भवन्ति एकान्ताशुभे काले सर्वे भावाः अशुभा एव भवन्ति, मिश्रकाले

પ્રજ્ઞાપક કાલ કી અપેક્ષા સે હી કહે ગયે હૈં ક્યોંકિ હિસ પ્રકાર કે મળ્યાદિકો કા સદ્ભાવ પ્રજ્ઞાપક કાલ મેં હી હોતા હૈ,

ઉત્તર-ભરત ક્ષેત્ર કે વર્ણન મેં જો “સ્થાણુવહુલ, વિષમ સ્થાન વહુલ” ઇત્યાદિ રૂપ સે ભૂમિભાગ વર્ણિત હુઆ હૈ વહુ ભરત ક્ષેત્ર કે અનેક સ્થળો કો લેકર વર્ણિત હુઆ હૈ ક્યોંકિ ભરત ક્ષેત્ર કે કઈ સ્થળ એસે હૈ જો સ્થાણુ સપન્ન ઔર વિષમતાસપન્ન હૈ તથા “વહુસમરમણીય ભૂમિભાગ હૈ” હિસ તરહ કે પદ સે ગર્ભિત જો સૂત્રદ્વય કહે ગયે હૈ વે યહ પ્રકટ કરતે હૈ કિ ભરતક્ષેત્ર કે કિસી દેશ વિશેષ મેં પુરુષ વિશેષ કે પુણ્યફલ કે મોગાર્થ અત્યન્તસમ ભૂમિભાગ હોતા હૈ ઔર વહુ રમણીય હોતા હૈ । હિસ તરહ કે પ્રતિપાદન મેં વિરોધ કે લિયે કોઈ સ્થાન નહીં હૈ ક્યોંકિ મોક્તાઓ કી વિચિત્રતા સે મોગ્ય પદાર્થો મેં વિચિત્રતા કા સદ્ભાવ નિયમ સે દેસ્તા હી જાતા હૈ । અતઃ ભરતક્ષેત્ર કાલ કી અપેક્ષા એકાન્તતઃ શુભ કા મી આધારમૂત હોતા હૈ અશુભ કા મી આધારમૂત હોતા હૈ ઔર શુભાશુભ

કાળની અપેક્ષાએ જ કહેવામાં આવેલ છે કેમકે આ જાતના મણિ વગેરેના સદ્ભાવ પ્રજ્ઞાપક કાળમાં જ થાય છે ઉત્તર-ભરતક્ષેત્રના વર્ણનમાં જે સ્થાણુ બહુલ વિષમ સ્થાન બહુલ વગેરે રૂપમાં જે ભૂમિભાગ વર્ણિત થયેલ છે તે ભરત ક્ષેત્રના ઘણા સ્થળોને લઈને વર્ણિત થયેલ છે કેમકે ભરત ક્ષેત્રના અનેક સ્થળો એવાં છે કે જે એ સ્થાણુ સપન્ન અને વિષમતા સપન્ન છે તેમજ ‘બહુસમરમણીયભૂમિભાગવાળા’ છે આ જાતના પદોથી ગર્ભિત જે સૂત્રદ્વય નિરૂપિત કરવામાં આવેલા છે, તેમનાથી આ પ્રકટ થાય છે કે ભરતક્ષેત્રના કોઈ દેશ વિશેષમાં પુરુષ વિશેષના પુણ્યફળના ઉપસોગમાટે અત્યંત સમભૂમિભાગ હોય છે, અને તે રમણીય હોય છે આ જાતના પ્રતિપાદનમાં વિરોધ માટે કોઈ સ્થાન જ નથી કેમકે ભોક્તાઓની વિચિત્રતાથી મોગ્ય પદાર્થોમાં વિચિત્રતાનો સદ્ભાવ યથાનિયમ એવામાં આવે જ છે, એથી ભરતક્ષેત્ર કાળ ની અપેક્ષાએ એકાન્તતઃ શુભાધારમૂત પણ હોય છે તેમજ અશુભાધારમૂત પણ હોય છે, તથા શુભાશુભ બન્ને રૂપમાં પણ હોય છે બ્યારે એકાન્ત શુભકાળ હોય છે ત્યારે તેમાં બેટલા ક્ષેત્રો છે તે સર્વે શુભરૂપજ હોય છે એકાન્ત અશુભ કાલમાં સર્વે અશુભરૂપજ હોય છે તેમજ શુભાશુભમિશ્રકાલમાં કયાક તો શુભતા રહે છે

तु चिच्छुभाःक्वचिच्छाशुभाः । इत्थं चात्र सूत्रत्रयमवसर्पिण्यास्तृतीयारकान्तादारभ्य वर्षशतन्यूनदुष्मभारकपर्यन्तो यो मिश्रकालस्तदपेक्षया बोध्यम् न तु एकान्ताशुमष-
ष्टारककालापेक्षम्, तत्र विरोधस्यावार्यमाणत्वादिति सर्वं समञ्जसम् ।

अथ दक्षिणार्द्धभरतोद्भवमनुष्यस्वरूपं पृच्छति 'दाहिणद्धभरहेणं भंते ? वासे मणुयाणं केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते' हे भदन्त ! दक्षिणार्द्धभरते खलु वर्षे मनुजानां मनुष्याणां कीदृशकः किं स्वरूपः आकारभावप्रत्यवतारः स्वरूपपर्यायप्रादुर्भावः प्रज्ञप्तः ! इति गौतमेन पृष्ठो भगवानाह—'गोयमा' हे गौतम ! तेणं मणुया' ते खलु मनुजाः मानवाः 'बहुसंघयणा' बहुसंहननाः—बहूनि—अनेकानि वज्र-
शृषमनाराचादीनि संहनानि—शरीरदाढ्यसम्पादकास्थिसमूहरूपाणि येषां ते तथा ।
तथा 'बहुसंठाणा' बहुसंस्थानाः बहूनि—प्रचूराणि संस्थानानि—चमचतुरस्रादि लक्षणश-
रीराकृतिविशेषा येषां ते तथा, 'बहुउच्चत्तपज्जवा' बहुउच्चत्वपर्यवाः बहवः अनेकविधा
उच्चत्वपर्यवाः उच्चत्वस्य शरीरोन्नतत्वस्य पर्यवाः पठच्चधनुःशतहस्तप्रमाणादिकाः

दोनों का भी आधारभूत होता है । जब एकान्त शुभ काल होता है तब उसमें जितने भी क्षेत्र हैं वे सब शुभरूप ही होते हैं एकान्त अशुभकाल में सब ही अशुभरूप ही होते हैं एव शुभाशुभ मिश्रकाल में कहीं पर शुभता रहती है और कहीं पर अशुभता रहती है । इस तरह सूत्रत्रय अवसर्पिणी के तृतीय आरक के अन्त से लेकर वर्ष शतन्यून दुष्मभारक पर्यन्त जो मिश्र काल है उसकी अपेक्षा से कहे गये हैं । एकान्त अशुभ आरकरूप षष्ठ काल की अपेक्षा से नहीं—
क्योंकि वहाँ पर इस प्रकार के कथन में विरोध का आना अनिवार्य है

दक्षिणार्धभरत में उत्पन्न हुए मनुष्यों का कथन—

'दाहिणद्धभरहेणं भंते ! मणुयाणं केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते'

इस सूत्र द्वारा गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है—हे भदन्त ! दक्षिणार्द्ध भारत में रहनेवाले मनुष्यों का आकारभाव प्रत्यवतार—स्वरूप कैसा कहा गया है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं—
"गोयमा ! तेणं मणुया बहुसंघयणा, बहुसंठाणा, बहु उच्चत्तपज्जवा" हे गौतम ! दक्षिणार्ध-
भरत में रहनेवाले मनुष्य अनेक वज्रशृषमनाराच आदि सहनन वाले होते हैं, अनेक समचतुरस्र आदि संस्थानवाले होते हैं, अनेक प्रकार की ५०० धनुष आदि रूप शारीरिक उच्चतावाले होते

अने कथांके अशुभना रहे छे आ प्रमाणे सूत्रत्रय अवसर्पिणीना तृतीय आरकना अंतर्धी भांडीने वर्षशतन्यून दुष्मभारकपर्यन्त जे मिश्रकाल छे तेनी अपेक्षाजे कडेवाभा आवेल छे, जेकान्त अशुभ आरक ३५ पञ्च कालनी अपेक्षाजे कडेवाभा आवेल नथी केभके त्या आ जतना कथनमा विरोधनी स्थिति उत्पन्न थवी अनिवार्य ज छे

दक्षिणार्ध भरतमा उत्पन्न थयेला मनुष्योना स्वइयणु कथन—

"दाहिणद्धभरहेणं भंते ! वासे मणुयाणं केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते"

आ सूत्र पडे गौतमे प्रभुने जेवी रीते प्रश्न कथे के छे भदन्त ! दक्षिणार्द्ध भरतमा रहेनारा भाषुसेना आकार भाव प्रत्यवतार—स्वइय—केवा छे, जवाणभां प्रभु कहे छे के 'गोयमा तेणं मणुया बहुसंघयणा बहुसंठाणा बहु उच्चत्तपज्जवा छे गौतम ! दक्षिणार्द्धभरतमा रहेनारा मनुष्ये अनेक वज्र शृषम नाराच वगेरे सहननवाणा छेय छे अनेक समचतुरस्र

વિશેષા યેષાં તે તથા' તથા 'બહુઆઝ પજ્જવા' બહુઆયુઃ પર્યવાઃ વહવઃ અનેકવિધાઃ આયુઃ પર્યવાઃ આયુષો જીવિતસ્ય પર્યવાઃ પૂર્વકોટિ વર્ષશતાદિકા વિશેષા યેષાં તે તથા 'બહુઈં વાસાઈ' બહુનિ વર્ષાણિ' સંવત્સરાન્ 'આઝં' આયુઃ જીવિતં 'પાલેતિ' પાલયન્તિ ધારયન્તિ 'પાલિત્તા' પાલયિત્વા 'અપ્પેગઈયા' અપ્યેકકે અપ્યેકે કેચિત્ મનુજાઃ 'નિરયગામી' નિરયગામિનઃ નરકગતિગામિનઃ 'અપ્પેગઈયા' અપ્યેકકે કેચિત્ 'તિરિયગામી' તિર્યગામિનઃ તિર્યગતિગામિનઃ 'અપ્પેગઈયા' અપ્યેકકે કેચિત્ 'મણુયગામી' મનુજગામિનઃ મનુષ્યગતિગામિનઃ 'અપ્પેગઈયા' અપ્યેકકે કેચિત્ 'દેવગામી' દેવગામિનઃ દેવગતિગામિનઃ 'અપ્પેગઈયા' અપ્યેકકે કેચિત્ મનુજાઃ 'સિજ્જતિ' સિધ્ધન્તિ સકલકાર્યકારિ તથા સિદ્ધા ભવન્તિ 'બુઝ્ઝંતિ' બુધ્ધન્તે વિમલકેવલલોકેન સકલલોકાલોકં જાનન્તિ 'મુચ્ચંતિ' મુચ્ચન્તે સર્વકર્મભ્યો મુક્તા ભવન્તિ, 'પરિણિવ્વાયંતિ' પરિનિર્વાન્તિ સમસ્તકર્મકૃતવિકારરહિતત્વેન સ્વસ્થા 'ભવન્તિ સન્નવદુક્ખાણમંત કરેતિ' સર્વદુઃખાનામ્ શારીરિક

હૈં "બહુ આઝ પજ્જવા" અનેક પ્રકાર કી આયુવાલે પૂર્વકોટિ રૂપ એવં સૌ વર્ષ આદિ રૂપ આયુ વાલે હોતે હૈં "બહુઈ વાસાઈ આઝ પાલેતિ, પાલિત્તા અપ્પેગઈયા નિરયગામી, અપ્પેગઈયા તિરિયગામી, અપ્પેગઈયા, મણુયગામી, અપ્પેગઈયા દેવગામી" અનેક વર્ષો કી આયુ કે વે મોક્ષા હોતે હૈં ઇસ તરફ સે આયુ-જીવનકાલ કો મોગ કરકે-સમાપ્ત કરકે ઇનમેં સે કિતનેક એસે હોતે હૈં જો મર કર તિર્યગગતિ મેં જાતે હૈં કિતનેક એસે હોતે હૈં જો મરકર મનુષ્યગતિ મેં જાતે હૈ, ઔર કિતનેક એસે હૈ જો મરકર દેવગતિ મેં જાતે હૈં તથા "અપ્પેગઈયા સિજ્જતિ, બુઝ્જતિ, મુચ્ચંતિ, પરિણિવ્વાયંતિ સન્નવ દુક્ખાણ મંત કરેતિ" કિતનેક એસે મી હોતે હૈં જો સિદ્ધ અવસ્થા કો પ્રાપ્ત કરતે હૈં અર્થાત્ કૃતકૃત્ય હો જાતે હૈ બુદ્ધ અવસ્થા કો પ્રાપ્ત કરતે હૈં-વિમલ કેવલ જ્ઞાન રૂપ આલોક સે સમસ્ત લોક સહિત અલોક કે જ્ઞાતા હો જાતે હૈં-મુક્ત હો જાતે હૈં-સકલકર્મો સે છૂટ જાતે હૈં-રહિત હો જાતે હૈં । સકલકર્મ કૃત વિકારો સે રહિત હો જાને કે કારણ વે પરિનિર્વાંત હો

વગેરે સંસ્થાનવાળા હોય છે, અનેક પ્રકારની ૫૦૦ ધનુષ આદિ ૩૫ શારીરિક ઊંચાઈવાળા હોય છે "બહુ આઝપજ્જવા" અનેક પ્રકારની અયુવાળા હોય છે બહુઈં 'વાસાઈ આઝં પાલેતિ પાલિત્તા અપ્પેગઈયા નિરયગામી અપ્પેગઈયા તિરિયગામી અપ્પેગઈયા મણુયગામી અપ્પેગઈયા દેવગામી" અનેક વર્ષોની આયુના તેઓ લોકતા હોય છે આ રીતે આયુ-જીવનકાળ-નો ઉપ લોગ કરીને એમનામાં કેટલાક એવાં હોય છે કે જેઓ મૃત્યુ પ્રાપ્ત કરીને નરકમાં જાય છે કેટલાક એવાં હોય છે કે જેઓ મૃત્યુ પ્રાપ્ત કરીને તિર્યગ ગતિમાં જાય છે, કેટલાક એવાં હોય છે કે જેઓ મૃત્યુ પ્રાપ્ત કરીને મનુષ્ય ગતિમાં જાય છે અને કેટલાક એવા હોય છે કે જેઓ મરીને દેવગતિ પામે છે તથા અપ્પેગઈયા સિજ્જતિ બુઝ્જતિ, મુચ્ચંતિ, પરિણિવ્વાયંતિ સન્નવદુક્ખાણમંત કરેતિ" કેટલાક એવા પણ હોય છે કે જેઓ સિદ્ધ અવસ્થાને પામે છે એટલે કે કૃત કૃત્ય થઈ જાય છે બુદ્ધ અવસ્થા પામે છે-વિમળ કેવળ જ્ઞાનરૂપ આલોકથી સમસ્ત લોક સહિત અલોકના જ્ઞાતા થઈ જાય છે મુક્ત થઈ જાય છે સકલ કર્મોથી મુક્ત થઈ જાય છે-રહિત થઈ જાય છે સકલ-કર્મકૃત વિકારોથી રહિત થઈ જાય છે તેથી તેઓ પરિ-

માનસિક સમસ્ત ક્લેશાનામ્ અન્તમ્ નાશ કુર્વન્તિ અવ્યાવાધસુખમાજો ભવન્તીત્યર્થઃ ।
અનોક્તમિદં સર્વ સ્વરૂપવર્ણનમ્ અરકવિશેષાપેક્ષયા નાનાવિધાન્ જીવાનપેક્ષ્ય વોધ્યમ્
અન્યથા સુષમસુષમાદિ ભવમનુજાનાં સિદ્ધત્વાદિ વિરઠાત્તત્કથનમયુક્તં સ્યાદિતિ ॥૬૦ ૧૧॥

અથાસ્ય દક્ષિણાર્દભરતસ્ય સીમાકારી વૈતાલ્યપર્વતઃ કાઽઽસ્તે ? इति
પૂછતિ—

મૂલમ્—કહિ ણં મંતે ! જંબુદ્વીપે દીપે ભરહે વાસે વેયઢ્ઢે ણામં
પવ્વણ્ પણ્ણત્તે ? ગોયમા ! ઉત્તરદ્ધ ભરહવાસસ્સ દાહિણેણં દાહિણ ભરહ
વાસસ્સ ઉત્તરેણં પુરત્થિમલ્લવણસમુદ્ધસ્સ પચ્ચત્થિમેણં પચ્ચત્થિમ
સમુદ્ધસ્સ પુગત્થિમેણં एत्थ ણં જંબુદ્વીપે દીપે ભરહે વાસે વેયઢ્ઢે ણામં
પવ્વણ્ પણ્ણત્તે, પાઈણપટ્ટીણાયણ ઉદીણદાહિણવિત્થિણ્ણે દુહા લવણ-
સમુદ્ધં પુટ્ટે પુરત્થિમિલ્લાણ કોડીણ પુરત્થિમિલ્લં લવણસમુદ્ધં પુટ્ટે પચ્ચત્થિ-
મિલ્લાણ કોડીણ પચ્ચત્થિમિલ્લં લવણસમુદ્ધં પુટ્ટે, પણવીસં જોયણાં
ઉદ્ધં ઉચ્ચત્તેણં છસ્મ કોસાં જોયણાં ઉવ્વેહેણં પણ્ણાસં જોયણાં વિ-
ક્ખંમેણં, તસ્સ બાહા પુરત્થિમપચ્ચત્થિમેણં ચત્તારિ અઢ્ઢાસીણ જોયણ-
સણ સોલસ ય ઇગ્ગૂણવીસઢ્ઢ ભાગે જોયણસ્સ અદ્ધમાગં ચ આયામેણં
પણ્ણત્તા. તસ્સ જીવા ઉત્તરેણં પાઈણપટ્ટીણાયયા દુહા લવણસમુદ્ધં
પુટ્ટા પુરત્થિમિલ્લાણ કોડીણ પુરત્થિમિલ્લં લવણસમુદ્ધં પુટ્ટા પચ્ચત્થિ-
મિલ્લાણ કોડીણ પચ્ચત્થિમિલ્લં લવણસમુદ્ધં પુટ્ટા દસ જોયણસહસ્સાં

જાતે હૈં, અપને આપ મેં સમા જાતે હૈં ઔર શારીરિક પર્વ માનસિક સમસ્ત ક્લેશો કા નાશ કર
દેતે હૈં અર્થાત્—અવ્યાવાધ સુખ કે મોક્ષા હો જાતે હૈં । યહા ઉક્ત યહ સર્વ સ્વરૂપ વર્ણન અરક-
વિશેષ કો અપેક્ષા સે નાનાવિધ જીવોં કો લેકર કે કહા ગયા જાનનાં ચાહિયે । નહીં હો તો
ફિર સુષમ સુષમાદિ કાલ મેં ઉત્પન્ન હુણ મનુષ્યોં કો સિદ્ધ પદ કો પ્રાપ્તિ તો હોતી નહીં હૈ—
અતઃ યહ કથન અયુક્ત હો જાવેગા ॥૧૧॥

નિર્વા. થઈ જાય છે સ્વ સ્વરૂપમા જ સમાહિત થઈ જાય છે. અને શારીરિક અને માનસિક
સમસ્ત ક્લેશોને વિનષ્ટ કરી નાખે છે એટલે કે અવ્યાવાધ સુખના મોક્ષતા થઈ જાય
છે અહીં આ બધું સ્વરૂપ વર્ણન બે કરવામા આવ્યું છે તે અરક વિશેષની અપેક્ષાએ
નાનાવિધ જીવોને લઈને કહેવામા આવેલ છે આમ ન હોય તો સુષમસુષમાદિકાળમાં ઉત્પન્ન
થયેલ મનુષ્યોને સિદ્ધ પદ પ્રાપ્ત થતું, નથી એથી આ કથન અયુક્ત થઈ જશે. ॥૧૧॥

सत्त य वीसे जोयणसए दुवालस य एगूणवीसइभागे जोयणस्स
 आयामेणं तीसे धणुपुदठे दाहिणेणं दस जोयणसहस्साइं सत्त य
 तेआले जोयणसए पण्णास य एगूणवीसइभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं
 रुयगसंठाणसंठिए सव्वरयणामए अच्छे सण्हे लदठे घदठे मदठे नीरए
 निम्मले णिष्पंके णिक्कंकडच्छाए सप्पमे समरोए पासाईए दरिसणिज्जे
 अभिरूवे पडिरूवे उभओ पासि दोहि पउमवरवेइयाहि दोहिं य वण-
 संडेहिं सव्वओ समंता संपरिकिखत्ते । ताओ णं पउमवरवेइयाओ अच्चे-
 जोयण उट्ठं उच्चत्तेणं पंचधणुसयाइं विक्खंभेणं पव्वयसमियाओ आया-
 मेणं वण्णओ भाणियव्वो । तेणं वणसंडा देसूणाइं दो जोयणाइं
 विक्खंभेणं पउमवरवेइया समगा आयामेणं किण्हा किण्होभासा जाव
 वण्णओ ॥सू०१२॥

छाया—कव खलु भदन्त ! जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे वैताड्यो नाम पर्वतः प्रवृत्तः,
 गौतम ! उत्तरार्द्धे भरतवर्षस्य दक्षिणे दक्षिणभरतवर्षस्य उत्तरे पौरस्त्यलवणसमुद्रस्य
 पाश्चात्ये पश्चिमलवणसमुद्रस्य पौरस्त्ये अत्र खलु जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे वैताड्यो नाम
 पर्वतः प्रवृत्तः, प्राचीनप्रतीचीनाऽऽयतः उन्नीचीनदक्षिण विस्तीर्णः द्विधा लवणसमुद्रं
 स्पृष्ट पौरस्त्यया कोट्या पौरस्त्ये लवणसमुद्रं स्पृष्टः पाश्चात्यया कोट्या पाश्चात्यं लवण-
 समुद्रं स्पृष्टः, पञ्चविंशति योजनानि ऊर्ध्वमुच्चत्वेन षट् सक्रोशानि योजनानि उद्वेगेन पञ्चा-
 शतं योजनानि विष्कम्भेण ५० तस्य वाहा पौरस्त्यपश्चिमेन चत्वारि अष्टाशीतानि योज-
 नशतानि षोडशच एकोनविंशतिभागान् योजनस्य अर्धभागं च आयामेन प्रवृत्ता । तस्य
 जीवा उत्तरेण प्राचीनप्रतीचीनाऽऽयता द्विधा लवणसमुद्रं स्पृष्टा पौरस्त्यया कोट्या पौर-
 त्यं लवणसमुद्रं स्पृष्टा पाश्चात्यया कोट्या पाश्चात्यं लवणसमुद्रं स्पृष्टा, दश योजन सह-
 स्राणि सप्त च विंशति योजनशतानि द्वादश च एकोनविंशति भागान् योजनस्य आया-
 मेन । तस्या धनुस्पृष्ट दक्षिणेन दश योजनसहस्राणि च त्रिचत्वारिंशानि योजन
 शतानि पञ्चदश च एकोनविंशतिभागान् योजनस्य परिक्षेपेण । रुचकसंस्थानसंस्थितः
 सर्वरजतमय अल्लः सुदृणः लष्ट घृष्टः मृष्टः नोरजा निर्मलः किण्पङ्कः निष्कङ्कटच्छायः
 सप्रभः समरीचिकः प्रासादीयः दर्शनीयः अमिरूपः प्रतिकूपः ।

उभयोः पार्श्वयोः द्वाभ्यां पद्मवरवेदिकाभ्यां द्वाभ्यां च वनवण्डाभ्यां सर्वतः समन्तात्
 संपरिक्षितः । ते खलु पद्मवरवेदिके अर्धयोजनमूर्ध्वमुच्चत्वेन पञ्चधनुः शतानि विष्कम्भेण,
 पर्वतसमिके आयामेन वर्णको मणितव्यः । तौ खलु वनवण्डः देशोने द्वे योजने विष्कम्भेण
 पद्मवरवेदिका समकौ आयामेन कृष्णौ कृष्णावभासौ । सू०१२॥

ટીકા—‘કહિ ણં મંતે ! જંબુદ્વીવે’ इत्यादि—गौतमो भगवन्तं पृच्छति ‘कहि णं मंते जंबुद्वीवे दीवे भरहे वासे वेयइहे णामं पव्वए पण्णत्ते’ हे भदन्त ! जम्बूद्वीपे द्वीपे भरते वर्षे वैताढ्यो नाम पर्वतः क=कुत्र प्रज्ञप्तः ? इति पृष्टो भगवानाह—‘गोयमा उत्तरद्ध-भरहवासस्स’ हे गौतम उत्तरार्द्धभरतवर्षस्य अनन्तरोक्तस्वरूपस्य ‘दाहिणेणं’ दक्षिणे दक्षिणदिग्भागे ‘दाहिणभरहवासस्स उत्तरेणं’ दक्षिणार्द्धभरतस्य उत्तरे—उत्तरदिग्भागे ‘पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स’ पौरस्त्यलवणसमुद्रस्य ‘पच्चत्थिमेणं’ पश्चिमे पश्चिमदिग्भागे ‘पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं’ पश्चिमलवणसमुद्रस्य पौरस्त्ये-पूर्वदिग्भागे । ‘एत्थ णं जंबुद्वीवे दीवे भरहे वासे वेयइहे णामं पव्वए पण्णत्ते’ अत्र खलु जम्बूद्वीपे द्वीपे भरते वर्षे वैताढ्यो नाम पर्वतः प्रज्ञप्तः स वैताढ्यः पर्वतः कीदृशः ? इत्याह ‘पाइण पढीणायए’ प्राचीन प्रतीचीनाऽऽयतः पूर्वपश्चिमदिशोरायतः—दीर्घः ‘उदीणदाहिणवि-त्थिण्णे’ उदीचीनदक्षिणविस्तीर्णः उत्तर दक्षिणदिशोर्विस्तीर्णः विस्तारयुक्तः ‘दुहा’ द्विधा अनुपद वक्ष्यमाणाभ्यां द्वाभ्यां प्रकाराभ्यां ‘लवणसमुद्द पुदुटे लवणसमुद्रं स्पृष्टः

इस दक्षिणार्ध भरत की सीमा करने वाला वैताढ्य पर्वत कहा पर है ? इसका कथन—

“कहियं मंते ! जंबूद्वीवे दीवे भरहे वासे वेयइहे णामं पव्वए पण्णत्ते” इत्यादि ।

ટીકાર્થ—હે ભદન્ત ! જમ્બૂદ્વીપ મેં સ્થિત ભરત ક્ષેત્ર મેં વૈતાઢ્ય પર્વત કહા પર કહા ગયા હૈ ।
इसके उत्तर में प्रमु कहते हैं—“गोयमा । उत्तरद्ध भरहवासस्स दाहिणेणदाहिण भरहवासस्स उत्तरेणं पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं एत्थ ण जंबुद्वीवे दीवे भरहे वासे वेयइहे णामं पव्वए पण्णत्ते” हे गौतम । उत्तरार्ध भरत क्षेत्र को दक्षिणदिशा में दक्षिणभरत क्षेत्र की उत्तरदिशा में पूर्वदिग्वर्तीलवण समुद्र की पश्चिमदिशा में और पश्चिमदिग्वर्ती लवण समुद्र की पूर्वदिशा में जम्बूद्वीपस्थ भरतक्षेत्र में वैताढ्यनामका पर्वत है । यह वैताढ्य-पर्वत “पाईणपढीणायए उदीण दाहिणवित्थिण्णे दुहा लवणसमुद्दं पुरदुटे पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्टे, पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिल्ल लवणसमुद्दं पुट्टे” पूर्व से

આ દક્ષિણાર્ધ ભરતની સીમા બતાવનાર વૈતાઢ્ય પર્વત કયા આવેલ છે ? આ વિષે કથન

‘કહિયં મંતે ! જંબુદ્વીવે દીવે ભરહે વાસે વૈયહ્હે ણામં પવ્વપ્પ પણ્ણત્તે—इत्यादि सूत्र—१२ ॥

ટીકાર્થ—હે ભદન્ત ! જમ્બૂદ્વીપમાં સ્થિત ભરત ક્ષેત્રમાં વૈતાઢ્ય પર્વત કયા આવેલ છે ? એના જવાબમાં પ્રમુ કહે છે કે “ગોયમા ! ઉત્તરદ્ધ ભરહવાસસ્સ દાહિણેણં દાહિણ ભરહવાસસ્સ ઉત્તરેણં પુરત્થિમ લવણસમુદ્દસ્સ પચ્ચત્થિમેણં પચ્ચત્થિમલવણસમુદ્દસ્સ પુરત્થિમેણં એત્થણં જંબુદ્વીવે દીવે ભરહે વાસે વૈયહ્હે ણામં પવ્વપ્પ પણ્ણત્તે” હે ગૌતમ ! ઉત્તરાર્ધ ભરત ક્ષેત્રની દક્ષિણ દિશામાં દક્ષિણ ભરત ક્ષેત્રની ઉત્તરદિશામાં પૂર્વ દિગ્વર્તી લવણ સમુદ્રની પશ્ચિમ દિશામાં અને પશ્ચિમ દિગ્વર્તી લવણ સમુદ્રની પૂર્વ દિશામાં જમ્બૂદ્વીપસ્થ ભરત ક્ષેત્રમાં વૈતાઢ્ય નામે પર્વત છે આ વૈતાઢ્ય પર્વત “પાઈણપઢીણાયપ્પ ઉદોણદાહિણવિત્થિણ્ણે દુહા લવણસમુદ્દં પુટ્ટે પુરત્થિમિલ્લાપ્પ કોડીપ્પ પુરત્થિમિલ્લં લવણસમુદ્દં પુટ્ટે પચ્ચત્થિમિલ્લાપ્પ

પ્રાપ્તઃ સ્પૃશેત્ર પ્રાપ્ત્યર્થત્વાત્કર્તરિત્તઃ તેન કર્મણિ દ્વિતીયા, એવમગ્રેડપિ । ‘પુરતિથિ-મિલ્લા’ પૌરસ્ત્યયા પૂર્વદિગ્ભવયા ‘કોઢી’ કોટ્યા અગ્રભાગેન ‘પુરતિથિમિલ્લ’ પૌરસ્ત્યં પૂર્વદિગ્ભવં ‘લવણસમુદ્રં પુટ્ટે’ લવણસમુદ્રં સ્પૃષ્ટઃ ‘પચ્ચતિથિમિલ્લા’ પશ્ચિમયા પશ્ચિમદિગ્ભ-વયા ‘કોઢી’ કોટ્યા ‘પચ્ચતિથિમિલ્લં લવણસમુદ્રં પુટ્ટે’ પશ્ચિમલવણસમુદ્રં સ્પૃષ્ટઃ । સ ચ ‘ઉદ્દં’ ઊર્ધ્વમ્ ઉપરિ ‘ઉચ્ચત્તેણં’ ઉચ્ચત્ત્વેન ‘પણવીસં’ પચ્ચવિંશતિ પચ્ચવિંશતિ સંખ્યકાનિ ‘જોયણાં’ યોજનાનિ ‘ઉચ્ચેદ્દેણં’ ઉદ્દેધેન ભૂમ્યન્તર્ગતભાગેન ‘હસ્સકોસાં’ જોયણાં સક્રોશાનિ ક્રોશસહિતાની એક ક્રોશાધિકાનિ પદ પદ્યચલ્યાનિ યોજનાનિ સમયક્ષેત્રવર્તિના મેરુવર્જના સકલપર્વતાનામુદ્દેધઃ સ્વોચ્ચત્વ ચતુર્થાંશો ભવતિ । અત્તેવાત્ર પચ્ચવિંશતિયોજનચતુર્થાંશઃ સક્રોશપદ્યોજનાનિ ‘ઉચ્ચેદ્દેણં’ ઉદ્દેધત્ત્વેન પ્રોક્તાનીતિ વોધ્યમ્ । તથા ‘વિસ્વમેણં’ વિષ્વક્રમેણ=વિસ્તારેણ ‘પણાસં જોયણાં’ પચ્ચાશત યોજનાનિ ઇતત્પરિમિતો વર્તતે ।

પશ્ચિમતક લગ્ના ૬ ઓર ઉત્તર સે દક્ષિણતક ચોઢા હૈ દોં તરફ સ યહ લવણસમુદ્ર કો છૂ રહા હૈ પૂર્વ કી કોટિ સે પૂર્વદિગ્વર્તી લવણસમુદ્ર કો ઓર પશ્ચિમદિગ્વર્તી કોટિ સે પશ્ચિમ કો લવણસમુદ્ર કો । “પણવીસ જોયણાં ઉદ્દં ઉચ્ચત્તેણં હસ્સ કોમાં જોયણાં ઉચ્ચેદ્દેણં પણાસ જોયણાં વિસ્વમેણં” હસકી ઊંચાઈ ૨૫ યોજન કી હૈ. હસકા ઉદ્દેધ એક ક્રોશ અધિક ૬ યોજન કા હૈ. સમય ક્ષેત્રવર્તી જિતને મી પર્વત હૈ ડનમેં એક મેરુ પર્વત કો છોડ કર સબ પર્વતોં કા ઉદ્દેધ અપની ઊંચાઈ સે ચતુર્થાંશ હોતા હૈ. હસીલિય યહા પર વૈતાલ્ય પર્વત કા ઉદ્દેધ એક ક્રોશ અધિક ૬ યોજન કા કહાગયા હૈ તથા વિસ્તાર હસ કા ૫૦ યોજન કા કહા ગયા હૈ “તસ્સ બાહા પુરતિથિમપચ્ચતિથિમેણં ચત્તારિ

કોઢીપ પચ્ચતિથિમિલ્લં લવણસમુદ્રં પુટ્ટે” પૂર્વથી પશ્ચિમ સુધી લાંબા છે અને ઉત્તરથી દક્ષિણ સુધી ચોડા છે. બે બાજુથી આ લવણ સમુદ્રને સ્પર્શી રહ્યો છે પૂર્વની કોટિથી—પૂર્વ દિગ્વર્તી લવણ સમુદ્રને અને પશ્ચિમ દિગ્વર્તી કોટિથી પશ્ચિમના લવણ સમુદ્રને આ સ્પર્શી રહ્યો છે “પણવીસં જોયણાં ઉદ્દં ઉચ્ચત્તેણં હસ્સકોસાં જોયણાં ઉચ્ચેદ્દેણં પણાસં જોયણાં વિસ્વમેણં” આની જિયાઈ ૨૫ યોજન જેટલી છે. આનો ઉદ્દેધ એક માઉ અધિક ૬ યોજન જેટલો છે. સમય ક્ષેત્રવર્તી જેટલા પર્વતો છે. તેમા એક મેરુ પર્વતને બાદ કરતા સર્વ પર્વતોનો ઉદ્દેધ પેાત પેાતાની જિયાઈથી ચતુર્થાંશ હોય છે એથી જ અહી વૈતાલ્ય પર્વતનો ઉદ્દેધ એક માઉ અધિક ૬ યોજન જેટલો કહેવામા આવેલ છે તેમજ વિસ્તાર આનો ૫૦ યોજન જેટલો કહેવામા આવ્યો છે “તસ્સ બાહા પુરતિથિમ પચ્ચતિથિમેણં ચત્તારિ અઢાસીય જોયણસય સોલસય ષ્ણૂણવીસદ્ભાગે જોયણસ્વં અઢ્ઢમાગ ચ આયામેણં ચ પણાસ” આ વૈતાલ્ય પર્વતની વાહા—દક્ષિણથી ઉત્તર સુધીની આડી આઠાશ પ્રદેશ પંક્તિ—પૂર્વ અને પશ્ચિમ દિશામા ૮૪ યોજન જેટલી છે અને એક યોજનના ૧૬ ભાગો માથી ૧૬૧ ભાગ પ્રમાણ છે આ તેની લંબાઈની અપેક્ષા એ કયેન છે

‘તસ્સ’ તસ્ય-વૈતાલ્યસ્ય ‘વાહા’ વાહા-દક્ષિણોત્તરાયતા વક્રા આકાશપ્રદેશપદ્ધત્તિઃ
‘પુરત્થિમપચ્ચત્થિમેણ’ પૌરસ્ત્યપાશ્ચાત્યેન પૂર્વપશ્ચિમયોર્દિશોઃ, ‘ચત્તારિ અઢ્ઢાસીએ જોયણ-
સએ’ અષ્ટાશીતાનિ અષ્ટાશીત્યધિકાનિ ચત્તારિ યોજનશત્તાનિ ચતુશ્ચત યોજનાનિ તથા
‘સોલસય એગૂણ વીસઈમાગે’ ષોડશ ચ એકોનવિંશતિમાગાન્ ‘જોયણસ્સ’ યોજનસ્ય
એકોનવિંશતિમાગવિભક્તસ્ય એકસ્ય યોજનસ્ય ષોડશમાગાન્, ‘અદ્ધમાગંચ આયા-
મેણં પળ્ળત્તા’ અદ્ધ-એકોનવિંશતિતમમાગસ્ય અદ્ધં ચ સાદ્ધં ષોડશમાગાનીત્યર્થઃ,
આયામેન-દૈર્ઘ્યેણ પ્રજ્ઞપ્તા ।

અથ વૈતાલ્યસ્ય જીવામાહ-‘તસ્સ જીવા ઉત્તરેણં’ તસ્ય-વૈતાલ્યસ્ય જીવા
ઉત્તરેણ - ઉત્તરસ્યાં દિશિ ‘પાઈણપહીણાયયા’ પ્રાચીનપ્રતીચીનાઽઽયતા-પૂર્વ પશ્ચિમયો
ર્દિશોરાયતા ‘દુહા’ દ્વિધા=દ્વાભ્યાં પ્રકારાભ્યાં ‘લવણસમુદ્દં પુઢ્ઢા’ લવણસમુદ્ર સ્પૃષ્ટા,
તથાહિ ‘પુરત્થિમિલ્લાએ’ પૌરસ્ત્યયા-પૂર્વદિગ્ભવયા ‘કોઢીએ’ કોટયા અગ્રમાગેન
‘પુરત્થિમિલ્લ’ પૌરસ્ત્ય-પૂર્વદિગ્ભવં ‘લવણસમુદ્દં પુઢ્ઢા’ લવણસમુદ્રં સ્પૃષ્ટા ‘પચ્ચત્થિ-
મિલ્લાએ’ પાશ્ચાત્યયા-પશ્ચિમદિગ્ભવયા ‘કોઢીએ’ કોટયા-પચ્ચત્થિમિલ્લે પાશ્ચાત્ય-પશ્ચિમ-
દિગ્ભવં ‘લવણસમુદ્દં પુઢ્ઢા’ લવણસમુદ્રં સ્પૃષ્ટા, ‘દસજોયણસહસ્સાઈ’ દશ
યોજનસહસ્રાણિ દશસહસ્ર યોજનાનિ, ‘સત્ત ય વીસે જોયણસએ’ સપ્તચ વિશાનિ

અઢ્ઢાસીએ જોયણસએ સોલસય એગૂણવીસઈમાગે જોયણસ્સ અદ્ધમાગં ચ આયામેણં પળ્ળત્તા”
હસ વૈતાલ્ય પર્વત કી વાહા-દક્ષિણ સે ઉત્તર તક ટેઢી આકાશ પ્રદેશપદ્ધત્તિ-પૂર્વ ઓર પશ્ચિમ
દિશા મેં ૮૪ યોજન કી હૈ ઓર એક યોજન કે ૧૭ માગો મેં સે ૧૬|| માગ પ્રમાણ
હૈ । યહ ઉસકી લમ્બાઈ કી અપેક્ષા કથન હૈ । વૈતાલ્ય કી જીવા કા પ્રમાણ કથન “તસ્સ
જીવા ઉત્તરેણં પાઈણપહીણાયયા દુહા લવણસમુદ્દં પુઢ્ઢા, પુરત્થિમિલ્લાએ કોઢીએ પુરત્થિમિલ્લ
લવણસમુદ પુઢ્ઢા પચ્ચત્થિમિલ્લાએ કોઢીએ પચ્ચત્થિમિલ્લ લવણસમુદ પુઢ્ઢા” ઉસ વૈતાલ્ય કી જીવા
ઉત્તરદિશા મેં પૂર્વ સે પશ્ચિમદિશા તક લમ્બી હૈ એવં દો પ્રકાર સે લવણ સમુદ્ર કો
સ્પર્શ કરતી હૈ પૂર્વ દિગ્ભવકોટો સે પૂર્વદિગ્ભવલવણ સમુદ્ર કો ઓર પશ્ચિમદિગ્ભવકોટિ સે
પશ્ચિમદિગ્ભવ લવણ સમુદ્ર કો । હસકો લમ્બાઈ ૧૦૭૨૦ યોજન કો હૈ ઓર ૧ યોજન
કે ૧૭ માગો મેં સે ૧૨ માગ પ્રમાણ હૈ ,

વૈતાલ્યની જીવાના પ્રમાણુપુ કથન “તસ્સ જીવા ઉત્તરેણં પાઈણપહીણાયયા દુહા
લવણસમુદ્દં પુઢ્ઢા પુરત્થિમિલ્લાએ કોઢીએ પુરત્થિમિલ્લ લવણસમુદ્દં પુઢ્ઢા પચ્ચત્થિમિલ્લાએ
કોઢીએ પચ્ચત્થિમિલ્લ લવણસમુદ્દં પુઢ્ઢા” । વૈતાલ્યની જીવા ઉત્તરદિશામાં પૂર્વથી
પશ્ચિમદિશા સુધી લાગી છે તેમજ એ રીતે લવણ સમુદ્રને સ્પર્શ કરે તે પૂર્વ દિગ્ભવ કોટિથી
પૂર્વદિગ્ભવ લવણ સમુદ્રને અને પશ્ચિમ દિગ્ભવ કે ટિથી પશ્ચિમ દિગ્ભવ લવણ સમુદ્રને
સ્પર્શ કરે છે આની લ માઈ ૧૦૭૨૦ યોજન જેટલી છે અને ૧ યોજનના ૧૬ ભાગોમાંથી
૧૨ ભાગ પ્રમાણ જેટલી છે

યોજનશતાનિ-વિંશત્યધિકાનિ સપ્તશતયોજનાનિ ચ 'एगूण वीसइभागे-जोयणस्स' एकोनविंशतिभागान् योजनस्य-एकोनविंशतिभागविभक्तस्य योजनस्य 'दुवालसय' द्वादश भागांश्च 'आयामेण' आयामेन-दैर्घ्येण प्रज्ञप्ता ।

अथ वैताढ्य धनुष्पृष्ठं वर्णयति-‘तीसे’ तस्याः-जीवायाः ‘दाहिणेणं’ दक्षिणेन दक्षिणदिग्भागे वैताढ्यपर्वतस्स ‘धणुपुट्टे’ धनुष्पृष्ठं ‘दस जोयणसहस्साइ’ दश योजनसहस्राणि-दशसहस्रयोजनानि तानि ‘तेयाळे, त्रिचत्वारिंशदधिकानि ‘सत्त य जोयणसए, सप्तशत योजनानि, ‘पण्णास य एगूणवीसइभागे’ पञ्चदशच एकोन-विंशतिभागविभक्तस्य एकस्य योजनस्य पञ्चदशभागांश्च ‘परिक्खेवेणं’ परिक्षेपेण परिधिना-वर्तुलाकारेण प्रज्ञप्तम् ।

अथ कीदृशो वैताढ्यः? इत्याह-‘रुयगसंठाणसंठिए’ रुचकसंस्थानसंस्थितः रुचकं, ग्रीवाभूषणविशेषः तस्य यत् संस्थानम्=आकारः तेन संस्थितः, तथा ‘सव्व-रयणामए’ सर्वरजतमयः- सर्वात्मना रजतमयः- रूप्यमयः, ‘अच्छे सण्हे लट्ठे घट्ठे मट्ठे नीरए निम्मले पिप्पंके णिक्कंढच्छाए सप्पमे समरीए पासाईय दरिसणिज्जे-अभिरूवे पडिरूवे’ अच्छादि प्रतिरूपलपर्यन्तपदानां व्याख्या अस्यैव चतुर्थसूत्रे गता, तत् एवावलोकनीयेति ।

वैતાढ્ય का धनुष्पृष्ठ-‘तीसे धणुपुट्टे दाहिणेणं दसजोयणसहस्साइ सत्तय नेयाळे जोयणसए पण्णासय एगूणवीसइभागे जोयणस्स પરિક્ખેવેણ રૂયગસંઠાણસંઠિય સવ્વ રયણામએ અચ્છે સણ્હે લળ્હે ઘટ્ઠે મટ્ઠે નીરએ નિમ્મલે પિપ્પંકે, ણિક્કંઢછાએ સપ્પમે સમરીએ પાસાઈએ દરિ સણિજ્જે અભિરૂવે પઢિરૂવે’, એસ જીવા કે દક્ષિણ દિગ્ભાગ મેં વૈતાઢ્ય પર્વત કા ધનુષ્પૃષ્ઠ ૧૦૭૪ યોજન કા ઓર ૧ યોજન કે ૧૯ ભાગો મેં સે ૧૫ ભાગ પ્રમાણ હૈં યહ એસકી પરોધિ કી અપેક્ષા સે કથન હૈં હસ વૈતાઢ્ય કા આકાર રુચક ગ્રીવા કે આમૂષણ વિશેષ કા જૈસા આકાર હોતા હૈં વૈસા હૈં. યહ વૈતાઢ્યપર્વત સર્વાત્મના રજતમય હૈં ઓર અચ્છ આદિ વિશેષણ સે ળેકર પ્રતિરૂપતક કે વિશેષણોં વાલા હૈં હન અચ્છાદિ પદોં કો

વૈતાઢ્ય ધનુષ્પૃષ્ઠ --

‘‘તીસે ધણુપુટ્ટે દાહિણેણં દસ જોયણસહસ્સાઈ સત્તયતેયાલે જોયણસય પણ્ણાસય ઇગૂણવીસઇભાગે જોયણસ્સ પરિક્ખેવેણં રૂયગસંઠાણસંઠિય સવ્વરયણામએ અચ્છે સણ્હે લળ્હે ઘટ્ઠે મટ્ઠે નીરય, નિમ્મલે, નિપ્પંકે, નિક્કં, સપ્પં, સમરીં, પાસાં, દરિં, અમિં, પઢિં તે ઇવાના દક્ષિણ દિગ્ભાગમા વૈતાઢ્ય પર્વતત્તુ ધનુષ્પૃષ્ઠ ૧૦૭૪૩ યોજન જેટલું અને ૧ યોજન ના ૧૯ ભાગોમાંથી ૧૫ ભાગ પ્રમાણુ જેટલું છે. આ તેની પરિધીની દૃષ્ટએ કથન છે તે વૈતાઢ્યને. આકાર રુચક-ગ્રીવાને. એક આભૂષણુ વિશેષને. જેવો આકાર હોય છે-જેવો છે આ વૈતાઢ્ય પર્વતસર્વાત્મના રજતમય છે અને અચ્છ વિગરે વિશેષણથી માઠીને પ્રતિરૂપક સુધીના વિશેષણોથી સુકત છે. આ અચ્છાદિ પદોની વ્યાખ્યા

સ ચ પુનઃ 'ઉમઓ' ઉમયોઃ-દ્વયોઃ 'પાસિં પાર્શ્વયોઃ' ઉત્તરતો દક્ષિણતશ્ચ 'દોહિં' દ્વાભ્યાં 'પડમવરવેદ્યાહિ' પદ્મવરવેદિભ્યાં મણિમયપદ્મરચિતોત્તમવેદિકાદ્વયેન 'દોહિં ચ વણસંઢેહિં' દ્વાભ્યાં ચ વનવણ્ડાભ્યાં-અનેકજાતીયોત્તમવૃક્ષસમૂહાભ્યાં 'સવ્વઓ-સમંતા' સર્વતઃ સમન્તાત્ 'સંપરિક્ષત્તે' સંપરિક્ષિત્તઃ પરિવેષ્ટિતઃ । પૂર્વપશ્ચિમતો જગતીસન્ધેન તદવરુદ્ધત્વાત્ પદ્મવરવેદિકા વનવણ્ડાભાવેન 'ઉમયોઃ પાર્શ્વયોઃ' ઇત્યુ-ક્તમ્ । 'તાઓણ પડમવરવેદ્યાઓ' તે અનન્તરોક્તે ખલ્લુ પદ્મવરવેદિકે 'અદ્ધજોયણં' અર્ધયોજનમ્-યોજનસ્ય અર્ધમ્ અર્ધમાગમ્ 'ઉદ્ધં' ઉર્ધ્વમ્-ઉપરિ 'ઉચ્ચત્તેણ' ઉચ્છ્રયેણ તથા 'પંચઘણુસયાઈ' પદ્મઘણુઃશતાનિ 'વિક્કલમેણ' વિષ્કલ્પમેણ વિસ્તારેણ, તથા 'પવ્વય-સમિયાઓ' પર્વતસમિકે પર્વતતુલ્યે 'આયામેણં' આયામેન-દૈર્ઘ્યેણ પ્રજ્ઞપ્તે । 'વણઓ વર્ણકઃ-અત્ર વર્ણનપરો વાક્યસમૂહો 'માણિયવ્વો' મણિતવ્ચઃ વક્તવ્યઃ । સવાસ્યૈવ ચતુર્થ-સૂત્રે ટીકાયાં દ્રષ્ટવ્ય ઇતિ । 'તેણ' તૌ-પૂર્વોક્તૌ 'વણસંઢા' વનવણ્ડૌ ખલ્લુ 'દેસુણાઈ' દેશોને-દેશેન-વિંચિદેશેન ઝને-ન્યૂને દો 'જોયણાઈ' દ્વે યોજને 'વિક્કલમેણં' વિસ્તારેણ, 'પડમવરવેદ્યા સમગા' પદ્મવરવેદિકા સમકે પદ્મવરવેદિકાસમાને 'આયામેણં' આયામેન-દૈર્ઘ્યેણ 'કિણ્હે' કુણ્ણે કુણ્ણવર્ણે 'કિણ્ણોમાસે' કુણ્ણાવમાસે 'જાવ વણઓ' યાવત્-

વ્યત્યા હસી કે ચતુર્થ સૂત્ર મેં કી જાતુકી હૈ । "ઉમઓ પાસિં દોહિં પડમવરવેદ્યાહિં દોહિં વણસંઢેહિં સવ્વઓ સમંતા સંપરિક્ષત્તો" યહ વૈતાલ્ય પર્વત અપને દોનો પાર્શ્વભાગોં સે દો પદ્મવર વેદિકાઓ સે સ્પૃષ્ટ હો રહા વૈતાલ્ય પર્વત કે ઉત્તર પાર્શ્વભાગ કી ઓર એક પદ્મવર વેદિકા હૈ ઓર વૈતાલ્ય પર્વત કે દક્ષિણ પાર્શ્વભાગ કી ઓર એક પદ્મવર વેદિકા હૈ હસી પ્રકાર સે ઉસકે દોનો પાર્શ્વભાગો કી તરફ દો વનવણ્ડ હૈ - યે પદ્મવરવેદિકાઈ માણિમય પદ્મ કી બની હુઈ તથા વનવણ્ડ અનેક જાતિય ઉત્તમ વૃક્ષ સમૂહ યે યુક્ત હૈ । "તાઓણ પડમવરવેદ્યાઓ અદ્ધજોયણ ઉદ્ધં ઉચ્ચત્તેણં પંચ ઘણુસયાઈ વિક્કલમેણ પવ્વયસમિયાઓ આયામેણં વણઓ માણિયવ્વો" યે પદ્મવર

આ અન્ય ન ચોથા સૂત્રમા કરવામા આવી છે ઉમઓ પાસિં દોહિં પડમવરવેદ્યાહિં દોહિંય વણસંઢેહિં સવ્વઓ સમંતા સંપરિક્ષત્તો" વૈતાલ્ય પર્વત બન્ને બાજુએથી યે પદ્મવર વેદિકાઓને સ્પર્શી રહેલ છે વૈતાલ્ય પર્વતના ઉત્તર પાર્શ્વભાગની તરફ એક પદ્મવર વેદિકા છે અને વૈતાલ્ય પર્વતના દક્ષિણ પાર્શ્વભાગની તરફ એક પદ્મવર વેદિકા છે આ પ્રમાણે તેના બન્ને પાર્શ્વભાગોની તરફ યે વનવણ્ડા છે એ પદ્મવર વેદિકાઓ મણિમય પદ્મની બનેલી છે તેમજ વનવણ્ડ અનેક જાતીય ઉત્તમ વૃક્ષ સમૂહથી યુક્ત છે, તાઓણ પડમવરવેદ્યાઓ અદ્ધજોયણં ઉદ્ધં ઉચ્ચત્તેણ પંચ ઘણુસયાઈ વિક્કલમેણ પવ્વય સમિયાઓ આયામેણં વણઓ માણિયવ્વો એ પદ્મવર વેદિકાઓ બન્ને ગાઉ બેટલી થાય છે અને ૨૦૦, ૫૦૦ ધનુષ બેટલી ચોડી છે તેમજ એમાથી ફરેની દીર્ઘતા પદ્મવર વેદિકા

યોજનશતાનિ-વિંશત્યધિકાનિ સપ્તશતયોજનાનિ ચ 'एगूण वीसइभागे-जोयणस्स' एकोनविंशतिभागान् योजनस्य-एकोनविंशतिभागविभक्तस्य योजनस्य 'दुवालसय' द्वादश भागांश्च 'आयामेण' आयामेन-दैर्घ्येण प्रज्ञप्ता ।

अथ वैताढ्य धनुष्पृष्ठं वर्णयति-‘तीसे’ तस्याः-जीवायाः ‘दाहिणेणं’ दक्षिणेन दक्षिणदिग्भागे वैताढ्यपर्वतस्स ‘धणुपुट्ठे’ धनुष्पृष्ठं ‘दस जोयणसहस्साइ’ दश योजनसहस्राणि-दशसहस्रयोजनानि तानि ‘तेयाळे, त्रिचत्वारिंशदधिकानि ‘सत्त य जोयणसए, सप्तशत योजनानि, ‘पण्णास य एगूणवीसइभागे’ पञ्चदशच एकोन-विंशतिभागविभक्तस्य एकस्य योजनस्य पञ्चदशभागांश्च ‘परिक्खेवेणं’ परिक्षेपेण परिधिना-वर्तुलाकारेण प्रज्ञप्तम् ।

अथ कीदृशो वैताढ्यः? इत्याह-‘रुयगसंठाणसंठिए’ रुचकसंस्थानसंस्थितः रुचकं, ग्रीवाभूषणविशेषः तस्य यत् संस्थानम्=आकारः तेन संस्थितः, तथा ‘सन्वरयणामए’ सर्वरजतमयः- सर्वात्मना रजतमयः- रूप्यमयः, ‘अच्छे सण्हे लट्ठे घट्ठे मट्ठे नीरण निम्मले पिप्पके णिकंकटच्छाप सप्पमे समरीए पासाईए दरिसणिज्जे-अभिरूवे पडिरूवे’ अच्छादि प्रतिरूपलपयन्तपदानां व्याख्या अस्यैव चतुर्थसूत्रे गता, तत् एवावलोकनीयेति ।

वैતાढ્ય का धनुष्पृष्ठ-‘तीसे धणुपुट्ठे दाहिणेणं दसजोयणसहस्साइ सत्तय नेयाळे जोयणसए पण्णासय एगूणवीसइभागे जोयणस्स परिक्खेवेण रुयगसंठाणसंठिए सन्वरयणामए अच्छे सण्हे लण्हे घट्ठे मट्ठे नीरण निम्मले पिप्पके, णिकंकटच्छाप सप्पमे समरीए पासाईए दरि सणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे’, उस जीवा के दक्षिण दिग्भाग में वैताढ्य पर्वत का धनुष्पृष्ठ १०७४ योजन का और १ योजन के १९ भागों में से १५ भाग प्रमाण हैं यह उसकी परोक्ष की अपेक्षा से कथन है इस वैताढ्य का आकार रुचक ग्रीवा के आभूषण विशेष का जैसा आकार होता है वैसा है. यह वैताढ्यपर्वत सर्वात्मना रजतमय है और अच्छ आदि विशेषण से लेकर प्रतिरूपतक के विशेषणों वाला है इन अच्छादि पदों को

वैताढ्य धनुष्पृष्ठ --

“तीसे धणुपુટ્ઠે દાહિણેજ દસ જોયણસહસ્સાઈ સત્તયતેયાલે જોયણસપ પણ્ણાસય ઇગૂણવીસઇભાગે જોયણસ્સ પરિક્ખેવેણ રુયગસંઠાણસંઠિય સન્વરયણામપ અચ્છે સણ્હે લણ્હે ઘટ્ઠે મટ્ઠે નીરપ, ણિમ્મલે, ણિપ્પંકે, ણિકં, સપ્પ, સમરી, પાસા, દરિ, અમિ, પડિ તે છવાના દક્ષિણ દિગ્ભાગમા વૈતાઢ્ય પર્વતનુ ધનુષ્પૃષ્ઠ ૧૦૭૪૩ યોજન જેટલુ અને ૧ યોજન ના ૧૯ ભાગોમાંથી ૧૫ ભાગ પ્રમાણુ જેટલું છે. આ તેની પરિધીની દૃષ્ટિએ કથન છે તે વૈતાઢ્યનો આકાર રુચક-ગ્રીવાનો એક આભૂષણુ વિશેષનો જેવો આકાર હોય છે-જેવો છે આ વૈતાઢ્ય પર્વત સર્વાત્મના રજતમય છે અને અચ્છ વિગરે વિશેષણુથી માંડીને પ્રતિરૂપક સુધીના વિશેષણુથી સુકત છે. આ અચ્છાદિ પદોની વ્યાખ્યા

સ ચ પુનઃ 'ઉમઓ' ઉમયોઃ-દ્વયોઃ 'પાસિં પાર્શ્વયોઃ' ઉત્તરતો દક્ષિણતશ્ચ 'દોહિં' દ્વાભ્યાં 'પઝમવરવેદ્યાહિં' પઞ્ચવરવેદિભ્યાં મણિમયપદ્મરચિતોત્તમવેદિકાદ્વયેન 'દોહિં ચ વણસંઢેહિં' દ્વાભ્યાં ચ વનવણ્ડાભ્યાં-અનેકજાતીયોત્તમવૃક્ષસમૂહાભ્યાં 'સવ્વઓ-સમંતા' સર્વતઃ સમન્તાત્ 'સંપરિક્કલ્લે' સંપરિક્ષિપ્તઃ પરિવેષ્ટિતઃ । પૂર્વપશ્ચિમતો જગતીસન્ધેન તદવરુદ્ધત્વાત્ પઞ્ચવરવેદિકા વનવણ્ડાભાવેન 'ઉમયોઃ પાર્શ્વયોઃ' ઇત્યુક્તમ્ । 'તાઓણં પઝમવરવેદ્યાઓ' તે અનન્તરોક્તે ચલ્લ પઞ્ચવરવેદિકે 'અદ્ધજોયણં' અર્ધયોજનમ્-યોજનસ્ય અર્ધમ્-અર્ધમાગમ્ 'ઉદ્ધં' ઉર્ધ્વમ્-ઉપરિ 'ઉચ્ચત્તેણ' ઉચ્છ્રયેણ તથા 'પંચઘણુસયાઈ' પશ્ચધનુઃશતાનિ 'વિક્કલ્લમેણં' વિષ્કલ્લમેણ વિસ્તારેણ, તથા 'પવ્વય-સમિયાઓ' પર્વતસમિકે પર્વતતુલ્યે 'આયામેણં' આયામેન-દૈર્ઘ્યેણ પ્રજ્ઞપ્તે । 'વણઓ વર્ણકઃ'-અત્ર વર્ણનપરો વાક્યસમૂહો 'માણિયવ્વો' મણિતવ્યઃ વક્તવ્યઃ । સચાસ્યૈવ ચતુર્થ-સૂત્રે ટીકાયાં દ્રષ્ટવ્યમ્ ઇતિ । 'તેણ' તૌ-પૂર્વોક્તૌ 'વણસંઢા' વનવણ્ડૌ ચલ્લ 'દેસુણાઈ' દેશોને-દેશેન-વિચિદેશેન ઝને-ન્યૂને દો 'જોયણાઈ' દ્વે યોજને 'વિક્કલ્લમેણં' વિસ્તારેણ, 'પઝમવરવેદ્યા સમગા' પઞ્ચવરવેદિકા સમકે પઞ્ચવરવેદિકાસમાને 'આયામેણં' આયામેન-દૈર્ઘ્યેણ 'કિણ્હે' કુણ્હે કુણ્ણવર્ણે 'કિણ્હોમાસે' કુણ્ણાવમાસે 'જાવ વણઓ' યાવત્-

ગ્રંથ્યા હસી કે ચતુર્થ સૂત્ર મેં કી જાચુકી હૈ । “ઉમઓ પાસિં દોહિં પઝમવરવેદ્યાહિં દોહિં વણસંઢેહિં સવ્વઓ સમંતા સંપરિક્કલ્લો” યહ વૈતાલ્ય પર્વત અપને દોનો પાર્શ્વભાગો સે દો પઞ્ચવર વેદિકાઓ સે સ્પૃષ્ટ હો રહા વૈતાલ્ય પર્વત કે ઉત્તર પાર્શ્વભાગ કી ઓર ઇક પઞ્ચવર વેદિકા હૈ ઓર વૈતાલ્ય પર્વત કે દક્ષિણ પાર્શ્વભાગ કી ઓર ઇક પઞ્ચવર વેદિકા હૈ હસી પ્રકાર સે ડસકે દોનો પાર્શ્વભાગો કી તરફ દો વનવણ્ડ હૈ - યે પઞ્ચવરવેદિકાઈ માણિમય પદ્મ કી બની હુઈ તથા વનવણ્ડ અનેક જાતિય ઉત્તમ વૃક્ષ સમૂહ સે યુક્ત હૈ । “તાઓણ પઝમવરવેદ્યાઓ અદ્ધજોયણ ઉદ્ધં ઉચ્ચત્તેણ પંચ ઘણુસયાઈ વિક્કલ્લમેણ પવ્વયસમિયાઓ આયામેણં વણઓ માણિયવ્વો” યે પઞ્ચવર

આ ગ્રંથ ન ચોથા સૂત્રમા ડરવામા આવી છે ઉમઓ પાસિં દોહિં પઝમવરવેદ્યાહિં દોહિં વણસંઢેહિં સવ્વઓ સમંતા સંપરિક્કલ્લો” વૈતાલ્ય પર્વત બન્ને બાજુએથી બે પઞ્ચવર વેદિકાઓને સ્પર્શી રહેલ છે વૈતાલ્ય પર્વતના ઉત્તર પાર્શ્વભાગની તરફ એક પઞ્ચવર વેદિકા છે અને વૈતાલ્ય પર્વતના દક્ષિણ પાર્શ્વભાગની તરફ એક પઞ્ચવર વેદિકા છે આ પ્રમાણે તેના બન્ને પાર્શ્વભાગોની તરફ બે વનવણ્ડો છે એ પઞ્ચવર વેદિકાઓ મણિમય પદ્મની બનેલી છે તેમજ વનવણ્ડ અનેક જાતીય ઉત્તમ વૃક્ષ સમૂહથી યુક્ત છે, તાઓણ પઝમવરવેદ્યાઓ અદ્ધજોયણ ઉદ્ધં ઉચ્ચત્તેણ પંચ ઘણુસયાઈ વિક્કલ્લમેણ પવ્વય સમિયાઓ આયામેણં વણઓ માણિયવ્વો એ પઞ્ચવર વેદિકાઓ બન્ને જાઉં બેટલી બાંધી છે અને ૧૦૦, ૫૦૦ ધનુષ બેટલી ચોડી છે તેમજ એમાંથી ફરેની દીર્ઘતા પઞ્ચવર વેદિકા

યાવત્પદેન 'નીલે, નીલાવભાસે, હરિતે, હરિતાવભાસે, શીતે શીતાવભાસે. સ્નિગ્ધે, સ્નિગ્ધાવભાસે તીવ્રે, તીવ્રાવભાસે, કૃષ્ણે, કૃષ્ણચ્છાયે, નીલે, નીલચ્છાયે, હરિતે, હરિતચ્છાયે, શીતે, શીતચ્છાયે, સ્નિગ્ધે, સ્નિગ્ધચ્છાયે તીવ્રે તીવ્રચ્છાયે. ઘનકટિત-
ટચ્છાયે રમ્યે મહામેઘનિકુરમ્વભૂતે' इत्यादि पञ्चमसूत्रतो बोध्यम् । व्याख्या च तत्
एव बोध्या ॥ सू० १२ ॥

મૂલમ્—વેયઢ્ઠુસ્સ ણં પવ્વયસ્સ પચ્ચત્થિમપુરત્થિમેણં દો ગુહોઓ
પણ્ણત્તાઓ, ઉત્તરદાહિણાયયાઓ પાર્ણપહીણવિત્થિણ્ણાઓ પણ્ણાસં
જોયણાં આયામેણં દુવાલસજોયણાં વિક્ખંમેણં અદ્ધ જોયણં
ઉદ્ધં ઉચ્ચત્તેણં વણ્ણમયકવાહોહાહિયાઓ, જમલજુયલકવાહધણદુપ્પ-
વેસાઓ ણિચ્ચંધયારતિમિસ્સાઓ વવગયગહચંદસૂરણક્કલ્લજોહસપહાઓ
જાવ પઢિહ્વાઓ તં જહા તમિસગુહો ચેવ ચંડપ્પવાયગુહા ચેવ ।
તત્થણં દો દેવા મહિહ્વિયા મહજ્જુઈયા મહાબલા મહાયસા મહાસોક્કા
મહા ભાગા પલિઓવમહિઈયા પસ્વિસંતિ, તં જહા કયમાલ્લે ચેવ
ણદ્ધમાલ્લે ચેવ । । તેસિણં વણ્ણસંઢાણં વહુસમરમણિજ્જાઓ ભૂમિભો-
ગાઓ વેયઢ્ઠુસ્સ પવ્વયસ્સ ઉમઓ પાસિ દસ દસ જોયણાં ઉદ્ધં
ઉપ્પજ્જાત્તા એત્થણં દુવે વિજ્જાહરસેઢીઓ પણ્ણત્તાઓ પાર્ણપહીણાય-
યાઓ ઉદીણદાહિણવિત્થિણ્ણાઓ દસ દસ જોયણાં વિક્ખંમેણં
પવ્વયસમિયાઓ આયામેણં ઉમઓ પાસિ દોહિં પડમવરવેહિયાહિં દોહિં
વણ્ણસંઢેહિં સંપરિક્કલ્લત્તાઓ । તાઓ ણં પડમવરવેહિયાઓ અદ્ધજોયણં
ઉદ્ધં ઉચ્ચત્તેણં પંચધણુસયાં વિક્ખંમેણં પવ્વયસમિયાઓ આયામેણં
વણ્ણઓ ણેણવ્વો વણ્ણસંઢાવિ પડમવરવેહિયા સમગા આયામેણં વણ્ણઓ ।
વિજ્જાહરસેઢીણં ભંતે । ભૂમીણં કેરિસલ્લે આયારભાવપહોયારે પણ્ણત્તે

વેદિકાએ દો દો કોશ ફો ઝેંચિ હૈ ઓર ૫૦૦-૫૦૦ ઘનુષ કો ચોઢી હૈ તથા इनही प्रत्येक
पर्वत की दीर्घता पञ्चवर वेदिका जितनी है । यहाँ वनषण्ड का वर्णन जैसा जो पहिले कृष्ण
कृष्णा वभास आदि पदो द्वारार्पचन सूत्र में किया गया हैं वैसा ही वह वर्णन यहाँ पर भी
कर लेना चाहिये ॥१२॥

જેટલી છે. અહીં વનષ ડાનુ વર્ણન જે રીતે પહેલા પચમ સૂત્રમાં કરવામાં આવ્યું છે તે રીતે
જ સમજવું ॥૧૨॥

गोयमा बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते से जहानामए आलिग
पुक्खरेइ वा जाव णाणाविहपंचवण्णेहिं मणीहिं तणेहिं उवसोभिए,
तं जहा—कित्तिमेहिं चेव अकित्तिमेहिं चेव तत्थणं दाहिणिल्लाए विज्जाहर—
सेदीए रहनेउरक्कवालपामोक्खा सद्धिं विज्जाहरणगरावासा पण्णत्ता
एवोमेव सपुब्बावरेणं दाहिणिल्लाए उत्तरिल्लाए विज्जाहरसेदीए
एणं दसुत्तरं विज्जाहरणगरावाससयं भवतीतिमक्खायं, ते विज्जाहर—
णगरा सिद्धत्थिमियसमिद्धा पमुइयजणवया जाव पांडेरूवा । तेषु णं
विज्जाहरणगरेसु विज्जाहररायाणो परिवसंति महयाहंभवंतमलयमं-
दरमहिंदसारा रायवण्णओ भाणियव्वो । विज्जाहरसेदीणं मंते मणु
याणं केरिसए आयाग्भावपढोयारे पण्णत्ते । गोयमा ! तेषं मणुया बहु
संघयणा बहुसंठोणा बहुउच्चत्तपज्जवा बहुआउपज्जवा जाव सव्व
दुक्खाणमंतं करेति ॥ सू० १३ ॥

छाया—वैताद्वयस्य खलु पर्वतस्य पाश्चात्यपौरस्त्येन द्वे गुह्ये प्रकृप्ते, उत्तरदक्षि
णाऽऽयते प्राचीनप्रतोचीनविस्तीर्णे पञ्चाशत् योजनानि आयामेन द्वादश योजनानि
विष्कम्भेण अष्ट योजनानि ऊर्ध्वमुत्त्वत्वेन वज्रमयकपाटावघाटिते यमलयुगलकपाट
घनदुष्प्रवेशे नित्यान्धकारतमिक्षे व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिःपथे यावत् प्रतिक्रये
तद्यथा—तमिस्त्रगुहा चैव १ जण्डप्रपातगुहा चैव २ । तत्र खलु द्वौ देवौ महर्द्धिकौ महाद्यु
तिकौ महायशसौ महासौख्यौ महाबुभुक्षुः पव्योपमस्थितिकौ परिवसत, तद्यथा कृतमा-
लकश्चैव नृतमालकश्चैव । तयोः खलु वनषण्डयोः बहुसमरमणोयाद् भूमिभागाद् वैता-
द्वयस्य पर्वतस्य उभयोः पार्श्वयोः दश दश योजनानि ऊर्ध्वम् उत्पत्य अत्र खलु द्वे
विद्याधरश्रेष्ठौ प्रकृप्ते, प्राचीनप्रतोचीनाऽऽयते उद्दीचीनदक्षिणविस्तीर्णे दश दश योज
नानि विष्कम्भेण पर्वतसमिके आयामेन उभयोः पार्श्वयोः द्वाभ्यां पद्मवरवेदिकाभ्यां द्वाभ्यां
वनषण्डाभ्यां संपरिक्षिप्ते । ताः खलु पद्मवरवेदिकाः अर्द्धयोजनमूर्ध्वमुत्त्वत्वेन पञ्चधनु
शतानि विष्कम्भेण पर्वतसमिका आयामेण वर्णको नेतव्यः वनषण्डा अपि पद्मवरवेदिका
समका आयामेन वर्णकः । विद्याधरश्रेष्ठयोः भवन्तः । भूम्यो कोदृशकः आकारभावप्रत्यक्ष
तारः प्रकृप्तः, गौतमः । बहुसमरमणीयो भूमिभागः प्रकृप्तः, स यथानामकः आलिङ्गपुष्कर
इति वा यावत् नानाविधपञ्चवर्णैर्मणिभिस्तृणैरूपशोभितः, तद्यथा—कञ्जिमैत्रवैव अकत्रि
श्चैव । तत्र खलु दक्षिणात्यायां विद्याधरश्रेष्ठ्यां गगनवल्गुप्रमुखाः पञ्चाशद् विद्याधर-

હીકાર્ય-વૈતાલ્ય પર્વતની પશ્ચિમ અને પૂર્વ દિશામાં બે શુક્રાઓ કહેવાય છે “ઉત્તરદાહિ-
 નાયયાઓ”, બે ઉત્તર અને દક્ષિણ સુધી લાગી છે “પાર્શ્વ પહોળ વિસ્થિતિઓ” તેમજ
 પૂર્વથી પશ્ચિમ સુધી ચોડી છે “પણાસ જોયગાઈ આયામેળ” એમથી ફરેકની લગભગ ૫૦
 ચોળન બેટલી છે “દુવાલસ જોયગાઈ વિકસમેળ” અને વિસ્તાર-ચોડ ૪-૧૨ ચોળન
 બેટલી છે, “અહુ જોયગાઈ ઉદ્ધં ઉચ્ચતેળ વરફરામયકવોઢાહાડિયાઓ જમલસુમલકવાહ
 ઘણ દુપ્પવેસાઓ ણિચ્ચધયારતિમિસ્સાઓ વવગયગહચંદ સ્વરણચ્ચત્તજોઈસં પહાઓ જાવ

વજ્રમયકપટાવધાટિતે-વજ્રરત્નમયકપટાભ્યામવધાટિતે-આચ્છાદિતે, અતएव 'जमल-
जुयलकवाढघणदुष्पवेसाओ' यमलयुगलकपाटघनदुष्प्रवेशे यमलानि समस्थितानि
युगलानि-युग्मानि घनानि निश्छिद्राणि च यानि कपाटानि तैः दुष्प्रवेशे कण्ठेन प्रवेशार्हे
पुनः कोदशे ? 'निच्चंधयारतिमिस्साओ' नित्यान्धकारतमिस्से नित्यं सदा अन्धं सतो-
रप्यायतलोचनयोः प्रवेशकजनं निश्चक्षुषमिव करोतीति अन्धकार तादृशं तमिस्स-तिमिरं
यत्र ते तथ -सदा निबिडान्धकारयुक्ते, तादृशत्वे हेतुमाह-ववगयगहचंदसूर णवखत्त जोइस
पहाओ' व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्य नक्षत्रज्योतिः पथे-व्यपगतं-निर्गतं ग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्राणां ज्योतिः
प्रकाशो यस्मात् स व्यपगत ग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिः, तादृशः पन्था ययोस्ते तथा यद्वा-
ववगयेत्यादि प्राकृतस्य "व्यपगत ग्रहचन्द्र सूर्यनक्षत्र ज्योतिः प्रमे" इतिच्छाया, व्यप
गता निर्गता ग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्र ज्योतिः प्रभा यतस्ते तथा । तत्र ज्योतिष्पदेन वहे ग्रहणम्,
ग्रहपदेनैव चन्द्रसूर्ययोरपि ग्रहणसम्भवे पुनस्तयोरुपादानं गोबलीवर्द्धन्यायेन प्रकर्षद्योतना-
र्यम् 'जाव' यावत् - यावत्पदेन-'अच्छ लक्षणे लष्टे मृष्टे नीरजसौ निर्मळे निष्पङ्के
निष्कङ्कटच्छाये सप्रमे समरीचिके सोद्द्योते प्रासादीये दर्शनीये अभिरूपे" इत्येषां
पदानां संग्रहो बोध्यः, तथा 'पडिरूवाओ' प्रतिरूपे अच्छादि प्रतिरूपपर्यन्तपदानां
व्याख्या चतुर्थसूत्रतो बोध्या । अथ तद्गुहाद्वयं नामतो दर्शयति, 'तं जहा' तद्यथा 'तमि-
स्सगुहाचेव खडप्पवायगुहाचेव' तमिस्सगुहा चैव खण्डप्रपातगुहा चैवेति ।

'तत्थ ण' तत्र-तयोर्गुहयोः प्रत्येकमेक एको देव इति संकलनया 'दो देवा' द्वौ देवौ
परिवसतः इति वक्ष्यमाणेनान्वयः । तौ च कीदृशौ ? इति जिज्ञासायामाह-'महिद्धिया'

इस तरह से जुड़े रहते हैं कि जिनकी वजह से उनमें प्रवेश पाना बड़े कष्ट से होता है. इनमें
सदा ऐसा गाढ अन्धकार रहता है कि वह प्रवेशक जन को निश्चक्षुष जन की तरह कर देता
है अर्थात् ये निबिड अन्धकार से युक्त रहती है क्यों कि ग्रह, चन्द्र सूर्य एव नक्षत्र इनका वहा
प्रकाश तक नहीं पहुंचता है ये दोनों गुफाएं अच्छ से लेकर प्रतिरूप तक के विशेषणों वाली
हैं इन गुफाओं के नाम "तमिस्सगुहा चेव खडप्पवायगुहाचेव" तमिस्सगुहा और खण्डप्रपात-
गुहा हैं ।

"तत्थ ण दो देवा महिद्धिया महज्जुईया महाबला, महायसा, महासोकखा, महाणुभागा
पलिओवमठईया परिवसति" इन प्रत्येक गुफामें दो देव रहते हैं ये विमान परिवार आदि

પડિરૂવાઓ' એમાથી હરેકે હરેકની જોઆઇ ૯ થોજન બેટલી છે એ જો બન્ને વજ્રમય
કપાટોથી આચ્છાદિત રહે છે તેમજ એ કપાટો પરસ્પર આ રીતે સંયુક્ત થયેલા છે કે જેથી
તેમા પ્રવિષ્ટ થવુ બહુજ દુષ્કર કાર્ય છે એમા ગ ૬ અધકાર વ્યામ છે તેથી એમા પ્રવિષ્ટ
જનને તે અક્ષુબ્ધીનની જેમ બનાવી દે છે. એટલે કે એઓ નિબિડ અધકાર પૂણું રહે
છે કેમકે ગ્રહ, ચંદ્ર સૂર્ય, તેમજ નક્ષત્રોનો ત્યા પ્રકાશ પહોચતો નથી એ બન્ને શુક્ષ્મો
અચ્છથી માંડીને પ્રતિ રૂપ સુધીના વિશેષણોથી યુક્ત છે. એ શુક્ષ્મોના નામ 'તમિસ્સ ગુહા
ચેવ ળંડપ્પવાય ગુહા ચેવ' તમિસ્સ શુકા અને ખંડ પ્રપાત શુકા છે

તત્થળ દો દેવા મહિઢ્ઢિયા મહજ્જુઈયા મહાબલા, મહાયસા, મહાસોક્ખા, મહાણુભાગા

इत्यादि-महर्द्धिकादि पदव्याख्याऽष्टमसूत्रे विजयदेववद् विज्ञेया । तौ देवौ तत्र 'कय-
मालएचेव' कृतमालकस्तमिस्रगुहाधिपतिः, 'नट्टमालएचेव' नृत्तमालकः खण्डप्रपातगुहा-
धिपतिश्चैव ।

अथात्र विद्याधरश्रेणिद्वयं प्ररूपयितुमाह-‘तेसि णं वणसंडाण’ तयोः-पूर्वोक्तयोः
खलु वनपण्डयोः ‘बहुसमरमणिज्जाओ’ बहुसमरमणीयात्-अत्यन्तसमतलात् अतएव
रमणीयात् सुन्दरात् ‘भूमिभागाओ’ भूमिभागात् भूमिभागप्रदेशात् ‘वेयइहस्स-पव्वयस्स
उमओ पासि’ वैताद्व्यस्स पर्वतस्य उभयोः द्वयोः पार्श्वयोः ‘दस दस जोयणाइं उइहं’
‘दश दश योजनानि ऊर्ध्वम्-ऊपरितनभागम् ‘उप्पइत्ता’ उत्पत्त्य गत्वा ‘तत्थणं दुवे
विज्जाहरसेदीओ’ अत्र इह खलु द्वे विद्याधरश्रेण्यौ विद्याधराणां श्रेण्यौ आश्रयभूते
पङ्क्ती ‘पणत्ताओ’ प्रज्ञप्ते, तयोरेका दक्षिणभागे अपरा चोत्तरभागे ते द्वे कीदृश्यौ ?
इत्याह-‘पाईणपडीणाययाओ’ प्राचीन प्रतीचीनायते-पूर्वपश्चिमयोर्दिशोरायते दीर्घे,
‘उदीण दाहिण वित्थिण्णाओ’ उदीचीन दक्षिण विस्तीर्णे=उत्तरदक्षिणयोर्दिशोर्विस्तीर्णे-

रूप महा ऋद्धि के स्वामी हैं महाद्युति वाले हैं महा बल वाले हैं महा यशवाले हैं महासुखशाली
हैं, महाप्रभाववाले हैं, इन पदों की व्याख्या विजयदेव की तरह अष्टम सूत्र में की जा चुकी
है, इनकी प्रत्येक की स्थिति १-१ पद्योपम की है “तं जहा”-कयमालए चेव, नट्टमालए
चेव” इन देवों के नाम कृतमालक और नृत्यमालक हैं इनमें जो कृतमालकदेव है वह तमिस्र-
गुहा का अधिपति है । “तेसिण वणसंडाणं बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ” इन वन-
पण्डों के भूमिभाग बहुसम हैं और बहुत रमणीय है । “वेयइहस्स पव्वयस्स उमओ पासि दस
दस जोयणाइ उइह उप्पइत्ता एत्थणं दुवे विज्जाहरसेदीओ पणत्ताओ” वैताद्व्य पर्वतके दोनों
पार्श्वभागों में दस योजन ऊपर जाकर विद्याधरों की दो श्रेणियाँ कही गई हैं “पाईणपडीणा-
ययाओ उदीणदाहिणवित्थिण्णाओ” ये विद्याधरश्रेणियाँ पूर्व से पश्चिमतक लम्बी हैं और उत्तर से

પલ્લિઓવમદિર્ઘયા પરિવસંતિ એમાંથી દરેક શુદ્ધિમાં બે દેવો રહે છે એઓ વિમાન
ધરિવાર આદિ રૂપથી મહાઋદ્ધિના સ્વામી છે મહાદ્યુતિવાળા છે, મહાબળવાન છે મહાયશ
વાળા છે મહાસુખશાલી છે, મહા પ્રભાવ સંપન્ન છે આ પટ્ટોની વ્યાખ્યા અષ્ટમ સૂત્રમાં
વિજયદેવની જેમ કરવામાં આવી છે આમાંથી દરેકની સ્થિતિ ૧-૧ પદ્યોપમ બેટલી છે
“ તં જહા-કયમાલણ ચેવ નટ્ટમાલણ ચેવ” આ દેવોનાનામો કૃતમાલક અને નૃત્યામાલક
છે. આમાંથી બે કૃતમાલક દેવ છે તે તમિસ્રશુદ્ધિનો અધિપતિ છે અને નૃત્યમાલક છે તે
અડપ્રપાત શુદ્ધિનો અધિપતિ છે “તેસિણ વણસંડાણં बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ”
એ વનપંડોનો ભૂમિભાગ बहुसम છે અને ખૂબજ રમણીય છે “वेयइहस्स पव्वयस्स उमओ
पासि दस दस जोयणाइ उइह उप्पइत्ता एत्थणं दुवे विज्जाहरसेदीओ पणत्ताओ”
વૈતાદ્વ્ય પર્વતના બંને પાર્શ્વભાગોમાં દશ યોજન ઉપર જઈને વિદ્યાધરોની બે શ્રેણી
છે. “पाईण पडीणाययाओ उदीणदाहिणवित्थिण्णाओ” એ વિદ્યાધર શ્રેણીઓ પૂર્વથી

વિસ્તારયુક્તે પ્રજ્ઞપ્તે । પુનસ્તે ડમે ‘દસ દસ જોયણાં વિક્ષમેણ’ દશ દશ યોજનાનિ વિષ્કમ્મેણ-વિસ્તારેણ, પુનઃ ‘પન્વયસમિયાઓ’ પર્વતસમિકે-પર્વતસમાને ‘આયામેણ’ આયામેન-દીર્ઘત્વેન જ્ઞાતવ્યે તથા તે વિદ્યાધરશ્રેણ્યૌ ‘ડમઓ પાર્સિ’ ડમઓઃ દ્વયોઃ પાર્શ્વયોઃ દક્ષિણત ઉત્તરતશ્ચ ‘દોહિં પડમવરવેડ્યાહિં’ દ્વાભ્યાં પન્નવરવેદિકાભ્યાં ‘દોહિં વણસેહેહિં’ દ્વાભ્યાં ચ વનવણ્ડાભ્યાં ‘સંપરિક્ષિત્તાઓ’ સંપરિક્ષિપ્તે પરિવેષ્ટિતે । એવઠ્ઠ એકૈકસ્યાં વિદ્યાધરશ્રેણ્યૌ દ્વે પદ્મવરવેદિકે દ્વૌ ચ વનવણ્ડૌ ઇતિ દ્વયોદ્વાભ્યાં સંયોજનયા ચતસ્રઃ પન્નવરવેદિકાઃ ચત્વારો વનવણ્ડાશ્ચ-સમ્પદ્યન્ત ઇતં બોધ્યમ્ । ‘તાઓળ પડમવરવેડ્યાઓ’ તાઃ ચતસ્રઃ પદ્મવરવેદિકાઃ સ્વલ્લ ‘અદ્દજોયણં’-અર્ધયોજનં-યોજનાર્દ્રમ્ ‘ઉહ્હં’ ઊર્ધ્વમ્-ઉપરિ ‘ઉચ્ચત્તેણં’ ઉચ્ચત્વેન ‘પંચઘણુસયાઈ’ પઠ્ઠચઘણુશ્ચતાનિ-પઠ્ઠચશનસખ્યાનિ ધનૂંપિ ‘વિક્ષમેણ’ વિષ્કમ્મેણ-વિસ્તારેણ ‘પન્વયસમિયાઓ’ પર્વતસમિકાઃ-પર્વતસમાનાઃ ‘આયામેણ’ આયામેન-દૈર્ઘ્યેણ, ‘વણઓ’ વર્ણકઃ-અસ્યા વર્ણનપરકવાક્યસમૂહો ‘જોયવ્વો’ નૈતબ્યઃ-પૂર્વણદ્ બોધ્યઃ । સ ચાસ્યૈવ ચતુર્થસૂત્રે ટીકાયાં દ્રષ્ટવ્ય ઇતિ । તથા સમૂહો

દક્ષિણ તક વિસ્તૃત હૈ “ દસ દસ જોયણાં વિક્ષમેણ પન્વયસમિયાઓ આયામેણ ” ફનકા પ્રત્યેક કા વિસ્તાર દશ દશ યોજન કા ઓર લમ્બાઈ ફનકી પર્વત કો લમ્બાઈ કે વરાવર હૈ “ડમઓપાર્સિ દોહિં પડમવરવેડ્યાહિં દોહિં વણસેહેહિં સંપરિક્ષિત્તાઓ” યે દોનો વિદ્યાધરશ્રેણિયાં અપને દોનો પાર્શ્વભાગોમેં દક્ષિણસે ઓર ઉત્તર સે દો દો પન્નવરવેદિકાઓ સે એવં દો દો વનવણ્ડો સે પરિવેષ્ટિત હૈ” ફસ તરહ સે યે ૪ પન્નવર વેદિકાઓ સે ઓર ૪ વનવણ્ડોસે પરિવેષ્ટિત હૈ ઁસા જાનના ચાહિયે યે ૪ પન્નવરવેદિકાએ “અદ્દજોયણં ઉહ્હં ઉચ્ચત્તેણં પંચ ઘણુસયાઈ વિક્ષમેણ પન્વયસમિયાઓ આયામેણ વણઓ જોયવ્વો” આધે આધે યોજન કી ડ્ઝાઈવાલી હૈ” ઓરે પાંચ સૌ પાંચમો ઘણુષ કી વિસ્તાર વાલી હૈ તથા ફનકી પ્રત્યેક કી લમ્બાઈ પર્વત કી લમ્બાઈ કે વરાવર હી હૈ । ફનકે વર્ણન મેં પૂર્વ જૈસા વર્ણન હી જાનના ચાહિયે, યહ વર્ણન ફસી કે ચતુર્થસૂત્ર મેં ક્રિયા જા સુકા હૈ । પન્નવરવેદિકા કી લમ્બાઈ કે વરાવર હી લમ્બાઈ વનવણ્ડો

પશ્ચિમ સુધી લાગી છે અને ઉત્તરથી દક્ષિણ સુધી વિસ્તૃત છે. “દસદસ જોયણાં વિક્ષમેણ પન્વયસમિયાઓ આયામેણ” એમાંથી દરેકનો વિસ્તાર દશ દશ યોજન બેટલી છે અને દરેકની લંબાઈ પર્વતની લંબાઈ બેટલી છે. “ડમઓ પાર્સિ દોહિં પડમવરવેડ્યાહિં દોહિં વણસેહેહિં સંપરિક્ષિત્તાઓ” એઓ બન્ને વિદ્યાધર શ્રેણીઓ પોતાના બન્ને પાર્શ્વભાગમાં દક્ષિણથી અને ઉત્તરથી બન્ને પન્નવરવેદિકા ઓથી અને વનવણ્ડોથી પરિવેષ્ટિત છે, એ જ પન્નવર વેદિકાઓ “અદ્દ જોયણં ઉહ્હં ઉચ્ચત્તેણં પંચઘણુસયાઈ” વિક્ષમેણ પન્વય સમિયાઓ આયામેણ વણઓ જોયવ્વો” અહીં અહીં યોજન બેટલી ઊંચાઈ વાળી છે અને પાંચસો પાંચસો ધણુષની બેટલી વિસ્તાર વાળી છે તથા આમાંથી દરેકની લંબાઈ પર્વતની લંબાઈ બેટલી છે. એમનું વર્ણન પહેલાં જેવું જ સમજવું બોધ્યું આ વર્ણન આ અથના ચતુર્થ સૂત્રમાં કરવામાં આવેલ છે. પન્નવરવેદિકાની લંબાઈ બેટલી લંબાઈ વનવણ્ડોની પણ

‘વળસંહાવિ’ વનવળા અપિ ‘પદમવરવેદ્યા સમગા’ પદમવરવેદિકા-પદમવરવેદિકા તુલ્યા ‘આયામેળ’ આયામેન બોધ્યાઃ । ‘વળ્ણઓ’ વળ્ણક-વનવળ્ણવળ્ણકપર સર્વોઽપિ પદ સમૂહોઽસ્યૈવ પઠ્ઠમસૂત્રે ટીકાયાં દ્રષ્ટવ્યં इति ।

અથ તયોઃ શ્રેણ્યોરાકારભાવપ્રત્યવતારં પૃચ્છતિ- ‘વિજ્ઞાહરસેદીળં’ इत्यादि, ‘વિજ્ઞાહર સેદીળં મંતે!’ હે મદન્ત ! વિદ્યાધરશ્રેણ્યોઃ-વિદ્યાધરશ્રેણિદ્વય સમ્બન્ધિન્યોઃ ‘ભૂમીળં કેરિસણ’ ભૂમ્યોઃ કીદૃશકઃ-કીદૃશઃ ‘આયારભાવપઢોયારે’ આકારભાવપ્રત્યવતારઃ સ્વરૂપપર્યાયપ્રાદુર્ભાવઃ ‘પળ્ણત્તે’ પ્રજ્ઞસઃ મગવાનુત્તરયતિ ‘ગોયમા બહુસમરમણિજ્જે’ હે ગૌતમ ! બહુસમરણીયઃ-અત્યન્તસમતલઃ અત એવ રમણીયઃ ‘ભૂમિભાગે-પળ્ણત્તે’ ભૂમિભાગઃ પ્રજ્ઞસઃ, ‘સે જહા નામણ આલિગપુક્કરેદ્ વા જાવ’ સ યથા નામકઃ આલિગ્ગપુક્કર इति વા યાવત્ ‘નાનાવિહપંચ વળ્ણેહિ મળીહિં તળેહિં ઉવસોમિણ’ નાના વિધિ પશ્ચવર્ણેઃ મળિમિઃ-તૃણૈશ્ચ ઉપશોભિતઃ આલિગ્ગપુક્કર इति વા ઇત્યારમ્ય નાના-વિધ પઠ્ઠવર્ણૈર્મળિમિ સ્તૃણૈશ્ચોપશોભિત इत्यन्त પદ સમૂહો રાજપ્રશ્રીયસૂત્રસ્ય પઠ્ઠ-

કી હૈ વનવળા કા વળ્ણન કરને વાલા પદમસૂત્ર હસ મૂત્રકે પંચમ સૂત્ર મેં કહા જા જુકા હૈ હસલિણ સૂત્રકાર ને “વનસંહાવિ પદમવરવેદ્યામમગા આયામેળ વળ્ણઓ” એસા યહ સૂત્ર કહા હૈ ।

“વિજ્ઞાહરસેદીળં મંતે ! ભૂમિળં કેરિસણ આયારભાવપઢોયારે પળ્ણત્તે” હે મદન્ત ! વિદ્યાધર શ્રેણ્યો કા આકારભાવ પ્રત્યવતાર-સ્વરૂપ કૈમા કહા ગયા હૈ । હસકે ઉત્તર મેં પ્રમુ કહતે હૈ-“ગોયમા ! બહુસમરમણિજ્જે ભૂમિભાગે પળ્ણત્તે” હે ગૌતમ વિદ્યાધરશ્રેણિયો કા ભૂમિભાગ બહુસમ-વિલકુલસમતલવાલા-અતએવ રમણીય કહા ગયા હૈ । “સે જહા નામણ આલિગપુક્કરેદ્ વા જાવ નાનાવિહ પંચવળ્ણેહિં મળીહિં તળેહિં ઉવસોમિણ” વહ એસા બહુસમ હૈ કિ જૈસા મૃદંગ કા મુલ પુટ બહુસમ હોતા હૈ, इत्यादि રૂપ સે જૈસા વળ્ણન ભૂમિભાગ કા યાવત્ વહ નાના પ્રકાર કે પાચ વળ્ણોવાલે મળિયો સે એવં તૃણો સે ઉપશોભિત હૈ” યહાં તક કે પદ સમૂહો દ્વારા કિયા ગયા હૈ વૈસા હી વહ સત્ર વળ્ણન હસકે સમ્બન્ધ મેં યહા પર મી કર લેના જાહિયે” યહ સવ વળ્ણન રાજપ્રશ્રીય સૂત્ર કે ૧૫ વે સૂત્ર સે ઊકર ૧૯ વે સૂત્રતક કરને મેં

છે આ અ યના પ અમ સૂત્રમા જો વનવળા ડાલુ વર્ણન કરવામા આવેલ છે એથી જ સૂત્રકારે “વનસંહાવિ પદમવરવેદ્યા સમગા આયામેળ વળ્ણઓ” આ પ્રમાણે કહ્યું છે

‘વિજ્ઞાહર સેદીળં મંતે ! ભૂમીળં કેરિસણ આયાર ભાવ પઢોયારે પળ્ણત્તે’ હે મદન્ત ! વિદ્યાધર શ્રેણીઓના આકારભાવ પ્રત્યવતાર-સ્વરૂપ વિષે શું કહ્યું છે ? ઓના જવાબમા પ્રમુ કહે છે ‘ ગોયમા ! બહુસમરમણિજ્જે ભૂમિભાગે પળ્ણત્તે’ હે ગૌતમ ! વિદ્યાધર શ્રેણી ઓના ભૂમિભાગ બહુસમ-એક દમ સમ-એથી રમણીય છે “સે જહા નામણ આલિગ પુક્કરેદ્ વા જાવ નાનાવિહ પંચવળ્ણેહિં મળીહિં તળેહિં ઉવસોમિણ” તે મૃદંગના મુખપત્ર-ખાંડ-સમ છે. इत्यादि રૂપમા જેવું વર્ણન “યાવત્ તે અનેક જાતના પંચવળ્ણોથી યુક્ત મણિઓ તેમજ તૃણોથી ઉપશોભિત છે “અહીં મુનીના પદમસૂત્રા વડે ભૂમિભાગનું વર્ણન પહેલાં

દશસ્રજાદારમ્બ્ય એકોનવિંશતિતમસ્રત્રપર્યન્તેભ્યઃ પઠ્ઠમ્યઃ સૂત્રેભ્યઃ કર્તવ્યઃ, તદર્થશ્ચ તત્રૈવ મત્કૃતસુબોધિનીટીકાયાં દ્રષ્ટવ્યમ્મિતિ । કીદૃશૈર્મણિભિસ્તૃણૈશ્ચોપશોભિત-મિતિ । જિજ્ઞાસાયામાહ ‘તં જહા’ તદ્વત્થા ‘કિત્તિમેહિં ચેવ અકિત્તિમેહિં ચેવ’ કૃત્રિમૈશ્ચેવ અકૃત્રિમૈશ્ચેવેતિ । તત્ર કૃત્રિમાઃ શિલ્પિકૌશલનિર્મિતાઃ, અકૃત્રિમાઃ= સ્વાભાવિકાઃ, તૈરુભયૈઃ સ ધૂમિમાગઃ ઉપશોભિતમિતિ સમ્બન્ધઃ ।

અત્રોભયોર્વિદ્યાધરશ્રેણ્યોર્નગરસંખ્યામાહ-‘તત્થ જં’ તત્ર-તયોર્દ્વયોર્વિદ્યાધરશ્રેણ્યોર્મધ્યે સ્થલુ ‘દાહિણિલ્લાપ’ દાક્ષિણાત્યાયાં-દક્ષિણમાગવર્તિન્યાં ‘વિજ્ઞાહરસેદીપ’ વિદ્યાધરશ્રેણ્યાં ગગનવલ્લભપ્રમુખાઃ-ગગનવલ્લભઃ પ્રમુખઃ-પ્રધાનો યેષુ તે તથાશ્રૂતાઃ પઠ્ઠ-શત્સંખ્યકાઃ વિદ્યાધરનગરાઽઽવાસાઃ વિદ્યાધરાણાં નગરાવાસાઃ-રાજધાન્યઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્વત્થા-ઓત્તરાહાયામ્-ઉત્તરમાગવર્તિન્યાં વિદ્યાધરશ્રેણ્યાં ‘રહનેઝરચક્રવાલપામોક્ત્વા’ રથનૂપુરચક્રવાલપ્રમુખાઃ-રથનૂપુરચક્રવાલાઃ પ્રમુખો યેષુ તથાશ્રૂતા ‘વિજ્ઞાહરણગરાવાસા પળ્લપ્તા’ વિદ્યાધરનગરાવાસાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, ‘પવામેવ’ એવમેવ પ્રદર્શિતપ્રકારેણૈવ ‘સપુવ્વાવરેણ’ સપૂર્વા-પરેણ-પૂર્વાપરસંખ્યાસંકલને ‘દાહિણિલ્લાપ’ દાક્ષિણાત્યાયાં-દક્ષિણમાગવર્તિન્યામ્ ‘ઉત્તરિલ્લાપ’ ઔત્તરાહ્યામ્-ઉત્તરમાગવર્તિન્યાં ચ ‘વિજ્ઞાહરસેદીપ’ વિદ્યાધરશ્રેણ્યાં ‘પગં દ-સુત્તરં’ દશોત્તરં-દશાધિકમ્, એકમ્-એકસંખ્યકમ્, ‘વિજ્ઞાહરણગરાવાસસયં’ વિદ્યાધર-નગરાવાસશતમ્-વિદ્યાધરનગરાવાસાનાં શતં ભવતિ, ઉભયશ્રેણીસ્થાનાં વિદ્યાધરાણાં દશાધિકા એકશતસંખ્યકા રાજધાન્યો ભવન્તીત્યર્થઃ, ‘ભવન્તીતિ મત્કલ્યાં’ મિતિ એતત્

આયા છે એ મણિ ઔર તુળ વહાં પર “કિત્તિમેહિં ચેવ અકિત્તિમેહિં ચેવ” કૃત્રિમ મી છે ઔર અકૃત્રિમ મી છે શિલ્પિયો દ્વારા અપનો કુશલતાસે નિર્મિત જો મણિ ઔર તુળ છે એ કૃત્રિમ ઔર સ્વાભાવિક જો મણિ ઔર તુળ છે એ અકૃત્રિક છે । “તત્થળ દાહિણિલ્લાપ વિજ્ઞા-હરસેદીપ રહનેઝરચક્રવાલપામોક્ત્વા સદ્ધિ વિજ્ઞાહરણગરાવાસા પળ્લપ્તા” દક્ષિણ વિદ્યાધર શ્રેણિ મેં ગગનવલ્લભ આદિ ૫૦ નગર છે રાજધાનિયા છે તથા ઉત્તર વિદ્યાધરશ્રેણી મેં રથનૂ-પુર ચક્રવાલ આદિ ૬૦ નગર છે-રાજધાનિયા છે હિસ તરહ એ સજ નગર ૧૧૦ છે દોનો

કરવામા આવેલ છે તેવુ જ વર્ણન અહીં પણ સમજવું જોઈએ આ વર્ણન રાજપ્રશ્રીય સૂત્રના ૧૫ માં સૂત્રથી ૨૩ીને ૧૬ માં સૂત્ર સુધી કરવામાં આવેલ છે આ મહિષ અને તુણ ત્યાં “કિત્તિમેહિં ચેવ અકિત્તિમેહિં ચેવ” કૃત્રિમપણ છે અને અકૃત્રિમ પણ છે. શિલ્પકારો સ્વકૌશલથી મહિષ અને તુણોનું નિર્માણ કરે છે તે કૃત્રિમ અને સ્વાભાવિકરીતે જે મહિષ અને તુણો સર્જિત થાય છે તે અકૃત્રિમ છે. “તત્થળ દાહિણિલ્લાપ વિજ્ઞાહરસેદીપ રહનેઝરચક્ર-વાલપામોક્ત્વા સદ્ધિ વિજ્ઞાહરણગરાવાસા પળ્લપ્તા” દક્ષિણ વિદ્યાધર શ્રેણીમાં ગગનવલ્લભ પગેરે ૫૦ નગરો છે-રાજધાનીઓ છે. તેગજ ઉત્તરવિદ્યાધર શ્રેણીમાં રથનૂપુર ચક્રવાલ પગેરે ૬૦ નગરો આવેલા છે રાજધાનીઓ-છે. આમ આ સર્વ નગરો બન્ને શ્રેણીઓમાં

આખ્યાતં-કથિતમ્ । 'તે વિજ્ઞાહરણગરા' તાનિ અનન્તરોક્તાનિ વિદ્યાધરનગરાણિ કીદ્-
શાનિ ? इति जिज्ञासायामाह-'रिद्धत्थिमियसमिद्धा' ऋद्धस्तिमित समृद्धानि 'पमुइय
जणजाणवया जाव पडिख्वा' प्रमुदितजनजानपदानि यावत् प्रतिरूपाणि ऋद्धानि=
विभवभवननादिभिर्वृद्धिं प्राप्तानि, स्तिमितानि-स्वपरचक्रमयरहितानि, समृद्धानि-धन-
धान्यादिसमृद्धियुक्तानि, अत्र द्विपदकर्मधारयः । तथा प्रमुदित जनजानपदानि-प्रमुदिताः
हृष्टाः प्रमोदकरवस्तूनां सद्भावात् जना नगरीवास्तव्याः लोकाः जानपदाः जनपदभवाः
देशभवास्तत्राऽऽयाताः सन्तो येषु तानि तथा । यावत् यावच्छब्दात् नगरवर्णनमौपपा-
तिकसूत्रवर्णितचम्पानगरीवद् बोध्यम् । केवलं स्त्रीनपुंसकत्वकृतो विशेषः तदर्थजिज्ञा-
सुभिरौपपातिकसूत्रस्य मत्कृता पीयूषवर्षिणी टीका विलोकनीयेति । प्रासादीयानि
दर्शनीयानि अभिरूपाणि प्रतिरूपाणीत्येषां व्याख्या प्राग्वत् । 'तेषु णं विज्जाहरणग
रेसु' तेषु-पूर्वोक्तेषु विद्याधरनगरेषु खलु 'विज्जाहररायाणो' विद्याधरराजानः विद्या-
धराणां राजानः-अधिपतयः 'परिवसंति' परिवसति-निर्वसन्ति । "विद्याधरराजान"

श्रेણિયો મેં । "તે વિજ્ઞાહરણગરા રિદ્ધત્થિમિયસમિદ્ધા પમુઇય જણજાણવયા જાવ પડિહ્વા"
યે વિદ્યાધરો કી રાજધાનિયા વિભવ, ભવન આદિકો દ્વારા ઋદ્ધ હૈ-વૃદ્ધિ કો પ્રાપ્ત હૈ, સ્તિમિત હૈ-
સ્વચક્ર ઔર પરચક્ર કે ભય સે રહિત હૈ, एवं धनधान्यादि रूप समृद्धि से युक्त हॆ । तथा
પ્રમોદકર વસ્તુઓં કે સદ્ભાવ સે નગરી મેં વસને વાલે જન એવ બાહર સે આયે હુએ જન સબ
સદા પ્રમુદિત રહતે હૈ યહાં યાવત્ શબ્દ સે સૂત્રકાર ને યહ પ્રકટ કિયા હૈ કિ હન નગરિયો
કા વર્ણન જૈસા ઔપપાતિક સૂત્ર મેં ચમ્પા નગરી કા વર્ણન કિયા ગયા હૈ જૈસા હી હૈ ઓસ કે
વર્ણન મેં આયે હુએ પદો કી વ્યાખ્યા હમને ઓસકી પીયૂષવર્ષિણી ટીકા મે સ્પષ્ટ કી હૈ પ્રાસા-
દીય દર્શનીય, અભિરૂપ એવ પ્રતિરૂપ પદો કી વ્યાખ્યા યથાસ્થાન કર દી ગઈ હૈ "તેસુણં
વિજ્ઞાહરણગરેસુ વિજ્ઞાહરરાયાણો પરિવસતિ મહયા હિમતવતમલયમદરમહિંદસારા રાયવ-
ણઓ માણિયવ્વો" ઓન વિદ્યાધર નગરોં મેં વિદ્યાધર રાજા રહતે હૈ યે સબ રાજા હૈમવતક્ષેત્ર કી

૧૧૦ છે 'તે વિજ્ઞાહરણગરા રિદ્ધત્થિમિયસમિદ્ધા પમુઇયજણજાણવયા જાવ
પડિહ્વા' આ વિદ્યાધરોની રાજધાનીઓ વિભવ, ભવન વગેરેથી ઋદ્ધ છે, વૃદ્ધિ-પ્રાપ્ત છે,
સ્તિમિત છે-સ્વચક્ર અને પરચક્રના ભયથી મુક્ત છે, તેમજ ધનધાન્યાદિરૂપ સમૃદ્ધિથી
યુક્ત છે તથા પ્રમોદદાયિની વસ્તુઓના સદ્ભાવથી નગરમાં રહે નારા તેમજ બહારથી
આવેલા જનો પ્રમુદિત રહે છે આહી 'યાવત્' શબ્દથી સૂત્રકારે આ વાત સ્પષ્ટ કરી
છે કે આ નગરીયોનું વર્ણન જે રીતે ઔપપાતિક સૂત્રમાં થયું નગરીયું વર્ણન કરવામાં
આવ્યું છે તેવું જ છે તથા નગરીના વર્ણનમાં જે પદો છે તેની વ્યાખ્યા અને
તેની પીયૂષવર્ષિણી ટીકામાં કરી છે પ્રાસાદીય, દર્શનીય, અભિરૂપ અને પ્રતિરૂપ પદોની
વ્યાખ્યા યથાસ્થાન કરવામાં આવી છે "તેસુણં વિજ્ઞાહરણગરેસુ વિજ્ઞાહરરાયાણો
પરિવસંતિ મહયાહિમવંત મલય મદર મહિંદસારા રાયવણઓ માણિયવ્વો" તે વિદ્યાધર

इत्यत्र समासान्तविधेरनित्यत्वाद्बहुप्रत्ययाभावो बोध्यः ते कीदृशाः ? इति जिज्ञासा-
यामाह—‘महयाहिमवन्तमलयमदरमहिदसारा’ महाहिमवन्मलयमन्दरमहेन्द्रसाराः महा-
हिमवान्—हैमवत क्षेत्रस्योत्तरतः सीमाकारी वर्षधरः पर्वतः, मलयः पर्वतविशेषः, मन्दरः—
मेरुः, महेन्द्रः पर्वतविशेषः, ते इव साराः प्रधानाः इत्यादि ‘रायवर्णओ’ राजवर्णकः—
राजवर्णनपरः पदसमूहोऽत्र ‘भाणियव्वो’ भणितव्यः—वक्तव्यः । अयं च—औपपातिक
सूत्रस्य एकादशसूत्रतो बोध्यः तदर्थश्च तत्रैव मत्कृतपीयूषवर्षिणी टीकातोऽवगन्तव्य इति ।

अथ विद्याधरश्रेणिद्वयवास्तव्य मनुजानामाकारभावप्रत्यवतारं पृच्छति—‘विज्जा-
हरसेदीणं भंते ! मणुयाणं केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते’ विद्याधरश्रेण्योः भदन्त
मनुजानां-मानवानां कीदृशकः-कीदृशः आकारभावप्रत्यवतारः-स्वरूपपर्यायप्रादुर्भावः प्रज्ञप्तः
कथितः ? इति पृष्ठो भगवानाह—‘गोयमा ! ते णं मणुआ बहुसघयणा’ हे गौतम !
ते विद्याधरश्रेणि वास्तव्यः खलु मनुजाः—मनुष्या बहुसंहननाः—बहूनि वज्ररूपभनारा-

उत्तर दिशा में सीमाकारी महाहिमवान् पर्वत, एव मलय पर्वत मेरुपर्वत और महेन्द्र पर्वत के
जैसे प्रधान है इन राजाओं का और विशेष वर्णन देखना हो तो औपपातिक सूत्र के ११
वें सूत्र की टीका देखनी चाहिये, वहां पर विस्तार के साथ यह वर्णन करने में आया है ।

अब सूत्रकार विद्याधरश्रेणिद्वय के निवासी जनो के आकार भाव प्रत्यवतार को प्रकट
करने के लिये प्रश्नोत्तर के रूप में उसे स्पष्ट करते हैं—“विज्जाहर सेदीणं भंते ! मणुयाणं
केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते’ हे भदन्त ! विद्याधर श्रेणिद्वय में रहेनेवाले मनुष्योंका
आकार भाव प्रत्यवतार-स्वरूप कैसा कहा गया है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं—“गोयमा !
तेणं मणुजा बहुसघयणा, बहुसठाणा, बहु उच्चत्त पज्जवा बहु आउपज्जवा जाव सव्व दुक्खाण
मत्तं करेत्ति” हे गौतम ! विद्याधर श्रेणि द्वय निवासी मनुष्यो का स्वरूप इस प्रकार से
कहा गया है—वे वज्र रूपम नाराच आदि सहनन वाले होते हैं, समचतुरस्र आदि संस्थान

नगरोभा विद्याधर राजा रहे छे आ जधा राजाओ हैमवत क्षेत्रनी उत्तर दिशाभा सीमा
कारी महाहिमवान् पर्वत तेमज मलय पर्वत मेरु पर्वत अने महेन्द्र पर्वतना जेवा
प्रधान छे आ राजाओ विषे जाणुवु डोय तो औपपातिक सूत्रना ११ भा सूत्रनी टीका
जेवी जेछि तया विस्तारपूर्वक आ विषे वखुन करवाभां आवुं छे.

इवे सूत्रकार विद्याधर श्रेणिद्वयना निवासीजनोना आकारभाव प्रत्यवतार-विषे स्पष्टता
करवा भाटे प्रश्नोत्तर रूपमां पोतानु कथन आ रीते प्रकट करे छे के—

“विज्जाहार सेदीणं भंते ! मणुयाणं केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते ?” छे
भदन्त ! विद्याधर श्रेणिद्वयभा रहिनारा भाखुसोना आकार भावप्रत्यवतार-स्वरूप-कैषु कहेवाभां
आवेख छे ? जेना जवाणभा प्रभु कहे छे के “गोयमा ! तेणं मणुया बहुसघयणा बहुस
ठाणा बहुउच्चत्तपज्जवा बहु आउपज्जवा जाव सव्व दुक्खाण मत्तं करेत्ति” छे गौतम !
विद्याधर श्रेणिद्वय निवासी मनुष्योनुं स्वरूप जेवुं कहेवाभां आवेखुं छे. समचतुरस्र आदि

ચાદોનિ સંહનનાનિ-વપુર્દદીકરણાસ્થિનિચયરૂપાણિ યેષાં તે તથા, 'વહુસંઠાણા' વહુસ-
સ્થાનાઃ-વહુનિ સમચતુરસ્ત્રાદીનિ સંસ્થાનાનિ-વિશિષ્ટાવયવગ્ધનારૂપશરીરાકૃતયો યેષાં
તે તથા, 'વહુ ઉચ્ચત્તપજ્જવા' વહુચ્ચત્તવપર્યવાઃ વહવઃ નાનાવિદ્યા ઉચ્ચત્તવસ્ય શરીરોચ્છ્ર-
યસ્ય પર્યવાઃ પઠ્ઠચધનુશ્વતાદિકા માનવિશેષા યેષાં તે તથા, તથા 'વહુ આઉપજ્જવા'
વહ્વાયુઃ-પર્યવાઃ-વહવઃ આયુષઃ પૂર્વકોટિવર્ષગતાદિકાઃ પર્યવાઃ-વિશેષા યેષાં તે તથા,
'જાવ' યાવત્-યાવત્પદેન "વહુનિ વર્ષાણિ આયુઃ પાલયન્તિ પાલયિત્વા અપ્યેકે નિરય-
ગામિનઃ અપ્યેકે તિર્યગગામિનઃ, અપ્યેકે મનુજગામિનઃ અપ્યેકે દેવગામિનઃ, અપ્યેકે
સિધ્યન્તિ મુચ્યન્તે પરિનિર્વાન્તિ" इत्येषां पदानां मङ्ग्रहो बोध्य, 'सर्वदुःखखण्डनमंतं करेति'
सर्वदुःखखानामन्तं कुर्वन्ति । एषां व्याख्या एकादशसूत्रतो बोध्या ॥ सू० १३ ॥

મૂલમ્-તાસિ ણં વિજ્ઞાહરસેદીણં વહુમમરમણિજ્ઞાઓ મૂમમા-
ગાઓ વેયઢ્ઢસસ પવ્વયસસ ઉમઓ પાસિં દસ જોયણાં ઉદ્દં ઉપ્પ-
ઇત્તા एत्थ णं दुवे आभिओगसेदीओ पण्णत्ताओ पाईणपडीणाययाओ
उदीणदाहिणवित्थिण्णओ दस दस जोयणां विस्वंमेणं पव्वय

વાળે હોતે હૈ, इनके शरीर की ऊँचाई पाचसौ धनुष आदि की होती है, पूर्वकोटिवर्षशन आदि
की इनकी आयु होती है यावत् पद के अनुसार वे इनकी आयु ५१ अठ्ठा तरह से पालन
करते हैं-पालन करके मृत्यु के अवसर पर मर कर उनमें से कितनेक तो नरकगामी होते
हैं, कितनेक तिर्यगगतिगामी होते हैं, कितनेक मनुष्यगतिगामी होते हैं और कितनेक देवगति
गामी होते हैं । कितनेक सिद्ध-कृतकृत्य हो जाते हैं केवलज्ञान रूपी आलोक से लोका-
लोक के ज्ञाता हो जाते हैं सर्व कर्मों से रहित हो जाते हैं, समस्त कर्मकृतविकार से
रहित हुए अपने आप में समा जाते हैं शारीरिक एवं मानसिक रूप समस्त क्लेशों का
नाश कर देते हैं-इस तरह अव्यावाय सुख के वे मोक्ता हो जाते हैं । ऐसी ही व्याख्या
इसके ११ वे सूत्र में की जाचुकी है ॥१३॥

સસ્થાનવાળા હોય છે એમના શરીરની ઉંચાઈ પાચસો ધનુષ વગેરે જેટલી હોય છે પૂર્વ
કોટિ વર્ષશત આદિ જેટલી આયુ હોય છે. 'યાવત્ પદથી એ સપ્પટ થાય છે કે એએ
આટલુ આયુ ચોક્કસ લોગવે છે આયુ લોગવીને મૃત્યુ વખતે તેઓમાંથી કેટલાક નરકગામી
હોય છે, કેટલાક તિર્યગ ગતિગામી હોય છે અને કેટલાક મનુષ્ય ગતિગામી હોય છે અને
કેટલાક-દેવગતિગામી હોય છે કેટલાક સિદ્ધ-કૃતકૃત્ય-થઈ જાય છે-દેવગણાનરૂપી આલોકથી
લોકાલોકના જ્ઞાતા થઈ જાય છે સર્વ કર્મોથી રહિત થઈ જાય છે સમસ્તકર્મકૃતવિકારથી
રહિત થયેલા તેઓ સ્વમાં જ સમવહત થઈ જાય છે. શારીરિક અને માનસિકરૂપે મમસ્ત
ક્લેશોને વિનષ્ટ કરી નાખે છે આ રીતે અવ્યાબાધ સુખના તેઓ લોકતા થઈ જાય છે એવી
જ વ્યાખ્યા એના જ ૧૧ મા સૂત્રમા પહેલા કરવામા આવી છે. ॥૧૩॥

समियाओ आयामेणं उभओ पासि दोहें य वणसंडेहिं संपरिक्खि
त्ताओ वण्णओ दोण्हवि, पव्वयसमियाओ आयामेणं । आभिओग-
सेदीणं भंते ! केरिसिए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा बहु
समरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव तणेहें उवसोमिए वण्णाइं
जाव तणाणं सदोत्ति । तासि णं आभिओगसेदीणं तत्थ तत्थ देसे
तहिं तहिं बहवे वाणमंतरा देवा य देवीओ य आसयंति संयाति
जाव फलवित्तिविसेसं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति । तासु णं आभि
ओगसेदीसु सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमजमवरुणवेसमणकाइयाणं
आभिओगाणं देवाणं बहवे भवणा पण्णत्ता, ते णं भवणा बाहें बट्टा
अंतो चउरंसा वण्णओ जाव अच्छरगणसंघविकिण्णा जाव पडिख्वा ।
तत्थ णं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमजमवरुणवेसमणकाइया
बहवे आभिओगा देवा महिद्धिया महज्जुईया जाव महासोक्खा
पलिआवमट्ठिइया पखिसंति । तासि णं आभिओगसेदीणं बहुसमर-
मणिज्जाओ भूमिभागाओ वेयड्डस्स पव्वयस्स उभओ पासि पंच पंच
जोयणाइं उड्ढं उप्पइत्ता, एत्थणं वेयड्डस्स पव्वयस्स सिहरतले पण्णत्ते
पाईणपडिणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे दस जोयणाइं विक्खंमेणं
पव्वयसमगे आयामेणं से णं इक्कोए पउमवरवेइयाए इक्केणं वणसं-
डेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, पमाणं वण्णओ दोण्हंपि । वेयड्डस्स
णं भंते ! पव्वयस्स सिहरतलस्स केरिसिए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते
गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते से जहाणामए आलिंग
पुक्खरेइ वा जाव णाणाविहपंचवण्णेहिं मणीहिं उवसोमिए जाव
वावीओ पुक्खरिणीओ जाव वाणमंतरा देवा य देवीओ य आसं
यंति जाव भुंजमाणा विहरंति ।

जंबुद्वीवे णं भंते ! दीवे भारहेवासे वेयड्डपव्वए कइ कूडा
पण्णत्ता ? गोयमा ! णव कूडा पण्णत्ता, तं जहा—सिद्धोययणकूडे ? दाहि

णड्ढुमरहकूडे २ खंडप्पवायगुहाकूडे ३ मणिमद्रकूडे ४ वेयड्ढुकूडे
 ५ पुण्णमद्रकूडे ६ तिमिसगुहाकूडे ७ उत्तरड्ढुमरहकूडे ८ वेसमणकूडे
 ॥ सू० १४ ॥

छाया—तयोः खलु विद्याधरश्रेण्योः बहुसमरमणीयाद् भूमिभागाद् वैताड्यस्य पर्वतस्य उभयोः पार्श्वयोः दश योजनानि ऊर्ध्वमुत्पत्य अत्र खलु द्वे अभियोग्यश्रेण्यो प्रक्षप्ते प्राचीनप्रतीचीनाऽऽस्यते उदीचीनदक्षिणविस्तीर्णं दशदश योजनानि विष्कम्भेण पर्वत समिके आयामेन उभयोः पार्श्वयोः द्वाभ्यां पञ्चवरवेदिकाभ्यां च उनगण्डाभ्यां संपरिक्षिप्ते वर्णको द्वयोरपि पर्वतसमका आयामेन अभियोग्यश्रेण्यो भवन्त कीदृशकः आकारभाव-प्रत्यवतारः प्रज्ञप्त गौतम । बहुसमरमणीयो भूमिभागः प्रज्ञप्तः यावत् तृणैरुपशोभतः वर्णा यावत् तृणानां शब्द इति । तयोः खलु अभियोग्यश्रेण्याः तत्र तत्रदेशे तत्र तत्र बहवो व्यन्तरा देवाश्च देव्यश्च आसते शेरने यावत् फलवृत्तिविशेष प्रत्यनुभवन्तो विहरन्ति । तयोः खलु अभियोग्य श्रेण्योः शक्रस्य देवेन्द्रस्य देवराजस्य सोमयमवरुणवैश्रवणकायिका-नामाभियोग्यानां देवानां बहूनि भवनानि प्रक्षप्तानि । तानि खलु भवनानि बहिः वृत्तानि अन्तःचतुरस्त्राणि वर्णकः यावत् अप्सरागणसंघविकीर्णानि यावत् प्रतिकृपाणि । तत्र खलु शक्रस्य देवेन्द्रस्य देवराजस्य सोमयमवरुणवैश्रवणकायिका बहव अभियोग्या देवा महर्द्धिका महाद्युतिका यावत् महासौम्याः पत्न्योपमस्थितिकाः परिचसन्ति ।

तयोः खलु अभियोग्यश्रेण्यो बहुसमरमणीयाद् भूमिभागाद् वैताड्यस्य पर्वतस्य शिखरतल प्रज्ञप्तम्, प्राचीनप्रतीचीनाऽऽस्यतम् उदीचीन दक्षिणविस्तीर्णं दश योजनानि विष्कम्भेण पर्वतसमकम् आयामेन । तत् खलु एकया पञ्चवरवेदिकया एकेन वनखण्डेन सर्वतः समन्तात् संपरिक्षिप्तम् प्रमाणं वर्णकोद्वयोरपि ।

वैताड्यस्य खलु भवन्तः । पर्वतस्य शिखरतलस्य कीदृशक आकारभावप्रत्यवतारः प्रक्षप्तः । गौतम । बहुसमरमणीयो भूमिभागः प्रक्षप्तः, स यथानामकः आलिङ्गपुष्कर इति वा यावत् नानाविधपञ्चवर्णैः मणिभिरुपशोभितः, यावत् वाप्यः पुष्करिण्यः यावत् व्यन्तरा देवाश्च देव्यश्च आसते यावद् भुञ्जाना विहरन्ति,

जम्बूद्वीपे खलु भवन्तः । द्वीपे भारते वैताड्यपर्वते कतिकूटानि प्रक्षप्तानि गौतम नवकूटानि प्रक्षप्तानि तद्यथा सिद्धायतनकूटं १ दक्षिणार्द्धभरतकूटं २ खण्डप्रपातगुहाकूटं ३ मणिमद्रकूटं ४ वैताड्यकूटं ५ पूर्णमद्रकूटं ६ तमिसगुहाकूटम् ७ उत्तरार्द्धभरतकूटम् ८ वैश्रवणकूटम् ९ ॥ सू० १५ ॥

टीका—‘तासि णं विज्जाहरसेदीणं’ इत्यादि । अथात्रैव वर्तमानाभियोग्य श्रेणीं निरूपयति ‘तासि णं’ तयोः—पूर्वोक्तयोः खलु ‘विज्जाहरसेदीणं बहुसमरम-

‘तासिण विज्जाहरसेदीणं बहुसमरमणिज्जाओ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—उन विद्याधर श्रेणियों के बहुसमरमणीय भूमिभाग से वैताड्य पर्वत के दोनों पार्श्व-

‘तासिण विज्जाहरसेदीणं बहुसमरमणिज्जाओ’ इत्यादि ॥ सूत्र १५ ॥

टीकार्थ—ते विद्याधर श्रेणियों ने बहुसमरमणीय भूमिभागी वैताड्य पर्वत के दोनों पार्श्व-

णिज्जा गो भूमिभागाओ वेयइहस्स पव्वयस्स' विद्याधरश्रेण्योः बहुसमरमणीयात् , भूमिभागात् वैताद्व्यस्य पर्वतस्य 'उभओ' उभयोः-द्वयोः 'पासि' पार्श्वयोः. 'दसजो-यणाइ' दश योजनानि 'उद्धं' ऊर्ध्वम्-उपरि 'उप्पइत्ता' उत्पत्य गत्वा 'एत्थणं दुवे अभि ओग सेढीओ' अत्र इह द्वे अभियोग्यश्रेण्यौ आ समन्तात् आभिमुख्येन युज्यन्ते प्रेष्यकमणि व्यापार्यन्त इत्याभियोग्याः शक्र लोकपालानां किङ्करा व्यन्तरविशेषाः तेषां श्रेण्यौ आवासपङ्क्ती 'पणत्ताओ' प्रप्लप्ते- कथिते ते च, कीदृश्यौ ! इति जिज्ञासायामाह 'पाईणपडीणययाओ' प्राचीन प्रतीचीनाऽऽयते पूर्वपश्चिमयोर्दिशोरायते दीर्घे 'उदीणदाहिणविस्तिण्णाओ' उदीचीन दक्षिण विस्तीर्णे उत्तरदक्षिणदिशोर्विस्तीर्णे विस्तारयुक्ते, 'दस दस जोयणाइं विक्खमेणं' दश दश योजनानि विष्कम्भेण-विस्तारेण, 'पव्वयसमियाओ' पर्वतसमिके पर्वततुल्ये 'आयामेणं' आयामेन दैर्घ्येण, तथा 'उभओ' उभयोः-द्वयोः 'पासि' पार्श्वयोः 'दोहिं' द्वाभ्यां पञ्चवरवेदिकाभ्यां द्वाभ्यां च 'वण संढेहिं संपरिक्खत्ताओ' वनवण्डाभ्यां संपरिक्षिप्ते परिवेष्टिते । 'वणओ' वर्णकः-वर्णनपरो वाक्यसमूहो 'दोण्हवि' द्वयोरपि द्वयोरिति जात्यापेक्षया प्रोक्तं, तेन द्वयोः पञ्चवरवेदिकयोः द्वयोर्वनवण्डयोरितिचतुर्णां पूर्ववद् बोध्यः । तथा-चत्वारोऽप्येते पञ्चवरवेदिकावनवण्डा 'आयामेणं' आयामेन-दैर्घ्येण 'पव्वयसमियाओ' पर्वतसमकाः पर्वततुल्या बोध्या इति ।

भागों में दश दश योजन ऊपर जाकर दो अभियोग्य श्रेणियां कही गई है शक्र एव लोकपालों के किङ्करभूत जो व्यन्तर देवविशेष है उनकी ये निवास भूत श्रेणियां हैं "प्राचीन प्रतीचीनायते ये दोनो पूर्वपश्चिम में लम्बी है "उदीचीनदक्षिणविस्तीर्णे" उत्तर दिशा और दक्षिणदिशा में चौड़ी है इनका विस्तार दश दश योजन का है "पर्वत समिके" तथा पर्वत की लम्बाई के बराबर इनको लम्बाई है । तथा ये अपने दोनो पार्श्वभाग में दो पञ्चवर वेदिकाओ से एवं दो वनवण्डो से परिवेष्टित हैं । इस ४ पञ्चवरवेदिकाएँ और चार वनवण्ड इनके दोनो पार्श्वभागों की ओर हैं । ये चारों पञ्चवरवेदिकाएँ और वनवण्ड लम्बाई में पर्वत के तुल्य है । "आभिओगसेढीणं" हे भदन्त ! इन आभियोग श्रेणियों का आकारभाव

आओमा दश दश योजन ऊपर जाकर दो अभियोग्य श्रेणियों के शक्र एव लोकपालों के भूत जो व्यन्तर देव विशेष है, तेमनी आ निवासभूत श्रेणियों के "प्राचीनप्रतीचीनायता" के ओ भन्ने पूर्व पश्चिमभा लाणी के "उदीचीनदक्षिण विस्तीर्णा उत्तर दिशा एव दक्षिण दिशाभा थाडी के, ओमने। वस्तुतः दश-दश योजन लंबाई के "पर्वत समिके" तेम ४ पर्वतानी लम्बाई लंबाई ओमनी लम्बाई के तथा ओ ओ भन्ने पार्श्वभागों के पञ्चवर वेदिकाओथी तेम ४ के वनवण्डोथी परिवेष्टित के ओ ४ पञ्चवरवेदिकाओ एव चार वनवण्डो ओमनी भन्ने आगुओ के ओ थारे पञ्चवरवेदिकाओ एव वनवण्डोनी लम्बाई पर्वत तुल्य के "अभिओगसेढीणं" हे भदन्त ! आ आभियोग श्रेणियोंको आकारभावप्रत्यवतार (स्वरूप) केवे के ? ओमने।

અર્થાભિયોગ્યશ્રેણિદ્વયસ્યાકારભાવપ્રત્યવતારં પૃચ્છતિ 'આભિયોગસેદ્ધીણં' इत्यादि । 'આભિયોગસેદ્ધીણં મંતે ! કેરિસણ આચાર્યભાવપહોચારે પળ્લત્તે' હે મદન્ત અભિયોગશ્રેણ્યાઃ ત્રીદશકઃ કોદશઃ આકારભાવપ્રત્યવતારઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ । મગત્રાગાહ—'ગોયમા બહુસમરમણિજ્જે ભૂમિભાગે પળ્લત્તે' હે ગૌતમ ! બહુસમરમણીયો ભૂમિભાગઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ 'જાવ તળેહિં ઉવસોમિણ' યાવત્ તુર્ણરૂપશોભિતો 'વળ્ણાહં જાવ તળાણ સદ્દો ત્તિ' વર્ણા યાવત્તુણાનાં શબ્દ इति । અત્ર યાવત્પદસંગ્રાહ્યઃ પદસમૂહો રાજપ્રશ્નીયસૂત્રસ્ય પઞ્ચ-દશસૂત્રાદારમ્ય એકોનવિંશતિતમસૂત્રતો ગોચરઃ । અર્થોઽપિ તત્રૈવમત્કૃત મુવોધિની ટીકાતોઽવસેય इति । 'તાસિ ણં' તયોઃ પૂર્વોક્તયોઃ સ્વલ્લુ 'અભિયોગસેદ્ધીણં' આભિ-યોગ્યશ્રેણ્યોઃ 'તત્થ તત્થ' તત્ર તત્ર તસ્મિસ્તસ્મિન્ 'દેસે' દેશે ભાગે, 'તહિ તહિ' તત્ર તત્ર તત્તદ્દેશસ્યાવાન્તરદેશે 'વહવે વાળમંતરા' વહવો વ્યન્તરાઃ દેવવિશેષા દેવા ય દેવીઓ ય આસયતિ' દેવાશ્ચ દેવ્યશ્ચ આસતે—યથાસુખં સામાન્યતસ્તિષ્ઠન્તિ, 'સયંતિ' શેરને સર્વથા કાયપ્રસારણેન વર્તન્તે ન તુ નિદ્રાન્તિ, દેવાનાં નિદ્રાયા અભાવાત્ 'જાવ' યાવ

પ્રત્યવતાર-સ્વરૂપ કેસા કહા ગયા હૈ ? હસકે ઉત્તર મેં પ્રમુ કહતેહૈ 'બહુ સમરમણીઓ ભૂમિ-ભાગો પળ્લત્તો' હે ગૌતમ । હન દોનો શ્રેણ્યોં કા ભૂમિભાગ બહુસમ હૈ ઔર હસીસે વહ બહુત હી રમણીય કહા ગયાહૈ ક્યોકિ વહ તુળો મે ઔર મણ્યોં સે ઉપશોભિત હૈ યે તુળ મણ્યાં વહાં કૃત્રિમ મી હૈ ઔર અકૃત્રિમ મી હૈ । યહા યાવત્પદ સે સપ્રાહ્ય પદ સમૂહ રાજપ્રશ્નીય સૂત્રકે ૧૫વેં સૂત્ર સે હેકર ૧૯વેં તક કે સૂત્રસે જાન હેના ચાહિયે; હનકા અર્થ હમને હસકી મુવોધિની ટીકા મેં સ્પષ્ટ કર લિખ દિયા હૈ । વહાં હનકે વર્ણોં કા ઔર હનકે શબ્દો કા મો સદ્ભાવ પ્રકટ કિયા હૈ । "તાસિણ આભિયોગસેદ્ધીણ તત્થ તત્થ દેસે તહિ તહિ વહવે વાળમંતરા દેવા ય દેવીઓ આસયતિ, સયતિ, જાવ ફલવિત્તિવિસેસ પચ્ચણ્ણમ્મવ-માણા વિહરતિ" હન પૂર્વોક્ત આભિયોગ્યશ્રેણ્યોં કે હન ૨ સ્થાનોં પર અનેક વાનવ્યન્તર દેવ ઔર દેવિયાં યથાસુખ ઉઠતી બેઠતી રહતી હૈ, શરીર કો પસાર કર આરામ કરતી રહતી હૈ,

જવાબ માં પ્રમુ કહે છે "બહુસમરમણીઓ ભૂમિભાગો પળ્લત્તો" હે ગૌતમ । જો બન્ને શ્રેણી-ઓને ભૂમિભાગ બહુ સમ છે અને જોથી જ તે બહુજ રમણીય છે કેમકે તે તુણોથી અને મણિઓથી ઉપશોભિત છે. જો તુણ મણિઓ ત્યા કૃત્રિમ પણ છે અને અકૃત્રિમ પણ છે અહીં "યાવત્" પદથી સંગ્રાહ્ય પદ સમૂહ રાજપ્રશ્નીય સૂત્રના ૧૫ માં સૂત્રથી ૧૯ માં સૂત્ર સુધી બાધવો જોઈએ. આ બધા પદસમૂહોની વ્યાખ્યા તેની મુવોધિની ટીકામાં સ્પષ્ટ કરી છે. ત્યા તેમના વર્ણોં તેમજ શબ્દોને સદ્ભાવ પ્રકટ કરવામાં આવેલ છે "તાસિણ આભિ-યોગસેદ્ધીણ તત્થ તત્થ દેસે તહિ તહિ વહવે વાળમંતરા દેવા ય દેવીઓ આસયંતિ, સયંતિ જાવ ફલવિત્તિવિસેસ પચ્ચણ્ણમ્મવમાણા વિહરતિ" આ પૂર્વોક્ત આભિયોગ્ય શ્રેણીઓના સ્થાનોપર અનેક વાનવ્યન્તર દેવો રેવીઓ મુખપૂર્વક ઊઠતા-બેસતા રહે છે, શરીરને પશુત કરીને આરામ કરતા રહે છે, નિદ્રાધીન થતા રહે છે કેમકે હેવોને નિદ્રા આવતી નથી,

ત્પદેન -“તિષ્ઠન્તિ, નિષીદન્તિ, ત્વગ્વર્ત્તયન્તિ, રમન્તે, લલન્તિ, ક્રીડન્તિ, કીર્તયન્તિ, મોહન્તિ, પુરાપુરાણાનાં સુચીર્ણાનાં સુપરાક્રાન્તાનાં શુભાનાં કૃતાનાં કલ્યાણાનાં કર્મણાં કલ્યાણમ્” इति संग्राहम् । तत्र तिष्ठन्ति=ऊर्ध्वावस्थानेन विद्यन्ते, निषीदन्ति=उप-विशन्ति, त्वग्वर्तयन्ति त्वक्परिवर्तनं पार्श्वपरिवर्तनं कुर्वन्ति रमन्ते रतिमावध्नन्ति, ललन्ति विलसन्ति क्रीडन्ति क्रीडां कुर्वन्ति कीर्तयन्ति वर्णयन्ति, मोहन्ति विषयं सेवन्ते तथा पुरा प्राग्भवे उपार्जितानां पुराणानां चिरन्तनानां सुचीर्णानां सुविधिकृतानां सुपराक્રान्तानां शोभनपराक्रमसम्पादितानाम् अत एव शुभानां शुभफलानां कृतानां कल्याणानां वास्तविककल्याणफलानां कर्मणां दानशीलादीनां कल्याणम् एकान्त-सुखावहं ‘फलवित्तिविसेसं’ फलवृत्तिविशेषं फलविपाकं ‘पञ्चशुभवमाणा’ प्रत्यनुभवन्तः एकैकशोऽनुभवविषयं कुर्वन्तः सन्तो ‘विहरन्ति’ विहरन्ति तिष्ठन्ति ।

‘તામુ ણં’ તયોઃ પૂર્વોક્તયોઃ સ્વલ્લુ ‘આમિઓગસેદોસુ સક્કસ્સ દેવિદસ્સ દેવરણ્ણો સોમમવરુણવેસમણકાદ્યાણં’ આમિયોગ્યશ્રેણ્યોઃ શક્રસ્ય દેવેન્દ્રસ્ય દેવરાજસ્ય સોમ-

નિદ્રા નહીં છેતી હૈં, ક્યોંકિ દેવોં કે નિદ્રા કા અમાવ હોતા હૈ । યહાં યાવત્પદસે “તિષ્ઠન્તિ નિષીદન્તિ, ત્વગ્વર્ત્તયન્તિ, રમન્તે, લલન્તિ, ક્રીડન્તિ, કીર્તયન્તિ મોહન્તિ, પુરાપુરાણાનાં સુચીર્ણાનાં સુપરાક્રાન્તાનાં શુભાનાં કૃતાનાં કલ્યાણાનાં કર્મણાં કલ્યાણમ્” इस पाठ का संग्रह हुआ है इस पाठ के अनुसार वे वानव्यन्तर देव और देवियां उनर स्थानों में खड़ी भी रहती है, बैठी भी रहती है, करबटे भी बदलती है, विषय सेवन भी करती है, विलास, युक्त चेष्टाएँ भी करती है मिनर प्रकार की क्रीडाएँ भी करती हैं, गाना बजाना नृत्य करना आदि क्रियाएँ भी करती है, देविया एक दूसरे देवो को और देवियो को वहां रिज्ञाते रहते हैं; इत्यादि रूप से वे वहा पर अपने सुविधिपूर्वक क्रिये गये पूर्वके दानादिरूप शुभ कर्मों के शुभ फलविशेष भोगा करते हैं । “तामुणं आमिओगसेदोसु सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो सोममवરુણવેસમણકાદ્યાણં આમિઓગાણં દેવાણં વહવે મવળા પળ્ણત્તા” उन दोनो

અહીં યાવત્ પદથી “તિષ્ઠન્તિ, નિષીદન્તિ, ત્વગ્ વર્ત્તયન્તિ, રમન્તે, લલન્તિ, ક્રીડન્તિ કીર્તયન્તિ, મોહન્તિ, પુરાપુરાણાનાં સુચીર્ણાનાં, સુપરાક્રાન્તાનાં, શુભાનાં, કૃતાનાં કલ્યાણાનાં કર્મણાં કલ્યાણમ્” આ પાઠનો સંગ્રહ થયેલ છે આ પાઠ અુજ્જય તે વાનવ્યતર દેવ અને દેવી એા તત્તત્ત પ્રદેશોમા ઊભા રહે છે, બેસે છે, પાર્શ્વપરિવર્તન કરે છે, વિષય સેવન કરે છે, વલાસ યુક્ત ચેષ્ટાઓ કરે છે, બિન્ન બિન્ન પ્રકારની ક્રીડાઓ કરે છે, ગાણું, વગાડણું નૃત્ય કરણું વગેરે વિવિધ ક્રિયાઓ કરતા રહે છે. દેવીઓ બીબા દેવોને અને દેવો બીબા દેવીઓને રિજવતા રહે છે હત્યાદિ રૂપમાં તેઓ ત્માં પોતપોતાની સુવિધાથી પૂર્વકૃત દાનાદિ શુભ કર્મોના શુભ ફળ વિશેષનો ઉપભોગ કરતા રહે છે “તામુણં આમિઓગસેદોસુ સક્કસ્સ દેવિદસ્સ દેવરણ્ણો સોમમવરુણવેસમણકાદ્યાણં આમિઓગાણં દેવાણં વહવે મવળા પળ્ણત્તા” તેઓ બન્ને અભિયોગ્ય શ્રેણીઓમાં દેવેન્દ્ર દેવરાજ શકેના-એ પૂર્વ દિશાના

યમવરુણવૈશ્રવણકાયિકાનાં તત્ર સોમઃ પૂર્વદિક્પાલઃ યમો દક્ષિણદિક્પાલઃ, વરુણઃ પશ્ચિમદિક્પાલઃ, વૈશ્રવણઃ ઉત્તરદિક્પાલઃ તેષાં કાયઃ સમૂહઃ સ્વામિત્વેન યેષાં તે તથાભૂતાસ્તેષામ્ 'આભિઓગાણ' આભિયોગ્યાનામ્ આજ્ઞાકારિણાં 'દેવાણં વહવે ભવણા પ્ણક્તા' દેવાનામ્ અનેકાનિ ભવનાનિ પ્રજ્ઞસાનિ 'તેણં ભવણા વાહિં વદ્ટા' તાનિ યલ્લ ભવનાનિ વહિર્વૃત્તાનિ વહિર્વર્તુલાકારાણિ 'અંતો ચડરંસા' અન્તઃ અભ્યન્તરે ચતુર-સ્રાણિ ચતુષ્કોણાનિ અત્ર 'વ્ણઓ' વર્ણકઃ ભવનવર્ણનપરઃપદસમૂહો વક્તવ્યઃ સ ચ કિં પર્યન્ત ઇત્યાહ 'જાવ અચ્છરગ્ણસંઘવિક્ષિણા' યાવદ્અસરોગ્ણસઙ્ઘ વિક્ષીર્ણાનિ-અપ્સરોગ-ણસઙ્ઘવિક્ષીર્ણાનિ અપ્સરોગ્ણસમૂહવ્યાપ્તાનિ ઇતિ પર્યન્તઃ તતોઽપિ કિમવધિરિતિ જિજ્ઞાસાયામાહ 'જાવ પહિરૂવા' યાવત્ પ્રતિરૂપાણિ । પ્રતિરૂપાણિ ઇતિ પર્યન્તો વર્ણકો બોધ્ય ઇતિ પર્યવસિતમ્ । તથા ચ સર્વપદાનિ યાવત્પદસંગૃહીતાન્યેવમ્ અથઃ પુષ્કર-કર્ણિકાસંસ્થાનસંસ્થિતાનિ ઉત્કીર્ણાન્તરવિપુલગમ્भीરસ્વાતપરિસ્થાણિ પ્રાકારાટ્ટાલક કપાટતોરણપ્રતિદ્વારદેશભાગાનિ યંત્રશતધ્નીમુશલમુશુળ્લીપરિવારિતાનિ અયોધ્યાનિ સદા જયાનિ સદા અજેયાનિ સદા ગુપ્તાનિ અષ્ટચત્વારિંશત્કાંષ્ટરચિતાનિ અષ્ટચત્વા-

આભિયોગ્ય શ્રેણિયો મેં દેવેન્દ્ર દેવરાજ શક્ર કે જો પૂર્વ દિશા કે દિક્પાલ સોમ હૈ , દક્ષિણ દિશા કે દિક્પાલ જો યમ હૈ , પશ્ચિમ દિશા કે દિક્પાલ જો વરુણ હૈ ઔર ઉત્તર દિશા કે દિક્પાલ જો વૈશ્રવણ હૈ જો કિ ઇન્દ્ર કે આજ્ઞાકારી હૈ ડનકે અનેક ભવન કહે ગયે હૈ । "તેણ ભવણા વાહિં વદ્ટા, 'અંતો ચડરંસા, વ્ણઓ જાવ અચ્છરગ્ણસંઘવિક્ષિણા જાવ પહિરૂવા" કે ભવન બાહર મેં તો ગોલ હૈ, ઔર ઓતર મેં ચતુરસ્ર-ચૌકોર હૈ । યહાં ભવનો કે વર્ણન કરને વાલા પાઠ "યે અપ્સરાઓ કે સમૂહ સે વ્યાપ્ત હૈ ઔર યાવત્પ્રામાદીય આદિ વિશેષણો વાલે હૈ" યહાં તક્ર કા યહા ગૃહીત હુઆ હૈ. વહ પાઠ જાનકારી કે લિખ યહાં પ્રકટ ક્રિયા જાતા હૈ- " અથ પુષ્કરકર્ણિકાસંસ્થાનસંસ્થિતાનિ ઉત્કીર્ણાન્તરવિપુલગમ્भीરસ્વાતપરિસ્થાણિ, પ્રાકારાટ્ટાલકપાટતોરણપ્રતિદ્વારદેશભાગાનિ, યંત્રશતધ્ની મુશલમુશુળ્લીપરિવારિતાનિ, અયોધ્યાનિ, સદા જયાનિ સદા અજેયાનિ, સદા ગુપ્તાનિ,

દિક્ષપાલ સોમ છે દક્ષિણ દિશાના દિક્ષપાલ યમના પશ્ચિમ દિશાના દિક્ષપાલ વરુણના અને ઉત્તર દિશાના દિક્ષપાલ વૈશ્રવણના-એ ઇન્દ્રના આજ્ઞાકારી છે-તેમના અનેક ભવનો કહેવાય છે "તેણ ભવણા વાહિં વદ્ટા, અંતો ચડરંસા, વ્ણઓ જાવ અચ્છરગ્ણસંઘવિક્ષિણા જાવ પહિરૂવા" તે ભવનો બહારથી ગોળ છે અને અંદરથી ચતુરસ્ર ચોખ ડા-છે. અહીં ભવનોના વણુ'ન સંબંધી 'એઓ અપ્સરાઓના સમૂહોથી વ્યાપ્ત છે અને યાવત્પ્રામાદીય આદિ વિશે-ષણોથી યુક્તને "અહીં મુખીને પાઠ ગૃહીત થયેલ છે તે પાઠ બહુવા માટે અહીં પ્રકટ કરવામા આવે છે "અથ પુષ્કરકર્ણિકાસંસ્થાનસંસ્થિતાનિ, ઉત્કીર્ણાન્તરવિપુલ ગમ્भीરસ્વાતપરિ-સ્થાણિ, પ્રાકારાટ્ટાલકપાટતોરણ પ્રતિદ્વારદેશભાગાનિ, યંત્રશતધ્નીમુશલ મુશુળ્લી પરિવા-રિતાનિ, અયોધ્યાનિ, સદા જયાનિ, સદા અજેયાનિ, સદા ગુપ્તાનિ, અષ્ટચત્વારિંશત્ કોષ્ઠ-

रिंशत्कृतवनमालानि क्षेमाणि शिवानि किङ्करामरदण्डोपरक्षितानि लायितोल्लायितमहितानि गोशीर्षसरसरक्तचन्दनदर्दर (प्रचुर) दत्त पञ्चाङ्गुलितलानि उपचितचन्दनकलशानि चन्दनघटसुकृततोरणप्रतिद्वारदेशभागानि आसक्तोत्सक्तविपुलवृत्तव्याधारितमाल्यदामकलापानि पञ्चवर्णसरससुरभिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारकलितानि कालागुरुप्रवरकुन्दुरुष्कतुरुष्कधूपदह्यमानसुरभिमधमघायमान गन्धोद्धूताभिरामाणि सुगन्धवरगन्धितानि गन्धवर्तीभूतानि (अप्सरोगणसङ्घकीर्णानि) दिव्यवृटितशब्दसंप्रनादितानि सर्वरत्नमयानि अञ्छानि श्लक्ष्णानि लष्टानि घृष्टानि मृष्टानि नीरजांसि निर्मलानि निष्पङ्कानि निष्कङ्कटञ्छायानि सप्रभाणि समरीचिकानि सोद्द्योतानि प्रासादीयानि दर्शनीयानि अभिरूपाणि (प्रतिरूपाणि) इति ।

एतद्व्याख्या—अधः पुष्करकर्णिकासंस्थान संस्थितानि अधः पुष्करकर्णिका-अधो-मुखकमलबीजकोशस्तस्या यत् संस्थानम्—आकारस्तेन संस्थितानि अधोमुख-पद्मबीजकोशाकाराणि तथा—उत्कीर्णान्तरविपुलगम्भीरखातपरिखाणि उत्कीर्णमिवो

अष्टचत्वारिंशत् कोष्ठरचितानि, अष्टचत्वारिंशत्कृतवनमालानि, क्षेमाणि, शिवानि, किङ्करामर-दण्डोपरक्षितानि, लायितोल्लायितमहितानि, गोशीर्षसरसरक्तचन्दन दर्दर (प्रचुर) दत्त पञ्चा-ङ्गुलितलानि उपचितचन्दनकलशानि, चन्दनघटसुकृततोरणप्रतिद्वारदेशभागानि, आसक्तोत्सक्त-विपुलवृत्तव्याधारितमाल्यदामकलापानि, पञ्चवर्णसरससुरभिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारकलितानि, काला-गुरुप्रवरकुन्दुरुष्कतुरुष्कधूपदह्यमान सुरभिमधमघायमानगन्धोद्धूताभिरामाणि, सुगन्धवरगन्धि-तानि, गन्धवर्तीभूतानि, (अप्सरोगणसङ्घकीर्णानि,) दिव्यवृटित शब्दसंप्रनादितानि सर्वरत्नमयानि, अञ्छानि, श्लक्ष्णानि, लष्टानि, घृष्टानि, मृष्टानि, नीरजांसि, निर्मलानि, निष्पङ्कानि, निष्कङ्क-टञ्छायानि सप्रभाणि, समरीचिकानि सोद्द्योतानि, प्रासादीयानि, दर्शनीयानि, अभिरूपाणि प्रति-रूपाणि । इस पाठ के पदों की व्याख्या इस प्रकार से है—नीचा मुख करके रखी गई कमल-कर्णिका का जैसा आकार होता है वैसा आकार इन भवनों का है इनकी जो खात—ऊपर

रचितानि, अष्टचत्वारिंशत्कृतवनमालानि क्षेमाणि, शिवानि, किङ्करामरदण्डोपरक्षितानि, लायितोल्लायितमहितानि, गोशीर्षसरसरक्तचन्दनदर्दर (प्रचुर) दत्त पञ्चाङ्गुलितलानि, उप-चितचन्दनकलशानि, चन्दनघटसुकृततोरणप्रतिद्वारदेशभागानि, आसक्तोत्सक्तविपुलवृत्त-व्याधारित माल्यदामकलापानि, पञ्चवर्णसरस सुरभि मुक्तपुष्पपुञ्जोपचारकलितानि, कालागुरुप्रवरकुन्दुरुष्क धूप दह्यमानसुरभिमधमघायमानगन्धोद्धूताभिरामाणि, सुगन्ध-वर गन्धितानि, गन्धवर्तीभूतानि, (अप्सरोगणसङ्घकीर्णानि) दिव्यवृटित शब्दसंप्रनादितानि सर्वरत्नमयानि, अञ्छानि श्लक्ष्णानि, लष्टानि, घृष्टानि, मृष्टानि, नीरजांसि निर्मलानि, निष्पङ्कानि निष्कङ्कटञ्छायानि 'सप्रभाणि, समरीचिकानि, सोद्द्योतानि, प्रासादीयानि' दर्शनीयानि, अभिरूपाणि प्रतिरूपाणि' आ पाठना पढेनी व्याख्या आ प्रभाणे छे. नत

ત્કીર્ણમ્-મુવ્યક્તમ્ તાદૃશમન્તરમ્-અમ્યન્તરં યાસાં તાદૃશ્ય. વિપુલાઃ વહવઃ ગમ્ભીરાઃ
 અલબ્ધતલાઃ સ્વાતપરિસ્થાઃ સ્વાતાનિ ઉપર્યધઃ સમાનિ પરિસ્થાઃ ઉપરિ વિશાલા અવઃ
 સદ્કુચિતાશ્ચ યેપાં તાનિ પ્રાકારાઢ્ઢાલકકપાટતોરણપ્રતિદ્વારદેશભાગાનિ-પ્રાકારઃ
 'કોટ્' ઇતિ ભાષાપ્રસિદ્ધઃ, અટ્ટાલકઃ-અટારી' ભાષાપ્રસિદ્ધઃ, તથા પ્રતિદ્વારદેશભાગે
 કપાટ તોરણ ચ યેપાં તાનિ તથા । 'પ્રતિદ્વારદેશભાગ' શબ્દસ્ય પરનિપાત આર્પત્વાત્
 તથા-યન્ન શતધ્નો મુશલપ્રથુણ્ડી પરિવારિતાનિ-યન્ત્રાણિ જગ્રાદિ યન્ત્રાણિ શતશ્ચ-
 પુરુષશતઘાતકાસ્ત્રવિશેષાઃ 'તોપ' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધાઃ મુગલાનિ-પ્રસિદ્ધાનિ મુથુણ્ડચઃ
 શસ્ત્રવિશેષાઃ-પૃતૈઃ પરિવારિતાનિ-રક્ષણાય પરિવેષ્ટિતાનિ, અતएव અયોધ્યાનિ-
 યોદ્ધુમશક્ત્યાનિ સદા-સર્વેસ્મિન્ કાલે જયાનિ-જયન્તીતિ જયાનિ શત્રુજયકારકાણિ,
 તથા શત્રુભિઃ સદા અજેયાનિ-જેતુમયોગ્યાનિ રાદા ગુપ્તાણિ-રક્ષિતાનિ અષ્ટચત્વારિશ-
 ત્કોષ્ટરચિતાનિ-રચિતાનિ-કૃતાનિ અષ્ટચત્વારિશતકોષ્ટાનિ યન્ન તાનિ તથા, રચિતશ-
 બ્દસ્ય પ્રાકૃતત્વાત્પરનિપાતઃ । અષ્ટચત્વારિશતકૃતમાલનિ અષ્ટચત્વારિશત=અષ્ટચત્વારિશ-
 દ્વેદમિન્નવિચ્છિન્નિયુક્તા વનમાલાઃ કૃતાઃ-સ્થાપિતાઃ યેષુ તાનિ તથા, ક્ષેમાણિ-પર-

ઔર નીચે સમાન આકૃતિ વાલી સ્વાઈ હૈ उसका एव ऊपर में विशाल और नीचे भाग में
 सकुचित जो परिखा है उसका भीतरी अन्तर बिलकुल सुव्यक्त है तथा ये दोनों ही विपुल
 गंभीर है - अलब्ध तल वाली है, प्रत्येक भवन के साथ कोट है, अटारी है तथा इनके
 प्रत्येक द्वार में कपाट लगे हुए हैं, हर एक भवन में एक साथ सौ पुरुषों को मार डाले
 ऐसी अनेक शतगिधियाँ-अस्त्रविशेष जिसे तोप कहा जाता है हैं, अनेक मुशल है अनेक
 मुथुण्डिया है-इस नाम के हथियार विशेष है इन सब हथियारों से वे मकान परिवेष्टित
 है अतएव कोई भी इन पर आक्रमण नहीं कर सकता है । इसीसे ये सदा अजेय है
 और स्वयं में ये सदा शत्रुओं को जीतने वाले है और सुरक्षित है प्रत्येक भवन में
 ४८-४८ कोठे बने हुए हैं एव "अष्टचत्वारि" ४८-४८ वनमालाए रखी हुई है ।

મુખી કમલકર્ષીકાને જેવો આકાર હોય છે તેવો આકાર અહીંના ભવનોના છે. એમની જે
 ખાત-ઉપર અને નીચે સમાન આકૃતિવાળી ખાઈ છે-તેનો તથા ઉપરની તરફ વિશાળ અને
 નીચેના ભાગમાં સકુચિત જે પરિખા છે તેનું બીતરી અન્તર એકદમ સુસ્પષ્ટ છે તેમજ
 એ એા ભન્ને વિપુલ ગભીર છે અલબ્ધ તલવાળી છે. દરેક ભવનની સાથે કોટ છે, અટારી
 છે, તેમજ એમના પ્રત્યેક દ્વારમાં કપાટો લાગેલા છે દરેક ભવનમાં એ કી સાથે સો પુરુ-
 શોને એકી સાથે મારી નાખે એવી અનેક શતધ્નીઓ-તોપો-છે, અનેક મુશલો છે, અનેક
 મુથુણ્ડીઓ છે, મુથુણ્ડી એક વિશેષ પ્રકારનું હથિયાર હોય છે, આ સર્વે હથિયારોથી તે
 ભવનો પરિવેષ્ટિત છે. એથી તેમની ઉપર કોઈ આક્રમણ કરી શકે નહીં એથી જ એ ભવનો
 સદા અજેય રહે છે અને સ્વયમેવ આ ભવનો શત્રુઓને છતનારા છે. અને સુરક્ષિત છે
 પ્રત્યેક ભવનમાં ૪૮-૪૮ કોઠાઓ બનેલા છે તેમજ "અષ્ટચત્વારિ" ૪૮-૪૮ વનમાળાઓ.

चक्रभयरहितानि, पुनः शिवानि-स्वचक्रभयरहितानि तथा किङ्करामरदण्डोपरक्षितानि दण्ड हस्तैर्भृत्यदेवैः संरक्षितानि, लायितोल्लायितमहितानि-लेपोपलेपपरिष्कृतानि, गोशीर्षसरसरक्तचन्दनदर्दरदत्तपञ्चाङ्गुलितलानि-गोशीर्ष चन्दनविशेषः, सरसं-रससहित प्रशस्त यद् रक्तचन्दनं चेत्युभाभ्यां दर्दरं-प्रचुरं यथा स्यात्तथा दत्तानि-न्यस्तानि पञ्चाङ्गुलितलानि येषु तानि तथा, । उपचितचन्दनकलशानि-उपचिताः-स्थापिताः चन्दनकलशा येषु तथा, चन्दनघटसुकृततोरणप्रतिद्वारदेशभागानि चन्दनघटाः चन्दनचर्चितकलशाः, सुकृततोरणानि -सुष्ठु रचिततोरणानि च प्रतिद्वारदेशभागेषु येषां तानि तथा । आसक्तोत्सक विपुलवृत्तव्याधारित माल्यदामकलापानि आसक्तः भूमौ लग्नः उत्सक्तः-उपरि लग्नश्च विपुलः विस्तीर्णः वृत्तः-वर्तुलः व्याधारितः-प्रलम्बितः माल्यदामकलापः-पुष्पमाला-समूहो येषु तानि तथा, पञ्चवर्णसरससुरभिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारकलितानि पञ्चवर्णानां सरसानां सुरभीणां-सुगन्धीनां पुष्पाणां यः पुञ्जः-समूहः तस्य य उपचारः यत्र तत्र स्थापनम् तेन कलितानि-युक्तानि तथा कालागुरु प्रवरकु-

परचक्र का यहां भय नहीं है “शिवानि” तथा स्वचक्र के भय से ये रहित है । जिनके हाथों में दण्ड है ऐसे किङ्करभूत देवों से ये संरक्षित बने हुए हैं । “लायितोल्लायित महितानि” गोमयादि के लेप से ये परिष्कृत हैं “गोशीर्षसरसरक्तचन्दनदर्दरदत्त पञ्चाङ्गुलितलानि” गोशीर्ष चन्दन और सरस रक्त चन्दन के अधिक से अधिक मात्रा में इनमें हाथे लगे हुए हैं । जगह जगह इनमें चन्दन के बने हुए कलश रखे हुए हैं । हर एक भवन के हर एक द्वार पर चन्दन कलशों द्वारा किये गए तोरण बने हुए हैं “आसक्तोत्सक विपुलवृत्तव्याधारितमाल्यदामकलापानि” इनमें जो पुष्पमालाओं का समूह है वह ऊपर से लेकर भूमि तक लगा हुआ है-ऐसा विस्तीर्ण है, तथा-वृत्त-गोल आकार वाला है और लटकता हुआ है “पञ्चवर्णसरसं” इन भवनों में यत्र-तत्र सरस पञ्चवर्णोपेत एवं सुगन्धित पुष्पों का समूह बिखरा हुआ रहता है “कालागुरु” जलते हुए कालागुरु की,

गोष्ठवेष्टी છે પરચક્રને અહીં ભય નથી “શિવાનિ”, તેમજ સ્વચક્રના ભયથી એ રહિત છે જેમના હાથોમાં દંડ છે એવા કિંકરભૂત દેવોથી એ ભવનો સંરક્ષિત થયેલા છે. “લાયિતો-લ્લાયિતમહિતાનિ” ગોમયાદિના લેપનથી એ ભવનો પરિષ્કૃત છે “ગોશીર્ષસરસરક્તચંદન-દર્દરદત્ત પંચાંગુલિતલોનિ” ગોશીર્ષચંદન અને સરસરક્ત ચંદનના અધિકાધિક પ્રમાણે-પાદના એ ભવનોમાં હાથના થાપાઓ લાગેલા છે. સ્થાન સ્થાન પર ચંદન નિર્મિત કલશો એ ભવનોમાં મૂકેલા છે ફરેક ભવનના ફરેક દ્વાર પર ચંદન કલશો ના તોરણો બનેલા છે. “આસક્તોત્સક્તવિપુલમત્ત વ્યાધારિતમાલ્યદામકલાપાનિ” એ ભવનોમાં જે પુષ્પમાલા-ઓના સમૂહો છે તે ઉપરથી ભૂમિસુધી પહોંચેલા છે-વિસ્તીર્ણ છે. તેમજ વૃત્ત-ગોળ આકાર વાળા છે અને લટકતા છે “પંચવર્ણસરસં” એ ભવનોમાં યત્ર તત્ર સરસ પંચવર્ણોપે-ત તેમજ સુગંધિત પુષ્પોના સમૂહો નિકીણ થયેલા રહે છે. “કાલાગુરુ” પ્રબલિત કલા-

ત્કીર્ણમ્-સુવ્યક્તમ્ તાદૃશમન્તરમ્-અભ્યન્તરં યાસાં તાદૃશ્ય વિપુલાઃ વહ્વઃ ગમ્ભીરાઃ
 અલબ્ધતલાઃ સ્વાતપરિસ્વાઃ સ્વાતાનિ ઉપર્યધઃ સમાનિ પરિસ્વાઃ ઉપરિ વિશાલા અધઃ
 સદ્કુચિતાશ્ચ યેપાં તાનિ પ્રાકારાદ્વાલકકપાટતોરણપ્રતિદ્વારદેશભાગાનિ-પ્રાકારઃ
 'કોટ્ટ' इति भाषाप्रसिद्धः, अट्टालकः-‘अटारी’ भाषाप्रसिद्धः, तथा प्रतिद्वारदेशभागे
 कपाट तोरण च येषां तानि तथा । ‘प्रतिद्वारदेशभाग’ शब्दस्य परनिपात आर्पत्वात्
 तथा-यन्त्र शतधनो मुशलमुशुण्डी परिवारितानि-यन्त्राणि जत्रादि यन्त्राणि शतधन्यः-
 पुरुषशतघातकास्त्रविशेषाः ‘तोप’ इति भाषा प्रसिद्धाः मुगलानि-प्रसिद्धानि मुशुण्डयः
 शस्त्रविशेषाः -एतैः परिवारितानि-रक्षणाय परिवेष्टितानि, अतएव अयोध्यानि-
 योद्धुमशक्यानि सदा-सर्वस्मिन् काले जयानि-जयन्तीति जयानि शत्रुजयकारकाणि,
 तथा शत्रुभिः सदा अजेयानि-जेतुमयोग्यानि सदा गुप्ताणि-रक्षितानि अष्टचत्वारिंश-
 त्कोष्ठरचितानि-रचितानि-कृतानि अष्टचत्वारिंशतकोष्ठानि यत्र तानि तथा, रचितग-
 न्दस्य प्राकृतत्वात्परनिपातः । अष्टचत्वारिंशत्कृतमालानि अष्टचत्वारिंशत=अष्टचत्वारिंश-
 त्केदमिन्नविच्छित्तियुक्ता वनमालाः कृताः-स्थापिताः येषु तानि तथा, क्षेमाणि -पर-

ઔર नीचे समान आकृति वाली खाई है उसका एव ऊपर में विशाल और नीचे भाग में
 सकुचित जो परिखा है उसका भीतरी अन्तर बिल्कुल सुव्यक्त है तथा ये दोनों ही विपुल
 गंभीर है - अलब्ध तल वाली है, प्रत्येक भवन के साथ कोट है, अटारी है तथा इनके
 प्रत्येक द्वार में कपाट लगे हुए है, हर एक भवन में एक साथ सौ पुरुषों को मार डाले
 ऐसी अनेक शतधियों-अस्त्रविशेष जिसे तोप कहा जाता है हैं, अनेक मुशल है अनेक
 मुशुण्डिया है-इस नाम के हथियार विशेष है इन सब हथियारों से वे मकान परिवेष्टित
 है अतएव कोई भी इन पर आक्रमण नहीं कर सकता है । इसीसे ये सदा अजेय है
 और स्वयं में ये सदा शत्रुओं को जीतने वाले है और सुरक्षित है प्रत्येक भवन में
 ४८-४८ कोठे बने हुए है एव “अष्टचत्वारि” ४८-४८ वनमालाए रखी हुई है ।

ગુપ્તી કમલકર્ણિકાને જેવો આકાર હોય છે તેવો આકાર અહીંના ભવનોના છે એમની જે
 ખાત-ઉપર અને નીચે સમાન આકૃતિવાળી ખાઈ છે-તેનો તથા ઉપરની તરફ વિશાળ અને
 નીચેના ભાગમાં સકુચિત જે પરિખા છે તેનું ભીતરી અન્તર એકદમ સુસ્પષ્ટ છે તેમજ
 એ એા બન્ને વિપુલ ગ ભાર છે અલબ્ધ તલવાળી છે દરેક ભવનની સાથે કોટ છે, અટારી
 છે, તેમજ એમના પ્રત્યેક દ્વારમાં કપાટો લાગેલા છે દરેક ભવનમાં એ કો સાથે સો પુરુ-
 શોને એકી સાથે મારી નાખે એવી અનેક શતધ્નીઓ-તોપો-છે, અનેક મુશલો છે, અનેક
 મુશુણ્ડીઓ છે, મુશુણ્ડી એક વિશેષ પ્રકારનું હથિયાર હોય છે, આ સર્વ હથિયારોથી તે
 ભવનો પરિવેષ્ટિત છે. એથી તેમની ઉપર કોઈ આક્રમણ કરી શકે નહીં. એથી જ એ ભવનો
 સદા અજેય રહે છે અને સ્વયમેવ આ ભવનો શત્રુઓને છતાનારા છે અને સુરક્ષિત છે
 પ્રત્યેક ભવનમાં ૪૮-૪૮ કોઠાઓ બનેલા છે તેમજ “અષ્ટચત્વારિ” ૪૮-૪૮ વનમાળાઓ

चक्रभयरहितानि, पुनः शिवानि-स्वचक्रभयरहितानि तथा किङ्करामरदण्डोपरक्षितानि दण्ड हस्तैर्भृत्यदेवैः संरक्षितानि, लायितोल्लायितमहितानि-लेपोपलेपपरिष्कृतानि, गोशीर्षसरसरक्तचन्दनदर्दरदत्तपञ्चाङ्गुलितलानि-गोशीर्ष चन्दनविशेषः, सरसं-रससहितं प्रशस्तं यद् रक्तचन्दनं चेत्युभाभ्यां दर्दरं-प्रचुरं यथा स्यात्तथा दत्तानि-न्यस्तानि पञ्चाङ्गुलितलानि येषु तानि तथा, । उपचितचन्दनकलशानि-उपचिताः-स्थापिताः चन्दनकलशा येषु तथा, चन्दनघटमुकृततोरणप्रतिद्वारदेशभागानि चन्दनघटाः चन्दनचर्चितकलशाः, मुकृततोरणानि -मुष्टु रचिततोरणानि च प्रतिद्वारदेशभागेषु येषां तानि तथा । आसक्तोत्सक विपुलवृत्तव्याधारित माल्यदामकलापानि आसक्तः भूमौ लग्नः उत्सक्तः-उपरि लग्नश्च विपुलः विस्तीर्णः वृत्तः-वर्तुलः व्याधारितः-प्रलम्बितः माल्यदामकलापः-पुष्पमाला-समूहो येषु तानि तथा, पञ्चवर्णसरससुरभिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारकलितानि पञ्चवर्णानां सरसानां सुरभीणां-सुगन्धीनां पुष्पाणां यः पुञ्जः-समूहः तस्य य उपचारः यत्र तत्र स्थापनम् तेन कलितानि-युक्तानि तथा कालागुरु प्रवरकु-

परचक्र का यहां भय नहीं है “शिवानि” तथा स्वचक्र के भय से ये रहित है । जिनके हाथों में दण्ड है ऐसे किङ्करभूत देवों से ये संरक्षित बने हुए हैं । “लायितोल्लायित महितानि” गोमयादि के लेप से ये परिष्कृत हैं “गोशीर्षसरसरक्तचन्दनदर्दरदत्त पञ्चाङ्गुलितलानि” गोशीर्ष चन्दन और सरस रक्त चन्दन के अधिक से अधिक मात्रा में इनमें ढाये लगे हुए हैं । जगह जगह इनमें चन्दन के बने हुए कलश रखे हुए हैं । हर एक भवन के हर एक द्वार पर चन्दन कलशों द्वारा किये गए तोरण बने हुए हैं “आसक्तोत्सक विपुलवृत्तव्याधारितमाल्यदामकलापानि” इनमें जो पुष्पमालाओं का समूह है वह ऊपर से लेकर भूमि तक लगा हुआ है-ऐसा विस्तीर्ण है, तथा-वृत्त-गोल आकार वाला है और लटकता हुआ है “पञ्चवर्णसरसं” इन भवनों में यत्र-तत्र सरस पञ्चवर्णोपेत एवं सुगन्धित पुष्पों का समूह बिखरा हुआ रहता है “कालागुरु” जलते हुए कालागुरु की,

गोष्ठवेदी छे परचक्रनो अही अथ नथी “शिवानि” तेभञ् स्वचक्रना अथथी ओ रहित छे. जेभना हाथोभां दंड छे ओवा किङ्करभूत देवोथी ओ अपनो संरक्षित थयेला छे. “लायितोल्लायितमहितानि” गोमयादिना लेपनथी ओ अपनो परिष्कृत छे “गोशीर्षसरसरक्तचन्दनदर्दरदत्त पञ्चाङ्गुलितलानि” गोशीर्षचन्दन अने सरसरक्त चन्दनना अधिकाधिक प्रगाढलेपादिना ओ अपनोभां हाथना थापाओ लागेला छे. स्थान स्थान पर चन्दन निर्मित कलशो ओ अपनोभां भूकेला छे इरेक अपनना इरेक द्वार पर चन्दन कलशो ना तोरखो अनेला छे. “आसक्तोत्सकविपुलमत्त व्याधारितमाल्यदामकलापानि” ओ अपनोभा ओ पुष्पमालाओना समूहो छे ते उपरथी भूमिमुधी पडोयेला छे-विस्तीर्ण छे. तेभञ् वृत्त-गोल आकार वाला छे अने लटकता छे “पञ्चवर्णसरसं” ओ अपनोभां यत्र तत्र सरस पञ्चवर्णोपेत तेभञ् सुगन्धित पुष्पोना समूहो निखीण थयेला रहे छे. “कालागुरु” अन्वहित हावा-

ન્દુરુષ્કતુરુષ્કધૂપદહ્યમાનસુરભિમધમધાયમાનગન્ધોદ્ધૂતાભિરામાણિ-કાલાગુરુઃ - કૃષ્ણાગુરુઃ પ્રવરઃ-પ્રશસ્તતરો યઃ ગન્ધદ્રવ્યવિશેષઃ, તુરુષ્કઃ-યાવનો ધૂપ 'લોહવાન' इति भाषा प्रसिद्धः, धूपः-दशाङ्गधूपश्च, एतेषां दह्यमानानां यः सुरभिः-मनोज्ञः मधमधायमानः -प्रसरन् गन्धः-स एव उद्धूतः, वायुना प्रसृतस्तेन, अभिरामाणि-रमणीयानि तथा-सुगन्धवरगन्धितानि-सुगन्धेषु-शोभनगन्धेषु यो वरः उत्तमो गन्धः स सज्जातोऽत्रेति तथा उत्तमगन्धयुक्तानि, अत एव गन्धवर्तिभूतानि-गन्धगुटिकासदृशानि, तथा अप्सरोगणसङ्घकीर्णानि-अप्सरोगणानां सङ्घेन समुदायेन कीर्णानि-व्याप्तानि तथा- दिव्यत्रुटित शब्द-सम्प्रनादितानि-दिव्यानां त्रुटितानां-वाद्यानां यः शब्दस्तेन सम्प्रनादितानि-शब्दयुक्तानि सर्वरत्नमयानि-सर्वात्मना रत्नमयानि अच्छादिप्रतिरूपपर्यन्तपदव्याख्या पूर्ववत् ।

‘तत्થ णં સવરુસસ દેવિંદસસ દેવરણ્ણો સોમજમવરુણવેસમણકાડયા વહવે-આમિઓગા દેવા પરિવસંતિ’ તત્ર-તેપુ પૂર્વોક્તેપુ ભવનેપુ खलु शक्रस्य देवेन्द्रस्य देवराजस्य सोमयमवरुणवैश्रवणकायिका बहव आभियोग्याः -किङ्कराः देवाः परिवसन्तीति

પ્રશસ્તતર કુન્દરુષ્કગન્ધદ્રવ્ય વિશેષ કી લોમાન કી ઓર દશાઙ્ગધૂપ કી મનોજ્ઞ ગન્ધ-વાસ સે જો કિ વાયુ કે દ્વારા ઇધર ઉધર ફેલાઈ ગઈ હૈ યે ભવન વડેત હી અધિક રમણીય બને હુપ હૈ તથા શોભનગન્ધ વાલે દ્રવ્યો કી ગન્ધ સે મી ઉત્તમ ગન્ધ કો મહક હનમેં સદા ભરી રહતી હૈ અત એવ યે એસે જ્ઞાત હોતે હૈ કિ માનો યે ગધ કો ગુટિકારૂપ હી હૈ । હન ભવનો મેં સદા અપ્સરાઓં કા સમુદાય ઇધર સે ઉધર ફિરતા રહતા હૈ । યહાં પર દિવ્ય વાજો કા નાદ હોતા રહતા હૈ અતએવ ડસસે યે સદા વાચાલિત સે બને રહતે હૈ । યે સર્વાત્મના રત્નમય હૈ તથા અચ્છ સે લેઠર પ્રતિરૂપ તક કે જિતને મી વિશેષણ પદ હૈ-અનસે યે યુક્ત હૈ હન અચ્છ આદિ પદો કી વ્યાખ્યા પહેલે યથાસ્થાન કી જા ચુકી હૈ હન પૂર્વોક્ત ભવનોં મેં-દેવેન્દ્ર દેવરાજ શક્ર કે સોમ, યમ, વરુણ ઓર વૈશ્રવણ જાતિ કે અનેક કિંકર મૂત દેવ રહતે હૈ । યે દેવ વિપુલ ભવન એવ પરિવારાદિરૂપ સમૃદ્ધિ

શુરુની, પ્રશસ્તતર કુન્દરુષ્કગન્ધ દ્રવ્ય વિશેષની, લોમાનની અને દશાઙ્ગધૂપની મનોજ્ઞગન્ધ અહીંના ભવનોમા સર્વત્ર વ્યાપ્ત છે તેથી એ ભવનો ખૂબજ રમણીય થઈ ગયા છે. તેમજ શોભન ગન્ધવાળા દ્રવ્યોની ગન્ધ કરતા પણ ઉત્તમ ગન્ધની મહેકથી સર્વદા એ ભવનો મહેકતા રહે છે એથી એ એવા લાગે છે કે માનો એ ગધની ગુટિકા રૂપ છે એ ભવનોમાં અપ્સરાઓના સમુદાયો આમથી તેમ હરતા-હરતાજ રહે છે અહીં દિવ્ય વાજાઓનો નાદ થતો રહે છે. એથી એ સુખરિત રહે છે. એ સર્વાત્મના રત્નમય છે તેમજ અચ્છથી માહીને પ્રતિરૂપ સુધીના જેટલા વિશેષણ પદો છે તેમનાથી એ યુક્ત છે આ અચ્છ વગેરે પદોની વ્યાખ્યા પહેલાં યથાસ્થાન કરવામા આવી છે આ પૂર્વોક્ત ભવનોમા દેવેન્દ્ર દેવરાજ શક્રના સોમ, યમ, વરુણ અને વૈશ્રવણ જાતિના અનેક કિંકર ભૂત દેવો રહે છે એ દેવો વિપુલ

પરેણાન્વયઃ, તેવ કીદશાઃ ? इति जिज्ञासायामाह—‘महिद्ब्रुव्या’ महद्ब्रुव्याः=विपुल
भवनपरिवार-लक्षणसमृद्धियुक्ताः ‘महज्जुईया’ महाद्युतिकाः शरीराभरणोभयसम्ब-
न्धिबृहत्प्रकाशसम्पन्नः ‘जाव’ यावत्-यावत्पदेन-‘महाबलाः’ महायशसः, एतदुभयपद
संग्रहो बोध्यः, तथा ‘महासोकखा पलिओवमद्ब्रुव्या’ महासुखाः पल्योपमस्थितिकाः एतेषां
महाबलादीनां पदानां व्याख्याऽष्टमसूत्रतो विजयद्वाराधिष्ठातृविजयदेववर्णनप्रकरणा-
दवसेया ।

‘તાસિળ’ તયોઃ- પૂર્વોક્તયોઃ સ્વલ્લ આમિઓગસેદીળં વહુસમરમણિજ્જાઓ
શ્રૂમિભાગઓ વેયદ્દહસ્સ પવ્વયસ્સ ઉમઓ પાર્સિ’ આમિયોગ્યશ્રેણ્યો વહુસમરમણી-
યાત્ શ્રૂમિભાગાત્ વૈતાલ્યસ્ય પર્વતસ્ય ઉમયોઃ-દ્વયોઃ પાર્શ્વયોઃ ‘પંચ પંચ જોયણાઈ
ઉદ્દ ઉપ્પદ્દા, પચ્ચ પચ્ચ યોજનાનિ ઊર્ધ્વમુત્પત્ત્ય-ગત્વા ‘પત્થળં વેયદ્દહસ્સ પવ્વયસ્સ-
સિહરતળે પળળતે’ અત્ર-દ્વિ સ્વલ્લ વૈતાલ્યસ્ય પર્વતસ્ય શિશ્વરતલં પ્રજ્ઞપ્તમ્, તચ્ચ
કીદશમ્ ? इति जिज्ञासायामाह-પ્રાચીનપ્રતીચીનાયતમિત્યાદિ । તત્ર ‘પાઈળ પઢી-
ણાયપ’ પ્રાચીનપ્રતીચીનાયતં પૂર્વ પશ્ચિમયોર્દિશોરાયત-દીર્ઘમ્ ‘ઉદીળ દાહિળ
વિચ્છિળળે’ ઉદીચીનદક્ષિણવિસ્તીર્ણે ‘દસજોયણાઈ વિક્ખમેળ’ દશયોજનાનિ
વિષ્કમ્મેળ-વિસ્તારેળ ‘પવ્વયસમગે’ પર્વતસમકમ્-પર્વતસમાનમ્ ‘આયામેળ’
આયામેન- દૈર્ઘ્યેળ । ‘સેળં’ તત્ શિશ્વરતલં સ્વલ્લ ‘ઇવ્કાપ’ એકયા ‘પડમવરવેદ્યાપ’

યુક્ત છે શરીર કી એવ આમરણ કી વૃહત્ કાન્તિ સે સમ્પન્ન છે. યાવત્પદ કે અનુસાર એ
મહાબલિષ્ઠ છે, મહાયશસ્વી છે તથા મહાસુલ સમ્પન્ન છે, ઓર એક પલ્યોપમ કી સ્થિતિ
વાલે છે । મહાબલ આદિ પદો કી વ્યાખ્યા અષ્ટમસૂત્ર સે કીં જિસમેં વિજય દ્વાર કે અધિ-
પતિ વિજય દેવ કા વર્ણન પ્રકરણ છે જાન લેનીં યાહિયે ।

इन दोनों आभियोग्य श्रेणियों के बहुसमरमणीय भूमिभाग से वैताल्यपर्वत की
दोनों बाजुओं में पाच पाच योजन ऊपर आगे जाने पर वैताल्य पर्वत का शिखर
तल कहा गया है “पाईण पडिणायप उदीणदहिणविच्छिण्णे दस जोयणाइ विक्खमेणं
पव्वयसमगे आयामेण” यह शिखर पर्व से पश्चिम तक लम्बा है इसका विस्तार १० योजन
का है इसलिए यह लम्बाई को अपेक्षा पर्वत के हो बराबर है “सेणं एक्काप पडमवर

ભવન તેમજ પરિવારાદિરૂપ સમૃદ્ધિથી યુક્ત છે શરીરની તેમજ આભરણની બૃહત્ કાંતિથી
સંપન્ન છે યાવત્પદ સુબળ એ મહાબલિષ્ઠ છે, મહાયશસ્વી છે તેમજ મહાસુલસંપન્ન છે અને
એકએક પલ્યોપમ જેટલી સ્થિતિવાળા છે મહાબલ આદિ પદોની વ્યાખ્યા અષ્ટમસૂત્રમાંથી
જાણી લેવી જોઈએ તેમા વિજયદ્વારના અધિપતિ વિજયદેવતું વર્ણન કરવામાં આવેલું છે.
એ બન્ને આભિયોગ્ય શ્રેણીઓના બહુસમરમણીય ભૂમિભાગથી વૈતાલ્ય પર્વતની બન્ને
બાજુ ઓમા પાચ પાચ યોજન ઉપર આગળ જવાથી વૈતાલ્ય પર્વતનું શિખર કહેવાય છે.
‘પાઈળ પડિયાયપ ઉદીળદાહિળ વિચ્છિળળે દસજોયણાઈ વિક્ખમેળ પવ્વયસમગે આયામેળ’
આ શિખર પૂર્વથી પશ્ચિમ સુધી લાંબું છે આનો વિસ્તાર ૧૦ યોજન જેટલો છે. એથી
આ લંબાઈની અપેક્ષાએ પર્વતની બરાબર છે “સેળં એક્કાપ પડમવરવેદ્યાપ એકેળં ઘળ-

પદ્મવરવેદિકયા 'ફલકેણ વણસંદેણ' એકેન વનવણ્ડેન ચ- 'સન્નવો સમંતા સંપરિક્ષિતે' સર્વતઃ સમન્તાત્ સંપરિક્ષિતં-પરિવેષ્ટિતમિતિ । અનયોર્દૈર્ધ્યવિસ્તાર પ્રમાણં વર્ણનં ચ જમ્બૂદ્વીપજગતીગતપદ્મવરવેદિકાવનવણ્ડયોરિવ વોધ્યમ્ । એતદેવ સ્વચયિતુમાહ 'પમાણં વણ્ણગો દોણ્હપિ' પ્રમાણં વર્ણકો દ્વયોરપીતિ ।

અથ ગૌતમઃ પુનઃ પૃચ્છતિ- 'વેયદ્દસ્સ ણં મંતે' इत्यादि । 'વેયદ્દસ્સ ણં મંતે' । પવ્વયસ્સ સિહરતલસ્સ કેરિસપ્ આયારભાવપહોયારે પણ્ણત્તે । હે મદન્ત ! વૈતાલ્યસ્ય ચલુ પર્વતસ્ય શિશ્વરતલસ્ય કોદશકઃ આકારભાવપ્રત્યવતારઃ=સ્વરૂપપર્યાયપ્રાદુર્ભાવઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ? મગવાનાહ- 'ગોયમા ! બહુસમરમણિજ્ઞે ભૂમિભાગે પણ્ણત્તે' હે ગૌતમ ! બહુસમરમણીયઃ ભૂમિભાગઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, 'સે જહાણામપ્પ અલિંગપુક્કલેરેવા જાવ ણાણાવિહ પંચવણ્ણેહિં મણીહિં ઉવસોમિપ્પ જાવ વાવીઓ પુક્કલરિણીઓ જાવ વાણમંતરા દેવા ય દેવીઓ ય આસયંતિ જાવ મુંજમાણા વિહરંતિ' સ યથાનામકઃ આલિંગપુક્કલરિણ્યો વાવદ્ વાપ્યઃ પુક્કલરિણ્યો વાવદ્ વ્યન્તરા દેવાશ્ચ इति वा पञ्चवर्णै र्मणिभिरुपशोभितो यावद् वाप्यः पुष्करिण्यो यावद् व्यन्तरा देवाश्च

વેદ્યાપ્ ફલકેણ વણસંદેગ સન્નવો સમંતા સંપરિક્ષિતે પમાણ વણ્ણગો દોણ્હપિ ” વહ શિશ્વરતલ એક પદ્મવર વેદિકા ઓર એક વનવણ્ડ સે ચારો ઓર સે ઘિરા હુઆ હૈ ઇન દોનો કી લમ્બાઈ ચૌડાઈ કા પ્રમાણ તથા ઇન્કે સમ્બન્ધ કા વર્ણન જમ્બૂદ્વીપ કી જગતી પદ્મવર વેદિકા ઓર વનવણ્ડ કે વર્ણન જૈસા હો હૈ ।

“વેયદ્દસ્સ ણં મંતે । પવ્વયસ્સ સિહરતલસ્સ કેરિસપ્ આગારભાવપહોયારે પણ્ણત્તે” હે મદન્ત ! વૈતાલ્ય પર્વત કે શિશ્વર કા આકારભાવ પ્રત્યવતાર-સ્વરૂપ કૈસા કહા ગયા હૈ ? ઇસકે ઉત્તર મેં પ્રશ્ન કહતે હૈ “ગોયમા ! બહુસમરમણિજ્ઞે ભૂમિભાગે પણ્ણત્તે” હે ગૌતમ ! શિશ્વર તલકા જો ભૂમિભાગ હૈ વહ સમ પર્વ રમણીય કહા ગયા હૈ, ‘સે જહાણામપ્પ આલિંગપુક્કલેરેવા જાવ ણાણાવિહ પંચવણ્ણેહિં મણીહિં ઉવસોમિપ્પ જાવ વાવીઓ પુક્કલરિણીઓ જાવ વાણ-મંતર દેવાય દેવીઓ ય આસયંતિ જાવ મુંજમાણા વિહરંતિ” જૈસા બહુસમરમણીય મૃદંગ કા મુક્ક પુટ હોતા હૈ इत्यादि रूप से तथा यावत् नाना प्रकार के पंच वर्णोपेत मणियों से वह

સંદેણ સન્નવો સમંતા સંપરિક્ષિતે પમાણ વણ્ણગો દોણ્હપિ” તે શિશ્વરતલ એક પદ્મ-વરવેદિકા અને એક વનવણ્ડથી ચારે તરફથી ઘેરાયેલું છે એવો અન્નેની લંબાઈ-ચોડાઈનું પ્રમાણ તેમજ એમના સંબંધનું વર્ણન જમ્બૂદ્વીપની જગતીની પદ્મવરવેદિકા અને વનવણ્ડના વર્ણન જેવું જ છે ‘વેયદ્દસ્સ ણં મંતે । પવ્વયસ્સ સિહરતલસ્સ કેરિસપ્ આગારભાવ-પહોયારે પણ્ણત્તે” હે મદન્ત ! વૈતાલ્ય પર્વતના શિશ્વરના આકારભાવ પ્રત્યવતાર-(સ્વરૂપ) કેવો છે ? એના જવાબમાં પ્રશ્ન કહે છે. “ગોયમા ! બહુસમરમણિજ્ઞે ભૂમિભાગે પણ્ણત્તે” હે ગૌતમ ! શિશ્વર તલનો જ ભૂમિભાગ છે તે સમરમણીય છે “સે જહાણામપ્પ આલિંગ પુક્કલેરેવા જાવ ણાણાવિહ પંચવણ્ણેહિં મણીહિં ઉવસોમિપ્પ જાવ વાવીઓ પુક્કલરિણીઓ જાવ મંતરા દેવાય દેવીઓ ય આસયંતિ જાવ મુંજમાણા વિહરંતિ” મૃદંગ મુખ પટ જેવું

देव्यश्च आसते यावद् भुञ्जमाना विहरन्तोति । अत्र यावत् पदसंग्राहः पाठो राज-
प्रश्रीवसूत्रस्य तत्रैव मत्कृतसुबोधिनीटीकातोऽवबोध्य इति ।

अथास्य वैताढ्यस्योपरितनः कूटानां संख्या पृच्छति 'जंबूद्वीपेण' इत्यादि 'जम्बू-
द्वीपे णं मंते ! दीवे भारहे वासे वेयइदपव्वए कइ कूडा पणत्ता' हे भदन्त !
जम्बूद्वीपे द्वीपे वर्तमाने भारते वर्षे स्थिते वैताढ्यपर्वते कति-कियत्स ख्यकानि
कूटानि-शिखराणि प्रज्ञप्तानि भगवानाह--'गोयमा । णव कूडा पणत्ता' हे गौतम !
नव-नव संख्यानि कूटानि प्रज्ञप्तानि 'तं जहा सिद्धाययणकूडे' तद्यथा सिद्धायतनकूट
सिद्ध शाश्वत यदायतनं स्थानं नदुपलक्षितं कूटं प्रथमम् ? 'दाहिणइदभरहकूडे'
दक्षिणार्द्धभरतकूटं-दक्षिणार्द्धभरतनामकस्य देवस्य निवासभूतं कूट द्वितीयम् २,
'खण्डप्पवायगुहाकूडे' खण्डप्रपातगुहाकूटं-खण्डप्रपातगुहायां अधिष्ठातृदेवस्य नृत्तमालस्य

शोभित है इत्यादि रूप से तथा वहां पर अनेक वापिकाएँ एवं अनेक पुष्करिणियां हैं यावत्
अनेक व्यन्तर देव और देविया वहां पर उठती बैठती रहती है इत्यादि रूप से तथा
यावत् वहा वे भोग भोगने हुए अपना समय चैन से व्यतीत करते हैं इत्यादि रूप से
जैसा यह सब पुरा का पुरा वर्णन राजप्रश्रीय सूत्र के १५वे सूत्र से लेकर १९ वे सूत्र तक
कथित वर्णन से जान लेना चाहिये वहां यह सब वर्णन बिलकूल स्पष्ट से किया गया है ।
"जंबूद्वीपे णं मंते ! दीवे भारहे वासे वेयइदपव्वए कइ कूडा पणत्ता " हे भदन्त !
जम्बूद्वीप नामके द्वीपमें स्थित भरत क्षेत्र में पड़े हुए वैताढ्यपर्वत के कितने कूट-शिखर
कहे गये हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं, 'गोयमा । णव कूडा पणत्ता' हे गौतम !
वैताढ्य पर्वत के नौ कूट शिखर कहे गये हैं । 'त जहा' जिनके नाम इस प्रकार
से हैं "सिद्धाययणकूडे १, दाहिणइदभरहकूडे २, खंडप्पवायगुहाकूडे ३ माणिमदकूडे

अहुसम २मस्थीय डोय छे इत्यादि इपथी तथा यावत् नाना प्रकारना पंचवर्णोपेत मस्थीयोथी
ते शोभित छे इत्यादि इपथी तथा त्यां अनेक वापिकाओ अनेक पुष्करिणीओ छे, यावत्
अनेक व्यन्तर देवा अने देवीओ त्यां उठता-जेसता रहे छे इत्यादि इपथी तेमज यावत्
त्यां तेओ भोगवता पोताना समय आनंद पूर्वक व्यतीत करे छे इत्यादि इपथी जेवुं
आ अणुं वषुंन राजप्रश्रीय सूत्रना १५मा सूत्रथी भांडीने १६ मा सूत्र सुधी करवाभा आवेल
छे ते प्रमाणे अडिंया पण्ण अण्णी देवु जोईओ आ अणुं वषुंन त्या ओकदम स्पष्ट
इपमा करवाभा आवेल छे

"जंबूद्वीपे णं मंते ! दीवे भारहे वासे वेयइदपव्वए कइ कूडा पणत्ता" हे भदन्त !
जम्बूद्वीप नामद्वीपमां स्थित भरतक्षेत्रना मध्यमा पठता वैताढ्य पर्वतना कटला शिखर
छे ! ओना जवाभमां प्रभु कहे छे के "गोयमा णव कूडा पणत्ता" हे गौतम ! वैताढ्य
पर्वतना नव कूट-शिखर कहेवाया छे "तं जहा" जेमना नामो आ प्रमाणे छे "१ सिद्धा-
ययण कूडे, २ दाहिणइदभरहकूडे, ३ खंडप्पवाय गुहा कूडे, ४ माणिमदकूडे, ५, इदवेय

निवासभूत कूटं तृतीयम् ३, 'माणिभद्रकूडे,' माणिभद्रकूटं—माणिभद्रनामकस्य देवस्य निवासभूतं कूटं चतुर्थम् ४, 'वेयङ्गकूडे' वैताढ्यकूटं—वैताढ्यनामकस्य देवस्य निवासभूतं कूटं पञ्चमम् ५, 'पुण्णभद्रकूडे' पूर्णभद्रनामकस्य देवस्य निवासभूत कूटं षष्ठम् ६, 'तमिस्रगुहा कूडे' तमिस्रगुहाकूटं—तमिस्रगुहाधिष्ठातृदेवस्य कृतमालकस्य निवासभूतं कूटम् सप्तमम् ७ 'उत्तराङ्गभरहकूडे' उत्तरार्द्धभरतकूटम्—उत्तरार्द्धभरतनामकस्य देवस्य निवासभूतं कूटं अष्टमम्, 'वैसमणकूडे' वैश्रवणकूटं—वैश्रवणनामकस्य लोकपालविशेषस्य निवासभूतं नवमम् ९, सर्वत्र मध्यमपदलोपि तत्पुरुषसमासो बोध्यः । इति ॥१४॥

'यथोद्देशं निर्देशः' इति प्रथमतः सिद्धायतनकूटं वर्णयति—

मूलम्—कहि णं भंते ! जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे वेयङ्गपव्वण
सिद्धाययणकूडे पण्णत्ते ? गोयमा पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं
दाहिणद्धभरहकूडस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे वे-

४, वेयङ्ग कूडे ५, पुण्णभद्रकूडे ६, तमिस्रगुहा कूडे ७, उत्तराङ्गभरहकूडे ८, वैसमणकूडे ९," सिद्धायतनकूट—शाश्वत आयतन से उपलक्षित कूट १, दक्षिणार्द्ध भरतनाम के देवका निवासभूत दक्षिणार्द्ध भरतकूट २, खंडप्रपात नाम की गुहाके अधिष्ठायाक नृत्तमाल देव का निवासभूत खंडप्रपातगुहाकूट ३' माणिभद्र नामक देव का निवासस्थान रूप माणिभद्रकूट ४, वैताढ्यनामक देव का निवासभूत वैताढ्यकूट ५, पूर्णभद्रनामक देव का निवासभूतकूट पूर्णभद्रकूट ६, तमिस्रगुहाके अधिष्ठायाक कृतमाल देव का निवासभूतकूट तमिस्रगुहाकूट ७, उत्तरार्द्धभरत नामकदेव का निवासभूतकूट उत्तरार्द्धभरतकूट ८, और वैश्रवणनामक लोकपाल का निवासभूतकूट वैश्रवणकूट है । इन समस्त पदों में मध्यमपदलोपी तत्पुरुष समास हुआ है ॥१४॥

कूडे, ६ पुण्णभद्र कूडे, ७ तमिस्रगुहा कूडे, ८ उत्तराङ्ग भरहकूडे ९ वैसमणकूडे," सिद्धायतन कूट—शाश्वत—आयतनही उपलक्षित कूट १, दक्षिणार्द्ध भरतनामक देवना निवास भूत दक्षिणार्द्ध भरत कूट २ अंडप्रपात नामक गुहाना अधिष्ठायाक नृत्तमाल देवना निवास भूत अंडप्रपातगुहाकूट ३ माणिभद्र नामक देवना निवासस्थान रूप माणिभद्र कूट ४, वैताढ्य नामक देवना निवासभूत वैताढ्यकूट ५ पूर्णभद्र नामक देवना निवास भूत पूर्णभद्र कूट ६ तमिस्र गुहाना अधिष्ठायाक कृतमाल देवना निवासभूत कूट तमिस्रगुहाकूट ७ उत्तरार्द्ध भरत नामक देवना निवास भूत कूट उत्तरार्द्ध भरत कूट ८, अने वैश्रवण नामक लोकपालना निवासभूत वैश्रवणकूट छे—आ, सर्व यद्वाया मध्यमपद लोपी तत्पु-
रुष समास थयेल छे ॥१४॥

यद्दृढे पञ्चए सिद्धाययणकूडे णामं कूडे पण्णत्ते-छसकोसाइं जोयणा
इं उड्डं उच्चत्तेणं, मूले छसकोसाइं जोणाइं विक्खंमेणं मज्झे देसूणाइं
पंच जोयणाइं विक्खंमेणं, उवरि साइरेगाइं णव जोयणाइं परिक्खेवेणं,
मूले वित्थिण्णे मज्जे संखित्ते उप्पि तणुए गोपुच्छसंठाणसंठिए,
संवरयणामए अच्छे सण्हे जाव पडिरूवे । से णं एगाए पउमवर-
वेइयाए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरि विखत्ते.
पमां वण्णओ दोण्हंपि । सिद्धाययणकूडस्स णं उप्पि बहुसमर-
मणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहानामए आलिङ्गपुक्खरेइ
वा जाव वाणमंतरा देवा य जाव विहरंति । तस्स णं बहुसमरमणि-
ज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभागे एत्थणं महं एगे सिद्धा-
ययणे पण्णत्ते कोसं आयामेणं, अद्धकोसं विक्खंमेणं, देसूणं कोसं
उड्डं उच्चत्तेणं अणेग खंभसयसंनिविट्ठे खंभुग्गय सुकयवइरवेइया
तौरणवरसइयसालभंजियाग सुसिलिड्विसिड्डलड्डसंठियपसत्थवेरुलिय-
विमलखंमे णाणामणिरयण खचियउज्जलबहुसम सुविभत्तभूमिभागे
ईहामिग उसभतुरगणर मगर विहगवालगकिन्नर रुरुसरभवमर
कुंजरवंलय जाव पउमलयभत्तिचित्ते कंचणमणिरयणथूमियाए
णाणाविहं पंचं वण्णओ घंटापडांगपरिमंडियग्गसिहरे धवले
मंरीइकवयं विणिम्मुर्यंते लाउल्लोइयमहिए जाव झया । तस्स णं
सिद्धाययणस्स तिदिसिं तओ दारा पण्णत्ता । तेणं दारा पंच धणु-
सयाइं उड्डं उच्चत्तेणं अड्डाइज्जोइं धणुसयाइं विक्खंमेणं तावइयं चैव
पवेसेणं, सेयवरक्कणगथूमियाग दाखण्णओ जाव वणमाला । तस्सणं
सिद्धाययणस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहा
णामए आलिङ्गपुक्खरेइ वा जाव तस्स णं सिद्धाययणस्स णं बहुसमर-
मणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थणं महं एगे देवच्छंदए
पण्णत्ते पंचधणुसंयाइं आयामविक्खंमेणं साइरेगाइं पंचधणुसयाइं उड्डं

उच्चतेणं सव्वरयणामए । एत्थणं अट्ठसयं जिणपडिमाणं जिणुस्से-
हप्पमाणमित्ताणं संनिखित्तं चिट्ठइ एवं जाव धूवकडुच्छुगा ॥सूत्र० १५॥

छाया— क खलु भदन्त ! जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे वैताढ्यपर्वते सिद्धायतन-
कूटं नाम कूटं प्रज्ञप्तम् । गौतम । पौरस्त्यलवणनमुद्रस्य पश्चिमेन दक्षिणार्द्धभरतकूटस्य
पौरस्त्येन अत्र खलु जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे वैताढ्ये पर्वते सिद्धायतनकूटं नाम कूटं
प्रज्ञप्तम्, षट् सक्रोशानि योजनानि उर्ध्वमुच्चत्वेन, मूले षट् सक्रोशानि योजनानि विष्कम्भेण
मध्ये देशोनानि पञ्च योजनानि विष्कम्भेण, उपरि सातिरेकाणि त्रीणि योजनानि विष्क-
म्भेण, मूले देशोनानि द्वाविंशति योजनानि परिक्षेपेण, मध्ये देशोनानि पञ्चदश योजनानि
परिक्षेपेण, उपरि सातिरेकाणि नव योजनानि परिक्षेपेण मूले विस्तोर्णं मध्ये संक्षिप्तम् उपरि
तनुकं गोपुच्छसंस्थानसंस्थित, सर्वरत्नमयम् अच्छं श्लक्ष्ण यावत् प्रतिरूपम् । तत्
खलु एकया पञ्चवरवेदिकया एकेन च वनपण्डेन सर्वतः समन्तात् संपरिक्षिप्तम्, प्रमाणं
वर्णको द्वयोरपि । सिद्धायतनकूटस्य खलु उपरि बहुसमरमणीयो भूमिभागः प्रज्ञप्तः, स
यथा नामकः अलिङ्गपुष्कर इति वा यावद् व्यन्तरा देवश्च यावद् विहरन्ति ।

तस्य खलु बहुसमरमणीयस्य भूमिभागस्य बहुमध्यदेशभागे अत्र खलु महदेकं सिद्धा-
यतनं प्रज्ञप्तम्, क्रोशमायामेन अर्द्धक्रोश विष्कम्भेण देशेन क्रोशमूर्ध्वमुच्चत्वेन, अनेक स्तम्भ
शतसन्निविष्टं स्तम्भोद्भूतकृतवज्रवेकातोरणवरचितशालभञ्जिताक सुप्रिलष्टविशिष्ट
लष्ट संस्थित प्रशस्तवैदूर्यविमलस्तम्भं नानामणिकनकरत्नरञ्जितोज्ज्वलबहुसमसुविभक्त-
भूमिभागम् ईदामृगवृषभतुरग नरमकरविहगव्यालक किन्नर रुद्र सरभ चमरकुञ्जरवनलता
यावत् पञ्चलता भक्तिचित्रं काञ्चनमणि रत्न स्तूपिकाक नागाविध पञ्च० वर्णकः घण्टापताका
परिमण्डिताग्रशिखरं धवलं मरीचिकवचं विनिर्मुञ्चत् लायितोल्लायितमहितं यावत्
ध्वजा । तस्य खलु सिद्धायतनस्य त्रिदिशि त्रीणि द्वाराणि प्रज्ञप्तानि, तानि खलु द्वाराणि
पञ्चधनुःशतानि ऊर्ध्वमुच्चत्वेन, अर्धदृतीयानि धनुःशतानि विष्कम्भेण, तावदेव प्रवेशेन
इवेतवरकनक स्तूपिकाकं द्वारवर्णको यावद् वनलता । तस्य खलु सिद्धायतनस्य अन्तः
बहुसमरणीयो भूमिभागः प्रज्ञप्तः, स यथानामकः अलिङ्गपुष्कर इति वा यावत् तस्य खलु
सिद्धायतनस्य खलु बहुसमरमणीयस्य भूमिभागस्य बहुमध्यदेशभागे अत्र खलु महानेको
देवच्छन्दकः प्रज्ञप्तः पञ्च धनुः शतानि आयामविष्कम्भेण सातिरेकाणि पञ्चधनुः शतानि
ऊर्ध्वमुच्चत्वेन सर्वरत्नमयः अत्र खलु अष्टशतं जिनप्रतिमानां जिनोत्सेधप्रमाणमात्राणां
संनिक्षिप्तं तिष्ठति, एवं यावत् धूपकडुच्छुका ॥सू० १५॥

टीका—‘कहि ण भंते !’ इत्यादि ।

‘कहि ण भंते ! जम्बूद्वीपे दीपे मारहे वासे वेयड्ढपव्वए सिद्धाययणकूहे पण्णत्ते’
हे भदन्त ! जम्बूद्वीपे द्वीपे मारहे वर्षे वैताढ्यपर्वते—मध्य जम्बूद्वीपान्तर्वर्त्ति भरत-

क्षेत्रस्थितवैताढ्यपर्वते सिद्धायतनकूटं क्व कस्मिन् भागे खलु प्रज्ञप्तम्? भगवानाह—
 'गोयमा ! पुरत्थिमलवणसमुद्रस्स' हे गौतम पौरस्त्य लवणसमुद्रस्य पूर्व दिग्घर्तिलवणसमुद्रस्य
 'पच्चत्थिमेणं' पश्चिमेन—पश्चिमायां दिशि 'दाहिणद्धमरहकूडस्स पुरत्थिमेणं' दक्षिणार्द्ध-
 भरतकूटस्य पौरस्त्येन—पूर्वस्यां दिशि 'एत्थ णं जंबूद्वीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढे
 पव्वए सिद्धाययणकूडे णामं कूडे पण्णत्ते' अत्र खलु जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे वैताढ्य-
 पर्वते सिद्धायतनकूटं नाम कूटं प्रज्ञप्तम् । तस्य उन्नतत्वादि प्रमाणमाह—'छ सक्को-
 साइं' इत्यादि । तत् सिद्धायतनकूटं 'छ सक्कोसाइं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं' सक्कोशानि
 क्रोशेन सहितानि षट्—षट्संख्यानि योजनानि ऊर्ध्वम् उच्चत्वेन प्रज्ञप्तम् । तथा
 'मूले छ सक्कोसाइं जोयणाइं विक्खमेणं' मूले—मूलप्रदेशे सक्कोशानि—क्रोशसहितानि
 षट् योजनानि विष्कम्भेण विस्तारेण, 'मज्झे देसूणाइं पंच जोयणाइं विक्खमेणं'
 मध्ये-मध्यभागे देशोनानि—किञ्चिद्देशेन न्यूनानि पञ्च योजनानि विष्कम्भेण, 'उवरि
 साइरेगाइं तिणिण जोयणाइं विक्खमेणं' उपरि-उर्ध्वभागे सातिरेकाणि—किञ्चिदधिकानि—

“कहिणं भंते! जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढपव्वए’ इत्यादि ।

टीकार्थ—गौतम स्वामी ने इस सूत्र द्वारा प्रभु से ऐसा पूछा है—हे भदन्त ! जम्बूद्वीप
 नामके द्वीप में स्थित जो भरत नाम क्षेत्र है और उस भरतक्षेत्र के बीचमें जो विजयार्थ नाम का
 पर्वत है सो उस पर्वत पर सिद्धायतन नामक कूट किस भाग में कहा गया है ? इसके उत्तर
 में प्रभु कहते हैं “गोयमा ! पुरत्थिमलवणसमुद्रस्स पच्चत्थिमेण दाहिणद्धमरहकूडस्स पुरत्थिमेणं
 एत्थ ण जंबूद्वीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढपव्वए सिद्धाययणकूडे णामं कूडे पण्णत्ते ‘हे गौतम !
 पूर्वदिग्घर्तिलवण समुद्र की पश्चिमदिशा में तथा दक्षिणार्ध भरतकूट की पूर्वदिशा में जम्बूद्वीप-
 स्थित भरतक्षेत्र के मध्य में रहे हुए वैताढ्यपर्वत के ऊपर सिद्धायतन कूट कहा गया है ।
 “छक्कोसाइं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण मूले छ सक्कोसाइं जोयणाइं विक्खमेणं मज्झे देसूणाइं
 पंचजोयणाइं विक्खमेणं उवरि साइरेगाइं तिणिण जोयणाइं विक्खमेणं, मूले देसूणाइं बावीस

‘कहिणं भंते ! जंबूद्वीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढपव्वए—इत्यादि सूत्र ॥१५॥

टीकाथ—‘गौतमे आ सूत्र वडे प्रभुने प्रश्न कथे’ के भदन्त ! जम्बूद्वीप नामक द्वीपमां
 स्थित जे भरत नामक क्षेत्र छे आने ते भरत क्षेत्रना मध्यमा जे विजयार्थ नामक पर्वत छे आने
 ते पर्वत पर जे सिद्धायतन नामक कूट छे ते कथा भागमा आवेल छे ? आना जवानमां
 प्रभु कहे छे ‘गोयमा ! पुरत्थिमलवणसमुद्रस्स पच्चत्थिमेणं दाहिणद्धमरहकूडस्स
 पुरत्थिमेणं एत्थणं जंबूद्वीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढ पव्वए सिद्धायतनकूडे नाम कूडे
 पण्णत्ते’ जे गौतम ! पूर्व दिग्घर्ती लवण समुद्रनी पश्चिमदिशाभा तेमज्ज दक्षिणार्द्ध भरत
 कूटनी पूर्व दिशाभा जम्बूद्वीप स्थित भरत क्षेत्रना मध्यमा आवेल गौताढ्य पर्वतनी
 उपर सिद्धायतन कूट छे “छक्कोसाइं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं मूले छसक्कोसाइं जोयणाइं
 विक्खमेणं मज्झे देसूणाइं पंच जोयणाइं विक्खमेणं उवरि साइरेगाइं तिणिण जोयणाइं

અર્થક્રોશાધિકાનિ ત્રીણિ યોજનાનિ વિષ્કમ્બેણ, 'મૂલે દેસુણાઈ વાવીસ જોયણાઈ પરિક્ષેવેણ' મૂલે દેશોનાનિ કિશ્ચિદેશન્યૂનાનિ દ્વાવિંશતિ-દ્વાવિંશતિ સંખ્યાનિ યોજનાનિ પરિક્ષેપેણ-પરિધિના, 'મજ્ઞે દેસુણાઈ પળ્ળરસજોયણાઈ પરિક્ષેવેણ' મધ્યે-મધ્યમાગે દેશોનાનિ-કિશ્ચિદેશન્યૂનાનિ પશ્ચદશ પઠ્ઠદશ સંખ્યાનિ યોજનાનિ પરિક્ષેપેણ, 'ઉવરિં સાહરેગાઈ ણવ જોયણાઈ પરિક્ષેવેણ' ઉપરિ-ઉપરિતનમાગે સાતિરેકાણિ-સાધિકાનિ નવ-નવસંખ્યાનિ યોજનાનિ પરિક્ષેપેણ, 'મૂલે વિત્થિળ્ણે' મૂલે વિસ્તીર્ણ વિસ્તાર-યુક્તમ્ 'મજ્ઞે સંખિત્તે' મધ્યે-મધ્યમાગે સંક્ષિપ્ત-સંકુચિતમ્, 'ઉપ્પિ તણુ' ઉપરિ ઉર્ધ્વમાગે તનુકં-પ્રતલમ્ અત એવ 'મૂલમધ્યોર્ધ્વેષુ ક્રમશો વિસ્તારસંક્ષેપ-તનુત્વસત્વાત્' 'ગોપુચ્છસંઠાણસઠિ' ગોપુચ્છસંસ્થાનસંસ્થિત-ગોપુચ્છાઽઽકારેણ સંસ્થિતમ્ પુનઃ 'સવ્વરયણામ' સર્વરત્નમય-સર્વાત્મના રત્નમયમ્ 'અચ્છે સળ્હે જાવ પહ્લિરૂવે' અચ્છં શ્લક્ષણં યાવત્ પ્રતિરૂપમ્, તત્ર અચ્છમ્-આકાશસ્ફટિકવદતિનિર્મલમ્-“શ્લક્ષણં શ્લક્ષણ-પુદ્ગલસ્કન્ધનિર્મિતવદતિચિક્કણમ્, યાવત્ યાવત્પદેન લ્હં ઘટ્ટં મૃટ્ટં નીરજસ્કં નિર્મલં નિષ્પદ્મં નિષ્કલ્લૂટચ્છાયાં સપ્રભં સમરીચિક સોદ્ધોતં પ્રાસાદીયં દર્શનીયમ્ અમિરૂપમ્” इत्येषां सङ्ग्रहो बोध्यः, तथा प्रतिरूपम् एषां व्याख्या चतुर्थसूत्रतो बोध्या ।

જોયણાઈ પરિક્ષેવેણ' यह सिद्धायतन कूट एक कोश ६ योजन का ऊँचा है मूल में इसका विस्तार एक कोश सहित ६ योजन का है मध्य में इसका विस्तार कुछ कम पाच योजना का है, उर्ध्वभाग में इसका विस्तार तीन योजन का एव कुछ अधिक आधेकोश का है मूल में इसकी परिधि कुछ कम २२, योजन की है मध्यभाग में इसकी परिधि कुछ कम १५ योजन की है, ऊपर में इसकी परिधि कुछ अधिक नौ योजन की है इस तरह यह मूल में विस्तार युक्त है, मध्यभाग में संकुचित है और ऊपर में प्रतल है अत एव यह गोपुच्छ के आकार जैसा हो गया है । यह पर्वत सर्वात्मना रत्नमय है और अचछ से लेकर प्रतिरूपतक के समस्त विशेषणों से युक्त हैं । इन अचछ आदि समस्त पदोंकी व्याख्या चतुर्थ सूत्र में की जा चुकी है अत वही से यह देख लेना चाहिये यह सिद्धायतन कूट

વિષ્કમ્બેણ, મૂલે દેસુણાઈ વાવીસ જોયણાઈ પરિક્ષેવેણ” આ સિદ્ધાયતન કૂટ એક ગાઉ ૬ યોજન જેટલો ઊંચો છે. મૂલમા આનો વિસ્તાર એક ગાઉ સહિત ૬ યોજન જેટલો છે. મધ્યમા આનો વિસ્તાર ૬૫ કમ પાચયોજન જેટલો છે. ઉર્ધ્વભાગમાં આનો વિસ્તાર ત્રણ યોજન તેમજ કંઈક વધારે અર્ધગાઉ જેટલો છે. મૂલમા આની પરિધિ કંઈક ૨૨ યોજન જેટલી છે. મધ્યભાગમાં આની પરિધિ કંઈક ૧૫ યોજન જેટલી છે. ઉપરની આની પરિધિ કંઈક વધારે નવ યોજન જેટલી છે. આમ આ મૂલમા વિસ્તાર યુક્ત છે. મધ્યભાગમાં સંકુચિત છે અને ઉપર પ્રતલ છે એથી આ ગોપુચ્છના આકાર જેવો થઈ ગયો છે. આ પર્વત સર્વાત્મના રત્નમય છે અને અચ્છથી પ્રતિરૂપ સુધીના સમસ્ત વિશેષણોથી યુક્ત છે. આ અચ્છ વગેરે સર્વ પદોની વ્યાખ્યા ચતુર્થ સૂત્રમાં કરવામાં આવી છે. એથી

‘સે, ણં પગાપ’ તત્ સિદ્ધાયતનકૂટં સ્વલ્પ એકયા ‘પઠમવરવેદ્યાપ’ પદ્મવર-
વેદિકયા ‘પગેણ ય’ એકેન ચ, ‘વણસંઢેણ’ વનપણ્ડેન. ‘સવ્વઓ. સમંતા સંપરિક્ખિત્તે’ સર્વતઃ
સમન્તાત્ સંપરિક્ષિપ્તં-પરિવેષ્ટિતમ્ । પદ્મવરવેદિકાવનપણ્ડયોર્દૈર્ઘ્યવિસ્તારપ્રમાણ વર્ણન
ચ જમ્બૂદ્વીપજગતીગત પદ્મવરવેદિકાવનપણ્ડયોરિવ બોધ્યમ્ । एतदेव सूचयितुमाह--
‘પમાણં વણ્ણઓ દોણંપિ’ પ્રમાણં વર્ણકો દ્વયોરપીતિ ।

તથા ‘સિદ્ધાયયણકૂહસ્સ ણં ઉપ્પિ’ સિદ્ધાયતનકૂટસ્ય સ્વલ્પ ઉપરિ-ઊર્ધ્વભાગે
‘બહુસમરમણિજ્જે, ભૂમિભાગે. પણ્ણત્તે’ બહુસમરમણિયઃ ભૂમિભાગઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, ‘સે જહા-
ણામપ્, આલિંગપુક્કરેદ્ વા જાવ વાણમંતરા દેવા ય જાવ વિહરંતિ’ સ યથાના-
મકઃ આલિંગપુક્કર इति वा यावद् व्यन्तरा देवाश्च यावद् विहरन्ति । अत्र

एक पद्मवરवेदिका से और एक वनपण्ड से सब ओर से घिरा हुआ है पद्मवर वेदिका और
वनपण्ड का वर्णन लम्बाई चौड़ाई को लेकर जैसा जम्बूद्वीप की जगती की पद्मवरवेदिका
का और उसके वनपण्ड का पहिळे किया जा चुका है वैसा ही है । इसी बात को
सूचित करने के लिए सूत्रकारने “प्रमाणं वर्णको द्वयोरपीति” ऐसा सूत्र पाठ कहा है ।

“सिद्धाययणकूहस्स णं उप्पि बहुसमसमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते” उस सिद्धायतनकूट के
ऊपर बहुसमरमणीय भूमिभाग कहागया है “से जहाणाમપ્ આલિંગપુક્કરેદ્ વા જાવ
વાણમંતરા દેવા ય જાવ વિહરંતિ” वह बहुसमरमणीय भूमि ऐसी बहुसम है कि जैसा बहुसम
मृदङ्ग का मुखपुट होता है यावत् यहा अनेक व्यन्तर देव आदि अपने समय को आनन्द से
व्यतीत करते रहते हैं यहां यावत्पद द्वय से राजप्रश्नोपसूत्र के १५वे सूत्र से लेकर १९वे
सूत्रतक जो पाठ कहा गया है वह गृहीत हुआ है. इस समस्त पाठ का अर्थ हमने उसकी
सुवोचिनी टीका में लिखा है अतः वहीं से इस विषय को समझ लेना चाहिये ।

ત્યાથી આ વિષે વાચી લેવું જોઈએ આ સિદ્ધાયતનકૂટ એક પદ્મવરવેદિકાથી અને એક વન-
પણ્ડની આરે બાજુએથી ઘેરાયેલો છે પદ્મવરવેદિકા અને વનપણ્ડનું વર્ણન લખાઈ તેમજ
ચોક્કાઈની અપેક્ષાએ જેમ જ જમ્બૂદ્વીપની જગતિની પદ્મવર વેદિકા અને તેના વનપણ્ડનું પહેલા
કરનામાં આવ્યું છે તેવું જ છે આ વાતને સૂચિત કરવા માટે સૂત્રકારે ‘પમાણં વર્ણકો
દ્વયોરપીતિ’ આ બાતનો સૂત્ર પાઠ કર્યો છે

સિદ્ધાયયણકૂહસ્સ ણં ઉપ્પિ બહુસમરમણિજ્જે ભૂમિભાગે પણ્ણત્તે” તે સિદ્ધાયતન
કૂટની ઉપર બહુસમ રમણીય ભૂમિભાગ છે “સે જહા ણામપ્ આલિંગપુક્કરેદ્ વા
જાવ વાણમંતરા દેવા ય જાવ વિહરંતિ” તે બહુસમરમણીય ભૂમિભાગ મૃદંગ, મુખવત્,
બહુસમ છે. યાવત્ અહીં, અનેક વ્યતર દેવ આદિ પોતાના સમયને આતક પૂર્વક, પસાર
કરે છે. અહીં યાવત્પદદ્વયથી રાજપ્રશ્નોપસૂત્રના ૧૫મા સૂત્રથી ૧૯ માં સૂત્ર સુધી જે
પાઠ કહેવામાં આવેલ છે તેનું શ્રદ્ધા સમજવું આ સમસ્ત પાઠનો અર્થ અંગેએ ત્યાં સુધી
ધિની ટીકામાં લખ્યો છે એથી આ સંબંધમાં ત્યાંથી જ બાણી લેવું જોઈએ.

અર્ધક્રોશાધિકાનિ ત્રીણિ યોજનાનિ વિષ્કમ્ભેણ, 'મૂલે દેશ્ણાઈ વાવીસ જોયણાઈ પરિક્ષેવેણ' મૂલે દેશોનાનિ કિશ્ચિદેશન્યૂનાનિ દ્વાવિશતિ-દ્વાવિશતિ સંખ્યાનિ યોજનાનિ પરિક્ષેપેણ-પરિધિના, 'મજ્જે દેશ્ણાઈ પળ્લરસજોયણાઈ પરિક્ષેવેણ' મધ્યે-મધ્ય-માગે દેશોનાનિ-કિશ્ચિદેશન્યૂનાનિ પશ્ચદશ પઠ્ઠદશ સંખ્યાનિ યોજનાનિ પરિક્ષેપેણ, 'ઉવરિં સાહરેગાઈ ણવ જોયણાઈ પરિક્ષેવેણ' ઉપરિ-ઉપરિતનમાગે સાતિરેકાણિ-સાધિકાનિ નવ-નવસંખ્યાનિ યોજનાનિ પરિક્ષેપેણ, 'મૂલે વિત્થિળ્ણે' મૂલે વિસ્તીર્ણ વિસ્તાર-યુક્તમ્ 'મજ્જે સંખિત્તે' મધ્યે-મધ્યમાગે સંક્ષિપ્તં-સકુચિતમ્, 'ઉપ્પિ તણુ' ઉપરિ ઊર્ધ્વમાગે તનુકં-પ્રતલમ્ અત એવ 'મૂલમધ્યોર્ધ્વેપુ ક્રમશો વિસ્તારસક્ષેપ-તનુત્વસત્વાત્' 'ગોપુચ્છસંઠાણસઠિ' ગોપુચ્છસંસ્થાનસંસ્થિતં-ગોપુચ્છાડ્ઠકારેણ સંસ્થિતમ્ પુનઃ 'સન્વરયણામ' સર્વરત્નમય-સર્વાત્મના રત્નમયમ્ 'અચ્છે સળ્હે જાવ પહિરૂવે' અચ્છં શ્લક્ષણં યાવત્ પ્રતિરૂપમ્, તત્ર અચ્છમ્-આકાશસ્ફટિકવદતિનિર્મલમ્-"શ્લક્ષણં શ્લક્ષણ-પુદ્ગલસ્કન્ધનિર્મિતવદતિચિક્ષકણમ્, યાવત્ યાવત્પદેન લ્પટં ઘૃષ્ટ મૃષ્ટ નીરજસ્કં નિર્મલં નિષ્પદ્મં નિષ્કલ્લટચ્છાય સપ્રભં સમરીચિક સોદ્ધોતં પ્રાસાદીયં દર્શનીયમ્ અમિ-રૂપમ્" इत्येषां सङ्ग्रहो बोध्यः, तथा प्रतिरूपम् एषां व्याख्या चतुर्थसूत्रतो बोध्या ।

જોયણાઈ પરિક્ષેવેણ' यह सिद्धायतन कूट एक कोश ६ योजन का ऊँचा है मूल में इसका विस्तार एक कोश सहित ६ योजन का है मध्य में इसका विस्तार कुछ कम पांच योजन का है, उर्ध्वभाग में इसका विस्तार तीन योजन का एव कुछ अधिक आर्धकोश का है मूल में इसकी परिधि कुछ कम २२, योजन की है मध्यभाग में इसकी परिधि कुछ कम १५ योजन की है, ऊपर में इसकी परिधि कुछ अधिक नौ योजन की है इस तरह यह मूल में विस्तार युक्त है, मध्यभाग में सकुचित हैं और ऊपर में प्रतल है अत एव यह गोपुच्छ के आकार जैसा हो गया है । यह पर्वत सर्वात्मना रत्नमय है और अचछ से लेकर प्रतिरूपतक के समस्त विशेषणों से युक्त हैं । इन अचछ आदि समस्त पदोंकी व्याख्या चतुर्थ सूत्र में की जा चुकी है अतः वही से यह देख लेना चाहिये यह सिद्धायतन कूट

વિષ્કમ્ભેણ, મૂલે દેશ્ણાઈ વાવીસ જોયણાઈ પરિક્ષેવેણ" આ સિદ્ધાયતન કૂટ એક ગાઉ ૬ યોજન જેટલો ઊંચો છે. મૂલમા આનો વિસ્તાર એક ગાઉ સહિત ૬ યોજન જેટલો છે મધ્યમા આનો વિસ્તાર ૫ કમ પાચયોજન જેટલો છે ઉર્ધ્વભાગમાં આનો વિસ્તાર ત્રણ યોજન તેમજ ૪ થક વધારે અર્ધગાઉ જેટલો છે મૂલમા આની પરિધિ ૪ થક કમ ૨૨ યોજન જેટલી છે મધ્યભાગમા આની પરિધિ ૪ થક કમ ૧૫ યોજન જેટલી છે ઉપરની આની પરિધિ ૪ થક વધારે નવ યોજન જેટલી છે. આમ આ મૂલમા વિસ્તાર યુક્ત છે. મધ્યભાગમાં સકુચિત છે અને ઉપર પ્રતલ છે એથી આ ગોપુચ્છના આકાર જેવો થઇ ગયો છે આ પર્વત સર્વાત્મના રત્નમય છે અને અચ્છથી પ્રતિરૂપ સુધીના સમસ્ત વિશેષણોથી યુક્ત છે આ અચ્છ વગેરે સર્વ પદોની વ્યાખ્યા ચતુર્થ સૂત્રમાં કરવામા આવી છે. એથી

‘સે.ળ ઇગાળ’ તત્ સિદ્ધાંતનકૂટં સ્થલુ એકયા ‘પઠમવરવેદ્યા’ પદ્મવર-
વેદિકયા ‘એળ ય’ એકેન ચ, ‘વણસંઢેળ’ વનવણ્ડેન ‘સવ્વઓ.સમંતા સંપરિક્ષિત્તે’ સર્વતઃ
સમંતાત્ સંપરિક્ષિત્તં--પરિવેષ્ટિતમ્ । પદ્મવરવેદિકાવનવણ્ડયોદૈર્ઘ્યવિસ્તારપ્રમાણ વર્ણન
ચ જમ્બૂદ્વીપજગતીગત પદ્મવરવેદિકાવનવણ્ડયોરિવ બોધ્યમ્ । એતદેવ સૂચયિતુમાહ--
‘પમાણં વણ્ણઓ દોળ્હંપિ’ પ્રમાણં વર્ણકો દ્વયોરપીતિ ।

તથા ‘સિદ્ધાંતયણકૂહસ્સ ણં ડપ્પિ’ સિદ્ધાંતનકૂટસ્ય સ્થલુ ઉપરિ-ઊર્ધ્વભાગે
‘બહુસમરમણિજ્જે, ભૂમિભાગે. પણ્ણત્તે’ બહુસમરમણિયઃ ભૂમિભાગઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, ‘સે જહા-
નામપ આલિંગપુલ્લેરેહ વા જાવ વાણમંતરા દેવા ય જાવ વિહરંતિ’ સ યથાના-
મકઃ આલિંગપુલ્લકર इति वा यावद् व्यन्तरा देवाश्च यावद् विहरन्ति । अत्र

एक पद्मवरवेदिका से और एक वनवण्ड से सब ओर से घिरा हुआ है पद्मवर वेदिका और
वनवण्ड का वर्णन लम्बाई चौड़ाई को लेकर जैसा जम्बूद्वीप की जगती की पद्मवरवेदिका
का और उसके वनवण्ड का पहिले किया जा चुका है वैसा ही है । इसी बात को
सूचित करने के लिए सूत्रकारने- “प्रमाणं वर्णको द्वयोरपीति” ऐसा सूत्र पाठ कहा है ।

“सिद्धांतयणकूहस्स णं डप्पि बहुसमसमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते” इस सिद्धांतनकूट के
ऊपर बहुसमरमणीय भूमिभाग कहागया है “से जहाणामप आलिंगपुल्लेरेह वा जाव
वाणमंतरा देवा य जाव विहरंति” वह बहुसमरमणीय भूमि ऐसी बहुसम है कि जैसा बहुसम
भूदण्ड का मुखपुट होता है यावत् यहा अनेक व्यन्तर देव आदि अपने समय को आनन्द से
व्यतीत करते रहते हैं यहां यावत्पद द्वय से राजप्रश्नीयसूत्र के १५वे सूत्र से लेकर १९वे
सूत्रतक जो पाठ कहा गया है वह गृहीत हुआ है. इस समस्त पाठ का अर्थ हमने उसकी
सुचोचिनी टीका में लिखा है अतः वहीं से इस विषय को समझ लेना चाहिये ।

ત્યાંથી આ વિષે વાચી લેવું જોઈએ આ સિદ્ધાંતનકૂટ એક પદ્મવરવેદિકાથી અને એક વન-
વણ્ડની ચારે બાજુએથી ઘેરાયેલો છે પદ્મવરવેદિકા અને વનવણ્ડનું વર્ણન લખાઈ તેમજ
એકબીજાની અપેક્ષાએ જેમ જ જમ્બૂદ્વીપની જગતિની પદ્મવર વેદિકા અને તેના વનવણ્ડનું પહેલા
કરનામાં આવ્યું છે તેવું જ છે આ વાતને સૂચિત કરવા માટે સૂત્રકારે ‘પમાણં વર્ણકો
દ્વયોરપીતિ’ આ બાતને, સૂત્ર પાઠ કહ્યો છે

સિદ્ધાંતયણકૂહસ્સ ણં ડપ્પિ બહુસમરમણિજ્જે ભૂમિભાગે પણ્ણત્તે” તે સિદ્ધાંતન
કૂટની ઉપર બહુસમ રમણીય ભૂમિભાગ છે “સે જહા નામપ આલિંગપુલ્લેરેહ વા
જાવ વાણમંતરા દેવા ય જાવ વિહરંતિ” તે બહુસમરમણીય ભૂમિભાગ મુકળ સુખવત્
બહુસમ છે યાવત્ અહીં અનેક વ્યતર દેવ આદિ પોતાના સમયને આતંક પૂર્વક પસાર
કરે છે. અહીં યાવત્પદ્મવરથી રાજપ્રશ્નીયસૂત્રના ૧૫મા સૂત્રથી ૧૯ મા સૂત્ર સુધી જે
પાઠ કહેવામાં આવેલ છે તેનું અડધું સમજવું આ સમસ્ત પાઠને અર્થ અંગેએ ત્યાં સુધી
ધિની ટીકામાં લખ્યો છે એથી આ સંબંધમાં ત્યાંથી જ બાણી લેવું જોઈએ.

યવવત્પદદ્વયેન રાજપ્રશ્રીયસૂત્રસ્ય પશ્ચદશ સૂત્રાદારમ્બ્ય એકોનવિંશતિતમસૂત્રતઃ પાઠઃ । ઇતઃ, તદર્થશ્ચ તત્રૈવ મત્કૃતસુવોધિનીટીકાતોઽવસેય ઇતિ ।

‘તસ્સ ણં બહુસમરમણિજ્જસ્સ ભૂમિભાગસ્સ વહુમઙ્ગદેસભાગે’ તસ્ય ચલ્લુ વહુ-
રમણીયસ્ય ભૂમિભાગસ્ય વહુમધ્યદેસભાગે, અત્યન્તમન્યદેસભાગે ‘एत्थ णं महं एगे
सिद्धाययणे पण्णत्ते’ અત્ર ચલ્લુ એકં મહત્ વિશાલ સિદ્ધાયતનં પ્રજ્ઞપ્તમ્, તસ્ય પ્રમાણમાહ
‘કોસ આયામેણં’ ક્રોશમ્ એક ક્રોશમ્ આયામેન દૈર્ઘ્યેણ ‘અદ્ધકોસં’ અદ્ધક્રોશમ્ ક્રોશ-
સ્યાર્દમ્ ‘વેક્કમેણં’ વિક્કમેણ વિસ્તારેણ, ‘દેસુણં કોસં ઉદ્દં ઉચ્ચત્તેણ’ દેશોનં કિઞ્ચિ-
દેશન્યૂન ક્રોશમ્ ઝર્ધમ્ ઉચ્ચત્વેન પ્રજ્ઞપ્તમ્ । इत्थं प्रमाणमुक्त्वा सम्प्रति तद्वर्णनमाह—
‘अणेगखमसयसनिविट्ठे’ અનેક સ્તમ્ભશતસન્નિવિષ્ટમ્ અનેકાનિ વહુનિ સ્તમ્ભશતાનિ
સન્નિવિષ્ટાનિ સંલગ્નાનિ યત્ર તત્ અનેકશતસ્તમ્ભયુક્તમિત્યર્થઃ, તથા ‘खंभुग्गयसुकयवइर
वेइया तोरण वररइयसालमजियाग सुसिलिह्विसिह्वलह्वंसठिय पसत्थ वेरुलियविमल
खंमे’ સ્તમ્ભોદ્રતસુકૃતવજ્રવેદિકાતોરણવરરતિદશાલભઞ્જિકાકસુખ્લિષ્ટવિશિષ્ટલ્હસસ્થિત
પ્રશસ્ત વૈદ્યૃયવિમલસ્તમ્ભમ્ તત્ર સ્તમ્ભેષુ ઉદ્ગતાઃ નિવિષ્ટાઃ સુકૃતાઃ નિપુણશિલ્પિરચિતા

“તસ્સ ણ બહુસમરમણિજ્જસ્સ ભૂમિભાગસ્સ વહુમઙ્ગદેસભાગે एत्थणं महं एगे सिद्धाय-
यणे पण्णत्ते” उस बहुसमरमणीय भूमिभाग के ठीक बीच में एक विशाल सिद्धायतन कहा
गया है यह “कोस आयामेण, अद्धकोस विक्कमेणं, देसुण कोस उददं उच्चत्तेण” सिद्धायतन
लम्बाई में एक कोश का है और विस्तार में आधे कोश का है. तथा कुछ कम एक कोश
का उंचा है ‘अणेगखमसयसनिविट्ठे’ यह अनेक सौ खंभो के ऊपर रहा हुआ है “खंभुग्गय
सुकयववेइया तोरणवररइयसालमजियाग सुसिलिह्व विमिह्वलह्वसठियपसत्थवेरुलियविमलखंमे’
प्रत्येक स्तम्भ के ऊपर निपुण शिल्पिजनो द्वारा रचित जैसी वज्रवेदिकाएँ और तोरण हैं तथा
श्रेष्ठ एवं नेत्रमन को हर्षित करने वाली शालभंजिकाएँ बनी हुई हैं । इस सिद्धायतन के जो
वैदूर्यनिर्मित स्तम्भ हैं वे सुल्लिष्ट- अच्छी तरह से जमे हुए हैं विलक्षण हैं-ये किस प्रकार से

“तस्सणं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स वहुमङ्गदेस भागे एत्थणं महं एगे सिद्धाययणे
पण्णत्ते” ते बहुसमरमणीय भूमिभागांना अराभर मध्यमां એક વિશાળ સિદ્ધાયતન આવેલ
છે “કોસ આયામેણ અદ્ધકોસ વિક્કમેણં દેસુણ કોસં ઉદ્દં ઉચ્ચત્તેણ” સિદ્ધાયતન લંબાઈ
મા એક ગાઉ જેટલું છે અને વિસ્તાર મા અર્ધ ગાઉ જેટલું છે, ઠીકે ઠીક એક ગાઉ
જેટલું ઉચું છે. “अणेगखमसयसनिविट्ठे” આ અનેકસો થાભલાઓની ઉપર સ્થિત
છે. “खंभुग्गय सुकयववेइया तोरणवररइयसालमजियाग सुसिलिह्व विसिह्वलह्व संठिय पसत्थ
वेरुलियवि खंमे” इरेक स्तंभानी उपर निपुण शिल्पकारो वडे निर्मित पञ्च वेदिकाओ. અને
તોરણો છે તથા શ્રેષ્ઠ અને નેત્ર મનને હર્ષિત કરનારી શાલ ભંજિકાઓ અનેલી છે. આ
સિદ્ધાયતનના જે વૈદૂર્ય રત્નનિર્મિત સ્તંભો છે તે સુલ્લિષ્ટ સારી રીતે પ્રલિષ્ટ થયેલા છે.
વિલક્ષણ છે શિલ્પકારોએ એમણે નિર્માણ કેવી રીતે કર્યું હશે ? આ પ્રમાણે બેનારાઓ,

શ્વ વજ્રવેદિકાસ્તોરણાનિ વરરતિદશાલમઙ્ગિકાઃ વરાઃ શ્રેષ્ઠાઃ રતિદાઃ નેત્રમનઃ
સુખદાઃ શાલમઙ્ગિકાશ્ચ યત્ર તત્ સ્તમ્ભોદ્રતસુકૃતવજ્રવેદિકા તોરણવરરતિદશાલ-
મઙ્ગિકાકં, તથા સુશ્લિષ્ઠાઃ સુષ્ટુ મિલિતાઃ વિશિષ્ઠાઃ વિલક્ષણાઃ લઘુસંસ્થિતાઃ સુન્દર-
સંસ્થાનયુક્તાઃ, અતएव પ્રશસ્તાઃ વૈદ્યૃયવિમલસ્તમ્ભાઃ વૈદ્યૃયરતનમયનિર્મલસ્તમ્ભા યત્ર તત્
સુશ્લિષ્ઠવિશિષ્ઠલઘુસંસ્થિતપ્રશસ્તવૈદ્યૃયવિમલસ્તમ્ભમ્, તતઃ પદદ્વયસ્ય કર્મધારય इति ।

તથા 'નાનામણિરયણસ્ત્રિચિયડ્ઝજ્જલવહુસમસુવિમત્તભૂમિભાગે' નાનામણિ કનકરત્ન-
સ્ત્રિચિતોડ્ઝજ્જલવહુસમસુવિમત્તભૂમિભાગં-નાનામણિમિઃ અનેકપકારકમણિમિઃ કનકૈઃ
સ્વર્ણૈઃ રત્નૈશ્ચ સ્ત્રિચિતઃ યુક્તઃ ડ્ઝજ્જલઃ વિશુદ્ધ વહુસમઃ અત્યન્તસમઃ સુવિમત્તઃ
કૃતસમ્યગ્વિભાગો ભૂમિભાગો યત્ર તાદૃશમ્, તથા 'ઈહામિગડમમતુરગણરમગર-
વિહગવાલગકિન્નરરુરુસરમચમરકુંજરવળલય જાવ પડમલયમત્તિચિત્તે' ઇહામૃગવૃષમતુરગ-
નરમકરવિહગવ્યાલકકિન્નરરુરુસરમચમરકુઞ્જર વનલતા યાવત્ પદ્મલતા મત્તિચિત્રમ્-
તત્ર-ઈહામૃગો વૃકઃ મો વલીવર્દઃ, તુરગઃ અશ્વઃ, નરઃ મનુષ્યઃ, મકરઃ ગ્રાહઃ,
વિહગઃ પક્ષી, વ્યાલકઃ વ્યાલઃ-સર્પઃ સ एव વ્યાલકઃ, કિન્નરઃ વ્યન્તરદેવવિશેષઃ,
રુરુ-મૃગઃ, સરમઃ અષ્ટાપદો વન્યજન્તુવિશેષઃ ચમરઃ વન્યા ગૌઃ, કુઞ્જરઃ-હસ્તી વનલતા-
વનોત્પન્નલતા યાવત્-યાવત્પદેન નાગલતા અશોકલતા ચમ્પકલતા ચૂતલતા વાસન્તિ-
કાલતાઽતિ કલતા કુન્દલતાનાં સેગ્રહઃ, તથા-પદ્મલતા કમલિની ચૈવાં મત્ત્યા-

બનાયે ગયે હોગે હસ તરહ કે આશ્ચર્ય દેને વાલે હૈં લઘુ સંસ્થિત-સુન્દર આકાર વાલે હૈં एव
પ્રશસ્ત હૈં ઔર વિમલ-નિર્મલ હૈં । "નાનામણિરયણસ્ત્રિચિય ડ્ઝજ્જલ વહુસમ સુવિમત્તભૂમિભાગે"
હસ સિદ્ધાંતન કા જો ભૂમિભાગ હૈ વહ અનેક મણિયો સે સ્વર્ણો સે ઔર રત્નો સે સ્ત્રિચિત હૈ
અતएव વહ ડ્ઝજ્જલ હૈ ઔર અત્યન્તસમ હૈ. તથા-"ઈહામિગ ડસમતુરગણરમગરવિહગવાલગ
કિન્નરરુરુસરમચમરકુંજરવળલય જાવ પડમલયમત્તિચિત્તે" યહા ઈહામૃગ-વૃક-વૃષમ-વૈલ, તુરગ-
અશ્વ, નર, મનુષ્ય, મકર-મગર, વિહગ-પક્ષી, વ્યાલ-સર્પ, કિન્નર-વ્યન્તરદેવવિશેષ, રુરુ-મૃગ,
સરમ-અષ્ટાપદ, ચમર-ચમરીગાય કુઞ્જર-હાથી, વનલતા-વનોત્પન્નલતા, તથા યાવત્પદ-ગૃહીત-નાગ
લતા, અશોકલતા, ચમ્પકલતા, ચૂતલતા, વાસન્તિકીલતા, અતિમુક્તકલતા, કુન્દલતા તથા પદ્મ-

એઈને આશ્ચર્ય થામે તેવા એ સ્ત લેએ લઘુ-સંસ્થિત સુન્દર આકાર વાળા છે, તેમજ
પ્રશસ્ત છે અને વિમલ નિર્મલ છે. "નાના મણિ સ્ત્રિચિય ડ્ઝજ્જલ વહુસુવિમત્ત ભૂમિ ભાગે"
આ સિદ્ધાંતનના એ ભૂમિભાગ છે તે અનેક મણિયોથી સ્વર્ણોથી અને રત્નોથી અલિપ્ત છે એથી
તે ઉત્કૃષ્ટ છે અને અત્યંત સમ છે. તેમજ 'ઈહામિગ ડસમતુરગણરમગરવિહગવાલગ કિન્ન-
રરુરુ સરમ ચમરકુ જરવળલયજાવ પડમલયમત્તિચિત્તે' અહીં ઈહામૃગ વૃક, વૃષભ, બળદ
તુરગ અશ્વ, નર મનુષ્ય, મકર મગર, વિહગ-પક્ષી, વ્યાલક-સર્પ, કિન્નર વ્યન્તરદેવવિશેષ,
મૃગ, સરભ અષ્ટાપદ, ચમર ચમરી ગાય કુંજર હાથી વનલતા વનોત્પન્ન લતા તથા યાવત્પદ
ગૃહીત નાગલતા અશોકલતા ચમ્પકલતા ચૂતલતા, વાસન્તિકી લતા અતિમુક્તકલતા કુંદલતા
૧૫

રચનયા ચિત્રમ્ અદ્ભુતમ્ તથા 'કંચનમણિરયણથૂમિયાપ' કાઠવનમણિરત્નં સ્તૂપિકાકં-
કાઠચનં સુવર્ણમણિઃ-મરકતાદિઃ-રત્નં વૈદ્યર્યાદિ તન્મયી સ્તૂપકા યસ્ય તત્તથા પુનઃ કીદ-
શમ્: 'જાણાવિહ પચ૦' નાનાવિધપઠચર્ણમણિભિઃ- અનેકજાતીય કૃષ્ણાદિવર્ણમ-
ણિભિઃ ઉપશોભિતમ્-અલંકૃતમ્ । તત્ર મળોનાં વર્ણગન્ધરસસ્પર્શનાં 'વર્ણઓ' વર્ણકઃ
વર્ણનપરઃ પદસમૂહઃ પ્રાગ્વન્ । તથા 'ઘંટાપઢાગપરિમંદિયગસિહરે' ઘંટાપતા-
કાપરિમંદિતાગ્નશિખરં ઘંટાભિઃ પતાકામિશ્વ પરિમંદિતમ્ સુશોભિતમ્-અગ્નશિખરમ્
ઉપરિતનભાગો યસ્ય તત્ તથા 'ધવલે' ધવલ-શુદ્ધવર્ણમ્ 'મરીઠકવયં' મરીચિકંચ-
કિરણસમૂહપરિક્ષેપં 'વિણિમ્મુયંતે' ત્રિનિર્બુઢવત્-ત્રિનારયન્ તથા 'લાઝલ્હોદ્યમદિય'
લાયિતોલ્લાયિતમહિતં લાયિતં-ગોમયાદિના ભૂમ્યુપલેપનમ્, ઉલ્લાયિતં સેટિકાદિભિઃ-
(શ્વેતમૃત્તિકાદિભિઃ) કુલ્યસમૂહસ્ય સંમૃદ્ધીકરણમ્ આખ્યાં મહિતં પરિષ્કૃતમિચ, તથા
'જાવ જ્ઞયા' યાવદ્ ધ્વજાઃ ઇતિ । લાયિતોલ્લાયિતમહિતમિત્યનન્તરં 'ધ્વજાઃ' ઇત્યત

હતા કમઝિનો હન સબકે ચિત્ર વને ૈ હમસે વહ મિદ્ધાયતન અદ્ભુત જૈસા પ્રતીત હોતા ૈ
'કંચનમણિ રયણથૂમિયાપ, જાણાવિહપંચ૦વર્ણઓ, ઘંટાપઢાગ પરિમંદિયગસિહરે ધવલે મરીઠકવ-
યં વિણિમ્મુયંતે' 'કચન-પુવર્ણ, મરકત આદિ મણિ ઓર વૈદ્ય આદિ રત્ન હનસે ડમકી શિખર
બની હુઈ ૈ અનેક પ્રકાર કે કૃષ્ણાદિ વર્ણોપેત મણિયો સે વહ સિદ્ધાયતન સુશોભિત ૈ યહાં
મણિયો કે વર્ણ, ગન્ધ, રસ ઓર સ્પર્શો કા વર્ણન પરક પદ સમૂહ જૈસા પહેલે કહા ગયા ૈ-વૈસા
હી વહ રહા પર મી કહ લેના ચાહિયે હસકા અગ્નશિખર-ઉપરિતનભાગ ઘંટા ઓર પતાકાઓ
સે પરિમંદિત ૈ યહ સિદ્ધાયતન ધવલ ૈ. તથા કિરણો કે સમુદાય કી- પ્રમાણાલ કો પ્રતિ
સમય છોડતા રહતા ૈ "લાઝલ્હોદ્ય૦" હસકી મિત્તિયાં સેટિકાદિ સે-ચૂને કી કલી આદિ, સે-
પુની હુઈ ૈ ઓર જમોન હમકો ગોમયાદિ સે લિપ રહતી ૈ- હસસે યહ વઢા-હી સુહાવના
લગનાઈ. "જાવ જ્ઞયા" યાવત્ ધ્વજાઈ હસકે કાર ફહરાતી રહતો ૈ યહાં યાવત્પદ સે, જિન

તેમજ પદ્ધતિ કમલિની આ સર્વના ચિત્રો બનેલા છે. એથી આ સિદ્ધાયતન અદ્ભુત
જેવું લાગે છે 'કંચનમણિરયણથૂમિયાપ જાણાવિહપચ૦ વર્ણઓ, ઘંટા પઢાગપરિમંદિય-
ગસિહરે ધવલે મરીઠકવયં વિણિમ્મુયંતે' કચન પુવર્ણ મરકત વગેરે મણિ આદિ 'વૈદ્ય'
આદિ રત્નોથી તેનું શિખર બનેલું છે અનેક પ્રકારના કૃષ્ણાદિ વર્ણોપેત મણિઓથી-તે
સિદ્ધાયતન સુશોભિત છે અહીં મણિઓના વર્ણ, ગન્ધ, રસ અને સ્પર્શના વર્ણન
સબધી પદ સમૂહ જેમ પહેલા કહેલામા આવેલ છે તેમ સમજી લેવો જોઈએ આનું
અગ્નશિખર ઉપરિતન ભાગ ઘંટા અને પતાકાઓથી પરિમંદિત છે આ સિદ્ધાયતન ધવલ
છે તે આજ કિરણ સમૂહોને-પ્રમાણલને પ્રતિસમય પ્રસૂત કરતું રહે છે. "લાઝલ્હોદ્ય૦"
આની દિવાલો સેટિકાદિથી-ચૂના વગેરેથી ઘોળેલી રહે છે અને એની જમીન ગોમયાદિથી
લિપ્ત રહે છે એથી આ જૂમર રણિયામણુ લાગે છે 'જાવ જ્ઞયા' યાવત્ ધ્વજાઓ એની ઉપર
લહેરાતી રહે છે-અહીં યાવત્પદથી જે પદોસંગૃહીત થયેલ છે 'તે પદોનું' વિવરણ યશિકા

पूर्व यानि पदानि तानि वक्ष्यमाण यमिकाराजधानी वर्णनप्रसङ्गे वक्ष्यन्तेऽतस्तानि न विव्रियन्ते इति बोध्यम् ।

‘तस्स णं सिद्धाययणस्स तिदिस्सि’ तस्य खलु सिद्धायतनस्य त्रिदिशि-तिसृणां दिशां समाहारं त्रिदिक् तस्मिन् तिसृषु दिक्षु ‘तओ दारा पणत्ता’ त्रीणि-त्रिसंख्यकानि द्वाराणि प्रज्ञप्तानि । ‘ते णं दारा पञ्च धणुसयाई’ तानि खलु द्वाराणि पञ्च धनुस्सतानि पञ्चशत-धनुः प्रमाणानि ५०० ‘उड्डं उच्चत्तेणं अड्ढाड्ज्जाई’ ऊर्ध्वं मुच्चत्वेन अर्धतृतीयानि ‘धणुसयाई, धनुःशतानि-सार्धद्विशत-धनुः २५० प्रमाणानि ‘विकखंमेणं’ विष्कम्भेण-विस्तारेण, ‘तावइयं चेव पवेसेणं’ तावदेव-तत्प्रमाणमेव प्रवेशेन प्रज्ञप्तानि । तानि कीदृशानि ? इत्याह-‘सेयवरकणगथूमियाण’ श्वेतानि-शुक्लवर्णानि वरकनक स्तूपिकाकानि-उत्तमस्वर्णमयस्तूपिका युक्तानि, अत्र ‘दार वण्णओ’ द्वारवर्णकः- द्वारवर्णनपरः पदसमूहो वक्तव्यः स स्थितः ? इत्याह ‘जाव वणमाला’ यावद् वनमाला इति वनमाला वर्णनपर्यन्तो वर्णको-बोध्य इत्यर्थः । अयं वर्णकोऽस्यैवाष्टमसूत्रे विलोकनीय इति ।

अथ सिद्धायतनस्य भूमिभागं वर्णयितुमाह-‘तस्स णं’ तस्य पूर्वोक्तस्य खलु

पदों का समूह हुआ है उन पदों का विवरण यमिका राजधानी के वर्णन प्रसङ्ग में किया जायगा इसलिये यहाँ उनका विवरण नहीं किया है.

‘तस्स णं सिद्धाययणस्स तिदिस्सि तओ दारा पणत्ता’ उस सिद्धायतन के तीन द्वारों दिशाओं में कहे गये हैं ‘तेण दारा पंचधणुसयाई उड्डं उच्चत्तेण अड्ढाड्ज्जाई धणुसयाई विकखंमेणं तावइयं चेव पवेसेण सेयवरकणगथूमियाण, दार वण्णओ जाव वणमाला’ ये द्वार ५०० पांच सौ धनुष के ऊँचे हैं और २५० अड्डाई सौ धनुष के विस्तार वाले-चौड़े हैं । और इतना ही इनका प्रवेश है । ये द्वार सफेद हैं और इनकी शिखरें श्रेष्ठ सुवर्ण की बनी हुई हैं । यहाँ द्वारों का वर्णन करने वाला पद समूह वन माला वर्णन तक का जो इसी के आठवे सूत्र में कहा जा चुका है यहाँ पर भी कह लेना चाहिये

‘तस्स णं सिद्धाययणस्स अतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पणत्ते’ उस सिद्धायतन का

राजधानीना वषुनं प्रथमं भगं करवामा आवसे. ओट्ठा माटे न अही आनु वषुनं करवामां आभुं नथी.

‘तस्स णं सिद्धाययणस्स तिदिस्सि तओ दारा पणत्ता’ ते सिद्धायतनना त्रयु द्वारे त्रयु दिशाओमां आवेसो छे ‘तेण दारा पंचधणुसयाई उड्डं उच्चत्तेण अड्ढाड्ज्जाई धणुसयाई विकखंमेणं तावइयं चेव पवेसेण सेयवर कणगथूमियाण दारवण्णओ जाव वणमाला’ ओ द्वारे ५०० पांचसौ धनुष ओट्ठां उंचा छे २५० अड्डाईसौ धनुष ओट्ठा विस्तार वाणा छे ओठा छे तेमन ओट्ठा ओमनो प्रवेश छे ओ द्वारे श्वेत छे अने ओमना शिखरे श्रेष्ठ सुवर्ण निर्मित छे आ अन्थना आठमां सूत्रमां वनमाला सुधी ओ द्वार विषयक वषुनं करनार पद समूह छे ते अही पक्ष जणुवो ओपुओ

‘तस्स णं सिद्धाययणस्स अतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पणत्ते’ ते सिद्धायतन नो

રચનયા ચિત્રમ્ અદ્ભુતમ્ તથા 'કંચનમણિરયણથૂમિયા' કાઠચનમણિરત્નં સ્તૂપિકાર્ક-
કાઠચનં સુવર્ણમણિઃ-મરકતાદિઃ-રત્નં વૈદ્યર્યાદિ તન્મયી સ્તૂપકા યસ્ય તત્તથા પુનઃ કીટ-
શમ્: 'ણાણાવિહ પચ્ચ' નાનાવિશ્રવઠ્ઠચર્ણમણિમિઃ-અનેકજાતીય કૃષ્ણાદિવર્ણમ-
ણિમિઃ ઉપશોભિતમ્-અલંકૃતમ્ । તત્ર મણોનાં વર્ણગન્ધરસસ્પર્શનાં 'વર્ણઓ' વર્ણકઃ
વર્ણનપરઃ પદસમૂહઃ પ્રાગ્વન્ । તથા 'ઘંટાપટ્ટાગપરિમંડિયગ્ગસિહરે' ઘણ્ટાપટ્ટા-
કાપરિમંડિતાગ્ગશિખરં ઘણ્ટામિઃ પટ્ટાકામિશ્ચ પરિમંડિતમ્ સુશોભિતમ્-અગ્રશિખરમ્
ઉપરિતનભાગો યસ્ય તત્ત તથા 'ધવલે' ધવલ-શુક્રવર્ણમ્ 'મરીંકવચ્ચં' મરીંચિકવચ્ચ
કિરણમમુહપરિક્ષેપં 'વિણિમ્મુયંતે' ત્રિનિર્મુઢવન્-નિઃસારયન્ તથા 'લાઝલ્લોદ્દયમદ્દિ'
લાયિતોલ્લાયિતમદ્દિતં લાયિતં-ગોમયાદિના ભૂમ્યુપત્થેપનમ્, ઉલ્લાયિતં સેટિકાદિમિઃ-
(શ્વેતમૃત્તિકાદિમિઃ) કુલ્યસમૂહસ્ય સંમૃષ્ટીકરણમ્ આખ્યાં મદ્દિતં પરિપ્કૃતમિવ, તથા
'જાવ ક્ષયા' યાવદ્ ધ્વજાઃ ઇતિ । લાયિતોલ્લાયિતમદ્દિતમિત્યનન્તર 'ધ્વજાઃ' ઇત્યત્

લતા કર્મઠિનો દન સબકે ચિત્ર બને છે । ઇમસે વહ ભિદ્ધાયતન અદ્ભુત જૈસા પ્રતીત હોતા હૈ
'કંચનમણિ રયણથૂમિયા', ણાણાવિહપંચ-વર્ણઓ, ઘંટાપટ્ટાગ પરિમંડિયગ્ગસિહરે ધવલે મરીંકવ-
ચ્ચં વિણિમ્મુયંતે' 'કચન-સુવર્ણ, મરકત આદિ મણિ ઓર વૈદ્યર્યા આદિ રત્ન ઇનસે ડસકી શિખર
બની હુઈ હૈ અનેક પ્રકાર કે કૃષ્ણાદિ વર્ણોપેત મણિયો સે વહ સિદ્ધાયતન સુશોભિત હૈ યહાં
મણિયો કે વર્ણ, ગન્ધ, રસ ઓર સ્પર્શો કા વર્ણન પરક પદ સમૂહ જૈસા પહેલે કહા ગયા હૈ-વૈસા
હી વહ વહા પર મી કહ લેના ચાહિયે । ઇસકા અગ્રશિખર-ઉપરિતનભાગ ઘણ્ટા ઓર પટ્ટાકાઓ
સે પરિમંડિત હૈ યહ સિદ્ધાયતન ધવલ હૈ. તથા કિરણો કે સમુદાય કી- પ્રમાજાલ કો પ્રતિ
સમય છોડતા રહતા હૈ "લાઝલ્લોદ્દય" ઇસકી મિત્તિયાં સેટિકાદિ સે-ચૂને કી કલ્લી આદિ સે-
પુની હુઈ હૈ ઓર જમોન ઇમકો ગોમયાદિ સે લિપ રહતી હૈ- ઇસસે યહ વહા હી સુહાવના
લગતા હૈ. "જાવ ક્ષયા" યાવત્ ધ્વજાઈ ઇસકે ડાર ફહરાતી રહતી હૈ યહાં યાવત્પદ સે જિન

તેમજ પદ્મલતા કર્મઠિની આ સર્વના ચિત્રો બનેલા છે. એથી આ સિદ્ધાયતન-અદ્ભુત
જેવું લાગે છે 'કંચનમણિરયણથૂમિયા' ણાણાવિહપંચ-વર્ણઓ, ઘંટા, પટ્ટાગપરિમંડિય-
ગ્ગસિહરે ધવલે મરીંકવચ્ચં વિણિમ્મુયંતે' કચન સુવર્ણ મરકત વગેરે મણિ આદિ 'વૈદ્યર્યા'
આદિ રત્નોથી તેવું શિખર બનેલું છે અનેક પ્રકારના કૃષ્ણાદિ વર્ણોપેત મણિઓથી તે
સિદ્ધાયતન સુશોભિત છે અહીં મણિઓના વર્ણ, ગન્ધ, રસ અને સ્પર્શના વર્ણન
સબધી પદ સમૂહ જેમ પહેલા કહેલામાં આવેલ છે તેમ સમજ લેવો જોઈએ. આનું
અગ્રશિખર ઉપરિતન ભાગ ઘણ્ટા અને પટ્ટાકાઓથી પરિમંડિત છે આ સિદ્ધાયતન ધવલ
છે તે આજ કિરણ સમૂહોને-પ્રમાજાલને પ્રતિસમય પ્રસૂત કરતું રહે છે. "લાઝલ્લોદ્દય"
આની દિવાલો સેટિકાદિથી-ચૂના વગેરેથી ઘોળેલી રહે છે અને એની જમીન ગોમયાદિથી
લિપ્ત રહે છે એથી આ ભૂમિ રણિયામણું લાગે છે 'જાવ ક્ષયા' યાવત્ ધ્વજાઈ એની ઉપર
લહેરાતી રહે છે અહીં યાવત્પદથી જે પદોસંગૃહીત થયેલ છે તે પદોનું વિવરણ યોગિક

પૂર્વ યાનિ, પદાનિ તાનિ વક્ષ્યમાણ યમિકારાજધાની વર્ણનપ્રસન્ને વક્ષ્યન્તેઽતસ્તાનિ ન વિવ્રિયન્તે, ઇતિ બોધ્યમ્ ।

‘તસ્સ ણં સિદ્ધાયયણસ્સ તિદિસિં’ તસ્ય ચલ્લ સિદ્ધાયતનસ્ય ત્રિદિશિ-તિસ્ટાણાં દિશાં સમાહાર સ્થિદિક્ તસ્મિન્ તિસ્ટુ દિશુ ‘તઓ દારા પણ્ણત્તા’ ત્રીણિ-ત્રિસંખ્યકાનિ દ્વારાણિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ । ‘તે ણં દારા પઠ્ઠ ધણુસયાઈ’ તાનિ ચલ્લ દ્વારાણિ પઠ્ઠ ધણુશ્શતાનિ પચ્ચશત ધણુઃ પ્રમાણાનિ ૫૦૦ ‘ઉદ્દહં ઉચ્ચત્તેણ અદ્દહાઙ્ગાઈ’ ઋર્ધ્વ યુચ્ચત્ત્વેન અર્ધતૃતી-યાનિ ‘ધણુસયાઈ, ધણુઃશતાનિ-સાર્ધદ્વિશત-ધણુઃ ૨૫૦ પ્રમાણાનિ ‘વિક્ખંભેણ’ વિક્ખમ્ભેણ-વિસ્તારેણ, ‘તાવદ્દયં ચેવ પવેસેણ’ તાવદેવ-તત્પ્રમાણમેવ પ્રવેશેણ પ્રજ્ઞપ્તાનિ । તાનિ કીદ-ધાનિ ? ઇત્યાહ-‘સેયવરકણગથૂમિયાઈ’ શ્વેતાનિ-શુક્લવર્ણાનિ વરકનક સ્તુપિકાકાનિ-ઉત્તમસ્વર્ણમયસ્તુપિકા યુક્તાનિ, અત્ર ‘દાર વણ્ણઓ’ દ્વારવર્ણકઃ- દ્વારવર્ણનપરઃ પદસમૂહો વક્તવ્યઃ સ મ્નિયન્તઃ ? ઇત્યાહ ‘જાવ વણમાલા’ યાવદ્ વનમાલા ઇતિ વનમાલા વર્ણનપર્યન્તો વર્ણકો-બોધ્ય ઇત્યર્થઃ । અયં વર્ણકોઽસ્યૈવાષ્ટમસૂત્રે વિલોકનીય ઇતિ ।

અથ સિદ્ધાયતનસ્ય ભૂમિભાગં વર્ણયિતુમાહ-‘તસ્સ ણં’ તસ્ય પૂર્વોક્તસ્ય ચલ્લ

પદોં કા સમૂહ હુઆ હૈ ડન પદો કા વિવરણ યમિકા રાજધાની કે વર્ણન પ્રસન્ન મેં ક્રિયા જાયગા-હસલિયે યહાં ડનકા વિવરણ નહીં ક્રિયા હૈ.

‘તસ્સ ણ સિદ્ધાયયણસ્સ તિદિસિં તઓ દારા પણ્ણત્તા’ ડસ સિદ્ધાયતન કે ત્રીન દ્વાર ત્રીન દિશાઓ મેં કહે ગયે હૈ ‘તેણ દારા પંચધણુસયાઈ ઉદ્દહ ઉચ્ચત્તેણ અદ્દહાઙ્ગાઈ ધણુ-સયાઈ વિક્ખંભેણ તાવદ્દય ચેવ પવેસેણ સેયવરકણગથૂમિયાઈ, દાર વણ્ણઓ જાવ વણમાલા’ યે દ્વાર ૫૦૦ પાચ સૌ ધણુષ કે ડેંચે હૈ ઓર ૨૫૦ અઢાઈ સૌ ધણુષ કે વિસ્તાર વાલે-ચૌઢે હૈ । ઓર ઇતના હી ડનકા પ્રવેશ હૈ । યે દ્વાર સપેદ હૈ ઓર ડનકી શિલરેં શ્રેષ્ઠ સુવર્ણ કી બની હુઈ હૈ । યહાં દ્વારો કા વર્ણન કરને વાલા પદ સમૂહ વન માલા વર્ણન તક કા જો ઇસી કે ઓઠવે સૂત્ર મેં કહા જા જુકા હૈ યહા પર મી કહ લેના ચાહિયે

‘તસ્સ ણ સિદ્ધાયયણસ્સ અંતો વહુસમરમણિજ્ઞે ભૂમિભાગે પણ્ણત્તે’ ડસ સિદ્ધાયતન કા રાજધાનીના વણુન પ્રત્ત ગમાં કરવામા આવશે. ઓટલા માટે જ અહી આનુ વણુન કરવામાં આનુ નથી

‘તસ્સ ણં સિદ્ધાયયણસ્સ તિદિસિં તઓ દારા પણ્ણત્તા’ તે સિદ્ધાયતનના ત્રણ દ્વારો ત્રણ દિશાઓમાં આવેલા છે ‘તેણ દારા પંચધણુસયાઈ ઉદ્દહ ઉચ્ચત્તેણ અદ્દહાઙ્ગાઈ ધણુસયાઈ વિક્ખંભેણ તાવદ્દય ચેવ પવેસેણ સેયવર કણગથૂમિયાઈ દારવણ્ણઓ જાવ વણમાલા’ એ દ્વારો ૫૦૦ પાચસો ધણુષ જેટલાં ઉંચા છે ૨૫૦ અઢીસો ધણુષ જેટલા વિસ્તાર વાળા છે ચોડા છે તેમજ ઓટલા એમનો પ્રવેશ છે. એ દ્વારો શ્વેત છે અને એમનાં શિખરો શ્રેષ્ઠ સુવર્ણ નિર્મિત છે. આ અન્યના આઠમાં સૂત્રમાં વનમાલા સુધી જે દ્વાર વિષયક વણુન કરનાર પદ સમૂહ છે તે અહીં પણ બાજુવો બેઠિયો

‘તસ્સ ણં સિદ્ધાયયણસ્સ અંતો વહુસમરમણિજ્ઞે ભૂમિભાગે પણ્ણત્તે’ તે સિદ્ધાયતન નો

‘સિદ્ધાયયણસ્સ’ સિદ્ધાયતનસ્ય ‘અન્તો’ અન્તઃ-મધ્યે ‘વહુસમરમણિજ્જે ભૂમિભાગે પળ્લણ્ણે, વહુસમરમણીયઃ ભૂમિભાગઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, કથિતઃ ‘સે જહાણામહ આલિંગપુક્કરેહ વા જાવ’ સ યથાનામક આલિંગપુક્કર ઇતિ વા યાવત્ । યાવત્પદેન-‘આલિંગ પુક્કર ઇતિ વા’ ઇત્યારમ્ય ‘તસ્ય ચલુ સિદ્ધાયતનસ્ય’ ઇત્યતઃ પૂર્વ ‘નાનાવિધ-પઠ્ઠવર્ણેર્મણિભિરુપશોભિતઃ, ઇત્યન્ત પદસગ્રહોઽત્ર કર્તવ્યઃ ઇતિ ।

‘તસ્સ ણં સિદ્ધાયયણસ્સ’ તસ્ય ચલુ સિદ્ધાયતનસ્ય-સિદ્ધાયતનસમ્બન્ધિનો ‘વહુસમરમણિજ્જસ્સ ભૂમિભાગસ્સ વહુમજ્જદેસમાપ’ વહુસમરમણીયસ્ય ભૂમિભાગસ્ય વહુમધ્યદેશભાગે-અત્યન્ત મધ્યદેશભાગે ‘एत्थ णं’ અત્ર ઇહ ચલુ ‘મહં’ મહાન્ વિસ્તૃતઃ ‘एगे देवच्छंदए’ एकः દેવચ્છન્દકઃ-દેવાસનવિશેષઃ ‘પળ્લણ્ણે’ પ્રજ્ઞપ્તઃ, સ ચ દેવચ્છન્દકઃ ‘पंचधनुसयाइं’ पञ्चधनुःशतानि ‘આયામવિક્કલમેણં’ આયામવિક્કલમેણ દૈર્ઘ્યવિસ્તારાભ્યામ્ ‘साइरेगाइं’ सातिरेकाणि किञ्चिद्देशाधिकानि ‘પંચધનુસયાઈં’ ‘उद्धं उच्चत्तेणं’ पञ्चधनुः शतानि ऊर्ध्वमुच्चत्वेन, સ પુનઃ ‘सन्वरयणामए’ सर्वरत्न-मयः-सर्वात्मना रत्नमयः । ‘एत्थणं’ અત્ર ઇહ અનન્તરવર્ણિતદેવચ્છન્દકે ચલુ

મીતરી ભૂમિભાગ વહુસમરમણીય કહા ગયા હૈ ‘સે જહાણામહ આલિંગપુક્કરેહ વા જાવ તસ્સ ણં સિદ્ધાયયણસ્સ ણ વહુસમરમણિજ્જસ્સ ભૂમિભાગસ્સ વહુમજ્જદેસમાપ एत्थ णं મહં एगे देवच्छंदए पण्णत्ते’ વહુ ભૂમિભાગ એસા વહુસમ હૈ જૈસા કિ મૃદગ્ગ કા મુલ્લપુટ વહુ-સમ હોતા હૈ ઇત્યાદિરૂપ સે ઇસ ભૂમિભાગ કે વર્ણન મેં જૈસે ઉપમાવાચી પદ પહિલે કહે ગયે હૈં વે હી ઉપમાવાચીં સવ પદ યહાં પર મી કહેલેના ચા હેયે ઔર યહુ ભૂમિભાગ કા વર્ણન “વહુ નાના પ્રકાર કે પાચવર્ણીં વાલે મણિયોં સે સુશોભિત હૈં” ઇન અન્તિમ પદોં દ્વારા વહાં જૈસા કિયા ગયા હૈ વૈસા હી યહા પર મી યહુ ઇન અન્તિમપદોં દ્વારા વર્ણિત કર લેના ચાહિયે ઁસ સિદ્ધાયતન કે વહુમધ્યદેશભાગ મેં એક વિશાલ દેવચ્છન્દ-ક કહા ગયા હૈ । દેવચ્છન્દક દેવાસનવિશેષરૂપ હોતા હૈ । યહુ દેવચ્છન્દક ‘पंचधनुसयाइ उद्धं उच्चत्तेण सन्वरयणामए’ ऊंचाईं મેં પાચ સૌ ધનુષ કા હૈં તથા સર્વાત્મના રત્નમય

અદરનો ભૂમિભાગ વહુસમરમણીય કહેવામાં આવેલ છે, “સે જહાણામહ આલિંગ પુક્કરેહવા જાવ તસ્સ ણં સિદ્ધાયયણસ્સ વહુસમરમણિજ્જસ્સ ભૂમિભાગસ્સ વહુમજ્જદેસમાપ एत्थ णं મહં एगे देवच्छंदए पण्णत्ते” તે ભૂમિભાગમૃદગ મુખપુટવત વહુસમ છે. ઇત્યાદિરૂપમાં આ ભૂમિભાગનું વર્ણન કરતા જે પ્રમાણે ઉપમાવાચી પદો પહેલાં કહેવામાં આવેલા છે તે ઉપમાવાચી સર્વ પદો અહીં પણ કહેવા નોંધીએ આ ભૂમિભાગનું વર્ણન તે નાના પ્રકારના પાંચ વર્ણોવાળા મણિઓથી સુશોભિત છે. જે અતિમ પદો વડે ત્યાં જેવું કરવામાં આવ્યું છે તેવું અહીં પણ એ અતિમ પદો વડે વર્ણિત સમગ્ર લેવું નોંધીએ તે સિદ્ધાય તન વહુમધ્ય દેશભાગમાં એક વિશાળ દેવ ચ્છન્દક કહેવાય છે. આ દેવચ્છન્દક દેવાસન વિશેષ હોય છે આ દેવચ્છન્દક “पंचधनुसयाइ उद्धं उच्चत्तेण सव्व” જે આદર્શમાં પાંચસો

‘અદ્વસયં’ અષ્ટશતમ્ અષ્ટોત્તરશતમ્ ‘જિણયદિમાણં જિણુસ્સેહપ્પમાણમિત્તાણં’ કામદેવપ્ર-
તિમાનાં કામદેવોત્સેધપ્રમાણમાત્રાણાં કામદેવશરીરોચ્ચત્વપ્રમાણપ્રમિતામ્ ‘સંનિલ્લિત્તં’
સન્નિલ્લિપ્તં-સંરક્ષિતં ‘ચિદ્દહ’ તિષ્ઠતિ । ઇતોઽનન્તર ‘તાસાં ચલ્લ કામદેવ પ્રતિમાના-
મયમેતદ્ધુપો વર્ણાવાસઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, ઇત્યારમ્ય’ ‘અષ્ટશતં ધૂપકહ્લુચ્છુકાનાં સન્નિલ્લિપ્ત
તિષ્ઠતિ, ઇતિ પર્યન્તઃ પાઠઃ સંગ્રાહ્યઃ । અમુમેવાર્થં સૂચયિતુમાહ-‘જાવ ધૂવકહ્લુ-
ચ્છુગા’ ઇતિ । સ ચ, પાઠો રાજપ્રશ્નીયસૂત્રસ્ય અશીતિતમૈવાશીતિતમસૂત્રતો દ્રષ્ટવ્યઃ ।
તદર્થશ્ચ તત્રૈવ મત્કૃતા સુબોધિનો ટીકાતોઽવસેય ઇતિ ॥
ઉક્તશ્ચ-‘અર્હન્નપિ જિનશ્ચૈવ જિનઃ સામાન્યકેવલો ।

કન્દર્પોઽપિ જિનશ્ચૈવ જિનો નારાયણો હરિઃ ॥૧॥ ॥છ.૦૧૫॥

અથ દક્ષિણાર્દ્ધભરતકૂટ સ્વરૂપમાહ—

મૂલમ્—કહિ ણં મંતે વેયહ્લે પવ્વણ દાહિણહ્લેભરહ્લે કૂદે ણામં કૂદે
પણ્ણત્તે ? ગોયમા ! ત્વંહ્લેવાયકૂદસ્સ પુરત્થિમેણં સિદ્ધાયયણકૂદસ્સ
પચ્ચત્થિમેણં એત્થ ણં વેયહ્લેપવ્વણ દાહિણહ્લેભરહ્લે કૂદે ણામં કૂદે પણ્ણત્તે
સિદ્ધાયયણકૂદપ્પમાણસરિસે જાવ તસ્સ ણં બહુસમરમણિજ્જસ્સ ભૂમિ
માગસ્સ બહુમજ્જદેસમાણ એત્થ ણં મહં એગે પાસાયબહિંસણ પણ્ણત્તે
કોસં ઉહ્લં ઉચ્ચત્તેણં, અદ્ધકોસં વિકલ્લમેણં, અબ્ભુગયમૂસિય પહસિણ

હૈ । ‘એત્થ ણ અદ્વસય જિગપદિમાણં જિણુસ્સેહપ્પમાણમિત્તાણ સંનિલ્લિત્ત ચિદ્દહ’ હિસ દેવ-
ચ્છદક મેં જિનોત્સેધપ્રમાણ પ્રમિત ૧૦૮ કામદેવ કો પ્રતિમાપં હૈ । હિન ૧૦૮ કામદેવ
પ્રતિમાઓ કા વર્ણાવાસ હિસ પ્રકાર કા કહા ગયા હૈ હિસકે બાદ યહાં એસે હિસ પાઠ
સે ઠેકર “અષ્ટશતં ધૂપકહ્લુચ્છુકાનાં સંનિલ્લિપ્તં તિષ્ઠતિ” હિન કામદેવ પ્રતિમાઓ કે આગે
૧૦૮ ધૂપ સે મરે હુણ કહાદે રલે હુણ હૈ યહા તક કા સબ પાઠ કહ લેના ચાહિયે
હિસી અર્થ કો સૂચિત કરને કે લિયે “એવં જાવ ધૂવકહ્લુચ્છુગા ” સૂત્રકાર ને એસા
સૂત્રપાઠ કહા હૈ । યહ પુરા કા પુરા પાઠ રાજપ્રશ્નીય સૂત્ર કે ૮૦ ઓર ૮૧ વે સૂત્ર સે
જાન લેના ચાહિયે વહા હમને હિસકો સુબોધિની ટીકા સે ઉસકા અર્થ સ્પષ્ટ કિયા હૈ ॥૧૫॥

ધનુષ પ્રમાણુ છે તેમજ સર્વાત્મના રત્નમય છે ‘પત્થણં અદ્વસયં જિણપદિમાણં જિણુસ્સેહ
પમાણમિત્તાણ સંનિલ્લિત્ત ચિદ્દહ ” દેવચ્છદકમા જિનોત્સેધ પ્રમાણુ પ્રમિત ૧૦૮ જિન
પ્રતિમાઓ વિરાજમાન છે આ ૧૦૮ જિન પ્રતિમાઓ નો વહુવાસ આ પ્રમાણુ છે આ
પાઠથી આ જિન પ્રતિમાઓની સામે ૧૦૮ ધૂપ-પૂરિત કટાહો મૂકેલા છે અહીં સુબોધિનો
સમસ્ત પાઠ અધ્યાહૃત કરવો જોઈએ એના અર્થને સૂચિત કરવા માટે સૂત્રકારે એવો સૂત્ર-
પાઠ કહેલો છે, આ સ પૂર્ણ પાઠ રાજપ્રશ્નીય સૂત્રના ૮૦ અને ૮૧ સૂત્રથી જણવો જોઈએ
ત્યાં અમે સુબોધિની ટીકામા આનો અર્થ સ્પષ્ટ કર્યો છે. ॥૧૫॥

जाव पासाईए २ । तस्स णं पासायवडिसगस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ
 णं महं एगा मणिपेढीया पण्णत्ता पंच धणूमयाईं आयामविकखंभेणं
 अड्ढाइज्जाइं धणूसयाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमई । तीसे णं मणि-
 पेढियाए उण्णिं सीहासणं पण्णत्तं सपरिवारं भाणियव्वं से केणट्ठेणं
 भंते ! एवं वुच्चइ-दाहिणड्ढभरहकूडे दाहिणड्ढभरहकूडे ? गोयमा !
 दाहिणड्ढभरहकूडे णं दाहिणड्ढभरहे णामं देवे महिद्धीए जाव पलि-
 ओवमट्ठिईए परिवसइ, से णं तत्थ चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं
 चउण्हं अग्गमहिस्सीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिमाणं सत्तण्हं अणियाणं
 सत्तण्हं अणियाहिवईणं सोलसण्हं आयस्सदेवसाहस्सीणं दाहिणड्ढ-
 भरहकूडस्स दाहिणेड्ढाए रायहाणीए अण्णेसि बहूणं देवाण य देवीण
 य जाव बिहरइ ।

कहि णं भंते ! दाहिणड्ढभरहस्स देवस्स दाहिणड्ढा णामं राय-
 हाणी पण्णत्ता ? गोयमा ! मंदरस्स पव्वयस्स दक्खिणेणं तिरियम-
 संखेज्जे दीवसमुद्दे वीइवइत्ता अण्णंमि जंबुद्विदे दीवे दक्खिणेणं
 वारम जोयणसहस्साइं ओगाहिता एत्थ णं दाहिणड्ढभरहस्स देवस्स
 दाहिणड्ढा णामं रायहाणी भाणियव्वा जहा विजयस्स देवस्स ।
 एवं सव्वकूडा णेयव्वा जाव वेसमणकूडे परोप्परं पुरत्थिमपच्च-
 त्थिमेणं । इमेसि वण्णावासे गाहा—

मज्झे वेयड्ढस्स उ कणगमया तिण्णि होंति कूडाउ ।

सेसा पव्वयकुडा सव्वे रयणामया होंति

माणिभइकूडे १ वेयड्ढकूडे २ पुण्णभइकूडे ३ एए तिण्णि कूडा
 कणगामया सेसा छण्णि रयणामया, दोण्हं वि सरिसणामया देवा कय
 मालए चेव णड्ढमालए चेव. सेसाणं छण्हं सरिसणामया जण्णामया
 य कूडा तन्नामो खलु हवन्ति ते देवा । पलिओवमट्ठिईया हवन्ति पत्तेयं
 पत्तेयं । १। रायहाणीयो जंबुद्वीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं तिरिं

असंखेज्जे दीवसमुदे वीईवइत्ता अण्णंमि जंबुदीव दीवे वास्मजोयण
सहस्साइं ओगाहत्ता, एत्थ णं रायहोणीओ भाणियव्वाओ विजयराय
हाणी सरिसयाओ ॥सू० १६॥

छया — क खलु भवन्त ! वैताढ्यपर्वते दक्षिणार्द्धभरतकूटं नाम कूटं गौतम ! खंड
प्रपातकूटस्य पौरस्त्येन सिद्धायतनकूटस्य पाश्चात्येन अत्र खलु वैताढ्यपर्वते दक्षिणार्द्ध-
भरतकूटं नाम कूटं प्रज्ञप्तम्, सिद्धायतनकूटप्रमाणसदृशं यावत् तस्य खलु बहुसमरम
णीयस्य भूमिभागस्य बहुमध्यदेशभागे अत्र खलु महानेक प्रासादावतंसकः प्रज्ञप्तः, क्रोश-
मूर्ध्वमुच्चवत्त्रेण अर्द्धक्रोशं विष्कम्भेण अभ्युद्धतोच्छ्रितप्रहसितो यावत् प्रासादीयः ४ ।

तस्य खलु प्रासादावतंसकस्य बहुमध्यदेशभागे अत्र खलु महती एका मणिपीठिका प्रज्ञप्ता
पञ्चधनुःशतानि आयामविष्कम्भेण अर्धतृतीयानि धनुःशतानि बाह्व्येन, सर्वमणिमयो
तस्याः खलु मणिपीठिकाया उपरि सिंहासनं प्रज्ञप्तम्, सपरिवारं भणितव्यम् ।

तत् केनार्थेन भवन्त ! एव मुच्यते दक्षिणार्द्धभरतकूटं दक्षिणार्द्धभरतकूटम् ? गौतम !
दक्षिणा भरतदेव खलु दक्षिणार्द्धभरतो नाम देवो महद्भिको यावत् पत्न्योपमस्थितिकः
परिवसति, स खलु तत्र चतसृणां सामानिकसाहस्रोणां, चतसृणाम् अग्रमहिषीणां सपरि-
वाराणां, तिसृणां परिवर्शं, सप्तानामनौकानां, सप्तानामनौकाधिपतीनां, षोडशानामात्म-
रक्षकदेवसाहस्रोणां, दक्षिणार्द्धभरतकूटस्य दक्षिणार्द्धाया राजधान्याम् अन्येषां बहूनां देवानां
च देवीनां च यावत् विहरति ।

क खलु भवन्त ! दक्षिणार्द्धभरतस्य देवस्य दक्षिणार्द्धा नाम राजधानी प्रज्ञप्ता ?
गौतम ! मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिणेन तिर्यगक्षेत्रेयद्वीपसमुद्रान् व्यतिव्रज्य अन्यस्मिन्
जम्बूद्वीपे द्वीपे दक्षिणेन द्वादश योजनसहस्राणि अवगाह्य अत्र खलु दक्षिणार्द्धभरतस्य देवस्य
दक्षिणार्द्धा नाम राजधानी भणितव्या यथा विजयस्य देवस्य । एवं सर्वकूटानि नेतव्यानि
यावत् वैतश्चरणकूटम् परदारं पौरस्त्यपश्चिमेन । एषा वर्णावासे गाथा

मध्ये वैताढ्यस्य तु कनकमयानि त्रीणि भवन्ति कूटानि तु,

शेषाणि पर्वतकूटानि सर्वाणि रत्नमयानि भवन्ति ॥१॥

माणिमद्रकूटं १ वैताढ्यकूटं २ पूर्णमद्रकूटं ३ पतानि त्रीणि कूटानि कनकमयानि,
शेषाणि षडपि रत्नमयानि, । द्वयो विसदृशं नामकौ देवौ कृतमालकश्चैव १ नृत्तपालकश्चैव
२ शेषाणां पण्णा सदृशनामकाः य नामकानि च कूटानि तन्नामान्, खलु भवन्ति ते देवाः ।
पत्न्यापमस्थितिकः भवन्ति प्रत्येक प्रत्येकम् १ राजधान्यो जम्बूद्वीपे द्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्य
दक्षिणेन तिर्यगक्षेत्रेयद्वीपसमुद्रान् व्यतिव्रज्य अन्यस्मिन् जम्बूद्वीपे द्वीपे द्वादश योजन सह-
स्राणि अवगाह्य, अत्र खलु राजधान्यो भणितव्याः विजयाराजराजधानी सदृशिका ॥सू१६॥

ટીકા- 'કહિ ણં મંતે ! વેયઙ્કે' इत्यादि ।

ગૌતમઃ શ્રીમહાવીરસ્વામિનં પૃચ્છતિ- 'કહિ ણં મંતે ! વેયઙ્કે પવ્વણ દાહિણદ્ધમરહકૂઢે ણામં કૂઢે પણ્ણત્તે' હે મદન્ત ! ક-કુત્ર સ્વલ્પ વૈતાલ્યે પર્વતે દક્ષિણાર્ધમરતકૂટં નામ કૂટં પ્રજ્ઞપ્તમ્, મગવાનાહ- 'ગોયમા ! સ્વલ્પવાયકૂઢસ્સ' હે ગૌતમ ! સ્વલ્પપ્રપાતકૂટસ્ય-સ્વલ્પપ્રપાત-ગુહાકૂટસ્ય 'પુરત્થિમેણં' પૌરસ્ત્યેન-પૂર્વસ્યાં દિશિ 'સિદ્ધાયયણકૂઢસ્સ' સિદ્ધાયતન-કૂટસ્ય વૈતાલ્યપર્વતીયપ્રથમકૂટસ્ય 'પચ્ચત્થિમેણં' પાશ્ચાત્યેન પશ્ચિમાયાં દિશિ 'एत्थ णं-वेयङ्कपव्वण' અત્ર સ્વલ્પ વૈતાલ્યપર્વતે-વૈતાલ્યપર્વતોપરિ 'દાહિણદ્ધમરહકૂઢે ણામં કૂઢે પણ્ણત્તે' દક્ષિણાર્ધમરતકૂટં નામ કૂટં પ્રજ્ઞપ્તમ્ । તત્ કીદૃશમ્ ? इति जिज्ञासा-यामाह-'सिद्धाययणकूडप्पमाणसरिसे' सिद्धायतनकूटप्रमाणसदृशं सिद्धायतनकूटस्य यत् प्रमाणं षट् सक्रोशानि योजनानि ऊर्ध्वमुच्चत्वेन इत्यादि वर्णकेनोक्तं त्रयोदशसूत्रे तेन सदृशं तत्प्रमाणसदृशप्रमाणरूपं सिद्धायतनकूटस्य यत्प्रमाणं तदेवदक्षिणार्धमरतकूट-स्यापि प्रमाणमिति भावः । एवं च षट् सक्रोशानीत्यारभ्य तस्य स्वલ्ल इत्यादि पर्यन्तः

દક્ષિણાર્ધમરતકૂટ કા સ્વરૂપ કથન—

'કહિણં મંતે! વેયઙ્કે પવ્વણ દાહિણદ્ધે મરહકૂઢે ણામં કૂઢે પણ્ણત્તે' इत्यादि ।

ટીકાર્થ-इस सूत्र द्वारा श्रीगौतमस्वामी ने प्रभु श्रीमहावीरस्वामी से ऐसा पूछा है-हे मदन्त! वैताल्यपर्वत के ऊपर दक्षिणार्धमरतकूट नामक कूट कहां पर कहा गया है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं "गोयमा' स्वल्पवायकूडस्स पुरत्थिमेणसिद्धाययणकूडस्स पच्चत्थिमेणं एत्थणं वेयङ्क-पव्वण द्दाहणद्वमरहकूडे णामं कूडे पण्णत्ते" हे गौतम! स्वल्पप्रात कूट की पूर्वदिशा में एवं प्रथम सिद्धायतन कूट की पश्चिमदिशा में वैताल्यपर्वत सबंधी दक्षिणार्धमरतकूट नामक द्वितीयकूट कहा गया है "सिद्धाययणकूडप्पमाणसरिसे जाव तस्सणं बहुसमरमणिज्जस्स भूमि-भागस्स बहुमज्झदेसमाए एत्थ ण मह एगे पासायवड्हसए पण्णत्त' इस कूट की ऊँचाई का

દક્ષિણાર્ધ મરત કૂટના સ્વરૂપનું કથન

'કહિણં મંતે વેયઙ્કે પવ્વણ દાહિણમ મરહકૂઢે ણામં કૂઢે પણ્ણત્તે' इत्यादि सूत्र १६॥

ટીકાર્થ-આ સૂત્રવડે ગૌતમે પ્રભુ શ્રીમહાવીરસ્વામી ને પ્રશ્ન કર્યો કે હેમહં ત વૈતાલ્ય પર્વત પર દક્ષિણાર્ધમરત નામે કૂટ કયાસ્થળે આવેલ છે એના જવાબમા પ્રભુ કહે છે "ગોયમા સ્વલ્પવાય કૂઢસ્સ પુરત્થિમેણ સિદ્ધાયયણકૂઢસ્સ પચ્ચત્થિમેણં एत्थणं वेयङ्कपव्वण द्दाहणद्व-मरहकूडे णामं कूडे पण्णत्ते" હે ગૌતમ ખડ પ્રપાત કૂટની પૂર્વદિશામાં વૈતાલ્ય પર્વત સબંધી દક્ષિણાર્ધ મરતકૂટ નામે દ્વિતીય કૂટ આવેલ છે 'સિદ્ધાયયણકૂઢપ્પમાણસરિસે જાવ તસ્સ ણં बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसमाए एत्थणं मह एगे पासायवड्हसए पण्णत्ते' આ કૂટની ઉચ્ચાઈનું પ્રમાણ સિદ્ધાયતન કૂટની ઉચ્ચાઈ બરાબર કહેવામાં આવેલ છે. એટલે એક ગાઉ અધિક છે. ૧૪૦ જેટલી એની ઉચ્ચાઈ છે. સિદ્ધાયતન કૂટની ઉચ્ચાઈનું વર્ણન ૧૩ મા સૂત્રમા કહેવામાં આવ્યું છે આ દ્વિતીય કૂટની બહુસમરમણીય ભૂમિભાગની બરાબર મધ્યમાં એક વિશાળ પ્રાસાદાવત સ્થળ આવેલ છે

सर्वोऽपि पदसमूहः सङ्ग्राहः इति सूचयितुमाह— 'जाव तस्सणं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए' यावत् तस्य खलु बहुसमरमणीयस्य भूमिभागस्य बहुमध्यदेशभागे इति—एतद्व्याख्या पञ्चदशसूत्रे गता । 'एत्थणं' अत्र इह दक्षिणार्द्ध भरतकूटस्य बहुसमरमणीयभूमिभागस्य बहुमध्यदेशभागे खलु 'महं एगे' एको महान्-पासायवडिसए' प्रासादावतंसकः-प्रासादश्रेष्ठः 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तः । स च 'कोसं' क्रोशं-क्रोशप्रमाणम् 'उड्डं उच्चत्तेणं' ऊर्ध्वम् उच्चत्वेन 'अद्धकोस' अर्द्धक्रोश=क्रोशस्यार्द्धम् 'विक्खमेणं' विष्कम्भेण-विस्तारेण तथा 'अब्भुगगयमूसियपहसिय' अभ्युद्धतोच्छ्रित-प्रहसितः अभ्युद्धतोच्छ्रितः- अत्युच्च प्रहसितः-श्वेतोज्ज्वलप्रभया हसन्निव तथा 'जाव पासाईए' यावत् प्रासादीयः दर्शनीयः अभिरूपः प्रतिरूपः इति अत्र यावत्पदेन "विविधमणिरत्नभक्तिचित्रः, वातोद्धूतविजयवैजयन्ती पताकाच्छत्रकलितः, तुङ्गः गगन-तलमनुलिखच्छिखरः' जालान्तररत्न, पञ्जरोन्मीलितः इव मणिकनकस्तूपिकाकः विकसितशतपत्रपुण्डरीकतिलकरत्नार्द्धचन्द्रचित्रः नानामणिदामालंकृतः अन्तर्वहिश्व-

प्रमाण सिद्धायतन कूट की ऊँचाई बराबर कहा गया है अर्थात् एक कोश अधिक ६ योजन की इसकी ऊँचाई है. सिद्धायतन कूट की ऊँचाई का प्रमाण १३ वे' सूत्र में कहा है । इस द्वितीयकूट के बहुसमरमणीय भूमिभाग के ठीक बीच में एक विशाल प्रासादावतंसक कहा गया है "कोस उड्डं उच्चत्तेण, अद्धकोस विक्खमेण, अब्भुगगयमूसिय-पहसिए जाव पासाईए ४' यह प्रासादावतंसकश्रेष्ठ प्रासाद-एक कोश का ऊँचा है और आधे कोश का विस्तार वाला है तथा यह बहुत ही अधिक ऊँचा है और अपनी श्वेत उज्ज्वलप्रभा से हँस सा रहा है ऐसा प्रतीत होता है यावत् यह प्रासादीय है, दर्शनीय है, अभिरूप और प्रतिरूप है. यहां यावत्पद से "विविधमणिरत्नभक्तिचित्रः, वातोद्धूत विजय वैजन्ती पताकाच्छत्रकलितः तुङ्ग, गगनतलमनुलिखच्छिखरः, जालान्तररत्नः, पञ्जरोन्मीलित इव मणिकनकस्तूपिकाकः, विकसितशतपत्रपुण्डरीकतिलकरत्नार्द्धचन्द्रचित्रः, नानामणिदामालं-

कोस उड्डं उच्चत्तेण अद्धकोसं विक्खमेण अब्भुगगमूसियपहसिए जाव पासाईए ४" आ प्रासादावतंसक-श्रेष्ठ प्रासाद एक आउ श्रेष्ठो उयो छे अने अर्धा गाह श्रेष्ठो विस्तार पाणो छे तेमअ आभूअअ वधाइ उयो छे आ पोतानी श्वेत उज्ज्वल प्रभाथी छसतो डोअ तेम लागे छे यावत् आ प्रासादीय छे दर्शनीय छे अलिइय छे प्रतिइय छे अही यावत् पदथी, विविध मणिरत्नभक्तिचित्रः वातोद्धूतविजयवैजयन्ती पताकाच्छत्रकलितः तुङ्ग गगनतलमनुलिखच्छिखर' जालान्तररत्नः पञ्जरोन्मीलित इव मणिकनकस्तूपिकाकः विकसितशतपत्रपुण्डरीकतिलकरत्नार्द्धचन्द्रचित्रः नानामणि दामालंकृत अन्तर्वहिश्व अत्रापि तदर्शनीयवाञ्छुकाप्रस्तुतः सुखरूपश्च सधीकः" आ

શ્લક્ષ્ણઃ તપનીયબાલુકાપ્રસ્તટઃ સુસ્પર્શઃ સશ્રોકઃ इत्येषां संग्रहः, व्याख्या च राजप्रश्रीयस्त्रस्यैकोनपण्डितमस्त्रस्य मत्कृतसुबोधिनी टीकातोऽवसेया ।

અથ તસ્ય પ્રાસાદાવતંસકસ્યાન્તવર્તિવસ્તુ વર્ણયતિ-‘તસ્સણં પાસાયવર્હિસગસ્સ બહુમજ્જદેસમાપ’ તસ્ય ચલ્લ પ્રાસાદાવતંસકસ્ય બહુમધ્યદેશભાગે-અત્યન્ત મધ્યભાગે ‘ઇત્થળં મહં ઇગા મણિપેદિયા પળ્લત્તા’ અત્ર ચલ્લ મહતી વિશાલા એકા મણિપીઠિકા પ્રજ્ઞપ્તા, સા-મણિપીઠિકા ‘પચધણૂસયાઈ આયામવિક્ખંભેળં’ પચ્ચધનુઃશતાનિ આયામ-વિષ્કંભેળ-દૈર્ઘ્યવિસ્તારાભ્યામ્ ‘અહ્હાહ્જ્જાઈ ધણૂસયાઈ વાહલ્લેળં’ અર્ધતૃતીયાનિ ધનુઃ શતાનિ વાહલ્યેન-સર્વાત્મના રત્નમયી-‘તીસેળ’ તસ્યાઃ-અનન્તરોક્તાયાઃ ચલ્લ ‘મણિ-પેદિયાઇ ઉપ્પિ સીહાસળ પળ્લત્તં’ મણિપીઠિકાયાઃ ઉપરિ સિંહાસનં પ્રજ્ઞપ્તમ્ । તચ્ચ સિંહાસનં ‘સપરિવારં’ સપરિવારં-દક્ષિણાર્ધભરતકૂટાધિષ્ઠાત્ સામાનિકાદિ દેવોપવેશન-યોગ્યમદ્રાસનસહિત ‘માણિયવ્વં’ મણિતવ્યં વક્તવ્યમ્ ।

અથ દક્ષિણાર્ધભરતકૂટસ્યાન્વર્થનામતાં પ્રશ્નોત્તરાભ્યાં દર્શયિતુમાહ-‘સે કેળદ્દેળં

કૃતઃ, અન્તર્વહિશ્ચ શ્લક્ષ્ણઃ, તપનીયબાલુકાપ્રસ્તરઃ, સુસ્પર્શઃ, સશ્રીકઃ’ હસ પૂરે પાઠ કા સમ્રહ હુઆ હૈ. હસ સૂત્રપાઠ કી વ્યાખ્યા હમને રાજપ્રશ્નનીય સૂત્ર કે ૫૮ વે સૂત્ર કી સુબોધિની ટીકા મેં કર દી હૈ અતઃ વહી સે હસે જાનલેના ચાહિયે., “તસ્સણં પાસાયવર્હિસગસ્સ બહુ મજ્જ દેસમાપ ઇત્થળં મહં ઇગા મણિપેદિયા પળ્લત્તા” હસ પ્રાસાદાવતંસક કે ઠીક મધ્યભાગ મે એક વિશાલ મણિપીઠિકા કહી ગઈ હૈં “પચધણૂસયાઈ આયામવિક્ખંભેળં અહ્હાહ્જ્જાઈ ધણુસ-યાઈ વાહલ્લેળં, સવ્વમણિમર્ઈ” યહ મણિપીઠિકા લખ્વાઈ મેં પાંચ સૌ ધનુષ કી હૈ તથા હસકી મોટાઈ અઢાઈ સૌ ધનુષ કી હૈ યહ મણિપીઠિકા સર્વાત્મના રત્નમય હૈ “તીસેળ મણિપેદિયાઇ ઉપ્પિ સીહાસળ પળ્લત્તં, સપરિવારં માણિયવ્વ” હસ મણિપીઠિકા કે ઉપર એક સિંહાસન કહા ગયા હૈ હસ સિંહાસન કે વર્ણન મેં “યહ સિંહાસન દક્ષિણાર્ધ ભરતકૂટ કે અધિષ્ઠાયક દેવ કે જો સામાનિક આદિ દેવ હૈં હનકે ઉપવેશન કે યોગ્ય મદ્રાસનો સે સહિત હૈ., એસા કથન

સમસ્ત પાઠનો સંગ્રહ થયેલ છે આ સૂત્ર પાઠની વ્યાખ્યા અમે રાજપ્રશ્નનીય સૂત્રના ૫૮માં સૂત્રની સુબોધિની ટીકામાં કરી છે તેથી જિજ્ઞાસુઓ ત્યાથી બાણી લે. “તસ્સ ણં પાસાયવર્હિસગસ્સ વહુમજ્જદેસમાપ ઇત્થળં મહં ઇગા મણિપેદિયા પળ્લત્તા” તે પ્રાસાદાવતંસકના બરાબર મધ્યભાગમાં એક વિશાળ મણિપીઠિકા છે. ‘પંચધણૂસયાઈ’ આયામવિક્ખંભેળં અહ્હાહ્જ્જાઈ ધણૂસયાઈ વાહલ્લેળં સવ્વ મણિમર્ઈ” આ મણિપીઠિકા લગભગ ચોરાઈમાં પાંચસો ધનુષ જેટલી છે આ મણિપીઠિકા સર્વાત્મના રત્નમય છે. ‘તીસેળ મણિપેદિયાઇ ઉપ્પિ સીહાસળ પળ્લત્તં સપરિવાર માણિયવ્વં” આ મણિપીઠિકાની ઉપર એક સિંહાસન છે આ સિંહાસનના વર્ણનમાં “આ સિંહાસન દક્ષિણાર્ધ ભરત કૂટના અધિષ્ઠાયક દેવના જે સામાનિક આદિ દેવો છે તેમના ઉપવેશન માટે યોગ્ય મદ્રાસનોથી સમાહિત છે” એવું કથન કરવું જોઈએ

भंते !' हे भदन्त ! तत् कूटं केनार्थेन केन प्रकारेण 'दाहिणद्धभरहकूडे दाहिणद्ध-
भरहकूडे' दक्षिणार्द्धभरतकूटं दक्षिणार्द्धभरतकूटम् 'एवं वुच्चइ' एवम्-इत्थम् उच्यते
-प्रज्ञाप्यते । भगवानाह-'गोयमा' दाहिणद्धभरहकूडेणं दाहिणद्धभरहे णामं देवे'
हे गौतम ! दक्षिणार्द्धभरतकूटे खलु दक्षिणार्द्धभरतो नाम देवः-तदधिष्ठातृदेवः 'परि-
वसइ' परिवसतीत्युत्तरेणान्वयः, स-च कोट्ठः ? इत्याह-'महिइडिए जाव पल्लिओ-
वमट्टिए' महिद्धिको यावत् पल्लोपमस्थितिकः, इति । महिद्धिक इति समारभ्य पल्लो-
पमस्थितिक इति पर्यन्तानां देवविशेषणवाचकानां पदानां सग्रहोऽस्यैवाष्टमसूत्रे विलोक-
नीयो व्याख्याऽपि तत् एव बोध्येति । 'से णं' स-पूर्वोक्तः दक्षिणार्द्धभरतनामा
देवः खलु 'तत्थ' तत्र-दक्षिणार्द्धभरतकूटे विहरतीति परेणान्वयः, स किं कुर्वन् विहर-
तीत्याह-'चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं अगमहिसीणं सपरिवाराणं' चतुस्रणां
सामानिक-साहस्सीणां सपरिवाराणां चतुस्रणामग्रमहिषीणां=प्रधानमहिषीणाम् 'तिण्हं'
तिस्रणाम् आभ्यन्तरिकमध्यमबालानां 'परिसाणं' परिवदां-सभानां 'सत्तण्हं' सप्तानां
इयगजरथपदाति महिषगन्धर्वनाटचलस्रणानाम् 'अणियाणं' अनीकानां-सैन्यानाम्
'सत्तण्हं' अणियाहिवईणं सप्तानाम् अनीकाधिपतीनां-सेनाधिपतीनाम् 'सोलसण्हं

कर केना चाहिए । 'से केणट्ठेण भंते एवं वुच्चइ दाहिणद्धभरहकूडे २' हे भदन्त ! इस
कूटका नाम दक्षिणार्द्ध भरतकूट ऐसा किस कारण से हुआ है ? इसके उत्तर में प्रमु कहते हैं-
"गोयमा । दाहिणद्धभरहकूडेणं दाहिणद्धभरहे णामं देवे महिइडिए जाव पल्लिओवमट्टिए
परिवसइ' हे गौतम ! इस कूट का नाम दक्षिणार्द्ध भरतकूट इसलिये कहा गया है कि
इस पर दक्षिणार्द्धभरत नाम का एक देव रहता है, यह महिद्धिक यावत् पल्लोपम की
स्थिति वाला है यहाँ इस देव के वर्णन में महिद्धिक पद से लेकर पल्लोपमस्थितिक पद के
भीतर जितने भी देव विशेषणवाचक पद आये हैं उन सब का सग्रह इसी सूत्र के ८वें
सूत्र में देख लेना चाहिये "से णं तत्थ चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं अगमहिसीणं,
सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिवईणं सोलसण्हं आय-

'से केणट्ठेण भंते एवं वुच्चइ दाहिणद्धभरहकूडे २' के अर्थ । आ इत्थुं नाम
दक्षिणार्द्ध भरत कूट केवी रीते प्रसिद्धं यथु ? आना न्वाणमां प्रमु कहे छे गोयमा ।
दाहिणद्धभरहकूडेणं दाहिणद्धभरहे णामं देवे महिइडिए जाव पल्लिओवमट्टिए परिवसइ'
हे गौतम ! आ इत्थुं नाम दक्षिणार्द्ध भरत कूट अट्ठला माटे प्रसिद्धं यथुं के आ कूट
पर दक्षिणार्द्ध भरत नामे अेक देव रहे छे आ देव महिद्धिक छे यावत् पल्लोपमनी
स्थितिवाणे छे अहो आ देवना वसुंनमा महिद्धिक पदथी लउने पदथोपमस्थिति सुधी
अट्ठला देवविशेषण वाचक पदो आवेला छे ते सर्वनां संग्रह आ सूत्रनाटमा सूत्रमां लेध
देवे। "से णं तत्थ चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं अगमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं
परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं

आयरक्खदेवसाहस्सीणं' पोडशानाम् आत्तरक्षकदेवसाहस्सीणाम्-पोडशसहस्र संख्यात्म-
रक्षकदेवानाम् 'दाहिणइदभरहकूडस्स दाहिणइदढाए रायहाणीए अण्णेसिं' दक्षिणार्द्ध-
भरतकूटस्य दक्षिणार्द्धायाः राजधान्याः अन्येषाम्-उक्तेभ्य इतरेषां 'बहूणं' देवा ण
देवीण य' बहूनां देवानां च देवीनां च 'जाव' यावत् यावत्पदेन "आधिपत्यं पौरपत्यं
स्वामित्वं भर्तृत्वं महत्तरकत्वम् आग्नेश्वरसेनापत्यं कायन् पालयन् महताऽहतनाट्यगीत-
वादित्रतन्त्रोत्तलताल-त्रुटितघनमृदङ्गपटुप्रवादितरवेण दिव्यान् भोगभोगान् भुञ्जानः"
इत्येषां संग्रहः, एवंभूतः स 'विहरइ' विहरति तिष्ठति, एतेषां विवरणमष्टमसूत्रे गतम् ।

अथास्य राजधानी कुत्र वर्तते इति पृच्छति-'कहि णं भंते । दाहिणइदभर-
हस्स देवस्स दाहिणइदढा णामं रायहाणी पण्णत्ता' हे भदन्त ! क कुत्र खलु दक्षिणार्द्ध

रक्खदेवसाहस्सीणं दाहिणइदभरहकूडस्स दाहिणइदढाए रायहाणीए अण्णेसिं च बहूण देवान
य देवीण य जाव विहरइ' यह बहा चार हजार सामानिक देवों का चारसपरिवार अग्रम-
हिवियों का, तीन परिषदाओं का, सात सैन्यों का, सात सेनापतियों का, सोलह हजार
आत्तरक्षक देवों का तथा दक्षिणार्द्ध भरतकूट की दक्षिणार्द्ध राजधानी निवासी अन्य और भी
बहुत से देव और देवियों का आधिपत्य, पौरपत्य, स्वामित्व, भर्तृत्व, महत्तरकत्व एवं
आग्नेश्वर सेनापत्य करवाता हुआ, पलवाता हुआ, एव चतुर प्रकारके बाजे बजाने वाले पुरुषों
द्वारा जोरजोर से बजाये गये बाजों के नाद पूर्वक, गीतों के साथ बाजों के नाद पूर्वक,
नाट्य के बाजों के नाद पूर्वक दिव्य दो गधीक देवोंके समान भोगों को भोगता हुआ अपने
समय को आनन्द के साथ व्यतीत करता है यहां "तन्त्री, तल, ताल, त्रुटिल, घनमृदङ्ग" ये
सब विशेष प्रकार के बाजों के ही भेद हैं । इनके विषय में जीवाभिगमसूत्र की टीका में
स्पष्टीकरण किया गया है तथा इन सब का विवरण इसके ८ वें सूत्र में किया जा चुका है-
अतः वहां से इस विषयको देख लेना चाहिये ।

दाहिणइदभरहकूडस्स दाहिणइदढाए रायहाणीए अण्णेसिं च बहूण देवानय देवीणय जाव
विहरइ' आ देव त्यां आर हजर सामानिक देवोना आर सपरिवार अग्रमहिवीओना
त्रय परिषदाओना सात सैन्योना सात सेनापतिओना सोण हजर आत्तरक्षक देवोना
तेमअ दक्षिणार्द्ध भरत कूटनी दक्षिणार्द्ध राजधानी निवासी अन्य भीअ वषु देव-देवीओना
आधिपत्य, पौरपत्य, स्वामित्व, भर्तृत्व महत्तरकत्व तेमअ आग्नेश्वर सेनापत्य करावतो
पणावतो तथा चतुर वाजओ वगाठनारा भुजुषोथी जेरथी वगाडेवा वालत्रोथी गीतो
साओणीने नादय के वादित्रोना नादपूर्वक दिव्यभोग भोगवतो पोतानो समय आनदपूर्वक
पसार करे छे, अही "तन्त्री, तल, ताल, त्रुटित, घनमृदङ्ग ओ सर्वे विशेष प्रकार ना
वादित्रोना अ प्रकारे छे आ संगंधमा लवाभिगम सूत्रनी टीकाभा, स्पष्टीकरण करवाभां
आओ छे तेथी ओ सर्वं विवरण ओना ८ सूत्रभा कथाभां आओ छे, ओथी आ
विषे त्याथी नखी लघुं ओथीओ.

મરતસ્ય દેવસ્ય દક્ષિણાર્ધાં નામ રાજધાની પ્રજ્ઞપ્તા ? મગવાનાહ—‘ગોયમા ! મંદરસ્સ પવ્વયસ્સ દક્ષિણેણ’ હે ગૌતમ ! મન્દરસ્ય—મેરો. પર્વતસ્ય દક્ષિણેન—દક્ષિણસ્યાં દિશિ ‘તિરિયમસંલેજ્જે દોવસમુદ્દે’ તિર્યગસંલેયદ્વીપસમુદ્રાન્ તિર્યક્ સ્થિતાન્ અસહ્યેયાન્ દ્વીપાન્ સમુદ્રાંશ્ચ ‘વોઈવહત્તા’ વ્યતિવૃજ્ય—વ્યતિક્રમ્ય ઉત્તલહ્વય ‘અણમિ’ અન્યસ્મિન્—અસ્મદાદ્યાશ્રયીભૂતજમ્બૂદ્વીપાદ્ધિન્ને ‘જંબુદીવે દીવે દક્ષિણેણ’ જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે દક્ષિણેન દક્ષિણસ્યાં દિશિ ‘વારસ જોયગસહસ્સાઈ’ દ્વાદશ યોજન સહસ્રાણિ—દ્વાદશસહસ્રયોજનાનિ ‘ઓગાહિત્તા’ અવગાહ્ય—પ્રવિશ્ય ‘પ્તથ ણં—દાહિણહ્લમરહસ્સ દેવસ્સ દાહિણહ્લદા ણામં રાયહાણી માણિયવ્વા’ અત્ર ચ્છુ દક્ષિણાર્ધમરતસ્ય દેવસ્ય દક્ષિણાર્ધાં નામ રાજધાનો ‘મણિતવ્યા—વક્તવ્યા’ ‘જહા વિજયસ્સ’ દેવસ્સ’ યથા વિજયસ્ય દેવસ્ય । ‘એવં’ એવમ્—દક્ષિણાર્ધમરતકૂટવત્ ‘સવ્વકૂહા નેયવ્વા’ સર્વકૂટાનિ નેતવ્યાનિ—જ્ઞાતવ્યનિ, કિમ્પર્યન્તાનિ ? इत्याह—‘जाव—वेसमणकूडे’ यावत् वैश्रवणकूटपर्यन्तानि सर्वाणि

રાજધાની વિષયક પ્રશ્ન—“કહિણ મતે ! દાહિણહ્લમરહસ્સ દેવસ્સ દાહિણહ્લદા ણામં રાયહાણી પણ્ણત્તા’ ગૌતમ ને પ્રમુ સે એસા પૂછા હૈ હે મદન્ત! દક્ષિણાર્ધમરતદેવ કો દક્ષિણાર્ધાં નામકી રાજધાની કહા પર કહો ગઈ હૈ ?” હાકે ઉત્તર મેં પ્રમુ કહતે—હૈ “ગોયમા! મંદરસ્સ પવ્વયસ્સ દાહિણેણ તિરિયમસંલેજ્જે દોવસમુદ્દે વોઈવહત્તા અણમિ જંબુદીવે દીવે દક્ષિણેણ વારસ જોયગસહસ્સાઈ ઓગાહિત્તા પ્તથણ દાહિણહ્લમરહસ્સ દેવસ્સ દાહિણહ્લદા ણામં રાયહાણી માણિયવ્વા’ હે ગૌતમ! સુમેરુ પર્વત કી દક્ષિણદિશા મેં તિર્યક્ અસહ્યાત દ્વીપસમુદ્રો’ કો પાર કરકે અન્ય જમ્બૂદ્વીપ નામ કે દ્વીપ મેં દક્ષિણ દિશા મેં ૧૨ હજાર યોજન નીચે આગે જાને પર દક્ષિણાર્ધ મરત દેવ કી દક્ષિણાર્ધાં નામ કી રાજધાની વક્તવ્ય હૈ ‘જહા વિજયસ્સ દેવસ્સ’ જૈસે વિજયદેવ કી રાજધાની વક્તવ્ય હુઈ હૈ, “એવ સવ્વ કૂહા ણેયવ્વા જાવ વેસમણકૂડે પરોપ્પર પુરત્થિમપચ્ચત્થિમેણ” હાકે તરહ. સે વૈશ્રવણ

રાજધાની વિષયક પ્રશ્ન :—કહિ ણં મતે દાહિણહ્લ મરહસ્સ દેવસ્સ દાહિણહ્લદા ણામ રાયહાણી પણ્ણત્તા” ગૌતમે પ્રશ્ન કર્યો કે હે ભદન્ત ! દક્ષિણાર્ધ મરત દેવની દક્ષિણાર્ધાં નામ રાજધાની કયા સ્થળે આવેલી છે ? એના જવાબમા પ્રશ્ન કહે છે. ગોયમા ! મંદરસ્સ પવ્વયસ્સ દક્ષિણેણ તિરિયમસંલેજ્જે દીવસમુદ્દે વિદ્વહત્તા અણમિ જંબુદીવે દીવે દક્ષિણેણ વારસ જોયગસહસ્સાઈ ઓગાહિત્તા પ્તથણ દાહિણહ્લ મરહસ્સ દેવસ્સ દાહિણહ્લદા ણામ રાયહાણી માણિયવ્વા “હે ગૌતમ ! સુમેરુ પર્વતની દક્ષિણ દિશામા તિર્યક્ અસહ્યાત દ્વીપસમુદ્રોને પારકરીને અન્ય જમ્બૂદ્વીપનામક દ્વીપમા દક્ષિણ દિશામા ૧૨ હજાર યોજન નીચે આગળ જવાથી દક્ષિણાર્ધ મરત દેવની દક્ષિણાર્ધાં નામની રાજધાની આવેલી છે. ‘જહા વિજયસ્સ દેવસ્સ’ વિજય દેવની રાજધાની વિષે જે પ્રમાણે કહેવામા આવ્યું છે. “એવં સવ્વકૂહા ણેયવ્વા જાવ વેસમણકૂડે પરોપ્પરં પુરત્થિમપચ્ચત્થિમેણ” તે પ્રમાણે જ વૈશ્રવણ

કૂટાનિ દક્ષિણાર્ધભરતકૂટવદ્ વર્ણનીયાનીતિ ભાવઃ । એવશ્ચ દક્ષિણાર્ધભરતકૂટં ૧
 સ્વપ્તપ્રપાતગુહાકૂટં ૨ માણિભદ્રકૂટ ૩ વૈતાદ્યકૂટં ૪ પૂર્ણભદ્રકૂટં ૫ તમિસ્રગુહાકૂટં ૬
 ઉત્તરાર્ધ-ભરતકૂટં ૭ વૈશ્રવણકૂટમ્ ૮ એતાનિ અઘૌ કૂટાનિ સમાનવર્ણનક નીતિ ।
 તથા 'પરોપ્પરં' પરસ્પરમ્-અન્યોન્યં 'પુરત્થિમપચ્ચત્થિમેળં' પૌરસ્ત્યપાશ્ચાત્યેન-પૂર્વ
 પૂર્વકૂટં પૂર્વદિશિ પરં પરં કૂટં પશ્ચિમદિશિ વર્તત ઇતિ બોધ્યમ્ । તથા ચ દક્ષિણાર્ધ
 ભરતકૂટં પૂર્વસ્યાં સ્વપ્તપ્રપાતકૂટાન્ પૂર્વસ્યાં માણિભદ્રકૂટાન્, તત્ પૂર્વસ્યાં વૈતાદ્યકૂટાન્
 તત્ પૂર્વસ્યાં પૂર્ણભદ્રકૂટાન્ તત્ પૂર્વસ્યાં તમિસ્રગુહાકૂટાન્ તત્ પૂર્વસ્યામ્ ઉત્તરાર્ધભરતકૂ-
 ટાન્ તત્ પૂર્વસ્યાં વૈશ્રવણકૂટાન્ યસ્માદ્યત પૂર્વસ્યાં તસ્માત્તત્ પશ્ચિમાયાં બોધ્યમ્, પૂર્વ-
 પશ્ચિમયોઃ સાપેક્ષતાત્, તથાહિ-વૈશ્રવણકૂટં પશ્ચિમાયામ્ ઉત્તરાર્ધભરતકૂટાન્, તત્ પશ્ચિ-
 માયાં તમિસ્રગુહાકૂટાન્, તત્ પશ્ચિમાયાં પૂર્ણભદ્રકૂટાન્, તત્ પશ્ચિમાયાં વૈતાદ્યકૂટાન્,

કૂટક ઓર સબ વાકીકે કૂટો કા વર્ણન કર લેના ચાહિયે. હસ તરહ દક્ષિણાર્ધ
 ભરતકૂટ ૧ સ્વપ્તપ્રપાતગુહાકૂટ ૨ માણિભદ્રકૂટ ૩ વૈતાદ્યકૂટ ૪ પૂર્ણભદ્રકૂટ ૫ તમિસ્રગુહા-
 કૂટ ૬ ઉત્તરાર્ધભરતકૂટ ૭ ઓર વૈશ્રવણકૂટ ૮ યે આઠ કૂટ સમાન વર્ણન વાળે હૈં । હન
 કૂટો મેં પૂર્વ પૂર્વ કા કૂટ તો પૂર્વદિશા મેં હૈં ઓર દૂસરા દૂસરા કૂટ પશ્ચિમદિશા મેં હૈં
 યેસા જાનના ચાહિયે તથાચ દક્ષિણાર્ધ ભરતકૂટ સ્વપ્તપ્રપાતકૂટ સે પૂર્વ દિશા મેં હૈં
 સ્વપ્તપ્રપાતગુહાકૂટ માણિભદ્રકૂટ સે પૂર્વ દિશા મેં હૈં, વૈતાદ્યકૂટ સે માણિભદ્રકૂટ પૂર્વદિશા
 મેં હૈં. પૂર્ણભદ્રકૂટ સે વૈતાદ્યકૂટ પૂર્વદિશા મેં હૈં તમિસ્રગુહાકૂટ સે પૂર્ણભદ્રકૂટ પૂર્વદિશા મેં હૈં
 ઉત્તરાર્ધકૂટ સે તમિસ્રગુહાકૂટ પૂર્વ દિશા મેં હૈં ઓર વૈશ્રવણકૂટ સે ઉત્તરાર્ધકૂટ પૂર્વ દિશા મેં
 હૈં હસ તરહ જો જિસસે પૂર્વદિશા મેં હૈં વહ ઉસસે પશ્ચિમદિશા મેં હૈં ક્યોં કિ પૂર્વ પશ્ચિમ
 મેં સાપેક્ષતા હૈં. જૈસે ઉત્તરાર્ધ ભરતકૂટ સે વૈશ્રવણકૂટ પશ્ચિમદિશા મેં હૈં તમિસ્રગુહાકૂટ સે
 ઉત્તરાર્ધ ભરતકૂટ પશ્ચિમદિશા મેં હૈં. પૂર્ણભદ્રકૂટ સે તમિસ્રગુહાકૂટ પશ્ચિમદિશા મેં હૈં.
 વૈતાદ્યકૂટ સે પૂર્ણભદ્રકૂટ પશ્ચિમદિશા મેં હૈં માણિભદ્રકૂટ સે વૈતાદ્યકૂટ પશ્ચિમદિશા મેં હૈં

કૂટ યુધી અને બીજા સર્વ કૂટોનું વર્ણન અહીં સમજવું જોઈએ આ પ્રમાણે દક્ષિણાર્ધ
 ભરતકૂટ ૧, અંડ પ્રપાતગુહાકૂટ ૨, માણિભદ્ર કૂટ ૩, વૈતાદ્યકૂટ ૪, પૂર્ણભદ્રકૂટ ૫, તમિસ્ર
 ગુહાકૂટ ૬, ઉત્તરાર્ધ કૂટ ૭ અને વૈશ્રવણ કૂટ ૮ એ આઠ કૂટો સમાનવર્ણનવાળા છે એ
 કૂટોમા પૂર્વ પૂર્વના કૂટો તા પૂર્વ દિશામાં છે અને બીજા બીજા કૂટ પશ્ચિમ દિશામાં
 છે. એમ બહુવું જોઈએ તથાચ દક્ષિણાર્ધ ભરતકૂટ અંડપ્રપાત કૂટથી પૂર્વ દિશામાં છે,
 અંડ પ્રપાત ગુહાકૂટ માણિભદ્ર કૂટથી પૂર્વદિશામાં છે, વૈતાદ્ય કૂટથી માણિભદ્રકૂટ પૂર્વ દિશા
 માં છે. પૂર્ણભદ્રકૂટથી વૈતાદ્ય કૂટ પૂર્વ દિશામાં છે. તમિસ્ર ગુહાકૂટથી પૂર્ણભદ્રકૂટ પૂર્વ
 દિશામાં છે. ઉત્તરાર્ધ કૂટથી તમિસ્ર ગુહાકૂટ પૂર્વદિશામાં છે અને વૈશ્રવણકૂટથી ઉત્તરાર્ધકૂટ
 પૂર્વ દિશામાં છે આ પ્રમાણે જે જેનાથી પૂર્વ દિશામાં છે તે તેનાથી પશ્ચિમ દિશામાં છે
 એમ કે પૂર્વ પશ્ચિમમાં સાપેક્ષતા છે એમકે ઉત્તરાર્ધ ભરતકૂટથી વૈશ્રવણકૂટ પશ્ચિમ દિશામાં
 છે, તમિસ્ર ગુહાકૂટથી ઉત્તરાર્ધ ભરતકૂટ પશ્ચિમ દિશામાં છે, પૂર્ણભદ્ર કૂટથી તમિસ્ર ગુહા

પશ્ચિમાયાં માણિભદ્રકૂટાત્ તત્ પશ્ચિમાયાં खण्डप्रपातकाटात् તત્ પશ્ચિમાયાં દક્ષિ-
નાર્ધે ભરતકૂટાત્ ઇતિ પર્યવસિતમ્ ।

‘ઇમેસિ’ ઇયામ્ અનન્તરોક્તાનાં કૂટાનાં ‘વળ્ળાવાસે’ વર્ણાત્રાસે-વર્ણનપદ્ધતૌ ‘ગાહા’
ગાથા-‘મજ્ઞે વેયદ્વદસ્સ ડ’ વૈતાલ્યસ્ય પર્વતસ્ય મધ્યે-મધ્યભાગે ‘તિણિ કૂડા’ ત્રીણિ-
કૂટાનિ અનુપદં વક્ષ્યમાણાનિ ‘કળગમયા’ કનકનયાનિ-સ્વર્ણમયાનિ ‘હોતિ’ ભવન્તિ
સન્તિ ‘સેસા’ શેષાણિ-તદ્વિન્નાનિ ‘પવ્વયકૂડા પર્વતકૂટાનિ ‘સવ્વે રયણામયા સર્વાણિ
રત્નમયાનિ-વૈદુર્યાદિ રત્નમયાનિ ‘હો તિ ભવન્તિ-સન્તિ । ૧ । તત્ર કાનિ સ્વર્ણમયાનિ કાનિ
રત્નમયાનોતિ દર્શયિતુમાહ-‘માણિભદ્રકૂડે’ માણિભદ્ર કૂટ ૧ ‘વેયદ્વદકૂડે’ વૈતાલ્યકૂટ ૨
‘પુણ્ણમદ્ કૂડે’ પૂર્ણમદ્રકૂટ ૩ ‘પપ્પ તિણિ કૂડા કળગમયા’ ઇતાનિ ત્રીણિ કૂટાનિ
કનકમયાનિ ‘સેસા’ શેષાણિ-અનન્તરોક્તકૂટત્રયભિન્નાનિ ‘છપ્પિ રયણામયા’ ષડ્પિ
કૂટાનિ રત્નમયાનીતિ ।

નવસુ કૂટેષુ ‘દોણ્હં’ દ્વયોઃ કૂટયો. તમિસ્રગુહાકૂટ, खण्डप्रपातकूटयो:

इत्यादि । ता इमेसि वण्णावासे गाहा—

મજ્ઞે વેયદ્વદસ્સ ડ કળગમયા તિણિ હોતિ કૂડા ડ ।

સેસા પવ્વયકૂડા સવ્વે રયણામયા હોતિ । ૧ ।

इन कूटों के वर्णन करने में यह गाथा है वैताल्य पर्वत के मध्य में वक्ष्यमाण ये तीन
कूट है जो कि स्वर्णमय हैं: इनसे भिन्न जो और पर्वत कूट है वे सब रत्नमय हैं वैदुर्य
आदि रत्नों के बने हुए हैं इनमें ‘माणिभद्रकूडे वेयद्वदकूडे पुण्णभद्रकूडे पप तिण्णि कूडे
कणगामया सेसा छप्पि रयणामया’ माणिभद्रकूट वैताल्यकूट एव पूर्णभद्रकूट, ये तीन कूट कन
कमय हैं और बाकीके ६ कूट रत्नमय हैं । ‘दोण्हं वि सरिसणामया देवा कयमालए चैव णट्ट-
मालए चैव सेसाणं छण्हं सरिसणामया जण्णामया य कूडा तन्नामा खल्ल हवन्ति ते देवा पलि-
ओवमट्ठिइया हवन्ति पत्तेयं’, ॥ १ ॥ इन नौ कूटों में से दो कूटों के तमिस्रगुहाकूट और

કૂટ પશ્ચિમ દિશામાં છે. વૈતાલ્ય કૂટથી પૂર્ણભદ્ર કૂટ પશ્ચિમ દિશામાં છે. મણિભદ્ર કૂટથી
વૈતાલ્ય કૂટ પશ્ચિમ દિશામાં છે ઇત્યાદિ. ઇમેસિ વળ્ળાવાસે ગાહા—

મજ્ઞે વેયદ્વદસ્સ ડ ક યા તિણિ હોતિ કૂડા ડ ।

સેસા પવ્વયકૂડા સવ્વે રયણામયા હોતિ ॥ ૧ ॥

આ કૂટોના વર્ણનને અનુલક્ષીને આ ગાથા છે—વૈતાલ્ય પર્વતના મધ્યમાં વક્ષ્યમાણ
એ ત્રણ કૂટો છે એ સ્વર્ણમય છે એનાથી બીજા એ પર્વત કૂટો છે તે સર્વે રત્નમય છે.
એ વૈદુર્ય વગેરે રત્નોના બનેલા છે. એમાં ‘માણિભદ્રકૂડે વેયદ્વદકૂડે પુણ્ણમદ્કૂડે પપ
તિણિ કૂડા કળગામયા સેસા છપ્પિ રયણામયા “માણિભદ્ર કૂટ, વૈતાલ્ય કૂટ અને પૂર્ણભદ્ર
એ ત્રણ કૂટો કનકમય છે અને બાકીના ૬ કૂટો રત્નમય છે “દોણ્ણં વિ સરિ ણમયા
દેવા કયમાલપ્પ ચેવ નટ્ટમાલપ્પ સેસાણં છણ્ણં સરિસણામયા જણ્ણામયા ય કૂડા તન્નામા
ખલ્લુ હવન્તિ તે દેવા પલિઓવમટ્ઠિયા હવન્તિ પત્તેયં ॥ ૧ ॥ એ નવકૂટોમાંથી એ કૂટોના—

‘વિસરિસણામયા દેવા’ વિસદ્દશનામકૌ દેવૌ સ્તઃ । તૌ ચ ક્રમેણ દર્શયતિ—‘કય-
માલ્લ એવ’ કૃતમાલકઃ ૧ એવ ‘નદ્દમાલ્લ એવ’ નૃત્તમાલકઃ એવ ઇતિ । તમિસ-
શુદ્ધાકૂટસ્ય કૃતમાલઃ, સ્વર્ણપ્રપાતશુદ્ધાકૂટસ્ય નૃત્તમાલઃ ઇતિ ક્રમેણ દ્વૌ દેવૌ બોધ્યૌ ।
‘સેસાણં’ શેષાણાં—પૂર્વોક્તમિન્નાનાં ‘છળં’ પળ્લાં કૂટાનાં ‘સરિસણામયા’ સદ્દશનામકાઃ
કૂટનામસદ્દશનામકાઃ દેવા ભવન્તિ । અત્રાર્થે ગાથામાહ- ‘જળ્લામયા’ ઇત્યાદિ ।
ઇતિ સ્પષ્ટયતિ—‘જળ્લામયાય કૂડા તન્નામા સ્વલ્લ’ યન્નામકાનિ કૂટાનિ તન્નામકાઃ
સ્વલ્લ તે =કૂટાધિષ્ઠાતાગે દેવાઃ । ‘હૌતિ’ ભવન્તિ-સન્તિ ઇતિ તે દેવાઃ કીદૃશાઃ ?
ઇતિ જિજ્ઞાસાયામાહ—‘પલ્લિઓવમદ્વિદ્યા’ પલ્લોપમસ્થિતિકાઃ-ઇત્યાદિ ‘પત્તેયં’ પ્રત્યેકમ્
એકૈકસ્ય કૂટસ્ય ‘પત્તેયં’ પ્રત્યેકમ્ એકૈકો દેવ એવ સર્વકૂટદેવાઃ પલ્લોપમસ્થિતિકાઃ
‘હવતિ’ સન્તીતિ । અનેનાષ્ટાનાં કૂટાનાં સ્વામિન ઉક્તાઃ, સિદ્ધાયતનકૂટે તુ સિદ્ધાય-
તનસ્યેવ મુખ્યત્વેન સ્વામિનોઽકથનમિતિ બોધ્યમ્ ।

અથ સ્વર્ણપ્રપાતશુદ્ધાકૂટાધિપતીનાં રાજધાન્યઃ ક સન્તીતિ પૃચ્છતિ—હે
મદન્ત ! સ્વર્ણપ્રપાતશુદ્ધાકૂટાધિપતીનાં તેષાં કૃતમાલકાદિદેવાનાં ‘રાયહાણીઓ’

સ્વર્ણપ્રપાતશુદ્ધાકૂટ કે દેવ વિસદ્દશનામ વાળે છે અને નામ ક્રમશઃ, કૃતમાલક અને નૃત્ત-
માલક છે । બાકી કે ૬ કૂટો કે દેવકૂટો કે જૈસે નામ છે વૈસે હી, નામવાળે છે । યહી
વાત “જળ્લામયાય કૂડા તન્નામા સ્વલ્લ હવતિ તે દેવા પલ્લિઓવમદ્વિદ્યા હવંતિ પત્તેયં ૨”
હસ ગાથા દ્વારા પ્રકટ કો ગઈ છે અને દેવોં કો એક ૨ પલ્લોપમ કો સ્થિતિ હોતી છે
હસ તરહ એક એક કૂટ કા એક એક દેવ હોતા છે અને વહ અને ૨ કૂટ કા સ્વા-
મી હોતા છે પરન્તુ સિદ્ધાયતનકૂટમેં જો સિદ્ધાયતન દેવ છે વહો વહા કા મુખ્ય રૂપ સે
સ્વામી છે એસા નહીં છે એસા જાનના ચાહિયે ।

અને સ્વર્ણપ્રપાતશુદ્ધાકૂટ આદિ કે અધિપતિયોં કી રાજધાનિયાં કહા પર છે, હસ વાત
કો જાનને કી ઇચ્છા સે ગૌતમસ્વામી પ્રશ્ન સે એસા પૂછતે હૈ—

તમિસ શુદ્ધાકૂટ અને સ્વર્ણપ્રપાત શુદ્ધાકૂટના—દેવ વિસદ્દશ નામવાળા છે. એમના નામો
ક્રમશઃ કૃતમાલક અને નૃત્તમાલક છે એવ ૬ કૂટોનાં નામ એવા જ નામવાળા છે એવ
વાત “જળ્લામયાય કૂડા તન્નામા સ્વલ્લ હવંતિ તે દેવા પલ્લિઓવમદ્વિદ્યા હવંતિ પત્તેયં ૨”
“આ ગાથા વડે પ્રકટ કરવામા આવી છે એ દેવોની એક એક પલ્લોપમ બેટલી સ્થિતિ
છે. આ પ્રમાણે એક એક દેવ હોય છે અને તે પોતા પોતાના કૂટનો સ્વામી હોય
છે પરન્તુ સિદ્ધાયતન કૂટમાં જે સિદ્ધાયતન દેવ છે તેજ ત્યાનો મુખ્ય રૂપથી સ્વામી હોય
એવું નથી આ એક નિશેષ વાત જ્ઞાનમાં રાખવી જોઈએ

એ સ્વર્ણપ્રપાત શુદ્ધાકૂટ વગેરેના અધિપતિઓની રાજધાનીઓ કયા અવેલી છે? એ
વાતને જાણવાની ઇચ્છાથી ગૌતમ પ્રશ્નને એવી રીતે પૂછે છે કે “રાયહાણીઓ” કે બહેત !

રાજધાન્યઃ ક્વ સન્તિ ? ભગવાનાહ—હે ગૌતમ ! ‘જંબુદ્વીવે દીવે મંદરસ્સ પવ્વયસ્સ દાહિણેણ’ જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે મન્દરસ્ય પર્વતસ્ય દક્ષિણેન-દક્ષિણસ્યાં દિશિ -તિરિયં-અસલેઝ્જે દીવસમુદ્દે વીરૂવહ્તા’ તિર્યક્ અસંખ્યેયદ્વીપસમુદ્રાન્ વ્યતિવ્રજ્ય-વ્યતિક્રમ્ય ‘અણ્ણમિ જંબુદ્વીવે દીવે વારસ જોયણસહસ્સાઈ ઓગાહેત્તા’ અન્યસ્મિન્ જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે દ્વાદશ યોજનસહસ્તાણિ અવગાહ્ય-પ્રવિશ્ય ‘પ્તથ ણં રાયહાણીઓ’ માણિયન્વાઓ’ અત્ર સ્થલ રાજધાન્યઃ મણિતવ્યાઃ-વક્તવ્યાઃ તાઃકીદશ્યઃ ?’ ઇતિ જિજ્ઞાસાયમાહ—‘વિજયા રાયહાણી સરિસયાઓ’ વિજયારાજધાનીમદશિકાઃ ઇતિ । યથા વિજયા રાજધન્યાઃ પ્રમાણાદિકં વર્ણિતં તથૈ’ સામાપિ બોધ્યમિતિ । તત્ર સ્થળપ્રપાતગુહાકૂટાધિપતિદેવસ્ય રાજધાની ઉપપાતગુહાનામ્ની માણિમદ્રકૂટાધિપતે દેવસ્ય માણિમદ્રેત્યેવ મન્યેષામપિ રાજધાન્યો

“રાયહાણીઓ” હે મદન્ત! ઉન સ્થળપ્રપાત ગુહાકૂટ આદિ કે અધિપતિ કૃતમાલાદિ દેવો કી રાજધાનિયાં કહાં પર હૈ” હસકે ઉત્તર મેં પ્રશ્ન કહતે હૈ ”ગોયમા! જંબુદ્વીવે દીવે મંદરસ્સ પવ્વયસ્સ દાહિણેણ તિરિયં અસલેઝ્જે દીવસમુદ્દે વીરૂવહ્તા અણ્ણમિ જંબુદ્વીવે દીવે વારસ જોયણસહસ્સાઈ ઓગાહેત્તા પ્તથ ણં રાયહાણીઓ માણિયન્વાઓ વિજયા રાયહાણી સરિસયાઓ” જહાં પર દ્રમ રહતે હૈ એસે હસ જંબુદ્વીપ નામકે દ્વીપ મેં જો સુમેરુ પર્વત હૈ ઉસ પર્વત કી, દક્ષિણ દિશામેં તિર્યક્ અસંખ્યાત દ્વીપ સમુદ્રોં કો ઉલ્લઙ્ઘન કરકે આગત અન્ય દૂસરે જમ્બુદ્વીપ મેં ૧૨ હજાર યોજન નોચે આગે જાને પર ઉન કૃતમાલાદિક દેવોં કી રાજધાનિયાં હૈ । યે રાજધાનિયાં વિજયા રાજધાની કી હો જૈસી હૈ અતઃ વિજયા રાજધાની કા પ્રમાણ આદિ જૈસા ઉપર કહા ગયા હૈ વૈસા હી વહ સબ યહાં પર મી હૈ એસા જાનના ચાહિયે । ઉનમેં જો સ્થળપ્રપાતગુહાકૂટ કા અધિપતિ દેવ હૈ ઉસકી રાજધાની સ્થળપ્રપાતગુહા નામકી હૈ માણિમદ્રકૂટ કા અધિપતિ જો દેવ હૈ ઉસકી રાજધાની માણિમદ્રા નામ કી હૈ હસી, તરહ સે અન્ય કૂટાધિપતિ દેવોં કી મી રાજધાનિયાં સમક્ષેની ચાહિયે । યે સબ કહે

અંકપ્રપાત શુક્રાકૂટ આદિના ‘અધિપતિ કૃતમાલાદિદેવોની રાજધાનીઓ કયાં આવેલી છે ? આના ઉત્તરમાં પ્રશ્ન કહે છે, “ગોયમા ! જંબુદ્વીવે દીવે મંદરસ્સ પવ્વયસ્સ દાહિણેણ તિરિયં અસલેઝ્જે દીવસમુદ્દે વીરૂવહ્તા અણ્ણમિ જંબુદ્વીવે દીવે વારસજો સહસ્સાઈ ઓગાહેત્તા પ્તથ ણં રાયહાણીઓ માણિયન્વાઓ વિજયારાયહાણી સરિસયાઓ ત્યાં અમે રહીએ છીએ એવા આ જંબુદ્વીપ નામક દ્વીપમાં જે સુમેરુ પર્વત છે તે પર્વત ની દક્ષિણ દિશામાં તિર્યક અસખ્યાત દ્વીપ સમુદ્રોને ઓળંગીને જે અન્ય જંબુદ્વીપ આવે છે તેમાં ૧૫ યોજન નીચે આગળ વાધવાથી તે કૃતમાલાદિક દેવોની રાજધાનીઓ છે. એ સર્વ રાજધાનીઓ વિજયા રાજધાની જેવી જ છે. એથી વિજયા રાજધાનીનું પ્રમાણ જેવું કહેવામાં આવ્યું છે તેવું જ સર્વનું સમજવું જોઈએ એમાં જે અંક પ્રતાપ શુક્રાકૂટના અધિપતિ દેવ છે તેની રાજધાની અંક પ્રપાત શુક્રા નામની છે માણિમદ્રા કૂટનો અધિપતિ જે દેવ છે તેની રાજધાની માણિમદ્રા નામે છે આ પ્રમાણે અન્ય કૂટાધિપતિ

બુચ્ચઈ' મદત્ત ! એવમ્ ઉચ્યતે-કથ્યતે 'વેયહ્દે પવ્વણ' વેયહ્દે પવ્વણ. વૈતાલ્ય પર્વતઃ
વૈતાલ્યઃ પર્વતઃ !' इति भगवानाह-‘गोयमा ! वेयह्द्रेण पव्वण भरह वासं’ हे गौतम !
वैताल्यः खलु पर्वतः भरत वर्ष-क्षेत्रं ‘दुहा’ द्विधा वक्ष्यमाणायां द्वाभ्यां प्रकाराभ्यां
विभयमाणे २’ विभजन् २- विभक्तं कुर्वन् २ चिद्वह्’ निष्पत्ति, ‘त जहा’ तद्यथा ‘दाहिणह्द
भरहंच । उत्तरह्दभरहं’ दक्षिणार्द्धभरतंच ? उत्तरार्द्धभरतं च २। एवं भरतवर्षस्य भागद्वयं
करोति वૈતાલ્ય ‘एकं दक्षिणमर्द्धम् अपरं चोत्तरमर्द्धमिति । अत्र वૈતાल्यपर्वतेच ‘वेयह्द-
गिरिकुमारे य इत्थदेवे परिवसइ’ वૈતાल्यगिरिकुमारो देवः परिवसति, स च कीदृशः ?
इति जिज्ञासायामाह-‘महिह्दिए जाव पलिओवमद्विहए’ महर्द्धिको यावत् पल्योपमस्थि-
तिकः इति । अत्र यावच्छब्द संग्राह्याः शब्दा अस्यैवाष्टमसूत्रतो ग्रहीतव्याः, तेषाम-
र्थोऽपि तत्रैव टीकातोऽवबोध्य इति ।

अथ वૈતાल्यस्यान्वर्थनामत्वे दर्शित हेतुमुपसंहरति-‘से तेणद्वेणं’ तत्तेनार्थेने-
त्यादि-सः-वૈતાल्यः तेन- प्रदर्शितेन अर्थेन कारणेन ‘गोयमा, एवं बुच्चइ’ हे गौतम!
एवमुच्यते-‘वेयह्द्रे पव्वण’ वૈતાल्यः पर्वतः २ इति ।

‘अदुत्तरं च णं’ अथोत्तरम्-अथापरं च खलु ‘गोयमा ! वेयह्दस्स पव्व-

‘गोयमा ! वेयह्द्रेण पव्वण भरहं वासं दुहा विभयमाणे चिद्वह्’

हे गौतम! વૈતાલ્યપર્વત ભરતક્ષેત્ર કો દો વિભાગો મેં વિભક્ત કરતા હૈ “તં જહા” જૈસે
‘દાહિણહ્દભરહં’ ચ ઉત્તરહ્દભરહં’ હનમેં એક કા નામ દક્ષિણોર્ધભરત ઔર દૂસરે કે નામ
ઉત્તરોર્ધભરત હૈ, ‘વેયહ્દગિરિકુમારે ય ઇત્થ દેવે મહિહ્દિયે જાવ પલિઓવમદ્વિહયે પરિવસઈ’,
હસ વૈતાલ્યપર્વત પર વૈતાલ્યગિરિકુમાર નામ કા એક દેવ રહતા હૈ યહ મહર્દ્ધિક દેવ હૈ ઔર
હસકો એક પલ્યોપમ કો સ્થિતિ હૈ યહાં યાવત્ શબ્દ સે સગ્રાહ્ય શબ્દ હસી સૂત્ર કે અષ્ટમ
સૂત્રસે જ્ઞાન ઠેના યાહિયે “સે તેણદ્વેણં ગોયમા એવ બુચ્ચઈ વેયહ્દે પવ્વણ ૨” હસ કારણ હૈ
ગૌતમ! હસ પર્વત કા નામ વૈતાલ્ય એમા જૈને કહ્તા હૈ । “અદુત્તરં ચ ણ ગોયમા! વેયહ્દસ્સ

જવાબમા પ્રશ્ન કહે છે. “ગોયમા ! વેયહ્દેણ પવ્વણ મરહં વાસં દુહા વિભયમાણે ૨ ચિદ્વહ્”
હે ગૌતમ ! વૈતાલ્ય પર્વત ભરત ક્ષેત્રને એ વિભાગોમા વિભક્ત કરે છે. “તં જહા” જેમકે
“દાહિણહ્દભરહં” ચ ઉત્તરહ્દભરહં” એમા થી એકનુ નામ દક્ષિણોર્ધ ભરત અને બીજાનુ
નામ ઉત્તરોર્ધ ભરત છે. “વેયહ્દગિરિકુમારે ય ઇત્થ દેવે મહિહ્દિયે જાવ પલિઓવમદ્વિહયે
પરિવસઈ” આ વૈતાલ્ય પર્વત પર વૈતાલ્ય ગિરિકુમાર નામે એક દેવ રહે છે આ મહર્દ્ધિક
દેવ છે અને આની એક પલ્યોપમ બેઠલી સ્થિતિ છે આહીં યાવત્ શબ્દથી સ ગ્રાહ્ય શબ્દો
એ બે સૂત્રના અષ્ટમ સૂત્રથી બધી દેવા બેઠી “સે તેણદ્વેણં ગોયમા ! એવ બુચ્ચઈ વેયહ્દેય
પવ્વણ ૨” આ કારણથી હે ગૌતમ ! આ પર્વતનુ નામ વૈતાલ્ય એવું મેં કહ્યું છે. “અદુત્તરં

अथ उत्तरभरतार्द्धस्वरूपं पृच्छति—

पञ्चयत्स वेयद्देह सासण णामधेज्जे पण्णते', अथवा हे गौतम-वैतादचार्यत का वैतादच
ऐसा नाम शाश्वत कहा गया है' इसके होने में कोई निमित्त नहीं है। 'जं णं कयाइ
ण आसि ण कयाइ ण अत्थि ण कयाइ ण भविस्सइ भुवि य भवइ य भविस्सइ य ध्रुवे णियए
सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे" क्योंकि ऐसा नहीं है कि यह वैतादचपर्वत पहिले
नहीं था किन्तु यह पहिले भी था और ऐसा भी नहीं है कि यह वर्तमान में भी नहीं
है किन्तु अब भी यह है तथा ऐसा भी नहीं है कि यह भविष्यत् काल में नहीं
रहेगा किन्तु उस समय भी यह रहेगा अतः त्रिकाल में इसकी सत्ता होने से यह पहिले
भूतकाल में था अब भी वर्तमान है और भविष्यत् काल में भी रहेगा इस कारण यह ध्रुव
है नियत है शाश्वत है अक्षय है अव्यय है अवस्थित है और नित्य है इन ध्रुवादि पदों
की व्याख्या चतुर्थ सूत्र में की जा चुकी है अतः यह वहीं से जानलेनी चाहिये ॥१७॥

જા નો । વૈયડ્ઢેસ્સ પવ્વયસ્સ વૈયડ્ઢેહ સાસપ જામવેજ્જે પળ્લસે” અથવા હે ગૌતમ !
 વૈતાહ્ય પર્વતનું વૈતાહ્ય જોવા નામ શાશ્વત કહેવામાં આવેલ છે જો નામથી તેની પ્રસિદ્ધિમાં
 કોઈ નિમિત્ત નથી “જે જ કયાહ જ આસિ, જ કયાહ જ અત્થિ જ કયાહ જ મવિસ્સહ
 મુવિં જ મવહ ય મવિસ્સહ ય પુવ્વે જિયપ સા -પ અક્કપ અવ્વપ અવઢિપ જિલ્લે” કેમકે
 જોવા પશુ નથી કે આ વૈતાહ્ય પર્વત પહેલા હતો નહિ. પરંતુ ખરેખર જો પહેલાં પશુ હતો.
 જો અત્યારે નથી જોવા પશુ નથી જો ખરેખર વર્તમાનમાં પશુ છે તેમજ જોવા પશુ નથી
 કે જો ભવિષ્યત કાલમાં રહેશે નહિ ખરેખર જો ભવિષ્યત કાળમાં પશુ વિદ્યમાન રહેવાનો
 છે આ રીતે ત્રિકાળમાં જોની સત્તા હોવાથી આ ભૂતકાળમાં હતો, હમણાં વર્તમાનમાં
 છે અને ભવિષ્યત કાળમાં પશુ રહેશે જોથી આ મુલ છે, નિયત છે, શાશ્વત છે, અક્ષય છે,
 અન્યથા છે, અવસ્થિત છે અને નિત્ય છે જો મવાદિ પદોની વ્યાખ્યા ચતુર્થ સૂત્રમાં કરવામાં
 આવી છે. જોથી તે સંબંધી કથન ત્યાંથી બાણી હેવું જોઈએ. ॥૧૭॥

पण्णत्ते ? गोयमा ! चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणेणं वेयड्डस्स पव्वयस्स उत्तरेणं पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं एत्थ णं जंबुद्वीवे दीवे उत्तरड्डुभरहे णामं वासे पण्णत्ते पाईणपडीणायए उदीणदाहिण-वित्थिण्णे, पलिअंक्रसंठिए दुहा लवणसमुद्दं पुदंठे पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुदंठे पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्च-त्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुदंठे गंगासिंघूहिं महान्दीहिं तिभागपविभत्ते दोण्णिअट्ठ तीसे जोयणसए तिण्णि य एगूणवीसइभागे जोयणस्स विक्कमेणं तस्स वाहा पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं अट्ठास्सवाणउए जोयणसए सत्त य एगूणवीसइभागे जोयणस्स अट्ठभागं च आयामेणं । तस्स जीवा उत्तरेणं पाईणपडीणायया दुहा लवणसमुद्दं पुट्ठा तहेव जाव चोदस जोयणसहस्साइं चत्तारिय एककहत्तरे जोयणसए च्च एगूण-वीसइभाए जोयणस्स किंचिविसेसूणे आयामेणं पण्णत्तो । तीसे धणुपुट्ठे दहिणेणं चोदसजोयणसहस्साइं पंच अट्ठावीसे जोयणसए एकारस य एगूण वीसइभाए जोयणस्स परिकखेवेणं ।

उत्तरड्डुभरहस्स णं भंते ! वासस्स केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहाणामए आलिंगपुक्खरेइ वा जाव कित्तिमेहिचेव अकित्तिमेहिचेव । उत्तरड्डु भरहेणं भंते ! वासे म याणं केरिसए आयारभाव पडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! तेणं मणुया बहु संघयणा जाव अप्पेगइया सिज्झंति जाव सब्ब दुक्खाणमंतं करंति ॥सू० १८॥

छाया—कव खलु भदन्त ! जम्बूद्वीपे द्वीपे उत्तरार्द्धभरतं नाम वर्षं प्रकृतम् ? गौतम क्षुद्रहिमवतो वर्षधरपर्वतस्य दक्षिणेन वैताल्यस्य पर्वतस्य उत्तरेण पौरस्त्य णसमुद्रस्य पाश्चात्येन पाश्चात्यलवणसमुद्रस्य पौरस्त्येन अत्र खलु जम्बूद्वीपे द्वीपे उत्तरार्द्धभरतं नाम वर्षं प्रकृतम्, प्राचीनप्रतीचीनाऽऽयतम्, उदीचीनदक्षिणविस्तीर्णं पर्यङ्कस्थितं द्विधा लवणसमुद्रं स्पृष्टं पौरस्त्यया कोट्या पौरस्त्य लवणसमुद्रं स्पृष्टं पाश्चात्यया कोट्या पाश्चात्य लवणसमुद्रं स्पृष्टं गङ्गासिन्धुभ्यां महानदीभ्यां त्रिभागप्रविभक्तं द्वे अष्टात्रिंशे योजनशते श्रीदक्षैकोनविंशतिभागान् योजनस्य विष्कम्भेण । तस्य वाहा पौरस्त्यपाश्चात्येन

અષ્ટાદશ દિવનવત્યધિકાનિ યોજનશતાનિ સપ્ત ચ એકોનવિંશતિભાગાન્ યોજનસ્ય અર્ધ્ધભાગં ચ આયમેન । તસ્ય જીવા ઉત્તરેણ પ્રાચ્ચનપ્રતીચીનાઽઽયતા દ્વિધા લવણસમુદ્ર સ્પૃષ્ટા તથેવ યાવત્ ચતુર્દશયોજનસહસ્રાણિ ચત્વારિ ચ એક સપ્તત્યધિકાનિ યોજનશતાનિ ષટ્ચ એકોનવિંશતિભાગાન્ યોજનસ્ય કિશ્ચિદ્વિશેષોનાન્ આયામેન પ્રજ્ઞતા । તસ્યાઃ ધનુષ્પૃષ્ઠં દક્ષિણેન ચતુર્દશયોજનસહસ્રાણિ પચ્ચઅષ્ટાવિંશતિ યોજનશતાનિ એકાદશ ચ એકોનવિંશતિ-ભાગાન્ યોજનસ્ય પરિક્ષેપેણ ।

ઉત્તરાર્ધભરતસ્ય ચલુ મદન્ત ! વર્ષસ્ય કોદશકઃ આકારભાવપ્રત્યવતારઃ પ્રજ્ઞતઃ ? ગૌતમ ! બહુસમરમણીયો મૂમિભાગઃ પ્રજ્ઞત સ યથાનામકઃ આલિહ્નપુષ્કરમિતિ વા યાવત્ કૃત્રિમૈશ્વૈવ અકૃત્રિમૈશ્વૈવ । ઉત્તરાર્ધમરતે ચલુ મદન્ત ! વર્ષે મનુજાનાં કોદશકઃ આકાર પ્રત્યવતારઃ ? ગૌતમ તે ચલુ મનુજા બહુસંહનના યાવત્ અપ્યેકકે સિદ્ધયન્તિ યાવત્ સર્વ-દુઃખાનામન્તે કુર્વન્તિ ॥ ૧૮ ॥

ટીકા— 'કહિ ણં મંતે !' इत्यादि ।

'કહિ ણં મંતે ! જંબુદ્વીવે દીવે-ઉત્તરમરહે જામં વાસે પળ્લણ્ણે' હે મદન્ત ! જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે ઉત્તરાર્ધમરતં નામ વર્ષ ચલુ વ્વ પ્રજ્ઞતમ્ ? મગવાનાહ—'ગોયમા ! ચુલ્હિમવતસ્સ' હે ગૌતમ ! ક્ષુદ્રહિમવતઃ—લઘુહિમવતઃ 'વાસહરપવ્વયસ્સ દાહિણેણ' વર્ષધરપર્વતસ્ય દક્ષિણેન—દક્ષિણસ્યાં દિશિ 'વેયદ્દહસ્સ પવ્વયસ્સ ઉત્તરેણ' વૈતા-હ્યસ્ય પર્વતસ્ય ઉત્તરેણ—ઉત્તરસ્યાં દિશિ 'પુરત્થિમલ્લવણસમુદ્દસ' પૌરસ્ત્યલવણસમુદ્રસ્ય પૂર્વદિગ્વર્તિલવણસમુદ્રસ્ય 'પચ્ચત્થિમેણ' પાશ્ચાત્યેન—પશ્ચિમાયાં દિશિ 'પચ્ચત્થિમલ્લવણ-

ઉત્તરાર્ધ ભરતકે સ્વરૂપ કા પ્રતિપાદન—

'કહિણં મંતે ! જંબુદ્વીવે દીવે ઉત્તરદ્વ મરહે જામં વાસે પળ્લણ્ણે' इत्यादि ।

ટીકાર્થ—ગૌતમસ્વામી ને પ્રશ્ન છે એસા પૂછા હૈ હે મદન્ત ! હસ જમ્બૂદ્વીપ નામકે દ્વીપ મેં ઉત્તરાર્ધ મરતક્ષેત્ર કહાં પર કહા ગયા હૈ' હસકે ઉત્તર મેં પ્રશ્ન કરીતે હૈ 'ગોયમા ! ચુલ્હિમવત-સ્મ વાસહરપવ્વયસ્સ દાહિણેણ વેયદ્દહસ્સ પવ્વયસ્સ ઉત્તરેણ પુરત્થિમલ્લવણસમુદ્દસ પચ્ચત્થિ-મેણ પચ્ચત્થિમલ્લવણસમુદ્દસ પૂરત્થિમેણ પસ્થળ જંબુદ્વીવે દીવે ઉત્તરદ્વ મરહે જામં વાસે પળ્લણ્ણે' હે ગૌતમ ! લઘુહિમવાન્ વર્ષધર પર્વત કો દક્ષિણ દિશા મેં એવં વૈતાહ્ય પર્વતની ઉત્તરદિ-શામેં તથા પૂર્વદિગ્વર્તીલવણ સમુદ્ર કો પશ્ચિમદિશામેં એવં પાશ્ચાત્યલ્લવણસમુદ્ર કો પૂર્વદિશામેં

ઉત્તરાર્ધ ભરતના સ્વરૂપનુ પ્રતિપાદન—

'કહિણં મંતે ! જમ્બુદ્વીવે દીવે ઉત્તરદ્વ મરહે જામં વાસે પળ્લણ્ણે' इत्यादि सूत्र ॥ ૧૮ ॥

ટીકાર્થ—ગૌતમે પ્રશ્નને કોવી રીતે પ્રશ્ન કર્યો છે કે હે મદન્ત ! આ જમ્બૂદ્વીપ નામક દ્વીપમાં ઉત્તરાર્ધ ભરત ક્ષેત્ર કયા સ્થળે આવેલ છે ? આના જવાબમાં પ્રશ્ન કરે છે "ગોયમા ! ક્ષુલ્હિમવતસ્સ વાસહરપવ્વયસ્સ દાહિણેણ વેયદ્દહસ્સ પવ્વયસ્સ ઉત્તરેણ પુરત્થિમલ્લવણ સમુદ્દસ પચ્ચત્થિમેણ પસ્થળ જમ્બુદ્વીવે દીવે ઉત્તરદ્વ મરહે જામં વાસે પળ્લણ્ણે" હે ગૌતમ ! લઘુહિમવાન વર્ષધર પર્વતની દક્ષિણ દિશામાં અને વૈતાહ્ય પર્વતની ઉત્તર દિશામાં તથા પૂર્વ દિગ્વર્તી લવણ સમુદ્રની પશ્ચિમ દિશામાં અને પાશ્ચાત્ય લવણ સમુદ્રની પૂર્વ દિશા

સમુદ્રસં પુરતિથમેળ' પાશ્ચાત્યલવણસમુદ્રસ્ય પૌરસ્ત્યેન-પૂર્વસ્યાં દિશિ 'एत्थ णं जंबुद्वीवे दीवे उत्तरइदमरहे णामं वासे पणत्ते' अत्र खलु जम्बूद्वीपे द्वीपे 'उत्तरार्द्धमरतं नाम वर्षं प्रज्ञप्तम्. तच्च कीदृशमिति जिज्ञासयामायांमप्रमाणादिना तद्वर्णयति-'पाईणपडीणायए' प्राचीनप्रतीचीनाऽऽयतं पूर्वपश्चिमयोर्दिशोरायतं-दीर्घम् 'उदीणदाहिणवित्थिण्णे' उदीचीनदक्षिणविस्तीर्ण-उत्तरदक्षिणयोर्दिशोर्विस्तारयुक्तम्, 'पलिंअंकसठिए' पर्यङ्कासस्थितं-पर्यङ्कासनसंस्थानेन सस्थितम्, 'दुहा लवणसमुदं पुट्टे' द्विधा लवणसमुद्रं स्पृष्टम्, तथाहि 'पुरत्थिमिल्लाए' पौरस्त्यया पूर्वदिग्भवया 'कोडीए' कोटया-अग्रभागेन 'पुरत्थिमिल्लं' पौरस्त्यं पूर्वदिग्भवं 'लवणसमुदं पुट्टे' लवणसमुद्रं स्पृष्टं 'पच्चत्थिमिल्लाए' पाश्चात्यया-पश्चिमदिग्भवया 'कोडीए' कोटया 'पच्चत्थिमिल्लं' लवणसमुद्रं पुट्टे पश्चिमलवणसमुद्रं स्पृष्टम्, गंगासिंधुहिं महाणईहिं तिभागपविमत्ते' गङ्गासिन्धुभ्यां महानदीभ्यां त्रिभागविभक्तं=त्रिभिर्भागैर्विभक्तम्, तत्रैवं भागत्रय बोध्यं-पूर्वभागो लवणसमुद्रं संगतया गंगामहानद्या कृतः, पश्चिमभागो लवणसमुद्रं संगतया सिन्धुमहानद्या कृतः, मध्यभागो गङ्गासिन्धुकृत इति । तथा 'दोणिण

जम्बूद्वीप नामक द्वीप में उत्तरार्ध भूक्षेत्र कहा गया है यह क्षेत्र-"पाडीण पडी णायए उदीणदाहिणवित्थिण्णे पलीअंकसठिए दुहा लवणसमुदं पुट्टे पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिल्ल लवणसमुदं पुट्टे गंगासिंधुहिं महाणईहिं तिभागपविमत्ते दोणिण अट्टनीस जोयणसए तिणिण य एगूनविसइभागे जोयणस्स विक्खंमेणं " यह पूर्व एवं पश्चिम दिशा में लम्बा है उक्त और दक्षिणदिशा में विस्तारयुक्त है पर्यङ्कासन संस्थान से सस्थित है पूर्वदिग्वर्ती कोटि से पूर्वदिग्वर्ती लवण समुद्र को और पश्चिम दिग्वर्ती कोटि से पश्चिम लवण समुद्र को स्पर्श कर रहा है गंगा और सिन्धु इन दो महान लवण समुद्र में मिलने वाली गंगा महानदी ने पूर्वभाग किया है, लवण समुद्र में मिलने वाली सिन्धु महानदी ने इसका पश्चिम भाग किया है एवं गंगा और सिन्धु इन दोनोंने इसका मध्यभाग किया है, इसका विस्तार

जम्बूद्वीप नामक द्वीपમાં ઉત્તરાર્ધ ભરત ક્ષેત્ર આવેલ છે. આ ક્ષેત્ર 'પાડીણ પડીણાયપ ઉદીણદાહિણવિત્થિણ્ણે પલિઅંકસંઠિપ દુહા લવણસમુદં પુટ્ટે પુરત્થિમિલ્લાપ-કોડીપ પુરત્થિમિલ્લ લવણસમુદં પુટ્ટે પચ્ચત્થિમિલ્લાપ કોડીપ પચ્ચત્થિમિલ્લ લવણસમુદં પુટ્ટે ગંગાસિન્ધુહિં મહાણઈહિં તિમાગપવિમત્તે દોણિણ અટ્ટનીસે જોયણસપ તિણિણય યગૂણવોસઇ ભાગે જોયણસ્સ વિક્કંમેણ" આ પૂર્વ તેમજ પશ્ચિમ દિશામાં લાંબુ છે ઉત્તર અને દક્ષિણદિશામાં વિસ્તારયુક્ત છે પર્યંકાસન સંસ્થાનથી સ્થિત છે. પૂર્વ દિગ્વર્તી કોટિથી પૂર્વદિગ્વર્તી લવણ સમુદ્રને અને પશ્ચિમ દિગ્વર્તી કોટિથી પશ્ચિમ લવણ સમુદ્રને આ સ્પર્શી રહેલ છે ગંગા અને સિન્ધુએ બે મહા નદીઓએ એને ત્રણ ત્રિભાગોમાં વિભાજ કરેલ છે. લવણ સમુદ્રમાં મળનારી મહા નદી ગંગાએ આનો પૂર્વ ભાગ કર્યો છે, લવણ સમુદ્રમાં મળનારી મહાનદી સિન્ધુએ આનો પશ્ચિમ ભાગ કર્યો છે અને ગંગા અને સિન્ધુએ આનો મધ્યભાગ કર્યો છે આનો વિસ્તાર

અઢતીસે જોયણસપ' દ્વે અઢાત્રિંશે યોજનશતે અઢાત્રિંશદધિકાનિ દ્વિશતયોજનાનિ
'તિણિ ય ઇગૂળવીસઙ્માગે જોયણસ્સ' ત્રીંશ્વ ઇકોનવિંશતિભાગાન્ યોજનસ્ય-ઇકો-
નવિંશતિભાગવિમત્કસ્ય યોજનસ્ય ત્રીન્ ભાગાંશ્ચ 'વિક્ષંભેણ' વિક્ષંભેણ=વિસ્તારેણ ।
'તસ્સ' તસ્ય-ઉત્તરાર્દ્ધભરતસ્ય 'વાહા'-વાહા-મુજાકારઃ ક્ષેત્રવિશેષઃ 'પુરત્થિમપચ્ચત્થિમેણ'
પૌરસ્ત્યપશ્ચિમેન-પૂર્વપશ્ચિમયોર્દિશોઃ 'અઢારસ વાણઽપ્ જોયણસપ' અઢાદશ દ્વિનવત્ય-
ધિકાનિ યોજનશતાનિ-દ્વિનવત્યધિકાઠ્ઠશતાધિકૈકસહસ્રયોજનાનિ 'સત્ત ય ઇગૂળ
વીસઙ્માગે જોયણસ્સ અઢ્ઢમાગં ચ' સપ્ત ચ ઇકોનવિંશતિભાગાન્ યોજનસ્ય અર્દ્ધ-
માગમ્-ઇકોનવિંશતિભાગવિમત્કસ્ય યોજનસ્ય સપ્તમાગાન્ ઇકોનવિંશતિતમભાગસ્ય
અર્દ્ધમાગં ચ 'આયામેણ'=દૈર્ઘ્યેણ । 'તસ્સ' ઉત્તરાર્દ્ધભરતસ્ય 'જીવા' જીવા 'ઉત્તરેણ' ઉત્તરેણ
ચુલ્લહિમવદિશિ 'પાઈણપહોણાયયા' પ્રાચીન પ્રતીચીન, ઽડયતા-પૂર્વપશ્ચિમયોર્દિશોરા-
યતા દીર્ઘા, 'દુહા લવણસમુદ્ધં પુઢ્ઢા તદેવ' દ્વિધા લવણસમુદ્ર સ્પૃષ્ટા તથૈવ પૂર્વવદેવ
દક્ષિણાર્દ્ધભરતજીવાવદેવ, અયમ્ભાવઃ પૌરસ્ત્યયા કોટયા પૌરસ્ત્યં લવણસમુદ્રં સ્પૃષ્ટા
પશ્ચિમયા કોટયા પશ્ચિમલવણસમુદ્રં સ્પૃષ્ટા, ઇત્યેવ દર્શયિતુમાહ-'જાવ' યાવાદિતિ
પશ્ચિમલવણસમુદ્રં સ્પૃષ્ટેતિ પર્યન્તમિત્યર્થઃ, 'ચોદસજોયણસહસ્સાઈ' ચતુર્દશ યોજન-

૨૩૮ $\frac{૩}{૧૯}$ યોજન કા હૈ "તસ્સ વાહા પુરત્થિમપચ્ચત્થિમેણ અઢારસ વાણઽપ્ જોયણસપ
સત્ત ય ઇગૂળવીસઙ્માગે જોયણસ્સ અઢ્ઢમાગ ચ આયામેણ" હસ ઉત્તરાર્દ્ધ ભરત કો
વાહા-મુજાકાર ક્ષેત્ર વિશેષ પૂર્વ પશ્ચિમદિશા મેં ૧૮૯૨ યોજન કો ઓર ઇક યોજન કે
૧૦ ભાગો મેં સે ૭૥ ભાગ પ્રમાણ હૈ યહ કથન આયામ(દોર્ઘતા) કી અપેક્ષા સે કહા ગયા
હૈ । "તસ્સ જીવા ઉત્તરેણ પાઈણપહોણાયયા દુહા લવણસમુદ્ધં પુઢ્ઢા તદેવ જાવ ચોદસજોયણ
સહસ્સાઈ ચત્તારિય ઇકઠ્ઠત્તરે જોયણસપ છચ્ચ ઇગૂળવીસઙ્માપ જોયણસ્સ કિંચિ વિસેસુને
આયામેણ પળ્ણત્તા" હસ ઉત્તરાર્દ્ધ ભારત કી જીવા ક્ષુલ્લહિમવાન્ પર્વત કી દિશા મેં પૂર્વ
સે પશ્ચિમ તક લમ્બી હૈ ઓર પૂર્વદિગ્વર્તી કોટિ સે પૂર્વદિગ્વર્તી લવણસમુદ્ર કા તથા પશ્ચિમ
દિગ્વર્તી કોટિસે પશ્ચિમ લવણ સમુદ્ર કો છૂતો હૈ હમકા આયામ ૧૪૪૭૧ યોજન કા હૈ ઓર

૨૩૮।૩।૧૮ યોજન બેટલી છે "તસ્સ વાહા પુરત્થિમપચ્ચત્થિમેણ અઢારસ વાણઽપ્ જોયણસપ
સત્ત ય ઇગૂળવીસઙ્માગે જોયણસ્સ અઢ્ઢમાગ ચ આયામેણ" આ ઉત્તરાર્દ્ધ
ભરતની વાહા-મુજાકાર ક્ષેત્ર વિશેષ-પૂર્વ પશ્ચિમ દિશામાં ૧૮૯૨ યોજન બેટલી અને
એક યોજનના ૧૬માં ભાગમાંથી ૭૬ ભાગ પ્રમાણ છે આ કથન આયામની અપેક્ષાએ
અનુસાર બેટલી "તસ્સ જીવા ઉત્તરેણ પાઈણપહોણાયયા દુહા લવણસમુદ્ધં પુઢ્ઢા તદેવ
જાવ ચોદસ જોયણસહસ્સાઈ ચત્તારિય ઇકઠ્ઠત્તરે જોયણસપ છચ્ચ ઇગૂળવીસઙ્માપ
જોયણસ્સ કિંચિ વિસેસુને આયામેણ પળ્ણત્તા" તે ઉત્તરાર્દ્ધ ભરતની છવા ક્ષુલ્લ
હિમવાન્ પર્વતની દિશામાં પૂર્વથી પશ્ચિમ સુધી લાંબી છે અને પૂર્વ દિગ્વર્તી કોટિથી
પૂર્વ દિગ્વર્તી લવણ સમુદ્રને તેમજ પશ્ચિમ દિગ્વર્તી કોટિથી પશ્ચિમ લવણ સમુદ્રને

સહસ્રાણિ-ચતુર્દશસહસ્રયોજનાનિ 'ચત્તારિ ય એકઠ્ઠત્તરે જોયણસણ' ચંત્તારિ ચં
એકસપ્તત્યધિકાનિ યોજનશતાનિ-એકસપ્તત્યધિકચતુશ્ચતયોજનાનિ 'છત્ત્વ એગૂણવી-
સહમાણ જોયણસ્સ કિંચિવિસેઘ્ણે' પદ ચ એકોનવિંશતિમાગાન્ યોજનસ્ય કિંચિદ્વિશે-
ષોનાન્ એકોનવિંશતિમાગવિમ્ભક્તસ્ય યોજનસ્ય કિંચિદ્વિશેષન્યૂનાન્ પદ્ધમાગાન્ 'આયામેણ
પણ્ણત્તા' આયામેન-દૈર્ઘ્યેણ પ્રજ્ઞપ્તા, 'તીસે' તસ્યાઃ ઉત્તરાર્દ્ધભરતજીવાયાઃ 'દાહિણેણ'
દક્ષિણેન-દક્ષિણસ્યાં દિશિ દક્ષિણપાર્શ્વે इति भावः 'ઘણુપુટ્ટે' ધનુષ્પટ્ટમ્-ઉત્તરાર્ધ-
ભરતક્ષેત્રસમ્બન્ધિ ધનુષ્પટ્ટાકારઃ ક્ષેત્રવિશેષઃ 'ચોદસસ જોયણસહસ્સાઈ' ચતુર્દશયોજન-
સહસ્રાણિ-ચતુર્દશસહસ્રયોજનાનિ, 'પંચ અઢ્ઠાવીસે જોયણસણ' પશ્ચ અષ્ટાવિંશાનિ યોજન-
શતાનિ-અષ્ટાવિંશત્યધિકાનિ પશ્ચશ્ચતયોજનાનિ 'એકકારસ ય એગૂણવીસહમાણ જોયણસ્સ'
એકાદશ એકોનવિંશતિમાગાન્ યોજનસ્ય એકોનવિંશતિ-માગવિમ્ભક્તસ્ય યોજનસ્ય
એકાદશ ભાગાંશ્ચ 'પરિક્ખેવેણ' પરિક્ષેપેણ-પરિધિના વિજ્ઞેયમિતિ ।

અયોત્તરાર્દ્ધભરતસ્ય સ્વરૂપં પ્રશ્નોત્તરાભ્યાં વર્ણયિતુમાહ-“ઉત્તરાર્દ્ધ મરહસ્સ ણં
મંતે ! વાસસ્સ કેરિસણ' ઉત્તરાર્દ્ધભરતસ્યં સ્વરૂપં મદન્ત ! વર્ષસ્ય કીદશકઃ-સ્વ-
રૂપપર્યાયપ્રાદુર્ભાવઃ 'પણ્ણત્તે' પ્રજ્ઞપ્તઃ, મગ્બાનુત્તરયતિ-ગોયમા ! બહુસમરમણિ-
જ્જે' હે ગૌતમ ! બહુસમરમણીયઃ-અત્યન્તસમતલોડત એવ રમણીયઃ-સુંદરઃ ભૂમિ-

એકે યોજન કે ૧૮ ભાગોં મેં સે કુલ્લ કમ ૬ ભાગ પ્રમાણ હૈ । “તીસે ઘણુપુટ્ટે દાહિણેણ ચોદસ
જોયણસહસ્સાઈ પચ અઢ્ઠાવોસે જોયણસણ એકકારસ ય એગૂણવીસમાણ જોયણસ્સ પરિક્ખેવેણ”
ઉસ ઉત્તરાર્ધ ભરત કી જીવા કા દક્ષિણ દિશા મેં દક્ષિણપાર્શ્વમે-ધનુષ્પટ્ટ-ધનુષ્ પટ્ટાકાર
ક્ષેત્ર વિશેષ ૧૪૫૨૮ યોજન કો ઔર એક યોજન કે ૧૮ ભાગોં મેં સે ૧૧ ભાગ પ્રમાણ
કહા ગયા હૈ યહ ધનુષ્પટ્ટ કા પરિક્ષેપ કી અપેક્ષા પ્રમાણ કથન હૈ ।

“ઉત્તરાર્દ્ધ મરહસ્સ ણં મંતે ! વાસસ્સ કેરિસણ આયારમાવપહોયારે પળ્ણત્તે” હે મદન્ત!
“ઉત્તરાર્ધ ભરતક્ષેત્ર કા આકારમાવ પ્રત્યવતાર-સ્વરૂપ કૈસા કહા ગયા હૈ ? હસકે ઉત્તર મેં પ્રસુ
કહતે હૈ “ગોયમા બહુસમરમણિજ્જે મૂમિમાગે પળ્ણત્તે સે જહા ણામણ આલિંગ પુવસરેહ વા જાવ

સ્પષ્ટે છે. આને આયામ ૧૪૪૭૧ યોજન જેટલો છે. અને એક યોજનના ૧૮ ભાગો-
માથી ૬ ઈક ૬મ ૬ ભાગ પ્રમાણ છે. “તીસે ઘણુપુટ્ટે દાહિણેણ ચોદસસ જોયણસહસ્સાઈ
પંચ અઢ્ઠાવીસે જોયણસણ એકકારસ ય એગૂણવીસહ માણ જોયણસ્સ પરિક્ખેવેણ” તે
ઉત્તરાર્ધ ભરતની જીવાનુ દક્ષિણ દિશામા-દક્ષિણ પાર્શ્વમા-ધનુષ્પટ્ટ-ધનુષ્-પટ્ટાકાર ક્ષેત્ર
વિશેષ-૧૪૫૨૮ યોજન જેટલું છે અને એક યોજનના ૧૮ ભાગમાંથી ૧૧ ભાગ પ્રમાણ
કહેવાય છે ધનુષ્પટ્ટના પરિક્ષેપની અપેક્ષાએ આ પ્રમાણ કથન છે

‘ઉત્તરાર્દ્ધભરહસ્સ ણં મંતે ! વાસસ્સ કેરિસણ આયારમાવપહોયારે પળ્ણત્તે” હે
મદન્ત ! ઉત્તરાર્ધ ભરત ક્ષેત્રનો આકારમાવ પ્રત્યવતાર (સ્વરૂપ) કૈસો છે ? આનો જવાબમાં
પ્રસુ કહે છે. “ગોયમા બહુસમરમણિજ્જે મૂમિમાગે પળ્ણત્તે સે જહા ણામણ આલિંગપુવસરેહ

માગે પળ્લત્તે' મૂમિભાગઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ સ ચ મૂમિભાગઃ કીદશઃ ઇતિ જિજ્ઞાસાયામાહ-
'સે જહાણામણ આલિંગપુષ્કરેઽ જાવ કિત્તિમેહિચેવ અકિત્તિમેહિ ચેવ' સ યથા
નામક આલિંગપુષ્કરમિતિ વા યાવત્ કૃતિમૈશ્ચેવ અકૃત્તિમૈશ્ચેવેતિ । અત્ર યાવત્પદ
સંગ્રાહ્યાણિ પદાનિ રાજપ્રશ્નીયસૂત્રસ્ય પશ્ચદશસૂત્રાદારભ્ય એકોનવિંશતિતમસૂત્રતો
બોધ્યાનિ । તદર્થશ્ચ તત્રૈવ મત્કૃતસુબોધિની ટીકાતો વિજ્ઞેય ઇતિ ।

અથોત્તરાર્દ્ધભરતવર્ષવાસ્તવ્યમનુગ્યસ્વરૂપં પૃચ્છતિ-ઉત્તરાર્દ્ધભરતે ખલ્લ મદન્ત !
વર્ષે-ઇત્યાદિ 'ઉત્તરદ્વદ્ધમરહે ણં મંતે ! વાસે' હે મદન્ત ! ઉત્તરાર્દ્ધભરતે વર્ષે-ઉત્તરાર્દ્ધ-
ભરતક્ષેત્રે સ્થિતાનાં 'મણુયાળં કેરિસણ આયારભાવપહોયારે' મનુજાનાં કીદશકઃ
આકારભાવપ્રત્યવતારઃ-સ્વરૂપપર્યાયપ્રાદુર્ભાવઃ 'પળ્લત્તે' પ્રજ્ઞપ્તઃ ? મગવાનાહ-ગોયમા !
તેણં મણુયા વહુસંઘયણા જાવ અપ્પેગહ્યા સિજ્ઞન્તિ જાવ સન્ન દુક્ખાણ મંતં કરેતિ'
હે ગૌતમ ! તે ખલ્લ મનુજાઃ વહુસંહનના યાવદ્ અપ્યેકકે સિદ્ધચન્તિ-યાવત્

કિત્તિમેહિ ચેવ અકિત્તિમેહિચેવ" હે ગૌતમ ઉત્તરાર્દ્ધ ભરત ક્ષેત્ર કા સ્વરૂપ હસ પ્રકાર સે કહા
ગયા હૈ-વહાં કા મૂમિભાગ વહુસમરમણીય હૈ ઔર વહ આલિંગપુષ્કર કે જૈસા કહા ગયા હૈ
મૃદજ્ઞ કે મુલપુટ કા નામ આલિંગપુષ્કર હૈ હસ વિષય મેં પહિલે અનેક ઉપમાવાચી શબ્દો
દ્વારા સ્પષ્ટીકરણ કિયા જા ચુકા હૈ યહી બાત યાવત્ પદ સે યહાં સમજાઈ ગઈ હૈ હસકે લિયે
રાજપ્રશ્નીય સૂત્ર કે ૧૫ વેં સૂત્ર સે હેકર ૧૯ વે સૂત્ર તક કે પાઠ કો દેક્ષના ચાહિયે વહાં
કા મૂમિભાગ કૃત્રિમ ઔર અકૃત્રિમ તુણો સે ઇવ મણિયો સે સુશોભિત હૈ ।

"ઉત્તરદ્વદ્ધમરહેણ મંતે વાસે મણુયાળં કેરિસણ આયારભાવપહોયારે પળ્લત્તે" હે મદન્ત!
ઉત્તરાર્દ્ધ ભરત મેં રહેને વાલે મનુષ્યો કા સ્વરૂપ કૈસા કહા ગયા હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રસુ કહતે હૈં
'ગોયમા તેણ મણુયા વહુ સંઘયણા જાવ અપ્પેગહ્યા સિજ્ઞન્તિ જાવ સન્નદુક્ખાણમંતં કરેતિ', હે
ગૌતમ! વહાં કે નિવાસી મનુષ્યો કા સ્વરૂપ ઇસા હૈ કિ વે વજ્રઋષમનારાચ આદિ અનેક પ્રકાર

વા જાવકિત્તિમેહિ ચેવ અકિત્તિમેહિ ચેવ" હે ગૌતમ ! ઉત્તરાર્દ્ધ ભરતક્ષેત્રનુ સ્વરૂપ આ પ્રમાણે
કહેવામાં આવેલ છે. ત્યાંનો મૂમિભાગ બહુસમરમણીય છે અને તે આલિંગ પુષ્કરના જેવો
કહેવામાં આવેલ છે. મૃદગના મુખપુટનું નામ આલિંગ પુષ્કર છે આ સંબંધમાં પહેલાં
અનેક ઉપમાવાચી શબ્દો વડે સ્પષ્ટતા કરવામાં આવી છે એજ વાત અહીં યાવત્ પદથી
અહીં સ્પષ્ટ કરવામાં આવી છે આ માટે રાજપ્રશ્નીય સૂત્રના ૧૫મા સૂત્રથી માંડીને ૧૯મા
સૂત્ર સુધીના પાઠને જોવો જોઈએ ત્યાંનો મૂમિભાગ કૃત્રિમ અને અકૃત્રિમ તુણોથી તેમજ
મણિઓથી સુશોભિત છે

"ઉત્તરદ્વદ્ધમરહેણ મંતે ! વાસે મણુયાળં કેરિસણ આયારભાવપહોયારે પળ્લત્તે" હે
મદન્ત ! ઉત્તરાર્દ્ધ ભરત માં રહેનારા માણસોના સ્વરૂપ કેવા છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે.
"ગોયમા ! તેણ મણુયા વહુસંઘયણા જાવ અપ્પેગહ્યા સિજ્ઞન્તિ જાવ સન્ન દુક્ખાણમંતં
કરેતિ" હે ગૌતમ ! ત્યાંના નિવાસી મનુષ્યોના સ્વરૂપ એવા છે કે તેઓ વજ્ર ઋષભ

सर्वदुःखानामन्तं कुर्वन्ति । अत्र यावत्पदद्वयसंग्राह्याणि पदानि एकादशसूत्रतो बोध्यानि तदर्थोऽपि तत्रैव बोध्य इति ।

ननु उत्तरार्द्धभरतवर्षक्षेत्रवासिमनुष्याणां मुक्तिधर्मोपदेशकतीर्थकराद्यभावेन मोक्षाङ्ग-भूतधर्मश्रवणाद्यभावात् कथं मोक्षप्राप्तिसूचकसूत्रोक्तिः सङ्गतिमङ्गति ? इति चेत् उच्यते चक्रवर्तीकाले समुद्रादित गुहाद्वयसत्त्वेन उत्तरार्द्धभरतवासिनां जनानां दक्षिणार्द्धभरते दक्षिणार्द्धभरतवासिनां साध्वादीनामुत्तरार्द्धभरते च गमनागमनतस्तेषामुत्तरार्द्धभरतवासिनां साध्वादिभ्यो मोक्षधर्मश्रवणसद्भावान्मोक्षसूत्रोक्तिरुचितैव । यद्वा चक्रवर्ती कालाति-रिवते काले विद्याधरश्रमणादिभ्यो मोक्षधर्मश्रवणसंभवात् स्वतो वा जातिस्मरणादिना मोक्षाङ्गधर्मप्राप्तिसंभवान्मोक्षसूत्रोक्तिः रुचितैवेति ॥ सू० १८ ॥

के संहनन वाले होते हैं, यावत् इनमें से कितनेक उसीभव से सिद्ध होते हैं यावत् समस्त दुःखों का विनाश करते हैं । यहा आगत दो यावत्पदों के द्वारा जिन पदों का संग्रह हुआ है उन पदों के लिये देखो ११ वें सूत्रको

शंका- उत्तरार्द्धभरत क्षेत्र में निवास करने वाले मनुष्यों को जो मोक्ष प्राप्ति होना कही गई सो वहां मुक्ति धर्मोपदेशक तीर्थकर आदि के अभाव होने से मोक्षाङ्गभूत धर्म श्रवण के अभाव को आश्रित करके कैसे वह संगत हो सकती है ? उत्तर—चक्रवर्तिकाल में समुद्रादित गुहा द्वय के सत्त्व से उत्तरार्द्ध भरतवासी जनों का दक्षिणार्द्ध भरत में गमनागमन होने से उन्हें साधु आ-दिकों से मोक्षधर्मश्रवण का अवसर मिल जाता है इससे इन्हें मोक्षप्राप्ति का होना संगत ही है असंगत नहीं । अथवा चक्रवर्तीकाल के अतिरिक्त काल में विद्याधर श्रमणादि को से मोक्षप्राप्ति के कारणभूत धर्म की प्राप्ति का होना संभव होने से अथवा स्वतः जातिस्मरण आदिसे मोक्षके कारणभूत धर्मकी प्राप्ति का होना संभव होनेसे यहां मोक्षसूत्रोक्ति उचित ही है ॥ १८ ॥

नारायण वगेरे अनेक प्रकारना संहननवाणा होय छे, यावत् अर्भाथी कटलाक तेज अवभां सिद्ध थर्म नथ छे यावत् सर्व दुःखोने विनष्ट करे छे, अही आवेला जे यावत् पडे, वडे जे पडेना, संग्रह थयेल छे ते पडे ना भाटे ११ भा सूत्र भा जेपुं जेधजे

शंका—उत्तरार्द्ध भरत क्षेत्र मां निवास करनारा मनुष्योना सधधमा जे मोक्ष प्राप्ति भाटे कडेवामां आवेल छे तो त्या मुक्ति धर्मोपदेशक तीर्थकरना अभावथी तेमज मोक्षां गभूत धर्मश्रवणना अभावथी मोक्षप्राप्तिनुं कथन केवी रीते उचित कडेवाय ?

उत्तर—चक्रवर्तीकालमां समुद्रादित गुहाद्वयना सत्त्वथी उत्तरार्द्ध भरत वासी जनोना दक्षिणार्द्ध भरत मां गमनागमन यवाथी तेमने साधुजो वगेरेथी मोक्षधर्म श्रवणुने अवसर भजे छे तेथी तेमने मोक्ष प्राप्ति थवी असंगत नहि, यख संगत ज कडेवाय अथवा चक्रवर्ती कालना अतिरिक्त काल मां विद्याधरश्रमणादिकोथी मोक्षप्राप्तिना कारणभूत धर्मनुं श्रवणुं संभवित होवाथी अथवा स्वतः जाति स्मरण आदिथी मोक्षना कारण भूत धर्मनी प्राप्ति थवी संभव होवाथी मोक्ष सूत्रोक्ति उचित ज छे ॥ १८ ॥

उत्तरार्द्धभरते ऋषभकूटपर्वतः क्वाऽस्तीति पृच्छति—

मूलम्—कहि णं भंते ? जंबुद्वीवे दीवे उत्तरद्वभरहे वासे उसभकूडे णामं पव्वए पण्णत्ते । गोयमा ! गंगा कुंडस्स पच्चत्थिमेणं सिंधुकुंडस्स पुरत्थिमेणं चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणिल्ले णितंवे एत्थ णं जंबुदीवे दीवे उत्तरद्वभरहे वासे उसभकूडे णामं पव्वए पण्णत्ते, अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दो जोयणाइं उव्वेहेणं मूले बारस जोयणाइं विक्खंमेणं, मज्झे अट्ठ जोयणाइं विक्खंमेणं, उपि चत्तारि जोयणाइं विक्खंमेणं, मूले साइरेगाइं सत्तनीसं जोयणाइं परिक्खेवेणं मज्झे साइरेगाइं पणवीसं जोयणाइं परिक्खेवेणं उपि साइरेगाइं बारस जोयणाइं परिक्खेवेणं मूले वित्थिण्णे मज्झे संक्खित्ते उपि तणुए गोपुच्छसंठाणसंठिए, सब्बजं वणयामए अच्छे सण्हे जाव पडिरूवे । से णं एगाए पउमवरवेइयाए तहेव जाव भवणं कोसं आयामेणं, अच्चकोसं विक्खंमेणं, देसूणं कोसं उड्ढं उच्चत्तेणं अट्ठो तहेव उपपलाणि पउमाणि जाव उसमेय एत्थ देवे महिड्ढिए जाव दाहिणेणं रायहाणी तहेव मंदरस्स पव्वयस्स जहा विजयस्स अविसेसियं ॥सू० १९॥

छाया—क्व खलु मदन्त ! जम्बूद्वीपे द्वीपे उत्तरार्द्धभरते वषे ऋषभकूटो नाम पर्वतः प्रवृत्तः, गौतम ! गङ्गाकुण्डस्य पश्चिमेन सिन्धुकुण्डस्य पौरस्त्येन क्षुद्रद्विमतो वर्षधर-पर्वतस्य दक्षिणात्ये, नितम्बे, अत्र खलु जम्बूद्वीपे द्वीपे उत्तरार्द्धभरते वषे ऋषभकूटो नाम पर्वतः प्रवृत्तः, अष्ट योजनानि ऊर्ध्वमुच्चत्वेन द्वे योजने उद्वेधेन, मूले द्वादश योजनानि विष्कम्भेण मध्ये अष्ट योजनानि विष्कम्भेण, उपरि चत्वारि योजनानि विष्कम्भेण, मूले सातिरेकाणि सप्तत्रिंशत् योजनानि परिक्षेपेण, मध्ये सातिरेकाणि पञ्चविंशति योजनानि परिक्षेपेण, उपरि सातिरेकाणि द्वादशयोजनानि परिक्षेपेण । मूले विस्तीर्णः मध्ये संक्षिप्त उपरि तनुकः गोपुच्छसंस्थानसंस्थित सर्वजम्बूतद्वयः । अलङ्कः इलङ्को यावत् प्रतिकूप स खलु पकया पञ्चवरवेदिकया तथैव यावत् भवनं क्रोशम् आयामेन अर्द्धक्रोशं विष्कम्भेण, देशेन क्रोशमूर्ध्वमुच्चत्वेन, अर्थस्तथैव, उपपलाणि पलाणि यावत् ऋषभश्च, अत्र देवो महिद्विको यावत् दक्षिणेन राजधानो तथैव मन्दरस्य पर्वतस्य यथा विजयस्य अविशेषितम् ॥सू० १९॥

उत्तरार्ध भरत में ऋषभकूट कहाँ पर है ? इसका समाधान—

“कहिं णं भंते ! जंबुद्वीवे दीवे उत्तरद्वभरहे वासे उसभकूडे णामं पव्वए”

उत्तरार्ध भरतमा ऋषभकूट कया आवेक्ष्यते । तेषु समाधान—

‘कहिं णं भंते ! जंबुद्वीवे दीवे उत्तरद्वभरहे वासे उसभकूडे णामं पव्वए पण्णत्ते’

ટીકા-‘કહિ ણં મંતે !’ इत्यादि । ‘कहि णं मंते ! जंबुद्वीवे दीवे उत्तरद्वद्वभरहे वासे उसमकूडे णामं पव्वए पणत्ते’ हे भदन्त ! जंबुद्वीपे द्वीपे उत्तरार्द्धभरते वर्षे ऋषभकूटो नाम पर्वतः क्व-कस्मिन् प्रदेशे प्रज्ञप्तः ? भगवानाह-‘गोयमा ! गंगा-कुंडस्स’ हे गौतम ! गङ्गाकुण्डस्य गङ्गायाः महानद्याः कुण्डं-हिमवतो निपतज्जलाशयस्तस्य ‘पच्चत्थिमेणं’ पश्चिमेन पश्चिमायां दिशि ‘सिधुकुंडस्स’ सिन्धुकुण्डस्य सिन्धोः कुण्डं-हिमवतो निपतज्जलाशयस्तस्य ‘पुरत्थिमेणं’ पौरस्त्येन-पूर्वस्यां दिशि ‘चुल्लहिमवत्स्स’ क्षुद्रहिमवतः-लघुहिमवतो ‘वासहरपव्वयस्स दाहिणिल्ले’ वर्षधरपर्वतस्य दक्षिणात्ये-दक्षिणदिग्भवे ‘णितवे’ नितम्बे मेखलासमीपवर्ती प्रदेशे ‘एत्थ णं जंबुद्वीवे दीवे उत्तरद्वद्वभरहे वासे उसमकूडे णामं पव्वए पणत्ते’ अत्र खलु जम्बूद्वीपे द्वीपे उत्तरार्द्ध-भरते वर्षे ऋषभकूटो नाम पर्वतः प्रज्ञप्तः, स च ‘अट्टजोयणाइं उद्धं उच्चत्तेणं दो जोय-णाइं उव्वेहेणं’ अष्ट योजनानि उर्ध्वमुच्चत्वेन द्वे योजने उद्वेधेन गाम्भीर्येण परिक्षेपेण ।

પણત્તે’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ-ગૌતમ ત્વામો ને પ્રમુ સે રેસા પૂછા હે-હે ભદન્ત! ઉત્તરાર્ધ ભરત ક્ષેત્ર મેં ઋષભકૂટ નામકા પર્વત કહાં પર કહા ગયા હૈ ? હસકે ઉત્તર મેં પ્રમુ કહતે હૈ-‘ગોયમા ! ગંગાકુન્ડસ્સ પચ્ચત્થિમેણં સિન્ધુકુન્ડસ્સ પુરત્થિમેણં ક્ષુલ્લહિમવતસ્સ વાસહરપવ્વયસ્સ દાહિ-ણિલ્લે ણિતંવે એત્થ ણ જંબુદ્વે દાવે ઉત્તરદ્વદ્ધ ભરહેવાસે ડસમકૂડે ણામ પવ્વએ પણત્તે” ભગવાન ફરમાતે હૈ હે ગૌતમ ! ગંગાકુન્ડ-હિમવાન પર્વત સે ગંગા નદી જિસ સ્થાન પર નીચે ગિરતી હૈ ડસ સ્થાન કી પશ્ચિમ દિશા મેં એવ સિન્ધુકુન્ડ-હિમવાન સે સિન્ધુ મહાનદી જિસ સ્થાન પર નીચે ગિરતી હૈ ડસ સ્થાન-કી પૂર્વદિશા મેં તથા-લઘુહિમવાન વર્ષધર પર્વત કે દક્ષિણ દિશા કે નિતમ્બ-મેખલાસમીપવર્તી પ્રદેશ-પર જમ્બુદ્વીપસ્થિત ઉત્તરાર્ધ ભરતક્ષેત્ર મેં ઋષભકૂટ નામકા અત્યંત રમણીય પર્વત કહા ગયા હૈ । યહ ઋષભકૂટ નામ કા પર્વત ‘અટ્ટજોયણાઈં ઉદ્ધં ઉચ્ચત્તેણં ડૉ જોયણાઈં ઉવ્વેહેણં’ ડૉ યોજન જમીન મેં હૈ

इत्यादि ॥ सू० १९॥

ટીકાર્થ-ગૌતમે પ્રભુને પ્રશ્ન કર્યો કે હે ભદન્ત ! ઉત્તરાર્ધ ભરત ક્ષેત્રમા ઋષભકૂટ નામે પર્વત કયા આવેલો છે ? કોના જવાબમા પ્રભુ કહે છે-ગોયમા ગંગાકુંડસ્સ પચ્ચત્થિમેણં સિન્ધુકુન્ડસ્સ પુરત્થિમેણ ક્ષુલ્લહિમવતસ્સ વાસહરપવ્વયસ્સ દાહિણિલ્લે ણિતંવે એત્થ ણ જંબુદ્વીવે દીવે ઉત્તરદ્વદ્ધ ભરહે વાસે ડસમકૂડે ણામ પવ્વએ પણત્તે” હે ગૌતમ ! હિમવાન પર્વત થી ગંગા મહા નદી જે સ્થાન પરથી નીચે પ્રવાહિત થાય છે, તે ગંગા કુંડની પશ્ચિમદિશામાં અને હિમવાન થી સિન્ધુ મહા નદી જે સ્થાન પરથી નીચે પ્રવાહિત થાય છે તે સિન્ધુ કુંડની પૂર્વદિશામા તથા લઘુહિમવાન વર્ષધર પર્વતની દક્ષિણ દિશાના નિતમ્બ-મેખલા સમીપવર્તી પ્રદેશ-પર જમ્બુદ્વીપસ્થિત ઉત્તરાર્ધ ભરતક્ષેત્રમા ઋષભકૂટ નામે પર્વત આવેલ છે આ ઋષભકૂટનામે પર્વત “અટ્ટજોયણાઈં ઉદ્ધં ઉચ્ચત્તેણં” ડૉ યોજનમાં આવેલો છે. ‘ડૉ જોયણાઈં ઉવ્વેહેણં’ જે યોજન જેટલો જમીનની અંદર છે.

મૂળે વારસ જોયણાં વિકલંભેણ' મૂળે-મૂળપ્રદેશે દ્વાદશયોજનાનિ વિષ્કમ્ભેણ, 'મજ્ઞે અઢ જોયણાં વિકલંભેણ' મધ્યે અઢ યોજનાનિ વિષ્કમ્ભેણ 'ઉપ્પિ ચત્તારિ જોયણાં વિકલંભેણ' ઉપરિ ચત્તારિ યોજનાનિ વિષ્કમ્ભેણ ઉપલક્ષણત્વાદ્ મૂળે મધ્યે ઉપરિ ચ આયામપ્રમાણમપિ તથૈવ વિજ્ઞેયમ્ સમવૃત્તસ્યાયામવિષ્કમ્ભયોઃ સામ્યાદિતિ । તથા 'મૂળે સાહરેગાં' મૂળે સાતિરેકાણિ ક્ષિત્તિપ્રદેશાધિકાણિ 'સત્તતીસં જોયણાં પરિકલેવેણ' સપ્તત્રિંશતં યોજનાનિ પરિક્ષેપેણ-પરિધિના, 'મજ્ઞે' મધ્યે-મધ્યદેશભાગે 'સાહરેગાં પળવીસં' સાતિરેકાણિ પઠ્ઠવિંશતિ-પશ્ચવિંશતિસંખ્યાનિ 'જોયણાં પરિકલેવેણ' યોજનાનિ પરિક્ષેપેણ 'ઉપ્પિ' ઉપરિ-ઊર્ધ્વદેશે 'સાહરેગાં વારસ જોયણાં પરિકલેવેણ' સાતિરેકાણિ દ્વાદશ યોજનાનિ પરિક્ષેપેણ-પરિધિના ।

તથા મૂળે વિત્થિળ્ણે' મૂળે વિસ્તીર્ણો 'મજ્ઞે સંક્ષિપ્તે' મધ્યે સંક્ષિપ્તઃ 'ઉપ્પિ-તણુ' ઉપરિ તનુકઃ અત એવ 'ગોપુચ્છસંઠાણસંઠિ' ગોપુચ્છસંસ્થાનસંસ્થિતઃ, તથા 'સન્વજબૂણયામ' સર્વજમ્બૂનદમયઃ સર્વાત્મના જમ્બૂનદાખ્યસ્વર્ણવિશેષમયઃ 'અચ્છે સળ્હે' "મૂળે વારસ જોયણાં વિકલંભેણ, મજ્ઞે અઢજોયણાં વિકલંભેણ, ઉપ્પિ ચત્તારિ જોયણાં વિકલંભેણ" મૂળ મેં હસકા વિષ્કમ્ભ-વિસ્તાર-બારહ યોજન કા હૈ મધ્ય મેં હસકા વિસ્તાર બાઠ યોજન કા હૈ ઔર ઊપર મેં હસકા વિસ્તાર ચાર યોજન કા હૈ "મૂળે સાહરેગાં સત્તતીસ જોયણાં પરિકલેવેણ' મજ્ઞે સાહરેગાં પળવીસ જોણાં પરિકલેવેણ, ઉપ્પિ સાહરેગાં વારસ જોયણાં પરિકલેવેણ" મૂળ મેં હસકો પરિધિ કુછ અધિક ૭ સાત યોજન કી હૈ । મધ્યમે હસકી પરિધિ કુછ અધિક ૨૫ પચીસ યોજન કહિ ગઈ હૈ ઔર ઊપર મેં હસકી પરિધિ કુછ અધિક ૧૨ બારહ યોજન કી હૈ । હસ તરહ યહ ઋષમ કૂટ પર્વત "મૂળે વિત્થિળ્ણે મજ્ઞે સંક્ષિપ્તે ઉપ્પિ તણુ' ગોપુચ્છસંઠાણસંઠિ' સન્વજબૂણયામ' અચ્છે, સળ્હે, જાવ પહિલુવે" મૂળ મેં વિસ્તીર્ણ મધ્ય મેં સકુચિત ઔર ઊપર મેં પતલ્લા હોગયા હૈ અતએવ ગાય કી પૂછ કા જૈસા સંસ્થાન હોત્તા હૈ વૈસા હિ હસકા સંસ્થાન હોગયા હૈ યહ પર્વત સર્વાત્મના જામ્બૂનદ સ્વર્ણકા બના હુઆ હૈ ઔર અચ્છ સે લેકર પ્રતિરૂપ તક કે વિશેષણોં વાલા હૈ

'મૂળે વારસ જોયણાં વિકલંભેણ મજ્ઞે અઢજોયણાં વિકલંભેણ ઉપ્પિ ચત્તારિ જોયણાં વિકલંભેણ" મૂળમાં આનેા વિષ્કમ્ભ-વિસ્તાર બાર યોજન જેટલો છે મધ્યમાં આનેા વિસ્તાર આઠ યોજન જેટલો છે અને ઉપરમાં આનેા વિસ્તાર ચાર યોજન જેટલો છે "મૂળે સાહરેગાં સત્તતીસં જોયણાં પરિકલેવેણ મજ્ઞે સાહરેગાં પળવીસં જોયણાં પરિકલેવેણ ઉપ્પિ સાહરેગાં વારસજોયણાં પરિકલેવેણ" મૂળમાં આની પરિધિ ૬૪૬ અધિક ૨૫ યોજન જેટલી છે અને ઉપરમાં આની પરિધિ ૬૪૬ અધિક ૧૨ યોજન જેટલી છે. આ પ્રમાણે આ ઋષભકૂટ પર્વત 'મૂળે વિત્થિળ્ણે મજ્ઞે સંક્ષિપ્તે, ઉપ્પિ તણુ' ગોપુચ્છ-સંઠાણસંઠિ' સન્વ જમ્બૂગયામ' અચ્છે સળ્હે જાવ પહિલુવે" મૂળમાં વિસ્તીર્ણ મધ્યમાં સકુચિત અને ઉપરમાં પાતળો થઈ ગયો છે એથી ગાયના પૂછડાડું જેવું સંસ્થાન હોય છે તેવું આડું સંસ્થાન થઈ ગયું છે. આ પર્વત સર્વાત્મના જામ્બૂનદ-સ્વર્ણ નિર્મિત છે

જાવ. પહિરુવે' અચ્છઃશ્લક્ષ્ણો યાવત્પ્રતિરૂપઃ । અચ્છાદિ પ્રતિરૂપાન્તપદાનાં સંગ્રહોઽ-
ર્થથ પૂર્વવદ્ બોધ્યમિતિ । તથા 'સે ણ' સઃ ઋષભકૂટપર્વતઃ સ્વલ્પ 'પગાપ પડમવર
વેદ્યાપ' એકયા પદમવરવેદિકયા 'તહેવ' તથૈવ-સિદ્ધાયતનકૂટવદેવ વર્ણનીયઃ, તદ્વર્ણ-
કવાકયં કિમ્પર્યન્તં સંગ્રાહ્યમિતિ જિજ્ઞાસાયમાહ-'જાવ ભવણ' યાવદ્ ભવનમ્ ઋષભકૂટા-
ધિપતે ઋષભનામકદેવસ્ય ભવનવર્ણનપર્યન્તં સંગ્રાહ્યમ્, તથાહિ-એકેન ચ વનવણ્ડેન સર્વતઃ
સમન્તાત્ સંપરિક્ષિપ્તઃ, ઋષભકૂટસ્ય સ્વલ્પ ઉપરિ બહુસમરમણીયો ભૂમિભાગઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ,
સ યથા નામકઃ આલિંગ્યપુષ્કરમિતિ વા યાવદ્ વ્યન્તરા યાવદ્ વિહરંતિ, તસ્ય સ્વલ્પ
બહુસમરમણીયસ્ય ભૂમિભાગસ્ય બહુમધ્યદેશભાગે મહદેકં ભવનં પ્રજ્ઞપ્તમિતિ । એતદ્વચા-
રણ્યા ભવણવર્ણનં ચ ચતુર્દશસ્ત્રતો બોધ્યમ્ ।

અથ ભવનમાનમાહ-'કોસં' इत्यादि । तद्भवनं 'कोसं आयामेणं' क्रोशम् आया
मेन दैर्घ्येण 'अद्धकोसं' अर्द्धक्रोशं-क्रोशस्यार्द्धं 'विकसंभमेणं'-विष्कम्भेण विस्तारेण

"સે ણ પગાપ પડમવરવેદ્યાપ તહેવ જાવ ભવણ કોસ આયામેણ અદ્ધકોસ વિકસંભેણ દે
સૂણ કોસં ડહં ઉચ્ચત્થેણં અદ્ધો તહેવ" યહ ઋષભકૂટ પર્વત ચારોં ઓર સે એક પદમવર વેદિકા
સે પરિવેષિત છે । ઇસકા ઓર સર્વ વિશેષ વર્ણન સિદ્ધાયતન કૂટ કે જૈસા હી છે તથાચ બહુ
ઋષભકૂટ પર્વત એક વનવણ્ડ સે ચારોં ઓર સે ઘિરા હુઆ છે । ઇસ ઋષભકૂટ પર્વત કી ડપ
ર કી ભૂમિ બહુસમરમણીય છે જૈસા બહુસમ મૃદક્ષ્ણ કા મુલપુટ હોતા છે એસા હી બહુસમ
સસ પર્વત કા ડપર કા ભૂમિભાગ છે, યાવત્ યહાં અનેક પ્રકારકે વ્યન્તર દેવ ઓર દેવીયાં
યાવત્ આનન્દ સે અપને પૂર્વકૃત શુભકર્મોં કે શુભફલોં કો ભોગતે હુએ આનન્દ સે રહતે છે
સસ બહુસમરમણીય ભૂમિભાગ કે મધ્યભાગ મેં એક વિશાલ ઋષભ નામ કે દેવકા ભવન
કહા ગયા છે इत्यादि रूप से कथन और भवन का वर्णन इसी सूत्र के १४ वें सूत्र
से जानलेना चाहिये इस भवन की लम्बाई एक कोश की है और चौड़ाई आधे कोश

અચ્છ ધી માંડીને પ્રતિરૂપ સુધીના વિશેષણોથી યુક્ત છે "સે ણ પગાપ પડમવરવેદ્યાપ
તહેવ જાવ ભવણ કોસં આયામેણં અદ્ધકોસં વિકસંભેણં દેસૂણ કોસં ડહં ઉચ્ચત્થેણં અદ્ધો
તહેવ" આ ઋષભકૂટ પર્વત ઓરેર એક પદમવર વેદિકાથી પરિવેષિત છે. આનું વિશેષ
વર્ણન સિદ્ધાયતન કૂટના જેવું જ છે તથા અ-ઋષભકૂટ પર્વત એક વનવણ્ડથી ઓરેર
ઘેરાયેલ છે. આ ઋષભકૂટપર્વતની ભૂમિનો ઉપરિભાગ બહુસમરમણીય છે મૃદ ગમુખપટ
વત્ આનો ઉપરિભાગ બહુસમરમણીય છે યાવત્ અહીં અનેક વ્યંતર દેવ અને દેવીઓ
યાવત્ આનંદ પૂર્વક પોતાના પૂર્વકૃત શુભ કર્મોના શુભ ફળોનો ઉપભોગ કરતા આનંદ
નિવાસ કરે છે તે બહુસમરમણીય ભૂમિભાગના મધ્યભાગ માં એક વિશાલ ઋષભ
નામના દેવનું ભવન છે इत्यादि रूपमा कथन અને ભવનનું વર્ણન આજ સૂત્રના ૧૪ મા
સૂત્રમાંથી બધી લેવું બોધ્યે આ ભવનની લંબાઈ એક ગાઉ જેટલી છે અને ચોડાઈ
અર્ધા ગાઉ જેટલી છે. તેમજ કંઈક કમ એક ગાઉ જેટલી એની ઉચાઈ છે.

‘દેશ્યં કોસં ઉદ્દં ઉચ્ચત્તેણ’ દેશોનં ક્રોશમ્ ઊર્ધ્વમ્ ઉચ્ચત્ત્વેન વર્તતે इति । અયં ભાવઃ ધનુસ્સહસ્રદ્વયપ્રમાણ એકઃ ક્રોશો ભવતિ । “કિઞ્ચિદ્દેશોન” શબ્દેનેહ પચ્ચધિક પચ્ચશતધનુન્યૂનતાવિવક્ષિતા । एवं चेदं भवनं चत्वारिंशदधिक चतुर्दशशतधनुः प्रमाणमुच्चत्वेन भवतीति । અર્થઃ નામાનુગતોઽર્થઃ ‘અદ્દો તહેવ’ તથૈવ અર્થઃઅન્વર્થ ઋષભકૂટસ્ય તથૈવ યથા જીવાભિગમાદૌ યમકાદીનાં પર્વતાનામુક્તઃ તથૈવૌચિત્યેન વક્તવ્યઃ । તદભિલાપસૂત્રં તુ ‘ઉપ્પલાણી’ ત્યાદિના સૂચિતં તદનુસૂત્ય સૂત્રમેવં વક્તવ્યમ્ તથાહિ ‘સે કેણદ્દેણં મંતે । एवं बुच्चइ उसहकूडपव्वए २१ गोयमा उसहकूडपव्वए खुट्ठयासु वावीसु पुक्खरिणीसु जाव विलपंतीसु बहूइ उप्पलाइ जाव सहस्सपत्ताइ सयसहस्सपत्ताइ उसहकूडप्पमाइ उसहकूडवण्णाइ’ इति ।

કોી હૈ તથા કુછ કમ એક કોશ કોી इसकी ऊँचाई है तात्पर्य इसका ऐसा है कि दो हजार धनुष का एक कोश होता है यहा जो इसकी ऊँचाई कुछ कम एक कोश की कहो गई है सो उस दो हजार धनुष में से ५६० कम विवक्षित हुए हैं । इस तरह इसकी ऊँचाई १ एक हजार ४४० चारसो चालोस धनुष की होती है ऐसा जानना चाहिये, “अद्वो तहेव” ऋषभकूट ऐसा नाम इसका सार्थक है जीवाभिगम सूत्र में जैसे यमकादिक पर्वतो के नामकी सार्थकता प्रकट की गई है वैसे ही यहां पर भी इसके नाम की सार्थकता प्रकट करलेनी चाहिये यही बात “उप्पलाणि पउमाणि जाव उसमे य एत्थ देवे महिद्धदिप” इस सूत्रपाठ द्वारा प्रकट की गई है अर्थात् जब श्रीगौतम स्वामी ने प्रभु से ऐसा पूछा कि हे भदन्त ! “से केणद्वेणं एव बुच्चइ उपहकूडपव्वए १” इस ऋषभकूट पर्वत को ऋषभ कूट इस नाम से आपने क्यों कहा है ? तब प्रभुश्री ने इसके उत्तर में इस प्रकार कहा है “गोयमा ! उसहकूडपव्वए खुट्ठयासु खुट्ठियासु वावीसु पुक्खरिणीसु जाव विलपंतीसु बहूइ उप्पलाइ जाव सहस्सपत्ताइ सयसहस्सपत्ताइ उसहकूडप्पमाइ उसहकूड

તાત્પર્ય આમ છે કે એ હજાર ધનુષ ખરાબર એક ગાઉ હોય છે અહીં જે આની ઊંચાઈ કંઈકેકમ એક કોશ જેટલી કહેવામા આવી છે તે એ હજાર ધનુષમાથી ૫૬૦ કમ વિવક્ષિત છે આ પ્રમાણે આની ઊંચાઈ ૧ હજાર ૪૪૦ ધનુષ જેટલી હોય છે એવું જાણવું જોઈએ “અદ્દો તહેવ” ઋષભકૂટ નામ આતુ યથાર્થ જ છે જીવાભિગમસૂત્રમાં જેમ યમકાદિક પર્વતોના નામની સાર્થકતા પ્રકટ કરવામા આવી છે તેવી જ અહીં આના નામ ની સાર્થકતા પ્રકટ કરી લેવી જોઈએ એજ વાત “ઉપ્પલાણિ પડમાણિ જાવ ઉસમેય એત્થ દેવે મહિદ્ધદિપ” આ સૂત્રપાઠ વડે પ્રકટ કરવામાં આવી છે એટલે કે જ્યારે ગૌતમે પ્રભુ શ્રીને આ જાનના પ્રશ્ન કર્યો કે હે ભદન્ ! “સે કેણદ્દેણં પવં બુચ્ચઈ ઉસહકૂડ પવ્વણ” ? આ ઋષભકૂટ પર્વત ને ઋષભકૂટ નામ થી તમે કેમ સંબોધિત કરી રહ્યા છો । ત્યારે પ્રભુએ એના ઉત્તરમા આ પ્રમાણે કહ્યું કે ‘ગોયમા ! ઉસહકૂડપવ્વણ ખુટ્ઠાસુ ખુટ્ઠિયાસુ વાવોસુ પુક્ખરિણીસુ જાવ વિલપંતીસુ બહૂહ ઉપ્પલાહ જાવ સહસ્સપત્તાઈ સયસ-

एतच्छाया-अथ केनार्थेन मदन्त ! एवमुच्यते ऋषभकूटपर्वतः २ ! गौतम ।
 ऋषभकूटपर्वते क्षुद्रासु क्षुद्रिकासु वापीसु पुष्करिणीषु यावत् विलपक्तिषु बहूनि उत्पलानि
 पद्मानि यावत् सहस्रपत्राणि शतसहस्रपत्राणि ऋषभकूटवर्णभानि । इति ।

एतद्व्याख्या-अथ केन अर्थेन-कारणेन मदन्त । एवमुच्यते ऋषभकूटपर्वतः २
 इति ! भगवानाह हे गौतम ! ऋषभकूटपर्वते ऋषभकूटपर्वतोपरि मानासु क्षुद्रासु स्व-
 र्पासु-क्षुद्रिकासु अतिस्वरूपासु वापीषु-चतुष्कोणासु पुष्करिणीषु वर्तुलासु कमलयुक्तासु
 वा यावत् यावत्पदेन-दीर्घिकासु च गुञ्जालिकासु च सरस्सु च सरःपङ्क्तिकासु च सरः
 सरः पङ्क्तिकासु च इतिपदानि संग्राह्याणि । तत्र दीर्घिकासु-सरलजलागममार्गयुक्तासु
 गुञ्जालिकासु वक्रजलागममार्गयुक्तासु सरस्सु जलाशयविशेषेषु, सरःपङ्क्तिकासु-
 सरसां-तडागानां पङ्क्तिषु, सरः सरः पङ्क्तिकासु एकस्मात्सरसोऽन्यस्मिन्नन्यस्मादन्य-
 स्मिन्नेवं संचारकपाटकेनोदक संचरति यासु तासु, तथा-विलपङ्क्तिषु विलानि-विल
 सदृशानि कूपरूपजलस्थानानि तेषां पङ्क्तयस्तासु च बहूनि उत्पलानि चन्द्रविका-
 सीनि कमलानि पद्मानि सूर्यविकासीनि कमलानि यावत् यावत्पदेन कुमुदानि
 नलिनानि सुमगानि सौगन्धिकानि पुण्डरीकाणि महापुण्डरीकाणि शतपत्राणि इत्येषां

वर्णनामाह” इस पाठ के पदों की स्पष्ट व्याख्या इस प्रकार से है । हे आयुष्यमान गौतम ऋषभ-
 कूट पर्वत पर छोटी २ वापिकाएँ चार कोनेवाली बावड़ियाँ हैं बड़ेसुन्दर कमलों से युक्त अथवा
 गोल २ आकार की पुष्करिणियाँ हैं यावत् दीर्घिकाएँ हैं जिनमें जलके आनेका मार्ग सरल है
 ऐसी वापिकाएँ हैं गुञ्जालिकाएँ हैं जिनमें जलके आनेका मार्ग सीधा नहीं है किन्तु बड़ा
 वक्र-टेढ़ा है ऐसी वापिकाएँ हैं । सरः-तालाव हैं । सरः पङ्क्तियाँ हैं । एव विल (छोटे छोटे जल
 स्थान) हैं उनमें पङ्क्तियाँ अनेक चन्द्र विकाशी कमल सूर्यविकाशी कमल कुमुद, नलिन सुमग, सौग-
 न्धिक, पुण्डरीक शतपत्र और सहस्र पत्र कमल हैं इनकी प्रभा ऋषभकूट पर्वत की प्रभा जैसी है
 और इनका आकार ऋषभकूट पर्वत के आकार के जैसा है अतः इन उत्पलादिकों को ऋषभकूट
 कह दिया गया है और इनके योग से इस पर्वत को ऋषभकूट कह दिया गया है ।

हस्तपत्राह” उसहकूटवर्णमाह” उसहकूटवर्णमाह” आ पाठना पढोनी स्पष्ट व्याख्या आ
 प्रभाह्ये छे. हे गौतम ऋषभकूट पर्वत पर नानी नानी वापिकाओ-चार थूला वाणी
 नानी नानी वापिकाओ छे कमलोंशी सुशोभित छे अथवा गोल गोल आकारनीपुष्क-
 रिणीओ छे. यावत् दीर्घिकाओ छे जेभा जल सरल रीते आवी शक्येवी वापिकाओ छे
 शुल्लिकाओ छे जेभा जल प्रवेशवाने भाग सीधे नथी परतु पके आडे टेढा छे जेवी
 वापिक ओ छे सर. तलाओ छे सर. पङ्क्तिओ छे तेभज मिल पङ्क्तिओ नाना नाना
 भाओशी या कूप पङ्क्तिओ छे तेओभा अनेक चन्द्रविकाशी कमलो, कुमुद, नलिन, सुमग
 सौगान्धिक, पुण्डरीक, महापुण्डरीक, शतपत्र अने सहस्रपत्र कमलो छे, जेभनी प्रभा ऋषभ
 कूट पर्वतनी प्रभा जेवी छे अने जेभनी आकार ऋषभकूट पर्वतना आकार जेवो छे, जेथी
 आ उत्पलादिकोने ऋषभकूट कह्यो छे, अने जेभनी सौगथी आ पर्वतने ऋषभकूट कह्यो छे.

સદ્ગ્રહો વૌધ્યઃ । તત્ર કુમુદાનિ-ચન્દ્રવિકાસિ શ્વેતકમલાનિ નલિનાનિ-સામાન્ય કમલાનિ, સુમગાનિ-કમલવિશેષાઃ, સૌગન્ધિકાનિ-શોભનગન્ધયુક્તકમલવિશેષાઃ પુણ્ડરી-કાણિ-શ્વેતકમલાનિ, -મહાપુણ્ડરીકાણિ વિશાલશ્વેત કમલાનિ શતપત્રાણિ શતપત્રયુક્તાનિ કમલાનિ તથા સહસ્રપત્રાણિ સહસ્રસંખ્યકપત્રયુક્તાનિ કમલાનિ, -શતસહસ્રપત્રાણિ લક્ષ-પત્રયુક્તાનિ કમલાનિ તાનિ કીદૃશાનિ ? इत्याह ऋषभकूटप्रभाणि ऋषभकूटपर्वता-काराणि । तथा ऋषभकूटवर्णानि ऋषभकूटस्य यो वर्णः तस्येव आभा प्रतिभासो येषां तानि तथा ततस्तानि तदाकारत्वात् तद्वर्णसादृश्याच्च ऋषभकूटानीति प्रसिद्धानि । तद्योगादेश पर्वतः ऋषभकूटः, नन्विह ऋषभकूटाकारत्वात् तत्सादृश्याच्च उत्पलादीनि ऋषभकूटान्यूच्यन्ते तेषां तेषामुत्पलादीनां योगात् पर्वतोऽपि ऋषभकूट उच्यते ? इत्यन्यो-न्याश्रय इ इति चेदाह-उभयेषामपि नाम्ना अनादिकाल प्रवृत्तोऽयं व्यवहार इति अन्योन्याश्रय दोषो नाशङ्कनीय इति । एवमन्यत्रापि बोध्यम् ।

अथ प्रकान्तरेणापि नामकारणं तदतिरिक्त च सर्वं वर्णयितुं सूत्रकारः संक्षेपेणाह-
'उसमेय एत्थ देवे' इत्यारभ्य 'जहा विजयस्स अविसेसियं' इति ततश्च ऋषभश्चात्र देवो

શંકા— इस प्रकार के कथन से तो फिर परस्पराश्रय दोष उपस्थित हो जाता है क्योंकि ऋषभकूट के आकार वाले कमल होने से उत्पलादिकों को ऋषभकूट कहा गया है और इनके योग होने से पर्वत को ऋषभकूट कहा गया है ।

उत्तर—ऐसा नहीं है क्योंकि दोनों का ऐसा नाम तो अनादिकाल से ही प्रवृत्त हुआ चला आ रहा है अतः इसमें परस्पराश्रय दोष के लिये स्थान ही नहीं मिलता है अनादि परम्परा से चले आरहे व्यवहार में परस्पराश्रय दोष नहीं होता है । “उसमे य एत्थ देवे महिद्दिण जाव दाहिणेण रायहाणी तहेव मंदरस्स पव्वयस्स जहा विजयस्स अविसेसियं” अब सूत्रकार इस सूत्र द्वारा प्रकारान्तर से ऋषभकूट का नामकरण आदिमें का कथन करते हुए कहते हैं कि इस पर्वत का जो ऋषभकूट नाम कहा गया है उसका कारण ऐसा है कि उस पर ऋषभकूट नाम का देव जो कि महर्द्धिक, महाधुतिक, महाबल, महायश-

શંકાઃ—આ બાતના કથનથી તો ફરી પરસ્પરાશ્રય દોષ ઉપસ્થિત થાય છે કેમકે ઋષભ કૂટના આકારવાળા હોવાથી ઉત્પલાદિકોને ઋષભકૂટ કહેવામાં આવેલ છે અને એમના યોગથી પર્વતને ઋષભકૂટ કહેવામાં આવેલ છે.

જિત્તર—આમ નથી કેમકે બન્નેના એ નામો તો અનાદિકાળથી જ પ્રવૃત્ત થતા આવ્યા છે એથી એમાં પરસ્પરાશ્રય દોષ માટે કોઈ સ્થાન નથી. અનાદિ પરંપરાથી આવી આવતા વ્યવહારમાં પરસ્પરાશ્રય દોષ થતો નથી. ‘उसमे य एत्थ देवे महिद्दिण जाव दाहिणेण रायहाणी तहेव मंदरस्स पव्वयस्स जहा विजयस्स अविसेसियं’ હવે સૂત્રકાર આ સૂત્ર વડે પ્રકારાન્તરથી ઋષભકૂટના નામકરણ આદિનું કથન કરતા કહે છે. કે આ પર્વતનું જે ઋષભકૂટ નામ કહેવાય છે તેનું કારણ આ છે કે તેની ઉપર ઋષભ

महाद्विको महाधुतिको महाबलो महायशो महासौख्यः पल्योपमस्थितिकः परिवसति । स खलु तत्र चतसृणां सामानिकसाहस्रीणां चतसृणाम् अग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां परिषदां सप्तानाम् अनीकानां सप्तानाम् अनीकाधीपतीनां षोडशानाम् आत्मरक्षकसाहस्रीणाम् ऋषभकूटस्य ऋषभाया राजधान्या अन्येषा च खलु बहूनां देवानां च देवीनां च आधिपत्यं पौरपत्यं स्वामित्वं भर्तृत्वं महत्तरकत्वम् आज्ञेश्वरसेनापत्यं कारयन् पालयन् महताऽऽहतनाट्य गीतवादिततन्त्रीतलतालत्रुटितघनमृदङ्गप्रत्युत्पन्न वादितरवेण दिव्यान् भोगभोगान् भुञ्जानो विहरति, स तेनार्थेन एवमुच्यते । ऋषभकूट ऋषभकूट इत्यारभ्य “क खलु भदन्त ! ऋषभस्य देवस्य ऋषभानाम राजधानी

त्वी, महासुखी एव पल्योपम की स्थिति वाला है रहता है वहाँ वह चार हजार सामानिक देवों का, चार सपरिवार अग्रमहिषियों का, तीन परिषदाओं का, सात अनीकों का, सात अनीकाधिपतियों का सोलह हजार आत्मरक्षकदेवों का तथा ऋषभकूट की ऋषभा राजधानी का एवं अन्य और वहाँ के निवासी अनेक देवों का और देवियों का आधिपत्य पौरपत्य स्वामित्व भर्तृत्व, महत्तरकत्व, आज्ञेश्वर सेनापत्य करवाता हुआ, पलवाता हुआ, जोर २ से चतुर बजाने वालों के द्वारा बजाये गये नाट्य, गीत के बाजों की, तन्त्री, तल, ताल, आदि रूप बाजों की ध्वनि पूर्वक दिव्य भोग भोगों को भोगता हुआ आनन्द के साथ रहता है । इस कारण गौतम ! मैंने एव अन्यतीर्थं करो ने ऋषभकूट इस नाम से उस पहाड़ का नाम कहा है । हे भदन्त ! ऋषभदेव की ऋषभा नामकी राजधानी कहाँ पर है ? इसके उत्तर में प्रभु श्रीकृष्ण कहते हैं—हे गौतम !

नामने। देव के ७२ महाद्विक महाधुतिक महाबल, महायशस्वी, महासुखी तेमज पल्योपमनी स्थितिवाले। छे ते रहे छे. त्यां ते चार हजार सामानिक देवानु चार सपरिवार अग्र-महिषीयानु त्रायु परिषदायानु सात अनीकानु सात अनीकाधिपतियानु सोण हजार आत्मरक्षक देवानु तेमज ऋषभकूटनी ऋषभा राजधानीना तेमज भील कटलाक त्यांना निवासी अनेक देवा अने देवीयानु आधिपत्य पौरपत्य, स्वामित्व भर्तृत्व, महत्तरकत्व आज्ञेश्वर सेनापत्य करवाता, पालन करवाता, चतुर वादको वडे भुज जोरथी वगाडेला बाज्यो गायेला गीतो, नाट्यो तेमज तन्त्री, तल, ताल आदि रूप विशेष वाद्योनी ध्वनि पूर्वक दिव्य भोगोने उपभोग करतो आनन्दपूर्वक त्यां रहे छे. आ कारणथी हे गौतम ! मे अने भील तीर्थं करेजे ऋषभकूट आ नामथी आ पर्वतने अर्थाधित करेले छे. हे भदन्त ऋषभदेवनी ऋषभानामके राजधानी क्या स्थले आवेली छे जेना जवाणमा प्रभु श्री कृष्ण छे. हे गौतम ! ऋषभदेवनी ऋषभा नामके राजधानी ऋषभकूटनी दक्षिण दिशाभां तिर्थं,

પ્રજ્ઞપ્તાઃ ગૌતમ ! ઋપમકૂટસ્ય દક્ષિણેન તિર્યગસંખ્યેયાન્ દ્વીપસમુદ્રાન્ વ્યતિવ્રજ્ય-
ઇત્યાદિ સર્વ વર્ણનમસ્ય ચ સૂત્રતો બોધ્યન્ । તદર્થોઽપિ તત્રૈવ બોધ્ય ઇતિ ॥૬૦॥૧૯॥

ઇતિ શ્રી શ્વિવિખ્યાત-જગદ્ગુહ-પ્રસિદ્ધ વાચક-પઠ્ઠચદશભાષાકલિત-લલિત-
કલાપાલાપક-પ્રવિશુદ્ધગદ્યપદ્યનૈકગ્રન્થનિર્માપક-વાદિમાનમર્દક-શ્રી શાહુ
છત્રપતિ કોલ્હાપુર રાજપ્રદત્ત-‘જૈનશાસ્ત્રાચાર્ય’ પદભૂષિત
કોલ્હાપુર રાજગુરુ-બાલવ્રહ્મચારી જૈનશાસ્ત્રાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર
પૂજ્યશ્રી-ઘાસીલાલ-ત્રિતિ વિરચિતયા જમ્બૂદ્વીપ-
પ્રજ્ઞપ્તેઃ પ્રકાશિકાખ્યાયાં વ્યાખ્યાયા
પ્રથમવક્ષસ્કારપર્વતવર્ણનમ્ ॥૧॥

ઋષભદેવ કો ઋપમા નામકો રાજધાકો ઋપમાકૂટ કો દક્ષિણદિશા મેં તિર્યક્ અસંખ્યાત દ્વીપ
સમુદ્રો કો ઉલ્લંઘન કર્કે ઇત્યાદિ સર્વ વર્ણન ઇસ વિષય કા જૈસા ઇસી સૂત્ર કે ૮ વે સૂત્ર મેં
કહા ગયા હૈ વૈસા હિ જાનના ચાહિયે. ॥ ૨૦ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલ ત્રિતિ વિરચિત જમ્બૂદ્વીપપ્રજ્ઞસિદ્ધ
કો પ્રકાશિકા વ્યાખ્યા મેં પ્રથમ વક્ષસ્કાર પર્વત વર્ણન સંપૂર્ણ ॥૧॥

અસંખ્યાત દ્વીપ સમુદ્રોને એ જાગીને ઇત્યાદિ વર્ણન આ સૂત્ર ના ૮ સૂત્રમાં કરવામાં
આવેલું છે તેવું જ સહી પણ સમજી લેવું જોઈએ આ પ્રમાણે અહીં જ જમ્બૂદ્વીપપ્રજ્ઞસિદ્ધ
નો પ્રકાશિકા ટીકામાં પ્રથમવક્ષસ્કાર પર્વતનું વર્ણન અહીં સમાપ્ત થયું.

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલ ત્રિતિવિરચિત જમ્બૂદ્વીપ
પ્રજ્ઞસિદ્ધ સૂત્રની પ્રકાશિકા વ્યાખ્યામાં પ્રથમ વક્ષસ્કાર પર્વત વર્ણન સંપૂર્ણ ॥૧॥

कालाधिकारः--

अथ द्वितीयवक्षस्कारवर्णनम्--

क्षेत्राणि अवस्थितानवस्थितकालभेदेन द्विधा जानन्नपीह साक्षादपगच्छतः
शुभान्भावान् दृष्ट्वा पारिशेष्यात्संभाव्यमानमनवस्थितकालमभिप्रेत्य पृच्छति--

मूलम्-जंबुद्वीवे णं भंते ! दीवे भारहे वासे कइविहे काले पण्णत्ते
गोयमा ! दुविहे काले पण्णत्ते. तं जहा--ओसप्पिणिकाले य
उस्सप्पिणिकाले य, ओसप्पिणि कालेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ?
गोयमा छव्विहे पण्णत्ते तं जहा-सुसमसुसमा काले णे सुसमाकाले २
सुसम दुस्समकाले ३ दुस्सम सुसमाकाले ४ दुस्समा काले ५ दुस्सम
इस्समा काले ६ उस्सप्पिणि काले णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ! गोयमा !
छव्विहे पण्णत्ते, तं जहा-दुस्समदुस्समाकाले १ जाव सुसमसु-
समाकाले ६ । एगमेगस्स णं भंते ! मुहुत्तस्स केवइया उस्सासद्धाविया
हिया ? गोयमा ! असंखिज्जाणं समयाणं समुदयसामिइ समागमेणं सा
एगा आवलियत्ति बुच्चइ, संखिज्जाओ आवलियाओ उसासो संखि-
ज्जाओ आवलियाओ नीसासा ।

हेट्ठस्स अणवगल्लस्स, णिरुवकिट्ठस्स जंतुणो ।

एगे उसासनीसासे, एस पाणुत्ति बुच्चइ ॥१॥

सत्त पाणूइं से थोवे. सत्त थोवाइं से लवे । लवानां सत्तहत्तरीए,
एस मुहुत्तेत्ति आहिए ॥२॥ तिण्णि सहस्सा सत्त य सयाइं तेवत्तरिं च
उसासा । एस मुहुत्तो भणिओ सव्वेहिं अणंतनाणाहिं ॥३॥ एएणं-मु-
त्तप्पमाणेणं तीसं मुहुत्ता अहोरत्तो, पण्णरस अहोरत्ता पक्खो, दो पक्खा
मासो, दो मासा उउ, तिण्णि उउ अयणे, दो अयणा संवच्छरे, पंच
संवच्छरिए जुगे, वीसं जुगाइं वाससए, दस वामसयोइं वाससहस्से, सयं
वाससहस्साणं वाससहस्से, चउरासीइं वाससयसहस्साइं से एगे पुव्वंगे,
चउरासीई पुव्वंगसयसहस्साइं से एगे पुव्वे, एवं विगुणं विगुणं णेयव्वं
तुडिए २ अड्डे २ अववे २ हुहुए २ उप्पले २ पउमे २ णल्लिणे २ अत्थ-

णिउरे २ अउए २ नउए २ चूलिया २ सीसपहेलिया २ जाव चउरा-
सीइ सीसपहेलियग सय सहस्साइं सा एगा सीसपहेलिया । एतोव ताव
गणिए एतावताव गणियस्स विसए, तेण परं ओवमिए ॥ सू० २० ॥

छाया—जम्बूद्वीपे खलु भदन्त । द्वीपे भारते वर्षे कतिविधः कालः प्रक्षप्तः ? गौतम ।
द्विविधः कालः प्रक्षप्तः तद्यथा अवसर्पिणीकालः १, उत्सर्पिणीकालश्च २, अवसर्पिणीकालः खलु
भदन्त कतिविधः प्रक्षप्तः ? गौतम पट्टविधः प्रक्षप्तः तद्यथा सुपमसुपमाकालः १, सुपमाकालः
२, सुपमदुष्पमाकालः ३, दुष्पमसुपमाकालः ४, दुष्पमाकालः ५, दुष्पमदुष्पमाकालः ६,
उत्सर्पिणीकालः खलु भदन्त कतिविधः प्रक्षप्तः गौतम पट्टविधः प्रक्षप्तः, तद्यथा दुष्पमदु-
ष्पमाकालः १ यावत् सुपमसुपमाकालः ६ पर्यन्तस्य खलु भदन्त मुहूर्तस्य कियत्यउच्छ्वा-
साद्धा व्याख्याताः, गौतम असंख्येयानां समयानां समुदयसमिति समागमेन सा
आवलिकेति उच्यते, संख्येयाः आवलिकाः उच्छ्वासाः, संख्येयाः आवलिकाः निश्वासः ।

दृष्टस्य अनवग्लानस्य निरुपक्विलष्टस्य जन्तोः ।

एक उच्छ्वासनिःश्वासः एष प्राण इत्युच्यते ॥ १ ॥

सप्त प्राणाः स स्तोका सप्त स्तोकाः स लवः ।

लवानां सप्त सप्तत्या, एष मुहूर्त इत्याख्यातः ॥ २ ॥

त्रीणि च सहस्राणि सप्त च शतानि त्रिसप्ततिश्च उच्छ्वासाः ।

एष मुहूर्तो मणितः सर्वैरनन्तज्ञानिभिः ॥ ३ ॥

एतेन मुहूर्तप्रमाणेन त्रिंशन्मुहूर्ता अहोरात्रः, पञ्चदश अहोरात्राः पक्षः, द्वौ पक्षौ मास
द्वौ । अतः त्रयः ऋतवोऽयनम् द्वे । अयने संवत्सरः पञ्च संवत्सरिकं युगं विशतिर्यु-
गानि वर्षशतम् दशवर्षशतानि वर्षसहस्रं, शतं वर्षं सहस्राणां, चतुरशीतिवर्षशतसहस्राणि
तदेकं पूर्वाङ्गं चतुरशोतिः पूर्वाङ्गशतसहस्राणि तदेकं पूर्वम्, एवं द्विगुणं द्विगुणं नेतव्यं
वृद्धितम् २, अवयवम् २, हुङ्कुम् २, उत्पलम् २ पद्मम् २ नलिनम् २, अर्धेनिपूरम् २,
अयुतम् २, नयुतम् २, प्रयुतम् २, चूलिका २, शीर्षप्रहेलिका २, यावच्चतुरशीतिशीर्ष-
प्रहेलिकाशतसः । एषा एका शीर्षप्रहेलिका । एतावत् तावद् गणितम् एतावान् तावद्
गणितस्य विषयः ततः परम् औपमिकम् ॥ २० ॥

कालाधिकार—

अवस्थित और अनवस्थित काल के भेद से क्षेत्रों के दो प्रकारों को जानते हुए भी गौतम
स्वामी साक्षात् शुभ भावों का यहाँ ह्रास देखकर सभाव्यमान अनवस्थित काल को लक्ष्य में
लेकरके प्रभू से पूछते हैं—

कालाधिकार—छे

अवस्थित अने अनवस्थित कालना बोद्धी क्षेत्रों ना ये प्रकारेने लक्षणवा छताये गौतम
स्वामी साक्षात् शुभ भावोंना अही ह्रास नेछने सभाव्यमान अनवस्थित काल ने लक्ष्य
भां राखी ने प्रभुने प्रश्न करे छे—

ટીકા—જંબૂદ્વીવેણં મંતે ! દીવે' ઇત્યાદિ ।

‘જંબુદ્વીવેણં મંતે ! દીવે મારહે વાસે કહિવિહે કાલે પળ્ણત્તે’ જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે સ્થલ મદન્ત મારતે વર્ષે કતિવિધ; કિયત્પ્રકારકઃ કાલઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ? મગવાનાહ—ગોયમા ! દુવિહે કાલે પળ્ણત્તે’ હે ગૌતમ ! દ્વિવિધઃ દ્વિપ્રકારકઃ કાલઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ‘તં જહા ઓસપ્પિણિ કાલે ય’ તદ્વથા—અવસર્પિણોકાલઃ—અવસર્પતિ હીયમાનારકત્વેનાવમર્પયતિવા ક્રમેણાઽઽયુઃ શરીર પ્રવૃત્તિભાવાન્ દ્વાસયતીતિ અવસર્પિણી સ ચાસૌ કાલશ્ચેતિ તથા અસ્યાઃ પ્રથમતુપાદાનં પ્રજ્ઞાપકાપેક્ષયા બોધ્યં, ક્ષેત્રેષુ મરતવત્ ! તથા ‘ઉત્સર્પિણિકાલે ય’ ઉત્સર્પિણીકાલઃ—ઉત્સર્પતિ—વર્દ્યતે અરકાપેક્ષયા, ઉત્સર્પયતિ ક્રમેણાઽઽયુઃ શરીરાદિકાન્ ભાવાન્ વર્દ્યયતિ વેત્યુત્સર્પિણી સા ચાસૌ કાલશ્ચેતિ તથા, ચકારદ્વયમ્મયોરપિ સમાનારકતા સમાનપરિમાણતાદિ સૂચનાર્થમ્ । ઉભયત્ર સંજ્ઞાત્વાદ્ભાષિતપુંસ્કત્વાભાવાન્ પુંવદ્ભાવઃ । તન્નાવસર્પિણી કાલમેદં પૃચ્છતિ—‘ઓસપ્પિણિ કાલેણં મંતે કહિવિહે પળ્ણત્તે’ હે મદન્ત અવસર્પિણીકાલઃ

“જંબૂદ્વીવેણં મંતે ! દીવે મારહે વાસે કહિવિહે કાલે પળ્ણત્તે” ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—હે મદન્ત ! જમ્બૂદ્વીપ નામકે હસ દ્વીપ મે કિત્તને પ્રકાર કા કાલ કહા ગયા હૈં ? હસકે ઉત્તર મે પ્રમુશી કહતે હૈં—“ગોયમા ! દુવિહે કાલે પળ્ણત્તે” હસ જમ્બૂદ્વીપનામકે દ્વીપમેં દો પ્રકાર કા કાલ કહા ગયાહૈ, “તં જહા” જો હસ પ્રકાર સે હૈં “ઓસપ્પિણી કાલે ય ઉત્સર્પિણી કાલે ય” એક અવસર્પિણીકાલ ઔર દુસરા ઉત્સર્પિણીકાલઃ, જિસ કાલ મેં ક્રમશઃ આયુ, શરીર આદિ હીન હોતે જાતે હૈ—દ્વાસ કો પ્રાપ્ત હોતે રહતે હૈં પેસા જો કાલ હૈ વહ અવસર્પિણી કાલ હૈં, પ્રજ્ઞાપક કી અપેક્ષા સે હસકા પ્રથમત્ ઉપાદાન કિયા ગયા હૈ, જૈસા કિ ક્ષેત્રો મેં મરત કા પ્રથમ ઉપાદાન કિયા ગયા હૈ તથા જિસ કાલ મેં ક્રમશઃ આયુ, શરીર આદિ ભાવોં કી વૃદ્ધિ હોતી જાતી હૈ અથવા જો ક્રમશઃ હન ભાવોં કો અરકોં કી અપેક્ષા સે બદતા જાતા હૈ ઉસકા નામ ઉત્સર્પિણી કાલ

‘જંબુદ્વીવે ણં મંતે ! દીવે મારહે વાસે કહિવિહે કાલે પળ્ણત્તે’ ઇત્યાદિ સૂત્ર ૨૦॥

ટીકાર્થ—હે ભદ્ર ત ! જંબૂદ્વીપ નામક આ દ્વીપમા કેટલા પ્રકાર ને કાળ કહેવામાં આવેલ છે ? એના જવાબમાં પ્રશ્ન કહે છે “ગોયમા” ! દુવિહે કાલે પળ્ણત્તે” આ જંબૂદ્વીપ નામક દ્વીપમાં બે પ્રકારનો કાળ કહેવામાં આવેલ છે. ‘તં જહા’ તે આ પ્રમાણે છે. “ઓસપ્પિણી કાલે ય ઉત્સર્પિણી કાલે ય” એક અવસર્પિણી કાળ અને બીજો ઉત્સર્પિણી કાળ. બે કાળમાં ક્રમશઃ આયુ, શરીર વગેરે હીન થતા જાય છે હાસ થતા જાય છે એવો બે કાળ છે તે અવસર્પિણી કાળ છે પ્રજ્ઞાપકની અપેક્ષાએ આનુ પ્રથમતઃ ઉપાદાન કરવામાં આવેલ છે જેવું કે ક્ષેત્રો માં મરતનુ પ્રથમ ઉપાદાન કરવામાં આવેલ છે તેમજ બે કાળમાં ક્રમશઃ આયુ શરીર વગેરે ભાવોની વૃદ્ધિ થતી જાય છે અથવા બે ક્રમશઃ એ ભાવોને અરકોની અપેક્ષાએ વધારતો જાય છે. તે કાળનુ નામ ઉત્સર્પિણી કાળ છે અહીં બે બે ‘ય’ આગ્યા છે

કતિવિધઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ મળવાનાહ 'ગોયમા છન્વિદે પળ્ળતે' દે ગૌતમ અવસર્પિણીકાલઃ
 ષઢ્વિધ પ્રજ્ઞપ્તઃ 'તં જહા—'સુસમ સુસમાકાલે'તદ્વથા સુપમસુષમાકાલઃ—સુ—સુષ્ટુ શોભના
 સમા વર્ષાણિ યસ્યા સા સુપમા, અત્ર સુવિનિર્દુમ્બ્યઃ સુપિ સ્તિ સમાઃ ૮૧૩|૮૮ ઇતિ સકા-
 રસ્ય ષત્વમ્ સુષમાચાસૌ સુપમા સુપમસુપમા, ઉભયોઃ સમાનાયેયોઃ પ્રકૃષ્ટાર્થત્વા દત્યન્ત
 સુષમેત્યર્થઃ ઇયમવૈકાન્તસુત્રરૂપપ્રથમારકરૂપા સા ચાસૌ કાલશ્ચ સુપમ સુપમા કાલઃ ૧,
 'સુસમાકાલે' સુપમાકાલઃ તત્ર સુપમા—પ્રાગુક્તસ્વરૂપા તદ્રૂપ કાલસ્તથા ૨, 'સુસમઃદુસ્સમ
 કાલે' સુપમ દુષ્પમાકાલઃ તત્ર સુપમા પ્રાગુક્તસ્વરૂપા સા ચાસૌ દુષ્પમા દુઃ દુષ્ટા સમા
 વર્ષાણિ યસ્યા સા ચેતિ સુપમદુષ્પમા અધિક સુપમા પ્રમાવાલ્પદુષ્પસુપમાપ્રમાવા તદ્રૂપઃ
 કાલઃ સુપમદુષ્પમાકાલઃ ૩ 'દુષ્પમ સુસમાકાલે' દુષ્પમ સુપમાકાલઃ દુષ્પમા ચાસા સુપમા

હૈ । યહાં જો દો ચકાર આયે હૈ વે યહ પ્રકટ કરતે હૈ યે દોનો કાલ અરેક આદિકોં કી
 અપેક્ષા સમાન હૈ, ઓર પરિમાણના આદિ કા અપેક્ષા મા સમાન હૈ । આ અવસર્પિણી કાલ કે
 કિતને મેદ હૈ હસનાત કો શ્રીગૌતમ સ્વામી પૂછતે હૈ "ઓસર્પિણિ કાલેળ મને । કહવિદે પળ્ળતે"
 હૈ મદન્ત । અવસર્પિણી કાલ કિતને પ્રકાર કા કહા ગયા હૈ ઉત્તર મેં પ્રમુશ્રો કહતે હૈ- 'ગોયમા ।
 છન્વિદે પળ્ળતે' હૈ ગૌતમ । અવસર્પિણી કાલ ૬ પ્રકાર કા કહા ગયા હૈ "ત જહા" જૈસે- "સુસમ
 સુસમાકાલે ૧, સુસમાકાલે ૨, સુસમદુસ્સમકાલે ૩, દુસ્સમસુસમાકાલે ૪, દુસ્સમાકાલે ૫,
 દુસ્સમદુસ્સમા કાલે ૬, સુપમસુષમા કાલ- જિસમેં અઞ્ઠે સમા-વર્ષ હોતે હૈ ઉસકા નામ સુષમા હૈ
 યહાં સ કો ષ "સુવિનિર્દુમ્બ્ય સુપિ સ્તિસમા" હિસ સૂત્ર સે હુઆ હૈ "સુષમા ચાસૌ સુષમા હિતિ
 સુષમસુષમા" યહા દૂસરા સુષમા શબ્દ મો હિસો પૂર્વોક્ત-પ્રથમ સુષમા અર્થ કા હો વાચક હૈ
 યહ દોનો સમાનાર્થક શબ્દો કે પ્રયોગ સે યહ કાલ અત્યન્ત શોભન વર્ષો વાલા હોતા હૈ. યહ
 પ્રથમ આરક અવસર્પિણી કાલ કા કહાગયા હૈ ક્યો કિ યહો એકાન્તત સુત્રરૂપ હોતા હૈ

તે ઓ બતાવે છે કે ઓ બન્ને કાળો. અરક વગેરેની અપેક્ષાએ સમાન છે અને પરિમા
 ણતા આદિની અપેક્ષાએ પણ સમાન છે હવે' અવસર્પિણી કાળના કેટલા ભેદો છે, એ
 વાતને ગૌતમ સ્વામી પૂછે છે "ઓસર્પિણિ કાલે ણ મંતે ! કહવિદે પળ્ળતે" હે ભદ્રત ! અવ-
 સર્પિણી કાળ કેટલા પ્રકારનો કહેવાય છે ! ઉત્તર મા પણ કહે છે—“ગોયમા । “છન્વિદે
 પળ્ળતે” હે ગૌતમ ! અવસર્પિણી કાળ ૬ પ્રકારનો કહેવામા આવેલ છે “તં જહા” જેમ
 કે “સુસમસુસમાકાલે ૧, સુસમાકાલે ૨, સુસમદુસ્સમકાલે ૩, દુસ્સમસુસમાકાલે ૪,
 દુસ્સમાકાલે ૫, દુસ્સમદુસ્સમાકાલે ૬” સુપમસુષમા કાળ જેમાં સારા સમા-વર્ષ-હોય છે
 તેનું નામ સુષમા છે. અહીં 'સ' નો 'ષ' સુવિનિર્દુમ્બ્યઃસુપિ સ્તિસમાઃ” ૮૧|૮૮ આ
 સૂત્ર વડે થયે છે સુપમા ચાસૌ સુષમા હિતિ સુષમ સુષમા” અહીં બોલે સુષમા શબ્દ પણ
 પૂર્વોક્ત પ્રથમ અર્થનો જ વાચક છે સમાનાર્થક બન્ને શબ્દોના પ્રયોગથી આ સ્પષ્ટ થાય છે
 કે આ કાળ અતીવ શોભન વર્ષવાળો થાય છે આ પ્રથમ આરક અવસર્પિણી કાળનો

અ દુષ્પમ સુષમા અધિક દુષ્પમાપ્રમાવાડ્વપ્સુષમા પ્રમાવા, તદ્રૂપઃ કાલો દુષ્પમસુષમા કાલઃ ૪, 'દુસ્સમાકાલે' દુષ્પમાકાલઃ તત્ર દુષ્પમા પ્રાગુક્તસ્વરૂપા તદ્રૂપઃ કાલઃ ૫, 'દુ મદુસ્સમાકાલે' દુષ્પમદુષ્પમાકાલઃ દુષ્પમા પ્રાગુક્તસ્વરૂપા સાચો દુષ્પમા 'અત્યન્તદુષ્પમા તદ્રૂપઃ કાલસ્તથા ૬, इत्य पिणीकालमेदाः १ ।

अथोत्सर्पिणी कालमेदं पृच्छति 'उत्सर्पिणिकाले णं भंते कइविहे पण्णत्ते' उत्सर्पिणीकालः खलु भदन्त कतिविधः प्रज्ञप्तः भगवानाह—'गोयमा छव्विहे पण्णत्ते' हे गौतम उत्सर्पिणी कालः षड्विधः प्रज्ञप्तः 'तं जहा—दुस्समदुस्समाकाले' तद्यथा दूषमदूषमाकालः जाव यावत् यावत्पदेन 'दूषमाकालः २, दूषमसुषमा : ३, सुषम-

द्वितीयकाल जिसका नाम सुषमा है यह भी शोभन वर्षों वाला होता है. "सुषमदुष्पमाकाल" यह तृतीय काल है इस काल में अधिकरूप से प्रथम तो शोभन वर्ष होते हैं, और बाद में दुष्ट वर्ष अल्प होते हैं. तात्पर्यकहने का यही है कि इस तृतीय आरक में सर्वप्रथम सुषमा का प्रभाव होता है और अल्परूप में दुष्पमाओं का प्रभाव रहता है. चतुर्थ आरक दुष्पम सुषमाकाल है—इस काल में अधिकरूप में दुष्पमाओं का प्रभाव रहता है और अल्परूप में सुषमाओं का प्रभाव रहता है. पांचवा आरक दुष्पमाकाल नामका है इस काल में समस्त वर्ष दुःख दायक ही होते हैं, छठा मेद दुष्पमाकाल है इनमें जितने भी वर्ष होते हैं—अर्थात् २१ हजार वर्ष होते हैं वे सब अत्यन्त दुष्ट ही होते हैं. एक भी समय इसमें शोभन नहीं होता है "उत्सर्पिणी काले णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते" हे भदन्त ! उत्सर्पिणीकाल कितने प्रकार का कहा गया है उत्तर में प्रसुग्री कहते हैं "गोयमा ! छव्विहे पण्णत्ते" हे गौतम ! उत्सर्पिणी काल ६ प्रकार का कहा गया है—'तं जहा जैसे—'दुस्समदुस्समाकाले' १ जाव सुसमसुसमाकाले ६" दुष्पम दुष्पमाकाल, यावत्-दुष्पमाकाल २, दुष्पमसुषमाकाल ३, सुषमदुष्पमाकाल ४, सुषमाकाल ५ और सुषमसुषमाकाल ६ ।

કહેવામાં આવેલ છે કેમકે એજ એકાન્ત સુખસ્વરૂપ હોય છે. દ્વિતીય કાળ જેનું નામ સુષમા છે તે પણ શોભન વર્ષવાલો હોય છે "સુસમદુસ્સમા કાલે" આ તૃતીય કાળ છે. આ કાળમાં અધિક રૂપથી પ્રારંભમાં તો શોભન વર્ષો હોય છે અને ત્યાર બાદ અલ્પરૂપમાં દુષ્ટ વર્ષો હોય છે. તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે કે આ તૃતીય આરક માં સર્વ પ્રથમ સુષમાનો પ્રભાવ હોય છે અને અલ્પરૂપમાં દુષ્પમાઓનો પ્રભાવ રહે છે અર્થાત્ આરક દુષ્પમ સુષમા કાળ છે. આ કાળમાં અધિક રૂપમાં દુષ્પમાઓનો પ્રભાવ રહે છે. અને અલ્પરૂપમાં સુષમાઓનો પ્રભાવ રહે છે પાંચમો આરક દુષ્પમા કાળ નામ છે. આ કાળમાં સમસ્ત વર્ષ દુઃખદાયક જ હોય છે. છઠ્ઠો પ્રકાર દુષ્પમ દુષ્પમા કાળ છે. એમાં જેટલા વર્ષો હોય છે. જેટલે કે ૨૧ હજાર વર્ષ હોય છે તે સર્વે અતીવ દુષ્ટ હો છે એક પણ સમય આમાં શોભન થતો નથી 'ઉત્સર્પિણી કાલે ણં મતે ! કइविहे पण्णत्ते" હે ભદ્રંત ઉત્સર્પિણીકાળ જેટલા પ્રકારનો કહેવામાં આવેલ છે ? ઉત્તરમાં પણ કહે છે—'गोयमा ! छव्विहे पण्णत्ते' હે ગૌતમ ! ઉત્સર્પિણી કાળ ૬ પ્રકારનો કહેવામાં આવેલ છે, 'તં જહા' એમ કે 'दुस्सम दुस्समाकाले १ जाव सुसमसुसमाकाले ६' દુષ્પમદુષ્પમાકાળ ૧ યાવત્ દુષ્પમાકાળ ૨ દુષ્પમસુષમા

દુષ્પમાકાલઃ ૪, સુપમાકાલઃ ૫ इति पदचतुष्टयस्य संग्रहः तथा 'सुसम सुसमा काले' सुपमसुषमा कालः ६, इति इत्युत्सर्पिणीकालभेदाः । २।

अथ तदुभयकालपरिमाणं जिज्ञासमानोऽवान्तरकालं प्रष्टुमुपक्रमते । 'एगमेगस्स णं' इत्यादि । 'एगमेगस्स णं' मते मुहुत्तस्स' हे भदन्त एकैकस्य मुहूर्तस्य खलु 'केवइया' कियत्स्यः कित्प्रमाणाः निश्वासो नाम वायोर्वहि निर्गमः ततश्च 'उस्सासद्धा' उच्छ्वासाद्धाः उच्छ्वासः—वायोरन्तःप्रवेशः उपलक्षणमेतत् तेन—निःश्वासोपि गृह्यते उच्छ्वासपदेन उच्छ्वासनिःश्वासौ बोध्यौ तदद्धाः—उच्छ्वासनिःश्वासाद्धाः उच्छ्वासनिःश्वासप्रमितकाल-विशेषाः 'वियाहिया' व्याख्याताः—कथिताः भगवानाह—'गोयमा असंखिज्जाणं समयाणं' हे गौतम असंख्येयानां समयानां आगम प्रसिद्धपटशाटिकापाटनदृष्टान्तज्ञापनीयस्वरूपाणां परमजघन्यकालविशेषाणां 'समुदयसमिद्द समागमेणं' समुदय समिति समागमेन समुदयाः समूहास्तेषां समितय सम्मेलनानि तासां यः समागमः एकीभवनं समुदयस-

“एगमेगस्स णं मते । मुहुत्तस्स केवइया उस्सासद्धा वियाहिया ।” इन दोनों कालों के परिमाण जाननेकी इच्छा से अब श्रीगौतम स्वामीने प्रश्न से ऐसा पूछा है—हे भदन्त! एक एक मुहूर्त के कितने उच्छ्वास निःश्वास प्रमित काल विशेष कहे गये हैं यहां उच्छ्वास यह पद उपलक्षण रूप है इससे निःश्वास का भी ग्रहण हो जाता है वायु का भीतर जाना यह उच्छ्वास है, तथा वायु का बाहर निकालना यह निःश्वास है. तात्पर्य पूछने का यही है की एक अन्तर्मुहूर्त में कितने उच्छ्वासनिःश्वास होते हैं ? इसके उत्तर में प्रश्नश्री कहते हैं— “गोयमा ! असंखिज्जाणं समयाणं समुदयसमिद्द समागमेणं सा एगा आवलिअत्ति बुच्चइ संखिज्जाओ आवलियाओ उसासो, संखिज्जाओ आवलियाओ नीसासो” हे गौतम आगम प्रसिद्ध समय का स्वरूप को जिसे शास्त्रकारों ने पटशाटिका के फाटने के दृष्टान्त से सावित किया है और जो काल का सब से जघन्यरूप प्रमाण है, ऐसे असंख्यातसमयों को समुदायरूप एक आवलिका कही गई है यहां पर ऐसी शका

કાળ ૩. સુષમ કુષ્પમાકાળ ૪ સુષમા કાળ ૫. અને સુષમ સુષમા કાળ ૬.

“एगमेगस्स णं मते । मुहुत्तस्स केवइया उस्सासद्धा वियाहिया ।” अन्ने कालोना परिभाषा ने जल्लुवानी छच्छाथी હવે ગૌતમે પ્રશ્ન ને એવી રીતે પ્રશ્ન કર્યો કે કે બદલ એક એક મુહૂર્તના કેટલા ઉચ્છ્વાસ નિશ્વાસ પ્રમિત કાળ વિશેષ કહેવાય છે ? અહીં ઉચ્છ્વાસ પદ ઉપલક્ષણ રૂપ છે. એનાથી નિશ્વાસનું પણ અહેસ થાય છે, વાયુ ને અંદર લઈ જવો તે ઉચ્છ્વાસ છે હવા વાયુ બહાર નીકળે છે તે નિશ્વાસ છે તાત્પર્ય આ છે કે એક અન્તર્મુહૂર્તમા કેટલા ઉચ્છ્વાસ નિશ્વાસો હોય છે ? એના જવાબમાં પ્રશ્ન કહે છે— ગોયમા ! અસંખિજ્જાણં સમયાણ સમુદય સમિદ્દસમાગમેણં સા ઇગા આવલિઅત્તિ ‘બુચ્ચઈ’ સંખિજ્જાઓ આવલિયા ઓ ઉસાસો સંખિજ્જાઓ આવલિયાઓ નીસાસો” હે ગૌતમ આગળ પ્રસિદ્ધ સમયનું સ્વરૂપ કે જેમ શાસ્ત્રકારોએ પટશાટિકાના ફાટવાના દૃષ્ટાંતથી સાબિત કરેલ છે જે કાલ નું સર્વથી જઘન્ય રૂપ પ્રમાણ છે એવા આ સંખ્યાત સમયોના સમુદાય રૂપ એક આવલિકા કહેવામા આવી છે. અહીં એવી શકા કરવી યોગ્ય નથી કે પ્રશ્નકારે

मिति समागमस्तेन प्रमितः कालविशेष 'सा एगा आवलिपत्ति वुच्चइ' सा एका आव-
लिका इति उच्यते ।

ननु प्रश्नवाक्ये मुहूर्तस्य कियन्तः उच्छ्वासाद्धा व्याख्याताः इत्युक्तम् उत्तरवाक्ये
तु समयावलिकादिक्रमेण निरूपणं क्रियते इति प्रश्नानुरूपमुत्तरदानमसंगतम् इति चेत्
आह प्रश्नवाक्ये समयावलिकयोरसांव्यवहारिकत्वेन तद्विषये पृच्छा न कृता उत्तर
वाक्ये तु केवलि प्रज्ञाया सूक्ष्मत्वेन वस्तुसूक्ष्मस्वरूपपर्यन्त गमनात् उच्छ्वासादीनां समया
वलिकानिरूपणाधीननिरूपणत्वाच्च भगवतस्तयोर्निरूपणं युक्तमेवेति ।

ननु पूर्वसमयसद्भावे परसमयस्मानुत्पन्नतया परसमयस्य च सद्भावे पूर्वसमयस्य
व्यतीतत्वेनाभावात्कथमसख्यातसमयानां समुदय समिति समागमो भवितुमर्हति येनाऽ

नहीं करनी चाहिये कि प्रश्नकार ने तो एक अन्तर्मुहूर्त में कितने उच्छ्वास निःश्वास होते हैं
ऐसा पूछा है और आप उत्तर दे रहे हैं कि असख्यात समयों के समुदाय की एक आवलिका
होती है मो ऐसा आपका उत्तररूप वाक्य सर्वथा असंगत ही है. क्यों कि उच्छ्वास आदिकों का
निरूपण किये बिना नहीं हो सकता है. अतः उच्छ्वास आदिकों का निरूपण इनके निरूपण
के आधीन है इसीलिये शास्त्रकार ने इनका निरूपण पहिले किया है. यद्यपि शंकाकार ने समय
आवलीका को असंव्यवहारिक होने से इस विषय में पृच्छा नहीं की है परन्तु उत्तरवाक्य में जो
इनका निरूपण किया गया है वह केवलिप्रज्ञा सूक्ष्म होती है और वह वस्तु के सूक्ष्म स्वरूपतक
पहुंच जाति है इस तरह समय काल का सब से सूक्ष्मस्वरूप है. अतः जबतक ऊपका निरूपण
नहीं हो जाता है तब तक इसके द्वारा साध्य आवलिका का और आवलिका साध्य उच्छ्वास
आदि का निरूपण नहीं हो सकता है, इस बात को प्रकट करने के लिये भगवान् ने इस प्रकार
से उत्तर दिया है अतः ऐसा यह उत्तर रूप कथन अनुचित नहीं है, किन्तु उचित ही है ।

तो जो अन्तर्मुहूर्तमा डेटला उच्छ्वास निःश्वासो होय छे ओवो प्रश्नकर्ता छे अने तमे
जवाब आपी रह्यो छे के असख्यात समयाना समुदायनी ओका आवलिका होय छे. तो
ओवा तमारा उत्तर रूप वाक्यने सर्वथा असंगत कहेवो उचित नथी, केमके उच्छ्वास वगे
रेनुं निरूपण समय आवलिकाना निरूपण कयां वगर संभव नथी. ओथी उच्छ्वास आदि डेटनुं
निरूपण समय आवलिकाना निरूपण कयां वगर संभव नथी. ओथी उच्छ्वास आदि डेटनुं
निरूपण ओमना निरूपणने आधीन न छे. ओथी शास्त्रकारो ओमनु निरूपण पहिला
कहेछे छे. ओ के शंकाकारे समय आवलिका ने असंव्यवहारिक होवाथी आ संभंधमां
पृच्छा करी नथी परन्तु उत्तर वाक्यमां ओ आविषे निरूपण करवाभा आवेछे छे ते केवलि
प्रज्ञा सूक्ष्म होय छे अने ते वस्तुना सूक्ष्म स्वरूप सुधी पहोन्ची जाय छे आ रीते समय
काणनुं सौ करता वधारे सूक्ष्म स्वरूप छे ओथी नयां सुधी तेनुं निरूपण कर वामां आवे
नही त्यां सुधी तेना वडे साध्य आवलिका अने आवलिका साध्य उच्छ्वास आदिनुं
निरूपण थर शके तेम नथी ओ वातने प्रकट करवा भाटे भगवाने ओवी रीते जवाब
आओ छे. ओथी आ उत्तररूप कथनअनुचित नथी परन्तु उचित न छे.

વલિકાદીનામસંખ્યાતસમયપ્રમાણસ્વરૂપતા ઘટતે इति चेत् आह—यद्यपि समुदयादिधर्मो विमात्रस्निग्धरूक्षपुद्गलादीनां भवति न तु कालस्येति सत्यं तथापि यं यं कालविशेषं प्ररूपयितुं प्रज्ञापकपुरुषविशेषेण यावन्तो यावन्तः समया एकज्ञानविषयी कृतास्तावन्तस्ते समुदयसमितिसमागता उपचर्यन्ते, अत एवायमौपाधिकः काल इति न काचिदनुपपत्तिरिति । तथा ‘संखिज्जाओ आवलियाओ उसासो’ सख्येया आवलिका उच्छ्वासः संखिज्जाओ आवलियाओ नीसासो’ सख्येया आवलिका निश्वासः तत्र सख्येयत्वोपपत्तिश्चैवम् आवलिकानां पदपञ्चाशदुत्तरशतद्वयेनैकः क्षुल्लकभवो भवति तानि

શકા—અસંખ્યાત સમયો કી સમૂહ સમિતિ સે એક આવલિકા નિષ્પન્ન હોતી હૈ એસા આપ કહ રહે હૈ—સો યહ બાત હમ કો સમજ મેં હી નહીં આતી હૈ ક્યોં કિ જબ તક પૂર્વ-સમય કા સદ્ભાવ રહેગા—તબ તક પર સમય કા ઉદય નહીં હોગા ઓર જબ પરસમય કા સદ્ભાવ હો જાવેગા—તબ પૂર્વ સમય કા વિનાશ હો જાવેગા—તો ફિર અસંખ્યાત સમયોં કી સમુદાયસમિતિ કૈસે નિષ્પન્ન હો સકેગીં કિ જિસસે આવલિકા બનાઈ જાતી હૈ ?

ઉત્તર—શંકા ઠીક હૈ—ક્યોંકિ સમુદયાદિ રૂપ ધર્મ વિમાત્ર સ્નિગ્ધ રૂક્ષગુણવાળે પુદ્ગલો મેં હોતા હૈ કાલ મેં નહીં હોતા. ક્યોંકિ વહ અમૂર્ત હૈ પરન્તુ ફિર મી પ્રજ્ઞાપકપુરુષ વિશેષ દ્વારા જિસ જિસ કાલ વિશેષ કી પ્રરૂપણા કરને કે લિયે જિતને જિતને સમય એક જ્ઞાન કે વિષયભૂત કિયે ગયે હોતે હૈ ઉત્તને ઉત્તને વે સમય સમુદયસમિતિ મેં આ ગયે હૈ એસા ઉપચાર સે માન લિયા જાતા હૈ, હસલિયે કાલ કો ઔપાધિક માના ગયા હૈ વાસ્તવિક નહીં અતઃ હસ પ્રકાર કી પ્રરૂપણા મેં કોઈ અનુપપત્તિ નહીં હૈ । સંખ્યાત આવલિકાઓં કા એક ઉચ્છ્વાસ હોતા હૈ ઓર સંખ્યાત હી આવલિકાઓં કા એક નિઃશ્વાસ હોતા હૈ, સંખ્યાત કી ઉપપત્તિ હસ પ્રકાર સે હોતી હૈ—૨૫૬ આવલિકાઓં કા એક ક્ષુલ્લકભવ હોતા હૈ કુલ અધિક ૧૭ ક્ષુલ્લકભવોં

શંકા—અસંખ્યાત સમયોની સમૂહ સમિતિથી એક આવલિકા નિષ્પન્ન થાય છે એવું તમે કહી રહ્યા છો તો આવાત સમજમાં આવતી નથી. કેમકે જ્યાં સુધી પૂર્વ સમયનો સદ્ભાવ રહેશે ત્યાં સુધી પરસમયનો ઉદય થશે નહીં અને જ્યારે પરસમયનો સદ્ભાવ થઈ જશે ત્યારે પૂર્વ સમયનો વિનાશ થઈ જશે, તો અસંખ્યાત સમયોની સમુદાય સમિતિ કેવી રીતે નિષ્પન્ન થઈ શકશે કે જેનાથી આવલિકા નિષ્પન્ન થાય છે

ઉત્તર—શંકા બરાબર જ છે. કેમકે સમુદાયાદિ રૂપ ધર્મ વિમાત્રસ્નિગ્ધ રૂક્ષગુણવાળા પુદ્ગલો માં હોય છે કાળમાં થતો નથી. કેમકે તે અમૂર્ત છે છતાંએ પ્રજ્ઞાપક પુરુષ વિશેષ વડે જે જે કાળ વિશેષની પ્રરૂપણા કરવા માટે જેટલા જેટલા સમયો એક જ્ઞાનના વિષયભૂત કરેલા હોય છે તો તેટલા તે સમયો સમુદય સમિતિમાં આવી ગયા છે, આમ ઉપચારથી માની લેવામાં આવે છે. એથી જ કાળને ઔપાધિક માનવામાં આવેલો છે તે વાસ્તવિક નથી એથી આ બતની પ્રરૂપણામાં કોઈ પણ અનુપપત્તિ નથી, સંખ્યાત આવલિકાઓનો એક ઉચ્છ્વાસ હોય છે. અને સંખ્યાત આવલિકાઓનો જ એક નિશ્વાસ પણ હોય છે. સંખ્યાત ઉપપત્તિ આ પ્રમાણે થાય છે. ૨૫૬ આવલિકાઓનો એક ક્ષુલ્લક ભવ હોય છે.

ચ સપ્તદશ સાધિકાનિ ઉચ્છ્વાસ નિઃશ્વાસકાલઃ ઇતિ ।

અથ યાદૃશૈરુચ્છ્વાસ નિશ્વાસાદિર્મુદ્ધૂર્તમાનં ભવતિ તદાહ—‘હેટ્વસ્સ’ ઇયાદિ ‘હેટ્વસ્સ’ હૃષ્ટસ્ય—તારુણ્યેન સમર્થસ્ય ‘અણવગલ્લસ્સ’ અનવગ્લાનસ્ય—ગ્લાનિર્વર્જિતસ્ય ‘ણિરુવકિટ્ઠસ્સ’ નિરુપહ્લિષ્ટસ્ય—સર્વદા વ્યાધિરહિતસ્ય નીરોગસ્ય ‘જંતુણો’ જન્તોઃ મનુષ્યસ્ય ચ ‘એગે ઉસા મનીસાસે’ એક ઉચ્છ્વાસનિઃશ્વાસઃ ઉચ્છ્વાસ યુક્તો નિશ્વાસઃ ‘એસ પાણુત્તિ’ સ એપ પ્રાણ ઇતિ પ્રાણ ઇતિ સંજ્ઞયા ‘બુચ્ચઈ’ ઉચ્યતે વ્યવહ્રિયતે ઇતિ ।

તથા ‘સત્ત પાણૂં સે થોવે’ સપ્ત પ્રાણાઃ સ સ્તોકઃ ‘સત્ત થોવાં સે લવે’ સપ્ત સ્તોકા સ લવઃ ‘લવાનાં સત્તહત્તરીપ’ લવાનાં સપ્ત સપ્તત્યા મિતો યઃ સ ‘એસ મુહુત્તેત્તિ’ એપ મુદ્ધૂર્ત ઇતિ ‘આહિપ’ આખ્યાતઃ કથિતઃ ૨ ।

કા એક ઉચ્છ્વાસ નિશ્વાસરૂપ કાલ હોતા હૈ । અવ જિસ પ્રકાર કે ઉચ્છ્વાસનિઃશ્વાસ આદિકોં સે એક મુદ્ધૂર્ત કા પ્રમાણ હોતા હૈ વહ પ્રકટ ક્રિયા જાતા હૈ—‘હેટ્વસ્સ અણવગલ્લસ્સ નિરુવકિટ્ઠસ્સ જંતુણો । એગે ઉસાસનીસાસે એસ પાણુત્તિ બુચ્ચઈ’ ॥૧॥ સત્ત પાણૂં સે થોવે સત્ત થોવાં સે લવે, લવાના સત્તહત્તરીપ એપ મુહુત્તેત્તિ આહિપ ॥૨॥ તિણિ સહસ્સા સત્ત ય સયાઈ તેવત્તરિં ચ કસાસા, એસ મુહુત્તો મણિમો સચ્ચેહિ અણંતનાણોહિ ॥૩॥—એસે પુરુષ કા કિ જો યુવા હોને સે સમર્થ હો, ગ્લાનિ વર્જિત હો, સર્વદા વ્યાધિ સે રહિત હો એસે ઉસ નીરોગ મનુષ્ય કા જો એક ઉચ્છ્વાસયુક્ત નિશ્વાસ હૈ ઉસકા નામ પ્રાણ કહા ગયા હૈ એસે સાત પ્રાણો કા એક સ્તોક હોતા હૈ સાત સ્તોકોં કા એક લવ હોતા હૈ ૭૭ લવોં કા એક મુદ્ધૂર્ત હોતા હૈ ૩૭૭૩ ઉચ્છ્વાસનિઃશ્વાસોં કા એક મુદ્ધૂર્ત હોતા હૈ । એસા અનન્ત જ્ઞાન સમ્પન્ન શ્રીજિનેન્દ્ર ભગવાનોં ને કહા હૈ “એપણ મુહુત્તપ્પમાણેણં તાસ મુહુત્તા અહોરત્તો, પણ્ણરસ અહોરત્તા પક્કલો, દો પક્કલા માસો, દો માસા ઉરુ, તિણિ ઉરુ અયણે, દો અયણા સવચ્છરે”

કંઈક વધારે ૧૭ છુલ્લકભવેનો એક ઉચ્છ્વાસ નિઃશ્વાસ ૩૫ કાળ હોય છે. હવે જેમ ઉચ્છ્વાસ નિશ્વાસ આદિકોંથી એક મુદ્ધૂર્ત નું પ્રમાણ હોય છે, તે પ્રકટ કરવામાં આવે છે. ‘હેટ્વસ્સ અણવગલ્લસ્સ નિરુવકિટ્ઠસ્સ જંતુણો ! એગે ઉસાસનીસાસે એસ પાણુત્તિ બુચ્ચઈ’ ॥૧॥ સત્ત પાણૂં સે થોવે’ સત્ત થોવાં સે લવે લવાના સત્તહત્તરીપ એપ મુહુત્તેત્તિ આહિપ ॥૨॥ તિણિ સહસ્સા સત્ત ય સયાઈ તેવત્તરિં ચ કસાસા એસ મુહુત્તો મણિમો સચ્ચેહિ અણંતનાણીહિ ॥૩॥ એવે પુરુષ હોય કે જેને યુવાવસ્થા પ્રાપ્ત હોય અને અમર્થ હોય ગ્લાનિ વર્જિત હોય, સર્વદા વ્યાધિ વિહીન હોય એવા તે નિરોગ મનુષ્યનો જે એક ઉચ્છ્વાસ યુક્ત નિશ્વાસ છે તેનું નામ પ્રાણ કહેવામાં આવેલ છે. એવા સાત પ્રાણોનો એક સ્તોક હોય છે સાત સ્તોકોનો એક લવ હોય છે ૭૭ લવોનું એક મુદ્ધૂર્ત હોય છે ૩૭૭૩ ઉચ્છ્વાસ-નિશ્વાસોનું એક મુદ્ધૂર્ત હોય છે એવું અનન્તજ્ઞાન સમ્પન્ન સર્વશ્રી જિનેન્દ્ર ભગવાનોએ કહ્યું છે ‘એપણ મુહુત્તપ્પમાણે નં તીસં મુહુત્તા અહોરત્તો પણ્ણરસ અહોરત્તા પક્કલો, દો પક્કલા માસો દો માસા ઉરુ, તિણિ ઉરુ, અયણે, દો અયણા સવચ્છરે, એવા મુદ્ધૂર્ત પ્રમાણથી ૩૦ મુદ્ધૂર્તનો એક અહોરત્ત

અથ કિયદ્ધિરુચ્છવાસનિશ્વાસૈરેકો મુહૂર્તો ભવતીત્યાહ 'તિણિ સહસ્સા' इत्यादि 'તિણિ સહસ્સા સત્ત ય સયાઈં તેવત્તરિં' ત્રીણિ સહસ્સાણિ સપ્ત શતાનિ ત્રિસપ્તતિઃ ત્રિ સપ્તત્યધિકસપ્તશત્યુત્તરસહસ્રત્રયસંખ્યકા 'ઉસાસા' ઉચ્છવાસા ઉપલૂશ્રણત્વાન્નિઃ શ્વાસાશ્ચ 'એસ મુહૂતો' એપ મુહૂર્તઃ મુહૂર્તાભિધાનઃ કાઠઃ 'સન્વેહિં અણતનાળીઠિં' સર્વે અનન્ત જ્ઞાનિભિઃ અનન્તજ્ઞાનસમ્પન્નૈર્જિનૈઃ 'મ્હણિઓ' મ્હણિતઃ-ઉક્ત ઇતિ । 'એણં એતેન-અનન્તરોક્ત સ્વરૂપેણ 'મુહુત્તપ્પમાણેણ તોસં' મુહૂર્તપ્રમાણેન ત્રિશત્-ત્રિશતસંખ્યકા 'મુહુત્તા' મુહૂર્તાઃ 'અહોરત્તો' અહોરાત્રઃ ભવતિ, 'પ્પણરસ' પચ્ચદશ-પચ્ચદશસંખ્યકાઃ 'અહોરત્તા' અહોરાત્રાઃ એકઃ 'પક્ખો' પક્ષઃ 'દો પક્ખા માસો' દ્વૌ પક્ષો એકો માસઃ, 'દો માસા ઉઠ્ઠ' દ્વૌ માસૌ એકઃ ઋતુઃ 'તિણિ' ત્રયઃ ત્રિસંખ્યકા 'ઉઠ્ઠ અયણે' ઋતવઃ એકમયનમ્, 'દો અયણા સંવચ્છરે' દ્વે અયણે એકઃ સંવત્સર, 'પંચ સંવચ્છરિણ' પચ્ચ સંવત્સરિકં-પચ્ચ વર્ષ પરિમિતમ્ એકં 'જુગે' યુગમ્ 'વીસં' વિંશતિ સંખ્યકાનિ 'જુગાઈ વાસસપ' યુગાનિ વર્ષ-શતમ્ 'દસ' દશ-દશસંખ્યાનિ 'વાસસયાઈં વાસસહસ્સે' વર્ષશતાનિ વર્ષસહસ્રમ્ 'સયં વાસ-સહસ્સાણં વાસસયસહસ્સે' વર્ષસહસ્રાણાં શત વર્ષશતસહસ્રમ્-વર્ષલક્ષમ્, 'ચરારાસીઈં-વાસસયસહસ્સાઈં' ચતુરશીતિ વર્ષશતસહસ્રાણિ-ચતુરશીતિવર્ષલક્ષાણિ 'સે એગે પુવ્વંગે' તદેકં પૂર્વાજ્ઞમ્, 'ચરારાસીઈં પુવ્વંગસયસહસ્સાઈં' ચતુરશીતિઃ પૂર્વાજ્ઞશતસહસ્રાણિ-ચતુર-શીતિલક્ષપૂર્વાજ્ઞાણિ 'સે એગે પુવ્વે' તદેકં પૂર્વમ્, પૂર્વવર્ષમાન ચૈવમભિહિતં, તથાહિ--"પુવ્વ-

એસે મુહૂર્ત પ્રમાણ સે ૩૦ મુહૂર્ત કા એક અહોરાત્ર હોતા હૈ પન્દ્રહ અહોરાત્ર કા એક પક્ષ હોતા હૈ દો પક્ષ કા એક માસ હોતા હૈ દો માસ કો એક ઋતુ હોતો હૈ તોન ઋતુઓં કા એક અયન હોતા હૈ, દો અયન કા એક સંવત્સર હોતા હૈ, "પંચ સવચ્છરિણ જુગે, વીસ જુગાઈં વાસસપ, દસવાસસયાઈં વાસસહસ્સે સયં વાસસહસ્સાણં વાસસયસહસ્સે, ચરારાસીઈં વાસસયસહસ્સાઈં સે એગે પુવ્વંગે" પાચ સવત્સરોં કા એક યુગ હોતા હૈ વીસ યુગોં કા એક સૌ વર્ષ હોતા હૈ, ૧૦૦૦ વર્ષોં કા એક હજાર વર્ષ હોતે હૈ, ૧૦૦૦૦ એક સો હજાર વર્ષોં કે એક લાખ વર્ષ હોતે હૈ ૮૪ લાખ વર્ષોં કા એક પૂર્વાજ્ઞ હોતા હૈ, "ચરારાસીઈં પુવ્વંગસયસહસ્સાઈં સે એગે પુવ્વે, એવ વિગુણ વિગુણં જેયવ્વ તુહિપર અઢઢે ૨ અવવેર હુહુપર ઉપ્પલેર પડમેર

ત્ર હોય છે ૫૬૨ અહોરાત્રનો એક પક્ષ હોય છે તે પક્ષનો એક માસ હોય છે તે માસની એક ઋતુ હોય છે. ત્રણ ઋતુઓનું એક અયન હોય છે તે અયનો નો એક સંવત્સર હોય છે 'પંચ સવચ્છરિણ જુગે, વીસ જુગાઈં વાસસપ દસવાસસયાઈં વાસસહસ્સે સયંવાસ સહસ્સાણ વાસસયસહસ્સે ચરારાસીઈં વાસસયસહસ્સાઈં સે એગે પુવ્વંગે" પાંચ સંવત્સર નો એક યુગ હોય છે વીસ યુગોના એક સો વર્ષ હોય છે ૧૦ સો વર્ષોના એક હજાર વર્ષ હોય છે. ૧૦૦ હજાર વર્ષોના એક લાખ વર્ષો હોય છે ૮૪ લાખ વર્ષોનું એક પૂર્વાજ્ઞ હોય છે, 'ચરારાસીઈં પુવ્વંગસયસહસ્સાઈં સે એગે પુવ્વે એવં વિગુણં વિગુણં જેયવ્વ તુહિપ ૨ અઢઢે ૨ અવવે ૨ હુહુપ ૨ ઉપ્પલે ૨ પડમે ૨ જલિણે અત્થણિડરે ૨ અહપ

“उ परिमाणं सपरिं खलु हुंति कोटिलक्खाओ । छप्पणं च सहस्सा वोद्ध्वा वास-
कोडीणं” छाया—पूर्वस्य तु परिमाणं सप्ततिः खलु भवन्ति कोटिलक्षाणि । पदपञ्चा-
शत् सहस्राणि बोद्धव्यानि वर्षकोटीनाम् इति । स्थापना च ७०५६००००००००००००
इति । ‘एव’ एवम्—अनेन प्रकारेण—पूर्वाङ्गपूर्वन्यानेन परं परं त्रुटिताङ्गं त्रुटितम्—
इत्यादि तदङ्गतल्लक्षणभेदाभ्यां ‘विगुणं विगुणं’ द्विगुणं द्विगुणं द्विसंख्यकं द्विसंख्यकं
‘णेषव्वं’ नेतव्वं—ज्ञातव्यम् । अयं भावः—‘त्रुटितम् अडडम्’ इत्यादीनि सूत्रे एक-
त्वेन निर्दिश्यमानानि त्रयोदशसंख्यास्थानानि सूत्रस्य लाघवप्रधानत्वं सूचकानि । द्विगुणं
द्विगुणमिति तु द्विसंख्यकं द्विसंख्यकमिति परं न तु द्विगुणकारपरम् । ततश्च पूर्वानन्तर
‘तुडिण २’ त्रुटिताङ्गं त्रुटितम्, ‘अडडे २’ अडडाङ्गम् अडडम्, ‘अववे २’ अववाङ्गम्
अववम् ‘हुहुण २’ हुहुकाङ्गं हुहुकम्, ‘उत्पले २’ उत्पलाङ्गम् उत्पलम्, ‘पडमे २’
पडमाङ्गं पडमम्, ‘णलिणे २’ नलिनाङ्गं नलिनम्, ‘अत्थनिउरे २’ अर्थनिपूराङ्गम् अर्थ-
निपूरम्, ‘अउए २’ अयुताङ्गम् अयुतम् ‘णउए २’ नयुताङ्गं नयुतं, ‘पउए’ २’ प्रयुताङ्गं

णलिणे २ अत्थणिउरे २ अउए २ नउए पउए २ चूलिया २ सीसपहेलियाए २ जाव चउरासीइ
सीसपहेलियगसयसहस्साइ सा एगा सीसपहेलिया” ८४ लाखपूर्वाङ्ग का एक पूर्व होता है.
पूर्ववर्ष का प्रमाण इस प्रकार से कहा गया है—“पुव्वस्स उ परिमाणं सपरिं खलु हुंति
कोटिलक्खाओ, छप्पणं च सहस्सा वोद्ध्वा वासकोडीणं” इनकी स्थापना इस प्रकार है—
७०५६०००००००००००० । ८४ लाख पूर्व का एक त्रुटिताङ्ग होता है, ८४ लाख त्रुटिताङ्ग का
एक त्रुटित होता है ८४ लाख त्रुटित का एक अडडाङ्ग होता है ८४ लाख अडडाङ्ग का एक अडड
होता है, ८४ लाख अडड का एक अववाङ्ग होता है, ८४ लाख अववाङ्ग का एक अवव होता है,
८४ लाख अवव का एक हुहुकाङ्ग होता है, ८४ लाख हुहुकाङ्ग का एक हुहुक होता है, ८४ लाख
हुहुक का एक उत्पलाङ्ग होता है, ८४ लाख उत्पलाङ्ग का एक उत्पल होता है, ८४ लाख उत्पल
का एक पडमाङ्ग होता है, ८४ लाख पडमाङ्ग का एक पड होता है, ८४ लाख पड का एक नलिनाङ्ग

२ नउए २ पउए २ चूलिया ५ सीसपहेलियाए २ जाव चउरासीइ सीसपहेलियंग सय
सहस्साइ सा एगा सीसपहेलिया” ८४ लाख पूर्वानेओ ओक पूर्व डोय छे, पूर्ववर्षनु
प्रमाण आ प्रमाणे डडेवाभा आवेव छे “पुव्वस्स उ परिमाणं सपरिं खलु हुंति कोटि
लक्खाओ छप्पणं च सहस्सा वोद्ध्वा वासकोडीणं” ओभनी स्थापना आ प्रमाणे छे—
७०५६०००००००००००० ८४ लाख पूर्वनु ओक त्रुटितांग डोय छे ८४ लाख त्रुटितांग
भराभर ओक ओडडांग डोय छे ८४ लाख ओडडांग भराभर ओक ओडड डोय छे ८४ लाख
ओडडनु ओक अववांग डोय छे ८४ लाख अववांग भराभर ओक अवव डोय छे. ८४ लाख
अववनु ओक हुहुकांग डोय छे ८४ हुहुकांग भराभर ओक हुहुक डोय छे, ८४ लाख हुहुक
भराभर ओक उत्प-लांग डोय छे ८४ लाख उत्पलांग भराभर ओक उत्पल डोय छे.
८४ लाख उत्पलनु ओक पडमांग डोय छे. ८४ लाख पडमांगनु ओक पड डोय छे. ८४
लाख पडनु ओक नलिनांग डोय छे. ८४ लाख नलिनांग भराभर ओक नलिन डोय छे.

પ્રયુતં 'ચૂલિયા ૨' ચૂલિકાઙ્ગં ચૂલિકા, 'સીસપહેલિયા ૨' શીર્ષપ્રહેલિકાઙ્ગં શીર્ષપ્રહેલિકા
 इति पर्यन्तं बोध्यम् । अत्र प्रथमं प्रथमापेक्षयाऽपरमपरं चतुरशीतिं लक्षगुणितं बोध्यमिति
 एतदेव सूचयितुमाह—'जाव चउरासीऽ सीसपहेलियगसयसहस्ताइं' यावच्चतुरशीतिः
 शीर्षप्रहेलिकाङ्गशतसहस्राणि—चतुरशीतिं लक्षशीर्षप्रहेलिकाङ्गानि 'सा एगा सीसपहे-
 लिया' सा एका शीर्षप्रहेलिकेति । अस्याः स्थापना चैवं विज्ञेया, तथाहि—७५८२६३
 २५३०, ७३०१०२४११५, ७९७३५६९९७५, ६९६८९६२१८९, ६६८४८०८०१८
 ३२९६ इति चतुष्पञ्चाशदङ्काः, एतदग्रे च चत्वारिंशदधिकं शून्यशतं प्रक्षेप्यम् । एवं
 स्यां शीर्षप्रहेलिकायां चतुर्नवत्याधिकशतसंख्यकानि अङ्कस्थानानि भवन्तीति ।

यद्वा—विगुणं વિગુણં” इत्यस्य—'विगुणं विगुणम्' इतिच्छाया । एतत्पक्षे तु यथो-
 चरं प्रधानं प्रधानं=प्रकर्षयुक्तं यथा स्यात्तथा ज्ञातव्यमिति । ततश्चायमत्र पर्यवसितोऽर्थः

होता है, ८४ लाख नलिनाङ्ग का एक नलिन होता है, ८४ लाख नलिन का एक अर्थ-
 निपूराङ्ग होता है, ८४ लाख अर्थनिपूराङ्ग का एक अर्थनिपूर होता है ८४ लाख अर्थ-
 निपूर का एक अयुताङ्ग होता है, ८४ लाख अयुताङ्ग का एक अयुत होता है, ८४ लाख
 अयुत का एक नयुताङ्ग होता है, ८४ लाख नयुताङ्ग का एक नयुत होता है, ८४ लाख नयुत
 का एक प्रयुताङ्ग होता है, ८४ लाख प्रयुताङ्ग का एक प्रयुत होता है, ८४ लाख प्रयुत का एक
 चूलिकाङ्ग होता है, ८४ लाख चूलिकाङ्ग को एक चूलिका होती है, ८४ लाख चूलिका का
 एक शीर्षप्रहेलिकाङ्ग होता है और ८४ लाख शीर्षप्रहेलिकाङ्ग को एक शीर्षप्रहेलिका होती है
 इस शीर्षप्रहेलिका की स्थापना इस प्रकार से है—७५८२६३२५३०७३०१०२४११५७९७३५
 ६९९७५६९६८९६२१८९६६८४८०८०१८३२९६ ये सब अंक ५४ हैं इनके आगे शून्यों
 की स्थापना और करनी चाहिये. इस तरह एक शीर्षप्रहेलिका में १९४-अङ्कस्थान होते हैं, यद्वा—
 “विगुणं विगुणं” की जब संस्कृत छाया “विगुणं विगुणं” ऐसी ही होती है तब इस पक्ष में आगे

૮૪ લાખ નલિન નુ એક અર્થનિપૂરાંગ હોય છે ૮૪ લાખ અર્થનિપૂરાંગ બરાબર એક અર્થ
 નિપૂર હોય છે ૮૪ લાખ અર્થ નિપૂર નુ એક અયુતાંગ હોય છે, ૮૪ લાખ અયુતાંગ
 બરાબર એક અયુત હોય છે, ૮૪ લાખ અયુતનુ એક નયુતાંગ હોય છે, ૮૪ લાખ નયુતાંગ
 બરાબર એક નયુત હોય છે ૮૪ લાખ નયુતનુ એક પ્રયુતાંગ હોય છે ૮૪ લાખ પ્રયુતાંગ
 બરાબર એક પ્રયુત હોય છે ૮૪ લાખ પ્રયુતનુ એક ચૂલિકાંગ હોય છે, ૮૪ લાખ ચૂલિ-
 કાંગની એક ચૂલિકા હોય છે, ૮૪ લાખ ચૂલિકાનુ એક શીર્ષ પ્રહેલિકાંગ હોય છે અને
 ૮૪ લાખ શીર્ષ પ્રહેલિકાંગની એક શીર્ષ પ્રહેલિકા હોય છે આ શીર્ષ પ્રહેલિકાની સ્થાપના
 આ પ્રમાણે છે—૭૫, ૮૨ ૬૩, ૨૫, ૩૦૭૩૦૧૦૨૪૧૧૫, ૭૬૭૩૫૬૬૮૭૫૬૬ ૬૮૬૬૨૧
 ૮૬૬૬૮૪૮૦૮૦૧૮૩૨૯૬ એ સર્વે અંક ૫૪ છે એમની આગળ ૧૪૦ શૂન્યોની સ્થાપના
 વધારાની કરવી જોઈએ આ પ્રમાણે એક શીર્ષ પ્રહેલિકામાં ૧૯૪ અંક સ્થાનો હોય છે
 યદ્વા—“વિગુણં વિગુણં” ની સંસ્કૃત છાયા વિગુણં વિગુણ બ થાય છે. એ પક્ષમાં આગળ

યથા પૂર્વાંગપેક્ષયા પૂર્વ પ્રધાનં તથા પૂર્વાપેક્ષયા ત્રુટિતાઙ્ગં પ્રધાનં તદપેક્ષયા ત્રુટિ-
મિત્યાદિ રીત્યા ઉત્તરમુત્તરં પ્રથમપ્રથમાપેક્ષયા પ્રધાનં ૨ વોધ્યમ્ । एवं च शीर्षप्रहेलिका
सर्वापेक्षया प्रधानं बहुउत्तरसंख्यास्थानविषयत्वादिति । अथवा-विगुणं गुणरहितमित्यर्थः ।

અયમત્રાશયઃ—પૂર્વાંગપૂર્વાદિકાનિ અનાદિસિદ્ધસંકેતમાત્રવશાદેવ વિવક્ષિત સંખ્યા-
મિધાયકાનિ, ન પુનઃ પઞ્ચાશ્ચત્તસહસ્રાદિવદ્ ગુણનિષ્પન્નાનિ । તથા ચ યથા પૂર્વાંગ
પૂર્વે ચ તથા ત્રુટિતાદિકપદસમૂહોઽપિ વિજ્ઞેયઃ । “વિગુણં વિગુણમ્” ઇતિ વોપ્સા તુ
ત્રુટિતાદિપદાનાં બહુત્વાત્ । નનુ ભવતા પૂર્વાંગ, પૂર્વાદિકાનિ અનાદિ સિદ્ધ સંકેતમાત્ર-
વશાદેવ વિવક્ષિતસંખ્યામિધાયકાનિ હત્યુક્તં, તત્ત્વૈષામન્વર્થત્વાભાવ ઇતિ પર્યવસ્યતિ,
પરંતુ અન્વર્થત્વમેષાં સુવ્યક્તમેવ, તથાહિ-અજ્ઞં તાવત્કારણં, કારણં ચ કાર્યસાપેક્ષમ્,

૨ કા પ્રધાન હોતા હૈ એસા ભાવ નિકલતા હૈ. તથા ચ પૂર્વાંગ કો અપેક્ષા પૂર્વ મેં પ્રધાનતા-પ્રકર્ષ
યુક્તતા હૈ, પૂર્વ કો અપેક્ષા ત્રુટિગ્રાજ્ઞ મેં પ્રધાનતા હૈ, ત્રુટિગ્રાજ્ઞ કો અપેક્ષા ત્રુટિત મેં પ્રધાનતા હૈ
ઇત્યાદિ રીતિ સે ઉત્તર ઉત્તર મેં પ્રથમ પ્રથમ કો અપેક્ષા સે પ્રધાનતા જાનનો ચાહિયે । હસ તરહ
શીર્ષ પ્રહેલિકા મેં સબ કો અપેક્ષા પ્રધાનતા હૈ ક્યોકિ વહ બહુતર સંખ્યાકે સ્થાન કા વિષય હૈ
અથવા-“વિગુણમ્”, હસકા અર્થ ગુણ રહિત એસા મી હોતા હૈ હસ પક્ષ મેં એસા ભાવ નિકલતા
હૈ કિ જિસ પ્રકાર પચ્ચાશત્ શતસહસ્ર ઇત્યાદિ ગુણ નિષ્પન્ન હૈં ઉસ તરહ સે યે પૂર્વાંગ પૂર્વ આદિ
ગુણનિષ્પન્ન નહીં હૈં યે તો કેવલ અનાદિસિદ્ધ સંકેત કે વશ સે હી વિવક્ષિત સંખ્યા કે અમિધા-
યક હૈં “વિગુણમ્”, એસા જો દો બાર કહા ગયા હૈ વહ ત્રુટિત આદિ પદો કો બહુતા કો ઠેકર
કહાગયા હૈ ।

શંકા—આપને અમી પૂર્વાંગ પૂર્વ આદિકોં કો અનાદિ સિદ્ધ સંકેત કે વશ સે હી વિવક્ષિત સંખ્યા
કે અમિધાયક કહા હૈ તો હસકા તાત્પર્ય-ભાવ યહી હુઆ કિ હનમેં અન્વર્થતા નહીં હૈ પરંતુ
એસી વાત તો હૈ નહીં કિ ક્યોં હનમેં અન્વર્થતા હૈ ઓર વહ હસ પ્રકાર સે હૈ-અજ્ઞ કારણ હોતા

આગળ તું પ્રધાન થાય છે એવો ભાવ સ્પષ્ટ થાય છે. તથા અ-પૂર્વાંગની અપેક્ષા પૂર્વમાં
પ્રધાનતા પ્રકર્ષ યુક્તતા-છે પૂર્વની અપેક્ષા ત્રુટિંગ મા પ્રધાનતા છે. ત્રુટિંગની અપેક્ષા
ત્રુટિત માં પ્રધાનતા છે ઇત્યાદિરૂપમાં ઉત્તર ઉત્તરમાં પ્રથમની અપેક્ષાએ પ્રધાનતા બાજુવી
જેઈએ. આ રીતે શીર્ષપ્રહેલિકામાં સર્વની પ્રધાનતા છે કેમકે તે બહુતર સંખ્યાત સ્થા
નો વિષય છે. અથવા વિગુણમ્ આનો અર્થ શુણ્ણ રહિત પણ થાય છે. આ પક્ષમાં
એવો ભાવ પણ નીકળે છે કે જે પ્રમાણે પચ્ચાશત શતસહસ્ર ઇત્યાદિ શુણ્ણ નિષ્પન્ન છે.
તેમ એ પૂર્વાંગ પૂર્વ આદિ શુણ્ણ નિષ્પન્ન નથી. એ તો ફક્ત અનાદિ સિદ્ધ સંકેત વશથી
જ વિવક્ષિત સંખ્યાના અમિધાયક છે વિગુણમ્, જે બે વાર કહેવામાં આવ્યું છે તે
ત્રુટિત આદિ પદોની બહુતત ને લીધે કહેવામાં આવેલ છે, શંકા—તમે હમણાં પૂર્વાંગ
પૂર્વ આદિકોને અનાદિસિદ્ધ સંકેતના વશથી જ વિવક્ષિત સંખ્યાના અમિધાયક કહેલ
છે તો આનો અર્થ આ થયો કે આમાં અન્વર્થતા નથી પરંતુ અરેખર એવું નથી
કેમકે આમાં અન્વર્થતા છે અને તે આ પ્રમાણે છે અગ કારણ હોય છે અને તે કાર્ય સાપેક્ષ
હોય છે અહીં પૂર્વાંગરૂપ કારણ તું કાર્ય પૂર્વ છે તેથી જ તો પૂર્વાંગમાં ‘પૂર્વસ્ય અજ્ઞ’

કાર્ય ચ પૂર્વમ્, અતएव पूर्वस्याङ्ग पूर्वङ्गमिति विग्रहः, पूर्वाङ्गं चतुरशीतिलक्षगुणितं सत्
 पूर्वं जायते, एवं चात्रान्वर्थत्वं सुव्यक्तमेवेति चेत्, आह—पूर्वशब्दस्यैव तावन्नास्त्यन्वर्थत्वं
 ततश्च तत्कारणस्यापि तदभावः सुस्पष्ट एवेति न कश्चिदोपः । यद्वा-द्विगुणं द्विगुण-
 मित्येवञ्छाया, अर्थस्तु ‘द्विभेद द्विभेदं’ इति बोध्यः । ततश्चायमत्राशयः—यथा “पूर्वाङ्गं
 पूर्वम्” इति द्विभेदम् अनेन क्रमेणैव त्रुटिताङ्गं त्रुटितमित्यारभ्य शीर्षप्रहेलिकादङ्गं शीर्ष-
 प्रहेलिका इति पर्यन्तं भेदद्वयं वो रमिति । सम्प्रति प्रक्रान्तविषयम् उपसंहरन्नाह—
 “एतावदिति” ‘एताव’ एतावत्—समयादि शीर्षप्रहेलिका पर्यन्तं ‘ताव’ तावद् ‘गणिए’
 गणितं—कालगणितं संख्यास्थानमिति यावत् । ‘एताव ताव गणियस्स विसए’ एतावानेव
 ताव र गणितस्य विषयः=आयुःस्थित्यादिकालः । एतावानायु कालस्तु केषांचिद् रत्न-
 प्रभानारकाणां भवनपतिव्यन्तराणां सुपम दुष्पमारकं सभविनां नरतिरश्चां च बोध्यः ।
 एतस्मात्परतोऽपि सर्पपचतुष्पल्यप्ररूपणा गम्यः संख्येयः कालोऽस्ति, परन्तु सोऽन-

હૈ और वह कार्य सापेक्ष होता है, यहा पूर्वाङ्ग रूप कारण का कार्य पूर्व है तभी तो जाकर पूर्वाङ्ग
 में—“पूर्वस्य अङ्गं” इस व्युत्पत्ति के अनुमार ऐसा विग्रह हुआ है पूर्वङ्ग को ८४ लाख से गुणा
 करने पर उससे पूर्व बनता है इस तरह से यहां अन्वर्थता स्पष्ट ही है फिर आपने इनमें अन्वर्थता
 का अभाव कैसे प्रतिपादित किया है ? तो इस शंका का उत्तर ऐसा है कि जब पूर्व शब्द में ही
 अन्वर्थता नहीं है तो फिर इनका जो कारण है उसमें अन्वर्थता का अभाव तो स्पष्ट ही है इस
 तरह से यहां कोई दोष नहीं है । यद्वा—“विगुण २” की संस्कृत छाया द्विगुण द्विगुण ऐसी ही है
 इसका अर्थ दो दो भेद होता है तथा च पूर्वाङ्ग पूर्व त्रुटिताङ्ग त्रुटित इस रूपसे शीर्षप्रहेलिकाङ्ग
 शीर्षप्रहेलिका तक दो दो भेद होते गये हैं—जो ऊपर में स्पष्ट किये जा चुके हैं । “एताव
 ताव गणिए, एतावताव, गणियस्स विसए तेण परं ओवमिए” इस प्रकार समय से लेकर शीर्ष-
 प्रहेलिका तक कालगणित है—संख्या का स्थान है और इतना ही गणित का विषय है— आयुस्थिति
 आदि रूप काल है इतना आयु काल कितनेक रत्नप्रमा के नारकोंका, भवनपति देवों का, व्य-

આ વ્યુત્પત્તિ સુબળ આ બાતનો વિગ્રહ થયો છે પૂર્વાંગને ૮૪ લાખથી ગુણિત કરવામાં
 આવે તો તેનાથી પૂર્વ બને છે આ પ્રમાણે અહીં અન્વર્થતા સ્પષ્ટ જ છે તો પછી તમે
 આમાં અન્વર્થતાનો અભાવ છે એવું પ્રતિપાદન કર્યું છે તે યોગ્ય છે ? આ શકનો
 જવાબ આ પ્રમાણે છે કે જ્યારે પૂર્વ શબ્દમાં જ અન્વર્થતા નથી તો પછી એવું જે
 કારણ છે તેમાં અન્વર્થતાનો અભાવ તો સ્પષ્ટ છે આ પ્રમાણે અહીં કોઈ દોષ જ નથી
 યદ્વા—“વિગુણ ૨” ની સંસ્કૃત છાયા દ્વિગુણ દ્વિગુણ એવી જ છે, આનો અર્થ
 બખ્તે એક હોય છે તથા ચ—પૂર્વાંગ પૂર્વ, ત્રુટિતાંગ ત્રુટિત આ રૂપથી શીર્ષ પ્રહેલિકાંગ,
 શીર્ષ પ્રહેલિકા સુધી બખ્તે એકો થયા છે તે વિષે ઉપર સ્પષ્ટતા કરવામાં આવી છે ‘પતા
 વતાવગણિય, પતાવતાવગણિયસ્સ વિસપ તેણ પરં ઓવમિય’ આ પ્રમાણે સમયથી
 માંડી ને શીર્ષ પ્રહેલિકા સુધી કાળ ગણિત છે, સંખ્યાનું સ્થાન છે, અને એજ ગણિતનો
 વિષય છે આયુસ્થિતિ આદિરૂપ કાળ છે. આટલો આયુ કાળ કેટલાક રત્નપ્રમાના નારકોના

તિજ્ઞાનિનોમસંવ્યવહાર્યઃ, અત એવાત્ર સ ન નિર્દિષ્ટ ઇતિ । શીર્ષપ્રહેલિકાતઃ પરંતુ
અનતિશયજ્ઞાનિમિર્ગ્રહીતુમશ્ક્યમ્' અતસ્તદૌપમિકમ્-ઉપમયા સાદૃશ્યેન નિર્વૃત્ત બોધ્ય-
મિતિ । એતદેવ સૂચયિતુમાહ-તેણ પરં ઓવમિ' ઇતિ । 'તેણ' ઇતિ પઠ્ઠમ્યર્થે-તૃતીયા
બોધ્યેતિ ॥૨૦॥

પૂર્વભૌપમિકમ્બુક્તં તદેવ પ્રશ્નોત્તરાભ્યાં નિરૂપયિતુમાહ-

મૂલમ્- સે કિં તં ઉવમિ' , ઉવિમિ' દુવિહે પળ્લણ્ણત્તે, તં જહા-પલ્લિ
ઓમે ય સાગરોવમે ય । સે કિં તં પલ્લિઓવમે ? પલ્લિઓવમસ્સ પરૂવળ્ણ
કરિસ્સામિ' પરમા દુવિહે પળ્લણ્ણત્તે, તં જહા-સુહુમે ય વાવહારિ' ય,
તત્થ ણં જે સે હુમે સે ઠપ્પે, તત્થ ણં જે સે વાવહારિ' સે ણં અણં-
તાણં સુહુમપરમા પુગ્ગલાણં સમુદય સમિદ્ધ સમાગમેણં વાવહારિ' પર-
મા નિપ્પજ્જઈ, તત્થ ણો સત્થં કમદ્ધ-

સત્થેણ સુતિક્કલ્લેણ વિ છેત્તું મેત્તું ચ જં કિર ણ સક્કા ।

તં પરમા સિદ્ધા વયંતિ આદ્ધં પમાણાણં ॥૧॥

વાવહારિય પરમાણૂં સમુદયસમિદ્ધસમાગમેણં સા એગા ઉસ્સણ્ણ-

ન્તર દેવોં કા એવ સુષમદુષ્પમારક મેં ઉત્પન્ન હુએ નર ઓર તિર્યંચોં કા, જાનના ચાહિયે
હસ કાલ સે મી આગે જો સર્ષપચતુષ્પલ્લય પ્રરૂપણાગમ્ય કાલ હૈ વહ મી સદ્ધ્યાત કાલ હી હૈ
પરંતુ વહ અનતિશયજ્ઞાનિયોં કે જ્ઞાન કા વિષય નહીં હોને સે અસંવ્યવહાર્ય હૈ હસીલિયે ઉસે
યહાં નિર્દિષ્ટ નહીં કિયા ગયા હૈ શીર્ષપ્રહેલિકા સે આગે કા જો કાલ હૈ વહ અનતિશય જ્ઞાનિયોં
દ્વારા ગમ્ય નહીં હોં સકતા હૈ હસીલિયે ઉસે ઔપમિક કહા ગયા હૈ અર્થાત્ ઉસકા જ્ઞાન ઉપમા
દેકર હી કરાયા જાતા હૈ અર્થાત્ વહ સાદૃશ્ય સે બોધ્ય હૈ- હસીલિયે 'તેણ પરં ઓવમિ' એસા
સૂત્રકાર ને કહા હૈ । 'તેણ' યહ તૃતીયા વિમક્તિ પંચમી વિમક્તિ કે અર્થ મેં હુઈ હૈ ॥૨૦॥

ભવનપતિ દેવોના તેમજ સુષમ દુષ્પમારકમાં ઉત્પન્ન થયેલા નર અને તિર્યંચોના બધાવે
એથીએ આ કાળ કરતાં પણ આગળ એ સર્ષપચતુષ્પલ્લય પ્રરૂપણા ગમ્ય કાળ છે તે પણ
સંખ્યાત કાળ જ છે પરંતુ તે અનતિશય જ્ઞાનીઓના જ્ઞાનને વિષય નથી તેથી તે અસં-
વ્યવહાર્ય છે. એથી જ તેને અકી નિર્દિષ્ટ કરવામા આવેલ નથી શીર્ષપ્રહેલિકા પછી એ
જે કાળ છે તે અનતિશય જ્ઞાનીઓ વડે ગમ્ય થાય તેવો નથી એથી તેને ઔપમિક કહેવા
મા આવેલ છે એટલે કે તેણ જ્ઞાન ઉપમા વડે જ સમવી શકે તેમ છે એટલે કે તે સાદૃ-
શ્યથી બોધ્ય છે એથી જ 'તેણ પરં ઓવમિ' એવું સૂત્રકારે કહ્યું છે 'તેણ' આતૃતીયા
વિમક્તિ પંચમીના અર્થ મા, થઈ છે. ॥૨૦॥

सण्हिआइवा सण्हिसण्हिआइ वा उद्धरेणूइ वा तसरेणूइ वा रहरेणूइ
 वा वालगगेइ वो लिक्खाइ वा जूआइ वा जवमज्झेइ वा उस्सेहंगुलेइ वा
 अट्ठ उस्सण्हसण्हियाओ सा एगा सण्ह सण्हिया, अट्ठ सण्हसण्हियाओ
 सा एगा उद्धरेणू, अट्ठ उद्धरेणूओ सा एगा तसरेणू, अट्ठ तासरेणूओ
 सा एगा रहरेणू अट्ठ रहरेणूओ से एगे देवकुरुत्तरकुराण मणुस्साणं
 वालगगे अट्ठ देवकुरुत्तरकुराण मणुस्साण वालगगा से एगे हरिवासम्म-
 यवासाण मणुस्साणं वालगगे, एवं हेमवयहेरण्वयाण मणुस्साणं पुव्वविदेह
 अवरविदेहोणं मणुस्साणं वालगगा सा एगा लिक्खा अट्ठ लिक्खाओ सा
 एगा जूआ अट्ठ जूआओ से एगे जवमज्झे अट्ठ जवमज्झा से एगे अंगुले.
 एएणं अंगुलप्पमाणेणं छ अंगुलाइं पाओ, बारस अंगुलाइं विहत्थी,
 चउवीसं अंगुलाइं रयणी, अडयालीसं अंगुलाइं कुच्छी, छण्णउइ अंगुलाइं
 से एगे अक्खेइ वा, दंडेइ वा, धणूइ वा, जुगेइ वा, मुसलेइ वा, णालिआइ
 वा, एएणं धणुप्पमाणेणं दो धणुसहस्साइं गाउयं, चत्तारि गाउयाइं
 जोयणं, एएण जोयणप्पमाणेणं जे पल्ले जोयणं आयामविकखंमेणं
 जोयणं उट्ठं उच्चत्तेणं, तं तिगुणं सविसेसं परिकखेवेणं । से णं पल्ले
 एगाहिय बेहिय तेहिय उक्कोसेणं सत्तरत्तपट्ठाणं संमट्ठे सण्णिचिए
 भरिए वालगगकोडीणं । तेणं वालगगा णो कुत्थेज्जा, णो परिविडंसेज्जा
 णो अग्गी डहेज्जा णो वाए हरेज्जा, णो पूइत्ताए हव्वमागच्छेज्जा,
 तओणं वाससए २ एगमेगं वालगगं अवहाय जावइएणं कालेणं से पल्ले-
 णीणे णीरए णिल्लेवे णिट्ठिए भवइ से तं पलिओवमे ।

एएसि पल्लाणं कोडाकोडी हवेज्ज दस गुणिआ ।

तं सागरोवमस्स उ एगस्स भवे परिमाणं ॥१॥

एएणं सागरोवमप्पमाणेणं चत्तारि सोगरोवमकोडाकोडीओ
 कालो सुसमसुसमा १ तिण्णि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो समा २
 दो सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमदुस्समा ३ एगा सागरोवमको-

डाकोडो बायालीसाए वाससहस्सेहि ऊणिओ कालो दुस्समसुसमा ४
 ए वीसं वाससहस्साइं कालो दुस्समा ५ एकवीसं वाससहस्साइं
 कालो दुस्समदुस्समा ६ पुणेरवि उस्सप्पिणीए एकवीसं वाससहस्साइं
 कालो दुस्समदुस्समा १ एवं पडिलोमं णेयवं जाव चत्तोरि सागरोवम
 कोडाकोडीओ कालो सुसमसुसमा ६ दस सागरोवमकोडा कोडीओ
 कालो ओसप्पिणि दम सागरोपवमकोडाकोडोओ कालो उस्सप्पिणी ।
 वीसं सागरोवनकोडाकोडीओ कालो ओसप्पिणी उस्सप्पिणी ॥सूत्र २१॥

छाया—अथ किं तदौपमिकम् ? औपमिकं, उपमितं द्विविधं प्रज्ञप्तम् तद्यथा-पल्यो-
 पमं च सागरोपमं च, अथ किं तत् पल्योपम १, पल्योपमस्य प्ररूपणां करिष्यामि, परमाणु
 द्विविधः प्रज्ञप्तः तद्यथा सूक्ष्मश्च व्यावहारिकश्च, तत्र खलु यः सः सूक्ष्मः, स स्थाप्यः, तत्र
 खलु यः स व्यावहारिकः स खलु अनन्तानां सूक्ष्मपरमाणुपुद्गलानां समुदयसमितिसमागमेन
 व्यावहारिकः परमाणु निष्पद्यते, तत्र नो शस्त्रं कामति—

शस्त्रेण सुतीक्ष्णेनापि छेत्तुं मेत्तुं च यं किल न शक्ताः ।

तं परमाणुं सिद्धा वदन्ति आदिं प्रमाणानाम् ॥ १ ॥

व्यावहारिक परमाणूनां समुदयसमितिसमागमेन सा एका उच्छूलक्ष्णश्लक्ष्णिका इति वा
 श्लक्ष्णश्लक्ष्णिका इति वा ऊर्ध्वरेणुरिति वा त्रसरेणुरिति वा रथरेणुरिति वा बालाग्रमिति
 वा लिङ्गा इति वा यूका इति वा यवमध्यमिति वा उत्सेधाङ्गुलमिति वा अष्ट उच्छूलक्ष्ण
 श्लक्ष्णिकाः सा एका श्लक्ष्णश्लक्ष्णिका, अष्टश्लक्ष्णश्लक्ष्णिका सा एका ऊर्ध्वरेणुः अष्ट
 ऊर्ध्वरेणवः सा एका त्रसरेणुः, अष्ट त्रसरेणवः सा एका रथरेणुः, अष्ट रथरेणवः तदेकं
 देवकुरुत्तरकुरुणा मनुष्याणां बालाग्रम्, अष्ट देव कुरुत्तरकुरुणा मनुष्याणां बालाग्राणि तदेकं
 हरिवर्षरम्यकवर्षाणां मनुष्याणां बालाग्रम्, एवं दैमवत हैरण्यवतानां मनुष्याणां पूर्वविदेहाप-
 रविदेहाणां मनुष्याणां बालाग्राणि सा एका लिङ्गा, अष्ट लिङ्गाः सा एका यूका, अष्ट यूकाः
 तदेकं यवमध्यम्, अष्ट यवमध्यानि तदेकमङ्गुलम्, पतेनाङ्गुलप्रमाणेन षडङ्गुलानि पादः,
 द्वादशाङ्गुलानि वितस्ति, चतुर्विंशतिरङ्गुलानि रत्नि, अष्ट चत्वारिंशदङ्गुलानि कुक्षिः,
 षण्णवतिरङ्गुलानि स एकोऽक्ष इति वा दण्ड इति वा घनुरिति वा युगमिति वा मुशलमिति
 वा नालिका इति वा । पतेन घनुप्रमाणेन द्वे घतुः सङ्घे गन्धूतं, चत्वारि गन्धूतानि
 योजनम् । पतेन योजनप्रमाणेन यः पल्यः योजनमायामविष्कम्भेण योजनमूर्ध्वमुच्चत्वेन तत्
 त्रिगुणं सविशेषं परिक्षेपेण, स खलु पल्यः ऐकादिक द्वैयद्विक त्रैयद्विकोणाम् उत्कर्षेण सप्त-
 रात्रप्ररूढानां समष्टः सन्निवित भूतः बालाग्रकोटीनाम् । तानि खलु बालाग्राणि नो कुथ्येयुः
 नो परिविध्वंसेरन्, नो अग्निर्दहेत् नो वातो हरेत्, नो पूतितया शीघ्रमागच्छेयुः, ततः

ચલુ વર્ષશતે ૨ એકમેક વાલાગ્રમપહાય થાવતા કાલેન સ પલ્ય ક્ષીણ નીરજા નિર્લેપઃ નિષ્ઠિનો ભવતિ । તત્ પલ્યોપમમ્ ।

પતેષા પલ્યાના, કોટાકોટી ભવેદ્ દશગુણિતા ।

સા સાગરોપમસ્ય તુ એકસ્ય ભવેત્ પરિમાણમ્ ॥ ૧ ॥

પતેન સાગરોપમપ્રમાણેન ચતસ્ર સાગરોપમકોટાકોટ્યઃ કાલ સુપમસુપમા ૧, તિસ્રઃ સાગરોપમકોટાકોટ્ય કાલઃ સુપમા ૨, દ્વે સાગરોપમકોટાકોટ્યૌ કાલઃ સુપમ દુષ્પમા ૩ એકા સાગરોપમ કોટાકોટી દ્વિચત્વારિંશતા વર્ષસહસ્રૈઃ ડનિકા કાલઃ દુષ્પમસુપમા ૪, એકવિંશતિ વર્ષસહસ્રાણિ કાલો દુષ્પમા ૫ એકવિંશતિવર્ષ સહસ્રાણિ કાલો દુષ્પમ દુષ્પમા ૬ —પુનરપિ ઉત્સર્પિણ્યા એકવિંશતિ વર્ષસહસ્રાણિ કાલો દુષ્પમદુષ્પમા ૧, એવ પ્રતિલોમે નેતવ્યમ્ થાવત્ ચતસ્રઃ સાગરોપમકોટાકોટયઃ કાલઃ સુપમસુપમા ૬, દશસાગરોપમકોટાકોટયઃ કાલઃ અવસર્પિણો દશસાગરોપમકોટાકોટયઃ કાલ ઉત્સર્પિણો, વિશતિઃ સાગરોપમ કોટા કોટયઃ કાલઃ અવસર્પિણ્યુત્સર્પિણો ॥ સૂ. ૨૧ ।

ટીકા—‘સે કિં તં ઉવમિષ્’ इत्यादि ।

‘સે કિં તં ઉવમિષ્’ અથ કિં તત્ ઔપમિકમ્ ’ इति प्रश्न उत्तरमाह—‘उवमिष दुविहे’ ઔપમિકં નામ કાલવિશેષં દ્વિવિધ -દ્વિપ્રકારક ‘પણ્ણત્તે’ પ્રજ્ઞસમ્, ‘તં જહા પલ્લિઓવમે ય સાગરોવમે ય’ તથથા પલ્યોપમં ચ સાગરોપમંચ । તત્ર ધાન્યપલ્યવત્ પલ્યં વક્ષ્યમાણ-સ્વરૂપં તેન ઉપમા યસ્મિન્સ્તત્ પલ્યોપમમ્ ૧, સાગરેણ-સમુદ્રેણ ઉપમા-દુર્લભપારત્ત્વેન સાદૃશ્ય યસ્મિન્સ્તત્ સાગરોપમમ્ । इह चकारौ समकक्षत्वद्योतनार्थौ, समकक्षता-समान

औपमिक कालका निरूपण —

“સે કિં તં ઉવમિષ્” इत्यादि—

इस सूत्र द्वारा गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है-हे भदन्त ! औपमिक काल का क्या स्वरूप है ? इसके उत्तर में प्रभु ने कहा है “उवमिष दुविहे पण्णत्ते” हे गौतम औपमिक दो प्रकार का कहा गया है ‘तं जहा’ जैसे ‘पल्लिओवमे य, सागरोवमे य” पल्योपम और सागरोपम, जिस काल में धान्य के पल्य की तरह पल्य की उपमा दी जाय वह पल्योपम है और जिस में समुद्र की उपमा दी जाय वह सागरोपम है यहां जो दो चकार आये हैं वे इन कालों में

औपमिक કાળનું નિરૂપણ --

‘સે કિં તં ઉવમિષ્’ इत्यादि सूत्र-२१ ॥

ટીકાર્થ—આ સૂત્ર વડે ગૌતમે પ્રભુને પ્રશ્ન કર્યો છે કે હે ભદ્રત ! ઔપમિકકાળનું સ્વરૂપ કેવું છે ? આના જવાબમાં પ્રભુએ કહ્યું છે “ઉવમિષ્ દુવિહે પણ્ણત્તે ” હે ગૌતમ ! ઔપ-મિકના બે પ્રકારે કહેવામાં આવેલ છે. “તં જહા” જેમ કે “પલ્લિઓવમેય સાગરોવમેય” પલ્યોપમ અને સાગરોપમ બે કાળમાં ધાન્યના પલ્યની જેમ પલ્યની ઉપમા આપવામાં આવે તે પાલ્યોપમ છે અને જેમાં સમુદ્રથી ઉપમા આપવામાં આવે તે સાગરોપમ છે અહીં

શ્રેણિતા સા ચ દ્વયોરસંખ્યેયકાલત્વરૂપા । एवं चासख्येयकालविशेषस्वरूपं पल्योपमसा-
गरोपमद्वयं सिद्धम् । सम्प्रति पल्योपमस्वरूपं जिज्ञासमानः शिष्यः पृच्छति—हे भदन्त !
'से किं तं पलिओवमे' अथ किं तत्पल्योपमम् ? इति । आचार्य आह—'पलिओवमस्स'
इत्यादि । 'पलिओवमस्स परूवणं' पल्योपमस्य प्ररूपणां—स्वरूप निरूपणां 'करिस्सामि'
करिष्यामि—अस्मिन्नेव सूत्रेऽग्रे विधास्यामि इति । अनेनाग्रे पल्योपमप्ररूपणाकरणक्रिया-
सूचकवाक्येन शिष्यमनः प्रसादितं भवति, अन्यथा "परमाणु द्विविधः" इत्यादिप्रक्रि-
यारीत्या दूरसाध्यां पल्योपमप्ररूपणां मन्यमानः शिष्यः खिन्नः स्यादिति । वाचना-
दानकाले आचार्यस्य शिष्यं प्रत्यायमेव हि क्रम इति पल्योपममेव प्ररूपयन्नाह—“पर
माणु” इत्यादि । 'परमाणु दुविहे पणत्ते' परमाणुद्विविधः प्रज्ञप्तः, त जहा—सुहुमे
य वावहारिण य' तद्यथा—सूक्ष्मश्च व्यावहारिकश्च । इह चकार द्वयं समकक्षत्व द्योतनार्थम् ।

समकक्षता के द्योतक हैं समकक्षता का तात्पर्य समान श्रेणितता से है यह समान श्रेणितता
दोनों में असख्येय कालत्वरूप है इस तरह ये दोनों काल असख्यात काल विशेष स्वरूप
वाले सिद्ध होते हैं । “से किं तं पलिओवमे” हे भदन्त पल्योपम का स्वरूप कैसा है ? इसके
उत्तर में प्रभु कहते हैं “पलिओवमस्स परूवण करिस्सामि -परमाणु दुविहे पणत्ते तं जहा
सुहुमे य वावहारिण य” हे गौतम । मैं आगे पल्योपम की प्ररूपणा करने वाला हूँ सो उससे
तुम्हें पल्योपम का स्वरूप ज्ञात हो जायगा, इस प्रकार के कथन से सूत्रकार ने शिष्य के
मन को प्रसन्न किया है जो वे ऐसा न कहते तो परमाणु दो प्रकार को है इत्यादि कथन रूप
प्रक्रिया की रीति से दूरसाध्य पल्योपम की प्ररूपणा मान कर शिष्य का मन खेदखिन्न हो
जाता, वाचनादान काल में आचार्य का शिष्य के प्रति यह क्रम है । पल्योपम की प्ररूपणा
करने के निमित्त सूत्रकार ने सब से पहिले परमाणु सूक्ष्म एवं व्यावहारिक के भेद से दो प्रकार
का है ऐसा कहा है यहाँ दो चकार इनमें समकक्षता के द्योतन के निमित्त प्रयुक्त हुए हैं ।

જે જે થ આવેલા છે તે એ કાલોમાં સમકક્ષતા બતાવવા માટે છે. સમકક્ષતાનો અર્થ
સમાન શ્રેણીઓ થાય છે. એ સમાન શ્રેણિતા બંનેમાં અસંખ્ય કાલ ત્વ રૂપ છે આ
પ્રમાણે એ બંને કાળો અસંખ્યાત કાળ વિશેષ સ્વરૂપવાળા સિદ્ધ થાય છે ‘સે કિં તં
પલિઓવમે’ હે ભદંત ! પલ્યોપમનું સ્વરૂપ કેવું છે ? આના જવાબમાં પ્રભુ કહે છે
“પલિઓવમસ્સ પરૂવણ કરિસ્સામિ પરમાણુ દુવિહે પણત્તે ત જહા—સુહુમેય વાવહારિણય
“હે ગોતમ” હું આગળ પલ્યોપમની પ્રરૂપણા કરવાનો છું જેથી તમને પલ્યોપમના
સ્વરૂપનું જ્ઞાન થઈ જશે આ બતાવના કથનથી સૂત્રકારે શિષ્યના મનને પ્રસન્ન કર્યું છે એ
તેઓ આમ કરતા નહીં તો પરમાણુ બે પ્રકારનો હોય છે. છતાંહિ કથનરૂપ પ્રક્રિયાની
રીતિથી દૂરસાધ્ય પલ્યોપમની પ્રરૂપણા માનીને શિષ્યનું મન ખેદ ખિન્ન થઈ જતું વાચના
દાનકાળમાં આચાર્યનો શિષ્ય પ્રતિ એજ ક્રમ હોય છે પલ્યોપમની પ્રરૂપણ કરવા માટે
સૂત્રકારે સર્વપ્રથમ પરમાણુ સૂક્ષ્મ અને વ્યાવહારિકના ભેદથી બે પ્રકારનો છે એમ કહ્યું છે.
અહીં બે ‘ચ’ ની પ્રરૂપણા એમાં સમકક્ષતાના દ્યોતન માટે કરવામાં આવી છે. એમાં બે

‘તત્થળં’ તત્ર-તયોર્મધ્યે खलु ‘जे से सहुमे से ठप्पे’ यः सः सूक्ष्मः परमाणुः सः स्थाप्यः अनिरूपणीयः एतत्प्रसङ्गानुपयोगित्वात्, तस्य स्वरूपं चान्यत्रोक्तमेवम्—

“कारणमेव तदन्त्यं सूक्ष्मो नित्यश्च भवति परमाणुः ।

एकरसवर्णगन्धो द्विस्पर्शः कार्यलिङ्गश्च ॥१॥”

इत्यादि लक्षणेनात्यन्त परम निकृष्टत्वमस्य स्वरूपं प्रतिपादितम्, तदतिरिक्तं वैशेषिकं रूपं चात्र न प्रतिपाद्यमस्ति तस्मात्तं सूक्ष्म परमाणुं स्थापयित्वा व्यावहारिकं परमाणुं प्रक्रान्ततया निरूप्यस्वरूपत्वेन निरूपयति ‘तत्थ णं जे से वावहारिए’ तत्र तयोर्मध्ये यः सः-बुर्वोक्तो द्वितीयः व्यावहारिकः व्यवहार प्रयोजनः परमाणुपुद्गलः ‘से ण अण-ताण सुहुम परमाणुपुद्गलाणं समुदयसमिहसमागमेणं’ स खलु अनन्तानां सूक्ष्मपरमाणु पुद्गलानां समुदयसमितिसमागमेन समुदयाः समूहाः तेषां याः समितयः-ब्रह्मनि मेल-

इन में जो सूक्ष्म परमाणु है वह स्थाप्य है अनिरूपणीय है क्यों कि वह इस प्रसङ्ग में अनु-पयोगी है सका स्वरूप दूसरी जगह इस प्रकार से कहा गया है परमाणु कारण ही होता है और वह-अन्त में ही होता है तथा सूक्ष्म, नित्य, एक रस एक वर्ण, एक गन्ध और दो स्पर्शवाला होता है इसको सत्ता का अनुमापक उससे अन्य कार्य ही होता है ।

“कारणमेव तदन्त्यं सूक्ष्मो नित्यश्च भवति परमाणुः ।

एक रस वर्णगन्धो द्विस्पर्शः कार्यलिङ्गश्च ॥ १ ॥

इस प्रकार के लक्षण कथन से इसका स्वरूप अत्यन्त परम निकृष्ट है ऐसा ही प्रतिपादित होता है. इसके अतिरिक्त और विगेष स्वरूप इसका यहां प्रतिपाद्य नहीं है. इसलिए सूक्ष्मपरमाणु की चर्चा न करके अब सूत्रकार व्यवहारोपयोगी परमाणु के स्वरूप का कथन करते हैं । यह व्यावहारिक परमाणु पुद्गल अनन्त सूक्ष्म परमाणु पुद्गलों की एकोमाव परिणति रूप समुदाय

સૂક્ષ્મ પરમાણુ છે તે સ્થાપ્ય છે અનિરૂપણીય છે કેમકે તે આ પ્રસંગમાં અનુપયોગી છે આનુ સ્વરૂપ અન્યત્ર આ પ્રમાણે નિર્ણય કરવામાં આવેલ છે—

કે પરમાણુ કારણજ હોય છે અને તે અતમાજ હોય છે તથા સૂક્ષ્મ, નિત્ય, એક રસ એક વર્ણ એક ગન્ધ અને સ્પર્શ વાળો હોય છે આની સત્તાનો અનુમાપક તેનાથી નિષ્પન્ન કાર્ય જ હોય છે--

कारणमेव तदन्त्यं सूक्ष्मो नित्यश्च भवति परमाणुः ।

एक रस वर्ण गन्धो द्विस्पर्शः कार्यलिङ्गश्च ॥१॥

આ 'અતના કથનથી આનુ' સ્વરૂપ અતીવ પરમ નિકૃષ્ટ છે એવું જ પ્રતિપાદિત થાય છે એના સિવાય આનુ વિશેષ સ્વરૂપ અહીં પ્રતિપાદ્ય નથી એથી સૂક્ષ્મ પરમાણુની ચર્ચા ન કરતા હવે સૂત્રકાર વ્યવહારોપયોગી પરમાણુના સ્વરૂપનું કથન કરે છે. આ વ્યાવહારિક પરમાણુ પુદ્ગલ અનન્ત, સૂક્ષ્મ પરમાણુ પુદ્ગલોની એકો માવ પરિણતિ રૂપ સમુદય સમિ-તિના સમાગમથી નિષ્પન્ન હોય છે. તાત્પર્ય આમ છે કે નિશ્ચય નય સૂક્ષ્મ પુદ્ગલોની

नानि तासां समागमेन संयोगेन एकीभावपरिणतिरूपेण एको 'वावहारिण परमाणु निष्पञ्जज' व्यावहारिकः परमाणु निष्पद्यते सम्पद्यते । अयम्भावः—निश्चयनयोहि निर्विभागसूक्ष्मं पुद्गलं परमाणुं वाच्छति, यस्त्वेकपरमाणुनिष्पन्नः सौंशसहितत्वात् स्कन्धत्वेनैव व्यपदिश्यते, व्यवहारनयस्तु सूक्ष्म परमाणुपुद्गलानेक संघातनिष्पन्नोऽपि यः शस्त्रच्छेद भेदानलदाहादिविषयो न भवति तं तथाविधस्थूलत्वा प्राप्तत्वात्परमाणु-त्वेन व्यवहरति, तस्मादसौ—निश्चयनयतः स्कन्धोऽपि व्यवहारनयमतेन व्यावहारिकः परमाणुरुक्तः इति । अयं च स्कन्धत्वादिन्धनवत् छेदादिविषयो भवतीति मा कश्चित्संशयं कुर्यादित्याह—'तत्थ णो' इत्यादि । 'तत्थ णो सत्थ कमइ' तत्र व्यावहारिक परमाणौ शस्त्र

समितिके समागम से निष्पन्न होता है तात्पर्य कहने का यह है—यद्यपि निश्चयनय सूक्ष्म पुद्गलों की एकीभाव परिणतिरूप समिति के समागम से उत्पन्न हुए परमाणु नहीं मानता है—उसे तो वह एक स्कन्धरूप ही मानता है, उसको मान्यता में तो परमाणु वही है जो निर्विभाग सूक्ष्म पुद्गल है, जो अनेक परमाणुओं के मेल से निष्पन्न हुआ है वह तो अंश सहित होने के कारण स्कन्धरूप से ही कहा गया है, परन्तु जो व्यवहारनय है वह ऐसा मानता है कि भले ही अनेक परमाणु पुद्गलों के संयोग से स्कन्धरूप अवस्था निष्पन्न हुई हो परन्तु यदि वह शस्त्रादि से छिदती नहीं है, भिदती नहीं है, अग्नि से जलती नहीं है तो वह तथाविध स्थूलतारूप परिणति को अप्राप्त होने के कारण परमाणु रूप से ही व्यवहार पथ में अवतरित होती है, इसलिये व्यावहारिक परमाणु भलेही निश्चयनय की मान्यतानुसार स्कन्धरूप हो तबभी वह व्यवहारनय की मान्यतानुसार परमाणुरूप ही मानी गई है परन्तु कोई इसे यों न समझ बैठ कि यह स्कन्धरूप होने से इन्धन काष्ठादि की तरह छेदादि क्रिया का विषयभूत होती होगी । इसलिये इस संशय को दूर करने के लिये सूत्रकार ने ऐसा कहा है कि "तत्थ णो सत्थ कमइ" उस व्याव-

एकीभाव परिणतिरूप समितिना समागमथी उत्पन्न थयेव परमाणुने परमाणु न मान तो नथी नेने तो ते एक स्कन्ध रूप न माने छे तेनी मान्यता सुज्ज तो परमाणु ते न छे के न निर्विभाग सूक्ष्म पुद्गल छे न अनेक परमाणुओंना भेगथी निष्पन्न थयेव छे ते तो अंश सहित होवा भद्व स्कन्ध रूप न छेव य छे परंतु न व्यवहारनय छे ते अयम माने छे के अनेक परमाणु पुद्गलोंने संयोगथी स्कन्ध रूप अवस्था निष्पन्न थयेव छे ते तो शस्त्रादिथी छेदित थती नथी छेदित थती नथी, अग्निमां भस्म थती नथी ते तो तथाविध स्थूलतारूप परिणतिने प्राप्त न करवाथी परमाणु रूपमां व्यवहारपथ मां अवतरित होय छे अथी व्यावहारिक परमाणु निश्चयनयनी मान्यता सुज्ज भवे स्कन्ध रूप होय छतांजे ते व्यवहारनयनी मान्यतानुसार परमाणुरूप न मानवां, आवी छे परंतु केहि आम न समझ देके आ स्कन्ध रूप होवाथी इन्धन—काष्ठादिनी जेम छेदादि क्रियानो विषय थती छे, अथी आ संशयने दूर करना भाटे सूत्रकारे कछु छे के "तत्थ णो सत्थ कमइ" ते व्यावहारिक परमाणुने अस्त्रादि कापी शक्ता नथी अही अवी आश का

શસ્ત્રાદિ નો ક્રામતિ ન પ્રવિશતિ । નન્તુ અનન્ત સૂક્ષ્મપરમાણુપુદ્ગલાનેક સંઘાતનિષ્પન્નનાં
કાષ્ઠાદીનાં છેદનમેદનાદિ પ્રસિદ્ધં તત્કથમનન્તસૂક્ષ્મપરમાણુપુદ્ગલાનેકસંઘાતનિષ્પન્નસ્ય
વ્યાવહારિકપરમાણોસ્છેદનમેદનાદિ ન ભવતિ ? , इतिचेत्, आह—काष्ठादीनां स्थूलत्वा-
द्भवति शस्त्रादिभिश्छेदनादि व्यावहारिक परमाणोस्तु सूक्ष्मत्वात् शस्त्रादिभिश्छेदनादि
न भवति । इह शस्त्रं नो क्रामतीत्युपलक्षणम्, तेन वह्निजलादिकमपि तत्र न क्रामति ।

अग्निदाहत्वं जलाद्र्द्रत्वं गङ्गादिनदीस्रोतः प्रतिघात्यत्वं तरङ्गान्दोल्यत्वादिकं च
व्यावहारिकपरमाणौ न भवतीति बोध्यम् । અમુમેવાર્થ સૂત્રકારો ગાથયા પ્રાહ—‘સત્ત્વેણ’

હારિક પરમાણુ કો સ્વદ્ગાદિ કાટ નહીં સકતે હૈં, यदि यहां पर ऐसी आशका की जाय कि
अनन्त सूक्ष्म पुद्गल परमाणुओं के संयोग से निष्पन्न हुए काष्ठादिक तो शस्त्रादि द्वारा छेदे मेदे
जाते हैं तो फिर अनेक सूक्ष्म पुद्गल परमाणुओं के संयोग से निष्पन्न हुआ यह व्यावहारिक
परमाणु शस्त्रादिकों द्वारा क्यों नहीं काटा जाता है? क्यों नहीं मेदा जाता है? क्यों नहीं अग्नी
द्वारा जलाया जाता है? वह भी काष्ठादिकों की तरह से छेदा मेदा जाना चाहिये तो इस
आशंका का उत्तर ऐसा है कि काष्ठादिक तो स्थूल होते हैं इसलिये उनका तो शस्त्रादिकों द्वारा
छेदन मेदन आदि होता है, परन्तु व्यावहारिक जो परमाणु है वह सूक्ष्म होता है इसलिये उसका
शस्त्रादिकों द्वारा छेदनमेदनादि नहीं होता है । यहां जो ऐसा कहा है कि इस पर शस्त्र का प्रभाव
नहीं पड़ता है सो यह उपलक्षण है इससे यह भी गृहीत होता है कि इस पर अग्नि जल आदि
का भी कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता है न अग्नि इसे जला सकती है और न पानी इसे गोला
आदि कर सकता है, ऐसा यह व्यावहारिक परमाणु है । गंगा आदि महानदियों का प्रवाह भी
इसे नहीं बहा सकता है, और न लहरें इसे डुला सकती हैं इसी बात को कथित यह गाथा
वताती है—

કરવામા આવે કે અનંત સૂક્ષ્મ પુદ્ગલ પરમાણુઓના સંયોગથી નિષ્પન્ન થયેલા કાષ્ઠાદિકે
તો શસ્ત્ર આદિ વડે છેદી શકાય છે. અને લેદી શકાય છે તો પછી અનેક સૂક્ષ્મ પુદ્ગલ પર
માણુઓના સંયોગથી નિષ્પન્ન થયેલ આ વ્યાવહારિક પરમાણુ શસ્ત્ર આદિ વડે કેમ કાપી શકા
તો નથી ? કેમ લેદી શકાતો નથી ? કેમ અગ્નિ માં ભસ્મ કરી શકાતા નથી ? કાષ્ઠ આદિ
કેની જેમ તેનું પશુ છેદન તેમજ લેદન થઈ જવું જોઈએ તો આ આશંકાનો જવાબ
આ પ્રમાણે છે કે કાષ્ઠાદિકે સ્થૂલ હોય છે, એથી તેમનું તો શસ્ત્ર આદિ વડે છેદન-લેદન વગેરે
થઈ શકે છે. પરંતુ વ્યાવહારિક જે પરમાણુ છે તે સૂક્ષ્મ હોય છે એથી તેનું શસ્ત્ર આદિ
વડે છેદન-લેદન થઈ શકતું નથી. અહીં જે આમ કહેવામા આવ્યું છે કે તેની ઉપર
શસ્ત્ર નો પ્રભાવ પડતો નથી તો આ ઉપલક્ષણ છે. એનાથી એવું પણ અર્થ થાય છે કે
એ ની ઉપર અગ્નિ-જલ વગેરેનો પણ પ્રભાવ પડતો નથી એને અગ્નિ ભસ્મ કરી શકતો
નથી તેમજ પાણી પણ એને લીનું કરી શકતું નથી. એવો આ વ્યાવહારિક પરમાણુ છે
ગંગા આદિ મહાનદીઓનો પ્રવાહ પણ એને પ્રવાહિત કરી શકતો નથી અને પાણી ની
લહેરો પણ એને હલાવી શકતી નથી, સ્થાનચ્યુત કરી શકતી નથી. એ જ વાતને આ

इत्यादि । 'सत्येण सुतिक्खेण वि' सुतीक्ष्णेनापि शस्त्रेण खड्गादिना केऽपि जनाः यं 'छेतुं' छेतुं-द्विधाकर्तुम् 'मेतुं, मेतुं' विदारयितुं वा 'किर' किल-निश्चयेन ण सक्का' न शक्ताः-समर्था न भवन्ति, 'तं सिद्धा'तं-सिद्धा' सिद्धाश्च सिद्धा उत्पन्न केवलज्ञानधरा जिनाः, न तु सिद्धिं गताः, तेषां वचनयोगासम्भवात् 'परमाणुं' परमाणुं=व्यावहारिकं परमाणु 'पमाणानं' प्रमाणानाम्-अग्रे वक्ष्यमाणानामुच्छ्लक्ष्ण श्लक्ष्णिकादिरूपाणाम् आदि' आदि-प्रथमम् 'वयंति' वदन्ति-कथयन्ति इति । भगवदुक्तत्वेनात्र परमाणुलक्षणे आगमप्रमाणमुच्यते, अनुमानप्रमाणमप्यत्रैव विज्ञेयं तथाहि-अनुमानप्रयोगः अणुपरिमाणं कचिद् विश्रान्तं तरतमशब्दवाच्यत्वात् महत्परिमाणवत्, यत्र विश्रान्तं स परमाणुरिति ।

“सत्येण सुतिक्खेण वि छेतुं मेतुं च ज किर ण सक्का ।

त परमाणुं सिद्धा वयंति आह पमाणानं ॥ १ ॥ —

कोई भी मनुष्य सुतीक्ष्ण शस्त्र से भी इस व्यावहारिक परमाणु को संहित करने के लिये या उसे विदारित करने के लिये समर्थ नहीं है ऐसा उत्पन्न केवलज्ञान वाले भगवन्तों ने कहा है यहां सिद्ध पद से सिद्ध अवस्था प्राप्त जन गृहीत नहीं हुए हैं, क्यों कि उनके वचनयोग नहीं होता है, अतः केवलज्ञान के आधारभूत केवली ही गृहीत हुए हैं । यह व्यावहारिक परमाणु सकल प्रमाणों का कहे जाने वाले उच्छ्लक्ष्ण आदि प्रमाणों का आदि कारण है, इस प्रकार का यह कथन भगवदुक्त होने से व्यावहारिक परमाणु के अस्तित्व में आगम प्रमाणरूप है। अर्थात् व्यावहारिक परमाणु की सत्ता का ज्ञापक आगम प्रमाण है । अनुमान प्रमाण इसकी सत्ता का ज्ञापक इस प्रकार से है “अणुपरिमाणं कचिद् विश्रान्तम् तरतमशब्दवाच्यत्वात् महत् परिमाणवत्” महत्परिमाण की तरह अणु परिमाण तरतमशब्द वाच्य होने से कहीं पर विश्रान्त है अर्थात् जिस प्रकार तरतमशब्द होने के कारण महत् परिमाण आकाश में विश्रान्त है, इसी प्रकार यह अणुपरिमाण भी तरतम-

ગાથા ૨૫૬ કહે છે —

સત્યેણ સુતિક્ખેણ વિ છેતું મેતું ચ જે કિર ણ સક્કા ।

તં પરમાણુ સિદ્ધા વયંતિ આહ પમાણાણ ॥૧॥

કોઈ પણ મનુષ્ય સુતીક્ષ્ણ શસ્ત્રથી પણ આ વ્યાવહારિક પરમાણુ ને સંહિત કરી શકતો નથી, વિદોષ કરી શકતો નથી, એવું ઉત્પન્ન કેવળ જ્ઞાની ભગવન્તોએ કહ્યું છે. અહીં સિદ્ધપદથી સિદ્ધ અવસ્થા પ્રાપ્ત જન ગ્રહીત થયેલા નથી કેમકે તેમને વચન યોગ થતો નથી એથી કેવળજ્ઞાનના આધારભૂત કેવળી જ અહીં ગૃહીત થયેલા છે. આ વ્યાવહારિક પરમાણુ સકલ પ્રમાણોને કહેનાર ઉચ્છલક્ષણ આદિ પ્રમાણોનું આદિ કારણ છે, આ બંધનું આ કથન ભગવદુક્ત હોવાથી વ્યાવહારિક પરમાણુના અસ્તિત્વમાં આગમ પ્રમાણ રૂપ છે એટલે કે વ્યાવહારિક પરમાણુ સત્તા વ્યાપક આગમ પ્રમાણ છે. અનુમાન પ્રમાણ આની સત્તાને બતાવનાર આ પ્રમાણ છે “અણુ પરિમાણું કચિદ્ વિશ્રાન્તમ્ તરતમશબ્દ વાચ્યત્વાત્ મહત્પરિમાણવત્” મહત્ પરિમાણની જેમ અણુ પરિમાણ તરતમ શબ્દવાચ્ય હોવાથી કોઈ સ્થાને વિશ્રાન્ત છે એટલે કે જેમ તરતમ શબ્દ હોવાથી મહત્ પરિમાણ

અન્યથા વસ્તુનો મહત્ત્વમપિ નોપપદ્યેત અણુમહતોઃ સાપેક્ષત્વાત્ । અતો દ્વચણુકાદીનિ પરિણામાનિ પરસ્પર મિન્નાનિ મન્તવ્યાન્યેવ । एवं च द्व्यणुके सिद्धे ततः पूर्ववर्ती निरंशः परमनिकृष्टः परमाणुः सिध्यत्येव । यदि अणुમહત્ત્વાદિરૂપેણ પરિમાણભેદા ન મન્યેત તદા સર્પપસુમેર્વોસ્તુલ્યપરિમાણતા પ્રસજ્યેત । અતઃ સિદ્ધઃ પરમાણુઃ । નનુ ભવતુ પરમાણુઃ સ સૂક્ષ્મત્વાત્ ચક્ષુરાદીન્દ્રિયાગમ્યોઽપિ ભવતુ, પરન્તુ તૈરનન્તૈઃ પરમાણુ-મિશ્રચક્ષુરાદ્યગોચરઃ શક્ત્ત્વચ્છેદા ઘગોચરશ્ચ એકો વ્યાવહારિકઃ પરમાણુર્નિષ્પદ્યતે इति यदुक्तं तन्मन्दम् इति चेत्, आह, पुद्गलपरिणामो हि सूक्ष्मवादरभेदेन द्विविधः । તત્ર સૂક્ષ્મ-પરિણામપરિણતાનાં પુદ્ગલાનામિન્દ્રિયાગ્રાહ્યત્વાગુરુલઘુપર્યાયવત્ત્વશસ્ત્ત્વચ્છેદાદ્યવિપયત્વાદયો

શબ્દવાચ્ય હોને કે કારણ પરમાણુ મેં વિશ્રાન્ત છે, યદિ એસા ન હો તો વસ્તુ મેં મહત્તા નહીં બન સકતી છે મહત્તા કે સદ્ભાવ સે યહ મી માનના પડતા છે કિ કહીં ન કહીં અણુપરિમાણ મી છે ક્યો કિ અણુ ઔર મહત્ત્વ યે, દોનો પરસ્પર સાપેક્ષ છે, હસલિયે દ્વચણુકાદિ ત્ર્યચણુકાદિરૂપ પરિમાણ પરસ્પર મેં મિન્ન છે એસા માનના ચાહિયે જબ જિસસે નિષ્પન્ન હુઆ હૈ દ્વચણુક કા સત્તા સિદ્ધ હો જાતી છે તો યહ દ્વચણુક જિસસે નિષ્પન્ન હુઆ છે એસા પૂર્વવર્તી નિરંશ પરમનિકૃષ્ટ પરમાણુ મી સિદ્ધ હો જાતા છે । યદિ અણુ મહત્ત્વાદિરૂપ સે પરિમાણ ભેદ ન માને જાવે તો સર્પપ ઔર પસુમેરુ મેં તુલ્ય પરિમાણતા આવે કા પ્રસજ્ઞ પ્રાપ્ત હોગા પરન્તુ એસા તો છે નહીં હસલિયે પરમાણુ છે હસસે યહ સિદ્ધ હો જાતા છે । શકા-મહે હી પરમાણુ કી સિદ્ધિ હો જાવે ઔર યહ મી બાત માનલી જાવે કિ વપ ચક્ષુરાદિક હિન્દ્રિયો કા વિષય નહીં છે, પરન્તુ યહ બાત ઠીક નહીં છે કિ હન અનન્ત પરમાણુઓ સે ચક્ષુરાદિ હિન્દ્રિયો દ્વારા ગ્રહણ કરને મેં નહીં આવે વાલા ઔર શક્તાદિકો દ્વારા છેદન ભેદનાદિ રૂપ ક્રિયા વા વિષય નહીં હો સકને વાલા એક વ્યાવહારિક પરમાણુ નિષ્પન્ન હોતા છે- તો હસકા ઉત્તર એસા છે કિ પુદ્ગલ-પરિણામ સૂક્ષ્મ એવ બાદર કે ભેદ સે દો પ્રકાર

આકાશમા વિશ્રાન્ત છે, તેમજ આ અણુ પરિમાણ પણ તરતમ શબ્દ વાચ્ય હોવાથી પરમાણુમાં વિશ્રાન્ત છે જો આમ ન હોય તો વસ્તુમાં મહત્તા થઈ શકે જ નહીં, મહત્તાના સદ્ ભાવથી આ વાત પણ માનવી પડશે કે કોઈ ને કોઈ સ્થાને અણુ પરમાણુ પણ છે જ કેમકે અણુ અને મહત્ત્વ જો બન્ને પરસ્પર સાપેક્ષ છે એથી દ્વચણુકાદિ ત્ર્યચણુકાદિ રૂપ પરિણામ પરસ્પરમા-મિન્ન છે એવું માનવું જોઈએ જ્યારે દ્વચણુકની સત્તા સિદ્ધ થઈ જાય છે તો આ દ્વચણુક જોનાથી નિષ્પન્ન થાય છે એવો પૂર્વવર્તિ નિરંશ પરમનિકૃષ્ટ પરમાણુ પણ સિદ્ધ થઈ જાય છે. જો અણુમહત્ત્વાદિરૂપથી પરિમાણ ભેદ માનવામાં આવે નહીં તો સર્પપ અને પસુમેરુમાતુલ્યપરિણામતા આવવાનો સમય ઉપસ્થિત્યથા પરતુ આમ તો બનતું જ નથી, એથી પરમાણુ છે આમ સિદ્ધ થઈ જાય છે ચકાઃ-પરમાણુની સિદ્ધિ લાભે થાય અને એ વાત પણ માન્ય થઈ જાયકે તે ચક્ષુરાદિક હિન્દ્રિયોનો વિષય નથી, પરતુ આ વાત ઠીક નથી કે આ અનન્ત પરમાણુએથી ચક્ષુરાદિ હિન્દ્રિયો દ્વારા ગ્રહણ કરવામાં નહીં આવેલ શસ્ત્ર આદિકે દ્વારા જે છેદન-ભેદન રૂપ ક્રિયાનો વિષય થઈ શકે નહીં તેવો એક વ્યાવહારિક પરમાણુ નિષ્પન્ન થાય છે. તો આવે જવાબ આ પ્રમાણે છે કે પુદ્ગલ પરિણામ

ધર્મા ભવન્ત્યેવેતિ ન કાઽપ્યનુપપત્તિઃ । આગમેઽપિ પુદ્ગલાનાં સૂક્ષ્મત્વાસૂક્ષ્મત્વપરિ-
ણામઃ શ્રૂયતે, યથા દ્વિપ્રદેશિકઃ સ્કન્ધ એકસ્મિન્નાકાશપ્રદેશે ભાતિ દ્વયોઽપીતિ સંકો-
ચવિકાસ કૃતો મેદઃ । લોકેઽપિ પિઞ્જિત કાર્પાસપુઞ્જલોહપિઞ્જયોઃ પરિણામમેદો
દૃશ્યતે એવેતિ નાત્ર કાઽપિ વિપ્રતિપત્તિઃ કર્તવ્યેતિ દિક્ ।

અથ પ્રમાણાન્તરં લક્ષયિતુમાહ-‘વાવહારિયપરમાણૂં’ इत्यादि । ‘वावहारिय
परमाणूँ’ व्यावहारिकपरमाणूनां व्यावहारिका ये परमाणवस्तेषाम् इहाप्यनन्तानामिति
पूर्वतोऽनुषज्यते तेनानन्तानां व्यावहारिकपरमाणूनां ‘समुदयसमिद् समागमेणं’ समुदय-

કા હોતા હૈં इनमें जो पुदगल सूक्ष्म परिणाम वाले होते हैं उनमें इन्द्रियाग्राह्यत्व, अगुरुलघु-
पर्यायवत्त्व, एवं शस्त्रादि द्वारा अच्छेद्यत्व आदि धर्म होते ही हैं. इस विषय में तो कोई कहने
जैसी बात ही नहीं है. आगम में भी ऐसा कहा गया सुना गया है कि पुदगलो का सूक्ष्म
परिणाम और असूक्ष्म परिणाम होता है द्विप्रदेशिक स्कन्ध एक आकाश प्रदेश में भी समा
जाता है और दो प्रदेशों में भी समा जाता है. ऐसा जो यह मेद है त वह उनके सकोच और
विकाश को लेकर हो जाता है जब द्विप्रदेशी स्कन्ध सकुचित होता है त वह एक अकाश
प्रदेश में मा जाता है और जब वह विस्तारवाला होता है तो वही दो प्रदेशों में समा जाता
है. सकोच और विस्तार ये पुदगलो का स्वभाव है जब कपास पिण्डावस्था में होता है तो
वह आकाश प्रदेशों को इतना नहीं घेरता है कि जितना वह अपिण्डावस्था में घेरता है । इसी
तरह एक मन कपास के जितने प्रदेश फैले हुए नजर आते हैं उतने ही वे प्रदेश लोहे में सकु-
चित देखे जाते हैं , इस तरह यह पुदगलों में परिणामकृत मेद लक्षित होता है. अतः इस

સૂક્ષ્મ અને બાહરના લેક્ષ્યી ળ પ્રકારનુ થાય છે એમા જે પુદગલ સૂક્ષ્મ પરિણામવાળા
હોય છે તેમાં ઇન્દ્રિય ગ્રાહ્યત્વ અગુરુલઘુપર્યાયવત્ત્વ, તેમજ શસ્ત્રાદિ વડે અચ્છેદ્યત્વ વગેરે
ધર્મો હોય જ છે આ સંબંધમાં તો વિશેષ કહેવાયેલું કંઈ નથી. આગમમા પણ
એવું જ કહેવામાં આવ્યું છે તેમજ સંભળવામાં આવ્યું છે કે પુદગલોનું સૂક્ષ્મ પરિણામ
અને અસૂક્ષ્મ પરિણામ હોય છે દ્વિપ્રદેશિક સ્કન્ધ એક આકાશ પ્રદેશ માં પણ સમાવિષ્ટ
થઈ જાય છે અને બે પ્રદેશોમા પણ સમાવિષ્ટ થઈ જાય છે. એ બે લેહ છે, તો તે તેના
સ કોચ અને વિકાશ તે લઈનેજ થાય છે. જ્યારે દ્વિપ્રદેશી સ્કન્ધ સ કુચિત થાય છે, તો તે
એક આકાશ પ્રદેશમા સમાવિષ્ટ થઈ જાય છે અને જ્યારે તે વિસ્તારવાળો હોય છે તો તે
બે પ્રદેશોમા સમાવિષ્ટ થઈ જાય છે. સ કોચ અને વિસ્તાર એ પુદગલોનો સ્વભાવ છે જ્યારે
કપાસ પિંડાવસ્થામા હોય છે તો તે આકાશ પ્રદેશોને આટલો ઘેરતો નથી કે જેટલો તે
અપિ રાવસ્થામા ઘેરે છે આ પ્રમાણે એક પણ કપાસના જેટલા પ્રદેશો ફેલાએલા દેખાય છે,
તેટલાજ તે પ્રદેશો લોખંડ મા સંકુચિત દેખાય છે આ રીતે પુદગલોમા પરિણામ કૃત લેહ
લક્ષિત હોય છે. એથી આ સંબંધમા શકા જેવી કોઈ વાત નથી,

સમિતિ સમાગમેન યા પરિણામમાત્રા 'સા ઇગા ઉસ્સપ્પહસપ્પિહાઈ' સા ઇગા ઉચ્છલક્ષણ
 ળલક્ષિણકા ઉત્ પ્રાવલ્લયેન 'સપ્પિહસપ્પિહાઈ' ળલક્ષણલક્ષિણકા અતિશયેન ળલક્ષણા
 ળલક્ષણલક્ષણા સૈવ તથા' इति शब्दः स्वरूपदर्शनार्थः, वा शब्दः परापेक्षया समुच्च-
 यार्थक' । 'एवं उद्धरेणूइ वा तसरेणूइ वा रहरेणूइ वा वालगोइ वा लिक्खाइ वा
 जूआइ वा जवमज्झेइ वा उस्सेहंगुळेइ वा' ऊर्ध्वरेणुरिति वा त्रसरेणुरिति वा रथरेणुरिति
 वा वालग्रमिति वा लिक्खाइति वा यूका इति वा यवमध्य इति वा उत्सेधाङ्गुल-
 मिति वा ललक्ष्णललक्षिणकाद्युत्सेधाङ्गुलान्ता अपि बोध्याः ।

एते च ललक्ष्णललक्षिणकादय उत्सेधाङ्गुलान्ता सर्वे प्रमाणाविशेषा यथोत्तरम-
 ष्टगुणाः अनन्तपरमाणुकाः बोध्या अनन्तपरमाणुकत्वमय सर्वत्राविरोधेन सत्त्वात्,
 अत एव ललक्ष्णललक्षिणके त्यादि निर्विशेषितमेवोक्तम् । तत्र ललक्ष्णललक्षिणका-पूर्व-
 प्रमाणापेक्षयाऽष्टगुणाधिका, एवमग्रेऽपि बोध्यम् । एतदेव स्पष्टयति-‘अट्ट उस्सप્पहस-
 प्पिहयाओ’ इत्यादि । ‘अट्ट उस्सप્पहसपिहयाओ सा इगो सपप्पहसपिहया’ अष्ट उच्छलक्ष्ण
 ललक्षिणकाः सा एका ललक्ष्णललक्षिणकाः ‘अट्टसपप्पहसपिहयाओ सा इगो उद्धरेणू’ अष्ट
 ललक्ष्णललक्षिणका सा एका ऊर्ध्वरेणुः अत्र ऊर्ध्वेत्यस्योपलक्षणत्वादधस्तिर्यग्ग्रहणम् तेन
 ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्गामी जालान्तरगतसूर्यकिरणस्फुरणलक्षणोरेणुः-धूलिः ऊर्ध्वरेणुः ‘अट्ट

सम्बन्ध में शंका करने जैसी कोई बात नहीं है । “वावहारिय परमाणूणं समुदयसमिहसमा-
 गमेणं सा इगो उस्सपप्पहसपिहयाओ वा सपप्पिहसपिहयाओ वा उद्धरेणूइ वा तसरेणूइ वा रहरेणूइ वा
 वालगोइ वा लिक्खाइ वा जूआइ वा” अनन्त व्यावहारिक परमाणुओं का संयोग से जो परि-
 णाममात्रा होती है उसका नाम एक उच्छलक्ष्णललक्षिणका है, आठ उच्छलक्ष्ण ललक्षिणकाओं
 को एक ललक्ष्णललक्षिणका होती है इसी तरह से उत्सेधाङ्गुल तक कथन जानना चाहिये. ये
 सब प्रमाण विशेष है ये सब अपने से पहिले से आठ २ गुणित होते हैं और एक अनन्त २
 पुद्गल परमाणुओं वाला होता है । आठ ललक्ष्णललक्षिणकाओं का एक ऊर्ध्वरेणु होता है । ऊर्ध्व-
 शब्द यहां उपलक्षणरूप है, इससे अबोगाकी रेणु और तिर्यग्गामी रेणु का भी ग्रहण हुआ है,
 इस तरह जो रेणु ऊर्ध्व, अधः एव तिर्यग्गामी जाल के अन्तर्गत सूर्य किरणों से जिसका

“वावहारिय परमाणूणं समुदयसमिह समागमेणं सा इगो उस्सपप्पहસપિહયાओ वा સપ્પિહ-
 સપ્પિહયાओ વા ઉદ્ધરેણૂઈ વા તસરેણૂઈ વા રહરેણૂઈ વા વાલગોઈ વા લિક્ખાઈવા જૂઆઈ વા”
 અનંત પરમાણુઓના સંયોગથી જે પરિણામમાત્રા થાય છે તેનું નામ ઉચ્છલક્ષ્ણલલક્ષિણકા છે
 આ ઉચ્છલક્ષ્ણલલક્ષિણકાઓની એક શલક્ષ્ણ શલક્ષિણકા હોય છે આ પ્રમાણે ઉત્સેધાંગુલ સુધી
 કથન બાણુવું બોધીએ એ સર્વે પ્રમાણુ વિશેષ છે, એ સર્વે પહેલા બેટલા આવી ગયા છે તે
 બધાથી શુચિત થાય છે- અને હરેકે હરેકે અનંત અનંત પુદ્ગલ પરમાણુઓવાલા હોય છે
 આઠ શલક્ષ્ણશલક્ષિણકાઓના એક ઉર્ધ્વરેણુ હોય છે ઉર્ધ્વ શબ્દ અહીં ઉપલક્ષણરૂપ છે
 એનાથી અબોગામી રેણુ અને તિર્યગામી રેણુનું પણ અહણ થયું છે આ પ્રમાણે બે રેણુ

उद्धरेणूओ सा एगा तसरेणु' अष्ट ऊर्ध्वरेणुव सा एका त्रसरेणुः-त्रस्यति पूर्वादि वात-
प्रेरितो गच्छतीति त्रसा सा चासौ रेणुस्त्रसरेणुः 'अष्ट तसरेणुओ सा एगा रहरेणु' अष्ट
त्रसरेणवः सा एका रथरेणुः रथगमनादुड्डीयमाना रेणु रथरेणुः 'अष्ट रहरेणूओ से एगे
देवकुरुत्तरकुराण' अष्ट रथरेणव तदेक देवकुरुत्तरकुरूणां देवकुरुत्तरकुरुक्षेत्रनिवासिनां
'मणुस्साण वालग्गे' मनुष्याणां वालाग्रं केशाग्रं भागः, 'देवकुरुत्तर कुराण मणुस्साणं'
देवकुरुत्तरकुरूणां मनुष्याणां यानी 'अष्टा वालग्गा' अष्टवालाग्राणि केशाग्राणि 'से एगे
हरिवासे रम्यववासाण' तदेकं हरिवर्परम्यकवर्षाणां हरिवर्ष रम्यकवर्षवासिनां 'मणुस्साणं
वालग्गे' मणुष्याणां वालाग्रम्, 'एव' एवम् अनेन प्रकारेण हरिवर्परम्यकवर्षक्षेत्रवासि-
मनुष्याणां यानि अष्ट वालाग्राणि तत् 'हैमवतहैरण्यवयाण' हैमवतहैरण्यवतानां हैमवत-
हैरण्यवतवर्षवासिनां 'मणुस्साणं' मनुष्याणामेकं वालाग्रम्, यानि अष्टौ हैमवत हैरण्य-
वतवर्षवासिमनुष्यवालाग्राणि तत् 'पुव्वविदेहअवरविदेहाण' पूर्व विदेहापरविदेहानां पूर्व-
विदेहापरविदेहवासिनां मणुष्याणामेकं वालाग्रम् यानि चाष्टौ पूर्वविदेहापरविदेहवासि
'मणुस्साण वालग्गा सा एगा लिक्खा' मनुष्यवालाग्राणि सा एका लिक्खा, 'अष्ट लिक्खाओ

स्फुरण होता है ऐसी जो घुलि है वह उर्ध्वरेणु शब्द से बाध्य हुई है। आठ उर्ध्वरेणुओं का
एक त्रसरेणु होता है। जो पूर्वादि दिशाओं से आगत वात से प्रेरित हुई इधर उधर चली
जाती है-उड़ जाती है ऐसी घुलि का नाम त्रसा है, ऐसी त्रसारूप जो रेणु है वह त्रसरेणु है।
आठ त्रसरेणुओं का एक रथरेणु होता है, रथ के चलने समय उससे उड़ी हुई घुलि ही
रथ रेणु है आठ रथ रेणुओं का एक देवकुरु एव उत्तरकुरु क्षेत्र के निवासी मनुष्यों का बालाग्र
होता है। आठ बालाग्रों का हरिवर्ष और रम्यकवर्ष के निवासी मनुष्यों का एक बालाग्र
होता है इसी हरिवर्ष और रम्यकवर्ष के निवासी मनुष्यों के जो आठ बालाग्र हैं उनका
हैमवत और हैरण्यवतक्षेत्र निवासी मनुष्यों का एक बालाग्र होता है। इनके आठ बालाग्रों का
पूर्वविदेह और अपरविदेह के निवासी मनुष्यों का एक बालाग्र होता है। इनके आठ बालाग्रों

उर्ध्व, अधः अने त्रिगुणाभीज्जान्तगतसूयं किरिणोथी नेनुं स्फुरणु डोय छे जेवी ने
धुलि छे ते उर्ध्वरेणु शब्दथी बाध्य थयेली छे। आठ उर्ध्वरेणुओने जेक त्रसरेणु डोय छे। जे
पूर्व आदि दिशाओथी आगत वातथी प्रेरित थईने आग-तेम उडी नय छे। जेवी धुलितुं
नाम त्रसा छे जेवी त्रसाउपरेणु ज त्रसरेणु कडेवाय छे। आठ त्रसरेणुओने जेक रथरेणु डोय
छे, रथ गाले छे तयारे तेनाथी जे रेणु उडे छे ते रथरेणु छे आठ रथरेणुओने जेक देव
कुरु अने उत्तर कुरुक्षेत्र निवासी मनुष्यओने जालाग्र डोय छे आठ जालाग्रओने हरिवर्ष अने
रम्यक वर्णना निवासी मनुष्यो तुं जेक जालाग्र डोय छे। जेज हरिवर्ष अने रम्यकवर्षना
निवासी मनुष्यओने जे आठ जालाग्रो छे ते हैमवत अने हैरण्यवत क्षेत्र निवासी मनु
ष्यो जेक जालाग्र डोय छे जेमना आठ जालाग्रोतुं पूर्व विदेह अने अपर विदेहना
निवासी मनुष्यो जेक जालाग्र डोय छे। जेमना आठ जालाग्रोनी-केशाग्रोनी-जेक लिक्खा

મા એગા જ્ઞા' યા અષ્ટયુકાઃ તદેકં યવમધ્યમ્ , યાનિચ 'અદ્ધ જવમઙ્ગા સે એગે અંગુલે' અદ્ધ યવમધ્યાનિ તદેકમઙ્ગુલમ્ , 'એણં' એતેન અનન્તરોક્તેન 'અંગુલપ્પમાણેણં છ અંગુલાઈં પાઓ' અદ્ધગુલપ્રમાણેન પદઙ્ગુલાનિ એકઃ પાદઃ-પાદમધ્યતલપ્રદેશઃ, પાદૈકદેશત્વા ત્પાદઃ ગ્રામૈકદેશે ગ્રામત્વવ્યવહારવત્ 'વારસ અંગુલાઈં વિદ્ધત્થી' દ્વાદશ અઙ્ગુલાનિ ચિત્ત સ્તિઃ , ચતુર્વીસં અંગુલાઈં રચણી' ચતુર્વિંશતિઃ અગુલાનિ રત્તિઃ પ્રસારિતાઙ્ગુલિકો હસ્તઃ, રત્તનરિનિ સૈદ્ધાન્તિકી પરિમાપા શબ્દક્રોશેતુ "મુષ્ટચા તુ વદ્ધયા સ (હસ્તઃ) રત્તિઃ સ્યાત્" ઇતિ વદ્ધમુષ્ટિકહસ્તો રત્તિરુક્તઃ, સચેદ ન ગૃહ્યતે ન્યૂનપ્રમાણત્વાત્ , વિવક્ષિતશ્ચ ચતુર્વિંશત્યદ્ધગુલપ્રમાણઃ સ ચ પ્રસારિતાઙ્ગુલિક એવ હસ્તો ઘટતે ઇતિ, તથા 'અહયાલીસં અંગુલાઈં કુચ્છી.' અષ્ટચત્વાર્વિંશત અઙ્ગુલાનિ કુક્ષિઃ, 'છણ્ણ-ઉઈ અંગુલાઈં સે એગે અક્કલેઈવા' પણ્ણવત્તિરઙ્ગુલાનિ સ એકોઽક્ષ શકટાવયવવિશેષઃ, ઇતિવા ઇતિ શબ્દઃ સ્વરૂપોપદર્શને વા શબ્દઃ સમુન્નચયે એવમગ્રેઽપિ 'દદેઙ્ગવા' દણ્ઢ ઇતિ

કી-કૈશાપ્રો કી એક લિક્ષા-લાસ હતી હૈ આઠ લિક્ષાઓ કી એક ચૂકા- ગિરકા જૂં હતી હૈ. આઠ ચૂકાઓ કા એક યવમધ્ય હોતા હૈ આઠ યવમધ્યો કા એક અઙ્ગુલ હોતા હૈ છહ અંગુલો કા એક પાદ- પાદમધ્યતલ પ્રદેશ હોતા હૈ પાદમધ્યતલ પ્રદેશ કો જો યહાં પાદ કહ દિયા હૈ વહ ગ્રામૈકદેશ મેં હુએ ગ્રામ કૈ વ્યવહાર કો તરહ કહ દિયા હૈ ૧૨અગુલો કી એક ચિત્તસ્તિ હોતી હૈ તથા ૨૪ અગુલો કી એક રત્તિ હોતી હૈ જિમમેં અંગુલિયાં પસારી ગઈ હોં એસે એક હાથ કા નામ સૈદ્ધાન્તિકી પરિમાપા મેં રત્તિ કહા ગયા હૈ ; પરન્તુ શબ્દકોષ મેં બંધી હુઈ મુદ્દિવાલે હાથકો એક રત્તિ કહા ગયા હૈ, સો એસી રત્તિ યહાં ગૃહીત નહીં હુઈ હૈ ક્યો કિ હસમેં પ્રમાણ કમ આતા હૈ, જવ પસારીં હુઈ અગુલિયો વાલે હાથ કી રત્તિ કહતે હૈં તમી ડસમેં ૨૪ અંગુલ પ્રમાણર્તા આતી હૈ, ઓર હસીસે રત્તિ પ્રમાણ સઘતા હૈ ૪૮ અંગુલો કી એક કુક્ષિ હોતી હૈ, ૯૬ અંગુલો કા એક અક્ષ હોતી હૈ, શકટ કા અવયવ વિશેષ જો હોતા હૈ ડસકા નામ અક્ષ હૈ હસી પ્રકાર સે ૯૬ અંગુલો કા એક દણ્ઢ હોતા હૈ, ધનુષ મો હતને

હોય છે, આઠ લિક્ષાઓની એક ચૂકા હોય છે આઠ ચૂકાઓતુ એક યવ મધ્ય હોય છે આઠ યવમધ્યોનો એક અંગુલ હોય છે. ૧૨ અંગુલોનો એક પાદ-પાદમધ્યતલ પ્રદેશ હોય છે પાદ મધ્યતલ પ્રદેશને જો અહીં પાદ કહેલ છે તે ગ્રામૈક દેશમાં થયેલ ગ્રામના વ્યવહારની જેમ સમજવું ૧૨ અંગુલોની એક ચિત્તસ્તિ હોય છે તેમજ ૨૪ અંગુલોની એક રત્તિ હોય છે. જેમાઆગળોએ પહોળી કરવામાં આવી છે એવા એક હાથનું નામ સૈદ્ધાન્તિકી પરિમાપામા રત્તિ કહેવામા આવેલ છે શબ્દકોષમા મુષ્ટિકા બાધેલા હાથને પણ એક રત્તિ કહેવામાં આવેલ છે. પરંતુ એતુ અહીં અદ્ધયુતુ નથી કેમકે આમા પ્રમાણુ ઓછુ આવે છે બ્યારે પહોળી કરેલી અંગુલીઓ વાળા હાથને રત્તિ કહે છે ત્યારે જ તેમાં ૨૪ અંગુલ પ્રમાણુતા આવે છે-અને એનાથીજ રત્તિ પ્રમાણુ સધે છે. ૪૮ અંગુલોની એક કુક્ષિ હોય છે ૯૬ અંગુલોની એક અક્ષ હોય છે શકટનો અવયવ વિશેષ જો હોય છે તેનું નામ અક્ષ છે. આ પ્રમાણુ

वा दण्डः प्रसिद्धः, धनुइवा' धनुरिति वा धनुः प्रसिद्धम्, 'जुगेइवा' युगमिति वा युग धुर्यवृषमस्कन्धस्थितः कण्ठविशेषः 'मुसलेइ वा' मुशलमिति वा मुशलं प्रसिद्धम् 'नालिआइ वा' नालिकेति वा नालिका यष्टि विशेषः अक्षादि नालिकान्तानि पणवत्यङ्गुलप्रमाणानि । अत्र धनुर्मात्रमुपयोगि, तदतिरिक्तानि नामानि प्रसङ्गादुपन्यस्तानि तानि चान्यत्रोपयोगीनि 'एएणं' एतेन अनन्तरोक्तेन 'धणुप्पमाणेणं दो धणुसहससाइं' धनुप्रमाणेन द्वे धनुःसहस्रे द्वि सहस्रधनुपि एकं 'गाउय' गव्यूतम्, 'चत्तारि गा-उयाइं जोयणं' चत्वारि गव्यूतानि एकं योजनम् । 'एएण' एतेन अनन्तरोक्तेन 'जो-यणप्पमाणेणं जे पल्ले' योजनप्रमाणेन यः पल्यः धान्यपात्रविशेष स इव पल्यः पल्यसदृशः पात्रविशेषो 'जोयणं' योजनम् एकं योजनम् 'आयामत्रिक्खंमेणं' आयाम-विष्कम्भेण-दैर्घ्यविस्ताराभ्यां समवृत्तत्वात् एकं 'जोयणं' योजनम् 'उड्डं उच्चत्तेणं' ऊर्ध्वम् उच्चत्वेन, 'तं' तत् पूर्वोक्त योजनम् 'तिगुणं' त्रिगुणं-त्रिभिर्गुणितं 'सविसेसं' सविशेषं विशेषसहितं 'परिक्खेवेणं' परिक्षेपेण-परिधिना, वृत्तपरिधेः किञ्चिन्न्यूनं षड्भागाधिकं त्रिगुणत्वात् 'से ण पल्ले' स खलु पल्यः 'एगाहिय बेहिय तेहिय' एकाहिकं द्वयहिकत्रैयहिकोणां तत्र मुण्डिते शिरसि एकेनाह्ना यावत्प्रमाणा बालाग्रकोटय उत्तिष्ठन्ति ता एकाहिक्यः द्वाभ्यां तु द्वैयहिक्यः त्रिभिस्तु त्रैयहिक्यस्तासाम्-अर्थात् एकदिनमत्र द्विदिनमत्र त्रिदिनभवानाम् 'उक्कोसेण' उत्कर्षेण-उत्कृष्टतया 'सत्तरत्तपल्लेण' सप्तरात्रो

ही अंगुलों का होता है जुआ जो बैलों के कंधों पर रखा जाता है वह भी इतने ही अंगुलों का होता है । मुशल एवं नालिका यष्टिविशेष भी इतने ही अंगुलों की होती है । यहां प्रकरण में उपयोगी एक धनुष मात्र ही है इससे अतिरिक्त और नाम तो केवल प्रसङ्ग से हो लिख दिये हैं । इनका उपयोग अन्यत्र होता है । २ हजार धनुष का एक गव्यूत होता है । चार गव्यूत का एक योजन होता है । इस योजन प्रमाणवाला पल्य-धान्यपात्रविशेष के जैसा यह पल्य होता है अर्थात् एक योजन गहरा, एक योजन चौड़ा और एक योजन लम्बा ऐसा एक पल्य बनाना चाहिये इस पल्य में कम से कम एक दिन से लेकर तीन दिन तक और अधिक से अधिक सात दिन तक के मुण्डित हुए शिर पर उत्पन्न हुए बालाग्रों की जो कि देवकुरु और

६६ अशुदीने जोक डड डोय छे धनुष पणु आटलाज अशुदीनु डोय छे धूसडु-जे भणवना आधा पर भूकवाभा आवे छे ते पणु जेटला ज अशुदीनु डोय छे मुशल अने नालिका-यष्टि विशेष पणु जेटलाज अशुदीनी डोय छे अही प्रकरणमां उपयोगी जोक धनुष मात्र ज छे भील नामो इकत प्रसंगानुसार ज लभवाभा आव्या छे अन्यत्र आ सवने। उपयोग थाय छे, छे हजार धनुषनो जोक गव्यूत थाय छे चार गव्यूत परापर जोक योजन डोय छे आ योजन प्रमाणवाला पल्य-धान्य पात्रविशेष ना जेवु आ पल्य डोय छे जेटले के जोक योजन पडोणु अने जोक योजन लाणु जेवुं जोक पल्य अनवुं जेधेओ. आ पल्यमां जोछाभां जोछा जोक द्विवसथी भाडीने त्रयु द्विवस सुधी अने वधारेमा वधारे सात द्विवस सुधीना सु डित थयेला शिर पर उत्पन्न थयेला बालाग्रोनी-डे जेओ देवकुरु अने उत्तर

તપન્નાનામ્ વાલાગ્રકોટીનાં-દેવકુરુત્તરકુરુમનુપ્યવાલાગ્રભાગાનામ્ 'સંભદ્રે' સંભટ્ટઃ આ-
 કર્ણપૂરિતઃ 'સણિચિણ્' સન્નિચિતઃ સં-સમ્યક્ પ્રચયવિશેષાત્ નિચિતઃ-નિવિહીકૃતઃ,
 મરિણ્' મૃતઃ પૂર્ણઃ । 'મૂઢે ઇગાહિય વેહિય તેહિય' इत्यत्र प्राकृतत्वात् पष्ठो बहुवचन-
 लोपः सर्वत्र तृतीयार्थे पठिष्ठ 'तेण' तानि पूर्वोक्तानि खलु 'वालग्गा णो कुयेज्जा' वाला
 ग्राणि न कुध्येयुः प्रचयविशेषाद् विवराभावाद्वायोः प्रवेशासम्भवाच्चासारतां न प्राप्नुयुः
 अतएव 'णो परिविडंसेज्जा' न परिविध्वसेरन् कतिपय परिशाट्टनमपि स्वीकृत्य
 विध्वस्तानि न भवेयुः, तानीत्यस्यार्थवशाद्विभक्तिं विपरिणम्य द्वितीया बहुवचनान्तत
 याऽग्रेतन दहनादि क्रियान्वय इति तानि वालाग्राणि 'णो अग्गी डहेज्जा' अग्निः नो
 दहेत्-न भस्मी कुर्यात् 'णो वाए हरेज्जा' वातः वायुः न हरेत् देशदेशान्तरं न नयेत्
 अत्यन्तनिचितत्वा च्छ वह्नि वाय्वोः सङ्क्रमो न भवतीति तात्पर्यम् । तानि वालाग्राणि
 'णो पूइत्ताए इव्वमागच्छेज्जा' पूतितया पूतिभावं हव्य कदाचिदपि न गच्छेयुः न कदापि
 शटितभावं प्राप्नुयुरित्यर्थः ततः तेभ्यः पूर्वोक्तेभ्यो वालाग्रेभ्यः यद्वा 'तओणं' तत्
 तदनन्तर पूर्वोक्तप्रकारकपल्यभरणानन्तर मित्यर्थः 'वाससए' २ वर्षशते वर्षशते
 प्रतिवर्षशते 'एगमेग' एकमेकम्-एकैकम् 'वालग्गं' वालाग્રम् पूर्वोक्तस्वरूपं प्रमाणविशेषम्
 'अवहाय' अपहाय-अपहृत्य 'जावइएण' यावता-यत्प्रमाणेन 'कालेण' कालेन 'से

ઉત્તર કુરુ કે મનુષ્યો કી હી કોટિયોં કો લૂઘ ધાંસર કર મર દેના યાહિયે કહીં પર તિલ
 માત્ર મી સ્થાન યાલી ન રહે ઇસ ઢંગ સે વે ડસમેં મરના યાહિયે. ઇસ તરહ મરે જાને પર
 ડનમેં વિવર-છેદ નહીં રહેગા. વિવર નહીં રહેને સે વહાં વાયુ કા મી પ્રવેશ નહીં હો સકેગા, ઇસ-
 ડિયે ન વે સઢ્ઢ ગલ સકેંગે ઔર નં એક સ્થાન સે દૂસરે સ્થાન પર ડહાયે જાકર વાયુ દ્વારા રહે
 જા સકેંગે નિવિહરૂપ સે મરે રહેને કે કારણ ડન્હે અગ્નિ મી ભસ્મસાત્ નહીં કર સકેગી
 ઇસ તરહ જબ ડન વાલાગ્રકોટિયોં સે વહ પલ્ય આકર્ણ અચ્છી તરહ અત્યન્ત નિવિહરૂપ સે
 મર જાવે-તબ ડસમેં સે સૌ વર્ષ નિકલ જાને પર એક વાલાગ્રકોટિ નિકાલની યાહિયે ઇસ તરહ
 કરતે ૨ જિતને કાલ મેં વહ પલ્ય ડન વાલાગ્રકોટિયોં સે રિક્ત હોતા હૈ, થોડા સા મી વાલાગ્રો
 કા અંશ ડસમેં નહીં ચિપકા રહતા, અત્યન્ત રૂપ સે ડસ પલ્ય કો ડન વાલાગ્રો સે શુદ્ધિ હો

કુરુના માણસોના જ હોય-કોટિઓને એકદમ ઠાસી ઠાસીને ભરવામા આવે કોઈ પણ સ્થાને
 તલમાત્ર પણ સ્થાન ખાલી હોય નહીં તેમ તેમાં ભરવામા આવે આમ બધાપછી તેમાં
 વિવર રહેશે નહીં વિવર નહીં રહેવાથી ત્યાં વાયુ પણ પ્રવિષ્ટ થઈ શકશે નહીં એથી તેઓ
 સડશે નહીં ઝાગળશે નહીં અને વાયુ પણ તેમને એક સ્થાનથી ઊઠાવી ને અન્યત્ર લઈ
 જવામાં સમર્થ થશે નહીં નિમિડરૂપમા હોવાથી અગ્નિ પણ તેમને ભસ્મ કરી શકશે નહીં આ
 રીતે બધારે તે બાલાગ્ર કોટિઓથીતે પલ્ય આકર્ષુ સારી રીતે અતીવ નિમિડ રૂપમાં પૂરિત
 થઈ બધે ત્યાં તેમાં સો વર્ષ નીકલી જવા બદ એક બાલાગ્ર કોટિ બહાર ઠાઠવી બેઈ એ
 આમ કરતાં કરતાં બેટલા કાળમા તે પલ્ય તે બાલાગ્ર કોટિઓની રિક્ત થય છે બાલા
 ગ્રોના સ્વરૂપાશ પણ તેમાં રહે નહીં તે પલ્ય એક દમ બાલાગ્રોથી રિક્ત થઈ બધ, એટલે

પછે સ્ત્રીને' સઃ પૂર્વોક્તઃ પલ્લયઃ ક્ષીણઃ વાલાગ્રકર્ષણવશાત્ ક્ષયં પ્રાપ્તઃ આકૃષ્ટધાન્યકો-
ષ્ટાગારવત્ તથા 'નીરજ' નીરજાઃ-રજ ધૂલિસ્તત્સદૃશસ્વક્ષ્મવાલાગ્રસ્તસ્માન્નિષ્ક્રાન્તો ની-
રજાઃ રજસ્તુલ્ય સ્વક્ષ્મવાલાગ્રરહિતઃ કોષ્ટાગારવત્ તથા 'નિલ્લેખે' નિર્લેપઃ દેપરહિતઃ
અત્યન્તસશ્લેષેણ તન્મયત્વપ્રાપ્તવાલાગ્રલેપાપહારાત્ અપનીત ધાન્યલેપકોષ્ટાગારવત્ 'તથા
'નિષ્કિણ' નિષ્કિન્નતઃ અપનેતવ્યઃ દ્રવ્યાપનયનાન્નિષ્ઠાં રિક્તતાં ગતો 'ભવઈ' ભવતિ વિશિષ્ટ
પ્રયત્ન પ્રમાર્જિત કોષ્ટાગારવત્ યદ્વા નીરજ આદયસ્ત્રયોઽપિ સમાનાર્થોઃ શબ્દ અતિશયિત
શુદ્ધિ સૂચનપરાઃ 'સે તં પલ્લિઓવમે' તદેતત્ પલ્લયોપમમ્ । इदं संख्येयवर्षकोटीकोटी
પ્રમાણં વાદરપલ્લયોપમં बोध्यं यतोऽत्र पल्यगतवालाग्राणां संख्येयैरेव वर्षे रपहारसंभव
ઉક્તઃ । अस्य च यद्यपि वक्ष्यमाणसुषमसुषमादिकालमानादौ नोपयोगस्तथापि सुषम
સુષમા કાલ માનોપયોગિ સ્વક્ષ્મપલ્લયોપમં मुखेनावबोध्यं भवत्वितोदं प्रदर्शितम् । स्वक्ष्म-
પલ્લયોપમપ્રમાણં तु एवं विज्ञेयं, तथाहि पूर्वोक्तमेकैकवालाग्रमसंख्येय खण्डीकृत्य भूत-
स्य उत्सेधाङ्गुलयोजनप्रमाणायामविष्कम्भावगाहस्य पल्यस्य वर्षशते २ एकैक वाला-
ग्र खण्डापहारेण यावता कालेन सर्ववालाग्रखण्डापहारान्निर्लेपतास्यात् सोऽसंख्येय वर्ष

જાતી છે-અર્થાત્ પૂર્ણરૂપ સે જે વાલાગ્ર ઉપ પલ્લય મેં સે નિકલ જાતે છે તો इतने काल का नाम
પલ્લયોપમ કાલ છે इस पल्य में सख्यात कोटीकोटीप्रमाण वर्ष समाप्त हो जाते है. इसे वादर
પલ્લયોપમ કાલ કહાગયાહૈ. क्यों कि इस पल्य गत वालाग्रों का अपहार संख्यात वर्षों में ही हो
જાતા છે. इस पल्य का यद्यपि वक्ष्यमाण सुषमा सुषमादिकाल प्रमाण में उपयोग नहीं है परन्तु फिर
મી સુષમ સુષમા કાલ કે પ્રમાણ મેં ઉપયોગી જો સૂક્ષ્મ પલ્લયોપમ છે वह मुख से समझ में
આજાય इसलिये इसे यहां दिखलाया गया है सूक्ष्म पल्योपम का प्रमाण इस तरह से विज्ञेय
છે-પૂર્વોક્ત વાલાગ્રો મેં સે એક એક વાલાગ્ર કે અસંખ્યાત સ્ખંડ કર જેના યોગે જોઈએ જોઈએ
ઉપ પલ્લય કો ભરના યોગે इस अवस्था में इस पल्यकी लम्बाईचौड़ाई एव अवगाह उत्से-
ધાઙ્ગુલ યોજન પ્રમાણ હો જાવેગી, अब सौ वर्ष निकल जाने पर उसमें से एक २ वालाग्रस्खण्ड
કા અપહાર કરના યોગે इस तरह से करते २ जितने काल में वह पल्य उन सर्व वालाग्रों के

के तेमाथी स पूछुं पछे जादाओ महार काही नाभवामां आवे तो तेदवा काणतु नाम
પલ્લયોપમ કાલ છે. આ પલ્લયમાં સંખ્યાત કોટિ કોટિ પ્રમાણુ વર્ષ સમાપ્ત થઈ જાય છે અને
વાદર પલ્લયોપમ કહેવામાં આવે છે, કેમકે આ પલ્લયગત વાલાગ્રોના અપહાર સંખ્યાતવર્ષો
મા જ થઈ જાય છે જો કે આ પલ્લયનો વક્ષ્યમાણ સુષમ સુષમાદિ કાલ પ્રમાણમાં ઉપ-
યોગ નથી છતાં સુષમ સુષમાકાળના પ્રમાણમાં ઉપયોગી જે સૂક્ષ્મપલ્લયોપમ છે તે સુષેથી
સમજ મા આવી શકે એટલામાટે અહીં દર્શાવવા મા આવેલ છે. सूक्ष्मपल्योपमतुं प्रमाणु
આ પ્રમાણુ વિજ્ઞેય છે પૂર્વોક્ત વાલાગ્રોમાં એક એક વાલાગ્રના અસંખ્યાત અંકો કરી
નાખવા જોઈએ અને ત્યાર બાદ તેમના વડે આ પલ્લયને પૂરિત કરવું આ સ્થિતિ મા આ
પલ્લયની લંબાઈ પહેલાઈ તેમજ અવગાહ ઉત્સેધાઙ્ગુલયોજન પ્રમાણુ થઈ જશે હવે हर
સે વર્ષે એક વાલાગ્રખંડનો તેમાંથી અપહાર કરવો આ પ્રમાણુ જેટલા કાળમાં તે પલ્લય

કોટીકોટોપ્રમાણઃ કાલઃ સૂક્ષ્મપલ્યોપમમ્ । “વિચિત્રાકૃતિ રાચાર્યસ્ય” ઇતિ સૂત્રકારેણા
જુક્તમપીદં સ્વયં વિજ્ઞેયમ્ । इदं सूक्ष्मपल्योपममेवच प्रस्तुतोपयोगी । अन्यथाऽनुयोगद्वारा
દિદિભિઃ સહ વિરોધઃ પ્રસજ્યેતેતિ સર્વમુપપન્નમ્ । एवमग्रे सागरोपमेऽपि विज्ञेयमिति ।

અથ ગાથયા સાગરોપમસ્વરૂપમાહ—‘एएसि’ इत्यादि । ‘एएसि’ एतेषाम्—अनन्त-
रोक्तानां ‘पल्लानं’ पल्यानां—पल्योपमानां या ‘दसगुण्या कोडाकोडी हवेज्ज’ दश
गुणिता कोटी कोटी भवेत् ‘तं’ तत् ‘एगस्स’ एकस्य ‘सागरोवमस्स’ सागरोपमस्य
‘भवे परिमाणं’ परिमाणं भवेत् ॥१॥ इति । ‘एएणं सागरोवमप्पमाणेणं चत्तारि साग-
रोवमकोडाकोडोओ कालो सुसमसुसमा’ एतेन सागरोपमप्रमाणेन चतस्रः सागरोपम-
अपहार होते २ उनसे सर्वथा निर्लिप्त बन जाता है ऐसा यह असंख्यातकोटीकोटी वर्षप्रमाण-
वाला काल सूक्ष्म पल्योपम काल कहा गया है । यही विषय “एएण जोयणप्पमाणेण जे पल्ले”
इत्यादि सूत्रपाठ से लगाकर “णिट्ठिए मवह सेतं पल्लिओवमे” यहां तक के सूत्रपाठ द्वारा
स्पष्ट की गई है । यद्यपि यहां पर सूत्रकार ने सूक्ष्मपल्योपम के विषय में अपने स्वतेज रूप से
विचार प्रगट नहीं किये हैं परन्तु फिर भी “विचित्राकृतिराचार्यस्य” के अनुसार अनुक्त भी इसे
स्वयं समझ लेना चाहिये. क्योंकि यह सूक्ष्म पल्योपम ही प्रस्तुत में उपयोगी है । यदि ऐसा न
हो तो फिर अनुयोगादि द्वारों के साथ विरोध का प्रसङ्ग प्राप्त होगा, इसी तरह का कथन साग-
रोपम के संबंध में भी जानना चाहिये, अब सूत्रकार इस गाथा द्वारा सागरोपम के स्वरूप का
कथन करते हुए कहते हैं—

“एएसि पल्लानं कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिआ ।

त सागरोवमस्स उ एगस्स भवे परिमाणं ॥ १ ॥

પલ્યોપમ કી જો દશ ગુણિત કોટી કોટી હૈ વહી એક સાગરોપમ પ્રમાણ હૈ । अर्थात्
कोटी कोटो पल्योपम को १० दश से गुणित करने पर एक सागरोपम होता है ऐसे सागरोपम

તે બાલાગ્રેના અપહાર થો સત્રંથા નિર્લિપ્ત બના બાય એવો તે અસંખ્યાત કોટી કોટી
વર્ષ પ્રમાણ વાળો કાળ સૂક્ષ્મ પલ્યોપમ કાળ કહેવામા આવે છે એ જ વિષય “एएण
जोयणप्पमाणेण जे पल्ले” इत्यादि सूत्र पाठથી માંડીને ‘णिट्ठिए मवह से तं पल्लिओवमे’ અહીં
સુધીના સૂત્રપાઠ વડે સ્પષ્ટ કરવામા આવેલ છે, જો કે અહીં સૂત્રકારે સૂક્ષ્મ પલ્યોપમના
વિષે પોતાના સ્વતંત્ર રીતે વિચારો બ્રજા કર્યા નથી છતાં “ વિચિત્રાકૃતિરાચાર્યસ્ય ”
ના સુચન અહીં અનુક્ત છે તો પણ સમજી લેવું જોઈએ કેમકે આ સૂક્ષ્મ પલ્યોપમ જ
પ્રસ્તુતમા ઉપયોગી છે. જો આમ હોય નહિ તો પછી અનુયોગાદિ દ્વારો સાથે વિરોધની
સ્થિતિ ઉપસ્થિત થશે આ બાબત કથન સાગરોપમના સબધમા પણ બાણુવું જોઈએ,
હવે સૂત્રકાર આ ગાથા વડે સાગરોપમ ના સ્વરૂપ કથન કરતા કહે છે—

पएसि पल्लानं कोडा कोडी हवेज्ज दस गुणिआ ।

तं सागरोवमस्स उ एगस्स भवे परिमाणं ॥१॥

પલ્યોપમની જે દશ ગુણિત કોટી કોટી છે તેજ એક સાગરોપમનું પ્રમાણ છે, એટલે

કોટાકોટ્યઃ કાલઃ સુષમસુષમા, ચતુઃ સાગરોપમકોટાકોટી પ્રમિતઃ કાલઃ પ્રથમો-
 ડ્રકો ભવતોત્યર્થઃ ૧ । તથા 'તિણિ સાગરોવમકોટાકોટીઓ' તિસ્રઃ સાગરોપમ-
 કોટાકોટ્યઃ—ત્રિસાગરોપમકોટાકોટી રૂપઃ 'કાલો સુસમા' કાલઃ સુપમા, અયં કાલો
 દ્વિતીયોડ્રક इति ૨ । 'દો સાગરોવમકોટાકોટીઓ' દ્વે સાગરોપમકોટાકોટ્યો દ્વિસા-
 ગરોપમકોટાકોટીરૂપઃ 'કાલો સુસમદુસ્સમા' કાલ સુપમદુષ્પમા, અયં કાલસ્તૃતીયો-
 ડ્રક इति ૩ । 'વાયાલીસાપ વાસસહસ્સેદિ ઝણિયા' દ્વિચત્વારિંશત વર્ષસહસ્રૈરુનિ-
 કા—ન્યૂના 'પગા સાગરોવમકોટાકોટી' એકા સાગરોપમકોટાકોટી 'કાલો દુસ્સમસુ-
 સમા' કાલો દુષ્પમસુષમા, અય કાલશ્ચતુર્થોડ્રક इति ૪ । એકવીસ વાસસહસ્સાઈ
 કાલો દુસ્સમા' એકવિંશતિવર્ષસહસ્રાણિ કાલો દુષ્પમા અયં કાલઃ પઞ્ચમોડ્રકઃ इति
 ૫ । તથા 'એકવીસ વાસસહસ્સાઈ કાલો દુસ્સમદુસ્સમા' એકવિંશતિવર્ષસહસ્રાણિ કાલો
 દુષ્પમદુષ્પમા, અય કાલઃ ષષ્ઠોડ્રક इति । ૬ । અત્રેદં બોધ્યમ્—પ્રથમેડ્રકે ચતસ્રઃ
 સાગરોપમકોટાકોટ્યઃ દ્વિતીયે તિસ્રઃ, તૃતીયે દ્વે, ચતુર્થે દ્વિચત્વારિંશતસહસ્રવર્ષન્યૂના
 એકા સાગરોપમકોટાકોટી, પશ્ચમે એકવિંશતિસહસ્રવર્ષાણિ ષષ્ઠે ચ એકવિંશતિસહસ્રવર્ષા-
 નીતિ સર્વસંકલનયાડ્વસર્પિણીકાલો દશસાગરોપમકોટાકોટી પ્રમાણ इति । इत्यव-
 સર્પિणी कालनिरूपणम् ॥

અવોત્સર્પિણી કાલં નિરૂપયિતુમાહ—“પુનરવિ”ઇત્યાદિ । ‘પુનરવિ ઉત્સર્પિણી’
 પુનરપિ ઉત્સર્પિણ્યાઃ—ઉત્સર્પિણીકાલસ્ય ‘એકવીસ વાસસહસ્સાઈ કાલો દુસ્સમદુસ્સમા’

પ્રમાણ સે ચાર સાગરોપમ કોટાકોટી કા એક સુષમસુષમા કાલ હોતા હૈ. ઇસીકો અવસર્પિણી
 કા પ્રથમ આરક કહા ગયા હૈ તં ન સાગરોપમકોટાકોટી કા દ્વિતીય કાલ જો સુષમા હૈ વહ હોતા
 હૈ. દો સાગરોપમ કોટાકોટી કા તૃતીય કાલ જો સુષમ દુષ્પમા હૈ વહ હોતા હૈ. ૪૨ હજાર વર્ષ
 કમ ૧ કોટાકોટી સાગરોપમ કા દુષ્પમ સુષમા કાલ હોતા હૈ. યહ ચૌથા કાલ હૈ “એકવીસ
 વાસસહસ્સાઈ કાલો દુસ્સમા ” ૨૧ હજાર વર્ષ કા દુષ્પમા નામકા ૫૦ વર્ષ કાલ હોતા હૈ
 તથા ઇતને હી હજાર વર્ષ કા ૬ વર્ષ કાલ જો દુષ્પમ દુષ્પમા હૈ વહ હોતા હૈ. ઇસ તરહ સર્વ
 સંકલના સે અવસર્પિણી કાલ ૧૦ કોટાકોટી સાગરોપમ કા હોતા હૈ ઇસપ્રકાર સે અવસર્પિણી

કે કોટી કોટી પદ્ધતિપ્રમાણે ૧૦ વડે ગુણિત કરવાથી એક સાગરોપમ થાય છે એવા સાગરો-
 પમ પ્રમાણથી ચાર સાગરોપમ કોટા કોટીનો એક સુષમ સુષમા કાળ હોય છે. એને જ
 અવસર્પિણી નો પ્રથમ આરક કહેવામા આવેલ છે ત્રણ સાગરોપમ કોટા કોટીનો દ્વિતીય
 કાલ જે સુષમા છે તે હોય છે. એ સાગરોપમ કોટા કોટીનો તૃતીય કાળ જે સુષમ
 દુષ્પમા છે તે હોય છે ૪૨ હજાર વર્ષ કમ ૧ કોટા કોટી સાગરોપમનો દુષ્પમ સુષમાકાળ
 હોય છે, આ એથી કાળ છે “એકવીસ વાસસહસ્સાઈ કાલો દુસ્સમા” ૨૧ હજાર વર્ષનો
 દુષ્પમા નામે ૫ મો કાળ હોય છે. તથા આઠવાજ હજાર વર્ષનો ૬૬૦ કાળ જે દુષ્પમ-દુષ્પમા
 છે તે હોય છે આ પ્રમાણે સર્વ સંકલનાથી અવસર્પિણી કાળ ૧૦ કોટા કોટી સાગરોપમ

एकविंशतिर्वर्षसहस्राणि काल दुष्पमदुष्पमा इति उत्सर्पिण्याः प्रथमोऽरको १ । 'एवं' एवम् अनेन प्रकारेण अवसर्पिणीकालस्य 'पडिलोमं' प्रतिलोमं-पश्चानुपूर्व्या 'जेयव्वं' नेतव्य-ज्ञातव्य कियदवधिज्ञातव्यम् ? इत्याह-'जाव चत्तारि'इत्यादि । 'चत्तारि सागरोवम काल का निरूपण करके अब सूत्रकार उत्सर्पिणी कालका निरूपण करते हैं—“एव पडिलोम जेयव्वं जाव चत्तारि सागरोवम कोडाकोडीओ कालो सुसमसुसमा ६” उत्सर्पिणीकाल में प्रथम काल जो दुष्पमदुष्पमा है वह २१ हजार वर्ष का होता है इसे ही उत्सर्पिणी काल का प्रथम अरक कहा गया है इस तरह से उत्सर्पिणी काल के ६ छट्टे सुषममुषमा अरक तक कथन कर लेना चाहिये, अवसर्पिणीकाल में जो १ प्रथम अरक है वह उत्सर्पिणी काल में ६ छट्टा पड़ जाता है और अवसर्पिणीकाल में जो ६ छट्टा अरक है वह उत्सर्पिणी काल में प्रथम अरक हो जाता यहाँ पर जो अरको का कालप्रमाण अवसर्पिणी के प्रकरण में कहा गया है वह वैसा ही है—उतना ही है घट बढ़ नहीं है इस तरह अवसर्पिणी में अरको का प्रमाण और नम्बर इस प्रकार से रहता है—अवसर्पिणी के अरक—

१-सुषमसुषमा ४कोडाकोडी सागरोपम की स्थिति ।

२-सुषमा-३कोडाकोडी सागरोपम की स्थिति ।

३-सुषमदुष्पमा-२कोडाकोडी सागरोपम की स्थिति ।

४-दुष्पमसुषमा—४२हजार वर्ष कम १ कोडाकोडी सागरोपम की स्थिति

५-दुष्पमा-२१हजार वर्ष की स्थिति ।

६-दुष्पमदुष्पमा-२१हजार वर्ष की स्थिति ।

નો હોય છે આ પ્રમાણે અવસર્પિણી કાળનું નિરૂપણ કરીને હવે સૂત્રકાર ઉત્સર્પિણી કાળ નું નિરૂપણ કરે છે “પવં પડિલોમં જેયવ્વં જાવ ચત્તારિ સાગરોવમકોડાકોડીઓ કાલો સુસમસુસમા ૬” ઉત્સર્પિણી કાળમાં પ્રથમ કાલ જે દુષ્પમ દુષ્પમા છે તે ૨૧ હજાર વર્ષનો હોય છે એને જ ઉત્સર્પિણી કાળનો પ્રથમ આરક કહેવામાં આવેલ છે. આ પ્રમાણે ઉત્સર્પિણી કાળના ૬ઠ્ઠા સુષમા સુષમા આરક સુધીનું કથન સમજી લેવું જોઈએ. અવસર્પિણી કાળમાં જે ૧ પ્રથમ આરક છે તે ઉત્સર્પિણી કાળમાં ૬ ઠો હોય છે અને અવસર્પિ કાળમાં જે ૬ઠ્ઠો આરક છે તે ઉત્સર્પિણી કાળમાં ૧ પ્રથમ આરક થઈ જાય છે. અહીં જે આરકોના કાલ પ્રમાણ અવસર્પિણીના પ્રકરણમાં કહેવામાં આવેલ છે તે પ્રમાણે જ છે વધ ઘટ નથી આ રીતે અવસર્પિણીમાં આરકો નું પ્રમાણ અને ક્રમ આ પ્રમાણે રહે છે. અવસર્પિણી ના આરક—

૧ સુષમ સુષમા ૪ કોડા કોડી સાગરોપમની સ્થિતિ

૨ સુષમા— ૩ , , ,

૩ સુષમ દુષ્પમા ૨ , , ,

૪ દુષ્પમ સુષમા ૪૨ હજાર વર્ષ કમ ૧ કોડા કોડી સાગરોપમની સ્થિતિ

૫ દુષ્પમા ૨૧ હજાર વર્ષની સ્થિતિ

૬ દુષ્પમ દુષ્પમા ૨૧ હજાર વર્ષની સ્થિતિ.

કોઢાકોઢીઓ કાલો સુસમસુસમા' ચતસ્રઃ સાગરકોટાકોટયઃ કાલઃ સુપમસુપમા ઇતિ, યોઽવસર્પિण्याઃ પ્રથમો મેદઃ સ હ્રદ ષષ્ટત્વેનાવસેય ઇત્યર્થઃ । અત્રેદં બોધ્યમ્-ઉત્સર્પિण्या દુષ્પમદુષ્પમારૂપે પ્રથમેઽરકે એકવિંશતિવર્ષસહસ્રાણિ, દ્વિતીયે દુષ્પમારૂપેઽરકે એકવિંશતિ-વર્ષસહસ્રાણિ, દુષ્પમસુષ્પમારૂપે તૃતીયેઽરકે દ્વિચત્વારિશદ્વર્ષસહસ્રોના એકા સાગરોપમકોટા કોટી, સુષ્પમદુષ્પમારૂપે ચતુર્થેઽરકે દ્વે સાગરોપમકોટાકોટયૌ, સુષ્પમારૂપે પશ્ચમેઽરકે તિસ્રઃ સાગરોપમકોટાકોટયઃ, સુષ્પમસુષ્પમારૂપે ષષ્ઠેઽરકે ચતસ્રઃ સાગરોપમકોટાકોટયઃ ઇતિ સર્વ સંકલનયા દશ સાગરોપમકોટાકોટય એકસ્યા મુત્સર્પિण्याં ભવન્તીતિ ।

અથ પ્રકૃતમુપસહરન્-અવસર્પિण्या ઉત્સર્પિण्या ઉભયોશ્ચ કાલમાનમાહ-‘દસસાગરોવમ-કોઢાકોઢીઓ’ ઇત્યાદિ તત્ર અવસર્પિણીકાલ ઉત્સર્પિણીકાલઃ પ્ચ દશસાગરોપમકો ટે કોટિક્ । અવસર્પિણ્યુત્સર્પિણીરૂપં કાલચક્રં તુ । વિશતિસાગરોપમકોટાકોટિકમ્ ઇત્યર્થઃ ॥ સૂ. ૨૧ ॥

ઉત્સર્પિણી કાલ કે આરક—

- ૧-દુષ્પમસુષ્પમા-૨૧ હજાર વર્ષ કી સ્થિતિ ।
- ૨ - દુષ્પમા- ૨૧ હજાર વર્ષ કી સ્થિતિ ।
- ૩ -દુષ્પમસુષ્પમા-૪૨ હજાર વર્ષ કમ ૧ કોઢા કોઢી સાગરોપમ કી સ્થિતિ ।
- ૪-સુષ્પમદુષ્પમા-૨ કોઢાકોઢી સાગરોપમ કી સ્થિતિ ।
- ૫-સુષ્પમા-૩ કોઢાકોઢી સાગરોપમ કો સ્થિતિ ।
- ૬-સુષ્પમસુષ્પમા-૪ કોઢાકોઢી સાગરોપમ કી સ્થિતિ ।

‘હસ સત્ર કી સંકલના કરને સે ઉત્સર્પિણી કાલ મી ૧૦ કોઢાકોઢી સાગરોપમ કા હોતા હૈ હસ તરહ યહ અવસર્પિણીરૂપ ઔર ઉત્સર્પિણીરૂપ કાલ ચક્ર ૨૦ કોઢાકોઢી સાગરોપમ કા હોના કહા ગયા હૈ; યહી સત્ર વિષય “एएणं सागरोवमप्पमाणेणं चत्तारि सागरोवमकोडाको-ढिओ” સે લેકર “दस सागरोवमकोडाकोढीओ कालो उत्सर्पिणी, बीसं सागरोवमकोडाकोढीओ

ઉત્સર્પિણી કાળના આરક

- ૧ દુષ્પમ દુષ્પમા-૨૧ હજાર વર્ષની સ્થિતિ
- ૨ દુષ્પમા-
- ૩ દુષ્પમ સુષ્પમા ૪૨ વર્ષ કમ ૧ કોઢા કોઢી સાગરોપમની સ્થિતિ.
- ૪ સુષ્પમ દુષ્પમા ૨ કોઢા કોઢી સાગરોપમની સ્થિતિ,
- ૫ સુષ્પમા ૩ કોઢા કોઢી સાગરોપમની સ્થિતિ,
- ૬ સુષ્પમ સુષ્પમા ૪ કોઢા કોઢી સાગરોપમની સ્થિતિ

આ સર્વની સંકલના કરવાથી ઉત્સર્પિણી કાલ યષુ ૧૦ કોઢા કોઢી સાગરોપમ ને હોય છે. આ પ્રમાણે આ અવસર્પિણી ૩૫ અને ઉત્સર્પિણી ૩૫ કાલ ચક્ર ૨૦ કોઢા કોઢી સાગરોપમનું છે એવું કહેવામાં આવેલ છે, એ જ વાત “एएणं सागरोवमप्पमाणेणं

अनन्तरसूत्रे भगते कालस्वरूपमुक्तम्, सम्प्रति काले भरतस्वरूपं जिज्ञासमानस्तत्र प्रथमोपस्थितत्वादादौ सुषमसुषमारूपावसर्पिणीभेद पृच्छति—

मूलम्—जंबुद्वीवेणं भंते ! दीवे भरहे वासे इमीसे ओसप्पिणए सुसमसुसमाए समाए उत्तमकट्टपत्ताए भरहस्स वासस्स केरिसए आयार—
भावपडोयारे होत्था ? गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे होत्था. से जहाणामए आलिगपुक्खरेइ वा जाव णाणामणि पंच वण्णेहिं तणेहि य मणीहि य उवसोभिए. तं जहा—किण्हेहिं जाव सुक्किल्लेहि एवं वण्णो गंधो रमो फासो सहो य तणाण य मणीण य भाणियव्वो जाव तत्थ णं बहवे मणुस्सा मणुस्सोओ य आसयंति सयंति चिट्ठंति णिसीयंति तुयट्ठंति हसंति रमंति ललंति । तीसेणं समाए भरहे वासे बहवे उद्दाला कुद्दाला कयमाला णट्टमाला दंतमाला नागमाला सिंगमाला संखमाला सेयमाला णामं दुमागणा पण्णत्ता. कुसविकुसविसुद्धरूक्खमूला मूल-
मंतो कंदमंतो जाव बीयमंतो पत्तेहि व पुप्फेहि फलेहि य उच्छण्णपडि—
च्छण्णा सिरीए अईव २ उवसोभेमाणा चिट्ठंति । तिसेणं समाए भरहे वासे तत्थ तत्थ बहवे मेरुतालवणाइं हेरुतालवणाइं मेरुतालवणाइं पभयालवणाइं सालवणाइं सरलवणाइं सत्तबण्णवणाइं पूयफलिवणाइं ख-
ज्जूरीवणाइं णालिएरीवणाइं कुसविकुसविसुद्धरूक्खमूलाइं जाव चिट्ठंति । तीसेणं समाए भरहे वासे तत्थ तत्थ बहवे सेरिया गुम्मा णोमालि-
यागुम्मा कोरंटयगुम्मा बंधुजीवगुम्मा मणोज्ज-गुम्मा बीयगुम्मा
णगुम्मा कणइरगुम्मा कज्जयगुम्मा सिंदुवाग्गुम्मा मोग्गरगुम्मा जू-
हियागुम्मा मल्लियागुम्मा वासंतियागुम्मा वत्थुलगुम्मा कत्थुलगुम्मा

कालो ओसप्पिणो उस्सप्पिणो” यहा तत्र के सूत्रपाठ द्वारा कहा गया है इनके पदों की व्याख्या सुगम है ॥ २१ ॥

चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ” थी भा.६।ने “ दस सागरोवमकोडाकोडीओ कालो उस्सप्पिणी” वोसं सागरावमकाडा कोडीओ कालो ओसप्पिणी उस्सप्पिणी” अही” सुधीना सूत्र पाठ पडे कडेवाभा आवेल ठे. आ सर्व पडोनी व्याख्या करण ठे. ॥२१॥

सेवालगुम्मा अगत्थिगुम्मा भगदंतियोगुम्मा चंपगगुम्मा जाइगुम्मा
णवणीइयागुम्मा कुंदगुम्मा महाजाइगुम्मा रम्मा महामेघणिकुरम्बभूया
दसच्चवणं कुसुमं कुसुमैति । जे णं भरहे वासे बहुसमरमणिज्जं भूमिभागं
वायविधुयगसाला मुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं करेति । तीसेणं समाए
भरहे वासे तत्थतत्थ तहि ताहिं बहुईओ पउमलयाओ जाव सामलयाओ
णिच्चं कुसुमियाओ जाव लयावण्णओ । तीसेणं समाए भरहे वासे
तत्थतत्थ तहिं तहिं बहुईओ वणराईओ पण्णत्ताओ, किण्हाओ किण्हो भा-
साओ जाव रम्माओ रयमत्तगच्छप्पय कोरंटगभिगारग कोंडलग जीवंचीवग
नंदीमुहकविलपिगलक्खग कारंडवचक्कवायगकलहंसहंससारसअणेगस-
उणगणमिहुणवियरिया सदुण्णइयमहुर सरणाइयाओ सर्पिण्डिय दरिय
भमरमहुपरिपहकर परिंलैतमत्त छेप्पयकुसुमासवलोलमहुरगुमगुमंत गु-
जंत देसभागाओ अम्भितरपुप्फफलाओ बाहिरपत्तोच्छण्णाओ पत्तेहि
य पुप्फेहि य ओच्छन्नर्वालच्छत्ताओ साउफलाओ निरोययाओ अकंट-
याओ णाणाविहगुच्छगुम्भमंडवग सोहियाओ विचित्तसुहकेउभूयाओ
वावीपुक्खरिणी दीहिया सुनिवेसिय रम्मजाल हस्याओ पिंडिमणी-
हारिम सुगंधिं सुह सुरभि मणहरंच महया गंधद्धारिमुयंताओ सव्वा-
उयपुप्फफलसामिद्धाओ सुरम्माओ पासाईयाओ दरिसणिज्जाओ अभि-
रूवाओ पडिरूवाओ ॥सू०२२॥

छाया— जम्बूद्वीपे खलु भदन्त ! द्वीपे भरते वर्षे अस्या अवसर्पिण्याः सुषम सुषमाया
समायाम् उत्तम काष्ठा प्राप्तायां भरतस्य वर्षस्य कीदृशक आकारभावप्रत्यवतारोऽभवत्
गीतम् । बहुसमरमणीयो भूमिभागोऽभवत् स यथानामकः आलिङ्ग पुष्करमिति वा यावत्
नानाविधपञ्चवर्णैः तृणैश्च मणिमिश्र उपशोमित , तद्यथा—कृष्णैर्यावच्छुक्लैः, पच वर्णो गन्धो
रसः स्पर्शः शब्दश्च तृणानां च मणोनां च भणितव्यः, यावत् तत्र खलु बहवो मनुष्या
मानुष्यश्च आसते शेरते तिष्ठन्ति निषीदन्ति त्वग्वर्त्तयन्ति हसन्ति रमन्ते ललन्ति । तस्यां
खलु समाया भरते वर्षे बहव उद्दालाः कुडालाः मोदालाः कृतमालाः नृत्तमाला दन्तमालाः
नागमालाः शृङ्गमाला शङ्खमाला श्वेतमालाः नाम द्रुमगणा प्रकृताः कुशविकुशविशुद्धवृक्षमूला
मूलयन्त कन्दवन्त यावद् बीजवन्त पत्रैश्च पुष्पैश्च फलैश्च अवच्छन्नप्रतिच्छन्ना श्रिया

અતિવ અતીવ ઉપશોભમાનાસ્તિષ્ઠન્તિ । તસ્યાં સ્ત્રુ સમાયાં ભરતે વર્ષે તત્ર તત્ર વહ્નિ મેરુતાલવનાનિ હેરુતાલવનાનિ મેરુતાલવનાનિ પ્રમતાલવનાનિ સાલવનાનિ સરલવનાનિ સપ્તર્ણવનાનિ પૂર્ગફલીવનાનિ સર્જૂગેવનાનિ નાલિકેરીવનાનિ કુશવિકુશવિશુદ્ધવૃક્ષમૂલાનિ યાવત્ તિષ્ઠન્તિ । તસ્યાં સ્ત્રુ સમાયાં ભરતે વર્ષે તત્ર તત્ર વહ્નિઃ સૈરિકા ગુલ્માઃ નવમાલિકા ગુલ્માઃ કોરુણ્ટઃ ગુલ્મા વન્ધુત્રીવકગુલ્માઃ મનોડવચગુલ્માઃ વીજગુલ્માઃ વાણગુલ્મા કર્ણિકાર ગુલ્માઃ કુન્જકગુલ્મા સિન્દુવારગુલ્મા મુદ્રરગુલ્માઃ યૂથિકાગુલ્મા મલ્લિકાગુલ્મા વાસન્તિકાગુલ્મા વસ્તુલગુલ્મા કસ્તુલ ગુલ્માશૈવાલગુલ્મા અગસ્તિગુલ્માઃ મગદન્તિકા ગુલ્માઃ સ્વર્ણકગુલ્મા જાતિગુલ્માઃ નવનીતિકાગુલ્મા કુન્દગુલ્મા મહાજાતિગુલ્માઃ રમ્યા મહા-મેઘનિકુરમ્વભૂતાઃ દશાદ્ધવર્ણ કુસુમ કુસુમયન્તિ । યે સ્ત્રુ ભરતે વર્ષે ઘટ્ટસમરણીય ભૂમિભાગં ઘાતવિધૂતાગ્રશાલા મુક્તપુષ્પપુષ્પોપચારકલિન કુર્વન્તિ । તસ્યાં સ્ત્રુ સમાયાં ભરતે વર્ષે તત્ર તત્ર તસ્મિ તસ્મિન્ વહ્ન્ય ગચ્છના યાવત્ શ્યામલતા નિત્યં કુસુમિતા યાવત્ તતા વર્ણક । તસ્યાં સ્ત્રુ સમાયાં ભરતે વર્ષે તત્ર તત્ર તન્મિન્ તન્મિન્ વહ્ન્યો વનરાજ્ય પ્રશ્નપ્તાઃ કૃષ્ણઃ કૃષ્ણવમાસા યાવત્ રમ્યાઃ રત મત્તક પદ્મપદ્મકોરુક શૃંગારક કુણ્ડલ-કજીવઃ કજીવનન્દીમુખ કપિલ પિન્નલાક્ષક કારણવચકચાકાકલહંસ હંસસારસાનેકશકુન ગર્ણામથુન વિચારિતાઃ શબ્દોન્નદિનમધુરસ્વરનાદિતાઃ સંપિઢિતદૃષ્ટમરમધુકરીપ્રકરપરિલી યમાનમત્તપદ્મક કુસુમાસવલોલમધુરગુમગુમાયમાન અઙ્ગદેશભાગાઃ અભ્યન્તરપુષ્પફલાઃ વહ્નિઃ પત્રાવચ્છન્ના, પુષ્પૈશ્ચ ફલૈશ્ચાવચ્છન્નપ્રતિચ્છન્નાઃ સ્વાદુફલાઃ નીરોગકાઃ અકણ્ઠકાઃ નાનાવિધગુચ્છગુલ્મમણ્ડપકશોભિતાઃ વિચિત્રશુભકેતુભૂતાઃ વાપીપુષ્કરિણી દોધિકા સુનિવેશિત રમ્યજાલગૃહકા પિણ્ડમનિર્હારિમા શુભર્ણધ શુભસુરભિમનોહરાં ચ મહાગન્ધધ્રાણિ મુચ્ચન્ત્યઃ સર્વર્તુકપુષ્પફલસમૃદ્ધાઃ સુરમ્યા પ્રાસાદીયા દર્શનીયા અભિરૂપાઃ પ્રતિરૂપાઃ ॥ સૂ. ૨૨ ॥

ટીકા—‘જંબુદ્વીવે ણં મંતે ! દીવે’ इत्यादि ।

ગૌતમસ્વામી પૃચ્છતિ ‘જંબુદ્વીવે ણ મંતે ! દીવે મારહે વાસે ઇમીસે ઓસપ્પિ-
ણીય સુમમસુસમાપ સમાપ’ હે મદન્ત ! જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે ભરતે વર્ષે અસ્યાઃ વર્તમાનાયાઃ

ભરત ક્ષેત્ર મેં યહ કાલ સ્વરૂપ પ્રતિપાદિત હુઆ હૈ અત ભરતક્ષેત્ર કે સ્વરૂપ કો જાનને કી ઇચ્છાવાલે ગૌતમસ્વામી સવ સે પહિલે કહે ગયે સુષમસુપમા કાલ કે સ્વરૂપ જો કિ અવસર્પિણી કા પ્રથમ ઘરક કહા ગયા હૈ પૂછતે હૈ—

“જંબુદ્વીવે ણં મંતે ! દીવે મારહે વાસે ઇમીસે ઓસપ્પિણીય” इत्यादि ।

“જંબુદ્વીવે ણ મંતે ! દીવે મારહે વાસે ઇમીસે ઓસપ્પિણીય” હે મદન્ત ! હસ જમ્બૂદ્વીપ નામ

ભરતક્ષેત્રમા આ કાલ સ્વરૂપ પ્રતિપાદિત થયેલ છે, એથી ભરતક્ષેત્રના સ્વરૂપ વિષે જાણવાને ઈચ્છુક શ્રી ગૌતમ સ્વામી સર્વ પહેલા કહેવામા આવેલ સુષમ સુપમા નામક કાલના સ્વરૂપ વિષે—કે જે અવસર્પિણી ના પ્રથમ આરક ના રૂપમા કહેવામા આવેલ છે તથા શ્રીને પૂછે છે—

‘જંબુદ્વીવે ણં મંતે ! દીવે મારહે વાસે ઇમીસે ઓસપ્પિણીય’ इत्यादि सूत्र—२२ ॥

ટીકા—હે મદન્ત ! આ જંબુદ્વીપ નામના દ્વીપમા સ્થિત ભરતક્ષેત્રમા આ અવસર્પિણી

अवसर्पिण्याः सुषमसुषमायां समायां कालविभागरूपायां प्रथमेऽरके इत्यर्थः, तस्यां कीदृश्याम् ? 'उत्तमकट्टपत्ताए' उत्तमकाष्ठाप्राप्तायां प्रशस्तप्रकृष्टावस्थां गतायां सत्यां 'भरहस्स बासस्स केरिसए' भरतस्य वर्षस्य कीदृशकः—कीदृशः 'आयारभावपडोयारे' आकारभावप्रत्यवतारः स्वरूपपर्याय प्रादुर्भावः 'होत्था' अभवन् ? इति । भगवानाह—'गोयमा !' हे गौतम ! अस्या अवसर्पिण्याः सुषमसुषमायां समायां भरतवर्षस्य 'बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे होत्था' बहुसमरमणीयो भूमिभागोऽभवत् 'से जहा णामए आलिङ्गपुक्खरेइ वा जाव णाणामणि पचवण्णेहि तणेहि य मणीहिय उवसोमिए' तद्यथा नामकः आलिङ्गपुष्करमिति वा यावत् नानाविधपञ्चवर्णैः तृणैश्च मणि मिश्र उपशोभितः । अत्र यावच्छब्दसंग्राह्याणि पदानि राजप्रश्रीयसूत्रस्य पञ्चदश सूत्रादारभ्य एकोनविंशतितम सूत्रपर्यन्तात् सूत्रसमूहाद् विज्ञेयः, तदर्थश्चापि तत्रैव मत्कृतसुबोधिनी टीकातोऽवसेय

के द्वीप में स्थित भरतक्षेत्र में इस अवसर्पिणी काल के "सुषमसुषमाए समाए" सुषमसुषमा नाम के प्रथम आरक में "उत्तम कट्टपत्ताए" जब कि वह अपनी सर्वोत्कृष्ट अवस्था में वर्त रहा था "भरहवासस्स केरिसए आयारभावपडोयारे" भरतक्षेत्र का कैसा आकारभावप्रत्यवतार—स्वरूप "होत्था" था, इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं—"गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे होत्था, से जहा णामए आलिङ्गपुक्खरेइ वा जाव णाणामणिपंचवण्णेहि तणेहि य मणीहिय उवसोमिए" हे गौतम ! जब जम्बूद्वीपाश्रित इस भरतक्षेत्र में अवसर्पिणी काल के समय प्रथम सुषमसुषमा नाम का प्रथम आरक अपनी सर्वोत्कृष्ट अवस्था पर चलना था उस समय यहाँ भूमिभाग बहुसमरमणीय था और वह ऐसा बहुसम था जैसा कि मृदंग कामुसपुट होता है यावत् वह नाना प्रकार के पाच वर्णों वाले मणियों से एवं तृणों से सुशोभित था. यहाँ यावत्पद से जिन पदों का संग्रह किया गया है उनपदों को यदि जानना हो तो इसकेलिये राजप्रश्रीयसूत्र के १५ वें सूत्र से लेकर १९वें सूत्र तक के कथन को देखना चाहिये. वहाँ पर इसविषय को उसकी सुबोधिनी टीका

काणना 'सुषम सुसमाए' सुषम सुषमा नामना प्रथम आरक भा "उत्तम कट्टपत्ताए" ज्यारे ते पोतानी सर्वोत्कृष्ट अवस्थाभा वती" रह्यो હતો. "भरहवासस्स केरिसए आयारभावपडोयारे" भरतक्षेत्रનો કેવો આકાર ભાવ પ્રત્યવતાર—(સ્વરૂપ) 'હોત્થા' હતો. એના જવાબ-માં પ્રભુ કહે છે "ગોયમા ! બહુસમર મણિજ્જે ભૂમિભાગે હોત્થા સે જહાણામણ આલિંગ પુક્કરેઈ વાં જાવ નાણામણિ પંચવણ્ણેહિ તણેહિં ય મણીહિય ઉવસોમિય" હે ગૌતમ ! જ્યારે જ જમ્બૂદ્વીપાશ્રિત આ ભરતક્ષેત્રમાં અવસર્પિણી કાળના સમયે પ્રથમ સુષમસુષમા નામક પ્રથમ આરક પોતાની સર્વોત્કૃષ્ટ અવસ્થા પર ચાલી રહ્યો હતો, તે સમયમાં અહીં ભૂમિ ભાગ બહુ સમરમણીય હતો અને તે એવો બહુસમ હતો કે એવો મૃદંગના મુખ પર નો આકાર હોય છે. યાવત્ તે અનેક પ્રકારના પાંચ વર્ણ વાળા મણિઓ થી તેમ જ તૃણોથી સુશોભિત હતો અહીં યાવત્પદ થી જે પદોનો સંગ્રહ કરવામાં આવેલ છે તે પદો વિષે નો બાણવાની ધ્વજા હોય તો એના માટે રાજપ્રશનીય સૂત્રના ૧૫ માં સૂત્ર થી માહી ને ૧૯ માં સૂત્ર સુધીના કથનને જોવું જોઈએ અહીં આ વિષય ને તેની સુબો-

અતિવ અતીવ ઉપશોભમાનાસ્તિ'ઠન્તિ । તસ્યા ચલ્લુ સમાયા ભરતે વર્ષે તત્ર તત્ર વહ્નિ
 મેરુતાલવનાનિ હેરુતાલવનાનિ મેરુતાલવનાનિ પ્રમતાલવનાનિ સાલવનાનિ સરલવનાનિ
 સપ્તર્ણવનાનિ પૂર્ણફલીવનાનિ ચર્જૂરોવનાનિ નાલિકેરીવનાનિ કુશવિકુશવિશુદ્ધવૃક્ષમૂળાનિ
 યાવત્ તિષ્ઠન્તિ । તસ્યાં ચલ્લુ સમાયા ભરતે વર્ષે તત્ર તત્ર વહ્નિ સૈરિકા ગુલ્મા' નવમાલિકા
 ગુલ્માઃ કોરણ્ટકગુલ્મા વન્ધુજીવકગુલ્માઃ મનોડવચગુલ્માઃ વૌજગુલ્મા' વાણગુલ્મા કર્ણિકાર
 ગુલ્માઃ કુન્જકર્ણુલ્મા સિન્ધુવારગુલ્મા મુદ્રગુલ્મા' યૂથિકાગુલ્મા' મલ્લિકાગુલ્માઃ વાસન્તિ-
 કાગુલ્માઃ વસ્તુલગુલ્માઃ કસ્તુલ ગુલ્માશૈવાલગુલ્મા' અગસ્તિગુલ્મા મગદન્તિકા ગુલ્માઃ
 ચૈમ્પકગુલ્મા જાતિગુલ્માઃ નવનોતિકાગુલ્માઃ કુંદગુલ્મા મહાજાતિગુલ્મા રમ્યા મહા-
 મેઘનિકુરમ્વભૂતાઃ દશાર્દેવર્ણ કુસુમ કુસુમયન્તિ । યે ચલ્લુ ભરતે વર્ષે વહ્નિસમરણીય ભૂમિભાગં
 દ્વાતવિધૂતાગ્રશાલા મુકપુષ્પપુન્જોપચાન્કલિન કુર્વન્તિ । તસ્યા ચલ્લુ સમાયા ભરતે વર્ષે
 તત્ર તત્ર તસ્મિન્ તસ્મિન્ વહ્નિય પન્થલના' યાવત્ દયામલતાઃ નિત્ય કુસુમિના યાવત્ તતા
 વર્ણક । તસ્યાં ચલ્લુ સમાયાં ભરતે વર્ષે તત્ર તત્ર તસ્મિન્ તસ્મિન્ વહ્નિયો વનરાજય
 પ્રશ્નપ્તાઃ કૃષ્ણઃ કૃષ્ણવમાસા યાવત્ રમ્યાઃ રત મત્તક પદ્મપદ્મકોરક મૃદ્ધારક કુણ્ડલ-
 કજીવન્જીવનન્દીમુષ્ણ કપિલ પિન્ગલાક્ષક કારણ્ડવચકવાકલ્લહંસ હંસસારસાનેકશકુન
 ગણમિથુન વિચારિતાઃ શશ્વોન્નદિતમધુરસ્વરનાદિતાઃ સમ્પિન્દિતદત્તધ્રમરમધુકરીપ્રકરપરિલી
 યમાનમત્તપદ્મપદ કુસુમાસવલોલમધુરશુભગુમાયમાન અન્નદેશભાગાઃ અન્નપન્તરપુષ્પફલાઃ
 વહ્નિઃ પત્રાવચ્છન્ના, પુષ્પૈશ્ચ ફલૈશ્ચાવચ્છન્નપ્રતિચ્છન્નાઃ સ્વાદુફલાઃ નીરોગકાઃ અકણ્ઠકાઃ
 નાનાવિધગુચ્છગુલ્મમણ્ડપકશોભિતાઃ વિચિત્રશુભકેતુભૂતાઃ વાપીપુષ્કરિણી દોધિકા સુનિવેશિત
 રમ્યજાલગૃહકા પિણ્ડમનિર્હારિમા યુગર્ધિ શુભસુરમિમનોહરાં ચ મહાગન્ધગ્રાણિ મુચ્ચન્ત્યઃ
 સર્વેષુકપુષ્પફલસમૃદ્ધાઃ સુરમ્યા પ્રાસાદીયા દર્શનીયા અભિરૂપાઃ પ્રતિરૂપાઃ ॥સૂ. ૨૨॥

ટીકા—‘જંબુદ્વીવે જં મંતે ! દીવે’ इत्यादि ।

ગૌતમસ્વામી પૃચ્છતિ ‘જંબુદ્વીવે જં મંતે ! દીવે મારહે વાસે ઇમીસે ઓસપ્પિ-
 ણીય સુમમસુસમાય સમાય’ હે મદન્ત ! જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે ભરતે વર્ષે અસ્યાઃવર્તમાનાયાઃ

ભરત ક્ષેત્ર મેં યહ કાલ સ્વરૂપ પ્રતિપાદિત હુઆ હૈ અત ભરતક્ષેત્ર કે સ્વરૂપ કો
 જાનને કી ઇચ્છાવાળે ગૌતમસ્વામી સવ સે પહિલે કહે ગયે સુષમસુપમા કાલ કે સ્વરૂપ જો
 કિ અવસર્પિણી કા પ્રથમ અરક કહા ગયા હૈ પૃચ્છતે હૈ—

“જંબુદ્વીવે જં મંતે ! દીવે મારહે વાસે ઇમીસે ઓસપ્પિણીય” इत्यादि ।

“જંબુદ્વીવે જં મંતે ! દીવે મારહે વાસે ઇમીસે ઓસપ્પિણીય” હે મદન્ત ! ઇસ જમ્બૂદ્વીપ નામ

ભરતક્ષેત્રમા આ કાલ સ્વરૂપ પ્રતિપાદિત થયેલ છે, એથી ભરતક્ષેત્રના સ્વરૂપ વિષે
 બાલ્યવાને ઇન્દ્રિયક શ્રી ગૌતમ સ્વામી સર્વ પહેલા કહેવામા આવેલ સુષમ સુષમા નામક કાલના
 સ્વરૂપ વિષે—કે જે અવસર્પિણી ના પ્રથમ આરક ના રૂપમા કહેવામા આવેલ છે પ્રથુ શ્રીને
 પૂછે છે—

‘જંબુદ્વીવે જં મંતે ! દીવે મારહે વાસે ઇમીસે ઓસપ્પિણીય’ इत्यादि सूत्र—२२ ॥

ટીકા—હે મદન્ત ! આ જમ્બૂદ્વીપ ના

સ્થિત ભરતક્ષેત્રમા આ અવસર્પિણી

अवसर्पिण्याः सुषमसुषमायां समाया कालविभागरूपायां प्रथमेऽङ्के अन्यर्थः, तस्यां कीदृश्याम् ? 'उत्तमकट्टपत्ताए' उत्तमकाष्ठाप्राप्तायां प्रशस्तप्रकृष्टावस्था गतायां सन्यां 'भरहस्स वासस्स केरिसए' भरतस्य वर्षस्य कीदृशः—कीदृशः 'आयारभावपडोयारे' आकारभावप्रत्यवतारः स्वरूपपर्याय प्रादुर्भावः 'होत्था' अभवत् ? इति । भगवानाह—'गोयमा !' हे गौतम ! अस्या अवसर्पिण्याः सुषमसुषमाया समायां भरतवर्षस्य 'बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे होत्था' बहुसमरमणीयो भूमिभागोऽभवत् 'मे जहा णामए आलिणुक्खरेइ वा जाव णाणामणि पंचवण्णेहि तणेहि य मणीहिय उवसोभिण' तत्र या नामकः आलिङ्गपुष्करमिति वा यावत् नानाविधपञ्चवर्णैः तृणैश्च मणि मिश्र उपगोमितः । अत्र यावच्छब्दसंग्राह्याणि पदानि राजप्रश्रीयसूत्रस्य पञ्चदश सूत्रादारभ्य एकोनविंशतितम सूत्रपर्यन्तात् सूत्रसमूहाद् विज्ञेयः, तदर्थश्चापि तत्रैव मत्कृतसुबोधिनी टीकातोऽवसेय

के द्वीप में स्थित भरतक्षेत्र में उस अवसर्पिणी काल के "सुषमसुषमाए समाए" सुषमसुषमा नाम के प्रथम आरक में "उत्तम कट्टपत्ताए" जब कि वह अपनी सर्वोत्कृष्ट अवस्था में वर्त रहा था "भरहवासस्स केरिसए आयारभावपडोयारे" भरतक्षेत्र का कैसा आकारभावप्रत्यवतार—स्वरूप "होत्था" था, इसके उत्तर में प्रसु कहते हैं—"गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे होत्था, से जहा णामए आलिणुक्खरेइ वा णाणामणिपंचवण्णेहि तणेहि य मणीहिय उवसोभिण" हे गौतम ! जब जम्बूद्वीपाश्रित इस भरतक्षेत्र में अवसर्पिणी काल के समय प्रथम सुषमसुषमा नाम का प्रथम आरक अपनी सर्वोत्कृष्ट अवस्था पर चलता था उस समय यहां भूमिभाग बहुसमरमणीय था और वह ऐसा बहुसम था जैसा कि मृदंग कामुसपुट होता है यावत् वह नाना प्रकार के पांच वर्णों वाले मणियों से एवं तृणों से सुगोमित था यहां यावत्तद से जिन पदों का संग्रह किया गया है उनपदों को यदि जानना हो तो इसकेलिये राजप्रश्रीयसूत्र के १५ वें सूत्र से लेकर १९वें सूत्र तक के कथन को देखना चाहिये. वहां पर इसविषय को उसकी सुबोधिनी टीका

काणना 'सुषम सुसमाए' सुषम सुषमा नामना प्रथम आरक मां "उत्तम कट्टपत्ताए" ज्यारे ते पोतानी सर्वोत्कृष्ट अवस्था मा वती" रह्यो इतो 'भरहवासस्स केरिसए आयारभावपडोयारे' भरतक्षेत्रने केवे आकार भाव प्रत्यवतार—(स्वरूप) 'होत्था' इते जेना जवाभ मा प्रसु छडे छे "गोयमा ! बहुसमर मणिज्जे भूमिभागे होत्था से जहा णामए आलिण पुक्खरेइ वा जाव णाणामणि पंचवण्णेहि तणेहि य मणीहिय उवसोभिण" हे गौतम ! ज्यारे ज जम्बूद्वीपाश्रित आ भरतक्षेत्रमा अवसर्पिणी काणना समये प्रथम सुषमसुषमा नामक प्रथम आरक पोतानी सर्वोत्कृष्ट अवस्था पर आली रह्यो इतो, ते समयमां अही भूमि भाग बहु सम रमणीय इतो अने ते जेवे बहुसम इतो के जेवे मृदंगना मुष्पुट ने आकार होय छे यावत् ते अनेक प्रकारना पांथ वल्लु वाणा मणिज्जे थी तेम ज तृणोथी सुशोषित इतो अही यावत्तद थी जे गदोने स अछे करवामा आवेछ छे ते पढे विषे जे जल्लुवानी छिछा होय तो जेना माटे राजप्रश्रीय सूत्रना १५ मा सूत्र थी मांडी ने १६ मा सूत्र सुधीना कथनने जेवुं जेछे जे अही आ विषय ने तेनी सुभा-

इति । यद्यद्वर्णविशिष्टैस्तृणैश्च मणिभिश्च स उपशोभितस्तत्तद्वर्णविशिष्ट तृणमणि-
प्रतिपादनायाह—‘तं जहा—किण्हेहि जाव सुक्किल्लेहि’ तद्यथा—कृष्णैर्यावच्छुक्लैरिति ।
अत्र यावत्पदेन ‘नीलैः लोहितैः हारिद्रैः’ इति संग्राहम् तथा ‘एवं वर्णो गंधो रसो फा-
सो सद्यो य तणाण य मणीण य भाणियव्वो’ तेषां तृणानां मणीनां च वर्णो गन्धो-
रसः स्पर्शः शब्दश्च भणितव्यः । वर्णादि स्पर्शान्तवर्णनं राजप्रश्नीयसूत्रस्य पञ्चदश-
सूत्रादारभ्य एकोनविंशतितमसूत्रपर्यन्तेऽवलोकनीयम् । शब्दवर्णनं तस्यैव त्रिपष्टितमचतु-
ष्षष्टितमेति सूत्रद्वयेऽवलोकनीयम् । तथा ‘जाव’ यावत् ‘तत्थ णं वहवे मणुस्सा मणु-
स्सीओ य आसयंति’ तत्र खलु बहवो मनुष्या मानुष्यश्च आसते, अत्र यावत्पदेन
पुष्करिण्यः पर्वतकाः गृहकाणि मण्डपकाः पृथिवीशिलापट्टकाश्च ज्ञातव्याः । तत्र पुष्क-
रिणीवर्णनं तस्यैव पञ्चपष्टितमसूत्रतः पर्वतकर्णनं पटपष्टितमसूत्रतः गृहकवर्णनं सप्त-
षष्टितमसूत्रतः, मण्डपकवर्णनं पृथिवीशिलापट्टकवर्णनं च अष्टपष्टितमसूत्रतो बोध्यम् ।

द्वारा स्पष्ट किया गया है । —‘किण्हेहि जाव सुक्किल्लेहि एव वर्णो, गंधो, रसो, फासो सद्योयतणाण
य मणीण य भाणियव्वो मणुस्सा जाव तत्थ ण वहने माणुसा माणुसीओ य आसयंति सयति
चिट्ठंति णिसीयंति तुयट्ठंति हसति रमंति ललंति’ वे वहा के मणि और तृण कृष्णवर्ण यावत् नीलव
र्ण, लोहित (लाल) वर्ण एव पीत वर्ण इन वर्णों से एव शुक्लवर्ण से युक्त हैं । इस उन मणि-
यों और तृणों के गन्ध, रस, स्पर्श और शब्द का वर्णन जैसा कि राजप्रश्नीय सूत्र के १५ वे
सूत्र से लेकर १९ वें सूत्र तक वहा पर किया गया है उसी प्रकार से यहा पर भी वह वर्णन
कर लेना चाहिये इनके शब्दों का वर्णन राजप्रश्नीय सूत्र के ६३ वे सूत्र में और ६४ वें सूत्र में
किया गया है । यावत् वहां पर अनेक मनुष्य और मनुष्य सीया उठती बैठती रहती हैं इत्यादि
यहा यावत्पद से पुष्करिणियों का, पर्वतो का, गृहों का, मण्डपो का और पृथिवीशिलापट्टकों का
ग्रहण हुआ है । पुष्करिणियों का वर्णन राजप्रश्नीय सूत्र के ६५ वे सूत्र से पर्वतों का वर्णन ६६
वें सूत्र से, गृहों का वर्णन ६७ वें सूत्र से एव मण्डपो का और पृथिवीशिलापट्टों का वर्णन ६८

ધિની નામની ટીકા વડે સ્પષ્ટ કરવામાં આવેલ છે ” “કિણ્હેહિ જાવ સુક્કિલ્લેહિ એવં વર્ણો,
ગંધો, રસો ફાસો સદ્યોય તણાણય મણીણય ભાણિયવ્વો જાવ તત્થ ણં વહવે મણુસ્સા
માણુસીઓ ય આસયંતિ, સયંતિ, ચિટ્ઠંતિ, ણિસીયંતી, તુયટ્ઠંતિ રમંતિ, લલંતિ” ત્યાંના
મણિ અને તૃણ કૃષ્ણ વર્ણુ યાવત્ નીલવર્ણુ, લોહિતવર્ણુ પીતવર્ણુ તથા શુક્લ વર્ણુ થી
શુક્લ છે આ પ્રમાણે તે મણિઓ અને તૃણોના ગન્ધ, રસ, સ્પર્શ અને શબ્દનું વર્ણન
જે પ્રમાણે રાજપ્રશ્નીય સૂત્રના ૧૫ માં સૂત્રથી માહીને ૧૯ માં સૂત્ર સુધી માં કરવામાં
આવ્યું છે તે પ્રમાણે જ અહીં પણ વર્ણન કરી લેવું જોઈએ એમના શબ્દોનું વર્ણન
રાજપ્રશ્નીય સૂત્રના ૬૩ માં સૂત્ર અને ૬૪ માં સૂત્રમાં કરવામાં આવેલ છે. યાવત્ ત્યાં
અનેક પુરુષો, સ્ત્રીઓ ઉઠતાં, બેસતા રહે છે ઇત્યાદિ અહીં યાવત્ પદ થી પુષ્કરિણીઓ,
પર્વતો, ગૃહો મંડપો અને પૃથિવી શિલા પટ્ટકોનું ગ્રહણ થયેલું છે પુષ્કરિણીઓનું
વર્ણન રાજપ્રશ્નીય સૂત્રના ૬૫ માં સૂત્ર થી, પર્વતો નું વર્ણન ૬૬ સૂત્ર થી ગૃહોનું વર્ણન

અર્થોઽપિ તત્રૈવ મત્કૃતસુવોધિની ટીકાતોઽવસેયઃ । તથા 'આસયતિ સયંતિ' આસતે શેરતે' ઇત્યાદીનામર્થોઽસ્યૈવાગમસ્ય પૃષ્ઠ સૂત્રતો વિજ્ઞેયઃ । કેવલં 'શેરતે' ઇત્યસ્ય અન્યો ડ્યો વોધ્યઃ । તત્ર દેવાનાં નિદ્રાયા અભાવાત્ 'શેરતે' શય્યોપરિશરીરપ્રમાગ્નમાત્રં કુર્વન્તિ ઇત્યર્થઃ મનુષ્યાણાં તુ શરીરપ્રસારણસ્ય નિદ્રાયાઽવાપિ સંભવાત્ અત્ર શેરતે=શય્યોપરિશરીરં પ્રસારયન્તિ નિદ્રાન્તિ ચેત્યર્થ ઇતિ । શિષ્યોપકારપરાયણેન ગુરુણા શિષ્યાઽવિજિજ્ઞાસિતોઽપિ વિષયઃ સ્વયં વક્તવ્ય ઇતિ પ્રથમારકપ્રભાવજનિત ભગતક્ષેત્રભૂમિસૌમાગ્યં સૂચયિતુમાહ—'તીસેળં-ઇત્યાદિ । 'તીસેળ' તસ્યાં પૂર્વોક્તાયાં ખલુ 'સમાપ' સમાયાં મુપમ-સુપમાયાં 'મારહે-વાસે વહવે' ભરતે વર્ષે વહવઃ—અનેકે 'ઉદાલા કુદાલા' ઉદાલાઃ કુદાલાઃ, 'કયમાલા' કૃતમાલાઃ 'નટમાલા દંતમાલા નાગમાલા સિંગમાલા સગ્ગ માલા સેય-માલા ણામં' નૃતમાલાઃ દન્તમાલાઃ નાગમાલાઃ શૃંગમાલાઃ શહમાલાઃ શ્વેત માલાઃ નામ

વેં સૂત્ર સે જાન લેના ચાહિયે હન મૂત્રોકે પદો કી વ્યાખ્યા હમને ડનકી સુવોધિના ટીકા મેં કર દી હૈ "આસતે શેરતે" ઇત્યાદિ ક્રિયા પદો કી વ્યાખ્યા ડસી આગમ કે છટ્ટે સૂત્ર મેં કી જા ચુકી હૈ । "શેરતે" શબ્દ કા અર્થ યથાપિ સોના હોતા હૈ પર વહાં યહ અર્થ વિવક્ષિત નહીં હુવા હૈ ક્યો કિ દેવોં કો નિદ્રા કા અભાવ રહતા હૈ ડસલિયે ડસકા અર્થ કેવલ યહા પર શય્યા કે ડપર વે દેવ ઓર દેવિયાં અપને અપને શરીર કો પસાર કર લેટ જાતી હૈ ઁસા હી "શેરતે" ડસ ક્રિયા-પદ કા અર્થ ક્રિયા ગયા હૈ પર યહ અર્થ યહાં નહીં ક્રિયા હૈ ક્યોં કી મનુષ્યોં મેં શય્યા કે ડપર શરીર પ્રસારણ મી દેસા જાતા હૈ ઓર નિદ્રા લેના મી દેસા જાતા હૈ ડસલિયે શેરતે ક્રિયા-પદ કા અર્થ યહા પર "વે લેટતે મી હૈ ઓર નિદ્રા મી લેતે હૈ" ઁસા હી કરના ચાહિયે ડસ નીતિ કે અનુસાર કિ ગુરુ કે દ્વારા જો કિ શિષ્યો કે ડપકાર કરને મેં હી પરાયણ રહતે હૈં શિષ્યજનોં દ્વારા અવિજિજ્ઞાસિત મી વિષય સ્વયં વતાના પ્રકટ કરના ચાહિયે, અત્ર સૂત્રકાર ભારતક્ષેત્ર કી ભૂમિ કે સૌમાગ્ય કો સૂચિત કરને કે લિપ્ કહતે હૈં 'તીસે ણં સમાપ ભરહે વાસે વહવે ડદાલા કુ-

૬૭ મા સૂત્ર થી તેમ જ મ ડપો અને પૃથિવી શિલાપટ્ટકોનુ વષ્ટુન ૬૮ મા સૂત્રથી કરવામા આવેલ છે આ સૂત્રોના પદોની વ્યાખ્યા તેની સુવોધિની ટીકામા કરવામા આવેલ છે. "આસતે શેરતે" ઇત્યાદિ ક્રિયાપદોની વ્યાખ્યા આ જ આગમના ૬ સૂત્રમા કરવામા આવેલ છે "શેરતે" શબ્દનો અર્થ જો કે 'મુષ્ણવુ' થાય છે. પરંતુ અહીં આ અર્થ વિવક્ષિત નથી કેમ કે દેવો સૂતા નથી એથી આ શબ્દનો અર્થ ફક્ત અહીં શય્યાની ડપર તે દેવ અને દેવીઓ પોતાના શરીર ને પ્રસૂત કરી ને ફક્ત લેટે છે. અહીં 'શેરતે' ક્રિયા પદ નો અર્થ મનુષ્યના સંદર્ભમા કરવામા આવેલ છે તે રૂપમા કરવામા આવેલ છે. મનુષ્યો શય્યા પર શરીરનુ પ્રસારણ કરે છે અને નિદ્રાધીન પણ થાય છે. એથી 'શેરતે' ક્રિયા પદનો અર્થ અહીં તેઓ લેટે પણ છે અને નિદ્રાધીન પણ થાય છે. એવો કરવો જોઈએ આ નીતિ મુજબ શિષ્યોના ડપકારમા રત શુદ્ધ શિષ્યો વડે અવિજિજ્ઞાસિત વિષયના સંબંધમા પણ જાને યથા સમય રૂપેતા કરતા રહે છે. તે મુજબ હવે સૂત્રકાર ભારતક્ષેત્રની ભૂમિના સૌમાગ્ય ને સૂચિત કરવા માટે કહે છે—"તીસેળ સમાપ ભરહે વાસે

પ્રસિદ્ધાઃ 'દુમગણા' દુમગણાઃ ઉત્તમવૃક્ષ જાતિ વિશેષસમૂહાઃ 'પણ્ણત્તા પ્રજ્ઞપ્તાઃ મયા-
 ઽન્યૈશ્ચ તીર્થકરૈઃ । તે ચ કીદૃશાઃ ?' इति निज्ञासायामाह—'कुस-विकुसविमुद्गरुक्ख-
 मूला' कुश विकुशविशुद्धवृक्षमूलाः तत्र कुशाः-दर्भाःविकुशाः वल्गजादयस्तृणविशेषाश्चै-
 ति कुश विकुशास्तैर्विशुद्धं-रहितं वृक्षमूलं वृक्षाधोभागो येषां ते तथा, मूलमिह शाखा-
 दोना मपि आदिभागो लक्षणया गृह्यते, ततश्च सकलवृक्षमत्कमूलवापनायेह वृक्षपदमु-
 पात्तम् । तेन सर्वेऽपि वृक्षाः स्वस्वमूलेषु शाखा प्रशाखादि मूलेषु च कुशविकुशवर्जिता
 इत्यर्थः । पुनः कीदृशास्ते ? इत्याह—'मूलमंतो' मूलवन्त -अत्र प्रशस्तार्थे मतुप् प्रत्ययः
 तेन दूरावगाढप्रशस्तमूलयुक्ता इत्यर्थः एवमग्रेऽपि 'कंदमंतो जाव' कन्द वन्त यावत् या-
 वत्पदेन जगती वनगतवृक्षगणवत् सर्व विशेषणं ग्राह्यम् तदर्थश्च तत्सङ्गा द्बोधः, वृक्षव-
 वर्णनं च पञ्चमसूत्राद्वोध्यम् । क्रियदवधि विशेषणं वृक्षस्य संग्राह्यम् । इत्याह 'वीय-
 मंतो' बीजवन्तः प्रशस्तबीजयुक्ताः इति पर्यन्तम्, तथा 'पत्तेहिय पुप्फेहिय फलेहिय उ-

દાલા ,કયમાલા નદમાલા દંતમાલા, નાગમાલા, મિગમાલા સસમાલા, સેયમાલા જામ દુમગણા પ-
 ણ્ણત્તા" उस सुषम सुषमा काल में इस भारत क्षेत्र में अनेक उदाल, कुदाल, मोदाल, कृतमाल,
 वृत्तमाल, दन्तमाल, नागमाल, शृङ्गमाल शङ्खमाल और श्वेतमाल नामके प्रसिद्ध उत्तमवृक्ष जाति
 के उत्तम वृक्षों का समूह कहा गया है "कुस विकुस विसुद्धरुक्खमूला मूलमंतो, कंदमतो जाव
 वीयमतो पत्तेहि य पुप्फेहि, फलेहि य उच्छण्णपडिच्छण्णा सिरिए अईव अईव उवसोभेमाणा चिट्ठ
 ति" ये सब वृक्ष अपने अपने मूल भागों में और शाखा प्रशाखा आदि के मूल स्थानों में कुश
 और विकुशवल्गज आदि तृण विशेषों से रहित है । वृक्षों का जो अधोभाग होता है वह यहां
 मूल शब्द से गृहीत हुआ है । तथा लक्षणा से शाखादिकों का भी आदि भाग गृहीत हो जाता
 है तथा ये सब वृक्ष प्रशस्त मूल वाले हैं क्योंकि इनके मूल जड़े बहुत बहुत दूरदूर तक जमीन
 में गहरे गये हुए हैं । इसी तरह से ये सब वृक्ष प्रशस्त कन्दों वाले हैं यहां आगत यावत्

બહુવે ઉદાલા કુદાલા કયમાલા નદમાલા, દંતમાલા, નાગમાલા, સિંગમાલા, સંજમાલા,
 સેયમાલા, જામ દુમગણા પણ્ણત્તા" આ સુષમ સુષમા કાલમાં આ ભરત ક્ષેત્રમાં અનેક
 ઉદાલ, કુદાલ, મોદાલ, કૃતમાલ, દંતમાલ, નાગમાલ, શૃંગમાલ, શખમાલ અને
 શ્વેતમાલ નામના પ્રસિદ્ધ ઉત્તમ વૃક્ષ જાતિના ઉત્તમ વૃક્ષ સમૂહો કહેવામાં આવેલ છે
 "કુસવિકુસવિસુદ્ધરુક્ખમૂલા મૂલમંતો કંદમંતો જાવ વીયમતો પત્તેહિય પુપ્ફેહિ, ફલે-
 હિ, ય ઉચ્છણ્ણ પડિચ્છણ્ણ સિરોપ અઈવ ૨ ઉવસોભેમાણા ચિટ્ઠતિ" આ સર્વ વૃક્ષો
 પોત પોતાના મૂળ ભાગોમાં અને શાખાપ્રશાખા આદિના મૂળ સ્થાનોમાં કુશ અને વિકુ-
 શબંધન વગેરે તૃણ વિશેષોથી રહિત હોય છે વૃક્ષોના જે અધોભાગ હોય છે તે અહીં
 મૂલ શબ્દથી ગૃહીત થયેલ છે તેમ જ લક્ષણથી શાખાદિકોના પણ આદિ ભાગ સગૃ-
 હીત થઈ જાય છે તેમ જ આ સર્વ વૃક્ષો પ્રશસ્ત મૂલ વાળા છે કેમ કે એમના મૂલભાગ
 બહુ જ ઊંડા સુધી ભૂમિમાં ગયેલા છે આ પ્રમાણે આ સર્વ વૃક્ષો પ્રશસ્ત કંદો વાળા
 છે. અહીં આવેલ યાવત્ પદ આ જતાવે છે કે જગતી ના વનવૃક્ષોના વર્ણન માં જેટલા

‘ચ્છણપહ્નિચ્છણા’ પત્રૈશ્વ પુષ્પૈશ્વ ફલૈશ્વ અવચ્છન્ન પ્રતિચ્છન્નાઃ વ્યાપ્તાઃ ‘સિરીષ’ શ્રિ
યા-શોભયા ‘અડવ ૨’ અતીવાતીવ અતિતરામ્ ‘ઉચ્સોભમાણા’ ઉપશોભમાનાઃ વિરાજમાનાઃ
‘વિદ્વંતિ’ તિષ્ઠન્તિ વિદ્યાન્તે ‘તીસેણં મમાપ મરદે વાસે’ તમ્યાં સમાયાં રાન્તુ મરતે વર્ષે
મરતક્ષેત્રે ‘તત્થતત્થ’ તત્ર તત્ર સ્થલે સ્થલે ‘વહવે’ વહુનિ વહુસંખ્યકાનિ મૂલે પુસ્ત્વં
પ્રાકૃતત્વાદ્બોધ્યમ્ ‘મેરુતાલવણા’ મેરુતાલવનાનિ મેરુતાલાઃ વૃક્ષવિશેષાઃ તેષાં વનાનિ
एवं ‘હેરુતાલવણાઈં મેરુતાલવણાઈં પમયા લવણાઈં સાલવણાઈં સરલવણાઈં સત્તવણવણાઈં
પૂયફલિવણાઈં સ્વજ્જૂરીવણાઈં ણાલિપરીવણાઈં’ હેરુતાલ મેરુતાલ પ્રમતાલ સાલ સરલ
સપ્તર્પણ પૂગફલી સ્વજૂરી નાલિકેરીનાં વૃક્ષવિશેષાનાં વનાનિ તાનિ ચ વનાનિ કીદશાનિ ?
इत्याह—‘कुसविकुस विसुद्धरुक्खमूलाइ’ कुशविकुशविशुद्धवृक्षमूलानि कुशविकुशवर्जितवृक्ष-

પદ યહ પ્રકટ કરતા હૈ કિ જગતી કે વન કે વૃક્ષો કે વર્ણન મેં જિતને વિશેષણ પ્રશસ્ત બીજ
વિશેષણતક પ્રયુક્ત કિયે ગયે હૈં વે સબ હી વિશેષણ ડન વૃક્ષો કે વર્ણન કરને મેં યદા પર મો ગૃહો-
ત કર કેના ચાહિયે । વૃક્ષો કા વર્ણન પચમ મૂત્રમેં કિયા ગયા હૈ તથા યે સબ વૃક્ષ પત્રોં સે પુષ્પોં
સે, ઔર ફલોં સે મરે હુપ રહતે હૈં । ઇસ કારણ યે અપની શોભા સે વહુત અધિક રૂપ મેં સુહાવને
હૈ । ‘તીસે ણં સમાપ મરદે વાસે તત્થ તત્થ વહવે મેરુતાલવણાઈં, હેરુતાલવણાઈં મેરુતાલવણાઈં
પમયાલવણાઈં સાલવણાઈં સરલવણાઈં સત્તવણવણાઈં, પૂયફલિવણાઈં, સ્વજ્જૂરીવણાઈં, ણાલિપરી-
વણાઈં, કુસવિકુસ વસુદ્ધરુક્ખમૂલાઈં જાવ ચિદ્વંતિ’ ઉસકાલ મેં ભારતવર્ષ મેં જગહ ૨ અનેક મેરુ-
તાલ-વૃક્ષવિશેષકે વન હોતે હૈ, હેરુતાલ કે વન હોતે હૈ, મેરુતાલ કે વન હોતે હૈ, પ્રમતાલ કે વન
હોતે હૈ, સાલવૃક્ષોકે વન હોતે હૈ, સરલવૃક્ષો કે વન હોતે હૈ, સપ્તર્પણોં કે વન હોતે હૈ, પૂગફલી
સુપારીકે વૃક્ષો કે વન હોતે હૈ સ્વજૂરી-પિન્ડસ્વજૂરી કે વન હોતે હૈ ઔર નારિયલ કે વૃક્ષો કે વન હોતે
હૈ । इन वनों में रहे हुए इन वृक्षों के नीचे का मृभाग कुश काग और विल्वादि लताओं से

વિશેષણો પ્રશસ્ત બીજ વિશેષણો સુધી પ્રયુક્ત કરવામા આવેલ છે. તે સર્વ વિશેષણો આ
વૃક્ષોના વર્ણનમા અહીં પણ શ્રીત કરવા બોધ્યો. વૃક્ષોનું વર્ણન પચમ સૂત્રમાં કરવામા
આવેલ છે તેમ જ આ સર્વ વૃક્ષો પત્રો, પુષ્પો અને ફળોથી અલંકૃત રહે છે. એથી આ
વૃક્ષો બહુ જ સુંદર શોભા સપન્ન હોય ગત થાય છે ‘તીસેણં સમાપ મરદે વાસે તત્થ
૨ વહવે મેરુતાલવણાઈં, હેરુતાલવણાઈં, મેરુતાલવણાઈં, પમયાલવણાઈં, સાલવણાઈં,
સરલવણાઈં સત્તવણવણાઈં, પૂયફલિવણાઈં સ્વજ્જૂરી વણાઈં, ણાલિપરી વણાઈં કુસવિ-
કુસવિસુદ્ધ રુક્ખમૂલાઈં જાવ ચિદ્વંતિ’ તે કાળમા ભારતવર્ષમા ઠેક ઠેકાણે અનેક લેરુ
તાલ-વૃક્ષ વિશેષ-ના વનો હોય છે હેરુતાલના વનો હોય છે, મેરુતાલના વનો હોય છે,
પ્રમતાલના વનો હોય છે સાલવૃક્ષોના વનો હોય છે, સરલવૃક્ષોના વનો હોય છે, સપ્ત-
ર્પણના વનો હોય છે, પૂગફલી-સુપારી-ના વૃક્ષોના વનો હોય છે, સ્વજૂરી-પિન્ડસ્વજૂરી-
ના વનો હોય છે. અને નારિકેલના વૃક્ષોના વનો હોય છે આ વનો મા આવેલા વૃક્ષોની
નીચેના ભૂમિ ભાગો કુશ-કાશ અને વિદાદિ લતા એથી સર્વથા રહિત હોય છે. આ વૃક્ષો
પણ પ્રથસ્ત મૂલ વાળા હોય છે. પ્રથસ્ત કંદવાળા હોય છે. ઇત્યાદિ રૂપ થી જે જે વિશેષણો

મૂલસહિતાનિ 'જાવ ચિદંતિ' યાવત્તિષ્ઠન્તિ । યાવત્પદેન મૂલવન્તિ કન્દવન્તિત્યાદીનિ ઉપરિતનાનિ પદાનિ સંગ્રાહ્યાણિ । તથા 'ત્રીસેણ સમાપ ભરહે વાસે તત્થ તત્થ વહવે સેરિયાગુમ્મા' તસ્યાં ચ્છલ્લ સમાયાં ભરતે વર્ષે તત્ર તત્ર વહવઃ સેરિકાગુલ્માઃ—સેરિકા-
 ડડ્ડચ્છલ્લતા સમૂહાઃ 'ખોમાલિયાગુમ્મા' નવમાલિકાગુલ્માઃ નવમાલિકાલતાસમૂહાઃ એવ
 'કોરંટયગુમ્મા' કોરંટકગુલ્મા 'બંધુજીવગુમ્મા' બન્ધુજીવકગુલ્માઃ 'મળોઝ્જગુમ્મા'
 મનોઽવઘગુલ્માઃ વીયગુમ્મા' વીજગુલ્મા 'વાણગુમ્મા' વાણગુલ્મા' નીલ ક્ષિણ્ટિકાગુલ્માઃ
 'કણરગુમ્મા' કર્ણિકારગુલ્માઃ કર્ણિકારાણાં 'કણેર ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધાનાં ગુલ્માઃ તથા
 'કઞ્જયગુમ્મા' કુઞ્જકગુલ્મા કુઞ્જા વૃક્ષવિશેષાસ્ત એવ કુઞ્જકા તેપાં ગુલ્મા 'સિંદુ-

સર્વથા રહિત હોતા હૈ. યે વૃક્ષ ભો પ્રશસ્ત મૂલ વાલે હોતે હૈ, પ્રશસ્ત કન્દવાલે હોતે હૈ- ઇત્યાદિ રૂપ સે જો વિશેષણ ધર્મો ૨ ઉપર મેં સમ્રાહ્ય કહે ગયે હૈ વે સત્ર વિશેષણ યહાં ઇન વૃક્ષો કે વર્ણન મેં મી પ્રશસ્ત બોજતક કે વિશેષણતક ગ્રહણ કર લેના ચાહિયે "ત્રીસેણ સમાપ ભરહે વાસે તત્થ તત્થ વહવે સેરિયાગુમ્મા, ખોમાલિયાગુમ્મા, કોરંટયગુમ્મા, વધુજીવયગુમ્મા, મળોઝ્જગુમ્મા, વીયગુમ્મા વાણગુમ્મા કણરગુમ્મા, કઞ્જયગુમ્મા સિંદુવારગુમ્મા, મોગરગુમ્મા, જૂહિયાગુમ્મા, મલ્લિયાગુમ્મા, વાસતિયાગુમ્મા, વત્થુલગુમ્મા કત્થુલગુમ્મા, સેવાલગુમ્મા, અગત્થિગુમ્મા, મગદતિ-ગુમ્મા ચંપકગુમ્મા, જાઈગુમ્મા ણવળોયગુમ્મા કુંદગુમ્મા, મહાજાડગુમ્મા રમ્મા, મહામેહણિકુરંબ-મૂયા દસદ્ધવળ્લ કુસુમ કુસુમેતિ" ઉસ કાલમેં ભરતક્ષેત્ર મેં જગહ જગહ અનેક સેરિકા નામકી લતાઓ કે સમૂહ હોતે હૈ, નવમાલિકા નામકી લતાઓ કે સમૂહ હોતે હૈ કોરંટ નામકી લતાઓ કે સમૂહ હોતે હૈ, બન્ધુ જીવક નામકી લતાઓ કે સમૂહ હોતે હૈ' મનોઽવઘ નામકી લતાઓ કે સમૂહ હોતે હૈ, વીજગુલ્મ હોતે હૈ વાણગુલ્મ હોતે હૈ । નીલક્ષિટિકા ગુલ્મ હોતે હૈ, કણેર કે ગુલ્મ હોતે હૈ । કુઞ્જક કે ગુલ્મ હોતે હૈ, વૃક્ષ વિશેષ કા નામ કુઞ્જ હૈ, સિન્દુવાર

હમણા જ ઉપર સમ્રાહ્ય કરવામા આવેલા છે તે સર્વ વિશેષણો અહીં આ વૃક્ષોના વર્ણનમાં પણ પ્રશસ્ત બીજ સુધીના વિશેષણ સુધી ગ્રહણ કરવા ભેદ છે "ત્રીસેણ સમાપ ભરહે વાસે તત્થ ૨ વહવે સેરિયા ગુમ્મા, ખોમાલિયા ગુમ્મા કોરંટયગુમ્મા, બંધુજીવયગુમ્મા, મળોઝ્જ ગુમ્મા, વીજગુમ્મા, વાણગુમ્મા, કણર ગુમ્મા, કઞ્જય ગુમ્મા, સિંદુવારગુમ્મા, મોગરગુમ્મા જૂહિયાગુમ્મા મલ્લિયા ગુમ્મા' વાસતિયા ગુમ્મા, વત્થુલ ગુમ્મા, કત્થુલ ગુમ્મા, સેવાલ ગુમ્મા, અગત્થિ ગુમ્મા મગદતિયા ગુમ્મા ચંપક ગુમ્મા, જાઈ ગુમ્મા, ણવળોયયા ગુમ્મા કુંદ ગુમ્મા મહાજાડગુમ્મા રમ્મા, મહામેહણિકુરંબમૂયા દસદ્ધવળ્લ કુસુમ કુસુમેતિ' તે કાળે ભરત ક્ષેત્રમાં ઠેકઠેકાણે ઘણી સેરિકા નામની લતા ઓના સમૂહો હોય છે નવમાલિકા નામની લતાઓના સમૂહો હોય છે કોરંટ નામની લતાઓના સમૂહો હોય છે બન્ધુ જીવક નામની લતાઓના સમૂહો હોય છે મનોઽવઘ નામની લતાઓના સમૂહો હોય છે બીજ શુદ્ધો હોય છે વાણ શુદ્ધો હોય છે. નીલકિટિકા શુદ્ધો હોય છે. કણેરના શુદ્ધો હોય છે. કુઞ્જકના શુદ્ધો હોય છે. વૃક્ષ વિશેષણ નામ કુઞ્જક છે. સિંદુ-

વારગુલ્મા' સિન્દુવારગુલ્મા: 'મોગરગુલ્મા' મુદ્ગરગુલ્મા: વેલી ડનિ પ્રસિદ્ધપુષ્પવિશેષગુ-
લ્મા: 'જૂહિયાગુલ્મા' યૂથિકાગુલ્મા: જૂહિ' ડનિ પ્રસિદ્ધપુષ્પવિશેષગુલ્મા: 'મલ્લિયાગુલ્મા
મલ્લિકાગુલ્મા: 'વાસંતિયાગુલ્મા' વાસન્તિકાગુલ્મા: 'વત્થુલગુલ્મા' વસ્તુલગુલ્મા: હરિતવ-
નસ્પતિવિશેષગુલ્મા: શારુવિશેષગુલ્મા વા 'કત્થુલગુલ્મા' કસ્તુલગુલ્મા: વનસ્પતિ વિશેષ-
ગુલ્મા 'સેવાલગુલ્મા' શૈવાલગુલ્મા: 'અગસ્તિયગુલ્મા' અગસ્તિયગુલ્મા:-અગસ્તિપુષ્પગુલ્મા:
'મગદતિયાગુલ્મા' મગદન્તિકાગુલ્મા:-'ચમ્પકગુલ્મા' ચમ્પકગુલ્મા: 'જાર્ડગુલ્મા' જાતી
ગુલ્મા: માલતીગુલ્મા: 'નવનીટિયાગુલ્મા' નવનીતિકાગુલ્મા: પુષ્પપ્રધાન વનસ્પતિવિશે-
ષગુલ્મા: 'કુન્દગુલ્મા' કુન્દગુલ્મા માધપુષ્પવિશેષગુલ્મા 'મહાજાડગુલ્મા' મહાજાતીગુલ્મા:
વૃદ્ધમાલતીગુલ્મા: તે ચ ગુલ્મા: કીટશા: ડત્યાહ 'રમ્મા' રમ્મા: મનોહરા 'મહામેઢણિકુરવભૂ
યા' મહામેઢનિકુરમ્ભૂતા મહાન્ત: સાટોપા યે મેઘાસ્તેપાં નિકુરમ્વેન સમૂહેન ભૂતા: સદશા:
'દસદ્ધવર્ણ' દશાર્દવર્ણ પશ્ચવર્ણ 'કુસુમ' કુસુમં પુષ્પ પુષ્પાણોતિ વોધ્યમ્ જાતાવેકત્વાત્
'કુસુમેતિ' કુસુમયન્તિ ઉત્પાદયન્તિ કુસુમપદસમભિવ્યાહારે ફલાશસ્યાત્રમોપાત્ કુસુમં કુર્વ-
ન્તિ, ઉત્પાદયન્તીતિ હિ તૈસ્યં ત્રિવરણમ્ 'જે ણં મરહે વાસે વહુસમરમણિજ્જં ભૂમિભાગં'
યે ગુલ્મા: સ્વલ્લ મરતે વર્ષે સ્થિતં વહુસમરમણીયમ્ ભૂમિભાગમ્ 'વાયવિધુયગ્ગસાલામુક્ક

ગુલ્મ હોતે હૈં, મુદ્ગર વેલી કે ગુલ્મ હોને હૈં યૂથિકા સ્વર્ણજુહી કે ગુલ્મ હોતે હૈં, મલ્લિકાલતા
કે ગુલ્મ હોતે હૈ, વાસન્તિકાલતા કે ગુલ્મ હોતે હૈ, વસ્તુલ કે ગુલ્મ હોતે હૈ, વસ્તુલ યહ
એક પ્રકાર કી હરિત વનસ્પતિ કા નામ હૈ ઓર યહ શાક કે કામ મેં આતી હૈં વનસ્પતિ વિશેષ-
રૂપ કસ્તુલ કે ગુલ્મ હોતે હૈ શૈવાલ કે ગુલ્મ હોતે હૈ, અગસ્તિપુષ્પ કે ગુલ્મ હોતે હૈં, મગ-
દન્તિકા કે ગુલ્મ હોતે હૈ, ચમ્પક કે ગુલ્મ હોતે હૈ, માલતી કે ગુલ્મ હોતે હૈં પુષ્પપ્રધાન વનસ્પતિ
રૂપ નવનીતિકા કે ગુલ્મ હોતે હૈં, માધપુષ્પવિશેષરૂપ કુન્દ કે ગુલ્મ હોતે હૈં એવં વૃદ્ધ માલતી
કે ગુલ્મ હોતે હૈં । યે સબ ગુલ્મ બઢે સુન્દર હોતે હૈં ઓર આટોપયુક્ત મેઘ કે સમૂહ જૈસે હોતે હૈં
તથા પાંચ વર્ણો વાલે પુષ્પો કો યે ઉત્પન્ન કરતે રહતે હૈં "જે ણં મરહે વાસે વહુસમરમણિજ્જં ભૂમિ
ભાગં વાયવિધુયગ્ગસાલા મુક્કપુષ્પ" યે ગુલ્મ ભારતક્ષેત્ર મેં સ્થિત વહુસમરમણીય ભૂમિભાગ કો વાયુ

વારના શુદ્ધો હોય છે. મુદ્ગર વેલી ના શુદ્ધો હોય છે. યૂથિકા-સ્વાર્ણ જુહીના શુદ્ધો
હોય છે મલ્લિકા લતાના શુદ્ધો હોય છે વાસન્તિકા લતાના શુદ્ધો હોય છે વસ્તુલના
શુદ્ધો હોય છે વસ્તુલ આ એક પ્રકારની હરિત વનસ્પતિ નામ છે. અને આ શાક
બનાવવાના ઊપયોગ મા આવે છે. વનસ્પતિ વિશેષરૂપ કસ્તુલના શુદ્ધો હોય છે શૈવા
લના શુદ્ધો હોય છે અગસ્તિ પુષ્પના શુદ્ધો હોય છે મગદતિકાના શુદ્ધો હોય છે શૈવા
લ પક્ષના શુદ્ધો હોય છે માલતીના શુદ્ધો હોય છે પુષ્પ પ્રધાન વનસ્પતિ રૂપ નવનીતિ
કાના શુદ્ધો હોય છે માધ પુષ્પ વિશેષ રૂપ કુન્દના શુદ્ધો હોય છે. તેમજ બૃહત્ માલ-
તીના શુદ્ધો હોય છે. આ સર્વ શુદ્ધો અતીવ સુંદર હોય છે અને આદાય યુક્ત મેઘના
સમૂહ જેવા હોય છે તેમજ પાંચ વર્ણ વાળા પુષ્પોને આ સર્વ ઉત્પન્ન કરતા રહે છે.
"જે ણં મરહે વાસે વહુસમરમણિજ્જં ભૂમિભાગં વાયવિધુયગ્ગસાલા મુક્ક પુષ્પ" એ શુદ્ધો

પુષ્પપુંજોવચારકલિયં' વાતવિધુતાગ્રશાલામુક્તપુષ્પપુન્જોપચારકલિતં વાતેન વાયુના વિધુ-
તાઃ વિશેષેણ કમ્પિતાઃ યા અગ્રશાલા શાલાગ્રાણિ શાલાગ્રાણિ તાભિર્મુક્તઃ ત્યક્તો ય
પુષ્પપુન્જઃ પુષ્પસમૂહઃ સ એવ ઉપચારઃ રચનાવિશેષસ્તેન કલિત-યુક્તં 'કરંતિ'કુર્વન્તિ
અગ્રશાલા इत्यत्र आर्पत्वादग्र शब्दस्य पूर्वप्रयोगः तथा 'तीसेणं समाए भरहे वासे तत्थ
तत्थ तर्हि तर्हि बहुइओ पउमलयाओ जाव' तस्यां खलु समायां भरते वर्षे तत्र तत्र
तस्मिन्स्तस्मिन् देशे तत्र तत्र' तस्य तस्य देशस्यावान्तरदेशे वहव्य पद्मलता यावत्-यावत्प-
देन 'नागलता अशोकलताः चम्पकलताः आम्रलताः वनलताः वासन्तिकलता अतिमुक्त
कलता कुन्दलता इति संग्राह्यम् , तथा 'सामलयाओ' श्यामलताश्च प्रज्ञप्ता ताश्च कीदृश्य
इत्याह-'णिच्चं कुसुमियाओ' नित्यं कुसुमिता 'जाव यावत् यावत्पदेन-नित्य मयूरिताः
इत्यादय शब्दा अस्यैवागमस्याष्टमसूत्रतः संग्राह्या इदमेव सूचयितुमाह 'लयावण्णओ'
लतावर्णक इति । अथ भरतक्षेत्रवर्ति वनराजिं वर्णयति-'तीसे णं समाए भरहे वासे तत्थ
तत्थ' तस्यां खलु समायां भरते वर्षे तत्र तत्र देशे 'तर्हि तर्हि' तत्र तत्र-तस्य

સે કમ્પિત શાલાઓકે અગ્રભાગ સે ત્યક્ત હુપ પુષ્પસમૂહ સે યુક્ત કરતે રહતે હૈ । "તીસેણં સમાપ
મરહે વાસે તત્થ તત્થ તર્હિ તર્હિ બહુઈઓ પડમલયાઓ જાવ સામલયાઓ ણિચ્ચ કુસુમિયાઓ જાવ
લયાવણ્ણઓ" ડસ કાલ મેં મરતક્ષેત્ર મેં જગહ જગહ સ્થાન સ્થાન પર અનેક પદ્મલતાઈં હોતી હૈં,
યાવત્ શ્યામલતાઈં હોતી હૈં, યે સવ લતાઈં સર્વદા, પુષ્પોં કો ઉત્પન્ન કરતી હૈં । યહાં યાવત્પદ
સે "નાગલતા, અશોકલતા, ચમ્પકલતા, આમ્રલતા, વનલતા વાસન્તિકલતા, અતિમુક્તકલતા,
ઔર કુન્દલતા इन सब लताओ का ग्रहण हुआ है । इन लताओ के विशेषरूप से वर्णन को देखने
के लिये इसी आगम का अष्टम सूत्र देखना चाहिये, इसी सूचना के निमित्त "जाव लयावण्ण-
ओ" ऐसा सूत्रपाठ सूत्रकार ने कहा है ।

“તીસે ણં સમાપ મરહે વાસે તત્થ તત્થ તર્હિ તર્હિ બહુઈઓ વણરાઈઓ પણ્ણત્તાઓ” ડસ
કાલ મેં મારતક્ષેત્ર મેં જગહ જગહ સ્થાન સ્થાન પર અનેક વનરાજિયાં કહી ગઈ હૈ યે વનરાજિયાં

ભરત ક્ષેત્રમાં સ્થિત બહુસમરમણીય ભૂમિભાગને વાયુથી કંપિત શાખાઓના અગ્રભાગથી
વર્ષેલા પુષ્પોથી અલંકૃત કરતા રહે છે, “તીસેણં સમાપ મરહે વાસે તત્થ તત્થ તર્હિ તર્હિ
બહુઈઓ પડમલયાઓ જાવ સામલયાઓ ણિચ્ચં કુસુમિયાઓ જાવ લયા વણ્ણઓ” તે કાળમાં
ભરત ક્ષેત્રમાં ઠેક ઠેકાણે અનેક પદ્મલતાઓ હોય છે યાવત્ શ્યામલતા હોય છે. એ સર્વ
લતાઓ સર્વકાળ પુષ્પોને ઉત્પન્ન કરે છે અહીં યાવત્પદ્મથી નાગલતા, અશોક લતા, ચંપક
લતા, આમ્ર લતા, વન લતા, વાસન્તિકા લતા, અતિમુક્તક લતા અને કુન્દ લતા આ સર્વ
લતાઓનું ગ્રહણ થયું છે આ લતાઓના વિષે સવિશેષ જાણવા માટે એ જ આગમના
આકંમાં સૂત્રનું અધ્યયન કરવું જોઈ એ એ સૂચના માટે ‘જાવ લયા વણ્ણઓ’ એવો સૂત્રપાઠ
સૂત્રકારે કરેલ છે

“તીસેણં સમાપ મરહેવાસે તત્થ ૨ તર્હિ તર્હિબહુ ઈઓ વણરાઈઓ પણ્ણત્તાઓ” તે કાલે
ભરત ક્ષેત્ર માં ઠેકઠેકાણે ઘણી વનરાજીઓ હતી એવું કહેવામાં આવે છે, એ વનરાજીઓ.

तस्य देशस्यावान्तरदेशे 'बहुईओ' वद्वयः—बहुसंख्याः 'घणराईओ' वनराजयः—वन-
पंक्तयः 'पण्णत्ताओ' प्रज्ञप्ताः, ताश्च कीदृश्यः ? इत्याह—'किण्हाओ किण्होभासाओ जाव
रम्माओ' कृष्णाः कृष्णावभासाः यावद् रम्याः इति । कृष्णावभासा इत्यारभ्य रम्या इति
पर्यन्तानां पदानां वनराजिविशेषणवाचकानामत्र सङ्ग्रहो बोध्यः, तथाहि—नीलाः नी-
लावभासाः हरिताः हरितावभासाः शीताः शीतावभासाः स्निग्धाः स्निग्धावभासाः ती-
व्राः तीव्रावभासाः कृष्णाः कृष्णच्छायाः नीलाः नीलच्छाया हरिताः हरितच्छायाः
शीताः शीतच्छायाः स्निग्धाः स्निग्धच्छायाः तीव्राः तीव्रच्छायाः घनकटितटच्छायाः
महामेघनिकुरम्बभूता रम्या इति, व्याख्या पूर्वमेव पञ्चमध्वने कृता पदमवरवेदिका वन-

'किण्हाओ किण्होभासाओ जाव रम्माओ, रयत्तगळ्पय कोरटगभिगारग कोडलग जीवं जीवग
नंदीमुह कविज्जिगळ्पयग कोरडगवक्कायग कळइंसइसमारस अणेगसउगागमिहुग विथगिया-
ओ" कृष्ण हैं और कृष्णरूप से ही इनका अवभास होता है यावत् ये बड़ी अच्छी सुहावनी
लगती हैं, यहा यावत्पद से यह प्रकट किया गया है कि कृष्णावभास पद से ठेकर अन्तिम रम्य
पद तक जितने भी पद वनराजि के विशेषणरूप से वाचक है उन सब का यहा पर समग्र
हुआ है वे पद इस प्रकार से है—'नीला, नीलावभासाः, हरिताः हरितावभासाः, शीता. शीताव-
भासाः, स्निग्धाः स्निग्धावभासाः, तीव्राः तीव्रावभासाः, कृष्णाः कृष्णच्छायाः, नीलाः नीलच्छायाः,
हरिताः हरितच्छायाः, शीताः, शीतच्छायाः, स्निग्धाः स्निग्धच्छायाः, तीव्राः तीव्रच्छायाः, घनकटित-
च्छायाः, महामेघनिकुरम्बभूताः रम्या " इन पदों की व्याख्या पूर्व में पांचवें सूत्र में पञ्चवर वेदि-
का के वर्णन के प्रसङ्ग में कर दिया गया है । इन वनराजियों में पुष्पो की गंध में अनुरक्त हुए
उन्मादी मृत्क कहीं कहीं पर मन बनाते हुए नजर आते हैं तो कहीं पर कोरङ्गक नाम के पक्षि
विशेष चह चहाते हुए दिखाई पड़ते हैं कहीं पर मृत्तारक कहीं पर कुंडलक, कहीं पर चकोर,

'किण्हाओ किण्होभासाओ, जाव रम्माओ, रयत्तगळ्पय कोरट गभिगारग कोडलगजीवं
जीवग नंदीमुह कविल पिगळक्कगकोरडवक्कवायग कळइंसइस सारस अणेग सउणगण
मिहुणं विथरियाओ" कृष्णु छे अने कृष्णुइपथी अपभासित थाय छे यावत् ओओ। पृभन
सोडामछां लागे छे अही यावत् पदथी आवात रुपट करनामा आवी छे के कृष्णुवभास
पदथी भाडीने अतिम रम्य पद सुधी नेटला पढे। वनराजिना विशेषणु इपमां आवेला छे
ते सर्वना अत्रे सङ्ग्रह थयेव छे तेमसमञ्जसु ते पढे। आ प्रभाषे छेः 'नीलाः नीलावभासा,
हरिताः, हरितावभासाः, शीताः, शीतावभासाः, स्निग्धाः, स्निग्धावभासाः तीव्राः, तीव्राव-
भासा, कृष्णाः, कृष्णच्छायाः, नीलाः नीलच्छाया, हरिताः, हरितच्छायाः, शीताः, शीत-
च्छाया, स्निग्धाःस्निग्धच्छायाः, तीव्राः तीव्रच्छाया, घनकटितटच्छायाः, महामेघनिकुर-
म्बभूताः रम्या " आ पढेनी व्याख्या पञ्चवर वेदिकाना प्रसङ्गमां य मां सूत्रमां करवाभां
आवी छे ओ वनराजिओमां पुष्पनी गंधमा अनुरक्त थयेव उन्मादी जूगे। के।छ के।छ
स्थले शुभन करता देणाय छे ते। के।छ के।छ स्थले कोरटक नामना पक्षी विशेषो कलरव
करता देणाय छे. के।छ स्थले मृत्तारक, के।छ स्थले कुंडलक, के।छ स्थले अकोर, के।छ स्थले

वर्णनप्रसङ्गे । तथा 'रय मत्तगच्छपय कोरंटगभिगारग कौडलगजीवजीवग नन्दीमुख कविलपिङ्गलखग कारंडव चक्रवायग कलहसहंससारस अणेगसउणगणमिहुणवियरियाओ' रतमत्तक पटपदकोरङ्गकभृङ्गारककुण्डलकजीवजीव नन्दीमुख कपिलपिङ्गलाक्षक कारण्डचक्रवाककलहसहंससारसानेक शकुनगणमिथुनविचरिताः तत्र-रताः अनुरक्ता अतएव मत्ताः-उन्मादिनो ये पट् पदाः-भ्रमराः, कोरङ्गकाः पक्षिविशेषाः, भृङ्गारकाः पक्षिविशेषाः, कुण्डलकाः-पक्षिविशेषाः, जीवजीवाः-चक्रोराः, नन्दीमुखाः-पक्षिविशेषाः कपिलाः-पक्षिविशेषाः, पिङ्गलाक्षकाः-पिङ्गलवर्णनेत्राः पक्षिणः कारण्डवाः-पक्षिविशेषाः चक्रवाकाः-‘चक्रवा’ इति भाषा प्रसिद्धाः, पक्षिणः, कलहंसाः-‘वतक’ इति प्रसिद्धाः, हंसाः प्रसिद्धाः, ते शकुनाः-पक्षिणः तेषां ये गणाः-समूहा-स्तेषां मिथुनेन युरमेन विचरिताः-इतस्ततः शाखाग्राच्छाखाग्रे कृतसंचाराः तथा ‘सदुण्णइयमदुरसरणाडयाओ’ शब्दोन्नदितनमधुरस्वरनादिताः उन्नदिता-पक्षिभिरुच्चैरुच्चारिता ये शब्दास्तेषां मधुरस्वरेण मधुरध्वनिना नादिताः ध्वनिताः तथा ‘संपिडियदरिय भमरमहुकरि पहकर परिर्लित मत्त छप्पय कुसुमासवलोल महुरगुमगुमंतगुंजतदेसभागाओ’ सम्पिण्डितदृप्त भ्रमर मधुकरीप्रकर परिलीयमानमत्तपट्पदकुसुमासवलोलमधुरगुमगुमायमानगुञ्जदेशभागाः, सम्पिण्डिताः कुसुमासवपानार्थं परस्परसम्मिलिताः ये दृप्ताना-मदमत्तानां भ्रमराणां मधुकरीणां-भ्रमरीणां च प्रकाराः समूहास्तैः सह परिलीयमानाः श्लिष्यन्तः परिमिलन्तो ये मत्तपट्पदाः, त एव पुनः कुसुमासवलोलश्च पुष्परसाऽऽस्वादलोलुपाश्च तेषां मधुरं यथा स्यात्तथा गुमगुमायमानैः-गुमगुमेति मधुरभृङ्गसङ्गीतैः गुञ्जन्-मधुरमन्यक्तं शब्दायमानो देशभागो यासु तास्तथा, अत्र मधुरगुञ्जनं मधुकरवृत्त्यापि देशभागे

कहीं पर नन्दीमुख, कहीं पर कपिल तीतर, कहीं पर पिङ्गलाक्षक, पिङ्गल नेत्रो वाले पक्षी विशेष, कहीं पर कारण्डव जलकाक और कहीं पर चक्रवाल तथा कलहंस-वतख एव हंस अपनी अपनी घर बालियों के साथ वृक्षों की एक शाखा से दूसरी शाखाओं के ऊपर संचार करते हुए दृष्टिपथ होते हैं । इस तरह यह वनराजि इन पक्षियों के मधुर शब्दों से सदा ध्वनित होती रहती है । “संपिडियदरिय भमर महु परि पहकर परिर्लित मत्त छप्पय कुसुमासवलोल महुर गुम गुमंत गुंजत देसभागाओ” इन वनराजियों के प्रदेश जगह जगह के कुसुमों का आसव के पान करने के निमित्त परस्पर समिलित हुए मदोन्मत्त भ्रमरों एवं भ्रमरीयों के समूह के साथ साथ मिले हुए एव कुसुम

नदी सुभी डोई स्थले कपिल तीतर, डोई स्थले पिङ्गलाक्षक पिङ्गल नेत्रवाण पक्षी विशेष डोई स्थले कारंडव जलकाक अने डोई स्थले चक्रवाक तेमज कलह सं-मतक अने हंस पोतपोता गी भाडाओनी साथे वृक्षोनी ओकथी गील शाखाओ पर संयरणु करता देखाय छे आ प्रभाणे आ वनराजि आ पक्षीओना मधुर शब्दोथी सर्वदा सुभरित रहे छे “संपिडियदरियभमरमहुपरिपहकर परिर्लित मत्त छप्पय कुसुमासवलोलमहुरगुमगुमायमानगुंजत देसभागाओ” आ वनराजिओना प्रदेशा कुसुमासवोना पान करवा माटे परस्पर संमिलित थयेला मदमत्त भ्रमरा अने भ्रमरीओना समूहोनी साथे साथे ओकत्र थयेला

समारोपितम्, तथा 'अर्द्धिभतरपुष्पफलाओ' अभ्यन्तरपुष्पफलाः अभ्यन्तरे पुष्पफलः सम्भृताः, 'वाहिरपत्तोच्छण्णाओ' वहिः पत्रावच्छन्नाः वहिर्भागे संजातपत्रसमूहप्रच्छन्नाः 'पत्तेहि य पुष्पेहि य' पत्रैश्च पुष्पैः फलैश्च 'ओच्छन्न वलिच्छताओ' अवच्छन्न प्रतिच्छन्नाः—तर्वाथाऽऽच्छादिता, 'साउफलाओ' स्वादुफलाः—स्वादयुक्तफलसम्पन्नाः 'निरोययाओ' निरोगकाः—रोगरहिताः वृक्षचिकित्साशास्त्रप्रदर्शितरोगवर्जिताः शीतविद्युदातपादि जनितोषद्रवरहिता वा, तथा 'अकंटयाओ' अकण्टकाः कण्टकरहिताः 'णाणाविह गुच्छ गुम्ममंडवगसोदियाओ' नानाविध गुच्छ गुल्म मण्डपकशोभिताः—नानाविधैः—ग्रहुप्रकारैः गुच्छैः पुष्पस्तवकैः गुल्मैः—लताप्रतानैः मण्डपकैः—लतामण्डपैश्च शोभिताः, 'विचित्त सुहकेउ भूयाओ' विचित्र शुभकेतुभूताः—विचित्रशुभध्वजरूपाः, 'वावी

के आसंव पान से चंचल हुए मत्त अन्य और पट्पदों के गुम गुम मधुर सगीत से गन्धायमान होते रहते हैं। "अर्द्धिभतरपुष्पफलाओ बाहिरपत्तोच्छण्णाओ पत्तेहि य पुष्पेहि य ओच्छन्नवलिच्छताओ, साउफलाओ निरोययाओ अकंटयाओ णाणाविहगुच्छगुम्ममंडवगसोदियाओ" ये वनराजियां भीतर में तो पुष्प और फलों से लदो हुई है और बाहर में पत्रों के समूह से आच्छादित हो रही है इनके फल मधुर रस से भरे हुए हैं इनमें किसी भी प्रकार का रोग नहीं है अथवा यहां किसी भी प्रकार का रोग नहीं रहता है वृक्षचिकित्साशास्त्र में जो रोग कहे गये हुए हैं वे रोग यहां के वृक्षों में नहीं हैं उन रोगों से यहां के वृक्ष रहित हैं, अथवा शीतजन्य, विद्युत्पातजन्य एवं आतप आदि जन्य उपद्रवों से ये वृक्ष सर्वथा रहित हैं। यहां कांटों का तो नाम नहीं है, ये वनराजियां नाना प्रकार के पुष्प स्तवकों से पुष्पों के गुच्छों से गुल्मों से, लता प्रतानों से, और लता मण्डपों से शोभित हैं। "विचित्त सुहकेउभूयाओ वावी पुक्खरिणी दीहिया सुनिवेसियरम्मजालहरयाओ, पिण्डिमणीहारिम, सुगंधि सुहसुरमिमणहरं च महया गंधद्वाणि सुयंताओ सव्वोउयपुष्फ-

तेभञ्ज कुसुमासव पानथी अयत्त थयेत्त महमत्त गाला पट्पदोना मधुर शुभन सगीतथी गन्धायमान थता रहै छे "अर्द्धिभतरपुष्पफलाओ बाहिरपत्तोच्छण्णाओ पत्तेहियपुष्पेहिय ओच्छन्न वलिच्छताओ, साउफलाओ, निरोययाओ अकंटयाओ णाणाविह गुच्छ गुम्म मंडवग सोदियाओ" जे वनराजियो अहर तो पुष्पो अने फलोथी युक्त छे अने अहार पत्रोना समूहोथी आच्छन्न छे जेमना फलो मधुर रसोथी युक्त छे. जेमनामा कोठपल्लु जातेना रोग नथी अथवा अही कोठ पल्लु जातना रोगन अस्तित्व न नथी. अथवा वृक्षचिकित्सा शास्त्र मा जे रोगोन पल्लुन छे ते रोगो अहीना वृक्षोभा नथी अर्थात् अहीना वृक्षो ते सर्व रोगोथी रहित छे अथवा शीत जन्य विद्युत्पातजन्य अने आतप आदि जन्य उपद्रवोथी जे वृक्षो सर्वथा हीन छे अही कांटोना तो अस्तित्व न नथी जे वनराजियो अनेक जातना पुष्पस्तवकोथी—पुष्पोना गुच्छोथी सुहकोथी लता प्रतानोथी अने लता मण्डपोथी सुशोभित छे. "विचित्त सुहकेउभूयाओ, वावी पुक्खरिणी दीहिया सुनिवेसिय रम्मजालहरयाओ, पिण्डिमणीहारिम, सुगंधि सुहसुरमिमणहरं च महया गंधद्वाणि सुयंताओ सव्वोउय पुष्पफलसमिद्धाओ सुरम्माओ पासाइयाओ, वरि

પુષ્કરિણી દીધિયા સુનિવેસિય રમ્મજાલહરયાઓ' વાપીપુષ્કરિણી દીર્ધિકા સુનિવે-
શિતરમ્યજાલગૃહકાઃ, તત્ર-વાપ્યઃ-ચતુષ્કોણાઃ, પુષ્કરિણ્યઃ-વાપ્ય એવ વૃત્તાકારાઃ, દી-
ર્ધિકાઃ-ઋજુસારિણ્યઃ, તાસુ સુનિવેશિતાનિ-સુષ્ઠુ સ્થાપિતાનિ રમ્યાણિ-રમણીયાનિ
જાલગૃહકાણિ-સચ્ચિદ્રગવાક્ષા યાસુ તાઃ, 'પિંડિમગોહારિમં' પિંડમનિહારિમાં-પિંડિમાં
મિલિતાં સર્તોં નિર્દારિમાં શુભપુદ્ગલસમૂહરૂપેણ દૂરદેશગામિનોમ્ 'સુગન્ધિ' સુગન્ધિ-
શોભનગન્ધવતોમ્, તથા 'સુહ સુરભિમળહરં ચ' શુભસુરભિમનોહરામ્-શુભઃ-પ્રશસ્ત યઃ
સુરભિઃ શોભનો ગન્ધસ્તેન મનોહારિણોમ્, 'મહયા ગન્ધધ્રાણિ' મહાગન્ધધ્રાણિ મહતી ચા-
સૌ ગન્ધધ્રાણિઃ-ગન્ધ એવ ધ્રાણિ તૃપ્તિ. તદ્દેવત્વાત્ ગન્ધધ્રાણિ સ્તાં તથા મહાગન્ધ-
તૃપ્તિમ્ 'મુયંતાઓ' મુશ્વન્ત્યઃ-પ્રસારયન્ત્ય. તથા 'મન્ડોડપપુષ્પફલપમિદ્ધાઓ' સાર્વર્તુ-
કપુષ્પફલસમૃદ્ધાઃ-સકલઋતુત્પન્નપુષ્પફલૈઃ સમૃદ્ધાઃ-સમ્પન્નાઃ 'સુરમ્માઓ' સુરમ્યાઃ-અતિ
રમણીયાઃ, 'પાસાઈયાઓ' પ્રાસાદીયાઃ-દર્શકાના હૃદયપ્રસાદકારાઃ, 'દરિસણિજ્જાઓ' દર્શ-
નીયાઃ, દ્રષ્ટુ યોગ્યા, 'અભિરૂવાઓ' અભિરૂપાઃ-સર્વથા દર્શકજનમનોનયનહારિણ્યઃ 'પઢિ-
રૂવાઓ' પ્રતિરૂપાઃ-અસાધારણ રૂપ યુક્તાશ્ચ સન્તિ ઇતિ ॥૬૦૨૨॥

ફલ સમિદ્ધાઓ સુરમ્માઓ પાસાઈયાઓ, દરિસણિજ્જાઓ, અભિરૂવાઓ પઢિરૂવાઓ' એ વનરાજિયાં
દેસને વાળોં કો એસી પ્રતીત હોતા હૈ કિ માનો એ વિચિત્ર પ્રકાર કી અઞ્છી ધ્વજાઈ સી હી હૈ ।
હન મેં જો વાપિકાઈ હૈ ચૌકોર વાવઢિવા હૈ, ગોલ આકાર વાળો પુષ્કરિણિયાં હૈ તથા દીર્ધિકાઈ હૈ
હન સબ કે ઊપર સુન્દર સુન્દર જાલગૃહ સ્થાપિત હૈ, છિદ્રોં સહિત ગવાક્ષોં કા નામ જાલગૃહ
હૈ, એ વનરાજિયાં એસી ગન્ધ ધ્રાણિ કો-નિસસે મનુષ્યોં કો તૃપ્તિ હો જાવે એસી સુગન્ધિ કો-છોડ
તી રહતોં હૈં યહ ગન્ધ ધ્રાણિ ડન વનરાજિયોં મેં સે અલપ માત્રા કે રૂપ મેં નિકલતી હૈ કિન્તુ પિંડિ-
ત હોકર કે નિકલતી હૈં ઔર નિકલકર વહ બહુત દૂર દૂર તક ચલી જાતી હૈં હસકી જો વાસ
હોતી હૈં વહ મનોહર હોતી હૈં, હન વનરાજિયોં મેં સર્વઋતુઓ કે પુષ્પ એવ ફૂલ છો રહેતે હૈં અતઃ
એ ડનસે સદા સમૃદ્ધ રહતી હૈં, એ સબ વનરાજિયા અતિ રમણીય હૈં, દર્શકજનો કે હૃદયોં કો પ્રસન્ન
કરનેવાલી હૈં, દર્શનીય-હૈં દેસને યોગ્ય હૈં, દેસને વાળોં કે મન ઔર નયનોં કો હરણ કરને વાલી
હૈં, ઔર અસાધારણરૂપ સે યુક્ત હૈં ॥ ૨૨ ॥

સણિજ્જાઓ અભિરૂવાઓ પઢિરૂવાઓ" એ વનરાજિઓ જોનારાઓને જોવી લાગે છે કે જાણે
જોઓ વિચિત્ર પ્રકારની સારી ધ્વજાઓ હોય' એમાં બે વાપિકાઓ છે—ચાર ખૂણા વાળી
વાવો છે ગોળ આકારવાળી પુષ્કરિણીઓ છે. તેમજ દીર્ધિકાઓ છે એ સર્વની ઉપર
સુન્દર સુન્દર જાલ ગૃહો સ્થાપિત છે છિદ્રોવાળા ગવાક્ષો જાલગૃહો કહેવાય છે એ વન
રાજિઓ મનુષ્યોને તૃપ્તિ થાય તેવી સુગન્ધિને-ગન્ધધ્રાણિને ઓમેર પ્રસન્ન કરતી રહે છે એ
ધ્રાણિ તે વનરાજિઓ માથી અલ્પમાત્રામાં પિંડિત થઈને નીકળે છે અને નીકળી ને તે
ખડખડ દર સુધી જતી રહે છે એમની બે વાસ હોય છે તે મનોહર હોય છે એ વનરા-
જિઓમાં સર્વઋતુઓના પુષ્પો તેમજ ફૂલો સર્વદા રહે છે એથી જોઓ તેમનાથી સદા
સમૃદ્ધ રહે છે એ સર્વ વનરાજિઓ અતિરમણીય છે દર્શકોના હૃદયોને પ્રસન્ન કરનારી
છે, દર્શનીયા છે, દર્શકો ના મન અને નયનોને આકર્ષનારી છે અને અસાધારણ રૂપથી
યુક્ત છે. ॥૨૨॥

અથાન્ન વૃક્ષાધિકારાત્કલ્પવૃક્ષવક્ષસ્વરૂપમાહ

મૂલમ્—ત્રીસેણં સમાપ્ત મરહે વાસે તત્થ તત્થ દેસે તહિં તહિં
મત્તંગાણામં દુમગણા પણ્ણત્તા. જહા સે ચંદપ્પમા જાવ ઓચ્છણ્ણ પહિ-
ચ્છણ્ણા ચિદ્દંતિ, એવં જાવ અણિગણાણામં દુમગણા પણ્ણત્તા ॥સૂ. ૦૨૩॥

છાયા—તત્થાં સ્વલ્લુ સમાયા મરતે વર્ષે તત્ર તત્ર દેશે તસ્મિન્ તસ્મિન્ મત્તાઙ્ગા નામ
દુમગણાઃ પ્રજ્ઞતાઃ યથા તે ચંદ્રપ્રમા યાવત્ અવચ્છન્ન પ્રતિચ્છન્નાસ્તિષ્ઠન્તિ, પવ યાવત્
અનગ્નકા નામ દુમગણાઃ પ્રજ્ઞતાઃ ॥૨૩॥

ટીકા—‘ત્રીસે ણં સમાપ્ત મરહે’ ઇત્યાદિ । ‘ત્રીસે ણં સમાપ્ત મરહે વાસે તત્થ
તત્થ દેસે તહિં તહિં’ તત્થાં સ્વલ્લુ સમાયાં મરતે વર્ષે તત્ર તત્ર દેશે તસ્મિન્ તસ્મિન્
તસ્ય તસ્ય દેશસ્યાવાન્તરમાગે ‘મત્તંગા’ મત્તાઙ્ગાઃ મત્ત—મદો હર્ષઃ, તત્કારણભૂતઃ, પેય-
પદાર્થે હિ મત્ત શબ્દેનોચ્યતે, તસ્ય અઙ્ગકાઃ—હેતુભૂતાઃ, અથવા મત્તમ્—આનન્દજનકં
પેયવસ્તુ તદેવ અઙ્ગમ્—અવયવો યેષાં તે તથા આનન્દપ્રદપેયપદાર્થદાયિનો ‘ણામં દુમગણા
નામ દુમગણાઃ—વૃક્ષસમૂહાઃ ‘પણ્ણત્તા’ પ્રજ્ઞતાઃ તે કીદશા! ઇતિ જિજ્ઞાસાયામાહ—
‘જહા સે ચંદપ્પમા જાવ ઓચ્છણ્ણપહિચ્છણ્ણા ચિદ્દંતિ’ યથા તે ચંદ્રપ્રમા યાવત્ છન્ન-

અવ સૂત્રકાર વૃક્ષાધિકાર કો ઠેકર કલ્પવૃક્ષો કે સ્વરૂપ કા કથન કરતે હૈ—

“ત્રીસેણં સમાપ્ત મરહે વાસે” ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—“ત્રીસે ણં સમાપ્ત મરહે વાસે તત્થ તત્થ દેસે તહિં તહિં મત્તંગા ણામં દુમગણા પણ્ણત્તા’
અસ સુષમ સુષમા નામકે આરક મેં ભારતક્ષેત્ર મેં જગહ જગહ અન સ્થાનોમે મત્તાંગ નામકે કલ્પવૃક્ષ યે
યહાં મત્ત શબ્દ સે હર્ષ કા કારણ ભૂત પદાર્થે લિખ્યા ગયા હૈ અસ હર્ષ કે કારણ ભૂત પદાર્થે કો
દેને મેં જો હેતુભૂત હોતે હૈં વે યહા મત્તાઙ્ગ શબ્દ સે કહે ગયે હૈ અથવા આનન્દ જનક જો પેયવ
સ્તુ વહી વસ્તુ જિનકી અવયવ હૈ—અર્થાત્ આનન્દ પ્રદ પેય પદાર્થે કો દેને કે સ્વભાવવાળે જો દુમ
ગણ હૈં—વૃક્ષ સમૂહ હૈં વે મત્તાઙ્ગશબ્દ સે કહે ગયે હૈં । “જહા સે ચંદપ્પમા જાવ ઓચ્છણ્ણ પહિચ્છ-

હવે સૂત્રકાર વૃક્ષાધિકારને લઈ ને કલ્પવૃક્ષોના સ્વરૂપનું કથન કરે છે—

“ત્રીસેણં સમાપ્ત મરહેવાસે તત્થ ૨ દેસે તહિં ૨ મત્તંગા ણામં દુમગણા પણ્ણત્તા’
ઇત્યાદિ સૂત્ર-૨૩

ટીકાર્થ—તે સુષમ સુષમા નામના આરકમાં ભારતક્ષેત્રમાં ઠેક ઠેકાણે તે સ્થાનોમાં મત્તાંગ
નામના કલ્પવૃક્ષો હતા અહીં મત્ત શબ્દથી હર્ષના કારણભૂત પદાર્થે અહીં કરવામાં આવેલ
છે. તે હર્ષના કારણભૂત પદાર્થે ને આપવામાં બે હેતુભૂત હોય છે તે અહીં મત્તાંગ
શબ્દથી કહેવામાં આવ્યા છે અથવા આનન્દ જનક બે પેયવસ્તુ છે તે વસ્તુ બેમના અવ
યવો છે એટલે કે આનન્દ પ્રદ પેય પદાર્થને આપનારા બે દુમો છે—વૃક્ષ સમૂહો છે તે
મત્તાંગ શબ્દથી ગૃહીત થયેલ છે “જહા સે ચંદપ્પમા જાવ ઓચ્છણ્ણ પહિચ્છણ્ણા ચિદ્દંતિ”
આ પાઠને સ્પષ્ટ રૂપથી સમજવા માટે યાવત પદ વડે બે પાઠ સંગૃહીત થયેલ છે, પહેલાં
તેને પ્રગટ કરવા માં આવે છે. તે પાઠ આ પ્રમાણે છે: “જહાસે ચંદપ્પમામણિ સિલાગવર-

प्रतिच्छन्नास्तिष्ठन्ति । अत्र यावत्पदेन्-‘जहा से चन्दप्पमामणिसिलाग वरसीधुवर वारुणि सुजाय पत्तपुप्फफल चोयणिज्जा ससार बहुदव्वजुत्ति संभार काल संधि आसवा महुमेरगरिट्टामदुद्धजाति पसन्नतल्लगसताउर खज्जूरिमुदियासारका विसायण सुपक्क खोयरसरस वर सुरा वण्णगंधरस फरिसजुत्ता बलवीरियपरिणामा मज्जविही बहुप्पगारा तहेव ते मत्तंगा वि दुमगणा अणेग बहु विविहवीससापरिण्याए मज्जविहीए उववेया फलेहिं पुण्णा वीसंदति कुसविकुस विसुद्धरुक्खमूला जाव पत्तेहिं च पुप्फेहिं च फलेहिं च ओच्छन्नपडिच्छन्ना चिट्ठंति’ इति संग्राहम् । एतेषां छाया-

यथा ते चन्द्रप्रभा मणिशिलिकावरसीधुवरवारुणी सुजात पत्र पुष्पफलचोय निर्यास सार बहुद्रव्य युक्ति सम्भा’ सन्धि आसवा मधुमेरकरिष्ठाभा दुग्ध जाति प्रसन्ना तल्लकशतायुः खर्जूरी मृद्वीकासार कापिशायन सुपक्वक्षोदरसवरसुराः वर्णगन्धरसस्पर्शयुक्ताः बलवीर्यपरिणामाः मद्यविधयो बहुप्रकाराः तथैव ते मत्तङ्गा अपि दुमगणाः अनेकबहुविविधविस्रसापरिणतेन मद्यविधिना उपपेताः फलेषु पूर्णाः विष्यन्दन्ते. कुशवि कुशविशुद्ध वृक्षमूलाः यावत् पत्रैश्च पुष्पैश्च फलैश्च अवच्छन्न प्रतिच्छन्नाः तिष्ठन्ति ।

पुण्णा चिट्ठंति’ इस पाठ को स्पष्टरूप से समझने के लिये यावत् पद द्वारा जो पाठ गृहीत हुआ है पहिले उसे प्रकट किया जाता है वह पाठ इस प्रकार से है-“जहा से चंदप्पभा मणि सिलाग वर सीधुवरवारुणि सुजाय पत्तपुप्फ फलचोयणिज्जा ससार बहुदव्वजुत्तिसभार काल संधि आसवा महुमेरगरिट्टामदुद्धजाति पसन्न तल्लग सताउ खज्जुरिय मुदियासारका विसायण सुपक्कखोयरसर वर सुरा वण्णगंधरसफरिसजुत्ता बलवीरियपरिणामा, मज्जविही बहुप्पगारा तहेव ते मत्तंगा वि दुमगणा अणेग बहु विविहवीससा पविण्याए मज्जविहीए उववेया फलेहिं पुण्णा वीसंदति, कुसविकुस विसुद्ध रुक्खमूला जाय पत्तेहिं च पुप्फेहिं च फलेहिं च ओच्छन्नपडिच्छन्ना चिट्ठंति” चन्द्रप्रभा, मणिशिलिका, उत्तममद्य एवं वरवारुणी ये सब मादक रस विशेष हैं ये सब सुपरिपाकगत पुष्पों के फलों के एव चोय इस नामके गन्धद्रव्य विशेष के रस से बनाये जाते हैं तथा इनमें शरीर को पोषण करने वाले द्रव्यों का मेल रहता है, इसी प्रकार से अनेक प्रकार के आसव (नशा करने वाला) भी बनाये जाते हैं जो अपने अपने समय में आसवोत्पादक

सीधु वरवारुणि सुजाय पत्त पुष्पफल चोयणिज्जा ससार बहुदव्वजुत्ति संभारकाल संधि आसवामहुमेरगा रिट्टामदुद्धजातिपसन्न तल्लग सताउखज्जुरिय मुदिया सारका विसायण सुपक्कखोयरसर वर सुरा वण्णगंधरसफरिसजुत्ता बलवीरिय परिणामा मज्जविही बहुप्प गारा तहेव ते मत्तंगा वि दुमगणा अणेग बहुविविह वीससा परिण्याए मज्जविहीए उववेया फलेहिं पुण्णा वीसंदति, कुसविकुसविसुद्धरुक्खमूला जाव पत्तेहिं च पुप्फेहिं च फलेहिं च ओच्छन्नपडिच्छन्ना चिट्ठंति” चन्द्रप्रभा मधु शिखिका उत्तममद्य तथा वरवारुणी ये सर्वे मादक रस विशेषो छे आ सर्वे सुपरिपाकगत पुष्पों इना तेभन्ने येथि नामकं गन्धं द्रव्य विशेषेना रसेभाथी बनाववामा आवे छे, तथा ओभेना भा शरीरने पुष्ट करीरा द्रव्योंसु अग्निश्रव २ छे छे. आ अभावे अनेक जातना आसवो पण्ण तैथार करवामा आवे छे छे

इदं सङ्केतवाक्यमपरेष्वपि वक्ष्यमाण द्रुमगणेषु दृढनीयम् । व्याख्या च वम्-यथा-येन प्रका-
रेण ताः चन्द्रप्रभा मणिशिलिका वरसीधु वग्धारुणो मुजात पत्रपुष्पफलचोयनिर्यास सार
बहुद्रव्य युक्ति सम्भारकालसन्धिजासवाः-तत्र-चन्द्रस्येव प्रभा-कान्तिः यस्याः सा तथा,
मणिशिलिका-मणिशिलैव मणिशिलिका सैव तथा, वरसीधु वरं परमं सीधु-मध्यं, वर वारु-
णी-उत्तमवारुणी, सुजातपत्रपुष्पफलचोयनिर्याससाराः सुजातानां सुपरिपाकागतानां पु-
ष्पाणां फलानां च चोयस्य तदारुगन्धद्रव्यविशेषस्य च निर्यासः रसः तेन साराः, तथा
बहुद्रव्ययुक्ति सम्भाराः बहूनां द्रव्याणां-रस वर्धकानां या युक्तयः मेलनानि तासां सम्भा-
रः-समूहो येषु ते तथा कालसन्धि जासवाः काले स्व स्वोचितकाले सन्धिजासवाः आ-
सवाद्भूतद्रव्यमेलनजनितमद्यानि ततः पदद्वय पदद्वय सम्मेलनेन कर्मधारयसमासः तथा
मधुमेरकरिष्ठाभादुग्धजातिः प्रसन्नातल्लकशतायुः खर्जूरौ मृद्वीकासारः कापिशायनः सुपक्व-
क्षोदरसवरसुराः तत्र मधु-मद्यविशेषः, मेरकं मद्यविशेषः रिष्टाभा गिरित्तवर्णा जम्बूफलक-
लिकेति प्रसिद्धा, दुग्धजातिः आस्वादतो दुग्धसदृशी प्रसन्ना-सुराविशेषः तल्लकः घृताविशे-
षः, शतायुः-शतकृत्वः शोधिताऽपि स्व स्वरूपा परित्यागिनी सुराः खर्जूरी मृद्वीकासारः
खर्जूरद्राक्षयोः सारः कापिशायनं-मद्यविशेषः, सुपक्वक्षोदरसवरसुराः सुपक्वः सम्यक्परिपा-
कप्राप्तो यः क्षोदरसः सुरोत्पादकचूर्णमिलितेक्ष्वादिरसः तन्निष्पन्नाः वरसुरा सर्वेषां पदा-
नां कर्मधारयः, एते च मद्यविधयः मद्यप्रकारा वर्णगन्धरसस्पर्शयुक्ता विशिष्टेन वर्णेन गन्धेन

द्रव्यों के मेल से निष्पन्न होते हैं तथा मधु मेरक, आदि ये भी मद्य जाति के विशेष प्रकार हैं
इनमें मधु और मेरक ये मादक पदार्थों के संयोग से बनाये जाते हैं रिष्टाभा नाम की शराब
जामुन के फलों से तैयार की जाती है, दुग्ध जाति की जो शराब होती है वह स्वाद में दुग्ध
जैसे स्वादवाली होती है प्रसन्ना और तल्लक यह भी एक प्रकार की विशेष शराब होती है सोबा
र शोधित हो जाने पर भी जो अपने स्वरूप का परित्याग नहीं करती है उस शराब विशेष का
नाम शतायु है खर्जूर और दाखो के रस से जो शराब बनाई जाती है उसका नाम खर्जुरी मृद्व
का सारा है इसी प्रकार एक शराब ऐसी भी होती है जो इक्षु के रस को पकाकर के उससे
तैयार की जाती है और इसमें सुरोत्पादक चूर्ण मिलाया जाता है । इन सब सुराविशेषों का वर्ण

यथा समये आसवेत्पादक द्रव्येनाऽस्मिन्नशुद्धी निष्पन्न होय छे तेभ्यः मधुमेरकं पत्रे
ज्येष्ठं येषु मद्य जातिना विशेष प्रकारे छे आभा मधु अने मेरक ज्येष्ठं मादक पदार्थानां संयोग
गर्भा निष्पन्नं थाय छे रिष्टाभा नामक शराब जांयुना क्षोणी तैयार करवाभा आवे छे.
दुग्धजातिनी ज्येष्ठं शराब होय छे ते स्वादभा दूध ज्येष्ठं स्वादवाणी होय छे. प्रसन्न अने तल्लक
आ येषु ज्येष्ठं प्रकारनी शराब शेष छे सो वज्रत शोधितयर्धन्य छता ज्येष्ठं पोताना स्व
रूप ने यथावत राखे छे ते शराब विशेषतः नाम शतायु छे. भर्जूर अने द्राक्षाना रसथी
ज्येष्ठं शराब तैयार करवाभा आवे छे तेनु नाम भर्जुरी मृद्वीकासार छे आ प्रभायु ज्येष्ठं
शराब ज्येष्ठं येषु होय छे के ज्येष्ठं रसने यकवी ने तेनाथी तैयार करवाभा आवे छे
अने तेभा सुरोत्पादक चूर्ण मिश्रित करवाभा आवे छे. आ सर्व सुरा विशेषेना येषु गन्ध रस
२६

રસેન સ્પર્શેન ચ યુક્તા સમ્પન્ના તથા વલ્લીર્યપરિણામા વલં શારીરિક શક્તિઃ વીર્યં પરાક્રમઃ
 હત્યુમે પરિણમયન્તીતિ તથા વલ્લીર્યકારકા હત્યર્થઃ તથા વહુપ્રકારા અનેકવિધાશ્ચ સન્તિ
 તથૈવ તેનૈવ પ્રકારેણ તે-પૂર્વોક્તા મત્તાઙ્ગા અપિ દ્રુમગણા અનેકવહુવિવિધવિસ્રસાપરિણતેન
 અનેક વ્યક્તિભેદાત્ સચાસૌ વહુ વિવિધ-વહુ પ્રચુરં યથા સ્યાત્તથા વિવિધ જાતિભેદાન્ના-
 નાવિધ વિસ્રસારપરિણતઃ-વિસ્રસયા-સ્વભાવેન પરિણતઃ-જાતઃ ન પુન કેનાપિ કૃતશ્ચેતિ
 અનેક વહુવિવિધવિસ્રસાપરિણતસ્તેન તથાપ્રકારેણ મધ્યવિધિના માદ્યન્તિ-હૃપ્યન્તિ અને-
 નેતિ મધ્યમ્-આનન્દપ્રદપેયપદાર્થઃ 'મદીહર્ષે' ઇતિ ધાતોઃ, ગદમદચર (પા० ૩।૧।૧૦૦)
 ઇતિ યત્પ્રત્યયઃ, તસ્ય વિધિઃ પ્રકાર સ્તેન આનન્દપ્રદપેય પ્રકારેણેત્યર્થઃ ઉપપેતા યુક્તા તે
 ચ તાલાદિ તલ્લુકાદિપુ પેયપ્રકાર યુક્તાઃ કિન્તુ ફલેપુ, હત્યેવ દર્શયિતુમાહ-'ફ
 લેર્હિ' ઇતિ । મૂલે તૃતીયા સપ્તમ્યર્થે પ્રાકૃતત્વાત્, તેન ફલેપુ- ફલાવચ્છેદેન પૂર્ણાં તૈ-
 રાનન્દપ્રદપેયપદાર્થૈર્ધૃતા સન્તો નિષ્પન્દન્તે સ્તોતોરૂપતયા વહન્તિ નિર્ક્ષરવત્ । અયં માવઃ-
 તેષાં દ્રુમગણાનાં પરિપક્વઃ સ્ફુટિતફલેભ્યઃ આનન્દપ્રદપેયરસા નિર્ક્ષરન્તીતિ । તે દ્રુમગણા-
 પુનઃ કીદૃશા ? હત્યાહ કુશવિકુશવિશુદ્ધવૃક્ષમૂલા દર્ભવત્ત્વજાદિ રહિતાધોભાગા યાવત્
 યાવત્પદેન મૂલવન્તઃ, કન્દવન્તઃ સ્કન્ધવન્તઃ હત્યાદય પશ્ચમસૂત્રોક્તા સંગ્રાહ્યા, અર્થોઽપિ
 એવ બોધ્યઃ । તથા પત્રૈશ્ચ પુષ્પૈશ્ચ ફલૈશ્ચ અવચ્છન્ન પ્રતિચ્છન્નાઃ સર્વથાઽઽચ્છાદિતાઃ
 તિષ્ઠન્તીતિ । એતે દ્રુમગણાસ્તુ યુગલિજનેભ્ય પેયપદાર્થ વિતરન્તીતિવોધ્યમ્ । અત્રેદં વો-

ગન્ધ, રસ ઔર સ્પર્શ વિશિષ્ટ પ્રકાર કા હો જાતા હૈ ઔર યે સેવિત કિયે જાને પર શરીર મેં
 બલ એવં વીર્ય કે ઉત્પાદક હોતે હૈ ઔર યે અનેક પ્રકાર કે હોતે હૈ । તો જિસ પ્રકાર યે લોગ
 પ્રસિદ્ધ ચન્દ્રપ્રમા આદિ સુરાયે હોતી હૈ उसी प्रकार से मत्ताङ्ग जाति के द्रुमगण भी स्वतः स्वभाव
 से અનેક પ્રકાર કે અમાદક પદાર્થો કે રૂપ મેં પરિણત હો જાતે હૈ इनका यह ऐसा परिणमन
 तालादि वृक्षों में जैसा उनके अङ्कुरादिकों में होता हुआ देखा जाता है वैसा इनमें नहीं देखा
 जाता है किन्तु जब इनके फल पकजाते हैं और वे फुटते हैं तब उनमें से निर्क्षर की तरह रस झर
 ने लगता है और उसे पीकर वहा के लोग आनन्द की मस्ती में छुमने लगते हैं इन वृक्षों के अषो-
 भाग कुश और विल्वादि तृणों से रहित होते हैं जो मनुष्य इनके पास जाकर जिस मादकपदार्थ-

અને સ્પર્શ વિશિષ્ટ પ્રકારના હોય છે. અને એમના સેવનથી શરીરમાં બળ અને વીર્યનું ઉત્પાદન
 થાય છે એ વૃક્ષી પ્રકારની હોય છે, જેમ લોક પ્રસિદ્ધ ચન્દ્રપ્રમા વગેરે સુરાઓ હોય છે
 તેમજ મત્તાંગ જાતિના દ્રુમગણ પણ સ્વતઃ સ્વભાવથી અનેક પ્રકારના અમાદક પદાર્થોના
 રૂપમાં પરિણત થઈ જાય છે એમનું આ એવું પરિણમન અંકુરાદિકોના રૂપમાં તાલાદિ
 વૃક્ષોમાં બોઈ શકાય છે તેવું નથી પરંતુ જ્યારે એમના કૂદો પરિપક્વ થઈ જાય છે અને
 તે ફૂટે છે ત્યારે તેમનામાંથી નિર્ક્ષરની જેમ રસ નિસ્યત થવા લાગે છે. અને તે રસનું પાન
 કરીને ત્યાંના લોકો આનંદની મસ્તીમાં તરબોળ થઈ જાય છે આ વૃક્ષોના અષો ભાગો
 કુશ અને બિલ્વાદિ તૃણોથી વિહીન હોય છે. જે માણસ આ વૃક્ષોની પાસે જઈને જે માદક

ધ્યમ્ મધપાનં હિ નિશ્ચયતો દુર્ગતિજનકં સુપમસુપમાકાલવર્તિનો યુગલિનસ્તુ નિશ્ચયત
સુગતિગામિનઃ । અતો મત્તાઙ્ગકા વૃક્ષા અમાદકાન્ અમૃતમયાન્ આનંદપ્રદરસવિશેષાનેવ
નિષ્પન્દ્યન્તિ ન તુ સુરાવિશેષાન્ । સાદૃશ્ય તુ વર્ણસામ્યેનેતિ । એતે દ્રુમગણાસ્તુ યુગલિ-
જનેભ્યઃ પેયપદાર્થ વિતરન્તીતિ બોધ્યમ્ । 'एवं' एवम् अनेन प्रकारेण मत्ताङ्ग द्रुमग-
णवत् 'जाव अणिगणा णाम दुमगणा पण्णत्ता' यावत् अनग्नका नाम द्रुमगणाः प्रज्ञप्ताः
इति । अत्र यावत्पदेन ये द्रुमगणाः समृद्धन्ते तद्वर्णनप्रकार एवं बोध्यः । तथाहि 'तीसेणं
समाए भरहे वासे तत्थ तत्थ देसे तद्धि तद्धि बहवे भिंगंगा णामं दुमगणा पण्णत्ता सम-
णाउसो जहा से वारग घडग कलस करग कक्करिपायचणिउदंक्वद्धणिउ पडद्वगविट्ठर-

કી ચાહના કરતા હૈ વે વૃક્ષ ડસી રૂપ મેં સ્વત. સ્વભાવ સે પરિણત હો જાતે હૈ ઔર યાચક-
જનોં કી ડસં ચાહના કો શાન્ત કર દેતે હૈં. ડસ વિષય મેં વિશેષ સુલાશા રૂપ સે પાઠ-
ગત પદોં કો વ્યાખ્યા પૂર્વક કથન હમને જીવાભિગમ સૂત્ર કી પ્રમેયઘોતિકા ટીકા મેં કિયા
હૈ. તાત્પર્યે ડસ કથન કા કેવલ ડતના હી હૈ કિ યુગલિકજનોં કો યે દ્રુમગણ જૈસા પેય પદાર્થ
વે ચાહતે હૈં વૈસા હી પેય પદાર્થ પ્રદાન કરતે રહતે હૈ વૈસા દેસા જાય તો મધપાન દુર્ગતિકા
જનક હોતા હૈ ઔર સુષમસુષમા કાલવર્તી યુગલિક જન નિયમ સે સુગતિગામી હોતે હૈ અતઃ યે
મત્તાઙ્ગક વૃક્ષ અમાદક અમૃતમય ઈસે આનન્દપ્રદ રસવિશેષોં કો હી વહાતે રહતે હૈ સુરાવિશેષોં
કો નહીં, પરન્તુ યહાં જો સુરાવિશેષોં કે સાથ ઇન્હે ઉપમિત કિયા ગયા હૈ વહ ઇનકે વર્ણ
કો લેકર કિયા ગયા હૈ, ડસી પ્રકાર સે વહાં જો ૧૦ વે અન્તિમ કલ્પવૃક્ષ અનગ્નક નામ કે
હોતે હૈ વે મી ડન યુગલિકોં કો અનેક પ્રકાર કે વસ્ત્રોં કો દેકર ડનકી ચાહના કી પૂર્તિ ક-
રતે રહતે હૈ, યહાં જો યાવત્પદ આયા હૈ ડસસે શેષ કલ્પવૃક્ષોં કા ગ્રહણ હુઆહૈ-ઇનમેં દ્વિતીય
નંબર કા કલ્પવૃક્ષ મૂતાઙ્ગ નામકા હૈ યે કલ્પવૃક્ષ મી વહાં અનેક હી હોતે હૈ ઇનકે સમ્બન્ધ

પદાર્થની ઇચ્છા કરે છે તે વૃક્ષ તે સ્વરૂપમાજ સ્વતાઃ સ્વભાવથી પરિણત થઈ જાય છે, અને
ચાચકોની ઇચ્છા ને પૂર્ણ કરે છે. આ સંબંધમાં વિશેષ સ્પષ્ટતાથી પાઠગત પદોનું વ્યા-
ખ્યા પૂર્વક કથન જીવાભિગમ સૂત્રની ટીકામાં કરવામાં આવેલ છે આ કથનનું તાત્પર્ય
આટલુંજ છે કે એ દ્રુમો યુગલિક જનોની ઇચ્છા સુજમ જે પદાર્થ તેઓ ઇચ્છતા હોય
તે આપે છે. જો બુદ્ધિ પૂર્વક વિચાર કરવામાં આવે તો આમ જણાશે કે મધપાન દુર્ગતિ
જનક છે અને સુષમ સુષમાકાળના યુગલિકો નિયમતઃ સુગતિગામી હોય છે. તેથી આ
મત્તાઙ્ગક વૃક્ષો પણ સુરા વિશેષના સ્થાને અમાદક અમૃતમય એવા આનંદ પ્રદ રસ રસવિ-
શેષોને જ પ્રવાહિત કરે છે અહીં જે સુરા વિશેષોની સાથે એમને ઉપમિત કર્યા છે તે
કેકલ એમના વર્ણનના ઉદ્દેશથી જ. આ પ્રમાણે ત્યાં જે ૧૦ મા અન્તિમ અનગ્નક નામે
કલ્પવૃક્ષો હોય છે. તે પણ તે યુગલિકોને અનેક ભતના વસ્ત્રોને અર્પી ને તેમની ઇચ્છા
પૂર્ણ કરતા રહે છે અહીં જે યાવત્ પદ આવેલ છે તેનાથી શેષ કલ્પવૃક્ષોનું શ્રદ્ધ કરવા
માં આવ્યું છે આમા બીજા નંબરે જે કલ્પવૃક્ષ છે તે ભૂતાગ નામક કલ્પવૃક્ષ કહેવાય છે.
જે કલ્પવૃક્ષો પણ ત્યાં પુષ્કળ પ્રમાણમા હોય છે. એમના સંબંધમાં એવું કથન છે—'તીસેણં

પારીચસક મિંગાર કરોહિ સહગપત્તી થાલળલ્લગચવલિયં અવમદ દગવારગ વિચિત્તવ
દ્વગમુત્તિચારુપીણયા કેંચળ મણિરયણ મત્તિચિત્તા માયણવિદ્ધોય વહુપ્પગારા તહેવ તેમિંગ-
ગા વિ દુમગણા અળેગવહુવિહ વીસસા પરિણયાપ માયણવિદ્ધીય ઉવવેઆ ફલેહિં પુણ્ણા-
વિવ વિસદ્દત્તિ ।૨।

एतच्छाया—तस्यां खलु समायां भरते वर्षे तत्र तत्र तस्मिन् तस्मिन् बहवो भृताङ्गा
नाम द्रुमगणाः प्रज्ञप्ताः श्रमणाऽऽयुष्मन् यथा ते वारकघटककलशकरक कर्करी पादाञ्च-
न्युदङ्क वार्धानी सुप्रतिष्ठक विष्टरपारीचपक अङ्गारकरोटिसरक पात्री स्थाल नल्लक चप
लितावमददकवारक विचित्र वृत्तक मणि वृत्तक शुक्तिचारुपीनकाकाञ्चन मणिरत्नभक्ति-
चित्राः भाजनविधयश्च बहुप्रकारा तथैव ते भृताङ्गा अपि द्रुमगणा अनेकवहुविधविससा-
परिणतेन भाजनविधिना उपपेताः फलैः पूर्णा इव विरुसन्ति २

एतद्व्याख्या—‘तीसेण’ इत्यादि । हे श्रमणायुष्मन् तस्यां खलु समायां भरते वर्षे-
तत्र तत्र देशे तस्मिन् तस्मिन् तस्य तस्य देशस्यावान्तरभागे बहवो भृताङ्गाः भ्रतं-भरणं
पूरणम् तस्मिन् अङ्गानि कारणानि भ्रताङ्गानि भाजनानि भरणक्रियाहि भरणीयं भाजनं
विना नोपपद्यते इति भाजनसम्पादकत्वाद् वृक्षा अपि भ्रताङ्गाः—भाजनसंपादका नाम
द्रुमगणाः प्रज्ञप्ताः तान् द्रुमगणान् वर्णयितुं दृष्टान्तमुपन्यस्यति यथा ते प्रसिद्धा वारक
घटक कलश करक कर्करी पादाञ्चन्युदङ्कवार्धानी सुप्रतिष्ठक विष्टरपारीचपकअङ्गार करोटि
सरक पात्री स्थाल नल्लक चपलितावमददकवारक विचित्र वृत्तक मणि वृत्तक शुक्ति चारु
पीनक काञ्चनमणिरत्नभक्तिचित्रा तत्र वारक माङ्गलिकघटः घटकः ह्रस्वो घटो घटक.—लघु
में ऐसा कथन है—‘तीसेण समाए भरहे वासे तत्थ २ देसे तहिं तहिं बहवे भिंगगा णाम दुमगणा
पण्णत्ता समणाउसो ! जहा से वारग-घडग-कलस-करग ककरि पायचणि उदक वद्धणि सुपइद्वग
विष्टरपारी चसक भिंगारकरोहिसडक पत्तो थालणल्ल ६ चवलिय अवम दयग वारग विचित्त वड-
गमुत्ति चारु पीणया केंचण मणिरयण भत्तिचित्ता मायण विद्दीय बहुप्पगारा तहेव ते भिंगंगा वि
दुमगणा अणेग बहुविह वीससा परिणयाए मायणविद्दीए उववेया फलेहिं पुण्णविव विस्सट्ति’
इस कथन का तात्पर्य ऐसा है कि उस प्रथम आरक में भरत क्षेत्र में जगह २ स्थानों स्थानों
पर अनेक भृताङ्ग नाम के कल्पवृक्ष होते हैं, ये कल्पवृक्ष उन्हें युगलिको को अनेक प्रकार के

સમાપ ભરહે વાસે તત્થ ૨ દેસે તહિં તહિં વહવે મિંગંગા ણામં દુમગણા પણ્ણતા સમણાઉસો
જહા સે વારગ ઘડગા-કલસ- કરગકકરિપાયંચણિ ઉદંકવદ્ધણિસુપહદ્વગવિદ્ધર પારી
ચસક મિંગાર કરોહિસહગપત્તી થાલ ણલ્લક ચવલિય અવમદદગવારગ વિચિત્ત વદ્ધ-
ગમુત્તિચારુ પીણયા કેંચળમણિરયણમત્તિચિત્તા માયણ વિદ્ધોય વહુપ્પગારા તહેવ તે મિંગંગા વિ
દુમગણા અણેગ વહુવિહવીસસા પરિણયાપ માયણવિદ્ધીય ઉવવેઆ ફલેહિં
પુણ્ણાવિવ વિસદ્દત્તિ’ આ કથનનું તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે કે તે પ્રથમ આરકમાં ભરતક્ષેત્ર
માં ઠેક ઠેકાણે અનેક ભૃતાંગ નામના કલ્પવૃક્ષો હોય છે એ કલ્પવૃક્ષો તે યુગલિકોને અનેક
પ્રકારના ભાજનોને પ્રદાન કરતા રહે છે આ સૂત્રપાઠગત પદોની વ્યાખ્યા અધિકાગમ સૂત્ર

घटः कलशः महाघटः, काकः कर्करी पात्र विशेष, पादाञ्चनी पाद प्रक्षालनार्था काञ्चन-
मयी पात्रो, उदङ्कः जलोत्क्षेपणपात्रविशेषः, वार्धानी जलधानी जलकुण्डिका मुप्रति-
ष्ठकः— पुष्पपात्रविशेषः पारी, घृतपात्रम् चपकः पानपात्रम्, भ्रदारकनकालुका 'व्रागी'
इति भाषायां प्रसिद्धा सरकः पात्रविशेषः पात्री भाजनविशेषः, म्यालम् प्रसिद्धम्, नल्ल
कः पात्रविशेषः चपलिता अवमदश्च पात्रविशेषौ दकवारकः— जलघट, तथा विचित्राणि—
विविधचित्रयुक्तानि वृत्तकानि गोलाकाराणि भोजनकालोपयोगीनि घृतादि पात्राणि, तथा
मणि वृत्तकानि—मणिप्रधानानि वृत्तकानि—पूर्वोक्तानि पात्राणि, श्रुक्तिः—चन्दनाधाधारभूता
'पात्री' चारुपीनका—पात्रविशेषः, एते पात्रप्रकाराः कीदृशाः ? इत्याह—काञ्चनमणि रत्न
भक्तिचित्राः काञ्चनमणिरत्नानां या भक्तयः— रचनास्ताभिः चित्राः अद्भुताः भाजन
विधयः—पात्रभेदाः, बहुप्रकाराः—एकैकस्मिन् भाजनविधाववान्तरानेरुभेदसत्त्वाद्बहुविधाः
भवन्ति तथैव तद्भदेव ते पूर्वोक्ताः श्रुताङ्गा अपि द्रुमगणाः अनेक बहुविधविस्रसापरिण
तेन भाजनविधिना उपपेताः फलैः पूर्णा इव विकसन्ति— शोभन्ते इति एते च द्रुमग-
णाः युगलिभ्यो यथेच्छं पात्राणि वितरन्तीति बोध्यम् ॥२॥

अथ तृतीयकल्पवृक्षस्वरूपमाह—

'तीसे णं समाप भरहे वासे तत्थ तत्थ देसे तहिं तहिं बहवे तुडिअंगा णाम दुम-
गणा पणत्ता समणाउसो ! जहा से अलिंगमुङ्गपणव पडह दहरिय करडि डिडिम भंभा-
होरंमकणिय खरमुहिमुगंद संखिय पिरलीवच्चक परिवाइणि वसवेणु सुघोस विवचिम-
हती कच्छभिरिगिसिगिआतलतालकंसतालसुसंपउत्ता आतोज्जविही निउणगंधव्वसम-
यकुसलेहिं फंदिया तिट्ठाणकरणमुद्धा तदेव ते तुडिअंगा वि दुमगणा अणेग बहु विविह-
वीससापरिणयाए ततविततघणञ्जुसिराए आतोज्जविहीए उववेया फलेहिं पुण्णाविव वि-
सट्ठंति, कुसविकुस जाव चिट्ठंति ॥३॥

भाननो को प्रदान करते रहते है । इस सूत्रपाठगत पदो की व्याख्या जीवाभिगम सूत्र में की
जा चुकी है, अतः वहीं से इसे देखलेना चाहिये ।

तृतीयकल्प वृक्षका स्वरूप कथन—

“तीसेण समाप भरहे वासे तत्थ २ देसे तहिं बहवे तुडिअ गा णाम दुमगणा पणत्ता, समणा-
उसो ! जहा से अलिंगमुङ्ग पणव पडह दहरियकरडि डिडिम भभा होरंम कणिय खरमुहि
मुगुंद संखिय पिरली वच्चक परिवादिनी वसवेणु सुघोस विवचि महतिकच्छभि रिगि सिगिआ—तल
तालकस सुसंपउत्ता आतोज्जविही निउण गंधव्व समय कुसलेहिं फंदिया तिट्ठाणकरणमुद्धा तदेव

भा करवाभां आवी छे, जेथी जिज्ञासुजनोत्थाथी ज वाथी छे

तृतीय कल्पवृक्षना स्वरूप कथन—

'तीसेण समाप भरते वासे तत्थ २ देसे तहिं २ बहवे तुडिअंगा णाम दुमगणा
पणत्ता समणाउसो ! जहा से अलिंग मुङ्ग पणव पडह, दहरियकरडि डिडिम भंभाहो-
रंम कणिय खरमुहिमुगंद संखिय पिरली वच्चक परिवादिनी वसवेणु सुघोस विवचि

एतच्छाया-तस्यां खलु समाया भरते वर्षे तत्र तत्र देशे तत्र तत्र तस्मिन् तस्मिन् बहवः त्रुटिताङ्गा नाम द्रुमगणाः प्रज्ञप्ताः श्रमणाऽऽयुष्मन् । हे श्रमणायुष्मन् तस्यां खलु समायां भरते वर्षे तत्र तत्र देशे तत्र तत्र बहवः त्रुटिताङ्गाः-वाद्यदायका नाम द्रुमगणाः प्रज्ञप्ताः । तत्र दृष्टान्तमाह-यथा ते आलिङ्ग मृदङ्ग पणव पटह दर्दरिका करटी ढिण्डिम भम्भाहोरम्भा कणिता खरघुखी मुकुन्द शङ्खिका पिरलीवच्चक परिवादिनीवंशवेणु सुधोपाविपञ्ची महती कच्छपी रिगिसिगिका तल-ताल कांस्यताल सुसम्प्रयुक्ताः आतोद्यविधयः निपुणगान्धर्वसमयकुशलैः स्पन्दिता त्रिस्थानरुणशुद्धाः, तथैव ते त्रुटिताङ्गा अपि द्रुमगणाः अनेक बहुविधविससापरिणतेन ततविततघनशुपिरेण आतोद्यविधिना उपपेता फलैश्च पूर्णा इव विकसन्ति, कुसविकुशयावत् तिष्ठन्ति । ३।

एतद्व्याख्या—‘तीसे णं’ इत्यादि ‘जहा से’ इत्यादि । यथा येन प्रकारेण ते वक्ष्यमाणाः वाद्यविधयः, ते च कीदृशाः ? इत्याह—‘आलिङ्गे’ त्यादि—आलिङ्गी-आलिङ्ग्य हृदिधृत्वा वादकेन वाद्यमानो मुरजः, मृदङ्गः-लघु मृदङ्गः, पणवः-भाण्डपटहः यद्वा-लघु पटहः, पटहः-दका, दर्दरिका वाद्यविशेषः, करटी वाद्यविशेषार्थः, ढिण्डिमः-वाद्यविशेषः, खरघुखी-वाद्यविशेषः, मुकुन्दः-वाद्यविशेषः-प्राणातिलीनं ये वाद्यमानः, शङ्खिका-लघुशङ्खरूपा तस्याः शब्दः किञ्चित्तीक्ष्णो भवति, न तु शङ्खवद्गभीर पिरलीवच्चकौ-तृणवाद्यविशेषौ, परिवादिनी-सप्ततन्त्रीका वीणा सितार इति भाषा प्रसिद्धा, वंशः वंशवाद्यम्, वेणुः-वंशवाद्यविशेषः सुधोपा-वीणाविशेषः, विपञ्ची-त्रितन्त्रीका वीणा, महती-शततन्त्रीका वीणा, कच्छपी-वीणाविशेष रिगिसिगिका-घर्ष्यमाणवाद्यविशेषः, तलं-हस्तपुट, तालो वाद्यविशेषः, कांस्यतालः-कांस्यनिर्मितो वाद्यविशेषः इत्येतैः सुसम्प्रयुक्ता-सु-सुष्ठु-अतिशयेन सम्-सम्यक् सङ्गीतशास्त्रोक्तरीत्या प्रयुक्ताः-सम्बद्धाः, यद्यपि हस्तपुटरूपं तलं ते तुड्डिङ्गा वि द्रुमगणा अणेगबहुविधिविह वीमसा परिणयाए तत वितत घण झुसिराए आतोञ्ज-

विहीए उववेया फलेहिं पुण्णा वि विसट्ठति कुसविकुस जाव चिट्ठति” इस तृतीय कल्पवृक्ष का यह कार्य है कि वह उन युगलिक जनों के लिये अनेक प्रकारके यथेच्छ बाजों को देता रहता है । ये कल्पवृक्ष वहा अनेक हैं इनका स्वाभाविक परिणमन ही बाजों के रूप में हो जाता है अतः जिन्हें जिन २ बाजों की चाहना होती है वे उन २ बाजों को वहा से प्राप्त कर लिया करते हैं । इस सूत्रपाठगत पदों को व्याख्या मैंने जीवोभिगमसूत्र में भोग भूमि के वर्णन

महति कच्छमि रिगिसिगिमा-तल तालकस ताल सुसंपउत्ता आतोञ्जविही निउणगंधव्व समयकुसलेहिं फंदिया तिउणकरणशुद्धा तथेव ते तुड्डिङ्गा वि द्रुमगणा अणेग बहु विविह वीससापरिणयाए तत वितत घण झुसिराए आतोञ्जविहीए उववेया फलेहिं पुण्णा विव विसट्ठति कुसविकुस जाव चिट्ठति” आ। तृतीय कल्पवृक्षः ३। अर्थ आ। प्रभावे छे के ते

ન વાદ્યવિશેષસ્તથાપિ તલોત્પન્નશબ્દમદ્દગ્નશબ્દવદ્વાદ્યં લક્ષણયાઽવગમયતિ, एतादृशाः आ-
 तोद्यविधयः-वाद्यप्रकारा. निपुणगान्धर्वसमयकुशलैः-निपुणं-पटु यथा स्यात्तथा गान्धर्वस-
 मये संगीतशास्त्रे ये कुशला-चतुरास्तैः स्पन्दिताः वादिताः, पुनः कीदृशाः ? इत्याह-
 त्रिस्थानकरणशुद्धाः त्रिपु-आदिमध्यान्त्येषु स्थानेषु कारणेन-क्रियया यथावद्वादनरूप-
 क्रियया शुद्धाः निर्दोषाः अस्थान व्यापारदोषरहिताः, इत्यर्थः तथैव-तद्वत् ते पूर्वोक्ता त्रु-
 टिताङ्गा अपि द्रुमगणाः अनेक बहु विविध-विस्त्रसापरिणतेन अनेको व्यक्तिभेदात् स चा-
 सौ बहु-प्रचुरं यथास्यात्तथा विविधो-जाति भेदान्नानाविधः स चासौ विस्त्रसापरिणत-
 विस्त्रसया-स्वभावेन परिणतश्च तेन तथाप्रकारेण तत् 'विततघनशुपिरेण तत्र तत-बीणा-
 दिकं वाद्यम् चित्तं पटहादिकं घनं-कांस्यतालादिकं, शुपिरं वशादिकं चैषा समाहारः
 ततविततघनशुपिर तेन तथा भूतेन आतोद्यविधिना वाद्यप्रकारेण उपपेता-युक्ताः फलैः
 पूर्णा इव विकसन्ति शोभन्ते । पुनस्ते कीदृशाः इत्याह-कुशविकुशयावत्तिष्ठन्ति इति ।
 यावत्पदसंग्राह्याणि पदानि अर्थश्चास्यैव पञ्चमसूत्रतो बोध्यः ।

अथ चतुर्थकલ્પવૃક્ષસ્વરૂપમાહ —

‘તીસે જં સમાપ્ત મરહે વાસે તત્થ તત્થ દેસે તહિ તહિં વહવે દીવસિદ્ધા જામં
 દ્રુમગણા પળણત્તા સમણાડસો ! જહા સે સંઘાવિરાગસમપ્ત નવનિદિવદ્દણો દીવિયા ચક્ક-
 વાલવિંદે પભૂયવટ્ટિપલિત્તણેદે ઘણિજ્જલિણ તિમિરમદ્દપ્પ કળગનિગરકુસુમિયપાલિયા-
 તગ્ગ વળપ્પગાસે કંચળમણિરયણવિમલમહરિહ તવણિજ્જુજ્જલ્લ વિચિત્તદંડાર્હિ દીવિઆર્હિ

પ્રકરણ મેં કી હૈ अतः वहीं से इसे देखलेना चाहिए, ग्रन्थ का कलेवर बढ़ जाने के मय से
 यहां उसे नहीं लिखा है. इस तृतीय कल्पवृक्ष का नाम त्रुटिताङ्ग है-त्रुटित नाम बाजे का है
 — बाजे अनेक प्रकार के होते हैं । यही बात इस सूत्रपाठ द्वारा प्रकट की गई है ।

શુભલિલેખનોને અનેક પ્રકારના ચથેચ્છ વાદિત્રો આપતા રહે છે એવા કલ્પવૃક્ષો ત્યાં અનેક છે.
 વાદિત્રોના રૂપના એમનું સ્વાભાવિક રૂપમા પરિણમન થઈ જાય છે જેમને જે જે પ્રકારના
 વાદિત્રોની આવશ્યકતા જણાય છે તે તે પ્રકારના વાદિત્રો તેઓ ત્યાથી મેળવી લે છે આ
 સૂત્રમા આવેલા પદોની વ્યાખ્યા છાસિકિમ સૂત્રના ભોગશૂભિ પ્રકરણમા કરવામા આવી
 છે એથી વાચકો ત્યાથી વાચી લે અથ્થ વિસ્તાર ભયથો અત્રે વ્યાખ્યા કરવામા આવી
 નથી આ તૃતીય કલ્પવૃક્ષનું નામ ત્રુટિતાંગ છે ત્રુટિત નામ વાદિત્રનું છે વાદિત્ર અનેક
 પ્રકારના હોય છે, એ જ વાત આ સૂત્ર પાઠ વડે પ્રકટકરવામા આવી છે.

સહસા પજ્જાલિઉસ્સપ્પિય નિદ્ધતેય દિપ્પંત વિમલ્લગ્ગણસમપ્પહાઈં વિતિમિરકરસૂરપસરિ-
 ઉજ્જોયચિલ્લિયાઈં જાલુજ્જલપ્પહસિયાભિરામાઈં સોભમાણા તદેવ તે દીવસિહાવિ દુમગ-
 ણા અણેગવહુવિવિહવીસસાપરિણયાણ ઉજ્જોયવિહોણ ઉત્તવેયા ફલેઈં પુણ્ણા ઇવ વિસટ્ઠંતિ
 કુસવિકુસ જાવ ચિટ્ઠંતિ, ઇતિ ।૪।

एतच्छाया-तस्यां खलु समायां भरते वर्षे तत्र तत्र देशे तत्र तत्र बहवो दीपशिखा
 नाम द्रुमगणाः प्रज्ञप्ताः श्रमणाऽऽयुष्मन् !, यथा तत् सन्ध्यारागसमये नवनिधिपतेः दी-
 पिकाचक्रवालवृन्दं प्रभूतवर्तिपर्याप्तस्नेहं घनोज्ज्वलितं तिमिरमर्दकं कनकनिकरकुसुमितपा-
 रिजातकवनप्रकाशं काञ्चनमणिरत्नविमलमहार्हतपनीयोज्ज्वलविचित्रदण्डाभिः दीपिका-
 मिः सहसा प्रज्वालितोत्सर्पितस्निग्धतेजोदीप्यमान विमलग्रहणसमप्रभाभिः वितिमि-
 रकरसूरप्रस्तोद्घोतदीप्यमानाभिः ज्वालोच्चलप्रहसिताभिरामाभिः शोभमानं तथैव ते
 दीपशिखा अपि द्रुमगणाः अनेक बहुविविधविस्रसापरिणतेन उद्घोतविधिना उपपेताः
 फलैश्च विकसन्ति, कुशविकुश यावत् तिष्ठन्ति इति ।४।

एतद्व्याख्या—हे श्रमणायुष्मन् ! तस्यां खलु समायां भरते वर्षे तत्र तत्र देशे
 तत्र तत्र बहवो दीपशिखाः दीपशिखा इव दीपशिखाः, तत्कार्यसम्पादित्वात्, अन्यथा
 व्याघातकालत्वेन तत्र बह्वेभावादीपशिखानामप्यसम्भवात्, नाम प्रसिद्धा द्रुमगणाः
 प्रज्ञप्ता । तान् वर्णयितुं दृष्टान्तमुपन्यस्यति यथा—येन प्रकारेण तत्—प्रसिद्धं सन्ध्या-

चतुर्थ कल्पवृक्षका स्वरूप—

“તીસેળ સમાપ ભરદેવાસે તત્થ ૨ દેસે તદ્દિ ૨ બહવે દોવસિહા ણામં દુમગણા પળ્ણતા સમણા-
 ડસો ! જહા દે સજ્ઞાવિરાગસમપ નવનિહિવહ્ણો દોવિયાચક્રવાલવિંદે પમૂય વટ્ટિપલિત્તજેદ્દે ઘણિ
 ડજ્જાલિપ્પ તિમિરમહપ્પ કળ્લગણિગર કુસુમિય પરિયાતગવળપ્પગાસે કચ્છળમણિરયણવિમલમહરિહ તવ-
 ણિજ્જુજ્જલ વિચિત્ત દંઢાઈં દોવિયાઈં સહસા પજ્જાલિયો સપ્પિય નિદ્ધતેયદિપ્પત વિમલ્લગ્ગણ-
 ઇત્યાદિ. । ચતુર્થ કલ્પવૃક્ષ કા નામ દ્વીપશિખ હૈ યે દ્વીપશિખ નામકે કલ્પવૃક્ષ વહા ડસ સમય
 જગહ ૨ અનેક સ્થલો પર સુશોભિત હોતે હૈ । યે અનેક બહુવિધ વિશ્વસા પરિણત ઉદ્ધોતવિધિ સે

ચતુર્થ કલ્પવૃક્ષ સ્વરૂપ—

‘તીસેળ સમાપ ભરદે વાસે તત્થ ૨ દેસે તદ્દિ ૨ બહવે દોવસિહા ણામં દુમગણા
 પળ્ણતા સમણાડસો । જહા સે સંજ્ઞાવિરાગસમપ નવનિહિવહ્ણો દોવિયા ચક્રવાલ વિંદે
 પમૂ વટ્ટિપલિત્તજેદ્દે ઘણિ ડજ્જાલિપ્પ તિમિરમહપ્પ કળ્લગણિગર કુસુમિય પારિયાતગવળપ્પ-
 ગાસે કચ્છળમણિરયણ વિમલમહરિય તવણિજ્જુજ્જલ વિચિત્ત દંઢાઈં દોવિયાઈં સહસા
 પજ્જાલિયો સપ્પિય નિદ્ધતેયદિપ્પંત વિમલ ગ્ગણ-ઇત્યાદિ ।

ચતુર્થ કલ્પવૃક્ષ નામ દ્વીપશિખ છે દ્વીપશિખ નામના કલ્પવૃક્ષો ત્યાં ઠેક ઠેકાણે
 હોય છે. એ સર્વ વૃક્ષો ત્યાં અનેક એ બહુવિધ વિશ્વસા પરિણત ઉદ્ધોતવિધિથી યુક્ત હોય

विरागसमये सन्ध्यैव विरागः विगतो रागः सूर्यस्यारुणिमा यत्र स विरागः स चासौ समयः सन्ध्याविरागसमयस्तस्मिन् तथा सूर्यरागरहितं संध्यासमये अंधकारारम्भकाले नवनिधिपतेः नव=नव संख्यकाश्च ते निधयः नैसर्प १, पाण्डुक २, पिङ्गलक ३, सर्वरत्न ४, महापद्म ५, काल ६, महाकाल ७, माणवक ८, शङ्खा तेषां पति-स्वामी-नवनिधिपति-चक्रवर्ति तस्य नवनिधिपतेः दीपिकाचक्रवालवृन्दं- दीपिकाः-लघु दीपाः, तासां चक्रवाल-गोलाकारः दीपिका चक्रवालं तदेव वृन्दं, तत् कीदृशम् ? इत्याह प्रभूतवर्ति पर्याप्तस्नेह-प्रभूताः-प्रचुराः स्थूला वर्तिकाः दशा यस्य तत् प्रभूतवर्ति तच्च तत् पर्याप्तस्नेह-पर्याप्तः-परिपूर्णाः स्नेहः तैलादि-लक्षणो यस्य तत् तथा, तथा घनोज्ज्वलितं घनम्-अत्यर्थ-निरन्तरम् उज्ज्वलितं-प्रकाशितम्, अतएव तिमिरमर्दकम्-अन्धकारनाशकम्, पुनस्तत् कीदृशम् इत्याह-कनकनिकरकुसुमितपारिजातकवनप्रकाशं तत्र कनकनिकरः-स्वर्णपुठजः कुसुमितपारिजातकवनं कुसुमित-पुष्पितं यत् पारिजातकवनं कल्पवृक्षविशेषवनं चेति कुसुमितपारिजातकवनम् अनयो समाहारद्वन्द्वे कनकनिकरकुसुमितपारिजातकवनं तद्वत्प्रकाशो यस्य तत् तथा, तथा-काञ्चनमणि रत्न विमल महाहृतपनीयोज्ज्वलविचित्रदण्डाभिः-तत्र काञ्चन-स्वर्ण मणिः वैडूर्यादि, रत्नं वज्रादि चेति काञ्चनमणिरत्नानि तन्मयाः विमलाः स्वाभाविकागन्तुकमलरहिताः महाहर्षाः-बहुमूल्या तपनीयोज्ज्वला तपनीयेन-उत्तमजातीयस्वर्णेन उज्ज्वलाः-भास्वराः, विचित्राः-विचित्रवर्णाः दण्डा-दीपिकाधारयष्टयो यासां तामिः, तथा सहसा प्रज्वालितोत्सर्पित स्निग्धतेजोदीप्यमानविमलग्रहगणसमप्रभाभिः सहसाः-एककालेन प्रज्वालिताः-प्रदीपिताः उत्सर्पिताः-एककालेन वर्च्युत्सर्पणत उर्ध्वोक्ताः, स्निग्धतेजसः स्निग्धं-नयनसुखदं तेजो यासां ताः नेत्राप्रतीघातकतेजोयुक्ता इत्यर्थः, दीप्यमानविमलग्रहगणसमप्रभाः-दीप्यमानः-निशि स्फुरन् विमलः-धूल्याद्यभावेन स्वच्छो यो ग्रहगण-ग्रहसमूहः तेन समा-समाना प्रभा-दीप्तिर्यासां ताः एतेषां पदानां कर्मधारये सहसा प्रज्वालितोत्सर्पितस्निग्धतेजोदीप्यमानविमलग्रहगणसमप्रभास्ताभिः, तथा-वितिमिरकरस्रप्रसृतोद्घोतदीप्यमानाभिः-वितिमिरकरः-विगतं तिमिरमन्धकार यस्मिन् सति स वितिमिरः तादृशः करः-किरणो यस्य स वितिमिरकरः, अथवा वितिमिरम्-अन्धकाराभावः तस्य करः कारको वितिमिरकरः स चासौ सुरः सूर्यश्चेति वितिमिरकरस्र तस्य यः प्रसृत-दिशि दिशि व्याप्तः उद्घोतः-प्रभासमूहः तद्वत् दीप्यमानाः प्रकाशमानास्ताभिः, तथा ज्वालोज्ज्वलप्रहसिताभिरामाभिः ज्वालाः शिखाएव उज्ज्वलप्रहसितं स्वच्छहासः, तेनाभिरामाः मनीहरास्ताभिः, एतादृशीभिर्दीपिकाभिः शोभमानं भवति, नथैव ते दीप-

युक्त होते हैं अतः दीपो को जो कार्य होता है उसके ये सम्पादक होते हैं नौ निधियों के ये नाम हैं-नैसर्प १, पाण्डुक २, पिङ्गलक ३, सर्वरत्न ४, महापद्म ५, काल ६, महाकाल ७, छे. जो थी दीपोना ७ कार्य होय छे तेभना छे सम्पादक होय छे नव निधियोना नाम आ प्रभाषे छे नैसर्प १ पाण्डुक २ पिङ्गलक ३ सर्वरत्न ४ महापद्म ५ काल ६ महाकाल ७

શિશ્વા અપિ દ્રુમગણા અનેકવહુવિવિધવિસ્રસાપરિણતેન અનેકો વ્યક્તિભેદાત્, સ ચાસૌ
 વહુવિવિધઃ વહુ-પ્રચુરં યથા સ્યાત્તથા વિવિધઃ જાતિભેદાન્નાનાવિધઃ સ ચાસૌ વિસ્રસા
 પરિણતાઃ સ્વભાવપરિણતશ્ચ તેન તથાભૂતેન ઉદ્ઘોતવિધિના દીપપ્રકારેણ ઉપપેતા યુક્તા
 ફલૈઃ પૂર્ણાં ઇવ વિકસન્તિ શોભન્તે, તથા કુશવિકુશ યાવત્ તિષ્ઠન્તીતિ પ્રાગ્વત્ ઇતિ ॥૪॥

અથ પશ્ચમકલ્પવૃક્ષસ્વરૂપમાહ—

‘તીસે ણ સમાપ્ મરહે વાસે તત્થ તત્થ દેસે તર્હિ તર્હિ વહવે જોહસિયા ણામં
 દ્રુમગણા પ્ણત્તા સમણાસો ! જહા સે અરુગયસરયસૂરમણ્ડલપટતત્તકાસહસ્સદિ-
 પ્પતં વિજ્જુજ્જલહુયવહ્ણિદ્ધૂમજલિયણિદ્ધંતધોય તત્તતવણિજ્જકિંસુયાસોયજામ્મયણકુસુ-
 મભિમંડલિયપુજમણિરયણ કિરણજચ્ચર્હિંગુલયણિગરુવારેગરુવા તહેવ તે જોહસિયા વિ
 દ્રુમગણા અણેગવહુવિવિદ્ધ વીસસાપરિણયાપ્ ળ્લજોયવિહીં ઉવવેયા સુહલેસા મંદલેસા
 મંદાયવલેસા કૂહ ઇવ ઠાણદ્વિયા અન્નોજ્જ સમોગાદાહિં લેસાહિં સાપ્ પહાપ્ તે પપ્પસે સ
 વ્વઓ સમંતા ઓદાસેતિ ઉજ્જોયતિ પમાસંતિ, કુસવિકુસ જાવ ચિદ્ધંતિ, ઇતિ ૧૫।

एतच्छाया—तस्यां खलु समायां भरते वर्षे तत्र तत्र देशे तत्र तत्र बहवो ज्योति-
 षिका नाम द्रुमगणा प्रज्ञप्ता श्रमणाऽऽयुष्मन् । यथा ते अचिरोद्गतशरत्सूर्यमण्डलपत-
 तुल्कासहस्रदीप्यमानविद्युदुज्ज्वल निर्धूमज्वलितद्रुतवह निर्धमांत धौततप्ततपनीय किंशु-
 काशोक जपाकुसुमविमुकुलितपुठजमणिरत्नकिरणजात्यहिङ्गुलकनिकररूपातिरेकरूपाः त-
 थैव ते ज्योतिषिका अपि द्रुमगणा अनेकवहुविविधविस्रसापरिणतेन उद्घोतविधिना
 उपपेता मुखलेस्या मन्दलेस्या मन्दाऽऽतपलेस्या कूटानीव स्थानस्थिता अन्योऽन्य-
 समवगाढाभिः लेस्याभिः स्वया प्रभया तान् प्रदेशान् सर्वतः समन्तात् अवभासयन्ति
 उद्घोतयन्ति प्रभासयन्ति कुशविकुश यावत् तिष्ठन्ति, इति १५।

एतद्व्याख्या—‘तीसे णं’ इत्यादि, तस्यां खलु समायां भरते वर्षे तत्र तत्र देशे तत्र
 तत्र=तस्य तस्य देशस्यावान्तरभागे ज्योतिषिका ज्योतिः प्रभा, तदस्त्यस्येति ज्योतिषः
 स एव ज्योतिषिकः सूर्यः, तद्वत्प्रकाशकत्वेन वृक्षा अपि ज्योतिषिकाः एतन्मानः नाम प्र-

माणવક ૮, ઓર શક્ક । હસ સૂત્રપાઠગત પદોં કી વ્યાખ્યા મી જીવાભિગમ સૂત્ર કે અનુવાદ કરતે
 સમય લિખી જા ચુકી હૈ અતઃ વહીં સે દેસ લેના ચાહિયે ।

पांचवें कल्पवृक्ष का स्वरूप—

‘તીસેણ સમાપ્ મરહે વાસે તત્થ ૨ દેસે તર્હિ ૨ વહવે જોહસિયા ણામં દ્રુમગણા પ્ણત્તા
 ઇત્યાદિ—પાંચવે કલ્પવૃક્ષ કા નામ જોતિષિક હૈ યે કલ્પવૃક્ષ ડસકાલ મેં વહાં અનેક હોતે હૈ—

૭ માણવક ૮ અને ૧૫ માં સૂત્રપાઠમાં આવેલા પદોની વ્યાખ્યા જીવાભિગમસૂત્ર ના
 ભાષાન્તર માં કરવામાં આવી છે એથી જિજ્ઞાસુઓએ ત્યાંથી વાંચી લેવું

पांचव्यां कल्पवृक्षस्य रूपः

‘તીસેણ સમાપ્ મરહે વાસે તત્થ ૨ દેસે તર્હિ ૨ વહવે જોહસિયા ણામં દ્રુમગણા
 પ્ણત્તા’ ઇત્યાદિ પાંચમા કલ્પવૃક્ષ નામ જોતિષિક છે એ કલ્પવૃક્ષ તે સમયે ત્યાં થયા

सिद्ध द्रुमगणाः प्रज्ञप्ताः । सम्प्रति सदृष्टान्त तद्वर्णनमाह 'जहा से' इत्यादि । यथा येन प्रकारेण ते प्रसिद्धाः अचिरोद्गतशरत्सूर्यमण्डलपतदुल्कासहस्रदीप्यमानविद्युदुज्ज्वलित निर्धूमज्ज्वलित हुतवहनिर्ध्मातधौततप्ततपनीयकिंशुकाशोकजपाकुमुमविमुकुलितपुञ्जमणिरत्नकिरण जात्यहिङ्गुलकनिकररूपातिरेकरूपाः तत्र अचिरोद्गतशरत्सूर्यमण्डलम्-अचिरोद्गतसद्य एव उदितं यत् शरत्सूर्यमण्डलं शरद्वत् सम्बन्धिसूर्यविम्बम्, तथा-पतदुल्कासहस्रम्-पतन्तीनाम्-आकाशादध आगच्छन्तीनाम् उल्काना सहस्रम्, तथा दीप्यमानविद्युत्-प्रकाशमानविद्युत्, तथा-उज्ज्वालनिर्धूमज्ज्वलितहुतवहः-उज्ज्वालः-उद्गता ज्वाला यस्य सः देदीप्यमानः एतादृशो निर्धूमो-धूमरहितो ज्वलितः-दीप्तिरसम्पन्नो यो हुतवहः-अग्निः स तथा, मूले 'हुतवह' शब्दस्य 'निर्धूम' शब्दात्पूर्वप्रयोगः प्राकृतत्वात्, पूर्वोक्तपदचतुष्टयस्य द्वन्द्वे-अचिरोद्गतशरत्सूर्यमण्डलपतदुल्कासहस्र-दीप्यमानविद्यु-दुज्ज्वाल निर्धूमज्ज्वलितहुतवहा इति । एते कीदृशा इति दर्शयितुमाह-'निर्ध्मात' इत्यादि । तत्र निर्ध्मात नितराम् अग्निसयोगेन ध्मातं-शोधितमलम् अत एव धौतं-शुद्धं तप्ते-तापप्राप्तं च यत् तपनीयम् उत्तमजातीयं सुवर्णं तत् निर्ध्मातधौततप्ततपनीयमिति, तथा किंशुकाशोकजपाकुसुमानां किंशुकः-पलाशः, अशोकः प्रसिद्धः, जपा प्रसिद्धा, आसां यानि विमुकुलितानि-विकसितानि कुसुमानि-पुष्पाणि तेषां ये पुञ्जाः-समूहास्ते किंशुकाशोकजपाकुसुमविमुकुलितपुञ्जा इति । 'विमुकुलित' शब्दस्य परनिपात आर्षत्वात् । तथा-मणीना रत्नानां च किरणा इति मणिरत्नकिरणा इति तथा-जात्यहिङ्गुलकानां-उत्तमजातीयहिङ्गुलकानां यो निकरः-समूहः स जात्यहिङ्गुलकनिकर इति । एतेषां द्वन्द्वे-निर्ध्मातधौततप्ततपनीयकिंशुकाशोक जपाकुसुमविमुकुलितपुञ्जमणिरत्नकिरणजात्यहिङ्गुलकनिकराः एतेषां यद्रूपं ततोऽपि अतिरेक-सातिशयं रूपं येषां ते तथा, ततः 'अचिरोद्गतेत्यादि ज्वलित हुतवहान्तस्य पदस्य निर्ध्मातेत्यादि रूपातिरेकरूपान्तस्य च पदस्य कर्मधारय । येन प्रकारेण निर्ध्मातधौततप्ततपनीयाद्यपेक्षयाऽपि विशिष्टरूप सम्पन्ना अचिरोद्गतशरत्सूर्यमण्डलादयः सन्तीति निष्कर्षः इति । तथैव ते-पूर्वोक्ताः ज्योतिषिका अपि द्रुमगणाः, अनेक बहुविविधविस्मयापरिण-तेनोद्द्योतविधिनोपपेताः सन्ति । ननु यदि सूर्यमण्डलादिहुतवहान्त ज्योतिर्वत् प्रकाशिनस्ते स्थितदा तद्वद्दर्शित्वतोत्रत्व चलनादिष्वनोपेता अपि सम्भवेयुरित्याह-सुखलेख्या-इत्यादि सुखयतीति सुखा-सुखदा लेख्या तैजो येषां ते सुखलेख्याः अतएव मन्दलेख्याः

और ये अपनी स्वाभाविक प्रभा से एवं अनेकबहुविविधविस्मया परिणत हुई उद्योतविधि से युक्त हुए उन २ प्रदेशों को चारों ओर से अवभासित करते रहते हैं । उद्योतित करते रहते हैं । इन सब कल्पवृक्षों के अधोभाग कुशकाश एव विकुश-बिल्वादि लताओं से रहित होते हैं ।

होय છે અને પોતાની સ્વાભાવિક પ્રભાથી તેમજ અનેક બહુવિવિધવિસ્મયા પરિણત શ્રેણી-ઉદ્યોત વિધિથી યુક્ત થયેલા તત્ત્વ પ્રદેશોને ઓઝેરથી અવભાસિત કરતા રહે છે ઉદ્યોતિત કરતા રહે છે તેમજ પ્રભાયુક્ત કરતા રહે છે આ સર્વ કલ્પવૃક્ષના અધોભાગ કુશ કાશ તેમજ વિકુશ બિલ્વાદિ લતાઓથી રહિત હોય છે. આ સૂત્રપાઠગત પદોની વ્યાખ્યા છવા.

—मन्दा—अल्पा छेइया येषां ते तथा, मन्दाऽऽतपछेइयाः मन्दातप इव छेइया येषां ते तथा, सुखसह तेजस्सम्पन्ना इत्यर्थः, तथा कूटानीव—पर्वतादि शिखराणीव स्थानस्थिताः—स्वोत्पत्तिस्थाने स्थिताः स्थिरीभूताः समयक्षेत्रवद्विर्वर्त्ति ज्योतिष्का इव ते प्रकाशयन्तीति भावः, तथा अन्योऽन्य समवगाढाभिः—अन्योऽन्य—परस्परं समवगाढाभिः एकत्र मिलिताभिः छेइयाभिः तेजोभिः स्वया-स्वकीयया प्रभया दीप्त्या तान् प्रदेशान् सर्वतः सर्वदिक्षु समन्तात्—सर्वविदिक्षु च अवभासयन्ति—प्रकाशयन्ति, उद्द्योतयन्ति तत्रस्थान् पदार्थान् सामान्यतः प्रभासयन्ति विशेषत इति । तथा कुश विकुश यावत् तिष्ठन्तीति प्राग्वदिति । एषां ज्योतिषिकाणां द्रुमगणानां प्रकाशो बहुदूर व्यापीदीपशिखाद्रुमापेक्षया तीव्रश्च भवतीति पूर्वद्रुमेभ्यो विशेषोऽत्र बोध्यः । ५।

अथ पट्टकल्पवृक्षस्वरूपमाह—

‘तीसे ण समाए भरहे वासे तत्थ देसे तत्थ तत्थ बहवे चित्तंगा णाम दुमगणा पणत्ता समणाउसो । जहा से पेच्छाधरे विचित्ते रम्मे वरकुसुम दाम मालुज्जले भासंतमुक्कपुप्फपुजोवयारकलिए विरल्लिय विचित्तमल्लसिरिसमुदयप्पगम्मे गंठिम वेढिम पूरिम संघाइमेण मल्लेण छेय सिप्पिविभागरइएणं सव्वओ चेव समणुवद्धे पविरल लंबंत विप्पइद्ध पंचवण्णेहिं कुसुमदामेहिं सोममाणे वणमालकयगाए चेव दिप्पमाणे, तहेव ते चित्तंगा वि दुमगणा अणेग बहु विविह वीससापरिण्याए मल्लविहीए उववेया कुसविकुस जाव चिहंति इति । ६।

एतच्छाया—तस्यां खलु समायां भरते वर्षे तत्र तत्र देशे तत्र तत्र बहवः चित्राङ्गा नाम द्रुमगणाः प्रज्ञप्ताः श्रमणाऽऽयुष्मन्, यथा तत् प्रेक्षागृहं विचित्रं रम्यं वरकुसुमदाममालो ज्ज्वलं भासमानं मुक्त पुष्पपुञ्जोपचारकलितं विततं विचित्रं माल्य श्रीसमुदयप्रगल्भं ग्रंथिमवेष्टितं पूरितं सङ्घातिमेन माल्येन छेक शिल्पिविभागरचितेन सर्वतश्चैव समनुवद्धं प्रविरललम्बमानं विप्रकृष्ट पञ्चवर्णैः कुसुमदामभिः शोभमानं वनमालाकृताग्रं चैव दीप्यमानं, तथैव ते चित्राङ्गा अपि द्रुमगणाः अनेक बहुविविध विस्त्रमापरिणतेन माल्यविधिना उपपेताः कुशविकुश यावत् तिष्ठन्ति, इति । ६।

एतद्रथाख्या—‘तीसेणं’ इत्यादि । हे श्रमणायुष्मन् ! तस्यां खलु समायां भरते वर्षे तत्र तत्र देशे तत्र तत्र बहवः चित्राङ्गाः चित्राणाम् अनेक प्रकारकाणां माल्यानां कारण-इस सूत्र पाठ गत पदों की व्याख्या जीवामिगम सूत्र में लिखी गई है । अतः इसे भी वहीं से

देख लेना चाहिये । ग्रन्थ का कलेवर विस्तृत करने से कोई लान नहीं है ।

छठे कल्पवृक्ष का स्वरूप—

“तीसे ण समाए भरहे वासे तत्थ २ देसे तहिं बहवे चित्तंगा णाम दुमगणा पणत्ता” इत्यादि । छठे कल्पवृक्ष का नाम चित्राङ्ग है । पुण्य से ये कल्पवृक्ष उस काल में वहां अनेक होते

बिगमसूत्र भा करवा भा आनी छे जेथी जिहासुओओ त्यांथी वाथी देहु ओछे ओही पुनः सूत्रपाठगत पढोनी व्याख्या करवाथी अन्य विस्तार थये.

त्वात् चित्रांगा नाम द्रुमगणाः प्रज्ञप्ताः । तान् द्रुमान् वर्णयितुं दृष्टान्तमुपन्यस्यति-‘जहासे’
इत्यादि । यथा-येन प्रकारेण तत् - प्रसिद्धं प्रेक्षागृहं नाट्यशाला, विचित्रं-नानाविधचि-
त्रोपशोभितम् अतएव रम्यं=रमणीयं तथा वरकुमुदाममालोज्ज्वलं-वर्गणि-उत्तमानि
यानि कुसुमानि येषां यानि दामानि-माल्यानि तेषां याः मालाः श्रेणयस्ताभिरुज्ज्वल
मण्डितं-देदोऽग्रमानम्, तथा-भासमानमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारकलितं भासमानः-देदीप्यमानो
यः मुक्तपुष्पपुञ्जोपचारः मुक्तो विकीर्णो यः पुष्पपुञ्जः पुष्पसमूहः तत्कृतो उपचारः-रचना
तेन कलितं युक्तम्, तथा विततविचित्रमाल्यश्रोसमुदायप्रगल्भं विततानि विस्तृतानि
विवित्राणि-नानाप्रकाराणि यानि माल्यानि-गुम्फितपुष्पमालाः, तेषां यः श्रोसमुदायः
शोभासमूहः तेन प्रगल्भम्-अतिपरिपुष्टं तथा-ग्रन्थिमं ग्रन्थिमवेष्टिमपूरिमसङ्घातिमेन-
ग्रन्थिमं ग्रन्थेन निर्वृत्तं, नैपुण्यातिशयात् ग्रन्थि ग्रन्थिसमुदायनिष्पादितं वेष्टनेन सूत्रवे
ष्टनक्रमेण निष्पन्नं पूरिमम् पूरणेन-भरणेननिष्पन्न संघातिमम्-सवातेन समूहेण निष्प-
न्नम्, एषा समाहारे ग्रन्थिमवेष्टिम पूरिमसङ्घातिम तेन तथा प्रकारेण माल्येन मालया,
पुनः कीदृशेन माल्येन ? इत्याह छेकशिल्पिविभागरचितेन छेकः निपुणो यः शिल्पो
तेन विभागरचितं विभागेन विभक्त्या विच्छिन्त्या रचित निष्पादितं तेन तथाभूतेन माल्येन
सर्वतः=सर्वदिक्षु समनुबद्ध संयुक्तम् तथा-प्रविरल लम्बमानविप्रकृष्टपञ्चवर्णैः-प्रविरलानि
अमिलितानि लम्बमानानि दीर्घाणि विप्रकृष्टानि-परस्परतःसुदूरवर्तीनि यानि पञ्चव
र्णानि नीलकृष्णहारिद्र लोहितशुक्लवर्णात्मकानि तानि प्रविरललम्बमानविप्रकृष्टपञ्चवर्णा-
नि तैस्तथाभूतैः कुसुमदामभिः-पुष्पमाल्यैः शोभमानं प्रविरलत्वम् अल्पावकाशे सत्यपि
स्यादत्त उक्तं विप्रकृष्टेति । पुनः कीदृशम् ? इत्याह-वनमालाकृतार्द्र वनमाला-वन्द
नमाला सा कृता अग्रे-अग्रभागे यस्य तत्तथाअग्रभागे कृतवन्दनमालमित्यर्थः, एव-निश्चयेन
तथाभूतं सत् दीप्यमानं शोभमानं भवति, तथैव ते पूर्वोक्ताः चित्राङ्गाः अपि द्रुमगणाः अने-
कबहु विविधविस्त्रसापरिणतेन अनेको व्यक्ति मेदात् बहुप्रचुरं यथा स्यात्तथा विविधः
अनेकविधो जातिमेदात् स चासौ विस्त्रसापरिणतः-स्वभावेन परिणतस्तेन तथाविधेन
माल्यविधिना उपपेताः-युक्ता भवन्ति, तथा कुशविकुश यावत् तिष्ठन्तीति प्राग्वत् । ६।

है जगह २ में स्थान २ पर ये वहां उस काल में पाये जाते हैं । भोगभूमि में इनका अब भी
सङ्काव है । इस भरतक्षेत्र में प्रथमकाल में भोगभूमि थी । अतः उस समय ये वहां प्रत्येक
स्थानों पर वर्तमान थे । ये चित्राग जाति के कल्पवृक्ष उन भोग भूमियां जनों को तथाविध

छंदा ६६५वृक्षसु २५३५ -

‘तीलेणं समाप मरहे वासे तत्थ २ देसे तर्हि तर्हि बहुवे चित्तंगा नामं द्रुमगणा पण्ण
त्ता’ इत्यादि ।

छंदा ६६५वृक्षसु नाम चित्राग छे ते काणे ओ ६६५वृक्षे त्यां पुष्पेण स प्याभां यथा इत्तां
ठेठेकाणे ओ ६६५ वृक्षे ते काणे त्यां पुष्पेण स प्याभा प्राप्ता यथा इत्ता भोग भूमिभां ओभेने
अत्यारे पण्ण सङ्काव छे आ भरत क्षेत्रभा प्रथम काणभा भोग भूमि इती ओथी ते

અથ સપ્તમકલ્પવૃક્ષસ્વરૂપમાહ—

‘તીસે ણં સમાપ તત્થ તત્થ મરહે વાસે દેસે તર્હિ તર્હિ બહવે ચિત્તરસા ણામં દુમ-
ગણા પળ્લતા સમણાડસો । જહા સે સુગંધવરકમલસાલિ તંદુલવિસિટ્ઠિણિરુવહ્યદુદ્ધ રદ્ધે
સારયધયગુડખણ્ડમધુમેલિણ અરસે પરમણ્ણે હોજ્જા ઉત્તમવળ્ણગધમંતે, અહવા રળ્ણો
ચક્કવટ્ઠિસસ હોજ્જ ણિઉળેહિ સ્સવપુરિસેહિ સજ્જિણ ચતુક્કલ્પસેયસિત્તે ઇવ ઓદળે કલમ
સાલિણિવ્વત્તિણ વિપ્પમ્મુલ્લકે સવપ્પમિઉવિસયસગલસિત્થે અળેગસાલળગસજુત્તે અહવા પ-
હ્હિપુળ્ણદવ્વુલ્લકલ્લદે સુસક્કલ્લણ વળ્ણગધરસફરિસજુત્તે વલ્લવીરિય પરિણામે ઇદિયવલ્લપુટ્ઠિવિ-
વદ્ધળે સુપ્પિપાસામહળે પહાણં ગુલકદિય સ્સણ્ણમચ્છંદિયઉવળીણ્ણવ્વમોઅગે સળ્ણસમિઙ્ગ-
ગમ્મે હવેજ્જ પરમેટ્ઠગસંજુત્તે, તદેવ તે ચિત્તરસાવિ દુમગણા અળેગવહ્હુવિહ વિવિહ વીસ-
સાપરિણયાણ મોયળવિહીણ ઉવવેયા કુસવિકુસ જાવ ચિટ્ઠિતિ ઇતિ । ૭।

પતચ્છાયા—તસ્યાં સ્વલ્પ સમાયા મરતે વર્ષે તત્ર તત્ર દેશે તત્ર તત્ર બહવઃ ચિત્રર-
સા નામ દ્રુમગણાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ શ્રમણાયુષ્મન્ !, યથા તત્ સુગન્ધવર કલમ શાલિ તળ્દુલવિ-
શિષ્ટ નિરુપદતદુગ્ધરાદં શારદઘૃતગુડખણ્ડમધુમેલિતમ્ અતિરસ પરમાન્નં ભવેત્ ઉત્તમવ-
ર્ણગન્ધવત્ અથવા રાજ્ઞઃ ચક્રવર્તિનઃ ભવેત્ નિપુર્ણઃ સ્વપુરુષૈઃ સજ્જિતઃ ચતુષ્કલ્પસેકસિ-
ક્તઃ ઇવ ઓદનઃ કલમશાલિનિર્વર્તિતઃ વિપ્રમુક્તઃ સવાળ્પમૃદુવિશદસકલસિન્ધઃ અનેક
શાલનસયુક્તઃ અથવા પરિપૂર્ણદ્રવ્યોપસ્કૃતઃ સુસસ્કૃતઃ વર્ણગન્ધરસસ્પર્શયુક્તો વલ્લવીર્યપરિ-
ણામઃ ઇન્દ્રિયબલપુષ્ટિવિવર્ધનઃ શ્રુત્પિપાસામથનઃ પ્રધાનગુલકથિતખણ્ડમત્સ્યણ્ડી ઘૃતોપ-
નીત ઇવ મોદકઃ શ્લક્ષ્ણસમિતાગર્મઃ ભવેત્ પરમેષ્ટકસંયુક્તઃ, તથૈવ તે ચિત્રરસા અપિ
દ્રુમગણાઃ અનેકવહ્હુ વિધ વિવિધ વિસ્રસાપરિણતેન મોજનવિધિના ઉપપેતાઃ કુશવિકુશ
યાવત્ તિષ્ઠન્તિ, ઇતિ ॥૭॥

પતદ્વ્યાખ્યા—‘તીસે ણ’ ઇત્યાદિ । તસ્યાં સ્વલ્પ સમાયાં મરતે વર્ષે તત્ર તત્ર દેશે
તત્ર તત્ર બહવઃ ચિત્રરસાઃ—ચિત્રઃ મધુરામ્લાદિ મેદાદનેકપ્રકારઃ, યદ્વા—આસ્વાદકજના-

વિસ્રસા પરિણામ સે પરિણત હોકર અનેક પ્રકાર કો માલ્યામો કો પ્રદાન કરતે હૈં । હસ સૂત્ર
પાઠ ગત પદો કી વ્યાખ્યા જીવામિગમ સૂત્ર કે અનુવાદ સે જાનના ચાહિયે ।

સાતવે કલ્પવૃક્ષ કા સ્વરૂપ—

“તીસે ણ સમાપ તત્થ ૨ મરહે વાસે દેસે તર્હિ ૨ બહવે ચિત્તરસા ણામ દુમગણા પળ્લતા

વખતે અહિ આ તે ઠેક ઠેકાણે હતા એ ચિત્રાગ જાતિના કલ્પવૃક્ષો તે લોગ જૂમિના માણુ
સોને તથાવિધ વિસ્રસાપરિણામથી પરિણત થઈને અનેક પ્રકારોની માળાઓ પ્રદાન કરે
છે. આ સૂત્રપાઠગત પદોની વ્યાખ્યા છવાશિગમસૂત્રના અનુવાદમા કરવામા આવી છે

સાતમા કલ્પવૃક્ષ ૧ સ્વરૂપ—

“તીસેણ સમાપ તત્થ ૨ મરહે વાસે તત્થ દેસે તર્હિ ૨ બહવે ચિત્તરસા ણામં દુમગણા
પળ્લતા સમણાડસો” ઇત્યાદિ ।

સાતમા કલ્પવૃક્ષ ૧ નામ ચિત્રરસ છે પ્રથમ કાળમા એ કલ્પવૃક્ષો આ ભરત ક્ષેત્રમા

नामाश्चर्यकरो रसो येषां ते तथाभूताः नाम द्रुमगणाः प्रज्ञप्ताः । तान् द्रुमगणान् सदृष्टान्तं वर्णयति तान् वर्णयितुं दृष्टान्तमाह—'जहा से' इत्यादि । यथा येन प्रकारेण तत् प्रसिद्धं सुगन्धवरकलमशालितण्डुलविशिष्टनिरुपहतदुग्धराजं सुगन्धाः उत्तमगन्धयुक्ताः वगः—प्रधानाः निर्दोषक्षेत्रकालादिसामग्रीभिः प्राप्ततण्डुलभावाः, ये कलमशालितण्डुलाः कलमशालेः तण्डुलास्ते सुगन्धवरकलमशालितण्डुलाः तथा विशिष्टं—नीरोग—गवादिभवत्त्वा—दुत्तमगुणसम्पन्नं निरुपहतं—पाकादिभिरनुपहतं च यद् दुग्धं तद् विशिष्टनिरुपहतदुग्धम्, उभयो द्वन्द्वे सुगन्धवरकलमशालितण्डुल—विशिष्ट निरुपहत दुग्धानि तैः राजं—पकम्, उत्तमशालितण्डुलैर्विशुद्धदुग्धेन च पाकनिपुणेन निष्पादितमिति भावः, तथा—शारदघृतगुडखण्डमधुमैलतम् शारदघृतगुडखण्डमधुभिः तत्र—शारदघृतं—शरदतुभवं घृतं गुडः प्रसिद्धः खण्डं='खॉड' इति प्रसिद्धम्, मधु—शहद इति प्रसिद्धं तैर्मैलितं योजितम् अतएव अतिरसम्—प्रशस्तरससम्पन्नम्, उत्तमवर्णगन्धवत्—प्रकृष्टवर्णगन्धसम्पन्नं परमान्नं पायसं भवेत्, अथवा—इव यथा राज्ञश्चक्रवर्तिनो निपुणैः पाककुशलैः सूपपुरुषैः पाककारिपुरुषैः सज्जितः—निष्पादितः चतुष्कल्पसेकनसित इव चत्वारः कल्पाः पाकशास्त्रोक्तविधयो यत्र स चतुष्कल्पः स चासौ सेकश्चेति चतुष्कल्पसेकस्तेन सितः युक्तः पाकशास्त्रविदो हि ओदनेषु केमलतोत्पादनयै चतुरः सेककल्पान् कुर्वन्तीति बोध्यम् । तथा—कलमशालिनिर्वर्तितः—कलमशालितण्डुलनिष्पादितः तथा विप्रमुक्तः—पाकदोषरहितः सुपक्वः तथा सबाष्पमृदुविशदसकलसिक्थः सबाष्पाणि—वाष्पसहितानि निःसरद्वाष्पयुक्तानि मृदुनि कोमलानि विशदानि—सर्वथा तुपादिमलापगमाद्विशुद्धानि सकलानि—पूर्णानि सिक्थानि कणा यत्र स तथा—अनेकशालनकसंयुक्तं अनेकानि बहूनि यानि शालनकानि निष्ठाणकानि तैः संयुक्तः ओदनो भवेत्, अथवा इव यथा परिपूर्णद्रव्योपस्कृत—परिपूर्णानि—मोदकाद्रभूतानि सर्वाणि यानि द्रव्याणि केसरैलावातद्राक्षादीनि तैरुपस्कृतं परिष्कृतं—यद्वा तानि उपस्कृतानि निश्चितानि यत्र स तथा, तथा—सुसंस्कृतं यथामात्राग्नि तापादिनोत्तमस्कार सम्पन्नीकृत, तथा—वर्णगन्धरसस्पर्शयुक्तः वर्णादयोऽत्राऽतिशायिनो गृह्यसमणाऽसौ—इत्यादि । सातवें कल्पवृक्ष का नाम चित्ररस है । प्रथम काल में ये कल्पवृक्ष

इस भरतक्षेत्र में जगह २ पर अनेक होते हैं । जैसा इनका नाम है उसी के अनुसार ये गुणोपेत हैं । मधुर आम्लादि रस इनका अनेक प्रकार का होता है । अथवा—आस्वादक जनों को वह रस आश्चर्यकारी होता है । इसलिये भी इन कल्पवृक्षों का नाम चित्ररस हो गया है । ये कल्पवृक्ष इस मधुरादि मेद से अनेक प्रकार के रसादि को किसो के द्वारा किये जाने पर

नहीं देते हैं किन्तु इनका ऐसा ही स्वभाव है कि ये स्वभावतः ही उस प्रकार के परिणमनवाले ठेकेकाष्ठे पुष्कल संख्या में होय छे जेपु जेमनु नाम तेवा जे शुद्धोथी जे युक्त छे मधुर आस्वादक रस जेमना अनेक प्रकारना होय छे अथवा आस्वादकेना भाटे ते रस आश्चर्यकारी होय छे जेथी पक्ष आ कल्पवृक्षे चित्ररस नामथी प्रसिद्ध थई गया छे जे कल्पवृक्षे मधुर वगैरे रसोने केई बडे नहि पक्ष स्वतः स्वभावतः जे आ प्रभावे परि

ન્તે સામર્થ્યાત્, તેન અતિશાયિવર્ણગન્ધરસસ્પર્શૈયુક્ત—સમ્પન્નઃ, તથા વલ્લીર્યપરિણામઃ—વલ્લીર્યદેતવ પરિણામા ઉત્તરકાલે યસ્ય સ તથા, વલ્લીર્યદેતુપરિણામયુક્ત ઇતિ ભાવઃ તત્ર બલં શારિરીકં વીર્યં માનસિકોત્સાહઃ, તથા- ઇન્દ્રિયચલપુષ્ટિવિવર્ધન. ઇન્દ્રિયાણાં યદ્ બલં-સ્વસ્વવિષયગ્રહણસામર્થ્યં તસ્ય યા પુષ્ટિઃ=અતિશાયી પોષસ્તસ્યાઃ વર્ધનઃ વર્ધયતીતિ વર્ધનઃ વૃદ્ધિકારક, તથા-શુત્પિપાસામયનઃ—શુધાતૃપાનાશકઃ, તથા-પ્રધાનગુહકથિત ખણ્ડમત્સ્યખંડીઘૃતોપનીતઃ પ્રધાનાનિ ગુહખણ્ડમત્સ્યખંડીઘૃતાનિ તત્ર ગુહઃ-પ્રસિદ્ધઃ, ખણ્ડ-ખાંડ' ઇતિ પ્રસિદ્ધમ્ મત્સ્યખંડી 'મિશ્રી' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધમ્, ઘૃત-પ્રસિદ્ધમ્ ઇત્યેતાનિ ઉપનીતાનિ યોજિતાનિ યત્ર સઃ અત્ર 'કથિત' શબ્દસ્ય ઉપનીત' શબ્દસ્ય ચ પરપ્રયોગઃ આર્પત્વાત્, તથા-શ્લક્ષ્ણસમિતાગર્ભઃ—શ્લક્ષ્ણા=ત્રિવસ્ત્ર ગાલિતત્વેન સૂક્ષ્મતામુપનીતા યા સમિતા ગૌધૂમચૂર્ણ સા ગર્ભે—અભ્યન્તરે યસ્ય સ તથા વસ્ત્ર ત્રિઃ પૂતગૌધૂમચૂર્ણનિર્મિતઃ, તથા—પરમમેષ્ટક સંયુક્તઃ પ્રશસ્ત દ્રવ્યયુક્ત, એતાદૃશ મોદકો ભવેત્ તથૈવ તે ચિત્રરસા અપિ દ્રુમગણાઃ, અનેક વહુવિધ વિવિધવિસ્રસાપરિણતેન ભોજનવિધિનોપપેતા ભવન્તિ, તથા કુશવિકુશ યાવત્ તિષ્ઠન્તિ ઇતિ પ્રાગ્વત્ । ૭ ।

અથાષ્ટમકલ્પવૃક્ષસ્વરૂપમાહ—

‘તીસે ણં સમાપ્ત મરહે વાસે તત્થ તત્થ દેસે તત્થ તત્થ વહવે મણિય ગા ણામં દુમગણા પણ્ણત્તા સમણાસો! જહા સે હારદ્ધહારવેદળયમહકુંડલ વામુત્તગ હેમજાલ મણિજાલ કળગજાલગ મુત્તગ ઉચિય કહગા खुडुय एकावलि कंठमुत्तग मगरियउरत्थ गेविज्ज सोणि-मुत्तगा चूडामणिकणगतिलग फुल्लगसिद्धत्थयकण्णवालि ससिस्सर उसह चकगतल मंगय-तुडिय इत्थ मालगहरिसय केऊर बलय णालंब अंगुलिज्जग वलक्ख दोणारमालिया कंचि मेहलकलाव पयरगपारि हेरग पायजाल घंटियाखिखणि रयणोरुजाल खुडियवर नेऊर-चलणमालिया कणगणिगल मालिया कंचणमणिरयणभत्तिचित्ता, तद्देव ते मणिअंगावि दुमगणा अणेग जाव भूसणविहीए उववेआ जाव तिट्ठति इति । ८ ।

એતચ્છાયા—તસ્યાં ખલુ સમાયાં મરતે વર્ષે તત્ર તત્ર દેશે તત્ર તત્ર વહવો મણ્યજ્ઞા નામ દુમગણા પ્રજ્ઞપ્તાઃ શ્રમણસ્યુષ્મન્ ! યથા સા હારાર્દ્ધહારવેદનકમુકુટકુંડલ વ્યામુક્તક

હોતે હૈં । અતઃ અનેક વહુવિધ વિસ્રસા પરિણત હુપ્ ભોજનવિધિ સે યુક્ત હોતે હૈં હસ સબન્ધ મેં કહે ગયે સૂત્ર કે પદોં કી વ્યાખ્યા પહિલે હમ જીવામિગમ સૂત્ર કે હિન્દી અનુવાદ મેં લિખ બાયે હૈં, અતઃ વહીં સે હસે સમજ્ઞ લેની ચાહિયે ।

આઠવે કલ્પવૃક્ષ કા સ્વરૂપ—

“તીસે ણં સમાપ્ત મરહે વાસે તત્થ ૨ દેસે તદ્દિ ૨ વહવે મણિયંગા ણામં દુમગણા પણ્ણત્તા

શુભનવાળા હોય છે એથીઅનેક મહુવિધ વિવિધ વિસ્રસા પરિણત થયેલા ભોજન વિધિથી એ યુક્ત હોય છે. આ સુબધમા કહેવામા આવેલા સૂત્રોના પદોની વ્યાખ્યા જીવામિગમ સૂત્ર ના અનુવાદમાં અમે પડેલા કરી છે એથી જિજ્ઞાસુઓ ત્યાથી વાચી લે.

આઠમા કલ્પવૃક્ષનું સ્વરૂપ.

“તીસેળ તપ મરહે વાસે તત્થ ૨ દેસે તદ્દિ ૨ વહવે મણિ ણામં દુમગણા પ

हेमजालमणिजालकनकजालक सूत्रकोचित कटकक्षुद्रकैकावलिकण्ठसूत्रकमकरिकोरः स्थ-
ग्रैवेय श्रोणिमूचकचूडामणिकनकतिलकपुष्पकसिद्धार्थकर्णवाली शशिसूर्यवृषभचक्रकतल-
भङ्गक त्रुटित हस्तमालक हर्षक केयूर वलय प्रालम्बाङ्गुलीयक वलाक्षदीनार मालिका-
काञ्ची मेखला कलापप्रतरक पारिहार्यक पादजाल घण्टिका किङ्किणी रत्नोरुजाल क्षुद्रि-
का वरनूपुर चरणमालिका कनक निगडमालिका काञ्चनमणिरत्नभक्तिचित्रा, तथैव ते मण-
यज्ञा अपि द्रुमगणाः अननक यावद् भूषणविधिना उपपेता यावत् तिष्ठन्ति इति । ८।

एतद्व्याख्या—‘तीसे णं’ इत्यादि । हे आयुष्मन्श्रमण! अस्यां खलु समायां भरते
वर्षे तत्र तत्र देशे तत्र तत्र बहवो मण्यङ्गाः—तत्र मणिपदं मणिमयाभरणपरं तेन मणयः म-
णिमयान्याभरणानि तेषाम् अद्भूताः—कारणभूता मण्यङ्गा नाम द्रुमगणाः प्रजप्ताः तान्
द्रुमगणान् सदृष्टान्तं वर्णयति ‘जहा से’ इत्यादि । यथा-येन प्रकारेण सा वक्ष्यमाणाभरण-
मालिका भवति, कथंभूता सा ? इत्याह ‘हारद्वहार’ इत्यादि । तत्र हारः अष्टादशसरिकः
अर्द्धहारः नवसरिकः वेष्टनकः कर्णभूषणविशेषः, मुकुटकुण्डले प्रसिद्धे व्यासुक्तं मालम्बि-
तं कुण्डलविशेषः, हेमजालं स्वर्णरचितजालाकृतिकालङ्कारविशेषः एव मणिजालकनकजाल-
कैऽपि बोध्ये, हेमजालकनकजालयो र्भेदो रुढिगम्यः, सूत्रकं—यज्ञोपवीतवद् धार्यमाणं
सुवर्णसूत्रम्, उचितकटकानि—योग्यवलयानि, क्षुद्रकम्—अङ्गुलीयकविशेषः, एकावली
विचित्रमणिस्वर्णरचिता एकसरिका, कण्ठसूकं—सूत्राकारकण्ठाभरणविशेषः मकरिका—
मकराकृतिराभरणविशेषः, उरःस्थं—हृदयाभरणविशेषः, ग्रैवेयं ग्रीवाभरणविशेषः श्रोणिमूचं
कटिसूत्रं चूडामणिः—सर्वभूषणरत्नसारो देवमनुष्याधिपतिमौलिस्थायी रोगामङ्गलादिदोषना-
शकः परममङ्गलभूत आभरणविशेषः, कनकतिलकं ललाटाभरणं, पुष्पकं पुष्पाकृतिललाटा
भरणं,—सिद्धार्थक सर्वप्रमाण स्वर्णकणरचित सुवर्णमणिकमयं भूषणं, कर्णवाली कर्णोपरि-
तनमागाभरणविशेषः, शशिसूर्यवृषभाः चन्द्रसूर्यवृषभाकार स्वर्णमयाभरणविशेषाः चक्रकचक्रा-
कारशिरोभूषणं, तलमङ्गकं बाह्याभरणविशेषः, त्रुटिकानि बाह्याभरणानि, उभयोर्बाह्याभरणत्वे-
ऽपि आकारकृतो भेदः, हस्तमालकम् आभरणविशेषः, हर्षकं भूषणविशेषः, केयूरं बाहुभू-
षणविशेषः, अङ्गदापरपर्यायः, पूर्वोक्तं बाहुभूषणतोऽत्राकृतिकृतो भेदः, वलयं—कङ्कणं, प्रा-

समणाउसो” इत्यादि । उस सुषम सुषमा नामके आरक की उपस्थिति में इस भरतक्षेत्र में
जगह २ अनेक मण्यङ्गनामके कल्पवृक्ष होते थे । ये कल्पवृक्ष वहाँ के युगलिकों के लिये स्वाभा-
विक रूप से अनेक प्रकार की भूषणविधि से युक्त हुए उनके मनोनुकूल आभूषणों की इच्छाओंकी
पूर्ति करते हैं इस सूत्र पाठ में जो २ पद आये हैं , उन की व्याख्या जीवाभिगम सूत्र के हिन्दी

समणाउसो” इत्यादि ।

ते सुषम सुषमा नामना आरकनी उपस्थितिमां आ भरतक्षेत्रमां ठेक ठेकाछे अनेक
मण्यङ्गनामना कल्पवृक्षो त्यांना युगलिको माटे स्वाभाविक रूपशी अनेक प्रकारनी भूषण
विधिथी युक्त थयेला तेमना आभूषणोनी इच्छाओनी पूर्ति करे छे आ सूत्रपाठमां जे जे पदो

લમ્બં-શુભ્વનકં કર્ણભૂષણમ્ અદ્વગુલીયકં મુદ્રિકા, વલક્ષં ગલાભરણવિશેષઃ, દીનારદાલિકા-
દીનારં સ્વર્ણમુદ્રા તદાકારા મણિમાલા, કાશ્ચી મેઘલા કલાપા તત્ર કાશ્ચી એકા યષ્ટિઃ, મે-
ઘલા અષ્ટ યષ્ટિકા રૂલાપઃ પશ્ચવિંશતિ યષ્ટિઃ । ઉક્ત ચ તલ્લક્ષણમ્—

એકા યષ્ટિ ભવેત્ કાશ્ચી, મેઘલા ત્વષ્ટ યષ્ટિકાઃ ।

રશનાઃ પોઢશ જ્ઞેયાઃ, કલાપઃ પશ્ચવિંશકઃ ॥૧૧॥ ઇતિ ।

કાઠ્ઠ્યાદયસ્ત્રયઃ સ્ત્રીકટયાભરણવિશેષાઃ પ્રતરક-વૃત્તપ્રતલ આભરણવિશેષઃ, પારિ-
હાર્યકમ્-વલયવિશેષઃ પાદજાલ-જાલાકૃતિપાદાભરણમ્, ઘણ્ટિકા-ઘર્ધરિકા; કિંઙ્કણ્યઃ શુ-
દ્ધઘણ્ટિકાઃ, અનયોરાકારકૃતો વિશેષઃ, રત્નોરુજાલ-રત્નમયં જહ્વાયાઃ પ્રલમ્બમાનં સઙ્કલકં-
શુદ્રિકા-આભરણવિશેષઃ વરનૂપુરાણિ શ્રેષ્ઠ ચરણાભરણવિશેષઃ, ચરણમાલિકા-વિલક્ષણાકારં
પાદાભરણં તત્ત્વ લોકે 'પાગડાં' ઇતિ પ્રસિદ્ધમ્ કનકનિગડઃ=નિગડાકારઃ પાદાલક્ષારઃ, સૌ-
વર્ણઃ રાજતો વા લોકે સ 'કંઢલો' ઇતિ રુચ્યાતઃ, એતેપાં હારાર્દ્દ હારાદિ કનકનિગડાન્તા-
નાં યા માલિકા શ્રેણિઃ સા તથા, કથંભૂતા સા 'ઇત્યાહ' કંચણ' ઇત્યાદિ । કાશ્ચન-સુવર્ણ-
મણિઃ-ચન્દ્રકાન્તાદિઃ રત્નં-કર્કેતનાદિકમ્ એતેપાં યા ભક્તિઃ-વિચ્છિન્તિઃ-રચના ઇતિ
યાવત્ તથા ચિત્રા-અદ્યુતા સા કાશ્ચનમણિરત્નભક્તિચિત્રાઃ તત્ત્વ હારાર્દ્દહારાદિમાલિકાન્તાં
પદસ્ય કાશ્ચનાદિ ચિત્રાન્તાપદસ્ય ચ કર્મધારયો, વિશેષણસ્ય પરનિપાત આર્પત્વાત્ । તત્ત્વ-
શ્રાયં સક્ષિપ્તોઽર્થઃ- કાઠ્ઠચનમણિરત્નવિચ્છિન્તિ સુશોભિતા હારાર્દ્દ હારાદિ શ્રેણિ ભવતિ ઇતિ
તૈથૈવ-તેન પ્રકારેણૈવ તે મણ્યજ્ઞા અપિ દ્રુમગણા અનેક વહુવિધવિવિધવિસ્રસા પરિણતેન ભૂષ-
ણવિધનાં ઉપપેતાઃ-યુક્તા ભવન્તિ, તથા કુશવિકુશ યાવત્ તિષ્ઠન્તીતિ ॥૮॥

અથ નવમ કલ્પવૃક્ષસ્વરૂપમાહ—

તીસેણં સમાપ્ત મરદે વાસે તત્ત્વ તત્ત્વ દેસે તત્ત્વ તત્ત્વ વહવે ગેહાગારા ણામં દુમગણા
-પણ્ણત્તા સમણાસો! જહા સે પાગારદ્વાલયચરિયદારગોપુરપાસાયાગાસતલમંડવ ઇગસાલગ-
-વિસાલગતિસાલગચડસાલગ ગઠ્ઠમધરમોહણધર વલ્લભીધરચિત્ત માલયધરમત્તિધરવહુતંસ-
-ચરુરંસ ણંદિયાવત્તસંઠિયા પંદુરતલ મુંડમાલ હમ્મિયં અહવાણં ધવલહર અદ્ધમાગહ વિઘ્મમ
સેલદ્ધસેલ સંઠિય કૂડાગારસુવિહિય કોટ્ટમ અણેગધર સરણલેણ આવણા વિહંગ જાલવિંદ-
ણિજ્જૂહ અપવરગચંદસાલિયા રુવિમત્તિકલિઆ ભવણવિહી વહુવિકપ્પા, તદેવ તે ગેહા-
ગારા વિ દુમગણા અણેગ વહુવિહ વિવિહવીસસા પરિણયાપ્પ મુહારુહણ મુહોત્તારાપ્પ મુહણિ-

અનુવાદ મેં સ્પષ્ટ રૂપ સે કી જા ચુકી હૈ । મન યહ વહીં સે સમજ લેની યાહિયે, એક લર કી
કાશ્ચી હોતી હૈ । ઝાઠ લરો કી મેઘલા હોતી હૈ । સોલહ લરો કી રસના હોતી હૈ ઓર
પંચીસ લરો કા એક કલાપક હોતી હૈ ।

આવેલા છે, તેમની વ્યાખ્યા 'જીવાભિગમસૂત્ર' ના હિન્દી અનુવાદમાં સ્પષ્ટ રૂપમાં કરવામાં
આવી છે. એથી આ વિષે ત્યાથી જ વાચી લેવું એક જોડે એક સેરની કાંચી હોય છે, ઝાઠ
સેરની મેઘલા હોય છે. સોળસેરની રસના હોય છે. અને ૨૫ સેરની એક કલાપક હોય છે,

कलमणपवेसाए दहरसोवाणपतिकलियाए पइरिक् सुहविहाराए मणोणुक्लाए भवणविहीए
उववेया जाव चिट्ठ ति, इति १९।

एतच्छाया— तस्यां खलु समायां भरते वर्षे तत्र तत्र देशे तस्मिन् तस्मिन् बहवः
गेहाकारा नाम द्रुमगणाः प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन् ! यथा ते प्राकाराट्टालक चरिकाट्टार गो-
पुरप्रासादाऽऽकाशतलमण्डपैकशालक द्विशालक त्रिशालक चतुःशालक गर्भगृहमोहनगृह वल-
भीगृह चित्रमालकगृहभक्तिगृहवृत्त यस्तचतुरस्रनन्धावर्तसंस्थिताः पाण्डुरतल मुण्ड माल-
हर्म्यम् अथवा खलु धवलगृहार्द्धमागध विभ्रम शैलार्द्धशैल संस्थितकूटाकार मुविहित-
कोष्ठकानेक गृहशरणलयनापणाः विटङ्कजाल वृन्द निर्व्यूहापवरक चन्द्रशालिका रूपवि-
भक्ति कलिताः भवनविधयो बहुविकल्पाः, तथैव ते गेहाकारा अपि द्रुमगणा अनेक बहु-
विधविधिविध विस्त्रसापरिणतेन सुखाऽऽरोहण सुखावतारेण सुखनिष्क्रमणप्रवेशेन दर्दरसोपा-
नपङ्क्ति कलितेन प्रतिरिक्त सुखविहारेण मनोऽनुकूलेन भवनविधिना उपपेताः यावत्तिष्ठ-
न्ति, इति १९।

एतद्व्याख्या—‘तस्यां खलु समायामि’ त्यादि—पूर्ववत्, नवरं गेहाकारा नाम द्रुम-
गणाः प्रज्ञप्ताः, हे आयुष्मन् ! श्रमण ! तान् वर्णयितुं दृष्टान्तमुपन्यस्यति—यथा ते प्राकारे-
त्यादि प्राकारः ‘कोट’ इति भाषा प्रसिद्धः अट्टालकः— प्रासादोपरिगृहम्, चरिकानगर प्रा-
कारान्तरालेऽष्ट इस्त प्रमाणो मार्गः, द्वारम्-गृहादि प्रवेशस्थानम्, गोपुरं पुरद्वारम्, प्रासा-
दः—राजभवनम् आकाशतलम्—कटाद्यनाच्छन्नप्रदेशः मण्डप छायाद्यर्थ पटादिमयः स्थान-
नविशेषः, एकशालकम्—एक भूमगृहम्, द्विशालक द्विभूमगृहम्, त्रिशालकं त्रिभूमगृहम्,
चतुःशालकं चतुर्भूमगृहम् । गर्भगृहम्—अभ्यन्तरगृहम्, मोहनगृहं वासभवनम्, वज्रभीगृहं—
प्रासादाग्रभागः, चित्रमालकगृहम्—चित्रकर्मयुक्तगृहम् मालकगृह—द्वितीयभूमिकाद्युपरिवर्ति-
गृहम्, गृहेत्यस्योभयत्रयोगात्, भक्तिगृह भक्तिः विच्छित्ति—स्तत्प्रधान गृहं, वृत्तं वर्तु-
लाकारं, त्रयस्त—त्रिकोणं, चतुरस्र—चतुष्कोणं, नन्धावर्तः स्वस्तिकविशेषस्तैः संस्थिताः, पा-
ण्डुरेत्यादि पाण्डुरतलं—शुक्तिकाचूर्णलिप्त तलयुक्तं गृहं मुण्डमालहर्म्यम्—उपर्यनाच्छादित-
शिखरादिभागरहितं हर्म्यम् अथवा—यद्वा खलु निश्चयेन धवलगृहेत्यादि—धवलगृह सौधम्
अर्धमागधविभ्रमाणि गृहविशेषाः, शैलार्धशैलसंस्थितानि—संस्थितेत्यस्य शैले अर्धशैले च-
योगः, तेन शैलसंस्थितानि पर्वताकाराणि अर्धशैलसंस्थितानि अर्धपर्वताकाराणि च गृहाः—

नैवे कल्पवृक्ष का स्वरूप —
“तीसे ण समाए भरहे बासे तत्थ २ देसे तहि तहि बहवे गेहागारा णामं द्रुमगणा
पण्णत्ता समणाउसो ।” इत्यादि ।

हे श्रमण आयुष्मन् उभ सुषम सुषमा नामक आरे में भरतक्षेत्र में जगह २ अनेक गेहाकार

नवमा कल्पवृक्ष स्वरूप

“तीसेण समाए भरहे बासे तत्थ २ देसे तहि तहि

बहवे गेहागारा णामं द्रुमगणा पण्णत्ता इत्यादि ।

हे श्रमण आयुष्मन् ! ते सुषम सुषमा नामना आरामा भरतक्षेत्रमां ओ स्थाने पर

ણિ, કૂટાકારાણિ—શિખરાકૃતીનિ, સૃવિહિતકોષ્ઠકાનિ સુસૂત્રણાપૂર્વક રચિતોપરિતિનભાગ-
વિશેષાઃ અનેકગૃહાણિ—વહુનિ ગૃહાણિ સામાન્યતઃ શરણાનિ—તૃણમયાનિ લયનાનિ પર્વત-
નિકુદ્ધિતગૃહાણિ આપણાઃ ઘટ્ટાઃ, इत्यादिकाः भवनविधय इत्यग्रिमेण सम्बन्धः ते च की
दृशाः ? इत्याह—विटङ्केत्यादि—विटङ्कः—कपोतपालिका जाल वृन्दं—गवाक्षसमूहः, निर्यूहः
—द्वारोपरितन पार्श्वनिःसृतदारु अपवरकः आच्छादकः चन्द्रशालिका शिरोगृहम्, इत्येवं
रूपा या विभक्तयः विच्छित्तयस्ताभिः कलिताः युक्ताः, बहुविकल्पाः અનેક પ્રકારાઃ
ભવનવિધયઃ વાસ્તુ પ્રકારાઃ ભવન્તિ તથૈવ તેનૈવ પ્રકારેણ તે ગેહાકારા અપિ દ્રુમગણાઃ ।
કિં વિશિષ્ટાસ્તે ! इत्याह—‘अनेक बहुविध विविधवित्तसापरिणतेन’ अर्थस्तु प्राग्वत् सु-
रारोहणसुखोत्तारेण—सुखेन सुख पूर्वकम्, आरोहः उपरिगमनम्, तथा सुखेन अवतारः
अधस्तादवतरणं यत्र स तथा तेन । सुखनिष्क्रमण प्रवेशेन सुखेन निष्क्रमणं ततोऽपग-
मनं यत्र स तथा । दर्दरसोपानपङ्क्तिफलितेन -दर्दराणि निरन्तर रत्नफलकमयानि सो-
पानानि, तेषां पङ्क्तयस्ताभिः कलितः युक्तस्तेन । प्रविरक्तसुखविहारेण प्रविरक्ते एकान्ते
सुखः सुखमयः विहारः अवस्थानशयनासनादिरूपो यत्र स तथा तेन । अतएव मनोऽनु-
कूलेन भवनविधिना उपपेताः—युक्ता यावत्तिष्ठन्तीति प्राग्वत् । १९।

अथ दशमकल्पवृक्षस्वरूपमेवम्—

તીસેણં સમાપ્ત મરહે વાસે તત્થ તત્થ દેસે તર્હિ તર્હિ વઢવે અણિગણા ણામં દુમ-
ગણા પળ્લતા સમણાઉસો ! જઠા સે આરૂંણગ ચોમતણુલ કંઠલ દુગૂલ કોસેજ્જ કાલમિ-
ગપટ્ટ અંમુઅ ચીણઅંમુઅપટ્ટા આમરણ ચિત્ત સળ્હગ કણ્ણાણગાંભિગણીલકજ્જલ બહુવળ્ણરત્ત-
પીયમુક્કિલ્લ સન્કકયમિગલોમહેમઘરલ્લગ અવરુત્તર સિંધુસમદામિલ—વગકલ્લિંગ નલિણ
તંતુમય મત્તિચિત્તા વત્થવિહી બહુપ્પગારા પવરપટ્ટણુગયા વળ્ણરાગકલિઆ, તહેવ તે અણિ
ગણા ત્રિ દુમગણા અળેગવહુવિહ વિવિહ વીસસા પરિણાયાપ્પ વત્થવિહીપ્પ ઉવવેઆ કુસવિ-
કુસ જાવ ચિટ્ઠંતિ, ઇતિ । ૧૯।

एतच्छाया—तस्यां खलु समायां भरते वर्षे तत्र देशे तस्मिन् तस्मिन् बहवः अन-
ग्ना नाम द्रुमगणाः प्रज्ञप्ताः भ्रमणाऽऽयुग्मन् । यथा ते आजिनक क्षौम तनुल (क) कम्ब
ल दुकूल कौशेय कालमृग पट्टांशुकचीनांशुक पट्टाः आभरण चित्र श्लक्ष्णककल्याणक भृङ्ग-
नील कज्जलबहुवर्णरक्तपीत शुक्ल संस्कृतमृगलोम हेमात्म रत्नकापरोत्तर सिन्धुश्लक्ष्मद्रवि-

નામ કે કલ્પવૃક્ષ હોતે હૈ । યે કલ્પવૃક્ષ મનોનુકૂલ ભવનવિધિ સે યુક્ત હોતે હૈ અર્થાત્ અનેક
પ્રકાર કે ભવનરૂપ મેં યે સ્વત સ્વભાવ સે પરિણત હો જાતે હૈ । સૂત્રગત પદોં કી વ્યાખ્યા જી-
વામિગમ સૂત્ર કે અનુવાદ મેં કી ગઈ હૈ ।

અનેક ગેહાકાર નામના કલ્પવૃક્ષો હોય છે. એ કલ્પવૃક્ષો મનોનુકૂલ ભવનવિધિથી યુક્ત
હોય છે. એટલે કે અનેક પ્રકારના ભવન રૂપમાં એ સ્વત. સ્વભાવથી પરિણત થઈ જાય
છે આ સૂત્રમાં આવેલા પદોની વ્યાખ્યા જીવામિગમસૂત્રના અનુવાદમાં કરવામાં આવેલી
છે. એથી જિજ્ઞાસુઓ ત્યાંથી વાંચી લે

ह वङ्ग कलिङ्ग नलीन तन्तुमयभक्तिचित्राः वस्त्रविधयः बहुप्रकाराः प्रवरपत्तनोद्गताः वर्णरागकलिताः, तथैव ते अनग्ना अपि द्रुमगणाः अनेक बहुविधविविधविम्वसा परिणतेन वस्त्रविधिना उपपेताः कुशविकुल यावत् तिष्ठन्ति, इति । १० ।

एतद्व्याख्या—‘तस्यां खलु’ इत्यादि प्राग्बत्, नवरम् अनग्नाः अविद्यमानाः नग्नाः तात्कालिका जना येभ्यस्तेऽनग्नाः द्रुमगणाः प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन् ! तान् वर्णयितुं दृष्टान्तमुपन्यस्यति यथा ते आजिनकेत्यादि—तत्र आजिनकम्—चर्ममयं वस्त्र क्षीमं सामान्यतः कार्पासिकं वस्त्रं केचित्तु क्षुमा—अतसी तन्मयं वस्त्रमिती वदन्ती, तनुलं—तनुः शरीरं तत् सुखस्पर्शतया लाति अनुगृह्णातीति तनुलं शरीरसुखादि कारक वस्त्रं, कम्बलः प्रसिद्धः ‘तणुअकवल’ इति पाठे तु तनुक कम्बलः, इतिच्छाया, तत्पक्षे तनुकः सूक्ष्मोर्णामयः कम्बलः, दुकूलः—गौडदेशीयं कार्पासिकं वस्त्रम्, यद्वा—दुकूलः—वृक्षविशेषः तद्वल्कलं गृहीत्वा उदखले जलेन सह कुट्टयित्वा कुसीकृत्य च व्यूयते तत्तत् दुकूलम्, कौशेयं—कृमिकोशज-तन्तुनिष्पन्नं वस्त्रम्, कालमृगपट्टाः कृष्णमृगचर्ममयं वस्त्रम् अंशुकं चीनांशुकानि नानादेशेषु प्रसिद्धानि दुकूलविशेष रूपाणि पूर्वोक्तस्यैव वल्कस्याभ्यन्तरहारिभिर्निष्पादितानि चीनांशुकानि वा पट्टाः पट्टसूत्रनिष्पन्नानि वस्त्राणि, आभरणचित्रेत्यादि तत्र आभरणैः, भूषणैः, चित्राणि अद्भुतानि आभरणचित्राणि, मल्लङ्गानि सूक्ष्मतन्तुनिष्पन्नानि कल्याणकानि सुलक्षणानि वस्त्राणि भृगनील अमरवन्नीलवर्णं तथा कज्जल कज्जलवत्कृष्णवर्णं बहुवर्णम् विचित्रवर्णम् रक्त—रक्तवर्णं पीतं पीतवर्णम्, शुक्लं शुक्लवर्णम् संस्कृतं सुसज्जितं यन्मृगलोम हेम स्वर्णं च तदात्मकं तन्मयम्, रल्लकः कम्बलश्चैते कीदृशाः ! इत्याह—अपरः—पश्चिमदेशः उत्तरः—उत्तरप्रदेशः सिन्धुः—देशविशेषः श्रवभः—देशविशेषः, द्रविडवङ्ग कलिङ्गश्चैव कल्पवृक्ष क, स्वरूपं कथन—

“तीक्ष्णेण समाप्य भरहे वासे तत्थ २ देसे तहिं तहिं बहवे अणिगण्य णामं दुमगणा पण्णत्ता समाणउत्तो ।” इत्यादि । हे श्रमण आयुष्मन् ! उस सुषम सुषमा नाम के आरे में भरत क्षेत्र में अनगनाम के कल्पवृक्ष होते हैं, इन कल्पवृक्षों के प्रभाव से वहाँ का कोई भी जन वस्त्र रहित नहीं रह पाता है, सुन्दर २ वेश कीमती वस्त्र वहाँ के मनुष्यों को इन से प्राप्त होते रहते हैं क्योंकि ये वृक्ष स्वभावतः अनेक रागों से रञ्जित हुए वस्त्रों के रूप में परिणत हो जाते हैं ।

इतिमा कल्पवृक्षस्य स्वरूपं कथनः

“तीक्ष्णेण समाप्य भरहे वासे तत्थ २ देसे तहिं २ बहवे अणिगमा णामं दुमगणा पण्णत्ता” इत्यादि ।

हे श्रमण आयुष्मन् ! ते सुषम सुषमा नामना आरामा भरतक्षेत्री अहंर अनगना नामना कल्पवृक्ष होता है जो कल्पवृक्षना प्रभावशी त्यानीं ठीक पक्ष व्यक्ति वस्त्र रहित रहती नहीं. उत्तम तेमम मूल्यवान वस्त्रो त्यांना माणुसेने जेभनाथी प्राप्त थता रहे छे केमठे जो वृक्षो स्वभावतः अनेक रागोथी रञ्जित थयेला वस्त्रोना इपमां परिणत थथ जाय छे, ॥१०॥

જ્ઞાઃ एते त्रयो देशविशेषाः, एतेषां सम्बन्धिनो ये नलिनतन्तवः मृणालतन्तवः सूक्ष्मतन्तवः यद्वा सूक्ष्मतन्तुमयः, भक्तयः विशिष्टरचना ताभि चित्राः अद्भुताः वस्त्रविधयः बहु प्रकाराः अनेक प्रकाराः भवन्ति तथा प्रवर पत्तनोद्भवाः प्रसिद्धनगरोद्भवाः, वर्णरागकलिताः वर्णैः अनेकविधवर्णैः रागैः मञ्जिष्ठादिभी रागैः कलिताः युक्ताः तथैव तेनैव प्रकारेण ते पूर्वोक्ताः अनग्ना अपि द्रुमगणाः तिष्ठन्ति, अनेक बहुविधेन्यादि प्राग्वत् ॥१०॥ सू० २३॥

પૂર્વસૂત્રે સુપમસુપમાયાં કલ્પવૃક્ષદશકસ્વરૂપં વર્ણિતમ્ અધુના સુપમસુપમા ભાવિનાં મનુજાનાં સ્વરૂપં જિજ્ઞાસમાન આહ—

મૂલમ્—તીસે ણં મંતે ! સમાએ ભરહે વાસે મણુયાણં કેરિસે
આયારભાવપડોયારે પણ્ણત્તે ! ગોયમા ! તે ણં મણુયા સુપઇટ્ઠિયકુમ્મ
ચારુચલણા જાવ લક્ષણવંજણગુણોવવેયા સુજાયસુવિમત્ત સંગયંગા
પાસાઈયા જાવ પઢિરૂવા । તીસે ણં મંતે ! સમાએ ભરહે વાસે મનુઈં
કેરિસે આયારભાવપડોયારે પણ્ણત્તે ? ગોયમા ! તાઓ ણં મનુઈંઓ સુ-
જાયસવ્વંગસુંદરઓ પહાણમહિલાગુણેહિં જુત્તા અઢકંત વિસપ્પમાણમઉ-
યસુકુમાલ કુમ્મસંઠિયવિસિદ્ધચલણા ઉજ્જુમઉયપીવર સુસાહયંગુલીઓ
અબ્ભુણ્ણયરૂપતલિણ તંબ સુદ્ધિણિદ્ધણક્ષા રોમરહિયપટ્ટલદ્ધસંઠિય અજ-
હણ્ણપસત્થલલક્ષણ અક્કોપ્પજંઘજુયલાઓ સુણિમ્મિય સુગૂઠ સુજણ્ણમંઢ-
લસુબદ્ધસંઘીઓ કયલી સંભાઈરેકસંઠિયાણેવ્વણ સુકુમાલમઉયમંસલ
અચિરલસમસંહિયસુજાય વટ્ટપીવરણિરંતરોરુ અટ્ટાવયવીરૂપપટ્ટસંઠિય પસ-
ત્થવિચ્છિણ્ણપિહુલસોળી વયણાયમપ્પમાણ દુગુણિય વિસાલમંસલ સુબદ્ધ
જહણવરધારિણીઓ વજ્જવિરાઈયપસત્થ લક્ષણનિરોદર તિવલિયબલિય-
તણુ ણયમજ્ઞિમાઓ ઉજ્જુયસમસહિય જચ્ચ તણુ કસિણ ણિદ્ધ આઙ્ગ-
લઉહ જાય વિમત્ત કંત સોમંતરૂહલ રમણિજ્જરોમરાઈ ગંગાવત્તપયા-
હિણાવત્તરંગ મંગુર વિકિરણતરુણ બોહિય આકોસાયંતપઉમગંભીર-
વિયડણામા અ બ્મહપસત્થપીણ કુચ્છીઓ સણ્ણયપાસાઓ સંગયપાસાઓ

इन्हीं वर्णों का वर्णन इस सूत्र द्वारा किया गया है इनको प्रकट करने वाले सूत्रगत पदों की व्याख्या ।
मैंने हिन्दी अनुवाद करते समय जीवाभिगम सूत्र में की है अतः वहाँ से यह ज्ञान लेनी चाहिये ।

આ વસ્ત્રોનું વર્ણન આ સૂત્રદ્વારા કરવામાં આવેલ છે તેને પ્રકટ કરનારા સૂત્ર ગત-
પદોની વ્યાખ્યા જીવાભિગમ સૂત્રના અનુવાદમાં કરવામાં આવી ગયેલ છે તેથી ત્યાંથી તે
સમજ લેવી ॥સુ. ૨૩॥

सुजायपासाओ मियमाइयपीणइयपासाओ अकरंडुय कणगरुयगणिम्मल
सुजायणिरुवहयगायलट्टीओ कंचणकलसप्पमाण समसहियलट्ट चुच्चुआ-
मेलगजमलजुयलवट्टिय अब्भुण्णयपीणइअय पीवरपओहराओ भुयंग
अणुपुव्वतणुय गोपुच्छ वट्टसमसंहियणमिय आइज्जललियवाहा तंवण-
हाओ मंसलग्गहत्थाओ पीवरकोमलवरंगुलियाओ णिद्धपाणिरेहा रवि
ससि संखचक्कसोत्थियसुविभत्तसुविइयपाणिरेहाओ पीणुण्णय कर कक्ख
वत्थिप्पप्पसा पडिपुण्णगलकपोला चउरंगुल सुप्पमाण कंबुवरसरंस-
गीवाओ मंसलसंठिय पसत्थहणुगाओ दाडिम पुप्फप्पगास पीवरपलंव
कुंचियवराधराओ सुंदरुत्तरोट्टाओ दहिदगरयचंदकुंदवासंतिमउलधवल-
अच्छिहविमलदसणाओ रत्तुप्पलपत्तमउय सुकुमालतालुजीहाओ कण-
वीरमउलकुडिल अब्भुग्गय उज्जुतुंगणासाओ सारयणवकमल कुमुयकुव-
लयविमलदलणियरसरिसलक्खणपसत्थअजिह्वकंतणयणा पत्तलधवलायत
आतंबलोयणाओ आणामियचावरुइलकिण्हम्भराइसंगयसुजायभूमयाओ
अलीणपमाणजुत्तसवणा सुसवणाओ पीणमट्टगंडलेहाओ चउरंसपसत्थ
समणिडालाओ कोमुई रयणिअरविमलपडिपुण्णसोमवयणाओ छत्तुण्णय-
उत्तमंगाओ अकविल सुसिणिद्ध सुगंधदीहसिरयाओ छत्त १ ज्ञय २
जुअ ३ थूम ४ दामिणि ५ कमंडलु ६ कलस ७ वावि ८ सोत्थिय ९
पडाग १० जव ११ मच्छ १२ कुम्म १३ रहवर १४ मगरज्झय १५ अंक
१६ थाल १७ अंकुस १८ अट्ठावय १९ प्पइट्टग २० मयूर २१ सि
रियमिसेय २२ तोरण २३ मेइणि २४ उदहि २५ वरभवण २६ गिरि
२७ वरआयंस २८ सलीलगय २९ उसम ३० सीह ३१ चामर ३२ उत्तम
पसत्थ बत्तीस लक्खणधरीओ हंससरिसगईओ कोइलमहुरगिरिसुस्सराओ
कृता सव्वस्स अणुमयाओ ववगयवल्लिपल्लियवंगदुव्वण्णवाहि दोहग्गसो-

गमुक्काओ उच्चत्तेण य णराण थोवूणमुस्सियाओ सभावासैंगारचारुवे-
 साओ, संगयगयहसियभणियचिद्धियविलाससंलावणिउणजुत्तोवयारकुस-
 लाओ सुंदर थणजहणवयणकरचलणणयणलावणयरूपजोव्वणविलास-
 कलियाओ णंदणवणविवरचारणीउव्व अच्छराओ भरहवासमाणुसच्छ-
 राओ अच्छेरापेच्छणिज्जाओ पासाईयाओ जाव पडिरूवाओ । तेण
 मणुओ ओहस्सरा हंसस्सरा णंदिस्सरा सीहस्सरा सीहघोसा स्सरा
 सुस्सरणिग्घोसा छायायवोज्जोविअंगमंगा वज्जरिसहनारायसंघयणा
 समचउरंससंठाणसंठिया छविणिग्रातंका अणुलौभवाउवेगा कंकग्गहणी
 कवोयपरिणामा सउणिपोसपिट्ठंतरोरुपरिणया छद्धणुसहस्सभूसिआ ।
 तेसिणं मणुयाणं वे छप्पणा पिट्ठकरंडकसया पण्णत्ता समणाउसो ! पउ
 मुप्पलगंधसरिसणीसाससुरभिवयणा, तेणं मणुया पगई उवसंता पगई
 पयणु कोहमाणमायालोभा मिउमहवसंपन्ना अल्लीणा भद्दगा विणीया
 अप्पिच्छा असणिहिसंचया विडिमतरपरिवसणा जहिच्छिय कामका-
 मिणो ॥सू० २४॥

छाया—तस्या खलु भदन्त ! समायां भरते वर्षे मनुष्याणा कीदृशकः आकार-
 भावप्रत्यवतारः प्रकृप्तः गौतम ! ते खलु मनुजा सुप्रतिष्ठितकूर्मचारुचरणा यावत् लक्षण-
 व्यञ्जनगुणोपपेता सुजात सुविमक्तसङ्गताङ्गाः, प्रासादीयाः, यावत् प्रतिकृपाः, । तस्या खलु
 भदन्त ! समायां भरते वर्षे मनुजीना कीदृशकः आकारभावप्रत्यवतारः प्रकृप्तः 'गौ-
 तम ! ताः खलु मनुज्य सुजातसर्वाङ्गसौन्दर्य प्रधानमहिलाशुणैयुक्ता' अतिकान्त विसर्प
 मृदुकसुकुमार कुर्मसंस्थित विशि रणाः 'ऋजुमृदुक पीवरघुसंहताङ्गुलयः अभ्युन्नरतिद-
 तलीन ताम्रशुचिस्निग्धनखाः रोमरहितवृत्तलण्ड (रम्य) संस्थिताऽऽघन्य प्रशस्तलक्षण को-
 प्यजङ्गायुगला धुनिर्मित सुगूढ सुजानु मण्डल बुधद्धसन्धयः कदलीस्तम्भातिरेक संस्थिनिवृण
 सुकुमार मृदुकमासलाबिरलसमसहितसुजातवृत्तपीवरनिरन्तरीर्वः अष्टापदवीतिक प्रष्ट संस्थित
 प्रशस्तविस्तीर्ण पृथुलश्रोणयः वदनाऽऽ प्रमाण द्विगु विशालमांसल बुबद्धज
 रधारिण्य वज्रविराजितप्रशस्तलक्षणनिरुद्धत्रिवि लिततनुनतमभ्यमाः ऋजुकसमसहित
 जात्यतनुकृष्णस्निग्धादेयललित सुजात सुवि कान्तशोभमानरुचिररमणीय रोमराजयः
 गङ्गावर्त प्रदक्षिणावर्ततरङ्गमद्गुरुरविकिरण तरुणबोचिताऽऽक्रोशायमानपद्मगम्भीरविकटना-
 भाः अनुद्भट प्रशस्तपीन कुक्ष्य सन्नतपार्श्वाः सद्गतपार्श्वाः सुजातपार्श्वाः नि त्रिक
 पीनरतिदपार्श्वा अकरण्डक कनयकूचक सुजातनिरुपहतगात्रयण्डयः काञ्चनकलश
 समसहि ट (रम्या)बूधु क यमल युगल वसिष्ठाभ्युन्नतपीनरतिदपीवरपयोधराः भूज-

इगानुपूर्वतनुकगोपुच्छवृत्तसमसंहितनतादेयललितवाहवः ताग्रनखा मासलाग्रहस्ताः पीवर-
कोमलवराहगुलीकाः स्निग्धपाणिरेखाः रविशशिशर्पिचक्रस्वस्तिकसुविभक्तमुचिरचितपाणि-
लेखाः पीनोन्नतकरकक्षवस्तिप्रदेशाः परिपूर्णगलकपोलाः चतुरद्वगुलसुप्रमाणकम्बुवरसदृश-
ग्रीवाः मांसलसंस्थितप्रशस्तहनुकाः दाडिमपुष्पप्रकाशपीवरप्रलम्बकुञ्चिनवराधरा सुन्दरो-
त्तरोष्ठाः दधिदकरजश्चन्द्रकुन्दवासन्तीमुकुलधवलाच्छिद्रविमलदशना रक्तोत्पलपत्रमृदुक-
शकुमारतालुजिह्वाः करवीरमुकुलकुटिलाभ्युद्रतक्रतुतुङ्गनासाः शारदनवकमल कुमुदकुवलय-
विमलदलनिकरसदृशलक्षणप्रशस्तानिहकान्तनयनाः पत्रल धवलायताऽऽताम्रलोचनाः आना-
मित्रचाप चारुचिर कृष्णाभराजिसङ्गतसुजातध्रुव आलीनप्रमाणनयुक्तश्रवणा सुश्रवणाः
पीनलण्ट (रम्य) गण्डलेखाः चतुरस्र प्रशस्तसमललाटाः कौमुदीरनिकरविमलपरिपूर्णसौ-
म्यवदनाः छत्रोन्नतोत्तमाङ्गाः अकपिलमुस्निग्ध सुगन्धदीर्घशिरोजा छत्र १ ध्वज २ यूप ३
स्तूप ४ दामनी ५ कमण्डलु ६ कलश ७ चापी ८ स्वस्तिक ९ पताका १० यव ११ मत्स्य
१२ कूर्म १३ रथवर १४ भकरभुजा १५ ऽहक १६ स्थाला १७ ऽकुशा १८ ऽष्टापद १९
इप्रतिष्ठक २० मयूर २१ श्यभिपेक २२ तोरण २६ मेदिन्यु २७ दधि २५ वरभवन २६ गिरि
२७ वरादर्श २८ सलीलगज २९ ऋषभ ६० सिंह ११ चामरो ३२ तमप्रशस्तद्वात्रिशल्लक्ष-
णधरा हससदृशगतय कोकिलमधुरगी सुस्वराः कान्ताः सर्वस्य अनुमताः व्यपगतवलिप-
लित व्यङ्ग्यदुर्वर्णव्याधिदौर्भाग्यशोकमुक्ताः उच्चत्वेन च नराणां स्तोकोनोच्छ्रिता स्वभाव-
शङ्करचारुवेधाः सङ्गातगतहसितभणितस्थितविलाससलापनिपुणयुक्तोपचारकुशलाः सुन्द-
रस्तनमधनवदनकरचरणनयनलावण्यरूपयौवनविलासकलिताः नन्दनवनविवरचारिण्य इव
अप्सरसः भरतवर्षमानुषाप्सरसः आचार्यकप्रेक्षणीयाः प्रासादीयाः यावत् प्रतिकृपाः ते खलु
मनुजा ओघस्वरा हंसस्वरा क्रौञ्चस्वरा नन्दीस्वरा सिंहस्वराः सिंहघोषाः सुस्वरा सु
स्वरनिर्घोषाः छायातपोद्योतिताङ्गाङ्गाः वज्रग्रहभनाराचसंहननाः समचतुरस्रसंस्थानसं-
स्थिताः छविनिरातङ्गाः अनुलोमबायुवेगाः कङ्कग्रहणोकाः कपोतपरिणामाः शकुनिपोसपृष्ठा-
न्तरोरपरिणताः षड्धनु सदस्रोच्छ्रिता तेषां खलु मनुष्याणां द्वे षट् पञ्चाशत् पृष्ठकरण्डक-
शते प्रक्षपते, भ्रमणायुष्मन्ते खलु मनुजा प्रकृत्युपशान्ता प्रकृतिप्रतनुक्रोधमानमायालोभाः
मृदुमादवसम्पन्नाः आलीनाः भद्रका विनीता अल्पेच्छा असन्निधिसंचया विष्टपान्तरप-
रिवसना यथेप्सितकामकामिन ॥ सू० २४ ॥

टीका—‘तीसे णं भते!’ इत्यादि ।

‘तीसेणं भंते! समाए भरहे वासे मणुयाणं’ हे भदन्त ! तस्यां खलु समायां भरते

इस प्रकार से १० दस तरह के कल्पवृक्षों का स्वरूप प्रकट कहे अब सूत्रकार सुषमसुषमा नामके कालमें उत्पन्न हुए मनुष्यों के स्वरूप का वर्णन करते हैं ।

“तीसेणं समाए भरहेवासे मणुयाणं केरिसए आयारभावपडोयारे पणत्ते” इत्यादि ।

आ। प्रमाणे १० प्रकारना कल्पवृक्षोनु स्व३५ प्रकट करीने हरे, सूत्रकार सुषमासुषमा नामके कालमा उत्पन्न थयेव मनुष्योना स्व३५व वस्तुन करे छे. ;
२९

વર્ષે મનુજાનાં યુગલિનાં સ્ત્રી પુરુષાણાં 'કેરિસપ' કોદ્દશકઃ—કથમ્ભૂતઃ 'અચારભાવપહો-
ચારે' આકારભાવપ્રત્યવતારઃ—સ્વરૂપપર્યાયપ્રાદુર્ભાવઃ 'પણ્ણત્તે' પ્રજ્ઞપ્તઃ? ઇતિ ગૌતમેન પૃષ્ઠો
મગવાન્ પ્રાહ- 'ગોયમા ! તે ણં મણુયા' હે ગૌતમ ! તે યુગલિન સ્ત્રીપુરુષાઃ 'સુપડદ્વિયં કુ-
મ્મચારુચલણા' સુપ્રતિષ્ઠિતકૂર્મચારુચરણાઃ—સુપ્રતિષ્ઠિતાઃ સમીચીનસસ્થાનાઃ કૂર્મચારુચ-
રણાઃ—કૂર્મઃ કચ્છપસ્તદ્વત્ ઉન્નતત્ત્વેન ચારવઃ શોભનાઃ ચરણાઃ યેષાં તે તથા નનુ "માનવા
મૌલિતો વર્ણ્યાં દેવાશ્ચરણતઃ પુનઃ" ઇતિ કવિસમયાન્મનુજ જન્મવતાં યુગ્મિનાં મૌલિત એવ
વર્ણનમુચિતં તત્કથં ચરણાદારમ્ય વર્ણનં યુક્તિયુક્તમિતિવેદત્રોચ્યતે-યુગ્મિનો હિ મનુષ્યાઃ
પ્રશસ્તપુણ્યાત્માનો ભવન્તીતિ તે દેવરૂપા ઇતિ ન દેવકલ્પાનાં તેષાં ચરણત આશ્રમ્ય વર્ણને
કાચિત્ક્ષતિરિતિ 'જાવ લક્ષણવંજણગુણોવવેયા યાવત્ લક્ષણવ્યઙ્ગજનગુણોપપેતાઃ "સુપડ-

ગૌતમ સ્વામી ને પ્રશ્ન સે હસ સૂત્ર દ્વારા એસા પૂછા હૈ કિ હે મદન્ત ! હસ સુષમસુષમા આ-
રક કે સદ્ભાવ મેં ભરત ક્ષેત્ર મેં યુગલિક મનુષ્યોંકા સ્વરૂપપર્યાય પ્રાદુર્ભાવ-સ્વરૂપ કેસા હોતા હૈ ?
હસકે ઉત્તર મેં પ્રશ્ન ને એસા કહા હૈ—'ગોયમા ! તેણ મણુયા સુપડદ્વિય કુમ્મચારુચલણા, જાવ લક્-
ક્ષણવંજણગુણોવવેયા સુજાય સુવિમત્તસંગયંગા પાસાઈયા જાવ પહિરુવા" હે ગૌતમ ! હસ સમય
મેં મનુષ્ય યુગલિક સ્ત્રી પુરુષ-જિનકા સસ્થાન સમીચીન હૈ એસે તથા કચ્છપ કે જૈસે ઉન્નત સુન્દર-
ચરણોં વાળે હોતે હૈ,

શંકા—“માનવા મૌલિતો વર્ણ્યાં દેવાશ્ચરણતઃ પુનઃ” હસ કવિસમય કે અનુસાર મનુષ્ય જન્મ-
વાળે યુગલિકોં કા વર્ણન મસ્તક સે લગાકર ક્રિયા જાતા હૈં ઓર દેવોં કા વર્ણન ચરણ સે લેકર
ક્રિયા જાતા હૈ તો ફિર યહા હનકા વર્ણન ચરણ સે લેકર સૂત્રકાર ને ક્યોં ક્રિયા ? તો હસકા
ઉત્તર એસા હૈ કિ યુગલિક મનુષ્ય પ્રશસ્ત પુણ્યવાળે હોતે હૈ અત ઉન્હેં દેવતુલ્ય માના જાતા હૈ
અતઃ દેવકલ્પ હન યુગલિક મનુષ્યોં કા વર્ણન ચરણ સે લેકર કરને મેં કોઈ ક્ષતિ જૈસી બાત

‘તીસેણ સમાપ મરહે વાસે મણુયાણં કેરિસપ આચારભાવપહોચારે પણ્ણત્તે—ઇત્યાદિ ॥સૂત્ર૧૧॥

ટીકાથ—ગૌતમે પ્રશ્નને આ સૂત્ર વડે પ્રશ્ન કર્યો છે કે હે ભદ્રત ! તે સુષમસુષમા આ-
રકના સદ્ભાવમાં ભરતક્ષેત્રમાં યુગલિક મનુષ્યોના સ્વરૂપપર્યાય પ્રાદુર્ભાવ એટલે કે સ્વરૂપ
કેવું હોય છે ? એના જવાબમાં પ્રશ્નને આ પ્રમાણે કહ્યું છે—‘ગોયમા ! તેણ મણુયા સુપડ
દ્વિય કુમ્મચારુચલણા જાવ લક્ષણવંજણગુણોવવેયા સુજાયસુવિમત્તસંગયંગા પાસાઈયા જાવ
પહિરુવા’ હે ગૌતમ ! તે સમયે મનુષ્ય યુગલિક સ્ત્રી-પુરુષ જેમનું સસ્થાન સમીચીન છે
એવા તેમજ કચ્છપ જેવા ઉન્નત સુન્દર ચરણોવાળા હોય છે

શંકા—“માનવા મૌલિતો વર્ણ્યાં દેવાશ્ચરણતઃ પુનઃ” આ કવિસમય મુજબ મનુષ્ય-
જન્મવાળા યુગલિકોં વર્ણન મસ્તકથી માંડીને કરવું જોઈએ અને દેવોં વર્ણન ચર-
ણોથી કરવામાં આવવું જોઈએ તો પછી અહીં જેમનું વર્ણન ચરણથી માંડીને સૂત્રકારે શા
માટે કર્યું છે ? આ પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે યુગલિક મનુષ્ય પ્રશસ્ત પુણ્યવાળા
હોય છે એથી તેઓ દેવ તુલ્ય માનવામાં આવે છે. એટલા માટે દેવકલ્પ આ યુગલિક મનુષ્યોં
વર્ણન ચરણથી માંડીને કરવામાં કોઈ ક્ષતિ જેવી વાત નથી આ યુગલિક સ્ત્રી-પુરુષ લક્ષણ સ્વ -

દ્વિય'ં' ઇત્યાદિ પદાદારભ્ય 'લક્ષણ વંજણ' ઇત્યાદિ પદપર્યન્ત વિશેષણપદાનાં સગ્રહો જી-
વામિગમાદિ સૂત્રતો વોધ્યઃ લક્ષણવ્યઠજનગુણોપપેતાઃ-લક્ષણાનિ-સ્વસ્તિકાદીનિ વ્યઠજ-
નાનિ-મપીતિલકાદીનિ ગુણાઃ, પ્રકૃતિભદ્રતાદયશ્ચ તરુપેતાઃ યુક્તાઃ 'મુજાય મુવિમ્મત-
સંગયંગા' સુજાતમુવિમ્મતસદ્ગતાઙ્ગાઃ મુવિમ્મતં મુપ્પુ વિભાગયુક્તમ્ અદ્ગોપાદ્ગાનો યથા
વદ્ધિભાગસત્તાત્, સદ્ગતં-પ્રમાણોપેતં ન તુ ન્યૂનાધિકમ્ અદ્ગં શરીરાવયવો યેષાં તે તથા 'પા
સાઈયા' પ્રાસાદીયા ઇત્યારભ્ય 'જાવ પહિરૂવા' યાવત્ પ્રતિરૂપાઃ ઇતિ પર્યન્તપદસદ્ગ્રહો
વોધ્યઃ તથાહિ-પ્રાસાદીયાઃ, દર્શનીયાઃ અભિરૂપા પ્રતિરૂપાઃ ઇતિ પદત્રય ફલિતમ્
પત ઢચાચ્યા પ્રાગ્વત્ . તસ્યાં ચલ્લ મદન્ત ! સમાયામિત્યાદિ 'તીસે ણં મંતે ! સમાપ' હે
મદન્ત ! તસ્યાં-પૂર્વોક્તાયાં સુપમસુપમાયાં સમાયાં કાલવિભાગરૂપાયાં ચલ્લ 'મરહે વાસે
મરતે વર્ષે મરતક્ષેત્રે 'મણુઈણ' મનુજીનાં-માનુપોણાં પ્રસ્તાવાદ્ યુગ્મિનીનાં 'કેરિસણ' કીટ-
શકઃ કોટશઃ 'આયારમાવપહોયારે' આકારમાવપ્રત્યવતારઃ સ્વરૂપપર્યાયપ્રાદુર્ભાવઃ 'પણ્ણત્તે'
પ્રજ્ઞમ્ : ? મગવાનાહ-'ગોયમા' તાઓળં' હે ગૌતમ ! તસ્યાં ચલ્લ સમાયાં તાઃ-ત્વયા
પૃષ્ઠાઃ ચલ્લ 'મણુઈઓ' મનુજ્યઃ 'સુજાય સવ્વંગસુન્દરીઓ' સુજાતસર્વાદ્ગસુન્દર્યઃ, સુજા

નહીં હૈ । યુગલિક જી પુરુષ લક્ષણ-સ્વસ્તિક આદિ, વ્યજન-મપીતિલક આદિ એવં ગુણ-પ્રકૃતિ
ભદ્રતા આદિ સે યુક્ત હોતે હૈ, સુજાત મુવિમ્મત સગત અંગ વાલે હોતે હૈ અર્થાત્ इनके शरीराव-
यव सुविभागयुक्त होते हैं एवं सङ्गत-प्रमाणोपेत होते हैं न्यूनाधिक नहीं होते हैं, यहां जो प्रथम
यावत् शब्द आया है उससे 'सुपइद्विय' इत्यादि पद से लेकर 'लक्खण, वजण' इत्यादि पद पर्यन्त
जितने और विशेषणपद हैं उनका सग्रह जीवामिगम आदि सूत्र से जानलेना चाहिये "पासाईया जाव
पहिरूवा" पाठ में आगत इस यावत्पद से दर्शनीय और अभिरूप इन पदों का सग्रह हुआ है,
इन चारों पद की व्याख्या पहिले जैसी की गई है वैसे ही जाननी चाहिये "तीसेणं मंते ! समाप
मरहे वासे मणुईण केरिसण आयारमाव पडोयारे पण्णत्ते" हे मदन्त ! उस सुपमसुपमाकाल के
समय मरत क्षेत्र की स्त्रियों का मनुष्यणियों का आकारमाव प्रत्यवतार स्वरूप कैसा कहा गया
है । इसके उत्तर में प्रश्न कहते हैं - "गोयमा । ताओ ण मणुईओ सुजायसव्वंग सुंदरीओ पहाण

સ્તિકે વિગેરે વ્યંજન-મપીતિલક વિગેરે તેમજ શુષ્ક-પ્રકૃતિભદ્રતા વગેરેથી યુક્ત હોય છે
સુજાત મુવિમ્મત સગત અગવાણા હોય છે. એટલે કે એમના શરીરાવયવો સુવિભાગયુક્ત
હોય છે. તેમજ સગત પ્રમાણોપેત હોય છે ન્યૂનાધિક હોતા નથી અહીં જે પ્રથમ યાવત્
શબ્દ આવેલ છે તેથી 'સુપઈદ્વિય' ઇત્યાદિ પદથી માંડીને 'લક્ષણવંજણ' ઇત્યાદિ પદ પર્યન્ત
જેટલા વધારાના વિશેષણપદો છે તેમનો સંગ્રહ 'જીવામિગમ' વગેરે સૂત્રદ્વારા બાંધી લેવો
જોઈએ 'પાસાદીયા જાવ પહિરૂવા' પાઠમાં આવેલ આ યાવત્ પદથી દર્શનીય અને
અભિરૂપ આ પદોનો સંગ્રહ થયેલ છે એ ચારે ચાર પદોની વ્યાખ્યા પહેલાં જોવી કરવામાં
આવે છે. તેથી જ સમજવી જોઈએ "તીસેણં મંતે ! સમાપ મરહેવાસે મણુઈણ કેરિસણ
આયારમાવપહોયારે પણ્ણત્તે" હે મદન્ત ! તે સુપમસુપમા કાળ ના સમયે મરત ક્ષેત્રની સ્ત્રી-
ઓના આકાર માવ પ્રત્યવતાર-રૂપરૂપ કેવું કહેવામાં આવેલ છે. આના જવાબમાં પ્રશ્ન કહે-
છે - "ગોયમા । તાઓ ણં મણુઈઓ સુજાયસવ્વંગસુન્દરીઓ પહાણ મહિલાગુણેહિં સુક્તા" હે

તાનિ યથાવત્ પ્રમાણોપેતતયા સૂત્પન્નાનિ સર્વાણ્યજ્ઞાનિ મસ્તકાદોનિ યાસાં તાઃ સુજા-
તસર્વાજ્ઞા, તાશ્ચ સુન્દર્યઃ સુજાતસર્વાજ્ઞત્વાત્ મનોહરાકારાઃ, 'પદ્માણ મહિલાગુણેદિ જુતા' પ્ર-
ધાનમહિલાગુણૈર્યુક્તાઃ પ્રધાનાઃ પ્રવરાઃ યે મહિલા ગુણાઃ સ્ત્રીગુણાઃ પ્રિયંવદત્વ સ્વામિચિ-
ત્તાનુવર્તકત્વાદયસ્તૈર્યુક્તાઃ ઉપેતાઃ તથા 'અદ્વંત વિસપ્પમાણ મઝય સુકુમાલ કુમ્મસંઠિય
વિસિદ્ધચલણા' અતિકાન્ત વિસર્પન્મૃદુક સુકુમાર કૂર્મસંસ્થિતવિશિષ્ટચરણાઃ—અતિકાન્તૌ
અતિસુન્દરૌ, વિસર્પન્તૌ સશ્ચરન્તાવપિ યદ્વા 'વિસપ્પમાણે' ત્યસ્ય વિશ્વપ્રમાણેતિચ્છાયા
તસ્ય દ્વિવચને વિશ્વપ્રમાણૌ—વિશિષ્ટ સ્વપ્રમાણૌ સ્વશરીરાનુસારિ પ્રમાણૌ ન ન્યૂનાધિકપ્રમા-
ણા વિત્યર્થઃ મૃદુક સુકુમારૌ મૃદુકાનાં—કોમલાનાં મધ્યે સુકુમારૌ સુકોમલૌ કૂર્મસંસ્થિતૌ
કૂર્મઃ કચ્છપસ્તદ્રત્ ઉન્નતપૃષ્ઠતયા સંસ્થિતૌ વિશિષ્ટૌ મનોજ્ઞૌ ચરણૌ યાસા તાસ્તથા 'ઉજ્જુ
મઝયપીવરસુસાહિયંગુલીઓ, ઋજુમૃદુકપીવરસુસદ્ધતાહુલીકાઃ ઋજવઃ સરલાઃ મૃદુકાઃ

મહિલાગુણેદિ જુતા" હે ગૌતમ । વે મનુષ્ય ક્ષિયા—યુગલિક્ષિયા મનુષ્યક્ષિયા અચ્છે પ્રમાણ મેં ઉત્પન્ન
હુપ મસ્તકાદિક ંગોં વાલો હતો હૈ તથા સુજાત સર્વાજ્ઞયુક્ત હોને સે વે વહો સુન્દર હતો હૈ—
મનોહર આકાર વાલો હતો હૈ, તથા મહોલાઓં કે પ્રધાનગુણો સે પ્રિય બોલના એવ અપને સ્વામી
કે ચિત્ત કે અનુકૂલ વર્તન કરના આદિ મહિલા જગત કે પ્રધાન સદ્ગુણો સે વે યુક્ત હતો હૈ, "અ
દ્વંત વિસપ્પમાણ મઝય સુકુમાલ કુમ્મસંઠિયવિસિદ્ધચલણા, ઉજ્જુમઝલ પીવર સુસાહિયંગુલિઓ
અબ્બુણ્ણય રહ્ય તલિણ તંવસુદ્ધણિદ્ધનક્કલા રોમરહિય પદ્—લદ્ધ સંઠિય અજહણ્ણપસંથલક્કણ અક્કો
પ્પજંઘજુયલાઓ" इनके दोनों चरण अतिकान्त—अतिसुन्दर होते हैं, विशिष्ट प्रमाणोपेत होते हैं—
अपने—अपने शरीर के अनुरूप प्रमाण वाले होते हैं न्यूनाधिक प्रमाणयुक्त नहीं होते, दुनिया में
जितने कोमल पदार्थ माने जाते हैं उन पदार्थों के बीच में ये इनके चरण और भी अत्यन्त सुकोमल
हैं । तथा जैसा कच्छप का संस्थान होता है वैसाही संस्थान आकार इनके चरणों का होता है,
अतएव ये बड़े मनोज्ञ होते हैं । इनके चरणों की अंगुलियां ऋजु सरल होती हैं, मृदुक कोमल

ગૌતમ । તે મનુષ્ય સ્ત્રીઓ—યુગલિક્ષિમનુષ્ય સ્ત્રીઓ સુપ્રમાણમાં ઉત્પન્ન થયેલા મસ્તકાદિ
અંગોવાળી હોય છે તેમજ સુજાત સર્વાજ્ઞ યુક્ત હોવાથી તેઓ ખૂબજ સુદર હોય છે. મ
નોહર આકારવાળી હોય છે, તથા મહિલાઓના પ્રધાનગુણોથી એટલે કે પ્રિય બોલવું તેમજ
સ્વામીના ચિત્તાનુકૂલ વર્તન કરવું વગેરે મહિલા જગતના પ્રધાન સદ્ ગુણોથી તેઓ યુક્ત હોય
છે "અદ્વંત વિસપ્પમાણમઝય સુકુમાલ કુમ્મ સંઠિય—વિસિદ્ધચલણા ઉજ્જુમઝલ પીવર
સુસાહિયંગુલીઓ અબ્બુણ્ણયરહમતલિણ તંવ સુદ્ધણિદ્ધનક્કલા રોમરહિય પદ્મલદ્ધ સંઠિય
અજહણ્ણપસંથલક્કણ અક્કોપ્પ જંઘ જુયલાઓ" એમના બન્ને ચરણો અતિકાન્ત—અતિ
સુદર હોય છે., વિશિષ્ટ પ્રમાણોપેત હોય છે પોતપોતાના શરીરના અનુરૂપ પ્રમાણવાળા હોય
છે. ન્યૂનાધિક પ્રમાણ વાળા હોતા નથી. સ સારમા જેટલા કોમળ પદાર્થો માનવામાં આવે છે.
તે પદાર્થોની વચ્ચે એમના આ ચરણો અત્યન્ત વધારે સુકોમળ છે તેમજ જેવું કચ્છપનું
સંસ્થાન હોય છે, તેવું જ સંસ્થાન એમના ચરણોનું હોય છે એથી એઓ ખૂબજ મનોજ
હોય છે. એમના ચરણોની આગળીઓ ઋજુ સરલ હોય છે. મૃદુક—કોમળ—હોય છે અને પી-

કોમલાઃ પીવરાઃ પુષ્પાઃ અનુપલક્ષ્યમાણસ્નાય્વાદિસન્ધિકત્વેનોપચિતાઃ મૃમૃદતાઃ મૃમિ
લિતાઃ અઙ્ગુલ્યઃ પાદાઙ્ગુલ્યો યાસાં તાસ્તથા, 'અઙ્ગુણય રઙ્ગય તલિણ તંવ મૃદ્ગિણ્ણવચ્ચા'
અમ્યુદ્ગત રતિદતલિન તામ્ર શુચિસ્તિગ્ધનચ્ચા' અમ્યુન્નતાઃ સમુન્નતાઃ રતિદાઃ દ્રાટ્ઠજનાનાં
પ્રીતિદાઃ યદ્વા 'રઙ્ગયા' इत्यस्य, रञ्जितेतिच्छाया, तत्पक्षे रञ्जिता लाक्षारसेन रागेण
रञ्जनमुपनीताः, तलिना. प्रतलाः ताम्राः—ताम्रवर्णाः—ईषद्रक्ता शुचय पवित्राः मल्ल-
हिता स्निग्धाः चिक्कणाः नखाः यासां तास्तथा, मूले 'नक्खे' त्यत्र द्वित्वं प्राकृतत्वात्
'रोमरहियवट्टल्लसंघियअजहणपसत्थलवखणअकोप्पजंघजुअलाओ' रोमरहित वृत्त लघु
(रम्य) संस्थिताऽजघन्य प्रशस्तलक्षणाकोप्यजङ्घा युगलाः—रोमरहितं निर्लाम वृत्तं वर्तुलं
लघुसंस्थितं रम्यसंस्थानयुक्तम् ऊर्ध्वोर्ध्वक्रमेण स्थूलस्थूलतरम् इति भावः, अजघन्य प्रश-
स्तलक्षणम् अजघन्यानि उत्कृष्टानि प्रशस्तानि श्लाघ्यानि लक्षणानि यत्र तत्तथा भूतम्
अकोप्यम् अद्वेष्यम् अति सुभगत्वात्, जङ्घायुगलं यासां तास्तथा, 'सुणिम्मिय सुगूढ
सुजाणुमंडल सुवद्धसंघीओ' सुनिर्मितसुगूढ सुजानुमण्डलसुवद्धसन्धयः सुनिर्मिते सुष्ठु
नितरां प्रमाणोपेते सुगूढे मांसलत्वादनुपलक्ष्ये ये सुजानुमण्डले सुन्दरजानुमण्डले तयोः
सुवद्धौ दृढस्नायुभिः सम्यग्बद्धौ सन्धौ सन्धाने यासां तास्तथा, 'कयलोखंभाइरेक रांठिय

હોતી હૈં ઔર પીવર પુષ્ટ હોતો હૈ, અર્થાત્ સ્નાયુ આદિકોં કો સન્ધિયા इनमें दिखलाई नहीं देती है
ऐसी होती हैं तथा सुसह्य होती हैं आपस में मिली रहती है इन अगुलियों के नख समुन्नत होते
हैं ऊपर कीओर बीच में उठे हुए रहते हैं रतिद होते हैं।देखने वालो को आनन्द प्रद होते हैं अ-
थवा "रङ्गया" रञ्जित होते हैं—लाक्षारस के राग से—रंगे हुए रहते हैं, तलिन पतले होते हैं ताम्र
ईषद्रक्तवर्ण वाले होते हैं, शुचि मल्ल रहित होते हैं एव स्निग्ध चिकने होते हैं । "नक्खे" में
द्वित्व प्राकृत होने से हुआ है इनका जङ्घायुगल रोमरहित होता है वृत्त—वर्तुल—गोल होता है लघु
संस्थित रम्य संस्थान से युक्त होता है उर्ध्व उर्ध्व कम से स्थूल स्थूल तर होता है—और अ-
जघन्यप्रशस्त लक्षणो वाला होता है—उत्कृष्ट श्लाघ्य लक्षणों से युक्त होता है, अकोट्य अतिसुभग
होने से अद्वेष्य होता है "सुणिम्मिय सुगूढ सुजाणु मण्डल सुवद्ध संघीओ, कयलो खंभाइरेक स

વર-પુષ્ટ હોય છે અર્થાત્ સ્નાયુ વગેરેનો સ ધિક્કાગ એમાં દેખાતો નથી તેમજ સુસંહ્ય હોય
છે પરસ્પર અડીને રહે છે એ આગળીઓના નખો સમુદ્ગત હોય છે. ઉપરની તરફ મધ્યમાં ઉ-
ન્નત થયેલા રહે છે. રતિદ હોય છે—એનારાઓને આનંદપ્રદ હોય છે અથવા "રઙ્ગયા" રંજિત
હોય છે—લાક્ષા રસના રાગથી રંગેલા હોય છે 'તલિન' પાતળા હોય છે તામ્ર-ઈષદ્ રક્તાવશુ-
વાળા હોય છે. શુચિ મલ વિહીન હોય છે તેમજ સ્નિગ્ધ સુચિકવણ હોય છે "નક્ખે" માં
દ્વિત્વ પ્રાકૃત હોવાથી થયેલ છે એમનું જ ધાયુગલ રોમરહિત હોય છે વૃત્ત—વર્તુલ—ગોલ
હોય છે લઘુસંસ્થિત—રમ્યસંસ્થાનથી યુક્ત હોય છે ઉર્ધ્વ ઉર્ધ્વ ક્રમથી સ્થૂલ સ્થૂલતર હોય છે
અને અજઘન્ય પ્રશસ્ત લક્ષણવાળું હોય છે ઉત્કૃષ્ટ શ્લાઘ્ય લક્ષણોથી યુક્ત હોય છે અકોટ્ય

તાનિ યથાવત્ પ્રમાણોપેતતયા સૂત્પન્નાનિ સર્વાણ્યજ્ઞાનિ મસ્તકાદોનિ યાસાં તાઃ સુજા-
તસર્વાજ્ઞા, તાશ્ચ સુન્દર્યઃ સુજાતસર્વાજ્ઞત્વાત્ મનોહરાકારાઃ, 'પદ્માણ મહિલાગુણેહિ જુત્તા' પ્ર-
ધાનમહિલાગુણૈર્યુક્તાઃ પ્રધાનાઃ પ્રવરાઃ યે મહિલા ગુણાઃ સ્ત્રીગુણાઃ પ્રિયંવદત્વ સ્વામિચિ-
ત્તાનુવર્ત્તકત્વાદયસ્તૈર્યુક્તાઃ ઉપેતાઃ તથા 'અદ્વંત વિસપ્પમાણ મઝય સુકુમાલ કુમ્મસંઠિય
વિસિદ્ધચલણા' અતિકાન્ત વિસર્પનમૃદુક સુકુમાર કૂર્મસંસ્થિતવિશિષ્ટચરણાઃ—અતિકાન્તૌ
અતિસુન્દરૌ, વિસર્પન્તૌ સશ્ચરન્તાવપિ યદ્વા 'વિસપ્પમાણે' ત્યસ્ય વિશ્વપ્રમાણેતિચ્છાયા
તસ્ય દ્વિવચને વિશ્વપ્રમાણૌ—વિશિષ્ટ સ્વપ્રમાણૌ સ્વશરીરાનુસારિ પ્રમાણૌ ન ન્યૂનાધિકપ્રમા-
ણા વિત્યર્થઃ મૃદુક સુકુમારૌ મૃદુકાનાં—કોમલાનાં મધ્યે સુકુમારૌ સુકોમલૌ કૂર્મસંસ્થિતૌ
કૂર્મઃ કચ્છપસ્તદ્વત્ ઉન્નતપૃષ્ઠતયા સંસ્થિતૌ વિશિષ્ટૌ મનોજ્ઞૌ ચરણૌ યાસાં તાસ્તથા 'ઉજ્જુ
મઝયપીવરસુસાહિયગુલીઓ, ઋજુમૃદુકપીવરસુસદ્તાહુલીકાઃ ઋજવઃ સરલાઃ મૃદુકાઃ

મહિલાગુણેહિ જુત્તા" હે ગૌતમ ! વે મનુષ્ય સ્ત્રિયા—યુગલિક મનુષ્યસ્ત્રિયા અચ્છે પ્રમાણ મે ઉત્પન્ન
હુપ મસ્તકાદિક અંગો વાલો હતો હૈ તથા સુજાત સર્વાજ્ઞયુક્ત હોને સે વે વડી સુન્દર હતો હૈ—
મનોહર આકાર વાલી હતી હૈ, તથા મહોલઓ કે પ્રધાનગુણો સે પ્રિય બોલના ઇવ અપને સ્વામી
કે ચિત્ત કે અનુકૂલ વર્તન કરના આદિ મહિલા જગત કે પ્રધાન સદ્ગુણો સે વે યુક્ત હતો હૈ, "અ
દ્વંત વિસપ્પમાણ મઝય સુકુમાલ કુમ્મસંઠિયવિસિદ્ધચલણા, ઉજ્જુમઝલ પીવર સુસાહિયગુલીઓ
અન્મુણય રહ્ય તલ્લિણ તંબસુદ્ધિણિદ્ધવક્ષા રોમરહિય પદ્મ—લદ્ધ સંઠિય અજહણ્ણપસત્થલક્ષણ અકો
પ્પજઞ્જુયલાઓ" इनके दोनों चरण अतिकान्त—अतिसुन्दर होते हैं, विशिष्ट प्रमाणोपेत होते हैं—
अपने—अपने शरीर के अनुरूप प्रमाण वाले होते हैं न्यूनाधिक प्रमाणयुक्त नहीं होते, दुनिया में
जितने कोमल पदार्थ माने जाते हैं उन पदार्थों के बीच में ये इनके चरण और भी अत्यन्त सुकोमल
हैं । तथा जैसा कच्छप का सस्थान होता है वैसाही सस्थान आकार इनके चरणों का होता है,
अतएव ये बड़े मनोज्ञ होते हैं । इनके चरणों की अंगुलियां ऋजु सरल होती हैं, मृदुक कोमल

ગૌતમ ! તે મનુષ્ય સ્ત્રીઓ—યુગલિકમનુષ્ય સ્ત્રીઓ સુપ્રમાણમાં ઉત્પન્ન થયેલા મસ્તકાદિ
અંગોવાળી હોય છે તેમજ સુજાત સર્વાંગ યુક્ત હોવાથી તેઓ ખૂબજ સુદર હોય છે. મ
નોહર આકારવાળી હોય છે, તથા મહિલાઓના પ્રધાનગુણોથી એટલે કે પ્રિય બોલવું તેમજ
સ્વામીના ચિત્તાનુકૂલ વર્તન કરવું વગેરે મહિલા જગતના પ્રધાન સદ્ ગુણોથી તેઓ યુક્ત હોય
છે "અદ્વંત વિસપ્પમાણમઝય સુકુમાલ કુમ્મ સંઠિય—વિસિદ્ધચલણા ઉજ્જુમઝલ પીવર
સુસાહિયગુલીઓ અન્મુણયરહ્યતલ્લિણ તંબ સુદ્ધિણિદ્ધવક્ષા રોમરહિય પદ્મલદ્ધ સંઠિય
અજહણ્ણપસત્થલક્ષણ અકોપ્પ જંબ જુયલાઓ" એમના બન્ને ચરણો અતિકાન્ત—અતિ
સુદર હોય છે., વિશિષ્ટ પ્રમાણોપેત હોય છે પોતપોતાના શરીરના અનુરૂપ પ્રમાણવાળા હોય
છે. ન્યૂનાધિક પ્રમાણ વાળા હોતા નથી. સ સારમાં જેટલા કોમળ પદાર્થો માનવામાં આવે છે.
તે પદાર્થોની વચ્ચે એમના આ ચરણો અત્યંત વધારે સુકોમળ છે. તેમજ જેવું કચ્છપનું
સંસ્થાન હોય છે, તેવું જ સંસ્થાન એમના ચરણોનું હોય છે એથી એઓ ખૂબજ મનોજ
હોય છે એમના ચરણોની આંગળીઓ ઋજુ સરલ હોય છે. મૃદુક—કોમળ—હોય છે અને પી-

કોમલાઃ પીવરાઃ પુષ્પાઃ અનુપલક્ષ્યમાણસ્નાયુઆદિસન્ધિકત્વેનોપચિતાઃ મૃમૃહતાઃ મૃમિ
લિતાઃ અઙ્ગુલ્યઃ પાદાઙ્ગુલ્યો યાસાં તાસ્તથા, 'અબ્ધુળય રડય તલિણ તંવ મૃઃ' ણિદ્ગ્ણવચ્ચા'
અબ્ધુદ્ધત રતિદતલિન તામ્ર શુચિસ્નિગ્ધનચા. અબ્ધુન્નતાઃ સમુન્નતાઃ રતિદાઃ દ્રષ્ટૃ જનાનાં
પ્રીતિદાઃ યદ્વા 'રહયા' इत्यस्य ,रञ्जितेतिच्छाया, तत्पक्षे रञ्जिता लाभाभसेन रागेण
રજનમુપનોતાઃ, તલિના. પ્રતલાઃ તામ્રાઃ-તામ્રવર્ણાઃ-ઈપદ્રક્તા શુચય પવિત્રાઃ મન્નર-
હિતા' સ્નિગ્ધાઃ ચિવકળાઃ નચાઃ યાસાં તાસ્તથા, મૂલે 'નવચ્ચે' ત્યજ દ્વિત્વં પ્રાકૃતત્વાત્
'રોમરહિયવદ્વલદ્વસંદ્વિયઅજઢણપસત્થલવચ્ચણઅવકોપ્પજંઘજુઅલાઓ' રોમરહિત વૃત્ત લઘ
(રમ્ય) સંસ્થિતાડજઘન્ય પ્રશસ્તલક્ષણાકોપ્યજઙ્ઘા યુગલાઃ-રોમરહિતં નિર્લોમ વૃત્તં વર્તુલં
લઘસંસ્થિતં રમ્યસંસ્થાનયુક્તમ્ ઋર્ધ્વોર્ધ્વક્રમેણ સ્થૂલસ્થૂલતરમ્ इति भावः, अजधन्य प्रश-
સ્तलक्षणम् अजधन्यानि उत्कृष्टानि प्रशस्तानि श्लाघ्यानि लक्षणानि यत्र तत्तथा भूतम्
અકોપ્યમ્ અદ્વેષ્યમ્ અતિ સુમગત્વાત્, જઙ્ઘાયુગલં યાસાં તાસ્તથા, 'સુણિમ્મિય સુગૂદ
સુજાણમંડલ સુવદ્ધસઘીઓ' સુનિર્મિતસુગૂદ સુજાણમણ્ડલસુવદ્ધસન્ધયઃ સુનિર્મિતે સુષ્ટુ
નિતરાં પ્રમાણોપેતે સુગૂદે માંસલત્વાદનુપલક્ષ્યે યે સુજાણમણ્ડલે મુન્દરજાણમણ્ડલે તયોઃ
સુવદ્ધો દ્વદસ્નાયુમિઃ સમ્યગ્વદ્ધો સન્ધો સન્ધાને યાસાં તાસ્તથા, 'કચલોચંભાદરેક રાઠિય

હોતી હૈં ઓર પીવર પુષ્ટ હોતો હૈ, અર્થાત્ સ્નાયુ આદિકોં કો સન્ધિયા इनमे दिखलाई नहीं देती हें
ऐसी होती हैं तथा सुसह्य होती हैं आपस में मिली रहती है इन अगुलियों के नख समुन्नत होते
हैं ऊपर कीओर बीच में उठे हुए रहते हैं रनिद होते हैं देसने वालो को आनन्द प्रद होते हैं अ-
थवा "रहया" रञ्जित होते हैं-लक्षारस के राग से-रंगे हुए रहते हैं, तलिन पतले होते हैं ताम्र
ईषद् रक्तवर्ण वाले होते हैं, शुचि मल रहित होते हैं एव स्निग्ध चिकने होते हैं । "नक्खे" में
द्वित्व प्राकृत होने से हुआ है इनका जन्घायुगल रोमरहित होता है वृत्त-वर्तुल-गोल होता है लघ
संस्थित रम्य सस्थान से युक्त होता है उर्ध्व उर्ध्व क्रम से स्थूल स्थूल तर होता है-और अ-
जधन्यप्रशस्त लक्षणो वाला होता है-उत्कृष्ट श्लाघ्य लक्षणों से युक्त होता है, अकोट्य अतिसुमग
होने से अद्वेष्य होता है "सुणिमिय सुगूद सुजाण मण्डल सुवद्ध सघीओ, कचलो खंभादरेक स

વર-પુષ્ટ હોય છે અર્થાત્ સ્નાયુ વગેરેનો સંધિભાગ એમા દેખાતો નથી. તેમજ સુસંહ્ય હોય
છે પરસ્પર અડીને રહે છે એ આગળીઓના નખો સમુન્નત હોય છે. ઉપરની તરફ મધ્યમાં ઉ-
ન્નત થયેલા રહે છે રતિદ હોય છે-એનારાઓને આનંદપ્રદ હોય છે અથવા "રહયા" રંજિત
હોય છે-લાક્ષા રસના રાગથી રંગેલા હોય છે 'તલિન' પાતળા હોય છે તામ્ર-ઈષદ્ રક્તવચ્ચ-
વાળા હોય છે. શુચિ મલ વિહીન હોય છે તેમજ સ્નિગ્ધ સુચિકવચ્ચ હોય છે. "નક્ચે" માં
દ્વિત્વ પ્રાકૃત હોવાથી થયેલ છે એમનું જ ઘાયુગલ રોમરહિત હોય છે વૃત્ત-વર્તુલ-ગોલ
હોય છે લઘસંસ્થિત-રમ્યસંસ્થાનથી યુક્ત હોય છે ઉર્ધ્વ ઉર્ધ્વ ક્રમથી સ્થૂલ સ્થૂલતર હોય છે
અને અજધન્ય પ્રશસ્ત લક્ષણવાળું હોય છે ઉત્કૃષ્ટ શ્લાઘ્ય લક્ષણોથી યુક્ત હોય છે અકોટ્ય

ખિન્વણ સુકુમાલ મઝય મંસલ અવિરલ સમસંહિય સુજાય વટ્ટપીવરણિરંતરોરુ' કદલો સ્તમ્ભાતિરેક સંસ્થિત નિર્વ્રણ સુકુમાર મૃદુક માંસલાવિરલસમસંહિતસુજાતવૃત્તપીવર નિરંતરોરવઃ કદલી-રમ્મા તસ્યા યઃ સ્તમ્ભઃ-કાણ્ડમ્ તસ્માદતિરેકેણ અતિશયેન સંસ્થિતં સંસ્થાનં યયોસ્તે કદલીસ્તમ્ભાતિરેકસંસ્થિતે નિર્વ્રણે વિસ્ફોટકાદિ ક્ષતરહિતે સુકુમારમૃદુકે સુકુમારેષુ મૃદુપુ મૃદુકે તથા અતિકોમલે માંસલે પુષ્ટે અવિરલે પરસ્પરાસન્ને સમે તુલ્યપ્રમાણે સહિકે ક્ષમે સુજાતે સુનિષ્પન્ને વૃત્તે વર્તુલે પીવરે ઉપવિતે નિરંતરે પરસ્પર-નિર્વિશેષે ઝરુ યાસાં તાસ્તથા, 'અદ્વાય વીઙ્ય પટ્ટ સંઠિય પસત્થ વિચ્છિણ્ણપિહુલ સો-ળી' અષ્ટાપદવીતિક પ્રઘ્ઠ સંસ્થિત પ્રશસ્તવિસ્તીર્ણ પૃથુલ શ્રોણયઃ વીતિકઃ વિગતા ઈતયો યસ્ય સ વીતિકાઃ ઘુણાઘુપદ્મવરહિતઃ સ ચાસૌ અષ્ટાપદઃ-દ્યૂતફલકવિશેષઃ અન્ન વિશેષણ વાચકપદસ્ય પરપ્રયોગઃ પ્રાકૃતત્વાત્, તદ્વત્ પ્રઘ્ઠસંસ્થિતા પ્રધાન સસ્થાનોપેતા પ્રશસ્તા શ્લાઘ્યા વિસ્તીર્ણવિપૃથુલા-અતિસ્થૂલા શ્રોણિઃ કટિદેશો યાસાં તાસ્તથા તથા 'વયણા-યામપ્પમાણ દુગુણિય વિસાલમંસલ સુવદ્ધ જહનવરધારિણીઓ' વદનાયામપ્રમાણદ્વિગુ-

ઠિય નિન્વણ સુકુમાલમઝય મસલ અવિરલ સમસંહિય સુજાય વટ્ટ પીવર ણિરંતરોરુ' इनके सुजानु-मण्डल नितरा प्रमाणोपेत होते हैं, और मांसल होने से अनुपलक्ष्य होते हैं तथा इनको सधिया दृढ़स्नायुओं से अच्छी तरह बद्ध रहती है इनके दोनों ऊरु कदली के स्तम्भ के जैसे स्थान से भी अधिक सुन्दर स्थान वाले होते हैं, विस्फोटक आदि के नश से रहित होते हैं, सुकुमार पदार्थों से भी ये अधिक सुकुमार होते हैं अतिकोमल होते हैं, मांसल-पुष्ट होते हैं, अविरल-परस्पर में जुड़े हुए से अर्थात् सट्टे हुए से रहते हैं, सम-तुल्यप्रमाण वाले होते हैं सहित-सक्षम होते हैं, अच्छे रूप में उत्पन्न हुए होते हैं, वृत्त-वर्तुल-होते हैं, पीवर-मांस से भरे हुए रहते हैं एवं निरन्तर-अन्तर रहित होते हैं, 'अद्वाय वीङ्यपट्टसंठियपसत्थविच्छिण्णपिहुलसोणी, वयणायामप्प-माण दुगुणिय विसालमंसल सुवद्व जहणवर धारिणीओ, वज्जविराजियपसत्थ लक्खणनिरोदर-

અતિ સુભગ હોવાથી અદ્વૈય હોય છે "સુખિન્મિય સુગૂઢ સુજણ્ણમણ્ડલ સુવદ્ધસંઘીઓ, કયલી સંભાદરેક સંઠિઅખિન્વણ સુકુમાલ મઝય મંસલ અવિરલ સમસંહિય સુજાયવટ્ટ પીવર ણિર તરોરુ" એમનું સુખાનુમદળ અતીવ સપ્રમાણ હોય છે, અને માસળ હોવાથી અનુપલક્ષ્ય હોય છે તેમજ એમની સધિઓ દૃઢ સ્નાયુઓથી સારી રીતે આબદ્ધ રહે છે એમના બન્ને ઉડુઓ કદલીના સ્તંભના સંસ્થાન કરતાં પણ વધારે સુદર સંસ્થાનવાળા હોય છે વિસ્ફોટક વગેરેના મણુથી રહિત હોય છે સુકુમાર પદાર્થો કરતાં પણ વધારે એઓ સુકુમાર હોય છે. અતિ કૌમળ હોય છે. માંસલ-પુષ્ટ હોય છે. અવિરલ એક બીજા ને અડીને રહે છે સમ-તુલ્ય પ્રમાણ વાળા હોય છે સહિક-સક્ષમ હોય છે સારા રૂપમાં ઉત્પન્ન થયેલા હોય છે વૃત્ત-વર્તુલ હોય છે પીવર પુષ્ટ રહે છે તેમજ સતત અતર વિહીન હોય છે "અદ્વાય-વીઙ્ય પટ્ટ સંઠિય પસત્થ વિચ્છિણ્ણ પિહુલસોળી વયણાયામપ્પમાણદુગુણિયા વિસાલ મંસલ સુવદ્ધજહણવરધારિણીઓ વજ્જવિરાજિ અપસત્થ લક્ષણ નિરોદરતિવલિયવલિ

ણિતવિશાલ માંસલ સુવદ્ જઘનવરધારિણીયઃ વદન મુલ તસ્ય ય આયામો દર્શ્ય દ્વાદ-
શાંગુલપ્રમાણં તસ્માદ્ દ્વિગુણિતં ચતુર્વિંશત્યંગુલપ્રમિતં વિસ્તીર્ણં ત્રિ તારોપેત માંસલં પુષ્ટં
સુવદ્દં દદવદ્દં ન તુ શ્લથં જઘનવર પ્રધાનકટિપૂર્વભાગં ધરન્તીત્યેવં શીલાસ્તથા વરગન્દસ્ય
વિશેષણવાચકત્વેન પૂર્વપ્રયોગાર્હત્વેઽપિ પરપ્રયોગઃ પ્રકૃતત્વાદેવાત્રાપિ વોચ્ય 'વજ્રવિગાઙ્ય
પસત્યલક્ષણનિરોદરતિવલિયવલિય તણુણયમજ્ઞિમાઓ' વજ્રવિગાજિત પ્રશસ્તલક્ષણ-
નિરુદર ત્રિવલિક વલિત તનુનતમધ્યમાઃ-વજ્રવિરાજિતં વજ્રવદ્ વિગાજિતં શોભિતં ક્ષામ-
ત્વેન પ્રશસ્તલક્ષણં સામુદ્રિકશાસ્ત્રોક્તપ્રશસ્તગુણયુક્તં નિરુદરં વિકૃતોદરરાહિત યદ્વા નિરુદ-
રમ્ અલ્પોદરમ્ ત્રિવલિકં ત્રિવલિયુત વલિતં સઠજાતવલં વલયુક્તં નદ્ધિ ક્ષામતયા દુર્વલમ્ તનુ-
પતલં નત નમ્ર તનુ નત કિશ્ચિન્નમ્રમ્ મધ્યમં-કટિરૂપમધ્યાઙ્ગમ્ યાસાં તાસ્તથા 'ઉજ્જુય-
સમસહિયજન્નચ તણુ કસિણ ણિદ્ધ આજ્જલહ સુજાયસુવિમત્તકંતસોમંત રુહલ રમણિજ્જ
રોમરાઈ' ઋજુક સમસહિતજાત્યતનુ કૃણ્ણસ્નિગ્ધાદેય હલિત સુજાત સુવિમત્ત કાન્તશોભ-

તિવલિયવલિયુતણુમજ્ઞિમાઓ" અષ્ટાપદવીતિક પદ મેં વીતિક વિશેષણ કા પ્રાકૃત હોને સે પરપ્રયોગ
હુઆ હૈ-તથા ચ-ણુ આદિ ઉપદ્રવ સે રહિત ધૂતફલક કી તર્હ પ્રઠ સસ્થાન વાલા-શ્રેષ્ઠ
આકાર વાલા હુનકા શ્રોણિપ્રદેશ-કટિભાગ હોતા હૈ ઓર વહ પ્રશસ્ત એવં અતિસ્થૂલ હોતા હૈ.
હુનકા પ્રધાનકટિ પૂર્વભાગ અર્થાત્ જઘન મુલ કી દ્વાદશ અંગુલ પ્રમાણ લઘ્વાઈ સે દૂના હોતા
હૈ અતએવ વહ વિસ્તીર્ણ, માંસલ-પુષ્ઠ, એવં સુવદ્-મજબૂત હોતા હૈ. હુનકા જો મધ્યભાગ હૈ વહ-વજ્ર
કે જૈસા સુહાવના હોતા હૈ પ્રશસ્ત લક્ષણોં સે-સામુદ્રિક શાસ્ત્રોક્ત અચ્છે ૨ લક્ષણોં સે યુક્ત
હોતા હૈ વિકૃત ઉદર સે રહિત હોતા હૈ અથવા અલ્પ ઉદર વાલા હોતા હૈ. ત્રિવલી સે યુક્ત
હોતા હૈ, વલિત-ત્રલ સપન્ન હોતા હૈ. દુર્વલ નહીં હોતા હૈ પતલ હોતા હૈ-સ્થૂલ નહીં હોતા હૈ,
ઓર કુલ ૨ શુકાસા રહતા હૈ " ઉજ્જુય સમ સહિય જન્નચ તણુ કસિણિદ્ધ આજ્જલહસુજાય
સુવિમત્ત કંતસોમંતરુહલ રમણિજ્જરોમરાઈ, ગંગાવત્ત પયાહિણાવત્ત તરગ મગુર વિકિરણ તરુણ-

યતણુમજ્ઞિમાઓ, અષ્ટાપદવીતિક પદમા વીતિક વિશેષણ પ્રાકૃતણુ હોવાથી પર પ્રયોગ
થયેલ છે. તેમજ ઘુણુ વગેરે ઉપદ્રવથી વિહીન ધૂતફલકની જેમ પ્રથમ સંસ્થાન યુક્ત
શ્રેષ્ઠ આકાર યુક્ત એમનો શ્રોણિ પ્રદેશ-કટિ ભાગ હોય છે, અને તે પ્રશસ્ત અને અતિ
સ્થૂલ હોય છે એમનો પ્રધાન કટિપૂર્વભાગ એટલે કે જઘન સુખની દ્વાદશ અંગુલ પ્રમાણ
લઘ્વાઈ કરતા બે ગણુ હોય છે, એથી તે વિસ્તીર્ણ માંસલ પુષ્ઠ અને સુવદ્ સુહૃદ હોય
છે એમનો બે મધ્યભાગ છે તે વજ્રના જેવો મનોહર હોય છે પ્રશસ્ત લક્ષણોથી સામુદ્રિક
શાસ્ત્રોક્ત સારા-સારાં લક્ષણોથી યુક્ત હોય છે વિકૃત ઉદરથી રહિત હોય છે. અથવા
અર્ધ ઉદરવાળો હોય છે ત્રિવલીથી યુક્ત હોય છે. વલિત-ત્રલ સંપન્ન હોય છે દુર્બળ
હોતો નથી, પાતળો હોય છે, સ્થૂલ હોતો નથી અને કંપક નભિન હોય છે. "ઉજ્જુયસમ-
સહિય જન્નચ તણુકસિણિદ્ધ આજ્જલહ સુજાય સુવિમત્તકંતસોમંતરુહલરમણિજ્જ

માનરુચિરમણીયરોમરાજય-‘ઇદ્ધ ઋજુકત્વાદીનિ રોમરાજિવિશેષણાનિ, તત્ર ઋજુકા-ઋ-
જ્વી-અવક્રા ન કુટિલા સમા તુલ્યા ન કાપિ દન્તુરા સંહિતા મિલિતા ન ત્વન્તરિતા જાત્યા
સ્વાભાવિકો મુખ્યા વા, તન્વી-સૂક્ષ્મા કૃષ્ણા-કૃષ્ણવર્ણા, ન તુ વર્ષિરોમવત્કપિશા સ્નિગ્ધા
ચિવ્વકળા સકાન્તિઃ આદેયા નેત્રસ્પૃહણીયા લલિતા-સુન્દરતા સમ્પન્ના સુજાતા સૂત્પન્ના
સુવિભક્તા સમીચીનવિભાગસમ્પન્ના કાન્તા કમનીયા અત એવ શોભમાના રુચિરમણીયા
અત્યધિકમનોહરા રોમરાજિઃ રોમવલિર્યાસાં તાસ્તથા, કેચિદ્ ઋજુકત્વાદીનિ રોમવિશેષા-
ન્યાહુઃ તથા સતિ વ્યધિકરણવહુઘ્રીદે રવલમ્વનાપત્તિરતો રોમરાજિવિશેષણાન્યેવ યુક્તાની-
તિ વ્યધિકરણવહુઘ્રીદે રગતિકગતિત્વાત્તન્મત ન યુક્તમ્ । ‘ગંગાવત્ત પયાદિનાવત્તતરંગ
મંશુર વિકિરણતરુણબોદિયઆકોસાયતપઝમંગમીરવિયદ્દનામા’ ગદ્ગાવર્ત્તપ્રદક્ષિણાવર્ત્ત-
રદ્ગમદ્ગુરવિકિરણતરુણબોધિતાકોશાયમાનપદ્મગમ્મીરવિકટનામાઃ-‘એતત્પદં મનુજવર્ણન-
પ્રસન્નેઽસ્મિન્નેવ સૂત્રે પૂર્વં વ્યાખ્યાત કેવલં સ્ત્રીપુંસત્વકૃતો મેદઃ અન્યત્સર્વ સમાનમ્,
‘અણુન્મહપસત્થપીણકુચ્છીઓ’ અનુદ્ધટ પ્રશસ્તપીનકુક્ષયઃ અનુદ્ધટૌ-અસ્પષ્ટૌ પ્રશસ્તૌ-
શ્લાઘ્યૌ પીનો સ્થૂલૌ કુક્ષી-ઝડરસ્ય વામદક્ષિણમાર્ગૌ યાસાં તાસ્તથા, ‘સળ્ળયપાસાઓ’

બોદિય આકોસાયતપઝમ ગમીરવિયદ્દનામા”

इनकी रोमराजिऋजुक-ऋज्वी सरल होती है, वक्र, कुटिल नहीं होती है, सम- बराबरहोती है कमती बढ़ती नहीं होती है-संहित-आपस से मिली हुई होती है. अन्तर से युक्त नहीं होती है. स्वभावतः पतली होती है. स्थूल नहीं होती है. कृष्णवर्ण बाळो होती है. कपि के रोमो की तरह कपिश नहीं होता है. स्निग्ध-चिकनी होती है, दर्दरी नहीं होता है, आदेय नेत्रो को स्पृहणीय होती है, ललित सुन्दरता से युक्त होती है, सुजात होता है अच्छे ढग से उत्पन्न हुई होती है, सुविभक्त होती है. अच्छी तरह विभाग से सपन्न होती है. कान्त कमनीय होती है. अनएव यह बड़ी सुहावनी लगती है, और जितनी भी रुचिर वस्तुएँ है उनकी भी अपेक्षा यह अधिक रुचिर होती है “गंगावर्त प्रदक्षिणावर्त” आदि सूत्र मनुष्य वर्णन के प्रसङ्ग में इसी सूत्र में पहिले व्याख्यात हो चुका है “अणुन्मह पसत्थ पीणकु-

રોમરાજિ, ગંગાવત્ત પયાદિનાવત્તતરંગમશુર વિકિરણ તરુણ બોદિય આકોસાયંત પઝમઃ
ગમીરવિયદ્દનામા” એમની રોમરાજિ ઋજુક-ઋજ્વી સરળ હોય છે વક્ર કુટિલ હોતી
નથી સમ બરાબર હોય છે સહિત પરસ્પર મિલિત હોય છે અન્તરથી યુક્ત હોતી નથી
સ્વભાવત. પાતળી હોય છે. સ્થૂલ હોતી નથી કૃષ્ણ વર્ણવાળી હોય છે, કપિના રોમની
એમ કપિશ હોતી નથી. સ્નિગ્ધ સુચિક્કણ હોય છે, ખરબચડી હોતી નથી આદેય નેત્રો
માટે સ્પૃહણીય છે. લલિત સુદ્દશથી યુક્ત હોય છે સુજાત હોય છે સારી રીતે ઉત્પન્ન
થયેલ હોય છે સુવિભક્ત હોય છે સારી રીતે વિભાગથી સ પન્ન હોય છે કાન્ત-કમનીય છે
એથી તે ખૂબજ સોહામણી લાગે છે અને બેટલી રુચિકર વસ્તુઓ છે તે સર્વ કરતા તે વધારે
રુચિર હોય છે, “ગંગાવર્ત પ્રદક્ષિણાવર્ત” વગેરે સૂત્ર મનુજવર્ણનના પ્રસંગમા આ સૂત્રન
વર્ણનમાં પહેલા વ્યખ્યાત થયેલ છે “અણુન્મહપસત્થપીણકુચ્છીઓ સળ્ળયપાસાઓ સળ્ગય

સન્નતપાર્શ્વાઃ, 'સંગયપાસાઓ' મંગતપાર્શ્વાઃ, 'મુજાયપાસાઓ' મુજાતપાર્શ્વાઃ, 'મિયમાઙ-
યપીણ રઙયપાસાઓ' મિતમાત્રિકપીનરતિદપાર્શ્વાઃ: एतन्पदचतुष्टयं प्राग्वत् केवलं स्त्रीपु-
सत्त्वकृतो विशेषः, 'અકરહુય કળગરુયગણિમ્મલ મુજાયણિરુવહય ગાયલદ્વીઓ' અકરહુય ક
કનકરુચકનિર્મલ મુજાતનિરુવદતગાત્રયષ્ટય -અકરહુય ના માંમ ટવાદનુપલક્ષ્યમાણપૃષ્ઠવંશ-
સ્થિકા કનકરુચકા-સ્વર્ણવન્કાન્તિ કાન્તિ નિર્મલા સ્વામાવિકાઙગન્તુકોભયમલગહિતા,
મુજાતો ગર્મીનાનાદાભ્ય જન્મદોષરહિતા, નિરુવદતા જ્વગદિરોગદંશાદ્યુપદ્રવગહિતા ગાત્રય-
ષ્ટિઃ-શરીરરુપયષ્ટિ યાનાં તામ્સ્થા, 'કંચન કલસપ્પમાણસમસદિય લદ્દુચ્ચુઆમેલગજ-
મલજુયલ વદિય અમુણયપીણરઙયપીવરપઓહરાઓ' કાચ્ચનકલશપ્રમાણસમસદિતલષ્ટ
(રમ્ય) ચૂચુ આમેલ ન યમ યુગલ વર્તિતામ્બુન્નતપોનાતિદપીવરપયોધરાઃ-કાચ્ચનકલશ-
પ્રમાણો સુવર્ણઘટપ્રમિતૌ સમૌ પરસ્પરં સમાનો ન ન્યૂનાધિકૌ મદિતૌ મિલિતૌ આન્તર્યર-

ષ્ટુઓ સળયપાસાઓ, સાયપાસાઓ, મુજાયપાસાઓ, મિયમાઙયપીણરઙયપાસાઓ" इनके उदर
के वाम दक्षिणभाग अनुद्भूत-प्रस्पष्ट होते हैं, प्रशस्त-स्वास्थ्य होते हैं, औ। पीन-स्थूल होते हैं,
"सन्नतपार्श्व, मुजानपार्श्व, मित्रमात्रिक पीनरतिदपार्श्व" ये पदत्रय पहिले मनुज वर्णन के समय
व्याख्यात हो चुके हैं "अकरहुय कणग रुयग णिम्मल मुजायणिरुवहय गायलद्वीओ" इनकी
शरीर यदि अकण्डुक-मांसल होने से अनुपलक्ष्यमाण है पृष्ठवंग की हड्डी जिसमें ऐसी होती
है, तथा स्वर्ण का जैसा कान्ति से युक्त होती है, निर्मल स्वामाविक एवं आगन्तुक मेल से रहित
होती है मुजात होती है 'गर्म' से लेकर जन्म तक के दोषों से रहित होती है एवं निरुवहत-
ज्वादिरोग तथा देशादिक उपद्रव से रहित होती है "कंचनकलसप्पमाणसमसदियलदुचुचु आ-
मेलग जमलजुअउदियं अमुणयपीणरङ्गय पीवरपओहराओ" इनके दोनों पयोधर सुवर्ण के
घट के जैसे सुहावने होते हैं, सम होते हैं परस्पर में समान होते हैं न्यूनाधिक नहीं होते हैं
आपस में मिळे हुए होते हैं. इनको इतनी अधिक निकटता रहती है कि इन दोनों के बीच में

પાસાઓ, મુજાયપાસાઓ, મિયમાઙય પીણરઙયપાસાઓ" એમના ઉદરનો વામ-દક્ષિણ
ભાગ અનુદ્ભૂત અસ્પષ્ટ હોય છે. પ્રશસ્ત સ્વાસ્થ્ય હોય છે. અને પીન સ્થૂલ હોય છે,
"સન્નતપાર્શ્વ, મુજાતપાર્શ્વ, મિત્ર માત્રિક પીનરતિદપાર્શ્વ" એ ત્રણે પદો પહેલાં મનુષ્ય
વર્ણનના પ્રસંગમાં વ્યાખ્યાત થયેલ છે "અકરહુય કળગરુયગણિમ્મલ મુજાય ણિરુવહય
ગાયલદ્વીઓ" એમની શરીરયદિ અકરહુક માસલ હોવાથી અનુપલક્ષ્યમાણ છે પૃષ્ઠવંશ
હાડકું એમ એવી તે હોય છે તેમજ સ્વર્ણના જેવી કાન્તિથી યુક્ત હોય છે નિર્મલ સ્વા-
માવિક અને આગન્તુક મેલથી વહીત હોય છે મુજાત હોય છે ગર્મથી માંડીને જન્મ
સુધીનાં દોષોથી રહિત હોય છે અને નિરુવદત જ્વરાદિરોગ તેમજ દંશાદિક ઉપદ્રવોથી
હીન હોય છે "કંચનકલસપ્પમાણસમસદિય લદ્દુચ્ચુ આમેલગજમલ જુઅલ વદિય અ-
મુણયપીણરઙયપીવરપઓહરાઓ" એમના બન્ને પયોધરો સુવર્ણ ઘટના જેવા મનો-
હર હોય છે સમ હોય છે પરસ્પર માં સમાન હોય છે ન્યૂનાધિક હોતા નથી પરસ્પર

હિતૌ અનયોર્મધ્યે વિસતન્તુરપિ ન પ્રવેષ્ટુમર્હતીતિ માવઃ, લષ્ટચૂચુકામેલકૌ-લષ્ટૌ-
 સુન્દરૌ ચૂચુકામેલકૌ કુચાગ્રભાગૌ યયોસ્તૌ તથાધૂતૌ યમલૌ તુલ્યશ્રેણિકૌ યુગ્મૌ યુગ્મરૂ-
 પૌ વર્તિતૌ-વર્તુલાકારૌ અભ્યુન્નતૌ ઉત્તુઙ્ગૌ પીનરતિદૌ પુષ્ટપ્રીતિદૌ, પીવરૌ માંસલત્વાત્પુ-
 ષ્ટૌ પયોધરૌ-કુચૌ યાસાં તાસ્તથા, 'શુચંગ અણુપુન્વ તણુઅ ગોપુચ્છ વટ્ટ' સંહિય ણમિય
 આહ્જ્જલલિયવાહા' શુજઙ્ગાનુપૂર્વ્ય તનુક ગોપુચ્છ વટ્ટ સમસંહિતનતાઽઽદેયલલિતવાહવઃ-
 શુજઙ્ગાનુપૂર્વ્યતનુકૌ-શુજઙ્ગઃ સર્પસ્તદ્વત્ આનુપૂર્વ્યેણ અધોઽધોભાગક્રમેણ તનુકૌ પ્રતલૌ અ-
 તપ્વ ગોપુચ્છવૃત્તૌ ગોપુચ્છવદ્ વૃત્તૌ વર્તુલૌ સમૌ પરસ્પરં સદૃશૌ સંહિતૌ મધ્યશરીરાપેક્ષયા-
 ઽવિરલૌ નતૌ-નમ્રૌ સ્કન્ધદેશસ્ય નતત્વાત્ આદેયૌ-અતિશોભનતયા કમનીયૌ લલિતૌ મ-
 નોહરૌ બાહ્ શુજૌ યાસાં તાસ્તથા, 'તંબનહાઓ' તામ્રનખાઃ તામ્રવર્ણનખાઃ રક્તનખા ઇત્યા-
 શયઃ, 'મંસલગ્ગહત્યાઓ' માંસલાગ્ગહસ્તાઃ માંસલૌ પુષ્ટૌ અગ્રહસ્તૌ હસ્તાગ્રભાગૌ યાસાં તા-
 સ્તથા, 'પીવર કોમલવરંગુલિયાઓ' પીવર કોમલ વરાહ્જ્જલીકાઃ પીવરા પુષ્ટાઃ કોમલા મૃદવઃ

સે મૃણાલતન્તુ માં નહીં નિહલ સકતા હૈ યા મૃણાલતન્તુ મીં ફન દોનોં કે મધ્ય મેં પ્રવેશ નહીં
 પાસકતા હૈ । ફન દોનોં સ્તનોં કે જો અગ્રભાગ હોતે હૈં વે વડે સુન્દર હોતે હૈં, યે દોનોં સ્તન
 સમશ્રેણિ મેં રહે હુપ હોતે હૈં ઓર યુગ્મરૂપ હોતે હૈં ફનકા દોનોં કા આકાર ગોલ હોતા હૈં ઓર
 યે વક્ષસ્થલ પર આગે કી ઓર બહુત સુન્દર ઢંગ સે ઝેંચે ડહે હુપ હોતે હૈં "પીનરતિદૌ" યે સ્થૂલ
 હોતે હૈં ઓર પ્રીતિ દેને વાલે હોતે હૈં તથા માંસ સે ભરે હુપ રહતે હૈં "શુચંગ અણુપુન્વતણુઅ ગોપુ-
 ચ્છવટ્ટસમસંહિય ણમિય આહ્જ્જલલિયવાહા" ફનકી દોનોં મુનાઈ સર્પ કી તરહ ક્રમશઃ નીચે
 કી ઓર પતલી હુઈ હોતી હૈં અતપ્વ વે ગોપુચ્છ કી તરહ ગોલ હોતી હૈં પરસ્પર મેં વે સમાન ઇકસી
 હોતી હૈં, મધ્યશરીર કી અપેક્ષા યે સંહિત-અવિરલ હોતી હૈં સ્કન્ધ દેશકે નત હોને સે યે નમ્ર-
 શુકી હુઈ હોતી હૈં આદેય હોતી હૈં ઓર મનકો હરણ કરને વાલી હોતી હૈં । "તંબનહાઓ, મંસ-
 લગ્ગહરથાઓ, પીવરકોમલવરંગુલિયાઓ, નિદ્ધપાણિરેહા, રવિસસિસલચક્કસોત્થિયસુવિમલ્લસુવિરહ્ય-

મળેલા હોય છે, એએા એટલા પાસે પાસે હોય છે કે એએા બન્નેના મધ્યમાથી મૃણાલ
 તન્તુ પણ નીકળી શકતુ નથી અથવા તો એમના મધ્યમાં મૃણાલ તન્તુ પણ પ્રવેશી શકતુ
 નથી. એએા બન્ને સ્તનોના જે અગ્રભાગ હોય છે. તે બહુજ સુંદર હોય છે, એ બન્ને
 સ્તનો સમશ્રેણિમાં હોય છે અને યુગ્મ રૂપ હોય છે એ બન્નેની આકૃતિ ગોળ હોય છે
 અને વક્ષસ્થલ પણ આગળ બહુજ સુંદર રીતે ઢેચે ઢેહેલા હોય છે "પીનરતિદૌ" એ સ્થૂલ
 હોય છે અને પ્રીતિકારક હોય છે તેમજ માંસથી સુપુષ્ટ હોય છે "શુચંગ અણુ પુન્વતણુ
 અગોપુચ્છવટ્ટ સમસંહિય ણમિય જ્જલલિય વાહા" એમની બન્ને બુબએા સર્પની
 જેમ ક્રમશઃ નીચેની તરફ પાતળી હોય છે એથી તે ગોપુચ્છની જેમ ગોળાકાર હોય છે
 પરસ્પરમાં તે સમાન એક સરખી હોય છે મધ્ય શરીરની અપેક્ષાએ-એ-સંહિત અવિરલ
 હોય છે. સ્કન્ધદેશ નત હોવાથી એ નમ્ર-નમિત હોય છે આદેય હોય છે અને મનોહર
 હોય છે "તંબનહાઓ, મંસલગ્ગહત્યાઓ, પીવરકોમલવરંગુલિયાઓ, નિદ્ધપાણિરેહા, રવિ
 સસિ સલ્લ ચક્ક સોત્થિય સુવિમલ્લ સુવિરહ્ય પાણિલેહાઓ" એમના નખોના પણ તામ્ર
 હોય છે એમના હાથોના અગ્રભાગ માંસલ-પુષ્ટ હોય છે, એમના હાથોની આંગળી એ પી-

વરા:-ઉત્તમા અંગુલ્યો યાસાં તાસ્તથા, 'ખિદ્ધપાણિ રેઢા' સ્નિગ્ધપાણિરેલા:-ચિક્ષણહસ્ત-
રેલાવત્યઇત્યર્થઃ 'રવિસસિસંસ્થચકસોત્થિય સુવિમત્તસુવિરહ્યપાણિરેલાઓ' રવિશશિશ્નચ-
ક્રસ્વસ્તિક સુવિમત્તસુવિરચિતપાણિરેલા:-રવિશશિશ્નચક્રસ્વસ્તિક એવ સુવિમત્તા સુસ્પ-
ષ્ટાઃ સુવિરચિતાઃ સુનિર્મિતાઃ પાણિરેલાઃ હસ્તરેલા યાસાં તાસ્તથા, 'પીણુણ્યકરકવસ્થવ-
ત્થિપપસા' પીનોન્નતકરકક્ષવસ્થોવસ્તિપ્રદેશઃ પીનાઃ-પુષ્ટાઃ અત એવ ઉન્નતાઃ-અભ્યુન્નતિ
પ્રાપ્તાઃ પ્રશસ્તા કર કક્ષવસ્થોવસ્તિપ્રદેશઃ કરકક્ષઃ ધ્રુજમૂલે વક્ષો-હૃદયં વસ્તિપ્રદેશઃ-ગુ-
હ્યપ્રદેશશ્ચ યાસાં તાસ્તથા, તથા 'પહિપુણ્ણગલકપોલા' પ્રતિપૂર્ણગલકપોલાઃ પ્રતિપૂર્ણાઃ પ-
રિપુષ્ટા ગલકપોલાઃ ગલ-કણ્ઠઃ કપોલો ચ યાસાં તાઃ, તથા 'ચડરંગુલ સુપ્પમાણ કંબુ-
વરસરિસગીવાઓ' ચતુરંગુલસુપ્પમાણ-કમ્બુવર સદ્દશગ્રીવાઃ ચતુરંગુલા=ચતુરંગુલપ્રમાણા
અત એવ સુપ્પમાણા-ઉચિતપ્રમાણયુક્તા કમ્બુવરસદ્દશી શ્રેષ્ઠશક્તસમાના રેલાત્રયયુક્તા ગ્રીવા
યાસાં તાસ્તથા; 'મંસલસંઠિયપસત્થહણુગાઓ માંસલસંસ્થિતપ્રશસ્તહણુકાઃ માંસલ.-પરિપુષ્ટઃ

પાણિહેલાઓ" इनके नखों का वर्ण ताम्र होता है इनके हाथों के अग्रभाग मांसल-पुष्ट होते है, इनके हाथों की अंगुलियां पीवर-पुष्ट होती है कोमल होती है और उत्तम होती है । ये त्रियां चिकनी हस्तरेखावाली होती है, इनके हाथों में रवि, शशि, शङ्ख, चक्र एवं स्वस्तिक, की रेखा-एँ होती है और ये रेखाएँ वहाँ सुस्पष्ट होती हैं । "पीणुण्यकरकवस्ववत्थिपपसा" इनका कक्ष-प्रदेश, वक्षस्थल, और वस्तिप्रदेश-गुह्यप्रदेश-ये सब पुष्ट होते हैं उन्नत होते हैं एवं प्रशस्त होते हैं । "पहिपुण्णगलकपोला" इनके गाल और कण्ठ ये दोनों प्रतिपूर्ण-भरे हुए होते हैं पिचके नहीं होते हैं "चडरंगुलसुप्पमाणकंबुवरसरिसगीवाओ" इनकी जो ग्रीवा होती है वह चतुरंगुलप्र-माणवाली होती है और इससे वह सुप्रमाणोपेत मानी जाती है, तथा जैसा श्रेष्ठ शङ्ख होता है वैसी वह होती है अर्थात् रेखात्रय से सहित होती है, "मंसलसंठियपसत्थहणुगाओ" इनके क-पोल का अग्रभाग-हनु-मांसल होता है, उचितसंस्थानवाला होता है, अतएव वह प्रशस्त होता

પર-સુપુષ્ટ હોય છે કામળહોય અને ઉત્તમ હોય છે, એ સ્ત્રીઓ સુચિક્ષવક્ષ હસ્તરેખાઓ વાળી હોય છે એમના હાથોમાં રવિ શશી શંખ ચક્ર અને સ્વસ્તિકની રેખાઓ હોય છે. અને એ રેખાઓ ત્યાં સુસ્પષ્ટ હોય છે, "પીણુણ્યકરકક્ષવત્થિપપસા" એમના કક્ષ પ્રદેશ વક્ષ-સ્થળ અને વસ્તિપ્રદેશ-ગુહ્ય પ્રદેશ એ સર્વે પુષ્ટ હો છે, ઉન્નત હોય છે તેમજ પ્રશસ્ત હોય છે "પહિપુણ્ણગલકપોલા" એમના ગાલ અને કંઠ એ બન્ને પ્રતિ પૂર્ણ પરિપુષ્ટ સુંદર હોય છે. અદર વળી ગયેલા હોતા નથી ચતુરંગુલપ્રમાણકંબુવરસરિસગીવાઓ" એમની જે ગ્રીવા હોય છે તે ચતુરંગુલ પ્રમાણવાળી હોય છે અને એથી જ તે સુપ્રમાણોપેત-માનવામાં આવી છે. તથા જેવો શ્રેષ્ઠ શંખ હોય છે તેવી જ તે શ્રેષ્ઠ હોય છે, એટલે કે રેખાત્રયથી યુક્ત હોય છે "મંસલ સંઠીય પસત્થ હણુગાઓ" એમના કપોલના અધો ભાગ હનુ માંસલ હોય છે. ઉચિત સંસ્થાન યુક્ત હોય છે, એથી તે પ્રશસ્ત હોય છે "સાદ્દિમ્

સંસ્થિતઃ—ઉચિતાકારયુક્તઃ, અત એવ પ્રશસ્તઃ શોભનઃ ॥ ૧૩ ॥ વપોલાધોભાગો યાસાં તાસ્ત-
થા, 'દાહિમપુષ્પગાસપીવર પલવકુંચિયવરાધરાઓ' દાહિમપુષ્પપ્રકાશ પીવર પ્રલમ્બકુ-
શ્ચિતવરાધરાઃ—દાહિમપુષ્પવત્ પ્રકાશો યસ્ય સઃ દાહિમપુષ્પપ્રકાશઃ દાહિમપુષ્પવદ્ રક્ત-
પીવરઃ પુષ્પઃ પ્રલમ્બ-—પૂર્વોષ્ઠાપેત્રયા ઇપલમ્બમાનઃ કુંશ્ચિત-—ઈપદ વલિતઃ અત એવ વરઃ શ્રેષ્ઠ-
અધરઃ—અધસ્તનોષ્ઠો યાસાં તાસ્તથા, 'મુન્દરુત્તરોદ્ઘાઓ, 'મુન્દરોત્તરોષ્ઠચ —શોભનોપરિતનો-
ષ્ઠયુક્તાઃ, તથા 'દહિ દગરયચંદ કુંદવાસંતિમડયધવલ અચ્છિદ્ધવિમલદસણાઓ' 'દધિદક-
રજશ્ચન્દ્ર વાસંતીમુકુલધવલાચ્છિદ્રદશનાઃ—દધિ પ્રસિદ્ધ દકરજઃ જલકળઃ ચન્દ્રઃ પ્રસિદ્ધઃ,
કુન્દ—કુન્દપુષ્પ, વાસન્તીમુકુલં વાસન્તીકલિકા, તદ્દધવલાઃ—શુભ્રાસ્તંયા, અચ્છિદ્રાઃ—
અવિરલા દશનાઃ—દન્તાઃ યાસાં તાસ્તથા,— તથા 'રત્નપ્પલપત્ત મડયમુકુમાલ તાલુ જીહા-
ઓ' રક્તોત્પલ પત્ર મૃદુરુસુકુમાર તાલુજિહાઃ—રક્તોત્પલસ્ય પત્રં 'પાંચડી ઇતિ પ્રસિદ્ધં, ત-
દ્દત્ રક્તં મૃદુસુકુમારમ્=અતિ કોમલ તાલુજિહ્વા=તાલુ જિહ્વા ચ યાસાં તાસ્તથા, તંયા 'ક-
ળવીરમઝલકુહિલ અબ્ધુગય ડજ્જુતુગણાસાઓ, કરવીર મુકુલાકુટિલામ્બુદ્રતઋજુતુજ્ઞના-
સાઃ—કરવીરઃ 'કનેર ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધો વૃક્ષવિશેષઃ, તસ્ય મુકુલવત્ કલિકા સદૃશી અ-
કુટિલાઃ—અજિહ્વા સતી અમ્બુદ્રના મૂઢ્ય મધ્યવિનિર્ગતા, ઋજ્વી—સરલા તુજ્ઞા—ઉચ્ચા ન તુ

હૈં “દાહિમપુષ્પગાસપીવરપલવકુંચિયવરાધરાઓ” इनका जो अधरोष्ठ होता है, वह दाहिम के पुष्प की तरह प्रकाशवाला होता है, अर्थात् अनार के पुष्प के जैसा लाल होता है, पुष्ट होता है, और ऊपर के होठ की अपेक्षा कुछ २ लम्बा होता है तथा वह कुचित—नीचे की ओर कुछ २ छुका सा हुआ रहता है, अत एव वह बड़ा श्रेष्ठ होता है, “मुन्दरुत्तरोद्घाओ दहिदगरयच-
दकुंदवासंतिमडलधवल अच्छिद्विमलदसणाओ” तथा ऊपर का जो इनका होठ होता है वह ब-
हुत सुन्दर होता है इनके जो दात हैं वे दहि, जलकण, चन्द्र, कुन्दपुष्प और वासन्तीकली के
जैसे अत्यन्त धवलवर्णवाले होते हैं, इनके बीच में छिद्र नहीं होता है ये ऐसे अविरल होते हैं,
और विमल—मलरहित होते हैं, “रत्नप्लपत्तमडय मुकुमालतालुजीहाओ, कणवीरमडलकुडिल अ-
ब्भुगय डज्जुतुगणासाओ, सारयणवकमलकुमुय कुवलयविमलदलणियरसरिसलक्खेणपसत्थ अजिह्वा-

પુષ્પગાસપીવરપલવકુંચિયવરાધરાઓ” એમના જે અધરોષ્ઠ હોય છે તે દાહમના
પુષ્પની જેમ પ્રકાશયુક્ત હોય છે એટલે, કે દાહમના પુષ્પ જેવો લાલ હોય છે, પુષ્ટ હોય
છે અને ઉપરના ઓષ્ઠ કરતા કંઈક લાંબો હોય છે તેમજ તે કુચિત નીચેની તરફ સહેજ
નૂત્ર થયેલ હોય છે. એથી તે ખૂબ જ શ્રેષ્ઠ હોય છે “મુન્દરુત્તરોદ્ઘાઓ દહિદગરય ચંદ કું-
દવાસંતિ મડલધવલઅચ્છિદ્ધવિમલદસણાઓ” તેમજ ઉપરના જે એમના ઓષ્ઠ હોય છે તે
ખડુંજ સુદર હોય છે એમના દાત દહી જલકણ ચન્દ્ર કુંદ પુષ્પ અને વાસન્તીની કળી જેવા
અતીવ શ્વેત વર્ણવાળા હોય છે એમની મધ્યના છિદ્ર હોતા નથી એ અવિરલ હોય છે અને
વિમલ—મળ રહિત હોય છે “રત્નપ્પલપત્તમડયમુકુમાલતાલુજીહાઓ કળવીર મડલકુહિલ-
અબ્ધુગય ડજ્જુતુગ નાસાઓ, સારયણવકમલકુમુય કુવલયવિમલદલણિયરસરિસ લક્ષણ-

ગવાદિ' શૃંગવત્ કુટિલા નામા-નાસિકા યાસાં તાસ્તથા, તથા - 'સારયણવકમલકુમુદકુવલ-
લયવિમલદલણિયર રારિસલક્ષણપસત્ય અજિહ્વકંતનયના' શારદ નવકમલ કુમુદકુવલય
વિમલદલ્લનિકર સદ્ગલક્ષણપ્રશસ્તાજિહ્વકાન્તનયનાઃ-શારદાનિ શરદતુ ભવાનિ યાનિ નવા-
નિ-નૂતનાનિ યાનિ કમલકુમુદકુવલયાનિ કમલં ચ પદ્મ સૂર્ય વિકાસિ, કુમુદ ચ ઉત્પલં
ચન્દ્રવિકાસિ, કુવલયં ચ નીલોત્પલમ્, એતેષાં દ્વન્દ્વસ્તાનિ તથા, એતેષાં યાનિ વિમલાનિ-
નિર્મલાનિ દલાનિ પત્રાણિ તેષા યો નિકર સમૂહઃ, તત્સદ્ગે-રક્તશ્વેતનીલવર્ણયુક્તે લક્ષણ-
પ્રશસ્તે લક્ષણતઃ-શોભનલક્ષણયોગાત્ મુશોભને અજિહ્વે અમન્દે ભદ્રભાવયુક્તતયા નિર્વિ-
કારચપલે કાન્તે સુન્દરે નયને નેત્રે યાસાં તા સ્તથા, તથા 'પત્તલધવલાયત આતંબલો-
યણાઓ' પત્રલધવલાયતાતામ્રલોચનાઃ પત્રલે પદ્મલે શોભનપદ્મયુક્તે ધવલે-શુભ્રે આયતે
દીર્ઘે કર્ણાન્તગતે આતામ્રે-ઈપદરુણે લોચને નેત્રે યાસા તાસ્તથા, નારાણા નયનશુભગત્ન-

કંતણયણા" इनका तालु और जिह्वा रक्तोत्पल के पत्र के समान रक्त होते हैं तथा मृदु और सु-
कुमार होते हैं इनकी नासिका बनेर की बालिका जैसी अकुटिल होती हुई शृङ्खल के मध्य से नि-
कलकर अत्यन्त सरल एवं ऊँची रहती है, गाय आदि की नाक की तरह वह कुटिल नहीं होती
है, इनके दोनो नेत्र शारद ऋतु सम्बन्धी नवीन सूर्य-विकासी पद्म, कुमुद चन्द्रविकाशी उत्पल,
पद्म कुवलय-नीलोत्पल के विमल पत्रों के समूह के जैसे होते हैं, -अर्थात् रक्त, श्वेत एवं नील
वर्ण से युक्त रहते हैं, तथा वे शोभन लक्षण के योग से प्रशस्त होते हैं, अजिह्वा होते हैं भद्रभा-
वयुक्त होने से विकारभाव रहित होकर चपल होते हैं, और कन्त होते हैं बड़े सुन्दर होते हैं,
"पत्तलधवलायत आतंभ लोयणाओ; आणामियचावरुडलकिण्हम्भराडसगयसुजाय मूमयाओ" तथा
वे उनके लोचन पत्रल-पद्मल शोभन पद्म से युक्त होते हैं, धवल शुभ्र होते हैं, आयत होते
हैं, कर्णान्तगत होते हैं एवं ईपद अरुण होते हैं नारियों की नयनसुभगता ही उनका उत्कृष्ट शृङ्गार
है इस बात को सूचित करने के लिये ही-शोभनपद्मयुक्तता और कर्णान्तगतत्व विशेषणों को ले-

પસત્ય અજિહ્વકંતણયણા' એમના તાલુ અને જિહ્વા રક્તોત્પલના પત્રની જેમ રક્ત હોય છે,
અને સુકુમાર હોય ને એમની નાસિકા, કથોરની કલિકા જેવી અકુટિલ હોય છે અને તે
ભદ્રકથના મધ્યમાથી નીકળીને અતીવ સરળ તેમજ બીચી રહે છે ગાય વગેરેના નાકની જેમ
તે કુટિલ હોતી નથી એમના બન્ને નેત્રો શરદ ઋતુ સંબંધી નવીન કમળ-સૂર્ય વિકાસી
પદ્મ કુમુદ ચન્દ્ર વિકાસી ઉત્પલ તેમજ કુવલય નીલોત્પલના વિમલ પત્રોના સમૂહના જેવા
હોય છે. એટલે કે રક્ત શ્વેત અને નીલ વર્ણથી યુક્ત રહે છે તથા તે શોભન લક્ષણના
યોગથી પ્રશસ્ત હોય છે અજિહ્વ હોય છે, ભદ્ર ભાવયુક્ત હોવા થી વિકાર ભાવ રહિત હોવા
છતાએ ચપળ હોય છે અને કાન્ત હોય છે અતીવ સુન્દર હોય "પત્તલધવલાયત આતંભ લો-
યણાઓ, આણામિયચાવરુડલકિણ્હમ્ભરાડ સંગયસુજાયમૂમયાઓ, તેમજ તે તેમનાં નેત્રો
પત્રલપદ્મલ-શોભન પદ્મથી યુક્ત હોય છે, ધવલ શુભ્ર હોય છે આયત હોય છે કર્ણાન્ત-
ગત હોય છે અને ઈપદ અરુણ હોય છે સ્ત્રીઓની નયન સુભગતા જ તેમને ઉત્કૃષ્ટ શૃ-
ંગાર છે એ વાતને સૂચિત કરવામાટે શોભન પદ્મ યુક્તતા અને કર્ણાન્તગતત્વ વિશેષણોને

મેવોત્કૃષ્ટશૃંગમિતિ શોભનપદ્મયુક્તત્વ કર્ણાન્તગતત્વદ્વચનાર્થ પુનરિદ વિશેષણમુપાત્તમિતિ
 બોધ્યમ્ । તથા—‘આણામિય ચાવ રુહિલ કિણ્હવ્મરાઈ સંગય મુજાયમ્મયાઓ’ આનામિત
 ચાપરુચિર કૃષ્ણાભ્રરાજિસંગતમુજાતબ્રુવઃ—અનામિતઃ આરોપિતો યશ્ચાપો—ધનુસ્તદ્વદ્ વક્રે
 રુચિરે સુન્દરે કૃષ્ણાભ્રરાજિસંગતે કૃષ્ણમેઘપટ્તિવત્ સંગતે સંહતે અવિચ્છિન્ને મુજાતે—
 શોભને બ્રુવૌ યાસાં તાસ્તથા ‘આલીણપમાણજુત્તસવણા આલીન પ્રમાણયુક્તશ્રવણા’, આલી-
 ને—સંગતે અત એવ ણ યુક્તે શ્રવણે—કર્ણૌ યાસાં તાસ્તથા, અત એવ ‘મુસવણાઓ’ મુશ્ર
 વણાઃ—મુકર્ણાઃ તથા ‘પીનામટ્ટગંડલેહાઓ, પીનામટ્ટ ગણ્ડલેહાઃ—પીના પરિપુષ્ટા ન તુ નિ-
 મ્નોન્નતા તથા મટ્ટા શુદ્ધા ન તુ શ્યામત્વાદિભિર્વર્ણે સંક્રાન્તા ગણ્ડલેહા—કપોલપાલી યાસાં
 તાસ્તથા, તથા ‘ચડરંસપસત્થસમણિહાલાઓ’ ચતુરસપ્રશસ્તસમલલાટાઃ—ચતુરસ—ચતુષ્કો-
 ણં પ્રશસ્ત લક્ષણોપેતં સમમ્—અવિષમમ્ લલાટં—માલં યાસાં તાસ્તથા, તથા ‘કોમુર્સરયણિ-
 કરવિમલપટ્ટિપુણ્ણસોમવયણાઓ’ કૌમુદી રજનીકરવિમલપ્રતિપૂર્ણસૌમ્યવદનાઃ—કૌમુદી—

કર પુનઃ લોચન કા વર્ણન ક્રિયા ગયા હૈ, આનામિત—આરોપિત ધનુષ સમાન વક્ર—કુટિલ અત-
 એવ રુચિર—સુન્દર એવ કૃષ્ણાભ્રરાજિ કે જૈસે સંગત—કૃષ્ણમેઘપંક્તિ કે સમાન સંગત—સંહતઅવિ-
 ચ્છિન્ન તથા મુજાત —શોભન એસી મોં બ્રુ ઇનકી હોતી હૈ । “આલીણપમાણજુત્તસવણા, મુસવ-
 ણાઓ, પીનામટ્ટગંડલેહાઓ, ચડરસપસત્થસમણિહાલાઓ, કોમુર્સરયણિયરવિમલપટ્ટિપુણ્ણસોમવય-
 ણાઓ” ઇનકે દોન શ્રવણ—કાન—આલીન—સંગત હોતે હૈ અતએવ વે પ્રમાણયુક્ત હોતે હૈ ઔર હસી
 લિયે યે મુકર્ણ—અંછે કાન વાલી માના જાતી હૈ ઇનકો કપોલપાલી પોન હોતી હૈ—પરિપુષ્ટ હોતી હૈ,
 નીચી લેંચી નહીં હોતી હૈ તથા વહ શુદ્ધ હોતી હૈ શ્યામતા આદિ વર્ણો સે સંક્રાન્ત નહીં હોતી હૈ
 હસકા લલાટ માલ ચતુરસ ચૌકોર હોતહૈ, પ્રશસ્ત-લક્ષણોપેત હોત હૈ, એવં સમ-અવિષમ હોત હૈ
 ઇનકા મુલ શરદકાલ કી પૂર્ણિમા કે ચન્દ્ર કે જૈસા વિમલ—નિર્મલ હોત હૈ, પ્રતિપૂર્ણ હોત હૈ—સૌન્દર્ય
 સે પૂર્ણરૂપ મેં મરા હુઆ હોતહૈ ઔર સૌમ્ય—શાન્તિજનક હોત હૈ “હ્રુત્તુણય ઉત્તમંગાઓ, અ-

લક્ષ્મીને કરીથી નેત્રોત્તુ વણું ન કરવામાં આવ્યું છે આનામિત આરો પિત ધનુષની જેમ વક્ર
 કુટિલ એથી રુચિર સુંદર તેમજ કૃષ્ણાભ્રરાજિની જેમ સંગત કૃષ્ણ મેઘપંક્તિની સમાના
 સંગત—સંહત અવિચ્છિન્ન તથા મુજાત શોભન એવી ભમરો જેમને હોય છે. “આલીણપમાણ
 જુત્તસવણા મુસવણાઓ, પીનામટ્ટગંડલેહાઓ, ચડરંસપસત્થસમણિહાલાઓ, કોમુર્સરયણિ-
 યર વિમલપટ્ટિપુણ્ણસોમવયણાઓ” જેમના બન્ને શ્રવણો—કાનો આલીન સંગત હોય છે.
 એથી તે સપ્રમાણ હોય છે અને એટલા માટે જ એઓ મુકર્ણ એટલેકે સારા કાનોવાળી
 માનવામાં આવે છે. એમની કપોલપાલી પીન હોય છે પરિપુષ્ટ હોય છે, નીચી જ ચી હોતી
 નથી તેમજ તે શુદ્ધ હોય છે શ્યામતા વગેરે વર્ણોથી સંક્રાન્ત હોતી નથી એમને લલાટ
 પ્રદેશ ભાલ ચતુરસ ચોખ્ખો હોય છે. પ્રશસ્ત લક્ષણોપેત હોય છે તેમજ સમ-અવિષમ
 હોય છે. એમનું મુખ શરદ કાલની પૂર્ણિમાની ચન્દ્રના જેવું વિમલ નિર્મલ હોય છે પ્ર-
 તિપૂર્ણ હોય છે, સૌન્દર્યથી પરિપૂર્ણ હોય છે અને સૌમ્ય શાન્તિજનક હોય છે “હ્રુત્તુણય—

શર ત્પૌર્ણમાસી, તસ્યા યો રજનીકરઃ ચન્દ્રસ્તદ્દ્વિમલં-નિર્મલં પ્રતિપૂર્ણમ્-અહોનં સૌમ્યં
પ્રસન્ન વદન મુખં યાસાં તાસ્તથા, તથા 'છતુણય ઉત્તમંગાઓ, છત્રોન્નતોત્તમાદ્વાઃ-છત્રવત્
ઉન્નત-તુઙ્ગમ્ ઉત્તમાઙ્ગ-શિરો યાસાં તાસ્તથા, તથા 'અકવિલ સુસિણિદ્ધમૃગન્ધ દોહ સિ-
રયાઓ' અકપિલ સુસ્તિગ્ધ સુગન્ધિદીર્ઘશિરોજાઃ અકપિલાઃ-કૃષ્ણાઃ સુસ્તિગ્ધાઃ સ્વભા-
વતચિક્ષણાઃ સુગન્ધયઃ શોભનગન્ધયુક્તાઃ દીર્ઘાઃ-લમ્બમાનાઃ શિરોજાઃ કેશા યાસાં તા-
સ્તથા, તથા 'છત્ત' છત્ર ૧ 'જ્ઞય' ધ્વજ ૨ 'જૂય' યૂપ 'યૂમ' સ્તૂપ ૪ 'દામિણિ' દામ ૫
'કમંહલુ' કમળહલુ ૬ 'કલસ' કલશ ૭ 'વાવિ' વાપી ૮ 'સોત્થિય' સ્વસ્તિક ૯ 'પઢાગ
પતાકા ૧૦ 'જવ' યવ ૧૧ 'મચ્છ' મત્સ્ય ૧૨ 'કુમ્મ' કૂર્મ ૧૩ 'રહવર' રથવર ૧૪ 'મ-
ગરજ્ઞય' મકરધ્વજ ૧૫ 'અંક' અંકુ ૧૬ 'થાલ' સ્થાલ ૧૭ 'અંકુસ' અદ્દુશ ૧૮ 'અદ્વાવય'
અષ્ટાપદ ૧૯ 'સુપ્પહટ્ટગ' સુપ્રતિષ્ઠક ૨૦ 'મયૂર' મયૂર ૨૧ 'સિરિ અભિસેઅ' શ્યૂભિપેક
૨૨ 'તોરણ' તોરણ ૨૩ 'મેહ્ણિ' મેદિનિ ૨૪ 'ઉદહિ' ઉદધિ ૨૫ 'વરમવળ' વરમવળ
૨૬ 'ગિરિ' ગિરિ ૨૭ 'વર આયસ' વરાદર્શ ૨૮ 'સલીલગય' સલીલગજ ૨૯ 'ઉસમ' ઋ-
ષમ ૩૦ 'સીહ' સિંહ ૩૧ 'ચામર' ચામર ૩૨ 'ઉત્તમપસત્થ વત્તીસલક્ષણધરીઓ 'ઉત્ત-
મપ્રશસ્તદ્વાત્રિશલ્લક્ષણધરિણ્યઃ-તત્ર છત્રં પ્રસિદ્ધં ૧, ધ્વજઃ પ્રસિદ્ધઃ યૂપઃ-સ્તમ્ભવિશેષઃ ૩.
સ્તૂપઃ-પીઠં ૪, દામ-માલા ૫, કમળહલુઃ-જલપાત્રવિશેષઃ ૬, કલસઃ ૭ વાપી ૮ સ્વસ્તિ-

કવિલ સુસિણિદ્ધ સુગન્ધદોહ સિરયાઓ, છત્ત ૧ જ્ઞય ૨ જૂમ ૩ યૂમ ૪ દામિણિ ૫ કમંહલુ ૬
કલસ ૭ વાવિ ૮ સોત્થિય ૯ પઢાગ ૧૦, જવ ૧૧, મચ્છ ૧૨, કુમ્મ ૧૩ રહવર ૧૪ મગર-
જ્ઞય ૧૫, અંક ૧૬, થાલ ૧૭, અંકુસ ૧૮, અદ્વાવય ૧૯ સુપહટ્ટગ ૨૦ મયૂર ૨૧, સિરિ અ-
ભિસેય ૨૨, તોરણ ૨૩ મેહ્ણિ ૨૪, ઉદહિ ૨૫, વરમવળ ૨૬, ગિરિ ૨૭ વર આયસ ૨૮,
સલીલગય ૨૯, ઉસમ ૩૦ સીહ ૩૧ ચામર ૩૨ ઉત્તમપસત્થ વત્તીસ લક્ષણધરીઓ" इनका
मस्तक छत्र के जैसा उन्नत होता है, इनके मस्तक के बाल-केश-अकपिल कृष्ण होते हैं, सुस्तिग-
स्वभावतः चिकने होते हैं सुगन्धित-शोभनगन्ध से युक्त रहते हैं, दीर्घ-लम्बे होते हैं, ये वत्तीस
श्रेष्ठ लक्षणों को जो सामुद्रिक शास्त्र में स्त्रियों के सौभाग्य के सूचक कहे गये हैं धारण करने
वाली होती हैं वे ३२ चिह्न लक्षण इस प्रकार से हैं-छत्र १ ध्वज २, यूप-स्तम्भविशेष-जो कि

ઉત્તમંગાઓ અકવિલ સુસિણિદ્ધ મગદોહસિરયાઓ છત્ત-૧, જ્ઞય-૨ જૂમ-૩ યૂમ ૪ દામિણી
-૫ કમંહલુ-૬ કલસ-૭ વાવિ-૮ સોત્થિય-૯ પઢાગ-૧૦ જવ-૧૧ મચ્છ-૧૨ કુમ્મ-૧૩
રહવર-૧૪ મગર-જ્ઞય-૧૫ અક-૧૬ થાલ-૧૭ અંકુસ-૧૮ અદ્વાવય-૧૯ સુપહટ્ટગ-૨૦ મ-
યૂર-૨૧ સિરિઅભિસેઅ-૨૨ તોરણ-૨૩ મેહ્ણિ-૨૪ ઉદહિ-૨૫ વરમવળ-૨૬ ગિરિ-૨૭
વરઆયસ-૨૮ સલીલગય-૨૯ ઉસમ-૩૦ સીહ-૩૧ ચામર-૩૨ ઉત્તમપસત્થવત્તીસ
જ-
ધરીઓ એમનું મસ્તક છત્ર એવું ઉન્નત હોય છે. એમના મસ્તકના વાળ અકપિલ કૃષ્ણ-
હોય છે સુસ્તિગ્ધ સ્વભાવતાઃ સુચિકવણ હોય છે સુગન્ધિત શોભન ગન્ધથી યુક્ત રહે છે
દીર્ઘ હોવા હોય છે એમના સૌભાગ્ય સૂચક તેમજ સામુદ્રિક શાસ્ત્રના ૩૨ લક્ષણોથી
તેઓ સપન્ન હોય છે ૩૨ લક્ષણો આ પ્રમાણે છે છત્ર ૧-ધ્વજ ૨-યૂપ-એક સ્તંભ વિશેષ
૩-એ યજમા આરોપિત હોય છે-સ્તૂપ પીઠ-૪દામ માળા-૫ કમંહલુ-જલપાત્ર વિશેષ-૬, ક-

કઃ ૧૨ પતાકા ૧૦ યવઃ ૧૧ મત્સ્યઃ ૧૨ કલશાદયઃ પ્રસિદ્ધાઃ, તથા-કૂર્મઃ-કચ્છપઃ ૧૩ રથવરઃ-શ્રેષ્ઠરથઃ ૧૪ મકર-ધ્વજઃ-મકરરૂપઃ ધ્વજઃ, કામદેવ-ધ્વજઃ, અયં-ધ્વજઃ સર્વકાલિક સૌભાગ્ય સૂચયતિ ૧૫, તથા અદ્ભ-ચિહ્ન ક્યામતા લક્ષ્ણ ૧૬ સ્થાલં પ્રસિદ્ધમ્ ૧૭ અદ્ભુશઃ પ્રસિદ્ધઃ ૧૮, અષ્ટાપદં-દ્યુતફલકમ્ ૧૯, સુપ્રતિષ્ઠકં-સ્થાપનકં ચિન્હવિશેષઃ ૨૦, મયૂરઃ પ્રસિદ્ધઃ ૨૧, અભિષેકઃ શ્રિય-લક્ષ્મ્યાઃ, અભિષેકઃ રત્નપનમ્ ૨૨, તોરણં પ્રસિદ્ધમ્ ૨૩, મેદિની-પૃથ્વી ૨૪ ઉદધિઃ-સમુદ્રઃ ૨૫, વરમવનં શ્રેષ્ઠપ્રાસાદઃ ૨૬, ગિરિઃ-પર્વતઃ ૨૭, વરાદર્શઃ-શ્રેષ્ઠદર્પણઃ ૨૮, સલોલગજઃ-લીલા સહિતોગજઃ ૨૯, ઋષભઃ બલીવર્દઃ ૩૦, સિંહઃ પ્રસિદ્ધઃ ૩૧ ચામર પ્રસિદ્ધન્ ૩૨ કલ્પેતાનિ ઉત્તમાનિ-શ્રેષ્ઠાનિ અતઃપ્રવ પ્રશસ્તાનિ-સામુદ્રિશશસ્ત્રે શ્રેષ્ઠત્વેનાભિહિતનયા પ્રશંમાર્દોણિ ચાનિ દ્વાત્રિશલ્લક્ષણાનિ=દ્વાત્રિગત્સંખ્યકાનિ સ્ત્રીણાં સૌભાગ્યસૂચકાનિ ચિહ્નાનિ, તેષા ધારિણ્યઃ-ધારિકાઃ-પ્રશસ્તછત્રાદિદ્વાત્રિશત્સંખ્યક સ્ત્રીશુભલક્ષણધારિણ્ય ઇતિ માવઃ, 'હંસસરિસર્ગઈઓ' હંસપટ્ટગતયઃ તથા 'કોઈલ મહુરગિર સુસ્સરાઓ' કોઈલમધુરગીર્સ્વરા -કોઈલસ્ય સહકારમઙ્ગરી રમાસ્વાદજનિતાનન્દેન મત્સ્યસતો યા મધુરાઃ-મનોહરા ગીઃ-ગાળી તદ્વત્સરો યાસાં તાસ્તથા કોઈલવન્મધુરાલાપિન્યઃ ઇતિ માવઃ તથા 'કંતા' કાન્તા કપનીયાઃ અતઃપ્રવ 'તન્વસ્સ' સર્વસ્ય-સ્વા સન્નવર્તિનો જનસ્ય 'અણુમયાઓ' અણુમતાઃ-અભિમતાઃ ન તુ કસ્યાપિ દ્વેષ્યા ઇતિ માવ તથા-વવગયવલિપલિય' વ્યવગતવલિપલિતાઃ-વ્યવગતાનિ-વિશેષેણ ઉપગતાનિ-દૂરિશુ-

યજ્ઞ' મેં આરોપિત હોતાઠે ૩, સ્તૂપ-પોઠ ૪, દામ-માલા ૫, કર્મણ્ડલજલપાત્રવિશેષ ૬, કલશ ૭ વાપી ૮, સ્વસ્તિક ૯, પતાકા ૧૦, યવ ૧૧, મત્સ્ય ૧૨ કૂર્મ-કચ્છપ ૧૩, રથવર-શ્રેષ્ઠ રથ ૧૪, મકરધ્વજ-મકરરૂપધ્વજા ૧૫, ગ્રહ કામદેવ કો ધ્વજા ઠે ઓર વહ સર્વકાલિક સૌભાગ્ય કો સૂચક હોતો ઠે અદ્ભ-કાલાનિલ ૧૬, સ્થાલ-થાલ ૧૭, અદ્ભુશ ૧૮, અષ્ટાપદ-દ્યુતફલક ૧૯, સુપ્રતિષ્ઠક-સ્થાપનક ૨૦, મયૂર-મોર ૨૧, અભિષેક-લક્ષ્મી કા અભિષેકરૂપચિન્હ ૨૨, તોરણ ૨૩, 'મેદિની-પૃથ્વી ૨૪' ઉદધિ-સમુદ્ર ૨૫, શ્રેષ્ઠ પ્રાસાદ ૨૬, ગિરિ-પર્વત ૨૭ શ્રેષ્ઠદર્પણ ૨૮, સલોલગજ-લીલા સહિતહાથી ૨૯, ઋષભ-બલીવર્દ બૈલ ૩૦, સિંહ ૩૧ ઓર ચામર ૩૨, " હંસ સરિસર્ગઈઓ, કોઈલમહુરગિરસુસ્સરાઓ, કંતા, સન્વસ્મ અણુમયાઓ, વવગયવલિપલિયવંગ-

લશ-૭ વાપી-૮, સ્વસ્તિક-૯ પતાકા-૧૦ યવ-૧૧ મત્સ્ય-૧૨ કૂર્મ-કચ્છપ ૧૩ રથવર-શ્રેષ્ઠ રથ-૧૪ મકર ધ્વજ-મકર રૂપધ્વજા-૧૫ આ કામદેવની ધ્વજા છે, અને એ સર્વ કાલિક સૌભાગ્ય સૂચક હોય છે) આંક કાળો તલ ૧૬-સ્થાલ-થાલ-૧૭, અકુશ-૧૮, અષ્ટાપદ દ્યુતફલક-૧૯, સુપ્રતિષ્ઠક-સ્થાપનક-૨૦, મયૂર-મોર ૨૧, અભિષેક-લક્ષ્મીનું અભિષેક રૂપ ચિહ્ન-૨૨, તોરણ-૨૩, મેદિની-પૃથ્વી-૨૪, ઉદધિ-સમુદ્ર-૨૫, શ્રેષ્ઠ પ્રાસાદ-૨૬, ગિરિ-પર્વત-૨૭, શ્રેષ્ઠ દર્પણ-૨૮, સલીલ ગજ-લીલા સહિત હાથી-૨૯ ઋષભ-બલીવર્દ-મળદ-૩૦, સિંહ-૩૧ અને ચામર-૩૨, 'હંસસરિસ ગઈઓ, કોઈલમહુરગિરસુસ્સરાઓ' કંતા, સન્વસ્મ અણુમયાઓ, વવગયવલિપલિયવંગદુઃસ્વગવાદિ દોહગસોગમુકકાઓ" હંસના જેવી એમની ગતિ હોય છે, એમની સ્વર સહકાર-આમની મનોહરા રમાસ્વાદથી ઉત્પન્ન થવાવાળા આ-

તાનિ વલિપલિતાનિ વલયઃ-ચર્મશૈથિલ્યજનિતા રેસ્વાવિશેષાઃ પલિતાનિ શ્વેતકેશાશ્ચ યાસાં તાસ્તથા વાર્ધક્યરહિતા ઇતિ ભાવઃ તથા 'વંગ દુઘ્વણવાહિ દોહગ્ગમોગમુક્કાઓ' વ્યદ્ગ દુર્વળ વ્યાધિદૌર્ભાગ્યશોકમુક્તાઃ વિરુદ્ધાનિ અદ્ગાનિ વ્યદ્ગાનિ હીનાધિકા અવયવાઃ દુર્વળઃ દુષ્ટો વર્ણ. અપ્રશસ્તા ત્વગિત્યર્થઃ વ્યાધયઃ-જ્વરાદય દૌર્ભાગ્યં-વૈધવ્યં શોક-પતિ પુત્રાદિમરણ-જનિતો દારિદ્ર્યકૃતશ્ચ એભ્યો મુક્તાઃ-રહિતા ચ પુનઃ 'ઉચ્ચત્તેણ' ઉચ્ચત્ત્વેન-ઔન્નત્યેન 'નરાણ' નરાણામ્ અપેક્ષયા 'થોવૂળમુસ્સિયાઓ' સ્તોકોનં કિંચિદ્નં યથા સ્યાત્તથા ઉચ્છિ-તાઃ ઉચ્ચા-કિંચિન્ન્યૂન ત્રિગવ્યૂતોચ્છિતા ઇત્યર્થઃ તથા 'સમાવસિંગારચરુવેસાઓ' સ્વભાવ શૃદ્ધારચારુવેષાઃ સ્વભાવતઃ પ્રકૃત્યા શૃદ્ધારઃ શૃદ્ધારાનુકૂલઃ ચારુ. સુન્દરો વેષો યાસાં તા-સ્તથા સ્વભાવતઃ એવ શૃદ્ધારાનુરૂપ મુવેપશાલિન્ય ઇત્યર્થઃ અનેન કેશવિરચના ધૌપાધિકશૃદ્ધા-રાભાવેન તાસાં નિર્વિકારમનસ્કતા સ્તુતિર્તેતિ તથા 'સંગયગયહસિયમણિયચિદ્વિયવિલા-સસંલાવાંણળજુતોવયારકુસલાઓ' સગતગતહસિત મણિતચેષ્ટિતવિલાસસંલાપનિપુણયુક્તો પચારકુશલાઃ તત્ર-સંગતમ્ ઉચિતં ગતં ગમનં હસિતં હાસઃ મણિત વચન ચેષ્ટિતં ચેષ્ટા વ્યાપારો વિલાસઃ શૃદ્ધારચેષ્ટાવિશેષઃ સંલાપઃ મિથો ભાષણમ્ એતેષુ નિપુણાઃ કુશલાઃ તથા યુક્તાઃ-સંગતા એ ઉપચારા-લોકવ્યવહારાસ્તેષુ કુશલા તતઃ સંગતાદિનિપુણાન્તપદસ્ય

દુઘ્વણવાહિ દોહગ્ગમોગમુક્કાઓ" હૈંસ કી જૈસી इनकी चाल होती है इनका स्वर सहकार-आम्र मंजरी के रसास्वाद से जनितानन्द से मत्त हुई कोकिल की वाणी के जैसा मधुर होता है ये बड़ी सुन्दरी होती है, अतएव पास में रहे हुए प्रत्येक व्यक्ति की चाहना के ये विषयभूत ही बनी रहती हैं, कोई भी उनसे द्वेष नहीं करता है, इनके शरीर में चर्म की शिथिलता से जनित रेखाएँ- झुर्रियाँ नहीं पड़ती है और न इनके बाल ही सफेद होते हैं अर्थात् इनके शरीर में वृ-द्धता नहीं आती है इनके शरीर में होनाधिक अंग नहीं है, इनके शरीर की चमड़ी अप्रशस्त वर्ण-वाली नहीं होती है, ज्वर आदि व्याधिया इन्हे नहीं सताता हैं वैधव्य का दुःख ये नहीं भोगती हैं और पुत्र का शोक एवं दारिद्र्य जन्य सक्लेश इनके निकट तक भी नहीं आ पाता है । "उच्चत्ते-ण्य णराण थोवूण मुस्सिયાओ सभावसिंगारचारुवेसाओ, सगयगयहसियमणिय चिद्वियविलास

નન્દથી મત્ત થએલી કોકિલની વાણી જેવો મધુર હોય છે એઓ બહુ જ સુન્દર હોય છે. એથી નિકટ રહેનારી ફરેકે-ફરેકે વ્યક્તિ એમને ચાહે છે કેઈ એમનાથી દ્વેષ કરતું નથી સા-માન્ય વ્યક્તિના શરીરમાં ચર્મની શિથિલતાથી જ પ્રકારની રેખા પડી જાય છે તે પ્રકારની રેખાઓ એટલે કે કરચલિયો એમના શરીર પર પડતી નથી અને એમના વાળ પણ સફેદ થતા નથી અર્થાત્ એમના શરીરમાં કેઈ પણ દિવસે ઘડપણ આવતું નથી. એમના શરી-રમાં હીનાધિક-અંગો હોતા નથી. એમના શરીરની ચામડી અપ્રશસ્ત વર્ણવાળી હોતી નથી, તોવ વગેરે રોગોથી એ ઓ સર્વે મુક્ત હોય છે વૈધવ્યનું દુઃખ એ કેઈ પણ દિવસે ભો-ગવતો નથી, અને પુત્રશોક અને દારિદ્ર્ય જન્ય સક્લેશથી એ ઓ સદા મુક્ત રહે છે. "ઉ-ચ્ચત્તેણ ય ણરાણ થોવૂળ-મુસ્સિયાઓ સમાવસિંગારચારુવેસાઓ સંગયગયહસિયમણિય ચિ-દ્વિય વિલાસસંલાવનિળજુતોવયારકુ ઓ, સુંદરથળજહ્ણ કરચલળળયળલાવળળ-

युक्तादि कुशलान्तपदस्य च कर्मधारयः अत्रेदं बोध्यम्—तदानीन्तनस्त्रीणां मनः परपुरुषं प्रति न कदाचिदपि साभिलाषमभूत् न पुरुषस्यापि परस्त्रियं प्रति ।

नन्वेवं तर्हि भगवद् आदिनाथस्य सुनन्दापाणिग्रहणमनुचितम् तथाविध काल स्वभावात् मृते पत्यौ तस्याः पाणिग्रहणं भगवता कृतमिति भगवतः परस्त्री दोष प्र- सङ्गोऽनिवार्यः ? इति चेत् आह—कस्यचिद्युगलस्य युगलत्वेन समुत्पन्नौ कन्यादारकौ बालभावानुरूपया क्रीडया क्रीडन्तौ कस्यचित् तालतरोरवस्ताद् गतौ । तदा कर्मयोगा- त्तस्य तालतरोः पतता फलेन काकतालीयन्यायनस्तयोर्मध्ये दारकः शिरस्याहतो मृतश्च

सलाव निउणजुत्तोवयारकुसलामो, सुंदरथणजहणवयण करचलणणयणलावणरूव जोव्वणविलास-कलियाओ” इनकी ऊँचाई मनुष्यों की ऊँचाई से कुछ कम होती है अर्थात् ये कुछ कम ३ कोश की ऊँची होती है तब कि वहाँ के मनुष्य पूरे ३ कोश के ऊँचे होते हैं, स्वभावतः ही इनका वेष शृङ्गार के अनुरूप होता है इस कथन से “कोश विरचन आदि जो औपाधिक शृङ्गार है उसका उनमें अभाव रहता है और इसीसे उनमें निर्विकार मनस्कता रहती है” यह बात सूचित की गई—है ये उचित गमन में, हास में, बोलने में, विविध प्रकार की चेष्टाओं के करने में विज्ञास में और आपस में बातचीत करने में बड़ी चतुर होती है, तथा उचित लौकिक व्यवहारों में भी ये बड़ी निपुण होती है । इस कथन का भाव ऐसा है कि उस काल की स्त्रियों का मन परपुरुष के प्रति और परपुरुष का मन परस्त्रियों के प्रति कभी भी अभिलाषी नहीं होता है यदि ऐसी बात है तो भगवान् आदिनाथ के सुनन्दा का पाणिग्रहण करना अनुचित ठहरता है क्योंकि सुनन्दा के पति के मर जाने पर ही भगवान् ने उसका पाणिग्रहण किया है अतः इस प्रकार के कृत्य करने में भगवान् को परस्त्री दोष का प्रसङ्ग अनिवार्य रूप से आता है, तो इसके सम्बन्ध

સ્વજોન્વળવિલાસકલિયાઓ” એમની ઉચાર્થ માણસોની ઉચાર્થ કરતા સહેજ ઓછી હોય છે. એટલે કે એઓ કંઈક કમ ત્રણગાઉ જેટલે જિંદગી હોય છે ત્યાંના પુરુષો ત્રણ કૌસ જેટલા જિંદગી હોય છે. સ્વભાવતઃ એમનો વેષ શુગાર યોગ્ય હોય છે આ કથનથી “દેશવિરચન વગેરે જે ઔપાધિક શુગારો છે, તેનો તેઓમાં અભાવ રહે છે અને એથી જ તેમનામાં નિર્વિકાર મનસ્કંતા રહે છે” આ વાત સૂચિત કરવામાં આવી છે એઓ ઉચિત ગમનમાં, હાસ્યમાં, બોલવામાં, અને કળતની ચોટાઓ કરવામાં, વિલાસમાં અને પરસ્પર વાત ચીત કરવામાં ખૂબ જ ચતુર હોય છે, તેમ જ લૌકિક વ્યવહારોમાં પણ ખૂબ જ નિપુણ હોય છે આ કથનનો ભાવ આ પ્રમાણે છે કે તે કાળની સ્ત્રિઓનું મન પરપુરુષ તરફ અને પરપુરુષનું મન પરસ્ત્રીઓ તરફ કદાપિ અભિલાષી થતું નથી જો આ વાત યથાર્થ છે તો ભગવાન આદિનાથનું સુનન્દા સાથે પાણિઅહંશ કરવું અનુચિત કરે છે કેમકે સુનન્દાના પતિના અવસાન પછી જ ભગવાને તેનું પાણિઅહંશ કયું છે એથી આ જાતના આચરણ બદલ ભગવાનને પરસ્ત્રી દેશ્વરો પ્રસંગ અનિવાર્ય પણે ઉપસ્થિત થાય છે તો આ સંબંધમાં સમાધાન એવું છે કે કોઈ યુગલિમાના યુગલ રૂપથી કન્યા અને દારક ઉત્પન્ન થયા તેઓ ભાલોચિત-કીડાઓ

तज्जननीजनकौ च तां कन्यां पालनपोषणादिना रक्षितवन्तौ । ताभ्यां च तस्याः
 सुनन्देति नाम कृतम् । ततः कियद्विसानन्तरं तज्जननीजनकौ मृतौ । ततः स। मृ-
 नन्दा आश्रयाभावाद् एकाकिनी तिष्ठति स्वपिति उपविशति वने इतस्ततः परिभ्रम-
 ति च । क्रमेण प्राप्तयौवनां निस्सहायामेकाकिनीं वने परिभ्रमन्तीमवलोक्य युगलिनस्तां
 नाभिकुलकरस्य समीपे समानीतवन्तः । नाभिकुलकरोऽपि तदीयमशेषवृत्तान्तमुपलभ्य भ-
 वत्वेष्टा ऋषभस्य पत्नीति तां भगवत ऋषभदेवस्य पत्नीत्वेन गृहीतवान् । अतो भगव-
 ता कुमारिकैव सुनन्दा परिणीता ततो भगवति परस्त्रीपरिणयनरूपो दोषारोपो न घटते ।
 ननु युगलिकानामकाल मृत्यु न भवतीति कथमस्य दारकस्य मृत्युर्जातः इति चेदाह-पूर्व-
 कोट्यर्थिकायुष्काणामकाल मृत्युर्न भवति किन्तु भगवतः आदिनाथवारके तस्य दारकस्य

में समाधान ऐसा है किसी युगलियाके युगल रूप से कन्या और दारक उत्पन्न हुआ वे बालोचि-
 तकीड़ा से खेलते किसी तालवृक्ष के नीचे पहुँच गये वहाँ कर्मयोग से उस तालवृक्ष से काकता-
 लीय न्याय से गिरते हुए उनके फल से सिर में चोट आजाने से वह बालक मर गया कन्या के
 माता पिता ने उस कन्या को पालपोष कर बड़ा किया उसका नाम सुनन्दा रखा गया कितनेक
 दिनों के बाद सुनन्दा के माता पिता का देहोत्सर्ग-मरण, हो गया सुनन्दा अब अकेली रह गई
 और अकेली ही उठने बैठने सोने लगी धीरे धीरे वह वनमें भी इधर उधर आश्रयाभाव के कारण
 आने जाने एवं फिरने लगी । जब वह यौवन मती हुई तो उसे जंगल में अकेली घूमती हुई देखकर
 युगलिक जन नाभिराय कुलकरके पास ले गये नाभिकुलकर ने उसका सब वृत्तान्त जानकर “यह
 ऋषभकुमार की पत्नी हो जावे” इस रूप से उसे स्वीकार कर लिया इस तरह भगवान् ऋषभ ने
 कुमारिका अवस्था में रही हुई ही उस सुनन्दा के साथ अपना विवाह किया है अतः भगवान् पर
 परस्त्री परिणय का दोषारोप नहीं आता है, शास्त्रों में ऐसा लिखा है कि भोगभूमियां जीवों की
 अकाल मृत्यु नहीं होती हैं फिर उस दारक की अकाल में मृत्यु कैसे होगई कही गई है । तो इस-

कस्ता केधं एक ताल वृक्षनी नीचे जधं पड़ोन्त्या त्या कर्मयोगिणी ते तालवृक्ष परस्थी' कड
 तालीय न्यायथी पडता तेना इणथी माथाभां आघात यथाथी ते दारक भरषु पाभ्ये. कन्याना
 माता-पिताअे ते कन्यायुं पालन पोषणु कथुं अने तेने मोटी करी तेनुं नाम माता पिता
 अे सुनदा राज्थु. केटल क द्विसे पछी सुनं'दानी माता पितायुं अवसान यधं गथुं सुनदा
 त्थार भाइ अेकही रही गधं. ते अेकही ज धरमां रहेवा लागी धीमे धीमे ते वनभा पणु
 आम तेम जवा आववा लागी ज्यारे ते हुवती यधं तो तेने जगलमां अेकही इरती
 जेधं ते युगलिक जन नाभिराय कुलकरी पास ले गथी नाभिकुलकरे तेनी अधी डकीकतं
 लण्णी ने आ ऋषभकुमारनी पत्नी थाय. आम तेने स्वीकार करी दीधे आरीते भगवान
 ऋषभे कुमारिकावस्थावाणी ते सुनदा माथे पाषुथडणु कथुं छे जेथी भगवान पर परस्त्री
 परिणयनने दोषारोपणु येअ्य कडेवाय नहि. शास्त्रोमा अेधुं विधान छे के भोगभूमिमां

પૂર્વકોટ્યધિકમાયુર્ના મૃદિત્યકાલમૃત્યોઃ પ્રાથમ્યમ્ । તદેવાહાન્યત્ર નન્નુ एवं तर्हि भगवतः सहोदरया सुमङ्गलया सह पाणिग्रहण त्वनुचितमेव सहोदरापाणिग्रहस्यातिगर्हितत्वं तु आपामरप्रसिद्धम् इति चेत् आह—तदानीं तथाविध व्यवहारस्य लोकाविरुद्धत्वेन भगवत्कृतस्य सहोदरायाः पाणिग्रहणस्यानौचित्यकथनमयुक्तमेवेति—पुनरप्याह—सुन्दर इत्यादिसુ-
 મ્ । જઘનં સ્ત્રીકટયા અધોભાગઃ વિલાસઃ=સ્ત્રીણાં ચેષ્ટાવિશેષઃ તથા 'જનદણવણવિવર-
 રચારિણીઝવ્વ' નન્દનવનવિવરચારિણ્યઃ નન્દનવનં મેરોદ્વીતીયં વનં તસ્ય યો વિવરઃ અવ-
 કાશઃ તત્ર ચારિણ્યઃ વિહરણશીલા 'અચ્છરાઓ' અપ્સરસ ઇવ 'મરહવાસમાણુસચ્છરાઓ'
 મારતવર્ષમાનુષાપ્સરસઃ મરતક્ષેત્રે માનુષીરૂપા અપ્સરસઃ તથા 'અચ્છેરગપેચ્છણિજ્જાઓ'
 આશ્ચર્ય પ્રેક્ષણીયાઃ આશ્ચર્યમિતિ કૃત્વા જનૈરવલોકનીયાઃ તથા પાસાર્દ્યાઓ જાવ પહિ-
 રૂવાઓ પ્રાસાદીયા યાવત્ પ્રતિરૂપાઃ યાવત્પદેન દર્શનીયા અભિરૂપાઃ ઇતિ સંગ્રાહ્યમ્ પ્રાસા-

કા ઉત્તર એસા હૈ કિ જિસકી આયુ પૂર્વ કોટિ સે અધિક હાતિ હૈ એસે યુગલિકોં કી અકાલ મૃત્યુ નહીં હોતી હૈ, પરન્તુ આદિ નાથ કે વારક મેં હુપ્પે હસ દારક કી પૂર્વકોટિ સે અધિક આયુ નહીં થી, હસલિપ્પે હસકી અકાલ મૃત્યુ હુઈ । અહ અકાલ મૃત્યુ કા ઉનકે વારક કા પ્રથમ દૃષ્ટાન્ત હૈ । એસે હી વાત અન્યત્ર હસ પ્રકાર સે કહો ગડ હૈ મગવાન્ કા અપની સહોદરા સુમંગલા કે સાથ જો પાણિગ્રહણ હુઆ હૈ વહ અનુચિત હી હુઆ હૈ । સહોદરા કે સાથ પાણિગ્રહણ હોના તો સાધારણ સે સાધારણ તક વ્યક્તિયો મેં અનુચિત કાર્ય માના જાતા હૈ તો હસ વિષય મેં કહા ગયા હૈ કિ ઉસ સમય હસ પ્રકાર કા વ્યવહાર લોકાવિરુદ્ધ થા—લોક મેં નિન્દનીય—પરં અનુ-
 ચિત નહીં માના જાતા થા અતઃ સહોદરા કે સાથ ક્રિયા ગયા મગવાન્ કા પાણિગ્રહણ ઉસ સમય કે અનુસાર અનુચિત કાર્ય નહીં થા । સુન્દર ઇત્યાદિ હન સ્ત્રિયો કે સ્તન જઘન ભાગ—કટિ કે નિચે કા સ્થાન ઇત્યાદિ વહ સુન્દર હી હોતે હૈ । 'જનદણવણવિવરચારિણીઝવ્વ અચ્છરાઓ' નન્દન વન મેં સુમેરુ કે દ્વિતીયવન મેં—વિહરણ શીલ અપ્સરાઓ કે જૈસી યે પ્રતીતિ હોતી હૈ અતઃ

જોવોનું' અકાલમૃત્યુ થતું નથી તો પછી તે દારકનું' અકાલ મૃત્યુ કેવી રીતે થયું ? તો આનો જવાબ આ પ્રમાણે છે કે જેમનું' આયુ પૂર્વકોટિથી અધિક હોય છે, એવા યુગલિકોનું' અકાલમૃત્યુ થતું નથી પણ આદિનાથના વારકમાં થયેલ આ દારકની પૂર્વકોટિ કરતા વધારે આયુષ્ય ન હોતી એથી એનું અકાલ મૃત્યુ થયું તેમનાવારકમાં અકાલ મૃત્યુ સંભવી આ પહેલું દૃષ્ટાન્ત છે. એવી વાત બીજા સ્થાને આ પ્રમાણે કહેવામાં આવી છે ભગવાનનું પોતાની સહોદરા સુમંગલા સાથે જે પાણિગ્રહણ થયું છે તે ઘણું અનુચિત જ થયું છે. સહોદરા સાથે પાણિગ્રહણ તો સાધારણ વ્યક્તિ માટે પણ અનુચિત કાર્ય ગણાય છે તો આ સંબંધમાં આમ કહેવામાં આવ્યું છે કે તે વખતે આ ભત્રેના વહેવાર લોકાવિરુદ્ધ ગણાતો હતો. લોકમાં નિંદનીય તેમજ અનુચિત ગણાતો નથી એથી સહોદરાની સાથે કરવામાં આવેલ પાણિગ્રહણ તે વખતના વ્યવહાર મુજબ અનુચિત કાર્ય ગણાય નહિ. 'સુન્દર' ઇત્યાદિ એ સ્ત્રીઓના સ્તન જઘન ભાગ કટિના નીચેનું સ્થાન વગેરે સર્વ અંગો 'સુન્દર જ હોય છે "નન્દન વણ વિવરચારિણી ઝવ્વ અચ્છરાઓ" એ સ્ત્રીઓ નન્દનવનમાં—સુમેરુના દ્વિતીય

દીયાદીનામર્થા પૂર્વવદ્વોધ્યા इति सम्प्रति तत्कालोत्पन्न स्त्रीपुंसा साधारणतया वर्णनमाह
'तेण मणुया' इत्यादि । ते भरतवर्षे सपमसुपमाकालभाविनः खलु मनुजाः, मनुजाश्च मनु-
ज्यश्चेति मनुजाः-पुरुषाः स्त्रियश्च 'ओहस्सरा' ओघस्वराः-ओघेन प्रवाहेण स्वरो येषां ते-
तथा-मेघवद् गम्भीरस्वरा इत्यर्थः । 'हंसस्सराः-हंसस्येव मधुरो स्वरो येषां ते तथा ।
'कोचस्सरा' क्रोञ्चस्वरा -क्रोञ्चस्येव-क्रोञ्चपक्षिण इव अनायासनिर्गतोऽपि दूरदेशव्यापी
स्वरो येषां ते तथा । 'णंदिस्सरा' नन्दीस्वरा -नन्दीः-द्वादशविधतूर्य समुदयस्तस्याः स्वर
इव स्वरो येषां ते तथा' तथा 'णंदिघोसा' नन्दीघोषा -नन्दाः पूर्वोक्तरूपायाः घोष इव-
अनुनाद इव घोष-अनुनादो येषां ते तथा । 'सीहस्सरा' सिंह स्वराः-सिंहस्येव बलिष्ठः
स्वरो येषां ते तथा । 'सीहघोसा' सिंहघोषाः-सिंहस्य घोष इव अनुनाद इव घोषो येषां
ते तथा, अतएव 'सुस्सरा' सुस्वराः-प्रशस्तस्वरयुक्ताः 'सुस्सरणिग्घोसा' सुस्वरनिर्घोषा-सु-
ष्ठु-शोभन स्वरनिर्घोषः-स्वरानुनादो येषां ते तथा, तथा 'छायायवोज्जो विअंगमंगा'
छायोद्योतितान्नाङ्गाः-छाया-प्रभया उद्योतितानि-प्रकाशितानि अङ्गानि अवयवा यस्य

'મરહવાસ માણસચ્છરાઓ', ભરતક્ષેત્ર કીં યે માનુષીરૂપ મેં અપ્સરાએ હી હૈ "અચ્છેરગપેચ્છણિજ્જા-
ઓ પાસાઈયાઓ જાવ પઢિરૂવાઓ" મનુષ્યલોક કે યે આશ્ચર્યરૂપ હૈ એસા સમજી કર યે જનો
દ્વારા પ્રેક્ષણીય હૈ પ્રાસાદીય આદિ-ઇન ચાર પદોં કી વ્યાખ્યા જેસી પૂર્વ મેં કી જા ચુકિ હૈ વૈસી
હી હૈ "તેણ મણુયા ઓહસ્સરા, હસસ્સરા, કોંચસ્સરા, ણંદિસ્સરા ણંદિઘોસા સીહસ્સરા" વે ડસ
કાલ કે મનુષ્ય ઔર સ્ત્રિયા ઓઘસ્વર વાલે મેષકે જેસે ગમ્ભીર સ્વર વાલે, હંસ કે જેસે મધુર સ્વર
વાલે ક્રોઞ્ચ પક્ષી કે જેસે દૂરદેશ વ્યાપિ સ્વર વાલે, નન્દી કે દ્વાદશવિધ તૂર્ય સમુદાય કે સ્વર કે
જેસે સ્વર વાલે, નન્દી કે અનુનાદ કે જેસે અનુનાદ વાલે સિંહ કે બલિષ્ઠ સ્વર કે જેસે સ્વર વાલે
"સીહઘોસા સુસ્સરા, સુસ્સરણિઘોસા, છાયાયવોજ્જોવિઅંગમંગા, વજ્જરિસહ નારાયસઘયણા સમ-
ચવરસસઠાણસઠિયા છવિણિરાતંકા" સિંહ કે અનુનાદ જેસે અનુનાદ વાલે, ઇતપ્વ શોભન સ્વર

વનમાં-વિહરણુશીલ અપ્સરાઓ જેવી સુ'હર છે એથી "મરહવાસમાણસચ્છરાઓ" ભર-
તક્ષેત્રની એ માનુષીરૂપમાં અપ્સરાઓ જ છે "અચ્છેરગપેચ્છણિજ્જાઓ પાસાઈયાઓ જાવ
પઢિરૂવાઓ" મનુષ્યલોકના માટે એ આશ્ચર્ય સ્વરૂપ હોવાથી લોકો વડે એ પ્રેક્ષણીય છે.
પ્રાસાદીય વગેરે એ ચાર પદોની વ્યાખ્યા જેમ પહેલાં કરવામાં આવી છે તેવી જ અહીં
પણ સમજવી "તેણ મણુયા ઓહસ્સરા, હંસસ્સરા, કોંચસ્સરા ણંદિસ્સરા, ણંદિઘોસા,
સીહસ્સરા" તે કાઠના મનુષ્યો અને સ્ત્રિઓ ઓઘસ્વરવાળા મેષના જેવા ગંભીર સ્વરવાળા
હંસના જેવા મધુરસ્વરવાળા ક્રોંચ પક્ષીના જેવા દૂરદેશવ્યાપી સ્વરવાળા નન્દીના દ્વાદશ-
વિધતૂર્ય સમુદાયના સ્વર જેવા સ્વરવાળા નંદીના અનુનાદના જેવા અનુનાદવાળા સિંહ-
ના બલિષ્ઠ સ્વરના જેવા સ્વરવાળા, "સીહઘોસા, સુસ્સરા, સુસ્સરણિઘોસા, છાયાયવોજ્જો
વિઅંગમંગ વજ્જરિસહનારાયસંઘયણા, સમચવરસસંઠાણસંઠિયા છવિણિરાતંકા" સિંહના

તદેવંવિધમજ્જ-શરીર યેપાં તે તથા, તથા 'વજ્જરિસદ્ધનારાયસઘયણા' વજ્જઋપમનારાચ સંહનનાઃ વજ્જઋપમનારાચાનિ વજ્જઋપમનારાચનામકાનિ સંહનનાનિ-શરીરસંઘટન પ્રકારા યેપાં તે તથા । 'તથા-સમચતુરસસંઠાણસંઠિયા' સમચતુરસસંસ્થાનસંસ્થિતાઃ-સમચતુરસ સસ્થાનમ્ આકૃતિ વિશેષો યેપાં તે તથા । , તથા 'છવિણિરાતંકા' છવિણિરાતક્લાઃ છવ્યાં =ત્વચિ નિરાતક્લાઃ=રોગરહિતા-દદ્રુકુષ્ઠાદિ ચર્મરોગ રહિતા इत्यर्थः । તથા 'અણુલોમવાયુ-વેગા' અણુલોમવાયુવેગાઃ અણુલોમઃ અણુલો વાયુવેગઃ-શરીરાન્તર્વર્તી વાતગ્રચારો યેપાં તે તથા । કકગહણી' કંકગ્રહણ્યઃ-કંકસ્યેવ પક્ષિવિગેપસ્યેવ નીરોગવર્ચસ્કતયા ગ્રહણી-ગુ દાશયો યેપાં તે તથા તથા 'કવોયપરિણામા' કપોતપરિણામાઃ-કપોતસ્યેવ પરિણામઃ-આહારપરિણામો યેપા તે તથા કપોતસ્ય પ્રસ્તરલવોઽપિ મુક્તો જીર્યતે તથેવ તેપામપિ મુક્તં દુર્જરભોજનમ્ અનાયાસેન જીર્યતે इति भाव । અનેન તેપામજીર્ણતાદિદોષરાહિત્ય સ્વચિ-

વાળે હોતે હૈ અષ્ટે સ્વર ઓર નિર્ઘોષ અનુનાદ વાળે હોતે હૈ, પ્રભા સે જિનકે શારીરિક અવયવ પ્રકાશિત હોતે રહતે હૈ એસે હોતે હૈ વજ્જઋપમનારાચ સંહનનવાળે હોતે હૈ સમચતુરસ સસ્થાન વાળે હોતે હૈ, ચમડી મેં ઇનકી કિસી મો પ્રકાર કા આતક રોગ નહી હોતા હૈ, દદ્રુ કુષ્ઠ આદિ ચર્મ-રોગ સે યે રહિત હોતે હૈ "અણુલોમવાયુવેગા, કકગહણી, કવોયપરિણામા, સઙ્ગિણોસપિદ્વંતરોરુપ-રિણયા છદ્વણુસહસ્સમૂસિઆ" શરીરાન્તર્વર્તી વાયુ કા વેગ ઇનકે સદા અણુકૂલ રહતા હૈ ઇનકા ગુદાશયકંકપક્ષી કે ગુદાશય કી તરહ નીરોગવર્ચસ્વાલા હોતા હૈ અર્થાત્ ઇનકા ગુદાશય ટટ્ટી સે સ્પર્શ નહીં હોતા હૈ કપોત કા જૈસા આહાર પરિણામ હોતા હૈ ઇસી તરહકા ઇનકા આહાર પ-રિણામ હોતા હૈ અર્થાત્ જૈસે કબૂતર કંકડ સ્વાજાવે તો વહ મી જીર્ણ હો જાતા હૈ પચ જાતા હૈ ઇસી તરહ સે ઇન્હે મી દુર્જર ભોજન પચ જાતા હૈ એસા ઇનકા આહાર પરિણામ હોતા હૈ ઇસ કથન સે યે અજીર્ણતા આદિ દોષ સે રહિન હોતે હૈ યહ વતલાયા ગયા હૈ ઇનકી ગુદા કા જો બા-હ્યમાગ હોતા હૈ વહ પક્ષી કી ગુદા કે બાહ્યમાગ કો તરહ મલ કે લેપ સે રહિત રહતા હૈ પોસ-

અનુનાદ જેવા અનુનાદવાળા એથી શોભન સ્વરવાળા હોય છે સારા સ્વર અનેનિર્ઘોષ—અનુનાદવાળા હોય છે પ્રભાથી જેમના શારીરિક અવયવો પ્રકાશિત થતા રહે છે, એવા હોય છે. વજ્જ ઋપમનારાય સંહનનવાળા હોય છે સમચતુરસ સંસ્થાનવાળા હોય છે એમની ચામડીમા કોઈ પણ ભાતની વિકૃતિ થતી નથી દદ્રુ કુષ્ઠ વગેરે ચર્મરોગથી એઓ વિહીન હોય છે, "અણુલોમ વાયુવેગા, કકગહણી, કવોયપરિણામા સઙ્ગિણોસપિદ્વંતરોરુપરિણયા, છદ્વણુસહસ્સમૂસિઆ" એમના શરીરાન્તર્વર્તી વાયુનો વેગ સદા અણુકૂલ રહે છે. એમનું ગુદાશય કંકપક્ષી ના ગુદાશયની જેમ નીરોગ વર્ચસ્વવાળું હોય છે, એટલેકે એમનું ગુદાશય ભજરુથી દિપ્ત હોતું નથી કપોતનો જે ભાતનો આહાર-પરિણામ હોય છે તેભાતનો એમનો આહાર પરિણામ હોય છે એટલે કે કપોત કાંકરાઓ ખાય છે તો પણ અણુ થઈ જાય છે પચી જાય છે, તેવી જ રીતે એમને પણ દુર્જર ભોજન પણ પચી જાય છે એવા એમનો આહાર પરિણામ હોય છે આ કથનથી સ્પષ્ટ થાય છે કે એઓ સર્વે અણુરૂપતા વગેરે દોષોથી રહિત

તમ્ । તથા--‘સડણિ પોસપિઢંતરોરુપરિણયા’ શકુનિ પોમપૃષ્ઠાન્તરોરુપરિણતા:-શકુને:-
પક્ષિણિ ઇવ નિર્લેપત્વાત્ પોસ:-અપાનભાગો ગુદવાદ્યભાગો યેષાં તે તથા । તથા-પૃષ્ઠ-પૃષ્ઠ-
ભાગ’, અન્તરે-પૃષ્ઠોદરયોરન્તરાલે-પાર્શ્વે इत्यर्थः ऊरू=सविथनी-इत्येतानि-परिणतानि
परिણિષ્ટતાં गतानि येषां ते तथा, ततः पक्षद्वयस्य कर्मधारयः । तथा ‘छद्मणु सहस्रम्-
सिया’ पक्षद्वयस्य सहस्रोच्छ्रिताः-पदसहस्रधनुः परिमितोच्चाः । एव विधास्ते मनुजा भव-
न्तीति । अथ तेषामेव मनुजानां वैशिष्ट्यमाह-‘तेसिणं मणुयाणं’ इत्यादि । ‘समणा उसो,
हे आयुष्मन् ! श्रमण ! ‘तेसिणं मणुयाणं’ तेषां खलु मनुजानां ‘वे छप्पणा पिट्टकरंढग-
सया’ द्वे पद पञ्चाशत्पृष्ठकरण्डकशते-पदपञ्चाशदधिकद्विशत संख्यकानि पृष्ठवंशवर्धुन्नता
अस्थिखण्डा पशुलिका इति यावत् ‘पणत्ता’ प्रज्ञप्ते-कथिते । तथा-ते मनुजाः ‘पउसु-
प्पलंगंसरिस णीसाससुरभिवयणा’ पद्मोत्पल गन्धसदृशनिःश्वाससुरभिवदनाः पद्मं सूर्य-
विकासिकमलम् उत्पलं-चन्द्रविकासिकमलम्, एतद्वयस्य यो गन्धस्तत्सदृशः-तत्तुल्यो निः-
श्वाससुरभि र्यस्मिस्तादृशं वदनं मुख येषां ते तथा भवन्ति । पुनस्ते कीदृशाः ! इत्याह-
‘तेण’ इत्यादि । ‘तेण मणुया पगई उवसंता’ ते खलु मनुजाः प्रकृत्युपशान्ता-प्रकृत्या-
स्वभावेन उपशान्ता शान्तस्वभावा भवन्ति न तु क्रूरस्वभावाः, तथा ‘पगईपयणु कोहमा-
णमायालोभा’ प्रकृतिप्रतनुक्रोधमानमायालोभाः प्रकृत्या-स्वभावेन प्रतनवः-अत्यल्पाः
क्रोधमानमायालोभाः येषां ते तथा, अतएव ‘मिउमद्वसम्पन्ना’ मृदुमार्दवं सम्पन्नाः-
मृदु शोभन परिणाम सुखकर यन्मार्दवं तेन सम्पन्नाः-युक्ताः, न तु खलजनवत् कपटमा-
र्दवयुक्ताः, तथा ‘अल्लीणा’ अलीनाः-सर्वगुणालङ्कृताः अथवा गुरुजनाज्ञाकारिणो न तु

શબ્દ કા અર્થ અપાન ભાગ હૈ इनका पृष्ठभाग दोनों पार्श्वभाग और दोनों ऊरू परिनिष्ठित होते
हैं अर्थात् बहुत मजबूत होते हैं ६ हजार धनुष के ये ऊँचे होते हैं । ‘तेसिणं मणुयाणं वे छप्प-
णा पिट्ट करंढकसया पणत्ता समणाउसो’ हे श्रमण ! आयुष्मन् उन मनुष्यों की २५६ पसु-
रियों को हड्डिया होती हैं, ‘पउसुप्पलंगंघ सरिसणोसास सुरभिवयणा’ इनका आसोच्छवास पक्ष एवं
(कमल)की जैसी गंध होती है वैसी गन्ध बाला होता है अतः उसकी खुशबू से इनका मुख सदा
सुवासित बना रहता है ‘तेणं मणुया पगई उवसंता पगई पयणु कोहमाण मायालोभा मिउमद्व
सम्पन्ना अल्लीणा मदगा विणीया अप्पिच्छा असण्हिसचया विडिमंतपरिवसणा जहिच्चिय का
मकामिणो” ये मनुष्य प्रकृति से ही शान्तस्वभाव वाले होते हैं क्रूरस्वभाव वाले नहीं होते हैं, तथा

હોયછે એમનાં શુદ્ધનો જે બાહ્ય ભાગ હોય છે તે પક્ષીની શુદ્ધના ભાગની જેમ મલના લેપથી
વિહીન રહે છે ‘પોસ’ શબ્દનો અર્થ અપાનભાગ છે, એમનો પૃષ્ઠભાગ, બન્ને પાર્શ્વ ભાગ
અને બન્ને ઉરુઓ પરિનિષ્ઠિત હોય છે. એટલે કે બહુ જ મજબૂત હોય છે છ હજાર
ધનુષ જેટલા એઓ ઉચ્ચ હોય છે “તેસિણં મણુયાણં વે છપ્પણા પિટ્ટકરંઢકસયા પણ
ત્તા સમણાઉસો” કે શ્રમણ આયુષ્મન્ ! તે મનુષ્યોની ૨૫૬ પાંસળીઓના અસ્થિઓ હોય
છે “પડસુપ્પલગંઘ સરિસ ણીસાસસુરભિવયણા” પક્ષ અને ઉત્પલનો જેવો ગંધ હોય છે
તેવા જ ગંધવાળા એમના આસોચ્છવાસ હોય છે. એથી એમના ગંધથી એમનું સુખ

કદાચિદપિ તદાજ્ઞોલ્લહ્વકાઃ, યદ્વા-આ-સમન્તાત્ લીનાઃ-સર્વાસુ ક્રિયાસુ ગુપ્તા ન તૂદ્ધતચે-
ષ્ટાકારિણઃ-ઇત્યર્થઃ, તથા 'મદ્રગા'મદ્રકા.-કલ્યાણ ભાગિનઃ 'મદ્રગા' ઇતિચ્છાયા પક્ષે-મ-
દ્રઘસ્તિગતય-ઇત્યર્થઃ, તથા 'વિનીયા' વિનીતાઃ-વૃદ્ધજનેષુ વિનયશાલિનઃ, 'અપ્પિચ્છા'
અલ્પેચ્છા-મણિકનકાદિ પ્રતિબન્ધ રહિતાઃ, 'અસણ્ણિહિસંચયા' અસન્નિધિ સચયાઃ-ન-
વિદ્યતે સન્નિધેઃ-પર્યુપિતસ્વાધ્યાદેઃ સંચયો યેષાં તે તથા અસંચયશીલા-ઇત્યર્થઃ, તથા-'વિ-
હિમંતરપરિવસણા' વિટપાન્તરપરિવસનાઃ-વિટપાન્તરેષુ-પ્રાસાદાધાકારેષુ શાસ્ત્રાન્તરેષુ પરિવ-
સનમ્-આવાસો યેષાં તે તથા, પ્રાસાદાકારકલ્પવૃક્ષનિવાસિન-ઇત્યર્થઃ । તથા 'જહિચ્છિ-
યકામકામિણો' યથેપ્સિતકામકામિન-યથેપ્સિતાન્-યથેષ્ટાન્ કામાન્-શબ્દાદીન્ ભોગાન્
કામયન્તે-ઉપભોગ્યત્વેન અભિલ્પન્તીતિ તથા-યથેષ્ટ શબ્દાદિવિપયોપભોગશાલિનશ્ચ ભવ-
ન્તીતિ ॥૬૦૨૪॥

પ્રકૃતિ સે હી ક્રોધ માન માયા ઔર લોભ કષાય કા મદતા વાલે હોતે હૈ-ઇસક્રિયે યે મૃદુ-શોભન
પરિણામવાલે પરિણામ મેં સુખકારો-એસે માર્દવ માવ સે સંપન્ન હોતે હૈં સ્વલજન કો તરહ કપટ
યુક્ત માર્દવભાવવાલે નહો હોતે હૈં । યે અલીન સર્વગુણો સે સહિત હોતે હૈં અથવા ગુરુજનોં કો આજ્ઞા
કે આરાધક હોતે હૈં-અનકો આજ્ઞાકે વિરાધક નહી હોતે હૈ । અથવા સબ તરફસે યે સમસ્ત શુભ
ક્રિયાઓં મેં લોન રહેતે હૈં-ઉદ્ધતચેષ્ટાકારી યે નહી હોતે હૈં, યે મદ્રક કલ્યાણભાગો હોતે હૈં અથવા
મદ્રગ-મદ્રહાથી કો જૈસો ચાલ વાલે હોતે હૈં યે વિનીત હોતે હૈં વૃદ્ધજનોં કો વિનય કરને વાલે
હોતે હૈ, યે અલ્પેચ્છ હોતે હૈ. મણિ કનક આદિ મેં પ્રતિબન્ધ સે હીન રહેતે હૈં યે પર્યુપિત સ્વાધ્યાદિ
કે સમ્રહ શીલ નહા હોતે હૈં-અનકા રહન સહન પ્રાસાદ આદિ કે આકારરૂપ કલ્પવૃક્ષોં કો
શાસ્ત્રાઓં કે મીતર હોતા હૈં તથા યે પ્રાસાદ કે જૈસે આકાર વાલે કલ્પવૃક્ષોં પર નિવાસ
કરતે હૈ તથા યે યથેષ્ટ શબ્દાદિક ભોગોં કો ભોગને કે સ્વભાવ વાલે હોતે હૈ ॥૨૪॥

સહા સુવાસિત રહે છે. 'તેણ મણુયા પગઈ સ્વસતા, પગઈ પયણુ કોહમાણમાયાલોભા
મિહમદ્ધવસંપન્ના, અલીણા, મદ્રગા, વિનીઆ અપ્પિચ્છા અસણ્ણિહિસં, વિહિમંતર-
પરિવસણા, જહિચ્છિયકામકામિણો' એ મનુષ્યો પ્રકૃતિથી શાન્ત સ્વભાવવાળા હોય છે.
ફેર સ્વભાવવાળા નહિ તેમજ પ્રકૃતિથી ક્રોધ, માન, માયા અને લોભ કષાયની મદતાવાળા
હોય છે. એથી જ એ જો મૃદુ શોભન પરિણામવાળા પરિણામ મા સુખકારી એવા માર્દવ-
ભાવથી સંપન્ન હોય છે ખદ માણુસોની જેમ કપટ યુક્ત માર્દવભાવવાળા હોતા નથી.
એ અલીન સર્વ શુભ સંપન્ન હોય છે અથવા શુરુજનોની આજ્ઞાના વિરાધક નહિ પણ
પાલન કરનારા હોય છે અથવા સર્વ રીતે એ સર્વ સમસ્ત શુભક્રિયાઓમાં હીન રહે છે.
એજો ઉદ્ધત ચેષ્ટાકારી હોતા નથી એ ભદ્રક કલ્યાણ ભાગી હોય છે અથવા ભદ્રગ ભદ્ર
હાથીના જેવી ગતિવાળા હોય છે એ વિનીત હોય છે વૃદ્ધ જનોની સામે વિનય થઈ
ને રહે છે એ અલ્પેચ્છ હોય છે મણિ કનક વગેરેમાં પ્રતિબન્ધથી હીન રહે છે એ પર્યુ-
પિત ખાદ્ય વગેરે પદાર્થોની સંકુરવાવાળા હોતા નથી એમની રહેણી કરણી પ્રાસાદ આ-
દિના આકર રૂપ કલ્પવૃક્ષોની શાખાઓની અંદર હોય છે એટલે કે એ પ્રાસાદ જેવા આકાર
વાળા વૃક્ષોપર નિવાસ કરે છે તેમ જ યથેષ્ટ શબ્દાદિક ભોગોને ભોગવનાર હોય છે-૨૪॥

सम्प्रति तेषां मनुजानां कियत्सु दिनेषु व्यतीतेषु आहारप्रयोजनं भवति ? तेषा-
माहारश्च कीदृशो भवति ? तस्मिन्काळे च पृथिव्या पुष्पफलानां च कीदृश आस्वादो-
भवति ? इति च प्रदर्शयितुमाह —

मूलम्—तेसि णं मणुयाणं केवइकालस्स आहारद्वे समुप्पज्जइ ?
गोयमा ! अट्ठमभत्तस्स आहारद्वे समुप्पज्जइ । पुढ्वीपुष्पफलाहारा णं ते
मणुया पण्णत्ता समणाउसो ! तीसे णं भंते ! पुढ्वीए केरिसए आसाए
पण्णत्ते ? से जहा नामए गुलेइ वा खंडेइ वा सक्कराइ वा मच्छंडियाइ वा
पप्पडमोयएइ वा भिसेइ वा पुप्फुत्तराइ वा पउमुत्तराइ वा विजयाइ वा
महाविजयाइ वा आकासियाइ वा आदंसियाइ वा आगासफलोवमाइ
वा उवमाइ वा अणोवमाइ वा भवेएयारूवे ? गोयमा ! णो इणद्वे समद्वे,
सा णं पुढ्वी इत्तो इट्ठतरिया चेव जाव मणामतरिया चेव आसाएणं प-
ण्णत्ता । तेसिणं भंते ! पुष्पफलाणं केरिसए आसाए पण्णत्ते ! से जहा
णामए रण्णो चाउरंतचक्कवद्विस्स कल्लाणे भोयणजाए सयसहस्सनिष्फ-
न्ने वण्णेण उवेए जाव फासेणं उवेए आसायणिज्जे विसायणिज्जे
दिप्पणिज्जे दप्पणिज्जे मयणिज्जे बिहणिज्जे सव्विदियगायपल्हाय
णिज्जे भवे एयारूवे, ? गोयमा ! णो इणद्वे समद्वे, तेसिणं पुष्पफलाणं
एत्तो इट्ठतराए चेव जाव आसाए पण्णत्ते ॥सू० २५॥

छाया—तेषां खलु मनुजानां कियत्कालेन आहारार्थः समुत्पद्यते ? गौतम ! अष्टमभ-
त्तेन आहारार्थः समुत्पद्यते, पृथिवीपुष्पफलाहाराः खलु ते मनुजा ग्रहताः भ्रमणायुष्मन् ।
तस्या खलु पृथिव्या भदन्त । कीदृशक आस्वादः ग्रहसः तद्यथानामकं शुद्ध इति खण्ड-
मिति वा शर्करेति वा मत्स्यणिडकेति वा पर्यटमोदक इति वा विसमिति वा पुष्पोत्तरेति वा
पशोत्तरेति वा विजयेति वा महाविजयेति वा आकाशिकेति वा आदशिकेति वा आकाश-
फलोपमेति वा उपमेति वा अनुपमेति वा, भवेदेतद्रूप ! गौतम ! नो अयमर्थः समर्थः
सा खलु पृथिवी इत इष्टतरिका चैव यावद् मन आमतरीका चैव आस्वादेन ग्रहन्ता ।
तेषां खलु भदन्त । पुष्पफलानां कीदृशक आस्वादः ग्रहसः तद्यथा नामक राहस्यातुरन्तश्च-
क्रवर्तिनः कल्याणं भोजनमातं शतसहस्रनिष्पन्न वर्णेनोपेतं यावत् स्पर्शेन उपेतम् आस्वा-
दनीयं विस्वादनीयं दीपनीयं दर्पनीयं मदनोयं वृंहणीयं सर्वेन्द्रियगात्रप्रदादनीयम्, भवेत्
एतद्रूपः ? गौतम ! नायमर्थः समर्थः तेषां खलु पुष्पफलानाम् इत इष्टतरिकाश्चैव यावत् आ-
स्वादः ग्रहसः ॥ सू० २५ ॥

ટીકા—‘તેસિ ણં મંતે ! ઇત્યાદિ । ‘તેસિ ણં મનુયાણં કેવડકાલસ્સ’ તેપાં खलु मनु-
 जानां कियत्कालेन किं प्रमाणेन कालेन ‘आहारद्वे’ आहारार्थः आहारप्रयोजनं ‘समुप्पज्जइ’
 समुत्पद्यते संजायते ? इति गौतमप्रश्नः । ‘केवडकालस्स’ इत्यत्र तृतीयार्थे पठ्ठी ।
 भगवानाह—‘गोयमा ! अट्टमभत्तस्स हे गौतम ! अष्टमभक्तेन अष्टमभक्तप्रमाणकालेन
 तेषाम् ‘आहारद्वे’ आहारार्थः आहारप्रयोजनम् आहारेच्छे यर्थः ‘समुप्पज्जइ’ नमुत्पद्यते ।
 ‘अट्टमभत्तस्स’ इत्यत्र तृतीयार्थे पठ्ठी बोध्या । अष्टमभक्तम् उत्पुपवासत्रयस्य संज्ञा तच्च
 तपोविशेषो निर्जरार्थं क्रियते तेषां मनुष्याणां तु सरसाहारभोजित्वेन तावत्कालपर्यन्तं
 क्षुद्वेदनीयोदयाभावादाहारमंज्ञैव न जायते इति निर्जरार्थत्वाभावात्तत्कृताहारत्यागस्य य-
 द्यप्यष्टमभक्तत्वं नास्ति तथापि अभक्तार्थत्वस्याद्यादत्रापि ‘अट्टमभत्तस्स’ इत्युक्तमिति । तथा

अब सूत्रकार यह प्रगट करते हैं कि उन मनुष्यों को कितने दिनों के बाद आहार की
 इच्छा होती है, तथा—उनका आहार कैसा होता है, और उस काल में पृथिवी के पुष्पफला-
 दिकों का कैसा आस्वाद होना है ।

“तेसि ण मणुयाण केवड कालस्स आहारद्वे समुप्पज्जइ” इत्यादि ।

टीकार्थ—“तेसि णं मणुयाण केवड कालस्स आहारद्वे समुप्पज्जइ” गौतमस्वामी ने प्रश्न से
 ऐसा पूछा है—हे भदन्त ! उन मनुष्यों को कितने समय के बाद आहार की अभिलाषा होती है
 इसके उत्तर में प्रश्न कहते हैं—“गोयमा ! अट्टमभत्तस्स आहारद्वे समुप्पज्जइ” हे गौतम ! अष्टम
 भक्त प्रमाण काल के बाद—अर्थात् तीन दिन के बाद उनके आहार की अभिलाषा होती है
 “अष्टम भक्त” यह तीन उपवास का नाम है, यह तपो विशेष है और निर्जरा के लिए किया
 जाता है, परन्तु ये मनुष्य तो उपवास करते नहीं हैं—क्यों कि भोगभूमि के जीवों के चारित्र
 नहीं होता है ये तो सरस आहार भोजी हैं, अतः इस भोजन से उन्हें तीन दिन तक क्षुद्वेदनीयो-
 दय के अभाव से भूख ही नहीं लगती है तीन दिन व्यतीत हो जाने पर ही भोजनेच्छा इन्हें

હવે સૂત્રકાર એ પ્રકટ કરે છે કે તે મનુષ્યોને કેટલા દિવસ પછી આહારની ઇચ્છા
 થાય છે, તેમ જ તેમને આહાર કેવો હોય છે અને તે કાળ માં પૃથિવીનાં પુષ્પફલ વગેરેનો
 સ્વાદ કેવો હોય છે

‘તેસિણં મણુયાણં કેવડકાલસ્સ આહારદ્વે સમુપ્પજ્જઈ’, ઇત્યાદિ—સૂત્ર—૧૨૫૧

ટીકાર્થ—ગૌતમે પ્રશ્નને પ્રશ્ન કર્યો કે હે ભદન્ત તે માણસોને કેટલા સમય પછી આહારની
 અભિલાષા થાય છે એના જવાબમાં પ્રશ્ન કહે છે

। “ગોયમા અટ્ટમભત્તસ્સ આહારદ્વે સમુપ્પજ્જઈ” હે ગૌતમ ! અષ્ટમભક્ત પ્રમાણ કાળ
 પછી એટલે કે ત્રણ દિવસ પછી આહારની અભિલાષા થાય છે ‘અષ્ટમ ભક્ત’ આ ત્રણ
 ઉપવાસનું નામ છે આ તપ વિશેષ છે અને નિર્જરામાંટે કરવામાં આવે છે પણ એ
 મનુષ્યો તો ઉપવાસ કરતા નથી, કેમકે ભોગભૂમિના જીવોને ચારિત્ર હોતું નથી એઓ
 તો સરસ આહાર-ભોજી છે એથી એ ભોજનથી તેમને ત્રણ દિવસ સુધી ક્ષુદ્રવેદનીયોદ-
 યના અભાવથી ભૂખ ડગતી જ નથી ત્રણ દિવસ વ્યતીત થાય તે પછી જ તેમની ભોજ-

‘સમણાસો ’ હે આયુષ્મન ! શ્રમણ ! ‘તે મણુયા’ તે મનુજા: ‘ળં’ સ્વલ્લુ-નિશ્ચયેન ‘પુ-
ઢવીપુષ્પફલાહારા’ પૃથિવીપુષ્પફલાહારા: પૃથિવી=ભૂમિ:,પુષ્પાણિ-કલ્પતરુપુષ્પાણિ ફ-
લાનિ-કલ્પતરુફલાનિ ચ, एतान्याहरन्ति-શ્રુજતે યે તે તથાભૂતા: ‘પણ્ણત્તા’ પ્રજ્ઞપ્તા: ।
તતો ગૌતમ પૃચ્છતિ- ‘તીસે ળં મંતે ! પુઢવીણ’ હે મદન્ત ! તસ્યા: સ્વલ્લુ પૃથિવ્યા:
‘કેરિસણ’ કીદશકઃ-ફિ પ્રકારક: ‘આસાણ’આસ્વાદ:-રસ: ‘પણ્ણત્તે’ પ્રજ્ઞપ્ત: ? ‘સે જહા
નામણ’ તથથાનામકમ્ ‘ગુલેહ વા’ ગુહ ડતિ વા, ડતિ શબ્દ: સ્વરૂપપ્રદર્શને, વા શબ્દ:
સમુચ્ચયે, ઇવમગ્રેડપિ, ‘સંઢેહવા’ સ્ખંડમિતિ વા ‘સક્રાહ વા’ શર્કરેતિ વા શર્કરા-‘કાલ્પી-
મિશ્રી’ ઇતિ પ્રસિદ્ધા ‘મચ્છંહિયાહ વા’ મત્સ્યઙિહકેતિ વા, મત્સ્યઙિહકા શર્કરા વિશેષ:,
‘પપ્પહમોયણ વા’ પર્યટમોદક ડતિ વા, પર્યટમોદકો લહ્હુક વિશેષ:, ‘મિસેહ વા’ ત્રિપ-
મિતિ વા, ત્રિસ-મૃણાલમ્ , ‘પુષ્ફત્તરાહ વા’ પુષ્પોત્તરેતિ વા, ‘પઢમુત્તરાહ વા’ પઢ્મોત્તરેતિ
વા, પુષ્પોત્તરપદ્મોત્તરે શર્કરાભેદો ‘વિજયાહ વા’ વિજયેતિ વા ‘મહાવિજયાહ વા’ મહાવિજ-

હોતી હૈ. ઇસલિણ યહ આહારત્યાગ ડનકે કર્મોં કી નિર્જરા કા કારણ નહીં હોતા હૈ ક્યો કિ
ડસ આહારત્યાગ મેં અષ્ટમ ભક્તતા નહીં હૈ પરન્તુ ફિર મી જો ડસ આહારત્યાગ કો અષ્ટમભક્ત
કી સજ્ઞા દી ગઈ હૈ વહ અભક્તાર્થત્વ કે સામ્ય કો લેકર હી દી ગઈ હૈ । “પુઢવોપુષ્પ ફલાહારા
ળ તે મણુયા પળ્ણત્તા” હે શ્રમણ આયુષ્મન્ ! વે મનુષ્ય નિશ્ચય સે પૃથિવી-મૃત્તિકા, પુષ્પ ઓર ફલ
કલ્પ વૃક્ષોં કે ફલ ઇનકા આહાર કરતે હૈ અબ ગૌતમસ્વામી પ્રશ્ન સે ઇસા પૂછતે હૈ-“તીસે
ળં મંતે ! પુઢવીણ કેરિસણ આસાણ પળ્ણત્તે” હે મદન્ત ! ડસ પૃથિવી કા આસ્વાદ કૈસા કહા
ગયા હૈ ? ઇમકે ડત્તર મેં પ્રશ્ન કહતે હૈ-“સે જહા નામણ ગુલેહ વા સંઢેહ વા, સક્રાહ વા મચ્છ-
હિયાહ વા પપ્પહમોયણ વા મિસેહ વા પુષ્ફત્તરાહ વા વિજયાહ વા” હે ગૌતમ । જૈસા આસ્વાદ
ગુહ કા હોતા હૈ, સ્ખંડ કા હોતા હૈ, શર્કરા કા હોતા હૈ -કાલ્પીમિશ્રી કા હોતા હૈ, મત્સ્યઙિહ-
કા-રાવ યા શર્કરાવિશેષ કા હોતા હૈ, પર્યટમોદક-લહ્હુકા હોતા હૈ, મૃણાલ કા હોતા હૈ,

નેજા જાત થાય છે એથી આ આહારત્યાગ એમના કર્મોની નિર્જરાનું કારણ હોતું નથી,
કેમકે તે આહારત્યાગમાં અષ્ટમ ભક્તતા નથી, છતાંએ જે એ આહારત્યાગને અષ્ટમ ભ-
ક્તતાની સંજ્ઞા આપવામાં આવી છે તે અભક્તાર્થત્વના સામ્યને લીધે જ આપવામાં આવી
છે. “પુઢવી-પુષ્પફલાહારા ળ તે મણુયા પળ્ણત્તા” હે શ્રમણ ! આયુષ્મન્ ! તે મનુષ્યો
નિશ્ચયપૂર્વક પૃથિવી, મૃત્તિકા, પુષ્પ અને ફળ-કલ્પવૃક્ષોના ફળ-આ સર્વેને આહાર રૂપમાં
ગ્રહણ કરે છે હવે ગૌતમ સ્વામી પ્રશ્નને આ જાતનો પ્રશ્ન કરે છે કે “તીસે ળ મંતે ! પુઢવીણ
કેરિસણ આસાણ પળ્ણત્તે” હે મદન્ત ! તે પૃથિવીનો આસ્વાદ કેવો કહેવામાં આવ્યો છે ?
એના જવાબમાં પ્રશ્ન કહે છે -“સે જહા નામણ ગુલેહ વા સંઢેહ વા સક્રાહ વા મચ્છંહિ-
યાહ વા પપ્પહમોયણ હ વા મિસેહ વા પુષ્ફત્તરાહ વા પઢમુત્તરાહ વા વિજયાહ વા” હે ગૌ-
તમ ! જેવો આસ્વાદ ગેળનો હોય છે, ખાડનો હોય છે, શર્કરાનો હોય છે, કાલ્પી મિશ્રી
નો હોય છે, મત્સ્ય ઙિહ-રાવ અથવા શર્કરા વિશેષનો હોય છે, પર્યટ મોદક-લાહવા વિશે-
ષનો હોય છે, મૃણાલનો હોય છે, પુષ્પોત્તરનો હોય છે, પદ્મોત્તરનો હોય છે, (પુષ્પોત્તર અને

येति वा, 'आकाशियाइ वा' आकाशिकेति वा 'आदंसियाइ वा' आदर्शिकेति वा, 'आगास-
फलोवमाइ वा' आकाशफलोपमेति वा, 'उवमाइ वा' उपमेति वा, 'अणोवमाइ वा' अनुप-
मेति वा, विजयाधनुपमान्तास्तदानीन्तना अमृतस्वादो भोज्यविशेषा विज्ञेयाः किम् 'एया-
रूवे' एतद्रूपः—एतत्प्रकारकः—गुडादीनामास्वाद तुल्यस्तेषामास्वादो 'भवे' भवति ? इति ।
भगवानाह—'गोयमा ! णो इणट्ठेसमट्ठे' हे गौतम ! नो अयमर्थः समर्थः 'सा णं पुढवी'
सा खलु पृथिवी 'इत्तो' इतः— पूर्वोक्तगुडादित 'इट्ठतरिया चेव' इष्टतरिका—अतिशयेन
सकलेन्द्रिय सुखजनिका । 'जाव' यावत्पदेन—कान्ततरिकाप्रियतरिका मनोज्ञतरिका चेति
पदत्रयं संगृह्यते, तत्र—कान्ततरिकाअतिशयेन रुचिकरा प्रियतरिका अतिशयेन प्रेमोत्पा-
दिका मनोज्ञतरिका—अतिशयेन मनोहरा तथा 'मणामतरिया' मन आमतरिकाअतिशयेन

पुष्पोत्तर का होता है पद्मोत्तर का होता है पुष्पोत्तर और पद्मोत्तर ये दो भेद एक जाति को
शर्करा के होते हैं, विजया का होता है "महाविजयाइ वा, आकासियाइ वा, आदंसियाइ वा,
वा, आगासफलोवमाइ वा, उवमाइ वा, अणोवमाइ वा, भवे एयारूवे" महाविजया का होता
है, आकाशिकाका होता है, आदर्शिका का होता है, आकाशफलोपमा का होता है, उपमा का
होता है, अनुपमा का होता है—ये सब विजया से लेकर अनुपमा तक के उस समय के विशेष
भोज्य पदार्थ हैं इसका स्वाद अमृत के जैसा होता है, इतना प्रभु के कहते ही गौतमस्वामीने
बीच में ही पूछा तो क्या हे भदन्त ! जैसा इनका स्वाद होता है वैसा ही स्वाद वहीं की
पृथिवी का होता है ? तो इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं—'गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे' हे गौतम !
यह अर्थ समर्थ नहीं है. क्योंकि "सा ण पुढवी इत्तो इट्ठतरिया चेव जाव मणामतरियाचेव आसा
एण पणत्ता" वहां की पृथिवी इन पूर्वोक्त गुडादि पदार्थों से भी इष्टतरक है— अतिशय रूपसे
सकल इन्द्रिय को सुख जनक है यहां यावत्पद से—"कान्ततरिका प्रियतरिका, मनोज्ञतरिका"
इन तीन पद का ग्रहण हुआ है, अतः इन पदों के अनुसार वह कान्ततरिका—अतिशय रूपसे

પડોત્તર એ બન્ને લેદો એક વિશેષ પ્રકારની શર્કરાના છે) વિજયાનો હોય છે. "મહાવિજ-
યાइ वा, आगासियाइ वा आदंसियाइ वा, आगासफलोवमाइ वा, उवमाइ वा, भवे एया
रूवे" महाविजयाનો હોય છે, આકાશિકાનો હોય છે, આદર્શિકાનો હોય છે, આકાશ-
ફલોપમાનો હોય છે, ઉપમાનો હોય છે, અનુપમાનો હોય છે, એ બધા વિજયાથી માંડીને
અનુપમા સુધીના તે વખતના વિશેષ પ્રકારના ભોજ્ય પદાર્થો છે એમનો આસ્વાદ અમૃત
જેવો હોય છે પ્રભુએ આટલું કહ્યું કે તરત ગૌતમે વચ્ચે જ પ્રશ્ન કર્યો કે—હે ભદન્ત !
જેવો એમનો સ્વાદ હોય છે, તેવો જ સ્વાદ ત્યાંની પૃથિવીનો હોય છે ? તો એના જવા-
બમાં પ્રભુ કહે છે—ગોયમા ! ણો ઇણટ્ઠે સમટ્ઠે" હે ગૌતમ ! આ અર્થ સમર્થ નથી કેમકે
"સા ણં પુઢવી ઇત્તો ઇટ્ઠતરિયા ચેવ જાવ મણામતરિયા ચેવ આસાપ્પં પણત્તા" ત્યાંની
પૃથિવી પૂર્વોક્ત ગોળ વગેરે પદાર્થો કરતા પણ ઈષ્ટ તરક છે અતિશય રૂપથી સકલ ઇન્દ્રિયો
માટે સુખજનક છે અહીં યાવત્ પદથી "કાન્તતરિકા, પ્રિયતરિકા મનોજ્ઞતરિકા" એ
ત્રણ પદો ગ્રહણ કરવામાં આવ્યા છે એથી એ પદો સુજળ તે કાન્તતરિકા—અતિશય રૂપમા

મનો ગમ્યા 'આસાણ' આસ્વાદેન-રસેન 'પણ્ણત્તા' પ્રજ્ઞપ્તા । પુનર્ગૌતમસ્વામી પુષ્પફલા-
નામાસ્વાદવિષયે પૃચ્છતિ-‘તેસિ ણ’ इत्यादि । ‘तेसि ण मंते ।’ हे भदन्त ! तेषां खलु
तत्कालोत्पन्नमनुष्याहारभूतानां कल्पतरुसम्बन्धिनां ‘पुष्पफलाण केरिसए आसाए पण्णत्ते’
पुष्पफलानां कीदृशः आस्वादः प्रज्ञप्तः ? इति । ‘से जहा णामए रण्णो’ तद्यथा नामकं
राज्ञो नृपस्य कीदृशस्य तस्य ? ‘चाउरंतचक्कवट्टिस्स’ चातुरन्तचक्रवर्त्तिनः; पदखण्डाधि-
पते; ‘कल्लाणे’ कल्याणम्-एकान्तसुखजनकं ‘भोयणजाए’ भोजनजातं-भोजनप्रकारः; ‘स-
यसहस्सनिप्फन्ने’ शतसहस्रनिष्पन्नं-लक्षदीनारव्ययेन सम्पन्नं ‘वण्णेण’ वर्णेन-अनिप्रग-
स्तेन वर्णेन ‘उवेए’ उपपेत-युक्तं, ‘जाव’ यावत्-यावत्पदेन गन्धेनोपपेत रसेनोपपेतम्
इति सग्राह्यम् तत्र-गन्धेन-अतिप्रशस्तेन गन्धेन, रसेन अतिप्रशस्तेन रसेनेति बोध्यम्,
तथा ‘फासेण’ स्पर्शेन-अतिप्रशस्तेन स्पर्शेन ‘उवेए’ उपपेतं-युक्तं यद्यपीह वर्णादयः सा-
मान्येन नोक्तास्तथापितेऽति प्रशस्ता एव बोध्याः, सामान्य वर्णादिमत्त्व तु सामान्य
भोजनेऽपि भवत्येवेत्यत एवाह-‘आसायणिज्जे’ आस्वादनीयम् सामान्यतः, ‘विसा-

રુચિકરા હૈ, પ્રિયતરિકા-અતિશયરૂપ સે પ્રેમોત્પાદિકા હૈ ઔર મનોજતરિકા-અતિશય રૂપ સે
મન કો હરને વાલી હૈ, एवं अतिशय रूप से वह मन आमतरिका मन के द्वारा गम्य है इस
प्रकार का उसका रस कहा गया है अर्थात् रस को लेकर इस पृथिवी का ऐसा वर्णन
किया गया है ।

‘તેસિ ણ મંતે ! પુષ્પફલાળ કેરિસए आसाए पण्णत्ते ?’ हे भदन्त ! वह। उन पुष्पफलो का
रस कैसा कहा गया है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-‘‘से जहा णामए रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स
कल्लाणे भोयणजाए यससहस्सनिप्फन्ने वण्णेण उवेए जाव फासेण उवेए आसायणिज्जे विसायणिजे,
दिप्पणिज्जे, दप्पणिज्जे, मयणिज्जे, विहणिज्जे, सविंदियगायपल्हायणिज्जे’’ हे गौतम ! जैसा-षट्-
खण्डाधिपतिचक्रवर्तिराजा का भोजन जो कि एक लाख दीनार के स्वर्च से निष्पन्न हुआ हो, क-
ल्याणप्रद-एकान्ततः सुख जनक होता है और वह अति प्रशस्त वर्ण से, अति प्रशस्त रस से,

રુચિકરા-છે, પ્રિયતરિકા-અતિશય રૂપથી પ્રેમોત્પાદિકા છે અને મનોજતરિકા-અતિશય રૂપ-
થી મનને આકર્ષનારી છે તેમજ અતિશય રૂપમાં તે મન આમતરિકા મન વડે ગમ્ય છે, આ
જાતની તેના રસની વિશેષતાઓ કહેવામાં આવી છે એટલે કે રસને લઈને તે પૃથ્વીનું આ
જાતનું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે

‘તેસિ ણ મંતે ! પુષ્પફલાળ કેરિસए आसाए पण्णत्ते ?’ હે ભદન્ત ! ત્યાં તે પુષ્પ
ફળોના રસો કઈ જાતના કહેવામાં આવેલ છે ? જોના જવાબમાં પ્રભુ કહે છે :-‘‘સે જહા ણા-
મए रण्णो चाउरंत चक्कवट्टिस्स कल्लाणे भोयणजाए यससहस्स निप्फन्ने वण्णेण उवेए
जाव फासेण उवेए आसायणिज्जे विसायणिज्जे विप्पणिज्जे दप्पणिज्जे मयणिज्जे विहणिज्जे,
सविंदियगायपल्हायणिज्जे’’ હે ગૌતમ ! જેવું ૬૮૫ ઠાધિપતિ ચક્રવર્તિનરેશનું ભોજન કે
જે એક લાખ દીનારના ખર્ચે નિષ્પન્ન થયેલ હોય, કલ્યાણ પ્રદ, એકાન્તત સુખજનક હોય
છે, અને તે અતિ પ્રશસ્ત વર્ણથી, અતિ પ્રશસ્તરસથી, અતિ પ્રશસ્ત ગન્ધથી અને અતિ પ્રશસ્ત
સ્પર્શ થી યુક્ત હોવાથીતે જેમ આસ્વાદનીય હોય છે, વિશેષરૂપથી સ્વાદનીય હોય છે, જહ-

યણિજ્જે' વિસ્વાદનીયં વિશેષતઃ, 'દિપ્પણિજ્જે, દીપનીયં-દીપયતિ જાઠરાગ્નિમિત્તિ વિ-
ગ્રહે વાહુકાત્કર્ત્તર્યનીયર પ્રત્યયઃ, જાઠરાગ્નિદીપ્તિવરમિત્યર્થઃ, 'દપ્પણિજ્જે' દર્પણીયમ્-
દૃષ્ટિકરમ્ ઉત્સાહ વર્ધકમિત્તિ યાવત્ 'મયણિજ્જે' મદનીય-મદજનકં 'દિહણિજ્જે' વૃહ-
ણીયં-ધાતુપચયકર, 'સન્નિદિયગાયપચ્છાયણિજ્જે, સર્વેન્દ્રિયગાત્રપ્રહાદજનક ચ ભવતિ
કિમ્ 'ભવે ય્યારૂવે' એતદ્ભૂપઃ=એતત્તુલ્યઃ તેષાં પુષ્પફલાનામ્ આસ્વાદો-રસો ભવેત્ ? મગ-
વાનાહ 'ગોયમા ! ણો હ્ણઢ્ઠે સમઢ્ઠે' હે ગૌતમ ! નાયમર્થઃ સમર્થઃ, 'તેસિ ણં પુષ્પફલાણં'
તેષાં સ્વલ્પ પુષ્પફલાનામ્ 'હત્તો' ઇતઃ ચક્રવર્ત્તિભોજનતઃ 'ઇટ્ટતરાણ ચેવ' ઇષ્ટતરકશ્ચૈવ
'જાવ' યાવત્-યાવત્પદેન કાન્તતરકશ્ચૈવ પ્રિયતરકશ્ચૈવ મનોજ્ઞતરકશ્ચૈવ મન આમતરકશ્ચૈવ
હતિ પદસંગ્રહઃ. એપામર્થોઽત્રૈવ સૂત્રે પૂર્વ ગતઃ, 'આસાણ' આસ્વાદૌ રસઃ પણ્ણત્તે' પ્રણપ્તઃ
કથિત હતિ ॥૬૦૨૫॥

સુપમસુપમાકાળે ભરતવર્ષોત્પન્ના જનાસ્તમાહારમાહાર્ય ક વસન્તિ ? હતિ જિજ્ઞાસોપ-
શાન્તયે ગૌતમસ્વામી પૃચ્છતિ—

મૂલમ્-તે ણં ! મણુયા તમાહારમોહારેત્તા કહિં વસહિં ઉવેતિં ગોયમા !
રુક્ષવગેહાલયાણં તે મણુયા પણ્ણત્તા સમણાસો ! તેસિ ણં ભંતે ! રુક્ષાણં
કેરિસણ આયરમાવપહોયારે પણ્ણત્તે ગોયમા ! કૂહાગારસંઠિયા પેચ્છા

અતિ પ્રશસ્ત ગન્ધ સે ઔર અતિપ્રશસ્ત સ્પર્શ સે યુક્ત હુઆ જેમા આસ્વાદનીય હોતા હૈ, વિશેષ
રૂપ સે સ્વાદનીય હોતા હૈ, જઠરાગ્નિ કા દીપક હોતા હૈ, ઉત્સાહવર્ધક હોતા હૈ, મદનીય હોતા
હૈ, વૃહણીય-ધાતુઓં કે ઉપચય કા કરને વાલા હોતા હૈ, પ્રહ્લાદનીય-સમસ્ત હિન્દ્રિયોં કો
ઔર પૂરે શરીર કો આનન્દ દેને વાલા હોતા હૈ તો કયા હે મદન્ત ! "ભવે ય્યારૂવે" હનકે
જૈસા હોં ડન પુષ્પફલ કા આસ્વાદ-રમ હોતા હૈ ? હસકે ઉત્તર મે પ્રમુ કહતે હૈ - "ગોયમા !
ણો હ્ણઢ્ઠે સમઢ્ઠે" હે ગૌતમ ! યહ અર્થ સમર્થ નહોં હૈ અર્થાત્ ચક્રવર્તીં કે મોજન સે મો ઇષ્ટતરક,
હો યાવત્ આસ્વાદ હન પુષ્પફલોં કા હોતા કહા ગયા હૈ, યહા યાવત્પદ સે "કાન્તતરક, પ્રિય-
તરક, મનોજ્ઞ તરકર ઔર મન આમતરક" હન ગદો કા સમ્રહ હુઆ હૈ । હન સમ્રહોત પદો કા
અર્થ જૈસા પહિલે કહાગયા હૈ-જૈસા હી હૈ ॥૨૫॥

રાશિને દીપક હોય છે, ઉત્સાહ વર્ધક હોય છે, મદનીય હોય છે, બ્રહ્મણીય-ધાતુઓતુ ઉપચય
કરક હોય છે અને પ્રહ્લાદનીય-સર્વ હિન્દ્રિયોને અને સર્વ શરીરને આનંદ આપનારું હોય
છે, તો શુ હે મદન્ત ! "ભવેય્યારૂવે" એમના જેવો જ તે પુષ્પફળોને આસ્વાદ હોય છે ?
એના બવાબમા પ્રશ્ન કહે છે 'ગોયમા ! ણો હ્ણઢ્ઠે સમઢ્ઠે' હે ગૌતમ ! આ અર્થ સમર્થ નથી
એટલે કે ચક્રવર્તીના ભોજન કરતાં પણ ઇષ્ટ તરક યાવત્ આસ્વાદ એ પુષ્પ ફલાદિકને હોય
છે. અહીં યાવત્ પદથી "કાન્તતરક પ્રિયતરક મનોજ્ઞતરક. અને મન આમ તરક" એ સર્વ
પદોને સંબંધ થયેલ છે એ પદોની વ્યાખ્યા પહેલાં કરવામા આવી છે, ॥૨૫॥

छत्तज्ञयथूमतोरण गोउरवेइया चोप्पालग अट्टालगपामाय हम्मियग वक्ख-
वालगगपोइया वलभीधरसंठिया, अत्थण्णो इत्थ वहवे वरभवणविसिद्ध संठा-
णसंठिया दुमगणा सुहसीयलच्छाया पणत्ता समणाउसो ! ॥सू० २६॥

छाया— ते खलु भदन्त ! मनुजास्तमाहारमाहार्यं न च वसन्ति उपयन्ति ? गौतम
वृक्षगेहालयाः खलु ते मनुजाः प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन् तेषां खलु भदन्त ! वृक्षाणां कीदृशक
आकारभावप्रत्यवतारः प्रज्ञप्तः ? गौतम ! कृटागारसंस्थिताः प्रेक्षाछत्रध्वज स्तूपतोरण गोपु-
रवेदिका चोप्पालकाट्टालक प्रासादहर्म्यगवाक्षवालाग्रपोनिका वलभीगृहसंस्थिताः सन्त्यन्ये
अत्र वहवो वरसवनविशिष्टसंस्थानसंस्थिता द्रुमगणाः शुभशीतलच्छाया, प्रज्ञप्ता श्रमणा-
युष्मन् ॥सू० २६॥

टीका—‘तेणं भंते’ इत्यादि ।

गौतम स्वामी पृच्छति—‘ते णं भंते ! मणुया’ हे भदन्त ! ते खलु मनुजाः ‘त-
माहारमाहरेत्ता’ तं पूर्वोक्तम् आहारम् आहार्यं— अहारं कृत्वा ‘कहिं क—कस्मिन् स्थाने
‘वसतिं वासं—निवासम् ‘उवेति’ उपयन्ति—प्रप्नुवन्ति कस्मिन् स्थानं निवासं कुर्वन्ति !
इत्यर्थः । भगवानाह—‘समणाउसो । हे आयुष्मन् ! श्रमण ! ‘गोयमा !’ गौतम !
‘रुक्खगेहालया णं’ वृक्षगेहालयाः वृक्षरूपाणि गेहानि=गृहाणि आलयाः आश्रया येषां ते
तथा—वृक्षरूपगृहेषु निवसनशोलाः, ‘ते मणुया पणत्ता’ ते मनुजा प्रज्ञप्ता भवन्ति । पुनर्गौ-
तमस्वामी पृच्छति ‘तेसि ण भंते । रुक्खाणं केरिसए’ हे भदन्त ! तेषां खलु वृक्षाणां
कीदृशकः किम्प्रकारेण ‘आयारभावणडोयारे’ आकारभावप्रत्यवतारः आकारभावः स्वरूप-

अब भगवान् गौतम की इस जिज्ञासा के कि भारतवर्ष में उत्पन्न हुए वे युगलिक जन
उस आहार को खाकर के फिर कहाँ रहते हैं ? समाधानार्थ सूत्र कहते हैं—

“तेणं भंते ! मणुया तमाहारमाहरेत्ता कहिं वसहिं उवेति” इत्यादि ।

टीकार्थ—‘तेणं भंते ! मणुया तमाहारमाहरेत्ता कहिं वसहिं उवेति’ हे भदन्त ! वे युगलिक
मनुष्य उस आहार को खा करके फिर कहाँ निवास करते हैं ? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु कहते हैं
“ गोयमा ! रुक्खगेहालयाण ते मणुया पणत्ता समणाउसो” हे श्रमण आयुष्मन् ! गौतम ! वे
युगलिक मनुष्य उस आहार को खाकर के वृक्षरूप गृह ही है आश्रयस्थान जिनका ऐसे होजाते
हैं अर्थात् वृक्षरूप गृहों में निवास करते हैं । “ तेसिण भंते ! रुक्खाणं केरिसए आयारभावण-

‘भारतवर्ष’मा उत्पन्न भयेति ते युगलिके जनो आहारं ग्रहणं करीने पथी कया रडे
छे ? अये जिज्ञासाना समाधेन भाटे हवे भगवान् गौतमने आ सूत्र कहे छे

‘ते णं भंते ! मणुया तमाहारमाहरेत्ता कहिं वसहिं उवेति—इत्यादि सू० ॥२६॥

टीकार्थ—हे भदन्त ! ते युगलिके ते आहारने ग्रहण करीने पथी कया निवास करे छे ? आ
प्रश्नना जवाबभां प्रभु कहे छे, “गोयमा ! रुक्खगेहालया णं ते मणुया पणत्ता समणा-
उसो” हे श्रमण आयुष्मन् ! गौतम ! ते युगलिक मनुष्य ते आहारने ग्रहण करीने वृक्ष
रूप गृह छे आश्रयस्थान जे मनु—जेना थि जाय छे ओटवे के वृक्ष रूप गृहोभा निवास

વિશેષસ્તસ્ય પ્રત્યવતારઃ પ્રાદુર્ભાવઃ 'પણ્ણત્તે' પ્રજ્ઞપ્તઃ પ્રરૂપિતઃ ભગવાનાહ—'ગોયમા' હે ગૌતમ ! 'કૂઢાગારસઠિયા' કૂટાકારસંસ્થિતાઃ—કૂટ—શિખર તદાકારસંસ્થિતાઃ—તદા-કૃત્તિકાઃ તથા—'પેચ્છાછત્તજ્ઞય ધૂમ તોરણ ગોરુર વેદ્યા ચોપ્પાલ્લગ અટ્ટાલ્લગપાસાય હમ્મિ-યગવક્કલ વાલ્લગ્ગપોડયા વલ્લભીઘરસઠિયા' પ્રેચ્છાછત્તજ્ઞય સ્તૂપ તોરણ ગોપુર વેદિકા ચોપ્પાલકાટ્ટાલકપ્રાસાદહર્મ્યગવાક્ષવાલાગ્રપોતિકા વલ્લભીગૃહસંસ્થિતાઃ અત્ર પ્રેક્ષાદિ વલ્લ-ભીગૃહાન્તશબ્દાનાં ઢન્ઢઃ, તદ્વત્ સંસ્થિતાઃ—સંસ્થાનયુક્તા ઇતિ વિગ્રહઃ, 'સંસ્થિતાઃ, શ-બ્દસ્ય ઢન્ઢાન્તે શ્રૂયમાણત્વાત્ પ્રેક્ષાદિપુ પ્રત્યેકત્રાન્વયઃ । તેન-પ્રેક્ષા સંસ્થિતાઃ છત્રસંસ્થિ-તાઃ ઇત્યાદિ રૂપેણ પદયોજના કાર્યા । તત્ર પ્રેક્ષાપદં પદૈકદેશે પદસમુદાયોપચારાત્ પ્રેક્ષા-ગૃહપર, તતશ્ચ પ્રેક્ષાગૃહસંસ્થિતાઃ—પ્રેક્ષાગૃહ—નાટકગૃહં તદ્વત્ સંસ્થિતાઃ—તાદૃશસંસ્થાન યુ-ક્તાઃ પ્રેક્ષાગૃહાકારા ઇત્યર્થઃ । તથા છત્ર સંસ્થિતાઃ—છત્રાકારાઃ, ધ્વજ સંસ્થિતાઃ ધ્વજાકારાઃ તોરણસંસ્થિતાઃ તોરણાકારા, સ્તૂપસંસ્થિતાઃ=સ્તૂપાકારાઃ ગોપુરસંસ્થિતાઃ ગોપુરાકારાઃ, વેદિકાસંસ્થિતાઃ—વેદિકા=વિતર્દિ કા-ઉપવેશનયોગ્યા ભૂમિસ્તદ્વત્સંસ્થિતાઃ—તદાકારાઃ ચો-પ્પાલકસંસ્થિતા—ચોપ્પાલકં=વરણ્ડા, ઇતિ માપા પ્રસિદ્ધમ્, તદ્વત્સંસ્થિતાઃ=તદાકારાઃ,

હોયારે પણ્ણતે ” હે ભદ્રન્ત ! ડન વૃક્ષો કા સ્વરૂપ કૈસા કહા ગયા હૈ ? હસકે ડત્તર મૈં પ્રસુ કહતે હૈ “ ગોયમા ! કૂઢાગાર સઠિયા પેચ્છા છત્તજ્ઞયધૂમતોરણગોરુરવેદ્યા ચોપ્પાલ્લગ અટ્ટાલ્લગ-પાસાય હમ્મિય ગવક્કલવાલ્લગ્ગ પોડ્યા વલ્લભીઘરસઠિયા” હે ગૌતમ ! વે વૃક્ષ કૂટ-શિખર કા જૈસા આકાર હોતા હૈ વૈસે આકાર વાલે હોતે હૈ પ્રેક્ષા-પ્રેક્ષાગૃહ-સિનેમાગૃહ યા નાટકગૃહ-કા જૈસા આકાર હોતા હૈ વૈસે આકાર વાલે હોતે હૈ છત્ર-છાતે કા જૈસા આકાર હોતા હૈ વૈસે આકાર વાલે હોતે હૈ, ધ્વજા કા જૈસા આકાર હોતા હૈ વૈસે આકાર વાલે હોતે હૈ, સ્તૂપકા (ચતૂરથા) જૈસા આકાર હોતા હૈ વૈસે આકાર વાલે હોતે હૈ, તોરણ કા જૈસા આકાર હોતા હૈ વૈસે આકાર વાલે હોતે હૈ, ગોપુરકા જૈસા આકાર હોતા હૈ, વૈસે આકાર વાલે હોતે હૈ, ઉપવેશન યોગ્ય ભૂમિ કા જૈસા આકાર હોતા હૈ વૈસે આકાર વાલે હોતે હૈ, ચોપ્પાલક વરણ્ડા કા જૈસા આકાર

કરે છે “તૈસિણં મંતે ! રુક્ખાણ કૈરિસપ આયારમાવપહેયારે પણ્ણત્તે” હે ભદ્રન્ત ! તે વૃક્ષોનુ સ્વરૂપ કેવું કહેવામાં આવ્યું છે ? એના ઉત્તરમાં ત્રણ કહે છે : “ગોયમા ! કૂઢા-ગારસઠિયા પેચ્છા છત્રજ્ઞયધૂમ તોરણ ગોરુરવેદ્યા ચોપ્પાલ્લગ અટ્ટાલ્લગ પાસાય હમ્મિય ગવક્કલવાલ્લગ પોડ્યા વલ્લભીઘરસઠિયા” હે ગૌતમ ! તે વૃક્ષો કૂટ-શિખર-ના આકાર સદૃશ આકારવાળા હોય છે પ્રેક્ષા-પ્રેક્ષાગૃહ-નાટક ગૃહનો જેવો આકાર હોય છે, તેવા આકારવાળા હોય છે છત્રનો જેવો આકાર હોય છે તેવા આકારવાળા હોય છે ધ્વજનો જેવો આકાર હોય છે, તેવા આકારવાળા હોય છે સ્તૂપનો જેવો આકાર હોય છે, તેવા આકારવાળા હોય છે તોરણનો જેવો આકાર હોય છે તેવા આકારવાળા હોય છે ગોપુરનો જેવો આકાર હોય છે, તેવા આકારવાળા હોય છે ઉપવેશન યોગ્ય ભૂમિનો જેવો આકાર હોય છે, તેવા આકારવાળા હોય છે અટ્ટાલનો જેવો આકાર હોય છે, તેવા આકારવાળા હોય છે,

અટ્ટાલકસંસ્થિતાઃ-અટ્ટાલકાકારાઃ, પ્રાસાદસંસ્થિતાઃ-પ્રાસાદો-રાજગૃહં તદાકારાઃ હર્મ્ય-
સંસ્થિતાઃ-હર્મ્ય-ધનિનામાવાસઃ-તદાકારાઃ ગવાક્ષસંસ્થિતાઃ-ગવાક્ષાકારાઃ, વાલાગ્રપોત્તિ-
કા સંસ્થિતાઃ વાલાગ્રપોત્તિકા=જલસ્થિતપ્રાસાદઃ તદાકારા તથા-વલભીગૃહસંસ્થિતા-વ-
લભીગૃહં ચન્દ્રશાલાગૃહં, તદાકારાશ્ચ તે દ્રુમગણાઃ સન્તિ । અય માવઃ કેચિદ્ દ્રુમગણાઃ કૂ-
ટાકારસંસ્થિતાઃ, કેચિત્ પ્રેક્ષાગૃહસંસ્થિતાઃ, કેચિચ્છત્રસંસ્થિતાઃ એવ પ્રકારેણાગ્રેડપિ મા-
વનીયમ્ ઇતિ । તથા ‘અત્યણે’ અત્ર-મરતે વર્ષે અન્યે પૂર્વોક્તભિન્ના ‘વહવે’ વહવો ‘વર-
મવણવિસિદ્ધસંઠાણસંઠિયા’ વરમવનવિશિષ્ટ સંસ્થાન સંસ્થિતાઃ-વરમવન-શ્રેષ્ઠગૃહં, તસ્ય યદ્
વિશિષ્ટ સંસ્થાનમ્-આકારસ્તેન સંસ્થિતાઃ ‘દ્રુમગણા’ દ્રુમગણાઃ સન્તિ । ‘સમણાઽસો !’ હે
આયુષ્મન્ ! શ્રમણ ! તે સર્વેડપિ દ્રુમગણા ‘સુહસીયલચ્છાયા’ શુભશીતલચ્છાયાઃ-શુભા
શીતલા ચ ચ્છાયા યેવાં તે તથાભૂતાઃ ‘પણ્ણત્તા’ પ્રજ્ઞપ્તાઃ=કથિતા ઇતિ । પૂર્વગૃહાકારકલ્પ-
દ્રુમવર્ણને કૃતેડપિ યત્પુનર્વર્ણન કૃતં તત્ એતેષ્વતિ મનોહરેષુ આવાસેષુ તે પરમપુણ્યમાજો
મનુજાઃ પરિવસન્તીતિ સ્તૂચયિતુમ્ । અતોડત્ર પોનરુત્તયં નાશઙ્કનીયમ્ ॥ સૂ. ૨૬ ॥

હોતા હૈ વૈસે આકાર વાલે હોતે હૈ અટારી કા જૈસા આકાર હોતા હૈ વૈસે આકાર વાલે હોતે હૈ, હસી
પ્રકાર વે પ્રાસાદ-રાજમહલ, હર્મ્ય-ધનવાલો કે ગૃહ-ગવાક્ષ લિંઢકી રૂપ ગૃહ, વાલાગ્ર-પોત્તિકા
જલસ્થિત પ્રાસાદ ઓર વલભીગૃહ ચન્દ્રશાલાગૃહ કે જૈસે આકાર વાલે હોતે હૈ એસા જાનના
ચાહિયે । તાત્પર્ય યહ હૈ કિતનેક વૃક્ષ કૂટ કે જૈસે આકાર વાલે હોતે હૈ કિતનેક વૃક્ષ પ્રેક્ષાગૃહ
કે જૈસે આકાર વાલે હોતે હૈ, કિતનેક વૃક્ષ છત્ર કે જૈસે આકાર વાલે હોતે હૈ, હસી પ્રકાર સે
આગે મી સમજા લેના ચાહિયે । “અત્યણે ઇત્ય વહવે વરમવણ વિસિદ્ધ સંઠાણસંઠિયા દ્રુમગણા
સુહસીયલચ્છાયા પળ્ણત્તા સમણાઽસો,, હે આયુષ્મન્ શ્રમણ । હસ ભરતક્ષેત્ર યેં હન પૂર્વોક્ત વૃક્ષો
સે મિલ અનેક વૃક્ષ એસે મા હૈ જો શ્રેષ્ઠ ગૃહ કા જૈસા આકાર હોતા હૈ વૈસે આકાર વાલે
હૈ । હે આયુષ્મન્ શ્રમણ । યે સવ દ્રુમગણ શુભશીતલ છાયા વાલે હૈ-એસા તીર્થકરોં ને તથા મૈને
કહા હૈ । યહાં પહિલે પ્રહોકાર કે કલ્પવૃક્ષો કા વર્ણન કરકે મી જો ફિર સે ‘વર
મવન સંસ્થાન ” ઇત્યાદિ રૂપ સે વર્ણન કિયા ગયા હૈ વહ હન મનોહર આવાસો મેં વે પરમપુ-

એ જ પ્રમાણે તે પ્રાસાદ-રાજમહેલ-હર્મ્ય-ધનાલય માણસોના ભવનો-ગવાક્ષ-ખડકી, રૂપ-
ગૃહ, વાલાગ્રપોત્તિકા-જલસ્થિત પ્રાસાદ અને વલભીગૃહ-ચન્દ્રશાલાગૃહના જેવા આકારવાળા
હોય છે, એમ બાણુબુ જોઈ એ તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે કે કેટલાક વૃક્ષો કૂટના જેવા આકાર-
વાળા હોય છે, કેટલાક વૃક્ષો પ્રેક્ષાગૃહના જેવા આકારવાળા હોય છે, કેટલાક વૃક્ષો છત્રના
જેવા આકારવાળા હોય છે, આ પ્રમાણે આગળ પણ સમજી લેવું જોઈએ “અત્યણે ઇત્ય
વહને વરમવણવિસિદ્ધસંઠાણસંઠિયા દ્રુમગણા સુહસીયલચ્છાયા પળ્ણત્તા સમણાઽસો” હે
આયુષ્મન્ શ્રમણ ! તે ભરતક્ષેત્રમા એ પૂર્વોક્ત વૃક્ષોથી બિન્ન બીજા વૃક્ષો એવા પણ છે
કે શ્રેષ્ઠગૃહનો જેવા આકાર હોય છે, તેવા આકારવાળા હોય છે, હે આયુષ્મન્ શ્રમણ !
એ સર્વ દ્રુમગણો શુભ-શીતલ છાયાવાળા છે, એવું તીર્થકરોંએ તેમજ મેં કહ્યું છે અહીં
પહેલાં ગૃહાકારના કલ્પવૃક્ષો પણ કરીને ફરીથી “વરમવન સંસ્થાનગ” ઇત્યાદિ રૂપમા

કિં તસ્મિન્ કાલે ગૃહાણિ સન્તિ ! નવા સન્તિ સન્તિ ચેત્ કિં તાનિ વિદ્યમાન
ધાન્યવત્તેષામુપભોગાય ન ભવન્તિ ! ઇત્યાદિપ્રશ્નોત્તરમાહ —

મૂલમ્—અત્થિ ણં મંતે ! તીસે સમાએ ભરહે વાસે ગેહાઈ વા ગેહાવણાઈ
વા ગોયમા ! ણો ઇણદ્દે સમદ્દે રુક્ષગેહાલયા ણં તે મણુયા પણ્ણત્તા
સમણાઁસો ! ! અત્થિ ણં મંતે ! તીસે સમાએ ભરહે વાસે ગામાઈ વા
જાવ સણિવેસાઈ વા ગોયમા ! ણો ઇણદ્દે સમદ્દે જહિચ્છિય કામગામિણો
ણં તે મણુયા ! અત્થિ ણં મંતે અમીઈ વા મસીઈ વા કિસીઈ વા વણિણ્ણત્તિ
વા પણિણ્ણત્તિ વા વાણિજ્જેઈ વા ણો ઇણદ્દે સમદ્દે વવગયઅસિમસિકિસિ-
વણિય પણિયવાણિજ્જા ણં તે મણુયા પણ્ણત્તા સમણાઁસો અત્થિ ણં
મંતે હિરણ્ણેઈ વા સુવણ્ણેઈ વા કંસેઈ વા દૂસેઈ વા મણિમોત્તિયસંસ-
સિલપ્પવાલરત્તરયણસાવજ્જેઈ વા હંતા અત્થિ ણો ચેવ ણં તેસિ મણુ-
યાણં પરિભોગત્તાએ હવ્વમાગચ્છઈ ॥સૂ. ૨૭॥

છાયા—સન્તિ સ્વલ્પ ભદન્ત ! તસ્યા સમાયાં ભરતે વર્ષે ગેહાનિ વા ગેહાપણાનિ વા ।
નાયમર્થ સમર્થઃ, વૃક્ષગેહાલયા સ્વલ્પ તે મનુજાઃ પ્રજ્ઞતા શ્રમણાયુષ્મન્ । સન્તિ સ્વલ્પ ભદન્ત
તસ્યાં સમાયાં ભરતે વર્ષે ગ્રામા ઇતિ વા યાવત્ સન્નિવેશા ઇતિ વા ? ગૌતમ ! નાયમર્થઃ
સમર્થ યથેષ્ણિતકામગામિન સ્વલ્પ તે મનુજાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, અસ્તિ સ્વલ્પ ભદન્ત અસિરિતિ વૃ-
મપિરિતિ વા કૃપિરિતિ વા વણિગિતિ વા પણિતમિતિ વા વાણિજ્યમિતિ વા ? નાયમર્થઃ
સમર્થઃ, વ્યપગતાસિમસિ કૃષિ વણિકૃપણિતવાણિજ્યાઃ સ્વલ્પ તે મનુજાઃ પ્રજ્ઞતાઃ શ્રમણાયુ-
ષ્મન્ । અસ્તિ સ્વલ્પ ભદન્ત । હિરણ્યમિતિ વા સુવર્ણમિતિ વા કાંસ્યમિતિ વા દૂણ્યમિતિ વા
મણિમૌકિક શક્કશિલાપ્રવાલ રક્ત રત્નસ્વાપતેયમિતિ વા ? હન્ત ! અસ્તિ 'નો ચેવ સ્વલ્પ તેષાં
પરિભોગ્યતયા હવ્યમ્ આગચ્છતિ ॥સૂ. ૨૭॥

પ્યશાલો મનુષ્ય રહતે હૈં ઇસ વાત કો સૂચિત કરને કે લિયે કિયા ગયા હૈં. ઇસલિયે પુનરુક્તિ કી
આશંકા નહીં કરના चाहिये ॥ ૨૬ ॥

કયા ઉસ કાલ મેં ગૃહ હોતે હૈં ? યા નહીં હોતે હૈં ? યદિ હોતે હૈં તો કયા વે ઉનકે
ઉપભોગ કે કામ મેં નહીં જાતે હૈં ? ઇત્યાદિ પ્રશ્નોં કા ઉત્તર દેતે હુવે સૂત્રકાર કહતે હૈં

વણ્ણન કરવામા આવ્યું છે તે એ મનોહર આવાસોમાં તે પરમ પુણ્યશાલી મેનુષ્યો રહે છે,
એ વાતને સૂચિત કરવા માટે કહેવામા આવ્યું છે માટે આ સ બધા પુનરુક્તિ કરવામા
આવી છે, એવી આશંકા કરવી નહીં ॥૨૬॥

શુ તે કાળમા ગૃહો હોય છે ? કે નહીં ? જો હોય છે તો શું તેમના ઉપભોગના કામ-
મા આવતા નથી ? વગેરે પ્રશ્નોના જવાબો

ટીકા—‘અત્થિયં મંતે ! ઇત્યાદિ । ગૌતમસ્વામી પૃચ્છતિ-‘અત્થિયં મંતે !
‘તીસે સમાપ્ મરહે વાસે’ હે મદન્ત ! તસ્યાં-સુપમસુપમાયાં સમાયાં મરતે વર્ષે સન્તિ ‘ગે-
હાહવા’ ગેહાનિ-ગૃહાણિ વા; ‘ગેહાવણાઙ વા’ ગેહાવણાઃ ગૃહયુક્તા આપણાઃ દટ્ટાવેતિ ? મગ-
વાનાહ-‘ગોયમા’ ણો ઇણદ્દે સમદ્દે’ હે ગૌતમ ! નાયમર્થઃ સમર્થઃ, યતો ‘સમણાઉમો ! હે
આયુષ્મન્ ! શ્રમણ ! તદાનીન્તનાઃ ‘તે મણુયા રુક્ખગેહાલયા’ તે મનુજા વૃક્ષગેહાલયાઃ-
પ્રાસાદાકારકલ્પવૃક્ષરૂપગૃહેષુ નિવસનશીલાઃ ‘પણ્ણત્તા’ પ્રજ્ઞપ્તાઃ । ગૌતમસ્વામી પુનઃ પૃચ્છ-
તિ ‘અત્થિયં મંતે ! તીસે સમાપ્ મરહે વાસે’ હે મદન્ત ! તસ્યા સમાયા મરતે વર્ષે ‘ગા-
માહવા’ ગ્રામાઃ-અઘ્ઠા-દશકરસહિતા વૃત્તિવેષ્ટિતાઃ, ‘જાવ’ યાવત્-યાવદિતિ પદેન-આકા-
શ-ઇતિ વા, નગરાણીતિ વા, खेटानीति वા, कर्बटानीति वા મહમ્બાનીતિ વા, દ્રોણમુખા-
નીતિ વા, પત્તનાનીતિ વા, નિગમા ઇતિવા, આશ્રમા ઇતિવા, સવાહા ઇતિ વા, ઇતિ સંગ્ર-
હઃ । તત્ર-આકરાઃ=સુવર્ણ રત્નાદ્યુત્પત્તિસ્થાનાનિ નગરાણિ=અષ્ટાદશકરવર્જિતતાનિ, खेटा-
नि=ધૂલિપ્રાકારપરિવેષ્ટિતાનિ, कर्बटानि=ક્ષુલ્લકપ્રાકારપરિવેષ્ટિતાનિ, अभितः પર્વતાવૃત્તા-
નિવા, મહમ્બાનિ=સાર્દ્ધક્રોશદ્વયાન્તર્ગ્રામાન્તરરહિતાનિ દ્રોણમુખાનિ=જલસ્થલપથોપેતા
જનનિવાસાઃ, પત્તનાનિ=સમસ્તવસ્તુ પ્રાપ્તિસ્થાનાનિ, તાનિ દ્વિવિધાનિ જલપત્તનાનિ ચ
સ્થલપત્તનાનિ ચ । તત્ર યત્ર નૌભિર્ગમ્યતે તાનિ સ્થલપત્તનાનિ । અથવા યાનિ કેવલં શક-
ટાદિભિ નૌભિર્વા ગમ્યન્તે તાનિ પત્તનાનિ, યાનિ કેવલં નૌભિરેવ ગમ્યન્તે તાનિ પટ્ટના-
નિ । તદુક્તમ્-

“અત્થિયં મંતે : તીસે સમાપ્ મરહે વાસે ગેહાહ વા ગેહાવણાહ વા ?’ ઇત્યાદિ

“ટીકાર્થ-અત્થિ ય મંતે ! તીસે સમાપ્ મરહે વાસે ગેહાહ વા ગે હાવણાહ વા” હે મદન્ત !
સ સુષમ સુષમા કાલ મેં મરત ક્ષેત્ર મેં ઘર હોતે હૈ કયા ? ગૃહયુક્ત આપણ-દુકાને હોતે હૈ
કયા ? અથવા બાજાર હોતે હૈ કયા ? હસ પ્રશ્ન કે ઉત્તર મેં પ્રશ્ન કહતે હૈ —“ગોયમા ! ણો
ઇણદ્દે સમદ્દે” હે ગૌતમ ! યહ અર્થ સમર્થ નહીં હૈ કયોં કિ “રુક્ખગેહાલયા” ણે તે મણુયા
પણ્ણત્તા’ હે શ્રવણ આયુષ્મન્ ! વૃક્ષરૂપ ગૃહ હો જિનકા આશ્રય સ્થાન હૈ એસે વે મનુષ્ય કહે ગયે હૈ
“અત્થિયં મંતે ! તીસે સમાપ્ મરહે વાસે ગામાહ વા જાવ સણિવેસાહ વા” હે મદન્ત ! સ
સુષમ સુપમા આરક મેં મરત ક્ષેત્ર મેં ગ્રામ યાવત્ સન્નિવેશ હોતે હૈ કયા ? ઉત્તર મેં પ્રશ્ન કહતે

“અત્થિયં મંતે ! તીસે સમાપ્ મરહે વાસે ગેહાહ વા ગેહાવણાહ વા ?’ ઇત્યાદિ સૂત્રોગ્ગા
ટીકાર્થ-‘હે મદન્ત ! તે સુષમ સુષમા કાળમા મરતક્ષેત્રમા ઘરો હોય છે ? ગૃહ યુક્ત આપણ
દુકાનો-હોય છે ? બહારો હોય છે આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા પ્રશ્ન કહે છે કે-‘ગોયમા ણો ઇણદ્દે
સમદ્દે’ હે ગૌતમ આ અર્થ સમર્થ નથી કેમકે ‘રુક્ખગેહાલયા ણે તે મણુયા પણ્ણતા’ હે
શ્રમણ આયુષ્મન્ વૃક્ષ રૂપ ગૃહ જ જેમણે આશ્રય સ્થાન છે એવા તે મનુષ્યો છે ‘અત્થિયં
મંતે તીસે સમાપ્ મરહે વાસે ગામાહ વા જાવ સણિવેસાહવા’ હે મદન્ત તે સુષમ સુષમા
આરકમા મરતક્ષેત્રમા ગ્રામ યાવત્ સન્નિવેશ હોય છે ? ઉત્તરમા પ્રશ્ન કહે છે ‘ગોયમા

પતનં શકટૈર્ગમ્યં, ઘોટકૈર્નોંભિરેવ ચ । નોંભિરેવ તુ યદ્ ગમ્યં, પટ્ટનં તત્પ્રચક્ષતે ॥૧॥ઈતિ ।
 નિગમાઃ=પ્રભૂતતરવણિગ્જનનિવાસાઃ, આશ્રમાઃ=પૂર્વ તાપસૈરાવાસિતાઃ પથ્થાદપરેઽપિ લો-
 કા યત્રાગત્ય વસન્તિ તાદૃશા જનનિવાસાઃ, સંવાહાઃ-કૃપીવલૈર્ધાન્યરક્ષાર્થં નિર્મિતાનિ દુર્ગ
 ભૂમિસ્થાનાનિ, પર્વતશિખરસ્થિતજનનિવાસા વા તથા 'સણિવેસાઢવા' સન્નિવેશાઃ=સમાગ-
 તસાર્થવાહાદિ નિવાસસ્થાનાનિ વા ! ભગવાનાહ-‘ગોયમા ! ણો ઇણદ્દે સમદ્દે’ હે ગૌતમ !
 નાયમર્થઃ, ‘જહિચ્છિયકામગામિણો ણં તે મણુયા’ યતસ્તે મનુજા યથેપ્સિતકામગામિનઃ-
 યથેપ્સિતમ્=ઇચ્છામનતિક્રમ્ય કામમ્-અત્યર્થમ્ ગચ્છન્તીતિ એવશીલાઃ-યથામિલપિત-
 સ્થાનેષુ ગમનશીલા इत्यર્થઃ, એતાદૃશાઃ ‘પણ્ણત્તા’ પ્રજ્ઞસા ઇતિ । અયં ભાવઃ-તસ્મિન્
 કાલે ગ્રામનગરાપિચ ભાવેન તે યથેચ્છ સ્થલગામિનઃ આસન્ ઇતિ । પુનર્ગૌતમસ્વામી પૃ-
 ચ્છતિ -‘મ તે : હે મદન્ત ! તસ્યાં=પૂર્વોક્તાયાં સુપમસુપમાખ્યાયાં સમાયાં મરતે વર્ષે જી-
 વનોપાયસાધનભૂત ‘અસીઢ વા’ અસિઃ=સૂક્ત ઇતિ વા શસ્ત્રકલે ત્યર્થઃ, ‘મસીઢ વા’ મષિઃ-
 લેખનકલેત્યર્થઃ ‘કિસીઢ વા’ કૃપિઃ-કૃપિકલેત્યર્થઃ ‘વણિપ્પત્તિ વા’ વણિક્=વણિકલેત્યર્થઃ
 ‘પણિપ્પત્તિ વા’ પણિત=ક્રયવિક્રયકલેત્યર્થઃ ‘વાણિજ્જેઢ વા વાણિજ્યં=વ્યાપારકલેત્યર્થઃ
 ‘અત્થિ’ અસ્તિ’ અયં ભાવઃ જીવનોપાયત્વેન પ્રસિદ્ધા અસિમખ્યાદિ કલાઃ કિં તદાનીન્તન
 જનાનાં જીવનોપાયભૂતા આસન્ !ઈતિ। ભગવાનાહ-હે ગૌતમ! ‘ણો ઇણદ્દે સમદ્દે’ નાયમર્થઃ

ર્થઃ, યતો ‘સમણાઽસો ! હે, આયુષ્મન્ ! શ્રમણ ! ‘તે મણુયા’ તે મનુજા ‘વવગયઅસિ
 મસિ કિસિવણિયપણિય વાણિજ્જા’ વ્યવગતાસિમપિકૃપિ વણિક્પણિત વાણિજ્યાઃ કલ્પ-
 વૃક્ષતો જીવનોપાયભૂત સકલ વસ્તુ પ્રાપ્ત્યા અસિમસ્યાદિ વ્યાપારરહિતાઃ ‘પણ્ણત્તા’ પ્રજ્ઞ-

‘ગોયમા’! ણો ઇણદ્દે સમદ્દે” હે ગૌતમ : યહ અર્થ સમર્થ નહીં હૈ ક્યોકિ “જહિ-ચ્છિયકામગામિ-
 ણો ણ તૈ મણુયા પણ્ણત્તા” વે મનુષ્ય યથામિલપિત સ્થાનોં પર જાને કે સ્વભાવ વાલે હોતે હૈ
 “અત્થિ ણં મેત્તે ! અસીઢ વા મસીઢ વા કિસીઢ વા વણિપ્પત્તિ વા પણિપ્પત્તિ વા વાણિજ્જેઢ વા” હે
 મદન્ત ! ડસ કાલ મેં અસિ, મષી, કૃષી વણિક કલા, ક્રયવિક્રયકલા ઔર વ્યાપાર કલા યે સવ
 જીવનોપાય ભૂત કલાપેં હોતી હૈ ક્યા : ડત્તર મેં પ્રમુ કહતે હૈં “ણો ઇણદ્દે સમદ્દે” હે ગૌતમ ! યહ
 અર્થ સમર્થ નહીં હૈં, ક્યોકિ “વવગયઅસિ મસિ કિસીવણિય પણિયવાણિજ્જા ણં તે મણુયા પણ્ણત્તા
 સમણાઽસો ” હે શ્રમણ આયુષ્મન્ ! વે મનુષ્ય અસિ, મષી, કૃષી વણિક્કલા આદિ સે રહિત હુપ

ણો ઇણદ્દે સમદ્દે” હે ગૌતમ ! આ અર્થ સમર્થ નથી કેમકે ‘જહિચ્છિયકામગામિણો ણં તે
 મણુયા પણ્ણત્તા’ તે મનુષ્યો યથામિલપિત સ્થાનો પર અવર જવર કરનાર હોય છે તેમને।
 આ બાતને સ્વભાવ જ હોય છે, “અત્થિ ણં મેત્તે ! અસીઢ વા મસીઢ વા કિસીઢ વા
 વણિપ્પત્તિ વા પાણિપ્પત્તિ વા વાણિજ્જેઢ વા” હે મદન્ત તે કાળમા અસિ, મષી, કૃષી, વણિ
 કલા, ક્રયવિક્રયકલા અને વ્યાપારકલા એ સર્વે જીવનોપાયભૂત કલાઓ હોય છે ? ઉત્તર
 માં પ્રશ્ન કહે છે ‘ણો ઇણદ્દે સમદ્દે હે ગૌતમ એ અર્થ સમર્થ નથી કેમકે ‘વવગય અસિ
 મસિ કિસિ વણિય પણિય વાણિજ્જા ણં તે મણુયા પણ્ણત્તા સમણાઽસો’ હે શ્રમણ આયુ

શ્વાઃ પુનર્ગૌતમસ્વામી પૃચ્છતિ—‘અત્થિ ણં મંતે !’ હે મદન્ત ! કિમસ્તિ તસ્યાં સમાયાં
 મરતે વર્ષે ‘હિરણ્ણેઽવા’ હિરણ્યમિતિ વા; તત્ર હિરણ્યં—રૂપ્યમ્ અઘટિત સુવર્ણમિતિ વા’ મૃ-
 વણ્ણેઽવા’ સુવર્ણ-ઘટિતં સુવર્ણમિતિ વા, ‘કંસેઽ વા’ કાંસ્યમ્=તામ્રત્રપુસંયોગજનિતો ધાતુ-
 વિશેષઃ इतिवा, ‘દૂસેઽવા’ દૂશ્ય=વસ્ત્રમિતિ વા, ‘મણિમોત્તિયસંસુ સિલપ્પવાલરત્તરયણ સા-
 વજ્જેઽ વા’ મણિમૌક્તિકશંખશિલાપ્રવાલરત્તરત્નસ્વાપતેયમિતિ વા, તત્ર-મણિઃ વૈદ્યર્થાદિઃ;
 મૌક્તિકં=પ્રુક્તાફલં, શંખઃ-દક્ષિણાવર્ત્તાદિઃ પ્રશસ્તઃ શંખશિઞ્ઞ=સ્ફટિકાદિરૂપા, પ્રવાલં=
 વિદ્રુમઃ; રક્ત રત્નાનિ પદ્મરાગાદીનિ, સ્વાપતેયં રજતસુવર્ણાદિકં દ્રવ્યમ્; एतेषां समाहारे
 તથેતિ । તસ્મિન્ કાલે હિરણ્ય સુવર્ણાદીનિ દ્રવ્યાણ્યાસન્ ન વેતિ ગૌતમ સ્વામિનઃ પ્રશ્ના-
 શયઃ । મગવાનાહ ‘હંતા ! અત્થિ’ હન્ત ! ગૌતમ ! અસ્તિ હિરણ્યાદિકં તસ્મિન્ કાલે ।
 પરન્તુ તત્ ‘તેસિં મણુયાણં પરિભોગત્તાए’ તેષાં મનુજાનાં પરિભોગ્યતયા=અપભોગ્યત્વેન
 ‘ણો ચેવણં’ નો ચૈવ ચલ્લ ‘હવ્વમાગચ્છઈ’ હવ્યં=કદાચિદપિ આગચ્છતિ—યાતિ ઇતિ ।

કહે ગયે હૈં “અત્થિ ણં મંતે । હિરણ્ણેઽ વા સુવર્ણેઽ વા કંસેઽ વા દૂસેઽ વા મણિમોત્તિય સસ સિ
 લ્પ્પવાલ રત્તરયણ સાવજ્જેઽ વા” હે મદન્ત ! ઉસકાલ મેં કયા મરત ક્ષેત્ર મેં હિરણ્ય ચાંદી અ-
 થવા અઘટિત સુવર્ણ હોતા હૈ કયા ? સુવર્ણ હોતા હૈ કયા ? કાસા હોતા હૈ કયા ? દૂશ્ય વસ્ત્ર હોતે હૈ
 કયા ? મણિ, મૌક્તિક, શંખ, શોલા, પ્રવાલ રક્ત રત્ન ઓર સ્વાપતેય યે સવ હોતે હૈ કયા ? ઉત્તર મેં
 પ્રશ્ન કહતે હૈ “હંતા અત્થિ ણો ચેવ ણ તેસિં મણુયાણં પરિભોગત્તાए હવ્વમાગચ્છઈ” હાં ગૌતમ
 ઉસ કાલ મેં યે સવ હોતે હૈ પર યે ઉન પુરુષો કે પરિભોગ કે કામ મેં નહો આતે હૈ । ૧૮ પ્ર
 કાર કે કર—ટેક્સો સે જો સહિત હોતે હૈ તથા વાહ સે જો ધિરે રહતે હૈ ઉનકા નામ પ્રામ હૈ
 યહાં યાવત્પદ સે આકર આદિ સ્થાનોં કા પ્રહણ હુઆ હૈ હન મેં સુવર્ણ, રત્ન વ્યાદિ ઉત્પન્ન કરને
 વાલો સ્થાને જહાં પર હોતી હૈ એસે સ્થાન કા નામ આકર હૈ । ઓર ૧૮ પ્રકાર કે ટેક્સ જિનમેં
 નહીં લગતે હૈ એસે સ્થાનો કા નામ નગર હૈ । બ્હલિ કે બને હુए કોટ સે જો પરિવેષ્ટિત હોતે હૈ
 ઉન સ્થાનોં કા નામ ચેટ હૈ । છોટે પ્રાકાર સે જો પરિવેષ્ટિત રહતે હૈ ઉન સ્થાનો કા નામ કર્બટ હૈ

અન્ તે મનુષ્યો અસિ, મધો, કૃષી, વણિકકલા વગેરેથી રહિત હોય છે ‘અત્થિ ણં મંતે
 હિરણ્ણેઽ વા સુવર્ણેઽ વા કંસેઽ વા દૂસેઽ વા મણિમોત્તિય સસસિલપ્પવાલરત્તરયણ સાવ
 જ્જેઽ વા’ હે મદન્ત તે કાળમા ભરતક્ષેત્રમા હિરણ્ય આદી અથવા અઘટિત સુવર્ણ હોય છે,
 સુવર્ણ હોય છે ? કાસું હોય છે. દૂશ્ય-વસ્ત્ર હોય છે મણિ મૌક્તિક, શંખ, શિલા પ્રવાલ
 રક્ત રત્ન અને સ્વાપતેય એ સર્વે હોય છે, ઉત્તરમા પ્રશ્ન કહે છે. “હંતા-અત્થિ ણો ચેવ
 ણ તેસિં મણુયાણ પરિભોગત્તાए હવ્વમાગચ્છઈ” હા, ગૌતમ તે કાળમા સર્વે હોય છે. યજ્ઞ
 એ તે મનુષ્યોના ઉપસોગમા આવતા નથી ૧૮ પ્રકારના ટેક્સો (કેરો) સહિત એ હોય છે.
 તેમજ વાહથી એ આવૃત રહે છે તેનું નામ પ્રામ છે. અહીં યાવત્પદથી આકર વગેરે
 સ્થાનોનું શ્રેષ્ઠ કરવામાં આવ્યું છે આમાં સુવર્ણ રત્ન વગેરે ઉત્પન્ન કરનારી ખાણો બધાં
 હોય છે એવા સ્થાનોનું નામ આકર છે, અને ૧૮ પ્રકારના ટેક્સ એ સ્થાનોમા નાખવામા
 આવતા નથી, તેવાસ્થાનોનું નામ નગર છે માટીની દીવાલથી ને પરિવેષ્ટિત હોય છે, તે

અત્રાય પ્રશ્ન:-અસ્તિ અઘટિતસુવર્ણસ્ય સુવર્ણસ્થાનૌ, રૂપ્યસ્ય ચ રૂપ્યસ્થાનૌ સંભાવના, પ-
રન્તુ ઘટિતસુવર્ણસ્ય તામ્રત્રપુસયોગજનિતસ્ય કાંસ્યસ્ય તત્તસન્તાનસંભવસ્ય વસ્ત્રસ્ય ચ ત-
દાનીં તાદૃશ વિજ્ઞાનાભાવાન્નાસ્તિ સંભાવના । યદ્યત્રૈવ મુચ્યેત-અતીતોત્સર્પિણી સમ્બન્ધી-
નિ તાન્યત્ર ભરતે વર્ષે નિધાનગતાનિ સમ્ભવન્તીતિ તદપિ ન વાચ્ય, સાદિ સર્પયવસિત
પ્રયોગબન્ધસ્ય અસંખ્યેયકાલપર્યન્તમવસ્થાનાસંભવાત્, તર્હિ કથં તાનિ તત્કાલસ્થાયિ-

અથવા જિનકે ચારોં ઓર પર્વત રહતે હૈં એસે સ્થાનો કા નામ મી કર્વટ હૈં જિનકે આસ પાસ
૨૥-૨૭ કોશ તક્ર દસરે ગ્રામ નહીં હોતે હૈં વે મહમ્મ કહે ગયે હૈં । જિન સ્થાનોં મેં જલ માર્ગ
સે ઓર સ્થલ માર્ગ સે દોનો માર્ગ સે પહુંચા જાતા હૈં એસે જન નિવાસ સ્થાન કા નામ દ્રોણમુલ
હૈં જિનમેં જીવનોપયોગી સમસ્ત વસ્તુએં મિલ જાતિ હૈં ઊન સ્થાનોં કા નામ પત્તન હૈં । યે પત્તન
જલ પત્તન ઓર સ્થલ પત્તન કે મેદ સે દો પ્રકાર કે હોતે હૈં જહા પર નૌકાઓ દ્વારા પહુંચા જાતા
હૈં વે જલપત્તન હૈં ઓર જહા કેવલ ગાડી આદિકે દ્વારા પહુંચા જાતા હૈં વે સ્થલ પત્તન હૈં અથવા
જહા પર કેવલ શકટ આદિ યા નૌકા દ્વારા પહુચા જાતા હૈં એસે સ્થાન કા નામ તો પત્તન હૈં
ઓર જહાં પર કેવલ નૌકા કે હી દ્વારા પહુચા જાતા હૈં ઊસ સ્થાન કા નામ પટ્ટન હૈં ।

પત્તન શકટૈર્ગમ્ય ઘોટકૈ નૌમિરેવ ચ ।

નૌમિરેવ તુ યદ ગમ્ય પટ્ટન તત્પ્રચક્ષતે ॥૧૧॥

જહાં પર બહુત અનેક વણિગ્જન રહતે હૈં એસે સ્થાન કા નામ નિગમ હૈં. પૂર્વ જિસ સ્થાન મેં તપ-
સ્વિજન તાપસીજન રહે હો ઓર વાદ મેં જહાં પર લોક આકર કે ઠહરને લગે હોં એસે સ્થાન કા
નામ આશ્રમ હૈં કિસાનોં દ્વારા ધાન્ય કો રક્ષા કે લિયે નિર્મિત જો દુર્ગમ્મિસ્થાન હૈં અથવા પર્વત
કે ઉપર જો જન નિવાસ સ્થાન હૈં ઊનકા નામ સવાહ હૈં જહાં પર સાર્થવાહ આદિ આકર કે ઠહ-
રતે હૈં યા નિવાસ કરને લગતે હૈં એસે સ્થાન કા નામ સન્નિવેશ હૈં. તલવાર ચલા કર જો આજી-
વિકા કી જાતી હૈં ઊસ કલા કા નામ અસિ હૈં. યહ ઉપલક્ષણ હૈં ઇસસે ઓર મો અન્ય શસ્ત્રોં

સ્થાનોતુ નામ ખેટ છે લઘુ પ્રાકારથી જે પરિવેષિત રહે છે તે સ્થાનોતુ નામ કમટ છે
અથવા જેમની ચોમેર પર્વત હોય છે, એવાં સ્થાનોતુ નામ કમટ છે. જેમની આસ પાસ ૨૦,
૨૧ ગાઉ સુધી ગ્રામો હોતા નથી, તેને મડંગ કહેવામાં આવે છે. જે સ્થાનોમાં જલમાર્ગ અને
સ્થળમાર્ગ આમ બન્ને રીતે પહોંચી શકાય એવા જનનિવાસ સ્થાનોતુ નામ દ્રોણમુખ
છે જે સ્થાનોમાં જીવનોપયોગી સર્વ વસ્તુઓ મળી આવે છે. તે સ્થાનોતુ નામ પત્તન છે,
જે પત્તનો જલ પત્તન અને સ્થલ પત્તન આમ બે પ્રકારના હોય છે જ્યાં હોડીઓ વડે
જઈ શકાય તે જલ પત્તન અને જ્યાં ફક્ત ગાડી વગેરે વડે જઈ શકાય તે સ્થલપત્તન છે.
અથવા જ્યાં ફક્ત શકટ વગેરે કે હોડીઓ વડે જઈ શકાય છે, એવા સ્થાનોતુ નામ પત્તન
છે, અને જ્યાં ફક્ત નૌકા વડે જ જઈ શકાય તે સ્થાનોતુ નામ પટ્ટન છે તદ્વક્તમ્.

પત્તન શકટૈર્ગમ્ય ઘોટકૈ નૌમિરેવ ચ

નૌમિરેવ તુ યદ ગમ્ય પટ્ટન તત્પ્રચક્ષતે ॥૧૧॥

જ્યાં ઘણા વણિક હોડા રહે છે તે સ્થાનોતુ નામ નિગમ છે, પહેલા જે સ્થાનમાં તપ
સ્વિ જનો-તપસ્વી ઓ રહે છે. અને પછી જ્યાં હોડા આવી ને રહેવા લાગે છે તે સ્થા

ત્વેનોક્તાનિ ! इति, अत्राह-क्रीडापरायणदेवैः क्षेत्रान्तरात् तेषां संहरणसंभवेन मृपममृप-
माकालेऽपि भरते वर्षे तत्सत्ता संभाव्यत एवेति नात्र मंगयाऽवकाश इति ॥सू० २७॥

કે દ્વારા જો આજીવિકા કી જાતી હૈ વહ મી અસિકલા યા ગસ્ત્રકલા હૈ લેખન કલા કા નામ મપિ
હૈ, કૃષિ કલા કા નામ કૃષિ હૈ, વણિગ્ કલા કા નામ વણિક્ હૈ સ્ત્રીદને ચેંચને કી કલા કા નામ
પણિત હૈ, વ્યાપાર કલાકા નામ વાણિજ્ય હૈ, ઘટિત સુવર્ણ કા નામ સુવર્ણ હૈ, માત્ર સોને કા
નામ હિરણ્ય હૈ । ચાંદી કા નામ મી હિરણ્ય હૈ । વૈદ્યર્થ આદિ કા નામ મણિ હૈ, મુક્તા ફલ
કા નામ મૌક્તિક હૈ, દક્ષિણાવર્તાદિ વાલા જો પ્રશસ્ત ગદ્ય હૈ વહી યહાં ગદ્ય શબ્દ સે લિયા
ગયા હૈ, સ્ફટિક આદિ રૂપ જો ઠોસ પદાર્થ હૈ વહ ગિલા શબ્દ સે લિયા ગયા હૈ મૂગે કા
નામ પ્રવાહ હૈ : પદ્મરાગાદિ રક્તરત્ન સે કહે ગયે હૈ ઔર રજત સુવર્ણ આદિક દ્રવ્ય સ્વાપ-
તેય શબ્દ સે લિયે ગયે હૈ । યહા પર એસી શંકા હો સકતો હૈ કિ અઘટિત સુવર્ણ કી સત્તા સુવર્ણ
સ્થાનિ મેં તથા રૂપ્ય ચાંદી કી સત્તા ચાંદી કી સ્થાન મેં હો સકતી હૈ. પરંતુ ઘટિત સુવર્ણ કી
તામ્ર ઔર ત્રપુ કે સયોગ સે જનિત કાસેકી ઔર તન્તુ સયોગ સે જનિત વજ્ર કી ઉસકાલ મેં એસે
વિજ્ઞાન કે અભાવ સે સમાવના કેસે હો સકતી હૈ? અર્થાત્ નહીં હો સકતી હૈ, યદિ યહાં એસા
કહા જાવે કિ અતીત ઉત્સર્પિણી કાલ સમ્બન્ધી વે વસ્તુએં ઇસ સમય કે મરતક્ષેત્ર મેં નિધાનગત
હુઈ પ્રાપ્ત હો સકતી હૈ, સો એસા મી નહીં હૈ ક્યોકિ સાદિ સપર્યવસિત પ્રયોગબન્ધ અસહ્યાત

નનુ નામઆશ્રમ છે ખેડુતો વડે નિર્મિત ધાન્યની રક્ષા માટે જે દુર્ગભૂમિ સ્થાન છે અથવા
પર્વતની ઉપર જે જનનિવાસ સ્થાન છે, તેનું નામ સવાહ છે જ્યાં સાથવાહ વગેરે આવી
ને રોકાય છે. અથવા નિવાસ કરે છે તે સ્થાનનું નામ સન્નિવેશ છે તલવારની શક્તિના
આધારે જે આલુવિકા મેળવવામાં આવે છે, તે કલાનું નામ અસિ છે. આ ઉપલક્ષણ છે.
એનાથી ખીજા શસ્ત્રોની તાકાત થી જે આલુવિકા મેળવવામાં આવે છે તે પશુ અસિકલા-
શસ્ત્રકલા છે લેખન કલાનું નામ મપિ છે. કૃષિકલાનું નામ કૃષિ છે વણિક કલાનું નામ
વણિક છે કેય વિકેય કરવાની કલાનું નામ પશ્ચિત છે વ્યાપાર કલાનું નામ વાણિજ્ય છે
ઘટિત સુવર્ણનું નામ સુવર્ણ છે, ફકત સુવર્ણનું નામ હિરણ્ય છે. ચાંદીનું નામ પશુ હિર
ણ્ય છે વૈદ્યર્થ વગેરેનું નામ મણિ છે મુક્તાદિનું નામ મૌક્તિક છે દક્ષિણાવર્તાદિ આકાર
વાળા જે પ્રપસ્ત શ ખો છે તે અહીં શખ શખ વડે ગ્રહણ કરવામાં આવ્યા છે. સ્ફટિક
વગેરે રૂપે જે નકકર પદાર્થો છે તે શિલા શખદોથી ગ્રહણ કરવામાં આવ્યા છે. મૂળાનું નામ
પ્રવાહ છે પદ્મરાગાદિક રક્તરત્નોને રત્નોકહેવામાં આવ્યા છે તેમજ રજત સુવર્ણ વગેરે દ્રવ્યો
સ્વાપતેય શખ વડે ગ્રહણ કરવામાં આવ્યા છે અહીં એવી શંકા થઈ શકે કે અઘટિત
સુવર્ણની સત્તા સુવર્ણની ખાણ માં તેમજ રૂપ્ય-ચાંદીની સત્તા ચાંદીની ખાણ માં જ હો
ય છે પણ ઘટિતસુવર્ણની તામ્ર અને ત્રપુના સયોગથી જનિત કાસ્યની અને તંતુ સયોગ
થી જનિત વસ્ત્રની તે કાળમાં આધુનિક યુગ જેવા વૈજ્ઞાનિક આવિષ્કારોના અભાવે સંભા
વના કેવી રીતે થઈ શકે ? એટલે કે થઈ શકે નહિ ને અહીં આ પ્રમાણે કહેવામાં આવે
કે અતીત ઉત્સર્પિણી કાળ સંબંધી તે વસ્તુઓ આ સમયના ભરત ક્ષેત્રમાં નિધાન ગત
થયેલી પ્રાપ્ત થઈ શકે છે, તો આ વાત પણ યોગ્ય નથી કેમકે સાદિ સપર્યવસિત પ્રયોગ

મૂલમ્—અત્થિ ણં મંતે ! તીસે સમાએ મરહે વાસે રાયાઇ વા, જુવરા-
યાઇ વા, ર્ઈસરતલવર માહંબિય ર્ઈમ્મસેટ્ટિ સેનાવડ સત્થવાહાઇ વા ?, ગોયમા !
ણો ર્ઈણટ્ટે સમટ્ટે, વવગય ર્ઈટ્ઠિસકારા ણં તે મણુયા પણ્ણત્તા સમણાઉસો !
અત્થિ ણં મંતે ! તીસે સમાએ મરહે વાસે દાસેઇ વા, પેસેઇ વા સિસ્સેઇ
વા, મયગેઇ વા માઇલ્લેઇ વા, કમ્મયરેઇ વા ? ણો ર્ઈણટ્ટે સમટ્ટે, વવગય
અભિઓગા ણં તે મણુયા પણ્ણત્તા સમણાઉસો ! અત્થિ ણં મંતે ! તીસે સમાએ
મરહે વાસે ! માયાઇ વા પિયાઇ વા માયાઇ વા મગિણીઇ વા મજ્જાઇ વા
પુત્તેઇ વા ધૂયાઇ વા સુણ્ણહોઇ વા ? હંતા ! અત્થિ, ણો ચેવ ણં તેસિં મણુ-
યાણં તિવ્વે પેમવંધણે સમુપજ્જઇ । અત્થિ ણં મંતે ! મરહે વાસે અરીઇ વા
વેરિએઇ વા ધાએઇ વા વહુએઇ વા પડિણીએઇ વા પચ્ચામિત્તેઇ વા : ? ગોર્યમા !
ણો ર્ઈણટ્ટે સમટ્ટે, વવગયવેરાણુસયા ણં તે મણુયા પણ્ણત્તા સમણાઉસો !
ત્થિ, ણં મંતે ! મરહે વાસે મિત્તાઇ વા વયંસાઇ વા ણાયએઇ વા સંઘા-
હિએઇ વા સહાઇ વા સુહીઇ વા સંગએત્તિ વા ? હંતા અત્થિ. ણોચેવ ણં તેસિં
મણુયાણં તિવ્વે રાગવંધણે સમુપ્પજ્જઇ ॥ સૂ. ૨૮ ॥

છાયા—અસ્તિ જલુ મદન્ત ! તસ્યાં સમાયાં મરતે વર્ષે રાજેતિ વા, યુવરાજ ર્ઈતિ
વા, ર્ઈશ્વર તલવર માહંમ્બિકકૌટુમ્બિકેમ્મયેષ્ઠિસેનાપતિસાર્થવાહા ર્ઈતિ વા ' નો
અયમર્થઃ સમર્થઃ, વ્યયગત ઋદ્ધિ સત્કારાઃ જલુ તે મનુજાઃ પ્રજ્ઞતાઃ ધ્રમણાયુષ્મન્ ! અસ્તિ
જલુ મદન્ત તસ્યાં સમાયાં મરતે વર્ષે દાસ ર્ઈતિ વા પ્રેમ્ય ર્ઈતિ વા શિષ્ય ર્ઈતિ વા મૃતક
ર્ઈતિ વા માનક ર્ઈતિ વા કર્મકરક ર્ઈતિ વા । નો અયમર્થઃ સમર્થઃ, વ્યયગતાભિયોગાઃ

કાલ તક અવસ્થિત નહીં રહ સક્રતા હૈ અન તસ સુષમ સુષમા કાલ મેં મરતક્ષેત્ર મેં ર્ઈનકા જો
આપને સદ્ભાવ કહા હૈ સો કૈસે જ્ઞહા હૈ તો ર્ઈમકા ઉત્તર એસા હૈ કિ દેવ કીહા પરાયણ
હોતે હૈ અત વે ક્ષેત્રાન્તર સે ડન વસ્તુઓં કો સહરણ કરકે સુષમ સુષમા કાલ મેં મો મરતક્ષેત્ર
મેં લાકર રલ સક્રતે હૈં । ર્ઈસ તરહ ર્ઈનકી સમાવના અહા હો સક્રતી હૈ ર્ઈસ વિષય મેં સશય
કરને કી કોઈ વાત નહીં હૈ ॥ ૨૭ ॥

બન્ધ અસ ળ્યાત ક ણ સુધો અવસ્થિત રહો શકે નહિ, માટે તે સુષમ સુષમા કાળમાં ભરત
ક્ષેત્રમા જોમનો જે આપત્રીએ સદ્ભાવ કહ્યો છે, તે કયા આધારે કહ્યો છે ? તો આનો જ
વાબ આ પ્રમાણે છે કે દેવો કીડા પરાયણ હોય છે એથી તેઓ ક્ષેત્રાન્તરથી જે વસ્તુઓડ
સ હરણ કરીને સુષમ-સુષમા કાલમા પણ ભરત ક્ષેત્ર મા લાવી તે મૂકી શકે છે, એથી એ
સર્વની અહી સમાવના થઈ શકે છે- આ સ બન્ધ ના પ્રથમના માટે કોઈ સ્થાન નથી ॥ ૨૭

खलु ते मनुजाः प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन् । अस्ति खलु भदन्त । नस्यां समाया भरते वर्षे माते ति वा पितेति वा भ्रातेति वा भगिनीनि वा भार्येति वा पुत्र इति वा दुहितेति वा स्त्रुपे ति वा ? हन्त । अस्ति , नो चैव खलु तेषां मनुजानां तीव्रं प्रेमानुबन्धनं समुत्पद्यते । अस्ति खलु भदन्त । भरते वर्षे अरिरिति वा वैरिक इति वा घातक इति वा वधक इति वा प्रत्यनीक इति वा प्रत्यमित्रमिति वा ? गौतम ! नो अयमर्थः समर्थः, व्यपगतवैरानु शयाः खलु ते मनुजाः प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन् । अस्ति खलु भदन्त भरते वर्षे मित्रमिति वा वयस्य इति वा क्षायक इति वा संघाटिक इति वा सखेति वा सुहृदिति वा संगत इति वा हन्त अस्ति, नो चैव खलु तेषां मनुजानां तीव्रं रागबन्धनं समुत्पद्यते ॥सू०२८॥

टीका—‘अत्थिणं’ इत्यादि ।

गौतम स्वामी पृच्छति—‘अत्थि णं भंते । तीसे समाए भरहे वासे रायाइ वा जुव- रायाइवा’ हे भदन्त । अस्ति खलु तस्यां समायां भरते वर्षे राजा इति वा, युवराज इति वा, तत्र राजा—माण्डलिको नरपतिः, युवराजः—नृपत्वेनाभिषेक्ष्यमाणो राजपुत्रः । तथा- सन्ति, किं तस्यां समायां भरते वर्षे ‘ईसर तलवर माडंबिय डवसेट्टि सेणावइ सत्थ- वाहाइवा ?’ ईश्वरतलवरमाडंबिककौटुम्बिकेभ्यश्चेष्टिसेनापतिसार्थवाहा इति वा, तत्र ईश्वर ऐश्वर्यशाली , तलवरः = सन्तुष्टभूपालप्रदत्तपट्टबन्धपरिभूषितराजकल्पः , माड- म्बिकः पञ्चशतग्रामाधिपतिः, ‘माण्डविकः’ इतिच्छाया पक्षे तु छिन्नभिन्नजनाश्रय विशेषो

‘अत्थि णं भंते । तीसे समाए भरहे वासे’ इत्यादि ।

‘अत्थि णं भंते । तीसे समाए भरहे वासे रायाइ वा जुवरायाइ वा ईसरतलवर माडं- बियइवम सेट्टिसेणावइसत्थवाहाइवा’ गौतमस्वामी ने यहा ऐसा पूछा है—हे भदन्त । सुषम सुषमा आरक की मौजूदगी में भरतक्षेत्र में राजा, युवराज, ईश्वर, तलवर, माडम्बिक कौटुम्बिक श्रेष्ठी, सेनापति एवं सार्थवाह ये सब होते हैं क्या ? माण्डलिक राजा का नाम नरपति है । आगे जिस राजपुत्र का नृप के रूप में अभिषेक होने वाला होता है उसका नाम युवराज है, ऐश्वर्य शाली व्यक्ति का नाम ईश्वर है सन्तुष्ट हुए भूपाल के द्वारा प्रदत्त पट्टबन्ध से जो परिभूषित होता है ऐसे राजकल्प व्यक्ति का नाम तलवर है. जो पांच सौ ग्राम का अधिपति होता है उसका नाम माडंबिक है “माण्डविक” इस छायापक्ष में जो छिन्न भिन्न जनाश्रय विशेष

‘अत्थिणं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे रायाइ वा जुवरायाइ वा ईसरतलवर माडं बिय इवम सेट्टि सेणावइसत्थवाहाइवा ?’ इत्यादि सूत्र २८॥

टीका—गौतम स्वामीने अही आवातने प्रश्न किये छे के छे भदन्त ! सुषम सुषमा आरकना समयमा भरतक्षेत्रमा राजा, युवराज, ईश्वर, तलवर माडंबिक कौटुम्बिक श्रेष्ठी, सेनापति तेभज सार्थवाहा छे सवे होय छे । मांडलिक नरेश नु नाम नरपति छे आशय. जे राजपुत्र नृपना रूपमा अभिषेक जनार छे, तेनु नाम युवराज छे. ऐश्वर्य शाली व्य- क्ति नु नाम ईश्वर छे सन्तुष्ट भयेव भूपाल वडे प्रदत्त पट्टबन्धनी जे परिभूषित होय छे तेवा राजकल्प व्यक्ति नु नाम तलवर छे पाचसो ग्रामना जे अधिपति होय छे. तेनु

મણ્ડવસ્ત્રાધિકૃત ઇતિ, કૌટુમ્બિકઃ=કુટુમ્બભરણે તત્પરો વહુકુટુમ્બપ્રતિપાલકો વા, ઇમ્યઃ-ઇમો=હસ્તી તત્પ્રમાણ દ્રવ્યમર્હતીતિ તથા, સ જઘન્યમધ્યમોત્કૃષ્ટમેદાત્ત્રિવિધઃ તત્ર હસ્તિપરિમિતમણિમુક્તાપ્રવાલસુવર્ણરજતાદિ દ્રવ્યરાશિ સ્વામી જઘન્યઃ, હસ્તિપરિમિતવજ્રહીરકમણિમાણિવયરાશિસ્વામિનો મધ્યમાઃ, હસ્તિપરિમિતકેવલવજ્રસ્વામી ઉત્કૃષ્ટઃ ઇતિ । શ્રેણી - લક્ષ્મીકૃપાકટાક્ષપ્રત્યક્ષલક્ષ્યમાણદ્રવિણલલક્ષણવિલક્ષણહિરણ્યપટ્ટસમલ-હકૃતમૂર્ધા નગરપ્રધાનવ્યવહર્તા, સેનાપતિઃ=ચતુરજ્ઞસેનાનાયકઃ, સાર્થવાહઃ=ગણિમધરિ મયેયપરિચ્છેદ્યરૂપક્રયવિક્રયવસ્તુજાતમાદાય લાભેન્ઞયા દેશાન્તરાણિ વ્રજતાં સાર્થ વા-હયતિ=યોગક્ષેમાભ્યા પરિપાલતીતિ, મૂલધનં દત્વા તાન્ સમર્દ્ધયતીતિ વા તથા, તત્ર-ગણિમમ્ =એક દ્વિ ત્રિ ચતુરાદિ સંખ્યાક્રમેણ ગણયિત્વા યદ્ દીયતે તત્, યથા-નાલિકેર

મેં અધિકૃત હોતા હૈ उसका नाम माण्डविक है जो कुटुम्ब के भरण पोषण करने में तत्पर रहता है अथवा अनेक कुटुम्बों का जो प्रतिपालक होता है उसका नाम कौटुम्बिक है जिसके पास हाथ का वजन बराबर द्रव्य होता है वह इम्य है यह इम्य उत्तम, मध्यम, और जघन्य के भेद से तीन प्रकार का कहा गया है इनमें जो हाथी के प्रमाण परिमित हुए मणि, मुक्ता, प्रवाल, सुवर्ण एवं रजत आदि द्रव्यों का स्वामी होता है वह जघन्य स्वामी है, हाथी परिमित वज्र का ही जो स्वामी होता है वह उत्कृष्ट इम्य है जो लक्ष्मी की कृपा के कृपाकटाक्ष से युक्त है एवं जिसका स-स्तक लक्ष्मी की कृपा के द्योतक हिरण्यपट्ट से अलंकृत रहता है ऐसा नगर का जो प्रधान व्यवहर्ता पुरुष होता है उसका नाम श्रेष्ठी है चतुरज्ज्ञ सेना का जो नायक होता है उसका नाम सेनापति है, गणिम, धरिम, मेय और परिच्छेद्यरूपा क्रय विक्रय के योग्य वस्तुओं को लेकर लाभ की इच्छा से देशान्तर में जाते हुए पुरुष के सार्थ-सध को जो योग क्षेम द्वारा पालता है उसका नाम सार्थ-वाह है अथवा मूलधन देकर जो उन्हें अपनी ऋद्धि के बराबर ऋद्धिवाला बनाता है वह सार्थवाह है

નામ માડંબિક છે “માણ્ડવિક” આ છાયા પક્ષમાં જે છિન્ન ભિન્ન જનાશ્રય વિશેષમાં અધિકૃત હોય છે તેનું નામ માડંબિક છે જે કુટુંબના ભરણ પોષણ કરવામાં તત્પર હોય છે. અથવા તેમના કુટુંબનો પ્રતિપાલક હોય છે, તેનું નામ કૌટુમ્બિક કહેવાય છે. જેની પાસે હાથીના વજન જેટલું દ્રવ્ય હોય છે તે ઇમ્ય છે એ ઇમ્યો ઉત્તમ, મધ્યમ અને જઘન્ય આમ ત્રણ પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે એમાં જે હસ્તિ પ્રમાણ-પરિમિત મણિ, મુક્તા, પ્રવાલ, સુવર્ણ તેમજ રજત વગેરે દ્રવ્યોનો સ્વામી હોય છે, તે ને જઘન્ય ઇમ્ય કહેવામાં આવે છે હસ્તિપરિમિત વજન નો જ જે સ્વામી હોય છે તે ઉત્કૃષ્ટ ઇમ્ય છે, જે લક્ષ્મીના કૃપા કટાક્ષથી જે યુક્ત છે તેમજ જેનું મસ્તક લક્ષ્મીની કૃપાથી દ્યોતક હિરણ્યપટ્ટથી અલંકૃત રહે છે, એવા નગરનો જે પ્રધાનવ્યવહર્તા પુરુષ હોય છે તેનું નામ શ્રેષ્ઠી છે ચતુર ગ સેનાનો જે નાયક હોય છે, તેનું નામ સેનાપતિ છે, ગણિમ, ધરિમ, મેય અને પરિચ્છેદ્ય રૂપ ક્રય-વિક્રય યોગ્ય વસ્તુઓને લઈને લાભની ઇચ્છાથી દેશાન્તરમાં જતા પુરુષો સાથે સઘને જે યોગક્ષેમ વડે રક્ષણ આપે છે તેનું નામ સાર્થવાહ છે, અથવા મૂલધન આપી ને જે તેઓને પોતાની ઋદ્ધિ જેટલી ઋદ્ધિવાળા બનાવે છે, તે સાર્થવાહ છે જે વસ્તુ

પૂર્ણાક્રમદલીફલાટિકમિતિ, ધરિમં=નુજા સૂત્રેણોત્તોલ્ય યદ્ દીયને તત્ 'યથા-ગ્રીહિ
યવ-લવણસિતાદિ, મેયં = શરાવલઘુમાળાદિનોત્તોલ્ય યદ્ દીયને તત્ 'યથા-દુગ્ધ પૃત
તૈલપ્રપૃતિ, પરિચ્છેદ્ય ચ પ્રત્યક્ષતો નિરુપાદિપરીક્ષયા યદ્ દીયને તત્, યથા મણિ મુક્તા-
પ્રવાલાડડમરણાદિ । ઇશ્વરાદિ સાર્થવાદાન્તપદાનામ્ ઇતરેતરયોગ દ્વન્દ્વ ઇતિ । મગવાનાહ-
'ગોયમા ! જો ઇણદ્દે સમદ્દે' ગૌતમ ! નો અયમર્થઃ સમર્થઃ, 'સમણાડસો !' હે આયુષ્મ-
ન્ ! શ્રમણ ! યતઃ 'તેણં પ્રણુયા વવગયહ્હિસન્કારા' ને સ્વલ્લ મનુજા વ્યપગતદ્દિ સત્કાર-
રાઃ વ્યપગતો=દૂરીભૂતો ઋદ્ધિસન્કારો-ઋદ્ધિઃ=વિભવૈશ્વર્યસત્કારઃ સેવ્યતાલક્ષણશ્ચ યેન્ય
સ્તે તથા, 'પણ્ણત્તા' પ્રજ્ઞાતાઃ કથિતા ઇતિ । પુનર્ગૌતમસ્વામી પૃચ્છતિ - 'અત્થિ ણં મંતે !
તીસે સમાપ્પ મરહે વાસે દાસેહ વા' હે મદન્ત ! અસ્તિ સ્વલ્લ તસ્યાં સમાયા મરતે વર્પે દા
સ ઇતિ વા દાસઃ પ્રસિદ્ધઃ 'પેસેહ વા' પ્રેષ્ય ઇતિ વા 'પ્રેષ્યઃ પ્રેષણાહો દૂતાદિઃ, 'સિસે-
હવા' શિષ્ય ઇતિ વા ? શિષ્યઃ પ્રસિદ્ધઃ 'મયગેહ વા' મૃતક ઇતિ વા, મૃતકઃ વેતનેન નિ-
યતકાલં યાવત્ કર્મસમ્પાદકઃ 'માહલ્લપ્પહ વા' ભાજક ઇતિ વા 'ભાજકો ધનાંશશૃઙ્ઘીતા

જો વસ્તુ એક, દો, તોન આદિ સંખ્યા સે ગિનકર દો જાતી હૈ જૈસે નારિયેલ આદિ એસી યે વસ્તુ
પૂર્ણ ગણિમ મેં લી ગઈ હૈ, જો વસ્તુ તરાજુ સે તાલકર દો જાતી હૈ જૈસે ગ્રાહિ, જૌ, ગેહુ આદિ એસી
યે વસ્તુ ધરિમ મેં લી ગઈ હૈ, જો વસ્તુ પ્રમાણિત વર્તન આદિ સે નાપકર દો જાતો હૈ જૈસે દૂધ,
ધૂત, તૈલ આદિ એસી યે વસ્તુ મેય મે લી ગઈ હૈ તથા જો ચીજ કસૌટી આદિ પર કસકર પરીક્ષા
કરકે દો જાતો હૈ જૈસે મણિ, મુક્તા, પ્રવાલ સુવર્ણ આદિ યે સર્વ વસ્તુ પરિચ્છેદ્ય મેં લી ગઈ હૈ
હસકે ઉત્તર મેં પ્રશ્ન કહતે હૈ "ગોયમા ! જો ઇણદ્દે સમદ્દે" હે ગૌતમ ! યહ અર્થ સમર્થ નહીં હૈ
ક્યોંકિ 'વવગયહ્હિ સન્કારાણં તે મણુયા પણ્ણત્તા સમણાડસો ' હે ' શ્રમણ આયુષ્મન્ ! જે મનુષ્ય
વિભવ એશ્વર્યરૂપ ઋદ્ધિ ઔર સેવ્યતારૂપ સત્કાર ઇનસે રહિત હોતે હૈ । 'અત્થિ ણ મંતે ' તીસે સ-
માપ્પ મરહે વાસે દાસેહ વા, પેસેહ વા, સિસેહ વા, મયગેહ વા, માહલ્લપ્પહ વા કમ્મયરપ્પહ વા" હૈ
મદન્ત ! ડસ સુષમ સુષમા કાલ કે સદ્વાવ મેં હસ મરત ક્ષેત્ર મેં ક્યા કોઈ દાસ હોતા હૈ ? ક્યા

એક, બે, ત્રણ વગેરે સંખ્યા વડે ગણીને આપવામા આવે છે, જેમ કે નારિયેલ વગેરે-એવી
તે વસ્તુઓને ગણિમ તરીકે ગણવામા આવી છે જે વસ્તુ ત્રાજવાથી તોલીને આપવામા
આવે છે જેમકે ગ્રાહિ, જૌ' ધી વગેરે-એવી એ વસ્તુઓને ધરિમ કહેવામા આવે છે. જે
વસ્તુઓ પ્રમાણિત પાત્ર વગેરેથી માપીને આપવામા આવે છે, જેમકે દૂધ, ઘી, તેલ વગેરે
એવી એ વસ્તુઓને મેય કહેવામા આવે છે, તેમજ જે વસ્તુઓ ની કસોટી વગેરે ઉપર કસીને
પરીક્ષા કરીને આપવામા આવે છે, જેમકે મણિ, મુક્તા, પ્રવાલ, સુવર્ણ વગેરે-એ સર્વ
વસ્તુઓ પરિચ્છેદ્ય કહેવાય છે એના જવાબમા પ્રશ્ન કહે છે "ગોયમા જો ઇણદ્દે સમદ્દે" હે
ગૌતમ ! આ અર્થ સમર્થ નથી કેમકે "વવગય હ્હિસન્કારા ણં તે મણુયા પણ્ણત્તા સમણા
ડસો "હે શ્રમણ આયુષ્મન્ તે મનુષ્યો વિભવ, એશ્વર્ય રૂપ ઋદ્ધિ અને સેવ્યતા રૂપ
સત્કારથી રહિત હોય છે "અત્થિ ણ મંતે !તીસે સમાપ્પ મરહે વાસે દાસેહ પેસેહ વા 'સિસેહ
વા મયગેહ વા માહલ્લપ્પહ વા, કમ્મયરપ્પહ વા" હે મદન્ત ! તે સુષમ સુષમાકાળ ના સદ્વાવ
મા આ મરત ક્ષેત્ર મા શુ કોઈ દાસ હોય છે ? પ્રેષ્ય-પ્રેષણાહ-ફલ વગેરે હોય છે ? શિષ્ય

દાયાદ્ इति यावत्, 'कम्मयरएडवा' कर्मकरकड ति वा ? कर्मकरकः=गृहसम्बन्धिसामान्य
कार्यसम्पादक इति । गौतमस्वामिनः प्रश्न श्रुत्वा भगवानाह — 'समणाउसो ! णो इण
ट्ठे समट्ठे' हे आयुष्मन् श्रमण ! नो अयमर्थः समर्थः, यतः 'ते मणुया ववगय अभि-
जोगा' ते मनुजा व्यपगताभियोगाः व्यपगतः= दूरीभूतः अभियोगः=कार्यं कर्तुं परप्रे-
रणा येभ्यस्ते तथा भूताः 'पणत्ता' प्रज्ञप्ताः । तस्मिन् काले स्वस्वामिभावः आदि संबन्धाभा-
वान्न कस्यापि कंचित् प्रति प्रेरकत्वमस्तीति बोध्यमिति । गौतमस्वामी पुनः पृच्छति—
'अत्थि णं मत्ते ! तीसे समाए भरहे वासे मायाइवा पियाइवा भायाइ वा भगिणीइवा
भज्जाइवा पुत्तेइवा धूयाइवा सुण्हाइवा' हे भदन्त ! तस्या खलु समाया भरते वर्षे अस्ति
किं माता इति वा ! पिता इति वा ! भ्राता इति वा भगिनी इति वा पुत्रः इति वा दुहिता
इति वा स्नुषा पुत्रवधूः इति वा भगवानाह—"इंता ! अत्थि" इन्त गौतम ! अस्ति किन्तु

कोई प्रेष्य-प्रेषणार्ह दूत आदि होता है : क्या कोई शिष्य होता है : मृत-वेतन लेकर नियत
काल तक काम करने वाला होता है : क्या कोई दायद धन का हिस्सेदार होता है : क्या कोई
गृहसंबंधी सामान्यकार्य करने वाला होता है : इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं—"णो इणट्ठे समट्ठे"
हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है क्योंकि "ववगय अभियोगा ण ते मणुया पणत्ता समणाउसो"
हे श्रवण आयुष्मन् ! वे मनुष्य कार्य करने के लिये जिनसे परप्रेरणारूप अभियोग दूर हो गया है
ऐसे होते हैं । अर्थात् उस काल में स्वस्वामिभाव-आदि रूप सबध का अभाव रहता है इस
लिये कोई किसी के प्रति प्रेरक नहीं होता है " अत्थि ण मत्ते ! तीसे समाए भरहे वासे मायाइ
वा पियाइ वा भायाइ वा, भगिणीइ वा, भज्जाइ वा, पुत्तेइ वा, धूयाइ वा, सुण्हाइ वा" हे
भदन्त ! उस वर्तमान सुषम सुषमा काल में भरतक्षेत्र में माता होती है क्या : पिता होता है
क्या : भ्राता होता है क्या : बहिन होती है क्या : पुत्र होता है क्या : दुहिता-पुत्री होती है
क्या : पुत्र वधू होती है क्या : अर्थात् उस काल में क्या भरतक्षेत्र में पिता पुत्र, पति पत्नी आदि
संबंध होते हैं क्या : इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं—"इंता, अत्थि णो चेव ण तेसि मणुयाण

હોય છે ? ભૂતક- વેતન લઈને નિયતકાલ સુધી કામ કરનાર હોય છે ? શું કોઈ દામાદ ધન
ના હિસ્સેદાર-હોય છે ? શું કોઈ ગૃહ સંબંધી સામાન્ય કાર્ય કરનાર હોય છે ? એના
જવાબમાં પ્રભુ કહે છે—"ણો ઇણટ્ઠે સમટ્ઠે" હે ગૌતમ ! આ અર્થ સમર્થ નથી કેમકે
"વવગય અભિયોગા ણ તે મણુયા પણત્તા સમણાઉસો !" હે શ્રવણ આયુષ્મન્ ! તે મનુ
ષ્યો કાર્ય કરવા માટે એમની ઉપરથી પરપ્રેરણા રૂપ અભિયોગ દૂર થઈ ગયો છે, એવા
હોય છે. એટલે કે તે કાળમાં-સ્વસ્વામિભાવ વગરે રૂપ સંબંધના અભાવ રહે છે એથી
કોઈ કોઈને પ્રેરક રૂપ થતું નથી "અત્થિણં મત્તે તીસે સમાપ્પ ભરહે વાસે માયાઈ વા પિ-
યાઈ વા ભાગિણીઈ વા ભજ્જાઈ વા, પુત્તેઈ વા ધૂયાઈ વા સુણ્હાઈ વા" હે ભદન્ત !
તે સુષમ સુષમા કાળમાં ભરત ક્ષેત્રમાં માતા હોય છે ? પિતા હોય છે ? ભાઈ હોય છે ?
બહેન હોય છે, પુત્ર હોય છે દુહિતા-પુત્રી-હોય છે ? પુત્ર વધૂ હોય છે ? એટલે કે તે કાળમાં
ભરત ક્ષેત્રમાં પિતા, પુત્ર પતિ, પત્ની વગેરે સંબંધો હોય છે ? એના જવાબમાં પ્રભુ કહે

માત્રાદિકેષુ પ્રત્યેકં ચ પુનઃ એતેપાં પરસ્પર 'તિવ્વે' તીવ્રં સાતિગય, - 'પેમવન્ધને' પ્રેમવન્ધન સ્નેહવન્ધન ણો' નૈવ 'સમુપજ્જહ' સમુત્પદ્યતે ન સજાયતે પુન ગૌતમ સ્વામી પૃચ્છતિ- 'અત્થિ ણં મંતે મરહે વાસે અરીહ વા' હે મદન્ત અસ્તિ खलु તસ્યા સમાયા મરતે વપે અગિ- રિતિ વા અરિઃ સામાન્ય શત્રુઃ, 'વેરિણ્ણવા' વૈરિકઃ મૂષકમાર્જાર વજ્જાતિતઃ શત્રુ, 'વાહણ્ણ- હવા' ઘાતક इति વા ઘાતકઃ અન્યદ્વારા ઘાતકર્તા, 'વહણ્ણવા' વ્યથકઃ સ્વયં દનનકર્તા વ્યથક इतिચ્છાયા પક્ષે ચપેટાદિના વ્યથોત્પાદકઃ इति, 'પહિણીયણ્ણવા' પ્રત્યનીક इ- તિ વા પ્રત્યનીકઃ કાર્યવિઘાતકર્તા, 'પચ્ચામિત્તેણ્ણવા' પ્રત્યમિત્રમિતિ વા પ્રત્યમિત્રમ્ યઃ પૂ- ર્વ મિત્રત્વમુપગતઃ પશ્ચાદમિત્રત્વમુપગચ્છતીતિ સઃ, યદ્વા-અમિત્ર સહાયક इति ? મગવાના- હ-'ગોયમા ણો ઇણ્ણદ્દે સમદ્દે' હે ગૌતમ નો અયમર્થઃ સમર્થઃ યતો 'સમણાડમો' હે મા- યુષ્મન્ શ્રમણ' 'તે ણં મણુયા વવગયવેરાણુસયા' તે खलु મનુનાઃ વ્યપગત વૈરાણુગયાઃ- વ્યપગતો વૈરાણુગયઃ દ્રેપાણુવન્ધો યેભ્યસ્તે તથાભૂતાઃ 'પણ્ણત્તા' પ્રજ્ઞસા इति । તસ્મિન્

તિવ્વે પેમવંધને સમુપજ્જહ" હા ગૌતમ ! યહ સવ વહા પર હોતા હૈ પરન્તુ ડન મનુષ્ય કા ડનમં તીવ્ર પ્રેમ વંધન ઉત્પન્ન નહીં હોતા હૈ । "અત્થિ ણ મતે । મરહે વાસે અરોહ વા વેરિણ્ણ વા ઘા- હણ્ણ વા, વહણ્ણ વા, પહિણીયણ્ણ વા, પચ્ચામિત્તેણ્ણ વા" અવ ગૌતમ પ્રમુ સે એમા પૂછને હૈ -હે મ- દન્ત ! ડસ કાલ મેં મરતક્ષેત્ર મેં ક્યા કોઈ કિસી કા શત્રુ હોતા હૈ ? મૂષક-માર્જાર કી તરહ ક્યા જાતિ સે કોઈ કિસી કા વૈરી હોતા હૈ ? ક્યા કોઈ કિસી ના ઘાતકર્તા-અન્ય દ્વારા વથ કરને વાલા હોતા હૈ ? ક્યા કોઈ સ્વયં કિસી કો હત્યા કરને વાલા હોતા હૈ ? અથવા જવ "વહણ્ણ" કો સંસ્કૃત છાયા વ્યથક એસી હોગી-તવ ચપેટા આદિ દ્વારા ક્યા કોઈ કિસી કો વ્યથા ઉત્પન્ન કરને વાલા હોતા હૈ ? એસા ડસકા અર્થ હોગા ક્યા કોઈ કિસી કે કાર્ય કા વિઘાત કરને કે સ્વભાવ વાલા હોતા હૈ ? ક્યા કોઈ કિસી કા પ્રત્યમિત્ર હોતા હૈ ! અર્થાત્ પહિલે મિત્ર વનાકર વાદ મેં ક્યા કોઈ કિસી કા શત્રુ હોતા હૈ, ડસકે ઉત્તર મેં પ્રમુ કહતે હૈ "ગોયમા ણો ઇણ્ણદ્દે સમદ્દે" હે ગૌતમ ! યહ અર્થ સમર્થ નહીં હૈ ક્યોંકિ "વવગયવેરાણુસયા ણં તે મણુયા પળ્ણત્તા સમણાડમો"

છે:- "હૈતા અત્થિ ણોવ્વેવ ણં તેસિ મણુયાણં તિવ્વે પેમવન્ધને સમુપજ્જહ" હા, ગૌતમ ! આ સર્વ સંબંધો તે કાળમાં હોય છે પણ તે માણુસોને તે સંબંધોમાં તીવ્ર પ્રેમ ભાવ હોતો નથી અત્થિ ણં મંતે । મરહે વાસે અરિહ વા વેરિણ્ણવા વાહણ્ણ વા વહણ્ણ પહિણીયણ્ણ વા, પચ્ચામિત્તેણ્ણ વા" હવે ગૌતમ પ્રમુને આ જાતને પ્રશ્ન કરે છે કે હ મદન્ત । તે કાળમાં, મરત ક્ષેત્રમાં શુ કોઈ નો શત્રુ હોય છે ? મૂષક-માર્જાર ની જેમ શુ કોઈ પણ જા- તનું જાતીય વેર હોય છે ? કોઈ ઘાતકર્તા જીભ વડે વથકરાવનાર-હોય છે ? શુ પોતે કોઈની હત્યા કરનાર હોય છે ? અથવા જ્યારે 'વહણ્ણવા' શબ્દની સંસ્કૃત છાયા વ્યથક એવી થશે-ત્યારે અપહ વગેરે વડે શુ કોઈ કોઈ ને વ્યથા આપનાર હોય છે ? એવો એનો અર્થ થશે કોઈ કોઈ ના કાર્યમાં વિઘ્નકરવાના સ્વભાવવાળુ હોય છે ? શુ કોઈ કોઈની પ્રત્યમિત્ર હોય છે ? એટલે કે પહેલાં કોઈ કોઈ નો મિત્ર બનીને પછી તેનો શત્રુ થઇ જાય છે તેવા એના જવાબમાં પ્રમુ કહે છે 'જો ઇણ્ણદ્દે સમદ્દે' હે ગૌતમ ! આ અર્થ સમર્થ

કાલે વૈરાનુબન્ધ કારણાભાવાદરિપ્રભૃતયો નાગન્નિતિ ભાવઃ । પુનર્ગૌતમસ્વામી પૃચ્છતિ-‘અત્થિ
 ણં મતે ! મરહે વાસે મિત્તાઈ વા, વયમાઈ વા, ણાયપ્પઈ વા, સંઘાહિપ્પઈ
 વા, મિત્ત સ્નેહી ‘વયંસાહવા’ વયસ્ય ઇતિ વા । વયસ્યઃ સમાનવયસ્કોઽતિશયસ્ને-
 હવાન્, ‘ણાયપ્પઈ વા’ જ્ઞાતક ઇતિ વા ! જ્ઞાતકઃ સ્વજ્ઞાતીયઃ, યદ્વા-એકત્ર સંવાસાદિના
 પરિચિતઃ ‘સંઘાહિપ્પઈ વા’ સઘાટિક ઇતિ વા !, સઘાટિકઃ સહચરઃ, ‘સદ્દાઈ વા’ સસા સ
 મપ્રાણઃ ‘સમપ્રાણ સસામતઃ’ ઇત્યભિધાનાત્ મદ્દાસનપાનશીલઃ સાતિશયસ્નેહીત્યર્થઃ,
 ‘સુહીઈ વા’ સુહૃદિતિ વા ! સુહૃત સકલ કાલમપ્રતિકૂલો હિતોપદેશદાયકચ્ચેતિ, ‘સગ
 પ્પત્તિ વા’ સાઙ્ગતિક ઇતિ વા ? સાઙ્ગતિકઃ સમાનકાર્યશીલત્વેનૈકત્રસગમનશીલ ઇતિ ।
 મગવાનાહ-‘હતા અત્થિ !’ હત ! ગૌતમ ! અસ્તિ મિત્ત્રાદિપુ પ્રત્યેકમ્, ચ પુનઃ ‘જો’
 નૈવ ‘તેમિ’ તેપા પરસ્પર ‘તિવ્વે’ ત્રીં સાતિશય ‘રાગવન્ધણે’ રાગવન્ધનં પ્રેમવન્ધઃ ‘સમુ
 પ્પજ્જઈ’ સમુત્પદ્યતે ॥ સૂ. ૦ ૨૮ ॥

હે શ્રમણ આયુષ્મન્ ! વે મનુષ્ય વૈરાનુબન્ધ સે દૂર રહે હુમ્મ હોતે હૈ । ડસકા કારણ યહ હૈ કે
 ડગકાલ મે વૈરાનુબન્ધ કે કારણો કા અભાવ રહતા હૈ અન વહા અરિ આદિ કોઈ કિમી કા
 નહીં હોતા હૈ । ‘અત્થિ ણ મતે ! મરહે વાસે મિત્તાઈ વા, વયમાઈ વા, ણાયપ્પઈ વા, સંઘાહિપ્પઈ
 વા, સદ્દાઈ વા, સુહીઈ વા, સગપ્પત્તિ વા’ હૈ મદન્ન । ડમ કાલ મેં ડસ મરતક્ષેત્ર મે કય કોઈ
 સ્નેહી હોરા હૈ । કયા કોઈ વયસ્ય-સમાન વયવાઠં કે સાથ સ્નેહ રક્ષને વાળા સાથી હોતા હૈ ? કયા
 કોઈ સ્વજાતિય હોતા હૈ । અથવા ણક જગદ રહને આદિ સે કયા કોઈ પરિચિત-પરિચયવાળા
 વન્ધુ હોતા હૈ ? કયા કોઈ સઘાટિક મહચર-માથ સાથ રહનેવાળા હોતા હૈ ? કયા કોઈ સસા
 ‘સમપ્રાણ રસામત’ કે અનુસાર સમાન પ્રાણો વાળા હોતા હૈ સાથ ડઠને વૈઠને વાળા સાથ
 વાનેપીને વાળા જો સાતિશય સ્નેહા હોતા હૈ ડસે સસા કહા ગયા હૈ, કયા કોઈ સુહૃદ, સર્વદા
 અપ્રતિકૂળચરણ વાળા ઔર હિતોપદેશ દેનેવાળા હોતા હૈ ? કયા કોઈ સાઙ્ગતિક હોતા હૈ-
 સદા કિસા એક હી કાર્ય મે લગા રહને વાળા હોતા હૈ ? ડસકે ઉત્તર મેં પ્રમુ કહતે હૈ ‘હતા,

નથી કેનકે ‘વચ્ચગ્ગ વૈરાણસયા ણ તે મણુયા પ્પણ્ણત્તા સમણાહસો, હે શ્રમણ આયુષ્મન !-તે
 મનુષ્યો વૈરાનુબન્ધથી પર હોય છે એનું કારણ આ છે કે તે કાળમાં વૈરાનુબન્ધના કારણોનો
 અભાવ રહે છે એથી ત્યાં કોઈ કોઈ નુ અરી વગરે થતું જ નથી ‘અત્થિ ણં મતે ! મરહે
 વાસે । મિત્તાઈ વા, વયસાઈ વા, ણાયપ્પઈ વા, સંઘાહિપ્પઈ વા, સદ્દાઈ વા, સુહીઈ વા, સગપ્પત્તિ
 વા’ હે મદન્ત ! તે કાળમાં આ ભગ્ત ક્ષેત્રમાં શુ કોઈ સ્નેહી હોય છે ? શુ કોઈ વયસ્ય
 સમાન વયવાળાઓની સાથે સ્નેહ રાખનાર સાથી-હોય છે ? શુ કોઈ સ્વજાતીય હોય છે ?
 અથવા શુ કોઈ સઘટિક-સહચર-સાથે રહેનાર હોય છે ? અથવા શુ કોઈ સસા ‘સમ
 પ્રાણ સસામતઃ’ એકત્રન સુખ સમાન પ્રાણવાળો હોય છે ? સાથે રહેનાર, સાથે ખાનાર
 પીનાર જે સાતિશય સ્નેહી હોય છે, તેને સખા કહેવામાં આવે છે, શુ કોઈ સુહૃદ સર્વદા
 અપ્રતિકૂળચરણ વાળો અને હિતોપદેશ આપનાર હોય છે ? શુ કોઈ સાઙ્ગતિક હોય છે ? શુ
 સર્વદા એકજ કાર્યમાં પ્રવૃત્ત રહેનાર હોય છે ? એના જવાબમાં પ્રમુ કહે છે ‘હતા !

मूलम्—अत्थि णं भंते तीसे ममाए भरहे वासे आवाहाइ वा वीवाहाइ वा जण्णाइ वा सद्धाइ वा थालीपागाइ वा मियपिंडनिवेयणाइ वा ? णां इणट्टे समट्टे, ववगय आवाह वीवाह जण्ण सद्ध थालीपागमियपिंडनिवेयणा णं ते मणुया पण्णत्ता समणाउमो ! अत्थि णं भंते तीसे ममाए भरहे वासे इंदमहाइ वा खंदमहाइ वा णागमहाइ वा जक्खमहाइ वा भूयमहाइ वा अंगडमहाइ वा तडागमहाइ वा दहमहाइ वा णदीमहाइ वा रुक्खमहाइ वा पव्वयमहाइ वा थूममहाइ वा चेइयमहाइ वा ? णो इणट्टे समट्टे, ववगय-महिमा णं ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो ! अत्थि णं भंते ! तीसे ममाए भरहे वासे णट्टपेच्छाइ वा जल्लपेच्छाइ वा मल्लपेच्छाइ वा मुट्ठियपेच्छाइ वा वेलंबगपेच्छाइ वा कहगपेच्छाइ वा पवंगपेच्छाइ वा लासगपेच्छाइ वा ? णो इणट्टे समट्टे, ववगयकोउहल्लो णं ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो ! ॥सू० २९॥

छाया—अस्ति खलु भदन्त तस्यां समाया भरते वर्षे आवाह इति वा विवाह इति वा यज्ञ इति वा आद्यमिति वा स्थालीपाक इति वा मृतपिण्डनिवेदनम् इति वा नो अयमर्थः समर्थः, व्यपगतः ॥ ५ ॥ आहविवाहयज्ञआद्यस्थालीपाकमृतपिण्डनिवेदनाः खलु ते मनुजाः प्रज्ञताः अमणायुष्मन् अस्ति खलु भदन्त तस्यां समायां भरते वर्षे इन्द्रमह इति वा स्कन्द मह इति वा नागमह इति वा यक्षमह इति वा भूतमह इति वा अवटमह इति वा तडागमह इति वा इंदमह इति वा नदीमह इति वा वृक्षमह इति वा पर्वतमह इति वा स्तूपमह इति वा चैत्यमह इति वा नो अयमर्थः समर्थः, व्यपगतमहिमाः खलु ते मनुजाः प्रज्ञता अमणायुष्मन् अस्ति खलु भदन्त तस्यां समायां भरते वर्षे नटप्रेक्षेति वा नाट्यप्रेक्षेति वा बल्लप्रेक्षेति वा मल्लप्रेक्षेति वा मौष्टिकप्रेक्षेति वा विडम्बकप्रेक्षेति वा कथक प्रेक्षेति वा प्लवकप्रेक्षेति वा लासकप्रेक्षेति वा नो अयमर्थः समर्थः व्यपगतकौतुहलाः खलु ते मनुजाः प्रज्ञता अमणायुष्मन् ॥सू० २७॥

॥ टीका—अत्थि णं भंते ?' इत्यादि ।

गौतम स्वामी पृच्छति—‘अत्थि णं भंते ! तीसे ममाए भरहे वासे आवाहाइ वा’ हे भ-अत्थि” हा गौतम । ये सब वहा होते तो है परन्तु “णो चेव ण तेसि मणुयाणं तिब्बे रागबन्धणे समुप्पज्जइ” आपस में कोई किसी के साथ सातिश तोत्र प्रेमबन्धन से बंधा हुआ नहीं होता है ॥२८

अत्थि” हा, गौतम । आ अथु त्या होय छे पयु “णो चेव ण तेसि मणुयाणं तिब्बे राग-बन्धणे समुप्पज्जइ परस्पर कोस कोसनी साथे सतिशय-तीन-प्रेममन्धन भा आमद्ध रडेतु नथी, ॥२८॥ ।

દન્ત અસ્તિ खलु तस्यां समायां भरते वर्षे आवाह इति वा ? आवाहः विवाहात् पूर्व क्रियमाणो वाग्दानरूप 'उत्सवनिशेषः, वीवाहाइ वा' विवाह इति वा ? विवाहः-प्रसिद्धः, 'जण्णाइ वा' यज्ञ इति वा ! यज्ञःवल्लौ घृतादिहवनलक्षणः, 'सद्धाइ वा' श्राद्धमिति वा ? श्राद्धं मृतक क्रिया । 'थालीपागाइ वा' स्थालीपाक इति वा ? स्थालीपाकः-लोकगम्यो मृतकक्रियाविशेष एव, 'मियपिण्डनिवेयणाइ वा' मृतपिण्डनिवेदनमिति वा ? , मृतपिण्डनिवेदनम् मृतमुद्दिश्य पिण्डप्रदानम् ? भगवानाह—'णो इणट्ठे समट्ठे' नो अयमर्थः समर्थः यतो 'समणा उसो , हे आयुप्पम् अमण' 'तेण मणुया' ते मनुजाः खलु 'ववगय आवाहवीवाह जण्ण सद्ध थालीपागमियपिण्डनिवेयणा' व्यपगताऽऽवाहविवाहयज्ञश्राद्धस्थालीपाकमृतपिण्डनिवेदनः-व्यपगतानि आवाहविवाह यज्ञश्राद्ध स्थालीपाकमृतपिण्डनिवेदनानि येभ्यस्ते तथा भूताः 'पण्णत्ता' प्रज्ञप्ताः । न तत्रावाहविवाहादिकं वर्त्तते इति भावः । पुनर्गौतमस्वामी पृच्छति—'अत्थिण भते ! तीसे समाए भरहे वासे इंदमहाइ वा' हे भदन्त अस्ति खलु तस्यां समायां भरते वर्षे इन्द्रमह इति वा' इन्द्रमहः इन्द्रनिमित्तक उत्सवः, 'खंदमहाइ' वा स्क-

“अत्थि णं भते ! तीसे समाए भरहे वासे आवाहाइ वा वीवाहाइ” इत्यादि

टीકાર્થ—ગૌતમ સ્વામી ને પુનઃ પ્રશ્ન સે એસા પૂછા હૈ હે ભદન્તા! ઉસ સુષમ સુષમા કાલ કે સમય હસ ભરત ક્ષેત્ર મેં આવાહ વિવાહ હોને કે પહિલે હોનેવાલા વાદ્ધાન રૂપ ઉત્સવ વિશેષ હોતા હૈ કયા ? વિવાહ પરિણયન રૂપ ઉત્સવ વિશેષ હોતા હૈ કયા ? યજ્ઞ અગ્નિ મેં ઘૃતાદિ કે હવન કરને રૂપ ઉત્સવ વિશેષ હોતા હૈ કયા ? શ્રાદ્ધ મરણ કે વાદ પક્તિભોજન આદિ રૂપ ક્રિયા હોતી હૈ કયા ? સ્થાલીપાક લોક ગમ્ય મૃતક ક્રિયા વિશેષ હોતા હૈ કયા ? મૃતપિણ્ડનિવેદન મૃતક કો લક્ષ્ય કરકે પિણ્ડદાન કરના હોતા હૈ કયા ? હસકે ઉત્તર મેં પ્રશ્ન કહતે હૈં કે “જો ઇણટ્ઠે સમટ્ઠે” હે ગૌતમ યહ અર્થ સમર્થ નહો હૈ ક્યોંકિ “વવગયા આવાહ વિવાહ જણ્ણ સદ્ધ થાલી પાગ મિય પિણ્ડ ણિવેયણા જ તે મણુયા પણ્ણત્તા” હે ઉસ કાલ કે મનુષ્ય આવાહ, વિવાહ, યજ્ઞ, શ્રાદ્ધ, સ્થાલીપાક ઔર મૃત પિણ્ડ નિવેદન હન સબ સે રહિત હોતે હૈ અર્થાત્ ઉસ કાલ મેં આવાહ આદિ ક્રિયાઈ નહોં હોતી હૈ । “અત્થિ ણં ભતે ! તીસે સમાએ, ભરહે વાસે હંદમહાઈ વા સદમહાઈ વા જાગમહાઈ વા જક્કસ

અત્થિ ણં ભતે તીસે સમાએ ભરહે વાસે આવાહાઈ વા વીવાહાઈ વા—ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—ગૌતમ સ્વામીએ પ્રશ્નને ફરીથી આમ પ્રશ્ન કર્યો કે હે ભદન્તા! તે સુષમ સુષમા કાળના સમય માં આ ભરત ક્ષેત્રમાં આવાહ-વિવાહ પહેલાંનો વાગ્દાન રૂપ ઉત્સવ વિશેષ હોય છે ? વિવાહ પરિણયન રૂપ ઉત્સવ વિશેષ હોય છે ? યજ્ઞ-અગ્નિમાં ઘૃતાદિકથી હવન કરવા રૂપ ઉત્સવ વિશેષ હોય છે ? શ્રાદ્ધ-મૃત્યુ પછી પક્તિભોજન આદિ રૂપ ક્રિયા-હોય છે ? સ્થાલીપાક-લોકગમ્ય મૃતક ક્રિયા વિશેષ હોય છે ? મૃતપિણ્ડનિવેદન-મૃતકને અનુલક્ષીને પિણ્ડદાન નામક કરવામાં આવેલ ક્રિયા વિશેષ હોય છે ? એના જવાબમાં પ્રશ્નકહે છે “જો ઇણટ્ઠે ટ્ઠે” હે ગૌતમ ! આ અર્થ સમર્થ નથી કેમકે “વવગય આવાહ વિવાહ જણ્ણ સદ્ધથાલીપાગ મિય પિણ્ડ ણિવેયણા જ તે મણુયા પણ્ણત્તા” તે કાળના મનુષ્યો આવાહ, વિવાહ, યજ્ઞ, શ્રાદ્ધ સ્થાલીપાક અને મૃતપિણ્ડ નિવેદન એ સર્વ ક્રિયાઓથી રહિત હોય છે એટલે કે તે કાળમાં આવાહ વગરે સર્વ ક્રિયાઓ થતી નથી ? “અત્થિ ણં ભતે તીસે તપ ભરહે વાસે હંદ

न्दमह इति वा स्कन्दमहः कार्तिकेयनिमित्तक उत्सवः 'णागमहाइ' वा नागमह इति वा? नागमह नागो भवनपतिविशेषः तन्निमित्तक उत्सवः 'जक्खमहाइ' वा यक्षमह इति वा? यक्षमहः यक्षनिमित्तक उत्सवः 'भूममहाइ वा' भूतमह इति वा भूतमह भूतनिमित्तक उत्सवः यक्षभूतौ व्यन्तरदेवविशेषौ 'अगडमहाइवा' अवटमह इति वा 'अवटमहः कूपोत्सव 'तडागमहाइवा' तडागमह इति वा तडागमहः सरोनिमित्तक उत्सवः 'दहमहाइवा' हृदमह इति वा हृदमहः हृदनिमित्तक उत्सवः 'णदीमहाइ वा' नदीमह इति वा नदीमहः नदीमुद्दिश्य क्रियमाण उत्सवः, 'रुक्खमहाइ वा' वृक्षमह इति वा वृक्षमहः वृक्षमुद्दिश्य क्रियमाण उत्सवः 'पव्वयमहाइ वा' पर्वतमह इति वा पर्वतमहः पर्वतोद्देशेन क्रियमाण उत्सवः 'थूममहाइ वा' स्तूपमह इति वा स्तूपः स्मृतिस्तम्भः तन्निमित्तक उत्सवः 'चेइयमहाइ वा' चैत्यमह इति वा चैत्यनिमित्तक उत्सवश्चैत्यमह इत्युच्यते चैत्यः मृतक स्मृति चिह्न चैत्यमिति । इत्थं गौतमेन पृष्ठो भगवानाह—'णो इणट्ठे समट्ठे' नो अयमर्थः समर्थः यतो 'समणा उसो' हे आयुष्मन् श्रमण 'ते णं मणुया ववगयमहिमा' ते खलु मनुजाः व्यपगतमहिमानः व्यपगतो म

महाइ वा भूममहाइ वा, अगडमहाइ वा, तडागमहाइ वा दहमहाइ वा णईमहाई वा, रुक्खमहाइ वा, पव्वयमहाइ वा थूममहाइ वा चेइयमहाइ वा ' हे भदन्त ! क्या उस सुषम सुषमा काल के समय इस भरत क्षेत्र में इन्द्र को निमित्त करके महोत्सव किये जाते हैं ? कार्तिकेय को लक्ष्य करके महोत्सव किये जाते हैं ? नागकुमार को लक्ष्य करके महोत्सव किये जाते हैं ? यक्ष के निमित्त करके महोत्सव किये जाते हैं ? भूत को निमित्त करके उत्सव किये जाते हैं ? यक्ष और भूत ये व्यन्तर जातिके देव हैं । कुओं कूपों को निमित्त करके उत्सव किये जाते हैं तडाग को निमित्त करके उत्सव किये जाते हैं ? इसी प्रकार से द्रव्य को नदी को वृक्ष को पर्वत को स्तूप को स्मृतिस्तम्भ को एवं चैत्य को मृतक स्मृति चिह्न को लक्ष्य करके उत्सव किये जाते हैं ? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु कहते हैं "णो इणट्ठे समट्ठे" हे गौतम यह अर्थ समर्थ नहीं है क्योंकि "ववगय महिमा णं ते मणुया पणत्ता समणाउसो" हे श्रवण आयुष्मन् वे उस काल के मनुष्य जिसको हर

महाइ वा खईमहाइ वा नागमहाइ वा जक्खमहाइ वा भूममहाइ वा, अगडमहाइ वा तडागमहाइ वा, दहमहाइ वा णदीमहाइ वा रुक्ख महाइ वा पव्वयमहाइ वा थूम महाइ वा चेइयमहाइ वा ? हे भदन्त ! शु ते सुषमसुषमा कालना समयमा आ भरतक्षेत्रमा इन्द्रना निमित्त उत्सवे। योज्जवामा आवे छे ? कार्तिकेयने अनुवक्षी ने महोत्सवे। योज्जवामा आवे छे ? नाग कुमारने अनुवक्षीने महोत्सवे। योज्जवामा आवे छे ? यक्षना निमित्त महोत्सवे। योज्जवामा आवे छे ? भूताना निमित्त उत्सवे। योज्जवामा आवे छे । भूत जे वानर जातिना देवे छे, कूपाना निमित्त उत्सवे। योज्जवामा आवे छे ? तडाग-तणावे-ना निमित्त उत्सवे। योज्जवामा आवे छे ? आ प्रभाण्णे द्रवने, नदीने, वृक्षने, पर्वतने, स्तूपकेने, स्मृतिस्तम्भेने तेभज्ज चैत्यने मृतकस्मृतिचिह्नेने अनुवक्षीने उत्सवे। योज्जवामा आवे छे ? आ प्रश्नना उत्तरमा प्रभु कहे छे 'णो इणट्ठे समट्ठे' हे गौतम आ अर्थ समर्थ नहीं, केभके 'वव महिमाण्णे ते मणुया पणत्ता स उसो' हे श्रमण आयुष्मन् ! ते कालमा मनुष्यो जेवा

હિમા માહાત્મ્યં ચેભ્યસ્તે તથાભૂતઃ 'પણ્ણત્તા' પ્રજ્ઞપ્તાઃ । પુનર્ગૌતમસ્વામી પૃચ્છતિ 'અત્થિણં મંતે તીસે સમાપ્પ ભરહે વામે ણહપેચ્છાઈ વા' હે ભદન્ત અસ્મિ સ્વલુ તસ્યાં સમાયાં ભરતે વર્ષે નટ પ્રેક્ષેતિ વા નટપ્રેક્ષા નટાનાં ક્રીડાકારિણાં પ્રેક્ષા નટકૃત કૌતુક દર્શનાય જનમેલક इत्यर्थः 'નટ્ટપેચ્છાઈ' નાટ્યપ્રેક્ષેતિ વા નાટ્યપ્રેક્ષા નાટ્ય નટકર્મ અભિનયઃ નદર્શનાય જનમેલક इति 'જલ્લપેચ્છાઈ વા' જલ્લ પ્રેક્ષિત જલ્લપ્રેક્ષા જલ્લઃ વરત્ર ચેલકાઃ તત્કૃતકૌતુકદર્શનાય સમ્મિલિતો જનસમુદાય इत्यर्थः 'મલ્લપેચ્છાઈ વા' મલ્લપ્રેક્ષેતિ વા મલ્લાઃ મુજાભ્યાં યુદ્ધકારકઃ તત્કૃતવાહુ યુદ્ધદર્શનાય સમુદિતા જના इत्यર્થઃ । 'મુદ્ધિયપેચ્છાઈ વા' મૌઘિક પ્રેક્ષેતિ વા મૌઘિકાઃ મુદ્ધિભિર્યુદ્ધકારકા મલ્લઃ તત્કૃતકૌતુક દર્શનાય સમ્મિલિતો જનસમૂહ इत्यર્થઃ । 'કહ્ગપેચ્છાઈ વા' કથક પ્રેક્ષેતિ કથકપ્રેક્ષા-કથકાઃ-કથાકારિણઃ યે હિ સુલલિતકથાવાચનેન શ્રોતૃજનાનાં હૃદિ રસમુત્પાદયન્તિ તત્કૃત કથા શ્રવણાય સમાગતો જનસમુદાયइति 'પવગપેચ્છાઈ વા' પ્લવક પ્રેક્ષેતિ વા પ્લવકપ્રેક્ષાઃ-પ્લવકા ઉત્પ્લુત્ય ચે ગર્તા-

પ્રકાર કે ઉત્સવ કરને કો ભાવના દૂર રહા કરતી હૈ એસે હી હોતે હૈ । "અત્થિ ણ મંતે તીસે સમાપ્પ ભરહે વાસે ણહપેચ્છાઈ વા ણટ્ટપેચ્છાઈ વા, જલ્લપેચ્છાઈ વા, મલ્લપેચ્છાઈ વા મુદ્ધિયપેચ્છાઈ વા વેલંગપેચ્છાઈ વા કહ્ગપેચ્છાઈ વા પવગપેચ્છાઈ વા લાસગપેચ્છાઈ વા" હે ભદન્ત ઉસ સુપમ સુપમા કાલ કે સમય મેં ભરત ક્ષેત્ર મેં કયા નટોં કે ચેલ તમાશો કે દેક્ષને કે લિયે મનુષ્યોં કે મેલે હોતે હૈ । નાટ્ય-નટ કર્મ અભિનય આદિ કો દેક્ષને કે લિયે મનુષ્ય કે મેલે હોતે હૈં કયા ? જલ્લ વર્ત પર નાના પ્રકાર કે ચેલ તમાશે દિસાને વાલોં કે કૌતુકો કો દેક્ષને કે લિયે મનુષ્યોં કે મેલે હોતે હૈ કયા ? અર્થાત્ વહાં મનુષ્ય એકત્રિત હોતે હૈ કયા ? મલ્લો દ્વારા કિયે ગયે વાહુયુદ્ધ કો દેક્ષને કે લિયે મનુષ્ય એકત્રિત હોતે હૈં કયા ? મનુષ્ય દ્વારા યુદ્ધ કરને વાલે મલ્લજનોં કે કૌતુકો કો દેક્ષને કે લિયે મનુષ્ય એકત્રિત હોતે હૈ કયા ? મુક્ષવિકાર આદિ દ્વારા મનુષ્યોં કો હસાને વાલે વિદૂષક જન કે કૌતુક કો દેક્ષને કે લિયે મનુષ્ય એકત્રિત હોતે હૈં કયા ? તથા સુલલિત કથા કે વાચને સે શ્રોતા જનોં કે હૃદય મે રસ ઉત્પન્ન કરાને વાલે કથક પુરુષોં કે દ્વારા વાચી ગઈ કથા કો સુનને કે લિયે મનુષ્ય એકત્રિત હોતે હૈ કયા ? તથા પ્લવકજનોં કે સઢ્ઢે આદિ કો લાંબકર

હોય છે કે કરેકે જાતના ઉત્સવો । યોજવાની ભાવનાઓથી તેઓ દૂર રહે છે 'અત્થિ ણ મંતે તીસે સમાપ્પ ભરહે વાસે ણહ પેચ્છાઈ વા ણટ્ટપેચ્છાઈ વા જલ્લપેચ્છાઈ વા મલ્લપેચ્છાઈ વા મુદ્ધિપેચ્છાઈ વા વેલંગ પેચ્છાઈ વા કહ્ગ પેચ્છાઈ વા પવગ પેચ્છાઈ વા લાસગ પેચ્છાઈ વા' હે ભદન્ત, તે સુષમ સુષમા કાળના સમયમા ભરત ક્ષેત્રમા શું નટોના ખેલ તમાશાઓને જોવા મનુષ્યોના ટોળાઓ એકત્ર થાય છે ? નાટ્ય-નાટકના અભિનય વિગેરેને જોવા માટે મનુષ્યો એકઠા થાય છે ? જલ્લ-વર્ત પર અનેકે જાતનાં ખેલ તમાશાઓ જાતાવનારાઓના કૌતુકોને જોવા માટે મનુષ્યોના ટોળાઓ એકત્ર થાય છે ? એટલે કે ત્યાં માણસો એકત્રિત થાય છે ? મલ્લો વડે કરવામા આવેલ ખાહુ યુદ્ધોને જોવા માટે માણસો એકત્રિત થાય છે । મુદ્ધિઓ વડે યુદ્ધ કરનારા મલ્લો ના કૌતુકો ને જોવા માટે માણસો એકત્રિત થાય છે ? તેમના સુલલિત કથાના વાચનથી શ્રોતાઓના હૃદયોમા રસ ઉત્પન્ન કરા-

દિક લઙ્ઘ્યન્તિને ગત્તાદિલઙ્ઘનકારિણ इत्यर्थः अथवा ये अन्यजनानुत्तरणी यामति विशालां नदीम् उत्तरन्ति ते प्लवकाः तत्कृतकौतुकदर्शनाय सम्मिलितो जनसमूह इत्यर्थः । 'लासकपेच्छा इ वा' लासकप्रेक्षेति वा लासकप्रेक्षा—लासाकाः लास्य नामकनृत्यविशेषकारिणः तत्कृतलास्य नृत्यप्रेक्षणाय समागतो जनसमुदाय इति । इत्थं गौतमेन पृष्ठो भगवानाह—'णो इण्ठे समट्ठे' नो अयमर्थः समर्थः यतो 'समणाउसो' हे आयुष्मन् श्रमण 'ववगय कोउ हल्लणं ते मणुया ते मज्झाः खल्ल व्यपगतकौतुहलाः—व्यपगतं कौतुहलं गेभ्यस्ते तथा भूताः 'पण्णत्ता' प्रज्ञप्ताः इति ॥ २९ ॥

મૂલમ્—અત્થિ ણં મંતે ! તીસે સમાએ ભરહે વાસે સગડાઈ વા રહા-
ઈવા જાણાઈ વા ગિલીઈ વા થિલીઈવા સીયાઈ વા સંદમાણિયાઈ વા
ણો ઇણઢે સમઢે પાયચારવિહારા ણં તે મણુયા પણ્ણત્તા સમણાઉસો !
અત્થિ ણં મંતે ! તીસે સમાએ ભરહે વાસે ગાવીઈ વા મહિસીઈ વા
આયાઈ વા એલગાઈ વા ? હંતા અત્થિ, ણો ચેવ ણં તેસિં મણુયાણં
પરિભોગત્તાએ હવ્વમાગચ્છંતિ । અત્થિ ણં મંતે ! તીસે સમાએ ભરહે
વાસે આસાઈ વા હત્થિઈ વા, ઉઢાઈ વા ગોણાઈ વા ગવયાઈ વા
અયાઈ વો એલગાઈ વા પસયાઈ વા મિયાઈ વા વરાહાઈ વા રુરુત્તિ વા

उसके पार पहुंच जाने वाले अथवा दूसरे जन जिस नदी को पार नहीं कर सके ऐसी अतिवि-
शाल नदी को पार करने वाले मनुष्यों के द्वारा किये गये कौतुक को देखने के लिये मनुष्य एक-
त्रित होते हैं क्या ? लासक जनों के लास्यनामक नृत्य विशेष को करने वाले मनुष्यों के उस
लास्य नृत्यविशेष को देखने के लिये मनुष्य एकत्रित होते हैं क्या ? इस प्रकार से गौतम । के
पृष्ठे पर प्रसु उनसे कहते हैं "णो इण्ठे समट्ठे ववगय कोउहल्लणं ते मणुया पण्णत्ता समणा-
उसो" हे गौतम यह अर्थ समर्थ नहीं है क्योंकि जिनके चित्त में इस प्रकार के कौतुक देखने
का भाव सर्वथा दूर हो गया है ऐसे ह। वे मनुष्य वहां के होते हैं ऐसा शास्त्रों में सिद्धान्तका
रोंने कहा है ॥ २९ ॥

વનારા કથક પુરુષો વઢે કહેવામાં આવેલ કથાને સાંભળવા માટે માણસો એકત્રિત થાય છે ?
તેમજ પ્લવક જનોના—ખાસચો વગેરેને યોગીની તેની બીજીતરફ પહોંચનારા અથવા બીજા
મનુષ્યો જે નદીને પાર કરી શકે નહીં એટલે કે આકાંક્ષી બીજે કાંઠે જઈ શકે નહિ
એવી અતિ વિશાલ નદીને પાર કરનારા માણસોના કૌતુકોને જોવા માટે શું માણસો એકત્રિત
થાય છે ? આ પ્રમાણે ગૌતમ નો પ્રશ્ન સાંભળીને પ્રજા તેને જવાબ આપતા કહે છે કે 'જો
ઇણઢે સમઢે વવગય કોઉહલ્લા ણં તે મણુયા પણ્ણત્તા સમણાઉસો' હે ગૌતમ ! આ અર્થ
સમર્થ નથી, કેમકે જેમના ચિત્તમાંથી આ જાતનાં કૌતુકો જોવાનો ભાવ સંપૂર્ણ રીતે દૂર
થઈ ગયો છે એવા તે મનુષ્યો ત્યાં રહે છે એવું શાસ્ત્રોમાં સિદ્ધાન્તકારો એ કહ્યું છે ॥ ૨૯ ॥

सरभाइ वा चमराइ वा कुरंगाइ वा गोकण्णाइ वा ? हंता अत्थि, णो चेव णं तेसिं परिभोगत्ताए हव्व मागच्छंति । अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे सीहाइ वा वग्धाइ वा विगाइ वा दीवियाइ वा अच्छाइ वा तरच्छाइ वा सियालाइ वा विडालाइ वा सुणगाइ वा कोकंतियाइ वा कोलसुणगाइ वा ? हंता अत्थि, णो चेव णं तेसि मणुयाणं आवाहं वा वावाहं वा छविच्छेयं वा उप्पायेति पगइभइया णं ते मावयगणो पण्णत्ता समणाउसो ! अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे साली इ वा वीहीइ वा गोहुमाइ वा जवाइ वा जव जवाइ वा, कलोयाइ वा मयूराइ वा मुग्गाइ वा मोसाइ वा तिलाइ वा कुलत्थाइ वा णिप्फावाइ वा आलिसंदगाइ वा अयसीइ वा कुसुंभाइ वा कोदवाइ वा कंगुत्ति वा वरगाइ वा रालगाइ वा सणाइ वा सरिसवाइ वा मूलगवीयोइ ? हंता अत्थि णो चेव णं तेसिं म याणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ॥सू० ३०॥

छाया—सन्ति खलु भदन्त ! तस्या समायां भरते वर्षे शकटानीति वा रथा इति वा यानानीति वा युरयानोति वा गिल्ल्यइति वा थिल्ल्यइति वा शिविका इति वा स्यन्दमानिका इति वा ? नो अयमर्थः समर्थः, पादचारविहाराः खलु ते मनुजाः प्रवृत्ता भ्रमणायुष्मन् ! अस्ति खलु भदन्त ! तस्या समायां भरते वर्षे गाव इति महिष्य इति वा अजा इति वा पडका इति वा ? हन्त ! सन्ति, न चैव खलु तेषां मनुजानां परिभोग्यतया द्वयमागच्छन्ति । सन्ति खलु भदन्त ! तस्यां समायां भरते वर्षे अश्वा इति वा हस्तिन इति वा उष्ट्रा इति वा गाव इति वा गवया इति वा अजा इति वा पडका इति वा प्रश्नया इति वा मृगा इति वा वराहा इति वा रुक्ख इति वा शरमा इति वा चमरा इति वा कुरङ्गा इति वा गोकर्णा इति वा ? हन्त ! सन्ति नो चैव खलु तेषां परिभोग्यतया द्वयमागच्छन्ति । सन्ति खलु भदन्त ! तस्या समायां भरते वर्षे सिंह इति वा व्याघ्रा इति वा वृका इति वा द्वीपिका इति वा ऋक्षा इति वा तरक्षव इति वा शृगाला इति वा विडाला इति वा शुनका इति वा कोकन्तिका इति वा कोलशुनका इति वा ? हन्त ! सन्ति, नो चैव खलु तेषां मनुजानाम् आवाधां वा व्यावाधां वा छविच्छेदं वा उत्पादयन्ति, प्रकृतिभद्रकाः खलु ते श्वापदगणाः प्रवृत्ताः भ्रमणायुष्मन् ! अस्ति खलु भदन्त ! तस्यां समायां भरते वर्षे इति वा व्रीह्य इति वा गोधूमा इति वा यवा इति वा यवयवा इति वा कलाया इति वा मसूरा इति वा मुद्गा इति वा माषा इति वा तिला इति वा कुलत्था इति वा निष्पावा इति वा आलिसन्दका इति वा अस्स्य इति वा कुसुम्भा इति वा कोदवा इति वा

કજ્જ વા इति वा वरगा इति वा रालका इति वा शणा इति वा मर्यपा इति वा मूलक बीजानीति वा ' इन्त ' सन्ति नो चैव खलु तेषां मनुजाना परिभोग्यतया दृव्यमा गच्छन्ति सू ॥३०॥

ટીકા—‘અત્થિ ણં મંતે’ इत्यादि ।

ગૌતમ સ્વામી પૃચ્છતિ—‘અત્થિ ણં મંતે તીસે સમાપ્પ મરહે વાસે સગહાઙ્ગ વા’ હે મદન્ત સન્તિ કલ્લ તસ્યાં સમાયાં મરતે વર્ષે શકટાનિ इति वा शकटानि गन्त्री विशेषा: ‘રહાઙ્ગ વા’ રથા इति वा ‘રથા’ પ્રસિદ્ધા: ‘જાણાઙ્ગ વા’ યાનાનીતિ वा यानानि शकटरथातिरिक्ता गन्त्री विशेषा: ‘જુગ્ગાઙ્ગ વા’ યુગ્યાનીતિ’ वा युग्यानि पुरुषवाह्या यानविशेषा: જમ્પાનાનીત્યર્થ: ‘ગિલ્લીઙ્ગ વા’ ગિલ્લયતિ वा गिल्लय:—પુરુષદ્વયવાહ્યા: શિવિકા વિશેષા: ‘થિલ્લીઙ્ગ વા’ થિલ્લય इति वा थिल्लय: અશ્વદ્વયેન અશ્વતરદ્વયેન वा वाह्यानि यानानि ‘સીયાઙ્ગ વા’ શિવિકા इति वा शिविका:—પુરુષવાહ્યા યાનવિશેષા: પાલકીતિ પ્રસિદ્ધ: ‘સંદમાણિયાઙ્ગ વા’ સ્યન્દમાનિકા इति वा स्यन्दमानिका: શિવિકાવિશેષા મગવાનાહ ‘ણો ડણઢે સમઢે’નો અયમર્થ: સમર્થ: યત્તો ‘સમણાઙ્ગસો’ હે આયુઘ્મન્ શ્રમણ ‘પાયચાર વિહારા ણં તે મણુયા’ તે મનુજા:

“અત્થિ ણં મંતે તીસે સમાપ્પ મરહે વાસે સગહાઙ્ગ વા રહાઙ્ગ વા” इत्यादि ।

ટીકાર્થ—“અત્થિ ણં મંતે તીસે સમાપ્પ મરહે વાસે સગહાઙ્ગ વા રહાઙ્ગ વા” ગૌતમસ્વામી ને પ્રશ્ન સે એસા પૂછા હૈ હે મદન્ત કયા ઉસ સુખમ સુખમા કાલ કે સમય મેં મરત ક્ષેત્ર મેં શકટ સામાન્ય બૈલગાઢિયા હોતી હૈ, રથ હોતે હૈ, યાન શકટ એવ રથ સે અતિરિક્ત સવારી કી ગાઢિયા હોતી હૈં : યુગ્ય દો પુરુષ જિન્હેં અપને કપોં પર રલ્લકર ચલાતે હૈં એસી છોટી ૨ ઢોલિયા પાલકિયાં હોતી હૈં : ગિલ્લિયા દો પુરુષ જિન્હેં કન્ઘા દેકર ચલાતે હૈં એસી ઢોલિયોં કે આકારમાં કુલ ૨ બઢી શિવિકાપં હોતી હૈં કયા : થિલ્લિયાં દો બોઢે જિન મેં જોતે જાકર જિન્હેં લેંચતે હૈં અથવા દો સ્વચર જિનમેં જુતકર જિન્હેં લેંચતે હૈં એસી વિશેષ શિવિકાપં વાગ્ધિયા હોતી હૈં કયા : શિવિકાપં બઢી ૨ પાલકિયા જિન્હેં પુરુષ અપને કન્ઘો પર રલ્લકર સાથર ઉઠાકર ચલતે હૈં હોતી હૈં : સ્યન્દમાનિકાપં હોતી હૈં : ઇસકે ઉત્તર મેં પ્રશ્ન કહતે હૈં—હે ગૌતમ યહ અર્થ સમર્થ—શાસ્ત્રસંમત નહીં ક્યોંકિં વહા કે મનુષ્ય પાદચારી હી હોતે હૈં । અતઃ ઉન્હેં ન બૈલગાઢીયોં કી આવશ્યકતા

અત્થિ ણં મંતે તીસે સમાપ્પ મરહે વાસે સગહાઙ્ગ વા રહાઙ્ગ વા’ इत्यादि सूत्र ॥३०॥

ટીકાર્થ—ગૌતમે પ્રશ્નને આ બાતનેા પ્રશ્ન કર્યો કે હે મદન્ત શુ તે સુખમ સુખમા કાળના સમયમાં મરત ક્ષેત્રમાં શકટ સામાન્ય બળદ ગાડીઓ હોય છે ? રથો હોય છે ? યાનો શકટ તેમજ રથાતિરિક્ત સવારી ગાડીઓ હોય છે ? યુગ્યો બે માણસો જેમને પોતાના રક ધો પર મૂકીને ચાલે છે, એવી નાની નાની પાલખીઓ હોય છે ? ગિલ્લિયાઓ બે પુરુષો જેમને ખભા પર મૂકીને ચલાવે છે, એવી પાલખીઓ કરતાં મોટી શિવિકાઓ હોય છે ? થિલ્લિયા બે ઘોડાઓ અથવા બે અશ્વરોવાળી વિશેષ શિવિકાઓ બગીચો હોય છે ? શિવિકાઓ મોટી મોટી પાલખીઓ જેમને માણસો પોતાના ખભા બિપર મૂકીને ચાલે છે તે હોય છે ? સ્યન્દમાનિકાઓ હોય છે ? તેના જવાબમાં પ્રશ્ન કહે છે—હે ગૌતમ. આ અર્થ સમર્થ નથી. એટલે કે શાસ્ત્ર-સંમત નથી, કેમકે ત્યાંના માણસો પાદચારી જ હોય છે. એથી તેમને

खलु पादविहाराः पादाभ्यां चरणाभ्यां विहारो विचरणं येषां ते तथाभूताः—चरणचङ्क्रमण
शीला न तु शकटादि गामिनः ‘पण्णत्ता’ प्रज्ञप्ताः । पुन गौतमस्वामी पृच्छति—‘अत्थि
णं भंते तीसे समाए भरहे वासे गाविड वा’ हे भदन्त सन्ति खलु तस्यां समायां भरहे
वासे वा गावडतिवा गावो धेनवः ‘महिंसीइवा’ महिष्य इति वा, महिष्यः प्रसिद्धः ‘अया-
इवा’ अजा इति वा ‘अजाः छाग्यः’ ‘णलगाड वा’ एडका इति वा एडकाः उरभ्यूः । भग
वानाह—‘हंता अत्थि’ हन्त सन्ति ‘णो चेव णं’ नो चैव खलु ताः गावो महिष्योऽजा एडका
वा ‘तेसि मणुयाणं परिभोगत्ताए’ तेषा मनुजानां परिभोग्यतया ‘हव्वं हव्य=रुदाचिदपि
‘आगच्छंति’ आगच्छन्तीति । पुनगौतमस्वामी पृच्छति—‘अत्थि णं भंते ! तीसे समाए
भरहे वासे आसाड वा’ हे भदन्त ! सन्ति खलु तस्यां समाया भरते वपे अश्वा इति वा ?,
अश्वाः—प्रसिद्धाः, ‘हत्थीड वा, उट्टाड वा, गोणाड वा, गवयाड वा, अयाड वा एलगाड
वा पसयाड वा, मियाड वा, वराहाड वा, रुरुत्ति वा, सरभाड वा, चमराड वा, कुरगाड वा
गोकण्णाड वा’ हस्त्युष्ट्रगोगवयाजैडकप्रश्रय मृगवराहरुरुशरभचमरकुरङ्गगोकर्णा इति
वा ?, तत्र—हस्तिनःप्रसिद्धाः, उष्ट्राः—प्रसिद्धाः, गावो—वृषभाः, गवया =गोसजातीया-
वन्यपशवः, अजाः=छागाः, एडकाः=मेपाः, प्रश्रयाः=द्विखुरा वन्यपशु विशेषाः मृगाः=ह-
रिणाः, वराहाः=शकराः, रुरवो=मृगविशेषाः, शरभाः=अष्टापदाः, चमराः=आरण्या गावः,

रहतो है और न पालखो आदि की आवश्यकता ही रहती है हे भदन्त । उस सुषम सुषमा काल
क्री मौजूदगी में क्या गायें होती है ? भैंस होती है ? अजाएँ बकरियाँ होती है ? एडकाएँ भेड़ें
होती है ? इस के उत्तर में प्रभु कहते हैं हां गौतम ये सब जानवर तो होते हैं पर वे गाय आदि
पशु उन मनुष्यों के उपयोग में कमी नहीं आते हैं ।

अब पुन गौतमस्वामी प्रभु से पूछते हैं—हे भदन्त उस काल में इस भरत क्षेत्र में अश्व-
घोड़ा हस्ती—हाथी उष्ट्र—कैट गाय—गवय रोज अजा एडक पसय मृग विशेष मृग—वराह सुवर
रुरु मृगविशेष शरभ अष्टापद चमर चमरीगाय कुरङ्ग और गोकर्ण मृग विशेष ये सब जीव होते
हैं क्या ? उत्तर में प्रभु कहते हैं हे गौतम ये सब जीव उस काल में होते हैं, “नो चेव णं”
परन्तु ये उस समय के मनुष्यों के काम में कभी भी उपयुक्त नहीं होते हैं । पुनः गौतम स्वामी
प्रभु से पूछते हैं हे भदन्त । उस काल में इस भरत क्षेत्र में सिंह व्याघ्र वृक, मेढिया—द्वीपिका—

બળહ ગર્હીઓ, પાલખીઓ વગેરેની આવશ્યકતા રહેતી નથી. હે ભદન્ત ! તે સુષમા સુ-
ષમાકાળમાં ભરતક્ષેત્રમાં ગાયો હોય છે ? ભેંસો હોય છે ? અજાઓ—બકરીઓ—હોય છે ?
એડકાઓ—વેટીઓ—હોય છે ? એના જવાબમાં પ્રભુ કહે છે હા, ગૌતમ ! એ બધાં પ્રા-
ણીઓ હોય છે, પણ એ ગાય વગેરે પશુઓ માણસોને ઉપયોગમાં આવતા નથી.

હવે ફરી ગૌતમ સ્વામી પ્રભુને પ્રશ્ન કરે છે કે હે ભદન્ત ! તે કાળમાં ભરતક્ષેત્રમાં અશ્વ-
ઘોડા ? હસ્તી—હાથી ઉષ્ટ્ર—ઉટ્ટ, ગાય, ગવય. રોજ, અજા એડક. પસય—મૃગવિશેષ, મૃગ વરાહ-
સુવર રુદ્ર—મૃગવિશેષ, શરભ—અષ્ટાપદ, ચમર—ચમરી ગાય, કુરંગ અને ગોકર્ણ—મૃગવિશેષ એ
બધાં પ્રાણીઓ હોય છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે. હા, ગૌતમ ! એ સર્વ જીવો તે કાળમાં
હોય છે ‘જો ચેવ ણં’ પણ તે સમયના માણસોના ઉપયોગમાં કદાપિ આવતા નથી. ફરી
ગૌતમ પ્રભુને પ્રશ્ન કરે છે. હે ભદન્ત, તે કાળમાં, આ ભરત ક્ષેત્રમાં સિંહ વ્યાઘ્ર, વૃક—

કુરજ્ઞાઃ=મૃગવિશેષાઃ, ગોકર્ણાઃ=મૃગવિશેષાઃ ડતિ વા ? । મગવાનાહ-‘હતા અતિથિ’ દન્ત ! સન્તિ, ‘ળો ચેવ ણં’ નો ચેવ સ્વલુ તે અશ્વહસ્ત્યુપ્દ્રાદયઃ’ નેમિ પરિભોગનાપ્’ નેપા મનુજાનાં પરિભોગ્યતયા ‘હન્વમાગચ્છન્તિ’ કદાચિદપિ આગચ્છન્તિ ડતિ । પુનર્ગતમસ્વામી પૃચ્છતિ-‘અતિથિ ણં મતે ! તીસે સમાપ્ મરહે વાપે સીદાટ વા’ હે મદન્ત ! મન્તિ સ્વલુ તસ્યાં સમાયાં મરતે વર્ષ સિદ્ધા ડતિ વા । મિદ્ધા=કેશરિણઃ, ‘વગ્વાડવા’ વ્યાગ્રા ડતિ વા ?, વ્યાગ્રાઃ=શાર્દૂલાઃ, ‘વિગાહ વા. દોવિયાડ વા અચ્છાડવા તગ્ચાડ વા સિયાલાડ વા વિદાલાડવા સુળગાડવા કોકંતિયાડવા કોલમુળગાડ વા’ વૃક દ્રીપિક ત્વક્ષતરશ્ચુશ્રગાલ-વિદાલશુનકકોકન્તિક કોલશુનકા ડતિ વા?, તત્ર વૃકાઃ-‘મેડિય’ ડતિ પ્રસિદ્ધાઃ, દ્રીપિકાઃ વ્યાગ્રવિશેષા ચિત્રકા ઇતિ પ્રસિદ્ધાઃ. ઋક્ષાઃ-મલ્લકાઃ, તરશ્વઃ-મૃગાદનાઃ વ્યાગ્રવિશેષાઃ, શ્રુગાલાઃ પ્રસિદ્ધાઃ, વિદાલાઃ-માર્જારાઃ, શુનકાઃ-શ્વાનઃ, કોકન્તિકાઃ-‘લોમહી’ તિ માપા પ્રસિદ્ધાઃ, કોલશુનકાઃ-મદ્વાવરાદાઃ । મગવાનાહ-‘હતા અતિથિ’ દન્ત ! સન્તિ, ‘ળો ચેવ ણ તેસિ મળુયાળં આવાહવા’ નો ચેવ સ્વલુ તેપા મનુજાનામ્ આવાધામ્-ઈગદ્ધાધાવા ‘વાવાહવા’ વ્યાગધા-વિશેષેણ વાગ્રા વા, ‘છવિચ્છેદં-ચર્મોત્પાટનં વા’ ઉત્પાદયન્તિ ઉત્પાદયન્તિ-જનયન્તિ, યતો સમળાડસો ?’ હે આયુષ્મન્ શ્રમણ ! ‘તે સાવયગળા’-તે શ્વાપદગળાઃ-હિંસક પશુમહાઃ‘ળં’ સ્વલુ ‘પગઈ મહયા’ પ્રકૃતિ મદ્રકાઃ

વ્યાગ્રવિશેષ, ચિત્રક-ચિત્તા, ઋક્ષ-રીછ તરશ્ચ મૃગમક્ષા વ્યાગ્રવિશેષ શ્રુગાલ ગીટહ વિદાલ વિલાવ શુનક કુત્તા, કોકન્તિક લોમહી એવ કોલશુનક વડે ૨ સુઘર યા જંગલી કુત્તે યે સવ જાનવર હોતે હૈ કયા : હસકે ઉત્તર મેં પ્રમુ કહતે હૈ, હાં ગીતમ । યે સવ જંગલી જાનવર ડસ કાલ મેં હસ મરત ક્ષેત્ર મેં હોતે હૈ પરન્તુ “ળો ચેવ ણ તેસિ મળુયાળં આવાહ વા વાવાહ વા” ઇત્યાદિ યે ડન મનુષ્યોકો જરા સી મી વાધા નહીં પહુંચાતે હૈ, ન વિશેષરૂપ સે ડન્હે કષ્ટ દેતે હૈ, ન યે ડનકે શરીર કો છિન્ન મિન્ન કરતે હૈ કયોકિ “સમળાડસો પગઈ મહયા ણં તે સાવયગળા પળ્ળત્તા” હૈ શ્રમણ આયુષ્મન્ । યે શ્વાપદગળ જંગલી જાનવર પ્રકૃતિ સે હી મદ્ર હોતે હૈ “અતિથિ ણં મતે તીસે સમાપ્ મરહે વાસે સાલીહ વા વીહિગોહમ જવજવ જવાહ વા કલમ મસૂર” ઇત્યાદિ

૧૩ દ્રીપિક વ્યાગ્ર વિશેષ ચિત્રક ચિત્તો, ઋક્ષ રીછ તરશ્ચ મૃગમક્ષી વ્યાગ્ર વિશેષ શ્રુગાળ બિદાલ શુનક કુત્તર કોકન્તિક લોમહી અને કોલ શુનક મોટા સૂવરો અથવા વન્ય શ્વાનો હોય છે ? એના જવાબમા પ્રશ્ન કહે છે, હા ગીતમ । એ સર્વ વન્ય પ્રાણીઓ તે કાળમાં આ ભરતક્ષેત્રમાં હોય છે, પણ “ળો ચેવ ણ તેસિ મળુયાળં આવાહ વા વાવાહ” ઇત્યાદિ. એ વન્ય પ્રાણીઓ તે આયુષોને સહેજ પણ કષ્ટ આપતા નથી, ન વિશેષ રૂપમાં તકલીફ આપે છે અને ન તેમનાં શરીરો ને છિન્ન ભિન્ન કરે છે કેમકે ‘સમળાડસો પગઈ મહયાળં તે સાવયગળા પ’ એ શ્રમણ આયુષ્મન । એ શ્વાપદગળો-વન્ય પ્રાણી યો સ્વ-ભાવતઃ મદ્ર હોય છે અતિથિ ણ મતે । મરહે વાસે સાલીતિ વા વીહિ ગોહમ જવ જવા હ વા કલમ મસૂર’ ઇત્યાદિ હવે ગીતમ પ્રશ્નને આ બાતને પ્રરેન કરે છે કે-હે ભક્ત । શું તે કાળમાં ભરત ક્ષેત્રમાં શાલિ-કલમાદિ ધાન્ય વિશેષ મીહિ-ધાન્ય, ગોધૂમ ગેહું યવ જવ

‘પણ્ણત્તા’ પ્રજ્ઞસાઃ । પુનર્ગૌતમ સ્વામી પૃચ્છતિ—‘અત્થિ ણં મંતે ! તીસે સમાપ્પ મરહે વાસે સાલોહિ વા’ હે મદન્ત ! સન્તિ સ્વલ્લુ તસ્યાં સમાયાં મરતે વર્ષે શાલય ઇતિ વા ? શાલયઃ કલમાદિ ધાન્યવિશેષા , ‘વીઠીહિ વા ગોહમાહિવા જવાહિ વા જ્વજ્જવાહિ વા’ વ્રીહિગોધૂમ યવ યવયવા ઇતિ વા ? તત્ર વ્રીહિઃ ધાન્યવિશેષઃ, ગોધૂમઃ—પ્રસિદ્ધઃ, યવઃ પ્રસિદ્ધઃ, યવયવઃ યવમેદઃ, એતેપામ્પ્ ઇતરેતરદ્વન્દ્વઃ, તથા ‘કલાયાહિ વા મસૂરાહિ વા મુગ્ગાહિ વા માસાહિ વા તિલાહિ વા કુલ્લથાહિ વા ણિપ્પફાવાહિ વા આલિસન્દગાહિ વા અયસીહિ વા કુસુંભાહિ વા કોઈ-વાહિ વા કંઘુત્તિ વા વગ્ગાહિ વા રાલગાહિ વા સણાહિ વા સરિસવાહિ વા મૂલગવીયાહિ વા’ કલાયમસૂરમુદ્ગમાસતિલકુલ્લથાનિષ્પાવાલિસન્દકાતસીકુસુમ્મકોદ્રવકજ્જવરકરાલકશણ સર્વ-પમૂલક વીજાનિ વા ? તત્ર કલાયઃવૃત્તચણકો ‘મટર’ ઇતિ માપા પ્રસિદ્ધઃ. મસૂરો ધાન્ય વિશેષઃ, મુદ્ગઃ ‘મુંગ’ ઇતિ લોકપ્રસિદ્ધો ધાન્યવિશેષઃ, માપઃ ‘ઉદ્દ’ ઇતિ માપા પ્રસિદ્ધો ધાન્ય વિશેષઃ, તિલઃ પ્રસિદ્ધ , કુલ્લથઃ—‘કુલ્લથી’ ઇતિ માપા પ્રસિદ્ધો ધાન્ય વિશેષઃ, વરકો ધાન્ય-વિશેષઃ, રાલકઃ—કજ્જુ વિશેષઃ, એવ, તત્ર કજ્જુવૃદ્ધચ્છિગઃ, રાલકોડ્ડલ્પશિરા દ્વિતિ મેદો બોધ્યઃ, શણો ધાન્યવિશેષઃ, સર્ષપઃ ‘સરસો’ ઇતિ માપા પ્રસિદ્ધસ્તે ઇતિ વા, તથા મૂલકવીજાનિ—મૂલકં—‘મૂલી’ ઇતિ માપાપ્રસિદ્ધં તસ્ય વીજાનિ । ઇત્યં ગૌતમસ્વામિના પૃષ્ઠો મગવાનાહ—‘હતા અત્થિ’ હન્ત ! સન્તિ, ‘ણોચેવ ણં’ન ચૈવ સ્વલ્લુ તાનિ ધાન્યાનિ ‘તેસિં મણુયાણં પરિમોગ્ગત્તાપ્પ’ તેષાં મનુજાનાં પરિમોગ્યતયા ‘હવ્વં’ હવ્વ—કદાચિદપિ ‘આગચ્છત્તિ’ આગચ્છન્તિ । યતસ્તે મનુજાઃ કલ્પવૃક્ષપુષ્પફલાઘાહરકા ભવન્તીતિ ॥૩૦

અવ શ્રોગૌતમ સ્વામી પ્રશ્ન સે એસા પૂછતે હૈં—હે મદન્ત ! કયા ઉસ કાલમેં મરત ક્ષેત્રમેં શાલ—કલમાદિ ધાન્યવિશેષ, વ્રીહિ ધાન્ય, ગોધૂમ ગેહુ, યવ—જો યવયવ જ્વાર યા વિશેષ પ્રકાર કે યવ, કલાય—મટર, મસૂર, મુદ્ગ મૂગ, માસ ઉદ્દ, તિલી, કુલ્લથ કુલ્લથી, નિષ્પાવ વલ્લ આલિ-સન્દક ચૌલા, અતસી અલસી કુસુમ્મ કુસુમ્મવૃક્ષ કા બીજ જિસ કે પુષ્પો સે વલ્લ રંગાજાતા હૈ કોદ્રવ કોદ, કજ્જુ બઢી કાગની, વરક ધાન્યવિશેષ, રાલક છોટીકાગનીવિશેષ શણ, સર્ષપ સરસો એવં મૂલક બીજ મૂલી કે બીજ યે સબ બીજ હોતે હૈ : ઉત્તરમેં પ્રમુશ્રી કહતે હૈ ‘હતા અત્થિ’ હાં, ગૌતમ ઉસ કાલ મેં મરત ક્ષેત્ર મેં યે સબ બીજ હોતે હૈં પરન્તુ “ણો ચેવ ણં તેસિં મણુયાણ પરિ-મોગ્ગત્તાપ્પ હવ્વમાગચ્છત્તિ ” યે સબ ઊન મનુષ્યોં કે મોગોપમોગ મેં કામ નહીં આતે હૈ ક્યોંકિ બે ઉસ કાલ કે મનુષ્ય કલ્પવૃક્ષ કે પુષ્પો ઓર ફલોં કા આહાર કરતે હૈં ॥૩૦॥

યવયવ જુઆર અથવા વિશેષ પ્રકારનો યવ કલાય વપણા મસૂર મુદ્ગ મગ માપ અડદ તિલ કુલ્લથ કળથી નિષ્પાવ વલ્લ આલિસન્દક ચોળા અતસી અલસી કુસુમ-કુસુમ વૃક્ષના બીજોના પુષ્પો વલ્લો રંગવામાં આવે છે, કોદ્રવ કુંગળી કંશુ મોટી કાંગળી વરક ધાન્ય વિશેષ રાલક નાની કાંગળી વિશેષ શણ સર્ષપ મરસવ અને મૂળક બીજ મૂળીના બીજો સર્વ જાતના બીજો હોય છે ? ઉત્તરમાં પ્રશ્ન કહે છે ‘હતા અત્થિ’ હા, ગૌતમ ! તે કાળમાં ભરતક્ષેત્રમાં એ સર્વ જાતના બીજો હોય છે પરંતુ “ણો ચેવ ણં તેસિં મણુયાણં પરિમોગ્ગત્તાપ્પ હવ્વ માગચ્છન્તિ” એ સર્વ પ્રકારના બીજો તે કાળના મનુષ્યોના ભોગોપભોગના ઉપયોગમાં આવતાં નથી, કારણ કે તે કાળના મનુષ્યો કલ્પવૃક્ષના પુષ્પો અને ફળોનો આહાર કરે છે સૂ.૩૦॥

मूलम्—अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे गड्डाइवा दरी-
इवा ओवायाइ वा पवायाइ वा विसमाइ वा विज्जलाइ वा ? णो इण्ठे
समहे. भरहे वासे बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहाणामए
आलिङ्गपुक्खरेइ वा० । अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे खाण्णइ
वा कंटगाइ वा तणाइ वा कयवराइ वा ? णो इण्ठे समहे, ववगय खाणु-
कंटगतणकयवरा णं सा समा पण्णत्ता । अत्थि णं भंते ! तीसे समाए
भरहे वासे डंसाइ वा मसगाइ वा जूआइ वा लिक्खाइ वा दिक्कुणाइ वा
आइ वा ? , णो इण्ठे समहे, ववगयडंसमसगजूअलिक्खदिक्कुणपिसुआ
उवहव विरहिया णं सा समा पण्णत्ता । अत्थि णं भंते ! तीसे समाए
भरहे वासे अहीइ वा अयगराइ वा ? हंता ! अत्थि णो चैव णं तेसिं
म याणं आबाहं वा जाव प गइ भद्वया णं ते बोलगगणा पण्णत्ता ॥
॥सू० ३१॥

। छाया — सन्ति खलु भदन्त । तस्यां समायां भरते वर्षे गर्त्ता इति वा, दर्य इति वा,
अवपाता इति वा, प्रपाता इति वा, विषमानिति वा, विजलानिति वा, ? नो अयमर्थः
समर्थः, भरते वर्षे बहुसमरमणीयो भूमिभाग प्रक्षत्तः, तद्यथा नामकम्—आलिङ्गपुष्कर इति
वा० । सन्ति खलु भदन्त ! तस्यां समायां भरते वर्षे स्थाणव इति वा कण्टका इति वा
तृणानीति वा कचवरा इति वा ? नो अयमर्थः समर्थः, व्यापगतस्थाणुकण्टक तृण कचवरा
खलु सा समा प्रक्षत्ता । सन्ति खलु भदन्त ! तस्यां समायां भरते वर्षे दशा इति वा म-
शका इति वा पिशुका इति वा ? नो अयमर्थः समर्थः, व्यपगतदंशमक यूकालिक्षादिद्वि-
पिशुका, उपद्रवविरहिता खलु सा समा प्रक्षत्ताः । सन्ति खलु भदन्त । तस्यां समायां
भरते वर्षे अहय इति वा अजगरा इति वा ? हन्त । सन्ति नो चैव खलु तेषां मनुजा-
नाम् आबाधा वा यावत् प्रकृतिभद्रकाः खलु व्यालकगणाः प्रक्षत्ताः ॥ ३१॥

टीका—‘अत्थि णं’ इत्यादि ।

‘अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे गड्डाइवा’ हे भदन्त ? सन्ति खलु
तस्यां समायां भरते वर्षे गर्त्ता इति वा ? गर्त्ताः ‘गड्डा-खड्डा’ इति भाषा प्रसिद्धाः,

‘अत्थि णं भंते तीसे समाए भरहेवासे’ इत्यादि

टीकार्थ—‘अत्थि णं भंते तीसे समाए भरहे वासे गड्डाइ वा दरीइ वा’ गौतम स्वामीने इस सूत्र द्वारा
प्रसुप्ते ऐसा पूछा है हे भदन्त क्या उस काल में सुषमसुषमा नामक आरे में इस भरत क्षेत्रमें गड्डे

‘अत्थि णं भंते तीसे समाए भरहे वासे गड्डाइ वा दरीइवा’ इत्यादि सूत्र ३१॥
टीकार्थ—हे गौतम आ सूत्र पडे प्रसुप्ते आ आतने प्रश्न कर्त्ते छे के ‘अत्थि णं भंते ! तीसे
समाए भरहे वासे’ हे भदन्त । शु ते कालमां सुषम सुषमा नामना आराभां आ भरत क्षेत्रमां
३६

‘पण्णत्ता’ प्रज्ञप्ताः । पुनर्गौतम स्वामी पृच्छति—‘अत्थि णं भते ! तीसे समाए भरहे वासे सालीइ वा’ हे भदन्त ! सन्ति खलु तस्यां समायां भरते वर्षे शालय इति वा ? शालयः कलमादि धान्यविशेषा, ‘वीहीइ वा गोहमाइवा जवाइ वा ज्वजवाइ वा’ व्रीहिगोधूम यव यवयवा इति वा ? तत्र व्रीहिः धान्यविशेषः, गोधूमः—प्रसिद्धः, यवः प्रसिद्धः, यवयवः यवभेदः, एतेषाम् इतरेतरद्वन्द्वः, तथा ‘कलायाइ वा मसूराइ वा मुग्गाइ वा मासोइवा तिलाइ वा कुलत्थाइ वा णिफफावाइ वा आलिसंदगाइ वा अयसीइ वा कुसुंभाइ वा कोई-वाइ वा कंगुत्ति वा वरगाइ वा रालगाइ वा सणाइ वा सरिसवाइ वा मूलगवीयाइ वा’ कलायमसूरमुद्गमासतिलकुलत्थनिष्पावालिसन्दकातसीकुसुम्भकोद्रवकज्वरकरालकशण सर्प-पमूलक बीजानि वा ? तत्र कलायः वृत्तचणको ‘मटर’ इति भाषा प्रसिद्धः, मसूरो धान्य विशेषः, मुद्गः ‘मुँग’ इति लोकप्रसिद्धो धान्यविशेषः, मापः ‘उडद’ इति भाषा प्रसिद्धो धान्य विशेषः, तिलः प्रसिद्धः, कुलत्थः—‘कुलथी’ इति भाषा प्रसिद्धो धान्य विशेषः, वरको धान्य-विशेषः, रालकः—कज्जु विशेषः, एव, तत्र कज्जुट्टेहच्छिगाः, रालकोऽल्पशिरा इति भेदो बोध्यः, शणो धान्यविशेषः, सर्पपः ‘सरसों’ इति भाषा प्रसिद्धस्ते इति वा, तथा मूलकबीजानि—मूलकं—‘मूली’ इति भाषाप्रसिद्धं तस्य बीजानि । इत्थं गौतमस्वामिना पृष्ठो भगवानाह—‘इता अत्थि’ इन्त ! सन्ति, ‘णोचेव णं’न चैव खलु तानि धान्यानि ‘तेसिं मणुयाणं परिभोगत्ताए’ तेषां मनुजानां परिभोग्यतया ‘हव्वं’ इव्य—कदाचिदपि ‘आगच्छति’ आगच्छन्ति । यतस्ते मनुजाः कल्पवृक्षपुष्पफलाद्याहरका भवन्तीति ॥३०॥

अब श्रीगौतम स्वामी प्रश्न से ऐसा पूछते हैं—हे भदन्त ! क्या उस कालमें भरत क्षेत्रमें शाल—कलमादि धान्यविशेष, व्रीहि धान्य, गोधूम गेहू, यव—जौ यवयव ज्वार या विशेष प्रकार के यव, कलाय—मटर, मसूर, मुद्ग मूग, मास उडद, तिल्ली, कुलत्थ कुलथी, निष्पाव वल्ल आलिसन्दक चौला, अतसी अलसी कुसुम्भ कुसुम्भवृक्ष का बीज जिस के पुष्पो से वस्त्र रंगाना जाता है कोद्रव कोद, कज्जु बड़ी कागनी, वरक धान्यविशेष, रालक छोटीकागनीविशेष शण, सर्पप सरसों एवं मूलक बीज मूली के बीज ये सब बीज होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं ‘इता अत्थि’ हाँ, गौतम उस काल में भरत क्षेत्र में ये सब बीज होते हैं परन्तु “णो चेव णं तेसिं मणुयाणं परिभोगत्ताए इव्वमागच्छति” ये सब उन मनुष्यों के भोगोपभोग में काम नहीं आते हैं क्योंकि वे उस काल के मनुष्य कल्पवृक्ष के पुष्पो और फलों का आहार करते हैं ॥३०॥

यवयव ज्वार अथवा विशेष प्रकारका यव कलाय वषळा मसूर मुद्ग भग भाष अडद तिल कुलत्थ कण्ठी निष्पाव वल्ल आलिसन्दक येणा अतसी अलसी कुसुंभा-कुसुंभा वृक्षका भी बीजा पुष्पो वस्त्रो रंगवामा आवे छे, कोद्रव दुग्णी कज्जु मोटी कांगनी वरक धान्य विशेष रालक नानी कांगनी विशेष शण सर्पप अरसव अने भूणके भीन भूणीना भी ओ सर्व जतना भीने होय छे ? उत्तरमां प्रभु कहे छे ‘इता अत्थि’ हाँ, गौतम ! ते काणमा भरतक्षेत्रमां ओ सर्व जतना भीने होय छे परन्तु “णो चेव णं तेसिं मणुयाणं परिभोगत्ताए इव्व मागच्छन्ति” ओ सर्व प्रकारना भीने ते काणना मनुष्याना लोगोपयोगना उपयोगमां आ वतां नथी, कारण छे ते काणना मनुष्यो कल्पवृक्षना पुष्पो अने फलाना आहार करे छे. सू. ३०॥

मूलम्—अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे गड्डाइवा दरी-
इवा ओवायाइ वा पवायाइ वा विसमाइ वा विज्जलाइ वा ? णो इण्ठे
समंठे. भरहे वासे बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहाणामए
आलिङ्गपुक्खरेइ वा० । अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे खाणूइ
वा कंटगाइ वा तणाइ वा कयवराइ वा ? णो इण्ठे समंठे, ववगय खाणु-
कंटगतणकयवरा णं सा समा पण्णत्ता । अत्थि णं भंते ! तीसे समाए
भरहे वासे डंसाइ वा मसगाइ वा जूआइ वा लिक्खाइ वा दिक्कुणाइ वा
आइ वा ?, णो इण्ठे समंठे, ववगयडंसमसगजूअलिक्खदिक्कुणपिसुआ
उवहव विरहिया णं सा समा पण्णत्ता । अत्थि णं भंते ! तीसे समाए
भरहे वासे अहीइ वा अयगराइ वा ? हंता ! अत्थि णो चैव णं तेसिं
मणुयाणं आबाहं वा जाव प गइ भइया णं ते बोलगगणा पण्णत्ता ॥
॥सू० ३१॥

छाया—सन्ति खलु भदन्त । तस्यां समायां भरते वर्षे गर्त्ता इति वा, दर्य इति वा,
अवपाता इति वा, प्रपाता इति वा, विषमानिति वा, विजलानिति वा, ? नो अयमर्थः
समर्थः, भरते वर्षे बहुसमरमणीयो भूमिभागः प्रक्षतः, तद्यथा नामकम्—आलिङ्गपुष्कर इति
वा० । सन्ति खलु भदन्त ! तस्यां समायां भरते वर्षे स्थाणव इति वा कण्टका इति वा
तृणानीति वा कचवरा इति वा ? नो अयमर्थः समर्थः, व्यापगतस्थाणुकण्टक तृण कचवरा
खलु सा समा प्रक्षताः । सन्ति खलु भदन्त ! तस्यां समायां भरते वर्षे दशा इति वा म-
शका इति वा पिशुका इति वा ? नो अयमर्थः समर्थः, व्यपगतदंशमक यूकालिक्षादिङ्कुण-
पिशुका, उपद्रवविरहिता खलु सा समा प्रक्षताः । सन्ति खलु भदन्त । तस्यां समायां
भरते वर्षे अहय इति वा अजगरा इति वा ? हन्त ! सन्ति नो चैव खलु तेषां मनुजा-
नाम्, आबाधा वा यावत् प्रकृतिभद्रकाः खलु व्यालकगणाः प्रक्षताः ॥ ३१॥

टीका—‘अत्थि णं’ इत्यादि ।

‘अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे गड्डाइवा’ हे भदन्त ? सन्ति खलु
तस्यां समायां भरते वर्षे गर्त्ता इति वा ? गर्त्ताः ‘गड्डा-खड्डा’ इति भाषा प्रसिद्धाः,

‘अत्थि णं भंते तीसे समाए भरहेवासे’ इत्यादि

टीकार्थ—‘अत्थि णं भंते तीसे समाए भरहे वासे गड्डाइ वा दरीइ वा’ गौतम स्वामीने इस सूत्र द्वारा
प्रसुप्ते ऐसा पूछा है हे भदन्त क्या उस काल में सुषमसुषसा नामक आरे में इस भरत क्षेत्रमें गड्डे

‘अत्थि णं भंते तीसे समाए भरहे वासे गड्डाइ वा दरीइवा’ इत्यादि सूत्र ३१॥
टीकार्थ—हवे गौतमे आ सूत्र पडे प्रसुप्ते आ आतने प्रश्न कये छे के ‘अत्थि णं भंते ! तीसे
समाए भरहे वासे’ हे भदन्त । शु ते कालां सुषम सुषसा नामना आराभां आ भरत क्षेत्रभां
३६

‘દરીહવા ઓવાયાઈ વા પવાયાડ વિસમાડ વા વિજ્જલાડવા’ દર્યવપાત પ્રપાતવિપમવિજલા-
નીતિ વા । તત્ર-દરી=કન્દરા, અવપાતઃ-અવપતન્તિ જના યત્ર સોડવપાતઃ, યત્ર સપ્રકા-
શેડપિચલન્ જનઃ પતતિ સોડવપાતો બોધ્યઃ, પ્રપાતઃ=મૃગુઃ પ્રપાતસ્ત્વતટો મૃગુઃ’
इत्यमरः વિપમં આરોહાવરોહૌ યત્ર સ્થાને દુઃશઃ૧ મવતસ્તત્સ્થાનં વિપમમિત્યુચ્યતે વિજ
લ ચિવકળકર્દમસંવલિસ્થાનં, યત્ર હિ જનોડતર્કિત એવ પતતીતિ । ‘જો ઇળદ્દે સમદ્દે’ નો
અયમર્થઃ સમર્થઃ યતઃ खलु ‘મરહે વાસે’ મરતે વર્ષે તસ્યાં સમાયાં ‘વહુસમરમણિજ્જે ભૂમિ-
ભાગે પળ્ણત્તે’ ‘વહુસમરમણીયો ભૂમિ ભાગઃ પ્રજ્ઞસઃ । તત્ર-ઔપમ્યમાહ-‘સે જહા જામપ’
तद्यथा नामकम् ‘आर्लिगपुक्खरेइवा’ आलिङ्गपुष्कर इति वा । अयं वर्णकग्रन्थः पूर्ववद्
બોધ્ય ઇતિ । પુનર્ગૌતમસ્વામી પૃચ્છતિ ‘અત્થિ જં મંતે ! તીસે સમાપ મરહે વાસે
खाण्डवा’ हे भदन्त सन्ति खलु तस्यां समायां मरते वर्षे स्थाणव इति वा ? स्थाणु
शाखापत्ररहितवरुः ‘कंटगाइ वा तणाइ वा’ तत्र कण्टकाः प्रसिद्धाः, तृणानि प्रसिद्धानि,
कचवराः अवस्कराः ‘कचरा इति भाषा प्रसिद्धाः । भगवानाह-‘जो इणद्वे द्वे’ नो अय-

હોતે હૈ દરી કન્દરાઈ હોતી હૈ : અવપાત-દિન મેં મી ચલતા હુઆ મનુષ્ય જિસમેં ગિર જાતા હૈ
ऐसे छिपे हुए गुप्त गद्दे होते हैं’ પ્રપાત-મૃગુ હોતે હૈ વિષમસ્થાન-જહાં ચઢના ઔર ઉતરના મુરિ
સે હો એસે સ્થાન હોતે હૈ : એવ વિજલસ્થાન-ચિકની કીચઢવાલે સ્થાન હોતે હૈ : હસકે ઉત્તરમેં
પ્રમુ કહતે હૈ-હે ગૌતમ । “જો ઇળદ્દે સમદ્દે”યહ અર્થ સમર્થ નહીં હૈ-અર્થાત્ ઉસ કાલમેં મરત ક્ષેત્રમેં
ऐसे स्थान नहीं होते हैं, क्योंकि उस समय तो भरत क्षेत्रमें बहुसम रमणीय भूमिभाग होता है ।
‘સે-જહાણામપ આર્લિગપુક્કરેઈ વા૦” ઔર वह भूमिभाग ऐसा बहुसमरमणीय होता है कि जैसा
मृदंगका मुखपुट होता है, इस सम्बन्ध का वर्णन करने वाला सूत्रपाठ पहिले लिखा जा चुका है ।
અબ પુનઃ ગૌતમસ્વામી પ્રમુસે એસા પૂછતે હૈ-“અત્થિ જં મંતે તીસે સમાપ મરહે વાસે
कंटगतणय कचवराइ वा० इत्यादि” हे भदन्त । उस काल में इस भरत क्षेत्र में क्या स्थाणु-
શાસ્ત્રા પત્ર આદિ સે રહિત વૃક્ષ હોતે હૈ : કંટક હોતે હૈ : કચવર-કૂડા કર્કટ આદિ હોતા હૈ :

ખાડાઓડોય છે? દરી કંદરાઓ ડોય છે? અવપાતો દિવસે પણ ચાલતા માણસો જેમાં પડી બચ
છે. એવાં ગુપ્ત ખાડાઓ ડોય છે? પ્રપાત ભુગુ ડોય છે? વિષમસ્થાનો બધા ચઢવું અને
ઉતરવું કંઈ છે એવા સ્થાનો ડોય છે? અને વિજલસ્થાનો ચીકણા કાઢવાળા સ્થાનો ડોય
છે? એના બવાબમા પ્રભુ કહે છે, હે ગૌતમ । ‘જો ઇળદ્દે સમદ્દે’ આ અર્થ સમર્થ નથી
ઝોટલે કે તે કાળમાં ભરતક્ષેત્રમાં એવા સ્થાનો હોતા નથી કેમકે તે કાળે તો ભરતક્ષેત્ર બહુ
સમરમણીય ભૂમિભાગથી સુશોભિત ડોય છે. ‘સે જહા જામપ આર્લિગપુક્કરેઈ વા૦” અને
તે ભૂમિભાગ એવો બહુસમરમણીય ડોય છે કે જેવો મૃદંગનો મુખપુટ ડોય છે. એનાથી
સમ્બન્ધ સૂત્રપાઠ પહેલાં લખવામાં આવ્યો છે

હવે ફરી ગૌતમ પ્રભુને આ રીતે પ્રશ્ન કરે ‘અત્થિ જં મંતે તીસે તપ મરહે વાસે
खाण्डवा कंटगतणय कचवराइ वा०” इत्यादि हे भदन्त । તે કાળમાં આ ભરતક્ષેત્રમાં
શુ સ્થાણુઓ શાખા યત્ર રહિત વૃક્ષો ડોય છે? કાટાંઓ ડોય છે? વૃક્ષ વાસ ડોય છે

मर्थ; समर्थः, यतो हे गौतम 'सा णं समा' सा सुषम सुषमाख्या समा खलु 'ववगय
खाणु कंटगतण कयवरा' व्यपगत स्थाणुकण्टकतृणकचवरा—व्यपगताः दूरीभूताः स्थाणु-
कण्टक तृणकचवरा यस्यां सा तथाभूता स्थाणुकण्टकादिरहितेत्यर्थः, 'पण्णत्ता' प्रज्ञप्ताः ।
पुनर्गौतमस्वामी पृच्छति—'अत्थि णं भंते तीसे समाए भरहे वासे डंसाइवा' हे
भदन्त सन्ति खलु तस्यां समाया भरते वर्षे दंशा इति वा दंशाः डांस इति भाषा
प्रसिद्धाः 'मसगाइवा' मशका इति वा मशकाः 'मच्छर इति प्रसिद्धाः, 'जुआइवा
यूकाइति वा ' यूकाः जू इति भाषा प्रसिद्धाः, 'ल्लिखाइवा' लिखा इति वा 'लीस'
इति भाषा प्रसिद्धाः 'ढिक्कुणाड वा' ढिक्कुणा इति वा ढिक्कुणाः मत्कुणाः, 'मक्कुणए
ढिक्कुणा तहा ढंक्णी पिहाणीए' इति देशीनाममाला 'पिसुआईवा' पिशुका इति वा ।
पिशुकाः 'पिस्सु सल्ला' इति भाषाप्रसिद्धाः भगवानाह 'णो इण्ठे समट्ठे' नो अयम-
र्थः समर्थः यतो हे गौतम 'सा णं समा' सा सुषम सुषमा समा खलु 'ववगयडंसमसग-
जुअल्लिखल्लिक्कुणा पिसुआ' व्यपगतदशमशक यूकाल्लिखल्लिक्कुणपिशुका अत एव 'उवडव-
विरहिया पण्णत्ता, उपद्रवरहिता प्रज्ञप्ताः । पुनर्गौतम स्वामी पृच्छति 'अत्थि णं भंते ।

इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं—हे गौतम । "णो इण्ठे समट्ठे" यह अर्थ समर्थ नहीं, अर्थात्
उसकाल में भरत क्षेत्र में स्थाणु आदि कुछ भी नहीं है क्योंकि "ववगयखाणु कंटक०" सुषम-
सुषमा नाम का द्वारा स्थाणु, कण्टक, तृण और कचरा आदि से सर्वथा रहित ही होता है,

अब पुनः गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं—'अत्थि णं भंते । तीसे समाए भरहे वासे
डंसाइ वा, मसगाइ वा जुआइ वा, ल्लिखाइ वा०, इत्यादि—हे भदन्त ! उसकालमें इस भरतक्षेत्र
में दंश—डांस, मशक—मच्छर, यूक—जू, लिखा—लीखे ढिक्कुण—खटमल एवं पिशुक—पिस्सु होते हैं
क्या ' इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं हे गौतम । "णो इण्ठे समट्ठे" यह अर्थ समर्थ नहीं है
अर्थात् उस काल में भरत क्षेत्र में डांस, मच्छर आदि जीव नहीं होते हैं, क्योंकि "ववगय
डंसमसकजुअ ल्लिख०" वह काल ही ऐसा होता है कि जिसमें ये उपद्रवकारी जीव भरतक्षेत्र
में उत्पन्न नहीं होते हैं । पुनः अब गौतम स्वामी प्रभु से पूछते हैं "अत्थि णं भंते ! तीसे समाए

अने कथं कथरे। वगेरे डोय छे ? जेना जवानभा प्रभु कहे छे हे गौतम । 'णो इण्ठे
समट्ठे' आ अर्थ समर्थ नथी ओटवे छे ते कालभा भरतक्षेत्रभा स्थाणु वगेरे कछ पणु डोतु
नथी केभके ववगय खाणु कंटक सुषमसुषमा नामे काल स्थाणु कंटक तृण कयवर वगेरेथी
सर्वथा रहित डोय छे हवे ईरी गौतम प्रभुने जेनी रीते प्रश्न करे छे के 'अत्थि णं भंते !
तीसे समाए भरहे वासे डंसाइ वा मसगाइ वा जुआइ वा ल्लिखाइ वा' इत्यादि" के
बाहुन्त । ते कालभा ते भरतक्षेत्रभा दंश मशक मच्छर यूक जू लिखा लीखे ढिक्कुण आंके
अने पिशुक आसे डोय छे ? जेना जवानभा प्रभु कहे छे,

हे गौतम । "णो इण्ठे समट्ठे" आ अर्थ समर्थ नथी ओटवे छे ते कालभा भरतक्षेत्रभा
डांस, मच्छर वगेरे छवे। डोतां नथी, करण के "ववगय डंसमसकलि ०, इत्यादि" ते
काल ज जेवो डोय छे के जेभा जे उपद्रवकारी छेने। भरतक्षेत्रभा उत्पन्न ज थतां नथी
ईरी हवे गौतम स्वामी प्रभुने प्रश्न करे छे के "अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे

તીસે સમાપ્ત ભરહે વાસે અહીંડવા' હે મદન્ત સન્તિ સ્વલુ તસ્યાં સમાયાં મરતે વર્ષે અહય
 ઇતિ વા અહયઃ સર્પાઃ 'અયગગાઈવા' અજગરા ઇતિ વા અજગરાઃ પ્રસિદ્ધાઃ । મગવાનાહ
 'હંતા અત્થિ' હન્ત સન્તિ અહયોજગરાશ્ચ 'ળો ચેવ ણ તેસિ મળુયાળ આવાહ વા જાવ'
 નો ચૈવ સ્વલુ તેપાં મન્નુજાનામ્ આવાધામ્ ઈપદ્ધાધાં વા યાવત્-યાવત્પદેન વ્યાવાધાં વા
 છવિચ્છેદ વા ઉત્પાદયન્તિ ઇતિ સંગ્રાહ્યમ્ તતઃ વ્યાવાધાં વિશેષેણ વાધાંવા છવિચ્છેદં
 ચર્મોત્પાટનં વા ઉત્પાદવન્તિ જનયન્તિ । અત્ર હેતુવાક્યમાહ 'પગઈમદયા ણં તે વાલ્ગગણા
 પળ્ણત્તા' પ્રકૃતિ મદ્રકાઃ સ્વલુ તે વ્યાલગ્ગણા પ્રજ્ઞપ્તાઃ કથિતા ઇતિ ॥૨૧॥

મૂલમ્—અત્થિ ણં મંતે ! તીસે સમાપ્ત ભરહે વાસે ડિંવાઈ વા ડમ-
 રાઈ વા કલહાઈ વા વોલાઈ વા ચારાઈ વા વડરાઈ વા મહાજુદ્ધાઈ વા મહા-
 સંગામાઈ વા મહાસત્થપડળાઈ વા મહાપુરિસપડળાઈ વા મહારુહિરણિ-
 વડળાઈ વા ? ગોયમા ! ણો ઇળહે સમદ્ધે વવગયવેરાનુવંધાણં તે મ-
 ણુઆ પળ્ણત્તા । અત્થિ ણં મંતે ! તીસે સમાપ્ત ભરહે વાસે દુબ્બૂ-
 યાળીઈ વા કુલરોગાઈ વા ગામરોગાઈ વા મંડલરોગાઈ વા પોટ્ટરોગા-
 ઈ વા સીસવેળયાઈ વા કળ્ણોદ્ધ અચ્છિળહ દંતવેયળાઈ વા કાસોઈ વા
 સાસાઈ વા સોસાઈ વા દાહાઈ વા અરિસાઈ વા અજીરગાઈ વા દઓ-
 દરાઈ વા પંડુરોગાઈ વા મગંદરાઈ વા ઇગાહિયોઈ વા વેયાહિયાઈ વા
 તેયાહિયાઈ વા ચડત્થાહિયાઈ વા ઇંદગ્ગહાઈ વા ધળુગ્ગહાઈ વા સંદગ્ગ-
 હાઈ વા કુમારગ્ગહાઈ વા જક્કલગ્ગહાઈ વા મૂયગ્ગહાઈ વા મત્થયસૂલાઈ
 વા હિયયસૂલાઈ વા પોટ્ટસૂલાઈ વા કુચ્છિસૂલાઈ વા જોણિસૂલાઈ

ભરહે વાસે અહીંડ વા અયગરાઈ વા", હે મદન્ત । ડસ આરે મેં મરત ક્ષેત્રમેં કયા સર્પ ઇવં અજગર
 હોતે હે ? ઉત્તરમેં પ્રસુશ્રી કહતે હે "હંતા, અત્થિ ણો ચેવ ણં તેસિ મળુયાળ આવાહ વા જાવ પગઈ
 મદયાળં તે વાલ્ગગણા પળ્ણ" હાં ગૌતમ । ડસ કાલ મેં મરત ક્ષેત્ર મેં સર્પ ઔર અજગર યે સબ
 હોતે હે પરન્તુ વે ડન મનુષ્યો કો થોહા સા મી કળ્લ નહીં દેતે હે ઔર ન વે કિસી કો વિશેષ
 પીહા હી દેતે હે, ક્યોકિ વે સબ સર્પ આદિ સ્વમાવત' હી મદ્ર હોતે હે ॥૨૧॥

તીડ વા, અયગરાઈ વા હે મદન્ત ! તે આરામાં ભરતક્ષેત્રમા શુ સર્પ અને અજગરો હોય
 છે જવાળમાં પ્રભુ કહે છે: "હંતા, અત્થિ ણો ચેવ ણં તેસિ મળુયાળ આવાહવા જાવ
 પગઈમદયા ણં તે વાલ્ગગણા પળ્ણ હા, ગૌતમ ! તે કાળમાં ભરતક્ષેત્રમાં સર્પ અને અજ-
 ગર એ સર્વ જીવો હોય છે પણ તે જીવો માણસોને સહેજ પણ કષ્ટ આપતા નથી અને
 કોઈને વિશેષ કષ્ટ પણ આપતા નથી કારણ કે એ સર્પ સર્પ વગેરે સ્વભાવત ભદ્ર હોય છે
 ॥૨૧॥

ગામમારીફ વા જાવ સણિવેસમારોફ વા પાણિવસયા જળવસયા કુલવસયા
વસણબમયમણારિયા ? ગોયમા ! ણો ફણદે સમદે, વવગયરોગાયંકા ણં
તે મ યા પણત્તા સમણોડસો ! ॥સૂ. ૩૨॥

છાયા-સન્તિ સ્વલુ મદન્ત ! તસ્યાં સમાયા મરતે વર્ષે હિમ્વા ઇતિ વા હમરા ઇતિ વા કલહા
ઇતિ વા બોલા ઇતિ વા ક્ષારા ઇતિ વા વૈરાણીતિ વા મહાયુદ્ધાનીતિ વા મહાસંગ્રામા ઇતિ વા
મહાશસ્ત્રપતનાનીતિ મહાપુરુષપતનાનીતિ વા મહારુઘિરનિપતનાનીતિ વા ગૌતમ ! નો
અયમર્થઃ સમર્થઃ વ્યપગતવૈરાણુવન્ધાઃ સ્વલુ તે મનુજાઃ પ્રહપ્તાઃ । સન્તિ સ્વલુ મદન્ત !
તસ્યાં સમાયાં મરતે વર્ષે દુર્ભૂતાનીતિ વા કુલવરોગા ઇતિ વા ગ્રામરોગા ઇતિ વા મણ્ડલરોગા
ઇતિ વા પોદ્ધરોગા ઇતિ વા શીર્ષવેદનેતિ વા કર્ણોષ્ઠાક્ષિનસ્વદન્તવેદનેતિ વા કાસ ઇતિ વા
શ્વાસ ઇતિ વા શોષ ઇતિ વા વાહ ઇતિ વા અર્શ ઇતિ વા અજોર્ણમિતિ વા દ્વકોદરમ્ ઇતિ
વા પાણ્ડરોગ ઇતિ વા મગન્દર ઇતિ વા પેકાદ્ધિક ઇતિ વા દ્વૈયાદ્ધિક ઇતિ વા ત્રૈયાદ્ધિક
ઇતિ વા ચતુર્યાદ્ધિક ઇતિ વા ઇન્દ્ર ગ્રહ ઇતિ વા ધનુર્ગ્રહ ઇતિ વા સ્કન્દગ્રહ ઇતિ વા કુમાર
ગ્રહ ઇતિ વા યક્ષગ્રહ ઇતિ વા મૂતગ્રહ ઇતિ વા મસ્તકશૂલમિતિ વા હૃદય શૂલમિતિ વા
પોદ્ધશૂલમિતિ વા કુક્ષિશૂલમિતિ વા યોનિશૂલમિતિ વા ગ્રામમારિરિતિ વા યાવત્સંનિવેશ-
મારિરિતિ વા પ્રાણિક્ષયા જનક્ષયાઃ કુલક્ષયા વસનમૂતા અનાયાઃ ગૌતમ ! નો અયમર્થ
સમર્થઃ વ્યપગતરોગાતઙ્કા સ્વલુ તે મનુજાઃ પ્રહપ્તાઃ શ્રમણાયુષ્મન્ ॥સૂ. ૩૨॥

ટીકા-‘અત્થિણં’ ઇત્યાદિ ।

‘અત્થિણં મંતે ! તીસે સમાપ મરદે વાસે હિંવાઈવા’ હે મદન્ત ! સન્તિ સ્વલુ તસ્યાં
સમાયાં મરતે વર્ષે હિમ્વા ઇતિ વા ? હિમ્વાઃ=મયાનિ, ‘હમરાઈવા’ હમરા ઇતિવા ?
હમરાઃ=શબ્દે વાહ્યામ્યન્તરા ઉપદ્રવાઃ, ‘કલહાઈવા બોલાઈવા સ્વારાઈવા વહરાઈવા મહાજુ-
દ્ધાઈવા’ કલહ બોલ ક્ષાર વૈર મહાયુદ્ધનીતિવા ? તત્ર કલહઃ=વાચિકઃ, બોલઃ=વહુજનાનાં
સમ્મિલિત આર્ત્તધ્વનિઃ, ક્ષારઃ=અન્યોડન્યમાત્સર્યમ્ વૈરં=શત્રુતા અસહનતયાડન્યોડન્યં

“અત્થિ ણ મંતે ! તીસે સમાપ મરદે વાસે હિંવાઈ વા હમરાઈ વા’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ-‘તવ ગૌતમત્વામી ને પ્રસુ સે એસા પૂછા હૈ-હે મદન્ત ! ક્યા ઉસ સુષમ સુષમા નામ કે
ઝારે મેં ઇસ મરત ક્ષેત્રમેં હિમ્વ ઉપદ્રવ હોતે હૈ ? હમર-રાષ્ટ્ર મેં મીતરી ઉપદ્રવ ઔર વાહિરિ ઉપદ્રવ
હોતે હૈ ? “કલહબોલ સારવહર મહાજુદ્ધાઈ વા મહાસગામાઈ વા મહાસત્થ પઢણાઈ વા મહાપુરિસ-
પઢણાઈ વા ?” કલહ વાયુદ્ધ હોતા હૈ ? બોલ અનેક મનુષ્યો કી સમિલિતરૂપ મેં આર્ત્તધ્વનિ હોતી

‘અત્થિ ણ મંતે ! તીસે સમાપ મરદે વાસે હિંવાઈ વા હમરાઈ વા’ ઇત્યા. ॥ સૂ. ૩૨॥

ટીકાર્થ-હવે ગૌતમે પ્રશ્નને એ જાતનો પ્રશ્ન કર્યો છે કે મદન્ત ! તું તે સુષમસુષમાનામના
આરામા આ ભરતક્ષેત્રમા હિંવા-ઉપદ્રવો — હોય છે ? હમરા-રાષ્ટ્રમાં અંદરે અંદર
ઉપદ્રવો અને બાહરી ઉપદ્રવો હોય છે ? “ હબોલ સારવહર મહાજુદ્ધાઈ વા મહાસંગામાઈ
વા મહા સત્થપઢણાઈ વા મહાપુરિસપઢણાઈ વા । ” કલહ-વાયુદ્ધ હોય છે બાહ-ધ્વનિ
મનુષ્યોનો ઝોકી સાથે થોધાટ [અતિ ધ્વનિ] હોય છે ખાર-પરખર ધર્મ્યાભાવ હોય છે વૈર

હિંસ્યહિંસક ભાવ इति, મહાયુદ્ધં વ્યૂહનિરપેક્ષો વ્યવસ્થારહિતો મહારણઃ, 'મહાસંગામાદ્-
વા' મહાસદ્ગ્રામા इतिવા ? મહાસદ્ગ્રામાઃ-ચક્રવ્યૂહાદિ રચનાવિશિષ્ટ-વ્યવસ્થાસહિતા મહા-
રણાઃ, 'મહાસત્થપઢમાદ્વા' મહાશસ્ત્રપતનનાનીતિવા ; મહાશસ્ત્રાણિ-અત્ર શસ્ત્રશદ્ધેન અસ્ત્રા-
ણિ ગ્રહ્યન્તે તેન મહાશસ્ત્રાણાં પતનનિ । અત્ર અસ્ત્રાણિ દિવ્યાન્યસ્ત્રાણિ નાગવાણાદીનિ,
અતિ વિસ્મયજનક વિચિત્રશક્તિયુક્તત્વાદેતેપાં મહાશસ્ત્રત્વમ્ તેષુ મહાશસ્ત્રેષુ । નાગવાણા
અધિજ્યે ધનુષિ સમારોપ્ય પ્રક્ષિપ્તાઃ જ્વાલામાળાઽઽકુલિતા અસહ્યોલ્કા દણ્ડરૂપા, સન્તઃ
શત્રુશરીરે સમ્યદ્નાપમૂર્ત્યો ભૂત્વા શત્રુ શરીરાણિ પાશરૂપતયા નિવધ્નન્તિ । વાયુવાણાશ્ચ
પ્રચણ્ડં વાયુમુત્પાદ્ય શત્રૂન્ ધૂલ્યાદિભિરન્ધીકૃત્ય યુદ્ધાક્ષમાન્ કુર્વન્તિ । અગ્નિવાણાસ્તુ
પ્રચણ્ડાગ્નિ જ્વાલાવર્ષણેન શત્રૂન્ નિર્દહન્તિ । તામસવાણાઃ શત્રુપક્ષે નિવિહમન્ધકાર મુત્પાદ્ય-

હૈ ' સ્વાર-આપસ મેં ર્થ્યાભાવ હોતા હૈ ' મહાયુદ્ધ વ્યૂહ રચના સે હીન ઇવં વ્યવસ્થા સે રહિત
મહારણ હોતે હૈ ' મહાસપ્રામ ચક્રવ્યૂહ રચના સે સહિત ઇવં વિશેષવ્યવસ્થા સે યુક્ત ઇસે વઢે ૨
યુદ્ધ હોતે હૈ ' મહાશસ્ત્રો કા પતન હોતા હૈ ' યહા શસ્ત્ર શબ્દ સે અર્જો કા ગ્રહણ હુઆ હૈ યે
અર્જ નાગ વાળ આદિ દિવ્ય અર્જરૂપ સે યહાં પ્રકટ કિયે ગયે હૈ, ઇન્હેં જો મહાશસ્ત્ર શબ્દ સે
કહા ગયા હૈ ઉસકા કારણ યહ હૈ કિ યે અતિ વિસ્મય જનક વિચિત્ર શક્તિ સે યુક્ત હોતે હૈ ઇનમેં
જો નાગ વાળ હોતે હૈ વે જવ પ્રત્યજ્ઞાયુક્ત ધનુષ પર આરોપિત કર છોડે જાતે હૈ તવ ઇનમેં સે
જ્વાલાઈ નિકલતી હૈ, લકોરકે રૂપમેં આકાશસે ઘિરે હુઈ તેજસમૂહસે યે યુક્ત હો જાતે હૈ ઔર ફિર
શત્રુ કે શરીર મેં પ્રવિષ્ટ હોકર યે નાગ કે રૂપ મેં બનકર ઉસ શત્રુ કે શરીર કો ચારો ઔર સે
જકડ છેતે હૈ વાયુ વાળ જો હોતે હૈ વે પ્રચણ્ડ વાયુ કો ઉત્પન્ન કરકે શત્રુ કો ઘૂલિ આદિ કે
દ્વારા મન્ધા બના કર ઉસે યુદ્ધ કરને મેં અસમર્થ બના દેતે હૈ, અગ્નિ વાળ જો હોતે હૈ વે પ્રચણ્ડ
' અગ્નિ જ્વાલા કી વર્ષા કરતે હૈ ઔર ઉસસે શત્રુ કો દગ્ધ કર દેતે હૈ, તામસવાળ જો હોતે હૈ

પરસ્પર અસહનશીલ હોવાથી હિંસ્યહિંસક ભાવ હોય છે? મહાયુદ્ધ વ્યૂહ રચનાથી રહિત અને
વ્યવસ્થા વગરનું મહારણ હોય છે? મહાસ ગ્રામ-ચક્રવ્યૂહ રચના સહિત તેમજ વિશેષ વ્ય-
વસ્થા સાથે મહાયુદ્ધો હોય છે, મહાશસ્ત્રોત્ત પતન હોય છે, અહીં શસ્ત્ર શબ્દથી અસ્ત્રનું પણ
ગ્રહણ થયેલ છે. એ શસ્ત્રો અહીં નાગ બાણ વગેરે દિવ્ય અસ્ત્રોના રૂપમાં પ્રગટ કરવામાં
આવ્યાં છે એમના માટે જે મહાશસ્ત્ર શબ્દનો પ્રયોગ કરવામાં આવ્યો છે તેનું કારણ આ
પ્રમાણ છે કે એ એ અદ્ભૂત શક્તિસ પત્ત હોય છે એમાં જે નાગબાણો છે તે જ્યારે પ્ર-
ત્યયા યુક્ત ધનુષ પર આરોપિત કરીને છોડવામાં આવે છે ત્યારે તેમાં જ્વાલાઓ નીકળે
છે લીટીનાં રૂપમાં આકાશમાંથી નીચે પડતા તેજ સમૂહોથી એ સંપન્ન હોય છે અને શ-
ત્રુના શરીરમાં પ્રવિષ્ટ થઈને એઓ નાગ રૂપે પરિણત થાય છે અને તેના શરીરને ચારે
તરફથી આબદ્ધ કરી દે છે જે વાયુબાણ હોય છે તે પ્રચંડ વાયુ ને ઉત્પન્ન કરીને શત્રુને
પૂર્ણ-ભારી વગેરેથી અંધ બનાવીને તેને યુદ્ધ કરવામાં અસમર્થ બનાવી દે છે. જે અગ્નિ
બાણ હોય છે તે પ્રચંડ અગ્નિ જ્વાલાની વર્ષા કરે છે અને તેનાથી શત્રુને દગ્ધ કરી નાખે

તાન્ શત્રૂન્ કિઙ્કર્ત્ત્વ્યવિમૂઢાન્ કુર્વન્તિ । ગરુડ પર્વતાદિ મહાસ્ત્રાણ્યપિ સ્વસ્ત્રનામાનુરૂપ-
કાર્યાણિ કૃત્વા શત્રુદલે વિઘ્નમુત્પાદયન્તીતિ બોધ્યમ્ ।

ઉક્તંચ- “ચિત્રશ્રેણિક ! તે વાળા ભવન્તિ ધનુરાશ્રિતાઃ ।

ઉત્કારૂપાશ્ચ ગચ્છન્તઃ શરીરે નાગમૂર્તયઃ ॥૧॥

ક્ષણં વાળાઃ ક્ષણં દણ્ડાઃ ક્ષણં પાશસ્ત્રમાગતાઃ । આમરા હ્યસ્ત્રમેદાસ્તે યથાચિન્તિતમૂર્તયઃ ॥૨॥

‘મહા પુરિસ પહ્ણાઙ વા’ મહાપુરુષપતનાનીતિ વા-મહાપુરુષપતનાનિ-મહાપુરુષાઃ-
રાજપ્રમુતયઃ, તેષાં પતનાનિ-યુદ્ધાદૌ કાલધર્મેપ્રાપ્તયઃ, ‘મહારુહિરણિવહ્ણાઙ વા’ મહા-
રુહિરનિપતનાનીતિ વા ?, મહારુહિરાણાં-રાજાદિરુહિરાણાં નિપતનાનિ-પ્રવાહરૂપેણ વહ-
નાનિ । મગવાનાહ-‘ગૌયમા ! જો ઇણદ્દે સમદ્દે ’ હે ગૌતમ ! નો અયમર્થઃ સમર્થઃ, ‘વવ-
ગયવેરાણુવંધાણ તે મણુયા’ યતસ્તે ખલ્લ મનુજા વ્યપગતવૈરાનુવન્ધા-વ્યપગતો-દ્રૌભૂતો
વૈરસ્ય શત્રુતાયા અનુવન્ધઃ-સમ્બન્ધો યેભ્યસ્તે તથાભૂતાઃ ‘પણ્ણત્તા’ પ્રજ્ઞપ્તાઃ । પુનર્ગૌતમ-
પૃચ્છતિ-‘અત્થિ ણં મંતે ! તીસે સમાપ્પ ભરહે વાસે દુન્નમૂયાણીઙ વા’ હે ભદન્ત ! સન્તિ

વે શત્રુપક્ષ મેં ગહન અન્ધકાર ઉત્પન્ન કરકે શત્રુઓ કો કિંકર્ત્ત્વ્ય વિમૂઢ બના દેતે હૈં, હસી તરહ
જો ગરુડાસ્ત્ર એવ પર્વતાસ્ત્ર હોતે હૈ વે મી અપને અપને નામકે અનુરૂપ કાર્ય કરકે શત્રુદલ મેં
વિગ્ન વાવાઓ કો ઉપત્થિત કરતે હૈ ઉક્તં ચ—

ચિત્ર શ્રેણિક ! તે વાળ ભવન્તિ ધનુરાશ્રિતા । ઉત્કારૂપાશ્ચ ગર્જન્તઃ શરીરે નાગમૂર્તયઃ ॥૧॥

ક્ષણ વાળાઃ ક્ષણ દણ્ડા ક્ષણ પાશસ્ત્રમાગતાઃ । આમરા હ્યસ્ત્રમેદાસ્તે યથાચિન્તિતમૂર્તયઃ ॥૨॥

મહાપુરુષો કા પતન હોતા હૈ * રાજા આદિ જનો કો યહાં મહાપુરુષ શબ્દ સે કહા
ગયા હૈ તથા ચ રાજા આદિ મહાપુરુષો કો ડસ કાલ મેં મરતક્ષેત્ર મેં યુદ્ધ કે અવસર મેં મૃત્યુ
હોતી હૈ * મહારુહિર કા પાત હોતા હૈ * પ્રવાહરૂપ સે રક્તપાત હોના હૈ * હસ પ્રકાર કે હન
પ્રશ્નો કે ઉત્તર મેં પ્રમુ ગૌતમ સે કહતે હૈ હે ગૌતમ ! “જો ઇણદ્દે સમદ્દે” યદ્ અર્થ સમર્થ નહીં
હૈ ક્યો કિ “વવગયવેરાણુવંધાણ તે મણુયા પળ્ણત્તા” ડસ કાલ કે મનુષ્ય વૈરભાવ સે રહિત
હોતે હૈં, અવ ગૌતમસ્વામી પુનઃ એસા પૂછતે હૈં “અત્થિ ણં મંતે ! તોસે સમાપ્પ ભરહે વાસે દુન્નમૂ-

છે. જે તામસ બાણુ હોય છે તે શત્રુ પક્ષમાં પ્રગાઢ અંધકાર ઊત્પન્ન કરીને શત્રુઓને કિં
કર્ત્ત્વ્ય વિમૂઢ બનાવી મૂકે છે આ પ્રમાણે જે ગરુડાસ્ત્ર અને પર્વતાસ્ત્ર હોય છે તે પણ એ
તપોતાના નામની વિશેષતા અુજળ કાર્ય કરીને શત્રુદલમાં અનેક ભતની વિગ્ન-આધાઓ
ઉત્પન્ન કરે છે. ઉક્તંચઃ

ચિત્ર શ્રેણિક ! તે વાળા ભવન્તિ ધનુરાશ્રિતા । ઉત્કારૂપાશ્ચ ગચ્છન્તઃ શરીરે નાગમૂર્તયઃ ॥૧॥

ક્ષણ વાળાઃ ક્ષણ દણ્ડાઃ ક્ષણ પાશસ્ત્રમાગતાઃ । આમરા હ્યસ્ત્ર મેદાસ્તે યથાચિન્તિત મૂર્તયઃ ॥૨॥

મહાપુરુષોનું પતન હોય છે ? રાજા વગેરે લોકોને આહી મહાપુરુષ શબ્દ વડે સંબોધિત
કરવામાં આવ્યા છે. તેમજ રાજા વગેરે મહાપુરુષોનું તે કાળમાં ભરતતીર્થમાં યુદ્ધનાસમયે
મૃત્યુ થાય છે ? મહારક્તપાત થાય છે ? પ્રવાહરૂપના રક્તપાત થાય છે ? આપ્રમાણે એ પ્રશ્નો-
ના ઉત્તરમાં પ્રમુ ગૌતમને કહે છે-હે ગૌતમ ! “જો ઇણદ્દે સમદ્દે” આ અર્થ સમર્થ નથી
કેમકે “વવગય વેરાણુવંધા ણં તે મણુયા પળ્ણત્તા” તે કાળના મનુષ્યો વૈરભાવથી રહિત
હોય છે હવે ગૌતમ સ્વામી ફરી આ ભતનો પ્રશ્ન કરે છે કે “અત્થિ ણં મંતે ! તીસે

खलु तस्यां समायां भरते वर्षे ? दुर्भूतानीति वा? दुर्भूतानी=दुष्टानि भूतानि=प्राणिनः,
धान्यादि हानिकारिणः शलभादयः, इतय इति भावः,
इतयश्च—

अति वृष्टिरनावृष्टिर्मृषिकाः शलभाः शुकाः । अत्यासन्नश्च राजानः षडेता इतयः स्मृता ॥१॥

तथा - 'कुलरोगाइवा' कुलरोगा इति वा ? कुलरोगाः=कुलपरम्परयाऽऽगता रोगाः,
'गामरोगाइवा' ग्रामरोगा इति वा ? ग्रामरोगाः=ग्रामव्यापिनो रोगाः-विषूचिकादयः, 'मंडल
रोगाइवा' मंडलरोगा इति वा ? मण्डलं=ग्रामसमूहस्तद्व्यापिनो रोगाः-विषूचिकादयः,
'पोट्टरोगाइवा' पोट्टरोगा इति वा ? पोट्टरोगाः-उदररोगाः, 'सीसवेयणाइवा' शीर्षवेद-
नेति वा ? शीर्षवेदना-मस्तकपीडा, 'कण्णोद्वअच्छिणहदंतवेयणाइवा' कर्णौष्ठाक्षिनखदन्त-
वेदना इति वा ? कर्णौष्ठाक्षिनखदन्ता प्रसिद्धाः, तत्र वेदनाः-पीडाः, 'कासाइवा' कास
इति वा ? कासः-कासरोगः 'खांसी' इति भाषा प्रसिद्धः, 'सासाइवा' श्वास इति वा ?
श्वासः-श्वासरोगः, 'सोसाइ वा' शोष इति वा ? शोषः-क्षयरोगः, 'दाहाइ वा' दाह
इति वा ? दाहः-दाहरोगः, 'अरिसाइ वा' अर्श इति वा ? अर्शो-गुदाङ्कुरः, 'बवासीर,
मसा' इति भाषा प्रसिद्धः, 'अजीरगाइ वा' अजीर्णमिति वा ? अजीर्णम्-अजीर्णरोगः,
'दओदराइ वा' दकोदर मिति वा ? दकोदरं-जलोदरम् 'पंडुरोगाइ वा' पाण्डुरोग इति
वा ? पाण्डुरोगः प्रसिद्धः, 'भगदराइ वा' भगन्दर इति वा ? भगन्दरः प्रसिद्धः, 'एगाहि-

આણિ વા કુલરોગાઈ વા, ગામરોગાઈ વા, મંડલ રોગાઈ પોટ્ટરોગાઈ વા, સીસવેયણાઈ વા, કણ્ણોદ્વ
અચ્છિણહદંત વેયણાઈ વા, કાસાઈ વા સાસાઈ વા સોસાઈ વા, હે મદ્રન્ત ! ઉસ કાલ મેં ભરત-
ક્ષેત્ર મેં દુષ્ટમૂત ધાન્યાદિ કો હાનિ પહુંચાને વાલે શલભ આદિ રૂપ ઇતિયાં હોતે હૈં ? ઉક્તં ચ-
"અતિવૃષ્ટિરનાવૃષ્ટિર્મૃષિકાઃ શલભા શુકાઃ । અત્યાસન્નાશ્ચ રાજાન ષડેતા ઇતયઃ સ્મૃતા" ॥૧॥

કુલરોગ-કુલપરમ્પરા સે આયે હુણ રોગ હૈ ? ગ્રામરોગ ગ્રામવ્યાપી રોગ વિષૂચિકા આદિ હૈ
મંડલરોગ અનેક ગ્રામ, મેં વ્યાપીરોગ વગેરહ હોતે હૈ ? પોટ્ટરોગ ઉદરવ્યાધિ, શીર્ષવેદના, ઓષ્ઠ
વેદના, અક્ષિવેદના, નસવેદના, એવં દન્તવેદના, યે સવ વેદનાઈ હોતે હૈ ? લોગો મેં સ્વાસી હોતી
હૈ શ્વાસ રોગ હોતા હૈ ક્ષયરોગ હોતા હૈ "દાહાઈ વા અરિસાઈ વા, અજોરગાઈ વા, દમોદરા-
ઈવા પંડુરોગાઈવા, ભગંદરાઈવા, એગાહિઆઈ વા, વેઆહિઆઈ વા, તેઆહિયાઈ વા, ચડતથ-

સમાપ મરહે વાસે દુર્ભૂઆણિ વા કુલરોગાઈ વા રોગાઈવા, મંડલરોગાઈવા, પોટ્ટ
રોગાઈવા, સીસવેયણાઈ વા, કણ્ણોદ્વ અચ્છિણહદંત વેયણાઈવા કાસાઈ વા સા વા સો
સાઈ વા' હે ભદ્રન્ત ! તે કાળે ભરતક્ષેત્ર માં દુષ્ટમૂતો-ધાન્યાદિને નુકસાન પહોંચાડનારા
શલભ વગેરે ઈતિઓ-હોય છે ? ભક્ત યઃ

અતિવૃષ્ટિરનાવૃષ્ટિર્મૃષિકાઃ શલભાઃ શુકાઃ । અત્યાસન્નાશ્ચ રાજાન ષડેતા ઇતયઃ સ્મૃતાઃ ॥૧॥
કુલરોગો-કુલપરંપરાગતરોગ-હોય છે ગ્રામરોગ ગ્રામવ્યાપીરોગ-વિષૂચિકા વગેરે
હોય છે મંડલરોગ અનેક ગ્રામોમા વ્યાપ્ત થાય તેવા ઠોઢેરા વગેરે રોગ-હોય છે, પોટ્ટ
રોગ-ઉદર વ્યાધિ શીર્ષ વેદના કષ્ણ વેદના ઝોષ વેદના અસ્થિ વેદના નખવેદના અને
દન્તવેદના એ સર્વવેદનાઓ હોય છે ? ઠોઢોને ઉધરસ હોય છે ? શ્વાસરોગ હોય છે, ક્ષય રોગ
હોય છે, "દાહાઈ વા અરિસાઈ વા અજીરગાઈ વા, દમોદરાઈ વા પંડુરોગાઈ વા અર્પંક-

याइ वा' एकाहिक इति वा ? एकाहिकः—एकदिवसान्तरेण जायमानो ज्वरः, 'वेया-
हियाइ वा' द्वैयाहिक इति वा 'द्वैयाहिक'—द्वि दिवसान्तरेण जायमानो ज्वरः, 'तेयाहिया
इ वा' त्रैयाहिक इति वा ? त्रैयाहिकः—दिवसत्रयान्तरेण जायमानो ज्वरः, 'चउत्थाहि-
याइवा' चतुर्थाहिक इति वा ? चतुर्थाहिकः—चतुर्थ दिवसं व्यवधाय जायमानो ज्वरः,
'इंदग्गहाइवा' इन्द्रग्रह इति वा ? इन्द्रग्रहः—इन्द्रावेशः, 'धणुग्गहाइवा' धनुर्ग्रहइति वा ध-
नुर्ग्रहः—वातविशेषः, 'खदग्गहाइवा' स्कन्दग्रह इति वा ? स्कन्दग्रहः—स्कन्दावेश, 'कुमार-
ग्गहाइवा' कुमार ग्रह इति वा ? कुमारग्रहः—कुमार नामक यक्षविशेषावेशः, 'जक्खग्गहा-
इवा' यक्षग्रह इति वा ? यक्षग्रहः—यक्षावेशः, 'भूयग्गहाइवा' भूतग्रह इति वा ? भूतग्रहः—
भूतावेश, एते इन्द्रग्रहादय उन्मादहेतवो बोध्या इति, तथा 'मत्थयसूलाइवा' मस्तक-
शूलमिति वा ? मस्तकशूलम्—मस्तके जायमानः शूल नामको रोगविशेषः, 'हियसूला-
इवा' हृदयशूलम् इति वा ? हृदयशूलं—हृदये जायमानः शूलरोगः. 'पोट्सूलाइवा' पोट्ट-
शूल मिति वा ? पोट्टशूलम्—उदरे जायमान शूलरोगः, 'कुच्छिसूलाइवा' कुक्षिशूल मिति-

हिआइ वा " दाहरोग होता है अशरीरोग-वन्नासीर होता है अजीर्ण होता है ? जलोदर होता है ?
पाण्डुरोग होता है ? भगन्दर होना है ? एक दिन छोडकर आनेवाला ज्वर होता है ? दो दिन छोड
कर आने वाला ज्वर होता है ? तीन दिन छोडकर आने वाला ज्वर होता है ? चार दिनों को
छोडकर आने वाला ज्वर होता है 'इंदग्गहाइ वा , धणुग्गहाइ वा खदग्गहाइ वा , कुमारग्गहाइ
वा, जक्खग्गहाइ वा, भूयग्गहाइ वा, मत्थयसूलाइ वा, हियसूलाइ वा, पोट्सूलाइ वा, कुच्छि-
सूलाइ वा, जोणिसूलाइ वा, गाममारीइ वा, जाव सण्णिवेसमारीइ वा, पाणिक्खया जणक्खया
कुलक्खया, वसण्णमूयमणारिया" इन्द्रग्रह होता है ? धनुर्ग्रह होता है ? वातविशेष व्याधि होती है ?
स्कन्धग्रह होता है ? कुमारग्रह होता है ? यक्षग्रह होता है ? भूतग्रह होता है ? ये सब इन्द्रग्रह आदि उन्माद
के हेतु होते है, तथा मस्तकशूल होता है ? हृदयशूल होता है ? पोट्टशूल उदरशूल होता है, कुक्षि-

राइ वा पग्गहिआइ वा वेयाहिआइ वा तेयाहिआइ वा चउत्थाहिआइ वा" दाह
रोग होय छे ? अशरीरोग होय छे ? अटलेके करसुना रोग होय छे ? अण्णु होय छे ? अणो
हर होय छे ? पाटुरोग होय छे ? भगंतर होय छे ? ओक दिवस वयमां भूमी दध ने आवनार
ज्वर विशेष ओटले के ओकातरियो ताव दोकेने आवे छे, ? जे दिवस वयमां भूमीने आव
नार ताव दोकेने आवे छे, ? त्रयु दिवस वयमां भूमीने आवनार ताव दोकेने आवे छे ? चार
दिवस वयमांभूमीने आवनार ताव दोकेने आवे छे ? 'इंदग्गहाइवा, धणुग्गहाइवा खदग्गहाइ
वा कुमारग्गहाइ वा जक्खग्गहाइ वा, भूयग्गहाइ वा मत्थयसूलाइवा हियस सूलाइ वा
पोट्सूलाइवा कुच्छिसूलाइवा जोणिसूलाइवा गाममारीइ वा जाव सण्णिवेसमा-
रोइ वा पाणिक्खया जणक्खया कुलक्खया वसण्णमूयमणारिया ? इन्द्रग्रह होय छे ?
धनुर्ग्रह होय छे ? वात विशेषव्याधि होय छे ? स्कन्धग्रह होय छे ? कुमार ग्रह होय छे ? यक्ष
ग्रह होय छे भूतग्रह होय छे ओ सर्व इन्द्रग्रह वगेरे उन्मादना हेतु होय छे ? तेभज ते
ते कणना दोकेने मस्तक शूल होय छे ? हृदय शूल होय छे ? पोट्टशूल-उदरशूल होय

વા , કુભેયૂઝં-કુપો જાયમાનઃ શૂલરોગ , 'જાણિમુઝાડ વા' યોનિ શૂલમિતિ વા ! ,યો-
 નિશૂલં-યોનો જાયમાનઃ શૂલરોગઃ, 'ગામમારીડવા' ગ્રામમારિ રિતિ વા ? , ગ્રામમારિઃ-રો-
 ગવિશેષેણ ગ્રામે વહૂનાં મરણમ્, 'જાવ' યાવત્-યાવત્પદેન-આકરમારિ રિતિ વા ? , નગર-
 મારીરિતિ વા , 'ખેટમારિ રિતિ વા , 'કર્વટ મારિ રિતિ વા ? મહમ્બ મારિરિતિ વા , દ્રો-
 નમુખ મારિરિતિ વા , પત્તનમારિરિતિ વા , આશ્રમમારિરિતિ વા , સંવાહમારિરિતિ વા,
 इति संग्रहः, तथा 'सण्णिवेसमारी डवा' मंनिवेशमारिरिति वा , आकरादि सन्निवेशान्त
 शब्दानामर्थाः पूर्वमुक्ताः, तेषु आकरादि सन्निवेशान्तेषु स्थानेषु मारिः-रोगविशेषेण
 बहुनो मरणमित्यर्थः, तथा 'वमणब्भूयं' व्यसनभूताः-जनानामापहृताः, 'अणारिया' अ-
 नार्याः-पापभूताः 'पाणिकखया' प्राणिक्रयः-गवादि प्राणिनां विनाशः, 'जणवखया'
 जनक्षयाः-मनुष्याणां विनाशः, 'कुलकखया' कुलक्षयाः-वंशविनाशश्च किं भवन्ति ?
 'भगवानाह-गोयमा ! णो इण्ढे समद्धे' हे गौतम ! नो अयमर्थः समर्थः, यतो 'समणा-
 उसो !' हे आयुष्मान् श्रमण ! 'ते ण मणुया' ते खलु मनुजाः 'ववगयरोगायका' व्यप-
 गतरोगातङ्काः-व्यपगताः-दूरीभूता रोगातङ्काः-पोडशविधा रोगा आतङ्काश्च येभ्यस्ते
 तथाभूताः 'पण्णत्ता' प्रज्ञप्ता इति ॥३२॥

શૂલ હોતા હૈ, યોનિશૂલ.હોતા હૈ, રોગવિશેષ સે પ્રામ મેં અનેક જીવો કા મરના હોતા હૈ, યહાં યા-
 વત્ શબ્દ સે “આકરમારિ, નગરમારિ, ખેટમારિ, કર્વટમારિ, મહમ્બમારિ, દ્રોણમુખમારિ, પત્તન,
 મારિ, આશ્રમમારિ, સંવાહમારિ” ઇન પદો કા સમ્રહ હુઆ હૈં, તથા સન્નિવેશમારિ હોતી હૈ .
 આકર સે લેકર સન્નિવેશ પદ કે શબ્દો કા અર્થ પહિલે કહા જા ચુકા હૈ ઇન આકર આદિ
 સે લેકર સન્નિવેશતક કે સ્થાનો મેં જો રોગવિશેષ કે દ્વારા અનેક જીવો કો મરના હૈ વહ તત્ત્વ
 મારિ હૈ તથા પ્રાણિક્રય હોતા હૈ . ગાય આદિ પશુઓ કા વોમારી સે વિનાશ હોતા હૈ . જનક્ષય મનુ
 ષ્યો કા કિસી વોમારી આદિ દ્વારા અકાલ મરણ હોતા હૈ . કુલક્ષય વંશવિનાશ હોતા હૈ . ઇસકે
 ઉત્તર મેં પ્રશ્ન કહતે હૈ “ગોયમા ણો ઇણ્ઢે સમદ્ઢે” હે ગૌતમ યહ અર્થ સમર્થ નહીં હૈ ક્યોકિ-
 “વવગય રોગાયકા ણં તે મણુયા પણ્ણત્તા સમણાઉસો” હે શ્રમણ આયુષ્મન્ ! ૧૬ પ્રકાર કે

છે . ! કુક્ષિશૂળ હોય છે ? યોનિશૂળ હોય છે ? રોગ વિશેષથી આમઆ ઘણાં જીવોનું
 મરણ થાય છે ? અહીં યાવત્ પદથી ‘આકરમારિ, નગરમારિ, ખેટમારિ, કર્વટમારિ,
 મહમ્બમારિ, દ્રોણમુખમારિ પત્તનમારિ, આશ્રમમારિ સંવાહમારિ’ એ પદોનો સંગ્રહ થયેલ
 છે તેમજ સન્નિવેશ મારિ હોય છે ? આકરથી સન્નિવેશ પદ સુધીના સર્વ પદોનો અર્થ
 પહેલા સ્પષ્ટ કરવામા આવેલ છે એ આકરથી સન્નિવેશ સુધીના સ્થાનોમા જે રોગ વિશેષ
 વડે ઘણાં જીવોનું મરણ થાય છે, તે તત્ તત્ મારિના પ્રભાવથી જ થાય છે તેમજ પ્રા-
 ણિક્રય થાય છે-ગાય વગેરે પશુઓનો માંદગીથી વિનાશ થાય છે . જનક્ષય-માણસોનો
 કોઈ માંદગી વગેરે વડે અકાલ મરણ થાય છે ? કુલક્ષય-વંશ વિનાશ થાય છે ? એના
 જવાબમાં પ્રશ્ન કહે છે “ગોયમા ! ણો ઇણ્ઢે સમદ્ઢે” હે ગૌતમ ! આ અર્થ સમર્થ નથીકેમકે-
 ‘વવગય રોગાયકા ણં તે મણુયા પણ્ણત્તા સમણા ઉસો’ હે શ્રમણ આયુષ્મન્ ! રોગ

સમ્પ્રતિ તેષાં મનુજાનાં ભવસ્થિતિ શરીરોચ્ચત્વાદિ વિપયમાહ—

મૂલમ્— તીસે તં મંતે ! સમાપ્ત ભરહે વાસે મણુયાણં કેવઇયં કાલં ઠિઈ પળ્લત્તા ? ગોયમા ! જહળ્લેણં દેસૂળાઈં તિણ્ણ પલિ ઓવમાઈં ઉક્કો— સેણં તિણ્ણ પલિ ઓવમાઈં । તીસે ણં મંતે ! સમાપ્ત ભરહે વાસે મણુયાણં સરીરા કેવઇયં ઉચ્ચત્તેણં પળ્લત્તા ? ગોયમા ! જહળ્લેણં દેસૂળાઈં તિણ્ણ ગાડયાઈં ઉક્કોસેણં તિણ્ણ ગાડયાઈં । તેણં મંતે ! મણુયા કિં સંઘયણી પળ્લત્તા ? ગોયમા ! વઢ્ઠોસભનારાય સંઘયણી પળ્લત્તા । તેસિ ણં મંતે ! મણુયાણં સરીરા કિં સંઠિયા પળ્લત્તા ? ગોયમા ! સમ્પચરંસ સંઠાણસંઠિયા પળ્લત્તા તેસિ ણં મણુયાણં વેહ્લ-પ્પળ્ણા પિટ્ઠકરંડયસયા પળ્લત્તા સમળા ઉસો ! તેણં મંતે ! મણુયા કાલમાસે કાલં કિચ્ચા કહિ ગચ્છંતિ કહિ ઉવવજ્જંતિ ગોયમા ! છમ્માસાવસેસાડયા જુયલગં પસવંતિ, ઇગૂળપળ્ણં રાઈંદિયાઈં સારક્ખંતિ સંગોવેંતિ સારક્ખિત્તા સંગોવેત્તા કાસિત્તા છીઈત્તા જંમાઈત્તા અક્કિટ્ઠા અવ્વહિયા અપરિયાવિયા કાલમાસે કાલં કિચ્ચા દેવલોપ્પસુ ઉવવજ્જંતિ, દેવલોપપરિગ્ગહાણં તે મણુયા પળ્લત્તા । તીસે ણં મંતે ! સમાપ્ત ભરહે વાસે કઠ્ઠવિહા મણુસ્સા અણુસજ્જિત્થા ? ગોયમા ! છવ્વિહા પળ્લત્તા, તં જહા પમ્હગંધા ૧ મિયગંધા ૨ અમમો ૩ તેયતલી ૪ સહા ૫ સણિચારી ૬ ॥ સુ. ૩૩ ॥

છાયા-તસ્યાં ચ્છલુ મદન્ત ! સમાયાં ભરતે વર્ષે મનુજાનાં કિયન્તં કાલં સ્થિતિ પ્રજ્ઞતાઃ ? ગૌતમ ! જઘન્યેન દેશોનાનિ ત્રીણિ પલ્લોપમાનિ, ઉત્કર્ષેણ ત્રીણિ પલ્લોપમાનિ । તસ્યાં ચ્છલુ મદન્ત ! સમાયાં ભરતે વર્ષે મનુજાનાં શરીરાણિ કિયન્તિ ઉચ્ચત્વેન પ્રજ્ઞતાનિ ?, ગૌતમ ! જઘન્યેન દેશોનાનિ ત્રીણિ ગવ્યૂતાનિ, ઉત્કર્ષેણ ત્રીણિ ગવ્યૂતાનિ । તે ચ્છલુ મદન્ત ! મનુજાઃ કિં સંહનિનઃ પ્રજ્ઞન્તા ? ગૌતમ ! વજ્રવ્રહ્મનારાચસંહનિનઃ પ્રજ્ઞતાઃ । તેષાં ચ્છલુ મદન્ત ! મનુજાનાં શરીરાણિ કિં સંસ્થિતાનિ પ્રજ્ઞન્તાનિ ?, ગૌતમ ! સમ્પચતુરસસંસ્થાન સંસ્થિતાનિ પ્રજ્ઞન્તાનિ । તેષા ચ્છલુ મનુજાનાં દ્વેષદ્વ પલ્લાશત્ પૃષ્ઠકરણ્ઢકશતે પ્રજ્ઞન્તે

રોગો સે ઔર આતઢ્ઠો સે ચે સબ રહિત હોતે હૈ અર્થાત્ રોગ ઔર આતઢ્ઠ સદા હનસે દૂર રહા કરતે હૈ એસા આગમ કા કથન હૈ ॥ ૩૨ ॥

પ્રકારના રોગો અને આતઢ્ઠોથી તે કાળના લોકો વિહીન હોય છે. ઔટલે કે સદા રોગો અને આતઢ્ઠો ઔમનાથી દૂર રહે છે એવું આગમનું કથન છે ॥ સુ. ૩૩ ॥

શ્રમણાયુષ્મન્ । તે સ્વલુ ભદન્ત ! મનુજાઃ કાલમાસે કાલ કૃત્વા સ્વ ગચ્છન્તિ ! ક્વ ઉત્પદ્યન્તે ? , ગૌતમ ! પળ્લમાનાવગેપાયુપો યુગલક પ્રતુવતે પ્કોનપઙ્ચાશદ્ રાત્રિન્દિવાનો સંરક્ષન્તિ સંગોપયન્તિ, સરદય સંગોપ્ય કાસિત્વા શ્રુત્વા જૃમ્ભિત્વા અફિલપ્તા અવ્યથિતા અપરિતાપિતા કાલમાસે કાલં કૃત્વા દેવલોકેષુ ઉત્પદ્યન્તે, દેવલોકપરિગ્રહા સ્વલુ તે મનુજાઃ પ્રજ્ઞપ્તા. । તસ્યાઃ સ્વલુ ભદન્ત ! સમાયાં ભરતે વર્ષે કતિવિધા મનુષ્યાઃ અન્વપ-જન્ ? , ગૌતમ ! પઙ્કવિધા પ્રજ્ઞપ્તા, તદયથા પઙ્કગન્ધા ૧ નૃગગન્ધાઃ ૨ અમમા ૩ તેજસ્ત-લિનઃ ૪ સહા ૫ શનૈશ્ચારિણ. ૬ ॥૧૭૦ ૩૩॥

ટીકા—‘તીસે ણં’ इत्यादि ।

‘તીસે ણં મંતે ! સમાપ્ ભરદે વાસે મણુયાણં કેવડયં કાલં ઠિઈં પળ્ણત્તા’ હે ભદન્ત ! તસ્યાં સ્વલુ સમાયા ભરતે વર્ષે મનુજાનાં કિયન્તં કાલં સ્થિતિઃ પ્રજ્ઞપ્તા ? ભગવાનાહ—‘ગોયમા ! જહ્ણણેણં દેસૂણાઈં તિણ્ણિ પલ્લિઓવમાઈં’ હે ગૌતમ ! જઘ્ણ્યેન દેશોનાનિ ત્રીણિ પલ્લોપમાનિ, ‘ઉક્કોસેણં તિણ્ણિ પલ્લિઓવમાઈં’ ઉત્કર્ષેણ ચ ત્રીણિ પલ્લોપમાનિ સ્થિતિસ્તેપાં મનુજાનાં પ્રજ્ઞપ્તા । અત્ર ‘દેશોનાનિ’ ઇતિ વિશેષણં યુગલિક સ્ત્રિયમાશ્રિત્ય બોધ્યમ્ । દેશોનતા ચ પલ્લોપમાસંખ્યેયમાગન્યૂનતયા બોધ્યા । અથ શરીરાવગાહનાવિષયે પૃચ્છતિ—‘તીસે ણં મંતે ! સમાપ્ ભરદે વાસે મણુયાણં સરીરા

“તીસે ણ મંતે ! સમાપ્ ભરદે વાસે મણુયાણં કેવડયં કાલં ઠિઈં પળ્ણત્તા” इत्यादि ।

ટીકાથ—‘તીસે ણ મંતે ! સમાપ્ ભરદેવાસે મણુયાણ કેવડયં કાલં ઠિઈં પળ્ણત્તા’ ઇસ સૂત્ર દ્વારા ગૌતમને પ્રશ્ન સે એસા પૂછા હૈ—હે ભદન્ત ! ઉપસુપમસુપમાકાલ મે ભરતક્ષેત્ર મે મનુષ્યોં કી સ્થિતિ ક્રિતને કાલ કી હોતી હૈ ઇસકે ઉત્તર મે પ્રશ્ન કહતે હૈ—‘ગોયમા જહ્ણણેણં દેસૂણાઈ તિણ્ણિ પલ્લિ ઓવમાઈ ઉક્કોસેણ દેસૂણાઈ તિણ્ણિ પલ્લિઓવમાઈં’ હે ગૌતમ ઉપસુપમસુપમાકાલ કે સમય મેં ભરતક્ષેત્ર કે મનુષ્યો કી આયુ જઘ્ણ્ય કુલ્લ કમ ત્રીન પલ્લોપમ કી હોતી હૈ ઓર ઉત્કલ્લ કુલ્લ કમ ત્રીન પલ્લોપમ કી હોતી હૈ યહા કુલ્લ કમ જો ત્રીન પલ્લોપમ કી આયુ કહી ગઈ હૈ વહ યુગ-લિક સ્ત્રિયોં કી આયુ કી અપેક્ષા લેકર કહી ગઈ હૈ તથા પલ્લોપમ કે અસલ્લ્યાતવેં ભાગ સે જો હીનતા હૈ વહો યહા કુલ્લ કમ કે સ્થાન પર ગૃહીત હુઈ હૈ અવ ગૌતમ શરીરાવગાહના કે સમ્બન્ધ

‘તીસે ણ મંતે ! સમાપ્ ભરદે વાસે મણુયાણં કેવડયં કાલં ઠિઈં પળ્ણત્તા’—इत्यादि सूत्र३३॥

ટીકાથ—આ સૂત્ર વડે ગૌતમે પ્રશ્નને આજ્ઞાતનેા પ્રશ્ન કર્યો છે કે—હે ભદન્ત ! તે સુપમ સુપમા કાળમા ભરત ક્ષેત્રમા મનુષ્યોની સ્થિતિ કેટલા કાળની હોય છે ? એના જવાબમા પ્રશ્ન કહે છે કે—ગોયમા ! જહ્ણણેણ દેસૂણાઈ તિણ્ણિ પલ્લિઓવમાઈં ઉક્કોસેણ—દેસૂણાઈં તિણ્ણિ પલ્લિ ઓવમાઈં હે ગૌતમ તે સુપમ સુપમા કાળના સમયમા ભરત ક્ષેત્રના મનુષ્યોનુ આયુ જઘ્ણ્ય—કંઈક સ્વલ્પ ત્રણ પલ્લોપમ જેટલુ હોય છે અને ઉત્કલ્પથી કંઈક કમ ત્રણ પલ્લોપમ જેટલુ હોય છે અહીં જે કંઈક કમ ત્રણ પલ્લોપમ જેટલુ આયુ ગહેવામા આવેલ છે, તે યુગલિક સ્ત્રીઓના આયુની અપેક્ષાએ કહેવામાં આવેલ છે તેમજ પલ્લોપમના અસંખ્યાતમા ભાગથી જે હીનતા છે તે અહીં કંઈક કમના સ્થાને ગૃહીત થયેલ છે હવે ગૌતમ શરીરાવગાહ

केवड्यं' हे भदन्त ! तस्यां खलु समायां भरते वर्षे मनुजानां शरीराणि क्रियन्ति=किं प्रमाणानि 'उच्चत्तेणं पण्णत्ता' उच्चत्वेन प्रज्ञप्तानि ?, भगवानाह—'गोयमा ! जहण्णेणं देसुणाइं तिण्णि गाउयाइं' हे गौतम ! तेषां मनुष्याणां शरीराणि जघन्येन देशोनानि त्रीणि गव्यूतानि, 'उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं' उत्कर्षेण च त्रीणि गव्यूतानि उच्चत्व-माश्रित्य विज्ञेयानि । अत्रापि 'देशोनानि' इति विशेषणं युगलिकस्त्रियमाश्रित्य बोध्यम् । यद्यपि 'छ धणुसमूसियाओ' इति पूर्वमुक्तं, तेनैवावगाहना प्रतीता, तथापि जघन्योत्कृष्टता सूचनार्थं पुनरवगाहना सूत्रमुक्तमिति बोध्यम् । अथ संहननविषये पृच्छति—'ते ण भंते ! मणुया किं संघयणीपण्णत्ता' हे भदन्त । ते खलु मनुजाः किं सहननः—किं च तत् संहननं चेति किं सहनन, तदस्त्येपामिति किं संहनननः—किं सहननविशिष्टाः प्रज्ञप्ता ?, भगवानाह—'गोयमा ! वइरोसभणाराय सघयणी पण्णत्ता' हे गौतम ! ते मनुजाः वज्र-रूपभनाराचसंहननः प्रज्ञप्ताः । सम्प्रति संस्थानविषये पृच्छति—'तेसि णं भंते ! मणुयाणं सरीरा किं सठिया पण्णत्ता' हे भदन्त ! तेषां खलु मनुजानां शरीराणि किं संस्थितानि=किमाकाराणि प्रज्ञप्तानि ?, भगवानाह—'गोयमा ! समचउरंससठाणसठिया

में प्रभु से पूछते हैं—'तोसे ण समाए भरहे वासे मणुयाण सरोरा केवड्य उच्चत्तेणं पण्णत्ता' हे भदन्त उस काल में भगवत्क्षेत्र में मनुष्यों के शरीर ऊचाई में कितने बड़े थे ? उत्तर में प्रभु कहते हैं "गोयमा जहन्नेणं तिण्णि गाउयाइं उक्कोसेण तिण्णि गाउयाइं" हे गौतम उस काल में भरत क्षेत्र में मनुष्यों के शरीर जघन्य से और उत्कृष्ट से तीनकोश के थे । यहां पर भोजो उत्कृष्ट शरीर की अवगाहना बतलाई गई है वह युगलिक स्त्रियों की अपेक्षा से ही बताई गई है "तेणं भंते मणुया किं सघयणी पण्णत्ता" हे भदन्त वे मनुष्य किस सहनन वाले होते कहे गये हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं "गोयमा वइरोसभणाराय सघयणी पण्णत्ता" हे गौतम । वे मनुष्य वज्ररूपभनाराच सहनन वाले होते कहे गये हैं । "तेसि णं भंते ! मणुयाण सरीरा किं सठिया पण्णत्ता" हे भदन्त ! उन मनुष्य के शरीर किस संस्थान वाले कहे गये हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं "गोयमा ! समचउरंसठाण सठिया" हे गौतम । उनका शरीर

ना विषे प्रभुने प्रश्न करे छे के 'तोसे णं भंते समाए भरहे वासे मणुयाणं सरीरा केवड्य उच्चत्तेणं पण्णत्ता' हे भदन्त । ते कालमा भरत क्षेत्रमा भाषुसे शरीरनी जियाई मा डेटवा लाणा हुता ? उत्तरमा प्रभु कहे छे के — 'जहन्नेण तिण्णि गाउयाइ उक्कोसेण तिण्णि गाउयाइं हे गौतम ते काल मा भरत क्षेत्रमा भाषुसे जघन्य अने उत्कृष्टनी अपेक्षाओ त्रिषु गाँठे डेटवा हुता. अही ने उत्कृष्ट शरीरनी अवगाहना रूपे करवामा आवी छे ते युगलिक स्त्रीओनी अपेक्षाओ रूपे करवामा आवी छे, "तेणं भंते मणुया किं सघयणी पण्णत्ता ?" हे भदन्त ते मनुष्यो कथं जतना संहननवाणा डोय छे जेना जवाण मा प्रभु कहे छे के 'गोयमा ! वइरोसभणाराय सघयणी पण्णत्ता हे गौतम । ते मनुष्यो वज्र रूप भनाराच संहननवाणा डोय छे 'तेसि णं भंते मणुयाणं सरीरा किं सठिया पण्णत्ता' हे भदन्त । ते मनुष्योना शरीर कथं जतना संस्थानवाणा छे ? जेना

પણ્ણત્તા' હે ગૌતમ ! તે મનુજાઃ સમચતુરસ્રસંસ્થાનસંસ્થિતાઃ—સમચતુરસ્ર=તુલ્યારોહપરિ-
 ણાહ, તત્ત્વ, સંસ્થાન સમચતુરસ્રસંસ્થાનં તેન સંસ્થિતાઃ । અથ પૃષ્ઠકરણ્ડક સંખ્યા-
 વિપયે પૃચ્છતિ—'તેસિ ણં' ઇત્યાદિ । 'તેસિ ણં મણુયાણં વેછપણ્ણા પિટ્ઠકરહયસયા' તેણં
 મનુજાનાં દ્વે પદ્ પચ્ચાશત્ પૃષ્ઠકરણ્ડકશતે=પદ્ પચ્ચાશદધિકા દ્વિગતસંખ્યકપૃષ્ઠકરણ્ડ-
 કાઃ 'પણ્ણત્તા' પ્રજ્ઞપ્તે । અત્ર સંહનનસંસ્થાપૃષ્ઠકરણ્ડકવિપયાણિ સૂત્રાણિ પૂર્વમુક્તાનિ ત-
 થાપ્યેણં પુનરુપાદાન તેણં સર્વેણા સંહનનાદિકં સમાન ભવતીતિ સૂચનાયેતિ । પુનર્ગૌત-
 મસ્વામીપૃચ્છતિ—'તે ણં મતે ! મણુયા કાલમાસે' હે મદન્ત ! તે સ્વલુ મનુજાઃ કાલ-
 માસે મરણસમયે 'કાલ કિન્ચા' કાલં કૃત્વા=મૃત્વા 'કહિં ગચ્છંતિ' ક્વ ગચ્છન્તિ=
 કસ્મિન્ લોકે પ્રયાન્તિ ? 'કહિં ઉવવજ્જંતિ' ક્વ ઉત્પદ્યન્તે ? ભગવાનાહ—'ગોયમા !
 છમ્માસાવસેસાડયા' હે ગૌતમ ! પમ્માસાવગેપાયુપ—પમ્માસાવગેપં=પમ્માસાવશિષ્ટમ્
 આયુર્યેણં તે તથાભૂતા કાલધર્મપ્રાપ્તૌ અવશિષ્ટપમ્મામાઃ વિહિતપરમવાયુર્વન્ધાઃ સન્તસ્તે
 મનુજાઃ યથાસમય 'જુયલ્લં' યુગલક=યુગ્મ 'પસવતિ' પ્રમુવતે=જનયન્તિ । તદ્ યુગલમ્
 'પગૂણપણ્ણ રાહંદિયાહં' એકોનપચ્ચાશદ્ રાત્રિન્દિવમ્=અહોરાત્રાન્ 'સારવલ્લંતિ' સંરક્ષન્તિ=

સમચતુરસ્ર સંસ્થાન વાલા રૂઢા ગયા હૈ વરાવર આરોહ ઓર પરિણાહ જિસકા હોતા હૈ उसका
 नाम समचतुरस्र संस्थान है, "तेसि ण मणुआण वे छप्पण्णा पिट्ठकरोहयसया पण्णत्ता समणा
 उसो" हे श्रमण आयुष्मन् ! उनके पृष्ठ करण्डक २५६ होते हैं, यद्यपि यह कथन पीछे किया जा
 चुका है, परन्तु फिर भी जो यह पर दुहगया गया है उसका कारण इन सबका सहननादि
 सब समान होता है इस बातको सूचित करता है "तेण मते ! मणुया कालमासे काल किच्चा कहिं
 गच्छंति, कहिं उववज्जंति" हे मदन्त ! ये मनुष्य समय पर मर करके कहा जाते हैं 'कहा उत्पन्न
 होते हैं' उत्तर में प्रभु कहते हैं "गोयमा ! छम्मासावसेसाडया जुयल्लं पसवन्ति" हे गौतम !
 जब इनकी आयु छ मास की बाकी रहती है तब परमव की आयु का बन्ध करते हैं और
 युगलिक को उत्पन्न करते हैं फिर उसको उत्पत्ति के बाद ये उसे युगलिक की "पगूणपण्णं

જનાણમા પ્રભુ કહે છે કે 'ગોયમા સમચતુરસ્રસંસ્થાન સંસ્થિતા હે ગૌતમ તેમનું શરીર સ
 મચતુરસ્રસંસ્થાનવાળું કહેવામા આવ્યું છે બરાબર આરોહ અને પરિણાહ બેમનુ
 હેય છે તેનું નામ સમચતુરસ્ર સંસ્થાન છે, 'તેસિણ મણુઆણ વેછપ્પણ્ણા પિટ્ઠ કરંહય
 સયા પણ્ણત્તા સમણાસો' હે શ્રમણ આયુષ્મન્ ! તેમના પૃષ્ઠ કરંડક ૨૫૬ હોય છે બે કે
 આ મનુજા કથન પહેલાં કરવામા આવેલ છે, પણ છતાંજે અહીં જે બીજી વખત કહેવામાં
 આવ્યું છે તેનું કારણ આ પ્રમાણે છે કે એમનું સંહનન વગેરે બધું સમાન હોય છે. આ
 વાતને સૂચિત કરવા માટે જ અહીં ઉપયુક્તકથનની બીજી વખત આવૃત્તિ કરવામાં આવી
 છે 'તેણ મતે મણુયા કાલમાસે કાલં કિન્ચા કહિં ગચ્છંતિ, કહિં ઉવવજ્જંતિ' હે મદન્ત
 એ મનુષ્યો! યથા સમયે મૃત્યુ પ્રાપ્ત કરીને કયા બન્ય છે કયા ઉત્પન્ન થાય છે ? ઉત્તરમા પ્રભુ
 કહે છે કે 'ગોયમા છમ્માસાવસેસાડયા જુયલ્લં પસવન્તિ' હે ગૌતમ જ્યારે એમનું આયુ છ
 માસ બેટલું બાકી રહે છે ત્યારે એ પરમવના આયુને બન્ધ કરે છે અને યુગલિકને ઉ-
 ત્પન્ન કરે છે યુગલિકની ઉત્પત્તિ પછી એઓ યુગલિકનું 'પગૂણપણ્ણ રાહંદિયાહં સાર-

ઉચિતોપચારાદિના પાલયન્તિ, 'સંગોવેતિ' સગોપયન્તિ=અનામોગેન દમ્તસ્ત્રલનાદિભ્યઃ સમ્યક્ રક્ષન્તિ, इत्थं 'सारस्वत्ता संगोवेत्ता' गरुड्य सगोप्य च अन्नसमये 'कामित्ता' कासित्वा=कासं कृत्वा, 'छोइत्ता' भुत्वा-छिकां कृत्वा, 'जभाइत्ता' जृम्भित्वा=जृम्भां कृत्वा 'अविक्रद्धा' अक्लिष्टाः=शारीरिरुक्लेशवर्जिताः, 'अव्वहिया' अव्यायिता 'अपरियाविद्या' अपरितापिताः=स्वत परतो वाऽनुपजातकायमनःपरितापाः सन्तः 'कालमासे काल किच्चा देवलोएसु' कालमासे काल कृत्वा देवलोकेषु भवनपतिमारभ्य ईशान पर्यन्त देवलोकेषु 'उववज्जंति' उत्पद्यन्ते, 'देवलोयपरिग्गहाणं ते मणुया' यतस्ते खलु मनुजाः देवलोकपरिग्रहाः=भवनपत्यादोगानान्तो देवलोरुः, तथाविधकालस्वभावात् तद्योग्यायुर्वन्धेन परिग्रह=अङ्गोकारो येषां ते तथाभूताः-देवलोकगामिन इत्यर्थः 'पण्णत्ता' प्रवृत्ताः-कथिताः । युगलिनो हि आयुषः पट्सु मासेसु अवशिष्टेषु परमवायुर्वध्नन्ति, अत एतेषामायुस्त्रिभागादौ परमवायुर्वन्धाभाव उक्त इति । ते मनुजाः स्वसमायुष्केषु स्वही-

રાહદિયાહ સારસ્વતિ, સગોવેતિ" ૪૯ ગતદિન તક ઉચિત ડાચાર આદિ સે પાલના કરતે હૈ, દેસમાલ કરતે હૈ इस प्रकार पालना और सरक्षण करके फिर ये 'कासित्ता छोइत्ता जभाइत्ता अविक्रद्धा अव्वहिया अपरियाविद्या कालमासे कालं किच्चा देवलोएसु उववज्जंति' " खांसी लेकर, छाक लेकर और जभाई लेकर बिना किसी रुष्ट के और बिना किसी परिताप के कालमास में मरकर देवलोक में भवनपति से लेकर ईशानपर्यन्त देवलोक में उत्पन्न होते हैं. क्योंकि 'देवलोयपरिग्गहिया ण ते मणुया पण्णत्ता" इनका जन्म देवलोक में ही होता है अन्य लोक में मनुष्य नारक और तिर्यचलोक में नहीं होता है ऐसा आगम का आदेश है । युगलिक जन सुज्यमान आयु जब छ मास की वाकी रहती है तब परमव की आयु का बन्ध कहते हैं इसलिये इनके परमव की आयु का बन्ध त्रिभाग में- अपनी आयु के त्रिभाग में नहीं होता है, ये स्वसमान आयुवाले देवलोक में उत्पन्न होते हैं इसलिये इनका उत्पाद भवनपति से लेकर ईशानपर्यन्त के देवलोक में ही कहा गया है । इन युगलिक जीवों का अकाल में मरण नहीं होता है ये अपने

જન્મતિ સગોવેતિ ૪૯ ગત દિવસ મુખી ઉચિત ઉપચાર વગરેથો લાલન પાલન કરે છે, દેખ રેખ તેમજ સલાહ રાખે છે, આ પ્રમાણે લાલન પાલન તેમજ સરક્ષણ કરીને પછી એઓ 'કાસિત્તા છોइत्ता जभाइत्ता अविक्रद्धा अव्वहिया अपरियाविद्या कालमासे कालं किच्चा देवलोएसु उववज्जंति' ઉધરસ ખાઈને, છીંક ખાઈને અને બગાસુ ખાઈને વગર કોઈ પણ જાતના કષ્ટે વગર કોઈ પણ જાતના પરિતાપે કાલમાસમા મરણ પામીને દેવલોકમા ભવનપતિથી માંહીને ઈશાન પર્યંત દેવલોકમા ઉત્પન્ન થાય છે કેમકે 'દેવલોય પરિગ્ગહિયા ણ તે મણુયા પઠ એમને જન્મ દેવલોકમાજ હોય છે અન્ય મનુષ્ય, નાગ અને તિર્યંકલોકમા એમને જન્મ થતો નથી એવો આગમનો આદેશ છે જુજ્યમાન આયુ ૬ માસ જેટલુ પાકી રહે છે ત્યારે યુગલિયાએ પરભવના આયુનો બન્ધ કરે છે એથી એમના પરભવના આયુનો બન્ધ ત્રિભાગમા-પોતાના આયુના ત્રિભાગમા-થતો નથી, એઓ સમાન આયુવાળા આયુનો લોકમાં કે પોતાના આયુ કરતાં હીન આયુવાળા દેવલોકમા જન્મશક્ય કરે છે એથી એમને ઉત્પાદ ભવનપતિથી માંહીને ઈશાન પર્યંતના દેવલોકમા કહેવામા આવેલ છે.

નાયુષ્કેષુ ત્રા સુરેષુ સમુત્પદ્યન્તે ઇતિ તેષા મ્ભવનપત્યાદીજ્ઞાનાન્નેષ્વેવ મુરેષ્વત્પત્તિસંભવ
 ઇતિ । 'કાલમાસે કાલં કૃત્વા' ઇતિ કથનેન તેષાં યુગલિકાનામકાલમરણાભાવ ઉક્તઃ ।
 'યુગલિનો દિ સ્વાપત્યાનિ એકાનપચ્ચાશદિવમાન મરણન્તિ સંગોપયન્તિ' ઇત્યુક્તમ્ । તત્ર
 તે કિયત્સુ દિવસેષુ કોદશા મ્ભવતિ ? ઇત્યત્ર કેચિદેવમાહુઃ—

‘સપ્તોત્તાનશયાલિહન્તિ દિવસાન્ સ્વાદ્ગુપ્તમાર્યાસ્તતઃ,
 કૌ રિહ્ણન્તિ પદૈસ્તતઃ કલગિરો યાન્તિ સ્જલદ્વિમ્ભત ।
 સ્થેયોમિશ્ચ તતઃ કલાગણમૃતસ્તારુણ્યમોગોદ્રતાઃ

સપ્તાહેન તતો મ્ભવન્તિ સુદ્દગાદાનેઽપિ યોગ્યાસ્તતઃ ॥૧॥ ઇતિ । અયમર્થઃ—

આર્યાઃ=યુગલિનઃ સપ્ત દિવસાન્=જન્મદિવસાત્ સપ્તદિવસાવધિકાલ યાવત્ પ્રથમે
 સપ્તાહે ઉત્તાનશયાઃ=અતિવાલાઃ સન્તઃ સ્વાદ્ગુપ્ત લિહન્તિ-ચૂપન્તિ તતો દ્વિતીયે સપ્તાહે
 સપ્તદિવસાન્ યાવત્ પદૈઃ-ચરણૈઃ કૃત્વા કૌ-પૃથિવ્યાં રિહ્ણન્તિ-રિહ્ણન્તિ-જાનુષ્ઠીકાભ્યાં

અપત્યોં કો ૪૯ દિન તક પાલતે હૈ ઓર ડનકા સરક્ષણ મરતે હૈ એસા જા કહા ગયા હૈ—
 સો ઇન દિનોં મૈં ઇન અપત્યો કો ક્યા સ્થિતિ હોતો રહતો હૈ, ડસ વિપય મૈં કિતનેક જનોં કા
 એસા કહના હૈ ।

“સપ્તોત્તાનશયા લિહન્તિ દિવસાન્ સ્વાદ્ગુપ્તમાર્યાસ્તત,
 કૌ રિહ્ણન્તિ પદૈસ્તતઃ કલગિરો યાન્તિ સ્જલદ્વિસ્તતઃ ।
 સ્થેયોમિશ્ચ તતઃ કલાગણમૃતસ્તારુણ્ય મોગોદ્રતા,
 સપ્તાહેન તતો મ્ભવન્તિ સુદ્દગાદાનેઽપિ યોગ્યાસ્તત ॥

હસકા અભિપ્રાય એસા હૈ કિં યે યુગલિકજન જન્મ સે જન્મ લેતે હૈં તબ સે ૭ સાત દિન તક તો-
 અર્થાત્ પ્રથમ સપ્તાહ મે તો- ડપર કો ઓર મુંહ કરકે સોંતે ૨ અપને અંગુષ્ઠ કો ચૂસતે રહતે હૈ
 ફિર દ્વિતીય સપ્તાહ મૈં જમોન પર એવ ઘુટનોં કે બલ સરકને લગતે હૈ, તૃતીય સપ્તાહ મે યે

આ યુગલિક જીવોનુ અકાલમા મરણુ યતુ નથી એઓ પોતાના અપત્યોનુ ૪૯ દિવસ
 સુધી લાલન-પાલન અને સંરક્ષણ કરે છે, એવુ જો કહેવામા આવ્યુ છે તો એ દિવસો
 માં એ અપત્યોની કેવી સ્થિતિ થતી રહે છે આ સ બધાં કેટલાક લોકોનુ આ પ્રમાણે
 કહેવું છે કે

સપ્તોત્તાનશયા લિહન્તિ દિવસાન્ સ્વાદ્ગુપ્તમાર્યાસ્તતઃ.
 કૌ રિહ્ણન્તિ પદૈસ્તતઃ કલગિરો યાન્તિ સ્જલદ્વિમ્ભતઃ ।
 સ્થેયોમિશ્ચ તતઃ કલાગણમૃતસ્તારુણ્ય મોગોદ્રતા ॥
 સપ્તાહેન તતો મ્ભવન્તિ સુદ્દગાદાનેઽપિ યોગ્યાસ્તત ॥

એનો અભિપ્રાય આ પ્રમાણે છે કે એ યુગલાદિ જનોં જ્યારથી જન્મ ગ્રહણ કરે છે
 ત્યારથી ૭ દિવસ સુધી તો એટલે કે પ્રથમ સપ્તાહ મા તો ઉપરની તરફ મો
 કરીને સૂતા સૂતા જ પોતાના અંગુષ્ઠને ચૂસતા રહે છે. પછી બીજા સપ્તાહમા પૃથ્વ

સરન્તિ । તતસ્તત્તૃતીયે સપ્તાહે સપ્ત દિવસાન્ યાવત્ કલગિરઃ-મધુરભાષિણો ભવન્તિ । તતશ્ચતુર્થે સપ્તાહે સપ્ત દિવસાન્ યાવત્ સ્વલલ્લઙ્ગિઃ પદૈઃ યાન્તિ-ગચ્છન્તિ । તતઃ પશ્ચમે સપ્તાહે સપ્ત દિવસાન્ યાવત્ સ્થેયોમિઃ-અતિશયસ્થિરૈઃ પદૈઃ યાન્તિ । તતઃ પચ્ઠે સપ્તાહે કલાગણશ્રુત-સમસ્તકલાધારિણો ભવન્તિ । તતઃ સપ્તમે સપ્તાહે તારુણ્ય-મોગોદ્ગતા-તરુણાવસ્થોપયોગિમોગોન્મુલ્લાઃ ભવન્તિ । કેચિત્ પુનઃ મુદ્દગાદાનેઽપિ-સમ્યક્ત્વગ્રહણેઽપિ યોગ્યા ભવન્તિ ઇતિ । ઇદં યદુક્તં તત્ સુપમસુપમાયાં આદિકાલમપેક્ષ્ય બોધ્યં, તતઃ પરં તુ કિંચિદધિકમપિ સંભાવ્યતે ઇતિ । અત્ર કશ્ચિદેવમપિ શઙ્કેત-નનુ તદાનીં મૃતક શરીરાણાં કા સ્થિતિરાસીત્ ? ઇતિ ચેત્, આદ-તસ્મિન્ કાલે મૃત-યુગલિક શરીરાણિ ભારણ્ઢાદિપક્ષિણો નીહકાષ્ટમિવ સમુત્પાટય નદીસાગરાદૌ પ્રક્ષિપન્તિ તથા જગત્સ્વભાવ્યાત્ । નનુ ઉત્કૃષ્ટતોઽપિ ધનુઃ પૃથક્ત્વપ્રમાણશરીરૈસ્તૈઃ પક્ષિભિઃ સ્વા-પેક્ષયા સમુત્કૃષ્ટપ્રમાણાણિ મનુપ્યશરીરાણિ સમુત્પાટય કથં સમુદ્રાદૌ પ્રક્ષિપ્યન્તે ?

મોઢી વાળી બોલને લગતે હૈં ચતુર્થ સપ્તાહ મેં યે સાત દિન તક લઙ્કસઙ્કાતે હુપ પૈરોં સે ચલને લગતે હૈં, પાંચવેં સપ્તાહ મેં યે સ્થિર હુપ પૈરોં સે ચલને લગતે હૈં છઠે સપ્તાહ મેં યે સમસ્ત કલાઓં કો ધારણ કરને વાલે હો જાતે હૈં । સાતવેં સપ્તાહ મેં યે યુવાવસ્થાપન્ન હુપ મોગોં કો મોગને વાલે હો જાતે હૈં ઓર કિતનેક સમ્યક્દર્શન કો ગ્રહણ કરને કે યોગ્ય મી બન જાતે હૈં । યહ જો કુલ કહાગયા હૈં વહ સુષમ સુષમા આરક કે પ્રારમ્ભક સમય કો લેકર કહા ગયા હૈં. ક્યોંકિં હસકે બાદ તો હસસે મી અધિક કામ કર સકતે હોગે એસી સમાવના હોતી હૈં, યહાં કોઈ એસી શંકા કર સકતા હૈં કિં હસ સમય અગ્નિ સસ્કાર આદિ કી અપ્રાદુર્ભૂતતા મેં મૃતક શરીરોં કો કયા સ્થિતિ હોતી હોગી ? તો હસકે ઉત્તર મેં યહી સમજનાં ચાહિયે કિં હસ સમય મેં મૃતક યુગલિક જીવોં કે શરીર કો ભારણ્ઢાદિ પક્ષી નીહકાષ્ટા કો તરહ ઝઠા કર કે નદી સાગર આદિ મેં ઢાલ દેતે હોગે ક્યોંકિં હસ સમય કે જગત્ કા એસા સ્વભાવ હોતા હૈં, યદિ ફિર મી યહાં

હમં પૃથ્વી ઉપર પગ તેમજ છૂટણના બળે ચરકવા માંડે છે ત્રીજા સપ્તાહમાં જોજો મધુર વાણી બોલવા માંડે છે ચતુર્થ સપ્તાહમાં જોજો સાત દિવસ સુધી લથડાતાં-લથડાતાં ચાલવા માંડે છે. પાંચમા સપ્તાહમાં જોજો સ્થિર થયેલા પગોથી ચાલવા માંડે છે છઠ્ઠા સપ્તાહમાં જોજો સર્વ કલાઓમાં વિશારદ થઈ બળ છે સાતમાં સપ્તાહમાં એ સર્વે યુવાવસ્થાપન્ન લોગોના ઉપલોકતા થઈ બળ છે અને કેટલાક તો સમ્યક્દર્શન ગ્રહણ કરવા યોગ્ય પણ થઈ બળ છે. અહીં જો જે કઈ કહેવામાં આવ્યું છે તે સુષમ સુષમા આર-કના પ્રારંભક સમયને લઈને કહેવામાં આવ્યું છે કેમકે જોના પછી તો જોના કરતાં પણ વધારે કામો સંભવી શકે છે, જોવી સંભાવના થાય છે અહીં કોઈ જોવી પણ શંકા ઉઠાવી શકે છે કે તે સમયે અગ્નિ સસ્કાર વગેરેની અપ્રાદુર્ભૂતિતામાં મૃતક શરીરોની કેવી સ્થિતિ થતી હશે ? તે જોના ઉત્તરમાં જોવું જ સમજવું બેઈએ કે તે સમયમાં મૃતકયુગ-લિક જીવોના શરીરોને ભારંઢાદિ પક્ષી નીહકાષ્ટાની જેમ ઊઠાવીને નદી-સાગર વગેરેમાં નાખી દેતાં હશે કેમકે તે સમયના જગત્નો જોવો સ્વભાવ હોય છે. અહીં ફરી કોઈ

इति च न शङ्क्यम्, केषांचित् पक्षिणाम् अरकापेक्षया यथासंभव बहुबहुतर बहुतम-
धनुः पृथक्त्वप्रमाणशरीरत्वेन तत्कालवर्त्ति युगलिक नरहस्त्यपेक्षयाऽधिकप्रमाणशरीरैस्तेः
पक्षिभिस्तेषां नराणां मृतशरीरसंवहनसंभवादिति ।

પુનર્ગૌતમસ્વામી પૃચ્છતિ—‘તીસે જાં મંતે ! સમાપ્ત મરહે વાસે કઙ્કિહા’ હે
મદન્ત ! તસ્યાં સ્વલુ સમાયાં મરતે વર્ષે કતિવિધાઃ=કતિપ્રકારાઃ કતિજાનિયા ‘મણુસ્સા
અણુ સજ્જિત્થા’ મનુષ્યા અન્વપજન્=અનુપક્તવન્તઃ-કાલત્કાલાન્તરમનુવૃત્તવન્તઃ-સન્તતિભા-
વેનામૂવન્’ इत्यर्थः । મગવાનાહ-ગોયમા ! છન્વિહા પળ્ણત્તા’ હે ગૌતમ ! પઙ્કવિધાઃ મનુ-
ષ્યાઃ પ્રજ્ઞાતાઃ, ‘તં જહા’ તદ્યથા-‘પમ્હગંધા’ પદ્મગન્ધાઃ- પદ્મસ્યેવ ગન્ધો યેષા તે તથા-
પદ્મગન્ધવન્તો મનુષ્યા इत्यर्थः ‘મિયગધા’ મૃગગન્ધાઃ- અત્ર મૃગશબ્દેન મૃગમદઃ=કસ્તૂ-

ऐसी आशका की जावे कि उत्कृष्ट सेभी धनु पृथक्त्व प्रमाण शरीर वाले उन पक्षियो द्वारा
अपनी अपेक्षा उत्कृष्ट प्रमाण वाले मनुष्य शरीरों को कैसे उठा कर समुद्र आदि में डालते होंगे !
तो इसका उत्तर यही है कि कितनेक पक्षियों के शरीर का प्रमाण अरक की अपेक्षा यथा संभव
बहु, बहुतर और बहुतम धनु पृथक्त्व प्रमाण वाला होता है अतः तत्कालवर्ती युगलिक नर
और हस्ती की अपेक्षा उनके शरीर का प्रमाण अधिक होने से वे पक्षी उन मनुष्य के मृत
शरीर को उठा सकने में समर्थ हो जाते हैं ।

અવ ગૌતમ સ્વામી પ્રશ્ન સે એસા પૂછતે હૈ—‘તીસેજા મંતે ! સમાપ્ત મરહે વાસે કઙ્કિહા
મણુસ્સા અણુસ્સજ્જિત્થા’ હે મદન્ત ! ઉસ કાલ મેં મરતક્ષેત્ર મેં કિત્તને પ્રકાર કે મનુષ્ય કાલ
સે કાલાન્તર મેં સન્તતિભાવ સે ઉત્પન્ન હુય ? ઇસકે ઉત્તર મેં પ્રશ્ન કહતે હૈ ‘ગોયમા ! છન્વિહા
પળ્ણત્તા તં જહા-પમ્હગંધા, મિયગધા, અમમા, તેયતલી, તહા, સણિચારી’ હે ગૌતમ ! છ
પ્રકાર કે મનુષ્ય ઉત્પન્ન હુય, જૈસે— પદ્મગન્ધ-પદ્મ કી ગન્ધ કે સમાન ગંધ સે યુક્ત શરીર
વાળે મનુષ્ય, મૃગગન્ધ-મૃગ કી અર્થાત્ કસ્તૂરી કી ગન્ધ કે સમાન ગંધ સે યુક્ત શરીર વાળે

બીજી શ'કા ઉઠાવી શકે છે કે ઉત્કૃષ્ટથી પણ ધનુ. પૃથક્ત્વ પ્રમાણ શરીરવાળા તે પક્ષીઓ
પોતાના કરતા ઉત્કૃષ્ટ પ્રમાણવાળા મનુષ્ય શરીરો ને કેવી રીતે ઉઠાવી ને સમુદ્ર
વગેરેમાં નાખતા હશે ? તો આને જવાબ એ છે કે કેટલાક પક્ષીઓના શરીરનું પ્રમાણ
અરકની અપેક્ષાએ યથાસંભવ બહુ, બહુતર અને બહુતમ ધનુઃ પૃથક્ત્વ પ્રમાણવાળા હોય છે,
જેથી તત્કાલવર્તી યુગલિક નરો અને હસ્તીઓની અપેક્ષાએ તેમના શરીરનું પ્રમાણ અધિક
હોવાથી તે પક્ષીઓ તે મનુષ્યોના મૃતશરીરોને ઉઠાવી શકવામાં સમર્થ હોય છે

હવે ગૌતમસ્વામી પ્રશ્ન કરે છે ‘તીસેજા મંતે ! સમાપ્ત મરહે વાસે કઙ્કિહા મણુ
સ્સા અણુસજ્જિત્થા’ હે મદન્ત તે કાળે અરતક્ષેત્રમાં કેટલા પ્રકારના મનુષ્યો કાળથી કાલા-
ન્તરમાં સન્તતિભાવથી ઉત્પન્ન થયા ? એના જવાબમાં પ્રશ્ન કહે છે—‘ગોયમા છન્વિહા પળ્ણત્તા
તં જહા-પમ્હગંધા, મિયગંધા, તેયતલી, તહા સણિચારી’ હે ગૌતમ ! છ પ્રકાર-
ના મનુષ્યો તે કાળે ઉત્પન્ન થયા જેમકે પદ્મગન્ધ-પદ્મના ગંધ જેવા ગંધથી યુક્ત શરીર
વાળા મનુષ્યો, મૃગગન્ધ મૃગની એટલે કે કસ્તૂરીના ગંધ જેવા ગંધથી યુક્ત શરીરવાળા

રિકા ગૃહ્યતે તસ્યેવ ગન્ધો યેપાં તે તથા મૃગમદગન્ધવન્નો મનુષ્યા इत्यर्थः, 'અમમા' અ-
મમાઃ=મમત્વરહિતા મનુષ્યાઃ' 'તેયતલી' તેજસ્તલિનઃ તેજઃ=પ્રમા તલં=રૂપં તદ્વયમસ્તિ
યેપાં તે તથા, કાન્ત્યા રૂપેણ ચ યુક્તા इत्यर्थः, 'સદ્ધા' સદ્ધાઃ=સદ્વિષ્ણવઃ-મદ્દન શીલા
इत्यर्थः ૫, 'સણિચારી' શનૈશ્ચારિણઃ-શનૈઃ=ઔત્સુક્યાભાવાન્મદ ચરન્તીત્યેવ શીલાઃ, શનૈ-
ર્ગમનશીલા इत्यर्थः ૬, યથા પૂર્વમેકાકારાઽપિ મનુષ્યજાતિસ્તૃતીયારક પ્રાન્તે ઋષભદે
વેન ઔગ્રમોગરાજન્યક્ષત્રિયમેદેશ્ચતુર્થા વિમક્તા તથાઽત્રાપિ પદ્મગન્ધત્વાદિગુણયોગાત્તે
મનુષ્યાઃ સ્વભાવાદેવ પદ્મગન્ધાદિ મેદેન પદ્મવિધજાતિમન્તો ભવન્તિ ઇતિ ભાવઃ ॥૬૦૩૩॥
इति प्रथमारक वर्णनम्—

મૂલમ્— તીસે ણં સમાણ ચઉહિં સાગરોવમકોડાકોડીહિં કાલે
વીઝ્ઞકંતે અણંતેહિં વણ્ણપજ્જવેહિં અણંતેહિં ગંધપજ્જવેહિં અણંતેહિં રસપ
જ્જવેહિં અણંતેહિં ફાસપજ્જવેહિં અણંતેહિં સંઘયણપજ્જવેહિં અણંતેહિં સં
ઠાણપજ્જવેહિં અણંતેહિં ઉચ્ચત્તપજ્જવેહિં અણંતેહિં આઉપજ્જવેહિં અણં-
તેહિં ગુરુલહુપજ્જવેહિં અણંતેહિં અગુરુલહુપજ્જવેહિં અણંતેહિં ઉઘ્ઠાણકમ્મ
બલવીરિયપુરિસ્સકાર પસ્સકમપજ્જવેહિં અણંતગુણપરિહાણીણ પરિહાયમાણે-
૨ પત્થણં સુસમા ણામં સમા કાલે પઢિવજ્જિસુ સમણાઉસો ? ॥સૂ ૩૪॥

જાયા—તસ્યાઃ સ્તુ સમાયાશ્વતસ્યમિ સાગરોપમકોટિકોટિમિઃ કાલે વ્યતિક્રાન્તે
અનન્તૈઃ વર્ણપર્યવૈઃ અનન્તૈ ગન્ધપર્યવૈઃ અનન્તૈ રસપર્યવૈઃ અનન્તૈ સ્પર્શપર્યવૈ અનન્તૈ સંઘ-
નપર્યવૈ અનન્તૈઃ સંસ્થાનપર્યવૈ અનન્તૈઃ ઉચ્ચત્વપર્યવૈઃ અનન્તૈ આયુ પર્યવૈઃ અનન્તૈઃ

મનુષ્ય અમમ-મમત્વરહિત મનુષ્ય, તેજ પ્રમા ઔર તલ-રૂપ इन दोनों से युक्त हुए मनुष्य, सहि-
ष्णु-सहनशील मनुष्य एवं शनैश्चारी मनुष्य-औत्सुक्याभाव से मन्द मन्द गति वे चलने वाले
मनुष्य जिस प्रकार पूर्व में एक आरक वाली भी मनुष्य जाति तृतीय आरक के प्रान्त में
ऋषभ देव ने उग्र, भोग, राजन्य और क्षत्रिय के भेद से चार प्रकारों में विभक्त की उसी
प्रकार से यहां पर भी पद्मगन्धत्वादि गुण के योग से वे मनुष्य स्वभावत ही पद्मगन्ध आदि के
भेद से छह प्रकार की जाति वाले हो जाते हैं ॥३३॥

॥ प्रथम आरक वर्णन समाप्त ॥

મનુષ્યો, અમમ-મમત્વહીન મનુષ્યો, તેજપ્રમા અને તલ રૂપ એઓ બન્નેથી સરૂપાન્ન મનુ-
ષ્યો અને ઔત્સુક્યાભાવથી મદ-મદ ગતિથી ચાલનારા મનુષ્યો જેમ પૂર્વમાં એક આકાર
વાળી મનુષ્યજાતિ પણ તૃતીય આરકના પ્રાન્તમાં ઋષભદેવે ઉગ્ર ભોગ, રાજન્ય અને ક્ષત્રિય-
ના ભેદથી ચાર પ્રકારમાં વિભક્ત કરેલ છે. તેમજ આહી પણ પદ્મગન્ધાદિ ગુણના યોગથી
મનુષ્ય સ્વભાવથી જ પદ્મગન્ધાદિ ભેદથી છ પ્રકારની જાતિવાળા થઈ બને છે ॥૩૩॥

આ પ્રથમ આરકનું વર્ણન છે.

શુરુલઘુપર્યવૈઃ અનન્તૈઃ અશુરુલઘુપર્યવૈ અનન્તૈઃ ઉત્થાનકર્મવલ્લીર્યપુરુષકારપરાક્રમપર્યવૈઃ
અનન્તગુણપરિહાણ્યા પરિહીયમાણે ૨ અત્ર ચલુ સુપમા નામ સમા કાલઃ પ્રત્યપદ્યત
અમણા યુષ્મન્ ॥ સૂ૦ ૩૪ ॥

ટીકા— ‘તીસે ણ સમાણ’ इत्यादि । ‘તીસે’ તસ્યાઃ=સુપમસુપમાયાઃ ‘ણ’ ચલુ
‘સમાણ’ સમાયાઃ ‘ચડહિં સાગરોવમ કોડાકોડીહિં’ ચતસ્રભિઃ સાગરોપમ-કોટીકોટીભિઃ
કૃત્વા ‘કાલે વીહકંતે’ કાલે વ્યતિક્રાન્તે=ચતુસ્સાગરોપમ કોટીકોટી પ્રમાણે કાલે વ્ય-
તીતે સતિ કીદૃશે તસ્મિન્ કાલે ? इत्याह-‘અણંતેહિં’ અનન્તૈઃ—અનન્તસંખ્યકૈઃ ‘વણ્ણપ-
જ્જવેહિં’ વર્ણપર્યવૈઃ વર્ણઃ—શુક્લપીત રક્ત નીલ કૃષ્ણ ભેદાત્ પશ્ચવિધાઃ, કથિતાઃ કપિશાદયસ્તુ
સંયોગજન્યા इति તે ન વિવક્ષિતાઃ, તેષાં વર્ણાનાં યે પર્યવાઃ પર્યાયાઃ કેવલી બુદ્ધિકૃતા
નિર્વિભાગા ભાગા એકગુણ શુક્લત્વાદયસ્તૈઃ, ‘અણંતેહિં ગંધપજ્જવેહિં’ અનન્તૈઃ, ગન્ધપર્યવૈઃ,
‘અણંતેહિં રસપજ્જવેહિં’ અનન્તૈઃ રસપર્યવૈ, ‘અણંતેહિં ફાસપજ્જવેહિં’ અનન્તૈઃ સ્પર્શપર્ય-
વૈઃ, ‘અણંતેહિં સઘયણપજ્જવેહિં’ અનન્તૈઃ સંહનનપર્યવૈઃ—સંહનનાનિ અસ્થિનિચયરચના

દ્વિતીય આરક વર્ણન—

“તીસે ણ સમાણ ચડહિં સાગરોવમકોડાકોડીહિં કાલે વીહકંતે” इत्यादि ।

ટીકાર્થ—તીસે ણ સમાણ ચડહિં સાગરોવમકોડાકોડીહિંકાલે વીહકંતે” જબ ચાર કો
ડાકોડી સાગર કાલ વ્યતીત હો જાતે હૈ તબ દૂસરા અવસર્પિણી કા કાલ પ્રારંભ હોતા હૈ. એસા
યહા સમ્બન્ધ લગાના યાદિય પ્રથમ જો સુષમ સુષમાનામકા કાલ હૈ ડસકો સ્થિતિ ૪ ચાર કો
ડાકોડી સાગરોપમ કી હૈ, યહ અવસર્પિણી કાલ કા પ્રથમ ભેદ હૈ અતઃ અવસર્પિણી કાલ મેં
ક્રમશઃ આયુકાય આદિ કા પ્રતિસમય હ્રાસ હો જાતા હૈ. હસીલિયે “અણંતેહિં વણ્ણ પજ્જવેહિં
અણંતેહિં ગંધપજ્જવેહિં, અણંતેહિં રસપજ્જવેહિં અણંતેહિં ફાસ પજ્જવેહિં” ધીરે ૨ અનન્ત વર્ણપર્યાયો
કા, અનન્ત ગન્ધ પર્યાયો કા, અનન્ત રસપર્યાયો કા, અનન્ત સ્પર્શપર્યાયો કા ધીરે ૨ હ્રાસ
હોતે ૨ જબ ચાર કોડા કોડા પ્રમાણ સમય સમાપ્ત હો જાતા હૈ, હસી પ્રકાર અનન્ત સંહનન-
પર્યાયો કા, અનન્ત સસ્થાનપર્યાયો કા, ઉચ્ચત્વ પર્યાયો કા, અનન્ત આયુપર્યાયો કા, અનન્ત

દ્વિતીય આરક વર્ણન

‘તીસેણ સમાણ ચડહિં સાગરોવમ કોડાકોડીહિં કાલે વીહકંતે’ इत्यादि सूत्र ॥૩૪॥

ટીકાર્થ—“તીસેણ સમાણ ચડહિં સાગરો” ન્યારે ચાર કોડાકોડી સાગર વ્યતીત થઈ બધ
એ ત્યારે દ્વિતીય અવસર્પિણી કાળ પ્રારંભ થાય છે. અહીં એવો સબંધ બાંધવો જોઈએ જે
સુષમ સુષમા કાળ છે તેની સ્થિતિ જ કોડાકોડી સાગરોપમ છે આ અવસર્પિણી કાળને
પ્રથમ ભેદ છે એથી અવસર્પિણી કાળમાં ક્રમશઃ આયુ, કાળ વગેરેનો પ્રતિ સમય હ્રાસ થતો
બધ છે એટલા માટે ‘ અણંતેહિં વણ્ણપજ્જવેહિં અણંતેહિં ગંધ પજ્જવેહિં અણંતેહિં રસપજ્જ
વેહિં અણંતેહિં ફાસપજ્જવેહિં’ ધીમે ધીમે અનન્ત વર્ણપર્યાયોનો, અનન્તગન્ધ પર્યાયોનો, અ
નન્ત રસ પર્યાયોનો અનન્ત સ્પર્શના પર્યાયો હ્રાસ થતા થતાં ન્યારે ચાર કોડાકોડી પ્રમાણ સમય
સમાપ્ત થઈ બધ છે આ પ્રમાણે અનન્ત સંહનન પર્યાયોનો અનન્ત સસ્થાન પર્યાયોનો અનેક
ઉચ્ચત્વ પર્યાયોનો અનન્ત આયુપર્યાયોનો અનન્ત શુરુ-લઘુ પર્યાયોનો અનન્ત અશુરુ લઘુ પર્યા-

વિશેષરૂપાણિ વજ્રઋપભનારાચ-વજ્રર્પભનારાચર્દ્ધનારાચકીલિકા સેવાર્ત્તમેદાત્ પૃથ્વીધા
નિ, અત્ર ચારકે વજ્રઋપભનારાચસ્યેવ સદ્ભાવ અન્યેપામભાવાત્ , તસ્ય વજ્રઋપભનારાચ-
સંહનનસ્ય પર્યવાસ્તૈઃ, 'અણંતેહિ સઠાણપઙ્ગવેહિ' અનન્તૈઃ સસ્યાનપર્યવઃ-સસ્યાનાનિ=
આકૃતિરૂપાણિ સમચતુરસ્રન્યગ્રોધસાદિ કુબ્જક વામન હુણ્ડમેદાત્ પૃથ્વીધાનિ, અત્ર ચારકે
સમચતુરસ્રનામકં પ્રથમં સસ્યાનં ગૃહ્યતે-અન્યેપામભાવાત્. તાનિ તસ્ય સમચતુરસ્રનામકસ્ય
સસ્યાનસ્ય પર્યવાસ્તૈ તથા 'અણંતેહિ ઉચ્ચત્ત પઙ્ગવેહિ' અનન્તૈઃ ઉચ્ચત્વપર્યવઃ-ઉચ્ચ-
ત્વં=શરીરોચ્છ્રાયઃ-પ્રથમેડરકે ચ તત્ ત્રિગવ્યૂતપ્રમાણં તસ્ય પર્યવઃ, તથા 'અણંતેહિ આડપ-

ગુરુષ્ઠુ પર્યાયો કા, અનન્ત અગુરુષ્ઠુ પર્યાયો કા, અનન્ત ઉત્થાન કર્મ બલ વૌર્ય પુરુષકાર પરા-
ક્રમ પર્યાયો કા દ્વાસ હોતે ૨ જવ ચાર કોડાકોડી પ્રમાણ પ્રથમ આરા અવસર્પિણો કા
સમાત હો જાતા હૈ તવ અવસર્પિણો કાલ કા દ્વિતીય સુષમા નામકા આરા હસ ભરતક્ષેત્ર મેં
પ્રારંભ હો જાતા હૈ । યહાં જો વર્ણાદિકો કો પર્યાયો કા કથન ક્રિયા ગયા હૈ વહ કેવલો
મગધાન્ કો બુદ્ધિ કે દ્વારા ક્રિયે ગયે નિર્વિભાગ ભાગા કો માનકર ક્રિયા ગયા હૈ. યે વર્ણાંદિ
કો કે નિર્વિભાગ ભાગ એક ગુણ શુક્લત્વાદિ રૂપ પડતે હૈ, હસ આરક મેં વજ્રઋપભનારાચ સહનન
હી હોતા હૈ, અન્ય સહનન નહીં હોતે હૈ, સહનન હૃદિયો કી એક પ્રકાર કી રચના વિશેષ કા
નામ હૈ, યે સહનન વજ્રઋપભનારાચ સહનન, નારાચ સહનન, અર્દ્ધનારાચસહનન, કીલિકા સહનન
ઔર સેવાર્ત્તસહનન કે મેદ સે ૬ પ્રકાર કે શાસ્ત્રો મેં વર્ણિત હુપ હૈ, સસ્યાન નામ આકાર કા
હૈ યે ઔ ૬ પ્રકાર કે હોતે હૈ- સમચતુરસ્રસસ્યાન, ન્યગ્રોધપરિમંદલસસ્યાન, કુબ્જકસસ્યાન,
વામન સસ્યાન, સાદિસસ્યાન ઔર હુણ્ડકસસ્યાન, હસ આરક મેં સમચતુરસ્રનામકા પ્રથમ
સસ્યાન હી હોતા હૈ. અન્ય સસ્યાન નહીં । ઉચ્ચત્વ સે યહા શરીર કી ઊંચાઈ ગૃહીત હુઈ હૈ,
પ્રથમ આરક મેં શરીર કી ઊંચાઈ ૩ ત્રીન કોશ કી હોતી હૈ ઔર આયુ કા પ્રમાણ ત્રીન પલ્યો

યોનો અનન્ત ઉત્થાન કર્મ અણવીર્ય પુરુષકારપરાક્રમ પર્યાયોનો હાસ થતા થતાં જ્યારે ૪ કોડા-
કોડી પ્રથમ આરા અવસર્પિણીનો સમાપ્ત થઈ જાય છે ત્યારે અવસર્પિણી કાળનો દ્વિતીય સુષમાના-
મક આરો આ ભરતક્ષેત્રમાં પ્રારંભ થઈ જાય છે અહીં જો વર્ણાદિકોના પર્યાયોનું કથન કરવા-
માં આવેલ છે. તે કેવલી મગધાનની બુદ્ધિ વડે કરવામાં આવેલ નિર્વિભાગ ભાગોનો માનીને
કરવામાં આવેલ છે. એ વર્ણાદિકોના નિર્વિભાગ ભાગ એક શુષ્ણુ શુક્લત્વાદિ રૂપ પડે છે આ આ
રકમાં વજ્ર ઋપભનારાચ સહનન જ હોય છે અન્ય સહનનોનો અભાવ રહે છે સહનન
અસ્થિઓ ની એક પ્રકારની રચના વિશેષનું નામ છે એ સહનનો શાસ્ત્રોમાં વજ્રઋપભનારાચ
સહનન ઋપભનારાચ સહનન, નારાચસહનન અર્દ્ધનારાચ સહનન કીલિકા સહનન અને
સેવાર્ત્ત સહનનના એકથી ૬ પ્રકારના વર્ણિત થયેલા છે સસ્યાન આકારનું નામ છે. એના
પણ ૬ પ્રકારો છે. સમચતુરસ્રસસ્યાન ન્યગ્રોધ પરિમંદલસસ્યાન કુબ્જક સસ્યાન વામન
સસ્યાન સાદિસસ્યાન અને હુણ્ડક સસ્યાન આ આરકમાં અન્ય સસ્યાનો નહિ પણ ફક્ત સમ-
ચતુરસ્રનામક પ્રથમ સસ્યાન જ હોય છે. ઉચ્ચત્વથી અહીં શરીરની ઉંચાઈ ગૃહીત થયેલી
છે પ્રથમ આરકમાં શરીરની ઊંચાઈ ૩ ગાઉ જેટલી હોય છે આયુનું પ્રમાણ ત્રણ પલ્યો

‘અજ્ઞાતે’ અનન્તૈઃ આયુઃ પર્યવૈઃ આયુઃ—જીવિત, તદત્ર પ્રથમેડરકે ત્રિ પલ્યોપમપ્રમાણં ગૃહ્ય-
તે, તસ્ય પર્યવાસ્તૈઃ, તથા ‘અજ્ઞાતે’ ગુરુલ્હુ પજ્જવેદિ’ અનન્તૈ ગુરુલ્હુપર્યવૈ.—ગુરુલ્હુનિ=
ગુરુલ્હુદ્રવ્યાણિ-વાદર સ્કન્ધદ્રવ્યાણિ ઔદારિક વૈક્રિયાહારકતૈજસરૂપાણિ તેષાં પર્યવાસ્તૈ
તથા ‘અજ્ઞાતે’ અગુરુલ્હુ પજ્જવેદિ’ અનન્તૈઃ અગુરુલ્હુપર્યવૈઃ અગુરુલ્હુનિ=અગુરુલ્હુદ્રવ્યાણિ
સૂક્ષ્મદ્રવ્યાણિ તાનિ ચ પૌદ્ગલિકાન્યેવ ગ્રાહ્યાણિ અપૌદ્ગલિકપ્રહણે તુ ધર્માસ્તિકાયાદીના
મપિ ગ્રહણં પ્રસજ્યેત તતશ્ચ નેપામપિ પર્યવહાનિગપદ્યેત, તાનિ અગુરુલ્હુદ્રવ્યાણિ કાર્મણ
મનો ભાપાદિ દ્રવ્યાણિ તેષાં પર્યવાસ્તૈઃ, તથા ‘અજ્ઞાતે’ ઉદ્ઘાણ કમ્મવલ્લ વીરિયપુરિસકાર
પરવક્રમપજ્જવેદિ’ અનન્તૈ ઉત્થાનકર્મવલ્લવીર્યપુરુપકારપરાક્રમપર્યવૈ ઉત્થાન—ચેષ્ટાવિશેષઃ,
કર્મ—અમણાદિક્રિયા વિશેષઃ, વલ્લ—શરીરસામર્થ્ય વીર્ય જીવભાવ, જીવત્વમિત્યર્થ પુરુપ-
કારઃ પૌરુપમ્ અભિમાનવિશેષઃ, પરાક્રમઃ—નિષ્પાદિતસ્વવિષયઃ પુરુપકાર એવ, એતેષાં
પર્યાયાસ્તૈશ્ચ કૃત્વા ‘અજ્ઞાતગુણપરિહાણી’ અનન્તગુણપરિહાણ્યા અનન્તગુણાનામ્—અનન્તાનાં
જ્ઞાનદર્શનાદ્યનન્તાનાં નિર્વિભાગભાગાનાં વર્ણાદિપર્યવાનાં પરિહાણિઃ—અપચયસ્તયા પરિહા-

પમ કા હોતા હૈ. ગુરુ લ્હુ દ્રવ્ય સે વાદરસ્કન્ધદ્રવ્યરૂપ જો ઔદારિક, વૈક્રિય, આહારક એવ
તૈજસ શરીર હૈ ઉનકો પ્રહણ હુઆ હૈ અગુરુલ્હુ દ્રવ્ય સે સૂક્ષ્મદ્રવ્યરૂપ જો પૌદ્ગલિક દ્રવ્ય હૈ
વે હી ગૃહીત હુએ હૈ, અપૌદ્ગલિક સૂક્ષ્મદ્રવ્ય નહીં યદિ ઇનકા મી યહા પ્રહણ હોના માન લિયા
જાય તો ધર્માસ્તિકાયાદિક દ્રવ્યો કા મી પ્રહણ હોના માનના પડેગા તો ઇસ તરહ સે ઇનકે
પર્યાયો કી મી હાનિ હોને કા પ્રસજ્ઞ પ્રાપ્ત હોગા, અતઃ ઇસ પ્રસગ કી નિવૃત્તિ કે લિયે અગુરુ-
લ્હુ દ્રવ્ય પદ સે કાર્મણ મનોભાપાદિ દ્રવ્યો કા હી પ્રહણ ક્રિયા જાનના ચાહિયે ઇસ તરહ
વર્ણગુણ કી, ગન્ધગુણ કી, રસગુણ કી એવ સ્પર્શગુણ કી, જો પર્યાયે હૈ—કેવલી કે દ્વારા અપની
બુદ્ધિ સે ક્રિયે ગયે જો નિર્વિભાગ ભાગ હૈ—વે અનન્ત સહ્યક હૈ, સંહનન કી પર્યાયે અનન્ત હૈ,
સસ્થાન કી પર્યાયે અનન્ત હૈ, ઉચ્ચત્વ કી પર્યાયે અનન્ત હૈ, આયુ કર્મકી પર્યાયે અનન્ત હૈ,
ગુરુલ્હુ દ્રવ્યો કી પર્યાયે અનન્ત હૈ, ઉત્થાન-ચેષ્ટા વિશેષ રૂપ, કર્મ-અમણાદિ રૂપક્રિયા, શરીર

પમ જેટલું હોય છે. ગુરુ-લ્હુ દ્રવ્યથી બાદર સ્કન્ધ દ્રવ્ય રૂપ જે ઔદારિક વૈક્રિય આહારક
તેમજ તેજસ શરીર છે તેનું અહણ થયેલ છે અગુરુ લ્હુ દ્રવ્યથી સૂક્ષ્મ દ્રવ્ય રૂપ જે પૌદ્ગલ
લિક દ્રવ્ય છે તેમનું જ અહણ થયેલ છે અપૌદ્ગલિક સૂક્ષ્મ દ્રવ્ય તું નહિ. જે એમનું પણ
અહીં અહણ કરવામાં આવે તો ધર્માસ્તિકાયાદિક દ્રવ્યોનું પણ અહણ માનવું જ પડશે
તો આ પ્રમાણે એમની પર્યાયોની પણ હાનિ થવાની સ્થિતિ ઉપસ્થિત થશે એટલામાટે આ
પ્રસંગની નિવૃત્તિ માટે અગુરુ લ્હુ દ્રવ્યપણા થી કાર્મણ અને મનો ભાવાદિ દ્રવ્યોનું અહણ
કરવામાં આવવું જોઈએ આ પ્રમાણે પણ ગુણની ગન્ધગુણની રસગુણની તેમજ સ્પર્શ-
ગુણની જે પર્યાયો છે—કેવલી વડે સ્વ બુદ્ધિથી કરવામાં આવેલ જે નિર્વિભાગભાગો છે તે
અનંત સંખ્યક છે સંહનની પર્યાયો અનંત છે સ્થાનની પર્યાયો અનંત છે ઉચ્ચત્વની પર્યાયો
અનંત છે આયુકર્મની પર્યાયો અનંત છે ગુરુલ્હુ દ્રવ્યોની અને અગુરુ લ્હુ દ્રવ્યોની પર્યા
યો અનંત છે ઉત્થાન—ચેષ્ટા વિશેષરૂપ કર્મઅમણાદિ રૂપ ક્રિયા શરીર સામર્થ્યરૂપ બળ વીર્ય

યમાણે૨, પરિહીયમાણે પરિહીયમાણે-નિતાન્તમપચયં ગચ્છતિ સતિ 'પૃથ્વળ' અત્ર -
અત્રાન્તરે ક્ષણં સુસમાળામં સમા કાલે' સુસમા નામ સમા કાલઃ ત્રિકોટિ સાગરોપમપ્રમાણઃ
અવસર્પિણ્યા દ્વિતીયોડરકઃ । 'પદ્મિવજ્જિસુ' પ્રત્યપદ્યત-પ્રતિપન્નો ભાગત ઇતિ । યથેપામ
નન્તત્વમ્ અનુસમયમનન્તગુણદ્વાનિશ્ચ ભવતિ તદુચ્યતે, તથાહિ--'તીસે ણં સમાપ્ત
ઉત્તમકદ્વપ્ત્તાપ્' ઇતિ' ઇતિ પ્રાગુક્તોક્ત્યા સુસમસુસમા-કાલે કલ્પદ્રુમપુષ્પફલાદિગતા
યે વર્ણગન્ધરસાદયસ્તે ઉત્કૃષ્ટાઃ, તેપાં કેવલી પ્રજ્ઞયા છિદ્યમાના યદિ નિર્વિભાગા ભાગાઃ
ક્રિયન્તે તર્હિ અનન્તા ભાગા ભવન્તિ । તેપાં મધ્યાદનન્તભાગાત્મક ઇકો રાશિઃ પ્રથમારક
દ્વિતીય-સમયે વ્રુટ્યતિ, ઇવં તૃતીયાદિ સમયેષ્વપિ વક્તવ્યં યાવત્પ્રથમારકાન્તિમસમય
પર્યન્તમ્ । ઇયમેવ રીતિઃ અવસર્પિણી ચરમ સમયં યાવદ્ વોઘ્યા । અતએવ- 'અનન્ત ગુણ-

સામર્થ્યરૂપ બલ, વીર્ય - જીવ કી શક્તિ, પુરુષકાર ઔર પરાક્રમ કી પર્યાયે મી અનન્ત હૈ, ઇન
સબ અનન્ત પર્યાયો કી કેવલી ભગવાન્ હી જાનતે હૈ સો ઇન સવ પર્યાયરૂપ અનન્ત ગુણો કી
જબ ધોરે ૨ પ્રતિસમય દ્વાનિ હોતે ૨ સુષમ સુષમા નામ કા પ્રથમ આરક સમાપ્ત હો જાતા હૈ તબ
૩ ત્રીન કોઢાકોઢી સાગરોપમપ્રમાણ વાલા દ્વિતીય આરક કી જિસકા નામ સુષમા હૈ
પ્રારંભ હોતા હૈ ઇન વર્ણાદિ પર્યાયો મેં અનન્તતા ઔર પ્રત્યેક મમય મેં અનન્તગુણ દ્વાનિ જો
હોતી હૈ ઉસે યહા સ્પષ્ટ કિયા જાતા હૈ-સુષમસુષમા કાલ મેં કલ્પદ્રુમ કે પુષ્પ ઔર ફલાદિ
કો મેં જો વર્ણ, ગન્ધ ઔર રસાદિ હોતે હૈ વે ઉત્કૃષ્ટ હોતે હૈ । ઇન્કે યદિ કેવલી કી પ્રજ્ઞાસે
નિર્વિભાગ ભાગ કિયે જાવે-તો વે અનન્ત ભાગ હોતે હૈ ઇન્કે મધ્ય સે અનન્ત ભાગાત્મક ઇક
રાશિ પ્રથમ આરક કે દ્વિતીય સમય મેં સમાપ્ત હો જાતી હૈ, દ્વિતીય અનન્તભાગાત્મક રાશિ પ્રથમ
આરક કે તૃતીય સમય મેં સમાપ્ત હો જાતી હૈ ઇસ પ્રકાર તૃતીયાદિ અનન્તભાગાત્મકરાશિયાં
પ્રથમ આરક કે ચતુર્થાદિ સમયો મેં સમાપ્ત હોતી રહતી હૈ સો ઇસ પ્રકાર સે ઇન્કે સમાપ્ત હોતે
રહને કા યહ ક્રમ પ્રથમ આરક કે અન્તિમ સમય તક જાનના ચાહિયે, તથા ઇસી પ્રકાર કા
યહી ક્રમ અવસર્પિણી કાલ કે અન્તિમ સમય તક ચાલ રહતા હૈ ઇસા જાનના ચાહિયે, ઇસ

જીવની શક્તિ પુરુષકાર અને પરાક્રમથી પર્યાયો પણ અનંત છે એ સર્વ અનંત પર્યાયો
ને કેવલી જ જાણે છે તે એ સર્વ પર્યાયરૂપ અનંત ગુણોથી બ્યારે ધીમે ધીમે પ્રતિસમય
દ્વાનિ થતા થતાં સુષમ સુષમા નામે પ્રથમ આરક સમાપ્ત થઈ જાય છે ત્યારે ત્રણ કોઢાકોઢી
સાગરોપમ પ્રમાણશુદ્ધ દ્વિતીય આરક કે જેનું નામ સુષમા છે તે પ્રારંભ થાય છે એ વર્ણાદિ
પર્યાયોમા અનંતતા અને દરેક સમયમા અનંતગુણ દ્વાનિ જે હોય છે તેનું અહીં સ્પષ્ટી-
કરણ કરવામા આવે છે સુષમ સુષમા કાળમાં કલ્પદ્રુમો અને તેમના પુષ્પો તેમજ ફળ વગેરે
મા જે વર્ણ ગન્ધ અને રસાદિ હોય છે તે ઉત્કૃષ્ટ હોય છે એમના જો કેવલીની પ્રજ્ઞાથી
નિર્વિભાગ ભાગ કરવામા આવે તે તે અનંત ભાગ થાય છે એમના મધ્યથી અનંતભાગા-
ત્મક એક રાશિ પ્રથમ આરકના દ્વિતીય સમયમા સમાપ્ત થઈ જાય છે દ્વિતીય અનંતભા-
ગાત્મક રાશિ પ્રથમ આરકના તૃતીય સમયમાં સમાપ્ત થઈ જાય છે આ પ્રમાણે તૃતીયાદિ
અનંત ભાગાત્મક રાશિઓ પ્રથમ આરકના ચતુર્થાદિ સમયોમા સમાપ્ત થતી રહે છે. તે

પરિહાણ્યા' इत्यत्र अनन्तगुणानां परिहानिस्तथा इति पृष्ठी तत्पुरुषो न तु कर्मधारयः । गुणशब्दश्च भागपयायवाची आगमेषु प्रसिद्धः ।

નન્વેવં વર્ણાદીનામ્ અનન્તગુણહાન્યા શ્વેતાદિવર્ણાનાં ગન્ધાદીનાં ચ સર્વથોચ્છેદઃ પ્રસજ્યેત, એતચ્ચ પ્રત્યક્ષવિરુદ્ધમ્ જાતીયપુષ્પાદી શ્વેતવર્ણસ્ય અન્યત્રાણ્યવર્ણાનાં તથૈવ ગન્ધાદીનાં સમ્પ્રત્યપ્યુપલભ્યમાનત્વાત્ ? ઇતિ ચેત્ , આહ-આગમે હિ અનન્તકસ્ય અનન્ત-મેદા ઉક્તાઃ, તત્ર હીયમાનભાગાનામ્ અનન્તકમ્ અલ્પમ્ તદપેક્ષયા મૌલરાશિઃ-ભાગાનન્તકં વૃહત્તરં વોધ્યમ્ અતો ન સર્વથોચ્છેદ ઇતિ । યુજ્યતે ચ તેષાં સર્વથોચ્છેદાભાવો ભવ્યવત્

તરહ “અનન્તગુણપરિહાણ્યા” પદ મે અનન્ત નિર્વિભાગમાગો કી પરિહાનિ સે એસા હી અર્થ કરકે “અનન્તગુણાનાં પરિહાણ્યા” મેં પૃષ્ઠી તત્પુરુષ સમાસ સમજના ચાહિયે । કર્મધારય નહીં ગુણ શબ્દ માગ અર્થ કા વાચક હૈ યહ વાત આગમ મેં પ્રસિદ્ધ હૈ ।

યહાં એસી શકા હો સકતી હૈ કિ જવ વર્ણાદિકોં કે અનન્તગુણોં કી હાનિ હોતી કહી ગઈ હૈ તો ફિર હસ તરહ સે હન શ્વેતાદિ વર્ણોં કા ઓર ગન્ધાદિ ગુણોં કા સર્વથા ઉચ્છેદ હી હો જાવેગા પરન્તુ એસા તો હોને કા નહીં ક્યોંકિ વર્તમાન કાલ મેં હન સવ હી હન ગુણોં કા જૈસે જાતીય પુષ્પાદિ મેં શ્વેતવર્ણ કા, હસી તરહ અન્યત્ર મી અન્ય શ્વર્ણોં કા એવં ગન્ધાદિકોં કા સદ્ધા વ તો દેસા હી જાતા હૈ તો હસ શંકા કા ઉત્તર એસા હૈ કિ આગમ મેં અનન્ત કે મી અનન્ત મેદ માને ગયે હૈં હનમેં હીયમાનભાગોં કા જો અનન્તક હૈ વહ તો અલ્પ હૈ ઓર હનમેં મૂલરાશિ કા જો ભાગાનન્તક હૈ વહ વૃહત્તર હૈ હસલિયે હનકા સર્વથા ઉચ્છેદ નહીં હો સવતા હૈ । ભવ્ય કી તરહ હનકે સર્વથા ઉચ્છેદ હોને કા પ્રસન્ન હી પ્રાપ્ત નહીં હોતા હૈ અમીં તક અનન્ત કાલ સે મી ભવ્યોં કે સિદ્ધ અવસ્થાપન હોતે રહને પર મી ઓર અનન્તકાલ તક્ક મી ભવ્ય સિદ્ધ અવસ્થા-

આ રીતે જોમની સમાપ્તિ સંભવી આ ક્રમ પ્રથમ આરકના અંતિમ સમય સુધી જાણવો જોઈએ. તેમજ આ પ્રમાણે જો જ ક્રમ અવસર્પિણી કાલના અંતિમ સમય સુધી આવી રહે છે એવું પણ જાણવું જોઈએ. આ પ્રમાણે અનન્તગુણપરિહાણ્યા પદમા અનંત નિર્વિભાગોની પરિહાનિથી એવો જ અર્થ અહીં કરીને અનન્તગુણાનાં પરિહાણ્યા માં પછી તત્પુરુષ સમાસ સમજવો જોઈએ કર્મધારય નહિ શુષ્ક શબ્દ ભાગ અર્થનોવાચક છે આ વાત આગમમા પ્રસિદ્ધ છે.

અહીં એવી શંકાપણ ઉદ્ભવી શકે છે કે જ્યારે વર્ણાદિકોના અનંત શુણોની હાનિ થતી રહી છે એવું કહેવામાં આવ્યું છે તો પછી આ રીતે તો જો શ્વેતાદિ વર્ણોનો અને ગન્ધાદિ શુણોનો સર્વથા ઉચ્છેદ જ થઈ જશે પણ આવું થશે નહિ કેમકે વર્તમાન કાળમાં જો સર્વ શુણોનો—જેમ જાતીય પુષ્પાદિમાં શ્વેતવર્ણોનો આ પ્રમાણે અન્ય પણ અન્ય-અન્ય વર્ણોનો તેમજ ગન્ધાદિકોનો સદ્ભાવ તો જોવામાં આવે જ છે તો આ શંકા નોજવાળા આ પ્રમાણે છે કે આગમમાં અનંતતાના પણ અનંત લેહો માનવામાં આવ્યા છે. જોમાં હીયમાન ભાગો નો જ અનંતક છે તે તો અદ્ય છે અને જોમનામાં જે મૂલરાશિનો ભાગાનન્તક છે, તે વૃહત્તર છે એથી જોમના સર્વથા ઉચ્છેદનનો સંભવ નથી. ભવ્યની જેમ

યથા સિધ્યત્સ્વપિ ભવ્યેષુ ન તેપામનન્તકાલેનાપિ નિર્લેપના તથા સર્વજીવેભ્યોઽનન્તગુ-
ણાનામ્ ઉત્કૃષ્ટવર્ણાદિગતભાગાનાં ન સર્વથોચ્છેદ ઇતિ । ન ચ તે સંખ્યાતા એવ સિધ્ય-
ન્તિ, ઇમે તુ પ્રતિસમયમ્ અનન્તા હીયન્તે ઇતિ મહદ્દૃષ્ટાન્તવૈપમ્યમ્ ? ઇતિ વાચ્યમ્ ,
યતસ્તત્રસિધ્યતાં ભવ્યાનાં યથા સંખ્યાતતા તથા સિદ્ધિકાલોઽનન્તઃ એવમત્રાઽપિ યથા
પ્રતિસમયમ્ અનન્તાનામેપાં હીયમાનતા તથા હાનિકાલોઽવસર્પિણી પ્રમાણ એવ તતઃ પરમ્
ઉત્સર્પિણી પ્રથમસમયાદૌ તેનૈવ ક્રમેણ વર્દન્તે વર્ણાદય ઇતિ સર્વે સુસ્થિતમ્ । ‘અણતેહિ

પન્ન હોતે રહેગે ફિર મી ઇનકા સર્વથા ઉચ્છેદ જૈસે નહીં હોતા હૈ ઇસી પ્રકાર મે સર્વ જીવોં કી
અપેક્ષા અનન્તગુણો ઉત્કૃષ્ટ વર્ણાદિગતભાગોં કા સર્વથા ઉચ્છેદ નહીં હોગા, ।

શંકા-વે સંખ્યાત હી સિદ્ધ હોતે હૈ પરન્તુ યે તો પ્રતિસમય અનન્તરૂપ મેં હી હીન હોતે
રહતે હૈ, ઇસ તરહ જો ભવ્ય કા દૃષ્ટાન્ત દેકર આપને ઇનકી નિર્લેપતા કા અભાવ પ્રતિપાદિત
કિયા હૈ-સો ઇસ દૃષ્ટાન્ત મેં તો ઇનકો અપેક્ષા બહુત વઢી વિષમતા હૈ-અર્થાત્ ઇસ દૃષ્ટાન્ત સે
વર્ણાદિકોં કે સર્વથા ઉચ્છેદ હોને કા જો પ્રસન્ન દિયા ગયા હૈ વહ હટના નહીં હૈ બના હી રહતા
હૈ : સો ઇસ પ્રકાર કી યહ આશંકા મી ઠીક નહીં હૈ-ક્યોં કિ સિદ્ધ હોનેવાલે ભવ્ય જીવોં મેં જૈસી
સંખ્યાતતા હૈ વૈસી કાલ મેં સંખ્યાતતા નહીં હૈ કિન્તુ વહ સિદ્ધિ કાલ તો અનન્ત હૈ ઇસી પ્રકાર
પ્રત્યેક સમય મેં અનન્ત વર્ણાદિ ભાવોં મેં જૈસી હીયમાનતા હૈ ક્યોંકિ વહ ઇનકા હાનિકાલ અવ
સર્પિણી પ્રમાણ હી હૈ ઇસકે બાદ તો ઉત્સર્પિણી કે પ્રથમ કાલ કે પ્રથમ સમય સે લેકર અન્તિમ
કાલ કે અન્તિમ સમય તક યે વર્ણાદિ ભાવ ઇસી ક્રમ સે વર્દમાન હોતે રહતે હૈ । અતઃ કિસી
મી કાલ મેં ઇન વર્ણાદિ ભાવોંકા સર્વથા ઉચ્છેદ પ્રાપ્ત નહીં હો સકતા હૈ । ‘અણતેહિ ઉચ્ચત્ત

એમનુ સર્વથા ઉચ્છેદન થાય તેવો પ્રસંગ જ ઉપસ્થિત થતો નથી આજ સુધી અનન્ત-
કાલથી ભવ્યો સિદ્ધ અવસ્થાપન્ન થતા આવ્યા છે અને ભવિષ્યમા પણ તેઓ અનન્તકાલ સુધી
સિદ્ધ અવસ્થાપન્ન થતા રહેશે, છતાં એ તેમનુ સર્વથા ઉચ્છેદન થતુ નથી. આ પ્રમાણે
જ સર્વજીવોની અપેક્ષાએ અનન્તશુષ્ક ઉત્કૃષ્ટ વર્ણાદિગત ભાગોનુ સર્વથા ઉચ્છેદન થશે નહિ-
શંકા-તેઓ તો સંખ્યાત જ સિદ્ધ હોય છે, પણ એ તો પ્રતિ સમય અનન્તરૂપમાં જ હીન
થતા રહે છે, આ પ્રમાણે જે ભવ્યનુ દૃષ્ટાન્ત આપીને તમે એમની નિર્લેપતાનો અભાવ
પ્રતિપાદિત કર્યો છે, તો આ દૃષ્ટાન્તમા તો એમની અપેક્ષા ખૂબજ વિષમતા છે, એટલે કે
આ દૃષ્ટાન્તથી વર્ણાદિકોનો સર્વથા ઉચ્છેદ થવા સંભવી જે પ્રસંગ આપવામાં આવેલ છે તે
કાયમ જ રહે છે તો આ જાતની આ આશંકા પણ યોગ્ય ન કહેવાય કેમકે સિદ્ધ
થનારા ભવ્ય જીવોમા જેવી સંખ્યાતતા છે તેવી કાળમાં સંખ્યાતતા નથી પરંતુ તે સિદ્ધિ
કાળ તો અભિન્ન છે આ રીતે દરેક સમયમાં અનન્ત વર્ણાદિ ભાવોમા જેવી હીયમાનતા છે,
તે તેમનો હાનિકાલ અવસર્પિણી પ્રમાણ જ છે એના પછી તો ઉત્સર્પિણીના પ્રથમકાળના
પ્રથમ સમયથી માહીને અન્તિમકાળના અન્તિમ સમય સુધી એ વર્ણાદિ ભાવો એ જ ક્રમથી
વર્દમાન થતા રહે છે માટે કોઈ પણ કાળમા એ વર્ણાદિભાવોનો સર્વથા ઉચ્છેદ પ્રાપ્ત થઈ
શકતો નથી.

પરિહાણ્યા' इत्यत्र अनन्तगुणानां परिहानिस्तया इति षष्ठी तत्पुरुषो न तु कर्मधारयः ।
गुणशब्दश्च भागपयायवाची आगमेषु प्रसिद्धः ।

नन्वेवं वर्णादीनाम् अनन्तगुणहान्या श्वेतादिवर्णानां गन्धादीनां च सर्वथोच्छेदः
प्रसज्येत, एतच्च प्रत्यक्षविरुद्धम् जातीयपुष्पादौ श्वेतवर्णस्य अन्यत्राण्यवर्णानां तथैव
गन्धादीनां सम्प्रत्यक्षुपलभ्यमानत्वात् ? इति चेत् , आह—आगमे हि अनन्तकस्य अनन्त-
भेदा उक्ताः, तत्र हीयमानभागानाम् अनन्तकम् अल्पम् तदपेक्षया मौलराशेः—भागानन्तकं
बृहत्तरं बोध्यम् अतो न सर्वथोच्छेद इति । युज्यते च तेषां सर्वथोच्छेदाभावो भव्यवत्

तरह “अनन्तगुणपरिहाण्या” पद में अनन्त निर्विभागभागों की परिहानि से ऐसा ही अर्थ करके
“अनन्तगुणानां परिहाण्या” में षष्ठी तत्पुरुष समास समझना चाहिये । कर्मधारय नहीं गुण शब्द
भाग अर्थ का वाचक है यह बात आगम में प्रसिद्ध है ।

यहां ऐसी शका हो सकती है कि जब वर्णादिकों के अनन्तगुणों की हानि होती कही
गई है तो फिर इस तरह से इन श्वेतादि वर्णों का और गन्धादि गुणों का सर्वथा उच्छेद ही हो
जावेगा परन्तु ऐसा तो होने का नहीं क्योंकि वर्तमान काल में इन सब ही इन गुणों का जैसे
जातीय पुष्पादि में श्वेतवर्ण का, इसी तरह अन्यत्र भी अन्य खणों का एवं गन्धादिकों का सद्भा
व तो देखा ही जाता है तो इस शंका का उत्तर ऐसा है कि आगम में अनन्त के भी अनन्त
भेद माने गये हैं इनमें हीयमानभागों का जो अनन्तक है वह तो अल्प है और इनमें मूलराशि
का जो भागानन्तक है वह बृहत्तर है इसलिये इनका सर्वथा उच्छेद नहीं हो सक्ता है । भव्य
की तरह इनके सर्वथा उच्छेद होने का प्रसङ्ग ही प्राप्त नहीं होता है अभी तक अनन्त काल से
भी भव्यों के सिद्ध अवस्थापन होते रहने पर भी और अनन्तकाल तक भी भव्य सिद्ध अवस्था-

આ રીતે એમની સમાપ્તિ સંખ્યાથી આ કેમ પ્રથમ આરંભના અંતિમ સમય સુધી બાંધવો
જોઈએ. તેમજ આ પ્રમાણે એ જ કેમ અવસર્પિણી કાલના અંતિમ સમય સુધી ચાલુ રહે
છે એવું પણ બાંધવું જોઈએ. આ પ્રમાણે અનન્તગુણપરિહાણ્યા પદમાં અનંત નિર્વિભા-
ગોની પરિહાનિથી એવો જ અર્થ ગ્રહણ કરીને અનન્તગુણનાં પરિહાણ્યા માં ષષ્ઠી તત્પુરુષ
સમાસ સમજવો જોઈએ કેમકારણ નહિ શુદ્ધ શબ્દ ભાગ અર્થનોવાચક છે આ વાત આ-
ગમમાં પ્રસિદ્ધ છે.

અહીં એવી શંકાપણ ઉદ્ભવી શકે છે કે બ્યારે વર્ણાદિકોના અનંત શુદ્ધોની હાનિ
થતી રહી છે એવું કહેવામાં આવ્યું છે તો ષષ્ઠી આ રીતે તો એ શ્વેતાદિ વર્ણોનો અને
ગન્ધાદિ શુદ્ધોનો સર્વથા ઉચ્છેદ જ થઈ જશે પણ આવું થશે નહિ કેમકે વર્તમાન
કાળમાં એ સર્વ શુદ્ધોનો—જેમ જાતીય પુષ્પાદિમાં શ્વેતવર્ણોનો આ પ્રમાણે અન્ય પણ
અન્ય-અન્ય વર્ણોનો તેમજ ગંધાદિકોનો સદ્ભાવ તો જોવામાં આવે જ છે તો આ શંકા
નોજવાળ આ પ્રમાણે છે કે આગમમાં અનંતતાના પણ અનંત લેહો માનવામાં આવ્યા છે.
એમાં હીયમાન ભાગો નો જે અનંતક છે તે તો અદ્ય છે અને એમનામાં જે મૂલરાશિનો
ભાગાન્તક છે, તે ગ્રહત્તર છે એથી એમના સર્વથા ઉચ્છેદનો સંભવ નથી. ભવ્યની જેમ

યથા સિધ્યત્સ્વપિ મન્યેષુ ન તેપામનન્તકાલેનાપિ નિર્લેપના તથા સર્વજીવેભ્યોઽનન્તગુ-
ણાનામ્ ઉત્કૃષ્ટવર્ણાદિગતભાગાનાં ન સર્વથોચ્છેદ ઇતિ । ન ચ તે સંખ્યાતા એવ સિધ્ય-
ન્તિ, ઇમે તુ પ્રતિસમયમ્ અનન્તા હીયન્તે ઇતિ મહદ્દૃષ્ટાન્તવૈપમ્યમ્ ? ઇતિ વાચ્યમ્ ,
યતસ્તત્રસિધ્યતાં મન્યાનાં યથા સંખ્યાતતા તથા સિદ્ધિકાલોઽનન્તઃ એવમત્રાઽપિ યથા
પ્રતિસમયમ્ અનન્તાનામેષાં હીયમાનતા તથા હાનિકાલોઽવસર્પિણી પ્રમાણ એવ તતઃ પરમ્
ઉત્સર્પિણી પ્રથમસમયાદૌ તેનૈવ ક્રમેણ વર્દન્તે વર્ણાદય ઇતિ સર્વે સ્મૃત્થિતમ્ । 'અણંતેર્હિ

પન્ન હોતે રહેગે ફિર મી ઇનકા સર્વથા ઉચ્છેદ જૈસે નહીં હોતા હૈ ડસી પ્રકાર મે સર્વ જીવોં કી
અપેક્ષા અનન્તગુણો ઉત્કૃષ્ટ વર્ણાદિગતભાગોં કા સર્વથા ઉચ્છેદ નહીં હોગા, ।

શંકા—વે સંખ્યાત હી સિદ્ધ હોતે હૈં પરન્તુ યે તો પ્રતિસમય અનન્તરૂપ મેં હી હીન હોતે
રહતે હૈં, ઇસ તરહ જો મન્ય કા દૃષ્ટાન્ત દેકર આપને ઇનકી નિર્લેપતા કા અભાવ પ્રતિપાદિત
કિયા હૈ—સો ઇસ દૃષ્ટાન્ત મેં તો ઇનકો અપેક્ષા બહુત વડી વિષમતા હૈ—અર્થાત્ ઇસ દૃષ્ટાન્ત સે
વર્ણાદિકોં કે સર્વથા ઉચ્છેદ હોને કા જો પ્રસન્ન દિયા ગયા હૈ વહ હટના નહીં હૈ બના હી રહતા
હૈ ? સો ઇસ પ્રકાર કી યહ આશંકા મી ઠીક નહીં હૈ—ક્યોં કિ સિદ્ધ હોનેવાલે મન્ય જીવોં મેં જૈસી
સંખ્યાતતા હૈ વૈસી કાલ મેં સંખ્યાતતા નહીં હૈ કિન્તુ વહ સિદ્ધિ કાલ તો અનન્ત હૈ ઇસી પ્રકાર
પ્રત્યેક સમય મેં અનન્ત વર્ણાદિ ભાવોં મેં જૈસી હીયમાનતા હૈ ક્યોંકિ વહ ડનકા હાનિકાલ અવ
સર્પિણી પ્રમાણ હી હૈ ઇસકે બાદ તો ઉત્સર્પિણી કે પ્રથમ કાલ કે પ્રથમ સમય સે હેકર અન્તિમ
કાલ કે અન્તિમ સમય તક યે વર્ણાદિ ભાવ ઇસી ક્રમ સે વર્દમાન હોતે રહતે હૈ । અતઃ કિસી
મી કાલ મેં ઇન વર્ણાદિ ભાવોંકા સર્વથા ઉચ્છેદ પ્રાપ્ત નહીં હો સકતા હૈ । 'અણંતેર્હિ ઉચ્ચત્ત

એમનુ સર્વથા ઉચ્છેદન થાય તેવો પ્રશ્ન જ ઉપસ્થિત થતો નથી આજ સુધી અનન્ત-
કાલથી ભવ્યો સિદ્ધ અવસ્થાપન્ન થતા આવ્યા છે અને ભવિષ્યમા પણ તેઓ અનન્તકાલ સુધી
સિદ્ધ અવસ્થાપન્ન થતા રહેશે, છતાં એ તેમનું સર્વથા ઉચ્છેદન થતું નથી. આ પ્રમાણે
જ સર્વભૂતોની અપેક્ષાએ અનન્તગુણ ઉત્કૃષ્ટ વર્ણાદિગત ભાગોનું સર્વથા ઉચ્છેદન થશે નહિ-
શંકા—તેઓ તો સંખ્યાત જ સિદ્ધ હોય છે, પણ એ તો પ્રતિ સમય અનન્તરૂપમાં જ હીન
થતા રહે છે, આ પ્રમાણે જે ભવ્યનું દૃષ્ટાન્ત આપીને તમે એમની નિર્લેપતાનો અભાવ
પ્રતિપાદિત કર્યો છે, તો આ દૃષ્ટાન્તમા તો એમની અપેક્ષા ખૂબજ વિષમતા છે, એટલે કે
આ દૃષ્ટાન્તથી વર્ણાદિકોનો સર્વથા ઉચ્છેદ થવા સંભવો જે પ્રસંગ આપવામાં આવેલ છે તે
કાયમ જ રહે છે તો આ જાતની આ આશંકા પણ યોગ્ય ન કહેવાય કેમકે સિદ્ધ
થનારા ભવ્ય ભૂતોમા જેવી સંખ્યાતતા છે તેવી કાળમાં સંખ્યાતતા નથી પરંતુ તે સિદ્ધિ
કાળ તો અભિન્ન છે આ રીતે ફરેક સમયમાં અનન્ત વર્ણાદિ ભાવોમા જેવી હીયમાનતા છે,
તે તેમનો હાનિકાલ અવસર્પિણી પ્રમાણ જ છે એના પછી તો ઉત્સર્પિણીના પ્રથમકાળના
પ્રથમ સમયથી માંડીને અન્તિમકાળના અન્તિમ સમય સુધી એ વર્ણાદિ ભાવો એ જ કેમથી
વર્દમાન થતા રહે છે માટે કોઈ પણ કાળમાં એ વર્ણાદિભાવોનો સર્વથા ઉચ્છેદ પ્રાપ્ત થઈ
શકતો નથી.

‘ઉચ્ચત્તપજ્જવેહિં’ इति यदुक्तं, तत्रैवमाशङ्का संजायते तथाहि—उच्चत्वं शरीरस्य स्वावगाढ-
मूलक्षेत्रादुपरितननमः प्रदेशावगाहित्वं तत्पर्यवाश्र एकद्वित्रिप्रतरावगाहित्वादयोऽसं-
ख्यातप्रतरावगाहित्वान्ता असंख्याता एव, अवगाहना क्षेत्रस्यासंख्यातप्रदेशात्मकत्वात्,
कथं तर्हि एषा मनन्तत्वम् ? कथं चैतेऽनन्तभागपरिहाण्या परिहीयन्ते ? इति ।

अत्रोच्यते—प्रथमारके यत् प्रथमसमायोत्पन्नानामुत्कृष्टशरीरोच्चत्वं भवति ततो
द्वितीयादि समयोत्पन्नानां यावतामेकनमः प्रतरावगाहित्वलक्षणपर्यवाणा हानिस्तावत्
पुद्गलानन्तकं हीयमानं द्रष्टव्यम्, आधारहानावाधेयहानेरावश्यकत्वात् । तेन उच्चत्व-
पर्यवाणामप्यनन्तत्वं सिद्धं नमः प्रतरावगाहस्य पुद्गलोपचयसाध्यत्वादिति

‘પજ્જવેહિં’ ऐसा जो कहा गया है सो वहां पर ऐसी आशंका हो सकती है कि स्वावगाढभूत मूल
क्षेत्र से लेकर ऊपर ऊपर तक का जो नमः प्रदेश है उस नमः प्रदेश में जो अवगाहिता हैं वही
शरीर की उच्चता है इस उच्चता की पर्याये एक दो तीन प्रतरावगाहित्व आदि असंख्यात प्रत-
रावगाहित्व तक होती है और ये असंख्यात ही होती है तात्पर्य इसका यही है कि जीव का
अवगाह आकाश के एक प्रदेश से लेकर असंख्यातप्रदेश तक ही होता है क्योंकि लोकाकाश के
असंख्यात ही प्रदेश हैं तो फिर यहां पर पर्यायो में अनन्तता कैसे कही गई है और कैसे यह
अनन्तभागो की परिहानि से हीन कही गई हैं ? सो इस शंका का समाधान ऐसा है कि प्रथम
आरक के प्रथम समय में उत्पन्न हुए जीवो की जो शरीरोच्चता होती है उससे द्वितीयादि समयो
में उत्पन्न हुए जीवो की जितनी एक नमः प्रदेशावगाहित्व रूप पर्यायो की हानि होती है वह
अनन्तरूप में हीयमान होता है क्योंकि आधार की हानि में आधेय को हानि होना आवश्यक है,
इससे उच्चत्वादि पर्यायो में भी नमः प्रदेशावगाह पुद्गलोपचय साध्य होने से अनन्तता सिद्ध हो
जाती है । “अनन्तैः आयुः पर्यवैः” ऐसा जो कहा गया है सो वहां पर भी ऐसी आशंका हो

“અનંતેહિં ઉચ્ચત્તપજ્જવેહિં” આમ જે કહેવામાં આવ્યું તો ત્યાં એવી શંકા થઈ શકે
કે સ્વાવગાઢ ભૂત મૂલ ક્ષેત્રથી માંડીને ઉપર-ઉપરનો જે નમઃ પ્રદેશ છે, તે નમઃ પ્રદેશમાં
જે અવગાહિત છે, તે જ શરીરનો ઉચ્ચતા છે, આ ઉચ્ચતાની પર્યાયો એક, બે, ત્રણ
પ્રતરાવગાહિત્વ આદિ અસંખ્યાત પ્રતરાવગાહિત્વ સુધી હોય છે અને એ અસંખ્યાત જ
હોય છે. તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે કે જીવનો અવગાહ આકાશના એકપ્રદેશથી માંડીને અ-
સંખ્યાત પ્રદેશ સુધી જ હોય છે કેમ કે લોકાકાશના અસંખ્યાતજ પ્રદેશો છે, તો પછી અહીં
પર્યાયોમાં અનંતતા શા માટે કહેવામાં આવી છે ? અને કેવી રીતે આ અનંતભાગોનાં
પરિહાનિથી હીન કહેવામાં આવા છે ? તો આ શંકાનું સમાધાન આ પ્રમાણે છે કે પ્રથમ
આરકમાં પ્રથમ સમયમાં ઉત્પન્ન થયેલા જીવોની જે શરીરોચ્ચતા હોય છે તેનાથી દ્વિતી-
યાદિ સમયોમાં ઉત્પન્ન થયેલા જીવોની જેટલી એક નમઃ પ્રદેશાવગાહિત્વ રૂપ પર્યાયોની
હાનિ હોય છે તે અનંતરૂપમાં હીયમાન હોય છે કેમ કે આધારની હાનિમાં આધેયનો
હાનિ આવશ્યક છે, એનાથી ઉચ્ચત્વાદિ પર્યાયોમાં પણ નમઃ પ્રદેશાવગાહપુદ્ગલોપચય
સાધ્ય હોવાથી અનંતતા સિદ્ધ થઈ જાય છે ‘અનન્તૈઃ આયુઃ પર્યવૈઃ’ આમ જે કહેવામાં

અનન્તૈઃ આયુઃ પર્યવૈઃ' ઇતિ યદુક્તમ્, તત્રૈવમાશઙ્કા જાયતે, તથાહિ-પર્યવાણામ્
 એકસમયોના દ્વિસમયોના યાવદસંખ્યેયસમયોનોત્કૃષ્ટા સ્થિતિરિતિ પર્યવાઃ સ્થિતિસ્થા-
 નતારતમ્યરૂપા અસંખ્યેયા એવ, આયુઃ સ્થિતે રસંખ્યાતસમયાત્મકત્વાત્, તર્હિ કથમ્-
 ક્તમ્-અનન્તૈઃ આયુઃ પર્યવૈઃ' ઇતિ, અત્રાહ- હીયમાનસ્થિતિસ્થાનકારણોભૂતાનિ અન-
 ન્તાનિ આયુઃ કર્મદલિકાનિ પ્રતિસમયં પરિહીયન્તે । તાનિ હીયમાનાનિ અનન્તાનિ આયુઃ
 કર્મદલિકાનિ ભવસ્થિતિકારણત્વાત્ આયુઃ પર્યવા એવ, અતસ્તેષામ્ અનન્તત્વે નાસ્તિ
 ક્વાડપિ વિપ્રતિપત્તિરિતિ ।

તથા- 'અનન્તૈર્ગુરુલઘુપર્યવૈઃ' ઇતિ યદુક્તં, તત્રગુરુલઘુ-પર્યવાઃ=ઔદારિક વૈક્રિયા-
 હારકતૈજસરૂપાણાં બાદરસ્કન્ધદ્રવ્યોણાં પર્યાયા ઇતિ તત્ર પ્રકૃતે વૈક્રિયાહારકયોરનુપ-
 યોગઃ, તેન તત્રાધસમયે ઔદારિકશરીરમાશ્રિત્ય ઉત્કૃષ્ટ વર્ણાદયો બોધ્યાઃ, તતઃ પરં

સકતી હૈ કિ એક સમય હીન, દો સમય હીન, યાવત્ અસંખ્યાત સમય હીન જો ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ
 હોતી હૈ જહી આયુ કી પર્યાયે હૈ, હસ સ્થિતિ સ્થાનો કી તરતમતા કો લેકર આયુ કી પર્યાયે અસ-
 ળ્યાત હી હો સકતી હૈ, ક્યોકિ આયુ કી સ્થિતિ અસંખ્યાત સમયરૂપ હી હોતી હૈ, તો ફિર
 આયુ કી પર્યાયો મેં અનન્તતા કૈસે કહી ગઈ હૈ ? તો હસ શકા કા સમાધાન એસા હૈ કિ હીયમા-
 નસ્થિતિસ્થાનકોકે કારણીભૂત જો આયુકર્મદલિક પ્રતિસમય હીન હોતે હૈં વે હીયમાન
 અનન્ત આયુકર્મદલિક ભવસ્થિતિ કે કારણભૂત હોને સે આયુ કે પર્યાયરૂપ હી હોતે હૈ અતઃ
 હનકી અનન્તતા મેં કોઈ વિપ્રતિપત્તિ નહી હૈ, "અનન્તૈર્ગુરુલઘુ પર્યવૈઃ" એસા જો કહા ગયા હૈ
 સો ઔદારિક વૈક્રિય આહારક એવં તૈજસ રૂપ બાદર સ્કન્ધ દ્રવ્યો કી જો પર્યાયે હૈં વે ગુરુ લઘુ
 પર્યાય હૈ । પ્રકૃત મેં વૈક્રિય ઔર આહારક પર્યાયોં કા ઉપયોગ નહીં લિયા ગયા હૈ । અતઃ પ્રથમ
 આરક મેં આધસમય મેં ઔદારિક શરીર કો આશ્રિત કરકે ઉત્કૃષ્ટ વર્ણાદિક જાનના ચાહિય
 હસકે બાદ વે ડસી તરહ સે હીન હોતે જાતે હૈં । તથા તૈજસ શરીર કો આશ્રિત કરકે આધ-

આન્થુ' છે, તે ત્યાં પણ જોવી આશંકા થઈ શકે છે કે જોકે સમય હીન, એ સમય હીન,
 યાવત્ અસંખ્યાત સમય હીન જે ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ હોય છે તે જ આયુની પર્યાય છે. આ
 સ્થિતિ સ્થાનોની તરતમ્યતા લઈને આયુની પર્યાયો અસંખ્યાત જ થઈ શકે છે. કેમ કે
 આયુની સ્થિતિ અસંખ્યાત સમય રૂપ જ હોય છે. તો પછી આયુની પર્યાયોમાં અનંતતા
 શા માટે કહેવામાં આવી છે ? તો આ શંકાનું સમાધાન આ પ્રમાણે છે કે હીયમાન
 સ્થિતિ સ્થાનકોના કારણભૂત જે આયુ કર્મ દલિકો પ્રતિ સમયે હીન થતા રહે છે તેઓ
 હીયમાન અનંત આયુ કર્મ દલિક ભવસ્થિતિના કારણ ભૂત હોવાથી આયુના પર્યાય રૂપ
 જ હોય છે એથી જોમની અનંતતામાં કોઈ પણ ભતની વિપત્તિ નથી. "અનન્તૈર્ગુરુલઘુપર્યવૈ" આમ જે કહેવામાં આન્થુ' છે તો ઔદારિક વૈક્રિય આહારક તેમ જ તૈજસ
 રૂપ બાદર સ્કન્ધ દ્રવ્યોની જે પર્યાયો છે તે ગુરુલઘુ પર્યાયો છે. પ્રકૃતમાં વૈક્રિય અને આહાર-
 રક પર્યાયોનો ઉપયોગ કરવામાં આવ્યો નથી. એથી પ્રથમ આરકના આધસમયમાં ઔદાર-
 રિક શરીરને આશ્રિત કરીને ઉત્કૃષ્ટ વર્ણાદિક બાબતુ બોધ્યો. ત્યારબાદ તેઓ તે પ્રમાણે

તથૈવ હીયન્તે । તથા- તૈજસ શરીરમાશ્રિત્યાદ્યસમયે કપોતપરિણામક જાઠરાગ્નિરુત્કૃષ્ટઃ, તદનન્તરં હાન્યા મન્દ મન્દતરાદિ વીર્યકત્વરૂપો ભવતીતિ

તથા- ‘અનન્તૈરગુરુલ્લુપ્તપર્યવૈઃ, ઇત્યુક્તમ્ । તત્ર ‘અગુરુલ્લુ દ્રવ્યાણિ=કાર્મણમનોભાષાદીનિ પૌદ્ગલિકાનિ સૂક્ષ્મદ્રવ્યાણિ’ ઇત્યર્થઃ કૃતઃ । તત્ર કાર્મણસ્ય સાતવેદનીય શુભનિર્માણ સુસ્વર સૌભાગ્યાદેયાદિ રૂપસ્ય બહુસ્થિત્યનુમાગપ્રદેશકત્વેન, મનોદ્રવ્યસ્ય વહુગ્રહણાસન્દિગ્ધગ્રહણશ્લટિતિગ્રહણ વહુધારણાદિ મત્ત્વેન, માપાદ્રવ્યસ્ય ઉદાત્તત્વ ગમ્ભીરોપનીતરાગત્વપ્રતિપાદનાદવિધાયિતાદિરૂપત્વેન ચ આદિસમયે ઉત્કૃષ્ટત્વં તતઃ પરં ક્રમેણાનન્તાપર્યવા હીયન્તેઽતિ ।

તથા- ‘અનન્તૈ રુત્થાનકર્મબલવીર્યપુરુષકારપરાક્રમપર્યવૈઃ’ ઇત્યુક્તમ્ । ઉત્થાનાદયઃ પ્રથમસમયે ઉત્કૃષ્ટાઃ, તતઃ પર ક્રમશઃ હીયન્તે ઇતિ બોધ્યમ્ । અત્ર પ્રકૃતવિષયે પ્રાચીના સમય મે કપોત પરિણામક જઠર સબધી અગ્નિ ઉત્કૃષ્ટ હોતી હૈ । હસકે બાદ દ્વિતીયાદિક સમયો મેં વહ હાનિરૂપ સે હોતી હુઈ મન્દ મન્દતર આદિ વીર્ય પ્રભાવ વાલી હોતી જાતી હૈ ।

“અનન્તૈઃ અગુરુલ્લુપ્તપર્યવૈઃ” એસા જો કહા ગયા હૈ સો હસકા અર્થ કાર્મણ મનોવર્ગણા ઓર માષા વર્ગણા આદિ રૂપ સૂક્ષ્મ પૌદ્ગલિક દ્રવ્ય એસા ક્રિયા હૈ હનમેં જો કાર્મણ દ્રવ્યરૂપ સૂક્ષ્મ પુદ્ગલ દ્રવ્ય હૈ એવ ડસમેં જો સાતાવેદનીય, શુભનિર્માણ, સુસ્વર, સૌભાગ્ય ઓર આદેયાદિ પ્રકૃતિયાં હૈ ડનમેં વહુ સ્થિતિ રૂપ, વહુ અનુભાગ રૂપ, વહુપ્રદેશરૂપ જો વધ હૈ ડસ રૂપ સે મનોદ્રવ્ય કા વહુપ્રહ્ણરૂપ સે, અસદિગ્ધ પ્રહ્ણરૂપસે, શ્લટિતિ પ્રહ્ણરૂપ સે ઓર વહુધારણાદિ મત્ત્વ રૂપ સે, માષા દ્રવ્ય કા ડદાત્તરૂપ સે, ગંભીર રૂપ સે રાગ આદિ રૂપ સે આદિ સમય મેં ઉત્કૃષ્ટ સચય-પ્રહ્ણ હોતા હૈ હસકે બાદ દ્વિતીયાદિ સમયો મેં ક્રમશઃ હનકી અનન્ત પર્યાય હીયમાન હોને લગતી હૈ ।

તથા-“અનન્તૈરુત્થાનકર્મબલવીર્યપુરુષકારપરાક્રમપર્યવૈઃ” એસા જો કહા ગયા હૈ સો હસકા જ હીન થતા જાય છે તેમ જ તૈજસ શરીરને આશ્રિત કરીને આદ્યસમયમાં કપોત પરિણામક જઠર સબધી અગ્નિ અતિ ઉત્કૃષ્ટ હોય છે, ત્યાર બાદ દ્વિતીયાદિક સમયોમાં તે હાનિરૂપમા પરિણુત થતી મન્દ મન્દતર વગેરે વીર્ય-પ્રભાવવાળી થતી જાય છે.

“અનન્તૈઃ અગુરુલ્લુપ્તપર્યવૈઃ” આમ કહેવામા આવ્યું છે તો આનો અર્થ કાર્મણ, અને મનોવર્ગણા અને ભાષાવર્ગણા આદિ રૂપ સૂક્ષ્મ પૌદ્ગલિક દ્રવ્ય આમ કરવામાં આવેલ છે. એમનામાં જે કાર્મણ દ્રવ્ય રૂપ સૂક્ષ્મ પુદ્ગલ દ્રવ્ય છે અને તેના જે સાતાવેદનીય, શુભનિર્માણ સુસ્વર, સૌભાગ્ય અને આદેયાદિ પ્રકૃતિયો છે, તેમનામા બહુસ્થિતિરૂપ, બહુ અનુભાગ રૂપ, બહુ પ્રદેશરૂપ જે બન્ધ છે, તે રૂપથી મનોદ્રવ્યનું બહુશુષ્ણરૂપથી, અસદિગ્ધ ગ્રહણ રૂપથી, શ્લટિતિ ગ્રહણ રૂપથી અને બહુધારણાદિમત્ત્વ રૂપથી, ભાષાદ્રવ્યનું ઉદાત્ત રૂપથી, ગંભીર રૂપથી રાગ આદિ રૂપથી આદિ સમયમાં ઉત્કૃષ્ટ-સચય ગ્રહણ હોય છે ત્યાર બાદ દ્વિતીયાદિક સમયોમાં ક્રમશઃ એમના અનન્ત પર્યાયો હીયમાન થવા માંડે છે

તથા-“અનન્તૈરુત્થાનકર્મબલવીર્ય પુરુષકારપરાક્રમપર્યવૈઃ” એવું જે કહેવામા આવ્યું

ગાથાઃ—સંઘયર્ણં સઠાળં, ઉચ્ચત્ત આઝયં ચ મણુયાળં ।

અણુસમયં પરિહાયઙ, ઓસપ્પિણી કાલદોસેણ ॥૧॥

કોહમયમાયલોમા, ઓસન્નં વહ્દપ્પ ય મણુયાળં ।

કૂહ તુલ કૂહમાણા, તેણાઽણુમાણેણ સવ્વંપિ ॥૨॥

વિસમા અઙ્ગ તુલાઓ, વિસમાણિ ય જળવપ્પુ માણાણિ ।

વિસમા રાયકુલાઙ, તેણ ડ વિસમાઙ વાસાઙ ॥૩॥

વિસમેસુ ય વાસેસુ, હુતિ અસારાઙ ઓસહિવલાઙ ।

ઓસહિ દુબ્બલેણ ય, આઝ પરિહાયઙ્ જરાળં ॥૪॥

છાયા— સંઘનનં સંસ્થાનમ્ ઉચ્ચત્વમ્ આયુશ્ચ મનુજાનામ્ ।

અનુસમયં પરિહીયતે અવસર્વિણોકાલ દોષેણ ॥૧॥

ક્રોધમદમાયાલોમાઃ પ્રાયો વર્ધન્તે ચ મનુજાનામ્ ।

કૂટતુલા કૂટમાને તેનાનુમાનેન સર્વમપિ ॥૨॥

વિષમા અથ તુલા વિષમાણિ ચ જનપદેષુ માનાનિ ।

વિષમાણિ રાજકુલાનિ તેન તુ વિષમાણિ વર્ષાણિ ॥૩॥

તાત્પર્ય એસા છે કે—પ્રથમ અવસર્પિણી કાલ મે ઉત્થાન આદિ પ્રથમ સમય મેં ઉત્કૃષ્ટ હોતે હૈં
હસકે બાદ ક્રમશઃ યે દ્વિતીયાદિ સમયો મેં હીન હોતે જાતે હૈં હસ પ્રકૃત વિષય મેં પ્રાચીન
ગાથાએ હસ પ્રકાર સે હૈ—

“સંઘયર્ણં સઠાળં ઉચ્ચત્ત આઝયં ચ મણુયાળં, । અણુસમયં પરિહાયઙ, ઓસપ્પિણીકાલદોસેણ ॥૧॥

કોહ મયમાયલોમા ઓસન્ન વહ્દપ્પ ય મણુયાળં । કૂહતુલ કૂહમાણા તેણાઽણુમાણેણ સવ્વંપિ ॥૨॥

વિસમા અઙ્ગતુલાઓ વિસમાણિ ય જળવપ્પુ માણાણિ । વિસમારાયકુલાઙ તેણ ડ વિસમાઙ વાસાઙ ॥૩॥

વિસમેસુ ય વાસેસુ હુતિ અસારાઙ ઓસહિવલાઙ । ઓસહિ દુબ્બલેણ ય આઝ પરિહાયઙ્ જરાળં ॥૪॥

છે તો આતુ' તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે કે—પ્રથમ અવસર્પિણી કાળમાં ઉત્થાન આદિ પ્રથમ
સમયમાં ઉત્કૃષ્ટ હોય છે ત્યારબાદ—ક્રમશઃ એઓ દ્વિતીયાદિ સમયોમાં હીન થતા જાય છે,
આ પ્રકૃતવિષયમાં પ્રાચીન ગાથાઓ આ પ્રમાણે છે :

સંઘયર્ણં સઠાળં ઉચ્ચત્ત આઝયં ચ મણુયાળં,

અણુસમયં પરિહાયઙ ઓસપ્પિણી કાલદોસેણ ॥૧॥

કોહમયમાય લોમા ઓસન્ન વહ્દપ્પ ય મણુયાળં

કૂહતુલકૂહમાણા તેણંઽણુમાણેણ સવ્વેપિ । ૨।

વિસમા અઙ્ગ તુલાઓ વિસમાણિ ય જળવપ્પુ માણાણિ,

વિસમા રાયકુલાઙ તેણ ડ વિસમાઙ વાસાઙ ॥૩॥

વિસમેસુ ય વાસેસુ હુતિ અસારાઙ ઓસહિવલાઙ ।

ઓસહિ દુબ્બલેણ ય આઝ પરિહાયઙ્ જરાળં ॥૪॥

વિષયેષુ ચ વર્ષેષુ ભવન્તિ અસારાણિ ઓપધિવલ્લાનિ ।

ઓપધિદૌર્વલ્યેન ચ આયુ પરિહીયતે નરાણામ્ ॥૪॥ ઇતિ ।

एषा वर्णगन्धादिपर्यवाणां हानि रवसर्पिणीकालदोषेण बोध्या इय तु दुष्पमामाश्रित्य वाह-
ल्येन भवति शेषारकेषु तु यथासंभव विज्ञेयेति । ननु-‘नित्यद्रव्यस्यापि कालस्य कथं
हानि ?’ इति शङ्ककस्याशङ्कानिवारणार्थं भवता वर्णगन्धादि पर्यवाणां हानिर्निर्दिष्टा, वर्णादि
पर्यवाश्च पुद्गलधर्माः, हीयमानैस्तैः कालस्य हानिरसंभाव्या, नहि अन्यधर्मेर्हीयमानैः अपरस्य
हानिः क्वचिद् दृष्टा यद्यन्यधर्मेर्हीयमानैरपरस्य हानिः स्वीक्रियेत, तर्हि वृद्धाया वयोहानौ
युवत्या अपि वयोहानिः प्रसज्येत, न चैवं भवतीति चेत्, आह, कालो हि कार्यमात्रस्य
कारणमिति कार्यगतधर्मान् कारणेऽप्युपचर्य कालस्य हानिरुक्ते न काऽपि विप्रतिपत्ति-
रिति ॥सू० ३४॥

इनका भाव स्पष्ट है इन वर्ण गन्ध आदि पर्यायी की हानि अवसर्पिणी काल के दोष से होती है ऐसा जानना चाहिये, दुष्पमा आरक को आश्रित करके तो वर्ण गन्ध आदिको को हानि बहुत अधिक रूप में होती है शेष आरकों में यथा समब हो होती है ऐसा तीर्थंकरों का आदेश है ।

કાલ કો તો નિત્ય દ્રવ્ય માના ગયા છે ફિર ઇસકી હાનિ કૈસે હોતી છે ? ઇસ પ્રકાર શંકા કરને વાલે કી શંકા કો નિવારણ કરને કે નિમિત્ત આપને જો વર્ણ ગન્ધ આદિ પર્યાયો કી હાનિ કહી હૈં સો યહ કથન તો ઠીક હૈં ક્યોંકિ વર્ણાદિકો કી પર્યાયે પુદ્ગલધર્મરૂપ હૈં, પરન્તુ ઇન હીયમાનો કે દ્વારા કાલ કી હાનિ હોના તો અસંભવિત્ હૈં ક્યોં કિ અન્ય કી હાનિ મેં અન્ય કી હાનિ નહીં હોતી હૈં કહીં એસા તો દેસા નહીં જાતા હૈં કિ વૃદ્ધા કી વયો હાનિ મેં યુવતી કે વય કી હાનિ હોતી હો’ સો ઇસકા ઉત્તર એસા હૈં કિ કાલ કાર્યમાત્ર કે પરિવર્તન મેં કારણ હોતા હૈં ઇસલિયે કાર્યગત ધર્મોં કા કારણ મેં મો ઉપચાર કર લિયા જાતા હૈં અતઃ યહાં પર ઇસી બાત કો લેકર કાલ કી હાનિ કહ દો ગઈ હૈં, ઇસમે વિવાદ જૈસી કોઈ બાત નહીં હૈં ॥૩૪॥

એમનો ભાવ સ્પષ્ટ છે આ બધા વર્ણ ગન્ધવગેરે પર્યાયોની હાનિ અવસર્પિણી કાળના દોષથી થાય છે, એમ સમજવું એક જો દુષ્પમા આરકને આશ્રિત કરીને તો વર્ણ ગન્ધ વગેરે આદિકોની હાનિ અત્યધિક રૂપમાં થાય છે. શેષ આરકોમાં યથાસંભવ જ થાય છે, એવી તીર્થંકરોની આજ્ઞા છે

કાળને તો નિત્ય દ્રવ્ય માનવામાં આવેલ છે. તો પછી એને હાનિ કેવી રીતે થાય છે ? આ બાતની શંકા કરનારાઓની શંકાતું નિવારણ કરવા માટે તમે જે વર્ણ ગન્ધ વગેરે પર્યાયોની હાનિ બતાવેલ છે તો આ કથન તો ઠીક જ છે કેમ કે વર્ણાદિકોની પર્યાયો પુદ્ગલ રૂપ છે, પણ આ હીયમાનો વડે કાળની હાનિ થવી એ તો અસંભવિત છે કેમ કે અન્યની હાનિમાં કોઈ અન્યની હાનિ થતી નથી કોઈ સ્થળે આવું તો જોવામાં આવતું નથી કે વૃદ્ધાની વયોહાનિમાં યુવતીના વયની હાનિ થતી હોય તો આનો જવાબ આ પ્રમાણે છે કે કાળ કાર્યમાત્રના પરિવર્તનમાં કારણભૂત હોય છે. એથી કાર્યગત ધર્મોના કારણમાં પણ ઉપચાર કરવામાં આવે છે એથી અહીં એ બાતને લઈને જ કાલની હાનિ કહેવામાં આવી છે એમાં વિવાદ એવી કોઈ બાત નથી. ॥૩૪॥

મૂલમ્—જંબુદ્વીવે ણં મંતે ! દીવે ઇમીસે ઓસપ્પિનીએ સુસમાએ સમાએ ઉત્તમકટ્ટપત્તાએ મરહસ્સ વાસસ્સકેરિસએ આયારભાવપહોયારે હોત્થા ? ગોયમા ! બહુસમરમણિજ્જે ભૂમિમાગે હોત્થા, સે જહાણામએ આલિંગપુક્કસેરેહ વા, તં ચેવ જં સુસમ સુસમાએ પુવ્વવણ્ણિયં, ણવરં ણાણત્તં ચરુધણુસહસ્સમૂસિયા એગે અટ્ટાવીસે પિટ્ઠકરંહુયસએ, છટ્ઠમત્તસ્સ આહારદ્દે, ચરુસટ્ઠિ રાહંદિયાહં સારક્કલંતિ, દો પલિઓવમોહં આઝ, સેસં તં ચેવ । તીસે ણં સમાએ ચરુવ્વહો મણુસ્સા અણુસજ્જિત્થા, જહા—એકા ?, પરરજંઘા ૨, કુસુમા ૩, સુસમણા ૪, ॥ સૂ ૩૫ ॥

છાયા—જમ્બૂદ્વીપે જલુ મદન્ત । દ્વીપે અસ્યા અવસર્પિણ્યાઃ સુપમાયાં સમાયામ્ ઉત્તમકાષ્ઠા પ્રાપ્તાયાં મરતસ્ય વર્ષસ્ય કીદશ આકારભાવપ્રત્યવતારોઽમવત્ ?, ગૌતમ ! બહુસમરમણીયો ભૂમિમાગોઽમવત્ તદ્યથાનામકમ્ આલિંગપુક્કર इति वा, तदेव यत् सुषमसुपमायां पूर्ववर्णितम् नवरं नानात्वं चतुर्धनुस्सहस्रोच्छिन्ना. एकम् अष्टाविंशं पृष्ठ करण्डकशतं षष्ठमकतस्य आहारार्थः, चतुष्पष्टि रात्रिन्दिवं संरक्षन्ति, द्वे पल्योपमे आयुः शेष तदेव । तस्यां जलु समायां चतुर्विधा मनुष्याः मन्वषजन्, तद्यथा—पकाः १, प्रचुर-जङ्गाः २, कुसुमाः ३, सुषमणा ४, ॥ ૩૫ ॥

ટીકા—‘જંબુદ્વીવે ણં’ इत्यादि ।

ગૌતમસ્વામી પૃચ્છતિ—‘જંબુદ્વીવે ણં મંતે ! દીવે’ હે મદન્ત ! જમ્બૂદ્વીપે જલુ દ્વીપે ‘ઈમીસે’ અસ્યાઃ વર્તમાનાયા ‘ઓસપ્પિનીએ’ અવસર્પિણ્યાઃ ‘સુસમાએ સમાએ ઉત્તમકટ્ટપત્તાએ’ સુષમાયાં સમાયામ્ ઉત્તમકાષ્ઠાપ્રાપ્તાયામ્=ઉત્કૃષ્ટાવસ્થામુપગતાયાં સત્ત્યાં ‘મરહસ્સ વાસસ્સ કેરિસએ’ મરતસ્ય વર્ષસ્ય કીદશઃ=કિં પ્રકારકઃ ‘આયારભાવપહોયારે’ આકાર-ભાવ પ્રત્યવતારઃ સ્વરૂપપર્યાયપ્રાદુર્ભાવઃ ‘હોત્થા’ અમવત્ ? इति । भगवान् आह—‘गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे’ હે ગૌતમ ! બહુસમરમણીય=અત્યન્તસમો મનોરમશ્ચ ‘ભૂમિમાગે’

ટીકા—“જંબુદ્વીવે ણં મંતે ! દીવે ઇમીસે ઓસપ્પિનીએ” इत्यादि ।

इस सूत्र द्वारा गौतम ने प्रसु से पूछा है “जंबुद्वीवें णं मंते । दीवे०” हे मदन्त ! जब इस जम्बूद्वीप में इस अवसर्पिणी के सुषमा नामक आरे को मौजूदगी में जब कि वह अपनी उत्कृष्ट अवस्था में वर्तमान रहता है मरत क्षेत्र की स्थिति कैसी रहती है ? इससे उत्तर में प्रसु कहते हैं—“गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिमागे होत्था, से जहाणामए आलिंगपुक्कसेरह वा त चेव जं

જંબુદ્વીવેણ મંતે દીવે ઇમીસે ઓસપ્પિનીએ, इत्यादि सूत्र-॥ ૩૫ ॥

ટીકાથે—આ સૂત્ર વડે ગૌતમે પ્રશ્નને આ બાતનેા પ્રશ્ન કર્યો છે કે “જંબુદ્વીવેણ મંતે દીવે०” “હે મદન્ત ! જ્યારે આ જમ્બૂદ્વીપમા આ અવસર્પિણીના સુષમા નામક આરકની હયાતીમા જ્યારે તે ચોતાની ઉત્કૃષ્ટ અવસ્થામા વર્તમાન રહે છે, ત્યારે મરતક્ષેત્રની સ્થિતિ કેવી રહે છે ? એના

ભૂમિભાગઃ=ભૂમિપ્રદેશઃ 'દ્વોત્થા' અમવત્ । તત્ર દૃષ્ટાન્તમાહ—'સે જહાનામણ' ઇત્યાદિ । 'સે જહા ણામણ' તથથા નામકમ્ 'આલિંગપુક્કરેદ વા' આલિંગપુક્કર ઇતિ વા, ઇત્યાદિ સર્વ વર્ણન સુષમસુષમા સૂત્રવદ્ બોધ્યમ્ । એતદેવ દર્શયતિ સૂત્રકારઃ 'તં ચેવ જં સુસમ સુસમાણ પુવ્વવણ્ણિયં' તદેવ યત્ સુપમસુપમાયાં પર્વવર્ણિતમિતિ । સમ્પ્રતિ તતો વૈશિષ્ટ્યં પ્રતિપાદયતિ 'નવર' ઇત્યાદિ । ણવરં' નવરં=કેવલં 'ણાણત્ત' નાનાત્વં=મેદોડયમ્, યત્ સુષમસુષમાસમુત્પન્ના મનુજાઃ 'ચઉધણુસહસ્સમૂસિયા' ચતુર્ધનુસ્સહસ્સોચ્છિન્નાઃ=ચતુસ્સહસ્-ધનુઃ પરિમાણોચ્ચાઃ ક્રોશદ્વયોન્નતાઃ પ્રજ્ઞસાઃ । તેપાં મનુજાનામ્ 'એગે' એકમ્ 'અદ્ધાવીસે-પિટ્ઠકરંહયસણ' અષ્ટાવિંશ પૃષ્ઠકરણ્ઢકશતમ્=અષ્ટાવિંશત્યધિકૈકશતસખ્યકાઃ પૃષ્ઠકરણ્ઢકાઃ ભવન્તિ । પ્રથમારકોત્પન્ન મનુજાપેક્ષયા સુપમારકોત્પન્નમનુજાનાં પૃષ્ઠકરણ્ઢકા અર્ધ ભવન્તી-તિ બોધ્યમ્ । તથા—તેપાં મનુજાનાં 'હ્હમત્તસ્સ' પ્ષ્ઠમત્તેડતિક્રાન્તે 'આહારદ્દે' આહારાર્થઃ =આહારપ્રયોજનં સમુત્પદ્યતે । તથા તે મનુજાઃ 'ચઉસઠ્ઠિં રાહંદિયાઈ' ચતુષ્પષ્ઠિં રાત્રિન્દિવં સ્વાપત્યં 'સારક્કલ્લન્તિ' સંરક્ષન્તિ । અત્રેદં બોધ્યમ્—ચતુષ્પષ્ઠિદિવસાવશિષ્ટાણુપસ્તે મનુજાઃ અપત્યાનિ જનયન્તિ, તાનિ ચતુષ્પષ્ઠિદિવસાવધિસંરક્ષ્ય સંગોપ્ય પૂર્વોક્તપ્રકારેણ કાલધર્મ-

સુસમસુસમાણ પુવ્વવણ્ણિયં" હે ગૌતમ ! હિસ કાલ કી ઉપત્થિતિ મેં ભરતક્ષેત્ર કા ભૂમિભાગ વહુ સમ રમણીય રહતા હૈ અત્યન્ત સમ ઔર મનોરમ હોતા હૈં યહા હિસકા વર્ણન "આલિંગપુક્કર આદિ રૂપ સે પૂર્વ મેં સુષમસુષમા કે વર્ણન મેં કહે ગયે સૂત્ર કી તરહ સે કર હેના ચાહિયે । પરન્તુ ડસ કાલ કે સમય કે વર્ણન મેં ઔર હિસ કાલ કે સમય કે વર્ણન મેં જો અન્તર હૈ વહ 'નવર' હિસ પદ દ્વારા સૂચિત કરતે હુણ સૂત્રકાર કહતે હૈં કિ હમ કાલ મેં ઉત્પન્ન હુણ મનુષ્ય "ચઉધણુસહસ્સમૂસિયા એગે અદ્ધાવીસે પિટ્ઠકરંહયસણ, હ્હમ મત્તસ્મ આહારદ્દે ચઉસઠ્ઠિં રાહંદિયાઈ સારક્કલ્લન્તિ" ચારહજાર ધનુષ કી અવગાહનાવાલે હોતે હૈં અર્થાત્-દો કોશ કે ઝેંચે શરીર વાલે હોતે હૈ, ૧૨૮ હનકે પૃષ્ઠ કરણ્ઢક હોતે હૈ, અવસર્પિણી કે પ્રથમ કાલ કે મનુષ્યો કે પૃષ્ઠકર-ણ્ઢક ૨૫૬ હોતે હૈ—તવ કિ હનકે પૃષ્ઠ કરણ્ઢક ડનસે આધે હોતે હૈ, દો દિન કે વ્યતીત હો જાને

જવાબમા પ્રભુ કહે છે—'ગોયમા ! વહુસમરમણિજ્ઞે ભૂમિભાગે દ્વોત્થા સે જહા ણામણ આલિંગ પુક્કરેદ વા તં ચેવ જં સુસમસુસમાણ પુવ્વવણ્ણિયં' હે ગૌતમ ! એ કાળમાં ભરતક્ષેત્રનો ભૂમિભાગ બહુસમરમણીય રહે છે, અતીવ સમ અને મનોરમ હોય છે બહી' આ ભૂમિ-ભાગનું વર્ણન આલિંગ પુક્કર' વગરે રૂપમાં પૂર્વમાં સુષમ સુષમાના વર્ણનમાં કહેવામાં આવેલ સૂત્રની જેમ જ સમજી લેવું જોઈ એ. પણ તે કાળના સમયના વર્ણનમાં અને આ કાળના સમયના વર્ણનમાં જે અન્તર છે તે 'નવરં' આ પદ વડે સૂચિત કરતાં સૂત્રકાર કહે છે કે તે કાળમાં જન્મેલ મનુષ્ય 'ચઉધણુસહસ્સમૂસિયા એગે અદ્ધાવીસે પિટ્ઠ કરંહયસણ, હ્હમ સ્સ આહારદ્દે, ચઉસઠ્ઠિં રાહંદિયાઈ સારક્કલ્લન્તિ' ચાર હજાર ધનુષ જેટલી અવગા-હનાવાળા હોય છે એટલે કે જે ગાઉ જેટલા ઉંચા શરીરવાળા હોય છે. ૧૨૮ એમના પૃષ્ઠ કરંહકે હોય છે અવસર્પિણીના પ્રથમકાળના મનુષ્યોના પૃષ્ઠ કરંહકે ૨૫૬ હોય છે.

યુક્તા ભવન્તિ । તદપત્યાનાં સપ્ત અવસ્થાક્રમાઃ—પૂર્વવત્ વોચ્યાઃ । તત્ર પ્રત્યેકસ્યામવ-
સ્થાયાં કાલમાનં નવદિનાનિ, અઘૃતૌ ઘટચઃ, ચતુસ્ત્રિશ્ચન્પલાનિ, ઋત્ત્રિદશિકાનિ મસદશ
ચાક્ષરાણિ । સપ્તભિર્વિભક્તા ચતુષ્પટ્ટિ દિવસાઃ પૂર્વોક્તપ્રમાણા एव लभ्यन्ते । પૂર્વાપેક્ષયા
તેપામધિકસરક્ષણકાલઃ કાલસ્ય હીયમાનસ્ય સત્ત્વેન ઉત્થાનાદીના હીયમાનત્વાન્ ઉત્થા-
નાદોનામભિવ્યક્તૌ બહુતરદિવસાનામપેક્ષિતત્ત્વેન વોચ્યઃ । એવમગ્રેડપિ વોધ્યમિતિ । તથા—
તેપાં મનુજાનામ્ આયુઃ=જીવિતકાલઃ ‘દોપલિઓવમાઈ’ ઢે પલ્યોપમે=દ્વિપલ્યોપમપ્રમાણં
ભવતિ । અત્ર સૂત્રે ગૌતમસ્વામિનઃ પ્રશ્નવાક્ય ’ મમવત ઉત્તરવાક્ય ચ મુપમમુપમા
સૂત્રવદ્ વોધ્યમિતિ । ‘આઝ સેસં ત ચેવ’ ઇદમાયુઃ પ્રમાણં શરીરોચ્છ્રયાદિકં ચ મુપમાયા
આદિ સમયે વોધ્યમ્ । અતઃ પર ક્રમેણ હાનિર્વોધ્યેતિ ।

પર इन्हें आहार की अभिलाषा होती है, अर्थात् दो दिन के बाद ये आहार करते हैं, ये अपने
बाल बच्चो के समाल ६४ दिन रात तक करते हैं, “दो पलिओवमाई आऊ सेस त चेव”
इनकी आयु का काल दो पल्योपम प्रमाण होता है इनके बच्चो की अवस्था का क्रम जैसा
पहिले कहा गया है वैसा ही यहा पर जानना चाहिए इनकी प्रत्येक अवस्था में कालमान नौ
दिन का होता है, ८ घडिया होती हैं, ३४ पल होते हैं, कुछ अधिक १७ अक्षर होते हैं ६४
दिनो को सात से विभाजित करने पर यही प्रमाण आता है, इस कथन से सूत्रकार ने यह साबित
किया है कि इनका सरक्षणकाल पूर्वकाल के सरक्षण काल को अपेक्षा है, काल की हीयमानता होने से
यहां उत्थान आदि हीयमन होते हैं, इन उत्थान आदि की अभिव्यक्ति होने में बहुतर दिवसों
की अपेक्षा रहा करती है, इसी तरह से आगे भी इनके सम्बन्ध में कथन जानना चाहिए, इनका
आयुकाल दो पल्योपम प्रमाण होता है तथा इनके शरीर की ऊँचाई दो कोश की होती है
इत्यादि रूप से जो ऐसा कहा गया है वह सब कथन सुषमा काल के आदि समय में कहा गया

જ્યારે એમના પૃષ્ઠ કર ઠકે તેમના કરતાં અડધા હોય છે એ દિવસો પસ.ર થાય પછી
એમને આહારની અભિલાષા થાય છે એટલે કે એ દિવસ પછી એઓ આહાર ગ્રહણ કરે
છે એ એ પોતાના બાળકોની સંભાળ ૬૪ દિવસ-રાત સુધી કરે છે “દો પલિઓવમાઈ આઝ
સેસં તં ચેવ” એમના આયુષ્યની અવધિ એ પલ્યોપમ પ્રમાણુ જેટલી હોય છે એમનાં
બાળકોનો અવસ્થાક્રમ એમ પહેલા કહેવામાં આવેલ છે તેમ જ સમજવો એમની ઢરેકે
ઢરેકે અવસ્થામાં કાળમાન નવ દિવસનું હોય છે, ૮ ધડીઓ હોય છે, ૩૪ પલ હોય છે, કંઈક
વધારે ૧૭ અક્ષર હોય છે, ૬૪ દિવસને ૭ વડે વિભાજિત કરીએ તો એ જ પ્રમાણુ આવે
છે. આ કથન થી સૂત્રકારે આ વાત સિદ્ધ કરી છે કે એમનો સરક્ષણુ કાળ પૂર્વકાળના
સંરક્ષણુ કાળની અપેક્ષાએ છે. કાળની હીયમાનતા હોવાથી અહીં ઉત્થાન આદિ હીયમાન
હોય છે એ ઉત્થાન આદિકોની અભિવ્યક્તિ હોવામાં બહુતર દિવસોની અપેક્ષા રહે છે.
આ પ્રમાણુ હવે પછી પણ એમના સંબંધમાં આ રીતે બાણુ બોધે છે કે એમનો યોશુ-
કાળ એ પલ્યોપમ પ્રમાણુ જેટલો હોય છે, તેમ જ એમના શરીરની ઊંચાઈ એ આઠ જેટલી
હોય છે ઇત્યાદિ રૂપમાં એ આવુ કથન કરવામાં આવેલ છે તે બધુ સુષમા કાળના આદિ
૪૦

અથ મગવાન્ મનુષ્ય મેદાનાહ—‘તીસે જં’ ઇત્યાદિ । હે ગૌતમ ! ‘તીસેણ સમાપ’ તસ્યાં સ્વલ્પ સમાયાં ‘ચઢવ્વિહા મણુસ્સા’ ચતુર્વિધા મનુષ્યાઃ ‘અણુસજ્જિત્થા’ અન્વયજન=અનુપક્તવન્તઃ, ‘તં જહા’ તદ્વથા ‘एका’ एकाः=પ્રધાનાઃ શ્રેષ્ઠા, એકશબ્દસ્યાત્ર સંજ્ઞાત્વાન્ન સર્વનામતા ૧, ‘પરજંઘા’ પ્રચુરજઙ્ઘા=પીનજઙ્ઘાઃ, ન તુ કાકવત્ તનુજઙ્ઘા ઇતિ ૨, ‘કુસુમા’ કુસુમાઃ સૌકુમાર્યેણ કુસુમસદૃશત્વાત્ ૩, ‘સુસમણા’ સુશમનાઃસુષ્ઠુ શમન=શાન્તભાવો યેષાં તે તથા—અતિશાન્તાઃ પ્રતનુકપાયત્વાદિતિ ૪, અત્ર તદ્ગુણવૈશિષ્ટ્યાત્ તત્તજ્જાતીયતા બોધ્યેતિ પૂર્વારકોત્પન્નપદ્જાતીયમનુષ્યાણામત્રારકેઽભાવાદિમે મનુષ્યાસ્તતોભિન્નજાતીયા એવ ભવન્તીતિ બોધ્યમ્ ॥૬૦ ૩૫॥ ઇતિ દ્વિતીયારક ॥

અથ તૃતીયારકસ્ય સ્વરૂપં પ્રતિપાદયિતું પ્રશ્નોત્તરસ્વરૂપાત્મકં સૂત્રમાહ—

મૂલમ્— તીસે જં સમાપ તિહિ સાગરોવમ કોડાકોડીહિ કાલે વીડ વકંતે અણંતેહિ વણ્ણ પજ્જવેહિ જાવ અણંતગુણપરિહાણીણ પરિહાયમાણે પરિહાયમાણે એથ જં સુસમદુસ્સમા ણામં સમા પઢિવર્જિસુ સમણાસો સા જં સમા તિહા વિમજ્જઇ પઢમે તિમાણ ૧. મજ્જિમે તિમાણ ૨. પચ્છિમે તિમાણ ૩. । જંબુદ્વીવે જં મંતે ! દીવે ઇમીસે ઓસપ્પિણીણ

જાનના યાદિય ક્યોકિ જૈસે ૨ યહ કાલ વ્યતીત હોતા હૈ વૈસે ૨ આયુ કી હીનતા હોતી જાતી હૈ, “તીસે જં સમાપ ચઢવ્વિહા મણુસ્સા અણુસજ્જિત્થા” હસ કાલ મેં યે ચાર પ્રકાર કે મનુષ્ય હોતે હૈ—“તં જહા એકા, પરજંઘા, કુસુમા, સુસમણા” એકશ્રેષ્ઠ, યહાં યહ એક શબ્દ સંજ્ઞા રૂપ મેં પ્રયુક્ત હુઆ હૈ સર્વનામરૂપ મેં નહીં હમરે કાકજઙ્ઘા કી તરહ તનુજઙ્ઘા વાલે નહીં પ્રયુક્ત પૃષ્ઠ જઙ્ઘા વાલે, તીસરે પુષ્પ કી તરહ સુકુમારઔર ચતુર્થ સુશમન—શાન્તિભાવવાલે ક્યોકિ હનકી કષાય પ્રતનુ પતલી હોતી હૈ હસ કારણ યે અતિશાન્ત હોતે હૈ’ પૂર્વ આરક મેં ઉત્પન્ન હુય ૬ પ્રકાર કે પુરુષોં કા હસ આરક મે અભાવરહતા હૈ હસલિયે યે ઉનસે ભિન્ન જ્ઞાતીય હી હોતે હૈ, અતઃ તત્તદ્ગુણ વિશિષ્ટ હોને સે હનમેં તત્તજ્જાતીયતા જાનની યાદિયે,, ॥૩૫॥

દ્વિતીય આરક કા કથન સમાપ્ત ॥

સમયમા કહેવામાં આવેલ છે કેમ કે જેમ જેમ આ કાળ વ્યતીત થાય છે તેમ તેમ આયુ વગરની હીનતા થતી જાય છે “તીસેણ સમાપ ચઢવ્વિહા મણુસ્સા અણુસજ્જિત્થા” એ કાળમાં આ પ્રમાણે ચાર પ્રકારના મનુષ્યો હોય છે—“તં જહા-એકા પરજંઘા કુસુમા, સુસમણા” એક શ્રેષ્ઠ, અહીં આ એક શબ્દ સંજ્ઞા રૂપમાં પ્રયુક્ત થયેલ છે, સર્વનામ રૂપમાં નહિ બીજા કાક જઙ્ઘાની જેમ તનુ જઙ્ઘાવાળા નહિ પણ પૃષ્ઠજઙ્ઘાવાળા, ત્રીજા પુષ્પની જેમ સુકુમાર અને ચોથા સુશમન-શાન્તિભાવવાળા કેમ કે એમની કષાય પ્રતનુ-પાતળી હોય છે એથી એઓ અતિશાંત હોય છે પૂર્વ આરકમાં ઉત્પન્ન થયેલ ૬ પ્રકારના પુરુષોને આ આરકમાં અભાવ રહે છે. એથી એઓ તેમનાથી ભિન્ન જાતીય જ હોય છે એથી તત્તદ્ ગુણ વિશિષ્ટ હોવા બદલ એમનામાં તત્તજ્જાતીયતા જાણવી જોઈ એ, ॥૩૫॥

દ્વિતીય આરકનું કથન સમાપ્ત

सुसमदुस्समाए समाए पदममज्झिमेसु तिभाएसु भरहस्स वासस्स केरि
सए आयारभावपडोयारे पुच्छा ? गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे
होत्था, सो चेव गमो जेयव्वो णाणत्तं दो धणुसहस्सोइं उड्डं उच्चत्तेणं चउ
सट्ठिपिट्ठकरंडगा चउत्थभत्तस्स आहारत्थे समुपज्जइ ठिई पलिओ-
वमं, एगूणसीइ रोइंदियाइं सारक्खंति संगोवेति जाव देवलोगपरिग्गहिया
णं ते मणुया पणत्ता समणाउसो ! । तीसे णं भंते ! समाए पच्छिमे
तिभाए भरहस्स वासस्स केरिसए आयारभावपडोयारे होत्था ? गोयमा
बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे होत्था, से जहा णामए अलिंगपुक्खरेइ
वा जाव मणीहिं उवसोमिए, तं जहा कित्तिमेहिं चेव अकित्तिमेहिं
चेव तीसे णं भंते ! समाए पच्छिमेतिभाए भरहे वासे मणुयाणं
केरिसए आयारभावपडोयारे होत्था गोयमा ! तेसि मणुयाणं छव्विहे
संघयणे, छव्विहे संठाणे, बहूनि धणुसयाणि उड्डं उच्चत्तेणं, जह-
ण्णेणं संखिज्जाणि वासाणि उक्कोसेणं असंखिज्जाणि वासाणि आउ
यं पालंति, पालित्ता अप्पेगइया णिरयगामी अप्पेगइया तिरियगामी
अप्पेगइया मणुस्सगामी अप्पेगइया देवगामी अप्पेगइया सिज्झंति जाव
सव्वदुक्खाणमंतं क रंति ॥सू० ३६॥

छाया—तस्यां खलु समायां तिसृभि सागरोपमकोटिकोटिभिःकाले व्यतिक्रान्ते
अनन्तैः वर्षपर्यन्तैः यावत् अनन्तगुणपरिहाण्या परिहीयमाणे परिहीयमाणे अत्र खलु सुषम-
दुष्पमा नाम समा प्रत्यपद्यत भ्रमणायुष्मन् ।, सा खलु समा त्रिधा विभज्यते—प्रथमस्त्रि-
भागः १, मध्यमस्त्रिभागः २, पश्चिमस्त्रिभागः ३ । नम्बूद्वीपे खलु भवन्ति ! द्वीपे अस्याम्
अवलपिण्यां सुषमदुष्पमायाः समायाः प्रथममध्यमयोस्त्रिभागयोर्भरतस्य वर्षस्य कीदृश
आकारभावप्रत्यवतारः पृच्छा, गौतम ! बहुसमसमणीयो भूमिभागोऽभवत् स पव गमो
नेतव्यः, नानात्वं द्वे धनुस्सहस्रे गर्भमुच्चत्वेन, तेषां च मनुजानां चतुष्पष्टिपृष्ठकरण्डकाः,
चतुर्थे भक्ते आहारार्थः, समुत्पद्यते, स्थितिः पत्थोपमम्, पकोनाशीतिं रात्रिन्दिवं संरक्षन्ति
संगोपयन्ति, यावत् देवलोकपरिगृहीताः खलु ते मनुजाः प्रवृत्ता भ्रमणायुष्मन् ! । तस्या-
खलु समायाः पश्चिमे त्रिभागे भरतस्य कीदृश आकारभावप्रत्यवतारोऽभवत् ?, गौतम !
बहुसमरमणीयो भूमि भागोऽभवत्, तद्यथानाम आलिङ्गपुक्कर इति वा यावत् मणिमिरुप-
शोभितः तद्यथा—कृत्रिमैश्चैव अकृत्रिमैश्चैव । तस्याः खलु समायाः पश्चिमे त्रिभागे भरते वर्षे
मनुजानां कीदृश आकारभाव प्रत्यवतारोऽभवत् ?, गौतम ! तेषां खलु मनुष्याणां बहुविधं

સંહનનં ષડ્વિધં સંસ્થાનં બહુનિ ઘનુદ્દશતાનિ ઉર્ધ્વમુચ્ચત્ત્વેન, યઘન્યેય સંખ્યેયાનિ વર્ષાણિ ઉત્કર્ષેણ અસંખ્યેયાનિ વર્ષાણિ આયુષ્કં પાલયન્તિ, પાલયિત્વા અપ્યેકકે નિરયગામિનઃ, અપ્યેકકે તિર્યગામિન, અપ્યેકકે મનુષ્યગામિન, અપ્યેકકે દેવગામિનઃ, અપ્યેકકે સિધ્યન્તિ યાવત્ મર્વદુ ક્ષાનામન્તં કુર્વન્તિ ॥ ૩૬ ॥

ટીકા—‘તીસેળં’ इत्यादि ।

‘સમણાડસો !’ હે આયુષ્મન્ ! શ્રમણ ! ‘તીસેળ સમાઈ તિહિં સાગરોવમ કોડા-કોડીહિં’ તસ્યાઃ સ્વલુ સમાયાઃ ત્રિભિઃ સાગરોપમકોટીકોટિભિઃ કૃત્વા ‘કાલે વીઢ્કંતે’ કાલે વ્યતિક્રાન્તે સત્તિ, કીદૃશે તસ્મિન્ કાલે ? इत्याह—‘અણંતેહિ વણ્ણપજ્જવેહિં જાવ’ અનન્તૈઃ વર્ણપર્યવૈર્યાવત્ ‘અણતગુણપરિહાણીઈ પરિહાયમાણે પરિહાયમાણે’ અનન્તગુણપરિહાણ્યા પરિહીયમાણે પરિહીયમાણે इति, અથ યાવત્ પદેન ત્રયસ્ત્રિંશત્તમસૂત્રોક્તઃ પાઠઃ સંગ્રાહઃ, ‘एत्थणं’ અત્ર-અત્રાન્તરે સ્વલુ ‘સુસમદુસ્સમા ણામ સમા પહિવજ્જિસુ’ સુપમ-દુષ્પમા નામ સમા પ્રત્યપદ્યત=પ્રતિપન્નઃ-લગિતઃ । ‘સા ણં’ સા=સુપમદુષ્પમા નામ સ્વલુ ‘સમા તિહા’ સમા ત્રિધા=ત્રિભિઃ પ્રકારૈ ‘વિમજ્જઈ’ વિમજ્જયતે=વિમક્તા ક્રિયતે । તમેવ-વિમાગમાહ-‘પઢમે’ इत्यादि । ‘પઢમે તિમાઈ’ પ્રથમસ્ત્રિમાગઃ=તૃતીયો ભાગઃ, ‘મજ્ઞિમે-તિમાઈ’ મધ્યમસ્ત્રિમાગઃ, ‘પચ્છિમે તિમાઈ’ પશ્ચિમઃ=અન્તિમસ્ત્રિમાગઃ । અયં ભાવઃ—

તૃતીયારક કા સ્વરૂપ કથન—

ટીકા—તીસે ણં સમાઈ તિહિં સાગરોવમ કોડાકોડીહિં કાલે વીઢ્કંતે’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—પ્રભુ ગૌતમ કો સમજાતે હુઈ કહ રહે હૈ-કિ હે ગૌતમ ! જવ અનન્ત વર્ણપર્યાયો કા યાવત્ અનન્ત પુરુષકાર પ્રારાક્રમ પર્યાયો કા ધીરે ૨ હ્રાસ હોતે ૨ યહ ત્રીન સાગરોપમ પ્રમાણ વાલા સુસમા નામકા દ્વિતીય આરા સમાઈ હો જાતા હૈ. તવ “एत्थ ण सुसम दुस्समा णामं समा पडिबज्जिसु समणाउसो” હે શ્રમણ આયુષ્મન્ ! હિસ ભારત ક્ષેત્ર મેં સુષમ દુષ્પમા નામકા તૃતીય કાલ લગતા હૈ; “सा णं समा तिहा विमज्जइ, पढमे तिमाए१, मज्झिमे तिमाए२, पच्छिमे तिमाए-३” હિસ તૃતીય કાલ કો ત્રીન વિભાગો મેં વિમક્ત ક્રિયા ગયા હૈ ઇક પ્રથમ ત્રિભાગ મેં, દ્વિતીય મધ્યમ ત્રિભાગ મેં ઓર તૃતીય પશ્ચિમ ત્રિભાગ મેં તાત્પર્ય હિસકા યહ હૈ કિ હિસ તૃતીય કાલ કે

તૃતીય આરકના સ્વરૂપ કથન

‘તીસેળ સમાઈ તિહિં સાગરોવમ કોડા કોડીહિં કાલે વીઢ્કંતે’-इत्यादि ॥ સુત્ર ૩૬ ॥

ટીકાર્થ—પ્રભુ ગૌતમને સમજાવતા હલે છે કે હે ગૌતમ ! જ્યારે અન તવણું પયથિને। યાવત્ અન ત પુરુષકાર પરાક્રમ પયથિને। ધીમે ધીમે હ્રાસ થતા થતા ત્રણ સાગરોપમ પ્રમાણ સુષમા નામકે દ્વિતીય આરક સમાઈ થાય છે ત્યારે “एत्थ णं सुसम दुस्समा णामं समा पडिबज्जिसु समणाउसो” હે શ્રમણ આયુષ્મન્ ! આ ભારત ક્ષેત્રમાં સુષમદુષ્પમા નામકે તૃતીય કાળ પ્રતે લ થાય છે સા ણં સમા તિહા વિમજ્જઈ, પઢમે તિમાઈ ૧, મજ્ઞિમે તિમાઈ ૨, પચ્છિમે તિમાઈ ૩” આ તૃતીય કાળને ત્રણ ભાગોમાં વિભક્ત કરવામાં આવેલ

છે એક પ્રથમ ત્રિભાગમાં, દ્વિતીય મધ્યમ ત્રિભાગમાં અને તૃતીય પશ્ચિમ ત્રિભાગમાં આનું તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે કે આ તૃતીય કાળના પ્રથમ, મધ્યમ અને પશ્ચિમ આ પ્રમાણે ત્રણ ભાગો થયેલા છે આ તૃતીય કાળનો સમય બે કોડા-કોડી સાગરોપમ પ્રમાણ છે આ સંખ્યાને જ્યારે ત્રણથી વિભક્ત કરવામાં આવે છે ત્યારે તેના એક ભાગ ૬૬૬૬૬૬૬૬૬૬૬૬૬૬૬૬૬ આટલો થાય છે. આટલું જ પ્રમાણ દ્વિતીય અને આટલું જ પ્રમાણ તૃતીય ભાગનું હોય છે હવે ગૌતમ પ્રશ્નને ફરી પ્રશ્ન કરે છે કે-“જલુહીવેળ મંતે ! દીવે રમીસે ઓસણિણીય સુસમદુસ્સમાપ સમાપ પદમમન્નિમેસુ તિમાણસુ મરદ્દસસ વાસ-સસ કેરિસપ આયારમાવપહોયારે પુચ્છા” હે ભદ્રન્ત ! જ્યારે આ જંબૂદ્વીપાન્તર્ગત ભરત ક્ષેત્રમાં અવસરિષ્ણી કાળની સ્થિતિમાં સુપમ દુષ્પમા કાળ વર્તે છે તે સમયે આના પ્રથમ ત્રિભાગ અને મધ્યમ ત્રિભાગમાં ભરતક્ષેત્રનું કેવું સ્વરૂપ હોય છે. એના જવાબમાં પ્રશ્ન કહે છે-“ગોયમા મહુસમરમણિજ્જે મૂમિમાને દોત્થા સો સેવ ગમો ણેયન્નો-ણાણન્તં

एव गमः=पाठो नेतव्यः ज्ञातव्य इति । अत्र 'णाणत्तं' नानात्वं=पार्थक्यमेवं बोध्यम्, तथाहि—प्रथममध्यमयोस्त्रिभागयोर्वर्त्तमाना मनुष्या 'दो घणुसहस्साइं उइदं उच्चत्तेणं' द्वे घणुसहस्रे ऊर्ध्वम् उच्चत्वेन प्रज्ञप्ताः । तथा 'तेसिं च मणुयाण चउसट्ठिं' तेषां च मनुष्याणां चतुष्पष्टिः=चतुष्पष्टि संख्यकाः 'पिट्ठकरंडुगा' पृष्ठकरण्डका भवन्ति । एवं च सुषमा समोत्पन्नमनुष्यापेक्षया एतेषां मनुष्याणां पृष्ठकरण्डकसख्या अर्धं भवतीति बोध्यम् । तथा—तेषां मनुष्याणाम् 'आहारत्थे' आहारार्थः=आहारप्रयोजनं 'चउत्थभत्तस्स' चतुर्थभक्ते व्यतिक्रान्ते 'समुप्पज्जइ' समुत्पद्यते—भवति । 'चउत्थ भत्तस्स' इत्यत्र सप्तम्यर्थे षष्ठी । एकदिनान्तरितस्तेषामाहारो भवतीति भावः । तथा तेषां 'ठीइ' स्थितिः आयुः स्थितिः 'पल्लिओवम' पल्योपमम्=एक पल्योपमं भवति । तथा ते मनुष्याः स्वापत्यानि 'एगूणासीइ' एकोनाशीति 'राइदियाइ' रात्रिन्दिवं 'सारक्खंति सगोवेति' सरक्षन्ति संगोपयन्ति । एकोनाशीति रात्रिन्दिवावशिष्टायुष्कास्ते मनुजा अपत्यानि प्रस्रवते, तानि ते एकोनाशीति रात्रिन्दिवं यावत् संरक्षन्ति संगोपयन्तीति भावः । एतेषामपत्यरू-

हे गौतम ! सुषम दुष्पमा काल के प्रथम और मध्य के त्रिभागों में इस भरत क्षेत्र का भूमिभाग बहुसम रमणीय होता है, इत्यादि रूप से सब कथन इस समय का पूर्वोक्त रूप से ही समझ लेना चाहिये, परन्तु जो उस कथन से यद्वा से सम्बन्ध रखने वाले इस कथन में भिन्नता है वह ऐसी है—“णाणत्तं दो घणु सहस्साइ उइदं उच्चत्तेणं, तेसिं च मणुयाण चउसट्ठिं पिट्ठकरंडुगा, चउत्थभत्तस्स आहारत्थे समुप्पज्जइ, ठिई पल्लिओवमं, एगूणासीइं राइ दियाइ, सारक्खंति, सगोवेति, जाव देवलोग परिग्गहिया ण ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो” कि इनके शरीर की ऊँचाई दो हजार घणुष की अर्थात् एक कोश की होती है, ६४ इनके पृष्ठ करण्डक होते हैं । एक दिन के अन्तर से इन्हें मूल लगती है. स्थिति १ एक पल्योपम की होती है ७९ रात दिन तक ये अपने अपत्यों-बच्चों की सार समाल करते हैं यावत्-फिर ये कालमास में मरकर देवलोक में जन्म धारण करते हैं । ऐसा हे श्रमण आयुष्मन् ! इन मनुष्यों के सम्बन्ध में कथन किया गया है। इनके

दो घणु सहस्साइ उइद उच्चत्तेणं” हे गौतम ! सुषम दुष्पमा કાળના પ્રથમ અને મધ્યના ત્રિભાગોમાં આ ભરતક્ષેત્રનો ભૂમિભાગ બહુ સમરમણીય હોય છે. ઇત્યાદિ રૂપમાં આ સમયનું કથન બધું પૂર્વોક્ત રૂપમાં જ સમજ લેવું જોઈએ પણ પૂર્વકથન કરતાં અહીં જે વિશેષતા છે તે આ પ્રમાણે છે “નાણત્તં દો ઘણુ સહસ્સાઈ ઉઈદં ઉચ્ચત્તેણં, તેસિં ચ મણુયાણં ચઉસટ્ઠિં પિટ્ઠ કરંડુગા, ચઉત્થમત્તસ્સ આહારત્થે સમુપ્પજ્જઈ, ઠિઈં પલ્લિઓવમ, ઇગૂણાસીઈ, રાઈ દિયાઈ, સારક્ખંતિ, સંગોવેતિ, જાવ દેવલોગ પરિગ્ગહિયા ણ તે મણુયા પણ્ણત્તા સમણાઉસો” એટલે કે એમના શરીરની ઊંચાઈ બે હજાર ઘણુષ એટલી અર્થાત્ એક ગાઉ એટલી હોય છે એમના પૃષ્ઠ કરંડકો ૬૪ હોય છે. એક દિવસના અંતરે એમને બૂબ લાગે છે. ૧ એમની સ્થિતિ એક પલ્યોપમ એટલી હોય છે ૭૯ રાત-દિવસ સુધી એઓ પોતાના અપત્યોની સંભાળ રાખે છે, યાવત પછી એઓ કાલમાસમાં મૃત્યુ પ્રાપ્ત કરીને દેવલોકમાં જન્મધારણ કરે છે હે શ્રમણુ આયુષ્મન્ ! આપુ તે મનુષ્યોના સંબંધમાં વિશેષ

પાળાં યુગલિકાનામપિ સપ્તાવસ્થાક્રમાઃ પૂર્વવદ્ બોધ્યાઃ તન્નૈકૈકસ્યામવસ્થાયામ્ એકાદશ દિનાનિ સપ્તઘટત્રયઃ અઘૃૈ પલ્લાનિ ચતુર્ગ્નિશદક્ષરોચ્ચારણપરિમિતાત્ કાલાત્ કિશ્ચિદધિક-શ્ચકાલો ભવતીતિ બોધ્યમ્ । ‘જાવ’ યાવદ્-યાવત્પદેન ‘સંરક્ષ્ય સગોપ્ય કાસિત્વા ક્ષુશ્વા જૃમ્મિત્વા અક્લિષ્ટા અવ્યથિતા અપરિતાપિતાઃકાલમાસે કાલં કૃત્વા દેવલોકેષુ ઉત્પદ્યન્તે’ इति संग्राह्यम् । અર્થસ્તુ પ્રાગુક્ત એવ । एतेषां देवलोकोत्पादे हेतुमाह-‘देवलोगपरिग-हिया णं’ इत्यादि । समणउसो !’ हे आयुष्मन् ! श्रमण । ते णं मणुया’ ते मनुजाः खलु=निश्चयेन ‘देवलोगपरिगहिया’ देवलोक परिगृहीता भवन्तीति । अत्रेदं बोध्यम्-अस्याः समायाः प्रथममध्यमत्रिभागयोर्भिन्नजातीयमनुष्याणामनुपज्जाना जाति परम्परा नास्ति, तथाविधकालस्वाभाव्यात् । यत्तु-‘उग्गा भोगा रायन्न खत्तिया संगहो भवेच-उहा’ इत्युच्यते तदस्याः समाया अन्त्यत्रिभागमपेक्ष्य बोध्यमिति । इत्थं सुपमसुपमायाः समायाः प्रथममध्यमत्रिभागौ वर्णयित्वा सम्प्रति अन्तिमत्रिभागविषये प्राह-‘तीसे णं’

યુગલિક અપત્યો કી સાત અવસ્થાઓ કા ક્રમ જૈસા પહિલે કહા જા ચુકા હૈ વૈસા હી હૈ, એક ૨ અવસ્થા મેં ૧૧ દિન સાત ઘડો આઠ પલ ઓર ૩૪ અક્ષરો કે ઉચ્ચારણ કરને મેં જિતના કાલ લગતા હૈ ડસસે કુછ અધિક કાલ હૈ, યહા યાવત્પદ સે “૭૯ દિન તક યે અપત્યો કી રક્ષા ઓર પાલન કરકે સ્વાંસી છીક ઓર જંમાઈ લેકર વિના કિસી ક્લેશ ઓર વ્યથા કે પ્રાપ્ત કિયે કાલ માસ મેં મર કર દેવલોકોં મેં ઉત્પન્ન હોતે હૈ” એસા પાઠ ગૃહીત હુઆ હૈ, ઇસકા કારણ યહ હૈ કિ ઇન્દે દેવાયુ કા હી બન્ધ હોતા હૈ ઓર મનુષ્યાયુ આદિ કા નહીં ।

હસ તૃતીય કાલરૂપ આરે કા પ્રથમ મધ્ય વિભાગ મેં ભિન્ન જાતિય મનુષ્યોં કી અનુષ-જ્જના-જાતિપરમ્પરા નહીં હોતી હૈ, ક્યોંકિ ઇસ કાલ કા હી એસા સ્વભાવ હૈ, “યત્તુ ડગ્ગા ભોગા રાયન્ન સ્ખત્તિયા સગહો ભવે ચહહા” એસા જો કહા ગયા હૈ વહ ઇસ તૃતીય કાલ કે અન્ત્ય ત્રિભાગ કો લેકર કહા ગયા હૈ, ઇસ તરહ સે તૃતીય કાલકે પ્રથમ ત્રિભાગ ઓર મધ્યમ ત્રિભાગ

કથન કરવામાં આવેલ છે એમના યુગલિક અપત્યોની સાત અવસ્થાઓને ક્રમ જે રીતે પહેલાં કહેવામાં આવ્યો છે, તે રીતે જ અહીં પણ ક્રમ સમજવો. ‘એક એક અવસ્થામાં ૧૧ દિવસ, સાત ઘડી, આઠ પલ અને ૩૪ અક્ષરોના ઉચ્ચારણમાં જેટલો સમય લાગે છે. તેના કરતા કંઈક અધિક સમય છે અહીં યાવત્ પદથી ૭૯ દિવસ સુધી એઓ અપત્યોની રક્ષા અને પાલન કરે છે, આંસી, છીક અને બગાસું ખાઈને વગર કંઈ પણ ભાતની વ્યથા કે ક્લેશો એઓ કાલ માસમાં મૃત્યુ પ્રાપ્ત કરીને દેવલોકમાં ઉત્પન્ન થાય છે. એવો પાઠ સ અહીં થયેલ છે. આજુ કારણ આ પ્રમાણે છે કે એમને દેવાયુને જ બન્ધ હોય છે અને મનુષ્યાયુ વગેરે નો નહીં. આ તૃતીય કાળ રૂપ આરાના પ્રથમ મધ્યમ ત્રિભાગમાં ભિન્ન ભતીય મનુષ્યોની અનુષજ્જના-જાતિ પરંપરા હોતી નથી, કેમકે એ કાળનો સ્વભાવ જ એવો છે. “યત્તુ ડગ્ગા ભોગા રાયન્નસ્ખત્તિયા સંગહો ભવે ચહહા” આમ જે કહેવામાં આવેલ છે તે આ તૃતીય કાળના અન્ત્ય ત્રિભાગને લઇને કહેવામાં આવેલ છે. આ રીતે તૃતીય કાળના પ્રથમ ત્રિભાગ અને મધ્યમ ત્રિભાગનું વર્ણન કરીને હવે સૂતકાર અંતિમ

इत्यादि । गौतमस्वामी पृच्छति-‘तीसे णं भते ! समाए पच्छिमे’ हे भदन्त ! तस्याः समायाः खलु पश्चिमे=अन्तिमे ‘तिभाए’ त्रिभागे ‘भरहस्स वासस्स केरिसए आयारभावपडोयारे’ भरतस्य वर्षस्य कीदृश आकारभावप्रत्यवतारः=स्वरूपपर्यायप्रादुर्भावः ‘होत्था’ प्रज्ञप्तः ? भगवानाह-‘गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे होत्था’ हे गौतम ! बहुसमरमणीयो भूमिभागः प्रज्ञप्त, ‘से जहा णामए’ तद्यथा नाम-‘आलिङ्गपुक्खरेइ वा जाव मणीहिं उवसोमिए’ आलिङ्गपुष्कर इति वा यावत् मणिभिरुपशोभितः । ‘तं जहा’ तद्यथा-‘कित्तिमेहिं चैव अकित्तिमेहिं चैव’ कृत्रिमैश्चैवेति यावत्पद संग्राह्यं पाठः पूर्वतोऽवधार्य इति । पूर्वकालापेक्षयाऽत्रायं विशेषः-पूर्वकाले हि कृष्यादिकर्माणि न प्रवृत्तान्यभूवन् . भूमिरपि कृत्रिमैस्तृणैर्मणिभिश्चोपशोभिता नासीत्, अत्र काले तु कृष्यादि कर्माणि प्रवृत्तानि, भूमिश्च कृत्रिमैस्तृणैर्मणिभिश्चोपशोभिताऽभूदिति । पुनर्गौतमस्वामी पृच्छति-

का वर्णन करके अब सूत्रकार अन्तिम त्रिभाग के विषय में कहते हैं-“तीसे णं भते ! समाए पच्छिमे तिभाए भरहस्स वासस्स केरिसए आयारभावपडोयारे होत्था” इसमें गौतम ने प्रसु से ऐसा पूछा है कि हे भदन्त ! उस तृतीय काल के पश्चिम त्रिभाग में भरत क्षेत्र का स्वरूप कैसा हुआ है ? इसके उत्तर में प्रसु कहते हैं-‘गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे होत्था से जहाणामए आलिङ्गपुक्खरेइ वा जाव मणीहिं उवसोमिए तं जहा कित्तिमेहिं चैव अकित्तिमेहिं चैव” हे गौतम ! तृतीय काल के पश्चिमत्रिभाग में भरतक्षेत्र का भूमिभाग बहुसमरमणीय होता है और यह ऐसा बहुसमरमणीय होता है कि जैसा आलिङ्ग पुष्कर होता है, यावत् यह मणियों से उपशोभित होता है इन मणियों में कृत्रिम और अकृत्रिम मणि होते हैं. यहा यावत्पद संग्राह्य पाठ पूर्व में जैसा कहा गया है वैसा ही वह यहा ग्रहण किया गया जानना चाहिये. पूर्वकाल की अपेक्षा यहा यह विशेषता है कि पूर्वकाल में कृष्यादि कर्म चालू नहीं हुए थे, तथा भूमि भी कृत्रिम तृण और मणियों से उपशोभित नहीं थी, परन्तु इस काल में तो कृष्यादि कर्म चालू हुए, और भूमि कृत्रिम एवं अकृत्रिम तृण और मणियों से शोभित हुई “तीसे णं भते ! समाए पच्छिमे

ત્રિભાગના સંબંધમાં કહે છે “તીસેણં ભતે ! સમાપ પચ્છિમે તિભાપ ભરહસ્સ વાસસ્સ કેરિસપ આયારભાવપડોયારે હોત્થા” આમાં ગૌતમે પ્રશ્નને આ રીતે પ્રશ્ન કર્યો છે કે હે ભદંત ! તે તૃતીય કાળના પશ્ચિમ ત્રિભાગમાં ભરતક્ષેત્રનું સ્વરૂપ કેવું થયું હશે ? આના જવાબમાં પ્રશ્ન કહે છે-“ગોયમા ! બહુસમરમણિજ્જે ભૂમિભાગે હોત્થા સે જહાણામપ આલિંગ પુક્ખરેइवा जाव मणीहिं उवसोमिए तं जहा-कित्तिमेहिं चैव अकित्तिमेहिं चैव” હે ગૌતમ ! તૃતીય કાળના પશ્ચિમ ત્રિભાગમાં ભરતક્ષેત્રને ભૂમિભાગ બહુસમરમણીય હોય છે અને એ આલિંગ પુષ્કરવત બહુસમરમણીય હોય છે, યાવત્ આ મણિઓથી ઉપશોભિત હોય છે, આ મણિઓમાં કૃત્રિમ અને અકૃત્રિમ મણિઓ હોય છે અહીં યાવત્ પદ સંગ્રાહ્ય પાઠ પહેલા જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે તે પ્રમાણે જ અહીં સમજવો. પૂર્વકાળની અપેક્ષા અહીં વિશેષતા આ પ્રમાણે છે કે પૂર્વકાળમાં કૃષ્યાદિ કર્મને પ્રારંભ જ થયો નથી. તેમજ ભૂમિ પણ કૃત્રિમ તૃણ અને મણિઓથી ઉપશોભિત ન હોતી પણ આ કાળમાં તે કૃષ્યાદિ કર્મો આદ્ય થઈ ગયા હતા અને ભૂમિ કૃત્રિમ તથા અકૃત્રિમ તૃણ અને મણિ-

‘તીસે જાં મંતે ! સમાપ્ત પચ્છિમે તિમાપ્ત મરહે વાસે મણુયાણં કેરિસપ્ આયારમાવપડો-
યારે’ હે મદન્ત ! તસ્યાઃ સ્વલુ સમાયાઃ યશ્ચિમે ત્રિમાગે મરતે વર્ષે મનુજાનાં કીદશ
આકારમાવ પ્રત્યવતારઃ=સ્વરૂપપર્યાયપ્રાદુર્ભાવઃ ‘હોત્યા’ પ્રજ્ઞપ્તઃ ? મગવાનાહ-‘ગોયમા !
તેસિં મણુયાણં છવ્વિહે સંઘયણે’ હે ગૌતમ ! તેપાં મનુજાનાં પદ્ધિધ સહનનં ભવતિ,
‘છવ્વિહે સંઠાણે’ પદ્ધિધં ચ સંસ્થાનં ભવતિ । તથા તે મનુજા ‘વહ્નિ ધણુસયાણિ ઉદ્ધ
ઉચ્ચત્તેણં’ વહ્નિ ધણુસયાણિ ઉચ્ચત્તેણં ભવન્તિ । તથા તે મનુજાઃ ‘જહ્ણેણ સંસ્થિ-
જ્ઞાણિ વાસાણિ’ જહ્ણેણ સંસ્થિયેયાણિ વર્ષાણિ ‘ઉચ્ચકોસેણ અસંસ્થિજ્ઞાણિ વાસાણિ આરુયં
પાલેતિ’ ઉચ્ચકોસેણ ચ અસંસ્થિયેયાણિ વર્ષાણિ આરુયઃ પાલયન્તિ, ‘પાલિત્તા’ પાલયિત્વા
‘અપ્પેગહ્યા’ અપ્પેકકે=કેચિત્ ‘ણિયરગમી’ ‘નિરયગામિનો=નારકા ભવન્તિ, ‘અપ્પેગહ્યા’
અપ્પેકકે ‘તિરિયગામી’ તિરિયગામિનો ભવન્તિ, ‘અપ્પેગહ્યા મણુસસગામી’ અપ્પે-
કકે મણુસસગામિનો ભવન્તિ, ‘અપ્પેગહ્યા દેવગામી’ અપ્પેકકે દેવગામિનો ભવન્તિ ‘અપ્પે-
ગહ્યા સિદ્ધંતિ’ અપ્પેકકે સિદ્ધિયન્તિ=સકલકાર્યકારિતયા સિદ્ધા ભવન્તિ ‘જાવ’ યાવ-

તિમાપ્ત મરહે વાસે-મણુયાણં કેરિસપ્ આયાર માવ પડોયારે હોત્યા” એવ ગૌતમ ને પ્રશ્ન સે પૂછા
હૈ હે મદન્ત ! એ તૃતીય કાલ કે અન્તિમ ત્રિમાગ મેં મરત ક્ષેત્ર મેં મનુષ્યોં કા સ્વરૂપ કૈસા હોતા
હૈ ? હસકે ઉત્તર મેં પ્રશ્ન કહતે હૈ-“ગોયમા તેસિં મણુયાણં છવ્વિહે સંઘયણે, છવ્વિહે સંઠાણે,
વહ્નિ ધણુસયાણિ ઉદ્ધ ઉચ્ચત્તેણં જહ્ણેણ સંસ્થિજ્ઞાણિ ઉચ્ચકોસેણ અસંસ્થિજ્ઞાણિ વાસાણિ આરુય
પાલેતિ” હે ગૌતમ ! હસ કાલ કે મનુષ્યોં કે ૬ પ્રકાર કા સહનન એવ છહ પ્રકાર કા સસ્થા
ન હોતા હૈ તથા હનકે શરીર કી ઝેંવાઈ સૈકડો ધનુષ કી હોતી હૈ હનકી આરુ જહ્ણ્ય સે સ-
સ્થાત વર્ષ કી ઝીર ઉત્કૃષ્ટ સે અસસ્થાત વર્ષોં કી હોતી હૈ હસ આરુ કા પાલન કરકે અર્થાત્
હસ આરુ કો ઈર્ણરૂપ સે મોગ કરકે હનમેં સે કિતનેક તો મર કર નરક ગતિ મેં જાતે હૈ,
કિતનેક તિર્યચ્ચ ગતિ મેં જાતે હૈ, કિતનેક દેવગતિ મેં જાતે હૈ ઝીર કિતનેક મનુષ્યગતિ મેં જાતે

એથી શોભિત થઈ ગઈ હતી. “તીસે જાં મંતે ! સમાપ્ત પચ્છિમે તિમાપ્ત મરહે વાસે
મણુયાણં કેરિસપ્ આયારમાવપડોયારે હોત્યા” હવે ગૌતમ પ્રશ્નને એવી રીતે પ્રશ્ન કરે
છે કે હે મદન્ત ! તે તૃતીય કાળના અન્તિમ ત્રિમાગમા મરતક્ષેત્રમાં મનુષ્યોંનું સ્વરૂપ કેવું
હોય છે ? એના જવાબમાં પ્રશ્ન કરે છે: ‘ગોયમા ! તેસિં મણુયાણં છવ્વિહે સંઘયણે,
છવ્વિહે સંઠાણે, વહ્નિ ધણુસયાણિ ઉદ્ધ ઉચ્ચત્તેણં જહ્ણેણ સંસ્થિજ્ઞાણિ વાસાણિ ઉચ્ચકો-
સેણ અસંસ્થિજ્ઞાણિ વાસાણિ આરુયં પાલેતિ” હે ગૌતમ ! આ કાળના મનુષ્યોંને ૬
પ્રકારના સહનન અને ૬ પ્રકારના સસ્થાને હોય છે તેમજ એમના શરીરની જિઆઈ
સે કડો ધનુષ જેટલી હોય છે, એમના આરુધ્યની અવધિ જહ્ણ્યથી સસ્થાત વર્ષની અને
ઉત્કૃષ્ટથી અસસ્થાત વર્ષોં જેટલી હોય છે આરુને લોગવીને જેટલે કે સપૂર્ણ રીતે આ
આરુને ઉપલોગ કરીને એમાંથી કેટલાક તો નરક ગતિમા જાય છે, કેટલાક તિર્યગ ગતિમાં
જાય છે, કેટલાક દેવગતિમા જાય છે અને કેટલાક મનુષ્ય ગતિમા જાય છે, તેમ જ કેટલાક
એવા પણ હોય છે કે જેઓ સિદ્ધ અવસ્થાને પણ પ્રાપ્ત કરે છે એવી યાવત્ પદ્ધતી

ત્પદેન બુદ્ધ્યન્તે મુચ્યન્તે પરિનિર્વાન્તિ इति संग्रहः । તત્ર બુદ્ધ્યન્તે=વિમલકેવલાલોકેન સકલલોકાલોકં જાનન્તિ, મુચ્યન્તે=સર્વકર્મેભ્યો મુક્તા ભવન્તિ ‘પરિનિર્વાન્તિ=સમસ્ત-કર્મકૃતવિકારરહિતત્વેન સ્વસ્થા ભવન્તિ, તથા-‘સવ્વદુઃખાણં’ સર્વદુઃખાનામ્=સમસ્ત-ક્લેશાનામ્ ‘અંત’ અન્તમ્=નાશં કરેતિ’ કુર્વન્તિ અવ્યાબાધસુખભાજો ભવન્તીતિ ભાવઃ ।

નનુ અસ્યા સમાયા માગત્રયં કથં કૃતમ્ ? इति चेत् आह-यथा सुषमसुषमायाः समाया आदौ मनुष्याः त्रिपल्योपमायुष्कास्त्रिगव्यूत परिमितोऽध्वास्त्रिदिनान्तरितभोजना एकोनपञ्चाशद् दिनानि यावत् स्वापत्यपालकाश्च भवन्ति । ततः क्रमेण वर्णगन्धादिपर्य-वहान्या कालस्य हीयमानत्वेन सुषमायाः समाया आदौ मनुष्या द्विपल्योपमायुष्काः द्वि-गव्यूतोच्छ्रया द्विदिनान्तरित भोजनाश्चतुष्पष्टिम् अहोरात्रान् यावत् स्वापत्यपालकाश्च

हैं तथा कितनेक ऐसे भी होते हैं जो सिद्ध अवस्था को भी प्राप्त करते हैं, यह यावत् पद से “बुद्ध्यन्ते, मुच्यन्ते परनिर्वान्ति” इन पदों का संग्रह हुआ है विमल केवल ज्ञानरूप आलोक के द्वारा सकल लोकालोक को वे जानने लगते हैं, समस्त कर्मों से वे मुक्त-छूट जाते हैं और सम-स्त कर्मकृत विकारों से फिर वे रहित हो जाने के कारण स्वस्थ हो जाते हैं, -एवं समस्त दुखों का नाश कर देते हैं अर्थात् अव्याबाध सुख के भोक्ता बन जाते हैं,

શકા-હસ કાલ કે ત્રીન ભાગ કૈસે કીયે ? તો હસકા ઉત્તર એસા છે કે જિસ પ્રકાર સુષમસુષમા કાલ કી આદિ મેં મનુષ્ય ત્રીન પલ્યોપમ કી આયુ વાલે ત્રીન કોશ પ્રમાણ શરીર વાલે એવં ત્રીનદિન કે અન્તર સે મોજન કરને વાલે હોતે હૈ-તથા ૪૯ દિન તક જીવિત રહકર અપને યુગલિક અપત્યો કી સાર સમાલ કરતે હૈ । ફિર ક્રમ ૨ સે યહ કાલ જૈસે ૨ હીન હો જાતા હૈ ઊસ ક્રમ સે વૈસે વર્ણ ગંધ આદિ કોં કો પર્યાયોં કી હાનિ હો જાતી હૈ. ઓર જબ યહ પ્રથમ કાલ પૂર્ણરૂપ સે સમાપ્ત હો જાતા હૈ તબ સુષમા નામક દ્વિતીય આરા પ્રારમ્ભ હો જાતા હૈ. હસ કાલ કી આદિ મેં મનુષ્યોં કી આયુ દો પલ્યોપમ કી હોતી હૈ, દો કોશ ઊંચા ઊંચા શરીર

“બુદ્ધ્યન્તે, મુચ્યન્તે, પરિનિર્વાન્તિ” આ પદોનો સંગ્રહ થયેલ છે વિમલ કેવલ જ્ઞાન રૂપ આલોક વડે તેઓ સકલ લોકલોકને જાણવા લાગે છે સમસ્ત કર્મોથી તેઓ મુક્ત થઈ જાય છે, અને સમસ્ત કર્મકૃત વિકારોથી તેઓ રહિત થઈ જવાથી સ્વસ્થ થઈ જાય છે, તથા સમસ્ત દુઃખોનો નાશ કરે છે એટલે કે અવ્યાબાધ સુખના ભોક્તા બની જાય છે

શંકા-આ કાળના ત્રણ ભાગો કેવી રીતે કરવામાં આવ્યા છે ? તો જોના જવાબ આ પ્રમાણે છે કે જેમ સુષમ-સુષમા કાળના આદિમા મનુષ્યો ત્રણ પલ્યોપમ જેટલી આયુની અવધિવાળા, ત્રણ ગાઉ પ્રમાણ શરીરવાળા તેમજ ત્રણ દિવસના અતરે ભોજન કરનારા હોય છે તથા ૪૯ દિવસ સુધી જીવિત રહીને પોતાના યુગલિક અપત્યોની સાર સભાળ કરે છે. પછી થથાકમે આ કાળ જેમ જેમ હીન થતો જાય છે, તે જ ક્રમથી વર્ણ, ગંધ આદિની પર્યાયોની હાનિ થતી જાય છે અને જ્યારે પ્રથમ કાળ સંપૂર્ણ રીતે સમાપ્ત થઈ જાય છે ત્યારે સુષમા નામક દ્વિતીય આરંભનો પ્રારંભ થાય છે. આ કાળના પ્રારંભમા મનુષ્યોનું આયુ-ધ્ય એ પલ્યોપમ જેટલું હોય છે તેમજ શરીર એ ગાઉ જેટલું ઉચું હોય છે એ દિવસના

भवन्ति, ततोऽपि क्रमेण वर्णगन्धादि पर्यवहान्या कालस्य हीयमानत्वेन सुषमदुष्पमायाः समाया आदौ मनुष्या एकपल्योपमायुष्का एकगव्यूतोच्छ्रया एकदिनान्तर्गितभोजना एको- नाशीति दिवसान् यावत् स्वापत्यपालकाश्च भवन्ति । ततः सुषमदुष्पमाया आद्यत्रिभा- गद्वयं यावत् वर्णगन्धादीनां नियतपरिहाण्या कालस्य हीयमानत्वेन क्रमेणाधिकाधिकं हीयमाना युगलिनोऽभूत् । अन्तिमत्रिभागे तु परिहाणिरनिश्चिता जातेति अस्याः समाया भागत्रयं कृतमिति ॥सू० ३६॥

होता है दो दिन के अन्तर से इन्हे आहार की इच्छा होती है चौ सठ रात दिन की जब इनकी आयु अवशिष्ट रहती है तब इनके युगलिक सतान का जन्म होता है, और ये ६४ दिन तक अपनी सतान की सार समाल करते रहते हैं इस तरह क्रम २ से जब इस काल की भी समाप्ति हो जाती है और वर्ण गन्धादिपर्यायों की भी पहिले ओरे की अपेक्षा और अधिक हीनता हो जाती है-तब तृतीय काल जो सुषमदुष्पमा है उसका प्रारंभ होता है इस काल के प्रारंभ में मनुष्य एक पल्योपम की आयुवाले होते हैं, एक कोश का इनका शरीर होता है, और एक दिन के अन्तर से इन्हे आहार की अभिलाषा होती है, जब इनकी आयु ७९ दिन की बाकी रहती है- तब इनके युगलिक सतान का जन्म होता है, ये ७९ दिन तक उसका लालन पालन कर कालमास में आनन्द के साथ अपने शरीर का परित्याग कर देव गति में जन्म लेते हैं, क्रम २ से जब यह तृतीय काल का त्रिभाग प्रमाण आद्य समय में व्यतीत हो जाता है और मध्य का भी इसी तरह से त्रिभाग प्रमाण समय समाप्त हो जाता है-इन दोनों त्रिभागों में वर्णादि पर्यायों की तो क्रमशः हानि होती ही रहती है-इन दोनों त्रिभागों में अधिकाधिकरूप से युगलिकों की हीनता आजाती है और फिर अन्तिम त्रिभाग में यह हीनता अनिश्चित रूप में आजाती है, इस कारण इस

अतरे तेभने आहार अक्षुष्य करवानी धिच्छा थाय छे, ६४ रात-दिवस जेटहुं आयुष्य अवशिष्ट रहै छे त्यारे जेभने युगलिक सतान थाय छे अने तेजो ६४ दिवस सुधी पोताना पाणकनी सार-संलाण करता रहै छे आ प्रमाणे यथाकमे न्यारे आ काणनी पणु समाप्ति थई जाय छे अने पणु गन्धादि पर्यायिनी पणु-पडेला आरकनी अपेक्षाजे पधारे हीनता थई जाय छे, त्यारे तृतीय काण जे सुषम दुष्पमा काण छे, तेने प्रारंभ थाय छे ते काणना प्रारंभमा मनुष्य जेक पल्योपम जेटला आयुष्यवाणा होय छे जेक गाँठ जेटहुं जेथु जेभनुं शरीर होय छे अने जेक दिवसना अंतरे जेभने आहार-अक्षुष्य करवानी अभिलाषा थाय छे न्यारे जेभनुं आयुष्य ७९ दिवस जेटहुं बाकी रहै छे त्यारे जेभने युगलिक सतान उत्पन्न थाय छे, जेजो ७९ दिवस सुधी तेनु लालन-पालन करीने काल मासमा आनन्दपूर्वक पोताना शरीरने छोडीने देवगतिमा जन्म प्राप्त करै छे, यथा-कमे न्यारे आ तृतीय काणनुं त्रिभाग प्रमाण-आद्य समय व्यतीत थाय छे अने मध्यम पणु त्रिभाग प्रमाण समय जे रीते समाप्त थई जाय छे-जे अने त्रिभागोमां वर्णादि पर्यायिनी तो क्रमशः हानि भती न रहै छे, जे अने त्रिभागोमां अधिकाधिक इषयी युग-लिकोनी न हीनता आवी जाय छे अने पछी अन्तिम त्रिभागमां आ हीनता अनिश्चित

સુપમ દુષ્પમાયા અન્તિમે ત્રિભાગે યથા લોકવ્યવસ્થા જાતા, તાં પ્રતિપાદયતિ—
 મૂલ્ય—ત્રીસે ણં સમાપ્ત પચ્છિમે તિમાપ્ત પલિઓવમદ્વમભાગાવ-
 સેસે એત્થ ણં ઇમે પળ્લરસ કુલગરા સમુપ્પજ્જિત્થો તં જહા સુમઈ ૧.
 પહિસ્સુઈ ૨. સીમંકરે ૩. સીમંધરે ૪. સ્વેમંકરે ૫. સ્વેમંધરે ૬.
 વિમલવાહણે ૭. ચક્ષુમં ૮. જસમં ૯. અમિચંદે ૧૦. ચંદામે ૧૧.
 પસેણઈ ૧૨, મરુદેવે ૧૩ ણામી ૧૪ ઉસમે ૧૫ ત્તિ ॥સૂ. ૩૭॥

છાયા—તસ્યા: સ્વલુ સમાયા: પશ્ચિમે ત્રિભાગે પલ્યોપમાદ્વમભાગાવશેષે અત્ર સ્વલુ
 ઇમે પઞ્ચદશ કુલકરા સમુદપદ્યન્ત, તદ્યથા—સુમતિ: ૧, પ્રતિશ્રુતિ ૨, સીમંકર ૩, સીમ-
 ન્ધર ૪, ક્ષેમંકર: ૫, ક્ષેમન્ધર ૬, વિમલવાહન ૭, ચક્ષુમાન્ ૮, યશસ્વાન્ ૯, અમિચન્દ્ર
 ૧૦, ચન્દ્રામ ૧૧, પ્રસેનજિત્ ૧૨, મરુદેવ: ૧૩, નામિ: ૧૪, ઋપમ: ૧૫, इति ॥૩૭॥

ટીકા—‘ત્રીસે ણં’ इत्यादि—‘ત્રીસે’ તસ્યા = સુપમદુષ્પમાયા: ‘ણં’ સ્વલુ ‘સમાપ્ત’
 સમાયા: ‘પચ્છિમે તિમાપ્ત પલિઓવમદ્વમભાગાવશેષે’ પશ્ચિમે ત્રિભાગે પલ્યોપમાદ્વમભા-
 ગાવશેષે કૃતાષ્ટભાગસ્ય પલ્યોપમસ્ય અષ્ટમે ભાગે અવશિષ્ટે સતિ, ‘એત્થ’ અત્ર એતદ-
 ધ્યન્તરે ‘ણં’ સ્વલુ ‘ઇમે, ઇમે વક્ષ્યમાણા: ‘પળ્લરસ કુલગરા’ પઞ્ચદશ કુલકરા = લોક-
 વ્યવસ્થાકારિણ: કુલકરણશીલા: વિશિષ્ટ બુદ્ધિયુક્તા: પુરુષવિશેષા: ‘સમુપ્પજ્જિત્થા’
 સમુદપદ્યન્ત = સમુત્પન્ના:, ‘તં જહા’ તદ્યથા—‘સુમઈ’ સુમતિરિત્યાદિ પશ્ચદશનામાનિ
 સૂત્રોક્તાનિ બોધ્યાનિ ।

તૃતીય આરે કે ત્રીન ત્રિભાગ ક્રિયે ગયે હૈ ॥૩૬॥

હસ આરે કે અન્તિમ ત્રિભાગ મેં જૈસી લોક કી વ્યવસ્થા હોતી હૈ અબ સૂત્રકાર ઉસકા
 પ્રતિપાદન કરતે હૈ—‘ત્રીસે ણ સમાપ્ત પચ્છિમે વિભાપ્ત પલિઓવમદ્વમભાગાવશેષે’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—ઉસ સુપમ દુષ્પમા નામકે તૃતીય આરે કે અન્તિમ ત્રિભાગ કી સમાપ્તિ હોને મેં
 જવ પલ્યોપમ કા આઠવાં ભાગમાત્ર સમય બાકો રહતા હૈ તબ યે “ઇમે પળ્લરસ કુલગરા સમુપ્પ-
 જ્જિત્થા” ૧૫ કુલકર ઉસ સમય ઉત્પન્ન હોતે હૈ—“ત જહા” ઉનકે નામ હસ પ્રકાર સે હૈ—
 “સુમઈ ૧, પહિસ્સુઈ ૨, સીમંકરે ૩, સીમંધરે ૪, સ્વેમંકરે, ૫, સ્વેમંધરે ૬, વિમલવાહણે ૭, ચ-

૩૫મા આવી બાય છે આ કારણથી આ તૃતીય આરકના ત્રણ ત્રિભાગો કરવામા આવેલ છે. ॥૩૬॥

ટીકા—આ આરકના અંતિમ ત્રિભાગમાં બેવી લોકની વ્યવસ્થા હોય છે તે વિશે હવે
 સૂત્રકાર પ્રતિપાદન કરે છે—

‘ત્રીસે ણ સમાપ્ત પચ્છિમે તિમાપ્ત પલિઓવમદ્વ મભાગાવશેષે’ इत्यादि સૂ. ૩૭॥

ટીકાર્થ—તે સુપમદુષ્પમા નામક તૃતીય આરકના અંતિમ ત્રિભાગની સમાપ્તિ થવામા
 બ્યારે પલ્યોપમને આઠમા ભાગ માત્ર બાકી રહે છે ત્યારે એ “ઇમે પળ્લરસ કુલગરા સમુપ્પ
 જ્જિત્થા” ૧૫ કુલકરે તે સમયે ઉત્પન્ન થાય છે “ત જહા” તેમના નામો આ પ્રમાણે છે
 ‘સુમઈ ૧, પહિસ્સુઈ ૨, સીમંકરે ૩, સીમંધરે ૪, સ્વેમંકરે ૫, સ્વેમંધરે ૬, વિમલવાહણે
 ૮, ચક્ષુમં ૮, જસમં ૯, અમિચંદે ૧૦, ચંદામે ૧૧, પસેણઈ ૧૨, મરુદેવે ૧૩, ણામી ૧૪,

નનુ સ્થાનાઙ્ગાદિપુ-“જંબુદીવે મારહે વાસે હમીસે ઓસપ્પિણીય સત્તકુલગરા હોત્થા, તં જહા-પદમિત્થ વિમલવાહણ ૧, ચક્કુમં ૨, જસમં ૩, ચડત્થમભિચંદે ૪, તત્તો પસે-ળઈ ૫, પુણ, મરુદેવે ૬, ચેવ નામી ૭ ય ॥” ઇત્યુક્તમ્, અત્ર તુ પઞ્ચદશ કુલકરા ઉક્તા ઇતિ પરસ્પરમાગમવિરોધઃ ૨ ઇતિ ચેત્ આઠ-સૂત્રગતે વૈચિત્ર્યાત્તત્ર સપ્તૈવ કુલકરા ઉક્તા અત્ર તુ પઞ્ચદશેત્યદોષ ઇતિ ।

નનુ તથાપિ ‘અસ્યાઃ સમાયાસ્તૃતીયે ત્રિભાગે પલ્યોપમાષ્ટભાગાવશેષે પઞ્ચદશ કુલકરા અભૂવન્’ ઇતિ યદુક્તં તન્ન સંગચ્છન્ને, યતઃ પલ્યોપમં કિલ્લ અસત્કલ્પનયા ચત્ત્યા-

ચક્કુમ ૮, જસમં ૨, અભિચંદે ૧૦, ચદામે ૧૧, પસેણ ૧૨, મરુદેવે ૧૩, ણામા ૧૪, ઉસમે ત્તિ” સુમતિ ૧, પ્રતિશ્રુત ૨, સીમંકર ૩, સીમધર ૪, ક્ષેમકર ૫, ક્ષેમધર ૬, વિમલવાહન ૭, ચક્કુમ્માન્ ૮, યગસ્વાન્ ૯, અભિચન્દ્ર ૧૦, ચન્દ્રામ ૧૧, પ્રસેનજિત્ ૧૨, મરુદેવ ૧૩, નામી ૧૪, ઔર ઋષભ ૧૫, તાત્પર્યે હસ કથન કા એસા હૈ કિ જબ હસ કાલ કી સમાપ્તિ હોને મેં એક પલ્યોપમ પ્રમાણ કાલ વાકો વચતા હૈ । તબ હસ પલ્યોપમ પ્રમાણ કાલ કે ૮ ભાગ કરના ઔર ૭ ભાગ પ્રમાણ પલ્યોપમ જબ સમાપ્ત હો જાવે ઔર ૮ વે ભાગ પ્રમાણ પલ્યોપમ જબ વાકો રહે તબ હસ સમય મેં ચે પન્દ્રહ કુલકર ઉત્પન્ન હોતે હૈ । ચે લોક કો વ્યવસ્થા કરને વાકે હોતે હૈ હસલિયે હન્દે કુલકર કહા ગયા હૈ, હનકા કામ કુલો કી રચના કરને કા હૈ । ચે વિશિષ્ટબુદ્ધિશાલી હોતે હૈ । અતએવ હન્દે પુરુષ વિશેષ મી કહા જાતા હૈ । યહાં શકા એસી હો સકતી હૈ કિ સ્થાનાઙ્ગ આદિ સૂત્રો મેં “જંબુદીવેદીવે મારહે વાસે હમીસે ઓસપ્પિણીય સત્ત-કુલગરા હોત્થા”-ત જહા પદમિત્થ વિમલવાહણ, ૨, ચક્કુમ ૨, જસમ ૩, ચડત્થમભિચંદે ૪, તત્તો પસેળઈ ૫, પુણ મરુદેવે ૬, ચેવ નામી ૭, હસ પાઠ કે અનુમાર ૭ હી કુલકર હસ મરતક્ષેત્ર મેં અવસર્પિણીકાલ મેં હુએ કહે ગયે । ફિર આપ યહા ૧૫ પ્રકટ કર રહે હૈ તો ફિર

ઉસમે ૧૫ ત્તિ” સુમતિ ૧, પ્રતિશ્રુત ૨, સીમંકર, સીમધર ૪, ક્ષેમકર ૫, ક્ષેમધર ૬, વિમલવાહન ૭, ચક્કુમ્માન્ ૮, યગસ્વાન્ ૯, અભિચન્દ્ર ૧૦, ચન્દ્રામ ૧૧, પ્રસેનજિત ૧૨, મરુદેવ ૧૩, નામી, અને ઋષભ ૧૫ આ કથનનુ તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે કે જ્યારે આ કાળની સમાપ્તિ થવામાં એક પલ્યોપમ પ્રમાણ કાળ શેષ રહે છે ત્યારે આપલ્યોપમ પ્રમાણ કાળના ૮ ભાગો કરવા અને સાત ભાગ પ્રમાણ પલ્યોપમ જ્યારે સમાપ્ત થઈ જાય અને ૮ મો ભાગ પ્રમાણ પલ્યોપમ જ્યારે શેષ રહી જાય ત્યારે એ સમયમા એ ૧૫ કુલકરો ઉત્પન્ન થાય છે એ લોક-વ્યવસ્થાપક હોય છે એથી જ એમને કુલકર કહેવામાં આવેલ છે એમનું કામ કુલોની રચના કરવાનું છે એઓ બુદ્ધિશાળી હોય છે, એથી એમને પુરુષ વિશેષ પણ કહેવામાં આવે છે અહીં શંકા એવી ઉદ્ભવે છે કે ‘સ્થાનાઙ્ગ’ વગેરે સૂત્રોમા “જંબુદીવે દીવે મારહે વાસે હમીસે ઓસપ્પિણીય સત્તકુલગરા હોત્થા-તં જહા પદમિત્થ વિમલવાહણ ૧, ચક્કુમં ૨, જસમં ૩, ચડત્થમભિચંદે ૪, તત્તોપસેળઈ ૫, પુણ મરુદેવે ૬, ચેવ નામીય ૭, આ પાઠ સુજળ ૭ જ કુલકર આ મરતક્ષેત્રમા અવસર્પિણી કાળમા થાય છે, આમ કહેવામાં આવ્યું છે પછી તમે અહીં ૧૫ નો ઉલ્લેખ કરી રહ્યા

રિંશદ્વાગવિમક્ત કલ્પનીયમ્ તે ચત્વારિંશદ્ ભાગા અષ્ટભિર્ભાજ્યાસ્તત એકૈકો ભાગઃ
 પશ્ચપશ્ચભાગયુક્તો ભવતિ । તત્ર યઃ પઞ્ચભાગયુક્તોઽષ્ટમો ભાગસ્તસ્મિન્ પઞ્ચદશ કુલકરા
 ભવન્તીત્યાગતમ્ । તેષુ પઞ્ચસુ ભાગેષુ ચત્વારો ભાગાઃ પલ્યોપમદશમભાગાયુષ્ઠાઘસ્ય
 સુમતિનામકસ્ય કુલકરસ્યાયુષિ ગતાઃ શેષઃ પલ્યોપમસ્યૈકો ભાગઃ, તત્રાસંખ્યેયપૂર્વાયુષો
 દ્વાદશ કુલકરાઃ, સંખ્યેયપૂર્વાયુષ્કો નામિઃ, એકોન નવતિપક્ષાધિક ચતુરશીતિલક્ષપૂર્વાયુષ્ક
 ઋષભદેવશ્ચ ભવન્તિ, એકસ્મિન્ચત્વારિંશત્તમે ભાગે કથ પ્રતિશ્રુત્યાદીનાં ચતુર્દશકુલકરાણાં
 બૃહત્તમાયુર્જુષાં સમાવના ' ઇતિ ચેત્, આહ-એકસ્મિન્ચત્વારિંશત્તમે ભાગેઽસંખ્યેયાનિ પૂર્વાણિ
 ભવન્તિ, તાનિ ચ અસંખ્યેયાનિ પૂર્વાણિ ક્રમેણ હીનહીનાનિ 'પલિસ્પૃઈ, સીમકરે, સીમ-
 ધરે, ચેમંકરે, ચેમધરે, વિમલવાહને, ચક્ષુમં, જસમ, અભિચંદે, ચંદામે, મરુદેવે' પ્રતિ-
 શ્રુતિ સીમદ્ધર સીમન્ધર ક્ષેમદ્ધર ક્ષેમન્ધર વિમલવાહન ચક્ષુષ્મઘશસ્વદભિચન્દ્ર ચન્દ્રામપ્રસેન-

યહ પરસ્પર મેં આગમો મેં વિરોધ કેસા ' તો હસ શકા કા સમાધાન એસા હૈ કિ સૂત્ર કી ગતિ
 વિચિત્ર હોતી હૈ અતઃ વહા સાત હો કુલકર કહે ગયે હૈ ઓર યહાં ૧૫ કહે હૈ, હસમેં કોઈ
 દોષ આને જૈસી વાત નહીં હૈ । ગકા-આપને જો એસા કહા હૈ કિ હસ કાલ કા તૃતીય
 ત્રિભાગ જવ પલ્યોપમ કે ૮વે ભાગમાત્ર અવશિષ્ટ રહતા હૈ તવ ૧૫ કુલકર ઉત્પન્ન હોતે હૈ સો
 યહ કથન સગત નહીં હોતા હૈ ક્યોકે અમત્કલ્પના સે પલ્યોપમ કે ૪૦ ચાલીસ ભાગ કલ્પિત
 કરના ચાહિયે । હન ૪૦ ચાલીસ ભાગો મેં ૮ કા ભાગ દેને પર એક એક ભાગ ૫-૫ ભાગો
 સે યુક્ત હોતા હૈ । હસ તરહ ૫ ભાગ યુક્ત જો ઝાઠવા ભાગ હૈ હસમેં ૧૫ કુલકર ઉત્પન્ન હોતે
 હૈ વહ વાત આગમ પ્રાપ્ત હોતી હૈ । હન પાંચ ભાગો મેં કે ૪ ભાગ તો પલ્યોપમ કે દશવે
 ભાગ પ્રમાણ આયુવાલે આદિ કે સુમતિ નામકે કુલકર કી આયુ મેં ચલે ગયે વાકી કા પલ્યોપમ
 કા એક ભાગ ઘોર રહા-સો હસમેં અસંખ્યાત પૂર્વ કી આયુવાલે શેષ ૧૨ કુલકર હુવ હન મેં
 સંખ્યાત પૂર્વ કી આયુવાલા નામિ હુવા ઘોર ૮૯ પક્ષ અધિક ૮૪ લાસ પૂર્વ કી આયુવાલા

છો તો આ આગમોમા પરસ્પર વિરોધ કેમ છે ? તો આ શકાનું સમાધાન આ પ્રમાણે
 છે કે સૂત્રની ગતિ વિચિત્ર હોય છે એથી ત્યાં સાત જ કુલકર કહેવામાં આવેલ છે અને
 અહીં ૧૫ કહેવામાં આવ્યા છે તેમાં કોઈ પણ ખાતનો દોષ નથી

શકા-તમે જે આમ કહ્યું છે કે આ કાળનો તૃતીય ત્રિભાગ જ્યારે એક ફક્ત પલ્યોપમના
 ૮ આઠમા ભાગ બેટલો અવશિષ્ટ રહે છે ત્યારે ૧૫ કુલકર ઉત્પન્ન થાય છે, તો આ કથન
 સગત થતું નથી કેમકે અસત્કલ્પનાથી પલ્યોપમના ૪૦ ભાગો કલ્પિત કરવા બોધ્યો એ
 ૪૦ ભાગોમા ૮ નો ભાગકરવાથી એક ભાગ ૫-૫ ભાગોથી યુક્ત થાય છે આ પ્રમાણે ૫
 ભાગ યુક્ત જે ૮ મા ભાગ છે તેમા ૧૫ કુલકરો ઉત્પન્ન થાય છે, આ વાત આગમથી સિદ્ધ
 થાય છે એ પાંચ ભાગોમાંના ચાર ભાગો તો પલ્યોપમના દસમા ભાગ પ્રમાણ આયુવાળા
 આદિના સુમતિ નામના કુલકરના આયુમા જતા રહ્યા શેષ પલ્યોપમનો એક ભાગ બાકી
 રહ્યો હોતો, તેમાં અસંખ્યાત પૂર્વની આયુવાળા શેષ ૧૨ કુલકર થયા આમાં સંખ્યાત-

जिन्मरुदेवानां द्वादशानां कुलकराणामायुर्मनानि, 'णाभी' नाभेस्तु सग्न्येयानि पूर्वाणि आयुर्मनम्, 'उसभे' ऋषभस्य चतुरशीति लक्षपूर्वाणि आयुर्मनम्, अवशिष्टाश्च एकोन-
नवतिपक्षा इत्येकस्मिन्नेव चत्वारिंशत्तमभागे चतुर्दशकुलकराणामस्ति सभावनेति न कश्चिद्
विरोध इति ॥३७॥

मूलम्—तत्थ णं सुमइ पडिस्सुइ सीमंकर सीमंधर खेमंकराणं एएसिं
पंचण्हं कुलगराणं हक्कारे दंडणीइ होत्था ते णं मणुआ हक्कारेणं दंडेणं
हया समाणा लज्जिया विलज्जिया वेड्ढा भीया तुसिणिया विण-
ओणया चिड्ढंति । तत्थ णं खेमंधरविमलवाहन चक्खुमं जसमं अभि-
चंदाणं एएसिं णं पंचण्हं कुलगराणं मक्कारे णामं दंडणीई होत्था
ते णं मणुया मक्कारेणं दंडेणं हया समाणा जाव चिड्ढंति तत्थ णं
चंदाभ पसेणइ मरुदेव उसभाणं एएसिणं पंचण्हं कुलगराणं धिक्कारे

ऋषभदेव हुआ तो फिर एक ४० वें भाग में प्रतिश्रुत आदि १४ कुलकरो की कि जो बहुत
बड़ी आयुवाक्ये ये उत्पत्ति कैसे समवित हो सकती है ? तो इस शंका का उत्तर ऐसा है कि
एक ४० वें भाग में असख्यात पूर्व होते हैं और ये असख्यात पूर्व क्रम से हीन हीन
होते हैं तथा प्रतिश्रुत, सीमंकर, सीमंधर, क्षेमंकर, क्षेमंधर, विमलवाहन, चक्षुभन्, यशस्वान्,
अभिचन्द्र, चन्द्राम, प्रसेनजित और मरुदेव इन १२ कुलकरो की आयु के प्रमाण होते हैं ।
नाभि की आयु का प्रमाण सख्यात पूर्वों का था और ऋषभ की आयु का प्रमाण ८४ लाख
पूर्व का था । बाकी के कुलकरो को आयु का प्रमाण ८९ पक्षाधिक ८४ लाख पूर्व का था ।
इस तरह ४० वें भाग में १४ कुलकरो की उत्पत्ति की समावना में क्या विरोध हो सकता
है ? अर्थात् कोई भी विरोध नहीं हो सकता है ॥३७॥

पूर्वना आयुष्यवाणा, नाभि यथा अने ८६ पक्ष अधिक ८४ लाख पूर्व जेट्ठा आयुवाणा,
ऋषभदेव यथा तो पछी जेठ ४० भा भागमां प्रतिश्रुत आदि १४ कुलकरोनी के जेज्जा णूण
वाणा आयुष्यवाणा हुता-उत्पत्ति केरी रीते स भनी शके ? तो आ शकनो उत्तर आ
प्रमाणे छे के जेठ ४० भा भागमा असख्यात पूर्वो डोय छे अने जे असख्यात पूर्वो
यथाक्रमे हीन-हीन डोय छे तेमन् प्रतिश्रुति, सीमंकर, सीमंधर, क्षेमंकर, क्षेमंधर, विमल
वाहन, चक्षुभन् यशस्वान्, अभिचन्द्र, चन्द्राम, प्रसेनजित अने मरुदेव जे १२
कुलकरोनी आयुना प्रमाणे डोय छे नाभिनी आयुनु प्रमाणे सख्यात पूर्वो हुतुं अने
ऋषभना आयुष्यनु प्रमाणे ८४ लाख पूर्वो हुतुं श्ये कुलकरोना आयुष्यनु प्रमाणे ८६
पक्षाधिक ८४ लाख पूर्व जेट्ठा हुतुं आ प्रमाणे ४० भागमा १४ कुलकरोनी उत्पत्तिनी
समावनामा शु विरोधथल शके छे ? जेट्ठे के कोर्ध पक्ष जतनो विरोध स भनी शके न
नहि ॥सूत्र० ३७॥

નામં દંડનીર્દં હોત્થા તે ણં મણુયા ધિક્કારેણં દંડેણં હયા સમાણા
જાવ ચિટ્ઠંતિ ॥સૂ. ૩૮॥

હાયા—તત્ર ચલુ સુમતિ પ્રતિશ્રુતિ સોમઙ્કર સોમન્ધર ક્ષેમઙ્કરાણામ્ પતેપાં પઞ્ચાનાં
કુલકરાણાં હાકરો નામ દળ્ડનીતિરમવત્ તે ચલુ મનુજા હાકેરેણ દળ્ડેન હતા સન્તો
લજ્જિતા વિલજ્જિતા વ્યર્ઘ્યાં ભીતાસ્તૂણીકા વિનયાવનતાસ્તિષ્ઠન્તિ । તત્ર ચલુ ક્ષેમન્ધર
વિમલવાહન ચક્ષુષ્મવ્ યશસ્વદ મિચન્દ્રાણામ્ પતેપાં ચલુ પઞ્ચાના કુલકરાણાં માકરો
નામ દળ્ડનીતિરમવત્, તે ચલુ મનુજા માકારેણ દળ્ડેન હતા: સન્તો યાવત્ તિષ્ઠન્તિ ।
તત્ર ચલુ ચન્દ્રાભપ્રસેનજિન્મરુદેવ નામિ ઋદ્ધભાણામ્ પતેપાં ચલુ પઞ્ચાના કુલકરાણા
ધિકારો નામ દળ્ડનીતિ રમવત્, તે ચલુ મનુજા ધિકારેણ દળ્ડેન હતા સન્તો યાવત્
તિષ્ઠન્તિ ॥સૂ. ૩૮॥

एते कुलकरत्वं कथं कृतवन्तः ? इत्याह—

ટીકા—તત્થ ણં' ઇત્યાદિ, 'તત્થ' તત્ર - તેપુ પઠ્ઠદળસંખ્યકેપુ કુલકરેપુ
મધ્યે 'ણં' ચલુ 'સુમદ્ પહિસ્સુદ્ સીમંકર સીમંધર ક્ષેમંકગણં એપ્પસિં પંચળ
કુલગરાણં' સુમતિ પ્રતિશ્રુતિ સીમઙ્કરસીમન્ધરક્ષેમઙ્કરાણામ્ એતેપાં પઞ્ચાનાં
કુલકરાણાં કાલે 'હકારે' હાકારો = 'હા' ઇત્યધિક્ષેપાર્થકઃ શબ્દસ્તસ્ય કરણમ્
નામ 'દંડનીર્દં' દળ્ડનીતિઃ - દળ્ડનં દળ્ડઃ = અપરાધિનામનુશાસનં તત્ર નીતિ' =
ન્યાયઃ 'હોત્થા' અમવત્ = સમુત્પન્નઃ । અત્રેદં બોધ્યમ્ તૃતીયારકાન્તે કાલદોષેણ
અલ્પીભૂતેષુ કલ્પવૃક્ષેષુ સન્તુ, તત્ર તેપાં યુગલિકમનુજાનાં મમત્વે જાયમાને તે કલ્પવૃક્ષાઃ
તૈર્મનુજૈઃ સ્વકીયત્વેન ધરીશૃહીતાઃ । તત્રાન્ય પરિશૃહીતે કસ્મિંશ્ચિત્ કલ્પવૃક્ષે કેનચિદ-

अब इन्होंने कुलकरता कैसे की-इस बात का कथन सूत्रकार करते हैं—

“तत्थ णं सुमद, पडिस्सुद, सीमकर, सीमंधर, खेमंकराणं एप्पसिं पंचण्ह”
इत्यादि ।

ટીકાર્થ—“તત્થ ણ સુમદ્ પહિસ્સુદ્, સીમંકર, સીમંધર ક્ષેમંકરાણ એપ્પસિં પંચળ”
પન્દહ કુલકરોં મેં સે સુમતિ, પ્રતિશ્રુત, સીમકર, સીમંધર ઔર ક્ષેમકર હન પાંચ કુલકરોં કે
સમય મેં “હાહાકાર” હસ નામ કી દળ્ડનીતિ થી, “હા” યહ શબ્દ અધિક્ષેપ કા વાચક હૈ ।,
હસકા કરના હાહાકાર હૈ, અપરાધિયોં કો અનુશાસન મેં લેના યહ દળ્ડ હૈ, હસ દળ્ડ કે લિયે
જો નીતિ-ન્યાય હૈ વહ દળ્ડનોતિ હૈ, યહા એમા સમજ લેના ચાહિયે—તૃતીય આરક કે અન્ત મેં
કાલદોષ કે પ્રભાવ સે જબ કલ્પવૃક્ષ થોડે સે રહ ગયે -નબ હન કલ્પવૃક્ષોં કે ડપર હન યુગલિક

હવે તેમણે કુલકરતા કેવી રીતે કરી ? આ વાતનું સૂત્રકાર કથન કરે છે—

‘તત્થણં સુમદ્ પહિસ્સુદ્ સીમંકર સીમંધર ક્ષેમંકરાણં એપ્પસિં પંચળ’—ઇત્યાદિ-સૂત્ર ॥૩૮॥
ટીક થ—જો ૧૫ કુલકરોમાધી સુમાત, પ્રતિશ્રુતિ સીમ કર, સીમન્ધર, અને ક્ષેમ કર જો
પાંચ કુલકરોના મમયનાં ‘હાહાકાર’ નામે દળ્ડનીતિ હતી. ‘હા’ શબ્દ અધિક્ષેપ વાચક છે જોતું
કરવું ‘હ હાકાર’ છે જ । ૧૫માને અનુશાસનમા રાખવા જો દળ્ડના માટે જે નીતિ-ન્યાય
છે, તે દળ્ડનીતિ છે. અહીં આમ સમજવું જોઈએ તૃતીય આરકતા અંતમા કાળ દોષના

न्येन ममत्वेन परिगृह्यमाणे तेषु विवादः प्रावर्तत । ततस्ते मनुजाः विवाद निर्णयाय सर्वेभ्योऽधिकप्रभावशालिनं सुमतिं सर्वेषामाधिपत्ये व्यवस्थापयन् । ततः स सुमतिः सर्वेभ्यो यथायोग्यं कल्पवृक्षादीन् विभज्य प्रददौ । तत्र यः कश्चित् मर्यादा मतिचक्राम, तच्छासनाय स जातिस्मृत्या नीतिज्ञत्वेन हाकार दण्डनीतिं प्रावर्तयत् । तामेव दण्डनीतिं प्रतिश्रुत्यादयश्चत्वारोऽप्यनुकृतवन्तः इति । हाकारदण्डनीत्या ते कीदृशा अभूवन् । इत्याह—‘ते णं’ इत्यादि । ‘ते णं मणुया’ ते मनुजाः खलु ‘हकारेणं दण्डेणं हया’ हाकारेण दण्डेन हताः= अदृष्टपूर्वशासनानां तेषां दण्डादि घातेभ्योऽप्यधिकं मर्मघातिं तच्छासनमिदमिति आत्मानं हता इव मन्यमानाः ‘समाणा’ सन्तो ‘लज्जिया’ लज्जिताः=सामान्यतो लज्जायुक्ताः, ‘विलज्जिया’ विलज्जिताः=विशेषतो लज्जिताः, ‘वेह्वा’ व्यर्द्धाः=

मनुष्यों को ममत्वभाव हो गया सो उन्होंने उन्हें अपना २ कर मान लिया, उस पर जब कोई दूसरा युगलिक मनुष्य अधिकार जमाने लगा तो उनमें आपस में विवाद होना प्रारम्भ हो गया । तब उन मनुष्यों ने विवाद का निर्णय कराने के लिये सब से अधिक प्रभावशाली सुमति कुलकर को सब के ऊपर अधिपति चुन लिया । तब सुमति कुलकर ने सब के लिये यथायोग्य कल्पवृक्षों का विभाग कर दिया और सब के लिये उन्हें वितरीत कर दिया । इनमें से जो कोई मर्यादा का उल्लङ्घन करता उसे अनुशासन में लेने के लिये उसने जाति स्मरेण ज्ञान के बल से नीतिज्ञ बनकर हाकार दण्ड नीति की प्रवृत्ति की, उसी दण्डनीति का अनुमरण प्रतिश्रुति आदि चार कुलकरों ने भी किया, “तेण मणुया हकारेणं दण्डेणं हया समाणा लज्जिया, विलज्जिया वेह्वा भीया तुसिणीया विणजोणया चिद्धंति” वे मनुष्य उस हाकाररूप दण्ड से जब आहत हुए, तो अपने आपको हत हुए के जैसे मानते हुए पहिले तो सामान्यरूप से लज्जायुक्त बने फिर विशेषरूप से लज्जित हुए, व्यर्द्ध—अत्यन्त और अधिक लज्जित हुए क्योंकि उन्होंने पहिले कभी ऐसा शासन देखा नहीं था । अतः ऐसा यह शासन उनके लिये दण्डादिघात से भी अधिक मर्म-

आवेक कल्पवृक्ष पर जीने युगलिक मनुष्य अधिकार करवा लाग्यो तो तेजोभां पशु परस्पर विवाद प्रारम्भ थर्य गयो । त्यारे सो युगलिकोने विवाहना निर्णय भाटे सोधी श्रेष्ठ प्रभाव शाली सुमति कुलकरने पोताना अधिपति तरीके चूटी दीधा सुमति कुलकरे सोना भाटे यथायोग्य कल्पवृक्षोनु विभाजन करी दीधुं ओना पछी कौध मर्यादानु उल्लघन करतो । त्यारे तने अनुशासनमां राखवा भाटे तेमणे जाति स्मरषु ज्ञानना अणधी नीतिज्ञ थर्यने हाकार दण्डनीतिनी प्रवृत्ति प्रारम्भ करी तेज दण्डनीतिनु अनुसरषु प्रतिश्रुति वगेरे चार कुलकरो ओ पशु कथुं छे “तेण मणुया हकारेणं दण्डेणं हया समाणा लज्जिया, विलज्जिया, वेह्वा भीया तुसिणीया विणजोणया चिद्धंति” ते मनुष्यो न्यारे हाकार इप दण्डधी न्यारे आहत थया, त्यारे पोतानी जातने हतना इपमा मानीने पडेवां तो सामान्य इपमा लज्जत थया पछी विशेष इपमां लज्जित थया व्यर्द्ध—अत्यन्त तेम न अधिक लज्जित थया, केम के तेमणे पडेवां कौध पशु दिवसे आवुं शासन नेथुं नडोतुं ओधी आ शासन तेमना भाटे हडादि घात करतां पशु वधारे मर्म घाती थथुं

અતિશયલજ્જિતાઃ, 'મીયા' મીતાઃ=મયયુક્તાઃ, 'તુમિણીયા' તુમ્ણીકાઃ=મૌનાઃ 'વિણઓવ-
ળયા ચિદ્વંતિ' વિનયાવનતાથ તિષ્ઠન્તિ, ન તુ ધૃષ્ટવત્ નિર્લજ્જાઃ નિર્મયાઃ વાચાલા અહંકાર-
રિણશ્ચ ભવન્તિ । હાકારદળ્લેન હતારતે મનુજા હતસર્વસ્વમિવાડ્ડત્માનં મન્યમાનાઃ પુનર-
પરાધસ્થાને ન પ્રવૃત્તા અભૂવન્નિતિ । સમ્પ્રતિ તદનન્તરં યા દળ્લનીનિર્મૂત્તાં તાં પ્રતિપાદ-
યતિ 'તત્થ ણ સ્થેમધર' ઇત્યાદિના । 'તત્થ ણ સ્થેમધર વિમલવાહણ ચક્ખુમ જસઘં
અમિચંદાણં' તત્ર સ્થેમધર વિમલવાહન ચક્ષુષ્મદ્યશસ્વદ્-અમિચન્દ્રાણામ્ 'એસિ ણં
પંચહં કુલગરાણં' એતેષાં પંચાનાં કુલકરાણં કાલે 'મકારે' માકારો-માકરણં માકરો 'ણામં
દંડણીઈ હોત્થા' નામ દળ્લનીતિરભવત્ । 'તે ણ મણુયા મકારેણં દંડેણં હયા સમાણા જાવ
ચિદ્વંતિ' તે સ્થેમધર મનુજા માકારેણ દળ્લેન હતાઃ સન્તો યાવત્ તિષ્ઠન્તિ । યાવત્ પદેન 'લ-
જ્જિતા વિલજ્જિતાઃ' ઇત્યાદિ પાઠઃ સંગ્રાહઃ । અત્રેદ બોધ્યમ્ હાકારદળ્લસ્યાતિપરિચયેન

ઘાતી હુઆ । ઇસલિયે ઉસે અપને આપકા ઘાતક માનકર ઉન્હે અત્યન્ત અધિક લજ્જા સે યુક્ત
હોના પડતા, હમારા અવ કયા હોગા ઇસ પ્રકાર સે મયમોત હોકર ઉન્હેં તુપ રહના પડતા
ઔર અપની ગલ્તી સ્વીકાર કર ઉન્હેં વિનયાવનત બનના પડતા, ધૃષ્ટ પુરુષ કી તરહ વે ન તો
નિર્લજ્જ બનતે, ન નિર્મય બનતે, ન વાચાલ બનતે ઔર ન અહંકારી બનતે । ઇસ તરહ હાકાર
દળ્લ સે હત હુએ વે મનુષ્ય જિનકા સર્વસ્વ હરણ કર લિયે હૈ । એસા અપને આપ કો સમક્કર
ફિર અપરાધ કરને કે સ્થાન પર પ્રવૃત્ત નહીં હોતે થે, "તત્થ ણં સ્થેમધર વિમલવાહણ ચક્ખુમં
જસમં અમિચંદાણ એસિ ણ પંચહં કુલગરાણ મકારે ણામં દંડણીઈ હોત્થા" ઇસ હાકાર દળ્લ
નીતિ કે વાદ સ્થેમધર, વિમલવાહન, ચક્ષુષ્માન્, યશસ્વાન્ એવ અમિચન્દ્ર ઇન પાંચ કુલકરો કે
કાલ મેં માકાર નામકી દળ્લનીતિ કા પ્રચલન હુઆ । "મત કરના" ઇસ પ્રકાર કી જો નિષેધા-
ત્મક નીતિ હૈ વહી માકાર નામ કી દળ્લનીતિ હૈ, ઇન સ્થેમધર આદિ પાંચ કુલકરો કે સમય મેં
જો મનુષ્ય દળ્લનીય કાર્ય કરતા તો ઉસે માકાર દળ્લનીતિ સે દળ્લિત કિયા જાતા થા-ઇસસે

પડયુ' ઝોટલા માટે તેને પોતાના ઘાતક રૂપમા માનીને તેઓ અત્યંત લજ્જિત થતા અને
કહેતા કે હવે અમારું શું થશે ? આ પ્રમાણે અચક્ષીત થઇને તેઓ તુપ ભક્ષી રહેતા અને
પોતાની ભૂલ કબૂલ કરી તેઓ વિનયાવનત થઈ જતા ધૃષ્ટ માણસની જેમ તેઓ નતો
નિર્લજ્જ થતા, ન નિર્મય થઇને રહેતા, ન વાચાલ બનતા અને ન અહંકારી બનતા
આ પ્રમાણે હાકાર દહથી હત થયેલા મનુષ્યો કે જેમનુ સર્વસ્વ હરણ કરવામાં આવ્યું
છે. એવું માનીને ફરી અપરાધ કરવાના કાર્યમા પ્રવૃત્ત થતા નહિ, "તત્થ ણં સ્થેમધર
વિમલવાહણ ચક્ખુમં જસમ અમિચંદાણ એસિ ણ પંચહં કુલગરાણ મકારે ણામ દંડણીઈ
હોત્થા" આ હાકાર દહનીતિ પછી સ્થેમધર, વિમલવાહન, ચક્ષુષ્માન્, યશસ્વાન્,
અને અમિચન્દ્ર એ પાંચ કુલકરોના કાળમાં માકાર નામની દહનીતિનું પ્રચલન થયું.
'નહિ કરો' આ પ્રકારની જે નિષેધાત્મક નીતિ છે તે જ માકાર નામની દહનીતિ છે. જે
સ્થેમધર આદિ પાંચ કુલકરોના સમયમાં જે મનુષ્યો દહનીય કાર્યો કરતા તેમને માકાર
નામક દહનીતિ સુજળ દહિત કરવામા આવતા એથી તે અપરાધી પૂર્વની જેમજ લજ્જિત

ततोऽभीतेषु युग्मिमनुजेषु सत्सु क्षेमन्धरः कुलकरस्तेषामनुशासनाय माकार दण्डनीतिं प्रवर्तितवान् तदनुयायिनो विमलवाहन-चक्षुष्मद् यशस्वर्दभचन्द्रा अपि माकारमेव दण्डनीतिं प्रवर्तितवन्तः । तत्र महत्यपराधे माकारो दण्डः, सामान्यापराधे तु हाकार इति ।

अथ तदनन्तर कालभाविनः कुलकरा यां दण्डनीतिं प्रवर्तितवन्तः, तामाह—‘तत्थ ण’ इत्यादि । ‘तत्थ ण’ तत्र खलु ‘चदाम पसेणइ मरुदेव उसमाण एएसि णं पचण्ह कुलगरा णं’ चन्द्राभप्रसेनजिद् मरुदेव नाभि ऋषभाणाम् एतेषां खलु पञ्चानां काले ‘धिव्कारे’ धिव्कारे-धिव्करणं धिव्कारो ‘णामं दण्णीई होत्था’ नाम दण्डनीतिरभवत् । ‘ते णं मणुया धिव्कारेणं दंढेण हया समाणा जाव चिट्ठंति’ ते खलु मनुजा धिव्कारेण

वह पूर्व की तरह लज्जित, विलज्जित यदि विशेषणों वाला बन जाया करता था, यही बात यहां यावत्पद से समझाई गई है । तात्पर्य इस कथन का यही कि जब हाकार दण्ड अति-परिचिन हो चुका तो उससे उन लोगों में भय नहीं रहा—‘ते त मणुया मकारेण दंढेण हया समाणा जाव चिट्ठंति’ तब उन युगलिक मनुष्यों में भय का संचार रहे—वे अनुशासन से हीन न होनावे इस भाव को लेकर क्षेमन्धर कुलकर ने उनको अपने अनुशासन में रखने के लिये माकार नामकी दण्डनीति का प्रचलन किया । क्षेमन्धर के बाद इनके अनुयायी विमलवाहन, चक्षुष्मत्, यशस्वान्, और अभिचन्द्र इन चार कुलकरों ने भी इसी माकार दण्डनीति का प्रवर्तन किया, यह मानकर दण्डनीति का बहुत बड़े अपराध के होने पर ही किया जाता था, सामान्य अपराध में तो केवल हाकार दण्डनीति का प्रयोग होता था, इनके बाद में हुए कुलकरों ने जिस दण्डनीति की प्रवृत्ति को उसे अब सूत्रकार प्रकट करते हैं—‘तत्थ णं चदाम, पसेनह, मरुदेव, उसमाण एएसि णं पचण्हं कुलगराण धिव्कारे णामं दण्णीई होत्था’ चन्द्राभ, प्रसेनजित मरुदेव, नाभि और ऋषभ इन पांच कुलकरों के काल में धिव्कार नामकी दण्डनीति प्रचलित हुई, इस दण्डनीति से इन कुलकरों के समय के मनुष्य दण्डित होते रहे यहां ऐसा समझना

विमलजित वगेरे विशेषणार्थी युक्त थर्ध जेतो जे ज वात अह्मी यावत् यदर्थी कडेवाभां अ वी छे. आ कथननुं तात्पर्य आ प्रमाणे छे के ज्यारे हाकार दंड अति परिचित थर्ध गये। त्यारे ते दोकामा दंड प्रत्ये भय रह्यो नहि. तेजो अकीत थर्ध गयो. त्यारे ते युगलिक मनुष्योभा भयनु सयरण रहे, तेजो अनुशासनहीन थर्ध भय नहि, जे भावने लधने क्षेमन्धर कुलकरे तेभने पोताना अनुशासनमा राखवा माटे ‘माकार’ नामक दंडनीति नु प्रचलन कथुं क्षेमन्धर पछी तेभना अनुयायी विमलवाहन, चक्षुष्मान्, अभिचन्द्र जे चार कुलकरोजो पणु जेज ‘माकार’ दंडनीतिनु प्रवर्तन कथुं आ ‘माकार’ दंडनीतिने प्रयोग जहु ज माटा अपराध जद्वल ज करवाभां आवतो सामान्य अपराध माटे तो इकन ‘हाकार’ दंडनीतिने प्रयोग ज थतो ‘हाकार’ दण्डनीति आद कुलकरोजो जे दंडनीतिने प्रयोग कर्यो, ते विषे हवे सूत्रकार कडे छे—चन्द्राभ, प्रसेनजित, मरुदेव, नाभि अने ऋषभ जे पाच कुलकरोना कालमा ‘धिव्कार’ नामक दंडनीतिनु प्रचलन छतुं; आ दंडनीतिथी जे कुलकरोना समयना दोको दंडित थया, जेपुं जेने समजहुं जेधजो. ‘माकार’

અતિશયલજ્જિતાઃ, 'મીયા' મીતાઃ=મયયુક્તાઃ, 'તુમિળીયા' તુમ્ળીકાઃ=મૌનાઃ 'વિળઓવ-
ળયા ચિદ્વતિ' વિનયાવનતાથ તિષ્ઠન્તિ, ન તુ ધૃષ્ટવત્ નિર્લજ્જાઃ નિર્ભયાઃ વાચાલા અહઙ્કા-
રિણથ ભવન્તિ । ઢાકારદળ્લેન હતાસ્તે મનુજા હૃતસર્વસ્વમિવાડ્ડમાનં મન્યમાનાઃ પુનર-
પરાધસ્થાને ન પ્રવૃત્તા અધૂવન્તિ । સમ્પ્રતિ તદનન્તરં યા દળ્લનીનિરભૂત્ તાં પ્રતિપાદ-
યતિ 'તત્થ ણ સ્થેમધર' ઇત્યાદિના । 'તત્થ ણ સ્થેમધર વિમલવાહણ ચક્કુમ જસવં
અમિચંદાણં' તત્ર સ્થેમધર વિમલવાહન ચક્ષુષ્મદ્યશસ્વદ્-અમિચન્દ્રાણામ્ 'એસિ ણં
પંચણ્હં કુલગરાણં' એતેપાં પચ્છાનાં કુલકરાણં કાલે 'મકારે' માકારગે-માકરણં માકરો 'ણામં
દંડળીઈં હોત્થા' નામ દળ્લનીતિરભવત્ । 'તે ણં મણુયા મકારેણં દંડેણં હયા સમાણા જાવ
ચિદ્વતિ' તે સ્થેમ મનુજા માકારેણ દળ્લેન હતાઃ સન્તો યાવત્ તિષ્ઠન્તિ । યાવત્ પદેન 'લ-
જ્જિતા વિલજ્જિતાઃ' ઇત્યાદિ પાઠઃ સંગ્રાહઃ । અત્રેદં બોધ્યમ્ ઢાકારદળ્લસ્યાતિપરિચયેન

ઘાતી હુઆ । ઇસલિયે ઉસે અપને આપકા ઘાતક માનકર ઉન્હે અત્યન્ત અધિક લજ્જા સે યુક્ત
હોના પડતા, હમારા અવ કયા હોગા ઇસ પ્રકાર સે મયમોત હોકર ઉન્હેં ચુપ રહના પડતા
ઔર અપની ગલ્તી સ્વીકાર કર ઉન્હેં વિનયાવનત બનના પડતા, ધૃષ્ટ પુરુષ કી તરહ વે ન તો
નિર્લજ્જ બનતે, ન નિર્ભય બનતે, ન વાચાલ બનતે ઔર ન અહંકારી બનતે । ઇસ તરહ ઢાકાર
દળ્લ સે હૃત હુવે મનુષ્ય જિનકા સર્વસ્વ હરણ કર લિય હૈ । એસા અપને આપ કો સમક્કર
ફિર અપરાધ કરને કે સ્થાન પર પ્રવૃત્ત નહીં હોતે થે, "તત્થ ણં સ્થેમધર વિમલવાહણ ચક્કુમ
જસમ અમિચંદાણ એસિ ણ પંચણ્હ કુલગરાણ મકારે ણામં દંડળીઈં હોત્થા" ઇસ ઢાકાર દળ્લ
નીતિ કે બાદ સ્થેમધર, વિમલવાહન, ચક્ષુષ્માન્, યશસ્વાન્ એવં અમિચન્દ્ર ઇન પાંચ કુલકરો કે
કાલ મેં માકાર નામકી દળ્લનીતિ કા પ્રચલન હુઆ । "મત કરના" ઇસ પ્રકાર કી જો નિષેધા-
ત્મક નીતિ હૈ વહી માકાર નામ કી દળ્લનીતિ હૈ, ઇન સ્થેમધર આદિ પાંચ કુલકરો કે સમય મેં
જો મનુષ્ય દળ્લનીય કાર્ય કરતા તો ઉસે માકાર દળ્લનીતિ સે દળ્લિત કિયા જાતા થા-ઇસસે

પડ્યું એટલા માટે તેને પોતાના ઘાતક રૂપમા માનીને તેઓ અત્યંત લજ્જિત થતા અને
કહેતા કે હવે અમારુ શું થશે ? આ પ્રમાણે બયલીત થઇને તેઓ ચુપ બસી રહેતા અને
પોતાની ભૂલ કબૂલ કરી તેઓ વિનયાવનત થઈ જતા ધૃષ્ટ માણસની જેમ તેઓ નતો
નિર્લજ્જ થતા, ન નિર્ભય થઇને રહેતા, ન વાચાલ બનતા અને ન અહંકારી બનતા
આ પ્રમાણે ઢાકાર દંડી હૃત થયેલા મનુષ્યો કે જેમનુ સર્વસ્વ હરણ કરવામાં આવ્યું
છે. એવુ માનીને ફરી અપરાધ કરવાના કાર્યમાં પ્રવૃત્ત થતા નહિ, "તત્થ ણં સ્થેમધર
વિમલવાહણ ચક્કુમ જસમ અમિચંદાણ એસિ ણં પંચણ્હં કુલગરાણં મકારે ણામં દંડળીઈં
હોત્થા" આ ઢાકાર દંડનીતિ પછી સ્થેમધર, વિમલવાહન, ચક્ષુષ્માન્, યશસ્વાન્,
અને અમિચન્દ્ર એ પાંચ કુલકરોના કાળમા માકાર નામની દંડનીતિનું પ્રચલન થયું.
'નહિ કરો' આ પ્રકારની જે નિષેધાત્મક નીતિ છે તે જ માકાર નામની દંડનીતિ છે એ
સ્થેમધર આદિ પાંચ કુલકરોના સમયમાં જે મનુષ્યો દંડનીય કાર્યો કરતા તેમને માકાર
નામક દંડનીતિ સુજળ દડિત કરવામા આવતા એથી તે અપરાધી પૂર્વની જેમજ લજ્જિત

ततोऽभीतेषु युग्मिमनुजेषु सत्सु क्षेमन्धरः कुलकरस्तेषामनुशासनाय माकार दण्डनीतिं प्रवर्तितवान् तदनुयायिनो विमलवाहन-चक्षुष्मद् यशस्वदभिचन्द्रा अपि माकारमेव दण्डनीतिं प्रवर्तितवन्तः । तत्र महत्यपराधे माकारो दण्डः, सामान्यापराधे तु हाकार इति ।

अथ तदनन्तर कालभाविनः कुलकरा या दण्डनीतिं प्रवर्तितवन्तः, तामाह-‘तत्थ ण’ इत्यादि । ‘तत्थ ण’ तत्र खलु ‘चदाम पसेणइ मरुदेव उसमाणं एएसि णं पचण्ह कुलगरा णं’ चन्द्राभप्रसेनजिद् मरुदेव नामि ऋषभाणाम् एतेषां खलु पञ्चानां काले ‘धिव्कारे’ धिव्कारे-धिव्करणं धिव्कारो ‘णामं दण्णीई होत्था’ नाम दण्डनीतिरभवत् । ‘ते णं मणुया धिव्कारेणं दंढेण हया समाणा जाव चिट्ठति’ ते खलु मनुजा धिव्कारेण

वह पूर्व की तरह लज्जित, विलज्जित यदि विशेषणों वाला बन जाया करता था, यही बात यहां यावत्पद से समझाई गई है । तात्पर्य इस कथन का यही कि जब हाकार दण्ड अति-परिचिन हो चुका तो उससे उन लोगों में भय नहीं रहा-‘ते त मणुया मकारेण दंढेण हया समाणा जाव चिट्ठति’ तब उन युगलिक मनुष्यों में भय का संचार रहे-वे अनुशासन से हीन न होनावे इस भाव को लेकर क्षेमन्धर कुलकर ने उनको अपने अनुशासन में रखने के लिये माकार नामकी दण्डनीति का प्रचलन किया । क्षेमन्धर के बाद इनके अनुयायी विमलवाहन, चक्षुष्मत्, यशस्वान्, और अभिचन्द्र इन चार कुलकरों ने भी इसी माकार दण्डनीति का प्रवर्तन किया, यह मानकर दण्डनीति का बहुत बड़े अपराध के होने पर ही किया जाता था, सामान्य अपराध में तो केवल हाकार दण्डनीति का प्रयोग होता था, इनके बाद में हुए कुलकरों ने जिस दण्डनीति की प्रवृत्ति का उसे अब सूत्रकार प्रकट करते हैं-‘तत्थ णं चदाम, पसेनइ, मरुदेव, उसमाण एएसि ण पचण्ह कुलगराण धिव्कारे णामं दण्णीई होत्था’ चन्द्राभ, प्रसेनजित् मरुदेव, नामि और ऋषभ इन पांच कुलकरो के काल में धिव्कार नामकी दण्डनीति प्रचलित हुई, इस दण्डनीति से इन कुलकरो के समय के मनुष्य दण्डित होते रहे यहां ऐसा समझना

विलज्जित वगेरे विशेषणोधी युक्त यर्थ जेतो जे ज वात अह्मी यावत् पहली छेवामां अ वी छे. आ कथननु तात्पर्य आ प्रमाणे छे के ज्यारे डाकार दंड अति परिचित यर्थ गये। त्यारे ते दोकाभा दंड प्रत्ये लय रह्यो नहि. तेज्यो अभीत यर्थ गयो. त्यारे ते युगलिक मनुष्योमा लयनु सचरख रहे, तेज्यो अनुशासनहीन यर्थ लय नहि, जे लावने लधने क्षेमन्धर कुलकरे तेभने पोताना अनुशासनमा राखवा भाटे ‘माकार’ नामक दंडनीति नु प्रचलन कयुं क्षेमन्धर पछी तेभना अनुयायी विमलवाहन, चक्षुष्मान् अभिचन्द्र जे चार कुलकरोज्ये पखु जे ‘माकार’ दंडनीतिनु प्रवर्तन कयुं आ ‘माकार’ दंडनीतिने प्रयोग जहुं ज मोटा अपराध जदल ज करामां आवतो सामान्य अपराध भाटे ते। इहन ‘डाकार’ दंडनीतिने प्रयोग ज थतो ‘डाकार’ दण्डनीति भाद कुलकरोज्ये जे दंडनीतिने प्रयोग कयौ, ते विषे हवे सूत्रकार छे छे-चन्द्राभ, प्रसेनजित्, मरुदेव, नामि जने ऋषभ जे पाच कुलकरोना काणया ‘धिव्कार’ नामक दंडनीतिनु प्रचलन कयुं आ दंडनीतिथी जे कुलकरोना समयना दोका दंडित थया, जेपुं जने समजहुं जेधज्ये ‘माकार’

दण्डेन हताः सन्तो यावत् तिष्ठन्ति । अत्रेदं बोध्यम्—माकार दण्डस्याप्यतिपरिचयेन ततोऽभीतेषु युगिमनुजेषु सत्सु चन्द्राभः कुलकरस्तेषामनुशासनाय धिक्कारं दण्डनीतिं प्रवर्तितवान् ।

तदुक्तम्—आगत्यल्पे नीतिमाद्यां द्वितीयां मध्यमे पुनः ।

महीयसि द्वे अपि ते, स प्रायुक्त महामतिः ॥१॥इति ।

ततस्तदनुयायिनः प्रसेनजिद् मरुदेव—नाभिऋषभाश्रत्वारोऽपि कुलकराः स्व स्वकाले तामेव दण्डनीतिमनुसृतवन्तः । तत्र महत्यपराधे धिक्कारो दण्डो मध्यमापराधे मकारो, जघन्यापराधे तु हाकार इति । इतोऽनन्तरं भरतकाले कालस्वभाव्याब्जनेषु महापराधिषु जातेषु परिभाषणाद्या चतुर्विधा दण्डनीतिरजायत । तदुक्तम्—

चाहिये—माकार दण्डनीति से जब मनुष्य अतिपरिचय में आगये तो फिर उन्हें उस दण्डनीति का जैसा भय चाहिये वैसा भय नहीं रहा—अतः वे इस नीति के सम्बन्ध में निर्भय होते चले गये, “तेषां मणुया धिक्कारेण दंडेण हया समाणा जाव चिट्ठंति” तब उन युगलिक मनुष्यों को अनुशासित करने के लिये चन्द्राभ कुलकर ने धिक्कार नाम की दण्डनीति को चाट किया—

तदुक्तम्—आगत्यल्पे नीतिमाद्यां द्वितीयां मध्यमे पुनः ।

महीयसि द्वे अपि ते स प्रायुक्त महामतिः ॥१॥

इन पांचों के बाद इन्हीं कुलकरों के अनुयायी प्रसेनजित्, मरुदेव, नाभि और ऋषभ इन पांच कुलकरों ने अपनी २ शासन व्यवस्था के समय में इसी धिक्कार दण्डनीति का अनुसरण किया जब युगलिक मनुष्यों से कोई महान् अपराध हो जाता तो उस समय वे धिक्कार दण्ड से उन्हें दण्डित करते, मध्यम अपराध हो जाने पर माकार दण्ड से और जघन्य अपराध हो जाने पर हाकार दण्ड से दण्डित करते । इनके बाद भरत काल में काल स्वभाव से जब मनुष्य महापराधी होने लगे तो परिभाषण आदि चार प्रकार की दण्डनीति चाट की गई ।

दण्डनीतिथी ज्यारे लोके अपतिपरिचित यध गया त्यारे जे दण्डनीतिने जेवे लय रडेवे जेधजे तेवे लय जे दण्डनीतिने रडो नही, जेथी तेजो जे नीतिना स लय भां निभय यध जेटवे के जेपरा यधने रडेवा लाग्या, ते सभये युगलिकोने अनुशासित करवा भाटे चन्द्राभ नाभक कुलकरे ‘धिक्कार’ नामक दण्डनीति प्रचलित करी तदुक्तम् :

आगत्यल्पे नीतिमाद्यां द्वितीयां मध्यमे पुनः ।

महीयसि द्वे अपि ते स प्रायुक्त महामतिः ॥१॥

जे पांच कुलकरो पछी जे कुलकरोना अनुयायी प्रसेनजित्, मरुदेव, नाभि अने ऋषभ जे पांच कुलकरोजे पोत-पोताना शासनकाणभां जे ‘धिक्कार’ दण्डनीतिनुं ज अनुसरण कथुं ज्यारे युगलिक मनुष्यो केहि महान् अपराध करता त्यारे ‘धिक्कार’ दण्डनीति द्वारा तेजोने दंडित करवाभा आवता, ज्यारे तेजो मध्यम अपराध करता त्यारे माकार दण्डनीति द्वारा अने जघन्य अपराध करता त्यारे हाकार दण्डनीति द्वारा दंडित करवाभा आवता त्यारे भाइ भरत काणभा काणना स्वभावथी ज्यारे मनुष्यो महापराधी थवा लाग्या त्यारे परिभाषण वगेरे चार प्रकारनी दण्डनीतिजो प्रचलित यध तदुक्तम् :-

परिभासणा उ पदमा मंडलवंधत्ति होइ बीया य
चारग छवि छेयाई भरहस्स चउन्विहा नीई ॥१॥

छाया—परिभाषणा तु प्रथमा मण्डलबन्ध इति भवति द्वितीया च ।

चारके छविच्छेदादि, भरतस्य चतुर्विधा नीतिः ॥१॥इति॥ ॥सू० ३८॥

इत्थं पञ्चदशस्य कुलकरस्य ऋषभस्वामिनः चतुर्दश कुलकरसाधारणं कुलकरत्व-
मुपदर्श्य सम्प्रत्यस्य असाधारणपुण्यप्रकृत्युदयसमुद्भूतं त्रिजगज्जनपूजनीयतां प्रदर्श-
यितुं यथाऽस्मादेव लोके विशिष्ट धर्माधर्म संज्ञाव्यवहारा प्रवृत्ता अभूवन्निति दर्शयति—

मूलम्—णाभिस्स णं कुलगरस्स मरुदेवाए भारियाए कुञ्छिसि एत्थ
णं उसमे णामं अरहा कोसलिए पढमराया पढमजिणे पढमकेवली पढम-
तित्थयरे पढमधम्मवरचाउरंतचकवट्टी समुप्पज्जित्था । तएणं उसमे
अरहा कोसलिए वीसं पुब्बसयसहस्साइं कुमारवासमज्जे वसइ, वसित्ता
तेवट्ठि पुब्बसयसहस्साइं महारायवासमज्जे वसइ; तेवट्ठि पुब्बसयसहस्साइं
महारायवासमज्जे वसमाणे लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरूप-
ज्जवसाणाओ बावेत्तरि कलाओ चोसट्ठि महिलागुणे सिप्पसयंच क
म्माणं तिण्णि वि पयाट्ठियाए उवदिसइ, उवदिसित्ता पुत्तसयं रज्जसए
अभिसिंचइ अभिसिंचित्ता तेसीइं पुब्बसयसहस्साइं महारायवासमज्जे
वसइ वसित्ता जे से गिम्हाणं पढमे मासे पढमे पक्खे चित्तबहुले तस्स
णं चित्तबहुलस्स णवमीपक्खेणं दिवसस्स पच्छिमे भागे चइत्ता हिरणं
चइत्ता सुवणं चइत्ता पुरं चइत्ता कोसं कोट्टागारं चइत्ता बलं चइत्ता वाहंणं
चइत्ता पुरं चइत्ता अंते उरं चइत्ता विउलधणकणगरयण मणिमोत्तिय संख
सिलप्पवालरत्तरयणसत्तसारसावइज्जं विच्छड्डइत्ता विगोवइत्ता दायं दाइया
णं परिभाएत्ता सुदंसणाए सीयाए सदेवम या राए परिसाए समणु-
गम्ममाणमग्गे संखियचक्कियणंगलिय मुहमंगलिय पूसमाणब बद्धमा-
णग आइक्खगलंखमंख घंटियगणेहि ताहि इट्ठाहि कंताहि पियाहि मणु

तदुक्तम्—“परिभासणा उ पदमा मंडलवंधत्ति होइ बीया य ।

चारग छवि छेयाई भरहस्स चउन्विहा नीई ॥१॥ ३८॥

परिभासणा उ पदमा मंडलवंधत्ति होइ बीयाय ।

चारग छवि छेयाई भरहस्स चउन्विहा नीई ॥१॥ सूत्र ॥३८॥

ण्णाहि मणामाहि उरालाहि कल्लाणाहि सिवाहि धन्नाहि मंगल्लाहि सस्सि-
रियाहि हियगमणिज्जाहि हिययपल्हायणिज्जाहि कण्णमणिव्वुइकराहि
अपुणरुत्ताहि अट्टसइयाहि वग्गूहि अणवरयं अभिणंदंता य अभिथुणंता
य एवं वयासी-जय जय नंदा ! जय जय भद्दा ! धम्मेणं अभीए परी-
सहोवसग्गाणं खंतिखमे भयभेखाणं धम्मे ते अविग्घं भवउत्तिकट्टु
अभिणंदंति य अभिथुणंति य तएणं उसमे अरहा कोसलिए
णयणमालासहस्सेहि पिच्छिज्जमाणे पिच्छिज्जमाणे एवं जाव
णिग्गच्छइ जहा उववाइए जाव आउलबोलवहुलं णमं करंते विणीयाए
रायहाणीए मज्जं मज्जेणं णिग्गच्छइ आसिय सम्मज्जिय सित्त इकपु-
प्फोवयारकलियं सिद्धत्थवणविउल रायमग्गं करेमाणे हयगयरहपहकरेण
पाइ चडकरेण य मंदं मंदं उद्धूयरेणुयं करेमाणे करेमाणे जेणेव
सिद्धत्थवण्णे उज्जाणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ उवाग-
च्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे सीयं ठावेइ ठावित्ता सीयाओ पच्चोरुहइ
पच्चोरुहित्ता सयमेवाभरणालंकारं ओमुयइ ओमुइत्ता सयमेव चउहिं अ
ट्टाहि लोयं करेइ करित्ता छट्टेणं भत्तेणं अपाणएणं आसाढाहिं णक्खत्तेण
जोग वागएणं उग्गाणं भोगाणं राइन्नानं खत्तियोणं चउहिं सहस्सेहिं
संविं एगं देवदुसमादाय मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए
॥सू० ३९॥

छाया—नामैः खलु कुलकरस्य मरुदेवाया भार्यायाः कुक्षौ अत्र खलु ऋषभो नाम
अर्हन् कौशलिकः प्र ज. प्रथमजिनः प्रथमकेवली प्रथमतीर्थकरः प्रथमधर्मवरचातु-
रन्तश्चक्रवर्ती समुद्रपथत । ततः खलु ऋषभ अर्हन् कौशलिको विंशति पूर्वशतसहस्राणि
कुमारवासमध्ये ति, उषित्वा त्रिषष्टि पूर्वशतसहस्राणि महारा समध्ये वसति, त्रिष-
ष्टिशतसहस्राणि महाराजवासमध्ये वसन् लेखादिका गणितप्रधानाः शकुनरुतपर्यवसाना ब्रा-
ह्मसप्तति कलाः चतुर्षष्टि महि गुणान् शिल्पशतं च कर्मणां त्रीण्यपि प्रजाहिताय उपदिशति,
उपदिश्य पुत्रशतं राज्यशते अभिविञ्चति, अभिविच्य त्रयस्त्रिंशत् पूर्वशतसहस्राणि महाराज-
वासमध्ये वसति उषित्वा यः स त्रीण्माणां प्रथमे मासे प्रथम पक्षश्चैत्र बहुलः, तस्य खलु
चन्द्रबहुलस्य नवमीपक्षे दिवसस्य पश्चिमे भागे त्यक्त्वा द्विरण्यं, त्यक्त्वा सुवर्णं, त्यक्त्वा
कोशं कोष्ठागारं, त्यक्त्वा बलं, त्यक्त्वा वाहनं त्यक्त्वा पुरं त्यक्त्वा अन्तःपुरं, त्य-
क्त्वा विपुलघनं कनकरत्नमणि मौक्तिकशङ्खशिला रत्नरत्न सत्सारस्वापतेय, विच्छेद्य

विगोप्य, दायं दयिकानां परिभाज्य, सुदर्शनायां शिविकायां, सदेवमनुजासुरया परिपदा
समनुगम्यमानमार्गः शास्त्रिकचक्रिकलाङ्गलिकमुन्मङ्गलिक पुण्यमाणव वर्द्धमानकाण्यायक
लङ्घ मख घंटिकगणः ताभिरिष्टाभि कान्ताभिः प्रियाभिर्मनोष्ठाभिर्मन आमीभिः उदाराभिः
कल्याणीभि शिवाभिः धन्याभिः मङ्गल्याभि सथीकाभि- हृदयगमनीयाभिः हृदयप्रहादनी-
याभिः कर्णमनोनिवृत्तिकरोभिः अपुनरुक्ताभिः अर्थशक्तिकाभिः धाग्भिः अनवरतम् अभि-
नन्दन्तश्च अभिष्टुवन्तश्च एवमवादिपुः जय जय नन्द ! जय जय भद्र ! धर्मेण अभीतः
परीषहोपसर्गाणां क्षान्तिक्षमो भयभैरवाणां धर्मे ते अविघ्न भवतु-इति कृत्वा अभिनन्दन्ति
च अभिष्टुवन्ति च । ततः क्लृप्ता ऋषभः अर्हन् कौशलिको नयनमालासहस्रैः प्रेक्ष्यमाणः
प्रेक्ष्यमाण एवं यावन्निर्गच्छति, यथा औपपातिके यावत् आकुलबोलबहुलं नभः कुर्वन्
विनीताया राजधान्या मध्यमध्येन निर्गच्छति, आसितसम्मार्जितसिक्तशुचिक पुष्पोपचार-
फलितं सिद्धार्थवनविपुलराजमार्गं कुर्वन् हयगजरथप्रकरेण पदातिचटकरेण च मन्दं मन्दम्
उद्धतरेणुकं कुर्वन् कुर्वन् यत्रैव सिद्धार्थवनम् उद्यान यत्रैव अशोकवरपादपः तत्रैव उपा-
गच्छति, उपागत्य अशोकवरपादस्य अध शिविकां स्थापयति, स्थापयित्वा शिविकातः
प्रत्यवरोहति, प्रत्यवरुह्य स्वयमेवाभरणालङ्कारम् अवमुञ्चति, अवमुच्य स्वयमेव खतसु-
मिमुष्टिमिलोच्चं करोति, कृत्वा षष्ठेन भक्तेन अपानकेन आपादादिभिर्नक्षत्रेण योगमुपागते
क्लृप्ता उग्राणां भोगार्ता राजन्यानां क्षत्रियाणां चतुर्भिः सहस्रैः सार्धम् एक देवदूष्यमादाय
मुण्डो भूत्वा अगारात् अनगारतां प्रव्रजित ॥सू० ३९॥

टीका-‘णामिस्स णं’ इत्यादि । ‘णामिस्स णं कुलगरस्स मरुदेवाए भारियाए कुञ्जि-
सि’ नामेः कुलकरस्य मरुदेव्या भार्यायाः कुक्षौ ‘एत्थ’ अत्र अस्मिन् समये ‘णं’ खलु ‘उसमे

इस प्रकार से पन्द्रह कुलकरो में और ऋषभस्वामो में चतुर्दश कुलकरो की साधारण
कुलकरता प्रगट करके अब सूत्रकार इनमें असाधारण पुण्यप्रकृति के उदय से समुद्भूत त्रिजग-
ज्जनो द्वारा-पूजनीयता प्रगट करने के लिये जिस तरह इनसे ही लोकमें विशिष्ट धर्माधर्मसंज्ञारूप
व्यवहार चालू हुए इस बात को दिखाते हैं—

“णामिस्स णं कुलकरस्स मरुदेवाए भारियाए” इत्यादि ।

टीकार्थ-“णामिस्स णं कुलकरस्स मरुदेवाए भारियाए कुञ्जिसि एत्थणं उसमे णामं अरहा”
नामि कुलकर की मरुदेवी भार्या की कुक्षि में इस समय ऋषभ नाम के अर्हन्त-देव, मनुष्य

आ प्रभाषे यद्वर कुलकरो अने ऋषभ स्वामीभा अतुर्दश कुलकरोनी साधारण कुलकरता
प्रगट करीने हवे सूत्रकार जेभनाभा असाधारण पुण्य प्रकृतिना उदयथी समुद्भूत त्रिजगज-
ज्जेना वडे पूजनीयता प्रगट करवा भाटे जे रीते जेभना वडे जे दोकभा विशिष्ट धर्माधर्म
संज्ञा रूप व्यवहारो प्रकटित थया, जे वातने स्पष्ट करे छे—

‘णामिस्स णं कुलगरस्स मरुदेवाए भारियाए’ इत्यादि सूत्र ॥३९॥

टीकार्थ-नामिकुलकरनी मरुदेवी भार्यानी कुक्षीमांथी ऋषभ नामना अर्हन्त देव, मनुष्य अने

જામં' ઋપમો નામ 'અરહા' અર્હન્=સદેવ મનુજામુરનમસ્કાર્હઃ 'સમુપજિજ્ઞાતા' મમુદપદ્યત' સમુત્પન્નઃ । સ કીદશઃ સમુદપદ્યત ? ઇત્યાહ—'કોસલિણ' કૌશલિકઃ=કોશલાયાં દેશ-વિશેષે ભવઃ, તથા 'પદમરાયા' પ્રથમરાજઃ પ્રથમશ્વાસૌ રાજા ચેતિ, ઇદાવસર્પિણ્યાં નામિ કુલકરાજ્ઞપૈર્યુગલિકમનુજૈઃ શક્રેણ ચ સર્વતઃ પ્રથમમભિપિત્તત્વાત્ આદિરાજ ઇત્યર્થઃ તથા 'પદમજિણે' પ્રથમજિનઃ પ્રથમશ્વાસૌ જિનશ્ચેતિ, રાગાદીનાં પ્રથમો જેતા, યદ્વા રાજ્યત્યાગાદનન્તરં દ્રવ્યતો ભાવતશ્ચ સાધુત્વે સમુત્પન્ને સતિ પ્રથમો મનઃપર્યવજ્ઞાની, અસ્યામવસર્પિણ્યામસ્યૈવ ભગવતઃ સર્વદઃ પ્રથમં મનઃપર્યવજ્ઞાનિત્વાત્ । નતુ સ એવ ભગ-વાન્ અસ્યામવસર્પિણ્યાં સર્વતઃ પ્રથમમ્ અવધિજ્ઞાની મનઃ પર્યવજ્ઞાની કેવલજ્ઞાની ચ જાતઃ । જિનપદેન ચ અર્વાધમન'પર્યવકેવલજ્ઞાનિનાં સર્વેધામપિ ગ્રહણ ભવતિ, તર્હિ કથમત્ર જિન-પદેન મનઃ પર્યવજ્ઞાનિમાત્ર ગૃહ્યતે ? ઇતિ ચેત્, આહ-જિનપદેન અવધિજ્ઞાનિનો ગ્રહણે સ્વત્રમ્ અક્રમવદ્દં સ્યાત્, કેવલજ્ઞાનિનો ગ્રહણે ચોત્તરગ્રન્થેન સહ પૌનરુત્તયં સ્યાત્, અતો

ઔર અસુરો છે નમસ્કાર કરને યોગ્ય આદિ નાથ પ્રમુ ઉત્પન્ન હુએ, "કોસલિણ" એ કૌશલિક થે ક્યોંકિ એ કોશલા નામકે દેશ વિશેષ મેં અવતરિત હુએ થે । "પદમરાયા" એ પ્રથમ રાજા થે ક્યોંકિ અવસર્પિણીકાલ મેં નામિકુલકર કે દ્વારા આજ્ઞાપ હુએ યુગલિક મનુષ્યો ને ઔર શકો ને હનકા સર્વપ્રથમ અભિષેક ક્રિયા થા । "પદમજિણે" સર્વ પ્રથમ એ અવસર્પિણી કાલ કે જિન થે—ક્યોંકિ રાગાદિકો કે એ હી સર્વ પ્રથમ જેતા થે, અથવા—રાજત્યાગ કે અનન્તર દ્રવ્ય ઔર ભાવ સે સાધુત્વ કે ઉત્પન્ન હોને પર એ પ્રથમ મન' પર્યવજ્ઞાની થે, ક્યોંકિ હસ અવસર્પિણીકાલ મેં એ મન પર્યવ કે સર્વપ્રથમ અધિકારી હુએ હૈ શંકા—જિનપદ સે તો સમસ્ત અવધિજ્ઞાનિયો કા, સમસ્ત મન' પર્યવજ્ઞાનિયો કા ઔર કેવલ જ્ઞાનિયો કા ગ્રહણ હો જાતા હૈ તો ફિર યહાં પર જિન પદ કે દ્વારા એક મન પર્યવજ્ઞાની કા હી ગ્રહણ આપને ક્યો ક્રિયા હૈ ? તો હસ શકા કા ઉત્તર એસા હૈ કિ યદિ જિન પદ સે અવધિજ્ઞાનો કા ગ્રહણ માના જાવે તો હસ સ્થિતિ મેં સૂત્રમેં અક્રમવદ્દતા આજાવેગી, કેવલજ્ઞાની કા ગ્રહણ માનને પર ઉત્તરગ્રન્થ કે સાથ પુનરુક્તિ દોષ આ-

અસુરોથી નમસ્કરણીય આદિનાથ પ્રમુ ઉત્પન્ન થયા. એઓ 'કોસલિણ' કૌશલિક હતા, કેમકે એઓ કોશલ નામક દેશ વિશેષમાં અવતરિત થયા હતા પ્રથમ રાજા હતા, કેમકે અવસર્પિણી કાળમાં નામિ કુલકર વડે આજ્ઞાપ થયેલ યુગલિક મનુષ્યોએ અને શકોએ સર્વ પ્રથમ એમને। અભિષેક કર્યો. અવસર્પિણી કાળના એઓ સર્વપ્રથમ જિન હતા કેમ કે રાગાદિકો પર વિજય મેળવનાર સર્વપ્રથમ એ જ હતા અથવા રાજ્ય ત્યાગ પછી દ્રવ્ય અને ભાવથી સાધુત્વ ઉત્પન્ન થયા પછી એઓ પ્રથમ મન પર્યવજ્ઞાની હતા કેમ કે એ અવસર્પિણી કાળમાં એઓ મનઃ પર્યવજ્ઞાનના સર્વપ્રથમ અધિકારી થયા

શંકા:—જિનપદથી તો સમસ્ત અવધિજ્ઞાનીઓનું સમસ્ત મનઃ પર્યવજ્ઞાનીઓનું અને કેવળ જ્ઞાનીઓનું અહંશ થઈ જાય છે તો પછી અહીં જિન પદ વડે તમે એક મનઃ પર્યવજ્ઞાનીનું જ અહંશ શા માટે કર્યું છે ?

આ શંકાનો જવાબ આ પ્રમાણે છે કે જો જિનપદથી અવધિજ્ઞાનીનું અહંશ માનવામાં આવે તો આ સ્થિતિમાં સૂત્રમાં અક્રમવદ્દતા આવી જશે અને કેવલજ્ઞાનીનું અહંશ માન-

ઽત્ર જિનપદેન મનઃપર્યવજ્ઞાની એવ ગૃહ્યતે ઇતિ । તથા ‘પદમ કેવલી’ પ્રથમ કેવલી= પ્રથમકેવલજ્ઞાની-આદ્યસર્વજ્ઞ ઇત્યર્થઃ । તથા ‘પદમતિત્થયરે’ પ્રથમતીર્થકરઃ આદ્યશ્ચતુર્વર્ણસ- હુસ્થાપકઃ, અતએવ ‘પદમધમ્મવર ચાતુરંતચક્રવટ્ટી’ પ્રથમધર્મવરચાતુરંતચક્રવર્તી-દાન- શીલતપોભાવૈઃ ચતસૃણાં નરકાદિ ગતીનાં ચતુર્ણાં વા કષાયાણામન્તો=નાશો યસ્માત્, અથવા-ચતસ્રો ગતિશ્ચતુર કષાયાન્ વા અન્તયતિ=નાશયતીતિ, યદ્વા-ચતુર્ભિર્દાનશીલ- તપોભાવૈઃ કૃત્વા અન્તો=રમ્યઃ, અથવા-ચત્વારઃ=દાનાદયઃ અન્તા=અવયવો યસ્ય, યદ્વા ચત્વારિ=દાનાદીનિ અન્તાનિ=સ્વરૂપાણિ યસ્ય ‘અન્તોઽવયવે સ્વરૂપે ચ’ ઇતિ હેમચન્દ્રઃ સ ચતુરંતઃ, સ એવ ચાતુરંતઃ, સ એવ ચક્રં જન્મ=જરામરણોચ્છેદકત્વેન ચક્રતુલ્ય- ત્વાત્, વરં ચ તત્ ચાતુરંતચક્રં વરચાતુરંતચક્રં, વરપદેન રાજચક્રાપેક્ષયાઽસ્ય શ્રેષ્ઠત્વં વ્ય- વ્યયતે, લોકદ્વયસાધકત્વાત્ ધર્મ એવ વરચાતુરંતચક્રં ધર્મવરચાતુરંતચક્રં તાદૃશસ્ય ધર્મા- તિરિક્તસ્યાસંભવાત્ અત એવ સૌગતાદિધર્માભાસનિરાસઃ, તેષાં તાત્ત્વિકાર્થપ્રતિપાદકત્વા-

જાવેગા । હસન્નિયે યદ્વાં જિનપદ સે સિર્ફ મન. પર્યય જ્ઞાની કા પ્રહુળ કિયા ગયા હૈ, અવસર્પિણો કાલ મેં “પદમકેવલી” યે હી સર્વપ્રથમ કેવલી હુએ હૈ, આદ્યસર્વજ્ઞ હુએ હૈ । “પદમતિત્થયરે” યે હી આદ્ય તીર્થકર પ્રકૃતિ કે ઉદયવાલે હુએ હૈ-સર્વપ્રથમ યે હી ચતુર્વિધ સબ કે સ્થાપક હુએ હૈ, “પદમધમ્મવરચાતુરંતચક્રવટ્ટી સમુપ્પજિજ્ઞા” યે હી પ્રથમ ધર્મવર ચાતુરંત ચક્રવર્તી હુએ હૈ-દાન, શીલ, તપ ઓર ભાવો કે દ્વારા ચાર ગતિયો કા અથવા ચાર કષાયો કા જિસસે નાશ હો જાતા હૈ, અથવા ચાર ગતિયો કા ઓર ચાર કષાયો કા જો વિનાશ કર દેતા હૈ, અથવા દાન, શીલ, તપ ઓર ભાવો સે જો રમ્ય હૈ, અથવા ચાર દાનાદિક જિસકે “અન્તોઽવ- યવે સ્વરૂપે ચ” હસ હેમચન્દ્ર કોશ કે અનુસાર અવયવ હૈં યા જિસકે સ્વરૂપ હૈં વહ ચતુરંત હૈ ચતુરંત હી ચાતુરંત હૈ, યહ ચાતુરંત હી જરા મરણ કા ઉચ્છેદક હોને સે જન્મ હૈ, એસા જો શ્રેષ્ઠ ચાતુરંતચક્ર હૈ વહી વર ચાતુરંતચક્ર હૈ; વર પદ સે રાજચક્ર કો અપેક્ષા હસમેં શ્રેષ્ઠતા વ્યક્ત કી ગઈ હૈ । ક્યોકિ યહ લોક દ્વય કા સાધક હોતા હૈ એસા ચાતુરંત ચક્ર ધર્મ કે

વામા આવે તેા ઉત્તર ગ્રન્થની સાથે પુનરુક્તિ હોય આવી જશે એથી જ અહીં જિનપદથી ફક્ત મન પર્યવજ્ઞાનીનું અર્થ કહેવામા આવેલ છે અવસર્પિણી કાળમાં ફક્ત એઓ જ સર્વપ્રથમ કેવલી થયા છે, આદ્ય સર્વજ્ઞ થયા છે, એઓ જ આદ્યતીર્થકર પ્રકૃતિના ઉદય- વાળા થયા છે, ચતુર્વિધ સધના સ્થાપક થયા છે એ ઓ જ પ્રથમ ધર્મવર ચાતુરંત નરકાદિ ગતિઓના અથવા ચાર ગતિઓના અને ચાર નરકાદિ ગતિઓના અથવા ચાર કષાયોના જેનાથી નાશ થઈ જાય છે, અથવા ચાર ગતિઓના અને ચાર કષાયોને જે વિનાશ કરે છે, અથવા દાન, શીલ, તપ અને ભાવોથી જે રમ્ય છે, અથવા ચાર દાનાદિક ‘અન્તોઽવયવે સ્વરૂપે ચ’ એ હેમચન્દ્ર કોષના કથન મુજબ અવયવો છે, અથવા જેના સ્વરૂપો છે, તે ચતુરંત છે ચતુરંત જ ચાતુરંત છે, એ ચાતુરંત જ જરા મરણનો ઉચ્છેદક હોવાથી જન્મ છે, એવો જે શ્રેષ્ઠ ચાતુરંત ચક્રની અપેક્ષા એમાં શ્રેષ્ઠતા વ્યક્ત કરવામા આવી છે કેમ કે એ લોકદ્વયનો સાધક હોય છે, ચક્ર છે તે જ ચાતુરંત ચક્ર છે. ચ પદથી

ભાવેન શ્રેષ્ઠત્વાભાવાત્, ધર્મવરચાતુરન્તચક્રેણ વર્તિતુ શીલં यस્ય સ ધર્મવરચાતુરન્તચક્ર-
વર્તી ચક્રવર્તિપદેન પદ્મસ્વરૂપાધિપતિ સાદૃશ્યં વ્યજ્યતે, તથાહિ=ચત્વારઃ—ઉત્તરદિશિ
હિમવાન્ શેષદિશ્વ ચોપાધિમેદેન સમુદ્રા અન્તાઃ—સીમાનસ્તેપુ સ્વામિત્વેન ભવચાતુર-
ન્તઃ, ચક્રેણ રત્નરૂપપ્રહરણવિશેષેણ વર્તિતુ શીલં यस્ય સ ચક્રવર્તી, ચાતુરન્તાશ્ચ તે ચ-
ક્રવર્તિનશ્ચેતિ ચાતુરન્તચક્રવર્તિનઃ ધર્મેણ—ન્યાયેન વરઃ—શ્રેષ્ઠઃ इतरतीर्थिकापेक्षयेति
ધર્મવરઃ ‘ધર્માઃ પુણ્યયમન્યાય સ્વભાવાચારસોપમાઃ’ इत्यमरः, સ ચાસૌ ચાતુરન્તચક્રવર્તી
ચેતિ ધર્મવરચાતુરન્તચક્રવર્તી, યદ્વા-ચાતુરન્તં ચ તત્ત્વચક્રં ચાતુરન્તચક્રં વરં ચ તત્ત્વચાતુર-
ન્તચક્રં વરચાતુરન્તચક્રં, ધર્મોવરચાતુરન્તચક્રમિવ ધર્મવરચાતુરન્તચક્રં, તેન વર્તિતુ વર્ત-
યિતું વા શીલં यस્ય સ ધર્મવરચાતુરન્તચક્રવર્તી, પ્રથમશ્ચાસૌ ધર્મવરચાતુરન્તચક્રવર્તી
ચેતિ પ્રથમધર્મવરચાતુરન્તચક્રવર્તીતિ । પ્રથમરાજન્યાદિ વિશેષણવિશિષ્ટઃ સ ભગવાન્ ઋષ-
ભોર્હન્ નામિકુલકર ભાર્યાયા મરુદેવ્યાઃ કુક્ષૌ સમુત્પન્નઃ इति भावः । ‘तएण’ ततः
—जन्मग्रहणानन्तरं खलु ‘उसमे अरहा कोसलिय’ ऋषभोर्हन् कौशलिको ‘वीस पुव्व

अतिरिक्त और कोई नहीं है । इससे सौगतादि धर्माभासों का निरास हो जाता है । क्योंकि
उनमें यथार्थरूप से प्रतिपादकता नहीं है । अतः उन्हें श्रेष्ठता का स्थान प्राप्त नहीं हो सका है ।
धर्मवरचातुरन्तचक्र से वर्तने का जिसका स्वभाव है वह धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्ती है । “चक्रवर्ती”
इस पद से छह खण्ड के अधिपति का सादृश्य व्यक्त किया गया है । जो उत्तर दिशा
में रहा हुआ हिमवान् है वह और शेष दिशाओं में उपाधिमेद से वर्तमान जो समुद्र है वे इस
भरत खण्ड को सीमा रूप हैं । इनमें जो स्वामिरूप से होता है वह चातुरन्त है तथा चक्र से
रत्न रूप प्रहरण विशेष से वर्तन करने का जिसका स्वभाव है वह चक्रवर्ती है, “धर्माः—पुण्य-
यमन्याय स्वभावाचारसयमाः” इस अमरकोष के वचनानुसार धर्म—न्याय से जो इतर तीर्थियों
की अपेक्षा श्रेष्ठ है वह धर्मवर है । ऐसा धर्मवर जो चातुरन्तचक्रवर्ती है वह धर्मवर चातुरन्त-
चक्रवर्ती है ऐसे वे प्रथम राजत्वादि विशेषणों से विशिष्ट भगवान् ऋषभ अर्हन्त नाभिकुलकरी

એવું ચાતુરન્ત ચક્ર ધર્માતિરિક્ત બીજી કોઈ નથી. એનાથી સૌગતાદિ ધર્માભાસોનો નિરાસ
થઈ જાય છે, કેમ કે તેમનામાં યથાર્થિક પ્રતિપાદકતા નથી. એથી જ તેઓને શ્રેષ્ઠતાનું
સ્થાન પ્રાપ્ત થયું તેથી. ધર્મવર ચતુરન્ત ચક્ર સુરૂપ વર્તવાનો જેનો સ્વભાવ છે, તે ધર્મ
ચાતુરન્ત ચક્રવર્તી છે ‘ચક્રવર્તી’ આ પદથી ૬ ખંડના અધિપતિનું સાદૃશ્ય વ્યક્ત કરવામાં
આવેલ છે. જે ઉત્તર દિશામાં આવેલ હિમવાન્ છે તે અને શેષ દિશાઓમાં ઉપાધિમેદથી
વર્તમાન જે સમુદ્ર છે તે આ ભરતખંડની સીમા રૂપમાં છે વિદ્યમાન છે એમાં જે સ્વામિ
રૂપે જે શાસક હોય છે તે ચાતુરન્ત છે, તેમ જ ચક્રના એટલે કે રાગ રૂપ પ્રહરણ વિશેષથી
વર્તન કરવાનો જેનો સ્વભાવ છે તે ચક્રવર્તી છે. “ધર્માઃ પુણ્યયમ ન્યાય સ્વભાવાચારસોપમાઃ”
જે ‘અમરકોષ’ના વચનાનુસાર ધર્મ—ન્યાયથી જે ઇતર તીર્થીઓની અપેક્ષાએ શ્રેષ્ઠ છે, તે
ધર્મ વર છે. એવો ધર્મવર જે ચાતુરન્ત ચક્રવર્તી છે, તે ધર્મવર ચાતુરન્ત ચક્રવર્તી છે
એવા તે પ્રથમ રાજન્યાદિ વિશેષણોથી વિશિષ્ટ ભગવાન્ ઋષભ અર્હન્ત નામિકુલકરની ભાર્યા

सयसहस्साइ' विंशति पूर्वशतसहस्राणि-विंशतिलक्षपूर्वाणि 'कुमारवासमञ्जे' कुमारवास-
मध्ये कुमारेण-भावप्रधानत्वात् कुमारत्वेन वासः-अवस्थितिस्तन्मध्ये 'वसइ' वसति ।
विंशतिलक्षपूर्वाणि यावत् कुमारपदे स्थित इति भावः । 'वसित्ता' उपित्वा-कुमार-
पदे स्थित्वा 'तेवट्ठि' पुञ्चसयसहस्साइ' त्रिपट्टि पूर्वशतसहस्राणि-त्रिपट्टि-लक्षपूर्वाणि 'म
हारायवासमञ्जे' महाराजवासमध्ये-महाराजेन-भावप्रधानत्वात् महाराजत्वेन वसनं-
महाराजवासस्तन्मध्ये 'वसइ' वसति । तत्र स प्रजानामुपकाराय यत्कृतवांस्तदाह 'तेवट्ठि'
इत्यादि । 'तेवट्ठि' पुञ्चसयसहस्साइ' महारायवासमञ्जे वसमाणे' त्रिपट्टि पूर्वशतसहस्रा-
णि महाराजवासमध्ये वसन् स भगवान् ऋषभोऽर्हन् 'लेहाइयाओ' लेखादिकाः-लेखन्
अक्षरविन्यासः स आदौ यासां तास्तथा ताः, पुनः 'गणियप्पहाणाओ' गणिततप्रधा-
नाः-गणितम्-अङ्कविद्या, तत्प्रधानं यासु तास्तथा ताः, तथा 'सउणरुयपज्जवसाणाओ'
शकुनरुतपर्यवसानाः शकुनरुतं-पक्षिशब्दः पर्यवसाने-अन्ते यासां तास्तथाभूताः ताः,
'वावत्तरि' द्वाससति-द्वाससतिसंख्यकाः 'कलाओ' कलाः, 'चोसट्ठि' चतुष्पट्टि-चतुष्प-

भार्या मरुदेवी की कुक्षि में उत्पन्न हुए, "तपण उसमे अरहा कोसलिप वीसं पुञ्चसयसहस्साइ
कुमारवासमञ्जे वसइ" जन्म ग्रहण के अनन्तर उन कौशलिक ऋषभ अर्हन्त ने २० लाख
पूर्व कुमारकाल में समाप्त किये । अर्थात् २० लाख पूर्वतक ऋषभनाथ कुमार काल मे रहे-
कुमार काल में इतने पूर्व तक "वसित्ता" रहने के बाद "तेवट्ठि पुञ्चसयसहस्साइ महाराय
वासमञ्जे वसइ" फिर वे ६३ लाख पूर्वतक महाराज पद में रहे "तेवट्ठि पुञ्चसयसहस्साइ महा-
रायवासमञ्जे वसमाणे लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुयपज्जवसाणाओ वावत्तरि कलाओ
चोसट्ठि महिलागुणे सिप्पसयं च कम्माणं तिणिण वि पयाहियाए उवदिसइ" उस पद में रहकर
उन्होंने जो प्रजानो का उपकार किया वह अब "तेवट्ठि" इत्यादि पदो द्वारा सूत्रकार
प्रगट करते है-६३ लाख पूर्वतक महाराज पद में रहकर उन ऋषभनाथ ने लेखादिक कलाओं
को-अक्षर विन्यास आदि रूप विचारों को गणित प्रधान-रूप कलाओ को, एव पक्षियों

मरुदेवीनी कुक्षिथी उत्पन्न थया 'तपणं उससेअरहा कोसलिप वीसं पुञ्चसयसहस्साइ
कुमारवासमञ्जे वसइ' जन्म पछी ते कौशलिक ऋषभनाथ अर्हन्ते २० लाख पूर्वकुमार कालमां
समाप्त कय्यो, ओटले के २० लाख पूर्व सुधी ऋषभनाथ कुमार कालमा रह्या 'ओटला
पूर्व सुधी कुमारकालमा रह्या पछी तेओ ६३ लाख पूर्व सुधी महाराज पदे रह्या
ओ पद पर समासीन रहिने तेमओ ओ रीते प्रणने। उपकार कय्यो ते विषे हवे "ते
वट्ठि" इत्यादि पदो वउ सूत्रकार कडे छे ६३ लाख पूर्व सुधी महाराज पद पर समा-
सीन रहिने ते ऋषभनाथे वेणादिक कलाओनो अक्षर विन्यास आदि ३५ विधाओनो, शशित
प्रधान ३५ कलाओनो, तेमअ पक्षीओनी वाष्ठी समज्जवा ३५ अ तिम कलाओनो, आ रीते
सर्व ७२ कलाओनो तेमअ ६४ ओओनी कलाओनो, एविधाना साधनभूत ठेओनी
स हर्षमा विज्ञानशतनो-शतसंख्यक कुलकरादि शिक्षेओनो, आस सर्वभणीने पुटुपेनी ७२
कलाओनो ६४ ओओनी कलाओनो अने विज्ञान शत ३५ शिक्षेओनो प्रवर्द्धित भाटे

ષ્ટિ સંખ્યકાન્ 'મહિલાગુણે' મહિલાગુણાન્ સ્ત્રીકલાઃ 'કમ્માણ' કર્મણાં—જીવિકાસા-
ધનભૂતાનાં ચ મધ્યે 'સિપ્પસયં' શિલ્પશતં—વિજ્ઞાનશતમ્ શતસંખ્યકાનિ કુમ્ભકારાદિ
શિલ્પાનીત્યર્થઃ, એતાનિ 'ત્રિણિપિ' ત્રીણ્યપિ 'પયાહિયાણ' પ્રજાહિતાય—લોકોપકારાય
'ઉવદિસઈ' ઉપદિશતિ । 'ત્રીણ્યપિ' इत्यत्र अपि शब्दः कला-महिलागुण-शिल्पशतानाम्
एकपुरुषोपदिश्यमानतेति सूचनार्थम् । 'उपदिशति' इति वर्तमानकालत्वेन निर्देशः सर्वेषां
माद्यतीर्थकराणामयमेव उपदेश प्रकार इति सूचयितुम् । यद्यपि कृषिवाणिज्यादयो
बहवो जीविकासाधनप्रकाराः सन्ति, तथापि यत् शिल्पशतमेवात्र निर्दिष्टं तत् कृषि-
वाणिज्यादीनां पश्चादुत्पत्तिरिति सूचनायेति । ततश्च भगवता शिल्पशतमेवोपदिष्टं
कृषिवाणिज्यादीनि तु पश्चात् समुद्भूतानीति विज्ञेयम् । अत एव आचार्योपदेशज शि-
ल्पम् अनाचार्योपदेशजं कर्मेति प्रसिद्धम् ।

કી બોલી કો પહિચાનનેરૂપ અન્તિમ કલા તક કી इन सब ७२ कलाओं को एवं ६४
स्त्रियों की कलाओं को, तथा जीविका के साधन भूत कर्मों के बीच में विज्ञानशत को—शत
संख्यक कुम्भकारादि शिल्पों को—इस तरह छेसादिक रूप पुरुषों की ७२ कलाओं को, ६४
स्त्रियों की कलाओं को और विज्ञानशतरूप शिल्पों को प्रजाजनो-के हितके लिये उपदिष्ट
किया, “त्रिण्यपि” में आया हुआ यह अपि शब्द यह सूचित करता है कि ये ७२ कलाएँ
६४ कलाएँ और शिल्पशत इन सब में एक पुरुष द्वारा उपदिश्यमानता है अर्थात् इनका सर्व
प्रथम उपदेश इन्हीं ऋषभदेव ने दिया है । “उपदिशति” ऐसा जो वर्तमान कालिक का प्रयोग
किया गया है उससे सूत्रकार ने यह सूचित किया है कि समस्त आद्यतीर्थकरों के उपदेश का
प्रकार ऐसा ही होता है । यद्यपि कृषि, वाणिज्य आदि अनेक प्रकार के जीविका के साधन हैं
तथापि यहां जो शिल्पशतमात्र का ही निर्देश करने में आया है वह इस बात को प्रगट करता
है कि इनकी उत्पत्ति पश्चात् ही हुई है । इस तरह भगवान् ऋषभदेव ने तो शिल्पमात्र का ही
उपदेश दिया है । कृषि वाणिज्यादि का नहीं—इनकी तो पीछे में ही उत्पत्ति हुई है । इसलिये—
शिल्प आचार्योपदेशन है और कर्म अनाचार्योपदेशन है । अथवा—

ઉપદેશ કર્યો. “ત્રીણ્યપિઃ” માં આવેલ આ ‘અપિ’ શબ્દ આ સૂચિત કરે છે કે એ ૭૨
કલાઓ, ૬૪ કલાઓ અને શિલ્પ-શત એ સર્વેમાં એક પુરુષ વડે ઉપદિશ્ય માનતા છે.
એટલે કે એ સર્વ કલાઓનો સર્વ પ્રથમ ઉપદેશ ઋષભદેવે જ કર્યો છે. “ઉપદિશતિ”
એવો જ વર્તમાન કાલિક પ્રયોગ કરવામાં આવેલ છે તેનાથી સૂત્રકાર આ પ્રમાણે સૂચિત
કરવા માંગે છે. સમસ્ત આદ્ય તીર્થકરો ના ઉપદેશનો પ્રકાર એવો જ હોય છે, જો કે
કૃષિ, વાણિજ્ય વગેરે અનેક પ્રકારના જીવિકાનાં સાધનો છે, તે પશુ અહીં માત્ર શિલ્પ-
શતનો જ નિર્દેશ કરવામાં આવેલ છે, તે આ વાત પ્રકટ કરે છે કે એમનું પ્રચલન પછી
જ થયું છે આ રીતે ભગવાન ઋષભદેવે તો શિલ્પ શત માત્રનો જ ઉપદેશ કર્યો છે,
કૃષિ વાણિજ્યાદિ નો ઉપદેશ કર્યો નથી. એમનો આવિષ્કાર તો પછી જ થયો છે એથી
શિલ્પ આચાર્યોપદેશજ છે અને કર્મ અનાચાર્યોપદેશજ છે. અથવા—

અથવા—“તુળહાર કાષ્ઠહાર કૃષિવાણિજ્યકાન્યપિ ।

કર્મણ્યાસૂત્રયામાસ લોકાનાં જીવિકાકૃતે ॥૧૧॥” ઇતિ ।

પ્રાચીનોક્ત્યા કૃષિવાણિજ્યાદીન્યપિ ભગવતૈવોપદિષ્ટાનીતિ વિજ્ઞેયમ્ । તતશ્ચ ‘કર્મણામ્’ इत्यत्र द्वितीयार्थे पृष्ठी । एवं च भगवान् जघन्यमध्यमोत्कृष्टभेदभिन्नानि कर्मणि-
शिल्पशतं च पृथगेवोपदिष्टवानिति बोध्यम् । कलानां लेखादिका द्वासप्ततिभेदाः तदर्थाश्च
ज्ञातासूत्रस्य प्रथमाध्ययने विशतितमसूत्रे मत्कृतायाम् अनगारधर्माभूतवर्षिणीटीकायां
द्रष्टव्याः । चतुष्पष्टिः स्त्रीकलाश्चेमाः, नृत्यम् १, औचित्यं २, चित्रं ३, वादित्रं ४, मन्त्रः
५, तन्त्रं ६, ज्ञानं ७, विज्ञानं ८, दम्भः ९, जलस्तम्भः १०, गीतमानं ११, ताल-
मानं १२, मेघवृष्टिः १३, जलवृष्टिः १४, आरामरोपणम् १५, आकारगोपनम् १६
धर्मविचारः १७, शकुनसारः १८, क्रियाकल्पः १९, संस्कृतजल्पः २०, प्रासादनीतिः
२१, धर्मरीतिः २२, वणिकावृद्धिः २३, स्वर्णसिद्धिः २४, सुरभितैलकरण २५, लीला-

“તુળહાર કાષ્ઠહાર કૃષિવાણિજ્યકાન્યપિ । કર્મણ્યાસૂત્રયામાસ લોકાના જીવિકાકૃતે ॥૧૧॥”

હસ પ્રાચીન ડક્તિ કે અનુસાર કૃષિ વાણિજ્ય આદિ કર્મ મી ભગવાન્ કે હી દ્વારા ઉપદિષ્ટ
હુશ હૈં એસા જાનના ચાહિયે । “કર્મણામ્” યહ દ્વિતીયાર્થ મેં પઠી હુઈ હૈ । અતઃ ભગવાન્
ને જઘન્ય , મધ્યમ ઔર ઉત્કૃષ્ટ કે મેદ સે અનેક પ્રકાર કે કર્મોં કા ઔર શિલ્પશત
કા અલગ ૨ હી ઉપદેશ દિયા હૈ એસા સમજના ચાહિયે । કલાઓ કે લેખાદિક જો
૭૨ મેદ હૈ ઔર હનકા જો અર્થ હૈ વહ સબ મૈને જ્ઞાતાસૂત્ર કે પ્રથમ અધ્યયન કા જો
વીસમા સૂત્ર હૈ ડસકી ટોકા મેં ખુલાશા કિયા હૈ । અતઃ યહ વિષય વહાં સે અઘ્ઠી
તરહ જાના જા સકતા હૈ । ૬૪ જો લિયો કી કલાઈ હૈં વે હસ પ્રકાર સે હૈ—નૃત્ય ૧,
ઔચિત્ય ૨, ચિત્ર ૩, વાદિત્ર ૪, મત્ર ૫, તન્ત્ર ૬, જ્ઞાન ૭, વિજ્ઞાન ૮, દમ્ભ ૯, જલસ્તમ્ભ
૧૦, ગીતમાન ૧૧, તાલમાન ૧૨, મેઘવૃષ્ટિ ૧૩, જલવૃષ્ટિ ૧૪, આરામરોપણ ૧૫,
આકારગોપન ૧૬, ધર્મવિચાર ૧૭, શકુનસાર, ૧૮. ક્રિયાકલ્પ ૧૯, સસ્કૃતજલ્પ ૨૦,

તુળહાર કાષ્ઠહાર કૃષિવાણિજ્યકાન્યપિ ।

કર્મણ્યાસૂત્રયામાસ લોકાનાં જીવિકા કૃતે ॥૧૧॥

આ પ્રાચીન કથન મુજબ કૃષિ વાણિજ્યાદિ કર્મોં પશુ ભગવાન વડે જ ઉપદિષ્ટ થયા
છે, આમ બધુજુ જોઈએ. ‘કર્મણામ્’ આ દ્વિતીયાર્થમા પઠી થયેલી છે. એથી ભગવાને
જઘન્ય, મધ્યમ અને ઉત્કૃષ્ટના ભેદથી અનેક પ્રકારોના કર્મોના અને શિલ્પશતોના શુદ્ધ
શુદ્ધ સ્વરૂપમાં જ ઉપદેશ કર્યો છે, આમ સમજવું જોઈએ લેખાદિકના રૂપમાં કલા-
ઓના જે ૭૨ ભેદો છે અને એમના જે અર્થો છે, તે વિષે એ ‘જ્ઞાતાસૂત્ર’ના પ્રથમ અધ્ય-
યનના, ૨૦ માં સૂત્રની ટીકામા સ્પષ્ટતા કરી છે. એથી આ સબધમા જિજ્ઞાસુઓ તે
અન્યનુ અધ્યયન કરીને વિશેષ જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરી શકે છે સ્ત્રીઓની ૬૪ કલાઓ આ પ્રમાણે
છે ૧ નૃત્ય, ૨ ઔચિત્ય, ૩ ચિત્ર, ૪ વાદિત્ર, ૫ મત્ર, ૬ તન્ત્ર, ૭ જ્ઞાન, ૮ વિજ્ઞાન,
૯ દમ્ભ, ૧૦ જલસ્તંભ, ૧૧ ગીતમાન, ૧૨ તાલમાન, ૧૩ મેઘવૃષ્ટિ, ૧૪ જલવૃષ્ટિ, ૧૫
આરામ રોપણ, ૧૬ આકારગોપન, ૧૭ ધર્મવિચાર ૧૮ શકુનસાર, ૧૯ ક્રિયાકલ્પ, ૨૦

સંચરણ ૨૬, હયગજપરીક્ષણ ૨૭, પુરુષસ્ત્રીલક્ષણં ૨૮, હેમરત્નમેદઃ ૨૯, અષ્ટાદશ-
લિપિપરિચ્છેદઃ ૩૦, તત્કાલબુદ્ધિ ૩૧, વાસ્તુસિદ્ધિઃ ૩૨, કામવિક્રિયા ૩૩, વૈદ્યક-
ક્રિયા ૩૪, કુમ્ભભ્રમઃ ૩૫, સારિશ્રમઃ ૩૬, અઙ્ગનયોગઃ ૩૭, ચૂર્ણયોગઃ ૩૮, હસ્તલાઘવ ૩૯, વચનપાટવં ૪૦, ભોજ્યવિધિઃ ૪૧, (વાણિજ્યવિધિઃ ૪૧, મુખ
મण्डनं ૪૨, શાલિખण्डनम् ૪૩, કથાકથનં ૪૪, પુષ્પગ્રથન ૪૫, વક્રોક્તિઃ ૪૬, કા
વ્યશક્તિઃ ૪૭, સ્ફારવિધિવેષ ૪૮, સર્વભાષાવિશેષઃ ૪૯, અભિધાનજ્ઞાનં ૫૦, શ્રૂષણ
પરિધાનં ૫૧, શ્રુત્યોપચારઃ ૫૨, ગૃહાચારઃ ૫૩, વ્યાકરણં ૫૪, પરનિરાકરણં, ૫૫,
રન્ધનં ૫૬, કેશબન્ધનં ૫૭, વીણાનાદઃ ૫૮, વિતણ્ડાવાદઃ ૫૯, અઙ્કવિચારઃ ૬૦,
લોકવ્યવહારઃ ૬૧, અન્યાક્ષરિકા ૬૨, પ્રશ્નપ્રહેલિકા ૬૪ इति । इह काश्चित् कलाः
स्त्रीपुरुषसाधारणा अपि यत् पृथक् पृथक् स्त्रीविषयत्वेन पुरुषविषयत्वेन चोक्तास्तत्र

પ્રસાદનીતિ ૨૧, ધર્મરીતિ ૨૨, વણિકાવૃદ્ધિ ૨૩, સ્વર્ણસિદ્ધિ ૨૪, સુરભિતૈલકરણ ૨૫,
લોલાસચરણ ૨૬, હયગજપરીક્ષણ ૨૭, પુરુષસ્ત્રીલક્ષણ ૨૮, હેમરત્નમેદ ૨૯, અષ્ટાદશલિપિ-
પરિચ્છેદ ૩૦, તત્કાલબુદ્ધિ ૩૧, વાસ્તુસિદ્ધિ ૩૨, કામવિક્રિયા ૩૩, વૈદ્યકક્રિયા ૩૪, કુમ્ભ-
ભ્રમ ૩૫, સારિશ્રમ ૩૬, અઙ્ગનયોગ ૩૭, ચૂર્ણયોગ ૩૮, હસ્તલાઘવ ૩૯, વચનપાટવ ૪૦,
ભોજ્યવિધિ ૪૧, (વાણિજ્યવિધિ ૪૧) મુખમण्डन ૪૨, શાલિખण्डन ૪૩, કથાકથન ૪૪,
પુષ્પગ્રથન ૪૫, વક્રોક્તિ ૪૬, કાવ્યશક્તિ ૪૭, સ્ફારવિધિવેષ ૪૮, સર્વભાષાવિશેષ ૪૯, અમિ-
ધાનજ્ઞાન ૫૦, શ્રૂષણપરિધાન ૫૧, શ્રુત્યોપચાર ૫૨, ગૃહાચાર ૫૩, વ્યાકરણ ૫૪, પર-
નિરાકરણ ૫૫, રન્ધન ૫૬, કેશબન્ધન ૫૭, વીણાનાદ ૫૮, વિતણ્ડાવાદ ૫૯, અઙ્કવિચાર
૬૦, લોક વ્યવહાર ૬૧, અન્યાક્ષરિકા ૬૨, એવ પ્રશ્નપ્રહેલિકા ૬૩, इन कलाओं में कितनीक
कलाएँ ऐसी भी है जो स्त्री और पुरुष में समानरूप से होती हैं, परन्तु जब वे स्त्री सबन्धी होती
हैं तो स्त्रीकला कहलाती है, और जब पुरुष सबन्धी होती हैं तो पुरुषकला कहलाती हैं, इस-

સ સ્કૃત જલ્પ, પ્રાસાદનીતિ, ૨૨ ધર્મરીતિ, ૨૩ વણિકાવૃદ્ધિ, ૨૪ સ્વર્ણસિદ્ધિ, ૨૫ સુરભિ
તૈલ કરણ, ૨૬ લીલા સચરણ ૨૭ હયગજપરીક્ષણ, ૨૮ પુરુષ સ્ત્રી લક્ષણ, ૨૯ હેમ-
રત્ન મેદ, અષ્ટાદશલિપિપરિચ્છેદ, ૩૦ તત્કાલ બુદ્ધિ, ૩૧ વાસ્તુસિદ્ધિ, ૩૨ કામવિક્રિયા,
૩૪ વૈદ્યક ક્રિયા, ૩૫ કુમ્ભ ભ્રમ, ૩૬ સારિશ્રમ, ૩૭ અઙ્ગનયોગ ૩૮ ચૂર્ણયોગ, ૩૯ હસ્ત
લાઘવ, ૪૦ વચન પાટવ, ૪૧ લોભમવિધિ, (૪૧ વાણિજ્ય વિધિ), ૪૨ શુભમંડન, ૪૩
શાલિખડન, ૪૪ કથાકથન, ૪૫, પુષ્પ ગ્રથન, ૪૬ વક્રોક્તિ, ૪૭ કાવ્યશક્તિ, ૪૮ સ્ફાર
વિધિવેષ, ૪૯ સર્વ ભાષા વિશેષ, ૫૦ અભિધાન જ્ઞાન, ૫૧ શ્રૂષણપરિધાન, ૫૨ શ્રુત્યોપચાર,
૫૩ ગૃહાચાર, ૫૪ વ્યાકરણ, ૫૫ નિરાકરણ, ૫૬ રન્ધન, ૫૭ કેશ બન્ધન, ૫૮ વીણા
નાદ, ૫૯ વિત ડાવાદ, ૬૦ અઙ્કવિચાર, ૬૧ લોકવ્યવહાર, ૬૨ અન્યાક્ષરિકા અને ૬૩ પ્રશ્ન
પ્રહેલિકા એ કલાઓમાં કેટલીક કલાઓ એવી પણ છે કે જે સ્ત્રી અને પુરુષ બંને માટે
સમાન રૂપે હોય છે, પણ જ્યારે તે સ્ત્રી સંબંધી હોય છે, ત્યારે સ્ત્રી કલા કહેવાય છે અને
જ્યારે પુરુષ સંબંધી હોય છે ત્યારે તેની ગણના પુરુષ કલાના રૂપમાં થાય છે એથી એમ

પૌનરુત્તયશઙ્કા ન કાર્યા, સ્ત્રીકલાવિપયત્વેન પુરુષકલાવિપયત્વેન ચ પૃથગ્ પૃથગ્ વિવક્ષણાત્, અન્યથા સ્ત્રીકલાપુરુષકલા તદુભયકલાચેતિ કલાનાં મેદત્રયં વિવક્ષણીયં સ્યાદિતિ । શિલ્પશતં યદુક્તં તત્ર મૂલશિલ્પાનિ કુમ્મશિલ્પં લોહશિલ્પં ચિત્રશિલ્પં તન્તુવાયશિલ્પં નાપિતાશિલ્પમિતિ પઠ્વ । તત્ર एकैकस्य मेदस्य विंशतिर्विंशति भेदा इति शिल्पशतम् । तदुक्तम्—

“पंचैव य सिप्पाइ घडलोह चित्तणंत कासवण ।

इक्किक्कस्स य इत्तो वीसं वीસं भवे मेया ॥१॥”

છાયા—પઠ્વૈવ ચ શિલ્પાનિ ઘટલોહ ચિત્ર વસ્ત્ર કાશ્યપાનિ ।

વિંશતિ एकैकस्य च इतो विंशतिर्भेदाः ॥१॥ इति

નનુ કિં નિમિત્ત ભગવતા પશ્ચ મૂલશિલ્પાનિ પ્રોક્તાનિ ? इति चेत्, आह—कालस्वभावेन युगलिकपुरुषेषु मन्दजाठराग्निषु जातेषु अपक्वौपधिषु भुज्यमानासु तदपरिपाकेन रुग्णप्रायास्ते युगलिकपुरुषाः संजाताः, ततस्तेषां दुर्दशामालोक्य दयाद्रहदयेन

છિયે इनमें पुनरुक्ति की संभावना नहीं हो सकती है, यदि ऐसा न होता तो फिर स्त्री कला पुरुषकला और तदुभयकला इस तरह से कलाओं के तीन मेद विवक्षित होते परन्तु इस प्रकार से कलाओं के मेद विवक्षित नहीं हुए है । शिल्पशत ऐसा जो कहा गया है उसमें मूलशिल्प चित्रशिल्प, तन्तुवायशिल्प, और नापित शिल्प ये पांच मेद है, इनमें प्रत्येकशिल्प के २०—२० और मेद होते है, इस तरह शिल्पशत होते हैं ।

तदुक्तम्—पंचैव य सिप्पाइ, घडलोह चित्तणंत कासवण ।

इक्किक्कस्स य इत्तो—वीस वीસ भवे मेया ॥१॥

શંકા—ભગવાન્ ને કિસ નિમિત્ત સે પાંચ મૂલશિલ્પ કહે છે ? તો હસ શંકા કા ઉત્તર એસા છે કે જબ યુગલિક પુરુષ મન્દ જાઠરાગ્નિ વાળે હો ગયે તબ ઝન્હોને અપક્વ ઔષધિયાં જ્ઞાના પ્રારંભ કર દિયા । પરન્તુ વે બી ઝન્હે નહીં પચી— હસ કારણ વે રુગ્ણપ્રાય રહને જ્ઞે ।

નામાં પુનરુક્તિની સંભાવના હોઈ શકે નહિ જો આમ ન હોત તો સ્ત્રી કલા, પુરુષ કલા અને તદુભયકલાના રૂપમાં કલાઓના ત્રણબેદો વિવક્ષિત હોત પરંતુ કલાઓના આ રીતે બેદો કરવામાં આવ્યા નથી શિલ્પશત જોયું જો કહેવામાં આવ્યું છે, તેમાં મૂલશિલ્પના કુલ શિલ્પ, લોહશિલ્પ, ચિત્ર શિલ્પ તન્તુવાય શિલ્પ અને નાપિતશિલ્પ જો પાંચ બેદો છે જોમાં દરેક શિલ્પના ૨૦-૨૦ પ્રકારો બીજા પશુ હોય છે આ રીતે શિલ્પશત થઈ જાય છે, તદુક્તમ્

પંચૈવ ય સિપ્પાઈ ઘટલોહ ચિત્તણંત કાસવણ । इक्किक्कस्स य इत्तो वीसं वीसं भवे मेया ॥१॥

શંકા—ભગવાને કયા નિમિત્તે પાંચ મૂલ શિલ્પો કહ્યા છે ? તો આ શંકાને ભગવાન આ પ્રમાણે કરવામાં આવે છે કે યુગલિક પુરુષો મન્દ જાઠરાગ્નિવાળા થઈ ગયા ત્યારે તેમણે અપક્વ ઔષધીઓનું સેવન કરવા માંડ્યું, પરંતુ તે ઔષધીઓને પશુ તેઓ પચાવી શક્યા નહિ, જોથી તેઓ પ્રાયઃ રૂઝા રહેવા લાગ્યા તેઓની આવી દુર્દશા જોધને ભગવાને કથાઈ

ભગવતા તદ્રન્ધનાય રન્ધનસાધનપાત્રનિર્માણશિલ્પમુપદિદેશ । તત્ર ભગવાન્ સર્વતઃ પ્રથમં ઘટનિર્માણશિલ્પમુપદિદ્વાનિતિ પ્રથમં ઘટમૂલશિલ્પં સંજાતમિતિ ? । અનાયૈભ્યઃ પ્રજાં રક્ષિતુ ક્ષાત્રયાઃ શસ્ત્રપાણયસ્તિડ્ઘ્ઠન્તુ ઇતિ ભગવતા લોહશિલ્પં દર્શિતમ્ ૨ । ચિત્રાદ્ગ્રન્થલ્પવૃક્ષેષુ કાલસ્વભાવેન પરિક્ષીણેષુ ચિત્રશિલ્પમ્ ૩ । વસ્ત્રપ્રદાયિષુ કલ્પવૃક્ષેષુ પરિક્ષીણેષુ તન્તુવાય-શિલ્પમ્ ૪ । પૂર્વમવર્દ્ધમાનરોમનશ્ચાન્ કાલપ્રભાવેન વર્દ્ધમાનરોમનશ્ચાન્ યુગલ્લિનો નરાન્ વીક્ષ્ય તેરોમનશ્ચૈસ્તેપાં વ્યાઘાતો મા ભૂદિતિ વિચાર્ય દયાર્દ્રહૃદયેન ભગવતા નાપિતશિલ્પં ચ પ્રદર્શિતમ્ ૫ ઇતિ । નન્તુ કર્મક્ષણાર્થમેવ અવશિષ્ટસત્કર્મણો ભગવન્તોડર્હન્તો વ્યાધિ-પ્રતીકારાર્થં ભૈષજ્યમિવ સ્ત્ર્યાદિ પર્ણિગ્રહં સ્વીકુર્વતે, ન ત્વિતરે, કથં પુન નિરવધૈકરુચિ-

તવ એસી દુર્દશા અનેકી દેશકર દયાર્દ્રહૃદય વાલે ભગવાન્ ને અને ઔષધિયો કો પકાને કે લિયે પકાને મેં સારરુર પાત્રો કે નિર્માણ કરનેકોશિલ્પ ક્રમ કા ઉપદેશ દિયા, હસમેં સવસે પહિલે ઘટ નિર્માણરૂપ શિલ્પ કા ઉપદેશ દિયા, હસલિષ્ ઘટમૂલશિલ્પ સર્વ પ્રથમ હુઆ । અનાય-જનોં સે પ્રજા કી રક્ષા કે લિયે ક્ષત્રિય જન અપને ૨ હાથોં મેં હથિયાર લિયે રહેં—હમકે લિયે પ્રસુ ને લોહ શિલ્પ કા ઉપદેશ દિયા, ચિત્રાજ્ઞજાત કે કલ્પવૃક્ષ જવ કાલસ્વભાવ કે કારણ નષ્ટ હો ગયે—તવ પ્રસુ ને ચિત્રશિલ્પ કા આદેશ દિયા, વલ્લોં કો દેને વાલે કલ્પવૃક્ષોં કે નષ્ટ હો જાને પર પ્રસુ ને તન્તુવાય શિલ્પ કા ઉપદેશ દિયા । પહિલે યુગલિક નરોં કે રોમ નશ્ચ નહીં બઢતે યે પર અવ કાલ કે પ્રભાવ સે બઢે હુઅ નશ્ચ રોમ વાલે યુગલિક નરોં કો દેશકર અને નશ્ચ રોમો સે અનેકા વ્યાઘાત ન હો જાય એસા વિચાર કર દયા સે જિનકા અન્ત કરણ આર્દ્ર હો રહા હૈ એસે ભગવાન્ ને નાપિત શિલ્પકા ઉપદેશ દિયા ।

શકા—કર્મનષ્ટ કરને કે લિયે હી અવશિષ્ટ સત્કર્મવાલે ભગવાન્ અર્હન્ત વ્યાધિ કે પ્રતીકાર કે લિયે ઔષધિસેવન કે સમાન સ્ત્રી આદિરૂપ પરિગ્રહ કો સ્વીકાર કરતે હૈં । ઇતરજન એસા નહીં કરને, અતઃ નિરવધકર્મ મેં હી રુચિવાલે ભગવાન્ સાવધક્રિયા કે ઉપદેશ મેં કૈસે પ્રવૃત્ત હુઅ :

થઇને તે ઔષધીઓને પકવવા માટે પકવવામાં સાધન રૂપ પાત્રોને બનાવવાની શિલ્પકલાને ઉપદેશ કર્યો એમાં સૌથી પહેલાં ઘટ નિર્માણરૂપ શિલ્પકલાને ઉપદેશ કર્યો— એથી જ ઘટ મૂલ શિલ્પ સર્વ પ્રથમ અસ્તિત્વમાં આવ્યું અનાયૈ લોકોથી પ્રજાની રક્ષા કરવા માટે ક્ષત્રિયો પોત પોતાના હાથોમાં હથિયારો રાખવા લાગ્યા, એના માટે પ્રભુએ લોહ શિલ્પને ઉપદેશ કર્યો ચિત્રાંગ જાતના કલ્પવૃક્ષો જ્યારે કાલ સ્વભાવના કારણે નાશ પામ્યા ત્યારે પ્રભુએ ચિત્ર શિલ્પને ઉપદેશ કર્યો વલ્લો આપનારા કલ્પવૃક્ષો જ્યારે નાશ પામ્યા ત્યારે પ્રભુએ તન્તુવાય શિલ્પને ઉપદેશ કર્યો પહેલાં યુગલિક નરોના રોમ—નખ વધતા ન હતાં. પણ પછી કાળના પ્રભાવથી યુગલિક નરોના રોમ—નખો વધવા લાગ્યા ત્યારે તે નખ—રોમો થી તેમને વ્યાઘાત થાય નહિ તેમ વિચારીને દયાર્દ્રાન્તઃકરણ ભગવાને નાપિત શિલ્પને ઉપદેશ કર્યો.

શકા—કર્મ નષ્ટ કરવા માટે જ અવશિષ્ટ સત્કર્મ વાળા ભગવાન અર્હન્ત વ્યાધિના પ્રતિકાર માટે ઔષધિ સેવન કરવામાં આવે છે. તેમ સ્ત્રી આદિ રૂપ પરિગ્રહને સ્વીકારે છે. ઇતર લોકો આવું કરતા નથી. એથી નિરવધ કર્મમાં જ રુચિ ધરાવનારા

મવાન્ સાવધક્રિયોપદેશે પ્રવૃત્તઃ : ' ઇતિ ચેત્, આહ કાલપ્રભાવેણ વૃત્તિહીનેષુ દીનેષુ જનેષુ સત્સુ તદ્દુર્દશામાલોક્ય કરુણરસસમાપ્ત્યુત્ત્વાન્તો ભગવાન્ વૃત્તિહીના એતે ચૌર્યા-દિ દુર્વૃત્તિમાજો મા ભૂવન્' ઇતિ વિચાર્ય તેપાં જીવિકાસાધનભૂતા કલાઃ મમુપદિદેએતિ અવશિષ્ટસત્કર્મપ્રભાવેણ ભગવતામર્હતાં સ્ત્ર્યાદિ પરિગ્રહ સ્વીકરણમિવ ભગવત આદિજિ-નસ્ય કલોપદેશકત્વમપિ વોધ્યમિતિ । એવં ભગવતો રાજ્યધર્મપ્રવર્તકત્વં દુષ્ટનિગ્રહાય શિષ્ટપરિપાલનાય વિજ્ઞેયમ્ । અરાજકત્વે હિ માત્સ્યન્યાયપ્રવૃત્ત્યા લોકે વ્યવસ્થાયા નિતરામ-ભાવ' પ્રસજ્યેત્, તતશ્ચ સર્વે દુર્વૃત્તિમાજ એવ મવેયુર્ગિતિ સર્વેપાં દુર્ગતિ રેવ સ્યાત્ ઇતિ દુર્ગતિમાજો મા ભૂવન્ મનુજા ઇતિ વિચાર્યેવ ભગવતા આદિજિનેન રાજધર્મોઽપિ પ્રવ-ર્તિતઃ । કિં ચ સર્વેઽપિ આદિજિના-પ્રથમ કેવલિનઃ રાજધર્મમપિ પ્રવર્તયન્તીતિ જીતવ્ય-

તો હસકા ઉત્તર એસા હૈ કિ કાલ કે પ્રભાવ સે વૃત્તિ હીન હુએ દીનજનો કે હો જાને પર ઉનકી દુર્દશા કે દેહ્ને સે જિનકા અન્ત કરણ કરુણા રસ કે પ્રવાહ સે મર ગયા હૈ એસે અર્હન્ત ભગવન્ત ને યહ સોચકર કિ વૃત્તિ સે વિહીન હુએ યે જન ચૌર્યાદિરૂપ દુર્વૃત્તિવાલે ન બન જાવે' ઉનકી જીવિકા કી સાધનભૂત કલાઓ કા ઉપદેશ દિયા । અવશિષ્ટ સત્કર્મકે પ્રભાવ સે ભગવન્ત શ્રી અર્હન્ત પ્રમુ જિસ પ્રકાર જી આદિરૂપ પરિગ્રહ કો સ્વીકાર કરતે હૈં ડસી પ્રકાર સે મગવાન્ આદિજિનકા યહ કલા કા ઉપદેશ મી સમક્ષના ચાહિયે । હસ નરહ મગવાન્ મેં રાજધર્મ કી પ્રવર્તકતા દુષ્ટો કે નિગ્રહ કે લિયે ઔર શિષ્ટજનોં કે પાલન કે લિયે હુઈ જાનની ચાહિયે । લોક મેં અરાજક અવસ્થા મેં માત્સ્યન્યાયકી પ્રવૃત્તિ કે અનુસાર વ્યવસ્થા કા અત્યન્ત અમાવ હો જાતા હૈ । હસ હાલત મેં સમસ્ત જન દુર્વૃત્તિ વાલે હો જાતે હૈં । અતઃ' હન જીવોં કો દુર્ગતિ કા પાત્ર ન હોના પડે એસા વિચાર કરકે મગવાન્ આદિ જિન ને રાજધર્મ કી મી પ્રવૃત્તિ કી, કિંચ-સમસ્ત આદિ જિન રાજધર્મ કી મી પ્રવૃત્તિ કરતે હૈં એસા જીત વ્યવહાર હૈ । હસી લિયે હન આદિ જિન ને મી રાજધર્મ પ્રવર્તિત કિયા ।

ભગવાન્ સાવધ ક્રિયાના ઉપદેશમા કેવી રીતે પ્રવૃત્ત થયા ? તેા પ્રશ્નોના જવાબ-આ પ્રમાણે છે કે કાળના પ્રભાવથી વૃત્તિહીન થયેલા હીન લોકોને જોઈને, તેમની દુર્દશા જોઈને જેમનું અન્તઃકરણ કરુણા પ્રવાહથી તરબોળ થઈ ગયું છે, તેવા અર્હન્ત ભગવાને વૃત્તિહીન લોકો ચૌર્યાદિ રૂપ દુર્વૃત્તિવાળા થઈ ન જાય આમ વિચારીને તેમની જીવિકાના સાધનના રૂપમાં કલાઓનો ઉપદેશ કર્યો અવશિષ્ટ સત્કર્મના પ્રભાવથી ભગવન્ત શ્રી અર્હન્ત પ્રભુ જે રીતે સ્ત્રી આદિરૂપ પરિગ્રહને સ્વીકારે છે, તે રીતે ભગવાન આદિ જિનનો આ કલાનો ઉપદેશ પણ સમજવો જોઈએ આ પ્રમાણે ભગવાનમાં રાજ ધર્મની પ્રવર્તકતા દુષ્ટોના નિગ્રહ માટે અને શિષ્ટ જનોના પાલન માટે છે આમ સમજવું જોઈએ. લોકમા અરાજક અનસ્થામાં માત્સ્ય-ન્યાયની પ્રવૃત્તિ મુજબ વ્યવસ્થાનો જ્યારે અત્યન્તામાવ થઈ જાય છે ત્યારે સર્વ લોકો દુર્વૃત્તિ-વાળા બની જાય છે એથી જોવો અરાજ રસ્તે જાય નહિ, તેમ વિચાર કરીને ભગવાન આદિ જિને રાજ ધર્મની પ્રવર્તના કરી કિંચ, સમસ્ત આદિ જિનો રાજ ધર્મની પ્રવૃત્તિ કરે છે, એવો જીત વ્યવહાર છે. એથી જ આ ભગવાન આદિ જિને પણ રાજધર્મની પ્રવર્તના કરી.

વહારઃ, અતઃશ્ચાપિ ભગવતા રાજધર્મઃ પ્રવર્તિત ઇતિ । પ્રકૃતમનુસારમઃ—તથા, ‘ઉવદિસિત્તા’ ઉપદિશ્ય=દ્વાસપ્તિ પુરુષસ્ય કલાઃ ચતુષ્પદિ મહિલાગુણાન શિલ્પશતાનિ ચ પ્રજાભ્ય ઉપદિશ્ય ‘પુત્તસયં’ પુત્રશતં=ભરત બાહુબલિપ્રમુખાન્ પુત્રાન્ ‘રજ્જસપ્’ રાજ્યશતે=કોસ-લાતક્ષશિલાદિપુ શતસંખ્યકેપુ ‘રાજ્યેપુ’ ‘અભિસિચિદ્’ અભિપિશ્ચતિ, ‘અભિસિચિત્તા’ અભિ-પિચ્ય ‘તેસીઈ પુન્વસયહસ્સાઈ’ ત્ર્યશીર્તિ પૂર્વશતસહસ્રાણિ=વિંશતિપૂર્વલક્ષાણિ કુમારવા-સસ્ય ત્રિપદિ પૂર્વલક્ષાણિ મહારાજવાસસ્યેતિ ત્ર્યશીર્તિલક્ષપૂર્વાણિ ‘મહારાયવાસમજ્ઞે વસઈ’ મહારાજવાસમધ્યે વસતિ । યદ્યપિ ભગવતો મહારાજવાસસ્ત્ર્યશીર્તિ લક્ષપૂર્વાણિ ન ભવન્તિ, કિન્તુ કુમારવાસમહારાજવાસયોઃ સમ્મલિતાનિ તાવન્તિ, પૂર્વાણિ ભવન્તિ, તથાપિ કુમાર-વાસાપેક્ષયા મહારાજવાસસ્ય પ્રાત્યુર્યેણ મહારાજવાસ સમ્બન્ધિત્વેનૈવ ત્ર્યશીર્તિલક્ષપૂર્વાણિ વિવ-ક્ષિતાનીતિ બોધ્યમ્ । इत्थं કુમારવાસમહારાજવાસયોઃ ત્ર્યશીર્તિલક્ષપૂર્વાણિ ‘વસિત્તા’ ઉપિત્વા ‘જે સે’ યઃ સઃ પ્રસિદ્ધો ‘ગિમ્હાણ’ ગ્રીષ્માણાં=ગ્રીષ્મઋતુઃ ‘પદમે માસે’ પ્રથમે=આઘે માસે ચૈત્રમાસે ‘પદમે પક્ષે ચિત્તબહુલે’ પ્રથમઃ પક્ષઃ ચૈત્રવહુલઃ—ચૈત્રકૃષ્ણપક્ષઃ, ‘તસ્સ ણં ચિત્ત બહુલસ્સ ણવમી પક્ષેણ’ તસ્ય સલ્લુ ચૈત્રવહુલસ્ય નવમી પક્ષે=નવમ્યાં તિથૌ ‘દિવસસ્સ’

इस तरह से प्रभु ने ७२ पुरुषों की कलाओं का ६४ स्त्रियों की कलाओं का और शिल्प-शत का प्रजाजनों के लिये “उवदिसित्ता” उपदेश देकर फिर उन्होंने “पुत्तसयं रज्जसप अमि-सिचिद्” भरत, बाहुबलि आदि अपने शतसंख्यक पुत्रों को कोसला, तक्षशिला आदि १०० एक सौ राज्यों के ऊपर अभिषेक किया, “अभिसिचित्ता” अभिषेक करके “तेसिई पुन्वसयसह-स्साई महारायवासमज्ज्ञे वसई” इस तरह ८३ लाख पूर्व—कुमार काल के २० लाख पूर्व और महाराज पद के ६३ लाख पूर्व तक के गृहस्थावस्था में रहे यहा इन दोनों पदों के कालको मिलाकर ८३ लाख पूर्व उन्होंने गृहस्थावस्था में अपना समय समाप्त किया—ऐसा जानना चाहिये इस तरह ८३ लाख पूर्व तक वे गृहस्था वस्थारूप महाराज पद में रहकर फिर “जे से गिम्हाण पदमे मासे पक्खे चित्तबहुले, तस्स णं चित्त बहुलस्स णवमी पक्खेणं दिवसस्स पण्णिमे मागे” ग्रीष्मऋतु के प्रथममास में चैत्रमास में कृष्णपक्ष में ९ नौमी तिथि में दिवस के पश्चिम

આ પ્રમાણે પ્રભુએ ૭૨ ઠલાઓનો ૬૪સ્ત્રીઓની ઠલાઓના અને શિલ્પશતોને પ્રજાજનો માટે ‘ઉવદિસિત્તા’ ઉપદેશ કરીને તેમણે ‘પુત્તસયં’ રજ્જસપ અમિસિચિદ્’ ભરત બાહુબલિ વગેરે પોતાના સોપુત્રોને કોસલા તક્ષશિલા વગેરે ૧૦૦ એકસો રાજ્યો પર અભિષેક કર્યો છે. અભિસિચિત્તા’ અભિષેક કરીને ‘તેસિઈ’ પુન્વસયસહસ્સાઈ મહારાજવાસમજ્ઞે વસઈ’ આ રીતે ૮૩ લાખ પૂર્વ—કુમાર કાળના ૨૦ લાખ પૂર્વ અને મહારાજ પદના ૬૩ લાખ પૂર્વ સુધી ગૃહસ્થાવસ્થામાં રહ્યા અહીં આ આ બન્ને પદોના કાળને મેળવવાથી ૮૩ લાખ પૂર્વ થાય છે તેમ સમજવું’ એ પ્રમાણે ૮૩ લાખ પૂર્વ તેઓ ગૃહસ્થાવસ્થા ૩૫ મહારાજપદમાં રહીને તે પછી “જે સે ગિમ્હાણ પદમે માસે પક્ષે ચિત્તબહુલે તસ્સ ણં ચિત્તબહુલસ્સ નવમી પક્ષે ણં દિવસસ્સ પણ્ણિમે માગે” ગ્રીષ્મઋતુના પ્રથમ મહીના એટલેકે ચૈત્ર માસમાં કૃષ્ણ પક્ષમાં નવમી તિથિમાં દિવસના પાછલા ભાગમાં ‘વસિત્તા દિવસ’ રજત—ચાંદીને ધોતીને

दिवसस्य 'पच्छिमे भागे' पश्चिमे भागे-उत्तार्द्ध भागे 'हिरण्यं' हिरण्य=रजतम् अघटित सुवर्णं वा 'चइत्ता' त्यक्त्वा परित्यज्य, सुवर्णं सुवर्णम्=अघटितं घटितं वा सुवर्ण 'चइत्ता' त्यक्त्वा 'कोसं' कोशं=भाण्डागारं 'कोष्ठागारं' कोष्ठागारं=धान्यागारं च 'चइत्ता' त्यक्त्वा, 'बलं' बलं=सैन्यं 'चइत्ता' त्यक्त्वा, 'वाहणं' वाहनम्=अश्वादिक 'चइत्ता' त्यक्त्वा 'पुरं' पुरं=नगर 'चइत्ता' त्यक्त्वा 'अंते उरं चइत्ता' अन्तः पुरं त्यक्त्वा, तथा 'विउल धणकणगरयणमणि-मोत्तियसंखसिलप्पवालरत्तरयणसतसारसावइज्जं' विपुलधनकनकरत्नमणिमौक्तिकशह्वशि-लाप्रवालरत्तरत्नसत्सारस्वापतेय-विपुल=प्रचुरं धनं-गवादिकं, कनकं-सुवर्णं, रत्नं-राजपट्टादिरूपाः, शिलाः=राजपट्टादिरूपाः, प्रवालानि=विद्रुमाणि, रत्नरत्नानि=पद्मरागाः, रत्नग्रहणेनैव पद्मरागस्यापि ग्रहणे सिद्धे पुनः रत्नरत्नग्रहणं तस्य प्राधान्यख्यापनार्थम्, एषां इन्द्रः, एतद्रूप यत् सत्सारस्वापतेयं-सन्=विद्यमानः सारो यस्मिंस्तत् सत्सार तादृशं यत् स्वापतेयं=द्रव्यं तच्च 'चइत्ता' त्यक्त्वा, हिरण्यादिकं पूर्वोक्तं सर्वं ममत्वपरित्यागेन परित्य-ज्येति भावः, तथा 'विच्छइत्ता' विच्छर्द्धं ममत्वाकरणेन दूरीकृत्य, 'विगोवइत्ता' विगो-प्य-जुगुप्सितमेतद् हिरण्यादिकमिति विनिन्द्य, तथा 'दाइयाणं' दायिकानां दायदानां 'दायं परिभाएत्ता' परिभाज्य एकैकशो वित्तोर्यं, तदा याचकानामभावाच्च दायिकग्रहणम्,

भाग में "चइत्ता हिरण्यं" रजत-चांदी को छोड़कर "चइत्ता-सुवर्णं" सुवर्ण को छोड़कर "चइत्ता कोसं कोष्ठागारं" कोश-भाण्डागार को छोड़कर, कोष्ठागार-धान्यमहार को छोड़कर "चइत्ता बलं" बलसैन्य को छोड़कर "चइत्ता वाहणं" अश्वादिक वाहनो को छोड़कर "चइत्ता पुरं" पुर-नगर छोड़कर "चइत्ता अंतेउरं" अन्तः पुर-रणवास को छोड़कर "चइत्ता विउल धणकणग-रयणमणिमोत्तिय सखसिलापवालरत्तरयणसतसारसावइज्जं" प्रचुर गवादि रूप धन को छोड़कर, कनक-सुवर्ण को, कर्केतन आदि रत्नको, 'सूर्यकान्तादिरूप मणियों को मुक्ताफलों को शह्वों को, राजपट्टादिरूप शिलाओं को, प्रवालों को, पद्मराग आदि रूप रत्न रत्नों को, इस प्रकार से सब सत्सारमूतद्रव्य को छोड़कर इन सबसे अपना ममत्वभाव हटाकर "विच्छइत्ता" ये सब जुगुप्सित हैं इस प्रकार से इन्हें "विगोवइत्ता" निन्दनीय समझकर और उस समय याचक-

'चइत्ता सुवर्णं' सेनाने छोडीने 'चइत्ता कोसं कोष्ठागारं' धान्य भाण्डागारने छोडीने अट्ठके धान्य बरारने छोडीने 'चइत्ता बलं' बल-सैन्यने छोडीने 'चइत्ता वाहणं' अश्वादिकवाहनाने छोडीने 'चइत्ता पुरं' पुर-नगरने छोडीने 'चइत्ता अंतेउरं' अन्तःपुर-रणवासने छोडीने 'चइत्ता विउलधणकणगरयणमणिमोत्तियसंखसिलापवालरत्तरयणसतसारसावइज्जं' प्रचुर गवादिद्रव्य धनने त्यज्जने कनक-सुवर्णं, कर्केतन विगेशे रत्नोने सूर्यकान्तादि मल्लियोने अकटाइणोने शोभोने कनक-सेनाने, राजपट्टादिद्रव्य शिलाओने, प्रवालोंने, पद्मराग विगेशे रत्न रत्नोने आ रीते अथा च सत्सार इय द्रव्योने छोडीने ओ अधाशी पोतानो ममत्व-भाव हटावीने 'विच्छइत्ता' आ अथा जुगुप्सित छे ओ अभाओ तेभने 'विगोवइत्ता' निन्दनीय समझने अने ते अंभे याचकोने अभाव होवाथी 'दायं दाइयाणं परिभाएत्ता'

તેડપિ નિર્મમા ભગવત્પ્રેરિતાઃ સન્ત ઉપહારરૂપેણૈવ તં જગૃહુઃ । જિનાનામયમેવ જીતકલ્પો
 યદ્ ગ્રહીતૃણામ્ ઇચ્છાવધિ દાતવ્યમિતિ । નન્તુ જિનસ્ય યાચકેચ્છાવધિદાનં યદિ જીતં, તર્હિ
 સામ્પ્રતિક એક એવ મહેચ્છો યાચકઃ એકદિનદેયં સવત્સરદેય વા ગ્રહીતુમિચ્છેત્ ? ઇતિ
 ચેત્ આહ, પ્રશ્ન પ્રભાવેણ તેષાં તથાવિધેચ્છાયા અસંભવાદિતિ । તથા—‘સુદસણાણ’ સુદર્શ-
 નાયાં=સુદર્શના નામ્ન્યા ‘સીયાણ’ શિવિકાયાં સમારૂઢઃ । ‘સમારૂઢ’ ઇત્યધ્યાહાર્યમ્ । તથા
 ‘સદેવ મણુયાસુરાણ’ સદેવ મનુજાસુરયા—મનુજાશ્ચ અસુરાશ્ચેતિ—મનુજાસુરાઃ દેવૈઃ સહિતા
 મનુજાસુરા યસ્યા સા તથા તયા ‘પરિસાણ’ પરિષદા ‘સમણુગમ્મમાણમગ્ગે’ સમણુગમ્ય-
 માન માર્ગોડ્ભૂદિત્યધ્યાહાર્યમ્ । તત્ત એવં વિધ તં ભગવન્તં ‘સંસ્થિયચક્કિય ણગલિયમુહ-

જનો કે અમાવ હોને સે “દાયં દાહ્યાણ પરિભાષ્તા” દાયાદોં મેં ઇન્હેં વિભક્તકર “સુદંસણાણ
 સીયાણ” વે પ્રશ્ન સુદર્શના નામકે રમણીય શિવિકા મેં આરૂઢ હો ગયે. જિસ સમય પ્રશ્ન ને દાયાદોં
 કો પૂર્વોક્ત દ્રવ્ય વિભક્ત કર દિયા થા ઉપ સમય ઉન દાયાદોં ને નિર્મમ હોકર—ભગવાન્ કે
 દ્વારા પ્રેરિત હોકર—ઉપહારરૂપ સે હી ઉસ વિભક્ત દ્રવ્ય કો ગ્રહણ કિયા થા જિનો કા યહી
 આચાર હૈ જીતકલ્પ હૈ કિ વે ગૃહીતા જનો કો ઉનકી ઇચ્છા કે અનુસાર હી દાન દેતે હૈ ।

શંકા—યદિ યાચક જનોં કો ઉનકી ઇચ્છા કે અનુસાર હી દાન દેના જિતેન્દ્રદેવ કા
 આચાર હૈ તો ઉસ સમય કા એક મહત્તી ઇચ્છા વાલા યાચક એક દિન મેં દેને યોગ્ય યા
 સવત્સર મેં દેને યોગ્ય દાન કો ગ્રહણ કરને કી ઇચ્છા ક્યોં નહીં કરતા હૈ ? તો ઇસકા સમા-
 ધાન યહી હૈ કિ પ્રશ્ન કે દિવ્ય પ્રભાવ સે યાચક જનોં મેં એસી ઇચ્છા નહીં હોતી હૈ કિ એક દિન મેં
 દિયે જાને યોગ્ય દાન યા સવત્સર મેં દિયે જાને યોગ્ય દાનકો મૈ હી પૂરે રૂપ સે લે હૈ ।
 સુદર્શના શિવિકા પર આરૂઢ હોકર જબ પ્રશ્ન ચલે તો ઉસ સમય “સદેવમણુયાસુરાણ પરિ-
 સાણ સમણુગમ્મમાણમગ્ગે” ઉનકે સાથ સાથ મનુષ્યોં કો પરિષદા કિ જિસમેં દેવ ઔર અસુર

હાથાદોમાં એને વહેંચી હઈ ને ‘સુદંસણાણ સીયાણ’ સુદર્શના નામની સુન્દર શિબિકામાં તેઓ
 આરૂઢ થયા જે સમયે પ્રભુએ હાથાદોમાં પૂર્વોક્ત દ્રવ્ય વહેંચી દીધું એ સમયે એ હાથાદો એ
 નિર્મમ મમત્વ રહિત થઈને ભગવાન દ્વારા પ્રેરાઈને ૮૩ પહારશ્વે એ વહેંચેલા દ્રવ્યને
 સ્વીકાર્યું” એનેા. એ જ આચાર છે : છત કદપ છે. કે તેઓ લેનાર જનેાને તેમની ઇચ્છા
 પ્રમાણે જ દાન હે.

શંકા—એ યાચક જનેાને તેમની ઇચ્છા પ્રમાણે જ દાન આપણ એવો એનેન્દ્રદેવનેા
 આચાર છે, તો તે સમયનેા એક મહત્તી ઇચ્છા ધરાવનાર યાચક એક એક દિવસ આપવા
 યોગ્ય અથવા એક વર્ષમાં આપવા યોગ્ય હાનને એક સાથે જ ગ્રહણ કરવાની ઇચ્છા કેમ
 કરતો નથી ? આ શંકાનુ સમાધાન એણુ છે કે પ્રભુના દિવ્ય પ્રભાવથી યાચક જનેામાં એવી
 ઇચ્છા જ થતી નથી કે એક દિવસમાં આપવામાં આપનાર દાન અથવા એક વર્ષમાં
 આપવામાં આવનાર દાનને હુ પૂરે પુરે લઈ લઉં

સુદર્શના શિબિકામાં એસીને જ્યારે પ્રભુ આદ્યા તો તે સમયે ‘સદેવમણુયાસુરાણ
 પરિસાણ સમણુગમ્મમાણમગ્ગે’ તેમની સાથે મનુષ્યોની પરિષદા કે જેમાં દેવો અને

मंगलियपूसमाणववद्धमाणग आइक्खगलसमखधंटियगणेहिं' शाङ्खिकं चाक्रिकलाङ्गलिकमु-
खमङ्गलिक पुण्यमाणववर्धमानकाख्यायक लद्धमद्धघाण्टिकगणाः-तत्र शाङ्खिकाः-शङ्खवा-
दकाः, चक्रिकाः-चक्रभ्रामकाः, लाङ्गलिकाः-कण्ठावलम्बितस्वर्णादिमयहलधारिणो भट्ट-
विशेषाः, मुखमङ्गलिकाः-चाटुकारिणः, पुण्यमाणवाः मागधाः, वर्धमानकाः-स्कन्धारो-
पितनराः, आख्यायकाः-कथाकारकाः, लद्धाः-वंशाग्रमधिरुख क्रोडाकारिण, मद्धाः-चि-
त्रफलकहस्ताः, घण्टिकाः-घण्टावादकाः, तेषां गणाः-समूहाः 'ताहिं' ताभिः-प्रसिद्धाभिः
'इट्टाहिं' इष्टाभिः अभिलपणीयाभिः, 'कंताहिं' कान्ताभिः-क्रमनीयाभिः, 'पियाहिं'
प्रियाभिः-प्रियार्थमुक्तत्वात् हृदयाभिलपणीयाभिः, 'मणुण्णाहिं' मनोज्ञाभिः-सुन्दरोभिः
अत एव 'मणामाहिं' मन आमाभिः-मनोगताभिः, 'उरालाहिं' उदारार्थभिः-उत्कृष्ट शब्दार्थ-
युक्ताभिः, 'कल्लाणाहिं' कल्याणीभिः-कल्याणार्थयुक्ताभिः, 'सिवाहिं' शिवाभिः-निरुपद्र-
वाभिः-शब्दार्थदोषरहिताभिरित्यर्थः, 'धण्णाहिं' धन्याभिः-पुण्णाहिं पुण्याभिः, 'मग-
ल्लाहिं' मङ्गल्याभिः-मङ्गलकरीभिः, 'सस्सिरियाहिं' सश्रीकाभिः-शब्दार्थालङ्कारयुक्तत्वात्

सम्मिलित ये चली, "सखिय" शाङ्खिकोने-शङ्ख बनाने वालों ने, "चक्रिय" चक्रिकोने चक्र
को घुमाने वालों ने "णगलिय" लाङ्गलिको ने-स्वर्ण निर्मित हलको कण्ठों में लटकाये हुए मनुष्यों
ने, "मुहमंगलिय" मुखमङ्गलिको ने चाटुकारियों ने, "पूसमाणव" पुष्पमाणवो ने-मागधो ने,
"वद्धमाणग" वर्धमानको ने अपने स्कन्धो पर जिन्हो ने पुरुषो को चढ़ा रखा है ऐसे मनुष्यों
ने "आइक्खग" आख्यायकों ने-कथा कारकजनों ने "लंख" लद्धो ने-वंश पर चढ़कर क्रीडा
करने वाले मनुष्यों ने, "मस" मद्धोने जिनके हाथों में चित्रफलक है ऐसे मनुष्यों ने एव "धं-
टियगणेहिं" घाण्टिको ने घण्टा बनाने वालों ने, "ताहि इट्टाहिं कंताहि पियाहि मणुण्णाहिं"
मणामाहि उरालाहि कल्लाणाहि सिवाहि धन्नाहि मगल्लाहि सस्सिरियाहि हिययगमणिज्जाहि हियय-
पल्हायणिज्जाहि कण्णमणिव्वुहकराहि अपुणरुत्ताहि अट्टसइयाहि वग्गहि अणवरय अभिणंदता'
प्रसिद्ध, इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ, मनभावनी, उत्कृष्ट शब्दार्थयुक्त, कल्याणार्थसहित, निरुपद्रव-

साथे होता ते जथा साथे आख्या 'सखिया' श षिडेओ ओटवेडे श ष वगाडनाराओओ
'चक्रिय' चक्रिकेओ ओटवेडे चक्रने इरववावाणाओओ 'णगलिय' लांगलिकेओ सोनाना भनेदा
डणने डे डटकावेदा मनुष्येओ 'मुहमंगलिया' मुख मंगलिकेओ-आटुकारीओओ.
'पूसमाणव' पुष्पमाणवेओ-विड्डावल्लिनु' वल्लुन करनार भागधेओ 'वद्धमाणग' वर्धमानकेओ-
भाधे पर पुड्डेने जेसारनाओओ 'आइक्खग' आख्यायकेओ-कथा कारकेओ 'लख'
ल जेओओ ओटवे वांस पर यडीने जेडकर नाराओओ 'मस' म जेओओ डे जेमना डेथेमा चित्र-
पट डेथे तेवा मनुष्येओ 'धंटियगणेहिं' घ टावगाड नाराओओ 'ताहिं इट्टाहिं कंताहि पियाहिं'
मणुण्णाहि मणामाहि उरालाहि कल्लाणाहि सिवाहि धन्नाहि मगल्लाहि सस्सिरियाहि
हिययगमणिज्जाहि हिययपल्हावणिज्जाहि कण्णमणिव्वुहकराहि अपुणरुत्ताहि अट्ट
सइयाहि वग्गहि अणवरयं अभिणंदत्ताय' प्रसिद्ध, इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ, मनभावनी,
उत्कृष्ट, शब्दार्थ युक्त, कल्याणार्थ सहित, निरुपद्रव शब्दार्थ दोष वगैरही, पवित्र,

शोभनाभिः अतएव 'ह्रिययगमणिज्जाहि' हृदयगमनीयाभिः—प्रसादगुणयुक्तत्वात् सुबोधाभिः, तथा 'ह्रिययपल्हायणिज्जाहि' हृदयप्रह्लादनीयाभिः—हृदयानन्दकरीभिः, अतएव 'कर्णमणिव्वुङ्कराहि' कर्णमनोनिर्वृतिरुरोभिः—कर्णमनः सुखकरीभिः तथा 'अपुणरुत्ताहि' अपुनरुक्ताभिः—पुनरुक्तिदोषरहिताभिः, तथा 'अद्वसड्याहि' अर्थशक्तिकाभिः—अर्थशतयुक्ताभिः, एतादृशीभिः 'वग्गुहि' वाग्भिः=वाणीभिः 'अणवरयं' अनवरतम्=अविच्छिन्नं—यथा स्यात्तथा 'अभिणंदंता' अभिनन्दयन्तः=सत्कुर्वन्तः 'अमियुणता' अभिष्टुवन्तः—प्रशंसन्तश्च 'एवं' एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण 'वयासी' अवादिषुः=उक्तवन्तः । यदुक्तवन्तस्तदाह—'जय जय' इत्यादि । 'नदा' हे नन्द ! नन्दतीति नन्दः, तत्संबोधने, हे समृद्धिशालिन्, यद्वा नन्दयतीति नन्दः, तत्संबोधने, हे आनन्द दायिन् 'जय जय' जय जय=नितरां जयशाली भव 'भद्दा' हे भद्र=हे कल्याण शालिन् ! 'जय जय' जय जय=नितरां जयशाली भव । तथा 'धम्मेण' धर्मेण=साधन-भूतेन धर्मेण 'परीसहोवसग्गाण' परीषहोपसर्गाणां=देवमनुष्य तिर्यक्कृतपरीषहोपसर्गोभ्यः, आपर्त्वात् पठवम्यर्थे षष्ठी, 'अमीए' अमीतो=भयरहितो भव, तथा 'भयमेरवाणं' भय भैरवाणां—भयावहा ये भैरवाः=घोराः प्राणिनस्ते भयभैरवास्तेषां भयङ्करप्राणिकृतोपद्रवाणां—'खंतिखमे' क्षान्तिक्षमः=क्षमापूर्वकं सहनकारी भव, 'धम्मे' धर्मे=चरित्रधर्मावाधने

शब्दार्थ दोष रहित, पवित्र, मङ्गलकारी, शब्दालंकार और अर्थालंकार से युक्त होने के कारण सश्रीक, अतएव हृदयगमनीय, हृदयप्रह्लादनीय, कर्ण और मन को आनन्द दायक, अपुनरुक्त सैकड़ों अर्थों वाली, ऐसी वाणियों से बार बार प्रभु का अभिनन्दन—सत्कार किया, उनकी प्रशंसा को फिर उन्होंने "एवं वयासी" इस प्रकार से कहना प्रारम्भ किया "जय जय णंदा" हे नन्द समृद्धिशालिन् अथवा हे आनन्ददायिन् ! आप अत्यन्त जयशाली हो "जय जय भद्दा" हे भद्र कल्याणशालिन् आप अत्यन्त जयशाली हो "धम्मेण अमीए" साधनभूत धर्म के प्रभाव से देव, मनुष्य और तिर्यञ्चो द्वारा कृत परीषह और उपसर्गों से भयरहित-निडर हो, "परीसहोवसग्गाणं खंतिखमे" भयावह जो घोर प्राणी है—उनके द्वारा किये गये उपद्रवों के आप क्षान्तिक्षम—क्षमापूर्वक सहनकारी हो, "भय मेरवाणं धम्मे ते अविग्गं भवउ" चारित्र धर्म

मंगलकारी, शब्दालंकार और अर्थालंकारથી युक्त होवाથી सश्रीक, अतएव हृदय गमनीय, कान और मनने अत्यंत आनंदप्रद, अपुनरुक्त से कडे अर्थवाणी जेवी वाञ्छितेवाली बार-बार प्रभुनुं अखिन दन—सत्कार कथुं तेमनी प्रशंसाकरी ते पछी तेजोये 'एवं वयासी' 'आ प्रभावे कडेवाने। प्रारंभ कथे 'जय जय णंदा' हे नन्द—समृद्धिशालिन् अथवा हे आनंददायिन् आप अत्यंत जयशाली थाव, 'जय जय भद्दा' हे भद्र कल्याणशालिन् आप अत्यंत जय शाली भनो। 'धम्मेण अमीए' साधन भूत धर्मना प्रभावથી देव, मनुष्यो और तिर्यंजो द्वारा करवामां आवेल परीषह और उपसर्गोથી भय रहित—निडर भनो। 'परीसहोवसग्गाणं खंति खमे' भयकर जे घोर प्राणियो छे तेमनाथी करवामा आवेल उपद्रवोनां आप क्षान्तिक्षम—क्षमा पूर्वक सहन करनार भनो। 'भयमेरवाणं धम्मे ते अविग्गं भवउ' चात्रि

‘ते’ त=तव ‘अविघ्न’ अविघ्नं ‘भवतु’ भवतु=विघ्नाभावोऽस्तु ‘त्तिरुद्दु’ इति कृत्या-
इत्युच्चार्य पुनः पुनः ‘अभिणंदति’ अभिनन्दयन्ति-सत्कुर्वन्ति ‘अभिधुवन्ति’ अभिधुवन्ति-
प्रशंसन्ति च । ‘तएणं’ ततः तदनन्तरं खलु ‘उसमे अरहा’ ऋषभोऽर्हन् ‘कोसलिए’ कौशलिको
कोशलदेशोद्भवः ‘णयणमालासहस्सेहि’ नयनमालासहस्रैः-नागरिकजनानां नयनपङ्क्ति-
सहस्रैः ‘पिच्छिज्जमाणे पिच्छिज्जमाणे’ प्रेक्ष्यमाणः प्रेक्ष्यमाणः-भूयोभूयोऽवलोक्य-
मानः, ‘एवं जाव णिग्गच्छइ’ एवम्-अमुना प्रकारेण निर्गच्छति-इति पदं यावत्
पर्यन्तं वाच्यम्, कस्मात् ? इत्याह ‘जहा उववाइए’ यथा औपपातिके-औपपातिक-
सूत्रे कूणिकराजनिर्गमनं तथैवात्रापि वक्तव्यम् । तत्कथं वक्तव्यमिति सूचयितुमाह-
‘जाव आउलबोलबहुलंणमं करंते विणीयाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ’ यावत्
आकुलबोलबहुलं नमः कुर्वन् विनीताया राजधान्या मध्यमध्येन निर्गच्छतीति । अत्र
यावत्पदेन ‘हिययमाला सहस्सेहि’ अभिणंदिज्जमाणे अभिणंदिज्जमाणे, मणोरहमालास-
हस्सेहि पिच्छिज्जमाणे पिच्छिज्जमाणे वयणमालासहस्सेहि अभिधुवमाणे अभिधुवमाणे,
कतिरुवसोहग्गुणेहि पत्थिज्जमाणे पत्थिज्जमाणे, दाहिण हत्थेण बहूणं णरणारी-

की आराधना में आपके लिये किसी भी प्रकार का विघ्न उपस्थित न हो, “त्तिरुद्दु अभिणंदति
य अभिधुवन्ति य” इस प्रकार से कहकर फिर से उन्होंने बारबार प्रभुको अभिनन्दन सत्कार किया
और प्रशंसा की, “तएणं उसमे अरहा कोसलिए णयणमालासहस्सेहि पिच्छिज्जमाणे पिच्छिज्जमाणे”
इसके बाद वे कौशलिक ऋषभ अर्हन्त नागरिक जनों की हजारों नयनपङ्क्तियों के बार बार
लक्ष्य होते हुए “एवं जाव णिग्गच्छइ जहा उववाइए” औपपातिक सूत्र वर्णित कूणिक राजा के
निर्गमन की तरह “विणीयाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ” विनीता राजधानी के
बीचों बीच के मार्ग से होते हुए निकले “जाव आउलबोलबहुलंणमं करंते” पाठ में जो
यह यावत्पद आया है उससे औपपातिक सूत्र का यह पाठ सगृहीत हुआ है-“हिययमालास-
हस्सेहि अभिणंदिज्जमाणे २ मणोरहमालासहस्सेहि पिच्छिज्जमाणे २, वयणमालासहस्सेहि अभिधु-
वमाणे २, कतिरुवसोहग्गुणेहि पत्थिज्जमाणे २, दाहिणहत्थेणं बहूणं णरणारीसहस्साणं अंजलि-

धर्मांनी आराधनामा आपने कौश पञ्च प्रकारसु’ विघ्न-भाषा न थाव ‘त्तिरुद्दु अभि-
णंदति य अभिधुवन्ति य’ आ प्रभाषे कहीने क्षीरिथी तेओओ वार वार प्रभुसु अभिन = कथु’,
सत्कार कथो अने प्रशंसा करी ‘तएणं उससे अरहा कोसलिए णयणमाला सहस्सेहि पिच्छिज्ज-
माणे पिच्छिज्जमाणे’ ते पछी ने कौशलिक ऋषभ अर्हन्त नागरिक जनोनि हल्लारे नेत्र पं कित-
ओथी वार वार लक्ष्य थता थता ‘एवं जाव णिग्गच्छइ जहा उववाइए’ औपपातिक सूत्रमें
वर्णित कूणिक राजाना निर्गमननी जेभ ‘विणीयाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ’ विनीता
नायक राजधानीना मध्यमा आवेदा मार्ग पर थधने पसार थथा “जाव आउल बोल बहुल णामे
करंते” पाठमा अही ने “यावत्” पद आवेद छे तेनांथी औपपातिक सूत्रने आ पाठ अं अ
हीत थथेद छे-“हिययमाला सहस्सेहि अभिणंदिज्जमाणे २, मणोरहमाला सहस्सेहि पिच्छि-
ज्जमाणे २, वयणमाला सहस्सेहि अभिधुवमाणे २ कतिरुवसोहग्गुणेहि पत्थिज्जमाणे २,

शोभनाभिः अतएव 'ह्रिययगमणिज्जाहि' हृदयगमनीयाभिः—प्रसादगुणयुक्तत्वात् सुबोधाभिः, तथा 'ह्रिययपल्लहायणिज्जाहि' हृदयप्रह्लादनीयाभिः—हृदयानन्दकरीभिः, अतएव 'कण्णमणिव्वुइकराहि' कर्णमनोनिर्वृतिरुरोभिः—कर्णमनः सुखकरीभिः तथा 'अपुणरुक्ताहि' अपुनरुक्ताभिः,—पुनरुक्तिदोषरहिताभिः, तथा 'अट्टसङ्गयाहि' अर्थशक्तिकाभिः—अर्थशतयुक्ताभिः, एतादृशीभिः 'वग्गूहि' वाग्भिः=वाणीभिः 'अणवरयं' अनवरतम्=अविच्छिन्नं—यथा स्यात्तथा 'अभिणंदंता' अभिनन्दयन्तः=सत्कुर्वन्तः 'अभियुणता' अभिण्णुवन्तः—प्रशंसन्तश्च 'एवं' एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण 'वयासी' अवादिपुः=उक्तवन्तः । यदुक्तवन्तस्तदाह—'जय जय' इत्यादि । 'नदा' हे नन्द ! नन्दतीति नन्दः, तत्संबोधने, हे समृद्धिशालिन्, यद्वा नन्दयतीति नन्दः, तत्संबोधने, हे आनन्द दायिन् 'जय जय' जय जय=नितरां जयशाली भव । 'भद्दा' हे भद्र=हे कल्याण शालिन् ! 'जय जय' जय जय=नितरां जयशाली भव । तथा 'धम्मेषण' धर्मेण=साधन-भूतेन धर्मेण 'परीसहोवसग्गाण' परीषहोपसर्गाणां=देशमनुष्य तिर्यक्कृतपरीषहोपसर्गोभ्यः, आर्पत्वात् पठवम्यर्थे षष्ठी, 'अभीए' अभीतो=भयरहितो भव, तथा 'भयमेरवाणं' भय भैरवाणां—भयावहा ये भैरवाः=घोराः प्राणिनस्ते भयभैरवास्तेषां भयङ्करप्राणिकृतोपद्रवाणां—'खत्तिस्समे' क्षान्तिक्षमः=क्षमापूर्वकं सहनकारी भव, 'धम्मेषे' धर्मे=चरित्रधर्माधारे

शब्दार्थ दोष रहित, पवित्र, मङ्गलकारी, शब्दालंकार और अर्थालंकार से युक्त होने के कारण सश्रीक, अतएव हृदयगमनीय, हृदयप्रह्लादनीय, कर्ण और मन को आनन्द दायक, अपुनरुक्त सैकड़ों अर्थों वाली, ऐसी वाणियों से बार बार प्रभु का अभिनन्दन-सत्कार किया, उनकी प्रशंसा को फिर उन्होंने "एवं वयासी" इस प्रकार से कहना प्रारम्भ किया "जय जय नदा" हे नन्द समृद्धिशालिन् अथवा हे आनन्ददायिन् ! आप अत्यन्त जयशाली हो "जय जय भद्दा" हे भद्र कल्याणशालिन् आप अत्यन्त जयशाली हो "धम्मेषण अभीए" साधनभूत धर्म के प्रभाव से देव, मनुष्य और तिर्यक्षो द्वारा कृत परीषह और उपसर्गों से भयरहित-निर्द्वेष हो, "परीसहोवसग्गाणं खत्तिस्समे" भयावह जो घोर प्राणी है—उनके द्वारा किये गये उपद्रवों के आप क्षान्तिक्षम—क्षमापूर्वक सहनकारी हो, "भय मेरवाणं धम्मेषे ते अविघ्णं भवउ" चारित्र धर्म

मङ्गलकारी, शब्दालंकार और अर्थालंकारी युक्त होवाली सश्रीक, अतएव हृदय गमनीय, कान और मनने अत्यन्त आनन्दप्रद, अपुनरुक्त सैकड़ों अर्थवाणी जैसी वाङ्मयिणी बार-बार प्रभु का अभिनन्दन-सत्कार करुं तेमनी प्रशंसाकारी ते पछी तेज्योये 'एवं वयासी' 'आ प्रभाये कडेवाने। प्रारब्ध कथे' 'जय जय नदा' हे नन्द—समृद्धिशालिन् अथवा हे आनन्ददायिन् आप अत्यन्त जयशाली थाव, 'जय जय भद्दा' हे भद्र कल्याणशालिन् आप अत्यन्त जय शाली भवो। 'धम्मेषण अभीए' साधन भूत धर्मना प्रभावधी देव, मनुष्यो और तिर्यक्षो द्वारा करवाभा आवेल परीषहू और उपसर्गोथी भय रहित-निर्द्वेष भवो। 'परिसहोवसग्गाणं खत्ति स्समे' भयंकर जे घोर प्राणियो छे तेमनाथी करवाभा आवेल उपद्रवोना आप क्षान्तिक्षम—क्षमा पूर्वक सहन करनार भवो। 'भयमेरवाणं धम्मेषे ते अविघ्णं' चारित्र

‘ते’ त=तव ‘अविग्धं’ अविघ्नं ‘भवउ’ भवतु=विघ्नाभावोऽस्तु ‘त्तिरुट्टु’ इति कृत्वा-
इत्युच्चार्य पुनः पुनः ‘अभिणदंति’ अभिनन्दयन्ति-सत्कुर्वन्ति ‘अभिधुवंति’ अभिप्लवन्ति-
प्रशंसन्ति च । ‘तएणं’ ततः तदनन्तरं खलु ‘उसमे अरहा’ ऋषभोऽहं ‘कोसलिण’ कौशलिको
कौशलदेशोद्भवः ‘णयणमालासहस्सेहि’ नयनमालासहस्रैः-नागरिकजनानां नयनपङ्क्ति-
सहस्रैः ‘पिच्छिज्जमाणे पिच्छिज्जमाणे’ प्रेक्ष्यमाणः प्रेक्ष्यमाणः-भूयोभूयोऽवलोक्य-
मानः, ‘एवं जाव णिगच्छइ’ एवम्-अमुना प्रकारेण निर्गच्छति-इति पदं यावत्
पर्यन्तं वाच्यम्, कस्मात् ? इत्याह ‘जहा उववाइए’ यथा औपपातिके-औपपातिरु-
सूत्रे कूणिकराजनिर्गमनं तथैवात्रापि वक्तव्यम् । तत्कथं वक्तव्यमिति सूचयितुमाह-
‘जाव आउलबोलबहुलंणमं करते विणीयाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं णिगच्छइ’ यावत्
आकुलबोलबहुलं नमः कुर्वन् विनीताया राजधान्या मध्यमध्येन निर्गच्छतीति । अत्र
यावत्पदेन ‘हिययमाला सहस्सेहि’ अभिणदिज्जमाणे अभिणदिज्जमाणे, मणोरहमालास-
हस्सेहि पिच्छिज्जमाणे पिच्छिज्जमाणे वयणमालासहस्सेहि अभिधुव्वमाणे अभिधुव्वमाणे,
कंतिरुवसोहग्गुणेहि पत्थिज्जमाणे पत्थिज्जमाणे, दाहिण हत्थेण बहुणं णरणारी-

की आराधना में आपके लिये किसी भी प्रकार का विघ्न उपस्थित न हो, “त्तिरुट्टु अभिणदंति
य अभिधुव्वति य” इस प्रकार से कहकर फिर से उन्होंने बारबार प्रभुको अभिनन्दन सत्कार किया
और प्रशंसा की, “तएण उसमे अरहा कोसलिण णयणमालासहस्सेहि पिच्छिज्जमाणे पिच्छिज्जमाणे”
इसके बाद वे कौशलिक ऋषभ अर्हन्त नगरिक जनों की हजारों नयनपङ्क्तियों के बार बार
लक्ष्य होते हुए “एव जाव णिगच्छइ जहा उववाइए” औपपातिक सूत्र वर्णित कूणिक राजा के
निर्गमन की तरह “विणीयाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं णिगच्छइ” विनीता राजधानी के
बीचों बीच के मार्ग से होते हुए निकले “जाव आउलबोलबहुलं णमं करते” पाठ में जो
यह यावत्पद आया है उससे औपपातिक सूत्र का यह पाठ संगृहीत हुआ है-“हिययमालास-
हस्सेहि अभिणदिज्जमाणे २ मणोरहमालासहस्सेहि पिच्छिज्जमाणे २, वयणमालासहस्सेहि अभिधु-
व्वमाणे २, कंतिरुवसोहग्गुणेहि पत्थिज्जमाणे २, दाहिणहत्थेणं बहुणं णरणारीसहस्साणं अज्जलि-

धर्म्मणी आराधनामा आपने कै। पद्य प्रकारनु विप्र-भाषा न थाव ‘त्तिरुट्टु अभि-
णदंति य अभिधुव्वति य’ आ प्रभाषे कहीने इरीथी तेजो। जे वार वार प्रभुनु अभिनन्दं कथुं,
सत्कार कथे अने प्रशंसा करी ‘तएण उसमे अरहा कोसलिण णयणमाला सहस्सेहि पिच्छिज्ज-
माणे पिच्छिज्जमाणे’ ते पछी ने कौशलिक ऋषभ अर्हन्त नागरिक जनोनि हजारे नेत्र पङ्क्ति-
जोथी वार वार लक्ष्य थता थता ‘एवं जाव णिगच्छइ जहा उववाइए’ ‘औपपातिक सूत्र’मे।
वर्णित इष्टिक राजाना निर्गमननी जेभ ‘विणीयाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं णिगच्छइ’ विनीता
नामक राजधानीना मध्यमा आवेदा मार्ग पर थधने पसार थथा “जाव आउल बोल बहुलं णमं
करते” पाठमा अही जे “यावत्” पद आवेद छे तेनांथी ‘औपपातिक सूत्र’ना आ पाठ संगृहीत
थथेद छे-“हिययमाला सहस्सेहि अभिणदिज्जमाणे २, मणोरहमाला सहस्सेहि पिच्छि-
ज्जमाणे २, वयणमाला सहस्सेहि अभिधुव्वमाणे २ कंतिरुवसोहग्गुणेहि पत्थिज्जमाणे २,

सहस्साणं अंजलिमालासहस्साइ पडिच्छमाणे पडिच्छमाणे मंजु मजुणा घोसेणं पडि
बुज्जमणे पडिबुज्जमाणे, भवणपंतिसहस्साइ समइच्छमाणे ममइच्छमाणे, ततीतलताल
तुडियगीयवाइयरवेणं महुरेण मणहरेणं जयसइधोसविसएणं मंजुमंजुणा घोसेणं य
पडिबुज्जमाणे अप्पडिबुज्जमाणे, कंदरगिरिविवरकुहरगिरिवरपासादुड्ढघणभवणदेवकुल-
सिंघाडगतिगचउक्कचच्चर आरामुज्जाणकाणणसमप्पवपदेसभागे पडिसुयासयसहस्स-
संकुल करेते हयहेसिय हत्थिगुलगुलाइय रहघणघणसइमीसएण महया कलरवेणं य
जणस्स महुरेण पूरयंते सुगंधवरकुसुमचुण्णउव्विद्धवासरेणुकविल नमं करेते कालागुरु
कुंदुरुक्कतुरुक्कधूवनिवहेणं जीवलोगमिव वासयंते समंतओ खुभियचक्कवाल पउरज-
णवालबुड्ढपमुइयतुरियपहाविय विउलाउलबोलबहुल' इतिसग्राह्यम् ।

छाया-स्वस्य-हृदयमालासहस्रैरभिनन्द्यमानः अभिनन्द्यमानः मनोरथमालासहस्रैर्विस्पृश्यमा-
नो विस्पृश्यमानः, वचनमालासहस्रैः अभिष्टूयमानः अभिष्टूयमानः, कान्ति रूप सोभाग्य-
गुणैः अभिष्टूयमानः अभिष्टूयमानः कान्तिरूपसौभाग्यगुणैः प्रार्थ्यमानः प्रार्थ्यमानः
दक्षिणहस्तेन बहूना नरनारी सहस्राणाम् अञ्जलिमालासहस्राणि प्रतीच्छन् प्रतीच्छन्,
मंजु मजुना घोषेण प्रतिबुध्यमानः प्रतिबुध्यमानः, भवनपङ्क्ति सहस्राणि समति
क्रामन् समतिक्रामन्, तन्त्री तलतालव्रुटितगीतवादितरवेण मधुरेण मनोहरेण जयशब्द-
घोषविशदेन मञ्जुमञ्जुना घोषेण च प्रतिबुध्यमानः प्रतिबुध्यमानः, कन्दरगिरि
विवरकुहरगिरिवरपासादोर्ध्वधनभवनदेवकुलशृङ्गाटकत्रिकचतुष्कचत्वरामोद्यानकानन सभा

मालासहस्साइ' पडिच्छमाणे २, मंजुमंजुणाघोसेण पडिबुज्जमाणे, भवणपतिसहस्साइ समइच्छ-
माणे २, तंतीतलतालतुडियगीयवाइयरवेण महुरेणं मणहरे ण जयसइधोसविसएणं मंजुमंजुणा-
घोसेणं पडिबुज्जमाणे अप्पडिबुज्जमाणे कंदरगिरि विवरकुहर गिरिवरपासादुड्ढघणभवणदेव कुल-
सिंघाडगतिग चउक्क चच्चर आरामुज्जाणकाणण समप्पवपदेसभागे पडिसुयासु सहस्ससंकुलं
करेते हयहेसिय हत्थिगुलगुलाइयरहघण घण सइमीसएण महया कलरवेणं य जणस्स महुरेणं पूरयते
सुगंधवरकुसुमवण्णउव्विद्धवासरेणुकविल नम करेते कालागुरुकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवनिवहेण जीवलो-
गमिव वासयते समंतओ खुभियचक्कवाल पउरजणवालबुड्ढपमुइयतुरियपहाविय विउलाउलबोलबहुल''

वाहिणहत्थेण बहूण नरनारी सहस्साणं अंजलि माला सहस्साइ पडिच्छमाणे २ मंजुमंजुणा
घोसेण पडिबुज्जमाणे, भवणपंति सहस्साइ समइच्छमाणे २, तंतीतलताल तुडियगीय वाइ
यरवेणं महुरेण मणहरेणं जयसइधोस विसएणं मंजुमंजुणा घोसेणं पडिबुज्जमाणे अप्पडि
बुज्ज णे कंदर गिरिविवर कुहर गिरिवर पासादुड्ढघणभवण देवकुल सिंघाडगतिगच-
उक्क चच्चर आरामुज्जाण काणण समप्पवप्प देसभागे पडिसुयासुय सहस्स संकुलं करे
ते हयहेसिय हत्थि गुलगुलाइय रहघणघणसइमीसएणं महयाकलरवेणं य जणस्स महुरेणं
पूरयते सुगन्धवर कुसुम चुण्ण उव्विद्धिवासरेणुकविलं नम करेते कालागुरु कुंदुरुक्क
तुरुक्क धूव निवहेण जीवलोगमिव वासयंते समंतओ खुभिय चक्कवाल पउरजण वाल
पमुइयतुरिय पहाविय विउलाउलबोलबहुलं " आ पाठने २५४८थं अमे औपपा-

પ્રપાદ્રદેશભાગાત્ પ્રતિશ્રુતશતસહસસંકુલાન્ કુર્વન્, હયઘ્રેપિત ગજગુલગુલાયિત રથ-
 ઘનઘનશબ્દમિશ્રિતેન મહતા કલરવેણ ચ જનસ્ય મધુરેણ પૂરયન્ સુગન્ધવરકુસુમચૂર્ણો-
 દ્વિદ્વાસરેણુકપિલં નમઃ કુર્વન્, કાલાગુરુકુન્દુરુજ્જ્વલતુરુષ્ણધૂપનિવહેન જીવલોકમિવ
 વાસયન્ સમન્તતઃ ભુમિતચક્રવાલં પ્રચુરજનવાલવૃદ્ધપ્રમુદિતત્ત્વરિતપ્રધાવિતવિપુલાકુલવોલ-
 વહુલમ્' इति । 'आकुलवोलवहुलं' नमः कर्तुं विनीताया राजधान्यामध्यमध्येन निर्ग-
 च्छति' इति तु सूत्रे प्रोक्तमेव । अर्थस्तु औपपातिकसूत्रस्य मत्कृतपीयूषवर्षिणी टीका-
 तोऽवगन्तव्यः । नवरं विनीतायाः=अयोध्याया इति । तथा 'आसियसम्मज्जियसित्त-
 सुइकपुप्फोवयारकलियं' आसित्तसम्मार्जितसित्तं शुचिकपुष्पोपचारकलितम्-आसित्तम्-
 ईषत्सित्तं सुगन्धिजलेन, ततः सम्मार्जितम्=अपनीतकचवरम्, सित्तं=सुगन्धितजलेन
 सम्यक् प्रक्षालितम्, अतएव शुचिकं=शुद्धं, ततः पुष्पपुञ्जोपचारकलितं-पुष्पपुञ्जेन कृतो
 य उपचारः=उपचरण शोभेति यावत् तेन कलितं=युक्त 'सिद्धत्थवणविउलरायमग्गं'
 सिद्धार्थवनविपुलराजमार्गं=सिद्धार्थवनोद्यानगामिराजमार्गं 'करेमाणे' कर्तुं, तथा 'हयगय-
 रहपहकरेण' हयगजरथप्रकरेण=हयगजरथसमूहेन 'पाइक्कचडकरेण' पदाति चटकरेण=
 पदाति समूहेन च 'मंदं मंदं' मन्दं मन्दं यथा स्यात्तथाऽ'उद्धयरेणुय' उद्धयरेणुकम्=उड्डी-

इस पाठ का स्पष्टार्थ हमने उसी औपपातिक सूत्र की पीयूषवर्षिणी टीका में लिखा है सो वही
 से इसे जान लेना चाहिये, उस समय "आसियसम्मज्जियसित्तसुइक पुप्फोवयारकलियं
 सिद्धत्थवणविउलरायमग्गं" सिद्धार्थवन उद्यान की ओर जाने वाला रास्ता सुगन्धित जल से
 सिक्त करवा दिया गया फिर उसे बुहार आदि से झाड़कर साफ सुथरा करवाया गया, कूड़ा
 कचरा वहां से हटवा कर उसे दूर फिंकवाया गया, पुनः सुगन्धित जल उस पर छिड़का गया,
 इससे वह पहले की अपेक्षा और अधिक शुद्ध हो गया था, फिर जगह २ उस पर पुष्पो द्वारा
 शोभा की गई थी, 'करेमाणे हय गय रहपहकरेण पाइक्क चडकरेण य' इस तरह जिनके प्रभाव
 से वह सिद्धार्थवनोद्यानगामी राजमार्ग शुद्ध, साफ और अलंकृत किया गया है ऐसे वे आदिजिन
 शिविका में विराजमान हुए, हय और गज समुदाय के साथ २ एवं पैदल चलने वाले सैनिक

તિક સૂત્રની પીયૂષ વર્ષિણી ટીકામાં કહેા છે તેા ત્રિજગ્ગુ જનેાએ ત્યાંથી જ બાણી દેવો
 બેઠાંએ તે વખતે 'આસિયસમ્મજ્જિયસિત્તસુइक पुप्फोवयारकलियं सिद्धत्थवणविउलरायमग्गं'
 सिद्धार्थ'वन तरई जनार मार्गने पडेला सुगन्धित जल वडे सिक्त करवाभा आब्ये। अने
 त्थार भाइ सावरणी वगेरेथी, कथरे। साइ करवाभा आब्ये। हुतो। पुणे त्थांथी लध देवाभां
 आब्ये। हुतो। अने छेवटे करी जील वार ते मार्गने सुगन्धित जल वडे सिक्त करवाभां
 आब्ये। हुतो। ओथी ते मार्ग' पडेला करतां वधारे शुद्ध थर्ध गये। हुतो, अने त्थार भाइ
 ते मार्ग' पर ठेक-ठेकाण्ये पुण्ये। वडे शोभा करवाभा आवी हुती। 'करेमाणे' हयगयरहपहक
 रेण पाइक्क चडकरेणय' आ प्रभ ण्ये जेमना प्रभावथी ते सिद्धार्थ'वनोद्यान गाभी राज
 मार्ग' शुद्ध साइ अने अलंकृत करवाभां आवेल छे, ओवा ते आदि जिन शिविका पर
 आइल थथा अने त्थार भाइ हय अने गज तेमज पायहणथी परिवेष्टित थर्धने ते

યમાનરેણુયુક્તં 'કરેમાણે' કુર્વન્ 'જેણેવ સિદ્ધત્થવણે ઉઙ્ગાણે' યત્રૈવ સિદ્ધાર્થવનં ઉદ્યાનં, 'જેણેવ' યત્રૈવ 'અસોગવરપાયવે' અશોકવરપાદપઃ 'તેણેવ ઉવાગચ્છઈ', તત્રૈવ ઉપાગચ્છતિ 'ઉવાગચ્છિત્તા' ઉપાગત્ય 'અસોગવરપાયવસ્સ' અશોક વરપાદપસ્ય, 'અહે' અધઃ=અધોમાને 'સીયં ઠાવેઈ' શિવિકાં સ્થાપયતિ, 'ઠાવિત્તા સીયાઓ પચ્ચોરુહઈ' સ્થાપયિત્વા શિવિકાતઃ પ્રત્યવરોહતિ-અવતરતિ 'પચ્ચોરુહિત્તા' પ્રત્યવરુહ્ય 'સયમેવાભરણાલંકારં' સ્વયમેવ આભરણાલંકારમ્-આભરણાનિ ચ અલંકારાશ્ચેતિ સમાહારસ્તત્, 'ઓમુયઈ' અવમુશ્ચતિ-પરિત્યજતિ, 'ઓમુહિત્તા' અવમુચ્ચ-ધરિત્યજ્ય 'સયમેવ' સ્વયમેવ 'અદ્ઢાહિં' આસ્થામિઃ શ્રદ્ધાન્વિતોભૂત્વા 'ચઠ્ઠિં' ચત્તમ્મિઃ 'મુઢ્ઢિહિં' મુઢ્ઢિમિઃ કરણભૂતામિઃ લોય' લોચં=કેશપનયનં 'કરેઈ' કરોતિ । અન્યતીર્થકરાણાં સાધૂનાં પશ્ચભિર્મુઢ્ઢિર્મિલોચ ઇતિ યદુક્તં, તત્રેયં વૃદ્ધપરમ્પરા-ભગવાનૃપમ સ્વામી પ્રથમમેકયા મુઢ્ઢયા ઇમશ્ચુકૂર્ચ્યોર્લોચમકરોત્ । તતસ્તિ-

સમૂહ કે સાથ ૨ ધિરે હુપ હોકર જા રહે થે "મંદં મદં ઉદ્ધતરેણુય કરેમાણે કરેમાણે જેણેવ સિદ્ધત્થવણે ઉઙ્ગાણે જેણેવ અસોગવરપાયવે તેણેવ ઉવાગચ્છઈ" ઉસ માર્ગ પર ઉસ સમય હય ઔર ગજ સમુદાય કે પૈરોં કે બાધાત સે एवं પૈદલ ચલને વાલે સૈન્ય સમૂહ કે પદો કે બાધાત સે જમીન મેં જમી હુઈ ધૂલિ ધીરે ૨ સે નિકલકર મન્દ મન્દ રૂપ મેં ઉઢતી હુઈ નજર આતી થી સિદ્ધાર્થવનોદ્યાન કે આતેં હી ઔર ઉસમેં મી જહાં અશોક નામ કા વર પાદપ થા "આગચ્છિત્તા અસોગવરપાયવસ્સ અહે સીયં ઠાવેઈ" વહાં પહુંચતે હી ઉસકે નીચે પ્રમુ કી પાલકી સઢી હો ગઈ "ઠાવિત્તા સીયાઓ પચ્ચોરુહઈ" પાલકી નીચે રસતે હી પ્રમુ ઉસ શિવિકા સે બાહર આગયે, "પચ્ચોરુહિત્તા સયમેવાભરણા લંકારં ઓમુયઈ" બાહર આતે હી પ્રમુ ને પહિરે હુપ આભરણોં કોં પવ અલંકારોં કોં અપને શરીર ઉપર સે ઉતાર દિયા, "ઓમુહિત્તા સયમેવ ચઠ્ઠિં અદ્ઢાહિં લોય કરેઈ" ઉતાર કર ઉન્હોને શ્રદ્ધાયુક્ત હોકર ચાર મુઢિયોં સે કેશો કા લુચ્ચન ક્રિયા, અન્ય તીર્થકરો ને સાધુ અવસ્થા ધારણ કરને પર પાંચ મુઢિયોં સે લોચ ક્રિયા હૈ એસા જો કહા હૈ સો હસ સમ્બન્ધ મેં વૃદ્ધપરંપરા એસી હૈ કિ ભગવાન્ શ્રવમ સ્વામી ને પ્રથમ એક મુઢિ સે મૂઢ ઔર દાદો કે બાલોં

શબ્દમાર્ગ પર આલ્યા તે બખતે 'મંદ મંદ ઉદ્ધતરેણુય કરેમાણે કરેમાણે જેણેવ સિદ્ધત્થવણે ઉઙ્ગાણે જેણેવ અસોગવરપાયવે તેણેવ ઉવાગચ્છઈ' હુય, ગજ અને પાયદળના પદબાધાતથી તે માર્ગની જલ વડે સિક્ત થયેલી ભૂમિની ધૂલિ ધીરે ધીરે-મન્દ મન્દ રૂપમાં ઉડવા લાગી આ રીતે સિદ્ધાર્થવનોદ્યાન અને તેમાં પશુ જ્યાં અશોક નામક વડ પાદપ હતું ત્યાં તેઓ આવ્યા ત્યાં 'આગચ્છિત્તા અસોગવરપાયવસ્સ અહે સીયં ઠાવેઈ' પહોંચતા જ તેની નીચે પ્રમુની શિબિકા બિંબી રહી 'ઠાવિત્તા સીયાઓ પચ્ચોરુહઈ' શિબિકા નીચે મૂકતાં જ પ્રમુ તેમાંથી બહાર આવ્યા 'પચ્ચોરુહિત્તા સયમેવાભરણાલંકારં ઓમુયઈ' બહાર આવતા જ પ્રમુએ પહેરેલાં આભરણો તેમજ અલંકારોને પોતાના શરીર પરથી ઉતાર્યા અને 'ઓ સયમેવ ચઠ્ઠિં અદ્ઢાહિં લોય કરેઈ' ત્યાર બાદ તેમણે શ્રદ્ધા પૂર્વક ચાર મુઢિઓ વડે કેશ હુંચન કર્યું, બીજા તીર્થકરો એ સાધુ-અવસ્થા ધારણ કર્યા બાદ પાંચ મુઢિઓ વડે કેશોનું હુંચન કર્યું હતું, એવું જ કહેવામાં આવ્યું છે, તેથી આ સમયમાં વૃદ્ધ પરંપરા એવી

સૃષ્ટિમુદ્રિભિઃ શિરસ્થકેશાન્ યાવત્ લુઞ્ચતિ તાવદિન્દ્રોઽવશિષ્યમાણામેકાં મુદ્રિ પવનાન્દોલિતાં કનકાવદાતયોઃ પ્રમુસ્કન્ધયોરુપરિહૃત્તીં મારકતીં ઘૃતિમાવિભ્રતીં પરમરમણીયાં વીક્ષ્ય પરમાનન્દરસસમપ્લાવ્યમાનહૃદયઃ શિરસાઽઙ્ગલિં વદૃધ્વા એવમવાદીત્ ભગવન્ । ઇમાં કેશમુદ્રિમેવ રક્ષતુ મદન્તો મય્યનુગૃહેતિ । एवं शक्रेणोक्तो भगवान् तां केशमुष्टिं तथैव रक्षितवान् । महान्तो हि एकान्तभक्तिमतां प्रार्थनां चेद्विघटयन्तीति तेषां स्वभावसिद्धो व्यवहारः । लुञ्चितांश्च तान् केशान् शक्रो हंसचित्रचित्रते वस्त्रे निधाय, एवं लोचं 'करित्ता कृत्वा 'देविदे देवराया भगवं सदोरयमुहपत्तिं रयहरणं, गोच्छगं, पडिग्गहं देवदूसं वत्थं पडिच्छइ' देवेन्द्रो देवराजः भगवते सदोरकमुखवास्त्रकां, रजोहरणं गोच्छकं, पात्रं देवदूप्यवस्त्रं च प्रयच्छति 'अपाणएण' अपानकेन-निर्जलेन 'छट्ठेण भत्तेण' पण्ठेन भक्तेन= उपवासद्वयरूपेण युक्तः, 'आसाढाहि' आपाढाभिः=उत्तराषाढाभिः 'णक्खत्तेण' नक्षत्रेण सह 'जोगमुवागएण' योगमुपागते चन्द्रे खलु 'उग्गाणं' उग्राणां=स्वद्वारा आरक्षकत्वेन

કા લોચ કિયા, ત્રીન મુદ્રિયો સે શિર કે બાલોં કા લોચ કિયા, ઇતને મેં વાકી વચી હુઈ એક મુદ્રિ કો જો કિ પવન કે શોકોં સે હિલ રહી થી ઓર કનક કે જૈસે અવદાત પ્રમુસ્કન્ધો કે ડપર હોટ રહી થી તથા દેસને મેં જો મરકતમણિ કી જૈસી કન્તિ વાલી થી પરમરમણીય દેસકર આનન્દરસ કે પ્રવાહ સે જિસકા અન્ત કારણ હિલોરે કે રહા હૈ એસે હન્દ્ર ને દોનોં હાથ જોડકર પ્રમુ સે એસી પ્રાર્થના કી કિ હે ભગવન્ હસ કેશમુદ્રિ કો મેરે ડપર અનુગ્રહ કરકે આપ રહને દે' હસે ન બસાઈ, પ્રમુને હન્દ્ર કી હસ પ્રાર્થના સે ડસ કેશમુદ્રિ કો વૈસી વૈસી રહને દી, જો મહાન્ પુરુષ હુઆ કરતે હૈ વે એકાન્તભક્તિવાલે પુરુષોં કી પ્રાર્થના કો વિઢ્ઠની નહીં કરતે હૈં એસા ડનકા સ્વભાવ સિદ્ધ વ્યવહાર હુઆ કરતા હૈ, લુઞ્ચિત હુએ ડન કેશો કો શકને હંસચિત્ર સે વિચિત્ર વસ્ત્ર મેં રક્ષકર ક્ષીરસાગર મેં નિશ્ચિત કર દિયા, "કરિત્તા છટ્ઠેણં ભત્તેણં અપાણપણં આસાઢાહિં ણક્ખત્તેણ જોગમુવાગણં" ઉગ્ગાણ મોગાણં રાહન્નાણં સ્સત્તિયાણં ચઝહિં સહસ્સેહિં સહિં ઇયં દેવ દૂસમાદાય મુંઢે

છે કે ભગવન ઋષભ સ્વામીએ પ્રથમ એક મુદ્રિ વડે મૂંછ અને ઢાઢીના વાળોનું 'હુચન કયુ' ત્રણ મુદ્રિઓ વડે માથાના વાળોનું 'હુચન કયુ' એના પછી બાકીની એક મુદ્રિ કે જે પવનના ઝોકાથી ઢાલી રહી હતી અને કનકના જેવા અવદાત પ્રભુના સ્કધે પર આળોટી રહી હતી તેમજ જેવામા જે મરકતમણિ સદૃશ કાતિવાળી હતી, પરમરમણીય તે દશ્યને જોઈ ને આનંદ રસના પ્રવાહમાં જેનું અન્ત કરણ તરબોળ થઈ રહ્યું છે એવા ઇન્દ્રે જન્ને હાથ જોડીને પ્રભુને પ્રાર્થના કરી કે હે ભગવન્ ! મારા ડેપર અનુગ્રહ કરીને આ કેશ મુદ્રિને આપ હવે રહેવા દો, હવે હુચન કરો નહિ પ્રભુએ ઇન્દ્રની પ્રાર્થનાને સાભળીને તે કેશમુદ્રિને તે પ્રમાણે જ રહેવા દીધી જે મહાન પુરુષો હોય છે તે એકાંત ભક્તિવાળા પુરુષોની પ્રાર્થનાનો અસ્વીકાર કરતા નથી. એવા તેમનો સ્વભાવ હોય છે હુચિત થયેલા તે વાળોને યદ્દે હસ ચિત્રથી ચિત્રિત થયેલા વસ્ત્રમાં મૂકીને ક્ષીર સાગરમાં નિશ્ચિત કરી દીધા. 'કરિત્તા છટ્ઠેણ મત્તેણં અપાણપણં આસાઢાહિં ણક્ખત્તેણ જોગમુવાગણં' ઉગ્ગાણ મોગાણં રાહન્નાણં સ્સત્તિયાણં ચઝહિં સહસ્સેહિં સહિં ઇયં દેવ દૂસમાદાય મુંઢે અવિત્તા

नियुक्तानां, 'भोगाणं' भोगानां=गुरुत्वेन व्यवस्थापितानां, 'राइन्नाण' राजन्यानां=वय-
स्यत्वेन स्वीकृतानां 'खत्तियाणं' क्षत्रियाणां=प्रजानां रक्षणार्थं नियुक्तानां 'चउहिं सहस्सेहिं
सद्धि एगं दूवदसं' चतुर्भिः सहस्रैः सह एकं देवदूष्य=दिव्यं वस्त्रम् 'आदाय' आदाय=
गृहीत्वा-परिधायेत्यर्थः, 'मुंडे भवित्ता अगाराओ' मुण्डो भूत्वा अगारात्=अगारं-गृह
परित्यज्य, 'अणगारियं' अनगारिताम्-अगार गृहं, तदस्यास्तीति अगारी=गृहस्थः, न
अगारी अनगारी साधुः, तस्य भावस्तत्ता-साधुत्वं, 'पव्वइए' प्रव्रजितः=प्राप्तः इति ।
एतावता भगवान् ऋषभदेवः इन्द्रप्रदत्तसदोरकमुखवस्त्रिकादि धर्मोपकरणानि गृहीत्वा
स्वयं दीक्षितोऽभूत्, तदनुसारिणः अन्येऽपि सहस्रचतुष्टयशिष्या इन्द्रप्रदत्तसाधूपकरणादि
ग्रहणपूर्वकं स्वयं दीक्षिताः अभूवन्, ततश्च तैः सहस्रचतुष्टयशिष्यैः सह भगवान्
ऋषभदेवः गृहस्थाश्रमं परित्यज्य अनगारितां प्राप्तवान् इति फलितम् ॥६०३९॥

ततो भगवानृषभो यदकरोत्तदाह—

मूलम्—उसमेणं अरहा कोसलिए संवच्छरं साहियं चीवरधारी होत्था,
तेण परं अचेलेण । जप्पाभिइं च णं उसमे अरहा कोसलिए मुंडे भवित्ता
गाराओ अणगारियं पव्वइए तप्पाभिइं च णं उसमे अरहा कोसलिए
णिच्चं वोसट्टकाए चियत्तदेहे जे केइ उवसग्गा उप्पज्जंति, तं जहा-दिब्बा
वा जाव पडिलोमा वा अणुलोमावा । तत्थ पडिलोमा वेत्तेण वा जाव
कसेण वा कोए आउट्टेज्जा, अणुलोमा वंदेज्ज वा जाव पज्जुवासेज्ज
वा ते सव्वे सम्मं सहइ जाव अहियासेइ । तएणं से भगवं समणे जाए
ईरियासमिए जाव परिट्ठावणासमिए मणसमिए वयसमिए कायसमिए

भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए" इस प्रकार प्रभु के लोच करने के बाद निर्जल दो
उपवास किये; फिर उत्तराषाढानक्षत्र के साथ चन्द्र का योग होने पर अपने द्वारा आरक्षक रूप
से नियुक्त किये गये उग्रों की, गुरुरूप से व्यवस्थापित किये गये भोगों की, मित्ररूप से
स्वीकृत किये गये राजन्यों की और प्रजाजनों की रक्षा के लिये नियुक्त किये गये क्षत्रियों की
चतुः सहस्रों के साथ एक देवदूष्य को ग्रहण कर मुण्डित होकर, गृह का परित्याग कर अनगारि
अवस्थाको को धारणा किया ॥३९॥

अगाराओ अणगारियं पव्वइए" आ प्रभाण्णे प्रभुण्णे तु यत्नं कर्त्ता माह मे थेविहार उपवासो
कर्त्ता. पछी उत्तराषाढा नक्षत्रनी साथे चन्द्रनो योग थयो त्थारे पोताना वडे आरक्षक उपमां
नियुक्त करवाभा आवेल उथोनी, गुरुइपमां व्यवस्थापित करवाभा आवेल बोओनी, मित्र-
इपमा स्वीकृत करवाभा आवेल राजन्योनी अने प्रजा जनानी रक्षा माटे नियुक्त करवाभा
आवेल क्षत्रियोनी यत्तु सहस्रीनी साथे ओक देवदूष्यने स्वीकारीने, मुंडित थधने, धरने
परित्याग करीने, अनगारिता धारण करी ॥सूत्र उक्त्वा॥

मणगुत्ते जाव गुत्तवंभयारी अकोहे जाव अलोहे संते पसंते उवसंते प-
रिणिब्बुडे छिण्णसोए निरुवलेवे संखमिव णिरंजणे, जच्चकणगंवं जाय-
रूवे आदिरसपडिभागे इव पागडभावे, कुम्भो इव गुत्तिदिए, पुक्खरपत्त-
मिव निरुवलेवे गगणमिव निरालंबणे, अणिले इव णिरालए चंदो इव
सोमदंसणे, सूरु इव तेयंसो, विहग इव अपडिवद्धगामी, सागरो इव गं
भीरे, मंदरो इव अकंपे पुढवीविव सब्बफासविसहे, जीवोविव अप्पडिह-
यगइत्ति ॥सू० ४०॥

छाया—ऋषभः खलु अर्हन् कौशलिक संवत्सरं साधिकं चीवरधारी अभवत्, ततः
परम् अचेलकः । यभृत्प्रति च खलु ऋषभः अर्हन् कौशलिको मुण्डो भूत्वा अगारात् अन-
गारिता प्रव्रजितः, तत्प्रभृति च खलु ऋषभोऽर्हन् कौशलिका नित्यं व्युत्सृष्टकाय, त्यक्तदेहो,
ये केचित् उपसर्गाः उत्पद्यन्ते, तद्यथा दिव्या वा यावत् प्रतिलोमा वा अनुलोमा वा, तत्र
प्रतिलोमा वेषेण वा यावत् कशेन वा काये आकुट्टयेत्, अनुलोमा वन्देत वा यावत् पयु-
पासीत वा, तान् सर्वान् सम्यक् सहते यावत् अभ्यास्ते । तत्र खलु स भगवान् भ्रमणो
जात ईर्यासमितो यावत् परिष्ठापनिका समितो मन समितो वाक्समित कायसमितो मनो
गुप्तो यावद् पुंसब्रह्मचारी अकोधो यावत् अलोमः शान्तः प्रशान्त उपशान्तः परिनिर्दुत-
छिन्न कोता निरुपलेपः, शङ्ख इव निरञ्जन, जात्यकनकमिव जातरूप आदर्श प्रतिभाग इव
प्रकट भावः, कूर्म इव गुप्तेन्द्रियः, पुष्करपत्रमिव निरुपलेपा, गगनमिव निरालम्बन अनल
इव निरालयः चन्द्र इव सौम्यदर्शन, सूर इव तेजस्वी, विहग इव अप्रतिवद्धगामी, सागर
इव गम्भीरः मन्दर इव अकम्पः पृथिवीव सर्व स्पर्श विषहः, जीव इव अप्रति बद्धगति
रिति ॥सू० ४०॥

‘उसमेण’ इत्यादि ।

टीका—‘उसमेणं अरहा कोसलिए संवच्छरं साहियं’ ऋषभः खलु अर्हन् कौशलिकः
संवत्सरं साधिकं किंचिदधिकैक—संवत्सरं यावत् ‘चीवरधारी’ चीवरधारी=वस्त्रधारी
‘होत्था’ अभवत्, ‘तेण परं’ ततः परम्=तदन्तरम् ‘अचेलए’ अचेलकोऽभवत् । ‘जप्प-

दीक्षित हो जाने पर प्रभु ने जो किया उसका कथन इस सूत्र द्वारा सूत्रकार करते
हैं—“उसमेण अरहा कोसलिए संवच्छरं साहियं” इत्यादि ।

टीकार्थ—“उसमेणं अरहा कोसलिए संवच्छरं साहियं चीवरधारी होत्था” उन कौशलिक
ऋषभ अर्हन्त ने कुछ अधिक एक वर्ष तक वस्त्र धारण किया “तेण परं अचेलए” इसके बाद वे

दीक्षा अलुच्छु कथा पछी प्रभुजे ने कथुं तेनु कथन सूत्रकार आ सूत्र पडे करे छे—

टीकार्थ—‘उसमेण अरहा कोसलिए संवच्छरं साहियं चीवरधारी होत्था’ ते कौशलिक
ऋषभनाथ अर्हन्त कंठक पधारे जेक वर्ष पयन्त वस्त्रधारी रह्या. ‘तेण परं अचेलए’ ते

नियुक्तानां, 'भोगाणं' भोगानां=गुरुत्वेन व्यवस्थापितानां, 'राइन्नाण' राजन्यानां=वय-
स्यत्वेन स्वीकृतानां 'खत्तियाणं' क्षत्रियाणां=प्रजानां रक्षणार्थं नियुक्तानां 'चउहिं सहस्सेहिं
सद्धि एगं दूवदूसं' चतुर्भिः सहस्रैः सह एकं देवदूष्य=दिव्यं वस्त्रम् 'आदाय' आदाय=
गृहीत्वा-परिधायेत्यर्थः, 'मुंडे भवित्ता अगाराओ' मुण्डो भूत्वा अगारात्=अगारं-गृह
परित्यज्य, 'अणगारियं' अनगारिताम्-अगार गृहं, तदस्यास्तीति अगारी=गृहस्थः, न
अगारी अनगारी साधुः, तस्य भावस्तत्ता-साधुत्वं, 'पव्वइए' प्रव्रजितः=प्राप्तः. इति ।
एतावता भगवान् ऋषभदेवः इन्द्रप्रदत्तसदोरकमुखवस्त्रिकादि धर्मोपकरणानि गृहीत्वा
स्वयं दीक्षितोऽभूत्, तदनुसारिणः अन्येऽपि सहस्रचतुष्टयशिष्या इन्द्रप्रदत्तसाधूपकरणादि
ग्रहणपूर्वकं स्वयं दीक्षिताः अभूवन्, ततश्च तैः सहस्रचतुष्टयशिष्यैः सह भगवान्
ऋषभदेवः गृहस्थाश्रमं परित्यज्य अनगारिता प्राप्तवान् इति फलितम् ॥६०॥३९॥

ततो भगवानृषभो यदकरोत्तदाह—

मूलम्—उसमेणं अरहा कोसलिए संवच्छरं साहियं चीवरधारी होत्था,
तेण परं अचेलए । जप्पभिइं च णं उसमे अरहा कोसलिए मुंडे भवित्ता
अगाराओ अणगारियं पव्वइए तप्पभिइं च णं उसमे अरहा कोसलिए
णिच्चं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे जे केइ उवसग्गा उप्पज्जंति, तं जहा-दिब्बा
वा जाव पडिलोमा वा अणुलोमावा । तत्थ पडिलोमा वेत्तेण वा जाव
कसेण वा कोए आउट्टेज्जा, अणुलोमा वंदेज्ज वा जाव पज्जुवासेज्ज
वा ते सव्वे सम्मं सहइ जाव अहियासेइ । तएणं से भगवं समणे जाए
ईरियासमिए जाव परिट्ठावणासमिए मणसमिए वयसमिए कायसमिए

भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए" इस प्रकार प्रभु के लोच करने के बाद निर्जल दो
उपवास किये; फिर उत्तराषाढानक्षत्र के साथ चन्द्र का योग होने पर अपने द्वारा आरक्षक रूप
से नियुक्त किये गये उग्रो की, गुरुरूप से व्यवस्थापित किये गये भोगो की, मित्ररूप से
स्वीकृत किये गये राजन्यो की और प्रजाजनो की रक्षा के लिये नियुक्त किये गये क्षत्रियो की
चतुः सहस्रो के साथ एक देवदूष्य को ग्रहण कर मुण्डित होकर, गृह का परित्याग कर अनगारि
अवस्थाको को धारणा किया ॥३९॥

अगाराओ अणगारियं पव्वइए" आ प्रभावे प्रभुओ धुअन कथां आह पे चोविहार उपवासे।
कथां, पछी उत्तराषाढा नक्षत्रनी साथे चन्द्रो योग थये त्थारे पोताना वडे आरक्षक उपमां
नियुक्त करवाभां आवेल उग्रोनी, गुरुइयमा व्यवस्थापित करवाभा आवेल भोगोनी, मित्र-
इयमा स्वीकृत करवाभा आवेल राजन्योनी अने प्रजा जनोनी रक्षा भाटे नियुक्त करवाभा
आवेल क्षत्रियोनी चतु सहस्रोनी साथे ओक देवदूष्यने स्वीकारीने, मुंडित थअने, धरने
परित्याग करीने, अनगारिता धारण करी ॥सूत्र ३६॥

मणगुत्ते जाव गुत्तवंभयारी अकोहे जाव अलोहे संते पसंते उवसंते प-
रिणिव्वुहे छिण्णसोए निरुवलेवे संखमिव णिरंजणे, जच्चकणगंवं जाय-
रूवे आदिससपडिभागे इव पागडभावे, कुम्भो इव गुत्तिदिए, पुक्खरपत्त-
मिव निरुवलेवे गगणमिव निरालंबणे, अणिले इव णिरालए चंदो इव
सोमदंसणे, सूरु इव तेयंसो, विहग इव अपडिवद्धगामी, सागरो इव गं
भीरे, मंदरो इव अकंपे पुढवीविव सव्वफासविसहे, जीवोविव अप्पडिह-
यगइत्ति ॥सू० ४०॥

छाया—ऋषभः खलु अर्हन् कौशलिक संवत्सरं साधिकं चीवरधारी अभवत्, ततः
परम् अचेलकः । यभृत्प्रति च खलु ऋषभः अर्हन् कौशलिको मुण्डो भूत्वा अगारात् अन-
गारिता प्रव्रजितः, तत्प्रभृति च खलु ऋषभोऽर्हन् कौशलिका नित्यं व्युत्सृष्टकायः त्यक्तपेहो,
ये केचित् उपसर्गाः उत्पद्यन्ते, तद्यथा दिव्या वा यावत् प्रतिलोमा वा अनुलोमा वा, तत्र
प्रतिलोमा वेषेण वा यावत् कशेन वा काये आकुट्टयेत्, अनुलोमा वन्देत वा यावत् पयु-
पासीत वा, तान् सर्वान् सम्यक् सहते यावत् अभ्यास्ते । तत्र खलु स भगवान् भ्रमणो
जात ईर्यासमितो यावत् परिष्ठापनिका समितो मन समितो वाक्समित कायसमितो मनो
गुप्तो यावद् गुप्तब्रह्मचारी अक्रोधो यावत् अलोभः शान्तः प्रशान्तः उपशान्तः परिनिर्वृत
छिन्न ज्ञोता निरूपलेपः, शङ्ख इव निरञ्जन, जात्यरुनकमिव जातरूप आदर्श प्रतिभाग इव
प्रकट भावः, कूर्म इव गुप्तेन्द्रियः, पुष्करपत्रमिव निरूपलेपा, गगनमिव निरालम्बन अनल
इव निरालयः चन्द्र इव सौम्यदर्शन, सूर इव तेजस्वी, विहग इव अप्रतिबद्धगामी, सागर
इव गम्भीरः मन्दर इव अकम्पः पृथिवीव सर्व स्पर्श विषहः, जीव इव अप्रति बद्धगति
रिति ॥सू० ४०॥

‘उसमेण’ इत्यादि ।

टीका—‘उसमेणं अरहा कोसलिए संवच्छरं साहियं’ ऋषभः खलु अर्हन् कौशलिकः
संवत्सरं साधिकं किंचिदधिकैक—संवत्सरं यावत् ‘चीवरधारी’ चीवरधारी=ब्रह्मधारी
‘होत्था’ अभवत्, ‘तेण परं’ ततः परम्=तदन्तरम् ‘अचेलए’ अचेलकोऽभवत् । ‘जप्प-

दीक्षित हो जाने पर प्रसु ने जो किया उसका कथन इस सूत्र द्वारा सूत्रकार करते
हैं—“उसमेण अरहा कोसलिए संवच्छरं साहियं” इत्यादि ।

टीकार्थ—“उसमेणं अरहा कोसलिए संवच्छरं साहियं चीवरधारी होत्था” उन कौशलिक
ऋषभ अर्हन्त ने कुछ अधिक एक वर्ष तक वस्त्र धारण किया “तेण परं अचेलए” इसके बाद वे

दीक्षा अलक्ष्य कर्त्ता पछी प्रभुजे ने कथुं तेनुं कथन सूत्रकार आ सूत्र पढे करे, छे—

टीकार्थ—“उसमेण अरहा कोसलिए संवच्छरं साहियं चीवरधारी होत्था” ते कौशलिक
ऋषभनाथ अर्हन्त के एक वर्ष धारि जेक वर्ष पयन्त वस्त्रधारी रह्या. ‘तेण परं अचेलए’ ते

મિદં ચ ણં' યત્પ્રભૃતિ=યત્સમયાદારમ્ય ચ खलु 'उसमे अरहा' ऋषभोऽर्हन् 'कोसलिण मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए' कौशलिको मुण्डो भूत्वाऽगारात् अनगारितां प्रव्रजितः, 'तप्पमिइ च णं' तत्प्रभृति तत्समयादारम्य च खलु 'उसमे अरहा कोसलिण णिच्चं' ऋषभोऽर्हन् कौशलिको नित्यं=सर्वदा 'वोमट्टकाए' व्युत्सृष्टकायः व्युत्सृष्टः=शरीरसंस्कारपरित्यागात् विसर्जित कायः=शरीरं येन तथाभूत—शरीरसंस्कारपरिवर्जित इत्यर्थः, तथा 'चियत्त-देहे' त्यक्तदेहः त्यक्तः=परिपहसहनात् उज्झित इव देहो येन स तथा शरीर ममत्व रहित इत्यर्थः, एतादृशः सन् सर्वान् उपसर्गान् सम्यक् सहते यावत् अध्यास्ते इति परेणान्वयः । एतदेवाह—'जे केइ उवसग्गा' ये केचित् उपसर्गाः=उपद्रवा 'उप्पज्जति' उत्पद्यन्ते 'तं जहा' तद्यथा 'दिव्वा' दिव्याः=दिवि भवाः—देवसम्बन्धिन इत्यर्थः, 'वा' शब्दो विकल्पार्थे, 'जाव' यावत्—यावत्पदेन—'माणुसा वा तिरिक्ख जोणिया वा' मानुषा वा तैर्यग्योनिका वा इति संग्राह्यम्, तत्र मानुषा =मनुष्यसम्बन्धिनः, तैर्यग्योनिकाः=तिर्यग्योनिसम्बन्धिनो वा 'पडिलोमा वा' प्रतिकूला=विरुद्धा वा 'अणुलोमावा' अनुकूलाः अविरुद्धा वा । 'तत्थ' तत्र तयोर्मध्ये 'पडिलोमा' प्रतिलोमा उपसर्गा 'वेत्तेण' वेत्तेण वेत्तञ्जतादण्डेन, 'जाव' यावत्—यावत्पदेन "तयाए वा छियाए

अचेलક હો ગયે, "જપ્પમિહ ચ ણ ઉસમે અરહા કોસલિણ મુંદે ભવિત્તા અગારાઓ અણગારિયં પવ્વહૂપ" જિસ સમય સે કૌશલિક ઋષભ અર્હન્ત મુણ્ડિત હોકર અગાર અવસ્થા કો ત્યાગ કર અનગાર અવસ્થા મેં આયે, "તપ્પમિહ ચ ણ ઉસમે અરહા કોસલિણ ણિચ્ચ વોસટ્ટકાપ ચિયત્ત દેહેજે કેહ ઉવસગ્ગા ઉપ્પજ્જતિ" તવસે ઝન્હોને અપને શરીર કા સસ્કાર (શ્રુગાર) કરના છોડ દિયા, વે ત્યક્તદેહ પરીષદ્દોં કે સહન કરને સે છોડ દિયે શરીર કે જૈસે હો ગયે—શરીર કે મહત્વ હીન હો ગયે, "ત જહા દિવ્વા વા જાવ પહિલોમા વા અણુલોમા વા" જો મી કોઈ ઉપસર્ગ—ઉપદ્રવ ડનકે ઊપર આતા યાદે વહ દેવોં દ્વારા કિયા ગયા હોતા યાવત્ મનુષ્યકૃત યા તિર્યચ્ચકૃત હોતા વે ડસે અચ્છી તરહ સે સહન કરતે યે । યહા "વા" શબ્દ વિકલ્પાર્થક હૈ. "તત્થ પહિલોમા વેત્તેણ વા જાવ કસેણ વા કાપ આડહેજ્જા" હન ઉપસર્ગોં મેં યદિ કોઈ ઉપસર્ગ ડનકે વિરુદ્ધ હોતા જૈસે—યદિ કોઈ ડન્હેં બેંત સે પીટતા, વૃક્ષ કી છાલ સે નિર્મિત રસ્સો સે કઠિન ચાલુક સે પીટતા, યા ચિકની કશા સે પીટતા, લતા દણ્ડ સે ડન્હે મારતા, કેશ—ચમડે કે કોઢે સે ડન્હેં મારતા તો ડસે મી યે બહે શાન્તમાવોં સે સહન કરતે યે । "અણુલોમા વંદેજ્જ વા જાવ પજ્જુવા-

પછી તેઓ શ્રી અચેલક બની ગયા 'જપ્પમિહ ચ ણ ઉસમે અરહા કોસલિણ મુંદે ભવિત્તા રામો અણગારિયં પવ્વહૂપ' જ્યારથી કૌશલિક ઋષભનાથ અર્હન્ત મુણ્ડિત થઈને અગાર અવસ્થાને ત્યાગ કરી અણગાર અવસ્થામાં આવ્યા 'તપ્પમિહ ચ ણ ઉસમે અરહા કોસલિણ ણિચ્ચં વોસટ્ટકાપ ચિયત્તદેહે જે કેહ ઉવસગ્ગા ઉપ્પજ્જતિ' ત્યારથી તેઓએ પોતાના શરીરના સંસ્કાર (શ્રુગાર) કરવાનું છોડી દીધું, તેઓ ત્યક્ત દેહ એટલેકે પરીષદો સહન કરવાથી ત્યજી દીધો છે શરીર પ્રત્યે મમત્વભાવ જેમણે એવા બની ગયા. 'ત જહા દિવ્વા વા જાવ પહિલોમા વા અણુલોમાવા' જે કોઈ ઉપસર્ગ—ઉપદ્રવ તેમના પર આવતો તે યાદે તો દેવા દ્વારા કરવામાં આવેલ હોય યાવત્ મનુષ્યકૃત અગર તિર્યચ્ચ દ્વારા કરવામાં આવેલ હોય તે બધાને તેઓ સારી રીતે સહન કરતા હતા અહીં યા 'વા' શબ્દ વિકલ્પાર્થક છે 'તત્થ પહિલોમા વેત્તેણ વા જાવ કસેણ વા કાપ આડહેજ્જા' આ ઉપસર્ગ પૈકી જે કોઈ ઉપસર્ગ તેમનાથી

વા લયાઈ વા" ત્વચા વા શ્લક્ષ્ણકષેણ વા લતયા વા ઇતિ સંગ્રાહ્યમ્, તત્ર ત્વચા શ્ણાણિ
વૃક્ષત્વગ્નિર્મિતયા કશયા વા 'છિયાઈ'—'છિયા' શબ્દઃ શ્લક્ષ્ણકશાયે દેશીશબ્દઃ, તતશ્ચ
શ્લક્ષ્ણકશેન ચિક્ષણકશયા વા લતયા લતાદણ્ઢેન વા, 'કસેણ' કશેન ચર્મયપ્ઠયા વા,
'કાઈ' કાયે શરીરે 'આડદટેજ્જા' અકુદ્દયેત્ તાડયેદિતિ । તથા—'અણુલોમા' અણુલોમા
ઉપસર્ગાઃ 'વદેજ્જ' વન્દેત અભિવાદયેદ્ વા 'નાવ' યાવત્ યાવત્પદેન—'પૂજ્જ વા મત્તકા-
રેજ્જ વા સમ્માણેજ્જ વા કલ્લાણં મંગલં દેવયં ચેડયં' પૂજયેદ્ વા સત્કારયેદ્ વા સમ્મા-
નયેદ્ વા કલ્યાણ મઙ્ગલં દૈવતં ચૈત્યમ્' ઇતિ । તત્ર—પૂજયેત્ વા સદ્વચનૈઃ, સત્કારયેદ્ વા
વચ્છાદિના, સમ્માનયેદ્ વા અભ્યુત્થાનાદિના મઙ્ગલં મઙ્ગલસ્વરૂપઃ, દૈવતં દેવસ્વરૂપઃ, ચૈત્યં
જ્ઞાનસ્વરૂપઃ, ઇતિ ધિયા 'પજ્જુવાસેજ્જ' પર્યુપાસોત પર્યુપાસનાં કુર્યાદ્ વા, 'તે સવ્વે' તાન્
દ્વિવિધાનપ્પુપસર્ગાન્ સ ભગવાન્ 'સમ્મં' સમ્યક્-યાથાતથ્યેન 'સહઈ' સહતે મયાકર-
ણેન, નિર્મયેનેત્યર્થઃ 'જાવ' યાવત્ યાવત્પદેન 'સ્મઈ તિતિક્કઈ' ક્ષમતે તિતિક્ષતે—ઈતિ
સંગ્રાહ્યમ્ તત્ર ક્ષમતે ક્રોધાભાવેન, તિતિક્ષતે દૈન્યાકરણેન 'અહિયાસેઈ' અધ્યાસ્તે—અવિચલ-
તયેતિ । 'તણ્ણં સે ભગવં સમણે જાઈ' તતઃ સ્વલ્લ સ ભગવાન્ ઋપમઃ શ્રમણો જાતઃ ।

સેજ વા" ઇસી તરફ યદિ ડનકે ડપર અનુકૂલ ઉપસર્ગ આતે—જેસે—કોઈ ડનકી વદના કરતા,
યાવત્ કોઈ ડનકી પૂજા -સદ્વચનો સે સ્તુતિ કરતા, સત્કાર—વચ્છાદિ પ્રદાન કર યા સ્વદે
હોકર ડનકે પ્રતિ અપની મક્તિપ્રકટ કરતા, ડનકા સમ્માન કરતા—હાથ જોડકર ડનકા આદર
કરતા, ઇસ બુદ્ધિ સે કિ યે મગલ સ્વરૂપ હૈં, દેવસ્વરૂપ હૈં ઔર જ્ઞાન સ્વરૂપ હૈ યદિ કોઈ ડનકી
પર્યુપાસના કરતા તો ડસ સ્થિતિ મેં યે હર્ષમાવ યુક્ત નહીં હોતે "તે સવ્વે સમ્મં સહઈ નાવ અહિ-
યાસેઈ" ઇસ તરફ યે મગવાન્ શ્રીઆદિનાથ મૂપ્ર ઇન પ્રતિકૂલ પરીષદ્ ઔર ઉપસર્ગોં કો અચ્છી તરફ
સે રાગદ્વેષ પરિણતિ ઉત્પન્ન હુઈ વિના—સહન કરતે થે. યહાં યાવત્પદ સે "સ્મઈ તિતિક્કઈ" ઇન
પદો કા પ્રદ્વણ હુઆ હૈં. ઇન પદોં સે યહ પ્રકટ કિયા ગયા હૈ—કિ ઇન ક્ષુદાદિ પરીષદ્દાદિકોં કે

(વરૂદ્ધ હોય જેમકે—જે કહાય કોઈ તેમને નેતરથી મારતુ અથવા વૃક્ષની છાલથી અગ્નિવેલ
હોરકાથી કે કઠોર ચાણુકથી તેમને મારતુ અથવા ચીકણા કશા—ચાણુકથી મારતુ હતા હંડથી
તેમને મારતા ચાનડાના ચાણુકથી તેમને મારતા તો તેને પણ એઓ અત્યંત શાત ભાવોથી
સહન કરતા હતા 'અણુલોમા વંદેજ્જવા જાવ પજ્જુવાસેજ્જવા' એ જ પ્રમાણે જે તેમની ઉપર
અનુકૂળ ઉપસર્ગ આવે જેમકે કોઈ તેમને વર્ષના કરતુ યાવત્ કોઈ તેમની પૂજા કરતુ
અર્થાત્ સદ્વચનોથી સ્તુતિ કરતુ સત્કાર—વચ્છાદિ પ્રદાન કરીને અગર ઉભા રહીને તેમના પ્રત્યે
પોતાનો ભક્તિભાવ બતાવતુ તેમણુ સન્માન કરતુ હાય જોડીને તેમને આહર એમ માનીને
કે તેઓ મગલસ્વરૂપ છે દેવસ્વરૂપ છે, અને જ્ઞાન સ્વરૂપ છે જે કોઈ તેમની પર્યુપાસના
કરતુ તો એ સ્થિતિમા તેઓ હર્ષાન્વિત થતા ન હતા 'તે સવ્વે સમ્મં સહઈ જાવ અહિયાસેઈ'
આ રીતે જે મગવાન્ શ્રી આદિનાથ પ્રભુ આવા પ્રતિકૂળ અનુકૂળ પરીષદો અને ઉપસર્ગોંને
સારી રીતે—એટલે કે રાગદ્વેષ રહિત થઈને—સહન કરતા હતા અહીં 'યાવત્ પદથી " ઇ
તિતિક્કઈ" આ પદોનુ અહણુ થયુ છે' એ પદોથી એ પ્રકટ કરવામા આવેલ છે કે એ પરીષદો—

કોદશઃ શ્રમણો જાતઃ ? इत्याह - 'ईरिया समिए' इत्यादि । तत्र 'ईरियासमिए' ईर्या-
समितः-ईरणम् ईर्या=व्रतिगमनं, तत्र समितः सम्यगेकीभावेन रागद्वेपराहित्येन वा
इतः प्रवृत्तः, 'जाव' यावत्-यावत्पदेन-"भासासमिए, एसणासमिए, आयाणभंडमत्त-
निकखेवणासमिए, उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाण" इति संग्राह्यम्, 'परिट्ठावणासमिए'
इति मूलोक्तेन पदांशेन सह "उच्चारादि सिंघाणान्त" पदांशस्य सम्बन्धः । छाया तु-
भाषासमितः, एषणासमित, आदानभाण्डमात्रनिक्षेपणासमितः, उच्चारप्रसवणखेलजल्ल-
शिङ्घाणपरिष्ठारपानिकासमितः इति । तत्र-भाषासमितः भाषणं भाषावचन तस्यां समितः=
कार्कश्यदि रहित हितमितस्फोत्तमृदुवचनं यथा स्यात्तथा प्रवृत्तः, तथा एषणासमितः
एषणा=गवेपणा ग्रहणैषणा परिभोगैषणादिलक्षणा, समितः, तत्र समितः-सम्यक् प्रकारेण
यथास्यात्तथा प्रवृत्तः, सोपयोगं नवकोटिविशुद्धभिक्षाग्रहणशील इत्यर्थः, तथा-आदानभाण्ड

સહન કરને મેં હન્દે ક્રોધ કા અભાવ રહતા થા ઔર દીનતા કા અભાવ રહતા થા, યે તો અવિચલ
ભાવ સે હી હન્દે સહતે થે, "તપ્પણ સે મગવં સમણે જાણે ઈરિયાસમિણ" યે ઋષભ એસે શ્રમણ
બનેં કિ યે ઈર્યાસમિતિ કે પાલન મેં, "જાવ" યાવત્-ભાષાસમિતિ કે પાલન મેં, એષણાસમિતિ
કે પાલન મેં, "પરિટ્ઠાવણાસમિણ" આદાન ભાણ્ડમાત્રનિક્ષેપણા સમિતિ કે પાલન મેં ઔર ઉચ્ચાર
પ્રસવણખેલ જલ્લશિંઘાણપરિષ્ઠાપનિકા સમિતિ કે પાલન મેં રાગદ્વેષ સે રહિત પરિણતિ સે પ્રવૃત્ત રહે,
વ્રતિગમન કા નામ ઈર્યા હૈ. હિસ ઈર્યા મેં જો એકીભાવ સે અથવા રાગદ્વેષરહિતતા સે પ્રવૃત્ત હોના
હૈ વહ ઈર્યા સમિતિ હૈ. ઈર્યાસમિતિ કા પાલન હૈ, કાર્કશ્ય આદિ સે રહિત હિત, મિત, સ્ફીત,
મૃદુવચન કા બોલના ભાષાસમિતિ હૈ, ભાષાસમિતિ કા પાલના હૈ, ગ્રહણૈષણા પરિભોગૈષણા-
દિરૂપ ગવેષણા મેં જો ઉપયોગ પૂર્વક નવકોટિ વિશુદ્ધ ભિક્ષા કા ગ્રહણ હોના એષણાસમિતિ હૈ
એષણાસમિતિ કા પાલન હૈ, ભાણ્ડ-વસ્ત્રાદિ ઉપકરણ કા માત્ર-પાત્ર કા જો આદાન ગ્રહણ કરના

દિકેને સહન કરતી વખતે એઓમા-ક્રોધનેા અભાવ રહેતો હતો અને દીનતાનેા અભાવરહેતો
હતો. એઓ તો 'અચ્ચાસ્તે' એટલેકે અવિચલ ભાવથી જ એ સર્વ' પરોષહોને સહન કરતા
હતા. 'તપ્પણ સે મગવ સમણે જાણે ઈરિયાસમિણ' એ ઋષભ એવા શ્રમણ બન્યા કે ઇર્યા સમિ
તિના પાલનમા યાવત્ ભાષા સમિતિના પાલનમાં, એષણા સમિતિના પાલનમાં, 'પરિટ્ઠાવણા
સમિણ આદાન ભાઠ માત્ર નિક્ષેપણ સમિતિના પાલનમા અને ઉચ્ચાર પ્રસવણ ખેલજલ્લ-
શિંઘાણપરિષ્ઠાપનિકા સમિતિના પાલનમા રાગદ્વેષથી વિહીન પરિણતિથી એઓ પ્રવૃત્ત રહ્યા.
વ્રતિગમનનું નામ ઇર્યા છે. આ ઇર્યામા જે એકી ભાવથી અથવા રાગદ્વેષ રહિત થઇને પ્રવૃત્ત
હોય છે, તે ઇર્યા સમિત છે એટલે કે ઇર્યા સમિતિનું પાલન છે. કાર્કશ્ય વગેરેથી રહિત
હિત, મિત, સ્ફીત મૃદુ વચન બોલવું ભાષા સમિત છે એટલે કે ભાષા સમિતિનું પાલન
છે અહૈષણા પરિભોગૈષણાદિરૂપ ગવેષણામા જે ઉપયોગ પૂર્વક નવકોટિ વિશુદ્ધ ભિક્ષાનું
ગ્રહણ છે, તે ગ્રહણ એષણા સમિત છે, એટલે કે એષણા સમિતિનું પાલન છે ભાઠ-વસ્ત્રાદિ
ઉપકરણનું માત્ર પાત્રનું જે આદાન ગ્રહણ કરવું અને નિક્ષેપણ મૂકવું છે. તેમાં બરાબર

માત્ર નિષ્કેપણાસમિતઃ, આદાને ગ્રહણે, માણ્ડમાત્રયોઃ માણ્ડસ્ય વસ્ત્રાધુપકરણસ્ય માત્રસ્ય પાત્રસ્ય ચ નિષ્કેપણાયાં રક્ષણે ચ સમિતઃ સુપ્રત્યુપેક્ષિતસુપ્રમાર્જિતક્રમેણ પ્રવૃત્તઃ, માણ્ડ-માત્રયોઃ, મધ્યમણિન્યાયેન આદાને નિષ્કેપણાયાં ચાન્વયો બોધ્ય इति । तथा-उच्चार-प्रस्त्रवणखेलजल्लशिङ्घाणपरिष्ठापनिकासमिती, तत्र उच्चारः पुरिपं, प्रस्त्रवणं मूत्रं, खेलः श्लेष्मा, जल्लः देहमलं, शिङ्घाणं नासिकामलं तेषां परियुक्तः, तथा-‘मणसमिप’ मनः समितः कुशलमनोयोगप्रवर्चकः, ‘भापासमितः’ इत्युक्त्वा पुनर्यद् ‘वाक्समितः’ इति प्रोक्तं तद् द्वितीयसमितावत्यादरसूचनार्थं करणत्रयशुद्धिसूत्रे सख्यापूरणार्थं च बोध्यमिति । तथा ‘कायसमिप’ कायसमितः प्रशस्तकाययोगवानित्यर्थः । तथा ‘मणगुत्ते’ मनोगुप्तः अकुशल मनोयोगनिरोधकः, ‘जाव’ यावत्-यावत्पदेन-‘वागुप्तः कायगुप्तो गुप्तो गुप्तेन्द्रियः, इति संग्राह्यम् । तत्र वागुप्तः अकुशल वाग्योगनिरोधकः, कायगुप्तः अकुशलकाययोगनिरोधकः, सत्प्रवृत्ति निरोधो गुप्तिरिति समिति गुप्त्यो-र्विशेषः, अतएव गुप्तः सर्वथा संवृतः, ततश्च गुप्तेन्द्रियः-गुप्तानि इन्द्रियाणि यस्य स

एवं निक्षेपण-धरना है उसमे देख माल कर एवं सुप्रमार्जित कर जो प्रवृत्त होना है वह आदान-भाण्डमात्रनिक्षेपणसमिति है इस समिति का पालना है अर्थात् वस्त्रादिकों का और पात्रों का जो भूमि को देखकर और उसे प्रमार्जित कर धरना और देखकर और प्रमार्जित कर उनका उठाना यही आदानभाण्डमात्रनिक्षेपणा समिति है इस समिति का पालना है. उच्चार-पुरीषोत्सर्गकरना, प्रस्त्रवण-पेशाव करना, श्लेष्मा का ढाळना, जल्ल-देह मैलका प्रक्षेपण करना, शिङ्घाण-नाक-छिकना इत्यादि रूप परिष्ठापनिका में जो समित होना है, वह उच्चार प्रस्त्रवण खेलजल्ल-शिङ्घाण परिष्ठापनिका समिति है, इस समिति का पालना है, इसका तात्पर्य यही है कि निर्जन्तु स्थान में मल मूत्रादि का त्याग करना सो उच्चारप्रस्त्रवणादिरूप समिति का पालन है, इसी तरह से वे भगवान् श्री आदिनाथ प्रभु ‘मणसमिप, वयसमिप, कायसमिप, मणगुत्ते, जाव गुत्तवभयारी अकोहे जाव अलोहे सते पसते उवसते परिणिब्बुडे, छिण्णसोप, गिरुवळेवे,

બેઠને તેમ જ સુપ્રમાર્જિત કરીને પ્રવૃત્ત હોય છે તે આદાન ભાઠ માત્ર નિષ્કેપણ સમિત છે. એટલેકે તે આદાન ભાઠ માત્ર નિષ્કેપણ સમિતિનું પાલન છે. તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે કે વસ્ત્ર દિકો અને પાત્રોને ભૂમિને બેઠને અને તેને પ્રમાર્જિત કરીને મૂકવાં તેમ જ બેઠને અને પ્રમાર્જિત કરીને તે વસ્ત્રાદિકો અને પાત્રોને ઉઠાવવાં એ જ આદાન ભાઠ-માત્રનિષ્કેપણ સમિત છે એ સમિતિનું પાલન છે ઉચ્ચાર-પુરીષોત્સર્ગ કરવો. પ્રસ્ત્રવણ-લગ્નશંકા કરવો, શ્લેષ્મ (કફ) નાખવો જલ્લ-દેહ-મલનું પ્રક્ષેપણ કરવું, શિંઘાણ-છીંકાખાવી ઇત્યાદિરૂપ પરિષ્ઠાપનિકામાં એ સમિત હોય છે તે ઉચ્ચાર પ્રસ્ત્રવણ ખેલ જલ્લશિંઘાણ પરિષ્ઠાપનિકા સમિત છે, આ સમિતિનું પાલન છે આનું તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે કે નિર્જન્તુ સ્થાનમાં મલ મૂત્રાદિનો ત્યાગ કરવો તે ઉચ્ચાર પ્રસ્ત્રવણાદિ રૂપ સમિતિનું પાલન છે. આ પ્રમાણે તે આદિનાથ પ્રભુ ‘મણસમિપ, વયસમિપ, કાયસમિપ, મણગુત્તે જાવ, શસ વેમયારી અકોહે જાવ અલોહે સંતે પસંતે ઉવસંતે પરિણિબ્બુડે, છિણ્ણસોપ, ગિરુવલેવે,

તથા—ઇન્દ્રિયવિપયેષુ શબ્દાદિષુ રાગદ્વેષરાહિત્યેન પ્રવૃત્ત इत्यर्थः । તથા ‘ગુત્તવંભ-
યારી’ ગુપ્તવ્રહ્મચારી—ગુપ્ત વસત્યાદિમિર્ગુપ્તિભિઃ પ્રયત્નપૂર્વકં રક્ષિતં યદ્ વ્રહ્મ મૈથુન-
વિરમણલક્ષણ, તેન ચરતીત્યેવં શીલઃ—વ્રહ્મચર્યરક્ષણે સતતપ્રવૃત્ત इत्यर्थः, તથા—‘અકોહે’
અક્રોધઃ ક્રોધવર્જિતઃ, ‘જાવ’ યાવત્—યાવત્પદેન—‘અમાણે અમા’ અમાનઃ અમાયઃ इति
પદ્વયં સંગ્રાહ્યમ્ । તતશ્ચ માનવર્જિતો માયાવર્જિતશ્ચેત્યર્થઃ, તથા ‘અલોહે’ અલોભઃ લોભ-
વર્જિતઃ, ક્રોધાદિરાહિત્ય સ્થૂલક્રોધાદ્યપેક્ષ્યા બોધ્યમ્ । સૂક્ષ્મક્રોધાદીનાં સૂક્ષ્મ સંપરાય-
ગુણસ્થાનકપર્યન્તં સદ્ભાવ. અતઃ સૂક્ષ્મક્રોધાદિ સત્તા તુ તત્કાલે ભગવત અસીદેવેતિ ।
અત એવ ‘સતે’ શાન્તઃ શાન્તકાયવાગ્મનોવ્યાપારત્વાત્, અત એવ ‘પસંતે’ પ્રશાન્તઃ પ્રકર્ષેણ
શાન્તિયુક્તઃ, તત એવ ‘ઉવસંતે’ ઉપશાન્તઃ પરીપહોપસર્ગપ્રાદુર્ભાવેऽપિ પ્રશાન્તિયુક્તત્વાદ
ધીરતયા તત્સહનશીલ इत्यर्थः, અતએવ ‘પરિણિવ્વુદે’ પરિનિર્વૃત્તઃ સકલ સન્તાપવર્જિત-
ત્વેન શીતલીભૂતઃ, ‘છિન્નસો’ છિન્ન સ્ત્રોતાઃ છિન્નસંસારપ્રવાહઃ, ‘છિન્નશોકઃ’ इति
ચ્છાયાપક્ષે—શોકરહિત इत्यर्थः, તથા ‘નિરુવલેવે’ નિરુપલેપઃ દ્રવ્યભાવમલરહિતઃ, इत्थં

સંસ્ક્રમિવ ણિરંજણે” મનઃ સમિત, વચઃ સમિત, કાયસમિત, મનોગુપ્ત યાવત્ ગુપ્તવ્રહ્મચારી,
ક્રોધહીન યાવત્ લોભ હીન યે, શાંત યે, પ્રશાન્ત યે, ઉપશાન્ત યે, પરિનિર્વૃત્ત યે, શોક રહિત
યે, ઉપલેપ રહિત યે, શસ્ત્ર કી તરહ નિરંજન યે, યહા જો પાંચ સમિતિયોં સે સમિત હોને
કે બાદ મનઃ સમિત આદિ વિશેષણો વાળા જો પ્રમુ કો પ્રકટ ક્રિયા ગયા હૈ ઉસકા તાત્પર્ય
એસા હૈ કિ વે કુશલ મનોયોગ કે પ્રવર્તક યે, હસસે અશુભ ચિન્તવન કા ઉનમેં સર્વથા અભાવ
સૂચિત ક્રિયા ગયા હૈ. ધર્મધ્યાન કે ધ્યાતૃત્વ કી ઉનમેં પુષ્ટિ કો ગઈ હૈ । “વચઃ સમિત” પદ
સે ભાષાસમિતિ મેં ઉનકો અત્યાદરભાવ થા યહ સ્પષ્ટ ક્રિયા ગયા હૈ, તથા કરણત્રયશુદ્ધિ સૂત્ર
મેં સંખ્યાપૂરણ કે લિયે હન વાકસમિત પદ કા પ્રયોગ ક્રિયા ગયા હૈ । “કાયસમિતઃ” એસા
જો કહા ગયા હૈ વહ ઈર્યાપથ સમિતિ મેં વિશેષ આદરભાવ સૂચિત કરને કે લિયે કહા ગયા હૈ
ક્યોં કિ યે પ્રશસ્તકાયયોગ વાલે યે, યે અકુશલ મનોયોગ કે નિરોધક યે. હસલિયે મનોગુપ્ત

સંસ્ક્રમિવ ણિરંજણે” મનઃ સમિત વચઃ સમિત, કાયસમિત મનોગુપ્ત યાવત્ ગુપ્ત વ્રહ્મચારી,
ક્રોધહીન યાવત્ લોભહીન હતા, શાંત હતા, પ્રશાંત હતા, ઉપશાંત હતા, પરિનિર્વૃત્ત હતા,
શોક વિહીન હતા, ઉપલેપ રહિત હતા, યંબની જેમ નિરંજન હતા, અહીં જે પંચસમિ-
તિઓ વડે સમિત થયા બાદ મન સમિત વગેરે વિશેષણોથી સુક્ત પ્રભુને પ્રકટ કર-
વામાં આવ્યા છે, તેનુ તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે કે તેઓ કુશલ મનોયોગના પ્રવર્તક હતા
એથી અશુભ ચિન્તવનને તેઓ શ્રીમાં સંપૂર્ણ રીતે અભાવ સૂચિત કરવામાં આવેલ છે
ધર્મધ્યાનના ધ્યાતૃત્વની તેઓશ્રીમાં પુષ્ટિ કરવામાં આવી છે. “વચ સમિત” પદથી ભાષા-
સમિતિમાં તેઓ શ્રીના અત્યાદર ભાવ હતા એ વાત સ્પષ્ટ કરવામાં આવી છે તેમ જ
કરણ ત્રય શુદ્ધિ સૂત્રમાં સંખ્યા પૂરણ માટે એ વાદ સમિત પદને પ્રયોગ કરવામાં આવેલ
છે. “કાયસમિતઃ” એવું જે કહેવામાં આવ્યું છે, તે ઈર્યાપથ સમિતિમાં વિશેષ આદર
ભાવ સૂચિત કરવા માટે કહેવામાં આવેલ છે કેમકે તેઓ શ્રી પ્રશસ્તકાયયોગવાળા હતા,

ભગવતો વર્ણનં સામાન્યેનાભિધાય સમ્પ્રતિ સોપમાનં ભગવતોવર્ણનમાહ—‘સંખમિવ’ इत्यादि । ‘संखमिव णिरंजणे’ शङ्ख इव निरञ्जनः निर्गतम् अञ्जनं जीवमालिन्यकरं कर्म यस्मात् स तथा, यथा शङ्खः शुभ्रो भवति तथैव विगतकर्ममलत्वात् स भगवानपि विशुद्धात्म-स्वरूप इत्यर्थः मूले ‘संखमिव’ इत्यत्र मकरोऽल्लक्षणिकः, तथा ‘जच्च कणग वा जाय-रूवे’ जात्यकनकमिव-विशुद्ध सुवर्णमिव जातरूपः, जातं रूपं स्वरूपं रागादि कुत्सित-द्रव्यविरहाद् यस्य स तथा, यथा-निर्गतमलं सुवर्णं सुदर्शनं भवति तथैवासौ रागादि

યે, યહાં યાવત્પદ સે “વાગ્ગુપ્તઃ કાયગુપ્તઃ ગુપ્તઃ ગુપ્તેન્દ્રિયઃ” ઇન પદો કા ગ્રહણ હુઆ હૈ, અકુશલ-વાગ્મયોગ કે નિરોધક હોને મે યે વાગ્ગુપ્ત, અકુશલ કાયયોગ કે નિરોધક હોને સે યે કાયગુપ્ત યે, સત્પ્રવૃત્તિ કા નામ સમિતિ હૈ ઔર અસત્પ્રવૃત્તિ કા નિરોધ કરના ગુપ્તિ હૈ. યહી ગુપ્તિ ઔર સમિતિ મેં મેદ હૈ, અતएव ये गुप्त-सर्वथा सवृत्त ये, इसीलिये ये गुप्तेन्द्रिय थे-इन्द्रियों क विषय भूत शब्दादिको में इनकी रागद्वेष से रहित ही प्रवृत्ति थी तथा ये गुप्त ब्रह्मचारी थे-ब्रह्मचर्य महाव्रत के संरक्षण में सदा ९ नौ कोटि से तल्लीन थे, तथा-“अक्रोधः” क्रोध रहित थे यहां यावत्पद से “अमाणे, अमाए, इन पदों का ग्रहण हुआ है. तथा च-ये मानवर्जित और मायावर्जित थे, “अलोभः” लोभ से रहित थे क्रोधादि कषायो से रहितता का यह कथन स्थूलक्रोधादि की अपेक्षा से किया गया जानना चाहिये क्योंकि १० वें सूक्ष्म सांपराय गुणस्थान तक कषाय का सङ्गा व सिद्धान्त ने माना है अतः सूक्ष्म क्रोधादि कषायों की सत्ता तो उस समय प्रभु में थी ही अत एव ये मन, वचन और काय के व्यापार की शान्ति होने से शान्त थे, प्रशान्त ये प्रकर्षरूप में शान्ति से युक्त थे और यही कारण था कि पहीषह और

તેઓ અકુશલ મનોયોગના નિરોધક હતા, એથી જ મનોગુપ્ત હતા અહીં યાવત્ પદથી વાગ્ગુપ્તઃ કાયગુપ્તઃ, ગુપ્તઃ ગુપ્તેન્દ્રિયઃ” આ પદોનો સંગ્રહ કરવામાં આવેલ છે. અકુશલ વાગ્મયોગના નિરોધક હતા તેથી એઓ વાગ્ગુપ્ત હતા અને અકુશલ કાયયોગના નિરોધક હોવાથી કાયગુપ્ત હતા. સત્પ્રવૃત્તિનું નામ સમિતિ છે. અને અસત્પ્રવૃત્તિનો નિરોધ કરવો ગુપ્તિ છે ગુપ્તિ અને સમિતિમાં એ જ ભેદ છે એથી તેઓ ગુપ્ત સર્વથા સવૃત્ત હતા એથી જ એઓ ગુપ્તેન્દ્રિય હતા ઈન્દ્રિયોના વિષયભૂત શબ્દાદિકોમાં એમની રાગદ્વેષવિહીન પ્રવૃત્તિ જ હતી, તેમજ એઓ ગુપ્ત બ્રહ્મચારી હતા બ્રહ્મચર્ય મહાવ્રતના સંરક્ષણમાં સર્વદા એઓ ૯ કોટીથી તલ્લીન હતા. તેમજ ‘અક્રોધઃ’ ક્રોધ વિહીન હતા. અહીં યાવત્ પદથી ‘અમાણે, અમાए’ એ પદો ગ્રહણ કરાયા છે તેમજ એઓ માનવર્જિત અને માયા વર્જિત હતા ‘અલોભ’ લોભ રહિત હતા અહીં-ક્રોધાદિ કષાય વિહીન પણા સબંધી કથન સ્થૂલ-ક્રોધાદિની અપેક્ષાએ કરવામાં આવેલ છે. કેમકે ૧૦ મા સૂક્ષ્મ સાંપરાય ગુણસ્થાન સુધી કષાયનો સદ્ભાવ સિદ્ધાન્તે માન્યો છે એથી સૂક્ષ્મ ક્રોધાદિક કષાયોની સત્તા તો તે વખતે પ્રભુમાં હતી જ, એથી તેઓ મન, વચન અને કાયના વ્યાપારની શાન્તિ થઈ જવાથી શાંત હતા, પ્રશાંત હતા, પ્રકર્ષ રૂપમાં શાંતિ યુક્ત હતા એથી જ તેઓ પરીષદ અને ઉપસર્જોના આક્રમણ વખતે ધીર થઈ જતા અને તેથી તેઓ તેમના આ-

ઉપસર્ગોં કે જાને પર મી ઘીર હો જાને કે કારણ ઉન્હે યે સહન કરને કે સ્વમાવ વાઢે બન ચુકે થે; હન્હે કિસી મી પ્રકાર કા વાહા ઓર મીતર કા આતાપ-સન્તાપ-આકુલ વ્યાકુલ નહીં કર સકતા થા-ઉસસે યે વર્જિત યે હસલિયે યે “પરિનિર્વૃત્તઃ” શીતલોમૂત હો ગયે યે તથા “છિન્ન-સ્રોતાઃ” યે હસલિયે કહે કયે હૈ કિ હનકા સસાર પ્રવાહ સર્વથા છિન્ન હો ચુકા થા, “છિન્ન-શોકઃ” જવ એસી “છિન્નસોપ” પદ કો ઝાયા રસ્તી જાવેગી તવ યે શોકરહિત યે એસા હસકા અર્થ હોગા, “નિરૂપલેપઃ” પદ સે યહ સૂચિત કિયા ગયા હૈ યે દ્રવ્યમલ ઓર માવમલ હન દોનો પ્રકાર કે મલો સે રહિત હો ચુકે થે, હસ તરહ સામાન્ય રૂપ સે ભગવાન્ કા વર્ણન કર અવ સૂત્રકાર સોપમાન ભગવાન્ કા વર્ણન કરતે હૈ-યે ભગવાન્ “શક્તમિવણિરઙ્ગન” જોવ કો મલીન કરને વાલા અઙ્ગન કે જૈસા કર્મરૂપ મૈલ જિનસે દૂર હો ગયા હૈ એસે યે, ગદ્ગદ શુભ્ર હોતા હૈ હસી પ્રકાર કર્મરૂપ મૈલ કે વિગત હો જાને સે પ્રમુ મી વિશુદ્ધ આત્મસ્વરૂપ વાઢે થે, “મૂલ મેં સંસ્થમિવ” એસા જો પાઠ કહા ગયા હૈ સો યહા યહ મકાર અલાક્ષણિક હૈ “અન્ન કણગં વ નિરૂપલેવે” વિશુદ્ધ સુવર્ણ કી તરહ પ્રમુ રાગાદિક કુત્સિત દ્રવ્યોં કે વિરહ હો જાને સે શુદ્ધ સ્વરૂપ સે યુક્ત થે, નિર્ગતમલ વાલા સુવર્ણ જૈસા સુદર્શન હોતા હૈ ડસી પ્રકાર રાગાદિમલરહિત હોને સે પ્રમુ મી સુદર્શન થે, “આદિરસ પદ્મિભાગે ઇવ પાગલમાવે” પ્રમુ આદર્શ-દર્પણ કે પ્રતિ બિમ્બ કી તરહ અનિગૂહિત અભિપ્રાય વાઢે થે, દર્પણ મેં જૈસા મુસાદિક કા આકાર હોતા હૈ । વૈસા હી વહ પ્રતિબિમ્બિત હૈ ડસી પ્રકાર સે ઋષભદેવ મી સર્વદા અનિગૂહિત અભિપ્રાયવાઢે થે,

કેમણીને સહન કરવા યોગ્ય સ્વભાવ વાળા થઈ ગયા હતા. એમને બહાર કે અંદરનો કોઈ પણ જાતનો આતાપ-સતાપ-આકુળ વ્યાકુળ કરી શકતો ન હતો. તેનાથી એઓ વર્જિત હતા, એથી જ ‘પરિનિર્વૃત્તઃ’ શીતલી ભૂત થઈ ગયા હતા. તથા ‘છિન્નસ્રોતા’ એ ઓ ઓટલાભાટે કહેવામાં આવેલ છે. કે એમનો સસાર પ્રવાહ સર્વથા છિન્ન ભિન્ન થઈ ગયો હતો. ‘છિન્નસોપ’ પદની ‘છિન્નશોક’ એવી છાયા થશે ત્યારે એઓ શોક રહિત હતા એવો એનો અર્થ થશે, ‘નિરૂપલેપઃ’ પદથી આમ સૂચિત કરવામાં આવેલ છે કે એઓ દ્રવ્યમલ અને ભાવમલ એ બન્ને પ્રકારના મલોથી વિહીન થઈ ગયા હતા. આ પ્રમાણે સામાન્ય રૂપમાં ભગવાનનું વર્ણન કરીને સૂત્રકાર હવે સોપમાન ભગવાનનું વર્ણન કરે છે એ ભગવાન્ ‘શક્તમિવ ણિરઙ્ગનઃ’ જીવને મલિન કરનારા અંજનના જેવું કર્મરૂપ મલ એનાથી દૂર થઈ ગયું છે, એવા હતા. શબ શુભ્ર હોય છે. આ પ્રમાણે કર્મરૂપ મલના વિનાશથી પ્રભુ પણ વિશુદ્ધ આત્મ સ્વરૂપવાળા હતા મૂલમાં ‘સંસ્થમિવ’ એવો જે પાઠ છે તેમાં આ મકાર અલાક્ષણિક છે “જત્યકનકમિવ નિરૂપલેવઃ” વિશુદ્ધ સુવર્ણની જેમ પ્રભુ રાગાદિક કુત્સિત દ્રવ્ય વિહીન હોવા બદલ શુદ્ધસ્વરૂપ યુક્ત હતા નિર્ગતમલવાળું સુવર્ણ જેવું સુદર્શન હોય છે તે સુજ્ઞ પ્રભુ પણ રાગાદિ મલરહિત હોવા બદલ સુદર્શન હતા, “આદર્શ પ્રતિભાગદ્વ પ્રક ” પ્રભુ આદર્શ-દર્પણના પ્રતિબિંબની જેમ અનિગૂહિત અભિપ્રાય વાળા હતા. દર્પણમાં જેમ અપ્રાદિકના આકાર જેવું જ પ્રતિબિંબ દેખાય છે, તેમજ ભગવાન ઋષભદેવ પણ સર્વદા અનિગૂહિત અભિપ્રાયવાળા હતા શકની જેમ તેઓ નિગૂહિત

મલરહિતત્વાત્ સુદર્શન इत्यर्थः, 'आदिरसपङ्क्तिभागे इव' आदर्श प्रतिभाग इव आदर्शे-
दर्पणे यः 'पागङ्भागे' प्रतिभागः प्रतिविम्बः स इव प्रकटभावः प्रकट अनिगूहित भावः
अभिप्रायो यस्य स तथा, यथा दर्पणे यथास्थित मुखादेः प्रतिविम्बः प्रतिफलितो
भवति तथैव भगवान् ऋपमोऽपि सर्वदाऽनिगूहिताभिप्राय आसीत्, न तु शठ इव निगू-
हिताभिप्राय इति भावः । तथा 'कूर्मो इव गुप्तिदिष्ट' कूर्म इव गुप्तेन्द्रिय—यथा
कूर्मो भये समुपस्थिते चतुरश्ररणान् ग्रीवां च सगोपयति, तथैवासौ भगवान् शब्दादि
भयेभ्यः सर्वदा सगोपितपञ्चेन्द्रिय आसीदित्यर्थः । तथा 'पुष्करपत्रमिव' पुष्कर-
पत्रमिव=कमलपत्रमिव 'निरुवलेव' निरुपलेपः—उपलेपवर्जितः, यथा कमलपत्र पङ्केजात
जले संबद्धितमपि जलादुपरि निर्लिप्तं तिष्ठति, तथैवासौ भगवान् भोगे समुत्पन्नः
स्वजनादिषु संबद्धितोऽपि तत्स्नेहरूपलेपरहित इत्यर्थः । तथा 'गगनमिव निरालम्बणे'
गगनमिव निरालम्बनः यथा—गगनम् अवष्टम्भरहितं भवति तथैवासौ भगवान् कुल-
ग्रामनगरादिनिश्चारहितोऽभूदित्यर्थः । तथा 'अनिले इव' अनिल इव=वायुरिव 'निरा-
लप' निरालयः=आलयवर्जितः, यथा वायुः सर्वत्र संचरणशीलत्वेन स्थानप्रतिबन्ध-

શઠ ક્રી તરહ નિગૂહિત અભિપ્રાયવાલે નહીં થે । “કુર્મો ઇવ ગુપ્તિદિષ્ટ” કચ્છપ જિસ પ્રકાર
મય કે ઉપસ્થિત હોને પર અપને ચારોં ચરણો કો ઔર ગ્રીવા કો સકુચિત ફર હેતા હૈ ઉસી
પ્રકાર પ્રસુ મી શબ્દાદિકોં મેં આસક્તિ હો જાને કે મય સે સર્વદા અપની પાંચોં હો ઇન્દ્રિયોકો
ઠનકે વિષયોં સે સગોપિત—સુરક્ષિત રલે હુએ થે, “પુસ્કરપત્રમિવ નિરુવલેવ” પ્રસુ કમલપત્ર ક્રી
તરહ ઉપલેપ સે રહિત થે, ત્રિસ પ્રકાર કમલ કીચક્ર મેં ઉત્પન્ન હોતા હૈ ઔર જલ મેં સર્વદ્વિત
હોતા હૈ તવ મી વહ જલ કે ઊપર હી રહતા હૈ ઔર ઉસસે નિર્લિપ્ત બના રહતા હૈ ઉસી તરહ
મગવાન્ ભોગ મેં ઉત્પન્ન હુએ ઔર અપને સર્વથિ જનોં કે બીચ મેં સર્વદ્વિત હુએ ફિર મી ઠનકે
સ્નેહરૂપલેપ સે રહિત થે, ‘ગગનમિવ નિરાલંબણે’ પ્રસુ આકાશ ક્રી તરહ અવલંબન સે રહિત થે,
આકાશ વિના સહારે કે જૈસા રહતા હૈ ઉસી પ્રકાર પ્રસુ મી કુલ ગ્રામ આદિ ક્રી નિશ્રા સે
રહિત થે, “અનિલે ઇવ નિરાલપ” વાયુ જિસ પ્રકાર સચરણ શીલ હોને સે વિના કિસો રોક

અભિપ્રાયવાળા ન હોતા “કુર્મં ઇવ ગુપ્તેન્દ્રિયઃ” કચ્છપ જેમ ભયાવસ્થામાં પોતાના ચારે
પગ અને ગ્રીવાને સંકુચિત કરી નાખે છે તેમજ પ્રભુ પણ શબ્દાદિ વિષયોમા આસક્તિ
ન થઈ બચ તે ભયથી સહા પોતાની પંચેન્દ્રિયોને તેમના વિષયોથી સગોપિત—સુરક્ષિત
રાખતા હતા “પુસ્કરપત્રમિવ નિરુલેવઃ” પ્રભુ કમળપત્રની જેમ ઉપલેપથી રહિત હતા
જેમ કમળ કાંદવમા ઉત્પન્ન થાય છે અને પાણીમા સર્વદ્વિત થાય છે, છતાંજે તે જલ ઉપર
જ રહે છે અને તેનાથી નિર્લિપ્ત થઈ ને રહે છે, તેમજ ભગવાન્ ભોગમાં પ્રકટ થયા અને
પોતાના સબધિઓની વચ્ચે રહીને મોટા થયા છતાંજે તેમના સ્નેહરૂપ લેપથી રહિત હતા
“ગગનમિવ નિરાલંબણે” પ્રભુ આકાશની જેમ આલબન વિહીન હતા આકાશ જેમ સહારા
વગર રહે છે તેમજ પ્રભુ પણ કુળ, ગ્રામ વગેરેની નિશ્રાથી રહિત હતા “અનિલે ઇવ નિરા-
લપ” વાયુ જેમ સચરણશીલ હોવાથી સર્વત્ર વિહરણશીલ હોય છે, તેમજ પ્રભુ પણ અ

રહિતો ભવતિ, તથૈવાસો પ્રમુરપિ અપ્રતિવન્ધવિહારિત્વેન વસત્યાદિ પ્રતિવન્ધરહિતો-
 ઽભૂદિત્યર્થઃ । તથા 'ચંદો ઇવ સોમદસણે' ચન્દ્રઃ સૌમ્યદર્શનઃ યથા ચન્દ્રઃ પ્રિય-
 દર્શનત્વેન સર્વેષાં મનોનયનાહ્લાદનનો ભવતિ તથૈવાસો પ્રમુરપિ સર્વેષાં મનોનયના-
 નન્દકર આસીદિત્યર્થઃ । તથા 'સૂરો ઇવ તેયસી' સૂર ઇવ તેજસ્વી યથા-સૂર્યઃ ચન્દ્ર-
 નક્ષત્રાદીનાં તેજોઽપહારકો ભવતિ તથૈવાસો પ્રમુરપિ સકલ પરતીર્થિકતેજોઽપહારકોઽ-
 ભૂદિત્યર્થઃ । તથા—'વિહગ ઇવ અપહિવદ્ધગામી' વિહગ ઇવ અપ્રતિવદ્ધગામી—અપ્રતિ-
 વદ્ધઃ=પ્રતિવન્ધરહિતઃ સન્ ગચ્છતીત્યેવ શીલઃ અપ્રતિવદ્ધગામી—યથા—વિહગઃ=પક્ષી-
 પ્રતિવન્ધરાદિત્યેન સ્વાવયવભૂતપલસાપેક્ષઃ સર્વત્ર વિહરતિ તથૈવાસો ભગવાન્ કર્મક્ષય-
 સહાયકારિણુ અનેકેષ્વનાર્યદેશેષુ પરાનપેક્ષઃ સન્ સ્વશક્ત્યા વિહરતીતિ ભાવઃ । તથા
 'સાગરો ઇવ ગંભીરે' સાગર ઇવ ગમ્ભીરઃ યથા સાગરોઽતલસ્પર્શી ભવતિ તથૈવાયં

ટોક કે સર્વત્ર વિહરણશીલ હોતી હૈ उसी प्रकार प्रभु भी अप्रतिबन्ध विहारी होने के कारण स्थान
 के प्रतिबन्ध से रहित थे, अर्थात् वसति आदि में ममत्व रहित थे, "चंदो इव सोम दसणे"
 चन्द्र की तरह प्रभु सौम्य दर्शनवाले थे चन्द्र जिस प्रकार से प्रिय दर्शनवाला होने के कारण
 समस्त जीवों के मन और नयनों को आह्लाद जनक होता है उसी तरह प्रभु भी समचतुरत्र
 सस्थान एवं वज्ररूपमसहनन के धारी होने से सब जीवों के मन और नेत्रों को आनन्द
 देने वाले थे "सूरो इव तेयंसी" सूर्य की तरह प्रभु तेजस्वी थे सूर्य जिस प्रकार नक्ष-
 त्रादिकों के तेज का अपहारक होता है उसी प्रकार प्रभु भी सकल परतार्थिकजनों के तेज
 के अपहारक थे, "विहगइव अपहिवद्वगामी" पक्षी की तरह प्रभु अप्रतिवद्व गामी थे पक्षी
 जिस प्रकार प्रतिबन्ध रहित होने के कारण केवल अपने अवयवभूत पंखों के बल पर
 सर्वत्र विहार करता है उसी प्रकार प्रभु भी कर्मक्षय में सहायकारी અનેક अनार्यદેશે' में
 परानपेक्ष होकर अपनी शक्ति के बल पर विहार करते थे 'सागरो इव गंभीर' प्रभु समुद्रकी
 तरह गंभीर थे, सागर जिस प्रकार अगाध होने के कारण किसी के भी द्वारा तल स्पर्शी

પ્રતિબન્ધ વિહારી હોવા બદલ સ્થાનના પ્રતિબન્ધથી રહિત હતા, એટલે કે વસ્તી વગેરેમાં
 મમત્વ વિહીન હતા "ચંદો ઇવ સોમદંસણે" પ્રભુ ચન્દ્રવત્ સૌમ્યદર્શનવાળા હતા જેમ
 ચન્દ્ર પ્રિયદર્શી હોવા બદલ સર્વ જીવોના મન અને નેત્રોને આહલાદ આપનાર હોય છે, તે
 મજ પ્રભુ પણ સમચતુરત્ર સ્થાન તેમજ વજ્ર રૂપના સંહનનના ધારી હોવાથી સર્વ
 જીવોના મન અને નેત્રોને આનંદ પમાડનાર છે "સૂરઇવ તેજસ્વી" પ્રભુ સૂર્યની જેમ તેજ
 સ્વી હતા સૂર્ય જેમ નક્ષત્રાદિકોના તેજને અપહર્તા હોય છે તેમજ પ્રભુ પણ સમસ્ત
 પરતીર્થિકજનોના તેજના અપહર્તા હતા. "વિહગ ઇવ અપહિવદ્ધગામી" પક્ષીની જેમ પ્રભુ
 અપ્રતિબદ્ધગામી હતા પક્ષી જેમ પ્રતિબન્ધ રહિત હોવા બદલ ફક્ત પોતાના અવયવભૂત
 પંખોના આધારે સર્વત્ર વિહાર કરે છે તેમજ પ્રભુ પણ કર્મક્ષયમાં સહાયકારી અનેક અ-
 નાર્ય દેશેમાં પરાનપેક્ષ થઈને સ્વબળ ના આધારે વિહાર કરે છે 'સાગરો ઇવ ગંભીરે' સાગર
 જેમ અગાધ હોવાથી અતલસ્પર્શી હોય છે તેમજ પ્રભુ પણ અતલ સ્પર્શી એટલે કે ગૂઢ

प्रभुरपि गम्भीराशय इत्यर्थः । अयं भावः—यथा समुद्रोऽगाधत्वान्न केनापि तलावच्छे-
देन स्पर्शनीयो भवति, तथैवासौ प्रभुरपि परैरज्ञातस्वाभिप्रायो निरुपमज्ञानवत्वेऽपि रहः
कृतदुश्चरितानामपरिस्रावित्वाद् हर्षशोकादिकारणसद्भावेऽपि तद्विकारादर्शनाद् वेति ।
तथा—‘मदरो इव अकंपे’ मन्दर इव अकम्पः यथा मन्दरपर्वतोऽकम्पो भवति तथैवासौ
प्रभुरपि स्वप्रतिज्ञातेषु तपःसंयमेषु दृढाशयत्वेन परीषदोपसर्गादिकृतवाधासंयुक्तोऽपि ततो-
ऽप्रच्यवनशील इति भावः । तथा ‘पुढवीविव सन्वफासविसहे’ पृथिवी इव सर्वस्पर्शविषहः -
यथा पृथिवी सर्वस्पर्शसहनशीलो भवति तथैव प्रभुरपि सर्वविधानुकूलप्रतिकूलस्पर्शसहनशी-
लो भवतीति तथा ‘जीवोविव अप्पडिहयगइत्ति’ जीव इव अप्रतिबद्धगतिरिति । यथा
जीवस्य कटकुड्यादिभिर्गतिप्रतिघातो न भवति तथैवास्य प्रभोरपि आर्यानार्यदेशेषु
संचरत परपाखण्डिकृतप्रतिघातो नाभूदित्यर्थः । इति शब्दो सन्दर्भपरिसमाप्तौ ॥ सू० ४० ॥

नहीं होता है उसी तरह प्रभु भी दूसरों के द्वारा जिनका अभिप्राय जाना जाय ऐसे नहीं
ये । अथवा प्रभु निरुपम ज्ञानशाली ये, फिर भी एकान्त में कृत दुश्चरितो के अपरिस्रावो
होने के कारण हर्षशोकादि कारणों के सद्भाव में भी तद्विकार का उनमें अदर्शन रहता था,
इसलिये वे सागर के जैसे गंभीर थे, तथा “मदरो इव अकंपे मन्दर के समान प्रभु अकम्प
थे, जिस प्रकार मन्दर पर्वत भयंकर से भी भयंकर आघी के समक्ष अकम्प अडिग रहता है उसी
प्रकार प्रभु भी अपने द्वारा प्रतिज्ञात तपः संयमों के ऊपर दृढाशयवाले होने के कारण परीषह
और उपसर्ग आदि के द्वारा बाधा संयुक्त होने पर भी उनसे विचलित नहीं होते, पृथिवी की
तरह प्रभु “पुढवी विव सन्वफास विसहे” सर्व प्रकार के स्पर्शों के सहन कर्त्ता थे, पृथिवी जिस
प्रकार सर्व प्रकार के स्पर्शों को सहन करने वाली होती है उसी प्रकार से प्रभु भी सर्व प्रकार
के अनुकूल, प्रतिकूल स्पर्शों के सहन करने के स्वभाव वाले थे, “जीवोविव जप्पडिहयगइत्ति”
प्रभु जीव की तरह अप्रतिबद्ध गतिवाले थे, जीव की गति जिस प्रकार कट कुड्यादिकों द्वारा
प्रतिहत नहीं होती उसी प्रकार प्रभु का विहार भी आर्य अनार्य देशों में होता हुआ भी
पाखण्डियों द्वारा प्रतिघातयुक्त नहीं होता ॥ ४० ॥

हता प्रभुने। अभिप्राय को न जानी शक्ता न होता अथवा प्रभु निरुपम ज्ञानशाली होता।
छतांजे कोछातमा कृत दुश्चरिताना अपरिस्रावी होवा यहल हर्ष शोकादि कारणाना सहसा
वर्मा पणु तद् विषयक विकाराना तेजोश्रीमा अभाव रहेतो हतो ओथी न तेजो श्री साग
रनी जेम गंभीर होता तेमज मन्दरनी जेम अकम्प होता जेम मन्दर पर्वत अकम्प
अकम्प सभत आधी नी सामे अकम्प अडिग रहे छे तेमज प्रभु पणु पिताना वडे प्रति-
ज्ञात तप संयमो छपर दृढ आशयवाणा होवाथी परीषह अने उपसर्ग वगेरे वडे
बाधा संयुक्त होवा छतांजे तेमनाथी विचलित थता नथो, पृथिवीनी जेम प्रभु “सर्वस्पर्श
विषह” सर्व प्रकारना स्पर्शो ने सहन करनार होता पृथिवी जेम सर्व प्रकारना स्पर्शोनि
सहन करनारी छे तेमज प्रभु पणु सर्व प्रकारना अनुकूल-प्रतिकूल स्पर्शोनि सहन करी शके
तेवा स्वभाववाणा होता। “जीव इव प्रतिबद्धगति” छपनी जेम प्रभु अप्रतिबद्धगतिवाणा
हता छपनी गति जेम कट कुड्यादि वडे प्रतिहत होती नथी तेमज प्रभुने विहार पणु आर्य
अनार्य देशोमा होय छे छतांजे ते पाखंडीजो वडे प्रतिघातयुक्त थतो नथी। ॥सू० ४०॥

मूलम्—णत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिवंधे । से पडिवंधे, चउ-
 विहे भवइ तं जहा दव्वओ, खित्तओ. कालओ, भावओ ! दव्वओ-
 इह खलु माया मे, पिया मे माया मे भगिणी मे जाव संगंथसंथुआ
 मे, हिरण्णं मे, सुवण्णं मे जाव उवंगरणं मे अहवा समासओ सच्चित्ते
 वा अचित्ते वा मीसए वा दव्वजाए सेवं तस्स ण भवइ । खित्तओ-
 गामे वा णयरेवा अरण्णे वा खेत्ते वा खले वा गेहे वा अंगणे
 वा, एवं तस्स ण भवइ । कालओ थोवे वा लवे वा मुहुत्ते वा
 अहोरत्ते वा पक्खे वा मासे वा उऊण वा अयणे वा संवच्छरे वा
 अन्नयरे वा दीहकाले पडिवंधे एवं तस्स ण भवइ । भावओ—कोहे
 वा जाव लोहे वा भए वा होसे वा एवं तस्स ण भवइ । से णं भगवं
 वासावासवज्जं हेमंतगिम्हासु गामे एगराइए णयरे पंचरोइए ववगय-
 हाससोग अरइ भय परित्तासे णिम्ममे णिरहंकारे लहुभूए अगंथे वासी
 तच्छणे अदुट्ठे चंदणाणुलेवणे अरत्ते लेहुम्मि कंचणम्मि य समे इहलोए
 परलोए य अपडिबद्धे जीबियमरणे निरवकंखे संसारपाग्गामी कम्मसंग-
 णिग्घायणट्ठाए अब्भुट्ठिए विहरइ ॥सू० ४१॥

छाया—नास्ति खलु तस्य भगवत कुत्रापि प्रतिबन्धः । स प्रतिबन्धः चतुर्विधो
 भवति, तद्यथा—द्रव्यतः क्षेत्रतः कालतो भावत । द्रव्यत—इह खलु माता मे, पिता मे,
 मे, भगिनी मे, यावत् संग्रन्थसंस्तुता मे, हिरण्यं मे, सुवर्णं मे यावत् उपकरणं
 मे, अथवा समासतः—सचित्ते वा अचित्ते वा मिश्रके वा, स पवं तस्य न भवति । क्षेत्रतो
 ग्रामे वा नगरे वा अरण्ये वा क्षेत्रे वा खले वा गेहे वा अङ्गणे वा, पवं तस्य न भवति ।
 कालत—स्तोके वा लवे वा मुहूर्त्ते वा अहोरात्रे वा पक्षे वा मासे वा । वा अयने
 वा संवत्सरे वा दीर्घकाले प्रतिबन्धः, पवं तस्य न भवति । भावतः क्रोधे वा यावत् लोभे
 वा भये वा हासे वा पवं तस्य न भवति । स खलु भगवान् वर्षा वर्षं हेमन्तग्रीष्मयोः
 ग्रामे ऐकरात्रिको नगरे पाञ्चरात्रिको व्यपगतहासशोकारतिभयपरित्रासो निर्मसो हि
 , इहलोकं परलोके च अप्रतिबद्धः, जीवितमरणे निरवकाशः संसारपारं हि कर्मस-
 कुनिर्घातनार्थाय अभ्युत्तिं विहरति ॥सू० ४१॥

અથ ભગવતઃ શ્રમણવસ્થા વર્ણયતિ—

ટીકા—‘ળત્થિ ણ’ ઇત્યાદિ । ‘ળત્થિ ણ તરસ ભગવતસ્સ કત્થઇ પહિવંધે’ તસ્ય ભગવતઃ મ્હુલ્લ કુત્રાપિ કરિંગશ્ચિદપિ સ્થાને પ્રતિવન્ધઃ ‘અયં મમ અહમસ્ય’ ઇતિ મનોભાવરૂપો વન્ધો નાસ્તિ=નાસીદિન્યર્થઃ । ‘અયં મમ અહમસ્ય’ ઇતિ રૂપશ્ચ સંસાર એવ । તદુક્તં—“અયં મમેતિ સંસારો નાહં ન મમ નિવૃત્તિઃ । ચતુર્ભિરક્ષરૈર્વન્ધઃ પચ્ચભિઃ પરમં પદમ્ ॥” ઇતિ । ‘સે પહિવંધે ચઠવ્વિહે ભવહ્’ સ ચ પ્રતિવન્ધશ્ચતુર્વિધો ભવતિ, ‘તં જહા-દવ્વઓ’ તદ્યથા-દ્રવ્યતઃ=દ્રવ્યમાશ્રિત્ય, ‘ચિત્તઓ’ ક્ષેત્રતઃ=ક્ષેત્રમાશ્રિત્ય ‘કાલઓ’ કાલતઃ=કાલમાશ્રિત્ય, ‘ભાવઓ’ ભાવતઃ=ભાવમાશ્રિત્યેતિ । તત્ર ‘દવ્વઓ’ દ્રવ્યતઃ=

ભગવાન્ કી શ્રમણવસ્થા કા વર્ણન

“ળત્થિ ણ તસ્સ ભગવંતસ્સ કત્થઇ પહિવંધે” ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—“તસ્સ ભગવંતસ્સ” ડન ઋષભનાથ ભગવાન્ કો “કત્થઇ” કહીં પર મી “પહિવંધે” યહ મેરા હૈ, મૈ ડસકા હૂ, ડસ પ્રકાર કા માનસિક વિકારરૂપ ભાવ નહીં હોતા । ક્યો કિ મૈ ડસકા હૂ, યહ મેરા હૈ ડસ પ્રકાર કા ભાવ હી સસાર હૈ, તદુક્તમ્—અયં મમેતિ સસારો નાહં ન મમ નિવૃત્તિ” ૨ જહ મેરા હૈ ડસ પ્રકાર કા ભાવહી સસાર હૈ મૈ ન ડનકા હૂ ઓર ન યહ મેરા હૈ” ડસ પ્રકાર કા જો ભાવ હૈ વહી સંસાર કો નિવૃત્તિ હૈ, “ચતુર્ભિરક્ષરૈર્વન્ધઃ પચ્ચભિઃ પરમં પદમ્” ચાર અક્ષરો દ્વારા બન્ધ હોતા હૈ ઓર પાંચ અક્ષરોં સે પરમ પદ પ્રાપ્ત હોતા હૈ “અહમસ્ય, અયં મમ” યહા ચાર ચાર અક્ષર હૈ ડનસે જીવ કર્મબન્ધ કા કર્તા હોતા હૈ ઓર “અહં અસ્ય ન, અયં મમ ન” યે પાંચ અક્ષર હૈ, ડનકે અનુસાર પ્રવૃત્તિ કરને વાલે પુરુષ કો મુક્તિ કો પ્રાપ્તિ હોતી હૈ, “સે પહિવંધે ચઠવ્વિહે ભવહ્” વહ પ્રતિબન્ધ ચાર પ્રકાર કા હોતા હૈ “તં જહા” જેસે—“દવ્વઓ” દ્રવ્ય કો આશ્રિત કરકે, “ચિત્તઓ” ક્ષેત્ર કો આશ્રિત કરકે, “કાલઓ” કાલ કો આશ્રિત કરકે ઓર “ભાવઓ”

ભગવાનની શ્રમણવસ્થાનુ વર્ણન

‘ળત્થિ ણ તસ્સ ભગવંતસ્સ કત્થઇ પહિવંધે’ ઇત્યાદિ ॥સુત્ર ૪૧॥

ટીકાર્થ—“તસ્સ મ સ્સ” તે ઋષભનાથ ભગવાનને ‘કત્થઇ’ કોઈ પશુ સ્થાને ‘પહિવંધો આ માડું છે હું એનો છું’ આ જાતનો માનસિક વિકારરૂપ ભાવ ઉત્પન્ન થતો. નહતો કેમકે હું આનો છું આ મારો છે આજાતનો ભાવ જ સસાર છે, તદુક્તમ્—“અયં મમેતિ સંસારો નાહં ન મમ નિવૃત્તિ” આ મારો છે એનેહું એનો છું એ ભાવસસાર છે, તેમ હું એમનો નથી અને એ મારો નથી આ જાતનો જે ભાવ છે તે જ સસારની નિવૃત્તિ છે “ચતુર્ભિરક્ષરૈર્વન્ધઃ પચ્ચભિઃ પરમં પદમ્” ચાર અક્ષરો વડે બન્ધ થાય છે અને પાંચ અક્ષરો વડે પરમ પદ પ્રાપ્ત થાય છે “અહમસ્ય અયં મમ” અહીં ચાર અક્ષરો છે એનાથી જીવ કર્મ-બન્ધનો કર્તા થાય છે અને “અહં અસ્ય ન, અયં મમ ન” એ પાંચ અક્ષરો છે એ અક્ષરો અનુજન પ્રવૃત્તિ કરનાર પુરુષને મુક્તિની પ્રાપ્તિ થાય છે. ‘સે પહિવંધે ચઠવ્વિહે ભવહ્’ તે પ્રતિબન્ધના ચાર પ્રકાર છે, ‘તં જહા’ જેમકે ‘દવ્વઓ’ દ્રવ્યને આશ્રિત કરીને, ‘ચિત્તઓ’ ક્ષેત્રને આશ્રિત કરીને “કાલઓ” કાલને આશ્રિત કરીને અને “ભાવઓ” ભાવને આશ્રિત

દ્રવ્યમાશ્રિત્ય પ્રતિબન્ધઃ ‘ઇહ સ્વલ્લુ માયા મે’ ઇહલોકે સ્વલ્લુ માતા મે-માતા મમાસ્તિ, एवं ‘પિયા મે’ પિતા મે, ‘માયા મે’ આતા મે, ‘મગિની મે’ મગિની મે ‘જાવ’ યાવત્-યાવત્પદેન ‘મજ્જા મે, પુત્તા મે, ધૂઆ મે, ણત્તા મે, સુઘ્ઠા મે, સહિસયણ’ છાયા-‘માર્યા મે, પુત્રા મે, દુહિતરો મે, નપ્પા મે, સ્તુપા મે, સલ્લિસ્વજન’ इति संग्राह्यम् । તત્ર-માર્યા-પત્ની મે-મમાસ્તિ, પુત્રા મે દુહિતરઃ-પુત્ર્યા મે નપ્પા-પૌત્રો દૌહિત્રો વા મે, સ્તુપા-પુત્ર વધૂ મે, તથા ‘સંગંથ સંથુયા મે’ સંગ્રન્થ સંસ્તુતા મે સલ્લિસ્વજને-ત્યસ્ય સંગ્રન્થસંસ્તુતા इत्यनेन सह सम्बन्धः, ततश्च-सल्लिस्वजनसंग्रन्थसंस्तुता इति पदम्, तत्र-सखा-मित्रं, स्वजनः-पितृव्यपुत्रादिः, संस्तुतः-पुनः पुनर्दर्शनेन परिचितः, सख्यादीनामितरेतरयोग द्वन्द्वः, ते च मे-मम सन्तीति । तथा-‘हिरण्ण मे’ हिरण्यं मे ‘सुवण्णं मे’ सुवर्णं मे, ‘जाव’ ‘કંસ મે દૂસ મે ધણં મે’ છાયા-કાંસ્ય મે દૂષ્યં મે ધનં મે’ इति संग्राह्यम्, तथा ‘उवगरणं मे’ उपकरणं-पूर्वोक्तातिरिक्ता सामग्री मे इति । पुनः प्रकारान्तरेण द्रव्यतः प्रतिबन्धमाह-‘अहवा’ इत्यादि । ‘अहवा’ अथवा-द्रव्यतः प्रतिबन्धः ‘समासओ’ समासतः-संक्षेपतः ‘सचित्ते वा’ सचित्ते-द्विपदादौ ‘अचित्ते वा’ अचित्ते-

માવ કો આશ્રિત કરકે “દવ્વઓ” દ્રવ્ય કો આશ્રિત કરકે પ્રતિબન્ધ હસ પ્રકાર સે હૈ— “ ઇહ સ્વલ્લુ માયા મેં પિયા મે, માયા મે, મગિની મે” માતા મેરી હૈ, પિતા મેરા હૈ, માઈ મેરા હૈ, મગિની મેરી હૈ “જાવ” યાવત્પદ સે “મજ્જામે, પુત્તા મે, ધૂઆ મેં ણત્તા મે, સુઘ્ઠા મેં સહિ-સયણ” इन पदों के समग्र के अनुसार मार्या मेरी है, पुत्र मेरे हैं, दुहिता-पुत्री मेरी है, नाती मेरा है, स्तुषा पुत्र वधू मेरी है, सखि-मित्र और स्वजन मेरे हैं, “सल्लिस्वजन” इस पद का “संगंथ सथुया मे” पद के साथ सम्बन्ध है. इससे संस्तुत-बार २ परिचित हुए सल्लि स्वजन पितृव्य पुत्र आदि ये सब मेरे हैं. तथा-“हिरण्णं मे” हिरण्य मेरा है, “सुवण्णं मे” सुवर्ण मेरा है “जाव” यावत्पद से गृहीत “कंस मे, दूस मे, धणं मे” इन पदों के अनुसार कासा मेरा है, दूष्य-वस्त्र-तम्बू आदि मेरे हैं, तथा “उवागरणं मे” उपकरण पूर्वोक्त वस्तुओं से अतिरिक्त सामग्री मेरी है । प्रकारान्तर से पुनः द्रव्य की अपेक्षा प्रतिबन्ध का कथन “अहवा समासओ सचित्ते वा अचित्ते वा मीसएवा दव्वजाए से त तस्स ण मवइ” अथवा द्रव्य की अपेक्षा

કરીને ‘દવ્વઓ’ દ્રવ્યને આશ્રિત કરીને જે પ્રતિબંધ થાય છે તેનું સ્વરૂપ આ પ્રમાણે છે. ‘ઇહ સ્વલ્લુ માયા મે, પિયા મે, માયા મે, મગિની મે, માતા મારી છે, પિતા મારા છે, માઈ મારો છે, બહેન મારી છે યાવત્ પદથી ‘મજ્જા મે, પુત્તા મે, ધૂઆ મે, ણત્તા મે, સુઘ્ઠા મે, સહિસયણ’ આ પદોના સંગ્રહ સુજળ ભાર્યામારી છે પુત્ર મારો છે, દુહિતા-પુત્રી મારી છે, નાતી મારી છે પુત્ર કે પુત્રીનો પુત્ર-મારો છે, સ્તુપા-પુત્ર વધૂ મારી છે, સખિ, મિત્ર અને સ્વજનો મારા છે ‘સલ્લિસ્વજનઃ’ આ પદનો ‘સંગંથ સથુયામે’ આ પદની સાથે સબંધ છે. એનાથી સંસ્તુત વારંવાર પરિચિત થયેલ સખિ-સ્વજન પિતૃવ્ય કાકા પુત્ર વગેરે બધા મારા છે. તેમજ ‘હિરણ્ણં મે’ હિરણ્ય આદી મારું છે ‘સુવણ્ણં મે’ સુવર્ણ-સોનું મારું છે ‘જાવ’ યાવત્ પદથી ગૃહબુદ્ધિથી ‘કંસ મે દૂસ મે ધણ મે’ આ પદો પ્રમાણે કાંસુ મારું છે, દ્રવ્ય-વસ્તુ તાંબુ

हिरण्यादौ, 'मीसए वा' मिश्रके-हिरण्याद्यलङ्कृतद्विपदादौ 'द्वज्जाए' द्रव्यजाते-उक्ता-
तिरिक्तद्रव्यसमूहे भवति 'वा' शब्दाः समुच्चयद्योतकाः 'सेव' स-पूर्वोक्तः प्रतिबन्धः
'तस्स' तस्य-प्रभोः एव-ममेदमिति भावपूर्वकं 'ण भवइ' न भवति न आसीदिति ।
'खित्तओ' क्षेत्रतः प्रतिबन्धः 'गामे वा' ग्रामे वा 'णयरे वा' नगरे वा 'अरण्णे वा' अरण्ये वा
'खेत्ते वा' क्षेत्रे-केदारे वा, 'खले वा' खले-धान्यमर्दनस्थाने वा 'गेहे वा' गेहे वा 'अंगणे
वा' अङ्गणे वा भवति, 'तस्स' तस्य प्रभोः क्षेत्रविषयः प्रतिबन्धः 'एवं' एवं-ममेदमिति
भावपूर्वकं 'न भवइ' न भवति-नासीदिति । तथा 'कालओ' कालतः प्रतिबन्धः 'थोवे
वा' स्तोके-सप्त प्राणात्मके 'लवे वा' लवे-सप्त स्तोकप्रमाणे वा, 'मुहुत्ते वा' मुहूर्त्ते-
सप्तसप्ततिलवमाने वा 'अहोरत्ते वा' अहोरात्रे-त्रिंशन्मुहूर्त्तमाने वा, 'पक्खे वा' पक्षे-पञ्च-
दशाहोरात्रात्मके वा, 'मासे वा' मासे-पक्षद्वयप्रमाणे वा, 'उऊए वा' ऋतौ मासद्वय-

प्रतिबन्ध सक्षेप से सचित्त द्विपद चतुष्पद आदि में अचित्त हिरण्य सुवर्णादि पुद्गलो में और मिश्रक
हिरण्य आदि से अलङ्कृतद्विपद आदि द्रव्यसमूह में होता है, यहां "वा" शब्द समुच्चयद्योतक
है. ऐसा यह प्रतिबन्ध ममत्वभाव उन प्रभु के नहीं था । "खित्तओ गामे वा णयरे वा अरण्णे
वा खेत्ते वा खले वा गेहे वा अंगणे वा एव तस्स ण भवइ" क्षेत्र की अपेक्षा प्रतिबन्ध ग्रामों
में, नगरों में, जंगलों में, खेतों में खलिहानों में, गृह में, अथवा अङ्गण में ममत्वभाव उन प्रभु
को नहीं था, "कालओ थोवे वा लवे वा मुहुत्ते वा अहोरत्ते वा पक्खे वा मासे वा उऊए
वा अयणे वा सक्खरे वा अन्नयरे वा दीहकाले पडिबधे, एवं तस्स न भवइ" तथा काल
की अपेक्षा प्रतिबन्ध ममत्वभाव उन प्रभु को एक स्तोक-सातप्राणात्मकसमयरूप काल में, एक
लव-सात स्तोक प्रमाणात्मक समयरूप काल में एक मुहूर्त्त में ७७ लवप्रमाण समय में, एक
अहोरात्र में तीस मुहूर्त्तप्रमाण समय में, एक पक्ष में १५ दिनरात्रप्रमाणसमय में, एक मास

पवेदे भारां छे, तेभज 'उवगरणं मे' उपकरण-पूर्वोक्तवस्तुओथी भाडी रडेही सामग्री भारी
छे प्रकारान्तरथी पुनःद्रव्यनी अपेक्षाओ प्रतिबन्धनुं कथन-अहवा' समासओ सचित्ते वा
अचित्ते वा मीसए वा द्वज्जाए से त तस्स ण भवइ' अथवा द्रव्यनी अपेक्षा ओ प्रतिबन्ध
सक्षेपथी सचित्त-द्विपद विगेदे अचित्त-हिरण्य सुवर्णादिभा अने मिश्रक हिरण्य विगेदे
थी शब्दगारेभ हाथि विगेदे द्रव्यसमूहभां होथ छे. अही 'वा' शब्द समुच्चय द्योतक छे.
ओवो आ प्रतिबन्ध-ममत्वभाव-ते प्रभुभा न छेतो 'खित्तओ गामे वा नयरे वा अरण्णे वा
खेत्ते वा खले वा गेहे वा अंगणे वा एवं तस्स न भवइ' क्षेत्रनी अपेक्षाओ आभोभां, नगरोभां,
वनोभा, जेतरोभां, अणोओभा धरोभा अगरे आंगणुभां ते प्रभुने प्रतिबन्ध न छेतो.
तेभज 'कालओ थोवे वा लवे वा मुहुत्ते वा अहोरत्ते वा पक्खे वा मासे वा उऊए वा
अयणे वा सक्खरे वा अन्नयरे वा दीहकाले पडिबधे एवं तस्स न भवइ' कालनी अपेक्षाओ
ममत्वभाव ते प्रभुने ओकेस्तोक-सात प्राणात्मक कालभा, न छेतो ओके लव सात स्तोक प्रमा-
णात्मक समय रूप कालभा, ओके मुहूर्त्त ७७ लव प्रमाणात्मक समयभां, ओके अहोरात्रभां-
तीस-मुहूर्त्त प्रमाणात्मक समयभां, ओके पक्षभा-१५ दिन-रात्र प्रमाणात्मक समयभां, ओके

प्रमाणे वा, 'अयणे वा' अयने-ऋतुत्रयप्रमाणे वा, 'संवच्छरे वा' सवत्सरे-अयनद्वयप्रमाणे वा 'अन्नयरे वा' अन्यतरस्मिन् वा 'दीर्घकाले' दीर्घकाले-वर्षशतादीं 'पण्डिते' प्रतिबन्धो भवति, अय प्रतिबन्धः 'तस्स' तस्य प्रभोः 'एवं एव-ममेदमिति भावपूर्वकं 'ण भवइ' न भवति-नासीदिति । तथा-'भावओ' भावतः प्रतिबन्धः 'कोहे वा' क्रोधे वा 'जाव' यावत्पदेन-'माणे वा मायाएवा' माने वा मायायां वा-इति संग्राहम्, तथा 'लोहे वा' लोभे वा 'भए वा' भये वा, 'हासेवा' हासे वा भवति, स प्रतिबन्धः 'तरन' तस्य प्रभोः 'एवं' एवं-ममेदमिति भावपूर्वकं 'ण भवइ' न भवति-नासीदिति । 'से' स प्रतिबन्ध-रहितः 'णं' खलु 'भगवं' भगवान् 'वासावासवज्जं' वर्षावासवर्जं-वर्षासु-वर्षाकाले वासः-वसनं निवासस्तद्वर्जं-वर्षाकालं विहायेत्यर्थः शेषयोः 'हेमंतगिम्हासु' हेमन्तग्रीष्मयोः ऋत्वोः 'गामे एगराइए' ग्रामे एकरात्रिकः-एकरात्रपर्यन्त निवासकृत् 'णयरे पंचराइए' नगरे पाञ्चरात्रिको 'ववगयहाससोग अरइ मय परित्तासे' व्यपगतहासगोकारतिभयपरित्रासाः, व्यपगताः-दूरीभूता हासशोकारतिभयपरित्रासाः-हासः-हास्यं, शोकः प्रसिद्धः,

में पक्षद्वय प्रमाण समय में, एक ऋतु में मास द्वयप्रमाण समय में एक अयन में ऋतुत्रयप्रमाण समय में, एक सवत्सर में-अयनद्वय प्रमाण समय में अथवा और भी किसी लम्बे समयवाले वर्षशतादि रूपकाल में नहीं था, प्रतिबन्धशब्द का अर्थ ममत्वभाव है, ऐसा ममत्वभाव प्रभु को न द्रव्य में था, न क्षेत्र में था, और न काल में था, "भावओ-कोहे वा जाव लोहे वा भए वा हासे वा एव तस्स ण भवइ" इसी तरह भाव की अपेक्षा प्रतिबन्ध उन प्रभु को न क्रोध में था न "यावत्पद" प्राह्य मान में था, न माया में था, और न लोभ में था और न हास्य में ही था इस तरह प्रतिबन्ध रहित हुए वे प्रभु सिर्फ "से ण भगव वासा वासवज्जं" वर्षा-काल के समय को छोड़कर शेष "हेमंत गिम्हासु" हेमन्त और ग्रीष्म ऋतुओं में "गामे एगराइए" ग्राम में एक रात्रपर्यन्त निवास करते थे, "णयरे पंचराइए" नगर में पांच रात्रि ये प्रभु पूर्वोक्तरूप से "ववगयहाससोगअरइमयपरित्तासे णिम्ममे णिरहंकारे", हास्य, शोक, अरति—

भासभा-नेपक्ष वाणा समयभा ओक ऋतुभा- ने भास प्रमाण समयभां, ओक अयनभा-त्रय ऋतु प्रमाण समयभा, ओक सवत्सरभा-ने अयन प्रमाणवाणा समयभां अथवा भीज डोई पक्ष दीर्घ समयवाणा वर्ष शतादि इय कालभा प्रतिबन्ध न हतो प्रतिबन्ध शब्दने अर्थ भवत्वभाव छे ओवे भवत्वभाव प्रभुने द्रव्यभा क्षेत्रभा के कालभा न हतो 'भावओ कोहे वा जाव लेहे वा भए वा हासे वा एव तस्स ण भवइ' आ प्रमाणे न भावनी अपेक्षाओ ते प्रभुने प्रतिबन्ध-भवत्वभाव- न क्रोधभा हतो, न यावत्पद आह-मानभां हतो न मायाभा हतो न लोभभां हतो तेम न हास्यभा हतो आ प्रमाणे प्रतिबन्ध रहित थयेला ते प्रभु इहेत 'से णंवं वासावासवज्जं' वर्षाकालना समयने जाह करीने जाहीभा 'हेमंतगिम्हासु' हेमन्त अने ग्रीष्म ऋतुभा 'गामे एगराइए' आभभां ओक रात्र पथ त निवास करता हतो 'णयरे पंचराइए' नगरभा पाथ रात्र पथन्त ओ प्रभु पूर्वोक्त प्रमाणे निवास करता हतो 'ववगय हाससोगअरइमयपरित्तासे णिम्ममे निरहंकारे' हास्य, शोक, अरति मानसिक उद्वेग,

अरतिः—मनस उद्वेगः, भयं प्रसिद्धं, परिवाराः—आकस्मिक भय च यस्मात् स तथाभूतः, पुनः 'णिम्ममे' निर्ममः=ममत्वरहितः, 'गिरहकारः' अहङ्कार वर्जितः; अतएव 'लहुभूए' लघुभूतः=ऊर्ध्वगतिकः तत एव 'अगंथे' अग्रन्थः बाह्याभ्यन्तरग्रन्थिरहितः 'वासीतच्छणे' वासीतक्षणे वास्या=सूत्रधारोपकरणविशेषेण यत्तक्षणं—न्वच उत्पन्नन तत्रापि 'अदुट्टे' अद्विष्टः—द्वेषवर्जितः तथा 'चंदणाणुलेवणे' चन्दनाणुलेपने 'अरत्ते' अरक्तः—रागरहितः, कश्चिद् भगवतः शरीरत्वचं वास्या तक्ष्णुयात्, कश्चित् शरीरं चन्दनेनाणुलेपयेत्, भगवान् द्वेपराधराहित्येन सम इतिभावः तथा 'लेहुम्मि' लेष्टी=लोप्ते 'कंचणम्मिय' काञ्चने—सुवर्णे च 'समे' समः=लोभराहित्येन तुल्यः, 'इहलोए' इहलोक—मनुष्यलोक 'परलोए' परलोक—देवमवादौ च 'अपडिबद्धे' अप्रतिबद्धः—मुखाराहित्येन अभिलाष-रहितः, तथा 'जीवियमरणे' जीवितमरणे जीवितं च मरणं च जीवितमरणं तत्र 'निरवकंखे' निरवकाङ्क्षः—आकाङ्क्षा रहितः इन्द्रादिकृत सत्कारादिप्राप्तौ जीवितविषये

मानसिक उद्वेग, भय, और परित्रास आकस्मिक भय इनसे सर्वथा रहित बन चुके थे, निर्मम ममता रहित हो चुके थे, निरहंकार अहंकार से वर्जित हो चुके थे, अतएव ये "लहुभूए" इतने अधिक हल्के उर्ध्वगतिक बन चुके थे. कि इन्हें बाह्य और आन्तरिक परिग्रह की आव-श्यकता ने अपने में नहीं बाधा, "अगंथे वासी" अत निर्ग्रन्थ अवस्थायुक्त हुए इन प्रभु को अपने ऊपर "तच्छणे अदुट्टे" कुल्हाड़ाचलाने वाले के प्रति भी किसी प्रकार का द्वेष भाव नहीं था और अपने ऊपर "चंदणाणुलेवणे अरत्ते" चन्दन का लेप करने वाले के प्रति थोड़ा सा भी राग भाव नहीं था, किन्तु दोनों प्रकार के प्राणियों पर इन के हृदय में समभाव था रागद्वेष से रहित परिणाम था, "लेहुम्मि कंचणम्मिय समे" ये लोष्ट और काञ्चन में भेद बुद्धि से रहित हो चुके थे, "इहलोए" इसलोक में मनुष्यलोक में एवं "परलोए परलोक देवमव-आदि में "अपडिबद्धे" इनकी अभिलाषा बिलकुल ध्वस्त हो चुकी थी, "जीवियमरणे निरवकंखे" जीवन और मरण में ये आकाङ्क्षा रहित बन चुके थे, इन्द्रादि द्वारा सत्कार की प्राप्ति होने

भय अने परित्रास—आकस्मिक भयभी सर्वथा रहितबनी गया होता निर्मम—ममताभी रहित थी गया होता निरहंकार—अहंकार रहित थी गया होता ऐसी-ऐसी श्री "लहु-भूए" ऐटला अथा हल्का-ऊर्ध्वगतिक—थी गया होता के तेमने बाह्य अने आन्तरिक परिग्रहनी आवश्यकताये पोतानाभा भद कथा नही, 'अगंथे वासी' तेथी निर्ग्रन्थ अवस्था पाणा भनेला ते प्रभुने पोतानी उपर 'तच्छणे अदुट्टे' कुल्हाड़ाचलानार पर पणु केथी जातने। द्वेष भाव न होतो अने पोताना पर 'चंदणाणुलेवणे अरत्ते' चन्दनने। द्वेष करनार। अत्ये जरा सरभो पणु राग भाव न होतो. परंतु अने जातना प्राणीये। तरह तेमना हृदयभा सम भाव होतो—राग द्वेष—विहीन थी गया होता 'लेहुम्मि कंचणम्मिय समे' तेथी टेभाणा अने सोनाभा भेद बुद्धि विनाना थी गया होता 'इहलोए' आ लोकभा—मनुष्य लोकभा अने 'परलोए' परलोक—देव भाव आदिभा अपडिबद्धे' ऐमनी अभिलाषा पणुत नाश पाभी होती जीवियमरणे निरवकंखे एवन अने मरणभा ऐसी आकाङ्क्षा रहित थी गया होता,

દુસ્સહપરીપહોપસર્ગપ્રાપ્તૌ મરણવિપયે ચ વાઙ્છારહિતઃ इत्यर्थः, तथा 'ससारपारगामी' संसारपागामी-ससारस्य चतुर्विधगतिरूपस्य पारं गन्तुं शौक्यमस्येति तथा, निर्वाण गमन-शील इत्यर्थः तथा 'कम्मसंगणिग्घायणद्व्याए' कर्मसङ्गनिर्घातनार्थाय-कर्मणां यः सङ्गः - जीवप्रदेशैः सह अनादिका सम्बन्धस्तस्य निर्घातनार्थाय-निनाशाय 'अभ्युद्विष्ट' अभ्यु-त्थितः-समुद्युक्तः सन् 'विहरइ' विहरतीति ॥४० ४१॥

મૂલમ્-તસસ પં ભગવંતસસ એણં વિહારેણં વિહરમાણસસ એગે વાસ સહસ્સે વિઙ્કકંતે સમાણે પુરિમતાલસસ નયરસસ વહિયો સગહમુહંસિ ઉજ્જાણંસિ ણિગ્ગોહવરપાયવસસ અહે જ્ઞાણંતરિયાએ વટ્ટમાણસસ ફ-ગ્ગુણબહુલસસ ઇક્કારસીએ પુવ્વણ્હકાલસમએ અટ્ટમેણં ભત્તેણં અપાણણં ઉત્તરાસાદાણક્વત્તેણં જોગમુવાગણં અણુત્તરેણં ણાણેણં જાવ વરિત્તેણં અણુત્તરેણં તવેણં વલેણં વીરિણે આલણં વિહારેણં ભાવણાએ સંત્તીએ ગુત્તીએ મુત્તીએ તુટ્ટીએ અજ્જવેણં મહવેણં લાઘવેણં સુચરિયસોવચિય ફલ નિવ્વાણમગ્ગેણં અપ્પાણં માબેમાણસસ અણંતે અણુત્તરે નિવ્વાધાએ

પર इन्हें "मैं और अधिक जिन्दा रहूँ तो इस प्रकार के सत्कार प्राप्त करता रहूँ" ऐसी अभि-
लाषा स्वप्न में भी नहीं होती थी, तथा दुस्सह परीपह और उपसर्ग की प्राप्ति होने पर इनके
मन में ऐसी भावना भी नहीं उठती थी कि "मैं बहुत ही शीघ्र मर जाऊ तो इन आपत्तियों
से मेरा पिण्ड छूटे" प्रत्युत जीवन और मरण में इनमें समभावना थी, क्योंकि ये "ससार
पारगामी" चतुर्विधगतिरूप जन्मजरामरण की व्याधिवाले इस ससार से पार जाने की कामना
वाले थे अर्थात् समस्त कर्मों के क्षय से जायमान ऐकान्तिक आत्म शुद्धि रूप मुक्ति के पथिक
ये, "कम्मसंग णिग्घायणद्व्याए अभ्युद्विष्ट विहरइ" इसी कारण कर्मों के अनादिकाल से जीव-
प्रदेशों के साथ हुए सम्बन्ध को सर्वथा निर्मूल करने के लिये ये कटिबद्ध हुए थे ॥४१॥

ઇન્દ્રાદિ વગેરે દેવતાઓ વડે સત્કાર પામી 'હું' વધારે આયુષ્ય લોગવીને આ પ્રમાણે કાયમ
સત્કાર મેળવતો રહું' એવી અભિલાષા સ્વપ્નમાં પણ એમને થતી ન હતી તથા દુસ્સહ પરી
પહ અને ઉપસર્ગની પ્રાપ્તિ થતા એમના મનમાં એવી ભાવના પણ ઉત્પન્ન થતી ન હતી
કે 'હું જલ્દી મરણ પામું તો' આ સર્વ આપત્તિઓથી મને મુક્તિ મળે "આ પ્રમાણે જીવન
અને મરણ પ્રત્યે એમના મનમાં સંપૂર્ણ સમભાવના-ઉત્પન્ન થઈ ચૂકી હતી કેમકે એઓ
'સંસારપારગામી' સંસારથી-ચતુર્વિધગતિ રૂપ જન્મજરામરણની વ્યાધિવાળા આ સંસારથી
પાર જવાની કામનાવાળા હતા. અર્થાત્ સમસ્ત કર્મોના ક્ષયથી જાયમાન એકાન્તિક આત્મ
શુદ્ધિ રૂપ મુક્તિના એઓ પથિક હતા 'કમ્મસંગણિગ્ઘાયણદ્વાએ અભ્યુદ્વિષ્ટ વિહરइ'
એથી જ કર્મોના અનાદિકાલથી જીવ પ્રદેશોની સાથે થયેલ સંબંધને સંપૂર્ણ નિર્મૂળ
કરવા માટે એઓ એકદમ કટિબદ્ધ થઈ ગયા હતા ॥૪૧॥

निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणाणदंसणे समुप्पण्णे जिणे जाए के वली सव्वन्नू सव्वदरिंसी स णेरइयतिरियनरामरस्स लौगस्स पज्जवे जाणइ पासइ, तं जहा आगइं गइं ठिइं चवणं उववायं भुत्तं कडं पडिसे- वियं आवीकम्मं रहो कम्मं तं कालं मणवयकाए जोगे एवमादी जीवाणवि सव्वभावे अजीवाणवि सव्वभावे मोक्खमग्गस्स विसुद्ध- तराए भावे जाणमाणे पासमाणे एस खलु मोक्खे मग्गे मम अण्णेसिं च जीवाणं हियसुहणिस्सेयसकरे सव्वदुक्खविमोक्ख परमसुहसमाणे भविस्सइ ॥सू० ४२॥

छाया—तरया खलु भगवत एतेन विहारेण विहरमाणस्य एकस्मिन् वर्षसहस्रे व्यतिक्रान्ते सति पुरिमतालस्य नगरस्य बहिः शकटमुखे उद्याने न्यग्रोधपादपस्याधोऽध्यानान्तरिकायां वर्षमानस्य फाल्गुनबहुलस्य एकादश्यां पूर्वार्द्धकालसमये अष्टमेन भक्तेन अपानकेन उत्तराषाढानक्षत्रे योगमुपागते, अनुत्तरेण ज्ञानेन यावत् चारित्र्येण, अनुत्तरेण तपसा- बलेन क्षीयेण आलयेन विहारेण भावनया क्षान्त्या गुप्त्या मुक्त्या तुष्ट्या आर्जवेण मार्दवेन लाघवेन सुचरितसोपचितफलनिर्वाणमार्गेण आत्मानं भावयतोऽनन्तम् अनुत्तरं निर्वाणं निरावरणं कृत्स्नं प्रतिपूर्णं केवलवरज्ञानदर्शनं समुत्पन्नम्, जिनो जातः केवली सर्वज्ञः सर्वदर्शी स नैरयिकतिर्यङ्मरामस्य लोकस्य पर्यवान् जानाति पश्यति, तद्यथा—आगतिं गतिं स्थितिं व्यवनम् उपपातं भुक्तं कृतं प्रतिसेवितं आविष्कर्म रइ कर्म, तस्मिन् तस्मिन् काले मनोवाक्कायान् योगान् एवमादीन् जीवानामपि सर्वभावान् अजीवानामपि सर्वभावान् मोक्षमार्गस्य विशुद्धतरकान् भावान् जानन् पश्यन्, एष खलु मोक्षमार्गो ममान्येषां च जीवानां हितसुखनिःश्रेयसकरः सर्वदुःखविमोक्षण परमसुखसमापन्नो भविष्यति ॥सू० ४२॥

टीका—‘तस्स ण’ इत्यादि । ‘तस्स णं’ तस्य—ऋषभस्य खलु ‘भगवंतस्स’ भगवतः एएणं एतेन—अनन्तरोक्तेन ‘विहारेणं’ विहारेण ‘विहरमाणस्स’ विहरमाणस्य—विचरतः ‘एगे वाससहस्से’ एकस्मिन् वर्षसहस्रे ‘विइक्कंते’ व्यतिक्रान्ते सति एक सहस्रवर्षेषु व्यतीतेषु ‘समाणे’ सत्सु ‘पुरिमतालस्स नयरस्स बहिया’ पुरिमतालस्य नगरस्य बहिः पुरिम-

“तस्स णं भगवंतस्स एएणं विहारेण विहरमाणस्स” इत्यादि ।

टोकार्थ—“तस्स णं भगवंतस्स एएणं विहारेण विहरमाणस्स एगे वाससहस्से विइक्कंते समाणे” इस तरह को परिणति में एकतान होकर विहार करते करते जब प्रभु का एक हजार वर्ष

‘तस्स ण भगवंतस्स एएणं विहारेणं’ इत्यादि

टीकार्थ—‘तस्स णं भगवंतस्स एएणं विहारेणं विहरमाणस्स एगे वाससहस्से विइक्कंते समाणे’ आ आतनी पश्चितीभा ओकतान थधने विहार करता करता प्रभुने ब्यादे ओक हजार वर्षो पूरा थध गया त्यादे ‘पुरिमतालस्स नयरस्स बहिया’ सगडमुहंसि

તાલનગરાદ્ બહિઃસ્થિતે 'સગહમુહસિ ઉજ્જાણંમિ ણિગ્ગોહવરપાયવસ્સ' શકટમુખે ઉદ્યાને ન્યગ્રોધવરપાદપસ્ય વટ્થ્વક્ષસ્ય 'અહે' અગ્રઃ અગ્રોભાગે 'ઝાણતરિયાપ' ધ્યાનાન્તરિકાયામ્ અન્તરસ્ય વિચ્છેદસ્ય વરણમ્ અન્તરિકા. અથના અન્તરમેવ આન્તર્ય તસ્ય સ્ત્રીત્વવિવક્ષાયામ્ આન્તરગે, સૈવ આન્તરિકા ધ્યાનસ્ય આન્તરિકા ધ્યાનાન્તરિકા પૃથક્ત્વવિતર્ક સવિચારમ્ ૧, એકત્વવિતર્કમવિનાશમ્ ૨, સૂક્ષ્મક્રિયમપ્રતિપાતિ ૩, વ્યુચ્છિન્નક્રિયાનિવૃત્તિ ૪, ઇતિ ચતુશ્વરણાત્મકસ્ય શુક્લધ્યાનસ્ય આપ્તચરણદ્વયધ્યાનાનન્તરં ચરમચરણદ્વયસ્ય યા અપ્રાપ્તિઃ સા ધ્યાનાન્તરિકા, યોગનિરોધરૂપસ્ય તૃતીયચતુર્થચરણધ્યાનસ્ય ચતુર્દશગુણસ્થાનવર્તિતિ કેવલિતિ સમવાત્તદાનીં તસ્ય ભગવતસ્તદપ્રાપ્તિર્વોધ્યા, एवं भूता या ध्यानान्तरिका तस्यां 'वट्टमाणस्स' वर्त्तमानस्य, 'फग्गुणबहुलस्स' फाल्गुणबहुलस्य फाल्गुणकृष्णपक्षस्य 'एक्कारसीए' एकादश्याम् एकादशी तिथौ 'पुव्वण्हकालसमए' पूर्वाह्नकालसमये अह्नः पूर्वो भागः पूर्वाह्नः, तद्रूपो यः कालसमयस्तस्मिन्. 'अपाणएणं' अपानदेन निर्जलेन 'अट्टमेण भत्तेण' अष्टमेन भक्तेन युक्तस्येति गम्य तथा 'उत्तरासाढाणक्खत्तेण' उत्तराषाढानक्षत्रे चन्द्रेण सह 'जोगमुवागएणं' योगम् उपागते प्राप्ते सति, अणुत्तरेण' अनुत्तरेण क्षपत्तश्रेणि समारूढत्वेन केवलसामीप्यतः परमविशुद्धिप्राप्तत्वेन

का समय समाप्त हो चुका "पुरिमतालस्स नयरस्म बहिया सगहमुहसि उज्जणंसि णिगोहवरपाय वस्स अहे झाणंतरियाए वट्टमाणस्स" तब पुरिमताल नगरके बाहर के शकट मुख नामके उद्यान में न्यग्रोध वृक्ष के नीचे ध्यानान्तरिका में विराजमान—पृथक्त्ववितर्क सविचार १, एकत्ववितर्क अविचार २, सूक्ष्मक्रिया अप्रतिपाति ३ और व्युच्छिन्नक्रियानिवृत्ति ४ मेदवाले शुक्लध्यान के आदि के दो मेदों के अनन्तर अन्त के दो मेदों की अप्राप्ति का नाम ध्यानान्तरिका है—क्योंकि इनकी प्राप्ति चौदहवें गुणस्थानवर्ती केवली को होती है, भगवान् के उस काल में इनकी अप्राप्ति थी, ऐसी इस ध्यानान्तरिका में स्थित "फग्गुण बहुलस्म इक्कारसीए पुव्वण्हकालसमए अट्टमेण भत्तेण अपाणएणं" फाल्गुण कृष्ण पक्ष की एकादशी के दिन पूर्वाह्न काल के समय में अष्टम भक्त से जब प्रभु युक्त थे "उत्तरासाढा णक्खत्तेण जोगमुवागएणं" तब चन्द्र के साथ उत्तराषाढा नक्षत्र के योग में "अणुत्तरेण णाणेणं जाव चरित्तेणं" अनुत्तरज्ञान से क्षपक श्रेणि पर आरूढ़ हुए जीव

णिग્ગોહવરપાયવસ્સ અહે ઝાણંતરિયાપ વટ્ટમાણસ્સ' પુરિમતાલ નગરની બહાર શકટ મુખ નામના ઉદ્યાનમાં ન્યગ્રોધ વૃક્ષની નીચે ધ્યાનાન્તરિકામાં વિરાજમાન થઈ ગયા. ૧ પૃથક્ત્વવિતર્ક સવિચાર, ૨ એકત્વવિતર્ક અવિચાર, ૩ સૂક્ષ્મક્રિયા અપ્રતિપાતિ, ૪ વ્યુચ્છિન્ન ક્રિયા નિવૃત્તિ એ રીતે ચાર પ્રકારના મેદવાળા શુક્લધ્યાનના પહેલાના બે ભેદોની પછી અન્તના બે ભેદોની અપ્રાપ્તિનું નામ ધ્યાનાન્તરિકા છે. કેમકે—તેની પ્રાપ્તિ થીકમાં ગુણસ્થાનમાં રહેલા કેવલીને જ થાય છે. ભગવાનને તેકાળે એની અપ્રાપ્તિ હતી એથી તે ધ્યાનાન્તરિકામાં રહેલા ભગવાન 'ફગ્ગુણબહુલસ્સ' એકારસીએ પુવ્વણ્હકાલસમય અટ્ટમેણ મત્તેણં અપાણણં' ફાલ્ગુણ મહીનાના કૃષ્ણપક્ષની એકાદશીના દિવસે પૂર્વાહ્નકાળના સમયમાં અષ્ટમભક્તથી યુક્ત હતા ત્યારે 'ઉત્તરાસાદા ણક્કત્તેણ જોગમુવાગણં' -

ચ નાસ્તિ ઉત્તરં પ્રધાનં છાત્રસ્થિકં જ્ઞાનં યસ્માત્તદનુત્તરં તેન તથાભૂતેન 'જ્ઞાણેણ' જ્ઞાનેન, 'જાવ' યાવત્પદેન દર્શનેનેતિ સંગ્રાહ્યમ્, અનુત્તરેણેત્યસ્ય તુ દર્શનેત્યાગ્મ્ય વિહારેણેત્યન્ત-પદેષુ સર્વત્રાન્વયઃ, તતશ્ચ અનુત્તરેણ ક્ષાયિકભાવાપન્નેન દર્શનેન સમ્યક્ત્વેન, અનુત્તરેણ ક્ષાયિકભાવાપન્નેન 'ચરિત્તેણ' ચારિત્રેણ વિરતિપરિણામેન, તથા 'અણુત્તરેણ અનુત્તરેણ સર્વોત્કૃષ્ટેન 'તવેણ' તપસા દ્વાદશવિધાનશ્ચનેન, અનુત્તરેણ 'વલ્લેણ' વલ્લેન શારીરિક શક્ત્યા, અનુત્તરેણ 'વીરિણં' વીર્યેણ સામર્થ્યેન, અનુત્તરેણ આલણં' આલયેન નિર્દોષ વસત્યા, અનુત્તરેણ 'વિહારેણ' વિહારેણ ગોચર્યાદૌ દોષપરિહારપૂર્વકં વિચરણેન, અનુત્તરયા 'ભાવણા' ભાવનયા પદાર્થાનિત્યત્વાદિભાવનયા, અનુત્તરયા 'સંતી' ક્રોધ-નિરોધેન, અનુત્તરયા 'ગુત્તી' ગુપ્તયા મનોગુપ્ત્યાદિરૂપયા, અનુત્તરયા 'મુત્તી' મુક્ત્યા નિર્લોભતા અનુત્તરયા 'તુટ્ટી' તુટ્ટયા સન્તોષેણ, અનુત્તરેણ 'અજ્જવેણ' આર્જવેન માયાનિ-રોધેન અનુત્તરેણ મહવેણ માર્દવેન માનનિરોધેન અનુત્તરેણ 'લાઘવેણ' લાઘવેન ક્રિયાનૈપુણ્યેન

કો હી નિયમ સે કેવલજ્ઞાન કી પ્રાપ્તિ હોતી હૈ ક્યોંકિં ઉસ સમય જીવ ૧૨વેં ગુણસ્થાન કે અન્ત મેં જ્ઞાનાવરણ, દર્શનાવરણ ઔર અન્તરાય હન કમૌંકા—સમૂલ વિનાશ કર ચુકા હોતા હૈં, અતઃ કેવલજ્ઞાન કે વહ જ્ઞાન બિલકુલ સમીપ પહુંચ જાતા હૈ, છબસ્થાવસ્થા કા જ્ઞાન હસ ક્ષાયિક જ્ઞાન કે સમક્ષ અવિશુદ્ધ હોતા હૈ ઔર યહ કેવલજ્ઞાન—ક્ષાયિક જ્ઞાન—પરમ વિશુદ્ધિવાલા હોતા હૈ—એસે કેવલજ્ઞાન કે સમીપ પહુંચે હુણ જ્ઞાન સે, યાવત્પદગ્રાહ્ય—અનુત્તર દર્શન સે, અનુત્તર ચારિત્ર સે “અણુત્તરેણ તવેણ” તથા સર્વોત્કૃષ્ટ તપ સે “વલ્લેણ—વીરિણં” આલણં વિહારેણ” અનુત્તર વલ્લ સે, અનુત્તર નિર્દોષ વસતિ સે, અનુત્તર વિહાર સે—ગોચરી આદિ મેં દોષ પરિહાર પૂર્વક વિચરણ સે, “ભાવણા” અનુત્તર ભાવના સે—પદાર્થો સમ્બન્ધી અનિત્યત્વાદિ વિચારધારા સે, “સંતી” અનુત્તર ક્ષાન્તિ સે—ક્રોધ કે નિરોધ સે, “ગુત્તી” અનુત્તર મનોગુપ્ત્યાદિ રૂપ ગુપ્તિ સે, “મુત્તી” અનુત્તર નિર્લોભતારૂપ મુક્તિ સે, “તુટ્ટી” અનુત્તર સન્તોષ સે, “અજ્જવેણ” અનુત્તર આર્જવ—માયા

ઉત્તરાષાઢા નક્ષત્રના યોગમા 'અણુત્તરેણ જ્ઞાણેણ ચરિત્તેણ' અનુત્તરજ્ઞાનથી ક્ષપકશ્રેણી પર આરૂઢ થયેલા જીવને નિયમથી કેવલ જ્ઞાનની પ્રાપ્તિ થાય છે કેમકે—તે સમયે જીવે ૧૨ માં શુદ્ધસ્થાનના આ તમાં જ્ઞાનાવરણ, દર્શનાવરણ અને અતરાય એ કર્મોના સમૂળ વિનાશ કરી ચૂકેલ હોય છે તેથી કેવળજ્ઞાનની બિલકલ નજીક તે પહોંચી જાય છે. છબસ્થાવસ્થાનું જ્ઞાન આ ક્ષાયિક જ્ઞાન પાસે અવિશુદ્ધ હોય છે. અને તે—કેવળ જ્ઞાન—ક્ષાયિકજ્ઞાન પરમવિશુદ્ધ હોય છે. એવા કેવળજ્ઞાનની સમીપ પહોંચેલા જ્ઞાનથી યાવત્પદગ્રાહ્ય—ક્ષાયિકજ્ઞાન પરમવિશુદ્ધ હોય છે. એવા કેવળજ્ઞાનની સમીપ પહોંચેલા જ્ઞાનથી યાવત્પદગ્રાહ્ય—અનુત્તરદર્શનથી અનુત્તર ચારિત્રથી 'અણુત્તરેણ તવેણ' તથા સર્વોત્કૃષ્ટ તપથી, 'વલ્લેણ વીરિણં આલણં વિહારેણ' અનુત્તર બળથી, અનુત્તર નિર્દોષ વસતિથી, અનુત્તર—વિહારથી ગોચરી વિશેષમાં દોષ નિવૃત્તિપૂર્વક વિચરણથી 'ભાવણા' અનુત્તરભાવનાથી પદાર્થો સમ્બન્ધી અનિત્યત્વાદિ વિચારધારાથી 'સંતી' અનુત્તરક્ષાન્તિથી—ક્રોધના નિરોધથી 'ગુત્તી' અનુત્તર મનોગુપ્ત્યાદિરૂપ ગુપ્તિથી 'મુત્તી' અનુત્તર નિર્લોભતારૂપ મુક્તિથી 'તુટ્ટી' અનુત્તર સન્તોષથી 'અજ્જવેણ' અનુત્તર આર્જવ—માયા નિરોધથી, 'મહવેણ' અનુત્તરમાન-

અનુત્તરેણ 'સુચરિય સોવચિયફલનિબ્વાણમગ્ગેણ' સુચરિતસોપચિત્તફલનિર્વાણમાર્ગેણ-સુચરિતસ્ય સદાચરણસ્ય પુણ્યસ્ય યત્ સોપચિત્તમ્-ઉપચિત્તેન ઉપચયેન સહિતં સોપચિતં પુષ્ટં યત્ફલં પરિણામો નિર્વાણમાર્ગઃ અસાધારણરત્નત્રયરૂપસ્તેન તથાભૂતેન ચ 'અપ્પાણં માવેમાણસ્સ' આત્માન માવયતઃ વાસયતઃ 'અણંતે' અનન્તમ્ નિરવસાનં વિનાશ-રહિતત્વાત્, 'અણુત્તરે' અનુત્તર સર્વોત્કૃષ્ટં, તત્ ઉત્કૃષ્ટસ્યામાવાત્, 'ણિન્વાધાપ' નિર્વ્યા-ધાતં વ્યાધાતવર્જિત-કટકુહચાદિભિરપ્રતિહતત્વાત્, 'ણિરાવરણે' નિરાવરણમ્-આવરણ-વર્જિતં ક્ષાયિકત્વાત્, 'કસિણે' કૃત્સ્નં-સમગ્રં સકલાર્થગ્રાહકત્વાત્, 'પણિપુણ્ણે' પ્રતિ-પૂર્ણ-સર્વતઃ પૂર્ણ ચન્દ્રવત્ સકલસ્ત્રાંશયુક્તત્વાત્ ઇતિ અનન્તેત્યાદિવિશેષણવિશિષ્ટં 'કેવલ

નિરોધ સે, 'મહવેણં' અનુત્તર માનનિરોધરૂપ માર્દવ સે, "લાઘવેણં" અનુત્તર લાઘવ સે-ક્રિયા મેં નૈપુણ્ય સે ઓર "સુચરિય સોવચિયફલનિબ્વાણમગ્ગેણં" અનુત્તર સુચરિત સોપચિત્તફલનિર્વાણ માર્ગ સે-સુચરિત-સદા-ચરણરૂપ પુણ્ય કા જો સોપચિત્ત-પુષ્ટ ફલ-નિર્વાણમાર્ગ જો કિ અસાધારણ રત્નત્રયરૂપ હૈ ઉસસે "અપ્પાણં માવે માણસ્સ" અપને આપકો માવિત કરતે હુય "અણંતે અણુત્તરે નિબ્વાધાપ નિરાવરણે કસિણે પહિપુણ્ણે કેવલવરનાણદસણે સમુપ્પણ્ણે" અનન્ત, અનુત્તર, નિર્વ્યા-ધાત, નિરાવરણ, કૃત્સ્ન, પ્રતિપૂર્ણ, કેવલવરજ્ઞાન દર્શન ઉત્પન્ન હો ગયા, કેવલવરજ્ઞાનદર્શન કે ઇન વિશેષણો કા સારાશ એસા હૈ કિ યહ વિનાશ રહિત હોતા હૈ ઇસલિયે અનન્ત કહા ગયા હૈ, સર્વોત્કૃષ્ટ હોતા હૈ ઇસલિયે અનુત્તર કહા ગયા હૈ, ક્યોંકિ ઇસસે ઉત્કૃષ્ટ ઓર જ્ઞાન દર્શન નહીં હોતા હૈ। યહ કટ કુહય આદિ આવરણો દ્વારા અપ્રતિહત હોતા હૈ ઇસલિયે ઇસે વ્યાધાતવર્જિત કહા ગયા હૈ, ક્ષાયિકરૂપ હોને સે યહ આવરણ સે વર્જિત હોતા હૈ ઇસલિયે નિરાવરણ કહા ગયા હૈ, સકલાર્થ કા ગ્રાહક હોતા હૈ-મૂર્ત પદાર્થ ઓર અમૂર્ત પદાર્થ ઇન સબકો યહ મૃણ કરને-વાલા હોતા હૈ-ઇસલિયે ઇસે કૃત્સ્ન કહા ગયા હૈ, સબ તરફ સે યહ પૂર્ણ હોતા હૈ-ચન્દ્ર કી તરહ

નિરોધરૂપ માર્દવથી 'લાઘવેણં' અનુત્તર લાઘવથી-ક્રિયામાં નિપુણતાથી અને 'સુચરિયસોવચિયફલનિબ્વાણમગ્ગેણં' અનુત્તર સુચરિત સોપચિત્ત ફળ નિર્વાણ માર્ગથી સુચરિત-સદાચરણરૂપ પુણ્યનું જે સોપચિત્તિ-પુષ્ટ-ફળ-નિર્વાણ-માર્ગ કે જે અસાધારણ રત્નત્રયરૂપ છે, તેનાથી 'અપ્પાણં માવેમાણસ્સ' પોતેપોતાને આવિત કરતા 'અણંતે અણુત્તરે નિબ્વાધાપ નિરાવરણે કસિણે પહિપુણ્ણે કેવલવરનાણદસણે સમુપ્પણ્ણે' અનન્ત, અનુત્તર, નિર્વ્યાધાત, નિરાવરણ કૃત્સ્ન, પ્રતિપૂર્ણ, કેવલવર જ્ઞાનદર્શન ઉત્પન્ન થયા કેવલવર જ્ઞાન દર્શનના ઉપયુક્ત વિશેષણોના સારાશ આ પ્રમાણે છે કે જે વિનાશ રહિત હોય છે એથી અનન્ત કહેવામાં આવેલ છે, સર્વોત્કૃષ્ટ હોય છે એથી અનુત્તર કહેવામાં આવેલ છે, કેમકે એનાથી ઉત્કૃષ્ટ જ્ઞાન-દર્શનની શક્યતા જ હોતી નથી તે કટ, કુહય વગેરે આવરણો દ્વારા અપ્રતિહત હોય છે. એથી આને વ્યાધાત વર્જિત કહેવામાં આવેલ છે ક્ષાયિકરૂપ હોવાથી આ આવરણથી વર્જિત હોય છે એથી જે નિરાવરણ કહેવામાં આવેલ છે. જે સકલાર્થના ગ્રાહક હોય છે. મૂર્ત પદાર્થ અને અમૂર્ત પદાર્થ એ સર્વેને એ ગ્રહણ કરનાર હોય છે. એથી આને કૃત્સ્ન કહેવામાં આવેલ છે એને ચારે તરફથી પૂર્ણ હોય છે, ચન્દ્રની જેમ આ

વરનાણદંસણે' કેવલવરજ્ઞાનદર્શન-કેવલમ્ અદ્વિતીયત્વાત્ અસહાયં વરં શ્રેષ્ઠં જ્ઞાન-સામાન્યવિશેષોભયાત્મકે જ્ઞેયવસ્તુનિ વિશેષાવધારણરૂપં, દર્શનં ચ સામાન્યાવધારણરૂપ-નિર્વિશેષં વિશેષાણાં ગ્રહો દર્શનમ્' इति वचनात्, तत्तथाभूतं 'समुत्पण्णे' समुत्पन्नम् सम् सम्यक् क्षायिकत्वेनावरणदेशस्याप्यभावानुत्पन्नं मादुर्भूतमिति । अत्रेदं बोध्यम् यथा दूरात् विभिन्नजातीयवृक्षसमूहं तत्तज्जातीयवृक्षत्वेनानवधारितमवलोकयतो जनस्य सामान्येन यो वृक्षमात्रग्रहः स दर्शनमुच्यते, यत्पुनरासन्नप्रदेशात्तमेव विभिन्नजातीयं

यह सकल अपने अशो से युक्त होता है, इसलिये इसे प्रतिपूर्ण कहा गया है, ज्ञान को अद्वितीय होने से केवलपद से और अन्यज्ञानादिको की सहायता से रहित होने से वर-श्रेष्ठ कहा गया है, इस तरह का केवलज्ञान उन प्रभु के उत्पन्न हुआ, ज्ञान जो होता है वह सामान्य विशेषधर्मविशिष्ट वस्तु का विशेषरूप से निश्चय करनेवाला होता है और दर्शन जो होता है वह सामान्यरूप से ही वस्तु का जानने वाला होता है, "निर्विशेष विशेषाणां ग्रहो दर्शनम्" ऐसा कथन है जिस समय केवलज्ञान केवलदर्शन उत्पन्न होते हैं उस समय आत्मा में आवरण का एक अंश भी मौजूद नहीं होता है; आवरण का सर्वथा अभाव हो जाता है । यहां इस प्रकार समझना चाहिये जब कोई मनुष्य दूर से विभिन्न जातिवाले वृक्षों के समूह को देखता है तब उसे यह प्रतीत नहीं होता है कि इस वृक्ष समूह में अमुक अमुक जाति के अमुक अमुक वर्ण आदि के वृक्ष हैं वहां तो सामान्यरूप से ही वृक्षत्व जाति का ज्ञान होता है, अतः ऐसा जो यह ज्ञान है इसी का नाम दर्शन है और जब वही मनुष्य पास में पहुंच जाता है तो उसे यह आमलकी है, यह खदिर है, यह पलाश है इत्यादि रूप से जो ज्ञान होता है वह विशेषग्राही ज्ञान कहा जाता है यही ज्ञान और दर्शन में भेद है ।

ગોતાના સર્વ અંશોથી યુક્ત હોય છે, એથી અને પ્રતિપૂર્ણ કહેવામાં આવેલ છે. જ્ઞાન અદ્વિતીય હોવા બદલ, કેવલ પદથી અને અન્ય-જ્ઞાનાદિકોની સહાયતાથી રહિત હોવા બદલ વર-શ્રેષ્ઠ કહેવામાં આવેલ છે. આ જાતનું કેવળ જ્ઞાન તે પ્રભુને ઉત્પન્ન થયું જ્ઞાન જે હોય છે તે સામાન્ય વિશેષ ધર્મ વિશિષ્ટ વસ્તુનો વિશેષ રૂપથી નિશ્ચય કરનાર હોય છે. અને દર્શન હોય છે તે સામાન્ય રૂપથી જ વસ્તુને જાણનાર હોય છે. "નિર્વિશેષ વિશેષાણાં ગ્રહો દર્શનમ્" આપું કથન છે. જે સમયે કેવળ જ્ઞાન, કેવળ દર્શન ઉત્પન્ન થાય છે, તે સમયે આત્મામાં આવરણનો એક અંશ પણ વિદ્યમાન હોતો નથી એટલેકે આવરણનો સર્વથા અભાવ થઈ જાય છે અહીં આ પ્રમાણે સમજવું જોઈએ કે બ્યારે કોઈ મનુષ્ય દરથી વિભિન્ન જાતિવાળા વૃક્ષોના સમૂહને જુઓ છે ત્યારે તેને એવી પ્રતીતિ થતી નથી કે આ વૃક્ષ સમૂહમાં અમુક જાતિના કે અમુક-અમુક વર્ણ આદિના વૃક્ષો છે ત્યાં તો જોનારને સામાન્ય રૂપથી વૃક્ષત્વ જાતિનું જ જ્ઞાન થાય છે એથી આજુ જે જ્ઞાન છે, તે જ દર્શન કહેવાય છે અને બ્યારે તે જ જોનારી વ્યક્તિ પાસે પહોંચે છે ત્યારે તેને આ આમલકી છે, આ ખદિર છે, આ પલાશ છે વગેરે રૂપથી જ્ઞાન થાય છે. જો જ્ઞાન વિશેષગ્રાહી જ્ઞાન કહેવાય છે જ્ઞાન અને દર્શનમાં આટલો જ તફાવત છે

વૃક્ષસમૂહમુત્પન્નપતસ્તત્તજ્ઞાતીયવિશિષ્ટવૃક્ષગ્રહઃ સ જ્ઞાનમુચ્યતે । અયમેવ જ્ઞાનદર્શનયો-
વિશેષઃ । નત્તુ જ્ઞાનદર્શનયોર્વિશેષસામાન્યગ્રાહિત્વેન મેદે કેવલજ્ઞાનદર્શનયોઃ પ્રત્યેકં સક-
લાર્થગ્રાહકતા ન સ્પાત્, યુજ્યતે ચ એકૈરસ્ય સકલાર્થગ્રાહકત્વમ્ ? इति चेत्, आह—ज्ञान-
क्षणे केवलिनो ज्ञान सकलविशेषान् गृह्णन् प्रकाशते इति सकलविशेषरूपं सामान्यमपि
प्रतिभातमेव । दर्शनक्षणे तु दर्शनं सामान्यं गृह्णन् प्रकाशते इति सकलविशेषा अपि
प्रतिभाता एव, विशेषरहितस्य सामान्यस्य ग्रहणासंभवात् । अत एव ‘निर्विशेषं विशे-
षाणां ग्रहो दर्शनम्’ इत्युच्यते । अतो—ज्ञानदर्शनयोः प्रत्येकसकलार्थग्राहित्वं न विरु-
ध्यते । परमयं विशेषः ज्ञाने प्राधान्येन विशेषाः गौणत्वेन सामान्यं, दर्शने तु प्राधान्येन
सामान्यं गौणत्वेन विशेषा इति । अथ समुत्पन्नकेवलज्ञानो भगवान् यथा जातस्तदाह—
‘जिणे जाए’ इत्यादि । समुत्पन्नकेवलज्ञानी स भगवान् ‘जिणे’ जिनो रागादिजेता

શંકા—જ્ઞાન ઔર દર્શન મેં વિશેષગ્રાહકતા ઔર સામાન્યગ્રાહકતા કી અપેક્ષા સે યદિ
મેદ માના જાતા હૈ તો ફિર કેવલો કે જ્ઞાન ઔર દર્શન મેં પ્રત્યેક મેં સકલાર્થ ગ્રાહકતા નહીં બન
સકતી હૈ પરન્તુ વહાં તો સકલાર્થ ગ્રાહકતા માની ગઈ હૈ : તો ઇસ શંકા કા ઉત્તર એસા હૈ કિ
કેવલો કા જ્ઞાન જ્ઞાનક્ષણ મેં સકલ વિશેષોં કો ગ્રહણ કરતા હુઆ હી પ્રકાશિત હોતા હૈ સો ઇસ
સમય સકલ વિશેષરૂપ જો સામાન્ય હૈ વહ અપ્રકાશિત નહીં રહતા હૈ વહ મો પ્રકાશિત હો જાતા
હૈ, ઇસો તરહ જબ દર્શન ક્ષણ મેં દર્શન સામાન્યકા પ્રકાશન કરતા હૈ—તબ સકલવિશેષ મો પ્રકા-
શિત હો જાતે હૈ ક્યોંકિ વિશેષરહિત સામાન્ય કા ગ્રહણ હોના અસમ્ભવ હૈ । ઇસલિયે “નિર્વિશેષ
વિશેષાણાં ગ્રહો દર્શનમ્” એસા કહા ગયા હૈ । ઇસલિયે જ્ઞાનદર્શન ઇન દોનોં મેં સે પ્રત્યેક મેં
સવ લાર્થગ્રાહકતા વિરુદ્ધ નહીં હોતી હૈ । પરન્તુ વિશેષતા યહી હૈ કિ જ્ઞાન મેં વિશેષ કો પ્રધાનતા
રહતી હૈ ઔર સામાન્ય કી ગૌણતા રહતી હૈ ઔર દર્શન મેં સામાન્ય કી પ્રધાનતા રહતી હૈ ઔર
વિશેષ કી ગૌણતા રહતી હૈ । ભગવાન્ કો જબ કેવલ જ્ઞાન ઉત્પન્ન હો ગયા—તબ પ્રમુ “જિણે

શકા —જ્ઞાન અને દર્શનમાં વિશેષ ગ્રાહકતા અને સામાન્ય ગ્રાહકતાની અપેક્ષાથી બે
લેહ માનવામાં આવે તો પછી કેવલીના જ્ઞાન અને દર્શનમાં પ્રત્યેકમાં સકલાર્થ ગ્રાહકતા સિદ્ધ
થઈ શકતી નથી પરંતુ ત્યાં તો સકલાર્થ ગ્રાહકતા માનવામાં આવી છે ? તો આ શંકાના
જવાબમાં આમ કહી શકાય કે કેવલીનું જ્ઞાન ક્ષણમાં સકલ વિશેષણોને ગ્રહણ કરતાં કરતાં
પ્રકાશિત થાય છે, એટલા માટે તે સમયે સકલ વિશેષ રૂપ જે સામાન્ય છે તે અપ્રકાશિત
રહેતું નથી પણ તે પ્રકાશિત થઈ જાય છે આ પ્રમાણે જ્યારે દર્શનક્ષણમાં દર્શન સામાન્યરૂપ
પ્રકાશન કરે છે ત્યારે સકલ વિશેષ પણ પ્રકાશિત થઈ જાય છે, કેમકે વિશેષ રહિત સામા-
ન્યનું ગ્રહણ થતું અસંભવ છે એથીજ “નિર્વિશેષ વિશેષાણાં ગ્રહો દર્શનમ્” આમ કહવામાં
આવ્યું છે. એથી જ્ઞાનદર્શન એ બન્નેમાંથી દરેકમાં સકલાર્થ ગ્રાહકતા વિરુદ્ધ હોતી
નથી. પણ વિશેષતા આ પ્રમાણે છે કે જ્ઞાનમાં વિશેષની પ્રધાનતા રહે છે. અને સામાન્યની
ગૌણતા રહે છે અને દર્શનમાં સામાન્યની પ્રધાનતા રહે છે અને વિશેષની ગૌણતા રહે છે.
ભગવાનને જ્યારે કેવળ જ્ઞાન ઉત્પન્ન થયું ત્યારે પ્રમુ “જિણે જાણ” જિન—એટલે કે

‘जाए’ जातः, ततः स ‘केवली’ केवली श्रुतज्ञानादि सहायवर्जितज्ञानवान्, अतएव ‘सव्वन्नु’ सर्वज्ञः विशेषांशप्राधान्येन सर्वपदार्थज्ञाता, ‘सव्वदरिसी’ सर्वदर्शी सामान्यांश-प्राधान्येन सर्वपदार्थज्ञाता सन् स जेरइयतिरियनरामरस्स’ स नैरयिकतिर्यङ्गरामरस्य-नैरयिकाश्च नराश्च अमराश्चेति-नैरयिकतिर्यङ्गरामराः, तः सहितो यः स तस्य तथाभूतस्य ‘लोगस्स’ लोकस्य पञ्चास्तिकायात्मकक्षेत्रखण्डस्य, उपलक्षणात् अलो-कस्य नमः प्रदेशमात्रात्मकक्षेत्रविशेषस्यापि पज्जवे’ पर्यायान् क्रमभाविस्वरूपविशेषान् ‘जाणइ’ जानाति केवलज्ञानेन, ‘पासइ’ पश्यति केवलदर्शनेनेति । तानेव पर्यायानाह-‘तं जहा’ इत्यादिना । ‘तं जहा’ तद्यथा ‘आगइ’ आगतिं नैरयिकदेवगतिभ्या च्यु-त्वा तिर्यग्योनौ मनुष्ययोनौ वा आगमनम् ‘गइ’ गतिं मनुष्यगतौ तिर्यग्गतौ वा मृत्वा देवगतौ नारकगतौ वा गमनं, ‘ठिइ’ स्थितिं कायस्थितिं भवस्थितिं च ‘चवणं’ च्य वनं देवलोकान्तरकाच्च च्युतिं, ‘उववायं’ उपपातं देवगतौ नारकगतौ वा जन्म, ‘भुत्तं’

जाए’ जिन-रागादिकों के जेता हो गये, ‘केवली’ केवली हो गये-श्रुतज्ञान आदि की सहायता से वर्जित ज्ञान वाले बन गये, अतएव “सव्वन्नु” सर्वज्ञ-विशेषाणों की प्रधानता को लेकर ममस्त पदार्थों के ज्ञाता बन गये, “सव्वदरिसी” सर्वदर्शी-सामान्यांश की प्रधानता लेकर सर्व पदार्थों के ज्ञाता दृष्टा बन गये, ‘स जेरइयतिरियनरामरस्स लोगस्स पज्जवे जाणइ पासइ’ इस तरह वे प्रभु नैरयिक, तिर्यक्च, नर, और देव इन से युक्त इस पञ्चास्तिकायात्मक लोक के और उपलक्षण से नमः प्रदेशमात्रात्मक अलोक के ज्ञाता दृष्टा बन गये अर्थात् लोक और अलोक की जो क्रम-भावी पर्यायें हैं उन सब के हस्तामलकवत् देखने जानने वाले हो गये, ‘तं जहा-आगइ गइ ठिइ चवणं उववाय भुत्तं कडं पडिसेवियं-आवीकम्म रहोकम्म’ “नैरयिक और देवगति से चव-कर मनुष्य अथवा तिर्यक्च गति में आगमन के मनुष्यगति और तिर्यक्चगति में से मरकर देवगति अथवा नरकगति में गमन के कायस्थिति के, देवलोक से और नरकलोक से चवन के, देवगति में

रागादिकोंना विजेता-थई गया। देवणा थई गया-श्रुतज्ञान वगेरनी सहायताथी वर्जित ज्ञानवाणा थई गया जेथी तेजेथी ‘सव्वन्नु’ सर्वज्ञ-विशेषाणोंनी प्रधानता लईने ममस्त पदार्थोंना ज्ञाता भनी गया ‘सव्वदरिसी’ सर्वदर्शी-सामान्यांशनी प्रधानता लईने सर्व पदार्थोंना ज्ञाता-दृष्टा-भनी गया ‘स जेरइयतिरियनरामरस्स लोगस्स पज्जवे जाणइ पासइ’ आ प्रमाणे ते प्रभु नैरयिक तिर्यक्च, नर अने देव जेभनाथी युक्त आ पञ्चास्ति-कायात्मक छप लोकना अने उपलक्षणी-नमः प्रदेशमात्रात्मक अलोकना ज्ञाता-दृष्टा भनी गया अर्थात् लोक अने अलोकना जे कभलावी पर्यायें छे, ते सर्वना हस्तामलकवत् जेनाश अने ज्ञाता थई गया ‘तं जहा-आगइ गइ ठिइ चवण उववाय भुत्तं कडं पडिसेवियं आवि कम्म रहोकम्म’ नैरयिक अने देवगतिथी अवीने मनुष्य अथवा तिर्यक्च गतिमा आग-मनना, मनुष्य गति अने तिर्यक्च गतिमाथी भुत्तु पाभीने देवगति अथवा नरकगतिमा गमनना, कायस्थितिना, देवलोकथी अने नरलोकथी अवनना देवगतिमा अने नरकगतिमा जन्मना, बुद्धना, जेकान्तमा अशितना, कृतना-जेकान्तमा कृत योथादि कर्माना, प्रति सेवि-

शुक्तम् एकान्तेऽशितं, 'कडं' कृतं एकान्ते कृतं चौर्यादि, 'पडिसेविय' प्रतिसेवितं मैथुनादि, 'आवीकम्मं' आविष्कर्म प्रकटकृतम्, 'रहोक्कम्म' रहःकर्म एकान्तकृतमिति एतान् आगत्यादीन् पर्यायान् स भगवानृषभदेवः केवलज्ञानदर्शनेन जानाति पश्यतीत्यर्थः । तथा 'तं तं कालं' इत्यत्र प्राकृतत्वात्सप्तम्यर्थे द्वितीया, ततश्च 'त त काल मणवयकाए जोगे' तस्मिन् तस्मिन् काले मनोवाक्कायान् योगान् ऋणत्रयरूपान् 'एवमादी' एवमादीन् एवम्प्रकारान् 'जीवाणवि' जीवनामपि 'सव्वभावे' सर्वभावान् समस्तान् जीवधर्मान् 'अजीवाणवि सव्वभावे' अजीवानामपि सर्वभावान् समस्तान् जीवधर्मान् रूपादीन् जानन् पश्यन् विहरति, तथा 'मोक्खमग्गस्स' मोक्षमार्गस्य रत्नत्रयरूपस्य 'विसुद्धतराए' विशुद्धतरकान् अतिशयविशुद्धियुक्तान् कर्मक्षयहेतुभूतान् 'भावे' भावान् ज्ञानाचारादीन् 'जाणमाणे पासमाणे' जानन् पश्यन् तथा 'एस' एषः वक्ष्यमाणप्रकारको 'मोक्खमग्गे' मोक्षमार्गः रत्नत्रयात्मकः 'खलु'खलु निश्चयेन 'मम' मम उपदेशकस्य ऋषभस्य 'अण्णेसि च' अन्येषा मदतिरिक्तानां च 'जीवाणं' जीवानां

और नरकगति में जन्मके, मुक्तके—एकान्तमे आगत के, कृतके—एकान्त में कृत चौर्यादि कर्म के, प्रतिसेवित के—मैथुनादि कर्म के, आविष्कर्म के—प्रकट में किये गये कर्म के, और रह कर्म के—एकान्त में आचरित कर्म के इस प्रकार से इन गति आगति आदि रूप पर्यायों के वे भगवान् साक्षात् ज्ञाता दृष्टा बन गये इसी तरह वे भगवान् "तं त काल मणवयकाए जोगे एवमादी जीवाणवि सव्वभावे अजीवाणवि सव्वभावे" समस्त जीवों के मन वचन काय रूप योगों के तथा उनसे सम्बन्ध रखने वाले और भी समस्त भावों के और अजीवों के समस्तभावों के—रूपादि अजीव धर्मों के—ज्ञाता दृष्टा बन गये "मोक्खमग्गस्स विसुद्धतराए भावे जाणमाणे पासमाणे" तथा—रत्नत्रयरूप मुक्तिमार्ग के अतिशय विशुद्धियुक्त—सकल कर्मों के क्षय में कारणभूत—भावोंके ज्ञानाचार आदिकों के ज्ञाता दृष्टा होते हुए "एस खलु मोक्खमग्गे मम अण्णेसि च जीवाण हिय सुहणिस्सेयसकरे सव्वदुक्ख विमोक्खणे परमसुह समाणणे भविस्सह" यह रत्नत्रयात्मक मुक्ति मार्ग निश्चय से सुझ उपदेशक ऋषभ को एव मुझ से अतिरिक्त अन्य भव्य जीवों को हित सुख

तना—मैथुनादि कर्मना, आविष्कर्मना, प्रकटमा करवाभा आवेक्ष कर्मना अने रहः कर्मना—एकान्तमा आचरित कर्मना आ प्रमाणे आ गति—आगति आदि रूप पर्यायाना ते भगवान् साक्षात् ज्ञाता दृष्टा बनी गया आ रीते ते भगवान् "तं तं कालं मणवयकाए जोगे एवमादी जीवाण वि सव्वभावे अजीवाण वि सव्वभावे" समस्त जीवों के मन—वचन, कायरूपयोगाना तेभ्य तेमनाथी स पद्ध भोज्य पशु समस्त भावोंना अने अश्रवणना समस्त भावोंना इयादि अश्रव—धर्मोंना—ज्ञाता—दृष्टा बनी गया 'मोक्खमग्गस्स विसुद्धतराए भावे जाणमाणे' तेभ्य रत्नत्रय रूप मुक्ति मार्गना अतिशय विशुद्धियुक्त—सकल कर्मोंना क्षयमा कारणभूत—भावोंना—ज्ञाना आर आदिना ज्ञाता—दृष्टा यधने 'एस खलु मोक्खमग्गे मम अण्णेसि च जीवाण हियसुहणिस्सेयसकरे सव्वदुक्खविमोक्खणे परमसुहसमाणणे भविस्सह' आ रत्नत्रयात्मक मुक्तिमार्ग निश्चय पूर्वक अने उपदेशक ऋषभनेतेभ्य भारा सिवाय भोज

‘હિયસુહ્ણિસ્સેયસકરે’ હિતસુખાનિઃશ્રેયસકરઃ, હિતઃ પરિણામશુભફલજનકઃ મુખ્યમ્ આત્યન્તિકદુઃખનિવૃત્તિઃ, નિશ્રેયસ કલ્યાણકરં સકલકર્મક્ષયલક્ષણો મોક્ષઃ, એતેષાં કરઃ કારક અત એવ ‘સવ્વદુઃખવિમોક્ષણે’ સર્વદુઃખવિમોક્ષણઃ સર્વદુઃખેભ્યઃ શારીરમાનસસકલદુઃખેભ્યો જીવાન્ વિમોક્ષયતિ દૂરી કરોતીતિ તથા શારીરમાનસસકલદુઃખાપનેતેત્યર્થઃ તત એવ ‘પરમસુહ્ણસમાણે’ પરમસુખસમાપનઃ પરમમ્ વિનાશાભાવાત્ સર્વોત્કૃષ્ટં યત્ સુખં સાતં તત્ સમ્, ગ્ યાથાતથ્યેન આપયતિ પ્રાપયતિ દદાતિ યઃ સ તથા પરમ સુખપ્રદાતા ચ ‘મવિસ્સડઃ’ મવિવિષ્યતીતિ જાનન પશ્યંશ્ચ વિહરતીનિ । મૂલે હિ ‘સવ્વન્નુ સવ્વદરિસી’ इत्युक्तम् । તત્રોત્થં વિચિકિત્સા જાયતે કેવલજ્ઞાન કેવલદર્શન ચ કેવલજ્ઞાન કેવલદર્શનાવરણયોઃ ક્ષીણમોહાન્ત્યસમય એવ ક્ષીણત્વેન યુગપદુત્પદ્યતે । તતશ્ચ યથા ‘સવ્વન્નુ સવ્વદરિસી’ इति ज्ञान प्राथम्यक्रमस्तथा ‘सव्वदरिस्सिसव्वन्नु’ इति दर्शनप्राथम्यक्रमोऽपि भवितुमर्हति, समानन्यायात्’ इति । અત્રાહ—‘સવ્વાબો લક્કીઓ સાગારોવઉત્ત-

નિ શ્રેયસકર હૈ પરિણામ મે શુભ હૈ હસલિયે હિતરૂપ હૈ, આત્યન્તિક દુઃખ કી નિવૃત્તિરૂપ હૈ હસલિયે સુખકર હૈ, ઔર સકલકર્મોં કા ક્ષય કરાનેવાલા હૈ હસલિયે નિ શ્રેયસકર હૈ, હસી સે સકલ જીવોં કૈ શારીરિક, માનસિક સમસ્ત દુઃખો કી નિવૃત્તિ હોતી હૈ હસી કારણ યહ સર્વદુઃખવિમોક્ષણરૂપ કહા ગયા હૈ ઔર હમી સે જીવોં કો અનન્ત સર્વોત્કૃષ્ટ જો સુખ હૈ ઉસકા યહ પ્રદાતા હૈ પૂર્વ મેં હુઆ હૈ ઔર આગે મી હોગા, હસ પ્રકાર સે જ્ઞાતા દૃષ્ટા બન ગયે યહાં પર “સવ્વન્નુ સવ્વદરિસી” જો એસા સૂત્રપાઠ કહા ગયા હૈ ઉસમેં એસી વિચિકિત્સા સદેહ હો સકતી હૈં કિ કેવલ જ્ઞાન ઔર કેવલ દર્શન, કેવલજ્ઞાનાવરણ ઔર કેવલ દર્શનારણ કૈ ક્ષીણમોહ નામકે ગુણસ્થાન કૈ અન્ત્ય સમય મેં હી ક્ષીણ હો જાને સે યુગપત્ ઉત્પન્ન હોતે હૈં તો ફિર જિસ પ્રકાર સે સર્વજ્ઞ સર્વ દર્શી એસે કથન મેં જ્ઞાન કી પ્રથમતા કા ક્રમ કહા ગયા હોતા હૈ ઉસી પ્રકાર “સવ્વદરિસી સવ્વન્નુ” એસા મી દર્શન કી પ્રથમતા કા ક્રમ હો સકતા હૈ ? હસકે હિયે સમાધાન એસા હૈ

બબ્બ જીવોના માટે હિત-સુખ નિઃશ્રેયસ્કર છે, પરિણામમા શુભ છે, એથી હિત રૂપ છે. આત્યન્તિક દુઃખની નિવૃત્તિ રૂપ છે, એથી સુખકર છે અને સકલ કર્મોને ક્ષય કરનાર છે, એથી નિઃશ્રેયસ્કર છે, એથી જ સકલ જીવોના શારીરિક-માનસિક સમસ્ત દુઃખોની નિવૃત્તિ થાય છે, એટલા માટે જ આ સર્વદુઃખવિમોક્ષણ રૂપ કહેવામા આવેલ છે અને એથી જ જીવોના અનન્ત સર્વોત્કૃષ્ટ જે સુખ છે, તે સુખને આપનાર એ જ છે, ભૂતકાળમાં પણ સુખ આપનાર એ જ ભાગે હતો અને ભવિષ્યમાં પણ સુખ આપનાર એ જ ભાગે થશે, આ પ્રમાણે જ્ઞાતા-દૃષ્ટા બની ગયા અહીં “સવ્વન્નુ સવ્વદરિસી” જે આ જાતનો સૂત્રપાઠ કહેવામા આવેલ છે, તેથી એવી વિચિકિત્સા (સંકેહ) થઈ શકે છે કે કેવળ જ્ઞાન અને કેવળ દર્શન કેવળ જ્ઞાનાવરણ અને કેવળ દર્શનાવરણના ક્ષીણ મોહ નામના ગુણસ્થાનના અન્ત્ય-સમયમાં જ ક્ષીણ થઈ જવાથી યુગપત્ ઉત્પન્ન થાય છે, તો પછી જે પ્રમાણે સર્વજ્ઞ સર્વદર્શી એવા કથનમાં જ્ઞાનની પ્રથમતાનો ક્રમ કહેવામા આવેલ છે તે પ્રમાણે જ “સવ્વદરિસી સવ્વન્નુ” આ જાતનો પણ દર્શનની પ્રથમતાનો ક્રમ સંભવી શકે છે ? આટલું સમાધાન આ

સ્સ ઉવવજ્જતિ ણો અણાગારોવઉત્તસ્સ' છાયા-સર્વા લબ્ધયઃ સાકારોપયુક્તસ્ય ઉપ-
પદ્યન્તે નો અનાકારોપયુક્તસ્ય-इत्यागमप्रमाणात् उत्पत्तिक्रमेण सर्वदा जिनानां प्रथमे
સમયે જ્ઞાન દ્વિતીયે સમયે દર્શનં ભવતીતિ સૂચયિતુ 'સવ્વન્નૂ સવ્વદરિસી' અયમેવ ક્રમઃ
સર્વત્ર સ્વીક્રિયતે । इति छद्मस्थानां तु प्रथमे समये दर्शनं द्वितीये समये ज्ञानमुत्प-
દ્યતે इत्यपि प्रसङ्गतो विज्ञेयम् । 'परमसुहसमाणो' इत्यस्य 'परमसुखसमापन'छाया
સમાપેઃ સમાણઃ इति प्राकृतसूत्रेण समापेः समाणादेशाद् बोध्येति ॥सू० ४२॥

મૂલમ્-તણ્ણં સે ભગવં સમણાણં નિગ્ગંથાણય નિગ્ગંથીણય મહવ્વ-
યાઈં સભાવણગાઈં છવ્વ જીવણિકાણ ધમ્મં દેસેમાણે વિહરઈ, તં જહા
પુઠ્ઠવિકાઈણ ભાવણામેગં પંચ મહવ્વયાઈં સભાવણગાઈં માણિયવ્વાઈં તિ
ઉસમસ્સ ણં અરહઓ કોસલિયસ્સ ચરુગસી ગણા ગણહરા હોત્થા ।
ઉસમસ્સ ણં અરહઓ કોસલિયસ્સ ઉસમસેણપામોક્ષાઓ તુ સીઈં
સમણસાહસ્સીઓ ઉક્કોસિયા સમણસંપયા હોત્થા । ઉસમસ્સ ણં અરહઓ
કોસલિયસ્સ વંભીસુંદરીપામોક્ષાઓ તિણિ અજ્જિયા સયસાહસ્સીઓ
ઉક્કોસિયા અજ્જિયા સંપયા હોત્થા । ઉસમસ્સ ણં અરહઓ કોસલિયસ્સ

કિ “સવ્વાઓ લક્કીઓ સાગારોવઉત્તસ્સ ઉવવજ્જંતિ” જિતની મો લબ્ધિયા હોતો હૈં વે સાકારોપ-
યોગ મેં ઉપયુક્ત જીવ કે હોતી હૈ, “ણો અણાગારોવઉત્તસ્સ” અનાકાર ઉપયોગ વાલે કે નહીં
હોતી હૈં, એસા આગમ કા પ્રમાણ હૈ । ઉત્પત્તિક્રમ કી અપેક્ષા સર્વદા જિન પ્રસુ કો પ્રથમ સમય
મેં જ્ઞાન ઉત્પન્ન હોતા હૈ ઔર દ્વિતીય સમય મેં દર્શન હોતા હૈ, ઇસ વાત કો સૂચિત કરને કે લિપ
“સવ્વન્નૂ સવ્વદરિસી” એસા હી સૂત્રપાઠ રહ્યા ગયા હૈં યહો ક્રમ સર્વત્ર હૈ । હા, જો જીવ છદ્મ-
સ્થ હૈં ઊનેકે તો પ્રથમ સમય મેં દર્શન ઔર દ્વિતીય સમય મેં જ્ઞાન હોતા હૈં એસાં જાનના ચાહિપ
“પરમ સુહ સમાણો” મેં સમાપિ કે સ્થાન મેં પ્રાકૃત સૂત્ર સે સમાણાદેશ હો જાતો હૈં તવ
“સમાણ” એસા બન જાતો હૈ ॥૪૨॥

પ્રમાણે છે કે “સવ્વાઓ લક્કીઓ સાગારોવઉત્તસ્સ ઉવવજ્જંતિ” જેટલી લબ્ધિઓ
થાય છે તે સાકારોપયોગમાં ઉપયુક્ત જીવને થાય છે, “ણો અણાગારો સ્સ” અનાકાર
ઉપયોગવાળાને હોતી નથી એવું આગમનું પ્રમાણ છે ઉત્પત્તિ ક્રમની અપેક્ષા સર્વદા જિન
પ્રભુના પ્રથમ સમયમાં જ્ઞાન ઉત્પન્ન થાય છે અને દ્વિતીય સમયમાં દર્શન હોય છે એ
વાતને સૂચિત કરવા માટે “સવ્વન્નૂ સવ્વદરિસી” એવો જ સૂત્રપાઠ રાખવામાં આવેલ
છે. એ જ ક્રમ સર્વત્ર છે પણ ને જીવો છદ્મસ્થ છે, તેમને તો પ્રથમ સમયમાં દર્શન અને
દ્વિતીય સમયમાં જ્ઞાન હોય છે આમ બધાં જ બોધ એ પરતુ બધારે “પરમસુહ સમાણો”
માં સમાપિના સ્થાનમાં પ્રાકૃત સૂત્રથી સમાણાદેશ થઈ જાય છે ત્યારે “સ ” એવું
રૂપ થઈ જાય છે ॥૪૨॥

सेज्जंसपामोक्खाओ तिण्णि समणोवासगसंयसाहस्सीओ पंच य साह-
स्सीओ उक्कोसिया समणोवासगसंपया होत्था । उसभस्स णं अरहवो
कोसलियस्स सुभद्दापामोक्खाओ पंच समणोवासिया सयसाहस्सीओ
चउपण्णं च सहरसा उक्कोसिया समणोवासिया संपया होत्था । उसभस्स
णं अरहओ कोसलियस्स अजिणाणं जिणसंकासाणं सब्बक्खरसंनिवाईणं
जिणोविव अवित्थं वागस्माण्णाणं चत्तारि चउदसपुब्बीसहस्सा अच्चड्डमा
यो सया उक्कोमिया चउदसपुब्बी संपया होत्था । उसभस्स णं अरहओ
कोसलियस्स णव ओहिणाणिसहस्सा उक्कोसिया ओहिणाणिसंपया
होत्था । उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स वीसं जिणसहस्सा, वीसं
वेउव्वियसहस्सा छच्चसया उक्कोसिया जिणसंपया वेउव्वियसंपया य
होत्था, बारसबिउलमइसहस्सा छच्चसया पण्णासा, बारसवाइसंपया
छच्चसया पण्णासा । उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स गइकल्लाणाणं
ठिइकल्लाणाणं आगमेसि भद्दाणं बावीसं अणुत्तरोववाइयाणं सहस्सा णव
य सया उक्कोसिया अ त्तरोववाइयसंपया होत्था । उसभस्स णं अरहओ
कोसलियस्स वीसं समणसहस्सा सिद्धा, चत्तालीसं अज्जियासहस्सा
सिद्धा सट्ठि अंतोवासिसहस्सा सिद्धा । अरहओ णं उसभस्स बहवे अंतो-
वासी अणगारा भगवंतो अप्पेइया मासपरियाया जहा उववाइए सब्बओ
अणगाखण्णओ जाव उद्धं जोणू अहोसिरा झाणकोट्टोवगया संजमेणं
तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति । अरहओ णं उसभस्स दुविहा अंत-
करभूमी होत्था तं जहा-जुगंतकरभूमी य परियाअंतकरभूमीय । जुगंतक-
रभूमी जाव असंखेज्जाइं पुरिसजुगाइं परियाअंतकरभूमी अंतो हुत्तपरि-
याए अंतमकासी ॥सू० ४३॥

छाया-तत खलु स भगवान् भ्रमणानां निर्ग्रन्थानां च निर्ग्रन्थीनां च पञ्च महा-
व्रतानि सभावनकानि षट् च जीवजिकायान् धर्मं देशयन् विहरति, तद्यथा-पृथिवीकायि-
कान् भावनगमेन पञ्च महाव्रतानि समावनकानि भणितव्यानीति । ऋषभस्य खलु अर्हतः
कौशलिकस्य चतुरशीर्तिर्गणा गणधरा अभवन् । ऋषभस्य खलु अर्हतः कौशलिकस्य ऋषभ-

सेनप्रमुखाश्चतुरशीतिः णसाहस्र्यः उत्कृष्टा श्रमणसम्पदोऽभवन् । ऋषभस्य खलु अर्हतः कौशलिकस्य ब्राह्मीसुन्दरीप्रमुखाः तिस्रः आर्यिकाशतसाहस्र्यः उत्कृष्टा आर्यिका सम्पदोऽभवन् । ऋषभस्य खलु अर्हतः कौशलिकस्य श्रेयांसप्रमुखास्तिस्रः श्रमणोपासक शतसाहस्र्यः पञ्च च साहस्र्यः उत्कृष्टाः श्रमणोपासकसम्पदोऽभवन् । ऋषभस्य खलु अर्हतः कौशलिकस्य सुभद्राप्रमुखाः पञ्च श्रमणोपासिकाशतसाहस्र्यश्चतुष्पञ्चाशच्च सहस्राणि उत्कृष्टाः श्रमणोपासिकासम्पदोऽभवन् । ऋषभस्य खलु अर्हतः कौशलिकस्य अजिनानां जिनसंकाशानां सर्वाक्षरसन्निपातिनां जिनस्येव अचितथं व्यागृणतां चत्वारिचतुर्दशपूर्वी-सहस्राणि अर्द्धाष्टमानि च शतानि उत्कृष्टाश्चतुर्दशपूर्वीसम्पदोऽभवन् । ऋषभस्य खलु अर्हतः कौशलिकस्य नव अवधिज्ञानिसहस्राणि उत्कृष्टा अवधिज्ञानिसम्पदोऽभवन् । ऋषभस्य खलु अर्हतः कौशलिकस्य विंशतिजिनसहस्राणि, विंशतिर्वैकुण्ठिकसहस्राणि पट् च शतानि उत्कृष्टा जिनसम्पदो वैकुण्ठिकसम्पदश्चाभवन्, द्वादशविपुलमतिसहस्राणि पट् च शतानि पञ्चाशत्, द्वादशवादिसहस्राणि पट् च शतानि पञ्चाशत् । ऋषभस्य खलु अर्हतः कौशलिकस्य गतिकल्याणानां स्थितिकल्याणानाम् आगमिष्यद्भट्टाणां द्वाविंशतिरनुत्तरोप-पातिकानां सहस्राणि नव च शतानि उत्कृष्टा अनुत्तरोपपातिकसम्पदोऽभवन् । ऋषभस्य खलु अर्हतः कौशलिकस्य विंशतिः श्रमणसहस्राणि सिद्धानि, चत्वारिंशत् आर्यिकासह-स्राणि सिद्धानि, पष्टिरन्तेवासिसहस्राणि सिद्धानि । अर्हतः खलु ऋषभस्य बहवः अन्तै-वासिनः अनगारा भगवतः अप्येकके मासपर्याया, यथा औपपातिके सर्वकः अणगार वर्णको यावत् ऊर्ध्वजानव अधःशिरसो ध्यानकोष्ठोपगताः संयमेन तपसा आत्मानं भाव-यन्तो विहरन्ति । अर्हतः खलु ऋषभस्य द्विविधाऽन्तकरभूमिरभवत्, तद्यथा युगान्तकर-भूमिः पर्यायान्तकरभूमिश्च । युगान्तकरभूमिर्यावदसंख्येयानि पुरुषयुगानि, पर्यायान्तकरभूमिः अन्तर्मुहूर्त्तपर्याये अन्तमकार्षीत् ॥सू० ४३॥

टीका—‘तए ण’ इत्यादि । ‘तएणं से भगवं’ ततः खलु स भगवान् ऋषभः ‘समणाणं निगंथाण य निगंथीण य’ श्रमणानां निर्ग्रन्थानां च निर्ग्रन्थीनां च श्रमणेभ्य निर्ग्रन्थेभ्यः श्रमणीभ्यो निर्ग्रन्थीभ्यश्च ‘सभावणगाइ’ सभावनकानि, ईर्यादिसमिति भाव-नासहितानि ‘पंचमहव्वयाइ’ पञ्चमहाव्रतानि प्राणातिपातविरमणादि परिग्रहविरमणा-न्तानि पञ्चसंख्यकानि महाव्रतानि, तथा ‘छच्च जीवणिकाए’ षट् च जीवनिकायान्=

“तए णं से भगवं समणाणं निगंथाण य निगंथीण य” इत्यादि ।

टीकार्थ—“तए णं से भगवं समणाणं निगंथाण य निगंथीण य” इसके बाद उन श्रमण भगवान् ऋषभ देव ने श्रमण निर्ग्रन्थों को एवं निर्ग्रन्थियों को “पंच महव्वयाइ” सभावणगाइ” पांच २ भावनाओं सहित पांच महाव्रतों का “छच्च जीवणिकाए धम्म देसेमाणे विहरइ, तं

‘तए णं से भगवं समणाणं निगंथाण य निगंथीण य, इत्यादि ।

टीकार्थ—“तए णं से भगवं समणाणं निगंथाण य निगंथीण य” त्थार आह ते श्रमण भगवान् ऋषभदेवे श्रमण निर्ग्रन्थाने तेमन् निर्ग्रन्थीणाने “पंचमहव्वयाइ सभाव-णगाइ” पांच पांच भावनाओं सहित पांच महाव्रतों ने “छच्च जीवणिकाए धम्म देसे माणे

પૃથિવ્યાદિત્રસાન્તાન્ જીવનિકાયાન્ ઇત્યેવં રૂપ 'ધમ્મં દેસેમાણે' ધર્મ દેશયન્=ઉપદિ-
શન્=વિહરતિ । અન્ન ધર્મ પ્રસ્તાવે યત્ પઙ્ગીવનિકાયાઃ પ્રોક્તાઃ તદ્ જીવનિકાયપરિ-
જ્ઞાનં વિના સમ્યગ્ મહાવ્રતપાલનં ન સંભવતીતિ સ્વચયિતુમિતિવોધ્યમ્ । નન્નુ પ્રાણાતિ-
પાતવિરમણલક્ષણે પ્રથમે મહાવ્રતેડ્યં નિયમઃ સંભવતિ, પરન્તુ મૃષાવાદાદિપુ ચતુર્ણુ મહા-
વ્રતેષુ નાયં નિયમઃ સંભવેત્, માષાવિભાગાદિ પરિજ્ઞાનાધીનત્વાત્તેપામ્ ? ઇતિ ચેત્, આહ-મહાવનસ્ય પર્યન્તવર્તિત્તિવૃક્ષવદ્ મૃષાવાદવિરમણાદીનિ ચત્વારિ મહાવ્રતાન્યપિ પ્રાણાતિ-

જહા-પુઢવિકાઙ્ગ ભાવણાગમેણ પંચ મહ્વચાઙ્ગ સમાવણગાઙ્ગ માણિયવ્વહિત્તિ' પટ્ટવિધજીવનિકાયો
ફા-પૃથિવીકાય, અપ્પકાય, તેજસ્કાય, વાયુકાય, વનસ્પતિકાય ઔર ત્રસકાય-ઇનકા ઉપદેશ
દિયા, અહિંસા મહાવ્રત, સત્યમહાવ્રત, અચૌર્યમહાવ્રત, બ્રહ્મચર્ય મહાવ્રત ઔર પરિગ્રહત્યાગ મહાવ્રત
યે પાંચ મહાવ્રત હૈ ઇન મહાવ્રતો કી અરાધના કે લિયે પ્રત્યેક મહાવ્રત કી ૫-૫ ભાવનાઐ
ફહી ગઈ હૈ, ઇનકા વર્ણન અન્ય આગમો મેં હૈ, યહા પર ધર્મોપદેશ કે પ્રકરણ મેં જો ૬ જીવ
નિકાયો કે સન્નિવંધ મેં કથન આયા હૈ ઉસકા કારણ યહ હૈ કિ જબ તક છ જીવનિકાયો કે
સ્વરૂપ કા પરિજ્ઞાન નહીં હોગા-તબ તક મહાવ્રતો કા પરિપાલન અછી તરહ સે નહીં હો સકતા
હૈ, ઇસ બાત કી સૂચના કે લિયે યહાં ષર છ જીવનિકાયો કા કથન કિયા ગયા હૈ,

શંકા-પ્રાણાતિપાત વિરમણ રૂપ અહિંસા મહાવ્રત મેં યહ નિયમ સંભવિત્ હોતા હૈ,
પરન્તુ મૃષાવાદાદિ વિરમણરૂપ ચાર સત્યમહાવ્રતાદિકો મેં યહ નિયમ સંભવિત્ નહીં હોતા હૈ ક્યો
કિ ઇન ચાર મહાવ્રતો મેં તો માષા આદિ કે પરિજ્ઞાન કી આવશ્યકતા હોતી હૈ, ઇનકે પરિજ્ઞાન
હુપ વિના સત્યમહાવ્રતાદિકો કા પરિપાલન યથાર્થરૂપ મેં નહીં બન સકતા હૈ, સો શંકા કા સ-
માધાન એસા હૈ-મહાવન કે પર્યન્તવર્તિત્તિવૃક્ષો કી વાઙ્ગ કો તરહ મૃષાવાદવિરમણાદિ જો ચાર

વિહરદ્, તં જહા-પુઢવિકાઙ્ગ ભાવણાગમેણ પંચમહ્વચાઙ્ગ માણિયવ્વહિત્તિ' પટ્ટવિધજીવનિકાયો
કાયોનો-પૃથિવીકાય, અપ્પકાય, તેજસ્કાય, વાયુકાય, વનસ્પતિકાય અને ત્રસકાયનો ઉપદેશ
આપ્યો. અહિંસા મહાવ્રત, સત્ય મહાવ્રત અચૌર્ય મહાવ્રત, બ્રહ્મચર્ય મહાવ્રત અને પરિગ્રહ
ત્યાગ મહાવ્રત જો પાંચ મહાવ્રતો છે આ મહાવ્રતોની આરાધના માટે દરેકે-દરેક મહાવ્રતની
પાંચ-પાંચ ભાવનાઓ કહેવામાં આવી છે, એમનું વર્ણન અન્ય આગમ ગ્રંથોમાં છે. અહીં
ધર્મોપદેશકના પ્રકરણમાં જો ૬ જીવનિકાયોના સ્વભાવમાં કથન આવેલ છે, તેનું કારણ આ
પ્રમાણ છે કે જ્યાં સુધી ૬ જીવનિકાયોના સ્વરૂપનું પરિજ્ઞાન થયે નહિ, ત્યાં સુધી મહાવ્રતોનું
પરિપાલન સારી રીતે થઈ શકશે નહિ જો વાતને સ્પષ્ટ કરવા માટે અહીં ૬ જીવનિકાયોનું
કથન કરવામાં આવેલ છે

શંકા :-પ્રાણાતિપાત વિરમણ રૂપ અહિંસા મહાવ્રતમાં જો નિયમ સંભવિત્ હોય છે
પરન્તુ મૃષાવાદાદિ વિરમણ રૂપ ચાર સત્ય મહાવ્રતાદિકોમાં જો નિયમ સંભવિત્ થતો નથી
કેમકે જો ચાર મહાવ્રતોમાં તો ભાષાં વગેરેના પરિજ્ઞાનની આવશ્યકતા હોય છે, એમના
પરિજ્ઞાન વિના સત્ય મહાવ્રતાદિકોનું પરિપાલન યથાર્થ રૂપમાં થઈ શકતું નથી આ પ્રમાણે
ઉપર્યુક્ત શંકાનું સમાધાન થઈ શકે છે મહાવ્રતના પર્યન્તવર્તિત્તિ વૃક્ષોની વાઙ્ગની જેમ મૃષા-

પાતવિરમણલક્ષણસ્ય પ્રથમમહાવ્રતસ્યૈવ રક્ષકાણિ, તથાહિ મૃપાવાદવિરમણયુક્તો મુનિઃ પરિનિન્દા વિરતત્વાત્ કુલવધ્વાદીનામર્હિસકો ભવતિ, અદત્તાદાનવિરમણયુક્તો ધનસ્વામિનાં સચિત્તજલફલાદીનાં ચ અર્હિસકો ભવતિ, મૈથુનવિરમણયુક્તો નવલ્લપઠ્ઠચેન્દ્રિયાદીનાં, પરિગ્રહવિરમણયુક્તશ્ચ શુક્તિકકસ્તૂરીમૃગાદીના ચ અર્હિસકો ભવતીતિ જીવનિકાયપરિજ્ઞાનં સર્વેષ્વપિ મહાવ્રતેષુ સમુપયોગીતિ । ધર્મસ્વરૂપમેવ વિવૃણોતિ ‘તં જઠા’ તથથા ‘પુઠ્ઠવિ કાઈપ’ પૃથિવીકાયિકો જીવનિકાયઃ, સૂચામાત્રત્વાત્ સૂત્રસ્યાત્ર લાઘવાર્થ ‘પૃથિવીકાયિકા ઇત્યેવોપાત્, તતશ્ચ-અપ્કાયિકઃ તેજસ્કાયિકો વાયુકાયિકો વનસ્પતિકાયિકસ્ત્રસકાયિક-’ ઇતિ સંગ્રાહ્યમ્, તથા-‘સમાવણાગમેણં’ સમાવનકાનિ=ઈર્યાસમિત્યાદિ ભાવનાયુક્તાનિ ‘પંચમહાવ્રત્યાઈ’ ‘પઠ્ઠ મહાવ્રતાનિ ‘સમાવણગાઈ’ સમાવનાગમેન=આચારાઙ્ગદ્વિ-

મહાવ્રત હૈ વે પ્રાણાતિપાત-વિરમણરૂપ પ્રથમ અર્હિસા મહાવ્રત કે હી રક્ષક હૈ જો મુનિ મૃપાવાદ વિરમણરૂપ ચાર મહાવ્રતોં સે યુક્ત હોતા હૈ વહ પરિનિન્દાવિરત હો જાને કે કારણ કુલવધ્વાદિકોં કા અર્હિસક હો જાતા હૈ, અદત્તાદાન વિરમણ વાલા મુનિ ધનસ્વામિયો કે સચિત્ત જલ ફલાદિકોં કા અર્હિસક હો જાતા હૈ, મૈથુનવિરમણયુક્ત મુનિ નૌ લાસ-પઞ્ચેન્દ્રિયોં કી હિંસા સે રહિત હો જાતા હૈ ઔર પરિગ્રહ વિરમણ વાલા મુનિ શુક્તિક કસ્તૂરીમૃગાદિકોં કા અર્હિસક હો જાતા હૈ, ઇસ તરહ સે જીવનિકાયોં કા પરિજ્ઞાન સર્વ હી મહાવ્રતોં મેં સમુપયોગી હૈ, સૂત્ર સૂચામાત્ર હોતા હૈ ઇસસે યહાં આયે હુપ્ પૃથિવીકાયિક પદ સે અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક, વાયુકાયિક, વનસ્પતિ કાયિક ઔર ત્રસકાયિક ઇન ૫ નિકાયો કા ગ્રહણ હો જાતા હૈ ઈર્યાસમિતિ આદિ ભાવનાઓં સે યુક્ત પાંચ મહાવ્રત પાલને કા જો પ્રમુ ને ઉપદેશ દિયા હૈ સો ઊન ભાવનાઓં કો જાનને કે લિપ્ આચારાઙ્ગ દ્વિતીયશ્રુતસ્કંધ સૂત્ર કે અન્તર્ગત ભાવના નામક અધ્યયનવર્તી જો પાઠ હૈ ઊસે હૃદયજ્ઞમ કર લેના ચાહિપ્, ઊસી કે અનુસાર પાંચ ભાવનાઓ સહિત ઇન પાંચ મહાવ્રતોં કા પરિપાલન કરના ચાહિપ્,

વાહાહિ વિરમણ્યાદિ જે ચાર મહાવ્રતો છે તે પ્રાણાતિપાત-વિરમણરૂપ પ્રથમ અર્હિસા મહાવ્રતના જ રક્ષક છે જે મુનિ મૃપાવાદવિરમણરૂપ ચાર મહાવ્રતોથી યુક્ત હોય છે, તે પરિનિન્દા વિરત હોવાથી કુલ વધ્વાદિકો માટે અર્હિસક થઈ જાય છે અદત્તાદાન વિરમણવાળા મુનિ ધનસ્વામીઓના સચિત્ત જગ કલાદિકોના અર્હિસક થઈ જાય છે. મૈથુન વિરમણ યુક્ત મુનિ નવ લાભ પંચેન્દ્રિયોની હિંસાથી રહિત થઈ જાય છે અને પરિગ્રહ વિરમણ વાળા મુનિ શુક્તિ કસ્તૂરી મૃગાદિકોના અર્હિસક થઈ જાય છે. આ પ્રમાણે જીવનિકાયોનું પરિજ્ઞાન સર્વમહાવ્રતોમાં સમુપયોગી છે. સૂત્ર સૂચામાત્ર હોય છે તેથી અહીં આવેલા પૃથિવીકાયિક પદથી અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક, વાયુકાયિક, વનસ્પતિ કાયિક અને ત્રસકાયિક એ પાંચ નિકાયોનું ગ્રહણ થાય છે. ઈર્યાસમિતિ આદિ ભાવનાઓથી યુક્ત પાંચ મહાવ્રત પાળવાનો જે પ્રભુએ ઉપદેશ આપ્યો છે, તે તે ભાવનાઓના જ્ઞાન માટે આચારાંગ સૂત્રના બીજાશ્રુતસ્કંધમાં જે ભાવના નામના અધ્યયનવર્તી પાઠ છે, તેને હૃદય ગમ કરવો જોઈએ. તે મુજબ જ પાંચ ભાવનાઓ સહિત એ પાંચ મહાવ્રતોનું પરિપાલન કરવું જોઈએ.

તીયશ્રુતસ્કન્ધાન્તર્ગતભાવનાનામકાધ્યયનવર્તિપાઠાનુસારેણાત્ર 'માણિયવ્વાઈતિ' મણિત-
વ્યાનિ=વક્તવ્યાનીતિ । નન્વત્ર સૂત્રે ઉદ્દેશકોટૌ 'પંચમહવ્વયાઈ સમાવણગાઈ છચ્ચ જી-
વણિકાઈ' ઇત્યુક્તમ્ નિર્દેશકોટૌ તુ 'પુઢવિકાઈપ ભાવણાગમેણં પંચ મહવ્વયાઈ સમાવણગાઈ
માણિયવ્વાઈતિ' ઇતિ વૈપરીત્યેનોક્તમ્ ઇતિ પૂર્વોક્તિઃ પશ્ચાદુક્તિર્વિરુદ્ધયતે ? ઇતિ ચેત્ ,
આહ-ઉદ્દેશકોટૌ પશ્ચાદુક્તાનામપિ પૃથિવીકાયિકાદીનાં નિર્દેશકોટૌ યત્પ્રથમત ઉપાદાનં
તત્ સ્વલ્પવક્તવ્યતયા 'સૂચીકટાહ' ન્યાયેન વિચિત્રા સૂત્રાણાં કૃતિરાચાર્યસ્ય' ઇતિ
ન્યાયેન વા વોદ્યમિતિ । નન્નુ યથા યતિધર્મઃ પ્રોક્તઃ તથૈવ ભગવતા ગૃહ્ધર્મસંવિગ્ન-
પાક્ષિકધર્માવપિ વક્તવ્યૌ મોક્ષાદ્ગત્વાત્ , યદુક્તમ્—"સાવજ્જજોગપરિવજ્જણાઉ સવ્વુત્તમો
જહધમ્મો । વીઘો સાવગધમ્મો, સંવિગ્ગપક્કપહો ॥૧॥"

છાયા—સાવધયોગપરિવર્જનાતુ સર્વોત્તમો યતિધર્મઃ ।

દ્વિતીયઃ શ્રાવકધર્મઃ તૃતીયઃ સંવિગ્ન પક્ષપથઃ ॥૧॥ ઇતિ,

શંકા—ઇસ સૂત્ર મેં ઉદ્દેશ્યકોટિ મેં "પંચ મહવ્વયાઈ સમાવણગાઈ છચ્ચ-જોવનિકાઈ"
એસા પાઠ કહા ગયા હૈ ઓર નિર્દેશકોટિ મેં "પુઢવિકાઈપ ભાવણાગમેણ પંચ મહવ્વયાઈ
સમાવણગાઈ માણિયવ્વાઈતિ" એસા પાઠ કહા હૈ—સો ઇસ પ્રકાર વિપર્યય કથન સે પરસ્પર
મેં પશ્ચાત્ ઉક્ત મી પૃથિવીયાયિક આદિકોં કા નિર્દેશકોટિ મેં જો પ્રથમત. ઉપાદાન કિયા
ગયા હૈં વહ ઉનકે સમ્બન્ધ મેં સ્વલ્પવક્તવ્યક્તા હોને કે કારણ "સૂચી કટાહ" ન્યાય કે અનુસાર
કિયા ગયા હૈ આચાર્યજન કી સૂત્રો કી રચના વિચિત્ર હોતી હૈ ।

શંકા-ભગવાન્ ને નિસ પ્રકાર યતિ ધર્મ કહા હૈ ડસી પ્રકાર ઉન્હોં કો ગૃહસ્થધર્મ
ઔર સવિગ્નપાક્ષિક ધર્મ મી કહના ચાહિયે થા, ક્યોંકિ યે દો ધર્મ મી પરસ્પરારૂપ સે મોક્ષ
કે કારણમૂત હૈં । તદુક્તમ્—"સાવજ્જજોગપરિવજ્જણા ઉ સવ્વુત્તમો જહધમ્મો । વીઘો સાવ-
ગધમ્મો તહ્ધો સવિગ્ગપક્કપહો ॥૧॥ જિસમેં મન, વચન, કાય, કૃત,, કારિત ઔર અનુ-
મોદના સે સર્વ સાવધયોગ કા પરિવર્જન હો જાતા હૈ વહ યતિધર્મ હૈ, ઇસસે ઉત્તરતા શ્રાવક

શંકા.—આ સૂત્રમાં ઉદ્દેશ કોટિમાં "પંચ મહવ્વયાઈ સમાવણાઈ છચ્ચજીવનિકાઈ"
એવો પાઠ કહેવામાં આવેલ છે, અને નિર્દેશ કોટિમાં "પુઢવિકાઈપ ભાવણાગમેણં પંચમહ-
વ્વયાઈ સમાવણગાઈ માણિયવ્વાઈ તિ" એવો પાઠ છે. તે આ બાતના વિપર્યય કથનથી
પરસ્પર પાઠોમાં અંતર આવે છે તે આ અંતરનું કારણ શું ?

ઉત્તર :-ઉદ્દેશ કોટિમાં પશ્ચાત્ ઉક્ત પશુ પૃથિવી કાયિક આદિકોતુ નિર્દેશ કોટિમાં
જે પ્રથમત. ઉપાદાન કરવામાં આવેલ છે તે એમના સંબંધમાં સ્વલ્પવક્તવ્યતા હોવાથી
"સૂચી કટાહ" ન્યાય સુજળ કરવામાં આવેલ છે આચાર્યજનોની સૂત્ર-રચના વિચિત્ર
હોય છે.

શંકા :-ભગવાને જે પ્રમાણે યતિ ધર્મ કહેલો છે, તે પ્રમાણે જ ગૃહસ્થ ધર્મ અને
સંવિગ્ન પાક્ષિક ધર્મ વિષે પણ નિરૂપણ કરવું જોઈતું હતું કેમકે એઓ બન્ને ધર્મ પણ
પરસ્પર રૂપથી મોક્ષના કારણમૂત છે. તદુક્તમ્ :-સાવજ્જજોગપરિવજ્જણા ઉ સવ્વુત્તમો
જહધમ્મો, વીઘો સાવગધમ્મો તહ્ધો સંવિગ્ગપક્કપહો ॥૧॥ જેમાં મન-વચન-કાય, કૃત-

અત્રાહ—સર્વસાવધવર્જનીયત્વેન દેશનાયાં પ્રથમં યતિધર્મસ્ય દેશનીયત્વાત્, મોક્ષ-પથસ્યાત્યાસન્નત્વાત્, શ્રમણસંઘસ્ય પ્રથમં વ્યવસ્થાપનીયત્વાત્ચ સર્વતઃ પ્રથમં યતિધર્મોપ-દેશો ભગવતા કૃતઃ, તતસ્તદ્ગ્રભૂતૌ શ્રાવકધર્મ સવિગ્નપાક્ષિકધર્માવપિ ભગવતા સમુપ-દિષ્ટાવેવ, અત એવ તૌ શાસ્ત્રેષુ સમુપલભ્યેતે, ભગવદનુપદિષ્ટત્વે તુ તયો નામાપિ શ્રોતુમ-શક્યમ્ । અત્ર તુ શ્રમણધર્મસ્યૈવ યદુપાદાનં તદ્વાધવાર્થમુક્તમ્ । અતઃ શ્રાવકધર્મયતિધર્મા-વપિ ભગવદુક્તત્વે નાત્ર સંગ્રાહ્યાવેવેતિ । અથ ભગવત્કૃતધર્મોપદેશપ્રભાવેણ વ્રહ્મો ભગવદ-નુયાયિનો જાતા, તેષાં યાવન્તઃ સંઘા-જાતાસ્તાનાહ—‘ઉસમસ્સ ણં’ इत्यादिना । ‘उस-मस्स णं अरहओ कोसलियस्स चउरासीगणा गणहरा होत्था’ ऋपभस्य खलु अर्हंतः कौशालिकस्य चतुरशीर्तिर्गणाः चतुरशीर्तिर्गणधराश्च अभवन् । अत्रेद वोध्यम्—यस्य भगवतो यावन्तो गणा भवन्ति तस्य तावन्त एव गणधरा भवन्ति । तदुक्तं—‘जावइया जस्स गणा तावइया गणहरा तस्स’ छाया—यावन्तो यस्य गणास्तावन्तो गणधरास्तस्य

કા ધર્મ ઔર સવિગ્નપાક્ષિક કા ધર્મ હૈ, સો ઇસ શ કા કા સમાધાન એસા હૈ કિ સર્વપ્રથમ પ્રમુ દેશના મૈં યધિધર્મ કા હી વ્યાખ્યાન કરતે હૈ, ક્યોકિ વહી દેશનીય બતલાયા ગયા હૈ. ઇસકા કારણ મો યહો હૈ કિ યતિધર્મ મૈં હો સર્વ પ્રકાર સે સાવધયોગ કા પરિહાર હોતા હૈ. ઇસી સે વહ મોક્ષપથ કે અત્યાસન્ન હોતા કહા ગયા હૈ । શ્રાવકધર્મ ઔર સવિગ્ન પાક્ષિક ધર્મ યે દો ધર્મ યતિધર્મ કે અન્નમૂત કહે ગયે હૈ સો ઇનકા મો પ્રમુ ને ઉપદેશ દિયા હી હૈ. યદિ એસા ન હોતા તો શાસ્ત્રો મૈં જો ઇનકા વર્ણન કિયા ગયા મિલતા હૈ વહ નહીં મિલતા । યહાં પર જો યતિધર્મ કા હી ઉપાસન કિયા ગયા હૈ વહ લાઘવ કે લિયે કિયા ગયા હૈ ઇસલિયે શ્રાવકધર્મ ઔર યતિધર્મ યે દોનો ધર્મ ભગવદુપદિષ્ટ હોને સે યહો પર સપ્રાદ્ય હી હૈ । ભગવાન્ દ્વારા ઉપદિષ્ટ હુપ ધર્મોપદેશ કે પ્રભાવ સે અનેક મનુષ્ય ઉનકે અનુયાયી હો ગયે ।

“ઉસમસ્સ ણં અરહઓ કોસલિયસ્સ ચઉરાસી ગણા ગણહરા હોત્થા” ઉસ સમય ઉન કૌશ

કાશિત અને અનુમોદનાથી સર્વ સાવધયોગનુ પરિવર્જન થઈ જાય છે તે યતિ ધર્મ છે એનાથી ઉતરતો શ્રાવક ધર્મ અને સવિગ્ન પાક્ષિક ધર્મ છે તો આ શંકાનુ સમાધાન આ પ્રમાણે છે કે સર્વ પ્રથમ પ્રમુ દેશનામા યતિ ધર્મનુ જ વ્યાખ્યાન કરે છે, કેમકે તે જ દેશનીય કહેવામા આવેલ છે આનુ કારણ આ પ્રમાણે છે કે યતિ ધર્મમાં જ સર્વ પ્રકારથી સાવધયોગનો પરિહાર થાય છે એથી જ તે મોક્ષપથનો અત્યાસન્ન છે, એવું કહેવાય છે શ્રાવક ધર્મ અને સવિગ્નપાક્ષિક ધર્મ એઓ બન્ને ધર્મો યતિ ધર્મના અગમ્ય કહેવામાં આવેલ છે, પ્રમુએ એમનો પણ ઉપદેશ આપેલો જ છે ને એવું ન હોત તો શાસ્ત્રોમાં જો એમનું વર્ણન મળે છે તે ગણત નહિ. અહીં જો યતિ ધર્મનુ ઉપાદાન કરવામાં આવેલ છે તે લાઘવના માટે કરવામાં આવેલ છે, એથી જ શ્રાવક ધર્મ અને યતિ ધર્મ એઓ બન્ને ધર્મો ભગવદુપદિષ્ટ હોવાથી અહીં સંગ્રાહ જ છે ભગવાન્ દ્વારા ઉપદિષ્ટ ધર્મોપ-દેશના પ્રભાવથી ઘણા મનુષ્યો તેમના અનુયાયીઓ થઈ ગયા, ‘ઉસમસ્સ ણં અરહઓ કોસ-લિયસ્સ ચઉરાસી ગણા ગણહરા હોત્થા’ તે સમયે તે કૌશાલક ઋષભ પ્રમુને ૮૪ ગણુ અને

इति । भगवतः साधुसंख्यामाह—‘उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स उसभसेणपामो-
क्खाओ चुलसीई समणसाहस्सीओ’ ऋषभस्स खलु अर्हतः कोशलिकस्य ऋषभसेन
प्रमुखाश्चतुरशीतिः श्रमणसाहस्यः=चतुरशीतिसहस्रसंख्यकाः श्रमणाः ‘उक्कोसिया समण-
संपया होत्था’ उत्कृष्टाः श्रमणसम्पदं अभवन् । साध्वी संख्यामाह—‘उसभस्स णं
अरहओ कोसलियस्स वंभी सुन्दरी पामोक्खाओ तिणिण अज्जियासयसाहस्सीओ’
ऋषभस्य खलु अर्हतः कौशलिकस्य ब्राह्मी सुन्दरी प्रमुखाः तिस्रः आर्यिकाशतसाहस्यः
त्रिलक्षसंख्यकाः उत्कृष्टाः साध्व्यः ‘उक्कोसिया अज्जियासंपया होत्था’ उत्कृष्टाः
आर्यिकासम्पदोऽभवन्, श्रावकसंख्यामाह—‘उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स सेज्जस-
पामोक्खाओ तिणिण समणोवासगसयसाहस्सीओ’ ऋषभस्य खलु अर्हतः कौशलिकस्य
श्रेयांसप्रमुखा तिस्रः श्रमणोपासकसाहस्यः ‘पंच य साहस्सीओ’ पञ्च साहस्यश्च=
पञ्चसहस्राधिकलक्षत्रयपरिमिता श्रावकाः ‘उक्कोसिया समणोवासगसंपया होत्था’ उत्कृष्टाः
श्रमणोपासकसम्पदोऽभवन् । श्राविकासंख्यामाह—‘उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स
सुमहा पामोक्खाओ पंच समणोवासियासयसाहस्सीओ—चउप्पणं च सहस्सा’ ऋषभस्य
खलु अर्हतः कोशलिकस्य सुमहाप्रमुखाः पञ्च श्रमणोपासिकाशतसाहस्यः चतुष्पञ्चाशच्च
साहस्यः=चतुष्पञ्चाशत्सहस्राधिकपञ्चलक्षसंख्यकाः ‘उक्कोसिया समणोवासिया संपया

ल्लिक ऋषभ प्रभु के ८४ गण एवं ८४ गणघर हो गये, ऐसा नियम है कि “जावइया जस्स गणा
तावइया गणहरा तस्स” कि जिसके जितने गण होते हैं उतने उनके गणघर होते हैं, भगवान्
आदिनाथ के ८४ गण ये इसी कारण इनके ८४ गणघर कहे गये हैं, “उसभस्स णं अरहओ
कोसलियस्स उसभसेणपामोक्खाओ चुलसीई समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसंपया होत्था”
इन प्रभु के ऋषभसेन आदि ८४ हजार श्रमण थे, “उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स वंभी
सुन्दरी पामोक्खाओ तिणिण अज्जिया सयसाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जिया संपया होत्था”
ब्राह्मी सुन्दरी आदि ३ तीन लाख आर्यिकाएँ थी, “उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स सेज्जस
पामोक्खाओ तिणिण समणोवासगसयसाहस्सीओ पंच य साहस्सीओ उक्कोसिया समणोवासग-
संपया होत्था” तीन ३ लाख ५ हजार श्रेयांसप्रमुख श्रावक थे, “उसभस्स णं अरहओ कोस-
लियस्स सुमहा पामोक्खाओ पंच समणोवासियासयसाहस्सीओ चउप्पणं च सहस्सा उक्कोसिया

४३ गणधरे ४४ गणा, जेवो नियम छे ते “जावइया जस्स गणा तौवइया गणहरा तस्स”
ऐमने जेटवा गणो डोय छे, तेमने तेटा गणधरे डोय छे भगवान् आदिनाथने ८४
गणो हता जेथी ४ जेमने ८४ गणधरे ठहेवाभा आवेल छे, “उसभस्स णं अरहओ
कोसलियस्स उसभसेणपामोक्खाओ चुलसीई समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसंपया
होत्था जे प्रभुने ऋषभसेन वगेरे ८४ हजार श्रमणो हता ‘उसभस्स णं अरहओ कोस-
लियस्स वंभी सुन्दरी पामोक्खाओ तिणिण अज्जियासयसाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जिया
संपया होत्था’ ब्राह्मी सुन्दरी विगेरे ३ गण लाख आर्याओ हती. ‘उसभस्स णं अरहओ
कोसलियस्स सेज्जसपामोक्खाओ तिणिण समणोवासगसयसाहस्सीओ पंच य साहस्सीओ
—उक्कोसिया समणोवासगसंपया होत्था’ ऋषु लाख पाय हजार श्रेयांस विगेरे आवडे।
हता ‘उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स सुमहापामोक्खाओ पंचसमणोवासिया सयसा-

होत्था' उत्कृष्टा श्रमणोपासिका सम्पदोऽभवन् । चतुर्दशपूर्विसंख्यामाह—'उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स अजिणाणं' ऋपभस्य खलु अर्हतः कौशलिकस्य अजिनानां=जिन-
मिन्नानां छत्रस्थानामित्यर्थः, 'जिणसंकासाणं' जिनसकाशानां=जिनसदृशानां 'सव्वक्ख-
रसनिवाईणं' सर्वाक्षरसन्निपातिनाम्—सर्वाणि च तानि अक्षराणि अकारादीनि, तेषां सन्नि-
पाताः=द्वयादिसंयोगाः, ते च अनन्तत्वात् अनन्ताः, ते विद्यन्ते ज्ञेयत्वेन येषां ते तथा
तेषां सर्वाक्षरसंयोगविदामित्यर्थः, तथा 'जिणो विव' अत्र पठ्यर्थे प्रथमा, ततश्च 'जिणो
विव' जिनस्येव=प्राप्तकेवलज्ञानस्येव केवलश्रुत-केवलिनः प्रज्ञापनायां तुल्यत्वात् 'अवि-
तहं' अवितथं=यथार्थं 'वागरमाणाणं' व्यागृणतां=व्याकुर्वतां 'चत्तारि चउदसपुव्वीसहस्सा
अद्धट्ठमा य सया' चत्वारि चतुर्दशपूर्विसहस्राणि अर्द्धाष्टमानि च शतानि=सार्द्धसप्तशता-
धिकचतुस्सहस्रसंख्यकाश्चतुर्दशपूर्विणः 'उक्कोसिया चउदसपुव्वीसंपया होत्था' उत्कृष्टाः
चतुर्दशपूर्विसम्पदोऽभवन् । अवधिज्ञानिसंख्यामाह—'उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स
णव ओहिणाणिसहस्सा' ऋपभस्य खलु अर्हतः कौशलिकस्य नव, अवधिज्ञानि सहस्राणि=
नव संख्यका अवधिज्ञानिनः 'उक्कोसिया ओहिणाणिसंपया होत्था' उत्कृष्टा अवधि-
ज्ञानि सम्पदोऽभवन् । जिनसंख्यां वैकुर्विकसंख्यां चाह—'उसभस्स णं अरहओ कोस-
लियस्स वीसं जिणसहस्सा' ऋपभस्स खलु अर्हतः कौशलिकस्य विंशतिः जिनसहस्राणि=

समणोवासिया सपया होत्था" पाच ५ लाख ५४ हजार सुभद्राप्रमुख श्रमणोपासिकाएँ—श्रविकाएँ
थीं, "उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स अजिणाणं जिणसकासाण सव्वक्खरसनिवाईण जिणो-
विव अवितहं वागरमाणाण चत्तारि चउदस पुव्वीसहस्सा अद्धट्ठमा य सया उक्कोसिया चउदस-
पुव्वीसंपया होत्था" सर्वाक्षरसंयोग वेदी, जिनमिन्न, जिनसदृश एवं जिनकी तरह अवितथ
अर्थ की प्ररूपणा करने वाले ऐसे चतुर्दश पूर्वधारी ४ हजार ७ सातसौ ५० पचास थे,
चतुर्दश पूर्वधारी श्रुतकेवली होते हैं, प्रज्ञापना में केवली और श्रुतकेवली तुल्य होते हैं, इसी
कारण यहां पर "जिनस्येव अवितथ व्यागृणता" ऐसा पाठ कहा गया है । "उसभस्स णं
अरहओ कोसलियस्स णव ओहिणाणिसहस्सा उक्कोसिया ओहिणाणि सपया होत्था" 'नौ
हजार अवधिज्ञानी थे, "उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स वीसं जिणसहस्सा" २० वीस

हस्तीओ चउप्पणं च सहस्सा उक्कोसिया समणोवासिया संपया होत्था' पांच लाख
श्रमण उल्लर सुभद्रादिश्रमणोपासिकाओ—श्रविकाओ इती उसभस्स अरहओ कोसलियस्स
अजिणाण जिणसंकासाणं सव्वक्खरसंनिवाईणं जिणोविव अवितहं वागरमाणाणं चत्तारि
चउदसपुव्वीसहस्सा अद्धट्ठमा य सया उक्कोसिया चउदसपुव्वी संपया होत्था' सर्वाक्षर
संयोगश्रुता, अनुमिन्न पणु अनुमरीणा तेमअ अनुनी जेम अवितथ अर्थनी प्रश्नपणु।
उरवावाणा ओवा १४ औदपूर्वने धारणु करना। याउ उल्लर ७ सातसौ ५० पचास इती,
औदपूर्वने धारणु करना। श्रुत केवली समान होथ ७ जेम कहुं छे तेथीअ अहोयां
'जिनस्येव अवितथ व्यागृणता' ओवे। पाठ कडेव छे 'उसभस्स णं अरहओ कोस-
लियस्स णव ओहि णाणीसहस्सा उक्कोसिया ओहिणाणीसंपया होत्था' ६ नव उल्लर
अवधिज्ञानीथे। इती 'उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स वीसं जिणसहस्सा' वीस उल्लर

विंशतिसहस्राणि जिनानि, तथा-‘वीसं वेडव्वियसहस्सा छच्चसया’ विंशतिः वैकुर्विकसह-
स्राणि पद् च शतानि=पद्शताधिकविंशतिसहस्रसंख्यका वैक्रियलब्धिमन्तश्च ‘उक्कोसिया
जिणसंपया वेडव्वियसंपयाय होत्था’ उत्कृष्टा जिनसम्पदो वैकुर्विकसम्पदश्च अभवन् ।
विपुलमतिसंख्यां वादिसंख्यां च प्राह-‘वारस विडलमइसहस्सा छच्च सया पण्णासा’
ऋषभस्य खलु अर्हतः कौशलिकस्य द्वादश विपुलमतिसहस्राणि पद् च शतानि पञ्चाशत्
पञ्चाशदधिक घट् शताधिक द्वादशसहस्रसंख्यकाः विपुलमतयो, वारस वाडसहस्सा छच्च
सया पण्णासा’ द्वादशवादिसहस्राणि पद् च शतानि पञ्चाशत् पञ्चाशदधिकपद्शताधिक
द्वादशसहस्रवादिनश्च उत्कृष्टा विपुलमतिसम्पदो वादिसम्पदश्चाभवन् । अनुत्तरोपपातिक-
संख्यामाह-‘उसमस्स ण अरहओ कोसलियस्स गइ कल्लाणाण’ ऋषभस्य खलु अर्हतः
कौशलिकस्य गतिकल्याणानां गतौ देवगतौ कल्याण दिव्यसातोदयत्वात् येषां ते तथा
‘ठिइकल्लाणाणं’ स्थितिकल्याणानां स्थितौ देवायूरूपस्थितौ कल्याणम् अप्रवीचारसुख-
स्वामित्वात् येषां ते तथा तेषाम्, तथा आगमेसि मद्दाणं’ आगमिष्यद् मद्दाणाम्-आग-
मिष्यति देवभवानन्तरमागामिनि मनुष्यमवे सेत्स्यमानत्वात् मद्रं मोक्षरूपं कल्याणं येषां
ते तथा तेषां ‘वावीस अणुत्तरोइयाणं सहस्सा णव य सया’ द्वाविंशतिः अनुत्तरोप-

हजार जिन ये, “वीस वेडव्वियसहस्सा छच्च सया उक्कोसिया जिणसंपया वेडव्वियसंपया य
होत्था” वैक्रियलब्धवाले २० हजार ६ छसौ ये, “वारह विडलमइसहस्सा छच्चसया पण्णासा”
१२ बारह हजार ६ सौ ५० पचास विपुलमति मनः पर्यय ज्ञानी ये, और “वारह वाडस-
हस्सा छच्च सया पण्णासा” इतने ही वादी ये । “उसमस्स ण अरहओ कोसलियस्स गइ-
कल्लाणाण, ठिइकल्लाणाणं आगमेसिमद्दाणं वावीस अणुत्तरोववाइयाणं सहस्सा णव य सया
उक्कोसिया अणुत्तरोववाइयसंपया होत्था” इन कौशलिक ऋषभ अर्हन्त के गति कल्याणों की-
देवगति में दिव्य सातोदय से कल्याण वालों की संख्या तथा स्थिति कल्याणवालों की-देवायु-
रूप स्थिति में अप्रवीचार सुख के स्वामी होने से कल्याण वालों की संख्या एवं आगमिष्य-
मद्रों की देवभव के अनन्तर आगामी मनुष्यभव में जिनका मोक्षरूप कल्याण होता है

७५० ६८१ ‘वीसं वेडव्वियसहस्सा छच्चसया उक्कोसिया जिणसंपया वेडव्वियसंपयाय
होत्था’ वैक्रियलब्धवाणा वीस हजार छसौ ६८१ ६८१. ‘वारसविडलमइसहस्सा छच्च सया
पण्णासा’ बार हजार छसौ पचास विपुलमति मनःपर्यय ज्ञानीये ६८१. अने ‘वारस-
वाडसहस्सा छच्चसया पण्णासा’ अने ओट्ठाव वादीये ६८१ ‘उसमस्स ण अरहो कोस-
लियस्स गइकल्लाणाणं, ठिइकल्लाणाणं, आगमेसिमद्दाणं वावीस अणुत्तरोववाइयाणं सह-
स्सा णव य सया उक्कोसिया अणुत्तरोववाइयसंपया होत्था’ ये कौशलिक ऋषभ अर्हन्तने
गतिकल्याणवाणाओनी देवगतिमां दिव्य सातोदयथी कल्याणवाणाओनी स ७५० तथा स्थिति-
कल्याणवाणाओनी देवायुष्य स्थितिमा अप्रविचार सुभना स्वाभी होवाथी कल्याणवाणाओनी
स ७५० तेभन् आगमिष्यमद्रोनी-देवभवना पछी आवनारा मनुष्य भवमां जेभनां मोक्ष
इप कल्याण थाय छे, जेभनी स ७५० अने अनुत्तरोपपातिकेनी स ७५० २२६०० वावीस
५०

पातिकानां सहस्राणि नत्र च शतानि नवगताविक्र द्वाविंशतिसप्तसंख्यका अनुत्तरोप-
पातिकाः 'उवक्रोसिया अणुत्तरोववाइयसंपया होत्था' उत्कृष्टा अनुत्तरोपपातिक संपदो-
ऽभवन् । अथ सिद्धसंख्यामाह—'उसमस्स ण अरहओ कोसलियस्स वीसं समणसहस्सा
सिद्धा' ऋषभस्य खलु अर्हत कौशलिकस्य विंशतिः श्रमणसहस्राणि सिद्धानि—विंशति
सहस्रसंख्यकाः श्रमणाः सिद्धाः, तथा 'चत्तालीस अज्जियासहस्सा सिद्धा' चत्वारिंशत्
आर्यिकासहस्राणि सिद्धानि—चत्वारिंशत्सहस्रसंख्यका आर्यिकाः सिद्धाः, इत्थं च श्रम-
णार्यिकोभयसंख्यामीलने 'सद्धि अंतेवासिसहस्सा सिद्धा' षष्टिः अन्तेवासिसहस्राणि
सिद्धानि—षष्टिसहस्रसंख्यकाः अन्तेवासिनः सिद्धा इत्यर्थः । अथ भगवतोऽन्तेवासिवर्णन-
माह—'अरहओ णं' इत्यादि । 'अरहओ ण उसमस्स बहवे अंतेवासी' अर्हतः खलु ऋषभस्य
बहवोऽन्तेवासिनः—शिष्या 'अणगारा' अनगाराः—साधवो 'भगवंतो' भगवन्तः सकल-
मान्याः, तत्र 'अप्पेगइया' अप्येकके=केचित् 'मासपरियाया' मासपर्यायाः—मासं पर्यायो
येषां ते तथा—एकमासिक दीक्षापर्याययुक्ताः, इतः परम् 'एकमासिका' इत्यारभ्य ऊर्ध्व
जानवः' इति पर्यन्तं सर्वम् अनगारवर्णनम् औपपातिकसूत्रतोऽवसेयम्, अमुमेवार्थं सूच-
यति—'जहा उववाइए सव्वओ अणगारवण्णओ जाव' इति, तथा 'उद्धं जाणू' उर्ध्वं जानवः
ऊर्ध्वं जानुनी येषां ते तयोक्ताः—ऊर्ध्वीकृत जानव इत्यर्थः, अयं भावः—शुद्धपृथिव्यासन
वर्जनादौषग्रहिक निपद्याया अभावाच्चोत्कुटुकासना इति, तथा 'अहोसिरा' अधः शिरसः—

उनकी सख्या, एवं अनुत्तरोपपातिकों की सख्या २२९०० थी, "उसमस्स णं अरहओ
कोसलियस्स वीसं समणसहस्सा सिद्धा" २० हजार श्रमणसिद्धों की सख्या थी, "चत्तालीस
अज्जिया सहस्सा सिद्धा" आर्यिका सिद्धों की सख्या ४० चालीस हजार थी, इस प्रकार
श्रमणसिद्ध और आर्यिका सिद्ध इन दोनों की सख्या ६० साठ हजार की थी "सद्धि अन्ते-
वासो सहस्सा सिद्धा" अन्तेवासी सिद्ध ६० हजार थे "अरहओ णं उसमस्स बहवे अंते-
वासी अणगारा भगवंतो" इनमें ऋषभ भगवान् के अन्तेवासी-शिष्य अनगार साधु सकलजनों
द्वारा पूज्य थे, "अप्पेगइया मासपरियाया" इनमें कितनेक अन्तेवासी एक मास की दीक्षा वाले
थे, "जहा उववाइए सव्वओ अणगार वण्णओ जाव उद्धं जाणू" वहा से लेकर "उर्ध्वजा-
नव," तक का सब अनगार वर्णन औपपातिक सूत्र से जान लेना चाहिये । शुद्ध पृथिवीरूप

६०२ नप्पेनी ६ती 'उसमस्स णं अरहओ कोसलियस्स वीसं समणसहस्सा सिद्धा'
वीस २० ६०२ श्रमणसिद्धों स ५था ६ती 'चत्तालीस अज्जियासहस्सा सिद्धा' आर्यिका
सिद्धोंनी स ५था ४० याणीस ६०२नी ६ती आरीते श्रमण सिद्ध अने आर्यिकासिद्ध
अने अनेनी स ५था ६० साठ ६०२नी ६ती. 'सद्धि अंतेवासी सहस्सा' अंते-
वासी सिद्ध साठ ६०२ ६ती 'अरहओ उसमस्स बहवे अंतेवासी अणगारा भगवंतो'
तेमा ऋषभभगव नना अंतेवासी—शिष्य—अनगार साधु सकलजनों द्वारा पूज्य ६ती.
'अप्पेगइया मासपरियाया' तेमां ६६वाक अंतेवासी अंक मासनी दीक्षावाणा ६ती.
'जहा उववाइए सव्वओ अणगारवण्णओ जाव उद्धं जाणू' आ पाठथी आ ७००नी

અધોમુખાઃ ઊર્ધ્વતિર્યગ્દૃષ્ટિવિક્ષેપરહિતા इत्यर्थः, तथा 'झाणकोट्टोवगया' ध्यानकोष्ठोपगताः
 ध्यानरूपो यः कोष्ठः कुसूलस्तम् उपागताः तत्र प्रविष्टाः कोष्ठके यथा धान्यं निक्षिप्तं न विकीर्णं
 भवति, एवमेव तेऽनगारा ध्यानकोष्ठकोपगताः सन्तो विषयाप्रचारितदृष्टयो भवन्तीति भावः,
 एवं विधास्तेऽनगाराः 'संजमेण' संयमेन=सप्तदशविधेन 'तवसा' तपसा=द्वादशविधेन च
 'अप्पाण भावेमाणा' आत्मान भावयन्तो=वासयन्तो 'विहरंति' विहरन्ति=तिष्ठन्तीति । संयम-
 तपसोश्चात्र ग्रहणं तयोः प्रधानतया मोक्षाङ्गत्वसूचनार्थम्, तत्र संयमस्य नवीनकर्मानुपा-
 दानहेतुत्वेन तपसश्च पुराणकर्मनिर्जराहेतुत्वेन मोक्षप्रधानाङ्गत्वम् । नवीन कर्मासंग्रहणात्
 पुरातनकर्मक्षणाच्च सकलकर्मक्षयलक्षणो मोक्षो भवत्येवेति । तथा—'अरहओ ण उसमस्स

આસન કો ડોહને સે ઔપગ્રાહિક નિષધા કે અભાવ સે જો ઉત્કુટુક આસન વાઠે સાધુ
 જન હૈં વે ઉર્ધ્વજાનુ સાધુજન હૈ, "અહો સિરા" જો નીચા મુંઢ કરકે તપસ્યા મેં લીન રહતે હૈં
 વે અધઃ શિરાઃ સાધુજન હૈં इनकी दृष्टि ऊपर की ओर नहीं जाती है. जो साधुजन कोष्ठक
 મેં રક્ષા હુઆ ધાન્ય જિસ પ્રકાર વિકીર્ણ નહીં હોતા હૈં इसी प्रकार "झाण कोट्टोवगया"
 ધ્યાનરૂપી કોષ્ઠક મેં વિરાજમાન રહતે હૈ, इनको दृष्टि विषयों की ओर प्रचारित नहीं होती
 હૈં વે અનગાર ધ્યાનકોષ્ઠકોપગત કહે જાતે હૈં । "संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति"
 હસ પ્રકાર કે યે સબ અનગાર સતરહ પ્રકાર કે સયમ સે ઔર ૧૨ પ્રકાર કે તપ સે અપની
 આત્મા કો ભાવિત કરતે યે. यहां जो संयम और तप का ग्रहण हुआ है वह प्रधानता से
 उनमें मोक्षाङ्गत्व की सूचना के निमित्त से हुआ है. क्योंकि संयम के द्वारा नवीन कर्मों का
 આગમન રોકા જાતા હૈ ઔર તપ કે દ્વારા સચિત હુએ કર્મો કી નિર્જરા કી જાતી હૈં इस
 कारण इनमें मोक्ष कारणता प्रधान है. यह तो निश्चित है कि नवीन कर्मों का आगमन तो
 હોતા નહીં ઔર પુરાને સચિત કર્મો કી નિર્જરા હોતી રહે તો હસ તરહ સે સકલ કર્મક્ષયરૂપ

'उर्ध्वजानवः' पर्यन्तानु तमात्र अनगारवर्णन औपपातिसूत्रयो समष्टि लेषु' शुद्ध पृथिवी
 રૂપ આસનને ઓહવાથી અને ઔપગ્રાહિક નિષધાના અભાવથી જે ઉત્કુટુક આસનવાળા
 સાધુજનો છે તે સર્વે ઉર્ધ્વજાનુ સાધુજનો છે જે 'અહોસિરા' નીચું મોં કરીને તપસ્યામાં
 લીન રહે છે તે અધઃ શિરાઃ સાધુજનો છે. એમની દૃષ્ટિ ઉપરની તરફ જતી નથી. જે
 સાધુજનો કોષ્ઠકમાં મૂકેલ ધાન્ય જેમ વિકીર્ણ થતું નથી તે જ પ્રકારે 'झाणकोट्टोवगया'
 ધ્યાન રૂપી કોષ્ઠકમાં વિરાજમાન રહે છે, તેમની દૃષ્ટિ વિષયોની તરફ પ્રચારિત થતી નથી—
 તેવા અનગારને ધ્યાન કોષ્ઠકોપગત કહેવામાં આવેલ છે 'संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणा
 विहरंति' આ પ્રમાણે જે સર્વે અનગારો ૧૭ પ્રકારના સયમથી અને ૧૨ પ્રકારના તપથી
 પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા હતા અહીં જે સયમ અને તપનું મહત્ત્વ થયેલ છે તે
 પ્રધાનતાથી તેમનામાં મોક્ષાંગત્વ ની સૂચના માટે થયેલ છે કેમકે સંયમ દ્વારા નવીન કર્મોનું
 આગમન રોકવામાં આવે છે અને તપ દ્વારા સચિત થયેલા કર્મોની નિર્જરા કરવામાં આવે
 છે એથી એમનામાં મોક્ષકારણતા પ્રધાન છે આ વાત તો નિશ્ચિત છે કે નવીન કર્મોનું
 આગમન તો થાય નહીં અને જૂના સચિત કર્મોની નિર્જરા થતી રહે તો આ પ્રમાણે

દુવિદ્યા' અર્હતઃ સ્વલ્પમસ્ય દ્વિવિદ્યા=દ્વિપ્રકારા 'અંતકરભૂમિ' અન્તકરભૂમિઃ-અન્તસ્ય=મવાન્તસ્ય મોક્ષસ્ય કરા અન્તકરાઃ મોક્ષગામિનસ્તેષાં ભૂમિઃ=કાલઃ 'હોત્યા' અમવત્ । કાલો હિ સર્વાધારઃ, અત આધારત્વસામ્યેનાત્ર કાલો ભૂમિત્વેન વિવક્ષિત ઇતિ । તામેવાન્તકરભૂમિમાહ-'ત જહા' ઇત્યાદિ । 'તં જહા' તદ્યથા 'જુગંતકરભૂમીય' યુગાન્તકરભૂમિઃ-યુગં=પચ્ચવર્ષાત્મકઃ કાલઃ, કૃતયુગાદિરુપો વા કાલઃ, અયં ચ યુગરૂપઃ કાલઃ ક્રમિકો ભવતિ તથૈવ ગુરુશિષ્યપ્રશિષ્યપરમ્પરાઽપિ ક્રમિકા, અતો ગુરુશિષ્યપરમ્પરાઽપિ યુગશબ્દે-નેહ વિવક્ષિતા । તયા ગુરુશિષ્યપ્રશિષ્યપરમ્પરયા સમુપલક્ષિતા યા અન્તકરભૂમિઃ=મોક્ષ-ગામિકાલઃ સા યુગાન્તરકરભૂમિઃ । તથા 'પરિયાઅંતકરભૂમીય' પર્યાયાન્તકરભૂમિઃ-પર્યાયઃ=તીર્થકૃતઃ કેવલિત્વકાલઃ, તદપેક્ષયા અન્તકરભૂમિઃ=મોક્ષગામિકાલપર્યાયઃ । અય ભાવઃ-લબ્ધકેવલજ્ઞાનસ્ય ભગવતો યાવતિ કેવલિત્વપર્યાયે વ્યતીતે મોક્ષં ગન્તું પ્રવૃત્તા

મોક્ષ જીવ કો પ્રાપ્ત હો હી જાતા હૈ । “અરહઓ ણં” ઉસમસ્સ દુવિદ્યા અન્તકરભૂમી હોત્યા” ડન આદિનાથ પ્રમુ કે અન્તકર મોક્ષગામી જીવો કા કાલ દો પ્રકાર કા હુઆ, કાલ સર્વાધાર હોતા હૈ અતપ્વ આધાર કી સામ્યતા કો લેકર કાલ કો યહા ભૂમિરૂપ સે કહ દિયા હૈ “ત જહા” વહ દ્વિપ્રકારતા હિસ પ્રકાર સે હૈ “જુગંતકર ભૂમીય” ઇક યુગાન્તકર ભૂમિ ઓર “પરિયા-અતકરભૂમિ ય, દૂસરી પર્યાયાન્તકર ભૂમિ, પાચ વર્ષ પ્રમાણ કાલ કા નામ યુગ હૈ અથવા કૃત-યુગાદિરૂપ કાલ કા નામ યુગ હૈ યહ યુગરૂપ કાલ ક્રમિક હોતા હૈ હિસલિયે યુગશબ્દ સે ગુરુશિષ્યપ્રશિષ્ય પરમ્પરા મી વિવક્ષિત હો જાતી હૈ. હિસ ગુરુશિષ્યપ્રશિષ્યપરમ્પરા સે સમુપલક્ષિત જો અન્તકર ભૂમિ હૈ મોક્ષગામી જીવો કા કાલ હૈ વહ યુગાન્તર ભૂમિ હૈ તીર્થકર કા જો કેવલિત્વ પર્યાય કા કાલ હૈ વહ પર્યાય હૈ હિસ અપેક્ષા જો મોક્ષગામી જીવો કા કાલ હૈ વહ પર્યાયાન્તકર ભૂમિ હૈ, હિસકા તાત્પર્ય ઇસા હૈ જબ ભગવાન્ કો કેવલજ્ઞાન હો ચુકા ઓર ઉસ અવસ્થા મેં ડનકી જિતની કેવલી અવસ્થારૂપ પર્યાય વ્યતીત હો ચુકી ઉસ સમય મેં જિતને

સકળકર્મક્ષયરૂપ મોક્ષ જીવને પ્રાપ્ત થઈ જ જાય છે. “અરહઓ ણં” ઉસમસ્સ દુવિદ્યા અન્ત-કરભૂમી હોત્યા તે આદિનાથ પ્રમુને અન્તકર-મોક્ષગામી જીવોને કાળ-બે પ્રકાર નો થયો કાળ સર્વાધાર હોય છે. એથી આધારની-સામ્યતાને લઈને કાળને અહીં ભૂમિ રૂપમાં કહે-વામાં આવેલ છે. ‘તં જહા’ તે દ્વિ પ્રકારતા આ પ્રમાણે છે. “જુગંતકરભૂમીય” એક યુગાન્તકર ભૂમિ અને બીજી “પરિયાઅંતકરભૂમી ય પર્યાયાન્તકર ભૂમિ પાંચ વર્ષ પ્રમાણ કાળનું નામ યુગ છે. અથવા કૃતયુગાદિરૂપ કાળનું નામ યુગ છે આ યુગ રૂપ કાળ-ક્રમિક હોય છે. આ પ્રમાણે ગુરુશિષ્ય પ્રશિષ્ય પર પરા પણ ક્રમિક હોય છે એથી જ યુગ શબ્દથી ગુરુ શિષ્ય પ્રશિષ્ય પર પરા પણ વિવક્ષિત થઈ જાય છે આ ગુરુ શિષ્ય પ્રશિષ્ય પર પરાથી સમુપલક્ષિત જે અંતકર ભૂમિ છે. મોક્ષ ગામી જીવોને કાળ છે, તે યુગાન્તકર ભૂમિ છે. તીર્થ કર્મો જે કેવલિત્વ પર્યાય કાળ છે તે પર્યાય છે. જે અપેક્ષાએ જે મોક્ષગામી જીવોને કાળ છે તે પર્યાયાન્તકર ભૂમિ છે. આનું તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે કે જ્યારે ભગવાનને કેવળ જ્ઞાન થઈ ચૂક્યું અને તે સ્થિતિમાં તેમની જેટલા કેવલી અવસ્થા રૂપ પર્યાયવ્યતીત થઈ

અનગારાઃ સ કાલઃ પર્યાયાન્તકરભૂમિરિતિ । અથ યુગાન્તકરભૂમિ પર્યાયાન્તકરભૂમ્યોઃ પ્રમાણપ્રરૂપણાયાહ—‘જુગંતકરભૂમી’ યુગાન્તકરભૂમિ દિ ‘અસંખેજ્જાઈ પુરિસજુગાઈ’ અસં-
ખ્યેયાનિ પુરુષયુગાનિ ‘જાવ’ યાવત્=અસંખ્યેયપુરુષપરમ્પરાપરિમિતાઽમવત્ । તથા ‘પરિયા
અંતકરભૂમી’ પર્યાયાન્તકરભૂમિરેપાઽમવત્ યત્ ભગવત ઋપમસ્ય ‘અતોમુહુત્તપરિયાપ’ અન્ત-
મુહુર્ત્તપર્યાયે=કેવલિજ્ઞાનસ્ય અન્તર્મુહુર્ત્તપ્રમાણે પર્યાયે વ્યતીતે સતિ ‘અંતમકાસી’ અન્તમ્=
મવાન્તમ્ અકાર્પીત્=અકરોત્ મુક્તિ ગતો ન તુ તતઃ પ્રાક્ કથિજ્જીવઃ । ભગવતોઽન્તર્મુહુર્ત્ત-
પ્રમાણે કેવલિપર્યાયે સતિ તન્માતા મરુદેવી મુક્તિ ગતેતિ વોધ્યમ્ ॥૬૦ ૪૩॥

યસ્મિન્ યસ્મિન્નક્ષત્રે જન્માદિ કલ્યાણકાનિ ભગવતો જાતાનિ તન્નક્ષત્રપ્રદર્શન
પુરસ્સરં ભગવતો જન્મકલ્યાણકાદોન્યાહ--

મૂલમ્—ઉસમેણં અરહા પંચ ઉત્તરાસાદે અમીઠછેદે હોત્થા, તં જહા-
ઉત્તરાસાદાહિં ચુપ્પચિત્તા ગમ્મં વક્કંતે, ઉત્તરાસાદાહિં જાપ્પ ઉત્તરાસાદાહિં
રાયા મિસેયં પત્તે ઉત્તરાસાદાહિં મુંદે મવિત્તા અગારાઓ અણગારિયં
પવ્વણ, ઉત્તરાસાદાહિં અણંતે જાવ સમુપ્પણ્ણે, અમીઠ્ઠા પરિણિવ્વણ
॥ સૂ. ૪૪ ॥

છાયા—ઋષભઃ સ્વલુ અર્ધન્ પચ્ચોત્તરાષાઢઃ અભિજિત્વષ્ઠોઽમવત્ તદ્યથા—ઉત્તરાષા-
ઢાહુ વ્યુતપ્રચ્યુત્થા ગર્મ વ્યુત્ક્રાન્તઃ, ઉત્તરાષાઢાસુ જાતઃ ઉત્તરાષાઢાસુ રાજ્યાભિવેક પ્રાપ્ત.
ઉત્તરાષાઢાસુ મુણ્ઢો ભૂત્વા અગારાત્ અનગારિતાં પ્રવ્રજિતઃ, ઉત્તરાષાઢાસુ અનન્ત યાવત્

મોક્ષ મેં જાને કે લિપ્પ અનગાર પ્રવૃત્ત હુપ્પ વહ કાલ પર્યાયાન્ત કર ભૂમિ હૈ, “જુગંતકરભૂમી
જાવ અસંખેજ્જાઈ પુરિસજુગાઈ” હનમેં જો યુગાન્તકર ભૂમિ હૈ વહ અસંખ્યાત પુરુષપરમ્પરાપ્રમિત
હોતો હૈ તથા “પરિયાયતકરભૂમિ અતો મુહુત્તપરિયાપ અંતમકાસી” પર્યાયાન્તકરભૂમિ ઈસી
હૈ કિ ભગવાન્ ઋષભ કે કેવલી હોને કો પર્યાય કા અન્તર્મુહુર્ત્તપ્રમાણ સમય વ્યતીત હોને પર
જિસ જીવ ને અપને મવકા અન્ત કર દિયા હોતો હૈ મોક્ષ મેં વહ જીવ પહુંચ જાતા હૈ—ઈસકે
પહિલે કોઈ જીવ મોક્ષ પ્રાપ્ત નહીં કરતા હૈ. ઈસા વહ સમય પર્યાયાન્તકર ભૂમિ રૂપ કહા ગયા
હૈ, ઋષભનાથ કો કેવલિપર્યાય જબ ઈક અન્તર્મુહુર્ત્તપ્રમાણ કાલ વ્યતીત હો ચુકી થી ઉસ સમય
મેં ઈનકી માતા મરુદેવા મુક્તિ ચલી ગઈ થી ॥ ૪૩॥

ચુકયા તે સમયમા જેટલા મોક્ષમા જનારા અનગારો પ્રવૃત્ત થયા, તે કાલ પર્યાયાન્તકર
ભૂમિ છે. “જુગંતકરભૂમી જાવ અસંખેજ્જાઈ પુરિસજુગાઈ” એમનામા જે યુગાન્તકર ભૂમિ છે
તે અસંખ્યાત પુરુષ પરપરા પ્રમિત હોય છે તથા “પરિયાયતકરભૂમી અંતોમુહુત્તપરિ-
યાપ અંતમકાસી” પર્યાયાન્તકર ભૂમિ એવી છે કે ભગવાન ઋષભને કેવળો થવાની પર્યાયને,
અન્તર્મુહુર્ત્ત પ્રમાણ સમય વ્યતીત થઈ જવા બાદ જે જીવે પોતાના ભવનો અન્ત કરી દીધો
છે, તે જીવ મોક્ષમા પહોંચી જાય છે એના પહેલા કેઈ જીવ મોક્ષ પ્રાપ્ત કરતો નથી.
એવો તે સમય પર્યાયાન્તકર ભૂમિ રૂપ કહેવામા આવેલ છે ઋષભનાથના કેવલિ પર્યાય
બ્યાપે એક અન્તર્મુહુર્ત્ત પ્રમાણ કાળ વ્યતીત થઈ ચુકયા હતા, તે સમયે તેમની માતા મરુ-
દેવા મુક્તિ પ્રાપ્ત કરી ચુકી હતી. ॥૪૩॥

સમુત્પન્નમ્, અભિજિતા પરિનિર્વૃત્ત ॥૨૭॥

ટીકા—‘ઉસમેળ’ इत्यादि । ‘उसमेणं अरहा पंच उत्तरासादे’ ऋषभः खलु अहंन् पञ्चोत्तरापादः पञ्चसु उत्तरापादासु च्यवनजन्मराज्याभिपेक्षदीक्षाज्ञानलक्षणानि पञ्च-
कल्याणकानि यस्य स तथाभूतः, ‘अभीडछट्टे’ अभिजित्पट्टः—अभिजिति नक्षत्रे पण्ठं= निर्वाणलक्षणं पण्ठ कल्याण यस्य स तथाभूतश्च ‘होत्था’ अभवत् । तदेवाह—‘त जहा’
तद्यथा ‘उत्तरासादाहि’ उत्तरापादासु नक्षत्रे ‘चुप’ च्युतः=सर्वार्थसिद्धि नाम्नो महाविमाना-
न्निर्गतः, ‘चइत्ता’ च्युत्वा ‘गव्भं वक्कते’ गर्भं व्युत्क्रान्तः=मरुदेवायाः कुक्षौ, अवतीर्णः ।
तथा—‘उत्तरासादाहि जाए’ उत्तरापादासु जातः=गर्भान्निष्क्रान्तः, ‘उत्तरासादाहि राया-
भिसेय पत्ते’ उत्तरापादासु राज्यभिपेक्षं प्राप्तः, ‘उत्तरासादाहि मुढे भवित्ता अगाराओ’

જિન ૨ નક્ષત્ર મેં જન્માદિક કલ્યાણક ભગવાન્ કે હુણે હૈં ઊન ૨ નક્ષત્રો કે પ્રદર્શન પૂર્વક
અબ સૂત્રકાર પ્રભુ કે જન્મકલ્યાણક કા કથન વહતે હૈ—“ઉસમેળં અરહા પચઉત્તરાસાદે”
इत्यादि ।

ટીકાર્થ—“ઉસમેળ અરહા પંચ ઉત્તરાસાદે” ઋષભનાથ ભગવાન્ પાંચ ઉત્તર નક્ષત્રો મેં જ્યવન
કલ્યાણ વાળે, જન્મકલ્યાણ વાળે, રાજ્યભિપેક્ષ કલ્યાણ વાળે ત્રીર દીક્ષા કલ્યાણ વાળે હુણે હૈં,
તથા “અભિહ છટ્ટે હોત્થા” અભિજિત્ નામકે નક્ષત્ર મેં વે નિર્માણ કલ્યાણ વાળે હુણે હૈ “ત જહા”
इसी विषय का स्पष्टो करण अथ सूत्रकार करते हुए कहते हैं—“उत्तरासादेहिं चुप चइत्ता गव्भं
वक्कते उत्तरासादाहि जाए” ऋषभनाथ भगवान् सर्वार्थसिद्धि नामके महाविमानसे उत्तरापाद नक्षत्र में
निर्गत होकर उसी उत्तरापाद नक्षत्र में मरुदेवाकी कुक्षि में अवतीर्ण हुए, उत्तरापाद नक्षत्र में ही
वे राज्यपद में अभिषिक्त हुए, “उत्तरासादाहि मुंढे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए”
उत्तरापादनक्षत्र में ही वे मुण्डित होकर अगारावस्था से अनगारावस्थामें प्रव्रजित हुए और

જે જે નક્ષત્રમાં જન્માદિ કલ્યાણક ભગવાનને થયાં છે તે નક્ષત્રોને પ્રદર્શિત કરીને
હવે સૂત્રકાર પ્રભુના જન્મકલ્યાણકનું કથન કરે છે :

‘ઉસમેળં અરહા-પંચ ઉત્તરાસાદે’ इत्यादि सूत्र ॥२७॥

ટીકાર્થ—“ઉસમેળ અરહા પંચ ઉત્તરાસાદે” ઋષભનાથ ભગવાન્ પાંચ ઉત્તરાસાદ નક્ષ-
ત્રોમાં જ્યવન કલ્યાણવાળા જન્મકલ્યાણવાળા, રાજ્યાભિપેક્ષ કલ્યાણવાળા અને દીક્ષાકલ્યાણ-
વાળા થયા છે, તથા ‘અભિહ છટ્ટે હોત્થા’ અભિજિત નામના નક્ષત્રમાં તેઓ નિર્વાણ કલ્યાણ
વાળા થયા છે. ‘ત જહા’ એ વિષે સ્પષ્ટતા કરતા હવે સૂત્રકાર કહે છે કે ‘ઉત્તરાસાદાહિં ચુપ
ચइत्ता गव्भं वक्कते उत्तरासादाहि जाए’ ऋषभनाथ भगवान् सर्वार्थसिद्धि नामना महावि-
मानशी उत्तरापाद नक्षत्रमा निर्गतं यच्च ते उत्तरापाद नक्षत्रमा च मरुदेवाणी कुक्षिमा
अवतीर्ण्यं थया. उत्तरापाद नक्षत्रमा च तेओ राज्यपदे अभिषिक्तं थया ‘उत्तरासादाहिं मुंढे
भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए’ उत्तरापाद नक्षत्रमा च तेओ मुंडितं यच्च ते अगारा

उत्तरापादासु मुण्डो भूत्वा अगारात्=अगार गृहं परित्यज्य 'अणगारियं' अनगारितां= साधुत्वं 'पव्वइए' प्रव्रजितः=प्राप्तः, 'उत्तरासाढाहिं अणंते जाव समुप्पण्णे' उत्तरापादासु अनन्तं यावत् समुत्पन्नम् । अत्र यावत्पदेन—'अणुत्तरेण निव्वाघाए णिरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणाणदंसणे' छाया—अनुत्तर निर्व्याघात निरावरणं कृत्स्नं प्रतिपूर्णं केवल-वरज्ञानदर्शनम् इति संग्राह्यम्, अर्थास्त्वेवामेकचत्वारिंशत्तन्त्रे (४१) विलोकनीया इति । तथा 'अमीइणा' अभिजिति नक्षत्रे 'परिणिव्वुए' परिनिर्वृत्तः=सिद्धिं गत इति ॥सू०४४॥

मूलम्—उसमेणं अरहा कोसलिए वज्जरिसहनारायसंघयणे समच-उरंससंठाणसंठिए पंच धणुसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं होत्था । उसमेणं अरहा वीसं पुव्वसयसहस्साइं कुमारवासमज्झे वसित्ता तेवडि पुव्वसयसहस्साइं महाराज्जवासमज्झे वसित्ता तेसीइं पुव्वसयसहस्साइं अगास्वासमज्झे वसित्ता मुंढे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए । उसमेणं अरहा एग वासहस्सं छउमत्थपरियायं पाउणित्ता एगं पुव्वसयसहस्सं वासमहस्सूणं केवलिपरियायं पाउणित्ता एगं पुव्वसयसहस्सं बहुपडिपुण्णं सामण्णपरियायं पाउणित्ता चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता, जे से हेमंताणं तच्चे मासे पंचमे पक्खे माहबहुले, तस्स णं माहबहुलस्स तेरसो पक्खेणं दसहिं अणगारसहस्सेहिं सद्धिं संपरिवुडे अट्ठावयसेलसिहरंसि चोदसमेणं भत्तेणं अपाणएणं संपलियंकनिसण्णे पुव्वाण्हकालंसमयंसि अभीइणा णक्खत्तेणं जोगमुवागएणं समदूसमाए समाए एगूण णवउइ-ईहिं पक्खेहिं सेसेहिं कालगए वीइक्कंतेजाव सव्वदुक्खप्पहीणे ॥सू०४५॥

छाया—ऋषभः खलु अर्हन् कौशलिको वज्रऋषभनाराचसंहननः समचतुरस्रसंस्थान संस्थितः पञ्च धनुश्शतानि ऊर्ध्वम् उच्चत्वेन अभवत् । ऋषभः खलु अर्हन् विंशति पूर्वशतसहस्राणि कुमारवासमध्ये उषित्वा त्रिषष्टि पूर्वशतसहस्राणि महाराज्यवासमध्ये

उत्तरासाढाहिं अणंते जाव समुप्पण्णे" उत्तरापादा नक्षत्र में ही उन्होंने अनन्त यावत् केवल-वरज्ञान दर्शन प्राप्त किये, यहाँ यावत्पद से—'अणुत्तरेण निव्वाघाए, निरावरणे, कसिणे, पडिपुण्णे, केवलवरणाण दंसणे" इन पदों का ग्रहण हुआ है, इन पदों का अर्थ जानने के लिए ४१ वें सूत्र को देखना चाहिये, 'अमीइणा परिणिव्वुए" ऋषभनाथ प्रसुका निर्वाण अभिजित् नामके नक्षत्र में हुआ ॥४४॥

वस्थायी अनगारावस्थायी प्रव्रजित् यथा 'उत्तरासाढाहिं अणंते जाव समुप्पण्णे' अने उत्तरापाद नक्षत्रमा ज तेभ्यो अन त यावत् केवलवरज्ञान दर्शनेनी प्राप्तिं कश्चि अट्ठी' यावत् पदो "अणुत्तरेण निव्वाघाए, निरावरणे, कसिणे, पडिपुण्णे, केवलवरणाण दंसणे" आ पदो अट्ठेयु यथा छे. आ पदेना अर्थने जलुवा माटे ४१ मा सूत्रने जेवुं जेधे 'अमीइणा परिणिव्वुए' ऋषभनाथ प्रसुका निर्वाण अभिजित् नामना नक्षत्रमा थ्यु. ॥सूत्र-४४॥

ઉપિત્વા ત્ર્યશીતિ પૂર્વશતસહસ્રાણિ અગારયાસમધ્યે ઉપિત્વા મુણ્ડો ભૂત્વા અગારાત્ અન-
ગારિતાં પ્રવ્રજિતઃ । ઋષભઃ સ્વલુ અર્હન્ પક્કં વર્ષસહસ્રં છદ્ધસ્થપર્યાયં પાલયિત્વા, પક્કં પૂર્વ-
શતસહસ્રઃ વર્ષસહસ્રોનં કેવલિપર્યાયં પાલયિત્વા, પક્કં પૂર્વશતસહસ્રં વહુપ્રતિપૂર્ણં શ્રામણ્યપર્યાયં
પાલયિત્વા ચતુરશીતિ પૂર્વશતસહસ્રાણિ સર્વાયુષ્કં પાલયિત્વા, ય સ હેમન્તાનાં તૃતીયો
માસ' પચ્ચમઃ પક્ષો માઘવહુલઃ, તસ્ય સ્વલુ માઘવહુલસ્ય ત્રયોદશી પક્ષે સ્વલુ દશમિરનગાર-
સહસ્રૈઃ સાદ્ધં સંપરિવૃત્ત અષ્ટાપદશૈલશિખરે ચતુર્દશેન ભક્તેન અપાનકેન સંપલ્યદ્ધ નિપણ્ણઃ
પૂર્વાહ્લકાલસમયે અભિજિત્. નક્ષત્રેણ યોગમુપગતે સ્વલુ સુપમદુષ્પમાયાઃ સમાયાઃ ઇકોન
નવત્યાં પક્ષેષુ શેવેષુ કાલગતો વ્યતિક્રાન્તો યાવત્ સર્વદુઃસપ્રહોણઃ ॥સૂ. ૦ ૪૫॥

ટીકા—‘ઉસમે ણ’ં’ ઇત્યાદિ । ‘ઉસમેણ અરહા કોસલિણ વજ્જરિસહનારાયસંઘયણે’
ઋષભઃ સ્વલુ અર્હન્ કૌશલિકો વજ્ર-ઋષભનારાચસંહનનઃ વજ્ર=કીલિકાકારમસ્થિ, ઋષભઃ=
તદુપરિ પરિવેષ્ટનપટ્ટાકૃતિકોઽસ્થિવિશેષઃ, નારાચમ્=ઉભયતો મર્કટબન્ધઃ, તથા ચ દ્વયો-
રસ્થનોરુભયતો મર્કટબન્ધનેન વદ્ધયોઃ પટ્ટાકૃતિના તૃતીયેનાસ્થના પરિવેષ્ટિતયોરુપરિ તદ-
સ્થિત્રયં પુનરપિ દ્વિતીકર્તુ તત્ર નિસ્તાત કીલિકાકારં વજ્રનામકમસ્થિ યત્ર ભવતિ તદ્
વજ્રઋષભનારાચમ્ સંહન્યન્તે=દ્વિતીક્રિયન્તે શરીરપુદ્ગલા યેન તત્ સહનનમ્=અસ્થિનિચયઃ
વજ્રઋષભનારાચં સહનનં યસ્ય સ તથાભૂતઃ, પુનઃ ‘સમચરંસસંઠાણસંઠિણ’ સમચતુરસસં-

અથ સૂત્રકાર પ્રમુ સે સબન્ધિત શરીરસહનન આદિ કા, કુમારાદિ કાલોં કો સ્થિતિ કા
ઔર દીક્ષા પ્રહણ આદિ કલ્યાણકો કા કથન કરતે હૈ—

“ઉસમે ણ અરહા કોસલિણ વજ્જરિસહનારાયસંઘયણે” ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ “ઉસમેણ અરહા કોસલિણ વજ્જરિસહનારાય સંઘયણે” કૌશલિક વે ઋષભ અર્હન્ત વજ્ર
ઋષભનારાચ સહનન વાલે થે, હસ સહનન મેં કીલિકા કે આકાર કી જો હડ્ડી હોતી હૈ ઉસકા
નામ વજ્ર હૈ, ઉસકે ઉપર પરિવેષ્ટનકરને વાલો પટ્ટી કે જૈસી જો દૂસરી હડ્ડી હોતી હૈ ઉસકા નામ
ઋષભ હૈ, દોનો તરફ જો મર્કટબન્ધ હૈ ઉસકા નામ નારાચ હૈ, તથા જિસ સંહનન મેં દોનો
હડ્ડિયોં કે ઉપર જો કિ દોનો ઓર સે મર્કટબન્ધ દ્વારા જકડી હુઈ હોતી હૈ ઇવ પટ્ટી કે જૈસી
તૃતીય હડ્ડી સે જો પરિવેષ્ટિત રહતી હૈ. હન તીનો હડ્ડિયોં કો મજબૂત કરને કે લિયે ઉનમેં કીલિકા
કે આકાર જૈસી ઇક વજ્ર નામ કી હડ્ડિ ટુકી હુઈ હોતી હૈ, હસી કારણ હસ સંહનન કા નામ

હવે સૂત્રકાર પ્રમુથી સંબદ્ધ શરીર સંહનન વગેરેનુ કુમારાદિ કાળોની સ્થિતિનું અને
દીક્ષા શરૂ થવેરે કલ્યાણકોનું કથન કરે છે :

‘ઉસમેણ અરહા કોસલિણ વજ્જરિસહનારાયસંઘયણે’- ઇત્યાદિ-સૂત્ર-૧૧૪૫॥

ટીકાર્થ—કૌશલિક તે ઋષભ અર્હન્ત વજ્ર ઋષભનારાચ-સંહનનવાળા હતા, એ સંહનનમાં
કીલિકાના આકારની જે અસ્થિ હોય છે તેનું નામ વજ્ર છે. તે અસ્થિની ઉપર પરિવેષ્ટન
કરનારી પટ્ટી જેવી બીજી અસ્થિ હોય છે તેનું નામ ઋષભ છે અને તરફ જે મર્કટ-
બન્ધ છે, તેનું નામ નારાચ છે તથા જે સંહનનમાં બેડ હાડકાઓની ઉપર કે જે બન્ને
બાજુથી મર્કટ બન્ધ વડે જકડાયેલ હોય છે, અને પટ્ટિના જેવી ત્રીજા હાડકાથી જે વીંટ-
ળાયેલ રહે છે, આ ત્રણે હાડકાઓને મજબૂત કરવા માટે તેમાં બીજાનાં આકાર જેવું એક

સ્થાનસંસ્થિતઃ-સમાઃ=તુલ્યાઃ અન્યૂનાધિકાઃ ચતસ્રઃ અસ્રયો દસ્તપાદોપર્યધોરૂપાશ્ચત્વા-
રોઽપિ વિભાગાઃ શુભલક્ષણોપેતા यस્ય સંસ્થાનસ્ય તત્ સમચતુરસ્ર=તુલ્યારોહપરિણાદં,
તત્ચ તત્ સંસ્થાનમ્=આહારવિગ્રેષઃ, તેન સંસ્થિતઃ યુક્તઃ, તથા ‘પંચ ઘણુસયાઈ’ પશ્ચધનુ-
શ્ચતાનિ ‘ઉદ્દં ઉચ્ચત્તેણં હોત્યા’ ઊર્ધ્વમુચ્ચત્વેન અમવત્=આસીદિતિ । इत्थं મગવતઃ
શરીરવર્ણનમભિધાય સમ્પ્રતિ કુમારવાસમધ્યાદિ સ્થિતિં છદ્મસ્થત્વાદિપર્યાયાંશ્ચ પ્રદર્શયન્
નિર્વાણકલ્યાણમાહ-‘ઉસમેણં અરહા વીસં’ इत्यादि । ‘ઉસમેણ અરહા વીસં પુવ્વસયસહસ્સાઈ’
ઋષભઃ खलु अहंन् विंशतिपूर्वशतसहस्राणि=विंशतिलक्षपूर्वाणि ‘કુમારવાસમજ્ઞે વસિત્તા’
કુમારવાસમધ્યે ઉપિત્વા-સ્થિત્વા, ‘તેવદ્દિં પુવ્વસયમહસ્સાઈ’ ત્રિપદ્ધિં પૂર્વશતસહસ્રાણિ=
ત્રિપદ્ધિલક્ષપૂર્વાણિ ‘મહારાજવાસમજ્ઞે વસિત્તા’ મહારાજ્યવાસમધ્યે ઉપિત્વા, इत्थ ‘તેસીઈ
પુવ્વસયસહસ્સાઈ’ ત્ર્યશીતિં પૂર્વશતસહસ્રાણિ=ત્ર્યશીતિલક્ષપૂર્વાણિ ‘અગારવાસમજ્ઞે’ અગા-
રવાસમધ્યે=ગૃહસ્થત્વે ‘વસિત્તા’ ઉપિત્વા, તતો ‘મુંદે મવિત્તા અગારાઓ’ મુણ્ડો ભૂત્વા

વજ્રઋષમનારાચ સંહનન હૈ, जिसके द्वारा शरीर पुद्गल दृढ किये जाते हैं उसका नाम संहनन है
यहसंहनन अस्थिनिचयरूप होता है. भगवान् ऋषभनाथ का यही सहनन था “समचउरंससंठाण
संठिप” संस्थान-समचतुरस्र था, जिस-संस्थान में हाथ, पैर, ऊपर और नीचे का भाग ये चारों
अवयव सम अन्यूनाधिक प्रमाण वाले होते हैं तथा शुभलक्षणो से युक्त होते हैं, उस संस्थान का
नाम समचतुरस्र संस्थान है, “पंच घणुसयाई उदं उच्चत्तेण होत्था” इनके शरीर की ऊँचाई
५०० धनुष की थी, “उसमेणं अरहा वीसं पुव्वसयसहस्साई कुमारवासमज्झे वसित्ता” ये
ऋषभनाथ जिनेन्द्र २० बीस लाख पूर्वतक कुमारवस्था में रहे, “तेवद्विं पुव्वसयसहस्साई महाराज
वासमज्झे वसित्ता” ६३ लाख पूर्व तक महाराजा के पद पर रहें, “तेसीइ पुव्वमयसहस्साइ
अगारवासमज्झे वसित्ता” इस तरह ८३ लाख पूर्व तक ये गृहस्थावस्था में रहे, “मुंदे मवित्ता
अगाराओ अणगारियं पव्वइए” बाद में ये मुण्डित होकर अगारावस्था को छोड़कर अनगारावस्था

વળ નામનુ હાડકુ બેસારેલ હોય છે. આકારણથી જ આ સંહનનુ નામ વળ ઋષભ
નારાય સંહનન છે જેના વડે શરીરના પુદ્ગલો મળખૂત કરવામાં આવે છે તે સંહનન
કહેવાય છે એ સંહનન અસ્થિ સમૂહ રૂપ હોય છે ભગવાન ઋષભનાથનું એ જ સંહનન
હતું ‘સમચઉરંસસંઠાણ સંઠિપ’ તેમનું સંસ્થાન સમચતુરસ્ર હતું જે સંસ્થાનમાં હાથ, પેં,
ઉપર અને નીચેનો ભાગ આ ચારે અવયવ સમ-અન્યૂનાધિક પ્રમાણ વાળા હોય છે અને
શુભ લક્ષણોથી યુક્ત હોય છે તે સંસ્થાનનું નામ સમચતુરસ્ર સંસ્થાન છે ‘પંચ ઘણુ - જ્ઞ’
ઉદં ઉચ્ચત્તેણં હોત્યા’ તેમના શરીરની ઉંચાઈ ૫૦૦-યાથ સો ધનુષની હતી ‘ઉસમેણં
અરહા વીસં પુવ્વસયસહસ્સાઈ કુમારવાસમજ્ઞે વસિત્તા । આ ઋષભનાથ જીનેન્દ્ર ૨૦
વીસ લાખ પૂર્વ પર્યન્ત કુમાર અવસ્થામાં રહ્યા. ‘તેવદ્દિં પુવ્વસયસહસ્સાઈ’ મહારાજવાસ-
મજ્ઞે વસિત્તા’ આ પ્રમાણે ૬૩ લાખ પૂર્વ સુધી મહારાજ પદ પર બિરાજ્યા ત્યાર બાદ
‘તેસિઈ પુવ્વસયસહસ્સાઈ અગારવાસમજ્ઞે વસિત્તા । ૮૩ લાખ પૂર્વ સુધી તેઓ ગૃહસ્થા-

अगारात्=अगारं परित्यज्य 'अणगारियं पन्वइए' अनगारितां प्रव्रजितः=प्राप्तः । इत्थं गृहीतप्रव्रज्य 'उसमेणं अरहा एगं वाससहस्सं' ऋषभः खलु अहंन् एकं वर्षसहस्रम्=एक सहस्रवर्षाणि 'छउमत्थपरियाय पाउणिच्चा' छउमत्थपर्यायं पालयित्वा=समाप्य, ततः 'एगं पुन्वसयसहस्सं वाससहस्सणं' एकं=पूर्वशतसहस्र वर्षसहस्रोन्नम्=एक सहस्रवर्षन्यूनैक-लक्षपूर्वाणि 'केवल्लिपरियाय' केवल्लिपर्याय=केवलित्व 'पाउणिच्चा' पालयित्वा=समाप्य, इत्थं च 'एगं पुन्वसयसहस्सं बहुपडिपुण्ण' एक पूर्वशतसहस्र बहुप्रतिपूर्णम्=अखण्डिता-नि एकलक्षपूर्वाणि 'सामण्णपरियायं पाउणिच्चा' श्रामण्यपर्यायं पालयित्वा, ततश्च 'चउरा-सीइं पुन्वसयसहस्साइं' चतुरशीतिं पूर्वशतसहस्राणि=चतुरशीतिलक्षपूर्वाणि 'सन्वाउयं' सर्वायुष्कं=संपूर्णमायुः 'पालइच्चा' पालयित्वा=समाप्य 'जे से हेमताणं तच्चे मासे पंचमे पक्खे माहवहुल्ले' यः स हेमन्तानां तृतीयो मासः पञ्चमः पक्षो माघवहुल्लः=माघकृष्णपक्षः, 'तस्सणं माहवहुल्लस्स तेरसीपक्खेणं' तस्य माघवहुल्लस्य त्रयोदशीपक्षे=त्रयोदशी तिथौ खलु 'दसहिं अणगारसहस्सेहिं' दशभिः अनगारसहस्रैः=दशसहस्रसंख्यकैरनगारैः 'सद्धिं संपरिवुडे' सार्द्धं सम्परिवृत्तः, 'अट्ठावयसेलसिहरंसि' अष्टापदशैलशिखरे=अष्टापदनामकपर्व-

में प्रव्रजित हो गये, "उसमेण अरहा एग वाससहस्सं छउमत्थपरियायं पाउणिच्चा" ये इस अवस्था में एक हजार वर्ष तक छउमत्थ रहे, "एग पुन्व सयसहस्सं वाससहस्सण केवल्लिपरियायं पाउ-णिच्चा" एक हजार वर्ष कम एक लाख पूर्वतक केवल्लिपर्याय का इन्होंने पालन किया, "एग पुन्वसयसहस्सं बहुपडिपुण्णं सामण्णपरियाय पाउणिच्चा" इस तरह पूरे एक लाख पूर्वतक श्रामण्य पर्याय का पालन करके इन्होंने अपनी "चउरासीइं पुन्वसयसहस्स सन्वाउय पालइच्चा" ८४ लाख पूर्व की पूरी आयु समाप्त कर फिर ये "जे से हेमताणं तच्चे मासे पंचमे पक्खे माहवहुल्ले, तस्स णं माहवहुल्लस्स तेरसी पक्खेणं" हेमन्त-ऋतु के माघकृष्ण पक्ष में त्रयोदशी के दिन "दसहिं अणगारसहस्सेहिं सद्धिं" दश हजार मुनियों से सम्परीवृत्त हुए "अट्ठावयसेल सिहरंसि" अष्टापद शैलशिखर से "चोदसमेणं मत्तेण" निर्जल छह उपवास करके "सपल्लियक-

वस्थाभां रक्षा. त्याग भाद 'मुंडे भविच्चा अगारात्तो अणगारियं पन्वइए तेओ भु कित थर्ध ने अगारावस्थानो ओट्ठे के अहस्सपञ्चानो त्याग करीने अनगार अवस्था धारण करी अर्थात् प्रमत्त थर्ध गया 'उसमेणं अरहा एगं वास सहस्सं छउमत्थ परियायं पाउणिच्चा' तेओ आ अवस्थाभां ओक डेकार वर्ष पर्यन्त छउमत्थ रहया. 'एगं पुन्वसयसहस्सणं केवल्लिपरियायं पाउणिच्चा' ओक डेकार वर्ष न्यून ओक लाख वर्ष पर्यन्त ओमणे केवलि पर्यायितुं पालन कथुं "एगं पुन्वसयसहस्सं बहु पडिपुण्णं सामण्णपरियायं पाउणिच्चा" आ प्रमाणे पूरा ओक लाख वर्ष सुधी श्रामण्य पर्यायितुं पालन करीने ओमणे पोतातुं 'चउरासीइं पुन्वसयसहस्सं सन्वाउयं पालयित्वा' ८४ लाख पूर्वतु संपूर्ण आयु समाप्त करीने पछी 'जे से हेमताणं तच्चे मासे पंचमे पक्खे माहवहुल्ले, तस्स णं माह-वहुल्लस्स तेरसी पक्खे णं' हेमन्त ऋतुना माघ कृष्ण पक्षभां तेरसने दिवसे 'दसहिं अण-गारसहस्सेहिं सद्धिं' दस डेकार मुनियोथी भुक्ता थर्ध ने "अट्ठावयसेलसिहरंसि" अष्टापद

તશિસ્ત્રે 'ચોદસમેળ મત્તેળં અપાણણં' ચતુર્દશેન મત્તેન અપાનકેન=નિર્જલૈઃ પદ્મિરૂપ-
વાસૈઃ યુક્ત ઇત્યધ્યાહાર્યમ્, તથા='સંપલિયંકણિસણ્ણે' સમ્પલ્યદ્ધનિપણ્ણઃ=પદ્માસનોપવિષ્ઠઃ
સન્ 'પુવ્વવ્વહકાલસમયંસિ' પૂર્વાહ્લકાલસમયે 'અમીહ્ણા ણક્કલ્લેણ જોગમુવાગણ' અભિ-
જિતા નક્કલ્લેણ સહ યોગમુવાગતે સ્વહ, ચન્દ્રે ઇત્યધ્યાહાર્યમ્, તથા 'સુસમદુસમાપ સમાપ
પગૂણણવહઈર્હિં પક્કલ્લેહિં' સુષમ દુષ્પમાયાઃ સમાયાઃ ઇકોનનવતૌ પક્ષેપુ=સાર્ધાષ્ટમાસા-
ધિકેષુ ત્રિપુ વર્ષેપુ 'સેસેહિં' શેવેપુ સત્સુ 'કાલગપ' કાલગતઃ=મરણધર્મ પ્રાપ્તઃ, 'વીહ્લકંતે'
વ્યતિક્રાન્તઃ=જન્મજરામરણાદિલક્ષણં સંસારમ્ વ્યતિગતઃ 'જાવ' યાવત્-યાવત્પદેન 'સમુ-
દ્ધતઃ' છિન્નજાતિજરામરણબન્ધનઃ સિદ્ધો બુદ્ધો મુક્તોઽન્તક્રુતઃ પરિવિવૃતઃ' ઇતિ સંગ્રાહ્યમ્ ।
તત્ર-સમુદ્ધાતઃ સ=સમ્યક્ પુનરાવૃત્તિરાદિત્યેન ઉત્=ઉર્ધ્વ લોકાગ્રલક્ષણં સ્થાનં યાતઃ=પ્રાપ્તઃ,
ન પુનરન્યતૈર્થિકવત્ પુનરવતારી, ઉક્તં ચ તૈઃ—

“જ્ઞાનિનો ધર્મતીર્થસ્ય, કર્તારઃ પરમં પદમ્ ।

ગત્વાઽઽગચ્છન્તિ ભૂયોઽપિ, મર્ત્ય તીર્થનિકારતઃ ॥૧॥ ઇતિ

નિસણ્ણે” પર્યંકાસન સે“પુવ્વ વ્હ” પૂર્વાહ્લ “કાલસમયસિ” કાલ કે સમય “અમીહ્ણા ણક્કલ્લેણ”
અભિજિત નક્ષત્ર કે સાથ “જોગમુવાગણ” ચન્દ્રયોગ મેં મુક્તિ પધારે, જબ યે મોક્ષ પધારે ડસ
સમય “સુસમ દુસમાપ સમાપ પગૂણ ણવહઈર્હિં પક્કલ્લેહિ સેસેહિં” ચતુર્થ કાલ કે ૩ વર્ષ ૮॥ માસ
બાકી યે, હસ પ્રકાર “કાલગપ વીહ્લકંતે જાવ સવ્વ દુક્કલ્પહીણે” જન્મ, જરા, મરણ આદિ લક્ષણ
વાલે સંસાર કા પરિત્યાગ કર વે પ્રમુ યાવત્ સર્વ દુઃખો સે પ્રહીણ હો ગયે, યહા યાવત્પદ સે
“સમુદ્ધાતઃ છિન્નજાતિજરામરણબન્ધન સિદ્ધો બુદ્ધો મુક્તોઽન્તક્રુતઃ પરિવિવૃતઃ” હસ પાઠ કા
પ્રહણ હુઆ હૈ । હસ પાઠ કા માવ હસ પ્રકાર હૈ—પ્રમુ ડસ લોકાગ્રરૂપ સ્થાન પર પહુંચે કિ
ફિર જહાં સે કમી મી વાપિસ ડન્હે યહાં પર નહીં આના પડ્તા હૈ । અતઃ અન્ય તીર્થિકો
ને જો ઇસા કહા હૈ કિ “જ્ઞાનિનો ધર્મતીર્થસ્ય કર્તાર. પરમ પદમ્ । ગત્વાઽઽગચ્છન્તિ ભૂયોઽપિ

શેઠ શિખરથી ‘ચોદસમેળ મત્તેળં’ નિર્જલ ૭ ઉપવાસ કરીને ‘સંપલિયક નિસણ્ણે’
પર્યંકાસનથી ‘પુવ્વવ્વહ પૂર્વાહ્લ કાલસમયસિ’ કાળના સમયે ‘અમીહ્ણા ણક્કલ્લેણ’ અભિ-
જિત નક્ષત્રથી સાથે ‘જોગમુવાગણ’ ચન્દ્રમાનોયોગ થયો ત્યારે તેઓ શ્રીમુક્તિગાનિ થયા.
ત્યારે તેઓ શ્રી મુક્તિ પધાર્યા ત્યારે ‘સુસમ દુસમાપ સમાપ પગૂણણવહ ઈર્હિં પક્કલ્લેહિ
સેસેહિં’ ચતુર્થ કાળના ૩ વર્ષ અને ૮॥ માસ આઠ માસ બાકિ હતા આ પ્રમાણે
‘કાલગપ વીહ્લકંતે જાવ સવ્વ દુક્કલ્પહીણે’ જન્મ, જરા, મરણ આદિ લક્ષણવાળા
સંસારનો પરિત્યાગ કરીને તે પ્રમુ યાવત્ સર્વદુઃખોથી પ્રહીણ થઈ ગયા અહીં યાવત્ પદ્ધતી
“સમુદ્ધાતઃ છિન્નજાતિજરામરણબન્ધન સિદ્ધો બુદ્ધો મુક્તોઽન્તક્રુતઃ પરિવિવૃતઃ” આ
પાઠ પ્રહણ થયેલ છે આ પાઠનો ભાવ આ પ્રમાણે છે જ્યારથી કરી વાર કોઈ પણ દિવસે
તેઓશ્રીને પાછા અહીં આવવાનું થાય નહિ એવા તે લોકાગ્રસ્થ સ્થાન પર તેઓશ્રી પધાર્યા
એથી અન્ય તીર્થિકાએ બે આ પ્રમાણે કહ્યું છે કે “જ્ઞાનિનો ધર્મતીર્થસ્ય કર્તારં પરમ
પદમ્ । ગત્વાઽઽગચ્છન્તિ ભૂયોઽપિ મર્ત્ય તીર્થનિકારતઃ ॥૧॥ તે મુક્તિ અને આગમથી સર્વથા

તથા છિન્નજાતિજરામરણબંધનઃ છિન્નં વિનાશિતં જાતિજરામરણરૂપં બંધનં, તર્દ્યતુભૂતકર્મણાં વિનાશાદ્ યેન સ તથાભૂતઃ, તથા સિદ્ધઃ કૃતાર્થઃ, બુદ્ધઃ જ્ઞાતમમસ્તતત્ત્વઃ, મુક્તઃ મવોપગ્રાહિકર્મા શેખ્યો વિનિર્ગતઃ, અન્તકૃતઃ અન્તઃ મવાન્તઃ કૃતો યેન સ તથાવિ-
ધઃ અપુનર્ભવ इत्यर्थः, પરિનિવૃત્તઃ કર્મકૃતસકલ સન્તાપરહિતત્વાત્ સમન્તાચ્છીતીભૂતઃ, અતएव 'સન્વદુક્ખપ્પહીણે' સર્વદુઃસ્વપ્રહીણઃ સર્વાણિ-શારીરમાનસાનિ દુઃસાનિ પ્રહીણાનિ યસ્ય સ તથા વિનષ્ટસકલશારીરમાનસદુઃસ્વથ જાતઃ ઇતિ ॥૨૫॥ ૪૫॥

અથ મગવતિ નિવૃત્તે દેવા યત્કૃતવન્તસ્તદાહ-

મૂલમ્—જં સમયં ચ ણં ઉસમે અરહા કોસલિએ કાલગણ વીઙ્ઠકંતે સમુજ્જાણ છિણ્ણજાઙ્ગરામરણવંધણે સિદ્ધે વુદ્ધે જાવ સન્વદુક્ખ-
પ્પહીણે, તં સમયં ચ ણં સક્કસ્સ દેવિંદસ્મ દેવરન્નો આસણે ચલિએ ।
તણ્ણં સે સક્કે દેવિંદે દેવરાયા આસણં ચલિયં પાસણ્ણ, પાસિત્તા ઓહિં
પણ્ણજણ્ણ, પણ્ણજિત્તા મયવં તિત્થયર ઓહિણા આમોણ્ણ, આમોણ્ણા એવં
વયાસી-પરિણિવ્વુણ્ણ સ્વલુ જંબુદીવે દીવે મરહે વાસે ઉમહે અરહા કોસ-
લિ એ, તં જીયમેયે તીયપચ્ચુપ્પણ્ણમણાગયાણં સક્કાણં દેવિંદાણં દેવરા-

મવં તીર્થનિકારત' ॥૧॥ વહ સર્વથા યુક્તિ ઔર આગમ સે વિરુદ્ધ હૈ, પ્રમુ ને જાનિ જરા
મરણ રૂપ બંધન કા વિનાશ હસલિયે કર દિયા ફિ હનકે હેતુભૂત કર્મો કા ઉન્હોને વિનાશ કર
દિયા થા । પ્રમુ કૃતાર્થ હોને કે કારણ સિદ્ધ હો ગયે કહે ગયે હૈં, મવોપગ્રાહિક કર્મા શો સે
વિનિર્ગત । હો જાને કે કારણ પ્રમુ કો મુક્તરૂપ સે પ્રકટ કિયા ગયા હૈ । અવ પ્રમુ કા પુનઃ
સંસાર મેં જન્મ નહીં હોગા । હસ કારણ ઉન્હે અન્તકૃત કહા ગયા હૈ, કર્મજન્ય સકલ સંતાપોસે
રહિત હોને કે કારણ પ્રમુ મેં સબ તરફ સે શીતલતા આગઈ થી હસલિયે ઉન્હે પરિનિવૃત્ત કહા
ગયા હૈ, શારીરિક, માનસિક સમસ્ત દુઃસોં સે પ્રમુ સર્વથા રહિત હો ચુકે થે હસલિયે ઉન્હે
સર્વદુઃસ્વપ્રહીણ પ્રકટ કિયા ગયા હૈ ॥૪૫॥

વિરુદ્ધ છે પ્રભુએ જાતિ જરા મરણ રૂપ બંધનનેા વિનાશ એટલા માટે કર્યો કે એમના
હેતુભૂત કર્મોનેા તેઓશ્રીએ વિનાશ કરી દીધો હતો કૃતાર્થ હોવા બદલ પ્રભુ સિદ્ધ રૂપે
પ્રસિદ્ધ છે. સમસ્ત તત્ત્વોના જ્ઞાતા હોવા બદલ પ્રભુ બુદ્ધ કહેવામાં આવેલ છે ભવોપગ્રાહિક
કર્મોશીથી વિનિર્ગત હોવાથી પ્રભુને મુક્ત રૂપમાં પ્રકટ કરવામાં આવેલ છે હવે સંસારમાં
કરી વાર પ્રભુનેા જન્મ કદાપિ થશે નહિ. એથી જ તેઓશ્રીને અન્તકૃત કહેવામાં આવેલ
છે. કર્મ જન્ય સમસ્ત સંતાપોથી રહિત હોવા બદલ પ્રભુમાં સર્વ રીતે શીતળતા આવી
ગઈ હતી એથી જ તેમને પરિનિવૃત્ત કહેવામાં આવેલ છે શારીરિક માનસિક સમસ્ત
દુઃખોથી પ્રભુ સર્વથા વિહીન થઈ ચૂક્યા હતા એટલા માટે તેઓશ્રીને સર્વદુઃખ પ્રહીણના
રૂપમાં પ્રકટ કરવામાં આવેલ છે ॥સૂત્ર-૪૫॥

ईणं तित्थगराणं परिनिव्वाणमहिमं करित्ते, तं गच्छामि णं अहंपि
भगवओ तित्थगरस्स परिनिव्वाणमहिमं करेमि त्ति कदट्ठु वंदइ णमंसइ,
वंदित्ता णमंसित्ता चउरासीए सोमाणियसाहस्सीहिं तायत्तीसाए ताय-
त्तीसएहिं, चउहिं लोगपालेहिं जाव चउहिं चउरासीईहिं आयरक्खदेव-
साहस्सीहिं अण्णेहि य बहूहिं सोहम्मकप्पवासीहिं वेमाणीएहिं देवेहिं दे-
वीहिं य सद्धिं संपरिखुडे ताए उक्किट्ठाए जाव तिरियमसंखेज्जाणं दीवस-
मुद्दाणं मज्झं मज्झेणं जेणेव अट्ठावयपव्वए जेणेव भगवओ तित्थयरस्स
सरीरए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता विमणे णिराणंदे अंसुपुण्णणयणे
तित्थयरसरीरं तिकखुत्तो ओयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता णच्चासण्णे
णाइदूरे सुस्सूसमाणे जाव पज्जुवासइ ॥ सू० ४६ ॥

छाया—यस्मिन् समये च खलु ऋषभोऽर्हन् कौशलिक कालगतो व्यतिक्रान्त
समुदातः छिन्नजातिजराभरणबन्धनः सिद्धो यावत् सर्वदुःखप्रहीणः, तस्मिन् समये च खलु
शक्रस्य देवेन्द्रस्य देवराजस्य आसनं चलितं। तत खलु स शक्रो देवेन्द्रो देवराज आसन
चलितं पश्यति, दृष्ट्वा अवधिं प्रयुनक्ति, प्रयुज्य भगवन्तं तीर्थंकरम् अवधिना आभोगयति,
आभोग्य पद्ममवादीत्-परिनिवृत्तः-खलु जम्बूद्वीपे द्वीपे भरते वर्षे ऋषभोऽर्हन् कौशलिकः,
तद्जीतमेतत् अतीतप्रत्युत्थन्नमनागतानां शक्राणां देवेन्द्राणां देवराजानां तीर्थंकराणां परि
निर्वाणमहिमानं कर्तुम् तद् गच्छामि खलु अहमपि भगवतस्तीर्थंकरस्य परिनिर्वाणमहिमानं
करोमीति कृत्वा बन्धते नमस्यति, बन्धित्वा नमस्यित्वा चतुरशीत्या सामानिकसाहस्रीभिः,
त्रयस्त्रिंशता त्रयस्त्रिंशकैः, चतुर्भिलोकपालैर्यावत् चतसृभिः चतुरशीतिभिः आत्परक्षक-
देवसाहस्रीभिः, अन्यैश्च बहुभिः सौधर्मकल्पवासिभिः वैमानिकैः देवदेवीभिश्च साधं सम्प-
वृत्तस्तया उत्कृष्टया यावत् तिर्यगसंख्येयानां द्वीपसमुद्राणां मध्यमध्येन यत्रैव अप्रापद-
पर्वतो यत्रैव भगवतस्तीर्थंकरस्य शरीरकं तत्रैव उपागच्छति उपागत्य विमना निरानन्दः
अभ्युपार्जनयनः तीर्थंकरशरीरकं त्रिकृत्व आदक्षिण प्रदक्षिणं करोति, कृत्वा नाट्यासन्ने नाति
दूरे शुश्रूषमाणो यावत् पर्युपास्ते ॥४६॥

भगवान् के मुक्ति में चले जाने पर देवोंने जो कुछ किया उसे यहां सूत्रकार प्रकट
करते हैं—“जं समय च णं उसमे अरहा कोसलिए कालगए” इत्यादि ।

टीकार्थ—“जं समय च णं उसमे अरहा कोसलिए कालगए वीइक्कंते समुज्जाए छिण्णजाइ-

भगवान् मुक्तिमा पधार्या अने त पछी देवाणे ने कछ कह्युं, तेने अही सूत्रकार
प्रकट करे छे : जं समय च णं उसमे अरहा कोसलिए कालगए-इत्यादि-॥सूत्र-४६॥

टीकार्थ—“जं समय च णं उसमे अरहा कोसलिए कालगए विइक्कंते समुज्जाए छिण्ण

टीका-‘जं समयं च’ इत्यादि । मूले ‘जं समयं’ ‘तं समयं’ इत्युभयत्र प्राकृत-
त्वात् सप्तम्यर्थे द्वितीया, ततश्च ‘जं समयं च णं’ उसमे अरहा-कोसलिए कालगए वीइ-
क ते समुज्जाए छिण्ण जाइजरामरणबंधणे-सिद्धे बुद्धे’ यस्मिन् समये च खलु ऋषभो-
ऽहंन् कौशलिकः कालगतो व्युत्क्रान्तः समुधातः छिन्नजातिजरामरणवन्धनः सिद्धो बुद्धो
‘जाव’ यावत्, यावत्पदेन-‘मुक्तः अन्तकृतः परिनिर्वृतः’ इति पदत्रयं संग्राह्यम्, तथा
‘सन्व दुक्खप्पहीणे’ सर्वदुःखप्रहीणः, ‘कालगतादिसर्वदुःख प्रहोणान्तगन्धानां व्याख्या-
ऽत्रैव चतुश्चत्वारिंशत्तमे सूत्रेऽवलोकनीया, ‘तं समयं च णं सकस्स देविंदस्स देवरण्णो
आसणे चलिए’ तस्मिन् समये च खलु शक्रस्य देवेन्द्रस्य देवराजस्य आसनं चलितं=
कम्पितम् । ‘तए ण-से सक्के देविंदे देवराया आसणं चलियं पासइ’ ततः खलु स शक्रो
देवेन्द्रो देवराजः आसनं चलित पश्यति=अवलोकयति, ‘पासित्ता’ दृष्ट्वा ‘ओहिं’ अवधिम्
अवधिज्ञानं ‘पउंजइ’ प्रयुनक्ति=व्यापृणाति, ‘पउंजित्ता’ प्रयुज्य=अवधिज्ञानं व्यापृत्य
‘मयवं तित्थयरं ओहिणा’ भगवन्तं तीर्थंकरम् अवधिना=अवधिज्ञानेन ‘आमोएइ आमो-
गयति=पश्यति, ‘आमोइत्ता’ आमोग्य=दृष्ट्वा ‘एवं’ एवं=वक्ष्यमाणं वचनम् ‘वयासी’
अवादीत्=उक्तवान् ‘परिणिब्बुए’ परिनिर्वृतः=कर्मकृतसकलसन्तापरहितत्वात् समन्ताच्छी-
तलीभूतः ‘खलु जंबुद्वीवे दीवे भरहे वासे उसहे अरहा कोसलिए’ खलु जम्बूद्वीपे

जरामरणबंधणे सिद्धे बुद्धे जाव सन्वदुक्खप्पहीणे” वे कौशलिक ऋषभ अर्हत जिस समय मुक्ति में
गये अर्थात् कालगत आदि सर्व दुःख प्रहोणान्त तक के विगेषणो से जब वे युक्त हो चुके “त
समयं च ण सकस्स देविंदस्स देवरण्णो आसणे चलिए” उम समय देवेन्द्र देवराज शक्र का
आसन कम्पायमान हुआ, “तएण से सक्के देविंदे देवराया आसणं चलियं पासइ” शक्रने
जब कम्पित होते हुए अपने आसन को देखा तो उसी समय उसने अपने अवधिज्ञान को
व्यापारित किया “पासित्ता” व्यापारित कर “ओहिं पउंजइ पउजित्ता मयवं तित्थयरं आमोएइ”
उसने उस अवधिज्ञान से तीर्थंकर प्रभु को देखा, “आमोइत्ता” देखकर फिर वह “एवं वयासी”
इस प्रकार कहने लगा “परिणिब्बुए खलु जंबुद्वीवेदीवे भरहे वासे उसहे अरहा कोसलिए” जम्बू-
द्वीप नामके द्वीप में स्थित भरतक्षेत्र में कौशलिक ऋषभ अर्हत परिनिर्वृत हुए है-कर्मकृत सकल

जाइजरामरणबंधणे सिद्धे बुद्धे जाव सन्वदुक्खप्पहीणे’ ते कौशलिक ऋषभ अर्हत ने समये
मुक्तिभा पधार्था-ओटवे के कालगत वगेरे सर्वदुःख प्रहीणान्त सुधीना विशेषणोधी न्याये
तेओश्री युद्धत थर्ध युद्धया ‘तं समयं च णं सकस्स देविंदस्स देवरण्णो आसणे चलिए’ ते
क्षमये देवेन्द्र देवराज शक्रने आसन कम्पायमान थयु ‘तएण से सक्के देविंदे देवराया
आसणं चलियं पासइ’ शक्रे न्याये पोतना आसनने कम्पायमानथतु नेथु त्यारे ते
क्षणे तेथे पोताना अवधि ज्ञानने व्यापारित कथु ‘पासित्ता’ व्यापारित करीने ‘ओहिं पउं-
जइ पउजित्ता’ मयवं तित्थयरं आमोएइ’ तेथे ते अवधि ज्ञानथी तीर्थंकर प्रभुने नेथ। ‘आमो-
इत्ता’ तीर्थंकर प्रभुने नेधने ते ‘एवं वयासी’ आ प्रभाणे कडेवा दाया ‘परिणिब्बुए खलु
जंबुद्वीवे दीवे भरहे वासे उसहे अरहा कोसलिए’ जम्बूद्वीपनामना द्वीपभा आवेस भरतक्षेत्र

द्वीपे भरते वर्षे ऋषभोऽर्हन् कौशलिक 'तं' तदेतत् 'तीय पञ्चुप्पणमणागयाण' अतीत-
प्रत्युत्पन्नानागतानाम्=भूतवर्तमानमविष्यत्कालजातानां 'सक्काण देविदाणं देवराईणं
तित्थगराण परिनिव्वाणमहिम' शक्राणां देवेन्द्राणां देवराजानां तीर्थकराणां परिनिर्वाण-
महिमानं=तीर्थकरसम्बन्धिपरिनिर्वाणमहोत्सवं 'करित्तए' कर्त्तु 'जीयमेयं' जीतं=जीत-
व्यवहारो वर्त्तते, 'तं' तत्=तस्माद् हेतोः अहंपि भगवओ तित्थगरस्स परिणिव्वाण-
महिमं करोमि' तद् गच्छामि खलु अहमपि भगवतस्तीर्थकरस्य परिनिर्वाण महिमानं करोमि
'त्तिकद्दु' इति कृत्वा=इत्युत्त्वा 'वंदइ' वन्दते=स्तौति 'णमंसइ' नमस्यति=प्रणमति
'वंदिता णमंसिता' वन्दित्वा नमस्यित्वा 'चउरासीए सामाणिय साहस्सीहिं' चतुरशीत्या
सामानिकसाहस्रीभिः=चतुरशीति सहस्रसंख्यकैः सामानिकदेवैः, 'तायत्तीसाए' त्रय
स्त्रिंशता=त्रयस्त्रिंशत्संख्यकैः 'तायत्तीसएहिं' त्रायस्त्रिंशकैः गुरुस्थानीयैर्देवैः, 'चउहिं' चतु-
र्भिः=चतुस्तंख्यकैः 'लोगपालेहिं' लोकपालैः=सोमयम-वरुणकुबेरमंजुकै लोकापालैः.
'जाव' यावत्-यावत्पदेन-'अट्टहिं' अगमहिंसीहि सपरिवाराहिं तिहिं परिमाहिं सत्तिहिं

सत्तापो से रहित हो गये हैं इसलिये वे समन्तात् शीतलीभूत बन गये है, "तं जीयमेय तीयपडु-
प्पण मणागयाणं सक्काणं देविदाणं देवराईणं तित्थगराणं परिनिव्वाणमहिम करित्तए" अतः समस्त
अतीत, वर्तमान एवं भविष्यत्काल सबधी इन्द्रो का यह जीत-व्यवहार है कि वे तीर्थकर प्रभु के
निर्वाणगमन महोत्सव को करें, "त गच्छामि णं अहंपि भगवओ तित्थगरस्स परिनिव्वाणमहिम
करित्तए" इसलिये मैं भी भगवान् तीर्थकर ऋषभदेव के निर्वाणगमनोत्सव करने के लिये जाता
हूँ "तं गच्छामि णं अहंपि भगवओ तित्थगरस्स-परिनिव्वाणमहिमं करेमिति कद्दु वदइ णमंसइ,
वंदिता णमंसिता चउरासीए सामाणिय साहस्सीहिं तायत्तीसाए तायत्तीसएहिं, चउहिं लोगपालेहिं
जाव चउहिं चउरासीईहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहि य बहूहिं सोहम्मकप्पवासीहिं वेमाणि-
एहिं देवेहिं देवीहिं य सद्धिं सपरिवुडे ताए उक्किट्ठाए जाव तिरियमसखेज्जाण दीवसमुदाणं
मज्झंमज्झेणं जेणेव अट्ठावयपव्वए जेणेव भगवओ तित्थगरस्स सरीरए तेणेव उवागच्छइ, उवा-

भा द्वीशलिक ऋषभ अर्हन् तं परिनिवृत्तं यथा छे.-कर्मकृत सकल सत्तापोऽथी रहितं यथं गथा
छे. अथी तेऽभा समन्तात् शीतलीभूतं भनी गथा छे 'तं जीयमेयं तीयपडुप्पणमणागयाणं
सक्काणं देविदाणं देवरायाणं परिणिव्वाणमहिमं करित्तए' तेथी सधणा अतीत, अनगत
अने वर्तमान काल सबधी इन्द्रोना आ एत व्यवहार छे के-तेऽभा तीर्थ कर प्रभुना निर्वाण
गमन भटोत्सवउत्सवे 'तं गच्छामि णं अहं पि भगवओ तित्थगरस्स परिणिव्वाणमहिमं
करित्तए' तेथी हुं पण भगवान् तीर्थकर ऋषभदेवोना निर्वाण भटोत्सव करवां भउ 'तं
गच्छामि णं अहंपि भगवओ तित्थगरस्स परिणिव्वाण महिमं करेमिति कद्दु वंदइ णमं-
सइ वंदित्ता णमंसित्ता चउरासीए सामाणिब साहस्सीएहिं तायत्तीसाए तायत्तीसएहिं
चउहिं लोगपालेहिं जाव चउहिं चउरासीईहिं आयरक्ख देवसाहस्सीहिं अण्णेहिय बहूहिं
सोहम्म कप्पवासीहिं वेमाणिएहिं देवेहिं देविहिय सद्धिं सपरिवुडे ताए उक्किट्ठाए जाव
तिरियमसखेज्जाण दीवलमुदाणं मज्झं मज्झेण जेणेव अट्ठावयपव्वए जेणेव भगवओ

टीका-‘जं समयं च’ इत्यादि । मूले ‘जं समयं’ ‘तं समयं’ इत्युभयत्र प्राकृत-
त्वात् सप्तम्यर्थे द्वितीया, ततश्च ‘जं समयं च णं उसमे अरहा-कोसलिए कालगए वीइ-
क ते समुज्जाए छिण्ण जाइजरामरणबंधणे-सिद्धे बुद्धे’ यस्मिन् समये च खलु ऋपभो-
ऽहंन् कौशलिकः कालगतो व्युत्क्रान्तः समुद्रातः छिन्नजातिजरामरणबन्धनः सिद्धो बुद्धो
‘जाव’ यावत्, यावत्पदेन-‘मुक्तः अन्तकृतः परिनिर्वृत्तः’ इति पदत्रय संग्राह्यम्, तथा
‘सव्व दुक्खप्पहीणे’ सर्वदुःखप्रहीणः, ‘कालगतादिसर्वदुःख प्रहोणान्तगद्धानां व्याख्या-
ऽत्रैव चतुश्चत्वारिंशत्तमे सूत्रेऽवलोकनीया, ‘तं समय च णं सकस्स देविदस्स देवरण्णो
आसणे चलिए’ तस्मिन् समये च खलु शक्रस्य देवेन्द्रस्य देवराजस्य आसनं चलितं=
कम्पितम् । ‘तए ण-से सक्के देविदे देवराया आसणं चलियं पासइ’ ततः खलु स शक्रो
देवेन्द्रो देवराजः आसनं चलित पश्यति=अवलोकयति, ‘पासित्ता’ दृष्ट्वा ‘ओहिं’ अवधिम्
अवधिज्ञानं ‘पउंजइ’ प्रयुनक्ति=व्यापृणाति, ‘पउंजित्ता’ प्रयुज्य=अवधिज्ञानं व्यापृत्य
‘भयवं तित्थयरं ओहिणा’ भगवन्तं तीर्थंकरम् अवधिना=अवधिज्ञानेन ‘आमोएइ’ आमो-
गयति=पश्यति, ‘आमोइत्ता’ आमोग्य=दृष्ट्वा ‘एवं’ एवं=वक्ष्यमाणं वचनम् ‘वयासी’
अवादीत्=उक्तवान् ‘परिणिव्वुए’ परिनिर्वृतः=कर्मकृतसकलसन्तापरहितत्वात् समन्ताच्छी-
तलीभूतः ‘खलु जंबुद्वीवे दीवे भरहे वासे उसहे अरहा कोसलिए’ खलु जम्बूद्वीपे

जरामरणबंधणे सिद्धे बुद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे” वे कौशलिक ऋषभ अर्हत जिस समय मुक्ति में
गये अर्थात् कालगत आदि सर्व दुःख प्रहोणान्त तक के विशेषणों से जब वे युक्त हो चुके “त
समयं च ण सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो आसणे चलिए” उस समय देवेन्द्र देवराज शक्र का
आसन कम्पायमान हुआ, “तएण से सक्के देविदे देवराया आसणं चलियं पासइ” शक्रने
जब कम्पित होते हुए अपने आसन को देखा तो उसी समय उसने अपने अवधिज्ञान को
व्यापारित किया “पासित्ता” व्यापारित कर “ओहिं पउंजइ पउजित्ता भयवं तित्थयरं आमोएइ”
उसने उस अवधिज्ञान से तीर्थंकर प्रभु को देखा, “आमोइत्ता” देखकर फिर वह “एवं वयासी”
इस प्रकार कहने लगा “परिणिव्वुए खलु जंबूद्वीवेदीवे भरहे वासे उसहे अरहा कोसलिए” जम्बू-
द्वीप नामके द्वीप में स्थित भरतक्षेत्र में कौशलिक ऋषभ अर्हत परिनिर्वृत हुए हैं-कर्मकृत सकल

जाइजरामरणबंधणे सिद्धे बुद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे’ ते कौशलिक ऋषभ अर्हत ने समये
मुक्तिभा पधाय-ओटवे के कालगत वगेरे सर्वदुःख प्रहोणान्त सुधीना विशेषणोत्थी न्यारे
तेओश्री युक्त थरं थुका ‘तं समयं च णं सकस्स देविदस्स देवरण्णो आसणे चलिए’ ते
समये देवेन्द्र देवराज शक्रने आसन कम्पायमान थयु ‘तएण से सक्के देविदे देवराया
आसणं चलियं पासइ’ शक्रे न्यारे पोतना आसनने कम्पायमानथतुं नेथु त्यारे तेओ
क्षणे तेणे पोताना अवधि ज्ञानने व्यापारित थयु ‘पासित्ता’ व्यापारित करीने ‘ओहिं पउं-
जइ पउजित्ता’ भयवं तित्थयरं आमोएइ’ तेणे ते अवधि ज्ञानथी तीर्थं कर प्रभुने नेथा ‘आमो-
इत्ता’ तीर्थं कर प्रभुने नेधने ते ‘एवं वयासी’ आ प्रभाणे कडेवा दाव्या ‘परिणिव्वुए खलु
जंबुद्वीवे दीवे भरहे वासे उसहे अरहा कोसलिए’ जम्बूद्वीपनामना द्वीपमां आवेल भरतक्षेत्र

દ્રીપે મરતે વર્ષે ઋષભોર્હન્ કૌશલિક. 'તં' તદેતત્ 'તીય પચ્ચુપ્પણમણાગયાણ' અતીત-
પ્રત્યુત્પન્નાનાગતાનામ્=મૃતવર્તમાનમ્ બિવ્યત્કાલજાતાનાં 'સક્કાણ દેવિદાણં દેવરાઈણં
તિત્થગરાણ પરિનિવ્વાણમહિમ' શક્કાણાં દેવેન્દ્રાણાં દેવરાજાનાં તીર્થકરાણાં પરિનિર્વાણ-
મહિમાનં=તીર્થકરસમ્બન્ધિપરિનિર્વાણમહોત્સવં 'કરિત્તપ્' કર્તુ 'જીયમેયં' જીતં=જીત-
વ્યવહારો વર્તતે, 'તં' તત્=તસ્માદ્ હેતોઃ અહંપિ મગવઓ તિત્થગરસ્સ પરિણિવ્વાણ-
મહિમં કરોમિ' તદ્ ગચ્છામિ સ્વલ્લુ અહમપિ મગવતસ્તીર્થકરસ્ય પરિનિર્વાણ મહિમાનં કરોમિ
'ત્તિકદ્દુ' इति कृत्वा=इत्युत्त्वा 'વંદહ' વન્દતે=સ્તૌતિ 'ળમંસહ' નમસ્યતિ=પ્રણમતિ
'વંદિત્તા ળમંસિત્તા' વન્દિત્વા નમસ્યિત્વા 'ચરુસીણ સામાણિય સાહસ્સીહિં' ચતુરશીત્યા
સામાનિકસાહસીમિઃ=ચતુરશીતિ સહસ્રસંખ્યકૈઃ સામાનિકરુદેવૈઃ, 'તાયત્તીસાપ્' ત્રય
સ્ત્રિશતા=ત્રયસ્ત્રિશતસંખ્યકૈઃ 'તાયત્તીસપ્હિં' ત્રાયસ્ત્રિશકૈઃ ગુરુસ્થાનીપૈદેવૈઃ, 'ચઠ્ઠિં' ચતુ-
ર્મિઃ=ચતુસ્સંખ્યકૈઃ 'લોગપાલેહિં' લોકપાલૈઃ=સોમયમ-વરુણકુવેરસંજ્ઞકૈ લૌકપાલૈઃ.
'જાવ' યાવત્-યાવત્પદેન-'અદ્દહિં' અગમહિસીહિં સપરિવારાહિં તિહિં પરિસાહિં સત્તહિં

સતાપો સે રહિત્ત હો ગયે હૈં ફસલિયે વે સમન્તાત્ શીતલીમૃત બન ગયે હૈ, "તં જીયમેય તીયપહુ-
પ્પણ મણાગયાણં સક્કાણં દેવિદાણં દેવરાઈણં તિત્થગરાણં પરિનિવ્વાણમહિમ કરિત્તપ્" અત્ સમસ્ત
અતીત, વર્તમાન એવં અવિવ્યત્કાલ સબધી ઇન્દ્રો કા યહ જીત-વ્યવહાર હૈ કિ વે તીર્થકર પ્રમુ કે
નિર્વાણગમન મહોત્સવ કો કરે, "તં ગચ્છામિ ણં અહંપિ મગવઓ તિત્થગરસ્સ પરિનિવ્વાણમહિમ
કરિત્તપ્" ફસલિયે મેં મી મગવાન્ તીર્થકર ઋષભદેવ કે નિર્વાણગમનોત્સવ કરને કે લિયે જાતા
હું "તં ગચ્છામિ ણં અહંપિ મગવઓ તિત્થગરસ્સ-પરિનિવ્વાણમહિમં કરેમિત્તિ કદ્દુ વદહ ળમંસહ,
વંદિત્તા ળમંસિત્તા ચરુસીણ સામાણિય સાહસ્સીહિં તાયત્તીસાપ્ તાયત્તીસપ્હિં, ચઠ્ઠિં લોગપાલેહિં
જાવ ચઠ્ઠિં ચરુસીહિં આયરક્ષદેવસાહસ્સીહિં અણ્ણેહિ ય વહ્હિં સોહમ્મકપ્પવાસોહિં વેમાણિ-
પ્હિં દેવેહિં દેવીહિ ય સદ્ધિ સપરિવુદે તાપ ઉક્કિદ્દાપ્ જાવ તિરિયમસલ્લેજ્જાણં દીવસમુદાણં
મજ્ઞંમજ્ઞેણં જેણેવ અદ્દાવયપવ્વપ્ જેણેવ મગવઓ તિત્થગરસ્સ સરોરપ્ તેણેવ ડવાગચ્છહ, ડવા-

માં કૌશલિક ઋષભ અહ ત પરિનિવૃત્ત થયા છે.-કર્મકૃત સકલ સતાપોથી રહિત થઈ ગયા
છે, એથી તેઓ સમન્તાત્ શીતલીમૃત બની ગયા છે 'તં જીયમેય તીયપહુપ્પન્નમણાગયાણં
સક્કાણં દેવિદાણં દેવરાયાણં પરિણિવ્વાણમહિમં કરિત્તપ્' તેથી સધળા અતીત, અનાગત
અને વર્તમાન કાલ સબધી ઇન્દ્રોના આ છત વ્યવહાર છે કે-તેઓ તીર્થ કર પ્રમુને નિર્વાણ
ગમન મહોત્સવકરવે 'તં ગચ્છામિ ણં અહ પિ મગવઓ તિત્થગરસ્સ પરિણિવ્વાણમહિમં
કરિત્તપ્' તેથી હું પણ મગવાન્ તીર્થકર ઋષભદેવને નિર્વાણ મહોત્સવ કરવા બહિં 'તં
ગચ્છામિ ણ અહંપિ મગવઓ તિત્થગરસ્સ પરિણિવ્વાણ મહિમં કરેમિત્તિ કદ્દુ વંદહ ળમં-
સહ વંદિત્તા ળમંસિત્તા ચરુસીણ સામાણિય સાહસ્સીપહિં તાયત્તીસાપ્ તાયત્તીસપ્હિં
ચઠ્ઠિં લોગપાલેહિં જાવ ચઠ્ઠિં ચરુસીહિં આયરક્ષ દેવસાહસ્સીહિં અણ્ણેહિય વહ્હિં
સોહમ્મ કપ્પવાસીહિં વેમાણિપ્હિં દેવેહિં દેવિહિય સદ્ધિ સંપરિવુદે તાપ ઉક્કિદ્દાપ્ જાવ
તિરિયમસલ્લેજ્જાણ દીવસમુદાણ મજ્ઞ મજ્ઞેણ જેણેવ અદ્દાવયપવ્વપ્ જેણેવ મગવઓ

अणीएहि' छाया-अष्टभिरग्रमहिषीभिः सपरिवाराभिः, तिसृभिः परिवद्धिः सप्तभिरनीकै ' इति संग्राह्यम्, तत्र-अष्टभिः अग्रमहिषीभिः=पद्मा १. शिवा २ शची ३ अरुजः ४अमला ५ अप्सरा ६ नवमिका ७ रोहिणी ८ इत्यष्टसंख्याभिरग्रममहिषीभिः क्रीदशीभिराभिः इत्याह-सपरिवाराभिः=षोडशसहस्र-षोडश-परिवार सहिताभिरिति, तथा तिसृभिः परिवद्धिः=वाह्यमध्याभ्यन्तररूपाभिस्त्रिसंख्याभिः परिपद्धिः, तथा सप्तभिः अनीकैः=हयग-जरथ सुभट-वृषभ गन्धर्व नाट्यरूपैः सप्तभिः सैन्यैः तथा सप्तभिः अनीकाधिपतिभिः, तथा 'चउहि चउरासोहि आयरक्ख देवसाहस्सीहि' चतसृभिः चतुर्गोतिभिः आत्मरक्ष-कदेवसाहस्सीभिः=चतसृषु दिक्षु प्रत्येकस्यां दिशि वर्तमानैः चतुरगोतिमहसैः चतुरगोति सहस्रात्मरक्षक देवैः, तथा-'अण्णेहि य बहुहि सोइम्मकप्पवासीहि वैमाणिएहि देवेहि देवीहि य सद्धि संपरिवुडे' अन्यैश्च बहुभिः सौधर्मकल्पवासिभिः वैमानिकदेवैः, ताद-शीभिर्देवीभिश्च सार्द्धं संपरिवृतः=संपरिवेष्टितः 'ताए' तथा=देवसम्बन्धिन्या 'उक्कि द्वाए' उत्कृष्टया=प्रशस्तविहायोगतिषु श्रेष्ठया, जाव' यावत्-यावत्पदेन-'तुरियाए चवलाए चडाए जवणाए उद्धुयाए सिग्घाए देवगईए वीईवयमाणे' छाया-त्वरितया चप-लया चण्डया जवनया उद्धूतया शिघ्रया दिव्यया देवगत्या व्यतिव्रजन् व्यतिव्रजन्' इति संग्राह्यम् । तत्र-त्वरितया मनोजन्यौत्सुक्यवशात् चपलया-कायव्यापारचापल्यात् चण्डया=तीव्रया श्रमजनितग्लान्यभावात् जवनया अत्युत्कृष्टगतिमत्वात् उद्धूतया=उत्कृ-ष्टया-वायुगतेरिवोकटत्वात्, शीघ्रया=निरवच्छिन्नशीघ्रत्वगुणयोगात् एतादृश्या दिव्य-या=देवजनोचितया देवगत्या=देवसम्बन्धिन्या गत्या करणभूताया व्यतिव्रजन् व्यति-

गच्छित्ता विमणे निराणंदे अंसुपुण्णयणे तित्थयरमरीरयं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता णञ्चासण्णे णाइदूरे सुस्सुसमाणे जाव पज्जुवासइ" इस प्रकार कहकर उस शक्रने वन्दना की, नमस्कार किया, वदना नमस्कार करके अपने ८४ हजार सामानिक देवों के साथ ३३ त्रायस्त्रिंशक देवों के साथ वावत्-सपरिवार आठ अपनी पट्टरानियों के साथ प्रत्येक-दिशा के ८४-८४ हजार आत्मरक्षक देवों के साथ और इसी तरह से और भी दूसरे सौधर्मकल्पवासो देव देवियों के साथ शक्र अपनी उत्कृष्ट प्रशस्त विहायोगति में भी श्रेष्ठ दिव्य देवगति से चलता २ तिर्यग् असख्यात द्वीप समुद्रों के ठीक मध्यभाग से होता हुआ जहा अष्टापद पर्वत था

तित्थयरस्स सरीरप तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता विमणे निरानन्दे अंसुपुण्णयणे तित्थयरसरीरयं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता णञ्चासण्णे णाइदूरे सुस्सु-समाणे जाव पज्जुवासइ' आ प्रभाषे कक्षोने ओ शके प्रभुने वंदना करी नमस्कार कर्था वंदना नमस्कार करीने पोताना ८४ हजार सामानिक देवानी साथे उउ त्रायस्त्रिंशक देवोनी साथे यावत् सपरिवार आठ पोतानी पट्टराणीथो साथे इरेठ दिशाना ८४ हजार ८४ हजार आत्म रक्षक देवोनी साथे अने आ प्रभाषे जीण पणु सौधर्म कल्पवासी देव-देवियोनी साथे ते शके पोतानी उत्कृष्ट प्रशस्त विहायोगतिमा पणु ओठ दिव्य ओवी देवगतिथी आहतो आहतो तिर्यग् असंख्यात द्वीप समुद्रोनी अराणर मध्यभागमां यधने न्या अष्टापद पर्वत

व्रजन्=गच्छन् 'तिरियमसंखेज्जाण'तिर्यगसखयेयानां तिर्यग्लोक्वर्त्तिनाम् असंखयेयानां 'दीवसमुद्वाणं' द्वीपसमुद्राणां द्वीपानां समुद्राणां च 'मज्झ मज्जेण' मध्यमध्येन=याति-शयमध्यभागेन 'जेणेव' यत्रैव=यस्मिन्नेव प्रदेशे 'अट्ठावयपव्वए' अष्टापदपर्वतः तत्र च पर्वते 'जेणेव' यत्रैव=यस्मिन्नेव भागे 'भगवओ तित्थगरस्स सरीरए' भगवत् स्तीर्थकरस्य शरीरकं 'तेणेव उवागच्छइ' तत्रैव उपागच्छति 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'विमणे' विमनाः-शोकाकुलितचित्तः, अतएव 'णिराणंदे' निरानन्दः-आनन्दवर्जित, 'अंसुपुण्णणयणे' अश्रुपूर्णनयनः-अश्रुपरिपूर्णनयनः 'तित्थयरसरीरय' तीर्थकरशरीरकं-भगवत् ऋषभदेवस्य निष्प्राणं शरीरं 'तिक्खुत्तो' त्रिकृत्व-वारत्रयम् 'आगहिण पयाहिणं करेइ' आदक्षिणप्रदक्षिण करोति, 'करित्ता' कृत्वा 'णच्चासण्णे णाइदूरे-जातिसमीपे नातिदूरे किन्तु समुचितस्थाने 'सुस्ससमाणे' शुश्रूषमाणः सेवमानः मांसाशिप्राणिभ्यो रक्षन्तित्यर्थः, 'जाव' यावत्-यावत्पदेन-णमंसमाणे अभिमुहे त्रिण-

जहा भगवान् तीर्थकर का शरीर था वहां आया 'वहा पर आकर वह शोकाकुलित चित्त वाला बन गया उसके मन से आनन्द बाहर निकल गया उसकी आँखों में आँसु भर आये उसने निष्प्राण उस तीर्थकर शरीर की तीन प्रदक्षिणाएँ देकर वह समुचित स्थान पर बैठ गया, मांसाशिप्राणियों से उस शरीर की रक्षा करता हुआ वह इन्द्र बार २ उस शरीर को प्रणाम करने लगा-पञ्चाङ्गनमन पूर्वक नम्रीभूत होने लगा और विनय के साथ दोनों हाथ जोड़कर उस शरीर के पास समुख बैठ गया ।

गति सूत्र में जो यावत्पद है उससे "तुरियाप, चवलाप, चंडाप, जवणाप, उदधूयाप, सिग्घाप, दिव्वाप, देवगईप, वीईवयमाणे २" इस पाठ का यहा ग्रहण हुआ है मनोजन्य औत्सुक्य के वश से उसको वह गति त्वरा से युक्त थी, कायव्यापार की चपलता से 'वह चपल थी, श्रम जनितग्लानि के अभाव से वह तीव्र थी, इससे ऊँची-उत्कृष्ट-और कोई गति नहीं हो सकती है, इस कारण 'वह जवना थी, वायु की गति की तरह वह उत्कट थी, इस-

होता न्यां भगवान् तीर्थकरन्तु शरीर इत्तु त्या गया त्या ज्ज ने ते शोकाकुलित चित्तवाणा थइ गया तेमना चित्तमांथी आनंदं हुरु थइ गथे तेमनी आंभो आसुथी बीज्ज ग-तेणे निष्प्राण्णेवा ते तीर्थकरना शरीरनी त्रषु प्रदक्षिणांओ करी अने त्यार भाइ ते उचित स्थान पर भेसी गथे, मांसभक्षक प्राणियोथी ते शरीरनी रक्षा करतो तेधं'द्र बार बार ते शरीरने प्रणाम करवा लाग्यो पंचांग नमन पूर्वक नम्रीभूतथवा लाग्यो अने सविनय अन्नेइथ जेडीने ते शरीरनी नल्लक भेसी गथे।

गति सूत्रमा जे यावत्पद आवेल छे तेथी 'तुरियाप चवलाप, चंडाप, जवणाप, उदधूयाप, सिग्घाप, दिव्वाप, देवगईप वीईव जे २" आ पाठने स अइ गथे छे मनोजन्य औत्सुक्य ने बीधे तेनी ते गति त्वरायुक्त इती काय व्यापारनी चपलताथी ते चपल इती श्रमजनित ग्लानिना अभावथी ते तीव्र इती, अनाथी उच्चतम-उत्कृष्ट-गति बील होय ज नइ. ओथी ने जवना इती. वायुनी गतिनी 'जेम ते उत्कट इती.

अणीर्हि' छाया-अष्टभिरग्रमहिपीभिः सपरिवाराभिः, तिसृभिः परिवर्द्धिः सप्तभिरनीकैः'
 इति संग्राहम्, तत्र-अष्टभिः अग्रमहिपीभिः=पद्मा १, शिवा २ शची ३ अञ्जः ४ अमला
 ५ अप्सरा ६ नवमिका ७ रोहिणी ८ इत्यष्टसंख्याभिरग्रमहिपीभिः कीदृशीभिराभिः
 इत्याह-सपरिवाराभिः=षोडशसहस्र-षोडश-परिवार सहिताभिरिति, तथा तिसृभिः परि-
 वर्द्धिः=बाह्यमध्याभ्यन्तररूपाभिस्त्रिसंख्याभिः परिपद्धिः, तथा सप्तभिः अनीकैः=हयग-
 जरथ सुभट-वृषभ गन्धर्व नाट्यरूपैः सप्तभिः सैन्यैः तथा सप्तभिः अनीकाधिपतिभिः,
 तथा 'चउर्हि चउरासोर्हि आयरक्ख देवसाहस्सीर्हि' चतसृभिः चतुर्गुणोतिभिः आत्मरक्ष-
 कदेवसाहस्सीभिः=चतसृषु दिक्षु प्रत्येकस्यां दिशि वर्तमानैः चतुरशीतिमहस्रैः चतुरशीति
 सहस्रात्मरक्षक देवैः, तथा-'अण्णेहि य वहुर्हि सोहम्मकप्पवासीर्हि वैमाणिएर्हि देवेहि
 देवीहि य सद्धि संपरिवुडे' अन्यैश्च बहुभिः सौधर्मकल्पवासिभिः वैमानिकदेवैः, तादृ-
 शीभिर्देवीभिश्च साद्धं संपरिवृतः=संपरिवेष्टितः 'ताए' तया=देवसम्बन्धिन्या 'उक्कि
 द्वाए' उत्कृष्टया=प्रशस्तविहायोगतिषु श्रेष्ठया, जाव' यावत्-यावत्पदेन-'तुरियाए चवलाए
 चडाए जवणाए उद्धूयाए सिग्घाए देवगईए वीईवयमाणे' छाया-त्वरितया चप-
 लया चण्डया जवनया उद्धूतया शिघ्रया दिव्यया देवगत्या व्यतिव्रजन् व्यतिव्रजन्'
 इति संग्राहम् । तत्र-त्वरितया मनोजन्यौत्सुक्यवशात् चपलया-कायव्यापारचापल्यात्
 चण्डया=तीव्रया श्रमजनितग्लान्यभावात् जवनया अत्युत्कृष्टगतिमत्त्वात् उद्धूतया=उत्कृ-
 टया-वायुगतेरिवोकटत्वात्, शीघ्रया=निरवच्छिन्नशीघ्रत्वगुणयोगात् एतादृश्या दिव्य-
 या=देवजनोचितया देवगत्या=देवसम्बन्धिन्या गत्या करणभूताया व्यतिव्रजन् व्यत्ति-

गच्छित्ता विमणे निराणदे अंसुपुण्णयणे तित्थयरमरीरयं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिण करेइ,
 करित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सुसमाणे जाव पज्जुवासइ" इस प्रकार कहकर उस शक्रने वन्दना
 की, नमस्कार किया, वदना नमस्कार करके अपने ८४ हजार सामानिक देवों के साथ ३३
 त्रायस्त्रिंशक देवों के साथ यावत्-सपरिवार आठ अपनी पट्टरानियों के साथ प्रत्येक-दिशा के
 ८४-८४ हजार आत्मरक्षक देवों के साथ और इसी तरह से और भी दूसरे सौधर्मकल्पवासी
 देव देवियों के साथ शक्र अपनी उत्कृष्ट प्रशस्त विहायोगति में भी श्रेष्ठ दिव्य देवगति से चलता
 २ तिर्यग् असख्यात द्वीप समुद्रों के ठीक मध्यभाग से होता हुआ जहा अष्टापद पर्वत था

तित्थयरस्स सरीरप तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता विमणे निरानन्दे अंसुपुण्णयणे
 तित्थयरसरीरयं तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेइ, करित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सु-
 समाणे जाव पज्जुवासइ" आ प्रभाषे कइने ओ शके प्रभुने वंदना करी नमस्कार कया
 वदना नमस्कार करीने पोताना ८४ हजार सामानिक देवानी साथे उउ त्रायस्त्रिंशक देवानी
 साथे यावत् सपरिवार आठ पोतानी पट्टराणीये साथे इदरे दिशाना ८४ हजार ८४ हजार
 आत्म रक्षक देवानी साथे अने आ प्रभाषे भीला पणु सौधर्म कल्पवासी देव-देवियोंनी साथे
 ते शके पोतानी उत्कृष्ट प्रशस्त विहायोगतिमा पणु श्रेष्ठ दिव्य ज्येवी देवगतिथी आहतो
 आहतो तिर्यग् असख्यात द्वीप समुद्रोंनी परापर मध्यभागमाथने जया अष्टापद पर्वत

ब्रजन्=गच्छन् 'तिरियमसंखेज्जाणं'तिर्यगसंख्येयानां तिर्यग्लोक्वर्तिनाम् असंख्येयानां
'दीवसमुद्राण' द्वीपसमुद्राणां द्वीपानां समुद्राणां च 'मज्झ मज्जेण' मध्यमध्येन=साति-
शयमध्यभागेन 'जेणेव' यत्रैव=यस्मिन्नेव प्रदेशे 'अट्ठावयपट्ठाए' अष्टापदपर्वतः तत्र
च पर्वते 'जेणेव' यत्रैव-यस्मिन्नेव भागे 'भगवओ नित्थगरस्स सगीरए' भगवत्
स्तीर्थकरस्य शरीरकं 'तेणेव उवागच्छइ' तत्रैव उपागच्छति 'उवागच्छित्ता' उपागत्य
'विमणे' विमनाः-शोकाकुलितचित्तः, अतएव 'णिराणंटे' निगनन्दः-आनन्दवर्जित,
'अंसुपुण्णणयणे' अश्रुपूर्णनयनः-अश्रुपरिपूर्णनयनः 'तित्थयगसरीरय' तीर्थकरशरीरकं-
भगवत् ऋद्धभदेवस्य निष्प्राणं शरीरं 'तिक्खुत्तो' त्रिकृत्व-वारत्रयम् 'आगहिण
पयाहिणं करेइ' आदक्षिणप्रदक्षिण करोति, 'करित्ता' कृत्वा 'णच्चासण्णे णाडदूरे-
नातिसमीपे नातिदूरे किन्तु समुचितस्थाने 'सुस्ससमाणे' श्रृपमाणः सेवमानः
मांसाशिप्राणिभ्यो रक्षन्नित्यर्थः, 'जाव' यावत्-यावत्पदेन-णमंसमाणे अभिमुहे त्रिण-

जहा भगवान् तीर्थकर का शरीर था वहां आया 'वहा पर आकर वह शोकाकुलित चित्त वाला
बन गया उसके मन से आनन्द बाहर निकल गया उसकी आँखों में आंसु भर आये उसने
निष्प्राण उस तीर्थकर शरीर की तीन प्रदक्षिणाएँ देकर वह समुचित स्थान पर बैठ गया,
मांसाशिप्राणियों से उस शरीर की रक्षा करता हुआ वह इन्द्र बार २ उस शरीर को प्रणाम
करने लगा-पञ्चाङ्गनमन पूर्वक नम्रीभूत होने लगा और विनय के साथ दोनों हाथ जोड़कर
उस शरीर के पास समुच्च बैठ गया ।

गति सूत्र में जो यावत्पद है उससे "तुरियाए, चवलाए, चंडाए, जवणाए, उद्धूयाए,
सिग्घाए, दिव्वाए, देवगईए, वीईवयमाणे २" इस पाठ का यहा ग्रहण हुआ है मनोजन्य
औत्सुक्य के वश से । उसको वह गति त्वरा से युक्त थी, कायव्यापार की चपलता से 'वह
चपल थी, अम जनितग्लानि के अभाव से वह तीव्र थी, इससे ऊँची-उत्कृष्ट-और कोई गति
नहीं हो सकती है, इस कारण 'वह जवना थी, वायु की गति की तरह वह उत्कट थी, इस-

होता न्यां भगवान् तीर्थकरन् शरीरं हतुं त्या गया त्यां न्छ ने ते शोकाकुलित चित्तवाणा
थम् गया तेमना चित्तमाथी आनन्द ह्युत्त थम् गये तेमनी आंथो आसुथी बीब्बध गन् तेण्णे
निष्प्राण्य जेवा ते तीर्थकरना शरीरनी त्रणु प्रदक्षिण्यो करी अने त्यार भाद ते उचित
स्थान पर जेसी गये, मांसभक्षक प्राणियोथी ते शरीरनी रक्षा करतो तेध्द्र बार बार ते
शरीरने प्रणाम करवा लाग्यो पयांग नमन पूर्वक नम्रीभूतथवा लाग्यो अने सविनय
अन्नेसाथ जेहीने ते शरीरनी नल्लक जेसी गये।

गति सूत्रमां जे यावत्पद आवेल छे तेथी 'तुरियाए चवलाए, चंडाए, जवणाए, उद्धू-
याए, सिग्घाए, दिव्वाए, देवगईए वीईवयमाणे २" आ पाठने स अह थये छे
भनोजन्य औत्सुक्य ने बीधे तेनी ते गति त्वरायुक्त हती साथ व्यापारनी चपलताथी
ते चपल हती अमजनित ग्लानिना अभावथी ते तीव्र हती जेनाथी उच्चतम-उत्कृष्ट-
अनि नील डोग न नडि. जेथी ने जवना हती. वायुनी गतिनी जेभ ते उत्कट हती.

एणं पञ्जलिउडे' छाया-नमस्यन् अभिमुखे विनयेन प्राञ्जलिपुटः, इति संग्राह्यम्, तत्र नमस्यन् पञ्चाङ्गनमनपूर्वकं प्रणतो भवन् अभिमुखे-सम्मुखे विनयेन सविनयं प्राञ्जलिपुटः अञ्जलीकृतकरयुगलः 'पञ्जुवासड' पर्युपास्ते तिष्ठति ॥सू० ४६॥

इत्थं भगवत्कलेवरसमीपागमनरूपां शक्रवक्तव्यतामुक्त्वा सम्प्रतीशानेन्द्रादिवक्त-

લિયે વહ ઉદ્ધૂત થી, નિરવચ્છિન્ન શીઘ્રત્વ ગુણ કે યોગ સે વહ શીઘ્રરૂપ થી, તથા દેવજનોચિત્ત હોને સે વહ દિવ્ય થી, તિર્યગ્ અસહ્યાત દ્વીપ સમુદ્રો કો પાર કરતા હુઆ વહ શક્ત આયા સો હસકા તાત્પર્ય એસા હૈ કિ તિર્યગ્લોકવર્તી અસહ્યાત દ્વીપ સમુદ્ર શાલ્મ મેં કહે ગયે હૈં તિર્યગ્લોક કા તાત્પર્ય મધ્યલોક સે હૈં હસ મધ્યલોક મેં જમ્બૂદ્વીપ આદિ દ્વીપ ઔર લવણસમુદ્ર આદિ સમુદ્ર અસહ્યાત ૨ હૈં એસો જિનેન્દ્ર કી વાણી હૈં । ત્રાયચ્છિગક દેવ ૩૩ હી હોતે હૈં ઔર યે ગુરુ-સ્થાનીય હોતે હૈં, સોમ, યમ, વરુણ ઔર કુબેર હસ તરહ સે યે ચાર લોકપાલ કહે ગયે હૈં । બાઠ અગ્રમહિષિયો કે નામ હસ પ્રકાર સે હૈં—પદ્મા ૧, શિવા ૨, શચી, ૩, અબ્જૂ ૪, અમલા ૫, અપ્સરા ૬, નવમિકા ૭, ઔર રોહિણી ૮, હન એક ૨ પદ્મ દેવિયો કા પરિવાર ૧૬—૧૬ હજાર પ્રમાણ હૈ, વાદ્યપારિષદા, મધ્યપરિષદા ઔર અમ્યન્તર પરિષદા કે મેદ સે હસકી ૩ પરિષદાઈ હોતી હૈ, અનીક—સેના સાત પ્રકાર કી કહી ગઈ હૈ—હય, ગજ, રથ. સુમટ, વૃષભ, ગન્ધર્વ, ઔર નાટ્ય ચાર દિશાઓ મેં સે પ્રત્યેક દિશા મેં ૮૪—૮૪ હજાર આત્મરક્ષક દેવ રહતે હૈં હસીલિયે યહાં ચારો દિશાઓં કે ચાર ચૌરાસી હજાર અર્થાત્ ત્રીન લાસ છિહોત્તર હજાર આત્મરક્ષક દેવ કહે ગયે હૈં ॥૪૬॥

હસ પ્રકાર સે ભગવાન્ કે કલેવર કે સમીપ શક્ત કે આગમન કી વક્તવ્યતા કો પ્રકટ કરકે.

એથી તે ઉદ્ધૂત હતી. નિરવચ્છિન્ન-શીઘ્રત્વ ગુણના યોગથી તે શીઘ્ર રૂપ હતી તેમજ દેવજનોચિત્ત હોવાથી તે દિવ્ય હતી તિર્યગ્ અસહ્યાત દ્વીપ સમુદ્રોને પાર કરીને તે શક્ત આવ્યો હતો આનું તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે. કે તિર્યગ્ લોકવર્તી અસહ્યાત દ્વીપ સમુદ્ર શાલ્મમાં કહેવામાં આવેલ છે—તિર્યગ્ લોકનું તાત્પર્ય મધ્યલોક થાય છે. એ મધ્ય-લોકમાં જ બૂદ્ધીપ વગેરે દ્વીપો અને લવણ સમુદ્ર વગેરે સમુદ્રો અસહ્યાત ૨ છે. એવી જિનેન્દ્રની વાણી છે ત્રાયચ્છિ શક દેવો ૩૩ જ થાય છે, અને એઓ ગુરુસ્થાનીય હોય છે. સોમ, યમ, વરુણ અને કુબેર આ રીતે એ ચાર લોકપાલો કહેવામાં આવેલ છે. આઠે અથ મહિષીઓના નામ આ પ્રમાણે છે ૧ પદ્મા, ૨ શિવા, ૩ શચી, ૪ અબ્જૂ, ૫ અમલા, ૬ અપ્સરા, ૭ નવમિકા અને ૮ રોહિણી એ એક-એક પદ્મદેવીઓનો પરિવાર ૧૬-૧૬ હજાર પ્રમાણ છે. બાદ્ય પરિષદા, મધ્ય પરિષદા અને આક્યન્તર પરિષદાના લોકથી આની ૩ પરિષદાઓ થાય છે અનીક-સેના સાત પ્રકારની કહેવામાં આવેલ છે, હય, ગજ, રથ, સુમટ, વૃષભ, ગન્ધર્વ અને નાટ્ય ચાર દિશાઓમાંથી દરેક દિશામાં ૮૪-૮૪ હજાર આત્મરક્ષક દેવો રહે છે એથી અહીં ચારે ચાર દિશાઓના ચાર ચૌરાસી હજાર આત્મર-ક્ષક દેવો કહેવામાં આવેલ છે. ॥૪૬॥

આ પ્રમાણે ભગવાનના કલેવરની પાસે શક્તના આગમનની વક્તવ્યતાને પ્રકટ કરીને હવે

વ્યતામાહ—

મૂલમ્—તેણં કાલેણં તેણં સમણં ઈસાણે દેવિંદે દેવરાયા ઉત્તર-
હ્લોગાહિવર્દ અઢ્ઢાવીસવિમાણસયસહસ્સાહિવર્દ સૂલપાણી વસહવોહણે
સુરિંદે અરયંવસ્વત્થધરે જાવ વિહરણં ભોગભોગાં મુંજમાણે વિહરણં । તણં
તરસ ઈસાણસ્સ દેવિંદસ્સ દેવરન્નો આસણં ચલણં । તણં, સે ઈસાણે જાવ
દેવરાયા આસણં ચલિયં પાસણં પાસિત્તા ઓહિ પંડંજણં પંડંજિત્તા મયવં
તિત્થયરં ઓહિણા આમોણં આમોણં જહા સવ્કે નિયગપરિવારેણં
માણેયવ્વો જાવ પજ્જુવાસણં । એવં સવ્વે દેવિંદા જાવ અચ્ચુણં નિયગ-
પરિવારેણં માણેયવ્વા । એવં જાવ મવણવાસીણં ઇંદા વાણમંતરાણં સોલસ
જોહિસિયાણં દોણિણં નિયગપરિવારા ણેયવ્વા ॥ સૂ. ૪૭ ॥

છાયા—તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે ઈશાનો દેવેન્દ્રો દેવરાજ ઉત્તરાર્દ્ધલોકાધિપતિઃ
અષ્ટાવિંશતિવિમાનશતસહસ્રાધિપતિઃ શૂલપાણિર્વૃષમવાહન સુરેન્દ્ર અરજોઽમ્બરવલ્લધરો
યાવત્ વિપુલાન્ ભોગભોગાન્ મુજ્જાનો વિહરતિ । તત ક્ષણં તસ્ય ઈશાનસ્ય દેવેન્દ્રસ્ય
દેવરાજસ્ય આસનં ચલતિ । તતઃ ક્ષણં 'સ ઈશાનો યાવત્ દેવરાજઃ આસન ચલિતં પશ્યતિ,
હઢ્ઢા અર્ધાધિ પ્રયુક્તે, પ્રયુજ્ય મગવન્તં તીર્થકરમ્ અવધિના આમોગયતિ, આમોગ્ય યથા
તે નિજકપરિવારેણ મણિતવ્યો યાવત્ પર્યુપાસ્તે । એવં સર્વે દેવેન્દ્રા યાવત્ અચ્યુતો
નિજકપરિવારેણ મણિતવ્યાઃ । એવં યાવત્ મવનવાસિનામિન્દ્રા વ્યન્તરાણાં જોહણં, જોતિષ્કાણાં
ઢ્ઢો, નિજકપરિવારા નેતવ્યાઃ ॥ સૂ. ૪૭ ॥

ટીકા—‘તેણ કાલેણ’ ઇત્યાદિ । ‘તેણ કાલેણ તેણ સમણં ઈસાણે’ તસ્મિન્ કાલે
તસ્મિન્ સમયે ઈશાનઃ ઈશાનનામકઃ ‘દેવિંદે દેવરાયા ઉત્તરાર્દ્ધ લોગાહિવર્દ’ દેવેન્દ્રો દેવરાજઃ
‘ઉત્તરાર્દ્ધલોકાધિપતિઃ ઉત્તરાર્દ્ધદેવલોકસ્વામી, ‘અઢ્ઢાવીસવિમાણસયસહસ્સાહિવર્દ’ અષ્ટાવિંશતિ

અથ સૂત્રકાર ઈશાન ઇન્દ્ર કી વક્તવ્યતા કા કથન કરતે હૈ—

“તેણ કાલેણ તેણ સમણં ઈસાણે દેવિંદે’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—‘તેણ કાલેણ તેણ સમણં ઈસાણે દેવિંદે દેવરાયા ઉત્તરાર્દ્ધ લોગાહિવર્દ અઢ્ઢાવીસવિ-
માણ સયસહસ્સાહિવર્દ’ એ સ કાલ મેં ઓર એ સમય મેં ઉત્તરાર્દ્ધલોક કે અધિપતિ દેવેન્દ્ર દેવરાજ
ઈશાન ઇન્દ્ર કા જો કિ ૨૮ જાણ વિમાનો કા અધિપતિ હૈ, ‘સૂલપાણી’ હાથ મેં જિસકે શૂલ

સૂત્રકાર ઈશાન ઇન્દ્રની વક્તવ્યતાનુ કથન કરે છે

‘તેણ કાલેણ તેણ સમણં ઈસાણે દેવિંદે’—ઇત્યાદિ—સૂત્ર ૪૭

ટીકાર્થ—‘તેણ કાલેણ તેણ સમણં ઈસાણે દેવિંદે દેવરાયા ઉત્તરાર્દ્ધલોગાહિવર્દ અઢ્ઢા-
વીસવિમાણસયસહસ્સાહિવર્દ’ તે કાલ અને તે સમયે ઉત્તરાર્દ્ધ લોકના અધિપતિ દેવેન્દ્ર
દેવરાજ ઈશાન ઇન્દ્ર—કે જે ૨૮ જાણ વિમાનોના અધિપતિ છે, ‘સૂલપાણી’ હાથમાં જેમ

एणं पञ्चलिउडे' छाया-नमस्यन् अभिमुखे विनयेन प्राञ्जलिपुटः, इति संग्राह्यम्, तत्र नमस्यन् पञ्चाङ्गनमनपूर्वकं प्रणतो भवन् अभिमुखे-सम्मुखे विनयेन सविनयं प्राञ्जलिपुटः अञ्जलीकृतकरयुगलः 'पञ्जुवासइ' पर्युपास्ते तिष्ठति ॥सू० ४६॥

इत्थं भगवत्कलेवरसमीपागमनरूपां शक्रवक्तव्यतामुत्त्वा सम्प्रतीशानेन्द्रादिवक्त-

લિયે વહ ઉદ્ધૂત થી, નિરવચ્છિન્ન શીઘ્રત્વ ગુણ કે યોગ સે વહ શીઘ્રરૂપ થી, તથા દેવજનોચિત્ત હોને સે વહ દિવ્ય થી, તિર્યગ્ અસહ્યાત દ્વીપ સમુદ્રો કો પાર કરતા હુઆ વહ શક્ર આયા સો હસકા તાત્પર્ય એસા હૈ કિ તિર્યગ્લોકવર્તી અસહ્યાત દ્વીપ સમુદ્ર શાસ્ત્ર મેં કહે ગયે હૈ તિર્યગ્લોક કા તાત્પર્ય મધ્યલોક સે હૈ હસ મધ્યલોક મેં જમ્બૂદ્વીપ આદિ દ્વીપ ઔર લવણસમુદ્ર આદિ સમુદ્ર અસહ્યાત ૨ હૈં એસો જિનેન્દ્ર કી વાણી હૈ । ત્રાયશ્ચિગક દેવ ૩૩ હી હોતે હૈં ઔર યે ગુરુ-સ્થાનીય હોતે હૈં, સોમ, યમ, વરુણ ઔર કુબેર હસ તરહ સે યે ચાર લોકપાલ કહે ગયે હૈ । આઠ અપ્રમહિષિયોં કે નામ હસ પ્રકાર સે હૈં—પદ્મા ૧, શિવા ૨, શચી, ૩, અબ્જૂ ૪, અમલા ૫, અપ્સરા ૬, નવમિકા ૭, ઔર રોહિણી ૮, હન એક ૨ પદ્મ દેવિયોં કા પરિવાર ૧૬—૧૬ હજાર પ્રમાણ હૈ, બાહ્યપરિષદા, મધ્યપરિષદા ઔર અમ્યન્તર પરિષદા કે મેદ સે હસકી ૩ પરિષદાઈ હોતી હૈં, અનીક—સેના સાત પ્રકાર કી કહી ગઈ હૈ—હય, ગજ, રથ. સુમટ, વૃષભ, ગન્ધર્વ, ઔર નાટ્ય ચાર દિશાઓં મેં સે પ્રત્યેક દિશા મેં ૮૪—૮૪ હજાર આત્મરક્ષક દેવ રહતે હૈં હસીલિયે યહાં ચારો દિશાઓં કે ચાર ચૌરાસી હજાર અર્થાત્ ત્રીન લાસ છિહોત્તર હજાર આત્મરક્ષક દેવ કહે ગયે હૈં ॥૪૬॥

હસ પ્રકાર સે ભગવાન્ કે કલેવર કે સમીપ શક્ર કે આગમન કી વક્તવ્યતા કો પ્રકટ કરકે

એથી તે ઉદ્ધૂત હતી. નિરવચ્છિન્ન-શીઘ્રત્વ ગુણના યોગથી તે શીઘ્ર રૂપ હતી તેમજ દેવજનોચિત્ત હોવાથી તે દિવ્ય હતી તિર્યગ્ અસહ્યાત દ્વીપ સમુદ્રોને પાર કરીને તે શક્ર આગ્યો હતો આનું તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે કે તિર્યગ્ લોકવર્તી અસહ્યાત દ્વીપ સમુદ્ર શાસ્ત્રમાં કહેવામાં આવેલ છે—તિર્યગ્ લોકનું તાત્પર્ય મધ્યલોક થાય છે. એ મધ્ય-લોકમાં જમ્બૂદ્વીપ વગેરે દ્વીપો અને લવણ સમુદ્ર વગેરે સમુદ્રો અસહ્યાત ૨ છે. એવી જિનેન્દ્રની વાણી છે ત્રાયશ્ચિ શક્ર દેવો ૩૩ જ થાય છે, અને એઓ ગુરુસ્થાનીય હોય છે સોમ, યમ, વરુણ અને કુબેર આ રીતે એ ચાર લોકપાલો કહેવામાં આવેલ છે. આઠ અપ્રમહિષિઓના નામ આ પ્રમાણે છે ૧ પદ્મા, ૨ શિવા, ૩ શચી, ૪ અબ્જૂ, ૫ અમલા, ૬ અપ્સરા, ૭ નવમિકા અને ૮ રોહિણી એ એક-એક પદ્મદેવીઓનો પરિવાર ૧૬—૧૬ હજાર પ્રમાણ છે. બાહ્ય પરિષદા, મધ્ય પરિષદા અને આમ્યન્તર પરિષદાના લેહથી આની ૩ પરિષદાઓ થાય છે અનીક-સેના સાત પ્રકારની કહેવામાં આવેલ છે, હય, ગજ, રથ, સુમટ, વૃષભ, ગન્ધર્વ અને નાટ્ય ચાર દિશાઓમાંથી દરેક દિશામાં ૮૪—૮૪ હજાર આત્મરક્ષક દેવો રહે છે એથી અહીં ચારે ચાર દિશાઓના ચાર ચૌરાસી હજાર આત્મરક્ષક દેવો કહેવામાં આવેલ છે. ॥૪૬॥

આ પ્રમાણે ભગવાનના કલેવરની પાસે શક્રના આગમનની વક્તવ્યતાને પ્રકટ કરીને હવે

व्यतामाह—

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं ईसाणे देविंदे देवराया उत्तर-
द्धलोगाहिवई अट्टावीसविमाणसयसहस्साहिवई सूलपाणी वसहवाहणे
सुरिंदे अरयंबरवत्थधरे जाव विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ। तएणं
तरस ईसाणस्स देविंदस्स देवरन्नो आसणं चलइ। तएणं से ईसाणे जाव
देवराया आसणं चलयं पासइ पासित्ता ओहि पउंजइ पउंजित्ता भयवं
तिथयरं ओहिणा आभोएइ आभोइत्ता जहा सक्के नियगपरिवारेणं
भाणेयव्वो जाव पज्जुवासइ। एवं सव्वे देविंदा जाव अच्चुए नियग-
परिवारेणं भाणेयव्वा। एवं जाव भवणवासीणं इंदा वाणमंतराणं सोलस
जोइसियाणं दोणिणं नियगपरिवारा णेयव्वा ॥ सू० ४७ ॥

छाया—तस्मिन् काले तस्मिन् समये ईशानो देवेन्द्रो देवराज उत्तरार्द्धलोकाधिपतिः
अष्टाविंशतिविमानशतसहस्राधिपतिः शूलपाणिर्वृषभवाहन सुरेन्द्र अरजोऽम्बरवत्सधरो
यावद् विपुलान् भोगभोगान् भुञ्जानो विहरति। ततः खलु तस्य ईशानस्य देवेन्द्रस्य
देवराजस्य आसनं चलति। ततः खलु स ईशानो यावत् देवराजः आसनं चलितं पश्यति,
दृष्ट्वा अर्वाधि प्रयुङ्क्ते, प्रयुज्य भगवन्तं तीर्थकरम् अवधिना आभोगयति, आभोग्य यथा
तो निजकपरिवारेण भणितव्यो यावत् पर्युपास्ते। एवं सर्वे देवेन्द्रा यावत् अच्युतो
निजकपरिवारेण भणितव्याः। एवं यावद् भवनवासिनामिन्द्रा व्यन्तराणां षोडश, जोतिष्काणां
द्वौ, निजकपरिवारा नेतव्याः ॥सू०४७॥

टीका—‘तेण कालेण’ इत्यादि। ‘तेण कालेण तेणं समएणं ईसाणे’ तस्मिन् काले
तस्मिन् समये ईशानः ईशाननामकः ‘देविंदे देवराया उत्तरद्ध लोगाहिवई’ देवेन्द्रो देवराजः
‘उत्तरार्द्धलोकाधिपतिः उत्तरार्द्धदेवलोकस्वामी,’ ‘अट्टावीसविमाणसयसहस्साहिवई’ अष्टाविंशति

अथ सूत्रकार ईशान इन्द्र की वक्तव्यता का कथन करते हैं—

“तेण कालेणं तेणं समएणं ईसाणे देविंदे’ इत्यादि।

टीकार्थ—“तेण कालेणं तेणं समएणं ईसाणे देविंदे देवराया उत्तरद्ध लोगाहिवई अट्टावीसवि-
माण सयसहस्साहिवई” उस काल में और उस समय में उत्तरार्द्धलोक के अधिपति देवेन्द्र देवराज
ईशान इन्द्र का जो कि २८ लाख विमानों का अधिपति है, “सूलपाणी” हाथ में जिसके शूल

सूत्रकार ईशान ईन्द्र की वक्तव्यता का कथन करते हैं

‘तेण कालेणं तेणं समएणं ईसाणे देविंदे’-इत्यादि—सूत्र ४७

टीकार्थ—“तेण कालेणं तेणं समएणं ईसाणे देविंदे देवराया उत्तरद्धलोगाहिवई अट्टा-
वीसविमाणसयसहस्साहिवई” ते काल अने ते समये उत्तरार्द्ध लोकना अधिपति देवेन्द्र
देवराज ईशान ईन्द्र-के जो २८ लाख विमानोंना अधिपति छे, ‘सूलपाणी’ हाथमां जेभ

વિમાનશતસહસ્રાધિપતિઃ અષ્ટાવિંશતિલક્ષસંખ્યકવિમાનસ્વામી' 'શૂલપાણી' શૂલપાણિઃ શૂલહસ્તઃ 'વસહવાહને' વૃષભવાહનઃ વૃષભો વાહનં યસ્ય સ તથા વૃષભયાનવાન્ 'સુરિન્દે' સુરેન્દ્રઃ સ્વર્લોકવાસિ દેવસ્વામી 'અરયંવરવત્થધરે' અરજોઽમ્બરવત્થધરઃ અરજોઽમ્બરં નિર્મલાકાશં, તત્સદૃશ સ્વચ્છં યદ્ વસ્ત્રં વસન તસ્ય ધરઃ ધારકઃ 'જાવ' યાવત્ યાવત્પદેન 'આલહ્યમાલમઝહે' ણવહેમચારુચિત્તચંચલકુંડલવિલિહિજમાણગલ્લે મહિદ્વિષ્ય મહઙ્ગુદ્વિષ્ય મહાવલ્લે મહાજસે મહાણુભાવે મહાસુકલ્લે માસુરવોદી પલંબવણમાલધરે ઈસાણકમ્પે ઈસાણવહિસપ વિમાણે સુહમ્માપ સમાપ ઈસાણંસિ, સીહાસણંસિ સે ણં અટ્ટાવીસાપ વિમાણાવાસસયસાહસ્સીણં અસીઈપ સામાણિયસાહસ્સીણં તાયત્તીસાપ તાયત્તીસગાણં ચઙ્ગહં લોગપાલાણં અટ્ટ્ઠહં અગ્ગમહીસીણં સપરિવારાણં તિણ્હ પરિસાણં સત્તણ્હં અણીયાણં સત્તણ્હં અણીયાહિવર્ણં ચઙ્ગહં અસીઈણં આયરક્કલ્લદેવસાહસ્સીણં અણ્ણેસિં ચ ઈસાણકમ્પવાસીણં સત્તણ્હં દેવાણં દેવીણં ય આહેવન્નં પોરેચ્ચં સામિત્તં મટ્ઠિતં મહત્તરગત્તં આણાઈસગ્ગસેણાવચ્ચં કારેમાણે પાલેણાણે મહ્યાહ્યણદ્વગીયવાહ્યતંતીતલતાલતુહિયધણમુદ્ગપદુપ્પત્ત્રાહ્યરવેણં'

હૈ "વસહવાહને" વાહન જિસકા વૃષભ હૈ, આસન કંપાયમાન હુઆ ઇસે સુરેન્દ્ર વિશેષણ સે જો અભિહિત ક્રિયા ગયા હૈ વહ યહ પ્રકટ કરતા હૈ કિ યહ ઈશાન ઇન્દ્ર ઈશાન સ્વર્ગવાસી દેવલોકોં કા પૂર્ણ રૂપ સે આધિપત્ય કરતા હૈ યહ સદા "અરયંવર વત્થધરે" અરજોઽમ્બરવત્થ પહિન્તા હૈ—નિર્મલ આકાશ કા રક્ત જૈમા સ્વચ્છ હોતા હૈ વૈસા હી ઇસકે દ્વારા પહિને ગયે વસ્ત્રોં કા વર્ણ માં સ્વચ્છ—નિર્મલ હોતા હૈ યહા "જાવ" યાવત્પદ સે આલહ્યમાલમઝહે, ણવહેમચારુચિત્તચંચલકુંડલવિલિહિજમાણગલ્લે, મહિદ્વિષ્ય, મહઙ્ગુદ્વિષ્ય, મહાવલ્લે, મહાજસે, મહાણુભાવે, મહાસુકલ્લે, માસુરવોદી, પલંબવણમાલધરે, ઈસાણકમ્પે, ઈસાણવહિસપ, વિમાણે, સુહમ્માપ, સમાપ ઈસાણંસિ સીહાસણંસિ, સે ણ અટ્ટાવીસાપ વિમાણાવાસસયસાહસ્સીણં અસીઈપ સામાણિયસાહસ્સીણં તાયત્તીસાપ તાયત્તીસગાણં ચઙ્ગહં લોગપાલાણં અટ્ટ્ઠહં અગ્ગમહિસીણં સપરિવારાણં તિણ્હ પરિસાણં સત્તણ્હં અણીયાણં સત્તણ્હં અણીયાહિવર્ણં ચઙ્ગહં અસીઈણં આયરક્કલ્લદેવસાહસ્સીણં અણ્ણેસિં ચ

ના શૂલ છે 'વસહવાહને' વૃષભ જેમનું વાહન છે. આસન કંપાયમાન થયું આને સુરેન્દ્ર વિશેષણથી જે અભિહિત કરવામાં આવેલ છે તે આ પ્રકટ કરે છે કે આ ઈશાન ઇન્દ્ર ઈશાન સ્વર્ગવાસી દેવલોકોના પૂર્ણ રૂપમાં આધિપત્ય કરે છે એ સદા 'અરયંવરવત્થધરે' અરજ અમ્બર વસ્ત્ર ધારણ કરે છે, એ નિર્મલ આકાશનો રંગ જેમ સ્વચ્છ હોય છે, તેમજ આ ઇન્દ્રે પહરેલા વસ્ત્રોનો વર્ણ પણ સ્વચ્છ—નિર્મલ હોય છે અહીં 'જાવ' યાવત્ પદથી 'આલહ્ય માલમઝહે', ણવહેમચારુચિત્તચંચલકુંડલ વિલિહિજમાણગલ્લે, મહિદ્વિષ્ય, મહઙ્ગુદ્વિષ્ય, મહાવલ્લે, મહાજસે, મહાણુભાવે, મહાસુકલ્લે, માસુરવોદી, પલંબવણમાલધરે, ઈસાણકમ્પે, ઈસાણવહિસપ, વિમાણે, સુહમ્માપ સમાપ. ઈસાણંસિ સીહાસણંસિ, સેણં અટ્ટાવીસાપ વિમાણાવાસસયસાહસ્સીણં અસીઈપ સામાણિયસાહસ્સીણં તાયત્તીસાપ, તાયત્તીસગાણં ચઙ્ગહં લોગપાલાણં અટ્ટ્ઠહં, અગ્ગમહિસીણં સપરિવારાણં, તિણ્હં પરિસાણં સત્તણ્હં અણીયાણં સત્તણ્હં અણીયાહિવર્ણં ચઙ્ગહં અસીઈણં આયરક્કલ્લદેવસાહસ્સીણં અણ્ણેસિં ચ ઈસાણ

छाया—आलगितमालामुकुटो नवहैमचारुचित्रचञ्चलकुण्डलविलिख्यमानगल्लो महर्द्धिको महाद्युतिको महाबलो महायशः महानुभावो महासौख्यो भास्वरशरीरः प्रलम्बवनमालाधरः ईशानकल्पे इशानावतंसके विमाने सुधर्मायां सभायाम् ईशाने सिंहासने, स खलु अष्टाविंशतेः विमानावासशतसाहस्रीणाम् अशीतः सामानिकसाहस्रीणां त्रयस्त्रिंशतस्त्रायस्त्रिंशकानां चतसृणाम् अशीतीनाम् आत्मरक्षकदेवसाहस्रीणाम् अन्येषां च उशानकल्पवासिनां देवानां देवीनां च आधिपत्यं पौरपत्यं स्वामित्वं भर्तृत्व महत्तरकत्व आङ्गेश्वरसेनापत्यं कारयन् पालयन् महता अहतनाद्यगीतवाद्यतन्त्रीतलतालत्रुटितघनमृदङ्गपटुप्रवादितरवेण—इति संग्राहम् । तत्र—आलगितमालामुकुटः—आलगितौ—स्वस्वोचितस्थाने धृतौ मालामुकुटौ—मालाकिरीटश्च येन स तथाभूतः पुनः नवहैमचारुचित्रचञ्चलकुण्डलविलिख्यमानगल्लः—नवे—नूतने हैम—स्वर्णमये चारुणी—मनोहरे चित्रे—अदृश्यते चञ्चले—कायव्यापारवशात् कम्पमाने ये कुण्डले—कुण्डलद्वयं, ताभ्यां विलिख्यमानः—घृण्यमाणो गल्लः—रूपोलो यस्य स तथाभूतः पुनः—महर्द्धिकः महती—विशाला ऋद्धि विमानादिसमृद्धिर्यस्य स तथा—सातिशयविमानादिसमृद्धियुक्त इत्यर्थः, तथा—महाद्युतिकः—महती द्युति—शरीराभरणादिसम्बन्धिमहादीप्तिमन्वित इत्यर्थः, महाबलः—महत्—सातिशय बल शरीरं सामर्थ्य यस्य

ईसाणकम्पवासीण देवाणं देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्ठित्तं महत्तरगत्तं आणाईसर सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महया ह्य णट्ठगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुडंगपडुप्पवाइयरवेण” इस पाठ का ग्रहण हुआ है इसका भाव इस प्रकार से है—माला और मुकुट जो कि यथोचित स्थान धारण किये गये थे वे बड़े ही इसके सुहावने प्रतीत होते हैं इसने जो कुण्डलकानों में पहिने हुए थे वे नवीन थे, सोने के बने हुए थे, मन को हरण करने वाले थे, बड़े अनोखे थे और शरीर के व्यापार के वश से चञ्चल होते रहते थे, इसलिये उसके दोनों कपोल इसके द्वारा घृण्यमाण होते रहते थे। इसकी विमानादिरूप समृद्धि अल्प नहीं थी—किन्तु महती—बड़ी थी, इसलिये यह सातिशय विमानादि समृद्धिवाला यहा प्रकट किया गया है। इसके शरीर की और शरीर के ऊपर घाँगण किये गये आभरणादिको की द्युति विशिष्ट प्रभा सपन्न थी। इसका शारीरिक सामर्थ्य सातिशय था अर्थात् पर्वत आदि को ऊखाड़ देने में इसे जग

कम्पवासीण देवाणं देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्ठित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महयाह्यणट्ठगीयवाइयतंतीतलतालतुडिय घण मुडंग पडुप्पवाइयरवेण” आ पाठ ग्रहण करवाभां आवेले छे. आ पाठने भाव आ प्रभाछे छे—यथा स्थाने धारण करवाभां आवेलां भाणा अने मुकुट गुण न सुहर लागता हुना ओछे ने नवीन हुंडवै कानेभां धारण करेवां हुता, ते नवा हुता अने ते हुंडवै सुवर्णना हुता भनोहेर हुता अदृश्यत हुता अने शरीरना डलन—यलनथी डालता हुता ओथी तेना अने कपोलौ तेनाथी घर्षित थता हुता ओनी विमानादि उप समृद्धि अदृश्य नहुता पण पुष्कण प्रभाछा हुती ओथी न ओभने अही सातिशय विमानादि समृद्धिवान तरीके प्रकट करवाभा आवेले छे ओना शरीरनी अने शरीर पर धारण करवाभा आवेला आभरणादिहोनी द्युति विशिष्ट प्रभा सपन्न हुती, ओनु शारीरिक सामर्थ्य सातिशय हुतुं, ओटवे छे यवत

देवानां देवीनां च आधिपत्यम् अधिपतित्वम् पौरपत्यं पुरपतित्वं, स्वामित्वं स्वाम्यं, भर्तृत्वम् महत्तरकत्वम् आज्ञेश्वरसेनापत्यम् आज्ञाया ईश्वरः आज्ञेश्वरः, सेनायाः पतिः सेनापतिः आज्ञेश्वरश्चासौ सेनापतिश्चेति आज्ञेश्वरसेनापतिस्तस्य भावस्तत्त्वं च कारयन् पालयंश्च महता विशालेन अहतनाट्यगीतवाद्यतन्त्रीतलतालत्रुटितघनमृदङ्गपटुप्रवादितरवेण अहतो निरवच्छिन्नो यो नाट्यगीतवाद्यतन्त्रीतलतालत्रुटितघनमृदङ्गपटुप्रवादितरवः तत्र नाट्यं नटकर्म, गीतं प्रसिद्धम् तथा पटुभिः पटुपुरुषैः प्रवादितानि यानि तन्त्रीतलतालत्रुटित-घनमृदङ्गरूपाणि वाद्यानि, एतेषां यो रवः शब्दस्तेन सहितान् 'विडलाइं भोगभोगाईं भुंजमाणे विहरइ' विपुलान् भोगभोगान् भुञ्जानो विहरति । 'अहतनाट्यगीतवाद्य' इत्यादिपदे 'वाद्य' शब्दस्य पूर्वनिपातः 'पटुप्रवादित' शब्दस्य परनिपातश्च आप्तत्वाद् बोध्य इति । 'तएणं' ततः भगवतः शरीरत्यागानन्तरं खलु 'तस्स ईसाणस्स देविदस्स देवरन्नो आसणं चलइ' तस्य ईशानस्य देवेन्द्रस्य देवराजस्य आसनं चलति । 'तएणं से ईसाणे' ततः खलु स ईशानो 'जाव' यावत् यावत्पदेन 'देवेन्द्रो देवराज इति' संग्राह्यः, तथा 'देवराया आसणं चलियं पासइ' देवराजः आसनं चलितं पश्यति, 'पासित्ता ओहिं पउंजइ'

का अधिपत्य, पौरपत्य, स्वामित्व, भर्तृत्व, महत्तरकत्व, एवं आज्ञेश्वर सेनापत्य करवाता हुआ उनकी परिपालना करता हुआ सतत निरवच्छिन्न रूप से होने वाले नाट्य के गीतों के साथ २ पटुपुरुषों द्वारा बजाये गये तन्त्री, तलताल, त्रुटित आदि रूप बाजो को तुमुल चित्ताकर्षक ध्वनि से युक्त "विडलाइं भोगभोगाईं भुंजमाणे विहरइ" विपुल भोगभोगों को भोगता हुआ अपना समय आनन्द के साथ व्यतीत करता रहता है. यहां "अहतनाट्य गीतवाद्य" आदि पद में वाद्य शब्द का पूर्वनिपात और "पटुप्रवादित" शब्द का परनिपात आर्थ होने से हुआ है ।

भगवान् ने जब अपने शरीर का परित्याग कर दिया था "तएणं तस्स ईसाणस्स देविदस्स देवरन्नो आसणं चलइ" उस समय इस देवेन्द्र देवराज ईशान इन्द्र का आसन कन्या यमान हुआ "तए णं से ईसाणे जाव देवराया आसणं चलियं पासइ" कम्पायमान हुए आसन

अनेक ईशानदेवद्वैतवासो देव-देवायो पर आधिपत्य, पौरपत्य, स्वामित्व, भर्तृत्व, महत्तरकत्व, तेभञ्ज आज्ञेश्वर सेनापत्यना रूपमा शासन करते। तेभनी परिपालना करते, सतत निरवच्छिन्न रूपथो अभिनीत थता नाट्य ना गीतोनी साथे-साथे पटु पुरुष वडे वगाडवाभां आवेसा त त्री, तलताल त्रुटि आदि रूप वाद्यत्रोनी तुमुल चित्ताकर्षक ध्वनि थो युक्त 'विडलाइं भोगभोगाईं—भुंजमाणे विहरइ' विपुल भोग भोगोने उपभोग करते। पोतानो समय भुजेथो पसार करते छेने। अहो 'अहत नाट्य गीतवाद्य' आदि पदमा वाद्यशब्द ने पूर्वनिपात अने "पटुप्रवादित" शब्दोने परनिपात आर्थ होवाथी थये छे. भगवाने न्यारे पोताना शरीरने परित्याग कये, 'तएणं तस्स ईसाणस्स देविदस्स देवरन्नो आसणं चलइ' ते समये आ देवेन्द्र देवराज अ ईशान भेन्द्रु आसन कम्पायमान थयु 'तएणं इसाणे जाव देवराया आसणं चलियं पासइ' तयारे ईशान देवे कम्पायमान थयेले आसन ने जेथु 'पासित्ता' जेधने तेले पोताना 'ओहिं पउंजइ' अधि ज्ञानने उपयुक्त थयु

દૃષ્ટ્વા અવધિં પ્રયુનક્તિ, 'પંડજિત્તા મયવં તિત્થયરં ઓહિણા આમોઇડ' પ્રયુજ્ય મગવન્તં તીર્થંકરમ્ અવધિના આમોગયતિ નિ ૧૧૮૮, 'આમોઇત્તા' આમોગ્ય નિગીક્ષ્ય શક્રેન્દ્રવત્ સકલપરિવારસમન્વિતોઽષ્ટાપદપર્વતે સમાગત્ય વન્દન નમસ્કારપૂર્વકં મગવન્તં પર્યુપાસ્તે એતદેવ સૂચયિતુમાહ-મૂલે 'જહા સવ્કે નિયગપરિવારેણ માણેયવ્વો જાવ પઞ્જુવામહ' इति 'एवं' एवम्-अनेन प्रकारेण 'सव्वे' सर्वे वैमानिका 'देविंदा' देवेन्द्राः 'जाव अच्चु-ए' यावदच्युतः-अच्युतपर्यन्ता 'णियगपरिवारेण' निजकपरिवारेण-स्व स्व परिवारेण सहिता 'माणेयव्वा' भणितव्याः । 'एव' एवम्-अनेन प्रकारेण-वैमानिकेन्द्रप्रकारेण 'जाव' यावत्-सर्वे यावच्छब्दोऽत्र सर्वार्थे न तु संग्रहार्थे, संग्राह्यपदाभावात्, 'भवनवासीणं इंदा' भवनवासिनाम् इन्द्राः-विंशतिरपि भवनवासीन्द्राः निज निज परिवारेण सहिता वक्तव्याः, तथा 'वाणमंतराणं' वानव्यन्तराणां-व्यन्तरजातीयानां देवानामपि 'सोलस' षोडश-षोडश संख्यका इन्द्रा कालादयो 'जोइसियाण दोणिण' ज्योतिष्कदेवानां चन्द्र-सूर्य द्वौ इन्द्रो नियगपरिवारेण जेयव्वा' निजनिजपरिवारेण सहिता वक्तव्याः, ननु

કો દેસા "પંડજિત્તા ઓહિં પંડજણ" દેસકર ઉસને અપને અવધિજ્ઞાન કો ઉપયુક્ત કિયા "પંડ-જિત્તા" ઉપયુક્ત કરકે ઉસને "મયવ તિત્થયરં ઓહિણા આમોઇડ" તીર્થંકર મગવાન્ કો ઉસ અવધિજ્ઞાન દ્વારા દેલા "આમોઇત્તા" દેસકર "જહાસવ્કે નિયગપરિવારેણ માણેયવ્વો જાવ પઞ્જુવામહ" વહ શક્રેન્દ્ર કી તરહ સકલ પરિવાર સહિત અષ્ટાપદ પર્વત પર આગયા ઓર વહા આકર કે ઉસને વન્દન નમસ્કાર પૂર્વક મગવાન્કી પર્યુપાસના કી "एवं सव्वे विं देविंदा जाव अच्चुए णियगपरिवारेण माणेयव्वा" इसी प्रकार से अच्युत देवलोक तक के समस्त इन्द्र अपने २ परिवार सहित अष्टापद पर्वत पर आये ऐसा कहना चाहिए, यहा यावत् शब्द सर्वार्थ में प्रयुक्त हुआ है संग्रहार्थ में नहीं क्योंकि यहा पर संग्राह्य पदों का अभाव है, "एव जाव भवनवासीणं इंदा वाणमंतराण सोलस" इसी तरह भवनवासियों के २० इन्द्र, व्यन्तरो के १६ कालादिक इन्द्र, और "जोइसियाणं दोणिण" ज्योतिष्कों के चन्द्र और सूर्य ये दो इन्द्र, "णियग परिवारा जेयव्वा" अपने २ परिवार सहित इस अष्टापद पर्वत पर ऐसा कहना चाहिये. यहाँ शका

'પંડજિત્તા' ઉપયુક્ત કરીને તેણે 'મયવં તિત્થયરં ઓહિણા આમોઇડ' તીર્થંકર મગવાનના તે અવધિજ્ઞાન વડે દર્શન કર્યા 'આમોઇત્તા' દર્શન કરીને તે 'જહા સવ્કે નિયગપરિવારેણ માણેયવ્વો જાવ પઞ્જુવામહ' શક્રેન્દ્રની જેમ સકલ પરિવાર સહિત અષ્ટાપદ પર્વત પર આવી ગયો અને ત્યાં આવીને તેણે વન્દન નમસ્કાર પૂર્વક મગવાનની પર્યુપાસના કરી 'एवं सव्वे देविंदा जाव अच्चुए णियगपरिवारेण माणेयव्वा' આજ પ્રમાણે અચ્યુત દેવ દોઢપર્યન્તના સંઘના ઈન્દ્રો પોત પોતાના પરિવાર સહિત અષ્ટાપદ પર્વત પર આવ્યા એમ કહેવું ભેદનો અહીં યાવતુ શબ્દ સર્વાર્થમાં પ્રયુક્ત થયેલ છે સંગ્રહાર્થમાં નહીં કેમકે અહીં સંગ્રહ કરેલા પદોના અભાવ છે 'एव जाव भवनवासीणं इंदा वाणमंतराणं सोलस' એજ પ્રમાણે ભવનવાસીયોના વીસ ઈન્દ્ર, વ્યતર દેવો ના ૧૬ સોળ કાળ વિગેરે ઈન્દ્ર અને 'जोइसियाणं दोणिण' જ્યોતિષકોના ચંદ્ર અને સૂર્ય એ એ ઈન્દ્ર 'णियगपरिवारा जेयव्वा' પોત પોતાના પરિવાર સાથે આ અષ્ટાપદ પર્વત પર આવ્યા, એમ કહેવું ભેદનો, અહીંયા એ જાતની

પ્રકાશિકા ટીકાદ્વિ.વક્ષસ્કાર સૂ.૪૭ મગવતઃ નિર્વાણાનન્તરમીશાનદેવકૃત્યનિરૂપણમ્ ૪૧૭

સ્થાનાઙ્ગાધાગમેષુ દ્વાત્રિંશત્સહ્યકા વ્યતરેન્દ્રા ઉક્તાઃ, ૬૬ તુ પોહશ કથમુચ્યન્તે : ૬૬
 ચેત્, આદિ—યદપિ વ્યતરેન્દ્રા દ્વાત્રિંશત્સહ્યકાઃ સન્તિ, પરન્તુ ન તે સર્વે ઋદ્ધિયાદિ
 સમ્પન્ના ભવન્તિ । તત્ર યે મહર્દિકાઃ કાલાદયઃ પ્રધાનવ્યતરેન્દ્રાસ્તે ૬૬ વિવક્ષિતાઃ, યે
 તુ અલ્પમહર્દિકા અણપન્નીન્દ્રાદયસ્તે ૬૬ ગૌણત્વાન્ન વિવક્ષિતાઃ તેષામવિવક્ષણે ન કાપિ
 વિપ્રતિપત્તિઃ કાર્યાઃ, યતો વિચિત્રા સૂત્રકૃતો શૈલી ભવતિ । અત એવોત્તમપુરુષપરિગ-
 નાયાં પ્રતિવાસુદેવાનામુત્તમપુરુષત્વેઽપિ ક્વચિત્ આગમે તત્પરિગણના ન કૃતા । યથા
 સમવાયાજ્ઞે ‘મરહેરવણ્ણ ણં વાસેણુ ઇગમેગાણુ ઓસપ્પિણીણુ ચડવણ્ણં ચડવણ્ણં ઉત્તમ-
 પુરિસા ઉપ્પજ્જિણુ વા, ઉપ્પજ્જિતિ વા, ઉપ્પજ્જિસ્સંતિ, ‘તં જહા—ચડવીસં તિત્થયરા વારસ
 ચક્કવટ્ટી નવ વલ્લદેવા નવ વાસુદેવા’ છાયા—મરતૈરવતયોઃ સ્વલ્લ વર્ષયોઃ એકૈકસ્યામુત્ત-
 મપુરુષપરિગણના ન કૃતા ।

ऐसी की जा सकती है कि स्थानाङ्ग आदि सूत्रों में ३२ व्यन्तरो के इन्द्र कहे गये हैं फिर यहा
 पर १६ ही इनके इन्द्र क्यों कहे गये है ? सो इसका समाधान ऐसा है कि यद्यपि व्यन्तरेन्द्र
 ३२ ही कहे गये हैं परन्तु यहां जो १६ प्रकट किये गये हैं—वे यह बतलाते हैं कि व्यन्तरो के
 ३२ इन्द्र सब समान ऋद्धि आदि वाले नहीं है किन्तु कालादिक १६ इन्द्र ही महान् ऋद्धिवाले
 हैं इसलिये ये प्रधान व्यन्तरेन्द्र हैं और इसी कारण इन्हें यहां विवक्षित किया गया है. अल्प-
 ऋद्धि वाले अणपन्नीन्द्रादिकों को नहीं विवक्षित किया गया है. उन्हें तो गौण ही रक्खा गया है.
 इसलिये इस प्रकार के कथन में कोई विप्रति पत्ति जैसी बात नहीं समझनी चाहिये क्योंकि सूत्रकारों
 की शैली विचित्र प्रकार की होती है, इसी का यह प्रभाव है कि जब उत्तम पुरुषों की परिग-
 णना की गई तो उसमें प्रतिवासुदेव को उत्तम पुरुष होने पर भी किसी २ आगम में परिगणना
 नहीं की गई है, जैसा कि समवायाङ्ग में “मरहेरवण्णं णं वासेणु एगमेगाणु ओसप्पिणीणु चडवण्णं
 चडवण्णं उत्तमपुरिसा उप्पज्जिणुवा उप्पज्जिति वा, उप्पज्जिस्संति वा तं जहा—चडवीसं तित्थयरा,

શકા કદી શકાય કે સ્થાનાંગ વિગેરે સૂત્રોમાં વ્યતરેન્દ્રોના ૩૨ અત્રીસ ઇન્દ્ર કહેવામાં
 આવેલ છે તો પછી અહીં તેના ૧૬ સોળજ ઇન્દ્ર કેમ કહેવા છે ? આશંકાતું સમાધાન
 એવું છે કે—જો કે વ્યતરેન્દ્રોની સંખ્યા ૩૨ જ છે પરંતુ અહીં જે ૧૬ પ્રકટ કરવા-
 માં આવ્યા છે તે આમ બતાવે છે કે વ્યતરેન્દ્રોના ૩૨ ઇન્દ્રો સર્વ સમાન ઋદ્ધિ આદિ થી
 શુદ્ધ નથી પણ કાલાદિક ૧૬ ઇન્દ્રો જ મહાન ઋદ્ધિવાળા છે એથી એઓ પ્રધાન વ્યત-
 રેન્દ્રો છે અને એથી જ એમને અહીં ઉલ્લેખ કરવામાં આવ્યો છે. અલ્પ ઋદ્ધિવાળા
 અણપન્નીન્દ્રાદિકોને અહીં ઉલ્લેખ કરવામાં આવ્યો નથી તેમજ સ્થાન ગૌણ જ માન-
 વમાં આવ્યું છે એથી આ બાતના કથનમાં કોઈ વિપ્રતિપત્તિ જેવી વાત સમજવી યોગ્ય
 નથી, કેમકે સૂત્રકારોની શૈલી વિચિત્ર પ્રકારની હોય છે. એનોજ એ પ્રભાવ છે, કે જ્યારે
 ઉત્તમ પુરુષોની પરિગણના કરવામાં આવી તો તેમાં પ્રતિવાસુદેવ ઉત્તમ પુરુષ હોવા
 છતાં કોઈ આગમમાં તે પ્રમાણે તેની પરિગણના કરવામાં આવી નથી. જેમ કે ‘સમવા-
 યાજ્ઞ’ માં “મરહેરવણ્ણ ણં વાસેણુ ઇગમેગાણુ ઓસપ્પિણીણુ ચડવણ્ણં ચડવણ્ણં
 પુરિસા ઉપ્પજ્જિણુ વા ઉપ્પજ્જિતિ વા, ઉપ્પજ્જિસ્સંતિ વા તં જહા— ચીસં તિત્થયરા

र्षिण्यां चतुष्पञ्चाशत् चतुष्पञ्चाशत् उत्तमपुरुषाः उदपद्यन्त वा, उत्पद्यन्ते वा, उत्पत्स्यन्ते वा, तद्यथा चतुर्विंशतिस्तोत्र्यकराः, द्वादश चक्रवर्तिनो नव बलदेवा नव वासुदेवा इत्यत्र प्रतिवासुदेवा उत्तमपुरुषत्वेन न संगृहीता इति । तथा 'जोइसियाणं दोणिण' ज्योतिष्काणां द्वौ इन्द्रौ=चन्द्र सूर्यौ, चन्द्रसूर्याविति जात्याश्रयेण बोध्यम्, व्यक्त्याश्रयेण तु ते असंख्याताः एते भवनवासिनां व्यन्तराणां ज्योतिष्काणां च इन्द्रा 'णियगपरिवारा' निजकपरिवाराः स्व स्व परिवारेण सहिता 'जेयव्वा' नेतव्याः—भणितव्याः । यथा स्वपरिवारेण सहितः शक्रः समागतस्तथैव सर्वे इन्द्राः स्व स्व परिवारेण सहिताः समागत्य सविधि भगवन्तं प्रणम्य नाति दूरे नाति निकटे कृताञ्जलयः साश्रुनयना स्थिता इति ॥सू० ४७॥

इत्थं चतुष्पष्टाविन्द्रेषु समागतेषु शक्रो देवेन्द्रो यत्कृतवांस्तदाह—

मूलम्—तए णं सक्के देविंदे देवराया बहवे भवणवइवाणमंतर-
जोइसवेमणिए देवे एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! णंदण-
वणाओ सरसाइं गोसीसवरचंदणकट्टाइं साहरह, साहरित्ता तओ चिइगा-
ओ रएह, एगं भगवओ तित्थयरस्स, एगं गणहराणं एगं अवसेसाणं

वारस चक्रवट्टी, नव बलदेवा, नव वासुदेवा" इस पाठ में प्रतिवासुदेव उत्तमपुरुषरूप से परिगणित नहीं किये गये हैं. ज्योतिष्क देवों के जो चन्द्र और सूर्य ऐसे दो इन्द्र कहे गये हैं वे जाति के आश्रयण से कहे गये हैं—नहीं तो वैसे तो ये व्यक्ति की अपेक्षा असंख्यात हैं । इन भवनवासियों के, व्यन्तरो के और ज्योतिष्कों के इन्द्र अपने २ परिवार से सहित होकर यहाँ आये ऐसा कह लेना चाहिये, जिस प्रकार अपने परिवार से युक्त होकर शक्र आया उसी प्रकार से समस्त इन्द्र भी अपने २ परिवार सहित होकर आये और वे सब के सब सविधि भगवान् को नमस्कार कर न उनके अति समीप बैठे और न उन से अति दूर ही बैठे. किन्तु यथोचित स्थान पर आकर बैठे उस समय उनके दोनों हाथ भक्ति के वश से अंजलिरूप में जुड़े हुए थे एवं आँखों में उन सब की शोक के अश्रु भरे हुए थे ॥४७॥

वारस चक्रवट्टी, नव बलदेवा, नव वासुदेवा" आ पाठमां प्रतिवासुदेवो उत्तमपुरुष इत्यर्थी परिगणित करवाभा आब्या नथी. ज्योतिष्क देवाना जे चन्द्र अने सूर्य जेवा जे इन्द्रो कहेवाभा आवेल छे ते जतिना आश्रयथी कहेवाभा आवेल छे. आम तो ते व्यक्तितनी अपेक्षा जे असंख्यात छे. जे भवनवासीजोना, व्यन्तराना अने ज्योतिष्काना इन्द्रो पोतपोताना परिवारानी साथे अने आब्या, जेपु' कहेपु' जेछजो. जेभ पोताना परिवारथी संयुक्त थधने शक आब्या ते प्रमाणे जे सर्वे इन्द्रो पणु पोत-पोताना परिवारथी संयुक्त थधने आब्या अने तेजो. सर्वे सविधि भगवानने नमन करीने जेकहम तेमनी पोसे पणु नहि तेम तेमनाथी वधारे इर पणु नहि आ प्रमाणे योग्य स्थाने जेसी गया ते.सभये तेमना. जन्ने छथी. प्रकृतवश अंजलि रूपे संयुक्त छता तेमनी आजोभाथी अश्रुधाराजो प्रवाहित थह रही छती. ॥४७॥

पिण्यां चतुष्पञ्चाशत् चतुष्पञ्चाशत् उत्तमपुरुषाः उदपद्यन्ते वा, उत्पद्यन्ते वा, उत्पत्स्यन्ते वा, तद्यथा चतुर्विंशतिस्तीर्थकराः, द्वादश चक्रवर्तिनो नव बलदेवा नव वासुदेवा इत्यत्र प्रतिवासुदेवा उत्तमपुरुषत्वेन न संगृहीता इति । तथा 'जोइसियाणं दोणिण' ज्योतिष्काणां द्वौ इन्द्रौ=चन्द्र सूर्यौ, चन्द्रसूर्याविति जात्याश्रयेण बोध्यम्, व्यक्त्याश्रयेण तु ते असंख्याताः एते भवनवासिनां व्यन्तराणां ज्योतिष्काणां च इन्द्रा 'णियग्रपरिवारा' निजकपरिवाराः स्व स्व परिवारेण सहिता 'णेयव्या' नेतव्याः—भणितव्याः । यथा स्वपरिवारेण सहितः शक्रः समागतस्तथैव सर्वे इन्द्राः स्व स्व परिवारेण सहिताः समागत्य सविधि भगवन्तं प्रणम्य नाति दूरे नाति निकटे कृताञ्जलयः साश्रुनयना स्थिता इति ॥सू० ४७॥

इत्थं चतुष्पष्टाविन्द्रेषु समागतेषु शक्रो देवेन्द्रो यत्कृतवांस्तदाह—

मूलम्—तए णं सक्के देविदे देवराया बहवे भवणवइवाणमंतर-
जोइसवेमणिए देवे एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! णंदण-
वणाओ सरसाइं गोसीसवरचंदणकट्टाइं साहरह, साहरित्ता तओ चिइगा-
ओ रएह, एगं भगवओ तित्थयरस्स, एगं गणहराणं एगं अवसेसाणं

वारस चक्रवर्दी, नव बलदेवा, नव वासुदेवा” इस पाठ में प्रतिवासुदेव उत्तमपुरुषरूप से परिगणित नहीं किये गये हैं. ज्योतिष्क देवो के जो चन्द्र और सूर्य ऐसे दो इन्द्र कहे गये हैं वे जाति के आश्रयण से कहे गये हैं—नहीं तो वैसे तो ये व्यक्ति की अपेक्षा असंख्यात है । इन भवनवासियों के, व्यन्तरों के और ज्योतिष्को के इन्द्र अपने २ परिवार से सहित होकर यहां आये ऐसा कह लेना चाहिये, जिस प्रकार अपने परिवार से युक्त होकर शक्र आया उसी प्रकार से समस्त इन्द्र भी अपने २ परिवार सहित होकर आये और वे सब के सब सविधि भगवान् को नमस्कार कर न उनके अति समीप बैठे और न उन से अति दूर ही बैठे. किन्तु यथोचित स्थान पर आकर बैठे उस समय उनके दोनो हाथ भक्ति के वश से अजलिरूप में जुड़े हुए थे एवं आँखों में उन सब की शोक के अश्रु भरे हुए थे ॥४७॥

वारस चक्रवर्दी, नव बलदेवा, नव वासुदेवा” आ पाठमां प्रतिवासुदेवा उत्तम पुरुष इत्यथी परिगणित करवामा आव्या नथी ज्योतिष्क देवाना जे चन्द्र अने सूर्य जेवा जे धन्द्री कहेवामा आवेत्त छे ते जातिना आश्रयथी कहेवामा आवेत्त छे. आभ तो ते व्यक्तितनी अपेक्षा जे असंख्यात छे. जे भवनवासीजोना, व्यन्तराना अने ज्योतिष्काना धन्द्री पोतपोताना परिवाराना साथे अत्रे आव्या, जेपुं कहेपुं जेछजे. जेभ पोताना परिवारथी स युक्त थधने शक आव्या ते प्रमाणे जे सर्वे धन्द्री पण्य पोत-पोताना परिवारथी स युक्त थधने आव्या अने तेजो-सर्वे सविधि भगवानने नमन करीने जेकहम तेमनी पोसे पण्य नहि तेम तेमनाथी वधाहे हर पण्य नहि आ प्रमाणे योग्य स्थाने जेसी गया तो सभये तेमना, जन्ने दाथे। भक्तिवश, अजलि इये स युक्त छेता तेमनी आजोमाथी अश्रुधारजो प्रवाहित थध रही छती. ॥४७॥

अणगाराणं । तएणं ते भवणवइ जाव वेमोणिया देवा णंदणवणाओ सरसाइं गोसीसवरचंदणकट्ठाइं साहरंति, साहरित्ता तओ चिइगाओ रंति—
एगं भगवओ तित्थयरस्स, एगं गणहराणं, एगं अवसेसाणं अणगाराणं ।
तएणं से सक्के देविदे देवराया अभिओगे देवे सहावेइ, सहावित्ता
एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! खीरोदगसमुद्दाओ खीरोदगं
साहरह । तएणं ते अभिओगा देवा खीरोदगं साहरंति ॥ सू० ४८ ॥

छाया—ततः खलु शक्रो देवेन्द्रो देवराजो बहून् भवनपतिव्यन्तरज्योतिषवैमानि-
कान् देवान् पद्मवादीत्—क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः नन्दनवनात् सरसानि गोशीर्षवरचन्दन-
काष्ठानि समाहरत, समाहृत्य तिस्रः चितिका रचयत, एकां भगवतस्तीर्थकरस्य, एकां
गणधरस्य, एकाम् अवशेषाणाम् अनगाराणाम् । ततः खलु ते भवनपति यावद् वैमानिका
देवा नन्दनवनात् सरसानि गोशीर्षवरचन्दनकाष्ठानि 'समाहरन्ति, समाहृत्य तिस्रः चितिका
रचयन्ति—एकां भगवतस्तीर्थकरस्य, एकां गणधराणाम्, एकाम् अवशेषाणां अनगाराणाम् ।
ततः खलु स ते देवेन्द्रो देवराज आभियोग्यान् देवान् शब्दयति, शब्दयित्वा पद्मवादीत्
क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः ! क्षीरोदकसमुद्रात् क्षीरोदकं समाहरत । ततः खलु ते आभियोग्या
देवाः क्षीरोदकसमुद्रात् क्षीरोदकं समाहरन्ति ॥४८॥

टीका—‘तए णं से सक्के’ इत्यादि । ‘तए णं’ ततः=चतुष्पष्टीन्द्रसमागमनानन्तरं
खलु ‘सक्के देविदे देवराया बहवे भवणवइ वाणमंतर जोइसवेमाणिए’ शक्रो देवेन्द्रो
देवराजः बहून् भवनपतिव्यन्तरज्योतिषवैमानिकान् चतुर्विधान् ‘देवे’ देवान् ‘एवं’ एवं
वक्ष्यमाणप्रकारेण—‘वयासी’ अवादीत्=उक्तवान् ‘खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया !’ क्षिप्र-
मेव=शीघ्रमेव भो देवानुप्रियाः ! यूय ‘णंदणवणाओ सरसाइं’ नन्दनवनात् सरसानि=स्नि-

इस प्रकार ६४ इन्द्रों के उपस्थित हो जाने पर शक्र देवेन्द्र ने जो किया उसका कथन
इस प्रकार है—“तएणं सक्के देविदे देवराया बहवे” इत्यादि ।

टीकार्थ—इसके बाद “तएणं सक्के देविदे देवराया बहवे भवणवइ वाणमंतरजोइस वेमाणिए
देवे एवं वयासी” देवेन्द्र देवराज शक्र ने उन उपस्थित हुए समस्त ६४ परिवार सहित भवनपति,
वानव्यन्तर, ज्योतिष्क एवं वैमानिक देवेन्द्रोंसे ऐसा कहा—“खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ।
नंदणवणाओ सरसाइं गोसीसचंदणकट्ठाइं साहरह” भो देवानुप्रिय ! तुम सब शीघ्र ही नन्दन-

आ प्रभाषे ६४ इन्द्रो न्यारे उपस्थित थई गया त्यारे शक्र देवेन्द्रे ने कथुं तेनुं
कथन आ प्रभाषे छे —‘तए ण सक्के देविदे देवराया बहवे’—इत्यादि सूत्र ॥४८॥

टीकार्थ—त्यार आह ‘तए ण सक्के देविदे देवराया बहवे भवणवइवाणमंतर जोइसिय
वेमाणिए देवे एवं वयासी’ देवेन्द्र देवराज शक्र ते उपस्थित थयेला समस्त-६४, परिवार
सहित भवनपतिओ, वनतरे। न्यातिष्के। तेभन वैमानिक देवेन्द्रोने. आ प्रभाषे कथुं
‘खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया नंदणवणाओ सरसाइं गोसीसचंदणकट्ठाइं साहरह’ छे देवा-

ग्धानि न तु रुक्षाणि, 'गोसीसवरचंदणकट्टाई' गोशीर्षवरचन्दनकाष्ठानि—गोशीर्षं= गोशीर्षं नाम्ना प्रसिद्धं यद्वरं=श्रेष्ठं चन्दनं तस्य काष्ठानि 'साहरह' समाहरत=समानयत 'साहरित्ता' समाहृत्य 'तओ चिइगाओ' तिस्र चितिकाः=चितात्रयं 'रएह' रचयत, तत्र 'एगं' एकां चितिकां 'भगवओ तित्थयरस्स' भगवतस्तीर्थकरस्य कृते रचयत, 'एगं' एकां चितिकां 'गणहरस्स' गणधराणां कृते, 'एगं' एकां च चितिकाम् 'अवसेसाण' अवशेषाणां तीर्थकरगणधरभिन्नानाम् 'अणगाराणं' अनगाराणां—साधूनां कृते रचयत। 'तए णं ते भवणवइ जाव वेमाणिया' ततः खलु ते भवनपति यावद् वैमानिकाः भवनपतिव्यन्तर ज्यौतिष वैमानिका 'देवा णदणवणाओ सरसाइ—गोसीसवरचंदणकट्टाई साहरंति' देवा नन्दनवनात् सरसानि गोशीर्षवरचन्दनकाष्ठानि समाहरन्ति, 'साहरित्ता' समाहृत्य 'तओ चिइगाओ रएंति' तिस्रः चितिकाः रचयन्ति। 'एगं भगवओ तित्थयरस्स' तत्रैकां चितिकां भगवतस्तीर्थकरस्य ऋषभदेव स्वामिनः कृते, 'एग गणहराणं' एकां चितिकां गणधराणां कृते, 'एगं अवसेसाणं—अणगाराणं' एकां च चितिकाम् अवशेषाणाम् अनगाराणां कृते रचयन्ति। 'तएणं से सक्के देविदे देवराया आभिथोगे' ततः खलु स शक्रो देवेन्द्रो देवराज अभियोग्यान्=किङ्करभूतान् 'देवे' देवान् 'सद्दावेइ' शब्दयति, 'सद्दा-वित्ता' शब्दयित्वा 'एवं' एवं—वक्ष्यमाणप्रकारेण 'वयासी' अवादीत्—उक्तवान् 'खिप्पामेव'

बनसे सरस गोशीर्षचन्दन की लकड़ियों को लाओ और "साहरित्ता" लाकरके "तओ चिइगाओ रएह" तीन चिताओं की रचना करो, इनमें "एगं भगवओ तित्थयरस्स" एक प्रभु तीर्थकर की, "एगं गणहरस्स" एक गणधर की और "एगं अवसेसाण अणगाराणं" एक अवशेष अनगारों की तब उन भवनपति से लेकर समस्त वैमानिक देवों ने नन्दन वन में जाकरके वहाँ से सरस गोशीर्षचन्दन की लकड़ियों को लेकर पूर्वोक्त तीन चिताओं की रचना की, एक भगवान् तीर्थ कर के लिये, दूसरी गणधरो के लिये और तीसरी इन दोनों से भिन्न शेष अनगारों के लिये "तएणं से सक्के देविदे देवराया आभिथोगे देवे सद्दावेइ" इसके बाद देवेन्द्र देवराजशक्र ने अभियोग्य जाति के देवों को बुलाया—"सद्दावित्ता एवं वयासी—" बुलाकर उसने ऐसा कहा

जुप्रिया. तमे सर्वं मणीने शीघ्र नन्दन वनमांथी सरस गोशीर्षचन्दनना लाकडाओ लावे। अने 'साहरित्ता' लावीने 'तओ चिइगाओ' त्रयुचित्ताओ। तैयार करे। 'एग भगवओ तित्थयरस्स' ओके प्रभु तीर्थकर भाटे 'एगं गणहरस्स' ओके गणधर भाटे अने 'एग अवसेसाण अण गाराण' ओके अवशेष अनगारे। भाटे. त्थार भाद ते भवनपतिओथी मांझीने सर्वं वैमानिक देवओ नन्दन वनमां जधने त्थीथी सरस गोशीर्ष चन्दनना लाकडाओ लावीने पूर्वोक्त त्रयु चित्ताओनी रचना करी ओके भगवान तीर्थकर भाटे, ओके गणधरे। भाटे अने ओके ओओ। अन्नेथी भिन्न शेष अनगारे। भाटे 'तएण से सक्के देविदे देवराया आभिथोगे देवे सद्दावेइ' त्थार भाद देवेन्द्र देवराज शक्रे आभिथोग्य जातिना देवोने ओलाथ्या 'सद्दावित्ता एवं' ओलावी ने तेभने आ प्रभाओ उछु—'खिप्पामेव ओ देवाणुप्पिया खिरोदगसंख-

शीघ्रमेव 'भो देवाणुप्पिया !' भो देवानुप्रियाः । यूयं 'खीरोदगसमुद्राओ' क्षीरोदक समुद्रात् 'खीरोदक' क्षीरोदकं 'साहरह' सम'हरत = समानयत 'तए णं से आभिओगा देवा' ततः खलु ते आभियोग्या देवाः क्षीरोदकसमुद्रात् 'खीरोदगं' क्षीरोदकं 'साहरंति' समाहरन्ति—समानयन्ति इति ॥४८॥

मूलम्—तए णं से सक्के देविदे देवराया तित्थगरसरीरगं खीरोदगेणं ण्हाणेइ ण्हाणित्ता सरसेणं गोसीसवरचंदणेणं अणुलिपइ,—अणुलिपित्ता हंसलक्खणं पडसाडयं णियंसेइ णियंसित्ता संव्वालंकारविभूसियं करेइ, तए णं से भवणवइ जाव वेमाणिया गणहरसरीरगाइं अणगारसरीरगाइंपि खीरोदगेणं ण्हावेति ण्हावित्ता सरसेणं गोसीसवरचंदणेणं अणुलिपति अणुलिपित्ता अहयोइं दिव्वाइं देवदूसजूयलाइं णियंसंति णियंसित्ता संव्वालंकारविभूसियोइं करेंति, तएणं से सक्के देविदे देवराया ते बहवे भवणवइ जाव वेमाणिए देवे एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! ईहामिग, उसम—तुरय जाव वणलयभत्तिचित्ताओ तओ सिबियाओ विउब्बेइ, एगं भगवओ तित्थयरस्स एगं गणहराणं एगं अवसेसाणं अणगाराणं, तएणं ते बहवे भवणवइ जाव वेमाणिया तओ सिबियाओ विउब्बंति, एगं भगवओ तित्थयरस्स एगं गणहराणं एगं अवसेसाणं अणगाराणं, तएणं से सक्के देविदे देवराया विमणे णिराणंदे अंसुपुण्ण-णयणे भगवओ तित्थयरस्स विणड्ड जम्मजरामरणस्स सरोरगं सीयं आरु हेइ आरुहित्ता चिइगाए ठवेइ, तएणं ते बहवे भवणवइ जाव वेमाणिया

“खिप्पमेव भो देवाणुप्पिया खीरोदगसमुद्राओ खीरोदगं साहरह” हे देवानुप्रियो ! तुम शीघ्र ही क्षीरोदक समुद्र पर जाओ और वहां से क्षीरोदक लेकर आओ इस प्रकार इन्द्र की आज्ञा सुनकर 'तएण ते आभिओगा देवा खीरोदगं साहर ति' आभियोग्य जाति के देव क्षीरोदक समुद्र पर गये और वहां से क्षीरोदक लेकर वापिस आगये ॥४८॥

हामो खीरोदगं साहरह' हे देवानुप्रिय, तमे शीघ्र क्षीरोदक समुद्र पर जाओ अने त्याथी क्षीरोदक लध आवो आ प्रभाणे धन्द्रनी आज्ञा साधणीने 'तएणं से आभिओगा देवा खीरोदगं साहरंति' ते सर्व आभियोग्य जातिना देवा क्षीरोदक समुद्र पर गया अने त्याथी क्षीरोदक लध ते पाछा आओ ॥४८॥

देवा गणहराणं अणगाराण्य विण्डु जम्मजरामरणाणं सरीरगाइं सीयं
आरुहेति आरुहित्ता चिइगाए ठवेति ॥सू० ४९॥

छाया—तत खलु स शक्रो देवेन्द्रो देवराजस्तीर्थकरशरीरकं क्षीरोदकेन स्नपयति
स्नपयित्वा सरसेण गोशीर्षवरचन्दनेनानुलिम्पति अनुलिप्य हंसलक्षणं पटशाटकं निवासयति-
निवास्य सर्वालङ्कारविभूषितं करोति, तत खलु ते भवनपति यावद् वैमानिका गणधर
शरीरकाणि अनगारशरीरकाण्यपि क्षीरोदकेन स्नपयन्ति स्नपयित्वा सरसेन गोशीर्षवर-
चन्दनेनानुलिम्पन्ति, अनुलिप्य अहतानि दिव्यानि देवदूष्ययुगलानि निवासयन्ति निवास्य
सर्वालङ्कारविभूषितानि कुर्वन्ति, ततः खलु स शक्रो देवेन्द्रो देवराजस्तान् बहून् भवनपति
यावद् वैमानिकान् देवानेवमवदत्-क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः । ईहामृगवृषभ-तुरग-यावद्
वनलता भक्तिचित्रास्तिस्रः शिविका विकुरुत, (तत्र) एका भगवते तीर्थकराय एका गण-
धरेभ्यः एकामवशेषेभ्योऽनगारेभ्यः, तत खलु ते बहवः भवनपति यावद् वैमानिकास्तिस्रः
शिविकां विकुर्वन्ति, (तत्र) एकां भगवते तीर्थकराय, एका गणधरेभ्यः, एकामवशेषेभ्यो-
ऽनगारेभ्यः, ततः खलु स शक्रो देवेन्द्रो देवराजो विमना निरानन्दोऽश्रुपूर्णनयनो भगवत-
स्तीर्थकरस्य विनष्टजन्मजरामरणस्य शरीरकं शिविकायामारोपयति आरोप्य चित्तिकायां
स्थापयति, तत खलु ते बहवो भवनपति यावद् वैमानिका देवा गणधराणामनगाराणां च
विनष्टजन्मजरामरणानां शरीरकाणि छिदिकायामारोपयन्ति आरोप्य चित्तिकायां स्था-
पयन्ति ॥सू० ४९॥

टीका—‘तएणं’ इत्यादि । ततः—तदनन्तरं—क्षीरोदकसंहरणानन्तरं ‘से’ सः—
पूर्वोक्तः ‘सक्के’ शक्रः ‘देविदे’ देवेन्द्रः ‘देवराया’ देवराजः ‘तित्थयरसरीरगं’ तीर्थकर
शरीरकं—जिनकलेवरं ‘खीरोदगेणं’ क्षीरोदकेन—क्षीरसागरानीतजलेन ‘ण्णाणेइ’ स्नपयति—
स्नापितं करोति ‘ण्हाणित्ता’ स्नपयित्वा ‘सरसेणं’ सरसेन—सुगन्धवन्धुरेण ‘गोसीसवर-
चन्दणेणं’ गोशीर्षवरचन्दनेन—देववृक्ष—सम्भवगोशीर्षाख्योत्तम चन्दनेन ‘अणुलिंविइ’ अनु-
लिम्पति—अनुलिप्तं करोति ‘अणुलिपित्ता’ अनुलिप्य ‘हंसलक्खणं’ हंसलक्षणं—हंसवच्छे-
व

अथ क्षीरोदक आजाने के बाद शक्र की कृति का वर्णन करते हैं—तएणं से सक्के
देविदे देवराया” इत्यादि ।

टीकाथ—“तए ण से सक्के देविदे देवराया तित्थगरसरीरगं खीरोदगेणं ण्हाणेइ”
इसके बाद देवेन्द्र देवराज शक्र ने तीर्थकर के शरीर को उस क्षीरोदक से स्नान कराया और
‘ण्हाणित्ता’ स्नान करा करके फिर उसे ‘सरसेण गोसीसचन्दणेणं अणुलिंविइ’ गोशीर्ष नाम के श्रेष्ठ

क्षीरिहक वध आख्या आह शक्रेनी कृतिनुं वधुं न करे छे—

‘तएण से सक्के देविदे देवराया’—॥इत्यादि—सूत्र ॥४९॥

शब्दार्थ—“तए ण से सक्के देविदे देवराया तित्थगरसरीरगं खीरोदगेणं ण्हाणेइ”
त्यादिपक्षी देवेन्द्र देवराज शक्र तीर्थकर ना शरीरने ते क्षीरिहकथी स्नानकराव्युं अने ‘
वित्ता’ स्नान करावी तेने ‘सरसेण गोसीसचन्दणेणं अणुलिपिइ’ गोशीर्षनामना श्रेष्ठ व्यक्त्ति

तवर्णं 'पडसाडयं' पटशाटकं-शाटकवस्त्र 'णियंसेइ' निवासयति-परिधापयति 'णियसित्ता' निवास्य-परिधाय 'सन्वालंकारविभूसिय' सर्वाभरणसमलङ्कृतं 'करेइ' करोति 'तएणं' ततः-तदनन्तरं भगवच्छरीरस्य शक्रकर्तृक सर्वालङ्कारविभूषितोत्तरणानन्तरम् खलु 'ते' ते 'भवणवइ जाव वेमाणिया' भवनपति यावद् वैमानिकाः भवनपति वाणमंतरं ज्योतिष्क वैमानिका देवा 'गणहरसरीरगाइ' गणधर शरीरकाणि गणधरकलेवराणि 'अणगार सरीरगाइ' अनगारशरीरकाणि अनगाराः साधवस्तच्छरीरकाणि तत्कलेवराणि 'खीरोदगेण' क्षीरोदकेन-क्षीरसागरानीतजलेन 'ण्हावेति' स्नपयन्ति 'ण्हावित्ता' स्नपयित्वा 'सरसेण' सरसेन सुगन्धिना 'गोसीसचंदणेणं' गोशीर्षचन्दनेन 'अणुलिपति' अनुलिम्पन्ति 'अणुलिपित्ता' अनुलिप्य 'अहयाइ' अहतानि-अखण्डितानि 'दिव्वाइ' दिव्यानि-स्वर्गायाणि उत्तमानि 'देवदूसज्जुयलाइ' देवदूष्ययुगलानि देवपरिधेयवस्त्रद्वयानि, इह बहुवचन प्रत्येकाणि गणधरानगारशरीराण्यपेक्ष्य 'णियंसति' निवासयन्ति परिधापयन्ति 'णियंसित्ता' निवास्य परिधाय 'सन्वालंकारविभूसियाइ' सर्वालङ्कारविभूषितानि सर्वाभरणाऽलङ्कृतानि 'करेति' कुर्वन्ति तएणं' ततः तदनन्तरं खलु गणधरानगारशरीराणां भवनपत्यादिकर्तृ-

चन्दन से अनुलिप्त किया "अणुलिपित्ता" अनुलिप्त करने के बाद फिर "हंस लक्ष्मणं पडसाडयं 'णियंसेइ'। उसे हंस के जैसे श्वेतवर्णवाले शाटक वस्त्र से सुसज्जित किया, "णियसित्ता" सुसज्जित करने के बाद फिर उसे "सन्वालंकारविभूसियं करेइ" समस्त अलंकारों से विभूषित किया, भगवान् के शरीर के विभूषित किये जाने के बाद "तए णं से भवणवइ जाव वेमाणिया गणहर सरीरगाइ अणगार सरीरगाइपि खीरोदगेणं ण्हावेति ण्हावित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं 'अणुलिपित्ता' अहयाइ दिव्वाइ देवदूसज्जुयलाइ णियंसति णियंसित्ता सन्वालंकारविभूसियाइ करे-ति" भवनपति से लेकर वैमानिक तक के देवों ने गणधर के शरीरों को और अनगार के शरीरों को भी क्षीरोदक से स्नानयुक्त किया, स्नानयुक्त करके फिर सरस गोशीर्षक नामक श्रेष्ठचन्दन से अनुलिप्त किया, अनुलिप्त करके अहत दिव्य देवदूष्ययुगल उन शरीरों पर धरे-पहिराये, देवदूष्य युगलों के पहिराने के बाद फिर उन्होंने उन शरीरों को समस्त प्रकार के अलंकारों से

ना देप कथे 'अणुलिपित्ता' अहनने देप करीने तेने 'हंसलक्ष्मणपडसाडयं णियंसेइ' हंसना जेवा सइत पणुवाण वस्त्रथी सुसज्जित कथु 'णियंसित्ता' सुसज्जित करीने तेने 'सन्वालंकारविभूसियं करेइ' सधणा अलंकारेथी शोभायमान कथु भगवानना शरीरने विभूषित कथे पछी 'तएणं से भवणवइ जाव वेमाणिया गणहरसरीरगाइ अणगार सरीरगाइ खीरोदगेणं ण्हावेति ण्हावित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं अणुलिपित्ता अहयाइ दिव्वाइ देवदूसज्जुयलाइ णियंसति णियंसित्ता सन्वालंकारविभूसियाइ करेति' पछी भवन प्रतिथी आर कोने वैमानिक पयन्त ना देवोओ गणधरना शरीरने आने अनगारनेना शरीरने पणु क्षीरोदकथी स्नान कथायु ते सर्वने स्नान करावीने पछी सरस गोशीर्ष नाममाहितम अहनथी देपकथे देपकरीने देवदूष्य युगल ते शरीरपर पडसाव्या, देवदूष्य युगल वस्त्रोधारण कराव्या पछी तेओओ ओ शरीरने सधणा प्रकाशना अलंकारेथी

क लिङ्करणानन्तरं 'से' सः-पूर्वोक्तः अलङ्कृतजिनकलेवरः 'सक्के' शक्रः 'देविंदे' देवेन्द्रः 'देवराया' देवराजः 'ते' तान्-अलङ्कृतगणधरानगारकलेवरान् 'वहवे' वहून्-अनेकान् 'भवणवइ जाव वेमाणिए' भवनपति यावद् वैमानिकान् भवनपतिवाणमन्तरज्यो-तिष्कवैमानिकान् 'देवे' देवान् 'एव' 'एवम्' वक्ष्यमाण वचनम् 'वयासी' अवदत्-अववीत् 'खिप्पामेव' क्षिप्रमेव शीघ्रमेव 'भो देवानुप्पिया !' भो देवानुप्रियाः ? हे महानुभावाः । 'ईहामिग उसभ तुरग जाव वणलयमत्तिचित्ताओ' ईहामृगवृषभ तुरगयावदनलता भक्ति-चित्राः-ईहामृग वृषभ तुरगनस्कामरविहग व्यालक किन्नररुररुशरभचमरकुञ्जरवनलता भक्ति-चित्राः-तत्र-ईहामृगः वृकाः, वृषभा-वलीवर्दाः, तुरगाः, -अश्वाः नराः-मनुष्याः, मकराः-ग्राहाः, विहगाः-पक्षिणः, व्यालकाः-सर्पाः किन्नराः-व्यन्तरदेवाः, रुखः-मृगाः, शरभाः अष्टापदाः, चमरा-चमर गावः कुञ्जराः-हस्तिनः, वनलताः-प्रसिद्धाः, एतासां या भक्तयः रचनाविशेषाः, तामिश्चित्राः-अदृश्याः 'तओ' तिष्ठः त्रिसंख्याः 'सिवियाओ' शिविकाः याप्ययानानि 'पालखी' इति प्रसिद्धाः 'विउव्वह' विकुरुत वैक्रियशक्तयोत्पादयत तत्र 'एग' एकां-शिविकां 'भगवओ' भगवते 'तित्थगरस्स' तीर्थकराय-जिनाय 'एगं' एकाम् अपरां द्वितीयां शिविकाम् 'गणहराणं' गणधरेभ्यः गणिभ्यः 'एग' एकाम् अन्यान्

विमूर्षित किया, "तएणं से सक्के देविंदे देवराया ते वहवे भवणवइ जाव वेमाणिए देवे एवं वयासी-" इसके बाद उस देवेन्द्र देवराज शक्र ने उन समस्त भवनपति देवों से लेकर यावत् वैमानिक देवों से इस प्रकार कहा-"खिप्पामेव भो देवानुप्पिया । ईहामिग उसभ तुरग जाव वणलय मत्तिचित्ताओ तओ सिवियाओ विउव्वह" हे देवानुप्रियो ! आपलोग ईहामृग, वृषभ, तुरग यावत् वनलताओं के चित्रों से चित्रित तीन शिविकाओं की विकुर्वणा करो. इनमें एक भगवान् तीर्थकर के लिये और एक अवशेष अनगारों के लिये "तएणं ते वहवे भवणवइ जाव वेमाणिया तओ सिवियाओ विउव्वन्ति" इस प्रकार से इन्द्रप्रदत्त आज्ञा के अनुसार उन भवनपति देवों से लेकर वैमानिक तक के देवों ने तीन शिविकाओं की विकुर्वणा की "एगं भगवओ तित्थगरस्स" इनमें एक तीर्थकर के लिये की गई, "एगं गणहराणं" एक गणधरों के

अलङ्कृत कथा. 'तएणं से सक्के देविंदे देवराया ते वहवे भवणवइ जाव वेमाणिए देवे एवं वयासी' ते पछी ओ देवेन्द्र देवराज शक्र ओ सुवणा भवनपति देवो यावत् वैमानिक देवाने आ प्रभाणे कहु 'खिप्पामेव भो देवानुप्पिया ईहामिगउसभतुरग जाव वणलय मत्तिचित्ताओ सिवियाओ विउव्वह' हे देवानुप्रियो आप धडाभुग, वृषभ, तुरग यावत् वनलताओ ना चित्रोथी चित्रित ओवी त्रयु शिविकाओ अर्थात् पालखीओनी विकुर्वणु। कशवे ते पछी ओक भगवान् तीर्थकरने माटे ओक गणधरे माटे अने ओक पाक्षीना अनगारे माटे 'तएणं ते वहवे भवणवइ जाव वेमाणिया तओ सिवियाओ विउव्वन्ति' आ प्रभाणे धरे आपेल आज्ञानुसार ओ भवनपति देवोथी लधने वैमानिक पर्यन्तना देवोओ त्रयु पालखी-ओना विकुर्वणु करी. 'एगं भगवओ तित्थगरस्स' ते पछी ओक भगवान् तीर्थकरने माटे अनावेसइता. 'एगं गणहराणं' ओ गणधरे माटे 'एगं अइसेनागं भगवाराण' त्रीण

तृतीयां शिविकाम् अवसेसाणं अवशेषेभ्यः जिनगणधरातिरिक्तेभ्यः अणगाराणं अनगारेभ्यः
विकुरुतेति पूर्वणान्वयः 'तएणं' तत-तदन्तरं खलु शिविकात्रयविकरणार्थशक्राज्ञानन्तरम्
'ते' ते शक्राज्ञाताः 'बहवे' बहवः 'भवणवइ जाव वेमाणिया' भवनपति याव-
द्वैमानिकाः भवनपतिज्योतिष्कव्यन्तरवैमानिकाः देवाः 'नओ' तिस्रः 'सिवियाओ'
शिविकाः 'विउव्वंति' विकुर्वन्ति, 'तएणं' ततः तदन्तरं खलु शिविकात्रयविकरणानन्तरम्
'से' सः 'सक्के' शक्रः 'देविंदे' देवेन्द्रः 'देवराया' देवराजः 'विमणे' विमनाः-विपण-
चित्तः 'णिराणंदे' निरानन्द आनन्दरहितः दुःखी 'अमुपुण्णणयणे' अश्रुपूर्णनयन वाष्पा-
कुलनेत्रः 'भगवओ' भगवत 'तित्थयरस्स' तीर्थकरस्य 'विणट्टजम्मजरामरणस्स' विनष्ट
जन्मजरामरणस्य जन्मवार्धक्यमृत्युरहितस्य भगवत इत्यनेन सम्बन्धः तस्य 'सरीरगं'
शरीरकं-कलेवरं 'सीअ' शिविकायाम् अत्र मूले सप्तम्यर्थे द्वितीया प्राकृतजन्या 'आरुहेइ'
आरोपयति-आरुढं करोति 'आरुहित्ता' आरोप्य-आरुढं कृत्वा भगवत्कलेवर 'चिइगाए'
चित्तिकायाम्-चितायाम् 'ठवेइ' स्थापयति 'तएणं'-ततः-तदनन्तरं भगवच्छरीरस्य
चितायां स्थापनानन्तरम् 'ते' ते-वैक्रियशक्त्योत्पादितशिविकात्रयाः 'बहवे' बहवः
अनेके 'भवणवइ जाव वेमाणिया' भवनपति यावद्वैमानिकाः-भवनपतिज्योतिष्कव्यन्तर
वैमानिकाः 'देवा' देवाः 'गणहराणं' गणधराणां गणिनाम् 'अणगाराणं' अनगाराणाम् 'य'
च 'विणट्टजम्मजरामरणाणं' विनष्टजन्मजरामरणानां-जन्मवार्धक्यमृत्युरहितानां 'सरीर-
गाइ' शरीरकाणि 'सीयं' शिविकायां द्वितीयायां तृतीयायां च 'आरुहेति' आरोपयन्ति-

लिये की गई और "एग अवसेसाणं अणगाराणं" एक शेष अनगारो के लिये की गई, इसके
बाद "तएणं से सक्के देविंदे देवराया विमणे णिराणंदे अंमुपुण्णणयणे भगवओ तित्थगरस्स
विणट्टजम्मजरामरणस्स सरीरगं सीयं आरुहेइ" उस देवेन्द्र देवराज शक्र ने विमनस्क और
निरानन्द होते हुए अश्रुपूर्णनयनों से भगवान् तीर्थकर के की जिन्होंने जन्म, जरा और मरण
को विनष्ट कर दिया है शरीर को शिविका में आरोपित किया, "आरुहित्ता" शिविका में
आरोपित करके फिर "चिइगाए ठवेइ" उसे उसने चिता में रखा, इसके अनन्तर "तएणं ते
बहवे भवणवइ जाव वेमाणिया देवा गणहराण अणगाराणय विणट्टजम्मजरामरणाण सरीरगाइ
सीयं आरुहेति" उन भवनपति देवों से लेकर वैमानिक तक के देवों ने गणधरों और अनगारों

એક બાકીના અનગારો માટે રચવામાં આવી તે પછી 'તપ ણં' સે સક્કે દેવિંદે દેવરાયા
વિમણે ણિરાણંદે અંમુપુણ્ણણયણે ભગવઓ તિત્થગરસ્સ વિણટ્ટજમ્મજરારમરણસ્સ સરીરગં
સીયં આરુહેइ' એ દેવેન્દ્ર દેવરાજ શક્ર વિમનસ્ક અને નિરાનંદ બની ને આશુઓથી
ભરેલા નેત્રો વડે ભગવાન તીર્થકર કે એઓએ જન્મ જરા અને મરણનો વિનાશ કરેલ છે
તેમના શરીરને પાલખી માં પધરાવ્યું: 'આરુહિત્તા' પાલખી માં પધરાવી ને તે પછી 'ચિइगाए
ठवेइ' તેને શક્રે ચિતા પર મુક્યું ત્યારબાદ 'तएण ते बहवे भवणवइ जाव वेमाणिया देवा
गणहराण अणगाराणय विणट्टजम्मजरामरणाण सरीरगाइ सीयं आरुहेति' ते भवनपति

આરુઢાનિ કુર્વન્તિ 'આરુહિતા' આરોપ્ય=આરુઢીકૃત્ય 'ચિડગા' ચિતિકાયાં ચિતાયા 'ઠવેતિ' સ્થાપયન્તિ-નિવેશયન્તિ ॥૪૯॥

અથ ચિતાયાં ભગવદાદિકલેખસ્થાપનાનન્તરં શક્રાદિકૃતિમાહ—

મૂલમ્—તણં સે સક્કે દેવિદે દેવરાયા અગ્ગિકુમારે દેવે સદ્દાવેડ સદ્દાવિત્તા એવં વયાસી-ચિપ્પામેવ મો દેવાણુપ્પિયા તિત્થગરચિડગા એજાવ અણગારચિડગા એગણિકાયં વિઠવ્વહ વિઠવ્વિત્તા એયમાણત્તિયં પચ્ચપ્પિણહ, તણં તે અગ્ગિકુમારા દેવો વિમણા નિરાનંદા અંસુપુણ્ણ ણયણા તિત્થયરચિડગા એજાવ અણગારચિડગા એય અગણિકાયં વિઠવ્વંતિ તણં સે દેવિદે દેવરાયા વાઠકુમારે દેવે સદ્દાવેડ સદ્દાવિત્તા એવં વયાસી ચિપ્પામેવ મો દેવાણુપ્પિયા ! તિત્થયરચિડગા એજાવ અણગારચિડગા એય વાઠકકાયં વિઠવ્વહ વિઠવ્વિત્તા અગણિકાયં ઉજ્જાલેહ તિત્થયરસરીરગં ગણહરસરીરગાં અણગારસરીરગાં ચ જ્ઞામેહ તણં તે વાઠકુમારા દેવા વિમણા નિરાણંદા અંસુપુણ્ણ ણયણા તિત્થયરચિડગા એજાવ વિઠવ્વંતિ અગણિકાયં ઉજ્જાલેતિ તિત્થયરસરીરગં જાવ અણગારસરીરગાણિ ય જ્ઞામેતિ

કે કિ જિન્હોને જન્મ જરા ઓર મરણ કો સર્વથા વિનષ્ટ કર દિયા હૈ શરીરો કો જિવિકા મેં આરોપિત કિયા, ઓર “આરુહિતા” આરોપિત કરકે ફિર उन्होने “ચિડગા એવેતિ” उन गरीमों को चिता में रख दिया, ईहायुग—નામ વૃક કા હૈ, વૃષભ નામ બલીવર્દ કા હૈ, તુરગ નામ ઘોડેકા હૈ નર નામ મનુષ્ય કા હૈ, મકર નામ ગ્રાહ કા હૈ, વિહગ નામ પક્ષી કા હૈ, વ્યાલક નામ સર્પકા હૈ કિન્નર વ્યન્તરજાતિ કે દેવવિશેષો કા નામ હૈ, રુરુ નામ મૃગ કા હૈ, શરભ નામ અષ્ટાપદ કા હૈ, ચમર નામ ચમરી ગાય કા હૈ, કુલ્લર નામ હાથી કા હૈ જગલ કી લતાઓ કા નામ વનલતા હૈ ॥૪૯॥

દેવોથી માડી ને વૈમાનિક સુધીના દેવોએ કે જેમણે જન્મ જરા અને મરણ ને સર્વથા વિનષ્ટ કરી દીધા છે એવા ગણધર અને અનગારોના શરીરોને શિબિકામા આરોપિત કર્યા અને ‘આરુહિતા’ આરોપિત કરીને પછી તેમણે ‘ચિડગા એવેતિ’ શરીરોને ચિતા પર મૂકી દીધા, ઈહામૃત, વૃકનું નામ છે વૃષભ, બલીવર્દનું નામ છે. તુરગ, નામ ઘોડાનું છે નર, મનુષ્યનું નામ છે મકર, ગ્રાહનું નામ છે. વિહગ, પક્ષીનું નામ છે. વ્યાલક, સર્પનું નામ છે કિન્નર, વ્યન્તર જાતિના દેવ વિશેષનું નામ છે રુરુ, મૃગનું નામ છે શરભ, અષ્ટાપદનું નામ છે, ચમર, ચમરી ગાયનું નામ છે કુંજર, હાથીનું નામ છે વનલતા, જંગલી લતાઓ નું નામ છે. ॥ સૂત્ર ૪૬ ॥

तएणं से सक्के देविंदे देवराया ते वहवे भवणवइ जाव वेमाणिए देवे
 एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! तित्थयरचिइगाए जाव अण-
 गारचिइगाए अगुरुतुरुक्कघयमधुं च कुंभग्गसो य भारग्गसो य साह
 रह, तएणं ते भवणवइ जाव तित्थयर जाव भारग्गसो य साहरंति, तएणं
 से सक्के देविंदे देवराया मेहकुमारे देवे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी
 खिप्पामेव भा देवाणुप्पिया ! तित्थयर चिइगं जाव अणगारचिइगं च
 खीरोदगेणं णिव्वावेह, तएणं ते मेहकुमारा देवा तित्थयरचिइगं जाव
 णिव्वावेति, तएणं से सक्के देविंदे देवराया भगवओ तित्थयरस्स उवरिल्लं
 दाहिणं सकहं गेण्हइ ईसाणे देविंदे देवराया उवरिल्लं वामं सकहं गेण्हइ,
 चमरे असुरिंदे असुरराया हिड्डिल्लं दाहिणं सकहं गेण्हइ, बली वइरोयणिदे
 वइरोयणराया हिड्डिल्लं वामं सकहं गेण्हइ, अवसेसा भवणवइ जाव
 वेमाणिया देवा जहारिइं अवसेसाइं, अंगमंगाइं, केइ जिणभत्तीए केइ
 जीयमेयंति कट्ठु केइ धम्मोत्ति कट्ठु गेण्हंति सू० ॥५०॥

छाया—ततः खलु स शक्रो देवेन्द्रो देवराजोऽग्निकुमारान् देवान् शब्दयति शब्द-
 यित्वा पवमवदत् क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः ! तीर्थंकरचित्तिकायां यावदनगारचित्तिकाया-
 मग्निकायं विकुरुत, विकृत्य पतामाश्रसिकां प्रत्यर्पयत, ततः खलु तेऽग्निकुमारा देवा विम-
 नसो निरानन्दा अश्रुपूर्णनयनास्तीर्थंकरचित्तिकायां यावदनगारचित्तिकायां चाग्निकायं
 विकुर्वन्ति, ततः खलु स शक्रो देवेन्द्रो देवराजो वायुकुमारान् देवान् शब्दयति शब्दयित्वा
 पवमवदत् क्षिप्रमेव भो देवाणुप्रियाः ! तीर्थंकरचित्तिकायां यावदनगारचित्तिकायां च वायु-
 कुमारं विकुरुत विकृत्य अग्निकायमुज्ज्वलयत तीर्थंकर शरीरकं गणधरशरीरकाणि अनगार-
 शरीरकाणि च भ्रापयत, ततः खलु ते वायुकुमारा देवा विमनसो निरानन्दा अश्रुपूर्णनय-
 नास्तीर्थंकरचित्तिकायां यावत् विकुर्वन्ति अग्निकायमुज्ज्वलयन्ति तीर्थंकरशरीरक यावदन-
 गारशरीरकाणि च भ्रापयन्ति, ततः खलु स शक्रो देवेन्द्रो देवराजस्तान् बहून् भवनपति
 यावद् वैमानिकान् देवान् पवमवदत् क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः ! तीर्थंकरचित्तिकायां
 यावदनगारचित्तिकायामगुरुतुरुक्क घृतमधु च कुम्भाप्रशश्च माराप्रशश्च संहरत, ततः
 खलु ते भवनपति यावत् तीर्थंकर यावद् माराप्रशश्च संहरन्ति, ततः खलु स शक्रो
 देवेन्द्रो देवराजो मेघकुमारान् देवान् शब्दयति शब्दयित्वा पवमवदत् क्षिप्रमेव भो देवानु-
 प्रियाः ! तीर्थंकरचित्तिकां यावदनगारचित्तिकां च क्षीरोदकेन निर्वापयत, ततः खलु ते

આરુઢાનિ કુર્વન્તિ 'આરુહિતા' આરોપ્ય=આરુઢીકૃત્ય 'ચિદ્ગાપ' ચિત્તિકાયાં ચિતાયાં 'ઠવેતિ' સ્થાપયન્તિ-નિવેશયન્તિ ॥૬૦ ૪૯॥

અથ ચિતાયાં ભગવદાદિકલેખસ્થાપનાનન્તરં શક્રાદિકૃતિમાહ—

મૂલમ્—તણં સે સક્કે દેવિદે દેવરાયા અગ્ગિકુમારે દેવે સદ્દાવેદ સદ્દાવિત્તા એવં વયાસી—સ્વિપ્પામેવ મો દેવાણુપ્પિયા તિત્થગરચિદ્ગાપ જાવ અણગારચિદ્ગાપ અગ્ગણિકાયં વિઠ્ઠવ્વહ વિઠ્ઠવિત્તા એયમાણત્તિયં પચ્ચપ્પિણહ, તણં તે અગ્ગિકુમારા દેવો વિમણા નિરાનંદા અંસુપુણ્ણ ણયણા તિત્થયરચિદ્ગાપ જાવ અણગારચિદ્ગાપ ય અગ્ગણિકાયં વિઠ્ઠવંતિ તણં સે દેવિદે દેવરાયા વાઠકુમારે દેવે સદ્દાવેદ સદ્દાવિત્તા એવં વયાસી સ્વિપ્પામેવ મો દેવાણુપ્પિયા ! તિત્થયરચિદ્ગાપ જાવ અણગારચિદ્ગાપ ય વાઠકકાયાં વિઠ્ઠવ્વહ વિઠ્ઠવિત્તા અગ્ગણિકાયાં ઉજ્જાલેહ તિત્થયરસરીરગં ગણહરસરીરગાં અણગારસરીરગાં ચ જ્ઞામેહ તણં તે વાઠકુમારા દેવા વિમણા નિરાણંદા અંસુપુણ્ણ ણયણા તિત્થયરચિદ્ગાપ જાવ વિઠ્ઠવંતિ અગ્ગણિકાયાં ઉજ્જાલેતિ તિત્થયરસરીરગં જાવ અણગારસરીરગાણિ ય જ્ઞામેતિ

કે કિ ત્રિન્દ્રોને જન્મ જરા ઓર મરણ કો સર્વથા વિનષ્ટ કર દિયા હૈ શરીરો કો શિબિકા મેં આરોપિત કિયા, ઓર “આરુહિતા” આરોપિત કરકે ફિર ડન્દ્રોને “ચિદ્ગાપ ઠવેતિ” ડન શરીરો કો ચિતા મેં રક્ષ દિયા, ઈહામૃગ—નામ વૃક્ષ કા હૈ, વૃષભ નામ બલીવર્દ કા હૈ, તુરગ નામ ઘોડેકા હૈં નર નામ મનુષ્ય કા હૈ, મકર નામ ગ્રાહ કા હૈ, વિહગ નામ પક્ષી કા હૈ, વ્યાલક નામ સર્પકા હૈ કિન્નર વ્યન્તરજાતિ કે દેવવિશેષો કા નામ હૈ, રુરુ નામ મૃગ કા હૈં, શરભ નામ અષ્ટાપદ કા હૈ, ચમર નામ ચમરી ગાય કા હૈ, કુક્ષર નામ હાથી કા હૈ. જગલ કી લતાઓ કા નામ વનલતા હૈ ॥૪૯॥

દેવોથી માડી ને વૈમાનિક સુધીના દેવોએ કે જેમણે જન્મ જરા અને મરણ ને સર્વથા વિનષ્ટ કરી દીધા છે એવા ગણધર અને અનગારોના શરીરોને શિબિકામાં આરોપિત કર્યા અને ‘આરુહિતા’ આરોપિત કરીને પછી તેમણે ‘ચિદ્ગાપ ઠવેતિ’ શરીરોને ચિતા પર મૂકી દીધા, ઈહામૃગ, વૃક્ષ નામ છે વૃષભ, બલીવર્દ નામ છે તુરગ, નામ ઘોડાનું છે નર, મનુષ્યનું નામ છે મકર, ગ્રાહનું નામ છે. વિહગ, પક્ષીનું નામ છે. વ્યાલક, સર્પનું નામ છે કિન્નર, વ્યન્તર જાતિના દેવ વિશેષનું નામ છે રુરુ, મૃગનું નામ છે શરભ, અષ્ટાપદનું નામ છે, ચમર, ચમરી ગાયનું નામ છે કુક્ષર, હાથીનું નામ છે. વનલતા, જંગલી લતાઓ નું નામ છે. ॥ સૂત્ર ૪૬ ॥

तएणं से सक्के देविदे देवराया ते बहवे भवणवइ जाव वेमाणिए देवे
 एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! तित्थयरचिइगाए जाव अण-
 गारचिइगाए अगुरुतुरुक्कघयमधुं च कुंभग्गसो य भारग्गसो य साह
 रह, तएणं ते भवणवइ जाव तित्थयर जाव भारग्गसो य साहरंति, तएणं
 से सक्के देविदे देवराया मेहकुमारे देवे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी
 खिप्पामेव भा देवाणुप्पिया ! तित्थयरचिइगं जाव अणगारचिइगं च
 खीरोदगेणं णिव्वावेह, तएणं ते मेहकुमारा देवा तित्थयरचिइगं जाव
 णिव्वावेति, तएणं से सक्के देविदे देवराया भगवओ तित्थयरस्स उवरिल्लं
 दाहिणं सकहं गेण्हइ ईसाणे देविदे देवराया उवरिल्लं वामं सकहं गेण्हइ,
 चमरे असुरिदे असुरराया हिड्डिल्लं दाहिणं सकहं गेण्हइ, बली वइरोयणिदे
 वइरोयणराया हिड्डिल्लं वामं सकहं गेण्हइ, अवसेसा भवणवइ जाव
 वेमाणिया देवा जहारिहं अवसेसाइं, अंगमंगाइं, केइ जिणभत्तीए केइ
 जीयमेयंति कट्टु केइ धम्मोत्ति कट्टु गेण्हंति सू० ॥५०॥

छाया—ततः खलु स शक्रो देवेन्द्रो देवराजोऽग्निकुमारान् देवान् शब्दयति शब्द-
 यित्वा पवमवदत् क्षिप्रमेव भो देवाणुप्रियाः ! तीर्थकरचित्तिकायां यावदनगारचित्तिकाया-
 मग्निकायं विकुरुत, विकृत्य पतामाक्षसिकां प्रत्यर्पयत, ततः खलु तेऽग्निकुमारा देवा विम-
 नसो निरानन्दा अश्रुपूर्णनयनास्तीर्थकरचित्तिकायां यावदनगारचित्तिकायां चाग्निकायं
 विकुर्वन्ति, ततः खलु स शक्रो देवेन्द्रो देवराजो वायुकुमारान् देवान् शब्दयति शब्दयित्वा
 पवमवदत् क्षिप्रमेव भो देवाणुप्रिया ! तीर्थकरचित्तिकायां यावदनगारचित्तिकायां च वायु-
 कुमारं विकुरुत विकृत्य अग्निकायमुज्ज्वलयत तीर्थकर शरीरकं गणधरशरीरकाणि अनगार-
 शरीरकाणि च भ्रापयत, ततः खलु ते वाळकुमारा देवा विमनसो निरानन्दा अश्रुपूर्णनय-
 नास्तीर्थकरचित्तिकायां यावत् विकुर्वन्ति अग्निकायमुज्ज्वलयन्ति तीर्थकरशरीरकं यावदन-
 गारशरीरकाणि च भ्रापयन्ति, ततः खलु स शक्रो देवेन्द्रो देवराजस्तान् बहून् भवनपति
 यावद् वैमानिकान् देवान् पवमवदत् क्षिप्रमेव भो देवाणुप्रियाः ! तीर्थकरचित्तिकाया
 यावदनगारचित्तिकायामगुरुतुरुक्क घृतमधुं च कुम्भाग्रशश्च भाराग्रशश्च संहरत, ततः
 खलु ते भवनपति यावत् तीर्थकर यावद् भाराग्रशश्च संहरन्ति, ततः खलु स शक्रो
 देवेन्द्रो देवराजो मेहकुमारान् देवान् शब्दयति शब्दयित्वा पवमवदत् क्षिप्रमेव भो देवाणु-
 प्रियाः ! तीर्थकरचित्तिकां यावदनगारचित्तिकां च क्षीरोदकेन निर्वापयत, ततः खलु ते

मेघकुमारा देवस्तीर्थकरचित्तिकां यावन्निर्वापयन्ति, ततः खलु स देवेन्द्रो देवराजो भगवत्स्तीर्थकरस्य उपरितनं दक्षिण सक्थि गृह्णन्ति, ईशानो देवेन्द्रो देवराज उपरितनं वामं सक्थि गृह्णन्ति, चमरोऽसुरेन्द्रोऽसुरराजोऽघस्तनं दक्षिणं सक्थि गृह्णन्ति, वली वैरोचनेन्द्रो वैरोचनराजोऽघस्तनं वामं सक्थि गृह्णन्ति, अवशेषा भवनपति यावद् वैमार्जिका देवा यथार्हमवशेषाणि अङ्गाङ्गानि, केचिज्जिनभक्त्या केचिज्जोतमेतदिति कृत्वा केचिद् धर्म इति कृत्वा गृह्णन्ति ॥सू० ५०॥

टीका—‘तएण से सक्के’ इत्यादि ।

ततः तदनन्तर भगवदादिशरीराणां तत्तच्चितासु संस्थापनानन्तरम् खलु सः—पूर्वोक्तः शक्रः ‘देविंदः’ देवेन्द्रः ‘देवराया’ देवराज. ‘अग्निकुमारे’ अग्निकुमारान् ‘देवे’ देवान् ‘सद्वावेइ’ शब्दयति ‘सद्वावित्ता’ शब्दयित्वा—आहूय ‘एवं’ एव-वक्ष्यमाणम् ‘वयासी’ अवदत् ‘खिप्पामेव’ क्षिप्रमेव—शीघ्रमेव ‘भो देवानुप्पिया !’ भो देवानुप्रियाः ! हे महानुभावाः ! ‘तित्थयरचिइगाए’ तीर्थकरचित्तिकायाम् ‘जाव’ यावत्—यावत्पदेन—‘गणहरचिइगाए’ इति संग्राह्यम् तस्य ‘गणधरचित्तिकायाम्’ इति छाया, गणधरचितायामिति तदर्थः, ‘अणगारचिइगाए’ अनगारचित्तिकायाम् अनगारचितायाम् ‘अगणिकायं’ अग्निकायम्—अग्निम् ‘विउव्वह’ विकुसुत-वैक्रियशक्त्योत्पादयत् ‘विउव्वित्ता’ विकृत्य—

चिता में भगवान् आदि के शरीरों को रखने के अनन्तर शक्र आदिकों ने जो काम किया उसे इस सूत्र द्वारा सूत्रकार प्रकट करते हैं —“तए णं से सक्के देविंदे देवराया अग्निकुमारे” इत्यादि ।

टीकार्थ—“तएण” भगवान् आदिनाथ आदि के शरीरों को चिताओं में रखने के बाद “देविंदे” देवेन्द्र “देवराया” देवराज “सक्के” शक्रने “अग्निकुमारे देवे” अग्निकुमार देवो को “सद्वावेइ” बुलाया “सद्वावित्ता” बुलाकर “एवं वयासी” उन देवो से उसने ऐसा कहा—“भो देवानुप्पिया” हे देवानुप्रियो ! आपलोग “तित्थयरचिइगाए” तीर्थकर की चिता में यावत् “गणहरचिइगाए” गणधरो की चिता में और “अणगारचिइगाए” अनगारो की चिता में “अगणिकायं विउव्वह” अग्निकाय को—अग्नि की—विकुर्वणा करो—विक्रियाशक्ति से अग्नि को उत्पन्न करो ‘विउव्वित्ता’

चिताभा भगवान् आदिना शरीराने स्थापित करीने शक वगेरेओ के छ छ कथुं तेने आ सूत्र वडे सूत्रकार प्रकट करे छे

‘तएण’ से सक्के देविंदे देवराया अग्निकुमारे’ इत्यादि ॥सूत्र ५० ॥

शब्दार्थ—(तएण) भगवान् विगेरेना शरीराने चिताओ पर भूकथा आठ (देविंदे) देवेन्द्र (देवराया) देवराज (सक्के) शक्रे (अग्निकुमारे) अग्नि कुमार देवाने (सद्वावेइ) ओलाव्या (सद्वावित्ता) ओलावीने (एव वयासी) ते देवाने तेओ आ प्रभाओ कथु—(भो देवानुप्पिया) हे देवानुप्रियो, तमे (तित्थयरचिइगाए) तीर्थकरनी चिताभा यावत् ‘गणहरचिइगाए’ गणधरानी चिताभां अने (अणगारचिइगाए) अनगारानी चिताभां (अगणिकाय विउव्वह) अग्निकायनी—अग्निनी विकुर्वणा करे, विक्रिया शक्तिथी अग्नि ने उत्पन्न करे (विउव्वित्ता)

वैक्रियशक्त्योत्पाद्य 'एयमाणत्तियं' एतामाज्ञप्तिकाम् इमामाज्ञां पालितां सतीम् 'पञ्च-
प्पिणह' प्रत्यर्पयत् अस्माभिर्मवदाज्ञामग्निविकरणकार्यं कृतमिति मदाज्ञा पूर्णा निवेदयत्
'तएणं' ततः—तदनन्तरम् खलु अग्निकुमारान्प्रति शक्रस्याग्निकायविक्रमणाज्ञानन्तम् 'ते'
ते शक्राज्ञप्ताः 'अग्निकुमारा' अग्निकुमाराः 'देवा' देवाः 'विमणा' विमनमः विपण्णचित्ताः
'णिराणंदा' निरानन्दाः—आनन्दरहिताः दुःखिनः सन्तः अतएव 'अमृपुण्णयणा' अश्रु-
पूर्णनयना—वाष्पाकुलनेत्राः 'तित्थयरचिइगाए' तीर्थररचितिकायाम् 'जाव' यावत्—याव-
त्पदेन—'गणहरचिइगाए' इति सग्रहो बोध्यः, तस्य 'गणधरचितिकायाम्' इति छाया
गणधरचितायामिति तदर्थः, 'अणगारचिइगाए य' अनगारचितिकायां च 'अगणिकाय'
अग्निकायम्—अग्निं 'विउव्वंति' विकुर्वन्ति, 'तएण' तदनन्तरम् अग्निकुमार देवैः अग्नि-
कायविकुर्वणानन्तरम् 'से देविंदे देवराया' सः देवेन्द्रः देवराजः 'वाउ कुमारे देवे सदा-
वेइ' वाउकुमारदेवान् शब्दयति, आह्वयति 'सदावित्ता' आहूय 'एवं वयासी' एवमवदत्—
'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया' क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः 'तित्थयरचिइगाए जाव अणगार-
चिइगाए' तीर्थररचितिकायां यावत् अनगारचितिकायां 'वाउकायं' वायुकायम् 'विउव्वह'

वैक्रियशक्ति से अग्नि को उत्पन्न करके "एयमाणत्तियं" फिर इस मेरी आज्ञा की "यह पालित
की जा चुकी है"—इस प्रकार से "पञ्चप्पिणह" हमें खबर दो "तएणं" इसके अनन्तर "ते
अग्निकुमारा देवा" उन अग्निकुमार देवों ने खेद—खिन्न चित्त होने हुए, आनन्द रहित चित्त
होते हुए और अश्रुपूर्णनेत्र होते हुए तीर्थर की चिता में, यावत् गणधर की चिता में और
"अणगारचिइगाए" शेष अनगारों की चिता में "अगणिकायं विउव्वंति" अग्निकाय की विकुर्वणा
शक्ति से उत्पत्ति की 'तएण' अग्निकुमार देवोंने तीर्थररररर के शरीर में अग्निकाय को विकुर्वणा
करने के बाद 'से देविंदे देवराया' वह देवेन्द्र देवराज ने 'वाउकुमारदेवे सदावेइ' वायुकुमार
देवों को बुलाया 'सदावित्ता' बुलाकर 'एव वयासी' उन वायु कुमार देवों को इस प्रकार कहा
'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया' हे देवानुप्रिय शीघ्रहो 'तित्थयरचिइगाए जाव अणगारचिइगाए'

वैक्रिय शक्तित्थी अग्नि उत्पन्न करीने (एयमाणत्तिय) पछी आ भारी आज्ञानु अक्षरशः
पालन थर्ध अथ त्थारे 'आज्ञानु यथावत् पालन थर्ध गयुं छे' अये पभाण्णे (पञ्चप्पिणह)
अभने अणर आये. (तएण) त्थार भाइ (ते अग्निकुमारा देवा) ते अग्निकुमार देवाअये
जेइ भिन्न चित्तवाणा थर्धने अर्थात् आनन्द विहीन थर्धने अने अश्रुपूर्ण नेत्रवाणा थर्ध
ने तीर्थरररनी चित्तामा यावत् गणधररनी चित्तामा अने (अणगारचिइगाए) शेष अन
गाररनी चित्ता मा (अगणिकायं विउव्वंति) अग्निकायनी विकुर्वण्ण शक्तित्थी उत्पत्ति करी
'तएण' अग्निकुमार देवाअये तीर्थरररररर शरीररमा अग्निकायनी विकुर्वण्ण शक्तित्थी
उत्पत्तिर्थावाइ 'से देविंदे देवराया ते देवेन्द्र देवराअये 'वाउकुमारे देवे सदावेइ' वायुकुमार
देवाने भाइअन्था "सदावित्ता" भाइरनीने 'एव वयासी' आ प्रभाण्णे क्खु "खिप्पामेव भो
देवाणुप्पिया" हे देवानुप्रिये अद्विथी "तित्थयरचिइगाए जाव अणगारचिइगाए" तीर्थरर
नी चित्तामा यावत् शेष अनगाररनी चित्तामा 'वाउकायं' वायुकायने 'विउव्वह विकुर्वित्त

विकुरुत 'विउव्वित्ता' विकुर्वन्-उत्पाद्य 'अग्निकायं' अग्निम् 'उज्जालेह' उज्ज्वलयत-
प्रदीपयत प्रदीप्य 'तित्थगरसरीरगं' तीर्थकरशरीर 'गणहरसरीरगाइ' गणधरशरीरकाणि
'अणगार सरीरगाइ' अनगारशरीरकाणि च 'झामेह' ध्यापयत-तएण शक्राज्जा श्रवणानन्तरम्
'ते'ते-पूर्वोक्ताः 'वाउकुमारा' वायुकुमाराः'देवा' देवा 'विमणा'विमनसः विपण्ण हृदयाः
'णिराणंदा' निरानन्दाः आनन्दरहिताः दुःखाकुलाः अतएव 'अंमुपुण्णणयणा' अश्रुपूर्ण-
नयना वाष्पाकुलनेत्राः 'तित्थयर चिइगाए' तीर्थकरचित्तिकायां जिनचित्तायाम् 'जाव'
यावत्-यावत्पदेन-'गणहरचिइगाए अणगारचिइगाए य अग्निकायं' इत्यस्य सग्रहः,
तस्य च 'गणधरचित्तिकायाम् अनगारचित्तिकायाम्' चाग्निकायम् इतिच्छाया, गणि-
चित्तायाम् अनगारचित्तायाम् अग्निमिति तदर्थः 'विउव्वंति' विकुर्वन्ति वैक्रियशक्त्योत्पा-
दयन्ति, तथा 'अग्निकायं' अग्निकायम्-अग्निम् 'उज्जाले ति' उज्ज्वलयन्ति प्रदीपयन्ति
प्रदीप्तेन चाग्निना 'तित्थयरसरीरगं' तीर्थकरशरीरक 'जाव' यावत्-यावत्पदेन 'गणहर-
सरीरगाइ' इत्यस्य सग्रहः, तस्य च 'गणधरशरीरकाणि' इतिच्छाया, गणधर कलेव-
राणीति तदर्थः, 'अणगारसरीरगाणि य' अनगारशरीरकाणि च 'झामेति' ध्यापयन्ति-
संयोजयन्ति 'तएण' ततः तदनन्तरं खलु जिनादिशरीरेषु दहनसंयोजनानन्तरम् 'से'

तीर्थकर की चिता में यावत् अनगार की चिता में 'वाउकायं' वायुकायको 'विकुर्वह' विकुर्वित
करो 'विउव्वित्ता' वैक्रियशक्ति से उत्पन्न कर के 'अग्निकाय' अग्निकायको 'उज्जालेह' प्रदीप्त
करो प्रदीप्त करके 'तित्थगरसरीरगं' तीर्थकरके शरीर को 'गणहरसरीरगाइ' गणधरो के शरीर
को एवं 'अणगार सरीरगाइ' शेष अनगार के शरीर को 'झामेह' अभिसंयुक्त करो 'तएण ते
वाउकुमारा देवा विमणा निराणंदा अंमुपुण्णणयणा' इसके बाद उन वायुकुमार देवों ने विमनस्क
एवं आनन्द रहित होकर तथा नेत्रों में जिनके अश्रु भरे हुए हैं ऐसे होकर 'तित्थगरचिइगाए'
जिनेन्द्रदेव की चिता में 'जाव' यावत्-गणधरों की चिता में एवं अनगारों की चिता में अग्नि-
काय की विकुर्वणा की, तथा 'अग्निकाय उज्जालेति' उसे प्रदीप्त किया, प्रदीप्त हुई उस अग्नि
के साथ फिर उन्होंने 'तित्थगरसरीरगं' तीर्थकर के शरीर को 'जाव' यावत्-गणधरों के

करो 'विउव्वित्ता' वैक्रिय शक्तिसे वायुकायने उत्पन्नकरने 'अग्निकाय' अग्निकाय ने 'उज्जालेह'
प्रदीप्त करो जो प्रभाषे अग्निकायने प्रदीप्त करीने 'तित्थगरसरीरगं' तीर्थ करनी
शरीरने यावत् 'गणहरसरीरगाइ' गणधरोना शरीरने तेमज्ज 'अणगारसरीरगाइ' शेष अन-
गारोना शरीरने 'झामेह' अभिसंयुक्तकरो (तएण ते वाउकुमारा देवा विमणा निराणंदा
अंमुपुण्णणयणा) त्थार भाइ ते वायुकुमार देवोओ विमनस्क तेमज्ज आनंद विहीन थधने
तेमज्ज अश्रुधीना नेत्रोथी (तित्थगरचिइगाए) जिनेन्द्रनी चित्तामा (जाव) यावत् गणध-
रोनी चित्तामा तेमज्ज अनगारोनी चित्तामा अग्निकायनी विकुर्वणा करो तेमज्ज (अग्निकायं
उज्जालेति) तेने प्रदीप्त करीं. प्रदीप्त थयेव ते अग्निनी साथे तेमज्जे (तित्थगरसरीरगं)
तीर्थकरना शरीरने यावत् गणधरोना शरीरोने (अणगार सरीरगाणि) अनगारोना शरीरोने

सः पूर्वोक्तः 'सक्के' शक्रः 'देविदे' देवेन्द्रः 'देवराया' देवराजः 'ते' तान्-पूर्वोक्तान् 'बहवे' बहून् अनेकान् 'भवणवइ जाव वेमाणिया' भवनपति यावद्वैमानिकान् भवनपतिज्योतिष्कव्यन्तरवैमानिकान् 'देवे' देवान् 'एवं' एवं-वक्ष्यमाणं 'वयासी' अवदत् 'खिप्पामेव' क्षिप्रमेव-शीघ्रमेव 'भो देवानुप्पिया !' भो देवानुप्रियाः ! हे महानुभावाः 'तित्थगरचिइगाए' तीर्थकरचितिकाया जिनचितायाम् 'जाव' यावत्-यावत्पदेन 'गणहरचिइगाए', इति संग्राह्यम्, तस्य च 'गणधरचितिकायामितिच्छाया, गणधरचितायामिति तदर्थः, 'अणगारचिइगाए' अनगारचितिकायाम् अनगारचितायाम् 'अगुरुतुरुक्कवयमधुं च' अगुरुतुरुक्कघृतमधु च तत्रागुरु-अगुरु, तुरुक्क-यावनधूपविशेषः 'लोहवान' इति ख्यातः, घृतं-प्रसिद्धं मधु चैतेषां समाहारद्वन्द्वे कृते तथा अगुरुयावनधूपघृतमधूनि च 'कुंभगसो' कुम्भाग्रशः-अनेकघटप्रमाणमधुर्वादि 'य' च-पुनः 'भारगसो' 'भाराग्रशः' अनेकभारप्रमाणं 'य' च-'साहरह' आनयत 'तएणं' ततः-तदनन्तरम् खलु अनेक कुम्भभारप्रमाणगुर्वाद्यानयनाज्ञानन्तरम्, 'ते' ते-आज्ञप्ताः 'भवणवइ जाव' भवनपति यावद्-भवनपति ज्योतिष्कव्यन्तरवैमानिका देवा 'तित्थयर जाव भारगसो' तीर्थकर यावद् भाराग्रशः तीर्थकरेत्यारभ्य 'भाराग्रशश्च' इति पर्यन्तपदानां संग्रहोऽत्र बोध्यः, तथाहि-तीर्थकरचि-

शरीर को "अणगारसरीरगाहं" अनागारो के शरीर को "ज्ञामेति" सयुक्त किया 'तएण' इस तरह अग्नि के साथ जिनादिको के शरीर जब सयुक्त हो चुके तब 'से सक्के' उस शक्ने 'देविदे देवराया' जो देवो का इन्द्र और उनका राजा था "बहवे भवणवइ जाव वेमाणिए देवे एवं वयासी" उन सब भवनपति से लेकर वैमानिक तक के देवों से-इस प्रकार कहा "खिप्पामेव भो देवानुप्पिया" हे देवानुप्रियो ! आप लोग बहुत ही जल्दी से "तित्थगरचिइगाए जाव गणहरचिइगाए अणगारचिइगाए" तीर्थकर की चिता में यावत् गणधरो की चिता में एव शेष अनगारो की चिता में 'अगुरु तुरुक्क वयमधु च कुंभगसो य भारगसो य साहरह' अगुरु, तुरुक्क, घृत और मधुको अनेक कुम्भप्रमाण और अनेक भार प्रमाण में डालने के लिये ले आओ "तएण ते भवणवइ जाव तित्थगर जाव भारगसो" तब वे भवनपति से लेकर वैमानिक तक के समस्त देवगण तीर्थकर की चिता में, गणधरो की चिता में और शेष अनगारो की चिता में

(ज्ञामेति) अग्नि स युक्त कथा (तएण) आ प्रभाषे अग्नि नी साथे जिनादिकेना शरीरे न्याये स युक्त थर्क गथा त्यारे (से सक्के) ते शक्र (देविदे देवराया) हे देवानो इन्द्र अने तेनो राजा हुतो (बहवे भवणवइ जाव वेमाणिए देवे एवं वयासी) तेष्टे सर्व भवनपतिओथी भाडीने वैमानिक बुधाना देवाने आ प्रभाषे कल्लु "(खिप्पामेव भो देवानुप्पिया) हे देवानुप्रियो तमे ऐकहम शोभनाथो (तित्थगर चिइगाए जाव गणहरचिइगाए अणगार चिइगाए) तीर्थकरनी चितामा यावत् गणधरोनी चितामा तेमश्च शेष अनगारोनी चितामा (अगुरु तुरुक्कवयमधु च कुंभगसो य भारगसो य साहरह) अगुरु, तुरुक्क घृत अने मधुने अनेक कुम्भ प्रभाषु अने अनेक भार प्रभाषुमा नाथवामाटे लावो. (त एणं ते भवणवइ जाव तित्थगर जाव भारगसो) त्यारे ते भवनपतिथी भाडीने वैमानिक

तिकायां गणधरचितिकायाम् अनगरचितिकायाम् अगुरुतुरूपकघृतमधु च कुम्भाग्रशश्च
 भाराग्रशश्चेति पर्यवसितम्, 'साहरंति' सहरन्ति-आनयन्ति 'तएणं' ततः-तदनन्तरम् खलु
 कुम्भभाराग्रप्रमाणानुर्वादिसहरणानन्तरम् 'से' सः-पूर्वोक्तः 'सक्के' शक्रः 'देविंदे' देवेन्द्रः
 'देवराया' देवराजः 'मेहकुमारे' मेघकुमारान् 'देवे' देवान् 'सद्दावेइ' शब्दयति-आमन्त्र-
 यति 'सद्दावित्ता' शब्दयित्वा आमन्त्र्य 'एवं' एवं-वक्ष्यमाणम् 'वयासी' अवदत् 'खिप्पा-
 मेव' क्षिप्रमेव 'भो देवानुप्पिया !' भो देवानुप्रियाः । हे महानुभावाः ! 'तित्थयर चि-
 इगं' तीर्थकरचितिकाम् 'जाव' यावद्-यावत्पदेन 'गणहरचिइगं' इति संग्राह्यम् तस्य च
 गणधरचितिकाम् इतिच्छाया, गणधरचितामिति तदर्थः 'अणगारचिइग च' अनगरचि-
 तिकां च अनगरचिता च 'खोरोदगेणं' क्षोरोदकेन-क्षीरसमुद्रत आनीतजलेन 'णिव्वा-
 वेह' निवापयत-विध्यापयत 'तएणं' ततः-तदनन्तरं खलु क्षोरोदकेन जिनादि चिता
 निर्वापणाज्ञानन्तरम्, 'ते' ते-आज्ञप्ताः 'मेहकुमारा' मेघकुमाराः 'देवा' देवाः 'तित्थयर-
 चिइगं' तीर्थकरचितिका 'जाव' यावत्-यावत्पदेन 'गणहरचिइगं' अणगारचिइगं य' इत्य-
 स्य समग्रः, तस्य च 'गणधरचितिकामनगर चितिकां च' इतिच्छाया, 'गणधरचितमन-
 गारचितां चेति तदर्थः 'णिव्वावे'ति' निर्वापयन्ति विध्यापयन्ति 'तएणं' ततः-तदनन्तरं
 खलु क्षोरोदकेन जिनादि चिता निर्वापणानन्तरम् 'से' सः-पूर्वोक्तः 'देविंदे' देवेन्द्रः

हालने के लिये अनेक कुप प्रमाण ओर अनेक भार प्रमाण अगुर, तुरुष्क, घृत और मधु के
 आप "तएणं सक्के देविंदे देवराया मेहकुमारे देवे सद्दावेइ" इसके बाद देवेन्द्र देवराज उम
 शक्रने मेघकुमार देवो को बुलाया "सद्दावित्ता एवं वयासी" और बुलाकर उनमे ऐसा कहा-
 "खिप्पामेव भो देवानुप्पिया ! तित्थयरचिइगे जाव अणगार चिइग च" हे देवानुप्रियो ! आप
 लोग शीघ्र ही तीर्थकर की चिता को यावत् गणधरों की चिता को एवं शेष अनगरों की चिता
 को 'खोरोदगेणं णिव्वावेह' क्षीरसागर से लाये हुए जल से बुझा दो "तएणं ते मेहकुमारा देवा
 तित्थयरचिइग जाव गणहरचिइगं अणगारचिइग य णिव्वावे'ति" तब उन मेघकुमार देवों ने
 तीर्थकर की चिताको यावत् गणधरों की चिताको अनगरों की चिता को क्षीरसागर से लाये

सुधीना समस्त देवगणोंने तीर्थ करनी चितामा, गणधरानी चितामा अने शेष अनगरानी
 चितामा नाथवाभाटे अनेक कुंभ प्रमाण अने अनेक भार प्रमाण अशुद्ध, तुरष्क, घृत
 अने मधु लक्ष आल्या (तए ण सक्के देविंदे देवराया मेहकुमारे देवे सद्दावेइ) त्थार भाई
 देवेन्द्र देवराज ते थके मेघकुमार देवाने बोला-आ. "सद्दावित्ता एवं वयासी" अने बोला-
 वीने तेमने आ प्रमाणे कछु "खिप्पामेव भो देवानुप्पिया ! तित्थयरचिइगे जाव अणगार
 चिइगं च" हे देवानुप्रियो ! आप सबे शीघ्र तीर्थ कर नीचिता ने यावत् गणधरानी
 चिताने तेमने शेष अनगरानी चिताने "क्षोरोदगेण णिव्वावेह" क्षीरसागरमाथी लक्ष
 आवेला जलथी सात करे "तएणं ते मेहकुमारा देवा तित्थयरचिइग जाव गणहरचिइगं
 अणगारचिइगं य णिव्वावे'ति" त्थारे ते मेघकुमार देवाने तीर्थ करनी चिताने यावत् गण
 धरानी चिताने अने अनगरानी चिताने क्षीर सागर माथी लक्ष आवेला पाणी चडे था.

‘देवराया’ देवराजः ‘भागवओ’ भगवता ‘तित्थयरस्स’ तीर्थकरस्य ‘उवरिल्ल’ उपरितन
 ‘दाहोणं’ दक्षिणं ‘सकह’ सक्थि—ऊरुम् दक्षिणभागस्थोरुसम्बन्ध्यस्थि ‘गेण्हइ’ गृह्णाति
 तथा ‘ईसाणे’ ईशानः ‘देविदे’ देवेन्द्रः ‘देवराया’ देवराजः ‘उवरिल्लं’ उपरितन ‘वामं’
 वामं ‘सकह’ सक्थि—ऊरुम् वामभागस्थोरुसम्बन्ध्यस्थि ‘गेण्हइ’ गृह्णाति तथा ‘चमरे’
 चमरः ‘असुरिदे’ असुरेन्द्रः ‘असुराया’ असुरराजः ‘हिट्ठिल्लं’ अधस्तनं ‘दाहिणं’ दक्षिण
 ‘सकहं’ सक्थि—ऊरु दक्षिणभागस्थोरुसम्बन्ध्यस्थि ‘गेण्हइ’ गृह्णाति ‘बली’ बली ‘वइरो-
 यणिदे’ वैरोचनेन्द्रः ‘वइरोयगराया’ वैरोचनराजः ‘हिट्ठिल्लं’ अधस्तनं ‘सकहं’ सक्थि—
 ऊरुम् अधस्तनभागस्थोरुसम्बन्ध्यस्थि ‘गेण्हइ’ गृह्णाति—चिनोति ‘अवसेसा’ अवशेषः ।
 अवशिष्टाः शक्राद्यतिरिक्ताः ‘भवनवइ जाव वेमाणिया’ भवनपति यावद्वैमानिकाः—
 भवनपतिज्योतिष्कव्यन्तरवैमानिकाः ‘देवा’ देवाः ‘जहारिहं’ यथार्हं=यथायोग्यम् यथा
 स्यात्तथा ‘अवसेसाइं’ अवशेषाणि—अतिरिक्तानि शक्रादि गृहीतातिरिक्तानि ‘अंगमंगाइं’

हुए जल से बुझा दिया “तएणं” से देविदे देवराया भगवओ तित्थयरस्स उवरिल्ल दाहिण सकहं
 गेण्हइ” जब क्षीरसागर के जल से वे तीर्थकर आदि को चिताएँ अच्छी तरह बुझ गई तो
 फिर उस देवेन्द्र देवराज ने भगवान् तीर्थकर की उपरितन दक्षिण हड्डी को—दक्षिण भागस्थ
 उरु सम्बन्धि हड्डी को उठाया ‘ईसाणे देविदे देवराया उवरिल्लं वामं सकहं गेण्हइ’ देवेन्द्र देवराज
 ईशान इन्द्र ने उपरितन वामभाग के उरु की हड्डी को उठाया तथा “चमरे—असुरिदे असुर-
 राया हिट्ठिल्लं दाहिणं सकहं गेण्हइ’ असुरेन्द्र असुरराज चमर ने अधस्तन दक्षिण हड्डी को—
 दक्षिणभागस्थ उरु सम्बन्धी अस्थि को उठाया ‘बली वइरोयणिदे वइरोवणराया हिट्ठिल्ल सकहं
 गेण्हइ’ वैरोचनेन्द्र वैरोचनराज बलि ने अधस्तन हड्डी को—अधस्तन भागस्थ उरु सम्बन्धी
 अस्थि को उठाया “अवसेसा’ बाकीके—शक्रादिको से अतिरिक्त भवनपति से लेकर वैमानिक तक
 के देवो ने “जहारिहं अवसेसाइ अंगमंगाइं” यथायोग्य अवशिष्ट अंगों की हड्डियों को उठा

करी “तएणं से देविदे देवराया भगवओ तित्थयरस्स उवरिल्लं दाहिणं सकहं गेण्हइ”
 यथारे क्षीरसागरना पाणीथी ते तीर्थकर वगेरेनी चिताओ। स पूरुं रीते ओलवाध गध
 त्याग ओह ते देवेन्द्र देवराज भगवान् तीर्थकरनी उपरितन दक्षिण अस्थिने—दक्षिण भाग
 स्थ ते स म धी अस्थिने लीधी “ईसाणे देविदे देवराया उवरिल्लं वामं सकहं गेण्हइ”
 देवेन्द्र देवराज ईशान इन्द्रे उपरितन वामभागनी अस्थिने लीधी तेमज “चमरे असु
 रिदे असुरराया हिट्ठिल्लं दाहिणं सकहं गेण्हइ” असुरेन्द्र असुरराज चमरे अधस्तन
 दक्षिण अस्थिने—दक्षिण भागस्थ तत् स म धी अस्थिने—लीधी “बली वइरोयणिदे वइ-
 रोवणराया हिट्ठिल्लं सकहं गेण्हइ” वैरोचनेन्द्र वैरोचन राज अस्थिने अधस्तन
 अस्थिने—अधस्तन भागस्थ तत् स म धी अस्थिने लीधी “अवसेसा” शेष—शक्रादिक सिवा-
 यना—भवनपतिथी भाडीने वैमानिक सुधीना देवोओ “जहारिहं अवसेसाइं अंगमंगाइ”
 यथायोग्य अवशिष्ट अंगोना अस्थिओने उठाओ। शंकाहट्टे द्वारा गृहीत अस्थियो सिवा-

અજ્ઞાજ્ઞાનિ પ્રત્યેકમજ્ઞાનિ સર્વાજ્ઞાસ્થોનિ ગૃહ્ણાતિ તત્ર 'કેઙ્' કેચિત્ દેવાઃ 'જિણમત્તીણ' જિણમત્તયા-જિનાનુરાગેન ગૃહ્ણાતિ 'કેઙ્' કેચિત્ દેવાઃ 'જીયમેયં' જીતમેતત્-જીતાખ્યઃ કલ્પોડયમ્ 'ઇતિકદ્દુ' ઇતિ કૃત્વા ડતિ બુધ્વા ગૃહ્ણાતિ 'કેઙ્' કેચિત્ 'ધમ્મોત્તિ કદ્દુ' અસ્માકમયં ધર્મં ઇતિ કૃત્વા ડતિ બુધ્વા 'ગેણહતિ' ગૃહ્ણાતિ ॥સુ.૦૫૦॥

અથાસ્થિસંચયનવિધ્યનન્તરજાતં વિધિમાહ—

તણ્ ણં સે સક્કે દેવિદે દેવરાયા બહવે ભવણવડ્ જાવ વેમાણિણ દેવે જહારિહં એવં વયાસી-સ્વિપ્પામેવ ભો દેવાણુપ્પિયા.' સવ્વરચનામણ મહ-
ઇમહાલણ તઓ ચેઇયથૂમે કરેહ, ઇણં ભગવઓ તિત્થયરસ્સ ચિડ્ડાણ ઇણં
ણહરચિડ્ડાણ ઇણં અવસેસાણં અણગારાણં ચિડ્ડાણ, તણ્ ણં તે બહવે
જાવ કરેંતિ, તણ્ ણં તે ભવણવડ્ જાવ વેમાણિયા દેવા તિત્થયરસ્સ પરિ-
ણિવ્વાણમહિમં કરેંતિ, કરિત્તા જેણેવ નંદીસરવરે દીવે તેણેવ ઉવા-
ચ્છંતિ, તણ્ ણં સે સક્કે દેવિદે દેવરાયા પુરચ્છિમિલ્લે અંજણગપવ્વણ અટ્ટા-
હિયં મહામહિમં કરેઇ, તણ્ ણં સક્કસ્સ દેવિદસ્સ દેવરાયસ્સ ચત્તારિ
લોગપાલા ચઉસુ દહિમુહગપવ્વણસુ અટ્ટાહિયં મહામહિમં કરેંતિ,
ઈસાણે દેવિદે દેવરાયા ઉત્તરિલ્લે અંજણગે અટ્ટાહિયં મહામહિમં કરેંતિ
ચમરો ય દાહિણિલ્લે અંજણગે તસ્સ લોગપાલા દહિમુહગપવ્વણસુ બલી
પવ્વત્થિમિલ્લે અંજણગે તસ્સ લોગપાલા દહિમુહગેસુ, તણ્ ણં તે બહવે
ભવણવડ્વાણમંતર જાવ અટ્ટાહિયાઓ મહા-મહિયાઓ કરેંતિ કરિત્તા
જેણેવ સાઈં ૨ વિમાણાઈં જેણેવ સાઈં ૨ ભવણાઈં જેણેવ સાઓ ૨
માઓ સુહમ્માઓ જેણેવ સગા ૨ માણવગો ચેઇયસંભા તેણેવ

લિયા, इनमें "केङ्" कितनेक देवोंने 'जिणमत्तीण' जिनेन्द्र की भक्ति से 'केङ् जीयमेयं' इति कद्दु' कितनेक देवों ने यह जीत नामका कल्प है इस अभिप्राय से 'केङ् धम्मो ति कद्दु गेणहति' कितनेक देवों ने हमारा यह धर्म है इस ख्याल से उन हड्डियों को उठाया ॥सु.०५०॥

यनी अस्थिओने-दीधी. ओभांथी (केङ्) डेट्ठाक देवोओ "जिणमत्तीण" जिनेन्द्रनी भक्तिथी 'केङ् जीतमेयं इति कद्दु' डेट्ठाक देवोओ आ अतनाभक कल्प छे आ अभिप्रायथी "केङ् धम्मोत्ति कद्दु गेणहंति" डेट्ठाक देवोओ आभारी आ करअ छे, आ अयादथी ते अस्थिओने उठाव्या. ॥सूत्र, ५०॥

उवागच्छन्ति उवागच्छिता वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु जिणसकहाओ पक्खिवन्ति अग्गेहि वरेहिं मल्लेहि ण अच्चेति अच्चित्ता विउल्लोइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरन्ति सू० ५१

छाया—ततः खलु स शक्रो देवेन्द्रो देवराज बहून् भवनपति यावद् वैमानिकान् देवान् यथार्हमेवमवदत् क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः ! सर्वरत्नमयान् महतिमद्वतस्त्रीन् चैत्य-
स्तूपान् कुरुत तत्र एकं भगवतस्तीर्थकरस्य चित्तिकायाम्, एकं गणधरचित्तिकायाम्
एकमवशेषाणामनगाराणाम् ततः खलु ते बहवो यावत् कुर्वन्ति, ततः खलु ते बहवो
भवनपति यावद् वैमानिका देवास्तीर्थकरस्य परिनिर्वाणमहिमानं कुर्वन्ति, कृत्वा यत्रैव
नन्दीश्वरवरो द्वीपः तत्रैव उपागच्छन्ति, ततः खलु स शक्रो देवेन्द्रो देवराज पौरस्त्ये-
ऽञ्जनकपर्वते अष्टाद्विकं महामहिमानं कुर्वन्ति, ततः खलु शक्रस्य देवेन्द्रस्य देवराजस्य
चत्वारो लोकपालाः चतुर्षु दधिमुखकपर्वतेषु अष्टाद्विकं महामहिमानं कुर्वन्ति, ईशानो
देवेन्द्रो देवराजः ओत्तराहेऽञ्जनकेऽष्टाद्विकं तस्य लोकपालाश्चतुर्षु दधिमुखकेषु अष्टाद्विकं
चमरश्च दक्षिणात्येऽञ्जनके तस्य लोकपाला दधिमुखकपर्वतेषु, बलि पश्चिमेऽञ्जनके तस्य
लोकपाला दधिमुखकेषु, ततः खलु ते बहवो भवनपतिव्यन्तर यावत् अष्टाद्विकान् महा-
महिम्न कुर्वन्ति कृत्वा यत्रैव स्वानि २ विमानानि यत्रैव स्वानि २ भवनानि यत्रैव स्वाः
२ सभा सुधर्मा. यत्रैव स्वकाः २ माणवका चैत्यस्तम्भाः तत्रैव उपागच्छन्ति उपागत्य
षष्ठमयेषु गोलवृत्तसमुद्रकेषु जिनसक्थोनि प्रक्षिपन्ति, प्रक्षिप्य अय्यैर्वरेमाल्लैश्च गन्धैश्चा-
चन्ति अबित्त्वा विपुलान् भोगभोगान् भुञ्जाना विहरन्ति । सू० ५१॥

टीका—‘तए णं से सक्के’ इत्यादि । ततः तदनन्तरं—जिनादि सक्थिग्रहणानन्तरम्
खलु सः—पूर्वोक्तः शक्रः ‘देविदे’ देवेन्द्रः ‘देवराया’ देवराजः ‘बहवे’ बहून्—अनेका-
न् ‘भवणवइ जाव वेमाणिए’ भवनपति यावद्वैमानिकान् भवनपतिव्यन्तरञ्चोतिष्क

इस प्रकार से जब वे चतुनिकाय के देव हृद्दियों का चयन कर चुके तब क्या हुआ—
इस बात को अब सूत्रकार प्रकट करते हैं—“तएणं से सक्के देविदे देवराया बहवे भव-
णवइ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—‘तएणं’ हृद्दियों के चयन हो चुकने के बाद ‘सक्के देविदे देवराया’ देवेन्द्र देवराज
शक्र ने ‘बहवे भवणवइ जाव वेमाणिए देवे जहारिहं एव वयासी’ उन समस्त भवनपति से लेकर

आ प्रभाञ्जे ज्यारे ते अतुनिकायना देवाञ्जे अस्थिओनु अयन करी दीधु त्यार
आइ शु थयुं. आ वातने डवे सूत्रकार प्रकट करे छे—

‘त एण से सक्के देविदे देवराया बहवे भवणवइ’ इत्यादि, सूत्र ॥५१॥

शब्दार्थ—“त एण” अस्थिओना अयन आइ “सक्के” देविदे देवराया” देवेन्द्र देवराज
शक्र “बहवे भवणवइ जाव वेमाणिए देवे जहारिहं एव वयासी” ते समस्त भवनपति

वैमानिकान् 'देवे' देवान् 'जहारिहं' यथाहं यथायोग्यम् 'एव' एवम्-वक्ष्यमाणम्
 'वयासी' अवदत्-अब्रवीत् 'भो देवानुप्पिया' भो देवानुप्रियाः हे महानुभावाः !
 'सञ्चरयणामए' सर्वरत्नमयान् सर्वात्मना रत्नमयान् 'महडमहालए' महातिमहतः—
 अतिविस्तीर्णान् (तओ) त्रीन् (वेइअथूमे) चैत्यस्तूपान् चैत्याः चित्तानन्दकास्तूपा-
 ऽचैत्यस्तूपास्तान् (करेह) कुरुत सम्पादयत चित्तात्रयभूमिष्विति शेषः तत्र (एग)
 एकं चैत्यस्तूपम् (भगवओ) भगवतः (तित्थगरस्स) तीर्थकरस्य (चिइगाए) चित्तिका-
 यां चिताभूमौ कुरुत (एगं) एकं चैत्यस्तूपम् (गणहरचिइगाए) गणधरचित्तिकायां
 गणिचिताभूमौ कुरुत (एग) एकं तदन्य तृतीयं चैत्यस्तूपम् (अवसेसाणं) अवशेषा-
 णाम् अवशिष्टानाम् (अणगाराणं) अनगाराणां साधूनां (चिइगाए) चित्तिकायां चि-
 ताभूमौ कुरुत, (तए) ततः तदनन्तरम्-चैत्यस्तूपत्रयकरणान्नान्तरम् (ण) खलु (ते)
 ते आज्ञप्ताः (बहवे) बहवः अनेके (जाव) यावत् यावत्पदेन "भवनपतिव्यन्तरज्यो
 तिष्कवैमानिकाः सर्वरत्नमयान् महातिमहतस्त्रीन् चैत्यस्तूपान्" इति संग्राह्यम् (करेंति)
 कुर्वन्ति सम्पादयन्ति (तए) ततः तदनन्तरम् चैत्यस्तूपत्रयकरणानन्तरम् (णं)

वैमानिक तब के देवों से यथायोग्य रूप से इस प्रकार कहा—'भो देवानुप्पिया ! सञ्चरयणामए
 महइ महालए तओ चेइअथूमे करेह' हे देवानुप्रियो ! तुम लोग समस्त रत्नों के बने हुए—
 सर्वात्मना—रत्नमय ऐसे तीन चैत्य स्तूपों की—चित्त को आनन्द उपजाने वाले—स्तूपों की चिता
 त्रय भूमियों में रचना करो 'एग भगवओ तित्थगरस्स चिइगाए एग गणहरचिरगाए एगं अव
 सेसाण अणगाराणं चिइगाए' इनमें एक चैत्य स्तूप, तीर्थकर भगवान् की चिता में, एक गणधरों
 की चिता में, और एक अवशेष अनगारों की चिता में 'तएण—ते बहवे जाव करेंति' इसके
 बाद उन भवनपति से लेकर वैमानिक तब के देवों ने जहाँ जहाँ चैत्य स्तूप बनाने को कहा
 गया था वहाँ वहाँ उन तीन सर्व रत्नमय चैत्य स्तूपों की रचना कर दी 'तएण ते बहवे भव-
 णवइ जाव वैमाणिया देवा तित्थगरस्स परिणिब्बाणमहिमं' इस के बाद उन समस्त भवनपति

ओधी भाडीने वैमानिक सुधीना देवाने यथायोग्य रूपमां आ प्रभाषे कलुं—“भो देवानुप्पिया !
 सञ्चरयणामए महइमहालए तओ चेइअथूमे करेह” हे देवानुप्रियो ! तओ सर्वरत्न-
 निर्मित ओटके के सर्वात्मना रत्नमय ओवा त्रय चैत्य स्तूपोनी—चित्तने आनंद आपे
 तेवा स्तूपोनी—चित्तात्रय भूमिपर रचना करे। “एगं भगवओ तित्थगरस्स चिइगाए, एगं गणहर
 चिइगाए एगं अवसेसाणं अणगाराणं चिइगाए” ओमा ओक चैत्यस्तूप तीर्थकर भगवान
 नी चितामा ओक गणधरानी चितामां अने ओक अवशेष अनगारानी चिता मां तैयार
 करे। ‘तएणं ते बहवे जाव करेति’ तयार भाइ ते भवनपतिथी भाडीने वैमानिक सुधीना
 देवाने जथा जथा चैत्य स्तूपो तैयार करवा भाटे कडेवामा आन्धु ढंठुं, तथा तथा सर्व रत्न
 मय त्रय चैत्य स्तूपोनी रचना करी। ‘त एणं ते बहवे भवणवई जाव वैमाणिया देवा तित्थ

खलु (ते) ते (वहवे) वहवः अनेके (भवनपति जाव वेमाणिआ) भवनपति यावद्वैमा-
निकाः (भवनपतिव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिकाः (देवा) देवाः (तित्थगरस्स) तीर्थकरस्य
जिनस्य (परिणिव्वाणमहिमं) परिनिर्वाणमहिमानं मोक्षगमनोत्स॥ (करेति) कुर्वन्ति
(करित्ता) कृत्वा (जेणेव) यत्रैव मूले सप्तम्यर्थे तृतीया प्राकृतत्वजन्मा बोध्या (नदीसरवरे)
नन्दीश्वरवरः तदाख्यः (दीवे) द्वीपः (तेणेव) तत्रैव अत्रापि मूले प्राकृतत्वादेव
सप्तम्यर्थे तृतीया (उवागच्छति) उपागच्छन्ति (तए) ततः तदन्तरं भवनपत्यादीनां
नन्दीश्वरद्वीपोपगमनानन्तरम् (णं) खलु (से) सः पूर्वोक्तः (सक्के) शक्रः (देविदे)
देवेन्द्रः (देवराया) देवराजः (पुरच्छिमिल्ले) पोरस्त्य-पूर्वदिग्भवे (अजणगपव्वए)
अञ्जनकपर्वते (अट्ठाहिअं) अष्टाद्विकम् अष्टाभिर्दिनैः सम्पाद्यम् (महामहिमं) महामहि-
मानं महोत्सवं (करेति) कुर्वन्ति सम्पादयन्ति (तए) ततः शक्रस्याष्टाद्विक भगवन्नि-
र्वाण महिपकरणानन्तरम् (णं) खलु (सक्कस्स) शक्रस्य (देविदस्स) देवेन्द्रस्य (देव-
रायस्स) देवराजस्य सम्बन्धिनः (चत्तारि) चत्वारः (लोगपाला) लोकपालाः (चउ-
सु) चतुर्षु (दहिमुहगपव्वएसु) दधिमुखरूपवर्ततेषु (अट्ठाहियं) अष्टाद्विकं (महामहिमं)
महामहिमानं (करेति) कुर्वन्ति (ईसाणे) ईशानः (देविदे) देवेन्द्रः (देवराया) देवराजः

से लेकर वैमानिक तक के चतुर्विध निकाय के देवों ने तीर्थकर भगवान् के निर्वाण कल्याण
की महिमा मोक्ष गमन का उत्सव किया “करित्ता जेणेव नन्दी सरवरे दीवे तेणेव उवागच्छन्ति”
मोक्षगमन का उत्सव करने के बाद वे चतुर्विध निकाय के देव फिर जहां पर नन्दीश्वर नामका
द्वीप था वहां पर गये “तए ण सक्के देविदे देवराया पुरच्छिमिल्ले अंजणगपव्वए—अट्ठाहियं
महामहिमं करे ति” वहां जाकर देवेन्द्र देवराज शक्र ने पूर्वदिशा में स्थित अंजनक पर्वत पर
अष्टाद्विका महोत्सव—जो कि आठ दिनों तक लगातार होता रहता है—किया “तएण
सक्कस्स देविदस्स देवरायस्स चत्तारि लोगपाला चउसु दहिमुहगपव्वएसु अट्ठाहियं महामहिमं
करे ति” इसके बाद देवेन्द्र देवराज शक्र के चार लोकपालों ने चार दधिमुख पर्वतों पर अष्टा-
द्विका महोत्सव किया “ईसाणे देविदे देवराया उत्तरिस्से अंजणगे अट्ठाहियं” देवेन्द्र देवराज

गरस्स परिणिव्वाणमहिमं करेइ” त्था॥ भा० ने समस्त भवनपतिथी भांडीने वैमानिक सुधी
ना चतुर्विध निकायना देवाणे तीर्थकर भगवानना निर्वाण कल्याणनी महिमानो—मोक्षगम-
नोत्सवनी आयोजना करी ‘करित्ता जेणेव नदीसरवरे दीवे तेणेव उवागच्छन्ति’ मोक्ष
गमनना उत्सव भा० ने चतुर्विध निकायना देवा जथा नन्दीश्वर नामे द्वीप हते त्था गथा
‘त एणं सक्के देविदे देवराया पुरच्छिमिल्ले अंजणगपव्वए अट्ठाहियं महामहिमं करे ति’
त्था जेधने देवेन्द्र देवराज शक्र पूर्व दिशाभा स्थित अंजनक पर्वत पर अष्टाद्विका ओटले
के आठ दिवस सुधी लगातार उरवाते। २६ छे—ते मंडोत्सनी आयोजना करी ‘त एणं सक्क-
स्स देविदस्स देवरायस्स चत्तारि लोगपाला चउसु दहिमुहगपव्वएसु अट्ठाहियं महामहिमं
करे ति’ त्था॥ भा० देवेन्द्र देवराज शक्रनाथार लोकपालाणे थार दधिमुख पर्वतो पर अष्टाद्विका

(उत्तरिल्ले) औत्तराहे उत्तरदिग्भवे (अंजणगे) अञ्जनके अञ्जननामकपर्वते (अट्टाहि-
यं) अष्टाद्विकं महिमानं करोति (तस्स) तस्येशानस्य देवेन्द्रस्य देवराजस्य सम्बि-
न्धनः (लोगपाला) लोकपालाः (चउसु) चतुर्षु (दहिमुहगेसु) दधिमुखकेषु दधि-
मुखपर्वतेषु (अट्टाहियं) अष्टाद्विकं महामहिमानं कुर्वन्ति (चमरो अ) चमरश्चासुरेन्द्रो-
सुरराजः (दाहिणिल्ले) दक्षिणात्ये दक्षिणदिग्भवे (अंजणगे) अञ्जनके अञ्जनपर्वते
अष्टाद्विकं महामहिमानं करोति (तस्स) तस्य चमरस्यासुरेन्द्रस्यासुरराजस्य सम्बन्धिनः
(लोगपाला) लोकपालाः (दहिमुहगवप्पसु) दधिमुखकपर्वतेषु अष्टाद्विकं महामहिमानं
कुर्वन्ति (वली) बलिः वैरोचनेन्द्रो वैरोचनराजः (पच्चत्थिमिल्ले) पश्चिमे (अंजणगे)
अञ्जनके अञ्जनपर्वते अष्टाद्विकं महामहिमानं करोति (तस्स) तस्य बलेः सम्बन्धिनः
(लोगपाला) लोकपालाः (दहिमुहगेसु) दधिमुखकेषु दधिमुखपर्वतेषु अष्टाद्विकं महा-
महिमानं कुर्वन्ति (तए) ततः-तदन्तरं शक्रादिवलिपर्यन्तेन्द्राणामष्टाद्विकं महामहिमक-
रणानन्तरम् (णं) खलु (ते) ते पूर्वोक्ताः (बहवे) बहव अनेके (भवणवड्वाणमंतर
जाव) भवनपति व्यन्तर यावत् भवनपतिव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिकाः (अट्टाहियाओ)
अष्टाद्विकान् (महामहिमाओ) महामहिमानः, मूले प्राकृतत्वात्स्नीत्वम् (करेति) कुर्व-

ईशान ने उत्तरदिशा के अञ्जन नाम के पर्वत पर अष्टान्हिक महोत्सव किया 'तस्म लोगपाला
चउसु दहिमुहेसु अट्टाहियं करेति' देवेन्द्र देवराज ईशान के चार लोकपालों ने चार दधिमुख
पर्वतों पर अष्टान्हिक महोत्सव किया, "चमरो य दाहिणिंल्ले अंजणगे तस्स लोगपाला दहिमुह-
गवप्पसु" असुरेन्द्र असुरराज चमर ने दक्षिण दिशा के अञ्जनपर्वत पर अष्टान्हिक
महोत्सव किया और उसके लोकपालों ने चार दधिमुखपर्वतों पर अष्टान्हिक महोत्सव किया
"वली" वैरोचनेन्द्र वैरोचनराज बलि ने "पच्चत्थिमिल्ले अंजणगे तस्स लोगपाला दहिमुहगेसु"
पश्चिमदिशा के अञ्जन पर्वत पर अष्टान्हिक महोत्सव किया और उसके चार लोकपालों ने दधिमुख
पर्वतों पर अष्टान्हिक महोत्सव किया, तएणं ते बहवे भवणवड्वाणमंतर जाव अट्टाहियाओ
महामहिमाओ करेति" इस तरह जब शक्र से लेकर बलितक के इन्द्र अष्टान्हिका महोत्सव कर

महोत्सव किये 'इसाणे देविदे देवराया उत्तरिल्ले अंजणगे अट्टाहियं देवेन्द्र देवराज ईशाने
उत्तर दिशाना अञ्जन नामक पर्वत पर अष्टाद्विकं महोत्सव किये 'तस्स लोगपाला च-
उसु दहिमुहेसु अट्टाहियं करेति' देवेन्द्र देवराज ईशानना चार लोकपालाओ चार दधिमुख
पर्वतो पर अष्टाद्विकं महोत्सव किये 'चमरोअ दाहिणिंल्ले अंजणगे तस्स लोकपाला दहि-
मुहगवप्पसु असुरेन्द्र असुरराज अमरे दक्षिण दिशा ना अञ्जन पर्वत पर अष्टाद्विकं
महोत्सव किये अने तेना लोकपालाओ दधिमुख पर्वतो पर अष्टाद्विकं महोत्सव किये
वैरोचनेन्द्र वैरोचन राज बलिओ 'पच्चत्थिमिल्ले अंजणगे तस्स लोगपाला दहिमुहगेसु'
पश्चिम दिशाना अञ्जन पर्वत पर अष्टाद्विकं महोत्सव किये अने तेना चार लोकपालाओ
दधिमुख पर्वतो नी उपर अष्टाद्विकं महोत्सव किये 'तएणं ते बहवे भवणवड्वाणमंतर
जाव अट्टाहियाओ महामहिमाओ करेति आ प्रभाणे जयादे शकथी भाडीने बलि सुधीन

न्ति (करित्ता) कृत्वा (जेणेव) यत्रैव (साडं २) स्वानि २ निजानि २ विमाणाडं) विमानानि (जेणेव) यत्रैव (साडं २) स्वानि २ (भवणाड) भवनानि (जेणेव) यत्रैव (साओ २) स्वाः २ 'समाओ) समा (गुहम्माओ) मुधर्माः देवदमाः (जेणेव) यत्रैव (सगा २) स्वकाः २ निजाः (माणवगा) माणवकाः माणवकानामान अन्यर्थ (चेइअखंभा) चैत्यस्तम्भाः आहादकस्तम्भाः (तेणेव) तत्रैव (उवागच्छन्ति) उपागच्छन्ति (उवागच्छिता) उपागत्य (वइरामएसु) वज्रमयेषु (गोलवटसमुगएसु) गोलवटसमुदगकेषु वर्तुलाकारभाजनविशेषेषु (जिनसकहाओ) जिनमदधीनि मूले स्त्रोत्वं प्राकृतत्वमूलकम् (पक्खिवन्ति) प्रक्षिपन्ति स्थापयन्ति (पक्खित्ता) प्रक्षिप्य-संस्थाप्य जिनसक्खिदशनादि (अग्गेहि) अग्र्यैः उत्तमैः अग्रैरितिच्छाया पक्षे प्रत्यग्रैः (वरेहिं) वरैः प्रकृष्टैः महद्भिरित्यर्थः (मल्लेहि) माल्यैः (अ) च (गंघेहि अ) गन्धैश्च (अच्चेति) अर्चन्ति पूजयन्ति (अच्चित्ता) अर्चित्वा पूजयित्वा (विउलाइं) विपूलान् (भोगभोगाइं) भोगभोगान् भोग्यभोगान् मूले नपुसकत्वं प्राकृतत्वमूलकम् (सुंजमाणा) भुञ्जानाः अनुभवन्तः

हुके तव भवनपति से लेकर वैमानिक तक के समस्त देवो ने अष्टान्हिका महोत्सव क्रिया 'करित्ता जेणेव साइ २ विमाणाइ जेणेव साइ २ भवणाइं जेणेव साओ २ समाओ सुहम्माओ जेणेव साण २ माणवगा चेइअखंभा तेणेव उवागच्छन्ति" अष्टान्हिका महोत्सव करके फिर वे सब के सब इन्द्रादिक देवलोक जहां अपने २ विमान थे, जहां अपने २ भवन थे जहां अपनी २ सुधर्मा समाए थी और जहां अपने २ माणवक नामके चैत्यस्तम्भ थे वहां पर गये, "उवागच्छिता" वहां जाकर "वइरामएसु गोलवटसमुगएसु जिनसकहाओ पक्खिवन्ति" उन्होंने वज्रमय गोलवट समुद्रको मे-वर्तुलाकार भाजनविशेषों में उन जिनेन्द्र की हड्डियों को रख दिया "पक्खित्ता अग्गेहिं वरेहिं मल्लेहिं य गंघेहि अच्चेति" रख करके फिर उन्होंने उत्तम या नवीन श्रेष्ठ बड़ी २ माल्यों से एवं गन्ध द्रव्यों से उनकी पूजा की "अच्चित्ता विउलाइ भोगभोगाइ सुंजमाणा विहरन्ति" पूजन

छन्दोमे अष्टाष्टिहं भडोत्सवे सम्पन्न कथा त्यागे भवनपतिथी भाडीने वैमानिक सुधीना सर्व देवोमे अष्टाष्टिहं भडोत्सवे कथा 'करित्ता जेणेव साइ २ विमाणाइ जेणेव साइ साइ भवणाइं जेणेव साओ २ समाओ सुहम्माओ जेणेव साण २ माणवगा चेइअखंभा तेणेव उवागच्छन्ति अष्टाष्टिहं भडोत्सव करीने पछी ते सर्व छन्दोदिक जथा पोत-पोताना विमानो इता जथा पोत पोताना भवनो इता, जथा पोत पोतानो सुधर्मा समाओ इती अने जथा पोतपोताना माणवक नामे चैत्य स्त्रोत्सवे, त्या गथा, 'उवागच्छिता त्या जधने 'वइरामएसु गोलवटसमुगएसु जिनसकहाओ पक्खिवन्ति तेभक्षे वज्रमय गोलवट समुद्रको मे-वर्तुलाकार भाजन विशेषोभा-ते जिनेन्द्रनी अस्थियोंने प्रस्थापित कथा. 'पक्खित्ता अग्गेहिं वरेहिं मल्लेहिं य गंघेहि अ अच्चेति' प्रस्थापित करीने पछी तेभक्षे उत्तम के नवीन श्रेष्ठ भाटी-भाटी भाणियोंथी तेभक्षे गन्ध द्रव्योंथी तेभनी पूजा करी 'अच्चित्ता, विउलाइ भोगभोगाइ सुंजमाणा विहरन्ति' पूजन करीने पछी तेभो सर्वे

(વિહરતિ) વિહરન્તિ આસતે । નનુ ચારિત્રાદિ ગુણરહિતમ્ય જિનશરીરસ્ય જિનસક્થ્યા-
દેશ્ચ પૂજનમનુચિતમ્ ।તિ ચેન્મૈવસ્-ભાવજિનો યથા વન્ધસ્તથા નામસ્થાપના દ્રવ્ય
જિના અપિ વન્ધ્યાસ્તદા દ્રવ્યજિનરૂપસ્ય જિનશરીરસ્ય ભાવજિનરૂપજિનશરીરાવયવ-
સક્થ્યાદીનાં ચ વન્ધત્વમિતિ તન્નાનુચિતમ્, જિનશરીરાવયવમકથ્યાદેર્ભાવજિનરૂપત્વેના
વન્ધત્વે ગર્ભતયોત્પન્નમાત્રસ્ય “સમણે ભગવં મહાવીરે” ઇત્યાદ્યભિલાપેન સૂત્રકૃતાં
સૂત્રકરણં શક્રાણાં શક્રસ્તવનપ્રયોગાદિકં ચાનુચિતં સ્યાદિતિ, અતएव જિનસક્થ્યાદ્યા-
શાતનાભયશીલા દેવાસ્તત્ર કામાસેવનાદૌ ન પ્રવર્તન્ત ઇતિ ॥૫૧॥

ઇતિ તૃતીયારક સમાપ્તઃ

કરકે ફિર વે સબ કે સવ અપને ૨ સ્થાનો પર રહતે હુए આનન્દ કે સાથ ત્રિપુલ ભોગભોગો
કો ભોગને મેં લગ ગયે, યહા પર એસી શકા હો સકતો હે-ચારિત્રાદિ ગુણ રહિત જિન શરીર
કા ઓર જિન હૃદિયોં કા પૂજન કરના અનુચિત હૈ-સો ઇસકા ઉત્તર એસા હૈં કિ જિસ પ્રકાર
સે ભાવજિન વન્ધ હોતે હૈં ઉસો પ્રકાર સે નામ જિન, સ્થાપના જિન ઓર દ્રવ્ય જિન મો વન્ધ
હોતે હૈં, ઇસ તરહ દ્રવ્યજિનરૂપ જિન શરીર કા ભાવજિનરૂપ જિનશરીર કા તથા ઉનકે અવયવ
મૂત અસ્થિ આદિકોં કા વન્દન કરના કોઈ અનુચિત નહોં હૈં યદિ એસા કહા જાય કિ જિન
શરીર કે અવયવમૂત હૃદિયોં આદિ મેં ભાવજિનરૂપતા નહોં રહતી હૈં ઇસલિયે ઉન્હે વન્ધ નહોં
માનના ચાહિયે તો ઇસકા સમાધાન એસા હૈં કિ જબ જિન ગર્મ મેં આતે હૈં તો ઉસ સમય જો
“સમણે ભગવં મહાવીરે” ઇસ પ્રકાર સે સૂત્રોં કી રચના કરતે હૈં તથા ઇન્દ્ર ઉનકા સ્તવન કરતે
હૈં યહ સબ અનુચિત માના જાના ચાહિયે, પરન્તુ નહોં માના ગયા હૈં, ઇસો પ્રકાર જિન
સક્થ્યાદિ કી આશાતના કે મય સે હરે હુए દેવ વહા કામસેવન આદિ કાર્ય મેં પ્રવૃત્તિ
નહોં કરતે હૈં ॥૫૧॥

॥ તૃતીયારક સમાપ્ત ॥

પોતપોતાના સ્થાનો પર નિવાસ કરતા આનન્દ પૂર્વક ત્રિપુલ ભોગ-ભોગો ભોગવવા લાગ્યા.
અહીં એવી શકા થઈ શકે કે ચારિત્રાદિ ગુણ વિહીન જિન શરીરનું અને જિન અસ્થિ
ઓતું પૂજન કરવું અનુચિત છે, તો આનો જવાબ આ પ્રમાણે છે કે જેમ ભાવજિન વન્ધ
હોય છે તેમજ નામ જિન સ્થાપનાજિન અને દ્રવ્યજિન પણ વન્ધ હોય છે આ પ્રમાણે
અજિન રૂપ જિન શરીરનું ભાવાજિન રૂપ શરીરનું તેમજ તેમના અવયવમૂત અસ્થિ
આદિકોં વન્દન કરવું કોઈ પણ રીતે અનુચિત નથી જો આ પ્રમાણે કહેવામાં આવે કે
જિન શરીરના અવયવમૂત અસ્થિ વગેરેમાં ભાવજિન રૂપતા રહેતી નથી, એથી તેમને વન્ધ
ગણવા યોગ્ય નથી તો આનું સમાધાન આ પ્રમાણે છે કે જ્યારે જિન ગર્ભમાં આવે છે
તો તે વખતે જે સમણે મગવં મહાવીરે આ પ્રમાણે સૂત્રોની રચના કરે છે. તેમજ ઇન્દ્ર
તેમનું સ્તવન કરે છે તો આ બધું અનુચિત ગણાવું બાકીએ પણ આવું માનવામાં આવ્યું
નથી એથી જ જિન અસ્થિ વગેરેની આશાતના ના ભયથી સત્રસ્ત થયેલા દેવો ત્યાં કામ
સેવન વગેરે કામમાં પ્રવૃત્તિ કરતા નથી ॥ સૂત્ર ૫૧ ॥

તૃતીયારક સમાપ્ત

अथ चतुर्थारकस्वरूपं निरूपयति-

मूलम्—तीसे णं समाए दोहिं सागरोवमकोडाकोडीहिं काले
वीइक्कंते अणंतेहिं वण्णपज्जवेहिं तहेव जाव अणंतेहिं उट्ठाणकम्म
जाव परिहायमाणे २ एत्थ णं दूसमसुसमा णामं समा काले पडिवज्जि
समणाउसो ! तीसे णं भंते ! समाए भरहस्स वासस्स केरिसए आगार-
भावपडोआरे पण्णत्ते ? गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते,
से जहाणामए आलिगपुक्खरेइ वा जाव मणीहि उवसोभिए, तं जहा
कित्तिमेहिं चेव अकित्तिमेहिं चेव, तीसे णं भंते ! समाए भरहे मणुआणं
केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! तेसिं मणुयाणं विवहे
संघयणे छेव्विहे संठाणे बहूइं धणूइं उद्धं उच्चत्तेणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं पुव्वकोडी आउअं पालेति पालित्ता अप्पेगइया निरयगामी
जाव देवगामी अप्पेगइया सिज्जंति जाव सब्बदुक्खाणमंतं करेंति, तीसे
णं माए तआ वंसा स प्पज्जित्था, तं जहा-अरहंतवंसे १ चक्क वट्ठि
वंसे २ दसाखंसे ३ तीसेणं समाए तेवीसं तित्थयरा इक्कारसचक्कवट्ठी णव
व देवा णव वा देवा स प्पज्जित्था ॥सू० ५२॥

छाया-तस्यां खलु समायां द्वाभ्यां सागरोपमकोटीभ्यां काले व्यतिक्रान्ते अनन्तैर्बर्ण-
पर्यवैः तै यावद्वनन्तैः उत्थानकर्म यावत् परिहोयमान. २ अत्र खलु दुष्पमसुसमा
समा कालः प्रत्यपद्यत भ्रमणाऽऽयुष्मन्। तस्यां खलु भवन्त। समायां भरतस्य वर्षस्य कीदृश
आकारमावप्रत्यवतारः प्रवृत्तः?, गौतम! बहुसमरमणीयो भूमीभागः प्रवृत्तः, स यथा कः
आलिङ्गपुष्करमिति वा यावत् मणिमिरुपशोभितः, तद्यथा-कृत्रिमैर्ब्रह्मैव अकृत्रिमैर्ब्रह्मैव, त
खलु भवन्त ! त्यां भरते मनुजानां कीदृशक आकारमावप्रत्यवतारः प्रवृत्तः?, गौतम !
तेषां मनुजानां षड्विधं संहननं षड्विधं संस्थानं बहूनि घनूवि ऊर्ध्वमुच्चत्वेन जघन्येना-
न्तर्मुहूर्त्तम् उत्क्रव्णेन पूर्वकोट्यायुष्कं पालयन्ति पालयित्वा अप्येकके निरयगामिनो यावत्
देवगामिनः अप्येकके सिध्यन्ति दुष्यन्ते यावत् सर्वदुक्खानामन्त कुर्वन्ति, तस्यां खलु यां
त्रयो वंशाः समुदपद्यन्त, तद्यथा-अर्हवृंशः १ चक्रवर्तिवंशः २ दशार्हवंशः ३ तस्यां खलु
समायां त्रयोविंशतिस्तीर्थकरा एकादश चक्रवर्तिनो नव बलदेवा नव वासुदेवाः समुदप-
द्यन्त ॥ सू० ५२ ॥

ટીકા—“તીસેણ સમાપ” इत्यादि—तस्याम् पूर्वोक्तायां खलु समायां काले (दोहिं) द्वाभ्यां (सागरोवमकोडाकोडीहिं) सागरोपमकोटाकोटीभिः—सागरोपमकोटाकोटीद्वयेनेति पदद्वयस्यार्थः, ‘प्रमिते’ इतिशेषः, तस्यानन्तरवर्तिना ‘काले’ इत्यनेन सम्बन्धः ‘काले’ काले समये ‘वीडवकते’ व्यतिक्रान्ते व्यतीते सति ‘अणनेहिं अनन्तै’ ‘वण्णपज्जवेहिं’ वर्णपर्यवै—वर्णा—शुक्लादयस्ते च पर्ययाः पर्याया गुणा वर्णपर्यवास्तैस्तथा शुक्लादिवर्णरूपगुणैः ‘पर्यवः पर्यायः, गुणः, विशेषः, धर्म’ इत्येते समानाथकाः, ‘तद्देव’ तथैव द्वितीयारकप्रतिपत्तिक्रमवद् बोध्यम्, ‘जाव’ यावत् ‘अणंतेहिं’ अनन्तैः ‘उट्ठाणकम्म जाव’ उत्थानकर्म यावत् उत्थानकर्मबलवीर्यपुरुषकार पराक्रमैरनन्तगुणपरिहान्या ‘परिहायमाणे २’ परिहीयमानः २ ‘एत्थ’ अत्र अत्रान्तरे ‘णं’ खलु (दूसमसुसमा) दुष्पमसुपमा ‘णामं’ नाम ‘समा’ कालः (पडिवज्जिसु) प्रत्यपद्यते (समणाउसो) । श्रमणाऽऽयुष्मन् ! हे श्रमण ! हे आयुष्मन् ! अथ पूर्वाकवद् भरतस्वरूपं निरूपयितुं संवदति (तीसेणं मंते !) तस्यां खलु भदन्त ! हे महानुभाव ! (समाए) समायां काले (भरहस्स) भरतस्य तदारूपस्य (वासस्स) वर्षस्य (केरिसए) कीदृशकः—कीदृशः (आगारभावपडोयारे) आक्रारभावप्रत्यवतारः स्वरूप—तद्रूपपदार्थसहितप्रादुर्भावः (पण्णत्ते) प्रज्ञप्तः ? (गोयमा !)

अव सूत्रकार चतुर्थारक का स्वरूप कहते हैं

‘तीसेण समाए दोहिं सागरोवमकोडाकोडीहिं’ इत्यादि सूत्र—५२—

टीकार्थ—जब दो कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण तृतीय काल समाप्त हो गया तब (अणंतेहिं वण्णपज्जवेहिं तद्देव जाव अणंतेहिं उट्ठाण कम्म जाव परिहायमाणे २ एत्थ णं दूसम सुसमा णामं ममा काले पडिवज्जिसु समणाउसो) अनन्त शुक्लादिगुण रूप पर्यायों की हीनता वाला यावत् अनन्त उत्थान, बल वीर्य, पुरुषकार पराक्रम रूप पर्यायों की हीनता वाला दुष्पमसुपमा नामका चतुर्थ काल हे श्रमण आयुष्मन् ! प्रारम्भ हुआ यहाँ यावत् शब्द से द्वितीय आरक में जिस प्रकार से वर्णपर्यायों से लेकर पुरुषकार पराक्रम तक का पाठ कहा गया है—वैसा ही वह सब पाठ यहाँ पर भी कह लेना चाहिये “तीसेण मंते ! समाए भरहस्स वासस्स केरिसए आगार-

હવે સૂત્રકાર ચતુર્થારકનું સ્વરૂપ કહે છે —

‘તીસેણ સમાપ દોહિં સાગરોવમકોડાકોડીહિં’—इत्यादि सूत्र ॥ ५२ ॥

टीकार्थ—जब दो कोटा कोटी सागरोपम प्रमाण तृतीय काल समाप्त थये त्थारे(अणंतेहिं वण्णपज्जवेहिं तद्देव जाव अणंतेहिं उट्ठाणकम्म जाव परिहा जे २ एत्थ णं दूसम सुसमा णाम समा काले पडिवज्जिसु समणाउसो) हे श्रमण आयुष्मन् अनन्त शुक्लादि गुण रूप पर्यायों की हीनता वाणो यावत् अनन्त उत्थान, बल, वीर्य, पुरुषकार पराक्रम रूप पर्यायों की हीनता वाणो दुष्पम सुपमा नामक चतुर्थ काल प्रारंभ थये अही यावत् पन्थी द्वितीय आरकમાં જેમ વણ પયથિયાથી માલીને પુરુષકાર પરાક્રમ સુધીના પાઠ અહણ થયો છે તેમજ તે પાઠ અહીં પણ અહણ થયેલ છે. “તીસે ણં મંતે ! સમાપ ભર વાસસ્સ કેરિસપ આગારમાવપડોયારે પણ્ણત્તે” હે ભદન્ત ! આ ચતુર્થ કાળમાં ભરત

ગૌતમ ! તસ્ય (વહુસમરમણિજ્જે)વહુમમરમાણીયઃ અત્યન્તસમતલોડત એવ રમણીયઃ સુન્દરઃ (ભૂમિભાગે) ભૂમિભાગઃ ભૂમિપ્રદેશઃ (પણ્ણત્તે) પ્રજ્ઞપ્તઃ સ કીદ્દશઃ ઇત્યાહ—‘સે’ સ’ (જહાણામપ્) યથાનામરુઃ (આલિંગપુક્કરેહ વા) આલિંગપુક્કરમિતિ વા—આલિંગ્ગઃ—મુરજો વાઘ-વિશેષઃ તસ્ય પુક્કરં—ચર્મપુટ તદત્યન્તસમતલં ભવતીતિ તત્તુલ્યસમતલત્વાત્ તદેવડતિ-શબ્દો હિ સાદૃશ્યાર્થરુઃ, વા શબ્દઃ સમુચ્ચયાર્થકઃ, એવમગ્રેપિ (જાવ) યાવત્—યાવ-ત્પદેન—‘મુદંગપુક્કરેહ વા સરતલેહ વા, કરતલેહ વા, ચંદમંડલેહ વા, સૂરમંડલેહ વા આર્યસમંડલેહ વા, ઉરબ્મચમ્મેહ વા, ઉપમચમ્મેહ વા, વરાહચમ્મેહ વા, સીહચમ્મેહ વા, વગ્ધચમ્મેહ વા, મિગચમ્મેહ વા, છગલચમ્મેહ વા, દીવિયચમ્મેહ વા, અણેગસંકુકીલગસહસ્સ-વિતહ ણાણાવિહ પંચવણ્ણેહિ” ઇતિ સંગ્રાહ્યમ્, તચ્છાયા—“મુદંગપુક્કરમિતિ વા, સરસ્તલમિતિ વા, ચન્દ્રમણ્ડલમિતિ વા, સૂરમણ્ડલમિતિ આદર્શમણ્ડલમિતિ વા, ઉરબ્રચર્મેતિવા, વૃપમચર્મેતિ વા વરાહચર્મેતિવા, સિંહ ચર્મેતિ વા, વ્યાઘ્રચર્મેતિ વા, મૃગચર્મેતિ વા છગલચર્મેતિ વા દ્વીપિક-ચર્મેતિ વા, અનેકશક્કુકીલકસહસ્રવિતતઃ નાનાવિધપચ્ચર્વણેઃ” ઇતિ, એતદ્વ્યાખ્યા રાજ-પ્રશ્નીયસૂત્રસ્ય પશ્ચદશસૂત્રસ્ય મત્કૃતસુવોધિનો ટીકાતો વોધ્યા, (મણીહિં) મણિભિઃ (ઉવસો-

માવપહોયારે પણ્ણત્તે” હે મદન્ત્ ! હિસ ચતુર્થકાલ મેં ભરત ક્ષેત્ર કા સ્વરૂપ કૈસા કહા ગયા હૈ ? હિસ પ્રશ્ન કે ઉત્તર મેં પ્રમુ શ્રી કહતે હૈ—“ગોયમા ! વહુસરમણિજ્જે ભૂમિભાગે પણ્ણત્તે, સે જહા-મપ્ અલિંગપુક્કરેહવા જાવ મણીહિં ઉવસોમિપ્” હે ગૌતમ ! ઉસ ચતુર્થ કાલ મેં હિસ ભારતક્ષેત્ર કો ભૂમિ અત્યન્ત સમતલ વાલી થો અત એવ વહ રમણીય—સુન્દર થો વહ એસો સમતલ વાલી થો કિ જૈસા મુરજ મુદંગ નામક વાઘ વિશેષ કા ચર્મપુટ સમતલ વાલા હોતા હૈ૦ યહા ઇતિ શબ્દ સાદૃશ્યાર્થક હૈ ઓર વા શબ્દ સમુચ્ચયાર્થક હૈ યહા પર યાવત્ શબ્દ સે—‘મુદંગપુક્કરેહવા, સર-તલે હવા, કરતલેહવા, ચંદમંડલેહવા, સૂરમંડલેહવા, આર્યસમંડલેહવા, ઉરબ્મચમ્મેહવા, ઉપમ-ચમ્મેહવા, વરાહચમ્મેહવા, સીહચમ્મેહવા, વગ્ધચમ્મેહવા, મિગચમ્મેહવા, છાગલચમ્મેહવા, દીવિય-ચમ્મેહવા, અણેગસંકુકીલગ સહસ્સવિતપ્ ણાણાવિહ પંચવણ્ણેહિ” હિસ પાઠ કા ગ્રહણ હુઆ હૈ હિસ પાઠ કે પદો કી વ્યાખ્યા રાજપ્રશ્નીય સૂત્ર કે ૧૫વે સૂત્ર કી સુવોધિની ટીકા સે જાન લેના

ક્ષેત્રના સ્વરૂપ વિષે શુ’ કહેવામાં આવ્યું છે ? તે આ પ્રશ્નના જવાબમાં પ્રભુ કહે છે—‘ગોયમા ! વહુસરમણિજ્જે ભૂમિભાગે પણ્ણત્તે, સે જહાણામપ્ આલિંગપુક્કરેહ વા જાવ મણીહિં ઉવસોમિપ્” હે ગૌતમ, તે ચતુર્થ કાળમાં તે ભરત ક્ષેત્રની ભૂમિ અત્યન્ત સમતલ હતી, એથી તે રમણીય સુદર હતી, મુરજ નામક વાઘ વિશેષનો ચર્મપુટ જે પ્રમાણે સમતલ વાળો હોય છે, તે પ્રમાણે જ તે ભૂમિ સમતલવાળી હતી અહીં ‘ઇતિ’ શબ્દ સાદૃશ્યાર્થક છે અને ‘વા’ શબ્દ સમુચ્ચયાર્થક છે અહીં યાવત્ શબ્દથી “મુદંગપુક્કરેહ વા, સરતલેહ વા કરતલેહ વા, ચંદમંડલેહ વા, સૂરમંડલેહ વા આર્યસમંડલેહ વા ઉરબ્મચમ્મેહ વા, ઉપમચમ્મેહ વા, વરાહચમ્મેહ વા, વગ્ધચમ્મેહ વા, સીહચમ્મેહ વા, મિગચમ્મેહ વા, છાગલચમ્મેહવા, દીવિયચમ્મેહવા. અણેગ સંકુકીલગસહસ્સવિતપ્ ણાણાવિહ પંચવ-ણ્ણેહિ” આ પાઠ સંગ્રહીત થયે છે. આ પાઠના પદોની વ્યાખ્યા ‘રાજપ્રશ્નીય સૂત્ર’ ના સૂત્ર નં. ૧૫ ની સુવોધિની ટીકા પરથી બાકી લેવી એકાએક તે ભૂમિ અનેક પ્રકારના

મિષ) ઉપશોભિતઃ—અલङ્કૃતઃ, (તં જહા) તદ્યથા (કિત્તિમેહિં ચેવ અકિત્તિમેહિં ચેવ) કૃત્રિમૈ-
 અકૃત્રિમૈશ્ચૈવ—સ્વાભાવિકૈઃ કારુનિર્મિતૈશ્ચ મણિભિરુપશોભિત इत्यर्थः, इति भरतर्षभ-
 मिभागवर्णनम् अथ दुष्पमसुपमाकालोत्पन्नभरतक्षेत्रभवमनुजान् वर्णयितुं सवदति (तीसे)
 तस्या दुष्पमसुपमायां(णं) खलु (भंते !) भदन्त ! हे महानुभावः (समाए) समायां
 काले (भरहे) भरते-भरतक्षेत्रे वर्षे (मणुयाणं) मनुजानां मनुष्याणां (केरिसए) कीदृशकः—
 कीदृशः (आयारभावपडोयारे) आकारभावप्रत्यवतारः—स्वरूपसंहननसंस्थानोच्चत्वादि प-
 दार्थसहितप्रादुर्भावः (पण्णत्ते) प्रज्ञप्तः ? अस्य प्रश्नस्योत्तर मगवानाह—(गोयमा !)
 गौतम ! (तेसिं) तेषां दुष्पमसुपमासमोत्पन्नभरतवर्षीयाणाम् (मणुयाणं) मनुजानां (छ-
 व्विहे) षड्विधं पट्प्रकारकं (संघयणे) सहननं-शरीरं(छव्विहे) षड्विधं (संठाणे) संस्थानम्
 आकारः (बहुइं) बहूनि-अनेकानि (घणूइं) घनूषि (उद्धं) ऊर्ध्वम् (उच्चत्तेण) उच्च-
 त्वेन प्रज्ञप्तम् तच्च ते (जहण्णेण) जघन्येन-अपकर्षेण (अंतोमुहुत्तं) अन्तर्मुहूर्तम् (उक्को
 सेणं) उत्कर्षेण-उत्कृष्टतया (पुव्वकोडोआउअं) पूर्वकोट्ययुष्कम्-पूर्वकोटिमायुः (पालेंति)

चाहिये० वह भूमि अनेक प्रकार के पाचवर्णों के मणियों से उपशोभित थी “कित्तिमेहिं चैव अ-
 कित्तिमेहिं चैव” इन मणियों में कृत्रिम मणि भी थे और अकृत्रिम मणि भी थे इस प्रकार से चतुर्थ
 काल के समय की भूमिकावर्णन कर अब सूत्रकार इस चतुर्थ काल में उत्पन्न हुए मनुष्यों का
 वर्णन करने के लिये कहते हैं—“तीसे णं भंते ! समाए भरहे वासे मणुयाणं केरिसए आयारभाव-
 पडोयारे पण्णत्ते” इसमें गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं—हे भदन्त उस चतुर्थ काल के मनुष्यों का
 स्वरूप कैसा कहा गया है ? अर्थात् इनका स्वरूप सहनन, संस्थान एवं उच्चत्वादि पदार्थ
 सहित प्रादुर्भाव कैसा बतलाया गया है इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु कहते हैं—“गोयमा तेसिं
 मणुयाणं छव्विहे सघयणे” हे गौतम चतुर्थ काल के मनुष्यों के ६ प्रकार का सहनन कहा गया
 है—तथा वह “बहुइं घणूइं उद्ध उच्चत्तेण” अनेक घनूष का ऊंचाई वाला कहा गया है. इस
 काल के मनुष्यों की आयु जघन्य से “अंतोमुहुत्तं” एक अन्तर्मुहूर्त की और उत्कृष्ट से “पुव्व-
 कोडो आउअं पालेंति” एक पूर्वकोटि की कही गई है इतनी बड़ी आयु को भोगकर “अप्ये-

પાંચ વર્ણો ના મણિઓથી ઉપશોભિત હતી “કિત્તિમેહિં ચેવ અકિત્તિમેહિં ચેવ” એ મણિ-
 ઓમાં કૃત્રિમ મણિઓ પણ હતા અને અકૃત્રિમ મણિઓ પણ હતા આ પ્રમાણે ચતુર્થ
 કાળના સમયની ભૂમિનું વર્ણન કરીને હવે સૂત્રકાર આ ચતુર્થ કાળમાં ઉત્પન્ન થયેલ
 માણસોનું વર્ણન કરવા માટે આ પ્રમાણે કહે છે—“તીસેણં મત્તે ! સમાયે ભરહે વાસે
 યાણં કેરિસયે આયારભાવપડોયારે પણ્ણત્તે” આમાં ગૌતમસ્વામી પ્રશ્નને આ પ્રમાણે પ્રશ્ન કરે
 છે કે હે ભદ્રન્ત તે ચતુર્થ કાળના માણસોનું સ્વરૂપ કેવું કહેવામાં આવ્યું છે ? આ પ્રશ્ન
 ના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે—“ગોયમા ! તેસિં મણુયાણં છવ્વિહે સંઘયણે” હે ગૌતમ ! ચતુર્થ
 કાળના માણસો ના ૬ પ્રકારના સહનન કહેવામાં આવ્યા છે તેમજ તે “બહુઈ ઘનૂઈ ઉદ્ધ
 ત્તેણં” અનેક ધનુષો જેટલી ઉચાઈ ધરાવતા હતા. આ કાળના માણસો નું આયુ જઘ-
 ન્યથી “અંતોમુહુત્તં” એક અન્તર્મુહૂર્તની અને ઉત્કૃષ્ઠથી “પુવ્વકોડી આડયં પાલેતિ” એક

પાલયન્તિ અનુભવન્તિ (પાલિત્તા) પાલયિત્વા તત્ર (અપ્પેગડયા) અપ્યેકકે કેચિત્ (ગિરય-
ગામી) નિરયગામિનઃ નરકગામિનઃ (જાવ) યાવત્- યાવત્પદેન- “તિર્યગામિનઃ મનુષ્ય
ગામિનઃ” ઇતિ સગ્રાહ્યમ્, (દેવગામી) દેવગામિનઃ (અપ્પેગડયા) અપ્યેકકે કેચિત્ મનુગા.
(સિદ્ધાન્તિ) સિદ્ધ્યન્તિ સિદ્ધિ પ્રાપ્નુવન્તિ (બુદ્ધાન્તિ) બુદ્ધ્યન્તે- વ્રોથ કેવલજ્ઞાનં પ્રાપ્નુવન્તિ
‘જાવ’ યાવત્- “મુચ્ચન્તિ, પરિણિવ્વાઅતિ” ઇતિ સંગ્રાહ્યમ્, તસ્ય “મુચ્ચન્તે પરિનિર્વા-
ન્તિ” ઇતિચ્છાયા, તત્ર મુચ્ચન્તે ઇત્યસ્ય સકલકર્મબન્ધાન્મુક્તા ભવન્તીત્યર્થઃ, પરિનિર્વા-
ન્તિ- પારમાર્થિકસુખં પ્રાપ્નુવન્તિ, ‘સન્વદુક્ષાણમત’ સર્વદુઃખાનામન્તં નાશં ‘કરેતિ’
કુર્વન્તિ, અથ પૂર્વ સમાપ્તો વિશેષમાહ-‘તીસે’ તસ્યાં ‘ળં’ લલ ‘સમાણ’ સમાયાં કાલે
‘તઓ’ ત્રયઃ- ત્રિસંખ્યાઃ ‘વસા’ વંશાઃ વંશા ઇવ વશાઃ પ્રવાહા- આવલિકાઃ, ન તુ સન્તા-
નરૂપાઃ પરમ્પરા પરસ્પરં પિતૃપુત્રપૌત્રપ્રપૌત્રાદિવ્યવહારાભાવાત્ ‘સમુપ્પજ્જિત્થા’ સમુદપ-
ધન્ત- સમુત્પન્ના અભૂવન્ ‘તં જહા’ તદ્યથા ‘અરહતવંસે’ અર્હદ્વંશઃ ૧ ‘ચક્રવટ્ટિવંસે’ ચક્રવર્તિ-
વંશઃ ૨ ‘દસારવંસે’ દશાર્હવંશઃ ૩ તત્ર દશાર્હવંશઃ- દશાર્હાણા બલદેવવાસુદેવાનાં વશો
દશાર્હવંશઃ, યદત્ર દશારશબ્દેન બલદેવવાસુદેવયોર્ગ્રહણં તદુત્તરસૂત્રવલાદેવ બોધ્યમ્,

ગડયા” કિ તનેક જીવ “ગિરયગામી” નરકગામી હોતે હૈ, “જાવ” યાવત્ કિતનેક જીવ તિર્યગામી
હોતે હૈ, કિતનેક જીવ મનુષ્ય ગામી હોતે હૈ ઓર કિતનેક જીવ “દેવગામી” દેવગામી હોતે હૈ.
તથા કિતનેક જીવ સિદ્ધાન્તિ” સિદ્ધિ ગતિ કો પ્રાપ્ત હોતે હૈ. ‘બુદ્ધાન્તે’ જાવ મુચ્ચન્તિ, પરિણિવ્વા-
અન્તિ” કિતનેક કેવલજ્ઞાન કો પ્રાપ્ત કરતે હૈ, યાવત્ સકલ કર્મોં કે બન્ધન સે મુક્ત હો જાતે હૈ
ઓર પારમાર્થિક સુખ કો પ્રાપ્ત કર લેતે હૈ “સન્વદુક્ષાણમંત કરેતિ” આર સમસ્ત દુઃખોં કા
અન્ત કર દેતે હૈ ‘તીસે સમાણ તઓ વંસા સમુપ્પજ્જિત્થા-તં જહા-અરહંતવંસે ચક્રવટ્ટિવંસે ૨
‘દસારવંસે’’ઉસ કાલ મેં ૩ ત્રીન વંશ ઉત્પન્ન હુણ-એક અર્હદ્વંશ દૂસરા ચક્રવર્તિ વશ ઓર ત્રીસરા
દશાર્હવંશ હન અર્હન્ત પ્રમુ કી જો વશ, હૈ વહ અર્હદ્વંશ ઓર ચક્રવર્તિ કા જો વશ હૈં વહ ચક્રવર્તિ
વંશ હૈ તથા બલદેવ ઓર વાસુદેવોં કે વશ કો દશાર્હ વંશ કહા ગયા હૈં. યહા પર જો દશાર

પૂર્વ કોટિ જેટલુ કહેવામા આવે છે. આટલુ દીર્ઘ આયુ લોગવીને “અપ્પેગડયા” કેટલાક
લેવે. “ગિરયગામી” નરક ગામી હોય છે જાવ યાવત્ કેટલાક લેવે. તિર્યગામી હોય
છે કેટલાક લેવે. મનુષ્યગામી હોય છે અને કેટલાક લેવે. “દેવગામી દેવગામી હોય છે.
તેમજ કેટલાક લેવે. “સિદ્ધાન્તિ સિદ્ધિગતિને પ્રાપ્ત કરે છે. “બુદ્ધાન્તિ જાવ મુચ્ચન્તિ પરિ-
ણિવ્વાઅન્તિ કેટલાક લેવે. કેવલજ્ઞાનને પ્રાપ્ત કરે છે યાવત્ સંકળ કર્મોના બંધનોથી મુક્ત
થઈ જાય છે, પારમાર્થિક સુખને પ્રાપ્ત કરે છે “સન્વદુક્ષાણમંત કરેતિ” અને સમસ્ત
દુઃખોનો અન્ત કરી નાખે છે ‘તીસે સમાણ તઓ વંસા સમુપ્પજ્જિત્થા તં જહા અરહંતવંસે
ચક્રવટ્ટિવંસે ૨ દસારવંસે’ તે કાળમા ત્રણ વશો ઉત્પન્ન થયા-એક અર્હદ્વંશ, બીજો
ચક્રવર્તિ વશ ત્રીજો દશાર્હ વશ એ ત્રણે મા જે અર્હન્ત પ્રમુનેા વશ છે, તે અર્હદ્વંશ
અને ચક્રવર્તિનો જે વશ છે તે ચક્રવર્તિ વશ છે. તેમજ બલદેવ અને વાસુદેવના વંશને
દશાર્હ વંશ કહેવામા આવે છે અહીં જે દશા શબ્દથી બલદેવ વાસુદેવનુ ગ્રહણ કરવામા

અન્યથા દશાર્હશબ્દેન વાસુદેવાનામેવ પ્રતિપાદ્યતયા ગ્રહણં સ્યાદિતિ ‘અહ્ય ચ દસારાણં’
 इति वचनात्. यद्यपि प्रतिवासुदेववंशोऽत्र नोक्तः तथापि उपलक्षणात् सोऽपि ग्राह्यः,
 तदनुक्तौ कारणं च उपाङ्गानामङ्गानुयायित्वमिति स्थानाङ्गे वशत्रयस्यैव प्रतिपादनात्, तत्-
 कारणं च प्रतिवासुदेवानां वामुदेववध्यतया पुरुषोत्तमत्वानभ्युपगम इति वृद्धा आहुः
 एतदेवाह—‘तीसेणं समाए तेवीसं तित्थयरा इक्कारस चक्रवट्टी णव वलदेवा णव वासुदेवा’
 इति “तस्यां समायां त्रयोविंशतिस्तीर्थका एकादश चक्रवर्तिनः ऋषभरतयोभृती यारके
 जननात्, नन वलदेवा नव वासुदेवाः, तत्र वासुदेवापेक्षया वलदेवानां ज्येष्ठत्वेन प्रागु-
 पदानम्, एवं चोपक्षणात्प्रति वासुदेववंशोऽपि ग्राह्य ‘समुपपन्नित्या’ समुदाद्यन्त । सू० ५२॥
 इति चतुर्थाऽरक उक्त. ४ ।

શબ્દ સે વલદેવ ઔર વાસુદેવ કા ગ્રહણ ક્રિયા ગયા હૈ વહ ઉત્તર સૂત્ર ક વલ સે હો ગ્રહણ ક્રિયા
 ગયા હૈ નહોં તો ફિર પ્રતિપાદ્ય હોને કે કારણ વાસુદેવો કા હી ગ્રહણ હોના ચાહિયે થા ‘અહ્યચ
 દસારાણં’ હસ વચન કે અનુસાર યથાપિ યહાં પર પ્રતિ વાસુદેવ કા વગ નહોં કહા ગયા હૈ તથાપિ
 ઉપલક્ષણ સે વહ મી યહા પર ગ્રાહ્ય હૈ ઉસે જો યહા સ્પષ્ટ રૂપ સે નહોં કહા ગયા હૈ ઉમકા કારણ
 ઉપાઙ્ગ અઙ્ગાનુયાયી હોતે હૈ હસ નિયમ કે અનુસાર સ્થનાઙ્ગ મે વશત્રય કા પ્રતિપાદન હૈ તથા
 પ્રતિ વાસુદેવ વાસુદેવ કે દ્વારા વધ્ય હોતે હૈ હસ કારણ ઉન્હે ઉત્તમ પુરુષોં મેં પરિગણિત નહોં
 ક્રિયા ગયા હૈ એસા વૃદ્ધ કહતે હૈ ઉસ ચતુર્થ ઠાલ મેં હી તેવીસ તિ-થયરા ઇક્કારસ ચક્કવટ્ટી ણવ
 વલદેવા” ૨૩ તીર્થકર ૧૧ ચક્રવર્તી ની વલદેવ ઔર ની વાસુદેવ હોતે હૈ યહા ૨૩ તીર્થકર
 હસલિયે કહે ગયે હૈ કિ ઋષભદેવ ભરત ક્ષેત્ર મેં તૃતીય આરક મેં હુય હૈ વાસુદેવ કી અપેક્ષા
 વલદેવ જ્યેષ્ઠ હોતે હૈ હસલિયે ઉન્હે પાઠ મેં પ્રથમ કહા ગયા હૈ હસ તરફ ઉપલક્ષણ સે પ્રતિવાસુ-
 દેવ કા વંશ મી ગૃહીત હુઆ જાનના ચાહિયે—ચતુર્થ આરક સમાપ્ત—૫૨

આવેલ છે તે ઉત્તર સૂત્રના બળથી ગ્રહણ કરવામાં આવેલ છે, નહીં તર પછી પ્રતિપાદ્ય
 હોવાને લીધે વાસુદેવોનું જ ગ્રહણ થયું. એથી જ અહ્ય ચ દસારાણં આ વચન મુજબ
 યદ્યપિ અત્રે પ્રતિ વાસુદેવનો વંશ કહેવામાં આવેલ નથી, તથાપિ ઉપલક્ષણથી તેનું પણ
 અહીં ગ્રહણ થયું છે તેને જો અત્રે સ્પષ્ટ રૂપમાં પ્રદર્શિત કરવામાં આવેલ નથી. તેનું કારણ
 ઉપાંગ અંગાનુયાયીઓ હોય છે. આ નિયમ મુજબ સ્થનાંગ માં વશત્રય નું પ્રતિપાદન
 છે તેમજ પ્રતિવાસુદેવ વાસુદેવ વડે વધ્ય હોય છે, તેથી તેમની ઉત્તમ પુરુષોમાં પરિગણના
 કરવામાં આવી નથી. એવું વૃદ્ધો કહે છે તે ચતુર્થ ઠાળ માં જ “તેવીસ તિથયરા
 ઇક્કારસ ચક્કવટ્ટી ણવ વલદેવા” ૨૩ તીર્થ કરે, ૧૨ ચક્રવર્તીઓ, નવ બળદેવો અને
 નવ વાસુદેવો હોય છે અહીં તીર્થ કરે. એટલા માટે કહેવામાં આવેલ છે કે ઋષભ દેવ
 ભરતક્ષેત્રમાં તૃતીય આરકમાં થયા છે. વાસુદેવની અપેક્ષા બળદેવ જ્યેષ્ઠ હોય છે. એથી
 તેમને પાઠમાં પ્રથમ કહેવામાં આવેલ છે આ પ્રમાણે ઉપલક્ષણથી પ્રતિવાસુદેવનો વશ
 પણ ગૃહીત થયો છે, તેમ સમજવું. ॥૫૨॥

ચતુર્થ આરક સમાપ્ત—

अथ पञ्चमोऽरको वर्ण्यते—

मूलम्—तीसे णं समाए एक्काए सागरोवमकोडाकोडीए वायाली
साए वाससहस्सेहि ऊणिआए काले वीइक्कंते अणंतेहि वण्णपज्जवेहि
तहेव जाव परिहाणीए परिहायमाणे २ एत्थणं दुसमा णामं समा काले
पड्विज्जिस्सइ समणाउसो ! तीसेणं भंते ! समाए भरहस्स वासस्स
केरिसिए आगारभावपडोयारे भविस्सइ ? गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे
भूमिभागे भविस्सइ से जहाणामए आलिङ्गपुक्खरेइव वा मुङ्गपुक्खरेइ
वा जाव णाणामणिपंचवण्णोहि कित्तिमेहि चेव अकित्तिमेहि चेव तीसे णं
भंते ! समाए भरहस्स वासस्स मणुआणं केरिसिए आगारभावपडोयारे
पण्णत्ते ? गोयमा ! तेसि मणुआणं छव्विए संघयणे छव्विए संठाणे बहु
ईओ रयणीओ उद्धं उच्चत्तेणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं साइरेगं
वाससयं आउअं पालेति पालित्ता अप्पेगइआ णिरयगामि जाव सब्बदु
क्खाणमंतं करेन्ति, तीसेणं समाए पच्छिमे तिआए गणधम्मं पासंडधम्मं
रायधम्मं जायतेए धम्मचरणे अवोच्छिज्जिस्सइ ॥सू० ५३॥

छाया—तस्यां खलु समायामेकया सागरोपमकोटाकोटया द्विचत्वारिंशता वर्षसह-
स्रैरुनितायां काले व्यतिक्रान्तेऽमन्तैर्वर्णपर्यवैः तथैव यावत् परिहाण्या परिधीयमानः २
अत्र खलु दुष्पमा नाम समा काल प्रतिपत्स्यते श्रमणाऽऽयुग्मन् । तस्यां खलु भवन्त !
समायां भरतस्य वर्षस्य कीदृशक आकारभापप्रत्यवतारो भविष्यति ? गौतम ! बहुसमर-
मणीयो भूमिभागे भविष्यति, स यथानामकः आलिङ्गपुष्करमिति वा मुदङ्गपुष्करमिति वा
यावद् नानामणि पञ्चवर्णैः कृत्रिमैश्चेव अकृत्रिमैश्चेव, तस्यां खलु भवन्त ! समायां भर-
तवर्षस्य मनुजानां षड्विधं संहननं षड्विधं संस्थानं बह्व्यो रत्नयः ऊर्ध्वमुखत्वेन जघ-
न्येनान्तर्मुहूर्त्तम् उत्कर्षेण सातिरेकं वर्षशतमायुष्कं पालयन्ति पालयित्वा अप्येकके निरय-
गामिनो यावत् सर्वदुःखानामन्तं कुर्वन्ति, तस्याः खलु समायाः पश्चिमे त्रिभागे गणधर्मः
पाण्डधर्मो राजधर्मो जाततेजाः धर्म चरणं च व्युच्छेत्स्यते ॥ ५३ ॥

टीका—“तीसे णं समाए” इत्यादि-तस्यां दुष्पमसुषमायां खलु समायां काले (एकाए)
एकया एक संख्यया (सागरोवमकोडाकोडीए) सागरोपमकोटाकोटया- एकेन कोटाकोटि

पंचम आरक का वर्णन—

‘तीसे णं समाए एक्काए सागरोवम’—इत्यादि सूत्र-५३

टीकार्थ—उस काल में जब ४२ हजार वर्ष कम एक कोटा कोटी सागरोपम प्रमाण वाला
चतुर्थकाल समाप्त हो चुका तब धीरे धीरे “मणंतेहि वण्णापज्जवेहि तहेव जाव परिहाणीए परि-

सागरोपमेनेति पदद्वयार्थः (वायालीसाए) द्विचत्वारिंशता (वाससहस्सेहिं) वर्षसहस्रैः द्विचत्वारिंशत्सहस्रवर्षैरिति पदद्वयार्थः (अणिआए) अनितायां न्यूनीभूतायां समायामिति पूर्वणान्वयः, तस्यां तद्रूपे (काले) काले (वीइक्कंते) व्यतिक्रान्ते-व्यतीते सति (अणंतेहिं) अनन्तैः अन्तरहितैः वर्णपञ्जवेहिं वर्णपर्यवः शुक्लादि-वर्णविशेषैः (तहेव) तथैव चतुर्थारकवदेव (जाव) यावत् गन्धपर्यवैरित्यारभ्य अनन्तबलवीर्यपुरुषकारपराक्रमैरनन्तगुणेति यावत्पद सग्राह्यम्, तत्रानन्तगुणेत्यस्याग्रेतनेनान्वयः (परिहाणीए) परिहान्या-अनन्तगुणपरिहान्या अनन्तगुणहासेन एषां व्याख्या द्वितीयारकवर्णने गता (परिहायमाणेऽ) परिहीयमानः २ हसन २ काल उपतिष्ठति (एत्थ) अत्र अत्रान्तरे (णं) खलु (दूसमा) दुष्पमा (णामं) नाम (समा) (काले कालः) (पडिवज्जिस्सइ) प्रतिपत्स्यते उपस्थास्यति अत्र चक्षुरपेक्षया भविष्यकालनिर्देशः (समणाउसो) श्रमणाऽऽयुष्मन् ! हे श्रमण ! हे आयुष्मन् ! अथ दुष्पमायां भरतस्वरूपं निरूपयितुं संवदति (तीसे) तस्यां दुष्पमायां समायां (णं) खलु (मंते) भदन्त ! महानुभावः (समाए) समायां (काले भरहस्स) भरतस्य (वासस्स) वर्षस्य (केरिसए) कीदृशकः कीदृशः (आगारभावपडोयारे) आकारभावप्रत्यवतारः, इदं प्राग्वत् (पण्णत्त) प्रज्ञप्तः । अस्य प्रश्नस्योत्तरं भगवानाह—(गोयमा !) गौतम ! (बहुसमरमणिज्जे) बहुसमरमणीयः अत्यन्तसमतलोऽत एव रमणीयः- सुन्दरः (भूमिभागे) भूमिभागः भूमि प्रदेशः (भविस्सइ) भविष्यति (से) सः भूमिभागः (जहाणामए) यथानामकः

हायमाणे” अन्तरहित वर्णपर्याय के यावत् गन्धपर्याय के अनन्त बल वीर्य पुरुषकार पराक्रम अनन्तगुणरूप से घट जाने पर ‘समणाउसो’ हे श्रमण आयुष्मन् ! ‘एत्थ ण दूसमा णाम समा काले पडिवज्जिस्सइ’ इस भरत क्षेत्र में दुष्पमा नामका पाचवा काल लगेगा यहाँ पर यह भविष्यत्काल का निर्देश वक्ता की अपेक्षा से किया गया है । ‘तीसेण मंते ! समाए भरहस्स केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णत्ते’ हे भदन्त ! इस पंचम काल के समय में भरत क्षेत्र का आकार भाव प्रत्यवतार—स्वरूप—कैसा कहा गया है इस गौतमके प्रश्न के उत्तर में प्रभु कहते हैं—“गोयमा बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे भविस्सइ, से जहाणामए आलिगपुक्खरेइ वा

पञ्चम आरकं तु वक्ष्ये

‘तीसेण समाए एक्काए सागरोवम’—धृत्यादि सूत्र-५३

टीकाथ—ते काणे न्यारे ४२ हजार वर्ष कथ ज्येष्ठे के।टी। सागरोपम प्रमाणवाणे। यत्तुथ काण सभास थये। त्यारे धीमे धीमे “अणंतेहिं वर्णपञ्जवेहिं तहेव जाव परिहाणीए परिहायमाणे” अन्त रहित वक्ष्यपर्यायिना यावत् गन्ध पर्यायिना अनन्त गणवीथे आयुष्मन् ! ‘एत्थ ण दूसमाणाम समा काले पडिवज्जिस्सइ’ आ भरतक्षेत्रमा दुष्पमा नामना पांचमा काण ने। आरके थये अही भविष्यकाणो उद्दिष्ट वक्तानी अपेक्षाको करवाभा आवेल्ले छे ‘तीसेण मंते समाए भरहस्स केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णत्ते’ छे भदन्त ! आ पञ्चम काणना अभयभा भरतक्षेत्रना आकार भाव प्रत्यवतार—स्वरूप—केतु कहेवाभा आवेल्ले छे । गौतमना आ प्रश्नना न्याय भा प्रभु कहे छे—बहुसमरमणिज्जे भूमि

(આલિંગપુલ્કરેઙ વા) આલિંગ પુલ્કરમિતિ વા આલિંગઃ—મુરજો વાઘવિશેષ, તસ્ય પુલ્ક-
રં ચર્મપુટં તદત્યન્તસમતલં ભવતીતિ તત્તુલ્યસમતલત્વાત્તદેવ ઇતિ । ઇતિ શબ્દોહિ સાદ્-
શ્યાર્થકઃ વા શબ્દઃ સમુચ્ચયાર્થકઃ, એવયગ્રેઽપિ (મુદંગપુલ્કરેઙ વા) મુદંગપુલ્કરમિતિ વા
(જાવ) યાવત્ ઇહ યાવત્પદેન ‘સરતલેઙ વા’ ઇત્યાદીના સદ્ગ્રહઃ ૫૧ એકપઠ્ચાશત્તમ-
સૂત્રે કૃતસ્તદનુસારેણ વોધ્યઃ, તેષાં વ્યાખ્યા ચ તદ્રત્ (ળાળામણિપંચવર્ણોહિ) નાનામ-
ણિપઠ્ચવર્ણેઃ નાના-નાનાવિધેઃ મણિભિઃ કીદૃશૈઃ પઠ્ચવર્ણેઃ કૃષ્ણનીલશુક્લહારિદ્રલોહિતૈઃ
પુનઃ કોદૃશૈસ્તેઃ (કિત્તિમેહિં ચેવ અકિત્તિમેહિં ચેવ) કૃત્રિમૈશ્વૈવ અકૃત્રિપૈશ્વૈવ રચિતૈઃ સ્વાભા-
વિકૈશ્વ મણિભિરુપશોભિતો ભૂમિભાગો ભરતવર્ષસ્ય ભવિષ્યતીતિ પ્રયોગઃ પૃચ્છકાપેક્ષયા,
અત્ર ભૂમેર્વહુસમરમણીયત્વાદિકં ચતુર્થારકતો હીયમાન ૨ કાલક્રમેળાત્યન્ત હીન વોધ્યમ્,
નનુ “સ્થાણુબહુલે વિસમબહુલે” ઇત્યાદિનાઽધસ્તનસૂત્રેણ લોકપ્રસિદ્ધેન ચ વિરુધ્ધયતે

મુદંગપુલ્કરેઙ વા જાવ સરતલેઙવા’ હે ગૌતમ ડસ સમય મેં ડસ ભરત ક્ષેત્ર કા મૂમિભાગ એસા
અત્યન્ત સમતલવાલા, રમણીય હોગા જૈસા કિ વાઘવિશેષ મુરજ [મુદંગ] કા પુલ્કર—ચર્મપુટ
અત્યન્ત સમતલ વાલા હોતા હૈ મુદંગ કા મુલ્લ સમતલ વાલા હોતા હૈ. ગહાં “ઇતિ” શબ્દ
સાદ્શ્યાર્થક હૈ ઓર “વા” શબ્દ સમુચ્ચયાર્થક હૈ. ઇસ તરહ સે ઇન શબ્દો કે સમ્બન્ધ મેં આગે
મી જાનના ઑહિયે. યહાં યાવત્પદ સે “સરતલેઙવા” ઇત્યાદિ પદ કા સમ્પ્રહ હુઆ હૈ યહ સંપ્રહ
૫૧ વે સૂત્ર મેં કિયા ગયા પ્રકટ કિયા હૈ ભરતક્ષેત્ર કા યહ મૂમિભાગ (ળાળામણિ પંચ વર્ણોહિ
કિત્તિમેહિં ચેવ અકિત્તિમેહિં ચેવ) અનેક પ્રકાર કે પાંચ વર્ણો વાલે કૃત્રિમ મણિયો સે એવં અકૃત્રિમ
મણિયો સે ઉપશોભિત હોગા યહા પૃચ્છક કી અપેક્ષા સે મી યહ ભવિષ્યત્કાલ કા પ્રયોગ હુઆ હૈ
યહા મૂમિભાગ મેં બહુસમરમણીયતા આદિ ચતુર્થ આરક કી અપેક્ષા હોયમાન હીયમાન કાલક્રમ કે
અનુસાર અત્યન્ત હીન જાનનીઑહિયે યહાં એસો આશંકા નહીં કરની ઑહિયે—“સ્થાણુ બહુલે
વિસમ બહુલે” ઇત્યાદિ સૂત્ર દ્વારા પંચમ કાલ મેં ભરતક્ષેત્ર કી મૂમિ સ્થાણુ બહુલ આદિ રૂપ

માગે ભવિસ્સહ સે જહા ળામપ આલિંગપુલ્કરેઙ વા મુદંગપુલ્કરેઙ વા જાવ સરતલે-
ઙવા’ હે ગૌતમ તે સમયે આ ભરત ક્ષેત્રનો ભૂ-ભાગ એવો અત્યંત સમતલ, રમણીય થશે
એવો કે વાઘવિશેષ મુરજ (મુદંગ) નો, પુલ્કર—ચર્મપુટ અત્યંત સમતલ હોય છે. મુદ-
ંગનું મુખ સમતલ હોય અહીં “ઇતિ” શબ્દ સાદ્શ્યાર્થક છે અહીં ‘વા’ શબ્દ સમુચ્ચયાર્થક
છે આ પ્રમાણે આ શબ્દોના સંબંધમાં આગળ પણ બહુવું જોઈએ. અહીં યાવત્ પદથી
“સરતલેઙવા” ઇત્યાદિ પદોનું ગ્રહણ થયું છે એકાવન (૫૧) માં સૂત્રમાં યાવત્ પદથી
અહીં સર્વ પદો પ્રકટ કરવામાં આવેલ છે ભરતક્ષેત્રનો આ ભૂમિભાગ (ળાળામણિ પંચ-
વર્ણોહિ કિત્તિમેહિં ચેવ અકિત્તિમેહિં ચેવ) અનેક પ્રકારના પાંચ વર્ણોવાળા કૃત્રિમ મણિ
ઓ તેમજ અકૃત્રિમ મણિઓથી ઉપશોભિત થશે- અહીં પૃચ્છકની અપેક્ષાએ પણ ભવિષ્ય-
તકાલનો પ્રયોગ કરવામાં આવેલ છે આ ક્ષેત્રના ભૂમિભાગની બહુસમરમણીયતા વગેરે અનુર્થ
આરકની અપેક્ષાએ હીયમાન કાલક્રમ અત્યંત હીન સમજવી. અહીં આ ભાતની
શંકા થવી ન જોઈએ કે “સ્થાણુ બહુલે વિસમબહુલે” ઇત્યાદિ સૂત્ર વડે પંચમકાળમાં ભરત

इति चेन्मैवम्- बहुलशब्देन स्थाणुकण्टकविषमतादीनां प्राचुर्यमुक्तं नहि पण्ठारक इवैकान्तिकत्वम् तेन क्वचिन्महानदीगङ्गादितटादी मशारामादौ वैताढ्यगिरो निकुञ्जादौ वा बहु समरमणीयत्वादिद्रुमुपलभ्यते एवेति न विरोधः, अथ दुष्पमाकालजातानां भरतवर्षीयमनुजानामाकारादिकान् निरूपयितुं संवदति (तीसे) तस्यामित्यादि प्राग्वत् नवरं (बहुईओ) बह्वः (रमणीयो) रम्यः- हस्ताः ऊर्ध्वगुच्छत्वेन समरतोननतत्वात्, यद्यपि कोषे रत्निशब्दो बद्धमुष्टिकहस्तार्थकस्तथापि स्वमिद्धान्तपरिभाषयाऽत्र पूर्णहस्तपरो गृह्यते । ते मनुजाः (जहण्णेणं) जघन्येन अपकृष्टतया (अंतोमुहुत्तं) भन्तर्मुहुत्तम् (उक्कोसेणं) उत्कर्षेण उत्कृष्टतया (साइरेगं) सातिरेकं किञ्चिदधिकरुसहितम् (वाससय) वर्षशतम् शतं

સે વર્ણિત કરી ગઈ છે ફિર યહાં આપ બહુસમરમણીય આદિ પદ દ્વારા ડસમેં બહુસમરમણીયતા કા કથન કૈસે કરતે હૈ? ક્યોકિ સૂત્ર મેં બહુલપદ પ્રયુક્ત હુઆ છે સો યહ પદ યહ પ્રકટ કરતા છે કિ હસ કાલ મેં સ્થાણુ કણ્ટક, વિષમતા આદિ કી પ્રચુરતા રહેગી. પરન્તુ છઠે આરક કી તરહ યહ હનકી પ્રચુરતા ઇકાન્ત રૂપ સે યહાં નહીં રહેગી હસસે કહીં ૨ મહાનદી ગાંગા આદિ કે તટાદિ મેં વહે વહે વગીચા આદિ કો મેં વૈતાઢ્યગિરિ કે નિકુઞ્જાદિકો મે બહુસમરમણીયતા ભૂમિભાગ મેં ઉપલબ્ધ હો હી રહી છે અતઃ પ્રતિપાદન મેં કોઈ વિરોધ જૈસી વાત નહીં છે.

અવ હસ કાલ મેં ઉત્પન્ન હુએ મનુષ્યો કા આકાર નિરૂપણ કરને કે નિમિત્ત સૂત્રકાર કહતે છે હસમેં ગૌતમ ને પ્રશ્ન સે ઇસા પૂછા છે—(તીસેણં મંતે સમાપ મરહસ્સ વાસસ્સ મણુયાણં કેરિ-સપ આયારમાવપહોયારે પણ્ણત્તે) હે મદન્ત ડસ કાલ કે મરતક્ષેત્ર કે મનુષ્યો કા આકાર-માવ પ્રત્યવતાર—સહનન, સસ્થાન, શરીર કી ડંચાઈ આદિ—કૈસા હોગા હસકે ઉત્તર મેં પ્રશ્ન કહતે છે । (ગોયમા તેસિ મણુયાણં છવ્વિહે સંઘયણે, છવ્વિહે સંઠાણે બહુઈઓ રયણીઓ ઉદ્ધં ઉચ્ચ-ત્તેણ જહણ્ણેણ અતોમુહુત્ત ઉક્કોસેણ સાહરેગં વાસસયં આઢય પાલેતિ) હે ગૌતમ ડસ સમય કે

ક્ષેત્રની ભૂમિ સ્થાણુ બહુલ આદિ રૂપથી વર્ણિત કરવામા આવેલ છે તો પણ અહીં તમે બહુસમરમણીય વગેરે પદ વડે તેમા બહુસમરમણીયતાનુ કથન કેવી રીતે કરો છો ? કેમકે સૂત્રમા બહુલપદ પ્રયુક્ત થયેલ છે તો આ પદ આવાત રૂપેષ્ટ કરે છે કે આ કાળમા સ્થાણુ કેટક, વિષમતા વગેરેની પ્રચુરતા રહેશે. પણ છઠા આરકના જેમ આ એમની પ્રચુરતા એકાત રૂપમા અહીં રહેશે નહીં. એથી યત્ર-યત્ર મહાનદી ગંગા વગેરેના તટાદિમા મોટા મોટા બગીચાઓમા, વૈતાઢ્યગિરિના નિકુઞ્જાદિકોમા બહુસમરમણીયતા ભૂમિભાગમા ઉપલબ્ધ થઈ જ રહી છે. એથી પ્રતિપાદનમા કોઈ પણ રીતે વિશેષ છે એવુ લાગતુ નથી હવે સૂત્રકાર આ કાળમા ઉત્પન્ન થયેલા મનુષ્યોના આકાર નિરૂપણ કરવાના હેતુથી કહે છે. આ સંબંધ માં ગૌતમ પ્રશ્નને આમ પ્રશ્ન કરે છે—(તીસેણં મંતે ! સમાપ મરહસ્સ વાસસ્સ મણુ-યાણ કેરિસપ આયારમાવપહોયારે પણ્ણત્તે) હે મદન્ત ! તે કાળમા મરતક્ષેત્રના મનુષ્યોના આકાર ભાવ-પ્રત્યવતાર-સહનન, સસ્થાન શરીરના ઉચાઈ વગેરે કેવા હશે ? એના જવાબ માં પ્રશ્ન કહે છે—(ગોયમા ! તેસિ મણુયાણ છવ્વિહે સંઘયણે છવ્વિહે સંઠાણે બહુઈઓ રય-ણીઓ ઉદ્ધં ઉચ્ચત્તેણં જહણ્ણેણં અંતો મુહુત્તં ઉક્કોસેણ સાહરેગં વાસસયં આઢયં પાલેતિ)

વર્ષાણિ કિઞ્ચિદધિકાનિ (આઉઅ) આયુષ્કમ્ આયુઃ (પાલેતિ) પાલયન્તિ અનુભવન્તિ (પાલિત્તા) પાલયિત્વા અનુભૂયાયુસ્તત્ર (અપ્પેગહયા) અપ્યેકકે કેચિત્ (ગિરયગામી) નિરયગામિનઃ (જાવ) યાવત્ અત્ર યાવત્પદેન— “તિર્યગગામિનઃ, મનુષ્યગામિનઃ દેવગામિનઃ, અપ્યેકકે સિધ્ધ્યન્તિ બુધ્ધ્યન્તે મુચ્ચન્તે પરિનિર્વાન્તિ” ઇત્યેપાં સદ્ગ્રન્થો ત્રોધ્યઃ એતદ્વચ્ચારુપ્યાઽવ્યવહિતપૂર્વક્રુતા ગ્રાહ્યા, (સવ્વદુક્ષાણમંતં) સર્વદુઃ સ્થાનામન્તં નાશં (કરેતિ) કુર્વન્તિ, પુનરપિ દુષ્પમાયાઃ સમાયાઃ પશ્ચિમત્રિભાગે નિજજ્ઞાતિ પ્રભૃતિ ધર્મવ્યુચ્છેદનાર્થમાહ— (તીસે) તસ્યાઃ દુષ્પમાયાઃ (ણં) સ્વલ્લ (સમાપ) સમાયાઃ કાલસ્ય (પચ્છિમે) પશ્ચિમે પાત્રાત્યે અન્તિમે (તિભાગે) ત્રિભાગે ભાગત્રયે અશત્રિતયે (ગણધર્મમે) ગણધર્મ સમુદાયધર્મઃ

મનુષ્યો કે ૬ પ્રકાર કા સહનન હોગા છહ પ્રકાર કા સસ્થાન હોગા—ઇત્યાદિરૂપ સે વહ સવ કથન પહિલે કહે ગયે જૈસા હી જાનના ચાહિયે વિશેષ ઉનકો સાત હાથ કી ઝંચાઈ વાલા શરીર હોગા યદપિ કોષ મેં વદ્ધમુષ્ટિ હાથ કો “રત્નિ” શબ્દ સે કહા ગયા હૈ, ફિર મી સિદ્ધાન્ત કી પરિમાષા કે અનુસાર યહા પૂરે હાથ કો હી રત્નિ શબ્દ સે પકડા ગયા હૈ યહાં કે મનુષ્ય ઉસ કાલ મેં જઘન્ય અન્તર્મુહર્ત્ત કી આયુવાલે ઔર ઉત્કૃષ્ટ સે કુલ્લ અધિક ૧ સો વર્ષ કી આયુ વાલે હોગે ઇતનો આયુ કો મોગર (અપ્પેગહયા) કિતનેક મનુષ્ય (ગિરયગામી) નરકગામી હોગે (જાવ સવ્વદુક્ષાણમંતં કરેતિ) યાવત્—કિતનેક તિર્યગગતિગામી હોગે કિતનેક મનુષ્યગતિગામી હોગે કિતનેક દેવગતિગામી હોગે, તથા કિતનેક “મિધ્યન્તિ” સિદ્ધિપદ કો પ્રાપ્ત કરેગે “બુદ્ધ્યન્તિ” કેવલ જ્ઞાન સે ચરાચર લોગ કા અવલોકન કરેગે “મુચ્ચન્તે” સમસ્ત કર્મો સે રહિત હો જાવેગે “પરિનિર્વાન્તિ—શીતીમૂત હો જાવેગે ઔર સમસ્ત દુસ્તો કા અન્ત કરદેગે પંચમ કાલ મેં જો જીવો કે મુક્તિ પ્રાપ્ત કરને કા યહ કથન કિયા હૈ વહ ચતુર્થ આરે મેં ઉત્પન્ન હુપ જીવ કા હી સમજના ચાહિયે. પંચમ આરે મેં ઉત્પન્ન હુપ જીવો કા નહીં (તીસેણ સમાપ

હે ગૌતમ ! તે કાળના મનુષ્યોના ૬ પ્રકારના સહનનો હશે, ૬ પ્રકારના સસ્થાનો હશે, વગેરે રૂપમાં આ બધું કથન પહેલા જે પ્રમાણે કહેવામાં આવ્યું છે, તેમજ સમસ્ત લેખુ બધાં વિશેષ તેમજ સાત હાથની બીચારી વાળું શરીર હશે જે કે કોશમાં બદ્ધમુષ્ટિ હોયને ‘રત્નિ’ કહેવામાં આવેલ છે. પણ સિદ્ધાન્તની પરિમાષા સુજળ અહીં આખા હાથને ‘રત્નિ’ શબ્દ વડે માનવામાં આવેલ છે. અહીંના મનુષ્યો તે કાળમાં જઘન્ય અન્તર્મુહર્ત્ત જેટલું આયુષ્ય ધરાવતા અને ઉત્કૃષ્ટ કરતા કંઈકે વધારે એક સો વર્ષ જેટલું આયુષ્ય ધરાવનારા હશે, આટલું આયુષ્ય લોગવીને (અપ્પેગહયા) કેટલાક મનુષ્યો (ગિરયગામી) નરકગામી થશે. (જાવ સવ્વદુક્ષાણમંતં કરેતિ) યાવત્ કેટલાક તિર્યગગતિગામી થશે, કેટલાક મનુષ્યગતિ ગામી થશે કેટલાક દેવગતિગામી થશે તેમજ કેટલાક ‘સિધ્ધ્યન્તિ’ સિદ્ધિપદને પ્રાપ્ત કરશે ‘બુદ્ધ્યન્તિ’ કેવળ જ્ઞાનથી ચરાચર લોકો અવલોકન કરશે “મુચ્ચન્તે” સમસ્ત કર્મોથી રહિત થઈ જશે. ‘પરિનિર્વાન્તિ’ શીતીમૂત થઈ જશે અને સમસ્ત દુઃખોનો અન્ત કરશે પચમકાળમાં જીવેની મુક્તિ પ્રાપ્ત કરવા સંબંધી જ આ કથન અત્રે સ્પષ્ટ કરવામાં આવેલ છે તે ચતુર્થ આશમાં ઉત્પન્ન થયેલ જીવો માટે જ સમજવ જોઈ.

નિજજ્ઞાતિધર્મઃ (પાસંડધર્મે) પાસાગ્ધ ધર્મઃ—શાક્યા-દિ ધર્મઃ (રાજધર્મે) રાજધર્મઃ નિગ્ર
હાનુગ્રહાદિ નૃપધર્મઃ (જાય તેષ) જાતતેજાઃ અગ્નિઃ સે હિ અતિગ્નિગ્ને મુપમસુપમાદૌ
અતિરુક્ષે દુષ્પમદુષ્પમાદૌ ચ નોન્પદ્યત ઇતિ, અગ્નેરનુસ્પાદાદગ્નિનિમિત્તકો રન્ધનાદિ
વ્યવહારોઽપિ (ધર્મચરણે) ધર્મચરણ ચરણધર્મઃ—સંયમરૂપો ધર્મઃ, પ્રાકૃતત્વાદન્ન પદવ્ય-
ત્યયઃ (અ) ચ ચકારાદ્ ગચ્છવ્યવહારોઽપિ (વોચ્છિજ્જિસ્સઙ્ગ) વ્યુચ્છેત્સ્યતે વ્યુચ્છેદં
પ્રાપ્યતિ વ્યુચ્છિન્તો ભવિષ્યતિ, સમ્યક્ત્વધર્મસ્તુ કેપાઞ્ચિત્તસમ્ભવત્યપિ, વિલઙ્ગાસ્તવ્યાનાં
હિ અતિવિલઘ્નત્વેન ચારિત્રાસમ્ભવઃ, અતएव પ્રજ્ઞાપ્યામુક્તમ્—“ઓસણ્ણ ધમ્મસન્નપ્પ-
બ્બમદ્દા” ઇતિ ‘અવસન્ન ધર્મસન્નપ્રમુદ્ધાઃ’ ઇતિચ્છાયા ધર્માસક્તિપ્રમુદ્ધાઃ જના અવસન્નમ્
શિથિલં સમ્યક્ત્વં પ્રાપ્નુવન્તિ ઇત્યર્થઃ ઇતિ સમ્યક્ત્વ કચિત્પ્રાપ્યતેઽપિ પ્રાયઃ ઇતિ
પઠ્ઠમો અરકઃ ॥ સૂ. ૫૩ ॥

અથ પઞ્ચારક નિરૂપયિતુમુપક્રમતે—

મૂલય—તોસે ણં સમાણેકકવીસાણે વાસસહસસેહિં કાલે વિઙ્ગકંતે
અણંતેહિં વણ્ણપજ્જવેહિં ગંધપજ્જવેહિં રસપજ્જવેહિં ફાસપજ્જવેહિં જાવ પરિ

પચ્છિમે તિમાગે ગણધર્મે પાસંડધર્મે રાયધર્મે જાયતેષ ધર્મચરણે અવોચ્છિજ્જિસ્સઙ્ગ) એસ કાલ
મેં પાશ્ચાત્ય ત્રિમાગ મેં અંશત્રિતય મેં—ગણધર્મ—સમુદાયધર્મ—નિજજ્ઞાતિધર્મ—પાસાગ્ધધર્મ—શાક્યાદિ-
ધર્મ—નિગ્રહાનિગ્રહાદિરૂપ નૃપધર્મ, જાતતેજ—અગ્નિ, ધર્માચરણ—સંયમરૂપધર્મ, એવ ગચ્છવ્યવહાર
યહ સર્વ વ્યુચ્છિન્ન હો જાવેગા અગ્નિ જવ રહેગી નહીં તો અગ્નિનિમિત્તક જો રન્ધનાદિ વ્યવહાર
હૈ વહ મી સર્વ વ્યુચ્છિન્ન હો જાવેગા. હા કિતનેક જીવોં કે સમ્યક્ત્વરૂપ ધર્મ હોતા રહેગા.
પરન્તુ વિલોં મેં રહેવાલોં કે અતિવિલઘ્ન હોને કે કારણ ચારિત્ર નહીં હોગા. હસલિયે પ્રજ્ઞાપના મેં
“ઓસણ્ણ ધમ્મસન્નપ્પબ્બમદ્દા” ધર્માસક્તિ સે બ્રહ્મ મનુષ્ય શિથિલ સમ્યક્ત્વ કો પ્રાપ્ત કરતે હૈં એસા
કહા ગયા હૈ તાત્પર્ય કહેને કા યહી હૈ કિં કિન્હોં કિન્હોં જીવ કે હસ કાલ મે મી સમ્યક્ત્વ
પ્રાપ્ત હોતા રહેગા ॥ સૂ. ૫૩ ॥

પચ્ચમ આરામા ઉત્પન્ન થયેલા જીવો માટે આ કથન રજૂ કરવામા આવેલ નથી (તોસેણ
તે પચ્છિમે તિમાગે ગણધર્મે પાસંડધર્મે રાયધર્મે જાયતેષ ધર્મચરણે અવોચ્છિજ્જિ-
સ્સઙ્ગ) તે કાળમા પાશ્ચાત્ય ત્રિમાગમા અંશત્રિતયમા—ગણધર્મ—સમુદાય ધર્મ—નિજજ્ઞાતિધર્મ
પાસંડધર્મ—શાક્યાદિધર્મ—નિગ્રહાનિગ્રહાદિરૂપ નૃપધર્મ, જાત તેજ—અગ્નિ, ધર્માચરણ—સંય-
મરૂપધર્મ અને ગચ્છ વ્યવહાર એ સર્વે છિન્ન—વિચ્છિન્ન થઈ જશે અગ્નિ જ્યારે રહેશે નહીં
ત્યારે અગ્નિ નિમિત્તક એ રન્ધનાદિ વ્યવહાર છે, તે પણ સંપૂર્ણરૂપમા છિન્ન—વિચ્છિન્ન
થઈ જશે હા કેટલાક જીવો ને સમ્યક્ત્વ રૂપધર્મ થતો રહેશે. પણ બિલોમાં રહેનારાઓ માટે
અતિવિલઘ્ન હોવા બદલ ચારિત્ર હશે નહિ. એથી જ પ્રજ્ઞાપનામાં “ઓસણ્ણ ધમ્મસન્ન
પ્પબ્બમદ્દા” ધર્માસક્તિથી બ્રહ્મ મનુષ્ય શિથિલ સમ્યક્ત્વને પ્રાપ્ત કરે છે. આમ કહેવામાં આવેલ
છે. તાત્પર્ય કહેવાનું આ પ્રમાણે છે કેટલાક જીવોને તેતે કાળમા પણ સમ્યક્ત્વ પ્રાપ્ત
થતું રહેશે. ॥૫૩॥

होयमाणे२ एत्थणं दूसमदममाणामं समा काले पडिवज्जिस्सइ समणाउसो
तोसे णं भंते समाए उत्तमकट्टपत्ताए भरहस्स वासस्स केरिसए आयार
भावपडोयारे भविस्सइ ? गोयमा ! काले भविरसइ हाहोभूए भंभाभूए
कोलोहलभूए समाणुभावेण य खरफरुसंघूलिमइला दुव्विसहो वाउला
भयंकरा य वाया संवट्ठगा य वाइंति इह अभिक्खणं धूमाहिति अ दिसा
समंता रउस्सला रेणुकलुसतमपडलणिरालोआ समयलुक्खयाए णं अहिअं
चंदा सीअं मोच्छिहिति अहिअं सूरिआ तविस्संति, अदुत्तरं च णं गोयमा!
अभिक्खणं अरसमेहा विरसमेहा खारमेहा खत्तमेहा अग्गिमेहा विज्जुमेहा
विसमेहा अजवणिज्जोदगा वाहिरोगवेदणोदीरणपरिणामसलिला अम-
णुण्णपाणिअगा चंडा निलपहततिक्खधाराणिवातपउरं वासं वसिहिति, जे
णं भरहे वासे गामागरणगरखेडकब्बडमडंबदोणमुहपट्टणासमगयं जणवयं
चउप्पयगवेलए खहयरे पक्खिसंधे गामारण्णप्पयारणिरए तसे अ पाणे
बहुप्पयारे रुक्खगुच्छगुम्मलयवल्लिपवालंकुरमादीए तणवणस्सइकाइए
ओसहीओ अ विद्धं सेहिति पव्वयगिरि डोंगरुत्थलभट्टिमादीए अ वेयड्ड-
गिरिवज्जे विरावेहिति, सलिलबिलविसमगत्तणिण्णुण्णयाणि अ गंगासिं-
धुवेज्जाइं समीकरेहिति, तोसे णं भंते! समाए भरहस्स वासस्स भूमीए
केरिसए आगा रभावपडोआरे भविस्सइ ?, गोयमा! भूमी भविस्सइ इंगा-
लभूआ मुम्मुरभूआ छारिअभूआ तत्तकवेल्लुअभूआ तत्तसमजाइभूआ
धूलिबहुला रेणुबहुला पंकबहुला पणयबहुला चलणिवहुला बहूणं धरणि
गोअराणं सत्ताणं दुण्णिक्कमायावि भविस्सइ । तोसेणं भंते ! समाए
भरहे वासे मणुआणं केरिसए आयारभावपडोआरे भविस्सइ ?, गोयमा !
मणुआ भविस्संति दुरूवा दुव्वणा दुगंधा दुरसा दुफासा अणिट्ठा अकंता
अप्पिआ असुभा अमणुण्णा अमणामा हीणस्सरा दीणस्सरा अणिट्ठस्सरा
अकंतस्सरा अपियस्सरा अमणामस्सरा अमणुण्णस्सरा अणादेज्जवयण.
पच्चायाता णिलज्जा कूडकवडकलहवंधवेरनिस्या मज्जायातिकमप्पहाणा

अकज्जणिच्चुज्जुया गुरुणिओगविणयरहिया य विकलरूवा परूढणहकेस.
 मंसुरोमा काला खरफरुससमावण्णा फुट्टसिरा कविलपलियकेसा बहुण्हा.
 रुणिसंपिणद्धदुहंसणिज्जरूवो संकुडिअवलीतरंगपरिवेदिअंगमंगा जरापरि.
 णयव्व थेरागणरा पविरलपविसडिअदंतसेदी उव्वडघडमुहा विसमणयणवंक
 णासा वंकवली विगयभेसणमुहा ददुदुविकिडिभसिउव्वफुडिअफरुसच्छवो
 चित्तलंगमंगा कच्छूरवसराभिभूआ खरतिक्खणक्खकंद्धइअविकयतणू टोल
 गतिविसमसंधिवंधणा उक्कडुअट्टिअविभत्तदुव्वलकुसंधयणकुप्पमाणकु तं-
 ठिआ कुरूवो कुट्टाणासणकुसेज्जकुभोइणो असुइणो अणेगवाहिपीडि-
 अंगमंगा खलंत विव्वलभाई णिरुच्छाहा सत्तपरिवज्जिया विगयचेट्टा
 णट्टतेआ अभिक्खणं सीउण्हखरफरुसवायविज्झडिअमलिणपंसुरओ गुडि
 अंगमंगा बहुकोहमाणमायालोभा वहुमोहा असुभदुक्खभागी ओसण्णं
 धम्मसण्णसम्मत्तपरिभट्टा उक्कोसेणं रयणिप्पमाणमेत्ता सोलसवीसइवास-
 परमाउसो बहुपुत्तणत्तुपरियाल पणयवहुला गंगासिंधूओ महाणईओ वेयडुं
 च पव्वयं नीसाए बावत्तरिं णिगोअवीअं बीअमेत्ता विलवासिणो मणुआ
 भविस्संति, ते णं मंते! मणुआ किमाहारिस्संति? गोयमा! ते णं कालेणं तेणं
 समएणं गंगासिंधूओ महाणइओ रहपहमित्तवित्थराओ अक्खसोअप्पमा-
 णमेत्तं जलं वोज्झिहिति सेवि अ णं जले बहुमच्छकच्छभाईण्णे णो चेवणं
 आउबहुले भविस्सइ। तएणं ते मणुया सूरुग्गमणमुहुत्तंसि अ सूरत्थमणमुहु-
 त्सि अ बिलेहितो णिद्धाइस्संति बिलेहितो णिद्धाइत्ता मच्छकच्छमे
 थलाइं गाहेहिति मच्छकच्छमे थलाइं गाहेत्ता सीआतवतत्तेहिं मच्छक-
 च्छमेहिं इक्कवीसं वाससहस्साइं वित्ति कप्पेमाणा विहरिस्संति। ते णं
 मंते ! मणुआ णिस्सीला णिव्वया णिग्गुणा णिम्मेरा णिप्पच्चक्खाणपो-
 सहौववासा ओसण्णं मंसाहारा मच्छाहारा खुट्टाहारा कुणिमाहारा काल-
 मासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिति कहिं उव्वज्जिहिति, गोयमा ! ओ

सण्णं णरगतिस्खिखजोणिएसु उववज्जिहिंति । तीसे णं भंते समाए सीहा
वग्धा बिगा दीविआ अच्छा तरस्सा परस्सरा सरभसियाल त्रिगडसुणगा
कोलसुणगा ससगा चित्तगा चिल्ललगा ओसण्णं पंसाहारा मच्छाहारा
खोहाहारा कुणिमाहारा कालमासे कालं किच्चा कहि गच्छिहिंति कहि
उववज्जिहिंति ? गोयमा ! ओसण्णं णरग-तिस्खिखजोणिएसु उववज्जि-
हिंति, तेणं भंते । ढंका कंका पोलगा मग्गुगा सिही ओसण्णं मंसाहारा
जाव कहि उववज्जिहिंति ? गोयमा ! ओसण्णं णरगतिस्खिखजोणिएसु
जाव उववज्जिहिंति ॥सू० ५४॥

छाया-तस्यां खलु समायामेकविंशत्या वर्षसहस्रै (प्रमिते) काले व्यतिक्रान्ते अन-
न्तैर्वर्णपर्यवैर्गन्धपर्यवै रसपर्यवैः स्पर्शपर्यवैः यावत् परिहीयमानः २ अत्र खलु दुष्पमदु-
ग्धमा नाम समा कालः प्रतिपत्स्यते श्रमणाऽऽयुष्मन् । तस्या खलु भदन्त ! समायामुत्त-
मकाष्ठाप्राप्तायां भरतस्य वर्षस्य कीदृशकः आकारभावप्रत्यवतारो भविष्यति, गौतम !
कालो भविष्यति द्वाद्वाभूतो मस्माभूतः कोलाहलभूतः समानुभावेन च खरपक्षधूलिम-
लिना दुर्विषद्वा व्याकुला मयङ्कराश्च वाताः संवर्तकाश्च वान्ति, इह अभीक्ष्णं २ धूमायि-
ष्यन्ते दिशः समन्तात् रजस्वला रेणुकलुषतमः पटलनिरालोकाः समयरुक्षतया खलु
अधिकं चन्द्राः शीतं मोक्षन्ति अधिकं सूर्यास्तप्स्यन्ति, अथोत्तरं च खलु गौतम ! अभी-
क्ष्णमरसमेधा विरसमेधाः क्षारमेधा शूत्रमेधा अग्निमेधा वद्युन्मेधा विषमेधा अयापनीयो-
दकाः व्याधिरागवेदनोदीरणा परिणामसलिला अमनोक्षपानीयकाः चण्डानिलप्रहततीक्ष्णघा-
रानिपातप्रचुरं वर्षं वर्षिष्यन्ति, येन भरतवर्षे ग्रामाकरनगरखेटकर्बटमडम्बद्रोणमुखपत्त-
नश्रमगतं जनपदं चतुष्पदगवेलकान् खचरान् पक्षिसंघान् ग्रामारण्यप्रचारनिरतान् प्रसांश्च
प्राणान् बहुप्रकारान् वृक्षगुच्छगुल्मलतावल्लीप्रवालाङ्कुरादिकान् टणवनस्पतिकायिकान् ओष-
धौश्च विश्वसयिष्यन्ति, पर्वतगिरिदुक्करोत्स्थलभ्राष्ट्रादिकान् च वैताल्यगिरिवजान् विला-
पयिष्यन्ति, सलिलविलविषमगर्तनिम्नोन्नतानि च गङ्गासिन्धुवज्जानि समीकरिष्यन्ति,
तस्यां खलु भदन्त ! समायां भरतस्य वर्षस्य भूमेः कीदृशकः आकारभावप्रत्यवतारः प्रक्षस्तः?,
गौतम ! भूमिर्भविष्यति अङ्गारभूता मुर्मुर्भूता क्षारिकभूता तप्तकबल्लुकभूता तप्त समज्यो-
तिर्भूता धूलिबहुला रेणुबहुला पङ्कबहुला प्रणयबहुला चलनिबहुला बहूनां धरणि गोचाराणां
सत्त्वानां दुर्निष्क्रमा चापि भविष्यति, तस्या खलु भदन्त ! समायां भरते वर्षे मनुजानां कीद-
ृशकः आकारभावप्रत्यवतारो भविष्यति ? गौतम ! मनुजा भविष्यन्ति दूरूरा दुर्वर्णा दुर्गन्धा
दूरसा दुःस्पर्शा अनिष्टा अकान्ता अप्रिया अशुभा अमनोक्षा अमनोऽमा हीनस्वरा दीनस्वरा
अनिष्टस्वरा अकान्तस्वरा अप्रियस्वरा अमनोऽमस्वरा अमनोऽक्षस्वरा अनादेयवचनप्रत्याजाता
निर्लेज्जा कूटकपटललह्वबन्धवैरनिरता मर्यादातिक्रमप्रधाना अकार्यनित्योद्यता गुरुनियोगविनय-

हिताश्च विकलरूपाः परूढनखकेशदमथुरोमाणः कालाः सरपरुषश्यामवणाः भ्रष्टशिरसः कपिल-
पलितकेशाः बहुस्नायुनि संपिनद्धदुर्देशनीयरूपाः सङ्कुटि(चि)त वलीतरङ्गपरिवेष्टिताङ्गाङ्गा-
जरापरिगता इव स्थविरकनरा प्रविरलपरिपण्णदन्तश्रेणयः उद्गटघटामुखा विपमनयनव-
क्रनासाः वक्रचलयः विकृतभीषणमुखा ददुर्विकटिमसिधमस्फुटितपरुच्छवय चित्रलाङ्गाङ्गाः
कच्छकसरा (कण्डुविशेषा) भिभूता खरतीक्ष्णनखरुण्डयितविकृततनवः टोलाकृति विपम
सन्धिबन्धना. उत्कटुकास्थिऋविभक्तदुर्वलकुसदननकुप्रमाणकुसंस्थिता कुरूपा कुस्थाना-
ऽऽसनकुशय्यकुभोजिन. अशुचय अनेकव्याधिपीडिताङ्गाङ्गास्खलाद्वहलगतय निरुत्साहाः
खस्वपरिवर्जिता विगतचेष्टाः नष्टतेजसः अभीक्ष्णं शीतोष्णखरपरुषवातमिश्रित मलिनपांसुर-
जोगुण्ठिताङ्गाङ्गाः बहुकायमानमायालोभाः बहुमोहाः अशुभदुःखभागिनः अवसन्नं धर्मसङ्गा
सम्यक्त्वपरिभ्रष्टा उत्कर्षेण रत्नि प्रमाणमात्राः षोडशविंशतिवर्षपरमायुषः बहुपुत्रनष्ट-
परिवारप्रणयबहुलाः गङ्गासिन्धूमहानद्यौ वैताढ्य च पर्वत निश्रया हाससातेःनिगोदा वीजं
वीजमात्राः विलवासिनो मनुजा भविष्यन्ति, ते खलु भदन्त मनुजा किमाहरिष्यन्ति ?,
गौतम ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये गङ्गासिन्धूमहानद्यौ रथपथमात्रविस्तारे अक्षस्रोत
प्रमाणमात्रं जलं वक्ष्यत तदपि च जलं बहुमत्स्यकच्छपाकीर्णम् नैव खल्वपि बहुलं भविष्यति
ततः खलु ते मनुजा सूरस्तमनमुद्धतं च विलेभ्यो निर्धाविष्यन्ति विलेभ्यो निर्धाव्य मत्स्य-
कच्छपान् स्थलानि ग्रहिष्यन्ति मत्स्यकच्छपान् स्थलानि ग्राहयित्वा शीतातपतप्तैः मत्स्य-
कच्छपैरेकविंशति वर्षसहस्राणि वृत्तं कल्पयन्तो विहरिष्यन्ति । ते खलु भदन्त ! मनुजाः
निः शीलाः निर्धृताः निर्गुणाः निर्मर्यादाः निष्प्रत्याख्यानपोषधोपवासाः अवसन्नं मांसाहाराः
मत्स्याहाराः क्षौद्राहाराः कुणपाहाराः कालमासे कालं कृत्वा क्व गमिष्यन्ति क्व उपपत्स्यन्ते?,
गौतम ! अवसन्नं नरकतिर्यग्योन्योरुपपत्स्यन्ते । तस्या खलु भदन्त ! समाया सिंहा. ग्याघ्राः
वृकाः द्वीपिका क्रक्षाः तरक्षाः पराशराः (खड्गिनः) शरमशूगालविडालश्चान (शुनका)
कोल शुनकशशका चित्रका चिल्लका (भापदाः) अवसन्नं मांसाहाराः मत्स्याहारा क्षौद्रा-
हारा कुणिपाहाराः कालमासे कालं कृत्वा क्व गमिष्यन्ति क्व उपपत्स्यन्ते ?, गौतम !
अवसन्नं नरकतिर्यग्योन्योरुपपत्स्यन्ते !, ते खलु भदन्त ! डङ्का कङ्का पिलका मद्गुका
शिखिनः अवसन्नं मांसाहारा यावत् क्व गमिष्यन्ति क्व उपपत्स्यन्ते ?, गौतम ! अव-
सन्नं नरकतिर्यग्योन्यो यावत् उपपत्स्यन्ते ॥ सू० ५४ ॥

टीका—“तीसे ण समाए” इत्यादि—तस्यां दुष्पमायां खलु समायां ‘काले

अब छद्दा आरक का प्रारम्भ करते हैं—

‘तीसेणं समाए एक्कवीसाए वाससहस्सेहिं’ इत्यादि सूत्र—५४—

• टीकार्थ—अवसर्पिणी का दुष्पमा नामका पाँचवां आरक जो कि २३ हजार वर्षका कहा

हुवे छद्दा आराने। आरक करोखे छोखे.

‘तीसेणं समाए एक्कवीसाए वाससहस्सेहिं’ इत्यादि सूत्र—५४

टीकार्थ—अवसर्पिणीने दुष्पमानामके पांचवें आरक के जे २३ हजार वर्ष के छद्दा

એકવીસાણ, એકવિંશત્યા એકવિંશતિસંખ્યકૈ (વાસસદસ્સેહિ) વર્ણસદ્મૈઃ પ્રમિતે (કાલે) કાલે સમયે (વિદ્કંતે) વ્યક્તિક્રાન્તે વ્યતીતે (અણતેહિ) અનન્તૈઃ નિરવગ્નિકૈઃ (વળ્ણપજ્જવેહિ) વર્ણપર્યવૈઃ વર્ણપર્યાયૈ (ગન્ધપજ્જવેહિ) ગન્ધપર્યવૈઃ ગન્ધપર્યાયૈઃ (રસપજ્જવેહિ) રસપર્યવૈઃ રસપર્યાયૈઃ (ફાસપજ્જવેહિ) સ્પર્શપર્યવૈઃ સ્પર્શપર્યાયૈઃ (જાવ) યાવત્ અત્ર યાવત્પટેન (અણતેહિ સઘયણપજ્જવેહિ અણતેહિ સંઠાણપજ્જવેહિ અણતેહિ ઉચ્ચત્તપજ્જવેહિ અણતેહિ અગુરુલહુપજ્જવેહિ અણતેહિ ઉદ્ઘાણકમ્મબલવારિઅપુરિસક્કારપરક્કમપજ્જવેહિ અણંતગુણપરિહાણીણ) ઇપાં પદાનાં સગ્રહો બોધ્યઃ એતચ્છાયા—અનન્તૈઃ સંહનનપર્યવૈઃ અનન્તૈઃ સંસ્થાનપર્યવૈઃ અનન્તૈરુચ્ચત્વર્યવૈઃ અનન્તૈરાયુપર્યવૈઃ અનન્તૈર્ગુરુલઘુપર્યવૈઃ અનન્તૈરુત્થાનકર્મવલવીર્યપુરુષકારપરાક્રમપર્યવૈઃ અનન્તગુણપરિહાન્યા ઇતિ એતદીયોડ્યઃ દ્વિતીયારકે સુષમાકાલવર્ણનપ્રસજ્ઞે ઉક્ત ઇતિ તતો ગ્રાહ્યઃ (પરિહાયમાણે ૨) પરિહીયમાનઃ ૨ ઘાનિ ગચ્છન્ ૨ કાલ ઉપસ્થિતો ભવતિ, (એત્થ) અત્ર અત્રાન્તરે (ળં) સ્વલ્લ (દૂસમદૂસમા) દુષ્પમદુષ્પમા એતન્નામ્ની (ળામ) નામ પ્રસિદ્ધા (સમા) સમા કાલ અમુમેવાર્ય સ્પટ્ટીકર્તુમાહ (કાલે) કાલઃ સમયઃ (પાઢિવજ્જિસ્સહ) પ્રતિપત્સ્યતે ઉપસ્થાસ્યતિ (સમણાઉસો) શ્રમણા-ડડયુષ્મન્ ! હે શ્રમણ હે આયુષ્મન્ ! (તીસે) તસ્યાં દુષ્પમદુષ્પમાયાં (ળં) સ્વલ્લ (મંતે) મદન્ત હે મહાજુભાવ (સમાણ) સમાયાં કાલાપરપર્યાયામ્ યદ્વા । (ઉત્તમકટ્ટપત્તાણ) ઇત્યસ્ય ઉત્તમ-કટ્ટપ્રાપ્તાયામ્ ઇતિચ્છાયા તત્પક્ષે પરમકટ્ટપ્રાપ્તાયામ્ ઇત્યર્થઃ (મરહસ્સ) મરતસ્ય મરત-

હે જબ વ્યતીત હો જાવેગા ઔર કાલક્રમ સે (અણતેહિ વળ્ણપજ્જવેહિ ગન્ધપજ્જવેહિ રસપજ્જવેહિ ફાસપજ્જવેહિ જાવ પરિહાયમાણે ૨ એત્થળં દૂસમદૂપમાગામં સમા કાલે પઢિવજ્જિસ્સહ સમણા-ઉસો) અનન્તવર્ણપર્યાયે, અનન્ત ગન્ધપર્યાયે, અનન્ત રસપર્યાયે અનન્તસ્પર્શ પર્યાયે, ઔર યાવત્પટગ્રાહ્ય (અણતેહિ સઘયણપજ્જવેહિ, અણતેહિ સંઠાણપજ્જવેહિ) અનન્ત સહનન પર્યાયે, અનન્ત સસ્થાનપર્યાયે, (અણતેહિ અગુરુલહુપજ્જવેહિ અણતેહિ ઉદ્ઘાણકમ્મબલવીર્યપુરિસક્કાર પરક્કમપજ્જવેહિ અણંતગુણ-પરિહાણીણ) અનન્ત અગુરુલઘુપર્યાયે અનન્તઉત્થાન કર્મ, બલ, વીર્ય પુરુષકાર પરાક્રમ પર્યાયે અનન્તગુણરૂપ સે ઘટતી જાવેગી તબ હે શ્રમણ આયુષ્મન્ ! દુષ્પમદુષ્પમા નામકા છટ્ટા આરા પ્રારમ્મ હો જાવેગા (તીસે ળં મંતે સમાણ ઉત્તમકટ્ટપત્તાણ મરહસ્સ વાસસ્સ કેરિસણ આચારમાવ-

કહેવામા આવેલ છે જ્યારે વ્યતીત થઈ જશે અને કાલક્રમથી (અણતેહિ વળ્ણપજ્જવેહિ ગન્ધપજ્જવેહિ રસપજ્જવેહિ ફાસપજ્જવેહિ જાવ પરિહાયમાણે ૨ એત્થળં દૂસમદૂસમા ળામં સમા કાલે પઢિવજ્જિસ્સહ સમણાઉસો) જ્યારે અનંતવર્ણ પર્યાયે, અનંત ગન્ધપર્યાયે, અનંત રસપર્યાયે, અનંતસ્પર્શ પર્યાયે, અને યાવત્પટ ગ્રાહ્ય (અણતેહિ સંઘયણપજ્જવેહિ અણતેહિ સંઠાણપજ્જવેહિ) અનંત સહનન પર્યાયે, અનંત સસ્થાન પર્યાયે, (અણતેહિ અગુરુલહુપજ્જવેહિ અણતેહિ ઉદ્ઘાણકમ્મબલવીર્યપુરિસક્કારપરક્કમપજ્જવેહિ અણંત ગુણ-પરિહાણીણ) અનંત અગુરુલઘુ પર્યાયે, અનંત ર ઉત્થાનકર્મ, બળવીર્ય, પુરુષકાર પરાક્રમ પર્યાયે, અનંત રૂપમા ઘટિત થતા જશે ત્યારે હે શ્રમણ આયુષ્માન્ ! દુષ્પમ દુષ્પમાનામક છટ્ટો આરો પ્રારમ્મ થશે. “તીસેળં મંતે ! સમાણ ઉત્તમ કટ્ટપત્તાણ મરહસ્સ વાસસ્સ કેરિ-

दुष्पमदुष्पमायां समायाम् (अभिवृण्णं) अभीक्ष्णमभीक्ष्णम् चारंवारम् (धूमार्हिति) धूमयि-
ष्यन्ते धूममुद्गिरिष्यन्ति (अ) च (दिशा) दिशाः कीदृश्यो दिशः ? (समंता रउस्सला) सम-
न्ताद् रजस्वला सर्वतो रजोयुक्ताः तथा (रेणुकलुसतमपडलणिरालोआ) रेणुकलुपतमपडल-
निरालोकाः रेणुभिः रजोभिः कलुपाः म्लानाः अतएव तमःपडलनिरालोकाः तमःपडलेन
अन्धकारसमूहेन निरालोकाः=प्रकाशवर्जिताः । तथा अस्यां दुष्पमदुष्पमायां समायाम्
(समयलुक्खयाएणं) समय रुक्षतया समयस्य=कालस्य रुक्षतया खलु=निश्चयेन(अहियं)
अधिकं प्रचुरम्=अपथ्यं वा (सीयं)शीत=हिमं(चदा) चन्द्राः (मोच्छिहिति) मोक्ष्यन्ति-
पातयिष्यन्ति वर्षयिष्यन्ति तथा (अहियं) अधिकम् अहितवा यथा स्यात्तथा (सूरिया) सूर्याः
(तविस्सति) तप्स्यन्ति ताप मोक्ष्यन्ति । अयं भावः-कालरौक्ष्येण जीवानां शरीराणि
रूक्षाणि भविष्यन्ति, ततश्च तेषां जीवानां शीतोष्णजनितोऽधिकः पराभवो भविष्यतीति ।
अथ पुनर्यद् दुष्पमदुष्पमायां समायाम् भविष्यति तदाह-(अदुत्तरं) इत्यादि। (अदुत्तरं च णं)
अथोत्तरम् एतदनन्तरम् अग्रेच खलु (गोयमा) हे गौतम । (अभिवृण्णं) अभीक्ष्णं=पुनः
पुनः (अरसमेहा) अरसमेधाः-अरसाः-रसरहिताश्च ते मेघाश्चेति, स्वादुरसवर्जितजलवर्षिमेघा

रेणुकलुसतमपडलणिरालोआ समयलुक्खयाएणं अहियं चन्दा सीयं मोच्छिहिति, अहियं सूरिआ
तविस्सति) इस दुष्पमदुष्पमा काल में दिशाएँ निरन्तर घूमके जैसीप्रतीत होगी अर्थात् दिशाएँ
घूमका घूमन करनेवाली होगी चारों ओर से इनमें घुलि घुलि ही छाई रहेगी इस कारण वे
अन्धकार से युक्त होने के कारण प्रकाश से रहित बन जायेगी तथा इस दुष्पम दुष्पमाकाल में
काल के अनुसार रुखापन होने के कारण (अहियं सीयं चन्दा.) अधिक मात्रा में या अपथ्यरूप
में अर्थात् सहन न की जासके इस रूप में हिम की वर्षा चन्द्र करेगे सूर्य इतनी अधिक उष्णता
की वर्षा करेंगे कि जिसे सहन करना बड़ा भारी कठिन हो जायगा तात्पर्य यह है काल की
रूक्षता के निमित्त से जीवों के शरीर रुक्ष होंगे, अतः शीत और उष्ण की अधिकता से जीवों
को महान् कष्ट का सामना करना होगा. (अदुत्तरं) इसके बाद (गोयमा ।) हे गौतम (अभिवृण्णं)

देशान्तरमा पडोयाडनाइ डेशे (इह अभिवृण्णं धूमार्हितिअदिसा समंता रउस्सला रेणुकलु
सतमपडलणिरालोआ समयलुक्खयाएण अहियं चन्दा सीयं मोच्छिहिति अहियं सूरिआ
तविस्सति) ओ दुष्पम दुष्पमाकाणमां दिशाओ सनत धूम-ओवी प्रतीत थशे ओटदे के दिशाओ
धूमनु घूमन करनारी थशे ओमेर ओमां धूण न छवाड रहेशे. ओथी ते अधकारावृत्त थवाथी
प्रकाश रहित थथ नशे तथा ओ दुष्पम दुष्पमाकाणमा काण सुज्ज इक्षता डोवा गडव
(अहियसीयं चन्दा.) अधिकमात्रामां अथवा अपथ्यइपमा ओटदे के सहन न थथ शके ओ
इपमा अन्ध हिम-वर्षा करशे सूर्य ओटवी गधी मात्रामा उष्णतानी वर्षा करशे के ते असह्य
थथ पडशे तात्पर्य आ प्रमाणे छे के कालनी इक्षताने दीधे ओवोना शरीर इक्ष थशे ओथी
शीत अने उष्ण अन्ने अधिक डोवाथी ओवोने महान् कष्ट थशे (अदुत्तरं) त्याइ भाड(गोयमा

इत्यर्थः, (विरसमेहा) विरसमेघाः—जलीयरसविरुद्धरसयुक्तजलवर्षिमेघाः, अमुमेवार्थं स्पष्ट-
प्रतिपत्तये प्राह—(स्वारमेहा) स्वारमेघाः सर्जादिस्वारसदृशरसयुक्तजलवर्षिमेघाः (स्वत्तमेहा)
स्वात्रमेघाः—कारीपरसमयजलवर्षिमेघाः (अग्निमेहा) अग्निमेघाः—अग्निवद्दाहकारिजलवर्षि-
मेघाः (विज्जुमेहा) विद्युन्मेघाः—विद्युत्पातकारिणो मेघाः (विसमेहा) विषमेघाः—विषवत्प्रा-
णघातकजलवर्षिमेघाः (अजवणिज्जोदगा) अयापनीयोदकाः अयापनीय—निर्वाहायोग्यम्
उदकं—जलं येषां ते तथा निर्वाहायोग्यजलवर्षिणो मेघाः, (वाहिरोगवेदणोदीरणपरिणामस-
लिला) व्याधिरोगवेदनोदीरणपरिणामसलिलाः व्याधयः चिरकालघातिनः कुष्ठादयः रोगाः
—सद्योघातिनः शूलादयः' तज्जनिता या वेदना-व्यथा, तस्या उदीरणम्—अप्राप्तेऽपिसमये
उदयावलिकायां प्रवेशनं तदेव परिणामः—परिपाको यस्य तादृशं सलिलं जलं येषां तथा
व्याध्यादिकारि जलवर्षका मेघाः, अतएव (अमणुण्णपाणिअगा) अमनोज्ञपानीयकाः—अम-
नोज्ञम्=अरुचिर पानीयक=जलं येषां ते-अरुचिजलवर्षिणो मेघाः, एवविधाः सर्वे मेघाः
(चण्डानिलपहततिक्खधारा—णिवायपाउरं) चण्डानिलप्रहततीक्ष्णधारा—निपात—प्रचुरम्—
चण्डानिलेन=प्रचण्डवायुना प्रहतानां=प्रकीर्णानां विक्षिप्तानां तीक्ष्णधाराणां—बलवद्धारणां
यो निपातः=निपतनं, स प्रचुरो=बहुलो यस्मिन् स तथा तम्(वासं)वर्ष=वृष्टिं(वासिर्हिति)
वर्षिष्यन्ति । अनेन वर्षणेन यद् भविष्यति तदाह 'जे णं भरहे' इत्यादि । (जे णं)येन वर्ष-

वार वार (अरसमेहा विरसमेहा स्वारमेहा स्वत्तमेहा अग्निमेहा विज्जुमेहा विसमेहा अजवणि-
ज्जोदगा) स्वादुरसवर्जित जलवर्षिमेघ—जलीय रस से विरुद्ध रसयुक्त जलवर्षी मेघ, स्वारमेघ—सर्जा-
दिसार सदृश रसयुक्त जलवर्षिमेघ स्वारमेघ कारीपरस सदृश जलवर्षी मेघ अग्निमेघ—अग्नि तुल्य
दाहकारी जलवर्षी मेघ, विद्युत्मेघ—विद्युत्पात कारी मेघ, विषमेघ विषके जैसे प्राणघातक जल वर-
सानेवाले मेघ, निर्वाह के अयोग्य जल को वरसानेवाले अयापनीयोदक मेघ, (वाहिरोगवेद-
णोदीरणपरिणामसलिला) असमय में चिर कालघाती कुष्ठादिक रोग रूप परिणामोत्पादक
जल वाले मेघ, सद्योघाती शूलादि वेदनाकारक जलवाले मेघ कि जिनका (अमणुण्णपाणि
अगा) पानी अरुचि कारक होगा—ऐसे अरुचिकारक जल को वरसाने वाले मेघ, ऐसी वर्षा करेगे

हे गौतम ! (अभिक्खणं) वार वार (अरसमेहा विरसमेहा स्वारमेहा स्वत्तमेहा अग्निमेहा
विज्जुमेहा विसमेहा अजवणिज्जोदगा) स्वादुरस वर्जित जलवर्षी मेघो—जलीय रसशी विरुद्ध
रसयुक्त जलमेघो, स्वारमेघो—सर्जादि सारसदृश रसयुक्त जलवर्षी मेघो, स्वारमेघो—कारी
रससदृश जलवर्षी मेघो, अग्नि मेघो—अग्नि-तुल्य दाहकारी जलवर्षी मेघो, विद्युत्मेघो—विद्यु-
त्पात कारी मेघो, विषमेघो—विष जेवो प्राण घातक जलवृष्टि करनारा मेघो निर्वाह—अयोग्य
जलवृष्टि करनारा अयापनीयोदक मेघो (वाहिरोगवेदणोदीरणपरिणामसलिला) असमयमा चिर-
काल घाती कुष्ठादिक रोगरूप परिणामोत्पादक जलयुक्त मेघो, सद्योघाती शूलादि वेदना कारक
जलयुक्त मेघो, अनेन (अमणुण्णपाणि अगा) पाणी अरुचिकारक थये, जेवी अरुचिकारक
जलवृष्टि करनारा मेघो, जेवी वर्षा करथे के जेभां वृष्टिधारा प्रत्यक्ष पवनना आघातोधी

આમ તેમ વેરાઈ જશે અને તે હોઠો ઉપર તે તીક્ષ્ણ વિશિષ્ટ આઘાતો કરનારી થશે. (જે જે મરદે વાસે, ગામાગરણગરણેડકન્ઘડમઠંબદોળસુદ્ધપટ્ટણાસમગયં જળવયચ્ચડ્ડપયગવેલપ્ત્તહરયે પક્કિસંઘે) આ વૃષ્ટિથી ભરતક્ષેત્રમાં સ્થિત વૃત્તિ વેષ્ટિત આમોમા, આકર સુવણ્ણ-દિની ખાણોમા, અષ્ટાદશ કરવર્જિત નગરોમાં, ઘૂલિ પ્રાકાર પરિક્ષિત ખેટ આમોમા, કુરિસત નગર રૂપ કળ્પોટોમા, અદી ગાઉનિ અદર આમાન્તર રહિત મઠંજોમાં, જલીય માર્ગથી યુક્ત જનનિવાસ રૂપ દ્રોણસુખોમા, સમસ્તવસ્તુઓની પ્રાપ્તિના સ્થાન ભૂત પત્તનોમા, જલપત્તનોમા અને સ્થલ પત્તનોમાં-જન્ને પ્રકારના પત્તનોમા, પ્રશૂતતર વણિજનોના નિવાસભૂત નિજ-મોમાં, પહેલાં તાપસજનો દ્વારા આવાસિત અને તરપશ્ચાત્ ભીંજા હોઠો જ્યાં આવીને રહેવા લાગ્યા હોય એવા સ્થાન રૂપ આશ્રમોમાં રહેનારા માણસોનો તે મેઘો વિનાશ કરશે તેમજ તે આમા દિઠોમા રહેનારા અતુષ્પદોના માહિષી વગેરેનો, ગોબ્ભતીય પશુઓનો, એલઠો-મેપોનો-ખેચરો-વૈતાલ્યગિરિ નિવાસી વિદ્યાધરોનો (પક્કિસંઘે) પક્ષી-સમૂહોનો અથવા આકાશ-

रण तसे अ पाणे बहुप्पयारे) ग्रमारण्यप्रचारनिरतान् त्रसांश्च प्राणान् बहुप्रकारान् ग्रामेषु
 अरण्येषु च यः प्रचारः—संचारस्तत्र निरतान्=तत्परान् बहुप्रकारान्=अनेकविधान् त्रसान्
 प्राणान् द्वीन्द्रियादीन् प्राणिनश्च तथा(रुक्ख-गुच्छ-गुम्म लय-वल्ली पवालं-कुरमादीए)वृक्षः-
 गुच्छ गुल्म-लय वल्लिप्रवालाङ्कुरादिकान्, तत्र वृक्षाः-आम्रादयः गुन्नाः वृन्ताकीप्रभृतयः
 गुल्मा =नवमालिकादयः, लताः=अशोकलतादयः, वल्लयः वालुङ्कादयः प्रवालाः प्रवालाः
 पल्लवाःअङ्कुराः शाल्यादीनाम् अभिनयोद्धेदाः एते आदौ येषां ते तथा तान् वृक्षाद्यङ्कुरान्त
 प्रभृतान्(तणवणस्मडकाइए) तृणवनस्पतिकायिकान् तृणवद् वनस्पतयः तृणवनस्पतयः, त
 एव कायाः=शरीराणि ते विद्यन्ते येषां ते तथा तान् बादरवनस्पतिकायिकान् तृणसाधर्म्यं
 चात्र बादरत्वेन, सूक्ष्माणां तेषां तैरुपधातासंभवादिति, तथा (ओसहीओ य) ओषधीः
 शाल्यादिरूपाश्च (विद्धं सेहिति) विध्वंसयिष्यन्ति-नाशयिष्यन्ति । तथा-ते मेघाः(वेयड्ढगि-
 रिवज्जे) पर्वतगिरिडुङ्गरोत्स्थलभ्राष्ट्रादिकान्-तत्र पर्वतनतात्-उत्सवविस्तारणात् पर्वताः
 क्रीडापर्वताः गृणन्ति-शब्दायन्ते जन निवासभूतत्वेनेति गिरयः डुङ्गानि धूल्युच्छ्रयरूपाणि
 भ्राष्ट्राः पांस्वादिवर्जितभूमयः तत एतेषां द्वन्द्वे ते अदियेपान्ते तथा तान् आदि शब्दात्
 प्रासादशिखरादि परिग्रहः वैतड्यगिरिवर्जान् शाश्वतान् वैताड्यान् वर्जयित्वा(पन्वय-गिरि-
 ङोंगरुत्थल भट्टिमादीए) पर्वतगिरि डुङ्गरोत्स्थलभ्राष्ट्रादीन् तत्र-पर्वताः पर्वणां तननाद्=

आकाशचारो पक्षियों की (ग्रामारण्यपरारणिरण तसे अ पाणे बहुप्पयारे) ग्राम एवं नंगल में
 चलने फिरने वाले अनेक प्रकार के त्रसजोवो का—द्वीन्द्रियादिक प्राणियों का (रुक्खगुच्छ गुम्म-
 लतावल्ली पवालकुरमादीए) आम्रादिक वृक्षों का, वृन्ताकी आदि गुच्छों का नवमल्लिका आदि
 गुल्मों का अशोकलता आदि लताओं का वालुङ्गी आदि वल्लियों का फलस्वरूप प्रवालों का
 और शालि आदिकों के नवीन उद्भेदरूप अङ्कुरों का इत्यादि तृणवनस्पति कायिकरूप बादर
 वनस्पतिकायिकों का (सूक्ष्मवनस्पतिकायिकों नहीं क्योंकि इनके द्वारा इनका विनाश नहीं हो
 सकता है) तथा (ओसहीओय) शाल्यादिरूप औषधियों का वे मेघ (विद्धंसेहिति) विनाश करेंगे
 तथा वे मेघ (वेयड्ढगिरिवज्जे पन्वय गिरिङोंगरुत्थल भट्टिमादीए अविरावेहिति) शाश्वत पर्वत वैताड्य-
 गिरि को छोड़कर ऊर्जयन्त वैमार आदि क्रीडा पर्वतों को गोपालगिरि चित्रकूट आदि पर्वतों को

आरी पक्षीओने। (ग्रामारण्यपरारणिरण तसे अ पाणे बहुप्पयारे) ग्राम अने नंगलोमां
 विचरनारा अनेक प्रकारना त्रसजोवोना—द्वीन्द्रियादिक प्राणीओने। (रुक्खगुच्छगुम्मलतावल्ली
 पवालंकुरमादीए) आम्रादिक वृक्षोने, वृन्ताकी वगेरे गुच्छोने। नवमल्लिका वगेरे गुल्मोने।
 अशोकलता आदि लताओने। वालुङ्गी वगेरे वल्लीओने। पल्लवइय प्रवालोने। अने शालि
 वगेरेना नवीन उद्भेद इय अङ्कुरोने—तृणवनस्पति कायिक इयमाडर वनस्पति कायिकोने।
 (सूक्ष्मवनस्पति कायिकोने नहि केमके तेमना वडे ओमने। विनाश थड शडे तेम नथी) तेमअ
 (ओसहीओय) शाल्यादिइय औषधियोने। ते मेघे। 'विद्धसेहिति' विनाश करे तेमअ ते
 मेघे। (वेयड्ढगिरिवज्जे पन्वयगिरिङोंगरुत्थलभट्टिमादीए अविरावेहिति) शाश्वत पर्वत
 वैताड्य गिरिने आढ करीने उर्जयन्त वैमार वगेरे क्रीडा पर्वतोने। गोपालगिरि चित्रकूट

વિસ્તારણાત્ પર્વતાઃ=ક્રીડાપર્વતા ઉજ્જયન્તવૈભાગદયઃ, ગિરયઃ ગૃણન્તિ શબ્દાયન્તે જનં નિવાસભૂતત્વેનેતિ ગિરયઃ ગોપાલગિરિ ચિત્રકૂટપ્રભૃતયઃ ડુઙ્ગાનિ શિલાસમૂહાઃ ચોરસમૂહા વા સન્ત્યેષ્વિતિ ડુઙ્ગરાઃ શિલોન્ચય માત્રરૂપાઃ ઉત્ત્થલાનિ=ઉન્નતાનિ સ્થલાનિ ધૃલ્લિસમૂહરૂપાણિ, આષ્ટાઃ=પાંસ્વાદિવર્જિતા ભૂમયઃ, તત્ર ઇપાં દ્વન્દ્વઃ તે આદૌ યેપાં તે તથા તાત્ર પ્રાસાદશિખરાદીનાં સંગ્રહઃ, એતાન્ સર્વાન્ । (વિરાવેદિતિ) વિદ્રાવયિષ્યન્તિ-નાગચિષ્યન્તિ । તથા તે મેધાઃ(ગંગાસિંધુવજ્જાહ)ગઙ્ગાસિન્ધુવર્જાનિ-શાશ્વત નદીં ગઙ્ગાં સિન્ધું ચ વર્જયિત્વા (સલિલવિલવિસમગત્તણિણુણ્યાઈ) સલિલવિલાવિપમગર્ત્તઃ નિમ્નોન્નતાનિ સલિલવિલાનિ ભૂનિર્ઘરાઃ, વિપમગર્ત્તઃ દુષ્પૂરશ્વઆણિ, તથા નિમ્નોન્નતાનિ નિમ્નાનિ ચ તાનિ ઉન્નતાનિ ચેતિ તથા તાનિ ઉચ્ચાવચાનીત્યર્થઃ, ઇપાં દ્વન્દ્વસ્તાનિ સલિલવિલપ્રભૃતીનિ સર્વાણિ જલ-સ્થાનાનિ(સમીકરેદિતિ) સમીકરિષ્યન્તિ સમાનાનિ કરિષ્યન્તીતિ । અથ ગૌતમસ્વામી પુનઃ પૃચ્છતિ (તીસેણં મંતે) ઇત્યાદિ । (તીસે ણં મંતે ! સમાપ) તસ્યાંં યલ્લ મદન્ત ! સમાયાંં હે મદન્ત ! તસ્યાંં યલ્લ દુષ્પમદુષ્પમાયાંં સમાયાંં(મરહસ્સ વાસસ્સ)ભારતસ્ય વર્ષસ્ય (ભૂમીઈ) ભૂમેઃ (કેરિસઈ)કીદ્દશકઃ(આગારમાવપહોયારે)આકારમાવપ્રત્યવતારઃ આકારાઃ આકૃતયઃ, માવાઃ પર્યાયા. તેષાં પ્રત્યવતારઃ આવિર્માવો(મવિસ્સઈ)મવિષ્યતિ ? । મગવાનાહ-(ગોયમા !)હે ગૌતમ ! તસ્યાંં દુષ્પમદુષ્પમાયાંં સમાયાંં(ભૂમી)ભૂમિઃ(મવિસ્સઈ)મવિષ્યતિ,

શિલા સમૂહ જ્યાં હોતે હૈ યા ચોર સમૂહ જિન મેં નિવાસ કરતે હૈં એસે હૂ ગરો કો-વઢી ૨ શિલાઓં વાલી ઉન્નતટેકરિયો કો, ધૂલિ સમૂહરૂપ ઉચ્ચ સ્થલો કો, ઓર પાંસુ આદિ સે રહિત વઢે પઠારો કો ઇત્યાદિ સમસ્ત સ્થાનો કો નષ્ટ કર દેગે (સલિલવિલવિસમગત્તણિણુણ્યાઈ અ ગંગા સિંધુ વજ્જાહ સમીકરેતિ) શાશ્વત નદી ગંગા ઓર સિન્ધુ કો છોડકર જમીન કે ઉપર કે ક્ષરનો કો, વિષમ ગઢો કો, -નીચે ૨ પસરેહુપ પાત્રોં કે વ્રહ કો, તથા નીચે ઉચ્ચે જલ સ્થાનો કો પન સબ કો બરાબર બના દેગે-સમાન-એકસા-કર દેગે (તીસે ણં મંતે ! સમાપ મરહસ્સ વાસસ્સ ભૂમિઈ કેરિસઈ આયારમાવપહોયારે મવિસ્સઈ) અબ ગૌતમ પ્રશ્ન સે એસા પછતે હૈ-હે મદન્ત ! ડસ દુષ્પમ દુષ્પમા નામ કે આરે મેં મરત ક્ષેત્ર કા આકાર માવ પ્રત્યવતાર-સ્વરૂપ કેસા હોગા ? હસકે ઉત્તર મેં પ્રશ્ન કહતે હૈ-(ગોયમા ! મૂનો મવિસ્સઈ હંગાલમૂઆ, મુમ્સુર મુઆ

વગેરે પર્વતનો, શિલાસમૂહ ન્યા હોય છે અથવા ચોર સમૂહો જેમા નિવાસ કરે છે એવા પર્વતનો, મોટી-મોટી શિલાઓ વાળા ઉન્નત ટેકરીઓનો, ધૂલિસમૂહ રૂપ ઉન્નત સ્થલોનો અને પાંસુ આદિથી રહિત વિશાળ પઠારોનો તેમજ સમસ્ત સ્થાનોનો નાશ કરશે (સલિલ વિલવિસમગત્તણિણુણ્યાઈ અ ગંગાસિન્ધુવજ્જાહ સમીકરેતિ) શાશ્વત નદી ગંગા અને સિન્ધુને બાદ કરીને પૃથ્વી ઉપરના સ્રોતોને, વિષમ ખાડાઓ ને, નીચે પ્રસરેલા પાણીના ઢોળોને, તેમજ નીચે ઊંચે જલસ્થાનોને તે સરખા કરી નાખશે સમાન કરી નાખશે (તીસેણં મંતે ! સમાપ મરહસ્સ વાસસ્સ ભૂમિઈ કેરિસઈ આયારમાવપહોયારે મવિસ્સઈ હે ગૌતમ પ્રશ્નને આ પ્રમાણે પૂછે છે- હે મદન્ત ! તે દુષ્પમા નામના આરામાં ભરતક્ષેત્રના આકાર-માવ પ્રત્યવતાર-સ્વરૂપ કેવું હશે ? એના જવાબમા પ્રશ્ન કહે છે-(ગોયમા ! ભૂમિમવિ-

કીદૃશી ભૂમિર્ભવિષ્યતિ? इत्याह(इंगालभूया) अद्गारभूता अद्गारः ज्वालारहिताग्निपिण्डस्तद्वद्
 भूता- तत्सदृशी, (मुष्मुरभूया) मुष्मुरभूता तुपाग्निरूपा (छारियभूया) क्षारिकभूता भस्मस-
 दृशी (तत्तकवेल्लुअभूया) तप्तकटाहसदृशी 'कवेल्लुअ' इति कटाहार्थे देशी शब्दः (तत्तसमजो-
 इभूया) तप्तसमज्योतिर्भूता-तप्तेन तापेन समो यो ज्योतिः=अग्निः स तप्तसमज्योतिः=
 सर्वदेशावच्छेदेन समानज्वालवान् अग्निः तद्भूताः=तत्सदृशी (धूलिवहुला) धूलिवहुला-
 धूलिः=पांशुः, सा बहुला=प्रचुरा यस्यां सा धूलिभूयिष्ठा (रेणुवहुला) रेणुवहुला-रेणुः=
 बालुका, सा बहुला=प्रचुरा यस्यां सा-बालुकाभूयिष्ठा(पंकवहुला) पङ्कवहुला पङ्कः=कर्दमो
 बहुलो यस्यां सा प्रचुरकर्दमयुक्ता (पणयवहुला) पनकवहुला-पनकः=प्रतलकर्दमो बहुलो
 यस्यां सा प्रचूरप्रतलकर्दमयुक्ता, (चलणिवहुला) चलनीवहुला-चलनी-चणप्रमाणः कर्दमः
 सा बहुला यस्यां सा तथा-चरणप्रमाणकर्दमेन प्रचुरतया युक्ता, अतएव(बहुणं) बहूनां(धर-
 णिगोयराणं) धरणिगोचराणां पृथ्वीस्थितानां(सत्ताणं)सत्त्वानां प्राणिनां(दुन्निक्कमायावि)
 दुर्निष्क्रमा दुःखेन निष्क्रमो=निष्क्रमणं यस्याः सा दुरतिक्रमणीया चापि (भविस्सइ)
 भविष्यति । गौतमस्वामी पुनः पृच्छति (तीसेण भंते ! समाए) तस्यां खलु भदन्त !

छारिअમૂઝા તત્તકવેલ્લુઅમૂઝા તત્તસમજોઈ મૂઝા ધૂલિવહુલા રેણુવહુલા, પળયવહુલા, ચલણિ-
 વહુલા, બહુણં ધરણિગોચરાણં સત્તાણ દુણિવક્રમાયાવિ ભવિસ્સઈ) હે ગૌતમ ! તસ દુષ્પમ
 દુષ્પમા કાલ મેં યહ ભૂમિ અદ્ગાર ભૂત જ્વાલારહિત અગ્નિપિંડ જૈસી, મુષ્મુરૂપ તુવાગ્નિ જૈસી
 ક્ષારિકભૂત-ગર્મ ૨ ભસ્મ જૈસી, તત્ત કટાહ જૈમી 'કવેલ્લુઅ' યહ દેશી શબ્દ હૈં ઔર કટાહ
 અર્થકા વાચક હૈં તત્તસમજ્યોતિ જૈસો-સમ્પૂર્ણ દેશ મેં સમાન જ્વાલાવાલી અગ્નિ જૈસી હોગો
 ઇવં પ્રચુર પાંશુવાલી હોગો, પ્રચુરરેણુ વાલી હોગી પ્રચુર પંકુવાલી હોગી પ્રચુર પનક-પતલે કીચઢ
 વાલી હોગી, પૈર જિસમેં સમસ્ત દૂબ નાવે ઇસી પ્રચુર કર્દમ વાલી હોગી. અતઃપવ ચલને વાલે
 મનુષ્યોં કો ઇસકે ઉપર ચલને ફિરને મેં વઢા ભારી કષ્ટ હોગા-વે બઢી મુશ્કિલ સે ઇસ કે ઉપર
 ચલફિર સકેંગે (તીસેણં ભંતે ! સમાએ મરહે વાસે મણુયાણ કેસરિએ આચારભાવપઢોયારે

इंगालभूया, मुष्मुरभूया छारिअमूઝા તત્તકવેલ્લુઅમૂઝા તત્તસમજોઈમૂઝા ધૂલિવહુલા
 રેણુવહુલા, પંકવહુલા, પ ડુલા, ચલણિ વહુલા ધરણિ મોચરાણં સત્તાણ દુણિવક્રમાયાવિ
 ભવિસ્સઈ) હે ગૌતમ ! તે દુષ્પમ દુષ્પમા કાળમા આ ભૂમિ અંગારભૂત જ્વાલારહિત અગ્નિ
 પિંડ જેવી મુષ્મુર રૂપ તુવાગ્નિ જેવી ક્ષારિકભૂત ગર્મ ભસ્મ જેવી, તત્તકટાહ જેવી 'કવેલ્લુઅ'
 આ દેશી શબ્દ છે અને કટાહ અર્થવાચક છે-તત્તસમજ્યોતિ જેવી સ પૂર્ણ દેશમા સમાન
 જ્વાલા વાળી અગ્નિ જેવી થશે અને પ્રચુર પાંશુવાળી થશે પ્રચુરરેણુવાળી થશે, પ્રચુરપંક-
 વાળી થશે. પ્રચુર પનક-પાતળા કાઢવવાળી થશે, પગ જેમા સ પૂર્ણ રૂપમા પેસી જાય એવા
 પ્રચુર કાઢવળી થશે. એથી ચાલનારા માણસોને એની ઉપર અવર-જવર કરવામાં ભારે કષ્ટ
 થશે તેઓ મુશ્કેલીથી એની ઉપર અવર-જવર કરા શકશે (તીસેણ ભંતે ! સમાએ મરહે વાસે
 મણુયાણ કેરિસવ આચારભાવપઢોયારે ભવિસ્સઈ) હે ભદન્ત ! તે કાળમા ભસ્ત ક્ષેત્રમા માણસ

समायां हे भदन्त ! तस्यां खलु दुष्पमदुष्पमायां समायां (भरहे वासे) भारते वर्षे (मणुयाणं) मनुजानां (केरिसण) कीदृशरुः (आयारभावपडोयारे) आकारभावप्रत्यवतारो (भविस्सइ) भविष्यति ? । भगवानाह - (गोयमा !) हे गौतम ! तस्या दुष्पमदुष्पमायां समाया (मणुआ) मनुजाः (भविस्सन्ति) भविष्यन्ति, कीदृशास्ते मनुजा भविष्यन्ति ? इत्याह—(दुरूवा) दुरूपाः दुष्टम्=अशोभनं रूपम् आकारो गेपां ते तथा अशोभनाकृतिकाः (दुवण्णा) दुर्वर्णाः दुष्टो वर्णो येषां ते तथा दुष्टवर्णयुक्ताः (दुगंधा) दुर्गन्धाः=दुर्गन्धयुक्तशरीराः (दुरसा) दूरमाः=दुष्टरसयुक्ताः (दुफासा) दुस्पर्शाः=कठोरादिदुष्टस्पर्शयुक्ताः अतएव (अणिट्ठा) अनिष्टाः=अनभिलषणीयाः अनिष्टमपि किञ्चित् कमनीय भवतीत्यत आह—(अकंता) अकान्ताः=अकमनीयाः अकमनीयमपि किञ्चित्कारणवशात् प्रीतये भवतीत्यत आह—(अप्पिया) अप्रियाः=अप्रीतिस्थानभूताः, अप्रियत्वं च तेषां कस्मात् ? इत्याह—(अशुभा) अशुभा=शुभभावरहिता अशुभा अपि केचिन् आन्तरिकसंवेदनेन शुभरूपेण ज्ञायन्ते इत्यतस्तन्निपेधाय प्राह—अमनोज्ञाः मनोज्ञाः=शुभत्वेन मनोविषयोभूताः, न मनोज्ञाः—अमनोज्ञाः—मनसाऽपि शुभतयाऽप्रतीयमाना, अमनोज्ञा

भविस्सइ) हे भदन्त ! उस काल में भारत क्षेत्रमें मनुष्यों का स्वरूप कैसा होगा ? उत्तर में प्रभु कहते हैं—(गोयमा ! मणुआ भविस्सन्ति) दुरूवा, दुवण्णा, दुगंधा, दुरसा, दुफासा, अणिट्ठा, अकंता, अप्पिया, अशुभा, अमणुण्णा, अमणामा, हीणस्सरा, दीणस्सरा, अणिट्ठस्सरा, अकंतस्सरा, अपियस्सरा, अमणामस्सरा, अमणुण्णस्सरा अणादेज्जवयणपच्चायाया णिलज्जा, कूडकवडकलहवंधवेर-निरया मज्जायातिकमप्पहागा अकज्जणिच्चुज्जुया गुरुणिओगविणयरहियाय) हे गौतम ! उस दुष्पम दुष्पमा कालके मनुष्य अशोभन रूपवाले अशोभन आकृति वाले, दुष्ट वर्णवाले, दुष्टगन्ध वाले—दुर्गन्धयुक्त शरीरवाले दुष्टरस युक्त शरीरवाले एवं दुष्टस्पर्शयुक्त शरीरवाले होंगे अत एव वे अनिष्ट अनभिलषणीय-होंगे अनिष्ट होने से वे अकान्त अकमनीय होंगे अकमनीय होने से वे अप्रीति के स्थानभूत होंगे, क्योंकि ये शुभभावों से रहित होंगे अमनोज्ञ होंगे—ये शुभ हैं—इस रूप से ये मन के विषयभूत नहीं होंगे अर्थात् इन्हें देखकर मन यह कभी नहींविचारेगा किये शुभ है ! तथा स्मरण

हे भगवन् ते कालमां भारत क्षेत्रमा भाषुसेतु स्वरूपं केवुं कथं ? अथाभमा प्रभु कहे छे—(गोयमा ! मणुआ भविस्सन्ति) दुरूवा, दुवण्णा, दुगंधा, दुरसा, दुफासा, अणिट्ठा, अकंता, अप्पिया, अशुभा, अमणुण्णा, अमणामा, हीणस्सरा, दीणस्सरा, अणिट्ठस्सरा, अकंतस्सरा, अपियस्सरा, अमणामस्सरा, अमणुण्णस्सरा, अणादेज्जवयणपच्चायाया णिलज्जा, कूडकवडकलहवंधवेर-निरया मज्जायातिकमप्पहाणा अकज्जणिच्चुज्जुया गुरुणिओगविणयरहियाय) हे गौतम ! ते दुष्पमाकालमा मनुष्ये अशोभन रूपवाणा, अशोभन आकृति वाणा, दुष्टवर्णवाणा, दुष्टगन्धवाणा—दुर्गन्धयुक्त शरीरवाणा, दुष्टरसयुक्तशरीरवाणा अने दुष्ट स्पर्शयुक्त शरीरवाणा थरी. ओथी तेओ अनिष्ट-अनभिलषणीय-थरी. अनिष्ट होवाथी तेओ अकान्त-अकमनीय थरी अकमनीय होवाथी तेओ अप्रीतिना स्थान भूत थरी. केमके ओओ अशुभभावनाओथी रहित थरी अमनोज्ञ थरी-ओओ शुभ छे—आ इयमां

અપિ પદાર્થાઃ કદાચિત્ સ્મરણાવસ્થાયાં મનોજ્ઞા ઇવામાન્તિ અતएવાહ—(અમણામા) અમનોડમાઃ—મનસા અમ્યન્તે=ગમ્યન્તે સ્મરણાવસ્થાયાં યે તે મનોડમાઃ, ન મનોડમા ઇત્યમનોડમા સ્મરણાવસ્થાયામપિ મનસઃ પ્રતિકૂળા ઇત્યર્થઃ, અથવા—એકાર્થકા એતે શબ્દા અતિશયનિષ્ટતાસૂચનાય । તથા—(દીનસ્સરા) દીનસ્વરા—દીનઃ સ્વરો યેપાં તે તથા—રુગ્ણસ્વરસદૃશસ્વરયુક્તાઃ (દીનસ્સરા) દીનસ્વરાઃ દીનઃ સ્વરો યેપાં તે તથા—દીન જનસ્વરસદૃશસ્વરયુક્તાઃ (અણિટ્વસ્સરા) અણિટ્વસ્વરાઃ—અણિટ્વઃ શ્રવણારમણીયઃ સ્વરો યેપાં તે તથા કર્ણકદુસ્વરયુક્તાઃ અતएવ (અપ્પિયસ્મરા) અપ્રિયસ્વરાઃ—અપ્રિયઃ સ્વરો યેપાં તે તથા કર્ણપ્રિયસ્વરયુક્તાઃ અતएવ (અમણુણસ્મરા) અમનોજ્ઞસ્વરાઃ=અશોભનસ્વરયુક્તાઃ, તથા (અમણામસ્સરા) અમનોડમસ્વરાઃ=સર્વથા મનઃ પ્રતિકૂલસ્વરયુક્તાઃ, તથા—(અણાદેજ્જવયણપચ્ચાયાયા) અનાદેયવચનપ્રત્યાયાતાઃ—અનાદેયમ્=અશોભનત્વાદસ્પૃહણીયં વચન પ્રત્યાયાત=જન્મ ચ યેપાં તે તથા—અસ્પૃહણીયવચના અસ્પૃહણીયજન્માનશ્ચેત્યર્થઃ, તથા (ણિલ્લજ્જા) નિર્લજ્જાઃ=લજ્જારહિતાઃ (કૂડકવહકલહવહવંધવેરનિરયા) કૂટ કપટ કલહવધવન્ધવૈરનિરતાઃ—કૂટ=કૂટદ્રવ્યં આન્તિજનકદ્રવ્ય, કપટઃ=પરપ્રતારણાય વેપાન્તરકરણં, કલહઃ યુદ્ધં,

અવસ્થામાં મો યે મનકે પ્રતિકૂળ હો પ્રતિભાસિત હોગે અથવા યે સવ શબ્દ અતિશયરૂપ સે અનિષ્ટતા કો હો સૂચના કરને કે લિયે પર્યાયવાચીરૂપ સે પ્રયુક્ત હુપ હૈં । તથા इनका जो स्वर होगा वह रुग्ण व्यक्ति के स्वर के जैसा होगा, दीनजनों का जैसा स्वर होता है वैसा इनका स्वर होगा, सुनने में कानों को इन का स्वर अरमणीय होगा इसलिए ये अनिष्ट स्वर वाले होंगे कर्णकटुस्वर से ये युक्तहोंगे अत एव ये अप्रिय स्वरवाले होंगे. इनका स्वर मन को विलकूल नहीं रुचेगा इसलिये ये अमनोज्ञ स्वरवाले होंगे इनके स्वर की याद आनेपर भी मगलानि से भर जावेगा इसलिये ये अमनोऽमस्वर वाले होंगे इनके वचन सुनने तककी भी इच्छा कोई नहीं करेगा. और न कोई इनके जन्मपाने की सराहना ही करेगा, ये सब लज्जाहीन होंगे कूटमें-आन्ति जनक द्रव्य में, कपट में—पर को प्रतारण करने के लिये वेषान्तर कर ने में—कलह—झगडा लड़ाई कर

એઓ મનના વિષયભૂત થશે નહિ અર્થાત્ એમને એઈને કોઈ પણ દ્રવ્યસે આ ભાતને વિચાર નહી થશે કે એઓ શુભ છે તેમજ સ્મરણ અવસ્થામાં પણ એઓ મનમાટે પ્રતિકૂળજ પ્રતિભાસિત થશે. અથવા એ બધા શબ્દો અતિશય રૂપમાં અનિષ્ટતાને જ સૂચિત કરવા માટે અત્રે પર્યાયવાચીના રૂપમાં પ્રયુક્ત થયેલા છે. તેમજ એમને જે સ્વર થશે તે રુગ્ણ વ્યક્તિના સ્વર જેવો થશે દીનજનોને જેવો સ્વર હોય છે, તેવો એમને સ્વર થશે કાનો માટે એમને સ્વર અરમણીય થશે એટલે કે કણ્ કટુ શબ્દ તેઓ ઉચ્ચારશે એથી એઓ અનિષ્ટ સ્વરવાળા થશે. કણ્ કટુ સ્વરથી એ યુક્ત થશે, એથી એઓ અપ્રિય-સ્વરવાળા થશે. એમને સ્વર મનને ણિલકુલ ગમશે નહિ તેથી એઓ અમનોજ્ઞ સ્વરવાળા થશે એમના સ્વરની સ્મૃતિ થતી જ મન ગ્લાનિ યુક્ત થઈ જશે એથી એઓ અમનોડમ સ્વરવાળા થશે એમના વચનને સાંભળવાની પણ કોઈ ઇચ્છા કરશે નહિ, અને એમના જન્મ ને લઈને પણ કોઈ સરાહના કરશે નહિ એઓ સર્વે નિર્લજ્જ થશે કૂટમાં-આન્તિ

वधः चपेटादिभिस्ताडनं, वन्धः=रज्जुभिर्नियमनम्, वैर=शत्रुता, एपां द्रव्यः, तत्र निरता-
 =संलग्नाः, तथा (मज्जायातिक्कमप्पहाणा) मर्यादाऽतिक्रमप्रधानाः-मर्यादा-व्यवस्था,
 तस्या अतिक्रमे-उल्लङ्घने प्रयानाः-प्रमुखाः (अरुज्जेणिच्चुज्जुया) अकार्यनित्योद्युक्ता-
 अकार्ये-अरुच्ये कर्मणि नित्य सर्वदा उद्युक्ताः-सलग्नाः, तथा (गुरुणिओगविणयरहिया)
 गुरुनियोगविनयरहिताः गुरुणां-मातापित्रादिकानां यो नियोगः-नियोजनं सयोजनं, तत्र
 यो विनयः विनीततातन्नियोगरवीकाररूपा तेन रहिताः-मातापित्रादि गुरुजनाज्ञोल्लङ्घका
 इत्यर्थः (य) च-पुनः (विकलरूपा) विकलरूपाः-विकलम्-असम्पूर्णं रूपम्-आकारो येषां
 ते तथा नेत्राद्यङ्गवैकल्येन असम्पूर्णाङ्गोपाङ्गाः, तथा (परुद्धणहकेसमसुरोमा) परुद्धनखकेश-
 श्मश्रुरोमाणः-परुद्धानि संस्काराभावात् प्रकृष्टतया वृद्धि गतानि नखकेशश्मश्रुरोमाणि येषां
 ते तथा (काला) कालाः कृष्णवर्णाः कृतान्तवत् क्रूरा वा (खरफरुससामवण्णा) खरपरुप-
 श्यामवर्णाः-खरपरुषाः-प्रकृष्टकठोरस्पर्शाश्च ते श्यामवर्णा-श्यामवर्णचन्तश्च ये ते तथा-
 स्पर्शतः सातिशयकठोरा वर्णतश्च नीलीभाण्डे निक्षिप्तोत्क्षिप्तवस्त्रवत् नीला इत्यर्थः, तथा

ने में, वध चपेटा आदि द्वारा ताडना-करनेमें वन्ध में-रज्जु आदि द्वारा दूसरों को बाधने में,
 वैर में शत्रुता करने में, ये सलग्न रहेंगे-ऐसे कार्यों में ये विशेषरूप से रत रह जा करेंगे। मर्यादा-
 व्यवस्था-के अतिक्रमण करने में ये कटिबद्ध रहेंगे। एव माता पिता आदिरूप गुरुजनो की विन
 यादि क्रिया करना उनको आज्ञा मानना आदि बातों को ये परवाह तक भी नहीं करेंगे। (विक-
 लरूपा) इनके अङ्गोपाङ्ग पूर्ण नहीं होंगे किसीन किसी अङ्ग उपाङ्ग से ये होन रहेंगे तथा
 (परुद्धणहकेसमसुरोमा) इनके नख बड़े रहेंगे, इनके मस्तक के बाल संस्कार रहित होने से
 बड़े रहेंगे। दाढ़ी के बाल और मूँछों के बाल भी आवश्यकता से अधिक वृद्धिगत होंगे (काला
 खरफरुससामवण्णा, फुट्टिसिरा, कपिलपल्लिकेसा, बहुण्णारुणि सपिण्णदुह सणिज्जरूपा सकुडि-
 अबलितरंगपरिवेदिअंगमंगा जरा परिणयव्व थेरगणरा पविरलपविसइ अ दंतसेढी, उम्मडघडमुहा)
 वर्णमें बिलकुल काळे होंगे, अथवा कृतान्त की तरह क्रूर होंगे इनके शरीर का स्पर्श बहुत अधिक

जनक द्रव्यमां, कपटमा-परने प्रतापु करवाभाटे वेपा-तर करवामा, कलह-कलह-कंकास कर,
 वामां, वध चपेटा आदि द्वारा ताडना करवामा अधमां रज्जु आदि द्वारा भीज्जोने भाध
 वामां, वैरमां शत्रुता करवामां ओओ। सलग्न रहेशे ओवा कार्यो भा तेओ। विशेष इपथी
 रत रहेशे। मर्यादा-व्यवस्था-के अतिक्रमण करवामा ओओ। कटिबद्ध रहेशे तेमज्जा माता-
 पिता वगेरे गुरुजनोनी विनयादि क्रिया करवामा, तेमनी आज्ञा मानवी वगेरे बातोनी
 ओओ। परवा हरेशे नही। (विकलरूपा) ओमना अंगोपांगो पूर्ण थेशे नहि। कर्षने कौष्ठ
 अंग उपांगथी ओओ। हीन रहेशे तेमज्जा (परुद्धणहकेसमसुरोमा) ओमना माथाना वाण
 संस्कार रहित होवाथी मोटा रहेशे दाढ़ी अने मूँछोना वाण पण आवश्यकता करता वधादे
 मोटा रहेशे (काला खरफरुससामवण्णा, फुट्टिसिरा, कपिलपल्लिकेसा बहुण्णारुणि सपि
 ण्णदुहसणिज्जरूपा संकुडिअबलितरंगपरिवेदिअंगमंगा जरापरिणयव्वथेरगणरा पविरल-
 पविसइ अ दंतसेढी, उम्मडघडमुहा) ओओ। वसुंभा साव काणा थेशे, अथवा कृतान्तनी

(ફુટ્ટસિરા) સ્ફુટિતશિરસઃ સ્ફુટતાનિ-રેલાવચ્ચાત્ સ્ફુટિતાનીચ શિરાંમિ-મસ્તકાનિ-યેપાં તે તથા-રેલાયુક્ત શિરસ इत्यर्थः, તથા (કવિલ્પલિપ્તકેસા) કવિલ્પલિપ્તકેશાઃ કવિલાઃ-કવિલ્પવર્ણાઃ ધુમ્રવર્ણાઃ પલિતાઃ-શ્વેતવર્ણાશ્ચ કેશા યેપા તે તથા ધુમ્રવર્ણશ્ચેતવર્ણકેશધારિણઃ (વહુનહારુણિસંપિણદ્ધ દુદ્ધમણિજ્જરૂવા) વહુ સ્નાયુ-નિસંપિનદ્ધ દુર્દર્શનીયરૂપા વહુમિઃ-વહુસખ્યકામિ સ્નાયુમિઃ-અદ્ભપ્રત્યદ્ભન્ધિવન્ધનરૂપામિઃ વસ્તમામિઃ નિસંપિનદ્ધાઃ-અતોવ સંનિવદ્ધાઃ, અતएव દુર્દર્શનીયરૂપાઃ દુર્દર્શનીયં રૂપ યેપા તે તથા-અગોમ-નાકૃતિકાઃ, તતઃ પદ્મસ્ય કર્મધારયઃ, તથા (સંકુલિઅવલીતરંગપરિવેદિયંગમગા) સંકુલિતવલીતરંગપરિવેદિતાદ્વાદ્વાઃ-વલ્ય રેલાત્મકાસ્ત્વગિત્કારાસ્તાહાં યે તરંગા-પરમ્પરાઃ તૈઃ પરિવેદિતાનિ-વ્યાપ્તાનિ અજ્ઞાનિ-અવયવા યસ્મિન્સ્તદ્ વલીતરંગપરિવેદિ-તાદ્ગમ્, સંકુલિતં-સંકોચમુપગત તથાવિધમદ્ગ યેપા તે તથા રેલાયુક્તસંકુલિતગરીરા इत्यर्थः, અતएव (જરાપરિણયજ્ઞ ચેરગગરા) જરાપરિણતા ઇવ સ્થવિરકનરા-વાર્ધક્યમુપગતા વૃદ્ધનરા ઇવ પ્રતીયમાનાઃ વૃદ્ધમાદૃશ્યમેવ પ્રકટયતિ (પવિગ્લપરિસહિયદસ-સેદ્ધી) પ્રવિરલ-પરિશટિત દન્તશ્રેણયઃ પ્રવિરલાઃ-પૃથક્ પૃથક્ સ્થિતા પરિશટિતાઃ-પરિશટમુપગતા દન્તશ્રેણિઃ દન્તપક્તિ યેપા તે તથા-સાન્તરાલપરિપતિતદન્તશ્રેણિયુક્તા इत्यर्थः, અતएव (ઉબ્ધઘટમુદ્ગા) ઉદ્ભટઘટમુદ્ગાઃ-ઉદ્ભટ-વિકટ ઘટમુદ્ગમિવ મુદ્ગં યેપાં તે તથા અલ્પદન્તવચ્ચેન ઘટમુદ્ગતુલ્યમુદ્ગયુક્તાઃ, તથા-(વિસમણયણવકળાસા) વિપમનય, નવકળાસાઃ વિપમે-અતુલ્યે નયને-નેત્રે વક્રા-કુટિલા નાસા - નાસિકા ચ યેપા તે તથા

કઠોર હોગા તથા નીઢો માળડ મેં વાર ૨ ઢાલને સે જૈવા વસ્ત્ર મેં નીઢ રગ ગહરા જમ જાતા હૈ વૈસા હી ગહરા વદ શ્યામવર્ણ-ગોઢ રગ-ઇનકેગરોઢ કા હોગા ઇનકે મસ્તક રેલાઓ સે યુક્ત હોંગે ઇન્કે મસ્તક કે જો કેશ હોંગે વે કવિત્ વર્ણવાલે-ચૂન્કે જૈસે વર્ણવાલે ઔઢ સફેદ રગ કે હોંગે ઇન્કો આકૃતિ અનેક સ્નાયુ જાલ સે ઘિમે હુડ મ્હાને કે કારણ દુર્દર્શનીય રહેગી ઇન્કા અદ્ભ-રેલાત્મક બલિયો કો પરમ્પરા સે-શુરિયો સે વ્યાપ્ત રહેગા સંકોચ યુક્ત હોગા અતएव યે એસે દેલ્લને પર પ્રતીત હોંગે કિ માનો વૃદ્ધાવસ્થા સે આલિંગિતવૃદ્ધજન હો હૈ ઇન્કો દન્ત પદ્ધતિ વિરલ હોગી ઔર વહ મી સહો હુડ હોગો-યા પરિપતિત હોગી. ઇન્કા મુદ્ગ હસસે એવા લગેગા કિ માનો યહ ઘડે કા હિં વિકૃત મુદ્ગ હૈ. (વિસમણયણવકળાસા) ઇન્કે દોનો નેત્ર બરાબર નહીં હોંગે-અતુલ્ય હોંગે ઔર નાક ઇન્કો કુટિલ હોગી(વક્રવચ્ચી ત્રિગમ્યમેપણમુદ્ગા) વઢો વિકાર વાઢા હોને સે ઇવં-

જેમ-કુર થશે એમના શરીરનો સ્પર્શ એકદમ વધારે કઠોર થશે તેમને નીલીશાડમાં વાર વાર ઝળોળવાથી જેમ વસ્ત્રમાં નીલરંગ ઘેરો બાંધી બાંધ છે તેવો જ ઘેરો શ્યામવર્ણ નીલ-રંગ-એમના શરીરનો થશે એમના મસ્તકો રેખાઓથી યુક્ત થશે, એમના મસ્તકના વાળ કવિલ્પવર્ણવાળા ધુમાડાના જેવાવર્ણવાળા અને સફેદ રંગવાળા થશે એમની આકૃતિ અનેક સ્નાયુમળલ વેદિત હોવાથી હૃદયનીચરહેશે. એમનું અંગ રેખાત્મક કરચલીઓથી વ્યાપ્ત રહેશે, સંકોચ યુક્ત થશે એથી જેવામાં જેવા લાગશે જે કે બાણે વૃદ્ધાવસ્થાથી આલિંગિત થયેલ વૃદ્ધજન જ છે એમની હૃતપક્તિ વિરલ થશે અને તે પણ સહી ગયેની હશે અથવા અધિપતિત થશે એમનું મુખ એનાથી એવું લાગશે કે બાણે તે ઘડાવું જ વિકૃત મુખ છે. (વિસમણયણવકળાસા) એમના બન્ને નેત્રો બરાબર નહીં હશે અતુલ્ય હશે અને

વિપમનેત્રકુટિલનાસિકા યુક્તા इत्यर्थः, तथा (वक्रवलीविगयभेसणमुहा) वक्रवली विकृत-
भीषणमुखा-वक्र-कुटिलं वलीविकृतं-वलीविकारधुक्तम् अतएव भीषण भयानकं मुखं येपा
ते तथा-कुटिलत्वेन रेखा विकारोपगतत्वेन च भयानकमुखयुक्ताः, (ददुकिटिम-सिध्म
फुडिअफरुसच्छवी) ददु-किटिम-सिध्म-स्फुटित-परुप-च्छवयः ददु किटिमसिध्मानि
कुष्ठभेदाः, तैः स्फुटिता परुपा कठोरा च छविः शरीर-चर्म-येपां ते तथा-ददुकिटिममि-
ध्मेति रोगत्रयजनित स्फुटितकठोरशरीरचर्माधारिण इत्यर्थः, अतएव(चित्तलंगमंगा)चित्र-
लाङ्गाङ्गाः-चित्रलानि कर्षुराणि अङ्गानि अवयवा यस्मिस्तादृशम् अङ्गं शरीरं येपा ते तथा-
कर्षुरवर्णावयवयुक्तशरीरा इत्यर्थः, तथा (कच्छूखसराभिभूया) कच्छूखसराभिभूताः-कच्छूः
पामा, खसरः कण्डुरोगविशेषः, ताभ्याम् अभिभूता व्याप्ताः, अतएव (खर-तिक्ख-णक्ख
कंङ्कइय विकय-तणू)खरतीक्ष्णनखरुण्ड्वयितविकृततनवः-खरा कर्कशाः तीक्ष्णा निधिताः
ये नखास्तैर्यत् कण्ड्वयितं कण्ड्वयन तेन निकृता विकारमुपगता सत्रणा तनु शरीरं येपा त
तथाभूताः कर्कशनिश्चितनखरुण्ड्वयनजनितत्रणयुक्तशरीरा इत्यर्थः तथा-(टोलगतिनिसम-
संधिवधणा)टोलगतिविपमसन्धिवन्धनाः-टोलाः=जन्तुविशेषाः, देशीयोऽय शब्दः, तेषां
गतिरिव गतिर्येषां ते तथा उप्प्रादिजन्तुगतिसदृशगतियुक्ताः, तथा-विपमाणि=वैपम्यमुप-
गतानि असमानि सन्धिवन्धनानि=सन्धिरूपाणि वन्धनानि येषां ते तथा, पदद्वयस्य कर्म-
धारयः तथा-(उक्कुडुअट्टिअविमत्तदुव्वलकुसंधयणकुप्पमाणकुसठिआ) उत्कुडुकारिथरुविम-
त्तदुर्वलकुसंडननकुप्पमाणकुसस्थिताः-उत्कुडुकानि यथास्थान स्थितिरहितानि यानि अस्थि-

કુટિલ હોને સે ઇન કા મુખ દેખને મેં મયક્કર હોગા (દદુકિટિમસિધ્મફુડિઅ પરુસછવી) ઇનકે
શરીર કા ચમઢા દાદ, કિટિમ-સાલ, સિધ્મ-સેહુઆ ઇન ચર્મવિકારો સે ભરા હુઆ હોગા અતएव
वह बहुत हा अधिक कठोर होगा, और इसी कारण उसके शरीर का हर एक अवयव चित्रल-
वर्ण होगा (कच्छू खसराभिभूया) कच्छू पामा और खसर कण्डुरोग से इनका शरीर व्याप्त रहेंगे अत
एव (खर-तिक्खणक्ख-कंङ्कइय-विकय-तणू) खर-कर्कश एव तीक्ष्ण नखों द्वारा खुजाया गया उनका
शरीर विकृत-बना हुआ होगा और जगह २ उभमें घाव होंगे(टोल गति-विपम संधिवधणा) इन
की चाल उप्प्रादि की चाल जैसी-होगी सन्धिवधन इनके विषम होंगे (उक्कुडु अट्टिअविमत्त दुव्वल
कुसवयणकुप्पमाणकुसठिआ) इन के शरीर-की अस्थिया उत्कुडु-यथास्थान की स्थिति से

એમનુ નાક કુટિલ હશે (વક્રવલીવિગયભેસણમુહા) એમનુ મુખ કરચલીએથી (વક્રુત
તેમજ કુટિલ હોવાથી એવાપા ભયકર લાગશે (દદુકિટિમસિધ્મફુડિઅપરુસછવી)
એમના શરીરનુ ચામડુ, દદુ, કિટિમ-પાખ, સિધ્મ વિગેરે વિકારોથી વ્યાપ્ત થશે, એથી
તે ઘણુ જ કઠોર હશે અને એથી જ તે શરીરનો દરેકે દરેક અવયવ ચિત્રલ-કપુર-હશે,
(કચ્છૂખસરામિભૂયા) કચ્છૂ પામા અને ખસર-કંડુરોગથી વ્યાપ્ત રહેશે એથી (ખર-તિક્કલ-
ણક્કકંઙ્કઈય-વિકય-તણૂ) ખર-કર્કશ અને તીક્ષ્ણ નખો વડે ખજવાળેલુ એમનુ શરીર
વિકૃત થઈ ગયેલુ હશે અને ઠેક ઠેકાણે તેમા ઘા હશે (ટોલગતિવિસમસંધિવધના)
એમની ચલ ઉપ્પ્રાદિકની જેની થશે એમના સંધિવંધન વિષમ હશે (ઉક્કુડુ-
અટ્ટિઅવિમત્તદુવ્વલકુસંધયણકુપ્પમાણકુસંઠિઆ) એમના શરીરની અસ્થિઓ ઉત્કુડુ-
યથાસ્થાનની સ્થિતિની રહિત હશે, અને વિભક્તપરસ્પરમા સમ્પ્રેયથી રહિત થશે એએ

કાનિ ક્રીકસાનિ 'હૃદ્દો' તિ પ્રસિદ્ધાનિ, તાનિ વિમત્કાનિ પરસ્પરમસંલેપેણ સ્થિતાનિ
 યેષાં તે તથા, પુનઃ-દુર્વલા = વચ્ચરહિતાઃ, કુસહનનાઃ = કુત્સિતસહનનાઃ સેવાર્ત્તસંહનન-
 યુક્તા इत्यर्थः, કુપ્રમાણા કુત્સિત-હીન પ્રમાણ યેષાં તે તથા હીનપ્રમાણયુક્તાઃ કુસં-
 સ્થિતા કુત્સિતનાકારયુક્તાઃ, एषां पदानां कर्म गारय . અતएव (કુરુવા) કુરુવાઃ કુત્સિ-
 તરૂપયુક્તાઃ, તથા-(કુટ્ટાણાગણ-કુસેઝ્જકુમોઙ્ગો) કુસ્થાનાસનકુગચ્યા કુમોજિનઃ-
 કુસ્થાને=કુત્સિતસ્થાને આસનમ્=ઉપવેશન યેષાં તે કુસ્થાનામના, કુત્સિતના ગચ્યા
 યેષાં તે કુચ્યાઃ, કુત્સિત ધુઝજને યે તે કુમોજિનઃ=કુત્સિતાન્નમ્લગ્નશીલાઃ, एषां,
 પદાનાં કર્મધારયઃ, તથા (અમુઙ્ગો) અમુચ્ય = શુદ્ધિરહિતાઃ, 'અશ્રુતયઃ' ઇતિચ્છાયાપક્ષે
 શાસ્ત્રજ્ઞાનવર્જિતા इत्यर्थः (અળેગવાહિપીલીઅંગમગા) અનેકવ્યાધિપીડિતાઙ્ગાઙ્ગાઃ અનેક
 વ્યાધિમિ = વહુવિધેરોગેઃ પીડિતાનિ=વ્યથામુપગતાનિ અઙ્ગાનિ=અવયવા યરિમસ્તત્તાદગ-
 મઙ્ગ=શરીરં યેષાં તે તથા-વિવિધવ્યાધિપરિપીડિતગરીર इत्यर्थः । તથા (સ્થલતવિબ્મ-
 લગર્હ) સ્થલદ્ વિહલગતયઃ-સ્થલન્તી=સચલન્તો વિહલા=વિવલવા અશક્તા ચ ગતિર્યેષાં
 તે તથા મદોન્મત્તવદ્ ગમનશીલા इत्यर्थः, તથા (ણિરુચ્છાઢા) નિરુત્સાઢાઃ=ઉત્સાહરહિતાઃ
 (સત્તપરિવર્જિયા) સત્તવપરિવર્જિતાઃ=આત્મવચ્ચવર્જિતાઃ અતएव (વિગયચેટ્ટા) વિગતચેટ્ટાઃ
 વિગતાઃ ચેટ્ટા યેષાં તે તથા ચેટ્ટા રહિતા इत्यर्थः, તથા-(નદ્વતેઆ) નદ્વતેજસઃ-નદ્વતાનિ

રહિત હોગી, ઔર વિમત્ક-પરસ્પર મં સંલેપ સે રહિન-હોગી યે સબ કે સબ દુર્વલ્લ વલરહિત,
 કુસહનન કુત્સિત સહનનવાલે-સેવાર્ત્ત સહનનવાલે ઔર કુપ્રમાણ-હીન પ્રમાણવાલે હોગે તથા કુસ-
 સ્થિત-કુત્સિત આકારવાલે હોગે અતएव યે કુરૂપ-કુત્સિતરૂપ યુક્તહોગે તથા યે(કુટ્ટાણાસન-
 કુસેઝ્જકુમોઙ્ગો) સ્લોટી ગન્દી જગહ મે ડહેગે ઔર વેટેગે ઇનકા વિસ્તર-યા શચ્યા કુત્સિત હોગી
 તથા યે કુત્સિત અન્ન મોજો હોગે (અમુટ્ગો) શુદ્ધિસે યે રહિત હોગે યા શાસ્ત્ર જ્ઞાન સે યે રહિત
 હોગે(અળેગવાહિ પીલીઅંગમગા) ઇનકે ગરીરવા પ્રત્યેક અવયવ અનેક વ્યાધિયો રોગો સે પ્રસિત
 હોગા (સ્થલંત વિબ્મલ ગર્હ) મદોન્મત્ત પુરુષ કા ગતીકો તરહ ઇનકો ગતો હોગી અર્થાત્ મદોન્મત્ત કી
 ગતિ લઢસઢાતો હોતી હૈ એસી હી ઇનકી ગતિ હોગી (ણિરુચ્છાઢા) ઇનમે કિસી ખી પ્રકાર કા
 ઉત્સાહ નહીં-હોગા (સત્તપરિવર્જિયા) સત્તવ-આત્મવચ્ચ સે યે રહિત હોગે (વિગયચેટ્ટા) ચેટ્ટા ઇનકી

સર્વે દુર્બલ્લવરહિત, કુસહનન કુત્સિત સહનનવાળા-સેવાર્ત્ત સંહનનવાળા અને કુપ્રમાણ-
 હીન પ્રમાણવાળા થશે તથા કુચ્ચ સ્થિત-કુત્સિત આકારવાળા થશે ઔથી ઔઓ કુરૂપ-કુરૂપ
 કુત્સિતરૂપયુક્ત થશે તેમજ ઔઓ (કુટ્ટાણાસનકુસેઝ્જકુમોઙ્ગો) અરાબ-ગાંધી જગ્યામા ઉઠશે-
 ઔસશે ઔમની શચ્યા કુત્સિતરૂપે (અમુટ્ગો) શુદ્ધિથી ઔઓ રહિત હશે અથવા શાસ્ત્ર-
 જ્ઞાનથી ઔઓ રહિત હશે (અળેગવાહિપીલીઅંગમગા) ઔમના શરીરનો દરેકે દરેક અવયવ
 અનેકવિધ વ્યાધિઓ-રોગોથી અભિન હશે. (સ્થલંતવિબ્મલગર્હ) મદોન્મત્ત પુરુષની ગતિની
 જેમ ઔમની ગતિ હશે ઔટલે કે મદોન્મત્તની ગતિ લથડતી હોય છે ઔવી જ ઔમની ગતિ
 હશે (ણિરુચ્છાઢા) ઔમનામાં કોઈ પણ જાનનો ઉત્સાહ નહિ હશે (સત્તપરિવર્જિયા) અતएव-
 આત્મ અળથી ઔઓ રહિત હશે (વિગય ચેટ્ટા) ઔમની ચેટ્ટા નદ્વ તથા જશે અર્થાત્ ઔઓ કોઈ

તેજાંસિ યેપાં તે તથા-નિષ્પ્રમા હત્યર્થઃ, તથા (અમિક્ષણં) અમીક્ષણં=સતત (મીઝળે સ્વ-
-ફરુસ-વાય-વિજ્ઞાદિઅ-મલિણ-પંસુ-રઓ-ગુંહિયંગમંગા) ગીતોળ્ણ સ્વ-પરુપ-વાત-મિશ્રિત-
મલિન-પાંશુ-રજોડ્વગુણિતાદ્વાદ્વાઃ ગીતાઃ=ગીતસ્પર્શાઃ, ડ્વળ્ણઃ=ડ્વળ્ણસ્પર્શાઃ, સરાઃ, તી-
ક્ષ્ણાઃ, પરુપાઃ,=કટોરા યે વાતાઃ, વાયવસ્તૈઃ મિશ્રિતાનિ=વ્યાપ્તાનિ, 'વિજ્ઞાદિય' ઇતિ
મિશ્રિતાર્થે દેશી શબ્દઃ, અતએવ મલિનાનિ માલિન્યમુપગતાનિ, તથા-પાંસુરજોડ્વગુણિ-
તાનિ પાંસવો=ધૂલ્યસ્તેપાં યાનિ રજાંમિ=મૂક્ષમરુણાસ્તૈરવગુણિતાનિ અદ્વાનિ અવયવા
યસ્મિંસ્તાદ્શમદ્ગ શરીરં યેપાં તે તથા-ગીતોળ્ણસ્વરુપવ્યાપ્તત્વેન મલિના ધૂલિમૂક્ષમાં-
શસંવલિશરીરાશ્ચેત્યર્થઃ, તથા-વહુકોદમાણમાયાલોભા)વહુક્રોધમાનમાયાલોભા-વહૃવઃ ક્રોધ-
માનમાયાલોભા યેપાં તે તથા-પ્રચુરક્રોધમાનમાયાલોભયુક્તાઃ(વહુમોહા) વહુમોહાઃ પ્રચુરમો-
હયુક્તાઃ, (અસુમદુઃખમાગી) અશુમદુઃખમાગિનઃ-નાસ્તિ શુભં શુભકર્મ યેપાં તે અશુમાઃ
શુભકર્મવર્જિતાઃ, અતએવ દુઃખમાગિનઃ- દુઃખમાજઃ, પદદ્વયસ્ય કર્મધારયઃ, તથા-(ઓસ-
ળ્ણં) વાહુલ્યેન (ધમ્મસળ્ણસમ્મત્તપરિવ્મદ્દા) ધર્મસંજ્ઞાસમ્યક્ત્વપરિભ્રષ્ટાઃ ધર્મસંજ્ઞા ધર્મ-
શ્રદ્ધા સમ્યક્ત્વં જિનમતાભિરુચિસ્તાભ્યાં પરિભ્રષ્ટાઃ ચ્યુતાઃ, વાહુલ્યગ્રહણેન કદાચિદેતે
સમ્યગ્દૃષ્ટયો અપિ ભવન્તીતિ સૂચિતમ્, તથા-(ઉક્કોસેણં) ઉત્કર્ષેણ (રયણિપ્પમાણમે-

નષ્ટ હો જાવેગી અર્થાત્ યે કિમી મી પ્રકાર કો ચેષ્ટા વાલે નહીં હોગે ચેષ્ટા સે રહિત હી હોગા
(નદ્દુતેઆ) ઇનકા શરીર ફીકા કાન્તિ રહિત હી હોગા, (અમિક્ષણં સીઝળેસ્વરુપમવાયવિજ્ઞા-
દિઅ મલિણપસુરમોગુંહિયંગમંગા) ઇનકા શરીર નિરન્તર શીતસ્પર્શ વાલો ડ્વળ્ણસ્પર્શ વાલો, તીક્ષ્ણ,
કટોર, વાયુ સે વ્યાપ્ત રહેગા અત એવ વહ મલિનતા યુક્ત હોગા ઓર ધૂઝિ કે છોટે છોટે કળોં સે વહ
અવગુણિત રહેગા (વહુ કોદમાણમાયાલોભા) ઇનકે ક્રોધ, માન, માયા ઓર લોભ યે કષાયે પ્રચુર
માત્રામેં રહેગો (વહુમોહા) મોહ મમતા-ઇનમેં બહુત અધિક હોગી (અસુમદુઃખમાગી) શુભ કર્મોં
સે યે રહિત હોગેં હમઝિયે દુ સોં કે હી યે પાત્ર હોગેં, તથા-(ઓસળ્ણ ધમ્મસળ્ણ સમ્મત્તપરિવ્મદ્દા)
યે પ્રાય.કર ધર્મશ્રદ્ધા ઓર મમ્યક્ત્વ સે પરિભ્રષ્ટ હોગે યદા જો પ્રાય શબ્દ પ્રયુક્ત હુઆ હૈ ઉસ સે યહ
પ્રગટ ક્રિયા ગયા હૈ કિ કદાચિત્ યે સમ્યગ્દૃષ્ટિ મો હોગે. તથા-(ઉક્કોસેણં રયણિપ્પમાણમેત્તા)

પણુ જાતની ચેષ્ટાવાળા થશે નહીં-ચેષ્ટારહિત થશે (નદ્દુતેઆ) એમનુ શરીર શીકુ -
કાંતિ રહિત હશે (અમિક્ષણં સીઝળેસ્વરુપમવાયવિજ્ઞાદિઅમલિણપંસુરઓગુંહિયંગ-
મંગા) એમનુ શરીર નિરંતર શીતસ્પર્શવાળા, ડ્વળ્ણસ્પર્શ વાળા, તીક્ષ્ણ, કટોર વાયુથી વ્યાપ્ત
રહેશે, એથી તે મલિનતા યુક્ત હશે અને ધૂલિના નાના-નાના કણો થી તે અવશુકિત
રહેશે (વહુ કોદમાણમાયાલોભા) એમને ક્રોધ, માન, માયા અને લોભ એ કષાયો પ્રચુર
માત્રામાં રહેશે. (વહુ મોહા) મોહ મમતા-એમનામાં બહુ જ પધારે પ્રમાણમાં થશે, (અસુ-
મદુઃખમાગી) શુભકર્મથી એઓ રહિત હશે એથી એઓ હુ ખલાગી થશે તથા (ઓસળ્ણ-
ધમ્મસળ્ણસમ્મત્તપરિવ્મદ્દા) એઓ પ્રાય ધર્મ, શ્રદ્ધા અને સમ્યક્ત્વથી પરિભ્રષ્ટ હશે અહીં
જે પ્રાય શબ્દવાળી 'ઓસળ્ણ' શબ્દ પ્રયુક્ત થયેલ છે તેનાથી આ વાત પ્રકટ કરવામાં
આવી છે કે કદાચિત એઓ સમ્યગ્દૃષ્ટિ સમ્પન્ન પણ થજ તથા (ઉક્કોસેણં રયણિપ્પમાણ-

कानि कीकसानि 'हड्डो' ति प्रसिद्धानि, तानि विभक्तानि परस्परमसंछेपेण स्थितानि
 येषां ते तथा, पुनः-दुर्वला = बलरहिताः, कुसहननाः = कुत्सितसहननाः सेवार्त्तसहनन-
 युक्ता इत्यर्थः, कुप्रमाणा कुत्सित-हीन प्रमाण येषां ते तथा हीनप्रमाणयुक्ताः कुसं-
 स्थिता कुत्सितार्यायुक्ताः, एषां पदानां कर्मधारयः . अतएव (कुरुवा) कुरुपाः कुत्सि-
 तरूपयुक्ताः, तथा-(कुट्टाणासण-कुसेज्जकुमोइणो) कुस्थानासनकुशल्या कुमोजिनः-
 कुस्थाने = कुत्सितस्थाने आसनम् = उज्ज्वलन येषां ते कुस्थानामना, कुत्सिता शय्या
 येषां ते कुशल्याः, कुत्सित भुज्जनने ये ते कुमोजिनः = कृत्स्नतान्त्रभक्षणशीलाः, एषां,
 पदानां कर्मधारयः, तथा (अमुइणो) अमुचय = शुद्धिरहिताः, 'अश्रुतयः' इतिच्छायापक्षे
 शास्त्रज्ञानवर्जिता इत्यर्थः (अणेगवाहिपील्लिअगमगा) अनेकवाधिपीडिताङ्गाङ्गाः अनेक
 व्याधिभिः = बहुविधैरोगैः पीडितानि = व्ययामुपगतानि अङ्गानि = अवयवा यस्मिन्स्तत्तादृश-
 मङ्गं = शरीरं येषां ते तथा-विविधव्याधिपरिपीडितगरीर इत्यर्थः । तथा (खल्लतविम्भ-
 लगई) खल्लद् विह्वलगतयः-खल्लन्ती = सखलन्ती विह्वला = विकल्पा अशक्ता च गतिर्येषां
 ते तथा मदोन्मत्तवद् गमनशीला इत्यर्थः, तथा (णिरुच्छाहा) निरुत्साहाः = उत्साहरहिताः
 (सत्तपरिवज्जिया) सत्त्वपरिवर्जिताः = आत्मबलवर्जिताः अतएव (विगयचेट्ठा) विगतचेष्टाः
 विगताः चेष्टा येषां ते तथा चेष्टा रहिता इत्यर्थः, तथा-(नट्टतेआ) नट्टतेजसः-नष्टानि

रहित होगी, और विभक्त-परस्पर में संछेप से रहित-होगी ये सब के सब दुर्वल बलरहित,
 कुसहनन कुत्सित सहनवाले-सेवार्त्त सहनवाले और कुप्रमाण-हीन प्रमाणवाले होंगे तथा कुस-
 स्थित-कुत्सित आकारवाले होंगे अतएव ये कुन्दप-कुत्सितरूप युक्तहोंगे तथा ये(कुट्टाणासण-
 कुसेज्जकुमोइणो) खोटी गन्दी जगह में उठेंगे और बैठेंगे इनका विस्तर-या शय्या कुत्सित होगी
 तथा ये कुत्सित अन्न भोजी होंगे (अमुइणो) शुद्धिसे ये रहित होंगे या शास्त्र ज्ञान से ये रहित
 होंगे(अणेगवाहि पील्लिअगमगा) इनके शरीरका प्रत्येक अवयव अनेक व्याधियों रोगों से ग्रसित
 होगा (खल्लत विम्भल गई) मदोन्मत्त पुरुष का गतीकी तरह इनकी गती होगी अर्थात् मदोन्मत्त की
 गति लड़खड़ाती होती है ऐसी ही इनकी गति होगी (णिरुच्छाहा) इनमें किसी भी प्रकार का
 उत्साह नहीं-होगा (सत्तपरिवज्जिया) सत्त्व-आत्मबल से ये रहित होंगे (विगयचेट्ठा) चेष्टा इनकी

सबे दुर्बलबलरहित, कुसहनन कुत्सित सहनवाला-सेवार्त्त सहननवाला अने कुप्रमाण-
 हीन प्रमाणवाला थगे तथा कुप्रस्थित-कुत्सित आकारवाला थगे ओधी ओओ कुप्र-कट्टपा
 कुत्सितरूपयुक्त थगे तेमज ओओ (कुट्टाणासणकुसेज्जकुमोइणी) भराभ-गंटी जग्याभा उठेंगे-
 ओससे ओमनी शय्या कुत्सितरुशे (अमुइणो) शुद्धिथी ओओ रहित रुशे अथवा शास्त्र-
 ज्ञानथी ओओ रहित रुशे (अणेगवाहिपील्लिअगमगा) ओमना शरीरना दरेके दरेके अवयव
 अनेकविध व्याधिओ-रोगाथी अग्नि रुशे, (खल्लतविम्भलगई) मदोन्मत्त पुरुषनी गतिनी
 ओम ओमनी गति रुशे ओट्टे के मदोन्मत्तनी गति लथइती होथ छे ओवी ज ओमनी गति
 रुशे (णिरुच्छाहा) ओमनामां केध पक्ष जगनो उत्साह नहि रुशे (सत्तपरिवज्जिया) सत्त्व-
 आत्म बलथी ओओ रहित रुशे (विगयचेट्ठा) ओमनी चेष्टा नष्ट थध जशे अर्थात् ओओ केध

तेजांसि येषां ते तथा-निष्प्रमा इत्यर्थः, तथा (अभिक्लृप्तं) अभीक्ष्णं=सतत (सीउण्ह खर-
-फरुस-वाय-विज्झड्डिम-मलिण-पंसुर-ओ-गुण्डियगमंगा) गोतोण खर-परुप-वात-मिश्रित-
-मलिन-पांसुर-जोऽवगुण्ठिताद्वाद्वाः शीताः=शीतस्पर्शाः, उष्णः=उष्णस्पर्शाः, खराः, ती-
-क्ष्णाः, परुपाः,=कठोरा ये वाताः, वायवस्तैः मिश्रितानि=व्याप्तानि, 'विज्झड्डिय' इति
मिश्रितार्थे देशी शब्दः, अतएव मलिनानि मालिन्यमुपगतानि, तथा-पांसुरजोऽवगुण्ठि-
-तानि पांसवो=धूलयस्तेषां यानि रजामि=मूक्ष्मरूपास्तैरवगुण्ठितानि अज्ञानि अवयवा
यस्मिंस्तादृशमद्ग शरीरं येषां ते तथा-गीतोणखरपरुपव्याप्तत्वेन मलिना धूलिमूक्ष्मां-
-शसंवलिशरीराश्चेत्यर्थः, तथा-बहुकोहमाणमायालोभा)बहुक्रोधमानमायालोभा-बहवः क्रोध-
-मानमायालोभा येषां ते तथा-प्रचुरक्रोधमानमायालोभयुक्ताः(बहुमोहा) बहुमोहाः प्रचुरमो-
-हयुक्ताः, (असुभदुःखभागी) असुभदुःखभागिनः नास्ति शुभं शुभकर्म येषां ते अशुभाः
शुभकर्मवर्जिताः, अतएव दुःखभागिनः- दुःखभाजः, पदद्वयस्य कर्मवारयः, तथा-(ओस-
-ण्णं) बाहुल्येन (धम्मसण्णसम्मत्तपरिचमट्ठा) धर्मसंज्ञासम्यक्तत्त्वपरिभ्रष्टाः धर्मसंज्ञा धर्म-
-श्रद्धा सम्पत्त्वं जिनमताभिरुचिस्ताभ्यां परिभ्रष्टाः च्युताः, बाहुल्यग्रहणेन कदाचिदेते
सम्यग्दृष्टयो अपि भवन्तीति सूचितम्, तथा-(उक्कोसेणं) उत्कर्षेण (रयणिप्पमाणमे-

नष्ट हो जावेगी अर्थात् ये किमी भी प्रकार को चेष्टा बाँधे नहीं होंगे चेष्टा से रहित हो होगा
(नट्ट तेआ) इनका शरीर फीका कान्ति रहित ही होगा, (अभिक्लृप्तं सीउण्हखरफरुसवायविज्झ-
-ड्डिम मलिणपंसुरओगुण्डियगमंगा) इनका शरीर निरन्तर शीतस्पर्श वालो उष्णस्पर्श वालो, तीक्ष्ण,
कठोर, वायु से व्याप्त रहेगा अत एव वह मलिनता युक्त होगा और घूँट के छोटे छोटे कणों से वह
अवगुण्ठित रहेगा (बहु कोहमाणमायालोभा) इनके क्रोध, मान, माया और लोभ ये कषाये प्रचुर
मात्रामें रहेगी (बहुमोहा) मोह ममता-इनमें बहुत अधिक होगी (असुभदुःखभागी) शुभ कर्मों
से ये रहित होंगे इसलिये दु खों के ही ये पात्र होंगे, तथा-(ओसण्ण धम्मसण्ण सम्मत्तपरिचमट्ठा)
ये प्राय कर धर्मश्रद्धा और सम्यक्त्व से परिभ्रष्ट होंगे यद्वा जो प्राय शब्द प्रयुक्त हुआ है उस से यह
प्रगट किया गया है कि कदाचित् ये सम्यग्दृष्टि भी होंगे। तथा-(उक्कोसेणं रयणिप्पमाणमेत्ता)

पक्षु जलनी चेष्टावाणा थरे नही-चेष्टारहित थरे (नट्ट तेआ) अभेदु शरीर की कृ-
-ंति रहित छरे (अभिक्लृप्तं सीउण्हखरफरुसवायविज्झड्डिममलिणपंसुरओगुण्डियग-
-मंगा) अभेदु शरीर निरन्तर शीतस्पर्शवाणा, उष्णस्पर्श वाणा, तीक्ष्ण, कठोर वायुशी व्याप्त
रहेथे, जेथी ते भविनता युक्त छरे अने धूलिना नाना-नाना कण्ठे थी ते अवशु कित
रहेथे (बहु कोहमाणमायालोभा) अभेने क्रोध, मान, माया अने लोभ जे कषाये प्रचुर
मात्रामें रहेथ (बहु मोहा) मोह ममता-अभेनाभा जहुँ ज वधारे प्रमाद्युभा थरे, (असु-
-भदुखभागी) शुभकर्मोथी जेजे रहित छरे जेथी जेजे इ भलागी थरे तथा (ओसण्णं-
-धम्मसण्णसम्मत्तपरिचमट्ठा) जेजे प्राय धर्म, श्रद्धा अने सम्यक्त्वथी परिभ्रष्ट छरे अही
जे प्राय शब्दवाची 'ओसण्ण' शब्द प्रयुक्त थयेछ छे. तेनाथी आ वात प्रकट करवाभा
आवी छे के कहायित जेजे सम्यग्दृष्टि सम्पन्न पक्षु थरे तथा (उक्कोसेणं रयणिप्पमाण-

ता) रत्निप्रमाणमात्राः रत्निः हस्तः-चतुर्निगत्यङ्गुलप्रमाणान्तप्रमाणा मात्रा परिमाणं
 येषां ते तथा हस्तप्रमाणगरीरा इत्यर्थः, तथा-(सोलसवीसइवासपरमाउसो) षोडशवि-
 शतिवर्ष परमायुष्मः षोडशभ्यो वर्षेभ्य आरभ्य निशति वर्षाणि यावत् उत्कृष्टायुष्काः,
 तथा (बहुपुत्तणत्तुपरियाळपणयबहुला) बहुपुत्तनत्तुपरिवारप्रणयबहुलाः बहवः=प्रचुरा ये
 पुत्रा नृपारः-पौत्रा दौहित्राश्च तद्रूपो यः पग्वारस्तत्र बहल =प्रचुरः प्रणय =स्नेहो येषां
 ते तेषां-पुत्रपौत्रादिरूपपरिवारे प्रचुरप्रीतिमन्त इत्यर्थः, स्तल्पेनैव कालेन यौवनोद-
 यान् अल्पेऽप्यायुषि ते प्रचुरपुत्रपौत्रादिसम्पन्ना भवन्तीति । एवं भूतास्ते मणुजा भवि-
 ष्यन्तीति । ननु तदानीं तेषां गृहाद्यभावेन ते क्व निवसन्तीत्याशङ्कामपनेतुमाह (गंगा
 सिन्धुओ महानदीओ वेयड्ड च पव्वयं नोसाए) गङ्गासिन्धु महानदी वैयाढ्यं च पर्वत
 निश्राय-गङ्गासिन्धु महानदी वैयाढ्यं च पर्वत निश्राय गङ्गासिन्धुमहानदी वैयाढ्यस्य
 पर्वतरय च निश्रां कृत्वा 'वावत्तरि णियोगवीयं वीयमेत्ता विलवासिणो मणुजा भवि-
 रसति' द्वासप्ततिर्निगोदवीजं बीजमात्रा विलवासिनो मनुजा भविष्यन्ति द्वासप्ततिसख्यका
 विलवासिनो=विलेपु निरसनशीला मनुजाः=मनुष्या भविष्यन्ति, कीदृशा एते भवि-
 ष्यन्ति ? इत्याह-निगोदवीजं-निगोदानां=भविष्यन्मनुजकुटुम्बानां बीजमिव=कारणमिव,
 भविष्यतां मनुजानां हेतुभूतत्वादेते निगोदबीजमित्युच्यन्ते इतिबोध्यम्, तथा चैते

इनके शरीर का ऊंचाई उत्कृष्ट से २४ अंगुल प्रमाण—एक हाथ की होगी (सोलसवीसइवासपरमाउ
 सो) इनकी उत्कृष्ट आयु १६ वर्ष से लेकर २० वर्ष तक होगी (बहुपुत्तणत्तुपरियाळपणयबहुला)
 अनेक पुत्र एवं नातीरूप परिवार में प्रचुर प्रणय—स्नेह—से ये युक्त होंगे क्यों कि थोड़े से ही
 काल में ये यौवनावस्थावाले होजावेंगे इस कारण अल्प आयु में भी ये प्रचुर पुत्र पौत्रादिपरि-
 वार बाँटे होजावेंगे यदि यहा पर कोई ऐसी आशंका करे कि उससमय में इनके गृहादि के
 अभाव से इनका निवास कहा पर होगा तो हम शङ्का की निवृत्ति के लिये सूत्रकार कहते हैं
 (गंगासिन्धुओ महानदीओ वेयड्ड च पव्वयं नोसाए वावत्तरि णियोगवीयं वीयमेत्ता विलवासिणो
 मणुजा भविस्सति) ये गंगा और सिन्धु जो महानदिया हैं उनके एवं वैयाढ्य पर्वत के सहारे
 पर रहेंगे विलवासी मनुष्य ७२ होंगे इन से फिर भविष्यत् मनुष्यों के कुटुम्बों की सृष्टि होगी

मेत्ता) ओमना शरीरनी उचाई उत्कृष्टथी २४ अंगुल प्रमाण ओक हाथ जेटही हजे (सोल-
 सवीसइवास परमाउसो) ओमनी उत्कृष्ट आयु १६ वर्षथी भाडीने २० वर्ष सुधी हजे (बहु
 पुत्तणत्तुपरियाळपणयबहुला) अनेक पुत्र अने पौत्ररूप परिवारमा प्रचुर प्रणय—स्नेहथी
 ओओ यौवनावस्था सम्पन्न थई थरो ओथी अल्प आयुमा पणु ओओ प्रचुर पुत्र पौत्रादि
 परिवार वाजा थई जरो जे अही ऊँछ ओवी आशंका करे के ते समयमा ओमने गृहा-
 दिना अभावथी ओओ निवास क्यां करी ? तो आ शंकानी निवृत्ति भाटे सूत्रकार कहे
 छे—(गंगासिन्धुओ महानदीओ वेयड्ड च पव्वयं नोसाए वावत्तरि णियोगवीयं वीयमेत्ता
 विलवासिणो मणुजा भविस्सति) ओओ गंगा अने सिन्धु तेमज वैयाढ्य पर्वतना
 आधारे रहेल विलवासी मनुष्य ७२ हजे ओमनाथी इरी भविष्यत् मनुष्योंना कुटुम्बानी-

બીજમાત્રાઃ-બીજસ્યેવ માત્ર પરિમાણ યેપાં તથા, સ્વરૂપતઃ સ્વરૂપા इत्यर्थः । हे गौतम ।
 दुष्पमदुष्पमायां समायां 'दुरूवा' इत्यारभ्य 'विलवामिनः' इत्यन्तविशेषणपदैर्निरूपिता
 मनुजा भविष्यन्तीति भवद्भिर्विज्ञेयम् । पुनर्गौतमस्वामी पृच्छति-(तेणं भंते मणुआ किमाह-
 रिरस्संति?) ते खलु भदन्त । मनुजाः किमाहरिष्यन्ति, हे भदन्तः । दुष्पमदुष्पमासमोत्पन्ना
 मनुष्या किंविधमाहारं कुर्वन्ति ? इति गौतम स्वामिनःप्रश्नः । भगवानाह (गोयमा) हे गौतम ।
 (तेणकालेणं तस्मिन् काले दुष्पमदुष्पमालक्षणे काले (तेण समएण) तस्मिन् समये
 दुष्पमायाः प्रान्तभागे (गगासिन्धूओ महाणईओ) गङ्गासिन्धु महानद्यौ, कीदृश्या महानद्यौ ?
 (रहपहमित्तवित्थराओ) रथपथमात्रविस्तरे-रथस्य पन्था रथपथः रथगमनमार्गः,
 तत्परिमाणो विस्तरो विस्तारो ययोस्ते तथाविधे, (अक्खसोयपमाणमेत्त) अक्षमनोतः
 प्रमाणमात्रम् अक्षः=चक्रं तस्य यत् स्रोतो-रन्ध्र तत्प्रमाणा = तत्परिमाणा मात्रा=
 प्रमाणम् अवगाहनाप्रमाणं यस्य तत्तथाविधं (जलं) जलं (वोज्झिहिंति) वक्षतः । गङ्गा-
 सिन्धोर्महानद्योर्विस्तारो रथपथमात्रप्रमाणो जलावगाहप्रमाणं रथचक्रस्रोतःपरिमितं च
 भवतीति बोध्यम् इति भावः । (से वि य ण जले) तदपि च जलं (बहुमच्छकच्छमाइण्णे)

ये स्वरूप से स्वरूप होंगे इस तरह हे गौतम । दुष्पमदुष्पमा काल में 'दुरूवा' पद से लेकर
 'विलवामिनः' इस अन्तिम विशेषण रूप पदों के पदों द्वारा हमने छठवे आरे-काल के
 मनुष्यों का वर्णन किया अब गौतम स्वामी पुनः प्रश्न से ऐसा पूछते हैं-(तेण । भंते मणुआ कमा
 हरिस्संति) हे भदन्त । वे छठे आरे के मनुष्य कैसा आहार करेंगे ? उत्तर में प्रश्नकहते हैं (गोय
 मा। तेणं कालेण तेण समएणं गगा सिन्धूओ महाणईओ) हे गौतम। उमकाल में और उस
 समय में गगा एवं सिन्धू नाम की दो नदियां रहेगी ये नदियां (रहपहमित्तवित्थराओ) रथ के
 गमन मार्ग का जितना प्रमाण होता है उतने प्रमाण के विस्तार वाली होंगी (अक्खसोयपमा-
 णमेत्ता) इन में रथ के चक्र के छिद्र के बराबर जिसकी अवगाहना का प्रमाण होगा इतना जल
 बहता रहेगा अर्थात् इनकी गहराई बहुत थोड़ी होगी, रथ के चक्र के छेद की जितनी गहराई
 होती है उतनी गहराई वाला उनमें जल रहेगा (से वि य णं जले बहु मच्छकच्छमाइण्ण णो चेव

સુઠિ થશે એઓ સ્વરૂપમાં સ્વરૂપ હશે આ પ્રમાણે હે ગૌતમ । દુષ્પમદુષ્પમાકાળમાં
 'દુરૂવા' પદથી માંડીને "વિલવસિનઃ" આ અંતિમ વિશેષણ રૂપ પદો સુધીના પદો વડે
 અમોએ છઠ્ઠા આરાના વખતના મનુષ્યોનું વર્ણન કર્યું છે હવે ગૌતમ સ્વામી ફરીથી પ્રશ્નશ્રીને
 પ્રશ્ન કરે છે- (તેણં ભંતે ! મણુઆ કિમાહરિસ્સંતિ) હે ભદ્રંત ! તે છઠ્ઠા આરાના મનુષ્યો
 કેવો આહાર કરશે ? જવાબમાં પ્રશ્ન કહે છે-(ગોયમા ! તેણં કાલેણ તેણં સમણે ગંગા
 સિન્ધુઓ મહાણઈઓ) હે ગૌતમ ! તે કાળમાં અને તે સમયમાં ગંગા અને સિન્ધુ નામે એ
 નદીઓ હશે એ બંને નદીઓ (રહપહમિત્તવિત્થરાઓ) રથના ગમન માર્ગનું જેટલું પ્રમાણ
 હોય છે, તેટલા પ્રમાણ જેટલા વિસ્તારવાળી હશે, (અક્કસોયપમાણમેત્ત) બંને નદીઓમાં
 રથના ચન્દ્રના છિદ્ર તુલ્ય જેની અવગાહનાનું પ્રમાણ હશે, તેટલું પાણી વહેતું રહેશે.
 જેટલે કે એ બંનેની ઊંડાઈ સાવ ઓછી હશે રથના ચક્રના છિદ્રની જેટલી ઊંડાઈ હોય

વહુમત્સ્યકચ્છપાકીર્ણં વહ્નિમિઃ મત્સ્યેઃ કચ્છપૈચ આકીર્ણં=વ્યાપ્તમ્ પ્રચુર્ગમીનકર્મવ્યાપ્તં
 મવિષ્યતિ । તથા—(જો એવું જાણીએ તો આઝવહુલે મવિરસઃ) નો એવું જાણીએ તો
 = તજ્જલ ચ સજાતીયાપ્કાયવહુલં નૈવ મવિષ્યતિ । અત્રેત્થં કશ્ચિન્ શઙ્કતે ભુલ્લહિમવ-
 ત્યરકવ્યવસ્થા નાસ્તીતિ પૂર્વાચાર્યેઃ પ્રતિપાદિતમ્ તર્હિ તદ્વતપગ્નહદાદ્ નિર્ગતયોર્ગદ્વા-
 સિન્ધુનદીપ્રવાહયોર્નિયતત્વેન પૂર્વોક્તરૂપૌ પ્રવાહૌ કથ સગચ્છેતે ? ઉત્પન્નાહ-ગદ્વાપપ્રા-
 તકુણ્ડાન્નિર્ગમાનન્તરં ક્રમેણ કાલપ્રભાવવશાદ્ મરતભૂમૌ પ્રચ્છન્ડતાપૈરપરજલેષુ શુષ્કેષુ
 સમુદ્રપ્રવેશે ગદ્વાસિન્ધ્વોઃ સૂત્રોક્ત પ્રમાણજલાવશેષે તાવન્માત્રજલવાહિત્વ તયોરિતિ
 ન કશ્ચિદ્ દોષઃ । (તર્ણ) તતઃ સ્વલુ=જલસ્યાત્પત્ત્વાત્ સ્વલુ (તે મણુયા) તે મનુજાઃ
 (સૂરુગમણમુહુત્તંસિ અ સૂરત્થમણમુહુત્તંસિ અ) મરોદ્મનમુહુત્તં ચ સૂરાસ્તમનમુહુત્તં
 ચ = સૂર્યોદયકાલે સૂર્યાસ્તકાલે ચ (વિલેહિતો) વિલેભ્યઃ 'ણિદ્વાદસસંતિ'
 નિર્ધાવિષ્યન્તિ=ત્વરિતગત્યા ગમિષ્યન્તિ વિલેહિતો (ણિદ્વાદસ) વિલેભ્યો નિર્ધાવ્ય

જાણીએ તો આઝવહુલે મવિરસઃ) એમાંથી અનેક મત્સ્યો અને કચ્છપ રહેશે એ જાણીએ તો
 કે જીવ નહીં હોયે હાં કોઈ એવી આશંકા કરી શકતા હૈ—ભુલ્લહિમવાન્ પર્વત પર અરક
 વ્યવસ્થા નહીં હૈ જ્યાં જો પક્ષ નામકા હૈ એ સસે હી એ ગદ્વા અને સિન્ધુ નામ કી નદિયાં નિક
 લી હૈ અતઃ એ નદિયાં કા પ્રવાહ નિયત હોતા હૈ ફિર પૂર્વોક્ત રૂપ સે આપને એને જો
 પ્રવાહ કહે હૈ એ કેસે કહે હૈ ? તો એ આશંકા કા ઉત્તર હૈ—ગદ્વા પ્રપાત કુણ્ડ સે નિર્ગમન કે
 અનન્તર ક્રમશઃકાલ કે પ્રભાવ સે મરતક્ષેત્ર મેં પ્રચ્છન્ડ તાપ દ્વારા અન્ય જલો કે શુષ્ક હો જાને
 પર સમુદ્ર કે પ્રવેશ કે સમય એ ગદ્વા અને સિન્ધુ નદિયાં મેં પૂર્વોક્ત પ્રમાણ વાળા જલ અવશેષ
 રહતા હૈ અતઃ એ ઉતરે હી પ્રમાણ વાળે જલ કો વડાતી હૈ અતઃ એમ મેં શઙ્ક જામી કોઈ વાત નહીં
 હૈ । (તર્ણ) તે મણુયા સૂરુગમણમુહુત્તંસિ અ સૂરત્થમણમુહુત્તંસિ અ વિલેહિતો ણિદ્વાદસસંતિ) એ
 બિલવાસી મનુષ્ય જબ સૂર્યોદય હોને કા સમય હોગા તબ ઓર જબ સૂર્યાસ્ત હોને કા સમય
 હોગા તબ અપને અપને બિલોસે બાહર નિકલેગે ઓર (વિલેહિતો ણિદ્વાદસ) બિલોસે વેગ પૂર્વક

એ તેટલી જાણીએ તો આઝવહુલે મવિરસઃ) એમાંથી અનેક મત્સ્યો અને કચ્છપો રહેશે એ જાણીએ તો
 સજાતીય અપ્કાયના એવા નહિ થશે અહીં કોઈ આ પ્રમાણે શંકા કરી શકે કે ભુલ્લહિમ-
 વાન્ પર્વત પર અરક વ્યવસ્થા નથી ત્યાં જે પક્ષ નામક હૈ છે. તેમાંથી જ ગંગા
 અને સિન્ધુ નામક નદીઓ નીકળી છે એથી આ નદીઓનો પ્રવાહ નિયત હોય છે તો
 પછી પૂર્વોક્ત રૂપથી આપે એમના જે પ્રવાહો કહ્યા છે, તે કયા આધારે કહ્યા છે ? તો
 આ આશંકાનો જવાબ આ પ્રમાણે છે—ગંગા પ્રપાતકુણ્ડથી નિર્ગમન પછી ક્રમશઃ કાળના પ્રભાવ
 થી ભરતક્ષેત્રમાં પ્રચ્છન્ડ તાપ દ્વારા અન્ય જલાશયો શુષ્ક થઈ જાય ત્યારે સમુદ્ર પ્રવેશ ના
 સમયે, એ ગંગા અને સિન્ધુ નદીઓમાં પૂર્વોક્ત પ્રમાણ વાળું પાણી અવશિષ્ટ રહે છે.
 એથી એઓ તેટલા જ પ્રમાણવાળા જળને પ્રવાહિત કરે છે, એથી અહીં શંકા એવી કોઈ
 વાત નથી

(તર્ણ) તે મણુયા સૂરુગમણમુહુત્તંસિ અ સૂરત્થમણમુહુત્તંસિ અ વિલેહિતો ણિદ્વાદસસંતિ)
 તે બિલવાસી મનુષ્યો જ્યારે સૂર્યોદય થવાનો સમય થશે ત્યારે અને જ્યારે સૂર્યાસ્ત થવાનો

(मच्छकच्छमे) मत्स्यकच्छपान् जलाद् गृहीत्वा (थलाङ्गं गाहेदिति) स्थलानि
ग्राहयिष्यन्ति=तटप्रदेशे समानयिष्यन्ति. (मच्छकच्छमे थलाङ्गं गाहेत्ता) मत्स्यकच्छपान्
स्थलानि ग्राहयित्वा=मत्स्यकच्छपान् तटप्रदेशे समानोय (सीयातवतत्तेहि) शीता-
तपतप्तैः राज्ञी शीतेन दिवसे चातपेन तप्तेः=धूपकरसैः (मच्छकच्छमेहि) मत्स्यकच्छपैः
(इक्षवीस वाससहस्साः) एकमिशानि वर्षमहन्नाणि (वित्ति कप्पे माणा) वृत्तिं कल्प
यन्तः = जीविकां कुर्वन्तो (विहरिस्सति) विहरिष्यन्ति= स्थास्यन्ति । दुष्पमदुष्पमाया
समायामग्ने विध्वंसेन आममत्स्यकच्छपानाम् अतिरसाना तज्जठराग्निना परिपाका-
संभवेन तत्कालसमुत्पन्ना मनुजास्तान् मत्स्यकच्छपान् शीतातपतप्तानेव मोक्षयन्ते
इत्युक्त 'सीयातवतत्तेहि' इति । पुनर्गौतमस्वामी पृच्छति-(तेण भते ! मणुया)
ते खलु भदन्त ! मनुजाः=हे भदन्त ! ते पण्डारकोत्पन्ना मनुष्याः (णिस्सीला) निस्सीलाः

निकलकर वे (मच्छकच्छमे) मत्स्यो और कच्छपों को जल से पकड़ेंगे और पकड़कर (थलाङ्गिगा-
हेदिति) उन्हें ये जमीनपर— तट प्रदेश पर—बाहर—ले आवेंगे (मच्छकच्छमे थलाङ्गं गाहेत्ता
सीयातवतत्तेहि मच्छकच्छमेहि इक्षवीस वाससहस्साइ वित्ति कप्पेमाणा विहरिस्सति) फिर ये
उन मच्छ कच्छपो को रात में शीत में और दिन में धूप में सुखावेगे इस प्रकार करने से उनका
रस जब शुष्क हो जावेगा—अर्थात् वे सब शुष्क हो जावेंगे तब ये उनसे अपनी क्षुधा की नि-
वृत्ति करेंगे इस तरह से ये आरे की स्थिति जो २१ हजार वर्ष की है वहा तक करते रहेंगे ।
तात्पर्य यही है कि छठे आरे में अग्निका तो विध्वंस हो जावेगा और आम—गीले—मच्छ कच्छपो
को तो कि जिनमें रस की अधिकता रहती है इनको जठराग्नि पचा नहीं सकेगी इस कारण
उस काल में उत्पन्न हुए मनुष्य उन मत्स्य कच्छपो को शीत और आतप में ढालकर उन्हें
सुखाकर ही स्वावेंगे यही बात "सीयातवतत्तेहि" पाठ द्वारा प्रकट की गई है ।

समर्थ ढंशे त्यारे पोत-पोताना भिदीभाथी भट्टार नीकणशे अने (विलेहितो णिद्धाहत्ता)
भिदीभाथी वेग पूर्वक नीकणीने तेजो (मच्छकच्छमे) मत्स्यो अने कच्छपोने पाण्डीभांथी,
पकड़शे अने पकड़ीने (थलाङ्गं गाहेदिति) तेभने जमीन उपर तट प्रदेश उपर—भट्टार लक्ष
आपशे (मच्छकच्छमे थलाङ्गं गाहेत्ता सीयातवतत्तेहि मच्छकच्छमेहि इक्षवीस वास-
सहस्साइ वित्ति कप्पेमाणा विहरिस्सति) पञ्ची जेजो ते मच्छ कच्छपोने रात्रेशीतमां अने
दिवसमा तडकाभां सूडवशे आ प्रभाण्णे करवाथी तेभनो रस न्यारे शुष्क थं जशे, जेटले
के तेजो सर्वे शुष्क थं जशे, त्यारे जेजो तेभनाथी पोतानी पुबुक्षा मटाडशे आ प्रभाण्णे
आ आरानी स्थिति २१ हजार वर्ष जेटली छे त्या सुधी जेजो तेभ करता रडेशे तात्पर्य
आ प्रभाण्णे छे के छडा आरामा अग्निनो विनाश थं जशे अने आम—हीना—मच्छ—कच्छ
पोने के जेभनामा रसनी अधिकता रडे छे, जेभनी जठराग्नि पचावी शकशे नली आ
कारण्णे ते काणमा उत्पन्न थयेला मनुष्यो ते मत्स्य कच्छपोने शीत अने आतपमा नाथीने
तेभने सूडवीने ज भाशे जे ज वात "सीयातवतत्तेहि" पाठ वडे प्रकट करवाभां आवा छे
ढवे गौतम स्वामी इरी प्रभुने आ प्रभाण्णे पूछे छे—(तेण भंते ! मणुया) डे भदन्त !

= શીલવર્જિતાઃ દુરાચારાઃ (ગિવ્યા) નિર્વ્રતાઃ = મહાવ્રતાણુવ્રતવર્જિતાઃ અનુવ્રતમૂલ-
 ગુણરહિતા इत्यर्थः, (ગિગુણા) નિર્ગુણાઃ = ઉત્તરગુણવર્જિતાઃ (ગિમ્મેરા) નિર્મર્યાદાઃ =
 કુલાદિમર્યાદાપરિવર્જિતાઃ, (ગિપ્પચ્ચક્ષાણપોસહોવવાસા) તત્ર નિષ્પ્રત્યાખ્યાનપોષધોપ-
 વાસાઃ પ્રત્યાખ્યાનાનિ = પૌરુષ્યાદિનિયમાઃ, પોષધોપવાસાઃ અષ્ટમ્યાદિ પર્વોપવાસાઃ,
 તેષ્યો નિષ્ક્રાન્તા યે તે તથા પૌરુષ્યાદિ નિયમાન્ અષ્ટમ્યાદિપર્વોપવાસાશ્ચ આનાચરન્તઃ,
 (ઓસણ્ણ) વાહુલ્યેન (મંસાહારા) મામાહારાઃ = માંસમક્ષિણઃ પશ્વાદીનાં માસ મક્ષણશીલાઃ
 (મચ્છાહારા) મત્સ્યાહારાઃ = મત્સ્યમોજિનઃ (સુહાહારા) સુદ્રાહારાઃ = તુચ્છાહારાહરણકા-
 રિણઃ તથા (કુણિમાહારા) કુણ્યાહારાઃ = વસાદિ દુર્ગન્ધાહારકારિણઃ મન્તઃ (કાલમાસે કાલ
 કિચ્ચા) કાલમાસે કાલં કૃત્વા (કઠિં ગચ્છિહિતિ) વગમિષ્યન્તિ = કસ્મિન સ્થાને ગતિ
 કરિષ્યન્તિ ? (કઠિં ઉવવજ્જિહિતિ) ક્વઉપપત્સ્યન્તે = કુત્ર જનિષ્યન્તે ? ઇતિ । મગવાનાદ
 (ગોયમા) હે ગૌતમ ! (ઓસણ્ણ) વાહુલ્યેન (ળરગતિરિવક્ષજોણિપ્પુ) નરકતિર્યગ્ગતિપ્ર
 (ગચ્છિહિતિ) ગમિષ્યન્તિ = ગતિમાજો મવિષ્યન્તિ (ઉવવજ્જિહિતિ) ઉપપત્સ્યન્તે = ઉત્પ-
 ત્તિમાજો મવિષ્યન્તિ । પુન ગૌતમસ્વામી પૃચ્છતિ-(તીસે ણં મંતે ! સમાપ) તસ્યાં

અત્ર ગૌતમ સ્વામી પુનઃ પ્રશ્ન સે એસા પૂછતે હૈં-“તેણં મન ! મણુગા” હે મદન્ત ! યે
 છોઠે આરે મેં ઉત્પન્ન હુપ મનુષ્ય જો કિ (ગિસાલા) શીલ સે વર્જિત દુરાચાર વાલે હોગે
 (ગિવ્યા) મહાવ્રત ઓર અણુવ્રતો સે રહિત રહેંગે-અનુવ્રત ઓર મૂલગુણો સે રહિત રહેંગે-
 (ગિગુણા) ઉત્તર ગુણો સે રહિત રહેંગે (ગિમ્મેરા) કુલાદિ મર્યાદા સે પરિવર્જિત રહેંગે (ગિપ્પચ્ચ-
 ક્ષાણપોસહોવવાસા) પૌરુષ આદિ નિયમો કે ઓર અષ્ટમી આદિ પર્વ સમ્બન્ધો ઉપવાસો
 કે આચરણ મે રહિત રહેંગે, (ઓસણ્ણ મસાહારા મચ્છાહારા સુહા હારા, કુણિમા હારા)
 પ્રાયઃ માસ હો જિનકા આહાર હોગા મત્સ્યોં કો જો સ્વાવેંગે, તુચ્છ આહાર કરેંગે ઓર
 વસાદિ દુર્ગન્ધ આહાર કરનેવાલેહોગે (કાલમાસે કાલં કિચ્ચા કઠિં ગચ્છિહિતિ, કઠિં ઉવવ
 જ્જિહિતિ) કાલમાસ મેં મરકર કહાં પર જાવેંગે ? કહા પર ઉત્પન્ન હોવેંગે ? હસકે ઉત્તર મેં
 પ્રશ્ન કહતે હૈં-(ગોયમા ! ઓસણ્ણ ણરગતિરિવક્ષજોણિપ્પુ ગચ્છિહિતિ ઉવવજ્જિહિતિ) હે ગૌતમ !
 પ્રાયઃ કર કે યે નરક ગતિ ઓર તિર્યચ્ચ ગતિ મેં જાવેંગે ઓર વહીં પર ઉત્પન્ન હોગે પુનઃ

એ છઠ્ઠા આરામાં ઉત્પન્ન થયેલા મનુષ્યો કે એઓ (ગિસીલા) શીલ વર્જિત દુરાચારી થશે
 (ગિવ્યા) મહાવ્રતોથી હીન થશે-અનુવ્રતો અને મૂળગુણોથી રહિત હશે (ગિગુણા) ઉત્તમ
 ગુણોથી રહિત હશે, (ગિમ્મેરા) કુલાદિ મર્યાદા થી પરિવર્જિત હશે (ગિપ્પચ્ચક્ષાણપોસ-
 હોવવાસા) પૌરુષિ વગેરે નિયમો અને અષ્ટમી વગેરે પર્વ સમયે ઉપવાસોના આચરણ
 થી રહિત થશે (ઓસણ્ણ મસાહારા મચ્છાહારા સુહાહારા કુણિમાહારા) પ્રાય માનાહારી
 થશે, મત્સ્યમક્ષી થશે, તુચ્છ આહાર કરશે અને વસાદિ દુર્ગન્ધ આહાર મક્ષી થશે (કાલ
 માસે કાલ કિચ્ચા કઠિં ગચ્છિહિતિ કઠિંઉવવજ્જિહિતિ) કાળ માસમાં મરણ પ્રાપ્ત કરીને
 ક્યા જશે ? ક્યા ઉત્પન્ન થશે ? એના જવાબમાં પ્રશ્ન કહે છે-ગોયમા ! ઓસણ્ણ ણરગતિરિવક્ષ-
 જોણિપ્પુ ગચ્છિહિતિ ઉવવજ્જિહિતિ હે ગૌતમ ! પ્રાય કરીને એઓ નરક ગતિ અને તિર્યચ્ચ
 ગતિમાં જશે અને ત્યા જ ઉત્પન્ન થશે કરી ગૌતમ સ્વામી પ્રશ્નને પ્રશ્ન કહે છે

खलु भदन्त ! समायां (मीहा) सिंहाः (वग्धा) व्याघ्राः (विगा) वृकाः (दीविया) द्वीपिकाः
(अच्छा) ऋक्षाः= भल्लूकाः (तरक्खा) तरभाः व्याघ्रजातविशेषाः वन्यपशुविशेषः
(परस्सरा) पराशरा 'गेडा, इति भाषा प्रसिद्धाः (सरभसियालबिरालमुणगा) शरभ-
शृगालविडालथुनका-तत्र शरभाः = अष्टापदा, शृगालाः = जम्बूका विडालाः-
मार्जाराः थुनकाः कुक्कूगः एतेषां पदानामितरेतग्योगद्वन्द्वः तथा (कोलमुणगा)
कोलथुनकाः=आण्या शूकरा (ससगा) गशका = (चित्तगा) चित्रका तथा
(चिल्ललगा) चिल्ललका=आपदविशेषाः, एते सर्वे जन्तवः । ओसण्ण (वाहुल्येन
(मंसाहारा) मांसाहाराः (मच्छाहारा) मत्स्याहाराः (खोदाहारा) क्षुद्राहाराः भुद्रं=
तुच्छम् आहारो येषां ते तथा नीरसधान्याहारिण इत्यर्थः (कुणिमाहारा)
कुणपाहाराः-कुणपः=शवः तस्य मांसादिरपि कुणपः, स आहारो येषां ते तथा-
मांसवसाद्याहारिणश्च सन्तः (कालमासे कालं किच्चा) कालमासे कालं कृत्वा (कहिं
गच्छिंहिति ? कहिं उववज्जिंहिति) क्व गर्मिष्यन्ति ? क्व उत्पत्स्यन्ते ? इति गौतमस्वा-
मिनः प्रश्नः। भगवानाह-(गोयमा) हे गौतम ! एते सिंहादयः (ओसण्णं) प्रायः=वाहुल्येन
(णरगतिरिक्खजोणिएसु) नरकतिर्यग्योनिकेषु जीवेषु (गच्छिंहिति उववज्जिंहिति)

गौतम स्वामो प्रभु से पूछते हैं- “ तीसेणं भंते । समाए सोहा वग्धा विगा, दाविया,
अच्छा, तरक्खा, परस्सरा) हे भदन्त ! उस छट्टे आरे मे शेर, व्याघ्र, वृक, द्वीपिक, चीता,
रोछ, तरक्ष-व्याघ्रजातिका हिंसक जानवर विशेष और परस्पर-गेडा, हाथी, (सरभसियालबिर-
लमुणगा) तथा शरभ-अष्टापद-शृगाल-विडाल-मार्जार थुनक-कुत्ते (कोलमुणगा जंगली
कुत्ते, (ससगा) खरगोश, (चित्तगा) चित्रक, (चिल्ललगा) चिल्ललक-आपदविशेष ये सब जानवर
(ओसण्ण) प्राय करके (मंसाहारा) मासाहारा (मच्छाहारा) मत्स्याहारी (खोदाहारा)
क्षुद्राहारी नीरसधान्य आहारी (कुणिमाहारी) कुणव-शवके आहारो तथा मांसवसा आदि
के आहारी होते हैं-तो ये सब भी (कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिंहिति कहिं उववज्जि-
हिति) कालमास में मरण कर के कहा जावेगे कहाँ उत्पन्न होंगे ! इसके उत्तर में प्रभु कहते
हे (गोयमा ! ओसण्णं णरगतिरिक्खजोणिएसु) हे गौतम ! ये सब पूर्वोक्त मासाहारादि विशेषण

भंते ! समाए सीद्धा वग्धा, विगा, दीविया, अच्छा, तरक्खा, परस्सरा) हे भदन्त ! ते छट्टा
आशमा सिंहा, वाघ, वृक, व्याघ्र, चीता, रोछ, तरक्ष-वाघनीलतप्तु, हिंसक जानवर विशेष
अने परस्पर-गेडा, हाथी (सरभसियालबिरालमुणगा) तथा शरभ-अष्टापद, शृगाल,
विडाल-मार्जर, थुनक-कुत्तारो (कोलमुणगा) वन्य इतर, (ससगा) खसलाओ (चित्तगा)
चित्रक (चिल्ललगा) चिल्ललक-आपदविशेष आ भधा प्राणीओ (ओसण्णं) प्राय करीने
(मंसाहारा) मासाहारी (मच्छाहारा) मत्स्याहारी (खोदाहारा) क्षुद्राहारी-नीरस धान्य
आहारी (कुणिमाहारा) कुणव-शव-आहारी तेमज भास-वसा आदिना आहारी होथ
छे तो पछी ओ भधा (कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिंहिति कहिं उववज्जिहिति) काल
मासमा मरण प्राप्त करीन क्या जसे ? क्या उत्पन्न थये ? ओना जवाभमा प्रभु कहे छे-
(गोयमा ! ओसण्णं णरगतिरिक्खजोणिएसु) हे गौतम ! ओओ सर्वे पूर्वोक्त मासाहारादि

ગમિષ્યન્તિ ઉપપત્સ્યન્તે ઇતિ ॥ પુનર્ગૌતમમ્પ્રામી પૃચ્છતિ (ને જાં મંતે ! ઢંકા કંકા પીલગા મગ્ગુઆ સિહી) તે ચલુ ભદન્ત ! ઢંકાઃ કંકાઃ પીલકાઃ મદ્ગુકાઃ શિશ્વિનઃ, તન્ન-ઢંકાઃ=કાકવિશેષાઃ, કંકાઃ=લોહપૃષ્ઠાશ્વ્યાઃ પક્ષિણઃ—‘લોહપૃષ્ઠસ્તુ કંકુઃ સ્યાત્’ इत्यमरः, પીલકાઃ, પક્ષિવિશેષાઃ, મદ્ગુકાઃ=જલવાયમાઃ, શિશ્વિનઃ=મયૂરાઃ, ત એને પક્ષિણઃ (ઓસણ) પ્રાય (માંસાહારા જાવ) માંસાહારા યાવત્ યાવત્પદેન—‘મત્સ્યાહારાઃ ક્ષુદ્રાહારાઃ કુળપાહારાઃ’ इति पदत्रयं संग्राह्यम् मांसाहागदि विनिष्ठाः सन्तः (કહિ ગચ્છિહિતિ કહિ ઉવવજ્જિહિતિ ?) વ્ય ગમિષ્યન્તિ નવ ઉત્પત્ત્યન્તે ? । મગ્ગનાદ્—(ગોયમા) હે ગૌતમ ! (ઓસણ) પ્રાયઃ (નરગતિરિશ્વજાણિયુ) નરકતિર્યગ્યોનિકેપુ (જાવ) યાવત્ (ઉવવજ્જિહિતિ) ઉત્પત્ત્યન્તે યાવત્પદેન—‘ગમિષ્યન્તિ’ ઇતિ સંગ્રાહ્યમ્ ॥ સૂ. ૫૪ ॥

પટ્ટારકઃ પ્રરૂપિતઃ, તત્પ્રરૂપણેન અવસર્પિણીકાલોઽપિ પ્રરૂપિતઃ. સમ્પ્રતિ પૂર્વોદિ-
ષ્ટા મુત્તમર્પિણીં તત્પ્રથમારકાદિ પ્રરૂપણાપૂર્વક પ્રરૂપયતિ—

મૂલમ્—તોસે જ સમાજ ડકકવોસાજ તામમહરસેહિ કાલે વીડ-
કકંતે આગમિસ્માજ ઊરસપ્પિણીજ માવજવહુલપડિવજ વાલવકરણેસિ
અમીડજખત્તે ચોદસ પદમસમયે અજ્જેતેહિ વજ્જપડ્ડજવેહે જાવ અજ્જંત
જુણપરિવદ્ધીજ પઞ્ચુદ્ધેમાણે ૨ એત્થ જં દૂસપદૂસમા જામં સમા પડિવ.
જ્જિસસડ સમણાસો ! તોસે જં મંતે ! સમાજ મરહસ્સ વાસસ્સ કેરિ—

વાઞ્ઞે ગ્યાપ્ર આદિ જાનવ પ્રાય કરકે નરકગતિ યા તિર્યગ્ગાત મેં મરણ કર કે જાવેંગે વહોં પર
ઉત્પન્ન હોંગે । (તેજાં મંતે ઢંકા કંકા પીલગા, મગ્ગુઆ સીહી) હે ભદન્ત ! ઢંક-કાકવિશેષ, કક-
વૃક્ષ કોડા પક્ષી, મદ્ગુ- જલ કૌવા, એવં શિશ્વી- મયૂર, (ઓસણં માંસાહારા જાવ કહિ ગચ્છ-
હિતિ, કહિ ઉવવજ્જિહિતિ) જે સર્વ પક્ષી, જો કો પ્રાય માંસ કા આહાર કરતે હૈં, યોગ્ય-
મત્સ્યોં કા આહાર કરતે હૈં ક્ષુદ્રાહાર કરતે હૈં, કુળપાહાર કરતે હૈં કાલપાસ મેં મર કર કહા
જાવેંગે! કહા ઉત્પન્ન હોંગે હસકે ઉત્તર મેં પ્રમુ કહને હૈં—(ગોયમા) ઓસણં જગતિરિશ્વજો-
ણિયુ) હે ગૌતમ! જે જીવ પ્રાય કરકે નરક ધૌર તિર્યગ્યોનિકોં મેં (જાવ ગચ્છિહિતિ)
હોંગે યાવત્ જાવેંગે એવં વહોં પર (ઉવવજ્જિહિતિ) ઉત્પન્ન હોંગે ॥સૂ. ૫૪॥

વિશેષણો વાળા સિંહ, વાઘ વગેરે પ્રાણીઓ. ઘણું કરીને નરક ગતિ અથવા તે તિર્યગ્ગતિમાં
મરણ પ્રાપ્ત કરીને જશે અને ત્યાં જ ઉત્પન્ન થશે (તેજાં મંતે ઢંકા, કંકા પીલગા મગ્ગુઆ
સિહી) હે ભદન્ત ! ઢંક-કાક વિશેષ, કક વૃક્ષ કોડ પક્ષી (મગલો) મદ્ગુ જલ કૌઆ અને
શિશ્વી-મયૂર (ઓસણં માંસાહારા જાવ કહિ ગચ્છિહિતિ કહિ ઉવવજ્જિહિતિ) એ બધા
પક્ષીઓ કે જેઓ પ્રાય માંસાહાર કરે છે, યાવત્ મત્સ્યાહાર કરે છે, ક્ષુદ્રાહાર કરે છે,
કુળપાહાર કરે છે, કાલમાસમા મૃત્યુ પ્રાપ્ત કરીને ક્યા જશે ? ક્યા ઉત્પન્ન થશે ? એના
જવાબમા પ્રમુ કહે છે—(ગોયમા) ઓસણ જગતિરિશ્વજોણિયુ) હે ગૌતમ ! એ જીવો
પ્રાય નરક અને તિર્યગ્ય યોનિકોમા (જાવ) યાવત (ગચ્છિહિતિ) જશે અને ત્યાંજ
(ઉવવજ્જિહિતિ) ઉત્પન્ન થશે, ॥૫૪॥

सए आगारभावपडोयारे भविस्सइ ? गोयमा । काले भविस्सइ हाहाभूए
मंभाभूए, एवं सो चेव दूसमदूममावेदओ णेयव्वो । तीसे णं समाए
एक्कवीसाए वाससहस्सेहि काले विइक्कंते अणंतेहि वण्णपज्जवेहि
जाव अणंतगुणपरिवुद्धीए परिवद्धेमाणे परिवद्धेमाणे एत्थ णं दूसमा
णामं समो काले पडिवज्जिस्सइ समणाउसो । ॥सू० ५५॥

छाया—तस्या खलु समायाम् एकविंशत्या वर्षसहस्रैः काले व्यतिक्रान्ते आगमि-
ष्यन्त्यामुत्सर्पिण्यां श्रावणबहुलप्रतिपदि बालवकरणे अभिजिन्नक्षत्रे चतुर्दशप्रथमसमये
अनन्तैर्वर्णपर्यवैयावत् अनन्तगुणपरिवुद्धया परिवर्द्धमानः परिवर्द्धमानः, अत्र खलु दुष्पम-
दुष्पमा नाम समा कालः प्रतिपत्स्यते, श्रमणायुष्मन् । । तस्यां खलु भदन्त । समायां भर-
तस्य वर्षस्य क्रीदश आकारभावप्रत्यवतारो भविष्यति ? गौतम । कालो भविष्यति
हाहाभूतो मंभाभूतो एव स एव दुष्पमदुष्पमावेष्टको नेतव्यः तस्याः खलु समायां एकविं-
शत्या वर्षसहस्रैः काले व्यतिक्रान्ते अनन्तैर्वर्णपर्यवैयावत् अनन्तगुणपरिवुद्धया परिवर्द्धमानः
परिवर्द्धमानः, अत्र खलु दुष्पमा नाम समा कालः प्रतिपत्स्यते श्रमणायुष्मन् ॥ सू० ५५ ॥

टीका—“तीसेणं समाए” इत्यादि । (समणाउसो !) श्रमणायुष्मन् । हे आयुष्मन्
श्रमण ! (तीसेण समाए) तस्याः खलु समायाः=अवसर्पिण्यवयवरूपायां दुष्पमानाम्भ्याः
(इक्कवीसाए वाससहस्सेहिं) एकविंशत्या वर्षसहस्रैः प्रमिते (काले वोइक्कंते) काले
व्यतिक्रान्ते सति (आगमिस्साए उस्सप्पिणीए) आगमिष्यन्त्याम्=आगामिन्याम् उत्सर्पि-
ण्याम् (सावणबहुलपडिवए) श्रावणबहुलप्रतिपदि=पूर्वावसर्पिण्या आपादपूर्णिमान्तिम

इस प्रकार छठे आरे की प्ररूपणा करदेने से अवसर्पिण। काल प्ररूपण हो जाता है । अव
सूत्रकार पूर्वोद्धिष्ट काल अवसर्पिणी काल की उमके प्रथमारक आदि की प्ररूपणा करते हुए प्ररू-
पणा करते है । तीसेणं समाए इक्कवीसाएवाससहस्सेहिं काले वोइक्कंते—इत्यादिपुत्र—५५

टीकार्थ—(समणाउसो) हे श्रमण आयुष्मन् ! (तीसेण समाए) उस अवसर्पिण। के अवयवरूप दुष्पमा
नामक आरे की (इक्कवीसाए वासमहस्सेहिं वोइक्कंते) २१ इक्कास हजार वर्ष रूप स्थिति के समाप्त
हो जाने पर अर्थात् २१ हजार वर्ष का पंचम काल निकल जाने पर (आगमिस्साए उस्सप्पिणीए)
आने वाले उत्सर्पिणी काल में (सावणबहुलपडिवए) श्रावण मास की कृष्णपक्ष की प्रतिपदा-

आ प्रभाषे छट्ठा आरानी अइपण्ण। करवाथी अवसर्पिणी कालनी अइपण्ण। थर्ध नय छे
हवे सूत्रकार पूर्वोद्धिष्ट अवसर्पिणी कालनी तेना प्रथम आरक वगेरेनी अइपण्ण। करे छे—

तीसे णं समाए इक्कवीसाए वाससहस्सेहिं काले विइक्कंते—इत्यादि—सूत्र ॥५५॥

टीकार्थ—(समणाउसो) हे श्रमण आयुष्मन् ! (तीसे णं समाए) ते अवसर्पिणीना
अवयव रूप दुष्पमा नामक आरानी (इक्कवीसाए वाससहस्सेहिं वोइक्कंते) २१ हजार
वर्ष रूप स्थिति न्याये सम्पूर्ण थर्ध ज्येष्ठे ज्येष्ठे के २१ हजार वर्षने प्रथमकाल नीकणी
ज्येष्ठे (आगमिस्साए उस्सप्पिणीए) तयारे आगम आगमना उस्सप्पिणी कालमां—सावणबहुल-

સમયે પરિસમાપ્તેઃ શ્રાવણમાસસ્ય કૃષ્ણપ્રતિપત્તિર્થૌ (વાલવકરણંસિ) વાલવકરણે=વાલવ નામકે કરણે (અમ્બીજનવક્ષત્તે) અમ્બિજિન્નક્ષત્રે ચન્દ્રેણ સાર્દ્ધં યોગમુપાગતે સતિ. (ચોદસપદમ-સમયે)ચતુર્દશ પ્રથમ સમયે ચતુર્દશાનાં કાલવિશેષાણાં યઃ પ્રથમઃ સમય ઉચ્છવાસો નિઃશ્વાસો વા તસ્મિન્-ચતુર્દશકાલવિશેષાણાં પ્રારમ્ભક્ષણે. ચતુર્દશકાલવિશેષાસ્તુ નિઃશ્વાસાદુચ્છવા-સાત્ વા ગણનીયાઃ, તથાહિ નિઃશ્વાસઉચ્છવાસોવા ૧, પ્રાણઃ ૨, સ્તોકઃ ૩, લવઃ ૪, મુહૂર્ત્તમ્ ૫, અહોરાત્રઃ ૬, પક્ષઃ ૭, માસઃ ૮, ઋતુઃ ૯, અયનમ્ ૧૦, સંવત્સરઃ ૧૧, યુગં ૧૨, કરણં ૧૩, નક્ષત્રમ્ ૧૪ ઇતિ । સમયસ્ય નિર્વિભાગત્વેનાદ્યન્તવ્યવહારાભાવાદાવ લિકાયાશ્ચાવ્યવહાર્યત્વાદત્ર સમયપદેન નિઃશ્વાસોચ્છવાસયોરેકતરગ્રહણમ્ । અત્રેદ બોધ્યમ્

તિથિ મેં પૂર્વ અવસર્પિણીકાલ કે આપાદ માસ કી પૂર્ણિમા રૂપ અન્તિમ સમય કી પરિસમાપ્તિ હોને પર (વાલવકરણંસિ અમ્બિજનવક્ષત્તે) વાલવ નામકે કરણમેં ચન્દ્રકે સાથ અમ્બિજિત્ નક્ષત્રકા યોગ હોનેપર (ચોદસપદમસમયે) ચૌદહ કાલો કા જો ઉચ્છવાસ યા નિઃશ્વાસ રૂપ પ્રથમ સમય હૈ ઉસ સમય (અણંતેહિ વળ્ણપગ્ગજવેહિ જાવ અણંતગુણપરિવૃદ્ધીપ પરિવૃદ્ધમાણે ૨ પત્થણ દૂસમ દૂમમા ણામં સમા પઢિવગ્ગિજસહ)અનન્ત વર્ણ પર્યાયોં સે યાવત્- અનન્ત ગન્ધ પર્યાયોં સે, રસ પર્યાયોં સે અનન્ત સ્પર્શ પર્યાયોં સે, સહનન પર્યાયોં સે અનન્ત સસ્થાન પર્યાયોં સે અનન્ત ઉચ્ચ-ત્વ પર્યાયોં સે અનન્ત આયુષ્ક પર્યાયોં સે અનન્ત ગુરુલ્લુપ્પર્યાયોં સે અનન્ત ઉત્થાન, કર્મ, વલ વીર્ય, પુરુષકાર પર્યાયોં સે અનન્ત ગુણ વૃદ્ધિ વાલા હોતા હુઆ દુષ્પદમદુષ્પમા નામ કા કાલ પ્રારમ્ભ હોગા. ચૌદહ પ્રકાર કે કાલ ડસ પ્રકાર સે હૈ નિઃશ્વાસ અથવા ઉચ્છવાસ ૧ પ્રાણ ૨ સ્તોક ૩ લવ ૪ મુહૂર્ત ૨, અહોરાત્ર ૬ પક્ષ ૭ માસ ૮ ઋતુ ૯, અયન ૧૦, સવત્સર ૧૧ યુગ ૧૨ કરણ ૧૩, ઔર નક્ષત્ર ૧૪ સમય કાલ કા નિર્વિભાગ અંશ હૈ-હસલિયે હસમેં આદિ અન્ત કા વ્યવહાર નહોં હોતા હૈ તથા આવલિકા રૂપ કાલ મેં અવ્યવહાર્યતા હૈ હમલિયે

પઢિવપ) શ્રાવણ માસની કૃષ્ણપક્ષની પ્રતિપદા તિથિમા પૂર્વ અવસર્પિણી કાળના અપાદ માસની પૂર્ણિમા તિથિ રૂપ અતિમ સમયની સમાપ્તિ થઈ જશે (વાલવકરણસિ અમ્બિજનવક્ષત્તે) વાલવ નામના કરણમાં ચન્દ્રની સાથે અમ્બિજિત્ નક્ષત્રનો યોગ થશે ત્યારે (ચોદસપદમસમયે) ચતુર્દશ કાળોનો જે ઉચ્છવાસ કે નિશ્વાસ રૂપ પ્રથમ સમય છે તે સમયે (અણંતેહિ વળ્ણપગ્ગજવેહિ, જાવ અણંત ગુણપરિવૃદ્ધીપ પરિવૃદ્ધમાણે ૨ પત્થણ દૂસમદૂસ-માણામં સમા પઢિવગ્ગિજસહ) અનંતવર્ણ પર્યાયોંથી, યાવત્ અનંત ગન્ધ પર્યાયોંથી, અનંતરસ પર્યાયોંથી અનંત સ્પર્શ પર્યાયોંથી, અનંત સહનન પર્યાયોંથી, અનંત સસ્થાન પર્યાયોંથી, અનંત ઉચ્ચત્વ પર્યાયોંથી, અનંત આયુષ્ક પર્યાયોંથી અનંત અશુભલુપ્પ પર્યાયોંથી, અનંત ઉત્થાન, કર્મ, બળ-વીર્ય પુરુષકાર પર્યાયોંથી, અનંત ગુણ વૃદ્ધિયુક્ત થનો આ દુષ્પદમ દુષ્પમા નામનો કાળ પ્રારંભ થશે ચતુર્દશ પ્રકારના કાળો આ પ્રમાણે છે નિશ્વાસ અથવા ઉચ્છવાસ (૧) પ્રાણ (૨) સ્તોક (૩) લવ (૪), મુહૂર્ત (૫), અહોરાત્ર (૬), પક્ષ (૭), માસ (૮) ઋતુ (૯) અયન (૧૦), સવત્સર (૧૧) યુગ (૧૨) કરણ (૧૩) અને નક્ષત્ર (૧૪) સમય અને નિર્વિભાગ અથા છે. એથી એમા આદિ અંતનો વ્યવહાર થતો નથી તથા આ-

एतेषां चतुर्दशानां कालविशेषाणां य प्रथमसमयः स एवोत्सर्पिणी प्रथमारकप्रथमसमयः अवसर्पिणी सम्बन्धिनार्षेयां निःश्वासादि चतुर्दशानां कालविशेषाणां द्वितीयापाढपौर्णमासो चरमसमय एव परिसमाप्तत्वात् । अत्रेदमायातम् यद्वा खलु अवसर्पिण्यादि महाकालः प्रथमतः प्रवृत्तौ भवति तदैव खलु तदवान्तरभूताः सर्वेऽपि निःश्वासादयश्चतुर्दशकाल-विशेषा युगपत्प्रवृत्ता भवन्ति, ततश्च स्वस्व प्रमाणसमाप्तौ ते समाप्तिं गच्छन्ति, एवं प्रवर्त्तमानाः समाप्नुवन्तश्च ते निःश्वासादिकालविशेषा महाकालपरिसमाप्तौ समाप्तिं गच्छन्तीति । अत्रेदं कश्चित् सन्दिहति ऋतुरापाढादौ प्रवर्त्तते इति शास्त्रे कथितम्, उत्सर्पिणी च श्रावणादौ प्रवर्त्तते इत्यत्र प्रोच्यते, ततश्च य एव चतुर्दशानां कालविशेषाणां प्रथम

સમય પદ સે યહાં પર ઉચ્છ્વાસ નિઃશ્વાસ મેં સે એક તર કા ગ્રહણ ક્રિયા ગયા હૈ ઓર યહા સે ચતુર્દશકાલ વિશેષોંકી ગણના કી ગઈ હૈ યહાં એસા સમજના ચાહિયે હન ચૌદહ કાલો કા જો પ્રથમ સમય હૈ વહી ઉત્સર્પિણી કાલ કે પ્રથમ આરક કા પ્રથમ સમય હૈ ક્યોકી અવસર્પિણીકાલ સંબંધો હન ચૌદહ નિઃશ્વાસાદિ કાલ વિશેષો કી દ્વિતીય આષાઢ પૌર્ણમાસો કે ચરમ સમય મેં હી પરિસમાપ્તિ હો જાતો હૈ । તાત્પર્ય ઇસ કથનકા એસા હૈ—જવ અવસર્પિણી આદિ રૂપ મહા કાલ પ્રથમતઃ પ્રવૃત્ત હોતા હૈ ડસી સમય તદવાન્તરભૂત સબ હી નિઃશ્વાસાદિરૂપ ચૌદહ કાલ વિશેષ યુગપત્ પ્રવૃત્ત હોતે હૈ ઓર જવ અપના પ્રમાણ સમાપ્ત હો જાતા હૈ તબ વે સબ હો નિઃશ્વાસાદિરૂપ ચૌદહ કાલ વિશેષ યુગપત્ પ્રવૃત્ત હોતે હૈ ઓર જવ અપના પ્રમાણ સમાપ્ત હો જાતા હૈ તબ વે સબ સમાપ્ત હો જાતે હૈ ઇસ પ્રકાર સે પ્રારંભ હુય ઓર સમાપ્ત હુય વે નિઃશ્વાસાદિ કાલવિશેષ મહાકાલ કી પરિસમાપ્તિ હોતે હી સમાપ્તિ કો પ્રાપ્ત હો જાતે હૈ યહાં કોઈ એસી આશંકા કરતા હૈ કિ ઋતુ આષાઢ કી આદિ મેં પ્રવૃત્ત હોતો હૈ એસા શાસ્ત્ર મેં કહા ગયા હૈ ઓર તુમ યહાં એસા કહતે હો કિ ઉત્સર્પિણી શ્રાવણ માસ કી આદિ મેં પ્રવૃત્ત હોતી

‘વલિકાદ્વપકાળમા અવ્યવહાર્યતા છે, એથી સમયપદથી અહીં ઉચ્છ્વાસ નિઃશ્વાસમાંથી એકતરફનું ગ્રહણ કરવામાં આવેલ છે અને અહીંથી ચતુર્દશકાળ વિશેષોની ગણના કરવામાં આવી છે. એવું અહીં સમજવું બોધ્યું છે એ ચતુર્દશ કાલોને, જે પ્રથમ સમય છે તેજ ઉત્સર્પિણી કાળના પ્રથમ આરકનો પ્રથમ સમય છે, કેમકે—અવસર્પિણીકાળ સંબંધી એ ચતુર્દશ નિઃશ્વાસાદિ કાળ વિશેષોની દ્વિતીય આષાઢ પૌર્ણમાસીના ચરમ સમયમાં જે પરિ-સમાપ્તિ થઈ બાક છે તાત્પર્ય આ કથનનું આ પ્રમાણ છે કે જ્યારે અવસર્પિણી આદિરૂપ મહાકાળ પ્રથમતઃ પ્રવૃત્ત થાય છે તે જ સમયે તદવાન્તર ભૂત સર્વ નિઃશ્વાસાદિ રૂપ ચતુર્દશ કાળ વિશેષ યુગપત્ પ્રવૃત્ત થાય છે અને જ્યારે પોતપોતાનું પ્રમાણ સમાપ્ત થઈ બાક છે ત્યારે તેઓ બધા જ સમાપ્ત થઈ બાક છે. આ પ્રમાણે પ્રારંભ થયેલ અને સમાપ્ત થયેલ તે નિઃશ્વાસાદિ કાળ વિશેષ મહાકાળની પરિસમાપ્તિ થતા જ સમાપ્ત થઈ બાક છે. અહીં કોઈ એવી આશંકા કરે છે કે ઋતુ અષાઢની આદિમાં પ્રવૃત્ત હોય છે, એવું

સમયઃ સ એવ ઉત્સર્પિण्याઃ પ્રથમસમય इति न संगच्छते, ऋत्वर्धस्य परिसमाप्तत्वादिति ।
 अत्राह—श्रावणादिः प्रावृद्, आश्विनादिर्वर्षाः, मार्गशीर्षादिः शरत्, माघादि हेमन्तः, चैत्रा-
 दिर्वसन्तः ज्येष्ठादि गर्ष्मः—इति रूपेण ऋतुक्रमस्याचार्यप्रोक्तत्वेनागमसम्मतत्वानुमानात्
 कस्मिन्नपि पक्षे न कश्चिद् दोष इति । (अणंतेहिं वणपज्जवेहिं) अनन्तैर्वर्णपर्यवैः=अन-
 न्तसंख्यकैर्वर्णपर्यायैः (जाव) यावत्—यावत्पदेन (अणंतेहिं गंधपज्जवेहिं, अणंतेहिं रस-
 पज्जवेहिंः अणंतेहिं फासपज्जवेहिंः अणंतेहिं संघयणपज्जवेहिंः अणंतेहिं सठाणपज्जवेहिं
 अणंतेहिं उच्चत्तपज्जवेहिं अणंतेहिं आउपज्जवेहिं अणंतेहिं गुरुलहुपज्जवेहिं अणंतेहिं
 अगुरुलहुपज्जवेहिं अणंतेहिं उट्ठाणकम्मवल्लवीरियपुरिसक्कारपज्जवेहिं) इति सग्राह्य-
 म् । छाया—अनन्तैर्गन्धपर्यवैः अनन्तै रसपर्यवैः अनन्तैः स्पर्शपर्यवैः अनन्तैः संहनन-
 पर्यवैः अनन्तैः सस्थानपर्यवैः अनन्तैः उच्चत्वपर्यवैः अनन्तैः आयुः पर्यवैः अनन्तैर्गु-
 रलघुपर्यवैः अनन्तैरुत्थानकर्म-वल्ल-वीर्य-पुरुषकारपर्यवैः इति । एतानि पदानि पूर्वं व्या-
 ख्यातानि । एतैरनन्तसंख्यकवर्णनादिभिः कृत्वा (अणंतगुणपरिवर्द्धीए) अनन्तगुणपरि-
 वर्द्धया (परिवृद्धे माणे २) परिवर्द्धमानः २ सन् (एत्थ णं) अत्र खलु
 =अत्रान्तरे खलु (दूसमदसमाणाम) दूष्पमदुष्पमा नाम (समा काले) समा कालः (पडिव-
 ज्जिस्सइ) प्रतिपत्स्यते=प्राप्तो भविष्यति । इति । भगवदुक्तौ गौतमस्वामी पृच्छति—
 तीसेणं मत्ते !' इत्यादि (मत्ते !) हे भदन्त ! (तीसेणं समाए) तस्यां खलु समयां
 (भरहस्स वासस्स) भरतस्य वर्षस्य (केरिसए) कीदृशकः=किंविधः (आगारभावपडोयारे)

हे भत. जो ही चौदह कालों का आदि समय है वही उत्सर्पिणी का प्रथम समय है ऐसा कथन
 सगत नहीं होता है क्योंकि आधी ऋतु की परिसमाप्ति होजाती है तो इसका समाधान ऐसा
 है कि— श्रावणादि प्रावृद् आश्विनादि वर्षा, मार्गशीर्षादि शरत्, माघादि हेमन्त, चैत्रादि वसन्त,
 और ज्येष्ठादि गर्ष्म ऋतु हैं । इस रूप से आचार्य ने ऋतुक्रम कहा है भत. आगम सम्मत
 अनुमान से इस पक्ष में भी कोई दोष नहीं है ।

अब गौतम स्वामी प्रश्न से ऐसा पूछते हैं—(तीसे णं मत्ते ममाए भरहस्स वासस्स केरिसए
 आगारभावपडोयारे भविस्सइ) हे भदन्त इस उत्सर्पिणी काल के प्रथम आरे में भरत क्षेत्र का

શાઅનું કથન છે અને તમે અહીં આમ કહો છો કે ઉત્સર્પિણી શ્રાવણ માસના આદીમાં
 પ્રવૃત્ત થાય છે એથી જે ચતુર્દશ કાળોના આદી સમય છે તે જ ઉત્સર્પિણીને પ્રથમ
 સમય છે, એવું કથન સગત લાગતું નથી કેમકે અધીં ઋતુની પરિસમાપ્તિ થઈ જાય છે
 તો આ ચંકાતું સમાધાન આ પ્રમાણે છે કે શ્રાવણાદી પ્રાવૃત્ત આશ્વિનાદિ વર્ષા માર્ગશી
 ર્ષાદિ શરદ માઘાદિ હેમન્ત, ચૈત્રાદિ વસન્ત અને જ્યેષ્ઠાદિ ગ્રાષ્મઋતુ છે એ રીતે
 આચાર્યએ ઋતુ કેમનું વર્ણન કર્યું છે એથી આગમસમ્મત અનુમાનથી આ પક્ષમાં કોઈ
 પણ ખતનો દોષ નથી

હવે ગૌતમ સ્વામી પ્રશ્નને આ પ્રમાણે પૂછે છે કે

(તીસેણં મત્તે સમાપે ભરહસ્સ વાસસ્સ કેરિસપ આગારભાવપડોયારે ભવિસ્સइ) હે
 ભદન્ત ! આ ઉત્સર્પિણી કાળના પ્રથમ આરામ ભરતક્ષેત્રનો કેવો આકાર—ભાવ—પ્રત્યવતાર

આકારભાવ-પ્રત્યવતારો (ભવિસ્સહ) ભવિષ્યતિ ? । ભગવાનાહ (ગોયમા !) ગૌતમ !
(કાલે ભવિસ્સહ) કાલો ભવિષ્યતિ (હાહાભૂષ મંમાભૂષ) હાહાભૂતો મંમાભૂત. (એવ સો
ચેવ દૂસમદૂસમા વેદઓ) સ એવ દુષ્પમ દુષ્પમાવેષ્ટકઃ=અવસર્પિણી વર્ણનપ્રસન્ને પૂર્વમુક્તઃ
સકલોડપિ દુષ્પમદુષ્પમાવર્ણકગ્રન્થસન્દર્ભો (ળેયવ્વો) નેતવ્યઃ=અન્નેય । ઇત્યં દુષ્પમ-
દુષ્પમાં સમાં વર્ણયિત્વા સમ્પ્રતિ દુષ્પમાં વર્ણયતિ 'તોસેળ' ઇત્યાદિ । (સમણાસો !) હે
શ્રમણાયુષ્મન્ ! (તોસેળં સમાય) તસ્યાઃ=દુષ્પમદુષ્પમાયાઃ સ્વલ્લુ સમાયાઃ (એકઘીસાપ
વાસસહસ્સેહિં) એકવિશત્યા વર્ષસહસ્રં: પ્રણિતે (કાલે વીઢ્વકંતે) વ્યતિક્રાન્તે=વ્યતીતે
સતિ (અણંતેહિ વળ્ણપજ્જવેહિં) અનન્તૈર્વર્ણપર્યવૈઃ (જાવ) યાવત્-યાવત્પદેન-(અણંતેહિ
રસપજ્જવેહિં) ઇત્યાદીનિ પૂર્વોક્તાનિ સકલાન્યપિ પદાનિ સગ્રાહ્યાણિ, તતશ્ચ અનન્તવર્ણ-
સાદિ પર્યાયાણામિત્યર્થઃ (અણતગુણપરિવુદ્ધો) અનન્તગુણપરિવુદ્ધ્યા (પરિવદ્ધેમાણે ૨)
પરિવદ્ધમાનઃ પરિવદ્ધમાનઃ સન્ (એત્થ ણં) અત્ર સ્વલ્લુ ઉત્સર્પિણ્યા (દૂસમા ણામં સમા કાલે)
દુષ્પમા નામ સમા કાલઃ (પઢિવજ્જિસ્સહ) પ્રતિપત્સ્યતે=આગમિષ્યતીતિ ॥૬૦૫૫ ॥

કૈસા આકાર ભાવ પ્રત્યવતાર સ્વરૂપ હોગા इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं—(गोयमा) हे गौतम ।
(काले भविस्सह, हाहाभूष मंमाभूष एवं सोचेव दूसमदूसमा वेदओ) यह काल ऐसा होगा
कि जैसा अवसर्पिणी काल के वर्णन में छठे आरे का वर्णन हाहाभूत मंमाभूत आदि पदों
द्वारा किया जा चुका है अतः जैसा वर्णन वहां किया गया है वैसा हो वह वर्णन इस प्रसङ्ग
में यहां पर भी जानलेना चाहिये इस प्रकार से उत्सर्पिणी के प्रथम आरे रूप दुष्पम दुष्पमा
का वर्णन करके अब सूत्रकार इनके द्वितीय आरे का वर्णन के प्रसङ्ग में कहते हैं—(तोसेण समाप
एकघीसाप वाससहस्सेहिं कठे विह्वकंते) जब उत्सर्पिणी का यह दुष्पमदुष्पमा नाम का
१ प्रथम काल जो कि २१ हजार वर्ष का है समाप्त होजावेगा तब (अणतेहिं वण्णपज्जवेहिं
जाव अणंतगुणपरिवुद्धो) परिवृद्धेमाणे एतथं दूसमा णाम समा काले पडिबज्जिस्सह) तब धीरे
२ काल के प्रभाव से अनन्त शुष्कादिवर्ण पर्यायों से यावत् —अनन्त रस आदि पूर्वोक्त पर्यायों
से अनन्तगुण परिवर्द्धित होता हुआ दूसरा दुष्पमा नाम का आरा प्रारम्भ होगा ॥५५॥

એટલે કે સ્વરૂપ થશે એના જવાબમાં પ્રભુ કહે છે—(ગોયમા ! કાલે ભવિસ્સહ, હાહાભૂષ,
મંમાભૂષ एवं सो चेव दूसमदूसमावेदओ) એ કાળ એવો થશે કે એવો અવસર્પિણી કાળના
વર્ણનમાં છઠા આરાનું વર્ણન હા હાભૂત, મંમાભૂત વગેરે પદોવડે રૂપ ઠરવામાં આવેલ,
છે, એથી જ પ્રમાણે ત્યાં વર્ણન ઠરવામાં આવેલ છે તેવું જ વર્ણન આ પ્રસંગે અહીં પણ
જાણી લેવું જોઈએ આ પ્રમાણે ઉત્સર્પિણીના પ્રથમ આરા ૨૫ દુષ્પમ દુષ્પમાનું વર્ણન કરીને
હવે સૂત્રકાર એના દ્વિતીય આરાના વર્ણન-પ્રસંગમાં કહે છે—(તોસેળં સમાપ પવ્કઘીસાપ
વાસસહસ્સેહિં કાલે વિહ્વકંતે) બ્યારે ઉત્સર્પિણીને આ દુષ્પમ દુષ્પમા નામનો ૧ પ્રથમ
કાળ કે જે ૨૧ હજાર વર્ષ જેટલો છે સમાપ્ત થઈ જશે ત્યારે (અણતેહિં વળ્ણપજ્જવેહિં જાવ
અણંતગુણપરિવુદ્ધીય પરિવદ્ધેમાણે એતથં દૂસમા ણામં સમા કાલે પઢિવજ્જિસ્સહ) ત્યારે ધીમે
ધીમે કાળના પ્રભાવથી અનંત શુક્લાદિ વર્ણ પર્યાયોથી યાવત્-અનંત રસ આદિ પૂર્વોક્ત
પર્યાયોથી અનંત શુષ્ક પરિવર્દિત, થતો જીને દુષ્પમા નામક આરાનો પ્રારંભ થશે. ॥૫૫॥

अस्या उत्सर्पिणी दुष्पमायाः अवसर्पिणी दुष्पमाया वैशिष्यमाह-

मूलम्- तेणं कालेणं तेणं समएणं पुक्खलसंवट्टए णामं महामेहे पाउ
 ञ्भविस्सइ भरहप्पमाणमित्ते आयामेणं तदणुरूवं च णं विक्खंभवाहल्लेणं
 तए णं से पुक्खलसंवट्टए महामेहे खिप्पामेव पतणतणाइस्सइ खिप्पामेव
 पतणतणाइत्ता. खिप्पामेव पविज्जुआइस्सइ, खिप्पामेव पविज्जुआइत्ता,
 खिप्पामेव जुगमुसलमुट्ठिप्पमाणमित्ताहिं धाराहिं ओघमेघंसत्तरत्तं वासं
 वासिस्सइ, जे णं भरहस्स वासस्स मूमिभागं इंगालभूयं मुम्मुरभूयं छारि
 यभूयं तत्तकवेल्लुगभूयं तत्तसमजोइभूयं णिव्वाविस्सतित्ति । तंसि च
 णं पुक्खलसंवट्टगंसि महामेहंसि सत्तरत्तं णिवत्तितंसि समाणंसि एत्थणं
 खीरमेहे णामं महामेहे पाउञ्भविस्सइ भरहप्पमाणमित्ते आयामेणं तद-
 रूवं च णं विक्खंभवाहल्लेणं ! तए णं से खीरमेहे णामं महामेहे खिप्पा
 मेव पतणतणाइस्सइ जाव खिप्पामेव जुगमुसलमुट्ठि जाव सत्तरत्तं वासं
 वासिस्सइ, जेणं भरहवासस्स भूमीए वण्णं गंधं रसं फासं च जणइस्सइ,
 तंसि च णं खीरमेहंसि सत्तरत्तं णिवत्तितंसि समाणंसि इत्थणं घयमेहे णामं
 महामेहे पाउञ्भविस्सइ भरहप्पमाणमित्ते आयामेणं. तदणुरूवं च णं विक्खं-
 भवाहल्लेणं । तएण से घयमेहे महामेहे खिप्पामेव पतणतणाइस्सइ जाव
 वा वासिस्सइ, जे णं भरहस्स वासस्स भूमीए सिणेहभावं जणइस्सइ तंसि
 च णं घयमेहंसि सत्तरत्तं णिवत्तितंसि समाणंसि एत्थणं अमयमेहे णामं
 महामेहे पाउञ्भविस्सइ भरहप्पमाणमित्तं आयामेणं जाव वासं वासिस्सइ
 जे णं भरहेवासे रुक्खगुच्छगुम्मलयवल्लितणपव्वगहरितओसहि पवालं
 रमाइए तणवणस्सइकाइए जणइस्सइ तेसिं च णं अमयमेहंसि सत्तरत्तं णिव-
 त्तितंसिसमाणंसि एत्थ णं रसमेहे नामं महामेहे पाउञ्भविस्सइ भरहप्पमाण-
 मित्ता आयामेणं जाव वासं वासिस्सइ जेणं तेसिं बट्ठणं रुक्खगुच्छ- म्म-
 वलि -तण-पव्वग हरित-ओसहि.पवालं-कुरमादीणं-तित्त-कड्डय-
 लय-कसाय-अंबिल-मुहुरे पंचविहे रसविसेसे जणइस्सइ । तए णं भरहे
 वासे भविस्सइ परूढ-रुक्ख-गुच्छ गुम्म-लय-वल्लि-तणपव्वयग-

हरि-ओसहिए उवचिय-तय-पत्तपवालंकुर-पूफ-फल समुइए सुहो
वमोगे यावि भविस्सइ ॥ सू ५६ ॥

छाया—तस्मिन् काले तस्मिन् समये पुष्करसंवत्तको नाम महामेघ प्रादुर्भवि-
ष्यति-भरतप्रमाणमात्र आयामेन तद्वनुरूपं च खलु विष्कम्भवाहल्येन । ततः खलु स
पुष्करसंवत्तको महामेघः क्षिप्रमेव प्रस्तनिष्यति, क्षिप्रमेव प्रस्तन्य क्षिप्रमेव प्रविद्योतिष्यते,
क्षिप्रमेव प्रविद्युत्य क्षिप्रमेव युग-मुसल-मुष्टि-प्रमाण-मात्रामिधाराभि ओघमेघं सप्तरात्रं
वर्षं वर्षिष्यति यः खलु भरतस्य वर्षस्य भूमिभागम् अङ्गारभूतं मुमुक्षून् क्षारिकभूत
तप्तकटाहभूत तप्तसमन्वोतिभूत निर्वापयिष्यतीति । तस्मिन् खलु पुष्करसंवत्तके महामेघे

रात्रं निपतिते सति अत्र खलु क्षीरमेघो नाम महामेघः प्रादुर्भविष्यति भरतप्रमाणमात्र
आयामेन तद्वनुरूपश्च खलु विष्कम्भवाहल्येन । ततः खलु स क्षीरमेघो नाम महामेघः
क्षिप्रमेव प्रस्तनिष्यति यावत् क्षिप्रमेव युगमुसलमुष्टि यावत् सप्तरात्रं वर्षं वर्षिष्यति, यः
खलु भरतवर्षस्य भूमौ वर्षं गन्ध रसं स्पर्शं च जनयिष्यति, तस्मिन् खलु क्षीरमेघे सप्त-
रात्रं निपतिते सति अत्र खलु घृतमेघो नाम महामेघः प्रादुर्भविष्यति भरतप्रमाणमात्र
आयामेन तद्वनुरूपश्च खलु विष्कम्भवाहल्येन । ततः खलु घृतमेघो नाम महामेघः क्षिप्रमेव
प्रस्तनिष्यति यावत् वर्षं वर्षिष्यति, यः खलु भरतस्य वर्षस्य भूमौ स्नेहभावं जनयिष्यति,
तस्मिन् खलु घृतमेघे सप्तरात्रे निपतिते सति अत्र खलु अमृतमेघो नाम महामेघः प्रादु-
र्भविष्यति भरतप्रमाणमात्र आयामेन, यावद् वर्षं वर्षिष्यति, यः खलु भारते वर्षे वृक्ष-
गुल्म-लता-वल्ली-दृण-पर्वत-हरितकौ-बधिप्रवाला-इक्षुरादिकान् दृणवनस्पतिकारिकान्
जनयिष्यति, तस्मिन् खलु अमृतमेघे सप्तरात्रं निपतिते सति अत्र खलु रसमेघो नाम
महामेघः प्रादुर्भविष्यति भरतप्रमाणमात्र आयामेन यावद् वर्षं वर्षिष्यति यः खलु तेषां
वृक्षानां वृक्ष-गुल्म-गुच्छलता-वलि-दृण-पर्वतग-हरितौषधि-प्रवाला-इक्षुरादिकानां तिक-
कटुक-कषाया-म्ल-मधुरान् पञ्चविविधान् रसविशेषान् जनयिष्यति । ततः खलु भरतं वर्षं
भविष्यति प्रकृत वृक्ष-गुच्छ-गुल्म-लता-वल्ली-दृण-पर्वतक-हरितकौ-बधिकम् उपचित्त-
त्वक्त्र-प्रवाला-इक्षुर-पुष्प-फल-समुदित-सुखोपमोग चापि भविष्यति ॥सू॥ ५६॥

टीका—‘तेणं कालेण’ इत्यादि । (तेणं कालेण) तस्मिन् काले=उत्सर्पिण्या द्वितीयार-
कलक्षणे (तेणं समणं) तस्मिन् समये=उत्सर्पिणीगतद्वितीयारकप्रथमसमये (पुक्खलसंव-

इस उत्सर्पिणी के दुष्प्रमा आरे में अवसर्पिणी के दुष्प्रमा आरे की अपेक्षा जो विशिष्टता
है उसका वर्णन करते हुए सूत्रकार कहते हैं ।

तेणं कालेणं तेणं समणं पुक्खलसंवट्टणं णामं महामेहे’ इत्यादि.

टीकार्थ—इस उत्सर्पिणी के द्वितीय आरक रूप दुष्प्रमा काल में—इसकाल के प्रथम

आ उत्सर्पिणीना दुष्प्रमा आशमां अवसर्पिणीना दुष्प्रमा आशाना अपेक्षाये ७ विशि-
ष्टता छे तेण वट्टणं करता सूत्रकार कहे छे—

‘ते णं कालेणं तेणं समणं पुक्खलसंवट्टणं णामं महामेहे’ इत्यादि सू. ५६॥

દુષ્ણામં) પુષ્કલસંવર્તકો નામ-પુષ્કલં=સકલમ્ અથુભાનુભાવરૂપં ભારતવર્ષીયપૃથિવી
 રૌદ્ર્યદાહાદિકં પ્રગસ્તેન સ્વોદકેન સંવર્તયતિ=દૂરિકરોતિ યઃ સઃ-એતન્નામકો (મહામેહે)
 મહામેઘઃ (પાઞ્ચમવિસ્સહ) પ્રાદુર્ભવિષ્પતિ=ઉત્પત્સ્યતે । કિયત્પ્રમાણ ઉત્પત્સ્યતે ? इत्याह-
 (મરહપ્પમાણમિત્તે આયામેણં) ભરતપ્રમાણમાત્ર આયામેન=દૈર્ઘ્યેન ભરતક્ષેત્રપ્રમાણઃ એકસપ્ત-
 ત્યધિકૃત્ ચતુશ્શતોતરચતુર્દશસહસ્રયોજન પ્રમાણ इत्यर्थः, (તયણુરૂવં ચ ણં વિક્ષંભવાહલ્લેણ)
 તદનુરૂપશ્ચ ચલુ વિષ્કમ્ભવાહલ્યેન-વિષ્કમ્ભેણ=વિસ્તારેણ વાહલ્યેન=સ્થોલ્યેન ચ
 ચલુ=નિશ્ચયેન તદનુરૂપઃ=ભરતક્ષેત્રપ્રમાણાનુરૂપઃ । 'તયણુરૂપં' इत्यत्रार्पत्वान्नપुंसकत्वम्
 एवमग्रेऽपि (तएणं) ततः ચલુ (સે પુસ્કલમવદ્દે) પુષ્કલસંવર્તકો નામ (મહામેહે) મહામેઘઃ
 પર્જન્યાદીન્ ત્રોન્ મેઘાનપેક્ષ્ય મહાન્=વિશાલો મેઘો મહામેઘઃ (લિપ્પામેવ) ક્ષિપ્રમેવ=ઘ-
 ટિત્યેવ (પતળતળાહસ્સહ) પ્રસ્તનિષ્પતિ=પ્રકર્ષેણ ગર્જિષ્યતિ, (લિપ્પામેવ પતળતળાહસ્તા)

સમય મેં-પુષ્કલસવર્તક નામકા (મહામેહે) મહામેઘ (પાઞ્ચમવિસ્સહ) પ્રકટ હોગા 'પુષ્કલસવર્તક-
 એસા જો મહામેઘ કા નામ કહા ગયા હૈં વહ ગુણાનુરૂપ નામ હૈ ક્યોકિ ભરત ક્ષેત્ર કી પૃથિવી કી
 રુક્ષતા કો દાહકતા આદિ કો જો કિ હિસમેં અવસર્પિણી કે છોઠે આરે મેં ઓર ઉત્સર્પિણી કે
 પ્રથમ આરક મેં આગહ થી પ્રશસ્ત અપને ઉદક કે દ્વારા દૂર કર દેતા હૈ । (મરહપ્પમાણમિત્તે
 આયામેણં તયણુરૂવં ચ ણ વિક્ષંભવાહલ્લેણ) હિસ પુષ્કલસવર્તક મહામેઘ કા પ્રમાણ
 જિતના ભરત ક્ષેત્ર કા પ્રમાણ હૈ ઉતના હોગા અર્થાત્ યહ ૧૪૪૭૧ યોજન કા લંબા
 હોગા તથા ભરત ક્ષેત્ર કા જિનના વિષ્કમ્ભ ઓર સ્થોલ્ય હૈ ઉતને હો પ્રમાણવાલા હિસકા વિષ્કમ્ભ
 ઓર સ્થોલ્ય હોગા-"તયણુરૂવ" મેં જો નપુસક લિંગ કા નિર્દેશ કિયા ગયા હૈ વહ આર્ષ હોને
 સે કિયા ગયા હૈ હિસી તરહ સે આગે મી જાનના ચાહિયે, (તણ સે પુસ્કલસવદ્દે મહામેહે
 લિપ્પામેવ પતળતળાહસ્સહ લિપ્પામેવ પવિઝ્જુમાહસ્સહ) હિસકે બાદ વહ પુષ્કલ સવર્તક-પર્જન્યા
 દિ ત્રીનમેઘોં કી અપેક્ષા વિશાલતાવાલા મહામેઘ બહુત હો શીઘ્રતા સે ગર્જના કરેગા (લિપ્પામેવ

ટીકાથ-આ ઉત્સર્પિણીના દ્વિતીય આરક રૂપ દુષ્ણમાકાળમાં-આ કાળના પ્રથમ સમયમાં
 પુષ્કલ સવર્તક નામક (મહામેહે) મહામેઘ (પાઞ્ચમવિસ્સહ) પ્રકટ થશે 'પુષ્કલસવર્તક' એવું
 જે મહામેઘનું નામ આપવામાં આવેલ છે, તે ગુણાનુરૂપ નામ છે કેમકે ભરતક્ષેત્રની પૃથિ-
 વીની રુક્ષતાને-દાહકતા આદિને કે જે એમાં અવસર્પિણીના છઠ્ઠા આરામાં અને ઉત્સર્પિણી
 ના પ્રથમ આરકમાં આવી ગઇ હતી-તેને તે મહામેઘ પોતાના પ્રશસ્ત ઉદકવડે દૂર કરી દે
 છે (મરહપ્પમાણમિત્તે આયામેણં "તયણુરૂવં ચ ણ વિક્ષંભવાહલ્લેણ) આ પુષ્કલસવર્તક
 મહામેઘનું પ્રમાણ જેટલું ભરતક્ષેત્રનું પ્રમાણ છે તેટલું થશે એટલે કે આ ૧૪૪૭૧ યોજન
 જેટલો લાંબો થશે તેમજ ભરતક્ષેત્રનો જેટલો વિષ્કંભ અને સ્થોલ્ય છે તેટલો જ પ્રમાણ જેટલો
 આનો વિષ્કંભ અને સ્થોલ્ય થશે તયણુરૂવ" માં જે નપુસકલિંગને। નિર્દેશ કરવામાં
 આવેલ છે તે આર્ષ હોવાથી કરવામાં આવેલ છે, આ પ્રમાણે જ આગળ પણ સમજવું
 બેઠ્યો (તણ ણ સે પુસ્કલસવદ્દે મહામેહે લિપ્પામેવ પતળતળાહસ્સહ લિપ્પામેવ પવિઝ્જુ
 આહસ્સહ) ત્યાર બાદ તે પુષ્કલ સવર્તક-પર્જન્યાદિ ત્રણ મેઘોની અપેક્ષાએ વિશાલતાવાળો

क्षिप्रमेव प्रस्तन्य=प्रगर्ज्य (खिप्पामेव) क्षिप्रमेव (पविज्जुआइस्सइ) प्रविद्योतिष्यते=विद्यु-
 द्भिर्व्युक्तो भविष्यति (खिप्पामेव पविज्जुआइत्ता) क्षिप्रमेव प्रविद्युत्य (खिप्पामेव) जुगमु-
 सलमुट्ठिप्पमाणमित्ताहिं) युगमुसलमुट्ठिप्रमाणमात्राभिः युगं=रथ शकटाद्यद्भूतं 'जूआ'
 इति लोकप्रसिद्धम्, मुसलं=प्रसिद्ध, मुट्ठि=वृद्धाङ्गुलिकः पाणिः, एतत्प्रमाणा मात्रा यासां
 ताभिस्तथाभूताभिः (धाराहिं) धाराभिः (ओढमेहं) ओषमेघम्-ओषेन=सामान्येन प्रवृत्तो
 मेघो यस्मिंस्तत्तथाविधं (सत्तरत्तं) मत्तरात्र=सप्ताहोरात्रान् (वास) वर्षं=वृष्टि (वासिस्सइ)
 वर्षिष्यति करिष्यति (जे ण) यः खलु=यो महामेघः खलु (भरहस्स वासस्स) भरतस्य
 वर्षस्य (भूमिभाग) भूपदेश कोट्यं भूभागम् ? उत्पाह - 'इंगालभूयं' इत्यादि । (इंगालभूय)
 अङ्गारभूतम्=अङ्गारसदृशं (मुम्भुरभूय) मुम्भुरभूतम्=विस्फुटितप्रदेशाङ्गारतुल्यं (छारियभूय)
 क्षारिकभूतम्=मस्मीभूतं (तत्तकवेल्खुगभूयं) तत्तकटाहभूतं=संतप्तकटाहसदृशमिति । एता-
 दृशं भूभागं (णिन्वाविस्सत्ति) अनर्वापिष्यतीति=शमयिष्यतीति । (तंसि च णं पुक्ख-
 लसंवट्ठगंसि महामेहंसि) तस्मिंश्च खलु पुक्खलसंवर्तके महामेघे (सत्तरत्त)सप्तरात्रं=सप्ता-
 होत्रान् निरन्तरं (णिवत्तितसि समाणसि) निपतिते सति (एत्थ णं) अत्र खलु (खोरमेहे
 णामं महामेहे) क्षोरमेघो नाम महामेघः (पाउम्भविस्सइ) प्रादुर्भविष्यति=उत्पत्स्यते (भर-

पतणतणाइत्ता) गर्जना करके (खिप्पामेव पविज्जुआइस्सइ) फिर वह शीघ्र ही विद्युतो-
 विजलियों से युक्त हो जावेगा अर्थात् उसमें-विजलिया चमकेगी (खिप्पामेव पविज्जुआइत्ता खिप्पा-
 मेव जुगमुसलमुट्ठिप्पमाणमित्तेहिं ओषमेघ सत्तरत्त वास वासिस्सइ) विजलियों के चमकने बाद
 फिर वहां महामेघ जुआ प्रमाण, मुसल प्रमाण तथा मुट्ठि प्रमाण वाली धाराओं से सात दिन रात
 तक कि जिनमें सामान्य रूप से मेघ का सद्भाव रहेगा वर्षा करता रहेगा (जेणं भरहस्स वासस्स
 भूमिप सिणेहमावं जणइस्सइ) यह मेघ भरत क्षेत्र के भू प्रदेश को कि जो अङ्गार के जैसा एवं
 तुषाग्नि के जैसा बन रहा था और मस्मीभूत हो चुका था तथा तप्त कटाह के जैसा जल रहा
 था बिलकुल शान्त कर देगा-शीतल कर देगा-(तंसि च ण पुक्खलसंवट्ठगंसि महामेहंसि) इस प्रकार
 उस पुक्खल संवर्तक महामेघ के (सत्तरत्तं णिवत्तितसि समाणसि) सात दिन रात तक निरन्तर वर-

महामेघ अतीव शीघ्रताથી गर्जना करे (खिप्पामेव पतणतणाइत्ता) गर्जना करीने (खि-
 प्पामेव पविज्जुआइस्सइ) पछी ते शीघ्र विद्युतोथी युक्त थये ओटले डे तेमांथी वीज्णी
 ओ यमकथे (खिप्पामेव पविज्जुआइत्ता खिप्पामेव जुगमुसलमुट्ठिप्पमाणमित्तेहिं ओषमेघ-
 सत्तरत्त वासं वासिस्सइ) वीज्णीओना यमकवा भाद पछी ते महामेघ यूका प्रभाषु, भूसल
 प्रभाषु तथा मुट्ठि प्रभाषु जेवी धाराओथी सात दिवस सुधी डे जेमां सामान्यइपथी मेघ-
 ना सद्भाव रडेथे वर्षा करतो रडेथे (जे णं भरहस्स वासस्स भूमिप सिणेहमावं जणइस्सइ)
 आ मेघ भरतक्षेत्रना भूप्रदेशने डे जे अ गार जेवे तेमज तुषाग्नि जेवे थर्थ रडो छे अने
 भरमीभूत थर्थ यूक्षे छे तो तथा तप्त कटाहनी जेम सणगी रडो छे तो तेने सम्पूर्णतः शान्त
 करेथे, शीतल करेथे (तंसि च णं पुक्खलसंवट्ठगंसि महामेहंसि) आ प्रभाषु ते पुक्खलसंवर्तक
 महामेघ (सत्तरत्तं णिवत्तितसि समाणसि) सात दिवस-रात्रि सुधी सतत वरसथे त्यार भाद

હપ્પમાણમેત્તે આયામેણ) ભરતપ્રમાણમાત્ર આયામેન (તયણુરૂવં ચ ણં વિક્કલંમવાહલ્લેણં) તદનુરૂપશ્ચ સલ્લુ વિક્કમ્મવાહલ્લેયેન । (તણ ણં) તતઃ સલ્લુ (સે સ્ત્રીરમેહે ણામં મહામેહે) સ સ્ત્રીરમેઘો નામ મહામેઘઃ (સ્ત્રિપ્પામેવ) સિપ્રમેવ (પતણતણાહસ્સહ) પ્રસન્નિગ્ધયતિ, (જાવ સ્ત્રિપ્પામેવ જુગમુસલ્લમુટ્ઠિ જાવ સત્તરત્ત વાસં વાસિસ્સહ) યાવત્ સિપ્રમેવ યુગમુસલ્લમુટ્ઠિ યાવત્ સત્તરાત્ર વર્ષં વર્ષિગ્ધયતિ । અત્ર યાવત્પદસંગ્રાહચારિણિ પદાનિ અસ્મિન્નેવ સૂત્રે પૂર્વોક્તાનિ અનુસન્ધેયાનિ, વ્યાખ્યાડપિ તત્ત એવાડ્વચોચ્ચેતિ । (જે ણં) યઃ સલ્લુ સ્ત્રીરમેઘો નામ મહામેઘઃ સલ્લુ (મરહવાસસ્સ મૂમીણ) મરતવર્ષસ્ય મૂમેઃ (વણ્ણં ગન્ધં રસં ફાસં ચ જણહસ્સહ) વર્ણં ગન્ધં રસં સ્પર્શં ચ જનયિગ્ધયતિ । વર્ણાદયશ્ચાત્ર શુભા એવ ગ્રાહ્યા , ચેમ્મ્યો લોકઃ સુખમનુભવતિ, અશુભવર્ણાદયસ્તુ પ્રાક્કાલિકાઃ સન્ત્યેવેતિ । અત્રેદં શઙ્કતે-યદિ સ્ત્રીરમેઘઃ શુભવર્ણાદીન્ જનયતિ, તદા તરુપત્રાદિપુ નીલો વર્ણઃ, જમ્બૂફલાદિપુ કૃષ્ણો, મરીચાદિપુ કટુકો રસઃ કારવેલ્લાદિપુ તિક્તઃ, ચરણકાદિપુ રૂક્ષઃ સ્પર્શઃ, સુવર્ણાદિપુ

સને પર (પ્તથ્થ ધ્વં સ્ત્રીરમેહે ણામં મહામેહે પાડ્મવિસ્સહ) ફિર યહાં સ્ત્રીરમેઘ નામ કા મહામેઘપ્રકટિત્ત હોગા (મરહપ્પમાણમેત્તે આયામેણં) હસકો મો લમ્મવાઈ મરત ક્ષેત્ર પ્રમાણ જિતની હોગી (તયણુરૂવં ચ ણ વિક્કલંમવાહલ્લેણ) ઔર મરત ક્ષેત્ર પ્રમાણ હો હસકા વિક્કમ્મ ઔર વાહલ્લય હોગા (તણ સે સ્ત્રીરમેહે ણામં મહામેહે સ્ત્રિપ્પામેવ પતણતણાહસ્સહ) વહ સ્ત્રીરમેઘ વહુત હી જલ્દી ગર્જના કરેગા (જાવ સ્ત્રિપ્પામેવ જુગમુસલ્લમુટ્ઠિ જાવ સત્તરત્ત વાસ વાસિસ્સહ) યાવત્ વહ વહુતહી શીઘ્રતા કે સાથ વિજુલિયો કો ચમકાવેગા ઔર વહુત હી શીઘ્ર ફિર વહ જુમા પ્રમાણ મુસલ પ્રમાણ ઔર મુટ્ઠિ પ્રમાણ વાલી ધરાઓ સે સાત દિન રાત તક વર્ષા કરતા રહેગા (જે ણં મરહવાસસ્સ મૂમીણ વર્ણં ગંધં રસ ફાસ ચ જણહસ્સહ) હવસે વહ સ્ત્રીરમેઘ મરત ક્ષેત્ર કી મૂમિ કે વર્ણ, ગંધ રસ, ઔર સ્પર્શ કો શુભ વનાદેગા-કપોકિ હસકે પહિલે વર્ણાં કે વર્ણાદિક અશુભ યે યહા કોઈ એસો આશંકા કર સકતા હૈ કિ યદિ સ્ત્રીરમેઘ શુભવર્ણાદિકો કો કર દેતા હૈ તો ફિર તરુપત્રાદિકો મેં નીલ, જમ્બૂફલાદિકો મેં કૃષ્ણવર્ણ, મરીચાદિકો મેં કટુરસ, કરેલા

પ્તથ્થ ધ્વં સ્ત્રીરમેહે ણામં મહામેહે પાડ્મવિસ્સહ) અહીં સ્ત્રીરમેઘ નામક મહામેઘ પ્રકટ થશે (મરહપ્પમાણમેત્તે આયામેણં) એની લખાઈ પણ ભરતક્ષેત્રના પ્રમાણુ જેટલી થશે (તયણુરૂવં ચ ણ વિક્કલંમવાહલ્લેણ) અને ભરતક્ષેત્ર પ્રમાણુ જે એનો વિક્કલ અને બાહલ્લય થશે (તણ સે સ્ત્રીરમેહે ણામ મહામેહે સ્ત્રિપ્પામેવ પતણતણાહસ્સહ) તે સ્ત્રીરમેઘ નામનો મહામેઘ બહુ જ શીઘ્ર ગર્જના કરશે (જાવ સ્ત્રિપ્પામેવ જુગમુસલ્લમુટ્ઠિ જાવ સત્તરત્ત વાસ વાસિસ્સહ) યાવત્ તે અતીવ શીઘ્રતાથી વીજળીઓ ચમકાવશે અને બહુ જ શીઘ્રતાથી તે યુક્ત પ્રમાણુ, મુસલ પ્રમાણુ અને મુટ્ઠિ પ્રમાણુ જેટલી ધારાઓથી સાત દિવસ-રાત્રિ સુધી વર્ષા કરતો રહેશે (જે ણં મરહવાસસ્સ મૂમીણ વર્ણ ગન્ધ રસ ફાસ ચ જણ) એથી તે સ્ત્રીરમેઘ ભરતક્ષેત્રની ભૂમિના વર્ણ, ગન્ધ, રસ અને સ્પર્શને શુભ બનાવી દેશે કેમકે એના પહેલાં ત્યાંના વર્ણાદિકે અશુભ હતાં . અહીં કોઈ એવી આશંકા કરી શકે છે કે જો સ્ત્રીરમેઘ વર્ણાદિકેને શુભ કરી દે છે તો યહી તરુ-પત્રાદિકેમા નીલ, જમ્બૂફલાદિકેમા કૃષ્ણ વર્ણ, મરીચાદિકેમા

શુરુ, ક્રકચાદિપુ સ્વરઃ-ઇત્યાદયોઽશુભવર્ણાદયઃ કથં સંભવન્તિ ? इति चेदाह-यद्यपि नीलादयोऽशुभपरिणामा , तथापि तेऽनुकूलवेद्यतया शुभा एव । यथा श्वेतो वर्णो यद्यपि शुभ एव, तथापि कुष्ठादिगतः प्रतिकूलवेद्यतयाऽशुभ एव भवतीति । (तंसि च णं खीरमेहसि सत्तरत्तसि णिवत्तितसि समाणसि) तस्मिंश्च खलु क्षीरमेघे सप्तरात्रं निपतिते सति (एत्थ णं) अत्र खलु (घयमेहे णામં મહામેહે) ઘૃતમેધો નામ મહામેધઃ (પાઠઽભવિસ્સઈ) પ્રાદુર્ભાવિષ્યતિ (મરહપ્પમાણમિત્તે આયામેણં, તયણુરૂવં ચ ણં વિક્કલમેણં) મરતપ્રમાણમાત્ર આયામેન તદનુરૂપશ્ચ ખલુ વિષ્કમ્બાહર્યેન (તણં સે ઘયમેહે ણામ મહામેહે) તતઃ ખલુ સ ઘૃતમેધોનામ મહામેધ (સ્થિપ્પામેવ) ક્ષિપ્રમેવ (પતળતણાઈસ્સઈ) પ્રસ્તનિષ્યતિ (જાવ વાસ વાસિરસઈ) યાવત્ વર્ષ વર્ષિષ્યતિ, (જે ણં મરહસ્સ વાસસ્સ ભૂમીઈ સિણેહમાવં જળઈસ્સઈ) યઃ ખલુ મરતસ્ય વર્ષસ્ય ભૂમૌ સ્નેહમાવં=સ્નિગ્ધતાં જનયિષ્યતિ (તંસિ ચ ણં ઘયમેહસિ સત્તરત્તં ણિવત્તિતંસિ સમાણસિ) તસ્મિંશ્ચ ખલુ ઘૃતમેધે સપ્તરાત્રં નિપતિતે સતિ, (एत्थण) अत्र

આદિ મેં તિક રસ ચળા આદિ મેં રુક્ષ સ્પર્શ, સુવર્ણ આદિકો મેં ગુરુસ્પર્શ, ક્રકચ, કરોત, આદિ મેં કઠોર સ્પર્શ, ઇત્યાદિ યે અશુભ વર્ણાદિક કૈસે સંભવિત હોતે હૈં ? તો ઇસકા ઉત્તર એસા હૈ-
કિ યદ્યપિ નીલાદિક અશુભ પરિણામ રૂપ હૈં પરન્તુ યે અનુકૂલ વેદ્ય હોને કે કારણ શુભ હી હૈં, જૈસે શ્વેતવર્ણ યદ્યપિ શુભ હી હોતા હૈ, પરન્તુ જન્ન યહ કુષ્ઠાદિગત હોતા હૈ તો વહ પ્રતિકૂલ વેદ્ય હોને સે અશુભરૂપ હી હોતા હૈ (તસિણં સ્ત્રીરમેહંસિ સત્તરત્તસિ ણિવત્તિતંસિ સમાણસે) જન્ન વહ ક્ષીરમેધ સાત દિન રાતતક બરાબર-નિરન્તર-વરસતા રહેગા-તન્ન ડસકે અનન્તર હી (ઘય-મેહે ણામ મહામેહે) યહાં ઘૃતમેધ નામ કા મહામેધ (પાઠઽભવિસ્સઈ) પ્રકટ હોગા યહ મેધ મી (મર હપ્પમાણમિત્તે આયામેણં તયણુરૂવં ચ ણં વિક્કલમેણં બાહલ્લેણ) મરત ક્ષેત્ર-પ્રમાણ હમ્બા હોગા ઔર મરતક્ષેત્ર પ્રમાણ હો ચૌઢા ઔર મોટા હોગા (તણં સે ઘયમેહે ણામ મહામેહે સ્થિપ્પામેવ પતળતણાઈ સ્સઈ) પ્રકટ હોને કે બાદ હી વહ ઘૃતમેધ ગર્જના કરેગા-(જાવ વાસ વાસિરસઈ) યાવત્ વર્ષા કરેગા (જેણં મરહસ્સ વાસસ્સ ભૂમીઈ સિણેહમાવં જળઈસ્સઈ) ઇસસે મરત ક્ષેત્ર કી ભૂમિ મે સ્નેહ માવ-

કટુરસ, કારેલા વગેરેમા તિક્તરસ, અણા આદિમાં રુક્ષ-સ્પર્શ, સુવર્ણ આદિકોમા ગુરુસ્પર્શ
કંકળ-કરવત વગેરેમા કઠોર સ્પર્શ વગેરે એ અશુભ વર્ણાદિકો કેવી રીતે સંભવિત હોય
છે ? તો આનો જવાબ આ પ્રમાણે છે કે નીલાદિક એ કે અશુભપરિણામ રૂપ છે પણ એ
એ અનુકૂલ વેદ્ય હોવાથી શુભ જ છે જેમ શ્વેતવર્ણ શુભ જ હોય છે, પરંતુ બ્યારે એ
કુષ્ઠાદિગત હોય છે તો તે પ્રતિકૂલ વેદ્ય હોવાથી અશુભ રૂપ ગણાય છે (તસિ ણં સ્ત્રીર-
મેહંસિ સત્તરત્તસિ ણિવત્તિતંસિ સમાણસિ) બ્યારે તે ક્ષીરમેધ સાત દિવસ અને રાત સુધી
સતત વર્ષાતો રહેશે, ત્યારબાદ (ઘયમેહે ણામં મહામેહે) અહીં ઘૃતમેધ નામક મહામેધ
(પાઠઽભવિસ્સઈ) પ્રકટ થશે આ મેધ પણ (મરહપ્પમાણમિત્તે આયામેણં તયણુરૂવં ચ ણં વિ-
ક્કલમેણં બાહલ્લેણ) મરતક્ષેત્ર પ્રમાણ બેટલી ચોઠાઈ વાળો અને વિશાળ હશે. (તણં સે
ઘયમેહે ણામ મહામેહે સ્થિપ્પામેવ પતળતણાઈસ્સઈ) પ્રકટ થવાબાદ તે ઘૃતમેધ ગર્જના કરશે (જાવ
વાસ વાસિરસઈ) યાવત્ વર્ષા કરશે. (જે ણં મરહસ્સ વાસસ્સ ભૂમિઈ સિણેહમાવં જળઈસ્સઈ)

मेहे) रसमेधो नाम महामेधः (पाउब्भविस्सइ) प्रादुर्भविष्यति (भरहृप्पमाणमित्ते आयामेणं) भरतप्रमाणमात्रं आयामेन (जाव वासं वासिस्सइ) यावद वर्पं वर्पिष्यति (जे णं) यः खलु (तेसिं) तेषां=पूर्वोक्तानां (वहूणं) वहूनां=बहुसंख्यकानां (रुक्ख-गुच्छ गुम्म-ल्लय-वल्लि-तण-पव्वग-हरित-ओसहि-पवालं-कुरमाईणं) वृक्ष-गुच्छ-गुल्म-लता-वल्ली-तृण-पर्वग हरितौ-पथि-प्रवाला-कुंरादीनां (तिक्त-कटुक-कषाय-महुरे) तिक्त-कटुक-कषायाम्ब-मधुरान् (पचविहे रसविसेसे) पञ्चविधान् रसविशेषान्-तिक्तादीन् पञ्च-प्रकारान् रसान् (जणइस्सइ) जनयिष्यति=उत्पादयिष्यति । पञ्चविधेषु रसेषु तिक्तो रसो निम्बादिषु, कटुको मरीचादिषु, कषायो हरीतक्यादिषु, अम्लश्चिञ्चादिषु, मधुरश्च शर्करादिषु बोध्यः । लवणरसस्य मधुरादि समर्गजत्वेन न पृथगुपन्यासः । पञ्चानां प्रयोजनं यद्यपि सूत्रे एव प्रोक्तं तथापि स्फुटतरप्रतिपत्तये पुनरप्यत्रोच्यते तथाहि-पुष्कल-

सत्तरत्त णिवत्तित्तिस्सि समानेत्ते) इस प्रकार से यह अवृत्तमेध सात दिन रात तक बरमता रहेगा-हमी के भीतर (एत्थणं रसमेहे णामं मह मेहे पाउब्भविस्सइ) यहा एक और महामेध प्रकट होगा- जिसका नाम रसमेध होगा. यह रसमेध भी (भरहृप्पमाणमित्ते आयामेण जाव वास वासिस्सइ) । लम्बाई चौड़ाई एव स्थूलता में भरत क्षेत्र की लम्बाई. चौड़ाई और स्थूलता के बराबर का होगा और यह भी भरतक्षेत्र की भूमिपर सात दिन रात तक लगातार वर्षता रहेगा (जेण वहूण रुक्ख-गुच्छ-गुम्म-ल्लय-वल्लि-तण-पव्वग-हरित-ओसहि-पवालंकुरमाईणं तिक्त, कटुक-कषाय-अंबिल-महुरे) यह रस मेव अनेक वृक्षां मे, गुच्छों मे, गुल्मों मे, लताओं मे वल्लियों में, तृणों में पर्वतो में हरित दुर्वादिकों में औषधियों में प्रवालो मे और अकुरादिको मे तिक्त, कटुक, कषायला, अम्ल और मधुर (पचविहे रसविसेसे) इन पांच प्रकार के रसविशेषो को (जणइस्सइ) उत्पन्न करेगा. इन पांच प्रकार के रसो मे तिक्तरसनिम्ब आदिको में, कटुक रस मरीच आदिको में कषायरस हरीतकी आदिको में, अम्लरस चिञ्चा ईमली आदिको मे और मधुर रस शर्करा आदिको में होता है लवणरस मधुरादि के समर्ग से उत्पन्न होता है.

रात सुधी वर्धते। रडेशे. आनी अहर ७ (एत्थ णं रसमेहे णामं महामेहे पाउब्भविस्सइ) अही ओक णीले महामेध प्रकट थशे जेनु नाम रसमेध डेशे आ रसमेध पणु (भरहृप्प माणमित्ते आयामेण जाव वासं वासिस्सइ) लंणार्थ, पडोणार्थ अने स्थूलतामां भरतक्षेत्रना प्रमाणु लेटवो डेशे आ पणु भरतक्षेत्रनी भूमिपर सात दिवस अने रात सुधी सतत वर्धते। रडेशे । जेण वहूण रुक्खगुच्छ गुम्मल्लय वल्लि तण पव्वग हरित ओसहि पवालंकुरमाईणं तिक्त, कटुक कषायअंबिल महुरे) ओ रसमेध अनेक वृक्षोमा, गुच्छोमा, गुल्मोमा, लताओमा, वल्लिओमा, तृणोमा पर्वतोमा, हरित दुर्वादिकोमां, औषधियोमां, प्रवालोमा अने अकुरादिकोमा तिक्त, कटुक, कषायला, अम्ल अने मधुर (पचविहे रसविसेसे) ओ पाच प्रकारना रसविशेषोने (जणइस्सइ) उत्पन्न करेशे ओ पाच प्रकारना रसोमा तिक्तरस नि ७ आदिकोमां, कटुक रस मरीच आदिकोमा कषायरस हरीतकी आदिकोमा, अम्लरस चिञ्चा आ इमली आदिकोमा अने मधुररस शर्करा आदिकोमा डोय छे लवणरस मधुरादिकोना स सर्गथी उत्पन्न थाय छे ओथी

મેહે) રસમેધો નામ મહામેધઃ (પાઠ્ઠમવિસ્સહ) પ્રાદુર્ભવિપ્યતિ (મરહપ્પમાણમિત્તે આયામેણ) મરતપ્રમાણમાત્રં આયામેન (જાવ વાસં વાસિસ્સહ) યાવદ્ વર્ષ વર્ષિપ્યતિ (જે ણં) યઃ સ્થલ (તેસિં) તેષાં=પૂર્વોક્તાનાં (વહૂણં) વહૂનાં=વહુસંખ્યકાના (રુક્ષ ગુચ્છ ગુમ્મ-લય-વલ્લિ-તણ-પવ્વગ-હરિત-ઓસહિ-પવાલં-કુરમાઈણ) વૃક્ષ-ગુચ્છ-ગુલ્મ-લતા-વલ્લી-તૃણ-પર્વગ હરિતૌ-પથિ-પ્રવાલા-કુરાદીનાં (તિત્ત-કટુય-કસાય-મહુરે) તિત્ત-કટુક-કપાયમ્મ-મધુરાન્ (પચવિદે રસવિસેસે) પચ્ચવિધાન્ રસવિગેપાન્-તિત્તતાદીન્ પચ્ચ-પ્રકારાન્ રસાન્ (જણહસ્સહ) જનયિપ્યતિ=ઉત્પાદયિપ્યતિ । પચ્ચવિધેષુ રમેષુ તિત્તતો રસો નિમ્વાદિપુ, કટુકો મરીચાદિપુ, કપાયો હરોતક્યાદિપુ, અમ્લશ્ચિન્ચાદિપુ, મધુરશ્ચ શર્કરાદિષુ વોધ્યઃ । લવણરસસ્ય મધુરાદિ સમર્ગજત્વેન ન પૃથગુપન્યાસઃ । પચ્ચાના પ્રયો-જનં યદ્યપિ સૂત્રે એવ પ્રોક્તં તથાપિ સ્ફુટતરપ્રતિપત્તયે પુનરપ્યત્રોચ્યતે તથાહિ-પુષ્કલ-

સત્તરત્ત ણિવત્તિત્તસિ સમાર્ણસે) હમ પ્રકાર સે યહ અમૃતમેઃ સાત દિન રાત તક વરમતા રહેગા-હમી કે મીતર (પત્થણં રસમેહે ણામં મહ મેહે પાઠ્ઠમવિસ્સહ) યહા એક ઓર મહામેધ ત્રકટ હોગા- જિસકા નામ રસમેધ હોગા. યહ રસમેધ માં (મરહપ્પમાણમિત્તે આયામેણ જાવ વાસ વાસિસ્સહ) । લમ્વાઈ ચૌઢાઈ એવં સ્થૂલતા મેં મરત ક્ષેત્ર કી લમ્વાઈ. ચૌઢાઈ ઓર સ્થૂલતા કે બરાબર કા હોગા ઓર યહ મી મરતક્ષેત્ર કી ભૂમિપર સાત દિન રાત તક લગાતાર વર્ષતા રહેગા (જેણ વહૂણ રુક્ષ-ગુચ્છ-ગુમ્મ-લય-વલ્લિ-તણ-પવ્વગ-હરિત-ઓસહિ-પવાલંકુરમાઈણં તિત્ત, કટુય-કસાય-અંબિલ-મહુરે) યહ રસ મેવ અનેક વૃક્ષો મે, ગુચ્છો મે, ગુલ્મો મે, લતાઓ મે વલ્લિયો મેં, તૃણો મેં પર્વતો મે હરિત દુર્વાદિકોં મેં ઔષધિયોં મેં પ્રવાલો મે ઓર અકુરાદિકોં મેં તિત્ત, કટુક, કપાયલા, અમ્લ ઓર મધુર (પચવિદે રસવિસેસે) હન પાંચ પ્રકાર કે રસવિશેષો કો (જણહસ્સહ) ઉત્પન્ન કરેગા. હન પાચ પ્રકાર કે રસો મે તિત્તરસનિમ્બ આદિકો મે, કટુક રસ મરીચ આદિકોં મેં કપાયરસ હરોતકી આદિકોં મે, અમ્લરસ ચિન્ચા હમલી આદિકો મે ઓર મધુર રસ શર્કરા આદિકોં મેં હોતા હૈ લવણરસ મધુરાદિ કે સર્ગ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ.

રાત સુધી વર્ષતો રહેશે. આની અહર જ (પત્થ ણં રસમેહે ણામં મહામેહે પાઠ્ઠમવિસ્સહ) અહીં એક બીજો મહામેધ પ્રકટ થશે જેનું નામ રસમેધ હશે આ રસમેધ પશુ (મરહપ્પમાણમિત્તે આયામેણ જાવ વાસં વાસિસ્સહ) લંખાઈ, પહોળાઈ અને સ્થૂલતામા ભરતક્ષેત્રના પ્રમાણ જેટલો હશે આ પશુ ભરતક્ષેત્રની ભૂમિપર સાત દિવસ અને રાત સુધી સતત વર્ષતો રહેશે । જેણ વહૂણ રુક્ષગુચ્છ ગુમ્મલય વલ્લિ તણ પવ્વગ હરિત ઓસહિ પવાલંકુરમાઈણં તિત્ત, કટુય કસાયઅંબિલ મહુરે) એ રસમેધ અનેક વૃક્ષોમા, ગુચ્છોમા, ગુલ્મોમા, લતાઓમા, વલ્લિઓમા, તૃણોમા પર્વતોમા, હરિત દુર્વાદિકોમા, ઔષધિઓમા, પ્રવાલોમા અને અકુરાદિકોમા તિત્ત, કટુક, કપાયલા, અમ્લ અને મધુર (પચવિદે રસવિસેસે) એ પાચ પ્રકારના રસવિશેષોને (જણહસ્સહ) ઉત્પન્ન કરશે એ પાચ પ્રકારના રસોમા તિત્તરસ નિમ્બ આદિકોમા, કટુક રસ મરીચ આદિકોમા કપાયરસ હરોતકી આદિકોમા, અમ્લરસ ચિન્ચા આમલી આદિકોમા અને મધુરરસ શર્કરા આદિકોમા હોય છે લવણરસ મધુરાદિકોના સર્ગથી ઉત્પન્ન થાય છે એથી

સ્વત્તુ (અમયમેહે જામ મગમેહે પાઝમ્મેરમઝ મરહપ્પમાણમિત્તે આયામેણં જાવ વાસં વા-
સિસ્સહ) અમૃતમેવો નામ મહામેઘઃ પ્રાદુર્ભવિષ્યતિ મરતપ્રમાણમાત્ર આયામેન યાવદ્
વર્ષં વર્ષિષ્યતિ (જે જાં) યઃ સ્વત્તુ=યોઽમૃતમેઘઃ સ્વત્તુ (મરહે વાસે) મરતે વર્ષે (સ્વસ્વ-ગુચ્છ-
ગુમ્મ-લય-વલ્લિ- તળ- પવ્વગ-હરિતગ-ઓસહિપવાલ-કુરમાઈપ) વૃક્ષ-ગુચ્છ-
ગુલ્મ-લતા-વલ્લી-તૃણ-પર્વગ-હરિતકૌ-પધિ- પ્રવાલાહકુરાદિકાન્-વૃક્ષાઃ=શાલિનઃ,
ગુચ્છાઃ=સ્તવકા ગુલ્માઃ સ્કન્ધરહિતા વનસ્પતિવિશેષાઃ, લતાવલ્લીતિ પદદ્વયં યદ્યપિ
સમાનાર્થક તથાપિ કથચિદ્ ભેદમુપાદાય પદદ્વયમુપાત્તમ્, તૃણાનિ=અશીરાદીનિ, પર્વગાઃ
=પર્વજા ઇક્ષુપ્રમૃતયઃ હરિતકાનિ=દૂર્વાદીનિ, ઓપધ્યઃ=શાલ્યાદયઃ, પ્રવાલાઃ=પલ્લ-
વાઃ, અહ્કુરા. =ત્રીહ્યાદિવીજમૂલચ, ઇત્યેતે આદૌ=પ્રારમ્ભે યેષાં તે તથા તાન્ (તળવળ-
સ્સહકાઈપ) તૃણવનસ્પતિકાયાિકાન્ વાદરવનસ્પતિકાયાિકાન્ (જળહસ્સહ) જનયિષ્યતિ=
ઉત્પાદયિષ્યતિ (તંસિ ચ જાં અમયમેહંસિ) તસ્મિન્ન સ્વત્તુ અમૃતમેઘે સત્તરત્તં જિવત્તિતંસિ
સમાણસિ) સપ્રરાત્રં નિપતિતે સતિ, (પ્તથ જાં) અત્ર સ્વત્તુ પઞ્ચમો (રસમેહે જામં મહા-

સ્નિગ્ધતાહો જાવેગી (તસિ ચ જાં ઘયમેહંસિ સત્તરત્તં જિવત્તિતંસિ સમાણસિ) હસ તરહ યહ્મૃતમેઘ
સાત દિન રાત તઠ લગાતાર વર્ષતા રહેગા હસી કે અનન્તર (પ્તથ જાં અમયમેહે પાઝમ્મ-
વિસ્સહ મરહપ્પમાણમિત્તે આયામેણ જાવ વાસ વાસિસ્સહ) યહાં અમૃતમેઘ નામકા મહામેઘ
પ્રકટ હોગા યહ લમ્બાઈ મેં ચૌઢાઈ મેં ઔર સ્થૂલતા મેં મરતક્ષેત્ર કી લમ્બાઈ ચૌઢાઈ એવ
સ્થૂલતા કે હી બરાબર હોગા યહ મો સાત દિન રાત તઠ અમૃત કી વરસા કરતા
રહેગા (જે જાં મરહે વાસે સ્વસ્વ-ગુચ્છ-ગુમ્મ-લય-વલ્લિ-તળ-પવ્વગ-હરિતગ-ઓસહિ-પવાલ
કુરમાઈપ) યહ મેઘ મરત ક્ષેત્ર મેં વૃક્ષોં કો, ગુચ્છોં કો, સ્કન્ધ રહિત વનસ્પતિવિશેષોં કો,
લતાઓં કો, વલ્લિઓં કો, અશીરાદિક તૃણોં કો, પર્વજ ઇક્ષુ આદિકોં કો દૂર્વાદિક હરી
વનસ્પતિ કો, શાલી આદિક ઔષધિયોં કો, પત્તે આદિરૂપ પ્રવાલો કો ત્રિહિ આદિ વીજ સૂચો-
મૃત અહ્કુરો કો ઇત્યાદિ વાદર વનસ્પતિ કાયિકોં કો ઉત્પન્ન કરેગા (તંસિ ચ જાં અમયમેહંસિ-

આથી ભરતક્ષેત્રની ભૂમિમા સ્નેહભાવ-સ્નિગ્ધતા થઈ જશે, (તંસિ ચ જાં ઘયમેહંસિ સત્તરત્તં
જિવત્તિતંસિ સમાણસિ) આ પ્રમાણે આ ધૃતમેઘ સાતદિવસ અને રાત સુધી સતત વર્ષતો
રહેશે ત્યારબાદ (પ્તથ જાં અમયમેહે પાઝમ્મવિસ્સહ મરહપ્પમાણમિત્તે આયામેણ જાવ વાસં
વાસિસ્સહ) અહીં અમૃતમેઘ નામક મહામેઘ પ્રકટ થશે આ મેઘ લગભગ પહોળાઈ અને
સ્થૂલતામા ભરતક્ષેત્ર જેટલો લગભગ, પહોળાઈ અને સ્થૂલવાળો થશે આ પણ સાત દિવસ
અને રાત સુધી અમૃતની વર્ષા કરશે (જે જાં મરહે વાસે સ્વસ્વ-ગુચ્છ-ગુમ્મ-લય-વલ્લિ-તળ
પવ્વગ-હરિતગ-ઓસહિ-પવાલ-કુરમાઈપ) આ મેં ભરત ક્ષેત્રમા વૃક્ષોને, ગુચ્છોને, સ્કન્ધ-
રહિત વનસ્પતિ વિશેષોને લતાઓને, વલ્લિઓને અશીરાદિક તૃણોને, પર્વજ ઇક્ષુ આદિ
કેને દૂર્વાદિક લીલી વનસ્પતિને, શાલી આદિક ઔષધિઓને, પાદડા આદિ રૂપ પ્રવાલોને,
ત્રીહિ આદિ વીજ સૂચીમૃત અહ્કુરોને ઇત્યાદિ વાદરવનસ્પતિકાયિકોને ઉત્પન્ન કરશે (તં
સિ ચ જાં અમયમેહંસિ સત્તરત્તં જિવત્તિ તસિ સમાણસિ) આ પ્રમાણે અમૃતમેઘ સાત દિવસ અને

मेहे) रसमेधो नाम महामेघः (पाठम्भविस्सइ) प्रादुर्भविष्यति (भरहृप्पमाणमित्ते आयामेणं) भरतप्रमाणमात्रं आयामेन (जाव वासं वासिस्सइ) यावद् वर्ष वर्षिष्यति (जे णं) यः खलु (तेसिं) तेषां=पूर्वोक्तानां (बहूणं) बहूनां=बहुसंख्यकानां (रुक्ख गुच्छ गुम्म-लय-वल्लि-तण-पव्वग-हरित-ओसहि-पवालं-कुरमाईणं) वृक्ष-गुच्छ-गुल्म-लता-वल्ली-तृण-पर्वग हरितौ-पथि-प्रवाला-कुंरादीनां (तिक्त-कटुक-कषाय-महुरे) तिक्त-कटुक-कषायाम्ब-मधुरान् (पचविहे रसविसेसे) पञ्चविधान् रसविशेषान्-तिक्तादीन् पञ्च-प्रकारान् रसान् (जणइस्सइ) जनयिष्यति=उत्पादयिष्यति । पञ्चविधेषु रमेषु तिक्तो रसो निम्बादिषु, कटुको मरीचादिषु, कषायो हरीतक्यादिषु, अम्लश्चिञ्चादिषु, मधुरश्च शर्करादिषु बोध्यः । लवणरसस्य मधुरादि समर्गजत्वेन न पृथगुपन्यासः । पञ्चानां प्रयो-जनं यद्यपि सूत्रे एव प्रोक्तं तथापि स्फुटतरप्रतिपत्तये पुनरप्यत्रोच्यते तथाहि-पुष्कल-

सत्तरत्त णिवत्तित्ति समानंसे) इम प्रकार से यह अमृतमेघ सात दिन रात तक बरसता रहेगा-इमी के भीतर (एत्थणं रसमेहे णामं मह मेहे पाठम्भविस्सइ) यहा एक और महामेघ प्रकट होगा- जिसका नाम रसमेघ होगा. यह रसमेघ मां (भरहृप्पमाणमित्ते आयामेण जाव वास वासिस्सइ) । लम्बाई चौड़ाई एव स्थूलता में भरत क्षेत्र की लम्बाई, चौड़ाई और स्थूलता के बराबर का होगा और यह भी भरतक्षेत्र की भूमिपर सात दिन रात तक लगातार वर्षता रहेगा (जेण बहूण रुक्ख-गुच्छ-गुम्म-लय-वल्लि-तण-पव्वग-हरित-ओसहि-पवालंकुरमाईण तिक्त, कटुक-कषाय-अंबिल-महुरे) यह रस मेघ अनेक वृक्षां में, गुच्छों में, गुल्मों में, लताओं में वल्लियों में, तृणों में पर्वतों में हरित दुर्वादिकों में औषधियों में प्रवालों में और अकुरादिकों में तिक्त, कटुक, कषायला, आम्ब और मधुर (पचविहे रसविसेसे) इन पांच प्रकार के रसविशेषों को (जणइस्सइ) उत्पन्न करेगा इन पांच प्रकार के रसों में तिक्तरसनिम्ब आदिकों में, कटुक रस मरीच आदिकों में कषायरस हरीतकी आदिकों में, अम्लरस चिञ्चा ईमली आदिकों में और मधुर रस शर्करा आदिकों में होता है लवणरस मधुरादि के समर्ग से उत्पन्न होता है.

रात सुधी वर्षतो रडेसे. आनी अहर ७ (एत्थ णं रसमेहे णामं महामेहे पाठम्भविस्सइ) अही ओठ भीन्ने महामेघ प्रकट थये जेतु नाम रसमेघ हथे आ रसमेघ पथु (भरहृप्प माणमित्ते आयामेण जाव वासं वासिस्सइ) लम्बाई, चौड़ाई अने स्थूलतामा भरतक्षेत्रना प्रमाण जेटो हथे आ पथु भरतक्षेत्रनी भूमिपर सात दिवस अने रात सुधी सतत वर्षतो रडेसे (जेण बहूण रुक्खगुच्छ गुम्मलय वल्लि तण पव्वग हरित ओसहि पवालंकुरमाईण तिक्त, कटुक कषायअंबिल महुरे) ओ रसमेघ अनेक वृक्षांमा, गुच्छांमा, गुल्मांमा, लताओमां, वल्लिओमा, तृणांमा पर्वतोमा, हरित दुर्वादिंकांमा, औषधिओमां, प्रवालांमा अने अकुरादि-कांमा तिक्ता, कटुक, कषायला, आम्ब अने मधुर (पचविहे रसविसेसे) ओ पांच प्रकारना रसवि-शेषेने (जणइस्सइ) उत्पन्न करथे ओ पांच प्रकारना रसोमा तिक्तरस निम्ब आदिकोमां, कटुक रस मरीच आदिकोमा कषायरस हरीतकी आदिकोमा, अम्लरस चिञ्चा आ इमली आदिकोमा अने मधुररस शर्करा आदिकोमा होय छे लवणरस मधुरादिकोना स समर्थी उत्पन्न थाय छे ओथी

સર્વત્ત્રકામિભસ્ય પ્રથમમેઘસ્ય પ્રયોજનં ભરતભૂમેર્દાદોપગમઃ, દ્વિતીયસ્ય ક્ષીરમેઘસ્ય ભર-
તભૂમૌ વર્ણાદિજનનમ્, તૃતીયસ્ય ઘૃતમેઘસ્ય ભરતભૂમૌ સ્નિગ્ધતાસંપાદનમ્, નનુ ક્ષીરમેઘે-
નેવ શુભવર્ણગન્ધાદિ નિષ્પત્તૌ સત્યાં તત્સહ ભાવિની સ્નિગ્ધતાઽપિ સ્વયમેવાયાતેતિ ઘૃત-
મેઘો નિષ્પ્રયોજનઃ ? इति चेदाह—ક્ષીરમેઘેન શુભવર્ણગન્ધાદીનામુત્પત્તૌ તત્સહભાવિની
સ્નિગ્ધતા ભરતભૂમૌ યદ્યપિ સ્વયમેવાયાતિ તથાપિ પ્રચુરતરસ્નિગ્ધતાસંપાદનમેવ ઘૃતમેઘ-
પ્રયોજનમ્, દૃશ્યતે चापि ક્ષીરાદધિકા સ્નિગ્ધતા ઘૃતે इति न कश्चिद् दोष इति । ચતુર્થસ્ય
અમૃતમેઘસ્ય વૃક્ષાદુત્પાદનં પ્રયોજનં પશ્ચમસ્ય ચ રસમેઘસ્ય વૃક્ષાદિપુ યથાયોગ્ય રસોત્પાદ-

હસલિયે उसका स्वतन्त्ररूप से कथन नहीं किया गया है पाच मेघो का प्रयोजन यद्यपि सूत्र में
ही कह दिया गया है तथापि स्फुटतर प्रतिपत्ति के लिये फिर से यहां वह कहा जाता है. पुष्कल
सर्वतर्क प्रथममेघका भरतक्षेत्रकी भूमिका दाहशमित करना यह प्रयोजन है द्वितीय क्षीरमेघ
का भरतक्षेत्र की भूमि में शुभवर्णादिका उत्पन्न करना यह प्रयोजन है तृतीय घृतमेघ का भर-
तक्षेत्र की भूमि में स्निग्धता को उत्पत्ति करना यह प्रयोजन है ।

શંકા—ઘૃતમેઘકા જો પ્રયોજન આપને ભરતક્ષેત્ર કો ભૂમિ મે સ્નિગ્ધતા કા આપાદન
કરને રૂપ પ્રકટ કિયા હૈ સો જવ ક્ષીરમેઘ સે હી શુભવર્ણ શુભગન્ધ આદિ કી ભરતક્ષેત્ર કી
ભૂમિ મેં નિષ્પત્તિ હો જાયગી તો શુભવર્ણ ગન્ધાદિ કે સાથ હોને વાલી સ્નિગ્ધતામી અપને આપ
આ જાવેગી ફિર હસ ઘૃતમેઘકા પ્રયોજન તો કુછ હી રહતા નહીં હૈ હસે નિષ્પ્રયોજન માનને કી
બ્યા આવશ્યકતા હૈ ? સો હસકા સમાધાન એસા હૈ કિ યહ બાત ઠોક હૈ કિ શુભવર્ણાદિકો
કી નિષ્પત્તિ મેં તત્સહભાવિની સ્નિગ્ધતા કા સપાદન કરના હી ઘૃતમેઘ કા પ્રયોજન હૈ યહ
બાત તો પ્રત્યક્ષ સે હી પ્રતીતિ હોતી દેસી જાતો હૈ કિ ક્ષીર સે અધિક સ્નિગ્ધતા ઘૃત મે હૈ
હત્યાદિ. અતઃ ઘૃતમેઘ કા કામ નિષ્ફળ નહીં હૈ—સફળ હૈ—ચતુર્થ જો અમૃતમેઘ હૈ—उसका

स्वतन्त्ररूपमा कथन करवामा आ०यु नथी, पाच मेघानुं प्रयोजन ले के सूत्रमां न स्पष्ट कर-
वामां आ०युं छे तो पञ्च स्फुटतर प्रतिपत्ति भाटे द्वितीया अही ते विषे स्पष्टता करवामां
आवेस छे पुष्कल सर्वतर्क प्रथममेघनुं प्रयोजन भरतक्षेत्रनी भूमिमे दाह शमित करवे। ते
छे भीन क्षीरमेघनुं प्रयोजन भरतक्षेत्रनी भूमिमां शुभ वर्णादिक उत्पन्न करवाइप. तृतीय
मेघनुं प्रयोजन छे भरतक्षेत्रनी भूमिमां स्निग्धतानी उत्पत्ति करवीते

શ કા-તમે ઘૃતમેઘનુ પ્રયોજન જ્યારે ભરતક્ષેત્રની ભૂમિમા સ્નિગ્ધતાનુ અપાદન કરવું
એવું પ્રકટ કરેલ છે તો ક્ષીરમેઘથી જ જ્યારે શુભવર્ણ, શુભગન્ધ વગેરેની ભરતક્ષેત્રની ભૂમિમાં
નિષ્પત્તિ થઈ જશે તો શુભવર્ણ ગન્ધાદિની સાથે આવનારી સ્નિગ્ધતા પણ આપમેળે જ આવી
જશે તો પછી આ ઘૃત મેઘનુ પ્રયોજન તો કંઈ દેખાતું જ નથી તો શુ એને નિષ્પ્રયોજન માન-
વામાં કંઈ વાધો છે ? નો આ શકાનું સમાધાન આ પ્રમાણે છે કે જો કે શુભવર્ણાદિકોની
નિષ્પત્તિમાં તત્સહભાવિનો સ્નિગ્ધતા આપમેળે જ આવી જાય છે પણ પ્રચુરતર સ્નિગ્ધતાનું
સંપાદન કરવું ઘૃતમેઘનુ પ્રયોજન છે એ વાત તો સ્પષ્ટ જ છે કે ક્ષીર કરતા વધારે સ્નિગ્ધતા
થીમાં છે એથી ઘૃતમેઘનું કામ નિષ્ફળ નથી સફળ છે. ચતુર્થ જે અમૃતમેઘ છે, તેનું પ્રયોજન

નમ્ । નતુ અમૃતમેષેન વનસ્પતૌ જનિતે સતિ વર્ણાદિસહિતસ્યૈવ વનસ્પતેરુપલભ્યમાનત્વેન વર્ણાદિ સહ ભાવિનો રસસ્યાપિ સુતરાગુત્પત્તૌ રસમેવો નિષ્પ્રયોજનઃ ? , ઇતિ ચેદાદ્—યદ્ય-પ્યમૃતમેષેન સામાન્યરસ ઉત્પાદ્યતે તથાપિ સ્વસ્વયોગ્યરસનિષ્પાદન રસમેઘસ્યૈવેતિ ન ક-કશ્ચિદોપ ઇતિ । ઇત્યં પશ્ચ મિર્મેઘૈ સ્વસ્વકાર્યે સપાદિતે સતિ યાદૃશં ભરતવર્ષસ્વરૂપ ભાવિ તદુચ્યતે—તર્ણ, ઇત્યાદિ । (તર્ણ ણં) તતઃ સ્વલુ (મરહે વાસે) ભરતં વર્ષ પડઢ—રુક્ષ-ગુચ્છ-ગુમ્મ-લય-વલ્લિ-તળ-પવ્વગ-હરિત-ઓસહિષ્) પ્રરુઢ વૃક્ષ-ગુચ્છ-ગુલ્મ લતા-વલ્લો તળ પર્વગ-હરિતૌ-પધિકં પ્રરુઢા-સમુત્પન્નાઃ વૃક્ષગુચ્છાદિહરિતૌપધ્યન્તા યત્ર તત્તાદૃશં (ભવિસ્સહ) ભવિષ્યતિ, તથા—(ઝવચિય તયપત્ત-પવાલં-કુર-પુષ્પ-ફલ-સમુ-

પ્રયોજન વૃક્ષાદિ કો ઉત્પાદન કરના છે. ઔર પાંચવા જો રસમેઘ છે ઉસકા પ્રયોજન વૃક્ષાદિકાં મેં યથાયોગ્ય રસ કા ઉત્પન્ન કરના છે ।

શંકા—જબ અમૃત મેઘ સે હી ભરતક્ષેત્ર કી ભૂમિ મેં વનસ્પતિ કા ઉત્પાદન હો જાતા છે તો વર્ણાદિ સહિત હી ઉનકા ઉત્પાદન હોતા છે. વર્ણાદિ રહિત રૂપ મેં તો ઉનકા ઉત્પાદન હોતા નહાં છે । ફિર જબ વર્ણાદિ સહિત હી ઉનકા ઉત્પાદન હોતા છે તો વર્ણાદિ સહભાવી જો રસ છે વહ તો ઉનમેં અપને આપ હા ઉત્પન્ન હો જાતા હોગા ફિર રસ કો ઉત્પન્ન કરને વાલા રસ મહામેઘ કા માનના નિષ્પ્રયોજન પ્રતીત હોતા છે— સો એસો શંકા ઠોક નહીં છે—ક્યોંકિ સ્વ સ્વ યોગ્ય રસ કા નિષ્પાદન કરના હો ઇસ રસ મહામેઘ કા કામ છે વૈસે તો અમૃત મેઘ સે સામાન્યતઃ રસ ઉત્પન્ન કરા હો દિયા જાતા છે । ઇસ તરહ સે ઇન પાંચ મેઘો દ્વારા અપના અપના કાર્ય સપાદિત હો જાને પર જૈસા ભારત વર્ષ કા આગે સ્વરૂપ હો જાતા છે અબ સૂત્રકાર ઉસીકા કથન કરતે હૈં— (તર્ણ મરહે વાસે પડઢ રુક્ષ-ગુચ્છ-ગુમ્મ-લય-વલ્લિ-તળ-પવ્વગ-હરિત-ઓસહિષ્ ભવિસ્સહ) ઇસકે બાદ ભરતક્ષેત્ર જિસમેં વૃક્ષ સે લેકર હરિત ઔષધિ તક

વૃક્ષાદિકાના ઉત્પત્તિ કરવી છે, અને પાંચમે જે રસમેઘ છે, તેનું પ્રયોજન વૃક્ષાદિકામાં યથાયોગ્ય રસોત્પત્તિ કરવી તે છે.

શંકા-જ્યારે અમૃત મેઘથી જ ભરત ક્ષેત્રની ભૂમિમાં વનસ્પતિનું ઉત્પાદન થઈ જાય છે. વનસ્પતિ વર્ણાદિ સહિતજ ઉત્પન્ન થાય છે વર્ણાદિ રહિતરૂપમાં વનસ્પતિનું ઉત્પાદન થતું નથી વર્ણાદિ સહિત જ જ્યારે તેમનું ઉત્પાદન થાય છે તો વર્ણાદિ સહભાવીજે રસ છે તેપણુ તેમનામાં આપ મેળે જ ઉત્પન્ન થશે જ તો જે પરિસ્થિતિમાં રસને ઉત્પન્ન કરનારા રસ મહામેઘનું કથન અહીં નિષ્પ્રયોજન પ્રતીત થાય છે એવી શંકા પણ અહીં યોગ્ય નથી. કેમકે સ્વ-સ્વ રસનું નિષ્પાદન કરવું એ જ એ રસમહામેઘનું કામ છે, આમ તો અમૃત મેઘથી જ સામાન્યતઃ રસ ઉત્પન્ન કરાવવામાં આવે જ છે. આ પ્રમાણે આ પાંચે મેઘો વડે પોત પોતાના કાર્ય સંપાદિત થઈ ગયા પછી ભરતર્ણનું સ્વરૂપ કેવું હશે ? એ સંબંધમાં સૂત્રકાર કહે છે— (તર્ણ મરહે વાસે પ્રરુઢરુક્ષ-ગુચ્છ-ગુમ્મ લય-વલ્લિ-તળ-પવ્વગ-હરિતઓસહિષ્ ભવિસ્સહ) ત્યાર બાદ જેમાં વૃક્ષથી માહીને હરિત ઔષધી સુધી વનસ્પતિઓ ઉત્પન્ન થઈ ચુકી છે એવું ભરતક્ષેત્ર વર્ષ થઈ જશે તેમજ (ઝવચિય-તય પત્ત-પવાલં-કુર-પુષ્પ-ફલ-

इए) उपचिन-त्वक्-पत्र-प्रगालाङ्कुर-पुष्प-फल-समुदितम् तत्र उपचितानि=परि-
पुष्टानि यानि त्वक्पत्रप्रगालाङ्कुरपुष्पफलानि-त्वक्=त्वचा-चलकम्, पत्रं=पण, प्रगालं=
किसलयम्, अङ्कुरः=अभिनवोद्भिद् बीजादि बीजसूचिः, पुष्पं=प्रसूनं फलं-प्रसिद्धम्, एते-
षामितरेतरयोगद्वन्द्वः तानि तथोक्तानि तैः समुदितं-व्याप्तम्, अत एव (सुहोवभोगे यावि)
सुखोपभोगं-सुखेन=अनायासेन उपभोगस्त्वक्पत्रादीनां यस्मिस्तत्तथाविधं चापि (भवि-
स्सइ) भविष्यति । एतेनोत्सर्पिण्या द्वितीयारके भरतवर्षे वनस्पतीनां, वनस्पतिषु च
पुष्पफलानां सत्ता प्रदर्शिता, ततश्च भरतवर्षस्य सुखोपभोगता सूचितेति ॥ सू० ५६ ॥

अथोत्सर्पिणी दुष्पमाकालसमवा मनुष्यास्तादृश भरतवर्षं दृष्ट्वा किं करिष्यन्ति ?

इत्याह—

सूत्रम्— तए णं ते मणुया भरहं वासं परूढ-गुच्छ-गुम्म-लय-
-वल्लि-तण-पव्वय-हरिय-ओसहीयं-उवचिय-तय-पत्त-पवालं-कुर-
-पुप्फ-फल-समुइयं सुहोवभोगं जायं जायं चावि पासिहिंति, पासित्ता
बिलेहिंतो णिद्धाइस्संति, णिद्धाइत्ता हट्ठतुट्ठा अण्णमण्णं सद्दाविस्संति,
सद्दावित्ता एवं वदिस्संति जाए णं देवाणुप्पिया ! भरहे वासे परूढ-
रुक्ख-गुच्छ-गुम्म-लय-वल्लि-तण-पव्वय-हरिय जाव सुहोवभोगे तं
जे णं देवाणुप्पिया ! अम्ह केइ अज्जप्पमिइ असुभं कुणिमं आहारं
आहारिस्सइ से णं अणेगाहिं छायाहिं वज्जणिज्जेत्ति कट्ठु संठिइं ठवे-
स्संति ठवित्ता भरहे वासे सुहं सुहेणं अभिरममाणा अभिरममाणा
विहरिस्संति ॥ सू० ५७ ॥

वनस्पतिया उत्पन्न हो गई है ऐसा हो जावेगा—तथा उवचिय-तय-पत्त-पवाल-कुर-पुष्प-फल-
-समुदय) परिपुष्ट बलकलो, पत्तो, किसलयो, अकुरो, जोही आदिके बीजो के अग्रभागों, पुष्पो,
और फलों से व्याप्त होकर (सुहोवभोगे याविभविस्सइ) जिसमें त्वक् पत्रादि का उपभोग अना-
यास से है ऐसा वह भरतक्षेत्र हो जावेगा. इस तरह के इस कथन से उत्सर्पिणी के इस द्वितीय
आरक में भरतक्षेत्र में वनस्पतियों का सङ्गाव और उनमें पुष्पफलादिको का सङ्गाव प्रकट किया
गया है और इससे उसमें सुखोपभोगता बतलाई गई है । ५६ ॥

समुदय) परिपुष्ट बलकलो यादोआ, किसलयो, अकुरो, जीहि वगेरेना, भीलोना अथ-भागेःपुष्पो
अने इल विगेरेथी व्याप्त यधने (सुहोवभोगे यावि भविस्सइ) नेभा त्वक् पत्रादिकोना उपभोग
अनायास इयभा यधं शकेशे एवु ते भरतवर्षं यथे. आ अतना आ कथनथी उत्सर्पिणीना
अे द्वितीय आरकभा भरतक्षेत्रभा वनस्पतिओना सङ्गाव अने तेओभा पुष्पफलादिकोना सङ्-
गाव प्रकट करवाभा आवेत्त छे अने एथी तेओभा सुखोपभोगता अताववाभा आवेत्त छे । ५६ ॥

प्रकाशिका टीकाद्विवक्षस्कारः सू० ५७ उत्सर्पिणीदुष्पमाकालगतमनुष्यकर्तृयनिरूपणम् ४९५

छाया—ततः खलु ते मनुजा भरत वर्षं प्ररुद्धगुच्छं गुल्मलता वल्लीतृणपर्वगं हरितौषधिकम् उपचितं त्वक्पत्र-प्रवाला इकुर-पुष्प-फल-समुद्भितं सुखोपभोगं जातं चापि द्रष्टव्यं न्ति दृष्ट्वा विलेभ्यो निर्धाविष्यन्ति निर्धाव्य दृष्ट्वा अन्योऽन्यं शब्दश्रियन्ति शब्दश्रियत्वा एवं वदन्ति जातं खलु देवानुप्रिया भरत वर्षं प्ररुद्ध-वृक्ष-गुच्छ-गुल्म-लता वल्ली तृणपर्वगं हरितं यावत् सुखोपभोगम् तद् यः खलु देवानुप्रिया अस्माकं कोऽपि अप्रभृति अशुभं कुणपम आहारम् आहरिष्यति स खलु अनेकाभिदृष्ट्याभिपर्जनीय इति कृत्वा संस्थितिं स्थापयिष्यन्ति स्थापयित्वा भरते वर्षे सुखं सुखेन अभिरममाणा अभिरममाणा विहरिष्यन्ति सू० ५७।

टीका—“तए णं” इत्यादि । (तए णं) ततः खलु (ते मणुया) ते मनुजाः= भरतवर्षस्थितास्तत्कालीना मनुष्याः (भरहं वासं) भरत वर्षं (परुद्ध-गुच्छं गुल्म-लय वल्लि तृण-पर्वगं हरिय-ओसहीयं) प्ररुद्ध-गुच्छ-गुल्म-लता-वल्ली-तृण-पर्वग-हरितौ-पथि कम् (उवचिय-तय-पत्त-पवालं-कुर-पुष्प-फल-समुद्भयं) उपचितं-त्वक्पत्र-प्रवाला-इकुर-पुष्प फल-समुद्भितं (सुहोवभोगं) सुखोपभोगं (जाय जायं चावि) जातं जातं चापि=प्राचुर्येण समुत्पन्नं चापि (पासिहितं) द्रश्यन्ति=अवलोकयिष्यन्ति, ‘परुद्ध गुच्छ’

अब सूत्रकार यह प्रकट करते हैं कि उत्सर्पिणी के दुष्पमाकाल में उत्पन्न हुए ये मनुष्य इस प्रकार के भारत वर्ष को देखकर क्या करेंगे—

“तए णं ते मणुया भरह वासं परुद्ध गुच्छ-गुल्म-लय-वल्लि” इत्यादि—५७—

टीका—भरत क्षेत्र में स्थित हुए तत्कालीन वे मनुष्य (भरह वास) भरतक्षेत्र को (परुद्ध गुच्छ गुल्मलयवल्लि तृण पर्वग हरिय ओसहीय) परुद्ध गुच्छों वाला, परुद्ध गुल्मोंवाला, परुद्ध लताओं एवं वल्लियों वाला परुद्ध तृण और पर्वग वनस्पतियों वाला, परुद्ध हरित और औषधियोंवाला (उवचिय तय पत्तपवाल कुरपुष्पफलसमुद्भयं) उपचित हुए छालों के समूह उपचित पत्तों के समूह वाला, उपचित हुए प्रवालों वाला, उपचित हुए अकुरों वाला, उपचित पुष्पों वाला, उपचित हुए फलोंवाला, अतएव (सुहोवभोगं जायं जायं चावि पासिहितं) देखेगे तो

इसे सूत्रकार को स्पष्ट करे छे के उत्सर्पिणी ना दुष्पमा कालमा उत्पन्न थयेला ओ मनुष्यो ओ प्रकारना भरतवर्षने ओछने शु करये ?

‘तए णं ते मणुया भरतं वासं परुद्धगुच्छगुल्मलयवल्लि’ इत्यादि सूत्र ॥५७॥

टीका—भरतक्षेत्रमा स्थित थछने-तत्कालीन ते मनुष्ये। (भरह वासं) भरतक्षेत्र (परुद्ध गुच्छ गुल्मलयवल्लितृणपर्वग हरियओसहीयं) प्ररुद्धगुच्छोवाणु प्ररुद्धगुल्मोवाणु, प्ररुद्ध लताओ आने वल्लियो वणु, प्ररुद्ध तृण आने पर्वग वनस्पतियोवाणु, प्ररुद्ध हरित आने औषधियोवाणु (उवचियतयपत्तपवालंकुरपुष्पफलसमुद्भयं) उपचित थयेला छालोना समूह वाणु उपचित थयेला पादोओना समूहवाणु, उपचित थयेला अकुरोवाणु उपचित पुष्पोवाणु प्रवाल वाणु आने उपचित थयेला इलोवाणु उपचित थयेला अकुरोवाणु उपचित थयेला पुष्पोवाणु आने उपचित थयेला फलोवाणु ओथी (सुहोवभोगं जाय जायं चावि पासिहितं) ते

इत्यादि-‘सुहोवभोगं’ इत्यन्तपदत्रयस्यार्थः पञ्चपञ्चाशत्तमे सूत्रेऽवलोकनीय इति (पासित्ता) दृष्ट्वा=अवलोक्य (विलेभ्यः (णिद्धाइस्संति) निर्धाविष्यन्ति=निर्गमिष्यन्ति (णिद्धा. इत्ता) निर्धाव्य=निर्गम्य (इद्वतुद्धा) इद्वतुष्टाः-दृष्टाः=आनन्दिताश्च ते तुष्टाः=सतोपमुपगताश्चेति तथा-आनन्द संतोषं चोपगता इत्यर्थः (अण्गमण्णं) अन्योन्यम् परस्परं (सद्दावित्ति) शब्दयन्ति, (सद्दावित्ता) शब्दयित्वा (एवं वदिस्संति) एवं वदिष्यन्ति=कथयिष्यन्ति, किं कथयिष्यन्ति ? इत्याह ‘जाए णं’ इत्यादि । (जाए णं) जातं खलु (देवाणुप्पिया !) देवानुप्रियाः (भरहे वासे) भरतं वर्षे (परुद्ध-रुक्ख-गुच्छ-गुम्म-ल्य-वल्लित्तण-पव्वय-हरिय जाव सुहोवभोगे) परुद्ध-वृक्ष-गुच्छ-गुल्म-लता-वल्लित्तण-पर्वग-हरित यावत् सुखोपभोगम्, (त जे ण देवाणुप्पिया अम्हं केइ) तद् यः खलु देवानुप्रियाः ! अस्माकं कश्चित्=हे देवानुप्रियाः भरतवर्षस्य वृक्षागुच्छगुल्मलतादिसंपन्नत्वेन सुखोपभोग्यत्वात् अस्माकं मध्ये यः कश्चित् (अज्जप्पमिइ) अद्यप्रभृति=अद्यारभ्य (असुमं कुणिमं आहार) अशुभं कुणपम् आहारम्=अप्रशस्तं मांसाहारम् (आहारिस्सइ) आहरिष्यति (से णं) स खलु (अणेगाहिं छायाहिं) एनेकामिच्छायाभिः=अनेकसख्यक पुरुषच्छाया

यह क्षेत्र सुख से उपभोग करने योग्य हो चुका है इस प्रकार का (पासित्ता) ख्याल करके वे (विलेहिंतो णिद्धाइस्संति) अपने अपने विलो से बाहर निकल आवेगे, और (णिद्धाइत्ता) बाहर निकल कर के फिर वे (इद्वतुद्धा अण्गमण्ण सद्दावित्ति) बड़े ही आनन्द से और सतोष से युक्त हुए आपस में एक दूसरे के साथ विचार विनिमय करेंगे (सद्दावित्ता एवं वदिस्संति) विचार विनिमय करके फिर वे इस प्रकार से एक दूसरे से कहेंगे (जाएण देवाणुप्पिया ! भरहे वासे परुद्धरुक्ख-गुच्छ-गुम्म-ल्य-वल्लित्तण-पव्वय-हरिय-जाव सुहोवभोगे) हे देवानुप्रियो ! भरत क्षेत्र वृक्षों से, गुच्छों से, गुल्मों से, लताओं से, वल्लियों से, तृणों से एवं हरित दूर्वादिकों से युक्त होकर सुखोपभोग बन गया है (त जे णं देवाणुप्पिया अम्हं केइ अज्जप्पमिइ असुमं कुणिमं आहारं आहारिस्सइ) अतः अब जो कोई है देवानुप्रियो ! हम लोगों में से आज से लेकर अशुभ, अप्रशस्त-आहार करेगा (से णं अणेगाहिं छायाहिं वज्जणिज्जति) वह अनेक पुरुषों

अनुभूयन्नेति के आ क्षेत्र सुखोपभोग्यं यर्धं युक्तं छे तो आ शीते (पासित्ता) ख्याल करीने तेओ। (विलेहिंतो णिद्धाइस्संति) पांतपोताना भिदोभाथी ण्हारनीकणी आवशे अने (णिद्धाइत्ता) ण्हार निक्खीने पछी तेओ। (इद्वतुद्धा अण्गमण्णं सद्दावित्ति) ण्हुअ आन हित अने स तुष्ट थथेलां तेओ। परस्परं जेठ-भीलनी साथे विचार विनिमय करे (सद्दावित्ता, एवं वदिस्संति) विचार विनिमय करीने पछी तेओ। आ प्रभाणे जेठ भीलने कडेसे (जए ण देवाणुप्पिया ! भरहे वासे परुद्धरुक्खगुच्छगुल्मल्यवल्लित्तणपव्वयहरिय जाव सुहोवभोगे) हे देवानुप्रियो। भरतक्षेत्रनक्षेत्रा, गुच्छाथी, गुल्माथी लताओथी वल्लिओथी तेमअ हरित हर वृद्धिओ थी युक्त यर्धने सुखोपभोग्यं अनी गथु छे (तज्जेण देवाणुप्पिया अम्हं केइ अज्जप्पमिइ असुमं कुणिमं आहारं आहारिस्सइ) ओथी डवेथी आपणुंभाथी केअ पणुं जे हे देवानुप्रियो ! अशुभ-अप्रशस्त ओहार कराने (से णं अणेगाहिं छायाहिं वज्जणिज्जति) ते अनेक

प्रमाण व्यवधाय (वज्जणिज्जेत्ति कट्टु) वर्जनीया इति कृत्वा स्वस्वसमूहतः पृथक्करणीयाः तत्संसर्गः सर्वथा वर्जनीय इति निश्चित्य (संठिं ठवेस्संति) संस्थितिं स्थापयिष्यन्ति व्यवस्थां करिष्यन्ति (संठिं ठवेत्ता) संस्थितिं स्थापयित्वा (भरहे वासे) भरते वर्षे (सुह सुहेणं) सुखं सुखेन सुखं यथा स्यात्तथा सुखेन—अनायासेन (अभिरममाणा २) अभिरममाणाः २—क्रोडन्तः २ (विहरिस्संति) विहरिष्यन्ति कालं यापयिष्यन्ति ॥ सू० ५७ ॥

मूलम्—तीसेणं भंते ! समाए भरहस्स वासस्म केरिसए आयार—भावपडोयारे भविस्सइ ? गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे भविस्सइ जाव कित्तिमेहिं चेव अकित्तिमेहिं चेव । तीसेणं भंते ! समाए मणुयाणं केरिसए आयारभावपडोयारे भविस्सइ ? गोयमा ! तेषिणं मणुयाणं छव्विहे संघयणे छव्विहे संठाणे बहुईओ रयणीओ उद्धं उच्चत्तेणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं साइरेणं वाससयं आउयं पालेहिंति, पालित्ता अप्पे गइया णिरयागामी जाव अप्पेगइया देवगामी ण सिज्झंति ॥ सू० ५८ ॥

छाया—तस्यां सल भदन्त ! समायां भरतस्य वर्षस्य कीदृशक आकारभावप्रत्यवतारो भविष्यति ? गौतम ! बहुसमरमणोयो भूमिभागे भविष्यति यावत् कृत्रिमैश्चैव अकृत्रिमैश्चैव । तस्यां खलु भदन्त समायां मनुजानां कीदृशक आकारभावप्रत्यवतारो भविष्यति ? गौतम ! तेषां खलु मनुजानां, षड्विधं संहनन, षड्विधं सस्थान बद्धि रत्नी उर्ध्वमुच्चत्वेन, जघन्येन, अन्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण सातिरेकं वर्षशतम् आयुष्कं पालयिष्यति, पालयित्वा अत्येकके निरयगामिनो यावत् अत्येकके देवगामिनः न सिध्यन्ति ॥ ५८ ॥

की छाया प्रमाण में वर्जनीय हो जावेगा—अर्थात् हम लोग अपने समुदाय से उसे पृथक्कर देगे और उससे कोई सम्बन्ध नहीं रखेगे. इस प्रकार (कट्टु) से निश्चयकरके (संठिं ठवेस्सति) वे व्यवस्था करेंगे । इस प्रकार की (संठिं ठवेत्ता भरहे वासे) व्यवस्था करके फिर वे (सुह सुहेणं अभिरममाणा २ विहरिस्सति) इस भरत क्षेत्र में बड़े ही आनन्द के साथ बिना किसी बाधा के विविध प्रकार की क्रीडाओं को करते हुए अपने समय को निकालेंगे ॥ ५७ ॥

इस उत्सर्पिणी के दुष्पमाकाल में भरत क्षेत्र के और उसमें स्थित मनुष्यों के आकार भाव

अनेक पुत्रों ने छाया प्रभाषणों में वर्जनीय यह बात जोटखे है और तेने पोताना समुदाय-भाषी जुहा जुहा करी भूकीशु अने तेना साथे केहिं पणु जातनेो संभंध करीशु नहीं आ प्रभाषे । निश्चय करीने (संठिं ठवेस्संति) तेजो व्यवस्था करेशे, आ प्रभाषे (संठिं ठवेत्ता भरहे वासे) व्यवस्था करीने यही ते (सुह सुहेण अभिरममाणा २ विहरिस्सति) आ भरत क्षेत्रमा भइ न आनंदपूर्वक व्याधा रहितथने विविध प्रकारनी क्रीडाओ करतां पोताना अभयने व्यतीत करेशे ॥ ५७ ॥

उत्सर्पिणीना दुष्पमाकालमा भरत क्षेत्रमा अने तेमां स्थित मनुष्यना आकारभाव

ટીકા—“તીસે જં મંતે !” ઇત્યાદિ । (તીસે જં મંતે ! સમાપ) તસ્યાં ચ્છલુ મદન્ત સમાયાં ! હે મદન્ત ઉત્સર્પિણી સંવન્ધિન્યાં દુષ્પમાયાં સમાયાં (મરહસ્સ વાસસ્સ) મગ્-
તસ્ય વર્પસ્ય=મરતક્ષેત્રસ્ય (કેરિસપ આયારમાવપહોયારે) કીદ્દશક આકારમાવપ્રત્યવતારઃ
પ્રજ્ઞપ્તઃ=પ્રચ્છિતઃ ? (વહુસમરમણિજ્જે ભૂમિભાગે મવિસ્સહ) વહુસમરમણીયો ભૂમિભાગો
મવિષ્યતિ (જાવ કિત્તિમેહિચેવ અકિત્તિમેહિચેવ) યાવત્ કૃત્રિમૈશ્વેવ અકૃત્રિમશ્ચેવ । અત્ર
યાવત્પદેન (સે જહા નામપ આલિગપુક્કલેદ વા) ઇત્યારમ્ય (કિત્તિમેહિ ચેવ) ઇત્યવધિકઃ
પાઠઃ સંગ્રાહ્ય ઇતિ । ગૌતમસ્વામી પુનઃ પૃચ્છતિ—(તીસેજં મંતે ! સમાપ) તસ્યાં ચ્છલુ
મદન્ત । સમાયાં=દુષ્પમાયાં સમાયાં (મણુયાણં) મનુજાનાં (કેરિસપ) કીદ્દશકઃ (આયા-
રમાવપહોયારે) આકારમાવપ્રત્યવતારો મવિષ્યતિ ? મગવાનાહ (ગોયમા ।) ગૌતમ ।
(તેસિ જં મણુયાણં) તેપાં ચ્છલુ મનુજાનાં (છન્વિહે) પહ્વિધં=પદ્મપ્રકારકં (સંઘયણે)

પ્રત્યવતાર કે વિષય મેં સૂત્રકાર કથન કરતે હૈ ‘તીસેજં મંતે ! સમાપ મરહસ્સ વાસસ્સ કેરિસપ’ ।

ટીકાર્થ—ગૌતમ ને પ્રમુ સે એસા પૂછા હૈ (તીસે જં મંતે ! સમાપ મરહસ્સ વાસસ્સ કેરિસપ આયા-
રમાવપહોયારે મવિસ્સહ) હે મદન્ત ! ઉત્સર્પિણી સંવન્ધી હસ દુષ્પમા કાલ મેં મરત ક્ષેત્ર કો આકાર
માવ કા પ્રત્યવતાર સ્વરૂપ—કૈસા હોગા ? હસ પ્રકાર ગૌતમ કે પૂછને પર પ્રમુ ને કહા હૈ (ગોય-
મા । વહુસમરમણિજ્જે ભૂમિભાગે મવિસ્સહ) હે ગૌતમ ! હસ કાલ મેં મરત ક્ષેત્ર કા ભૂમિભાગ વહુ
સમરમણીય હોગા (જાવ કિત્તિમેહિ ચેવ અકિત્તિમેહિ ચેવ) યાવત્ વહ કૃત્રિમ અકૃત્રિમ મણિયો સે
સુશોભિત હોગા યહાં યાવત્પદ સે યહી “આલિગપુક્કલેદવા” હમ પાઠ સે લેકર “કિત્તિમેહિ ચેવ”
તક કા પાઠ ગૃહીત હુઆ હૈ અવ ગૌતમ પ્રમુ સે એસા પૂછતે હૈ—(તીસે જં મંતે ! સમાપ મણુયાણ
કેરિસપ આયારમાવપહોયારે મવિસ્સહ) હે મદન્ત ! હસ દુષ્પમા નામ કે આરે મેં મનુષ્યોં કા આકાર
માવ કા પ્રત્યવતાર સ્વરૂપ કૈસા હોગા ? હસકે ઉત્તર મેં પ્રમુ કહતે હૈ—(ગોયમા । તેસિજં મણુયાણં
છન્વિહે સંઘયણે છન્વિહે સંઘાણે, વહુઈઓ રયણીઓ હહં ઉચ્ચતેણં) હે ગૌતમ ! હન મનુષ્યોં કે

પ્રત્યવતાર ના સંબધમા સૂત્રકાર કથન કરે છે—

‘તીસેજં મંતે ! સમાપ મરહસ્સ વાસસ્સ કેરિસપ, ઇત્યાદિ સૂત્ર ૧૮

ટીકાર્થ—ગૌતમે પ્રભુને આ પ્રમાણે પ્રશ્ન કર્યો (તીસેજં મંતે ! સમાપ મરહસ્સ વાસસ્સ
કેરિસપ આયારમાવપહોયારે મવિસ્સહ) હે મદન્ત ઉત્સર્પિણી સંવન્ધી એ દુષ્પમા કાળમા
મરત ક્ષેત્રના આકારભાવના પ્રત્યવતાર એટલે કે સ્વરૂપ કેવું હશે ? આ પ્રમાણે ગૌતમસ્વામીએ
પ્રશ્ન કર્યા પછી પ્રભુએ કહ્યું (ગોયમા । વહુસમરમણિજ્જે ભૂમિભાગે મવિસ્સહ) હે ગૌતમ !
એ કાળમા મરત ક્ષેત્રનો ભૂમિભાગ વહુસમરમણીયથશે (જાવ કિત્તિમેહિ ચેવ અકિત્તિમેહિ ચેવ)
યાવત્ તે કૃત્રિમ અકૃત્રિમ મણિઓથી સુશોભિત થશે અહીં યાવત્ પદ્યમાં “આલિગપુક્કલેદવા”
પાઠથી લઈને “કિત્તિમેહિ ચેવ” સુધીનો પાઠ ગૃહીત થયો છે અને ગૌતમ સ્વામી એમ પૂછે છે
(તીસેજં મંતે ! મણુયાણ કેરિસપ આયાર માવ પહોયારે હે મદન્ત ! તે દુષ્પમા નામક આરામા
મનુષ્યે ના આકાર ભાવના પ્રત્યવતાર (એટલે કે સ્વરૂપ કેવું હશે ? એના જવ બમા પ્રભુ કહે છે
(ગોયમા । તેસિજં મણુયાણં છન્વિહે સંઘયણે, છન્વિહે સંઘાણે વહુઈઓ રયણીઓ હહં ઉચ્ચતેણં)

सहनन शरीरास्थिरचना भविष्यति, (छन्विहं) पइविधं पट्टप्रकारकम् (संठाणं) संस्थानम्
आकारो भविष्यति, तथा ते मनुजाः (बहुइओ रयणीओ) बह्वी रत्नीः (उद्ध उच्चतेणं)
ऊर्ध्वमुच्चत्वेन भविष्यति, तथा (जहण्णेणं) जघन्येन (अंतोमुहुत्तं) अन्तर्मुहूर्तम् (उक्को-
सेणं) उत्कर्षेण (साइरेगं वाससयं) सातिरेकं वर्षशतं किञ्चिदधिकं वर्षगतम् (आउयं)
आयुष्क जीवितकालं (पालेहिंति) पालयिष्यन्ति, (पालित्ता) पालयित्वा (अप्पेगइया)
अप्येकके केचित् (गिरयगामी) निरयगामिन नारका (जाइ) यावत्-यावत्पदेन-अप्ये-
कके तिर्यग्गामिनः अप्येकके मनुष्यगामिन इति संग्राह्यम्, तथा—(अप्पेगइया देवगामी)
अप्येकके देवगामिनो भविष्यन्ति, परन्तु तत्र काले संजाता मनुष्याः (ण सिज्झन्ति)
न सिध्यन्ति सिद्धिगतिगामिनो न भवन्तीति ॥ सू० ५८ ॥

अथ दुष्पमसुषमां समां वर्णयति—

मूलम्-तीसेणं समाए एककवोसाए वाससहस्सेहि काले वीइक्कंते
अणंतेहि वण्णपज्जवहि जाव पखिइडेमाणे २ एत्थणं दूसमसुसमा णामं
समा काले पडिवज्जिस्सइ समणाउसो तीसे णं भंते ! समाए भरहस्स
वासस्स केरिसए आशारभावपडोयारे भविस्सइ ? । गोयमा । बहुसमर-
मणिज्जे जाव अकित्तिमेहिं चेव । तेसि णं भंते ! मणआणं केरिसए
आयारभावपडोयारे भविस्सइ ? गोयमा ! तेसिणं मणुयाणं छव्विहे संघ
यणे, छव्विहे संठाणे, बहुइं धणूइं उद्धं उच्चत्तेणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं

६ प्रकार का तो सहनन होगा, ६ प्रकार का संस्थान होगा और शरीर की ऊँचाई अनेक हस्त
प्रमाण होगी. (जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं साइरेग वाससय आउय पालेहिंति) इनकी आयु
का प्रमाण जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त का और उत्कृष्ट कुछ अधिक १०० वर्ष का होगा (पालित्ता
अप्पेगइया गिरयगामी, जाव अप्पेगइया देवगामी) आयु की समाप्ति के अनन्तर कितनेक तो इनमें
से नरकगति में जावेंगे यावत् कितनेक तिर्यग्गति में जावेगे, कितनेक मनुष्यगति में जावेगे और
कितनेक देवगति में जावेंगे परन्तु (न सिज्झन्ति) सिद्धगति में कोई नहीं जावेगा ॥ सू० ५८ ॥

हे जीतभ ! ते मनुष्योने ६ प्रकारनु तो सहनन थसे, ६ प्रकारनु संस्थान थसे अने शरीरनी
ज्याई अनेक हस्त प्रमाणु केटवी हसे (जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेण साइरेग वास-
सयं आउय पालेहिंति) जेभनी आयुध्यनु प्रमाणु जघन्यथी जेक अंतर्मुहूर्तनु अने
उद्धं उच्चत्तेणं १०० वर्ष केटवी हसे (पालित्ता अप्पेगइया गिरयगामी, जाव अप्पेगइया
देवगामी) आयुध्यनी समाप्ति पछी केटवाक तो जेभनाभाथी नरक गतिमा जेथे यावत्
केटवाक तिर्यग् गतिमा जेथे, केटवाक मनुष्य गतिमा जेथे अने केटवाक देवगतिमा जेथे
पथु (न सिज्झन्ति) सिद्धगति केई जेवनी थकथे नहि ॥ ५८ ॥

उक्कोसेण पुव्वकोडी आउयं पालेहिंति, पालित्ता अप्पेगइआ णिरयगामी जाव अंत करेहिंति । तीसेणं समाए तओ वंसा समुपज्जिस्संति, तं जहा-
तित्थगरवंसे चक्कवट्ठिवंसे दसाखंसे । तीसेणं समाए तेवीसं सित्थगरा,
एक्कारस चक्कवट्ठी णव बलदेवा णव वासुदेवा समुपज्जिस्संति । सू० ५९।

छाया—तस्यां खलु समायाम् एकविंशत्या वर्षसहस्रैः काले व्यतिक्रान्ते अनन्तैर्वर्णपर्यवैर्या
वत् परिवर्द्धमान परिवर्द्धमान अत्र खलु दुष्पमसुपमा नाम समा काल प्रतिपत्स्यते श्रमणा-
युष्मन् ! तस्यां खलु भदन्त ! समायां भरतस्य वर्षस्य कीदृश आकारभावप्रत्यवतारो भवि-
ष्यति ? गौतम ! बहुसमरमणीयो यावत् अकृत्रिमैश्चैव । तेषां खलु भदन्त ! मनुजानां कीदृशक
आकारभावप्रत्यवतारो भविष्यति ? । गौतम ! तेषां खलु मनुजानां षड्विध संहननं षड्विध
संस्थानं बहूनि धनूपि ऊर्ध्वमुच्चत्वेन जघन्येन अन्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण पूर्वकोटोम् आयुष्क
पालयिष्यन्ति पालयित्वा अध्येकके निरयगमिनो यावत् अन्तं करिष्यन्ति । तस्यां खलु
समायां त्रयो वशा समुत्पत्स्यन्ते तद्यथा—तीर्थकरवंश चक्कवर्त्तिवंश २, दशार्हवश- तस्यां
खलु समायां त्रयोविंशति स्तोर्थकराः एकादश चक्कवर्त्तिनः नव बलदेवाः नव वासुदेवा
समुत्पत्स्यन्ते ॥ सू ५९।

टीका — “तीसे णं समाए” इत्यादि । (समणाउसो) श्रमणायुष्मन् हे आयुष्मन्
श्रमण (तीसेणं समाए) तस्यां खलु समायाम् (एक्कवीसाए वाससहस्सेहिं) एकविंशत्या
वर्षसहस्रैः प्रमिते (काले वीइक्कंते) काले व्यतिक्रान्ते (अणंतेहिं वण्णपज्जवेहिं) अन-
न्तैर्वर्णपर्यवैः (जाव) यावत्—यावत्पदेन (अणंतेहिं गधपज्जवेहिं) इत्यरभ्य (अणंतपरिवु-
ह्द्वीए) इत्यन्तः पाठः संग्राह्यः, (परिवह्द्वेमाणे२) परिवर्द्धमानः २ (एत्थ ण) अत्र खलु=
अस्मिन् भरते वर्षे खलु (दूसमसुसमा णामं समा काले) दुष्पमसुपमा नाम समा कालः

॥ उत्सर्पिणी के दुष्पमसुपमा का वर्णन—

‘तीसे णं समाए एक्कवीसाए वाससहस्सेहिं काले वीइक्कंते’ इत्यादि सूत्र—५९

टीकार्थ—(समणाउसो) हे आयुष्मन् श्रमण (तीसेणं समाए) उम उत्सर्पिणी में (एक्कवीसाए
वाससहस्सेहिं) २१ हजार वर्ष प्रमाण वाला जब (काले वीइक्कंते) यह दुष्पमा नाम का द्वितीय काल
समाप्त हो जावेगा तब (अणंतेहिं वण्णपज्जवेहिं जाव परिवह्द्वेमाणे२ एत्थण दूसमसुसमा णामं समा
काले पडिवज्जिस्सइ) अनन्त वर्ण पर्यायो से यावत् अनन्त गध आदि पर्यायो से अनन्त गुण रूप में

उत्सर्पिणीना दुष्पमसुपमानुं वण्णं—

‘तीसेणं समाए एक्कवीसाए वाससहस्सेहिं काले वीइक्कंते’ इत्यादि सूत्र ॥५९॥

टीकार्थ— (समणाउसो) हे आयुष्मन् श्रमण ! (तीसे णं समाए) ते उत्सर्पिणीमां
(एक्कवीसाए वाससहस्सेहिं) २१ हजार वर्ष प्रमाणवाला न्याये (काले वीइक्कंते) ये
दुष्पमा नामके द्वितीयकाल समाप्त यद्यं न्ये त्थारे (अणंतेहिं वण्णपज्जवेहिं जाव परिवह्द्वे-
माणे २ एत्थ णं दूसमसुसमा णामं समा काले पडिवज्जिस्सइ) अनंत वण्ण पर्यायोथी यावत्
अनंत गध आदि पर्यायोथी अनंत शुष्प रूपमां वृद्धिगत थेतो आ भरतक्षेत्रमां दुष्पम

(पण्डितजिज्ञासुः) प्रतिपत्स्यते समापन्नो भविष्यति । (तीक्ष्णं भंते ! समाप्) तस्य
खलु भदन्त ! समायां (भरहस्स वासस्स) भरतस्य वर्षस्य (केरिसप्) कीदृशकः (आया
रभावपडोयारे) आकारभावप्रत्यवतारो (भविस्सइ) भविष्यति ? इति गौतम
प्रश्ने भगवानाह—‘गोयमा ! गौतम ! (बहुसमरमणिज्जे जाव अक्कित्तिमेहिं चेव)
बहुसमरमणीयो यावत् अकृत्रिमैश्चैव । अत्र यावत्पदेन (भूमिभागे भविस्सइ)
इत्यरभ्य (क्वित्तिमेहिं चेव) इत्यन्त ! पाठः संग्राह्यः । पुनर्गौतमस्वामी पृच्छति तेषां
भंते ! मणुयाणं तेषां खलु भदन्त ! मनुजानां हे भदन्त ! तेषामुत्सर्पिणीदुष्पम
सुपमाकालभाविनां मनुष्याणां (केरिसप् आया रभावपडोयारे) कीदृशक आकारभाव
प्रत्यवतारो (भविस्सइ) भविष्यति ? । भगवानाह— (गोयमा ।) गौतम (तेसि णं
मणुयाण) तेषां खलु मनुजानां (छव्विहे संघयणे) पइविधं संहनन (छव्विहे सठाणे
पइविधं सस्थानं च भविष्यति, तथा-ते मनुजाः (बहुईं धणूईं उड्ढं उच्चत्तेणं) वहूनि

वृद्धि गत होता हुआ इस भरत क्षेत्र में दुष्पमसुपमा नाम का तृतीय काल प्राप्त हो जावेगा
(तीक्ष्णं भंते ! समाप् भरहस्स वासस्स केरिसप् आया रभावपडोयारे भविस्सइ) गौतमने प्रश्नु
से ऐसा पूछा है कि हे भदन्त ! जब यह काल भरतक्षेत्र में अवतीर्ण हो जावेगा तो भरतक्षेत्र का
आकार भाव का प्रत्यवतार स्वरूप कैसा होगा? इस प्रश्न के उत्तर में प्रश्नु ने कहा है हे गौतम!
इस आरे में भरतक्षेत्र का भूमिभाग बहु सम रमणीय होगा यावत् अकृत्रिम पंचवर्णों के मणियों
से वह उपशोभित होगा. यहा यावत्पद से “भूमिभागे भविस्सइ” यहां से लेकर “क्वित्तिमेहिं
चेव” तक का पाठ गृहीत हुआ है. अब गौतमस्वामी पुनः प्रश्नु से ऐसा पूछने हैं— (तेषां
भंते ! मणुयाणं केरिसप् आया रभावपडोयारे भविस्सइ) हे भदन्त ! इस काल के मनुष्यों का
स्वरूप कैसा होगा ? इसके उत्तर में प्रश्नु कहते हैं— (गोयमा ! तेषां मणुयाणं छव्विहे सघ-
यणे छव्विहे सठाणे बहुईं धणूईं उड्ढं उच्चत्तेणं) हे गौतम ! उत्सर्पिणी के दुष्पमासुपमा कालभावी
मनुष्यों के छह प्रकार के संहनन होंगे छह प्रकार के सस्थान होंगे—तथा इनके शरीर की

सुषमानाभक तृतीय काल प्राप्त थये (तीक्ष्णं भंते ! समाप् भरहस्स वासस्स केरिसप् आया र-
भावपडोयारे भविस्सइ) गौतमे प्रश्नुने आ प्रभाण्णे प्रश्न कर्थीं के हे भदन्त ! आया रे अये काल
भरतक्षेत्रमा अवतीर्ण थईं अथे तयारे भरतक्षेत्रमा आकार-भावने। प्रत्यवतार ओटवे के
स्वरूप केवुं इथे ? आ भतना प्रश्नना जवाभमां प्रश्नु कडे थे—हे गौतम ! अये आशमां
भरतक्षेत्रमा भूमिभाग बहु समरमणीय थये. यावत् अकृत्रिम पायवर्णानां भव्तिओथी ते
उपशोभित थये अही यावत् पइथी (भूमिभागे भविस्सइ) अही थी भाडीने (क्वित्तिमेहिं
चेव) सुधीने। पाठ गृहीत थये थे इवे गौतम स्वामी पुन प्रश्नुने आ भतने। प्रश्न करे
थे—(तेसि ण भंते ! मणुयाणं केरिसप् आया रभावपडोयारे भविस्सइ) हे भदन्त ! आ कालमा
मनुष्येणु स्वरूप केवुं इथे ? अयेना जवाभमा प्रश्नु कडे थे—(गोयमा ! तेषां मणुयाणं
छव्विहे संघयणे छव्विहे सठाणे बहुईं धणूईं उड्ढं उच्चत्तेणं) हे गौतम ! उत्सर्पिणीना
दुष्पमा सुपमा कालभावी मनुष्यानां ६ प्रकारना संहनना थये, ६ प्रकारना सस्थानां

ધનૂપિ ઉર્ધ્વમુચ્ચત્વેન ભવિષ્યન્તિ, તથા—(જહ્ણણેણં અંતોમુહુત્તં ઉચ્કોસેણં પુન્નવકોડી) જઘન્યેનાન્તર્મુહૂર્ત્તમ્ ઉત્કર્ષેણ પૂર્વકોટિમ્ (આડય) આયુષ્ક (પાલેહિતિ) પાલયિષ્યન્તિ (પાલિત્તા) પાલયિત્વા (અપ્પેગહયા ધિરયગામી જાવ અંત કરેહિતિ) અપ્યેકકે નિરયગામિનો યાવત્ અન્તં કરિષ્યન્તિ, યાવત્પદસગ્રાહપાઠમનુષ્ટત્યૈવમર્થો બોધ્યસ્તથાદિ—કેચિદ્ મનુષ્યા નરકગામિનો ભવિષ્યન્તિ, કેચિત્ તિર્યગામિનો ભવિષ્યન્તિ, કેચિન્મનુષ્યગામિનઃ કેચિચ્ચ દેવગામિનો ભવિષ્યન્તિ, કેચિચ્ચ સિદ્ધિગતિગામિનો ભવિષ્યન્તીતિ । તસ્યાં સમાયા યે મનુષ્યવંશાઃ પ્રચલિષ્યન્તિ તાનાહ—(તીસેણં સમાપ) તસ્યાં સ્વલ્લ સમાયા (તઓ વંસાઃ) ત્રયો વંશાઃ (સમુપ્પજ્જિસ્સંતિ) સમુત્પત્સ્યન્તે સમુત્પન્ના ભવિષ્યન્તિ (તં જહા) તથથા—(તિત્થગરવંસે) તીર્થકરવંશઃ તીર્થદ્ધરસન્તાનપરમ્પરા (ચક્કવટ્ઠિવંસે) ચક્રવર્તિવંશઃ ચક્રવર્તિસન્તતિપરમ્પરા, (દસારવંસે) દશાર્હવંશઃ યદુવંશશ્ચેતિ । તસ્યાં સમાયાં કિયત્કિયત્સંખ્યઃ કાશ્ચક્રવર્ત્યાદયઃ સમુત્પત્સ્યન્તે ? इत्याह—(तीसेणं भंते ! समाप) तस्यां

ऊँचाई अनेक धनुष प्रमाण होगी. (जह्णणेण अतो मुहुत्त उचकोसेण पुन्वकोडी आडय पात्रेहिति) इनकी आयु जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त की और उत्कृष्ट से एक पूर्वकोटि तक की होगी (पालित्ता अप्पेगहया धिरयगामी, जाव अंत करेहिति) इतनी लम्बी आयु का भोग करके जब ये मरेंगे तो इनमें से कितनेक मनुष्य तो नरक में जावेगे और किननेक मनुष्य यावत् समस्त शारीरिक और मानसिक दुखों का विनाश करेंगे यहाँ यावत्पद से सम्राट्ट पाठ इस प्रकार से हैं—“केचित् मनुष्या. नरक गामिनो भविष्यन्ति, केचित् तिर्यगामिनो भविष्यन्ति, केचित् मनुष्यगामिनो भविष्यन्ति केचित् देवगामिनो भविष्यन्ति, केचित् सिद्धगतिगामिनो भविष्यन्ति” इस यावत्पद गृहीत पाठ का अर्थ स्पष्ट है. (तीसेण समाप तओ वता समुप्पज्जिस्सति) उस उत्सर्पिणी काल के इस तृतीय आरक में तीन वंश उत्पन्न होंगे—(तं जहा) जो इस प्रकार से है—(तिथ्यगरवंसे, चक्कवट्ठिवंसे) एक तीर्थकर वंश, द्वितीय चक्रवर्ती वंश तृतीय दशार्ह वंश—यदुवंश (तीसे ण समाप

થશે તેમ જ એમના શરીરની ઉંચાઈ અનેક ધનુષ પ્રમાણ જેટલી હશે (જહ્ણણેણં અતો મુહુત્ત ઉચ્કોસેણં પુન્નવકોડી આડય પાલેહિતિ) એમનું આયુષ્ય જઘન્યથી એક અન્તર્મુહૂર્ત જેટલું અને ઉત્કૃષ્ટથી એક પૂર્વકોટિ સુધી હશે (પાલિત્તા અપ્પેગહયા ધિરયગામી, જાવ અંત કરેહિતિ) આટલું લીધે આયુષ્ય ભોગવીને જ્યારે એઓ મરણ પામશે ત્યારે એમના માંથી કેટલાક મનુષ્યો તો નરકમાં જશે અને કેટલાક મનુષ્યો યાવત સમસ્ત શારીરિક અને માનસિક દુખોનો વિનાશ કરશે અહીં યાવત્ પદથી સમ્રાટ્ટ પાઠ આ પ્રમાણે છે— “કેચિત્ મનુષ્યાઃ નરકગામિનો ભવિષ્યન્તિ, કેચિત્ તિર્યગામિનો ભવિષ્યન્તિ, કેચિત્ મનુષ્યગામિનો ભવિષ્યન્તિ, કેચિત્ દેવગામિનો ભવિષ્યન્તિ કેચિત્ સિદ્ધગતિગામિનો ભવિષ્યન્તિ, યાવત્ પદથી ગૃહીત એ પાઠનો અર્થ સ્પષ્ટ જ છે. (તીસેણં સમાપ તઓ વસા સમુપ્પજ્જિસ્સંતિ) તે ઉત્સર્પિણી કાળના એ તૃતીય આરકમાં ત્રણ વંશો ઉત્પન્ન થશે (તં જહા) તે આ પ્રમાણે છે (તિત્થગરવંસે, ચક્કવટ્ઠિ વંસે, દસારવંસે) એક તીર્થકર વંશ, દ્વિતીય ચક્રવર્તીવંશ અને તૃતીય દશાર્હવંશ યદુવંશ. (તીસેણં સમાપ તેવીસં

खलु भदन्त ! समायां (तेवीसं तित्थगरा) त्रयोविंशतिस्तीर्थकराः (एकरास चक्रवर्ती)
एकादश चक्रवर्तिनः (णव वलदेवा) नव वलदेवाः नवसंख्यका वलदेवाः (णव वासुदेवा)
नव वासुदेवाः नवसंख्यका वासुदेवाश्च (समुपज्जिस्सन्ति) समु-पत्स्यन्ते उत्पन्ना भवि-
ष्यन्तीति ॥ सू० ५९ ॥

अथ सुषमदुष्पमाकालं वर्णयति—

मूलम्—तीसे णं, समाए सागरोवमकोडाकोडीए वायालोमाए
वाससहस्सेहिं ऊणियाए काले वीइक्कन्ते अणन्तेहिं वण्णपज्जवेहिं जाव
अणंतगुणपरिवुद्धीए परिवुद्धेमाणे २ एत्थ णं सुषमदूसमा णायं समा-
काले पडिवज्जिस्सइ समणाउसो ! सा णं समा तिहा विभजिस्सइ—पढमे
तिभागे, मज्झिमे तिभागे पच्छिमे तिभागे । तीसे णं भन्ते ! समाए पढमे
तिभाए भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ ? गोयगा !
बहुसमरमणिज्जे जाव भविस्सइ, मणुयाणं जोवेव ओसप्पिणी पच्छिमे
तिभागे वत्तव्वया सा भाणियव्वा, कुलगस्वज्जा उसभसामिवज्जा । अण्णे-
पढन्ति.तंजहा तीसे णं समाए पढमे तिमाए इमे पण्णरस कुलेगरा समुपज्जि
स्सन्ति तं जहा—सुमइं जाव उसभे सेसं तं चेव दंडणोइओ पडिलोमाओ
णेयव्वाओ. तीसे णं समाए पढमेतिभागे रायधम्मे जाव धम्मचरणे य
वोच्छिज्जिस्सइ । तीसे णं समाए मज्झिमपच्छिमेसु तिभागेसु जाव पढम-
मज्झिमेसु वत्तव्वया ओसप्पिणीए सा भाणियव्वा । सुसमा तद्देव, सुस-
मासुसमावि तद्देव जाव छव्विहा मणुस्सा अणुमज्जिस्सन्ति जाव सण्णि
चारी ॥ सू० ६० ॥

छाया—तत्थं खलु समायां सागरोपमकोटी कोट्यां द्विवत्वारिंशता वर्षसहस्रैरनिकायां
काले व्यतिक्रान्ते अनन्तैर्वर्णय्यैर्वर्षावत् अनन्तगुणपरिवुद्ध्या परिवर्द्धमान परिवर्द्धमान अत्र
तेवीस तित्थगरा, एकरास, चक्रवर्ती, णव वलदेवा, णव वासुदेवा समुपज्जिस्सन्ति) इति
उत्सर्पिणी काल के इस तृतीय आरक में २३ तार्थक ११ चक्रवर्ती, नौ वलदेव, और नौ
वासुदेव उत्पन्न होंगे ॥ ५९ ॥

तित्थगरा, एकरास चक्रवर्ती णव वलदेवा णव वासुदेवा समुपज्जिस्सन्ति) ते उत्सर्पिणी
छाया अ तृतीय अ २३ तार्थक ११ चक्रवर्ती, नौ वलदेवा अने नौ वासुदेवा
उत्पन्न होंगे ॥ ५९ ॥

खलु सुषमदुष्पमानाम समा कालः प्रतिपत्स्यते श्रमणायुष्मन् । सा खलु समा त्रिधा विभक्ष्यते प्रथमस्त्रिभागः १ मध्यमस्त्रिभागः पश्चिमस्त्रिभागः । तस्यां खलु भदन्त । समायां प्रथमे त्रिभागे भरतस्य वर्षस्य कीदृशक आकारभावप्रत्यवतारो भविष्यति गौतम । बहुसमरमणो यो यावद् भविष्यति मनुजानां या एव उत्सर्पिण्यां पश्चिमे त्रिभागे वक्तव्यता सा भणितव्या कुलकरवर्जा ऋषभस्वामिवर्जा । अन्ये पठन्ति तस्यां खलु समायां प्रथमे त्रिभागे इमे पञ्चदश कुलकराः समुत्पत्स्यन्ते तद्यथा सुमति यावद् ऋषभः शेष तदेव दण्डनोतय प्रतिलोमा नेतव्या तस्या खलु समायां प्रथमे त्रिभागे राजधर्मो यावत् धर्मचरणं च व्युच्छेत्स्यति । तस्यां खलु समाया मध्यमपश्चिमयोस्त्रिभागयोर्भावत् प्रथममध्यमयोर्वक्तव्यता अवसर्पिण्यां सा भणितव्या सुषमा तथैव सुषमसुषमा तथैव यावत् पट्विधा मनुष्या अनुसङ्क्ष्यन्ति यावत् संज्ञिचारिणः ॥सू० ६०॥

टीका— “तीसेणं समाए” इत्यादि । (समणाउसो) श्रमणायुष्मन् । हे आयुष्मन् ! (तीसेणं समाए) तस्यां खलु समायां तस्यां दुष्पमसुषमायां खलु समायां (सागरोवमकोडाकोडीए) सागरोपमकोटीकोट्यां (बायालीसाए वाससहस्सेहि) द्विचत्वारिंशता वर्षसहस्रैः द्विचत्वारिंशत्सहस्रवर्षैः (ऊणियाए) ऊनिकायां न्यूनायां (काले वीइ वकंते) कालव्यतिक्रान्ते व्यतीते सति—द्विचत्वारिंशद्वर्षसहस्रोने दुष्पमासुषमारूप काले व्यतीते सति (अणंतेहि वण्णपज्जवेहिं जाव अणंतगुणपरिवुइदीए परिवुइडेमाणे २) अनन्तैर्बर्णपर्यवैयावत् अनन्तगुणपरिवृद्ध्या परिवर्द्धमानः २, यावत् पदेनात्र ‘अणंतेहि गधपज्जवेहि’ इत्यादि पूर्वोक्तः पाठः संग्राह्यः (एत्थ णं) अत्र खलु अस्मिन् भरतक्षेत्रे खलु(सुसमदु समा णामं समा काले) सुषमदुष्पमानाम समा कालः उत्सर्पिण्याश्चतुर्थारकक्षणः कालः

‘तीसेणं समाए सागरोवम कोडाकोडीए बायालीसाए वाससहस्सेहि, इत्यादि

टीकार्थ—हे आयुष्मन् श्रमण ! उत्सर्पिणी के ४२ हजार वर्ष का १ सागरोपम कोटाकोटि प्रमाणवाले इस तृतीय आरक की परिसमाप्ति हो जाने पर (अणंतेहि वण्णपज्जवेहिं जाव अणंतगुण परि बुइदीए परिवुइडे माणे २ एत्थण सुसमदुसमा णामं समा काले पडिबज्जिस्सइ समणाउसो) अनन्त वर्णार्याओं से यावत् अनन्तगुण वृद्धिसे वर्द्धित होगा हुआ इस भरतक्षेत्र में सुषम दुष्पमानामका चतुर्थ आरक लगेगा अवतरित होगा (सा ण समा तिहा विभजिस्सइ) इस आरक

‘तीसेण समाए सागरोवम कोडा कोडीए बायालीसाए वाससहस्सेहि इत्यादि सूत्र ॥६०॥

टीकार्थ—हे आयुष्मन् श्रमण ! उत्सर्पिणीना ४२ हजार वर्ष का १ सागरोपम कोटाकोटि प्रमाणवाला या तृतीय आरकनी व्यापारे परिसमाप्ति થઈ જશે ત્યારે (अणंतेहि वण्णपज्जवे हिं जाव अणंतगुणपरिवुइदीए परिवुइडेमाणे २ एत्थण सुसमदुसमा णामं समा काले पडिबज्जिस्सइ समणाउसो) अनन्तवर्षपर्यवैयावत् यावत् अनन्त गणवृद्धिशी वर्द्धमान ये भरतक्षेत्रमा सुषमदुष्पमानामके चतुर्थ आरक लागશે એટલે કે અવતરિત થશે (सा णं समा तिहा विभजिस्सइ) ये आरकना त्रय भागे थશે (पट्टमे तिभागे, मण्डिमे तिभागे पच्छिमेति भागे) એમા એક પ્રથમ ત્રિભાગ થશે. દ્વિતીય મધ્યમત્રિભાગ થશે અને તૃતીય પશ્ચિમ

(पण्डितजिज्ञासु)प्रतिपत्स्यते प्राप्तो भविष्यति । अस्याः समाया भागत्रयं भवतीति तद् दर्शयतिसाणं' इत्यादि । (सा णं समा तिहा विभज्जिस्सइ) १। खलु समा त्रिधा विभङ्ग्यते सा सुषमदुष्पमारूपा समा भागत्रयेण विभक्ता भवति । तत्र प्रत्येकभागं नामनिर्देश पूर्वकमाह—'पढमे तिभागे, इत्यादि । (पढमे तिभागे मज्झिमे तिभागे, पच्छिमे तिभागे) प्रथमस्त्रिभागो, मध्यमस्त्रिभागो पश्चिमस्त्रिभाग इति । 'त्रिभाग' इत्यस्य 'तृतीयो भाग इत्यर्थः । एव सुषमदुष्पमायाः समाया भागत्रयं प्रदर्श्य सम्प्रति प्रथमत्रिभागस्या- कारभावं जिज्ञासमानो गौतमस्वामी पृच्छति—'तीसे णं भंते' । इत्यादि । (तीसे णं भंते । समाए) तस्याः खलु भदन्त ! समायाः (पढमे तिभाए) प्रथमे त्रिभागे (भर- हस्स वासस्स) भरतस्य वर्णस्य (केरिस्सए) कीदृशकः (आगारभावपढोयारे) आकारभाव- प्रत्यवतारो (भविस्सइ) भविष्यति ? । भगवानाह—(गोयमा ।) गौतम ! (बहुसमरम- णिज्जे) बहुसमरमणीयो (जाव) यावद् (भविस्सइ) भविष्यति । अत्र यावत्पदेन स एव वर्णनक्रमः संग्राह्यो योऽवसर्पिण्याः सुषमदुष्पमा समा निरूपणावसरे भरतक्षेत्रस्य वर्णन- क्रमो वर्णित इति । मनुष्याणां विषये गौतमप्रश्नो भगवदुत्तरं च अवसर्पिण्याः

के तीन भाग होंगे (पढमेतिभागे, मज्झिमे ति भागे, पच्छिमे तिभागे) इन में एक प्रथम त्रिभाग होगा द्वितीय मध्यम त्रिभाग होगा और तृतीय पश्चिम त्रिभाग होगा इनमें से जो 'पढमेतिभाए' प्रथम त्रिभाग है—तीसरा भाग है—(तीसेण भंते ! समाए भरहस्स वासस्स केरिस्सए आगारभाव- पढोयारे भविस्सइ) हे भदन्त ! उस प्रथम त्रिभाग में भरत क्षेत्र का स्वरूप कैसा होगा ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं—(गोयमा ।) बहु समरमणिज्जे जाव भविस्सइ) हे गौतम ! प्रथम त्रिभाग में भरत क्षेत्र का भूमिभाग बहुत समरमणीय होगा । यहां यावत्पद से वही वर्णन क्रम संग्राह्य हुआ है जो अवसर्पिणी के सुषमा आरक के दुष्मा आरक के निरूपण के समय में भरत क्षेत्र का वर्णित किया गया है (मणुयाणं जा चेव ओसप्पिणीए पच्छिमे वत्तव्वया सा भाणियव्वा कुलगरवज्जा उस- मसामिवज्जा) अवसर्पिणीसम्बन्धी सुषमदुष्पमा के पश्चिम त्रिभाग में जैसा मनुष्यों का वर्णन किया गया है वैसा ही वर्णन कुल करके वर्णन को और ऋषमस्वामी के वर्णन को छोड़ कर यहां पर भी करनेवा चाहिये क्यों कि अवसर्पिणी के सुषमदुष्पमा के पश्चिम त्रिभाग में जिन दण्डनीतियों प्रवृत्ति कुलकरो ने की है और ऋषमस्वामी ने जो अन्तपाक आदि क्रियाओं का और शिल्प

त्रिभाग यशे ओभाथी ने (पढमे तिभाए) प्रथम त्रिभाग छे अर्थात् त्रिभागे भाग छे, (तीसेण भंते ! समाए भरहस्स वासस्स केरिस्सए आगारभावपढोयारे भविस्सइ) हे भदन्त ! ते प्रथम त्रिभागभाभरतक्षेत्रनु स्वरूप केवु हरे ? ओना जेवाणभां प्रभु कहे छे—(गोयमा बहुसमरमणिज्जे जाव भविस्सइ) हे गौतम ! प्रथम त्रिभागभा भरतक्षेत्रना भूमिभाग बहुसमरमणीय यशे अही यावत् पढथी ते प्रभाषे जे वल्लुनं क्रम संग्राह्य यशे के जे प्रभाषे अवसर्पिणीना सुषम-दुष्मा आरकना निरूपणु समयभां भरतक्षेत्रनु वल्लुनं करवाभां आण्थु छे (मणुयाण जा चेव ओसप्पिणीए पच्छिमे वत्तव्वया सा भाणियव्वा कुलगरवज्जा उसमसामिवज्जा) अव- सर्पिणीसं-न्धी सुषम दुष्पमाना पश्चिम त्रिभागभा जेवु मनुष्येणु वल्लुनं करवाभां आण्थु छे,

સુપમદુષ્પમાયાઃ પશ્ચિમત્રિભાગવર્ણનપ્રસન્ને મનુષ્યવિષયે યાદૃશો ગોતમપ્રશ્નઃ યાદૃશં ચ ભગ-
વદુત્તરં તત્સર્વમિહાપિ કુલકરવર્ણનમ્ ઋષમસ્વામિવર્ણનં ચ પરિત્યજ્ય સંગ્રાહ્યમ્ । એતદેવ-
દર્શયતિ (મણુયાણં જા ચેવ ઓમપ્પિગીણ પચ્છિમે વત્તવ્વયા મા માણિયવ્વા કુઠ્ઠમર-
વજ્જા ઉસમસામિવજ્જા) મનુજાનાં યાંચં અવસર્પિણ્યાં પચ્છિમે ત્રિભાગે વક્તવ્યતા સા
મણિતવ્યા કુલકરવર્જા ઋષમસ્વામિવર્જાં ઇતિ । અયં ભાવઃ અવસર્પિણી સમ્વન્તિ સુપમદુ-
ષ્પમાયાઃ પશ્ચિમત્રિભાગે કાલે યાદૃશં મનુજાનાં વર્ણનં ગત તાદૃશમેવ વર્ણનમત્રાપિ વક્ત-
વ્યમ્ , પરન્તુ કુલકરવર્ણનમ્ ઋષમસ્વામિવર્ણનં ચાત્ર ન વક્તવ્યમ્ યતોઽવસર્પિણ્યાઃ સુપમ-
દુષ્પમાયાઃ સમાયાઃ પશ્ચિમે ત્રિભાગે યા દણ્ડનીત્યાદયઃ કુલકરૈઃ પ્રવર્ત્યન્તે, ઋષમસ્વા-
મિના ચ યા અન્નગાકાદિક્રિયાઃ શિલ્પકલાશ્ચોપદર્શ્યન્તે તાશ્ચોત્સર્પિણ્યાઃ સુપમદુષ્પમાયાઃ
સમાયાઃ પ્રથમે ત્રિભાગે ન પ્રવર્ત્યન્તે ન ચાપ્યુપદર્શ્યન્તે । અયં ભાવઃ ઉત્તર્પિણ્યા દ્વિતીયા-
રકે યે કુલકરા ભવન્તિ તત્પ્રવર્તિતદણ્ડનીત્યાદીનામેવ ચતુર્થારકેઽનુવૃત્તિર્ભવતિ પાકાદિ-
ક્રિયાણાં શિલ્પકલાનાં ચાપિ પૂર્વપ્રવૃત્તાનામેવ તત્રાનુવૃત્તિર્ભવતીતિ તત્તત્પ્રતિપાદક-
પુરુષાનાવશ્યકતેતિ અવસર્પિણીતૃતીયારક પશ્ચિમત્રિભાગકાલવર્ણને કુલકરવર્ણનમૃષમસ્વા-
મિવર્ણનં ચ વર્જયિત્વા સર્વં વાચ્યમિતિ । અથવા—‘ઋષમસ્વામિવર્જા’ इत्यस्य ‘ऋषमस्वा-
कलाभो का उपदेश क्रिया है वे सब उत्सर्पिणी के सुषमदुष्पमा नामके प्रथम त्रिभागमें प्रचलित नहीं
हुई और न उपदिष्ट ही हुई हैं तात्पर्य कहने का यह है उत्सर्पिणी के द्वितीय आरक में जो कुल-
कर होते हैं उनके द्वारा प्रवर्तित दण्डनीत्यादिकों की ही चतुर्थ आरक में अनुवृत्ति होती है
तथा पूर्वप्रवृत्त ही पाकादि क्रियाओं को की और शिल्प कलाओं को भी वहां पर अनुवृत्ति
होती है इसीलिये यहां इनके प्रतिपादक पुरुषों की अनावश्यकता प्रकट की गई है और ऐसा
कहा गया है कि अवसर्पिणी के सुषम दुष्पमा के पश्चिम त्रिभाग के वर्णन के समय मनुष्यों
का जैसा वर्णन किया गया है वैसा वह सब वर्णन कुलकर और तीर्थकर ऋषमस्वामी के
वर्णन को छोड़कर कहलेना चाहिये अथवा “ऋषमस्वामी वर्जा” का अभिप्राय ऋषमस्वामी

તેવું જ વર્ણન ફક્ત કુલકરના તેમજ ઋષમ સ્વામીના વર્ણનને બાદ કરીને અહીં પણ
સમજવું જોઈએ કેમકે અવસર્પિણીના સુષમ દુષ્પમાના પશ્ચિમ ત્રિભાગમાં જેટલા પ્રકારની
દંડનીતિઓની પ્રવૃત્તિ કુલકરોએ કરેલી છે અને ઋષમ સ્વામીએ જે અન્તપાક વગેરે ક્રિયા
ઓને અને શિલ્પકલાઓને ઉપદેશ કર્યો છે તે બધું ઉત્સર્પિણીના સુષમદુષ્પમાના પ્રથમ
ત્રિભાગમાં પ્રચલિત થયું નથી અને ઉપદિષ્ટ પણ થયું નથી તાત્પર્ય આ પ્રમણ છે કે
ઉત્સર્પિણીના દ્વિતીય આરકમાં જે કુલકર હોય છે, તેમના વડે પ્રવર્તિત દંડનાતિ વગેરેની
જ અતુથ આરકમાં અનુવૃત્તિ હોય છે તેમ જ પૂર્વપ્રવૃત્ત પાકાદિ ક્રિયાઓની અને શિલ્પ
કલાઓની પણ ત્યાં અનુવૃત્તિ થતી એટલા માટે અહીં એમના પ્રતિપાદક પુરુષોની અનાવ-
શ્યકતા પ્રકટ કરવામાં આવી છે અને એવું કહેવામાં આવ્યું છે કે અવસર્પિણીના સુષમ
દુષ્પમાના પશ્ચિમ ત્રિભાગના વર્ણન અમયે મનુષ્યોત્તરે જે પ્રમાણે વર્ણન કરવામાં આવેલું
છે, તેવું જ વર્ણન કુલકર અને તીર્થકર ઋષમસ્વામીના વર્ણનને બાદ કરીને સમજવું

મ્યમિલાપવર્જા' इति भावः । ततश्च ऋपमस्वामिनोऽभिलाप वर्जयित्वा भद्रकृन्नामकस्य तीर्थङ्करस्याभिलापो वक्तव्य इत्यभिप्रायः । अत्रेदं बोध्यम्-उत्सर्पिण्यां चतुर्विंशति तमतीर्थकृतोऽभिलापोऽवसर्पिण्यां संजातस्य प्रथमतीर्थकरस्य सदृशः प्रायस्त्वं भद्र कृतीर्थरत्नवर्णने कलाद्युपदेशाभिलापाभावेन बोध्यमिति । अत्र कुलकरविषये वाचनाभेद-माह-'अण्णे पढन्ति' इत्यादि । (अण्णे पढन्ति) अ य पठन्ति-अपरे आचार्या एवं पाठभेदं वदन्ति, तथाहि-(तीसे णं समाए पढमे तिभाए इमे पण्णरस कुलगरा -समुपज्जिस्सन्ति, तं जहा सुमई जाव उसमे, सेसं तं चेव) तस्यां खलु समायां प्रथमे त्रिभागे इमे पञ्चदश कुलकराः समुत्पत्स्यन्ते, तद्यथा-सुमतिर्यावद्वपम , शेषं तदेव । अयमिहाभिप्रायः केषां चिन्मते उत्सर्पिणीसम्बन्धिसुपमदुष्पमायाः प्रथमे त्रिभागे सुमतिमारभ्य ऋषभपर्यन्ताः

સંબંધી અભિલાપ છે. સો ઇસ અભિલાપ કો છોડ કર ભદ્રકૃત નામકે તીર્થંકર કા અભિલાપ કહના । હમ કથન કા તત્પર્યે એસા છે કે ઉત્સર્પિણી ૧૨ વે તીર્થંકર કા અભિલાપ પ્રાપ્ત કરકે અવસર્પિણી મે ઉત્પન્ન હુએ પ્રથમ તીર્થંકર કે જૈસા હી કહના ચાહિયે કયો કે ઇન દોનો મેં પ્રાય કરકે સમાન શોભતા છે । અભિલાપ કી પ્રાય સમાનતા છે એસા જો કહા ગયા છે વહ ભદ્રકૃત તીર્થંકર કે વર્ણન મેં કલાદિક કે ઉપદેશ કે અભિલાપ કે અમાવ સે કહા ગયા છે એસા જાનના ચાહિયે યહા કુલકર કે વિષયમેં જો વાચનાભેદ છે ઉસે સૂત્રકાર "અણ્ણે પઢંતિ " ઇસ સૂત્ર દ્વારા પ્રકટ કરતે છે - ઇસમેં ઉન્હોને યહ સમજાયા છે કે કિતનેક આચાર્ય એસા પાઠ ભેદ કહતે છે - (તંસે ણ સમાએ પઢમેતિભાએ ઇમે પણ્ણરસકુલગરા સમુપજ્જિસ્સતિ ત જહા સુમઈ જાવ ઉસમે સેસ તંચેવ) ઉત્સર્પિણી સમ્બન્ધી સુપમદુષ્પમા કે પ્રથમ ત્રિભાગ મેં ચે ૧૫ કુલકર ઉત્પન્ન હોગે જૈસે સુમતિ યાવત્ ઋષભ અર્થાત્ પ્રથમ સુમતિ કુલકર બૌર અન્તિમ ઋષભ કુલકર બાકી કે જો ૧૩ મધ્યકે બૌર કુલકર છે ઉનકા નામ પૂર્વ મેં પ્રકટ હો કરદિયા ગયા છે તથા ઇન ૧૫ કુલકરો મેં સે ૫-૫ કુલકરો દ્વારા જો જો ઢળહનોતી ચાલ્હ કી જાતો છે

જો/એ. અથવા 'ઋષમસ્વામીવર્જા' નો અભિપ્રાય ઋષભસ્વામી સંબંધી અભિલાપ છે, તે એ અભિલાપને બાદ કરીને ભદ્રકૃતનામક તીર્થંકરનો અભિલાપ કહેવો આ કથનનું તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે કે ઉત્સર્પિણીના ૨૪ માં તીર્થંકરનો અભિલાપ પ્રાપ્ત કરીને અવસર્પિણીમાં ઉત્પન્ન થયેલ પ્રથમ તીર્થંકરના જેવો જ અભિલાપ કહેવો જોઈએ કારણ કે એઓ બન્નેમાં ઘણું કરીને સમાનશીલતા છે, અભિલાપની પ્રાય સમાનતા છે આમ જે કહેવામાં આવેલ છે, તે ભદ્રકૃત તીર્થંકરના વર્ણનમાં કલાદિકના ઉપદેશના અભિલાપના અભાવથી કહેવામાં આવેલ છે એવું સમજવું બાધ્યું અહીં કુલકરના સંબંધમાં જે વાચના ભેદ છે, તેને સૂત્રકાર "અણ્ણે પઢંતિ" એ સૂત્ર વડે પ્રકટ કરે છે તેમણે આમ સમજાવ્યું છે કે કેટલાક આચાર્યો જેવા પાઠભેદને ઉલ્લેખ કરે છે-(તીસે ણ સમાએ પઢમેતિભાએ ઇમે પણ્ણરસ કુલગરા સમુપજ્જિસ્સતિ તં જહા સુમઈ જાવ ઉસમે સેસં તં ચેવ) ઉત્સર્પિણી સંબંધી સુપમદુષ્પમાના પ્રથમત્રિભાગ એ ૧૫ કુલકર ઉત્પન્ન થશે જેમ કે સુમતિ યાવત્ ઋષભ સ્વામી એટલે કે પ્રથમ સુમતિ કુલકર અને અન્તિમ ઋષભસ્વામી કુલકર શેષ જે ૧૩ મધ્યના બીજા કુલકરો છે,

પશ્ચદશસંખ્યકાઃ કુલકરા વર્ણનોયાઃ । एतेषु चञ्चदशसु कुलकरेषु सर्वप्रथमः सुमतिः सर्वा
 न्तिमश्च ऋषभः, मध्यस्थिताश्च त्रयोदश कुलकराः पूर्वोक्तनामान एव । तथा पञ्चभि
 कुलकरैर्या या दण्डनीतय प्रवर्त्यन्ते तास्ता अपि पूर्वोक्ता एवावसेग इति । अतः परो
 यो विशेषस्तमाह 'दण्णीर्दो' इत्यादि । (दण्णीर्दो पडिलोमाओ जेयव्वाओ) दण्डनी-
 तयः प्रतिलोमा नेतव्याः—अवसर्पिणी सम्बन्धिसुषमदुष्पमायामेकैः कुलकरपञ्चककृता या
 या दण्डनीतयः प्रोक्ताः, तत्प्रतिकूला दण्डनीतयोऽत्र वक्तव्या इति । अयं भावः
 अवसर्पिण्याः सुषमदुष्पमायां प्रथमकुलकरपञ्चकसमयेऽपराधस्याल्पत्वेन हाकारो दण्डम् ।
 द्वितीयकुलकरपञ्चकसमये तु जघन्यमध्यमरूपापराधद्वयस्य सद्भावान्न माकार-हाकार-रूपं
 दण्डद्वयम् । तृतीयकुलकरपञ्चकसमये तत्कृष्टमध्यमजघन्यरूपापराधत्रयसद्भावान्न जघन्येऽ
 पराधे हाकारो दण्ड, मध्यमे माकारो दण्डम्, उत्कृष्टे तु धिक्कारो दण्डमिति । उत्सर्पि-
 ण्यां सुषमदुष्पमायाः प्रथमे त्रिभागे प्रथमकुलकरपञ्चकसमये त्वपराधस्य जघन्यमध्यमो-
 त्कृष्टतया जघन्ये अपराधे हाकारो मध्यमे माकारः उत्कृष्टे तु धिक्कारः । द्वितीयकुलकर

વહ મી પૂર્વ મેં પ્રકટ કર દી ગઈ હૈ પરન્તુ હન દણ્ડ નીતિયોમેં જો ઉત્સર્પિणी કાલ કે હસ આરે
 કે પ્રયોગ મે મિન્નતા હૈ વહ હસ પ્રકાર સે હૈ —(દણ્ડણોર્દો પડિલોમાઓ) અવસર્પિणी કે સુષમ
 દુષ્પમા મેં પ્રથમ કુલકર પંચક મેં સમય મેં અપરાધ કી અલ્પતા હોને સે હાકાર દણ્ડનીતિ પ્રયુક્ત
 હુઈ હૈ । દ્વિતીય કુલકર પંચક મેં સમયમેં જઘન્ય ઓ મધ્યમ અપરાધો કે સદ્ભાવ સે હાકાર
 ઓર માકાર યે દો દણ્ડ નીતિયાં પ્રયુક્ત હુઈ હૈ તથા તૃતીય કુલકર પંચક મેં સમય જઘન્ય,
 મધ્યમ ઓર ધિક્કાર યે ત્રીનો હી દણ્ડનીતિયા પ્રયુક્ત હુઈ હૈ એસા પહિલે પ્રકટ ક્રિયા જા
 ચુકા હૈ - પરન્તુ ઉત્સર્પિણી કે હસ સુષમદુષ્પમા નામ કે આરે મેં પ્રથમ ત્રિમાગ મેં પ્રથમ કુલકર
 પંચક મેં સમય મેં ત્રીનો પ્રકારકે અપરાધો કે સદ્ભાવ સે જઘન્ય અપરાધ મે હાકાર, મધ્યમ અપ
 રાધ મેં માકાર ઓર ઉત્કૃષ્ટ અપરાધ મેં ધિક્કાર હન ત્રીનો દણ્ડનીતિયો સે, દ્વિતીય કુલકર પંચક

તેમના નામો પહેલાં પ્રકટ કરવામાં આવેલ છે તથા જો ૧૫ કુલકરોમાંથી ૫, ૫ કુલકરો
 વડે જે-જે દંડનીતિ ચાલુ કરવામાં આવે છે, તે ૫જુ પહેલા પ્રકટ કરવામાં આવી છે ૫જુ
 જો દંડનીતિઓમાંથી જે ઉત્સર્પિણી કાલના જો આશના પ્રયોગમાં મિન્નતા છે. તે આ
 પ્રમાણે છે—(દણ્ડણોર્દો પડિલોમાઓ) અવસર્પિણીના સુષમ દુષ્પમામાં પ્રથમ કુલકર પંચ-
 કના સમયમાં અપરાધની અલ્પતા હોવાથી હાકાર દંડનીતિ પ્રયુક્ત થયેલી છે દ્વિતીય
 કુલકર પંચકના સમયમાં જઘન્ય અને મધ્યમ અપરાધના સદ્ભાવથી હાકાર અને માકાર
 જો જે દંડનીતિઓ પ્રયુક્ત થઈ છે તથા તૃતીય કુલકર પંચકના જઘન્ય, મધ્યમ અને
 ઉત્કૃષ્ટ અપરાધના સદ્ભાવથી હાકાર, માકાર અને ધિક્કાર જો ત્રણે દંડનીતિઓ પ્રયુક્ત
 થયેલી છે આ પ્રમાણે પહેલા પ્રકટ કરવામાં આવેલ છે. ૫જુ ઉત્સર્પિણીના જો સુષમ-
 દુષ્પમા નામક આશના પ્રથમત્રિમાગમાં પ્રથમ કુલકર પંચકના સમયમાં ત્રણે પ્રકારના
 અપરાધના સદ્ભાવથી જઘન્ય અપરાધમાં હાકાર મધ્યમ અપરાધમાં માકાર અને ઉત્કૃષ્ટ
 સમયમાં ધિક્કાર જો ત્રણ દંડનીતિઓથી, દ્વિતીય કુલકર પંચકના સમયમાં જઘન્ય અને મધ્યમ

પઠ્ઠકસમયડપરાધસ્ય જઘન્યમધ્યમત્વેન જઘન્યેડપરાધે હાકારો મધ્યમે ચ માકારઃ । તૃતીયકુલકરપઠ્ઠકસમયે ત્વપરાધસ્ય જઘન્યત્વેન હાકારમાત્રં દળ્ઢમિતિ । ‘દંડળીઢો’ इत्यस्योपलक्षणत्वेन शरीरप्रमाणायुष्क प्रमाणादिकं चापि यथासमं प्रातिज्येन विज्ञेयमिति । ‘अण्णे पढंति’ इत्यादि रूपस्य वाचनान्तरीयपाठस्यायमभिप्रायः- राजधर्मस्य कालप्रभावेण अत्रारके क्रमशो व्यवच्छेदात् जनानां च भद्रप्रकृतिकत्वेनाल्पापराधकारित्वाद्, राज्ञां चाऽप्यनुग्रहदण्डत्वादपराधदण्डयोरत्रारकेऽल्पता भविष्यति । ततोऽरिष्टनामचक्रवर्तिकुलोत्पन्नाः पञ्चदश कुलकरा भविष्यन्ति, तदितरे च राजानस्तद्व्यवस्थापितमर्यादारक्षका भविष्यन्ति । ततः कालक्रमेण सर्वेऽप्यहमिन्द्रत्वं प्रतिपन्ना भविष्यन्ति । अत्र य ऋषमनामा सर्वान्तिमः कुलकरः स ऋषभाभिधतीर्थकरादन्योऽवसेयः । तत्र काले च तत्स्थानीयोऽन्तिमस्तीर्थकरो भद्रकृन्नामा भविष्यति । अयं च प्रस्तुतारके एकोनत्र-

કે સમય મે જઘન્ય હી અપરાધ કે સદ્ભાવ સે હાકાર ઔર માકાર દળ્ઢનાતિયો સે એવ તૃતીય કુલકર પઠ્ઠકર કે સમય મેં કેવલ જઘન્ય હી અપરાધ કે રહજાને કે કારણ એક હાકાર હી દળ્ઢ નીતિ સે કામ લિયા જાતા હૈ (દળ્ઢળીઢો) યહ પદ ઉપલક્ષણ રૂપ હૈ હમ કારણ શરીર પ્રમાણ, આયુષ્ક પ્રમાણ, આદિ કી મી યથાસમવ પ્રતિ લોમતા હૈ યહ વાત પ્રકટ કો ગઈ જાનનો ચાહિયે (અણ્ણે પઢંતિ) इत्यादि रूप वाचनान्तरीय पाठ का यह अभिप्राय है —राजधर्म का कालप्रभाव से इस आरक में क्रमशः व्यवच्छेद हो जावेगा क्योंकि मनुष्य धीरे-धीरे भद्र प्रकृतिवाले हो जावेंगे इससे उनमें अल्पापराधकारिता आती जावेगी राजाजन भी तीव्र दण्ड देने वाले नहीं होंगे इसलिये अपराध और दण्ड की अल्पता हो जावेगी अरिष्ट नामक चक्रवर्ती के कुल में उत्पन्न हुए १५ कुलकर होंगे इनसे भिन्न जो राजाजन होंगे वे उन कुलकरों को व्यवस्थापित मर्यादा रक्षक होंगे धीरे-ધારે જૈસા જૈસા કાલ વ્યતીત હોતા જાવેગા વૈસે સબ મનુષ્ય અહમિન્દ્રત્વ કો પ્રાપ્ત હોતે જાવેગે હસમેં સર્વાન્તિમ ઋષમ નામ કા કુલકર હોગા —હસ કાલ મેં અન્તિમ સ્તીર્થકર ભદ્રકૃત નામ કા હોગા અવસર્પિણો કાલ કે હસ આરે મેં જૈસે જોવીસ સ્તીર્થકરો મે સે

અપરાધના સદ્ભાવથી હાકાર અને માકાર હ ડનીતિઓથી તેમજ તૃતીય કુલકર પચકના સમયમા કેવલ જઘન્ય અપરાધ જ શેષ રહેવાથી એક હાકાર હ ડનીતિથી કામ અભાવવામા આવે છે. (દળ્ઢળીઢો) એ પદ ઉપલક્ષણ રૂપ છે. એથી શરીર પ્રમાણ, આયુષ્ક પ્રમાણ, વગેરેની પણ યથા સંભવ પ્રતિબોધતા છે. એ વાત પ્રકટ કરવામા આવેલી છે (અણ્ણે પઢંતિ) इत्यादि रूप, वाचनान्तरीय पाठने એ અભિપ્રાય છે—રાજધર્મને કાલ પ્રભાવથી એ આરકમાં કેમશઃ વ્યવચ્છેદ થઈ જશે કેમકે નાણુસ ધીમે-ધીમે ભદ્ર પ્રકૃતિવાળા થઈ જશે એથી તેમનામા અલ્પાપરાધ કારિતા આવતી જશે રાજાઓ પણ તીવ્ર દંડ આપનારા નહિ થશે. એથી અપરાધ અને હ ડની અલ્પતા થઈ જશે, અરિષ્ટ નામક ચક્રવર્તીના કુળમા ઉત્પન્ન થયેલા ૧૫ કુલકરો થશે એમનાથી ભિન્ન જે રાજાઓ થશે, તેઓ તે કુલકરોની વ્યવસ્થાપિત મર્યાદાના રક્ષક થશે ધીમે-ધીમે જેમ-જેમ કાળ વ્યતીત થતો જશે તેમ-તેમ સર્વ મનુષ્યે અહમિન્દ્રત્વને પ્રાપ્ત કરતા જશે, એમા સર્વાન્તિમ ઋષભ નામક કુલકર થશે, એ કાળમાં

ત્યા પૈશ્વરતિક્રાન્તે સમુત્પત્તસ્યતે इत्यगमेऽभिहितम् । अवसर्पिणीकाले यः प्रथमस्तीर्थं कर
स्तत्स्थाने उत्सर्पिण्यां चतुर्विंशतितमસ્तीर्थंङ्करो भवतीति बोध्यम् । इह ये पठन्वद्ग कुल-
कराः प्रोक्ताः, तत्र अन्यान्यागमे अन्यमन्य नामोपलभ्यते, तथाहि स्थानाङ्गस्य सप्तमे
स्थानके सप्त कुलकराः प्रोक्ताः, तत्र सुमतिनाम नोक्तं, दशमे तु दश कुलकराः प्रोक्ताः,
परन्तु तत्र 'सुमति' इति नाम प्रोक्तं, 'सुमति' इति आर्षशैल्या प्रसाध्य तच्छाया 'सुमति'
इति कथंचिद् भविष्यति, तथापि तन्नाम तत्र पृष्ठकुलकरस्थाने पठितं, न तु प्रथमतीर्थ,
करस्थाने । अत्रैव प्रथमे त्रिभागे किं किं वस्तु व्युच्छेदं प्राप्स्यतीति जिज्ञासायामाह 'तीसे
णं समाए पढमे तिभागे रायधम्मे जाव धम्मचरणे य वोच्छिज्जिस्सइ' इति । तस्यां खल

પ્રથમ તીર્થંકર આદિનાથ હુણ કહે ગયે હૈ વૈસે હી ચૌબીસ તીર્થંકર યહાં પર મો હોગે પર યહા
इनकी उत्पत्ति पहिला चौबिसमां तीर्थंकर होगा फिर तेबोसमां तीर्थंकर होगा इस रूप से होगी
इस तरह ऋषभनाथ भगवन् का स्थानीय अन्तिम चौबिसमां तीर्थंकर जो होगा उसकानाम भद्रकृत
होगा यह इप काल में ८९ पक्ष प्रमाण जब यह काल व्यतीत हो जावेगा तब होगी ऐसा
आगम में कहा गया है अवसर्पिणी काल में जो प्रथम तीर्थंकर है उसके स्थान में उत्सर्पिणी
काल में २४ वां तीर्थंकर होता है यहां जो १५ कुलकर कहे गये हैं उनके भिन्न २ दूसरे
आगमों में नाम पाये जाते हैं । जैसे—स्थानाङ्ग के सप्तम स्थानक में सात कुलकर कहे हुए हैं—
सो उनमें सुमति कुलकर ऐमां नाम नहीं है दशव स्थानक में १० कुलकर कहे हुए हैं सो
वहां सुमति ऐसा नाम कहा गया है यदि आर्षशैली से ऐसा कहा गया है हम इस बात को
मान कर सुमति के स्थान में सुमति ऐसाहो जायगा यह मान ले तब भी यह नाम वहा छठे
कुलकर के स्थान में पठित हुआ है प्रथम तीर्थंकर के स्थान में नहीं । (तोसेण समाए पढमे
तिभाए रायधम्मे जाव धम्मचरणे अबोच्छिज्जिस्सइ) उत्सर्पिणी के इस चतुर्थ वारक में प्रथम

અતિમ તીર્થંકર ભદ્રકૃત નામે થશે. અવસર્પિણી કાળના એ આરામાં જેમ ૨૪ તીર્થંકરો-
માથી પ્રથમ તીર્થંકર આદિનાથ થયા છે, આમ કહેવામા આવ્યું છે, તેમજ ૨૪ તીર્થંકરો
અહીં પણ થશે પરંતુ અહીં જેમની ઉત્પત્તિ પહેલા ૨૪ મા તીર્થંકર થશે, ત્યારબાદ
૨૪ મા તીર્થંકર થશે આ ક્રમથી તીર્થંકરો થશે. આ પ્રમાણે ઋષભનાથ ભગવાનનો સ્થાનીય
અતિમ ૨૪ મા તીર્થંકર જે થશે તેવું નામ ભદ્રકૃત થશે, એ આ કાળમા ૮૯ પક્ષ પ્રમાણ
જ્યારે આ કાળ વ્યતીત થઈ જશે ત્યારે થશે આમ આગમતુ વચન છે અવસર્પિણી
કાળમાં જે પ્રથમ તીર્થંકર છે, તેના સ્થાને ઉત્સર્પિણી કાળમાં ૧૪ તીર્થંકર હોય છે. અહીં
જે ૧૫ કુલકરો કહેવામા આવેલ છે, તેમના ભિન્ન-ભિન્ન બીજા આગમોમા નામે લેવા મળે છે
જેમ કે 'સ્થાનાંગ'ના સપ્તમ સ્થાનકમાં સાત કુલકરો થયા છે એવું કહેવામા આવ્યું છે તો
તેઓમા સુમતિ કુલકર એવું નામ નથી ૧૦માં સ્થાનકમા ૧૦ કુલકરો કહેવામા આવ્યા છે ત્યા
સુમતિ એવું નામ કહેવામાં આવ્યું છેને આર્ષ શૈલીથી એવું કહેવામા આવ્યું છે જેમ અમેઆ
વાત માનીએ તો સુમતિના સ્થાને સુમતિ એવું થઈ જશે. એવું માની લઈએ તો પણ એ નામ

સમાયામ્ પ્રથમે ત્રિભાગે રાજધર્મોયાવદ્ ધર્મચરણ ચ વ્યુચ્છેત્સ્યતિ વિનાજ પ્રાપ્સ્યતિ, અત્ર યાવત્કરણાત્ ગણધર્મ: પાશ્વળ્ધર્મશ્ચ ગ્રાહ:; અથ શેષ વિમાગદ્વયવત્કવ્યતાં પ્રતિપાદયિ-
તુમાહ'તોસેણ સમાપ્ મજ્જિમપચ્છિમેષુ તિભાગેષુ જાવ પદમમજ્જિમેષુ વત્તવ્વયા ઓસપ્પિ.
ળીણ સા માણિયન્વા' ઇતિ, તસ્યાં ચલ્લ સમાયાં મધ્યમ પશ્ચિમયોત્તિભાગયો: યાવત્ પ્રથ
મમધ્યમયો: - અર્થયોજનેન ઔચિત્યાત્ મધ્યમપ્રથમયોગિત્યવસેયમ્, અન્યથા શુદ્ધપ્રાતિ-
લોમ્યાસંભવેન અર્થાનુપપત્તિરાપદ્યેત । યા વત્કવ્યતા અવસર્પિણ્યામુક્તા સા મણિતવ્યા, ઇત્યેવં
રીત્યા ચતુર્થારક: સમ્પન્ન:; અથ પઠ્ઠમપટ્ઠૌ આરકૌ અતિદિશન્નાહ- 'સુસમા તદેવ
સુસમાસુસમાવિ તદેવ જાવ છન્વિહા મણુસ્સા અણુસજ્જિસ્સંતિ જાવ સણિચારી' ઇતિ,
સુષમા-પઠ્ઠમસમાસ્વરૂપ: કાલ:; તથૈવ અવસર્પિણી દ્વિતીયારકવદ્ વોઘ્યા, સુપમસુપમા
પ્પસમાલક્ષણ: કાલ: પટ્ટારક ઇત્યર્થ: સાડપિ તથૈવ- અવસર્પિણી પ્રથમારકવદ્ વોઘ્યા,
ક્રિયત્પર્યન્તમત્ર વિજ્ઞાતશ્યમિતિ જિજ્ઞાસાયામાહ-યાવત્ પદ્વિધા: મનુષ્યા: અનુસંસ્યન્તિ
સંતતિધારયા અનુવર્તિષ્યન્તિ યાવત્ શનૈશ્ચારિણ:; સંજ્ઞિચારિણ ઇતિ ભાવ: । અત્ર
યાવત્પદાર્ પૂર્વોક્તા: પમાગન્ધાદય એ ગ્રહોત્તર્યા: ॥૬૦ ॥

ઇતિશ્રી વશ્વવિરુયાત-જગદ્વલ્લભ-પ્રસિદ્ધવાચકપશ્ચદશમાપાકલિત-લલિતકલાપાલપક-

પ્રવિશુદ્ધગદ્યપદ્યાનૈકગ્રન્યનિર્માપક-વાદિમાનમર્દક-શ્રી-શાહ છત્રપતિકોલ્હાપુર-

રાયપ્રદત્ત-જૈનશાસ્ત્રાચાર્ય, -પદભૂષિત-કોલ્હાપુરરાજગુરુ-વાલબ્રહ્મચારી

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર-પૂજ્યશ્રી-વાસીલાલ-ત્રતિવિરચિતાયાં

શ્રીજમ્બૂદ્વીપપ્રજ્ઞપ્તિસૂત્રસ્ય પ્રકાશિકાખ્યાયાં વ્યાખ્યાયાં

॥ દ્વિતીયવક્ષસ્કાર: સમાપ્ત: ॥

ત્રિમાગ મૈં રાજધર્મ યાવત્ ગણધર્મ, પાશ્વળ્ધર્મ નષ્ટ હો જાવેંગે (તોસે ણં સમાપ્ મજ્જિમપચ્છિમેસુ
તિમાપસુ જાવ પદમમજ્જિમેસુ વત્તવ્વયા ઓસપ્પિળીણ સા માણિયન્વા) હસ આરક કે મધ્યમ
ઔર પશ્ચિમ ત્રિમાગ કી વત્કવ્યતા અવસર્પિણી કે ચતુર્થ આરક કે પ્રથમ ઔર મધ્યમ કે ત્રિમાગ
જૈસો હૈ । સુસમા તદેવ (સુસમસુસમા વિ ત'વ જાવ છન્વિહા મણુસ્સા અણુજ્જિસ્સતિ જાવ
સણિચારી) સુષમા ઔર સુષમા સુષમા કાલ કા વત્કવ્યતા જૈમી અવસર્પિણી કાલ કી પ્રરૂપણા
કરતે સમય કહી ગઈ હૈ વૈસી હી હૈ । ॥૬૦ ॥

દ્વિતીયવક્ષસ્કાર કા વર્ણન સમાપ્ત ।

ત્યા ૭૪૧૩૨ના સ્થાનમાં પઠિત થયેલું છે પ્રથમ તીર્થંકરના સ્થાનમાં નહિ (તોસે ણં સમાપ્
પદમે તિમાપ રામધર્મે જાવ ધર્મચરણેઝ વોચ્છિજ્જિસ્સતહ) ઉત્સર્પિણીના એ ચતુર્થ
આરકમાં પ્રથમ ત્રિમાગમાં રાજધર્મ યાવત ગણધર્મ, પાશ્વળ્ધર્મ નાશ પામશે (તોસે ણં
સમાપ્ મજ્જિમપચ્છિમેસુ તિમાપસુ જાવ પદમમજ્જિમેસુ વત્તવ્વયા ઓસપ્પિળીણ સા માણિ-
યન્વા) એ આરકમાં મધ્યમ અને પશ્ચિમ ભાગની વત્કવ્યતા અવસર્પિણીના ચતુર્થ આરકના
પ્રથમ અને મધ્યમના ત્રિમાગ જેવી છે (સુસમા તદેવ સુસમકસમા વિસુતદેવ જાવ છન્વિહા
મણુસ્સા અણુજ્જિસ્સંતિ જાવ સણિચારી) સુષમા અને સુષમા સુષમા કાળની વત્કવ્યતા
જે પ્રમાણે અવસર્પિણી કાળની રૂપણા કરતા કહેવામાં આવી છે, તેવી જ છે ॥ ૬૦ ॥

બીજા વક્ષસ્કારનું શુભરાત્રી બાપાતર અમાસ

तृतीय वक्षस्कारः प्रारम्भयते

अथ वर्ण्यमानस्यैतद्वर्षस्य नाम्नः प्रवृत्ति निमित्त प्रष्टुकामः गौतमः प्रह- “से-
केणट्टेणं” इत्यादि ।

मूलम्-से केणट्टेणं भंते ! एवं वुच्चइ भरहेवासे २ ? गोयमा !
भरहे णं वासे वेअद्धस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चोदसुत्तरं जोअणसयं
एक्कारस्स य एगूणवीसइभाए जोअणस्स अवाहाए लवणसमुदस्स उत्तरेणं
चोदसुत्तरं जोअणसयं एक्कारस्स य एगूणवीसइभाए जोअणस्स अवाहाए
गंगाए महाणईए पच्चत्थिमेणं सिंघेए महाणईए पुरत्थिमेणं दाहिणद्ध
भरहमज्झिल्लतिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थणं चीणी याणामं रायहाणी
पण्णत्ता, पाइणपडीणाययो उदीणदाहिणविच्छिन्ना दुवालस जोयणा-
यामा णवजोअण विच्छिण्णा धणवइमति णिम्माया चामीयस्पागारा णाणा
मणि पंचवण्णकविसीसग परिमंडिआभिरामा अलकापुरी संकासा पमुइय
पक्कीलिया पच्चक्खं देवलोगभूआ रिद्धित्थिमिअ समिद्धा पमुइयजण-
जाणवया जाव पडिक्खा ॥ सू० १ ॥

छाया-तत् केनार्थेन भदन्त ! एव मुच्यते भरतवर्षम् २१ गौतम ! भरते खलु वर्षे चैतादयस्य
पर्वतस्य दक्षिणेन चतुर्दशोत्तरं योजनशतम् एकादशैकोनं विंशति भागान् योजनस्याबा-
धया लवणसमुद्रस्योत्तरेण चतुर्दशोत्तरं योजनशतम् एकादशैकोनं विंशतिभागान् योजनस्या
बाधया गङ्गाया महानाद्या पश्चिमेन सिन्धुः महानाद्याः पौरस्त्येन दक्षिणार्द्धभरतमध्यम
तृतीयभागस्य बहुमध्यदेशभागे, अत्र खलु विनीता नाम राजधानी प्रशस्ता पूर्वापरयी दिशोराय-
ता उत्तरदक्षिणयो विस्तीर्णा द्वादश योजनायामा, नवयोजन विस्तीर्णा धनपतिमत्या नि-
मिता चामीकरप्राकारा, नानामणि पञ्चवर्णकपिशीर्षपरिमण्डिताऽभिरामा अलकापुरी
संकाशा, प्रमुदितप्रकीडिता, प्रत्यक्षं देवलोकभूता, ऋद्धस्तिमित समृद्धा प्रमुदितजनजानपदा
यावत् प्रतिरूपा ॥ सू० १ ॥

टीका “सेकेणट्टेणं” इत्यादि । (से केणट्टेणं भंते ! एवं वुच्चइ भरहे वासे अथ स-
म्पूर्णभरतक्षेत्रस्वरूपश्रवणानन्तरं गौतमः पृच्छति तत्केनार्थेन खलु भदन्त ! एवमु-

* तृतीय वक्षस्कार का वर्णन प्रारम्भ *

से केणट्टेणं भंते एवंवुच्चइ भरहेवासे २-इत्यादि सूत्र-

तृतीय वक्षस्कारस्य वर्णन प्रारंभ

से केणट्टे णं भंते ! एव वुच्चइ भरहेवासे-इत्यादि सूत्र-१

ચ્યતે મરતવર્ષ ૨ ? ઇતિ અસ્મિન્ ક્ષેત્રે મરતચક્રવર્તી આમીદ્ અતર્વાસ્ય મરતં વર્ષમિતિ નામ જાતમ્ ઇતિ મગવાન્ પ્રદર્શતિ-‘ગોયમા’ ઇત્યાદિ-‘ગોયમા ! મરદે ણં વાસે વેયદ્વસ્સ પવ્વયસ્સ દાહિણેણં’ મગવાનાહ-હે ગૌતમ ! મરતે સ્વલ્લ વર્ષે વૈતાલ્યસ્ય પર્વતસ્ય દક્ષિણે દક્ષિદિગ્વર્તિ ભાગે ઇત્યર્થઃ ‘ચોદ્ધસુત્તર જોયણસયં એકારસય એગૂણવીસડમાણ જોયણસ્સ અવાહાણ’ ચતુર્દશોત્તરં યોજનશતમ્ એકાદશચૈકોનવિંશતિભાગાન્ યોજનસ્ય અવાયયા અન્તરં કૃત્વા ‘લવણસમુદ્રસ્સ ઉત્તરેણં ચોદ્ધસુત્તરં જોયણસયં એકારસય એગૂણવીસડમાણ જોયણસ્સ અવાહાણ’ તથા લવણસમુદ્રસ્યોત્તરે દક્ષિણલવણસમુદ્રસ્ય ઉત્તરેભાગે, ચતુર્દશોત્તરં યોજનશતમ્ એકાદશ ચૈકોનવિંશતિભાગાન્ યોજનસ્ય અવાયયા-અન્તરં કૃત્વા, પૂર્વાપરસમુદ્રયો ગંગા સિન્ધુભ્યાં વ્યવહિતત્વાન્ન તદ્વિવક્ષાં કૃતા ‘ગંગાણ મહાણઈણ પચ્ચત્થિમેણં’ ગંગાયા મહા-નદ્યા પશ્ચાત્યે પશ્ચિમાયામ્ ‘સિન્ધુણ મહાણઈણ પુરત્થિમેણં’ સિન્ધ્વા મહાનદ્યાઃ પૂર્વસ્યાં દિશિ ‘દાહિણદ્ધમરહમજ્જિલ્લતિભાગસ્સ બહુમજ્જદેસમાણ’ દક્ષિણાર્દમરતસ્ય મધ્યમત્.

ટીકાર્થ-- ૧ હસ સૂત્ર દ્વારા શ્રી ગૌતમ સ્વામીને પ્રશ્ન સે હસ પ્રકાર પૂછા હૈ-કિં (સે કેળદ્દેણં મંતે । એવં બુચ્ચહ મરદે વાસે ૨) હૈ મદન્ત । હસ મરત ક્ષેત્ર કા નામ મરત ક્ષેત્ર એસા કિમ કારણ સે રચા ગયા હૈ ? હસકે ઉત્તર મેં પ્રશ્ન શ્રી કહતે હૈ (ગોયમા ! મરદે ણં વાસે-વેમદ્વસ્સ પવ્વયસ્સ દાહિણેણં ચોદ્ધસુત્તરં જોયણસયં એકારસય એગૂણવીસડમાણ જોયણસ્સ અવાહાણ લવણસમુદ્રસ્સ ઉત્તરેણં) હૈ ગૌતમ । મરત ક્ષેત્ર કે વૈતાલ્ય પર્વત કે દક્ષિ-ણ ભાગ મેં-૧૧૪^૧/_{૧૯} યોજન કે અન્તરાલ સે તથા દક્ષિણ લવણ સમુદ્ર કે ઉત્તર ભાગ મેં-૧૧૪^૧/_{૧૯}

^૧/_{૧૯} યોજન કે અન્તરાલ સે (ગંગાણ મહાણઈણ પચ્ચત્થિમેણં) ગંગા નદી કી પશ્ચિમદિશામેં (સિન્ધુણ મહાણઈણ પુરત્થિમેણં) સિન્ધુનદીકી પૂર્વદિશામેં (દાહિણદ્ધમરહમજ્જિલ્લતિભાગસ્સ

ટીકાર્થ--આ સૂત્ર વડે ગૌતમસ્વામીએ પ્રશ્નને આ પ્રમાણે પ્રશ્ન કર્યો છે કે (સે કેળદ્દેણં મંતે એવં બુચ્ચહ મરદેવાસે ૨) હે મદન્ત ! આ મરતક્ષેત્રનું નામ મરતક્ષેત્ર એવીને શા કારણથી પ્રસિદ્ધ થયું છે ? એના જવાબમાં પ્રશ્ન કહે છે (ગોયમા ! મરદેણં વાસે વેમદ્વસ્સ દાહિણેણં ચોદ્ધસુત્તર જોયણસયં એકારસય એગૂણવીસડમાણ જોયણસ્સ અવાહાણ લવણસમુદ્રસ્સ ઉત્તરેણં) હે ગૌતમ ! મરતક્ષેત્રના વૈતાલ્ય પર્વતના દક્ષિણભાગથી ૧૧૪^૧/_{૧૯} યોજનના અંતરાલથી તેમજ દક્ષિણ લવણ સમુદ્રના ઉત્તરભાગમાં ૧૧૪-૧૧૧/૧૯ યોજનના અંતરાલથી (ગંગાણ મહાણઈણ પચ્ચત્થિમેણં) ગંગા મહાનદીની પશ્ચિમ દિશામાં (સિન્ધુણ મહાણઈણ પુરત્થિમેણં) સિન્ધુ નદીની પૂર્વ દિશામાં (દાહિણદ્ધમરહમજ્જિલ્લતિભાગસ્સ બહુમજ્જદેસમાણ) અને દક્ષિણાર્ધ મરતના મધ્યતૃતીય ભાગના બહુ મધ્યપ્રદેશ ભાગમાં (પત્થ ણં વિનીચ્ચા નામ રાયદ્ધાણી પળ્લન્તા) વિનીચ્ચા નામક એક રાજધાની કહેવામાં આવેલ છે ૧૧૪ યોજનની ઉત્પત્તિ-નો પ્રકાર આ પ્રમાણે છે મરતક્ષેત્રનો વિસ્તાર ૫૨૬.૬૧૯ યોજન જેટલો છે વૈતાલ્ય પર્વતનો વ્યાસ ૫૦ યોજન જેટલો છે તેા આને મરતક્ષેત્રના વિસ્તારમાંથી બાદ કરીએ તો ૪૭૬-૬૧૯ યોજન શેષ

ત્રીયભાગસ્ય बहुमध्यदेशभागे, 'एत्थणं विणीआ णाम रायहाणी पणत्ता' अत्र खलु एतादृशे किञ्च क्षेत्रे विनीता अयोध्या नाम्नी राजधानी प्रजप्ता । साधिक चतुर्दशाधिक योजनशताङ्कोत्पत्ति प्रकारः प्रदर्श्यते—तथाहि भरतक्षेत्रम् षड्विंशत्यधिकपञ्चशतानि ५२६ योजनानि पट् ६ कला योजनैकोनविंशतिभागरूपा विस्तृतम्, अस्मात् पञ्चाशत् ५० योजनानि वैताढ्यगिरिव्यासरूपाणि शोध्यन्ते, जातम् ४७६ $\frac{६}{१९}$ कलाः, दक्षिणोत्तरभरतार्द्धयो विभजनया एतस्यार्द्धे २३८ $\frac{३}{१९}$ कलाः, इयतो दक्षिणार्द्धभरतव्यासाद् 'उदीणदाहिणवित्थिन्ना' इत्यादि वक्ष्यमाणवचनात् विनीताया विस्ताररूपाणि नव योजनानि शोध्यन्ते, जातम् २२९ $\frac{३}{१९}$ कलाः, अस्य

बहुमध्यदेशभागे) और दक्षिणार्ध भरत के मध्यम—तृतीय भागके बहुमध्य देशभाग में (एत्थ णं विणीआ णाम—रायहाणी पणत्ता) विनीता नाम की एक बहुत प्रसिद्ध राजधानी कहो गई है । ११४ योजन की उत्पत्ति का प्रकार ऐसा है—भरत क्षेत्र का विस्तार ५२६ $\frac{६}{१९}$ योजन का है वैताढ्य पर्वतका व्यास चौड़ाई ५० योजन का है तो इसे भरत क्षेत्र के वि

स्तार में से घटा देने पर ४७६ $\frac{६}{१९}$ योजन रह जाते हैं । दक्षिणार्ध भरत और उत्तरार्ध भरत में इन्हें

विभक्त करने पर २३८ $\frac{३}{१९}$ योजन आते हैं । अब दक्षिणार्ध भरत व्यास में से विनीता के विस्ताररू-

प नौ योजन घटाने पर २२९ $\frac{३}{१९}$ आते हैं । इसके मध्य भाग में नगरी है तो इस प्रमाण को आ

धा करने पर ११४ योजन प्रमाण आजाता है बचे हुए एव योजन के १९—भाग करने पर और उनमें ३ कलाओं को मिलाने पर हुए—२२ को भाषा करने पर ११ कला आजाती है यह विनीता नामकी नगरी (पाईण पडोणायया) पूर्व से पश्चिम तक लम्बी है (उदीणदाहिणवित्थिन्ना)

રહે છે દક્ષિણાર્ધ ભરત અને ઉત્તરાર્ધ ભરતમાં એમને વિભક્ત કરીએ તો ૨૩૮-૩૧૯ યોજન થાય છે હવે દક્ષિણાર્ધ ભરતવ્યાસમાંથી વિનીતાના વિસ્તાર ૩૫ નવ યોજન બાદ કરીએ તો ૨૨૯-૩૧૧ આવે છે એના મધ્યભાગમાં નગરી છે. તો આ પ્રમાણને અધુરું કરીએ તો ૧૧૪ યોજન પ્રમાણ આવેલી બાકી છે એવું તેમજ યોજનાના ૧૯ ભાગ કરવાથી અને તેમાં ૩ કલાઓ ઉમેરવાથી ૨૨ થયા અને હવે ૨૨ ના બે ભાગ કરીએ તો તેના અર્ધી ૧૧ કલાઓ આવેલી બાકી છે એ વિનીતા નામે નગરી (પાઈણ પડોણાયયા) પૂર્વથી પશ્ચિમ સુધી લાંબી

च मध्यमागे नगरोत्पद्गरणे ११४ चतुर्दशोत्तरयोजनशनम् जातम् अवशिष्टस्यैकस्य योजनस्य एकोनविंशतिभागेषु कलात्रयक्षेत्रे सति जाताः २२ तदर्द्धम् ११ एकादशकला इति, तामेव विशेषणैर्विशिनष्टि— 'पाईण पढीणायया' इत्यादि । 'पाईण पढीणायया' पूर्वापरयो दिशोरायता 'उदीणदाहिणवित्थिन्ना' उत्तरदा क्षिणयो विस्तीर्णा 'दुवाल्स जोयणायामा' द्वादशयोजनायामा 'णवजोयणवित्थि- ण्णा' नव योजनविस्तीर्णा 'धणवइमत्तिणिम्मया' धनपतिमत्या उत्तरदिक् पालबुद्धया निर्मिता, निपुणशिल्पविरचितस्यातिसुन्दरत्वात् 'चामीयरपागारा' चामीकरप्राकारा स्वर्णमयप्राकारयुक्ता 'णाणामणिपंचवण्णा कविसोसगपरिमंडियाभिरामा' नानामणिपठचवर्णकपिशीर्षकपरिमण्डिता अतएवाभिरामा मनोहरा 'अलकापुरीसकासा' अलकापुरीसंकाशा-धनदपुरीसन्निभा 'पमुइयपक्कीलिया' प्रमुदितप्रकीडिता, प्रमुदित- जनयोगात् नगर्यापि 'तात्स्थपात् तद्वचपदेश' इति न्यायात् प्रमुदिता तथा प्रकीडिता

और उत्तर से दक्षिण तक चौड़ी है (दुवाल्सजोयणायामा) इस तरह इसकी लम्बाई १२-यो- जन की है (णवजोयण वित्थिणा) और नौ योजन की इसकी चौड़ाई है । (धणवइमत्ति णिम्मया) कुवेर ने उत्तर दिशा के अधिपति ने—इसे रचा है (चामीयरपागारा) स्वर्णमय—प्राकार से यह यु क्त है (णाणामणि पंचवण्ण कविसोसगपरिम डियाभिरामा) पांचवर्णवाळे अनेक मणियों से इसके क गुरे बने हुए हैं उनसे यह परिम डित है अतः देखने में यह बड़ी सुन्दर लगती है. (अल- का पुरी सकासा) इसलिये यह ऐसी प्रतीत होती है कि मानो यह धनद—कुवेर—को ही नगरी है. (पमुइय पक्कीलिया) यहां पर रहने वाले सदा प्रसन्नचित्त—रहते हैं और अनेक प्रकार की क्रीडाओं के रसमें सराबोर—रहते हैं—इस कारण यह नगरी भी उनके सम्बन्ध से प्रमुदित और प्रकीडित बनी रहती है. (पच्चक्खं देवलोगमूया) देखने वालों के लिये यह नगरी साक्षात् देव- लोक के समान लगती है (रिद्धत्थिमियसमिद्धा) यह नगरी विभव, भवन आदि के द्वारा वृद्धि को प्राप्त हुए हैं इसमें रहने वालों को स्वचक्र और परचक्र का विलकूल भय नहीं रहता है तथा धन

छे. (उदीणदाहिणवित्थिन्ना) अने उत्तरथी दक्षिण सुधी पडोणा छे (दुवाल्सजोयणायामा) आ प्रमाणे ओनी ल भाई १२ ये. जन जेटली छे (णवजोयणवित्थिण्णा) अने नव ये. जन जेटली ओनी पडोणा छे (धणवइमत्ति णिम्मया) उत्तर दिशाना अधिपति कुवेरे ओनी रचना करी छे (चामीयरपागारा) स्वर्णमय प्राकारथी ओ युक्त छे (णाणामणि पंचवण्ण कविसोसगपरिमंडियाभिरामा) पांच वणुवाणा अनेक मणियोथी ओना कांशाओ अनेला छे तेमनाथी ओ परिम डित छे ओथी ओवाभा ओ भूषण अ सुंदर लागे छे (अलकापुरी संकासा) ओथी ओ ओनी प्रतीत थाय छे के ओण्णे ओ धनद—कुवेर—नी नगरी छे, (पमुइय पक्कीलिया) ओही रहनेवाला सवांका प्रसन्नचित्त रहे छे अने अनेक प्रकारनी क्रीडाओना रसभा भजन रहे छे ओथी आ नगरी पखु तेमना संधथी प्रमुदित अने प्रकीडित रहे छे. (पच्चक्खं देवलोगमूया) ओनाओ भाटे ओ नगरी साक्षात् देवलोक जेनी लागे छे, (रिद्धत्थिमियसमिद्धा) ओ नगरी विभव, भवन आदि वडे समृद्धि सम्पन्न थई

ક્રીડાવન્તસ્તાદૃશા યે જનાસ્તદ્યોગાન્નગર્યપિ પ્રક્રીડિતા 'પચ્ચક્ષ્ણં દેવલોગભૂયા પ્રત્યક્ષં દેવલોકભૂતા સાશ્વાદેવલોકસમાના, 'રિદ્ધિત્થિમિયસમિદ્ધા, ઋદ્ધસ્તિમિત સમૃદ્ધા ઋદ્ધા વિમવમવનાદિભિ વૃદ્ધિમુપગતા સ્તિમિતા—સ્વપરચક્રમયગદ્ધિતા સ્થિ-
રેતિ યાવત્, સમૃદ્ધા ધનવાન્યસમેવિતાત્પ્રમુદિતા જના નાગરિકાઃ, 'પમુદ્ધય જળ જાળવયા, પ્રમુદિતજન જાનપદા 'જાવ પઢિરૂવા, યાવત્ પ્રતિરૂપા, પ્રમુદિતજનજા-
નપદેતિ વિશેષણં પ્રમુદિતપ્રક્રીડિતેતિ વિશેષણસ્ય હેતુભૂતતયા ન પોનરુક્ત્યમિ-
ત્યલમધિકપલ્લવિતેન ॥૨૦ ॥ ૧॥

નન્વેવ પ્રસ્તુત ભરતક્ષેત્રસ્ય નામ પ્રવૃત્તિઃ કથં જાતા ? इत्याह—“तत्थणं इत्यादि
मूलम्—तत्थ णं, विणोवाए रायहोणीए भरहे णामं राया चाउरंत
चक्कवट्ठी समुप्पजित्था, गहया हिमवंत महंतमलयमंदर जाव रज्जं पसासे
माणे विहरइ । चिइओ गमो रायवण्णगस्सइमो, तत्थ असंखेज्ज कालवासं
तरेण उप्पज्जए जसंसो उत्तमे अभिजाए सत्तवीरिय परक्कमगुणे पसत्थ
वण्ण सरसार संघयणतनुगबुद्धिधारणमेहासंठाण सीलप्पगई पहाणगारव-
च्छायागइए अणेगवयणप्पहाणे तेअ आउबलवीरियजुत्ते अञ्जुसिरघणणि-
चिअलोह संकलणाराय वइरउसह संघयण दंढधारी झस १ मिंगार २ जुग
३ बद्धमाणग ४ भद्दमाणग ५ संख ६ छत्त ७ वीअणि ८ पडाग ९ चक
१० णंगल ११ मुसल १२ रह १३ सोत्थिअ १४ अंकुस १५ चंदा
१६ इच्च १७ अग्गि १८ जूय १९ सागर २० इंदज्झय २१ पुहवि
२२ पउम २३ कुंजर २४ सीहासण २५ दंढ २६ कुम्भ २७ गिरिवर
२८ तुरगवर २९ वरमउह ३० कुंडल ३१ णंदावत्त ३२ धणु ३३ कोंत
३४ सागर ३५ भवणविमाण ३६ अणेगलक्खण पसत्थ सुविभत्त चित्तकर

વાન્ય આદિ કી વૃદ્ધિ કે કારણ યહા કે સમસ્ત નાગરીક જન સદા આનન્દ—આનન્દ મેં હી દૂબે રહતે હૈ । (જાવ પઢિરૂવા) ઇસ કારણ યાવત્ યહ નગરી પ્રતિરૂપ હૈ— અન્ય નગરી ઇમકે જૈસી નહીં હૈ— ‘અનુપમરૂપવાલી હૈ પ્રમુદિતજનજાનપદા’ યહ વિશેષણ “ પ્રમુદિતપ્રક્રીડિત” ઇસ વિશેષણ કા હેતુ-ભૂત હૈ. ઇમ કારણ યહા પુનરુક્તિ દોષ નહીં આતા હૈ ॥ ૧ ॥

છે, એના રહેનારાઓને સ્વચ્છ અને પર ચ્છનેા બધા એકદમ લાગતો નથી, તેમજ ધન-
ધાન્ય આદિની સમૃદ્ધિને લાધે અહીં રહેનારા સર્વ નાગરિકો સર્વેક આનંદ મગ્ન જ રહે
છે, (જાવ પઢિરૂવા) જેથી યાવત એ નગરી પ્રતિ રૂપ છે, બીજી કોઈ નગરી એના જેવી
સમૃદ્ધ નથી. એ અનુપમ રૂપવતી છે, “પ્રમુદિતજનજાનપદા” એ વિશેષણ “પ્રમુદિતપ્રક્રીડિત”
એ વિશેષણ માટે હેતુભૂત છે. એથી અહીં પુનરુક્તિ દોષ નથી, ॥ ૨૦ ॥ ૧ ॥

चरणदेसभागे उद्धामुह लोमजाल सुकुमालणिद्ध मउओवत्त पसत्थलोम
विइअमिस्विच्छच्छणविउलवच्छे देसखेत्तसुविभत्तदेहधारी तरुणरवि
रस्सिबोहिअवरकमल विबुद्धगम्भवण्णे हयपोसणकोससण्णिभ पसत्थ पि-
ड्डत णिरुवलेवे पउमुप्पलकुंदजाइजूहियवर चंपगणागपुप्फसारंगतुल्लगंधी
छत्तीसा अहिअ पसत्थ पत्थिवगुणेहिं जुत्ते अव्वोच्छिण्णातपत्त पागड
उभयजोणी विसुद्धणिअगकुलगयणपुण्णचंदे चंदे इव सोमयाए णयणमण
णिबुइकरेअक्खोमे सागरोव थिमिए धणवइव्व भोगसमुदयसइव्वयाए
समरे अपराइए परम विक्रमगुणे अमर वई समाण सरिसखे मणुअवई
भरहणक्कवट्ठी भरहं भुंजइ पणडसत्त ॥ सू० २ ॥

छाया- तत्र खलु विनीताया राजधान्या भरतो राजा चातुरन्तचक्रवर्ती समु-
दपद्मत्, महाहिमवन्महम्मलयमन्दरयावद्राज्य प्रशासयन् विहरति । द्वितीयो गमो राज-
वर्णकस्यायम् तत्र असंख्येयकालवर्षान्तरेण उत्पद्यते वशस्वी, उत्तमः, अभिजान- सत्त्ववीर्य-
पराक्रमगुणः प्रशस्त सारसंहननतनुकुबुद्धिधारणमेधा संस्थानशीलप्रकृतिक प्रधानगौर-
वच्छायागतिक अनेक वचन प्रधानः, तेज आयु र्वलवीर्ययुक्तः अशुपिर घणनिचित-
लोहसुद्धलनाराचवज्रपेम संहननदेहधारी अथ १ युग २ भृङ्गार ३ वर्द्धमानक ४ भद्रासन
५ शङ्ख ६ छत्र ७ व्यजन ८ पताका ९ चक्र १० लङ्गूल ११ मुसल १२ रथ १३ स्वस्तिका
१४ कुङ्कुश १५ चन्द्रा १६ दिव्या १७ ग्नि १८ यूप सागरे २० न्द्रध्वज २१ पृथ्वी २२ पद्म
२३ कुञ्जर २४ सिंहासन २५ २६ कूर्म २७ गिरिवर २८ तु रगवर २९ वरमुकुट ३० कुण्डल
३१ नन्द्यावर्त ३२ धनु ३३ कुन्त २४ सागर ३५ भवन विमाना ३६ नेकलक्षण प्रशस्त सुविभ-
क्त चित्रकरचरणदेशभागः ऊर्ध्वमुखलोमजाल सुकुमाल स्निग्ध मृदुकावर्त्त प्रशस्त लो-
मविरचित श्रीवत्सच्छन्नविपुलवक्षस्कः, देशक्षेत्र सुविभक्तदेहधारी, तरुणरविरश्मि बोधि-
तवरकमल विद्ध गर्भवर्ण, हयपोसनकोशसन्निभपृष्ठान्तनिरूपलेप, पदमोत्पल कुन्द
जाति यूथिकवरचम्पकनाग पुष्प सारङ्गतुल्य गन्धो, षट्त्रिंशता अधिक प्रशस्त पार्थिव-
गुणैर्युक्त अव्यवच्छिन्नातपत्रः, प्रकटोभययोनिक- विशुद्ध निजककुलगगन पूर्णचन्द्र इव सो-
मतया नयनमनसो निवृत्तिकरः, अक्षोभ, सागर इव स्तिमितः, धनपति रिव भाग समुद-
सद् द्रव्यतया, समरे अपराजितः, परम विक्रमगुणः, अमरपतिसमान सहशरूप, पनुमपति.
महतचक्रवर्ती भरत मुदक्ते प्रणष्टशत्रुः ॥ सूत २ ॥

टीका-‘तत्थण विणीथाए रायहोणीए भरहे णाम . राया तत्र खलु विनीतायाम्
अयोव्याया राजधान्या भरतो नाम राजा, सच वासुदेवोऽपि स्यात् तथा साम-
न्तादिरपि स्यात् अतस्तयोर्व्यावृत्त्यर्थमाह-‘चाउरतचक्रवट्ठी’ चातुरन्तचक्रवर्ती, चत्वा-

રોડ્ઁન્તાઃ-પૂર્વાપરદક્ષિણસમુદ્રાસ્ત્રયઃ ચતુર્થો હિમવાન્ इत्येवं स्वरूपास्ते सन्ति
 वश्यतया अस्येति चातुरन्तः सचासी चक्रवर्ती चेति चातुरन्तचक्रवर्ती 'समुष्प-
 ज्जित्था, समुदपद्यत आसीदित्यर्थः स कीदृशः ? इत्याह-'महयाहिमवंतमहं मलय
 मंदर जाव रज्ज पसासेमाणे विहरइ, महाहिमवन्महन् मलयमन्दर यावद्राज्यं प्रभा-
 सयन् विहरति, यावत्पदात् प्रथमोपाङ्गतः, माहिदसारे इत्यारभ्य समग्नो राजवर्णको
 ग्राह्यः राजा औपपातिके एकादश सूत्रे द्रष्टव्यः तथाहि-महाहिमवान् हैमवत हरि-
 वर्षक्षेत्रयो विर्भाजकः कुल पर्वतः तद्वत् महान् तथा मलयमन्दरमहेन्द्राणां
 पर्वतविशेषाणा सार इव सारो यस्य स तथा अन्तर्वलं यद्वा मलयादिरिवमारः प्रधान-
 नो यः स तथा पर्वतानां तन्ध्ये मलयादयः पर्वतविशेषाः प्रधानास्तथाऽयमपि अन्य
 नरेन्द्राणां मध्ये प्रधान इतिभावः, एतादृशविशेषणविशिष्टः राजा राज्यं प्रशासयन्
 पालयन् विहरति इत्यत एव भरतं वर्षमिति नन्वेनमपि शाश्वती भरतनाम प्रवृत्तिः

तत्स्थળેવિળીયાપ રાયહાળીપ ભરહેનામ'-इत्यादि सूत्र २-

ટીકાર્થ—उस विनीता नाम की राजधानी मे (भरहेणाम राया चाउरतचक्रवर्ती
 समुष्पज्जित्था) भरत नाम का चातुरन्त चक्रवर्तीराजा उत्पन्न हुआ-पूर्व पश्चिम
 और दक्षिण दिग्बर्ती तान समुद्र और चतुर्थ हिमवान् पर्वत जिस राजा के आधीन
 होते हैं वह चातुरन्त कहलाता है, ऐसा चातुरन्त चक्रवर्ती राजा जो होता है वह चातुरन्त
 चक्रवर्ती राजा कहा जाता है । (महया हिमवत महत्तमलयमंदर जाव रज्जं जाव
 पसासे माणे विहरइ) यह चातुरन्त चक्रवर्ती भरत राजा हिमवान् पर्वत के, मलय पर्वत के,
 मंदर पर्वत के और महेन्द्र पर्वत के जैसा विशिष्ट अन्तर्वल वाला था- अथवा मलयादि पर्वतों के
 जैसा प्रधान था ये मलयादि पर्वत अन्य पर्वतों के बीच में प्रधान रूप से परिगणित हुए हैं
 इसी -तरह से यह राजा भी अन्य राजाओं के बीच में प्रधान रूप से उल्लिखित होता
 था ऐसा यह राजा यावत् राज्य-का शासन करता हुआ-हर तरह से उसका संरक्षण और
 संभाल करता हुआ आनन्द से रहता था इस कारण-इस क्षेत्र का नाम भरत क्षेत्र ऐसा हुआहै-

તત્થળં વિળીયાપ રાયહાળીપ ભરહેનામ'-इत्यादि सूत्र-॥२॥

ટીકાર્થ—त विनीता नामक राजधानीमे (भरहेणाम राया चाउरत चक्रवर्ती समु-
 ष्पज्जित्था) भरत नामे एक चातुरन्त चक्रवर्ती राजा उत्पन्न थयो पूर्व-पश्चिम अने
 दक्षिण दिग्बर्ती त्रय समुद्रो अने चतुर्थ हिमवान् पर्वत के राजानी अधिनतामे होय छे.
 ते चातुरन्त छे ओवे के चातुरन्त चक्रवर्ती राजा होय छे, तेने चातुरन्त चक्रवर्ती राजा
 कहोवामा आवे छे, (महया हिमवन्तमहत्तमलयमंदर जाव रज्जं जाव पसासे माणे विहरइ)
 ओ चातुरन्त चक्रवर्ती भरत राजा हिमवान् पर्वतना, मलय पर्वतना, मंदर पर्वतना अने
 महेन्द्र पर्वतना जेवु विशिष्ट अन्तर्गण धरावतो हुतो अथवा मलयादि पर्वतानी जेभ ते
 प्रधान हुतो ओ मलयादि पर्वत अने पर्वतना प्रधान रूपमे परिगणित थयो छे, आ
 प्रमाणे ओ ओ राजा पण अन्य राजाओनी मध्ये प्रधान रूपमे उल्लिखित थयो हुतो ओवे
 ते राजा यावत् राज-शासन स भाणतो, हरेक रीते तेनु संरक्षण अने तेनी संभाल करतो

દ્યતે इति सच कीदृश इत्याह—‘जसंसी उत्तमे अभिजाए, यशस्वी कीर्त्तिमान् उत्तमः
 शलाकापुरुषत्वात् अभिजातः कुलीनः श्रौतपभादिवंश्यत्वात् ‘सत्त्ववीरिय परवक्रमगुणे,
 सत्त्वं—साहसं वीर्यम्—आन्तरं बलम्, परक्रमः शत्रुविनाशनशक्तिः एते गुणा यस्य स
 सत्त्ववीर्यपराक्रमगुणः एतेन राज्योचितसर्वातिशायि गुणवत्त्वमुक्तम् पसत्त्ववण्णसरसार-
 संघयण तनुगबुद्धिधारण मेहासंठाण सीलप्पई’ प्रशस्तवर्णं स्वरसार संहनन तनुकुर्वु
 द्धिधारणमेधा संस्थान शील प्रकृतिरुः, तत्र प्रशस्ताः—तत्कालवर्त्ति जनापेक्षया श्लाघ-
 नीयाः वर्णः देहकान्तिः, स्वरो ध्वनिः सारः शुभपुद्गलोपचयजन्म्यो धातुविशेषः,
 संहननम् अस्थिनिचयरूपम् तनुकं गरीरम् धारणा अनुभूतार्थधारणाशक्तिः मेधा हेयो-
 पादेयधीः, संस्थानं यथास्थानमङ्गोपाङ्गविन्यासः शीलम् आचारः प्रकृतिस्वभावः, एतेषां
 द्वन्द्वोत्तरं प्रशस्ता वर्णादयोऽर्थाः यस्य स तथेति बहुव्रीहिः ‘पद्माणगारवच्छायागईए,

ક્રિયા જાવે તો ફિર હસ કાલ મે મનુષ્યો મેં અસહ્યાતા યુષ્કત્વ કા વ્યવહાર પ્રસન્ન પ્રાપ્ત હોતા
 હૈ. અતઃ કાલ મેં અસહ્યેયતા અસહ્યાત વર્ષોં કી અપેક્ષા સે હી માનના ચાહિયે હસ તરફ જબ
 અસહ્યાત વર્ષોં તક અસહ્યાત કાલ વ્યતીત હો ચુકે તબ એક ભરત ચક્રવર્તીં કે વાદ દુસરા
 ભરત ચક્રવર્તીં કિ જિસસે ભરત ક્ષેત્ર કા ભરત એસા નામ પ્રચલિત હોતા હૈ ઉત્પન્ન હોતા હૈ
 યહ ભરત ચક્રવર્તીં (જસંસી ઉત્તમે અભિજાણ) યશસ્વી કીર્તિ સંપન્ન હોતા હૈ, ઉત્તમ શલાકા
 પુરુષ હોને સે—શ્રેષ્ઠ હોતા હૈ તથા અભિજાત—કુલીન હોતા હૈ ક્યો કિ યહ ઋષભાદિ કા
 વંશજ હોતા હૈ (સત્ત્વવીર્યપરવક્રમગુણે) હસમેં સત્ત્વ સાહસ વીર્ય આન્તર બલ, પરાક્રમ—
 શત્રુ વિનાશન શક્તિ યે સબ ગુણ હોતે હૈં હમ પદ દ્વારા હસમેં રાજન્ય કે ઉચિત સર્વાતિ
 શાયી ગુણવત્તા પ્રગટ કી ગઈ હૈ (પસત્થ વણ્ણ સર સાર સંઘયણ તનુગબુદ્ધિધારણ મેહા સંઠાણ
 સોલપ્પઈ) અન્ય રાજાઓં કી અપેક્ષા હમકા વર્ણ દેહકાન્તિ, સ્વર ધ્વનિ, સાર શુભપુદ્ગલોપચય
 જન્ય ધાતુવિશેષ, સંહનન અસ્થિનિચય તનુ ગરર વારેણા અનુભૂત અર્થ કી ધારણા શક્તિ

જ્યાતતાનો વ્યવહાર થયો નથી. જે સમયની અપેક્ષાએ કાળમા અસખ્યાતાનો વ્યવહાર
 કલ્પિત કરવામાં આવે તો પછી એ કાળમા મનુષ્યોમા અસખ્યાતાયુષ્કત્વનો વ્યવહાર પ્રસન્ન
 પ્રાપ્ત થાય છે એથી કાળમાં અસખ્યેયતા અસખ્યાત વર્ષોની અપેક્ષાથી જ માનવી નેઈએ
 આ રીતે જ્યારે અસખ્યાત વર્ષોં સુધી અસખ્યાત વર્ષોં વ્યતીત થઈ ચૂક્યા ત્યારે એક ભરત
 ચક્રવર્તીં પછી બીજો ભરત ચક્રવર્તીં—કે જેમનાથી ભરતક્ષેત્રનું નામ ભરત આ પ્રમાણે પ્રખ્યાત
 થાય છે—ઉત્પન્ન થાય છે એ ભરત ચક્રવર્તીં (જસંસી ઉત્તમે અભિજાણ)—યશસ્વી—કીર્તિ
 સંપન્ન હોય છે, ઉત્તમ શલાકા પુરુષ હોવાથી—શ્રેષ્ઠ હોય છે તેમજ અભિજાત કુલીન હોય
 છે. કેમકે એ ઋષભાદિક વંશ જ હોય છે (સત્ત્વવીર્ય પરવક્રમગુણે) એમા સત્ત્વ—સાહસ
 વીર્ય—આંતર બળ, પરાક્રમ—શત્રુ વિનાશન શક્તિ એ સર્વે શુભ હોય છે એ પદ વડે તેમાં
 રાજન્યના ઉચિત સર્વાતિ શાયી શુભ વત્તા પ્રગટ કરવામા આવી છે (પસત્થ વણ્ણ સરસાર
 સંઘયણ તનુગ બુદ્ધિધારણ મેહા સંઠાણ સોલપ્પઈ) અન્ય રાજાઓની અપેક્ષા એનો વર્ણ—
 દેહ કાન્તિ, સ્વર—ધ્વનિ, સાર શુભ પુદ્ગલોપચય જન્ય ધાતુ વિશેષ, સંહનન—અસ્થિનિચય

અત્રાપિ દ્વન્દ્વોત્તરં પ્રધાના અનન્યવર્તિનો ગૌરવાદયોઽર્થાં यस્ય સ પ્રધાનગૌરવચ્છા-
યાગતિકઃ, તત્ર ગૌરવમ્ અભિમાનઃ છાયા શરીરશોભા, ગતિઃ સંચરણમિતિ, 'અને-
ગવયણપ્પહાણે' અનેકવચનપ્રધાનઃ અનેકવાચનિકેષુ શ્રેષ્ઠઃ સકલવક્તૃશ્રેષ્ઠા इत्यर्थः વચ
નપ્રકારશ્ચાયમ્ "સત્યં શૌચમનાયાસઃ મદ્ગલં પ્રિયવાદિતા इत्यादि । 'તેય આડવલવી-
રિયજુત્તે' તેજઆયુવલવીર્યયુક્તઃ તત્ર તેજઃ પરૈરસહનીયઃ પ્રતાપઃ અયુર્વલં પુરુષાયુષં વીર્યમ્
આત્મ સમુત્થં તૈઃ યુક્તઃ एतेन जरारोगादिनोपहतवीर्यत्व नास्येति सिद्धम् 'અજ્ઞુસિ-
રઘણિચિય લોહસકલળારાયવહરડસહસંઘયણ દેહધારી, અશુપિરઘણનિચિતલોહશદ્ધ
લનારાચવજ્રર્પમસંહનનદેહધારી, તત્ર અશુપિરા નિચ્છિદ્રા અતપ્ત્વ ઘનનિચિતા અત્ય
ન્તઘના યા લોહશદ્ધલા તદિવ નારાચવજ્રઋપમં પ્રસિદ્ધા વજ્રઋષમનારાચં સંહનનં યત્ર
ત તથાચિત્તં દેહ ધરતીત્યેવં શીલઃ, 'ક્ષસ ૧ જુગ ૨ મિંગાર ૩ વદ્ધમાણગ ૪ મદમા-
ણગ ૫ સલ્લ ૬ છત્ત ૭ વીઅણિ ૮ પઢાગ ૯ ચક્ક ૧૦ ણગલ ૧૧ મુસલ ૧૨ રહ ૧૩
સોત્થિય ૧૪ અંકુસ ૧૫ ચંદા ૧૬ ઇચ્ચ ૧૭ અગ્ગિ ૧૮ જૂય ૧૯ સાગર ૨૦ ઇદજ્ઞય

વચ્છાયાગહપ) ગૌરવ-સ્વાભિમાન-છાયા શરીર શોભા ઔર ગતિ અસાધારણ યે સમ્મ ઇસમેં
અસાધારણ હોતે હૈ । (અનેગવયણપ્પહાણે) યહ સકલ વક્તાઓ મેં શ્રેષ્ઠ વક્તા હોતા હૈ. (તેય
આડવલવીરિયજુત્તે) તેજ-જિસે દૂસરે જન સહન નહોં કર સકેં એસે પ્રતાપ, આયુ, વલ, ઔર
વીર્ય સે યહ યુક્ત હોતા હૈ. ઇસસે જરા રોગ આદિ સે યહ ઉપહત વીર્ય વાલા નહોં હોતા હૈ
યહ બાત સિદ્ધ હોતી હૈ (અજ્ઞુસિરઘણિચિય લોહસકલળારાયવહરડસહસંઘયણદેહધારી)
નિચ્છિદ્ર અતપ્ત્વ અત્યન્ત ઘની જો લોહ શ્રદ્ધલા ઉપકે જૈસા ઇનકા વજ્ર ઋષમ નારાચ સંહનન
વાલા દેહ હોતા હૈ (ક્ષસ ૧ જુગ ૨ મિંગાર ૩ વદ્ધમાણગ ૪ મદમાણગ ૫ સલ્લ ૬ છત્ત ૭
વીઅણિ ૮ પઢાગ ૯ ચક્ક ૧૦ ણગલ ૧૧ મુસલ ૧૨, રહ ૧૩, સોત્થિય ૧૪ અંકુસ ૧૫,
ચંદા ૧૬, ઇચ્ચ ૧૭, અગ્ગિ ૧૮, જૂય ૧૯, સાગર ૨૦, ઇદજ્ઞય ૨૧, પુહવિ ૨૨, પડમ

તનુ-શરીર, ધારણા-અનુભૂત અર્થની ધારણા શક્તિ-મેધા-હેયોપાદેયવિવેચક બુદ્ધિ સ્થાન
અગોપાંગવિન્યાસ, શીલ-આચાર અને પ્રકૃતિ-સ્વભાવ એ સર્વે તત્કાલવર્તી મનુષ્યોની
અપેક્ષા શલાધનીય-પ્રથમનીય હોય છે (પહાણગારવચ્છાયાગહપ) ગૌરવ-સ્વાભિમાન-છાયા
શરીર શોભા અને ગતિ અસાધારણ એ સર્વે એમા અસાધારણ હોય છે. (અનેગ વયણપ્પ-
હાણે) એ સકલ વક્તાઓમાં શ્રેષ્ઠ વક્તા હોય છે. (તેમઆડવલવીરિયજુત્તે) તેજ-એને
બીજા માણસો સહન કરી શકે નહિ એવો પ્રતાપ, આયુ, બળ અને વીર્યથી એ યુક્ત હોય
છે એથી જરારોગ આદિથી એ ઉપહત-વીર્યવાળો થતો નથી એ વાત સિદ્ધ થાય છે
(અજ્ઞુસિરઘણિચિય લોહસંકલળારાયવહરડસહસંઘયણદેહધારી) નિચ્છિદ્ર એથી અત્યંત
સાન્દ્ર એ લોહ શ્રદ્ધા હોય છે તેના એવો એનો વજ્રઋષમ, નારાય સંહનનવાળો
દેહ હોય છે (ક્ષસ ૧, જુગ ૨, મિંગાર ૩, વદ્ધમાણગ ૪, મદમાણગ ૫, સલ્લ ૬,

૧ સત્ય શૌચમનાયાસ મદ્ગલ પ્રિયવાદિતા' इत्यादि ये वक्ता के गुण कहे गये हैं ।

૨ "સત્ય શૌચમનાયાસ મદ્ગલ પ્રિયવાદિતા' વગેરે વક્તાના શુભો કહેવામા આવ્યા છે.

ઘટે इति सच कीदृश इत्याह—‘जसंसी उत्तमे अभिजाए, यशस्वी कीर्त्तिमान उत्तमः शलाकापुरुषत्वात् अभिजातः बुलीनः श्रीऋषभादिर्वश्यत्वात् ‘सत्त्ववीरिय परक्कमगुणे, सत्त्वं—साहसं वीर्यम्—आन्तरं बलम्, परक्कमः शत्रुविनाशनशक्तिः एते गुणा यस्य स सत्त्ववीर्यपराक्कमगुणः एतेन राज्योचितसर्वातिशायि गुणवत्त्वमुक्तम् पसत्थवण्णसरसार-संघयण तनुगबुद्धिधारण मेहासंठाण सीलप्पई’ प्रशस्तवर्ण स्वरसार संहनन तनुकुबुद्धिधारणमेधा संस्थान शील प्रकृतिः, तत्र प्रशस्ताः—तत्कालवर्त्ति जनापेक्षया श्लाघनीयाः वर्णः देहकान्तिः, स्वरः ध्वनिः सारः शुभपुद्गलोपचयजन्म्यो धातुविशेषः, संहननम् अस्थिनिचयरूपम् तनुकं शरीरम् धारणा अनुभूतार्थधारणाशक्तिः मेधा हेयोपादेयधीः, संस्थानं यथास्थानमङ्गोपाद्गविन्यासः शीलम् आचारः प्रकृतिस्वभावः, एतेषां द्वन्द्वोत्तरं प्रशस्ता वर्णादयोऽर्थाः यरय स तथेति बहुव्रीहिः ‘पहाणगारवच्छायागइए,

ક્રિયા જાવે તો ફિર ઇસ કાલ મે મનુષ્યો મેં અસહ્યાતા યુક્તત્વ કા વ્યવહાર પ્રસન્ન પ્રાપ્ત હોતા હૈ. અતઃ કાલ મેં અસહ્યેયતા અસહ્યાત વર્ષોં કી અપેક્ષા સે હી માનના ચાહિયે ઇસ તરહ જહ અસહ્યાત વર્ષોં તક્ અસહ્યાત કાલ વ્યતીત હો ચુકે તવ ઇક ભરત ચક્રવર્તીં કે બાદ દૂસરા ભરત ચક્રવર્તીં કિ જિસસે ભરત ક્ષેત્ર કા ભરત એસા નામ પ્રચલિત હોતા હૈ ઉત્પન્ન હોતા હૈ યહ ભરત ચક્રવર્તીં (જસંસી ઉત્તમે અભિજાણ) યજ્ઞસ્વી કીર્તિ સંપન્ન હોતા હૈ, ઉત્તમ શલાકા પુરુષ હોને સે—શ્રેષ્ઠ હોતા હૈ તથા અભિજાત—કુલીન હોતા હૈ ક્યો કિ યહ ઋષભાદિ કા વંશજ હોતા હૈ (સત્ત્વવીર્યપરક્કમગુણે) ડસમેં સત્ત્વ સાહસ વીર્ય આન્તર બલ, પરાક્કમ—શત્રુ વિનાશન શક્તિ યે સબ ગુણ હોતે હૈં ઇમ પદ દ્વારા ડસમેં રાજન્ય કે ડચિત સર્વાતિ શાયી ગુણવત્તા પ્રગટ કી ગઈ હૈ (પસત્થ વણ્ણ સર સાર સંઘયણ તનુગબુદ્ધિધારણ મેહા સંઠાણ સોલપ્પઈ) અન્ય રાજાઓં કી અપેક્ષા ઇમકા વર્ણ દેહકાન્તિ, સ્વર ધ્વનિ, સાર શુભપુદ્ગલોપચય જન્ય ધાતુવિશેષ, સંહનન અસ્થિનિચય તનુ શરર વારણા અનુમૂત અર્થ કી ધારણા શક્તિ

ખ્યાતતાનો વ્યવહાર થયો નથી. જે સમયની અપેક્ષાએ કાળમાં અસખ્યાતતાનો વ્યવહાર કલ્પિત કરવામાં આવે તો પછી એ કાળમાં મનુષ્યોમાં અસખ્યાતાયુક્તત્વનો વ્યવહાર પ્રસન્ન પ્રાપ્ત થાય છે એથી કાળમાં અસખ્યેયતા અસખ્યાત વર્ષોની અપેક્ષાથી જ માનવી ભેદ એ આ રીતે જ્યારે અસખ્યાત વર્ષો સુધી અસખ્યાત વર્ષો વ્યતીત થઈ ચૂક્યા ત્યારે એક ભરત ચક્રવર્તી પછી બીજો ભરત ચક્રવર્તી—કે જેમનાથી ભરતક્ષેત્રનું નામ ભરત આ પ્રમાણે પ્રખ્યાત થાય છે—ઉત્પન્ન થાય છે એ ભરત ચક્રવર્તી (જસંસી ઉત્તમે અભિજાણ)—યજ્ઞસ્વી—કીર્તિ સંપન્ન હોય છે, ઉત્તમ શલાકા પુરુષ હોવાથી—શ્રેષ્ઠ હોય છે તેમજ અભિજાત કુલીન હોય છે. કેમકે એ ઋષભાદિક વંશ જ હોય છે (સત્ત્વવીર્ય પરક્કમગુણે) એમાં સત્ત્વ—સાહસ વીર્ય—આંતર બળ, પરાક્કમ—શત્રુ વિનાશન શક્તિ એ સર્વે શુભ હોય છે એ પદ વડે તેમાં રાજન્યના ઉચિત સર્વાતિ શાયી શુભ વત્તા પ્રગટ કરવામાં આવી છે (પસત્થ વણ્ણ સરસાર સંઘયણ તનુગ બુદ્ધિધારણ મેહા સંઠાણ સોલપ્પઈ) અન્ય રાજાઓની અપેક્ષા એના વર્ણ—દેહ કાન્તિ, સ્વર—ધ્વનિ, સાર શુભ પુદ્ગલોપચય જન્ય ધાતુ વિશેષ, સંહનન—અસ્થિનિચય

अत्रापि द्वन्द्वोत्तरं प्रधाना अनन्यवर्तिनो गौरवादयोऽर्था यस्य स प्रधानगौरवच्छा-
यागतिकः, तत्र गौरवम् अभिमानः छाया शरीरशोभा, गतिः संचरणमिति, 'अणे-
गवयणप्पहाणे' अनेकवचनप्रधानः अनेकवाचनिकेषु श्रेष्ठः सकलवक्तृश्रेष्ठा इत्यर्थः वच-
नप्रकारश्चायम् "सत्य शौचमनायासः मङ्गलं प्रियवादिता इत्यादि । 'तेय आउवलवी-
रियजुत्ते' तेजआयुवल्वीर्ययुक्तः तत्र तेजः परैरसहनीयः प्रतापः अयुर्वलं पुरुषायुषं वीर्यम्
आत्म समुत्थं तैः युक्तः एतेन जरारोगादिनोपहतवीर्यत्व नास्मेति सिद्धम् 'अञ्जुसि-
रघणणिचिय लोहसंकलणारायवहरउसहसंघयण देहधारी, अशुपिरघणनिचितलोहशङ्ख
लनाराचवज्रर्षमसंहननदेहधारी, तत्र अशुपिरा निच्छिद्रा अतएव घननिचिता अत्य-
न्तघना या लोहशृङ्खला तदिव नाराचवज्रऋषमं प्रसिद्धा वज्रऋषमनाराचं संहननं यत्र
त तथाविधं देह धरतीत्येवं शीलः, 'झस १ जुग २ भिंगार ३ बद्धमाणग ४ भदमा-
णग ५ सख ६ छत्त ७ वीअणि ८ पडाग ९ चक्र १० णगल ११ मुसल १२ रह १३
सोत्थिय १४ अंकुस १५ चंदा १६ इच्च १७ अगि १८ जूय १९ सागर २० इंदञ्जय

वच्छायागहण) गौरव-त्वाभिमान-छाया शरीर शोभा और गति असाधारण ये सब इसमें
असाधारण होते हैं । (अणेगवयणप्पहाणे) यह सकल वक्ताओं में श्रेष्ठ वक्ता होता है. (तेय
आउवलवीरियजुत्ते) तेज-जिसे दूसरे जन सहन नहीं कर सकें ऐसे प्रताप, आयु, बल, और
वीर्य से यह युक्त होता है. इससे जरा रोग आदि से यह उपहत बोर्य वाला नहीं होता है
यह बात सिद्ध होती है (अञ्जुसिरघणणिचिय लोहसंकलणारायवहरउसहसंघयणदेहधारी)
निच्छिद्र अतएव अत्यन्त घनी जो लोह शृङ्खला उसके जैसा इनका वज्र ऋषम नाराच सहनन
वाला देह होता है (झस १ जुग २ भिंगार ३ बद्धमाणग ४ भदमाणग ५ सख ६ छत्त ७
वीअणि ८ पडाग ९ चक्र १० णगल ११ मुसल १२, रह १३, सोत्थिय १४ अंकुस १५,
चंदा १६, इच्च १७, अगि १८, जूय १९, सागर २०, इंदञ्जय २१, पुहवि २२. पडम

तनु-शरीर, धारणा-अनुभूत अर्थों की धारणा शक्ति-मेधा-छेयोपादेयविवेक बुद्धि स स्थान
अंगोपांगविन्यास, शील-आचार अने प्रकृति-स्वभाव जो सबे तत्कालवर्ती अनुभूतों की
अपेक्षा श्लाघनीय-प्रशंसायुक्त होय छे (पहाणगौरवच्छायागहण) गौरव-त्वाभिमान-छाया
शरीर शोभा अने गति असाधारण जो सबे ओभा असाधारण होय छे. (अणेग वयणप्प-
हाणे) जो सकल वक्ताओं में श्रेष्ठ वक्ता होय छे. (तेयआउवलवीरियजुत्ते) तेज-जिसे
भील भावसे सहन करी शके नहि ओवे प्रताप, आयु, बल अने वीर्य की युक्त होय
छे ओथी नराशय आदि की उपहत-वीर्यवाणे थेनो नथी जो बात सिद्ध थाय छे.
(अञ्जुसिरघणणिचिय लोहसंकलणारायवहरउसहसंघयणदेहधारी) निच्छिद्र ओथी अत्यन्त
सान्द्र ओ होइ शंभला होय छे. तेना ओवे ओनो वज्रऋषम, नाराच संहननवाणे
देह होय छे (झस १, जुग २, भिंगार ३, बद्धमाणग ४, भदमाणग ५, सख ६, छत्त

१ सत्य शौचमनायास मङ्गल प्रियवादिता' इत्यादि ये वक्ता के गुण कहे गये हैं ।

२ "सत्य शौचमनायास मङ्गल प्रियवादिता' वगेरे वक्ताना शुभो कहेवाभा आया छे,
६६

२१ पुहवि २२ पउम २३ कुंजर २४ सीहासण २५ दंड २६ कुम्भ २७ गिरिवर २८
 तुरगवर २९ वरमउड ३० कुंडल ३१ णंदावत्त ३२ घणु ३३ कौत ३४ गागर ३५
 भवणविमाण ३६ अणेगलक्खण पसत्थसुविमत्तचित्तरचरणदेसभाए' तत्र ज्ञमो मीनः
 १ युगं शकटाङ्गविशेषः २, भृङ्गारो. जलभाजनविशेषः ३, वर्द्धमानक शरावः ४,
 भद्रासनम् ५, शङ्खो दक्षिणावर्त्तः ६, छत्रं प्रसिद्धम् ७, व्यजन व्यजनकम् 'पंखा
 इतिप्रसिद्धम् ८ पताका ९ चक्रम् १० लाङ्गलम् हलम् ११, मुमलम् १२, रथ १३,
 स्वस्तिकम् १४, अकुंशः १५, चन्द्रः १६, आदित्या १७, गनी प्रसिद्धौ १८ यूयो
 यज्ञस्तम्भः १९, सागर समुद्रः २०, इन्द्रध्वजः २१, पृथ्वी २२, पद्म २३, कुञ्जरः
 प्रसिद्धाः २४, सिंहासनम् २५, दण्ड २६, कूर्म २७, गिरिवर २८, तुरगवर २९,
 वरमुकुट ३०, कुण्डलानि व्यक्तानि ३१, नन्धावर्त्तः प्रतिदिग् नवकोणकः स्वस्तिकः
 ३२, घनुः ३३, कुन्तः भल्लुकः ३४, गागरः स्त्रीपरिधानविशेष ३५, भवनविमा-
 नम् ३६, एतेषां द्वन्द्वोत्तरम् एतानि प्रशस्तानि माङ्गल्यानि, सुविमक्तानि अतिशयेन

२३, कुंजर २४, सीहासण २५, दंड, २६, कुम्भ २७, गिरिवर २८, तुरगवर २९, वरमउड
 ३०, कुण्डल ३१, णंदावत्त ३२, घणु ३३, कौत ३४, गागर ३५, भवणविमाण ३६,
 (अणेगलक्खण पसत्थसुविमत्तचित्तरचरणदेसभाए) इनकी हथेलियों में और पगथलियों में एक
 हजार प्रशस्त एवं विभक्त रूप में रहे हुए सुलक्षण होते हैं उनमें से कितने सुलक्षणों के
 त्रिलोक गम—इस प्रकार से है—शस—मीन—युग—जुमा—मंगार जलभाजनविशेष, वर्द्धमानक
 शराव—भद्रासन, दक्षिणावर्त्त शंख छत्र व्यजन—पंख, पताका चक्र लांगल, हल मुसल, रथ,
 स्वस्तिक, अकुश, चन्द्र, आदित्य, सूर्य, अग्नि यूप—यज्ञस्तम्भ, सागर—समुद्र, इन्द्रध्वज,
 पृथिवी, पद्म, कुञ्जर,—हस्ती—सिंहासन दण्ड कूर्म—कलुभा. गिरिवर श्रेष्ठपर्वत तुरगवर—श्रेष्ठ
 घोड़ा, वरमुकुट, कुण्डल, नन्धावर्त्त, — हर एक दिशा में नौकोणों वाला स्वस्तिक, घनुष, कुन्त,
 भल्लुक— भाला, गागर— स्त्री परिधान विशेष, और भवन विमान इन पदार्थों के वहां जो चिह्न

७, बीअणि ८, पडाग ९, चक्क १०, णंगल ११, मुसल १२, रद्ध, १३, सोत्थिय १४, अकुस
 १५, चंदा १६, इच्च १७, अग्नि—१८, जूय—१९, सागर २०, इंद्वज्जय २१, पुहवि २२, पउम
 २३, कुंजर २४, सीहासण २५, दंड २६, कुम्भ २७, गिरिवर २८, तुरगवर २९, वरमउड
 ३० कुंडल ३१, णंदावत्त ३२, घणु—३३, कौत ३४, गागर ३५, भवणविमाण ३६, अणेग-
 लक्खण पसत्थसुविमत्तचित्तरचरणदेसभाए) ओमनी हथेलीओमा अने पगना तणी-
 यामा ओके हजार प्रशस्त तेमज विभक्त रूपमा रहेला सुलक्षणे होय छे तेओमाथी
 केटलांके सुलक्षणे आ प्रमाणे छे—अम—मीन, युग—जुमा, अंगार—अल लाजन विशेष
 वर्द्धमानक—शराव, भद्रासन, दक्षिणावर्त्त शंख, छत्र, व्यजन—पंखो, पताका, चक्र, लांगल,
 हल, भूसल रथ, स्वस्तिक, अकुश चन्द्र, आदित्य, सूर्य, अग्नि, यूप—यज्ञस्तम्भ, सागर—
 समुद्र, इन्द्रध्वज, पद्म, कुंजर—हस्ती सिंहासन, दंड, कूर्म काथणो, गिरिवर—श्रेष्ठ पर्वत,
 तुरगवर—श्रेष्ठ घोडा, वरमुकुट, कुंडल, नन्धावर्त्त—हर एक दिशांमां नव भूषाओ वाओ स्वस्तिक
 घनुष, कुन्त, भल्लुक—भालो, गागर—स्त्री परिधान विशेष अने भवन—विमान, ओ पदार्थोना

વિવિક્તાનિ, યાનિ અનેકાનિ અષ્ટોત્તરસદસપ્રમાણાનિ લક્ષણાનિ તૈશ્ચિત્રો-વિસ્મયકરઃ કર ચરણયોદેશભાગો यस્ય સ તથા, તીર્થકૃતામિવ ચક્રવર્તિનામપિ અષ્ટાધિક સદસ્યલક્ષણાનિ ભવન્તિ ઉત્તમ—

મૂલમ્—“પાગય મણુઆણં વત્તીસં લક્ષણાનિ અટ્ઠસયં” ૧

બલદેવ વાસુદેવાણં અટ્ઠમહસ્સં ચક્કવટ્ઠિતિત્થગરાણં ॥૩૬૧॥

છાયા— “પ્રાકૃત મનુજાનાં દ્વાત્રિશલ્લક્ષણાનિ અષ્ટશતમ્” ૧

બલદેવ વાસુદેવાનામ્ અષ્ટસદસં ચક્રવર્તિ તીર્થકરણામ્ ॥” ઇતિ

ઉદ્દામુહલોમજાલમુકુમાલણિદ્ધમઝાવત્તપસત્થલોમવિરહઅસિરિવચ્છછળ્લણવિઝલવચ્છે તત્ર ઝર્ધ્વમુસં ભૂપેરુદ્ધચ્છતામ્ અંકુરાણામિલ્લ યેપાં તાનિ ઝર્ધ્વતુસાનિ યાનિ લોમાનિ તેપાં જાલં સમૂહો યત્ર સ તથા મુકુમાલસ્તિગ્ધાનિ નવનીતપિણ્ડાદિ-
દ્રવ્યાણિ તદ્દત્ મૃદુકાનિ કોમલાનિ તથા આવર્તૈઃ દક્ષિણાવર્તૈઃ પ્રશસ્તાનિ માઙ્ગલ્યાનિ યાનિ લોમાનિ તૈર્વિરચિતો યઃ શ્રીવત્સઃ ચિહ્નવિશેષઃ તતઃ પૂર્વપદેન કર્મ-
ધારયઃ તેન છન્નમ્ આચ્છાદિતં યુક્તમિત્યર્થઃ વિપુલ વક્ષો વક્ષસ્થલં યસ્ય સ તથા ‘દેસલેક્ષેત્તમુવિભક્તદેહધારી’ દેશક્ષેત્રમુવિભક્તદેહધારી, દેશે કોશલદેશાદૌ, ક્ષેત્રે તદેક-

અક્ષિત હોતે હૈ વે સબ આપસ મેં એક દુસરે સે અલગ ૫ હોતે હૈં ઔર મંગલકારી હોતે હૈં ।
इन चिह्नों से युक्त उनके हाथ और पैर बड़े सुहावने लगते हैं । १००८ लक्षण जिस प्रकार
से तीर्थकरों के होते हैं वैसे ही वे चक्रवर्तियों के भी होते हैं उक्तं च—

પાગય મણુઆણ વત્તીસલક્ષણાનિ અટ્ઠમય ।

બલદેવવાસુદેવાણં અટ્ઠસદસસ ચક્કવટ્ઠિતિત્થગરાણં” ॥૧॥

(ઉદ્દામુહ લોમજાલમુકુમાલણિદ્ધમઝાવત્ત પસત્થલોમવિરહઅસિરિવચ્છછળ્લણવિઝલવચ્છે) इनका
वक्षःस्थल विपुल होता है और वह उर्ध्वमुखवाले, तथा नवनीत पिण्डादि के जैसे मृदुता-
वाले एवं दक्षिणावर्त्त वाले ऐसे प्रशस्त वालों से— रोमों से चित— बनेहुए श्रीवत्सचिह्न विशेष
से आच्छादित— युक्त रहते हैं (देस लेखेत्त मुविभक्तेहधारी) देश— कोशल देश आदि में
और क्षेत्र उसके अवयवभूत विनीता आदि नगरी मे यथास्थान जिसमें अवयवों की रचना हुई है

ચિહ્નો ત્યા અક્ષિત હોય છે, તે બધાં પરસ્પર — એક-બીજાથી અલગ-અલગ હોય છે, અને
મંગળ કારી હોય છે એ ચિત્રોથી સમ્પન્ન તેમના હાથ અને પગ અતીવ સુદર લાગે છે
૧૦૦૮ લક્ષણો જેમ તીર્થ કરાને હોય છે, તેમ જ એ બધા લક્ષણો ચક્રવર્તીઓને પણ હોય
છે કહ્યું છે—

પાગય મણુઆણ વત્તીસ લક્ષણાનિ અટ્ઠસયં ।

બલદેવ વાસુદેવાણ અટ્ઠસદસસં ચક્કવટ્ઠિતિત્થગરાણં ॥ ૧ ॥

(ઉદ્દામુહલોમ જાલ મુકુમાલણિદ્ધમઝાવત્તપસત્થલોમવિરહઅસિરિવચ્છછળ્લણવિઝલ-
વચ્છે) એમનું વક્ષસ્થળ વિપુલ હોય છે અને તે ઉર્ધ્વમુખનાળા તેમજ નવનીત પિંડાદિના જેમ
મૃદુતાવાળા અને દક્ષિણાવર્તવાળા એવા પ્રશસ્તવાળોથી-યુક્ત રહે છે (દેસલેક્ષેત્ત મુવિભક્તદેહ

દેશભૂતવિનીતાનગર્યાદૌ સુવિમલ્લો યથાસ્થાનવિનિવિષ્ટાવયવો યો દેહસ્તં ધરતીત્યેવં
 શીલઃ ભરતક્ષેત્રે તત્કાલાવચ્છેદેન ન ભરતચક્રતોડપરમુન્દરાકૃતિરભૂદિત્યર્થઃ 'તરુણ
 રવિરસ્સિલ્લોહિયવરકમલવિબુદ્ધગન્ધવર્ણે' તરુણરવિરસ્મિલ્લોહિતવરકમલવિબુદ્ધગર્મવર્ણ તરુ-
 ણરવિરસ્મિલ્લોહિઃ ઉદ્ગચ્છત્સૂર્યકિરણૈઃ લોહિતં વિકાસિતં ચદ્વરકમલં શ્રેષ્ઠકમલં તસ્ય
 વિબુદ્ધો વિકસ્વશે યો ગર્ભો મધ્યભાગસ્તદ્વદ્વર્ણઃ શરીરકાન્તિર્યસ્ય સ તથા કાઠચન-
 વર્ણશરીર 'ઇત્યર્થઃ હયપોસણકોસસણિભપમત્યપિટ્ઠં તણિરુવલ્લેવે' હયપોસન કોશપ-
 ન્નિભપૃષ્ઠાન્તનિરુપલેપઃ હયપોસનં હયાપાન તદેવ કોશઽવ કોશઃ સુગુપ્તત્વાત્ તત્સ-
 ન્નિભઃ પ્રશસ્તઃ પૃષ્ઠસ્ય પૃષ્ઠભાગસ્ય અન્તઃ ચરમભાગોડપાનં તત્ર નિરુપલેપો લેપરહિત
 પુરીષકત્વાત્ 'પડમુપ્પલકુદ જાહજૂહિયવરચંપગણાગપુષ્પસારંગતુલ્લગધી' પદ્મોત્પલ કુંદ-
 જાતિયૂથિકવરચમ્પકનાગપુષ્પસારજ્ઞતુલ્યગન્ધી તત્ર પદ્મં પ્રસિદ્ધમ્, ઉત્પલં કમલવિશેષઃ,
 'કુંદજાતિ યૂથિજ્ઞઃ પ્રસિદ્ધપુષ્પવિશેષાઃ વરચમ્પકો-રાજચમ્પકઃ, નાગપુષ્પં નાગ-
 કેસરકુસુમમ્, સારજ્ઞ પદૈકદેશે પદસમુદાય ગ્રહણાત્ સારજ્ઞપદેન સારજ્ઞમદઃ કસ્તૂરીતિ
 પ્રસિદ્ધઃ। એતૈષા તુલ્યો ગન્ધઃ યસ્ય સ તથા, સુગન્ધયુક્તદેહ ઇત્યર્થઃ 'છત્તીસા અહિમ્ પસત્થ
 પત્થિવગુણેહિં જુત્તે' પદત્રિંશતા અધિક પ્રશસ્તપાર્થિવગુણૈર્યુક્તઃ, તે ચ ગુણાસ્તાવત્

ऐसा उनका देह एक ही होता है अर्थात् उस काल में ऐसा सुन्दर आकार वाला शरीर किसी-
 का नहीं होता है (तरुणरविरस्सिल्लोहिवरकमलविवुद्धगन्धवर्णने) इनके शरीर की कान्ति
 तरुण रवि से— निकलते हुए सूर्य की किरणों से विकसित हुए कमल के गर्म के वर्ण की जैसी
 होती है अर्थात् सुवर्ण के जैसा वर्णवाला इनका शरीर होता है. (हयपोसणकोमसणिभ
 पमत्थ पिण्डतणिरुवलेवे) इनका जो गुदा भाग होता है वह घोंडे के गुदाभाग की तरह
 पुरीष से अलिप्त रहता है (पडमुप्पलकुदजाहजुहियवरचंपगणागपुष्पमारगतुल्लगधी) इनके
 शरीर की गन्ध पद्मउत्पल, कुंद— चमेली या मौरघा का पुष्प, वर चम्पक— राजचम्पक— नाग
 पुष्प— नागकेशर— एवं सागर्ज— पदैकदेश में पदसमुदाय के ग्रहण के अनुसार कस्तूरी—
 इनकी जैसी गंध होती है वैसी होती है (छत्तीसाअहिम पसत्थ पत्थिवगुणेहिं जुत्ते) ३६

ધારી)દેશકેશલ, દેશ આદિમા અને ક્ષેત્ર તેના અવયવભૂત વિનીતા આદિ નગરીમાં યથાસ્થાન
 જેમાં અવયવોની રચના થઈ છે, એવો તેમનો દેહ એક જ હોય છે એટલે કે તે કાળમાં
 એવાસુદર આકારવાળો દેહ કોઈનેય નથી હોતો. (તરુણરવિરસ્સિલ્લોહિઅવરકમલવિવુદ્ધ-
 ગન્ધવર્ણને) એમના શરીરની કાતિ તરુણ રવિથી નીકળતા સૂર્યના કિરણોથી વિકસિત કમલ-
 ના ગર્મના વર્ણ જેવી હોય છે એટલે કે સુવર્ણ જેવા વર્ણવાળો એમનો દેહ હેય છે.
 (હયપોસણ કોસસણિભપસત્થપિટ્ઠતણિરુપલેવે) એમનો જે ગુદાભાગ હોય છે તે ઘેડાના
 ગુદાભાગની જેમ પુરિષથી અલિપ્ત રહે છે (પડમુપ્પલકુંદ જાહ જૂહિવરચંપગણાગપુષ્પ
 સારંગતુલ્લગધી) એમના શરીરની ગંધ પદ્મ, ઉત્પલ, કુંદ—ચમેલી કે મોગરાના પુષ્પ, વર
 ચંપક, રાજચંપક, નાગપુષ્પ—નાગકેશર તેમજ સારંગ—પદૈકદેશમાં પદસમુદાયના ગ્રહણ
 મુજબ કસ્તૂરીની જેવી ગંધ હોય છે, તેવી હોય છે (છત્તીસા અહિમપસત્થપત્થિવ

‘अव्यङ्गो १, लक्षणपूर्णो २, रूपसंपत्तिभूतनुः ३, उत्पत्त्यारम्भ तात्त्विकः सात्त्विको नृपः ३६ इत्यन्ताः पञ्चविंशत्परिमिता भिन्नेषाः ‘अव्योच्छिन्नागतपत्ते’ अव्यवच्छिन्नाना-
पत्रः, अव्यवच्छिन्नम्—अखण्डितमातपत्रं यस्य स तथा एकउत्रराज्ययागीत्यर्थः
एतेनास्य पितृपितामहक्रमागतराज्यभोक्तृत्वं सूचितम् अथवा तस्य प्रभुत्वं केनापि
बलीयसा रिपुणा न व्यवच्छिन्नमिति सूचितम् । ‘पागडउभयजोणी’ प्रकटोभययो-
निकः, प्रकटे विशदावदाततया जगद्विख्याते उभययोन्यौ मातृपितृपक्षरूपे यस्य
तथा, निर्मलजननीजनकोभयपक्षवानित्यर्थः अतएव ‘विमुद्धणिअगकुळायणपुण्ण-
चंदे इव सोमयाए णयणमणणिवुईकरे’ तत्र विभुदं कळङ्करहितं यन्निजककुळं
तदेव गगनं तत्र पूर्णचन्द्र इव सोमतया मृदुस्वभावेन नयनमनसो निर्वृत्तिकरः
आनन्दकरः, ‘अक्खोमे’ अक्षोभः भयरहितः, ‘सागरोवधिमिए’ सागर इव स्तिमितः

अधिक प्रशस्त पार्थिव गुणो से ये युक्त होते हैं वे गुण इस प्रकार से हैं— अव्यङ्ग १ लक्षणा-
पूर्ण २ रूपसंपत्तियुक्त शरीर ३, यहा से लेकर तात्त्विक और सात्त्विके तक इस प्रकार ये ३६
हो जाते हैं । “अव्योच्छिन्नागतपत्ते” इसका एकउत्र राज्य होता है, इसलिए इनका राज्य पितृ
पितामह की वश परम्परा से चला हुआ जाता है यह बात इस बात से सूचित की गई है अथवा
इनका प्रभुत्व किसी अन्य बलिष्ठ शत्रु के द्वारा छिन्न भिन्न नहीं किया जा सकता है ऐसा
भी समझा जा सकता है । (पागडउभयजोणी) इन के मातृ पितृ पक्ष जगत में विख्यात होता
है । (विमुद्धणिअगकुळायणपुण्णचंदे इव सोमयाए णयणमणणिवुईकरे) अत एव ये
अपने कळङ्क विहीन कुलरूप गगन मंडल में मृदु स्वभाव के कारण पूर्ण चन्द्र मण्डल की तरह
नेत्र और मन को आनन्द करने वाले होते हैं । (अक्खोमे सागरोव धिमिए घणवह्व भोग

गुणेहि जुत्ते) ३६ अधिक प्रशस्त पार्थिवशुभोत्थी व्योमे स पन्न होय छे ते शुभे। अव्यङ्ग
लक्षणापूर्ण ३५ पत्ति युक्त शरीर त्याधीधने सात्त्विक सुधी व्यो शुभे। ३६ स पत्ति धर्म नय
छे ‘अव्योच्छिन्नागतपत्ते’ व्यो व्योच्छिन्न राज्य होय छे व्योमनु राज्य पितृ-पितामहोनी वश
परपराधी साध्य आवतु होय छे, व्यो वान व्योनाधी सूचित करवासा आवी
छे अथवा व्योमनु प्रभुत्व होय पञ्च जीन शत्रु वडे छिन्न-भिन्न करी शक्यतु नथी व्यो
पञ्च समल शक्ये छी व्यो (पागडउभयजोणी) व्योमनो मातृ-पितृपक्ष जगतमा विख्यात
होय छे (विमुद्ध निअगकुळायण पुण्णचंदे इव सोमयाए णयणमणणिवुईकरे) व्यो
व्योमे। पीताना कल कळीन कुल ३५ गगनम उणमा मृदुस्वभावने दीधे पूण्ण चन्द्र म उणनी

१ अव्यङ्गो १ लक्षणापूर्णो २ रूपसंपत्तिभूतनुः ३ अमदो ४ जगदोन्मुखी ५ यगस्वीव ६ कुपोल्लहत् ७ । कला-
सुक्तकर्मा ८ च शुद्धराजकुलेन्द्रव ९ । वद्वानुगः १० त्रिशक्ति ११ अ पुजारागी १२ प्रजा गुरु १३ ।
समर्थन दुर्मर्यादा त्रयाणा सममात्रया १४ । कोशवान् १५ सत्यसन्धान १६ चेरदृग् १७ दूरमत्रदृग् १८
आसिद्धि कर्मोद्योगी १९ च प्रवीण शस्त्र २० शास्त्रयो २१ । निग्रहा २२ नृग्रहपरो २३ निर्लेख दूर-
शिष्टयो २४ उपायार्जित राज्य श्री २५ दुनिशौण्डो २६ ध्रुववयी २७ । न्यायप्रियो २८ न्यायवेत्ता २९
व्यसमानाव्यासक ३० । अवर्मावीर्या ३१ गाम्भीर्यो ३२ दार्य ३३ चातुर्यभूषित ३४ प्रणयाधिकक्रोध
३५ तात्त्विको नृप ३६

સાગરપ્રસ્તાવાત્ ક્ષીરસમુદ્રાદિ સ ઇવ સ્તિમિતઃ સ્થિરશ્ચિન્તાકલ્લોલવર્જિતો ન પુન-
ર્હીયમાનવર્ધમાનકલ્લોલલવણસમુદ્રૈવાસ્થિરસ્વભાવ इत्यर्थः 'घणवद्व्य भोगसमु-दयस-
द्वययाए' धनपतिरिव कुबेर इव भोगस्य समुदयः—सम्पदुदयस्तेन सह सद्-
विद्यमान द्रव्य यस्य स भोगसमुदय सद्द्रव्यस्तस्य भावस्तत्ता तथा, भोगोपयोगि
भोगाङ्ग समृद्ध इत्यर्थः (समरे अपराइए) समरे—संग्रामे अपराजितः—पराजयमप्राप्तः
(परमविक्रमगुणे) परमविक्रमगुणः उत्कृष्टपराक्रमगुणयुक्तः (अमरवहसमाणसरिसरूवे)
अमरतेः शक्रस्य समानं सहशमत्यर्थतुल्यं रूपं यस्य सोऽमरपति समानसदृशरूपः, इन्द्र-
समानरूपसम्पत्तिमानित्यर्थः (मणुअवई) मनुजपतिः नगराधिपतिः (भरहचक्रवर्ती) भरत-
चक्रवर्ती उत्पद्यते इति पूर्वेण सम्बन्धः, अथोत्पन्नः सन् किं कुरुते इत्याह—(भरह)
इत्यादि (भरहं भुंजइ पणट्टसत्तू) अनन्तरसूत्रे एव प्रदर्शितस्वरूपो भरतचक्रवर्तीभरतं
भुङ्क्ते—शास्तीति, प्रणष्टशत्रुरिति स्पष्टम्, अत इदं भरतक्षेत्रं मुच्यते इति निगमनमग्रे
वक्ष्यते ॥ सू० २ ॥

સમુદયસદ્વ્યયાए समरे अपराइए परमविक्रमगुणे अमरवह समाणसरिसरूवे) निर्भय होते
है, क्षीरमसुद्र आदि की तरह ये चिन्ता रूप कल्लोलों से वर्जित रहते हैं कल्लोलों से हीयमान
वर्धमान लवण समुद्र की तरह ये अस्थिर स्वभाव वाले नहीं होते हैं कुबेर के जैसे ये भोगों के
समुदाय में अपने विद्यमान द्रव्यों को खर्च करने वाले होते हैं अर्थात् विद्यमान द्रव्य के अनु-
सार ये भोगोपभोगों को भोगने वाले होते हैं । समराङ्गण में इन्हे कोई परास्त करने वाला
नहीं होता है— ये अपराजित होते हैं । क्योंकि ये जिस पराक्रम गुण से युक्त होते हैं वह उन-
का उत्कृष्ट होता है । उनका रूप शक्र के समान बहुत ही अविक्र सुन्दर होता है । (मणुअ-
वई भरहचक्रवर्ती भरह भुंजइ पणट्टसत्तू) इस प्रकार के इन पूर्वोक्त समस्त विशेषणों से सप-
न मनुजाधिपति भरत चक्रवर्ती इस भरत क्षेत्र का शासन करते हैं उस समय इनका कोई भी
शत्रु प्रतिपक्षी— नहीं रहता है समस्त शत्रुगण नष्ट हो जाता है इस कारण हे गौतम ! इस
क्षेत्रका नाम भरत क्षेत्र इस प्रकार से कहने में आया है ॥२॥

જેમ નેત્ર અને મનને આનંદ આપનાર હોય છે. (અક્ષોમે સાગરોવ ચિમિપ ઘણવ-
દ્વ્ય ભોગસમુદયસદ્વ્યયાए समरे अपराइए परमविक्रमगुणे अमरवहसमाण
सरिसरूवे) निर्भय હોય છે, ક્ષીરસમુદ્ર વગેરેની જેમ એઓ ચિન્તારૂપ કલ્લોલોથી
વર્જિત રહે છે કલ્લોલોથી હીયમાન, વર્ધમાન લવણ સમુદ્રની જેમ એઓ અસ્થિર સ્વભા-
વવાળા હોતા નથી કુબેરની જેમ એઓ ભોગોના સમુદાયમાં પોતાના વિદ્યમાન દ્રવ્યોને
ખર્ચ કરતા હોય છે એટલે કે વિદ્યમાન દ્રવ્ય મુજબ એઓ ભોગોપભોગોને ભોગવનાર
હોય છે સ્થાનગણમાં એઓ અપરાજિત હોય છે કેમકે એઓ જે પરાક્રમ ગુણથી યુક્ત
હોય છે, તે તેમને ઉત્કૃષ્ટ હોય છે તેમનું રૂપ શક્ર જેવું અતીવ સુંદર હોય છે. (મણુઅવઈ
भरहचक्रवर्ती भरहं भुंजइ पणट्टसत्तू) આ પ્રમાણે એ પૂર્વોક્ત સમસ્ત વિશેષણોથી
સમ્પન્ન મનુજાધિપતિ ભરત ચક્રવર્તી એ ભરતક્ષેત્રનું શાસન કરે છે તે સમયે એમને
કોઈ પણ શત્રુ પ્રતિપક્ષી રહેતો નથી સમસ્ત શત્રુઓનો વિનાશ થઈ જાય છે એથી હે
ગૌતમ ! આ ક્ષેત્રનું નામ ભરત ક્ષેત્ર કહેવામાં આવ્યું છે ॥ ૨ ॥

अथ प्रस्तुत भरतस्य दिग्विजयादिवक्तव्यतामाह—(तए णं) इत्यादि ।

मूलम्—तए णं तस्स भरहस्स रण्णोअण्णया कयाइ आउहघर-
 सालाए दिव्वे चक्करयणे समुप्पज्जित्था, तए णं से आउहघरिए भरहस्स रण्णा
 आउहघरसालाए दिव्वं चक्करयणं समुप्पण्णं पासइ पासित्तो हट्टतुड्ड चित्त-
 माणांदिए नंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहिअए
 जेणामेव दिव्वे चक्करयणे तेणामेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता त्तिक्खुत्तो आ
 याहिणं पयाहिणं करेइ करित्ता करयल जाव कट्टु चक्करयणस्स पणामं करेइ
 करित्ता आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइपडि णिक्खमित्ता जेणामेव वाहिरि
 आ उवट्ठाणसाला जेणामेव भरहेराया तेणामेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता
 करयल जाव जएणं विजएणं वद्धावेइ वद्धावित्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणु
 प्पियाणं पिअट्टयाए पियं णिवेएमो पियं भे भवउ, तए णं से भरहेराया तस्स
 आउहघरिअस्स अंतिए एअमट्ठं सोच्चाणिसम्म हट्ट जाव सोमणस्सिए वि
 असिअवरकमलणयणवयणे पयलिअवरकडग तुरिअ केऊर मउड कुंडलहार,
 विरायंतरइअवच्छे पालंब पलंबमाणघोलंतभूसणधरे ससंभमं तुरिअं चवलं
 णरिंदे सीहासणाओ अब्भुट्टेइ, अब्भुट्टित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ
 पच्चोरुहित्ता पाउआओ ओमुअइ ओमुइत्ता एगसाडिअं उत्तरासंगं करेइ
 करित्ता अंजलिमउलिअगगहत्थे चक्करयणाभिमुहे सत्तट्टपयाइं अणुग-
 च्छइ अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेइ अंचित्ता दाहिणं जाणु धरणितलंसि
 णिहट्टु करयल जाव अंजलिं कट्टु चक्करयणस्स पणामं करेइ करित्ता
 तस्स आउहघरिअस्स अहामोलिअं मउडवज्जं ओमोअं दलइ दलित्ता
 विउलं जीविआरिहं पीइदाणं दलइ दलित्ता सक्कारेइ सम्माणेइ सक्करेत्ता
 सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ पडिविसज्जित्ता सोहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे
 सण्णिसण्णे । तए णं से महे राया कोडंबियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एवं
 वयासी खिप्पामेव भो देवा प्पिआविणीअं रायहाणि सन्निभतर बोहिरिअं
 आसिअ संमज्जिअ सित्त सुइगरत्थं तरवीहिअं मंचाइमंचकविअं णाणाविह

रागवसणऊसिअन्नयपडागाइपडागमंडिअं लाउल्लोइअमहिअं गोसीस सरस
 रत्त चंदणकलसं चंदणघरसुकय जावगंधुद्धुआभिरामं सुगंधवरगंधिअं गंध
 पट्टिभूअं करेह कारवेह करेत्ता कारवेत्ताय एयमाणत्तिअं पच्चप्पिणह ।
 तए णं ते कोडुंबिय पुरिसा भरहेणं रण्णा एवं वुत्ता इड्ड० करयल जाव
 एवं सामित्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति पडिसुणित्ता भरहस्स
 अंतिआओ पडिणिक्खमंति पडिणिक्खमित्ता विणीअं रायहाणीं जाव करेत्ता
 कारवेत्ता य तमाणत्तिअं पच्चप्पिणंति । तएणं णं से भरहे राया जेणेव
 मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्तो मज्जणघरं अणुपविसइ अणु
 पविसित्ता समुत्तजालाकुलाभिरामे विचित्तमणिरयण कुट्टिमतले रमणिज्जे
 ण्हाणमंड्वंसि णाणामणिरयणभत्तिचित्तंसि ण्हाणपीढंसि सुहणिसण्णे
 सुहोदएहि गंधोदएहि पुप्फोदएहि सुद्धोदएहिअ पुण्णे कल्लाणगपवर
 मज्जणविहीए मज्जिए तत्थ कोउअसएहि बहुविहेहि कल्लाणगपवरमज्ज-
 णावसाणे पम्हल सुकुमालगंधकासाइअ ल्हिअंगे सरससुरहि गोसीस
 चंदणाणलित्तगत्ते अहयसुमहग्घदसरयणसुसंबुडे सुइमालावण्णगविलवणे
 आविद्धमणिसुवण्णे कप्पिअहारद्धहारतिसरिअपालंबलंभमाणकडिसुत्त सुक
 य सोहे पिणद्ध गेविज्जगअंगुलिज्जगलल्लिअगयलल्लियकयाभरणे णाणामणि
 कडगतुडिअथंमिअभूए अहिअसस्सिरीए कुंडलउज्जोइआणणे मउडदित्त-
 सिरए हारोत्थय सुकयवच्छे पालंबपलंबमाण सुकयपडउत्तरिज्जे मुहि
 ओ पिंगलंगुलिए णाणामणिकणगविमलमहरिहणिउणोअविअमिसि
 मिसितविइअ सुसिलिड्विसिड्डलड्डसंठिअ पसत्थ आविद्ध वीरवलए
 किं बहुणा ? कप्परुक्खए चेव अलंकिअ विभूसिए णरिदे सकोरट जाव
 चक्कन्नामर वालवीअंगे मंगलजयसइकयालोए अणेगगणणायग दंणणा
 यग जाव द्वा संधिवाल सद्धि संपरिबुडे धवल महामेहणिग्गए इव जाव
 ससिब्ब पियदंसणे णरवई धूवपुप्फ गंधमल्लहत्यगए मज्जणघराओ पडिणि
 क्खमइ पडिणिक्खमि त्ता जेणेव चक्करयणे तेणामेव पहारेत्थ गमणाए ॥३॥

छाया—ततः खलु तस्य भरतस्य राज्ञोऽन्यथा कदाचिद् आयुधगृहशालायां दिव्यं चक्ररत्नं समुत्पन्नं, ततः खलु स आयुधगृहिको भरतस्य राज्ञः आयुधगृहशालायां दिव्यं चक्ररत्नम् समुत्पन्नं पश्यति, दृष्ट्वा च हृष्टं तुष्टं चित्तमानन्दितः नन्दितः प्रीतिमनाः परम-सौमनस्यतः हर्षपशविसर्पद्दहदयः यत्रैव दिव्यं चक्ररत्नं तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य त्रिः कृत्वा आदक्षिणप्रदक्षिणं करोति, कृत्वा करतलं यावत् कृत्वा चक्ररत्नस्य प्रणामं करोति, कृत्वा आयुधगृहशालातः प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव घाहिरिका उपस्थानशाला यत्रैव भरतो राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतलं यावत् जयेन विजयेन वर्द्धयति, वर्द्धयित्वा एवमवादीत्—एवं खलु देवानुप्रियाणाम् आयुधगृहशालायां दिव्यं चक्ररत्नं समुत्पन्नं तदेतत् खलु देवानुप्रियाणां प्रियार्थतायै प्रियं निवेद्यामः प्रियं भवतां भवतु, ततः खलु स भरतो राजा तस्य आयुधगृहिकस्य अतिके पतमर्थम् श्रुत्वा निशम्य हृष्टं यावत् सौमनस्यतः विकसितवरकमलनयनवदनः प्रचलितवरकटकवृटितकेयूर-मुकुटकुण्डलहारविराजमानरतिदवक्षस्कं प्रालम्बप्रलम्बमानघोलद् भूषणधरः ससम्भ्रमत्वरितं चपलं नरेन्द्रः सिंहासनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय पादपीठात् प्रत्यवरोधति, प्रत्यवस्था पादुके अवमुञ्चति, अवमुच्य एकशाटिकम् उत्तरासङ्गं करोति कृत्वा अब्जलिमुकुलिताग्रहस्तं चक्ररत्नाभिमुखं ।

।ष्टपदानि अनुगच्छति, अनुगत्य वामं जानुम् आकुञ्चयति, अकुच्य दक्षिणं जानुं धरणीतले निहत्य करतलं यावदब्जलिं कृत्वा चक्ररत्नस्य प्रणामं करोति, कृत्वा तस्यायुधगृहिकस्य यथा मालितं मुकुटवर्जम् अवमोचकं ददाति, दत्त्वा सत्कारयति, सम्मानयति, सत्कृत्य सन्मान्य प्रतिविसर्जयति, प्रतिविसर्ज्य सिंहासनं वरगतं पूर्वामिमुखः सन्निषण्णः । ततः खलु स भरतोरजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत् क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः ! विनीतां राजधानीं साभ्यन्तरवाहिरिकाम् आसिक्तसंमार्जितसिक्तशुचिकरस्थान्तरवीथिकाम् मञ्चातिमञ्चकलिताम् नानाविधरागवसनोच्छ्रितभजपताकातिपताकमण्डिताम्, लापितोल्लोचितमहितां लिप्तोल्लोचितमहिताम्बा, गोशीर्षसरसरक्तचन्दनकलशाम् चन्दनगृहसुकुतं यावद्गन्धोद्धृताभिरामाम् सुगन्धधरगन्धिताम् गन्धवर्त्तिभूताम् एतामाह्वयति प्रत्यर्पयति ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः भरतेन राज्ञा पथं मुक्तां सान्तः दृष्टुष्टं करतलं यावत् पथं स्वामिन् ! आज्ञायाः विनयेन वचनं प्रतिशृण्वन्तः प्रतिश्रुत्य भरतस्य अंतिकात् प्रतिनिष्क्रामन्ति प्रतिनिष्क्रम्य विनीतां राजधानीं यावत् कृत्वा कारयित्वा च तामाह्वयति प्रत्यर्पयन्ति । ततः खलु स भरतो राजा यत्रैव मञ्जनगृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य मञ्जनगृहम् अनुप्रविशति अनुप्रविश्य समुक्तिजालाकुलाभिरामे विचित्रमणित्तकुट्टिमतले रमणीये स्नानमण्डपे नानामणिरत्नभक्तिचित्रे स्नानपीठे सुखनिषण्णः शुभोदकैः सुखोदकैर्वा गन्धोदकैः पुष्पोदकैः शुद्धोदकैश्च, पुनः कल्याणकारिबरमं विधिना मज्जितः तत्र कौतुकशतैः बहुविधैः कल्याणकप्रवरमज्जनावसाने पक्ष्मलसुकुमालगन्धकाषायिकी रुक्षिताङ्गं सरससुरभिगोशीर्षचन्दनानुलितगात्रः अहतं हार्धदुग्धरत्नसुसंवृत्तं शुचिमाळावर्णकविलेपनं आविद्ध-

मणिसुवर्णः कल्पितद्वाराद्धहारत्रिसरिकप्रालम्बप्रलम्बमानकटिसूत्रसुकृतशोभः, पिनद्धग्रैवे
यकाऽङ्गुलीयक ललिताङ्ग कललितक चाभरण, नानामणिकटकत्रुटिकस्तम्भिनभुजः अधिक-
सश्रीकः, कुण्डलोदघोतितानन 'मुकुटदीप्तशिरस्कः, दारावस्तृतसुकृतनवक्षस्क, प्रलम्ब-
प्रलम्बमान सुकृतपटोद्योरीयक, मुद्रिकापिङ्गलाद्गुलिकः नानामणि कनकविमल माहा-
र्घनिपुण 'ओम्बवि' परिकर्मित' मिसमिसेत' दीप्यमाना विरचितसुश्लिष्टविशिष्टलष्ट-
संस्थितप्रशस्ताविद्ध वीरचलयः, किं बहुना कल्पवृक्ष इव अलङ्कृतो विभूषितश्च नरेन्द्रः
सकोरण यावत् चतुश्चामर वालवीजिताङ्गः, मङ्गल जय जय शब्दकृतालोक, अनेक गण
नायक दण्डनायक यावत् दूतसन्धिपालै सान्द्ध संपरिवृतः धवलमहामेघ निर्गत इव यावत्
शशीव प्रियदर्शनो नरपति धूपपुष्पगन्धमास्यहस्तगतो मञ्जनगृहात् प्रतिनिष्कामति,
प्रतिनिष्कम्य यत्रैव चक्ररत्न तत्रैव प्रधारितवान् गमनाय ॥ सू ३ ॥

टीका—“तए णं” इत्यादि । ‘तए णं’ ततोमाण्डलिकत्वप्राप्त्यनन्तर खलु
‘तस्स भरहस्स रण्णो’ तस्य भरतस्य राज्ञः ‘अण्णया कयाइ’ अन्यदा कदाचित्-अन्यस्मिन्
कस्मिंश्चित् काले माण्डलिकत्वं पालयतः वर्षसहस्रेगते सति ‘आउहघरसालाए’ आयुधगृ-
हशालायां शस्त्रागारशालायाम् ‘दिव्वे चक्करयणे समुप्पज्जित्था’ दिव्य चक्ररत्नं समुदप-
घत=समुत्पन्नम् ‘तए णं’ ततश्चक्ररत्नोत्पत्तेरनन्तरं खलु ‘से आउहघरिए’ स आयुध-
गृहिकः-आयुधगृहशालारक्षकः ‘भरहस्स रण्णो आउहघरसालाए दिव्वं चक्करयण समुप्पणं
पासइ’ भरतस्य राज्ञ आयुधगृहशालायां दिव्यं चक्ररत्नं समुत्पन्न पश्यति ‘पासित्ता’
दृष्ट्वा ‘हट्टतुट्टचित्त माणंदिए’ हट्टतुष्टचित्तानन्दितः, हट्टतुष्टः-अतीवतुष्टः तथा चित्तेन
आनन्दितः अत्र मकार आर्पत्वात्, यद्वा हट्टतुष्टम्-अत्यर्थं तुष्टं हट्ट वा-‘अहो मया इदमपूर्वं

“भरतचक्रवर्ती का दिग्विजयादि का वर्णन”

,तएणं भरहस्स रण्णो अण्णया कयाइ’ इत्यादि —सूत्र ३

टीकार्थ—(तरूण) माण्डलिकत्व प्राप्ति के अनन्तर (तस्स भरहस्स) उस भरत की (अण्णया
कर्याइ) किसी एक समय जब को माण्डलिकत्व पदमें रहते रहने एक हजार वर्ष व्यतीत होगये
तब—(आउहघरसालाए) शस्त्रागारशालामें (दिव्वे चक्करयणे समुप्पज्जित्था) दिव्य चक्ररत्न
उत्पन्न हुआ (तएण से आउहघरिए भरहस्स रण्णो आउहघरसालाए दिव्वं चक्करयण समु-
प्पणं पासइ) जब आयुधशाला के रक्षक ने भरत की आयुधशाला में दिव्य चक्ररत्न उत्पन्नहु-
आ देखा तो (पासित्ता) देखकर वह (हट्ट तुट्ट चित्तमाणंदिए नदिए पीहमणे परमसोमण

“भरत चक्रवर्ती नी दिग्विजयादिनु वणुन”

‘त एण तस्स भरहस्स दण्णो अण्णया कयाइ’ इत्यादि —सू. ४

टीकार्थ—(तए णं) माण्डलिकत्व प्राप्ति पछी (तस्स भरहस्स) ते भरतनी (अण्णया
कयाइ) कोठ ओक समये न्याये माण्डलिकत्व पद पर समासीन रहैतां ओक हजार वर्ष
व्यतीत थई गया त्याये (आउहघरसालाए) शस्त्रागारशालामें (दिव्वे चक्करयणे समुप्प-

दृष्ट' मिति विस्मितं तुष्टं 'सुष्टु जातं यन्मयैव प्रथममिदमपूर्वं दृष्ट यन्निवेदनेन स्वप्र
भुमां प्रीतिपात्रं करिष्यतो'ति सन्तोषमापन्नं यत्र तद् यथास्यात्तथा आनन्दितः प्रमोद
प्रकर्षतां प्राप्त इत्यर्थः 'नन्दिष' नन्दितः मुखप्रसन्नतादिभावैः समृद्धिसुपगतः 'पीडमणे'
प्रीतिमनाः प्रीतिः मनसि यस्य स तथा 'परमसौमणस्सिप' परम सौमनस्यितः, परमं
सौमनस्यं सुमनस्कत्वं जातमस्येति परमसौमनस्यित, एतदेव व्यनक्ति 'हरिसवसविस-
र्पद्दृढदयः, हर्षवशेन विसर्पद् उल्लसद् हृदयं यस्य स तथा, एतादृशः आयुधशालारक्षकः
'जेणामेव दिव्वे चक्ररयणे तेणामेव उवागच्छइ' यत्रैव दिव्यं चक्ररत्न तत्रैवोपागच्छति,
'उवागच्छिता' उपागत्य 'तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ' त्रिःकृत्वः—त्रीन् वारान्
आदक्षिणप्रदक्षिणं दक्षिणहस्तादारभ्य प्रदक्षिणं करोति, 'करेत्ता' कृत्वा च 'करयल जाव-

स्सिप हरिसवसविसप्पमाणहिमप जेणामेव दिव्वे चक्ररयणे तेणामेव उवागच्छइ) दृष्ट तुष्ट—
अत्यन्त तुष्ट हुआ और चित्त में आनन्दित हुआ यहा प्राकृत होने के कारण मकार लाक्षणिक
है अथवा वह दृष्ट तुष्ट हुआ इसका तात्पर्य ऐसाभी होता है कि वह बहुत अधिक तुष्ट हुआ और
यह मैंने अपूर्व ही वस्तु देखो है इस ख्याल से विस्मित भी हुआ तथा बहुत अच्छा हुआ जो मुझे
ही इस अपूर्व वस्तु के सर्व प्रथम दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है अबतो मैं इस बात को
स्वप्न अपने स्वामी के निकट भेजूंगा — और उनका प्रीतिपात्र बनने का सौभाग्य प्राप्त करूंगा—
इस प्रकार के विचार से वह सतुष्ट हुआ और आनन्द युक्त हुआ तथा नन्दितहुआ मुख प्रसन्न-
ता आदि भावों से वह समृद्धि को प्राप्त हुआ उसके मन में परम प्रीति जगी (परमसौमणस्सि-
प) वह परम सौमनस्यित हुआ हर्ष के वश से उसका हृदय उछलने लगा और फिर वह जहा
पर वह दिव्य चक्ररत्न था वहा पर गया(उवागच्छिता तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ करि-
त्ता करयल जाव कदंढु चक्ररयणस्स पणाम करेइ) वहाँ जाकर के उसने तीनवार आदक्षिण प्रद-
क्षिण किया दक्षिण हाथ की तरफ से लेकर वायें हाथ की तरफ तीन प्रदक्षिणाएं की तीन प्रद-
क्षिणा करके फिर उसने करतल यावत् करके चक्ररत्न को प्रणाम किया यहाँ यावत्पद से "करयल

जित्था) दिव्य चक्ररत्न उत्पन्न भूयु (तप णं से आउह्हरिप भरहस्स रण्णो आउह
घरसालाय दिव्वं चक्ररयणसमुत्पण्णं पासइ) अथारे आयुध शालाना रक्षके भरतनी आयुध-
शालाभां दिव्य चक्ररत्न उत्पन्न भयेत्तुं भयेत्तु तो (पासित्ता) नेधने ते (दृष्टतुष्टचित्तमाणं
दिप नन्दिष पीडमणे परमसौमणस्सिप हरिसवसविसप्पमाणहिमप जेणामेव दिव्वे चक्र-
रयणे तेणामेव उवागच्छइ) दृष्ट-तुष्ट अत्यंत तुष्ट भयेत्तुं अने चित्तमा आनन्दित भयेत्तुं
अही प्राकृत होवाथी मकार लाक्षणिक छे अथवा ते दृष्ट तुष्ट भयेत्तुं अने तात्पर्य आ
प्रमाणे पक्ष थाय छे के ते भहुं न वधारे तुष्ट भयेत्तुं अने भे अपूर्व वस्तु न नेध छे
अने विचारथी विस्मित पक्ष भयेत्तुं तथा भहुं न सारु भूयु के ने सर्व प्रथम अने अपूर्व
वस्तुना दर्शनने दास भने न भयेत्तुं हुवे तो अने वातनी लक्ष हुं मारा स्वाभीने करीश
अने भतना विचारथी ते स तुष्ट भयेत्तुं अने आनन्द युक्त भयेत्तुं तेम न नन्दित भयेत्तुं सुभ
प्रसन्नता आदि भावोथी ते समृद्धिने प्राप्त भयेत्तुं तेना मनमां परम प्रीति जगी (परम

કદ્દુ ચક્રચરણસ્સ પળામં કરેઈ' અન્ન યાવત્પદાત્ 'કરચલ પઢિગ્ગહિઅં દસળહ સિરસાવત્તં મત્થપ્પ અંજલિં' ઇતિ સંગ્રાહ્યમ્, કરતલપરિગૃહીતં દશનચ્ચં સિરસાવત્તં મસ્તકે અઠ્ઠજલિં કૃત્વા, કરતલાભ્યાં પરિગૃહીતઃ કરતલપરિગૃહીતસ્તં, દશકરદ્વયસમ્બન્ધિનો નચ્ચાઃ સમુદિ-
તા યત્ર તં, શિરસિ મસ્તકે આવર્તત્તઃ—આવર્તનં પ્રાદક્ષિણ્યેન પરિભ્રમણં યસ્ય તં તાદૃશ મસ્તકે અઠ્ઠજલિં કૃત્વા ચક્રચરણસ્ય પ્રણામં કરોતિ 'કરેત્તા' કૃત્વા ચ 'આહ ઘરસાલાઓ પઢિગ્ગહિઅમ્મ' આયુધગૃહશાલાતઃ પ્રતિનિષ્ક્રામતિ નિર્ગચ્છતિ 'પઢિગ્ગહિઅમિત્તા' પ્રતેનિ-
ષ્ક્રમ્ય નિર્ગત્ય ચ 'જેનામેવ બાહિરિઆ ઉવટ્ટાણસાલા જેનામેવ મરહે રાયા તેનામેવ ઉવા-
ગચ્છઈ' યત્રેવ બાહિરિકા આભ્યન્તરાપેક્ષયા બાહ્યા, ઉપસ્થાનશાલા આસ્થાનમણ્ડપઃ યત્રેવ
ચ મરતો રાજા તત્રૈવોપાગચ્છતિ 'ઉવાગચ્છિત્તા' ઉપાગત્ય ચ 'કરચલ જાવ જણ્ણં વિજ-
ણ્ણં વદ્ધાવેઈ' અન્નાડપિ 'કરચલ જાવ'ત્તિ કરતલ પરિગૃહીતં દશનચ્ચં સિરસાવત્તં મસ્તકે
અઠ્ઠજલિં કૃત્વા જયેન વિજયેન વર્દયતિ—સ આયુધગૃહિકો જયવિજયાભ્યાં ત્વં વર્દસ્વ'
इत्याशिषं ददातीत्यर्थः 'वद्धावित्ता एवं वयासी' वर्दयित्वा च एवमवादीत्—एवं वक्ष्यमाण

પઢિગ્ગહિઅ દસળહં સિરસાવત્તં મત્થપ્પ અંજલિં" ઇસ પાઠક સમ્રહ હુઆ હૈ ઇસકા ભાવ દેસા હૈ
કિ ચક્રચરણ કો પ્રણામ કરતે સમય ડસને દોનો હાથોં કી અંજલિ ઇસ પ્રકાર કી બનાઈ કિ જિ-
સમેં ૧૦ અંગુલિયોં કે નચ્ચ આપસ મેં મિલ જાવેં ઇસ પ્રકારસે અંજલિ બનાકર ડસને ડસ અંજલિ
કો મસ્તક કી દાહિની બીર સે બાઈ બીર તોન બાર ફિરાયા— ઇસ ઢંગ સે ડસને ડસે પ્રણામ
ક્રિયા (કરિત્તા આહઘરસાલાપ્પ પઢિગ્ગહિઅમ્મ પઢિગ્ગહિઅમિત્તા જેનામેવ બાહિરિઆ ઉવટ્ટાણસાલા
જેનામેવ મરહે રાયા તેનામેવ ઉવાગચ્છઈ)પ્રણામ કરકે ફિર બહ ડસ આયુધશાલાસે બાહરનિકલા બીર
નિકલ કર જહાં બાહિરી ઉપસ્થાનશાલા (બાહરી કચહરી થી બીર ડસમેં જહાં મરત
રાજા બેઠે થે વહાં પર આયા (ઉવાગચ્છિત્તા) વહા આકરકે (કરચલ જાવ જણ્ણં વિજ-

લોમણસ્સિય) તે પરમ સૌમનસ્યિત થયો—હૃષિકેયથી તેનું હૃદય ઉછળવા લાગ્યું અને
પછી તે જ્યાં તે દિવ્ય ચક્રચરણ હતું ત્યાં ગયો. (ઉવાગચ્છિત્તા તિક્કલુત્તો આયાહિણપયાહિણં
કરેઈ કરિત્તા કરચલ જાવ કદ્દુ ચક્રચરણસ્સ પળામં કરેઈ) ત્યાં જઈને તેણે ત્રણ વાર
આઠક્ષિણુ પ્રદક્ષિણુ કરી—દક્ષિણુ હાથ તરફથી લઈને ડાબા હાથ તરફ ત્રણ પ્રદક્ષિણુઓ કરી
ત્રણ પ્રદક્ષિણુઓ કરીને પછી તેણે કરતલ યાવત્ કરીને ચક્રચરણને ત્રણામ કર્યા અહીં યાવત્
પદ્ધતી (કરચલપઢિગ્ગહિઅ દસળહં સિરસાવત્તં મત્થપ્પ અંજલિ) આ પાઠને સંગ્રહ થયેલો
છે. એનો ભાવ આ પ્રમાણે છે કે ચક્રચરણને ત્રણામ કરતી વખતે તેણે બન્ને હાથોની અંજલિ
આ પ્રમાણે બનાવી કે જેમાં ૧૦ આંગળીઓના નખો પરસ્પર મળી જાય આ પ્રમાણે
અંજલિ બનાવીને તેણે તે અંજલિને મસ્તકની જમણી બાજુથી ડાબી બાજુ ત્રણ વખત
ફેરવી. આ રીતે તેણે ત્રણામ કર્યા. (કરિત્તા આહઘરસાલાપ્પ પઢિગ્ગહિઅમ્મ પઢિગ્ગહિઅ-
મિત્તા જેનામેવ બાહિરિઆ ઉવટ્ટાણસાલા જેનામેવ મરહે રાયા તેનામેવ ઉવાગચ્છઈ)
ત્રણામ કરીને પછી તે આયુધ શાળામાંથી બહાર નીકળ્યો અને નીકળીને જ્યાં બહાર

प्रकारेण उक्तवान्, किं तदित्याह—‘एव खलु देवाणुप्पियाणं आउहधग्माळाए दिव्वे चक्ररयणे समुप्पण्णे तं एयणं देवाणुप्पियाणं पियद्वयाए पिय णिवेएमो पिय भे भवउ’ एवं खलु इत्थमेव यदुच्यते मया तद् सर्वथा सत्यमेव यद्देवानुप्रियाणाम् आयुधगृह्णात्यां शस्त्रागारशालायां चक्ररत्न समुत्पन्न तदेतत् खलु देवानुप्रियाणा प्रियार्थनार्य=प्रीत्यर्थं प्रियम् इष्टं निवेदयामः एतत् प्रियनिवेदनं प्रियम् ‘भे’ भवता भवतु ततो भरतः किं कृतवान् इत्याह—‘तए ण’ इत्यादि । ‘तए णं से भरहे राया तस्स आउहधरिअस्स अंतिए एयमद्वं सोच्चा णिसम्म हट्ट जाव सोमणस्सिए’ ततः खलु स भरतो राजा तस्य आयुधगृहीकस्य अन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य हृष्ट यावत् सोमनस्यत, तत आयुधगृहिकस्य आयुधशालारक्षकस्य अन्तिके समीपे एतं चक्ररत्नोत्पत्तिरूपम् अर्थं श्रुत्वा निशम्य हृद्यध्वार्य इष्ट यावत्सोमनस्यतः, अत्र यावत्पदात् पूर्ववद् बोध्यम् । तथा—‘वियसियवरकमलणयणवयणे’ विकसितवरकमलनयनवदनः तत्र—विकसिते वरकमलवन्नयनवदने यस्य स तथा—प्रफु-

एणं वद्धावेह) उसने पूर्वोक्तानुसार भरत राजा को प्रणाम किया और आपकी जय हो आपकी विजय हो इस प्रकार जय विजय के शब्दों को उच्चारण करते हुए उसने उन्हें बधाई दी (वद्धावित्ता एव वयासी) बधाई देकर के फिर उसने ऐसा कहा— (एवं खलु देवाणुप्पियाणं आउहधरसालाए दिव्वे चक्ररयणे समुप्पण्णे) हे देवानुप्रिय ! आपकी आयुधशाला में आज दिव्यचक्ररत्न उत्पन्न हुआ है (तं एयणं देवाणुप्पियाणं पियद्वयाए पिय णिवेएमो) तो हे देवानुप्रिय ! मैं आप की प्रीति के लिये आया हूँ (पिय भे भवउ तएणं से भरहे राया तस्स आउहधरिअस्स अंतिए एयमद्वं सोच्चा णिसम्म हट्ट जाव सोमणस्सिए) यह मेरे द्वारा निवेदित हुआ अर्थ आपको प्रिय हो इस प्रकार उस आयुधशाला के मनुष्य से सुनकर के और उसे हृदय में धारण करके वह भरत राजा हृष्ट यावत् सोमनस्यत हुआ यहा पर भी यावत्पद से पूर्वोक्त पाठ गृहीत हुआ है । (वियसियवरकमलणयणवयणे पयलिववरकडगात्तुडिअकेऊर मउड कुंडल हारविरायतरइवण्ळे पालवपलंभमाण घोलंत भूषण घरे) उसके सुन्दर दोनों नेत्र और मुख श्रेष्ठ कमल के जैसे विकसित हो गये, चक्ररत्न की उत्पत्ति के श्रवण से जनित

उपस्थान शाणा छत्ती (भहार क्यहरी छत्ती) अने तेभा नया भरत राजा भेडा छत्ता त्या भयो. (उवागच्छित्तो) त्या अर्थने (करयल जाव जणण विजयणं वद्धावेह) तेणे पूर्वोक्ता-नुसार भरत राजा ने प्रशुभा कर्था अने तभादेो नय थायेो, तभादेो नय थायेो, आ प्रभाणे नय--विजय शण्ढेो उच्यारता तेणे तेभने वधामणी आपी (वद्धमवित्ता एवं वयासी) वधामणी आपी ते पछी तेणे कहु (एवं खलु देवाणुप्पियाणं आउहधरसालाए दिव्वे चक्ररयणे समुप्पण्णे) हे देवानुप्रिय ! तभारी आयुधशालाभा आये दिव्य चक्ररत्न उत्पन्न थयुं छे (तं एयणं देवाणुप्पियाणं पियद्वयाए पियणिवेएमो) ते हे देवानुप्रिय ! हे तभारी भासे ये छोट अर्थ विषे निवेदन कर्वा अयेो छु. (पिय भे भवउ तए णं से भरहे राया तस्स आउहधरोअस्स अंतिए एयमद्वं सोच्चा णिसम्म हट्ट जाव सोमणस्सिए) भारा वडे

લલવરપદ્મજલોચનમુખઃ, તથા—‘પયલિયવરકડગતુહિયકેઝરમડકુંડલહારવિરાયંતરૈઃ અ
વચ્છે’ પ્રચલિતવરકટકત્રુટિકેયૂરમુકુટકુણ્ડલહારવિરાજમાનરતિદવક્ષસ્કઃ, તત્ર પ્રચલિતાનિ
ચક્રરત્નોત્પત્તિશ્રવણજનિતસમ્ભ્રમાતિશયાત્ કમ્પિતાનિ વરકટકે પ્રધાનવલયે ત્રુટિકે વાહુ-
રક્ષકૌ કેયૂરે વાહોરેવ ભૂપગવિશેષૌ મુકુટં કુણ્ડલે ચ યસ્ય સ તથા સિંહાગ્રલોકનન્યાયેન
ભૂયઃ પ્રચલિતશબ્દસ્ય ગ્રહણાત્ પ્રચલિતશરેણ વિરાજમાનરતિદમ્ આનન્દદં વક્ષો યસ્ય સ
તથા પથ્થાત્ પદદ્વયસ્ય કર્મધારયઃ, ‘પાલંબપલંબમાણધોલંતભૂસણધરે’ પ્રાલમ્બ પ્રલમ્બમાન
ધોલદ્ભૂષણધરઃ, તત્ર પ્રલમ્બમાનઃ સમ્ભ્રમાદેવ પ્રાલમ્બો હ્રુમકં યસ્ય સ પ્રાલમ્બપ્રલમ્બ-
માનઃ, ધોલદ્ દોલાયમાન ભૂષણં ધરિત ય સ ધોલદ્ભૂષણધરઃ તતઃ પદદ્વયસ્ય કર્મધારયઃ અત્ર
‘પાલંબપલંબમાણ’ इत्यत्र पदव्यतिक्रमः आर्पित्वात् एतादृशः सन् भरतो राजा ‘ससंभ्रम
तुरियं चवलं सिंहासणाओ अब्भूद्वेइ’ ससंभ्रमं सादर सोत्सुकं वा त्वरितं—मानसोत्सुक्यं वा
यथास्यात्तथा चपलं—कार्योत्सुक्यं यथास्यात्तथा नरेन्द्रो भरतः सिंहासनादभ्युत्तिष्ठति
‘अब्भुद्वित्ता’ अभ्युत्थाय ‘पायपीढाओ’ पादपीठात् पदासनात् ‘पच्चोरुइ’ प्रत्यवरोहति
अवतरति ‘पच्चोरुहित्ता पाडयाओ ओमुइ’ प्रत्यवरुह्य अवतीर्य पादुके पादत्राणे अव-
मुञ्चति त्यजति ‘ओमुइत्ता’ अवमुच्य त्यक्त्वा ‘एगसाडिअं उत्तरासंगं करेइ’ एकःशाटो

અત્યંત સન્નમ કે વશ સે હાથોં કે શ્રંષ કટક, ત્રુટિક— બાહુરક્ષક, મુકુટ ધૌર કુણ્ડલ ચન્નલ
હોં ઉઠે વક્ષસ્થલ પર વિરાજિત હાર હિલને લગા ગલે મેં લટકતી હુઈ લમ્બી ૨ પુષ્પમાળાપં
ચન્નલ હો ઉઠી અનેક આભૂષણ આનન્દાતિરેક કે મારે શરીર મેં કસકને લગે હસ પ્રકાર સે વહ
પ્રફુલ્લિત નેત્ર ધૌર મુલ્લવાલા હોકર એવ કટક, કુણ્ડલ તથા લટકતી હુઈ માલાઓં કો શરીર
પર ધારણ કર (સસંભ્રમં તુરિયં ચવલં ણરિદં) વઢી ઉતાવલ સે યા વઢીઉત્કઠા સે અપને કાર્ય કી
સિદ્ધિ મેં ચન્નલ જૈસા બન કર વહ ભરત રાજા (સિંહાસનાઓ અબ્ભુદ્વેઈ) સિંહાસન સે ઉઠા
(અબ્ભુદ્વિત્તા પાયપીઢાઓ પચ્ચોરુહઈ) ધૌર ઉઠકર વહ પાદ પીઠ પર પૈર રલ્લ કર નીચે ઉતરા
(પચ્ચોરુહિત્તા પાડયાઓ ઓમુઇ) નીચે ઉતર કરકે ડસને દોનો પૈરો મેં પહિરી હુઈ સ્વહાર્ક
કો ઉતાર દિયા— (ઓમુઇત્તા એગસાડિઅં ઉત્તરાસંગં કરેઈ) સ્વહાર્કોં કો ઉતાર કર ફિર

નિવેદિત એ અર્થ તમને પ્રિય થાઓ. આ પ્રમાણે તે આયુધશાળાના માણસનાવચન સાંભળીને
અને તેને હૃદયમાં ધારણ કરીને તે ભરત રાજા હૃષ્ટ થાવત સૌમનસ્થિત થયો. અહીં પશુ
થાવત પદ્ધતી પૂર્વોક્ત પાઠ ગૃહીત થયેલો છે (વિયસિયવરકમલ્લયણવયણે પયલિઅવર
તુહિઅકેઝર કુંડલહારવિરાયંતરૈઃવચ્છે પાલંબપલંબમાણધોલંત ભૂસણધરે) તેના
બન્ને સુંદર નેત્રો અને મુખ શ્રેષ્ઠ કમળાની જેમ વિકસિત થઈ ગયા ચક્રરત્નની ઉત્પત્તિ-
જનિત અત્યંત સંભ્રમના વશથી હાથોના શ્રેષ્ઠ કટક, ત્રુટિક—બાહુરક્ષક, મુકુટ અને કુંડળો
અચળ થઈ ગયા. વક્ષસ્થળ—સ્થિત હાર હાલના લાગ્યો. ગળામાં લટકતી લાંબી—લાંબી પુષ્પ
માળાઓ અચળ થઈ ગઈ અનેક આભૂષણો આનન્દાતિરેકથી શરીરમાં સળકવા લાગ્યાં આ
પ્રમાણે તે પ્રફુલ્લિત નેત્ર અને મુખવાળો થઈને તેમજ કટક, કુંડળ તથા લટકતી માળા-
ઓને શરીર પર ધારણ કરીને (સસંભ્રમં તુરિયં ચવલં ણરિદં) એકદમ ઉતાવળથી અથવા

યત્ર સ એકશાટકમ્ અણ્ણશાટકમ્ અસ્યૂતમિત્યર્થઃ કરોતિ 'કરેત્તા' કૃત્વા 'અંજલિમુડલિ અગ્ગહત્યે' અઞ્જલિના મુકુલિતૌ કુદ્દમલાકારીકૃતૌ અગ્ગહસ્તૌ હસ્તાગ્રભાગૌ યેન સોડ્ઞ્જલિ-મુકુલિતાગ્રહસ્ત. 'ચક્રરયણામિમુદ્દે' ચક્રરત્નામિમુદ્દે ભૂત્વા 'સત્તદ્વપયાઈ અણુગચ્છઈ' સપ્તવા અષ્ટૌ વા પદાનિ અણુગચ્છતિ સિંહાસનાદગ્રે ગચ્છતિ 'અણુગચ્છિત્તા' અણુગત્ય 'વામં જાણુ અંચેઈ' વામં જાણુમ્ આકુચ્ચયતિ-ઝર્ધ્વં કરોતિ 'અંચેત્તા' આકુચ્ચ-ઝર્ધ્વં કૃત્વા 'દાહિણં જાણુ ધરણીતલંસિ ણિહદ્દુ કરયલ જાવ અંજલિં કદ્દુ ચક્રરયણસ્સ પણામ કરેઈ' દક્ષિણં જાણુ ધરણીતલે નિહત્ય-નિવેશ્ય કરતલપરિગૃહીતં દશનચં શિરસાવર્ત મસ્તકે અઞ્જલિ કૃત્વા ચક્રરત્નસ્ય પ્રણામં કરોતિ 'કરેત્તા' કૃત્વા 'તસ્સ અઝઘરિઅસ્સ અહામાલિઅં મઝઘવ્જ્જં ઓમોઅં દલઈ' તસ્યાડ્ઞયુધ્ધગૃહિકસ્ય 'યથામાલિતં' યથા ધારિતં યથા પરિહિતમ્ અવમુચ્ચયતે-પરિધીયતે યઃ સોડ્વમોચકઃ-આભરણવિશેષસ્તં મુકુટ વર્જં મુકુટં વિના સર્વભૂષણં દદાતિ, મુકુટસ્ય રાજચિહ્નાલક્ષ્ણાત્વેનાદેયત્વાત્ 'દલિત્તા'

ઉસને એક શાટિક- વિનાજુઙ્ગાહુઆ- ઉત્તરાસન્ન ધારણ ક્રિયા- (કરિત્તા અંજલિ મુડલિઅગ્ગ હત્યે ચક્રરયણામિમુદ્દે સત્તદ્વપયાઈ અણુગચ્છઈ) ઉત્તરાસન્ન ધારણ કરકે ફિર ઉસને અપને દોનો હાથોં કો કુદ્દમલાકારીકૃત ક્રિયા ઔર ચક્રરત્ન કી તરફ ઝન્મુખ હોકર વહ- (સત્તદ્વ પયાઈ અણુગચ્છઈ) સાત આઠ પૈર આગે ચલા-(અણુગચ્છિત્તા વામં જાણું અજેઈ, અચેત્તા દાહિણ જાણુ ધરણો તલંસિ ણિહદ્દુ કરયલ જાવ અંજલિં કદ્દુ ચક્રરયણસ્સ પણામં કરેઈ) આગે ચલકર ઉસને ફિર અપને વાયેં જાણુ કો ઈંચા ક્રિયા ઈંચા કરકે ફિર ઉસને અપને દક્ષિણ જાણુ કો જમોગ પર રક્ષા ઔર કરતલ પરિગૃહીતવાલી, દશ નચોં કે આપસ મે જોડને વાલી એસી અઞ્જલિ કો તોનવાર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિ કરતે હુપ ચક્રરત્ન કો પ્રણામ ક્રિયા (કરેત્તા તસ્સ

અતીવ ઉલ્લેખથી તે પોતાના કાર્યની સિદ્ધિમાં ચચળ બેવે. થધને તે ભરત રાજા (સિદ્ધા- સણામો અમ્મુદ્દે) સિંહાસન ઉપથી બેસે. થયે. (અમ્મુદ્દિત્તા પાયપીઢામો પચ્ચોરુદ્દહ) અને બેસા થધને તે પાદપીઠ ઉપર પગ મૂકીને નીચે ઉતર્યો. (પચ્ચોરુદ્દિત્તા પાણ્યામો ઓમુયઈ) નીચે ઉતરીને તેણે બન્ને પગોમાં પહેરેલી પાદુકાઓ ઉતારી નાખી. (ઓમુદ્દિત્તા પગસાદિઅં ઉત્તરાસન્ન કરેઈ) પાદુકાઓ ઉતારીને પછી તેણે એક શાટિક-વગર 'સિવેદુ' -ઉત્તરાસન્ન ધારણ કર્યું- (કરિત્તા અંજલિમુડલિઅગ્ગહત્યે ચક્રરયણામિમુદ્દે સત્તદ્વપયાઈ અણુગચ્છઈ) ઉત્તરાસન્ન ધારણ કરીને પછી તેણે પોતાના બન્ને હાથોને કુદ્દમલાકારે કરીને અને ચક્રરત્ન તરફ ઝન્મુખ થઈને તે (સત્તદ્વપયાઈ અણુગચ્છઈ) સાત-આઠ ડગલા આગળ વધ્યે. (અણુગચ્છિત્તા વામ જાણુ અંચેઈ અચેત્તા દાહિણ જાણુ ધરણીતલંસિ ણિહદ્દુકરયલ જાવ અંજલિ કદ્દુ ચક્રરયણસ્સ પણામં કરેઈ) આગળ વધીને ફરી તેણે પોતાની ડાબી બાજુ (ધૂટણ)ને બેસે કરીને પછી તેણે પોતાની જમણી બાજુ (ધૂટણ)ને પૃથ્વી પર મૂકી અને કરતલ પરિગૃહી- તવાળી, દશનબોને પરસ્પર બેઠનારી એવી અઞ્જલિકરીને ત્રણવાર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ કરતાં ચક્રરત્નને વદન કર્યાં (કરેત્તા તસ્સ અઝઘરિઅસ્સ અહામાલિઅં મઝઘવ્જ્જં ઓમોઅં દલઈ દલ વિઠલં જીવિઆરિદ્દં પીદ્વાણં દલઈ) વદન કરીને પછી તે ભરત રાજાએ

દત્ત્વા 'વિઊલં જીવિઆરિહં પોહ્દાણં દલ્હ' વિપુલં-પ્રચુરં જીવિકાર્હમ્-આજીવિકાયોગ્યં પ્રીતિદાનં દદાતિ 'દલિત્તા' દત્ત્વા 'સવ્કારેહ સમ્માણેહ' સત્કારયતિ વસ્ત્રાદિના સન્માન-યતિ વચનવહુમાનેન 'સવ્કારેત્તા સમ્માણેત્તા' સત્કૃત્ય સન્માન્ય ચ 'પહિવિસજ્જેહ' પ્રતિવિસર્જયતિ સ્વસ્થાનગમનાય સમાદિશતિ । 'પહિવિસજ્જેત્તા' પ્રતિવિસર્જ્ય 'સીહાસ-ણવરગણ પુરત્થામિમુદ્દે સણ્ણિસણ્ણે' સિંહાસનવરગતઃ શ્રેષ્ઠસિંહાસનસ્થિતઃ પૂર્વામિમુખઃ સન્નિષણ્ણઃ ઉપવિષ્ટઃ । અથ ભરતો યત્કૃતવાન્ તદાહ- 'તણ્ણં' इत्यादि । 'તણ્ણં' સે ભરહે રાયા કોહુંવિયપુરિસે સદ્દાવેહ' તતઃ સલ્લ સ ભરતો રાજા કૌટુમ્બિકપુરુષાન્ શબ્દયતિ અહ્યયતિ 'સદ્દાવેત્તા' શબ્દયિત્વા ચ 'एवं वयासी' एवं वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत् उक्तवान् किमुक्तवानित्याह- 'खिप्पामेव' इत्यादि 'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! विणीयं रायहाणि सच्चिन्तरवाहिरियं' क्षिप्रमेव शीघ्रमेव भो देवानुप्रियाः ! विनीतां राजधानीं साभ्यन्तरवाह्या अन्तर्वाह्याम् अन्तर्वाह्यभागसहिता 'आसिय समज्जियसित्त सुइगरत्थं-तरवीहियं' तत्र आसित्त संमाजित सित्त शुचिक रथ्यान्तर वीथिकाम् आसित्ता गन्धो-

અહિઘરિઅસ્મ અહામાલિમ મહવજ્જ ઓમોહ દલહ દલહતા વિઊલં જીવિઆરિહં પોહ્દાણં દલહ) પ્રણામ કરકે ફિર ઉસ મગ્ત રાજા ને ઉસ આયુષ ગૃહિક કે છિયે અપને મુકુટ કો છોહ કર વાકી કે સવ પહિરે આમૂષણ ઉનાર કર દે દિયે ઔર ભવિષ્ય મેં ઉસકી આજીવિકા ચલતી રહે હસકે યોગ્ય વિપુલ પ્રીતિદાન દિયા (દલિત્તા સવ્કારેહ, સમ્માણેહ, સવ્કારેત્તા, સમ્માણેત્તા, પહિવિસજ્જેહ, પહિવિસજ્જેત્તા સીહાસણ વરગણ પુરત્થામિમુદ્દે સણ્ણિ-સણ્ણે) વિપુલ પ્રીતિદાન દેકર ફિર ઉસને ઉસકા વસ્ત્રાદિ કે દ્વારા સન્માનક્રિયા, વહુમાન દ્વારા ઉસકા સન્માન ક્રિયા હસ પ્રકાર ઉસકા સત્કાર ઔર સન્માન કરકે ફિર ઉસને ઉષે વિસર્જિત કર દિયા વિસર્જિત કરકે ફિર વહ અપને શ્રેષ્ઠ સિંહાસન પર પુર્વદિશા કી આત

તે આયુષ ગૃહિકને પોતાના મુકુટ સિવાય ધારણ કરેલાં બધા આભૂષણો ઉતારીને આપીદીધા અને ભવિષ્યમા તેની આલુવિકા ચાલતી રહે તે પ્રમાણે વિપુલ પ્રમાણમા પ્રીતિદાન આપ્યું (દલિત્તા સવ્કારેહ સમ્માણેહ, સવ્કારેત્તા, સમ્માણેત્તા પહિવિસજ્જેહ, પહિવિસજ્જેત્તા સીહા-સણવરગણ પુરત્થામિમુદ્દે સણ્ણિસણ્ણે) વિપુલ પ્રીતિદાન આપીને તેણે તેનું વસ્ત્રાદિક વડે સન્માન કયું, બહુમાન વડે તેનું સન્માન કયું. આ પ્રમાણે તેના સત્કાર અને સન્માન કરીને પછી તેણે તેને વિસર્જિત કરી દીધો. વિસર્જિત કરીને પછી તે પોતાના શ્રેષ્ઠ સિંહા-સન ઉપર પૂર્વ દિશા તરફ મુખ કરીને સારી રીતે બેસી ગયો. (તણ્ણં સે મરહે રાયા કોહુંવિયપુરિસે સદ્દાવેહ) ત્યાર બાદ તે ભરત રાજાએ પોતાના કૌટુમ્બિક માણસોને બોલાવ્યા (સદ્દાવેત્તા ઇવં વયાસી) અને બોલાવીને તેમને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું (ખિપ્પા-મેવ ભો દેવાણુપ્પિયા ! વિણીયં રાયહાણિ સચ્ચિન્તરવાહિરિય આસિયસમજ્જિયસિત્ત સુઇગરત્થં-તરવીહિયં મંચાઈ મંચકલિય) હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે સૌ શીઘ્ર વિનીતા રાજધાની ને અદર અને બહારથી એકદમ સ્વચ્છ કરો, મુગધિત પાણીથી સિંચિત કરો, સાવરણીથી ફચરો સાફ કરો, બેથી રાજમાર્ગો અને અવાન્તરમાર્ગો સારી રીતે સ્વચ્છ થઈ જાયે. હર્ષ-

दकादिभिरीपत्सिक्ता, समार्जिता समार्जनैः परिस्कृता अतएव शुचिका संमृष्टा रथ्या राजमार्गोऽन्तरवीथी च अवान्तरभागो यस्यां सा तथा ताम् 'मंचाडमंचकलियं' तत्र मञ्चातिमञ्चकालिताम् मञ्चाः—मालकाः दर्शकजनोपवेशनार्थम् अतिमञ्चाः तेषामप्युपरि ये तैः कलिता युक्ता ताम् 'णाणाविह रागवसण ऊसिअन्नयपडागाडपडागमंडिय' तत्र नानाविधो रागो—रञ्जनं येषु तानि वसनानि वस्त्राणि येषु तादृशा ये उच्छिद्रता उर्ध्वीकृता ध्वजाः—सिंहगरुडादिरूपकोपलक्षिता वृहत्पट्टरूपाः पताकाश्च तदितररूपाः, अतिपताकाः तदुपरि वर्त्तिन्यः पताकास्ताभिर्मण्डिताम् 'लाउल्लोइयमडियं' तत्र लापितोल्लोचितमडितां यद्वा लिप्तोल्लोचितमडिताम्, तत्र लापित छगणादिना लेपनम्, उल्लोचितं सैटिकादिना कुब्जादिषु धवलनं ताभ्यां मडितमिव मडितं शोभितं प्रासादोदियस्यां सा तथा ताम्, यद्वा लिप्तं छगणादिना, उल्लोचितम् उल्लोच युक्तं प्रासादादियस्यां सा तथा ताम् 'गोसीसरसरत्तचंदणकलस' गोशीर्षसरसरत्तचन्दनकलशां तत्र गोशीर्षैः सरसरत्तचन्दनैश्च युक्ताः शोभार्थं कलशाः यस्यां ताम् 'चंदणघडसुकय जाव गंधुदधूयाभिराम' चन्दनघटसुकृत यावदगन्धोद्धूताभिरामाम् अत्र यावत्पदेन 'चंदण घड

हुइ करके अच्छी तरह से बैठ गया (तएण से भरहे राया कोडुंबियपुरिसे सदावेइ) बादमे उस भरत राजा ने अपने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया (सदावित्ता एव वयासी) और बुलाकर उनसे उसने ऐसा कहा — (स्त्रिप्पामेव भो देवानुप्पिया विणीअं रायहाणि सम्भितरबाहिरिअं आसिय समज्जियसित्तसुइगरत्तर्त्तवीहियं मचाइमचकलियं) हे — देवानुप्रियो ! आपलोग बहुत ही जल्दी विनीता राजधानी को भीतर और बाहर से बिल्कुल साफ सुथरी करो सुगंधित पानी से उसे सिञ्चित करो, बुहारी से कूड़ा कचरा निकाल कर उसकी सफाई करो की जिससे राजमार्ग और अवान्तर मार्ग अच्छी तरह साफ सुथरे हो जावें दर्शकजनो के बैठने के लिये मंचों के ऊपर मंचों को सुसज्जित करो (णाणाविहरागवसणऊसिअ शयपडागाडपडागमंडियं) अनेक प्रकार के रंगों से रंगे हुए वस्त्रों की ध्वजाओं से पताकाओं से—कि जिनमें सिंह गरुड आदि के चिह्न बने हो तथा अतिपताकाओं से—इन पताकाओं के उपर फहराती हुइ बड़ीर लम्बी पताकाओं से—उसे मण्डित करो (लाउल्लोइयमडियं) जिनकी नीचेकी जमीन गोबर आदि से लिपी हो और चूने की कलई से जिनकी दीवारें पुती हों ऐसे प्रासादादिको बाली उसे बनाओ (गोसीसरसरत्तचंदणकलस) शोभा के निमित्त हर एक दरवाजे पर ऐसे कलशों को रखो कि जो गोशीर्षचन्दन से और रत्तचंदन से उपलब्ध हो (चंदनघडसुकय जाव गंधुदधूयाभिराम)

केने जेसवा भाटे भंथोनी ठपर भंथोने सुसज्जित करे। (णाणाविहरागवसणऊसिअन्नय पडागाड पडागमडियं) अनेक जतना २ गोथी रंगोकोवा वस्त्रोनी ध्वजोकोथी—पताकोकोथी के जेनीअंहर सिद्ध, गजुड वगेरेना (यहो होय तेभज्ज अति पताकोकोथी—जे पताकोकोनी ठपर देखती बहुतो मोटी—मोटी बाणी पताकोकोथी—विनीता नगरीने भंडित करे। (लाउल्लोइय मडियं) जेभनी नीथोनी भूमि छात्र वगेरेथी दिप्त होय अने यूनानी कलधथी

સુકયતોરણ પહિદુવારદેસમાયં આસત્તોસત્તવિહલવદ્વધારિય મલ્લદામકલાવં પંચવળ્ણ-
સરસ સુરમિમુક્કપુષ્પપુંજોવયારકલિયં, કાલાગુરુપવરકુંદુરુક્કતુરુક્કધૂવહઙ્ગતમઘમઘત
ગંધુદ્ધુયામિરામં' इति पर्यन्तं ग्राह्यम् । तत्र चन्दनघटसृकृततोरणप्रतिद्वारदेशभागाम्,
तत्र चन्दनघटाश्च सृकृतानि सृण्डुकृतानि सृण्डुतया निवेशितानि तोरणानि च प्रतिद्वार-
देशभागे यस्याः सा तथा ताम् यत्र प्रतिद्वारे चन्दनयुक्त घटाः सृण्डुतोरणानि च सन्ती-
त्यर्थः, आसक्तोत्सक्त विपुलवृत्तावतारितमाल्यदामकलापाम्, तत्र आसक्तो भूमिसंसक्तः,
उत्सक्तः—उपरि संसक्तः, विपुलो विस्तीर्णः, घृत्तो वर्तुलो गोलकारः, उपरिदेशात् अव-
तारितः प्रलम्बमानीकृतः, माल्यानि पुष्पाणि तेषां दामानि मालाः तेषां माल्यदाम्नां
कलापः—समूहो यस्यां सा तथा ताम् पंचवर्णसरससुरमिमुक्त पुष्पपुञ्जोपचारकलिताम्,
तत्र पञ्चवर्णाणि कृष्णनीलादि पञ्चवर्णयुक्तानि सरसानि सुरभीणि सुगन्धीनि च तानि
मुक्तानि विक्रीर्णानि यानि पुष्पाणि तेषां पुञ्जरूपचाराः—रचनाविशेषाः, तैः कलितां
युक्ताम्, कालागुरुप्रवरकुन्दरुक्कतुरुक्कधूपदह्यमानातिशयगन्धोद्ध्युतामिरामाम्, तत्र काला-
गुरु प्रवरकुन्दरुक्कतुरुक्काः श्रेष्ठगन्धद्रव्यविशेषाः प्रसिद्धाः, धूप प्रसिद्धः एते दह्यमाना
अग्नौ प्रक्षिप्यमाणास्तेषां 'मघमघंत' अतिशयितो यो गन्धः उद्ध्युतः—सर्वतः प्रसृतः तेन

प्रत्यેક દ્વાર પર ચન્દન કે ઘડો કો તોરણ કે આકાર મેં સ્થાપિત કરો યહા યાવત્પદસે “ચંદણ
ઘડસુકય તોરણ પહિદુવારદેસમાયં આસત્તોસત્તવિહલવદ્વધારિય મલ્લદામકલાવ, પંચવળ્ણસર-
સસુરમિમુક્કપુષ્પપુંજોવયારકલિય, કાલાગુરુપવર કુંદરુક્ક તુરુક્ક ધૂવહઙ્ગતમમઘમઘત ગંધુદ્ધુયામિ
રામં)” હસ પાઠ કા સગ્રહ હુઆ હૈ . હસકા માવ એસા હૈ કિએસી લટકતી હુઈ
માલાઓ કે સમૂહ સે હસ નગરી કો અલંકૃત કરો કિ જો માલાઓ કા સમુદાય
ઊપર નીચે દોનોં ઓર સે પાની કે છિલકાવ સે તર હો રહા હો વિસ્તીર્ણ હો ગોલ હો ઓર
ઊપરકી ઓર નીચે કી ઓર લટકતા હુઆ હો, નગરી મેં એસે પાંચ વળોં કે પુષ્પોં વિસરો કિ જો
સુરમિત હો સુગંધિત હો—એવં સરસ હો—શુષ્ક નહીં હો નગરી કો ઓર અધિક સુગંધિત બનાવે
કે લિયે કાલાગુરુ, પ્રલભ્રેષ્ઠકુન્દરુક્ક ઓર તુરુક્ક—લોમાન, ઇન સબઘૂવોં કો સુગંધિત દ્રવ્ય

જેમની દીવાલો દીપેલો હોય એવા પ્રાસાદિકોવાળી તે નગરીને ખનાવીને (જોસીસ સરસ-
રત્તચંદણકલસં) શાભા—નિમિત્ત દરેક દ્વાર પર એવા કળશે મૂકો કે જેઓ ગોશીર્ષ
અન્દન અને રક્ત અન્દનથી ઉપલિપ્ત હોય. (ચંદણઘડસુકય જાવ ગંધુદ્ધુયામિરામ) દરેક
દ્વાર પર અન્દનના કળશેને તોરણના આકારમાં સ્થાપિત કરો. અહીં યાવત્ પદ્યો (ચંદણઘડ-
સુકયતોરણપહિદુવારદેસમાય આસત્તોસત્તવિહલવદ્વધારિયમલ્લદામકલાવ, પંચવળ્ણ સરસ
સુરમિમુક્ક પુષ્પ પુંજોવયારકલિયં, કાલાગુરુ, પવરકુંદરુક્કતુરુક્કધૂવહઙ્ગત મઘમ-
ઘંત ગંધુદ્ધુયામિરામ) આ પાઠનો સગ્રહ થયેલો છે. એનો માવ આ પ્રમાણે છે કે એવી
લટકતી માળાઓના સમૂહોથી આ નગરીને અલંકૃત કરો કે જે માળાઓના સમુદાયે ઉપર
નીચે અને તરફથી પાણીના છટકાવથી તરબોળ થઈ રહ્યા હોય, તે વિસ્તીર્ણ હોય,
'ગોળ' હોય અને ઉપરથી નીચે લટકતી હોય, આ નગરીમાં એવા પાંચવળોંના પુષ્પોને વિકીર્ણ

अभिरामाम् । अतएव 'सुगंधवरगंधियं' सुगन्धवरगन्धिताम् 'गंधवट्टिभूयं' गन्धवर्त्तिभूताम् सुगन्धवर्त्तिकारूपाम् ईदृशविशेषणविशिष्टाम् 'करेह कारवेह' कुरुत स्वयम् कारयत परः 'करेत्ता, कारवेत्ता' य कृत्वा कारयित्वा च 'एय माणत्तियं पच्चप्पिणह' एतामाज्ञप्तिकां प प्रत्यर्पयत एतामाज्ञप्तिम्—आज्ञां प्रत्यर्पयत समर्पयत ततस्ते किं कुर्वन्तीत्याह—'तए णं' इत्यादि । 'तए ण ते कोडुनियपुरिसा भरहेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा' ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः भरतेन राज्ञा एवमुक्ताः सन्तः ततो भरताज्ञानन्तर ते कौटुम्बिक-पुरुषाः राजसेवकाः भरतेन राज्ञा एवमुक्तप्रकारेणोक्ताः सन्तः 'हट्ठं करयल जाव' इष्टाः करतल यावत् तत्र इष्टाः करतल यावत् परिगृहीतं दशनखं शिरसावत्तं मस्तके अञ्जलि-कृत्वा 'एव सामित्ति ! आणाए विणएण वयणं पडिसुणंति' एवं स्वामिन् ! आज्ञाया विनयेन वचनं प्रतिशृण्वन्ति एवं स्वामिनः यथाऽऽयुष्मन्तः आदिशन्ति तथेति कृत्वा आज्ञायाः विनयेन वचनं प्रतिशृण्वन्ति स्वीकुर्वन्तीति ततस्ते किं कुर्वन्तीत्याह—'पडिसु-णिच्चा भरहस्स अंतियाओ पडिणिवस्समति' प्रतिश्रुत्य स्वीकृत्य भरतस्य राजोऽन्तिकात्

विशेषो को — अग्नि में जलाओ एवं अतिशयरूप से इनके निकले हुए धूम की गन्ध से उसे सु-गंधो का भंडार बनाओ "सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूयं करेह कारवेह" यहीवात इन पदों द्वारा विशेषरूप से पुष्ट की गई है 'करेह' क्रियापद का अर्थ है आप सब इस बात को स्वयं करो तथा "कारवेह" दूसरों से भी कराओ "करेत्ता कारवेत्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह" इस प्रकार आदेश देने के बाद उस चक्रवर्ती ने उनसे साथर मैं ऐसा कहा कि "हमें तुम लोंग" यह सब कहागया काम हमने पूरा कर लिया" इसबात की खबर देना (तएणं त कोडुनिय पुरिसा भरहेणं रण्णा एवंवुत्ता समाणा हट्ठ करयलजाव एवं सामित्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति" इस प्रकार से अपने अधिपति भरत राजा द्वारा आज्ञापित हुए वे कौटुम्बिक पुरुष बहुत ही अधिक प्रसुद्धित हुए उन्हो ने दोनों हाथों को पूर्वोक्तरूप से जोड़ कर के एव उनकीकृत अञ्जलिको मस्तक पर दाहिनी ओर से बाईं ओर को घुमाकर

करे। के ने सुरभित होय, सुगंधित होय तेमन् सरस्स होय ओटवे के शुष्क न होय। नगरीने अतीव सुगंधित बनाववा भाटे डालागुरु, श्रेष्ठ कुन्डकुष्क अने तुलुष्क-दोषान ओ सर्वधूपोने-सुगंधित द्रव्य विशेषोने-अग्निभा पधराओ अने अतिशय रूपमां ओभनाथी नीकणता धूमनी गंधथी तेने सुगंधने। बाह्यर बनावी हे। "सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूयं करेह कारवेह" ओन् वात ओ पढोवडे विशेष रूपमा पुष्ट करवासा आवी छे। "करेह" क्रिया पढने। अर्थ छे-तमे सौ भणीने ओ काम जाते करे। तथा 'कारवेह' भीलओ। पासेथी पणु करवे। 'करेत्ता कारवेत्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह' आ प्रभाण्णे आदेश आपीने ते अकंपती' ओ तेभने आम कहुं के काम पुरुं थाय ओटवे तमे सवे' अभने आ रीते अभर आओ के तमे ने काम अभने सो'पेहुं ते अभ सारी रीते पुरे कथुं छे (तएण तं कोडुं वियपुरिसा भरहेण रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठ करयल जाव एवं सामित्ति आणाए वयणं पडिसुणंति) आ प्रभाण्णे पोताना अधिपति भरत राजा द्वारा आज्ञापित थयेला ते कौटु-

प्रतिनिष्क्रामन्ति 'पडिणिक्खमिच्चा, विणीयं रायहाणि जाव करेत्ता कारवेत्ताय तमाणत्तिय पच्चप्पिणंति' प्रतिनिष्क्रम्य च विनीतां राजधानीं यावत्पदेनानन्तरोक्तसकलविशेषण-विशिष्टां कृत्वा कारयित्वा च तामाज्ञां भरतस्य प्रत्यर्पयन्ति । अथ भरतः किं कृतवानित्याह—'तए णं से' इत्यादि । 'तए णं से भरहे राया जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ' ततः खलु स भरतो राजा यत्रैव मज्जनगृहम् स्नानगृहम् तत्रैवोपागच्छति 'उवागच्छित्तामज्जणघरं अणुपविसइ' उपागत्य च मज्जनगृहं-स्नानगृहम् अनुप्रविशति 'अणुपविसित्ता समुत्ताजालाकुलाभिरामे विचित्तमणिरयणकुट्टिमतले रमणिज्जे ण्हाणमंडवंसि' अनुप्रविश्य समुत्तेन मुक्ताफलयुक्तेन जालेन गवाक्षेन आकुलो व्याप्तोऽभिरामश्च यः तस्मिन्, विचित्रमणिरत्नमयम् 'कुट्टिमतल' वद्धभूमिका यत्र स तथा तस्मिन्, अत एव रमणीये स्नानमण्डपे 'णाणामणिरयणमत्तिचित्तंसि, ण्हाणपीढंसि सुहणिसण्णे' नानाविधानां मणीनां

के अपने स्वामी की प्रदत्त आज्ञा को विनय पूर्वक स्वीकार किया (पडिसुणित्ता भरहस्स-अंतियाओ पडिणिक्खमंति) आज्ञा को स्वीकार करके फिर वे भरत महाराज के पास से वापिस चले आये (पडिणिक्खमिच्चा विणीयं रायहाणि जाव करेत्ता कारवेत्ताय तमाणत्तिय पच्चप्पिणंति) वापिस आकर उन्होंने विनीतारानधानी को जिस प्रकार से सुसज्जित आदि करने के लिए भरत राजा ने उन्हें से कहा था उसी प्रकार से पूर्वोक्त विशेषण विशिष्ट करके और उस भरताज्ञा को पूर्ण सधजाने की स्वर भरत महाराज के पहुँचादो (तए ण से भरहे राया जेणेव मज्जणघरे, तेणेव उवागच्छइ) अपनी आज्ञा पूर्ण रूप से सम्पादित हो गई जान कर भरत महाराज स्नान शाला की ओर गये (उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ) वहाँ आकर वे उस स्नान गृह के भीतर प्रविष्ट हुए (अणुपविसित्ता समुत्ताजालाकुलाभिरामे विचित्तमणिरयणकुट्टिमतले रमणिज्जे ण्हाणमंडवंसि) प्रविष्ट होकर वे मुक्ताजाल से व्याप्त गवाक्षों वाले तथा जिसका कुट्टिमतल अनेकमणिओ एवं रत्नों से खचित हो रहा है ऐसे स्नान मंडप में रखे हुए (ण्हाणपीढंसि णाणामणिमत्तिचित्तंसि) स्नानपीठ पर जो कि अनेक

भिन्न पुष्पो षड्भुज प्रमुदित तथा तेजोऽग्रे पूर्वोक्त रूपमा अन्ने दायाणी अंजलि भनावीने तेने भस्तरक पर जमणी तरक्षी ढाणी तरक्ष ईरवीने पोताना स्वामीओ आपेदी आशा अविनय स्वीकारी (पडिसुणित्ता भरहस्स अंतियाओ पडिणिक्खमंति) आशा स्वीकारिने पछी ते भरत महाराज पासेथी पाछा आन्था (पडिणिक्खमिच्चा विणीयं राया हाणि जाव करेत्ता कारवेत्ता य तमाणत्तिय पच्चप्पिणंति) पाछा आवीने तेमछे भरतराजओ जे रीते आदेश आपेदी ते मुज्ज विनीता राजधानीने सारी रीते सुखज करिने अने करवीने तेमज काम स पूछुं थवानी भरत भरत महाराज पासे थोद्याही (तए ण से भरहे राया जेणेव मज्जणघरे, तेणेव उवागच्छइ) पोतानी आशा सुभूषुं रीते पावन थई गथुं छे, ओ सुयना साक्षणीने ते भरत महाराज स्नानशाला तरक्ष गथा (उवागच्छित्ता मज्जणघर अणुपविसइ) त्या जधने तेओ ते स्नानगृहमा प्रविष्ट थया (अणुपविसित्ता समुत्ताजाला-कुलाभिरामे विचित्तमणिरयणकुट्टिमतले रमणिज्जे ण्हाणमंडवंसि) प्रविष्ट थधने ते मुक्ताजाल

रत्नानां च भक्तयो यथाचित्त्वेन रचनास्ताभिः चित्रे विचित्रे, स्नानपीठे स्नानयोग्यासने सुखेन निषण्णः उपविष्टः 'सुहोदर्हि, गंधोदर्हि, पुष्पोदर्हि, शुद्धोदर्हि य' शुभोदकैः तीर्थोदकैः यद्वा सुखोदकैः नात्युष्णैः नतिशीतैः, गन्धोदकैः तत्र चन्दनादिमिश्रितजलैः पुष्पोदकैः कुसुमवासितैः शुद्धोदकैः—स्वच्छपवित्रजलैश्च 'मज्जिण' इत्यग्रेण नष्ट सम्बन्धः तथा 'पुण कल्लाणगपवरमज्जणविहीण मज्जिण तत्थ कोउयसएहि, बहुविहेहि' पूर्ण-कल्याणकारिप्रवरमज्जनविधिना मज्जनविधिपूर्वकं मज्जितः स्नपितोऽन्तःपुरवृद्धाभिरिति बोध्यम् । कथम् इत्याह—(तत्थ) इत्यादि । (तत्थ कोउयसएहि बहुविहेहि) तत्र स्नानान्तरे कौतुकानां—रक्षादिनां शतैः, यद्वा कौतुहलिकजनैः स्वसेवा सम्यक् प्रयोगार्थं दर्शयमानैः कौतुकशतैः आश्चर्यजनककथानकरूप कुतूहलैः, बहुविधैः,—अनेकप्रकारैः सह स्नपितः अथ स्नानानन्तरविधिमाह—(कल्लाणग) इत्यादि । (कल्लाणग पवर मज्जणावसाणे) कल्याणकप्रवरमज्जनावसाने—स्नानानन्तरम् (पम्हलसुकुमारगंधकासाइम ल्हिमगे) पद्मलसुकुमारगन्धकापायिकोरुक्षिताङ्गः, तत्र पद्ममलया—पद्मगत्या अपर मुकुमारया मुकुमलया गन्धप्रधानया कापायिकया कापायेण पीतरक्तवर्णाश्रय रजनीय वस्तुनारक्ता कापायिकी तथा कपायरक्तया शाट्टिकयेत्यर्थः रुक्षितं रुक्षीकृतं प्रोच्छिन्नतमि-

प्रकार की मणि से और रत्नों द्वारा कृत चित्रों से विचित्र है (सुहृन्निषण्णे) आनन्द पूर्वक विराजमान हो गये (सुहोदर्हि गंधोदर्हि पुष्पोदर्हि शुद्धोदर्हि अ पुणकल्लाणगपवरमज्जणविहीण मज्जिण) वहां पर उन्हे शुभोदकों से तीर्थोदकों से अथवा न अतिगरम और न अति ठंडा ऐसे पानी से गन्धोदकों से चन्दनादि मिश्रित जल से पुष्पोदकों से फूल सुवासितपानों से और शुद्धोदकों से स्वच्छ पवित्र जल से पूर्ण कल्याणकारी प्रवरमज्जन विधिपूर्वक अन्तःपुर की वृद्धास्त्रियों ने स्नान कराया (तत्थ कोउयसएहि बहुविहेहि कल्लाणगपवरमज्जणावसाणे पम्हल सुकुमारगंधकासाइम ल्हिमगे) वहां स्नान के अवसर में कौतुहलिक जनोने अनेक प्रकार के कौतुक दिखाये जिन में अपने द्वारा की गई सेवा के सम्यक् प्रयोग दिखाये गये थे जब कल्याणकारक सुन्दर—श्रेष्ठ—स्नान क्रिया समाप्त हो चुकी तब उसके बाद उनका शरीर पद्मल रूपेँ वाली सुकुमार सुगन्धित तौलिये से पोछा गया और फिर (मरस सुरहेगोसीस-

थी व्यास गवाक्षावाणा तेभञ्ज अनेक भण्डियो अने रत्नोथी आथित कुट्टिमत्तलवाणा म डपभां भूकेला (पद्मानपीठसि जाणामणिभत्तिच्चित्तंसि) स्नान पीठ पर ठे के अनेक प्रकारना भण्डियो अने रत्नो द्वारा कृतचित्रोथी विचित्र छे (सुहृन्निषण्णे) आनन्द पूर्वक विराजमान अर्थ गया (सुहोदर्हि गंधोदर्हि पुष्पोदर्हि शुद्धोदर्हि अ पुणकल्लाणगपवरमज्जणविहीण मज्जिण) त्या तेभण्डे शुद्धोदकथी—तीर्थोदकथी अथवा वधारे न छिण्डु अने न वधारे अति शीत ज्येवा शीतल पाणीथी गन्धोदकथी चन्दनादि मिश्रित पाणीथी पुष्पोदकथी पुष्पसुवासित पाणीथी अने शुद्धोदकथी स्वच्छ पवित्र जलथी पूषु कट्याण्डकारी अवर मज्जनविधिपूर्वक अन्तःपुरनी वृद्धास्त्रीओ स्नान करान्यु (तत्थ कोउयसएहि बहुविहेहि कल्लाणगपवरमज्जणावसाणे पम्हलसुकुमारगंधकासाइम ल्हिमगे) त्या स्नान करवाना अवसरमा कौतुहलिक

ત્યર્થઃ અઙ્ગં यस્ય સ તથા (સરસસુરહિગોમીસચંદણાણુલિત્તગત્તે) સરસસુરમિગોશીર્ષ-
ચન્દાનુલિપ્તગાત્રઃ, રસેન સહિતાઃ સરસાસ્તૈઃ સુરમિગોશીર્ષચન્દનૈરનુલિતં ગાત્રં यस્ય
સ તથા, (અહ્યસુમહગ્ધદુસ્સરયણસુસંબુદે) અદ્વતં મલમૂષિકાદિભિરનુપદ્રુતમ્ સુમહાર્થં વહુ-
મૂલ્યકં યદુષ્યરત્નં પ્રધાનવસ્ત્રમ્ તત્સુસંવૃતં મુષ્ઠુપરિહિતં યેન સ તથા, અત્ર ચ વસ્ત્રસૂત્રં
પૂર્વં યોજનીયં ચન્દનસૂત્ર પશ્ચાત્, નદિ સ્નાનોત્થિત એવ ચન્દનેન વપુર્વિલિમ્પતીતિ વિધિ-
ક્રમઃ (સુદ્માલા વર્ણગવિલેખણે) શુચિમાલાવર્ણકવિલેખનઃ શુચિ પવિત્રં માલા પુષ્પ
માલા વર્ણકવિલેખનં મળનકારિ કુઙ્કુમાદિ વિલેખનં એતદ્ દ્રવ્યં યસ્ય સ તથા, પૂર્વ
સૂત્રે વપુઃ સૌગન્ધ્યાર્થમેવ વિલેખનમુક્તમ્ અત્ર તુ વપુર્મળનાયેતિ વિશેષઃ (અવિદ્મમણિ-
સુવર્ણે) અવિદ્ધાનિ પરિહિતાનિ મણિસુવર્ણાનિ યેન સ તથા, અનેન રજતાઘલક્રારનિવેષઃ
સૂચિતઃ, મણિસુવર્ણાલક્રારાનેવ વિશેષત આદ્ય (કપ્પિયહારદ્વહારતિસરિય પાલંબપલંબમાણ
કલ્પિસુત્તમુકય સોદે) કલ્પિતહારાર્દ્ર હારત્રિસરિકપ્રાલમ્બમાન કલ્પિસુત્તમુકયસોદે, તત્ર-
કલ્પિતો યથાસ્થાનં વિન્યસ્તો હારઃ-અષ્ટાદશ સરિકઃ, અર્દ્રહારઃ-નવસરિકઃ ત્રિસરિકશ્ચ

ચંદણાણુલિત્તગત્તે) ડનકે શરીર પર સરસ સુરમિ ગોશીર્ષ ચન્દન કા લેપ ક્રિયા ગયા (અહ્યસુમહગ્ધ
દુસ્સરયણસુસંબુદે) ફિર મલ મૂષિકા આદિ સે અનુપદ્રુત એવં વેશકી કીમતી દૂષ્ય રત્ન-પ્રધાન-
વસ્ત્ર ઉસે પહિરાયાગયા (સુદ્માલા વર્ણગવિલેખણે) અઙ્ગો પવિત્ર માલાયો સે ઓર મળન કારો
કુઙ્કમ આદિ વિલેખનો સે વહ યુક્ત ક્રિયા ગયા યદાં વલ્લ સૂત્ર કી યોજનાં પઢિલે કરના ચાહિયે
ઓર ચન્દન સૂત્ર કી પશ્ચાત્ -ક્યોઈ સ્નાન સે ડઠાહુઆ બ્યકિ ડઠને હો ચન્દન સે લેપ કરતા
હે એસા વિધિક્રમ નહીં હૈ ।

તથા પૂર્વસૂત્ર મેં શરીર કો સુગંધિત કરને કે ઝિયે હી વિલેખન કહા ગયા હૈ ઓર યહાં ઉસે
માળિત કરને કે ઝિયે વિલેખન કહા ગયા હૈ (અવિદ્મમણિસુવર્ણે) મણિ ઓર સુવર્ણ કે બને
હુણ આભૂષણ ઉસે પહિરાયે ગયે (કપ્પિયહારદ્વહારતિસરિયપાલંબમાણકલ્પિસુત્તમુકયસોદે)
હનમેં હાર અદ્વારહ ભરકા હાર નૌ ભરકા અર્દ્રહાર, ઓર તિસરિક-હાર યે સવ યથાસ્થાન

જાનેએ અનેક પ્રકારના કોતુકો બતાવ્યા. જેમાં પોતાના વડે કરવામાં આવેલી સેવાઓના
સમ્યક્ પ્રયોગો બતાવવામાં આવ્યા. જ્યારે કલ્યાણકારક સુંદર શ્રેષ્ઠ-સ્નાનક્રિયા પૂરી થઈ
થૂકી ત્યારે તેમને દેહ પદ્મમલ-રૂપાવાળા-સુકુમાર સુગંધિત દુવાલથી લુછવામાં આવ્યો
અને ત્યાર બાદ (સરસસુરહિગોમીસ ચંદણાણુલિત્તગત્તે) તેમના દેહ પર સરસ સુરમિ
ગોશીર્ષ ચન્દનનો લેપ કરવામાં આવ્યો. (અહ્યસુમહગ્ધદુસ્સરયણસુસંબુદે) ત્યાર બાદ મલ
મૂષિકા વગેરેથી અનુપદ્રુત તેમજ બહુમૂલ્ય દૂષ્યરત્ન-પ્રધાન-વસ્ત્રો તેને પહેરાવ્યા, (સુદ્મા
લાવર્ણગવિલેખણે) શ્રેષ્ઠ પવિત્ર માલાઓથી અને મળનકારી કુકુમ આદિ વિલેખનોથી તે
યુક્ત કરવામાં આવ્યા. અહીં વલ્લસૂત્રની યોજના પહેલા કરવી જોઈએ અને ચંદન સૂત્રની
તત્પશ્ચાત્ કેમકે સ્નાન પછી તરત જ બ્યકિત ચંદનનો લેપ કરે છે, એવો વિધિક્રમ નથી
તેમજ પૂર્વસૂત્રમાં શરીરને સુગંધિત કરવા માટે જ વિલેખન કહેવામાં આવેલ છે અને અહીં
તેને મંડિત કરવા માટે વિલેખન કહેવામાં આવેલ છે. (અવિદ્મમણિસુવર્ણે) માણુ અને

हारएव येन स कल्पितहाराद्धहारत्रिमरिकः, प्रलम्बमानः प्रालम्बो-श्रुम्बनक यस्य स प्राल-
म्बप्रलम्बमानः लम्बायमानश्रुम्बनकयुक्तः तथा (पालवपलंबमाण) प्राम्लवप्रलम्बमान इत्यत्र
पदव्यत्ययः आपत्त्वात् तथा-कटिसूत्रेण-कट्या भरणेन सुप्टुक्रता शोभा यस्य स कटि-
सूत्रसुकृतशोभः, ततः पदत्रयस्य कर्मधारयः, अथवा कल्पितहारादिभिः सुकृता शोभा
यस्य स तथा (पिण्डगेविज्जग अंगुलिज्जगल्लियक्याभरणे) पिण्डानि-वद्धानि
ग्रैवेयकाणि कण्ठाभरणानि अङ्गुलीयकानि अङ्गुलीयाभरणानि येन स पिण्डग्रैवेयका-
ङ्गुलीयकः, तथा ललिते सुकुमारे अङ्गके मुद्गादी ललितानि शोभावन्ति कचानां-केशा-
नाम् आभरणानि-पुष्पादीनि यस्य स ललिनाङ्गक ललितकचाभरणः, ततः कर्मधारयः,
अत्रोक्तद्वयविशेषणेन आभरणाङ्कारकेशालङ्कारौ उक्तौ । अथ सिद्धावलोकन्यायेन पुनरपि आभ-
रणालङ्कार वर्णयन्नाह -(णाणामणिकडगतुडिय थंभियमुए) नानामणिकटकट्टिकस्तम्भित-
श्रुजः नानामणीनां कटकट्टिकैः-हस्तवाद्वाभरणविशेषैर्वहुत्वात् स्तम्भिता विव स्तम्भितौ
श्रुजौ यस्य स तथा (अहियसस्सिरीए) अधिकसश्रीकः, अत्यन्तशोभासहितः (कुण्डल-
उज्जोइआणणे) कुण्डलोद्योतिताननः कुण्डलाभ्याम् उद्योतित-प्रकाशितमाननं मुखं
यस्य स तथा (मउडदित्तिसिरए) मुकुटदीप्तशिरस्कः मुकुटेन दीप्तं प्रकाशितं शिरो यस्य
स तथा (हारोत्थय सुकयवच्छे) हारावस्तुतसुकृतवक्षस्कः हारेण अवस्तुतम् आच्छादितं

उसे पहिराये गये लटकताहुआ श्रुम्बनक उसे पहिरायागया कटिमूत्र उसे पहिराय गया इस
से उसकी शोभा में चार चांद लग गये (पिण्डगेविज्जग अंगुलिज्जग लल्लिअगय ललि-
अकयाभरणे णाणामणि कडगतुडिअथंभियमुए) ग्रैवेयक-कण्ठाभरण-पहिराये गये, अंगु-
लियों में अङ्गुलीयक अंगुठियां पहिरायी गईं तथा सुकुमार मस्तकादि के उपर शोभावाले
केशों के आभरण रूपपुष्पादिक निहितरूपे गये (णाणामणिकडग तुडिय थंभियमुए)
नाना मणियों के बने हुए कटक और टुटित उसकी मुजाओं में पहिराये गये (अहिय-
सस्सिरीए) इस तरह की सजावट से उनकी शोभा और अधिक हो गई (कुण्डल उज्जोइ-
आणणे) उसका मुखमण्डल कुण्डलों की मनोहर कान्ति से प्रकाशित होगया (मउड-
दित्तिसिरीए) मुकुट को झल झलाती दीप्ति से उनका मस्तक चमकने लगा हारोत्थयसु-

सुवर्ण निर्मित आभूषण। तेने पहरेआया (कप्पिअहारद्धहारतिसरिअपालवमाणकडि-
सुत्तसुकय सोहे) आभूषणोभा हार-अहार सेरने। हार नव सेरने। अर्द्धहार अने त्रिसरिक
हार ओ अधा तेने यथा स्थान पहरेआवनामा आया तेथी तेनी शोभा आर गच्छी वधी
गर्ध (पिण्डगेविज्जगअंगुलिज्जगल्लिअगय लल्लिअकयाभरणे णाणामणिकडगतुडिअथंभि-
अमुए) ग्रैवेयक-क कालरुओ। पहरेआवनामा आया, आंगणीओभा अंगुलीयक मुद्रिकाओ। पहरेआनी
तेभओ सुकुमार मस्तकादि उपर शोभा स यन्नवाणोना आभरण ३५ पुष्पादिके धारण
कराओ। (णाणामणि कडग तुडियथंभियमुए) अनेक भण्डिओथी निर्मित कटक अने टुटित
तेनी बुलओभा पहरेआया (अहियसस्सिरीए) आ प्रभाणे सज्जवटथी तेनी शोभा धण्डी
वधी गर्ध (कुण्डलउज्जोइआणणे) तेनु सुअभ ठण कुंडलीनी मनोहर कान्तिथी प्रकाशित थथ

તેનૈવ હેતુના દર્શકજનાનાં સુકૃતમ્ આનન્દપ્રદં વક્ષો यस્ય સ તથા । (પાલંબપલંબ માણસુકયપટઉત્તરિજ્જે) પ્રલમ્બપ્રલમ્બમાનસુકૃતપટોત્તરીય પ્રલમ્બેન દીર્ઘેણ પ્રલમ્બમાને- ન-દોલાયમાનેન સુકૃતેન સુષ્ટુ િર્મિતેન પટેન-વસ્ત્રેણ ઉત્તરીયમ્ ઉત્તરાસન્નો यस્ય સ તથા (મુદ્ધિયાપિગલગુલીય) મુદ્ધિકાપિન્નલાઙ્ગુલિકઃ મુદ્ધિકામિઃ અઙ્ગુલીયકૈઃ પિન્નલાઃ પિન્નલવર્ણા અઙ્ગુલ્યો यस્ય સ તથા ણાણામણિ કણગવિમલ મહરિહ ણિણ્ણોયવિય મિસિ મિસિંતવિરઙ્ગય સુસિલિટ્ઠવિસિટ્ઠલટ્ઠમઠિયપસત્થઆવિદ્ધવીરવલ્લ) નાનામણિ કન કવિમલમહાર્થં નિપુણ પરિકર્મિત દીપ્યમાન વિરચિત સુશ્ચિલ્લવિશિષ્ટ લઘ્સંસ્થિત પ્રશસ્તાવિદ્ધ વીરવલ્લયઃ । તત્ર નાનામણિ જટિતસુવર્ણમ્ અત્થેવ વિમલં સ્વચ્છં મહાર્થં વહુમુલ્લયકં નિપુણેન શિલ્પિના (ઓયવિય) તિ, પરિકર્મિતમ્ (મિસિ મિસિત) ત્તિ, દીપ્ય- માનં વિરચિતં-નિર્મિતં સુશ્ચિલ્લં સુસન્ધિવિશિષ્ટમ્ લઘ્સં મનોહરં સંસ્થિતં સંસ્થાનં यस્ય તત્ તથા, પશ્ચાત્પૂર્વપદૈઃ કર્મધારયઃ, એવં વિધં પ્રશસ્તમ્ આવિદ્ધમ્ પગિહિત વીર- વલ્લયં યેન સ તથા તદન્યોઽપિ યઃ કશ્ચિત્ વીરવ્રતધારી ભવેત્ તદા સ માં વિજિત્ય મોચયત્યેતદ્વલ્લયમિતિ સ્પર્દયા યત્ પરિધીયતે તદ્વીરવલ્લયમિત્યુચ્યતે (કિં વહુણા) કિં

કયવચ્છે હાર સે આઞ્ઞાદિત હુઆ ઉનકી વક્ષસ્થલ દર્શકજનોં કો આનન્દપ્રદ બનગયા (પાલંબ પલંબમાણસુકયપટઉત્તરિજ્જે) ફૂલ્લતે હુએ લમ્બે સુકૃત પટ સે ઉસકા ઉત્તરાસન્નક્રિયા ગયા અર્થાત્ વહુત હી સુન્દર લમ્બે લટકતે હુએ વસ્ત્રકા દુપટા ઉનકે કધે પર સજાયાગયા થા જો કિં હવા કે મન્દ ૨ શ્લોકે સે ઢિલ રહા થા (મુદ્ધિયાપિગલગુલીય)જો મુદ્ધિકાપં -અંગૂઠિયાં ઉસકી અંગુલિયો મેં પહિરાઈ ગઈ િ ઉનસે ઉમકો વે સબ અંગુલિયાં પિન્નલવર્ણવાલી પ્રતીત હોને લગી ણાણામણિ કણગવિમલમહરિહિણિણ્ણોયવિયમિસિમિસિત વિરહ અ સુસિલિટ્ઠ વિસિટ્ઠ લટ્ઠ સઠિઅ પસત્થ આવિદ્ધવીરવલ્લ) અનેક મણિયોં સે સ્વચિત્ સુવર્ણ કા વીરવલ્લય જો કિત્ત્વચ્છ ઔર વેશ કીમતી થા, નિપુણ શિલ્પી દ્વારા જિસકા નિર્માણ હુઆ થા, સન્ધિ જિસકી વઢી સુન્દર થી, દેસને મેં જો વઢા સુહાવના થા, ઉસને અપને હાથ મેં પહિરા હુઆ થા જો કોઈ વીરવ્રત ધારી યોદ્ધા મુઢે પરાસ્ત કરકે મેરે હિસ વીર વલ્લય કો મુજ સે છુડા લેગા વહી હિસ

અથુ' (મહાદ્ધિત્તસિરીય) મુથુટની ઝળહળતી દ્વીપિથી તેમનુ મસ્તક ચમકવા લાગ્યુ (દ્વારો તથા સુકયવચ્છે) હારથી આઞ્ઞાદિત થયેલુ તેનુ' વક્ષસ્થળ દર્શકો આટે આનન્દ પ્રદ બની ગયુ (પાલંબ પ માણસુકયપટઉત્તરિજ્જે) ઝુવતા લાખા સુકૃત પટથી તેનો ઉત્તરાસન્ન બનાવીને પહેરાવવામાં આવ્યો એટલે કે બહુજ સુન્દર લાંબા લટકતા વસ્ત્રોનો દુપટો તેના ખભા પર મૂકવામાં આવ્યો તે દુપટો પવનના મદ મદ ઝોકાઓથી હાલી રહ્યો હવા (મુદ્ધિયાપિગલગુલીય) જે મુદ્ધિકાઓ અંગૂઠીઓ તેની આંગળીઓમાં પહેરાવામાં આવી હતી તથા તેની બધી આંગળીઓ પીતલચુવાળી દેખાતી હતી (ણાણામણિકણગ વિમલમહરિહિણિણ્ણોયવિયમિસિમિસિત વિરહઅસુસિલિટ્ઠ વિસિટ્ઠ લટ્ઠ સંઠિઅ પસત્થ આવિદ્ધવીરવલ્લ) અનેક માણેઓ વડે અચિત સુવર્ણ સ્વચ્છ અને બહુમૂલ્ય કે જેનું નિર્માણ ઉત્તમ શિલ્પીઓએ કર્યુ હતું, જેની સધિ અત્યંત સુંદર હતી

વહુના વર્ણિતેન (કપ્પરુક્ષણ ચેવ અલંક્રિયવિભૂસિણ) કલ્પવૃક્ષ ઇવ અલંક્રુનો વિભૂષિતશ્ચ, તત્ર કલ્પવૃક્ષ પત્રાદિભિરલંકૃતઃ ફલ પુષ્પાદિભિઃ વિભૂષિતઃ રાજા તુ મુકુટાદિભિરલંકૃતઃ વસ્ત્રાભરણાદિમિશ્ર ભૂષિત ઇતિ (ઞરિંદે) નરેન્દ્રઃ (મકોરંટ જાવ ચડચામર વાલવીહંગે) સકોરંટ યાવત્ ચતુશ્ચામર વાલવીજિતાઙ્ગઃ અત્ર યાવન્કરણાત્ (મકોરંટમલ્લદામેણ છત્તેણ ધરિઙ્ગમાણેગં) ઇતિ ગ્રાહ્યમ્. સકોરંટાનિ-કોરંટાભિ-ધાન કુસુમરતત્ત્વકવન્તિ, કોરંટપુષ્પાણિ હિ પીતવર્ણાનિ માન્યાન્તે શોભાર્થે ઢીયન્તે, માલાયૈ દિતાનિ માલ્યાનિ-પુષ્પાણિ તેપાં દામાનિ માલા યત્ર તત્તથા, એવં વિધેન છત્રેણ ધ્રિયમાણેન, વિરાજમાન ઇતિ ચતુર્ણામ્ અગ્રતઃ પ્રપ્તઃ પાર્શ્વયોશ્ચ વીજ્યમાન-ત્વાત્ ચતુઃ સદ્ગુણકાનાં ચામરાણાં વાલૈ વીજિતમ્ સ્પર્શિતમઙ્ગ યસ્ય સ તથા શિરસિ ધ્રિયમાણેન કોરંટ સપીતકુસુમસ્તત્ત્વકયુક્તપુષ્પમાલાસુસજ્જિતછત્રેણ વિરાજમાનઃ ચતુ સંખ્યાક ચામર વાલવીજિતશરીરશ્ચેત્યર્થઃ (મંગલ જય જય સદ્કયાલોપ) મઙ્ગલ જય જય શબ્દકુતાલોકઃ મઙ્ગલભૂતો જયજયશબ્દો જનૈઃ કૃતઃ આલોકે દર્શને સંસાર મેં વિશિષ્ટ વીર માના જ્ઞાયગા હસ પ્રકાર કો સ્પર્શાં સે જો વચ્ચ ધારણ ક્રિયા જાતા હૈ

વહી વીરવલ્લય કહા ગયા હૈ । (કિંવહુણા) ઓર અધિક કયા કહા જાવે (કપ્પરુક્ષણચેવ અલંક્રિયવિભૂસિણરિંદે સકોરંટજાવ ચડચામર વાલવીહંગે) હસ તરફ વહ નરેન્દ્ર મુકુટ આદિ કો દ્વારા અલંકૃત હુઆ ઓર વસ્ત્રાભરણાદિકો દ્વારા ભૂષિત હુઆ વસ્ત્રાદિકો દ્વારા અલંકૃત હુઆ ઓર ફલ પુષ્પાદિ કો દ્વારા વિભૂષિત હુઆ કલ્પવૃક્ષ કે જેસા પ્રતીત હોને લગા ઉપ સમય ઉમકે મસ્તક ઉપર યાવત્પદ દ્વારા ગૃહીતપદો કે અનુસાર કોરંટ પુષ્પો સ્તવકો કી માલા સે યુક્ત છત્ર ધારિયો ને તાને હુઆ થે । ચામર ઢોરનેવાલે ઉપકે પીછે પીછે ઓર સન્મુખ સ્થલે હોકર એવં દાર્ઁ વાર્ઁ ઓર સ્થલે હોકર ચામર ઢોર રહે થે । હસલિયે વાલોં સે ઉસકા શરીર સ્પર્શિત હો રહા થા (મંગલ જય જય સદ્કયાલોપ) ઉમકે દિલ્લતે હી લોગ જય હો જય હો હસ પ્રકાર કે

જેવામા જે અત્યંત સુંદર લાગતુ હતુ, તેણે પોતાના હાથમા પકડેયું હતું, વીરમતધારી થોડો મને પરાજિત કરીને મારા આ વીરવલ્લયને મારી પાસેથી જૂટવી લેશે, તેજ થોડા આ સંસારમાં વિશિષ્ટ વીર તરીકે પ્રસિદ્ધ થશે આ જાતની સ્પર્શાથી જે વલ્લય ધારણ કરવામાં આવે છે. તેને જ વીરવલ્લય કહેવામાં આવે છે (કિંવહુણા) અને વધારે શું કહીએ. (કપ્પરુક્ષણ ચેવ અલંક્રિયવિભૂસિણરિંદે સકોરંટ જાવ ચડચામર વાલવીહંગે) આ પ્રમાણે તે નરેન્દ્ર મુકુટ વગેરેથી અલંકૃત થયે. અને વસ્ત્રાભરણાદિ-કોથી ભૂષિત થયે તે વસ્ત્રાદિકોથી અલંકૃત અને ફળપુષ્પાદિકોથી વિભૂષિત થયેલ કલ્પવૃક્ષની જેમ શોભવા લાગ્યે. તે સમયે તેના મસ્તક ઉપર યાવત પદ દ્વારા ગૃહીત પદો સુખ્ય કોરંટ પુષ્પોના સ્તવકોની માદાથી યુક્ત છત્રો છત્રધારીઓએ તાણેલા હતા. ચામર ઢોળનારાઓ તેની પાછળ અને સન્મુખ ઊભા થઈને તેમજ હાથી અને જમણી ખાશુ ઊભા થઈને ચામર ઢોળતા હતા. જોથી ચામરોનાવાળોથી નેનો દેહ સ્પર્શિત થઈ રહ્યો હતો (મંગલજય જયસદ્કયાલોપ) તેને જોતા જ લોકો 'જય થાઓ, જય થાઓ'

सम्मुखे सति यस्य स तथा (अणेगगणनायग दंडणायग जाव दूय सन्धिवाल सद्धि संपरिवुडे) अनेक गणनायकदण्डनायक यावत् दूत सन्धिपालै सार्द्ध संपरिवृत्तः, अनेके गणनायकाः—मल्लादिगणमुख्याः, दण्डनायकाः—तन्त्रपालाः (कोष्ठ-पाल) यावत् (ईसर तल्लवर माडंबियकोडु वियमंतिमहामति गणग दोवारिय अमच्च चेडपीढमहणगरणिगम सेट्टि सेणावड सत्थावाह) इति ग्राह्यम्, तत्र ईश्वराः—युवराजाः अणिमाद्यैश्वर्ययुक्ता वा, तल्लवराः—परितुष्टपदत्तपट्टबन्धविभूषिता राजसदृशाः, माड-म्बिकाः—छिन्नमडरवाधिपाः, कौटुम्बिकाः—कुटुम्बमुख्याः, मन्त्रिणः महामन्त्रिणः, गणकाः—गणितज्ञा भाण्डागरिका वा, दौवारिकाः—प्रतीहाराः, अमात्याः—राज्यकार्या-धिष्ठायका, चेटाः पादमूलिका दासा वा, पीठमर्दाः—आस्थाने आसन्नामन्न सेवकाः समवयस्का इत्यर्थः, नगरम् तात्स्थ्यात्तद् व्यपदेशेन नगरनिवासिप्रभृतय, निगमाः वणिजः श्रेष्ठिनः—श्रीदेवताध्यासित सौवर्णपट्टभूषितोत्तमाङ्गाः, अथवा नगराणां निगमा-नां च वणिग्वासानां श्रेष्ठिनो महत्तराः, सेनापतयः—चतुरङ्गसैन्यनायकाः, सार्थवाहाः—

माङ्गलिक शब्दों का उच्चारण करने लगने, (अणेग गणनायगदंडणायग जाव दूयसन्धि-वाल सद्धि संपरिवुडे) अनेक गणनायकों से अनेकदण्ड नायको से, यावत्—“ईसर तल्लवर माड-बियकोडुंबिय मति महामती गणदोवारिय अमच्च चेड पीढमहणगरणिगमसेट्टि सेणावड सत्थ-वाह” अनेक ईश्वरों से,—युवराजों से, अथवा अणिमादिरूप ऐश्वर्य से युक्तधनी पुरुषों से अनेक तल्लवरो से—परितुष्ट हुए नृप के द्वारा प्रदत्त पट्टबन्ध से विभूषित हुए राजा जैसे पुरुषों से, अनेक माटम्बिकों से—छिन्न मडम्बाधिपतियों से, अनेक कुटुम्ब के मुखियों से, अनेक मंत्रियों से अनेक महामंत्रियों से, अनेक गणकों से गणितज्ञों से, अथवा भाण्डारियों अनेक द्वारपालों से अनेक अमार्यों से, राजकार्य के अधिष्ठायकों अनेक चेटों से नौकर चाकरों से अनेक पीठ-मर्दों से—समवयस्क अङ्ग/क्षत्रों से, अनेक नगरनिवासियों से, अनेक निमों से वणिजनों से अनेक श्रेष्ठियों से,—श्री देवता से युक्त पट्टबन्ध जिनके मरतक पर सुशोभित है ऐसे नगर

आ प्रमाणे भागवतिः शब्दानां उच्यते। करत्वा लाग्या (अणेगगणनायगदंडणायग जाव दूयसन्धिवालसद्धि संपरिवुडे) अनेक गणनायकोधी, अनेक दंड नायकोधी यावत् (ईसर तल्लवर माडुबिय कोडुबियमति महामति गणदोवारिय अमच्च चेडपीढमहणगरणिगमसेट्टि सेणावड सत्थवाह) अनेक ईश्वरोधी, युवराजोधी आवा अणिमादि ३५ ओषधोधी युक्त धनी पुरुषोधी, अनेक तल्लवरोधी परितुष्ट थयेला नृप वडे प्रदत्त पट्टबन्धधी विभूषित थयेला रत्न जेवा पुरुषोधी, अनेक माडणिकोधी—छिन्न मडम्बाधिपतियोधी, अनेक कुटुम्बना मुखियाओधी, अनेक मन्त्रियोधी अनेक महामन्त्रीओधी, अनेक गणकोधी, गणितज्ञोधी अथवा भांडारीओधी, अनेक द्वारपालोधी, अनेक अमार्योधी राज्यकार्यना अधिष्ठायकोधी, अनेक चेटोधी नौकरोधी अनेक पीठमर्दोधी समवयस्क अंगरक्षकोधी अनेक नगरनिवासी-ओधी, अनेक निगमोधी वणिज्जनोधी, अनेक श्रेष्ठिओधी श्रीदेवताधी युक्त पट्टबन्ध जे भना भस्तके पर सुशोभित छे जेवा नगर श्रेष्ठोओधी अनेक सेनापतिओधी चतुरंग

सार्थनायकाः, दूताः—देशान्तावासि राजादेशनिवेदकाः, सन्धिपालाः—राज्यमन्धिरक्षकाः
एतेषां द्वन्द्वः तैः सार्द्धं सपरिवृत्तः समन्तात् परिकरितः नृपतिः मञ्जनगृहात् परि-
निष्क्रामतीति सम्बन्धः किं भूतः (धवलमहामेह णिगण इव जाव ससिन्धु पिय-
दसणे) धवलमहामेघ निर्गत इव यावत् शशिरिचप्रियदर्शनः तत्र धवलमहामेघः—स्वच्छ-
शरन्मेघः तस्मान्निर्गतः शशीव चन्द्र इव प्रियदर्शनः, अत्र यावत्पदात् (गहगणदि-
प्पन्तरिक्खतारागणानां मज्झे) ग्रहगणदीप्यमान ऋक्षतारागणानां मध्ये तथा च यथा
चन्द्रः शरदभ्रपटलनिर्गत इव ग्रहगणानां दीप्यमानऋक्षाणां शोभमान नक्षत्राणां,
तारागणानां च मध्ये वर्त्तमान इव प्रियदर्शनो भवति तथा भरतोऽपि सुधा धवली-
कृत मञ्जनगृहान्निर्गतो ऽनेकगणनायकादि परिवार मध्ये वर्त्तमानो प्रियदर्शनोऽभवे-
दितिभावः, पुनः कीदृशो नृपतिः प्रतिनिष्क्रामतीत्याह— (धूपपुष्प गन्धमल्लद्वय-
गण) धूप पुष्पगन्धमाल्यहस्तगतः, तत्र धूपपुष्पगन्धमाल्यानि सुगन्धद्रव्योपकरणानि
हस्तगतानि यस्य स तथा तत्र धूपो दशाङ्गादिः, पुष्पाणि प्रफुल्ल कुसुमानि गन्धाः

सेठों से, अनेक सेनापतियों से चतुरङ्गसैन्य के नायकों से, अनेक मार्थवाहों से सार्थ के नायक
अनेक दूतों से—देशान्तर वामी राजादेशनिवेदकों से, एवं अनेक सन्धिपालों से- राज्यसन्धि
रक्षकों से, विराहुआ वह नृपति मञ्जनगृह से बाहर निकला (धवलमहामेह णिगण इव जाव
ससिन्धु पियदसणे) उम समय वह देखने में ऐसा प्रिय प्रतीत होता था कि जैसा धवल
महामेघ से निर्गत चन्द्र देखने में प्रिय प्रतीत होता है. यहा यावत्पद से "गहगणदिप्पत
किक्खतारागणानां मज्झे" इस पाठ का ग्रहण हुआ है. इसका भाव ऐसा है कि निसप्रकार
शरदभ्रपटल के भीतर से निकलता हुआ चन्द्रमण्डल देदिप्यमान नक्षत्रों एवं तारागणों के
मध्य में वर्त्तमान होता हुआ प्रियदर्शनमाला होता है उसी तरह भरत राजा भी सुधाधवलकृत
मञ्जनगृह से निकलने पर अनेक गणनायकादि परिवार जनों के बीच में वर्त्तमान हुए प्रियदर्श-
नवाले हुए (धूपपुष्पगन्धमल्लद्वयगण. मञ्जनघराओ पाडिगिक्खमह) मञ्जनगृह से बाहर
निकलते समय उनके हाथ में धूप दशाङ्गादि धूप, प्रफुल्लित कुसुम गन्ध द्रव्य और माल्य—

सैन्यना नायकोधी, अनेक सार्थ वाडोधी सार्थना नायकोधी, अनेक दूतोधी देशान्तरवासि
राजदेश निवेदकोधी तेमञ् अनेक सन्धिपादोधी राज्यसन्धिरक्षकोधी वीटणाथेदो ते नृपति
मञ्जन गृह (सनानगृह)धी भडार आव्यो (धवल महामेहणिगण इव जाव ससिन्धु पिय
दसणे) ते समये ते जेवामा जेवो प्रिय लागतो हनेो के जेवो धवल महामेघधी निर्गत
चन्द्र जेवामा प्रिय लागे छे अही यावत् पदथी (गहगणदिप्पतरिक्खतारागणानां मज्झे)
आ पाठ अहेय थयो छे आनो भाव आ प्रभाजे छे के जेम शरदभ्रपटलमाथी निस्र-
चन्द्रमण्डल देदिप्यमान नक्षत्रो तेमञ् तारागणोनी वन्थे सुशोभिन प्रियदर्शनीय छे य छे,
तेमञ् भरत राज पण सुधा धवलीकृत मञ्जन गृहमाथी भडार नीकणीने अनेक गणनायकादि
परिवारनो दोहोनी वन्थे सुशोभित थतो प्रियदर्शी थयो, (धूप पुष्प गन्धमल्लद्वयगण
मञ्जनघराओ पडिगिक्खमह) मञ्जन गृहमाथी नीकणी वणने तेना हाथोमा धूप दशाङ्गादि
धूप प्रफुल्लित कुसुम, गन्ध द्रव्य अने भादय अथित पुण्यो जे अथा सुगन्धित पदार्थो हनो

गन्धद्रव्याणि माल्यानि ग्रथितपुष्पाणि एताणि हस्ते गतानि-प्राप्तानि यस्य स तथा (मञ्जनघराओ पडिणिकखमई) मञ्जनगृहात्प्रतिनिष्क्रामति (पडिणिकखमित्ता) प्रति-
निष्क्रम्य (जेणेव आउहघ/सालाजेणेव चक्ररयणे तेणामेव पहारेत्थ गमणाए) यत्रैव
आयुधगृहशाला यत्रैव च चक्ररत्न तत्रैव प्रवागितवान् गमनाय-गन्तुं कामः प्रावर्तत
इत्यर्थः ॥ सू० ३ ॥

अथ भगवत्तगमनानन्तरं यथा तदनुचराश्चक्रुस्तथाऽऽह 'तए णं' इत्यादि ।

मूलम्-तए णं तस्स भरहस्स रण्णो बहवे ईसरपभिइओ अप्पे-
गइया पउमहत्थगया अप्पेगइया उप्पलहत्थगया जाव अप्पेगइया सय
सहस्सपत्तहत्थगया भरहं रायाणं पिट्ठओ २ अणुगच्छन्ति । तए णं तस्स
भरहस्स रण्णो बहूइओ-‘खुज्जाचिलाइवामणिवडभीओ बब्बरी वडसि-
याओ । जोणियपल्हवियाओ इसिणिय थारुकिणियाओ ॥१॥ लासिय
लउसिय दमिलीसिंहलितह आस्वी पुलिदीय । पक्कणि बहलो मुरंडी
सबरीओ पारसीओय ॥ २ ॥ अप्पेगइया वंदणकलसहत्थगयाओ चंगेरी
पुप्फ पडलहत्थगयाओ भिगार आदंसथालपातिसुपइट्ठगवायकस करंड-
पुप्फचंगेरीमल्लवण्ण चुण्णगंधहत्थगयाओ वत्थ ओभरण लोमहत्थय
चंगेरीपुप्फपडलहत्थगयाओ जाव लोमहत्थगयाओ अप्पेगइयाओ सीहा-
सणहत्थगयाओ छत्त चामरहत्थगयाओ तिल्लसमुग्गयहत्थगयाओ—

तेल्ले कोट्ठसमुग्गे पत्तेचेए अंतगरमेला य ।

हरियाले हिगुलए मणोसिला सासव समुग्गे ॥ १ ॥

अप्पेगइयाओ तालियंटहत्थगयाओ अप्पेगइयाओ धूवकडुच्छुय
हत्थगयाओ भरहं रायाणं पिट्ठओ २ अणुगच्छन्ति तए णं से भरहे राया
सव्विड्डीए सव्वबलेण सव्वसमुदएणं सव्वायरेणं मव्वविभूसाए सव्व-

ग्रथित पुष्प ये सब सुगन्धिन सन्म्रा था (पडिनिक्खमित्ता) मञ्जनगृह से निकलकर वे
(जेणेव आउहघरसाला) जहा उनको अ युधयशाला थी (जेणेव चक्ररयणे) और उपमे म
जहा पर चक्ररत्न था (तेण मेव पहारेत्थ गमणाए) उसी ओर वे चलने लगे । ३ ।

(पडिनिक्खमित्ता) मञ्जनगृहमाथी निकलीने ते (जेणेव आउहघरसाला) जहा तेभनी
आयुधशाला હતી, (जेणेવ ચક્રરયણે) અને તેમા પશુ જ્યા ચક્રરત્ન હતુ (તેણામેવ પહારેત્થ
ગમણાએ) તે તરફ તેઓ ચાલવા લાગ્યા ॥ ૩ ॥

विभूर्इए सव्वत्थपुप्फपल्लालंकोरविभूमाए सव्वतुडिय मद्दमणियाएणं
महया इड्ढीए जाव महया वरतुडिअजमगपवाइएणं संख पणवपद्रह भेरि-
बल्लखिरमुहिमुरजमुइंगदुंदुहि निग्घोसणाइएणं जेणेव आउहघरसाला
तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता आल्लोए चक्करयणस्स पणामं करेइ
करेत्ता जेणेव चक्करयणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता लोपहतथयं
परामुसइ परामुसित्ता चक्करयणं पमज्जइ पमज्जित्ता दिव्वाए उदगधाराए
अब्भुक्खेइ अब्भुक्खित्ता सरसेणं गोसीसत्तदणेणं अणुलिपइ अणुलि-
पित्ता अग्गहिं वरेहिं गंधेहिं मल्लेहिं य अच्चिणइ पुप्फारुहणं मल्ल-
गंधवण चणवत्थारुहणं आभरणारुहणं करेइ करित्ता अच्छेहिं सण्हेहिं
सेएहिं रयणामएहिं अच्छरसातंडुलेहिं चक्करयणस्स पुरओ अट्ठमंगलए
आलिहइ तं जहा-सोत्थियसिग्विच्छ णंदियावत्त वद्धमाणग भद्दासण
मच्छकलसदप्पण अट्ठमंगलए आलिहित्ता काऊगं करेइ उवयारंति किंते ?
पाद्रलमल्लियचंपग असोगपुण्णोगचूय मंजरिणवमालियवकुलतिलगकणवी
र न्द कोज्जय कोरंय पत्तदमणयवगसुरहि सुगंधगंधियस्स कयग्गहगहि-
यकरयलपब्भट्ठविप्पमुक्कस्स दसद्धवणस्स कुसुमणिगरस्स तत्थ चित्तं
जाणुस्सेहप्पमाणमित्तं ओहिनिगरं करेत्ता चंदप्पभवइरुलिय विमलदंडं
कंचणमणिरयणभत्तिचित्तं कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूव; गंधुत्तमाण-
विद्धं च धूववाट्टे विणिम्मुअंत वेरुलियमयं करुच्छुयं पग्गहेत्तु; पयते
धूव दहइ, दहेत्ता सत्तट्ठपयाइं पच्चसक्कइ, पच्चोसक्किता वामं जाणुं
अंचेइ जाव पणामं करेइ, करित्ता आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ पडि-
णिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिआ उवट्ठाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवा
गच्छइ उवागच्छिता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसीअइ सण्णि
सीएत्ताअट्ठारससेणिपसेणीओ सद्दावेइ सद्दावेत्ता एवं वयोसी खिप्पामेव;
मो देवाणुप्पिया ! उस्सुक्कं उक्कर उक्किट्ठं अदिज्जं अमिज्जं अभट्ठप्प-
वेसं अदंडकोदंडिमं अधरिं गणिआवरणाउइज्ज कलियं अणेगतालाय;

राणचरियं अणद्धु अमुङ्गं अमिलायदामं पमुइ य पक्कीलियसपुरजण-
जाणवयं वि जयवेज्जयं चक्करयणस्स अट्ठाहियं महामहिमं करेहि करित्ता
ममेअ माणत्तिय खिप्पामेव पच्चाप्पिण्ह तएणं ताओ अट्ठास्स सेणिप्प
सेणीओ भरहेणं रत्ता एवं बुत्ताओ समाणीओ हट्ठाओ जाव विणएणं
पडिमुगांति पडिमुणित्ता भरहस्म रण्णो अंतिआओ पडिणिक्खमेति
पडिणिक्खपित्ता उस्सुक्कं उक्कर जाव करेति य कारवेति य करेत्ता
कारवेत्ता जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता जाव
तमाणत्तियं पच्चाप्पिणंति ॥ सू० ४ ॥

छाया— ततः खलु तस्य भरतस्य राज्ञो बहव ईश्वर प्रभृतयः अप्येके पद्महस्तगताः
अप्येके उत्पलहस्तगताः, यावत् अप्येके शतसदृश पत्रहस्तगता, भरत राजान पृष्ठतः पृष्ठतोऽ-
नुगच्छन्ति । ततः खलु तस्य भरतस्य राज्ञो बहव्यः— कुब्जाः चिलात्यो वामनिका वडभिका
वर्षय्यो बकुशिका जोनिक्य । पल्लविका, ईसिनिकाः थारुकिनिकाः ॥१॥ लासिक्यो लङ्कु-
शक्योद्रविड्यः सिद्धय आरव्य पुलिन्द्रयः । पक्कण्यो बहल्यो मुरुण्डय शवर्यः पारसीकाः
॥२॥ अप्येकिकाः चन्दनकलशहस्तगता चगेरीपुष्पपटलहस्तगता भृङ्गारादशस्थालपात्रो सुप्र-
तिष्ठक पातकरकरत्नकरण्डपुष्पचंगेरीमाल्य वणचूर्णगन्धहस्तगताः यावत् लोमहस्तगताः
अप्येकिका सिंहासनहस्तगता, छत्रचामरहस्तगता, तैलसमुद्रक हस्तगताः,

तैलं कोष्ठसमुद्गकं पत्र चोथं च तगरम् पला च
हरिताल द्विगुलक मनः शिला सर्षपसमुद्गम् ॥ १ ॥

अप्येकिकास्तालवृन्त हस्तगता, अप्येकिका धूपकहस्तहस्तगता भरत राजान
पृष्ठतः पृष्ठतोऽनुगच्छन्ति, ततः खलु स भरतो राजा सर्वद्वर्षा सर्वद्युत्या सर्वबलेन सर्व-
समुदयेन सर्वादरेण सर्वविभूषया सर्वविभूत्या, सर्ववस्त्रपुष्पमाल्यालङ्कारविभूषया सर्ववृटि-
तशब्दसन्निनादेन महत्या ऋद्ध्या यावद् महता वरवृद्धितयमकसमक प्रवादितेन शङ्खपणवप
टह मेरी झञ्जरी खरमुखीमुरजमुदङ्गदुन्दुमिनिर्घोषनादितेन यत्रैव आयुधगृहशाला तत्रैवो-
पागच्छति उपागत्य आलोके चक्ररत्नस्य प्रणाम करोति, कृत्वा यत्रैव चक्ररत्न तत्रैवोपा-
गच्छति, उपागत्य लोमहस्तक परामृशति परामृश्य चक्ररत्नं प्रमार्जयति प्रमार्ज्य दिव्यया
उदकधारया अभ्युक्षति, अभ्युक्ष्य सरसेन गोशीर्षचन्दनेनानुलिम्पति, अनुलिप्य अग्रे वरै-
र्गन्धै मन्त्रैश्चार्चयति पुष्पारोपण माल्यगन्धवर्णचूर्णवस्त्रारोपणमाभरणारोपणं करोति
कृत्वा अच्छै प्रलक्ष्णैः प्रवेतैः रजतमये अच्छरसतण्डुलैः चक्ररत्नस्य पुरतोऽष्टाष्टमङ्गलकानि
आलिखति तद्यथा—स्वस्तिक श्रीवत्सनन्धावर्त्तबर्द्धमानक भद्रासनमत्स्यकलशदर्पणाष्टकमङ्गल-
कानि आलिख्य कृत्वा करोति उपचारमिति कोऽसौ (उपचार) ?

प्रकाशिका टीका ट० षष्ठस्कारः सू० ४ भरतराज्ञ गमनानन्तर तदनुचरकायनिरूपणम् ५५१

पाटलमल्लिकचम्पकाशोकपुन्नागआम्रमञ्जरी नवमालिक यकुलतिलककणवीरकुन्द-
कुञ्जक कोरण्टक पत्रदमनकधरसुरभिसुगन्धगन्धितस्य करग्रहगृहातकरतलप्रभ्रष्टविप्रमुक्त-
स्य दशार्द्धवर्णस्य कुटुमनिकरस्य तत्र चित्र जानूत्सेधप्रमाणमात्रम् अवधिनिकर कृत्वा
चन्द्रप्रभवज्वैदूर्यविमलदण्डम् काञ्चनमणिरत्नभक्तिचित्रम्, कृष्णागुरुप्रवरकुन्दुरुक्तुरुक्त
धूपगन्धोत्तमानुविद्धं विनिर्मुञ्चन्तम्, वैदूर्यमयं कङ्कलुक प्रगृह्य 'प्रयतः' धूप वहति, दग्धा
सप्ताष्ट पदानि प्रत्यपसर्प्यति, प्रत्यपसर्प्य चामं जानुम् अञ्चति, यावत् प्रणामं करोति, कृत्वा
आयुधगृहशालतः प्रतिनिष्क्रामति प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव वाहिरिका उपस्थानशाला यत्रैव सिंहा
सनं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सिंहासनवरगत पौरस्त्याभिमुखः सन्निपीदति, संनिपद्य
अष्टादशश्रेणिप्रश्रेणीः शब्दयति, शब्दयित्वा पवमवादीत् क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिया ।
उच्छुल्काम् उत्कराम् उत्कृष्टाम् अदेयाम् अमेयाम् अभटप्रवेशिकाम् अदण्डकुदण्डिमाम् अध-
रिमाम् गणिकावर नाटकीयकलिताम् अनेकतालाचरानुचरिताम् अनुद्धूतमृदङ्गाम् अमलान-
माल्यशस्नीम् प्रमुदिनप्रकोटितशपुरजनजानपदाम्, विजयवैजयिकीम्, चक्ररत्नस्य अष्टा-
हिकां महामहिमां, कुरुत, कृत्वा मम पतामाञ्जितिकां क्षिप्रमेव प्रत्यर्पयत । ततः खलु ता
अष्टादश श्रेणिप्रश्रेण्य भरतेन राज्ञा पवमुक्ता सत्यः हृष्टाः यावत् चिनयेन प्रतिशृण्वन्ति,
प्रतिशृण्व भरतस्य राज्ञः अन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य उच्छुल्काम् उत्कराम्
यावत् कुर्वन्ति च कारयन्ति च कृत्वा कारयित्वा यत्रैव भरतो राजा तत्रैवोपागच्छन्ति
उपागत्य यावत् तामाञ्जितिकां प्रत्यर्पयन्ति ॥ सू० ४ ॥

टीका—“तण्णं” इत्यादि । (तण्णं तस्स भरहस्स रण्णो बहवे ईसरपभिइओ) ततः
खलुः तस्य भरतस्य राज्ञो बहव ईश्वरप्रभृतयः ततो भरतस्य गमनसमये खलु तस्य
भरतस्य राज्ञो बहवो जना ईश्वरप्रभृतयः तलवरादारभ्य सन्धिपालान्ता यावत्पद सग्राह्याः
पूर्ववत् (अप्पेगइया पउमहत्थगया) अप्पेके पद्महस्तगताः करगृहीतकमलाः (अप्पेगइया
उप्पलहत्थगया) अप्पेकके उत्पलहस्तगताः उत्पलानि कमलप्रमेदाः तानि हस्तगतानि

‘तण्णं तस्स भरहस्स रण्णो’—इत्यादि सू०-४

टीकार्थ—(तण्णं तस्स भरहस्स रण्णो बहवे ईसर पभिइओ) उस भरत राजा के चलने के
समय उसके अनेक ईश्वर आदिजन तलवर से लेकर सधिपाल तक के समस्त मनुष्य — (भरहं
रायाण पिट्ठओ २ अणुगच्छन्ति) उस भरत राजा के पिछे २ चलने लगे. इनमें से (अप्पेगइया पउम-
हत्थगया) कितनेक व्यक्तियों के हाथ में पद्म था (अप्पेगइया उत्पलहत्थगया) कितनेक व्यक्तियों

‘तण्णं तस्स भरहस्स रण्णो’—इत्यादि सूत्र-॥ ४ ॥

टीकार्थ—(तण्णं तस्स भरहस्स रण्णो बहवे ईसर पभिइओ) ते भरत राजा यादवा दाज्ये ते
सभये अनेक ईश्वर आदि तलवरी थी माडीने सधिपाल सुधीना सर्व मनुष्ये । (भरहं रायाण
पिट्ठओ २ अणुगच्छन्ति) ते भरत राजानी पाछण-पाछण यादवा दाज्या. ओ मनुष्ये। मांथी
(अप्पेगइया पउमहत्थगया) डेटकाक मनुष्ये। ना दाथे। मा पद्मो डेटा । (अप्पेगइया उत्पल
हत्थ गया) डेटकाक मनुष्ये। ना दाथे। मा उत्पल डेटा । (जाव अप्पेगइया सयसहस्सपत्तहत्थ-

येषां ते तथा (जाव अप्पेगइया सयसहस्सपत्तहत्थगया) यावत्पदेन (अप्पेगइया कुमु-
यहत्थगया अप्पेगइया नल्लिण हत्थगया अप्पेगइया सोगंधिय हत्थगया, अप्पेगइया
पुंडरीयहत्थगया, अप्पेगइया सहस्सपत्तहत्थगया (इति संग्राह्यम्, तथा च अप्पेके कुमुद-
हस्तगताः, अप्पेके नल्लिनहस्तगताः, अप्पेके सौगन्धिकस्तगताः, अप्पेके पुण्डरीकहस्तगताः
अप्पेके सहस्रहस्तगताः, अप्पेके शतसहस्रपत्रहस्तगताः, लक्षपत्रकमलहस्तगताः (भरह
रायाण पिट्ठो अणुगच्छति) भरतं राजान पृष्ठतः पृष्ठतः पृष्ठभागे क्रमेण अनुगच्छन्ति अनु-
अनुयान्ति । (तएणं तस्स भरहस्स रण्णोवहुईओ) ततः सामन्त नृपानुगमनानन्तरम् तस्य
भरस्य राज्ञः सम्बन्धिन्यो बह्व्यो दास्यो भरतं राजानं पृष्ठतः पृष्ठतोऽनुगच्छन्ति इतिपूर्वेण
सम्बन्धः कास्ता इत्याह—

(खुज्जा चिलाइ वामणि वडभीओ वव्वरी वडसियाओ ।

जोणियपल्लवियाओ ईसिणियथारु किणियाओ ॥१॥

लासिअलउसिज्ज दमिलीसिंहलि तह आरबी पुलिंदीअ ।

पक्कणि बहलिमुरंडी सबरीओ पारसीओअ ॥२॥

के हाथ मे उत्पल था — (जाव अप्पेगइया सयसहस्सपत्त हत्थगया) यावत् कितनेक व्यक्तियो*
के हाथ में कुमुद था, कितनेक व्यक्तियो के हाथ में नल्लिन था, कितनेक व्यक्तियो* के हाथ में
सौगंधिक था कितनेक व्यक्तियो के हाथ में पुण्डरीक था, कितनेक व्यक्तियो के हाथ में सहस्र
पत्तों वाला कमल था और कितनेक व्यक्तियो के हाथ में शत सहस्र पत्तों वाला कमल था (त-
एणं तस्स भरहस्स रण्णो वहुईओ खुज्जा चिलाइ वामणि वडभी ओ वव्वरीवडसियाओ जोणिय
पल्लवियाओ इसिणिय थारु किणियाओ ॥१॥ — लासिअलउसिज्ज दमिली सिंहलि तह आरबी
पुलिंदीअ । पक्कणि बहलिमुरंडी सबरीओ पारसीओअ ॥२॥ इन सब सामन्त नृपो* के पीछे-

गया) यावत् कटलाक मनुष्येना हाथेमा कुमुदो हुता, कटलाक माणुसेना हाथेमा नल्लिन
हुता, कटलाक मनुष्येना हाथेमा सौगंधिको हुता, कटलाक मनुष्येना हाथेमा पुंडरीको
हुता, कटलाक मनुष्येना हाथेमा सहस्रहस्त कमलो हुता अने कटलाक मनुष्येना हाथेमा
शत-सहस्रहस्त कमलो हुता^१ (तए णं तस्स भरहस्स रण्णो वहुईओ खुज्जा चिलाइ
वामणिवडभीओ वव्वरीवडसियाओ, जोणियपल्लवियाओ ईसिणिय थारु किणियाओ ॥१॥
लासिअलउसिज्जदमिलीतह आरबी पुलिंदीअ । पक्कणि बहलिमुरंडी सबरीओ पारसीओअ २

१ यहाँ यावत्पद से “अप्पेगइया कुमुदहत्थगया, अप्पेगइया नल्लिण हत्थगया, अप्पेगइया सोगंधिय हत्थ-
गया, अप्पेगइया पुंडरीय हत्थगया, अप्पेगइया सहस्सपत्त हत्थगया” इस पाठ का संग्रह हुआ है ये सब
यद्यपि कमल के ही मेद है परन्तु इनमें क्या मेद है यह अन्य ग्रन्थों में लिखा जा चुका है अतः वहाँ
से यह विषय जान लेना चाहिये

१ अहो यावत्पदार्थी “अप्पेगइया कुमुदहत्थगया, अप्पेगइया, नल्लिण हत्थगया, अप्पेगइया
सौगंधिय हत्थगया, अप्पेगइया पुंडरीय हत्थगया, अप्पेगइया सहस्सपत्तहत्थगया” आ-
पाठने संग्रह थियो छे ओ वहाँ ओ के कमलना व प्रकारे छे, छताओ ओमनामां शे बेड
छे. ओ वात अन्य ग्रन्थेमां स्पष्ट करवामा आवी छे ओथी ते ओथेमाथी ओ विषे लक्ष्मी
देवुं ओईओ.

છાયા—કુબ્જાશ્ચિલાત્યો વામનિકા વહમિકા વર્વર્યો વકુશિકા: ।

જોનિક્ય: પલ્હવિકા ઈસિનિકા: થારુકિનિકા: ॥૧॥

લાસિક્કયો લકુશિક્કયો દ્રવિડચ: સિંહલ્ય આરબ્ય: પુલિન્દ્રચ: ।

પવ્વકળ્યો વહલ્યો મુરુન્ડચ: શવર્ય: પારસિકા: ॥૨॥

તત્ર કુબ્જા: વક્રજઙ્ઘા:, ચિલાત્ય: ચિલાતદેશોદ્ભવા:, વામનિકા:, અતિલઘુ-
શરીરા: લઘૂન્નતદ્વદ્યકોષ્ઠાવા' વહમિકા: મહઙ્કોષ્ઠા વક્રાધ: કાયાવા વર્વર્યો-વર્વર-
દેશોત્પન્ના:, વકુશિકા:-વકુશદેશોદ્ભવા જોનિક્યો-જોનકદેશજા:, પલ્હવિકા પલ્હવદે-
શોત્પન્ના, ઈસિનિકા:, ઈસિનિક દેશમવા:, થારુકિનિકા: થારુકિનદેશોત્પન્ના, લાસિક્કિ-
ન્યો-લાસકદેશોદ્ભવા:, લકુશદેશજા:, દ્રવિડ્યો-દ્રવિડદેશજા:, મિંહલ્ય:-સિંહલદેશજા:
આરબ્ય:-આરવદેશજા:, પુલિન્દ્રચ: પુલિન્દ્રદેશજા:, પવ્વકળ્ય: પવ્વકળદેશજા:, વહલ્યો વહ-
લિદેશજા:, મુરુન્ડ્યો મુરુન્ડદેશજા:, શવર્ય:-શવરદેશજા:, પારસીકા:-પારસદેશજા:,
અત્ર ચિલાત્યાદયોઽષ્ટાદશ પર્વોક્તાનુસારેણ તત્તદ્દેશોદ્ભવત્વેન તત્તન્નામિકા:, કુબ્જાદયસ્તુ
તિક્તો વિશેષણભૂતા વિજ્ઞાતવ્યા:, અથ યથા પ્રકારેણોપકરણેન તા: ભરતમનુજગ્મુસ્તથા
ચાહ—(અપ્પેગહ્યા) ઇત્યાદિ । (અપ્પેગહ્યા વંદનકલસહત્થગયાઓ) અપ્પેકિકા વન્દ-
નકલશહસ્તગતા:, તત્ર વન્દનકલશા:-મઙ્ગલ્ય ઘટા હસ્તગતા યાસાં તાસ્તથા (ચંગેરીપુષ્પ-

૨ જિનકી જંઘાઈ વક્ર હૈ જો ચિલાત દેશ મેં ઉત્પન્ન હુઈ હૈ તથા જો અતિલઘુ શરીર વાલી હૈ
અથવા જિનકા નાભિ સે નાંચે કા શરીર ભાગ વક્ર હૈ એસી વર્વર દેશ કી દાસિયાં, વકુશ દેશ
કી દાસિયાં, જોનક દેશ કી દાસિયાં, પલ્હવ દેશ કી દાસિયાં, ઈમનિક દેશ કી દાસિયાં,
થારુકિન દેશ કી દાસિયાં, લાસક દેશ કી દાસિયાં, લકુશ દેશ કી દાસિયાં, દ્રવિડ દેશ કી દાસિયાં
સિંહલ દેશ કી દાસિયા, અરવ દેશ કી દાસિયાં, પુલિન્દ્ર દેશ કી દાસિયાં પવ્વકળ દેશકી દાસિ-
યા વહલી દેશ કો દાસીયા, મુરુન્ડદેશ કી દાસીયાં, શવર દેશ કી દાસીયાં, પારસ દેશ કી દા-
સીયાં, હસ પ્રકાર કી યે ૧૮ દેશોકી દાસિયાં—ચલી (અપ્પેગહ્યા વંદનકલસહત્થગયાઓ
ચંગેરી પુષ્પપટલહત્થગયાઓ) હનમેં સે કિતનીક સ્ત્રિયો-દાસિયો કે હાથ મેં મઙ્ગલ કલશ

એ સર્વે સામન્ત નૃપોની પાછળ જેમના સાથેના વક્ર છે, જેઓ ચિલાત
દેશમાં ઉત્પન્ન થઈ છે, તેમજ જેઓ અતિ લઘુ શરીરવાળી છે અથવા જેમનું નાભિથી
નીચેનું શરીર વક્ર છે, એવી બધી દેશની દાસીઓ, વકુશ દેશની દાસીઓ, જોનક દેશની
દાસીઓ, પલ્હવદેશની દાસીઓ, ઈમનિક દેશની દાસીઓ, થારુકિન દેશની દાસીઓ, લાસક
દેશની દાસીઓ, લકુશ દેશની દાસીઓ, દ્રવિડ દેશની દાસીઓ, સિંહલ દેશની દાસીઓ,
અરવ દેશની દાસીઓ, પુલિન્દ્ર દેશની દાસીઓ, પવ્વકળ દેશની દાસીઓ, વહલિ દેશની
દાસીઓ, ચુરડદેશની દાસીઓ, શવર દેશની દાસીઓ, પારસ દેશની દાસીઓ, આ પ્રમાણે
અઢાર દેશની દાસીઓ ચાલવા લાગી (અપ્પેગહ્યા વંદન કલસહત્થગયાઓ ચંગેરી પુષ્પ
પટલહત્થગયાઓ) એ દાસીઓમાંથી કેટલીક દાસીઓના હાથોમાં મંગળ કળશો હતા,
કેટલીક દાસીઓના હાથોમાં ફૂલની નાની છાબડીઓ હતી અને તેમાં અનેક ખતના

पडलहत्यगयाओ) चङ्गेरी पुष्पपटलहस्तगता, तत्र चङ्गेर्या पुष्पपटलं चङ्गेरीपुष्पपटलम् चङ्गेरी कुसुमममूह तत् हस्तगतं यासां तास्तथा (मिंगार आदंसथालपात्रीसुपइदृगवाय-करगरयणकरंडपुष्पचंगेरी मल्लवण्णचुण्णगंधहत्यगयाओ) भृङ्गारादर्शस्थालपात्रीसुप्र-तिष्ठकवातकरकरत्नकरण्डपुष्प चङ्गेरीमाल्यवर्णचूर्णगन्धहत्यगता, तत्र भृङ्गागकः (झारी) ति भाषा प्रसिद्धः आदर्श दर्पणः स्थाल महतीस्थाली, पात्री लघुस्थाली सुप्रतिष्ठा सुस्थापनं भवति यस्मिन् स सुप्रतिष्ठकः पूर्णघटाद्याधारमात्रविशेषः वातकरकः घटविशेषः रत्नकरण्डः (करंडिया) इति भाषाप्रसिद्धो रत्नाधारपात्रविशेषः, अनः परं नवरं पुष्प चङ्गेरीतः आभ्य माल्यादिपदविशेषितास्वत्तच्चङ्गेर्यो ज्ञातव्या स्तथा च पुष्पचङ्गेरीमा-ल्यचङ्गेरी, वर्णचङ्गेरी, चूर्णचङ्गेरी, गन्धचङ्गेरी एता हस्तगता यासां तास्तथा (वत्थ आम-रणलोमहत्ययचंगेरी पुष्पपडलहत्यगयाओ) वस्त्रामरणलोमहस्तक चङ्गेरी पुष्पपटलह-स्तगताः तत्र लोमहस्तक वज्रमयूरपिच्छसमूहः पुष्पपटल पुष्पसमूहः अतिरिक्तानि प्रसि-

थे. कितनीक दासियो के हाथ में चंगेरी में पुष्पों का समूह था. (मिंगार आदंस थाल पाति सुपइदृगवायकरगरयणकरंडपुष्पचंगेरी मल्लवण्णचुण्णगंधहत्यगयाओ) कितनीक दासियों के हाथ में भृङ्गारकथा-झारी थी. कितनीक दासियों के हाथ में आदर्श-दर्पण था. कितनीक दासियों के हाथ में स्थाल-बड़े थाल थे कितनीक दासियों के हाथ में छोटी थालियां थी, कितनीक दासियों के हाथ में सुप्रतिष्ठ पूर्ण घटों आदि के आवार भूत पात्रविशेष—थे कितनीक दासियों के हाथ में वातकरक-घटविशेष—थे, कितनीक दासियों के हाथ में रत्न करण्ड—रत्नों को रखने के पात्र विशेष—थे इसी तरह से किन्हीं दासियों के हाथ में पुष्प चंगेरी, किन्हीं दासियों के हाथ में वर्ण चङ्गेरी, किन्हीं के हाथ में चूर्ण चङ्गेरी और किन्हीं के हाथ में गन्ध चङ्गेरी थी (वत्थ आमरणलोमहत्यय चंगेरी पुष्प पडल हत्यगयाओ जाव लोमहत्य गयाओ) किन्हीं दासियों के हाथ में वज्र थे, किन्हीं दासियों के हाथ में आमरण थे किन्हीं दासियों के हाथ में

पुष्प थे. इति (मिंगार आदंस थाल पाति सुपइदृगवायकरगरयणकरंडपुष्पचंगेरी मल्लवण्णचुण्णगंधहत्यगयाओ) कटलीक दासीओना हाथेभां, भृङ्गारके. इति, कटलीक दासीओना हाथेभां—आदर्श—दर्पण इति कटलीक दासीओना हाथेभां स्थाली—मोटा—मोटा थाणे. इति कटलीक दासीओना हाथेभां नानी—नानी थाणीओ इति कटलीक दासीओना हाथेभां सुप्रतिष्ठके—पूषं घट—वगेरेना आधार भूतपात्र विशेष इति कटलीक दासीओना हाथेभां वातकरक—घट विशेष—इति कटलीक दासीओना हाथेभां रत्न करंड—रत्नाने भूक्वा मटेना पात्र विशेष इति ओ प्रभाणे अ कटलीक दासीओना हाथेभां पुष्पनी नानी छाभडीओ, कटलीक दासीओना हाथेभां रजबरेली नानी छाभडीओ, कटलीक दासीओना हाथेभां यूषं भरेली नानी छाभडीओ अने कटलीक दासीओना हाथेभां सुगन्ध—पडावो भरेली नानी छाभडीओ इति. (वत्थ आमरण लोमहत्ययचंगेरी पुष्पप हत्यगयाओ जाव लोमहत्यगयाओ) कटलीक दासीओना हाथेभां वज्रो इति कटलीक दासीओना हाथेभां आभरेण इति, कटलीक दासीओना हाथेभां दोमहस्तके इति. ओटले के भयरेना पिच्छ-

द्धान्येव तानि हस्तगतानि यामां तास्तथा (जावलोमहृत्थगयाओ) यावत् लोमहृत्थगताः
आवद्धमयूरपिच्छहस्तगताः, इत्यर्थः (अप्येगइयाओ सीहासणहृत्थगयाओ) अप्येकिका
सिहासन हस्तगता (छत्तचामरहृत्थगयाओ) अप्येकिकाः छत्रचामर हस्तगताः (तिल्लसमु
गय हृत्थगयाओ) तथा अप्येकिकाः तैल समुद्राः तैल भाजन विशेषास्तद्भस्तगताः अत्र
समुद्रक सङ्ग्रहमाह—

तेल्लेकोट्टे समुग्गे पत्ते चोएअ तगरमेला य

हरिआले हिंगुलए मणोसिलासासवसमुग्गे ॥१॥

तेलं कोष्टसमुद्रकः पत्र चोयं च तगरम् एला च ।

हरिताल द्विज्जुलकं मनः शिला सर्पपसमुद्गः ॥१॥

एवम् कोष्टसमुद्गाः कोष्टभाजनविशेषाः तद्भस्तगताः, एवं पत्रसमुद्गक
हस्तगताः, चोय समुद्गकहस्तगताः तगरसमुद्रकहस्तगताः, एलासमुद्गकहस्तगताः,

में लोम हस्तक थे—मयूर के पिच्छो की बनी हुई मयूरपिच्छिकाएँ—थी किन्हीं २ दासियों के हाथ
में पुष्पपटल—पुष्पसमूह—था बाकी के इस सूत्रगत पद सुगम है । (जाव लोमहृत्थगयाओ)
तथा कितनीक दासिया ऐसी थी कि जिनके हाथ में यावत् आवद्ध मयूरपिच्छो की पोटलिया
थी (अप्येगइयाओ सीहासणहृत्थगयाओ) कितनीक दासिया ऐसी थी कि जिनके हाथ में
सिहासन था (छत्तचामरहृत्थगयाओ) कितनीक दामिया ऐसी थी कि जिनके हाथ में
छत्र, चमर ये दोनों बर ए थी, (तिल्लसमुगयहृत्थगयाओ) कितनीक दामिया ऐसी थी कि
जिनके हाथ में तेल के रखने का पात्र विशेष था समुद्र शब्द का अर्थ पात्र विशेष है. समुद्रक
का संग्रह इस गाथा द्वारा इस प्रकार से कहा गया है —

तेल्ले, कोट्टसमुग्गे पत्ते चोए अ तगर मेलाय ।

हरिआले हिंगुलिण मणोसिला सासवसमुग्गे ॥१॥

इस के अनुसार कितनीक दासियों के हाथ में कोष्टसमुद्रक थे, कितनीक दासियों के हाथ में
पत्र समुद्रक थे, कितनीक दासियों के हाथ में चोय समुद्रक थे, कितनीक दासियों के हाथ में

कैथी निर्मित मयूर (पिच्छकाओ) हत्ती केटलीक दासीओना हाथोमा पुष्पपटलो-पुष्प समूहो
हत्ता आ सूत्रना शेष पटोनी व्याख्या सरल छे (जाव लोमहृत्थगयाओ) तेमन केटलीक
दासीओ ओवी हत्ती के नेमना हाथोमा यावत् आवद्ध मयूर पिच्छोनी पोटलीओ हत्ती,
(अप्येगइयाओ सीहासणहृत्थगयाओ) केटलीक दासीओ ओवी हत्ती के नेमना हाथोमा
सिहासोना हत्ता तथा (छत्तचामर हृत्थगयाओ) केटलीक दासीओओवीहत्ती के नेमना हाथोमा
छत्र, चामर ओ भन्ने वस्तुओ हत्ती (तिल्लसमुगय हृत्थगयाओ) केटलीक दासीओ ओ
के नेमना हाथोमा तेल भरवाना पात्र विशेष ह ॥ 'समुद्ग' शब्दोना अर्थ पात्र
विशेष थाय छे 'समुद्ग'ना संग्रह आ गाथा वडे आ प्रभ छे स्पष्ट करवा भन्नावेल छे

तेल्ले, कोट्टसमुग्गे पत्ते चोए अ तगर मेलाय ।

हरिआले हिंगुलिण मणोसिला सासवसमुग्गे ॥ १ ॥

हरिताल समुद्रगक हस्तगताः हिङ्गूलकसमुद्रगक हस्तगताः, मनः शिला समुद्रगकहस्त-
गताः सर्पसमुद्रगकहस्तगता इति ।

(अप्पेगइयाओ तालिअटहत्थगयाओ अप्पेगइयाओ धूव कडुच्छुयहत्थगयाओ भरहं
रायाणं पिट्ठओ २ अणुगच्छंति) अप्येकिकाः तालवृन्तहस्तगताः, तत्र तालवृन्त-व्यजनं
यासां तास्तथा, अप्येकिकाः धूपकडुच्छुकहस्तगताः=धूपाधान कडुच्छुकपात्रपाणयः, भरत
राजानं पृष्ठतः पृष्ठतोऽनुगच्छन्ति । अथ यया समुद्रया भरतो राजा आयुधशालागृहं गत-
वान् तामाह—(तएणं) इत्यादि (तएण से भरहे राया) ततः खलु स भरतो राजा (जेणेव
आउहघरसाला तेणेव उवागच्छइ) यत्रैव आयुधगृहशाला तत्रैवोपागच्छतीति अग्रेण
सम्बन्धः सः किम्भूतस्तत्राह—(सन्विइढिए) सर्वद्वर्या—सकलालङ्कारादिरूपया लक्ष्म्या युक्त
इति गम्यं पुनः (सन्वजुइए) सर्वधुत्या सर्वदीप्त्या (सन्ववलेण) सर्ववलेन—सर्वसैन्येन,
(सन्वसमुदएणं) सर्वसमुदयेन—परिवारादि समुदायेन (सन्वायरेण) सर्वादरेण चक्ररत्न-
भक्तिबहुमानेन (सन्वविभूसाण) सर्वविभूषया सर्वशोभया (सन्वविभूर्इए) सर्वविभूत्या सर्व-
सम्पत्त्या सह तथा (सन्ववत्थपुप्फमल्लालंकारविभूसाए) सर्ववस्त्रपुष्प माल्यालंकारविभू-
षया (सन्वतुडिय सहसण्णिणाएण) सर्वत्रुटितशब्दसंनिनादेन सर्वेषां त्रुटितानां नृत्याणां
वाद्यविशेषाणां यः शब्दो ध्वनिर्यश्च सं=सङ्गतो निनादः=प्रतिध्वनिस्तेन, अथ सर्वशब्देन
अल्पीयोऽपि निर्दिष्टं भवति ततश्च न तथा विभूतिर्वर्णिता भवतीति आशङ्कमानं प्रत्याह—
(महया इइढीए) इत्यादि । (महया इइढीए जाव) महत्या ऋद्ध्या यावत्, तत्र ऋद्धिरैश्व-
र्यम् यावत्पदात् धुत्यादि परिग्रहः (महया वरतुडियजमगसमगपवाइएणं) महता वरत्रुटित-

हरिताल समुद्रक ये, कितनीक दासियो के हाथ में हिङ्गूलक समुद्रक (डबूशा) ये कितनीक
दासियों के हाथ में मन शिला समुद्रक ये और कितनीक दासियों के हाथ में सर्प समुद्रक
ये इसी तरह से कितनीक दासियों के हाथ में (तालिअट हत्थगयाओ) तालपत्र — पंखा —
व्यजन — बीजना — था — (अप्पेगइया धूव कडुच्छुय हत्थगयाओ) और कितनीक दासियों के
हाथ में धूप रखने के कड़ाह ये (भरहं रायाणं पिट्ठओ २ अणुगच्छते) ये सब दासियां भी
भरत राजा के पीछे चल रही थी (तए ण से भरहे राया सन्विइढीए सन्वजुइए सन्ववलेण —
सन्वसमुदएणं सन्वायरेणं सन्वविभूसाए सन्वविभूर्इए सन्व वत्थ पुप्फ गंध मल्लालंकारविभूसाए

ओ भुज्ज कटलीक दासीओना हाथेमा केओ समुद्रगके होता कटलीक दासीओना
हाथेमां पत्र समुद्रगके होता कटलीक दासीओना हाथेमां योय समुद्रगके होता कटलीक
दासीओना हाथेमां तगर समुद्रगके होता कटलीक दासीओना हाथेमां हरिताल समुद्रगके
होता कटलीक दासीओना हाथेमां हिङ्गुलक समुद्रगके होता, कटलीक दासीओना हाथेमां
मनःशिला समुद्रगके होता अने कटलीक दासीओना हाथेमां सर्प समुद्रगके होता आ
प्रमाणे कटलीक दासीओना हाथेमां (तालिअटहत्थगयाओ) तालवृत्रो—पंखाओ—होता,
(अप्पेगइया धूवकडुच्छुयहत्थगयाओ) अने कटलीक दासीओना हाथेमां धूप भूकवानी
कडुछीओ होती (भरह रायाणंपिडओ २ अणुगच्छति) ओ सर्वे दासी पणु भरत राजानी

प्रकाशिकाटीका तृ० वक्षस्कार' सू ४ भरतराज' गमनानन्तर तदनुचरकार्यनिरूपणम् ५१७

यमकसमक प्रवादितेन तत्र महता-बृहता वरत्रुटिताना श्रेष्ठ तुर्याणां यमकसमक युग
पत्रप्रवादितं प्रवादनं शब्दकरणं तेन (संखपणवपडहमेरिझल्लरिखरमुहि मुरज मुडंग दुदुहि
निग्घोसणाइएणं) शङ्खपणवपडह मेरीझल्लरीखरमुखीमुरजमृदङ्गदुन्दुमिनिर्घोपनादितेन,
तत्र शङ्खः-प्रसिद्धः, पणवो लघुपटहः, पटहस्तु स एव महान् (ढोल) इति भाषा प्रसिद्धः,
मेरी ठक्का, झल्लरी=बलयाकारा (झालर) इति भाषा प्रसिद्धा, खग्मुखी=काहला मिधो-

सन्वतुडिअ सद सण्णिणएणं महया इह्ठीअ जाव महया वरतुडिअ जमगममगपवाइएणं सख
पणवपडहमेरिझल्लरिखरमुहि - मुरज मुडंगदुन्दुहिणिग्घोसणाइएण जेणेव आउडघसाला तेणेव
उवागच्छह) इस तरह के ठाट बाट से चलता हुआ वह भरत राजा जहा पर आयुध शाला
थी वहां पर आया . ऐसा यहा सम्बन्ध लगा लेना चाहिये । भरत राजा के सम्बन्ध में सूत्रकार
कथन करते हुए कहते हैं कि उस समय वह भरत राजा समस्त अलङ्कारों से विभूषित
था इसलिये सम्पूर्ण दासि से वह चमक रहा था । समस्त सेना उसके साथ चल रही थी ।
समस्त परिवार उसका उसके साथ साथ था । चक्ररत्न के भक्ति के प्रति बहुमान उसके हृदय में
हिलोरे के रहा था, आदरणीय जन के या आदरणीय वस्तु के दर्शन करने के लिये जिस वेष-
भूषा से जाना चाहिए ऐसे समस्त वेषभूषा से वह सुसज्जित था इस तरह वह भरत राजा अपनी
समस्त राज्यविभूति के साथ आयुधशाला में आने के लिये चला आ रहा था समस्त बल,—
पुष्पमाल्य एवं अलङ्कारों से विभूषित हुए उस भरत राजा के आगेर भिन्न प्रकार के बाजे बजते
हुए आरहे थे । इनकी ध्वनि और प्रतिध्वनि से पुरस्कृत हुए एवं अपनी महर्दिक यावत् धृति
आदि से सौभाग्य की पराकाष्ठा को प्राप्त हुए वे भरत राजा बड़े जोर से एक साथ बजाए गये
श्रेष्ठ शंख, — पणव, — लघुपटह, पटह — विशाल, पटह — ढोल, मेरी, — झालर, खरमुखी मृदङ्ग,

पाछण पाछण आली रही हती (तप ण से भरहे राया सन्विह्ठीअ सन्वज्जुइए सन्व बलेण
सन्व समुदपण सन्वायरेण सन्वविभूसाए सन्वविभूर्हए सन्ववत्थपुणफगंधमल्लाल कारविभू-
साए सन्वतुडिअसहसंण्णिणएण महया इह्ठीअ जाव महया वरतुडिअजमगसमग पवाइएणं
संखपणवपडह मेरिझल्लरिखरमुहिमुरजमुडंग दुंदुहिणिग्घोसणाइएण जेणेव आउड
घरसाला तेणेव उवागच्छह) आ जतना ठाठमाठथी आसतो ते भरत राजा तथा आयुध
शाला हती, त्या गथे। आ जतना अर्थ अत्रे समल्ल देवे ओधये भरत राजाना सभ-
धर्मा सूत्रकार कथन करे छे ते समथे ते भरत राजा सव अलङ्कारेथी विभूषित हतो।
ओथी ते सम्पूण् दीप्तिथी प्रकाशित थल रह्यो हतो। सम्पूण् सैन्य तेनी साथे-साथे
आलो रह्यु हतु तेना समग्र परिवार तेनी साथे साथे आसतो हने। तेना हृदयमां
यकेशन प्रत्ये अतीव भक्ति तेमज बहुमान उत्पन्न थया आदरणीय जन अथवा
आदरणीय वस्तुना ध्यान माटे जे वेषभूषाथी जपुं ओधये ओवी समस्त वेषभूषाथी
सुसज्ज हतो आ प्रमाणे ते भरत राजा पौतानी समस्त राज्य विभूतिनी साथे
आयुधशाला तरफे जई रह्यो हतो। समस्त वस्त्रो, पुष्पमाल्य तेमज अलङ्कारेथी
विभूषित थयेला ते भरत राजानी आगण भिन्न-भिन्न प्रकारना वाजयो वाजता

वाद्यविशेषः, मुरजो, मृदङ्गश्च वाद्यविशेषौ दुन्दुभिः वाद्यविशेष एव, एषां निर्घोषनादितेन, तत्र निर्घोषो महाध्वनिर्नादितं च प्रतिध्वनिस्तेन सह यत्रैव आयुधशाला तत्रैवोपागच्छति (उवागच्छित्ता आलोए चक्ररयणस्स पणामं करेइ) उपागत्य आलोके दर्शने सत्येव चक्ररत्नस्य प्रणामं करोति, चक्ररत्नं प्रणमतीत्यर्थः, आयुधवगस्य देवाधिष्ठितत्वात् (करेत्ता जेणेव चक्ररयणे तेणेव उवागच्छइ) कृत्वा प्रणामं विधाय यत्रैव चक्ररत्नं तत्रैव उपागच्छति (उवागच्छित्ता लोमहृत्थयं परामुसइ) उपागत्य लोमहस्तकं परामृशति-समीपं गत्वा लोमहस्तकं मयूरपिच्छप्रमार्जयित्वा, परामृशति गृह्णाति (परामृशित्ता चक्ररयणं पमज्जइ) परामृश्य गृह्णात्वा चक्ररत्नं प्रमार्जयति, (पमज्जित्ता) प्रमार्ज्य (दिग्वाए उदगधाराए अब्भुक्खेइ) दिव्ययोदकधारया अभ्युक्षति सिञ्चति प्रक्षालयतीत्यर्थः (अब्भुक्खित्ता) अभ्युक्ष्य प्रक्षाल्य (सरसेण गोसीसचदणेणं अनुलिपइ) सरसेन सुन्दरेण गोशीर्षचन्दनेन-एतन्नामकं श्रेष्ठचन्दनविशेषेण अनुलिम्पति चर्चयति (अनुलिपित्ता) अनुलिम्प्य (अग्गेहिं वरेहिं गघेहिं मल्लेहिं अच्चिणइ) अग्नैः चूतनैः, वरैः श्रेष्ठैर्गन्धैर्माल्यैश्च अर्चयति (अच्चिणित्ता) अर्चयित्वा (पुप्फारुहणं मल्लगंधवण्णचुण्णवत्थारुहणं आभ-

और दुन्दुभि इन सबको ध्वनि और प्रतिध्वनि के साथर जहा पर आयुधशाला थी वहा पर आये । (उवागच्छित्ता आलोए चक्ररयणस्स पणामं करेइ) वहां पर आकर के उन्होने उस चक्ररत्न के दिखने पर उसे प्रणाम किया । क्यों'कि यह देवाधिष्ठित था । (करेत्ता जेणेव चक्ररयणे तेणेव उवागच्छइ) प्रणाम करके फिर वे जहा पर वह चक्ररत्न था वहा पर गये । (उवागच्छित्ता लोमहृत्थयं परामुसइ, परामृशित्ता चक्ररयणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिग्वाए उदगधाराए अब्भुक्खेइ) वहां जाकर उन्होने मयूर पिच्छ को बनी हुई प्रमार्जनी को उठाया , उठाकर उससे उन्होने चक्ररत्न की सफाई की । सफाई करके फिर उन्होने उस पर निर्मल जल की धारा छोड़ी (अब्भुक्खित्ता सरसेण गोसीसचदणेण अनुलिपइ) जल धारा करके फिर उन्हो ने उस पर सरस गोशीर्ष चंदन से छेप किया - (अनुलिपित्ता अग्गेहिं वरेहिं गघेहिं मल्लेहिं अच्चिणइ) छेप करके अमनवीन एवं श्रेष्ठ गन्धद्रव्यों से और पुष्पों से उन्हो ने उसको पूजा की (अच्चिणित्ता पुप्फारुहणं मल्लगंधवण्ण-

हता तेमनी ध्वनि प्रतिध्वनिथी पुरस्कृत थयेला तेमज्ज पोतानी भद्धिं यावत् धुति आदिथी सौभाग्यनी पराकाष्ठाये पडोथेला त भरत राजा भद्धुअ जेथी ज्येही साथे वगडायेला श्रेष्ठ शोभा, पञ्चरत्नधुपट्ट, पट्ट-विशाल, पट्ट-ढोल, खेरी-आकर, भरभुभी भृङ्ग अने दुडुभी ज्ये सर्वनी ध्वनि अने प्रतिध्वनिनी साथे साथे न्या आयुधशाला हती त्या ते राजा आये (उवागच्छित्ता आलोए चक्ररयणस्स पणामं करेइ) त्या पडोथीने तेजे ते चक्ररत्नने जेने प्रणाम करी केमके ते देवाधिष्ठित हतु, (करेत्ता जेणेव चक्ररयणे तेणेव उवागच्छइ) प्रणाम करीने पछी ते न्या चक्ररत्न हतु त्यां गथे, (उवागच्छित्ता लोमहृत्थयं परामुसइ, परामृशित्ता चक्ररयणं पमज्जइ पमज्जित्ता दिग्वाए उदगधाराए अब्भुक्खेइ) त्या जेने तेजे मयूरपिच्छ निर्मित प्रमार्जनीने हाथभा लीधी अने तेना वडे तेजे चक्ररत्ननी सक्षार्थ करी सक्षार्थ करीने पछी तेजे तेनी छपर निर्भण जणधारा छोडी,

रणारुहणं करेइ) पुष्पारोपणं मान्यगन्धवर्ण चूर्णवस्त्रारोपणम् आभरणारोपणं करोति, पुष्पारोपणं माल्यारोपणम्, गन्धारोपणं वर्णारोपणं चूर्णारोपणं वस्त्रारोपणम् आभरणारोपणं करोति (करित्ता) कृत्वा (अच्छेहि सण्हेहि सेएहि रयणामएहि अच्छरसातडुलेहि चकरयणस्स पुरओ अट्टट्ट मगलए आलिहइ) अच्छैः श्लक्ष्णैः श्वेतैः रजतमयैः अच्छरसतण्डुलैश्चक्ररत्नस्य पुरतः अष्टाष्टमङ्गलकानि आलिखति, तत्र-पुष्पाधारोपणं विधाय अच्छैः निर्मलैः श्लक्ष्णैः अतिचिकणः श्वेतैश्चेत रजैः, रजतमयैः, रजतनिर्मितैः, अतएव अच्छरसतण्डुलैः चक्ररत्नस्य पुरतः, अष्टाष्टमङ्गलकानि आलिखति, तान्येव दर्शयति-(तं जहा) तद्यथा (सोत्थिय) इत्यादि । (सोत्थियसिरिवच्छणदिआवत्तवद्धमाणग भद्दासणमच्छकलसदप्पणअट्टमंगलए) स्वस्तिक १ श्रीवत्स २ नन्धावर्त्त ३ वर्द्धमानक ४ भद्दासन ५ मत्स्य ६ कलश ७ दर्पणा ८ ए मङ्गलकानि, इमानि अष्ट मङ्गलकानि (आलिहित्ता) आलिख्य आकारविशेषकरणेन (काऊणं) कृत्वा-अन्तर्वर्णकादि मरणेन पूर्णानि विधाय (करेइ उवयारंति) करोति उपचारमिति उपचारं करोतीति (कित्ते) इति कोऽसौ उपचारः ? तमेव दर्शयति-(पाडलमल्लिअ चंपग-

चुण्ण वत्थारुहण आभरणारुहणं करेइ) पूजा करके फिर उन्होंने उसपर पुष्प चढ़ाये मालाएँ चढ़ाई गन्ध द्रव्य चढ़ाया, सुगन्धित चूर्ण चढ़ाया, वस्त्र चढ़ाया, और आभरण चढ़ाये । (करित्ता अच्छेहि सण्हेहि सेएहि रयणामएहि अच्छरसातडुलेहि चकरयणस्स पुरओ अट्टट्ट मगलए अ लिहइ) पुष्पादि चढ़ाकरके फिर उन्होंने ने उस चक्ररत्न के समक्ष स्वच्छ स्निग्ध श्वेत ऐसे रजतमय स्वच्छ सरस तटुलो से - चावलों से - आठ २ मङ्गल द्रव्य लिखे । (त जहा) उन मङ्गल द्रव्यों के नाम . इस प्रकार से है - (सोत्थिय सिरिवच्छणदिआवत्त वद्धमाणग भद्दासण मच्छकलस दप्पण अट्ट मगलए) स्वस्तिक १, श्री वत्स २, नन्धावर्त्त ३, वर्द्धमानक ४, भद्दासन ५, मत्स्य ६, कलश ७, और दर्पण ८, इन आठ मंगल द्रव्योंको (आलिहित्ता) लिख करके (काऊण करेइ उवयारंति) तथा उनके भीतर आकारादिवर्णों को लिखकर के इस प्रकार से उनका उपचारकिया - (कित्ते) जैसे - (पाडल मल्लिअचंपगअसोक पुण्णागाचुअ मंजरिणवमालिअ

(अभुक्खित्ता सरसेण गोसीस चंदणेण अनुलिपइ) जणधारा कथा पथी तेणे तेनी उपर गोपाथं अन्धनदुं देपन कथुं (अणुलिपित्ता अगोहिं वरेहिं गंधेहिं मल्लेहिं अखिणइ) देप करीने अअनवीन तेमअ अेअ गन्ध द्रव्येथी अने पुण्येथी तेणे तेनी पूजा करी (अखिणित्ता पुष्पारुहणं मल्लगन्धवर्णचुण्णवत्थारुहणं आभरणारुहणं करेइ) पूजा करीने पथी तेणे तेनी उपर पुण्ये अढव्या, मागाओ ध रत्न करापी गन्ध द्रव्ये अढव्यां, सुगन्धित चूर्ण अढव्यु, वस्त्र अढव्यु अने अ भरणे। अढव्या (करित्ता अच्छेहि सण्हेहि सेएहि रयणामएहि अच्छरसातडुलेहि चकरयणस्सपुरओ अट्टट्ट मगलए आलिहइ) पुष्प वगेरे अढवाने तेणे ते अकरतनो साथे स्नग्ध, स्निग्ध, श्वेत ओवा रजतमय स्नग्ध सरस तटुलोथी-ओआओथी आठ आठ मंगल द्रव्ये आढेअ्या (त जहा) ते मंगल द्रव्याना नाओ आ मभाणे छे-(सोत्थिय' सिरिवच्छ णदिआवत्तवद्धमाणमच्छकलसदप्पण अट्ट-

असोगपुष्पाग चूयमंजरीणवमालिभवकुलतिलगकणवीरकुंद कोज्जयकोरंटयपत्तदमणयवर-
सुरहिमुगंधगंधिअस्स) पाटलमल्लिकचम्पकाशोकपुन्नागाम्रमञ्जरीनवमालिका वकुलतिल-
ककणवीरकुन्दकुब्जककोरण्टकपत्रदमनकवरसुरमिसुगन्धगन्धितस्य इत्यादि पपुचन्तपदानां
(पुष्पनिकरस्य) इत्यग्रेण सम्बन्धः, तत्र पाटलं—पाटलपुष्पम् मल्लिका—विचकिलपुष्पम्
(वेली) इति भाषायां प्रसिद्धम्, चम्पकाशोकपुन्नागाः प्रसिद्धाः आम्रमञ्जरी वकुलः
केसरः तिलको यः स्त्रीकटाक्षनिरीक्षितो विकसति तत्पुष्पम्, कणवीरकुन्दे प्रसिद्धे
कुब्जकं कूब इति नाम्ना वृक्षविशेषस्तत्पुष्पम्, कोरण्टकं—तन्नामक पुष्पविशेषः पत्राणि
मरुवक पत्रादीनि दमनकः स्पष्टः एतैर्वरसुरभिः—अत्यन्त सुरभिः तथा सुगन्धाः
शोभनचूर्णास्तेषां गन्धो यत्र स तथा तस्य (कयगगहगहियकरयलपम्भट्टविप्पमुक्कस्स)
कचग्रहग्रहीतकरतलप्रभ्रष्टविप्रमुक्तस्य युवत्याः पञ्चाङ्गुलिभिः. केशेषु ग्रहण कचग्रहः
तन्न्यायेन गृहीतस्तथातदनन्तरं करतलाद्विप्रमुक्तः सन् प्रभ्रष्टः (पतितः) तस्य (दसद्ध-
वण्णस्स) दशार्द्धवर्णस्य पञ्चवर्णस्य (कुसुमणिगरस्स) कुसुमनिकरस्य पुष्पपुञ्जस्य (तत्थ
चिच्चं जाणुस्सेहप्पमाणमित्तं ओहिनिकरं करेत्ता) तत्र चित्रं जानुस्सेधप्रमाणमात्रम् अव-

वकुलतिलग करणवीरकुद कोज्जय कोरंटय पत्तदमणयवरसुरहि 'सुगन्धगन्धिअस्स कयगगहगहि-
यकरयल पम्भट्टविप्पमुक्कस्स दसद्धवण्णस्स — पुष्पणिगरस्स) हर एक मंगल द्रव्य के चित्र के
भितर बनाये गये प्रत्येक वर्ण पर उसने पाटल पुष्पों को गुलाब के फूलों को चढ़ाया । मल्लिका
मोषरा — के पुष्पों को चढ़ाया, चम्पक वृक्ष के पुष्पों को चढ़ाया , अशोक वृक्ष के पुष्पों को
चढ़ाया, पुनाग वृक्ष के पुष्पों को चढ़ाया, आम्र वृक्ष की मंजरी चढ़ायी, नवमल्लिका, वकुल,
तिलक, कणवीर—कनेर—कुन्द—कुब्जक, कोरट, मरुवा, और दमनक इन सबके पुष्पों को
चढ़ाया । ये सब पुष्प अपनी सुगंधित गंध से महक रहे थे—मर्थात् ताजे थे—कुम्हलाये हुए
नहीं थे । जिस प्रकार सदाय होकर युवा पुरुष अपनी तरुण भाव्या के राति काल में बहुत धिमे से
हाथ द्वारा केशग्रह करलिया करता है और बाद में उसे छोड़ देता है । उसी प्रकार से चढ़ाते
समय भरत राजा ने उन पुष्पों को पांचो अंगुलियों से पकड़ कर के उन लिखित वर्णादि के ऊपर

मंगलय) स्वस्तिक १, श्रीवत्स ३, नन्धावत्ता ३, वद्धमानक ४, बाद्रासन ५, भत्स्य ६,
६, कणश ७ अने हर्षण ८, ये आठ मंगल द्रव्योने (आलिङ्गित्ता) लभीने (काऊणं करेइ)
उवयारत्ति) तेमअ तेमनी अ हर अकारादि वल्लेनि लभीने आ प्रभाण्णे तेमनो उपचार क्ये
(किं ते) जेम के (पाटलमल्लिक चपगमसोक पुष्पागचूयमंजरीणवमालिषवकुलतिलगकण
वीरकुंदकोज्जयकोरंटयपत्तदमणयवप सुरहिसुगंधगंधिअस्स कयगगहगहियकरयलपम्भट्टविप्प
मुक्कस्स दसद्धवण्णस्स पुष्पणिगरस्स) हरेक हरेक मंगल द्रव्यना चित्रनी अ हर भनाववामां
आवेत्ता हरेक हरेक वल्लं उपर तेण्णि पाटल पुष्पो अढाव्यां, मल्लिका—मोगराना पुष्पो अढाव्यां
अभयक वृक्षना पुष्पो अढाव्यां, अशोक वृक्षना पुष्पो अढाव्यां, पुनाग वृक्षाना पुष्पो अढाव्यां
आम्रवृक्षनी मंजरीयो अढावी, नवमल्लिका, वकुल, तिलक, कणवीर कनेर, कुन्द, कुब्जक,
कोरंट, मरुवा अने दमनक ये सर्वना पुष्पो अढाव्यां ये सर्वे पुष्पो ताज्ज हन् ।

धिनिकर कृत्वा तत्र चक्ररत्नपरिकरभूम्या चित्रम् आश्चर्यजनक जानृत्सेधप्रमाणेन
जह्वा यावदुच्चत्त्रप्रमाणेन प्रमाणोपेतपुरुषस्य चतुरङ्गुलचरणस्य चतुर्विंशत्यङ्गुल-
जानूच्चत्वसंमेलनेनाष्टाविंशत्यङ्गुलरूपेण समाना मात्रा यस्य स तथा तम् अवधिना
मर्षादया निकरं विस्तारं कृत्वा निधाय (चन्द्रप्पभवद्भरवेरुलिभाविमलदहं) चन्द्रप्रमवज्ज-
वैदूर्यविमलदण्डम्, तत्र चन्द्रप्रभाः चन्द्रकान्तमणयः वज्राणि-हीरकमणयः-वैदूर्याणि
तन्नामक मणयः तद्वत् तन्मयो वा विमलो दण्डो यस्य स तथा तम् (कंचणमणि-
रयणभक्तचित्तं) काञ्चनमणिरत्नभक्तचित्तम् । तत्र काञ्चनमणिरत्नानां भुवर्णमणिरत्न-
विशेषाणां भक्तयः-विभक्तयो रचना ताभिश्चित्रम् (कालागुरुप्रवरकुंदरुक्कतुरुक्कध्रुवगं-
धुत्तमाणुविद्धं च ध्रुववर्द्धिं) कृष्णागुरुप्रवरकुंदरुक्कतुरुक्कधूपगन्धोत्तमाणुविद्धां च धूप-
वर्त्तिम् तत्र कृष्णागुरुप्रवरकुंदरुक्कतुरुक्कतागा तत्तन्नामकसुगन्धिद्रव्यविशेषाणां यो धूपो
गन्धोत्तमः सौरभोत्कृष्टः तेन अनुविद्धा व्याप्ता तां धूपवर्त्तिं धूपश्रेणिं च (विणिम्भु-
यत्तं) विनिर्मुञ्चन्तं त्यजन्तं (वेरुलियमयं कडुच्छुयं परगहेत्तुपयते ध्रुवं दहद्) वैदूर्य-

चढाया । वे पुष्प पांच वर्णों के थे । (तत्तच्चित्तं जाणुस्सेहप्पमाणमित्तं ओहिणीगरं करेत्ता) इन
पुष्पों को वहां उसने इतनी मात्रा में चढाया की वहां उनकी ऊँचाई जानु के प्रमाण के बराबर अर्थात्
२८ अंगुल प्रमाण हो गई- इसतरह आश्चर्यकारक चढाये हुए फुलों की माला चढा करके उस
भरत राजा ने (चन्द्रप्पभवद्भरवेरुलिभविमलदहं कंचणमणिरयणभक्तचित्तं-कालागुरुप्रवर कुंदरु-
क्कतुरुक्क ध्रुवगधुत्तमाणुविद्धं च-ध्रुववर्द्धिं) फिर चन्द्रकान्त मणियों के, हीरा के एवं वैदूर्यम-
णियों के जैसे विमल दण्डवाले अथवा इन मणियों से निर्मित-हुए दण्ड वाले एवं काञ्चन और
मणिरत्नों से जिस में अनेक प्रकार के चित्रों की रचना हो रही है और जो काला गुरु, प्रव-
र कुंदरुक्क से बनी हुई धूप की उत्तम गंध से-व्याप्त होरहा है तथा जो धूप कीश्रेणि को (वि-
णिम्भुयत्तं) निकाल रहा है ऐसे (वेरुलियमयं कडुच्छुयं परगहेत्तु) वैदूर्य मणि के बने हुए धूप
दहन पात्र को हाथ में लेकर के (पयते) बड़ी सावधानी से आदर पूर्वक उसने (ध्रुवं दहद्)

न होता जेभ युवा पुरुष सहय थर्धने इतिहास वખતે પોતાની તરૂણી આર્યાના કેશે ધીમેથી
પોતાના હાથમા પકડે છે અને ત્યાર બાદ છોડી દે છે, તેજ પ્રમાણે ભરત રાજાએ પુષ્પો
અઢાવતી વખતે તે પુષ્પોને પાંચે આગળીઓથી પકડીને તે લિખિત વર્ણાદિકની ઉપર અઢાવ્યાં
તે પુષ્પો પાંચ વર્ણોના હતાં.(તત્ત્વચિત્તં જાણુસ્સેહપ્પમાણમિત્તં ઓહિણીગરં કરેત્તા) એ પુષ્પોને
તેણે ત્યાં આટલી બધી માત્રામા અઢાવ્યા કે ત્યાં તેમની ઉંચાઈ બહુના પ્રમાણે સુધી એટલેકે
૨૮ અંગુલ પ્રમાણ થઈ ગઈ, આ પ્રમાણે સારી એવી આશ્ચર્યકારક માત્રામા પુષ્પો અઢાવીને
તે ભરત રાજાએ (ચદ્વપ્પમવદ્ભરવેરુલિભવિમલદહ કંચણમણિરયણમિત્તિચિત્તં કાલાગુરુ-
પવરકુદુરુક્કતુરુક્કધ્રુવગંધુત્તમાણુવિદ્ધં ચ ધ્રુવવર્દ્ધિં) ત્યાર બાદ ચન્દ્રકાન્ત મણિઓના હીરાના
તેમજ વૈદૂર્યમણિઓના જેવા વિભળ દંડવાળા અથવા એ મણિઓથી નિર્મિત દંડવાળા તેમજ
કાચન અને મણિરત્નોથી જેમા અનેક પ્રકારના ચિત્રોની રચના થઈ રહી છે અને જે
કાલાગુરુ પ્રવર કુદરુક્ક અને તુરુક્ક નિર્મિત ધૂપની ઉત્તમ સુગંધથી જે વ્યાપ્ત છે અને

મય કહુચ્છુક પ્રમૃદ્ય પ્રયતો ધૂપં દદતિ, તત્ર વૈદૂર્યમયં વૈદૂર્યરત્નઘટિતમ્, કહુચ્છુકં-
 ધૂપાધાનરૂપાત્રં પ્રમૃદ્ય મૃદ્ધોત્ત્વા (પ્રયતઃ) આદ્રિયમાણો ધૂપં દદતિ (દદેત્તા) દઘ્વા
 (સત્તદ્વપયાઈં પચ્ચોસવ્કહ) સપ્તાષ્ટપદાનિ પ્રત્યવજ્ઞ્વક્રતિ પરાવર્ત્તે, તત્ર ધૂપ દઘ્વા
 પ્રમાર્જનાદિ હેતુ વિશેષેગ સન્નિશ્રીયમાનચક્રરત્ને અત્યાસન્નતયા મત્ક્રતાશાતના માભૂ-
 યાદિત્યભિપ્રાયેણ સ રાજા સપ્તાષ્ટપદાનિ પ્રત્યપસર્પ્યતિ પશ્ચાદપસરતિ इत्यर्थः (પચ્ચો-
 સવિક્રતા) પ્રત્યવજ્ઞ્વક્ય પરાવર્ત્ય (વામ જાણુ અંચેઈ જાવ પળામં કરેઈ) વામં જાણુમ્
 અશ્વતિ યાવત્ પ્રણામં કરોતિ, તત્ર વામ જાણુમ્ અશ્વતિ આકુશ્ચયતિ ઊર્ધ્વં કરોતિ
 યાવત્કરણાત્ (દાહિણં જાણું ધરણિયલસિ નિહદ્દુ કરયલપરિગહિય દસનહં સિર-
 સાવત્તં મત્થપ અંજલિ) इति संग्रहः, દક્ષિણં જાણુ ધરણી તલે નિહત્ય કરતલ પરિ-
 મૃદ્ધીતં દસનહં શિરસાવત્તં મસ્તકે અંજલિ કૃત્વા પ્રણામં કરોતિ મનોઽમીઘાર્થં સિદ્ધિ-
 દાયકમિદમિતિબુદ્ધ્યા પ્રીતઃ સન્ પ્રણમતીત્યર્થઃ (કરેત્તા) પ્રણામ કૃત્વા (આઠહર-
 સાલાઓ પહિણિવલમહ) આયુધમૃદ્ધશાલાતઃ પ્રતિનિષ્ક્રામતિ નિર્ગચ્છતિ (પહિણિવલ-

ધૂપ જલાયા । (દદેત્તા સત્તદ્વપયાઈં પચ્ચોસવ્કહ) ધૂપ જલાકર ફિર વહ વહાં સે સાત આઠ પગ
 પીછે છોટા અર્થાત્ મેરે દ્વારા કિસી મી પ્રકાર સે ચક્રરત્ન કી અશાતના ન હો જાવે હસ ક્યાલ
 સે વહ ધૂપ જલાકર પીછે વહા સે સાત આઠ પૈર દૂર હો ગયા (પચ્ચોસવિક્રતા વામ જાણુ અંચેઈ)
 વહા સે ૭-૮ પૈર દૂર હો કર ડસને અપની વાઈ જાણુ કો ઊપર ડઠાયા (જાવ પળામ
 કરેઈ) યાવત્ પ્રણામ ક્રિયા યહાં યાવત્પદસે (દાહિણી જાણું ધરણિયલસિ નિહદ્દુ
 કરયલપરિગહિયં દસનહં સિરસાવત્તં મત્થપ અંજલિ) હસ પાઠ કા સમ્રહ હુમા હૈ
 હસ પાઠકા તાત્પર્યં રેસા હૈ કિ જવ ડસને અપની વાઈ જાણુ કો ઊપર કી ઓર ડઠા-
 યા—તવ ડસને અપની દાહિની જાણુ કો— મૃતલ પર રલા ઓર દશો નલ અગુલિયો કે પરસ્પર
 મેં મિલ જાવે હસ ક્રગ સે અંજલિબના કર ઓર ડસે દાહિની ઓર સે વાઈ ઓર તલ મસ્તક કે
 ઊપર સે ત્રીન વાર ઘુમાકર પ્રણામક્રિયા (કરેત્તા) પ્રણામ કરકે (આઠહરસાલાઓ પહિણિવલમહ)
 ફિર વહ આયુધ શાલા સે વાહર નિકલા (પહિણિલમિત્તા જોણેવ વાહિરિયા ડવદ્વાળસાલા

જેભાંથી ધૂપની શ્રેણીએ (વિણિન્સુયતં) નીકળી રહે છે એવા (વેરુલિયમયં કહુચ્છુયં પગદેતુ)
 વૈદૂર્યમણિનિમિત્ત ધૂપદહન પાત્રને હાથમાં લઈને (પયત્તે) બહુજ સાવધાની પૂર્વક તેમજ
 આદર પૂર્વક તેણે (ધૂપં દદદ) ધૂપને તેમાં સળગાવ્યો. (દદેત્તા સત્તદ્વપયાઈં પચ્ચોસવ્કહ)
 ધૂપ સળગાવીને પછી તે ત્યાંથી સાત-આઠ પગલાં પાછો ફર્યો, એટલે કે આઠ વડે કોઈ
 યજ્ઞ રીતે ચક્રરત્નની અશાતના ન થાય એ વિચારથી તે ધૂપ સળગાવીને પછી સાત-આઠ
 પગલાં ત્યાંથી દૂર ખસી ગયો. (પચ્ચોસવિક્રતા વામં જાણુ અંચેઈ) ત્યાંથી સાત-આઠ પગલાં
 પાછો ખસીને તેણે પોતાના ડાબા ઘૂંટણને ઉપર ઉઠાવ્યો (જાવ પળામં કરેઈ) યાવત્ પ્રણામ
 કર્યા, અહીં યાવત્ પદથી (દાહિણં જાણું ધરણિયલસિ નિહદ્દુ કરયલ પરિગહિયં દસનહં
 સિરસાવત્તં મત્થપ અંજલિ) આ પાઠને સ અર્થ થયો છે આગ્ર તાત્પર્યં અ પ્રમાણે છે કે
 જ્યારે તેણે પોતાના ડાબા ઘૂંટણને ઉપર ઉઠાવ્યો ત્યારે તેણે પોતાના જમણા ઘૂંટણને
 પૃથ્વી ઉપર મૂક્યો અને આગળીએના હથેલી નયો પચ્ચેપચ્ચ સન્નિહિત કરીને પછી

પ્રકાશિકા ટીકા તુ. વક્ષસ્કાર સુ. ૪ મરતરાજ ગમનાનન્તર તદ્વચરકાર્યનિરૂપણમ્ ૫૬૩

મિત્તા) પ્રતિનિષ્ક્રમ્ય નિર્ગત્ય (જેનેવ વાહિરિયા ઉવઢાણસાળા જેનેવ સીદાસણે તેનેવ ઉવાગચ્છિ) યત્રેવ વાહિરિકા ઉપસ્થાનશાળા યત્રેવ સિદાસન તત્રેવ ઉપાગચ્છતિ (ઉવાગચ્છિત્તા) ઉપાગત્ય (સીદાસણવરગપ્ પુરત્યામિમુદ્દે સણિસિચ્છ) સિદાસનવરગત પૌરસ્ત્યામિમુલ્લઃ પૂર્વદિશામિમુલ્લઃ સન્નિપીદતિ ઉપવિગતિ (સણિમોડ્ત્તા) સનિપથ (અદ્દારસસેણિપ્પસેણીઓ સદાવેદ) અદ્દાદશ શ્રેણિપ્રશ્રેણિઃ શબ્દયતિ તત્ર અદ્દાદશ શ્રેણીઃ—કુમ્ભકારાદિપ્રકૃતીઃ, પ્રશ્રેણીઃ—તદવાન્તરમેદાન્ શબ્દયતિ આદ્યતિ (સદાવેત્તા એવ વયાસી) શબ્દયિત્વા એવ—વક્ષ્યમાણપ્રકારેણાડવાદીત્ ઉક્તવાન્ । અદ્દાદશશ્રેણિશ્રેણયશ્રેમાઃ

(કુમાર ૧ પદ્મહલ્લા ૨ સુવર્ણકારાય ૩ સૂવકારા ય ૪ ગંધવ્વા ૫ કામવગા ૬ માલાકારાય ૭ કચ્છકરા ૮ ॥૧॥

તત્ત્વોલિયા ૯ ય એ નવપ્પયારાય નારુઆ મળિયા ।

અદ્દણ નવપ્પયારે કારુઅ વળ્ણે પયક્કામિ ॥૨॥

ચમ્મયરુ ૧ જંતપીલગ ૨ ગંધિઅ ૩ છિપાય ૪ કંસકારે ૫ ય ।

સીવગ ૬ ગુઆર ૭ મિલ્લા ૮ ધીવર ૯ વળ્ણાદ અદ્દદસ ॥૨॥

સીદાસણવરગપ્ પુરત્યામિમુદ્દે સણિસીઅહ) વહા આકર વહ પૂર્વદિશા કી ઓર મુંહ કરકે ઉસ સિદાસન પર બૈઠ ગયા (સણિસીહત્તા) બૈઠકર (અદ્દારસ સેણિપ્પસેણીઓ સદાવેદ) ઉસને અદ્દાદશ શ્રેણી પ્રશ્રેણી કો પ્રનાજનો કો બુલાયા—(સદાવેત્તા એવ વયાસી) ઓર બુલાકર ઉન સે એસા કહા—વે અદ્દાદશ શ્રેણિ પ્રશ્રેણિ હસ પ્રકાર સે હૈ—“કુમાર ૧ પદ્મહલ્લા ૨ સુવર્ણકારા ૩ ય સૂવકારાય ૪ ગંધવ્વા ૫, કામવગા ૬ માલાકારાય ૭ કચ્છકરા ૮ ॥ ૧ ॥—તત્ત્વોલિયાય એ નવપ્પયારા ય નારુઆ મળિયા” અદ્દણ નવપ્પયારે કારુઅવળ્ણે પયક્કામિ ॥૨॥ ચમ્મયરુ ૧ જંતપીલગ ૨ ગંધિઅ ૩ છિપાય ૪ કંસકારે ૫ ય, સીવગ ૬ ગુઆર ૭ મિલ્લા ૮ ધીવર ૯ વળ્ણાદ અદ્દદસ ॥૩॥ ચિત્રકાર આદિક મીં હન્હીં મેં અન્તમૂત હો જાતે હૈં । ઉસ મરત

અન્હિ બનાવીને તે અન્હિને જમણી તરફથી ડાબી તરફ મસ્તક ઉપર ત્રણ વાર ફેરવીને પ્રણામ કર્યા (કરેત્તા) પ્રણામ કરીને (આઠઘરસાલાઓ પહિણિક્કમહ) ત્યાર બાદ તે આયુધશાળામાંથી બહાર નીકળી ગયો (પહિણિક્કમિત્તા જેનેવ વાહિરિયા ઉવઢાણસાળા જેનેવ સીદાસણે તેનેવ ઉવાગચ્છિ) બહાર નીકળીને પછી તે જ્યાં બાહ્ય ઉપસ્થાનશાળા બેસવાની જગ્યા હતી અને તેમાં પણ જ્યાં સિદાસન હતું ત્યાં આવ્યો. (ઉવાગચ્છિત્તા સીદાસણવરગપ્ પુરત્યામિમુદ્દે સણિસીઅહ) ત્યાં આવીને તે પૂર્વદિશા તરફ મુખ કરીને તે સિદાસન ઉપર બેસી ગયો. (સણિસીહત્તા) બેસીને (અદ્દારસસેણિપ્પસેણીઓ સદાવેદ) તેણે અદ્દાદશ શ્રેણી-પ્રશ્રેણિના પ્રમજનોને બોલાવ્યા (સદાવેત્તા એવ વયાસી) અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું તે અદ્દાદશ શ્રેણિ પ્રશ્રેણિના પ્રમજનો આ પ્રમાણે છે—(કુમાર ૧- પદ્મહલ્લા ૨, સુવર્ણકારા ૩, ય સૂવકારાય ૪, ગંધવ્વા ૫, કામવગા ૬ માલાકારાય ૭, કચ્છકરા ૮ ॥ ૧ ॥ તત્ત્વોલિયાય એ નવપ્પયારાય નારુઆ મળિયા અદ્દણ નવપ્પયારે કારુઅવળ્ણે પયક્કામિ ॥૨॥ ચમ્મયરુ ૧ જંતપીલગ ૨, ગંધિઅ ૩ છિપાય ૪, કંસકારે ૫ ય, સીવગ ૬ ગુઆર ૭, મિલ્લા ૮, ધીવર ૯ વળ્ણાદ અદ્દદસ ॥૩॥ ચિત્રકારો વગેરે પણ એમનામાં અન્તમૂત થઈ જાય છે તે ભરત રાજાએ પૌરજનોને

ચિત્રકારાદયોઽપિ એતેષ્વેવાન્તર્ભવન્તિ, અથ પૌરજનાન્ પ્રતિ ક્ષિમવાદીત્ ઇત્યાહ-
(સ્થિપ્પામેવ) ઇત્યાદિ । (સ્થિપ્પામેવ મો દેવાણુપ્પિયા ! ઉસ્સુક્કં ઉક્કરં ઉક્કિદ્દં અદિજ્જં
અમિજ્જં અમહપ્પવેસ અદંડકોદંડિમં અધરિમં ગણિયાવરણાહજ્જ કલિય અણેગ તાલાય-
રાણુચરિયં અણુદ્ધુયમુદ્દં અમિલાયમલ્લદામં પમુદ્ધય પક્કીલિય સપુરજણજાણવયં વિજય-
વેજજયં ચક્કરયણસ્સ અટ્ટાહિયં મહામહિમં કરેહ કરિત્તા મમેયમાણત્તિયં સ્થિપ્પા-
મેવ પચ્ચપ્પિણહ) સિપ્રમેવ મો દેવાનુપ્રિયાઃ ! ઉચ્છુલ્કામ્ ઉત્કરામ્ ઉત્કુષ્ઠામ્ અદે-
યામ્ અમેયામ્ અમટપ્રવેશામ્ અદણ્ડકુદણ્ડિમામ્ અધરિમામ્ ગણિકાવરનાટકીયકલિ-
તામ્ અનેકતાલાચરાણુચરિતામ્ અનુદ્ધૂતમૃદજ્ઞામ્ અમ્ભાનમાલ્યદામ્નીમ્, પ્રમુદિત-
પ્રક્રીડિતસપુરજનજાનપદામ્, વિજયવૈજયિકીમ્, ચક્રરત્નસ્ય અષ્ટાઢ્ઢિકા મહામહિ-
મામ્, કુરુત, કૃત્વા મમ એતામાજ્ઞપ્તિકાં સિપ્રમેવ પ્રત્યર્પયત, તત્ર સિપ્રમેવ મો દેવા-
નુપ્રિયાઃ ! ચક્રરત્નસ્ય અષ્ટાનામ્ અઢ્ઢાં સમાહારોઽષ્ટાઢ્ઢં તદસ્તિ યસ્યાં મહામહિમાયાં
સા અષ્ટાઢ્ઢિકા તાં મહામહિમાં કુરુતેતિ કૃત્વા મમ એતામ્ અગ્રવર્ત્તિનોમાજ્ઞપ્તિકાં સિપ્ર-
મેવ શીઘ્રમેવ પ્રત્યર્પયત સમર્પયત ઇતિ ચાગ્રેણ સમ્બન્ધઃ, અથ ક્રમશઃ વિશેષણાનિ
વ્યાખ્યાયતે ઉચ્છુલ્કામિત્યાદિ તત્ર ઉન્મુક્તં ત્યક્તં શુલ્કં વિક્રેતવ્ય વસ્તુ પ્રતિ રાજ-
દેયં દ્રવ્યં યસ્યાં સા તથા તામ્ એવમુત્કરામ્, તત્ર ઉન્મુક્તઃ કરો ગવાદીન્ પ્રતિ
પ્રતિવર્ષે રાજદેયં દ્રવ્યં યસ્યાં સા તથા તામ્ એવમ્ ઉત્કુષ્ઠામ્, તત્ર ઉત્=ઉત્મુક્તં કુષ્ટ-
કર્ષણ-લભ્યવસ્તુ ગ્રહણાય આકર્ષણમિત્યર્થઃ યસ્યાં સા તથા તામ્ અદેયામિતિ, વિક્રય

રાજા ને ડન પૌરજનોં સે કયા કહા સો પ્રકટ ક્રિયા જાતા હૈ -(સ્થિપ્પામેવ મોં દેવાણુપ્પિયા ।
ઉસ્સુક્કં ઉક્કરં ઉક્કિકદ્દં અદિજ્જં અમિજ્જ અમહપ્પવેસ અદંડકોદંડિમં અધરિમ ગણિયાવરણા
હજ્જકલિયં અણેગતાલાયરાણુચરિય અણુદ્ધુયમુદ્દં અમિલાય મલ્લદામં પમુદ્ધયપક્કીલિય સપુર-
જણજાણવય વિજયવેજજયં ચક્કરયણસ્સ અટ્ટાહિયં મહામહિમં કરેહ કરિત્તા મમેયમાણત્તિયે
સ્થિપ્પામેવ પચ્ચપ્પિણહ) હૈ દેવનુપ્રિયો ! તુમ શીઘ્ર હી અષ્ટાઢ્ઢિકા મહોત્સવ કરો-હસ મેં વિક્રય
વસ્તુ પર જો રાજ્ય કર-ચુગો લગતી હૈ ઉસે માફ કરદો ગાય આદિ કે ઉપર જો પ્રતિવર્ષે રાજ
દેય દ્રવ્ય લિયા જાતા હૈ ઉસે મી ઉન્મુક્ત કર દો લભ્યવસ્તુ કો ગ્રહણ કરને કે હિયે જો ભૂમિ

એટલે કે નગરવાસીઓને શુ કહ્યુ તે વિષે હવે સ્પષ્ટ કરવામાં આવે છે કે-(સ્થિપ્પામેવ
મો દેવાણુપ્પિયા ! ઉસ્સુક્ક ઉક્કર ઉક્કિકદ્દં અદિજ્જં અમહપ્પવેસ અદંડકોદંડિમં અધરિમ
ગણિયાવરણાહજ્જકલિયં અણેગ તાલાયરાણુચરિય અણુદ્ધુયમુદ્દં અમિલાય મલ્લદામ
પમુદ્ધય પક્કીલિય સપુરજણજાણવય વિજયવેજજયં ચક્કરયણસ્સ અટ્ટાહિય મહામહિમં
કરેહ કરિત્તા મમેયમાણત્તિયં સ્થિપ્પામેવ પચ્ચપ્પિણહ) હૈ દેવાનુપ્રિયો ! તમે અષ્ટાઢ્ઢિકા મહો-
ત્સવ ઉજવો તેમાં વિક્રેય વસ્તુ પર જે રાજ્ય કર ટેકસ લે છે તેને માફ કરી દો ગાય
વગેરે ઉપર જે દર વર્ષે રાજદેય દ્રવ્ય લેવામાં આવે છે તેને પણ માફ કરી દો લભ્ય વસ્તુને
ગ્રહણ કરવા માટે જે ભૂમિ વગેરેને ખેડવામાં આવે છે, તેને પણ આઠ દિવસ માટે બંધ કરી
દો તથા જેના ઉપર જે કંઈ પણ લેણુ દેણુ હોય તે પણ બંધ કરી છે અથવા તો આ મહોત્સવ

નિષેધેન ન વિદ્યતે દેયદ્, દાતવ્યં દ્રવ્યં યસ્યાં સા તથા તામ્ ન કેનાપિ કસ્યૈ
 અપિ દેયમિત્યર્થઃ, અગ્રાધિતિ, ક્રયવિક્રયનિષેધેનૈવ અવિદ્યમાનમાતવ્યામ્, અઘટપ્રવેશા
 મિતિ, ન વિદ્યતે ઘટાનાં રાજપુરુષાણામ્ આજ્ઞાદાયિનાં પ્રવેશઃ કુટુમ્બગૃહેષુ યસ્યાં
 સા તથા તામ્, અદણ્ડકુદણ્ડિમામિતિ, દણ્ડેન લભ્યં દ્રવ્યં દણ્ડચઃ કુદણ્ડેન નિર્વૃત્તં
 કુદણ્ડિમં-રાજદ્રવ્યં તન્નાસ્તિ યસ્યાં સા તથા તામ્, તત્ર દણ્ડો યથાપરાધં રાજગ્રાહ્યં
 દ્રવ્યં કુદણ્ડસ્તુ રાજકર્મચારિણાં પ્રજ્ઞાધપરાધાત્ અપરાધિનો મહત્ત્વપરાધે અલ્પમ્ અલ્પા-
 પરાધે ચાધિકં યથોચિતરહિતં રાજગ્રાહ્યં દ્રવ્યમ્ इति વિજ્ઞેયમ્, અધરિમામિતિ
 (અવિદ્યમાન ધરિમમ્=ઋણદ્રવ્ય યસ્યાં સા તથા તામ્ ઉત્તમર્ણાધર્મણાભ્યામ્ ઋણાર્યમ્
 અન્યોન્યં ન વિવદનીય મત્તઃ દ્રવ્યં નીત્વા મુત્કલનીય દાતવ્યમિત્યર્થઃ ગણિકાવર-
 નાટકીય કલિતામિતિ) ગણિકાવરૈઃ ત્રિલાસિનીપ્રધાનૈઃ નાટકીયૈઃ નાટકપ્રતિવદ્ધ-
 પાત્રૈઃ કલિતા શોભિતા યા સા તથા તામ્, નાટકાદિ શોભિતામિત્યર્થઃ અનેકતાલા
 ચરાનુચરિતામિતિ, તત્ર (અનેકે યે તાલાચરાઃ પ્રેક્ષાકારિ વિશેષાસ્તૈરનુચરિતામ્-
 આસેવિતામ્ અનુદ્ધૂતમૃદજ્ઞામિતિ) અનુ=આનુરૂપ્યેણ મૃદજ્ઞસમ્બન્ધિ વિધિના ઉદ્ધૂતાઃ

બૌરહ કા જીતના હોતા હૈ ઉસે મો ઘાઠ દિન કે લિયે બન્દ કર દો જિસ પર જિસ કા કુછ
 મી હેના દેના હો ઉસે મો બન્દ કરે દો અથવા હિસ મહોત્સવ કે હોને તક કોઈ
 રોજગાર-વ્યાપાર-આદિ ન કરે એસી રાજાજ્ઞા કી ઘોષણા કર દો ક્રય વિક્રય કે નિપેવ
 હો જાને કે કારણ કોઈ મો વ્યક્તિ નાપને, ગિનને આદિ કી વસ્તુ કે હેન દેન કા વ્ય
 વહાર ન કરે, આજ્ઞા પ્રદાન કરને વાલે રાજપુરુષો કા કુટુમ્બી જનો કે ગૃહોં મેં પ્રવેશ ન
 હો અપરાધ હો જાને પર દણ્ડ રૂપ મે જો અપરાધ કે અનુસાર અપરાધો સે
 રાજદ્રવ્ય લિયા જાતા હૈ વહ ન લિયાજાવે રાજ્ય કર્મચારીયોં કે દ્વારા છોટે વહે અપરાધ હો જાને
 પર જો ઉનસે જુર્માના કે રૂપ મે થોડા યા બહુત ફરજાનુસાર દણ્ડ વસૂલ ક્રિયા જાતા હૈ ઉસે ન
 લિયા જાવે-કર્જદાર સે કર્જ દેને વાલા વ્યક્તિ અપને ઋણ કો વસૂલ કરને કે લિયે વિવાદ ન કરે
 કિન્તુ વહ દ્રવ્ય મુક્ત સે હેર દિયા જાવે ઔર ઉનકે જગહે કો શાન્ત કર દિયા જાવે । બિલા-
 સિનિયોં કે નાટકીય પુરુષો દ્વારા હમ મેં સ્ત્રૂબ ધાર્મિક નાટક ક્રિયા જાવે, હિસ ઉત્સવ કો
 દેજને કે લિયે અનેક જન આવે રાત દિન હિસ ઉત્સવ મેં મૃદજ્ઞ જ્વનિ હોતી રહે, જો માલાયેં હિસ

થાય ત્યા સુત્રી કોઈ પણ જાનો વેપાર વગેરે થાય નહિ એવી રાજાજ્ઞાની ઘોષણા કરી
 હો ક્રય-વિક્રય ઉપર પ્રતિબંધ થઈ ગયા પછી કોઈ પણ માણસ આપી શકાય કે ગણી
 શકાય એવી વસ્તુઓની આપ-લે બંધ કરી દો આજ્ઞા પ્રદાન કરનાર રાજ પુરુષો
 નો કુટુમ્બી જનોના ગૃહોમાં પ્રવેશ ન થાય અપરાધ થઈ જાય તો દંડ રૂપમાં જે
 અપરાધ મુજબ અપરાધી પાસેથી રાજદ્રવ્ય લેવામાં આવે છે, તે લેવાનું બંધ કરી દો
 રાજ્ય કર્મચારીઓ વડે નાના-મોટા અપરાધો બદલ તેમની પાસેથી દંડ સ્વરૂપ જે તે
 દંડ પણ થોડું-ઘણું ઈચ્છા મુજબ દંડ વસૂલ કરવામાં આવે છે, તે લેવામાં ન

राजा ने उन पौरजनों से क्या कहा सो प्रकट किया जाता है —(स्विप्पामेव भो देवाणुप्पिया । उस्सुक्कं ढक्करं ऊक्किट्ठंअदिअं अमिज्ज अमहप्पवेस अदहकोदडिम अधरिम गणियावरणा हइज्जकल्लियं अणेगतालायराणुचरियं अणुद्धयमुइंगं अमिलाय मल्लदाम पमुह्यपक्कलीय सपुर-जणजाणवयं विजयवेजईअ चक्करपयस्स अट्ठाहिय महामहिमं करेह करित्ता ममेयमाणत्तिये स्विप्पामेव पच्चप्पिणह) हे देवनुप्रियो । तुम शीघ्र ही अष्टान्हिका महोत्सव करो—इस मे विक्रय वस्तु पर जो राज्य कर—चुगो लगती है उसे माफ करदो गाय आदि के ऊपर जो प्रतिवर्ष राज देय द्रव्य लिया जाता है उसे भी उन्मुक्त कर दो लभ्यवस्तु को ग्रहण करने के लिये जो भूमि

એટલે કે નગરવાસીઓને થુ કહ્યું તે વિષે હવે સ્પષ્ટ કરવામાં આવે છે કે—(સિંખામેશ્વર
મો દેવાણુપિયા ! ઉસ્તુકક ઉપકર ઉક્કિદું મદિજ્જં અમહ્વપવેસં મદ્વકોદ્દિમં અઘરિમં
નણિયાવરણાહ્જ્જકલિયં અણેન તાલાયરાણુચરિય અણુદ્ધુયમુદ્ગં અમિલાય મલ્લદામં
પમુદ્ધય પવ્કીલિય સપુજ્જ વયં વિજયવેત્તજ્જં ચકકરયણસસ અહ્ઠાહિય મહામદ્દિમં
કરેહ્ઠ કરિત્તા મમેયમાણસિયં સિંખામેશ્વર પવ્કપિણહ) હે દેવાણુપિયો ! તમે અષ્ટાક્ષિકામહો-
ત્સવ ઉજવો. તેમાં વિકેપ વસ્તુ પર જે રાજ્ય કર ટેકસ લે છે તેને માફ કરી દો. ગાય
વગેરે ઉપર જે દર વગેરે રાજદેય દ્રવ્ય લેવામાં આવે છે તેને પણ માફ કરી દો. દ્રવ્ય વસ્તુને
શ્રહણ કરવા માટે જે ભૂમિ વગેરેને ખેડવામાં આવે છે, તેને પણ આઠ દિવસ માટે બંધ કરી
દો. તથા જેના ઉપર જે કંઈ પણ લેણુ લેણુ હોય તે પણ બંધ કરી દો અથવા તો આ મહોત્સવ

निषेधेन न विद्यते दण्ड, दातव्यं द्रव्यं यस्या सा तथा ताम् न केनापि दग्धे
अपि देयमित्यर्थः, अग्राधिति, क्रयविक्रयनिषेधेनैव अविद्यमानमातव्याम्, अगटप्रवेशा
मिति, न विद्यते भयाना राजपुरुषाणाम् आज्ञादायिनां प्रवेशः कुटुम्बगृहेषु यस्या
सा तथा ताम्, अदण्डकुदण्डिमामिति, दण्डेन लभ्य द्रव्यं दण्ड्यः कुदण्डेन निर्वृत्तं
कुदण्डिमं-राजद्रव्यं तन्नास्ति यस्यां सा तथा ताम्, तत्र दण्डो यथापराधं राजप्राप्तं
द्रव्यं कुदण्डस्तु राजकर्मचारिणा प्रज्ञाद्यपराधात् अपराधिनो महत्यपराधे अल्पम् अल्पा-
पराधे चाधिकं यद्योचितरहितं राजग्राह्यं द्रव्यम् इति विज्ञेयम्, अधगिमामिति
(अविद्यमान वरिमम्=ऋणद्रव्यं यस्यां सा तथा ताम् उत्तमर्णाधर्मणाभ्याम् ऋणार्थम्
अन्योन्यं न विवर्त्नीय मत्तः द्रव्यं नीत्वा मुक्तकलनीय दातव्यमित्यर्थः गणिकावर-
नाटकीय कलितामिति) गणिकावरैः विलासिनीप्रधानैः नाटकीयैः नाटकप्रतिबद्ध-
पात्रैः कलिता शोभिता या सा तथा ताम्, नाटकादि शोभितामित्यर्थः अनेकताला
चरानुचरितामिति, तत्र (अनेके ये तालाचराः प्रेक्षाकारि विशेषास्तैरनुचरिताम्-
आसेविताम् अनुद्धूतमृदङ्गामिति) अनु=आनुरूप्येण मृदङ्गसम्बन्धि विधिना उद्धूताः

बौरह का जीतना होता है उसे भी आठ दिन के लिये बन्द कर दो जिस पर जिस का कुछ
भी लेना देना हो उसे भी बन्द कर दो अथवा इस महोत्सव के होने तक कोई
रोजगार-व्यापार-आदि न करे ऐसी राजाज्ञा की घोषणा कर दो क्रय विक्रय के निषेध
हो जाने के कारण कोई भी व्यक्ति नापने, गिनने आदि की वस्तु के लेन देन का व्यव-
हार न करे, आज्ञा प्रदान करने वाले राजपुरुषों का कुटुम्बी जनो के गृहों में प्रवेश न
हो अपराध हो जाने पर दण्ड रूप में जो अपराध के अनुसार अपराधो से
राजद्रव्य लिया जाता है वह न लिया जावे राज्य कर्मचारियों के द्वारा छोटे बड़े अपराध हो जाने
पर जो उनसे जुर्माना के रूप में थोड़ा या बहुत इच्छानुसार दण्ड वसूल किया जाता है उसे न
लिया जावे-कर्जदार से कर्ज देने वाला व्यक्ति अपने ऋण को वसूल करने के लिये विवाद न करे
किन्तु वह द्रव्य मुझ से ठेकर दिया जावे और उनके झगड़े को शान्त कर दिया जावे । विला-
सिनियों के नाटकीय पुरुषों द्वारा डम में खूब धार्मिक नाटक किया जावे, इस उत्सव को
देखने के लिये अनेक जन आठ रात दिन इस उत्सव में मृदङ्ग बजि होती रहे, जो मालाएँ इस

थाय तथा सुग्री को भी पक्षु जानना वेपार वगेरे थाय नाई ऐसी राजाज्ञानी घोषणा करी
हो क्रय-विक्रय उपर प्रतिषेध था गया पशु को भी पक्षु भाषुस भाषी शक्य है गणु
शक्य ऐसी गणु वस्तु ऐसी आप-ले पक्ष करी हो आज्ञा प्रदान करना राज पुत्रो
नो कुटुम्बी जनोना गृहोमा प्रवेश न थाय, अपराध था जान्य तो दंड इपमां ने
अपराध मुझ अपराधो पासेथी राजद्रव्य लेवामा आवे छे, ते देवानु पक्ष करी हो
राज्य कर्मचारी मो वडे नाना-मोटा अपराधो पक्ष तेमनी पासेथी दंड स्वइय ने ते
कई पक्ष थोडु-बहु ईच्छा मुझ दंड वसूल करवामा आवे छे, ते देवामां न

કલાકૌશલદર્શનાર્થમૂર્ધ્વે ક્ષિપ્તા મૃદંગા યસ્યાં સા તથા તામ્ । અમ્લાનમાલ્યદામ્ની-
મિતિ તત્ર અમ્લાનાનિ મ્લાનિરહિતાનિ માલ્યદામાનિ પુષ્પમાલાઃ યસ્યાં સા તથા
તામ્, મ્લાનપુષ્પમાલાઃ નિઃસાર્ય અભિનવાઃ ૨ દીયન્તે इत्यर्थः (પ્રમુદિતપ્રક્રી-
ડિતસપુરજનજાનપદામિતિ) તત્ર પ્રમુદિતાઃ સાનન્દાઃ પ્રક્રીડિતાઃ ક્રીડિતુમારબ્ધા
સપુરજનાઃ અયોધ્યાવાસિજનસહિતાઃ જનપદાઃ કોશલદેશવાસિનો જના યત્ર સા તથા
તામ્, વિજયવૈજયિકીમિતિ, તત્ર અતિશયેન વિજયો વિજય-વિજયઃ સ પ્રયોજનં યસ્યાં
સા તથા તામ્ અસ્મિન્નાયુધરત્ને સમ્યગારાધિતે સતિ તત્ રત્નં મદમીષ્ટ મનોરથં મહાવિજ-
યરૂપં સર્વથા સાધયિષ્યતીતિ બુદ્ધ્યા વિજય પ્રયોજનમુક્ત્વા અષ્ટાદિકાં મહામહિમાં કુરુતેતિ
(તણ તાઓ અદ્વારસ સેણિપ્પસેણીઓ મરહેણ રન્ના એવં બુત્તાઓ સમાણીઓ હદ્દાઓ
જાવ વિણણં પહિસુણેતિ) તતઃ સ્વલ્લુ તા અષ્ટાદશ શ્રેણિપ્રશ્રેણયઃ મરતેન રાજ્ઞા એવમુક્તાઃ
સત્યઃ હ્રૂષ્ટાઃ યાવદ્ વિનયેન પ્રતિશ્રુવન્તિ, અત્ર યાવત્પદાત્ કરતલપરિગૃહીતં દશનહં

ઉત્સવ કે સમય હવેર ઉધર લટકાવી જાવે વે મ્લાન ન હોને પાવે “પમુદ્ધમ પવક્રીલિમ સપુરજન-
જાણવયં” હર એક વિનિતાવાસી જન હમ ઉત્સવ મેં મુદિત મન બન કર કોશલ દેશ વાસિયોં કે
સાથ ૨ નાના પ્રકાર કી ક્રીડાઈ કો “વિજયવેજહં” એસે હસ અષ્ટાદિકા મહોત્સવ કી હસ
આયુધરત્ન કી અછ્છી તરહ સે આરાધના કરને કે નિમિત્ત આયોજના કરો । વ્યોકિં યહ આયુ
ધરત્ન અવ સમ્યક્ પ્રકાર સે આરાધિત હો જાવેગા તો નિયમ સે વે હસસે મુક્તે હચ્છિત વિજય રૂપ
ફલકી પ્રાપ્તિ હોજાવેગી । હસ પ્રકાર સે વ્યવસ્થા કરકે ફિર હમને આપકી આજ્ઞાનુસાર હસ
મહોત્સવ સફલ કરને કી વ્યવસ્થા કરલી હૈ એસી શીઘ્ર હી સ્વભર હમે દો (તણ તાઓ અદ્વારસ
સેણિપ્પસેણીઓ મરહેણ રન્ના એવં બુત્તાઓ સમાણીઓ હદ્દાઓ જાવ વિણણ પહિસુણેતિ) હસ
પ્રકાર સે મરત રાજા કે દ્વારા કહે ગયે વે શ્રેણિ પ્રશ્રેણિરૂપ પ્રજાજન હર્ષ સે બહુત અધિક આન-
ન્દિત હુઈ સતુષ્ટ હુઈ એવં મરત રાજા કી આજ્ઞા કો અન્હાને વિના અનુનય કિઈ સ્વીકાર
લિયાં સ્વીકાર કરતે સમય અન સબને દોનો હાથો કો વહી વિનય કે સાથ જોડો યહા પર

આવે કજ્જાર પાસેથી કજ્જ આપનાર માણસ પોતાના ઋણની વસૂલાત કરવા માટે વિવાદ
કરે નહિ—પણ તે દ્રવ્ય મારી પાસેથી લઈને આપી દે અને આ પ્રમાણે તે ઝગડાને અંત
થાય વિલાસિનીઓના નાટકીય પુરુષો વડે એ ઉત્સવમાં ઉત્તમ ધાર્મિક નાટકો ભજવવામાં
આવે એ ઉત્સવને જોવા માટે ઘણા લોકો આવે રાત-દિવસ એ ઉત્સવમાં મૃદંગ-ધ્વનિ થતો
રહે જે માળાઓને ઉત્સવમાં આમતેમ લટકાવવામાં આવે તે મ્લાન થાય નહિ (પમુદ્ધમ-
વક્રીલિમ સપુરજનજાણવયં) દરેક વિનિતાવાસીજન એ ઉત્સવમાં મુદિત મનવાળો થઈને
કોશલદેશવાસીઓની સાથે સાથે અનેકવિધ ક્રીડાઓ કરે (વિજય વેજહં) આ પ્રમાણે અષ્ટાદિકા
મહોત્સવથી એ આયુધ ૨ ત્વની સારી રીતે આરાધના કરવા માટે આવેજના કરે કેમકે એ આયુ-
ધરત્ન જ્યારે સારી રીતે આરાધિત થઈ જશે ત્યારે નિયમથી જોના વડે અને ઈચ્છિત વિજય રૂપ
ફળની પ્રાપ્તિ થઈ જશે આ પ્રમાણે વ્યવસ્થા કરીને ધણી વ્યવસ્થા થઈ ગયાની અને અખર
આપો (તણ તાઓ અદ્વારસ સેણિપ્પસેણીઓ મરહેણ રન્ના એવં બુત્તાઓ સમાણીઓ
હદ્દાઓ જાવ વિણણ પહિસુણેતિ) આ પ્રમાણે ભરત રાજા વડે આરાધિત થએલા તે શ્રેણિ
પ્રશ્રેણિ રૂપ પ્રમજન હર્ષથી અત્યધિક આનંદિત થયા, અંતુષ્ટ થયા અને ભરત રાજાની
આજ્ઞાને તેમણે વગર કોઈ પણ જાતની આના કાનીએ સ્વીકારી લીધી આજ્ઞા સ્વીકાર કરતી

શિરસાવર્ત મસ્તકે અંજલિ કૃત્વેતિ ગ્રાહ્યમ્ વિનયેન પ્રતિશ્રુયન્તિ વિનયપૂર્વિરમાત્રમિકા સ્વીકૃવન્તિ इत्यर्थः (પડિસુણિત્તા) પ્રતિશ્રુત્ય સ્વીકૃત્ય (મરહસ્સ અતિયાઓ પડિણિ-
ક્ષમ્મેતિ) ભરતસ્ય રાજઃ અન્તિકાત્ સમીપાત્ પ્રતિનિષ્કામન્તિ નિર્ગચ્છન્તિ 'પરિણિક્ષ-
મિત્તા' પ્રતિનિષ્ક્રમ્ય-નિર્ગમ્ય (ઉમ્મુક્કં ઉક્કરં જાવ કરેતિ ચ કારવેતિ ચ) ઉચ્છુન્કામ્
ઉત્ક્રાં યાવત્કુવન્તિ ચ કારયન્તિ ચ ભરતાજાનુવારેણ । (કરેત્તા કારવેત્તા) કૃત્વા કાર-
યિત્વા ચ (જેણેવ મરહે રાયા તેણેવ ઉવાગચ્છન્તિ) યત્રેવ ભરતો રાજા તત્રોપાગચ્છન્તિ
(ઉવાગચ્છિત્તા) ઉપાગત્ય (જાવ તમાણત્તિયં પચ્ચપ્પિણંતિ) યાવત્ તામ્ આગ્નપ્તિકામ્
આજ્ઞાં પ્રત્યર્પયન્તિ સમર્પયન્તીતિ ॥ છૂં ૪ ॥

યાવત્પદ સે (કરતલપરિગૃહીત દગનલ્લ શિરસાવર્ત મસ્તકે અંજલિ કૃત્વા) એસા પાટ સપ્રહીત હુઆ
હે । (પડિસુણિત્તા) ભરત રાજા કી આજ્ઞા કો સ્વીકાર કરકે (મરહસ્સ રણ્ણો અતિયાઓ પડિણિક્ષ-
મ્મેતિ) ફોર વે સબકે સવ ભરત રાજા કે પાસસે વાપિસ અપને સ્થાન પર છોટ આગ (પડિણિક્ષ-
મિત્તા ઉમ્મુક્કં ઉક્કરં જાવ કરેતિ અ કારવેતિ અ) છોટકરકે ઉન્હોને ભરત રાજા કી આજ્ઞાનુસાર
નગરીં મેં અષ્ટાદિકા મહોત્સવ કિયા ઓર કરવાયા જિસ પ્રકાર સે ઇસ મહોત્સવ કો ઉચ્છુન્કા
આદિ રૂપ સે વ્યવસ્થા કરને કો આજ્ઞા રાજાને દી થી વૈસી હી વહ સવ વ્યવસ્થા ઉન્હોને ઇસ
કી ઓર કરવાયી । (કરેત્તા કારવેત્તા જેણેવ મરહે રાયા તેણેવ ઉવાગચ્છન્તિ) ઇસ ઉત્સવ કો
કરકે ઓર કરાકે ફિર વે જહાં પર ભરત રાજા થા વહાં પર આયે (ઉવાગચ્છિત્તા જાવ તમા
ણત્તિયં પચ્ચપ્પિણંતિ) વહાં આકર હે રાજા જૈસી આજ્ઞા મહોત્સવ કરને કરાને કી આપને દી થી
ઊસી કે અનુસાર હમલોગો ને ઊસે કિયા હે ઓર કરાયા હે એવી સ્વર ઉન્હોને રાજા કો
આકર કે દેદી ॥ ૪ ॥

વખને તેમણે પોતાના બન્ને હાથોથી સવિનય પ્રમાણે કર્યા. અહીં યાવત્ પદથી (કરતલ-
પરિગૃહીતં દગનલ્લ શિરસાવર્ત મસ્તકે અંજલિ કૃત્વા) એવો પાઠ સંપ્રદીત થયો છે (પડિસુ-
ણિત્તા) ભરત રાજાની આજ્ઞાનો સ્વોકાર કરીને (મરહસ્સરણ્ણો અંતિયાઓ પડિણિક્ષમ્મેતિ)
પછી તેઓ સર્વે ભરત રાજા પાસેથી પાછા પોત-પોતાના સ્થાન પર આવી ગયા (પડિ-
ણિક્ષમિત્તા ઉમ્મુક્કં ઉક્કર જાવ કરેતિઅ કારવેતિઅ) પાછા કરીને તેમણે ભરતરાજાની
આજ્ઞા સુજ્ઞ નગરીમા અષ્ટાદિકા મહોત્સવ ઊજવ્યો અને ઊજવાવ્યો, જે પ્રમાણે
એ મહોત્સવની ઉચ્છુલ્લ વગેરે રૂપથી વ્યવસ્થા કરવાની આજ્ઞા રાજાએ આપી હતી તેવી જ
વ્યવસ્થા તેમણે તે ઉત્સવમાં કરી અને કરવડાવી (કરેત્તા કારવેત્તા જેણેવ મરહે રાયા
તેણેવ ઉવાગચ્છન્તિ) એ ઉત્સવને ઊજવાવી ને પછી જાા તે ભરત રાજા હોના ત્યા આઠ્યા
(ઉવાગચ્છિત્તા જાવ તમાણત્તિયં પચ્ચપ્પિણંતિ) ત્યા આવીને તેમણે રાજાને આ પ્રમાણે ખબર
આપી કે હે રાજા મહોત્સવ ઊજવાવાની જેવી આજ્ઞા આપશ્રીજે આપી હતી તે સુજ્ઞ
અમેજે તે મહોત્સવ ઊજવ્યો છે, અને ઊજવાવ્યો છે ॥ ૪ ॥

કલાકૌશલદર્શનાર્થમૂર્ધ્વં ક્ષિપ્તા મૃદઙ્ગા યસ્યાં સા તથા તામ્ । અમ્લાનમાલ્યદામ્ની-
મિતિ તત્ર અમ્લાનાનિ મ્લાનિરઘ્નિતાનિ માલ્યદામાનિ પુષ્પમાલાઃ યસ્યાં સા તથા
તામ્, મ્લાનપુષ્પમાલાઃ નિઃસાર્ય અભિનવાઃ ૨ દીયન્તે इत्यर्थः (પ્રમુદિતપ્રક્રી-
ઢિતસપુરજનજાનપદામિતિ) તત્ર પ્રમુદિતા સાનન્દાઃ પ્રક્રીઢિતાઃ ક્રીઢિતુમારબ્ધા
સપુરજનાઃ અયોધ્યાવાસિજનસહિતાઃ જનપદાઃ કોશલદેશવાસિનો જના યત્ર સા તથા
તામ્, વિજયવૈજયિકીમિતિ, તત્ર અતિશયેન વિજયો વિજય-વિજયઃ સ પ્રયોજનં યસ્યાં
સા તથા તામ્ અસ્મિન્નાયુધરત્ને સમ્યગારાધિતે સતિ તત્ રત્નં મદમીષ્ટ મનોરથં મહાવિજ-
યરૂપં સર્વથા સાધયિષ્યતીતિ બુદ્ધ્યા વિજય પ્રયોજનમુક્ત્વા અષ્ટાદિકાં મહામહિમાં કુરુતેતિ
(ત ए ण ताओ अद्वारस सेणिप्पसेणीओ भरहेण रन्ना एवं वुत्ताओ समाणीओ हट्ठाओ
जाव विणएणं पडिमुणेंति) તતઃ ક્ષલ્લ તા અષ્ટાદશ શ્રેણિપ્રશ્રેણયઃ મરતેન રાજ્ઞા એવમુક્તાઃ
સત્યઃ હ્રૂષ્ટાઃ યાવદ્ વિનયેન પ્રતિશ્રુષ્વન્તિ, અત્ર યાવત્પદાત્ કરતલપરિગૃહીતં દશનલં

ઉત્સવ કે સમય ડૂધર ઉધર લટકાવી જાવે વે મ્લાન ન હોને પાવે “પમુદ્ધમ પવક્રીલિમ્ સપુરજન-
જાળવયં” હર એક વિનિતાવાસી જન હમ ઉત્સવ મેં મુદિત મન બન કર કોશલ દેશ વાસિયોં કે
સાથ ૨ નાના પ્રકાર કી ક્રીઢાઈ કરે “વિજયવૈજયં” એસે હસ અષ્ટાદિકા મહોત્સવ કી હસ
આયુધરત્ન કી અછી તરહ સે આરાધના કરને કે નિમિત્ત આયોજના કરો । વયોંકિ યહ આયુ
ધરત્ન બવ સમ્યક્ પ્રકાર સે આરાધિત હો જાવેગા તો નિયમ સે વે હસસે મુક્તે હચ્છિત વિજય રૂપ
ફલકી પ્રાપ્તિ હોજાવેગો । હસ પ્રકાર સે વ્યવસ્થા કરકે ફિર હમને આપકી આજ્ઞાનુસાર હસ
મહોત્સવ સફલ કરને કી વ્યવસ્થા કરલી હૈ એસી શીખ હી સ્વર હમે દો (ત ए ण ताओ अद्वारस
सेणिप्पसेणीओ भरहेण रन्ना एवं वुत्ताओ समाणीओ हट्ठाओ जाव विणएणं पडिमुणेंति) હસ
પ્રકાર સે ભરત રાજા કે દ્વારા કહે ગયે વે શ્રેણિ પ્રશ્રેણિરૂપ પ્રજાજન હર્ષ સે બહુત અધિક આન-
ન્દિત હુए सतुष्ट हुए एव भरत राजा की आज्ञा को उन्होंने विना अनुनय किए स्वीकार
लिया स्वीकार करते समय उन सबने दोनों हाथों को बड़ी विनय के साथ जोड़ो यहां पर

આવે કૃષ્ણદાર પાસેથી કૃષ્ણ આપનાર માણસ પોતાના નકળની વસ્તુલાત કરવા માટે વિવાદ
કરે નહિ—પણ તે દ્રવ્ય મારી પાસેથી લઈને આપી દે અને આ પ્રમાણે તે ઝગડાને અંત
થાય વિલાસિનીઓના નાટકીય પુરુષો વડે એ ઉત્સવમાં ઉત્તમ ધાર્મિક નાટકો બજવવામાં
આવે એ ઉત્સવને જોવા માટે ઘણા લોકો આવે રાત—દિવસ એ ઉત્સવમાં મૃદગ—ધ્વનિ થતો
રહે જે માળાઓને ઉત્સવમાં આમતેમ લટકાવવામાં આવે તે મ્લાન થાય નહિ (પમુદ્ધમ-
વક્રીલિમ્ સપુરજનજાળવયં) દરેક વિનિતાવાસીજન એ ઉત્સવમાં મુદિત મનવાળો થઈને
કેશલદેશવાસીઓની સાથે સાથે અનેકવિધ ક્રીડાઓ કરે (વિજય વૈજયં) આ પ્રમાણે અષ્ટાદિકા
મહોત્સવથી એ આયુધ ૨ ત્નની સારી રીતે આરાધના કરવા માટે આવેજના કરે। કેમકે એ આયુ-
ધરત્ન જ્યારે સારી રીતે આરાધિત થઈ જશે ત્યારે નિયમથી જોના વડે મને ઈચ્છિત વિજય રૂપ
ફળની પ્રાપ્તિ થઈ જશે આ પ્રમાણે વ્યવસ્થા કરીને પછી વ્યવસ્થા થઈ ગયાની અને બીજર
આપે। (ત ए ण ताओ अद्वारस सेणिप्पसेणीओ भरहेण रन्ना एवं वुत्ताओ समाणीओ
हट्ठाओ जाव विणएणं पडिमुणेंति) આ પ્રમાણે ભરત રાજા વડે આજ્ઞાપિત થયેલા તે શ્રેણિ
પ્રશ્રેણિ રૂપ પ્રજાજન હર્ષથી અત્યધિક આનંદિત થયા, સતુષ્ટ થયા અને ભરત રાજાની
આજ્ઞાને તેમણે વગર કોઈ પણ જાતની આના કાનીએ સ્વીકારી લીધી. આજ્ઞા સ્વીકાર કરતી

શિરસાવર્ત મસ્તકે અંજલિ કૃત્વેતિ ગ્રાહ્યમ્ વિનયેન પ્રતિશ્રુયન્તિ વિનયપૂર્વિરમાત્રસિકા સ્વીકૃવન્તિ इत्यर्थः (પડિમુણિત્તા) પ્રતિશ્રુત્ય સ્વીકૃત્ય (મરહસ્સ અતિયાઓ પડિણિ-
વલ્લમેતિ) મરતસ્ય રાજ્ઞઃ અન્તિકાત્ સમીપાત્ પ્રતિનિષ્કામન્તિ નિર્ગચ્છન્તિ 'પરિણિસ્ત-
મિત્તા' પ્રતિનિષ્ક્રમ્ય-નિર્ગમ્ય (ઉસ્મુકં ઉવકર જાવ કરેતિ ય કારવેતિ ય) ઉચ્છુલ્કામ્
ઉત્તરાં યાવત્કુવેન્નિ ચ તારયન્નિ ચ મરતાજ્ઞાનુપારેણ । (કરેત્તા કારવેત્તા) કૃત્વા કાર-
યિત્વા ચ (જેણેવ મરહે રાયા તેણેવ ઉવાગચ્છન્તિ) યત્રેવ મરતો ગત્તા તત્રોપાગચ્છન્તિ
(ઉવાગચ્છિત્તા) ઉપાગત્ય (જાવ તમાણત્તિયં પચ્ચપ્પિણંતિ) યાવત્ તામ્ આજપ્તિકામ્
આજ્ઞાં પ્રત્યર્પયન્તિ સમર્પયન્તીતિ ॥ સૂ. ૪ ॥

યાવત્પદ સે (કરતલપરિગૃહીત દગનલ્લ શિરસાવર્ત મસ્તકે અંજલિ કૃત્વા) એસા પાઠ સમ્રહીત હુમા
હૈ । (પડિમુણિત્તા) મરત રાજા કી આજ્ઞા કી સ્વીકાર કરકે (મરહસ્સ રણો અતિયાઓ પડિણિલ્લ-
મેતિ) ફોર વે સલ્લકે સલ્લ મરત રાજા કૈ પાસસે વપિસ અપને સ્થાન પર લૌટ આળ (પડિણિલ્લ-
મિત્તા ઉસ્મુકં ઉવકર જાવ કરેતિ અ કારવેતિ અ) લૌટકરકે ઉન્હોને મરત રાજા કી આજ્ઞાનુસાર
નગરી મેં અષ્ટાદિકા મહોત્સવ કિયા ઓર કરવાયા જિસ પ્રકાર સે ઇસ મહોત્સવ કી ઉચ્છુલ્કા
આદિ રૂપ સે વ્યવસ્થા કરને કી આજ્ઞા રાજાને દી થી વૈસી હી વહ સલ્લ વ્યવસ્થા ઉન્હોને ઉસ
કી ઓર કરવાયી । (કરેત્તા કારવેત્તા જેણેવ મરહે રાયા તેણેવ ઉવાગચ્છન્તિ) ઇસ ઉત્સવ કી
કરકે ઓર કરાકે ફિર વે જહાં પર મરત રાજા થા વહાં પર આયે (ઉવાગચ્છિત્તા જાવ તમા
ણત્તિય પચ્ચપ્પિણતિ) વહાં આકર હે રાજા જૈસી આજ્ઞા મહોત્સવ કરને કરાને કી આપને દી થી
ઉસી કૈ અનુસાર હમલોગો ને ઉસે કિયા હૈ ઓર કરાયા હૈ એમી સલ્લર ઉન્હોને રાજા કી
આકર કૈ દેદી ॥ ૪ ॥

વખતે તેમણે પોતાના બન્ને હાથોથી સવિનય પ્રમાણે કયાં અહીં યાવત્ પદ્મી (કરતલ-
પરિગૃહીત દગનલ્લ શિરસાવર્ત મસ્તકે અંજલિ કૃત્વા) એવો પાઠ સંપ્રહીત થયો છે (પડિમુ-
ણિત્તા) મરત રાજાની આજ્ઞાને સ્વીકાર કરીને (મરહસ્સરણો અંતિયાઓ પડિણિલ્લમેતિ)
પછી તેઓ સર્વે મરત રાજા પાસેથી પાછા પોત-પોતાના સ્થાન પર આવી ગયા. (પડિ-
ણિલ્લમિત્તા ઉસ્મુકં ઉવકર જાવ કરેતિઅ કારવેતિઅ) પાછા ફરીને તેમણે મરતરાજાની
આજ્ઞા મુજબ નગરીમા અષ્ટાદિકા મહોત્સવ ઊજવ્યો અને ઊજવાવ્યો, જે પ્રમાણે
જે મહોત્સવની ઉચ્છુલ્ક વગેરે રૂપથી વ્યવસ્થા કરવાની આજ્ઞા રાજાએ આપી હતી તેવી જ
વ્યવસ્થા તેમણે તે ઉત્સવમાં કરી અને કરવાડાવી (કરેત્તા કારવેત્તા જેણેવ મરહે રાયા
તેણેવ ઉવાગચ્છન્તિ) એ ઉત્પવને ઊજવાવી ને પછી જાતા તે મરત રાજા હોના ત્યાં આઠ્યા
(ઉવાગચ્છિત્તા જાવ તમાણત્તિયં પચ્ચપ્પિણંતિ) ત્યાં આવીને તેમણે રાજાને આ પ્રમાણે ખબર
આપી કે હે રાજા મહોત્સવ ઊજવવાની જેવી આજ્ઞા આપશ્રીએ આપી હતી તે મુજબ
અમેએ તે મહોત્સવ ઊજવ્યો છે, અને ઊજવાવ્યો છે ॥ ૪ ॥

अथ अष्टाद्विका महामहिमा समाप्त्यनन्तर किमभवदित्याह—“तए णं” इत्यादि ।

मूलम्—तएणं से दिव्वे चक्करयणे अट्ठाहियाए महामहिमाए निव्वत्ताए समाणीए आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्ख-
मिक्का अंतलिक्खपडिवण्णे जक्खसहरससंपरिवुडे दिव्वतुडियसइसण्णि-
णाएणं आपूरेते चेव अंबरतलं विणीयाए रायहाणीए मज्झंमज्झेणं
णिगच्छइ णिगच्छित्ता गंगाए महाणईए दाहिणिल्लेणं कूलणं पुरत्थिमं
दिस्सि मागहतित्थाभिमुहे पयाते आविहोत्था, तएणं से भरहे राया
तं दिव्वं चक्करयणं गंगाए महाणईए दाहिणिल्लेणं कूलणं पुरत्थिमं दिस्सि
मागह तित्थाभिमुहं पयातं पासइ पासेत्ता हट्टतुट्ट जाव हियए कोडुंबिय-
पुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी—खिप्पामेव ओ देवाणुप्पिया ! आभि
सेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह हयगयरहपवरजोहकलियं चाउरगिणि सेणं
सण्णाहेह, एतमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तएणं ते कोडुंबिय जाव पच्चप्पि-
णंति, तएणं से भरहे राया जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ उवा-
गच्छित्ता मज्जणघरं अ पविसइ, अणुपविसेत्ता समुत्तजालाभिरामं
तहेव जाव धवलमहामेह णिग्गाए इव ससिक्ख पियदंसणे णरवई मज्ज
णघराओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमिक्का हयगयरहपवरवाहणभट्टचड-
गरपहकर संकुलाए सेणाए पहिअकिट्ठी जेणेव वाहिरिआ उवट्ठाणसाला
जेणेव अभिसेक्के हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अंजण
गिरिकडगसण्णिभं गयवइं णरवई दुरुढे । तएणं से भरहाहिवे
णरिंदे हारोत्थए सुकयरइयवच्छे कुंडलउज्जोइआणणे मउडदित्त-
सिरए णरसीहे णरवई णरिंदे णरवसहे मरुयरायवसभकप्पे अब्भ
हिय रायतेअलच्छीए दिप्पमाणे पसत्थ मंगलसएहिं संथुव्वमाणे
जयसइकयालोए हत्थिखंधवरगाए मकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्ज-
माणेणं सेयवर चामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं २ जक्ख सहस्ससंपरिवुडे
वेसमणि चेव धणवई अमर वइसण्णिभाइ इट्ठीए पहियकित्तो गंगाए

महाणईए दाहिणिल्लेणं क्लेणं गामागरणगरखेडकञ्चडमंडव दोण-
मुंहपट्टणासमसंवाहसहस्समंडिय थिमियमेइणीयं वसुहं अभिजिण-
माणे २ अग्गाइं वराइं रयणाइं पडिच्छमाणे २ तं दिव्वं चक्करयणं
अणुगच्छमाणे २ जोयणंतरियाहि वसहोहि वसमाणे २ जेणेव मागह-
तित्थे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता मागहतित्थस्स अदरसामंते
दुवालसजोयणायामं णव जोयणविच्छिण्णं वरणगरसरिच्छं विजय-
खंधावारनिवेसं करेइ करित्ता वड्डइरयणं सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी
रिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! ममं आवासं पोसहसालं च करेइ करित्ता
ममेयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि तए णं से वड्डइरयणे भरहेणं रण्णा एवं
ते समाणे हट्टतुट्ट चित्तमाणंदिए पीइमणे जाव अंजलिं कट्टु एवं सामी
तहत्ति आणाए विणएण वयणं पडिसुणेइ पडिसुणित्ता भरहस्स रण्णो-
आवसहं पोसहं सालं च करेइ करित्ता एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पि-
णंति, तएणं से भरहे राया आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चो-
रुहइ पच्चोरुहित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता
पोसहसालं अणुपविसइ अणुपविसित्ता पोसहसालं पमज्जइ पमज्जित्ता
दब्भसंथारगं संथरइ संथरित्ता दब्भसंथारगं दुरुहइ दुरुहित्ता मागह-
तित्थकुमारस्स देवस्स अट्टमभत्तं पणिण्हइ पणिण्हित्ता पोसहसालाए
पोसहिए बंभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववयगमालावण्णगविलेवणे
णिक्खित्तसत्थमुसले दब्भसंथारोवगए एगे अबोए अट्टमभत्तं पडिजा-
गरमाणे २ विहरइ । तएणं से भरहे राया अट्टमभत्तंसि परिण-
ममाणंसि पोसह सालाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया
उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कोडुवियपुरिसे सदावेइ
सदावित्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया हयगयरह पव-
रजोहकलियं चाउरगिणिं सेणं सण्णाहेह चाउग्घंटं आसरहं पडिक-
प्पेह तिट्ठुक मज्जणघरं अणुपविसइ अणुपविसित्ता समुत्त तहेव जाव

धवलमहामेहणिग्गए जाव मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमिच्चा
हयगयरहपवरवाहण जाव सेणावइ पहियकित्ती जेणेव बाहिरिया उवट्टा-
णसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरेहे तेणेव उवागच्छइ उवाग-च्छित्ता
चाउग्घंटे आसरेहं दुरुहे ॥ सू० ५ ॥

छाया—ततः खलु तद्विव्य चक्ररत्नम् अप्राहिकायां महामहिमार्था निर्वृतायां सत्याम्
आयुधगृहशालात् प्रतिनिष्कामति प्रतिनिष्कस्य अन्तरिक्षं प्रतिपन्नं यक्षसहस्रसंपरि-
वृतम्, दिव्यवृष्टिनिशब्दसन्निनादेन आपूरय दिवाम्बरतलं विनीताया राजधान्या, मध्य-
मध्येन निर्गच्छति निर्गत्य गङ्गाया महानद्या दाक्षिणात्येन कूलेन पौस्त्या दिशं मागध-
तीर्थाभिमुखं प्रयातं अप्यभवत्, ततः खलु स भरतो राजा त दिव्य चक्ररत्नं गङ्गाया
महानद्या दाक्षिणात्येन कूलेन पौरस्त्या दिशं मागधतीर्थाभिमुखं प्रयात पश्यति, दृष्ट्वा दृष्ट-
तुष्ट यावद्भूदयः कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा एत्रमवादीत्—क्षिप्रमेव भो देवा-
नुप्रियाः ! आभिषेक्य हस्तिरत्नं प्रतिकल्पयन् हयगजरथप्रवरयोधकलितां चातुरङ्गिणीं
सेनां सन्नाहयत्, पतामाहसिकां प्रत्यर्पयत्, ततः खलु ते कौटुम्बिक यावत् प्रत्यर्पयन्ति,
ततः खलु स भरतो राजा यत्रैव मज्जनगृहं तत्रैवोपागच्छति उपागत्य मज्जनगृहम् अनु-
प्रविशति अनुप्रविश्य समुक्कजालाभिरामं तथैव यावत् धवलमहामेघ निर्गत इव शशीव
प्रियदर्शनो नरपतिः मज्जनगृहात् प्रतिनिष्कामति प्रतिनिष्कस्य हयगजरथप्रवरवाहन 'चउगर
पहकरत्ति' विस्तारवृन्दसंकुलया सेनया प्रथितकीर्तिं यत्रैव बाहिरिका उपस्थानशाला यत्रै-
वाभिषेक्य हस्तिरत्नं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य अज्जनगिरिकटकसन्निभं गजपतिं नरपतिं
कुण्डे । ततः खलु स भरताधिपो नरेन्द्रः दारावस्तुतमुकतरतिद्वक्षस्कः कुण्डलोद्-
द्योतिताननं मुकुटदीप्तशिरस्कं नरसिंहो नरपतिं नरेन्द्रो नरवृषभः मरुद्राजवृषभकल्पः
अभ्यधिकराजतेजो लक्ष्म्या दीप्यमान प्रशस्तमङ्गलशतैः संस्तूयमानः जयशब्दकृतलोक
हस्तिस्कन्धवरगतः सकोरुणमात्यदाम्ना छत्रेण ध्रियमाणेन इत्रेतवरचामरैरुद्वयमानैः २ पक्ष
सहस्रसंपरिवृतं वैभ्रमणइव घनपतिः अमरपतेः सन्निभया ऋद्ध्या प्रथितकीर्तिः गङ्गाया
महानद्या दाक्षिणात्ये कूले ग्रामाकरनगरयेष्ट कर्वट मडम्ब द्रोणमुख पत्तनाऽऽभ्रमसंवाह-सह-
स्रमण्डितां स्तिमितमेदनीकां वसुधाम् अभिजयन् अभिजयन् अग्राणि घराणि रत्नानि प्रती-
च्छन् २ तद्विव्य चक्ररत्नम् अनुगच्छन् अनुगच्छन् योजनान्तरिताभिर्वसतिभिर्वसन् वसन्
यत्रैव मागधतीर्थं तत्रैवोपागच्छति उपागत्य मागधतीर्थेऽदूरसामन्ते द्वादशयोजनायाम्
नवयोजनविस्तीर्णं वरनगरसदृशं विजयस्कन्धावारनिवेशं करोति कृत्वा वर्द्धकिरत्न
शब्दयति शब्दयित्वा पवमवादीत् क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः ममावासं पौषधं । च कुरु
कृत्वा मम पतामाहसिकां प्रत्यर्पय, ततः खलु स वर्द्धकिरत्नो भरतेन राज्ञा पवमुक्तः सन्
दृष्टुष्ट चित्तानन्दितः प्रीतिमनाः यावत् अज्जलिं कृत्वा एवं स्वामिन् तथेति आह्वया
विनयेन वचनं प्रतिशृणोति, प्रतिश्रुत्य भरतस्य राज्ञः आवास पौषधशालां च करोति,
कृत्वा पतामाहसिकां क्षिप्रमेव प्रत्यर्पयति, ततः खलु स भरतो राजा आभिषेक्यात् हस्ति-
रत्नात् प्रत्यवरोहति, प्रत्यवरुह्य यत्रैव पौषधशाला तत्रैवोपागच्छति उपागत्य पौषधशाला-
मनुप्रविशति, अनुप्रविश्य पौषधशालां प्रमार्जयति प्रमार्ज्य दर्भसंस्तारकं संस्वृणाति,

सस्त्रीयं दर्भसस्तारक दुरुहति, दुरुह्य मागधतीर्थकुमारस्य देवस्य अष्टमभक्तं प्रगृह्णाति, प्रगृह्य पौषधशालायां पौषधिकः ब्रह्मचारी उन्मुक्तमणिसुवर्णं व्यपगतमालावर्णकविलेपनः निक्षिप्तशस्त्रमुसलः दर्भसस्तारोपगत एक अद्वितीय अष्टमभक्तं प्रतिजाग्रत् प्रतिजाग्रत् विहरति । ततः खलु स भरतो राजा अष्टमभक्ते परिणमतिपौषधशालातः प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव बाहिरिका उपस्थानशाला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य काण्डुमिश्रकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत् क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिया ! हयगजरथप्रवरयोधकलितां चतुरङ्गिणो सेनां सन्नाहयत चातुर्घण्टम् अध्वरथ प्रतिकल्पयत इति कृत्वा मञ्जनगृहमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य समुक्त तथैव यावत् घवलमहामेघ निर्गतो यावन् मञ्जनगृहात् प्रतिनिष्क्रामति प्रतिनिष्क्रम्य हयगजरथप्रवरवाहन यावत् सेनापति प्रयितकीर्ति यत्रैव बाहिरिका उपस्थानशाला यत्रैव चातुर्घण्टोऽध्वरथस्तत्रैवोपागच्छति उपागत्य चातुर्घण्टम् अध्वरथ दुरुहे ॥ सू० ५ ॥

टीका—“तए णं” इत्यादि । ‘तए णं से दिव्वे चक्करयणे अट्टाहियाए महामहिमाए निव्वत्ताए समाणीए आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ’ ततः तदनन्तरं खलु तच्चिद्व्यं चक्ररत्नम् अष्टाद्विकाया महामहिमायां महोत्सवरूपायाम् निवृत्तायां सत्याम् आयुधगृहशालातः प्रतिनिष्क्रामति निर्गच्छति (पडिणिक्खमिता) प्रतिनिष्क्रम्य (अंतलिक्खपडिवण्णे जक्खसहस्स संपरिवुडे) अन्तरिक्षप्रतिपन्नं नभः प्राप्तं यक्षसहस्रसंपरिवृतं चक्रधरचतुर्दशरत्नानां प्रत्येक देवसहस्राधिष्ठितत्वात् (दिव्वतुडियसइसणिणाएणं आपू-

‘तएणं से दिव्वे चक्कयणे अट्टाहियाए महामहिमाए’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं से दिव्वे चक्करयणे) इसके बाद वह चक्ररत्न जब की (अट्टाहियाए महामहिमाए निव्वत्ताए समाणीए) अष्टाद्विका महोत्सव अच्छी तरह से समाप्त हो चुका (आउहघरसालाओ) आयुधगृहशाला से (पडिणिक्खमइ) निकला (पडिणिक्खमिता) निकलकर वह (अंतलिक्खपडिवण्णे) अन्तरिक्ष आकाश में अधर चलने लगा (जक्ख सहस्ससंपरिवुडे) वह १ हजार यक्षों देवों से घिरा हुआ था क्योंकि चक्रवर्ती के चौदह रत्नों में से प्रत्येक रत्न १

‘त एणं से दिव्वे चक्करयणे अट्टाहियाए महामहिमाए’ - इत्यादि सूत्र - ५ ॥

टीकार्थ (त एणं से दिव्वे चक्करयणे) त्थार भा० ते यकंरत्न न्धारे (अट्टाहियाए महामहिमाए निव्वत्ताए समाणीए) अष्टाद्विका महोत्सव सारी रीते सम्पन्न थर् अर्थे (आउहघरसालाओ) आयुध गृहशालाथी (पडिणिक्खमइ) नीकपुथु (पडिणिक्खमिता) नीकजाने ते (अंतलिक्खपडिवण्णे) अंतरीक्ष आकाशभा अद्धर आलवा लागुथु (जक्ख सहस्ससंपरिवुडे) ते ओक हंभर यक्षो-देवोथी पविष्टत हंभु, केभके यकवतीना यतुदंशरत्नोभाथी इरेक रत्न ओक हंभर देवोथी अधिष्ठित होय थे (दिव्वतुडिय सहस्रणिणाएणं आपूरै ते चैव अंबरतलं विणीयाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं

धव महामेहणिग्गए जाव मज्जनघराओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमिच्चा
हयगयरहपवरवाहण जाव सेणावइ पहियकिच्ची जेणेव बाहिरिया उवट्ठा-
णसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरेहे तेणेव उवागच्छइ उवाग-च्छित्ता
चाउग्घंटे आसरेहं दुरुहे ॥ सू० ५ ॥

छाया—ततः खलु तद्विव्य चक्ररत्नम् अष्टाद्विकायां महामहिमायां निर्वृतायां सत्याम्
आयुधगृहशालात् प्रतिनिष्कामति प्रतिनिष्कस्य अन्तरिक्षं प्रतिपन्नं यक्षसहस्रसंपरि-
वृतम्, दिव्यवृद्धिनिशब्दसन्निनादेन आपूरय दिवाम्बरतल विनीताया राजधान्या मध्य-
मध्येन निर्गच्छति निर्गत्य गङ्गाया महानद्या दक्षिणात्येन कूलेन पौस्त्यां दिशं मागध-
तीर्थाभिमुखं प्रयातं अप्यभवत्, ततः खलु स भरतो राजा त दिव्य चक्ररत्नं गङ्गायां
महानद्या दक्षिणात्येन कूलेन पौरस्त्यां दिशं मागधतीर्थाभिमुखं प्रयातं पश्यति, दृष्ट्वा दृष्ट-
तुष्ट यावद्धृदयं कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्—क्षिप्रमेव भो देवा-
नुप्रियाः ! आभिषेक्य हस्तिरत्नं प्रतिकल्पयत हयगजरथप्रवरयोधकलितां चातुरङ्गिणीं
सेनां सन्नाहयत, पतामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पयत, ततः खलु ते कौटुम्बिक यावत् प्रत्यर्पयन्ति,
ततः खलु स भरतो राजा यत्रैव मज्जनगृहं तत्रैवोपागच्छति उपागत्य मज्जनगृहम् अनु-
प्रविशति अनुप्रविश्य समुक्तजालाभिरामं तथैव यावत् धवलमहामेघ निर्गत इव शशीव
प्रियदर्शनो नरपतिः मज्जनगृहात् प्रतिनिष्कामति प्रतिनिष्कस्य हयगजरथप्रवरवाहन 'चउगर
पहकरत्ति' विस्तारवृन्दसंकुलया सेनया प्रथितकीर्तिः यत्रैव बाहिरिका उपस्थानशाला यत्रै-
वाभिषेक्यं हस्तिरत्नं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य अज्जनगिरिकटकसन्निभं गजपतिं नरपतिं
दुरुहे । ततः खलु स भरताधिपो नरेन्द्रः द्वारावस्तृतसुकतरतिद्वक्षस्कः कुण्डलोद्-
द्योतिताननं मुकुटदीप्तशिरस्कं नरसिंहो नरपतिं नरेन्द्रो नरवृषभः मरुद्राजवृषभकल्पः
अभ्यधिकराजतेजो लक्ष्म्या दीप्यमान प्रशस्तमङ्गलशतैः संस्तूयमानः जयशब्दकृतालोक
हस्तिस्कन्धवरगतः सकोरण्टमालयदान्ना छत्रेण ध्रियमाणेन इत्रेतरचामरैरुद्धयमानैः २ पक्ष
सहस्रसंपरिवृतं वैभ्रमणश्च घनपतिः अमरपतेः सन्निभया ऋद्धया प्रथितकीर्तिः गङ्गाया
महानद्या दक्षिणात्येन कूले ग्रामाकरनगरयेष्ट कर्बट मङ्गस्व द्रोणमुख पत्तनाऽऽभ्रमसंवाह-सह-
स्रमण्डितां स्तिमितमेदनीका वसुधाम् अभिजयन् अभिजयन् अग्र्याणि वराणि रत्नानि प्रती-
च्छन् २ तद्विव्यं चक्ररत्नम् अनुगच्छन् अनुगच्छन् योजनान्तरिताभिर्वसतिभिर्वसन् वसन्
यत्रैव मागधतीर्थं तत्रैवोपागच्छति उपागत्य मागधतीर्थस्याऽदूरसामन्ते द्वादशयोजना
नवयोजनविस्तीर्णं वरनगरसदृशं विजयस्कन्धावारनिवेशं करोति कृत्वा वर्द्धकिरत्नं
शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत् क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिया ममावासं पौषध । च कुरु
कृत्वा मम पतामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पय, ततः खलु स वर्द्धकिरत्नो भरतेन राज्ञा एवमुक्तः सन्
दृष्टुष्ट चित्तानन्दितः प्रीतिमना यावत् अब्जलिं कृत्वा एव स्वामिन् तथेति आज्ञाया
विनयेन वचनं प्रतिशृणोति, प्रतिश्रुत्य भरतस्य राज्ञः आवास पौषधशालां च करोति,
कृत्वा पतामाज्ञप्तिकां क्षिप्रमेव प्रत्यर्पयति, ततः खलु स भरतो राजा आभिषेक्यात् हस्ति-
रत्नात् प्रत्यवरोहति, प्रत्यवरुह्य यत्रैव पौषधशाला तत्रैवोपागच्छति उपागत्य पौषधशाला-
मनुप्रविशति, अनुप्रविश्य पौषधशालां प्रमार्जयति प्रमार्ज्य दग्धसंस्तारकं संस्पर्णाति,

संस्तरीयं दूर्ध्वसंस्तारकं दुरूहति, दुरूह मागधतीर्थकुमारस्य देवस्य अष्टमभक्तं प्रगृह्णाति, प्रगृह्य पौषघशालायां पौषधिकः ब्रह्मचारी उन्मुक्तमणितुवर्णं द्यपगतमालावर्णकचिलेपनः निक्षिप्तशस्त्रमुसलः दूर्ध्वसंस्तारोपगत एक अद्वितीय अष्टमभक्तं प्रतिजाग्रत् प्रतिजाग्रत् विहरति । ततः खलु स भरतो राजा अष्टमभक्ते परिणमतिपौषघशालातः प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव बाहिरिका उपस्थानशाला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य कौटुम्भिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा पवमवादीत् क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिया ! हयगजरथप्रवरयोधकलितां चतुरङ्गिणों सेनां सन्नाहयत चातुर्घण्टम् अश्वरथं प्रतिकल्पयत इति कृत्वा मञ्जनगृहमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य समुक्त तथैव यावत् घवलमहामेघ निर्गतो यावत् मञ्जनगृहात् प्रतिनिष्क्रामति प्रतिनिष्क्रम्य हयगजरथप्रवरवाहन यावत् सेनापति प्रथितकीर्ति यत्रैव बाहिरिका उपस्थानशाला यत्रैव चातुर्घण्टोऽश्वरथस्तत्रैवोपागच्छति उपागत्य चातुर्घण्टम् अश्वरथं दुरूहे ॥ सू० ५ ॥

टीका—“तए णं” इत्यादि । ‘तए णं से दिव्वे चक्करयणे अट्टाहियाए महामहिमाए निव्वत्ताए समाणीए आउडहरसालाओ पडिणिक्खमइ’ ततः तदनन्तरं खलु तद्विव्यं चक्ररत्नम् अष्टाहिकायां महामहिमायां महोत्सवरूपायाम् निर्वृत्तायां सत्याम् आयुधगृहशालातः प्रतिनिष्क्रामति निर्गच्छति (पडिणिक्खमिता) प्रतिनिष्क्रम्य (अंतलिक्खपडिवण्णे जक्खसहस्स संपरिवुडे) अन्तरिक्षप्रतिपन्नं नभः प्राप्तं यक्षसहस्रसंपरिवृतं चक्रधरचतुर्दशरत्नानां प्रत्येक देवसहस्राधिष्ठितत्वात् (दिव्वतुडियसइसण्णिणाएणं आपू-

‘तएणं से दिव्वे चक्करयणे अट्टाहियाए महामहिमाए’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं से दिव्वे चक्करयणे) इसके बाद वह चक्ररत्न जब की (अट्टाहियाए महामहिमाए निव्वत्ताए समाणीए) अष्टाहिका महोत्सव अच्छी तरह से समाप्त हो चुका (आउडहरसालाओ) आयुधगृहशाला से (पडिणिक्खमइ) निकला (पडिणिक्खमिता) निकलकर वह (अंतलिक्खपडिवण्णे) अन्तरीक्ष आकाश में अघर चलने लगा (जक्ख सहस्ससंपरिवुडे) वह १ हजार यक्षों देवों से घिरा हुआ था क्योंकि चक्रवर्ती के चौदह रत्नों में से प्रत्येक रत्न १

‘त एणं से दिव्वे चक्करयणे अट्टाहियाए महामहिमाए’ - इत्यादि सूत्र - ५ ॥

टीकार्थ (त एणं से दिव्वे चक्करयणे) त्थार भाव ते चक्ररत्न ज्ज्यारे (अट्टाहियाए महामहिमाए निव्वत्ताए समाणीए) अष्टाहिका महोत्सव सारी रीते सम्पन्न थइ थूथे। (आउडहरसालाओ) आयुध गृहशालाथी (पडिणिक्खमइ) नीकथु (पडिणिक्खमिता) नीकजाने ते (अंतलिक्खपडिवण्णे) अंतरीक्ष आकाशमा अद्धर आलवा लाउथु (जक्ख सहस्ससंपरिवुडे) ते ओक डल्लर थक्का-देवोथी परिवृत्त डत्तुं, केभके चक्रवर्तीना थतुडंशरत्नोभांथी डरेक रत्न ओक डल्लर डेवोथी अधिष्ठित होथे (दिव्वतुडिय सह संण्णिणाएणं आपूरे ते चैव अंबरतलं विणीयाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं

રેતે ચેવ અંવરતલં વિણીયાણ રાયહાણોણ મજ્ઞ મજ્ઞેણં (ણિગચ્છહ) દિવ્યત્રુટિતશબ્દ સન્નિનાદેન દિવ્યાનાં દેવકૃતાનાં ત્રુટિતાનાં તૂર્યાણાં વાધવિશેષાણાં યઃ શબ્દો—ધ્વનિઃ યશ્ચ સજ્જતો નિનાદઃ પ્રતિધ્વનિસ્તેન આપૂરયદિવામ્બરતલં શબ્દવ્યાપ્તં નમઃ કુર્વદિવે-ત્યર્થઃ વિનીતાયાઃ રાજધાન્યાઃ મધ્યં મધ્યેન—મધ્યદેશભાગેન નિર્ગચ્છતિ (ણિગચ્છિત્તા) નિર્ગત્ય (ગંગાણ મહાણઈણ દાહિણિલ્લેણં કૂલેણં પુરત્થિમં દિસિં માગહતિત્થામિમુદે પયાણ યાવિ હોત્થા) ગઙ્ગાયાઃ—ગઙ્ગાનામ્ન્યાઃ મહાનવાઃ દાક્ષિણાત્યે દક્ષિણભાગવર્તિનિ કૂલે—સમુદ્ર-પાર્શ્વવર્તિનિ તટે इत्यर्थः उभयत्र णं शब्दो वाक्यालंकारे अयं भावः विनीता समश्रेणी हि पूर्वदिशि वहन्ती गङ्गा मागधतीर्थस्थाने पूर्वसमुद्रं प्रविशति तच्च तटं दक्षिणभागवर्तित्वेन दक्षिणात्यमिति व्यवह्रियते । अतएव दक्षिणात्येन कूलेन पौरस्त्यां पूर्वां दिशं मागधती-र्याभिमुखं प्रयातं चलितम् अप्यासीत् (तए णं से भरहे राया तं दिव्वं चक्ररयणं गंगाए महाणईए दाहिणिल्लेणं कूलेणं पुरत्थिमं दिसिं मागहतित्थाभिमुह पयातं पासइ) ततः

હજાર દેવોં સે અધિષ્ઠિત હોતા હૈ । (દિવ્યત્રુટિયસદસણિણાણં આપૂરેતે ચેવ અંવરતલ વિણી-યાણ રાયહાણોણ મજ્ઞં મજ્ઞેણં (ણિગચ્છહ)) ઉસ સમય અમ્બરતલ દિવ્યવાજોં કે નિનાદ एवं प्रतिनिनादों से गुंज रहा था अतएव ऐसा प्रतीत होता था कि मानों यह चक्ररत्न ही आकाशको शब्द से व्याप्त हुआ जैसा कर रहा है । इस तरह से आकाश में अद्वर चलता हुआ वह चक्ररत्न विनीता राजधानी के ठीक बीच में से होकर निकल (णिगचछित्ता) निकलकर वह (गंगाए महाणईए दाहिणिल्लेणं कूलेणं पुरत्थिमं दिसिं मागहतित्थाभिमुह पयाण यावि होत्था) गंगामहानदी के दक्षिणदिशावर्ती कूल से होता हुआ पूर्वदिशा को ओर रहे हुए मागधतीर्थ की तरफ चला । यहां सूत्र में दोनों “णं” वाक्यालंकार में प्रयुक्त हुए हैं । विनीता की समश्रेणि में पूर्वदिशा की ओर वहती हुई गंगा मागधतीर्थ स्थान में पूर्व समुद्र में गिरती है अतः वह तट-दक्षिण भागवर्ती होने के कारण (दाक्षिणात्य) इस पद से व्यवहृत हुआ है । इसी कारण यहां ऐसा कहा गया है (तएणं से भरहे राया तं दिव्वं चक्ररयणं गंगाए महाणईए दाहिणिल्लेणं कूलेणं

णिगच्छह) તે વખતે અખર તળ દિવ્ય વાજઓના નિનાદ અને પ્રતિનિનાદોથી શુભિત થઈ રહ્યું હતું એથી એવું લાગતું હતું કે બધે એ ચક્રરતન જ આકાશને શબ્દિત કરી રહ્યું છે આ પ્રમાણે આકાશમાં અદ્વર ચાલતું તે ચક્રરતન વિનીતા રાજધાનીની ઠીક વચ્ચે થઈને પસાર થયું ‘ણિગચ્છિત્તા’ પસારથઈને તે (ગંગાણ મહાણઈણ દાહિણિલ્લેણ કૂલેણં પુરત્થિમં દિસિં માગહતિત્થામિમુદે પયાણ યાવિ હોત્થા) ગંગા મહાનદીની દક્ષિણ દિશા—તરફના કિનારાથી પસાર થતું પૂર્વ દિશા તરફના માગધ તીર્થ તરફ ચાલવા લાગ્યું અહીં સૂત્રમાં અને ‘ણ’ વાક્યાલંકારમાં પ્રયુક્ત થયેલ છે વિનીતાની સમશ્રેણિમાં પૂર્વ દિશા તરફ વહેતી ગંગા મગધ તીર્થસ્થાનમાં પૂર્વ સમુદ્રમાં મળે છે એથી તે તટ દક્ષિણ ભાગવર્તી હોવા બદલ “દાક્ષિણાત્ય” એ પદથી વ્યવહૃત થયેલ છે એથી જ અહીં આ પ્રમાણે કહેવામાં આવ્યું છે (તણં સે ભરહે રાયા તં દિવ્વં ચિચ્ચરયણં ગંગાણ મહાણઈણ દાહિણિલ્લેણં કૂલેણં પુર-ત્થિમં દિસિં માગહતિત્થામિમુહં પયાતં પાસइ) બાકી રાખીએ ન્યાયે તે દિવ્ય ચક્રરતને ગંગા

સહુ સ ભરતો રાજા તદ્વિવ્ય ચક્રરત્નં ગદ્ગાયા મહાનદ્યા દાક્ષિણાત્યેન કૂલેન પૌરસ્ત્યા-
પૂર્વો દિશં માગધતીર્થાભિમુખં પ્રયાતં ચલિતં પશ્યતિ (પાસિત્તા) હૃદ્ગા (હૃદ્ગુદ્ગ જાવ હિયપ
કોહુવિયપુરિસે સદાવેહ) હૃદ્ગુદ્ગ યાવદ્હૃદયમિતિ હૃદ્ગુદ્ગ શ્રિત્તાનન્દિતઃ પરમસૌમનસ્યિતઃ
હર્ષવશવિસર્પદ્હૃદયઃ કૌદુમ્બિકપુરુષાન્ શન્દયતિ આહ્વયતિ (સદાવેત્તા) શન્દયિત્વા
(એવં વયાસી) એવં વક્ષ્યમાણપ્રકારેણ અવાદીત્ કથિતવાન્ (સ્વિપ્પામેવ મો દેવાણુપ્પિયા !
આમિસેવકં હૃત્થિરયણં પઢિકપ્પેહ) ક્ષિપ્રમેવ મો દેવાનુપ્રિયાઃ ! આમિપેક્કયમ્ અમિપેક
યોગ્યં હસ્તિરત્નં પટ્ટહસ્તિનં પ્રતિકલ્પયત-સજ્જીકુરુત (હયગયરહપવરજોહકલિયં ચાઉરં-
ગિણિસેણં સણ્ણાહેહ) હયગયરથપવરયોધકલિતાં ચાતુરંગિણીં સનાં સન્નાહયત સજ્જી
કુરુત (એયમાણત્તિયં પચ્ચપ્પિણહ) એતામાજ્ઞસિકામ્ આજ્ઞાં પ્રત્યર્પયત (તણં તે કોહુવિય
જાવ પચ્ચપ્પિણંતિ) તતઃ સહુ તે કૌદુમ્બિક યાવત્પ્રત્યર્પયન્તિ તથા ચ તે કૌદુમ્બિક પુરુષાઃ

પુરુષિમં દિસિં માગહતિત્થાભિમુહ પયાયં પામહ) ભરત રાજા ને જવ ડસ દિવ્ય ચક્રરત્ન કો ગંગા
મહાનદી કે દક્ષિણદિશા કે તટ સે પૂર્વદિશાકી ઓર વર્તમાન માગધ-તીર્થકી તરફ સે જાતા
હુમા દેસા તો (પાસિત્તા) દેસકર વહ (હૃદ્ગુદ્ગ જાવ હિયપ કોહુવિયપુરિસે સદાવેહ) હૃદ્ગુદ્ગ ઓર
ગુદ્ગ હુમા, ચિત્તમેં આનન્દિત એવ પરમ સૌમનસ્યિત હુવે ડસને હર્ષ સે ડહરતે હુપ હૃદય સપન્ન
બનકર કૌદુમ્બિક પુરુષો કો બુઢાયા ઓર (સદાવેત્તા) બુઢાકર ડનસે (એવ વયાસી) એસા
કહા-(સ્વિપ્પામેવ મો દેવાણુપ્પિયા ! આમિસેવકં હૃત્થિરયણં પઢિકપ્પેહ) હે-દેવાનુપ્રિયો ! તુમ ઓગ
શોષ હી અમિપેક્ક યોગ્ય પ્રધાનહાથી કો-પટ્ટ હાથી-કો સુજ્જિત કરો । (હયગયરહપવર જો
હકલિયં ચાઉરંગિણિ સેણં સણ્ણાહેહ) તથા-હય-ગજ-રથ પવર-યોધાઓ સે યુક્ત ચાતુરંગિણીસેના
કો સુસજ્જિત કરો । (એયમાણત્તિયં પચ્ચપ્પિણહ) જૈસી આજ્ઞા યહ મૈને તુમકો દી હૈ ડસકે
અનુસાર સવ કામ કરકે ફિર હમેં સ્વર દો । (તણં તે કોહુવિયપુરિસા જાવ પચ્ચપ્પિણંતિ)
ભરત રાજા કે દ્વારા હસ પ્રકાર સે આજ્ઞત હુપ વે કૌદુમ્બિક જન હૃદ્ગુદ્ગ ગુદ્ગ હુપ એવ ચિત્ત

મહાનદીના દક્ષિણ દિશાના તટથી પૂર્વ દિશાના તરફ વર્તમાન માગધ તીર્થ તરફ જતું જોયું તે।
(પાસિત્તા) જોઈને તે (હૃદ્ગુદ્ગ જાવ હિયપ કોહુવિય પુરિસે સદાવેહ) હૃદ્ગુદ્ગ અને ગુદ્ગ થયો।
ચિત્તમાં આનન્દિત તેમજ પરમ સૌમનસ્યિત થઈને, હર્ષાવિષ્ટ થઈને કૌદુમ્બિક પુરુષોને
બોલાવ્યાં અને (સદાવેત્તા) બોલાવીને તેણે (એવ વયાસી) આ પ્રમાણે કહ્યું-(સ્વિપ્પામેવ મો
દેવાણુપ્પિયા ! આમિસેવકં હૃત્થિરયણં પઢિકપ્પેહ) હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે યથાશીઘ્ર અભિ-
વેક યોગ્ય પ્રધાન હાથીને-પટ્ટહાથીને સુસજ્જ કરો। (હયગયરહ પવર જોહકલિયં ચાઉર-
રંગિણિ સેણ સણ્ણાહેહ તેમજ હથ-ગજ-રથ-પવર યોદ્ધાઓથી યુક્ત ચાતુરંગિણી સેનાને
સુસજ્જ કરો। (એયમાણત્તિયં પચ્ચપ્પિણહ) જેવી આજ્ઞા મે તમને કરી છે તે સુજળાંબધુ
કામ સમ્પન્ન કરીને પછી અને સૂચના આપો। (તણં તે કોહુવિય પુરિસા જાવ પચ્ચ-
પ્પિણંતિ) ભરત રાજા વડે આ પ્રમાણે આજ્ઞા થયેલા તે કૌદુમ્બિક જનો હૃદ્ગુદ્ગ-ગુદ્ગ થયા અને

ચિત્તમા આનંદિત થયા અને રાજા ભરતે જે પ્રમાણે કરવાનો તેમને આદેશ આપ્યો હતો, તે બધું-સમ્પન્ન કરીને તેમણે ભરત રાજાની પાસે સૂચના મોકલી (તે ઇષ્ટ સે મરદે રાયા જેણેવ મ વ્જ્જણઘરે તેણેવ ઠવાગચ્છહ) ત્યાર બાદ તે ભરત રાજા જ્યાં સ્નાન ગૃહ હતું, ત્યાં ગયા. (ઠવાગચ્છિત્તા જેણેવ મવ્જ્જણઘર તેણેવયમણુપવિસર, અણુપવિસિત્તા સમુત્તજાલાભિરામે તદેવ જાવ ધવલ મહામેહિણિગમ્પ ઇવ સસિન્નવ પિયવંસણે જરવઈ મવ્જ્જણઘરાઓ પહિણિ-ક્કલમઈ) ત્યાં જઈને તે મનજન ગૃહમાં પ્રવિષ્ટ થયા. પ્રવિષ્ટ થઈને તે જેની બારીઓ મુકાદ્દેખોથી ખચિત છે અને એથી જ જે અતીવ મનોરમ લાગે છે તેમજ ચાવત્ પદાન્તુ-સાર જે વિચિત્ર મહિરત્નોની ભૂમિવાળું છે એવા, મહાપમાં મૂકેલા નાના મહિઓથી ખચિત સ્નાન પીઠ ઉપર સુખપૂર્વક બેસી ગયો. ત્યાં તે રાજાને સારી રીતે સ્નાન કરાવવામાં આનંદ, સ્નાન કરાવ્યા બાદ તે ભરત રાજા ધવલ મહામેઘ-સ્વચ્છ શરત્ મોલીન એવથી નિર્ગત શરી-ચંદ્ર-ની જેમ તે મનજનગૃહમાંથી બહાર નીકળ્યા. તે સમયે તેઓ

(હયગયરહપવરવાહનમહચહગરપહકરસંકુલાપ્ત સેના પહિયકિત્તી જેણેવ વાહિરિયા ઉવટ્ટા
ણસાલા જેણેવ આભિસેક્કે હત્થિરયણે તેણેવ ઉવાગચ્છટ) હયગયરથપવરવાહનમહ-
ચહગરપહકર સકુલયા સેનયા પ્રથિતકીર્ત્તિઃ યત્રૈવ વાહ્યોપસ્થાનશાલા યત્રૈવ આભિપેક્કયં
હસ્તિરત્તનં તત્રૈવોપાગચ્છતિ, તત્ર હયગયરથાઃ પવરાણિ વાહનાનિ મટાઃ-યોદ્ધારઃ તેપાં (ચહ-
ગરપહકરત્તિ) વિસ્તારવૃન્દમ્ તેન સકુલયા વ્યાપ્તયા સેનયા સાદ્દં પ્રથિતકીર્ત્તિઃ
વિહ્યાતકીર્ત્તિમાન્ ભરતો રાજા યત્રૈવ વાહ્યોપસ્થાનશાલા યત્રૈવ ચ આભિપેક્કયમ્ અભિપેક્ક-
યોગ્યં હસ્તિરત્તનં પટ્ટહસ્તિવરઃ તત્રૈવોપાગચ્છતિ (ઉવાગચ્છિત્તા) ઉપાગત્ય (અંજળગિરિ-
કહગસણિમં ગયવહં ણરવહં દુરુદે) અઙ્ગનગિરિકટકસન્નિમં ગજપતિં નરપતિંદુરુદે,
તત્ર અઙ્ગનગિરેઃ-અઙ્ગનપર્વતસ્ય કટકો નિતમ્બમાગઃ તત્સન્નિમં ગજપતિં-રાજકુઙ્ગરં
નરપતિં ભરતો દુરુદે-આરુઢ્વ ઇતિ ।

અથ ગજારુઢશ્ચ રાજાં ચકરત્તન પ્રદર્શિતમાર્ગે ગચ્છતિ કીદશ્યા ઋદ્ધયા તદાહ-
(તપ્ત ણં સે) ઇત્યાદિ । (તપ્ત ણં સે મરહાદિવે ણરિંદે) તતઃ સ્થલ સ ભરતાધિપો નરેન્દ્રઃ
(હારોત્થય મુકયરહયવચ્છે) હારાવસ્તુત મુકુતરતિદવક્ષસ્કઃ તત્ર હારેણ અવસ્તુતમ્ આચ્છા-
દિતમ્ અતપ્ત મુકુતં મનોહરં તેનૈવ હેતુનો રતિદં પ્રદર્શકજનાનામાનન્દપ્રદં વક્ષો
યસ્ય સ તથા (કુંહલઝઙ્ગોદ્યાણણે) કુન્દલોદ્ ઘોતિતાનનઃ કુન્દલાભ્યામુદ્ધોતિતં-
પ્રકાશિતમ્ આનનં મુખં યસ્ય સ તથા (મહદિત્તસિરપ્) મુકુટદીપ્તશિરસ્કઃ, મુકુટેન
દીપ્તં પ્રકાશિતં શિરો મસ્તક યસ્ય સ તથા (ણરસીહે) નરસિંહઃ શૂરત્વાત્ (ણરવહં)

હયગયરહપવરવાહનમહચહગરહપહકરસકુલાપ્ત સેનાપ્ત પહિયકિત્તી જેણેવ વાહિરિયા ઉવટ્ટાણ
સાલા જેણેવ અભિસેક્કે હત્થિરયણે તેણેવ ઉવાગચ્છટ્ મઙ્ગનગ્રહ સે વાહર નિકલકર વે ભરત રાજા
કિ જિનકી કીર્તિં હય-ગજ, રથ-શ્રેષ્ઠ-વાહન-ઔર યોદ્ધાઓં કે વિસ્તૃત વૃન્દ સે વ્યાપ્ત સેના
કે સાથ વિહ્યાત હૈં જહાં વાહ્ય ઉપસ્થાનશાલા થી ઔર ઉસમેં મી અભિપેક્ક યોગ્ય હસ્તિરત્તન થા-
પટ્ટહાથી થા-વહાં પર આયે । (ઉવાગચ્છિત્તા) વહાં આકરકે (અંજળ ગિરિ કહગસંનિમં ગયવહં
ણરવહં દુરુદે) વે નરપતિ અઙ્ગનગિરિ કે કટકનિતમ્બમાગ-કે જૈસે ગજપતિ પર અરુઢ હો ગયે
(તપ્ત ણં સે મરહાદિવે ણરિંદે હારોત્થય મુકયરહયવચ્છે કુંહલઝઙ્ગોદ્યાણણે મહદિત્તસિરપ્ ણરસી

જેવામાં અતીવ સોદામણી લાગતા હતા. (પહિણિક્ષમિત્તા હયગયરહપવરવાહન હગ
રપહકર સંકુલાપ્ત સેનાપ્ત પહિયકિત્તિ જેણેવ વાહિરિયા ઉવટ્ટાણસાલા જેણેવ આભિ-
સેક્કે હત્થિરયણે તેણેવ ઉવાગચ્છટ્) મઙ્ગનગૃહમાંથી બહાર નીકળીને તે ભરત રાજા કે
જેમની કીર્તિ હય-ગજ રથ-શ્રેષ્ઠ વાહન અને યોદ્ધાઓના વિસ્તૃત વૃન્દથી વ્યાપ્ત
સેના સાથે વિહ્યાત છે-તે બધા બાહ્ય ઉપસ્થાન શાળા હતા અને તેમાં પશુ બધા અભિપેક્ક
યોગ્ય હસ્તિરત્તન હર્તુ એટલે કે પટ્ટ હાથી હતા-ત્યાં આપ્યા (ઉવાગચ્છિત્તા) ત્યાં
આવીને (અંજળગિરિકહગસંનિમં ગયવહં ણરવહં દુરુદે) તે નરપતિ અઙ્ગન ગિરિના
કટક-નિતમ્બ ભાગ-જેવા ગજપતિ ઉપર સમારૂઢ થઈ ગયા (તપ્ત ણં સે મરહાદિવે
ણરિંદે હારોત્થયમુકયરહયવચ્છે કુંહલઝઙ્ગોદ્યાણણે મહદિત્તસિરપ્ ણરસીહે ણર-

નરપતિઃ સ્થામિત્વાત્ (જરિંદે) નરેન્દ્રઃ પરમૈશ્વર્યયોગાત્ (જરવસદે) નરવૃષભઃ સ્વીકૃત
કૃત્ય સંપાદકત્વાત્ (મરુઘરાયવસમકપ્પે) મરુઘરાયવૃષભકલ્પઃ, તત્ર મરુતો દેવાઃ વ્યન્તરા-
દયસ્તેષાં રાજાનઃ ઇન્દ્રાસ્તેષાં મધ્યે વૃષભાઃ મુખ્યાઃ સૌધર્મેન્દ્રાદયસ્તત્કલ્પઃ તત્સદૃશ
ઇત્યર્થઃ (અમ્મહિયરાયતેઅલચ્છીપ દિપ્પમાણે) અમ્યધિક રાજતેજો લક્ષ્મ્યા દીપ્ય-
માનઃ (પમત્થ મંગલસપ્પહિં સંથુવ્વમાણે) પ્રશસ્તમન્નલશતૈઃ સંસ્તૂયમાનો વન્દિભિરિતિ
(જય સદ્દં કળાલોપ) જય શબ્દકૃતાલોકઃ જયશબ્દઃ કૃતઃ આલોકે દર્શને સત્યેવ
યસ્ય સ તથા (હત્થિલંઘવરગણ) હસ્તિસ્કન્ધવરગતઃ પ્રાપ્તઃ (જેણેવ માગહતિત્થે
તેણેવ ઉવાગચ્છહ) યત્રૈવ માગધતીર્થ તત્રૈવોપાગચ્છતિ કેન સહ તત્રાહ—‘સકોરંટ મલ્લ-
દામેણં છત્તેણં ધરિજ્જમાણેણં’ સકોરંટમાલ્યદાત્રા છત્રેણ ધ્રિયમાણેન સહ ‘સેયવર—

હે જરવહ જરિંદે જરવસદે મરુઘરાયવસમકપ્પે અમ્મહિયરાયતેઅલચ્છીપ દિપ્પમાણે) ઇમકે
વાદ વે મરતાધિપ નરેન્દ્ર કિ જિનકા વક્ષઃસ્થલ હાર સે વ્યાપ્ત હો રહા હૈ, ઇસી કારણ જો વઢા
હી સુહાવના લગ રહા હૈ ઔર દેસનેવાલે મનુષ્યોં કે લિપ્ આનન્દપ્રદ હો રહા હૈ, મુક્ષમળ્લ
જિનકા દોનોં કર્ણ કે કુળ્લોં સે ઉદોતિત હો રહા હૈ મુકુટ સે જિનકા મસ્તક ચમક
રહા હૈ શૂવોર હોને કે કારણ જો મનુષ્યોં મેં સિંહ કે જૈસે પ્રતીત હો રહે હૈં, સ્વામી હોને સે જો
નર સમાજ કે પ્રતિપાલક—બને હુપ હૈં, પરમ એશ્વર્ય કે યોગ સે જો મનુષ્ય મેં ઇન્દ્ર કે તુલ્ય
મિને જા રહે હૈં, સ્વકૃત કૃત્ય કે સંપાદક હોને કે કારણ જો નર વૃષભ માનેજા રહે હૈ વ્યન્ત-
રાદિક દેવોં કે ઇન્દ્રોં કે બીચ મેં જો મુખ્ય—જૈસે બને હુપ હૈ—વહુત અધિક રાજતેજ કી
લક્ષ્મી સે જો ચમક રહે હૈં (પમત્થમંગલસપ્પહિં સંથુવ્વમાણે) વન્દિજનોં દ્વારા ઉચ્ચરિત સંકહો
માગલાચક શબ્દો સે જો સંસ્તુત હો રહે હૈ તથા (જયસદ્દકળાલોપ) આપકી જય હો, જય
હો, ઇસ પ્રકાર સે જો દિલ્લે હો લોગોં દ્વારા કૃત શબ્દો સે પુરસ્કૃત ક્રિયે જારહે હૈં (હત્થિલં-
ઘવરગણ) અપને પટ્ટ હાથી પર બેઠે હુપ (જેણેવ માગહતિત્થે તેણેવ ઉવાગચ્છહ) જહોં પર

વર્હા જરિંદે જરવસદે મરુઘરાયવસમકપ્પે અમ્મહિયરાયતેઅલચ્છીપ દિપ્પમાણે) ત્યાં જાહે
તે—આપનાધિપતિ નરેન્દ્ર કે જેમનુ વક્ષસ્થળ હારથી વ્યાપ્ત થઈ રહ્યું છે, એથી જે બહુ
જ-સોહામણું લાગી રહ્યું છે, અને જોનારા મનુષ્યો માટે જે આનન્દ પ્રદ થઈ રહ્યું છે, મુખ્ય
અર્થના જેમના અન્ને કણુના કુંડળોથી ઉદોતિત થઈ રહ્યું છે, મુકુટથી જેમનુ મસ્તક
અમકી રહ્યું છે, શૂવોર હોવાથી જે મનુષ્યોમાં સિંહવત પ્રતીત થઈ રહ્યા છે, સ્વામી
હોવાથી જે નર સમાજ માટે પ્રતિ-પાલક રૂપ છે, પરમ એશ્વર્યના યોગથી જે મનુષ્યોમાં
ઇન્દ્ર તુલ્ય ગણાય છે, સ્વકૃત કૃત્યના સંપાદક હોવાથી જે નર-વૃષભ તરીકે પ્રખ્યાત છે,
વ્યન્તરાદિક દેવોના ઇન્દ્રોની વચ્ચે જે મુખ્ય જેવા છે, અત્યધિક રાજ તેજની લક્ષ્મીથી જે
તેજસ્વી થઈ રહ્યા છે (પમત્થ મંગલસપ્પહિં સંથુવ્વમાણે) વન્દિજનો વડે ઉચ્ચારિત સંક-
હાધિક મંગળ વાચક શબ્દોથી જે સંસ્તુત થઈ રહ્યા છે, તેમજ (જય સદ્દકળાલોપ)
‘તમારી જય થાઓ, જય થાઓ’ આ પ્રમાણે જેમના દર્શન થતાં જ જે લોકો વડે
મંગળ શબ્દોથી પુરસ્કૃત થઈ રહ્યા છે (હત્થિલં ગણ) પોતાના પટ્ટ હાથી ઉપર
બેઠેલા (જેણેવ માગહતિત્થે તેણેવ ઉવાગચ્છહ) જ્યાં તે માગધ તર્થ હતું, ત્યાં આ

चामराहिं उदधुन्वमाणीहिं २' तथा श्वेतवर चामरैरुतध्रुयमानैः २ सह वीज्यमानैः सह इति 'जक्खसहस्ससपरिवुडे' यक्खसहस्ससपरिवृत्तः. यक्षाणां देवविशेषाणां महन्ताभ्यां, संपरिवृत्तः चक्रवर्त्तिशरीरस्य व्यन्तरदेव सहस्रद्रयाधिष्ठितत्वात् 'वेसमणे चेव धणवड' वैश्रमण इव धनपतिः धनस्वामी कुवेर इव 'अमरवड मण्णभाए इह्दीए पडियकित्ती' अमरपति सन्निभया इन्द्रसदस्या ऋद्ध्या प्रथितकीर्तिः विस्तृतकीर्तिः 'गंगाए महाणईए दाहिणिल्लेणं कूलेणं' गङ्गायाः महानद्याः दाक्षिणात्येन दक्षिणदिगम्बस्थितेन कूलेन तटेन 'गामागरनगरखेटकब्बडमडवदोणमुहपट्टागममसंवाहमहस्समडिय' ग्रामा करनगरखेटकर्वटमडम्बदोणमुखपत्तनाऽऽश्रमसंवाहसहस्रपण्डिताम्, तत्र-ग्रामः-वृत्ति-वेष्टिताः, आकरः सुवर्णरत्नाद्युत्पत्तिस्थानम् नगर प्रसिद्धम् खेटम्-धुल्लिप्राकारपरि-

वह मागध तीर्थ था वहा पर आये जिम समय ये भरत राजा हाथी के ऊपर बैठे हुए इस तीर्थ की तरफ आ रहे थे—उस समय इनके ऊपर—सकोरंट कोरंट पुष्पों की माला से युक्त छत्र छत्रधारियों ने तान रक्खा था (सेयवरचामराहिं उदधुन्वमाणीहिं २ जक्खसहस्ससपरिवुडे वेसमणे चेव धणवड अमरवडसन्निभाए इह्दीए पडियकित्ती) इसके ऊपर चामर दोर ने बाँधे जन चार २ श्वेत श्रेष्ठ चामर दोर रहे थे क्योंकि चक्रवर्ती का शरीर दो हजार देवों से अधिष्ठित होता है कुवेर के जैसे ये धन के स्वामी थे और इन्द्र के जैसे ऋद्धि से ये विस्तृत कीर्ती वाले थे (गंगा महाणईए दाहिणिल्लेणं कूलेणं) ये महानदी गंगा के दाक्षिणात्यकूल से पूर्वदिग्वर्ती मागधतीर्थ की ओर चले उस समय ये (गामागरनगर खेटकब्बडमडवदोणमुह पट्टागम) वृत्ति वेष्टितग्रामों से, सुवर्ण रत्नादिक की उत्पत्ति स्थान रूप आकरों से, नगरों से, धुल्लिके प्राकार से परिवेष्टित खेटों से, क्षुद्र प्राकार से वेष्टित कर्वटों से ढाई कोश तक प्रामान्तर से रहित महन्तो (छोटा गाम) से, जल मार्ग एवं स्थल मार्ग से युक्त जननिवास रूप दोण-

ये वप्यते ओ भरत राजा हाथी ऊपर सवार थेने ओ तीर्थ तरफ आवी रह्या होता, ते समये तेमनी ऊपर सकोरंट-कोरंट पुष्पानी भागाथी युक्त छत्र छत्रधारीओओ ताण्णी राण्यु हुत्तुं (सेयवरचामराहिं उदधुन्वमाणीहिं २ जक्खसहस्ससपरिवुडे वेसमणे चेव धणवड अमरवड सन्निभाए इह्दीए पडियकित्ती) ओनी ऊपर चमर दोणनाराओ। चारचार श्वेत-श्रेष्ठ चामर दोणी रह्या होता ओ ऊपर देवोथी तेओ आवृत होता केभके. चक्रवर्तीओ शरीर ओऊपर देवोथी अधिष्ठित होथ छे कुवेर ओवा ओओ धनस्वामी होता ओने छत्रना ओवी ऋद्धिओ ओओ विस्तृत कीर्तिवाला होता. (गंगा महाणईए दाहिणि-ल्लेणं कूलेणं) ओओ महानदी गंगाना दाक्षिणात्य कूलथी पूर्व दिग्वर्ती मागध तीर्थ तरफ खाना थया ते समये ओओ (गामागरनगरखेटकब्बडमडवदोणमुहपट्टागम) वृत्त वेष्टित आओथी, सुवर्ण रत्नादिकना उत्पत्ति स्थान रूप आओथी, नगरओथी, धुल्लिना प्राकारओथी परिवेष्टित ओओथी, क्षुद्र प्राकारवेष्टित कर्वटोथी, अदी गाँव सुधी ग्रामान्तर-रहित मन्तोथी, जलमार्ग ओने स्थलमार्गओथी युक्त जननिवास रूप

वेष्टितम्, कर्बटम् क्षुद्रप्राकारवेष्टितं लघु नगरम्, मडम्बं—सार्द्धकोशद्वयान्तरेण ग्रामान्तरर-
हितम्, द्रोणमुखं—जलस्थलपथोपेतो जननिवासः, पत्तनं—समस्तवस्तु प्राप्तिस्थानम् शकटा-
दिभिर्नौभिर्वा यद्गम्यं, तत्पत्तनम्, यत् केवलं नौभिरेव गम्यं तत् पट्टनम् उक्तं च—

“पत्तनं शकटैर्गम्यं घोटकैर्नौभिरेव च । नौभिरेव च यद्गम्यं पट्टनं तत् प्रचक्षते ॥१॥

आश्रमः—तापसैरावासितः पश्चादपरोऽपि जनस्तत्रागत्य वसति, सवाहः—कृषी-
वलैर्धान्यरक्षार्थं निर्मितं दुर्गभूमिस्थानम्, पर्वतशिखरस्थितजननिवासः समागतप्र-
भूतपथिकजननिवासो वा तेषां सङ्क्षैर्मण्डिताम् (धिमियमेङ्गणीयं वसुहं अभिजि-
णमाणे अभिजिणमाणे) स्तिमितमेदनीकां वसुधाम् अभिजयन् अभिजयन्, तत्र नृप-
स्य प्रजापि यत्स्यात् स्तिमिता भयरहितत्वेन स्थिरा मेदिनी—मेदिन्याश्रितजनो
यस्यां सा तथा ताम् एवंविधां वसुधाम् अभिजयन् अभिजयन् तत्रत्याधिप वशी-
करणेन स्ववशे कुर्वन् २ इत्यर्थः । (अग्गाइं वराइं रयणाइं पडिच्छमाणे पडिच्छमाणे)
अग्र्याणि वराणि अत्यन्तमुत्कृष्टानि रत्नानि तत्तज्जातिप्रधानवस्तूनि प्रतीच्छन् प्रतीच्छन्
गृह्णन् २ (तं दिव्यं चक्ररयणं अणुगच्छमाणे अणुगच्छमाणे) तदिव्यं चक्ररत्नम् अनु-
गच्छन् अनुगच्छन् चक्ररत्नप्रदर्शितमार्गेण चलन् चलन्नित्यर्थः (जोयणंतरियाहिं

मुखो से समस्त वस्तुओं की प्राप्ति के स्थान रूप पत्तनों से अथवा शकटादि से या नौका से
गम्यरूप पत्तनों से केवल नौका से ही गम्यरूप पट्टनो से तपसी जनो द्वारा आवासित पश्चात्
अपरजन द्वारा भी ठहरने योग्य ऐसे आश्रमो से कृषीवलौ पर्वतशिखर स्थित जननिवासरूप
अथवा समागतप्रभूत पथिक जन निवासरूप सवाहो से मण्डित (धिमियमेङ्ग यं वसुहं अभिजिण
माणे २) ऐसी स्थिर प्रजाजनोवाली वपुधा को वहां के अधिपति को अपने वश में करते हुए
(अग्गाइ वराइ रयणाइं पडिच्छमाणे २) एवं उनसे नगराने के रूप में उत्कृष्ट रत्नों को-तत्तज्जा-
ति में प्रधान मून वस्तुओं को स्वीकार करते हुए (त दिव्य चक्ररयण अणुगच्छमाणे) तथा
चक्ररत्न द्वारा प्रदर्शित मार्ग से चले हुए (जोयणतरियाहिं वरइहिं वसमाणे वसमाणे) और

द्रोण मुखो, समस्त वस्तुओं की प्राप्ति स्थान रूप पत्तनो अथवा शकटादिथी अथवा
नौकाओथी गम्य रूप पत्तनोथी, शकट नौकाओथी अ गम्यरूप पट्टनोथी, तापसी जनो
वडे आवासित तेम अ अपर जनो वडे पथु निवास योग्य अथवा आश्रमोथी, कृषको वडे
धान्यरक्षार्थं निर्मित दुर्गभूमि रूप सवाहोथी अथवा पर्वत शिखर स्थित जन
निवास रूप अथवा समागत प्रभूत पथिक जन निवास रूप सवाहोथी मण्डित (धिमिय
मेङ्गणीयं वसुहं अभिजिणमाणे २) ओरी स्थिर प्रजागणी वसुधाने, त्याना अधिपतिने
पोताने अ न करता (अग्गाइं वराइं रयणाइं पडिच्छमाणे २) तेमअ तेमनी पासेथी
नगराणाना रूपमा उत्कृष्ट रत्नाने—तत्तज्जातिमा प्रधान मून वस्तुओने स्वीकारता स्वीकारता
(त दिव्य चक्ररयणं अणुगच्छमाणे) तेमअ चक्ररत्न द्वारा प्रदर्शित मार्गोथी आश्रिता
(जोयणंतरियाहिं वसणीहिं वसमाणे) अने ओक ओक ओजन उपर पोतानो पडाव

(१) पत्तनं शकटैर्गम्यं घोटकैर्नौभिरेवच नौभिरेवच यद्गम्यं पट्टनं तत् प्रचक्षते”

वसहीहि वसमाणे वसमाणे) योजनान्तरिताभिर्व्यमतिभिः— विश्रामैः वसन् वसन् एक-
स्माद्विश्रामात् चतुः क्रोशात्मकं योजनं गत्वा परं विश्रामम् उपादत्ते इत्यर्थः (जेणेव
मागहतिस्थे तेणेव उवागच्छइ) यत्रैव मागधतीर्थं तत्रैव उपागच्छति (उवागच्छित्ता)
उपागत्य (मागहतिस्थस्म अदूरसामंते दुवालसजोयणायामं णव जोयणवित्थिणं
वरणगरसरिच्छ खंधावारनिवेसं करेइ) मागधतीर्थस्य अदूरसामन्ते दूरं च सामन्तं
च दूरसामन्तं नोऽन्यत्र नातिदूरे नातिमभीषे यथोचितस्थाने द्वादशयोजनायामं नव-
योजनविस्तीर्णं वरनगरसदृशं विजयस्वरुन्धावारनिवेसं भैरवनिवासस्थानं करोति (क-
रित्ता) कृत्वा (वड्ढइरण्यण सहावेइ) वर्द्धकिरत्तन—सूत्रधारमुत्थं शब्दयति आह्वयति
(सहावित्ता) शब्दयित्वा (एव वयासीं स्तिप्पामेव भो देवानुप्पिया !) एव वक्ष्यमाण-
प्रकारेण अनादीत् क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिय ! (मम आवासं पोसहसालं च करेहि)
मम कृते आवासं निवासस्थानं पौषधशाला च कुरु (करित्ता) कृत्वा (ममेदमाण-

एक एक योजन पर अपना पडाव डालने हुए (जेणेव मागहतिस्थे तेणेव उवागच्छइ) जहा वह
मागधतीर्थ था वहा पर आये (उवागच्छित्ता) वहा आकर के इन्होने (मागहतिस्थस्म अदूरसामंते
दुवालसजोयणायामं णव जोयणवित्थिणं वरणगरसरिच्छ विजयखंधावारनिवेसं करेइ) उस मागध-
तीर्थ के अदूरसामंत प्रदेश में—न अतिदूर और नहि अति निकट ऐसे उचित स्थान में—अपने—नौ
योजन का विस्तार बाछा एव १२ योजन की लम्बाई वाला कटक को—सैन्य का—निवासस्थान
बनाया अर्थात् पूर्वोक्त प्रमाणवाले स्थानपर अपना सैन्य ठहराया (करित्ता वड्ढइरण्यणं सहावेइ)
उप स्थान पर सैन्य ठहराकर फिर उसने सूत्रधारों के मुखिया को बुलाया (सहावित्ता एवं
वयासीं) और बुलाकर उससे ऐसा कहा—(स्तिप्पामेव भो देवानुप्पिया ! मम आवासं पोसहसा-
लं च करेहि) हे देवानुप्रिय ! तुम शीघ्र ही मेरे लिए एक निवास स्थान और पौषधशाला का
निर्माण करो (करित्ता ममेयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि) निर्माण करके फिर मुझे मेरी आज्ञा के अनु-

नाशता (जेणेव मागहतिस्थे तेणेव उवागच्छइ) जथा मागध तीर्थं उतु, त्यां गया
(उवागच्छित्ता) त्यां आवीने तेमण्णे (मागहतिस्थस्म अदूरसामंते दुवालसजोयणायामं
णव जोयणवित्थिणं वरणगरसरिच्छ विजय खंधावार निवेसं करेइ) ते मागध तीर्थं नी
अदूरमभीषं प्रदेशमां—अर्थात् न अति दूर के न अति निकट जेवा उचित स्थानमा-
पोताना नव योजन विस्तार वाणा अने बार योजन लम्बाई वाणा कटक—सैन्य—नुं
निवास स्थान बनाओ जेटवे के पूर्वोक्त प्रमाणवाणा स्थानमां तेण्णे पोताना सैन्येना पडाव
नाओ. (करित्ता वड्ढइरण्यण सहावेइ) ते स्थान पर सेनाने सुखाम आपीने पछी तेण्णे
सूत्रधारानां मुखिया ने बोलाओ (सहावित्ता एवं वयासीं) अने बोलावीने तेण्णे आ
प्रमाणे कहुं— (स्तिप्पामेव भो देवानुप्पिया ! मम आवासं पोसहसालं च करेहि) हे
देवानुप्रिय ! तमे शीघ्र मारा माटे जेके निवास स्थान अने पौषधशालातु निर्माण करो.
(करित्ता ममेयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि) निर्माण करीने पछी अने जे आज्ञा सुखाम काम

ત્તિયં પચ્ચપ્પિણાહિ) મમ एतामाज्ञसिकां प्रत्यर्पयेति (तएणं से वड्ढइरयणे भर-
हेणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे इट्ठतुट्ठ चित्तमाणंदिए पीईमणे जाव अंजलिं कट्ठु
एवं सामी तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिमुणेइ) ततः खलु स वर्द्धकिरत्नो
भरतेन राज्ञा एवमुक्तः सन् ह्रष्टतुष्ट चित्तानन्दितः प्रीतिमनाः यावत् पदात् कर-
तलपरिगृहीतं दशनखं शिरसावर्त मस्तके अञ्जलिं कृत्वा एवं स्वामिन् तथेति इत्यु-
त्त्वा आज्ञया विनयेन वचनं प्रतिशणोति अङ्गी करोति (पडिमुणित्ता) प्रतिश्रुत्य
स्वीकृत्य (भरहस्स रण्णो आवसहं पोसहसालं च करेइ) भरतस्य राज्ञ आवासं पौष-
धशालां च करोति (करित्ता) कृत्वा सम्पाद्य (एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणाति)
एताम् उक्तविधाम् आज्ञसिकां राजाज्ञा क्षिप्रमेव प्रत्यर्पयति परावर्तयति (तए णं से
भरहे राया आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ) ततः खलु स भरतो राजा
आभिषेक्यात् हस्तिरत्नात् प्रत्यवरोहति अवत्तरति (पच्चोरुहित्ता) प्रत्यवरुह्य अवतीर्य

સાંર કામ હો જાને કી સુવર દો-(ત ઇણ સે વડ્ઢઇરયણે ભરહેણ રણ્ણાએવં વુત્તે સમાણે ઇટ્ઠ તુટ્ઠ
ચિત્તમાણંદિય પીઈમણે જાવ અંજલિં કટ્ઠુ એવ સામી તહત્તિ સામી આણાએ વિણએણં વયણં પાંટ-
મુણેઈ) હિસ પ્રકાર ભરત કે દ્વારા કહા ગયા વર્દ્ધકિરત્ન ઇટ્ઠતુટ્ઠ હોતા હુઆ અપને ચિત્ત મેં
આનન્દિત હુઆ ડસકે મનમેં પ્રીતિ જગી યાવત્ અંજલિકો જોડ્ઢકર ડસને ફિર ઇસા કહા હે
સ્વામિન્ ! જૈસી આપને આજ્ઞા દા હૈ ડસી કે અનુસાર કામ હોગા હિસ તરહ કહકર ડસને
પ્રમુ કી આજ્ઞા કો બઢી વિનય કે સાથ સ્વીકાર કિયા (પડિમુણિત્તા ભરહસ્સ રણ્ણો આવ-
સહં પોસહસાલં ચ કરેઈ) આજ્ઞા સ્વીકાર કર કે ફિર ડસને વહાં સે આકર ભરત રાજા કે નિમિ-
ત્ત નિવાસ સ્થાન ઓર પૌષધશાલા કા નિર્માણ કિયા (કરિત્તા ઇયમાણત્તિયં ચિપ્પામેવ પચ્ચપ્પિ-
ણંતિ) નિર્માણ કાર્ય સમાપ્ત હોતે હો ફિર ડસને રાજા કી આજ્ઞાયાવાત્ પાલિત હો ચુકી હૈ .
હિસકી સુવર શોખ હો ભરત રાજા કે પાસ પહુવા દો । (તઇણં સે ભરહે રાયા આભિસેક્કાઓ-
હત્થિરયણાઓ પચ્ચોરુહઈ) ભરત રાજા અપની કૃતાજ્ઞાનુસાર કાર્ય પૂરા હુઆ સુનકર અભિષેક

સમ્પન્ન થઈ જવાની સૂચના આપો. (ત ઇણ સે વડ્ઢઇરયણે ભરહેણ રણ્ણાએવં વુત્તે સમાણે
ઇટ્ઠ-તુટ્ઠ ચિત્તમાણંદિય પીઈમણે જાવ અંજલિં કટ્ઠુ એવ સામી તહત્તિ સામી આણાએ
વિણએણં વયણં પાંટમુણેઈ) અ પ્રમાણે ભરત રાજા વડે આજ્ઞા તે વર્દ્ધકિરત્ન ઇટ્ઠ-તુટ્ઠ
થતો પોતાના ચિત્તમા અનન્દિત થયો. તેના મનમા પ્રીતિ ઉત્પન્ન થઈ, યાવત્ અ અલિ
બેઢીને પછી તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું-હે સ્વામિન્ ! હે પ્રમાણે આપશ્રીએ અજ્ઞા કરી છે,
તે મુજબ કામ સમ્પન્ન થશે આ પ્રમાણે કહીને તેણે પ્રમુતી આજ્ઞાને બહુજ વિનય પૂર્વક
સ્વીકાર કરી (પડિમુણિત્તા ભરહસ્સ રણ્ણો આવસહં પોસહસાલં ચ કરેઈ) આજ્ઞા સ્વી-
કાર કરીને પછી તેણે ત્યાથી આવીને ભરત રાજા માટે નિવાસ સ્થાન અને પૌષધશાળાનું
નિર્માણ કયું (કરિત્તા ઇયમાણત્તિયં ચિપ્પામેવ પચ્ચપ્પિણંતિ) નિર્માણ કાર્ય સમ્પન્ન થતા
જ તેણે રાજાજાનું પાલન થઈ ચૂક્યું છે તે અંગેની ખબર રાજા પાસે પહોંચાડી (ત ઇણં
સે ભરહે રાયા આભિસેક્કાઓ હત્થિરયણાઓ પચ્ચોરુહઈ) ભરત મહારાજા પોતાની આજ્ઞા

(જેણેવ પોસહસાલા તેણેવ ઉવાગચ્છડ) યત્રૈવ પોપધશાલા તત્રૈવોપાગચ્છતિ (ઉપાગચ્છિત્તા) ઉપાગત્ય (પોસહસાલં અણુપવિસદ) પોપધશાલા મનુપ્રવિગતિ (અણુપવિગિત્તા) અનુપ્રવિગત્ય (પોસહસાલં પમજ્જડ) પોપધશાલા પ્રમાર્જયતિ (પમજ્જિત્તા) પ્રમાર્જ્ય (દ્વમસંધારગં સંધરદ) દ્વમસંસ્તારકં દ્વમ્માસનં વિસ્તારયતિ (સંધરિત્તા) મંસ્તીર્ય (દ્વમસંધારગ દુરુહડ) દ્વમસંસ્તારકમ્ અર્ધતૃણહસ્તપરિમિત દ્વમ્મામનમ્ દુરુહતિ આગેહનિ ઉપગિગતિ (દુરુહિત્તા) આરુહ્ય (માગહતિત્થકુમારસ્સ દેવસ્સ અદ્દમમત્તં પગિણ્હઈ) માગધતીર્યકુમારસ્સ સાધનાય અષ્ટમમત્તં પ્રગૃહ્ણતિ તત્ર અષ્ટમમત્તમિતિ ઉપગાસત્રયમુચ્યતે તદ્ અષ્ટમમત્તં પ્રગૃહ્ણતિ (પગિણ્હિત્તા) પ્રગૃહ્ય (પોસહસાલાપ પોસહિપ, વંમયાગી, ઉમ્મુક્કમણિસુવર્ણે વવગયમાલાવર્ણગવિલેપણે, નિવિલ્લત્તસત્થમુસલે, દ્વમસંધારોવગપ્ એગે અબીપ્ અદ્દમમત્તં પહિજાગરમાણે પહિજાગરમાણે) પોપધશાલાયા પોપધિકુઃ પોપધવાન્ બ્રહ્મચારી ઉમ્મુક્તમણિસુવર્ણઃ—ત્યક્તમણિસુવર્ણામરણઃ, વ્યપગતમાલાવર્ણકવિલેપનઃ, તત્ર વ્યપગતાનિ ત્યક્તાનિ માલાવર્ણકવિલેપનાનિ—સક્ક ચન્દનવિલેપનાનિ યેન સ તથા, નિશ્ચિન્ત-

યોગ્ય પદ્દ હોયો સે નાંચે ઉતરે ઓર (જેણેવ પોમહસાલા તેણેવ ઉવાગચ્છડ) જહા પોપધશાલા થો ડસ ઓર વલ દિયે (ઉવાગચ્છિત્તા પોસહસાલં અણુપવિસદ) વટાંઆકર વે પોપધશાલા મેં પ્રવિષ્ટ હુપ (અણુપવિસિત્તા) પ્રવિષ્ટ હોકરુકે ઉન્હોને (પોસહસાલં પમજ્જડ) પોપધશાલા કા પ્રમાર્જન ક્રિયા । (પમજ્જિત્તા દ્વમસંધારગ સંધરદ) પ્રમાર્જન કરકે ફિર વહા પર ઉન્હોને અડાઈ હાથ કા દર્મ કા આસન વિઠાયા (સંધરિત્તા દ્વમસંધારગ દુરુહડ) વિઠાકર ફિર વે વૈઠ ગયે (દુરુહિત્તા માગહતિત્થકુમારસ્સ દેવસ્સ અદ્દમમત્ત પગિણ્હઈ) વહા વૈઠ કર ઉન્હો ને માગધતીર્ય કુમાર કો સાધના કે લિયે તોન ઉપવાસ ધારણ ક્રિયે (પાગાળહત્તા પોસહસાલાપ પોસહિપ વમયાગી ઉમ્મુક્કમણિસુવર્ણે વવગયમાલાવર્ણગવિલેપણે નિવિલ્લત્તસત્થમુસલે દ્વમસંધારોવગપ્ ણો અબીપ્ અદ્દમમત્તં પહિજાગરમાણે ૨) તોન ઉપવાસ ધારણ કરકે વે પોપધશાલા, બ્રહ્મચારી એવ ઉમ્મુક્તમણિ સુવર્ણામરણવાલેં હોગયે ઉન્હોને સક્ક ચન્દનવિલેપન સવ છોડ

શુભમ કાર્ય સમ્પન્ન થઈ ચૂક્યું છે તે વાત સાંભળીને અભિપેક્ષ થોગ્ય પદ્દહાથી ઉપરથી નીચે ઉતર્યા અને (જેણેવ પોસહસાલા તેણેવ ઉવાગચ્છડ) જ્યાં પોપધશાલા હતી તે તરફ રવાના થયા (ઉવાગચ્છિત્તા પોસહસાલં અણુપવિસદ) ત્યાં આવીને તેઓ પોપધશાલામાં પ્રવિષ્ટ થયા. (અણુપવિસિત્તા) પ્રવિષ્ટ થઈને તેમણે (પોસહસાલં પમજ્જડ) પોપધશાલાનું પ્રમાર્જન કર્યું (પમજ્જિત્તા દ્વમસંધારગં સંધરદ) પ્રમાર્જન કરીને પછી તેમણે ત્યાં એકી હાથ પ્રમાણુ બેટલું દર્માસન પાથર્યું (સંધરિત્તા દ્વમસંધારગ દુરુહડ) પાથરીને પછી તેઓ તે આસન ઉપર બેસી ગયા (દુરુહિત્તા માગહતિત્થ કુમારસ્સ દેવસ્સ અદ્દમમત્તં પગિણ્હઈ) ત્યાં બેસીને તેમણે માગધતીર્ય કુમારની સાધના માટે ત્રણ ઉપવાસો ધારણ કર્યા (પગિણ્હિત્તા પોસહસાલાપ પોવહિપ વમયાગી ઉમ્મુક્કમણિસુવર્ણે વવગયમાલાવર્ણગવિલેપણે અબીપ્ અદ્દમમત્ત પહિજાગરમાણે) તથા ઉપવાસો—અદ્દમ ધારણ કરીને તેઓ પોપધવાનાં બ્રહ્મચારી અને ઉમ્મુક્તપણે સુવર્ણામરણવાળા થઈ ગયા તેમણે કંઈ-ચંદન વિલેપન વગેરે

ત્તિયં પચ્ચપ્પિણાદિ) મમ एतामाज्ञसिकां प्रत्यर्पयेति (तएणं से बह्दइरयणे भर-
हेणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ चित्तमाणंदिए पीईमणे जाव अंजलिं कट्ठु
एवं सामी तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ) ततः खलु स वर्द्धकिरत्नो
भरतेन राज्ञा एवमुक्तः सन् दृष्टुष्ट विचानन्दितः प्रीतिमनाः यावत् पदात् कर-
तलपरिगृहीतं दशनखं शिरसावर्त मस्तके अञ्जलिं कृत्वा एवं स्वामिन् तथेति इत्यु-
त्त्वा आज्ञया विनयेन वचनं प्रतिशृणोति अङ्गी करोति (पडिसुणिच्चा) प्रतिश्रुत्य
स्वीकृत्य (भरहस्स रण्णो आवसहं पोसहसालं च करेइ) भरतस्य राज्ञ आवासं पौष-
धशालां च करोति (करित्ता) कृत्वा सम्पाद्य (एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चपिणाति)
एताम् उक्तविधाम् आज्ञसिकां राजाज्ञा क्षिप्रमेव प्रत्यर्पयति परावर्तयति (तए णं से
भरहे राया आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ) ततः खलु स भरतो राजा
आभिषेक्यात् हस्तिरत्नात् प्रत्यवरोहति अवत्तरति (पच्चोरुहित्ता) प्रत्यवरुह्य अवतीर्य

સૌર કામ હો જાને કી સ્વર દો—(ત એણં સે બહ્દઇરયणे भरहेणं रण्णाएव वुत्ते समाणे हट्ठ तुट्ठ
चित्तमाणंदिए पीईमणे जाव अंजलिं कट्ठु एव सामी तहत्ति सामी आणाए विणएणं वयणं पाट-
सुणेइ) इस प्रकार भरत के द्वारा कहा गया वर्द्धकिरत्न दृष्टुष्ट होता हुआ अपने चित्त में
आनन्दित हुआ उसके मनमें प्रीति जगी यावत् अंजलिको जोड़कर उसने फिर ऐसा कहा है
स्वामिन् । जैसी आपने आज्ञा दी है उसी के अनुसार काम होगा इस तरह कहकर उसने
प्रभु की आज्ञा को बड़ी विनय के साथ स्वीकार किया (पडिसुणिच्चा भरहस्स रण्णो आव-
सहं पोसहसालं च करेइ) आज्ञा स्वीकार कर के फिर उसने वहाँ से आकर भरत राजा के निमि-
त्त निवास स्थान और पौषधशाला का निर्माण किया (करित्ता एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चपि-
णति) निर्माण कार्य समाप्त होते ही फिर उसने राजा को आज्ञायथावत् पालित हो चुकी है .
इसकी खबर शीघ्र हो भरत राजा के पास पहुँचा दो । (तएणं से भरहे राया आभिसेक्काओ-
हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ) भरत राजा अपनी कृताज्ञानुसार कार्य पूरा हुआ सुनकर अभिषेक

સમ્પન્ન થઈ જવાની સૂચના આપો (ત એણં સે બહ્દઇરયणे भरहेणं रण्णाएव वुत्ते समाणे
हट्ठ-तुट्ठ चित्तमाणंदिए पीईमणे जाव अंजलिं कट्ठु एव सामी तहत्ति सामी आणाए
विणएणं वयणं पाटसुणेइ) अ प्रमाणे भरत राजा वडे आज्ञासे ते वर्द्धकिरत्न दृष्ट-
तुष्ट होता पोताना चित्तमा अनन्ति । थयो तेना मनमा प्रीति उत्पन्न थई, यावत् अञ्जलि
जोड़ने की तेथे आ प्रमाणे कथु-डे स्वामिन् । अ प्रमाणे आपञ्चीजे अज्ञा करी छे.
ते सुज्जण काम सम्पन्न थये आ प्रमाणे कडीने तेथे प्रभुनी आज्ञाने अहुँन विनय पूर्वक
स्वीकार करी (पडिसुणिच्चा भरहस्स रण्णो आवसहं पोसहसालं च करेइ) आज्ञा स्वी-
कार करीने पछी तेथे त्याथी आवीने भरत राजा माटे निवास स्थान अने पौषधशाला
निर्माण कथु (करित्ता एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चपिणति) निर्माण कार्य सम्पन्न थता
अ तेथे राजाज्ञातु पालन थई चूथु छे ते अगेनी जगर राजा पासो पडोयाडी (त एणं
से भरहे राया आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ) भरत महाराज पोतानी आज्ञा

(જેનેવ પોસહસાલા તેનેવ ઉવાગચ્છડ) યત્ર પૌપથગાલા તત્રવોપાગચ્છતિ (ઉવાગચ્છત્તા) ઉપાગત્ય (પોસહસાલં અણુપવિસહ) પૌપથગાલા મનુપ્રવિગતિ (અણુપવિગિત્તા) અનુપ્રવિગત્ય (પોસહસાલં પમજ્જહ) પૌપથગાલા પ્રમાર્જયતિ (પમજ્જિત્તા) પ્રમાર્જ્ય (દબ્બમસંથારગ સંથરહ) દબ્બમસંસ્તારકં દબ્બમાસનં નિસ્તારયતિ (મથગિત્તા) મંસ્તીર્ય (દબ્બમસંથારગ દુરુહહ) દબ્બમસંસ્તારકમ્ અર્પત્તુણદ્વસ્તપરિમિત દબ્બમાસનમ્ દુરુહતિ આરોહતિ ઉપવિગતિ (દુરુહિત્તા) આરુહ (માગહતિત્થકુમારસ્સ દેવસ્સ અટ્ટમમત્તં પગિણ્હરૂ) માગધતીર્યકુમારસ્સ સાધનાય અષ્ટમમત્તં પ્રગૃહ્ણતિ તત્ર અષ્ટમમત્તમિતિ ઉપવાસત્રયમુચ્ચતે તદ્ અષ્ટમમત્તં પ્રગૃહ્ણતિ (પગિણ્હિત્તા) પ્રગૃહ્ય (પોસહસાલાં પોસહિં, વંમયાગી, ઉમ્મુક્કમણિસુવર્ણે વવગયમાલાવર્ણગવિલેવણે, નિક્કિલ્લત્તસત્થમુસલે, દબ્બમસંથારોવગં એ એવીં અટ્ટમમત્તં પહિજાગરમાણે પહિજાગરમાણે) પૌપથગાલાયા પૌપથિકઃ પૌપથવાન્ બ્રહ્મચારી ઉમ્મુક્કમણિસુવર્ણઃ—ત્યક્તમણિસુવર્ણામરણઃ, વ્યપગતમાલાવર્ણકવિલેપનઃ, તત્ર વ્યપગતાનિ ત્યક્તાનિ માલાવર્ણકવિલેપનાનિ—સક્ ચન્દનવિલેપનાનિ યેન સ તથા, નિશ્પિત્ત-

યોગ્ય પદ હોયો સે નોંચે ડનરે ઓર (જેનેવ પોમહસાલા તેનેવ ઉવાગચ્છડ) જહાં પોપથગાલા થો ડસ ઓર વલ દિયે (ઉવાગચ્છિત્તા પોસહસાલં અણુપવિસહ) વહાં આકર વે પોપથગાલા મેં પ્રવિષ્ટ હુય (અણુપવિસિત્તા) પ્રવિષ્ટ હોઠરુકે ડન્હોને (પોસહમાલં પમજ્જહ) પૌપથગાલા કા પ્રમાર્જન કિયા । (પમજ્જિત્તા દબ્બમસંથારગ સંથરહ) પ્રમાર્જન કરકે ફિર વહા પર ડન્હોને બઢાઈ હાથ કા દર્મ કા આસન વિઝાયા (સંથરિત્તા દબ્બમસંથારગ દુરુહહ) વિઝાકર ફિર વે વૈઠ ગયે (દુરુહિત્તા માગહતિત્થકુમારસ્સ દેવસ્સ અટ્ટમમત્ત પગિણ્હરૂ) વહા વૈઠ કર ડન્હો ને માગધતીર્ય કુમાર કો સાધના કે લિયે તોન ઉપવાસ ધારણ કિયે (પાંગાણ્હિત્તા પોસહસાલાં પોસહિં વમયાગી ઉમ્મુક્કમણિસુવર્ણે વવગયમાલાવર્ણગવિલેવણે નિક્કિલ્લત્તસત્થમુસલે દબ્બમસંથારોવગં ણો એવીં અટ્ટમમત્તં પહિજાગરમાણે ૨) તોન ઉપવાસ ધારણ કરકે વે પોપથગાલા, બ્રહ્મચારી એવ ઉમ્મુક્કમણિ સુવર્ણામરણવાલેં હોગયે ડન્હોને સક્ ચન્દનવિલેપન સવ છોહ

સુબ્બ કાર્ય સમ્પન્ન થઈ ચૂકયુ છે તે વાત સાલગાને અભિપેક્ષ યોગ્ય પદ્ધતી ઉપરથી નીચે ઉતર્થા અને (જેનેવ પોસહસાલા તેનેવ ઉવાગચ્છડ) ન્યા પૌપથગાલા હતી તે તરફ રવાના થયા (ઉવાગચ્છિત્તા પોસહસાલં અણુપવિસહ) ત્યા આવીને તેઓ પૌપથગાલામાં પ્રવિષ્ટ થયા. (અણુપવિસિત્તા) પ્રવિષ્ટ થઈને તેમણે (પોસહસાલં પમજ્જહ) પૌપથગાલા પ્રમાર્જન કર્યું (પમજ્જિત્તા દબ્બમસંથારગ સંથરહ) પ્રમાર્જન કરીને પછી તેમણે ત્યાં એકી હાથ પ્રમાણુ બેઠહુ હર્માસન પાથર્યું (સંથરિત્તા દબ્બમસંથારગ દુરુહહ) પાથરીને પછી તેઓ તે આસન ઉપર બેસી ગા । (દુરુહિત્તા માગહતિત્થ કુમારસ્સ દેવસ્સ અટ્ટમમત્તં પગિણ્હરૂ) ત્યા બેસીને તેમણે માગધતીર્ય કુમારની સાધના માટે ત્રણ ઉપવાસો ધારણ કર્યા (પગિણ્હિત્તા પોસહસાલાં પોસહિં વમયાગી ઉમ્મુક્કમણિસુવર્ણે વવગયમાલાવર્ણગવિલેવણે એવીં અટ્ટમમત્ત પહિજાગરમાણે) તથા ઉપવાસો—અટ્ટમ ધારણ કરીને તેઓ પૌપથગાલા બ્રહ્મચારી અને ઉમ્મુક્કમણિ સુવર્ણામરણવાળા થઈ ગયા તેમણે સક્-ચન્દન વિલેપન વગેરે

शस्त्रमुसलः, निक्षिप्तं हस्ततो त्रिमुक्तं शस्त्रं मुपलं च येन स तथा, दध्मसंस्तारोपगनः
 सार्धद्वयहस्तपरिमितदध्मसोनोपविष्टः एकः आन्तर व्यक्तगादि सहायवियोगात्,
 अद्वितीयः तथात्रिध पदात्यादि सहायविरहात् अष्टमभक्तं प्रतिज्ञाग्रन् प्रतिज्ञाग्रन्
 पालयन् पालयन् विहरति तिष्ठति (तए णं से भरहे राया अष्टमभक्तसि परिणम-
 माणंसि पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ) ततः खलु स भग्नो राजा अष्टमभक्ते परि-
 णमति पूर्यमाणे परिपूर्णप्राये सति पोषधशालानः प्रतिनिष्क्रामति-निर्गच्छति (पडि-
 णिक्खमित्ता) प्रतिनिष्क्रम्य (जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ)
 यत्रैव बाह्योपस्थानशाला तत्रैवोपागच्छति (उवागच्छिता) उपागत्य (कोडुवियपुरि
 से सदावेइ) कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति आह्वयति (सदावित्ता) शब्दयित्वा आह्वय
 (एवं वयासी) एव वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत् उक्तवान् (खिप्पामेव भो देवानुप्पिया
 (हयगजरहपवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेण सण्णाहेइ) क्षिप्रमेव शीघ्रमेव भो देवानु-
 प्रियाः ! हयगजरहपवरयोधकलित्तम्-अश्वहस्तिरथप्रवरसैनिकैः युक्ता चातुरङ्गिणीं सेनां

दिया हाथ से शस्त्र छोड़ दिया मुसल छोड़ दिया २॥ हाई हाथ प्रमाण दर्मासन पर विराजमान
 वे आन्तरिक व्यक्त रागादिक के परिहार कर देने से एक अद्वितीय — होगये उनके पास में उस
 समय सेना आदि का एक भी जन नहीं रहा इस प्रकार से उन्होंने सविधि पोषध का पालन
 किया (तएणं से भरहे राया अष्टमभक्तसि परिणम माणंसि पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ । सविधि
 पोषधका जब वे पालन कर चुके अर्थात् उसकी आराधना समाप्त हो चुकी — तब वे पोषध-
 शाला से बाहर आये (पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ)
 पोषधशाला से बाहर आकर फिर वे जहाँ बाह्य उपस्थान शाला था वहाँ पर आये (उवाग-
 च्छित्त कोडुवियपुरिसे सदावेइ) वहाँ आकरके उन्होंने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया (सदा-
 वित्ता एवं वयासी—) बुलाकरके के उनसे उन्होंने ऐसा कहा—(खिप्पामेव भो देवानुप्पिया ।
 हय गय रह पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेण सण्णाहेइ) हे देवानुप्रियो ! तुमलोग शीघ्र-ही

सर्वे त्यल्ल दीधा हाथमाथी शस्त्र त्यल्ल दीधु, मुसल त्यल्ल दीधु, आदि हाथ प्रमाण दर्मासन
 उपर विराजमान ते भरत महाराज आन्तरिक व्यक्त रागादिकना परिहारथी अद्वितीय धर्म
 गया तेमनी पासो ते समये सेना वगेरे ने। जोक पणु भाषुस हुतो नहि आ प्रसाण्णे
 तेमण्णे यथाविधि पोषधनु पालन कथुं (त एण से भरहे राया अष्टमभक्तसि परिणम-
 माणंसि पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ) यथाविधि ज्यारे ते पोषधनु पालन करी यूथ्यो
 जेउत्ते के तेनी आराधना पूरी थई थूरी त्यारे तेजो पोषधशालाभाथी अडार आण्यो
 (पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ) पोषधशालाभाथी
 अडार आणीने पग्री तेजो ज्या आण्यो उपस्थान शाला हुती त्या आण्यो, (उवागच्छित्त
 कोडु वियपुरिसे सदावेइ) त्या आणीने तेमण्णे कौटुम्बिक पुरुषीने बोलाण्यो (सदावित्ता
 एव वयासी) बोलाणीने तेमण्णे आ प्रमाणे कलु (खिप्पामेव भो देवानुप्पिया । हय गय
 रह पवर जोहकलिय चाउरंगिणिं सेण सण्णाहेइ) हे देवानुप्रियो ! तमे शीघ्रमेव हय

सन्नाहयत—सज्जी कुरुत, (चाउघटं आसरहं पडिकप्पेह) तथा चतस्रो घण्टा अवल-
म्बिता यत्र स तथा तादृशम् अश्वरथम्, अश्ववहनीयो रथः अश्वरथः तं प्रतिकल्प-
यत सज्जी कुरुत (त्तिकट्टु मज्जनघरं अणुपविसइ) इतिकृत्वा मज्जनगृहमनुप्रविशति
(अणुपविसित्ता) अनुप्रविश्य (समुत्त तद्देव जाव धवलमहामेह णिग्गए जाव मज्जनघराओ
पडिणिक्खमइ) समुत्त तथैव यावन् धवलमहामेघ निर्गतो यावन् मज्जनगृहात् प्रति-
निष्क्रामति, तत्र समुत्तजालाकुलामिगमे इत्यादि विशेषणविशिष्टे स्नानमण्डपे
नानामणिरत्नभक्तिचित्रे स्नानपीठे सुखेनोपविश्य स्नपितः स्नानानन्तरं च धवलमहा-
मेघान्निर्गतः शशीय प्रियदर्शनो नरपतिः भरतः सुधाधवलीकृतात् मज्जनगृहात् प्रति-
निष्क्रामतीति भावः (पडिणिक्खमित्ता) प्रतिनिष्क्रम्य (द्वयगयरहपवरवाहण जाव
सेणावइ पडियकित्ति जेणेव बाहिरिया उवट्टाणमाला जेणेव चाउघटं आसरहे तेणेव
उवागच्छइ) द्वयगजरथप्रारवाहनं यावत् सेनापतिप्रथितकीर्त्तिः यत्रैव बाह्योपस्थानमाला
यत्रैव चातुर्घटोऽश्वरथः तत्रैवोपागच्छति, व्याख्या च पूर्ववत् बोध्या (उवागच्छित्ता)
उपागत्य (चाउघटं आसरहं) चातुर्घटम् अश्वरथं दुरुढे आरोहति स्म इति ॥सू० ५॥

हय गज, रथ एव श्रेष्ठ याघाओ से युक्त सेना को तैयार करो—(चाउघटं आसरहं पडिकप्पेह)
तथा जिसमें चार घटे लट्क रहे हो ऐसे अश्वरथ को—अश्वो द्वारा चरने वाले रथ को मज्जन
करो (त्तिकट्टु) इस प्रकार कहकर वे (मज्जनघरं अणुपविसइ) स्नान गृह में प्रविष्ट हो गये
(अणुपविसित्ता समुत्त तद्देव जाव धवल महामेहणिग्गए जाव मज्जनघराओ पडिणिक्खमइ) वहाँ
जाकर वे पूर्वोक्त मुक्ता जाला कुल आदि विशेषणों से अभिराम स्नान मंडप में रखे हुए पूर्वोक्त”
नानामणि भक्तिचित्र” विशेषगवाके स्नान पीठ पर आनन्द के साथ बैठ गए वहाँ पर उन्हें स्नान
कराया गया—स्नान करने के बाद वे धवलमेघ से निर्गत चन्द्र मण्डल की तरह उस स्नान
घर से बाहर निकले (पडिणिक्खमित्ता हय गय रह पवर वाहण जाव सेणावइ पडियकित्ति
जेणेव बाहिरिया उवट्टाणमाला जेणेव चाउघटं आसरहे तेणेव उवागच्छइ) इन सूत्र पदों की

गज, रथ तेनञ्च वीर श्रेष्ठ योद्धाओथी युक्त सेना तैयार करे। (चाउघटं आसरहं पडिक-
प्पेह) तेमञ्च जेमां चार घटाओ लट्की रह्या छेय, जेवा रथने अश्वोथी यदाववामा
आवे जेवा रथ ने सज्जित करे, (त्तिकट्टु) आ प्रभाण्णे कळीने ते (मज्जनघरं अणुप-
विसइ) स्नान गृहमा प्रविष्ट थया. (अणुपविसित्ता समुत्त तद्देव जाव धवल महामेहणिग्गए
जाव मज्जनघराओ पडिणिक्खमइ) त्या जधने ते पूर्वोक्त मुक्ताजाल क्षण आदि विशे-
षणोथी अभिराम स्नानमंडप मा भूईला पूर्वोक्त “नानामणि भक्तिचित्रं” विशेषणोवाणा
स्नान पीठ उपर आनंद पूर्वक बैसी गया त्या तेमने स्नान कराववामां आंधु. स्नान
कथा पछी तेजो धवल मेघथी निर्गत चन्द्र मंडलनी जेम ते स्नानगृहमाथी अहार नीक-
थ्या (पडिणिक्खमित्ता हय गय रह पवर वाहण जाव सेणावइ पडियकित्ति जेणेव
बाहिरिया उवट्टाणमाला जेणेव चाउघटं आसरहे तेणेव उवागच्छइ) जे सूत्रपढोनी

अथ कृतस्नानादि विगिरिर्भरतो यच्चक्रे तदाह 'तएणंसे' इत्यादि

मूलम्— तएणं से भएहे राया चाउग्घटं आसरहं दुरूढे समाने
हएगयरहपवरजोहकलियाए सद्धि संपारिवुडे महया भडचडगरपह-
गरवंदपरिक्खित्ते चक्कग्यणदेसियमग्गे अणेगरायवरसहस्साणुयाय-
मग्गे महया उक्किट्ठ सीहणायवोलकलकलरवेणं पक्खुभिय महासमु-
द्वरवभूयंपिव करेमाणे २ पुरत्थिमदिसाभिमुहे मागहतित्थेणं लव-
णसमुद्धं ओगाहइ जाव से रहवरस्स कुप्परा उल्ला, तएणं से भरहे
राया तुरगे निगिण्हई निगिण्हित्ता रहं ठवेइ ठवित्ता धणुं परामुसइ
तएणं तं अइरुग्गय बालचंदइंदधणुसंकासं दरियदप्पियददधण-
सिगरइयसारं उरगवरपवरगवलपवरपरपरहुयभमरकुलणीलिणिद्धं धंत-
धोयपट्टं णिउणोवियमिसिभिरित मणिरयणधंटियाजालपरिक्खित्तं
तडित्तरुणकिरणतवणिज्जबद्धचिंधं दहरमलयगिरिसिहरकेसरचामरबालद्ध
चंदचिंधं कालहरियरत्तपीयसुक्किल्ल बहुण्हारुणि संपिणद्ध-
जीवं जीवियंतकरणं चलजीव धणूं गहिऊण से णरवई उमुंच वरवइर-
कोडियं वइरसारतोडं कंचनमणिकणगरयणधोइट्ठ सुकयपुंखं अणेगम-
णिरयणविविहसुविइयनामचिंधं वइसाहं ठाईऊणट्ठाणं आयतकण्णायतं
च काऊण उसुमुदारं इमाइं वयणाइं तत्थ भाणिय से णरवई—हंदि सुणं
तु भवंतो बाहिरओ खलु सरस्स जे देवा । णागासुरा सुवण्णा तेसिं
खु णमो पणिवयाणि ॥१॥ हंदि सुणंतु भवंतो अब्भितरओ सरस्स
जे देवा णागासुरा सुवण्णा सव्वे मेते विसयवासी ॥२॥ इति कट्ठु
उसुं णिसिरइत्ति—'परिगरणिगरिअमज्झो वाउद्धुय सोभमाणकोसेज्जो
चित्तेण सोभए धणुवरेण इंदोन्व पच्चक्खं ॥३॥ तं चंचलायमाणं

व्याख्या पहिले को गइ व्याख्या के ही अनुरूप है (उवागच्छित्ता चाउग्घटं आसरहं दुरूढे)
अश्वरथ के पास पहुंचकर कर वह उस पर बैठ गया ॥५॥

व्याख्या पढेलां करवाभा आवेल व्याख्या सुअअ न छे (उवागच्छित्ता चाउग्घटं आसरहं
दुरूढे) अश्वरथ पास पढेथीने तेज्जे तेनी ६५२ सवार था ॥ ५ ॥

पंचमिचंदोवमं महाचाप । छज्जइ वामे हत्ये णरवइणोनंमि विजयमि
॥४॥ तए णं से सरे भग्हेणं रण्णा णिसइे समाने खिणामेव दुवाल--
सजोयणाइं गंता मागहत्तिथाधिपतिस्स देवस्स भवणंसि निवइए,
तएणं से मागहत्तिथाहिवई देवे भवणंसि सरं णिवइअं पामइ
पासित्ता आसुरुत्ते रुत्ते रुइे चंडिक्किए कुविए मिसिमिसेमाणे ति-
वलियं भिउडिं णिडाले साहइ साहरित्ता एवं वयासी-केस णं भो
एस अपत्थियपत्थए दुरंतपंतलक्खणे हीणपुण्णचाउइसे हिरिसिरि-
परिवज्जिए जेणं मम इमाए एयाणुरूवाए दिव्वाए देविच्छीए दिव्वाए
देवजुईए दिव्वेणं दवाणुभावेणं लद्धाए पत्ताए अभिसमण्णागयाए
उप्पि अप्पुस्सुए भवणंसि सरं णिसिरइत्तिकदट्ठु सीहासणाओ
अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता जेणेव से णामाहयंके सरे तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता तं णामाहयंके सरं गेण्हइ णामंके अणुप्पवाएइ णागंके
अणुप्पवाएमाणस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए
संकप्पे समुप्पज्जित्था उप्पणे खलु भो जंबुदीवे दीवे भरहे वासे भरहे
णामं राया चाउरंतचक्कवट्ठी तं जोयमेयं तीय पच्चुपण्णमणागयाणं
मागहत्तिथकुमाराणं देवाण गइणमुवत्थाणीयं करेत्तए तं गच्छमि णं
अहपि भरहस्स रण्णो उवत्थाणीयं करेमिक्किकदट्ठु एव संपेहेइ ॥सू० ६॥

छाया—ततः खलु स भरतो राजा चातुर्घण्टम् अश्वरथमारूढः सन् हयगजस्थ प्रव-
रयोधकलितया सार्धं संपरिवृतः महामटचङ्गरपट्टकरवृन्दपरिक्षिप्त चक्ररत्नादेशित-
मार्गं अनेकराजवरसहस्रानुयातमार्गः, महता उत्कृष्टसिंहनादबोलकलकलरवेण प्रक्षु-
भितमहासमुद्ररवभूतमिव कुर्वन्नपि पौरस्त्यदिगभिमुखो मागधतीर्थेन लवणसमुद्रम् अव-
गाहते यावत् तस्य रथवरस्य कूर्परो आर्द्रो स्याताम्, ततः खलु स भरतो राजा तुर-
गान् निगृह्णाति, निगृह्य रथं स्थापयति स्थापयित्वा घनुः पराभृशति, ततः खलु तत् त्रि-
रोद्धतवालचन्द्रेन्द्रघनुःसकाशं वरमद्विषहृत्तदपिपतद्वधनशृङ्गाप्रसारम्, उरगवरप्रवर ग ।
लप्रवळपरमृनभ्रमरकुलनीलोस्निग्धप्रातघातपृष्ठम्, निपुणौपित वेदोप्यमान मणिरत्नघण्टि-
काजालपरिक्षिप्तम्, तडित्तरुणकिरणतपनोयबद्धचिह्नम्, वर्द्धमलयगिरिशिखरकेसरचामर-
बालार्धचन्द्रचिह्नम् कालहरितरक्तपीत शुक्ल बहुस्नायुसम्पन्नजीवम्, जीवितान्तकरणम्,
चलजीवम्, स नरपति घनुः, इषु च गृहीत्वा वरवज्रकीटिकम्, वज्रसारतुण्डम् कञ्चनम-
रि करत्नघौतेष्टसुकृतपञ्चम्, अनेकमणिरत्नविविधसुविरचितनामचिह्नम्, वेशास्त्रम्,

स्थानं स्थित्वा इषु चोदारम् आयनरुर्णयिन कृत्वा तत्र इमानि घनानि स नरपतिर-
भाणीत् हन्दि । शृण्वन्तु भवन्तो वहिमात् खलु शरस्य ये देवाः । नागासुराः सुपर्णाः
तेभ्यः खलु नमः प्रणिपनामि ॥१॥

हन्दि ! शृण्वन्तु भवन्तोऽभ्यन्तरतः शरस्य ये देवा

नागासुरा सुपर्णाः सर्वेते मम विषयवासिनः ॥२॥

इति कृत्वा इषु विसृजति, परिकरनिगडितम्भः, घातोद्धूतशोभमानकौशेयः
चित्रेण घनुर्वरेण शोभते इन्द्र इव प्रत्यक्षम् ॥३॥ तं चञ्चलायमान पञ्चमीचन्द्रोपमं महा
बापम् राजते वामे हस्ते नरपते तस्मिन् विजये ॥४॥ ततः खलु स शरो भरतेन राज्ञा
निखट्टः सन् क्षिप्रमेव द्वादश योजनानि गत्वा मागधतीर्थाऽधिष्ठते देवस्य भवने निपतितः,
ततः खलु स मागधतीर्थाधिपतिर्देवो भवने शरं निपतितं पश्यति, दृष्ट्वा आशुक्लृप्तः, रुष्टः,
आण्डिक्रियत, कुपितः, क्रोधाग्निना दीप्यमानः, त्रिवलिकां भृकुटिं सहरति संहृत्य पवम-
घादीत् क खलु भो पपः अप्राथितप्रार्थिकः दुरन्तप्रान्तलक्षण, हीनपुण्यचातुर्दश, ह्यो
श्री परिवर्जितः यः खलु मम अस्या पतद्रूपाया दिव्यायाः, देवकृद्भयाः, दिव्याया देव-
द्युतेः, दीव्येन देवातुभावेन लब्धाया प्राप्तया अभिसमन्वागताया उपरि उत्सुकः भवने शरं
निखट्टतोति कृत्वा विहासनाद्भ्युत्तिष्ठतीति, अभ्युत्थाय यत्रैव स नामादताङ्क शरस्तत्रै-
वोपागच्छते उपाग य तं नामादताङ्कं शरं गृह्णाति, नामाङ्कमनुगवाचरति नामाङ्कमनुगवा-
चरतोऽयम् पतद्रूपः आभ्यात्मिकः चिन्तितः प्रार्थितः मनोगत सत्त्वं समुत्पद्यन् उत्पन्न-
खलु भो ! जम्बूद्वीपे द्वीपे भरते वर्षे भरतो नाम राजा चातुरन्तचक्रवर्त्ती तत् जीतमेव
अतीत प्रत्युत्पन्नानागतानां मागधतीर्थकुमाराणां देवानां राज्ञाम् उपस्थानिकं कर्तुम् तत्
गच्छामि खलु अहमपि भरतस्य राज्ञ उपस्थानिकं करोमि, इति कृत्वा पवं सेप्रक्षते ॥सू०६॥

टीका— “तएणं से” इत्यादि । ‘तए ण से भरहे राया चाउग्घंटं आसरहं
दुरूढे समाणे’ ततः खलु स भरतो राजा चतस्रो घण्टाः सन्ति अस्येति चातुर्घण्टः चतु-
र्घण्टायुक्तस्नम् अश्वरथ दुरूढे आरूढः सन् ‘हयगयरहपवरजोहकलियाए सद्धिं संपरिवुडे’
हयगजरथप्रवरयोधकलितया सार्द्धं संपरिवृतः, तत्र हयगजरथप्रवरयोधैः कलितया युक्तया

टीकार्थ—‘तएणं से भरहे राया चाउग्घंटं आसरहं’ इत्यादि सूत्र-६-

टीकार्थ—(तएणं) इसके अनन्तर (से भरहे राया) वह भरतराजा (चाउग्घंट आसरह) चार
घण्टों से युक्त अश्वरथ पर (दुरूढे समाणे) आसीन होकर (लवणसमुद्दं ओगाहइ) लवण समुद्र में
प्रवेश किया ऐसा यद्वा सम्बन्ध है । (हयगयरहपवरजोहकलियाए सद्धिं संपरिवुडे) उस समय उसके

‘त एणं से भरहे राया चाउग्घंटं आसरहं’ इत्यादि ॥ सूत्र—६ ॥

टीकार्थ—(त एण) त्थार भाइ (से भरहे राया) ते भरत राजा (चाउग्घंटं आसरह)
आरथ प्रयोधी युक्त अश्वरथ पर (दुरूढे समाणे) आसीन थपने (लवणसमुद्दं ओगाहइ)
लवण समुद्रमा प्रविष्ट थया. जेना अने सभं व छे (हयगयरहपवरजोहकलियाए
सद्धि संपरिवुडे) ते सभे तेनी साथे सेना छती ते जेनाभा इय-वेडा, ज- २१॥

सेनया सार्धं सपरिवृतः-सपरिवेष्टितः, तथा 'महया गडचडगरपहगरवन्दपरिविखले' महाभटचडगरपहकरवृन्दपरिहितः, तत्र महाभटानां संग्रामाभिलाषि महायोधानाम् 'चडगरत्ति' विस्तृताः विविधाः 'पहगरत्ति' समूहाः तेषां यद् वृन्दं तेन परिक्षिप्तः—परिकारितः 'चक्ररयणदेसियमग्गे' चक्ररत्नदेगितमार्गः तत्र—चक्ररत्नेन देगितः प्रदर्शितो मार्गो यस्मै स तथा 'अणेगरायवरसहस्साणुयायमग्गे' अनेकगजनगसहस्राणुयातमार्गः, तत्र अनेकेषां राजवराणां मुकुटधारिराजानां सहस्रगणुयातः अनुगतो मार्गः—पृष्ठभागो यस्य स तथा 'महया उक्किट्ट सीहणायबोलकलकलरवेणं पक्खुभिय महासमुद्रवभूयं पिव करेमाणे २ पुरत्थिमदिसाभिमुहे मागहत्तित्थेणं लवणसमुदं ओगाहड' महता उत्कृष्ट सिंहनाद बोल कलकलरवेण प्रक्षुभित महासमुद्रवभूतमिव कुर्वन् २ पौरस्त्यदिगभिमुखो मागधतीर्थेन लवणसमुद्रम् अवगाहते, तत्र—महता विशालेन उत्कृष्टिः आनन्दध्वनिः, सिंहनादः प्रसिद्धः बोलः अव्यक्तध्वनिः, कलकलश्च तदितरो ध्वनिः तल्लक्षणो यो रवः शब्दः तेन प्रक्षुभितः महावायुवशात् उत्कल्लोलो यो महासमुद्रस्तस्य रवभूतमिव महासमुद्रशब्दमयमिव आकाशं कुर्वन् पूर्वदिगभिमुखो मागध नाम्ना तीर्थेन तीर्थपार्श्वभागेन लवणसमुद्रमवगाहते प्रविशति । कियत् अवगाहते इत्याह—'जाव से'

साथ सेना ओ उस सेना में अधिकसंख्यक हय—घोड़ा—गज—हाथी—रथ, और श्रेष्ठ योधा थे । इन सब से वह घिरा हुआ था (महया भट चडगर पहगरवन्दपरिविखले) गद्दासग्रामाभिलाषी योधाओं का परिकर उसके साथ चल रहा था (चक्ररयणदेसियमग्गे) गन्तव्यस्थान का मार्ग उसे चक्ररत्न बतला जाता था (अणेगरायवरसहस्साणुयायमग्गे) अनेक मुकुटधारी हजारों श्रेष्ठराजा उसके पीछे चल रहे थे । (महया उक्किट्ट सीहणाय बोलकलकलरवेणं पक्खुभिय महासमुद्रवभूयंपिव करेमाणे २ पुरत्थिमदिसाभिमुहे मागहत्तित्थेणं लवणसमुदं ओगाहड) उत्कृष्ट सिंहनाद के जैसे बोल के कल कल शब्द से ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मानों समुद्र अपनी कल्लोलमालाओं से ही क्षुभित हो रहा है और यह उस क्षुभित हुए समुद्र का हो गर्जन शब्द है इसमें आकाश मंडल गुंज उठा था जब वह लवण समुद्र में प्रवेश करने जा रहा था तब वह पूर्व दिशा की

रथ अने श्रेष्ठ योद्धाओं के साथ सर्वथी आवृत्त थयेले । ते (महया भटचडगरपहगरवन्दपरिविखले) भट्टा संग्रामाभिलाषी योद्धाओं ने परिकर (समूह) अपनी साथे—साथे आली रह्यो केते । (चक्ररयणदेसियमग्गे) गन्तव्य स्थानने मार्ग ते चक्ररत्न बतावतु केतु (अणेगरायवरसहस्साणुयायमग्गे) अनेक मुकुटधारी हजारों श्रेष्ठ राजाओं ने नी पाछण पाछण आली रह्यो केते । (महया उक्किट्ट सीहणायबोलकलकलरवेणं पक्खुभियमहासमुद्रवभूयं पिव करेमाणे २ पुरत्थिमदिसाभिमुहे मागहत्तित्थेणं लवणसमुदं ओगाहड) उत्कृष्ट सिंहनाद केवा अवाजना केल—केल शब्दथी ओवी प्रतीति थय रह्यो केती के नले समुद्र पोतानी केलेले, भाणाओथी क्षुभात न थय रह्यो होय अने ओ ते क्षुब्ध समुद्रनी गजानानो व शब्द छे ओथी आकाश मंडल गुंज केतु जयारे ते लवण समुद्रभां प्रविष्ट थवा जय रह्यो केते । तयारे ते पूर्व दिशा तरफ मुण करीने मागध तीर्थभां थयने

इत्यादि । 'जाव से रहवरस्स कुप्परा उल्ला' यावत् तस्य रथवरस्य कूर्परी आर्त्री स्या-
ताम्, तत्र-रथवरस्य कूर्पराविव कूर्परी कूर्पराकारत्वात् रथचक्रावयवौ आर्त्री भवेताम्
'तए णं से भरहे राया तुरगे निगिण्हई' ततः खलु स भरतो राजा तुरगान् अवान्
निगृह्णाति-स्थिरीकरोति 'निगिण्हित्ता' तुरगान् निगृह्ण 'रह ठवेइ' रथं स्थापयति 'ठवेत्ता
स्थपयित्वा 'धणुं परामुसइ' धनुः परामृशति स्पृशति गृह्णातीत्यर्थः 'तए णं' ततः
खलु ततो-धनुः परामर्शानन्तरं खलु स नरपतिः इमानि वक्ष्यमाणानि वचनानि 'भा-
णीय त्ति' अभाणीन् इति सम्बन्धः किं कृत्वा इत्याह-धनुर्गृहीत्वा धनुश्च किमाकारकं
तत्राह-तत् धनुः 'अइरुग्गयवालचंदइंदधणुसंकासं' अचिरोद्गतवालचन्द्रेन्द्रधनुः संका-
शम्, तत्र अचिरोद्गतः तत्कालोदितः यो वालचन्द्रः-शुक्लपक्ष द्वितीयाचन्द्रस्तेन

और मुँह करके मागघ तीर्थ से होकर लवण समुद्र में प्राविष्ट हुआ था । (जाव से रहवरस्स कुप्परा उल्ला) जब वह लवणसमुद्र में प्रविष्ट हुआ तो वह इतना ही गहरा बहा था कि उसके रथ के पहियों के अवयव ही गीले हो पाये (तएणं से भरहे राया तुरगे निगिण्हई) भरत राजा ने अपने रथ के घोड़ों को रोक दिया (निगिण्हित्ता रह ठवेइ) घोड़ों के रुकते ही रथ भी खड़ा हो गया (ठवेत्ता धणुं परामुसइ) रथ के खड़े होते ही भरत महाराजा ने अपने धनुष को उठाया (तएणं) इसके बाद उस भरत राजा ने इस प्रकार से कहा ऐसा यहां सम्बन्ध है । जिस धनुष को भरत राजा ने उठाया था उसकी विशेषता प्रकट करने के लिये सूत्रकार कहते हैं- (अइरुग्गय वालचंद इंदधणुसंकास दरियदप्पिय दढवणमिगरइयसारं उरगवरपवरणवल पवर परपरहुयममरकुलणीलणिद्धं) उसका अकार अचिरोद्गत वालचन्द्र के जैसा एवं इन्द्र धनुष के जैसा था । यहां अचिरोद्गत वालचन्द्र से शुक्लपक्ष की द्वितीया का चन्द्र गृहीत हुआ है क्योंकि यही पतला और विशेयरूप में वक्र धनुष के जैसा होता है । इसी तरह से वर्षाकाल के समय जो गगन में इन्द्रधनुष टट्टना हुआ दिखलाई देता है वह भी इन्द्रधनुष के जैसा ही

લવણ સમુદ્રમાં પ્રવિષ્ટ થયેા હતેા । (જાવ સે રહવરસ્સ કુપ્પરા ઉલ્લા) જ્યારે તે લવણ સમુદ્રમાં પ્રવિષ્ટ થયેા ત્યારે તે આટલો જ ઊંડો હતો કે તેનાથી તેના રથના ચક્રોના અવ-
યવો જ ઘોડાઓ રોકી દીધાં । (તણ સે ભરહે રાયા તુરગે નિગિણ્હઈ) ભરત રાજાએ પોતાના
રથના ઘોડાઓ રોકી દીધાં । (નિગિણ્હિત્તા રહ ઠવેઈ) ઘોડાઓ અટક્યા નેથી રથ પણ ઊભો-
રહ્યો । (ઠવેત્તા ઘણુ પરામુસઈ) રથ ઊભો રહ્યો કે તરત જ ભરત રાજાએ પોતાના 'ધનુ-
ષ્યને ઉઠાવ્યું' (તણ) ત્યાર બાદ તે ભરત રાજાએ આ પ્રમણે કહ્યું-એવો આ રથાને
સંબંધ છે જે ધનુષને ભરતરાજાએ ઉઠાવ્યું હતું, તેની વિશેષતા પ્રકટ કરતાં સૂત્રકાર
કહે છે- (અઈરુગ્ગયવાલચંદઈંદધણુસંકાસં દરિયદપ્પિયદઢવણમિગરહયમારં ઉરગવર પવ-
રણવલ પવર પરપરહુય મમરકુલળીલણિદ્ધં) તેનો આકાર અચિરોદ્ગત બાળચંદ્ર જેવો
તેમજ ઇન્દ્ર ધનુષ જેવો હતો । આહો! અચિરોદ્ગત બલચંદ્રથી શુક્લ પક્ષની દ્વિતીયાનો
ચંદ્રગૃહીત થયો છે કેમકે એજ પાતળો અને વિશેષ રૂપમાં વક્ર ધનુષ જેવો હોય છે આ
પ્રમાણે વર્ષાકાળના સમયે જેમ ગગનમાં ઇન્દ્રધનુષ ઉદગત થતું એવા માં આવે છે તેમ તે

તથા ઇન્દ્રધનુષા ચ અતિવક્રતયા સ્વાશ સદૃશ યત્તત્તથા, પુનઃ 'અગ્નિદરિગ દ્વિય
દદ્ધણસિંહરસાર' વરમહિષ દ્વિપદપ્પિનદ્વધનશૃંગરતિદમારમ્. તત્ર દત્તદર્પિતઃ સજ્ઞાત-
દર્પાતિશય યો વરમહિષઃ વાહદ્વિપોત્તમઃ તસ્ય દ્વદં નિગિદ્ધપુદ્ગલાનપ્પન્નમ્ અનપ્પઃ ઘન-
હિદ્ધરહિતં યત્ શૃંગ રતિદ-રમણીયં તદ્વત સાર સશ્રેષ્ઠ તત્સદ્ગમ્યપરચુક્તમિત્યર્થઃ
પુનઃ કીદશમ્ 'અગ્નિવરપવરગવલ્લ વરપરહુયમમરકુલળીન્નિહિદ્ધવંત મોગપટ્ટ' અગ્નિવરપવર-
ગવલ્લપવરપરમ્ભુતમરકુલનીલીસ્નિગ્ધધ્માતચૌતપૃષ્ઠમ્, તત્ર ઉરગમરો-મુગ્ગશ્રેષ્ઠઃ પ્રવરગવલ્લ
પ્રધાનમહિષશૃંગમ્, પ્રવરપરમ્ભુતઃ શ્રેષ્ઠકોકિલઃ, અમાકુલ મનુકરમમૂઢઃ, નીલી-ગુલિકા
પ્રતાનીવ સ્નિગ્ધ કાલકાન્તિયુક્તં, ધ્માતમિવ ધ્માતમ્-તેજમા જાજ્વલ્યમાનં ધૌતમિવ
ધૌત-નિર્મલં પૃષ્ઠ પૃષ્ઠમાગો યસ્ય તત્તથા 'ગિરિગોત્રિય મિસિ મિસિતમણિરયણ-
ઘંટિયાજાલપરિચ્છિન્ન' નિપુણૌપિત દેદીપ્યમાનમણિરત્નઘંટિકા જાલપરિચ્છિન્નમ્,
તત્ર-નિપુણેન-શિલ્પિના ઓપિતાઃ ઉજ્જ્વાલિતાઃ અતપ્પ દેદીપ્યમાનાઃ મણિરત્નઘંટિકા
તાસાં યજ્જાલં સમૂહઃ તેન પરિચ્છિન્નં વેષ્ટિતં યત્તત્તથા, પુનઃ કીદશમ્ 'તદ્વિત્તરુણકિ-
રણતવણિજ્જવદ્ધિવિધ' તદ્વિત્તરુણકિરણતપનીયવદ્ધિચ્છિન્નમ્, તત્ર તદ્વિદિવ વિદ્યુદિવ-
તરુણાઃ નવીનાઃ કિરણા યસ્ય તત્તથા, એવં વિધસ્ય તપનીયસ્ય મુવર્ણરય સમ્બન્ધીનિ
તપનીયમયાનીત્યર્થઃ વદ્ધાનિ ચિદ્ધાનિ યત્ર તત્તથા ચાકચિક્કયયુક્ત નાનાવિધસુવર્ણ-
ચિક્કયુક્તમિત્યર્થઃ 'પુનઃ-દદ્ધરમલયગિરિસિહરકેસરચામરવાલ્લદ્ધચંદચિધ' દદ્ધર મલયગિરિ-

વક્ર હોતા હૈ અતઃ ધનુષ કી વક્રતા પ્રકટ કરને કે લિયે ઇન દોનો કા સામ્ય યહાં વતલાયા
ગયા હૈ । તથા અદ્ધકાર સે ગર્ભાલે હુપ શ્રેષ્ઠ મહિષ કે નિવિદ્ધપુદ્ગલો સે નિપ્પન્ન અતપ્પ હિદ્ધરહિત
એસે રમણીય શૃંગ કે જૈસે મજબૂત એવ શ્રેષ્ઠ નાગ કી પ્રધાન મહિષ શૃંગ કી શ્રેષ્ઠ કોકિલ કી
અમર કુલકો એવં નીલી ગુટિકા કી જૈસી કાલો કાન્તિ વાલે (ધન ધોયપદ) તેજ સે જાજ્વ-
લ્યમાન, તથા નિર્મલ પૃષ્ઠ ભાગ વાલે (ગિરિગોત્રિયમિસિમિસન મણિરયણઘંટિયાજાલપરિચ્છિન્ન)
નિપુણ શિલ્પિયો દ્વારા ઉજ્જ્વાલિત કી ગઈ અતપ્પ દેદીપ્યમાન એસી મણિરત્ન ઘંટિકાઓ કે સમૂહ
સે વેષ્ટિત (તદ્વિત્તરુણકિરણતવણિજ્જવદ્ધિવિધ) વિજલી કે જૈસી નવીન કિરણો વાલે સુ-
વર્ણ સે નિર્મિત જિસમેં ચિન્હ હૈ (દદ્ધર મલયગિરિસિહરકેસરચામરવાલ્લદ્ધચંદચિધ) દદ્ધર

પશુ ઇન્દ્રધનુષ જેવો જ વક્ર હોય છે એથી ધનુષની વક્રતા પ્રકટ કરવા માટે એ બન્નેની
સમાનતા અહીં સ્પષ્ટ કરવામાં આવી છે તેમજ અદ્ધકારથી ગર્ભિત થયેલા શ્રેષ્ઠ મહિષના
નિબિડ પુદ્ગલોથી નિપ્પન્ન એથી હિદ્ધરહિત એવા રમણીય શૃંગ એવા સુદૃઢ અને શ્રેષ્ઠ
નાગની પ્રધાન મહિષશૃંગની શ્રેષ્ઠ કોકિલની, અમર કુલની તેમજ નીલી ગુટિકા જેવી કાળી
ઠાતિવાળા (અંત ધોયપદ) તેજ થી બજવલ્યમાન, તથા નિર્મલ પૃષ્ઠભાગવાળા (ગિરિગોત્રિ-
યમિસિમિસનમણિરયણઘંટિયાજાલપરિચ્છિન્ન) નિપુણ શિલ્પિઓ વડે ઉજ્જ્વાલિત કર-
વામાં આવી એથી દેદીપ્યમાન એવી મણિરત્ન ઘંટિકાઓના સમૂહોથી વેષ્ટિત (તદ્વિત્ત-
રુણકિરણતવણિજ્જવદ્ધિવિધ) વિદ્યુત જેવા નવીન કિરણોવાળા સુવર્ણથી નિર્મિત જેમા
ચિહ્નો છે (દદ્ધરમલયગિરિસિહરકેસરચામરવાલ્લદ્ધચંદચિધ) દદ્ધર અને મલયગિરિના

શિશ્વકેમરચામરવાઝદ્વચન્દ્રચિહ્નમ્, તત્ત દર્દરમલય નામકગિર્યોઃ—યાનિ શિશ્વરાણિ તત્તસમ્બન્ધિનો ગે કેસરાઃ—તત્રત્ય સિદ્ધસ્કન્ધકેશાઃ ચામરચાલાઃ—ચમરગોપુચ્છકેશાઃ એતે તથા અર્ધચન્દ્રાથ ચ્ચણ્ડચન્દ્રપ્રતિબિમ્બાનિ ચિત્રરૂપાણિ ઇતાદશાનિ ચિહ્નાનિ યત્ર તત્તથા, ધનુષિ સિદ્ધકેશરવન્ધનં શૌર્યાતિશયલ્યાપનાથં, ચામરવાલવન્ધમ્ અર્ધચન્દ્રચિત્રમ્ ચ શોભાતિશય દર્શનાર્થમિતિ વિજ્ઞેયમ્, પુનઃશ્ચ ‘કાલહરિયરત્તપીયસુક્લિલ્લબહુણ્દારુણિ સંપિણ્દજીવં’ કાલહરિતરત્તપીતશુક્લ—બહુસ્નાયુસંપિનદ્વજીવમ્, તત્ર કાલહરિત રત્તપીતશુક્લચર્ણાઃ યાઃ ચદ્વઃ સ્નાયવઃ શરીરાન્તર્વર્તિનાડીવિશેષાઃ તામિઃ સંપિનદ્વા-વદ્વા જીવા પ્રત્યશ્ચા યસ્ય તત્તથા ‘જીવિયંતકરણમ્’ જીવિતાન્તકરણં રિપૂણાં જીવનનાશરૂપમ્ ‘ચરુજીવં’ ચલજીવમ્, ચલા ચચ્ચલા જીવા પ્રત્યશ્ચા યસ્યા તત્તથા ઇતાદશં પૂર્વોક્તાનેકવિશેષણવિશિષ્ટમ્ ‘ઘણં ગદ્ધિજ્ઞ સે જ્ઞરવદ્ ડસુ ચ’ સ નરપતિઃ ધનુઃ ઇપુ વાણં ચ ગૃહીત્વા, પૂર્વોક્તાનિ પદાનિ ધનુષો વિશેષણાનિ સામ્પ્રતં વાણ-વિશેષણાનિ પ્રાઢ—‘વરનદ્ધરકોડિયં’ વરવજ્રકોટિકમ્, તત્ર વરવજ્રમય્યૌ શ્રેષ્ઠહીરકજ-ટિતૌ કોટયૌ ડભયપ્રાન્તૌ યસ્ય સ તથા તામ્, પુનઃશ્ચ ‘વદ્ધરસારતોડં’ વજ્રસારતુણ્દમ્ વજ્રવત્ સારમ્ અમેયત્વેન અમદ્ધગુરં તુણ્દમ્ અગ્રમાગો યસ્ય સ તથા તમ્, પુનઃશ્ચ કીદ-શમ્ ‘કંચનમણિક્ષણગરયણધોદ્ધસુકયપુંસં’ કાશ્ચનમણિક્ષણકરત્નધૌતેષ્ઠસુકૃતપુદ્ધમ્, તત્ર—કાશ્ચનેતિ કાશ્ચનસૂચિતાઃ મણયઃ ક્ષનકેતિ ક્ષનકસૂચિતાનિ રત્નાનિ પ્રદેશ વિશેષે યસ્ય સઃ તથા ધૌત ઇવ ધૌતો નિર્મલત્વાત્ ઇષ્ટો ધાનુષ્કાણામભિમતઃ સુકૃતો િપુણશિલ્પિના નિમિતઃ પુદ્ધઃ પૃષ્ઠમાગો યસ્ય સ તથા તમ્ ‘અગેગમણિરયણ-વિવિદ્ધસુવિરદ્ધયામચ્ચિધ’ અનેકમણિરત્નવિવિધસુવિરચિત્તનામચિહ્નમ્, તત્ર અનેકૈઃ મણિરત્નૈઃ વિવિધં—નાનાપ્રકારં સુવિરચિત્ત નિર્મિતં નામચિન્હં ભરતચક્રિનામવર્ણપદ્ધતિ-રૂપં યત્ર સ તથા તમ્ ઇતાદશવિશેષણવિશિષ્ટમ્ ઇપું ગૃહીત્વા પુનઃ કિ કૃત્વા તત્રાદ

ઔર મલયગિરિ કે શિશ્વર કે સિદ્ધસ્કન્ધકેશ, ચામર વાલ ચામર ગોપુચ્છ કેશ एवं अर्धचन्द्र ये जिसमें चिह्नरूप से बने हुए हैं । (काल हरियरत्तपीय सुक्लिल बहुण्दारुणिसंपिण्दजीवं) कालादिवर्णवाली स्नायुओं से जिसकी प्रत्यक्षा बंधी हुई है । (जीविमंतकरणं चलजीवं घणूं गद्विज्ज्ञ) जो शत्रुओं के जीवन का अन्त करने वाला है तथा जिसकी प्रत्यक्षा चंचल है ऐसे धनुष को हाथ में लेकर (स ज्जरवद्) उस भरत राजा ने (उसुंच वरवद्दरकोडियं वद्दर सार-तौड, कंचनमणिक्क्षणगरयणधोद्वद्वसुकयपुंसं अगेगमणिरयणविविद्वसुविरद्वयनामचिध वद्दसाहं

શિશ્વરના સિંહ સ્કન્ધ ચિક્રર, ચામર-માલચમ, ગોપુચ્છચિક્રર તેમજ અર્ધ ચન્દ્ર એ ચિન્હો જેનાં ચિન્હ રૂપે આકૃત છે (કાલહરિયરત્તપીય સુક્લિલ્લ બહુણ્દારુણિ સંપિ-ણ્દ જીવં) કાલાદિ વર્ણ યુક્ત સ્નાયુઓથી નિર્મિત જેમાં પ્રત્યક્ષ આબદ્ધ છે. (જીવિ-અનકરણ ચલજીવં ઘણૂ ગદ્ધિજ્ઞ) જે શત્રુઓના જીવનમાટે અન્તકર છે તેમજ જેની પ્રત્ય-ક્ષા અચળ છે, એવા ધનુષને હાથમાં લેધને (સ જ્ઞરવદ્) તે ભરત રાજાએ (ડસુ ચવર-વદ્ધરકોડિયં વદ્ધર સારતોડ, કંચનમણિક્ષણગરયણધોદ્ધદ્ધસુકયપુંસં અગેગમણિરયણ-

कुमार इन सबके लिये नमस्कार करता हूँ यद्यपि यहाँ पर प्रयुक्त नम शब्द से ही नमस्कार करने की बात आ जाती है, परन्तु फिर भी जो “पणिबयाभि” शब्द का प्रयोग किया है । वह भरत चक्री की भक्ति की अतिशयता ख्यापन करने के लिये किया गया है । इस तरह सर प्रयोग के लिये साहाय्य करने वाले बहिर्भाग वासी देवों को संबोधित करके अब वह आन्तरिक वर्ती देवों का संबोधन करता है— (हृदि सुणतु भवतो अम्भितरयो सरस्स जे देवा—णागासुरा सुवर्णा सव्वे मेते विसयवासो ॥२॥—यहाँ “हृदि” पद सम्बोधन में प्रयुक्त हुआ है । मेरे में रहनेवाले जो नागकुमार, असुरकुमार, सुवर्णकुमार नाम के देव हैं—वे सब सुन—मैं उन्हें नमस्कार करता हूँ । यहाँ जो चक्रवर्ती ने ऐसा कहा है उसका अभिप्राय ऐसा है कि ये सब देव मेरी आज्ञा के वशवर्ती होने के कारण मेरे द्वारा छोड़े गये बाण के सब प्रकार से सहायक होंगे ही इस कारण मैं उन्हें नमस्कार करता हूँ । यद्यपि कोई ऐसी आशंका यहाँ करे कि जब ये देव राजा के आधिन होने रूप से निर्धारित है तो फिर उन्हें नमस्कार करना उसका अनुचित है ।

હું નાગકુમાર, અમુર કુમાર, સુવર્ણ કુમાર એ સર્વે માટે નમસ્કાર કરું છું જો કે અહીં પ્રયુક્ત 'નમ' શબ્દથી જ નમસ્કાર કરવાની વાત આવી જાય છે પણ છતાંજે જે "પણિ-વ્યામિ" શબ્દનો પ્રયોગ કરવામાં આવેલ છે તે ભરત ચક્રીની ભક્તિની અતિશયતા જ્યાં પન કરવા માટે કહેવામાં આવેલ છે આ પ્રમાણે બાણ પ્રયોગમાં સહાયભૂત થનારા બહિ-ભાંગવાસી દેવોને સંબોધન કરીને હવે તે આભ્યતરવર્તી દેવોને સંબોધન કરે છે. (હિંદિ સુણતુ મન્વતો અન્નિવતરમો સરસ્સ જે દેવા-નાગાસુરા સુવર્ણા સર્વે મંતૈ વિલય-વાસી ॥ ૨ ॥ અહીં "હિંદિ" પદ સંબોધન માટે પ્રયુક્ત થયેલ છે મારા દેશમાં રહેનારા જે નાગકુમાર, અમુરકુમાર, સુવર્ણકુમાર નામક દેવો છે, તેઓ સર્વે સાબળો-હું તે મને સર્વને નમસ્કાર કરું છું અહીં જે ચક્રવર્તી એ આ પ્રમાણે કહ્યું છે તેનો અભિ-પ્રાય આ પ્રમાણે છે કે એ સર્વે દેવો મારી આજ્ઞા સુજળ ચાલનારા છે. તેથી મારાવડે છોડવામાં આવેલ બાણને સર્વ રીતે સહાયભૂત થશે જ કોથી હું તેમને નમસ્કાર કરું છું. જો કે અહીં કોઈ એવી આશંકા કરી શકે તેમ છે કે જ્યારે એ દેવો રાજાને આધીન

આજ્ઞા વશંવદત્તેન નિર્ધારિતા સ્તર્હિ તમ્ય નમસ્કારોઽનુપપન્નઃ ડતિ નોદ્ધાવનીયમ્.
ક્ષત્રિયાણાં શસ્ત્રસ્ય નમસ્કાર્યત્વે વ્યવહારદર્શનાત્ ચક્રગત્નસ્યેવ. તેન તદ્વધિષ્ઠાતૃણામપિ
સ્વાભિમત કાર્યમાધકૃત્ત્વેન નમસ્કારસ્યેષ્ટત્વાત્ 'ઇતિ કદ્દુ ઇસું નિસિરહત્તિ' ડતિ
કૃત્વા-નિવેદ્ય ઇસું-વાળ નિસૃજતિ મુશ્ચતિ । ભરતસ્યૈતત્પ્રસ્તાવવર્ણનાય ગાથા દ્વયમાહ-
પરિગરણિ ,રિયમજ્ઞો વાડદુય સોમમાણકોસેજ્જો ।

ચિત્તેણ સોમપ્ ધણુવરેણ ઇંદોવ્વ પન્ચક્લ્લં ॥ ૩ ॥

તં ચંચલાયમાણં પંચમિ ચંદોવમં મહાચાવં ।

છજ્જહ વામે હત્યે ણરવહ્ણો તંમિ વિજયમિ ॥ ૪ ॥

છાયા- પરિગરણિગહિતમધ્યો વાતોદ્ધૂતગોમમાણકોશેયઃ । ચિત્રેણ ધનુર્વરેણ
શોભતે ઇન્દ્ર ઇવ પ્રત્યક્ષમ્ । ૩ । તં ચંચલાયમાણ પંચમી ચન્દ્રોપમં મહાચાપમ્ ।
રાજતે વામે હસ્તે નરપતેસ્તસ્મિન્ વિજયે । ૪ । તત્ર પરિકરેણ-મલ્લકચ્છવન્ધેન યુદ્ધો-
ચિત્તવસ્ત્રવન્ધવિશેષેણ, નિગહિતં-મુવદ્ધં મધ્ય-મધ્યભાગઃ કટિભાગો યસ્ય સ તથા

સો યહ શંકા ઠીક નહીં હૈ ક્યોકિ ચક્રગત્ન કો તરહ જવ ક્ષત્રિયોં કો શસ્ત્ર નમસ્કાર્ય હૈં તો જો
અધિષ્ઠાયક દેવ હૈં અન્હે રાજા નમન કરે ઇસમૈં કોઈ અનુચિત વાત નહીં હૈ । કારણ
કિ વે મો રાજા કે અભિમત કાર્ય મૈં સાધક હોતે હૈ । (ઇતિ કદ્દુ ઇસું નિસિરહત્તિ) એસા
કહકર અમને વાળ કો છોડ દિયા । ભરત કે ઇમી પ્રસ્તાવ કો વર્ણન કરને કે લિયે યે દો
ગાથાઈ કહી ગઈ હૈ-

પરિગરણિગરિયમજ્ઞો વાડદુયસોમમાણકોસેજ્જો ।

ચિત્તેણ સોમપ્ ધણુવરેણ ઇંદોવ્વ પન્ચક્લ્લં ॥૧॥

તં ચંચલાયમાણં પંચમિ ચંદોવમં મહાચાવં ।

છજ્જહ વામે હત્યે ણરવહ્ણો તંમિ વિજયમિ ॥૨॥

જિસ પ્રકાર આજ્ઞાદે મૈં ડતરતે સમય પહિલવાન અપનો કાંછ કો વાંધજેતા હૈ ડસોં પ્રકાર
માગધતીથેશ કે સાધને કે લિયે ધનુષ પર વાળ ચઢા કર છોડને કે સમય ડસ ભરત રાજા ને

છે જ તો પત્રી તેમને નમસ્કાર કરવા ઉચિત કહેવાય નહિ તો આ શંકા ખરાખર નથી
કેમ કે ચક્રગત ની જેમ જ્યારે ક્ષત્રિયોને શસ્ત્ર નમસ્કાર્ય છે તો તેમના અધિષ્ઠાયક દેવ
છે, તેમને રાજા નમન કરે તેમા કોઈ અનુચિત વાત નથી કારણ કે તેઓ પણ રાજાના
અભિમત કાર્યમાં સાધક હોય છે (ઇતિ કદ્દુ ઇસું નિસિરહત્તિ) આ પ્રમાણે કહીને તેણે બાણ
છોડી દીધુ. ભરતના એ પ્રસ્તાવ ને સ્પષ્ટ કરવા માટે આ બન્ને ગાથાઓ કહેવામાં આવી છે-

પરિગરણિગરિયમજ્ઞો વાડદુયસોમમાણકોસેજ્જો ।

ચિત્તેણ સોમપ્ ધણુવરેણ ઇંદોવ્વ પન્ચક્લ્લં ॥૧॥

તં ચંચલાયમાણં પંચમિ ચંદોવમં મહાચાવં ।

છજ્જહ વામે હત્યે ણરવહ્ણો તંમિ વિજયમિ ॥૨॥

જે પ્રમાણે અખાહમાં ઉતરતી વખતે પહેલવાન કહેાટો બાંધે છે, તેમજ માગધ તીથેશ
શને સાધવા માટે ધનુષ ઉપર બાણ ચઢાવીને છોડતી વખતે તે ભરત રાજાએ પણ ચેતા-

कुमार इन सबके लिये नमस्कार करता हूँ यद्यपि यहा प' प्रयुक्त नमः शब्द से ही नमस्कार करने की बात आ जाती है, परन्तु फिर भी जो "पणिवयाभि" शब्द का प्रयोग किया है। वह भरत चक्री की भक्ति की अतिशयता ख्यापन करने के लिये किया गया है। हम तरह तरह प्रयोग के लिये साहाय्य करने वाले बहिर्भाग वासी देवों को संबोधित करके अब वह आन्तरिक वर्ती देवों का संबोधन करता है— (हृदि सुगुण भवतो अस्मिन्तरा सरस्व जे देवा—णागासुरा सुवर्णा सब्बे मेते विसयवासो ॥२॥—यहां "हृदि" पद सम्बोधन में प्रयुक्त हुआ है। मेरे मे रहनेवाले जो नागकुमार, असुरकुमार, सुवर्णकुमार नाम के देव हैं—वे सब सुन—मैं उन्हें नमस्कार करता हूँ। यहां जो चक्रवर्ती ने ऐसा कहा है उसका अभिप्राय ऐसा है कि ये सब देव मेरी आज्ञा के वशवर्ती होने के कारण मेरे द्वारा छोड़े गये बाण के सब प्रकार से सहायक होंगे ही इस कारण मैं उन्हें नमस्कार करता हूँ। यद्यपि कोई ऐसी आशंका यहां करे कि जब ये देव राजा के आधिपत्य होने रूप से निर्धारित हैं तो फिर उन्हें नमस्कार करना उसका अनुचित है।

હું નાગકુમાર, અમુરકુમાર, સુવર્ણકુમાર એ સર્વ માટે નમસ્કાર કરું છું જો કે અહીં પ્રયુક્ત 'નમ' શબ્દથી જ નમસ્કાર કરવાની વાત આવી જાય છે પણ છતાંજે જે "વનિ-વ્યામિ" શબ્દનો પ્રયોગ કરવામાં આવેલ છે તે ભરત ચક્રીની ભક્તિની અતિશયતા ખ્યા-યન કરવા માટે કહેવામાં આવેલ છે આ પ્રમાણે બાણ પ્રયોગમાં સહાયભૂત થનારા બહિ-ભાંગવાસી દેવોને સંબોધન કરીને હવે તે આભ્યતરવર્તી દેવોને સંબોધન કરે છે. (હિંદિ સુણતુ મન્વન્તો અન્નિમતરઞ્ચો સરસ્સ જો દેવા-જાનાસુરા સુવર્ણા સર્વે મંતે વિસય-વાસી ॥ ૨ ॥ અહીં "હિંદિ" પદ સંબોધન માટે પ્રયુક્ત થયેલ છે મારા દેશમાં રહેનારા જે નાગકુમાર, અમુરકુમાર, સુવર્ણકુમાર નામક દેવો છે, તેઓ સર્વ સાંભળો-હું તે મને સર્વને નમસ્કાર કરું છું અહીં જે ચક્રવર્તી એ આ પ્રમાણે કહ્યું છે તેનો અભિ-પ્રાય આ પ્રમાણે છે કે એ સર્વ દેવો મારી આજ્ઞા મુજબ ચાલનારા છે. તેથી મારાવડે છોડવામાં આવેલ બાણને સર્વ રીતે સહાયભૂત થશે જ એથી હું તેમને નમસ્કાર કરું છું. જો કે અહીં કોઈ એવી આશંકા કરી શકે તેમ છે કે જ્યારે તે દેવો રાજાને આધી-

આજ્ઞા વશંવદત્ત્વેન નિર્ધારિતા સ્તર્હિં તમ્ય નમસ્કારોડ્નુપપન્નઃ ડતિ નોદ્ધાવનીયમ્. ક્ષત્રિયાણાં શસ્ત્રસ્ય નમસ્કાર્યત્વે વ્યવહારદર્શનાત્ ચક્રરત્નસ્યેવ. તેન તદધિષ્ઠાતૃણામપિ સ્વામિમત કાર્યમાધકૃત્વેન નમસ્કારસ્યેષ્ટત્વાત્ 'ડતિ કદ્દુ ડપું નિસિરહત્તિ' ડતિ કૃત્વા-નિવેદ્ય ડપું-વાણ નિસૃજતિ મુશ્ચતિ । ભરતસ્યૈતત્પ્રસ્તાવવર્ણનાય ગાથા દ્વયમાહ-

પરિગરણિ ,રિયમજ્ઞો વાઙ્મુય સોમમાણકોસેજ્જો ।

ચિત્તેણ સોમણ ધણુવરેણ ઇંદોન્ન પન્ચક્કલં ॥ ૩ ॥

તં ચંચલાયમાણં પંચમિ ચંદોવમં મહાચાવં ।

છજ્જહ વામે હત્થે ણરવહ્ણો તંમિ વિજયંમિ ॥ ૪ ॥

છાયા- પરિકરનિગદિતમન્યો વાતોદ્ધૂતશોભમાનકૌશેયઃ । ચિત્રેણ ધનુર્વરેણ શોભતે ઇન્દ્ર ઇવ પ્રત્યક્ષમ્ । ૩ । તં ચન્ચલાયમાન પશ્ચમી ચન્દ્રોપમં મહાચાપમ્ । રાજતે વામે હસ્તે નરપતેસ્તસ્મિન્ વિજયે । ૪ । તત્ર પરિકરેણ-મલ્લકચ્છબન્ધેન યુદ્ધો-ચિતવસ્ત્રબન્ધવિશેષેણ, નિગદિતં-સુવદ્ધં મધ્યં-મધ્યમાગઃ કટિમાગો યસ્ય સ તથા

સો યહ શંકા ઠીક નહીં હૈ ક્યોકિ ચક્રરત્ન કો તરહ જવ ક્ષત્રિયો કો શસ્ત્ર નમસ્કાર્ય હૈં તો જો ડનકે અધિષ્ઠાયક દેવ હૈ ડન્હે રાજા નમન કરે ડસમેં કોઈ અનુચિત વાત નહીં હૈ । કારણ કિ વે મો રાજા કે અમિમત કાર્ય મેં સાધક હોતે હૈં । (ઇતિ કદ્દુ ડપું નિસિરહત્તિ) ઇસા કહકર ડમને વાણ કો છોડ દિયા । ભરત કે ડસી પ્રસ્તાવ કો વર્ણન કરને કે લિયે યે દો ગાથાઈ કહી ગઈ હૈં-

પરિગરણિગરિયમજ્ઞો વાઙ્મુયસોમમાણકોસેજ્જો ।

ચિત્તેણ સોમણ ધણુવરેણ ઇંદોન્ન પન્ચક્કલં ॥૧॥

ત ચંચલાયમાણં પંચમિ ચંદોવમં મહાચાવં ।

છજ્જહ વામે હત્થે ણરવહ્ણો તમિ વિજયમિ ॥૨॥

જિસ પ્રકાર આહ્વાદે મેં ડતરતે સમય પહિલવાન અપનો કાંછ કો વાંચ્છેતા હૈ ડસી પ્રકાર માગવતીથેશ કે સાવને કે લિયે ધનુષ પર વાણ વઢા કર છોડને કે સમય ડસ ભરત રાજા ને

છે જ તો પત્રી તેમને નમસ્કાર કરવા ઉચિત કહેવાય નહિ તો આ શંકા બરાબર નથી કેમ કે ચક્રરત્ન ની જેમ જયારે ક્ષત્રિયોને શસ્ત્ર નમસ્કાર્ય છે તો તેમના અધિષ્ઠાયક દેવ છે, તેમને રાજા નમન કરે તેમા કોઈ અનુચિત વાત નથી કારણ કે તેઓ પશુ રાજાના અભિમત કાર્યમાં સાધક હોય છે (ઇતિ કદ્દુ ડપું નિસિરહત્તિ) આ પ્રમાણે કહીને તેણે બાણ છોડી દીધું. ભરતના એ પ્રસ્તાવ ને સ્પષ્ટ કરવા માટે આ બન્ને ગાથાઓ કહેવામાં આવી છે-

પરિગરણિગરિયમજ્ઞો વાઙ્મુય સોમમાણકોસેજ્જો ।

ચિત્તેણ સોમણ ધણુવરેણ ઇંદોન્ન પન્ચક્કલં ॥૧॥

તં ચંચલાયમાણં પંચમિ ચંદોવમ મહાચાવં ।

છજ્જહ વામે હત્થે ણરવહ્ણો તમિ વિજયમિ ॥૨॥

જે પ્રમાણે અખાઠામાં ઉતરતી વખતે પહેલવાન કહેાટો બાંધે છે, તેમજ માગધ તીથે શને સાધવા માટે ધનુષ ઉપર બાણ ચઢાવીને છોડતી વખતે તે ભરત રાજાએ પશુ પોતા-

वातेन-प्रस्तावात् समुद्रपवनेन उद्धूतम्-उत्क्षिप्तं शोभमानं कौशेयं-वस्त्रविशेषो यस्य स तथा, चित्रेण धनुर्वरेण शोभने 'स भरतः' इन्द्र इव प्रत्यक्षम् साक्षात् नत्प्रागुक्त स्वरूपं महोचापं चञ्चलायमानं सौदामिनीयमानम्, आरोपितं गुणत्वेन पञ्चमीचन्द्रोपमम्, पञ्चमीचन्द्र उपमा यत्र तम् 'छज्जइ' राजते प्रकाशते, कुत्र इत्याह-वाम इस्ते नरपते श्रक्रिणो भरतस्य तस्मिन् विजये मागधतीर्थेश साधनरूपो । 'तए णं से सरे भरहेणं' रण्णा णिसिद्धे समाणे खिप्पामेव दुवालसजोयणाइं गंता मागहतित्थाहिव-इस्स देवस्स भवणंसि निवइए' ततः खलु स शरो भरतेन राज्ञा निरुद्धः सन् क्षिप्रमेव द्वादशयोजनानि गत्वा मागधतीर्थाधिपतेः देवस्य भवने निपतितः 'तए णं से मागहतित्थाहिवई देवे भवणसि सरं णिवइयं पासइ' ततः खलु स मागधतीर्थाधिपतिः देवो भवने स्वकीय स्थाने शरं निपतितं पश्यति 'पासित्ता' दृष्ट्वा आसुरत्ते' आशु शीघ्र रक्तः क्रोधोदयाद् स्फुरितकोपानलः 'रुद्धे चंडिकिए' रुद्धः- उदितक्रोधः चाण्डि-

भी अपनी घोड़ी को काँध को बाँध लिया था इससे उसके शरीर का मध्य भाग कटि भाग सुदृढ बन्धन से बद्ध हो जाने के कारण बहुत मजबूत हो गया था अथवा - युद्धोचित वस्त्र बन्धन विशेष से उसका मध्यभाग कटिभाग बँधा हुआ था इसने जो कौशेय वस्त्र विशेष पहिर रक्खा था वह समुद्र के पवन से घेरिरे उस समय हिल रहा था अतः वाम हाथ में धनुष लिये हुए वह भरत राजा प्रत्यक्ष इन्द्र के जैसा प्रतीत हो रहा था । तथा वाम हाथ में जो पूर्वोक्तरूप से वर्णित धनुष था वह विनली की तरह चमक रहा था- एवं शुक्र पक्ष की पचमी तिथि के चन्द्र जैसा प्रतीत हो रहा था. (तएणं से सरे भरहेणं रण्णा णिसिद्धे समाणे खिप्पामेव दुवालसजोयणाइं गंता भोग-हतित्थाहिवइस्स देवस्स भवणंसि निवइए) जब भरत राजा ने वह बाण छोड़ा तो छूटते ही १२ योजन तक जाकर मागधतीर्थ के अधिपति देव के भवन में पड़ा । (तएणं से मागहतित्थाहिवई भवणंसि सर निवइय पासइ) उस मागधतीर्थाधिपति देव ने ज्योंही अपने भवन में गिरेदुरु बाण को देखा तो (दृष्ट्वा) देखकर (आसुरत्ते रुद्धे चंडिकिए कुविए मिमभिसेमाणेनि) वह क्रोध से

नी घातीनी काँधने बांधी लीधी अथी तेना शरीरनेा मध्यभाग ओटले के कटिभाग सुदृढ बन्धनथी आबद्ध थई जवा महल्ल भहुअ मज्ज्यूत थई गये। अथवा युद्धोचित वस्त्र बन्धन विशेषथी तेना मध्यभाग कटिभाग आबद्ध हुतो ओखे ने कौशेय वस्त्र विशेष धारणु करैछु' हुतु, ते समुद्रना पवनथी धीमे-धीमे ते वज्रते डाढी रद्धु हुतु' अथी डाणा हाथमां धनुष धारणु करैछ ते भरत राजा प्रत्यक्ष इन्द्र जेवे। लागतो हुतो तथा वाम हस्तमां ने पूर्वोक्त उपमां वर्णित धनुष हुतु ते विद्युत् नी जेम अमझी रद्धु हुतु तेमज्ज शुक्रपक्षनी पंचमी तिथिना चन्द्र जेवु लागतु' हुतु, (तएणं से सरे भरहेणं रण्णा णिसिद्धे समाणे खिप्पामेव दुवालसजोयणाइं गंता मागहतित्थाहिवइस्स देवस्स भवणंसि निवइए) जयारे भरत राजाओ बाण छोड्यु' तो छूटता ज १२ योजन मुधी जधने मागध तीर्थना अधिपति देवना भवनमां पड्यु. (तएणं से मागहतित्थाहिवई भवणंसि सर निवइय पासइ) ते मागध तीर्थाधिपति देवे जयारे घाताना भवनमां पडेछुं बाणु जेथु तो

वियतः—सञ्ज्ञातचाण्डिक्यः अतिक्रोधयुक्त इत्यर्थः, 'कुत्रिण' कुपितः—प्रवृद्ध क्रोधो-
दयः 'मिसेमिसेमाणे ति' कोपाग्निना दीप्यमान इव दन्तरोष्ठे दशन मिसमिसशब्दं
कुर्वाण इत्यर्थः 'तिवलियं मिउडिं णिडाळे साहरइ' त्रिपलिकां तिस्रो वलयः प्रकृष्ट
क्रोधोदितललाटेखा रूपा यस्यां सा तथा ता तथाविधा भृकुटिं संहरति निवेद्यति
आकर्षयतीत्यर्थः 'संहरित्ता' संहरत्य 'एव वयासी' एवमवादीत उक्तवान् 'केम णं' इत्यादि
'केस णं' भो एस अपत्थियपत्थए दुरतपंतलक्खणे हीणपुण्णचाउडसे हिरिसिरि-
परिवज्जिए जेणं मम इमाए एयाणुरूवाए दिव्वाए देविद्धीए दिव्वाए देवजुईए
दिव्वेणं दिव्वाणुभावेण लद्धाए पत्ताए अभिसमण्णागयाए उप्पि अप्पुस्सुए भवणसि
सर णिसिरइत्ति कट्ठु सीहासणाओ अब्बुट्ठेइ' कः खलु भो एपः अप्रार्थितप्रार्थकः
दुरन्तप्रान्तलक्षण हीनपुण्णचातुर्दश ह्री श्री परिवर्जितः यः खलु मम अस्या एतदू-
पायाः दिव्यायाः देवश्रद्धयाः दिव्याया देवद्युतेः दिव्येन देवानुभावेन लब्धायाः
प्राप्ताया अभिसमन्वागताया उपरि आत्मना उत्सुकः भवने शरं निरुज्जतीति कृत्वा

रक्त—आग—बबूला हो गया—क्रोध के उदय से जग गई हे क्रोध रूपी अग्नि जिसकी ऐसा बन
गया—जिसने यह बाण फेका है उसके ऊपर व गुस्सेमें भर गया—अत एव उसके रूपमें रौद्र-
भाव प्रकटने लग गया और उदित क्रोध के वशवर्ती होकर वह दातों से अपने होठों को डसता
हुआ मिसमिसाने लग गया (तिवलियं मिउडिं णिडाळे साहरइ) उसी समय उसकी भृकुटि
त्रिवाल युक्त होकर ललाट पर चढ़ गई—टेढ़ी हो गई (संहरित्ता एवं वयासी) भृकुटि ललाट
पर चढ़ाकर वह फिर ऐसा सोचने लगा (केसणं भो एस अपत्थियपत्थए दुरतपंतलक्खणे
हीणपुण्णचाउडसे हिरिसिरिपरिवज्जिए जेणं मम इमाए एयाणुरूवाए दिव्वाए देविद्धीए दिव्वाए
देवजुईए दिव्वेणं देवाणुभावेण लद्धाए पत्ताए अभिसमण्णागयाए उप्पि अप्पुस्सुए भवणसि सरं-
णिसिरइत्ति कट्ठु सीहासणाओ अब्बुट्ठेइ) अरे। ऐसा यह—कौन अप्रार्थित प्रार्थी—मरण का
अभिलाषी हुआ है—अर्थात् ऐसा कौन है जो मेरे साथ युद्ध का अभिलाषी होकर अपनी अकाल

(हृष्टा) क्रोधने (आसुरत्वेरुद्धे बंडविक्रप कुविप मिसमिसे माणेति) ते क्रोधशी रक्त थप गये।
क्रोधना उदयशी क्रोध रूपी अग्नि नेमां प्रकट थये छे जेवो ते थप गये। जेथे आ पाणु
इं कथुं तेनी उपर ते क्रोधाविष्ट थप गये। क्रोधशी तेना रूपमां रौद्रभाव प्रकटवा लाग्यो अपने
क्रोधवशवर्ती थपने ते हात पीसवा लाग्यो अने डोह करवा लाग्यो (तिवलियं मिउडिं
णिडाळे साहरइ) ते वपते तेनी भृकुटि त्रिवाल युक्त थप गप ललाट उपर थडी गप-
पके थप गप (संहरित्ता एवं वयासी) भृकुटि ललाट पर चढ़ावीने तेथे आ प्रभाणु
विचार कथे। (केस णं भो एस अपत्थियपत्थए दुरतपंतलक्खणे हीणपुण्णचाउडसे
हिरिसिरिपरिवज्जिए जे णं मम इमाए एयाणुरूवाए दिव्वाए देविद्धीए दिव्वाए देवजुईए
दिव्वेणं देवाणुभावेण लद्धाए पत्ताए अभिसमण्णागयाए उप्पि अप्पुस्सुए भवणसि
सरं णिसिरइत्ति कट्ठु सीहासणाओ अब्बुट्ठेइ) अरे। आ डोणु अप्रार्थित प्रार्थी—
मरणअभिलाषी थये छे जेटवे के जेवो डोणु छे के जे मारी साथे युद्ध करवा तैयार थये।

સિંહાસનાદમ્બ્યુચ્છિષ્ઠિતિ ઇતિ, તત્ર કઃ સ્વલ્પ અનિદ્દિષ્ટનામકઃ મો ઇતિ સમ્બોધને દેવાનાં મધ્યે एषः—बाणप्रयोक्ताः, अप्रार्थितप्रार्थक इति, अप्रार्थितम्—अमनोरथगोचरीकृतम् प्रस्तावात् मरणं तस्य प्रार्थकोऽभिलाषी, यो मया सह युयुत्सुः स मरणमभिवाञ्छतीतिभावः, दुरन्तप्रान्तलक्षण इति तत्र दुरन्तानि दुष्टावसानानि प्रान्तानि—तुच्छानि लक्षणानि यस्य स तथा अशुभलक्षणसम्पन्न इत्यर्थः हीनपुण्यचातुर्दश इति, हीनायां पुण्यचातुर्दशयां जातो हीनपुण्यचातुर्दशः कृष्णचातुर्दशी जात इत्यर्थः, ह्री श्री परिवर्जित इति, ह्रिया—लज्जया श्रिया शोभया च परिवर्जितः—रहितः यः स्वल्प मम अस्याः प्रत्यक्षानुभूयमानायाः दिव्यायाः प्रधानायाः देवद्वय्याः देवानाम् ऋद्धिः धनरत्नादिसम्पत् देवर्द्धिः तस्याः, दिव्याया देवद्युतेरिति, देवानां द्युतिर्देवद्युतिः—देवशरीराभरणादिसम्पत् तस्याः तथा दिव्येन देवानुभावेन देवभवप्रभावेण लब्धायाः—जन्मान्तरोपाजितपुण्येन स्वायत्तीप्राप्तायाः—अधुनोपस्थिताया अभिसमन्वागतायाः भोग्यत्वेन अधीनया उपरि अल्पोत्सुकः प्राणत्राणोत्साहवर्जितः, यो मम भवने शरं निमृजति बाणं प्रक्षिपति इति कृत्वा इत्युक्त्वा सिंहासनादम્ब्युચ્છિષ્ઠિતિ (અમ્બુદ્વિત્તા) અમ્યુત્યાય (જેણેવ સે ણામાહર્યંકે સરે તેણેવ ડવાગચ્છહ) યત્રૈવ નામા-

મૃત્યુ કો બુઝા રહા હૈ મેરી સમક્ષમેં વહ કુલક્ષગો હૈ અશુભ લક્ષણો વાલા હૈ હોન પુણ્ય ચાતુર્દશ હૈ હીન — પુણ્યવાળી ચતુર્દશો મેં — કૃષ્ણ ચતુર્દશો કે દિન — ડસકા — જન્મ હુઆ હૈ તથા વહ મો હો સે રહિત હૈ કિં જિસને મેરો હમ પ્રત્યક્ષ મેં અનુભૂયમાન પ્રધાન દેવર્દ્ધિ — ધનરત્નાદિરૂપ સમ્પત્તિ કે ઉપર, દેવદ્યુતિ કે ઉપર — દેવ શરીર, આભરણાદિ કી કાન્તિ કે ઉપર જો કિં મૈને દિવ્ય દેવાનુભાવસે—જન્માન્તરોપાર્જિત પુણ્ય સે અપને અધોન કી હૈ તથા જિસકે ભોગને કા મુઝે હી અધિકાર હૈ બાણ કા વાર કિયા હૈ—જ્ઞાત હોતા હૈ વહ અલ્પોત્સુક હૈ—પ્રાણ પ્રાણ કે ડત્સાહ સે વર્જિત હો ચુકા હૈ—નહીં તો ડસે મેરે ભવન મેં બાણ છોડ્ઝે કા ક્યા અધિકાર થા ઈસા સોચ કર વહ શીઘ્ર હી સિંહાસન સે ડઠ બેઠા (અમ્બુદ્વિત્તા જેણેવ સે ણામાહર્યંકે સરે તેણેવ ડવાગચ્છહ) ઔર ડઠ કર વહ જહાં પર વહ નામાક્ષિત બાણ પડા હુઆ થા વહાં પર આયા—(ડવાગ-

છે, અને પોતાના અકાલ મૃત્યુને ઓલાવી રહ્યો છે. મને લાગે છે કે તે કુલક્ષણી છે, અશુભ લક્ષણો વાળો છે, હીનપુણ્ય ચાતુર્દશ છે.—હીન પુણ્યવાળી ચતુર્દશીમાં—કૃષ્ણ ચતુર્દશીના દિવસે તેનો જન્મ થયો છે તેમજ તે શ્રી-હી થી રહિત છે કેમકે તેને મારી આ પ્રત્યક્ષ-માં અનુભૂયમાન પ્રધાન દેવર્દ્ધિ—ધનરત્નાદિરૂપ સમ્પત્તિ ઉપર—દેવ દ્યુતિ ઉપર—દેવ શરીર, આભરણાદિની કાન્તિ ઉપર કે જે મેં દિવ્ય દેવાનુભાવથી જન્માન્તરોપાર્જિત પ્રમળ પુણ્યથી સ્વાધીન બનાવી છે તેમજ જેને ભોગવવા નો અધિકાર મને જ પ્રાપ્ત થયેલો છે—બાણ પ્રહાર કર્યો છે મને લાગે છે કે તે અલ્પોત્સુક છે, પ્રાણુત્રાણના ઉત્સાહથી વર્જિત થઈ ચૂક્યો છે, નહીં તો તે મારી ઉપર બાણ છોડવાનું સાહસ જ કેવી રીતે કરી શકે ? આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તે તરત જ સિંહાસન ઉપરથી ઉભો થઈ ગયો. (અમ્બુદ્વિત્તા જેણેવ ણામાહર્યંકે સરે તેણેવ ડવાગચ્છહ) અને ઉભો થઈને તે ન્યા તે નામાક્ષિત બાણ પડેલું

હતાઢ્કુઃ નામાઢ્કિતઃ શરઃ તત્રૈવોપાગચ્છતિ, તત્ર નામરૂપોઢ્કતઃ-અણ્ણિતઃ અઢ્કુઃ-
ચિન્હં યત્ર સ તથા નામાઢ્કિત ઇત્યર્થઃ (ઉવાગચ્છિત્તા) ઉપાગત્ય (તં ણામાઢ્કયક
સરં ગેણ્હઢ્ક) તં નામાઢ્કતાઢ્કં શરં શૃઢ્કાતિ (ણામંકં અણુપ્પવાણ્હ) નામાઢ્કુમ્ અનુ-
પ્રવાચયતિ વર્ણાનુપૂર્વોક્રમેણ પઠતિ (ણામક અણુપ્પવાણ્માણસ્મ ડમે ણ્યાઢ્કવે અઙ્ગ-
તિય્ણ ચિંતીય પત્થિય કપ્પિય મળોગય મંકપ્પે સમુપ્પજ્જિતથા) નામાઢ્કુમ્ અનુપ્ર-
વાચયતોઢ્કયં વક્ષ્યમાણ એતદ્દૂપો વક્ષ્યમાણસ્વરૂપ આધ્યાત્મિકઃ ચિન્તિતઃ પ્રાર્થિતઃ
કલ્પિતઃ મનોગતઃ સંકલ્પઃ સમુદ્પદ્યત, તત્ર આત્મનિ અધિ અધ્યાત્મ તત્ર ભવઃ
આધ્યાત્મિકઃ આત્મવિષય ઇત્યર્થઃ અઢ્કુરઢ્કવ ચિન્તિત ઇતિ, સંકલ્પઃશ્ચ દ્વિતીયા ધ્યાના-
ત્મકઃ ચિન્તાત્મકઃશ્ચ તત્રાદ્યઃ સ્થિરાધ્યવસાયઢ્કલ્પઃ, દ્વિતીયશ્ચલાધ્યવસાયઢ્કલ્પઃ,
અસ્મિન્ પક્ષે ચિન્તિતઃ-ચિન્તાત્મકઃ ચેતસોઢ્કનવસ્થિતત્વાત્ પ્રાર્થિતઃ-પ્રાર્થનાવિષયઃ અર્થ
મે મનોરથઃ ફઢ્કઝાન્ ભૂયાદિત્પભિન્નાપાત્મક ઇત્યર્થઃ પુષ્પિત ઇવ કલ્પિતઃ = સ એવ

ચિત્તા તં ણામાઢ્કયકં સર પગેણ્હઢ્ક) વઢ્કા આકર કે ડમને ડમ નામાઢ્કિત વાળ કો અપને
હાથ મેં ડઢ્કા લિયા । (ણામંકં અણુપ્પવાણ્હ) ઓર નામ કે અક્ષરો કો વાચા (ણામંક અણુપ્પ-
વાણ્માણસ્મ ઇમેરયાવે અઙ્ગતિય પત્થિય મળોગય સરૂપે સમુપ્પજ્જિતથા) નામા કેન અક્ષરો
કો વાચતે હુપ ડસે એસા વક્ષ્યમાણ સ્વરૂપ વાલા આધ્યાત્મિક, ચિન્તિત, પ્રાર્થિત, કલ્પિત, મનો-
ગત, સંકલ્પ ડત્પન્ન હુઆ । વઢ્ક સંકલ્પ આત્મા મેં ડત્પન્ન હુઆ ઇપલિયે ડસે આધ્યાત્મિક કહા
હે ચિન્તા યુક્ત હોને સે વઢ્ક ચિન્તિત થા । સંકલ્પ ડો પ્રકાર કા હોતા હૈ-એક ધ્યાનાત્મક ઓર
ડૂસરા ચિન્તાત્મક । ઇન્મેં પહિલા સ્થિર અધ્યવસાયરૂપ હોતા હૈ । કયો કો યહ તથાવિધ દ્વઢ્કસં-
હનનાદિગુણ વાલો કે હોતા હૈ, ડૂમરા ચઙ્ગાધ્યવસાયરૂપ હોતા હૈ । ઓર યહ તથાવિધ દ્વઢ્કસં-
હનનાદિ ગુણવાલો સે ભિન્ન જીવો કે હોતા હૈ ડનમેં સે યહ સંકલ્પ ચિત્ત કો અનવસ્થિતિરૂપ હોને
સે ચિન્તિત થા એસા સંકલ્પ અનભિન્નાપાત્મક મી હો સકતા હૈ । ઇસકે ડિયે કહા ગયા હૈ કિ
નહી યહ ડમકા સંકલ્પ પ્રાર્થિત થા અભિલાષા જન્ય થા અર્થાત્ યહ મેરા સંકલ્પ ફઢ્કઝાહો હોગા

હત્તુ' ત્યાં ગથે. (ઉવાગચ્છિત્તા તં ણામાઢ્કયકં સર ગેણ્હઢ્ક) તા ઝડને તેણે તે નામા-
કિત બાણુને પોતાના હાથમા લીધું (ણામંકં અણુપ્પવાણ્હ) અને નામના અક્ષરો વાચ્યા,
(ણામંકં અણુપ્પવાણ્માણસ્મ ઇમે ણ્યાઢ્કવે અઙ્ગતિય પત્થિય મળોગય સંકલ્પે સમુપ્પજ્જિતથા)
નામાકિત અક્ષરો વાચીને તેને એવો વક્ષ્યમાણ સ્વરૂપ વાળો આધ્યાત્મિક ચિંતિત, પ્રાર્થિત
કલ્પિત, મનોગત સંકલ્પ ડત્પન્ન થયો તે સંકલ્પ આત્મામાં ડત્પન્ન થયો એથી તેને
આધ્યાત્મિક કહેવામાં આવ્યો છે ચિન્તાયુક્ત હોવા બદલ તે ચિંતિત હોતા સંકલ્પ
મે પ્રકારના હોય છે-એક ધ્યાનાત્મક અને બીજો ચિન્તાત્મક એમા પ્રથમ સ્થિર અધ્યવસાય
રૂપ હોય છે કેમકે એ તથાવિધ દ્વઢ્કસંહનનાદિ ગુણવાળાઓને થાય છે બીજો સંકલ્પ
અધ્યાધ્યવસાય રૂપ હોય છે અને તે તથાવિધ દ્વઢ્કસંહનનાદિ ગુણવાળાઓથી ભિન્ન એવો
ને હોય છે, તેમનામા આ સંકલ્પ ચિત્તની અનવસ્થિતિ રૂપ હોવા બદલ ચિતિત હોતો.
એવો સંકલ્પ અનભિલાષાત્મક પણ થઈ શકે એથી કહેવામા આવેલ છે કે આ સંકલ્પ

व्यसथायुक्तः सर्गया राजयोग्यापहारप्रदानेन मया राजा सत्कार्यः इति कार्याकारेण विचारः द्विपत्रित इव मनोगतः न बहिर्वचनेन प्रकाशितः एवंविधः संकल्पः समु-
दपद्यत, तमेवाह—(उप्यण्णे खलु भो) उत्पन्नः खलु निश्चयेन भो इत्यामन्त्रणे (जम्बु-
द्वीवे दीवे भरहे णामं राया चाउरंतचक्रवर्त्तो) जम्बूद्वीपे द्वीपे भरते वर्षे भरतो
नाम राजा चातुरन्तचक्रवर्त्तो (तं जीयमेयं तीय पञ्चुप्पणमणागयाणं मागहतित्थ-
कुमाराणं देवाणं राईणमुवत्थाणीयं करेत्तए) तत् तस्माज्जीतमेतत् अतीतप्रत्युत्पन्नाना-
गतानां मागधतीर्थकुमाराणाम्, मागधतीर्थस्य अधिपतयः कुमाराः मागधतीर्थकुमाराः
तेषां तन्नामकानां राज्ञां नरदेवानाम् उपस्थानिकं प्राप्तं कर्तुम् (तं गच्छामि ण अहं
पि भरहस्स रण्णो उवत्थाणीयं करेमि त्ति कट्ठु एवं सपेहेइ) तत् गच्छामि खलु
अहमपि भरतस्य राज्ञश्चक्रिण उपस्थानिकं करोमि इति कृत्वा इति मनसि विचिन्त्य
एवं वक्ष्यमाणं निजकृदिसारं संप्रेक्षते पर्यालोचयति ॥६०॥ ६॥

ततः किं करोति इत्याह— “संपेहेत्ता” इत्यादि।

**मूलम्—संपेहेत्ता हारं मउडं कुंडलाणि य कडगाणि य तुडियाणि य
वत्थाणि य आभरणानि य सरं च णामाहयंकं मागहतित्थोदगं च गेण्हइ**

ऐसा अभिलाषा वाला था तथा उसने इसे अभी तक मन में ही रखा था बाहिर किसी को बचन
द्वारा नहीं कहा था—इसलिये वह मनोगत था (उप्यण्णे खलु भो जम्बुद्वीवे दीवे भरहे णाम राया
चाउरंतचक्रवर्त्तो) ओह ! जम्बूद्वीप में भरत क्षेत्र में चा रन्त चक्रवर्त्तो भरत नाम का राजा
उत्पन्न हुआ है—(तं जीयमेयं तीयपञ्चुप्पणमणागयाणं मागहतित्थकुमाराण देवाणं राईणमुव
त्थाणीय करेत्तए) अतः अतीत प्रत्युत्पन्न मागध तीर्थ के अधिपति कुमारों का यह जीत-परम्परागत
व्यवहार—है कि वे उसे नजराना—मेट—उपस्थित करें—(त गच्छामि अहं पि भरहस्स रण्णो उवत्था-
णीयं करेमि त्ति कट्ठु एवं सपेहेइ) तो अब मैं चढ़ और चक्रकर भरत राजा को नजराना उप-
स्थित करूँ इस प्रकार से विचार करके फिर उसने नजराना प्रदान करने के योग्य वस्तुओं के
सम्बन्ध में विचार किया— ॥६॥

तेने आर्थित्तं हतो अने ते अभिलाषाजन्यं हतो ओटवे के ओ भारे स कट्ठु इति आहो
थशे ओवी अभिलाषा युक्तं हतो तेभज्ज तेष्से अत्थार सुधी तेने पोताना मनमा ७ राज्ञो
होतो। ओहार केधनी पासपेषु वचनं दाश प्रकट कथो न हतो, ओथी ते मनोगतं हतो (उप्य-
ण्णे खलु भो जम्बुद्वीवे दीवे भरहे णामं राया चाउरंतचक्रवर्त्तो) ओह ! जम्बूद्वीपमा
भरत क्षेत्रमां चातुरन्त चक्रवर्त्तो भरत नामे राजा उत्पन्नं थये। छे (तं जीयमेयं तीय-
पञ्चुप्पणमणागयाण मागहतित्थकुमाराणं देवाणं राईण उवत्थाणीयं करेत्तए) ओथी अ-
तीत प्रत्युत्पन्न मागध तीर्थना अधिपति कुमारोने आ एत-पर परागत व्यवहार—छे के
तेओ तेने नजरालु (मेट) करे (तं गच्छामि अहं पि भरहस्स रण्णो उवत्थाणीयं करेमि
त्ति कट्ठु एवं सपेहेइ) तो हवे हुं ७६ अने ७७ने भरत राजाने नजरालु उपस्थित
कइ आ प्रभावे विचार करीने पछी नजरालु योग्य वस्तुओना विषे विचार कथो ॥ ६॥ ६॥

गिणिहत्ता ताए उक्किट्ठाए तुडियाए चवलाए जयणाए सीहाए मिग्घाए
उड्डयाए दिव्वाए देवगईए वीईवयमाणे वीईवयमाणे जेणेव भरहे गया
तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अंतलिक्खपडिवण्णे सखिखिगीयाइं पंच
वण्णाइं वत्थाइं पवरपरिहिए कस्यलपरिग्गहियं दमणहं सिर जाव अंजलि
कट्टे भरहं रायं जएणं विजएण वद्धावेत्ता एवं वयासी अभिजिणं देवा-
णुप्पिएहिं केवलकप्पे भग्हे वासे पुरत्थिमेणं मागहतित्थमेराए तं अहण्णं
देवाणुप्पियाणं विसयवासी अहण्णं देवाणुप्पियाणं आणत्ती किंकरे आ-
हण्णं देवाणुप्पियाणं पुरत्थिमिल्ले अंतवाले तं परिच्छंतु णं देवाणुप्पिया !
ममं इमेयारूवं पीइदाणं त्तिकट्टु हारं मउडं कुंडलाणि य कडगाणि य
जाव मागहतित्थोदगं च उवणेइ, तएणं से भरहेराया मागहतित्थकु-
मारस्स देवस्स इमेयारूवं पीइदाणं पडिच्छइ पडिच्छित्ता मागहतित्थकु-
मार देवं सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ
तएण से भरहे राया रहं परावत्तेइ, परावत्तेत्ता मागहतित्थेणं लवणस-
मुद्दाओ पच्चुत्तरइ पच्चुत्तरित्ता जेणेव विजयखंधावारणवेसे जेणेव
बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तुरए गिणिहइ
गिणिहत्ता रहं ठवेइ ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता जेणेव
मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ अणु-
पविसित्ता जाव ससिक्ख पियदंसणे णस्वई मज्जणघराओ पडिणिकख-
मइ पडिणिकखमित्ता जेणेव भोयणमंडवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता
भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए अट्ठमभत्तं पारेइ पारित्ता भोयणमंडवाओ
पडिणिकखमइ पडिणिकखमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव
सीहासणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे
णिसीयइ णिसीइत्ता अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ सहावेइ सहवित्ता एवं
वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! उस्स ककं उक्करं जाव मागहतित्थ-
कुमारस्स देवस्स अट्ठाहियं महामहिमं करेइ करित्ता मम एयमाणित्तयं

पञ्चपिणह, तएणं ताओ अट्टारससेणिप्पसेणीओ भरहेणं रण्णा एवं
 बुत्ताओ समाणीओ हट्ठ जाव करेंति करित्ता एयमाणत्तियं पञ्चपि-
 णंति, तएणं. से दिव्वे चक्कस्यणे वइरामयतुंवे लोहियक्खामयारए
 जंबुणयणे मीए णाणामणिखुरप्पथालपरिगए मणिमुत्ताजालभूसिए
 सणंदिघोसे सखिंखिणीए दिव्वे तरुणरविमंडलणिमे णाणामणिर-
 यणघंटियाजालपरिक्खित्ते सव्वाउअसुरभि कुसुम आसत्तमल्लदामे
 अंतलिक्खपडिवण्णे जक्खसहस्ससंपरिबुडे दिव्वतुडियसइसण्णिणादेणं
 पूरेते चेव अंवस्तलं णामेण य सुदंसणे णरवइस्स पढमे चक्कस्यणे माग
 हतित्थकुमारस्स देवस्स अट्टाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए
 आउहवरसालाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता दाहिणपञ्चत्थिमं
 दिसे वरदामतित्थाभिमुहे पयाए यावि होत्था ॥सू०७॥

छाया—संप्रेक्ष्य द्वार मुकुटं कुण्डलानि च वृष्टिकानि च वस्त्राणि च आभरणानि
 च शर च नामादत्ताङ्क मागधतीर्थोदकं च गृह्णाति गृहीत्वा तथा उत्कृष्टया त्वरया चपलया
 चपलया यत्नया सिंहाया उद्धृतया दिव्यया देवगत्या व्यतिव्रजन् यत्रैव भरतो राजा तत्रैव
 उपागच्छति, उपागत्य अन्तरिक्षप्रतिपन्नः सकिंकिणीकानि पञ्चवर्णानि वस्त्राणि पवरप-
 रिहितः करतलपरिगृहीतशिरयावत् मञ्जलिं कृत्वा भरतं राजान जयेन विजयेन वर्द्धयति,
 वर्द्धयित्वा पवमवादीत्, अभिजितं खलु देवानुप्रियैः केवलकल्पं भरत वर्षं पौरस्त्ये मागधतीर्थ-
 मर्यादया तर्ह्यं खलु देवानुप्रियाणाम् विषयवासी अहं देवानुप्रियाणामाज्ञप्तिकिङ्करः अहं
 देवानुप्रियाणां पौरस्त्योऽन्तपालः तत् प्रतीच्छन्तु खलु देवानुप्रियाः मम पतद्रूपं प्रीतिदानम्
 इति कृत्वा द्वारं मुकुटं कुण्डलानि च कटकानि च यावत् मागधतीर्थोदकं च उपनयति,
 ततः खलु स भरतो राजा मागधतीर्थकुमारस्य देवस्य इदमेतद्रूपं प्रीतिदानं प्रीतिच्छति प्रतीष्य
 मागधतीर्थकुमारं देव सत्कारयति सम्मानयति सत्कार्यं सन्मान्य च प्रतिविसर्जयति ततः
 खलु स भरतो राजा रथं परावर्त्तयति, परावर्त्त्य मागधतीर्थेन लवणसमुद्रात् प्रत्यवतरति
 प्रत्यहं तीर्थं यत्रैव विजयस्कन्धावारनिवेशो यत्रैव बाह्या उपास्थानशाला तत्रैवोपागच्छति,
 उपागत्य तुरगान् निगृह्णाति निगृह्य रथं स्थापयति, स्थापयित्वा रथात् प्रत्यवरोहति, प्रत्यवरुह्य
 यत्रैव मञ्जनगृहं तत्रैवोपागच्छति उपागत्य मञ्जनगृहमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य यावत् शशीव
 प्रियदर्शनो नरपतिः मञ्जनगृहात् प्रतिनिष्क्रामति प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव भोजनमण्डपस्तत्रैवोपा-
 गच्छति उपागत्य भोजनमण्डपे सुखासनवरगतं अष्टमभक्तं पारयति पारयित्वा भोजनमण्डपात्
 प्रतिनिष्क्रामति प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला यत्रैव सिंहासनं तत्रैवोपागच्छति
 उपागत्य सिंहासनवरगतः पौरस्त्याभिमुखो निषीदति, निषद्य अष्टादश प्रश्नेषुः

शब्दयति शब्दयिता णापादोन धिप्रमेन भो देवानुप्रिया । उन्मुक्तम उन्मगं यावत्
मागधतीर्थकुमारस्य देवस्य अप्रादिका महामहिमा कुम्भं दृष्ट्वा मम एतामाग्निकां प्रत्यर्पयन्
तत खलु ताः अप्रादय श्रेणिप्रश्रयण्य भर्तते राजा परम्, उक्ता सन्य हृष्ट्यावन कुर्वन्ति.
कृत्वा एतामाग्निकां प्रत्यर्पयन्ति नत गलु तदिव्य चक्ररत्न चक्रमय तुम्बं लोहितद्व
रत्नमयारक जाम्बूनम् नेमि नानामणिभुरप्रस्थालपरिगतं मणिमुक्ताजालभूषितम्, सनन्दि
धोपम् सकिद्विणीकम्, दिव्यम् तस्मिन्निर्मलम् नाना-मणिरत्नघण्टिकाजालपरि-
क्षिप्तम् सर्वं सुरभिकुसुमासक्त मात्यदाम अन्तरिक्ष प्रतिपन्नम् यक्षसहस्रवहं परिधृतम्, दिव्य
वृद्धितशब्द सन्निनायेन पूरयद्वि च अम्बरतलम् नाम्ना च सुदर्शनम् नरपते. प्रगमम्
चक्ररत्नम्, मागधतीर्थकुमारस्य देवस्य अप्रादिकाया महामहिमाया निवृत्ताया सत्याम् आयु-
धगृहशालत प्रतिनिष्कामति प्रतिनिक्रम्य दक्षिणपश्चिमा दिश वरदामनीथाभिमुख्य प्रयातं
चलितं चाप्यभवत् ॥सू० ७॥

टीका—(संपेहेत्ता) इत्यादि ।

(संपेहेत्ता) संप्रेक्ष्य-पर्यालोच्य (हारं मण्डं कुंडलाणि य कडगाणि य तुडियाणि
य वत्थाणि य आभरणानि य सरं च णामाहयकं मागहतित्थोदगं च गेण्हइ) हारम्—
अष्टादशादिसरिकमुक्ताहारम् तत्र मुकुटं-शिरोभूषणम्, कुण्डलानि च, कर्णभूषणानि,
कटकानि च- इस्ताभरणानि, वृद्धितानि च बाह्याभरणानि, वस्त्राणि च नानामणि-
रत्नादि खचित परिधेयपट्टवस्त्राणि भरतस्य प्रत्यर्पणाय शरं-बाणं च, नामाहताङ्गं
भरतेति नामाङ्कितचिन्हं शरं च मागधतीर्थोदकं च-राज्याभिषेकोपयोगि मागधतीर्थजलं
च एतानि गृह्णाति (गिण्हत्ता) गृहीत्वा (ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए जयणाए
सीहाए सिग्घाए उद्धूमाए दिव्वाए देवगईए वीईवयमाणे वीईवयमाणे जेणेव भरहे
राया तेणेव उवागच्छइ) तथा उत्कृष्टया त्वरितया चपलया जया सिंघया गोघ्रया उद्धू-
तया दिव्यया देवगत्या व्यतिव्रजन् व्यतिव्रजन् यत्रैव भरतो राजा तत्रैवोपागच्छति,

‘संपेहेत्ता हारं मण्डं कुंडलाणि य’ इत्यादि सू०-७

टीकार्थ—(संपेहेत्ता) अच्छी तरह से विचार करके (हारं मण्डं कुंडलाणि य कडगाणि य तुडि-
याणि य वत्थाणि य आभरणानि य सरं च णामाहयकं मागहतित्थोदगं च गेण्हइ) उसने हार, मुकुट,
कुण्डल, कटक, वृद्धित-बाहुके आभरण, नानामणिरत्नादिक से खचित पहिरने योग्य वस्त्र भरत के
नाम से अङ्कित बाण एवं मागधतीर्थ का राज्याभिषेकोपयोगी उदक लिया—(गिण्हत्ता ताए
उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए जयणाए सीहाए सिग्घाए उद्धूमाए दिव्वाए देवगईए वीईवय-

‘संपेहेत्ता हारं मण्डं कुंडलाणिय’ इत्यादि सू० ७ ॥

टीकार्थ—(संपेहेत्ता) सारी रीति विचार करीने (हारं मण्डं कुंडलाणिय कडगाणि य तुडिया-
णिय, वत्थाणिय आभरणानि य सरं च णामाहयकं मागहतित्थोदगं च गेण्हइ) तेथे हार, मुकुट,
कुण्डल, कटक, वृद्धित-बाहुना आभरण विशेष नानाभूषि रत्नादिकथी अचित पडेइया येइथ
पक्षी सशतना नाभथी अ कित भाषु तेम अ मागधतीर्थ दुं राज्याभिषेक येइथ उदक जे
अधी पधुथो वीधी (गिण्हत्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए जयणाए सीहाए सि-
ग्घाए उद्धूमाए दिव्वाए देवगईए वीईवयमाणे जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छइ) जे

पञ्चपिणह, तण्णं ताओ अट्टारससेणिप्पसेणीओ भरहेणं रण्णा एवं
 वुत्ताओ समाणीओ हट्ठ जाव करेति करित्ता एयमाणत्तिथं पञ्चपि-
 णंति, तण्णं. से दिव्वे चक्करयणे वइरामयतुंवे लोहियक्खामयारए
 जंबुणयणे मीए णाणामणिखुरप्पथालपरिणए मणिमुत्ताजालभूसिए
 सणंदिघोसे सखिखिणीए दिव्वे तरुणरविमंडलणिमे णाणामणिर-
 यणघंटियाजालपरिक्खित्ते सव्वाउअसुरभि कुसुम आसत्तमल्लदामे
 अंतलिक्खपडिवण्णे जक्खसहस्ससंपरिखुडे दिव्वतुडियसइसण्णिणादेणं
 पूरेते चेव अंवरतलं णामेण य सुदंसणे णरवइस्स पढमे चक्करयणे माग
 हतित्थकुमारस्स देवस्स अट्टाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए
 आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता दाहिणपच्चत्थिमं
 दिसे वरदामतित्थाभिमुहे पयाए यावि होत्था ॥सू०७॥

छाया—संप्रेक्ष्य द्वार मुकुटं कुण्डलानि च श्रुटिकानि च वस्त्राणि च आभरणानि
 च शर च नामाहुताङ्ग मागधतीर्थोदकं च गृह्णाति गृहीत्वा तथा उत्कृष्टया त्वरया चपलया
 चपलया यत्नया सिद्धया उद्धृतया दिव्यया देवगत्या इतिव्रजन् यत्रैव भरतो राजा तत्रैव
 उपागच्छति, उपागत्य अन्तरिक्षप्रतिपन्नः सर्गिकिणीकानि पञ्चवर्णानि वस्त्राणि पवरप-
 रिहितः करतलपरिगृहीतशिरयावत् अञ्जलिं कृत्वा भरतं राजान जयेन विजयेन वर्द्धयति,
 वर्द्धयित्वा पद्मवादीत्, अभिजितं खलु देवानुप्रियैः केवलकल्पं भरत वर्षं पौरस्त्ये मागधतीर्थ-
 मर्यादया तदहं खलु देवानुप्रियाणाम् विषयवासो अहं देवानुप्रियाणामाहृष्टिकिङ्करः अहं
 देवानुप्रियाणां पौरस्त्योऽन्तर्पालः तत् प्रतीच्छन्तु खलु देवानुप्रिया मम पतद्रूपं प्रीतिदानम्
 इतिकृत्वा द्वारं मुकुटं कुण्डलानि च कटकानि च यावत् मागधतीर्थोदकं च उपनयति,
 ततः खलु स भरतो राजा मागधतीर्थकुमारस्य देवस्य इदमेतद्रूपं प्रीतिदानं प्रीतिच्छति प्रतीप्य
 मागधतीर्थकुमारं देव सत्कारयति सम्मानयति सत्कार्यं सन्मान्य च प्रतिविसर्जयति ततः
 खलु स भरतो राजा रथं परावर्त्तयति, परावर्त्तं मागधतीर्थेन लवणसमुद्रात् प्रत्यवतरति
 प्रत्यवतीर्थं यत्रैव विजयस्कन्धावारनिवेशो यत्रैव बाह्या उपास्थानशाला तत्रैवोपागच्छति,
 उपागत्य तुरगान् निगृह्णाति निगृह्य रथं स्थापयति, स्थापयित्वा रथात् प्रत्यवरोहति, प्रत्यवरोह्य
 यत्रैव मञ्जनगृहं तत्रैवोपागच्छति उपागत्य मञ्जनगृहमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य यावत् शशीव
 प्रियदर्शनो नरपतिः मञ्जनगृहात् प्रतिनिष्क्रामति प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव भोजनमण्डपस्तत्रैवोपा-
 गच्छति उपागत्य भोजनमण्डपे सुस्नासनवरगतं अष्टमभकं पारयति पारयित्वा भोजनमण्डपात्
 प्रतिनिष्क्रामति प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला यत्रैव सिंहासनं तत्रैवोपागच्छति
 उपागत्य सिंहासनवरगतः पौरस्त्याभिमुखो निपीदति, निषद्य अष्टादश

शब्दयति शब्दयित्वा णामादान् विप्रतेन भा देवानुप्रिया । उन्मुक्तम उन्मुक्ता यावत्
मागधतीर्थकुमारस्य वे ।स्य अष्टादश मन्त्रादिमा कुम्भे गत्वा मम पतामाग्निका प्रत्यर्पयन्
तत खलु ताः अष्टादश त्रेणिप्रथमय भगतेन राजा पश्यम्, उक्ता मन्य एतयावन कुर्यात्,
कृत्वा पतामाग्निका प्रत्यर्पयन्ति नन गलु तद्विषय चकरन्त घट्टमय तुस्य लोहितान्ध
रत्नमयारक जाम्बूनद नेमि नानामणिशुभ्रप्रस्थालपरिगतं मणमुक्ताजालभूषितम् मन्त्राद्
धोपम् सकिङ्किणीकम्, दिव्यम् तस्मिन्निमडलनिभम्, नाना-मणिरत्नशण्डिकाजालपरि-
क्षिप्तम् सर्व सुरभिकुसुमासक्त भाव्यदाम अन्तरिक्ष प्रतिपन्नम् यक्षसत्त्वरं परिचुम्भम्, दिव्य
शुद्धितशब्द सन्निनादेन पूरयदिव च जम्बरतलम् नाम्ना च तुदशनम् नरपते, प्रथमम्
चकरत्नम्, मागधतीर्थकुमारस्य देवस्य अष्टादिकाया मन्त्रामतिमाया निनुत्ताया नन्याम् आयु-
धगृहशालत प्रतिनिष्कामति प्रतिनिरुम्य दक्षिणपश्चिमा दिश वरदामनीथाभिमुख्य प्रयानं
चलितं चाप्यभवत् ॥सू० ७॥

टीका—(संपेहेत्ता) इत्यादि ।

(संपेहेत्ता) संप्रेक्ष्य-पर्यालोच्य (हारं मउडं कुंडलाणि य कडगाणि य तुडियाणि
य वत्थाणि य आभरणानि य सरं च णामाहयकं मागहतित्थोदगं च गेण्हइ) हारम्—
अष्टादशदिसरिकमुक्ताहारम् तत्र मुकुटं-शिरोभूषणम्, कुण्डलानि च, कर्णभूषणानि,
कटकानि च— हस्ताभरणानि, त्रुटितानि च बाह्याभरणानि, वस्त्राणि च नानामणि-
रत्नादि खचित परिधेयपट्टवस्त्राणि भरतस्य प्रत्यर्पणाय शर-पाणं च, नामाहताङ्कं
भरतेति नामाङ्कितचिह्नं शरं च मागधतीर्थोदकं च—राज्याभिषेकोपयोगि मागधतीर्थजलं
च एतानि गृह्णाति (गिण्हत्ता) गृहीत्वा (ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए जयणाए
सीहाए सिग्घाए उद्धूमाए दिव्वाए देवगईए वीईवयमाणे वीईवयमाणे जेणेव भरहे
राया तेणेव उवागच्छइ) तथा उत्कृष्टया त्वरितया चपलया जया सिंहया शीघ्रया उद्धू-
तया दिव्यया देवगत्या व्यतिव्रजन् व्यतिव्रजन् यत्रैव भरतो राजा तत्रैवोपागच्छति,

‘संपेहेत्ता हार मउडं कुंडलाणि य’ इत्यादि सू०-७

टीकार्थ—(संपेहेत्ता) अच्छी तरह से विचार करके (हार मउडं कुंडलाणि य कडगाणि य तुडि-
याणि य वत्थाणि य आभरणानि य सरं च णामाहयकं मागहतित्थोदगं च गेण्हइ) उसने हार, मुकुट,
कुण्डल, कटक, त्रुटित-बाहुके आभरण, नानामणिरत्नादिक से खचित पहिरने योग्य वस्त्र भरत के
नाम से अङ्कित बाण एवं मागधतीर्थ का राज्याभिषेकोपयोगी उदक लिया—(गिण्हत्ता ताए
उक्किट्ठाए तुरिआए चवलाए जयणाए सीहाए सिग्घाए उद्धूमाए दिव्वाए देवगईए वीईवय-

‘संपेहेत्ता हारं मउडं कुंडलाणिय’ इत्यादि सू० ७ ॥

टीकार्थ—(संपेहेत्ता)सारी रीते विचार करीने (हारं मउडं कुंडलाणिय कडगाणि य तुडिया-
णिय, वत्थाणिय आभरणानि य सरं च णामाहयकं मागहतित्थोदगं च गेण्हइ) तेण्हे हार, मुकुट,
कुंडल, कटक, त्रुटित-बाहुना आभरण विषेय नानामणि रत्नादिकथी अचित पहिरवा योग्य
वस्त्रो भरतना नामथी अङ्कित बाण तेभ अ मागधतीर्थ'उ' राज्याभिषेक योग्य उदक जे
अधी वस्तुओ दीधी (गिण्हत्ता ताए उक्किट्ठाए तुरिआए चवलाए जयणाए सीहाए सि-
ग्घाए उद्धूमाए दिव्वाए देवगईए वीईवयमाणे जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छइ) जे

તત્ર તથા ઉત્કૃષ્ટયા ગત્યા ત્વરયા આકૂલયા ન સ્વામાચિન્યા, ચપલયા કાયતોડપિ
 ચણ્ડયા, જવનયા વેગવત્યા મિહયા-તદ્વાદ્યસ્થૈર્યેણ, ઉદ્ભૂતયા- દર્પાતિશયેન જયિ-
 ન્યા વિપક્ષજેતૃત્વેન છેકયા નિપુણયા દિવ્યયા દેવગત્યા આકાશમાર્ગગમનેન વ્યતિ-
 વ્રજન્ વ્યતિવ્રજન્ યત્રૈવ મરતો રાજા તત્રૈવોપાગચ્છતિ (ઉવાગચ્છિત્તા) ડપાગત્ય (અત-
 લિક્ષપડિવળ્લે સલ્લિલિનીયાઈં પંચવળ્લાઈં વત્થાઈં પવરપરિહિપ્ કરચલપરિગઢિય દસ-
 ણહ સિર જાવ અંજલિં કદ્દુ મરહં રાયં જણં વિજણ વદ્ધાવેઈ) અન્તરિક્ષપ્રતિપન્નઃ
 સર્કિકિણીકાનિ પશ્ચવર્ણાનિ વસ્ત્રાણિ પ્રવરં પરિહિતઃ કરતલપરિમૃદીતં દશનલ્લં શિર
 યાવત્ અંજલિં કૃત્વા મરતં રાજાનં જયેન વિજયેન વર્જયતિ, તત્ર અન્તરિક્ષપ્રતિપન્ન
 આકાશગતો દેવાનામભૂમિચારિત્વાત્ સર્કિકિણીકાનિ-શુદ્રઘટિકા સહિતાનિ પશ્ચવર્ણાનિ
 ચ કૃષ્ણનોલપોતરક્તશુક્લવર્ણાનિ ચ વસ્ત્રાણિ પ્રવર વિધિપૂર્વકં યથા સ્યાત્ તથા પરિહિતઃ

માણેર જેણેવ મરહે રાયા તેણેવ ઉવાગચ્છઈ) હન સવ ઉપહાર કરને યોગ્ય વસ્તુઓં કો છેકર
 ષહ ઉસ ઉત્કૃષ્ટ, ત્વરિત, ચપલ, અતિ મહાન્ વેગ સે આરબ્ધ હોને કે કારણ સિંહગામિ જૈસી
 શીખ્રતાવાળી, ઉદ્ભૂત દિવ્ય દેવગતિ દ્વારા ચલતા ચલતા જડા મગ્ન રાજાથા વહા પર આયા ગતિ
 કે હન વિશેષણોં કી વ્યાખ્યા પહિલે કો જા સુકી હૈ । (ઉવાગચ્છિત્તા અંતલિક્ષપડિવળ્લે સલ્લિ-
 લિનીઆઈં પંચવળ્લાઈં વત્થાઈં પવરપરિહિપ્ કરચલપરિગઢિયં દસણહ સિરઆવત્ જાવ અંજલિં
 કદ્દુ મરહં રાયં જણં વિજણં વદ્ધાવેઈ) વહાં આકરકે ઉસને શુદ્રઘટિકાઓં સે યુક્ત એસે
 પાંન વળોં વાલે વળોં કો પહિરે હુપ્ હી આકાશ મેં સહે-સહે દશ નલ્લ જિસમેં મિલ્લ જાવેં એસોં
 અંગુલોં કરકે ઔર ઉસે મસ્તક પર ધર કરકે મરત રાજા કો જય વિજય શબ્દો કા ઉચ્ચારણ
 કરતે હુપ્ હી વધાઈ દી યહાં જો ઉસે શુદ્ર ઘટિકાઓં સે યુક્ત વલ્લ પહિરે હુપ્ પ્રકટ ક્રિયા ગયા
 હૈ ઉસકા તાત્પર્ય યહી હૈ કિ ઉસને ઉન ઘટિકાઓં સે ઉત્થિત શબ્દોં દ્વારા યહો પ્રકટ સર્વજન
 સમક્ષ ક્રિયા મેં આપકા પ્રકટરૂપ મેં સેવક હૂં ગુપ્તરૂપ મેં નહોં (વદ્ધાવિત્તા એવ વયાસી) વધાઈ

સર્વે ઉપહાર યોગ્ય વસ્તુઓં લઈ ને તે ઉત્કૃષ્ટ, ત્વરિત, ચપલ અતિ મહાન્ વેગથી આર-
 બ્ધ હોવાથી સિંહ ગતિ જેવી શીખ્રતાવાળી, ઉદ્ભૂત દિવ્ય દેવગતિથી આલેનો-આલેનો ન્યાં
 ભરતરાજ હોતો, ત્યાં આવ્યો ગતિના એ સર્વે વિશેષણોની વ્યાખ્યા પહેલા કરવામા આવી છે
 (ઉવાગચ્છિત્તા અંતલિક્ષપડિવળ્લે સલ્લિલિની આદિ પંચવળ્લાઈં વત્થાઈ પવરપરિહિપ્
 કરચલપરિગઢિયં વસણહ સિર જાવ અંજલિ કદ્દુ મરહં રાયં જણં વિજણં વદ્ધાવેઈ) ત્યાં
 આવીને તેણે શુદ્ર ઘટિકાઓથી યુક્ત એવા પાંચવળેવાળા વસ્ત્ર પહેરીને આકાશમા જ
 ઊભા રહીને દસનખો જેમાં સયુક્ત થઈ બાથ એવી અજલી ળનાવીને અને તેને મસ્તક
 ઉપર મૂકીને ભરત રાજાને જય-વિજય શબ્દો સાથે અભિનંદન વધામણી આપ્યા અહી
 જે શુદ્ર ઘટિકાઓ યુક્ત વસ્ત્રો પહેરેલા છે, એવો ઉદ્દેશ્ય છે તેનું તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે
 કે તેણે તે ઘટિકાઓથી ઉત્થિત થતા શબ્દો વડે એજ વાત મર્વ લોકો સમક્ષ પ્રગટ
 કરીકે હું તમારો પ્રગટ રૂપમા સેવક છું, ગુપ્ત રૂપમા નહિ (વદ્ધાવિત્તા એવ વયાસી) અભિ-

तत्र तथा उत्कृष्टया गत्या तस्या आकूलया न स्वामागिन्या, चपलया प्रायतोऽपि चण्डया, जवनया वेगवत्या पिङ्गया-तद्वाद्यैर्येण, उद्बुनया- दर्पातिजयेन जयिन्या विपक्षजेतृत्वेन छेक्या निपुण्या दिव्यया देवगत्या आकाशमार्गगमनेन व्यतिव्रजन् व्यतिव्रजन् यत्रैव भरतो राजा तत्रैव यागच्छति (उवागच्छिता) पागत्य (अतल्लिखपडिवण्णे सखिखिणीयाइं पंचवण्णाइं वत्थाइं पवरपरिहिण्ण करयलपरिगहिय दसणहं सिर जाव अंजलिं कट्ठु भरहं रायं जणं विजणं वद्धावेइ) अन्तरिक्षप्रतिपन्नः सर्किणिणीकानि पञ्चवर्णानि वस्त्राणि प्रवरं परिहितः करतलपरिगृहीतं दशनखं शिरयावत् अञ्जलिं कृत्वा भरतं राजानं जयेन विजयेन वर्द्धयति, तत्र अन्तरिक्षप्रतिपन्न आकाशगतो देवानामभूमिचारित्वात् सर्किणिणीकानि-क्षुद्रघण्टिका सहितानि पञ्चवर्णानि च कृष्णनोलपोतरक्तशुक्लवर्णानि च वस्त्राणि प्रवरं विधिपूर्वकं यथा स्यात् तथा परिहितः

माणेर जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छइ) इन सब उपहार करने योग्य वस्तुओं को लेकर वह उस उत्कृष्ट, त्वरित, चपल, अति महान् वेग से आरम्भ होने के कारण सिंहगामि जैसी शीघ्रतावाली, उद्भूत दिव्य देवगति द्वारा चलता चलता जहां भग्न राजाथा वहां पर आया गति के इन विशेषणों की व्याख्या पहिले को जा चुकी है । (उवागच्छिता अंतलिखपडिवण्णे सखिखिणीयाइं पंचवण्णाइं वत्थाइं पवरपरिहिण्ण करयलपरिगहियं दसणहं सिरजावत्त जाव अंजलिं कट्ठु भरहं रायं जणं विजणं वद्धावेइ) वहां आकरके उसने क्षुद्रघण्टिकाओं से युक्त ऐसे पाँच वर्णों वाले वस्त्रों को पहिरे हुए ही आकाश में खड़े-खड़े दश नख जिसमें मिल जावें ऐसी अंगुली करके और उसे मस्तक पर धर करके भरत राजा को जय विजय शब्दों का उच्चारण करते हुए ही बघाई दी यहां जो उसे क्षुद्र घण्टिकाओं से युक्त वस्त्र पहिरे हुए प्रकट किया गया है उसका तात्पर्य यही है कि उसने उन घण्टिकाओं से उत्थित शब्दों द्वारा यही प्रकट सर्वजन समक्ष किया मैं आपका प्रकटरूप में सेवक हूँ गुप्तरूप में नहीं (वद्धावित्ता एवं वयासी) बघाई

सर्वे उपहार योग्य वस्तुओं लक्ष ने ते उत्कृष्ट, त्वरित, चपल अति महान् वेगशी आरम्भ होवाथी सिंह गति जैसी शीघ्रतावाणी, उद्भूत दिव्य देवगतिशी आलने-आलतो ज्यों भरतराज होतो, त्या आये। गतिना जे सर्वे विशेषणोनी व्याख्या पढेला करवाभा आवी छे (उवागच्छिता अंतलिखपडिवण्णे सखिखिणी आइ पंचवण्णाइं वत्थाइ पवरपरिहिण्ण करयलपरिगहियं दसणहं सिर जाव अंजलिं कट्ठु भरहं रायं जणं विजणं वद्धावेइ) त्यां आवीने तेहे क्षुद्र घण्टिकाओंथी युक्त जेवा पायवणोवाण वस्त्रे पढेरीने आकाशभा जे जेला रहीने दसनजो जेभा संयुक्त थर लय जेवी अजही जनावीने अने तेने मस्तक उपर भुझीने भरत राजने जय-विजय शब्दो साथे अखिनहन वधामणी आभ्या अही जे क्षुद्र घण्टिकाओं युक्त वस्त्रो पढेरेला छे, जेवो उद्देश्य छे तेनु तात्पर्य आ प्रमाणे छे के तेहे ते घण्टिकाओंथी उत्थित यता शब्दो बडे जेव वान सर्व लोको समक्ष प्रगट करीके हु तभारे प्रगट रूपमा सेवक छु, गुप्त रूपमा नहि (वद्धावित्ता एवं वयासी) अलि-

धारितः । किमुक्तं भवति इत्याह किंकिणी ग्रहणेन तस्य, किंकिणी समुत्थगन्धेन सर्वजन-
समक्षं सेवकोऽस्मि न तु गुप्तरूपेणेति ज्ञापनार्थम्, करतलपरिमृहीतं दशनयुं शिरमात्रं
मस्तकेऽब्जलि कृत्वा भरतं राजानं चक्रिणं जयेन विजयेन जयविजयगन्धेन वर्द्धयति
'वर्द्धावित्ता' वर्द्धस्त्वि' एवं वयासी' एवं वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादात् 'अभिजिणं देवा-
णुप्पिण्हि केवलकल्पे भरहे वासे पुरत्थिमेणं मागहत्तिथमेराए त अहणं देवाणुप्पियाणं
विसयवासी अहणं देवाणुप्पियाण आणत्तीकिकरे अहणं देवाणुप्पियाणं पुरत्थिमिल्ले
अंतवाले तं पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! ममं इमेयारूवं पीडदाणं तिकट्टु हारं मउडं
कुंडलाणि य कडगाणि य जाव मागहत्तिथोदग च उवणेइ' अभिजित खलु देवानुप्रियैः
केवलकल्पं भरतं वर्ष पौरस्त्ये मागधतीर्थमर्यादया तदहं खलु देवानुप्रियाणां विषय-
वासी, अहं खलु देवानुप्रियाणां पौरस्त्योऽन्तपालः तत्प्रतीच्छन्तु देवानुप्रियाः ! ममे-
दम् एतद्रूपं प्रीतिदानम् । इतिकृत्वा हारं मुकुटं कुण्डलानि च यावत् मागधतीर्थोदकं
च उपनयति 'देवाणुप्पिण्हि' देवानुप्रियैः—'केवलकल्पे' केवलकल्पं—केवलज्ञानसदृश सम्पू-

देकर के फिर उसने ऐसा कहा—(अभिजिणं देवाणुप्पिण्हि केवलकल्पे भरहे वासे पुरत्थिमेणं
मागहत्तिथमेराए तं अहणं देवाणुप्पियाणं विसयवासी अहणं देवाणुप्पियाणं आणत्ती किंकरे
अहणं देवाणुप्पियाणं पुरत्थिमिल्ले अतवाले तं पडिच्छंतुं देवाणुप्पिया मम इमेयारूवं पीड-
दाणं तिकट्टु हारं मउडं कुंडलाणि य कडगाणि य जाव मागहत्तिथोदग च उवणेइ) आप देवानु-
प्रिय के द्वारा केवल कल्प-ममस्त-भरत क्षेत्र पूर्व दिशा में मागधतीर्थ तक अच्छा तरह से जीत
लिया गया है, मैं आप देवानुप्रिय के द्वारा जिते गए देश का निवासी हूँ, मैं आपका आज्ञास्ति
किंकर हूँ मैं आप देवानुप्रिय का पूर्व दिशा का अन्तपाल हूँ इसलिये आप देवानुप्रिय मेरे इस
प्रीतिदान को—मेरा का—स्वीकार करें ऐसा वह कर उसने उसके लिये हार, मुकुट, कुण्डल,
कटक यावत् मागध तीर्थ का उदक दे दिया । पौरस्त्य अन्तपाल शब्द का भावार्थ ऐसा है कि
पूर्व दिशा में आपके द्वारा जो शासित देश है उस देश का मैं शत्रुओं आदिके द्वारा जायमान

नन्दन आपीने पछी तेले आ प्रभाणे कछु— अभिजिणं देवाणुप्पिण्हि केवलकल्पे भरहे
वासे पुरत्थिमेणं मागहत्तिथमेराए तं अहणं देवाणुप्पियाणं विसयवासी अहणं देवाणु-
प्पियाणं आणत्तीकिकरे अहणं देवाणुप्पियाणं पुरत्थिमिल्ले अतवाले तं पडिच्छंतु णं देवा-
णुप्पिया ! ममं इमेयारूवं पीडदाणं तिकट्टु हारं मउडं कुण्डलाणि य कडगाणि य जाव माग-
हत्तिथोदगं च उवणेइ) आप देवानुप्रिय वडे केवल कल्प—ममस्त—भरतक्षेत्र पूर्व दिशा में
मागधतीर्थ सुधी सारीरीते अतीवामां आण्ठुं छे हुं आप देवानुप्रिय वडे विजित
देशानो निवासी छु हुं आपश्रीनो आज्ञास्ति किंकर छु हुं आप देवानुप्रियनो पूर्व
दिशानो अंतपाल छु ओथी आप देवानुप्रिय भारा आ प्रीतिदाननो—लेटनो स्वीकारकरो आ
प्रभाणे कछीने तेले तेमना भाटे हार, मुकुट, कटक यावत् मागधतीर्थनु उदक
ओ सवे वस्तुओ अपित करी. पौरस्त्य अन्तपाल शब्दनो भावार्थ आ प्रभाणे छे के
पूर्व दिशाभा आप वडे शासित के देश छे. ते देशनो हुं शत्रुओ वगेरे द्वारा जायमान

ર્ગમિત્યર્થઃ 'મરહે વાસે' મરતં વર્ષે મરતક્ષેત્રમ્ 'પુરત્થિમેણં' પૌરસ્ત્યે પૂર્વસ્થાં દિશિ
 खलु 'मागहतित्थमेराए' मागधनीर्थमर्पादया गागयतीर्थपर्यन्तम् 'अभिजिण' अभि-
 जित खलु निश्चयेन 'तं' तस्मात् कारणात् अरण्ये' अह खलु देवाणुप्पियाणं' देवानु-
 प्रियाणां भवतां 'विसयवासी' विषयवासी देशवामी 'अहण्णं' अतएव अहं खलु 'देवा-
 णुप्पियाणं' देवानुप्रियाणाम् 'आणत्तिकिकरे' आज्ञाप्तिकिङ्करः-आज्ञाकारी सेवकः
 'अहण्णं' अहं खलु 'देवाणुप्पियाणं' देवानुप्रियाणाम् 'पुરत्थिमेणं' पौरस्त्यः-पूर्वदिक्
 सम्बन्धी 'अंतवाले' अन्तपालः, अन्नं-त्वदाज्जप्तिदेश सम्बन्धिन पालयति रक्षयति रि-
 प्वादि सर्वोपद्रवेभ्य इति अन्तपालः-त्वदादेशरक्षकोऽस्मि 'तं' तत् तस्मात् कारणात्
 'पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया' प्रतीच्छन्तु-गृह्णन्तु खलु भो देवानुप्रियाः । 'ममं' मम
 'इमं' इदं पुर उपस्थापितम् 'एयारूव' एतद्रूपं प्रत्यक्षानुभूयमानस्वरूपम् 'पीईदाणं'
 प्रीतिदानम् उपहाररूपम् 'तिकट्टु' इति कृत्वा इति विज्ञप्य 'हारं' हार-मुक्ताहारम् 'मउडं'
 मुकुटम् 'कुंडलाणि य' कुण्डलानि च 'कडगाणि य' कटकानि च हस्तभूषणानि च यावत्
 नामाङ्कितवाणम् 'मागहतित्थोदगं च' मागधनीर्थोदकं च-राज्याभिषेकोपयोगि माग-
 धतीर्थजलं च 'उवणेइ' उपनयति-भरतचक्रिणे प्राभृती करोति अर्पयतीत्यर्थः, 'तएणं
 से मरहे राया मागहतित्थकुमारस्स देवस्स इमेयारूवं पीईदाणं पडिच्छइ' ततस्त-
 दनन्तरं खलु स भरतो राजा मागधतीर्थकुमारनाम्नो देवस्य इदम् एतद्रूपं प्रीतिदानं
 प्रतीच्छति स्वीकरोति 'पडिच्छित्ता' प्रतीप्य स्वीकृत्य 'मागहतित्थकुमारं' देव सक्कारेइ
 सम्माणेइ' मागधतीर्थकुमार देव सत्कारयति अनुगमनादिना सन्मानयति मधुरवचना-
 दिना 'सक्कारित्ता सम्माणित्ता' सत्कार्यं सन्मान्य च 'पडिविसज्जेइ' प्रति विसर्जयति
 स्वस्थानगमनाय अनुमन्यते 'तएणं से मरहे राया रहं परावत्तेइ' ततः खलु स भरतो

उपद्रवો સે રક્ષા કરને વાલા હું યહાં યાવત્ શબ્દ સે નામાકિત વાણ ગૃહીત હુઆ હૈ । (તएणं
 સે મરહે રાયા માગહતિત્થકુમારસ્સ દેવસ્સ હમં ઇયારૂવં પીઈદાણં પડિચ્છइ) મરત રાજા ને મી
 માગધતીર્થ કુમાર દેવ કે હસ પ્રકાર કે હસ પ્રીતિદાન કો-મેટ કો-સ્વીકાર કર ળિયા(પડિ-
 ચ્છિત્તા માગહતિત્થકુમાર દેવં સવકારેइ, સમ્માણેइ) મેટ સ્વીકાર કરકે ફિર ડસ મરત રાજા
 ને ડસ માગધતીર્થ કુમાર કા અનુગમનાદિ દ્વારા સત્કાર કિયા ઔર મધુર વચનાદિ દ્વારા સન્માન
 કિયા (સવકારિત્તા સમ્માણિત્તા પડિવિસજ્જેइ) સત્કાર ઇવ સન્માન કરકે ફિર ડસે વિસર્જિત

ઉપદ્રવેથી રક્ષાકરનાર છુ અહી યાવત્ શબ્દથી નામાંકિત આણુતુ અકલ્પ થયું છે (તएणं
 સે મરહે રાયા માગહતિત્થકુમારસ્સ દેવસ્સ હમં ઇયારૂવં પીઈદાણં પડિચ્છइ) મરત રાજાએ
 પણ માગધ તીર્થ કુમાર દેવના આ જાતના એ પ્રીતિદાન (મેટ) નો સ્વીકાર કર્યો (પડિ-
 ચ્છિત્તા માગહતિત્થકુમાર દેવં સવકારેइ, સમ્માણેइ) મેટનો સ્વીકાર કરીને પછી તે મરત
 રાજાએ તે માગધ તીર્થ કુમારનો અનુગમનાદિ દ્વારા સત્કાર કર્યો અને મધુર વચનાદિ
 દ્વારા તેનું સન્માન કર્યું (સવકારિત્તા સમ્માણિત્તા પડિવિસજ્જેइ) સત્કાર અને સન્માન
 કરીને પછી તેને વિદાય આપી (ત एणं સે મરહે રાયા રહં પરાવત્તેइ) ત્યાર બાદ તે

राजा रथ परावर्त्तयति निनर्त्तयति 'परावर्त्तित्ता' पगवर्त्त्य 'मागद्वतित्थेणं' लवणसमुद्राओ पञ्चुत्तरइ' मागधतीर्थेन लवणसमुद्रात् प्रत्यवतरति 'पञ्चुत्तरित्ता' प्रत्यवतीर्य 'जेणेव विजयसंघावारणिवेसे जेणेव बाहिरिया उवट्टाणसाला तेणेव उवागच्छइ' यत्रैव विजयस्कन्धावारनिवेशो यत्रैव च बाह्या उपस्थानशाला तत्रैव उपागच्छति 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'तुरए णिगिण्हइ' तुरगान् निगृह्णाति—स्थिरी करोति 'निगिण्हित्ता' निगृह्य 'रहं ठवेइ' रथं स्थापयति 'ठवित्ता' स्थापयित्वा 'रहाओ पच्चोरुहइ' रथात् प्रत्यवरोहति अवतरति 'पच्चोरुहित्ता' प्रत्यवरुह्य 'जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ' यत्रैव मज्जनगृह तत्रैवोपागच्छति 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'मज्जणघर अणुपविसइ' मज्जनगृहम् अनुप्रविशति 'अणुपविसित्ता' अनुप्रविश्य 'जाव ससिन्व पियदसणे' यावत् शशीव प्रियदर्शनः 'णरवई मज्जणघराओ पडिणिकखमई' नरपतिः मज्जनगृहात् प्रतिनिष्क्रामति अत्र पूर्व-

कर दिया । (तएणं से भरहे राया रहं परावर्त्तेइ) इसके बाद उस भरत राजा ने अपने रथ को छोटाया (परावर्त्तित्ता मागद्वतित्थेणं लवणसमुद्राओ पञ्चुत्तरइ) और लौटाकर मागधतीर्थ से होता हुआ वह लवण समुद्र से वापिस भरत क्षेत्र को ओर आ गया (पञ्चुत्तरित्ता जेणेव विजयसंघावारणिवेसे जेणेव बाहिरिया उवट्टाणसाला तेणेव उवागच्छइ) और आकर के वह जहा पर विजयस्कन्धावार का निवेश था—पडाव पडा हुआ था और उसमें भी जहां पर बाह्य उपस्थान शाला थी वहां पर आया । (उवागच्छित्ता तुरए निगिण्हइ) वहां आकरके उसने घोड़ों को रोक दिया (निगिण्हित्ता रह ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ) घोड़ों को रोक करके उसने फिर रथ खड़ा कर दिया । रथ के खड़े होते ही वह उस रथ से निचे उतरा और उतरकर फिर वह जहा पर स्नानगृह था वहा पर आया (उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ) वहां आकर वह स्नानगृह में प्रविष्ट हुआ (अणुपविसित्ता जाव ससिन्व पियदंसणे णरवई मज्जणघराओ पडिणिकखमई) वहां प्रविष्ट होकर उसने पूर्ववत् स्नान किया स्नान करने के अनन्तर फिर धवल महामेघ से निकलते हुए चन्द्र के

भरत राजाએ પોતાના રથને પાછો વાળ્યો (પરાવર્તિત્તા માગદ્વતિત્થેણં લવણસમુદ્રાઓ પચ્ચુત્તરઈ) અને પાછો વાળીને માગધ તીર્થમાંથી પસાર થઈ ને તે લવણ સમુદ્ર તરફથી પાછો ભરત ક્ષેત્ર તરફ આવી ગયો (પચ્ચુત્તરિત્તા જેણેવ વિજયસંઘાવારણિવેસે જેણેવ બાહિરિયા ઉવટ્ટાણસાલા તેણેવ ઉવાગચ્છઈ) અને આવીને તે જ્યાં વિજય રક્ષાવારણિવેશ હતો—પડાવ હતો, અને તેમા પણ જ્યાં બાહ્ય ઉપસ્થાન શાળા હતી ત્યાં આવ્યો (ઉવાગચ્છિત્તા તુરપ્પ નિગિણ્ણઈ) ત્યાં આવીને તેણે ઘોડાઓને ઉભારાખ્યા (નિગિણ્ણિત્તા રહં ઠવેઈ ઠવિત્તા રહાઓ પચ્ચોરુહઈ પચ્ચોરુહિત્તા જેણેવ મજ્જણઘરે તેણેવ ઉવાગચ્છઈ) ઘોડાઓને ઉભારાખીને પછી તેણે રથ ઊભારાખ્યો રથ ઊભો રહેતા જ તે રાજા રથ ઉપરથી નીચે ઉતરીને અને નીચે ઉતરી ને પછી જ્યાં સ્નાનગૃહ હતું—ત્યાં ગયો (ઉવાગચ્છિત્તા મજ્જણઘર અણુપવિસઈ) ત્યાં આવીને તે સ્નાનગૃહમાં પ્રવિષ્ટ થયો (અણુપવિસિત્તા જાવ સસિન્વ પિયદંસણે ણરવઈ મજ્જણઘરાઓ પડિણિક્કમઈ) ત્યાં પ્રવિષ્ટ થઈને તેણે 'પૂર્વવત્ સ્નાન કય્યું', સ્નાન

વત્ સ્નાનવિધ્યનન્તરં ધ્વલમહામેઘાન્નિર્ગચ્છત્ ચન્દ્ર ઇવ સુધાધવલીકૃતમઞ્જનમૃદાત્ પ્રિય-
 દર્શનઃ મ નાનઃ ચક્રો નિર્ગચ્છતીનિમાય 'પરિણિક્ષમિત્તા' પ્રતિનિષ્ક્રમ્ય નિર્ગત્ય
 'જેણેવ મોયણમંડવે તેણેવ ઉવાગચ્છઈ' યત્રૈવ મોજનમણ્ડપસ્ત્રૈવોપાગચ્છતિ 'ઉવાગ-
 ચ્છિત્તા' ઉપાગત્ય 'મોયણમંડવંસિ સુહાસણવરગણ અદ્દમમત્તં પારેઈ' મોજનમણ્ડપે સુહા-
 સનવરગતઃ સન્ અદ્દમમત્તં પારયતિ ઉપવામત્રયાનન્તરં પારગા કરોતીત્યર્થઃ 'પારિત્તા'
 પારયિત્વા પારણાં કૃત્વા 'મોયણમંડવાઓ પહિણિક્ષમઈ' મોજનમણ્ડપાન્ પ્રતિનિષ્ક્રામતિ
 'પહિણિક્ષમિત્તા' પ્રતિનિષ્ક્રમ્ય નિર્ગત્ય 'જેણેવ વાહિરિયા ઉવટ્ટાણસાલા જેણેવ સીહાસણે
 નેણેવ ઉવાગચ્છઈ' યત્રૈવ વાહ્યા ઉપસ્થાનશાલા યત્રૈવ સિંહાસન તત્રૈવોપાગચ્છતિ 'ઉવાગ-
 ચ્છિત્તા' ઉપાગત્ય 'સીહાસણવરગણ પુરત્થામિમુહે ણિસીઈ' સિંહાસનવરગતઃ પૌરસ્ત્યા-
 મિમુલ્લઃ પૂર્વામિમુલ્લઃ નિષીદતિ ઉપવિશતિ 'ણિસીઈત્તા' નિપથ ઉપવિશ્ય 'અટ્ટારસેણિ-
 પ્પસેણીઓ સદાવેઈ' અષ્ટાદશ શ્રેણિ પ્રશ્રેણીઃ શબ્દયતિ આહ્વયતિ 'સદાવિત્તા' શબ્દયિત્વા
 આહૂય 'एवं वयासी' एवं वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत् उक्तवान् अथ क्रिमयादीत् इत्याह—

जैसे प्रिय दर्शन वाला वह भरत राजा उस सुधाधवली कृत स्नान घर से बाहर आया । (पडिणि-
 क्खमिक्खा जेणेव मोयणमंडवे तेणेव उवागच्छइ) स्नान घर से बाहर आकर के फिर वह जहा
 भोजन शाला थी वहां पर आया (उवागच्छित्ता मोयणमंडवंसि सुहासणवरगण अदुममत्तं पारेइ)
 वहां आकर के उसने भोजन मंडप में सुहासन पर बैठ कर अष्टमककी पारणा की (पारित्ता
 मोयणमंडवाओ पडिणिक्खमइ) पारणा कर के फिर वह भोजन शाला से बाहर आया (पडि
 णिक्खमिक्खा जेणेव बाहिरिया उवट्टाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ) बाहर आकर
 के फिर वह जहा वाह्य उपस्थानशाला थी और उसमें भी जहां पर सिंहासन था वहा परआया
 ('उवागच्छित्ता सीहासणवरगण पुरत्थामिमुहे णिसीइइ) वहा आकर के वह पूर्वदिशा की ओर
 मुंह करके सिंहासन पर बैठगया (णिसीइत्ता अट्टारससेणिप्पसेणीओ सदावेइ) बैठकर फिर उसने
 १८ श्रेणि प्रश्रेणियो को बुलाया—(सदावित्ता एवं वयासी) बुलाकर उसने ऐसा कहा —खिप्पामेव

કરીને પછી ધ્વલમહામેઘથી નિષ્પન્ન ચન્દ્ર જેવો પ્રિયદર્શી તે ભરત રાજા તે સુધાધવલીકૃત
 સ્નાનમૃદમાથી બહાર આવ્યો. (પહિણિક્ષમિત્તા જેણેવ મોયણમંડવે તેણેવ ઉવાગચ્છઈ)
 સ્નાન ઘરમાથી બહાર નીકળીને પછી તે જ્યાં હોજનશાળા હતી ત્યાં ગયો. (ઉવાગચ્છિત્તા
 મોયણમંડવંસિ સુહાસણવરગણ અદ્દમમત્તં પારેઈ) ત્યાં આવીને તે હોજન મંડપમા સુહાસન
 ઉપર બેઠો અને ત્યાર બાદ તેણે અદ્દમ ભક્તની પારણા કરી (પારિત્તા મોયણમંડવાઓ
 પહિણિક્ષમઈ) પારણા કરીને પછી હોજન શાળામાથી બહાર આવ્યો. (પહિણિક્ષમિત્તા જેણેવ
 વાહિરિયા ઉવટ્ટાણસાલા જેણેવ સીહાસણે તેણેવ ઉવાગચ્છઈ) બહાર આવીને પછી તે જ્યાં
 બાહ્ય ઉપસ્થાન શાળા હતી અને તેમા પશુ જ્યાં સિંહાસન હતું ત્યાં આવ્યો. (ઉવાગચ્છિત્તા
 સીહાસણવરગણ પુરત્થામિમુહે ણિસીઈ) ત્યાં આવીને તે પૂર્વ દિશા તરફ મુખ કરીને
 સિંહાસન ઉપર બેઠી ગયો. (ણિસીઈત્તા અટ્ટારસ સેણિપ્પસેણીઓ સદાવેઈ) બેસીને પછી
 તેણે ૧૮ શ્રેણિ-પ્રશ્રેણિના લોકોને બોલાવ્યા, (સદાવિત્તા एवं वयासी) બોલાવીને આ પ્રમાણે

‘सिष्णामेन भो ! देवानुप्पिया’ इति, विप्रमेव भो देवानुप्रियाः ! ‘उत्सुकं उक्तर जान मागधतित्थकुमारस्स देवस्स अट्ठादियं महामहिम करेह’ उच्छुल्लकाम् उच्छुल्लकाम् यावत् मागधतीर्थकुमारस्य देवस्य विजयोपलक्षिकाम् अष्टादिकां अष्टादिनमम्पाद्यां महामहिमां महान् महिमा यस्यां सा ताम् कुरुत तत्र-उच्छुल्लकामिति उन्मुक्तः-त्यक्तः शुल्लः राज-कीयदेयद्रव्यं यस्यां सा ताम् यान् पदान् उच्छुल्लनादि सर्वं विगोषणा-गिष्टां कुरुतेति सम्बन्धः ‘करित्ता’ कृत्वा ‘मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह’ मम एताम् आज-प्तिकां प्रत्यर्पयत-परावर्त्तयत ‘तए ण ताओ अट्ठा’ससेणिप्पसेणीओ भरहेण रण्णा एवं वुत्ताओ समाणीओ हट्ठ जान ‘रेंति’ ततः खलु ता अष्टादश श्रेणि प्रश्रणयः भरनेन रात्रा एवम् उक्ता आज्ञप्ताः सत्यः हृष्ट यावत् तुष्टानन्दितहृदयाः राजोदितामष्टादिकां कुर्वन्ति ‘करित्ता’ कृत्वा ‘एयमाणत्तियं पच्चप्पिणंति’ एतामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पयन्ति समर्पयन्ति । ‘तए णं से दिव्वे चक्ररयणे’ ततः खलु तत् दिव्यं चक्ररत्नम् ‘वडरामय तुंवे’ वज्रम-यतुम्बम्, तत्र वज्रमयं हीरकखचितं तुम्बम्-अरकनिवेशस्थानं यत्र तत्तथा पुनः कीदृशम्

भो देवानुप्पिया ! उत्सुकं उक्तर जान मागधतित्थकुमारस्स देवस्स अट्ठादियं महामहिम करेह) है देवानुप्रियो ! तुम सब मिलकर मागधतीर्थ कुमार देवके विजय के उपलक्ष में आठदिन तक खूब ठाट बाटसे उत्सवकरो इसमें राजकीय देव द्रव्य माफ करो, चुल्ही(जकात)बगैरह प्रजाजनोसे नालिया जाये ऐसी व्यवस्था करदो (करित्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह) यह सब करके फिर मुझे इसकी खबर दो (तए णं ताओ अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ भरहेण रण्णा एवं वुत्ताओ समाणीओ हट्ठ जान करेंति) इस प्रकार भरतराजाद्वारा आज्ञप्त किये वे अष्टादश श्रेणिजन बहुत ही हर्षित एवं तुष्ट चित्त हुए राजोदित आठदिन तक के महामहोत्सवकरने में तल्लीन होगये (करित्ता एयमाणत्तियं पच्च-प्पिणंति) महामहोत्सव करके” हमने आपकी आज्ञानुसार सब काम विधिवत् करलिया है” इस बात की खबर राजा के पास पहुँचादी (तए णं से दिव्वे चक्ररयणे वडरामय तुंवे) इसके बाद

कथु- (सिष्णामेव भो देवानुप्पिया ! उत्सुकं उक्तर जान मागधतित्थकुमारस्स देवस्स अट्ठादियं महामहिम करेह) हे देवानुप्रियो ! नमो नो भणीने मागध तीर्थ कुमार उपर विन्य भेगोये। ते उपलक्ष्यमा आठ दिवस सुधी भहु ५ ठाठ-माठथी उत्सव करे। येमां राजकीय देव द्रव्य माफ करे, प्रजाजने। पासेयी कर लेवामां न आवे, आ जननी व्यवस्था करे। (करित्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह) आ भु करीने पछी भने सूचना आपो। (तए णं ताओ अट्ठारससेणिप्पसेणीओ भरहेण रण्णा एवं वुत्ताओ समाणीओ हट्ठ जान करेंति) आ प्रमाणे भरत राजा वडे आज्ञप्त थयेता ते अष्टादश श्रेणि-प्रभेणि जने। भहु ५ हर्षित तेग ५ तुष्टचित्त थया तेजे। राजोदित आठ दिवस सुभीना मडा भडो-त्सवनी व्यवस्थामां तल्लीन थर्ध गथा (करित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणंति) मडामडो-त्सव कायं सम्पन्न करीने तेमजे राजा पासे आ जननी सूचना भोडवी है अपोओ आपश्रीनी आसा सुखम सर्व मडामडोत्सव कायं यथाविधि सम्पन्न कथुं छे। (तए णं से दिव्वे चक्ररयणे वडरामयनुवे) त्वार जाह ते अकरत्न के जेहु अरक-निवेश स्थान वज्रमय

‘લોહિયક્ષ્મ રયણમયારણ, લોહિતાક્ષરત્નમયારણ, લોહિતાક્ષા રત્નમયા અરકા યત્ર તત્તથા પુનઃ કીદૃશમ્ ‘જંબૂણયણેમિ’ જામ્બૂનદનેમિકમ્ જામ્બૂનદં રક્તસુવર્ણં તન્મયો નેમિઃ ધારા યત્ર તત્તથા ‘ળાણામણિ ચુરપ્પથાલપરિગણ’ નાનામણિ ક્ષુરપ્રસ્થાલપરિગતમ્, તત્ર નાનામણિમયમ્ અન્તઃ ક્ષુરપ્રાકારત્વાત્ ક્ષુરપ્રરૂપં સ્થાલમ્-અન્તઃ પરિધિરૂપં તેન પરિગતં યત્તત્તથા ‘મણિમુત્તાજાલમૂસિણ’ મણિમુક્તાજાલાભ્યાં ધ્રુપિતમ્, નન્દિઃ-ભમ્મામૃદઙ્ગાદિ દ્વાદશવિધતૂર્યસમુદાયસ્તસ્ય ઘોષસ્તેન સહિતં યત્તત્તથા, પુનઃ કીદૃશમ્ ‘સંહિલિખિણી’ સંહિલિખિણીકમ્, કિદ્ધિણીભિઃ-ક્ષુદ્રઘટિકાભિઃ સહિત સંહિલિખિણીકમ્, પુનઃ કીદૃશમ્ ‘દિવ્વે’ દિવ્યમ્, દિવ્યમિતિ વિશેષણસ્ય પ્રાગુક્તત્વેઽપિ પ્રશસ્તતાઽઽતિશય રૂપાપનાયં પુનઃ કથનમ્ ‘તરુણરવિમંડલિણિમે’ તરુણરવિમંડલનિમમ્, તત્ર તરુણરવેર્મંડલસદૃશમ્ મધ્યાહ્નસૂર્યસદૃશમ્ તેજોયુક્તં ગોળાકારં ચ ‘ળાણામણિરયણઘંટિયાજાલપરિવિલ્લિત્તે’ નાનામણિરત્નઘટિકાજાલપરિવિલ્લિત્તમ્ તત્ર નાનામણિરત્નઘટિકાનાં યત્ જાલં

વહ દિવ્યચક્રરત્ન કી જિસકા અરક નિવેશસ્થાન વજ્રમય હૈ આયુષ ગૃહશાળા સે બાહર નિકલા એસા સમ્બન્ધ યહાં લગા લેના ચાહિયે અબ વહ ચક્રરત્ન કૈસા થા-ફમી સમ્બન્ધ મેં દિયે ગયે પદોં કો વ્યાખ્યા કી જાતી હૈ- (લોહિયક્ષ્મામયારણ) હસકે જો અરકયે વે લોહિતાક્ષરત્ન કે બને હુણ થે (જંબૂણયણેમી) હસકીનેમિ-ચક્ર ધારા-જામ્બૂનદ સુવર્ણ કી બની હુહ થી (ળાણામણિચુરપ્પથાલપરિગણ) યહ અનેક મણિયોં સે નિર્મિત અન્તઃ પરિધિરૂપ સ્થાલ સે યહ યુક્ત થા (મણિમુત્તાજાલપરિમૂસિણ) મણિઝીર મુક્તાજાલોં સે યહ પરિમૂષિન થા (સળદિધોમે) દ્વાદશ પ્રકાર કે ભમ્મામૃદઙ્ગ આદિ તૂર્ય સમૂહ કો જૈસી આવાજ હોતી હૈ એસી હમ કો આવાજ થી (સંહિલિખિણી દિવ્વે તરુણરવિમંડલિણિમે, ળાણામણિરયણઘંટિયાજાલપરિવિલ્લિત્તે ક્ષુદ્ર ઘટિકાઓં સે યહ વિરાજિત હૈ । યહ દિવ્ય અતિશય રૂપ મેં પ્રશસ્તથા મધ્યાહ્ન સૂર્ય જિસ પ્રકાર તેજોવિશેષ સે યુક્ત રહતા હૈ ઊસી પ્રકાર કે તેજોવિશેષ સે યહ યુક્ત થા ગોળ આકાર વાલા થા અને કમણિયોં એવં રત્ન કી ઘંટિકાઓં કે સમૂહ સે યહ સર્વ ઓર સે જ્યાત થા (પન્વોડયસુગમિ-

છે, આયુષશાળામાંથી બહાર નીકળ્યું એવો સળધ અહીં ઝાણી લેવો. લોહિએ, હવે તે ચક્રરત્ન કેવું હતું એ સળધમાં જે પડેો આપવામાં આવ્યા છે તેમની બા.આ. કરવામાં આવે છે (લોહિયક્ષ્મામયારણ) એના જે અરકો હતા તે લોહિતાક્ષરત્નોના હતા (જંબૂણયણેમી) એની નેમિ-ચક્રધારા-જામ્બૂનદ સુવર્ણની અનેલી હતી (ળાણામણિ ચુરપ્પથાલપરિગણ) તે અનેક મણિઓથી નિર્મિત અન્ત પરિધિરૂપ સ્થાલ થી યુક્ત હતું (મણિ મુત્તાજાલપરિમૂસિણ) મણિ અને મુક્તાજાલોથી એ પરિમૂષિન હતું (સળદિધોમે) દ્વાદશ પ્રકારના ભમ્મામૃદઙ્ગ વગેરે તૂર્ય-સમૂહ નો જેવો અવાજ હોય છે, એવો એનો અવાજ હતો. (સંહિલિખિણી દિવ્વે, તરુણરવિમંડલિણિમે, ળાણામણિરયણઘંટિયાજાલપરિવિલ્લિત્તે) ક્ષુદ્ર ઘટિકાઓથી એ વિરાજિત હતું એ દિવ્ય અતિશયરૂપમાં પ્રશસ્ત હતું મધ્યાહ્ન નો સૂર્ય જેમ તેજોવિશેષથી સમન્વિત હોય છે. તેમજ એ ચક્રરત્ન પણ તેજોવિશેષથી સમન્વિત હતું એ ગોળ આકાર વાળું હતું, અનેક મણિઓ તેમજ રત્નોની ઘટિકાઓના સમૂહથી એ આરે આગુઓથી બાંધ હતું, (સન્વોડયસુરમિકુસુમઆસત્તમલ્લદામે, અંતલિલ્લપ્પાલિલ્લને,

समूहस्तेन परिक्षिप्तं सर्वतो व्याप्तं यत्तत्तथा 'सम्बोडयसुरभिकुमुम आसत्तमल्लदामे' सर्वर्तुके सुरभिकुसुमासक्तमाल्यदामम्, सर्वेषाम् ऋतूनां सम्बन्धीनि यानि मृगभि कुसुमानि-सुगन्धिपुष्पाणि तैः आभक्ताः-युक्ता माल्यदामानः पुष्पमाला यत्र तत्तथा 'अंतलिखलपडिवण्णे' अन्तरिक्षप्रतिपन्नम्-गगनतलगतम् 'जक्खसहस्स सपरिवुडे' यक्षसहस्रसंपरिवृतम् यक्षेति व्यन्तरदेवनिकायः, 'दिव्वतुडियसदसण्णिणाटेणं पूरेते चेव अंबरतलं' दिव्यवृद्धितशब्दसन्निनादेन पूरयदिव अम्बरतलम्, तत्र दिव्यानाम् वृद्धितानां तुर्यवाद्यविशेषाणां यः शब्दः ध्वनि यश्च सङ्गतो निनादः प्रतिध्वनिः तेन अम्बरतल पूरयदिव 'णामेणय सुदंसणे' नाम्ना च सुदर्शनम् 'णरवडस्स पढमे चक्करयणे' नरपतेः चक्रिणो भरतस्य प्रथमम् आद्यं प्रगन च सर्वरत्नेषु वैरिविजये सर्वत्रामोघशक्तिकत्वात् चक्ररत्नम् 'मागहत्तित्थकुमारस्स देवस्स अट्टाहिआए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए आउइधरसालाओ पडिणिवल्लमड' मागधतीर्थकुमारस्य देवस्य विजयोपलक्षे अष्टादिकायां महामहिमायां निवृत्तायां सत्याम् आयुधगृहशालातः प्रतिनिष्क्रामति निर्गच्छति 'पडिणिवल्लमत्ता' प्रतिनिष्क्रम्य 'दाहिणपच्चत्थिम दिसिं वरदामत्तित्थाभिमुहे पयाए यावि होत्था' दक्षिणपाश्चात्यां-दक्षिणपश्चिमां दिशम् नैऋत्यकोणमाश्रित्य वरदामतीर्थाभिमुखं प्रयातं-चलितं चाप्यभवत् ॥६० ७॥

कुसुम आसत्त मल्लदामे अंतलिखलपडिवन्ने, जक्खसहस्सपरिवुडे) समस्त ऋतुओं के सुरभित कुसुमों को निर्मित मालाओ से यह सुशोभित था, आकाश में ठहरा हुआ था हजार यक्षों से यह परिवृत था (दिव्य वृद्धिमदसण्णिणाएणं पूरेते चेव अंबरतलं णामेणं सुदंसणे णरवडस्स पढ मे चक्करयणे) दिव्यनूर्य वाद्यविशेषों के शब्द से एवं उनकी सगत ध्वनियों से अम्बर तल को भर सा रहा था, नाम इनका सुदर्शन था ऐसा यह भरत चक्रवर्ती का-प्रथम-आद्य, तथा सर्वरत्नों में श्रेष्ठ वैरिजनों के विजय करने में सर्वत्र अमोघ शक्ति वाला होने से प्रधान चक्ररत्न था ऐसा यह चक्ररत्न (मागहत्तित्थकुमारस्स देवस्स अट्टाहिआए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए आउइधरसालाओ पडिणिवल्लमड) जब मागधतीर्थ कुमार को भरत चक्रवर्ती ने अपने वश में कर लिया तब उसके उपलक्ष में क्रिये आठदिन के महामहोत्सव के निष्पन्न हो जाने पर आयुधशाला गृह

जक्खसहस्सपरिवुडे) सर्व ऋतुओंना सुरभित कुसुमोंनी भागाओंथी ओ सुशोभित હતુ. ओ आकाશમાં अवस्थित હતુ સહસ્ર પક્ષોથી ओ પરિવૃત્ત હતુ (દિવ્યતુડિયસદસ-
ણિણાણં પૂરેતે ચેવ અંબરતલં ણામેણં સુદંસણે ણરવડસ્સ પઢમે ચક્કરયણે) દિવ્યનૂયં
વાદ્ય વિશેષોના શબ્દથી તેમજ તેમની સગત ધ્વનિઓથી તે અંબરતલને પૂરત કરતુ હતુ
ઓવુ ઓ ભરત ચક્રવર્તીનુ પ્રથમ-આદ્ય તેમજ સર્વરત્નોમાં શ્રેષ્ઠ, વૈરિઓ ઉપર વિજય મેળ-
વવામાં સર્વત્ર અમોઘ શક્તિ ધરાવનાર હોવાથી ઓ પ્રધાન ચક્રરત્ન હતુ ઓવુ આ ચક્રરત્ન
(માગહતિત્થકુમારસ્સ દેવસ્સ અટ્ટાહિઆપ મહામહિમાપ ણિવ્વત્તાપ સમાણીપ આઉહધરસાલાઓ
પડિણિવલ્લમડ) તથા માગધતીર્થ કુમારને ભરત ચક્રવર્તીએ પોતાના પશમાં કરી લીધી
ત્યાર બાદ તે અ ન દના ઉપલક્ષ્યમાં આઠ દિવસનો મહામહોત્સવ સમ્પન્ન કરવામાં આવ્યો,

छाया—तत खलु स भरतो राजा तद्विव्य चक्ररत्न दक्षिण पाश्चात्या दिश वरदामतीर्थाभिमुखं प्रयात चापि पश्यति, दृष्ट्वा हृष्ट तुष्ट० कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा एवम् अवादीत्-क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिया । हयगजरथप्रवरचातुरंगिणी सेना सन्नाहयत अभिपेक्ष्य हस्तिरत्नं प्रतिरूपयत इति कृत्वा मज्जनगृहम् अनुप्रविशति अनुप्रविश्य तेनैव क्रमेण यावत् धनलमहामेघनिर्गतो यावत् श्वेनवरचामरं रुद्धमानं रुद्धमानं हस्तपाशित वरफलज प्रवरपरिकरखेट रुवरवर्मकवचमाढय पद्मकलित उत्कट वरमुकुटकिरीट पताक वज्रवैजयन्ती चामर चलच्छत्रान्यकारकलित, असि क्षेपिणी रज्ज चाप नाराज कणक कल्पनीशूललगुडभिन्दिपालधनुस्तूणशरप्रहरणैश्च कालनीलरुधिरपीत शुषलानेकचिह्नशतसन्निविष्टम् आस्फोटितसिद्धानां सैन्धित हय द्वेपित हस्तिगुलगुलायितानेकरथशतसहस्रानुकरणशब्दनिहन्यमानशब्दसहितेन यमकसमकभम्भादोरम्मा पवणिता खरमुखो मुकुन्द शङ्खिका पिरलीवच्चक परिव्राजिनी वंशवेणु विपञ्ची महतो कच्छपो भारतीरिगसिरिका तलताल कांस्यताल करघानोत्थितेन, महता शब्दसन्निनादेन सकलमपि जीवलोकं पूरयन् चलवाहनसमुदयेन एवम् यक्षसङ्घपरिवृत्तो वैश्रमणो धनपतिरिव अमरपति सन्निभया क्रद्धया प्रथितकीर्तिः ग्रामाकरनगरखेटकवटं तथैव शेषं यावत् विजयस्कन्धावारनिवेशं करोति, कृत्वा वर्द्धकिरत्नं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत् क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिय । मम आवासं पौषधशाला च कुरु मम पतामाक्षपितकां प्रत्यर्पय ॥ सू० ८ ॥

टीका—‘तए णं’ इत्यादि । ‘तए णं से भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं’ ततः खलु स भरतो राजा तद्विव्यं चक्ररत्नम् ‘दाहिणपच्चत्थिमं दिंसि’ दक्षिणपाश्चात्यां दक्षिणपश्चिमां दिशं नैऋत्यकोणं प्रति ‘वरदामतित्थाभिमुहं पयातं चावि पासइ’ वरदामतीर्थाभिमुखं प्रयातं चापि पश्यति ‘पासित्ता’ दृष्ट्वा ‘इद्ध तुद्ध० कोडुंबियपुरिसे सदावेइ’ दृष्टतुष्टचित्तानन्दितः सन् कौटुम्बिकपुरुषान् प्रधानराजसेवकान् शब्दयति आह्वयति ‘सदावित्ता’ शब्दयित्वा—आहूय ‘एव वयासी’ एव वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्—

‘तएणं भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं’, इत्यादि

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (भरहे राया) भरत राजा ने जब (त दिव्वं चक्करयणं) उस दिव्य चक्ररत्न को (दाहिण पच्चत्थिमं दिंसि वरदामतित्थाभिमुहं पयातं चावि पासइ) दक्षिण-पश्चिम दिग्वर्ती नैऋत्यकोण की ओर वरदाम तीर्थ की तरफ जाते हुए देखा—तब (पासित्ता इद्ध तुद्ध कोडुंबियपुरिसे सदावेइ) देखकर अपने अपने कौटुम्बिक पुरुषों को, प्रधान सेवकों को बुलाया (पदावित्ता एवं वयासी) और बुलाकर उसने ऐसा कहा—(विष्णामेव भो देवानुप्पिया । हय-

‘तएणं भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं’ इत्यादि सू० ॥८॥

(त एणं) त्थार भाइ (भरहे राया) भरत राजा ने जब (तं दिव्वं चक्करयणं) ते चक्ररत्नने (दाहिणपच्चत्थिमं दिंसि वरदामतित्थाभिमुहं पयातं चावि पासइ) दक्षिण पश्चिम दिग्वर्ती नैऋत्य कोण तरफ वरदाम तीर्थ तरफ जाता देखे (पासित्ता इद्ध तुद्ध कोडुंबिय पुरिसे सदावेइ) देखने तेबे पोताना कौटुम्बिक पुरुषोने, प्रधान राज सेवकोने बुलाव्या.

ઉક્તવાન્ 'સ્નિગ્ધામેવ મો દેવાણુપ્પિયા !' ક્ષિપ્રમેવ મો દેવાનુપ્રિયાઃ । 'હયગયરહપવર-
 ચાઝરંગિણિ સેણં સળ્ળાહેહ', હયગયરથપવરચાતુરંગિણો સેનાં સન્નાહયત-સજ્જીકુરત
 'આમિસેકં હત્થિરયણં પઢિકપ્પેહ' આમિષેકયં હસ્તિરત્નં પ્રતિકલ્પયત 'ત્તિકદ્દુ મજ્જણઘરં
 અણુપવિસહ' इति कृत्वा इति कथयित्वा मज्जनगृहम् अनुप्रविशति 'अणुपविसित्ता' अनु-
 प्रविश्य 'तेणेव कमेणं जाव धवलमहामेहणिगए' तेनैव क्रमेण पूर्वोक्तस्नानाधिकारसूत्र-
 परिपाठ्या स्नानादिविधं समाप्य यावत् धवलमहामेषनिर्गतश्चन्द्र इव सुधाधवलीकृत
 मज्जनगृहात् स चक्री-भरतो निर्गच्छतीति भावः । तदनन्तरं नरपतिश्चक्री भरतो गजपति-
 मारोहति केन सहित आरोहतीत्याह-'जाव सेयवर चामराहिं उद्धुवमाणीहिं उद्धुवमणीहिं'
 यावत् सकोरण्टमाल्यदाग्ना छत्रेण ध्रियमाणेन सहितस्तथा श्वेतवरचामरः अग्रतः पृष्ठतः
 पार्श्वयोश्च चतुर्भिः प्रकारकैः स्वच्छश्रेष्ठ चामरैरुद्धूयमानै-रुद्धूयमानैः-वीज्यमानैर्वीज्यमानैः
 सहितः स नरपतिः गजपति मारोहति इति भावः । अथ यथाभूतो भरतो वरदामतीर्थ

ગય રહ પવર ચાઝરંગિણિ સેણં-સળ્ળાહેહ) હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ હોગ શીઘ્ર હો હય-બોહા
 ઓ સે હાથિયોં સે રથોં સે પવ પ્રબલ શ્રેષ્ઠ યોધાઓં સે યુક્ત ચાતુરંગિણી સૈન્ય કી તૈયારી કરો-
 અર્થાત્ ઉસે સજાકર તૈયાર રલ્લો તથા (આમિસેકકં હત્થિરયણં પઢિકપ્પેહ તિકદ્દુ મજ્જણઘરં
 અણુપવિસહ) આમિષેકય-રાજા કે સવારી કે યોગ્ય હસ્તિરત્ન કો મી સજાઓ । એસા કહકર
 વહ મજ્જનગૃહ મેં-સ્નાનઘર મેં- પ્રવિષ્ટ હો ગયા-(અણુપવિસિત્તા) મજ્જનગૃહ મેં પ્રવિષ્ટ હોકર
 (તેણેવ કમેણં જાવ ધવલમહામેહણિગપ જાવ સેયવરચામરાહિં ઉદ્ધુવમાણીહિં ૨) વહ ભરત ચક્રી
 પૂર્વોક્ત સ્નાનાધિકાર સૂત્ર પરિપાટી કે અનુસાર સ્નાનાદિવિધિ કો પરિસમાપ્ત કર કે યાવત્ ધવલ-
 મહામેષ સે નિર્ગત ચન્દ્રકી તરહ ધવલીકૃત ઉસ મજ્જનગૃહસે નિકલ્લા ઔર નિકલ કર ફિર વહ
 ગજપતિ પર આરૂઢ હુઆ જબ વહ ગજપતિ પર બેઠ ગયા તબ ઉસકે ઉપર છત્રધારિયોં નેકોરન્ટ
 પુષ્પોં કી માલાઓં સે યુક્ત છત્ર તાન દિયે । તથા આગે સે પિછે સે ઔર દોનોં પાર્શ્વ ભાગોં સે

(સહાવિત્તા પર્વ વ્યાસી) અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું - (સ્નિગ્ધામેવ મો દેવાણુ-
 પ્પિયા ! હયગયરહપવરચાઝરંગિણિ સેણં સળ્ળાહેહ) હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે યથા
 શીઘ્ર હયો-બોહા, ગજ, રથ તેમજ પવર શ્રેષ્ઠ યોદ્ધાઓથી યુક્ત ચાતુરંગિણી સેના સુસજ્જિત
 કરો. એટલે કે તેને સુખજ કરીને તૈયાર રાખો. તથા-(અમિસેકકં હત્થિરયણ પઢિકપ્પેહ
 તિકદ્દુમજ્જણઘર અણુપવિસહ) આમિષેકય રાજાની સવારીયોગ્ય હસ્તિરત્નને પણ સુસજ્જ કરો.
 આમ કહીને તે મજ્જન ગૃહમાં-સ્નાન ગૃહમાં પ્રવિષ્ટ થયો. (અણુપવિસિત્તા) મજ્જન ગૃહમાં
 પ્રવિષ્ટ થઈને (તેણેવ કમેણં જાવ ધવલમહામેહણિગપ જાવ સેયવરચામરાહિં ઉદ્ધુવમા-
 ણીહિ ૨) તે ભરત ચક્રવીર પૂર્વોક્ત સ્નાનાધિકાર સૂત્ર પરિપાટી સુજ્ઞ સ્નાનાદિક વિધિને
 વતાવીને યાવત્ ધવલ મહામેષથી વિનિર્ગત ચન્દ્રની જેમ ધવલી કૃત તે મજ્જન ગૃહમાંથી
 બહાર નીકળ્યો અને નીકળીને પછી તે ગજપતિ ઉપર આરૂઢ થયો. જ્યારે તે ગજપતિ
 ઉપર બેસી ગયો ત્યારે તેની ઉપર છત્રધારકોએ કેરટ પુષ્પોની માળાઓથી યુક્ત છત્રો
 તાણ્યા. તેમજ આગળ-પાછળ અને બન્ને પાર્શ્વભાગ તરફ ચામર ઢાળનારાઓએ શ્વેત

પ્રાપ્ત: યથા ચ વરદામતીર્થે સ્કન્ધાવારનિવેશમકરોત્તયાહ-અત્ર સૂત્રે વાક્યદ્વયં, તત્ર ચાદિ-
વાક્યે 'તદેવ સેસ' इत्यतिदेशपदेन सूचिते सूत्रे 'जेणेव वरदामतित्ये तेणेव उपागच्छड'
इत्यनेन अन्वयः कार्यः स भरतो यत्रैव वरदामतीर्थं तत्रैव उपागच्छति, द्वितीयवाक्ये
च 'विजयखंधावारणिवेसं कुरेड्' इत्यनेनान्वयः किं लक्षणः स राजा इत्याह 'माइय'
इत्यादि 'माइय वरफल्य पवरपरिगर खेडयवरवम्म कवयमाढीमइस्सकल्लि' हस्त-
पाशित वरफलक प्रवरपरिकरखेटकवर वम्मकवयमाढयसहस्रकल्लिः, तत्र-'माइय' चि
देशीयशब्दः हस्तपाशितार्ये तेन हस्तपाशित वरफलक 'ढाल' इति नाम्नालोके प्रसिद्ध
येषां ते तथा प्रवरः परिकरः-प्रगाढगात्रिकाग्रन्थः खेटक च वंशशलाकादिमय येषां ते
तथा वरवम्मकवयमाढयः-सन्नाहविशेषा येषां ते तथा ततः पदत्रयस्य कर्मगारयः तेषां
सहस्रैः-वृन्दवृन्दैः समूहैः कलितो युक्तो यः स तथा, राज्ञां हि संग्रामप्रयाणसमये
युद्धाङ्गानां सह सञ्चरणस्यावश्यकत्वात् पुनश्च कीदृशः 'उक्कडवरमउडतिरीडपडागझयवेज-
यंति चामरचलंतछत्तंधयारकल्लि' उक्कडवरमुकुटकिरीटपताकध्वजवैजयन्ती चामरचल-

उसके ऊपर चामर डोरने वालों ने श्वेत चामर डोरना प्रारम्भ करा दिया। अब सूत्रकार यह प्रकट
करते हैं कि वह भरत चक्रो कैसा होकर वरदामतीर्थ पर गया और किस तरह से उसने वरदा-
मतीर्थ पर अपने स्कन्धावार को ठहराया तथा वह भरत चक्रो कैसा था? अब पहिले भरत चक्रो
के सम्बन्ध में ही विशेषणों द्वारा उसकी विशेषता प्रकट की जाती है। (माइय वरफलय पवरप-
रिगर खेडय वरवम्मकवयमाढीसहस्रकल्लि) यहाँ "माइय" यह देशी शब्द है और यह हाथ में
पकड़ने के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। इस तरह जिन्होंने अपने-अपने हाथों में वरफलय-ढाल
ले रखा है, श्रेष्ठ कमर बन्ध से जिनका कटिभाग खूब कसकर बन्धा हुआ है। तथा वंश की
शलाकाओं से निर्मित जिनके खेटके-बाण हैं, एवं दृढवद्ध कवच-जहर वस्त्र-ते जो सज्जित
हैं ऐसे हजारों योद्धाओं से वह भरत चक्रो युक्त था (उक्कड वरमउड तिरीडपडाग झय वैजयंति
चामरचलंतछत्तंधयारकल्लि) उन्नत एवं प्रवर-श्रेष्ठ मुकुट-राजचिह्नविशेषित शिरोभूषण किरीट

શ્રેષ્ઠ આમરો ઢાળવા માહ્યા. હવે સૂત્રકાર એ વાત પ્રકટ કરે છે કે તે ભરત ચક્રી કેવા થઈ
ને વરદામ તીર્થ ઉપર ગયો અને કેવી રીતે તેણે વરદામ તીર્થ ઉપર પોતાના સ્કન્ધાવારનો
પકાવ નાખ્યો તેમજ તે ભરતચક્રી કેવો હતો? હવે સર્વપ્રથમ વિશેષણો વડે ભરતચક્રીના
સ બધામાં જ વિશેષતા પ્રગટ કરતા સૂત્રકાર કહે છે (માહયવર ફલય પવરપરિગરખેડયવર-
વમ્મકવય માઢીસહસ્રકલ્લિ) અહીં 'માહય' એ દેશી શબ્દ છે અને એ હાથમાં પકડવા
માટેના અર્થમાં પ્રયુક્ત થયેલ છે આ પ્રમાણે જેમણે પોત-પોતાના હાથોમાં વરફલકો-
ઢાલોલઈ રાખી છે, શ્રેષ્ઠ કમરબધી જેમનો કટિ ભાગ બહુ જ કસીને બાધવામાં આવ્યો
છે તેમજ વંશની શલાકાઓથી નિર્મિત જેમના ખેટકો-બાણો-છે-તેમજ દૃઢ બદ્ધ કવચ-
અર્થાત્ જે મજબૂત કવચથી સુસજ્જિત છે એવા સહસ્રો યોદ્ધાઓથી તે ભરતચક્રી યુક્ત
હતો. (ઉક્કડ વરમઉડતિરીડપડાગઝયવેજયંતિ ચામરચલંતછત્તંધયારકલ્લિ) ઉન્નત
તેમજ પ્રવર શ્રેષ્ઠ મુકુટ-રાજચિહ્ન વિશેષિત શિરોભૂષણ કિરીટ-સદૃશ શિરોભૂષણ પતાકા-

ચલ્લનાન્ધકારકલિતઃ, તત્ર-ઉત્કટવરાણિ ઉન્નતપ્રવરાણિ મુકુટાનિ રાજચિન્હવિશેષિત-
શિરોભૂષણાનિ ફિરીટાનિ મુકુટસદૃશશિરોભૂષણાનિ પતાકા લઘુપટરૂપા, ધ્વજા બૃહત્પટ-
રૂપાઃ વૈજયન્ટ્યઃ પાર્શ્વતઃ લઘુપતાકિકાદ્વયસંયુક્તાઃ પતાકા एव, ચામરાણિ તથા ચન્દ્રચ્છ-
ત્રાણિ ચ તેષાં સમ્પન્નિય યદન્ધકારં-ઝાયારૂપમ્ તેન કલિતઃ યુક્તઃ, અત્ર અન્ધકારશબ્દેન
મુકુટાદીનાં ઝાયા ગૃહ્યતે, તેન આત્મજનિતવલ્લેશગદ્ધિન ઇતિ ભાવઃ પુનર્ભરતમેવ વિશિનષ્ટિ-
(અસિલ્લેવણિ સ્વર્ગચાવનારાયકળયકળપિણિમૂલલઝડ્ઢિમિહિમાલધણુહતોણસરપહરણેહિય)
અસિલ્લેવણી સ્વર્ગચાવનારાચકળકલ્પની શૂલઝગુડમિન્દિપાન્ધનુરતૂળ શરપ્રહરણૈશ્ચ
(મહિષ) સયુક્તઃ તત્ર અસયઃ-લઘુવિશેષાઃ ક્ષિપ્યન્તે સીસકગુટિકા યામિરિતિ ક્ષેપિણ્યઃ
(ગોફળ) ઇતિ લોકપ્રસિદ્ધા, સ્વક્ષાઃ સામાન્યતઃ, ચાપાઃ ધનુષિ નારાચાઃ-સર્વલોહ-
બાણાઃ, કળકાઃ વાણવિશેષાઃ કલ્પન્યઃ લઘુસ્વક્ષાઃ શૂલાનિ પ્રસિદ્ધાનિ લઘુઘાઃ
યષ્ટિવિશેષાઃ મિન્દિપાલાઃ હસ્તક્ષેપ્યાઃ મહાફલાદીર્ધાં આયુધવિશેષાઃ, ધનુષિ વંશમય-
બાણાસનાનિ, તૂળાઃ-તૂળીરાઃ વાણકોશા ઇત્યર્થઃ, શરા-સામાન્ય વાણાઃ ઇત્યાદિમિ
પ્રહરણૈશ્ચ કિમાકારકૈરુક્તપ્રહરણૈઃ કલિત ઇત્યાહ (કાલળીલ) ઇત્યાદિ (કાલળીલ રુહિર
પીય મુલ્કિલ્લ અનેગચિંધસયસણિવિદ્વે) કાલ નીલરુધિરપીતશુક્લાનેકચિન્હશતસન્નિ-

મુકુટ સદૃશ શિરોભૂષણ પતાકા-લઘુપતાકાઈ, ધ્વજાઈ વહોર પતાકાઈ, વૈજયન્તિ-પાર્શ્વભાગ મેં
છોટીર દો પતાકાઓ સે યુક્ત પતાકાઈ, ચામર एव છત્ર इनकी छाया से वह युक्त है (यहा अंध-
कार पद से मुकुटादिकों की छाया गृहीत हुई है अतः इस प्रकार के रुधन से आतपजनित क्लेश
से रहित वह भरत चकी प्रकट किया गया है) (अमिल्लेवणि स्वर्ग चाव नारायकणय कल्पणि-
मूल लडडभिडिमालधणुह तोण सरपहरणेहिय) असि-तलवार विशेष, क्षेपणी-गोफन, स्वर्ग
सामान्य तलवार, चाप-धनुष, नाराच-सर्प रूरा से दने हुए लोहे के बाण, कणक-वाणविशेष
कल्पनी लघुस्वर्ग, शूल, लघुह-यष्टि विशेष, मिन्दिपाल-वल्लभ महाफलवाला लम्बा आयुधविशेष
धनुष-वंशमय बाणासन, तूण-माथा, शर-सामान्य बाण, इन सब प्रहरणों से जो कि (काल-
लील रुहिर पिय मुल्लिक्कल अनेगचिंधसयसणिविद्वे) काळे, नीले, लाल, पीछे और सफेद

લઘુપતાકાઓ, ધ્વજાઓ-વિશાળ પતાકાઓ. વૈજયંતી-પાર્શ્વભાગમાં નાની-નાની બે પતાકા-
ઓથી યુક્ત પતાકાઓ ચામર તેમજ છત્ર એ સર્વની છાયાથી તે યુક્ત હશે, (અહીં અંધકાર
પદથી મુકુટાદિકોની છાયા ગૃહીત થઈ છે, એથી આ ભરતના કથનથી આતપ જનિત ક્લેશથી
રહિત તે ભરતચક્રો પ્રકટ કરવામાં આવેલ છે) (અસિલ્લેવણિસ્વર્ગચાવનારાયકળયકળપણિ
મૂલલઝડ્ઢિમિહિમાલધણુહતોણ સરપહરણેહિય) અસિ-તલવાર વિશેષ, ક્ષેપણી ગોફળ,
ખડ્ગ-સામાન્ય તલવાર ચાપ-ધનુષ્ય, નારાય-આયુધ લોખંડનું અનેક બાણ, કણક-બાણ-
વિશેષ, કલ્પનીલઘુ-ખડ્ગ-શૂલ લઘુહ-યષ્ટિ વિશેષ મિન્દિપાલ-વલ્લભ-મહાફલકે યુક્તમુદીર્ધ
આયુધવિશેષ ધનુષ-વંશમય બાણાસન તૂણ-તૂળીર, શર-સામાન્ય બાણ, એ સર્વ પ્રહરણોથી
કે જે (કાલળીલરુહિરપીય મુલ્કિલ્લ અનેગચિંધસયસણિવિદ્વે) કાળા, નીલા, લાલ, પીળા
અને શ્વેત ૨ ગોમા અનેક સહસ્રો ચિહ્નોથી યુક્ત હતા એટલે કે એ સર્વ ચિન્હો ભરતની

વિષ્ટમ્, તન્ન-રુધિરશબ્દો રક્તાર્થે પ્રયુક્તઃ તેન કાલનીલરક્તપીતશુક્રવર્ણાનિ જાતિતઃ
પશ્ચવર્ણાનિ વ્યક્તિતસ્તુ તદવાન્તરભેદાત્ અનેકરૂપાણિ યાનિ ચિન્હગતાનિ તાનિ સન્નિ-
વિષ્ટાનિ સ્થાપિતાનિ યસ્મિન્ તત્તથા તત્ યથાસ્યાત્તથેતિ ક્રિયાવિશેષણનયા ધોધ્યમ્ ।
કોઽર્થઃ ? રાજ્ઞાં દ્વિ શસ્ત્રાધ્યક્ષાસ્તત્તજ્ઞાતીયતત્તદેશીયશસ્ત્રાણાં તસ્યૈવ પરિજ્ઞાનાય
શસ્ત્રકોશેષુ ઉક્તરૂપાણિ ચિન્હાનિ નિવેશયન્તિ ગસ્ત્રેષુ ચ તત્તદ્વર્ણમયાન કોશાન કુર્વ-
ન્તીત્યર્થઃ, પુનશ્ચ રાજસામગ્રી કથનદ્વાગ ભરતરાજાનમેવ વિશિનષ્ટિ (અપ્ફોહિય સીહણાય
છેલિય હ્યહેસિય હત્થિગુલગુલાહ્ય અળેગ રહસયસહસ્સઘણઘણેતળીહમ્મમાણ-
સહસહિણ) આસ્ફોટિત સિંહનાદસંદિત હ્યહેપિત હસ્તિગુલગુલાયિતાનેકથશત-
સહસ્રનઘનેતિ નિહન્યમાનશબ્દસહિતેન, તન્ન આસ્ફોટિતં મુજાસ્ફોટરૂપં સિંહનાદઃ
સિંહસ્યેવ શબ્દકર્ણમ્ 'છેલિય' ત્તિ સંદિતં હર્ષોત્કર્ષેણ સીત્કારકરણમ્ હ્યહેપિતમ્
હણહણેતિ તુરજ્જશબ્દઃ, હસ્તિગુલગુલાયિતં-ગજગર્જિતમ્ અનેકાનિ યાનિ રથશતસહ-
સ્રાણિ લક્ષપરિમિતાનિ તેપામ્ 'ઘણઘણેત' ત્તિ ઘણઘણશબ્દઃ, અયં સ્થાનામનુકરણશબ્દઃ
તથા નિહન્યમાનાનામશ્વાનાં ચ તોત્રાદિ શબ્દાસ્તૈઃ સહિતેન તથા 'જમગસમગમ્ભા-

રંગો કે અનેક સૈકડો ચિન્હોં સે યુક્ત થે અર્થાત્ યે સઞ્ચ ચિહ્ન જાતો કી અપેક્ષા પાચ વર્ણોં કે હી
યે પરન્તુ વ્યક્તિ કી અપેક્ષા અવાન્તર મેદોં કો ઠેકર યે સૈકડોં કી સહ્યા મેં યે ક્યો કિ એસા
દેસા જાતા હૈ કિ રાજાઓ કે શસ્ત્રાધ્યક્ષ તત્તજ્ઞાતીય તત્તદેશીય શસ્ત્રો કે પરિજ્ઞાન કે નિમિત્ત
શસ્ત્રકોશો કે ઊપર ઉક્તરૂપ વાલે ચિહ્ન બના દેતે હૈં ઓર ગસ્ત્રો કે ઊપર મી તત્તદ્વર્ણમય અનેક
ચિહ્ન કર દિયા કરતે : એસે શસ્ત્રો સે વહ ભરત ચક્રી યુક્ત થા, તથા (અપ્ફોહિયસીહણાય
છેલિય હ્યહેસિયહત્થિગુલગુલાહ્ય અળેગ/રહસયસહસ્સઘણઘણેતળીહમ્મમાણસહસહિણ) જન્
ભરત ચક્રા હસ સઞ્ચ યુદ્ધ સામગ્રી સે યુક્ત હુઆ ચળ જા રહ્યા થા ડસ સમય ડસકે સાથ કે
કિતનેક યોદ્ધાજન મુજાઓ કો ઠોકતે હુપ સાથ મેં ચલ રહે યે। કોહર યોદ્ધા જન સિંહ કે જૈસે
શબ્દો કી ધ્વની કરતે હુપ ચલે જા રહે યે। કોહર યોદ્ધા હર્ષ કે ઉત્કર્ષ સે સીત્કાર શબ્દ કરતે
હુપ આગે વઢ રહે યે। સાથ મેં ઘોઢાઆં કી હિનડિનાહટ કે શબ્દ ગૂજરહે યે। હસ્તિગુલગુલાયિત
હાથિયોં કી ચિલાહ હતો જા રહી થી, હાલો રથોં કી ચિત્કાર ધ્વનિ નિકલ રહી થી ।

અપેક્ષાકો પાચ વર્ણના જ હતા, પરંતુ વ્યક્તિની અપેક્ષાએ અવાન્તર ભેદથી એ સહસ્ત્રોની
સંખ્યામાં હતા કેમકે આમ ભેવાયા આવે છે કે રાજાઓના શસ્ત્રાધ્યક્ષ તત્તજ્ઞાતીય, તત્ત-
દેશીય શસ્ત્રોના પરિજ્ઞાન-નિપિત શસ્ત્રકોશોની ઉપર ઉપયુક્ત ચિન્હો બનાવી દે છે અને
શસ્ત્રોની ઉપર પણ તત્તદ્વર્ણમય અનેક ચિન્હો કરી નાખે છે એવા શસ્ત્રોથી તે ભરત ચક્રી
યુક્ત હતા. તેમજ (અપ્ફોહિયસીહણાય છેલિયહ્યહેસિય હત્થિ ગુલગુલાહ્ય અળેગરહસય-
સહસ્સ ઘણઘણેતળીહમ્મમાણસહસહિણ) બ્યારે ભરત ચક્રી આ બધી યુદ્ધ-સામગ્રીથી
સુસજ્જ થઈને જઈ રહ્યો હતો, તે સમયે તેની સાથેના કેટલાક યોદ્ધાઓ ભુજાઓ ઠોકતા
ઝોટલે કે યુદ્ધ માટે અમે તત્પર છીએ આ બતને બાવ વ્યક્ત કરતા સાથે ચાલી રહ્યા
હતા કેટલાક યોદ્ધાઓ સિંહ બેવી ગળના કરતા ચાલી રહ્યા હતા, કેટલાક યોદ્ધાઓ
હર્ષાવિષ્ટ મૂળે સીત્કાર શબ્દ કરના-કરતા આગળ ધપી રહ્યા હતા. ઘોડાઓના હથુલધાટથી
દિશાઓ આપ થઈ ગઈ હતી હસ્તિ ગુલગુલાયિત-કાથીઓની ચીલથી મહાગબ્દ થઈ રહ્યો.

હોરંમકિર્ગિા સ્વરમુદ્ધિમુગુંદસંસ્થિય પિરલી।ચ્ચગપરિવાદ્ધિ વંસવેણુવિપંચિ મહતિ
 કચ્છવિમિરિયારિગસિરિગતલતાલકંમતાલકરઘાણુત્થિયણ' યમકસમકમમ્માહોરમ્મા-
 વ્વણિતા સ્વરમુલ્લો મુકુન્દશક્લિકા પિરલી।ચ્ચકપરિવાદિની વંશવેણુવિપચ્ચી મહતી
 કચ્છપી ભારતી રિગસિરિકાનલનાલકાંસ્યતાલકરધ્મનોત્થિતેન, તત્ર 'જમગસ-
 મમે' તિ-યુગદ્વાદ્યમાનેભ્યઃ મમ્મા-ઢક્કા, હોરમ્મા-મશ્ઢક્કા, વ્વણિતા-કાચિદ્
 વીળા સ્વરમુલ્લો કાહલીતિ પ્રસિદ્ધાઃ, મુકુન્દો મુરજવિશેષઃ, શક્લિકા-લઘુશક્લરૂપા પિર-
 લીવચ્ચકૌ-તૃણરૂપવાદ્યવિશેષૌ, પરિવાદિનો સપ્તતન્ત્રીવોળા વંશઃ-પ્રસિદ્ધ, વેણુવંશ
 વિશેષઃ, વિપચ્ચીતિતન્ત્રી વોળા મહતીસપ્તતન્ત્રીકા કચ્છપી-કચ્છપાકારો વાદ્યવિશેષઃ,
 ભારતીવીળા, રિગસિરિકા-વર્ષમાળગાદિત્રવિશેષઃ, તલં-હસ્તપુટં તાલાઃ વાદ્યવિ-
 શેષઃ, કાંસ્યતાલાઃ-પ્રસિદ્ધાઃ, કરધ્માનં-પરસ્પરં હસ્તતાલનમ્ પતેભ્યો વાદિતવાદ્યવિ-
 શેષેભ્ય ઉત્થિતેન નિઃસૃતેન ઉત્પન્નેનેત્યર્થ 'મહયા સદ્સણ્ણિણાદેણ' મહતા શબ્દ-
 સન્નિનાદેન તત્ર મહતા વિપુલેન શબ્દસન્નિનાદેન ધ્વનિપ્રતિધ્વન્યાત્મકેન 'સયલમવિ

સંસજનો દ્વારા ઘોઢોં કો તાલનાં કે નિમિત્ત પ્રયુક્ત ક્રિયે ગયે કોઢોં કા આવાજ મરો
 રહી થો । તથા (જમગસમગ મમા હોરંમ કિર્ગિત સ્વરમુદ્ધિ મુગુંદસંસ્થિયપિરલી વચ્ચગ પરિ
 વાદ્ધિ વપવેણુ વિપંચિ મહતિકચ્છ વિમિરિયા રિગસિરિગતલતાલકંમતાલકરઘાણુત્થિયણ) એક
 સાથ વજાયે ગયે મમા-ઢક્કા, હોરમ્મા-મશ્ઢક્કા, કૂણિતા-વીળા, સ્વરમુલ્લી-કાહલી, મુકુન્દ
 -મુરજ વિશેષ, શક્લિકા-છોટી શંસી, પિરલી, વચ્ચક(યે દોનોં વાદ્યવિશેષ ઘાસકે તુળોં સે વજાયે
 જાતે હૈં) પરિવાદિની-સપ્તતન્ત્રી વીળા,વંશ-વાંસુરી, વેણુ-વિશેષ પ્રકાર કી વાંસુરી, વિપચ્ચી-વીળા
 મહતી-કચ્છપી-સાત તારોવાલી કચ્છપકેજૈસે આકાર કી વીળા-તમૂરા, ભારતી વીળા, રિગપિ-
 રિકા ઘિસને પર જો વજતા હૈ એસા વાદ્યવિશેષ, તલ હપેલી કો આવાજ, જિસે તાલ કહા
 જાતા હૈ કાંસ્યતાલ એવ કરધ્માન-પ્રાપસ મૈં હાથો કા તાલન હન સવકે રનપન હુય (મહયા સદ્
 સન્નિનાદેન) વિપુલ શબ્દોં કી ધ્વનિ એવં પ્રતિધ્વનિ હોતીચારહો થો હસે (મયન્મવિ જીવલોયં

હતા. સાર્થ સો વડે ઘોડાઓની તાલના-નિમિત્તે જે કોડાઓ કટકારી રહ્યા હતા તેનો અવાજ
 થઈ રહ્યો હતો તેમજ (જમગ-સમગ મમા હોરંમ કિર્ગિત સ્વરમુદ્ધિ મુગુંદ સંસ્થિયપિરલીવ-
 ચ્ચગ પરિવાદ્ધિ વંસવેણુવિપંચિ મહતિ કચ્છવિમિરિયારિગસિરિગ તલતાલકંમતાલકર
 ઘાણુત્થિયણ) એકી સાથે વગાડવામાં આવેલા ભાંભા-ઢક્કા, હોરભા-મશ્ઢક્કા, કૂણિત-વીળા
 ખરમુહી-કાહલી, મુકુન્દ-મુરજ વિશેષ, શક્લિકા-છોટી-શંખી, વિરલી, વચ્ચક (એઓ બન્ને
 વાદ્ય-વિશેષો ઘાસના તુણોથી બનાવવામાં આવે છે.) પરિવાદિની-સપ્તતન્ત્રી વીળા, -વ શ વાંસળી
 વેણુ-વિશેષ પ્રકારની-વાસળી, વિરલી-વીળા, મહતી-કચ્છપી-સાતતારોવાળી કચ્છપ જેવા
 આકારવાળી વીળા, તખૂરો, ભારતી વીળા, રિગસિરિકા-વપવાથી જે વાગે છે એ બાતલું
 વાદ્યવિશેષ, તલ-કુણિતના અવાજ કે જેને તાલ કહેવામાં આવે છે, કાંસ્યતાલ તેમજ કર-
 ધ્માન-પરસ્પર કાથોનું તાલન, એ સર્વથી ઉત્પન્ન થયેલા (મહયા સદ્સન્નિનાદેન) વિપુલ
 શબ્દોનો ધ્વનિ અને પ્રતિધ્વનિ શબ્દ થઈ રહ્યો હતા એથી (સયલમવિ જીવલોયં પ્રયત્ને)

जीवलोयं पूरयंते' सकलमपि जीवलोकं पूरयन् 'बलवाहनसमुदणं' बलवाहनसमु-
दयेन, तत्र बलं चातुरङ्गसैन्यम्, वाहनं-शिविकादि, एतयोः क्रमेण यः समुदयः समूहः
तेन युक्तो भरतः पुनश्च कीदृशः 'एवं जक्खसहस्सपरिवुडे वेसमणे चेव धणवई' एवम्
अगुना प्रकारेण 'जक्ख सहस्सपरिवुडे' यक्षसहस्रपरिवृतः यक्षाणां देवविशेषाणां सहस्र
संपरिवृतः 'वेसमणे चेव धणवई' वैश्रमणः धनपतिरिव कुवेर इव सम्पत्तिशाली भरतोऽपि
यक्षसहस्रद्वयसंपरिवृतः चक्रवर्त्तिशरीरस्य व्यन्तरदेव सहस्रद्वयाधिष्ठितत्वादितिभावः
तथा 'अमरवइ सण्णिभाए इह्दीए पडियकित्ती' अमरपतेः इन्द्रस्य सन्निभया सदृश्या
ऋद्ध्या प्रथितकीर्त्तिः, प्रख्यातकीर्त्तिः 'गामागरणगरखेडकव्वडतहेव सेसं जाव
विजयखंघावारणिवेसं करेइ' अत्र 'तहेव सेसं' इत्यतिदेशपदेन सूचितानि यावत्
पदान्तरगतानि च सर्वाणि विशेषणानि सुलभतया ज्ञानार्थम् एकीकृत्य लिख्यन्ते यथा
'गामागरणगरखेडकव्वडमडंबदोणमुह पट्टणासमसंवाहसहस्समंडियं थिमियमेइणीयं वसुहं
अभिजिणमाणे अभिजिणमाणे अग्गाइं वराइं रयणाइ पडिच्छमाणे पडिच्छमाणे
तं दिव्वं चक्ररयणं अणुगच्छमाणे अणुगच्छमाणे जोयणंतरियाहिं वसहीहिं वसमाणे
वसमाणे जेणेव वरदामतिन्थे तेणेव उवागच्छइ' ग्रामाऽऽकर नगरखेटकर्वटमडम्बद्रोणमु-
खपत्तनाश्रमसंवाहसहस्रमण्डितां स्तिमितमेदनीकां वसुधाम् अभिजयन् अभिजयन् अग्याणि
वराणि रत्नानि प्रतीच्छन् प्रतीच्छन् तद्विष्यं चक्ररत्नम् अनुगच्छन् अनुगच्छन्
योजनान्तरिताभिर्वसतिभिर्वसन् वसन् यत्रैव वरदामतीर्थः तत्रैव उपागच्छति तत्र ग्रामः-
प्रसिद्धः, आकरः-खनिः नगरं प्रसिद्धम् 'खेड' खेटम्-धूलिप्राकारयुक्तं लघुनगरम्,

पूरयंते) वह भरत चक्री सकल जीवलोक को व्याप्त कर रहा था तथा (बलवाहनसमुदण) बल
-चतुरङ्ग सैन्य और वाहन शिविकादि के समुदाय से वह भरत चक्री युक्त था (एवं जक्खसह-
स्सपरिवुडे, वेसमणे चेव धणवई) अतएव हजार यक्ष से परिवृत हुए धनपति के जैसा सम्पत्ति
शाली वह भरत चक्री प्रतीत होता था क्योंकि चक्रवर्तीका शरीर दोहजार व्यन्तर देवों से अधि-
ष्ठित होता है (अमरपति सण्णिभाइ इह्दीए पडियकित्ती गामागरणगरखेडकव्वड तहेव सेसं
जाव विजयखंघावारणिवेस करेइ) तथा इन्द्र के जैसी ऋद्धि से वह भरत चक्री प्रख्यात कीर्ति
वाला था इस तरह होता हुआ वह भरतचक्री हजारों ग्रामों से हजारों खानों से-सुवर्णादि के

से भरत यक्षी सहस्र उपलब्ध करने व्याप्त करी रहते होते, तथा (बलवाहनसमुदणं) अक्ष-
यतुरंग सैन्य और वाहन-शिविकादि वगैरेना समुदायथी ते भरत यक्षी युक्त होते। (एवं
जक्खसहस्सपरिवुडे, वेसमणे चेव धणवई) ऐथी सहस्र यक्षेथी परिवृत्त थयेथे। ते राज
धनपति जेवो सम्पत्तिशाली वागते होते, केभई यक्षवर्तीका शरीर के दोहर व्यन्तर देवोथी
अधिष्ठित होय छे (अमरपतिसण्णिभाए इह्दीए पडियकित्ती गामागरणखेडकव्वड तहेव
सेसं जाव विजयखंघावारणिवेसं करेइ) तथा इन्द्र जेवी ऋद्धिथी ते भरत यक्षी प्रख्यात
कीर्तिवाणे होते आ ग्रामो सुसज्ज थधने ते भरत यक्षी सहस्रो ग्रामोथी सहस्रो भावोथी

यद्वा नदीभिः पर्वतैर्वा वेष्टित नगरम्, 'कव्वड' कर्वटं कुत्तिसतनगरम् 'मडव' मडम्बो ग्रामविशेषः यस्य चतुर्दिक्षु सार्धयोजनद्वयपर्यन्तं द्वितीय ग्रामो न भवेत् सः 'दोणमुह' दोणमुखम्, जलस्थलमार्गकं नगरम् 'पट्टण' पत्तनम्—सर्ववस्तु प्राप्तिस्थानम् 'आसम' आश्रमः तापसादे निवासस्थानम् 'संवाह' सवाहः दुर्गविशेषः यत्र कृषीवलाः धान्यादीनि रक्षितुं स्थापयन्ति एतेषां 'सहस्स मंडियं' सहस्रैर्मण्डिताम् 'थिमियमेइणीयं' स्तिमितमेदिनीकाम्, स्तिमिता स्थिरा मेदिनी जनसमूहः यस्यां सा तथा ताम् 'वसुहं' वसुधाम् 'अभिजिणमाणे' २ अभिजयन् अभिजयन् अन्यराजाधिकारात् बलात् स्वाधिकारे आनयन् २ 'अग्गाइ' वराइ रयणाइ पडिच्छमाणे पडिच्छमाणे' अग्न्याग्नि प्रधानानि वराणि श्रेष्ठानि रत्नानि प्रतीच्छन् प्रतीच्छन्—स्वीकुर्वन् स्वीकुर्वन् 'तं दिव्वं चक्करयणं अणुगच्छमाणे अणुगच्छमाणे' तद्विव्य चक्ररत्नम् अनुगच्छन् अनुगच्छन् तत्पृष्ठतो व्रजन् व्रजन् 'उवागच्छइ' उपागच्छति 'उवागच्छिता' उपागत्य 'वरदामतिथस्स अदूरसामते दुवाळसजोयणायामं णवजोयणवित्थिन्नं विजयखंधावारणिवेसं करेइ' वरदामतीर्थस्य 'अदूरसामन्ते

उत्पत्तिस्थानोसे—धूलि प्राकार युक्त हजारों लघुनगरो' से अथवा नदियों' से या पर्वतो' से परिवेष्टित नगरो' से, हजारो कर्वटो से—कुत्तिसनगरो' से चारों दिशाओ में सार्धयोजन द्वय तक द्वितीय ग्राम रहित मडम्बो से, जलस्थल मार्गवाले दोणमुखो से सर्ववस्तुओं की प्राप्ति के स्थान-मृतपत्तनो' से, आश्रमोसे—तापसादिके निवासभूत स्थानो से तथा जहां पर कृषकवर्ग धान्यादिको के रक्षानिमित्त स्थापित करते है ऐसे सवाहो से मण्डित, एवं जनसमूह जिसमें स्थिर है ऐसी मेदिनी—वसुधा को अपने अधिकार में लेता २ तथा श्रेष्ठ रत्नो को नजराने के रूप में स्वीकार करता २ तथा दिव्य चक्ररत्न के पीछे २ चलता २ तथा एक योजन के अन्तराल से पडाव डालता २ जहा वरदाम तीर्थ था वहां पर आया । यहाँ पर इस पूर्वोक्त व्याख्या का मूल पाठ ऐसा है—(गामागरणगरखेडकव्वडमडंबदोणमुहपट्टणासमसवाहसहस्समण्डियं थिमियमेइणीयं, वसुहं अभिजिणमाणे २ अग्गाइ वराइ रयणाइ पडिच्छमाणे २ त दिव्वं चक्करयणं अणुगच्छमाणे २

सुवर्णादिकाना उत्पत्ति स्थानोथी धूलि प्राकार युक्त सहस्त्रो लघु नगरो,थी अथवा नदीओथी के पर्वतोथी परिवेष्टित नगरोथी सहस्त्रो कर्वटोथी—कुत्तिसत नगरोथी, चारै दिशाओभां सार्धयोजनद्वय सुधी द्वितीय ग्राम रहित मडंओथी, जल स्थल मार्गवाणा दोणामुओथी सर्ववस्तुओ भणी शके ओवा प्राप्ति स्थान भूत पत्तनोथी आश्रमोथी—तापसादिना निवास-भूत स्थानोथी तेमज्ज न्यां कृषकवर्ग धान्यादिकोनी रक्षा भाटे निमित्त करे छे ओवा सवा-होथी, मंडित तेमज्ज जनसमूह जेमां स्थिर छे ओवी मेदिनी—वसुधाने पोताने अधीन णनावतो तेमज्ज श्रेष्ठ रत्नोने नजराणाना स्वइयमां स्वीकार करतो—तेमज्ज दिव्य चक्ररत्ननी पाछण—पाछण आहतो आहतो तथा ओके योजनना अंतरालथी पडाव नाभतो—नाभतो न्यां वरदाम तीर्थ' हंतुं त्यां आओओ अही ओ पूर्वोक्त व्याख्याने मूलपाठ आ प्रभाष्टे छे—(गामागरणगरखेडकव्वडमडंबदोणमुहपट्टणासमसवाहसहस्समण्डियं थिमियमेइणीयं, वसुहं अभिजिणमाणे २ अग्गाइ वराइ रयणाइ पडिच्छमाणे २ त दिव्वं चक्करयणं अणुग-

नातिदूरे नातिसमीपे यथोचितस्थाने द्वादशयोजनायामं नययोजनविस्तोर्णं विजय-
स्कन्धावारनिवेशं करोति 'करित्ता' कृत्वा 'वद्धइरण सदावेड' वर्द्धकरित्तं शब्दयति
आह्वयति 'सदावित्ता' शब्दयित्वा आह्वय 'एव वयासी' एवं वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्
उक्तवान् 'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मम आवसहं पामहसालं च करेहि ममेय
य माणत्तियं पच्चप्पिणाहि' क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिय ! मम आवासं पौषधशालां च कुरु
मम एतामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पय ॥सू०८॥

अथ राऽऽज्ञप्त्यनन्तरं कीदृशं वर्द्धकरित्तं कीदृशं च वैतयिकमाचचारेत्याह—"तए
णं से" इत्यादि ।

मूलम्—तए णं से आसमदोणमुहगामपट्टणपुरवरखंधावारगिहा-
वणविभागकुसले एगासीति पयेसु सव्वेसु चैव वत्थुसु णेगगुणजाणए
पंडिए विहिण्णू पणयालीसाए देवयाणं वत्थुपरिच्छाए णेमिपासेसु
भत्तसालासु कौट्टणिसु य वासघरेसु य विभागकुसले छेज्जे वेज्जे य

जोयणतरियाहि वसहीहि वसमाणे वममाणे जेणेव वरदामतित्थे तेणेव उवागच्छइ) बहा आकर
के उसने वरदामतीर्थ के न अतिनिकट और न अतिदूर किन्तु यथोचितस्थान में १२ योजन
चौड़ा और नौ योजन लंबा ऐसा अपना विजयस्कन्धावार ठहरादिया इस सम्बन्ध में पाठ
ऐसा है—(उवागच्छित्ता वरदामतित्थस्स अदूरसामने दुवाळमजोयणायामं णवजोयणवित्थिन्नं
विजयखंधावारणिवेसं करेइ) इतने विस्तोर्णं स्कन्धावार को ठहराकर फिर उसने अपने (वद्धइ-
रणं सदावेइ) वर्द्धकी रत्न को बुलाया (सदावित्ता एवं वयासी) उसे बुलाकर के फिर उसने ऐसा
कहा—(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मम आवसहं पोसहसालं च करेहि, ममेय माणत्तियं पच्चपि-
णाहि) हे देवानुप्रिय ! तुम शीघ्र ही मेरे निमित्त एक आवास और एक पौषधशाला बनाओ
फिर इसकी बन जानेपर मुझे खबर दो ॥सू०८॥

छमाणे २ जोयणंतरियाहि वसहीहि वसमाणे वसमाणे जेणेव वरदामतित्थे तेणेव उवा-
गच्छइ) त्या आवीने तेणे वरदाम तीर्थनी न अतिनिकट अने न अतिदूर पणु यथोचित
स्थान पर १२ योजन पडोणा अने नवयोजन दीर्घ जेवा विस्तृत क्षेत्रमा विजय स्कन्धा-
वार नाथ्यो आ संधर्मा पाठ आ प्रमाणे छे—(उवागच्छित्ता वरदामतित्थस्स अदूर-
सामने दुवाळमजोयणायामं णवजोयणवित्थिन्नं विजयखंधावारणिवेसं करेइ) आवा विस्तीर्ण
स्कन्धावार (सैन्य) ने पडव नाभी ने पछी तेणे पोताना (वद्धइरणं सदावेइ) वर्द्धकी
रत्नने पोवाये। (सदावित्ता एवं वयासी) तेने पोवावीने पछी राजाजे आ प्रमाणे कहुं
(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मम आवसह पोसहसालं च करेहि ! ममेय माणत्तियं पच्च-
प्पिणाहि) हे देवानुप्रिय ! तमे यथा शीघ्र मारा भाटे जेक आवास नेअजेक पौषधशाला
बनावडावे। अने पछी अने सूचना-आपो. ॥८॥

दाणकम्मे पहाणबुद्धी जलयाणं भूमियाण य भायणे जलथलगुहासु जंते
परिहासु य कालनाणे तहेव सद्दे वत्थुप्पएसे पहाणे गन्धिणि कण्ण-
रुक्खवल्लिवेदियगुणदोसविआणए गुणङ्गे सोलसपासायकरणकुसले
चउसट्ठि विकप्पवित्थियमई णंदावत्तेय वद्धमाणे सोत्थिय रुअग तह
सव्वआ भद्दसण्णिवेसे य बहु विसेसे उद्दंडिय देवकोट्टदारुगिरि
खायवाहणविभागकुसले

इय तस्स बहु गुणङ्गे थवइरयणे णरिंदचंदस्स ।

तवसंजमनिविट्ठे किं कखाणी तुवट्ठाई ॥१॥

सो देव कम्म विहीणा खंधावारं णरिंदवयणेणं ।

आवसहभवणकलियं करेइ सव्वं मुहुत्तेणं ॥२॥

करेत्ता पवरपोसहधरं करेइ करित्ता जेणेव भरहे राया जाव एत-
माणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणइ, सेसं तहेव जाव मज्जणघराओ पडि-
णिव मइ पडिणिव मित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउ-
गंधंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ ॥सू०९॥

— ततः खलु तद्भाश्रमद्रोणमुखग्रामपत्तनपुरवरस्कन्धावारगृहापणविभागकुशलम्
एकाशीतिपदैषु सर्वेषु चैव वास्तुषु अनेकगुणज्ञायकं पण्डितम्, विचित्रम् पञ्चचत्वारि-
ंशतो देवानां वास्तुपरीक्षायां वास्तुपरिच्छदे वा नेमिपाश्वर्येषु भक्तशालासु कोट्टनीषु च
वा द्वेषु च विभागकुशलम् छेद्ये वेद्ये च दानकर्माणि प्रधानबुद्धिः, जलगानां भूमिकानां
च भाजन जलस्थलगुहासु यन्त्रेषु परिखासु च कालज्ञाने तथैव शब्दे वास्तुप्रदेशे प्रधा-
नम्, गन्धिणो कन्यावृक्षवल्लिवेष्टितगुणदोषविज्ञायकं गुणाढ्य षोडशप्रासादकरणकुशलं चतुः-
षष्टिविकल्पविस्तृतमति नन्धावर्ते च वर्द्धमाने स्वस्तिके रुक्के तथा सर्वतोभद्रसन्निवेशे
च बहुविशेषम् उद्दिष्टरुदेवकोट्टदारुगिरिस्नातवाहनविभागकुशलम्—

एतत् तस्य बहुगुणाढ्यं स्थपतिरत्नं नरेन्द्रचन्द्रस्य ।

तपः संजमनिविष्ट किं करवाणि इत्युपतिष्ठते ॥ १ ॥

तद् देवकर्मविधिना स्कन्धावारं नरेन्द्रवचनेन ।

आवासमघनकलितं करोति सर्वं मुहूर्त्तेन ॥ ५ ॥

कृत्वा प्रवरपोषधगृहं करोति, कृत्वा यत्रैव भरतो राजा यावत् एताम् आज्ञातिकां
क्षिप्रमेव प्रत्यर्पयति, शेषं तथैव यावत् मज्जनगृहात् प्रतिनिष्क्रामति प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव
बाह्या उपस्थानशाला यत्रैव चातुर्घण्टोऽश्वरथः तत्रैव उपागच्छति ॥ सू०९॥

ટીકા—“તણ ણં સે” ઇત્યાદિ । ‘તણ ણં સે’ તતઃ સ્વલ્લુ તત્ વર્દકીરત્નમહમ્
‘કિંકરવાણાં તુ વઢાઈ’ કિંકરવાણિ કિં કરોમિ આદિશન્તુ દેવાનુપ્રિયા મયા કિં કર્તવ્ય
મિત્યુક્ત્વા ભરતચક્રિસમીપે ઉપતિષ્ઠતે ઇત્યગ્રેણ સમ્મન્થઃ । કીદૃશં વર્દકીરત્નમિત્યાહ-
‘આસમદોણમુહ’ ઇત્યાદિ ‘આસમદોણમુદગામપટ્ટણપુરવરલ્લંઘાવારગિહાવણવિભાગકુસલે’
આશ્રમદ્રોણમુલ્લગ્રામપત્તનપુરવરસ્કન્ધાવારગૃહાપણવિભાગકુશઙ્કમ્, તત્ર-આશ્રમાદાયઃ एत-
સ્માત્પૂર્વે અષ્ટમસૂત્રે વ્યાખ્યાતાર્થાઃ, સ્કન્ધાવારગૃહાપણાઃ પ્રમિદ્ધા एव एतेषा વિભાગે
વિભાગરૂપેણ રચનાયાં કુશલં નિપુણમ્, અથવા—

“પુરમવનગ્રામાણાં યે કોના સ્તેષુ નિવસતાં દોષાઃ ।

અપચાદયોઽન્યજાન્તાસ્તેષ્વેવ વિવૃદ્ધિમાયાન્તિ ॥૧૧॥”

ઇત્યાદિ યોગ્યાયોગ્યસ્થાનવિભાગજ્ઞમ્, પુનશ્ચ કીદૃશમ્ ‘एगासीतिपयेसु सन्वेसु
चेव वत्थूसु जोगगुणजाणए पंडिहए’ एकाशीति पदेषु सर्वेष्वेव वास्तुषु अनेरुगुणजायकं
पण्डितम्, તત્ર एकाशीतिः पदानि विभागाः विभक्तव्यवास्तुक्षेत्रमाणाः तानि यत्र तानि
तथा एवंविधेषु वास्तुषु गृहभूमिषु सर्वेष्वेव एव शब्दात् चतुःषष्टिपदशतपदरूपेषु

‘તણં સે આસમ દોણમુદગામપટ્ટણં—ઇત્યાદિ૦ સૂત્ર -૯

ટીકાર્થ—इसके बाद उस वर्दकि रत्न ने “मैं क्याकरू, मेरे योग्य आप देवानुप्रिय
आदेशदे—मुझे क्या करना चाहिये ऐसा कहकर वह भरत चक्रो के पाम पहुँचा ऐसा यहाँ
सम्बन्ध है वह वर्दकी रत्न कैसा था—इस सम्बन्ध में सूत्रकार अपने विचार कोप्रकट करते हुए
कहते हैं— (आसमदोणमुदगामपट्टणपुरवरल्लंघावारगिहावणविभागकुसले) वह वर्दकिरतन
आश्रमद्रोणमुल्लग्राम, पत्तन, पुरवर, स्कन्धावारगृहापण इनको विभाग रूप से रचना करने में निपुण
था, अथवा—“पुमवनग्रामाणां ये कोनास्तेषु निवसतां दोषाः । अपचादयोऽन्यजान्तास्तेष्वेव
विवृद्धिमायान्ति ॥१॥ इत्यादि कथन के अनुसार योग्यायोग्य स्थान के विभागका जानने वाला
था (एगासीतिपदेसु सन्वेसु चेव वत्थूसु जोगगुणजाणए पंडिहए) तथा ८१ विभाग—विभक्तव्य वास्तु-
क्षेत्र खण्डवाली ऐसी गृह भूमियो में तथा इसी प्रकारकी ६४ खण्ड वाली और १०० पद—खण्डवाली

‘તણં સે આસમદોણમુદગામપટ્ટણં—ઇત્યાદિ, ॥સૂ.૦૯॥

ટીકાર્થ—ત્યાર બદ તે વર્દકી રત્ને ‘હું શું કરું, હું દેવાનુપ્રિય ! મને આપશ્રી મારા
યોગ્ય આદેશ આપો, મારે શું કરવું જોઈએ ? આમ કહીને તે ભરત અહીં રાજા પાસે ગયો.
આ રીતે અહીં સબંધ છે. તે વર્દકી રત્ન કેવો હતો ? આ સંબંધમા સૂત્રકાર પોતાના
વિચારો આ પ્રમાણે વ્યક્ત કરે છે—(આસમદોણમુદગામપટ્ટણપુરવરલ્લંઘાવારગિહાવણવિભાગ-
કુસલે) તે વર્દકીરતન આશ્રમ દ્રોણમુખગ્રામ, પત્તન, પુરવર, સ્કન્ધાવાર, ગૃહાપણ એ સર્વની
વિભાગ રૂપમા રચના કરવામાં નિપુણ હતો. અથવા

‘પુરમવનગ્રામાણાં યે કોનાસ્તેષુનિવસતાં દોષાઃ ।

અપચાદયોઽન્યજાન્તાસ્તેષ્વેવ વિવૃદ્ધિમાયાન્તિ ॥૧૧॥

ઇત્યાદિ કથન મુજબ યોગ્યાયોગ્ય સ્થાનના વિભાગનો તે જ્ઞાતા હતો. (एगासीति
पदेसु सन्वेसु चेव वत्थूसु जोगगुणजाणए पंडिहए) તેમજ ८१ विभाग विभक्त-
वर्दवाणी એવી ગૃહભૂમિકાઓમાં તથા એજ પ્રકારની ६४ ખંડવાળી અને १०० પદ ખંડ

વાસ્તુષુ ચ અનેકેષાં ગુણાનામ્પલક્ષણત્વાદ્ દોષાણાં ચ જ્ઞાયકમ્ સદસદ્ વિવેકિની બુદ્ધિઃ
 પળ્હા પળ્હાદ્ધિર્યસ્યેતિ પળ્હિતમ્ સાતિશયબુદ્ધિયુક્તમ્ ‘વિહિણ્ પળ્યાલીસાપ્ દેવયાળ’
 વિધિજ્ઞં પશ્ચચત્વારિણ્શતો દૈવતાનામ્ ઉચિતસ્થાનનિવેશનાદિવિધિજ્ઞમિત્યર્થઃ તથા ‘વસ્થુ
 પરિચ્છાપ’ વાસ્તુપરીક્ષાયાં ચ વિધિજ્ઞમિતિ યોજ્યમ્ તદ્વિધિશ્ચ ‘ગૃહમધ્યે હસ્તમિતં સ્વાત્વા
 પરિપૂરિતં પુનઃ શ્વમ્ । યદ્યનમનિષ્ટં તત્ સમે સમમ્ ધન્યમધિકં ચેત્ ॥૨॥’ इत्यादि,
 અથવા વાસ્તુનાં પરિચ્છદે આચ્છાદન કટકમ્વાદિમિરાવરણં તત્ર વિધિજ્ઞમ્, યથાસ્થાન-
 કટકમ્વાદિવિનિયોજનાત્ તથા-‘નેમિપાસેષુ મત્તસાલાસુ કોટ્ણિસુ ય’ નેમિપાદર્શેષુ
 સમ્પ્રદાયગમ્યેષુ સ્થાનેષુ મત્તશાલાસુ-રસવતીશાલાસુ કોટ્ણીસુ, કોટ્-દુર્ગં સ્થાયિરાજ-
 સત્કં નયન્તિ પ્રાપયન્તિ આગન્તુકરાજ્ઞામિતિ વ્યુત્પત્ત્યા કોટ્-ન્યઃ-યાઃ કોટ્ગ્રહણાય પ્રતિ-
 કોટ્મિત્તય ઉત્થાપ્યન્તે તાસુ તથા-‘વાસધરેસુ ય વિમાગકુસલે’ તથા વાસગૃહેષુ શયન-
 ગૃહેષુ વિમાગકુશલં-યથોચિત્યેન વિમાગરૂપે નિપુણમ્, તથા ‘છેજ્જે વેજ્જે ય દાણકમ્મે
 પહાણવુત્તી’ છેદ્યે વેધ્યે ચ દાનકર્મણિ પ્રધાનબુદ્ધિઃ, તત્ર છેદ્યં-છેદનાહં કાષ્ઠાદિ, વેધ્યં

ગૃહમૂમિયોં મેં અનેક ગુણ એવં દોષોં કા જ્ઞાતા થા, પળ્હિત થા-સદઅસદ્ કા વિવેક કરને વાલી
 બુદ્ધિરૂપ પળ્હા સે યુક્ત થા સાતિશય બુદ્ધિવાલા થા (વિહિણ્ પળ્યાલીસાપ્ દેવયાળ) ૪૫
 દેવતાઓં કો ઉચિત સ્થાન મેં વૈઠાને આદિ કી વિધિ કા જ્ઞાતા થા (વસ્થુપરિચ્છાપ) વાસ્તુ પરીક્ષા
 મેં વિધિજ્ઞયા-વહ વિધિ હસપ્રકાર સે હૈ-‘ગૃહમધ્યે હસ્તમિત સ્વાત્વા પરિપૂરિત પુનઃ શ્વમ્મુ,
 યદ્યનમનિષ્ટ તત્ સમે સમં ધન્યમધિકંચેત્ ॥૧॥’-इत्यादि-અથવા-મકાનો કો ઊપર સે ઢકને મેં
 જો ઢકને કે કામ મેં આને વાલેકટ કમ્મ આદિરૂપ આવરણ હૈ, ડસ સમ્બન્ધ મેં વિધિજ્ઞયા (નેમિ
 પાસેસુ મત્તસાલાસુ કોટ્ણિસુ ય વાસધરેસુ ય વિમાગકુસલે) સમ્પ્રદાયગમ્ય નેમિપાદર્શોં મેં, મત્ત-
 શાલાઓં મેં-મોજન ઘરોં મેં, કોટ્ણિયોં મેં કોટ્ગ્રહ કે લિયે જો પ્રતિકોટ્મિત્તિયાં ડઠાઈ જાતી
 હૈ ડનમેં તથા શયન ગૃહોં મેં યથોચિત રૂપ સે વિમાગ કરને મેં કુશલ થા, તથા-છેજ્જે, વેજ્જે,

વાળી ગૃહમૂમિકાઓના અનેક ગુણ તેમજ દોષોનો તે જ્ઞાતા હોતો પડતો હતો. સદ્ અસદ્
 વિવેક કરનારી બુદ્ધિરૂપ પળ્હા સે યુક્ત હતો. એટલે કે સાતિશય બુદ્ધિવાળો હતો, (વિહિણ્
 પળ્યાલીસાપ્ દેવયાળ) ૪૫ દેવતાઓને યોગ્ય સ્થાને બેસાડવા વગેરે વિધિનો તે જ્ઞાતા
 હતો. (વસ્થુ પરિચ્છાપ) વાસ્તુ પરીક્ષામાં વિધિજ્ઞ હતો તે વિધિ આ પ્રમાણે છે—

“ગૃહમધ્યે હસ્તમિતં સ્વાત્વા પરિપૂરિતં પુનઃ શ્વમ્મુ,

યદ્યનમનિષ્ટ તત્ સમે સમ ધન્યમધિકં ચેત્ ॥૧॥

इत्यादि अथवा मकानोने उपरથી आच्छादित करना भाटे उपयोगी जेवा कटकम्मा आदि,
 ૪૫ આવશ્ય છે તે સંબંધમાં વિધિજ્ઞ હતો. (નેમિપાસેસુ મત્તસાલાસુ કોટ્ણિસુ ય
 વાસધરેસુ ય વિમાગકુસલે) સમ્પ્રદાય ગમ્ય નેમિ પાદર્શમાં, મત્ત શાલાઓમાં ભોજનગૃહોમાં
 કોટ્ણીઓમાં-કોટ ગ્રહ માટે કિલ્લાને સરકરવા જે પ્રતિ કોટમિત્તિઓ ઉઠાવવામાં આવે છે,
 તે સંબંધમાં તેમજ શયન ગૃહોમાં યથોચિત રૂપથી વિમાગ કરવામાં તે કુશળ હતો, તેમજ
 (છેજ્જે, વેજ્જે, અ દાણકમ્મે, પહાણવુત્તી, જલયાળ મૂમિયાળય માયણે જલથલ ગુહાસુ જંતેસુ

वेधनाहं तदेव, दानकर्म—अङ्कनार्थं गैरिकरक्तद्रव्येण रेखादानकर्म तत्र प्रधानबुद्धि विभेदजम्, विशेषरूपेण ज्ञायकमित्यर्थः, पुनश्च कीदृशम् 'जलयाणं भूमियाण य भायणे, जलगानां जलगतानां भूमिकानां जलोत्तरणार्थरूपद्याकरणाय भाजनं यथोचित्येन विभाजकम्, च शब्दः समुच्चये उन्मग्नानिमग्नानद्युत्तरे तस्यैतादृशसामर्थ्यस्य सुप्रतीतत्वात् पुनश्च कीदृशम् 'जलथलगुहासु जंतेसु परिहासु य कालनाणे तदेव सदे वत्थुप्पएसे पहाणे' जलस्थलगुहासु यन्त्रेषु परिखासु च कालज्ञाने तथैव शब्दे वास्तुप्रदेशे प्रधानम्, तत्र जलस्थलगुहासु—जलस्थलयोः सम्बन्धिनीषु गुहासु इव गुहासु सुगद्गास्वित्यर्थः तथा यन्त्रेषु घटीयन्त्रादिषु, परिखासु प्रतीतासु, च शब्दः समुच्चये कालज्ञाने चिकीर्षितवास्तु प्रशस्ता-प्रशस्तलक्षणपरिज्ञाने "वैशाखे श्रावणे माघे, फाल्गुणे क्रियते गृहम् । शेषमासेषु न पुनः, पौषो वाराहसम्मतः ॥१॥ इत्यादिके तथैवेति वाच्यान्तरसंग्रहे शब्दे शब्दशास्त्रे सर्वकलाव्युत्पत्ते रेतन्मूलकत्वात्, वास्तुप्रदेशे—गृहक्षेत्रैकदेशे "ऐशान्यां देवगृहं महानसं चापि कार्यमाणेयाम् । नैऋत्यां भाण्डोपस्करोऽर्थधान्यानि मारुत्याम् ॥१॥" इत्यादि

अ दाणकम्मे, पहाणबुद्धी, जलयाण भूमियाण य भायणे जलथलगुहासु जंतेसु परिहासुअ कालनाणे) छेदन करने योग्य काष्ठादि, वेधने योग्यकाष्ठादि एवं दानकर्म—अङ्कनार्थं गैरिक धातु से रक्त कियेहुए होरे से निशानी करना—इन सब में प्रधान बुद्धि वाला था अर्थात् इन सबको विशेषरूप से जाननेवाला था . . यथोचितरिति से विभाजक था जलसम्बन्धी एवं स्थल सम्बन्धी गुफाओं की जैसी गुफाओं में—सुरङ्गों में, घटोयन्त्रादिकों में, परिखाओं में—खातिकाओं में, काल ज्ञान में चिकीर्षित वास्तु के प्रशस्त अप्रशस्तरूप परिज्ञान में—जैसे—"वैशाखे श्रावणे, माघे, फाल्गुने क्रियते गृहम् । शेषमासेषु पुनः पौषो वाराहसम्मतः ॥१॥ (तदेव सदे वत्थुप्पएसे पहाणे गन्धि-णिक्कणरुक्ख वल्लिवेदिअ गुणदोसविआणए गुणइडे) इसीतरह शब्द शास्त्र में अर्थात् व्याकरण शास्त्रमें वास्तु प्रदेश में—ग्रह क्षेत्रके एकदेशमें—जैसे—"ऐशान्यां देवगृहं महानस चापि कार्यमाणेयाम्" । नैऋत्या भाण्डोपस्करोऽर्थधान्यानि मारुत्याम् ॥१॥ इत्यादिरूप से गृहावयवविभाग में

परिहासुअ कालनाणे) छेदन करना योग्य काष्ठादि, वेधन योग्य काष्ठादि तेभञ्ज दानकर्म—अङ्कनार्थं गैरिक धातुथी रक्त करवाभां आवेक्षा ने होराथी निशानी करवी—वगेरे कामोभां ते प्रधान बुद्धिवाणे होता अर्थात् जो सर्वे ने ते विशेष रूपभां लक्ष्यतो होता यथोचित रीतिथी विभाजक होता, जल स मधी तेभञ्ज स्थल स मधी शुक्ष्माणी जेवी शुक्ष्माभां—सुरंगोभां घटीयन्त्रादिकोभा, परिखाओभा आतिकाओभां, कालज्ञानभा, चिकीर्षित वस्तुना प्रशस्त, अप्रशस्त रूप परिज्ञानभा जेभके—

वैशाखे श्रावणे माघे, फाल्गुने क्रियते गृहम् ।

शेषमासेषु न पुनः पौषो वाराहसम्मतः ॥१॥

(तदेव सदे वत्थुप्पएसे पहाणे गन्धिणि कण्णरुक्खावल्लिवेदिअ गुणदोसविआणए गुणइडे) आ प्रमाणे शब्द शास्त्रभां जोटवे के व्याकरण शास्त्रभां वास्तुप्रदेशभा—गृहक्षेत्रना जोके देशभा—जेभके—"ऐशान्यां देवगृहं महानस चापि कार्यमाणेयाम् । नैऋत्यां भाण्डोपस्करोऽर्थधान्यानि मारुत्याम् ॥ इत्यादि रूपथी गृहावयवविभागभा, शास्त्रोक्त विधि-

गृहावयवविभागे शास्त्रोक्तविधिविधाने प्रधानं मुख्यम्, पुनश्च कीदृशम् 'गर्भिणीकण-
रुक्खवल्लिवेष्टिय गुणदोषविभाण' गर्भिणी कन्यावृक्षवल्लिवेष्टितगुणदोषविज्ञायकम्,
तत्र-गर्भिण्यः-जातगर्भा वलयः फलाभिमुखवल्लय इत्यर्थः कन्या इव कन्याःअफलाः
अथवा दूरफलावा वलयः वृक्षाश्च वास्तुक्षेत्रप्ररूढाः वल्लिवेष्टितानि-भावे क्तप्रत्ययवि-
धानात् वल्लिवेष्टनानि वास्तु क्षेत्रोद्गतवृक्षेषु आरोहणानि एतेषां ये गुणदोषास्तेषां
विज्ञायक विशेषरूपेण जानति, ते चेमे "गर्भिणी वल्लिर्वास्तुप्ररूढा आसन्नफलदा
कन्या च सा तत्रैव नासन्नफला, वृक्षाश्च प्लक्षवटाश्चतयोदुम्बराः प्रशस्ताः आसन्नाः
कण्टकिनोरिपुमयदा" इत्यादि, प्रशस्तद्रुमकाष्ठं वा गृहादि प्रशस्तम् वल्लिवेष्टितानि

स्तवल्लिसम्बन्धीनि प्रशस्तानि गृहमहीषु न चाप्रशस्तवल्लिसम्बन्धीनि पुनश्च
'गुणद्वे' गुणादयम् प्रज्ञाधारणाबुद्धिहस्तलाघवादिगुणयुक्तम्, तथा 'सोलसपासायकरण-
कुसणे' षोडश प्रासादकरणकुशलम्, तत्र षोडश प्रासादाः सान्तनस्वस्तिकादयो भूपति-
गृहाणि तेषां करणे कुशलं निपुण मित्यर्थः, तथा 'चउसद्विविकप्पवित्थियमई' चतुः
षष्टिविकल्पविस्तृतमतिः, तत्र-चतुःषष्टिविकल्पाः गृहाणां वास्तुप्रसिद्धा तत्र विस्तृता
अमूढा मतिर्यस्य तत्तया, विकल्पानां चतुःषष्टिरेवम्-प्रमोदविजयादीनि षोडशगृहाणि

शास्त्रोक्तविधिविधान में वह प्रधान था मुख्य था गर्भिणी वेलों के अर्थात् फलाभि मुखवेलों के,
कन्या के जैसी अफल-अथवा दूरफल वाली वेशों के और वृक्षों के- वास्तु क्षेत्र प्ररूढ वृक्षों
के ऊपर वल्लियों के वेशों के गुण और दोषों का जानने वाला था, जैसे-गर्भिणी वल्लि
वास्तु प्ररूढा आसन्नफलदा कन्याच सा तत्रैव नासन्नफला, वृक्षाश्च प्लक्षवटाश्चतयोदु-
म्बरा प्रशस्ता आसन्ना कण्टकिनो रिपुमयदा" इत्यादि "प्रशस्तद्रुमकाष्ठं वा गृहादि प्रशस्तं, वल्लि
वेष्टितानि प्रशस्तवल्लिसम्बन्धीनि प्रशस्तानि गृहमहीषु न चाप्रशस्तवल्लिसम्बन्धीनि" वह बड़े
कीरत्न गुणाढ्यथा-प्रज्ञाधारणाबुद्धिसे एव हस्तलाघवादि गुण से युक्त था (सोलसपासायकरणकु-
सले) सान्तन स्वस्तिक आदि के भेद से सोलहप्रकार के प्रासादों के भूपतिगृहों के बनाने में वह
कुशल था (चउसद्विविकप्पवित्थियमई) वास्तुशास्त्रप्रसिद्ध ६४ प्रकार के गृहों के निर्माण में वह
अमूढमतिवाला था ६४प्रकार के गृह इस प्रकार से है-"प्रमोदविजयादीनि षोडशगृहाणि पूर्व

विधानमां ते प्रधान इतो, मुख्य इतो सगर्भासताओना ओटवे के इणाभिगुण सताओना,
कन्या ओवी अइण अथवा हर इणवाही सताओना अने वृक्षोना वास्तुक्षेत्र प्ररूढवृक्षोनी उपरनी
सताओ वेष्टनोना शुषु अने दोषोना ते जाता इतो, ओभके गर्भिणी वल्लिर्वास्तुप्ररूढा आसन्न
फलदा, कन्या च सा तत्रैव नासन्नफला, वृक्षाश्च प्लक्षवटाश्चतयोदुम्बरा प्रशस्ताः आसन्ना
कण्टकिनो रिपुमयदाः इत्यादि "प्रशस्तद्रुमकाष्ठं वा गृहादि प्रशस्त, वल्लिवेष्टितानि
प्रशस्तवल्लिसम्बन्धीनि प्रशस्तानि गृहमहीषु न चाप्रशस्तवल्लिसम्बन्धीनि" ते वृद्धी
रत्न गुणाढ्य इतो, प्रज्ञा-धारणा बुद्धिथी तेभश्च हस्तलाघवादि शुष्णोथी युक्त इतो तेभश्च
(सोलस पासायकरणकुसले) सान्तन स्वास्तिक वगेरेना वेदथी सोण प्रकारना प्रासादोना
भूपतिगृहोना निर्माषु प्रायमां ते कुशल इतो (चउसद्विविकप्पवित्थिय मई) वास्तु शास्त्र
प्रसिद्ध ६४ प्रकारना गृहोना निर्माषुमां ते अमूढ मतिवाओ इतो. ६४ प्रकारना गृहो आ

शिका टीका तृ० वक्षस्कारः सू०९ आपण्यनन्तर वर्द्धकीरत्नस्य कौशत्यनिरूपणम् ६२५

पूर्वद्वाराणि स्वस्तनादीनि षोडशदक्षिणद्वाराणि धनदादीनि, षोडश उत्तरद्वाराणि दुर्भगादीनि षोडश पश्चिमद्वाराणि पुनश्च कीदृशम् 'णंदावत्तेय वद्धमाणे सोत्थिय रुयग तह सब्बओमह सण्णिवेसे य बहुविसेसे' नन्धावर्त्त-गृहविशेषे एममग्रेतने विशेषणेष्वपि, च शब्दः समुच्चये, वर्द्धमाने स्वस्तिके रुचिके तथा सर्वतोभद्रसन्निवेशे च बहुविशेषः प्रकारो ज्ञेयतया कर्त्तव्यतया च यस्य तत् बहुविशेषम्, नन्धावर्त्तादिगृहविशेषस्त्वयं वराहोक्तः

“नन्धावर्त्तमल्लिन्दैः शालाकुड्यात् प्रदक्षिणान्तगतैः ।

द्वारं पश्चिममस्मिन् विहाय शेषाणि कार्याणि ॥१॥

इत्यादि पुनश्च कीदृशम् 'उद्दडिय देव कोट्टारुगिरिस्त्रायवाहणविभागकुसले' उद्दण्डिकदेवकोष्ठदारु गिरिस्त्रातवाहनविभागकुशलम्-तत्र ऊर्ध्वे दण्डे भवं उद्दण्डिकः-ध्वजः देवा इन्द्रादि प्रसिद्धाः, कोष्ठः उपरितनगृहम्, धान्यकोष्ठो वा, दारुणि- वास्तुचित-काष्ठानि, गिरयो-दुर्गादिकरणार्थं जनावासयोग्याः पर्वताः, स्त्रातानि-पुष्करिण्यादिकानि वाहनानि शिविकादीनि एतेषां विभागे कुशलम्-सर्वथा निपुणम् 'इअ तस्स बहुगुणदे थवइ रयणे णरिंदचंदस्स' इत्युक्तप्रकारेण बहु गुणाढ्यं तस्य नरेन्द्रचन्द्रस्य भरतचक्रिणः स्थपतिरत्नं वर्द्धकिरत्नम् 'तवसयमनिव्विट्ठे किं करवाणी तु वट्ठाई' तपः सयमाभ्यां

द्वाराणि, स्वस्तनादीनि षोडश दक्षिणद्वाराणि, धनदादीनि षोडश उत्तरद्वाराणि, दुर्भगादीनि षोडश पश्चिमद्वाराणि" णंदावत्ते य वद्धमाणे सोत्थियरुयगतह सब्बओमहसण्णिवेसेय बहुविसेसे) नन्धावर्त्त, वर्द्धमान, स्वस्तिक, रुचिक तथा सर्वतोभद्रसन्निवेश इनके निर्माण कार्य में वहबहुत विशेष था-नन्धावर्त्तादिगृहविशेषके सम्बन्धमें वराह ने ऐसा कहा है—

नन्धावर्त्तमल्लिन्दैः शालाकुड्यात् प्रदक्षिणान्तगतैः ।

द्वारं पश्चिममस्मिन् विहाय शेषाणि कार्याणि ॥१॥ इत्यादि

(उद्दडियदेवकोट्टदारुगिरिस्त्रायवाहणविभागकुसले) उद्दण्डिक-ध्वज, इन्द्रादिक देव, ऊपर का गृह-कोष्ठ, अथवा धान्यकोष्ठ दारु-गृह के योग्य काष्ठ, कोठ आदि बनाने के लिये जनावास-योग्य पर्वत, स्त्रात-पुष्करिणी आदि एवं वाहन शिविकादिक-इनके विभाग में वह कुशल था, (इय तस्स बहुगुणदे थवइरणये णरिंदचंदस्स-तवसजमनिव्विट्ठे किं करवाणीतु वट्ठाई) इस पूर्वोक्त प्रकार

प्रमाणे छे- 'प्रमोदविजयादीनि षोडश गृहाणि पूर्वद्वाराणि, स्वस्तनादीनि षोडश दक्षिण द्वाराणि धनदादीनि षोडश उत्तरद्वाराणि दुर्भगादीनि षोडश पश्चिमद्वाराणि णंदावत्ते य वद्धमाणे सोत्थियरुयगतह सब्बओमह सण्णिवेसेय बहुविसेसे) नन्धावर्त्त, वर्द्धमान स्वस्तिक रुचिक तेभञ्च सर्वतोभद्रसन्निवेश ओ सवेना निर्माण कार्यमां ते भूभञ्च विशेषश्च छेतो नन्धावर्त्तादि गृहविशेषना स भधमां वराहो आ प्रमाणे कथु छे—

नन्धावर्त्तमल्लिन्दैः शालाकुड्यात् प्रदक्षिणान्तगतैः

द्वारं पश्चिममस्मिन् विहाय शेषाणि कार्याणि ॥१॥ इत्यादि ।

(उद्दडिय देवकोट्टदारुगिरिस्त्रायवाहणविभागकुसले) उद्दण्डिक-ध्वज, इन्द्रादिक देव, ऊपर का घर-कोष्ठ, अथवा धान्य कोष्ठ, दारु-योग्य कोष्ठ, कोठ वगैरे जनाववा भाटे जनावास योग्य पर्वत, स्त्रात-पुष्करिणी वगैरे तेभञ्च वाहन-शिविकादिक-ओभना विभागमां ते कुशल छेतो (इयतस्स बहुगुणदे थवइरणये णरिंदचंदस्स-तव सजमनिव्विट्ठे किं करवाणी तु आई) ओ पूर्वोक्त प्रकार भूभञ्च अनेक शुभ सम्पन्न ते भरतचक्र-स्थपितरत्न-वर्द्धकिरत्न के जेने

નિર્વિષ્ટં લબ્ધમિતિ કિં કરવાળીત્યાદિ તુ પ્રાગ્યોજિતમેવ । ‘સો દેવ કમ્મવિહિના
 સંઘાવારણરિંદવયણેણં । આવસહમવળકલિયં કરેહ સવ્વં મુહુત્તેણં ॥૨॥ તદ્ વર્દ્ધકિરત્નમ્
 દેવકર્મવિધિના દેવકૃત્યપ્રકારેણ ચિન્તિતમાત્રકાર્યકર્ણરૂપેણેત્યર્થઃ સ્કન્ધાત્તારં નરેન્દ્ર-
 વચનેન આવાસા રાજાં ગૃહાન્ ભવનાનીતરેણાં તૈઃ કલિતં કરોતિ સર્વં મુહુર્ત્તેન નિર્વિલમ્બ-
 મિત્યર્થઃ ‘કરેત્તા’ કૃત્વા ‘પવરપોસહધરં કરેહ’ પ્રવરપૌષ્ઠગૃહં કરોતિ-શ્રેષ્ઠ પૌષ્ઠશાલાં
 નિર્માતિ ‘કરિત્તા’ કૃત્વા ‘જેણેવ મરહે રાયા જાવ એતમાણત્તિયં સ્વિપ્પામેવ પચ્ચપ્પિણહ’
 યત્રૈવ ભરતો રાજા યાવત્પદાત્ તત્રૈવોપાગચ્છતિ એતાં રાજાં પૂર્વોક્તામ્ આજ્ઞાપ્તિકામ્ આજ્ઞાં
 ક્ષિપ્રમેવ શીઘ્રમેવ રાજ્ઞે પ્રત્યર્પયન્તિ સમર્પયન્તિ ‘સેસં તહેવ જાવ મઙ્ગનઘરાઓ પહિણિ
 વ્હમહ’ શેષં તથૈવ પૂર્વવદેવ યાવત્ પદાત્ સ રાજા સ્નાનાર્થં મઙ્ગનગૃહં પ્રવિષ્ટવાન્
 સ્નાપિતઃ સન્ યથા ધવલમહામેઘાન્નિર્ગતશ્ચન્દ્ર ઇવ સુધાધવલી કૃતમઙ્ગનગૃહાત્ પ્રતિનિષ્ક્રા-

કે અનુસાર અનેક ગુણો સે યુક્ત એસા વહ ભરત ચક્રી કા સ્થપિતરત્ન-વર્દ્ધકિરત્ન કિં જિસે ભરત
 ચક્રી ને તપ એવ સયમ સે પ્રાપ્ત ક્રિયા હૈ કહને લગા-કહિયે મૈં કયા કરુ-(સો દેવકમ્મવિહિના-
 સંઘાવારણરિંદવયણેણ-આવસહમવળકલિયં કરેહ સવ્વં મુહેત્તેણં) હિસ પ્રકાર કહકર વહ રાજા
 કે પાસ આગયા ઔર ઉસને ચિન્તિત માત્ર કાર્ય કરને કી અપની શક્તિ કે અનુસાર નરેન્દ્ર
 કે હિંપ પ્રાસાદ ઔર દૂસરો કે હિંપ ભવનોં કો એક મુહૂર્ત્ત મૈં તયાર કર દિયા (કરેત્તા પવર
 પોસહધર કરેહ) યહ સબ કામ એક હી મુહૂર્ત્ત મૈં નિષ્પન્ન કરકે ફિર ઉસને એક સુન્દર પૌષ-
 ષશાલા તૈયાર કરદી-(કરિત્તા જેણેવ મરહે રાયા જાવ એતમાણત્તિયં સ્વિપ્પામેવ પચ્ચપ્પિણહ) યથો-
 ચિત રૂપ સે પૌષ્ઠશાલા નિષ્પન્ન કરકે ફિર વહ જહાં પર ભરતચક્રી થે વહા ગયા ઔર રાજા
 કો પૂર્વોક્ત આજ્ઞાકી પૂર્તિ કી સ્વર શીઘ્ર હી ઉન્હે કર દી. (સેસ તહેવ જાવ મઙ્ગનઘરાઓ
 પહિણિવ્હમહ) હિસકે બાદ કા શેષ કથન પૂર્વોક્ત રૂપ સે હી હૈ યાવત્ વહ સ્નાનગૃહ સે બાહિર
 નિકલા યહાં તક કા યહાં યાવત્પદસે “સ રાજા સ્નાનાર્થં મઙ્ગનગૃહં પ્રવિષ્ટવાન્ સ્નાપિતઃ સન્
 યથા ધવલમહામેઘાન્નિર્ગતશ્ચન્દ્ર ઇવ સુધા ધવલીકૃત મઙ્ગનગૃહાત્ પ્રતિનિષ્ક્રામતિ” હિસ પાઠ કા

ભરતચક્રીએ તપ તેમજ અથમથી પ્રાપ્ત કરેલ તે છે-તેવધકીરત્ન કહેવા લાગ્યો-બાલો હું શું
 કરું ? (સો દેવકમ્મવિહિના સંઘાવારણરિંદવયણેણ-આવસહમવળકલિયં કરેહ સવ્વં
 મુહુત્તેણં) આ પ્રમાણે કહીને તે રાજા પાસે આવી ગયો, અને તેણે પોતાની ચિન્તિતમાત્ર
 કાર્ય કરવાની હૈવી શક્તિ મુજબ નરેન્દ્ર માટે પ્રાસાદ અને બીજાઓ માટે ભવનોં એક
 મુહૂર્ત્તમાં જ નિર્મિત કરી દીધા. (કરેત્તા પવરપોસહધર કરેહ) એ બધું કામ એકજ મુહૂ-
 ર્ત્તમાં નિષ્પન્ન કરીને પછી તેણે એક સુન્દર પૌષ્ઠશાલા તૈયાર કરી દીધી (કરિત્તા જેણેવ
 મરહે રાયા જાવ એતમાણત્તિયં સ્વિપ્પામેવ પચ્ચપ્પિણહ) યથોચિત રૂપમાં પૌષ્ઠશાલા નિષ્પન્ન
 કરીને પછી તે જ્યાં ભરતચક્રી હતા ત્યાં ગયો અને રાજાની પૂર્વોક્ત આજ્ઞા પૂરી કરી છે,
 એવી રાજાને સૂચના આપી (સેસ તહેવ જાવ મઙ્ગનઘરાઓ પહિણિવ્હમહ) એના પછીતુ કથન
 પૂર્વોક્ત રૂપમાં જ છે યાવત્ સ્નાનગૃહમાંથી બહાર નીકળ્યો, અહીં સુધીને અને યાવત્
 પદથી “સ રાજા સ્નાનાર્થં મઙ્ગનગૃહં પ્રવિષ્ટવાન્ સ્નાપિતઃ સન્ યથા

मणि-निर्गच्छति 'पडिणिम्वमिता' प्रतिनिष्कम्प-निर्गत्य 'जेणेव बाहिरिया उपट्ठाण-
साला जेणेव चाउग्वंटे आसरहे तेणेव उपागच्छइ' यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला यत्रैव चातुर्घटं
चत्वारो घण्टा अस्य तत् तथा एवं मृगमध्वर्य तत्रैव उपागच्छति, स भग्नो राजेति ॥६९॥

सूत्रम्-उवागच्छिता तद्वर्णं तं धरणितलरामणलुत्तुं ततो बहुलकस्व-
णपसत्थं हिमवंतकंदस्तरणिवाय संवद्धिवचित्तनिणिसदलियं जम्बुणय
सुकयद्वयं कणयदंडियारं पुलयवरिंद गीलसासगपवालफलिहवरयणले-
दठुमणिविदुमविभूसियं अडयालीसारइयतवणिज्जपट्टसंगहियजुत्तुवं
पघसियपसियनिम्मियनवपट्टपुट्टपरिणिट्ठियं विसिट्ठलट्ठणवलोहवद्धकम्मं
हरिपहरणरयणसरिसचक्कं कक्केयणइंदनीलसामगसुसमाहियवद्धजा-
लकडगं पसत्थवित्थिन्नसमधुरं पुरवरं च गुत्तं सुकिरण तवणिज्जजुत्त-
कलियं कंकटयणिजुत्तकप्पणं पहरणाणुजायं खेडगकणग धणुमंडलग-
वरसत्तिकोततोमरसरस य बत्तीसतोणपरिमंडिअं कणगरयणचित्तं जुत्तं
इलीसुहबलागगयदंतचंदमोत्तियतणसोल्लिय कुदकुडयवरसिंदुवार-
कंदलवरफेणणिगरहारकासप्पगासधवलेहिं अमरमणपवणजेइणचवल-
सिग्घगामोहिं चउहिं चामराकणगविभूसिअंगेहि तुरंगेहि सच्छत्तं
सज्जयं सघटं सपडागं सुकयसंधिकम्मं सुसमाहिय समणकणगगंभी-
रतुल्लघोसं वरकुप्परं सुचक्कं वरनेमीमंडलं वरधारातोडं वरवइरबद्ध-
तुवं वरकंचणभूसियं वरायरियणिम्मियं वरतुगसंपउत्तं वरसारहि -
संपग्गहियं वरपुरिसे वरमहारह दुरुडे आरुडे पवरयणपरिमंडियं
कणयत्तिखिणीजालसोभियं अउज्झं सोयामणिकणगतवियपंकय
जासुअणजलणजलियसुयतांडरागं गुंजद्धबंधुजीवगरत्तहिंगुलगणि-

ग्रहण हुआ है। प्रतिनिष्कम्प यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला यत्रैव चातुर्घट अश्वरथं तत्रैव उपा-
गच्छति ॥ स्नानगृहसे बाहर निकलकर फिर वह भरतचक्रो अपनी बाह्यउपस्थानशालामें जहां पर
चातुर्घट अश्वरथ था वहां पर आया ॥९॥

तत्रैव इव सुधाघवलोकित मज्जनगृहात् प्रतिनिष्कामति ॥ आ पाठ अडय धये। छे
प्रतिनिष्कम्प यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला यत्रैव चातुर्घट अश्वरथ तत्रैव उपागच्छति ॥
स्नानगृहभांभी अडार नीडवीने पत्री ते अस्तयडी पोतानी भाइ उपस्थान आगामां अथां
चातुर्घट अश्वरथ छेते। त्यां आये ॥९॥

गरसिंदूररुइलकुंकुमपारेवयचलणणयणकाइलदसणावरणरइतातिरे रत्ता-
 सोगकणगकेसुयगयतालुसुरिंदगोवगसमप्पमप्पगासं बिंबफलसिलप्प-
 वालउड्डितसूरसरिसं सव्वोउअसुरहिकुसुमआसत्तमल्लदामं ऊसियसेय-
 उ यं महामेहरसियगंभीरणिद्धघोसं सत्तुहिअयकंपणं पभाए य
 सस्सिरीयं णामेणं पुहविविजयलंभंति विस्सुतं लोगविस्सुत-
 जसोऽह्यं चाउग्घंटं आसरहं पोसहिए णखई दुरूढे तएणं से
 भरहे राया चाउग्घंटं आसरहं दुरूढे समाणे सेसं तहेव दाहिणाभि-
 मुहे वरदामतित्थेण लवणसमुदं ओगाहइ जाव से रहवरस्स कुप्परा
 उल्ला जाव पोइदाणं से णवरिं चूडामणिं च दिव्वं उरत्थगेविज्जं
 सोणिअसुत्तगं कडगाणि य तुडियाणि य जाव दाहिणिल्ले अंतवाले
 जाव अट्टाहियं महामहिमं करेइ, करित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ,
 तए णं से दिव्वे चक्कस्यणे वरदामतित्थकुमारस्स देवस्स अट्टाहियाए
 महामहिमाए निव्वत्ताए समाणीए आउहघरसालाओ पडिणिक्ख-
 मइ पडिणिक्खमित्ता अंतलिक्खपडिवण्णे जाव पूरन्ते चेव अंबस्तलं
 उत्तरपच्चत्थिमं दिसिं पभासतित्थाभिमुहे पयाते यावि होत्था, तएणं
 से भरहे राया तं दिव्वं चक्कस्यणं जाव उत्तरपच्चत्थिमं दिसिं
 तहेव जाव पच्चत्थिमदिसाभिमुहे पभासतित्थेण लवणसमुदं ओगा-
 हेइ, ओगाहित्ता जाव से रहवरस्स कुप्परा उल्ला जाव पीइदाणं से
 णवरं मालं मउडिं मुत्ताजालं हेमजालं कडगाणिय तुडियाणि य आभ-
 रणाणि य सरं च णामाहयंकं पभासतित्थोदगं च गिण्हइ गिण्हित्ता
 जाव पच्चत्थिमेणं पभासतित्थमेराए अहण्णं देवाणुप्पियाणं विसयवासी
 ण पच्चत्थिमिल्ले अंतवाले, सेसं तहेव जाव अट्टाहिया निव्वत्ता
 ॥सू०१०॥

छाया—उपागत्य तत खलु तं घरणितलगमनलघु ततो बहुलक्षणप्रशस्तं हिमवद्
 कन्दूरान्तरनिर्वातसंघटितचित्रतिनिशदलिकं जाम्बूनदलुक्तकूर्धरं कनकदण्डिकार पुलकव-
 रेन्द्र नीलसासकप्रवालस्फटिकवररत्न लेङ्गमणिचिद्रमविभूषितम्, अष्टावत्वारिंशदरचित-
 तपनीय पद्मसंगृहीत युक्ततुम्बम्, प्रघर्षितं प्रक्षितनिर्मितं नवपद्मपृष्ठपरिनिष्ठितम् विशिष्ट

लघुनवलोहवर्गकर्मण हरिप्रहणरत्नसदृशचक्रम् फर्कवनेन्द्रीनोलशस्यकसुममाहितवद्वज्राल-
कटकम् प्रशस्तविस्तोर्णसमधुरम्, पुरवर च गुणम्, सुकिरणतनीययोरुक्तकलितम्,
कटककनियुक्तकन्यनम्, प्रहरणानुयातम्, रोटककणकघनुर्मण्डलागवरशाक्तकुन्ततोमर-
शरशतद्वात्रिशत्तुणपरिमण्डितम्, कनकरत्नचित्रम्, युक्तम्. हलीमुखयलाकगजदन्तचन्द्र-
मौक्तिकमल्लिकापुष्पकुन्दकुटजवरसिन्दुवारकन्दलवरफेननिकरहारकाशप्रकाशघवलै. अमर-
मनपवनजयि चपलशीघ्रगामिभि चतुर्भिः चामराकनकविभूषिताङ्गकै तुरगै, सच्छत्र
सध्वजं सघण्टं सपताक सुकृतसन्धिरुर्माणम् सुममाहित समरकणकगम्भात्तुल्यघोषम्,
वरकूर्पूर सुवक्रं वरनेमीमण्डलं वरधूस्तुण्डं वरवज्रवद्धतुस्य वरकाञ्चनभूषित वराचायं
निमित्तं वरतुरगसम्प्रयुक्तं वरसारथिसुसंगृहीत वरपुरुषो वरमहारथ दुरुः भारूढे
प्रवररत्नपरिमण्डितं कनककीङ्किणीजालशोभितम् अयाध्य सौदामिनो कनकरत्नपद्मनपाकु-
सुमन्वलितशुकतुण्डरागं गुञ्जार्द्धवन्धुजीवकरकतहिङ्गुलकनिकरसिन्दूरचविरकुङ्कुमपारावत-
वरणनयनकोकिलदशनावरणरतिदासतिरक्ताशोककनककिङ्कणकगजतालुसुरेन्द्रगोपकसमप्रभ-
प्रकाशम् विम्बफलशीलाप्रवालोत्तिष्ठत्सरसदृश सर्वर्तुकसुरभिकुसुमासक्तमाव्यदामानम्
लङ्कितश्वेतध्वजं महामेघरसितगम्भीरस्निग्धघोषं शशुहृदयकम्पन प्रभाते च मर्थाक नाम्ना
पृथ्वीविजयलाभमिति विश्रुतं लोकविश्रुतयशाः, अहतम्, चातुर्घण्टमश्वरथं नरपति दुरूढे,
तत खलु स भरतो राजा चातुर्घण्टमश्वरथं दुरूढं सन् शेष तथैव दक्षिणाभिमुखो
वरदामतीर्थेन लवणसमुद्रमवगाढते यावत् तस्य रथवरस्य कूर्पूरो आद्रो भवत यावत्
प्रीतिदान तस्य, नवरं चूडामणिं दिव्यम् उरस्थग्रैवेयकं आणिसूत्रकं कटकानि च वृष्टि-
कानि च यावत् दक्षिणात्याऽन्तपाल यावत् अष्टादिकां महामहिमा कुर्वन्ति, कृत्वा
पतामाकृष्टिकां प्रत्यर्पयन्ति, ततः खलु तद्विव्यं चक्ररत्नं वरदामतीर्थकुमारस्य अष्टादिकाया
महामहिमायां निवृत्तायां सत्याम् आयुधगृहशालात प्रतिनिष्कामति प्रतिनिष्कम्य अन्तरिक्ष-
प्रतिपन्न यावत् पूर्यदिव अम्बरतलम् उत्तरपाश्चात्यां दिशं प्रभासतीर्थोभिमुखं प्रयातं
चाप्यभवत्, ततः खलु स भरतो राजा तद्विव्यं चक्ररत्नं यावत् उत्तरपाश्चात्यां दिशं
तथैव यावत् पश्चिमदिशामिमुखो प्रभासतीर्थेन लवणसमुद्रम् अवगाढते, अवगाह्य यावत्
रथवरस्य कूर्पूरो आद्रो भवत् प्रीतिदान तस्य नवरं मालां मौलिम्, मुक्ताजालं हेमजालं
कटकानि च वृष्टिकानि च आमरणानि च शरं च नामाहताङ्क प्रभासतीर्थोदकं च गृह्णाति,
गृहीत्वा यावत् पाश्चात्ये प्रभासतीर्थमयाद्या अहं खलु देवानुप्रियाणा विषयवासी यावत्
पाश्चात्योऽन्तपाल शेषं तथैव यावत् अष्टादिका निवृत्ता ॥सू० १०॥

टीका—“उवागच्छित्ता तपणं” इत्यादि । उपागत्य ततः खलु ‘तं’ तं प्रसिद्धम्
‘वरपुरिसे वरमहारं दुरूढे’ वरपुरुषो भरतचक्री वरमहारं दुरूढ इत्यग्रे सम्बन्धः, कीदृशं
(उवागच्छित्ता तपणं तं वरणितलगमणलहु) इत्यादि सू १० ॥

टीकार्थ—(उवागच्छित्ता) वहां आकरके वह वर पुरुष भरतचक्री उस वरमहारथ पर सवार

‘उवागच्छित्ता तपणं न वरणितलगमणलहु’ इत्यादि ॥सू०॥

टीकार्थ—(उवागच्छित्ता) तथा आधीने ते वर पुरुष भरत चक्री ते वरमहारथ उपर सवार

મહારથમિત્યાહ—‘ધરણિતલગમણહું’ ધરણિતલગમને લધું ગોમ્રં-શીઘ્રગામિનમ્ ‘બહુ
લક્ષણપસત્યં’ બહુલક્ષણપ્રશસ્તમ્ અનેકશુભલક્ષણસંયુક્તમ્, પુનશ્ચ ક્ષીદ્યશમ્ ‘હિમવન્ત
કંદરંતરણિવાયસવદ્વિચિત્તિણિસદલિયં’ હિમવતઃ કન્દરાન્તરનિર્ગત સંવદ્ધિતચિત્ર-
તિણિસદલિકમ્, તત્ર-હિમવતઃ ક્ષુદ્રહિમાલયગિરેઃ નિર્વાતાનિ-વાયુરઘ્નિતાનિ યાનિ કન્દ-
રાન્તરાણિ તત્ર સંવદ્ધિતાશ્ચિત્રાઃ વિવિધાસ્તિનિશા રથરચનાત્મકવૃક્ષવિશેષાઃ ત એવ દલિ-
કાનિ દારુણિ યસ્ય તમ્, તિણિશનામક સુચારુદારુનિર્મિતમ્ ‘કંદરંતરણિવાય’ इति મૂલે
પદવ્યત્યયઃ આર્પત્વાત્ ‘જંબૂળય સુકયકૂવરં’ જામ્બૂનદ સુકૃતકૂવરમ્ તત્ર-જામ્બૂનદં
જમ્બૂનદનામકં સુવર્ણમ્ તેન સુકૃતં સુઘટિત કૂવરં યુગન્વરં યત્ર (તથા યુગ્રા इति ભાષા
પ્રસિદ્ધમ્) તમ્ ‘કળય દંડિયારં’ કનકદણ્ડિકારમ્, તત્ર કનકદણ્ડિકાઃ—કનકમયલધુ-
દણ્ડરૂપા અથા યત્ર સ તથા તમ્, પુનશ્ચ ક્ષીદ્યશમ્ ‘પુલયવરિંદ ણીલસાસગપવાલફલિહ્વર-
ણયણલેદ્દુમણિવિદ્દુમવિમ્ભૂસિયં’ પુલકવરેન્દ્ર નીલસાસકપ્રવાલસ્ફટિકરત્નલેષ્ઠુમણિવિદ્દુ-
મવિમ્ભૂષિતમ્, તત્ર પુલકાનિ વરેન્દ્રનીલાનિ સાસકાનિ રત્નવિશેષાઃ પ્રવાલાનિ સ્ફટિક-
વરત્નાનિ ચ પ્રસિદ્ધાનિ, લેષ્ઠવો વિજાતીય રત્નાનિ, મળયઃ—ચન્દ્રકાન્તાદયઃ વિદ્દુમઃ

હુઆ—એસા આગેકે પદકે સાથ સમ્બન્ધ હૈ અથ યહા પદિલે યહ પ્રકટ ક્રિયા જાતા હૈ કિ
વહ મહારથ કૈસા થા—(ધરણિતલગમણહું) વહ પૃથિવી તલ પર ચરને મે બહુત શીઘ્રતા વાલા
થા (બહુલક્ષણ પસત્ય, હિમવત કંદરંતરણિવાય સવદ્વિચિત્તિણિસદલિય) અનેક શુભલક્ષ
ણોસે વહ યુક્ત થા હિમવાન્ પર્વત કે વાયુરઘિત મીતર કે કન્દરા પ્રદેશો મે સંવદ્ધિત હુણ
વિવિધ રથ રચનાત્મક તિણિશ વૃક્ષવિશેષરૂપ કાઠ સે વહ બના હુઆ થા (કંદરંતરણિવાય)
હસ મૂલ પદ મે આર્ષ હોને સે પદવ્યત્યય હો ગયા હૈ. (જંબૂળયસુકયકૂવરં) જમ્બૂનદ
નામક સુવર્ણ કા હમકા યુગન્વર—જુગ્રા થા. (કળયદંડિયાર) હસકે અરકકનક મય લધુ
દણ્ડરૂપમે થે (પુલયવરિંદનીલસાસગપવાલફલિહ્વરણયણલેદ્દુમણિવિદ્દુમવિમ્ભૂસિયં) પુલક,
વરેન્દ્ર નીલમણિ, સાસક, પ્રવાલ, સ્ફટિકમણિ, લેષ્ઠ-વિજાતિરત્ન ચન્દ્રકાન્ત આદિ મણિ એવં વિદ્દુમ
હન સવ પ્રકાર કે રત્નાદિકો સે વહ વિમ્ભૂષિત થા (અઢ્યાલોસારરહ્યતવણિજ્જપટ્ટસગહિયજુત્તલુવં)

થયો આ ભાતનો આગળના પદ સાથે સંબંધ છે. અને પહેલા એ પ્રકટ કરવામાં આવે છે કે તે
મહારાજા કેવો હતો. (ધરણિતલગમણહું) તે પૃથિવી તલ ઉપર શીઘ્ર ગતિથી ચાલનાર હતો.
(બહુલક્ષણપસત્ય, હિમવત કંદરંતરણિવાય સવદ્વિચિત્તિણિસદલિય) અનેક શુભલક્ષણોથી
તે યુક્ત હતો. હિમવાન્ પર્વતના વાયુરઘિત અંદરના કંદરા પ્રદેશોમાં સંવદ્ધિત થયેલા
વિવિધ રથરચનાત્મક તિણિશ વૃક્ષવિશેષરૂપ કાઠથી તે બનેલો હતો. (કંદરંતરણિવાય) એ
મૂલપદમાં આર્ષ હોવાથી પદવ્યત્યય થયેલ છે. (જંબૂળયસુકયકૂવરં) જમ્બૂનદ નામક સુવર્ણ
નિર્મિત એ રથની ધૂસરી હતી. (કળયદંડિયાર) એના અરકો કનકમય લધુદંડ રૂપમાં
હતા. (પુલયવરિંદનીલસાસગપવાલફલિહ્વરણયણલેદ્દુમણિવિદ્દુમવિમ્ભૂસિય) પુલક,
વરેન્દ્રનીલમણિ, સાસક, પ્રવાલ, સ્ફટિકમણિ, લેષ્ઠ વિજાતિરત્ન, ચન્દ્રકાન્ત આદિ મણિ તેમજ
વિદ્દુમ એ સર્વ પ્રકારના રત્નાદિકોથી તે વિમ્ભૂષિત હતો. (અઢ્યાલોસારરહ્ય તદ્વતવણિજ્જપ

प्रगलविशेषः तं विभूषितः तथा तम् 'अड्यालीमारगड्यतवणिजपट्टमंगहिय जुन तुवं' अष्टाचत्वारिंशदरश्चिन तपनीय पट्टमंगह्रीन युक्तनुम्बम्, तत्र -रचिताः -गुण्टुनिमिताः प्रतिदिशं द्वादश २ सङ्ख्यावात् उभयत्र अष्टाचत्वारिंशदगा यत्र ते तथा, अत्र 'अड्यालीसार रड्य' इति मूलसूत्रे 'रड्य' इति निशेषणस्य पूर्वं प्रयोनक्ये परनिपातः प्राकृतत्वात् तथा तपनीयपट्टैः रक्तस्वर्गमयपट्टिकः लोके महल इति प्रसिद्धः संगृहीते दृढीकृते तथा युक्ते यथा-योग्ये नाति लघुनी नाति महती ततः पदत्रयस्य कर्मधारये कृते सति एतादृशे तुम्बे यस्य स तथा तम् 'पवसिय पसिय निम्मिय नव पट्टपुट्टपरिणिट्टियं' प्रवर्षितप्रसित-निर्मित नवपट्टपुष्टपरिनिष्ठितम्. तत्र प्रवर्षिताः-प्ररूपेण घृष्टाः प्रसिता प्रकर्षेण वद्धा ईदृशा निमिताः निवेजिताः नवाः नूतनाः पट्टाः पट्टिका यत्र तत् तथाविधं यत्पुष्ट चक्रपरिधिरूपं गोलाकाररूप 'हाल' इति प्रसिद्धम्. तत्परिनिष्ठितं गुनपन्नं कार्यनिर्वा-हकत्वेन यस्य स तथा तम् 'विसिट्ट लट्टणवल्लोहवद्धकम्म' विशिष्टलट्टणवल्लोहवद्धकर्मा-णम्, तत्र विशिष्टलट्टे-अतिमनोहरे नवे नवीने लोह वत्तं लोहश्चर्मरज्जुके तयोः कर्म-कार्यं वर्तते यत्र स तथा तम् पुनश्च कीदृशम् 'हरिपहरणरयणसरिसचक्रं' हरिप्रहरण-रत्न सदृशचक्रम्, तत्र हरिः वासुदेवः तस्य प्रहरणरत्नं चक्ररत्नं तत्सदृशे चक्रे चक्रद्वयं स तथा तम्, पुनश्च 'कक्केयणइंदनीलसासगसुसमाहियवद्धजालकडगं' कर्केतनेन्द्रनील-

प्रत्येक दिशा में १२-१२-दोनेसे ४८ हममें अरं थे रक्त स्वर्णमय पट्टको से महलुओ से-दृढीकृत तथा उचित हमके दोनो तुवे थे (पवसियपसियनिम्मिय नवपट्टपुट्टपरिणिट्टियं) इसका पुठी में जो पट्टिकाएँ लगी हुई थी-वे प्रवर्षित थी-खुब-घिसी हुई थी-अच्छी तरह से उसमें बद्ध थी और अजीर्ण थी, नवीन थी (विसिट्टलट्टणवल्लोहवद्धकम्म) विशिष्ट लट्ट-अति मनोहर-नवीन लोहे से हममें काम किया गया था अर्थात् मजबूती के लिए जगह २ इसमें-नवीन नवीन लोहे की कोले एवं उनकी सुन्दर पत्तिये लगी हुई थी अथवा टीका के अनुसार हमके अवयव नवीन लोहे से एवं नवीन चर्म की रज्जुओं से जकड़े हुए थे ऐसा अर्थ होता है । (हरिपहरणरयणसरिसचक्र) इसके दोनो पहिये वासुदेव के चक्ररत्नके जैसे गोल थे (कक्केयणइंदनील सासग सुसमाहिय वद्धजालकडगं) इसमें जो जालसमूह था वह कर्केतन चन्द्रकान्तादि मणियो-से, इन्द्रनील-

सगहियजुत्तुवं) द्वादश दिशाओं १२-१२ आभ भधा मणीने ४८ ओमां अरक होता. रक्त स्वर्णमय पट्टकोशी-महलुओगी-दृढीकृत तेमज्ज उच्चि येना भन्ने तु भा होता (पवसियपसि-यनिम्मियनवपट्टपुट्ट परिणिट्टियं) ऐनी पुठीमा ने पट्टिकाओ होती ते प्रवर्षित होती भूषण घसाओही होती सारी रीते तेमा बद्ध होती अने अलुष्ट होती, नवीन होती. (विनिट्ट लट्टणवल्लोह वद्धकम्म) विशिष्ट-लट्ट-अति मनोहर-नवीन दोण उथी तेमा काम करेहुं हुतु ओरुवे के मज्जपूती भाटे स्थान-स्थानमा तेमा नवीन-नवीन दोण उनी भीलीओ तेमज्ज पत्तियो लागेही होती अथवा टीका शुभण तेमा अवयवो नवीन दोण उथी तेमज्ज नवीन अर्भणी रज्जुओशी आभद्ध होता आवो अर्थ थाय छे (हरिपहरणरयणसरिसचक्रं) ऐना भन्ने पैडाओ वासुदेवना चक्ररत्न ओवा गोण होता (कक्केयण इंदनील सासग सुसमाहिय वद्धजालकडगं) ओमां ने भल समूह होता ते कर्केतन चन्द्रकान्तादि, मणियोशी-इन्द्रनी-

शस्यकमुसमाहितवद्धजालकटकम् , तत्र कर्केतनः-चन्द्रकान्तादिमणिः, इन्द्रनीलः-इन्द्रइव नीलः इयामः खत्वादर पृथ्वीकायात्मकनीलरत्नविशेषः, शस्यकः-रत्नविशेषः रत्नत्रयं सुष्ठु सम्यग् आहितं निवेशितं कृतसुन्दरसंस्थानमित्यर्थः ईदृशं वद्धं जालकटकं जालकसमूहो यत्र स तथा तम्, तथा 'पसत्थ वित्थिन्न समधुरं' प्रशस्तविस्तीर्णसमधूरम् प्रशस्ता विस्तीर्णा समा वक्रता रहिता धूर्यत्र स तथा तम् तथा 'पुरवरं च गुत्तं' पुरवरं च गुत्तम् पुरमिव गुप्तं श्रेष्ठरूमिः सुरक्षितम् समन्ततः अयं भागः गृहेहि प्रायः सर्वतो लोहादिमयी आवृत्तिर्मवति, प्रवरदृष्टान्तकथनेनायमर्थः सम्पद्यते यथा पुरम् अस्त्र शस्त्र सेनादिभिसुरक्षितं तथा रथोऽपि सुरक्षितस्तम्, पुनश्च कीदृशम् 'सुकिरणतवणिज्ज जुत्तकलियं' सुकिरणतपनिययोक्त्रकलितम्, तत्र सुकिरणं सुष्ठु कान्तिकं यत्तपनीयं सुवर्णं तन्मया योक्त्रां तैः कलितस्तथा तम्, योक्त्रेण हि वोद्गस्कन्धे युग्मं बध्यते इति 'कंकटयणिजुत्तकप्पणं' कंकटकनियुक्तकल्पनम्, कंकटकाः-सन्नाहा कवचास्तेषां नियुक्ता स्थापिता कल्पना रचना यत्र स तथा तम् यथाशोभं तत्र सन्नाहाः स्थापिताः सन्तीतिभावः, तथा-'पहरणाणुजायं' प्रहरणानुयातम्, प्रहरणैशस्त्रैरनुयातो भृत्युक्तः इत्यर्थः स तथा तम्, एतदेव व्यक्ति आह-'खेटककणगधणुमंडलगवरसत्तिकोततोमरसरस य बत्तीसतोणपरिमंडियं' खेटककनकधनुर्मण्डलाग्रवरशक्तिकुन्ततोमरशरशतद्वान्निशतूणपरिमण्डितम्, तत्र खेटकानि फलकानि 'ढाल' इति भाषा प्रसिद्धानि कणकाः-बाणविशेषाः धनु-

मणियों से एवं शस्यक-रत्नविशेष-से सुन्दर आकारवाला बना हुआ था (पसत्थवित्थिन्नसमधुरं) इसकी धुरा- अग्रभाग प्रशस्त थी, विस्तीर्ण थी और सम-वक्रतारहित थी (पुरवरं च गुत्तं) श्रेष्ठ पुरकी तरह यह सुरक्षित था (सुकिरण तवणिज्जुत्तकलियं) सुष्ठु किरणवाले तपनीय सुवर्ण की इसकी बेलों के गलों में ढालने वाली रस्सी थी (कंकटयणिजुत्तकप्पणं) कंकटक-सन्नाह कवचों की इसमें रचना हो रही थी तात्पर्य इसका यही है कि इसकी विशिष्ट शोभा बढ़ाने के लिए इसमें जगह २ कवच स्थापित हो रहे थे (पहरणाणुजायं) प्रहरणों से- अस्त्र शस्त्र आदिकों से भरा हुआ था. जैसे-(खेटककणगधणु मंडलगवरसत्तिकोत तोमरसरस य बत्तिस तोणपरिमंडियं) इसमें खेटक-ढाळे-रखी हुई थी, कणक-विशेष प्रकार के बाण रखे हुए थे धनुष रखे हुए थे, मण्डलाग्र-विशेष प्रकार की तलवारें रखी हुई थी

जम्बूद्वीपे भी तेमञ्ज शस्यक-रत्न विशेष भी सुन्दर आकारवाला होता. (पसत्थवित्थिन्नसमधुरं) जेनी धुरा (अग्रभाग) प्रशस्त होती, विस्तीर्ण होती और सम-वक्रता रहित होती (पुरवरं च गुत्तं) श्रेष्ठ पुरकी जेम जे सुरक्षित होता. (सुकिरण तवणिज्जुत्तकलियं) अणुदाना अणुभां नाभेदी राय सुष्ठु किरणवाला तपनीय सुवर्ण नी भनेदी होती (कंकटयणिजुत्तकप्पणं) कंकटक-सन्नाह कवचों की जेभां रचना थी रही होती तात्पर्य आहु आ प्रमाणे छे के जेनी विशिष्ट शोभावृद्धि भाटे जेभा स्थान-स्थान उपर क्रमो स्थापित करेला होता (पहरणाणुजायं) प्रहरणों की-अस्त्र-शस्त्र आदिकों भी परिपूरित होता जेभके-(खेटककणगधणु मंडलगवरसत्तिकोततोमरसरस य बत्तीसतोणपरिमंडियं) जेभां जेटक-ढाळे-

वि प्रसिद्धानि मण्डलाग्राः खड्गविशेषाः वरशक्तयः त्रिशूलानि कुन्ताः भल्ला इति प्रसि-
द्धाः तोमराः बाणविशेषाः शराणां शतानि येषु तादृशा ये द्वात्रिंशत्तृणाः भस्त्रकास्तैः
परिमण्डितो यः स तथा तम् तथा 'कणगरयणचित्त' कनकरत्न-चित्रम्. सुवर्ण रत्नविशेषः
परिमण्डितम् तथा 'जुत्त' युक्तं तुगैरित्यग्रेण सम्बध्यते तुग्गैः किं विशिष्टैरित्याह 'हली-
मुहवलागयदंतचंदमोत्तियतणसोल्लिअकुंदकुट्टववरसिंदुवारकंदलवरफेणणिगरहासकासप्प-
गासधवलेहि' हलीमुखवलाकगजदन्तचन्द्रमौक्तिक 'तणसोल्लिअ' मल्लिका पुष्प कुन्दकुट-
जवरसिन्दुवारकन्दल वरफेननिकरहारकाशप्रकाशधवलैः, तत्र—हलीमुखं रुद्धिगम्यम्, वलाको
वकः गजदन्तचन्द्रौ-प्रसिद्धौ मौक्तिकम् मुक्ताफलम् 'तणसोल्लिअत्ति' मल्लिकापुष्पं कुन्दम्
श्वेतपुष्पविशेषः कुटजानि कुटजपुष्पाणि, वरसिन्दुवाराणि निर्गुण्डीपुष्पाणि कन्दलानि
कन्दलनामकवृक्षविशेषपुष्पाणि वरफेननिकरः वरफेनसमूहः हारो मुक्ताहारः काशाः
तृणविशेषास्तेषां प्रोक्तानां यः प्रकाशः उज्ज्वलता तद्वत् धवलैः धवलवर्णैः, पुनश्च
कीदृशैः 'अमरमणपवणजइणचवलसिग्घगामीहि' अमरमनःपवनजयिचपलशीघ्रगा-
मिभिः, तत्र अमराः देवा मनांसि चित्तानि पवनो वायुः तान् वेगेन जयति इति

वर शक्ति—त्रिशूल रखे हुए थे. किन्तु—भाले रखे हुए थे, तोमर—विशेष प्रकार के बाण रखे हुए
थे, सैरुड़ों सामान्य बाण जिनमें रखे हुए हैं ऐसे ३२ भाये इसमें रखे हुए थे. (कणगरयणचित्त)
इसमें जो चित्रबने हुवे थे वे कनक और रत्नो द्वारा अतिरमणीय बने हुए थे. (हलीमुखवला-
गयदंतचंदमोत्तियतणसोल्लिय कुंदकुड्यवरसिंदुवारकंदलवरफेणणिगरहासकासप्पगासधवलेहि)
इसमें जो 'जुत्त' घोड़े जुते हुए थे—वे हलीमुख, बगला, गजदन्त, चन्द्रमा—मौक्तिक, मल्लिका
पुष्प, कुन्दकुष्प, कुटजपुष्प, निर्गुण्डी पुष्प, कन्दल नामक वृक्षविशेष के पुष्प, सुन्दर फेन
का समूह, हार,—मुक्ताहार और काश—तृणविशेष इनकी जैसी—उज्ज्वलता वाले थे—अर्थात्
धवल वर्ण के थे (अमरमणपवणजइणचवलसिग्घगामीहि) जैसी देवों की, मनकी, वायुकी,
गति होती है उस गति को भी परास्तकरनेवाली इनको चपलतामरी शीघ्र गति थी. उस गति से

भूकेली होती कणक—विशेष प्रकारना भाणो भूकेला होता धनुष भूकेला होता, भल्लाअ—विशेष
प्रकारनी तलवारो भूकेली होती वरशक्ति—त्रिशूल भूकेला होता कुंत—भालाओ—भूकेला होता.
तोमर—विशेष प्रकारना भाणो भूकेला होता सइसो सामान्य भाणो जेमा भूकेला से, जेमा
उर तणीरो जेमा भूकेला होता (कणगरयणचित्त) जेमा जे त्रिने अनेला होता, ते कनक अने
रत्ननिर्भित होवाथो अत्यंत रमणीय लागताहता (हलीमुखवलागदंतचंदमोत्तियतणसोल्लिय-
कुंदकुड्यवरसिंदुवारकंदलवरफेणणिगरहासकासप्पगासधवलेहि) जेमां जे ' ' घोडाओ
जेतरैला होता, ते हलीमुख, बगला, गजदन्त, चन्द्रमा, मौक्तिक, मल्लिका

कुटज पुष्प, निर्गुण्डी पुष्प कंदल नामक वृक्षविशेषना पुष्प, सुन्दर शीघ्र समूह हो
अने काश—तृण विशेष जे सब पक्षियों जेवा उज्ज्वलता वाला होता ओटले
पुष्पाणा होता (अमरमणपवणजइण चवल सिग्घगामीहि) जेवी देवोनी, मननी, व
होय छे, तेमनी गति ने पक्ष परास्त करनारी जेमनी चपलतामरी शीघ्र गति

શસ્પકમુમમાહિતવદ્જાલકટકમ્ , તત્ર કર્કેતનઃ-ચન્દ્રકાન્તાદિમણિઃ, ઇન્દ્રનીલઃ-ઇન્દ્રિવ
નીલઃ શ્યામઃ સ્વર્વાદર પૃથ્વીકાયાત્મકનીલરત્નવિશેષઃ, શસ્યકઃ-રત્નવિશેષઃ રત્નત્રયં સુષ્ટુ
સમ્યગ્ આહિતં નિવેશિતં કૃતસુન્દરસંસ્થાનમિત્યર્થઃ ઈદ્દશં વદ્દે જાલકટકં જાલકસમૂહો
યત્ર સ તથા તમ્, તથા 'પસત્થ વિત્થિન્ન સમધુરં' પ્રશસ્તવિસ્તીર્ણસમધૂરમ્ પ્રશસ્તા વિ-
સ્તીર્ણાં સમા વક્રતા રહિતા ધૂર્યત્ર સ તથા તમ્ તથા 'પુરવરં ચ ગુત્તં' પુરવરં ચ ગુત્તમ્
પુરમિવ ગુપ્તં શ્રેષ્ઠધૂરમિવ સુરક્ષિતમ્ સમન્તતઃ અયં માનઃ રથેહિ પ્રાયઃ સર્વતો લોહાદિ-
મયી આવૃત્તિર્ભવતિ, પ્રવરદૃષ્ટાન્તકથનેનાયમર્થઃ સમ્પદ્યને યથા પુરમ્ અસ્ત્ર શસ્ત્ર સેનાદિ
મિસુરક્ષિતં તથા રથોઽપિ સુરક્ષિતસ્તમ્, પુનશ્ચ કીદૃશમ્ 'સુકિરણતવણિજ્જ જુત્તકલિયં'
સુકિરણતપનિયયોક્ત્રકલિતમ્, તત્ર સુકિરણં સુષ્ટુ કાન્તિકં યત્તપનીયં સુવર્ણં તન્મયાં
યોક્ત્રાં તૈઃ કલિતસ્તથા તમ્, યોક્ત્રેણ હિ વોદ્રસ્કન્થે યુગં વધ્યતે ઇતિ 'કંકટયણિજુત્ત-
કપ્પણં' કંકટકનિયુત્તકલ્પનમ્, કંકટકાઃ-સન્નાહા કવચાસ્તેષાં નિયુજ્ઞા સ્થાપિતા કલ્પના
રચના યત્ર સ તથા તમ્ યથાશોભં તત્ર સન્નાહાઃ સ્થાપિતાઃ સન્તીતિમાવઃ, તથા-પહ
રણાણુજાર્યં' પ્રહરણાનુયાતમ્, પ્રહરણૈશસ્ત્રૈરનુયાતો મૃતયુક્તઃ ઇત્યર્થઃ સ તથા તમ્, एत-
દેવ વ્યક્તિ આહ- 'સ્વેદગક્રણગધણુમંડલગવરસત્તિકોત્તમરસરસ ય વત્તીસતોળ-
પરિમંહિયં' સ્વેદકકનકધનુર્મંડલાગ્રવરશક્તિકુન્તતોમરશરશતદ્વાર્ત્રિશતૂળપરિમંહિતમ્ ,
તત્ર સ્વેદકાનિ ફલકાનિ 'ઢાલ' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધાનિ ક્રણકાઃ-વાળવિશેષાઃ ધનૂ-

મણિયોં સે एवं શસ્યક-રત્નવિશેષ-સે સુન્દર આકારવાળા બના હુઆ થા (પસત્થવિત્થિન્નસ-
મધુરં) હસકી ધુરા- અગ્રભાગ પ્રશસ્ત થી, વિસ્તીર્ણ થી ઓર સમ-વક્રતારહિત થી (પુરવરં
ચ ગુત્તં) શ્રેષ્ઠ પુરકી તરહ યહ સુરક્ષિત થા (સુકિરણ તવણિજ્જુત્તકલિયં) સુષ્ટુ કિરણ-
વાલે તપનીય સુવર્ણ કી હસકી બૈલો કે ગલો મેં ઢાલને વાલી રસી થી (કંકટયણિજુત્ત-
કપ્પણં) કંકટક-સન્નાહ કવચો કી હસમે રચના હોં રહી થી તાત્પર્ય હસકા યહી હૈ કિ
હસકી વિશિષ્ટ શોભા વધાને કે લિપ્ત હસમેં જગદ્ ૨ કવચ સ્થાપિત હો રહે થે (પહરણાણુજાર્યં)
પ્રહરણો સે- અલ્પ શસ્ત્ર આદિકોં સે મરા હુઆ થા જૈસે-(સ્વેદગક્રણગધણુ મંડલગવરસત્તિકોત્ત
તોમરસરસ ય વત્તિસ તોળપરિમંહિયં) હસમેં સ્વેદક-ઢાલે-રસી હુઈ થી, ક્રણક-વિશેષ
પ્રકાર કે વાળ રલેહુપ થે ધનુષ રલે હુપ થે, મંડલાગ્ર-વિશેષ પ્રકાર કી તલવારેં રસી હુઈ થી

લમ્બિએથી તેમજ શસ્યક-રત્ન વિશેષથી સુષ્ટુ આકારવાળો હતો. (પસત્થ વિત્થિન્ન
સમધુરં) એની ધુરા (અગ્રભાગ) પ્રશસ્ત હતી, વિસ્તીર્ણ હતી અને સમ-વક્રતા રહિત હતી
(પુરવર ચ ગુત્તં) શ્રેષ્ઠ પુરની જેમ એ સુરક્ષિત હતો (સુકિરણ તવણિજ્જુત્તકલિયં) બળ-
દોના ગળામાં નાખેલી રાશ સુષ્ટુ કિરણવાળા તપનીય સુવર્ણની બનેલી હતી (કંકટયણિ-
જુત્તકપ્પણં) કંકટક-સન્નાહ કવચોની એમાં રચના થઈ રહી હતી તાત્પર્ય આનું આ
પ્રમાણ છે કે એની વિશિષ્ટ શોભાવૃદ્ધિ માટે એમાં સ્થાન-સ્થાન ઉપર કવચો સ્થાપિત કરેલા
હતાં (પહરણાણુજાર્યં) પ્રહરણથી-અસ્ત્ર-યસ્ર આદિકોથી પરિપૂરિત હતો જેમકે-(સ્વેદગ
ક્રણગધણુ મંડલગવરસત્તિકોત્તતોમરસરસ ય વત્તીસતોળપરિમંહિયં) એમાં ખેટક-ઢાલો-

वि प्रसिद्धानि मण्डलाग्राः खड्गविशेषाः वरशक्तयः त्रिशूलानि कुन्नाः भल्ला इति प्रसिद्धाः तोमराः बाणविशेषाः शराणां शतानि येषु तादृशा ये द्वात्रिंशत्तृणाः भस्त्रकास्तैः परिमण्डितो यः स तथा तम् तथा 'कणगरयणचित्त' कनकरत्नचित्रम्, मुवर्ण रत्नविशेषः परिमण्डितम् तथा 'जुत्त' युक्तं तुगैरित्यग्रेण सम्बध्यते तुरगैः किं विशिष्टैरित्याह 'हली-मुहबलागगयदंतचंदमोत्तियतणसोल्लिअकुंदकुड्यवरसिंदुवारकंदलवरफेणणिगरहासकासप्पगासधवल्लेहिं' हलीमुखवलाकगजदन्तचन्द्रमौक्तिक 'तणसोल्लिअ' मल्लिका पुष्प कुन्दकुटजवरसिन्दुवारकन्दल वरफेननिकरहारकाशप्रकाशधवल्लैः, तत्र—हलीमुखं रुद्धिगम्यम्, वलाको वकः गजदन्तचन्द्रौ-प्रसिद्धौ मौक्तिकम् मुक्ताफलम् 'तणसोल्लिअत्ति' मल्लिकापुष्पं कुन्दम् श्वेतपुष्पविशेषः कुटजानि कुटजपुष्पाणि, वरसिन्दुवाराणि निर्गुण्डीपुष्पाणि कन्दलानि कन्दलनामकवृक्षविशेषपुष्पाणि वरफेननिकरः वरफेनसमूहः हारो मुक्ताहारः काशाः तृणविशेषास्तेषां प्रोक्तानां यः प्रकाशः उज्ज्वलता तद्वत् धवल्लैः धवल्लवर्णैः, पुनश्च कीदृशैः 'अमरमणपवणजङ्घणचवल्लसिग्घगामीहिं' अमरमनःपवनजयिचपलशीघ्रगामिमिभिः, तत्र अमराः देवा मनांसि चित्तानि पवनो वायुः तान् वेगेन जयति इति

वर शक्ति—त्रिशूल रखे हुए थे. किन्तु—भाले रखे हुए थे, तोमर—विशेष प्रकार के बाण रखे हुए थे, सैरुद्धो सामान्य बाण जिनमें रखे हुए हैं ऐसे ३२ भांये इसमें रखे हुए थे. (कणगरयणचित्त) इसमें जो चित्रवने हुवे थे वे कनक और रत्नो द्वारा अतिरमणीय बने हुए थे. (हलीमुखवलागगयदंतचंदमोत्तियतणसोल्लिय कुंदकुड्यवरसिंदुवारकंदलवरफेणणिगरहासकासप्पगासधवल्लेहिं) इसमें जो 'जुत्त' बोड़े जुते हुए थे—वे हलीमुख, बगला, गजदन्त, चन्द्रमा—मौक्तिक, मल्लिका पुष्प, कुन्दपुष्प, कुटजपुष्प, निर्गुण्डी पुष्प, कन्दल नामक वृक्षविशेष के पुष्प, सुन्दर फेन का समूह, हार,—मुक्ताहार और काश—तृणविशेष इनकी जैसी—उज्ज्वलता वाले थे—अर्थात् धवल्ल वर्ण के थे (अमरमणपवणजङ्घणचवल्लसिग्घगामीहिं) जैसी देवी की, मनकी, वायुकी, गति होती है उस गति को भी परास्त करनेवाली इनको चपलताभरी शीघ्र गति थी. उस गति से

भूकेली इती कण्ठ-विशेष प्रकारना आण्णो भूकेली इती धनुष भूकेली इती, भड्वाअ-विशेष प्रकारनी तलवारो भूकेली इती वरशक्ति-त्रिशूल भूकेली इती कुंत-लावाओ-भूकेली इती. तोमर-विशेष प्रकारना आण्णो भूकेली इती सद्धो सामान्य आण्णो जेमा भूकेली से, जेवा उर तण्णीरे जेमा भूकेली इती (कणगरयणचित्त) जेमां जे चित्रो अनेला इती, ते कनक अने रत्ननिर्मित होवाथी अत्यंत रमणीय लागताइता (हलीमुखवलागदंतचंदमोत्तियतणसोल्लिय-कुंदकुड्यवरसिंदुवारकंदलवरफेणणिगरहासकासप्पगासधवल्लेहिं) जेमां जे 'जुत्त' बोडाओ अतरैला इती, ते हलीमुख, बगला, गजदन्त, चन्द्रमा, मौक्तिक, मल्लिका पुष्प, कुन्द पुष्प, कुटज पुष्प, निर्गुण्डी पुष्प कंदल नामक वृक्षविशेषना पुष्प, सुन्दर शीघ्र समूह हार—मुक्ताहार अने काश—तृण विशेष जे सब पदार्थो जेवा उज्ज्वलता वाणा इतां अटले के धवल्लवर्ण वाणा इता (अमरमणपवणजङ्घण चवल्ल सिग्घगामीहिं) जेवी देवीनी, मननी, वायुनी गति होथि छे, तेमनी गति ने पण परास्त करनारी जेमनी चपलताभरी शीघ्र गति इती, ते

शस्यकमुसमाहितवद्धजालकटकम् , तत्र कर्केतनः-चन्द्रकान्तादिमणिः, इन्द्रनीलः-इन्द्रइव नीलः श्यामः खरबादर पृथ्वीकायात्मकनीलरत्नविशेषः, शस्यकः-रत्नविशेषः रत्नत्रयं सुष्ठु सम्यग् आहितं निवेशितं कृतसुन्दरसंस्थानमित्यर्थः ईदृशं वद्धं जालकटकं जालकसमूहो यत्र स तथा तम्, तथा 'पसत्थ वित्थिन्न समधुरं' प्रशस्तविस्तीर्णसमधुरम् प्रशस्ता विस्तीर्णा समा वक्रता रहिता धूर्यत्र स तथा तम् तथा 'पुरवरं च गुत्तं' पुरवरं च गुत्तम् पुरमिव गुप्तं श्रेष्ठरुमिव सुरक्षितम् समन्ततः अयं भागः रथेहि प्रायः मर्वतो लोहादिमयी आवृत्तिर्भवति, प्रवरदृष्टान्तकथनेनायमर्थः सम्पद्यते यथा पुरम् अस्त्र शस्त्र सेनादिभिः सुरक्षितं तथा रथोऽपि सुरक्षितस्तम्, पुनश्च कीदृशम् 'सुकिरणतवणिज्जुत्तकलियं' सुकिरणतपनिययोक्त्रकलितम्, तत्र सुकिरणं सुष्ठु कान्तिकं यत्तपनीयं सुवर्णं तन्मयां योक्त्रां तैः कलितस्तथा तम्, योक्त्रेण हि वोद्वस्त्वने युगं वध्यते इति 'कंकटयणिजुत्तकप्पणं' कंकटकनियुक्तकल्पनम्, कंकटकाः-सन्नाहा कवचास्तेषां नियुक्ता स्थापिता कल्पना रचना यत्र स तथा तम् यथाशोभं तत्र सन्नाहाः स्थापिताः सन्तीतिभावः, तथा-'पहरणाणुजायं' प्रहरणानुयातम्, प्रहरणैशस्त्रैरनुयातो भृतयुक्तः इत्यर्थः स तथा तम्, एतदेव व्यक्ति आह-'खेडकणगधणुमण्डलगवरसत्तिकोततोमरसरस य वत्तीसतोणपरिमण्डियं' खेटककनकधनुर्मण्डलाग्रवरशक्तिकुन्ततोमरशरशतद्वात्रिशतूणपरिमण्डितम् , तत्र खेटकानि फलकानि 'ढाळ' इति भाषा प्रसिद्धानि कणकाः-वाणविशेषाः धनू-

मणियों से एवं शस्यक-रत्नविशेष-से सुन्दर आकारवाला बना हुआ था (पसत्थवित्थिन्नसमधुरं) इसकी धुरा- अग्रभाग प्रशस्त थी, विस्तीर्ण थी और सम-वक्रतारहित थी (पुरवरं च गुत्तं) श्रेष्ठ पुरकी तरह यह सुरक्षित था (सुकिरण तवणिज्जुत्तकलियं) सुष्ठु किरणवाले तपनीय सुवर्ण की इसकी वैलों के गलों में ढालने वाली रस्सी थी (कंकटयणिजुत्तकप्पणं) कंकटक-सन्नाह कवचों की इसमें रचना हो रही थी तात्पर्य इसका यही है कि इसकी विशिष्ट शोभा बढ़ाने के लिए इसमें जगह २ कवच स्थापित हो रहे थे. (पहरणाणुजायं) प्रहरणों से- अब शस्त्र आदिकों से भरा हुआ था जैसे-(खेडकणगधणु मण्डलगवरसत्तिकोत तोमरसरस य वत्तिस तोणपरिमण्डियं) इसमें खेटक-ढाळे-रखी हुई थी, कणक-विशेष प्रकार के बाण रखे हुए थे धनुष रखे हुए थे, मण्डलाग्र-विशेष प्रकार की तलवारें रखी हुई थी

लभञ्जिओथी तेम- शस्यक-रत्न विशेषथी सुन्दर आकारवाला होता. (पसत्थ वित्थिन्न समधुरं) ओनी धुरा (अग्रभाग) प्रशस्त होती, विस्तीर्ण होती अने सम-वक्रता रहित होती (पुरवरं च गुत्तं) श्रेष्ठ पुरनी जेम ओ सुरक्षित होता. (सुकिरण तवणिज्जुत्तकलियं) अणु-होना गणनामां नाजेदी राथ सुष्ठु किरणवाला तपनीय सुवर्णनी अनेदी होती (कंकटयणिजुत्तकप्पणं) कंकटक-सन्नाह कवचोनी ओमां रचना यही रही होती तात्पर्य आनु आ प्रभाञ्जि छे के ओनी विशिष्ट शोभावृद्धि भाटे ओमा स्थान-स्थान उपर कवचो स्थापित करेला होता. (पहरणाणुजायं) प्रहरणोथी-अस्त्र-शस्त्र आदिकोथी परिपूरित होता जेभके-(खेडकणगधणु मण्डलगवरसत्तिकोततोमरसरस य वत्तिसतोणपरिमण्डियं) ओमा खेटक-ढाळे-

षि प्रसिद्धानि मण्डलाग्राः खड्गविशेषाः वग्गतयः त्रिशूलानि कुन्ताः भल्ला इति प्रसि-
द्धाः तोमराः बाणविशेषाः शराणां शतानि येषु तादृशा ये द्वात्रिंशत्तृणाः भस्त्रकास्तैः
परिमण्डितो यः स तथा तम् तथा 'कणगरयणचित्त' कनकरत्नचित्रम् मृगवर्णं रत्नविशेषः
परिमण्डितम् तथा 'जुत' युक्तं तुर्गैरित्यग्रेण सम्बध्यते तुर्गैः किं विशिष्टैरित्याह 'हली-
मुहबलागगयदंतचंद्रमोत्तियतणसोल्लिअकुंदकुड्यवरसिंदुवारकंदलवरफेणणिगरहासकासप्प-
गासधवलेहि' हलीमुखबलाकगजदन्तचन्द्रमौक्तिक 'तणसोल्लिअ' मल्लिका पुष्प कुन्दकुट-
जवरसिंदुवारकन्दल वरफेननिकरहारकाशप्रकाशधवलैः, तत्र—हलीमुखं रुद्धिगम्यम्, बलाको
वकः गजदन्तचन्द्रौ-प्रसिद्धौ मौक्तिकम् मुक्ताफलम् 'तणसोल्लिअत्ति' मल्लिकापुष्पं कुन्दम्
श्वेतपुष्पविशेषः कुटजानि कुटजपुष्पाणि, वरसिंदुवाराणि निर्गुण्डीपुष्पाणि कन्दलाणि
कन्दलनामकवृक्षविशेषपुष्पाणि वरफेननिकरः वरफेनसमूहः हारो मुक्ताहारः काशाः
तृणविशेषास्तेषां प्रोक्तानां यः प्रकाशः उज्ज्वलता तद्वत् धवलैः धवलवर्णैः, पुनश्च
कीदृशैः 'अमरमणपवणजङ्घणचवलसिग्घगामीहि' अमरमनःपवनजयिचपलशीघ्रगा-
मिभिः, तत्र अमराः देवा मनांसि चित्तानि पवनो वायुः तान् वेगेन जयति इति

वर शक्ति—त्रिशूल रखे हुए थे, किन्तु—भाले रखे हुए थे, तोमर—विशेष प्रकार के बाण रखे हुए
थे, सैरुद्धो सामान्य बाण जिनमें रखे हुए हैं ऐसे ३२ भाँधे इसमें रखे हुए थे (कणगरयणचित्त)
इसमें जो चित्रवने हुवे थे वे कनक और रत्नो द्वारा अतिरमणीय बने हुए थे, (हलीमुहबला-
गगयदंतचंद्रमोत्तियतणसोल्लिय कुंदकुड्यवरसिंदुवारकंदलवरफेणणिगरहासकासप्पगासधवलेहि)
इसमें जो 'जुन' घोड़े जुते हुए थे—वे हलीमुख, बगला, गजदन्त, चन्द्रमा—मौक्तिक, मल्लिका
पुष्प, कुन्दकुष्प, कुटजपुष्प, निर्गुण्डी पुष्प, कन्दल नामक वृक्षविशेष के पुष्प, सुन्दर फेन
का समूह, हार,—मुक्ताहार और काश—तृणविशेष इनकी जैसी—उज्ज्वलता वाले थे—अर्थात्
धवल वर्ण के थे (अमरमणपवणजङ्घणचवलसिग्घगामीहि) जैसी देवों की, मनकी, वायुकी,
गति होती है उस गति को भी परास्त करनेवाली इनको चपलतामयी शीघ्र गति थी, उस गति से

भूकेली होती वृक्ष—विशेष प्रकारना आणो भूकेली होता धनुष भूकेली होता, भद्रात्र—विशेष
प्रकारनी तलवारो भूकेली होती वरशक्ति—त्रिशूल भूकेली होता कुंत—सादाओ—भूकेली होता,
तोमर—विशेष प्रकारना आणो भूकेली होता सैरुद्धो सामान्य आणो नेमा भूकेली है, अत्र
उर तृष्णीशे ओमा भूकेली होता (कणगरयणचित्त) ओमा ने चित्रो अनेला होता, ते कन्द अने
रत्ननिर्मित डोवाथी अत्यंत रमणीय लागता होता (हलीमुहबलागदंतचंद्रमोत्तियतणसोल्लिय-
कुंदकुड्यवरसिंदुवारकंदलवरफेणणिगरहासकासप्पगासधवलेहि) ओमा ने 'जुत' घोडाओ
नेतरैला होता, ते हलीमुख, बगला, गजदन्त, चन्द्रमा, मौक्तिक, मल्लिका पुष्प, कुन्द पुष्प,
कुटज पुष्प, निर्गुण्डी पुष्प कंदल नामक वृक्षविशेषना पुष्प, सुन्दर वृक्ष समूह हार—मुक्ताहार
अने काश—तृण विशेष ओ सब प्रकार्यो नेवा उज्ज्वलता वाला होता ओटले के धवलव-
र्णवाला होता (अमरमणपवणजङ्घण चवल सिग्घगामीहि) नेवी देवानी, मननी, वायुनी गति
डोय छे, तेमनी गति ने पण परास्त करनारी ओमनी चपलतामयी शीघ्र गति होती, ते

अमरमनः पवनजयिनः अतएव चपलं शीघ्रम् अतिशयशीघ्रं गामिनो गमनशीलाः इति चपलशीघ्रगामिनः. अमरमनः पवनजयिनश्च ते चपलशीघ्रगामिनश्चेति ते तथा तैः पुनश्च कौटिल्यैः 'चउहि चामरा रुणंगविभूसिअंगेहि' चतुर्भिः चतुः संन्यातैः चामरैः तथा कनकैश्च त्रिभूषितमहं येषां ते तथा तैः, अत्र चामरशब्दस्य स्त्रोत्रम् आपेन्नात् 'तुग्गेहि' एतादृशविशेषणविशिष्टैः तुरंगैः अश्वैः युक्तं रथमिति पूर्वमेवोक्तम्. अथ पुनारयं विशिनष्टि 'सच्छत्त' सच्छत्रम् छत्रेण सहितम् 'सज्जयं' सध्वजम् ध्वजैः सन्तितम् 'सघटं' सघण्टम् घण्टाभिः सहितम् 'सपडागं' सपताकम् पताकाभिः सहितम् 'मुकयसंघिकम्म' मुकृत-सन्धिकर्माणम् मुकृतं सुष्ठु निर्मितं सन्धिकर्म सन्धियोजन यत्र स तथा तम् 'सुसमाहिय समरकणगगंभीरघोसं' सुसमाहितसमरकनकगम्भीरघोषम्, तत्र-सुसमाहितः-सुष्ठु यथोचित स्थाननिवेशितो यः समरकणकः-संग्रामवाद्यविशेषः तस्य वीराणां वीररसोत्पादकत्वेन तुल्यो गम्भीरो घोषः गम्भीरात्मकध्वनिर्यस्य स तथा तम् 'वरकुप्परं' वरकूर्परम् वरे कूर्परो कूर्पराकारौ पिञ्जनके इति प्रसिद्धे रथावयवौ यस्य स तथा तम् 'सुचक्कं वरनेमी मंडलं' सुचक्रम् वरनेमीमण्डलम्-प्रधानचक्रधारावृत्तम् 'वरधारातोडं' वरधूस्तुण्ड वरे शोभमाने धूस्तुण्डे धून्वीर्कवरे अवयवविशेषौ यस्य स तथा तम् 'वरवइरवद्धतुवं, तत्र-वर-

वेगपूर्वक इनके चलने का स्वभाव था (चउहि चामरा रुणंगविभूसिअंगेहि) चार चामरों से एव कनकों से इन का अंग विभूषित था, यहाँ चामर शब्द को जो—स्त्रीलिङ्ग में लिखा गया है वह आर्ष होने से लिखा गया है ऐसे विशेषणविशिष्ट घोड़ों से युक्त वह रथ था तथा (सच्छत्तं, सज्जयं, सघटं, सपडागं, मुकयसंघिकम्म, सुसमाहिय समरकणगगंभीरघोसं, वरकुप्परं) यह रथ छत्र सहित था, ध्वजा सहित था, घटाओं से युक्त था, पताकाओं से सहित था, सधियों की इसमें अच्छी तरह से योजना की गई थी जैसा घोष यथोचित स्थानविशेष में नियोजित संग्राम वाद्यविशेष का होता है उसी प्रकार का इसका गम्भीरघोष था इसके कूर्पर दोनों अवयवविशेष—बड़े सुन्दर थे (सुचक्कं वरनेमीमंडलं) सुन्दरचक्रधार वाले इसके सुन्दर दोनों (वरधारातोडं) इसके युग के दोनों कोने बड़े सुन्दर थे (वरवइरवद्धतुवं) इसके दोनों

अतिथी ७ आसवाणी ओमनी टेव हत्ती (चउहि चामरा रुणंगविभूसिअंगेहि) आर अमराथी तेमअ कनकैथी ओमना अ ओ विभूषित होता अही 'चामर' शब्दने के स्त्रीलिङ्ग में प्रयुक्त करने में आवेक है, ते आर्ष होवाथी प्रयुक्त करेक है ओरा विशेषणविशिष्ट घोड़ाओथी ते रथ युक्त होता. तथा (सच्छत्तं सज्जयं सघटं सपडागं मुकयसंघिकम्म सुसमाहिय समरकणग गम्भीरघोसं वरकुप्परं) ओ रथ छत्र सहित होता, ध्वज सहित होता, घंटा-ओथी युक्त होता पताकाओथी सहित होता, ओमा सधियोंनी योजना सरसरीते करने में आवी होती. ओवे घोष यथोचित स्थान-विशेष में नियोजित संग्रामवाद्यविशेषने होथ है, ते ७ प्रमाणने ओने गभीर घोष होता ओना कूर्पर-अने अवयव विशेषों—अतीव सुन्दर होता, (सुचक्कं वरनेमीमंडलं) सुन्दर चक्रयुक्त ओनु नेमी मंडल होता. (वरधारा तोडं) ओना युगला अने धूलाओ अनीव युक्त होता (वरवइरवद्धतुवं) ओना अने तुंग श्रेष्ठ-अ-

वज्रवद्धतुम्बम्, वरवज्रैः-श्रेष्ठहीरकैः चन्द्रं तुम्बे यस्य स तथा तम् 'वरकचणभूसियं वर-
काञ्चनभूपितम् श्रेष्ठमुष्णभूपितम् 'वरायग्यनिम्मियं' वराचार्यः प्रधानशिल्पी तेन
निर्मितः 'वरतुरगरांपउत्तं' वरतुरगसंप्रयुक्तम् वरतुरगैः श्रेष्ठैः संप्रयुक्तः युक्तः स तथा
तम् 'वरसारहिमुसंपगगहियं' वरसारधिमुसंप्रगृहीतम्, वरेण-निपुणेन सारगिना मुसंप्र-
गृहीतः स्वायत्तिकृतो यः स तथा तम् 'वरपुरिसे' इत्यादि तु पूर्वमेव योजितम् वरपु-
रूपं श्रेष्ठपुरुषः सुराजा भरत उक्तं विशिष्ट रथमारूढे इति 'दूरूढे आरूढे' इत्यत्र समा-
नार्थक पदद्वयोपादानं पदसंज्ञाधिपति भरतचक्रो मुखपूर्वकम् रथमारूढ इति ज्ञापनार्थं
विज्ञेयम् उक्तमेवार्थं पुनः रथविषये ग्राह- 'पवररयणपरिमडियं' इत्यादि प्रवररत्नपरिम-
ण्डितम् उत्तमरत्नैः परिशोभितम्-युक्तम् 'कणयखिखिणीजालसोभियं' कनककिङ्किणी-
जालशोभितम् सुवर्णनिर्मितकिङ्किणीममूहभूपितम् 'अउज्जं' अयोध्यम्-अनभिभवनीयम्
परामवरहितं पुनश्च कीदृशम् 'सोयामणि कणगतविषपंकयजासुअणजलणजलियमुअतोड-
रागं' सोदामिनीकनकतप्तपङ्कजजपाकुसुमज्वलनज्वलितधुक्तुण्डरागम्, तत्र सोदामिनी
विद्युत् तप्त यत् कनक सुवर्णम् तच्चानलोत्तीर्णं रक्तवर्णं भवति पङ्कज कमलम्, तच्च सामा-
न्यतो रक्त वर्ण्यते 'जासुअण' चि जपाकुसुमं-रक्तवर्णविशिष्टजपाकुसुमनामकपुष्पविशेषः
'जलणजलिय चि' ज्वलनज्वलितः ज्वलितज्वलनः प्रदीप्ताग्निः अत्र पदव्यत्ययः प्राकृ-

तुंश श्रेष्ठ वज्ररत्न से बद्ध ये (वरकचणभूसियं) यह श्रेष्ठ सुवर्ण से भूषित था (वरायग्यनि-
म्मियं) यह श्रेष्ठ शिल्पी के द्वारा बनाया गया था (वरतुरगसंपउत्तं) श्रेष्ठ घोड़े इसमें जुते
थे (वरसारहिमुसंपगगहियं) श्रेष्ठ निपुण सारथि द्वारा यह चलाया जाता था, ऐसे इन विशेषणों
से विशिष्ट (वरमहारहं) उस श्रेष्ठ महारथ पर (वर पुरिसे) वह सुराजा छलंडके अधिपतिभरत
(दूरूढे आरूढे) बैठा यहां समानार्थक दूरूढ और आरूढ ये जो दो पद प्रयुक्त साथ २ किये
गये हैं सो वे ये प्रकट करते हैं भरत चक्रो उस रथ पर मुख पूर्वक बैठा (पवररयणपरिमडियं)
यह रथ उत्तम रत्नों से शोभित था (कणयखिखिणीजालसोभियं) सुवर्ण की बनी हुई छोटी-२
घंटिकाओं से यह शोभित था (अउज्जं) इसका कोई भी शत्रु परामव नहीं कर सकता था
(सोयामणिकणगतविषपंकयजासुअणजलणजलियमुअतोडरागं) इसकी रक्तता सोदामिनी-

रत्न थी आभूषण होता। (वरकचणभूसियं) ओ रथ श्रेष्ठ सुवर्ण से भूषित होता। (वरायग्यनि-
म्मियं) ओ श्रेष्ठ शिल्पी द्वारा निर्मित होता। (वरतुरगसंपउत्तं) श्रेष्ठ घोड़ाओं के भांजेतरेल
होता। (वरसारहिमुसंपगगहियं) श्रेष्ठ निपुण सारथि द्वारा ते हाकेवाभां आवतो होता ओवा ओ
विशेषणों से विशिष्ट (वरमहारहं) ते श्रेष्ठ महारथ उपर (वरपुरिसे) ते सुराजा छलंडाधिपति
भरत (दूरूढे आरूढे) सवार थे। अही समानार्थक दूरूढ अने आरूढ ओ ओ के पदों साथे-
साथे प्रयुक्त करवाभां आवेल छे, तेथी आम प्रकट थाय छे के भरतचक्रो ते उपर मुखपूर्वक
बैठा। (पवररयणपरिमडियं) ते रथ उत्तमरत्नों से शोभित होता। (कणयखिखिणीजालसोभियं)
सुवर्ण की नानी-नानी घंटिकाओं से सुशोभित होता। (अउज्जं) ओ शत्रुओं से अजेय होता।
(सोयामणिकणगतविषपंकयजासुअणजलणजलिय मुअतोडरागं) ओनी रक्तता सोदामिनी

तत्वात् 'सुअतोडरागं' शुकतुण्डम् शुकमुखम् एतेषां राग इव रागो रक्तता यस्य स तथा तम् 'पुनश्च कीदृशम् 'गुंजद्वबंधुजीवग रत्तहिं गुलग णिगर सिंदूररुइलकुंकुमपारेवय चरण-णयण कोइलदसनावरणरइतातिरेगरत्तासोग कणग केसुय गयताल्लसुरिंदगोवगसमप्पमप्पगासं' गुठजार्दबन्धुजीवकरत्तहिं नुलकनिकर सिन्दूररुचिरकुड्कुमपारावतचरणनयनकोकि-लदशनावरणरतिदातिरेक्ताशोककनककिंशुक गजताल्ल सुरेन्द्रगोपकसमप्रभप्रकाशम्, तत्र गुठजार्दम् रक्तिकार्धरागभागः बन्धुजीवकं द्विप्रहरविकाशिरक्तपुष्पम्, रक्तः संमर्दितो हिं गुलकनिकरः सिंदूरम् प्रसिद्धम्, रुचिरं मनोह्रं चाक्यचिक्यरक्ततायुक्तम् कुड्कुमम् पारावत-चरणः कपोतचरणः, नयनकोकिलः कोकिलनयनद्वयम् अत्र पदव्यत्ययः आर्पत्वात् दशनावरणम् अधरोष्ठः, रतिदो मनोहरः अतिरक्तः अधिकारुणोऽत्यन्तलालिमायुक्तोऽ-शोकः अशोकतरुः, इदृश च तथैव कनकं किंशुकं पलाशपुष्पम् तथा गजताल्ल हस्तिताल्ल सुरेन्द्रगोपको वर्षासु रक्तवर्णः क्षुद्रजन्तुः विशेषः एभिः समा-सदृशी प्रभा-छविः तथा एवंविधः प्रकाशः तेजः समूहो यस्य स तथा तम्, पुनश्च कीदृशम् । 'बिम्बफलसिलप्प-वाल उट्टितसूरसरिसं' बिम्बफलश्लीलप्रवाल यद्वा शिलप्रवालोत्तिष्ठतसूरसदृशम् तत्र बिम्ब-फल-प्रसिद्धम् 'सिलप्पवाल' चि अत्र अश्लील शब्द इव श्रियं लातीति श्लीलम् एवंविधं यत्प्रवालं श्लीलप्रवाल परकर्मितविद्रुमः यद्वाशिलाप्रवालं शिलाशोधितविद्रुमः तथा उत्तिष्ठतसूरः-उद्गच्छतसूर्यः तेषां सदृशो यः स तथा तम्, 'सव्वोउय सुरहिं कुसुमआसत्त-मल्लदामं' सर्वर्तुकसुरभिकुसुमासक्तमाल्यदामानम्, तत्र सर्वर्तुकानि-षट् ऋतुमवानि यानि

विजलो, तत सुवर्ण-अग्नि से उसी समय निकले हुए सुवर्ण पङ्कज-रक्तकमल, जपाकुसुम, प्रदीप्त अग्नि और शुककी चोंच इनकी रक्तता जैसी थी (गुजद्व बंधुजीवग, रत्तहिं गुलग णिगर, सिंदूर रुइर कुकुम, पारेवयचरणयणकोइलदसनावरणरइतातिरेगरत्तासोगकणगकेसुय-गयताल्लसुरिंदगोवगसमप्पमप्पगासं) इसको छवि और तेज प्रकाश रक्तीके अर्धभाग बन्धु-जीवक-द्विप्रहरप्रकाशीरक्त पुष्प, रत्तहिं गुलक, निकर, सिन्दूर, रुचिरकुंकुम, पारावतचरण, कोकि-लनेत्र, दशना वरण-अधरोष्ठ, रतिद मनोहर, एवं अतिरिक्त अशोक वृक्ष, कनक किंशुक पुष्प, गजताल्ल, एवं सुरेन्द्रगोपक -जुगनु, इन सबकी छवि और तेजः प्रकाश के जैसा था (बिम्ब फल-मिलप्पवालउट्टितसूरसरिस सव्वोउयसुरहिंकुसुमआसत्तमल्लदामं, उसिअसेयज्जयं) यह रथ

विष्णुत्, तमसुवथु'-अग्निमाथी तस्त य ण्डार काढेला सुवथु', प'कञ-रक्त कमल, जपाकु-सुम प्रदीप्त अग्नि अने पोपटनी यंयु जेनी इती (गुजद्व बन्धुजीवग, रत्तहिं गुलग णिगर सिंदूररुइर कुकुम परिवयचरणयण कोइलदसनावरणरइतातिरेगरत्तासोगकणग केसु-यगयताल्लसुरिंदगोवगसमप्पमप्पगासं) जेनी छवि अने जेपु तेज प्रकाश रतीने। अध-काग, बन्धु लवक-द्वि प्रहर प्रकाशी रक्त पुष्प, हिं गुलक, निकर, सिद्धर, रुचिर कंक, पारावत चरण, कोकिल नेत्र, दशनावरण-अधरोष्ठ, रतिद मनोहर, अतिरक्त अशोक वृक्ष, कनक किंशुक पुष्प, गजताल्ल तेमज सुरेन्द्र गोपक ओटवे के अधीत जे सव्व जेपु इत्तुं. (बिम्बफलसिलप्पवालउट्टितसूरसरिसं सव्वोउयसुरहिंकुसुम आसत्तमल्लदामं उसि-

सुरभिणि कुपुमानि अग्रयिन ममुान्यपुण्याणि मालपदानानि-ग्रथिनपुण्याणि यत्र स
तथा तम् 'ऊमियसेयज्जय' उच्छिन्नश्चेतध्वजम् उच्छिन्नः ऊर्ध्वीकृतश्चेत-वज्रो यत्र स
तथा तम् 'महामेहरनिय-गभीहणिद्धघोस' महामेघरसितगम्भीरस्निग्धघोषम्, महामेघस्य
यद्रसितं-गर्जितं तद्वद् गम्भीरः स्निग्धः स्नेहसयुक्तः घोषो यस्य स तथा तम्
'सत्तुहिययकंपणं' शत्रुहृदयकम्पनम्, शत्रुहृदयकम्पनकम् 'पभाष्य' प्रभाते च अष्टम-
तपःपारणकं दिवसे प्रातः काले आमन्नपारितपोपध्वजतः सन् नरपतिः अश्वत्थं दुरूढे
इत्यग्रे सम्बन्धः कीदृशं रथम् इत्याह 'सस्मिरीय' सश्रीकं शोभायुक्तम् 'णामेणं पुहवि-
विजयलभतिविस्तृतं' नाम्ना पृथ्वीविजयलभमिति विश्रुतं प्रसिद्धम्, रथेऽस्मिन् समारूढः
सन् पुरुषो भूविजयं लभते इति सान्त्वयेकम् 'अहय' अहतम् सर्वावयवयुक्तम् 'चाउगघटं
चातुर्वर्ण्यं चतस्रो घण्टा यस्य स तथा तम् 'आसरहं' अश्वरथम्, कीदृशं राजेन्याह-
'पोसहिण' पौषधिकः आसन्नपारितपोपध्वजतः पुनश्च कीदृशः 'लागविस्तृतजसो' लोक-
विश्रुतयशाः लोकविख्यातकीर्तिः 'णरवई' नरपतिः चक्री भरतः सर्वविशेषणप्रतिष्ठमश्वरथं
दुरूढे आरूढ इति । अथ रथारोहणान्तरं भरतः किं कृतवान् इत्याह-'तएणं से' इत्यादि
'तएणं से भरहे राया चाउगघटं आसरहं दुरूढे समाणे सेसं तहेव' ततः खलु स भरतो राजा

विषफल कुंदरीफल, शिलाप्रवाल-परिकर्मितविद्रुम, यद्वा शिलाशोषित विद्रुम, एवं उगता हुआ सूर्य
इनका जैसा रंग होता है वैसे ही रंग वाला था, समस्त शत्रुओं के पुष्पो के भाग्य इस
पर पड़ी हुई थी, इसके ऊपर बहुत उन्नतश्चेतध्वजा फहरा रही थी (महामेहरसिय गम्भीर-
गिद्धघोस) महामेघ की गर्जना के जैसा इसका गम्भीर स्निग्ध घोष था, (सत्तुहिययकं-
पणं) शत्रुजनके हृदय को यह कपकपी छुड़ने वाला था (पभाष्य अ सस्मिरीय णामेणं
पुहविविजयलभति विस्तृतं लागविस्तृतजसोऽहयचाउगघटं आसरह पोसहिण णरवई दुरूढे,
तएणं से भरहे राया चाउगघटं आसरह दुरूढे सेस तहेव दाङ्गिणमुहेण वरदामतित्येणं
लवणसमुहं ओगाहइ) प्रातः काल जबकि अष्टम (तेला) तपस्या का पारणा था और पौषधका
पारणा किये हुए बहुत समय नहीं हुआ था ऐसा वह नरपति शोभायुक्त तथा पृथिवी—
विजयलाम इम नाम से प्रसिद्ध एवं सर्वावयवयुक्त ऐसे उस चार घंटाओं से सहित अश्वरथ पर

असेयज्जय) ओ रथ णि अक्षण, कुंदरीक्षल, शिला प्रवाल-परिकर्मित विद्रुम, अथवा शिला-
शोषित विद्रुम, तेभञ्ज उदित सूर्य जेवा र गवाणो हतो. समस्त शत्रुओंना पुष्पोंनी भागाओ।
ओ रथ ऊपर पडेली हती ओ रथ ऊपर ओकहम उन्नत ओक श्वेत ध्वजा फरकी रही हती
(महामेहरसियगम्भीरगिद्धघोस) महामेघनी गर्जना जेवो ओनो स्निग्ध घोष हतो।
(सत्तुहिययकंपण) शत्रुओंना हृदयोंने ते क पावनार हने। (पभाष्य अ सस्मिरीयं णामेणं
पुहविविजयलभति विस्तृतं लागविस्तृतजसोऽहयचाउगघटं आसरहं पोसहिण णरवई
दुरूढे तएणं से भरहे राया चाउगघटं आसरहं दुरूढे सेस तहेव दाङ्गिणामुहेणं वरदामति-
त्येणं लवणसमुहं ओगाहइ) प्रातः समये न्यारे अष्टम तपस्यानी पारणा हती अने पौषधनी
पारणाने पणु वधारे समय थये न हतो, जेवा समये शोभायुक्त ते नरपति पृथिवी विजय

चातुर्घण्टम् अश्वरथम् आरूढः सन् शेषं तथैवेति वचनात् 'हयगयरहपवरजोहकलियाप सद्धि संपरिवुडे महया भडचडगरपहगरवंदपरिक्खित्ते चक्ररयणदेसियमग्गे अणेग रायनर-सहस्साणुयायमग्गे महया उक्किट्ठ सीहणायबोलकलकलवेणं पक्खुभिय महासमुद्रव-भूयं पिव करेमाणे' इत्यन्तं ग्राह्यम् हयगजरथप्रवरयोधकलितया सार्द्धं सपरिवृतः महाविस्तारवत्समूहवृन्दपरिक्षिप्तः चक्ररत्नादेशितमार्गः अनेकराजवरसङ्क्रान्ताणुयात-मार्गः महता उत्कृष्ट सिहनाद बोलकलकलरवेण प्रक्षुभितमहासमुद्ररवभूतमिव कुर्वन् कुर्वन् 'दाहिणाभिमुहे वरदामतित्थेणं लवणसमुद्र ओगाहइ' दाक्षिणात्यभिमुखो वरदामतीर्णेण-व-रदामनाम्नाऽवतरणमार्गेण लवणसमुद्रमवगाहने प्रविशति कियद्दूर लवणसमुद्रमवगाहते इत्याह- 'जाव से रहवरस्स कुप्परा उल्ला' यावत् तस्य रथवरस्य कूर्परारो-कूर्पराकारो रथा-वयवौ आर्द्रौ स्याताम् आर्द्राभूतौ भवेताम् 'जाव पीइदाणं से' यावत् प्रीतिदानं तस्य वरदामतीर्थाधिपदेवस्य अत्रापि यावत् पदात् मागधदेवसाधनाधिकारोक्त प्रीतिदानपर्य-न्तं स्रजं ग्राह्यम् विलोकनीय च अत्रैव तृतीय वक्षस्कारे ६-७ सूत्रे

चढा "लोयविस्सुयजसो" यह भरतचकी का विशेषण है और इसका अर्थ लोक में जिसका यश विख्यात है ऐसा है "पोसहिण" यह भी भरतचकी का विशेषण है और इसका अर्थ पौष-घनत की पारणा किये जिसे विशेष समय नहीं हुआ है ऐसा है ।

"तएण से भरहे राया" इत्यादि- जब भरत महाराजा अश्वरथ पर बैठ चुके-तब वे "हयगयरहपवरजोहकलियाप सद्धि संपरिवुडे महया भडचडगर पहगरवंदपरिक्खित्ते चक्र-रयणदेसियमग्गे, अणेगराजन्यवर सहस्साणुयायमग्गे, महया, उक्किट्ठ सीहणाय बोलकलकलरवेणं पक्खुभिय महासमुद्रवभूयपिव करेमाणे२" इस पूर्वकथित पाठ के अनुसार दक्षिणदिशा की ओर मुँह किये हुए वरदाम नाम के अवतरण मार्ग से होकर लवण समुद्र में उतरे (जाव से रह वरस्स कुप्परा उल्ला) यावत् उनके उस रथ के कूर्पराकारवाले रथावयव ही गींके हो पाये इतनी दूर तक ही वे उस लवण समुद्र में गये (जाव पीइदाणं से) यावत् वहाँ पर यावत्पद से मागध

बाबा को नामथी प्रसिद्ध तेमन सर्वायय युक्त जेवा ते थार घ टाजोथी भंजित रथ उपर सवार थे। "लोयविस्सुयजसो" को भरतचकी भाटे प्रयुक्त विशेषण है. अने जेने। अर्थ है लोकप्रियात. "पोसहिण" को पक्ष भरतचकी भाटे प्रयुक्त विशेषण है. अने जे विशेषण शब्दने। अर्थ है-जेने पौषघ घनतनी पारण पछी अधिक समय थये। नथी 'तएण से भरहे राया' इत्यादि, ज्यारे ते भरत राज अधरथ उपर सवार थई गये। त्यारे तजो। (हयगयरहपवरजोहकलियाप सद्धि संपरिवुडे महया भडचडगरपहगरवदपरिक्खित्ते चक्र-रयणदेसियमग्गे अणेगराजन्यवरसहस्साणुयायमग्गे महया उक्किट्ठ सीहणाय बोलक-लकलरवेण पक्खु भेयमडासमुद्रवभूय पिव करेमाणे) को पूर्व कथित पाठ सुत्रम दक्षिण दिशा तरई सुत्र करीने वरदाम नामक अवतरण मार्गथी पसार थईने लवण समुद्रमां प्रविष्ट थया जाव से रहवरस्स कुप्परा उल्ला'यावत् तेमना रथमा इपराकार वाणा रथावयव:जो बीना थया जेटल हर सुधीलवण सुमद्रमा गया (जाव पीइदाणं से) यावत् त्या तेमजे

‘પીડદાનં મે’ પ્રીતિદાનં તત્ર તાર્થગજદેવસ્ય મ ભગ્નઃ સ્વીકરોતીતિભાવઃ તતઃ
સ ચક્રો ભરતઃ તં દેવ મત્કાર્યયતિ સમ્માનયતિ પ્રતિવિપર્જયતિ ચ મક્તિપૂર્વકં વરદામતી-
ર્થાધિપદેવઃ ભરતાય કિં કિમર્પયતિ ઇત્યાહ ‘જનર ચૂડામણિં ય દિવ્વં ડરત્થગેવિજ્જગ
સોણિઅસુત્તગં કઢગાણિ ય તુડિયાણિ ય’ માગધતીર્થાધિપ દેવકુમારપેક્ષયા નવગ્મ
અય વિશેષો ચૂડામણિં ચ દિવ્ય ગનાદર સર્વવિપાપહ સર્વવિપદરણકરમ્ શિરોભૂષણવિશેષમ્
સુકુટ તથા ડગરથ વક્ત્રસ્થલ તત્ર ભૂષણવિશેષમ્ ગ્રંથેયકં ગ્રીવાભરણં શ્રોણિસૂત્રકં કટિમે-
લ્લામ્ કંદોરા ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધમ્ કટકાનિ ચ હસ્તાભરણાનિ ત્રુટિકાનિ ચ વાહાભર-
ણાનિ ચ કિચદ્દૂરપર્યન્તં વક્ત્રવ્યામત્યાહ-‘જાવ દાહિણિલ્લે અંતવાલે’ ઇતિ યાવદાક્ષિણા-
ત્યોડન્તપાલ્લ ઇતિ અત્ર પ્રીતિદાનં દદાતિ ગજા ચ પ્રીતિદાનં સ્વીકરોતિ વાક્યપ્રાપ્તૌ
પદૌકમરતકૃતતત્સ્વીકરણતીર્થાધિપદેવસન્માનેન વિસર્જનરથપરાવૃતિ સ્કન્ધાવારપ્રત્યા-
ગમન મગ્ગજનગૃહગમનસ્નાનભોજનકર્ણશ્રેણિપ્રશ્રેણિ શબ્દનાદિ પ્રતિપાદકસૂત્રં વક્ત્રવ્યમ્,
માગધદેવસાધનાધિકારોક્તં સર્વં નેયમિતિભાવઃ કિયત્પર્યન્તમિત્યાહ-અત્ર યાવત્પદાત્ અશ્વ-

દેવ કે બધિકાર મેં કહા ગયા પ્રીતિદાન તક કા સૂત્રપાઠ ગૃહીત હુઆ હૈ । હસે યહો પર તૃતીય
વક્ત્રસ્કાર કે ૬-૭-વે સૂત્ર મેં દેલ્લેના યાહિયે । હસ પ્રીતિદાન કો સ્વીકાર કરને કે બાદ
ભરત ચક્રોને હસ દેવ કા સત્કાર કિયા સન્માન કિયા-ઑર ફિર હસે વિસર્જિત કર દિયા મક્તિ
પૂર્વક વરદામતીર્થાધિપ દેવ ને ભરત ચક્રો કે લિયે ક્યાર દિયા-હસે યો જાનના યાહિયે-
(જનરં ચૂડામણિં ય દિવ્વં ડરત્થગેવિજ્જગ સોણિઅસુત્તગ કઢગાણિ ય તુડિયાણિ ય) માગધ-
તીર્થાધિપ દેવકુમાર કો અપેક્ષા વરદામતીર્થાધિપ દેવને ચૂડામણિ, જો કિ દિવ્ય થા સર્વ પ્રકાર
કે વિષો કા હરને વાલા થા । હેસા શિરોભૂષણ દિયા । વક્ત્રસ્થલ કા ભૂષણદિયા, ગ્રંથેયક
ગ્રીવા કા આભરણ દિયા, શ્રેણિસૂત્રક-કટિમેલ્લા દી । કટક દિયે ઑર વાહુ ને આભરણદિયે ।
ઑર ફિર હસને કહા કિ મેં આપકા યાવત્ દાક્ષિણાત્ય ડદન્ત પાલ્લ યહાં વહ પ્રીતિદાન દેતા
હૈ । રાજા હસ પ્રીતિદાન કો સ્વીકાર કર હેતા હૈ તો હન સવ કે સમ્બન્ધ મેં આગત સૂત્રપાઠ

વરદામ તીર્થાધિપ દેવનું પ્રીતિપાદન સ્વીકાર કરેલ છે અહીં યાવત્ પદ્ધતી માગધ દેવના
અધિકારમાં વર્ણિત પ્રીતિદાન સુધીનો સૂત્રપાઠ સંગૃહીત થયેલો છે એ વિષયને લગતું વશું ન
આ અર્થના તૃતીય વક્ત્રસ્કારના સૂત્ર ૬ અને ૭ માંથી જાણી લેવું જોઈએ એ પ્રીતિદાનનો
સ્વીકાર કર્યા પછી ભરતચક્રોએ તે દેવતાને સત્કૃત તેમજ સન્માનિત કરીને પછી તેમનું વિસર્જન
કરી દીધું. વરદામ તીર્થાધિપ દેવે ભરતચક્રો માટે ભક્તિપૂર્વક શુ-શુ આપ્યું, એ વિષે સ્પષ્ટતા
કરતાં સૂત્રકાર કહે છે-(જનરં ચૂડામણિય દિવ્વં ડરત્થગેવિજ્જગં સોણિઅસુત્તગં કઢગાણિ ય
તુડિયાણિ ય) માગધતીર્થાધિપ દેવકુમારની અપેક્ષા વરદામતીર્થાધિપ દેવે ચૂડામણિ-કે જે દિવ્ય
તેમજ સર્વપ્રકારના વિષોને હરનાર હોના, એવું શિરોભૂષણ આપ્યું તે દેવે વક્ત્રસ્થળનું આભૂ-
ષણ આપ્યું. ગ્રંથેયક ગ્રીવાનું આભરણ આપ્યું શ્રેણિસૂત્રક-કટિમેલ્લા આપી. કટકો આપ્યા
અને વાહુના આભરણો આપ્યા અને ત્યાર બાદ તેણે કહ્યું કે હું આપશ્રીનો યાવત્ દાક્ષિ-
ણાત્ય ઉદન્તપાલ્લ છું અહીં તે પ્રીતિદાન આપે છે, રાજા તે પ્રીતિદાનનો સ્વીકાર કરી લે છે

નિગ્રહરથસ્થાપનધનુઃપરામર્શવાગોત્કેષે કોપોત્પાદકોપાપનયનનિજર્દિસાર પ્રીતિદાન
 સ્ત્રાણિ માગતીર્થદેવસ્ત્રાધિકારવદ્ વિજ્ઞેયાનિ નવર “જાવ અદ્વાદિય મહામહિમં કરેતિ”
 અષ્ટાદશ શ્રેણિપ્રશ્રેણયોઽષ્ટાદિકા મહામહિમાં કુર્વન્તિ ‘કરિતા’ કૃત્વા વરદામતીર્થાધિપટેસ્ય
 વિજયોપલક્ષિકામષ્ટાદિકાં મહામહિમામ્-મહાન્ મહિમા યસ્યા મા તથા તાં કુર્વન્તિ
 વિધાસ્યન્તિ વિધાય ‘પ્રયમાણસિયં પચ્ચપ્પિણંતિ’ एतां भरतादिष्टामाजतिकां स्वस्वामिभ्यो
 भरतेभ्यः प्रत्यर्पयन्ति परावर्तयन्ति तदनु अथ प्रभास तीर्थाधिपसाधनायो विजयाण-
 पक्रमते-‘तएण’ इत्यादि ‘तएणं’ से दिव्वे चक्करयणे वरदामतित्थकुमारस्स देवस्स अद्वा-
 हियाए महामहिमाए निव्वत्ताए समाणीए आउहवरसालाको पडिनिक्खमइ’ ततः खलु
 तद्विष्यं चक्ररत्न वरदामतीर्थकुमारस्य देवस्य अष्टादिकायां महामहिमाया निवृत्तायां सत्याम्

માગધતીર્થ કુમાર કે પ્રકરણ મેં જૈસા કહા ગયા હૈ વૈસા હી યહા પર વહ સવ કથન સમ-
 શ્લેના चाहिये । अर्थात् वरदामतीर्थ कुमादेव भरत चक्रो के लिये शिगेमूषणादिक भेट में देता
 है । वह उसे स्वीकार कर लेता है । भरत चक्रो उमका सम्मानदिकर विसर्जन कर देता है ।
 फिर वह वहां से अपने रथ को छोटा लेता है और अपने स्कन्धावार में आ जाता है । वहां
 आकर वह मज्जन गृह में चला जाता है वहां स्नान करके भोजन शाला में आकर वह भोजन
 से निवृत्त होकर के श्रेणिप्रश्रेणि जनों को बुलाता है इत्यादि सब कथन यहां मागधतीर्थकुमार
 देव के प्रकरणानुसार हो है । (जाव अद्वादियं महामहिमं करेति) यावत् वे सब श्रेणिप्रश्रेणिजन
 वरदामतीर्थाधि देव के विजयोपलक्ष्य में आठदिन का महोत्सव करते है (करेत्ता) और यह
 सब करके फिर वे नरेश भरत चक्रो को (प्रयमाणसिथ पचचप्पिणंति) इस स्त्री-कार्य हो जाने की
 खबर दे देते हैं (तएणं से दिव्वे चक्करयणे वरदामतित्थकुमारस्स देवस्स अद्वाहियाए महा-
 महिमाए निवत्ताए समाणीए आउहवरसालाको पडिनिक्खमइ) इस तरह वरदामतीर्था-
 धिदेव कુमार के विजयोपलक्ष्य में किया गया वह ८ दिन का महामहोत्सव जब निष्पन्न

તો આ સંબંધમાં આગત સૂત્રપાઠ માગધતીર્થ કુમારના પ્રકરણમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં
 આવેલ છે એજરીતે અહીં પણ તે સર્વકથન બાળી લેવું બાકી છે. એટલે કે વરદામતીર્થ કુમાર દેવ
 ભરતચક્રી માટે શિરોભૂષણાદિક ઉપહારના રૂપમાં આપે છે તે ઉપહાર ભરતચક્રી સ્વીકાર કરી
 લે છે ભરતચક્રી તે દેવદુત્ સન્માન આદિ કરીને વિસર્જન કરી દે છે ત્યાર બાદ તે ત્યાંથી
 પોતાનો રથ પાછો વાળે છે અને પોતાના સ્કન્ધાવારમાં આવી બાથ છે. ત્યાં આવીને તે
 મજ્જિમાળામાં જનો રહે છે ત્યાં સ્નાન કરીને ભોજનશાળામાં આવીને તે ભોજનથી
 નિવૃત્ત થઈને શ્રેણિ-પ્રશ્રેણિ જનોને બોલાવે છે ઇત્યાદિ સર્વકથન અહીં માગધતીર્થકુમાર
 દેવ ના પ્રકરણ સુખજ છે. (જાવ અદ્વાદિયં મહામહિમં કરેતિ) યાવત તે સર્વ શ્રેણિ-
 પ્રશ્રેણિ જનો વરદામતીર્થાધિપ દેવના વિજયોપલક્ષ્યમાં આઠ દિવસનો મહોત્સવ કરે છે
 (કરિતા) અને મહોત્સવનું આયોજન સંપૂર્ણ કરીને પછી તેઓ પોતાના નરેશ ભરતચક્રીને
 (પ્રયમાણસિય પચ્ચપ્પિણતિ) એ બાબતની બાથ કરે છે. (તપ્પણં સે દિવ્વે ચક્કરયણે
 વરદામતિત્થકુમારસ્સ દેવસ્સ અદ્વાહિયાપ મહામહિમાપ નિવત્તાપ સમાણીપ આઉહવરસા-

આયુષગૃહશાલાતઃ પ્રતિનિષ્ક્રામતિ 'પટ્ટિણિસ્વમિત્તા' પ્રતિનિષ્ક્રમ્ય 'અંતલિક્ષપટ્ટિવળ્ણે જાવ પુરંતે ચેવ અંવરતલ્લ ઉત્તરપચ્ચત્થિમં દિસિં પમાસતિત્થામિમુદ્દે પયાપ્યાયિ જોત્થા' અંતરિક્ષપ્રતિપન્ને ગાનગતં યાવન્ દિવ્યત્રુટિન વાઘવિશેષગન્ધમન્નિનાદેન અમ્બરતલ્લ પૂર્યદિવ ઉત્તરપાશ્ચાત્યામ્ ઉત્તરપશ્ચિમાં વાયવી દિશં પ્રમાસતીર્થામિમુખં પ્રયાત ચાપ્યભવત્, અત્ર શુદ્ધદક્ષિણવર્ત્તિનો વરદામતીર્થતઃ શુદ્ધપશ્ચિમવર્ત્તિનિ પ્રમાસે ગમનાય દૃત્યમેવ પથઃ સરલત્વાત્, અન્યથા વરદામતઃ પશ્ચિમાગમને અનુવારિધિવેલ્લં ગમનેન પ્રમાસતીર્થ-પ્રાપ્તિઃ દૂરેણ સ્યાત્ इति, પ્રમાસનામ તીર્થે યત્ર સિંધુનદી સમુદ્રં પ્રવિશતિ. 'તएण से भरहे राया तं दिव्वं चक्ररयणं जाव उत्तरपच्चत्थिमं दिसिं तहेव जाव पच्चत्थिमदिसा-मिमुहे पमासतित्थेणं लवणसमुदं ओगाहेइ' ततः खलु स भगतो राजा तद्विष्य चक्ररत्नं यावदुत्तरपाश्चात्याम् उत्तरपश्चिमां वायवीं दिशं प्रमासतीर्थाभिमुखं प्रयात प्रयाणं कुर्वन्तं पश्यतीति यावत्पदाद् बोध्यम् यत्र यवत्पदात् 'पासड' इत्यारभ्य पूर्ववत्सर्वं ग्राह्यम्

હો ચુકતા હૈ-તબ વહ દિવ્ય ચક્રરત્ન આયુષગૃહ શાલા સે બાહર નિકલતા હૈ । (પટ્ટિણિક્ષમિત્તા અંતલિક્ષપટ્ટિવળ્ણે જાવ પુરંતે ચેવ અંવરતલ્લ ઉત્તર પચ્ચત્થિમ દિસિં પમાસતિત્થામિમુદ્દે પયાપ્યાયિ જોત્થા) વહાં સે બાહર નિકલ કર વહ આકાશ તલ મેં યાવત્ રહતા હુઆ હી દિવ્ય ત્રુટિત વાઘવિશેષ કે શબ્દ સન્નિનાદ સે અમ્બર તલ્લ કો ભરતાર સા ઉત્તર પાશ્ચાત્યદિશા કી બોર અર્થાત્ વાયવ્યદિશા મેં રહે હુપ પ્રમાસતીર્થ કી બોર ચલને લગતા હૈ । ક્યોંકિ વહાં સે યહાં બાનેકા યહી સીધા સરલ રાસ્તા હૈ । અન્યથા વરદામતીર્થ સે પશ્ચિમાગમન મેં યદિ સમુદ્ર કી વેલા સે હોકર પ્રમાસતીર્થ મેં જાયા જાવે તો ઇસસે પ્રમાસતીર્થ વહુત દૂર પડ જાતા હૈ । યહ પ્રમાસતીર્થ જહાં સિન્ધુ નદી સમુદ્ર મેં પ્રવેશ કરતી હૈ વહીં પર હૈ । (તएण से भरहे राया तं दिव्वं चक्ररयणं जाव उत्तरपच्चत्थिमं दिसिं तहेव जाव पच्चत्थिमदिसामिमुहे पमासतित्थेण लवणसमुदं ओगाहेइ) ઇસકે બાદ વહ ભરતચક્રી જબ અપને દિવ્ય ચક્રરત્ન કો ઉત્તર પાશ્ચાત્ય-

લાઓ પટ્ટિણિક્ષ હ) આ પ્રમાણે વરદામ તીર્થાધિપતિ દેવ કુમારના વિજયોપલક્ષ્યમાં પ્રારંભ કરવામાં આવેલ તે આઠ દિવસનો મહોત્સવ સમાપ્ત થયો ત્યારે તે દિવ્ય ચક્રરત્ન આયુષગૃહશાળામાંથી બહાર નીકળે છે (પટ્ટિણિક્ષમિત્તા અંતલિક્ષપટ્ટિવળ્ણે જાવ પુરંતે ચેવ અંવરતલ્લ ઉત્તરપચ્ચત્થિમં દિસિં પમાસતિત્થામિમુદ્દે પયાપ્યાયિ જોત્થા) ત્યાંથી બહાર નીકળીને તે આકાશતલમાં યાવત્ સ્થિત રહીને જ દિવ્ય ત્રુટિત વાઘવિશેષના શબ્દ સન્નિનાદથી અમ્બર તલને સમ્પૂર્ણ કરતું ઉત્તર પાશ્ચાત્યદિશા તરફ એટલે કે વાયવ્ય દિશા તરફ આવેલા પ્રમાસતીર્થ તરફ ચાલવા લાગે છે. કેમકે અહીંથી ત્યા પહોંચવાનો સીધો-સરલ રસ્તો જોઈ છે જો વરદામતીર્થથી પશ્ચિમાગમનમાં સમુદ્ર-વેલા ઉપર થઈને પ્રમાસતીર્થ તરફ પ્રયાણ કરવામાં આવે તો એથી પ્રમાસતીર્થ પહોંચી દૂર થઈ પડે છે આ પ્રમાસતીર્થ જ્યાં સિન્ધુ નદી સમુદ્રમાં પ્રવેશે છે ત્યાં જ છે (તएण से भरहे राया तं दिव्वं चक्ररयणं जाव उत्तरपच्चत्थिमं दिसिं तहेव जाव पच्चत्थिमदिसाમिमुहे पमासतित्थेणं लवणसमुदं ओगाहेइ) ત્યાર બાદ તે ભરતચક્રી જ્યારે પોતાના દિવ્ય ચક્રરત્નને ઉત્તર પાશ્ચાત્યદિશા-

તથૈવ પૂર્વોક્તાનુસારેણૈવ યાવત્ પશ્ચિમદિશાભિમુખં પ્રભાસતીર્થેણ લવણસમુદ્રમવગાહતે—
 પ્રવિશતિ 'ઓગાહિત્તા' અવગાહ્ય ક્રિયત્પર્યન્તમવગાહતે इत्याह 'जाव से रहवरस्स कुप्परा
 उल्ला' यावत्तस्य रथवरस्य कूर्परौ कूर्पराकाररथावयवविशेषौ आर्द्रौ स्याताम् जातौ क्रियत्
 पर्यन्तं वक्तव्यमित्याह 'जाव पीइदाणं' प्रीतिदानपर्यन्तं मागधदेवसाधनाधिकारोक्तं सूत्रं
 ग्राह्यम् 'से' प्रभासतीर्थाधिपदेवस्य प्रीतिदानं चक्री भरतः स्वीकरोतीतिभावः पूर्ववत् सर्वं
 ग्राह्यम् परन्तु प्रीतिदानम् 'णवरं वरदामतीर्थाधिपदेवापेक्षया अयं विशेषः तमेव दर्शयति—
 'मालं मउडिं मुत्ताजालं हेमजालं कडगाणिय तुडियाणि आभरणाणिय सरं च णामा-
 हयंकं पभासतित्थोदगं च गिण्हइ' तत्र 'मालं' मालां—रत्नमालाम् 'मउडिं' मुकुटम्
 'मुत्ताजालं' मुक्ताजालं दिव्यमौक्तिकम् 'हेमजालं' कनकराशिम्, कटकानि च हस्ताभरणानि,
 त्रुटिकानि च—बाह्याभरणानि नामाहताङ्गं शरं च प्रभासतीर्थोदकं च गृह्णाति 'गिण्हित्ता'
 गृहीत्वा 'जाव पच्चत्थिमेणं पभासतित्थमेराए' यावत् पाश्चात्ये पश्चिमदिग्भागे प्रभास-

दिशा—वायवीविदिशा की ओर प्रभासतीर्थ की तरफ जाता हुआ देखता है—तो वह पहिले जैसा
 कहा जा चुका है उसी तरह से सब कार्य करता है और पश्चिमदिशाकी ओर सन्मुख होकर
 वह प्रभासतीर्थ से लवण समुद्र में प्रवेश करता है । (ओगाहिता जाव से रहवरस्स कुप्परा
 उल्ला) वहां वह इतनी ही दूर जाता है कि जिससे उसके रथ के कूर्पराकार वाले अवयवही
 गीले हो पाते हैं । (जाव पीइदाणं से णवर मालं मउडिं मुत्ताजालं हेमजालं कडगाणि अ तुडि-
 आणिअ आभरणाणि अ सरंच णामाहयंकं पभासतित्थोदगंच गिण्हइ) वहां पहुँच कर वह अपने
 बोझो को ठहरा लेता है और रथ को खड़ा कर लेता है रथ के खड़ा होते ही वह धनुष को
 हाथ में लेकर उस पर बाण का आरोपण करता है । और फिर उसे छोड़ता है वह बाण
 प्रभासतीर्थाधिप देव के भुवन में जाकर पड़ता है । प्रभासतीर्थाधिप देव कुमार को भवन में
 खड़े हुए बाण को देख कर क्रोध जगता है । जब उसका क्रोध शान्त हो जाता है तब वह अपनी
 ऋद्धि के अनुसार भरत चक्रो के पास आकर उनको शरण स्वीकार करलेता है और इस उप-

વાયવી વિદિશા તરફ ઐટલે કે પ્રભાસતીર્થ તરફ પ્રમાણ કરતુ થુવે છે ત્યારે પહેલાં કહ્યું
 છે તે પ્રમાણે જ તે સર્વકાર્ય સમ્પન્ન કરે છે અને પશ્ચિમ દિશા તરફ સન્મુખ થઈને તે
 પ્રભાસતીર્થથી લવણ સમુદ્રમાં પ્રવેશ કરે છે (ઓગાહિત્તા જાવ સે રહવરસ્સ કુપ્પરાહલ્લા)
 ત્યાં તે ઐટલે દૂર સુધી ગમન કરે છે કે બેથી તેના રથના કૂર્પરાકારવાળા અવયવો જ ભીના
 થઈ શકે છે (જાવ પીઇદાણં સે ણવરં માલં મઝહિ મુત્તાજાલં હેમજાલં કઢગાણિઅ
 અતુહિઆણિઅ આમરણાણિ અ સરંચ ણામાહયંકં પમાસતિત્થોદગં ચ ગિણ્હઇ) ત્યાં પહેલો-
 ગીને તે પોતાના લોહાઓને થોભાવે કે અને રથને ઊભો રાખે. રથ ઊભો રાખીને તરત
 જ ને પોતાના હાથમાં ધનુષ લે છે અને ને ધનુષ ઉપર બાણ ન આરોધી કરે છે અને
 ત્યાર બાદ બાણ લક્ષ્ય તરફ છોડે છે તે બાણ પ્રભાસતીર્થાધિપદેવકુમારના ભવનમાં પડે છે.
 પોતાના ભવનમાં પડેલા બાણને જોઈને તે ક્રોધિત થઈ જાય છે જ્યારે તેનો ક્રોધ શાંત
 થઈ જાય છે ત્યારે તે પોતાની ઋદ્ધિ સુબળ ભરતચક્રીની પાસે આવીને તેમનું શરણ સ્વીકારે

તીર્થમર્યાદયા 'અહ્ણં દેવાણુપ્પિયાણં વિસયવાસી જાવ પચ્ચત્થિમિલ્લે અંતવાલે' અહં
 સ્વલ્લ દેવાણુપ્રિયાણાં પાશ્વાત્યોઽન્તપાલઃ 'સેસં તદેવ જાવ અદ્વાહિયા નિવ્વત્તા શેપમ્ ઉક્તા-
 તિરિત્તં પ્રીતિદાનોપહ્વીકન સ્વીકરણમુરસન્માનન વિસર્જનાદિ તથેવ માગધતીર્થાધિપમુરા-
 ધિકાર ઇવ વક્તવ્ય યાવત્ અદ્વાહિકા નિવૃત્તા ॥૨૦॥

અથ સિન્ધુદેવી સાધનાધિકારમાહ—'તણં સે' ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્— તણં સે દિવ્વે ચક્કરયણે પમાસતિત્થકુમારસ્સ દેવસ્સ
 અદ્વાહિયાએ મહામહિમાએ ણિવ્વત્તાએ સમાણીએ આહધસાલાઓ પ-
 ઢિણિક્સમહ, પઢિણિક્સમિત્તા જાવ પૂરંતે ચેવ અંવસ્તલં સિંધુએ મહા-
 ણઈએ દાહિણિલ્લેણં કૂલેણં પુરચ્છિમં દિસિં સિંધુદેવીભવણાભિમુદે પયાતે
 યાવિ હોત્થા । તણં સે ભરહે રાયા તં દિવ્વ ચક્કરયણં સિંધુએ મહાણઈએ

લક્ષ્ય મેં વહા ઉનકે લિયે પ્રીતિદાન દેતા હૈ । ઇસ પ્રીતિદાન મેં વહા જૈસા પહિલે કહા ગયા હૈ
 વહા (સે ણવરં માલં મઝહિં મુત્તાજાલ હેમજાલં કઢગાણિ ય તુહિયાણિ ય આમરણાણિ ય સરંચ)
 ઇત્યાદિ સૂત્ર દ્વારા પ્રકટ કર દિયા ગયા હૈ—પ્રીતિદાન મેં ડસને રત્ન માલા મુકુટ, દિવ્ય મૌકિક
 કનકરાશિ—કટક હસ્તામરણ ત્રુટિક બાહ્યામરણ, નામાક્રિત બાળ ઔર પ્રમાસ તીર્થ કા જલદિયા
 (ગિણિહત્તા જાવ પચ્ચત્થિમેણં પમાસતિત્થમેરાએ અહ્ણં દેવાણુપ્પિયાણં વિસયવાસી જાવ પચ્ચ-
 ત્થિમિલ્લે અંતવાલે સેસં તદેવ જાવ અદ્વાહિયા નિવ્વત્તા) ભરતચક્રી ને ઇસ પ્રીતિદાન કો સ્વીકાર
 કરલિયા । ફિર ડસને ડસકા સન્માન સત્કાર કિયા ઔર બાદ મેં ડસે વિસર્જિત કરદિયા બાદ
 મેં ભરત ચક્રી વહાં સે અપને રથ કો લોટાકર જહાં અપની સેના કા પઢાવ હુઆ થા વહા
 આગયા । ઇત્યાદિ સબ કથન જૈસા માગધતીર્થાધિપ દેવ કે પ્રકરણ મેં લિખ્તા જા ચુકા હૈ । વૈસા
 હી યહાં પર કહ લેના ચાહિયે યાવત્ અષ્ટ દિવસ કા મહોત્સવ સમાપ્ત હોગયા ॥૧૦॥

છે અને એ ઉપલક્ષ્યમાં તે તેમના માટે પ્રીતિદાન આપે છે એ પ્રીતિદાનમાં જેમ પહેલા
 કહેવામાં આવ્યું છે બધું (સે ણવર માલં મઝહિં મુત્તાજાલ હેમજાલ કઢગાણિય તુહિયાણિ
 ય આમરણાણિ ય સરંચ) ઇત્યાદિ સૂત્ર વડે પ્રકટ કરવામાં આવેલ છે. પ્રીતિદાનમાં તેણે
 રત્નમાળા મુકુટ દિવ્ય મૌકિક કનકરાશિ કટક હસ્તામરણ ત્રુટિક—બાહુ આમરણ નામાક્રિત
 બ.ધુ અને પ્રમાસતીર્થનું જળ એ સર્વવસ્તુઓ આપી. (ગિણિહત્તા જાવ પચ્ચત્થિમેણં પમાસ
 તિત્થમેરાએ અહ્ણં દેવાણુપ્પિયાણં વિસયવાસી પચ્ચત્થિમિલ્લે અન્તવાલે સેસં તદેવ
 અદ્વાહિયા નિવ્વત્તા) ભરતચક્રી એ એ પ્રીતિદાનને સ્વીકાર કર્યો પછી તેણે તેનું સન્માન
 કર્યું તેનો સત્કાર કર્યો અને પછી તેનું વિસર્જન કર્યું ત્યાર બાદ ભરતચક્રી ત્યાંથી પોતાના
 રથને પાછો વાળીને જ્યાં સેનાનો પકાવ હતો ત્યાં આવ્યો ઇત્યાદિ સર્વ કથન જેવું માગ-
 ધતીર્થદેવના પ્રકરણમાં સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યું છે તેવું જ અત્રે બાણી દેવું બોધ્યું. યાવત્
 આઠ દિવસનો મહોત્સવ સમાપ્ત થયો. ॥૧૦॥

दाहिणिल्लेणं कूलेणं पुरत्थिमं दिंसि सिंधुदेवीभवणाभिमुहं पयात पा-
 सइ, पासित्ता हट्टतुट्ट चित्त तहेव जाव जेणेव सिंधूए देवीए भवणं तेणे
 व उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिंधूए देवीए भवनस्स अद्दममंते दुवाल-
 जोयणायामं णवजोयणवित्थिन्नं वरनगरसरिच्छं विजयखंधावारणिवेसं
 करेइ जाव सिंधुदेवीए अद्दमभत्तं पणिहइ पणिहिन्ता पोसहसालाए
 पोसहिए बंभयारी जाव दब्भसंथारोवगए अद्दमभत्तिए मिंधुदेवि मणसि
 करेमाणे चिडइ । तएणं तस्स भरहस्स रण्णो अद्दमभत्तंसि परिणममाणंसि
 सिंधूए देवीए आसणं चलइ, तएणं सा सिंधुदेवी आमणं चलयं पासइ
 पासित्ता ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता भरहं रायं ओहिणा आभोएइ, आभोए
 त्ता इमे एआरूवे अब्भत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पं समुप्पज्जि
 त्था उप्पण्णे खलु भो जंबुदीवेदीवे भरहे वासे भरहे णामं गया चाउरंत
 चक्करवट्ठी. तं जीयमेयं तोअ पच्चुप्पणमणागयाणं सिंधूणं देवीणं भर
 हाणं राईणं उवत्थाणियं करेत्तए, तं गच्छामि णं अहंपि भरहस्स रण्णा
 उवत्थाणियं करोमि त्ति कट्ठ कुंभट्टसहस्सं रयणचित्तं णाणामणि कणगर-
 यणभत्तिचित्ताणि य दुवे कणगमहासणाणि य कडगाणि य तुडियाणि
 य जाव आभरणाणि य गेण्हइ गेणिहत्ता ताए उक्किट्ठाए जाव एवं वयासी
 अभिजिएणं देवाणुप्पिएहि केवलकप्पे भरहे वासे अहण्णं देवाणु-
 प्पियाणं विसयवासिणी अहण्णं देवाणुप्पियाणं आणत्तिकिकरी तं पडि-
 च्छंतु णं देवाणुप्पिया ! मम इमं एयारूवं पीइदाणं तिकट्ठ कुंभट्टसहस्सं
 रयणचित्तं णाणामणि कणग कडगाणि य जाव सो चेव गमो जाव पडि-
 विसज्जेइ तएणं से भरहे गया पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्ख-
 मित्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता ण्हाए कयवलि-
 कम्मे जाव जेणेव भोयणमंडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
 भोयणमंडवंसि सुहासवरगए अद्दमभत्तं परियादियइ परियादिएत्ता जाव
 सोहासणवरगए पुस्तथाभिमुहे णिसीयइ णिसीएत्ता अट्टारससेणि प्पसे-
 णीओ सहावेइ सइवित्ता जाव अट्टाहियाए महामहिमाए तमाणत्तिं
 पच्चप्पिणंति ॥सू० ११॥

छाया—तत खलु तद् दिव्य चक्ररत्न प्रभासतीर्थकुमारस्य अष्टादिकायां महामहि-
मायां निवृत्ताया मयाम् आयुधगृहालान् प्रतिनिष्कामति, प्रतिनिष्काम्य यावत् पर्यदिव
अम्बरतलं सिन्ध्वा महानद्या दक्षिणात्येन कूलेन पौरस्त्या दिशं सिन्धुदेवी भवनाभिमुखं
प्रयातं चाप्यभवत् । तत खलु स भरतो राजानहिव्य चक्ररत्न सिन्ध्वा महानद्या दक्षि-
णात्येन कूलेन पौरस्त्या दिशं सिन्धुदेवी भवनाभिमुखं प्रयातं पश्यति, दृष्ट्वा दृष्टुष्ट चित्त
तथैव यावत् यत्र सिन्ध्वा देव्या भग्न तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य सिन्ध्वाः देव्याः
भग्नस्य अदूरसामन्ते द्वादश योजनयामं नद्ययोजनविस्तीर्णं वरनगरसदृशम् विजयकन्धावार-
निवेशं करोति यावत् सिन्धुदेव्या अष्टमभक्त प्रगृह्णाति, प्रगृह्य गौरधगालाया पोषधिको
ब्रह्मचारी यावद् दर्भसंस्तारकोपगत अष्टमभक्तिक सिन्धुदेवीं मनसि कुर्वन् निष्ठति ।
ततः खलु तस्य भरतस्य राज्ञोऽष्टमभक्ते परिणमति सिन्ध्वा देव्या आसनं चलितं,
ततः खलु सा सिन्धु देवी आसनं चलितं पश्यति, दृष्ट्वा अग्रे प्रयुनक्ति, प्रयुज्य भरत
राजानम् अवधिना आभोगयति, अयमेतद्रूप आध्यात्मिकश्चित्तं प्राथिनो मनोगत सङ्केत-
समुद्पद्यत, उत्पन्नः खलु भो जम्बूद्वीपे द्वीपे भरते वर्षे भरतो नाम राजा चातुर्न्तचक्रवर्ती
तज्जीतमेतत् अनीतवर्तमानानागताना सिन्धूणां देवीनां भरता राजाम् उपस्थानिकं
कर्तुम्, तद्गच्छामि खलु अहमपि भरतस्य राज्ञ उपस्थानिकं करोमीति कृत्वा कुम्भाष्टनद्वय
रत्नचित्रं नानामाणिकनकरत्ने च छे कनकभद्रासने च कटकानि च वृट्टिकानि च यावत्
आभरणानि च गृह्णाति, गृहीत्वा तथा उत्कृष्टया यावत् अभिजितं खलु देवानुगियै, केव-
लकल्पे भरत वर्षम् अहं खलु देवानुप्रियाणां विषयवासिणी, अहं खलु देवानुप्रियाणाम् आश्र-
प्ति किङ्करी तन्प्रतीच्छन्तु खलु देवानुप्रियाः । ममेकम् पतद्रूपं प्रीतिदानमिति कृत्वा कुम्भा-
ष्टनद्वयं रत्नचित्रं नानामाणिकनक कटकानि च यावत् स पव गमः यावत् प्रनिविसर्जयति,
ततः खलु स भरतो राजा पोषधशालात प्रतिनिष्कामति, प्रतिनिष्काम्य यत्रैव मज्जनगृहं तत्रैव
उपागच्छति, उपागत्य स्नात कृतबलिकर्मा यावत् यत्रैव भोजनमण्डपस्तत्रैव उपागच्छति,
उपागत्य भोजनमण्डपे सुखासनवरगत अष्टमभक्ते यावत् सिंहासनवरगतः पौरस्त्याभिमुखो
निषीदति निषद्य अष्टादशश्रेणीप्रश्रेणी शब्दयति, शब्दयित्वा यावद् अष्टादिकायां महामहि-
मायां तामाश्रितिकां प्रत्यर्पयन्ति ॥ सू० ११॥

टीका—“तएणं से” इत्यादि । ‘तएणसे दिव्ये चक्ररयणे प्रभासतित्थकुमार-
देवस्स अट्ठादियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए आउहधरसालाओ पडि-

सिन्धु देवी साधनाधिकार कथन—

‘तएण से दिव्ये चक्ररयणे प्रभासतित्थकुमारस्स’ इत्यादि सूत्र ॥११॥

टीकार्थ—इस प्रकार से वह दिव्य चक्ररत्न प्रभासतीर्थ कुमार के विजयोपलक्ष्य में क्रिये
आठ दिन तक के महामहोत्सव समाप्त हो जाने पर (आउहधरसालाओ पडिणिकखमइ) आयु

सिन्धुदेवी साधनाधिकार कथन

‘त एण से दिव्ये चक्ररयणे प्रभासतित्थकुमारस्स’ इत्यादि सूत्र—॥११॥

टीकार्थ—आ प्रभासे ते दिव्य चक्ररत्न प्रभासतीर्थ कुमारना विजयोपलक्ष्यमां आयो (आउहधरसालाओ पडिणिकखमइ) आयुध

दाहिणिल्लेणं कूलेणं पुरत्थिमं दिमिं सिंधुदेवीभवणाभिमुहं पयात्ता पा-
 सइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ चित्त तहेव जाव जेणेव सिंधूए देवीए भवणं तेणे
 व उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिंधूए देवीए भवनस्स अद्गसामंते दुवाल्-
 जोयणायामं णवजोयणवित्थिन्नं वरनगरसरिच्छं विजयखंधावारणिवेसं
 करेइ जाव सिंधुदेवीए अट्ठमभत्तं पणिहइ पणिहिहत्ता पोसहसालाए
 पोसहिए बंभयारी जाव दब्भसंथारोवगए अट्ठमभत्तिए सिंधुदेविं मणसि
 करेमाणे चिट्ठइ । तएणं तस्स भरहस्स रण्णो अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि
 सिंधूए देवीए आसणं चलइ, तएणं सा सिंधुदेवी आमणं चलयं पासइ
 पासित्ता ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता भरहं रायं ओहिणा आभोएइ, आभोए
 त्ता इमे एआरूवे अब्भत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पं समुप्पज्जि
 त्था उप्पण्णे खलु भो जंबुद्वीवेदीवे भरहे वासे भरहे णामं राया चाउरंत
 चक्करवट्ठी. तं जीयमेयं तोअ पच्चुप्पणमणागयाणं सिंधूणं देवीणं भर
 हाणं राईणं उवत्थाणियं करेत्तए, तं गच्छामि णं अहंपि भरहस्स रण्णा
 उवत्थाणियं करोमि त्ति कट्ठु कुंभट्ठसहस्सं रयणचित्तं णाणामणि कणगर-
 यणभत्तिचित्ताणि य दुवे कणगभद्दासणाणि य कडगाणि य तुडियाणि
 य जाव आभरणाणि य गेण्हइ गेणिहत्ता ताए उक्किट्ठाए जाव एवं वयासी
 अभिजिएणं देवाणुप्पिएहिं केवलकप्पे भरहे वासे अहण्णं देवाणु-
 प्पियाणं विसयवासिणी अहण्णं देवाणुप्पियाणं आणत्तिकिकरी तं पडि-
 च्छंतु णं देवाणुप्पिया ! मम इमं एआरूवं पीइदाणं तिकट्ठु कुंभट्ठसहस्सं
 रयणचित्तं णाणामणि कणग कडगाणि य जाव सो चेव गमो जाव पडि-
 विसज्जेइ तएणं से भरहे राया पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्ख-
 मित्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता ण्हाए कयवलि-
 कम्मे जाव जेणेव भोयणमंडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
 भोयणमंडवंसि सुहासवगए अट्ठमभत्तं परियादियइ परियादिएत्ता जाव
 सोहासणवगए पुरत्थाभिमुहे णिसीयइ णिसीएत्ता अट्ठास्सेणि प्पसे-
 णीओ सद्दावेइ सद्दवित्ता जाव अट्ठादियाए महामहिमाए तमाणत्तियं
 पच्चप्पिणंति ॥सू० ११॥

छाया—तत खलु तद् दिव्य चक्ररत्न प्रभासतीर्थकुमारस्य अष्टादिकायां महामहि-
मायां निवृत्ताया मयायाम् आयुःप्रगल्भालान प्रतिनिष्कामति, प्रतिनिष्काम्य यावत् पर्यदिव
अम्बरतले सिन्ध्या महानया दक्षिणात्येन कृत्वेन पौरस्त्या दिशं सिन्धुदेवी भवनाभिमुखं
प्रयातं चाप्यभवत् । तत खलु स भरतो राजानद्विव्यं चक्ररत्न सिन्ध्या महानया दक्षि-
णात्येन कृत्वेन पौरस्त्या दिशं सिन्धुदेवी भवनाभिमुखं प्रयातं पश्यति, दृष्ट्वा दृष्टुष्ट चित्त
तथैव यावत् यत्र सिन्ध्या देव्या भवन तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य सिन्ध्याः देव्याः
भवनस्य अदूरसामन्ते द्वादश योजनयामं नवयोजनविस्तीर्णं वरनगरसदृशम् विजयकुन्धावार-
निवेशं करोति यावत् सिन्धुदेव्या अष्टमभक्त प्रगृह्णानि, प्रगृह्य गौतमगालाया पोषधिको
ब्रह्मचारी यावद् दर्भसंस्तारकोपगत अष्टमभक्तिक सिन्धुदेवीं मनसि कुर्वन् तिष्ठति ।
ततः खलु तस्य भरतस्य राज्ञोऽष्टमभक्ते परिणमति सिन्ध्या देव्या आसनं चलितं,
ततः खलु सा सिन्धु देवी आसन चलितं पश्यति, दृष्ट्वा अगधि प्रयुनक्ति, प्रयुज्य भरत
राजानम् अवधिना आभोगयति, अयमेतद्विषय आध्यात्मिकश्चित्तित प्राथिनो मनोगत सङ्केत-
समुदपद्यत, उत्पन्नः खलु भो जम्बूद्वीपे द्वीपे भरते वर्षं भरतो नाम राजा चातुर्वर्त्तचक्रवर्ती
तज्जीतमेतत् अतीतवर्त्तमानानागतानां सिन्धूणां देवीनां भरता राजाम् उपस्थानिकं
कर्तुम्, तद्गच्छामि खलु अहमपि भरतस्य राश उपस्थानिक करोमीति कृत्वा कुम्भाएतदस्त्र
रत्नचित्रं नानामाणिकनकरत्ने च छे कनकमद्रासने च कटकानि च वुटिकानि च यावत्
आभरणानि च गृह्णाति, गृहीत्वा तया उत्कृष्टया यावत् अभिजितं खलु देवानुप्रियाः केव-
लकल्पं भरत वर्षम् अहं खलु देवानुप्रियाणां विषयवात्सिणी, अहं खलु देवानुप्रियाणाम् आह-
प्ति किङ्करी तन्प्रतीच्छन्तु खलु देवानुप्रियाः । ममेतद् पतद्रूपं प्रीतिदानमिति कृत्वा कुम्भा-
एतदस्त्रं रत्नचित्रं नानामाणिकनक कटकानि च यावत् स पव गमः यावत् प्रतिविस्जयति,
ततः खलु स भरतो राजा पोषधशालात प्रतिनिष्कामति, प्रतिनिष्काम्य यत्रैव मज्जनगृहं तत्रैव
उपागच्छति, उपागत्य स्नातः कृतबलिकर्मा यावत् यत्रैव भोजनमण्डपस्तत्रैव उपागच्छति,
उपागत्य भोजनमण्डपे सुखासनवरगत अष्टमभक्तं यावत् सिंहासनवरगतः पौरस्त्याभिमुखो
निषीदति निषद्य अष्टादशश्रेणीप्रश्रेणी शब्दयति, शब्दयित्वा यावद् अष्टादिकायां महामहि-
मायां तामाह्वयित्वा प्रत्यर्पयन्ति ॥ सू० ११॥

टीका—“तएणं से” इत्यादि । ‘तएणसे दिव्ये चक्ररयणे प्रभासतित्थकुमार-
स्स देवस्स अट्ठादियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए आउहघरसालाओ पडि-

सिन्धु देवी साधनाधिकार कथन—

‘तएणं से दिव्ये चक्ररयणे प्रभासतित्थकुमारस्स’ इत्यादि सूत्र ॥११॥

टीकार्थ—इस प्रकार से वह दिव्य चक्ररत्न प्रभासतीर्थ कुमार के विजयोपलक्ष्य में क्रिये
आठ दिन तक के महामहोत्सव समाप्त हो जाने पर (आठहघरसालाओ पडिणिक्खमइ) आयु

सिन्धुदेवी साधनाधिकार कथन

‘त एण से दिव्ये चक्ररयणे प्रभासतित्थकुमारस्स’ इत्यादि सूत्र—॥११॥

टीकाथ—आ प्रभासे ते दिव्य चक्ररत्न प्रभासतीर्थ कुमारना विजयोपलक्ष्यमां आयो(जित
आठ दिवसने) महोत्सव समाप्त थयं गथे त्थारे (आठहघरसालाओ पडिणिक्खमइ) आयुध

ણિક્ષમઈ' તતઃ खलु तद्विष्य चक्ररत्नं प्रभासतीर्थकुमारस्य देवस्य अष्टादિકायां अष्ट-
 दिवसावसानं यस्या सा ताम् महामहिमायां निवृत्ताया सत्याम् आयुष्यगृह्णान्यातः प्रतिनिष्क्रा-
 मति निर्गच्छति 'पडिणिक्खमिप्ता' प्रतिनिष्क्रम्य निर्गत्य 'जाव पूरेंते चेव अंवरतलं'
 यावत् दिव्यत्रुटित नामकवाद्यविशेषशब्दसन्निनादेन अम्बरतल गगनतल पूरयदिव 'सिंधूए
 महाणईए दाहिणिल्लेणं कूलेणं पुरत्थिमं दिंसि सिंधुदेवी भवणाभिमुखे पयाते यावि
 होत्था' सिन्ध्वा' महानद्याः दाक्षिणात्येन दक्षिणेन कूलेन पौरस्त्या पूर्वा दिशम् सिन्धु-
 देवी भवनाभिमुखं प्रयात चाप्यभवत्, अयं विशेषः पूर्वो दिशमित्यत्र पश्चिमदिग्वर्तिनः
 प्रभासतीर्थत आगच्छन् वैताढ्यगिरिकुमारदेव सिसाधयिपया तद्वासकटाभिमुखं जिग्मीषुः
 प्रथमतः अनुपूर्वमेव याति स तच्च दिग्विभागज्ञानं नरुराहति भाषा प्रसिद्धं जम्बूद्वीप-
 प्रकाशकपत्रे द्रष्टव्यम् ततः सुतरां ज्ञानं भविष्यति सिन्धुदेवी गृह्णामिमुखं च चक्र-
 रत्नं प्रयातम् ननु सिन्धुदेवी भवनम् अत्रैव सूत्रे उत्तरभरतार्द्धमध्यखण्डे सिन्धु-
 कुण्डे सिन्धुद्वीपे वक्ष्यते तत्कथमत्र तत्सम्भव इति चेन्न महर्द्धिकदेवीना मूलस्था-

धगृહ શાલા સે બાહર નિકલા (પડિણિક્ષમિત્તા જાવ પૂરેતે ચેવ અંવરતલ સિધૂપ મહાણઈપ
 દાહિણિલ્લેણં કૂલેણ પુરત્થિમં દિસિ સિંધુદેવો ભવણાભિમુદે પયાપ યાવિ હોત્થા) નિકલ કર વહ
 યાવત્— દિવ્યત્રુટિત નામક વાદ્યવિશેષ કે શબ્દ સન્નિનાદ દ્વારા ગગન તલ કો ભરતા ભરતા
 સા સિન્ધુ મહાનદી કે દક્ષિણ કૂલ સે હોતા હુઆ પૂર્વદિશામેં સિન્ધુદેવો કે ભવન કી ઓર ચલા ।
 “પૂર્વદિશામેં” જો એસા કહા હૈ સો ઉસકા તાત્પર્યે એસા હૈ કિ પશ્ચિમદિગ્વર્તી પ્રભાસ તોર્થ
 સે આતા હુઆ ભરતચક્ત્રી વૈતાલ્યગિરિ કુમાર દેવ કો વશ કરને કી હ્ચ્છા સે ઉસકે વાસભૂત
 કૂટ કી તરફ જાને કા અભિલાષી હોતા હૈ । સો પહિલે ઉસે પૂર્વદિશા મેં હી જાના હોતા હૈ ।
 યહ દિવિમાગકા જ્ઞાન જમ્બૂદ્વીપ કે નક્ષે સે બ્ધી તરહ હો જાતા હૈ । સિંધુદેવી કે ઘર કી
 તરફ ચક્રરત્ન ચલા એસા જો યહાં કહા ગયા હૈ સો સિન્ધુદેવો કે ભવન કા કથન તો હસી
 સૂત્ર મેં ઉત્તર ભરતાર્ધ કે મધ્યમ સ્વખંડાર્ધ સિન્ધુ કુણ્ડ મેં સિન્ધુદ્વીપ મેં કહા જાવેગા તો ફિર

ગૃહશાળામાથી બહાર નીકળ્યું. (પડિણિક્ષમિત્તા જાવ પૂરેતે ચેવ અંવરતલ સિધૂપ
 મહાણઈપ દાહિણિલ્લેણં કૂલેણ પુરત્થિમં દિસિ સિંધુ દેવો ભવણાભિમુદે પયાપ યાવિહોત્થા)
 નીકળીને તે યાવત્ દિવ્ય ત્રુટિત નામક વાદ્યવિશેષના શબ્દ સન્નિનાદ વડે ગગનતલને સમૂ-
 રિત કરતું સિન્ધુ મહાનદીના દક્ષિણ કૂલથી પસાર થઇને પૂર્વ દિશામાં । સિન્ધુ દેવી નાં
 ભવન તરફ આદ્યું “પૂર્વ દિશામાં” આવું જે કથન છે તેણે તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે કે
 પશ્ચિમ દિગ્વર્તી પ્રભાસતીર્થ તરફથી આવતો ભરતચક્રી વૈતાલ્યગિરિ કુમારદેવને વશ કરવાની
 ઇચ્છાથી તેના વાસભૂત ચૂકટ તરફ જવા અભિલાષા કરે છે એથી પહેલાં પૂર્વ દિશા તરફ
 જ તેણે જવાનું થાય છે એ દિગ્વિગ્રય ભાગ્યનું જ્ઞાન જમ્બૂદ્વીપના માનચિત્રથી સારી પેઠે
 થઇ બાય છે. સિન્ધુ દેવીના ઘર તરફ ચક્રરત્ન આદ્યું. આમ જે વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે
 તે સિન્ધુ દેવીના ભવનનું કથન તો એજ સૂત્રમાં ઉત્તર ભરતાર્ધના મધ્યમ ખંડમાં સિંધુ
 કુંડમાં સિન્ધુદ્વીપમાં વર્ણવવામાં આવશે જ તેા પછી અહીં તેનો સદ્ભાવ શા માટે કહ્યો

નાદન્યત્રાપિ ભવનાદિગમ્ભવેન નાનુપપન્નેઃ, યથા પ્રથમસ્તર્ગ્ય ગોર્ધર્મેન્દ્રાગ્રમદિપીળા સૌધર્માદિ દેવલોકે વિમાનમહાત્મેપિ નન્દીશ્વરે કુણ્ડલેવા રાજયાન્યઃ, અથવા અથ દેવ્યા અસંખ્યેયતમે દ્વીપે રાજયાન્યઃ મિન્ધુવાવર્તનક્રુષ્ટે ચ પ્રાસાદાવતમક ડાતિ. એવ ચ મિન્ધુ-દ્વીપે દેવીભવનમહાત્મેપિ સૂત્રચલાદત્રાપિ તદસ્તીતિ જ્ઞાયતે, તદનુ ભરતઃ કિં કૃતવાન ઇત્યાહ—‘તણ્ણ’ ઇત્યાદિ ‘તણ્ણ મે મરહે રાયા તં દિવ્વં ચક્રરયણં મિથુણ મહાણઈપ દાહિણિલ્લેણ કૂલેણં પુર્ગાન્થમ દિમિં સિંધુ દેવી ભવનામિમુસં પયાન પાસડ’ તતઃ ચલ્લ મ ભારતી રાજા તદિત્યં ચક્રરત્ન મિન્ધુવા મહાનદ્યઃ દક્ષિણાત્યેન દક્ષિણેન કૂલેન તીરેણ પૌરત્યા પૂર્વામ્ દિશં મિન્ધુદેવી ભવનામિમુસં પ્રગાતં પચ્યતિ ‘પાસિત્તા’ દદ્ધા ‘હટ્ઠતુટ્ઠ ચિત્ત તહેવ જાવ’ હટ્ઠતુટ્ઠ ચિત્તાનન્દિતઃ અતિશયપ્રમોદમાપન્નઃ સન્ ચક્રી-

યહાં ઉસકા સન્નાવ હોના કૈસે કહા ? ઉત્તર—મહર્દિક્કદેવિયોં કે ભવન મૂલસ્થાન સે અન્યત્ર મી હોતે હૈ ફસલિયે એમા કથન યહા અયુક્ત નહીં હૈ । જૈસે સૌધર્માદિ ઇન્દ્રોં કી અપ્રમહિપિયોં કે વિમાન સૌધર્માદિ દેવલોકોં મેં હોતે હૈ ફિર મી નન્દીશ્વર દ્વોપ મેં અથવા કુણ્ડલ દ્વોપ મેં ફનકી રાજધાનીયાં હૈ, અથવા ઇસો સિન્ધુદેવો કી રાજધાની અસદ્યાતવે દ્વીપ મેં હૈ ઓર સિદ્ધાવર્તન ક્રુષ્ટ મેં ઇસકા પ્રાસાદાવર્તમક હૈ । ઇમી તરહ સિન્ધુ દ્વીપ મેં સિન્ધુ દેવી કે ભવન કા સન્નાવ હોને પર મી ઇસી સૂત્ર કે વલ સે અન્યત્ર મી વહ હૈ એસા જાના જાતા હૈ એસા હોને પર મી “સિન્ધૂપ દેવીપ ભવણસ્મ અદૂરસામંતે” ઇત્યાદિ વક્ષ્યમાણ સૂત્ર પાઠ—“લંઘાવારે નિવેસં કરેહ” યહાં તક કા સગત વૈઠ સકેગા, નહીં તો વહ મી વિષટિત હો જાવેગા ।

(તણ્ણ સે મરહે રાયા ત દિવ્વં ચક્રરયણં સિંધૂપ મહાણઈપ દાહિણિલ્લેણ કૂલેણં પુર-ત્થિમં દિસિં સિંધુદેવી ભવનામિમુદે પયાય પાસડ) જવ ભરત રાજાને ઉસ દિવ્ય ચક્રરત્ન કો સિન્ધુ મહાનદી કે દક્ષિણ તટ સે હોતે હુપ પૂર્વદિશા મેં સિન્ધુ દેવી કે ભવન કી ઓર જાતે હુપ દેસા તો વહ (પાસિત્તા) દેસકર (હટ્ઠ તુટ્ઠ ચિત્ત તહેવ જાવ જેણેવ સિંધૂપ દેવીપ ભવણં તેણેવ

છે ? ઉત્તરમહર્દિક્ક દેવીઓના ભવનો મૂલસ્થાનથી અન્યત્ર પણ હોય છે. એથી આ કથન અહીં અયુક્ત નથી જેમ સૌધર્માદિ ઇન્દ્રોની અગ્રમહીપિઓના વિમાનો સૌધર્માદિ દેવલો-કમાં હોય છે છતાંજે નન્દીશ્વર દ્વીપમાં અથવા કુણ્ડલદ્વીપમાં એમની રાજધાનીઓ છે. અથવા એજ સિન્ધુદેવીની રાજધાની અસંખ્યાતમા દ્વીપમાં છે અને સિદ્ધાવર્તન ક્રુષ્ટમાં આતુ પ્રાસાદાવત સક છે એજ રીતે સિન્ધુદ્વીપમાં સિન્ધુ દેવીના ભવનનો સદ્ભાવ છે છતાં એ એજ સૂત્રના બળથી અન્યત્ર પણ તેની સદ્ભાવના છે એવું બધુવામાં આવે છે એવું હોય તો જ “સિન્ધૂપ દેવીપ ભવણસ્મ અદૂરસામંતે” ઇત્યાદિ વક્ષ્યમાણ સૂત્રપાઠ “લંઘાવારે નિવેસં કરેહ અહીં સુધીનો સગત થઈ પડશે નહીં તો તે પણ વિષટિત થઈ જશે

(તણ્ણ સે મરહે રાયા તં દિવ્ય ચક્રરયણં સિંધૂપ મહાણઈપ દાહિણિલ્લેણ કૂલેણં પુરત્થિમં દિસિં સિંધુદેવી ભવનામિમુદે પયાય પાસડ) બ્યારે ભરત રાજાએ ત દિવ્ય ચક્ર-રત્નને સિંધુ મહાનદીના દક્ષિણ તટ ઉપર થઈને પૂર્વદિશામાં સિન્ધુ દેવીના ભવન તરફ જતું બોલ્યું તો તે (પાસિત્તા) બોઈને (હટ્ઠતુટ્ઠચિત્ત તહેવ જાવ જેણેવ સિંધૂપ દેવીપ ભવણં

णिक्त्वमइ' ततः खलु तद्विष्य चक्ररत्नं प्रभासतीर्थकुमारस्य देवस्य अप्राहिकायां अष्ट-
दिवसावसान यस्या सा ताम् महामहिमाया निवृत्ताया सत्याम् आयुष्यगृहशालातः प्रतिनिष्क्रा-
मति निर्गच्छति 'पडिणिक्खमिक्का' प्रतिनिष्क्रम्य निर्गत्य 'जाव पूरेंते चेव अवरतलं'
यावत् दिव्यत्रुटित नामकवाद्यविशेषशब्दसन्निनादेन अम्बरतल गगनतल पर्यदिव 'सिंधूप
महाणईए दाहिणिल्लेणं कूलेणं पुरत्थिमं दिंसि सिंधुदेवी भवणाभिमुखे पयाते यावि
होत्था' सिन्ध्वा महानद्याः दाक्षिणात्येन दक्षिणेन कूलेन पौरस्त्या पूर्वा दिशम् सिन्धु-
देवी भवनाभिमुखं प्रयातं चाप्यभवत्, अयं विशेषः पूर्वो दिग्मित्यत्र पश्चिमदिग्भूर्वर्तिनः
प्रभासतीर्थत आगच्छन् वैताढ्यगिरिकुमारदेव सिमाधयिषया तद्वासकृताभिमुखं जिग्मीषुः
प्रथमतः अनुपूर्वमेव याति स तच्च दिग्विभागज्ञानं नकरादिति भाषा प्रसिद्धं जम्बूद्वीप-
प्रकाशकपत्रे द्रष्टव्यम् ततः सुतरां ज्ञानं भविष्यति सिन्धुदेवी गृहाभिमुखं च चक्र-
रत्नं प्रयातम् ननु सिन्धुदेवी भवनम् अत्रैव स्त्रे उत्तरभरतार्द्धमध्यखण्डे सिन्धु-
कुण्डे सिन्धुद्वीपे वक्ष्यते तत्कथमत्र तत्सम्भव इति चेन्न महर्द्धिकदेवीना मूलस्था-

धगृह शाला से बाहर निकला (पडिणिक्खमिक्का जाव पूरेंते चेव अवरतल सिंधूप महाणईए
दाहिणिल्लेणं कूलेण पुरत्थिमं दिंसि सिंधुदेवी भवणाभिमुखे पयाए यावि होत्था) निकल कर वह
यावत्— दिव्यत्रुटित नामक वाद्यविशेष के शब्द सन्निनाद द्वारा गगन तल को भरता भरता
सा सिन्धु महानदी के दक्षिण कूल से होता हुआ पूर्वदिशामें सिन्धुदेवी के भवन की ओर चला ।
“पूर्वदिशामें” जो ऐसा कहा है सो उसका तात्पर्य ऐसा है कि पश्चिमदिग्वर्ती प्रभास तीर्थ
से आता हुआ भरतचक्री वैताढ्यगिरि कुमार देव की वश करने की इच्छा से उसके वासभूत
कूट की तरफ जाने का अभिलाषी होता है । सो पहिले उसे पूर्वदिशा में ही जाना होता है ।
यह दिग्विभागका ज्ञान जम्बूद्वीप के नक्शे से अच्छी तरह हो जाता है । सिंधुदेवी के घर की
तरफ चक्ररत्न चला ऐसा जो यहां कहा गया है सो सिन्धुदेवी के भवन का कथन तो इसी
सूत्र में उत्तर भरतार्ध के मध्यम खण्डार्ध सिन्धु कुण्ड में सिन्धुद्वीप में कहा जावेगा तो फिर

गृहशालाभाथी गृहशाला नीकण्यु. (पडिणिक्खमिक्का जाव पूरेंते चेव अवरतल सिंधूप
महाणईए दाहिणिल्लेणं कूलेण पुरत्थिमं दिंसि सिंधु देवी भवणाभिमुखे पयाए याविहोत्था)
नीकण्युने तो यावत् दिव्य त्रुटित नामक वाद्यविशेषना शब्द सन्निनाद वरें गगनतलेने समू-
रित करतुं सिन्धु महानदीना दक्षिण कूलेथी पसार थधने पूर्व दिशामा सिन्धु देवी ना
भवन तरफ आद्यु “पूर्व दिशामा” आतुं के कथन छे तेनुं तात्पर्य आ प्रभाषे छे के
पश्चिम दिग्वर्ती प्रभासतीर्थ तरफथी आवतो भरतचक्री वैताढ्यगिरि कुमारदेवने वश करवानी
पुच्छाथी तेना वासभूत कूट तरफ जवा अभिलाषा करे छे ओथी थडेलो पूर्व दिशा तरफ
ज तेनुं जवातु थाय छे के दिग्विभाग भागनुं ज्ञान जम्बूद्वीपना मानचित्रथी सारी पेठे
थड जय छे. सिन्धु देवीना घर तरफ अकरन आद्यु. आभ के वर्युन करवामा आन्यु छे
तो सिन्धु देवीना भवननुं कथन तो ओज सूत्रमा उत्तर भरतार्धना मध्यम षडभां सिंधु
कुण्डमा सिन्धुद्वीपमा वर्युवामा आवशे ज तो पछी अच्छी तेना सद्भाव सा भाटे कही

નાદન્યત્રાપિ ભવનાદિગમ્યભવેન નાનુપપન્નેઃ, યયા ધનમમ્ભર્ગ્ય મૌર્ધમેન્દ્રાગ્રમહિષીણાં સૌધર્માદિ દેવલોકે વિમાનમદ્ભાવેપિ નન્દીશ્વરે કુણ્ડલેત્રા રાજધાન્યઃ, અસ્યા એવ દેવ્યા અસંખ્યેયતમે દ્વીપે રાજધાન્યઃ સિન્ધુવાવર્તનકૂટે ચ પ્રાસાદાવતસક ડાંત, એવ ચ સિન્ધુ-દ્વીપે દેવીભવનમદ્ભાવેડપિ સૂત્રવચ્ચાદત્રાપિ તદસ્તીતિ જાયતે, તદન્તુ ભરતઃ કિં કૃતવાન્-ઇત્યાહ-‘તણ્ણ’ ઇત્યાદિ ‘તણ્ણ મે ભરહે રાયા તં દિવ્વં ચક્કરયણં સિંધુપ્પ મહાણઈપ્પ દાહિણિલ્લેણ કૂલેણં પુરન્નિમ દિર્મિં મિંધુ દેવી ભવનામિમુલ્લં પયાત પાસડ’ તતઃ સ્થલ મ ભારતી રાજા તદિવ્વં ચક્કરત્તન સિન્ધ્વા મહાનદીઃ દક્ષિણાત્યેન દક્ષિણેન કૂલેન તીરેણ પૌરસ્ત્યાં પૂર્વામ્ દિશં સિન્ધુદેવી ભવનામિમુલ્લં પ્રગાત પગ્ગયતિ ‘પાસિત્તા’ દ્વપ્પા ‘હટ્ઠતુટ્ઠ ચિત્ત તદેવ જાવ’ હટ્ઠતુટ્ઠ ચિત્તાનન્દિતઃ અતિશયપ્રમોદમાપન્નઃ સન્ ચક્રી-

યહાં ઉસકા સદ્ભાવ હોના કૈસે કહા ? ઉત્તર-મહર્દિકદેવિયોં કે ભવન મૂલસ્થાન સે અન્યત્ર મી હોતે હૈ ઇસલિયે એસા કથન યહા અયુક્ત નહીં હૈ । જૈસે સૌધર્માદિ ઇન્દ્રોં કી અગ્રમહિષિયોં કે વિમાન સૌધર્માદિ દેવલોકોં મેં હોતે હૈ ફિર મી નન્દીશ્વર દ્વીપ મેં અથવા કુણ્ડલ દ્વીપ મેં ઇનકી રાજધાનીયાં હૈ, અથવા ઇસી સિન્ધુદેવો કી રાજધાની અસંખ્યાતવે દ્વીપ મેં હૈ ઓર સિદ્ધાવર્તન કૂટ મેં ઇસકા પ્રાસાદાવર્તસક હૈ । ઇસી તરહ સિન્ધુ દ્વીપ મેં સિન્ધુ દેવી કે ભવન કા સદ્ભાવ હોને પર મી ઇસી સૂત્ર કે બલ સે અન્યત્ર મી વહ હૈ એસા જાના જાતા હૈ એસા હોને પર મી “સિન્ધુપ્પ દેવીપ્પ મવણસ્સ અદૂરસામંતે” ઇત્યાદિ વક્ષ્યમાણ સૂત્ર પાઠ-“લંઘાવારે નિવેસ કરેહ” યહાં તક કા સગત વૈઠ સકેગા, નહીં તો વહ મી વિષટિત હો જાવેગા ।

(તણ્ણ સે ભરહે રાયા તં દિવ્વં ચક્કરયણં સિંધુપ્પ મહાણઈપ્પ દાહિણિલ્લેણ કૂલેણં પુર-ત્થિમં દિર્મિં સિંધુદેવી ભવનામિમુલ્લં પયાયં પાસડ) જબ ભરત રાજાને ઉસ દિવ્ય ચક્કરત્તન કો સિન્ધુ મહાનદી કે દક્ષિણ તટ સે હોતે હુપ્પ પૂર્વદિશા મેં સિન્ધુ દેવી કે ભવન કી ઓર જાતે હુપ્પ દેક્ષા તો વહ (પાસિત્તા) દેક્ષકર (હટ્ઠ તુટ્ઠ ચિત્ત તદેવ જાવ જેણેવ સિંધુપ્પ દેવીપ્પ મવણં તેણેવ

છે ? ઉત્તરમહર્દિક દેવીઓના ભવનો મૂલસ્થાનથી અન્યત્ર પણ હોય છે. એથી આ કથન અહીં અયુક્ત નથી જેમ સૌધર્માદિ ઇન્દ્રોની અગ્રમહિષિઓના વિમાનો સૌધર્માદિ દેવલો-કમાં હોય છે છતાંજે નન્દીશ્વર દ્વીપમાં અથવા કુણ્ડલદ્વીપમાં એમની રાજધાનીઓ છે. અથવા એજ સિન્ધુદેવીની રાજધાની અસંખ્યાતમાં દ્વીપમાં છે અને સિદ્ધાવર્તન કૂટમાં આવું પ્રાસાદાવતસક છે એજ રીતે સિન્ધુદ્વીપમાં સિન્ધુ દેવીના ભવનનો સદ્ભાવ છે છતાં જો એજ સૂત્રના બળથી અન્યત્ર પણ તેની સદ્ભાવના છે એવું બાણવામાં આવે છે એવું હોય તો જ “સિન્ધુપ્પ દેવીપ્પ મવણસ્સ અદૂરસામંતે” ઇત્યાદિ વક્ષ્યમાણ સૂત્રપાઠ “લંઘાવારે નિવેસ કરેહ અહીં” સુધીનો સગત થઈ પડશે નહીં તો તે પણ વિષટિત થઈ જશે

(તણ્ણ સે ભરહે રાયા તં દિવ્વં ચક્કરયણં સિંધુપ્પ મહાણઈપ્પ દાહિણિલ્લેણ કૂલેણં પુરત્થિમં દિર્મિં સિંધુદેવીભવનામિમુલ્લં પયાયં પાસડ) અથારે ભરત રાજાજે ત દિવ્ય ચક્ર-રત્નને સિંધુ મહાનદીના દક્ષિણ તટ ઉપર થઈને પૂર્વદિશામાં સિન્ધુ દેવીના ભવન તરફ જઈને એજ તો તે (પાસિત્તા) એઈને (હટ્ઠતુટ્ઠચિત્ત તદેવ જાવ જેણેવ સિંધુપ્પ દેવીપ્પ મવણં

पौषशालायां पौषधिकः—पौषव्रतवान् अतएव 'वभयारी' ब्रह्मचारी 'जाव दम्भस-
थारोवगए' यावद्भर्मसंस्तारकोपगतः सार्द्धद्वयहस्तपरिमितदम्भासने उपविष्टः सन् अत्र
यावत्पदात् उन्मुक्तमणिमुवर्ण इत्यादि सर्वं पूर्वोक्तं ग्राह्यम् अष्टमभक्तिकः—कृताष्टमतपाः
सिन्धुदेवीं मनसि कुर्वन् तिष्ठति । 'तएणं तस्स भरहस्स रण्णो अट्टमभत्तंसि परिणममाणंसि
सिधूए देवीए आसनं चलइ' ततः खलु तस्य भरतस्य राज्ञोऽष्टमभक्ते परिणमति—
परिपूर्णप्राये जाते सगच्छति सति सिन्ध्वा देव्या आसनं सिंहासनं चलति 'तएणं
सा सिंधु देवी आसनं चलयं पासइ' ततः खलु सा सिन्धुदेवी आसनं—स्वसिंहासनं
चलितं पश्यति 'पासित्ता' दृष्ट्वा 'ओहिं पउजइ' अवधिं प्रयुंक्ते—अवधिना ज्ञानेन पश्य-
ति 'पउजित्ता' प्रयुज्य 'भरहं राय ओहिणा आमोएइ' भरत राजानम् अवधिना
अवधिज्ञानेन, अभोगयति उपयुक्ते जानातीत्यर्थः 'आमोइत्ता' आमोग्य उपयुज्य ज्ञात्वा
तस्याः सिन्धुदेव्याः 'इमे एयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए कप्पिए पत्थिए मणोगए
संकप्पे समुप्पज्जित्था' अयमेतद्रूपो वक्ष्यमाणस्वरूपः, आध्यात्मिकः आत्मगत अङ्कुर

वाला अतएव ब्रह्मचारी भरत चको २॥ हाथ प्रमाण दर्शान पर पूर्वोक्त मणिमुवर्ण,दि सबका
परित्याग करके बैठ गया, और सिन्धु देवी का मनमें ध्यान करने लगा । (तएणं तस्स भरहस्स
रण्णो अट्टमभत्तंसि परिणममाणंसि सिधूए देवीए आसनं चलइ) जब उस भरत राजा को अट्टम
भक्तकी तपस्या पूरी होने को आई कि उसी समय सिन्धु देवी का आसन कंपायमान हुआ । (तएणं
सा सिंधु देवी आसनं चलयं पासइ) सिन्धु देवीने ज्यों ही कंपित हुए अपने आसन को देखा तो
(पासित्ता ओहिं पउजइ) उसी समय उसने अपने अवधि ज्ञान को जोड़ा—अर्थात् अवधिज्ञान का
प्रयोग किया (पउजित्ता भरहं राय ओहिणा आमोएइ) अवधिज्ञान का प्रयोग करके उसने उसके
द्वारा भरत राजा को देखा (आमोइत्ता इमे एयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे
समुप्पज्जित्था) राजा को देखकर उसे आध्यात्मिक चित्तितकल्पितप्रार्थितमनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ ।
संकल्प के इन विशेषणों की व्याख्या पीछे की जा चुकी है । इन विशेषणों का तात्पर्यार्थ ऐसा है—

पोसहिप वंभयारी जाव दम्भसंथारोवगए अट्टमभत्तिप सिंधुदेविं मणसि करेमाणे चिद्धइ)
ब्रह्म उपवास वर्धने ते पौषध व्रतवाणे जेथी ब्रह्मचारी भरतचको अदी हाथ प्रमाण दर्भा-
सन उपर पूर्वोक्त मणि मुवर्णादि सर्वने परित्याग करीने जेसी गये अने सिन्धु देवीनुं
मनमां ध्यान करवा लाग्ये । (तएणं तस्स भरहस्स रण्णो अट्टमभत्तंसि परिणममाणंसि
सिधूए देवीए आसनं चलइ) ज्यारै ते भरत राजानी अट्टम भक्तानी तपस्या समाप्त थवा
आवी के तेज समये सिन्धु देवीनुं आसन कंपायमान थयु । (तएणं सा सिन्धु देवी
णं चलयं पासइ) सिंधु देवीजे ज्यारै पोतानु आसन कंपित थतुं जेथुं के (पासित्ता
ओहिं पउजइ) तरेत ज तेजे पोताना अवधिज्ञानने जेठयुं जेटवे के तेजे पोताना अवधि-
ज्ञानने प्रयोग कर्ये । (पउजित्ता भरहं राय ओहिणा आमोएइ) अवधिज्ञानने प्रयोग करीने
तेजे तेना वडे भरतराजने जेथे । (आमोइत्ता इमे एयारूवे अज्झत्थिए चित्तिप कप्पिए पत्थिए
मणोगए प्पे समुप्पज्जित्था) राजाने जेधने तेना मनमां आध्यात्मिक, चित्तित, प्रार्थित

षट्खंडाधिपति भरतस्तथैव यावत् अत्र यावत् पदात् नन्दितः प्रीतिमानाः, परममौमस्यतः
 हर्षवशविसर्पद् हृदय इति ग्राह्यम् एतादृशो भरतः 'जेणेव सिंधूए देवीए भवणं तेणेव
 उवागच्छइ' यत्रैव सिन्धुदेव्या भवनं निवासस्थानम् तत्रैवोपागच्छति 'उवागच्छित्ता'
 उपागत्य 'सिंधूए देवीए भवणस्स अदूरसामंते' सिन्ध्वा देव्या भवनस्य अदूरसामन्ते
 नातिदूरे नातिसमीपे यथोचितस्थाने 'दुवालसजोयणायां णवजोयणवित्थिन्नं वरणगर-
 सरिच्छं विजयखंघावारणिवेसं करेइ' द्वादश योजनायाम्, नव योजनविस्तीर्णं वरनगरसदृश
 विजयस्कन्धावारनिवेशं सेनानिवेशं करोति 'जाव सिंधु देवीए अट्टमभत्तं पणिणइ' अत्र
 यावत्पदात् वर्द्धकिरत्नशब्दायनपौषधशाला निर्माणनादि सर्वं ग्राह्यम्, तेन पौषधशालायां
 सिन्धुदेव्याः साधनाय भरतो राजा अष्टमभत्तं प्रगृह्णाति 'पणिणित्ता' प्रागृह्य 'पोसहसालाए
 पोसहिण् बंभयारी जाव दब्भसंथारोवगए अट्टमभत्तिण् सिन्धुदेवि मणसि करेमाणे चिट्ठइ'

उवागच्छइ) बहु आनन्दित एवं सतुष्ट चित्तं हुआ यहां यावत् शब्द से—नन्दित' प्रीतिमाना-
 परमसौमनस्यतः हर्षवशविसर्पद् हृदयः" इन पदों का संग्रह हुआ है। इन पदों की व्याख्या
 यथास्थान की जा चुकी है। ऐसे विशेषणों से विशिष्ट वह भरतचक्रो जहां पर सिन्धु देवी का
 भवन था—निवासस्थान था वहां पर आया (उवागच्छित्ता) आकर के (सिंधूए देवीए भवणस्स
 अदूरसामंते) उसने सिन्धुदेवी के भवन पास ही यथोचितस्थान में (दुवालसजोयणायां णव
 जोयणवित्थिन्नं, वरणगरसरिच्छं विजयखंघावारणिवेस करेइ) अपना १२योजन लम्बा और
 नौ योजन चौड़ा श्रेष्ठनगर के जैसा विजयस्कन्धावार निवेश किया—सेना का पड़ाव डाला (जाव
 सिंधू देवीए अट्टमभत्तं पणिणइ) यहां यावत् पद से वर्द्धकि रत्न को बुलाना, पौषध शाला का निर्मा-
 ण आदि कार्यों के निर्माण आदि सम्बन्ध कहना इत्यादि सब कथन पूर्व में किये गये कथन के
 अनुसार समझ लेना चाहिये। पौषधशाला में बैठकर भरत राजाने सिन्धु देवी को अपने वश में
 करने के लिये तीन उपवास किये। (पणिणित्ता पोसहसालाए पोसहिण् बंभयारी जाव दब्भ-
 संथारोवगए अट्टमभत्तिण् सिंधु देवि मणसि करेमाणे चिट्ठइ) तीन उपवास लेकर वह पौषध व्रत

तेणेव गच्छइ) ते राजा अतीव आनन्दित तेमञ्च संतुष्ट चित्तवाणे थये अही' यावत्
 शुद्धी "नन्दितः प्रीतिमाना परमसौमस्यत हर्षवशविसर्पद् हृदयः" ये पदोना संग्रह
 थये छे ये पदोनी व्याख्या यथास्थाने करवाभा आवेद छे जेवा विशेषणोनी विशिष्ट
 ते भरतचक्रो न्यां (सिन्धु देवीनुं) भवन छत्तु—निवासस्थान छत्तु त्या आव्यो। (उवागच्छित्ता)
 त्या आवीने (सिंधूए देवीए भवणस्स अदूरसामंते) तेणे सिन्धु देवीना भवननी पास
 यथोचित स्थानमा (दुवालसजोयणायां णवजोयणवित्थिन्नं, वरणगरसरिच्छं विजय-
 खंघावारणिवेसं करेइ) पोताने। १२ योजन लांजे। अने ९ योजन पडोणे। श्रेष्ठ नगर
 जेवे निजय स्कन्धावार निवेश कथो—जेठे के पड़ाव नाथ्ये। (जाव सिंधूदेवीए अट्टमभत्तं
 पणिणइ) अही यावत् पथी वर्द्धकिरत्नने पोताव्यो, पौषधशालातु निर्माण कराय् छत्तु त्यादि
 पूर्व वर्णित सब कथन अध्याहृत करी देवुं जेठे पौषधशालामा जेथाने भरत राजा
 सिन्धुदेवीने पोताना वशमां करवा भाटे तब छपरासे कथी (पणिणित्ता पोसहसालाए

पौषशालायां पौषत्रिः—पौषत्रयनवान अतएव 'वभयागी' ब्रह्मचारी 'जाव दम्भ-
थारोवगए' यावद्दर्भसंस्तारकोपगतः सार्द्धद्वयहस्तपरिमितदम्भासने उपविष्टः सन् अत्र
यावत्पदात् उन्मुक्तमणिसुवर्ण इत्यादि सर्वं पूर्वोक्त ग्राह्यम् अष्टमभक्तिकः—कृताष्टमतपाः
सिन्धुदेवीं मनसि कुर्वन् तिष्ठति । 'तएणं तस्स भरहस्स रण्णो अट्टमभत्तंसि परिणममाणंसि
सिधूए देवीए आसनं चलइ' ततः खलु तस्य भरतस्य राज्ञोऽष्टमभक्ते परिणमति—
परिपूर्णप्राये जाते सगच्छति सति सिन्ध्वा देव्या आसनं सिंहासनं चलति 'तएणं
सा सिंधु देवी आसनं चलियं पासइ' ततः खलु सा सिन्धुदेवी आसनं—स्वसिंहासनं
चलितं पश्यति 'पासित्ता' दृष्ट्वा 'ओहिं पउजइ' अवधिं प्रयुक्ते—अवधिना ज्ञानेन पश्य-
ति 'पउंजित्ता' प्रयुज्य 'भरहं राय ओहिणा आभोएइ' भरत राजानम् अवधिना
अवधिज्ञानेन, अभोगयति उपयुज्जे जानातीत्यर्थः 'आभोइत्ता' आभोग्य उपयुज्य ज्ञात्वा
तस्याः सिन्धुदेव्याः 'इमे एयारूवे अज्झत्थिए चितिए कप्पिए पत्थिए मणोगए
संकप्पे समुप्पज्जित्था' अयमेतद्रूपो वक्ष्यमाणस्वरूपः, आध्यात्मिकः आत्मगत अङ्कुर

वाला अतएव ब्रह्मचारी भरत चक्रो २॥ हाथ प्रमाण दर्भासन पर पूर्वोक्त मणिसुवर्ण,दि सबका
परित्याग करके बैठ गया, और सिन्धु देवी का मनमें ध्यान करने लगा । (तएणं तस्स भरहस्स
रण्णो अट्टमभत्तंसि परिणममाणंसि सिधूए देवीए आसनं चलइ) जब उस भरत राजा को अष्टम
भक्तकी तपस्या पूरी होने को आई कि उसी समय सिन्धु देवी का आसन कंपायमान हुआ । (तएणं
सा सिंधु देवी आसनं चलियं पासइ) सिन्धु देवीने ज्यों ही कंपित हुए अपने आसन को देखा तो
(पासित्ता ओहिं पउजइ) उसी समय उसने अपने अवधि ज्ञान को जोड़ा—अर्थात् अवधिज्ञान का
प्रयोग किया (पउंजित्ता भरहं राय ओहिणा आभोएइ) अवधिज्ञान का प्रयोग करके उसने उसके
द्वारा भरत राजा को देखा (आभोइत्ता इमे एयारूवे अज्झत्थिए चितिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे
समुप्पज्जित्था) राजा को देखकर उसे आध्यात्मिक चितितकल्पितप्रार्थितमनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ ।
संकल्प के इन विशेषणों की व्याख्या पीछे की जा चुकी है । इन विशेषणों का तात्पर्यार्थ ऐसा है—

पोसहिणं बभयारी जाव दम्भसंस्तारोवगए अट्टमभत्तिए सिन्धुदेवि मणसि करेमाणे चिद्धइ)
ब्रह्म उपवास वर्धने ते पौषध व्रतवाणे। ओशी ब्रह्मचारी भरतचक्रो अढी हाथ प्रमाण दर्भा-
सन उपर पूर्वोक्त भक्षि सुवर्णादि सर्वान्। परित्याग करीने जेसी गथे। अने सिन्धु देवीनुं
भनभां ध्यान करवा लाग्ये। (तएणं तस्स भरहस्स रण्णो अट्टमभत्तंसि परिणममाणंसि
सिधूए देवीए आसनं इ) अथादे ते भरत राजान्नी अट्टम भक्तान्नी तपस्या समाप्त थवा
आवी के तेज समये सिन्धु देवीनुं आसन कंपायमान थयुं (तएणं सा सिन्धु देवी
आसनं चलिय पासइ) सिंधु देवीजे अथादे पोतानुं आसन कंपित थयुं जेथुं के (पासित्ता
ओहिं पउंजइ) तस्य ज तेथे पोताना अवधिज्ञानने जेठयुं जेठवे के तेथे पोताना अवधि-
ज्ञानने। प्रयोग कथे। (पउंजित्ता भरहं राय ओहिणा आभोएइ) अवधिज्ञानने। प्रयोग करीने
तेथे तेना वडे भरतराजने जेथे। (आभोइत्ता इमे एयारूवे अज्झत्थिए चितिए कप्पिए पत्थिए
मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था) राजाने जेधने तेना भनभा आध्यात्मिक, चितित, प्रार्थित

इव, ततः चिन्तितः पुनः पुनः स्मरणरूपो विचारो द्विपत्रित इव कल्पितः स एव व्यवस्थायुक्तः महतोऽस्याऽनुरूपं -सत्कारविशेषं-करिष्यामीति कार्याकारेण परिणतो विचारः पल्लवितः इव ३, प्रार्थितः-स एव इष्टरूपेण स्वीकृतः पुष्पित इव ४, मनोगतः सङ्कल्पः मनसि दृढरूपेण स्थितः 'इदमेव मया कर्तव्यम्' इति विचारः फलित इव ५, समुदपद्यत-समुत्पन्नः स च कः सङ्कल्प इत्याह-'उत्पण्णे खलु भो जंबुद्वीवे दीवे भरहे वासे भरहे णामं राया चाउरंतचक्कवट्टी, तं जीयमेय तीय पच्चुप्पणमणा-गयाणं सिंघूणं देवीणं भरहाणं राईणं उवत्थाणीय करेत्तए' उत्पन्नः खलु भो जम्बू-द्वीपे-जम्बूद्वीप नामक द्वीपे भरते वषे भरतो नाम राजा चातुरन्तचक्रवर्त्ती समा-

કિ જિમ પ્રકાર બીજ મૂમિ મેં રહકર પહિલે અઢકુર કે રૂપ મેં પનપતા હૈ उसी प्रकार यह सकल्प भी आत्मा में अडकुर रूपमें उदमुत हुआ अतः उसे अध्यात्म पद से यहा विशेषित किया गया है । यह बार २ उसके स्मरण में जब आने लगा तब यह द्विपत्रित उसी अडकुर की तरह चिन्तित पद से विशेषित किया गया है । जब यही सकल्प "इम मंहान् पुरुष का मै 'इसी के अनुरूप सत्कार करूंगा" इस प्रकार की व्यवस्था वाला बन गया तब यह कल्पित पद से विशेषित किया गया है । ऐसा करने से हो मेरा काम फलित हो सकेगा । इस प्रकार इष्ट रूप से यह मान्य हो चुका तब यह प्रार्थित पद से विशेषित किया गया है । तथा इस विचार रूप संकल्प को उसने जब तक वचन द्वारा बाहिर प्रकाशित नहीं किया-तब तक वह मनोगत रहने के कारण मनोगत बनारहा इसलिये उसे मनोगत पद से विशेषित किया गया है । (उत्पण्णे खलु भो जंबुद्वीवे दीवे भरहे वासे भरहे णामं राया चाउरंत चक्कवट्टी तं जीयमेय तीय पच्चु-प्पण मणागयाणं सिंघूणं देवीणं भरहाणं राईणं उवत्थाणिअं करेत्तए) जंबूद्वीप नाम के द्वीप में

મનોગત સંકલ્પ ઉત્પન્ન થયો. સંકલ્પના એ ઉદ્દેશિત વિશેષણોની વ્યાખ્યા પહેલા સ્પષ્ટ કરવામાં આવી છે. એ વિશેષણોનું તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે-કે જેમ બી જમિમાં રહીને પહેલાં અંકુરના રૂપમાં ઉદ્ભવે છે તે જ પ્રમાણે એ સંકલ્પ પણ આત્મામાં અંકુરના રૂપમાં ઉદ્ભૂત થયો. એથી તે સંકલ્પને પ્રથમ અધ્યાત્મ પદથી અહીં વિશેષિત કરવામાં આવેલ છે. એ જ્યારે વારવાર તેના સ્મરણમાં આવવા લાગ્યો ત્યારે એ દ્વિપત્રિત તે અંકુરની જેમ ચિત્તિત પદથી વિશેષિત કરવામાં આવેલ છે જ્યારે એ જ સંકલ્પ "એ મહાપુરુષને હું એના અનુરૂપ સત્કાર કરીશ" એ બાતની વ્યવસ્થાયુક્ત થઈ ગયો ત્યારે તે સંકલ્પ કલ્પિત પદથી વિશેષિત કરવામાં આવેલ છે આ પ્રમાણે કરવાથી જ મારું કામ ફલિત થઈ શકશે આ રીતે એ સંકલ્પ ઇષ્ટ રૂપથી માન્ય થઈ ગયો ત્યારે તે પ્રાર્થિત પદથી વિશેષિત કરવામાં આવેલ છે તેમજ એ વિચારરૂપ સંકલ્પને તેણે જ્યાં સુધી વચન દ્વારા બહાર પ્રગટ કર્યો નહીં ત્યાં સુધી તે મનોગત હોવાથી મનોગત નામથી સંબોધિત થયો એથી જ તેને મનો-ગત પદથી વિશેષિત કરવામાં આવેલ છે (ઉત્પણ્ણે સ્ખલુ મો જંબુદ્વીવે દીવે મરહે વાસે મરહે ણામ રાયા ચાઉરંતચક્કવટ્ટી તં જીયમેય તીય પચ્ચુપ્પણમણાગયાણ સિંઘૂણં દેવીણં મરહાણં રાઈણં ઉવત્થાણિઅં કરેત્તપ) જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમાં ભરતક્ષેત્રમાં ભરત નામે રાજા

યાતિ-તજ્જીતમેતત્ આચાર એપઃ અતીતવર્તમાનાનાગતાના સિન્ધુનાં સિન્ધુનામ્નીનાં
 દેવીનાં ભરતાનાં રાજામ્ ઔપસ્થાનિકં નજરાણા ડતિ લોકે પ્રમિદ્ધ પ્રાપ્ત કત્તુ વર્તતે
 હિતિ 'તં ગચ્છામિ ણ અહ પિ મરહસ્સ રણો ઉવત્થાણિયં કરેમિ ત્તિરુદ્ધ કુંભદ્વસહસ્સરય-
 ણચિત્તં ણાણામણિ ક્કણગરયણમત્તિચિત્તાણિય દેવગણમદાસણાણિ ય કહગાણિય તુહિ-
 યાણિય જાવ આમરણાણિય મેળહ મિહિત્તા' તદ્ગચ્છામિ સ્વલુ અહમપિ ભરતસ્ય રાજશ્ર-
 ક્ષિણઃ ઉપસ્થાનિક પ્રાપ્ત કરોમીતિ કૃત્વા મનસિ વિચાર્ય 'કુંભદ્વસહસ્સમ ગ્યણચિત્ત'
 કુમ્ભાદ્વસહસ્સરત્નચિત્રમ્-કુમ્ભાનામદ્યોત્તરં સહસ્રં રત્નચિત્રમ્ નાનામણિકનકરત્નમત્તિચિત્રે
 ચ દ્વે સુવર્ણમદ્રાસને ચ નાનામણિકનકરત્નાનાં મત્તિઃવિવિધરચના તયા ચિત્રે વિચિત્રે ચ
 દ્વે સુવર્ણમદ્રાસને કટકાનિ ચ હસ્તામરણાનિ ત્રુટિકાનિ ચ વાદ્દામરણાનિ યાવદામર-
 ણાનિ ચ ગૃહાતિ ગૃહીત્વા 'તાપ ઉક્કિદ્ધાપ જાવ એવં વયાસી' તયા ઉત્કૃષ્ટયા ગત્યા
 યાવત્ પદાત્ ત્વરયા આકૂલયા ન સ્વાભાવિન્યા ચપલયા કાયતોડપિ ચણ્ડયા, રૌદ્રયા
 અત્યુત્કર્ષયાગેન, સિંહયા તદ્દાદર્થ સ્થેયેણ, ઉદ્ભૂતયા દર્પાતિશયેન જયિન્યા વિપક્ષજેતૃત્વેન

ભરત ક્ષેત્ર મેં ભરત નામ કા રાજા ઉત્પન્ન હુઆ હૈ । તો અતીત અનાગત એવ વર્તમાન સિંધુ
 દેવિયોં કા યહ કુલ પરમ્પરા કા આચાર હૈ કિ વે ડન ભરત કે ચક્રવર્તિયોં કો નજરાના
 પ્રદાન કરે અતઃ (ગચ્છામિણં અહ પિ મરહસ્સ રણો ઉવત્થાણિયં કરેમિત્તિ કદ્દુ કુંભદ્વસહસ્સ
 રયણચિત્તં ણાણામણિક્કણગરયણમત્તિચિત્તાણિય દેવગણમદાસણાણિ ય કહગાણિ ય તુહિયાણિ ય જાવ
 આમરણાણિ ય મેળહ) મેં જાઁઁ ઔર મેં મી ડન ભરત મહારાજા કો મેંટ પ્રદાન કરું એસા વિચાર
 કરેકે ડસને ૧૦૦૮ કુંભ ઔર નાનામણિયોં એવં કનક રત્ન કી રચના સે જિસમેં અનેક
 ચિત્ર હો રહે હૈ એસે દો મદ્રાસન, તથા કટક હસ્તામરણ, ઔર ત્રુટિ-જાહુ કે આમરણોં કો
 ડસને લિયા (મિહિત્તા તાપ ઉક્કિદ્ધાપ જાવ એવં વયાસી) ડન્હે ડેકર વહ ડસે ઉત્કૃષ્ટ
 આદિ વિશેષણોંવાલી ગતિ સે ચલતી-૨ જહાં પરસેના કા પઢાવ રક્ષકર ભરત મહારાજા થા વહાં

ઉત્પન્ન થયો છે. અતીત અનાગત તેમજ વર્તમાન સિન્ધુદેવીઓને એ કુલપરંપરાગત
 આચાર છે કે તેઓ તે ભરતના ચક્રવર્તિઓને નજરાણું પ્રદાન કરે માટે (ગચ્છામિણં અહંપિ
 'સ રણો ઉવત્થાણિય કરેમિત્તિ કદ્દુ કુંભદ્વ સહસ્સરયણચિત્તં ણાણામણિક્કણ-
 મત્તિચિત્તાણિ ય દેવગણમદાસણાણિ ય કહગાણિ ય તુહિયાણિ ય જાવ આમરણાણિ
 ય મેળહ) હું જાઉં અને હું પણ તે ભરત રાજાને નજરાણું પ્રદાન કરું આમ વિચાર કરીને
 તેણે ૧૦૦૮ કુંભો અને અનેક મણિઓ તેમજ કનક, રત્નની રચનાથી જેમાં અનેક ચિત્રો
 મંડિત છે એવા એ ઉભય મદ્રાસને તેમજ કટક-હસ્તામરણો અને ત્રુટિ-જાહુના આભરણો
 એ સર્વ આભૂષણો તેણે લીધા (મિહિત્તા તાપ ઉક્કિદ્ધાપ જાવ એવં વયાસી) સર્વ આભૂ-
 ષણોને લઈને તે ઉત્કૃષ્ટ વગેરે વિશેષણોવાળી ગતિથી ચાલતી-ચાલતી જ્યાં ભરત રાજા હતો,
 ત્યાં આવી. ગતિના ઉત્કૃષ્ટ વગેરે વિશેષણો યાવત્ પદથી ગૃહીત થયેલા છે તે આ પ્રમાણે
 છે-“ત્વરયા ચપલયા, ચણ્ડયા, રૌદ્રયા, સિંહયા, ઉદ્ભૂતયા, જયિન્યા, હેકયા, વિવ્યયા” ત્યાં

છેકયા નિપુણયા દિવ્યયા દેવગત્યા આકાશમાર્ગગમનેન વ્યતિવજન્ યત્રૈવ ભરતો રાજા તત્રૈવોપાગચ્છન્તિ ઉપાગત્ય અન્તરિક્ષપ્રતિપન્ના સા સિન્ધુદેવી કરતન્ યાવદઙ્ગલિ કૃત્વા જયવિજયશબ્દેન વર્દ્યયતિ વર્દ્યયિત્વા एवं વક્ષ્યમાણપ્રકારેણ અવાદીત્ ઉક્ત-વતી ક્ષિપ્તુત્રવતી इत्याह— ‘અભિજિણં’ इत्यादि ‘अभिजिणं देवानुप्पिण्हिं केवल-कप्पे भरहे वासे अहण्णं देवानुप्पियाणं विसयवासिणी अहण्णं देवानुप्पियाणं आणत्तिकिकरी त पडिच्छंतु णं देवानुप्पिया ! मम इमं पयारूवं पीइदाणं त्तिकददु कुंमट्ट-सहस्सं रयणचित्तं णाणामणिकणगकडगाणिय जाव सो चेव गमो जाव पडिविसज्जेइ’ અભિજિતં खलु देवानुप्रियैः श्रीमद्भिः केवलकल्पं-केवलज्ञानसदृशं सम्पूर्णं भरतं वर्षम् भरतक्षेत्रम् तेन हेतुना अह खलु देवानुप्रियाणां भवतां विषयवासिनी देशवासिनी अहं खलु देवानुप्रियाणाम् आज्ञप्तिकिङ्करी आज्ञाङ्किता सेविका तत् तस्मात् प्रतीच्छन्तु गृह्णन्तु खलु देवानुप्रियाः ! मम इदमेतद्रूपं प्रीतिदानम् इति कृत्वा कथयित्वा कुम्भाष्ट-सहस्रं रत्नचित्रम् अष्टोत्तरसहस्रपरिपूरितं कुम्भं तथा नानामणिकनकरत्नभक्तिचित्रे

પર આવી—વે ઉત્કૃષ્ટ આદિ ગનિ કે, જો વિશેષણ પદ યાવત્પદ સે ગૃહીત હુપ હૈ વે હસ પ્રકાર સે હૈ—ત્વરયા, ચપલયા, ચળ્હયા, રૌદ્રયા, સિંહયા, ઉદ્ધૂતયા, જયિન્યા, છેકયા, દિવ્યયા,” વહા આકરકે વહ આકાશ માર્ગ મેં હી સ્થિત રહી નીચે નહીં ઉતરી વહીં સ્હી-૨ ડસને દોનો હાથો કી અજલિ બનાકર ઓર ડસે મસ્તક પર રસકર પહિછે ભરત મહારાજાકો જયવિજય શબ્દોં સે વધાઈ દી । વધાઈ દેકર ફિર ડસને હસ પ્રકાર ડનસે કહા—(અભિજિણં દેવાણુપ્પિણ્હિં કેવલકપ્પે ભરહે વાસે અહણ્ણં દેવાણુપ્પિયાણ વિસયવાસિણી અહણ્ણં દેવાણુપ્પિયાણં આણત્તિકિકરી તં પહિચ્છંતુ ણં દેવાણુપ્પિયા ! મમ ઇમં પયારૂવં પીહદાણં ત્તિકદદુ કુમટ્ટ-સહસ્સ રયણચિત્તં ણાણામણિક્કણગકઢગાણિય જાવ સોચેવ ગમો જાવ પહિવિસજ્જેહ) આપ દેવાનુપ્રિય ને કેવલ કલ્પ—સમ્પૂર્ણ ભરત ક્ષેત્ર—જીત—લિયા હૈ । મૈ મી આપ દેવાનુપ્રિય કે હી દેશ કી નિવાસિની હૂં— અતઃ આપ દેવાનુપ્રિય કી મેં આજ્ઞાકિઙ્કરીહૂં—આજ્ઞાકી સેવિકહૂં હસલિયે આપ દેવાનુપ્રિય મેરે દ્વારા દિયે ગયે હસ પ્રીતિદાન કો સ્વીકાર કરેં । ઇસા નિવેદન કરકે ડસને ૧૦૦૮ કુમો તથા નાનામણિયોં, કનક एवं રત્નો સે જિનમેં રત્નોના

આવીને તે આકાશ માર્ગમા જ અવસ્થિત રહી નીચે ઉતરી નહીં ત્યા બી રહીને જ તેણે બન્ને હાથોની અર્જલિ બનાવીને અને તે અર્જલિને મસ્તક પર મૂકીને સર્વ પ્રથમ ભરત રાજાને જય-વિજય શબ્દોથી વધામણી આપી. વધામણી આપીને પછી તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું— (અભિજિણ દેવાણુપ્પિણ્હિં કેવલકપ્પે ભરહે વાસે અહણ્ણ દેવાણુપ્પિયાણ વિસયવા-સિણી અહણ્ણં દેવાણુપ્પિયાણં આણત્તિકિકરી ત પહિચ્છંતુ ણં દેવાણુપ્પિયા ! મમ ઇમં પયારૂવં પીહદાણ ત્તિકદદુ કુમ્મટ્ટસહસ્સં રયણચિત્ત ણાણામણિ કણગ કઢગાણિય જાવ સોચેવ ગમો જાવ પહિવિસજ્જેહ) આપ દેવાનુપ્રિયે કેવલકલ્પ-સમ્પૂર્ણ ભરતક્ષેત્ર છતુ ધીધુ છે. હું પણ આપ દેવાનુપ્રિયના દેશમા જ રહેનારી છું એથી આપ દેવાનુપ્રિયની જ હું આજ્ઞા કિ કરી છું—આજ્ઞાની સેવિકા છું એથી આપ દેવાનુપ્રિય મારા વડે આપવામાં આવેલ આ પ્રીતિદાનને ગ્રહણ કરો આ પ્રમાણે નિવેદન કરીને તેણે ૧૦૦૮ કુંભો તથા નાનામણિઓ,

ચ દ્વે કનકમદ્રાસને મિદ્રાસનદ્વય કટકાનિ ચ યાવત્ સ પત્ર માગધદેવગમોઽવાનુમ-
ર્ત્તવ્યઃ યાવત્ પ્રતિવિસર્જયતિ યાવન્પદાત્ સ ભરતઃ પ્રીતિદન સ્વીકરોતિ તતસ્તાં દેવોં
સત્કારયતિ સન્માનયતિ પ્રતિવિર્જયતિ ચ સ્વસ્થાનગમનાય અનુમન્યતે ત્રાણપ્રયોગમન્તરેણં
સિન્ધુદેવ્યાઃ સાધનં જાત મિતિભાવઃ તદુત્તરવિધિમાદ્—‘તપ્પણં’ ઇત્યાદિ ‘તપ્પણ સે મરહે
રાયા પોસહસાલાઓ પહ્ણિણ્ણમ્મહ’ તતઃ સ્વલુ સ મરતો રાજા પૌષધશાલાતઃ પ્રતિ-
નિષ્ક્રામતિ નિર્ગચ્છતિ ‘પહ્ણિણ્ણમ્મિત્તા’ પ્રતિનિષ્ક્રમ્ય નિર્ગત્ય ‘જેણેવ મજ્જનઘરે તેણેવ
ઉવાગચ્છઈ’ યત્રેવ મજ્જનગૃહ—સ્નાનગૃહમ્, તત્રેવ ઉપાગચ્છતિ ‘ઉવાગચ્છિત્તા’ ઉપાગત્ય
‘ણ્ઠાપ કયવલિકમ્મે જાવ જેણેવ મોયણમંહવે તેણેવ ઉવાગચ્છઈ’ સ્નાતઃ કૃતવલિ-
કર્મા—કાકેભ્યો દત્તાન્નભાગઃ સન્ યાવત્ યત્રેવ મોજનમંહપસ્તત્રેવ ઉપાગચ્છતિ ‘ઉવા-
ગચ્છિત્તા’ ઉપાગત્ય ‘મોયણમંહવંસિ સુદ્ધાસણવરગપ્ અદ્દમમત્તં પરિયાદિયઈ’ મોજન

હો રહી હૈં એસે દો કનક મય મદ્રાસનોં કો, દો કટકોં કો એવં જુટિતોં કો મેટ રૂપ મેં મહા-
રાજા મરત ચક્રી કે લિયે પ્રદાન કિયે । યહાં પર માગધ દેવ કે પ્રકરણ મેં કહા ગયા સબ વિષય
યાવત્પદ સે ગૃહીત હુઆ હૈ—અત સિન્ધુ દેવી દ્વારા પ્રદત્ત સબ નજરાના મહારાજા મરતચક્રોં ને
સ્વીકાર કર લિયા । ઔર ફિર ઉનકા સમ્માન ઔર સત્કાર કે સાથ ડસને સિન્ધુ દેવી કો વિમર્જિત
કર દિયા યહાં યહ વિશેષ કથન જાનનાં ચાહિયે કિ મહારાજા મરતચક્રી ને જો સિન્ધુદેવો કો
વશ મેં કિયા હૈ વહ વિના ત્રાણ કે પ્રયોગ કે કિયા હૈ (તપ્પણં સે મરહે રાયા પોસહસાલાઓ
પહ્ણિણ્ણમ્મહ) ઇમ કે બાદ મરતચક્રી પૌષધશાલા સે બાહર આયે (પહ્ણિણ્ણમ્મિત્તા જેણેવ
મજ્જનઘરે તેણેવ ઉવાગચ્છઈ) ઔર બાહર આકર કે વે જહાં પર સ્નાન ગૃહથા વહાં પર ગયે ।
(ઉવાગચ્છિત્તા ણ્ઠાપ કયવલિકમ્મે જાવ જેણેવ મોયણમંહવે તેણેવ ઉવાગચ્છઈ) વહાં જાકર
ઉન્હોંને સ્નાન કિયા ઔર સ્નાન કરકે વલિકર્મ કિયા —કાક આદિકોં કે લિયે અન્ન કા
વિભાગ કિયા । ફિર વે વહાં મોજન મંહપ મેં આયે (ઉવાગચ્છિત્તા મોયણમંહવંસિ સુદ્ધાસન—
વરગપ્ અદ્દમમત્તં પરિયાદિયઈ) વહાં આકર કે વે ઉસ મોજન મંહપ મેં સુદ્ધાસન સે બૈઠ

કનક તેમજ સ્નેહી જેમાં રચના થઈ રહી છે એવા બે કનક ભદ્રાસનો, બે કટકો
તેમજ જુટિતો ભરતચક્રીને અર્પણ કર્યા અહીં મગધદેવના પ્રકરણમાં વર્ણિત સમસ્ત વિષય
યાવત્ પદ્ધતી ગૃહીત થયેલો છે આમ સિન્ધુ દેવી દ્વારા પ્રદત્ત સર્વ નજરાણુ ભરતચક્રીએ
અહણુ કરી લીધું અને પછી સન્માન અને સત્કાર સાથે તેણે સિન્ધુદેવીને વિચર્જિત કરી લીધી
અહીં એ વિશેષ કથન બાણુવુ બેઠ્યો કે ભરતચક્રીએ જે સિન્ધુદેવીને વશમા કીધી તે
બાણુ નાપ્રયોગ વિના જ (તપ્પણં સે મરહે રાયા પોસહસાલાઓ પહ્ણિણ્ણમ્મહ) ત્યાર બાદ
ભરતચક્રી પૌષધશાળામાંથી બહાર આવ્યા (પહ્ણિણ્ણમ્મિત્તા જેણેવ મજ્જનઘરે તેણેવ ઉવા-
ગચ્છઈ) અને બહાર આવીને ત્યાં સ્નાન ગૃહ હતું ત્યાં ગયા. (ઉવાગચ્છિત્તા ણ્ઠાપ કયવલિકમ્મે
જાવ જેણેવ મોયણમંહવે તેણેવ ઉવાગચ્છઈ) ત્યાં જઈને તેમણે સ્નાન કર્યું અને સ્નાન
કરીને મલિકર્મ કર્યું એટલે કે કાક વગેરે માટે અસનો ભાગ કર્યો પછી તે ત્યાંથી લોજન
મંદપમાં આવ્યા (ઉવાગચ્છિત્તા મોયણમંહવંસિ સણવરગપ્ અદ્દમમત્તં પરિયાદિયઈ) ત્યાં

मण्डपे सुखासनवरगतः अष्टमभक्तं परिपारयति, 'परियादिएत्ता' परिपार्य 'जाव सीहा-
सनरगतः श्रेष्ठसिंहासनोपविष्टः 'पुरत्याभिमुहे णिसीयइ' पोरस्त्याभिमुखः निपीदति
उपविशति 'णिसीएत्ता' निपद्य उपविश्य 'अट्टारस सेणिप्पसेणीओ सदावेइ' अष्टादश श्रेणि-
प्रश्रेणीः शब्दयति आह्वयति 'सदावित्ता' शब्दयित्वा आह्वय 'जाव अट्टाहियाए महामहि-
माए तमाणत्तिय पच्चप्पिणंति' यावत्ताः श्रेणि प्रश्रेणयोऽष्टादिकाया महामहिमायाः ताम्
आज्ञास्तिकां प्रत्यर्पयन्ति समर्पयन्ति यथाऽष्टादिकोत्सवः कृत इति ॥सू० ११॥

अथ वैताड्यसुरसाधनमाह- "तएणं से" इत्यादि ।

मूलम्- तएणं से दिड्वे चक्कस्यणे सिंघूए देवीए अट्टाहीयाए
महामहीमाए णिव्वत्ताए समाणीए आउहधससालाओ तहेव जाव
उत्तरपुरत्थिमं दिसिं वेयद्धपव्वयाभिमुहे पयाए यावि होत्था. तए णं
भरहे राया जाव जेणेव वेयद्धपव्वए जेणेव वेयद्धस्स पव्वयस्स दाहिणिल्ले
णितंवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता वेयद्धस्स पव्वयस्स दाहिणिल्ले
णितंवे दुवालसजोयणायामं णवजोयणवित्थिन्नं वरणगरसरिच्छं विज-
यखंधावारनिवेसं करेइ करित्ता जाव वेयद्धगिरिक्कुमारस्स देवस्स अट्टम-
भत्तं पणिण्हइ पणिण्हित्ता पोसहसालाए जाव अट्टमभत्तिए वेयद्धगिरि-
कुमारं देवं मणसि करेमाणे चिट्ठइ तएणं तस्स भरहस्स रण्णो अट्टमभत्तंसि

गये-और बैठकर उन्होंने अष्टमभक्त की पारणा की (परियादियत्ता जाव सीहासनवरगए
पुरत्याभिमुहे णिसीयइ) अष्टम भक्तकी पारणा करके सिंहासन पर बैठ गये (णिसीएत्ता
अट्टारस सेणिप्पसेणीओ सदावेइ) सिंहासन पर बैठकर फिर उन्होंने १८ श्रेणी प्रश्रेणिजनो को
बुझाया (सदावित्ता) बुलाकरके (जाव अट्टाहियाए महामहिमाए तमाणत्तिय पच्चप्पिणंति) यावत्
उन श्रेणी प्रश्रेणीजनो ने आठ दिन का महामहोत्सव किया । और इसकी खबर "हमलोगोने
आठ दिन का महामहोत्सव कर लियाहै । ऐसी खबर पीछे राजा के पास मेजदी ॥सू० ११॥

आधीने ते बोझन भ ३५भा सुभासन पूर्वइ भेसी गया अने भेसीने नेभने अष्टम भक्तनी
पारणा करी. (परियादियत्ता जाव सीहासनवरगए पुरत्याभिमुहे णिसीयइ) अष्टम भक्तनी
पारणा करीने पछी ते यावत् पूर्वदिश तरइ सुभ करीने सिंहासन उपर भेसी गया
(णिसीएत्ता अट्टारस सेणिप्पसेणीओ सदावेइ) सिंहासन उपर भेसीने पछी तेभणे १८ श्रेणि
प्रश्रेणिजनेने बोझाया (सदावित्ता) बोझावीने (जाव अट्टाहियाए महामहिमाए तमाणत्तिय
पच्चप्पिणंति) यावत् ते श्रेणि-प्रश्रेणिजनेओ आठ दिवसने महामहोत्सव कर्यो अने महो-
महोत्सव सम्पन्न थई जवानी सूचना राजने आयी ॥११॥

परिणममाणंसि वेयद्धगिरिकुमारस्स देवस्स आसणं चलइ एवं सिन्धु-
गमो णेयव्वो, पीईदाणं आभिसेक्कं रयणालङ्कारं कडगाणि य तुडि-
याणि य वत्थाणि य आभरणाणि य गेण्हइ, गिण्हत्ता, ताए उक्कि-
ट्टाए जाव अट्टाहियं जाव पच्चप्पिणंति । तएणं से दिव्वे चक्करयणे
अट्टाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए जाव पच्चत्थिमं दिसिं
तिमिसगुहाभिमुहे पयाए यावि होत्था, तएणं से भरहे राया तं दिव्वं
चक्करयणं जाव पच्चत्थिमं दिसिं तिमिमगुहाभिमुहं पयातं पासइ, पा-
सित्ता हट्टतुट्ट चित्त जाव तिमिसगुहाए अदूरसामंते दुवालस जोय-
णायामं णवजोयणवित्थिन्नं जाव कयमालस्स देवस्स अट्टमभत्तं पणि-
ण्हइ पणिण्हत्ता पोसहसालाए पोसहीए वंभयारी जाव कयमालगं देवं
मणसि करेमाणे करेमाणे चिट्ठइ तएणं तस्स भरहस्स रण्णो अट्टमभत्तंसि
परिणममाणंसि कयमालस्स देवस्स आसणं चलइ तहेव जाव वेयद्ध-
गिरिकुमारस्स णवरं पीईदाणं इत्थीरयणस्स तिलगचोइसं मंडालंकारं कड-
गाणि य जाव आभरणाणि य गेण्हइ गिण्हत्ता उक्किट्टाए जाव सक्का-
रेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ जाव भोयणमंडवे
तहेव महामहिमा कयमालस्स पच्चप्पिणंति ॥१२॥

छाया-ततः खलु तद्दिव्यं चक्ररत्नं सिन्ध्वा देव्याः अष्टाहिकायां महामहिमार्या निवृ-
त्तायाम्, सत्याम्, आयुधगृहशालात तथैव यावत् उत्तरपौरस्त्यां दिशं वैताढ्य-
मिमुखं प्रयातं चाप्यभवत्, ततः खलु स भरतो राजा यावत् यत्रैव वैताढ्यपर्वतः
यत्रैव वैताढ्यस्य पर्वतस्य दाक्षिणात्ये नितम्बे तत्रैवोपागच्छति, उपागत्यवैताढ्यस्य पर्व-
तस्य दाक्षिणात्ये नितम्बे द्वादशयोजनायामं नवयोजनविस्तीर्णं वरणगरसदृशं विजय-
स्कन्धावारनिवेशं करोति, कृत्वा यावत् वैत गिरिकुमारस्य देवस्य अष्टमभक्तं प्रगृ-
ह्णाति प्रगृह्य पौषधशालायां यावत् अष्टमभक्तिकः वैताढ्यगिरिकुमारं देवं मनसि कुर्वन्
तिष्ठति, ततः खलु तस्य भरतस्य राज्ञः अष्टमभक्ते परिणमति वैतं गिरिकुमारस्य देवस्य
आसनं चलति, एव सिन्धुदेव्या गमो नेतव्य, प्रीतिदानम् आभिषेक्यम् रत्नालङ्कार
कटमानि च व्रुटिकानि च वस्त्राणि आभरणानि च गृह्णाति गृहीत्वा तथा उत्कृष्टया यावत्
अष्टाहिकां यावत् प्रत्यर्पयन्ति । ततः खलु तद्दिव्यं चक्ररत्नम् अष्टाहिकायां महामहिमार्यां
निवृत्तायां सत्यां यावत् पाश्चात्यां दिशं तिमिसगुहाभिमुखं प्रयातं चाप्यभवत्, ततः खलु
स भरतो राजा तद्दिव्यं चक्ररत्नं यावत् पाश्चात्यां दिशं तिमिसगुहाभिमुखं प्रयातं पश्यति,

मण्डपे सुखासनवरगतः अष्टमभक्तं परिपारयति, 'परियादियत्ता' परिपार्य 'जाव सीहा-
सनवरगतः श्रेष्ठमिहासनोपविष्टः 'पुरत्यामिमुहे गिसीयइ' पोरस्त्यामिमुखः निपीदति
उपविशति 'गिसीयत्ता' निपद्य उपविश्य 'अट्टारस सेणिप्पसेणीओ सदावेइ' अष्टादश श्रेणि-
प्रश्रेणीः शब्दयति आह्वयति 'सदावित्ता' शब्दयित्वा आह्वय 'जाव अट्टाहियाए महामहि-
माए तमाणत्तियं पच्चप्पिण्णति' यावत्ताः श्रेणि प्रश्रेणयोऽष्टाद्विकाया महामहिमायाः ताम्
आह्वयित्वा प्रत्यर्पयन्ति समर्पयन्ति यथाऽष्टाद्विकोत्सवः कृत इति ॥सू० ११॥

अथ वैताल्यसुरसाधनमाह- "तएणं से" इत्यादि ।

मूलम्- तएणं से दिञ्चे चक्करयणे सिंघूए देवीए अट्टाहीयाए
महामहीमाए णिवत्ताए समाणीए आउहघरसालाओ तहेव जाव
उत्तरपुरत्थिमं दिसिं वेयद्धपव्वयामिमुहे पयाए यावि होत्था. तए णं
भरहे राया जाव जेणेव वेयद्धपव्वए जेणेव वेयद्धस्स पव्वयस्स दाहिणिल्ले
णितंवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता वेयद्धस्स पव्वयस्स दाहिणिल्ले
णितंवे दुवालसजोयणायामं णवजोयणवित्थिन्नं वरणगरसरिच्छं विज-
यखंधावारनिवेसं करेइ करित्ता जाव वेयद्धगिरिक्कुमारस्स देवस्स अट्टम-
भक्तं पणिण्हइ पणिण्हित्ता पोसहसालाए जाव अट्टमभत्तिए वेयद्धगिरि-
कुमारं देवं मणसि करेमाणे चिट्ठइ तएणं तस्स भरहस्स रण्णो अट्टमभत्तंसि

गये-और बैठकर उन्होंने अष्टमभक्त की पारणा की (परियादियत्ता जाव सीहासनवरगए
पुरत्यामिमुहे गिसीयइ)-अष्टम भक्तकी पारणा करके सिंहासन पर बैठ गये (गिसीयत्ता
अट्टारस सेणिप्पसेणीओ सदावेइ) सिंहासन पर बैठकर फिर उन्होंने १८ श्रेणी प्रश्रेणिजनों को
बुझाया (सदावित्ता) बुलाकरके (जाव अट्टाहियाए महामहिमाए तमाणत्तियं पच्चप्पिण्णति) यावत्
उन श्रेणी प्रश्रेणिजनों ने आठ दिन का महामहोत्सव किया । और इसकी खबर "हमलोगोंने
आठ दिन का महामहोत्सव कर लियाहैं । ऐसी खबर पीछे राजा के पास मेजदी ॥सू० ११॥

आवीने ते बोअन म डपमा सुभासन पूर्वइ भेसी गया अने भेसीने नेभने अष्टम भक्तानी
पारब्बा करी (परियादियत्ता जाव सीहासनवरगए पुरत्यामिमुहे गिसीयइ) अष्टम भक्तानी
पारब्बा करीने पछी ते यावत् पूर्वदिश तरहे सुभ करीने सिंहासन उपर भेसी गया
(गिसीयत्ता अट्टारस सेणिप्पसेणीओ सदावेइ) सिंहासन उपर भेसीने पछी तेभण्णे १८ श्रेणि
प्रश्रेणिजनेने बोआन्ना (सदावित्ता) बोआवीने (जाव अट्टाहियाए महामहिमाए तमाणत्तियं
पच्चप्पिण्णति) यावत् ते श्रेणि-प्रश्रेणिजनोंओ आठ दिवसने महामहोत्सव कर्यो अने महाम-
होत्सव सम्पन्न थई जवानी सूचना राजने आपी ॥११॥

परिणममाणंसि वेयद्धगिरिकुमारस्स देवस्स आसणं चलइ एवं सिंधु-
गमो णेयव्वो, पीईदाणं आभिसेक्कं रयणालङ्कारं कडगाणि य तुडि-
याणि य वत्थाणि य आभरणाणि य गेण्हइ, गिण्हत्ता, ताए उक्कि-
ट्टाए जाव अट्टाहियं जाव पच्चप्पिणंति । तएणं से दिव्वे चक्करयणे
अट्टाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए जाव पच्चत्थिमं दिसिं
तिमिसगुहाभिमुहे पयाए यावि होत्था, तएणं से भरहे राया तं दिव्वं
चक्करयणं जाव पच्चत्थिमं दिसिं तिमिसगुहाभिमुहं पयातं पासइ, पा-
सित्ता हट्टतुट्ट चित्त जाव तिमिसगुहाए अदूरसामंते दुवालस जोय-
णायामं णवजोयणवित्थिन्नं जाव कयमालस्स देवस्स अट्टमभत्तं पगि-
ण्हइ पगिण्हत्ता पोसहसालाए पोसहीए वंभयारी जाव कयमालगं देवं
मणसि करेमाणे करेमाणे चिट्ठइ तएणं तस्स भरहस्स रण्णो अट्टमभत्तंसि
परिणममाणंसि कयमालस्स देवस्स आसणं चलइ तहेव जाव वेयद्ध-
गिरिकुमारस्स णवरं पीईदाणं इत्थीरयणस्स तिलगंचोइसं मंडालंकारं कड-
गाणि य जाव आभरणाणि य गेण्हइ गिण्हत्ता उक्किट्टाए जाव सक्का-
रेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ जाव भोयणमंडवे
तहेव महामहिमा कयमालस्स पच्चप्पिणंति ॥१२॥

छाया-ततः खलु तद्दिव्यं चक्ररत्नं सिन्ध्वा देव्याः अष्टाहिकायां महामहिमायां निवृ-
त्तायाम्, सत्याम्, आयुषगृहशालात तथैव यावत् उत्तरपौरस्त्यां दिशं वैताढ्य-
मिमुखं प्रयातं चाप्यभवत्, ततः खलु स भरतो राजा यावत् यत्रैव वैताढ्यपर्वतः
यत्रैव वैताढ्यस्य पर्वतस्य दाक्षिणात्ये नितम्बे तत्रैवोपागच्छति, उपागत्यवैताढ्यस्य पर्व-
तस्य दाक्षिणात्ये नितम्बे द्वादशयोजनायामं नवयोजनविस्तीर्णं वरणागरसदृशं विजय-
स्कन्धावारनिवेशं करोति, कृत्वा यावत् चैत गिरिकुमारस्य देवस्य अष्टमभक्तं प्रगृ-
ह्णाति प्रगृह्य पौषधशालायां यावत् अष्टमभक्तिकः वैताढ्यगिरिकुमारं देवं मनसि कुर्वन्
तिष्ठति, ततः खलु तस्य भरतस्य राज्ञः अष्टमभक्ते परिणमति वैताढ्यगिरिकुमारस्य देवस्य
आसनं चलति, पव सिन्धुदेव्या गमो नेतव्य, प्रीतिदानम् आभिषेक्यम् रत्नालङ्कार
कडमानि च व्रुटिकानि च वस्त्राणि आभरणानि च गृह्णाति गृहीत्वा तथा उत्कृष्टया यावत्
अष्टाहिकां यावत् प्रत्यर्पयन्ति । ततः खलु तद्दिव्यं चक्ररत्नम् अष्टाहिकायां महामहिमायां
निवृत्तायां सत्यां यावत् पाश्चात्यां दिशं तिमिसगुहाभिमुखं प्रयातं चाप्यभवत्, ततः खलु
स भरतो राजा तद्दिव्यं चक्ररत्नं यावत् पाश्चात्यां दिशं तिमिसगुहाभिमुखं प्रयातं पश्यति,

મળ્હપે સુહાસનવરગતઃ અષ્ટમમક્તં પરિપારયતિ, 'પરિયાદિયત્તા' પરિપાર્ય 'જાવ સીહા-
સનરગનઃ શ્રેષ્ઠસિંહાસનોપત્રિષ્ઠઃ 'પુરત્યાભિમુદ્ધે ગિસીયઈ' પોરસ્ત્યાભિમુદ્ધઃ નિપીદતિ
ઉપવિશતિ 'ગિસીયત્તા' નિપદ્ય ઉપવિશ્ય 'અટ્ટારસ સેગિપ્પસેણીઓ સદાવેઈ' અટ્ટાદશ શ્રેણિ-
પ્રશ્રેણીઃ શબ્દયતિ આહ્વયતિ 'સદાવિત્તા' શબ્દયિત્વા આહ્વય 'જાવ અટ્ટાહિયાપ મહામહિ-
માપ તમાણત્તિય પચ્ચપ્પિણંતિ' યાવત્તાઃ શ્રેણિ પ્રશ્રેણયોઽષ્ટાહિકાયા મહામહિમાયાઃ તામ્
આજ્ઞપ્તિકાં પ્રત્યર્પયન્તિ સમર્પયન્તિ યથાઽષ્ટાહિકોત્સવઃ કૃત્ત ઇતિ ॥સૂ.૦૧૧॥

અથ વૈતાલ્યસુરસાધનમાહ- 'તણ સે' ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્- તણ સે દિઙ્વે ચક્કસયણે સિંધૂપ દેવીપ અટ્ટાહીયાપ
મહામહીમાપ ગિવ્વત્તાપ સમાણીપ આઠહવરસાલાઓ તહેવ જાવ
ઉત્તરપુરત્થિમં દિસિં વેયદ્ધપવ્વયાભિમુદ્ધે પયાપ યાવિ હોત્થા. તણ ણં
મરહે રાયા જાવ જેણેવ વેયદ્ધપવ્વપ્પ જેણેવ વેયદ્ધસ્સ પવ્વયસ્સ દાહિણિલ્લે
ગિતંબે તેણેવ ઉવાગચ્છઈ ઉવાગચ્છિત્તા વેયદ્ધસ્સ પવ્વયસ્સ દાહિણિલ્લે
ગિતંબે દુવાલસજોયણાયમં ણવજોયણવિત્થિન્નં વરણગરસરિચ્છં વિજ-
યસંધાવારનિવેસં કરેઈ કરિત્તા જાવ વેયદ્ધગિરિકુમારસ્સ દેવસ્સ અટ્ટમ-
મક્તં પગિણ્હઈ પગિણ્હિત્તા પોસહસાલાપ જાવ અટ્ટમમક્તિપ્પ વેયદ્ધગિરિ-
કુમારં દેવં મણસિ કરેમાણે ચિટ્ઠઈ તણં તસ્સ મરહસ્સ રણો અટ્ટમમક્તંસિ

ગયે-ઔર बैठकर उन्होंने अष्टममक्त की पारणा की (परियादियत्ता जाव सीहासनवरगप
पुरत्याभिमुद्दे गिसीयई) अष्टम मक्तकी पारणा करके सिंहासन पर बैठ गये (गिसीयत्ता
अट्टारस सेगिप्पसेणीओ सदावेई) सिंहासन पर बैठकर फिर उन्होंने १८ श्रेणी प्रश्रेणिजनों को
बुझाया (सदावित्ता) बुलाकरके (जाव अट्टाहियाप महामहिमाप तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति) यावत्
उन श्रेणी प्रश्रेणीजनों ने आठ दिन का महामहोत्सव किया । और इसकी खबर "हमलोगोंने
आठ दिन का महामहोत्सव कर लियाई । ऐसी खबर पीछे राजा के पास भेजदी ॥सू.०११॥

આવીને તે ભોજન મહપમા મુખાસન પૂર્વક બેસી ગયા અને બેસીને નેમને અષ્ટમ બક્તની
પારણા કરી. (પરિયાદિયત્તા જાવ સીહાસનવરગપ પુરત્યાભિમુદ્ધે ગિસીયઈ) અષ્ટમ બક્તની
પારણા કરીને પછી તે યાવત પૂર્વદિશ તરફ મુખ કરીને સિંહાસન ઉપર બેસી ગયા
(ગિસીયત્તા અટ્ટારસ સેગિપ્પસેણીઓ સદાવેઈ) સિંહાસન ઉપર બેસીને પછી તેમણે ૧૮ શ્રેણિ
પ્રશ્રેણિજનોને બોલાવ્યા (સદાવિત્તા) બોલાવીને (જાવ અટ્ટાહિયાપ મહામાહિમાપ તમાણત્તિયં
પચ્ચપ્પિણંતિ) યાવત તે શ્રેણિ-પ્રશ્રેણિજનોએ આઠ દિવસનો મહામહોત્સવ કર્યો. અને મહા-
મહોત્સવ સમયે થઈ જવાની સૂચના રાજાને આપી ॥૧૧॥

परिणममाणंसि वेयद्धगिरिकुमारस्स देवस्स आसणं चलइ एवं सिंधु-
गमो जेयव्वो, पीईदाणं आभिसेक्कं रयणालङ्कारं कडगाणि य तुडि-
याणि य वत्थाणि य आभरणाणि य गेण्हइ, गिण्हित्ता, ताए उक्कि-
ट्ठाए जाव अट्ठाहियं जाव पच्चप्पिणंति । तएणं से दिव्वे चक्करयणे
अट्ठाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए जाव पच्चत्थिमं दिसिं
तिमिसगुहाभिमुहे पयाए यावि होत्था, तएणं से भरहे राया तं दिव्वं
चक्करयणं जाव पच्चत्थिमं दिसिं तिमिसगुहाभिमुहं पयातं पासइ, पा-
सित्ता हट्ठतुट्ठ चित्त जाव तिमिसगुहाए अदूरसामंते दुवालस जोय-
णायामं णवजोयणवित्थिन्नं जाव कयमालस्स देवस्स अट्ठमभत्तं पणि-
ण्हइ पणिण्हित्ता पोसहसालाए पोसहीए बंभयारी जाव कयमालगं देवं
मनसि करेमाणे करेमाणे चिट्ठइ तएणं तस्स भरहस्स रण्णो अट्ठमभत्तंसि
परिणममाणंसि कयमालस्स देवस्स आसणं चलइ तहेव जाव वेयद्ध-
गिरिकुमारस्स णवरं पीईदाणं इत्थीरयणस्स तिलगंघोदसं भंडालंकारं कड-
गाणि य जाव आभरणाणि य गेण्हइ गिण्हित्ता उक्किट्ठाए जाव सक्का-
रेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ जाव भोयणमंडवे
तहेव महामहिमा कयमालस्स पच्चप्पिणंति ॥१२॥

छाया-ततः खलु तद्विव्यं चक्ररत्नं सिन्ध्वा देव्याः अष्टाहिकायां महामहिमायां निवृ-
त्तायाम्, सत्याम्, आयुधगृहशालात तथैव यावत् उत्तरपौरस्त्यां दिशं वैताढ्य-
पर्वताभिमुखं प्रयातं आप्यभवत्, ततः खलु स भरतो राजा यावत् यत्रैव वैताढ्यपर्वतः
यत्रैव वैताढ्यस्य पर्वतस्य दक्षिणात्ये नितम्बे तत्रैवोपागच्छति, उपागत्यवैताढ्यस्य पर्व-
तस्य दक्षिणात्ये नितम्बे द्वादशयोजनायाम् नवयोजनविस्तीर्णं वरणागरसदृशं विजय-
स्कन्धावारनिवेशं करोति, कृत्वा यावत् वैताढ्यगिरिकुमारस्य देवस्य अष्टमभक्तं प्रगृ-
ह्णाति प्रगृह्य पौषधशालायां यावत् अष्टमभक्तिकं वैताढ्यगिरिकुमारं देवं मनसि कुर्वन्
तिष्ठति, ततः खलु तस्य भरतस्य राज्ञः अष्टमभक्ते परिणमति वैताढ्यगिरिकुमारस्य देवस्य
आसनं चलति, पञ्च सिन्धुदेव्या गमो नेतव्यः, प्रीतिदानम् आभिषेक्यम् रत्नालङ्कार-
कटमानि च व्रुटिकानि च वस्त्राणि आभरणानि च गृह्णाति गृहीत्वा तया उत्कृष्टया यावत्
अष्टाहिकां यावत् प्रत्यर्पयन्ति । ततः खलु तद्विव्यं चक्ररत्नम् अष्टाहिकायां महामहिमायां
निवृत्तायां सत्यां यावत् पाश्चात्या दिशं तिमिसगुहाभिमुखं प्रयातं आप्यभवत्, ततः खलु
स भरतो राजा तद्विव्यं चक्ररत्नं यावत् पाश्चात्यां दिशं तिमिसगुहाभिमुखं प्रयातं पश्यति,

दृष्ट्वा हृष्टतुष्ट चित्तं यावत् तिमिस्रगुहाया अदूरसामन्ते द्वादशयोजनायाम् नवयोजनविस्तीर्णं यावत् कृतमालस्य देवस्य अष्टमभक्तं प्रगृह्णाति, प्रगृह्य पौषधशालाया पौषधिको ब्रह्मचारी यावत् कृतमालकं देव मनसि कुर्वन् तिष्ठति, ततः खलु तस्य भरतस्य राज्ञः अष्टमभक्ते परिणमनि कृतमालस्य देवस्य आसनं चलति तथैव यावत् वैताढ्यगिरिकुमारस्य नवरं प्रीतिदानं स्त्रीरत्नस्य तिलकचतुर्दशं भाण्डालकारं कटकानि च यावत् आभरणानि च गृह्णाति, गृहीत्वा तथा उत्कृष्टया यावत् सत्कारयति, सन्मानयति, सत्कार्यं सम्मान्य प्रति-
विमर्जयति यावत् भोजनमण्डपे, तथैव महामहिमां कृतमालस्य प्रत्यर्पयन्ति ॥सू० १२॥

टीका—‘तण्णं से इत्यादि ‘तण् णं से दिव्वे चक्करयणे सिंघूप देवीए अट्टा-
हियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए आउइधरसालाओ तहेव जाव उत्तरपुरत्थिमं
दिसिं वेयद्धपव्वयामिमुहे पयाए यावि होत्था” ततः खलु तद्विष्यं चक्ररत्नं सिन्ध्वाः
सिन्धुनाम्न्याः देव्याः विजयोपलक्षिकायाम् अष्टाहिकायां महामहिमायां निवृत्तायां
सत्याम् आयुधगृहशालातस्तथैव पूर्ववदेव निष्कामति—प्रतिनिष्क्रम्य यावत् अनेक वाद्य-
विशेषाणां ध्वनि प्रतिध्वन्यात्मकशब्दैः गगनतलं पूरयदिव उत्तरपौरस्त्याम्—उत्तरपूर्वां
दिशम् ईशानकोणवैताढ्यपर्वताभिमुखं प्रयातं चाप्यभवत् प्रस्थित जातम् सिन्धुदेवी
भवनतो वैताढ्यपुरसाधनार्थं वैताढ्यसुरावासभूतं वैताढ्यकूटं गच्छतश्चक्ररत्नस्य ईशान-
दिश्येव सुष्ठु पन्था ‘तण्णं से मरहे राया जाव जेणेव वेयद्धपव्वए जेणेव वेयद्ध

तण्णं से दिव्वे च रयणे सिंघूप देवीए” इत्यादि । सूत्र—१२—

टीकार्थ—तण्ण से दिव्वे चक्करयणे) इसके बाद वह दिव्य चक्ररत्न (सिंघूप देवीए
अट्टाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए आउइधरसालाओ तहेव जाव उत्तरपुरत्थिमं दिसिं
वेयद्धपव्वयामिमुहे पयाए यावि होत्था) सिन्धुदेवी के विजयोपलक्ष्य में कृत महामहोत्सव समाप्त
हो जाने पर आयुध गृहशाला से पूर्व की तरह ही बाहर निकला और निकलकर यावत् अनेक
वाद्यविशेषों के ध्वनि प्रतिध्वनिरूप शब्दों द्वारा गगनतलको भरता-रसा उत्तर पूर्व दिशा में—ईशान
कोण में स्थित वैताढ्य पर्वत को ओर चला सिन्धु देवी के भवन से वैताढ्यपुरसाधन
के लिये वैताढ्यसुरावासभूत वैताढ्यकूट की ओर जाते हुए चक्ररत्नको ईशानदिशामें ही सरल

“तण्ण से दिव्वे चक्करयणे सिंघूप” इत्यादि सूत्र ॥१२॥

टीकार्थ— (तण्णं दिव्वे चक्करयणे) त्थाए भाए ते दिव्वे चक्ररत्न (सिंघूप देवीए अट्टाहियाए
महामहिमाए णिव्वत्ताए णीए आउइधरसालाओ तहेव जाव उत्तरपुरत्थिमं दिसिं वेयद्ध-
पव्वयामिमुहे पयाए यावि होत्था) सिन्धुदेवीना विजयोपलक्ष्यमा जे महामहोत्सव आयो-
जित करेनामा आयो ते न्थारे सम्पन्न थय जये त्थारे ते पडेत्तानी जेम जे आयुधगृह-
शालाभाओ ँडार नीकय्थे अने नीकगीने यावत् अनेक वाद्य विशेषाणा ध्वनि प्रतिध्वनि
इय शब्दो द्वारा गगनतलने सम्भूरित करतु उत्तर पूर्व दिशाम्—ईशान कोणुमां स्थित
वैताढ्य पर्वतणी तरह् यादयुं, सिन्धु देवीना भवनथी वैताढ्यपुर साधन भाटे वैताढ्य-
सुरावासभूत वैताढ्यकूट तरह् प्रयाणु करतां चक्ररत्नने ईशानदिशामां ज सरलता थय

पञ्चयस्स दाहिणिल्ले णितंवे तेणेव उवागच्छइ' ततः खलु स भगतो राजा यावन् यत्रैव
वैताढ्यः पर्वतः यत्रैव च वैताढ्यस्य पर्वतस्य दाक्षिणात्यो दक्षिणार्द्धमन्तर्पार्श्ववर्त्तो
नितम्बः मूलभागस्तत्रैव उवागच्छति, अत्र यावत्पदात् वैताढ्यपर्वताभिमुखं प्रयात चक्र-
रत्नं पश्यति, दृष्ट्वा हृष्टतुष्ट चित्तानन्दितः परमसौमनस्यत भगतो राजा इति संग्राह्यम्
'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'वेयद्धस्स पञ्चयस्स दाहिणिल्ले णितंवे दुवालसज्जोयणायामं
णवजोयणवित्थिन्नं वरणगरसरिच्छं विजयखंधावारनिवेशं करेइ' वैताढ्यस्य पर्वतस्य
दाक्षिणात्ये दक्षिणार्द्धभरतपार्श्ववर्त्तिनि नितम्बे मूलभागे द्वादशयोजनायामं द्वादश
योजनदैर्घ्यं नवयोजनविस्तीर्णं पट्त्रिंशत्तमक्रोशविस्तीर्णम्, वरनगरमदृशं-श्रेष्ठनगरतुल्यम्
विजयस्कन्धावारनिवेशं सेनानिवेशम्, करोति 'करित्ता' कृत्वा 'जाव वेयद्धगिरि-
कुमारस्स देवस्स अट्टमभत्तं पणिण्हइ' अत्र यावत्पदात् वर्द्धकिरन्नशब्दापन पौषधशाला
विधापनादि सर्वं नेतव्यम्, तेन पौषधशालायां वैताढ्यगिरिकुमारस्य देवस्य साधनायेति

रास्ता पढा इसो छिये वह इस मार्ग से गया (तएण से भरहे राया जाव जेणेव वेयद्ध
पव्वए जेणेव वेयद्धस्स पञ्चयस्स दाहिणिल्ले णितवे तेणेव उवागच्छइ) डमके बाद वह भरत
चक्री यावत् जहां पर वैताढ्य पर्वतथा, और जहां पर वैताढ्य पर्वतका दाक्षिणात्य दक्षिणार्द्ध
भरतका पार्श्ववर्ती नितम्ब था—मूल भागथा-वहा पर आया—यहां यावत्पद से यह पाठ गूड़ीतहुआ
है—“वैताढ्य पर्वताभिमुखं प्रयातं चक्ररत्नं पश्यति दृष्ट्वा हृष्टं तुष्टं चित्तानन्दितः परमसौमन-
स्यतः भरतो राजा” । (उवागच्छित्ता वेयद्धस्स पञ्चयस्स दाहिणिल्ले णितंवे-दुवालस जोय-
णायामं णवजोयणवित्थिन्न वरणगरसरिच्छं विजयखंधावारनिवेशं करेइ) वहां आकर के उसने
वैताढ्य पर्वत के दाक्षिणात्य नितम्ब पर दक्षिणार्द्ध भरत पार्श्ववर्ती मूल भाग पर—१२
योजन की लंबाई वाले और ७ योजन की चौड़ाई वाले श्रेष्ठ नगर तुल्य विशाल सैन्य
का पडाव ढाला (करित्ता जाव वेयद्धगिरिकुमारस्स देवस्स अट्टमभत्तं पणिण्हइ) पडाव ढाल
कर यावत् उसने वैताढ्य गिरि कुमार देव को साधन करने के लिए अष्टम भक्त का व्रत

अथी ७ ते आ भाग'थी गथुं (त एण से भरहे राया जाव जेणेव वेयद्धपव्वए जेणेव
वेयद्धस्स पञ्चयस्स दाहिणिल्ले णितवे तेणेव उवागच्छइ) त्यारथा ते भरतचक्री यावत्
ज्यां वैताढ्य पर्वत छेतो अने ज्यां वैताढ्य पर्वतने दाक्षिणात्य दक्षिणार्द्ध भरतने पार्श्व-
वर्ती नितम्ब-मूलभाग छेतो त्या आये। अही यां यावत् पढथी आ पाठ गूड़ीत थये।
छे—“वैताढ्यपर्वताभिमुखं प्रयातं चक्ररत्नं पश्यति दृष्ट्वा, हृष्टं तुष्टं चित्तानन्दितः परमसौ-
मनस्यतः भरतो राजा” । (उवागच्छित्ता वेयद्धस्स पञ्चयस्स दाहिणिल्ले णितंवे दुवालस-
जोयणायामं णवजोयणवित्थिन्नं वरणगरसरिच्छं विजयखंधावारनिवेशं करेइ) त्या आवीने
तेणे वैताढ्य पर्वतने दाक्षिणात्य नितम्ब पर दक्षिणार्द्ध भरत पार्श्ववर्ती मूल भाग उपर
१२ योजन लंबाई व आधवाणे अने नव योजन चौडाणाधवाणे श्रेष्ठ नगर तुल्य विशाल
सैन्यने पडाव नाथ्यो। (करित्ता जाव वेयद्धगिरिकुमारस्स देवस्स अट्टमभत्तं पणिण्हइ) पडाव
नाथीने यावत् तेणे वैताढ्यगिरि कुमार देवनी साधना भाटे अष्टमभक्त व्रत धारण कथुं.

शेषः अष्टमभक्तं प्रगृह्णाति 'पगिण्हित्ता' प्रगृह्य 'पोसहसालाप जाव अष्टमभक्तिं वेयद्ध-
गिरिकुमारं देवं मणसि करेमाणे करेमाणे चिट्ठइ' पौषधशालायां यावत्तरणात् पौषधिकः
पौषधव्रतवान् अतएव ब्रह्मचारी दर्भसंस्तारोपगतः सार्द्धद्वयहस्तपरिमित दर्भासनं
उपविष्टः उन्धुत्तामणिसुवर्णालङ्कार इत्यादि सर्वं पूर्वोक्तं ग्राह्यम् अष्टमभक्तिकः कृताष्टम-
तपाः, वैताढ्यगिरिकुमारं देवं मनसि कुर्वन् कुर्वन् ध्याय ध्यायंस्तिष्ठति । 'तए णं
तरस भरहरस रण्णो अष्टमभक्तसि परिणममाणसि वेयद्धगिरिकुमारस्स देवस्स आसणं
चलइ' ततः खलु तस्य भरतस्य राज्ञः अष्टमभक्ते परिणमति परिपूर्णप्राये जायमाने
सति वैताढ्यगिरि कुमारस्य देवस्य आसनं सिंहासनम्, चलति 'एवं सिंधुगमो जेयव्वो'
एवं सिन्धुदेव्याः गमः सदृशपाठो नेतव्यः—स्मृतिपथम् आनयितव्यः इदं च सिन्धु-
देव्या अतिदेशकथनं तद्वाणव्यापारमन्तरेणैवायमपि साध्यः उति सादृश्यख्यापनार्थं
तथा च वैताढ्यगिरिकुमारो देवः रसिंहासनं चलिता पतयति, दृष्ट्वा अवधिं प्रयुङ्क्ते

धारण-क्रिया (पगिण्हित्ता पोसहसालाप जाव अष्टमभक्तिं वेयद्धगिरिकुमारं देवं मणसि करेमाणे
चिट्ठइ) अष्टमभक्त को धारण करके पौषधशाला में पौषधव्रत वाले अत एव ब्रह्मचारी तथा
दर्भ के सहारे पर आसीन—२॥ हाथ प्रमाण दर्भासन पर स्थित—एव मणिमुक्ता आदि के
अलङ्कारों से विहीन हुए ऐसे उस महाराजा भरत चक्रा ने पूर्व में कहे अनुसार वैताढ्य-
गिरी कुमार का मन में ध्यान करना प्रारम्भ किया (तएण तस्स भरहस्स रण्णो अष्टमभक्तसि
परिणममाणसि वेयद्धगिरिकुमारस्स देवस्स आसणं चलइ) इसके बाद महाराजा भरत चक्रा
का जब अष्टम भक्त समाप्त प्रायः होने को आया तब (एवं सिंधुगमो जेयव्वो) इसके
बाद जैसा-सिन्धु देवी के साधन प्रकरण में कहा गया है वैसा कथन यहां जानना—चाहिये अर्थात्
जिस प्रकार भरत चक्रा ने सिन्धु देवी को बिना वाण के वश में किया उसी प्रकार से
इसे भी बिना—वाण के वश में किया इस तरह जब वैताढ्यगिरी कुमार देवने अपना
आसन कर्पण होते हुए देखा तो देखकर— उसने अपने अवधि को उपयुक्त किया उससे

(पगिण्हित्ता पोसहसालाप जाव अष्टमभक्तिं वेयद्धगिरिकुमारं देवं मणसि करेमाणे
चिट्ठइ) अष्टमभक्त धारण करीने पौषधशालाया पौषधव्रतवाणा जेथी ब्रह्मचारी तेभज
दर्भना सहारा उपर समासीन २॥ हाथ प्रमाण दर्भासन उपर स्थित मणिमुक्ता आदि
अलङ्काराथी विहीन थयेला जेवा ते भरतचक्रा पूर्वमां कइल। सुबज्ज ज वैताढ्यगिरि कुमारदेवना
ध्यानमां जेकथित्त थई गय। (तएण तस्स भरहरस रण्णो अष्टमभक्तसि परिणममाणसि
वेयद्धगिरिकुमारस्स देवस्स आसणं चलइ) तयार आइ न्यारे भरतचक्रांनु अष्टमभक्त व्रत
समाप्त प्रायः ज हुतु तयारे वैताढ्यगिरि कुमार देवनु आसन कपायमान थयुं (एवं सिंधु-
गमो जेयव्वो) तयार आइ जे प्रमाणे सिन्धु देवीना प्रारब्धमा कइवामा आबुं छे ते प्रमाणे
ज अही पणु समज्जु ओटछे के जेम भरतचक्रांजे सिन्धुदेवीने वजर आबुं ज वशमां करी
तेभज ते वैताढ्यगिरि कुमार देवने पणु पोताना शमा कथा आ प्रमाणे न्यारे वैताढ्य
गिरि कुमार देवे पोतानुं आसन कपित थतुं जेथुं तो आ जेछने तेछे पोताना अवधि-

प्रयुज्य भरतं राजानम् अवधिज्ञानेन आभोगयति जानाति आभोग्य ज्ञात्वा तस्य वैता-
ढ्यगिरिकुमारस्य देवस्य अयमेतद्रूपो नक्ष्यमाण स्वरूपः आध्यात्मिकः—आत्मगत अङ्कुर
इव, ततश्चिन्तितः पुनः पुनः रमरणरूपो विचारो द्विप्रवृत्त इव कल्पितः—एव एव व्यवस्था
युक्तः विचारः पल्लवित इव ३, प्रार्थितः स एवेष्टरूपेण स्वीकृतः पुष्पित इव ४, मनो-
गतः संकल्पः मनसि दृढरूपेण विषयः सत्कारार्हस्य तत्साधित मदायचीकृत सत्कार-
वस्तुभिस्तद्योग्यं सत्कारं करिष्यामि, इति विचारः फलित इव ५, समुत्पन्नः, स च कः
सङ्कल्प इत्याह—उत्पन्नः खलु भो जम्बूद्वीपे द्वीपे—जम्बूद्वीपनामके द्वीपे भरते वर्षे भरतो
नाम राजा चातुरन्तचक्रवर्ती तज्जीतमेतत् जीताचार एषः अतीतदर्शमानानागतानां
वैताढ्यगिरिकुमाराणां देवानां भरतानां राज्ञाम् उपस्थानिकं प्राभृत कर्तुं वर्त्तने इति,
तद्वच्छामि खलु अहमपि भरतस्य राज्ञश्चक्रिण उपस्थानिकं करोमीति विचार्य 'पीडदाणं
अभिसेवकं रयणालंकारं कडगाणि य तुडियाणि य वत्थाणि य आभरणाणि य गेण्हइ'
प्रीतिदानम् अभिषेक्यम्—अभिषेकयोग्यं राजपरिधेयम्, रत्नालंकार मुकुटम्, कटकानि
च हस्ताभरणानि, त्रुटिकानि च बाह्याभरणानि, वस्त्राणि च आभरणानि च गृह्णाति
'गिण्हित्ता' गृहीत्वा 'ताए उक्किट्ठाए जाव अट्ठाहिय जाव पच्चप्पिणंति' तथा उत्कृष्टया

उसने भरत राजा को अपना ध्यान करते हुए देखा—जाना तब उस वैताढ्य गिरि कुमार
देव के मन में ऐसा आध्यात्मिकचिन्तित, कल्पित प्रार्थित पुष्पित, मनोगत, संकल्प विचार
प्रकट हुआ कि जंबूद्वीप में भरत क्षेत्र में भरत नाम का चातुरन्त चक्रवर्ती महाराजा
उत्पन्न हुआ है तो अतीत, अनागत, वर्तमान काल के समस्त वैताढ्यगिरी कुमार देवों
का ऐसा परम्परा से चला आया यह आचार व्यवहार है कि वे उसे नजराना दें तो मैं
चल और उसे भेट करूँ ऐसा विचारकर (पीडदाण अभिसेवकं रयणालंकारं कडगाणिय
तुडियाणिय वत्थाणिय आभरणाणिय गेण्हइ) उसने प्रीतिदान में देने के निमित्त अभिषेक-
योग्य राजपरिधेय रत्नालंकार—मुकुट कटक त्रुटिक वस्त्र, और आभरण लिये (गिण्हित्ता
ताए उक्किट्ठाए जाव पच्चप्पिणंति) और लेकर वह उत्कृष्ट आदि विशेषणों वाली गति

ज्ञानेन उपयुक्तं कथं। अवधिज्ञानभां तेणे भरतयक्की राजाने तेना न ध्यानभां दीन ज्ञेया-
त्वाये ते वैताढ्यगिरि कुमार देवना मनभां जेवे आध्यात्मिक, चिन्तित, कल्पित, प्रार्थित,
पुष्पित, मनोगत संकल्प—विचार प्रकट थयो के न जंबूद्वीप नामके द्वीपभा, भरतक्षेत्रभा भरत
नाम चातुरन्त चक्रवर्ती राज उत्पन्न थयो के तो अतीत, अनागत, वर्तमान कालना सर्व
वैताढ्यगिरि कुमार देवानो वय पर पराथी जेवे आचार—व्यवहार आहतो आवे छे के ते
चक्रवर्ती जेवा भरत राजाने नजरालु आपे तो हुं नडि अने तेने नजरालु आपु आम
विचार करीने (पीडदाणं अभिसेवक रयणालंकार कडगाणिय तुडियाणिय वत्थाणिय आभ-
रणाणि य गेण्हइ) ते वैताढ्यगिरि कुमार देवे राजाने प्रीतिदानभा आपना भाटे अभिषेक
योग्य राजपरिधेय—रत्नालंकार, मुकुट, कटक, त्रुटिक, वस्त्र अने आभरणो लीया (गिण्हित्ता
ताए उक्किट्ठाए जाव अट्ठाहिय जाव पच्चप्पिणंति) अने ते सर्व लब्ध ने ते उत्कृष्ट आदि

गत्या यावत् अष्टादिकां महामहिमां यावत् प्रत्यर्पयन्ति—समर्पयन्ति, अत्र प्रथमो यावच्छब्दः उक्तातिरिक्त विशेषणसहितां गतिं प्रीतिवाक्यं प्राभृतोपनयनग्रहणे सुरसन्मानन विसर्जने स्नानभोजने श्रेणि प्रश्रेण्यामन्त्रण बोधयति, द्वितीयस्तु यावच्छब्दः अष्टादिकाऽऽदेशदानकरणे इति सूचयति ।

अथ तमिश्रा गुहाधिपकृतमाल सुरसाधनार्थमुपक्रमते

‘तए ण’ इत्यादि ‘तए णं से दिव्वे चक्करयणे अट्टाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए जाव पच्चत्थिमं दिसिं तिमिसगुहाभिमुहे पयाए यावि होत्था’ ततः खलु तद्विव्य चक्ररत्नम् अष्टादिकायां महामहिमायां निवृत्तायां सत्याम् अर्थाद् वैताढ्यगिरिकुमारस्य देवस्य विजयोपलक्षिकायां यावत् पाश्चात्यां पश्चिमां दिशं तमिस्रागुहाभिमुखं प्रयातं चाप्यभवत् प्रस्थितमभूत् प्रस्थितजातम् वैताढ्यगिरिकुमारसाधनस्थानस्य तमिश्रायाः पश्चिमवर्त्तित्वात् ‘तए णं से भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं जाव पच्चत्थिमं दिसिं तिमिसगुहाभिमुहं पयातं पासइ’ ततः खलु स भरतो राजा तद्विव्यं चक्ररत्नं यावत्

से चल कर जहा पर सहाराजा भरत नरेश था वहा पर आया इत्यादि और सब आगे का कथन महामहोत्सव करने तक और उसकी भरत नरेशको सूचना देने तक का यहां पर करनेना चाहिये । यह सब कथन पीछे लिखा ही जा चुका है अतः वहीं से इसे देख केना चाहिये यही बात यहां पर आये हुए यावत् शब्द सूचित करता है ।

तमिश्रा गुहाधिप कृतमालदेव साधन वक्तव्यता—(तएणं से दिव्वे चक्करयणे अट्टाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए जाव पच्चत्थिमं दिसिं तिमिसगुहाभिमुहे पयाए यावि होत्था) जब वैताढ्यगिरिकुमार देव के विजयोपलक्ष्य में ८ दिन का महामहोत्सव समाप्त हो चुका तब वह दिव्य चक्ररत्न पश्चिमदिशा में वर्तमान तमिस्रा गुहा की तरफ प्रस्थित हुआ क्यों कि वैताढ्यगिरिकुमार को साधन करने का स्थान तमिस्रा गुहा की पश्चिम दिशा में है (तएणं से भरहे राया त दिव्वं चक्करयणं जाव पच्चत्थिमं दिसिं तिमि-

विशेषणोपाणी गतिथी आधीने जयां भरत नरेश हुते। त्यां आओ, पत्यादि आगणतु' सर्व कथन—महामहोत्सव सम्पन्न करवा तेमज ते उत्सवनी पूजुथवानी भरत नरेशने सूचना आपवा सुधीनु' अही' जाणी देवु जोधये. जे गधु कथन पडेला स्पष्ट करवाभां आओ ज छे जेथी गधु त्याथी ज जाणी देवु जोधये अही यावत् पहली जेज वात स्पष्ट करवाभा आवी छे

तमिश्रागुहाधिप कृतमालदेवसाधनवक्तव्यता

(त एणं से दिव्वे चक्करयणे अट्टाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए जाव पच्चत्थिमं दिसिं तिमिसगुहाभिमुहे पयाए यावि होत्था) जयारे वैताढ्यगिरि कुमार देवना विजयोपलक्ष्यमां ८ दिवसने महामहोत्सव सम्पन्न थय सुक्यो त्यारे ते दिव्य चक्ररत्न पश्चिम दिशाभा वर्तमान तमिस्रागुहा की तरफ प्रस्थित थयु केभके वैताढ्यगिरि कुमारने साधनानु' स्थान तमिस्रा गुहा की पश्चिम दिशाभा छे (तएण से भरहे राया तं दिव्वं चक्करयण

पाश्चात्यां पश्चिमां दिशं तमिस्रागुहाभिमुखं प्रयातं—प्रस्थितं पश्यति 'पामित्ता' दृष्ट्वा
'हृदुतुदुचित्त जाव तिमिसगुहाए अदूरसामंते दुवालसजोयणायामं णव जोयणवित्थिण्णं
जाव कयमालस्स देवस्स अट्टमभत्तं पणिण्हइ' हृदुतुदु चित्तानन्दितः यावत् परमसोमनस्यितः
स भरतः तमिस्रागुहायाः अदूरसामन्ते नातिदूरे नातिसमीपे उचितस्थाने द्वादशयोजना-
यामं नवयोजनविस्तीर्णं वरनगरसदृशं विजयस्कन्धावारनिवेश सेनानिवेशं करोति 'रुग्गित्ता'
कृत्वा यावत् पदात् वर्द्धकिरत्नशब्दापनपौषधशालाविधापनादि सर्वं नेतव्यम्, तेन
पौषधशालायां कृतमालस्य देवस्य साधनाय अष्टमभक्तं प्रगृह्णाति 'पणिण्हित्ता' प्रगृह्य
'पोसहसालाए पोसहिए वंभयारी जाव कयमालगं देवं मणसि करेमाणे करेमाणे चिट्ठइ'
पौषधशालायां पौषधिकः पौषधव्रतवान् अतएव ब्रह्मचारी यावत्करणत् दर्वमसंस्तारको-
पगतः सार्द्धद्वयहस्तपरिमित दर्वमांसने उपविष्टः, उन्मुक्तमणिसुवर्णालङ्कार इत्यादि सर्वं

सगुहाभिमुखं प्रयातं पासइ) जब भरत राजा ने उम दिव्य चक्ररत्न को यावत् पश्चिमदिशा
में तमिस्रा गुहा की ओर जाते देखा तो (पासित्ता) देखकर वह (हृदुतुदु चित्त जाव तिमिस-
गुहाए अदूरसामंते दुवालसजोयणायामं णवजोयणवित्थिण्णं जाव कयमालस्स देवस्स
अट्टमभत्तं पणिण्हइ) हर्षित एवं सतोषित हुआ यावत् उसने तमिस्रा गुहा के पास में
ही न उससे- अधिक दूर और न उसके अधिक निकट—किन्तु समुचित स्थान में ही—१२
योजन के लंबे एवं नौ योजन विस्तार वाले अपने विशाल सैन्य का पड़ाव ढाला यावत् कृतमाल
देव की साधने के निमित्त उस ने अष्टम भक्त को तपस्या को स्वीकार की यहा यावत्
शब्द से वर्द्धकिरत्न का बुलाना पौषधशाला के बनाने का आदेश देना आदि आदि
पूर्वोक्त—सब प्रकरण लगा लेना चाहिये (पणिण्हित्ता पोसहसालाए पोसहिए वंभयारी जाव
कयमालगं देवं मणसिकरेमाणे २ चिट्ठइ) इस प्रकार पौषधशाला में पौषध व्रतको धारण कर एवं
ब्रह्मचर्यव्रत वाला वह भरत नरेश यावत् कृतमाल- देव का मन में ध्यान करने लगा यहाँ
यावत् शब्द से "दर्मासनसस्तारकोपगतः उन्मुक्तमणिसुवर्णालङ्कारः" इत्यादि पूर्वोक्त सब पाठ

जाव पच्चत्थिमं दिस्सि तिमिसगुहाभिमुखं प्रयातं पासइ) अथारे भरत राजाजे ते दिव्य
चक्ररत्नने यावत् पश्चिम दिशाभा तमिस्रा गुहा तरङ्गे जतु जेथु ते। (पासित्ता) जेभने ते
(हृदुतुदु चित्त जाव तिमिसगुहाए अदूरसामंते दुवालसजोयणायामं णवजोयणवित्थिण्णं
जाव कयमालस्स देवस्स अट्टमभत्तं पणिण्हइ) हर्षित तेभज सतोषित चित्त थयेवे।
यावत् तेथु तमिस्रा गुहानी पासै ज तेनाथी वधारे इर पणु नहि अने अधिक निकट पणु
नहि पणु सभुचित्त स्थानमा—१२ येज्जन जेटवे। लांजे। अने नव येज्जन प्रभाणु पडोणा पोताना।
विशाण सैन्येना पडाव नाण्णो। यावत् कृतमालदेवने साधवा भाटे तेथु अष्टमभक्तनी तपस्या
स्वीकार करी अही। यावत् शण्हथी वर्द्धकिरत्नने ओलाववे। पौषधशालाना निर्माणु भाटे
तेने आदेश आपवे। वंगेरे पूर्वोक्त सब प्रकरण अर्थात् करवु जेधजे (पणिण्हित्ता
पोसहसालाए पोसहिए वंभयारी जाव कयमालगं देवं मणसि करेमाणे २ चिट्ठइ) आ प्रभाणु
पौषधशालाभा पौषधव्रतवाणे। तेभज ब्रह्मचारी भरत नरेश यावत् कृतमाल देवजु भनभा

गत्या यावत् अष्टाहिकां महामहिमां यावत् प्रत्यर्पयन्ति—समर्पयन्ति, अत्र प्रथमो यावच्छब्दः उक्तातिरिक्त विशेषणसहितां गतिं प्रीतिवाक्यं प्राभृतोपनयनग्रहणे सुरसन्मानन विसर्जने स्नानभोजने श्रेणि प्रश्रेण्यामन्त्रेण बोधयति, द्वितीयस्तु यावच्छब्दः अष्टाहिकाऽऽदेशदानकरणे इति सूचयति ।

अथ तमिश्रा गुहाधिपकृतमाल सुरसाधनार्थमुपक्रमते

‘तए ण’ इत्यादि ‘तए णं से दिव्वे चक्करयणे अट्टाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए जाव पच्चत्थिमं दिसिं तिमिसगुहाभिमुहे पयाए यावि होत्था’ ततः खलु तदिव्य चक्ररत्नम् अष्टाहिकायां महामहिमायां निवृत्तायां सत्याम् अर्थाद् वैताढ्यगिरिकुमारस्य देवस्य विजयोपलक्षिकायां यावत् पाश्चात्यां पश्चिमां दिशं तमिस्रागुहाभिमुखं प्रयातं चाप्यभवत् प्रस्थितमभूत् प्रस्थितजातम् वैताढ्यगिरिकुमारसाधनस्थानस्य तमिश्रायाः पश्चिमवर्त्तित्वात् ‘तए णं से भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं जाव पच्चत्थिमं दिसिं तिमिसगुहाभिमुहं पयातं पासइ’ ततः खलु स भरतो राजा तदिव्यं चक्ररत्नं यावत्

से चल कर जहाँ पर महाराजा भरत नरेश था वहा पर आया इत्यादि और सब आगे का कथन महामहोत्सव करने तक और उसकी भरत नरेशको सूचना देने तक का यहाँ पर करकेना चाहिये । यह सब कथन पीछे लिखा ही जा चुका है अतः वहाँ से इसे देख लेना चाहिये यही बात यहा पर आये हुए यावत् शब्द सूचित करता है ।

तमिश्रा गुहाधिप कृतमालदेव साधन वक्तव्यता—(तएणं से दिव्वे चक्करयणे अट्टाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए जाव पच्चत्थिमं दिसिं तिमिसगुहाभिमुहे पयाए यावि होत्था) जब वैताढ्यगिरिकुमार देव के विजयोपलक्ष्य में ८ दिन का महामहोत्सव समाप्त हो चुका तब वह दिव्य चक्ररत्न पश्चिमदिशा में वर्तमान तिमिस्रा गुहा की तरफ प्रस्थित हुआ क्यों कि वैताढ्यगिरिकुमार को साधन करने का स्थान तिमिस्रा गुहा की पश्चिम दिशा में है (तएणं से भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं जाव पच्चत्थिमं दिसिं तिमि-

विशेषज्ञोवाणी गतिथी आलीने जयां सरत नरेश इतो त्यां आओ, इत्यादि आगणनु' सर्व कथन—महामहोत्सव सम्पन्न करवा तेमज ते उत्सवनी पूछुथवाणी सरत नरेशने सूचना आपवा सुधीनु' अही' अणी देवु नेधओ. ओ अधु कथन पडेवां स्पष्ट करवामां आओ ज ओ ओथी अधु त्याथी ज अणी देवु नेधओ अही यावत् पढथी ओज वात स्पष्ट करवामा आनी छे

तमिश्रागुहाधिप कृतमालदेवसाधनवक्तव्यता

(त एणं से दिव्वे चक्करयणे अट्टाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए जाव पच्चत्थिमं दिसिं तिमिसगुहाभिमुहे पयाए यावि होत्था) जयादे वैताढ्यगिरि कुमार देवना विजयोपलक्ष्यमां ८ दिवसने महामहोत्सव सम्पन्न थधु अक्यो त्यादे ते दिव्य चक्ररत्न पश्चिम दिशाभा वर्तमा । तिमिस्रागुहाणी तरफ प्रस्थित थधु केमके वैताढ्यगिरि कुमारने साधनानु' स्थान तमिस्रा गुहाणी पश्चिम दिशाभां छे (तएण से भरहे राया तं दिव्वं चक्करयण

पाश्चात्यां पश्चिमां दिशं तमिस्रागुहाभिमुखं प्रयातं—प्रस्थित पश्यति 'पासित्ता' दृष्ट्वा
'हृदुतुदुचित्त जाव तिमिसगुहाए अदूरसामने दुवालसजोयणायामं णव जोयणविस्थिन्न
जाव कयमालस्स देवस्स अट्टमभक्तं पणिण्हइ' हृष्टुष्टु चित्तानन्दितः यावत् परममोमनस्यिनः
स भरतः तमिस्रागुहायाः अदूरसामन्ते नातिदूरे नातिसमीपे उचितस्थाने द्वादशयोजना-
यामं नवयोजनविस्तीर्णं वरनगरसदृशं विजयस्कन्धावारनिवेग सेनानिवेशं करोति 'रुग्गित्ता'
कृत्वा यावत् पदात् वर्द्धकिरत्तनशब्दापनपौषशालाविधापनादि सर्वं नेतव्यम्, तेन
पौषशालायां कृतमालस्य देवस्य साधनाय अष्टमभक्तं प्रगृह्णाति 'पणिण्हित्ता' प्रगृह्य
'पोसहसालाए पोसहिए वंमयारी जाव कयमालगं देवं मणसि करेमाणे करेमाणे चिट्ठइ'
पौषशालायां पौषधिकः पौषधव्रतवान् अतएव व्रतचारी यावत्करणात् दर्वमसंस्तारको-
पगतः सार्द्धद्वयहस्तपरिमितं दर्वमांसने उपविष्टः, उन्मुक्तमणिमुवर्णालङ्कार इत्यादि सर्वं

सगुहामिमुखं पयात् पासइ) जब भरत राजा ने उम दिव्य चक्ररत्न को यावत् पश्चिमदिशा
में तमिस्रा गुहा की ओर जाते देखा तो (पासित्ता) देखकर वह (हृदुतुदु चित्त जाव तिमिस-
गुहाए अदूरसामने दुवालसजोयणायामं णवजोयणविस्थिण्ण जाव कयमालस्स देवस्स
अट्टमभक्त पणिण्हइ) हर्षित एवं सतोषित हुआ यावत् उसने तमिस्रा गुहा के पास में
ही न उससे- अधिक दूर और न उसके अधिक निकट—किन्तु समुचित स्थान में ही—१२
योजन के छेदे एवं नौ योजन विस्तार वाले अपने विशाल सैन्य का पड़ाव डाला यावत् कृतमाल
देव को साधने के निमित्त उस ने अष्टम भक्त को तपस्या को स्वीकार की यहा यावत्
शब्द से वर्द्धकिरत्तन का बुलाना पौषशाला के बनाने का आदेश देना आदि आदि
पूर्वोक्त—सब प्रकरण लगा लेना चाहिये (पणिण्हित्ता पोसहसालाए पोसहिए वंमयारी जाव
कयमालगं देव मणसिकरेमाणे २ चिट्ठइ) इस प्रकार पौषशाला में पौषध व्रतको धारण कर एवं
ब्रह्मचर्यव्रत वाला वह भरत नरेश यावत् कृतमाल- देव का मन में ध्यान करने लगा यहां
यावत् शब्द से "दर्मासनसस्तारकोपगतः उन्मुक्तमणिमुवर्णालङ्कारः" इत्यादि पूर्वोक्त सब पाठ

जाव पञ्चविंशम विस्ति तिमिसगुहामिमुखं पयातं पासइ) न्याये भरत राजा ने ते दिव्य
चक्ररत्नने यावत् पश्चिम दिशाभा तमिस्रा गुहा तरहे जतु जेथु ते (पासित्ता) जेधने ते
(हृदुतुदु चित्त जाव तिमिसगुहाए अदूरसामने दुवालसजोयणायामं णवजोयणविस्थिण्ण
जाव कयमालस्स देवस्स अट्टमभक्तं पणिण्हइ) हर्षित तेभज संतोषित चित्त थयेथे।
यावत् तेथे तमिस्रा गुहानी पास ज तेनाथी वधाइ हर पणु नहि अने अधिक निकट पणु
नहि पणु अशुचित स्थानमां—१२ योजन जेटथे बाणि अने नव योजन प्रमाण पडोण। पोतान।
विशाल सैन्यने पड़ाव नाथ्यो यावत् कृतमालदेवने साधवा माटे तेथे अष्टमभक्तनी तपस्या
स्वीकार करी अही यावत् शब्दथी वर्द्धकिरत्तनने आवावणे, पौषधशालाना निर्माण माटे
तेनेआदेश आपणे वगेरे पूर्वोक्त सर्व प्रकरण अन्धालूत करतु जेधजे (पणिण्हित्ता
पोसहसालाए पोसहिए वंमयारी जाव कयमालगं देव मणसि करेमाणे २ चिट्ठइ) आ प्रमाणे
पौषधशालाभा पौषधव्रतवाणे तेभज ब्रह्मचारी भरत नरेश यावत् कृतमाल देवसु मनभा

ग्राह्यम् अष्टमभक्तिकः कृताष्टमतपाः कृतमालकं देवं मनसि कुर्वन् ध्यायं २ स्तिष्ठति 'तए
णं तस्स भरहस्स रण्णो अट्टमभत्तंसि परिणममाणंसि कयमालस्स देवस्स आसणं चलइ'
ततः खलु तस्य भरतस्य राज्ञश्चक्रवर्त्तिनः अष्टमभवते परिणमति परिपूर्णप्राये जायमाने
सति कृतमालस्य देवस्य आसनं सिंहासनं चलति 'तद्देव जाव वेयद्धगिरिकुमारस्स' तथैव
पूर्वदेव यावत् वैताढ्यगिरिकुमारस्य सदृश पाठो नेतव्यो यावत्पदात् सर्वं प्राग्वत्
'णवरं पीइदाणं इत्थीरयणस्स तिल्लचोइसं मंडालंकारं कडगाणि य जाव आभरणाणि
य गेण्हइ' नवरम् अयं विशेषः स्त्रीरत्नस्य कृते तिलकं-ललाटाभरणं रत्नमयं चतुर्दशं
यत्र तत्तिलकचतुर्दशम् ईदृश भाण्डालङ्कार शब्दस्य प्राकृतत्वात् अलङ्कारशब्दस्य परनिपाते
संस्कृते पूर्वनिपातोचितत्वात् अलङ्कारभाण्डम् आभरणकरण्डकम्, कटकानि च स्त्रीपुरुष-
साधारणानि बाह्याभरणानि यावत् आभरणानि च गृह्णाति, चतुर्दशाभरणानि चैवम् 'हार
१ ङ्गहार २ इग ३ कणय ४ रयण ५ मुत्तावली ६ उ केऊरे ७ । कडए ८ तुडिए ९

ग्रहण हुआ जानना चाहिये (तएणं तस्स भरहस्स रण्णो अट्टमभत्तंसि परिणममाणंसि
कयमालदेवस्स आसणं कपइ) जब उप भरत राजा को अष्टम भक्त को तपस्या समाप्त
होने के सन्मुख हुआ तब कृतमाल देव का आसन कंपायमान हुआ, (तद्देव जाव वेयद्धगिरि
कुमारस्स) यहा पर इस समय वैताढ्यगिरिकुमार देव के प्रहरण में जैसा कथन किया जा
चुका है वह सब यहां पर समझ लेना चाहिए (णवर पीइदाणं इत्थीरयणस्स तिल्लचोइसं
मंडालंकारं कडगाणि य जाव आभरणाणि य गेण्हइ) प्रीतिदान मे वहां के कथन से यहां अन्तर
है और वह-इस प्रकार से है-प्रीतिदान में उमने भरत राजा को देने के लिये स्त्रीरत्न
के निमित्त रत्नमय १४ ललाट-आभरण जिसमें है ऐसे अलङ्कार भाण्ड को-आभरणकरण्डक
को-स्त्री पुरुष साधारण कटको को, यावत् आभरणों को लिया वे १४ आभरण इस प्रकार
से हैं-(हार १ ङ्गहार ५ इग ३ कणय ४ रयण २ मुत्तावली ६ उ केऊरे ७ कडए ८ तुडिए ९
मुदा १० कुडल ११ वरमुत्त १२ चुलमणि १३ तिलय १४) (पणिहिन्ता ताए उक्किट्ठाए

ध्यान करवा लाग्यो, अही यावत् शब्दही 'द्वर्मासनसंस्तारकोपगः उन्मुक्तमणिसुवर्णालङ्कारः'
ध्यायान्ति पूर्वोक्त सर्व पाठ संगृहीत थिये छे (तएणं तस्स भरहस्स रण्णो अट्टमभत्तंसि
परिणममाणंसि कयमालदेवस्स आसणं कपइ) अयारे ते भरत राजानी अष्टमभक्त तपस्या
समाप्त थवा आवी ते समये कृतमालदेवनु आसन कंपायमान थयुं (तद्देव जाव वेयद्धगिरि
कुमारस्स) अही वैताढ्यगिरि कुमारदेवना प्रहरणमा जे प्रभावे कथन कडेवामा आंथुं छे, ते अंधु
अही 'समञ्ज देवु' जेधजे (णवरं पीइदाणं इत्थीरयणस्स तिल्लचोइसं मंडालंकारं कडगाणि
य जाव आभरणाणि य गेण्हइ) प्रीतिदानना कथनमा अही ने कथन करता अंतर छे अने
ते अंतर आ प्रभावे छे-प्रीतिदानमा तेले भरत राजाने आपवा आटे स्त्रीरत्नमाटे रत्नमय
१४ ललाट-आभरणे जेमा छे जेवा अलंकार बाड-आभरण कर डक, -स्त्री पुरुष साधारण
कटके, यावत् आभरणे लीधा ते १४ आभरणे आ प्रभावे छे-(हार १, ङ्गहार २, इग
३, कणय ४, रयण ५, मुत्तावली ६, उ केऊरे ७, । कडए ८, तुडिए ९, मुदा १०, कुडल

मुद्रा १० कुंडल ११ उरसुत्त १५ चल्मणि १३ तिलयं ॥१४॥१॥' नि तावत् पर्यन्त
वक्तव्यं यावद् भोजनमण्डपे भोजनम्, तत्रैव मगधसुरम्भेव महामहिमा अष्टादिका कृत-
मालस्य प्रत्यर्पयन्त्याज्ञां श्रेणिप्रश्रेणयः इति ॥१२॥

मूलम्-तएणं से भरहे राया कयमालस्म अट्टाहियाए महामहिमा
ए णिव्वत्ताए समाणीए सुसेणं सेणावई सदावेय सदावेत्ता एवं वयासी
गच्छाहिणं भो देवानुप्पिया ! सिंधुए महाणईए पच्चत्थिमिल्लं णिक्खुडं
ससिंधुसागःगिरिमेशगं समविसमणिक्खुडाणि च ओ अवेहि ओअवे
त्ता अग्गाई वराई रथणाई पडिच्छाहि अग्गाई वराई रथणाणि पडि-
च्छिता ममेयमणत्तियं पच्चप्पिणाहि तएणं से सेणावई वलस्स पेया
भरहे वासंमि विस्सुयजसे महावलपरक्कमे महप्पा ओअंसी तेयलक्खण
जुत्ते मिलक्खुभासाविसारए चित्त चारुभासी भरहे वासंमि णिक्खुडाणं
निण्णाण य दुग्गमाणे य दुप्पवेसाण य वियाणए अत्थसत्थकुसले
रथणं सेणावई सुसेणे भरहेणं रण्णा एवं वत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ चित्तमाणं-
दिए जाव करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु
एवं सामी ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता
भरहस्स रण्णो अंतियाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव सए
आवासे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता कोडंबियपुरिसे सदावेइ,

जाव सक्कारेइ- सम्माणेइ) इन सब आभरणों को लेकर वह कृतमाल देव उस देव प्रसिद्ध
उत्कृष्ट आदि विशेषणों वाली गति से चलता हुआ महाराजा भरत राजा के पास आया
इत्यादि सब कथन यहां वे श्रेणिप्रश्रेणिजन हम आठ दिन का महामहोत्सव कर चुके हैं
ऐसी स्वर पोछे भरत नरेश को देते हैं यहां- तरु का जैसा पहिले किया जा चुका
वैसा ही कथन कर लेना चाहिये ॥१२॥

११, उरसुत्त १२, चल्मणि १३, तिलयं १४) पणिगिट्ठा ताए उक्किट्ठाए जाव सक्कारेइ
सम्माणेइ) ओ सर्व आभरणोंने धरने ने कृतमालदेव ते देवप्रसिद्ध उत्कृष्ट आदि विशेषणो-
वाणी गतिथी आसतो आसतो ते भरत राजा पास आये इत्यादि सर्वकथन अही ते श्रेष्ठी-
प्रश्रेष्ठी जेने-अमे ८ दिनसने मंडाभंडोसव सम्पन्न कथो छ ओवी सूचना भरतयहीने
आये छे. अही सुधी पडेलानी जेभज पधु कथन आणी देवु जेधजे ॥१२॥

सद्वावित्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पियाः आभिसेक्कं
हत्थिरयणं पडिकप्पेह हयगयरहपवर जाव चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेह
त्तिकट्ट जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता मज्जणघरं
अणुपविसइ अणुपविसित्ता ण्हाए कयवलिकम्मे कयकोउय मंगलपा-
यच्छित्ते मनद्धवद्धवम्मियकवए उप्पिलिय सरासणपट्टिए पिणद्ध गेविज्ज
वद्ध अविद्ध विमलवरचिंधपट्टे गहियाउहप्पहरणे अणेगगणनायग
दंडनायग जाव सद्धिं संपरिबुडे सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमा-
णेणं मंगलजयसद्धकयालोलोए मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ पडि-
णिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाण साला जेणेव आभिसेक्के हत्थि-
रयणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अभिसेक्कं हत्थिरयणं दुरुढे ।
तए णं से सेणे सेणावई हत्थिखंधवरगए सकोरंट मल्लदामेणं छत्तेणं
धरिज्जमाणेणं हयगयरहपवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं
संपरिबुडे महया भट्ठवडगरपहगर वंदपरिक्खित्ते महया उक्किट्ठि सीह-
णाय बोलकलकलसद्धेणं समुद्धस्वभूयंपिव करेमाणे करेमाणे सव्विच्छीए
सव्वज्जुईए सव्वबलेणं जाव निग्घोसनाइएणं जेणेव सिंघु महाणई
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चम्मरयणं परामुसइ तएणं तं सिखिच्छ
सग्गिसख्वं मुत्ततारद्धचंदचित्तं अयलमकंपं अमेज्जकवयं जंतं सलिला
सागरेसु य उत्तरणं दिव्वं चम्मरयणं सणसत्तरसाईं सव्व धण्णाइं जत्थ
राहंति एगदिवसेण वावियाइं वासं णाऊण चक्कवट्टिणा परा मुंढे दिव्वे
चम्मरयणे दुवालस्स जोयणाइं तिरियं पवित्थरइ तत्थ साहियाइं तएणं से
दिव्वे चक्करयणे सुसेणसेणावइणा परामुट्ठे समाणे खिप्पामेव णावा-
भूए जाए आविहोत्था तएणं से सुसेणे सेणावइस खंधावारबलवाहणे
णावाभूयं चम्मरयणं दुरुहइ दुरुहित्ता सिंघु महाणइ विमलजलतुंगवीचिं
णावाभूएणं चम्मरयणेणं सबलवाहणे ससेणे समुत्तिण्णे तओ महाणइ
मुत्तरित्तु सिंघुं अप्पडिहयसासणे अ सेणावइ कहिंचि गामगरणगर पव्व-

याणि खेडकव्वडमडंवाणि पट्टणाणि सिंहलए वव्वरणं य सव्वं च अंगलोयं
बलायालोयं च परमरम्मं जवणदीवं च पवरमणिरयणग कोसागारमभिद्धं
आखके रोमके य अलसंड विसयवासी य पिकखुरे कालमुहे जोणएय उत्तर-
वेयद्ध संसियाओ य मेच्छजाइ बहुप्पगारा दाहिण अवरेण जाव सिंधु साग-
रंतो त्ति सव्वपवर कच्छं चओ अवऊण पडिणिअत्तो बहुसमरमणिज्जे य
भूमिभागे तस्स कच्छस्स सुहणिसण्णे ताहे ते जणवयाण णगराण पट्टणा
णयजे य ताहिं सामिया पभूया आगरपत्ती य मंडलपत्तीय पट्टणपत्ती य
सव्वे धेत्तूण पाहुडाइ आभरणाणि भूसणाणि रयणाणि य वत्थाणि य महारिहा
णि अण्णं च जं वरिद्धं गयारिहं जं च इच्छिअव्वं एअं सेणावइस्स उवणं
ति मत्थयकयंजलिपुडा पुणरवि काऊण अंजलिं मत्थयंमि पणयातुद्धमे

म्हे ज्थ सामियादेवयव सरणा गया भो तुव्वम विसयवासिणोत्ति विजयं
जं पमाणा सेणावइणा जहारिहं ठविउ पृइअ विसज्जिआणिअत्ता सगाणि
णगराणि पट्टणाणि अणुपविट्ठा, ताहे सेणावई सविणओ धेत्तूण पाहु-
डाइ आभरणाणि भूसणाणि रयणाणि य पुणरवि तं सिंधुनामधेज्जं
उत्तिण्णे अणहसासणबले, तहेव भरहस्स रण्णो णिवेएइ णिवेइत्ता य
अप्पिणित्ता य पाहुडाइं सक्कारिय सम्माणिए सहारिसे विसज्जिए सगं
पढंमंडव मइगणं, ततेणं सुसेणे सेणावई ण्हाए कयवल्लि कम्मे कयकोउय-
मंगलपायच्छित्ते जिमिअमुत्तरागए समाने जाव सरसगासीसचंदणु-
क्खित्तगायसरीरे उप्पि पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं वत्तीसइ
वद्धेहिं णाडएहिं वरतरुणी संपउत्तेहिं उवणच्चिज्जमाणे २ महया हयण-
ट्टगीअवाइअ तंतीतलतालतुडिअघणमुइंगपडुप्पवाइअरवे णं इट्ठे सह-
फरिसरसरूवगंधे पंचविहे माणुस्सए काम भोगे भुंजमाणे विहरइ सू० १३॥

छाया—ततः खलु स भरतो राजा कृतमालस्य अष्टाद्विकायां महामहिमायां निवृत्तायां
सत्यां सुपेण सेनापति शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीन्—गच्छ खलु भो देवानुपिय ! ति-
न्वा महानद्यां पाश्चात्यं निष्कुटं सस्तिन्धुसागरगिरिमर्यादं समविषमनिष्कुटानि च साधय,

साधयित्वा अग्रथाणि वराणि रत्नानि प्रतीच्छ, अग्रथाणि वराणि रत्नानि प्रतीष्य ममैतामा-
 ज्ञप्तिकां प्रत्यर्पय, ततः खलु स सेनापतिः बलस्य नेता भरते वर्षे विश्रुतयशाः, महाबल-
 पराक्रम, महात्मा, ओजस्वी तेजोलक्षणयुक्तः, म्लेच्छभाषाविशारदः, चित्रचारुभाषी, भरते
 वर्षे निष्कुटानां निम्नानां च दुर्गमानां च दुष्प्रवेशानां च विज्ञायकः, अस्त्रशस्त्रकुशलः अर्थशास्त्र
 कुशलो वा रत्नं सेनापतिः सुषेणं भरतेन राज्ञा पव मुक्तं सन् दृष्टुष्ट चित्तानन्दितः यावत्
 करतलपरिगृहीतं दशनखं शिरसावर्चं मस्तके अजलिं कृत्वा पवं स्वामिन् । तथेति आह्वा
 याः विनयेन वचनं प्रतिशृणोति, प्रतिथित्य भरतस्य राज्ञः अन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामति प्रति-
 निक्रम्य यत्रैव स्वस्य आवासः तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति
 शब्दयित्वा पवमवादीत् क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिय । आभिषेक्य हस्तिरत्नं प्रतिकल्पय ह्यगजरथ
 प्रवर थावत् चातुरङ्गिणो सेनां सन्नाश्य इति कृत्वा यत्रैव मज्जनगृहं तत्रैवोपागच्छति
 उपागत्य मज्जनगृहमनुप्रविशति अनुप्रविश्य स्नातः कृतबलिकर्मा कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तः,
 सन्नद्धबद्धवस्मितकवच, उत्पीडितशरासनपट्टिकाः, पितृद्वैवेयबद्धाविद्ध विमलवरचिह्नपटः,
 गृहीतायुधप्रद्वरणः, अनेक गणनायक दंडनायक थावत्सार्द्धं संपरिवृतं सकोरण्डमाल्यदाग्ना
 छत्रेण ध्रियमाणेन मङ्गल जयशब्दकृतालोको मज्जनगृहात् प्रतिनिष्क्रामति प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव
 बाह्या उपस्थाशाला यत्रैव आभिषेक्यं हस्तिरत्नं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य आभिषेक्यं हस्ति-
 रत्नं दुरुढः । ततः खलु स सुषेणः सेनापतिः हस्तिस्कन्धवरगत सकोरण्ड माल्यदाग्ना छत्रेण
 ध्रियमाणेन ह्यगजरथप्रवरयोधकलितया चातुरङ्गिण्या सेनया सार्द्धं संपरिवृतः महता भट
 'चङ्गपट्टगर' विस्तारवृन्द परिक्षिप्तः महतोत्कृष्टसिंहनाद बोलकलकलशब्देन समुद्ररवभूतमिव
 कुर्वन् कुर्वन् सर्वद्विकः सर्वद्युतिक सर्वबलेन यावत् निर्घोषनादेन यत्रैव सिन्धु महानदी
 तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य चर्मरत्नं परामृशति, ततः खलु तत् श्रीवत्ससदृशम् मुक्तताराद्धं
 चन्द्रचित्रम् अचलम् अकम्पम् अमेघकवचम् यत् तत् सलिलासु सागरेषु चोत्तरणे दिव्य चर्म-
 रत्नम् शणसप्तदशानि सर्वधान्यानि यत्र रोहन्ते एकदिवसेनोत्तानि, वर्षे राज्ञा चक्रवर्तिना
 परामृष्टं दिव्यचर्मरत्नं द्वादशयोजनानि तिर्यक् प्रविस्तृणाति तत्र साधिकानि, ततः खलु
 तद्विव्यं चर्मरत्नं सुषेण सेनापतिना परामृष्टं यत् क्षिप्रमेव नौभूत जातं चाप्यभवत् । ततः
 खलु स सुषेणः सेनापतिः सस्कन्धावारबलवाहनः नौभूतं चर्मरत्नम् आरोहति, आरुह्य
 सिन्धु महानदीं विमलजलतुङ्गवीचिं नौभूतेन चर्मरत्नेन सबलवाहनः स सैन्य समुत्तीर्णः, ततो
 महानदीं सिन्धुमुत्तीर्य अप्रतिहतशासनश्च सेनापतिः क्वचित् ग्रामाकरनगरपर्वतान् खेड
 कर्षटमडम्बानि पत्तनानि सिंहलकान् बर्बरकांश्च यवं च अङ्गलोके बलावलोकं च परम-
 रम्यम्, यवनद्वीपं च प्रवरमणिरत्नकोशागारसमृद्धम्, आरबकान् रोमकांश्च अलसण्ड
 विशयवासिनश्च पिक्कुरान् कालमुखान् जोनकांश्च उत्तरवैताल्यसंश्रिताश्च म्लेच्छजाती
 बहुप्रकाराः, दक्षिणापरेण थावत् सिन्धुसागरान्त इति, सर्वप्रवर कच्छं च 'ओअवेडण'
 साधयित्वा प्रतिनिवृत्तो बहुसमरमणीये च भूमिमाने तस्य कच्छस्य सुखनिषण्णः,
 तस्मिन् काले ते जनपदानां नगराणां पत्तनानां च ये च स्वामिकाः प्रभूताः आकरपत-
 यश्च मण्डलपतयश्च पत्तनपतयश्च सर्वे गृहीत्वा प्राभृतानि आभरणानि भूषणानि
 रत्नानि च वस्त्राणि च महार्घाणि अन्यच्च यद्विष्टं राजाहं यच्च पृथ्व्यम् यत् सेनापते

रूपनर्यान्त, मस्तककृताञ्जलिपुटाः, पुनरपि मस्तके अञ्जलिं कृत्वा प्रणता यूय मस्मा-
कमत्र स्वामिन देवतामिव शरणागता. स्मो वयं युष्माकं विषयवासिन इति विजयं जल्पन्त'
सेनापतिना यथार्हं स्थापिताः पूजिता विसर्जिताः निवृत्ताः स्वकानि स्वकानि नगराणि पत्तनानि
अनुप्रविष्टाः । तस्मिन् काले सेनापतिः सविनयो गृहीत्वा प्राभृतानि आभरणानि भूषणानि
रत्नानि च पुनरपि तानि निधुनामधेयामुत्तीर्णः अक्षतशासनवलयः तथैव भरतस्य राक्षो
निवेदयति निवेदयित्वा च प्राभृतानि अर्पयित्वा च (स्थितः) सत्कारित सम्मानित सहर्षः
विसृष्टः स्वकं पटमण्डपमधिगतः । ततः खलु सुपेणः सेनापतिः स्नात कृतबलिकर्मा
कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तः जिमितभुक्तयुत्तरागतः सन् यावत् सरसगोशीर्षचन्दनोक्षित
गात्रशरीरः उपरि प्रासादवरगतः स्फुटद्भिः मृदङ्गमस्तकैः द्वात्रिंशदधदैर्नाटकैः वरत-
रूपी सप्रयुक्तैः उपनृत्यमानः २, उपगीयमानः २, उपलभ्य (लाभ्य) मान २, महताऽह-
तनाट्य गीतवादित तन्त्री तल ताल वृटित घनमृदङ्गपटुप्रवादितरवेण इष्टान् शब्दस्पर्श
रसरूपगन्धान् पर्चाविधान् मानुष्यकान् कामभोगान् भुञ्जानो विहरति ॥सू० १३॥

टीका—‘तए णं से’ इत्यादि । ‘तए णं से भरहे राया कयमालस्स अट्ठाहियाए
महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए सुसेणं सेणावइ’ सदावेइ’ ततः खलु स भरतो राजा
चक्रवर्ती कृतमालस्य विजयोपलक्षिकायाम् अष्टाहिकायां महामहिमायां निवृत्तायां समा-
प्तायां सत्याम् सुषेणं सुषेणनामकं सेनापतिं शब्दयति अहयति ‘सदावित्ता’ शब्दयित्वा
आहूय ‘एवं वयासी’ एवं वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत् उक्तवान् ‘गच्छाहिणं भो देवाणुप्पिया !
सिंधुए महाणईए पच्चत्थिमिल्लं णिक्खुइ ससिंधु सागरगिरिमेरागं समविसमणिक्खुडा-
णियओ अबेहि’ गच्छ खलु भो देवानुप्रिय ! सेनापते सुषेण ! सिन्ध्वा महानद्याः पाश्चात्यं—

‘तएणं से भरहे राया कयमालस्स अट्ठाहियाए’—इत्यादि सूत्र—१३-

टीकार्थ—अब श्रेणि प्रश्रेणिजनो ने कृतमाल देव को साधने के निमित्तकिये गये भरत राजा
को उनके द्वारा आदिष्ट आठ दिन तक के महामहोत्सव हो जाने की स्वर दे दी तब भरत-राजा
ने (सुसेण सेणावइ सदावेइ) सुषेण नाम के सेनापति को बुलाया (सदावित्ता एवं वयासी) और
बुलाकरके उससे ऐसा कहा—(‘गच्छाहिणं भो देवाणुप्पिय ! सिंधूए महाणईए पच्चत्थिमिल्लं
णिक्खुइ ससिन्धुं सागरगिरिमेरागं समविसमणिक्खुडाणि अ ओअवेहि) हे देवानु प्रिय ! तुम

‘तएणं से भरहे राया कयमालस्स अट्ठाहियाए’ इत्यादि—सूत्र—॥१३॥

टीकार्थ—कृतमालदेवने साध्या पछी भरत महाराज्जो श्रेणी प्रश्रेणी जनेने आठ दिवसने।
महामहोत्सव आयोजित करवानी आज्ञा आपी भरत महाराज्जो आज्ञा सुजण महामहोत्सव
सम्पूज्जं थयं जवानी राज्जने जणर आपी त्याहे भरत राज्जो (सुसेण सेणावइ सदावेइ)
सुषेण नामक सेनापतिने बोलाव्यो (सदावित्ता एवं वयासी) अने बोलावीने तेने आ
प्रमाणे छु (गच्छाहिणं भो देवाणुप्पिया ! सिंधूए महाणईए पच्चत्थिमिल्लं णिक्खुइ
ससिन्धुं सागरगिरिमेरागं समविसमणिक्खुडाणि अ ओअवेहि) हे देवानु प्रिय ! तसे

पश्चिमदिग्दर्शनं निष्कृतं कोणस्थितभरतक्षेत्रखण्डरूपम्, इदं चक्रैर्विभाजकैर्विभक्तमित्याह—
 'ससिन्धु सागरगिरिमेरागं' इति ससिन्धुसागरगिरिमर्यादम् तत्र पूर्वस्यां दक्षिणस्यां च
 सिन्धुर्नदी पश्चिमायां सागरः—पश्चिमसमुद्रः उत्तरस्यां गिरिवैताढ्यः एतैः कृता मर्यादा
 विभागरूपा तथा सहितम् यत् तत्तथा एभिः कृतविभागमित्यर्थः 'समविसमणिक्खुडाणि य'
 समविषमनिष्कृतानि च समानि च समभूमिभागवर्त्तानि विषमाणि च—दुर्गभूमिभागवर्त्तानि
 च यानि निष्कृतानि अवान्तरक्षेत्रखण्डरूपाणि तानि तथा 'ओअवेहि' साधय तत्र विजयं
 कुरु अस्मद् आज्ञां प्रवर्तय 'ओअवेत्ता' साधयित्वा 'अग्गाइ' वराइ रयणाइ पडिच्छाहि'
 अग्न्याणि सद्यस्कानि वराणि प्रधानानि रत्नानि स्वस्वजातौ उत्कृष्टवस्तूनि प्रतीच्छ गृहाण
 'पडिच्छित्ता' प्रतीष्य गृहीत्वा 'ममेय माणत्तियं पच्चप्पिणाहि' मम एतामाज्ञसिकां प्रत्य-
 र्पय ततो भरतेन आज्ञापिते सति सुषेणो सेनापतिः यादृशो गुणी यथा च कृतवान्
 तथाऽऽह—'तए णं से सेणावई बलस्स जेया भरहे वासंमि विस्सुजसे महाबलपरक्कमे
 महप्पा ओअसी तेअलक्खणजुत्ते मिलक्खुभासाविसारए चित्तचारुमासी' ततः खलु स
 सुषेणः सेनापतिः बलरय इत्यादिस्कन्धरूपस्य नेता स्वामी स्वातन्त्र्येण प्रवर्तकः भरते

सिन्धु महानदी के पश्चिमदिग्दर्शनं भरतक्षेत्र खण्डरूप निष्कृत प्रदेश को जो कि पूर्व में और दक्षिण
 दिशा में सिन्धु महानदी के द्वारा, पश्चिम—दिशा में पश्चिम समुद्र के द्वारा और उत्तर दिशा में
 वैताढ्यनामक गिरि के द्वारा विभक्त हुआ है तथा वहां के सम विषमरूप—अवान्तर क्षेत्रों को हमारे
 अधीन करो अर्थात् वहां जाकर तुम हमारी आज्ञा के वशवर्ती उन्हें बनाओ (ओअवेत्ता अग्गाइ
 वराइ रयणाइ पडिच्छाहि) हमारी आज्ञा के वशवर्ती उन्हें बनाकर वहां से तुम श्रेष्ठ नवीन रत्नों
 को—अपनी जाति में उत्कृष्ट वस्तुओं को—ग्रहण करो (पडिच्छित्ता ममेयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि)
 ग्रहण करके फिर हमें हमारी इस आज्ञा की पूर्ति हो जाने की खबर दो (तते णं से सेणावई
 बलस्स जेया भरहे वासंमि विस्सुजसे महाबलपरक्कमे महप्पा ओअसी तेअलक्खणजुत्ते मिलक्खु
 भासा विसारए चित्तचारुमासी) उस प्रकार से भरत के द्वारा आज्ञित हुआ वह सैन्य का नेता

सिन्धु महानदीना पश्चिम दिग्दर्शनं भरतक्षेत्र अंशरूप निष्कृत प्रदेशने के के पूर्वभां अने
 दक्षिणभा सिन्धु महानदी वडे पश्चिम दिशाभां पश्चिम समुद्र वडे अने उत्तर दिशाभां
 वैताढ्य नामक गिरि वडे विभक्त छे, तेभज त्यांना जीअ सम—विषम रूप अवान्तर क्षेत्रोंने
 अभादे अधिन करै। अर्थात् त्यां जेने तमे अमारी आज्ञावर्ती तेभने अनाओ
 (ओअवेत्ता अग्गाइ वराइ रयणाइ पडिच्छाहि) अमायी आज्ञा वशवर्ती अनावीने त्यांही तमे
 नवीन रत्नोने इरेक प्रकारनी उत्कृष्टवस्तुओंने ग्रहण करै (पडिच्छित्ता ममेयमाणत्तियं पच्च-
 प्पिणाहि) ग्रहण करीने पत्री आज्ञा पूरी थवानी अभने सूचना आपो। (त एणं सेणावई बलस्स
 जेया भरहे वासंमि विस्सुजसे महाबलपरक्कमे महप्पा ओअसी तेअलक्खणजुत्ते मिलक्खु-
 भासाविसारए चित्तचारुमासी) आ प्रभावे भरत द्वारा आज्ञित थयेदी ते सेनापति सुषेण के
 जेने। यश भरतक्षेत्रभा प्रज्जात छे जेना जेना प्रतापथी भरतनी सेना प्रशंभशाही भान-

વર્ષે વિશ્રુતયશઃ-વિખ્યાતકીર્તિઃ, મહાબલપરાક્રમઃ-મહતઃ બલસ્ય સૈન્યસ્ય ભરતચક્રવર્તિ-
સમ્બન્ધિનઃ, પરાક્રમો યસ્માત્ સ તથા, એતેન 'ઓઅંમી' ઇતિ પદેન પૌનરુક્ત્યમ્
'મહપ્પા' મહાત્મા ઉદાત્તસ્વભાવઃ વિપુલાશયવાન 'ઓઅંસી' ઓજસ્વી આત્મના વીર્યાધિકઃ
પ્રકર્ષાન્મશક્તિવાન 'તેઅલ્લક્ષણજુત્તે' તેજો લક્ષણયુક્તઃ તેજસા શરીરેણ લક્ષણેશ્ચ સત્ત્વા-
દિમિઃ સમ્પન્નઃ પ્રશસ્તગુણયુક્તઃ 'મિલલ્લક્ષુમાસાવિમારણ' મ્લેચ્છમાપાવિશારદઃ મ્લેચ્છ-
માષાસુ-પારસી આરવી પ્રમુલાસુ વિશારદ પળ્હિતઃ અતએવ 'ચિત્ત ચારુમાસી' ચિત્ર-
ચારુમાષી ચિત્રં વિવિધં ચારુ ગુણોપેતં માપતે ઇત્યેવ શીલઃ આગ્રામ્યાપિ ગુણોપેતમાપ-
ણશીલઃ પુનશ્ચ 'મરહે વાસમિ નિલ્લક્ષુહાણં નિળ્ણાય ય દુગ્ગમાણ ય દુપ્પવેસાણ ય વિઆણય
અત્થસત્થક્કુસલે રયણ સેણાવઈ સુસેણે મરહેણં રણ્ણા એવં વુત્તે સમાણે હટ્ટ તુટ્ટ
ચિત્તમાણંદિપ્પ જાવ કરયલપરિગ્ગહિયં દસણહં સિરસાવત્ત મત્થપ અંજલિ કદ્દુ એવ
સામી ! તહત્તિ આણાપ વિણણં વયણં પહિસુણેઈ' મરતેવર્ષે ભરતક્ષેત્રે નિષ્કુટાનામ્
અવાન્તરક્ષેત્રલ્લક્ષણરૂપાણામ્, નિમ્નાનાં ચ ગમ્મીરસ્થાનામ્ દુર્ગમાનાં ચ દુઃખેન ગન્તુ
શક્યાનામ્, દુષ્પ્રવેશાનાં ચ દુઃખેન પ્રવેષ્ટું શક્યાનાં યૂમાગાનાં વિજ્ઞાયકઃ તદ્વાસીવ
પ્રચાર ચતુરઃ, અસ્ત્રશસ્ત્ર કુશલઃ તત્ર અસ્ત્રં વાણાદિરુઃ શસ્ત્ર સ્વજ્ઞાદિકં તત્ર કુશલઃ પ્રસિદ્ધઃ

સુષેણ સેનાપતિ કિ જિસ કા ભરત ક્ષેત્ર મેં યશ પ્રખ્યાત હૈ જિસસે ભરત કી સેના પરાક્રમ શાલી
માની જાતી હૈ જો સ્વયં તેજસ્વી હૈ જિસ કા સ્વભાવ ઉદાત્ત હૈ-વિપુલ આશય-વાલા હૈ શરીર સંવંધી
તેજ સે, એવં સત્ત્વાદિ લક્ષણો સે જો સપન્ન હૈ મ્લેચ્છમાયાઓં કા-પારસી આરવી, આદિ ભાષાઓં
કા જો વિશિષ્ટ જ્ઞાતા હૈ ઔર હસી સે જો વિવિધ પ્રકાર કી ભાષાઓ કોં સુન્દર ઢંગ સે બોલના
હૈ (મરહે વાસમિ નિલ્લક્ષુહાણં નિળ્ણાય દુગ્ગમાણય દુપ્પવેમાણય વિઆણય અત્થસત્થક્કુસલે
રયણ સેણાવઈ સુસેણે-મરહેણ રણ્ણા એવ વુત્તે સમાણે હટ્ટ તુટ્ટ ચિત્તમાણંદિપ્પ જાવ કરયલપરિગ્ગ-
હિય દસણહં સિરસાવત્ત મત્થપ અંજલિ કદ્દુ એવં સામી ! તહત્તિ આણાપ વિણણં વયણં પહિ-
સુણેઈ) જો ભરત ક્ષેત્ર મેં અવાન્તર ક્ષેત્ર લ્લક્ષણ રૂપ નિષ્કુટોં જિસ મેં હરેક કોઈ પ્રવેશ નહીં કર
સકે ગમ્મીર-સ્થાનોં કા દુર્ગમ સ્થાનોં કા એવં જિનમેં પ્રવેશ વઢી કઠિનાડ સે કિયા જા સકે એસે
સ્થાનો કા વિજ્ઞાયક હૈ વિશેષ રૂપ સે જાનને વાલા હૈ અલ્લ શલ્લ સત્ત્વાલ્લન મેં વાણાદિરૂપ અલ્લ એવં

પ્રામા આવે છે. જે સ્વય તેજસ્વી છે, જેનો સ્વભાવ ઉદાત્ત છે. વિપુલ આશય વાળો છે
શરીર સંબંધી તેજથી તેમજ સત્ત્વાદિ લક્ષણોથી જે સપન્ન છે. મ્લેચ્છ ભાષાઓં કાસી,
આરવી વગેરે ભાષાઓનો જે વિશિષ્ટ જ્ઞાતા છે એથી જ જે વિવિધ પ્રકારની ભાષાઓને
સુંદર ઢંગથી બોલી શકે છે (મરહે વાસમિ નિલ્લક્ષુહાણં નિળ્ણાય દુગ્ગમાણ ય દુપ્પવેસાણય-
વિઆણય અત્થસત્થ કુલે રયણ સેણાવઈ સુસેણે મરહેણં રણ્ણા એવંવુત્તે સમાણે હટ્ટ-તુટ્ટ ચિત્ત-
માણંદિપ્પ જાવ કરયલપરિગ્ગહિયં દસણહં સિરસાવત્ત મત્થપ અંજલિ કદ્દુ એવ સામી 'તહત્તિ
આણાપ વિણણં વયણં પહિસુણેઈ) જે ભરત ક્ષેત્રમાં અવાન્તર ક્ષેત્ર ખડકીય નિષ્કુટોંકે જેમાં
હરેક કોઈ પ્રવેશી શકે નહીં, એવા ગમ્મીર સ્થાનો, દુર્ગમ સ્થાનો કે જેમાં પ્રવેશ કરવું અતીવ દુષ્કર
કાર્ય છે. તેવા સ્થાનોનો વિજ્ઞાપક છે. વિશેષ રૂપથી બાણાદિરૂપ અલ્લ એવં પ્રાણાદિ

અર્થશસ્ત્રકુશલો વા અર્થશાસ્ત્ર' નીતિશાસ્ત્રાદિ તત્ર કુશલઃ નિપુણઃ રત્નં રત્નસ્વરૂપઃ
 સેનાપતિઃ—સર્વ સેનાપ્રધાનઃ સુષેણ—તન્નામકો ભરતેન રાજા ચક્રવર્તિના એવમુક્તઃ સન્
 હૃદયતુષ્ટચિત્તાનન્દિતઃ યાવત્ પદાત્ નન્દિતઃ પ્રીતિમનાઃ પરમસૌમનસ્યિતઃ, કરતલપ-
 રિશ્વકીતં દશનચ્છં શિરસાવર્તે મસ્તકે અઙ્ગુલિ કૃત્વા તત્ર કરતલાભ્યાં પશ્ચિમ્મુક્તો યસ્તં
 તથા દશરથદ્વયસમ્બન્ધિનો નચ્છાઃ સમુદિતાઃ તત્ર સ તથા તં મસ્તકે અઙ્ગુલિ કૃત્વા એવમ્
 ઉક્તવાન્ એત્રં સ્વામિન્ ! યથા શ્રીમાન્ આદિશતિ તથેતિ તથાસ્તુ ઇતિ કૃત્વા આજ્ઞાયાઃ
 સ્વામિશાસનસ્ય વિનયેન વિનયપૂર્વકં વચનં પ્રતિશૃણોતિ સ્વીકરોતિ 'પહિસુણિત્તા' પ્રતિ-
 શ્રુત્ય સ્વીકૃત્ય 'મરહસ્સ રણો અંતિયાઓ પહિણિક્લમહ' ભરતસ્ય રાજઃ અન્તિકાત્ સમીપાત્
 પ્રતિનિષ્ક્રામતિ નિર્ગચ્છ તે (પહિણિક્લમિત્તા) પ્રતિનિષ્ક્રમ્ય 'જેજેવ સપ આવાસે તેજેવ
 ઉવાગચ્છતિ' યત્રૈવ સ્વસ્ય આવાસઃ નિવાસસ્થાનં તત્રૈવ ઉપાગચ્છતિ આગચ્છતિ 'ઉવાગ-
 ચ્છિત્તા' ઉપાગત્ય સ સુષેણઃ—'કોઢુંબિયપુરિસે સદાવેહ' કૌટુમ્બિકપુરુષાન્ શબ્દયાતિ આહ્વયતિ
 'સદાવિત્તા' શબ્દયિત્વા આહૂય 'એવં વયાસી' એવં વક્ષ્યમાણપ્રકારેણ અવાદીત્ ઉક્તવાન્

સજ્ઞાદિરૂપ શસ્ત્ર કે દ્વારા પ્રહાર કરને મેં—કુશલ હૈ અથવા અર્થ શાસ્ત્ર મેં નિપુણ હૈ હસી—કારણ ઉસે
 સેનાપતિરત્ન કહા ગયા હૈ એસે ઉસ સેનાપતિરત્ન સુષેણ સે ભરતચક્રી ને જબ પૂર્વોક્ત રૂપ સે કહા
 તો વહ અપને સ્વામી કી બાત કો સુનકર બહુત હી અધિક હર્ષિત એવ સતુષ્ટ ચિત્ત હુઆ "યહાં
 પ્રયુક્ત હુએ—યાવત્પદ સે " નન્દિતઃ પ્રીતિમનાઃ પરમસૌમનસ્યિતઃ ॥ इन पदों का ग्रहण हुआ
 है उसने दोनों हाथों को दशों नख जिभमें मिलजावें ऐसे अंगुलि के रूप में करके—और उसे
 मस्तक पर से घुमा करके उस प्रकार से कहा-हे स्वामिन् । आपकी आज्ञा हमें प्रमाण है इस
 प्रकार कहकर उमने स्वामी के आज्ञा के वचनों को विनय के साथ स्वीकार कर लिया (पहिसु
 णित्ता मरहस्स रणो अंतियाओ पहिणिक्लमह) स्वीकार करके फिर वह भरत राजा के पास
 से चला आया—(पहिणिक्लमिक्ता जेजेव सप आवासे तेजेव उवागच्छह) वहां से आकर वह जहां
 अपना घर था वहां आया—(उवागच्छित्ता कोडुंबियपुरिसे सदावेह) वहां आकर के उस सुषेण
 ने अपने को कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाया (सदावित्ता एवं वयासी) बुला कर फिर उनसे उसने

इय शस्त्र तेभज्जअङ्गादि इय शस्त्र वडेप्रहार करवामा जे कुशल छे अथवा अर्थशास्त्रमां निपुण
 छे, ज्येथी ज तेने सेनापतिरत्न कडेवामा आवेल छे. ज्येवा ते सेनापतिरत्न सुषेणने ते भरतचक्रीजे
 ज्यारे पूर्वोक्त रूपमा कहु त्यारे ते पोताना स्वामीनी बातने सांझणीने भूषण हषित तेभज्ज
 अंतुष्ट चित्त थये. अही प्रयुक्त थये. यावत् पदथी (नन्दित प्रीतिमना परम सौमनस्यित)
 जे पढानुं अङ्गुल थयु छे ते सेनापतिजे जने हाथाना दश नखो जेमां स युक्त थयु ज्य
 तेभ ज्जअलना इयमां जनवीने जने तेने मस्तके ईरवीने आ प्रमाणे कहु—हे स्वामीन् !
 आपश्रीनी आज्ञा मारा माटे प्रमाण इय छे आभ कहीने तेजे स्वामीनी आज्ञाना वचने।
 सविनय स्वीकारी दीधा (पहिसुणित्ता मरहस्स रणो अतियाओ पहिणिक्लमह) स्वीकार करीने
 थछी ते भरत राजा पासथी जेतो रछी, (पहिणिक्लमिक्ता जेजेव सप आवासे तेजेव उवा-
 गच्छह) त्याथी आवीने ते ज्यथा पोतानु धर हटुं त्या आव्ये। (उवागच्छित्ता कोडुंबिय

‘સ્વિપ્પામેવ મો દેવાણુપ્પિયા ! આમિસેવક દત્થિરયણં પઢિકપ્પેહ’ ભિપ્રમેવ મો દેવાનુ-
પ્રિયાઃ ! આમિષેવકયમ્ અમિષેકયોમ્યં દસ્તિરત્તં પ્રધાનહસ્તિતં પ્રતિકલ્પયત સઙ્ગીકુરુત
‘હયગયરહપવર જાવ ચતુરંગિણિં સેણં સણ્ણાહેહ’ હયગજરથપ્રવર યાવત્ પદાત્ યોધકલિતાં
ચાતુરઙ્ગિણીં સેનાં સન્નાહયત સન્નદ્ધાં કુરુત ‘ત્તિકદ્દુ’ ઇતિકૃત્વા ‘જેણેવ મઙ્ગણધરે તેણેવ
ઉવાગચ્છહ’ યત્રૈવ મઙ્ગળગૃહં સ્નાનગૃહં તત્રૈવ ઉપાગચ્છતિ ‘અગચ્છિત્તા’ ઉપાગત્ય ‘મઙ્ગળ-
ધરં અણુપવિસિદ્ધં’ મઙ્ગળગૃહમ્ અણુપવિશતિ ‘અણુપવિસિત્તા’ અણુપવિશ્ય ‘ણ્ઠાપ્’ સ્નાતઃ
‘કયવલિકમ્મે’ કૃતવલિકમ્મ—કૃત વલિકમ્મ યેન સ તથા વાયસાદિભ્યો દત્તાન્નભાગઃ ‘કય-
કોડયમંગલપાયચ્છિત્તે’ કૃતકૌતુરુમદ્ગલપાયશ્ચિત્તઃ—કૃતં કૌતુકેન કૃતહલેન મદ્ગલં પાપગા-
ન્ત્યર્થં પ્રાયશ્ચિત્તં ચ યેન સ તથા ‘સન્નદ્ધ શરીરારોપણાત્ વદ્ધં કસાવન્ધનતઃ વર્મ્મ લોહ
ક્ત્તઞ્ઞાદિરૂપં સઙ્ગાતમસ્યેતિ વર્મિતમ્ પતાદ્દશ કવચં તનુત્રાણ યસ્ય સ તથા, પુનશ્ચ કીદ્દશઃ
સુષેણઃ ‘ઉપ્પીલિયસરાસણપટ્ટિપ્પ’ ઉત્પીઢિતશરાસન પટ્ટિકઃ ઉત્પીઢિતા—ગાઢ ગુનારોપણાદ્

એમા કહા—(સ્વિપ્પામેવ-મો દેવાણુપ્પિયા ! આમિસેવક દત્થિરયણ પઢિકપ્પેહ) હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ
લોંગ બહુત હો શીઘ્ર અમિષેક યોગ્ય પ્રધાન હસ્તી કો સઙ્ગિત કરો (હયગયરહપવર જાવ
ચતુરંગિણિ સેણ સણ્ણાહેહ) તથા હય, ગજ રથ, પ્રવર, પદાતિ જનોં સે યુક્ત ચતુરંગિણી સેના કો
સઙ્ગિત કરો (ઈતિ કદ્દુ જેણેવ મઙ્ગળધરે તેણેવ ઉવાગચ્છહ એમા આદેશ અપને કૌટુમ્બિક પુરુષો
કો દેકર વહ જહાં પર સ્નાન ગૃહ થા વહાં પર આગયા (અણુપવિસિત્તા ણ્ઠાપ્ કયવલિકમ્મે) વહાં
પર આકર કે ઉસને સ્નાન ક્રિયા ઔર વલિકમ્મ ક્રિયા કાક આદિકો કે ઊયે અન્ન કા વિત-
રણ ક્રિયા (કયકોડય મંગલપાયચ્છિત્તે) કૌતૂહલ સે મંગલ ઔર દુસ્વપ્ન શાન્ત્યર્થ પ્રાયશ્ચિત
ક્રિયા (સન્નદ્ધવદ્ધ વર્મિય કવચ) શરીર પર આરોપણ કર કે વર્મિતલોહ કે મોટે ૨ તારોં સે
નિર્મિત દુપ કવચ કો કસા વન્ધન સે બાંધા—સ્ત્રૂવ—ત્રકઢ કા શરીર પર વન્ધન સે વદ્ધ કર
પડિરા (ઉપ્પીલિયસરાસણપટ્ટિપ્પ) ધનુષ પર બહુત હી મજબૂતી કે સાથ પ્રત્યજ્ઞા કા આરોપણ

પુરિસે સદ્ધાવેહ) ત્યા આવીને તે સુષેણે પોતાના કૌટુમ્બિક પુરુષોને બોલાવ્યા (સદ્ધાવિત્તા
પવં વયાસી) બોલાવીને પછી તે સુષેણે તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું—સ્વિપ્પામેવ મો દેવાણુપ્પિયા !
આમિસેવક દત્થિરયણ પઢિકપ્પેહ) હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો એકદમ શીઘ્ર અમિષેક
યોગ્ય પ્રધાન હસ્તિને સુધર્મિય તૃકરો (હયગયરહપવર જાવ ચતુરંગિણિં સેણં
સણ્ણાહેહ) તેમજ હય, ગજ, રથ, પ્રવર પદાતિ જનોથી યુક્ત એવી ચતુરંગીણી સેના
સુધર્મી કરો (ઈતિકદ્દુ જેણેવ મઙ્ગળધરે તેણેવ ઉવાગચ્છહ) પોતાના કૌટુમ્બિક પુરુષોને એવો
આદેશ આપીને તે બધાં સ્નાન ગૃહ હતું ત્યાં આવી ગયો. (અણુપવિસિત્તા ણ્ઠાપ્ કયવલિકમ્મે)
ત્યાં આવીને તેણે સ્નાન કર્યું અને બલિકમ્મ કર્યું કાક વગેરે માટે અન્નનું વિતરણ કર્યું
(કયકોડયમંગલપાયચ્છિત્તે) કૌતૂહલથી મંગલ અને દુસ્વપ્ન શાન્ત્યર્થ પ્રાયશ્ચિત કર્યું
(સન્નદ્ધવદ્ધ વર્મિય કવચ) શરીર પર આરોપણ કરીને વર્મિત લોખંડના મોટા મોટા
તારોથી નિર્મિત કવચને કાળા વન્ધનથી આગ્રહ કર્યું એટલે કે એકદમ મજબૂતીથી
કવચને બાંધ્યું (ઉપ્પીલિય સરાસણપટ્ટિપ્પ) ધનુષ ઉપર ખૂબજ મજબૂતીથી પ્રત્યજ્ઞાનું

દ્વીકૃતા શરાસનપટ્ટિકા ધનુર્દંડો યેન સ તથા 'પિણદ્વગેવિજ્જવદ્ધ આવિદ્ધ વિમલવરચિંધપટ્ટે' પિણદ્વગ્રૈવેયવદ્ધાવિદ્ધવિમલવરચિંધપટ્ટઃ, પિણદ્વગ્રૈવેયં-ગ્રીવાત્રાણકં ગ્રીવાભરણં વા યેન સ તથા વદ્ધો-ગ્રન્થિદાનેન આવિદ્ધઃ પરિહિતો મસ્તકાવેષ્ટનેન વિમલવરચિંધપટ્ટો વીરાતિવીરતા સૂચકવસ્ત્રવિશેષો યેન સ તથા, પિણદ્વગ્રૈવેયશ્ચાસૌ વદ્ધાવિદ્ધવિમલવરચિંધપટ્ટશ્ચેતિ સ તથા 'ગહિયાહપ્પહરણે' ગૃહીતાયુધપ્રહરણઃ ગૃહીતાનિ આયુધાનિ પ્રહરણાનિ ચ શાસ્ત્રાસ્ત્રાણિ યેન સ તથા, આયુધપ્રહરણયોસ્તુ ક્ષેપ્યાક્ષેપ્યકૃતો વિશેષો વોધ્યઃ, તત્ર ક્ષેપ્યાનિ વાણાદીનિ આક્ષેપ્યાનિ સ્વજ્ઞાદીનિ, અથવા ગૃહીતાનિ આયુધાનિ પ્રહરણાય યેન સ તથેતિ । 'અણેગગણનાયક દંડનાયક જાવ સદ્ધિં સપરિવુદ્ધે' અનેક ગણનાયકદંડનાયક યાવત્ સંપરિવૃત્તઃ તત્ર અનેકે-બહવઃ ગણનાયકાઃ મલ્લાદિ ગણમુખ્યાઃ, દંડનાયકાઃ તન્ત્રપાલાઃ, યાવત્ પદાત્ ईશ્વરતલવરમાહમ્બિકકૌટુમ્બિકમન્ત્રિમહામન્ત્રિ ગણકદૌવારિકાઽમાત્યચેટપીઠમર્દનગરનિગમશ્રેષ્ઠિસેનાપતિસાર્થવાહસન્ધિપાલાઃ ગ્રાહ્યાઃ તૈઃ સાર્દ્ધં સંપરિવૃત્તઃ-યુક્તઃ પુનઃ કીદશઃ સુષેણઃ 'સકોરંટમલ્લદામેણં છત્તેણ ધરિજ્જમાણેણં' સકોરંટમાલ્યદામ્ના છત્રેણ ધ્રિય-

ક્રિયા (પિણદ્વગેવિજ્જવદ્ધ આવિદ્ધ વિમલવરચિંધપટ્ટે) ગલે મેં હાર પહિરા તથા-મસ્તક પર અક્કી તરહ સે ગાંઠ સે બાંધકર વિમલ વર ચિંદ્ પટ્ટ-વીરાતિવીરતા કા સૂચક-વસ્ત્ર વિશેષ-બાંધા (ગહિયાહપ્પહરણે) હાથ મેં આયુધ ઔર પ્રહરણ લિપ-આયુધ ઔર પ્રહરણ મેં ક્ષેપ્યા ક્ષેપ્યકૃત વિશેષતા હૈ ઔર કોહ વિશેષતા નહીં હૈ । વાણાદિક ક્ષેપ્ય ઔર સ્વજ્ઞ આદિ આક્ષેપ્ય હૈ । અથવા પ્રહરણ કે લિયે-શત્રુઓં પર પ્રહાર-કરને કે લિયે જિસને આયુધકો લિયે હૈ એસા મી અર્થ 'ગૃહીતાયુધપ્રહરણ' હસ પદ કા હો સકતા હૈ "અણેગ ગણનાયક દંડનાયગ જાવ સદ્ધિં સપરિવુદ્ધે, હસ સમય યહ અનેક ગણનાયકોં સે-મલ્લાદિગણ મુખ્યજનો સે અનેક દંડનાયકોં સે અનેક તન્ત્રપાલોં સે, યાવત્પદગૃહીત અનેક હિશ્વરોં સે અનેક તલવરોં સે અનેક માહમ્બિકોં સે અનેક કૌટુમ્બિકોં સે, અનેક મન્ત્રિયોં સે અનેક મહામન્ત્રિયોં સે અનેક ગણ કોં સે અનેક દૌવારિકોં સે અનેક અમાત્યોં સે અનેક ચેટોં સે અનેક પીઠમર્દ કોં સે અનેક નગર નિગમ કે શ્રેષ્ઠિયોં સે

આરોપણુ કથુ' . (પિણદ્વગેવિજ્જવદ્ધ આવિદ્ધ વિમલવરચિંધ પટ્ટે) ગળામાં હાર ધારણુ કર્યો મસ્તક ઉપર સારી રીતે ગાંઠ બાંધીને વિમલવર ચિંદ્ પટ્ટ - વીરાતિવીરતા સૂચક વસ્ત્ર વિશેષ બાંધ્યું (ગહિયાહપ્પહરણે) હાથમાં આયુધ અને પ્રહરણુ લીધા આયુધ અને પ્રહરણુમાં ક્ષેપ્યાક્ષેપ્યકૃત વિશેષતાજ છે, બીજી કાંઈ વિશેષતા નથી, બાણુ વગેરે ક્ષેપ્ય અને ખડ્ગ વગેરે આક્ષેપ્ય છે. અથવા - પ્રહરણુ માટે - શત્રુઓ ઉપર પ્રહાર કરવા નાટે જેણે આયુધો ધારણુ કર્યા છે. એવો પણ અર્થ (ગૃહીતાયુધપ્રહરણ) આ પદનો થઈ શકે છે (અણેગ ગણનાયક દંડ નાયગ જાવ સદ્ધિં સંપરિવુદ્ધે) તે સમયે જો અનેક ગણ નાયકોથી-મલ્લાદિગણ મુખ્ય જનોથી, અનેક દંડ નાયકોથી, અનેક તન્ત્રપાલોથી, યાવત્ પદ ગૃહીત અનેક હિશ્વરોથી, અનેક તલવરોથી, અનેક માહમ્બિકોથી, અનેક કૌટુમ્બિકોથી, અનેક મન્ત્રિઓથી અનેક મહામન્ત્રિઓથી, અનેક ગણુકોથી, દૌવારિકોથી, અનેક અમાત્યોથી, અનેક ચેટોથી, અનેક પીઠમર્દકોથી, અનેક નગર નિગમના શ્રેષ્ઠિઓથી, અનેક સેનાપતિ-

माणेन तत्र सकोरण्टानि कोरण्टनामककुसुमरतवक्रयुक्तानि कुसुमपुष्पाणि हि पीतव-
र्णानि मालान्ते शोभार्थं दीयन्ते मालायै हितानि माल्यानि-पुष्पाणि तेषां दामानि मालाः
यत्र तत् तथा एवंविधेन छत्रेण आतपनिवारकेण ध्रियमाणेन शिरसि (विराजमानः)
'मंगलजयसदकयालोए' मङ्गलजयशब्दकृतालोकः, मङ्गलभूतः जयशब्दः कृत आलोके
दर्शने सति यस्य स तथा एवंभूतः सुपेणः 'मञ्जणघरालो पड्डिणिकखमड' मञ्जर्जनगृहात्
प्रतिनिष्क्रामति निःसरति 'पड्डिणिकखमिता' प्रतिनिष्क्रम्य निमृत्य 'जेणेव बाहिरिया
उवट्टाणसाला जेणेव आभिसेक्के हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छइ' यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला
सभाशाला यत्रैव आभिषेक्यम् अभिषेकयोग्य हत्थिरयणं 'तेणेव उवागच्छइ' तत्रैवोपागच्छति
'उवागच्छिता' उपागत्य आभिसेक्कं हत्थिरयणं दुरुद्धे' आभिषेक्यं हस्तिरत्नं दुरुद्धम्
आरुद्धः 'तए णं से सुसेणे सेणावई हत्थिखंधवरगए' ततः खलु स सुपेणः-सुपेणनामकः
सेनापतिः हस्तिस्कन्धवरगतः प्राप्तः 'सकोरंटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण' सको-
रंटमाल्यदाम्ना छत्रेण ध्रियमाणेन सह 'विराजमानः' पुनः कीदृशः 'हयगयरहपवर जोह
कलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे' हयगजरथप्रवरयोधकलितया अश्वहस्ति-

अनेक सेनापतियों से अनेक सार्थवाहो से और अनेक सन्धिपालो से युक्त हो गया था (सकोरंट
मल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण) कोरंट पुष्पो के माला से युक्त ऊपर ताने गये छत्ते से यह
सुशोभित हो रहा था (मंगलजयसदकयालोए) इसके दिखते ही लोग मंगलकारी जय २
शब्द का उच्चारण करने लग जाते ऐसा यह सुपेण सेनापति रत्न (मञ्जणघराओ पड्डिणिकखमड)
स्नानगृहसे बाहर निकला (पड्डिणिकखमिता जेणेव बाहिरिया उवट्टाणसाला जेणेव आभिसेक्के
हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छइ) बाहर निकल कर यह उपस्थानशाला में आया वहां आकर फिर
यह जहां आभिषेक्य हस्तिरत्न था वहां पर गया (उवागच्छिता आभिसेक्कं हत्थिरयणं दुरुद्धे)
वहां जाकर यह आभिषेक्य हस्तिरत्न के ऊपर सवार हो गया-(तए णं से सुसेणे सेणावई हत्थिखं-
धवरगए सकोरंटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण हयगयरह पवर जोहकलियाए चाउरंगिणीए
सेणाए सद्धिं संपरिवुडे) इस के अनन्तर वह सुपेण सेनापति हाथों के स्कन्ध पर अच्छी तरह

॥१॥, अनेक सार्थवाहो॥१॥ अने अनेक-सन्धिपालो॥१॥ युक्त-थई गयो-होतो। (सकोरंट
मल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण) कोरंट पुष्पनी माला॥१॥ युक्त उपर ताण्णवामा आवेह
थी ओ सुशोभित थई रह्यो-होतो। (मंगल जयसदकयालोए) अने नेतां २ दो-हो। मंगल-
जय-जय शब्दोच्चार करवा होगता ओवो। सुपेण सेनापतिरत्न (मञ्जणघराओ पड्डिणि-
कखमड) स्नान गृहमांथी गहोर नीकलोयो (पड्डिणिकखमिता जेणेव बाहिरिया उवट्टाणसाला
जेणेव अभिसेक्के हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छइ) गहोर नीकलोने ओ उपस्थानशालांमा
आव्यो आपीने पछी ओ जयां आभिषेक्य हस्तिरत्न हत्तुं त्यां आव्यो। (उवागच्छिता
आभिसेक्कं हत्थिरयणं दुरुद्धे) त्यां जईने ओ आभिषेक्य हस्तिरत्न उपर सवार थई गयो
(तए णं से सुसेणे सेणावई हत्थिखंधवरगए सकोरंटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण
हयगयरहपवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे) ओना पछी ते सुपेण

દ્વદ્વીકૃતા શરાસનપટ્ટિકા ધનુર્દંડો યેન સ તથા 'પિણ્દગેવિજ્જવદ્ધ આવિદ્ધ વિમલવરચિંધપટ્ટે' પિણ્દગ્રૈવેયવદ્ધાવિદ્ધવિમલવરચિંધપટ્ટઃ, પિણ્દં ગ્રૈવેયં—ગ્રીવાત્રાણકં ગ્રીવામરણં વા યેન સ તથા વદ્ધો—ગ્રન્થિદાનેન આવિદ્ધઃ પરિહિતો મસ્તકાવેષ્ટનેન વિમલવરચિંધપટ્ટો વીરાતિવીરતા સૂચકવસ્ત્રવિશેષો યેન સ તથા, પિણ્દગ્રૈવેયશ્ચાસૌ વદ્ધાવિદ્ધવિમલવરચિંધપટ્ટશ્ચેતિ સ તથા 'ગહિયાઝહ્પહરણે' ગૃહીતાયુધપ્રહરણઃ ગૃહીતાનિ આયુધાનિ પ્રહરણાનિ ચ શાસ્ત્રાસ્ત્રાણિ યેન સ તથા, આયુધપ્રહરણયોસ્તુ ક્ષેપ્યાક્ષેપ્યકૃતો વિશેષો बोध्यः, તત્ર ક્ષેપ્યાનિ બાણાદીનિ આક્ષેપ્યાનિ સ્વજ્ઞાદીનિ, અથવા ગૃહીતાનિ આયુધાનિ પ્રહરણાય યેન સ તથેતિ । 'અળેગગણનાયક દંડનાયક જાવ સર્દિ સંપરિવુદે' અનેક ગણનાયકદંડનાયક યાવત્ સંપરિવૃતઃ તત્ર અનેકે—બહવઃ ગણનાયકાઃ મલ્લાદિ ગણમુખ્યાઃ, દંડનાયકાઃ તન્ત્રપાલાઃ, યાવત્ પદાત્ ईश्वरतलवरमाडम्बिककौटुम्बिकमन्त्रिमहामन्त्रि ગણકદૌવારિકાઽમાત્યચેટપીઠમર્દનગરનિગમશ્રેષ્ઠિસેનાપતિસાર્થવાહસન્ધિપાલાઃ ગ્રાહ્યાઃ તૈઃ સાર્દ્ધં સંપરિવૃતઃ—યુક્તઃ પુનઃ કીદશઃ સુષેણઃ 'સકોરંટમલ્લદામેણં છત્તેણ ધરિજ્જમાણેણં' સકોરંટમાલ્યદામ્ના છત્રેણ ધ્રિય-

કિયા (પિણ્દગેવિજ્જવદ્ધ આવિદ્ધ વિમલવરચિંધપટ્ટે) ગલે મેં હાર પહિરા તથા—મસ્તક પર અછ્છી તરહ સે ગાંઠ સે બાધકર વિમલ વર ચિન્હ પટ્ટ—વીરાતિવીરતા કા સૂચક—વસ્ત્ર વિશેષ—બાંધા (ગહિયાઝહ્પહરણે) હાથ મેં આયુધ ઔર પ્રહરણ લિય—આયુધ ઔર પ્રહરણ મેં ક્ષેપ્યા ક્ષેપ્યકૃત વિશેષતા હૈ ઔર કોહ વિશેષતા નહીં હૈ । બાણાદિક ક્ષેપ્ય ઔર સ્વજ્ઞ આદિ આક્ષેપ્ય હૈ । અથવા પ્રહરણ કે લિયે—શત્રુઓં પર પ્રહાર-કરને કે લિયે જિસને આયુધકો લિયે હૈ એસા બી અર્થ 'ગૃહીતાયુધપ્રહરણ' હિસ પદ કા હો સકતા હૈ "અળેગ ગણનાયક દંડનાયક જાવ સર્દિ સંપરિવુદે, હિસ સમય યહ અનેક ગણનાયકોં સે—મલ્લાદિગણ મુખ્યજનો સે અનેક દંડનાયકોં સે અનેક તન્ત્રપાલોં સે, યાવત્પદગૃહીત અનેક હિશ્વરોં સે અનેક તલવરોં સે અનેક માડમ્બિકોં સે અનેક કૌટુન્નિકોં સે, અનેક મન્ત્રિયોં સે અનેક મહામન્ત્રિયોં સે અનેક ગણ કોં સે અનેક દૌવારિકોં સે અનેક અમાત્યોં સે અનેક ચેટોં સે અનેક પીઠમર્દ કોં સે અનેક નગર નિગમ કે શ્રેષ્ઠિયોં સે

આરોપણ કયું'. (પિણ્દગેવિજ્જવદ્ધ આવિદ્ધ વિમલવરચિંધ પટ્ટે) ગળામાં હાર ધારણ કર્યો મસ્તક ઉપર સારી રીતે ગાંઠ બાંધીને વિમલવર ચિન્હ પટ્ટ - વીરાતિવીરતા સૂચક વસ્ત્ર વિશેષ બાંધ્યું (ગહિયાઝહ્પહરણે) હાથમાં આયુધ અને પ્રહરણો લીધા આયુધ અને પ્રહરણમાં ક્ષેપ્યાક્ષેપ્યકૃત વિશેષતા છે, બીજી કોઈ વિશેષતા નથી, બાણ વગેરે ક્ષેપ્ય અને ખડગ વગેરે આક્ષેપ્ય છે. અથવા - પ્રહરણ માટે - શત્રુઓ ઉપર પ્રહાર કરવા નાટે જેણે આયુધો ધારણ કર્યા છે એવો પણ અર્થ (ગૃહીતાયુધપ્રહરણઃ) આ પદનો થઈ શકે છે (અળેગ ગણનાયક દંડ નાયક જાવ સર્દિ સંપરિવુદે) તે સમયે જો અનેક ગણ નાયકોથી—મલ્લાદિગણ મુખ્ય જનોથી, અનેક દંડ નાયકોથી, અનેક તન્ત્રપાલોથી, યાવત્ પદ ગૃહીત અનેક હિશ્વરોથી, અનેક તલવરોથી, અનેક માડમ્બિકોથી, અનેક કૌટુન્નિકોથી, અનેક મન્ત્રીઓથી અનેક મહામન્ત્રિઓથી, અનેક ગણકોથી, દૌવારિકોથી, અનેક અમાત્યોથી, અનેક ચેટોથી, અનેક પીઠમર્દકોથી, અનેક નગર નિગમના શ્રેષ્ઠિઓથી, અનેક સેનાપતિ-

माणेन तत्र सकोरुण्टानि कोरुण्टनामककुसुमरतवक्रयुक्तानि कुसुमपुष्पाणि हि पीतव-
र्णानि मालान्ते शोभार्थं दीयन्ते मालायै हितानि माल्यानि-पुष्पाणि तेषां दामानि मालाः
यत्र तत् तथा एवंविधेन छत्रेण आतपनिवारकेण ध्रियमाणेन शिरसि (विराजमानः)
'मंगलजयसहकयालोए' मङ्गलजयशब्दकृतालोकः, मङ्गलभूतः जयशब्दः कृत आलोकै
दर्शने सति यस्य स तथा एवंभूतः सुपेणः 'मञ्जणधरालो पडिणिकखमड' मञ्जणनगृहात्
प्रतिनिष्क्रामति निःसरति 'पडिणिकखमिता' प्रतिनिष्क्रम्य निमृत्य 'जेणेव बाहिरिया
उवट्टाणसाला जेणेव आभिसेक्के हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छइ' यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला
समाशाला यत्रैव आभिषेक्यम् अभिषेकयोग्यं हत्थिरयणं 'तेणेव उवागच्छइ' तत्रैवोपागच्छति
'उवागच्छिता' उपागत्य आभिसेकं हत्थिरयणं दुरुढे' आभिषेक्यं हस्तिरत्न-दुरुढम्
आरुढः 'तए णं से सुसेणे सेणावई हत्थिखंधवरगए' ततः खलु स सुपेणः-सुपेणनामकः
सेनापतिः हस्तिस्कन्धवरगतः प्राप्तः 'सकोरुण्टमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण' सको-
रुण्टमाल्यदाम्ना छत्रेण ध्रियमाणेन सह 'विराजमानः' पुनः कीदृशः 'हयगयरहपवर जोह
कलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धि संपरिवुडे' हयगजरथप्रवरयोधकलितया अश्वहस्ति-

अनेक सेनापतियों से अनेक सार्थवाहो से और अनेक सन्धिपालो से युक्त हो गया था (सकोरुण्ट
मल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण) कोरुण्ट पुष्पों के माला से युक्त ऊपर ताने गये छत्ते से यह
सुशोभित हो रहा था (मंगलजयसहकयालोए) इसके दिसते ही लोग मंगलकारी जय २
शब्द का उच्चारण करने लग जाते ऐसा यह सुपेण सेनापति रत्न (मञ्जणधराओ पडिणिकखमड)
स्नानगृहसे बाहर निकला (पडिणिकखमिता जेणेव बाहिरिया उवट्टाणसाला जेणेव आभिसेक्के
हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छइ) बाहर निकल कर यह उपस्थानशाला में आया वहां आकर फिर
यह जहां आभिषेक्य हस्तिरत्न था वहां पर गया (उवागच्छिता आभिसेकं हत्थिरयणं दुरुढे)
वहां जाकर यह आभिषेक्य हस्तिरत्न के ऊपर सवार हो गया-(तए णं से सुसेणे सेणावई हत्थिखं-
धवरगए सकोरुण्टमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण हयगयरह पवर जोहकलियाए चाउरंगिणीए
सेणाए सद्धि संपरिवुडे) इसके अनन्तर वह सुपेण सेनापति हाथों के स्कन्ध पर अच्छी तरह

आधी, अनेक सार्थवाहोधी अने अनेक-संधिपालोधी युक्त-थई गथो डतो. (सकोरुण्ट
मल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण) कोरुण्ट पुष्पनी भाणीथी युक्त उपर ताण्णवामा आवेव
छत्रथी ओ सुशोभित थई रह्यो डतो. (मंगल जयसहकयालोए) अने ओतां ल डोको. मंगल-
कारी जय-जय शब्दोवायार करवा लागता ओधो. सुपेण सेनापतिरत्न (मञ्जणधराओ पडिणि-
कखमड) स्नान गृहभांथी गहार नीकण्यो (पडिणिकखमिता जेणेव बाहिरिया उवट्टाणसाला
जेणेव अभिसेक्के हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छइ) गहार नीकणोने ओ उपस्थानशाणांभां
आओ आपीने पछी ओ लया आभिषेक्य हस्तिरत्न डतुं त्यां आय्यो (उवागच्छिता
आभिसेकं हत्थिरयणं दुरुढे) त्यां लधने ओ आभिषेक्य हस्तिरत्न उपर सवार थई गथो
(त ए णं से सुसेणे सेणावई हत्थिखंधवरगए सकोरुण्टमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण
हयगयरहपवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धि संपरिवुडे) अने पछी ते सुपेण

श्रेष्ठयोधयुक्तया चतुरङ्गिण्या सेनया साद्धं भवहस्तिरथपदाति सेनया सह संपरिवृतः

। 'महया भटचङ्गरपहगरवन्दपरिविखचे' महता भटविस्तारवृन्दपरिशिखितः तत्र महता विपुलेन, भटाः—योद्धारस्तेषां 'चङ्गरपहगरचि' विस्तारवृन्दम् तेन परिशिखितः सेन । 'महया उक्किट्टिसीहणाय बोलकलकलसहेणं समुदरवभूयंपिव करेमाणे करेमाणे सन्विद्धीए सन्वज्जुईए सन्ववलेणं जाव निग्घोमनाइएणं जेणेव सिंधू महाणई तेणेव 'गच्छइ' उवागच्छित्ता चम्मरयणं पगामुमई' ता उत्कृष्टः सिंहनाद बोलकलकल-शब्देन द्रवभूतमि कुर्वन् २ सर्वद्वर्चा सर्वद्युत्या, 'बलेन यावत् निर्घोपनादेन सह 'व सिन्धुर्महानदी तत्रैवोपागच्छति उपागत्य, महतामहता रवेण उत्कृष्टिः—आनन्दध्वनिः, सिंहनादः प्रसिद्धः, बोलो वर्णरहितो ध्वनिः कलकलश्च तदितरो ध्वनिः, तल्ल-लो यः शब्दः रवः तेन समुद्रवभूतमि प्राप्तमिव दिग्मण्डलं कुर्वन् कुर्वन् सर्वद्वर्चा सर्वद्युत्या, सर्वबलेन, तत्र—सर्वद्वर्चा सर्वया समस्तया शब्दया आमरणादि रूपया लक्ष्म्याः । तथा 'द्युत्या सर्वकान्त्या सर्वबलेन सर्वसैन्येन एवं यावत् निर्घोपनादेन बाधविशेषशब्देन सह वर्तमानः स सुषेणः यत्रैव सिन्धुर्महानदी 'वोपागच्छति 'उवागच्छित्ता'

से बैठा हुआ कोरंट पुष्पो की माला से विराजित भ्रियमाण छत्र से सुशोभित हुआ तथा हय रथ एवं प्रवर योधाओं से सहित चतुरंगिणी सेना से विरा हुआ (महया म रपहगरवन्दपरिविखचे) विपुल योद्धाओं के विस्तृत वृन्द से युक्त हुआ जहाँ पर सिन्धु नदी भी वहाँ पर आया—इस प्रकार से बड़ा संबंध लगा लेना चाहिये साथ में चलने वाली चतुरंगिणी सेना की (उक्किट्टिसीहणाय बोल-कलकलसहेणं समुदरवभूयंपिव करेमाणे २ सन्विद्धीए सन्वज्जुईए सन्ववलेणं जाव निग्घोमनाइएणं जेणेव सिन्धू महाणई—तेणेव उवागच्छइ) उत्कृष्ट आनन्द ध्वनि से सिंहनाद से अव्यक्त ध्वनि से एवं कल कल शब्द से समुद्र ही मानों गर्ज रहा है इस प्रकार से यह दिग्मण्डल को क्षुभित करता जा रहा था इस तरह अपनी पूर्ण विभूति से एवं सर्व धुनि से तथा सर्व बल से यावत् बाध विशेष के शब्दों से युक्त हुआ यह सुषेण सेनापति रत्न जहाँ पर सिन्धु नदी भी बड़ा पर आ पहुँचा (उवागच्छित्ता चम्मरयणं परा

सेनापति हाथीना स्कन्ध उपरसारी रीते बैठेहैं। कोरंट पुष्पानी आजायी विशजित, भ्रिय-माछु छत्रयी सुशोभित थयेहैं। तेमज—हय, गज, रथ, तेमज प्रवर योद्धाजोयी युक्त तथा अतुरंगिणी सेनायी परिवृत थयेहैं। (म म रप वन्दपरिविखचे) विपुल योद्धा-जोयाना विस्तृतवृन्दयी युक्त थयेहैं, ज्यो सिन्धु नदी डली, त्यां आओये आ प्रभावे अही' संबंध जाणी देवे। जेधजे साथे यावनारी अतुरंगिणी सेनानी (उक्किट्टिसीहणाय बोल-कलकलसहेण समुदरवभूय पिव करेमाणे २ सन्विद्धीए ज्जुईए सन्व वलेणं जाव निग्घोमनाइएण जेणेव सिन्धुमहानइ तेणेव उवागच्छइ) उत्कृष्ट आनन्द ध्वनियी, सिंह-नादयी, अव्यक्त ध्वनियी तेमज हय—गज शब्दयी, ज्यो के समुद्र ज गजना करी रह्यो होय, आ प्रभावे जे दिग्मण्डलने क्षुभित करतो प्रयास करी रह्यो डेतो आ प्रभावे पातानी पूरा विभूतियी तेमज संबंधितयी तथा सय अजयी यावत् बाधविशेषना शब्दोयी युक्त

ઉપાગત્ય ચર્મરત્નં પરામૃશતિ સ્પૃશતિ, ચર્મરત્નવર્ણનમાહ—‘તણ ણં’ હત્યાદિ ‘તણ ણં તં’ તતઃ ક્ષણ તત્ચર્મરત્નમ્ ‘સિરિવચ્છસરિસરૂપં’ શ્રીવત્સસદશરૂપમ્ તત્ર શ્રીવત્સસદશ માત્ત-
લિકસ્વસ્તિકવિશેષઃ શ્રીવત્સાકારં રૂપં યસ્ય તમ્ તથા

નનુ અસ્ય શ્રીવત્સાકારત્વે ચત્વારોઽપિ પ્રાન્તાઃ સમવિષમાઃ ભવન્તિ તથા ચ અસ્ય ચર્મરત્નસ્ય કિરાતકૃતવૃષ્ટ્યુપદ્રવનિવારણાર્થં તિર્યગ્ વિસ્તૃતેન વૃત્તાકારેણ છત્રરત્નેન સદૃશ કથં સજ્જટનાસ્યાદિતિ વેદ્ય સ્વતઃ શ્રીવત્સાકારમપિ સદૃશદેવાધિષ્ઠિતત્વાત્ યથાઽવસરં ચિન્તિ-
તાકારમેવ ભવતીત્યનુપત્યમાવાત્ ‘મુત્તતારદ્વ ચંદચિત્તં’ મુક્ત તારાદ્વચન્દ્રચિત્રમ્, તત્ર મુક્તાનાં મૌક્તિકાનાં તારાણાં તારકાણામ્ અર્દ્ધચન્દ્રાણાં ચ ચિત્રાણિ—આલેખ્યાણિ યત્ર તત્તથા પુનઃ કીદૃશં ચર્મરત્નમ્ ‘અચલમકમ્પં’ અચલમકમ્પમ્, ચશ્ચલતા રહિતમ્ અકમ્પં કમ્પરહિતમ્ તત્ર—
અચલમ્ અકમ્પમ્ દ્વૌ સદૃશાર્થકૌ શબ્દૌ અતિશય સૂચકૌ તથા ચ અત્યન્તદદપરિમાણં ભરત-

મુસદ્) વહાં બાકર કે હસને ચર્મરત્ન કા સ્પર્શ કિયા (તણં તં સિરિવચ્છસરિસરૂપં મુત્તતારદ્વ ચંદચિત્તં અચલમકમ્પં અમેજ્જકવથં) વહ ચર્મરત્ન શ્રીવત્સ કે જેસે બાકાર વાલા થા માત્તલિક સ્વસ્તિક વિશેષ કા નામ શ્રીવત્સ હે યહાં એસી આશંકા હો સકતી હે કિ જબ વહ ચર્મરત્નકા શ્રી વત્સ કે જેસે-બાકાર થા તો શ્રીવત્સ કે તો ચારો પ્રાન્ત સમવિષમ હોતે હૈં ફિર હસ કી કિરાતકૃત વૃષ્ટિ રૂપ ઉપદ્રવ કો નિવારણ કરને કે લિયે વિસ્તૃત કિયે ગયે ગોલ બાકાર વાલે છત્ર કે સાથ સજ્જટના કેસે હોસકેગી ? તો હસ આશંકા (સમાધાન એસા હૈં કિ વહ ચર્મરત્નસ્વતઃ તો શ્રી વત્સ કે જેસે બાકારવાલા હે પરન્તુ દેવાધિષ્ઠિત હોને કે કારણ યહ યથાવસર ચિન્તિત બાકાર વાલા હો જાતા હે હસલિયે હસ કથન મેં કોઈ અનુપપત્તિ જેસી વાત નહીં હે । હસ ચર્મરત્ન મેં મુક્તાઓ કે બૌર અર્દ્ધચન્દ્ર કે ચિત્ર બને હુણ યે । યહ અચલ બૌર અકમ્પ હોતા હે યથાપિ અચલ બૌર અકમ્પ યે દોનો શબ્દ સમાનાર્થક હે હસલિયે જહાં સમાનાર્થક દો શબ્દ બાતે હૈં વે અતિશય કે સૂચક હોતે હૈં હસ તરહમરતચક્રી કા સકલ સૈન્ય મી યદિ હસે ચલાના કેપાના યાહે તો

થયેલો તે મુખેલુ સૈનાપતિરત્ન જ્યાં સિન્ધુ નદી હતી ત્યાં પહોંચ્યો. (ઉપાગચ્છિત્તા ચર્મર-
યણં પરામૃશતિ) ત્યાં પહોંચીને તેણે ચર્મરત્નનો સ્પર્શ કર્યો (તણં તં સિરિવચ્છસરિસરૂપં
મુત્તતારદ્વચચિત્તં અચલમકમ્પં અમેજ્જ) તે ચર્મરત્ન શ્રીવત્સ જેવા આકારવાળું હતું
ભૌતિક સ્વસ્તિક વિશેષરૂપ નામ શ્રીવત્સ છે અહીં જેવી આશંકા થઈ શકે તેમ છે કે જ્યાં
તે ચર્મરત્ન શ્રીવત્સના જેવા આકારવાળું હતું તો શ્રીવત્સના તો આરે આર પ્રાન્તો સમ-
વિષમ હોય છે તો પછી જો કિરાતકૃત વૃષ્ટિરૂપ ઉપદ્રવના નિવારણ માટે વિસ્તૃત કરવામાં
આવેલ ગોલાકૃત છત્રની સાથે સજ્જટના કેવી રીતે થઈ શકશે ? તો જો આશંકાનું સમાધાન
આ પ્રમાણે છે કે તે ચર્મરત્ન સ્વતઃ તો શ્રીવત્સના આકાર જેવું છે પણ દેવાધિષ્ઠિત હોવાથી
જો યથાવસર ચિન્તિત આકારવાળું થઈ જાય છે. જોથી આ કથનમાં કોઈ અનુપપત્તિ જેવી
વાત નથી. ચર્મરત્નમાં મુક્તાઓના તારકાઓ અને અર્દ્ધચન્દ્રના ચિત્રો બનેલા છે. જો અચલ
અને અકમ્પ હોય છે જો કે અચલ અને અકમ્પ બન્ને શબ્દો સમાનાર્થક છે જોથી જ જ્યાં
સમાનાર્થક છે શબ્દો આવે છે તો અતિશય સૂચક હોય છે. આ પ્રમાણે ભરતચક્રીની સંપૂર્ણ

योधयुक्तया चतुरङ्गिण्या सेनया सार्द्धं अश्वहस्तिरथपदाति सेनया सह संपरिवृतः
 : 'महया भटचङ्गरपङ्गरवन्दपरिक्लिष्टे' महता भटविस्तारवृन्दपरिक्षिप्तः तत्र
 महता विपुलेन, भटाः—योद्धारस्तेषां 'व रपङ्गरत्ति' विस्तार वृन्दम् तेन परिक्षिप्तः
 तेन : 'महया उक्किट्टिसीहणाय बोलकलकलसदेणं समुद्रवभूयपिब करेमाणे करेमाणे
 सन्विद्धीए सव्वज्जूईए सव्वबलेणं जाव निग्घोमनाइएणं जेणेव सिंघू महाणई तेणेव
 'गच्छइ' उवागच्छित्ता चम्मरयणं परागुमई' । उत्कृष्टः सिंहनाद बोलकलकल-
 शब्देन द्रवभूतमि कुर्वन् २ सर्वद्वयां सर्वद्युत्या, 'बलेन यावत् निर्घोपनादेन सह
 'व सिन्धुर्महानदी तत्रैवोपागच्छति उपागत्य, महतामहता रवेण उत्कृष्टः—आन-
 न्दध्वनिः, सिंहनादः प्रसिद्धः, बोलो वर्णरहितो ध्वनिः कलकलश्च तदितरो ध्वनिः, तल्ल-
 लो यः शब्दः रवः तेन समुद्रवभूतमि प्राप्तमिव दिग्मण्डलं कुर्वन् कुर्वन् सर्वद्वयां
 सर्वद्युत्या, सर्वबलेन, तत्र—सर्वद्वयां सर्वथा समस्तया ऋद्धया आभरणादि रूपया लक्ष्म्याः
 : तथा 'द्युत्या सर्वकान्त्या सर्वबलेन सर्वसैन्येन एवं यावत् निर्घोपनादेन बाधवि-
 शेषशब्देन सह वर्तमानः स सुषेणः यत्रैव सिन्धुर्महानदी तत्रैवोपागच्छति 'उवागच्छित्ता'

से बैठा हुआ कोरंट पुष्पो की माला से विराजित ध्रियमाण छत्र से सुशोभित हुआ तथा
 हय गज रथ एवं प्रवर योद्धाओं से सहित चतुरङ्गिणी सेना से विरा हुआ (महया
 भ रपङ्गरवन्दपरिक्लिष्टे) विपुल योद्धाओं के विस्तृत वृन्द से युक्त हुआ जहाँ पर
 सिन्धु नदी भी वहाँ पर आया-इस प्रकार से यहा संबंध लगा केना चाहिये साथ में चलने वाली
 चतुरङ्गिणी सेना की (उक्किट्टिसीहणाय बोल-कलकलसदेणं समुद्रवभूयपिब करेमाणे २
 सन्विद्धीए सव्वज्जूईए सव्वबलेण जाव निग्घोमनाइएणं जेणेव सिंघू महाणई-तेणेव उवागच्छइ)
 उत्कृष्ट आनन्द ध्वनि से सिंहनाद से अन्यक्त ध्वनि से एवं कल कल शब्द से समुद्र ही मानों
 गर्ज रहा है इस प्रकार से यह दिग् मण्डल को क्षुभित करता जा रहा था इस तरह अपनी पूर्ण
 विभूति से एवं सर्व धुनि से तथा सर्व बल से यावत् बाध विशेष के शब्दों से युक्त हुआ यह सु-
 षेण सेनापति रत्न जहाँ पर सिन्धु नदी थी वहाँ पर आ पहुँचा (उवागच्छित्ता चम्मरयणं परा

सेनापति हाथीना स्कन्ध उपरसारी रीते ठेठेडो डेरंट पुष्पोनी भाजाथी विशाजित, ध्रिय-
 भाषु छत्रथी सुशोभित थयेडो। तेमञ्ज-डम, गञ्ज, रथ, तेमञ्ज प्रवर योद्धाओथी युक्त तथा
 अतुरंगिणी सेनाथी परिवृत थयेडो। (म म रथ वन्दपरिक्लिष्टे) विपुल योद्धा-
 ओना विस्तृतवृन्दथी युक्त थयेडो, ज्यां सिन्धु नदी डती, त्यां आओयो. आ प्रभाषे अडी'
 अंभं नल्लो देवो जेधओ साथे आलनारी अतुरंगिणी सेनानी (उक्किट्टिसीहणाय बोल-
 कलकलसदेणं समुद्रवभूय पिब करेमाणे २ सन्विद्धीए ज्जूईए सव्व बलेणं जाव
 निग्घो इएण जेणेव सिन्धुमहाणई तेणेव उवागच्छइ) उत्कृष्ट आनन्द ध्वनिथी, सिंह-
 नादथी, अन्यक्त ध्वनिथी तेपञ्ज डल-डल शब्दथी, अषे डे समुद्र ज गञ्जना करी रथी
 डोय, आ प्रभाषे ओ दिग्मण्डलने क्षुभित करतो प्रभाषु करी रथी डतो। आ प्रभाषे पोतानी
 पूषु विभूतिथी तेमञ्ज-सर्वद्विथी तथा सर्वं जणथी यावत् बाधविशेषना शब्दोथी युक्त

ઉપાગત્ય ચર્મરત્નં પરામૃશતિ સ્પૃશતિ, ચર્મરત્નવર્ણનમાહ—‘તણ ળં’ હત્યાદિ ‘તણ ળં તં’ તતઃ ક્ષણ તત્ચર્મરત્નમ્ ‘સિરિવચ્છસરિસરૂપં’ શ્રીવત્સસદ્ગરૂપમ્ તત્ર શ્રીવત્સસદ્ગં માત્ર-
ક્લિકસ્વસ્તિકવિશેષઃ શ્રીવત્સાકારં રૂપં યસ્ય તમ્ તથા

નનુ અસ્ય શ્રીવત્સાકારત્વે ચત્વારોઽપિ પ્રાન્તાઃ સમવિષમાઃ ભવન્તિ તથા ચ અસ્ય ચર્મરત્નસ્ય કિરાતકૃતવૃષ્ટિપદ્મવિનિવારણાય તિર્યગ્ વિસ્તૃતેન વૃત્તાકારેણ છત્રરત્નેન સદ્ ગ્રંથં સદ્ગુટનાસ્યાદિતિ ચેન્ન સ્વતઃ શ્રીવત્સાકારમપિ સદ્ગ્રન્થદેવાધિષ્ઠિતત્વાત્ યથાઽવસરં ચિન્તિ-
તાકારમેવ ભવતીત્યનુપપ્ત્યમાવાત ‘મુત્તતારદ્વ ચંદચિત્તં’ મુક્ત તારાદ્વચન્દ્રચિત્રમ્, તત્ર મુક્તાનાં મૌલિકાનાં તારાણાં તારકાણામ્ અર્દ્ધચન્દ્રાણાં ચ ચિત્રાણિ—આછેરૂપાણિ યત્ર તત્તથા પુનઃ કીદૃશં ચર્મરત્નમ્ ‘અચલમકમ્પં’ અચલમકમ્પમ્, ચચ્ચલતા રહિતમ્ અકમ્પં કમ્પરહિતમ્ તત્ર—
અચલમ્ અકમ્પમ્ દ્વી સ ઈયંકૌ શબ્દૌ અતિશય સૂચકૌ તથા ચ અત્યન્તદૃઢપરિમાણં મરત-

સુસદ્) જહાં આકર કે ફસને ચર્મરત્ન કા સ્પર્શ કિયા (તણં તં સિરિવચ્છસરિસરૂપં મુત્તતારદ્વ ચંદચિત્તં અચલમકમ્પં અમેગ્ગકવયં) વહ ચર્મરત્ન શ્રીવત્સ કે જેસે આકાર વાલા થા માત્રાલિક સ્વસ્તિક વિશેષ કા નામ શ્રીવત્સ હૈ યહાં એસી આશંકા હો સકતી હૈ કિ જવ વહ ચર્મરત્નકા શ્રી વત્સ કે જેસે-આકાર થા તો શ્રીવત્સ કે તો ચારો પ્રાન્ત સમવિષમ હોતે હૈં ફિર ફસ કી કિરાતકૃત વૃષ્ટિ રૂપ ઉપદ્રવ કો નિવારણ કરને કે લિયે વિસ્તૃત કિયે ગયે ગોલ આકાર વાલે છત્ર કે સાથ સદ્ગુટના કેસે હોસકેગી : તો ફસ આશંકા (સમાધાન એસા હૈં કિ વહ ચર્મરત્નત્વતઃ તો શ્રી વત્સ કે જેસે આકારવાલા હૈ પરન્તુ દેવાધિષ્ઠિત હોને કે કારણ યહ યથાવસર ચિન્તિત આકાર વાલા હો જાતા હૈ ફસલિયે ફસ કથન મેં કોઈ અનુપપત્તિ જેસી બાત નહીં હૈ । ફસ ચર્મરત્ન મેં મુક્તાઓ કે ઓર અર્દ્ધચન્દ્ર કે ચિત્ર બને હુપ યે । યહ અચલ ઓર અકમ્પ હોતા હૈ યથાપિ અચલ ઓર અકમ્પ યે દોનો શબ્દ સમાનાર્થક હૈ ફસલિયે જહાં સમાનાર્થક દો શબ્દ જાતે હૈં વે અતિશય કે સૂચક હોતે હૈં ફસ તરહ મરતચકી કા સકલ સૈન્ય મી યદિ ઉસે ચલાના કેપાના યાહે તો

થયેદો તે મુપેષુ સૈનાપતિરત્ન ન્યાં સિન્ધુ નદી હતી ત્યા પહોંચ્યો. (ઉપાગચ્છિત્તા ચર્મર-
યણં પરામૃશત) ત્યાં પહોંચીને તેણે ચર્મરત્નને સ્પર્શ કર્યો (ન ળણં તં સિરિવચ્છસરિસરૂ-
પં મુત્તતારદ્વચંદચિત્તં અચલમકમ્પં અમેગ્ગકવયં) તે ચર્મરત્ન શ્રીવત્સ જેવા આકારવાળું હતું
માંગલિક સ્વસ્તિક વિશેષનું નામ શ્રીવત્સ છે અહીં એવી આશંકા થઈ શકે તેમ છે કે બ્યારે
તે ચર્મરત્ન શ્રીવત્સના જેવા આકારવાળું હતું તો શ્રીવત્સના તો આદે ચાર પ્રાન્તો સમ-
વિષમ હોય છે તો પછી એ કિરાતકૃત વૃષ્ટિપદ્મ ઉપદ્રવના નિવારણ માટે વિસ્તૃત કરવામાં
આવેલ ગોલાકૃત છત્રની સાથે સદ્ગુટના કેવી રીતે થઈ શકશે ? તો એ આશંકાનું સમાધાન
આ પ્રમાણે છે કે તે ચર્મરત્ન સ્વતઃ તો શ્રીવત્સના આકાર જેવું છે પણ દેવાધિષ્ઠિક હોવાથી
એ યથાવસર ચિન્તિત આકારવાળું થઈ જાય છે. એથી આ કથનમાં હોઈ અનુપપત્તિ જેવી
વાત નથી ચર્મરત્નમાં મુક્તાઓના તારકાઓ અને અર્દ્ધચન્દ્રના ચિત્રો બનેલા છે. એ અચલ
અને અકમ્પ હોય છે એ કે અચલ અને અકમ્પ બન્ને શબ્દો સમાનાર્થક છે એથી જ બ્યા
સમાનાર્થક બે શબ્દો આવે છે ત અતિશય સૂચક હોય છે. આ પ્રમાણે અસ્તચકીની સંપૂર્ણ

ચક્રિસકલસૈન્યાક્રાન્તત્વેઽપિ ન મનાગપિ કમ્પતે इति भावः पुनः कीदृशं चर्मरत्नम् 'अमे-
 लजकवयं' अमेधकवचम् अमेधं दुर्भेद्यं कवचमिव अमेधकवचम्-वज्रपङ्जरमिव दुर्भेदमिति भावः
 'जंतं सलिलासु सागरेषु य उत्तरणं' सलिलासु सागरेषु च उत्तरणयन्त्रम्, तत्र सलिलासु
 नदीषु सागरेषु समुद्रेषु चोत्तरणयन्त्रं, पारगमनोपायभूतम् 'दिव्यं चक्रकरणं' दिव्यं देव-
 कृतप्रातिहार्यं देवकृतं स्तुतिं सम्पन्नमित्यर्थः चर्मरत्नं चर्मसु प्रधानम् अनलजलादिभिरनुप-
 धात्यवीर्यत्वात् पुनः 'सणसत्तरसाइं' सव्यधण्णाइं- जत्थ रोहंति प्पगदिवसेण वाविआइं' यत्र
 शणसप्तदशानि सर्वधान्यानि रोहन्ते एकदिवसेनोप्तानि, तत्र शणं-शणधान्यम् सप्तदशं-
 सप्तदश-संख्यापूरकं येषु तानि शणमप्तदशानि सर्वधान्यानि यत्र रोहन्ते ज्ञायन्ते एक-
 दिवसेनोप्तानि, एयं सम्प्रदायः गृहपतिरत्नेन अस्मिश्चर्मणि धान्यानि सूर्योदये उप्यन्ते
 अस्तसमये च लूयन्ते इति, सप्तदश धान्यानि त्विमानि, "सालि १ जव २ वीहि ३

भी वह जरा सा भी कंपित नहीं, हो सकता है-यही बात यहां सूचीत की गई है जिस प्रकार
 वज्र पञ्जर दुर्भेद्य होता है उसी प्रकार से वह भी दुर्भेद्य था (जंतं सलिलासु सागरेषु य उत्तरणं)
 इसके बल से चक्रवर्ती का, समस्त कटक-नदीयो-को, और सागरों को, समुद्रों को-पार कर देता
 है। अर्थात् नदियों के, और समुद्रों के, पार करने में यह एक आयुभूत-यंत्र है-। (दिव्यं चर्मर-
 यणं सणसत्तरसाइं सव्यधण्णाइं, जत्थ रोहंति, प्पगदिवसेण वाविआइं) यह देव कृत परि-
 हार्य रूप होता है-देवकृतस्तुति-सम्पन्न होता है। अनलजलादि से इसका उपधात नहीं हो
 सकता है क्योंकि यह, ऐसी ही शक्ति-सम्पन्न होता है अतः यह समस्त प्रकार के चर्मों में
 प्रधान होने से चर्मरत्न कहा गया है। इसके बोयेगये, शण और १७ प्रकार के धान्य ही एक
 दिन में उत्पन्न हो जाते हैं। फलित हो जाते हैं। शण धान्यका नाम शण है। ऐसा सम्प्रदाय है
 कि गृहपति रत्न द्वारा इस चर्मरत्न पर सूर्योदय के समय धान्य बोदिये जाते हैं, और अस्त के
 समय में काटलिये जाते हैं उन १७ प्रकार के धान्यों के नाम इस प्रकार से हैं-"सालि १ जव

સેના-પશુઓ-તેનો અધિકાર કરવા-કપિત કરવા પ્રયત્ન કરે તો પશુ તે સહે જ પશુ કપિત
 થઈ શકે નહિ-એ જ વસ્તુ-અને સૂચિત કરવામાં આવી છે એમ વળ પંજર હોઈ શકે
 છે, તેમજ એ 'પશુ હોઈ શકે' (જંત સલિલાસુ સાગરેસુ ય ઉત્તરણં) એના બળથી થક
 વર્તીતું સમસ્ત કટક નદીઓને અને સાગરો ને, સમુદ્રોને પાર કરી નાથ છે. એટલે કે
 નદીઓ અને સમુદ્રોને પાર કરવામાં એ એક મહત્વપૂર્ણ યંત્ર છે. (દિવ્ય ચર્મરયણ
 સણસત્તરસાઈ સવ્યધણ્ણાઈ જતથ રોહંતિ પ્પગદિવસેણ વાવિઆઈ) એ દેવકૃત પરિહાર્ય રૂપ
 હોય છે. દેવકૃત સ્તુતિ સંપન્ન હોય છે. અનલજળ વગેરેથી એનો ઉપધાત થઈ શકતો
 નથી કેમકે એ એવી જ શક્તિવાળા સંપન્ન હોય છે. આમ એ સમસ્ત પ્રકારના ચર્મોમાં
 પ્રધાન હોવાથી ચર્મરત્ન કહેવામાં આવ્યું છે એના બંદે વર્ણિત શબ્દો અને ૧૭ પ્રકારના
 ધાન્યો એક દિવસમાં જ ઉત્પન્ન થઈ નાથ છે-ફલિત થઈ નાથ છે શબ્દ ધાન્યનું નામ શબ્દ
 એવો મુદ્રપ્રદાય (રિવાજ) છે કે ગૃહપતિ-રત્ન બંદે એ ચર્મરત્ન ઉપર સૂર્યોદય સમયે ધાન્યો
 વર્ષિત કરવામાં આવે છે અને સૂર્યાસ્ત થાય તે સમયે ધાન્યોની લણણી કરવામાં આવે છે

કુદ્વ ૪ રાલય ૫ તિલ ૬ મુગ ૭ માસ ૮ ચવલ ૧ ચિના ૧૦ । તુઅરિ ૧૧ મસુરિ ૧૨
કુલ્તયા ૧૩ ગોહુમ ૧૪ ગિપ્ફાવ ૧૫ અયસિ ૧૬ સળા ૧૭ ॥૧॥ સૂર્યે ઉદિતે સતિ
પ્રથમપ્રહરે ઉપ્યન્તે, દ્વિતીય પ્રહરે જલાદિના દીયતે તૃતીય પ્રહરે ધાન્યાનિ પક્વાનિ મવન્તિ
ચતુર્થે પ્રહરે હ્યન્તે નિષ્પૂયન્તે તતો યથાસ્થાનં સેનાવિભાગે તત્તસ્થાને પ્રેપ્યન્તે इति ।
શાલિઃ ૧ પ્રસિદ્ધઃ, જવઃ ૨ પ્રસિદ્ધ, વ્રીહિઃ ૩ ધાન્યવિશેષઃ, કોદ્રવઃ ૪ પ્રસિદ્ધઃ, રાલય
૫ ધાન્ય વિશેષ, તિલઃ ૬, મુદ્ગઃ ૭, માપઃ ૮, ચવલઃ ૯ ચૌલા ઇતિ પ્રસિદ્ધઃ, ચળકઃ

૨વીર્હિઃ ૩ કુદ્વ ૪ રાલય ૨ તિલ ૬ મુગ ૭ માસ ૮ ચવલ ૯ ચિના ૧૦ । તુઅરિ ૧૧ મસુરિ ૧૨
કુલ્તયા ૧૩ ગોહુમ ૧૪ ગિપ્ફાવ ૧૫ અયસિ ૧૬ સળા ૧૭ ॥૧॥

સૂર્ય કે ઉદય હોને પર પ્રથમ પ્રહર મેં યે ધાન્ય ઓ દિયે જાતે હૈ દ્વિતીય પ્રહાર મેં ઇન્હે
જલાદિ દેકર બઢાયા જાતા હૈ, તૃતીય પ્રહર મેં યે પક્વ હો જાતે હૈં ઓર ચતુર્થ પ્રહર મેં યે
કાટલિયે જાતે હૈં । ફિર યથાસ્થાન યે સેના વિભાગ મેં જગહર મેજદિયે જાતે હૈં । શાલિનામ
ધાન્ય કા હૈ । જવ-જૌ કાનામ હૈ । વ્રીહિ એક પ્રકાર કા ધાન્ય વિશેષ હોતા હૈ । કોદ્રવ-કોદૌ
કા નામ હૈ યહ બુન્દેલ સ્ખંડ પ્રાન્ત મેં બહુત અધિક હોતા હૈ । તથા આદિ વાસિયો મે ઇમકે સ્થાને
કા બહુત અધિક પ્રચાર હૈ । રાલિ યહ મી એક પ્રકાર કા અનાજ વિશેષ હૈ । સ્થાને મેં યહ બહુત
હલ્કા હોતા હૈ । યહ બીમારી મેં પથ્ય કે રૂપ મે પ્રયુક્ત હોતા હૈ । તિલ જિસે તિછી કહતે હૈ-
તિછી મી એક પ્રકાર કા અનાજ હૈ-ઇસ કા તેલ નિકાલ કર ઓર ઇસકે લઢ્ઢુ બનાકર લોગ
સ્થાને કે કામ મેં ઇસકા વ્યવહાર કરતે હૈં । મુદ્ગ-મુંગ કા નામ હૈ । માસ-ઝઢદ્ કા નામ હૈ
ચવલ ચૌલા કા નામ હૈ । ઇસકે મુંગાઢા બઢે અષ્ટે એવં સ્વાદિષ્ટ બનતે હૈ । લોગ ઇસે સિસા-
કર ઓર ઇસ મેં નમક મસાલા મિલાકર સ્વાતે હૈં । ચળક નામ ચના કા હૈ । તુઅર જિસે

તે ૧૭ પ્રકારના ધાન્યો આ પ્રમાણે છે-“શાલિ ૧, જવ ૨, વીર્હિ ૩, કુદ્વ ૪, રાલય ૫,
તિલ ૬, મુગ ૭, માસ ૮, ચવલ ૯, ચિના ૧૦ । તુઅરિ ૧૧, મસુરિ ૧૨, કુલ્તયા ૧૩,
ગોહુમ ૧૪, ગિપ્ફાવ ૧૫, અયસિ ૧૬, સળા ૧૭ ॥

સૂર્યોદય થાય કે તરત જ પ્રથમ પ્રહરમાં એ ધાન્યો વપિત કરવામાં આવે છે. બીજા
પ્રહરમાં એમને પાણી વગેરેથી સિંચિત કરીને વર્દિત કરવામાં આવે છે. ત્રીજા પ્રહરમાં એ
ધાન્યો પરિપક્વ થઈ જાય છે. અને ચતુર્થ પ્રહરમાં એમની લલણી કરવામાં આવે છે. પછી
સેના વિભાગમાં યથાસ્થાન ઠેક ઠેકાણે એ ધાન્યોને ચોકલી આપવામાં આવે છે. શાલી
ધાન્યનું નામ છે. જવ-જવનું નામ છે. વ્રીહિ એક પ્રકારનું ધાન્ય વિશેષ હોય છે. કોદ્રવ
કોદરાનું નામ છે આ ધાન્ય બુંદેલ ખડ પ્રાન્તમાં બહુ જ થાય છે. તેમજ આદિવાસી
લોકો એ ધાન્યને ખાવામાં ખૂબ જ ઉપયોગ કરે છે રાત્રિ એ પણ એક પ્રકારનું અન્ન
વિશેષ છે. પથવામાં એ બહુ જ હલ્કું હોય છે આ ધાન્ય બીમારીમાં પથના રૂપમાં પ્રયુક્ત
થાય છે તિલ જેને તલ કહીએ છીએ. તિલ પણ એક પ્રકારનું અન્ન છે. આ માંથી તેલ કાઢીને
અને એનાથી લાઠવા બનાવીને લોકો ખાય છે. મુદ્ગ-મગનું નામ છે. માસ-ઝઢદનું નામ
છે ચવલ-ચૌલાનું નામ છે એ શેકીને પણ ખવાય છે શેકવાથી એ સ્વાદિષ્ટ થઈ જાય છે.

૧૦ ચળા इति प्रसिद्धम् त्वरिका ११ त्वर इति भाषा प्रसिद्धम्, मक्षरः १२ प्रसिद्धः, कुल्लथः १३ प्रसिद्धः, गोधूमः १४ प्रसिद्धः, निष्पावः १५ धान्यविशेषः, अतसी १६ धान्यविशेषः, 'अलसी' प्रसिद्धः, शणः १७ धान्यविशेषः, अन्यत्र चतुर्विंशतिरपि उक्तानि, लोके च क्षुद्रधान्यानि बहूनि, पुनश्चर्मरत्नस्य विशेषणमाह—'वासं' इत्यादि 'वासं' णाउण चक्रवर्तिणा परामुष्टे दिव्ने चम्मरयणे दुवालसजोयणाइं तिरिअं पवित्थरइ' वर्ष—जलद-वृष्टिं ज्ञात्वा राज्ञा चक्रवर्तिना भरतेन परामुष्टं—स्पृष्टम् दिव्यं चर्मरत्न द्वादश योजनानि अष्टाचत्वारिंशक्रोशकानि तिर्यक् प्रविस्तृताणि वर्द्धते, ननु द्वादशयोजनावधि तस्थुषश्चक्र-वर्त्ति स्कन्धावारस्य अवकाशाय द्वादशयोजनप्रमाणमेव इदं विस्तृतं युज्यते किमधिक

અરહર કહા જાતા હૈ ધાન્ય વિશેષ હૈ इसकी दाल गुलाबीरंग की होती है तथाखाने में यह सुपाय्य होती है । कुल्लथ नामकुल्लथो का है—यह जंगलो धान्य है विना बोये चौमासे में यह पैदा होती है गोधूम नाम गेहूं का है निष्पाव यह भी एक प्रकार का धान्य विशेष है—इमका आकार सेम—बाखोर के बीज के जैसा होता है । गुजरात तरफ इसका भोजन में शाक के रूप में बहुत प्रयोग देखने में आता है । अतसी यह भी एक प्रकार का धान्य विशेष है । यह तिल्ली की तरह नुकीला ओर चपटा होता है । परतिल्ली से बड़ाहोता है इसे भाषा मे अलसी कहा जाता है । शण भी यह भी एक प्रकार का धान्यविशेष है । कहीं कहीं धान्यों की संख्या २४ भी कही गई है क्योंकि लोक में क्षुद्र धान्य बहुत है (वासं णाउण चक्रव-दिणा परामुष्टे दिव्ने चम्मरयणे दुवालसजोयणाइं तिरिअं पवित्थरइ) वर्षा की आगमन देख कर—जान कर—भरत चक्रवर्ती द्वारा स्पृष्ट हुआ वह दिव्य चर्मरत्न कुछ अधिक १२योजना तक तिर्यक् विस्तृत हो गया । यहाँ ऐसी आशंका हो सकती है कि चक्रवर्ती का सैन्य तो

લોકો અને રાષ્ટ્રીને અને તેમાં મીઠું—મસાલા મિશ્ર કરીને ખાય છે ચલુક—ચલુકાનુ નામ છે. તુઅર—તુવેરને કહે છે. એ પણ ધાન્યવિશેષ છે. મક્ષર પણ એક પ્રકારનું અન્ન વિશેષ છે. એની દાળ શુભાખી રંગની થાય છે. તેમજ ખાવામાં એ સુપાચ્ય હોય છે કુલ્લથ નામ—કળથીનું છે એ જંગલી ધાન્ય છે વધિત કર્યાં. વગર જ ચતુર્માસમાં એ ઉત્પન્ન થઈ જાય છે ગોધૂમ—ઘઉંનું નામ છે. નિષ્પાવ એ પણ એક પ્રકારનું અન્ન વિશેષ છે એનો આકાર સેમ—વાલોળનાખી જેવો હોય છે ગુજરાતમાં એનો ભોજનમાં શાકના રૂપમાં ખડું જ પ્રયોગ એવામાં આવે છે. અતસી આ પણ એક પ્રકારનું અન્ન વિશેષ છે. એ તલ જેવું અણીદાર અને ચપટું હોય છે પણ તલ કરતા મોટું હોય છે. અને ભાવામાં અલસી કહેવામાં આવે છે. શણ આ પણ એક પ્રકારનું ધાન્ય વિશેષ છે કેટલાક સ્થાનોમાં ધાન્યોની સંખ્યા ૨૪ જેટલી પણ કહેવામાં આવી છે કેમકે લોકમાં ક્ષુદ્ર ધાન્યોની સંખ્યા વધારે છે. (વાસં ણાઉણ-ચક્રવર્તિણા પરામુષ્ટે દિવ્ને ચમ્મરયણે દુવાલસજોયણાહ તિરિઅં પવિત્થરઈ) વર્ષાનું આગ-મન એઈને—અણીને—ભરતચક્રી વડે સ્પૃષ્ટ થયેલુ તે દિવ્ય ચર્મરત્ન કઈક વધારે ૧૨ યોજન સુધી તિર્યક વિસ્તૃત થઈ ગયું અને એવી પણ આશંકા થઈ શકે કે ચક્રવર્તીનું સૈન્યતો ૧૨ યોજન જેટલા વિસ્તારવાળું હતું જ તો પછી તેટલા વિસ્તારવાળા સૈન્યને પણ એ

विस्तारेण इति चेन्न चर्मच्छत्रयोः अन्तराल पूरणाय तथोक्तत्वात् इति 'तत्थ साहियाइ' तत्र उत्तरभरत-मध्यखण्डवर्ति किरातकृतमेघोपद्रवनिवारणादि कार्ये साधिकानि किञ्चिदधिकानि 'तएणं से दिव्वे चम्मरयणे सुसेणसेणावइणा परामुट्टे समाणे सिप्पामेव णावाभूए जाए यावि होत्था'ततः खलु तद्विव्यं चर्मरत्नं सुषेणसेनापतिना परामुट्टं स्पृष्टं सत् क्षिप्रमेव शीघ्रमेव नौभूतं महानद्युत्ताराय नौ तुल्य जातं चाप्यभवत्-नावाकारेण जातम्, 'तएणं से सुसेणे सेणावई सखधावारबलवाहणे णावाभूय चम्मरयणं दुरुहइ, ततः चर्मरत्नं नौ भवना-नन्तरं खलु स सुषेणः सेनापतिः-सेनानीः सस्कन्धावारबलवाहनः स्कन्धावारस्य-सैन्यस्य ये बलवाहने हस्त्यादि चतुरङ्ग शिबिकादि रूपे ताभ्यां सह वर्तते यः स तथा एवं भूतः सन् नौभूत चर्मरत्नं दुरूह आरुह्य सिंधुं महानइ' सिंधुं सिन्धुनाम्नीं महानदीम् विमलजलतुङ्ग वीचिम्, विमलजलस्य स्वच्छोदकस्य तुङ्गाः अत्युच्चाः वीचयः कल्लोलाः यस्यां सा तथा ताम् 'णावाभूएणं चम्मरयणेणं' नौभूतेन चर्मरत्नेन 'सबलवाहणे' सबलवाहनः बलवाहनाभ्यां हस्त्यादि चतुरङ्गशिबिकादिरूपाभ्यां सह वर्तते यः स तथा 'सेणे' ससेनः सेनास-

१२ बारह योजन के विस्तार वाला ही था तो फिर उतने विस्तार वाले सैन्य को अपने भीतर स्थान देने के लिये चर्मरत्न को भी उतना ही बढ़ना चाहिये था यह अधिक क्यों बढ़ा १५ योजन प्रमाण ही इसे बढ़ना चाहिये था । तो इसका उत्तर ऐसा है कि यह जो इतना बड़ा सो चर्म और छत्र के अन्तराल को पूरा करने के लिये ही बढ़ा (तत्थ साहियाइ) यही बात इस सूत्र पाठ द्वारा पुष्ट की गई है—उत्तर भरत मध्यखण्डवर्ती किरात द्वारा कृत मेघ के उपद्रव को रोकने के लिये ही यह १२ योजन प्रमाण से कुछ अधिक विस्तृत हुआ । (तएणं से दिव्वे चम्मरयणे सुसेणसेणावइणा परामुट्टे समाणे सिप्पामेव णावाभूए जाए) वह दिव्य चर्मरत्न सुषेण सेनापति द्वारा स्पष्ट होता हुआ शीघ्र ही नौका रूप हो गया । (तएणं से सुसेणे सेणावई सखधावारबलवाहणे णावाभूय चम्मरयणं दुरुहइ) इसके अनन्तर वह सुषेण सेनापति स्कन्धावार के बल और बाहन—हस्त्यादि चतुरंग एवं शिबिकादि रूप बाहन से युक्त हुआ उस नौभूत चर्मरत्न पर सवार हो गया (दुरुहत्ता सिंधु महानइ विमलजलतुङ्गवीचि णावा-

दिव्य चर्मरत्ननी अइर स्थान आपवा माटे तेने पख्ख आटहुं न विस्तृत करहुं न ओछिओ तो ओने। नवाण आ प्रमाणे छे के ओ ने उपयुक्त प्रमाणे छे टहुं विस्तृत थयुं ते तो अर्थ अने छत्रना अंतरालने दूर करवा न विस्तृत थयुं छतुं (तत्थसाहियाइ) ओ न वात ओ सूत्रपाठ वडे पुष्ट करवाभा आवी छे, उत्तर भारत भवती किरात द्वारा कृत मेघना उपद्रवने रोकवा माटे न ओ १२ योजन प्रमाणाधी कर्क वधाई विस्तृत थयुं छतुं, (त एणं से दिव्वे चम्मरयणे सुसेणसेणावइणा परामुट्टे समाणे सिप्पामेव णावाभूए जाए) ते दिव्य चर्मरत्न सुषेण सेनापति वडे स्पृष्ट यती न ओकडम नौका इय थयुं अयुं, (त एणं से सुसेणे सेणावई सखधावारबलवाहणे णावाभूय चम्मरयणं दुरुहइ) ओना पत्री ते सुषेण सेनापति स्कन्धावारना अण (सेना, अने वहन—हस्त्यादि चतुरंग तेमन शिबिकादि इय वाहनथी युक्त थयेवो नौका इय ते चर्मरत्न उपर सवार अर्थ गयो, (दुरुहत्ता सिंधुमहानइ विमलजलतुङ्गवीचि णावाभूएण चम्मरयणेण सबलवाहणे ससेणे

હિતઃ સુષેન નામા સેનાપતિઃ 'સમુત્તિષ્ણે' નદી સમુત્તીર્ણઃ તત્તો મહાળઈ મુત્તરિતું 'સિંધુ અ-
પ્પહિહય સાસણેય સેનાવઈ, તત્તો મહાનદીં સિન્ધુમુત્તીર્ચ અપ્રતિહતશાસનઃ-અણ્ણિહિતાજ્ઞ સે
નાપતિઃ 'કહિં ચિ ગામાગરણગરપવ્વયાણિ' ક્વચિદ્ ગ્રામાકરનગરપર્વતાન્ 'ચેટકવ્વડ-મહં-
વાણિ' અત્રાપિ ક્વચિચ્છન્દસ્ય સમ્બન્ધસ્તેન ક્વચિત્ ચેટકર્વટમહમ્બાનિ, તત્ર ચેટાઃ ધૂલિ-
કા પ્રાકારવેષ્ટિતનગરમ્ કર્વટઃ કુત્તિસતનગરમ્ મહમ્બઃ ગ્રામવિશેષઃ સાર્દ્ધક્રોશદ્વયાન્તર્ગ્રામાન્તર
રહિતઃ યસ્ય ચતુર્દિશુ-પટ્ટણાણિ' સર્વવસ્તુપ્રાપ્તસ્થાનાનિ તથા સિંહલે સિંહલકાન્ સિંહલદે-
શોદ્ધવાન્ 'બબ્બરે' બર્બરદેશોત્પન્નાન્ 'સવ્વં ચ' સર્વં ચ 'અંગલોયં બલાયાલોય ચ' અજ્ઞ-
લોક બલાકાલોકં ચ 'પરમરમ્મં' પરમરમ્યમ્ એતદ્વયમ્ મ્હેચ્છ જાતીય નિવાસસ્થાનમ્ 'જવ-
ણદીવં ચ' યવનદ્વીપં ચ દ્વીપવિશેષમ્ ચકારાઃ સમુચ્ચયાર્થાઃ કોદ્દશં દ્વીપમ્ 'પવરમણિરયણ
કણગકોસાગારસમિદ્ધં' પ્રવરમણિ રત્નકનકકોસાગારસમૃદ્ધમ્ તત્ર પ્રવરાણાં શ્રેષ્ઠાનાં મણિ
રત્નકનકાનાં કોસાગારાણિ માળ્હારાણિ તૈઃ સમૃદ્ધમ્ 'આરબકે' આરબકાન્ આરબદેશો-
દ્ધવાન્ 'રોમકેય' રોમકાંશ્ચ રોમકદેશોત્પન્નાન્ 'અલસંહવિસયવાસીય' અલસંહવિષયવા-

મૂળેણં જન્મરયણેણં સબલવાહુણે સસેણે સમુત્તિષ્ણે) ઉસ પર સવાર હોકર ભરત મહારાજા કી આજ્ઞા
કા પાલક 'વહ સિન્ધુ મહાનદી કો કિ જિસમેં નિર્મલ જાલ કી વહી તરગે ઉઠ રહો હૈં અપને
બલ એવં વાહન કે સાથ ઉસ નૌકા મૂત ચર્મરત્ન સે પાર કર ગયા । (તઓ મહાળઈ મુત્તરિતુ
સિન્ધુ અપ્પહિહયસાસણે અ સેનાવહ કહિંચિ ગામાગરણગર પવ્વયાણિ ચેટ કવ્વડમહંવાણિ પટ્ટ-
ટણાણિ સિંહલે બબ્બરે અ સવ્વં ચ અંગલોયં બલાયાલોયંચ પરમરમ્મં જવણદી પવરમવ્વણિ-
રયણકણગકોસાગાર સમિદ્ધં) સિન્ધુ મહાનદી કો પાર કરકે જિસ કો આજ્ઞા અર્થહિત હૈ
એસા, વહ સેનાપતિ કહો પર ગ્રામ, નગર પર્વતોં કો કહો પર ચેટ કર્વટ, મહંબો કો કહો
કહિં પર પટ્ટનોં કો તથા સિંહલકોં કો -સિંહલ દેશ મેં ઉત્પન્ન હુએ મનુષ્યોં કો બર્બરકોં કો
બર્બર દેશ મેંઉત્પન્ન હુએ મનુષ્યોં કો મ્હેચ્છ જાતિયજન કે આશ્રયમૂત તથા પ્રવર મણિરત્ન એવં
કનકાં કે માળ્હારોં અતએવ પરમ રમ્ય એસે અંગ લોક કો, બલાવલોક કો તથા જવનદ્વીપકો
(આરબક)આરબકોં કો અરબદેશ કે નિવાસિયોં કો, (રોમકેય) રોમક દેશ કે નિવાસિયોં કો

ત્તિષ્ણે) તે નૌકા ઉપર સવાર થઈને ભરતની આજ્ઞાનો પાલક તે જોમાં (નર્મળ જલના
વિશાળ તરંગો ઉઠી રહ્યા છે એવી સિંધુ મહાનદીને પોતાના બળ (શૈલ્ય) અને વાહન સાથે
પાર કરી ગયો. (તઓ મહાળઈમુત્તરિતુ સિન્ધુ અપ્પહિહયસાસણે અ સેનાવહ કહિંચિ ગામા-
ગરણગરપવ્વયાણિ ચેટકવ્વડમહંવાણિ પટ્ટણાણિ સિંહલે બબ્બરે અ સવ્વં ચ અંગ-
લોય બલાયાલોયં ચ પરમરમ્મંજવણદી પવરમવ્વણિરયણકણગ કોસાગારસમિદ્ધં) સિન્ધુ મહા-
નદી પાર કરીને જેની આજ્ઞા અર્થહિત છે, એવો તે સેનાપતિ ક્યાંક ગ્રામ, નગર પર્વતોને
ક્યાંક ચેટ-કર્વટ, મહંબોને ક્યાંક પટ્ટનોને તેમજ સિંહલકોને-સિંહલ દેશમાં ઉત્પન્ન થયેલા
મનુષ્યોને, બર્બરોને-બર્બર દેશમાં ઉત્પન્ન થયેલા મનુષ્યોને, મ્હેચ્છ જાતીયલોકોના અશ્રય-
મૂલે તેમજ પ્રવરમણિરત્ન તથા કનકના ભંડારો અતએવ પરમરમ્ય એવા અંગ લોકોને,
બલાવ લોકોને તેમજ યવનદ્વીપને (આરબક) આરબકોને-અરબદેશમાં નિવાસ કરનારા લોકોને

सिनश्च अलसण्डनामक देशवामिनः 'पिक्खुरे' पिक्खुगान 'कालमुहे' कालमुगान 'जोण एय' जोनकांश्च म्लेच्छविशेषान् 'ओअवेऊणत्ति पदेन यागःअथ एतः गाथितैरजेपमपि निष्कुटं भरतखण्डसाधितं नवेत्याह—'उत्तरवेअद्ध संसियाओ य' उत्तरवैताढ्यमंश्रिताश्च तत्र उत्तरः उत्तरदिग्भर्त्ता वैताढ्यः इदं हि दक्षिणसिन्धुनिष्कुटान्तेन अस्मात् वैताढ्यः उत्तरस्यां दिशि वर्तते इति, तं सश्रिताश्च तदुपत्यक्तायां स्थिताश्च उत्तरवैताढ्यनिवासिनः कीदृशाः 'मेच्छजाइ बहुप्पगारा' म्लेच्छ-जातीर्विदुःप्रकाशः उक्तव्यतिरिक्ता इत्यर्थः 'दाहिण अवरेण' दक्षिणापारेण-नैऋतकोणेन 'जाव सिंधुसागरं तोत्ति' यावत् सिन्धु सागरान्त इति सिन्धुनदीसङ्गतः सागरः मध्यमपदलोपी समासः स एव अन्तःपर्यवसानं तावदवधि इति भावः 'सव्वपवरकच्छं च' सर्वं प्रवरं-सर्वश्रेष्ठं कच्छं च कच्छदेशम् 'ओअवेऊण' साधयित्वा स्वाधीनं कृत्वा विजित्य 'पड्डिणिअत्तो' प्रतिनिवृत्तः पश्चात् 'बहुसमरमणिज्जेय भूमिभागे तस्स कच्छस्स सुहणिसण्णे' पश्चात् बहुसमरमणीये च भूमिभागे 'तस्स कच्छस्स सुहणिसण्णे' पश्चात् बहुसमरमणीये च भूमिभागे तस्य कच्छदेशस्य सुखेन निपण्णः निर्बाधस्थाने स्थितः इत्यर्थः स सुपेणः सेनापतिरिति । ततः किं जातमित्याह—'ताहे' इत्यादि 'ताहे' तस्मिन् काले ते इति तदस्योत्तरवाक्ये 'सव्वे वेत्तूण' इत्यत्र व्यवहृतिः सम्बन्धो बोध्यः 'जणवयाण' जनपदानां देशानाम् 'णगराण पट्टणाण य' नगराणां पत्तनानां च 'जे य तहिं समिया'ये च तत्र तस्मिन् निष्कुटे कोणवर्ति-

(अलसंडविसय वासीअ) और अलसण्ड देश निवासियों को तथा (पिक्खुरे) पिक्खुरोंको (कालमुहे) कालमुखों का (जोणए अ) जोनकों को—म्लेच्छविशेषों को, तथा (उत्तरवेअद्धसंमियाओ य मेच्छजाइ बहुप्पगारा दाहिण अवरेण जाव सिंधुसागर तोत्ति सव्वपवरकच्छं च ओअवेऊण) उत्तर वैताढ्य में संश्रित—उसकी तलहरी हरी में बसी हुई—अनेक प्रकार की म्लेच्छ जाति को नैऋत कोण से लेकर सिन्धुनदी जहां सागर में मिली है वहां तक के समस्त प्रदेश को और सर्वश्रेष्ठ कच्छ देश को अपने वश में करके (पड्डिणिअत्तो) पीछे लौट आया (बहुसमरमणिज्जे अ भूमि—भागे तस्स कच्छस्स सुहणिसण्णे) और लौटकर वह सुपेण सेनापति कच्छदेश के बहुसमरमणीय भूमिभाग में आकर के सुखपूर्वक ठहर गया । (ताहे तेइंजणवयाण णगराण पट्टणाण य जे अ

(रोमकेअ) रोमके देशना निवासीओने (अलसंडविसय वासी अ) अने अलसंडदेश निवासी ओने तथा (पिक्खुरे) पिक्खुरेने, (कालमुहे) कालमुखे ने (जोणए अ) जोनकेने—म्लेच्छ विशेषकेने तथा (उत्तरवेअद्धसंमियाओ य मेच्छजाइ बहुप्पगारा दाहिण अवरेण जाव सिंधुसागरं तोत्ति सव्वपवरकच्छं च ओअवेऊण) उत्तर वैताढ्यमां संश्रित—तेनी तणेटीमंभा निवास करती अनेक प्रकारनी म्लेच्छ जातिओने तेमअ नैऋत्य कालुथी भांडीने सिंधु नदी ज्वां सागरमां भणे छे त्यां सुधीना सव्व प्रदेशने अने सर्वश्रेष्ठ कच्छ देशने पोताना पथमां करीने ते (पड्डिणिअत्तो) पीछे आवी गये। (बहुसमरमणिज्जे अ भूमिभागे तस्स कच्छस्स सुहणिसण्णे) अने अवीने ते सुपेण सेनापति कच्छ देशना अतीव समरमणीय भूमि भागमा आवी ने सुखपूर्वकं ठेकाइ गये। (ताहे ते जणवयाण णगराण पट्टणाण य जेअ तहिं समिया पभूआ आगरपती अ मडलपती अ पट्टणपती अ सव्वे-

મરતક્ષેત્રલ્પરૂપે સ્વામિકાઃ ચક્રવર્તિસુષેણ સેનાન્યોરપેક્ષયા અલ્પદ્વિકત્વેનાજ્ઞાતસ્વામિનઃ
 इत्यज्ञातार्थे क प्रत्ययः 'पभूया आगरपत्तीय' प्रभूताः आकरपत्तयश्च तत्र ये च प्रभूताः
 बहवः आकराः सुवर्णाद्युत्पत्तिभुवस्तेषां पतयः 'मण्डलपतीय' मण्डलपतयश्च देशकार्य-
 नियुक्ताः मण्डलपतयः 'पट्टणपतीय' पत्तनपतयश्च 'सन्वे वेत्तूण' ते सर्वे गृहीत्वा
 आदाय 'पाहुडाई' आभरणाणि भूषणाणि रयणाणि य वत्थाणिय महारिहाणे अण्णं
 च जं वरिट्ठं रायारिहं जं च इच्छिअव्व एयं सेणावइस्स उवणेति मत्थयकयंजलिपुडा'
 प्राभृतानि उपायनानि आभरणानि-अङ्गपरिधेयानि भૂषणानि उपाङ्गपरिधेयानि रत्नानि
 च वस्त्राणि च महाघाणि च बहुमूल्यकानि अन्यच्च यद्वरिष्ठ प्रधानं वस्तुद्वस्तिरथादિકं
 राजाई राजोपनयनयोग्यं यच्च एष्टव्यम् अभिलाषयोग्यम् एतत्सर्वं पूर्वोक्तं सेनापतेः-
 सेनापतिं सुषेणमुपनयन्ति उपदौक्यन्ति मस्तककृताञ्जलिपुटाः सन्तः पुनरपि काळण
 अंजलिं मत्थयंमि पणया' ते तत्रत्य स्वामिनः दत्तप्राभृतोत्तरकाले परावर्त्तनसमये
 पुनरपि भूयोऽपि मस्तके अञ्जलिं कृत्वा प्रणताः नम्रत्वमुपागताः 'तुम्हे अम्हेऽस्थ

તાહિં સમિપ્રા પમૂઆ આગરપતો અ મંડલપતી અ પટ્ટણપતી અ સન્વેવેત્તૂણ પાહુડાઈ, આમ-
 રણાણિ, મૂસણાણિ, રયણાણિ, વત્થાણિ અ, મહારિહાણિ અણ્ણ ચ જં વરિટ્ઠં રાયારિહં જં ચ
 इच्छिअव्वं अ सेणावइस्स उवणेती मत्थयकयंजलिपुडा) તથ જો જનપદો કે, નગરો કે, પટ્ટનો કે
 વહા ચક્રવર્તિ એવં સુષેણ કી અપેક્ષા અલ્પ ઋદ્ધિ વાળે હોને સે અજ્ઞાત સ્વામી થે (અલ્પાર્થ
 में यहां क प्रत्यय हुआ है) સ્વર્ણાદિકો કી ઉત્પત્તિ કે સ્થાનો કે જો સ્વામી થે । મણ્ડલપતિ થે,
 એવ પત્તનપતિ થે વે બહુમૂલ્ય પ્રાભૃતો-મેટો-કો લે લેકર બહુમૂલ્ય આભરણો કો લેકર બહુમૂલ્ય-
 મૂષ્ણો-ઊપાઙ્ગ પરિધિયો કો લે લેકર બહુમૂલ્ય રત્નાદિકો કો લે લેકર બહુમૂલ્ય વસ્ત્રો કો લેકર
 તથા અન્ય ઔર મી વરિષ્ઠ હસ્તિ રથ આદિક રાજા કો મેટ મેં દેને યોગ્ય વસ્તુઓ કો એવં
 चाहना के योग्य चीजों को ले लेकर सेनापति सुषेण के पास आये । ઔર दोनों हाथ को
 जोड़ कर लाई हुई अपनी वस्तुओं को उसे मेट के रूप में प्रदान को । (पुनरपि काळण
 अंजलिं मत्थयंमि पणया तुम्हे अम्हेऽस्थ समिप्रा) તદા ભૌટતે સમય ઝન્હેને પુનઃ અંજલિ કરકે

વેત્તૂણ, પાહુડાઈ આમરણાણિ મૂસણાણિ, રયણાણિ, વત્થાણિ અ, મહારિહાણિ, અણ્ણ
 च ज वरिट्ठं रायारिहं जं च इच्छिअव्वं अ सेणावइस्स उवणेति मत्थयकयंजलिपुडा)
 ત્યારે જે જનપદોના, નગરોના, પટ્ટનોના ત્યાં ચક્રવર્તી અને સુષેણની અપેક્ષા અલ્પઋદ્ધિ-
 વાળા હોવાથી અજ્ઞાત સ્વામી હતા (અહીં અલ્પાર્થમાં 'ક' પ્રત્યય થયે છે) સુવર્ણા-
 દિકોની ઉત્પત્તિ ના સ્થાનોના જે સ્વામીઓ હતા મણપતિઓ હતા તેમજ પત્તનપતિઓ
 હતા તેઓ સર્વ બહુમૂલ્યવાન પ્રાભૃતો - મેટોને લઈને બહુમૂલ્યવાન આભરણોને લઈને
 બહુમૂલ્યવાન ભૂષણો - ઉપાંગ પરિધિઓને લઈને, બહુમૂલ્યવાન રત્નાદિકોને લઈને, બહુ-
 મૂલ્યવાન વસ્ત્રોને લઈને તેમજ અન્ય કેટલાક વરિષ્ઠ હસ્તિ, રથ વગેરે રાજાને લેટમા આપવા
 યોગ્ય વસ્તુઓને તેમજ ગમી થાય અને મેળવવાની ઇચ્છા થાય એવી યોગ્ય વસ્તુઓને
 લઈને સેનાપતિ સુષેણની પાસે આવ્યા અને બેને હાથ ભેડીને સાથે લાવેલી વસ્તુઓ

सामिथा देवयंत्र सरणागयामो तुभं विसयवासिणोत्ति विजयं जंपमाणा' यूयमस्माकम्
अत्र स्वामिकाः—स्वामिनः देवतामिव शरणागतास्मो वय युष्माकं विपयवासिनः
देशवासिनः भवद्भिः अस्मद्देशविजीतत्वात् भवतामेवायं देश इति, इतिविजयं—विजयसूचकं
वचो जल्पन्तः तदनु सेनापतिः किं कृतवान् इत्याह—'सेणावहणा जहारिहं ठविय पडय
विसज्जिया णिअत्ता सगाणि णगराणि पट्टणाणि अणुपविट्ठा' सेनापतिना सुपेण माम्ना
यथाहं यथौचित्येन स्थापिताः नगराद्याधिपत्यादि पूर्वकार्येषु नियोजिताः ततः पूजिताः
वस्त्रादिभि आदरसूचकवचोभिश्च विसर्जिताः स्वस्थानगमनायानुशताः निवृत्ता—प्रत्यावृत्ता
सन्तः स्वकानि निजानि नगराणि पत्तनानि च अनुप्रविष्टाः गताः विसर्जनानन्तर सेना-
पतिर्यत् कृतवान् तदाह—'ताहे' इत्यादि । 'ताहे सेणावई सविणयो वेत्तूण पाहुडाइं

और उसे मस्तक पर लगा करके बड़ी नम्रतासे युक्त होकर ऐसा कहा की—आप हमारे स्वामी
हैं । (देवयंत्र व सरणागयामो) हम देवता की तरह आपकी शरण में आये हुए हैं (तुभं विसयवा-
सिणोत्ति विजयं जयमाणा सेणावहणा—जहारिहं ठविय पडय विसज्जिया णियत्ता सगाणि णगराणि
पट्टणाणि अणुपविट्ठा) हम आपके ही देशवासि हैं आप यद्यपि हमारे देश से विजातीय हैं तो भी
यह देश अपना ही है । इस प्रकार से विजय सूचक वचन कहते हुए उन सब को सेनापति
ने उनके ही नगराधिपत्यादिरूप पूर्व के प्रस्थापित अपने अपने अधिकार स्थानों पर यथावत्
प्रस्थापितकर के उनको वहां से विसर्जित कर दिये विसर्जित करने के पहले सुपेण सेनापति ने
उन सभी को यथायोग्य वस्त्रादि अर्पित कर उनका सत्कार किया, एवं आदर पूर्वक के
वचनों द्वारा उनका सम्मान किया इस प्रकार अपने अपने स्थान पर जाने के लिए सेनापति के
द्वारा विसर्जित हुए वे अधिकारी आदिजन अपने अपने नगर एवं पत्तनादि में जा बसे उनके
जाने के अनन्तर सेनापतिने क्या किया उस विषय में सूत्रकार कहते हैं—(ताहे सेणावई सविणयो

तेनी समक्ष बैठना इपमां भूकी (पुनरवि कारुण अज्जलि मत्थर्यमि पणया तुभं अम्हे
उत्थ समिआ) तेभं पाछा वणती वणते तेभं अज्जि वनावोने अने तेने भस्तडे
भूकीने भूभं नअ पण्णे आ प्रभाण्णे कडु—डे आपथी अमारा स्वामी छे । (देवयंत्र व सर-
णागयामो) अम्हे देवताओनी नेम आपना शरणे आब्या छीजे, (तुभं विसयवासिणो
त्ति विजयं जयमाणा सेणावहणा जहारिहं ठविय पडय विसज्जिया णियत्ता सगाणि
णगराणि पट्टणाणि अणुपविट्ठा) अम्हे आपथीना देशेना व रहेनारा छीजे आपथी
ओ डे अमारा देशथी विजितिय छे छता ओ आ देश आपथीना व छे, आ प्रभाण्णे विजय
सूचक वचने कडेनारा तेओ सर्वने सेनापति सुपेण्णे तेभना व नगराधिपत्यादि इप पूर्व
प्रस्थापित होइओ उपर यथावत् आहु राभीने तेभने विसर्जित करी दीधा, विसर्जित
क्या पडेकां सेनापति सुपेण्णे तेभने वस्त्रादि अर्पिने तेभने सत्कार कर्छे अने आदर पूर्वक
वचने वडे तेभनु स-नान कथुं डेतु, आ प्रभाण्णे पोत पोताना स्थाने उपर ववा भाटे
सेनापति वडे विसर्जित करवामा आवेका ते सर्व अधिकारी वगेरे होइओ पोत पोताना नगरे
तेभं पत्तने तरे वता रक्षा, तेओ सर्व वता रक्षा तयारवाह सेनापतिओ थुं कथुं ओ

આમરણાણિ રચનાણિય પુનરવિ ત સિંધુનામધેજ્ઞં ઉત્તિણ્ણે અણહસાસણવલ્લે તદેવ મરહ-
સ્સ રણ્ણો ણિવેદ્દહ' તસ્મિન્ કાલે સેનાપતિઃ-સેનાનીઃ સુષેણઃ સવિનયઃ અન્તર્ધૃતસ્વામિ-
મક્તિકઃ સન્ 'ધેતૂળ' મૃતીત્વા પ્રાપ્તતાનિ આમરણાણિ ભૂપણાણિ રત્નાનિ ચ પુનરપિ ભૂ-
યોડપિ તાં સિન્ધુનામધેયામ્ મહાનદીમુત્તીર્ણઃ 'અણહસાસણવલ્લે' અક્ષતશાસનવલ્લઃ, તત્ર
અણહ શબ્દોડક્ષતપર્યાયો દેશીશબ્દસ્તેન અણદમ્ અક્ષત ક્વચિદપિ અલ્પિન્દિત-શાસનમ્
આજ્ઞા વલ્લં ચ યસ્ય સ તથા 'તદેવ' મરહસ્સ રન્નો' તથૈવ યથાર સ્વયં સ્વાધીનં કૃતવાન્
તથા ૨ મરતસ્ય રાજ્ઞઃ-મરતાય રાજ્ઞે નિવેદયતિ-કથયતિ 'ણિવેદ્દહા ય' નિવેદ્ય ચ નિવે-
દનં કૃત્વા 'અપ્પિણિત્તા ય પાહુહાઈ' પ્રાપ્તતાનિ અર્પયિત્વા ચ પ્રસ્થિતઃ તતો મરતો યત્કુ-
તવાન્ તદાહ- 'સવકારિય સમ્માણિય સહરિસે વિસજ્જિય સગં પટમંડવમહ્ગય' તતઃ

ધેતૂળ પાહુહાઈ આમરણાણિ ભૂપણાણિય પુનરવિ તં સિંધુનામધેજ્ઞં ઉત્તિણ્ણો) વિનય પૂર્વક જિસને
અપને હૃદય મૈ સ્વામી મક્તિ ધાળ્ણ કા યો એસે સુપેણ સેનાપતિ ને મેટ મેં પ્રાપ્ત હુય સમી
પ્રાપ્તોકો અર્થાત્ આમૂષણારિ કો ઇવં રત્નો કો લેકર સિંધુનદી કો પાર કી (અણયસા
સણવલ્લે) વહ સુપેણ સેનાપતિ અક્ષત શાસન એવ અક્ષતવલ્લ વાલા થા યહા 'અણહ' યહ શબ્દ દેશી
હૈ ઇવં અક્ષત કા વાચક હૈ શાસન શબ્દ કા અર્થ આજ્ઞા ઇવં વલ્લકા અર્થ સૈન્ય હૈ હસ પ્રકાર
અક્ષત શાસન એવ વલ્લ યુક્ત સુપેણ સેનાપતિ ને (મરહસ્સ રણ્ણો ણિવેદ્દહ) જિસ ક્રમ સે વિજય
પ્રાપ્ત ક્રિયા ડસે યથાક્રમ સમી વૃત્તાંત ધા કરકે મરત રાજા સે કહે-(ણિવેદ્દહા ય અપ્પિણિત્તા
ય પાહુહાઈ સવકારિય સમ્માણિય સહરિસ વિસજ્જિય) સવ સમાચાર કહ કર ઔર મેટમેં
પ્રાપ્ત સવ વસ્તુઓં કો મરત કે લિયે દેકર કે ડનકે દ્વારા પ્રચુર દ્રવ્યાદિસે સન્કારિત હુઆ
ઔર બહુમાન સૂચક શબ્દોં સે ઔર વસ્ત્રા દિકોસે સમ્માનિત હુઆ વહ સુપેણ સેનાપતિ
હર્ષસહિત વિસર્જિત હોકર-(સગપટમંડવમહ્ગય) અપને પટમંડપમેં-દિવ્ય પટકૃતમહ્ગય મે અથવા

સંબધમા સૂત્રકાર કહે છે-(તાહે સેનાવહસવિણઓ ધેતૂળ પાહુહાઈ આમરણાણિ ભૂપણાણિ-
ય પુનરવિ ત સિંધુનામધેજ્ઞં ઉત્તિણ્ણો) વિનય સહિત બેથે પોતાના હૃદયની અહર સ્વામિની
મહિત ધરણ કરી રાખી છે એવા તે સુષેણ સેનાપતિએ ભેટમાં પ્રાપ્ત કરેલા સર્વ પ્રાપ્ત
તોને આભારણોને ભૂષણોને તેમજ રત્નોને લઈને તે સિંધુ નદીને પાર કરી (અણયસાસણ
વલ્લે) તે સુષેણ સેનાપતિ અક્ષત શાસન તેમજ અક્ષત અણ સમ્પન્ન હતો. અહીં "અણહ"
આ શબ્દ દેશી શબ્દ છે અને અક્ષતનો પર્યાયવાચી છે શાસન શબ્દનો અર્થ આજ્ઞા અને
બળનો અર્થ સૈન્ય છે આ પ્રમાણે અક્ષત શાસન અને બળ સમ્પન્ન થયેલા તે સુષેણ
સેનાપતિએ (મરહસ્સ રણ્ણો ણિવેદ્દહ) બે ક્રમથી વિજય પ્રાપ્ત કર્યો હતો તે ક્રમથી બધા
સમાચારો વિગતવાર રાખીને કહ્યા. (ણિવેદ્દહા ય અપ્પિણિત્તા ય પાહુહાઈ સવકારિય સમ્માણિય
સહરિસ વિસજ્જિય) સર્વ સમાચારો કહીને અને ભેટમાં પ્રાપ્ત સર્વ વસ્તુઓ કહીને અને
મરત રાખીને આપી ને તથા તેમના વડે પ્રચુર દ્રવ્યાદિથી સત્કૃત થઈને બહુમાન સૂચક
શબ્દોથી અને વસ્ત્રાદિકોથી સન્માનિત થઈને તે સુષેણ સેનાપતિ હર્ષસહિત રાજા પાસેથી
વિસર્જિત થઈને (સગ પટમંડવમહ્ગય) પોતાના મહપમા દિવ્ય પટકૃત મહપમાં અથવા

પ્રશ્નના સ્વામિના ભરતેન ગુપેણઃ સેનાપતિઃ સત્કારિતઃ; પ્રત્યુદ્રવ્યાદિભિઃ, સમ્માનિતો
 बहुमानवचनादिभिः वस्त्रादिभ्यश्च अतएव सर्वपः प्राप्तप्रच्युगसत्कारत्वात् विसृष्टः स्वस्थान-
 गमनाय अनुज्ञातः सन् स-सेनापतिः स्वकं निजं पटमण्डपं-दिव्यपटकृतमण्डपं मध्यम-
 पदलोपी समासः पटमण्डपोपलक्षित प्रा गदं वा सुपेणः सेनापतिः अतिगतः प्राविशत्
 'तएणं सुसेणे सेणावईण्हाए कयवलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्तं' ततः खल्ल
 स सुपेणः सेनापतिः स्नातः कृतवलिकर्मा-नायसादिभ्यां दत्तान्न भागः कृतकौतुक
 मङ्गलप्रायश्चित्तः सन् 'जिमिय भुत्तत्तरागए समाणे जाव' जिमितः शैक्तवान् राजवि-
 धिना, भुत्तयुत्तरं-भोजनोत्तरकाले आगतः सन् उपवेशनस्थाने, अत्र यावत् पदात् 'आ-
 यंते चोक्खे परमसुई भूए' इतिग्राह्यम्. आचान्तः शुद्धोदकेन कृतस्त्वमुखशौचः चोक्षो
 छेपसिक्थाद्यपनयने, अतएव परमशुचीभूतः इदं च पदत्रयम् भुत्तत्तरागए समाणे' इति
 पदात् पूर्वयोज्यम् तथैव गिष्टजनक्रमस्य दृश्यमानत्वात् पुनः सेनापतिः कीदृशोऽभूत् इत्याह-
 सरस गोसीस इत्यादि'सरसगोसीस चदणाणुक्खित्तगायसरीरे, सरस-गोशीर्षचन्दनोक्षितगा

પટમંડપ સે ઉપલક્ષિત પ્રાસાદમે—ગ્રાગયા (તપણ સે સુસેણે સેણાવઈ ણ્હાए કયવલિકમ્મે કયકો-
 उयमंगलपायच्छित्ते) વહા ગ્રાકર કે ઉસ સુપેણ સેનાપતિ ને સ્નાન ક્રિયા વલિકર્મ ક્રિયા—
 કાક આદિ કોં કે લિયે બન્ન કા વિભાગક્રિયા—કૌતુક મંગલ પ્રાયશ્ચિન ક્રિયા(જિમિયસુતુ-
 त्तरागए समाणे) બાદ મેં રાજવિધિ કે અનુષાર ભોજન ક્રિયા ભોજન કરનેકે બાદ ફિર
 वह उपवेशन स्थान में आया—यहा यावत्पद से—“आयंते, चोक्खे परमसुईभूए” इन पदों का
 ग्रહणहुआ है भोजन कर चुकने पर शुद्ध जल से हाथ मुह धोना इसकानाम आचान्त
 है शरीर पर पड़े हुए स्नाने के सीत आदि को दूर करना—इसका नाम चोक्ष है इस
 प्रकार सब प्रकार से शरीर को हाथ—मुह आदि धोकर और उसपर पड़े हुए भोजन के
 अंश को हटाकर बिल कुल साफ सुथरा बनालेना इसका नाम परमशुची भूत होना है
 इस पदत्रय की योजना “भुत्तत्तरागए समाणे” इस पद से पूर्व करनी चाहिये क्योंकि
 शिष्टजनो में इसी प्रकार का क्रम देखा गया है। (सरसगोसीसचदणाणुक्खित्तगायसरीरे)

પટમંડપથી ઉપલક્ષિત પ્રાસાદમા આવી ગયો. (તપણ સે સુસેણે સેણાવઈ ણ્હાए કયવલિકમ્મે
 कयकोउयमंगलपायच्छित्ते) ત્યાં આવીને તે સુપેણ સેનાપતિએ સ્નાન કર્યું. બલિકર્મ
 કર્યું - કાક વગેરેને માટે અન્ન લાગત અર્પિત કરીને કૌતુક મંગલ અને પ્રાયશ્ચિત્ત કર્યા
 (જિમિય ભુત્તત્તરાગપ સમાણે) ત્યાંપ્રાદ રાજવિધિ મુજબ ભોજન કર્યું. ભોજન
 કરીને પછી તે ઉપવેશન સ્થાનમા આવ્યો. અહીં યાવત્ પદથી (આયંતે ચેવ્વે પરમસુઈ
 भूए) એ પદોત્ અહલ યથુ છે ભોજન કર્યા પછી શુદ્ધ પણીથી હાથ ઓ ધોવા તે
 આચાન્ત કહેવાય છે. શરીર ઉપર પડેલા ભોજનના સીત વગેરે દૂર કરવા તે ચોક્ષ કહેવાય છે
 આ પ્રમાણે સર્વરીતે હાથ ઓ વગેરે સ્વચ્છ કરીને અને શરીર ઉપર પડેલા ભોજનના કણોને
 હટાવીને શરીરને એકદમ સ્વચ્છ બનાવી લેવું તેનું નામ પરમ શુચીભૂત છે. એ પદત્રયની
 योजना (ભુત્તત્તરાગપ સમાણે) એ પદોની પૂર્વે કરવી અપેક્ષિત છે કેમ કે શિષ્ટ લોકમાં

રીરઃ તત્ર સરસેન ગોશીર્ષચન્દનેન ઉક્ષિપ્તાઃ સિક્તાઃ ગાત્રે શરીરે ભવા ગાત્રાઃ શરીરા-
વયવાઃ વક્ષઃપ્રમુતયો યત્ર શરીરે તદેવ ભૂતં શરીરં યસ્ય સ તથા અત્ર યચ્ચન્દનેન સેચનમુ-
ક્તમ્ તત્ માગેશ્રમજનિતવપુસ્નાપવ્યપાહાય 'ઉર્ષિ પાસાયવરગપ્' ઉપરિ પ્રાસાદવરગતઃ
પ્રાસાદવરં પ્રાપ્તઃ સ સેનાપતિઃ સુષેણઃ 'ફુટ્તમાણેહિં' સ્ફુટદ્ધિરિવ અતિરમસા, સ્ફાલન-
વશાત્ વિદલદ્ધિરિવ મુર્દંગમત્થપર્હિં' મૃદદ્ગપસ્તકૈઃ તત્ર મૃદજ્ઞાનાં મૃદદ્ગ નામક વાદ્યવિશેષાણાં
મસ્તકાનીવમસ્તકાનિ ઉપરિતનભાગાઃ ઉભયપાર્શ્વે ચર્મોપનદ્ધપુટાનીતિ તૈઃ 'વત્તીસહ વદ્ધેહિં'
તથા દ્વાત્રિશતાઽભિનેતવ્યપ્રકારૈઃ પાત્રૈર્વા વદ્ધૈઃ ઉપસમ્પન્નૈ 'ળાહપર્હિં' નાટકૈઃ પ્રસિદ્ધૈઃ
તથા 'વરતરુણી સંપડત્તેહિં' વરતરુણીભિઃ સુભગાભિઃ સ્ત્રોભિઃ સંપ્રયુક્તૈઃ પ્રારબ્ધૈઃ
'ઉવળચ્ચિજ્જ માણે ૨' ઉપનૃત્યમાનઃ ૨ નૃત્યવિપયી ક્રિયમાણ તદભિનયપુરસ્સર નર્ત-
નાત્, 'ઉવગિજ્જમાણે ૨' ઉપગીયમાનઃ ૨ તદ્ગુણગ્રામાત્ 'ઉવલાલિ (લમિ) જ્જમાણે'
ઉપલાલિજ્યમાનઃ તદીપ્તિપ્રાર્થસમ્પાદનાત્ મહયાહયણદ્ ગીય વાહ્ય તંતીતલતાલતુહિય-

જબ સુષેણ સેનાપતિ મોજનાદિકાર્ય સે કિલ કુલ નિવૃત્ત હોકર નિશ્ચિન્ત હો તુકા=તબ
ઉસકે શારીરિક અવયવો પર સરસગોર્શર્ષ ચંદન છિડકા ગયા યહા જો "ગાત્ર શરીર"
પ્રકાર્યક-વાચક દોશન્દ પ્રયુક્ત હુપ હૈ સો इनमें गात्र शब्द का अर्थ-शारीरिक अवयव
है ऐसे छाती आदिअवयव जिसके शरीर में है वह "सरसगोर्शर्षचन्दनोत्क्षिप्तगात्रशरीरः"
है यहां जो चन्दन से सेचन होना कहागया है वह इस बात को प्रगट करने के लिए
कहा गया है कि उस चन्दन के सेचन से सुषेण सेनापति को जो मार्ग में चलने के
कारण शारीरिक श्रम जन्यताप हुआ वह शान्त होगया (उर्षि पसायवरगप) इसके बाद
वह सुषेण सेनापति अपने श्रेष्ठ प्रासाद में पहुंचा वहा पर उसने पांच प्रकार के मनुष्य
संबंधे कामभोगो को भोगा ऐसा सम्बन्ध यहां लगा लेना चाहिये (फुट्टमाणेहिं मुर्दंगम-
त्थपर्हि वत्तिसहवद्धेहि णाहपर्हि वरतरुणीसपडत्तेहि उवणचिज्जमाणे २ उवगिज्जमाणे २

આ જાતનો ક્રમ એવામા આવે છે (સરસ ગોશીર્ષચંદનાણુક્ષિપ્તગાયસરીરે) અર્થાત્
સુષેણ સેનાપતિ લોજનાદિ કાર્યથો એકદમ નિશ્ચિન્ત થઈ ગયો-ત્યારે તેના શારીરિક અવયવો
ઉપર સરસ ગોશીર્ષ ચંદન છાટવામાં આવ્યું અહીં જે (ગાયસરીર) એ એકાથક વાચક
એ શબ્દો પ્રયુક્ત થયા છે તે એમા ગાત્ર શબ્દનો અર્થ શારીરિક અવયવો છાતી વિગેરે
જેના શરીરમા છે તે જ 'સરસ ગોશીર્ષ ચંદનોક્ષિત ગાત્ર શરીર' છે. અહીં જે ચંદનથી
સિચિત થયેલુ એવું કહેવામાં આવ્યું છે તે આ વાતને પ્રકટ કરવા માટે કહેવામાં
આવ્યું છે કે તે ચંદનના સેચનથી સુષેણ સેનાપતિને જે માર્ગમાં ચાલવાથી શારીરિક
શ્રમ જન્ય તાપ થયો તે ઉપશમિત થઈ જાય (ઉર્ષિ પાસાયવરગપ) ત્યાર બાદ તે
સુષેણ સેનાપતિ પોતાના શ્રેષ્ઠ પ્રાસાદ મા ગયો ત્યાં તેણે પાંચ પ્રકારના મનુષ્ય સંબંધી
કામ ભોગોને ભોગવ્યા એવો સંબંધ અત્રે બાધવો (ફુટ્ટમાણેહિં મુર્દંગમત્થપર્હિ વત્તિસ-
હવદ્ધેહિ ણાહપર્હિ વરતરુણીસંપડત્તેહિ ઉવળચિજ્જમાણે ૨ ઉવગિજ્જમાણે ૨ ઉવલા
લિજ્જમાણે મહયાહયણદ્ગીયવાહિત તંતિતલતાલતુહિય ઘણમુદગ પદુપ્પવાહયરથેણ

घणमुद्गपडुप्पवाइयरवेण' महताऽहतनाट्य-गीतवादिततन्त्रातलतालनूर्यघनमृदङ्ग पडुप्पवा-
दितरवेण तत्र महता-प्रधानेन ब्रह्मता वा रवेणेति सम्बन्धः अहतः अनुवद्धो रवस्येति
विशेषणम् नाट्यं नृत्तं तेन युक्तं नाट्यगीतं तच्च वादितानि च तानि शब्दवन्ति कृतानि
तन्त्री च वीणा तल्ली च हस्तौ तान्ताश्च कशिकातुडियत्ति, तूर्याणि च पटहादीनि
वादिततन्त्रीतलतालतूर्याणि तानि च तथा घनो मेघः तदाकारो यो मृदङ्गो ध्वनिगाम्भीर्य
साधर्म्यात् स चासौ पडुना दक्षेण प्रवादितश्च यः स घनमृदङ्गपडुप्रवादितः सचेति द्वन्द्वे तेषां
रवः शब्दः तेन करणभूतेन अथवा 'आह्वयत्ति' आख्यायक प्रतिबद्धं यन्नाटकं तेन युक्तं यत्तद्
गीतम् शेषं तथैव इह च मृदङ्गग्रहणं तूर्येषु मध्ये तस्य प्रधानत्वात् । 'इट्टे इष्टान्' इच्छावि
षयी कृतान् 'सहफरिस रसरुवंगंधे' शब्दस्पर्शरसरूपगन्धान् 'पंचविहे' 'पञ्चविधान्'
'माणुस्सए' मनुष्यकान् मनुष्यसम्बन्धिनः 'काममोगे' कामभोगान् कामांश्च भोगांश्च

उलालिज्जमाणे २ महया हयणङ्गीभवदिततंतीतल ताल तुडेअ घण मुद्गपडुप्पवाइयरवेण इट्टे
सहफरिसरसरुवंगंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे भुजमाणे विहरइ) जिस समय वह अपने श्रेष्ठ
प्रासाद पर पहुँचा उस समय वहाँ पर मृदङ्ग बजाये जा रहे थे ३२ प्रकार के अभिनयों से
युक्त नाटक उसके निमित्त पात्रों द्वारा किये जा रहे थे इन नाटकों में काम करने वाली
नाटकीय वस्तुओं को अभिनय द्वारा प्रकट करने वाली सुन्दर २ तरुण क्रियां थी वे उसमें
नृत्य करती थी उसे यह सेनापति देखता था जिस बात को यह चाहता था उसी बात के
अनुरूप नृत्यादी क्रियाओं से वे उसके मन को अनुरजित करती थी नाटक में गाये गये
गीतों के अनुसार ही उन नाटकों में बाजे बजाये जा रहे थे तन्त्रों भी बजायी जा रही थी,
ताल भी दिये जा रहे थे पटह बजाये जा रहे थे घन के जैमो मृदङ्गों की ध्वनि निकल रही
थी इन सब वादितों को बजाने वाले वादक जन अपनी अपनी वाद्य क्रिया में बहुत अधिक
दक्ष थे इन नाटकों में जो गीत गाये जाते थे वे सब नाटकीय आख्यातकों के सम्बन्ध से सम्ब-
न्धित थे इस तरह यह सुषेण सेनापति अपनी इच्छा के अनुसार पाँच प्रकार के शब्द,

इट्टे सहफरिसरसरुवंगंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे भुजमाणे विहरइ) के समर्थ
ते पोताना अष्ट प्रासाद उपर पहुँच्यो ते वणते त्या मृदङ्गो वगाडवाभा आवी रह्या
हता तेना भाटे ३२ प्रकारना अभिनयोथी युक्त नाटके विविध पात्रो वडे बजववाभा
आवी रह्या हता, जे नाटकेनी कथा वस्तुओने विविध प्रकारना अभिनयोथी सुन्दर तडुषु
ओओ। तेभां नृत्य करी रही हती। तेने ते सेनापति जेतो हतो। जे बातने जे सेनापति
धृष्टतो ते सुजण ज ते स्त्रियो नृत्यादि क्रियाओ वडे तेना मनने रञ्जित करती हती
नाट्यभां गावामा आवता गीतो सुजण ज ते नाटकेभां वाद्यो वगाडवामा आवी रह्या
हता, तत्री पणु वगाडवामा आवी रह्यी हती, ताल पणु आपवामा आवतो हतो। पटहो
वगाडवामा आवी रह्यो हता, वाहणो जेवो गलीरमृदङ्गोभाथी ध्वनि नीकणी रह्यो
हतो। जे सर्व वादितो वगाडनार वाडक कलाकारो पोतानी कणामां पहुँच ज इक्ष हता ते सर्व
नाटकेभां जे गीत गावामा आवता हता ते सर्व नाटकीय आख्यातकेथी सम्बन्धित
हता आ प्रमाणे ते सुषेण सेनापति पोतानी धृष्टासुजण पाथ प्रकारना शब्दो रूपो,

इति प्राप्तसङ्गान् तत्र शब्दरूपे नामौ स्पर्शरसगन्धा भोगा इति समयपरिभाषा,
'शृङ्गमाणे' शृङ्गानः अनुमयन् स सेनापतिः सुपेणो निहरतीति ॥६०१३॥

अथ तमिस्रा गुहाद्वारोद्घाटनायोपक्रमते 'तएणं से' इत्यादि ।

मूलम-तएणं से भरहे राया अण्णया कयाई सुसेणं सेणावइं सदा-
वेइ सदावित्ता एवं वयासी गच्छणं खिप्पामेय भो देवाणुप्पिया तिमिस-
हाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडे विहाडेहि विहाडित्ता मम एय-
माणत्तियं गच्छप्पिणाहि त्ति, तएणं से सुसेणे सेणावईं भरहेणं रण्णा एवं
वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठं त्ति त्तिमाणंदिए जाव कस्यलपरिग्राहयं सिरसावत्तं
मत्थए अंजलिं कट्ठं जाव पडिसुणेइ पडिसुणित्ता भरहस्स रण्णो अंति-
याओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता जेणेव सए आवासे जेणेव पोस-
हसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता दब्भसंथारणं सत्थइ, जाव कय-
मालस्स देवस्स अट्ठमभत्तं पणिण्हइ पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी
जाव अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ पडि-
णिक्खमित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पा-
वेसाइं मंगलाइं वत्थाइं पवरपरिहिए अप्पमहग्घाभणालंकियसरीरे
धूवपुप्फगंधमल्लहत्थगए मज्जणघराआ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता
जेणेव तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडा तेणेव प्हारेत्थ
गमणाए तएणं तस्स सुसेणस्स सेणावइस्स बहवे राईसरतलवरमाडंबिय
जाव सत्थनाहप्पभिययो अप्पेगइया उप्पलहत्थगया जाव सुसेणं सेणावइं
पिट्ठओ२ अणुगच्छंति, तएणं तस्स सुसेणस्स सेणावइस्स बह्वईओ
खुज्जाओ चिलाइआओ जाव इंगिअ चित्तिअ पत्थिअ विआणिआउ
णिउणकुसलाओ विणीआओ अप्पेगइआओ कलसहत्थगयाओ
जाव अणुगच्छंतीति । तएणं से सुसेणे सेणावईं सन्विच्चीए सन्वजुईए

स्पर्श, रस, रूप और गन्ध से संबंधित पांच प्रकार के अनुप्यमव मे भोगने के योग्य काम भोगों
को भोगने लगा ॥१३॥

२३, ३५ अने ७ धर्मी स न धित पांच प्रकारना अनुप्य अनमा भोगवना योग्य काम भोगो
भोगवना बोधे। ॥१३॥

जाव णिग्घोसणाइएणं जेणेव तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स
 कवाडा तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता आलोए पणामं करेइ करित्ता
 लोमहत्येणं पमज्जइ पमज्जित्ता दिव्वाए उदगधाराए अब्भुक्खेइ
 अब्भुक्खित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं पंचगुलितले चच्चए दलइ दलित्ता
 अग्गेहि वरेहिं गंधेहिय मल्लेहिय अच्चिणित्ता पुष्फारुहणं जाव
 वत्थारुहणं करेइ करित्ता आसत्तोसत्त विपुल वट्ट जाव करेइ करित्ता अच्छे
 हिं सण्हेहिं रयणामएहिं अच्छरसातंडुलेहिं तिमिस्स गुहाए दाहिणिल्लस्स
 दुवारस्स कवाडं पुरओअट्टट्टमंगलए आलिहइ तं जहा सोत्थिय सिग्घिच्छ
 जाव कयग्गहगहिअ करयलपब्भट्ट चंदप्पभवइरवेरुलिअ विमिल दंडं जाव
 धूवंदलयइ दलयित्ता वामं जाणुं अंचेइ अंचित्ता करयल जाव मत्थए
 अंजलि कट्टु कवाडाणं पणामं करेइ करित्ता दंडरयणं परासुसइ तएणं त
 दंडरयणं पंच लइअं वइस्सारमइअं विणासणं सब्बसत्तुसेण्णाणं खंधावारे
 णवइस्स गट्ठदरिविसमपब्भारगिस्सिक्खिपवायाणं समीकरणं संतिकरं हित-
 करं रण्णोहयइच्छिअमणोरहपूरगं दिव्व मप्पडिहयं दंडरयणं गहाय
 सत्तट्टपयाइं पच्चोसक्कइ पच्चोसक्कित्ता तिमिस्सगुहाए दाहिणिल्लस्स
 दुवारस्स कवाडे दंडरयणेणं महया महया सदेणं तिक्खुत्तो आउडेइ तएणं
 तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडा सुसेणे सेणावइणा दंडरयणेणं
 महया महया सदेणं तिक्खुत्तो आउडिआ समाणा महया महया सद्देणं
 कौचारवं करेमाणा सरसरस्स सगाइं सगाइं ठाणाइं पच्चोसक्कित्था तएणं
 से सुसेणे सेणावई तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडे विहाडेइ
 विहाडित्ता जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता जाव
 भरहं रायं करयलपरिग्गहियं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावित्ता एवं
 वयासी विहाडिआणं देवाणुप्पिया तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवार-
 स्स कवाडा एयणं देवाणुप्पियाणं पियं णिवेएमो पियं मे भवउ तएणं
 से भरहे राया सुसेणस्स सेणावइस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म

हृदुह चित्तमाणंदिए जाव हिअए सुसेणं सेणावइं सक्कारेइ सम्माणेइ
सक्कारित्ता सम्माणि । कोडुंबियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी
खिप्पामेव भो देवा प्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह हयगय-
रह पवर तहेव जाव अंजणगिरिक्खडसण्णिभं गयवरं णरवई दुरुढे ॥सू० १४॥

१-ततः खलु स भरतो राजा अन्यदा कदाचित् सुषेणं सेनापतिं शब्दयति शब्दयित्वा
पथमवादीत् गच्छ खलु क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिय । तमिस्रा गुहाया दाक्षिणात्यस्य द्वारस्य
कपाटौ विधाट्य, हि मम यतामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पय इति, ततः खलु स सुषेण सेना-
पति भरतेन राज्ञा पथमुक्तः सन् दृष्टुष्ट चित्तानन्दितः यावत् करतलपरिगृह्योतं शिरसावर्त्त
मस्तके अञ्जलिं कृत्वा त् प्रतिशृणोति, प्रतिश्रुत्य भरतस्य राज्ञ अन्तिकात् प्रतिनिष्कामति
प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव स यत्रैव पौषधशाला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य दर्भसंस्ता-
रकं संस्तृणाति, यावत् कृत स्य देवस्य अष्टमभक्तं प्र ाति, पौषधशालायां पौषधिकः
ब्रह्मचारी यावत् अष्ट ते परिणमति, पौषधशालातः प्रतिनिष्कामति प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव
मज्जनगृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य स्नातः कृतवलिकर्मा कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्त शु-
द्धप्रावेशानि मङ्गलानि णि प्रवरपरिहित अल्प घाभिरणालङ्कृतशरीरः धूपपुष्पग-
न्धमाल्यहस्तगत मज्जनगृहात् प्रतिनिष्कामति प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव तमिस्राया गुहाय द्वारस्य
कपाटौ तत्रैव गमनाय प्रधारितवान् ततः खलु तस्य सुषेणस्य सेनापते बहव्यो राजेश्वर-
तलवरमादम्बिक यावत् सार्धैव तयः अप्येकका उत्पलहस्तगता यावत् सुषेणं सेना-
पतिं पृच्छतः २ अनुगच्छन्ति, ततः खलु तस्य सुषेणस्य सेनापते बहव्यः कुञ्जाः चिलात्या
यावत् इङ्गितचिन्ति यितविज्ञायिकाः निपुणकुशलाः विनीताः अप्येकका कलहहस्त-
गताः यावद् अनुगच्छन्तीति । ततः खलु स सुषेणः सेनापति सर्वद्वर्था सर्वयुत्या सर्वद्यु-
त्यावा यावत् निर्योषनावितेन यत्रैव तमिस्रागुहाया दाक्षिणात्यस्य द्वारस्य कपाटौ तत्रैव
उपागच्छति उपागत्य आलोकै ण करोति, कृत्वा लोमहस्तकं परामृशति परामृश्य
तमिस्रागुहायाः दाक्षिणात्यस्य स्य कपाटौ लोमहस्तकेन प्र ाति प्रमार्ज्य द्वि
उदकधारया अभ्युक्षति, अभ्युक्ष्य सरसेन गोशीर्षचन्दनेन चर्चितं पञ्चांगुलितलं ददाति कृत्वा
अग्न वरैर्गन्धैश्च माल्यैश्च ति यित्वा पुष्पारोपणं यावत् वस्त्रारोपणं करोति कृत्वा
आसक्तो विपुलवर्त यावत् करोति कृत्वा अच्छैः श्लक्ष्णैः रजतमयैः आच्छरसतण्डुलैः
तमिस्रागुहायाः दाक्षिणात्यस्य क गोः पुरत अष्टाष्टमङ्गलानि आलिखति
तत् स्वस्तिकं श्रीवत्स यावत् क हीतकरतल प्रभ्रष्ट चन्द्रप्रभवज्वरेहृयैविमलदण्डं यावत्
धूपं दहति, जातुम् अञ्जयति अङ्गि । करतल यावत् मस्तके अञ्जलिं कृत्वा कपाटयोः
प्रणामं करोति कृत्वा दण्डरत्नं परामृशति, ततः तत् दण्डरत्न पञ्चलतिक वज्रसार-
मयं विनाशनं सर्वशत्रुसेनानां, स्कन्धावारे नरपते गर्तवरीविषमप्राग्भार गिरिवर प्रपातानां
श्रीकरणं शान्तिकरं शु हितंकर गो इदं येषित्तमनोरथ पूरकं दिव्यमप्रतिहतम्,
दण्डरत्नं गृहीत्वा सप्तंष्ट पदानि वष्कते वष्कय तमिस्रागुहायाः दाक्षिणात्यस्य
द्वारस्य कपाटौ दण्डरत्नेन । २ शब्देन वि कृत्वः आकुटयति ततः खलु तमिस्रागु-
हायाः दाक्षिणात्यस्य द्वारस्य कपाटौ सुषेणसेनापतिना, दण्डरत्नेन महता २ शब्देन

त्रिकृत्वः आकुट्टितौ सन्तौ महता शब्देन कौचारवं कुर्वन्तौ 'सरसरस्स' अनुकरणशब्देन, स्वके स्थाने प्रत्यवाप्वक्त्रिकाताम्, स्वकाभ्यां स्थानाभ्यां प्रत्यवस्त्वतौ इति वा ततः खलु स सुपेण' सेनापतिः तमिस्रागुहायाः दक्षिणात्यस्य द्वारस्य कपाटौ विघाटयति विघाटय यत्रैव भरतो राजा तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य यावत् भरतं राजान करतलपरिगृहीतं जयेन विजयेन वर्द्धापयति वर्द्धापयित्वा पवम् अवादीत्-विघाटितौ खलु देवानुप्रिय ! तमिस्रागुहायाः दक्षिणात्यस्य द्वारस्य कपाटौ, पतदेव देवानुप्रियाणां प्रियं निवेदयाम-प्रियं भवतां भवतु ततः खलु स भरतो राजा सुपेणस्य सेनापते' अन्तिके पतम् अर्थं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्टचित्तानन्दितः यावद् हृदयः सुपेण सेनापतिं सत्कारयति सन्मानयति, सत्कार्यं सन्मान्य कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा पवम् अवादीत् क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः । आभिषेक्यम् हस्तिरत्नं प्रतिकल्पयत इयगजरथप्रवर तथैव यावद् अञ्जनगिरिकूटसन्निभं गजवरं नरपतिः दूरुढे ॥सू० १४॥

टीका—'तएणं से इत्यादि

'तएणं से भरहे राया अण्णया कयाई सुसेणं सेणावई सदावेइ' ततः खलु स भरतो राजा अन्यदा कदाचित् अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् काले सुपेणं सेनापतिं शब्दयति आह्वयति 'सदाविच्चा एवं वयासी' शब्दयित्वा आहूय, एव वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत् उक्तवान् 'गच्छणं खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया' गच्छ खलु क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिय ! 'तिसिसगुहाए

। तमिस्रागुहाद्वार का उद्घाटन—

'तएणं से भरहे राया अण्णया कयाई'—इत्यादि सू० १४ ॥

टीका—'तएणं से भरहे राया अण्णया कयाई' एकदिन की बात है कि भरत राजा (सुसेणं सेणावई सदावेइ) सुपेण सेनापति को बुलाया— (सदाविच्चा एवं वयासी) बुलाकर उस से ऐसा कहा—(गच्छणं खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! तिसिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडे विहाडेहि) हे देवानुप्रिय ! तुम शीघ्र ही जाओ—और तमिस्रागुहा के दक्षिण भाग के द्वार के किंवदों को खोलो (विहाडिच्चा) और खोल कर (मम पयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि) मुझे पिछे खबर दो—

तमिस्रागुहाद्वार का उद्घाटन—

'तएणं से भरहे राया अण्णया कयाई' इत्यादि

टीका—(त एणं से भरहे राया अण्णया कयाई) जेह दिवसनी बात छे ते भरत राजा जे (सुसेणं सेणावई सदावेइ) सुपेण सेनापतिने भेलावेथे। (सदाविच्चा एवं वयासी) भेलावने तेने आ प्रभावे कथुं (गच्छणं खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! तिसिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडे विहाडेहि) हे देवानु प्रिय ! तमे शीघ्र जावे आने तमिस्रागुहाना दक्षिण भागना द्वारना कवाडेने उद्घाटित करे। (विहाडिच्चा) उद्घाटित करीने (मम पयमाणत्तियं

दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडे विहाडेहि' तमिस्रागुहायाः दाक्षिणात्यस्य- दक्षिणभागस्य द्वारस्य कपाटौ विघाटय-सम्बद्धौ उत्पाटय 'विहाडित्ता' विघाटय उद्धाटय 'मम एय-माणत्तियं पच्चप्पिणाहि त्ति' मम एताम् उक्तप्रकारामाज्ञप्तिकाम् आज्ञां प्रत्यर्पय समर्पय इति 'तएणं से सुसेणे सेणावई भरहेणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे' ततः खलु स सुषेणः सेनापतिः भरतेन राज्ञा एवम् उक्तप्रकारेणोक्तः सन् 'इद्वुत्तु चित्तमाणंदिण जाव' दृष्टतुष्ट-चित्तानन्दितः यावत् पदात् नन्दितः प्रीतिमनाः परमसौमनस्यतः इति संग्राह्यम् 'करयल परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अंजलिं कट्ठु जाव पडिसुणेइ' करतलपरिग्रहीतं शिरसावत्तं मस्तके अञ्जलिं कृत्वा यावत् पदात् एव स्वामिन् । यथा श्रीमान् भवान् आदिशति तथा-ऽस्तु इति कृत्वा अज्ञायाः विनयेन वचनं प्रतिश्रृणोति स्वीकरोति 'पडिसुणिता' प्रतिश्रुत्य स्वीकृत्य स सुषेणः सेनापतिः 'भरहस्स रण्णो अंतियाओ पडिणिक्खमइ' भरतस्य राज्ञः अन्तिकात् समीपात् प्रतिनिष्क्रामति निस्सरति, 'पडिणिक्खमिता' प्रतिनिष्क्रम्य निःसृत्य

(तएणं से सुसेणे सेणावई भरहेणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे इद्वुत्तु चित्तमाणंदिण जाव करयल परिग्गहियं दसणह सिरसावत्त मत्थए अंजलिं कट्ठु जाव पडिसुणेइ) इस प्रकार से अपने स्वामी भरत राजा के द्वारा आज्ञित हुआ सुषेण सेनापति दृष्ट तुष्ट होता हुआ चित्त में आनन्दित हुआ यहा यावत्पद से " प्रीतिमनाः परमसौमनस्यतः" इनपदों का ग्रहण हुआ है उसने उसी समय अपने दोनों हाथों कीअंगुली इस प्रकार से बनाई कि जिसमें अंगुलियों के दशों हि नख एक दूसरी अंगुली के नखों के साथ लग गये उस अंगुली को उसने अपने मस्तक पर रखा-ओर यावत्- "हेत्त्वामिन् ! आपने जो मुझे आदेश दिया है मैं उसको उसी प्रकार से पालन करुंगा" इस प्रकार कह कर उसने प्रसु की प्रदत्त आज्ञा बड़ी विनय के साथ स्विकार करली (पडिसुडित्त भरहस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमइ) प्रसु की आज्ञा स्विकार करके फिर वह

पच्चप्पिणाहि) यही मने अ०अ०-आ०। (स एणं से सुसेणे सेणावई भरहेणं रण्णा एव वुत्ते समाणे इद्वुत्तु चित्तमाणंदिण जाव करयलपरिग्गहियं दसणह सिरसावत्त मत्थए अंजलिं कट्ठु जाव पडिसुणेइ) आ प्रभाषे पौताना स्वामी भरत राजा वडे आज्ञप्त थथेहे। ते सुणेणु सेनापति इष्ट-तुष्ट तेभज्ज चित्तमा आनंदित थथे। यावत् यदथी 'प्रीतिमना' परमसौमनस्यतः 'ओ पडिउ' अहणु थथु छे तेणु तरतज्ज पौताना अन्ने ढाथेनी आंगणीओ। ओवी रीते अनापी डे ओथी आंगणीओना इथेइश नणे। इरेके इरेके नअनी साथे सलग्न थथ गथा ते अज्जिने तेणु पौताना मस्तक उपर भूही अने यावत्-डे स्वामिन् आपअीओ मने ओ आदेश आप्थे छे, हुं जे आदेशुं यथावत् पालन करीथ आ प्रभाषे कहीने तेणु प्रभुनी आज्ञा विनयपूर्वक स्वीकारी बोधी (पडिसुणिता भरहस्स रण्णो अंतियाओ पडि-णिक्खमइ) प्रभुनी आज्ञा स्वीकारीने यही ते तरत ज्ज अडार आवी गथे। 'पडिणिक्खमिता जेणेव सपभावासे जेणेव पौसहसाला तेणेव उच्चागच्छ) अडार आवीने ते जथा पौताने।

‘જેનેવ સપ્ આવાસે જેનેવ પોસહસાલા તેનેવ ઉવાગચ્છડ’ યત્રૈવ સ્વસ્ય સ્વકીયસ્ય આવાસઃ—નિવાસસ્થાન યત્રૈવ પૌષધશાલા તત્રૈવ ઉપાગચ્છતિ ‘ઉવાગચ્છિત્તા’ ઉપાગત્ય સ સુષેણઃ સેનાપતિઃ ‘દંભસંથારગં સંથરઈ’ દંભસંસ્તારક સાર્દ્ધં દ્વયહસ્તપરિમિતં દર્ભાસનં સંસ્તૃણાતિ વિસ્તૃણાતિ ‘જાવ કયમાલસ્સ દેવસ્સ અટ્ટમમત્તં પગિણ્હ’ યાવત્ કરણાત્ વર્દ્ધકિરત્નશબ્દાપનપૌષધશાલા વિધાપનાદિ સર્વં ગ્રાહ્યમ્, તેન પૌષધશાલાયાં કૃતમાલસ્ય દેવસ્ય સાધનાય અષ્ટમમત્તં પ્રગૃહ્ણાતિ ‘પગિણ્હિત્તા’ પ્રગૃહ્ણ ‘પોસહસાલાપ્ પોસહિપ્ વંમ-યારી જાવ અટ્ટમમત્તસિ પરિણમમાણસિ પોસહસાલાઓ પહિણિક્સમઈ’ પૌષધશાલાયાં પૌષધિકઃ પૌષધવ્રતવાન્ અતપ્ત્વ બ્રહ્મચારી યાવત્ પદાત્ ઉન્મુક્તમણિસુવર્ણાલંકાર ઇત્યાદિ સંગ્રાહ્યમ્ અષ્ટમમત્તે પરિણમતિ ‘પરિપ્પે જાયમાને સતિ’ પૌષધશાલાતઃ પ્રતિનિષ્ક્રામતિ, ‘પહિણિક્સમિત્તા’ પ્રતિનિષ્ક્રમ્ય ‘જેનેવ મઝ્જળધરે તેનેવ ઉવાગચ્છડ’ સ સુષેણઃ સેનાપતિઃ

વહાં સે શીઘ્ર હી બાહર આગયા—(પહિણિક્સમિત્તા જેનેવ મપ્ આવાસે જેનેવ પોમહસાલા તેનેવ ઉવાગચ્છડ) વહાં આકર વહ જહાં પર અપના આવાસ થા ઓર જહા પર પૌષધશાલા થી - વહાં પર આયા (ઉવાગચ્છિત્તા દંભસંથારગં સંથરઈ) વહાં આકર કે ઉસને ૨॥ હાથ પ્રમાણ દર્ભાસન ધિછાયા— (જાવ કયમાલસ્સ દેવસ્સ અટ્ટમમત્તં પગિણ્હ) યાવત્ કૃતમાલદેવ કો વશ મે કરને કે લિપ્ ઉસને અષ્ટમમત્ત ક્ષી તપસ્થા ધારણ કરલી યહાં યાવત્ મે પદસે વર્દ્ધકિરત્ન કા બુલાના, પૌષધશાલા કા નિર્માણ કરને કા આદેશ દેના આદિ સબ પ્રકરણ જૈસા પિછે લિખ્તા જા ચુકા હૈ વૈસાહો યહાં ગૃહીત હુમા હૈ(પગિણ્હિત્તાપોસહસાલાપ્ પોષહિપ્ વંમયારી જાવ અટ્ટમમત્તસિ પરિણમમાણસિ પોસહસાલાઓ પહિણિક્સમઈ) અષ્ટમ મત્ત કો તપસ્થા ધારણ કરકે પૌષધ શાલા મેં પૌષધવ્રત વાલા વહ્નબ્રહ્મચારી યાવત્ મણિમુક્તાદિ કેઅલંકારો સે રહિત વનકરકૃતમાલદેવ કા મનમેં ધ્યાન કરને લગા યહાં પર જૈસા કિ પૂર્વ પ્રકરણ મેં લિખ્તા જાચુકા હૈ વહ સબ ગ્રહણ કર લેના ચાહિયે જબ સુષેણ સેનાપતિ કા ગૃહીત અષ્ટમ મત્ત કા તપ સમાપ્ત હો ચુકા તબ વહ પૌષધ-શાલા સે બાહર નિકલા—(પહિણિક્સમિત્તા જેનેવ મઝ્જળધરે તેનેવઉવાગચ્છડ) ઓર બાહર નિકલ

આવાસ અને જ્યા પૌષધશાળા હટી ત્યા આગ્યા (ઉવાગચ્છિત્તા દંભસંથારગં સંથરઈ) ત્યાં આવીને તેણે ૨॥ હાથ પ્રમાણે દર્ભાસન પાંથયું. (જાવ કયમાલસ્સ દેવસ્સ અટ્ટમમત્ત પગિણ્હ) યાવત્ કૃતમાલ દેવને વશમાં કરવા માટે તેણે અષ્ટમ ભકતની તપસ્થા ધારણ કરી લીધી અહીં યાવત્ પદથી વર્દ્ધકિરત્નને ઘોલાવવો, પૌષધશાળાના નિર્માણમાટે તેને આદેશ આપવો વગેરે સર્વ ઘટનાઓએ જેનાવિષે પહેલાં સ્પષ્ટ કરવામાં આવેલ છે તે અત્રે પણ સમજવી (પગિણ્હિત્તા પોસહસાલાપ્ પોષહિપ્ વંમયારી જાવ અટ્ટમમત્ત સિ પરિણમમાણસિ પોસહસા-લાઓ પહિણિક્સમઈ) અષ્ટમ ભકતની તપસ્થા ધારણ કરીને પૌષધશાળામાં પૌષધવ્રત વાળો તે બ્રહ્મચારી યાવત્ મણિમુક્તાદિ અલંકારથી રહિત બનેલો તે મનમાં કૃતમાલદેવનું ધ્યાન કરવા લાગ્યો અહીં જે પ્રમાણે પૂર્વપ્રકરણમાં સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યું છે તે પ્રમાણેનું કથન શ્રદ્ધા કરવું જોઈએ જ્યારે સુષેણ સેનાપતિની અષ્ટમભકત તપસ્થા સમાપ્ત થઈ ગઈ ત્યારે

यत्रैव मञ्जनगृहं-स्नानगृहं तत्रैव उपागच्छति 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'ण्हाए कयबलिकम्मे' स्नातः कृतबलिकर्मा वायसादिभ्यो दत्तान्न भागः पुनः कीदृश 'कयकोउयमंगलपाय-च्छित्ते' कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तः पुनश्च 'सुद्धप्पावेसाइ मंगलाइं वत्थाइं पवरपरिहिए' शुद्ध प्रावेशानि सभा प्रवेशयोग्यानि मङ्गलानि-मङ्गलकारकाणि वस्त्राणि प्रवराणि परि-हितः परिगृहीतः 'अप्पमहग्घामरणालंकिरिय सरीरे' अल्पमहार्घाभरणालङ्कृतशरीरः तत्र अल्पम् अल्पभारं महार्घं बहुमूल्यकमाभरण तेन अलङ्कृत शोभित शरीरं यस्य स तथा एवम् 'धूपपुप्फगंधमल्लहत्थगए' धूपपुष्पगन्धमाल्यहस्तगतः तत्र धूपपुष्पगन्धमाल्यानि हस्ते गतानि यस्य स यथा एवंभूतः सेनापतिः 'मञ्जणघराओ पडिणिक्खमइ' मञ्ज-नगृहात् स्नानगृहात् प्रतिनिष्क्रमति निःस्सरति 'पडिजिक्खमिता' प्रतिनिष्क्रम्य निःसृत्य 'जेणेव तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स क्वाडा तेणेव प्हारेत्थ गमणाए' यत्रैव तमिस्रागुहायाः दाक्षिणात्यस्य दक्षिणभागवर्त्तिनो द्वारस्य कपाटी कपाटश्च कपाटश्च त्रिषु स्यादर न ना इति वाचस्पतिः तत्रैव गमनाय प्रवारि तवान् गमनसकल्पं कृतवान्

कर वह जहा स्नान गृह था वहा पर गया—(उवागच्छित्ता) वहा जाकर के (ण्हाए कयब-लिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते) उमने स्नान किया बलिकर्म किया—काक आदिकों के लिये अन्न का वितरण किया फिर कौतुक मंगल प्रायश्चित्त किये—बादमें (सुद्धप्पावेसाइ मंगलाइं वत्थाइ पवरपरिहिए) नभामें प्रवेश करने के लायक, मङ्गल कारक सुन्दर वस्त्रों को पहिरा (अप्पमहग्घामरणालंकिरियसरीरे धूपपुप्फगंधमल्लहत्थगए—मञ्जणघराओ पडिणिक्खमइ) शरीर पर अल्प पर कीमत में बहुत मूल्य वाले आभरणों को धारण किया हाथ में धूप, पुष्प गंध, एवं मालाएँ ली इस प्रकार से मज्ज घञ कर वह स्नान घर से बाहर आया (पडिणि-क्खमिता जेणेव तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स क्वाडा तेणेव प्हारेत्थ गमणाए) बाहर आकर वह जहां पर तिमिस्रागुहा के दक्षिण भागवर्त्ता द्वारो के किवाड थे उस ओर चला दिया—(तएण तस्स सुसेणस्स सेणावइस्स बहवे) उस समय उस सुषेण—सेनापति के अनेक

ते पौषधशाणाभाथी भहार नीकणीये। (पडिणिक्खमिता जेणेव मञ्जणघरे तेणेव उवागच्छित्ता अने भहार नीकणीने नया स्नान गृह इतु त्या गये। (उवागच्छित्ता) त्या नधने (ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते) तेथे स्नाना कथुं अनेपछी भली कर्म कथुं ओटवे के काक पगेरेने अन्न वितरित कथुं त्यारभाड कौतुक मंगल अने प्राश्चित्त विधि सम्पन्न करी. जेना पछी (सुद्धप्पावेसाइ वत्थाइ पवरपरिहिए) सभाभा प्रवेश करवा योग्य मंगल कारक वस्त्रो पहरेया (अप्पमहग्घामरणालंकिरियसरीरे धूप पुष्पगंधमल्ल हत्थगए मञ्जणघराओ पडिणिक्खमइ) शरीरे उपर अल्प राखु बहुमूल्य आभरण धारण कर्या हाथभां धूप पुष्प गंध तेमज्ज माणाओ लीधी अने आ प्रभावे सुसज्जत थर्धने ते स्नानगृहभांथी भहार आये। (पडिणिक्खमिता जेणेव तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स क्वाडा तेणेव प्हारेत्थ गमणाए) भहार आवी ते नया तिमिस्रागुहाना दक्षिण भागवर्त्ती द्वारना कपाटी इता ते तरङ्ग रवाना थये। (त एण तस्स सुसेणस्स सेणा स बहवे) ते अभये ते सुषेण

'तए णं तस्स सुसेणस्स सेणावड्ढम वहवे राडसरतलवरमाडविज जाव सत्थवाहप्पभियओ'
तत' तमिस्रागुहागमनसङ्कल्पानन्तर खल्ल तस्य सुपेणस्य सेनापतेः वहवः गजेश्वर तलवर
माडम्बिक यावत् कौटम्बिक इभ्यश्रेष्ठी यावत् सार्थवाहप्रभृतयः सेनापति मनुगच्छन्तीत्य-
ग्रेण सम्बन्धः अत्र यावत् पदात् गणनायक दण्डनायक मन्त्रिमहामन्त्रीत्यादयः पूर्वोक्ताः
सर्वे ग्राह्या. 'अप्पेगइया उत्पलहत्थगया जाव सुसेणं सेणावड्ढ पिट्ठओ २ अणुगच्छन्ति'
राजेश्वरादीनां मध्ये अप्येके उत्पलहस्तगताः—उत्पलानि कमलानि हस्ते येषां ते तथा,
एवं सर्वाण्यपि विशेषणानि अत्र भरतस्य चक्ररत्नपूजां कर्तुमुद्यतस्येव वाच्यानि यावत्
पदात् अप्येके कुसुमहस्तगताः अप्येके नलिन हस्तगताः, अप्येके सौगन्धिक हस्तगताः
अप्येके पुण्डरीकहस्तगताः अप्येके सहस्रपत्रहस्तगताः इति संग्राह्यम् एते एवभूताः
सन्तः सुपेणं सेनापतिं पृष्ठतः २ अनुगच्छन्ति यान्ति 'तएण तस्स सुसेणस्स सेणाव-
ड्ढस्स बह्वइओ खुज्जाओ चिलाइयाओ जाव इंगियचितियपत्थियविआणिआउ णिउण-

(राडसरतलवरमाडविज जाव सत्थवाहप्पभियओ अप्पेगइया उत्पलहत्थगया जाव सुसेण सेणावड्ढं
पिट्ठओ पिट्ठओ अणुगच्छन्ति) राजेश्वर तलवर मडम्बिक यावत् सार्थवाह आदि जन उस सुपेण
सेनापति के पीछे यावत् उत्पल को लिये हुए चल रहे थे. यहां प्रथम यावत् शब्द से 'गण-
नायक, दण्ड नायक' मन्त्री, महामन्त्री आदि जनों का ग्रहण हुआ है, इनमें कितनेक तो अपने
अपने हाथों में उत्पल लिये हुए थे 'तथा द्वितीय यावत् पदानुसारः' कितनेकने अपने अपने हाथों
में कुसुम लिये हुए थे, कितनेकने अपने अपने हाथों में नलिन—कमल विशेष—लिये हुए थे.
कितनेकने अपने अपने हाथोंमें सौगन्धिक—कमल विशेष लिये हुए थे कितनेकने अपने अपने
हाथों में पुण्डरीक लिए हुए थे कितनेकने अपने अपने हाथों में सहस्रदलों वाला कमल
लिये हुए थे" इन पदों का ग्रहण हुआ है। (तएण तस्स सुसेणस्स सेणावड्ढस्स बह्वइओ
खुज्जाओ चिलाइयाओ जाव इंगिय चितिय पत्थिय विआणिआउ निउणकुसलाओ विणीयाओ

सेनापतिना अन्ये (राडसर तलवर माडविज जाव सत्थवाहप्पभियओ अप्पेगइया उत्पलहत्थ
गया जाव सुसेण सेणावड्ढं पिट्ठओ पिट्ठओ अणुगच्छन्ति) राजेश्वरी, तलवारी, मांडविके यावत्
सार्थवाह वगेरे दोके २ सुपेण सेनापतिनी पाछण—पाछण यावत् उत्पले लधने आली
रह्या होता. अही प्रथम यावत् शब्दथी गणनायके, दंड नायके, मन्त्रीओ, महामन्त्रीओ
वगेरेनु अक्षय थयु छे अमा डेटवाक दोके तो पोत पोताना हाथेमां उत्पले लधने आली
रह्या होता. तेमज् द्वितीय यावत् पदानुसार डेटवाक पोत पोताना हाथेमां पुण्यो
लधने आली रह्या होता. डेटवाक पोताना हाथेमा नलिनो—कमल विशेष—लधने आलता
हता. डेटवाक हाथेमा सौगधिके (कमल विशेष) लधने आलता होता डेटवाक हाथेमा
पुण्डरिके लधने आलता होता डेटवाक पोताना हाथेमां सहस्रदल कमणे लधने आलता
हता. ओ पदे अक्षय थया छे (तएण तस्स सुसेणस्स सेणावड्ढस्स बह्वइओ खुज्जाओ
चिलाइयाओ जाव इंगिय चितिय पत्थिय विआणिआउ निउणकुसलाओ विणीयाओ

કુસલાઓ વિળીઆઓ અપ્પેગહ્યાઓ કલસહત્થગયાઓ જાવ અણુગચ્છંતીતિ' ન કેવલં રાજેશ્વરપ્રમુતયઃ સુષેણં સેનાપતિ મનુગચ્છન્તિ અપિતુ કિઙ્કરો જના અષ્ટાદશ દાસ્યઃ અપિ કાસ્તાં ઇત્યાહ કુઞ્જાઃ-વક્કજહ્વાઃ, ચિલાત્યાઃ-ચિલાતદેશોદ્ભવાઃ યાવત્પદાત્ વામનિકાઃ વડમિકાઃ, વર્બર્યઃ વકુશિકાઃ, જોનિક્યઃ, પલ્હવિકા ઇત્યાદયોઽષ્ટાદશ તત્તદેશોદ્ભવત્વેન તત્તન્નામિકાજ્ઞેયાઃ, કુઞ્જા વામનિકા વડમિકા ઇત્યેતાતિસ્સસ્તુ વિશેષણભૂતાઃ ઇત્યાદિપૂર્વવત્ તત્ત્વ પૂર્વાપેક્ષયાઽય વિશેષઃ કિં લક્ષણાશ્ચેત્યઃ ? 'ઈંગીય ચિતિય પત્થિયવિઆણિઆજ' ઇક્કિતચિન્તિતપ્રાર્થિતવિજ્ઞાયિકાઃ, તત્ત્વ ઇક્કિતેન નયનાદિ વેષ્ટયૈવ કથનાદિભિઃ ચિન્તિતં પ્રશ્નના મનસિ સંકલ્પિતં યદ્યત્ પ્રાર્થિત તસ્ય વિજ્ઞાયિકાઃ યાઃ તાઃ તથા, તથા નિપુણકુશલાઃ અત્યન્ત કુશલાઃ, તથા વિનીતાઃ આજ્ઞાકારિણ્યઃ અપ્યેકિકાઃ

અપ્પેગહ્યાઓ કલસહત્થગયાઓ જાવ અણુગચ્છન્તિ) કેવલ સુષેણ સેનાપતિ કે પીછે પીછે રાજેશ્વર આદિ જનમહલીહી નહીં ચલ રહો થા. કન્તુ ડનકે પછે પીછે ૧૮ પ્રકાર કો દાસિયાં મી ચલ રહી થી-ડનકે નામ ઇસ પ્રકાર સે હૈ-કોઈ કોઈ દાસિયાં ચિલાત દેશોદ્ભવાથી, ઇસલિયે ડનૈ ચિલાત કહા ગયા હૈ. યાવત્પદ સે ગૂહીત કોઈકોઈ દાસિયાં વર્બર દેશ કી થી ઇસ-લિયે ડનૈ વર્બરી કહા ગયા હૈ કોઈ વકુશ દેશ કો થી ઇસલિયે ડનૈ વકુશિકા કહા ગયા હૈ કોઈ કોઈ જોનિક દેશ કો થી ઇસલિયે ડનૈ જોનિકી કહા ગયા હૈ કોઈ કોઈ પલ્હવદેશકી થી ઇસલિયે ડનૈ પલ્હવિકા કહા ગયા હૈ ઇનમૈ કિતનીક દાસિયાં કુઞ્જા વક્ક જહ્વાઓ વાલી થી, કિતનીક વામન-જોને શરીર વાલી થી. ઓર કિતનીક દાસિયાં વડમિકા થી યે સવ ચેટિયાં-દાસિયાં નયનાદિકી વેષ્ટા સે હી કથન કી તો વાત દૂર હી રહી પ્રમુ કે દારા ચિન્તિત મન મૈ સંકલ્પિત કિયે ગયે વિષય કો, તથા પ્રાર્થિત વિષય કો જાન જાતી થી તથા યે અપને કામ મૈ નિપુણ કુશલ-અત્યન્ત કુશલ થી સાથ સાથ મૈ

અપ્પેગહ્યાઓ કલસહત્થગયાઓ જાવ અણુગચ્છન્તિ) સુગેષુ સેનાપતિની પાછળ પાછળ ઇકત રાજેશ્વર વગેરે જનમહલી જ આલી રહી હતી એવુ નથી પણ તેની પાછળ ૧૮ પ્રકારની દાસીઓ પણ આલી રહી હતી તેમના નામ આ પ્રમાણે છે. કેટલીક દાસીઓ ચિલાત દેશોદ્ભવા હતી, એથી તેમને ચિલાત કહેવામા આવે છે, યાવત્ પદથી ગૂહીત કેટલીક દાસીઓ બર્બર દેશની હતી, એથી તેમને બર્બરી કહેવામા આવી છે. કેટલીક દાસીઓ બકુશ દેશની હતી, એથી તેમને બકુશી કહેવામા આવી છે. કેટલીક દાસીઓ જોનિક દેશની હતી, એથી તેમને જોનિકી કહેવામા આવી છે. કેટલીક દાસીઓ પલ્હવ દેશની હતી એથી તેમને પલ્હવિકા કહેવામા આવી છે એ દાસીઓમા કેટલીક દાસીઓ કુખ્જ વક્કજહ્વાઓ વાળી હતી. કેટલીક વામન કી ગણુ શરીરવાળી, કેટલીક દાસીઓ વડમિકા હતી, એ બધી દાસી-ઓમાથી ક'ઈક કહ્યા પહેલાં જ નયનાદિની ચેષ્ટાઓથી, પ્રભુ વડે ચિતિતમનમા સંકલ્પિત કરવામા આવેલા વિષયને તથા પ્રાર્થિત વિષયને આણી દેતી હતી, એ દાસીઓ પોતાના કામમા નિપુણ કુશલ-અત્યંત કુશલ હતી, એ દાસીઓ વિનીત અને આજ્ઞા કારિણી પણ હતી. એમા કેટલીક દાસીઓના હાથોમા અન્દનના કળશો હતા અહીં યાવત્ પદથી પૂર્વો-

कलशहस्तगताः यावत् अनुगच्छन्ति, यावत् पदात् पूर्वोक्तं सर्वं ग्राह्यम् 'तएण मे सुसेणे सेणावई सन्विद्धीए सव्वजुइ जाव णिग्घोसणाइएणं जेणेव तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडा तेणेव उवागच्छइए' ततः तमिस्रागुहाभिमुखगमनान्तरं खलु स स्पेणः सेनापतिः सर्वद्ध्यां सर्वया ऋद्ध्या आभरणादि रूपया लक्ष्म्या तथा सर्वद्यूत्या सर्वकान्त्या युक्तः सन् यावन्निर्घोपनादितेन पूर्वोक्तसमस्तवाद्यसहित निर्घोप नामक वाद्यविशेषशब्देन यत्रैव तमिस्रागुहाया दक्षिणात्यस्य-दक्षिणभागवर्तिनो द्वारस्य कपाटौ तत्रैवोपागच्छति 'उवागच्छित्ता' उपागत्य-कपाटसमीपमागत्य 'आलोए पणाम करेइ' आलोके दर्शनमात्रे एव कपाटयोः प्रणाम करोति 'करित्ता' कृत्वा 'लोमहत्थग परामुसइ' लोमहस्तकं प्रमार्जनिकां परामृशति हस्तेन स्पृशति गृह्णातीत्यर्थः 'परामुसित्ता' परामृश्य गृहीत्वा 'तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडे लोमहत्थेणं पमज्जइ' तमिस्रा गुहायाः दक्षिणात्यस्य द्वारस्य कपाटौ लोमहस्तकेन प्रमार्जनिकया प्रमार्जयति 'पमज्जित्ता' प्रमार्ज्य 'दिग्वाए उदगधाराए अब्भुक्खेइ' दिव्यया उदकधारया अभ्युक्षति सिंचति स्नपयतीत्यर्थः, 'अब्भुक्खित्ता' अभ्युक्ष्य सिंचित्वा

ये विनीत आज्ञा कारिणी श्री. इनमें कितनीक दासियों के हाथ में चन्दन के कलश थे. यहां यावत्पद से पूर्वोक्त सब विषय गृहीत हुआ है . (तएण से सुसेणे सेणावई सन्विद्धीए सव्वजुइए जाव णिग्घोसणाइएणं जेणेव तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडा तेणेव उवागच्छइ) इस प्रकार वह सुषेण सेनापति अपनी समस्त ऋद्धि से और समस्त धृति से युक्त हुआ यावत् बाजों के गडगडाहट के साथ साथ जहा पर तिमिस्रा गुहा के दक्षिण द्वार के किवाड़ थे वहां पर आ पहुचा. (उवागच्छित्ता आलोए पणामं करेइ, करित्ता लोमहत्थगं परामुसइ.) वहां आकर उसने उन कपाटों को दिखते ही प्रणाम किया प्रणाम करके फिर उसने लोमहस्तक प्रमार्जनिका— को उठाया (परामुसित्ता तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडे लोमहत्थेणं पमज्जइ) उसे उठाकरके उसने तिमिस्र गुहा के दक्षिण दिग्वातीद्वार के कपाटों को साफ किया—(पमज्जित्ता) साफ करके (दिग्वाए उदगधाराए अब्भुक्खेइ) फिर उन पर उसने दिव्य—उदक की धारा छोड़ी अर्थात् दिव्य उदक धारा के उन पर छीटे

कत सर्वविषय संगृहीत थये छे. (त एणं से सुसेणे सेणावई सन्विद्धीए सव्वजुइए जाव णिग्घोसणाइए णं जेणेव तिमिस्र गुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडा तेणेव उवागच्छइ) आ प्रभावे ते सुषेण सेनापति पोटानी समस्त ऋद्धिअने समस्तधृतिथी युक्त थयेदे यावत् बाधोना ध्वनि आथे अया तिमिस्रा गुहाया दक्षिण द्वारना कमाठ डेतात्था आवी पडोत्था. 'उवागच्छित्ता आलोए पणामं करेइ करित्ता लोमहत्थगं परामुसइ' त्यां आवीने तेणे ते कमा डेने नेधने प्रणाम कथां प्रणाम करीने पछी तेणे लोम हस्तक प्रमार्जनिका डायमां दीधी. 'परामुसित्ता तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडे लोमहत्थेणं पमज्जइ' डायमां धधने तेणे तिमिस्र गुहाया दक्षिण दिग्वाती द्वारना कपाटोने साइ कथां (पमज्जित्ता) साइ करीने 'दिग्वाए उदगधाराए अब्भुक्खेइ' पछी तेणे तेमनी उपर दिव्य उदक धारा छोड़ी ओटवे के

‘सरसेण गोसीसचंदणेण पंचगुलितले चच्चए दलइ’ सरसेन रससहितेन गोशीर्ष-
चन्दनेन गोरोचनमिश्रितचन्दनविशेषेण चर्चितम् अनुलिप्तम् पञ्चांगुलितलं ददाति
‘दलइत्ता अग्गेहिं वरेहिं गंधेहिय मल्लेहिय अच्चिणेइ’ अग्रैः—अपरिभुक्तैः अभिनवैरित्यर्थः
वरैः श्रेष्ठैः गन्धैश्च माल्यैश्च अर्चयति स सुषेणः सेनापतिः कपाटौ पूजयति ‘अच्चिणित्ता’
अर्चयित्वा ‘पुष्फारुहणं जाव वत्थारुहणं करेइ’ पुष्पारोपणम् यावत् वस्त्रारोपणम् यावत्
पदात् माल्यारोपणं वर्णारोपणं चूर्णारोपणम् आभरणारोपणं करोति ‘करित्ता’ कृत्वा
‘आसत्तो सत्तविपुलवट्ट जाव करेइ’ आसत्तोत्सक्तविपुलवर्त्तयावत्करोति तत्र आसक्तः आ-
अवाङ्मुखः अधोमुखो भूत्वा सक्तः भूमौ संलग्नः उत्सक्तः उ—उपरि सबद्धः यः विपुलः
विशालः वर्त्तः गोलाकारः यावत् चाक्यचिक्ययुक्तः मुक्तादामविलम्बिविम्बः, चितानः
चंदनवा इति भाषाप्रसिद्धः सः सौन्दर्यादि गुणग्रामगरिष्ठो यथा स्यात् तथा करोति-स-
योजयति । ‘करित्ता’ कृत्वा ‘अच्छेहि’ अच्छैः बिमलैः ‘सण्हेहि’ श्लक्ष्णै अतिप्रतलै चि -

दिये(अम्बुक्खेत्ता सरसेण गोसीसचंदणेण पंचगुलितले चच्चए दलइ) दिव्य उदक धारा के छीटे
देकर फिर उसने सरस गोशीर्षचन्दन से—गोरोचनमिश्रित चन्दन से—अनुलिप्त पञ्चाङ्गुलितल दिया
अर्थात् गोशीर्ष चन्दन के बड़ा पर हाथे लगाये—(अग्गेहिं वरेहिं गंधेहिय मल्लेहिय अच्चिणेइ)
इमके बाद फिर उस सुषेण सेनापतिने उन कपाटों की अभिनव श्रेष्ठ गन्धों से और मालाओं से
पूजा की (अच्चिणित्ता पुष्फारुहणं जाव वत्थारुहण करेइ) पूजा करके फिर उसने उनके ऊपर
पुष्पों का आरोहण यावत् वस्त्रों का आरोहण किया । यहां यावत्पद से “माल्यारोपणं वर्णा-
रोपणं चूर्णारोपणं आभरणारोपणं करोति” इस पाठ का समग्र हुआ है (करित्ता आसत्तोत्स-
विपुल वट्ट जाव करेइ) इन सब वस्तुओं का वहां पर आरोपण करके फिर उसने उनके ऊपर
एक चन्दनवा ताना जो आकार में गोल था । तथा विस्तृत था । नीचेकी ओर उसका मुख
यावत् वह चाक्यचिक्य से युक्त था । मुक्ता दाम से वह विशिष्ट था । तथा जिस प्रकार से
उसके सौन्दर्य की अभिवृद्धि हो—इस ढंग से वह सजाया गया था । (करित्ता अच्छेहिं सण्हेहिं

दिव्य उदकधाराणां तेभ्यो उपर छाटा नाभ्या (अम्बुक्खेत्ता सरसेण गोसीसचंदणेण पंचगुलि-
तले चच्चए दलइ) उदक धाराणां छाटा दधने पछी तेणे सरस गोशीर्ष चन्दन थी गोरीअर
मिश्रित चन्दन थी अनुलिप्त पञ्चांगुलितल अट्टे के गोशीर्ष चन्दनना त्यां हाथना थापाओ
लगाओ (अग्गेहिं वरेहिं गंधेहिय मल्लेहिय अच्चिणेइ) त्थार आठ ते सुषेण सेनापतिओ
कपाटोनी अभिनव श्रेष्ठ गन्धो थी अते भाणाओ थी पूजा करी ‘अच्चिणित्ता पुष्फारुहणं जाव
वट्ट हणकरेइ’ पूजा करीने तेणे तेभ्यो उपर पुष्पोनु आरोहण यावत् वस्त्रोनु आरोपण
कथु” अही था यावत्पद थी (माल्यारोपणं वर्णारोपणं चूर्णारोपणं आभरणारोपणं करोति) आं पाठ
ने। स अठ थयो छे (करित्ता आसत्तोत्स विपुल वट्ट जाव करेइ) ओ सव वरेणोनु
तेभ्यो उपर आरोपण करीने पछी तेणे तेभ्यो उपर ओक विस्तृत, तेभ्यो गोण अहरवा
आंथो ते अहरवाना नीथेना भाग आक्यचिक्य थी (अमकदार) युक्त हतो तेभ्यो ने रीते
ते अहरवाना सौन्दर्य भा अभिवृद्धि थाय ते रीते तेने सुसज्जित करवाना आंथो हतो।

णैरित्यर्थः 'सेएहिं' श्वेतै रययामएहिं' अच्छरसतण्डुलैः तत्र अच्छो निर्मलो रसो विम्बो येषां ते अच्छरसाः प्रत्यासन्न वस्तु प्रतिविम्बाधारभूता इव अतिविमला इति भावः एवं भूतैः तण्डुलैः 'तिमिस्सगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडाणं पुरओ अट्ठमंगलए आलिहइ' तमिस्रागुहायाः दाक्षिणात्यस्य दक्षिणदिग्वर्त्तिनो द्वारस्य कपाटयोः पुरतः अग्रे अष्टाष्टमङ्गलकानि स्वस्तिकादयोऽष्टाष्टमाङ्गल्यवस्तूनि आलिखति अत्र चाष्टाण्टेति वीप्सावचनात् प्रत्येकमष्टौ अष्टौ आलीखतीति विज्ञेयम्, तान्येव अष्टप्रदर्शयन्ते 'तं जहा सोत्थिय सिरिवच्छं जाव' इति तद्यथा स्वस्तिक १ श्री वत्स २ यावत् नन्दिकावर्त्त ३ वर्द्धमानक ४ भद्रासन ५ कलश ६ मत्स्य ७ दर्पणानि अष्टमङ्गलकानि 'आलिहिया'

रययामएहिं अच्छरसातडुलेहिं तिमिस्सगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडाणं पुरओ अट्ठमंगलए आलिहइ) चन्द्रवा को किवाडों के ऊपर बाधकर फिर उसने स्वच्छ महीन चांदी के चावलों से कि जिनमें स्वच्छता के कारण पास में रही हुई वस्तुओं का प्रतिविम्ब पड़ता था । तिमिस्सगुहा के दक्षिण द्वारवर्ती उन किवाडों के समक्ष आठ आठ मंगल द्रव्यों का आलेखन किया अर्थात् प्रत्येक मंगल द्रव्य आठ आठ की संख्या में लिखे । "तं जहा" वे आठ मंगल द्रव्य इस प्रकार से हैं—(सोत्थिय-सिरिवच्छ जाव कयगगह गहिय करयलपम्भट्टचंदप्पभवहरवेरुल्लिय-विमलदहं) स्वस्तिक, श्री वत्स यावत्-नन्धावर्त्त, वर्द्धमानक, भद्रासन, कलश, मत्स्य और दर्पण । यहा यावत् पद से इस पाठ का ग्रहण हुआ है । (आलिहिया काऊं करेइ, उवयारत्ति कित्ते पाडलमल्लिय चपगमसोग पुण्णाग चूमजरीणवमल्लिय वकुलतिलग कणवीर कुंदकोज्जय कोरंटय पत्तदमणयवरसुरहिं सुगघगघियस्स) इस पाठ का अर्थ इस प्रकार से है—एक एक मङ्गल द्रव्य को आठ आठ रूप में लिखकर फिर उसने उन पर रंग भरा रंग भरकरके फिर उसने उन सब का इस प्रकार से उपचार किया गुलाबके फूल, बेलाके फूल, चम्पकके फूल, अशोकके फूल,

करित्ता अच्छेहिं सण्हेहिं रययामएहिं अच्छरसातडुलेहिं तिमिस्स गुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडाणं पुरओ अट्ठमंगलए आलिहइ) चन्द्रवाने कपाटोनी उपर आधीने पछी तेणे स्वच्छ जीष्वा याहीना योआथी के ने योआयोमां स्वच्छताने दीधे पांसे भूकेवी परतुंओनु प्रतिभिंअ पछी रद्युं डतुं तिमिस्स गुहाणा दक्षिण द्वारवर्ती ते कपाटोनी सामे आठ आठ मंगल द्रव्योनु आलेखन कयुं ओट्टे के प्रत्येक मंगल द्रव्य आठ आठ नेटवी संख्यामा लण्था (तं जहा) ते आठ मंगल द्रव्यो आ प्रभाण्णे छे. (सोत्थिय—सिरिवच्छ जाव कयगगहगहियकरयलपम्भट्ट ? चंदप्पभवहरवेरुल्लिय विमलदहं) स्वस्तिक, श्रीवत्स यावत् नन्धावर्त्त, वर्द्धमानक, भद्रासन, कलश, मत्स्य अने दर्पण्णे अही यावत् पडथी आ पाडेने स अहं थये छे, (आलिहिया काऊं करेइ, उवयारत्ति कित्ते पाडलमल्लिय चपग मसोग पुण्णाग चूम मंजरीणवमल्लिय वकुल तिलगकणवीर कुंदकोज्जय कोरंटय पत्त दमणयवरसुरहिं सुगघग घियस्स) आ पाडेने अर्थ आ प्रभाण्णे छे—जेक जेक-मंगल द्रव्यने आठ आठ रूपमां लणीने तेणे तेमनी उपर रंग अर्थो रंग अशीने पछी ते तेणे ते सर्वानो आ प्रभाण्णे उपचार कर्थो शुद्धाणना पुण्णे वेदाना पुण्णे, अ पकना पुण्णे

આલિલ્ય આકાર કૃત્વા 'કાઝરં' અન્તવર્ણકાદિ ભરણેન પૂર્ણાનિ કૃત્વા 'કરેઈ ઉવયારં
 ત્તિ' કરોતિ ઉપચારમિતિ કોડસૌ ઉપચાર इत्याह 'किंते' ! કોડસૌ તત્રાહ— 'પાટલમ—
 લિલય ચંપગ અસોગ પુણ્નાગ ચૂયમજરી ણવમાલિય વકુલતિલગ કળવીરકુંદકોઝ્જય
 કોરટય પત્તદમળય વરસુરહિ સુગંધગંધિયસ્સ' પાટલ મલિકા ચમ્પકાશોક પુન્નાગ
 ચૂતમઝરી નવમાલિકા વકુલતિલક કળવીરકુંદ કુઝ્જક કોરણ્ટકપત્રદમનક વરસુરમિ
 સુગન્ધગન્ધિકસ્ય તત્ર પાટલ-પાટલપુષ્પમ્ (ગુલાવ) इति પ્રસિદ્ધમ્ મલિકા-મલિકા
 ધિકૃતિપુષ્પમ્ (વેલીતિ) માપાપ્રસિદ્ધમ્ ચમ્પકા શોકપુન્નાગાઃ પુષ્પવિશેષાઃ, ચૂતમ-
 ઝરી આમ્રમજ્જરી, વકુલઃ કેસરો યઃ સ્ત્રીમુખ સીધુસિક્તો વિકસતિ તત્પુષ્પમ્, તિલકો
 યઃ સ્ત્રીઋટાક્ષનિરીક્ષિતો વિકસિતો ભવતિ તત્પુષ્પમ્, કળવીર કુંદે પ્રસિદ્ધે, કુઝ્જકમ્,
 ક્રૂગો નામ વૃક્ષવિશેષસ્તત્પુષ્પમ્, પત્રાણિ દમનકઃ પુષ્પવિશેષઃ एतैઃ વરસુરમિઃ અત્યન્ત
 સુરમિઃ તથા સુગન્ધાઃ શોભનચૂર્ણા તેષા ગન્ધો યત્ર સ તથા તસ્ય અત્ર તદ્વિતલક્ષણ
 ઇક્ પ્રત્યયઃ તતઃ વિશેષણદ્વયસ્ય કર્મધારયો બોધ્યઃ इदञ्च कुसुम निकरस्येत्यस्य
 વિશેષણમ્ યાવત્ પદગ્રાહ્યમ્, પુનશ્ચ 'કયમ્ગ્રાહ્યગ્રહિય કરયલ પઠમઠ્ઠ ચંદપ્પભવરવેરુલિય—
 વિમલદંડ જાવ ધૂવં દલયડ' કચગ્રહગ્રહીત કરતલ પ્રમ્રષ્ટ ચન્દ્રપ્રભવજ્જવૈદૂર્યવિમલદંડ
 યાવત્ ધૂપં દહતિ, અત્ર કચગ્રહેત્યાદેઃ પ્રમ્રષ્ટેત્યન્તસ્ય કચગ્રહગ્રહીત કરતલવિપ્રમુક્ત
 પ્રમ્રષ્ટસ્ય દશાર્દ્ધવર્ણમ્ય પઠચવર્ણસ્ય કુસુમનિકરસ્ય પુષ્પપુક્કસ્ય તત્ર ચિત્ર જાનૂત્સેધ-
 પ્રમાણમિતમ્ અવધિનિકરં કૃત્વા ઇતાવત્પર્યન્તં તાત્પર્યમ્, તત્ર કચગ્રહો ત્રિલાસાર્થ
 યુવત્યાઃ પઠચાદ્ગુલિભિઃ કેશેષુ ગ્રહણં તન્ન્યાયેન ગૃહીતઃ તથા તદનન્તરં કરતલાદિ
 પ્રમુક્તઃ સન્ પ્રમ્રષ્ટઃ પતિતઃ તસ્ય તથા દશાર્દ્ધવર્ણસ્ય પઠચવર્ણસ્ય કુસુમનિકરસ્ય પુષ્પ-
 રાશેઃ તત્ર ઋપાટપરિકરભૂપો જાનૂત્સેધપ્રમાણમિતમ્ જાનું યાવદુચ્ચત્વપ્રમાણપરિમિતમ્
 અષ્ટાવિંશત્યંગુલરૂપમ્ અવધિનિકરમ્ અવધિના મર્યાદયા નિકરં વિસ્તારકૃત્વા 'ચંદપ્પ
 વરવેરુલિયવિમલદંડ જાવ ધૂવં દહઈ' ચન્દ્રપ્રમાઃ ચન્દ્રકાન્તાઃ વજ્રાણિ-હીરકાઃ વૈદૂ-
 ર્યાણિ વૈદૂર્યનામક રત્નાનિ વજ્રઠ્ઠચમણિ રત્નમત્તિચિત્રમિત્યારમ્ય કહ્હુચ્છુકં પ્રમુશ

પુન્નાગકે ફૂલ, આમ્રકી મજ્જરી, વકુલકી કેશર-તિલક કે પુષ્પ, કનેર કે પુષ્પ, કુઝ્જક કે
 પુષ્પ, દમનક મરુવા-કે પુષ્પ જો કે વહુત હી સુગવ સે યુક્ત હોતે હૈં ડન પર ચઢાયે હસકે
 બાદ ડસને કચગ્રહ કી તરહ ગૃહીત પશ્ચાત્ કરતલ સે પ્રમ્રષ્ટ દશાર્દ્ધ વર્ણ વાલે પુષ્પનિકર
 કા વહાં પર જાનુત્સેધપ્રમાણ પરિમિત ઢેર કર દિયા ફિર જિસકા દંડ ચન્દ્રકાન્ત વજ્ર ઇવ વૈદૂર્ય
 સે નિર્મિત હુઆ હૈ તથા યાવત્પદ ગૃહીત જિસ મેં કાઠ્ઠચન મણિ ઓર રત્નો સે નાના પ્રકાર કે

અશોકના પુષ્પો પુન્નાગના પુષ્પો, આમ્રની મજ્જરી, વકુલના કેશર, તિલકના પુષ્પો, કણેર
 ના પુષ્પો કુઝ્જકના પુષ્પો, દમનક મરવાના પુષ્પો કે જેઓ અતીવ સુગંધિત હોય છે. તેમની
 ઉપર ચઢાવ્યા ત્યારબાદ તેણે કચ ગ્રહની જેમ ગૃહિત પશ્ચાત્ કરતલથી પ્રમ્રષ્ટ દશાર્દ્ધ-
 વર્ણના પુષ્પ નિકરને ત્યાં જાનૂત્સેધ પ્રમાણે પરિમિત હગલો કર્યો પછી જેમની ઢાંડી
 ચન્દ્રકાન્ત, વજ્ર તેમજ વૈદૂર્યથી નિર્મિત થયેલી છે તેમજ યાવત્ પદ ગૃહીત જેમાં કાચન મણી

પ્રયતઃ ઇત્યન્તં ગ્રાહ્યમ્ એતાદૃશ વિશેષણવિશિષ્ટમ્ 'કહ્લુચ્છુકં' ધૂપાધાનપાત્રમ્ પ્રગૃહ્ય ગ્રહીત્વા 'પ્રયતઃ' સાદરઃ આદ્રિયમાણો-ધૂપં દદાતિ દહતીત્યર્થઃ- 'દહિતા' દગ્ધ્વા 'વામ જાણું અંચેડ દાહિણં જાણું ધરણિયલસિ નિહદ્દુ' ઇત્યપિ ગ્રાહ્યમ્ તથા ચ વામ જાનુમ્ અઠ્ચતિ ઋર્ધ્વ- કૂરોતી, દક્ષિણં જાનું ધરણીતલે નિહત્ય સ્થાપયિ વા પાતયિત્વા 'કરયલ જાવ મત્થપ અંજલિ કદ્દુ કવાઢાણ પળામં કરેઈ' કરતલ પરિગૃહીતં દશનં શિરસા-વતં મસ્તકં અંજલિદ્કૃત્વા કપાટયોઃ પ્રણામં કરોતિ નમનોય વસ્તુનઃ ઉપચારં ક્રિયમાણે આદાવન્તે ચ પ્રણામમ્ય શિ ષ્ઠ્યવહારૌચિત્યાત્ 'કરિત્તા' કૃવા 'દંઢરયણ પરામુસડ' દળ્ઢરત્ન પરામુગતિ સ્પૃગતિ ગૃહ્ણ- તિ 'તપ્ણં તં દંઢરયણં' તતઃ તદનુ દળ્ઢરત્નસ્પર્શાનન્તરં સ્વલુ તદળ્ઢરત્ન કીદૃશ તદિત્યાદ્ 'પંચલહ્યં' પઠ્ચલતિકમ્ પઠ્ચલતિકાઃ કત્તલિકારૂપાઃ અવયવા યત્ર તત્તથા પુનશ્ચ કીદૃશમ્ 'વહર સારમહ્યં વજ્ર સારમયમ્ વજ્રસ્ય યત્સારં પ્રધાનદ્રવ્યં તન્મયમ્-તદ્ ઘટિતમ્ વજ્રસ્ય યત્સારં પ્રધાનદ્રવ્યં તન્મયમ્-તદ્ ઘટિતમ્ વજ્રવદ્ પુનશ્ચ 'વિનાસણ સબ્વસત્તુ સેણાણં' સર્વશત્રુ સેનાનાં વિનાશનં વિનાશરૂપમ્ પુનશ્ચ કીદૃશમ્ 'સંધાવારે ણરવહસ્સ મહ્દરિ- વિસમપમ્મારગિરિવરપવાયાણં સમીકરણં' સ્કન્ધાવારે નરપતેઃ ગત્તદરી વિપમપ્રાગ્મારગિ-

ચિત્ર બનાયે ગયે હૈ એસે ધૂપકટાહ કો હાથ મે ઢેકર વઢી સાવધાની સે ડામમેં ધૂપ જલાઈ (દહિતા વામ જાણુ અંચેડ દાહિણ જાણુ ધરણિયલસિ નિહદ્દુ કરયલ જાવ મત્થપ અંજલિ કદ્દુ કવાઢાણ પળામં કરેઈ) ધૂપજલા કર ફિર ડસને અપનો બાઈ જાનુ કો ઘુટને કો જમીન સે ડપર રલા ઓર દક્ષિણ જાનુ કો જમીન પર સ્થાપિત કિયા ઓર ડોનોં હાથો કી ડસ ઢગ સે અંજલિ બનાઈ કિ જિસમેં દશોં અગુલિયોં કે નલ આપસ મે મિલ જાવે એસી અંજલિ બનાકર ડસને ડસ અંજલિ કો મસ્તક પર રલ્લકર ડોનોં કિવાઢોં કો પ્રણામ કિયા ક્યોંકિ નમનોય વસ્તુ કે ડપચાર મેં આદિ ઓર અન્ત મેં ડસે પ્રણામ કિયા જાતા હૈ એસા શિષ્ટ જનોં કા વ્યવહાર હૈ । (કરિત્તા દંઢરયણ પરામુસડ) પ્રણામ કરકે ફિર ડસને દળ્ઢરત્ન કો ડઠાયા (તપ્ણં તં દંઢરયણં પંચલહ્યં વહરસારમહ્યં વિનાસણં સબ્વ સત્તુસેણાણં સંધાવારે ણરવહસ્સ મહ્દરિવિસમપમ્માર- ગિરિવરપવાયાણં સમીકરણં સત્તિકરં સુમકર હિતકરં રણો હિયઈચ્છિય મળોરહપૂરગ દિવ્વમપ્પહિ-

અને રત્નોથી વિવિધ પ્રકારના ચિત્રો તૈયાર કરવામાં આવ્યા છે એવા ધૂપકટાહ-ધૂપદાનીને હાથમાં લઈને ખૂબજ સાવધાનીથી તે ધૂપ કટાહમાં ધૂપ સળગાવે। (દહિતા વામ જાણું અંચેડ દાહિણ જાણું ધરણિયલસિ નિહદ્દુ કરયલજાવ મત્થપ અંજલિ કદ્દુ કવાઢાણ પળામં કરેઈ) ધૂપ સળગાવીને પછી તેણે પોતાના વામ ઘૂટણને જમીન ઉપર સ્થાપિત કર્યો અને બંને હાથોની આ પ્રમાણે સુદ્રા બનાવી કે જેમાં દશે દશ આંગળીઓના નખો પરસ્પર લેગા થઈ જાય એવી આંગળીની સુદ્રાબનાવીને તેણે તે અંગળીને મસ્તક ઉપર મૂકી અને બંને કપાટો નેપ્રમાણ કર્યા કેમકે નમનોય વસ્તુના ઉપચારમાં આદિ તેમજ અંતમાં તેને પ્રણામ કરવામાં આવે છે, એવો શિષ્ટાચાર છે. (કરિત્તા દંઢરયણ પરામુસડ) પ્રણામ કરીને તેણે હંઠ રત્નને ડેહાંચું (તપ્ણં તં દંઢરયણં પંચલહ્યં વહરસારમહ્યં વિનાસણં સબ્વસત્તુસેણાણં સંધાવારે ણરવહસ્સ મહ્દરિ વિસમપમ્મારગિરિવરપવાયાણ સમીકરણં સંતિકરં સુમકરં હિતકરં રણોહિય ઇચ્છિય મળોરહપૂરગ દિવ્વમપ્પહિયં વહરયણ મહાય સત્તુ પયાઈ પચ્ચોસકકઈ) એ હંઠના અવયવો પચ્ચલતિકા-કતલિકા રૂપ હતા. એ હંઠ રત્ન વજ્રના સારથી બનેલું હતું. સર્વ શત્રુઓ તેમજ તેમની સેનાઓને તે વિનષ્ટ કરનાર હતું રાબાના

ચિરપ્રપાતાનાં સમીકરણમ્ તત્ર નરપતેઃ રાજ્ઞઃ સ્કન્ધવારે સેનાસમૂહસન્નિવેશે પ્રસ્તાવાદ્ ગન્તું પ્રવૃત્તે સતિ ગર્ત્તઃ ગહ્વા, ઇતિ ભાષાપ્રસિદ્ધમ્ દરી કન્દરા વિષમઃ ડન્નતાડવનતા પ્રાગ્મારાઃ પ્રકૃષ્ટમારાઃ ગિરિવરાઃઅત્ર ગિરિશબ્દેન શુદ્રગિરયો ગ્રાહ્યાઃ યે યાત્રોન્મુસ્વાનાં રાજ્ઞાં ગચ્છન્તઃ સૈન્યસમૂહસ્ય વિધનકરાઃ સન્તિ પ્રપાતાઃ ગચ્છતાં જનાનાં સ્વલનદેતવઃ પાષા-
ણાઃ તેષાં સમીકરણમ્ સમભાગાપાદકમ્ 'સંતિકરં' શાન્તિકરમ્ ઉપદ્રવશાન્તિકારકમ્ નન્તુ યદિ ઉપદ્રવોપશમકં તત્ તર્હિ સતિ દળ્હરત્ને સગરસુતાનાં જ્વલનપ્રભ નાગધિપ કૃતોપદ્રવઃ કથં નોપશશમ ઇતિ ચેન્ન સોપક્રમોપદ્રવ વિદ્રાવણ એવ તસ્ય સામર્થ્યાત્ અનુક્રમોપદ્રવ વિદ્રાવણે સર્વથા તસ્ય સામર્થ્યાભાવાત્ અતએવ વિજયમાને વીરદેવે કુશિષ્યમુક્તા તેજોલેશ્યા સુનક્ષત્ર સર્વાનુમતો અનગારો મસ્મતાં નિનાયઃ, 'શુભકરં' શુભકરમ્—કલ્યાણકરમ્ 'હિતકરં' હિતકરમ્ ઉત્તૈરેવ ગુણો રુપકારકારકમ્, પુનઃ કોદશમ્ 'રણ્ણો હિય ઇચ્છિયમણોરહપૂરગં'

હયં દંડરયણ ગહાય સત્તદ્રુપયાઈ પચોસકઠ્ઠ) હસદળ્હ કે અવયવ-પચ્ચલતિ કા કત્તલિકા રૂપ થે—યહ દળ્હરત્ન વજ્ર કે સાર સે બના હુઆ થા સમસ્ત શત્રુઓં કા ઔર ડનકી સેનાઓં કા યહ વિનાશ કરને બાલા થા ! રાજા કે સેના સમૂહ કે સન્નિવેશ મેં—પઢાવ મેં ગહ્વોં કો દરીયોં કો,—કન્દરાઓં કો—ઝંચે નીચે ઓટે ઓટે પર્વતોં કો, યાત્રા કે સન્મુસ્સ હોકર જાનેવાલે રાજાઓં કી સેના કે ફિસલકર ગિરને મેં —કારણમૂત હોતે હૈં એસે પાષાણોં કો યહ સમ કર દેતા હૈ તથા યહ—શાન્તિકર હોતા હૈ—ઉપદ્રવોં કો દૂર કર દેતા હૈ । યહા એસી આશકા હો સકતી હૈ કિ યદિ યહ દળ્હરત્ન ઉપદ્રવોં કો શાન્ત કરને કી શક્તિબાલા હૈ તો દળ્હરત્ન કે હોને પર મી સગર કે પુત્રોંકા જ્વલનપ્રભનાગાધિપ દ્વારા કિયા ગયા ઉપદ્રવ શાન્ત ક્યોં નહીં હો પાયા તો હસકા સમાધાન એસો હૈ કી યહ દળ્હરત્ન—સોપક્રમ ઉપદ્રવોં કો હો શાન્ત કરને મેં શક્તિ વાલા હોતા હૈ । અનુપક્રમ ઉપદ્રવોં કો શાન્ત કરને કી શક્તિવાલા નહીં હોતા હૈ હસલિષ્ વીર દેવ કે વિચમાન હોને પર કુશિષ્યમુક્ત—તેજોલેશ્યા ને સુનક્ષત્ર ઔર સર્વાનુમતિ નામક દો અનગારોં કો મસ્મ કર દિયા । યહ ચક્રત્ન શુભકર કલ્યાણકર હોતા હૈ એવં હિતકર ઉક્તગુણો દ્વારા ઉપકાર

સૈન્ય સમૂહને સન્નિવેશમા પઢાવમા ખાડાઓને ફરિઓને ઠ દરાઓને ઉઆ નીચા પર્વતોને યાત્રા કરતી વખતે રાજાઓની સેના જેમના ઉપશ્થી લપસી પડે ઓવા પાષાણોને એ સમ કરી નાખે છે તેમજ એ શાંતિકર હોય છે ઉપદ્રવોનું ઉપશમન કરે છે અહીં ઓવી શંકા થાય છે કે એ એ ઠંડરત્ન ઉપદ્રવોને શાંત કરી શકે ઓવી શક્તિ ધરાવતું હોય તો ઠંડરત્ન હોય તો પણ સગરના પુત્રોનું જ્વલન પ્રભનાગાધિપ વડે કરવામાં આવ્યું તે વખતે ઉપદ્રવનું ઉપશમ કેમ થયું નહીં તો આ શંકાનું સમાધાન આ પ્રમાણે છે કે આ ઠંડરત્ન સોપક્રમ ઉપદ્રવો ને શાંત કરવા સમર્થ હોય છે અનુપક્રમ ઉપદ્રવોને શાંત કરવાની શક્તિ એમાં હોતી નથી અને ઓથી જ વીરદેવ વિચમાન હોતા છતાં એ કુશિષ્ય મુક્તતેજો લેશ્યાને સુનક્ષત્ર અને સર્વાનુમતી નામક એ અનગારો ને લક્ષમ કરી નાખ્યા. એ ચક્રત્ન શુભકર—કલ્યાણ કર હોય છે. તેમજ હિતકર હોય છે (રણ્ણો હિય ઇચ્છિય મણોરહ

राज्ञः चक्रवर्त्तिनो हृदयेच्छ्रुतमनोरथपूरकम्, गुहाकपटोदघाटनादिकार्यकरणसमर्थत्वात्
'दिग्ब' दिव्यम्-यक्षसहस्राधिष्ठितमित्यर्थः 'अप्पडिहयं' अप्रतिहतम्-क्वचिदपि प्रति-
घातमनापन्नम् 'दंडरयणं' दण्डरत्नम्-दण्डनामकं रत्नम् 'गहाय' हस्ते गृहीत्वा 'सत्त-
दुपयाई पच्चोसक्कई' सप्ताष्टपदानि प्रत्यवष्ण्वकते अपसर्पति स स्रुपेणः सेनापति
रिति अत्र सेनापतेः सप्ताष्टपदापसरणं प्रजिहीर्षोः दृढतरप्रहारकरणाय 'पच्चोसक्कित्ता'
प्रत्यवष्ण्वन्त्रय-सप्ताष्टपदानि अपसृत्य 'तिमिस्सगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडे
दंडरयणेणं महया महया सहेणं तिकखुत्तो आउडेइ' तमिस्रगुहायाः दाक्षिणात्यस्य
दक्षिणभागवर्त्तिनो द्वारस्य कपाटी दण्डरत्नेन महता महता शब्देन त्रिःकृत्व-त्रीन्
वारान् आकुट्टयति ताडयति अत्र इत्थंभूतलक्षणे इति तृतीया, यथा प्रकारेण महान्
शब्दः उत्पद्यते तथा प्रकारेण ताडयतीत्यर्थः ततः किं जातमित्याह-'तएण' इत्यादि

करनेवाला होता है । (रणो दिव्यइच्छिय मणोरहपूरग) चक्रवर्ती के हृदय में वर्तमान-इच्छित
मनोरथ को पुरा करने वाला है क्यों की यहा गुहा के कपाटों के उद्घाटन आदि कार्योंको करता है ।
(दिग्ब) यक्ष सहस्र से यह अधिष्ठित होने के कारण दिव्य कहा जाता है (अप्पडिहयं) यह
कहीं भी प्रतिघात को प्राप्त नहीं होता है इसलिए अप्रतिहत कहा गया है इस प्रकार के इन
पूर्वोक्त विशेषणों से युक्त (दंडरयणं गहाय दण्डरत्न को हाथ में लेकर) सत्तदुपयाई पच्चोसक्कई-
वह स्रुपेण सेनापति सात आठ पैर पीछे हटा यहां जो प्रतिजिहीर्षस्रुपेण सेनापति का सात
आठ पैर पीछे हटना प्रकट किया गया है वह उसके द्वारा दृढतर प्रहार प्रकट करने के लिए
कहा गया है (पच्चोसक्कित्ता) सात आठ पैर पीछे हटकर के (तिमिस्सगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवा-
रस्स कवाडे दंडरयणेणं महया २ सहेणं तिकखुत्तो आउडेइ) फिर उभय स्रुपेणसेनापतिने
तिमिस्सगुहा के दक्षिण दिग्वर्ती द्वार के किवाड़ों को दण्डरत्न से जोर जोरसे जिससे शब्दों
का निकलना हो इस रूप से तीनवार ताडित किया-किवाड़ों पर तीन बार जोर २ से दण्ड

पूरगं) चक्रवर्ती' ना हृदयमां विद्यमान इच्छित मनोरथत्तु ओ चक्ररत्न पूरक होय छे. केभडे
ओ चक्ररत्न शुक्लाना कपाटोने उद्घाटित करवा वगेरे कार्यो करे छे (दिग्ब) यक्षसहस्रोधी ओ
अधिष्ठित होवा अद्वैत दिव्य कडेवाभां आवे छे (अप्पडिहय) ओ चक्ररत्न केध. पञ्चस्थाने
प्रतिघात हशाने पाभर्तु नथी ओधी न ओने अप्रिहत कडेवाभा आवे छे. आ प्रभाषे ओ
पूर्वोक्त विशेषणोधी युक्त (दंडरयण गहाय) दंडरत्नने हाथनां धर्धने (सत्तदुपयाई
पच्चोसक्कई) ते स्रुपेण सेनापति सात आठ डगला पाछे अस्थो अढी' ने प्रतिहीधु-
स्रुपेण सेनापतिने सात आठ डगलां पीछे डंड करवानु लप्यु छे ते तेना वडे दृढतर प्रहार
प्रकट करवा माटे कडेवाभा आवे छे (पच्चोसक्कित्ता) सात आठ डगला पाछे असीने 'तिमिस्स
गुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडे दंडरयणेणं महया २ सहेणं तिकखुत्तो आउडेइ)
पछा ते स्रुपेण सेनापतिने तिमिस्स शुक्लाना दक्षिण दिग्वर्ती' द्वारना कपाटोने दंड रत्नधी
जेर-जेरधी के जेनाधी शब्द थाय ओवी रीते त्रय बार ताडित कर्थां. ओटवे के कभाडे उपर

‘तएणं तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडा सुसेणसेणवइणा दंडरयणेणं महया महया सहेणं कौचारवं करेमाणा’ ततः आकुट्टनादनु खल्लु तमिसगुहायाः दाक्षिणात्यस्य द्वारस्य कपाटौ सुषेणनाम्ना सेनापतिना दण्डरत्नेन महता महता शब्देन त्रिः कृत्वः—त्रीन् वारान् आकुट्टितौ सन्तौ महता महता शब्देन दीर्घतरनिनादिनः क्रौंचस्य पक्षिविशेषस्येव बहुव्यापित्वात् य आरवः शब्दः तं कुर्वाणौ ‘सरसरस्स त्ति अनुकरणशब्दस्तेन तादृशं शब्दं कुर्वाणौ ‘सगाइं सगाइं’ स्वके स्वके—स्वकीये स्वकीये ‘ठाणाइं’ स्थानेऽवष्टम्भभूततोड्ढकरूपे ‘पच्चोसक्कित्था’ प्रत्यवाष्वाष्किषाताम् स्वस्थानात् प्रत्यपससर्प्यतुः ‘तएणं से सुसेणे सेणावई तिमिसगुहाए दाहिणिल्लदुवारस्स कवाडे विहाडेइ’ ततः कपाटप्रत्यपसर्पणादनु खल्लु स सुषेणः सेनापतिः तमिसगुहायाः दाक्षिणात्यस्य द्वारस्य कपाटौ विघाटयति उद्धाटयति यद्यपि इदं सूत्रमावश्यकचूर्णौ वर्द्धमानसुरिकृतादिचरिते च न दृश्यते, तदाऽव्यवहित पूर्वसूत्रे एव कपाटोद्धाटनम् अभिहितम्, यदि चैतत्सूत्रादर्शानुसारेण इदं सूत्रमावश्यकं व्या-

रत्न पटका (तएणं तिमिस गुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडा सुसेणसेणावइणा दंडरयणेणं महया २ सहेणं तिखुत्तो आडडिया समाणा महया २ सहेणं कोचारवं वरेमाणा) इसतरह- तिमिस गुहा के दक्षिणदिग्वर्ती द्वार के किवाड़े जो कि सुषेण नामक सेनापति रत्न के द्वारा तीन बार दण्ड रत्न के पटकने से जोर जोर का शब्द जिस प्रकार निकले इस ढंग से पटकने पर, दीर्घतर शब्द करनेवाले क्रौंच पक्षी की आवाज की तरह आवाज करते हुए तथा (सरसरस्स सगाइं २ ठाणाइं) सर सर इस तरह का शब्द करते हुए अपने स्थान से विचलित हो गये— सरक गये (तएणं से सुसेणे सेणावई तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडे विहाडेइ) इसके बाद उस सुषेण सेनापतिने तिमिस गुहाके दक्षिण दिग्वर्ती किवाड़ों को उद्धाटितकर दिया यद्यपि यह सूत्र आवश्यक चूर्णों में और वर्द्धमान सुरि कृतादि चरित्र में नहीं उपलब्ध होता है इसकारण अव्यवहित पूर्व सूत्र में ही कपाटोद्धाटन कहा गया है ऐसा जानना चाहिए। और यदि

अथ वार जेर—जेरथी ६ ६ रत्न पछाडथे। (तएण तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडा सुसेणसेणावइणा दंडरयणेणं महया २ सहेणं तिखुत्तो आडडिया समाणा २ सहेणं कोचारवं करेमाणा) आ प्रभाण्णे तिमिस्स शुक्ष्णा दक्षिण दिग्वर्ती दाशना कभाडो के जेभने सुषेण सेनापतिणे अथ वार ६ ६ रत्नना जेर जेरथी शब्द थाय तेभ प्रताडित कथां अने प्रताडित थवाथी दीर्घतर अवाज करेनाथ। कौंच पक्षिणी जेभ अवाज करता तथा (सरसरस्स सगाइं २ ठाणाइं) सर सर आ प्रभाण्णे शब्द करता पोताना स्थानथी विचलित थर्ध गया जेटवे के कभाडो पोताना स्थान परथी भसी गया। (तएणं से सुसेणे सेणावई तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडे विहाडेइ) त्थारभाइ ते सुषेण सेनापतिणे तिमिस्स शुक्ष्णा दक्षिण दिग्वर्ती कभाडो, ने उद्धाटन कथां जेके आ सूत्र आवश्यक चूर्णिमां अने वर्द्धमान सुरीकृतादी आरित्रमां उपलब्ध थतुं नथी जेथीअ अन्य-वहीत पूर्व सूत्रमां अ कपाटोद्धाटन कडेवाभा आव्युं छे. अने जे जे सूत्र अही

खयेयं भवेत्तदा पूर्वसूत्रे सगाइ सगाई ठाणाई' इत्यत्र आर्षत्वात् पञ्चमी व्याख्येया
तेन स्वकाभ्यां स्थानाभ्या कपाटद्वयसम्मीलनारपदाभ्यां प्रत्यवगत्ताविति कश्चिद्वि
कसेतावित्यर्थः तेन विघाटनार्थकमिदं न पुनरुक्तमिति 'विहाडेत्ता' विघाटय 'जेणेव
मरहे राया तेणेव उवागच्छइ' यत्रैव भरतो राजा तत्रैव उपागच्छति 'उवागच्छित्ता'
उपागत्य 'जाव मरह राय करयल परिगगहियं जएणं विजएणं वद्धावेइ' सुषेणः सेनापति
यावत् भरतं राजाम् स्वस्वामिनम्, करतलपरिगृहीतं दगनख गिरमावर्तं मस्तके अञ्ज
लिङ्गकृत्वा जयेन विजयेन-जयविजयशब्दाभ्यां वद्धयति-अशीर्वचनं ददाति 'वद्धावे-
त्ता एवं वयासी' वद्धयित्वा एवं वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत् उक्तवान् 'विहाडिया णं
देवानुप्पिया निमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडाए जणं देवानुप्पियाणं पियं
णिवेएमो पियं मे भवउ' विघाटितौ-उत्पाटितौ खलु हे देवानुप्रियाः ! हे प्रभवः ! तमि-
न्नागुहायाः दक्षिणात्यस्य दक्षिणभागवत्तिनो द्वारस्य कपाटौ एतत्खलु देवानुप्रियाणां
देवानुप्रियेभ्यः प्रभुभ्यः प्रियं निवेदयामः, अत्र निवेदकस्य सेनापतेरेकत्वात् क्रियायाम्

यह सूत्र यहा कहा गया है तो इसके अनुसार 'सगाइ सगाइ ठाणाइ' यहा पर पचमी
विभक्ति ममस्वर के दातो किवाइ अपने अपने स्थान से कुछ खुलगये ऐसा ममस्सना चाहिये,
इस कारण पुनरुक्ति का दोषयहां नहीं आता है । (विहाडेत्ता जेणेव मरहे राया तेणेव उवा-
गच्छइ) किवाइ को खोलकर फिर वह सुषेण सेनापति जहाभरत राजा ये वहा पर गया
(उवागच्छित्ता जाव मरह राय करयलपरिगगहियं जएणं विजएण वद्धावेइ) वहां जाकर
महाराना उसने यावत् भरत राजा को दोनो हाथ जोड़कर जय विजय शब्दो द्वारा बर्षाई दी
(वद्धावेत्ता एव वयासी) बर्षाई देकर उसने उनसे ऐसा कहा (विहाडियाण देवानुप्पिया !
तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडा एजण देवानुप्पियाणं पियं णिवेएमो पियं मे भवउ)
हे देवानुप्रिय ! तिमिसगुहाके दक्षिदिग्बर्ती द्वार के किवाड उद्धाटित हो चुके है मैं इस देवानु-
प्रिय के प्रिय अर्थको आप से निवेदन करता हूं यह आप के लिए इष्ट संपादक होवे "णिवे-

कडेवाभा आग्यु छे ते सुजण (सगाई सगाई ठाणाई) अही पंचमी विभक्ति समझने
ते भन्नेकभाडे पोताना स्थान पर थी थोडा छिडी गया जेभ समज्जु आकारण्थी अही
पुनश्चित्त दोष थोता नहीं (विहाडेत्ता जेणेव मरहे राया तेणेव उवागच्छइ) कभाडेने
छिडाटित करीने पछी ते सुषेण सेनापति जया भरत राजा हुतो त्या गये। (उवागच्छित्ता
जाव भरत राय करयलपरिगगहियं जएणं विजएण वद्धावेइ) त्या जधने तेण यावत्
भरत राजने भन्ने हाथ जोडीने जय विजय शब्द वडे वधामणी आपी (वद्धावेत्ता एव
वयासी) वधामणी आपीने तेभने आ प्रभाणु निवेदन कयु "विहाडियाण देवानुप्पिया तिमिस
गुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडाए जणं देवानुप्पियाणं पियं णिवेएमो पियं मे भवउ)
हे देवानुप्रिय ! तिमिस गुहाना दक्षिण दिग्बर्ती द्वारना कभाडे छिडाटित थल गयां छे,
हुं देवानुप्रिय ! आपश्रीना प्रिय अर्थने आपश्री समक्ष निवेदन कयु छु जे आपश्री भाटे
छिष्ट संपादक थाओ। 'णिवेएमो' भां जे बहुवचनने। प्रयोग करवाभा आवेस छे ते समस्त

एकवचनस्यौचित्येन यन्निवेदयाम इत्यत्र बहुवचनं तत्सपरिकरस्यापि आत्मनो निवेदकत्वं व्यापनार्थं तच्च बहुनामेकवाक्यत्वेन प्रत्योत्पादनार्थम् अथवा अस्मदो द्वयोश्चेति सूत्रेण एकत्वे द्वित्वे च विवक्षिते बहुवचनम् इति बोध्यम् ऐतत्, प्रियम् इष्टं-अमीष्ट मे भवतां भवतु ततो भरतः किं कृतवान् इत्याह—‘तएणं’ इत्यादि ‘तएणं से भरहे राया सुसेणस्स सेणावइस्स अंति ए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म इट्ठुत्तु चित्तमाणंदि ए जाव हिअ ए सुसेणं सेणावइं सक्कारेइ सम्माणेइ’ ततः—कपाटोद्घाटननिवेदनानन्तरं खलु स पदखंडाधिपति भरतो राजा सुषेणस्य सेनापतेः अन्तिके समीपे एतमर्थं कपाटोद्घाटननिवेदनानन्तरं खलु स भरतो राजा सुषेणस्य सेनापतेः अन्तिके समीपे एतमर्थं कपाटोद्घाटनारूपं श्रुत्वा निश्चम्य हृदये अवधार्य हृष्टतुष्टचित्तानन्दितः यावद्द्वयः सुषेणं—तन्नामानं सेनापतिं सत्कारयति बहुमूल्य द्रव्यादिभिः सन्मानयति प्रियवचोभिः, सन्मानयति प्रियवचोभिः ‘सक्कारित्ता सम्माणित्ता’ सत्कार्यं सन्मान्य च ‘कोट्टुबियपुरिसे सदावेइ’ कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति आह्वयति ‘सदावित्ता एवं

एमो” मैं जो बहुवचन का प्रयोग किया गया है वह समस्तपरिकर सहित सेनापति के निवेदन करने को प्रकट करने के लिए किया गया है अर्थात् सब परिवार मिळकर सेनापति के मुखसे यह शुभ संवाद का अपनेराजा भरत से निवेदन का रहे हैं ऐसा जानना चाहिए अथवा—“अस्मदो द्वयोश्च” इस सूत्र से एकत्वअथवा द्वित्व विवक्षित होने पर भी बहुवचन प्रयुक्त होजाता है. इसके अनुसार यहाँ बहुवचन प्रयुक्त हुआ है। (तएणं से भरहे राया सुसेणस्स सेणावइस्स अंति ए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म इट्ठुत्तु चित्तमाणंदि ए जाव हिअ ए सुसेणं सेणावइं सक्कारेइ सम्माणेइ) इसके बाद महत्तराजाने सुषेण सेनापति से इस अपने अमीष्ट अर्थ संपादित होने की बात सुनी तो वह उसे सुनकर और उसे हृदय से निश्चिय कर इष्ट तुष्ट चित्तानन्दित हुआ यावत् उसका हृदय आनन्द से उछलने लगा और उसने उसी समय सुषेणसेनापति का बहुमूल्य द्रव्यादि प्रदान करके सत्कार किया और प्रियवचनों द्वारा उसका सन्मान किया (सक्कारित्ता सम्माणित्ता कौटुम्बिकपुरिसे सदावेइ) सत्कार सन्मान करके फिर उसने कौटुम्बिक पुरुषों

પરિકર સહિત સેનાપતિના નિવેદન કરવા માટે પ્રકટ કરવામાં આવેલ છે એટલે કે સમસ્ત પરિકર મળીને સેનાપતિના મુખથી જો શુભ સંવાદ પોતાના રાજા ભરતને નિવેદન કરે છે આમ સમજવું જોઈએ અથવા અસ્મદોદ્વયોશ્ચ જો સૂત્રથી એકત્વ અથવા દ્વિત્વ વિવક્ષિત હોવા છતાંજો બહુવચન પ્રયુક્ત થઈ ગયું છે જો મુજબ અહીં બહુવચન પ્રયુક્ત થયેલ છે (તણં સે મરહે રાયા સુસેણસ્સ સેણાવહસ્સ અંતિયે એયમટ્ઠં સોચ્ચા નિસમ્મ ઇટ્ઠુત્થં ચિત્તમાણંદિયે જાવ હિયયે સુસેણ સેણાવહં સક્કારેઈ સમ્માનેઈ) ત્યાર બાદ ભરત રાજાએ સુષેણ સેનાપતિના મુખથી સ્વાભિષ્ટ અર્થ સંપાદિત થવા અથવા વાત સાંભળી અને તે પછી તેવાત હૃદયમાં નિશ્ચિન કરીને તે રાજા હૃષ્ટ-તુષ્ટ ચિત્તાનંદિત થયો યાવત તેણે હૃદય આનંદથી ઉછળવા લાગ્યું અને તેણે તેજ સમયે સુષેણ સેનાપતિને બહુમૂલ્ય દ્રવ્ય આદિપ્રદાન કરીને સત્કાર કર્યો અને પ્રિયવચનોથી તેણે સન્માન કર્યું. (સક્કારિત્તા

वयासी' शब्दयित्वा आह्वय एतं वक्ष्यमाण प्रकारेण अत्रादीत् ऊक्तवान् 'खिप्पामेव भो देवानुप्पिया।' क्षिप्रमेव भो देवानुप्पियाः ! 'आभिसेयकं हत्थिरयणं पडिकप्पेह' अभिषेकयोग्य-अभिषेकयोग्य पट्टहस्तिनं रात्रिहस्तिप्रधानमित्यर्थः हस्तिरत्नं प्रतिकल्पयत सज्जीकुरुत 'हयगयरहपवर तद्देव जाव अंजनगिरिकूडसण्णिमं गयवर णरवई दूरुढे' हयगजरथ प्रवर तथैव यावत् अञ्जनगिरिकूटमन्निभम् अञ्जनपर्वतकूटवत् कृष्णवर्णमुच्चं च गजवरं हस्तिश्रेष्ठं नरपतिः भरतो राजा दूरुढे आरूढः सन् यत्कृतवान् तदाह ॥ सूत्र १४ ॥ गजरूढः सन् नृपतिः यत्कृतवान् तदाह - 'तए णं' इत्यादि ।

मूलम्-तएणं से भग्दे राया मणिरयणं परामुसइ तोतं चउ रंगुलप्प-माणमित्तं च अणग्घंतंसिअं छलंसं अणोवमजुइं दिव्वं मणिरयण पतिसमं वेरुलिअं सव्वभूअकंतं जेणय मुद्धागएणं दूक्ख ण किंचि जाव हवइ आरोग्गे य सव्वकालं तेरिच्छिअ देवमाणुसकयाय उवसग्गा सव्वे ण करेति तस्स दुक्खं संगामेऽपि असत्थवज्झो होइ णरोमणिवरं धरेतो ठिय जोव्वण केसअवड्डियणहो हवइ य सव्वभयविप्पमुक्को तं मणिरयणं गहाय से णरवई हत्थिरयणस्स दाहिणिल्लाए कुंभोए णिक्खिवइ तएणं से भग्गाहिवे णरिदे हारोत्थए सुकयरइयवच्छे जाव अमरवइसण्णिभाए इच्छीए पहियकित्ती मणिरयणकउज्जोए चक्करयणदेसियमग्गे अणे-गरायसहस्साणुयायमग्गे महया उक्किड्ढ सीहणाय बोलकलरवेणं समु-दूदरवभूअंपिव करेमाणे करेमाणे जेणेव तिमिसगुहाए दाहिणिल्ले

को बुलाया- (सदावित्ता एव वयासी) बुलाकर उनसे उसने ऐसा कहा- (खिप्पामेव भो देवानुप्पिया ! आभिषेकं हत्थिरयणं पडिकप्पेह) हे देवानुप्पियो ! तुम बहुत ही जल्दी आभिषेक्य हस्तिरत्न को- अभिषेक योग्य प्रधान हस्ति को सजाओ (हय गयरह पवर तद्देव जाव अंजन-गिरि कूडसण्णिमं गयवइ णरवई दूरुढे) इसके बाद हय, गज, रथ प्रवर यावत् अंजनगिरि के कूट जैसे श्रेष्ठ हस्ती पर भरतराजा आरूढ हुआ -॥१४॥

सम्मानिता कोडंबिय पुरिसे सद्भावह) सत्कार तेमज सम्मान करीने पछी तेबु कीटु'जिउ पुउपोने भोलाया (सद्भावित्ता एव वयासी) भोलायीने ते पुउपोने तेबु आ प्रभाबु कहु' (खिप्पामेव भो देवानुप्पिया ! आभिषेकं हत्थिरयणं पडिकप्पेह) हे देवानुप्पियो ! तमे अहुं थोअ आभिषेक्य हस्तिरत्नने अभिषेक योग्य प्रधान हस्तीने सुसज्जित करे। (हयगयरह पवर तद्देव जाव अंजनगिरि कूडसहस्रसं गयवइ णरवई दूरुढे) त्पार आइ हय, गज, रथ, प्रवर यावत् अंजन गिरिना कूट जेवा श्रेष्ठ हस्ती उपर भरतराजा आइइ थयो. ॥सू. १४॥

दुवारे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तिमिसगुहं दाहिणिल्लेणं दुवारेणं
 अईइ ससिव्व मेहंधयारनिवहं । तएणं से भरहे राया छत्तलं दुवालसंसिअं
 अट्ठकण्णियं अहिगरणिसंठियं अट्ठ सोवण्णिय कागणिरयणं परामुसइत्ति
 तएणं तं चउरंगुलप्पमाणमित्तं अट्ठसुवण्णं च विसहरणं अउलं चउरंस-
 संठाणसंठिअं समतलं माणुम्माणजोगा जतोलागे चरति सब्वजणपन्नवगा
 णइव चंदो णइव तत्थ सूरे ण इव अग्गी णइव तत्थ मणिणो तिमिरणासेंति
 अंधयारे जत्थ तयं दिव्वं भावजुत्तं दुवालसजोयणाइ तस्स लेसाउ विवद्धंति
 तिमिरणिगरपडिसेहिआओ रत्तिं च सब्वकालं खंधावारे करेइ आलोअं
 दिवसभूअं जस्स पभावेण चक्कवट्ठी तिमिसगुहं अतीति सेण्णसहिए
 अभिजेतुं बितियमद्धभरहं रायवरे कागणिं गहाय तिमिसगुहाए पुरच्छि-
 मिल्लपच्चत्थिमिल्लेसुं कडएसुं जोयणंतरियाइं पंचधणुसयविकखंभाइं
 जोयणुज्जोयकराइं चक्कणेमी संठियाइं चंदमंडलपडिणिकासाइं एगूण
 पण्णं मंडलाइ आलिहमाणे आलिहमाणे अणुप्पविसइ तएणं सा तिमिस
 गुहा भरहेणं रण्णा तेहिं जोयणंतरिहिं जाव जोयणुज्जोयकरेहिं एगूण
 पण्णाए मंडलेहिं अलिहिज्जमाणेहिं आलिहिज्जमाणेहिं खिप्पामेव
 आलोगभूया दिवसभूया जाया यावि होत्था ॥सू०१५॥

छाया—ततः खलु स भरतो राजा मणिरत्नं परामृशति 'तोतं' इति सम्प्रदायगम्यम्
 चतुरंगुलप्रमाणमितं च अनर्घम्, व्यस्तम्, षडंसम्, अनुपमतिद्युतिं दिव्यम्, मणिरत्नपति-
 समम्, वैदूर्यं सर्वभूतकान्तम्, येन च मूर्द्धगतेन न दुःखं किञ्चित् यावद् भवति आरोग्यं
 च सर्वकालम्, तिर्यक्देव मनुष्यकृताः उपसर्गाश्च सर्वे न कुर्वन्ति तस्य दुःखम्, सग्रामेऽपि
 अशस्त्रवध्यो भवति 'नरो मणिवरं' धरन् स्थितयौवनकेशावस्थितनखी भवति च सर्वभय-
 विप्रमुक्तः तत् मणिरत्नं गृहीत्वा स नरपतिः हस्तिरत्नस्य दाक्षिणात्ये कुम्भे निक्षिपति,
 ततः खलु स भरताधिपो नरेन्द्रो दारावस्तुत सुकृतरतिदवक्षस्कः यावत् अमरपतिसन्नि-
 भया क्रद्धया (युक्तः) प्रथितकीर्तिं मणिरत्नकृतोद्योत चक्ररत्नदेशितमार्गः अनेकराज सह-
 स्त्रानुयातमार्गं महतोत्कृष्टसिंहनादबोलकलकलरवेण समुद्ररवभूतामिव कुर्वन् यत्रैव तमि-
 स्नागुहाया दाक्षिणात्यं द्वात्रिं तत्रैवोपागच्छति उपागत्य तमिस्नागुहां दाक्षिणात्येन द्वारेणा-
 स्थेति शशीव मेघान्धकारनिवहम् । ततः खलु स भरतो राजा षडल द्वादशाक्षमम्बक-
 णिकम् अधिकरणिसंस्थितम् अष्ट सौवर्णिकम् काकणीरत्नम् परामृशति । ततः खलु तत् चतु-
 रङ्गुलप्रमाणमितम् अष्टसुवर्णं च विषहरणम् अतुलं चतुरस्रसंस्थानसंस्थितं समतलं मानोन्मा-

નયોગાઃ યતો લોકે ચરન્તિ સર્વજનપ્રજાપત્તાઃ નાપિ નન્દ્રો નયો તત્ર સૂર્ય નયોઽગ્નિઃનર્વા
તત્ર મળયઃ તિમિરં નાશયન્તિ અન્ધકારે યત્ર તત્કત્ દિવ્ય પ્રભાવયુક્તં ઢાદશયોજનાનિ તસ્ય
લેહ્યા વિવર્દન્તે તિમિરનિરૂપતિપેષિકા રત્નં ચ સર્વકાલં સ્ફન્ધાવારે વારોતિ દિવમ
મૃતમ્ આલોકે કરોતિ ' યસ્ય પ્રભાવેણ ચક્રવર્તી તમિસ્રા ગુહામ્ અત્યેતિ સૈન્યમહિનો દ્વિ
તીયમર્દ્ધમરતમ્ અભિજેતુમ્ રાજપરઃ કાપ્તો ગૃહોત્વા તમિસ્રાગુહાયા. પોરસ્ત્યપાશ્ચાત્યયો
કટકયોઃ યોજનાનન્તરિતાગિ પચ્ચધનુઃ શતશ્ચિહ્નમાણિ યોજનોદ્યાનકરાર્ણ ચક્રનેમિ સસ્થિ
તાનિ ચન્દ્રમણ્ડલ પ્રતિનિકાશાનિ પક્ષોનપચ્ચાશતં મણ્ડલ્લાનિ આદિપ્તન્ અનુપવિશતિ, તત
ક્ષણે તમિસ્રાગુહા મરતેન રાજા તૈર્યાજનાન્તરિતૈઃ ગાવદ્ યોજનોદ્યાતકરૈરેકોનપચ્ચાગના
મણ્ડલૈઃ આલિખ્યમાનૈઃ આલિખ્યમાનૈઃ ક્ષિપ્રમેવ આલોક મૃતા ડ્યોતં મૃતા દિવસમૃતા
જાતા ચાપ્યમવત્ ॥ સુ. ૧૫ ॥

ટીકા-‘તણં સે’ इत्यादि । ‘तणं से भरहे राया मणिरयणं परामुसइ’ ततो
गजारोहणानन्तरं खलु स भरतो राजा मणिरत्न परामृशति हस्तेन स्पृशति किं विशिष्ट
तदित्याह-‘तोतं, इति सम्प्रदायगम्यं विशिष्टाकार सम्पन्नम् सुन्दरम् तथा ‘चउरंगुलपमा
णमित’ चतुरंगुलप्रमाणमात्रं च तत्र चतुरंगुलप्रमाणा मात्रा दैर्घ्येण यस्य तत्तथा चशब्दाद्
द्वयंगुलपृथुलमिति प्राक्तम् तदेवाह ‘चउरंगुलो दुअंगुलपिहुलोअमणी’ इति ‘अणघ,
अनर्घम्-अमूल्यं न केनापि तस्यार्धः मूल्यं कर्तुं शक्यते इत्यर्थः पुनः कीदृशम् ‘तंसिअं’

हाथी के ऊपर बैठकर भरतराजाने क्या किया सो कहते हैं—

तणं से भरहे राया मणिरयणं— इत्यादि सू-१५—

टीકાર્થ-(તણ સે મરસે રાયા મણિરયણં પરામુસઈ) મરત રાજા ને જાવ કિ વહ ગજ શ્રેષ્ઠ પર
મરુદ હો જુકા તત્પશ્ચાત્ મણિરત્ન કો લુઆ યઈ મણિરત્ન -(તોતં ચડરંગુલપમાગમિત્તં ચ અણઘં
તસિઅં છલંસ અણોવમજુઈ દિવ્વં મણિરયણપતિસમ વેરુલિય સન્વમૂયકંતં) તોત થા હમ પદ કા અર્થ
સંપ્રદાય ગમ્ય હૈ અર્થાત્ વિશિષ્ટ આકાર સે યુક્ત સુદરતા વાલા તથા પ્રમાણ મેં યહ ચાર અંગુલ કા
થા, અર્થાત્ યહ ચાર અંગુલ કા લમ્બા થા ઓર દો અંગુલ કા મોટા થા ક્યોંકિ” ચડરંગુલો
દુ અંગુલ પિહુલોયમર્ણો” એસા કહાગ યા હૈ. અનર્ચ થા-હસકા મૂલ્ય નહોં થા - અમૂલ્ય થા-

હાથી ઉપર બેસીને ભરત રાજાએ જે કાર્ય કર્યું તેનું વર્ણન કરે છે.

ટીકાર્થ—(તે પળ સે મરહે રાયા મણિરયણં इत्यादि) सू १५

(તણ સે મરહે રાયા મણિરયણં પરામુસઈ) અર્થારે ભરત રાજા ગજ શ્રેષ્ઠ હસ્તી
રત્ન પર આઈથ થઈ ગયો ત્યાર બાદ તેણે મણિરત્નને સ્પર્શ કર્યો એ મણિરત્ન (તોતં
ચડરંગુલપમાગમિત્તં ચ અણઘ તંસિઅ છલંસ અણોવમજુઈ દિવ્વં મણિરયણપતિસમ
વેરુલિયં સન્વમૂયકંતં) તોત હંતુ ‘તોત’ પદનો અર્થ સંપ્રદાય ગમ્ય છે તેમજ પ્રમા
ણમા એ મણિરત્ન ચાર અંગુલ જેટલું હંતુ અટલે કે એ ચાર અંગુલ જેટલું લાંબુ અને
એ અંગુલ પ્રમાણ મોટું હંતુ કેમકે ‘ચડરંગુલો દુઅંગુલ પિહુલોયમર્ણી, આ પ્રમાણે કહેવામાં
આવ્યું છે એ મણિરત્ન અનર્ચ હંતુ. એની કીમત થઈ શકે તેમ ન હંતુ અર્થાત્

ત્ર્યસ્રમ્ તિસ્રોઽસ્રયઃ ક્રોટયો ક્રોળાઃ યત્ર તત્તથા ઈદ્રશં સત્ 'છલંસ પઢસ્ત્રં પટ્કોટિકમ્
 લોકેઽપિ પ્રાયો વૈદ્યસ્ય મૃદજ્ઞાકારત્વેન પ્રસિદ્ધત્વાન્મધ્યે ઉન્નતવૃત્તત્વેનાન્તરિતસ્ય
 સહજપિદ્ધસ્ય ઉભયાન્તરર્તિનોઽસ્તિત્રયસ્ય સત્ર્યાત્ નનુ પઢસ્રમિત્યનેનૈવ સિદ્ધે ત્ર્યસ્ર
 પઢસ્રમિત્યુક્તિ' કિમર્થાં ઇતિ चेन्न उभयोरन्तरयो निरन्तरक्रोटिपट्टकभवने नापि
 પઢસ્રનાયાઃ સમ્પ્રગાત્ તદ્વ્યવચ્છેદાર્થમ્ ત્ર્યસ્ર સત્ પઢસ્રપિત્યુક્તેઃ તથા 'અળો
 વપજુઃ' અનુપગધુર્તિ અનુપમા ધુતિ યસ્ય તત્તથા પુનઃ કીદશમ્ 'દિવ્યં' દિવ્યમ્-મણિરયણ-
 પતિપમં' મણિરત્નપતિસમમ્ મણિરત્નેષુ પૂર્વોક્તેષુ પતિસમમ્ શ્રેષ્ઠમ્ સર્વોત્કૃષ્ટત્ર્યાત્ 'વેરુ
 લિઅં' વૈદ્યમ્ વૈદ્યજાતીયમ્ 'સવ્વભૂયન્તં' સર્વભૂતકાન્તમ્ સર્વેષાં ભૂતાનાં કાન્તં-કામ્યમ્
 સકલજનમનોહારકમ્ ઇત્યર્થઃ 'જેણય મુદ્દાગણં દુક્લં ન કિંચિ જાવ હવહ' યેન ચ મુદ્દ-
 ગતેન શિરોધૃતેન હેતુભૂતેન ન કિંચિદ્ યાવદ્ દુઃખં ભવતિ જાયતે 'આરોગે ય સવ્વ
 કાલં, આરોગ્યં નેરુગ્યં ચ સર્વકાલ મરતિ, તેચ્છિ અ દેવમાણુસકયાય ઉવસગ્ગા સવ્વેણ

કોઈ હસકી કોમત નહીં કર સકતા થા, આઠાર મે યહ તિઠોળ થા-તિલ્હૂટા થા પરન્તુ યહ
 ષડ્ પેઝા થા લોક મેં મી પ્રાયઃ વૈદ્યમણિ મૃદજ્ઞાકાર રૂપ સે પ્રસિદ્ધ હૈ હસસે બીચ મેં
 ઉન્નત વૃત્ત હોં જાને કે કારણ આજુ બાજુ મે ત ન તીન કોટિકા સદ્ભાવ સ્વભાવતઃ આજાતા
 હૈ. યદાં એવી આશંકા તો હોસકતી હૈ કિં જવ યહ ષટ્પેઝા કહા ગયા હૈ તો ફિર હસે તિલ્હૂટા
 કહને કા કયા કારણ હૈ ? તો હસકા ઉત્તર યહ હૈ કિં આજુ બાજુ મેં મી ષડ્ પેઝા કા સદ્ભાવ
 હસ તરહ સે ન બન જાવે હસ વાત કો નિરાકરણ કરને કે લિયે "ત્ર્યસ્ર" પદ સ્વતન્ત્ર રૂપ સે કહા
 ગયા હૈ. અર્થાત્ યહ તિલ્હૂટા હોતા હુઆ મી ષડ્ પેઝા થા ધુતિ અનુપમ થી યહ દિવ્ય થા મણિ
 પવ રત્નોં મેં યહ સર્વોત્કૃષ્ટ હોને સે ઉનકા પતિસમ થા યહ વૈદ્યજાતી કા થા. યહ સર્વભૂત-
 કાન્તથા, — સમસ્ત પ્રાણિયો કી યોગ્ય થા-(જેણ ય મુદ્દાગણ દુક્લ ન કિંચિ જાવ
 હવહ, આરોગે અ સવ્વકાલતિરિચ્છિય દેવમાણુસકયા ય સવ્વે ણ કરેતિ તસ્સ દુક્લં) હસે મસ્તક

અમુલ્ય હંતું એની કોઈપણરીતે કિંમત થઈજશક્તીનહતી આકારમા એ ત્રિકોણ હંતું પણ
 એ ષટ્પેલા હંતુ લોકમા પણ વૈદ્યમણિ મૃદંગાકાર રૂપમાં પ્રસિદ્ધ છે જ એથી જ વચ્ચેથી
 ઉન્નત વૃત્ત હોવાથી જાને તરફથી ત્રણત્રણ કોટીનો સદ્ભાવ સ્વભાવતઃ આવી જાય છે.
 અત્રે એવી આશંકા થઈ શકે તેમ છે કે જ્યારે એ ષટ્પેલા કહેવામાં આવેલ છે.
 તો પછી આને ત્રણ પુણ્યાણુ થા કારણથી કહેવામાં આવેલ છે? તો આ શંકાનો જવાબ
 આ પ્રમાણે છે કે જાને તરફ ષટ્પેલાતાની સદ્ભાવના થઈ ન જાય તેના માટે જ 'ત્ર્યસ્ર'
 પદનુ કથન અત્રે સ્વતન્ત્ર રૂપમાં કરવામાં આવેલ છે એટલે કે આ ત્રણ પુણ્યીયું હંતુ
 છતાં ષટ્પેલા હંતુ આ રત્નની ધુતિ અનુપમ હતી એ દિવ્ય હંતુ મણિ તેમજ રત્નોમા
 એ સદોત્કૃષ્ટ હોવા બદલ પતિસમ હંતુ એ વૈદ્ય જાતિનુ હંતુ એ સર્વ ભૂતકાન્ત હંતુ
 સમસ્ત પ્રાણીઓની આહવા યોગ્ય હંતુ (જેણય મુદ્દાગણ દુક્લ ન કિંચિ જાવ હવહ
 આરોગે અ સવ્વકાલંતિરિચ્છિય દેવમાણુસકયા ય સવ્વે ણ કરેતિ તસ્સ દુક્લં)
 એ રત્નને મસ્તક ઉપર ધારણ કરવાથી ધારણ કરતાં ને કોઈ પણ જાતની તકલીફ કે ચિંતા

કરેતિ તસ્ય દુઃખં' તિર્યઙ્ દેવમનુષ્યકૃતાઃ ચ શબ્દસ્ય વ્યવહૃતસમ્બન્ધાદુપસર્ગાથ
 સર્વે ન કુર્વન્તિ તસ્ય મણિરત્નધારકસ્ય દુઃખમ્ 'સંગામે વિ અસત્યવજ્ઞો હોઃ' સંગ્રા-
 મેઽપિ અશસ્ત્રવધ્યો ભવન્તિ તત્ર સંગ્રામેઽપિ બહુવિગેધિસમરે અલ્પવિરોધિયુદ્ધે વા ન
 શસ્ત્રવધ્યોઽશ્ત્રવધ્યઃ શસ્ત્રવધ્યો ન ભવન્તિ. 'ળરો મણિવર ધરેતો ઠિય જોવ્વળ કેવ અવદ્વિય
 ણહો હવઙ્ સવ્વમયવિપ્પમુક્કો' નરો મણિવર ધરન્ સ્થિતયૌવનકેશાવસ્થિતનલ્લો
 મત્તિ ચ સર્વમયવિપ્રમુક્તઃ તત્ર નરો મણિવરં મણિશ્રેષ્ઠ ધરન્ દધત્ સ્થિતવિન-
 શ્વરભાવમનાપન્નં યૌવન યુવત્વં યસ્ય સ તથા કેશૈઃ સઠાવસ્થિતાઃ અવદ્વિપ્પવો નલ્લા
 યસ્ય સ તથા સ્થિતયૌવનશ્વાસૌ કેશાવસ્થિતનલ્લશ્ચેતિ સ્થિતયૌવનકેશાવસ્થિતનલ્લઃ
 તથા સર્વમયવિપ્રમુક્તઃ સકલત્રાસવિમુક્તશ્ચ ભવન્તિ. 'તં મણિરયણં ગઘાય સે ણરવર્ઘે હત્થિર
 યણસ્સ દાહિણિલ્લાપ કુંભીણ ણિલ્લિલ્લવઙ્' તત્ પૂર્વોક્ત વિશેષણવિશિષ્ટ મણિરત્નં ગૃહી
 ત્વા હસ્તે ગૃહીત્વા સ નરપતિઃ ભરતઃ હસ્તિરત્નસ્ય ગજશ્રેષ્ઠસ્ય દાક્ષિણાત્યે દક્ષિણ-
 માગવર્તિનિ કુમ્મે નિલ્લિપતિ નિવધ્નાતિ કુંભીણ ઇત્યત્ર સ્ત્રીત્વં પ્રકૃતત્વાત્ 'તણ્ણં સે
 મરહાહિવે ણરિંદે હારોત્થણ સુકયરહયવચ્છે' તતઃ સ્થલ્લ સ મરતાધિપો નરેન્દ્રઃ નરપતિઃ

ધારણ કર્તા કો કિસીમી પ્રકાર કા દુઃખ નહીં હોતા હૈ અર્થાત્ ઇસકે મસ્તકપર ધારણ કરતે-
 સમસ્ત દુઃખ ધારણ કર્તા કે નષ્ટ હો જાતે હૈ સદા કાલ ધારણ કર્તા નીરોગ રહતા હૈ હમમણિ-
 રત્ન કો ધારણ કરનેવાળે કે ઊપર કિસી મી સમય તિર્યન્ચ દેવ ઓર મનુષ્ય કૃત ડપસર્ગ
 જરા સા મી કષ્ટનહીં દે સકતે હૈ. (સંગામે વિ અસત્યવજ્ઞો હોઃ ણરો મણિવરં ધરેતો ઠિમજો-
 વ્વળકેસ અવદ્વિયળહો હવઙ્ અ સવ્વમયવિપ્પમુક્કો) સંગ્રામ મેં મી બહે સે બહે યુદ્ધ મે મી હસ
 રત્ન કો ધારણ કિયે હુણ મનુષ્ય શસ્ત્રોં દ્વારા મી વધ્યનહોં હો સકતા હૈ ધારણ કર્તા કા યૌવન
 સદાકાલ સ્થિર રહતા હૈ ઇસકે નલ્લ ઓર કેશ નહીં બઢતે હૈ. યહ સર્વ પ્રકાર કે મય સે રહિત
 હોતા હૈ (તં મણિરયણં ગઘાય સે ણરવર્ઘે હત્થિરયણસ્સ દાહિણિલ્લાપ કુંભીણ ણિલ્લિલ્લવઙ્) હસ પ્રકાર
 કે હન પૂર્વોક્ત વિશેષણોં વાળે મણિરત્ન કો લેકર ડસ નરપતિને ડસે હસ્તિરત્ન કે દાહિને કુમ્મ
 મેં બાંધ દિયા (તણ્ણં સે મરહાહિવે ણરિંદે હારોત્થણ સુકયરહયવચ્છે જાવ અમરવઙ્ સણ્ણિમાણ

થતી નથી અટલે કે એને ધારણ કરતા જ ધારણ કરનારના સર્વ દુઃખો નાશ પામે છે
 ધારણ કરનાર સઠાકાળ નિરોગી રહે છે એ મણિ રત્નને ધારણ કરનાર ઉપર કેમ
 પણ સમયે તિર્યન્ચ દેવ અને મનુષ્યકૃત ડપસર્ગોની અસર થતી નથી (સંગામે વિ અસત્ય-
 વજ્ઞો હોઃ ણરો મણિવર ધરેતો ઠિમજોવ્વળકેસ અવદ્વિયળહો હવઙ્ અ સવ્વમય-
 વિપ્પમુક્કો) સંગ્રામમાં પણ ભય કરતા ભય કરે યુદ્ધ માં પણ એ રત્નને ધારણ કરનાર
 મનુષ્ય શસ્ત્ર વડે પણ વધ્ય થઈ શકતો નથી ધારણ કરનારનું યૌવન સઠા કાળ સ્થિર રહે
 છે તેના નખ અને વાળ વધતા નથી તે સર્વ પ્રકારના ભયોથી મુક્ત રહે છે (તં મણિ-
 રયણ ગઘાય સે ણરવર્ઘે હત્થિરયણસ્સ દાહિણિલ્લાપ કુંભીણ ણિલ્લિલ્લવઙ્) આ પ્રમાણે
 તે પૂર્વોક્ત વિશેષણો વાળા મણિરત્નને લઈને તે નરપતિએ હસ્તી રત્નના દક્ષિણ તરફના
 કેશ સ્થળમાં બાધી દીધું (તણ્ણં સે મરહાહિવે ણરિંદે હારોત્થણ સુકયરહયવચ્છે

હારાવસ્તુતઃ ધૃતમુક્તાદિહારઃ પુનઃ કીદશઃ 'સુકય રડયવચ્છે' સુકૃતરતિદવક્ષસ્કઃ સુકૃતં સુરોત્યા રચિતમ્ ચતુષ્પદિ શરહારાદિમિઃ અતપ્વ રતિદ પ્રમોદજનકં વક્ષો યસ્ય સ તથા પુનશ્ચ 'જાત અમરવદ્ સન્નિમાપ્ દક્ષીણ પદિયકિત્તી મણિરયણકઃઞ્જો' તત્ર અમર-પતિ સન્નિમયા-હન્દ્રતુલ્યયા ઋદ્ધયા-આમરણાદિરૂપયા લક્ષ્મ્યા યુક્તઃ તથા પ્રથિતકીર્તિઃ વિશ્યાતયશાઃ તથા મણિરત્નકૃતોદ્યોતઃ મણિરત્નકૃતપ્રકાશઃપુનશ્ચ કીદશો રાજ ભરતઃ 'ચક્રરયણદેસિય મગ્ને અણેગરાય સહસ્સાણુયાયમગ્ને' ચક્રરત્નદેશિતમાર્ગઃ ચક્રરત્નેન દેશિતઃ પ્રદર્શિતો માર્ગો યસ્મૈ સ તથા, તથા અનેકરાજસહસ્રાણુગાતમાર્ગઃ અનેકરાજસહ સ્ત્રૈરનુચલિતમાર્ગઃ ચક્રરત્નપ્રદશિતાનુસારેણ ગચ્છતો ભરતસ્ય અનુ પશ્વાત્ મુકુટધારિણ અનેકે રાજાનઃ પ્રચલન્તીત્યર્થઃ પુનશ્ચ કીદશઃ 'મહયા ઉક્લિદ્ઠ સીહણાય વોલકલકલર-વેણં સમુદ્રવભૂય પિવ કરેમાણે જેણેવ તિમિસગુહાપ્ દાહિણિલ્લે દુવારે તેણેવ ઉવા-ગચ્છહ' મહતોત્કુષ્ઠ સિંહનાદવાલકલકલરવેણ સમુદ્રવભૂતામિવ કુર્વન્ કુર્વન્ યત્રેવ તમિ સ્નાગુહાયા દાક્ષિણત્યં દ્વાર તત્રૈવોપાગચ્છતિ તત્ર મહતા વિશાલેન ઉત્કુષ્ઠઃ સિંહનાદઃ વોલો અવ્યક્તધ્વનિઃ) વર્ણરહિતધ્વનિ તથા કલકલશ્ચ તદિતરોચ્યક્તધ્વનિઃ તલ્લક્ષણો યો રવઃ શબ્દઃ તેન સમુદ્રવં ભૂતમિવ સમુદ્રવ પ્રાતમિવ ગુહામિતિ ગમ્યમ્, અત્ર ભૂગતો ઇતિ સૌત્રો ધાતુઃ તસ્માત્ક પ્રત્યયે ભૂતામિતિ કુર્વાણઃ૨ યત્રેવ તમિસ્નાગુહાયાઃ દાક્ષિણાત્યં-દક્ષિણ-ભાગવર્તિ દ્વારં તત્રૈવોપાગચ્છતિ 'ઉવાગચ્છિત્તા' ઉપાગત્ય સ રાજા ભરતઃ 'તિમિસગુહં

હદિપ્ પદિયકિત્તી મણિરયણકઃઞ્જોપ્ ચક્રરયણદેમિયમગ્ને અણેગરાયસહસ્સાણુઅયમગ્ને મહયા ઉક્લિદ્ઠ સીહણાયવોલકલકલરવેણં સમુદ્રવભૂયપિવ કરમાણે ૨ જેણેવ તિમિસ ગુહાપ્ દાહિણિલ્લે દુવારે તેણેવ ઉવાગચ્છહ) ગલે મેં વારણ ક્રિયા હૈ મુક્તાદિકા હાર જિસને, તથા ચૌ સઠ લરકે હાર સે જિસકા વક્ષસ્થલ પ્રમોદજનક હો રહા હૈ યાવત્ અમરપતિ કો જૈસી ઋદ્ધિ સે જિસ-કી કીર્તિ વિશ્યાત હો રહી હૈ આમરણાદિ રૂપ કાન્તિ સે જિસકે ચારો ઓરઉદ્યોત ફેલ રહા હૈ. ચક્રરત્ન જિસે ગન્તવ્ય માર્ગ કા નિર્દેશ કર રહા હૈ. જિસકે પીછે પીછે હજારો રાજા ચલ રહે હૈ જોર જોર સે સૈન્ય જનાદિ દ્વારા કિયે ગયે સમુદ્ર કે રવ જૈસે સિંહનાદ કે શબ્દો સે અવ્યક્ત શબ્દો સે ઓર કલ કલ રવ સે દિહ્મડલ કો વ્યાપ્ત કરતા કરતા વહ ભરત રાજા જહાં પર તિમિસગુહા કા દક્ષિણદિગવર્તી દ્વાર યા વહાં પર આયા (ઉવાગચ્છિત્તા તિમિસગુહં દાહિણિલ્લેણ

જાત અમરવદ્ સન્નિમાપ્ દક્ષીણ પદિયકિત્તી મણિરયણકઃઞ્જોપ્ ચક્રરયણદેસિય મગ્ને અણેગરાયસહસ્સાણુયાયમગ્ને મહયા ઉક્લિદ્ઠસીહણાય વોલકલકલરવેણં સમુદ્રવભૂય) પિવ કરેમાણે ૨ જેણેવ તિમિસગુહાપ્ દાહિણિલ્લે દુવારે તેણેવ ઉવાગચ્છહ) ઓવામાં જેણે મુકતાદિનો હાર ધારણ કર્યો છે તેમજ ૬૪ લડીના હારથી જેવું વક્ષસ્થળ પ્રમોદજનક થઈ રહ્યું છે. યાવત્ અમરપતિ જેવી ઋદ્ધિથી જેની કીર્તિ વિશ્યાત થઈ રહી છે આમરણાદિ-કીર્તિથી જેની ચારે બાજુએ પ્રકાશ વ્યાપ્ત થાય છે જેનો ગન્તવ્ય માર્ગ ચક્ર નિર્દેશ કરી રહેલ છે જેની પાછળ પાછળ હજારો રાજાઓ ચાલો રહ્યા છે જેના સૈન્યના પ્રયાણથી સમુદ્ર તેમજ સિંહનાદ જેવા અવાજથી દિગ્ મંડળ વ્યાપ્ત થઈ રહ્યું છે એવો તે ભરત રાજા

દાહિણિલ્લેણ દુવારેણ અર્દ્ધ સસિન્વ મેહંધયારનિવહં' તમિલાગુહાં દાક્ષિણાત્યેન દ્વારેણા-
ત્યેતિ પ્રવિશતિ શશીવ ચન્દ્રઈવ મેધાન્ધકારનિવહં મેઘજનિતાન્ધકારસમૂહં શશીવ ચન્દ્રઈવ
પ્રવિશતીત્યર્થ: 'તણ્ણ સે મરહે રાયા છત્તલં' તન: ગુહાપ્રવેશાનન્તરં સ્વલ્પ મ મરતો
રાજા ષટ્ તલ્લમ્ ચત્તારિ ચત્તસ્રુ દિશુ દ્વે તુર્ધ્વમધ્યેત્યેવં પદ સંખ્યકાનિ તલાનિ યત્ર
તત્તથા તાનિ ચ ત્રિપદ્યસ્વલ્પરૂપાણિ ચૈર્ધ્મૌ અવિપમનયા તિષ્ઠન્તિ ઇતિ, પુન: કીદશમ્
'દુવાલસંસિઞ્' દ્વાદશાસ્રમ્ 'અટ્ટકણિય' અટ્ટકર્ણિકમ્ કર્ણિકા: કોણા: યત્ર અશ્રિત્રયં
મિલતિ તેષાં ચાધ: ઉપરિ પ્રત્યેકં ચતુર્ણો સદ્ભાવાત્ અટ્ટકર્ણિકમ્ 'અદિગરણિસંઠિઞ્'
અધિકરણિસંસ્થિતમ્ અધિકરણિ: સુવર્ણકારોપકરણં તદ્વત્ સંસ્થિતં સંસ્થાનં યસ્ય તત્તથા,
તત્ સદ્દશાકાર સમચતુરસ્રત્વાત્, આકૃતિસ્વરૂપં નિરૂપ્ય અત્ય તૌલ્યમાનમાહ—'અટ્ટસોવ-
ણિયં' અટ્ટ મૌર્વર્ણિકમ્ અટ્ટસુવર્ણમાન યસ્ય તત્તથા, તત્ર સુવર્ણમાનમિદમ્ ચત્તારિ મધુર-
ત્વળફલાન્યેક: શ્વેતસર્પપ: પોડશ શ્વેતસર્પપા એક ધાન્યમાપફલ દ્વે ધાન્યમાપફલે એકા:
ગુઠ્ઠા પઠ્ઠગુઠ્ઠા: એક: કર્મમાશ: પોડશ કર્મમાપકા: એક: સુવર્ણા:' ઇતિ એતાદૃશૈ
રઘ્મિ: સુવર્ણૈ: કાકળીરત્નં નિષાદ્યતે ઇતિ ચાધિકારે 'એતાનિ ચ મધુરત્વળફલાદીનિ
મરતચક્રવર્તિકાલસમ્મવીન્યેવ ગૃહ્ણન્તે, અન્યથા કાલમેદેન તદ્વૈપમ્યસમ્મવે કાકળીરત્નં
સર્વચક્રિણાં તુલ્યં ન સ્યાત્, તુલ્ય વેષ્યતે તદિ' ત્યેતસ્માદનુયોગદ્વારવૃત્તિવચનાત્ એત-
દેશીયાદેવ સ્થાનાઙ્ગવૃત્તિવચનાત્

'ચરગુલો મળી પુળ તસ્સચ્ચં ચેવ હોઈ વિચ્છિણ્ણો ।

ચરગુલપ્પમાળા સુવર્ણવર કાગળી નેયા' ॥૧૧॥

દુવારેણ અર્દ્ધ સસિન્વ મેહંધયારનિવહં) વહાં આકરકે વહ જૈસે ચન્દ્ર મેવ જનિત અન્ધકાર મેં
પ્રવિષ્ઠ હોતા હૈ. ડસી તરહ સે તિમિલાગુહા મેં દક્ષિણ દ્વાર સે પ્રવિષ્ઠ હુઆ (તણ્ણ સે મરહે રાયા
છત્તલં દુવાલસસિઞ્ અટ્ટકણિયં અદિગરણિસંઠિઞ્ અટ્ટસોવણિયકાગણિરયણ પરામુસહ) હસકે
બાદ ડસ મરત રાજા ને છહ તલવાલે— ચાર દિશાઓં કે ચાર તલ ઓર ઊપર નીચે કે દો તલ
હસ પ્રકાર સે છહ તલવાલે ૧૨ કોટીવાલે આઠ કોનોં વાલે, અધિકરિણો સુવર્ણકાર જિસ હોહે
કી બની હુઈ પિણ્ઠી પર ધરકર સુવર્ણ ચાંદી આદી કો હથોકે સે કૂટતા પોટતા હૈ— ડસ પિણ્ઠી
કે જૈસે અકાર વાલે આઠ વર્ણોં કા જિતના વજન હોતા હૈં ડતને વજન વાલે એમો કાકળી

અર્થાં તિમિલા ગુહાનુ દક્ષિણ દિગ્વર્તીય દ્વાર હવ ત્યા આગે। (ડવાગચ્છિત્તા તિમિલા-
ગુહં દાહિણિલ્લેણ દુવારેણ અર્દ્ધ સસિન્વ મેહંધયારનિવહં) ત્યા આવીને તે જેમ ચન્દ્ર
મેઘજનિત અન્ધકારમાં પ્રવેશે છે તેમજ તે તિમિલા ગુહામાં દક્ષિણ દ્વારથી પ્રવેશ્ય છે।
(તણ્ણ મરહે રાયા છત્તલં દુવાલસસિઞ્ અટ્ટકણિયં અદિગરણિસંઠિઞ્ અટ્ટસોવણિય
કાગણિરયણ પરામુસહ) ત્યાર બાદ મરત રાજાએ ૬ તલ વાળા ચાર (દશ) એના ચાર તલ
અને ઉપર નીચેના એ તલ, આ પ્રમાણે ૬ તલ વાળા ૧૨ કોટીવાળા આઠ ખુલ્લ વાળા
અધિકરણી-સુવર્ણકાર દોષાડની બનેલી જે પીડી ઉપર મૂકીને સુવર્ણ-ચાંદી ગેરને
હથોડીથી ૩૮ પીટે છે તે પીડી જેવા આકારવાળા એટલે કે (એરણ જેવા) આઠ સુવર્ણનું

અત્રાહ્નુલં પ્રમાણાઞ્જૂલં જ્ઞાતવ્યમ્ સર્વ ચક્રવર્તિનામપિ કાકળ્યાદિ રત્નાનાં તુલ્યપ્રમા-
ણત્વાત્ ઇતિ' મળ્યગિરિ કૃતવૃદ્ધત્ સંગ્રહણી વૃદ્ધદ્વિત્તિવચનાચ્ચ કેચન અસ્ય પ્રમાણાહ્નુલ-
નિષ્પન્નત્વમ્, કેચિચ્ચ 'एगमेगस्स ण रण्णो चाउरंत चक्कवट्ठिणो अट्ठ सोवण्णिण कागणि
रयणे छत्तले दुवालसंसिण अट्ठकागिणिण अहिगरणिस ठाणसंठिए पण्णत्ते, एगमेगा
कोढीउस्सेहंगुलविकखंभा तं समणस्स भगवओ महावीरस्स अद्धंगुलं' इत्यनुयोगद्वार
सूत्रबलादुत्सेधाह्નુलनिष्पन्नत्वम् केऽपि च एतानि सप्तैकेन्द्रियरत्नानि सर्व चक्रवर्तिना
मात्माह्नुलेन ज्ञेयानि शेषाणि तु सप्तपञ्चकेन्द्रियरत्नानि तत्कालिकपुरुषोचित मानानी-
ति प्रवचनसारोद्धारवृत्तित्रलादात्माह्नुलनिष्पन्नत्वमाहुः, अत्र च पक्षत्रये तत्त्व निर्णयः
सर्वविद्वेद्यः, अत्र च ग्रन्थगौरवमिया बहुवक्तव्यं नोच्यते इति । एतावद्विशेषणविशिष्टम्
'कागणिरयण परामुसह च्छि' काकणीरत्नं परामृशति स्पृशति गृह्णातीत्यर्थः इति । अस्य
ग्रहणानन्तरं स भरतो राजा यत् कृतवान् तदाह—'तएण त चउरगुलप्पमाणमिच्चं' ततः
परामर्शनान्तर खलु तत् काकणी रत्नं राजवरो गृहीत्वा यावदेकोनपञ्चाशतं मण्डलानि
आलिखन् आलिखन् अनुप्रविशतीत्युत्तरेण सम्बन्धः, 'चउरंगुलप्पमाणमिच्चं' चतुरङ्गुल-
प्रमाणमात्रम्, अस्यैकैका अश्विश्चतुरङ्गुलप्रमाणविष्कम्भा द्वादशाप्यश्रयः प्रत्येक चतुरङ्गुल-
प्रमाणा भवन्तीत्यर्थः, अस्य समचतुरस्रत्वादायामो विष्कम्भश्च प्रत्येकं चतुरंगुलप्रमाण
इत्युक्तं भवति, यैवासिद्धध्वीकृता आयाम प्रतिपद्यते सैव तिर्यग्यवस्थापिता विष्कम्भ-
भाग् भवतीत्यायामविष्कम्भयोरेकतरनिर्णयेऽपि अपरनिर्णयः स्यादेवेति सूत्रे विष्क-
म्भस्यैव ग्रहणम्, तद्ग्रहणे चायामोऽपि गृहीत एव, समचतुरस्रत्वात्तस्येति, तदेवं सर्वत-
श्चतुरङ्गुलप्रमाणमिदं सिद्धम् तथा 'अट्ठ सुवण्णं च' अष्टसुवर्णं च अष्टभिः सुवर्णैः निष्प-
न्नम् अष्टसुवर्णम् अष्टसुवर्णं मूलद्रव्येण निष्पन्न मित्यर्थः चकारो विशेषणसमुच्चये सर्वत्र
तथा 'विसहरणं' विषहरणम् विषं जङ्गमादि भेदभिन्नं तस्य हरण तावद् जंगमविषनाशक-

રત્ન કો ડસને ડઠાયા (તણં તં ચउरंगुलप्पमाणमिच्चં અદ્દસુવણ્ણ ચ વિસહરણં અતુલ ચउર-
સઠાણસઠિઁ, સમતલ માણુમ્માણ જોગા જતો લોગે ચરતિ) હસ રત્ન કો જો ૧૨—અશ્રીયાં
કોટિયા થીં વે પ્રત્યેક ચાર ચાર ૪—૪—અઞ્જૂલ કો થીં । હસ તરહ હસકો લલાહ ઔર ચૌહાઈ
ચાર—ચાર અઞ્જૂલ પ્રમાણ હોને સે યહ કાકળીરત્ન સમચતુરસ્ર કહા ગયા હૈ હસકા વજન આઠ
સુવર્ણ સૌનૈયાં કે વજન બગબર થા તથા યહ જન્ગમાદિ નક્ષ દાતો કે વિષ કો દૂર કરને-
વાલા થા હસકે જૈસા ઔર કોઈ રત્ન નહીં થા યહ સમતલ વાલા થા હસો રત્ન સે જગત મેં

એટલું વજન હોય છે તેટલા વજન વાળા જેવા કાકળી રત્નને 'ઉઠાવ્યુ (તપણંત ચउર-
ગુલપ્પમાણમિચ્છ અદ્દ સુવણ્ણં ચ વિસહરણ અટલ ચउરસસંઠાણસંઠિઁ સમતલ માણુ
મ્માણજોગા જતો લોગે ચરતિ) એ રત્નની જે ૧૨ અશ્રીઓ-કોટીઓ હતી તે દરેકે ૪-૪
અ શુદ્ધ એટલી હતી આ પ્રમાણે એની લખાઈ અને પહેળાઈ ચાર ચાર અ શુદ્ધ પ્રમાણ
હોવાથી એ કાકળી રત્ન સમચતુરસ્ર કહેવામા આવેલ છે એવું વજન આઠ સુવર્ણ સૌનૈયાના
વજન એટલું હતું તેમજ એ જગમાદિ નક્ષ-દાતોના વિષને દૂર કરનાર હતું એના

मित्यर्थः सुवर्णाष्ट तुणानां मध्ये विपहरणस्य प्रसिद्धत्वाद् अस्य हि तथाविध स्वर्णमय
 आदिति 'अउलं' अनुलम् तुलारहितमनन्यसदृशमित्यर्थः अनुपममित्यर्थः पुनः कीदृशम्
 'चउरससंठाणसंठियं' चतुरस्रसंस्थानसंस्थितमिति विशेषणं तु पूर्वोक्ताधिकरणि दृष्टान्तेन
 मान्यमिति न तु अधिकरणि दृष्टान्ते मान्यमाने नारय पूर्वोक्ता चतुरङ्गुलता उप-
 पद्यते अधिकरणेरधः सकुचितत्वेन विषमचतुरत्वादित्याह— 'रामतल' समतलम्—समानि
 न न्यूनाधिकानि तलानि यस्य तत्तथा अथ काकणी रत्नमेव यच्छब्दगर्भिमतवाक्य
 द्वारा विशिनष्टि 'माणुम्माण जोगा जतो लोमे चरति' मानोन्मानयोगाः यतो लोके चरन्ति,
 तत्र यतः काकणीरत्नात् मानोन्मान (प्रमाण) योगाः एते मानविशेषव्यवहारा लोके
 चरन्ति प्रवर्तन्ते इत्यर्थः तत्र मानं—मान्यमान सेतिका कुडवादि, रसमानं चतुः पट्टिकादि
 उन्मान कर्पपलादि खण्डगुडादि द्रव्यमानहेतुः, उपलक्षणात् सुवर्णादिमानहेतुः प्रतिमान-
 मपि ग्राह्यं गुञ्जादि, किं विशिष्टास्ते व्यवहाराः 'सर्वजनपणवगा' सर्वजनप्रज्ञापकाः
 सर्वजनानाम् अधमणोत्तमणानां प्रज्ञापकाः—मेय द्रव्याणामियत्तानिर्णायकाः अयमाशयः
 यथा सम्प्रति आसृजन्कृतनिर्णयाङ्क कुडवादिमानं जनप्रत्यायक व्यवहारप्रवर्तकं च
 भवति तद्वच्चक्रवर्ति काले कारणिकपुरुषैः काकणिरत्नाङ्कितं तत्तादृशं भवेदित्यर्थः मा-
 हात्म्यान्तरमाह—'णइव चंदो ण इव तत्थ सूरं ण इव अग्नी ण इव तत्थ मणिणो तिमिरं
 णासेति अंधयारे जत्थ तयं दिव्वं भावजुत्तं' नापि चन्द्रः नवा तत्र सूर्यः नवा अग्निः
 नवा तत्र मणयः तिमिरं नाशयन्ति,, यत्रान्धकारे तत्तत् दिव्यं प्रभावयुक्तम् तत्र नापि
 चन्द्रो नवा सूर्यस्तत्र तिमिरम् अन्धकारं नाशयतीति योजनीयम्, अत्र इवाक्यालङ्कारे
 एवं सर्वत्र, नवाऽग्नि दीपादि गतः नवा मणयः तत्र तिमिरं नाशयन्ति, प्रकाशं कर्तुं न
 शक्नुवन्तीत्यर्थः, यत्रान्धकारे अन्धकारयुक्तत्वेनाभेदोपचारात् अन्धकारवति गिरिशुहादौ
 तत्तत् काकणीरत्न दिव्यं प्रभावयुक्तं तिमिरं नाशयति, अथेदं कियत् क्षेत्रं प्रकाशय-
 तीत्याह—'दुवालस जोयणाइं तस्स लेसाउ विवद्धेति' द्वादशयोजनानि तस्य काकणीरत्न-
 स्य लेस्याः—प्रमाः विवर्द्धन्ते' अमन्दाः सत्यः प्रकाशयन्तीत्यर्थः किं विशिष्टा, लेस्याः

उस समय मान और उन्मान के व्यवहार होते थे (सर्व जन पणवगा) जो जनता को मान्य
 होते थे । (ण इवचंदो, ण इव तत्थ सूरं ण इव अग्नी ण इव तत्थ मणिणो तिमिरं णासेति अंध-
 यारे तत्थ तयं दिव्वं भावजुत्तं दुवालसजोयणाइं तस्स लेसाउ विवद्धेति तिमिरणिगरपडिसोहियाओ)
 जिस गिरिशुहादिगत अन्धकार को चन्द्र-सूर्य अग्नि या और दूसरे मणियो का प्रकाश नष्ट

नेवु भीलु कोरि रत्न हेतुं न नही के समतलवाणु हेतु के रत्नथी न नगतभां ते
 पपते मान अने उन्मानना व्यवहारो सम्पन्न थता हेता. (सर्वजनपणवगा) ने न-
 ताने मान्य हेता (णइव चंदो णइव तत्थ सूरं, ण इव अग्नी ण इव तत्थ मणिणो
 तिमिरं णासेति अंधयारे तत्थ तयं दिव्वं भावजुत्तं दुवालसजोयणाइं तस्स लेसाउ
 विवद्धेति तिमिरणिगरपडिसोहियाओ) ने गिरिशुहाना अधिकारने चन्द्र सूर्य अग्नि के
 अन्य भीलु भलिओना प्रकाश नष्ट करी शकता नही के अधिकारने के प्रभावशाली

પ્રમા: इत्याह-‘तिमिरगिरपरिसेहियाओ’ तिमिरनिकरप्रतिषेधिका: तमिस्रागुहाया: पूर्वाग्ना द्वादशयोजनविस्तारयोस्तासा प्रसरणात् ‘रत्तिं च सव्वकाल खंधावारे करेइ आन्नायं दिवसभूयं जस्स पभावेण चक्कवट्टी तिमिसगुहं अतीति सेण्णसहिण् अभिजेत्तुं वि-
 तियमद्धमरहं’ अत्र प्रथमं न यच्छब्दाच्चाहारात् अर्थयशाद्विभक्तिपरिमाणाच्च यद्वर्त्तनं रात्रौ रात्रिं रात्रावत्यर्थः चा वाक्यान्तरारम्भार्थः सर्वकालं स्कन्धावारे दिवसभूत दिवस-
 सदृशं यथा दिवसे आलोकं स्तथा रात्रौ अपीत्यर्थः आलोकं करोति-प्रकाशयति यस्य प्रभावेण चक्रवर्त्ती तमिस्रां गुहाम् अत्येति प्रविशति सैन्यसहितो द्वितीय मर्द्धभरतमभि-
 जेतुम् उत्तरभरतं वशोर्क्तुम् ‘रायवरे काकणिं गहाय तिमिसगुहाए पुरच्छिमिल्लपच्च-
 त्थिमिल्लेसुं कडपसुं’ राजवरः चक्रवर्त्ती भरतः काकणी-पदैकदेशे पदसमुदायोपचारात्
 काकणीरत्नं गृह्यत्वा आदाय तमिस्रागुहायाः पौरस्त्यपाश्चात्ययोः कपाटयोः-भित्तयोः
 प्राकृतत्वाद् द्विवचने बहुवचनम् ‘जोयणंतरियाइं पंचघणुसयविकखंभाइं जोयणुज्जयकराइं
 चक्कणेमी सठियाइं चंदमंडलपडिणिकासाइं एगूणपण्ण मंडलाइ आलिहमाणे आलि-
 हमाणे अणुप्पविसइ’ योजनान्तरितानि प्रमाणांगुलनिष्पन्नयोजनमपान्तराले मुक्त्वा

नहीं कर सकता था उस अन्धकार को यह प्रभावशाली देवाधिष्ठित काकणीरत्न नष्ट कर देता था
 इस काकणी रत्न की प्रमा-१२ योजन तक के क्षेत्र को प्रकाशित कर देती है (रत्तिं च सव्वकालं
 खंधावारे करेइ, आलोकं दिवसभूयं जस्स पभावेण चक्कवट्टी तिमिसगुहं अतीति सेण्णसहिण्
 वितियमद्धमरहं) यह रत्न चक्रवर्ती के सैन्य में दिवस के जैसा ही रात्रि में प्रकाश देता है-
 उत्तर भरत को वश करने के लिए इसी के प्रकाश में ही चक्रवर्ती तमिस्रागुहा में सैन्य-
 सहित प्रवेश करता है (रायवरे काकणिं गहाय तिमिसगुहाए पुरच्छिमिल्लपच्चत्थिमिल्लेसुं कडपसुं
 जोयणंतरियाइं पंचघणुसयविकखंभाइं) ऐसे पूर्वोक्त विशेषणों वाले काकणी रत्न को लेकर चक्रवर्ती
 ने तिमिस्रगुहा के पूर्व ओर पश्चिमदिग्वर्ती किवाड़ों की भीत में एक एक योजन के अन्तरालको
 और पांचसौ घनुष के विस्तार को छोड़कर (जोयणुज्जय कराइं चक्कणेमी सठियाइ चंदमंडल-
 पडिणिकासाइं एगूणपण्ण मंडलाइ आलिहमाणे आलिहमाणे २) ४९ मंडललिखे-बनाये ये मंडल

કાકણી રત્ન નષ્ટ કરતું હતું એ કાકણી રત્નની પ્રમા ૧૨ યોજન પ્રમાણુ વિસ્તારવાળા
 ક્ષેત્રને પ્રકાશિત કરતી હતી. (રત્તિં ચ સવ્વકાલં ખંધાવારે કરેइ આલોક દિવસભૂયં
 જસ્સ પભાવેણ ચક્કવટ્ટી તિમિસગુહં અતીતિ સેણ્ણસહિણ્ વિતિયમદ્ધમરહં) એ રત્ન
 અકવર્તીના સૈન્યમાં રાત્રીમાં દિવસ જેટલો જ પ્રકાશ આપતું હતું ઉત્તર ભારતને વશમાં
 કરવા માટે એના પ્રકાશમાં અકવર્તી તમિસ ગુહામાં સૈન્યસહિત પ્રવેશ કરે છે
 રાયવરે કાકણિ ગહાય તિમિસગુહાએ પુરસ્થિમિલ્લપચ્ચત્થિમિલ્લેસુ કડપસું જોયણ-
 તરિયાઈ પંચઘણુસયવિક્કખંભાઈ એવા પૂર્વોક્ત વિશેષણો વાળા કાકણીરત્નને લઈને
 અકવર્તી તિમિસ ગુહાના પૂર્વ અને પશ્ચિમ દિગ્વર્તી કમાડોની દિવાલમાં એક એક
 અન્તરાલને અને ૫૦૦ ધનુષ્યનો વિસ્તારને ત્યજીને (જોયણુજ્જયકરાઈ ચક્કણેમી
 સઠિયાઈ ચંદમંડલપડિણિકાસાઈ એગૂણપણ્ણ મંડલાઈ આલિહમાણે ૨) ૪૯ મંડળો લખ્યા-

कृतानि इत्यर्थः पठचधनुः शतविष्कम्भाणि—धवगाढनापेक्षया उत्सेधागुलनिष्पन्नपञ्च-
धनुःशतमानविष्कम्भाणि, वृत्तत्वात् विष्कम्भग्रहणेन यायामोऽपि तावानेवावगन्तव्यः,
उत्सेधांगुलप्रमोद्यमानायागढना केन चक्रिणा भरतेन हस्तान् नत्वाकणीत्वेन क्रिय
माणत्वान्मण्डलानाम्, अयं च मण्डलावगाहः स्व स्व प्रकाश्य गोजनमध्ये एव गण्यते
अन्यथा ४९ मण्डलानामवगाहे षण्डी क्रियमाणे गुहाभित्तो रायामः उक्तः प्रमाणावि-
कप्रमाणः प्रसज्येतेति, अतएव च योजनोद्योतकराणि योजनमात्रक्षेत्रप्रकाशकानि,
यावन्मण्डलान्तरालं तावन्मण्डलप्रकाश्यं गुहाभित्तिक्षेत्रमित्यर्थः, चक्रनेमिसंस्थितानि
चक्रस्य नेमिः—परिधिः तत्संस्थितानि तत्संस्थानि वृत्तानीत्यर्थः तथा चन्द्रमण्डलप्रति-
निकाशानि, चन्द्रमण्डलस्य प्रतिनिकाशानि भास्वरत्वेन सदृशानि 'एगूणपण्णं मंडलं' इ-
एकोनपञ्चाशत् मण्डलानि वृत्तसुवर्णरेखारूपाणि, काकणीरत्नस्य सुवर्णमयत्वात्
'आलिहमाणे आलिःमाणे' आलिखन् आलिखन् विन्यस्यन् विन्यस्यन् 'अणुपविसइ'
अनुप्रविशति गुहामिति बोध्यम्, वीप्सावचनमाभिष्यद्योतनार्थम्, मण्डलालिखनक्रम-
भायं गुहायां प्रविशन् भरतः पाश्चात्यपान्थजनप्रकाशकणाय दक्षिणद्वारे पूर्वदिक्पाटे

एक २ योजन की मूमितक प्रकाश देते थे इनका आकार चक्रनेमि के जैसा तथा भास्वर
होने के कारण चन्द्रमंडल के जैसा था इस तरह के मंडलों का आलेखन करता २ वह भरत-
चक्री (अणुपविसइ) गुहा में प्रविष्ट हुआ (तएण सा तिमिसगुहा भरहेण रण्णा तेहिं जोयणं तरि-
पहिं जाव जोयणुज्जोयकरेहिं एगूणपण्णाए मंडलेहिं आलिहज्जमाणेहिं २ खिप्पामेव आलोम-
भूया उज्जोयभूया जाया यापि होत्था) इस तरह वह तमिस्रागुहा उन एक योजन के अन्तराल
से बनाये गये यावत् एक योजन तक प्रकाश देनेवाले उन ४९ उंचास लिखे गए मंडलों से
आलोकित हो उठी उद्योतीत हो उठी और जैसे उसमें दिवस का प्रकाश हो गया हो ऐसी होकर
वह चमक उठी क्योंकि काकणी रत्नसुवर्णमय होता है इसलिये ये जो मंडल उससे लिखे गये वे
वृत्त और हिरण्यरेखारूप थे ये किस २ गुहा के द्वार आदि में लिखे गये इसका स्पष्टीकरण इस
प्रकार से है पाश्चात्य पान्थजनों को प्रकाश देने के लिए दक्षिण द्वार में पूर्वदिक्पाट में प्रथम-

मंडलो अनाव्या. ओम डो। ओक-ओक योजन नेटवी भूमीने प्रकाशित करे छे ओ मंडोने।
आकार चक्रनेमि जेवो तेमज भास्वर होवाथी चन्द्रमंडल जेवो डो। आ अतना मंडोने।
आलेखन करतो करतो ते भरतचक्री (अणुपविसइ) शुद्धाभा प्रविष्ट थये। (तएण सा तिमिस-
गुहा भरहेण रण्णा तेहिं जोयणं तरिपहिं जाव जोयणुज्जोयकरेहिं एगूणपण्णाए मंडलेहिं आलि-
हज्जमाणेहिं आलिहज्जमाणेहिं खिप्पामेव आलोमभूया उज्जोयभूया जाया यापि होत्था) आ
प्रमाणे ते तिमिस शुद्धा ओक योजनना अतशब्धी अनारवामा आवेदा यावत् ओक योजन
सुधी प्रकाश पाथरनार ते ४९ मंडोथी आलोकित थर्थ गछं अने जण्णे के तेमा दिवसने।
प्रकाश थर्थ गये। होय तेम प्रकाशित थर्थ गज के मुके काक्षिणीरत्न सुवर्णमय होय छे. ओधी
ओ मंडो जेने रत्नउडे लणवामा आव्या डो। ते वृत्त अने हिरण्य रेखा रूप डो। ओ
मंडो। कछं कछं शुद्धाभा द्वार वगेरे उपर लणवामा आव्या ओडुं स्पष्टीकरण आ प्रमाणे

પ્રથમ યોજનમુત્તયા મળ્હલ માલિખતિ તતો ગોમૂત્રિકાન્યાયેન ઉત્તરતઃ પશ્ચિમદિક્ક-
પાટતોઢકે તૃતીયયોજનાદૌ દ્વિતીય મળ્હલમાલિખતિ, તતસ્તેનૈવ ન્યાયેન પૂર્વદિ-
ક્કપાટતોઢકે ચતુર્થયોજનાદૌ તૃતીયમ્ તતઃ પશ્ચિમદિગ્મિત્તૌ પશ્ચમયોજનાદૌ ચતુર્થ
તતઃ પૂર્વદિગ્મિત્તૌ પઞ્ચયોજનાદૌ પશ્ચમ, તતઃ પશ્ચિમદિગ્મિત્તૌ સપ્તમયોજનાદૌ પઞ્ચમ્,
તતઃ પૂર્વદિગ્મિત્તૌ અષ્ટમયોજનાદૌ સપ્તમમ્, एवं तावद् वाच्य यावदष्टचत्वारिंशत्तमम्
ઉત્તરદિગ્દ્વારસત્કપશ્ચિમદિક્કપાટે પ્રથમયોજનાદૌ એકાનપચ્ચાશત્તમ ચોત્તરદિગ્દ્વારસત્ક-
પૂર્વદિક્કપાટે દ્વિતીયયોજનાદૌ આલિખતિ, एवमेकस्यां पित्तं पञ्चविततिः अपरस्यां-
चतुर्विंशतिरित्येकोनपञ्चाशत् मण्डलानि भवन्ति. एतानि च खलु गुहायां निर्यग् द्वादशयो-
जनानि प्रकाशयन्ति, ऊर्ध्वांशभागेन चाष्टौ योजनानि, गुहाया विस्तरोच्चत्वस्य चक्रमेण
एतावत् एव सङ्गात्, अग्रतः पृष्ठमथ योजन प्रकाशयन्तीति ।

યોજન કો છોડકર પ્રથમ મહલ उसने लिखा हमने बाद गोमूत्रेकान्याय से उत्तर दिशा में
पश्चिमदिक्कपाटनोड्डक में उसने तृतीय योजन को आदि में द्वितीय मंडल लिखा हमी न्याय के
अनुसार उसने पूर्वदिक्कपाटनोड्डक में चतुर्थयोजन की आदि में तृतीय मंडल लिखा इसके बाद
पश्चिमदिगिमिति में पाँचवा योजन को आदि में चतुर्थ मंडल लिखा इसके बाद पूर्वदिगिमिति में छठे
योजन की आदि में पाँचवा मण्डल लिखा इसके बाद पश्चिमदिगिमिति में सातवा योजन की आदि
में छठामण्डल लिखा इसके बाद पूर्वदिगिमिति में आठवा योजन को आदि में सातवा मंडल
लिखा इस तरह लिखते लिखते उसने उत्तर दिग्द्वार के पश्चिम दिक्कपाट में प्रथमयोजन की
आदि में ४८ अठनालीस वा मंडल लिखा और ४९ वा मंडल उत्तरदिग्द्वार के पूर्वदिक्कपाट
में द्वितीय योजन की आदि में लिखा इस प्रकार से एकमिति में २५ मंडल और दूसरीमिति
में २४ मंडल लिखे गए मिलकर ४९ मंडल हो जाते हैं । ये मंडल गुहा में तिरछे रूप में बारह

છે. પાશ્ચાત્ય પાથજનોનેપ્રકાશ આપવા માટે દક્ષિણ દ્વારમાં પૂર્વદિક્કપાટમાં પ્રથમ યોજનને
ત્યજીને પ્રથમ મહળ તેણે લખ્યું ત્યારબાદ ગોમૂત્રીકાન્યાયથી અર્થાત્ ચાલતા મળદના સૂત્રના
જેવા આકારથી ઉત્તરદિશામાં પશ્ચિમ દિક્કપાટતોડ્ડકમાં તેણે તૃતીય યોજનના પ્રારભમાં દ્વિતીય
મહળ લખ્યું એ ન્યાય મુજબ તેણે પૂર્વદિક્કપાટ તોડ્ડકમાં ચતુર્થ યોજનના પ્રારભમાં
તૃતીય મહળ લખ્યું ત્યારબાદ પશ્ચિમ દિગ્મિત્તિમાં પાચમા યોજનના પ્રારભમાં તેણે
ચતુર્થ મહળ લખ્યું ત્યારબાદ પૂર્વ દિગ્મિત્તિમાં ૬ઠા યોજનના પ્રારભમાં પાચમું મહળ
લખ્યું ત્યારબાદ પશ્ચિમ દિગ્મિત્તિમાં સાતમા યોજનના પ્રારભમાં ૬ઠું મહળ લખ્યું. ત્યારબાદ
પૂર્વદિગ્મિત્તિમાં આઠમા યોજનના પ્રારભમાં આઠમું મહળ લખ્યું આ પ્રમાણે લખતાં
લખતાં તેણે ઉત્તર દિગ્દ્વારના પશ્ચિમ દિક્કપાટમાં પ્રથમ યોજનમાના પ્રારભમાં ૪૮મું મહળ
લખ્યું. અને ૪૯મું મહળ તેણે ઉત્તરદિગ્ના પૂર્વદિક્કપાટમાં દ્વિતીય યોજનના પ્રારભમાં
લખ્યું આ પ્રમાણે એક ભિત્તિમાં ૨૫ મહળ અને બીજી ભિત્તિમાં ૨૪ મહળો
લખવામાં આવ્યા આમ જ નેનો ચરવાળો ૪૯ મહળો થઈ બાક છે એ મહળો ગુફામાં
વક્રાકારમાં ૧૨ યોજન સુધી અને ૮ યોજન સુધી જાયે તથા નીચે પ્રકાશ પાથરે છે. કેમ

નનુ ગોમૂત્રિકા વિરચનક્રમેણ મળ્ડલાલિખ્યને કથમેપાં યોજનાન્તરિત્વમ્ 'યથેક-
મિત્તિગતમળ્ડલાપેક્ષયા તર્કિ યોજનદ્વયાન્તરિત્વમાપદ્યેન અન્યથા દ્વિતીય મળ્ડલસ્યૈકમિ-
ત્તિગતત્વપ્રસન્નઃ તથા સતિ ગોમૂત્રિકામદ્ધઃ અન્યમિત્તિગતમળ્ડલાપેક્ષયા તુ તિર્યક્
સાધિક દ્વાદશ યોજનાન્તરિત્વમિતિ ચેન્ન પૂર્વમિત્તૌ પ્રથમં મળ્ડલમાલિખતિ, તતસ્ત-
ત્સમ્મુખપ્રદેશાપેક્ષયા યોજનાતિક્રમે દિતીયમળ્ડલમાલિખતિ, તતસ્તત્સમ્મુખ પ્રદેશા-
પેક્ષયા યોજનાતિક્રમે પૂર્વમિત્તૌ તૃતીયમળ્ડલમાલિખતીત્યાદિ ક્રમેણ મળ્ડલકરણાત્
ગોમૂત્રિકારત્વસ્ય યોજનાન્તરિત્વસ્ય ચ સુવ્યક્તયા સર્વસ્ય સુસ્થત્વાત્, અથ પચ્ચાશદ્

યોજન તક ઔર ઝેંચે નીચે આઠ યોજન તક પ્રકાશ દેતે હૈ ક્યોકિ ગુહાકા વિસ્તાર ઔર ઉચ્ચતા
ક્રમ સે હતની હી હૈ । યે મંડલ આગે ઔર પોછે એક યોજન તક પ્રકાશ દેતે હૈ—

શઙ્કા—યદિ ચક્રવર્તીતિમિત્ત ગુહા મેં ગોમૂત્રિકા (ચલને વેલવેમૂતકે જૈમા આકર) કે
આકાર મેં ૪૯ મંડલ લિખતા હૈ તો ફિર इनमें एक एक યોજન કે અન્તર સે લિખને કી જો
બાત કહી ગઈ હૈ વહ સઘતી નહીં હૈ યદિ એક મિત્તિગત મંડલ કી અપેક્ષા યોજનાન્તરિતા માની
જાવે તો ફિર ઇસ તરહ સે યોજનદ્વય સે અન્તરિતતા કી આપત્તિ આતી હૈ યદિ એસા ન માના-
જાય તો ફિર દ્વિતીય મંડલ મેં એક મિત્તિગતતા કા પ્રસન્ન પ્રાપ્ત હોગા । ઇસ તરહ સે હોને મેં ગો-
મૂત્રિકા કે આકાર ઠા હોના નહીં બન સકતા ઔર યદિ અન્યમિત્તિગત મળ્ડલ કી અપેક્ષા ગોમૂત્રિ-
કા કા આકાર કહા જાવે તો ફિર તિર્યક્ મેં ૧૨ યોજન સે અધિક કો અન્તરિતતા હો જાતી હૈ

ઉત્તર—યહ ભરત ચક્રવર્તી પૂર્વદિગતમિત્તિ મેં પ્રથમ મંડલ લિખતા હૈ ઇસકે બાદ ઇસકે
સમ્મુખ પ્રદેશ કી અપેક્ષા એક યોજન છોડકર દ્વિતીય મંડલ લિખતા હૈ ફિર ઇસકે સમ્મુખ પ્રદેશ મેં
એક યોજન છોડકર પૂર્વમિત્તિ મેં તૃતીય મંડલ લિખતા હૈ ઇત્યાદિ ક્રમ સે મળ્ડલ કરને સે વે ગોમૂત્રિકા
કે આકાર કે ઔર એક યોજન સે અન્તરિતતા વાલે હો જાતે હૈ । પચાસ યોજન કા લઘાઈ વાલી

કે શુક્રાને વિસ્તાર અને તેની ઉચ્ચતા કેમથી આટલી જ છે. એ મંડળો આગળ અને
પાછળ એક યોજન સુધી પ્રકાશ પાથરે છે,

શંકા :- જો ચક્રવર્તી તિમિત્ત શુક્રામાં ગોમૂત્રિકાના અર્થાત્ (ચાલતા બળદના સુતરનો
જેવો આકાર થાય છે તેવા) આકારમાં ૪૯ મંડળો લખે છે તો પછી એમને એક-એક
યોજનના અંતરથી લખવાની જે વાત કહેવામાં આવી છે, તે ખરાબર બંધ બેસતી નથી.
જો એક મિત્તિગત મંડળની અપેક્ષાએ યોજનાન્તરિતા માનવામાં આવે તો પછી આ પ્રમાણે
યોજન દ્વયથી અન્તરિતતાની આપત્તિ આવે છે જો આ પ્રમાણે માનવામાં આવે નહિ તો
પછી મંડળમાં એક મિત્તિગતતાનો પ્રસન્ન પ્રાપ્ત થશે ? આ પ્રમાણે થાય તો ગોમૂત્રિકાના
આકારની સલાવના જ શક્ય નથી અને જો અન્યમિત્તિગત મંડળની અપેક્ષા ગોમૂત્રિકાને
આકાર કહેવામાં આવે તો પછી તિર્યક્માં ૧૨ યોજનથી અધિકની અન્તરિતતા થઈ જાય છે.

ઉત્તર :- જો ભરત ચક્રવર્તી પૂર્વદિગતમિત્તિમાં પ્રથમ મંડળ લખે છે ત્યાર બાદ તેના
સમુખ પ્રદેશની અપેક્ષાએ એક યોજન વિસ્તાર છોડીને દ્વિતીય મંડળ આટીએ છે પછી
તેની સાથેના પ્રદેશમાં એક યોજન વિસ્તાર ત્યજીને પૂર્વમિત્તિમાં તૃતીય મંડળ લખે છે.

પ્રથમં યોજનમુત્તમ મળ્ડલ માલિખતિ તતો ગોમૂત્રિકાન્યાયેન ઉત્તરતઃ પશ્ચિમદિગ્ગ-
 પાટતોઢકે તૃતીયયોજનાદૌ દ્વિતીય મળ્ડલમાલિખતિ, તતસ્તેનૈવ ન્યાયેન પૂર્વદિ-
 વ્કપાટતોઢકે ચતુર્થયોજનાદૌ તૃતીયમ્ તતઃ પશ્ચિમદિગ્મિત્તૌ પશ્ચમયોજનાદૌ ચતુર્થ
 તતઃ પૂર્વદિગ્મિત્તૌ પૃથ્વયોજનાદૌ પશ્ચમ, તતઃ પશ્ચિમદિગ્મિત્તૌ સપ્તમયોજનાદૌ પૃથ્વમ્,
 તતઃ પૂર્વદિગ્મિત્તૌ અષ્ટમયોજનાદૌ સપ્તમમ્. एवं तावद् वाच्यं यावदष्टचत्वारिंशत्तमम्
 उत्तरदिग्द्वारसत्कपश्चिमदिक्कपाटे प्रथमयोजनादौ एकानपञ्चाशत्तम चोत्तरदिग्द्वारसत्क-
 पूर्वदिक्कपाटे द्वितीययोजनादौ आलिखति, एवमेकस्यां पित्तं पञ्चविंशतिः अपरस्यां-
 चतुर्विंशतिरित्येकोनपञ्चाशत् मण्डलानि भवन्ति, एतानि च खलु गुहाया निर्यग् द्वादशयो-
 जनानि प्रकाशयन्ति, ऊर्ध्वाधोभागेन चाष्टौ योजनानि, गुहाया विस्तरोच्चत्वस्य चक्रमेण
 एतावत् एव सङ्गात्, अतः पृष्ठमश्च योजनं प्रकाशयन्तीति ।

યોજન કો ઢોઢકર પ્રથમ મળ્ડલ ડસને લિખા ઇમરે વાદ ગોમૂત્રેકાન્યાય સે ઉત્તર દિશા મેં
 પશ્ચિમદિવ્કપાટનોઢક મેં ડસને તૃતીય યોજન કો આદિ મેં દ્વિતીય મળ્ડલ લિખા ઇમી ન્યાય કે
 અનુસાર ડસને પૂર્વદિવ્કપાટોઢક મેં ચતુર્થયોજન કી આદિ મેં તૃતીય મળ્ડલ લિખા ઇસકે વાદ
 પશ્ચિમદિગ્મિત્તિ મેં પાચવેં યોજન કો આદિ મેં ચતુર્થ મળ્ડલ લિખા ઇસકે વાદ પૂર્વદિગ્મિત્તિ મેં છઠે
 યોજન કી આદિ મેં પાચવાં મળ્ડલ લિખા ઇસકે વાદ પશ્ચિમદિગ્મિત્તિ મેં સાતવે યોજન કી આદિ
 મેં છઠામળ્ડલ લિખા ઇસકે વાદ પૂર્વદિગ્મિત્તિ મેં માઠવેં યોજન કી આદિ મેં સાતવા મળ્ડલ
 લિખા ઇસ તરહ લિખતે લિખતે ડસને ઉત્તર દિગ્દ્વાર કે પશ્ચિમ દિવ્કપાટ મેં પ્રથમયોજન કી
 આદિ મેં ૪૮ મળ્ડલાલીસ વા મળ્ડલ લિખા ઓર ૪૯ વાં મળ્ડલ ઉત્તરદિગ્દ્વાર કે પૂર્વદિવ્કપાટ
 મેં દ્વિતીય યોજન કી આદિ મેં લિખા ઇસ પ્રકાર સે એકમિત્તિ મેં ૨૫ મળ્ડલ ઓર દૂસરોમિત્તિ
 મેં ૨૪ મળ્ડલ લિખે ગય મિલકા ૪૯ મળ્ડલ હો જાતે હૈ । યે મળ્ડલ ગુહા મેં તિરછે રૂપ મેં વારહ

છે. પાશ્ચાત્ય પાથજનોનેપ્રકાશ આપવા માટે દક્ષિણ દ્વારમાં પૂર્વદિક્કપાટમાં પ્રથમ યોજનને
 ત્યજીને પ્રથમ મળ્ડલ તેણે લખ્યું ત્યારબાદ ગોમૂત્રીકાન્યાયથી અર્થાત્ ચાલતા મળ્ડલના સૂત્રના
 જેવા આકારથી ઉત્તરદિશામાં પશ્ચિમ દિક્કપાટતોઢકમાં તેણે તૃતીય યોજનના પ્રારભમાં દ્વિતીય
 મળ્ડલ લખ્યું એ ન્યાય મુજબ તેણે પૂર્વદિક્કપાટ તોઢકમાં ચતુર્થ યોજનના પ્રારભમાં
 તૃતીય મળ્ડલ લખ્યું ત્યારબાદ પશ્ચિમ દિગ્મિત્તિમાં પાચમા યોજનના પ્રારભમાં તેણે
 ચતુર્થ મળ્ડલ લખ્યું ત્યારબાદ પૂર્વ દિગ્મિત્તિમાં ૬ ઠા યોજનના પ્રારભમાં પાચમું મળ્ડલ
 લખ્યું ત્યારબાદ પશ્ચિમ દિગ્મિત્તિમાં સાતમા યોજનના પ્રારભમાં ૬ઠું મળ્ડલ લખ્યું. ત્યારબાદ
 પૂર્વદિગ્મિત્તિમાં આઠમા યોજનના પ્રારભમાં આઠમું મળ્ડલ લખ્યું આ પ્રમાણે લખતાં
 લખતા તેણે ઉત્તર દિગ્દ્વારના પશ્ચિમ દિક્કપાટમાં પ્રથમ યોજનમાના પ્રારભમાં ૪૮મું મળ્ડલ
 લખ્યું. અને ૪૩મું મળ્ડલ તેણે ઉત્તરદિગ્દ્વારના પૂર્વદિક્કપાટમાં દ્વિતીય યોજનના પ્રારભમાં
 લખ્યું આ પ્રમાણે એક ભિત્તિમાં ૨૫ મળ્ડલ અને બીજી ભિત્તિમાં ૨૪ મળ્ડલો
 લખવામાં આવ્યા આમ બંનેના સરવાળો ૪૯ મળ્ડલો થઈ જાય છે એ મળ્ડલો શુક્રમાં
 વક્રાકારમાં ૧૨ યોજન સુધી અને ૮ યોજન સુધી જાયે તથા નીચે પ્રકાશ પાથરે છે. કેમ

નતુ ગોમૂત્રિકા વિરચનક્રમેણ મળ્ડલાલિખતે કથમેષાં યોજનાન્તર્ગિતત્વમ્ 'યદેક-
મિત્તિગતમળ્ડલાપેક્ષયા તર્ઙિ યોજનદ્વયાન્તર્ગિતત્વમાપદ્યેન અન્યથા દ્વિતીય મળ્ડલસ્યૈકમિ-
ત્તિગતત્વપ્રસન્નઃ તથા સત્તિ ગોમૂત્રિકાપદ્મઃ અન્યમિત્તિગતમળ્ડલાપેક્ષયા તુ તિર્યક્
સાધિક દ્વાદશ યોજનાન્તરિતત્વમિત્તિ ચેન્ન પૂર્વમિત્તો પ્રથમં મળ્ડલમાલિખતિ, તતસ્ત-
ત્સમ્મુખપ્રદેશાપેક્ષયા યોજનાતિક્રમે દ્વિતીયમળ્ડલમાલિખતિ, તતસ્તત્સમ્મુખ પ્રદેશા-
પેક્ષયા યોજનાતિક્રમે પૂર્વમિત્તો તૃતીયમળ્ડલમાલિખતીત્યાદિ ક્રમેણ મળ્ડલકરણાત્
ગોમૂત્રિકારત્વસ્ય યોજનાન્તરિતત્વસ્ય ચ સુવ્યક્તતયા સર્વસ્ય સુસ્થત્વાત્, અથ પચ્ચાશદ્

યોજન તક ઓર ડેવે નીચે આઠ યોજન તક પ્રકાશ દેતે હૈ ક્યોંકિ ગુહાકા વિસ્તાર ઓર ઉચ્ચતા
ક્રમ સે હતની હી હૈ । યે મંડલ આગે ઓર પોછે એક યોજન તક પ્રકાશ દેતે હૈ—

શઙ્કા—યદિ ચક્રવર્તીતિમિત્તા ગુહા મેં ગોમૂત્રિકા (ચલને વેલ્લેમૂતકે જૈમા આકર) કે
આકાર મેં ૪૯ મંડલ લિખતા હૈ તો ફિર इनमें એક એક યોજન કે અન્તર સે લિખને કી જો
બાત કહી ગઈ હૈ વહ સઘતી નહીં હૈં યદિ એક મિત્તિગત મંડલ કી અપેક્ષા યોજનાન્તરિતા માની
જાવે તો ફિર હસ તરહ સે યોજનદ્વય સે અન્તરિતતા કી આપત્તિ આતી હૈ યદિ એસા ન માના-
જાય તો ફિર દ્વિતીય મંડલ મેં એક મિત્તિગતતા કા પ્રસન્ન પ્રાપ્ત હોગા । હસ તરહ સે હોને મેં ગો-
મૂત્રિકા કે આકાર કા હોના નહીં બન સકતા ઓર યદિ અન્યમિત્તિગત મળ્ડલ કી અપેક્ષા ગોમૂત્રિ-
કા કા આકાર કહા જાવે તો ફિર તિર્યક્ મેં ૧૨ યોજન સે અધિક કો અન્તરિતતા હો જાતી હૈ

ઉત્તર— યહ મરત ચક્રવર્તી પૂર્વદિગ્ગતમિત્તિ મેં પ્રથમ મંડલ લિખતા હૈ હસકે બાદ હસકે
સમ્મુખ પ્રદેશ કી અપેક્ષા એક યોજન છોડકર દ્વિતીય મંડલ લિખતા હૈ ફિર હસકે સમ્મુખ પ્રદેશ મેં
એક યોજન છોડકર પૂર્વમિત્તિ મેં તૃતીય મંડલ લિખતા હૈં ઇત્યાદિ ક્રમ સે મળ્ડલ કરને સે વે ગોમૂત્રિકા
કે આકાર કે ઓર એક યોજન સે અન્તરિતતા વાલે હો જાતે હૈ । પચાસ યોજન કો લઘાઈ વાલી

કે શુક્રાને વિસ્તાર અને તેની ઉચ્ચતા કમથી આટલી જ છે. એ મંડળો આગળ અને
પાછળ એક યોજન સુધી પ્રકાશ પાથરે છે.

શંકા :- જો ચક્રવર્તી તિમિત્ત શુક્રામાં ગોમૂત્રિકાના અર્થાત્ (આલતા બળહના સુતરને
જેવો આકાર થાય છે તેવા) આકારમા ૪૯ મંડળો લખે છે તો પછી એમને એક-એક
યોજનના અંતરથી લખવાની જો વાત કહેવામા આવી છે, તે બરાબર બંધ બેસતી નથી
જો એક ભિત્તિગત મંડળની અપેક્ષાએ યોજનાન્તરિતા માનવામા આવે તો પછી આ પ્રમાણે
યોજન દ્વયથી અન્તરિતતાની આપત્તિ આવે છે જો આ પ્રમાણે માનવામા આવે નહિ તો
પછી મંડળમાં એક ભિત્તિગતતાનો પ્રસન્ન પ્રાપ્ત થશે ? આ પ્રમાણે થાય તો ગોમૂત્રિકાના
આકારની સંભાવના જ શક્ય નથી અને ને અન્યભિત્તિગત મંડળની અપેક્ષા ગોમૂત્રિકાનો
આકાર કહેવામા આવે તો પછી તિર્યક્માં ૧૨ યોજનથી અધિકની અન્તરિતતા થઈ જાય છે.
ઉત્તર - જો ભરત ચક્રવર્તી પૂર્વદિગ્ગતભિત્તિમા પ્રથમ મંડળ લખે છે ત્યાર બાદ તેમા
સમુખ પ્રદેશની અપેક્ષાએ એક યોજન વિસ્તાર છોડીને દ્વિતીય મંડળ આલેજે છે પછી
તેની સામેના પ્રદેશમા એક યોજન વિસ્તાર લખીને પૂર્વભિત્તિમા તૃતીય મંડળ લખે છે.

યોજનાયામાયાં ગુહાયામ્ એકોન પચ્ચાશતા મળ્ડલૈર્યત્પ્રકાશકરણમુક્ત તસ્યાર્થસ્ય સુલ્લપ્રતિ-
પત્તયે સક્ષપેળ મળ્ડલપશ્ચકસ્ય સ્થાપનાં દર્શયતિ યથા- ? ? ? ? એવ પદ્કોષ્ટકપરિકલ્પિત
ષ્ઠ્યયોજનક્ષેત્રે એકસ્મિન પક્ષે ત્રીણિ અન્ય તુ દ્વે એત્યુભય સમ્મેલને પશ્ચમળ્ડલાનિ
એવમનેન ગોમૂત્રિકા મળ્ડલકવિરચનક્રમેણ પચ્ચાશદ્ યોજનાયામાયાં ગુહાયામૈકોનપચ્ચા-
શતોઽપિ મળ્ડલકાનાં સ્થાપના આકારઃ સ્વય વિજ્ઞેયેતિ । અથ પ્રકૃતં પ્રસ્તૂયતે- 'તણ્'
ઇત્યાદિ । તણ સા તિમિસગુહા મરદેળં રળ્ણા તેહિં જોયળંતરિણિં જાવ જોયળુજ્જો-
યકરેહિં એગૂળવળ્ણાપ મંડલેહિ આલિહિજ્જમાળેહિં આલિહિજ્જમાળેહિં સ્વિપ્પામેવ આલો-
ગમૂયા ઉજ્જોયમૂયા દિવસમૂયા જાયા યાવિહોત્થા' તતો મળ્ડલાલિખનાનન્તરં સ્વલ્લ
સા તમિસા ગુહા મરતેન રાજા તૈઃ યોજનાન્તરિતૈઃ યાવ્ધોજનોધોતકરૈઃ એકોનપચ્ચા-
શતા મળ્ડલૈગલિહ્યમાનૈરાલિખ્યમાનૈઃ ક્ષિપમેવ આલોકં સૌર પ્રકાશં મૂતા પ્રાતા, અત્ર
મૂગતૌ ઇતિ સોત્ર ગાતોઃ ક્ત પ્રત્યયઃ એવમ્ ઉધોતં ચાન્દ્રપ્રકાશંમૂતા કિં બહુના ? દિવસ-

ગુફા મેં જો ૪૯ મંડલ કરને કી વાત કહી ગઈ હૈ- વહ મચ્છી તરહ સે સમજ મેં આ જાવે હસકે
લિયે સૂત્રકાર ને પાંચ મંડલોં કી સ્થાપના સસ્કૃત ટીકા મેં દિશ્વા કરકે સમજાયા હૈ-હસ તરહ ષ્ઠ
કોષ્ટક પરિકલ્પિત ષ્ઠ યોજનવાળે ક્ષેત્ર મેં એક પક્ષ મેં ત્રીન ઔર અન્યત્ર દો મંડલ છલિં જાતે
હૈ દોનોં કા જોડ પાંચ હો જાતા હૈ । હસીતરહ ગોમૂત્રિકા કે આકાર વાળે મંડલોં કી રચના
કે ક્રમ સે ૫૦ યોજન પ્રમાણ વાળી ગુહા મેં ૪૯ મંડલોં કી સ્થાપના સ્વય હી સમજ ઠેના
ચાહિય (તણ સા તિમિસગુહા મરદેળં રળ્ણા તેહિં જોયળંતરિણિં જાવ જોયળુજ્જોયકરેહિં
એગૂળવળ્ણાપ મળ્ડલેહિં આલિહિજ્જમાળેહિં ૨ સ્વિપ્પામેવ આલોગમૂયા ઉજ્જોયમૂયા દિવસમૂયા
જાયાયાવિહોત્થા) એક ૨ યોજન કે અન્તરાલ સે, યાવત્ એક ૨ યોજન તક પ્રકાશ દેનેવાળે
હન ૪૯ મળ્ડલોં કો હસ પ્રકાર સે લિખને કે વાદ વહ તિમિસગુહા બહુત હો શોષ આલોકમૂત
હો ગઈ ઉધોતમૂત હો ગઈ ઔર દિવસ કે જૈસી હોગઈ યહાં અપિશન્દ સમાવના અર્થ મેં પ્રયુક્ત

ઇત્યાદિ કમથી મડળો આલેખવાથી ગોમૂત્રિકાના આકારના અને એક યોજન જેટલી અત-
સ્તિતાવાળા થઈ જાય છે. ૫૦ યોજન જેટલી લંબાઈવાળી શુક્રામાં જે ૪૯ મડળો લખવાની
વાત કહેવામાં આવી છે તે સારી રીતે સમજમાં આવી જાય એ હેતુથી સૂત્રકારે આ પ્રમાણે
પાંચ મડળોની સ્થાપના સસ્કૃત ટીકામાં કરીને સમજાવવા પ્રયત્ન કર્યો છે આ રીતે ૫૨ કોષ્ટક
પરિકલ્પિત ૫૩ યોજનવાળા ક્ષેત્રમાં એક પક્ષમાં ત્રણ અને અન્યત્ર બે મડળો લખવામાં આવે છે
અન્નેનો સરવાળો પાંચ થઈ જાય છે આ પ્રમાણે ગોમૂત્રિકાના આકારવાળા મડળની રચના
કમથી ૫૦ યોજન પ્રમાણવાળી શુક્રામાં ૪૯ મડળોની સ્થાપના આપ મેળે જ સમજ લેવી
જોઈએ. (તણ સા તિમિસગુહા મરદેળ રળ્ણા તેહિં જોયળંતરિણિં જાવ જોયળુજ્જોય-
કરેહિં એગૂળવળ્ણાપ મળ્ડલેહિં આલિહિજ્જમાળેહિં ૨ સ્વિપ્પામેવ આલોગમૂયા ઉજ્જોયમૂયા
દિવસમૂયા જાયા યાવિ હોત્થા) એક-એક યોજનના અતરાલથી યાવત્ એક-એક યોજન મુખી
પ્રકાશ પાથરનારા એ ૪૯ મડળોને આ પ્રમાણે લખવાથી તે તિમિસ શુક્ર અતીવ શીઘ્ર આલોક
ભૂત થઈ ગઈ, અને દિવસના જેવી ઘઈ પ્રકાશિત થઈ ગઈ અહીં 'અપિ' શબ્દ સંભાવનાના

ભૂતા દિનનદશી જાતા ચાસીત્, ચ સમુચ્ચયે અપિઃ સમ્ભાવનાયામ્, તેન નેય ગુહા મળ્ડલપ્રકાશપૂર્ણાં કિન્તુ સમ્ભાવ્યતે આલોકભૂતા, એવમગ્રેતનપદદ્વયમપિ તથાહિ નેયં ગુહા મળ્ડલપ્રકાશપૂર્ણાં અપિ તુ સમ્ભાવ્યતે ઉદ્યોતભૂતા તથા નેયં ગુહા મળ્ડલપ્રકાશપૂર્ણાં અપિ તુ સમ્ભાવ્યતે દિવસભૂતા ઇતિ ॥સુ. ૧૫॥

અથાન્તર્ગૃહ વર્તમાનયોઃ પરપારં જિગમિષૂર્ણાં પ્રતિબન્ધકીભૂતયો રુન્મગ્નાનિમગ્ના-
નમકનદ્યોઃ સ્વરૂપં પ્રરૂપયિતુકામઃ પ્રાહ - “તીસે જં” ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્-તીસે જં તિમિસગુહાએ વહુમચ્છ દેસમાએ એત્થજં ઉમ્મ.
ગગિમગ્ગજલાઓ જામં દુવે મહાજઈઓ પળ્લજાઓ જાઓજં તિમિસ
ગુહાએ પુરચ્છિમિલ્લાઓ મિત્તિકડગાઓ પવૂઢાઓ સમાણીઓ પચ્ચ.
ત્થિમેજં સિંધુ મહાજઈ સમપ્પેતિ, સે કેળદ્વંજં મંતે ! એવં વુચ્ચઈ ઉમગ્ગ.
ગિમગ્ગજલાઓ મહાજઈઓ ?, ગોયમા ! જળ્લં ઉમગ્ગજલાએ મહાજઈએ
તળંવા પત્તંવા કદ્દં વા સક્કરં વા આસે વા હત્થી વા રહે વા જોહે વા
મણુસે વા પક્કિવ્વપ્પઈ તળ્લં ઉમગ્ગજલા મહાજઈ તિક્કિવ્વત્તો આહુણિઅ
૨ એગંતે થંલસિ એદ્દેઈ, જળ્લં ગિમગ્ગજલાએ મહાજઈએ તળં વા પત્તં વા
કદ્દં વા સક્કર વા જાવ મણુસે વા પક્કિવ્વપ્પઈ તળ્લં ગિમગ્ગજલામહાજઈ
તિક્કિવ્વત્તો આહુણિઅ આજ્ઞણિઅ અંતો જળંસિ ગિમજ્જાવેદ્દ, સે તેળદ્વેજં
ગોયમા ! એવં વુચ્ચઈ ઉમગ્ગગિમગ્ગજલાઓ મહાજઈઓ, તણ્ણં સે મરહે
રાયા ચક્કરચળદેસિયમગ્ગે અળેગરાય. મહયા ઉક્કિદ્દ સીહણાય જાવ
કરેમાળે કરેમાળે સિંધુએ મહાજઈએ પુરચ્છિમિલ્લેજં કૂઢેજં જેણેવ
ઉમગ્ગજલા મહાજઈ તેણેવ ઉવાગચ્છઈ ઉવાગચ્છિત્તા વચ્છરચળં સદાવેદ્દ
સદાવિત્તા એવં વયાસી સિંપ્પામેવ મો દેવાપ્પિયા ! ઉમ્મગગિમગ્ગજલાસુ

હુઆ હૈ હસસે યહ સમજાયા ગયા હૈ કિ વહ ગુપ્તા મળ્ડલ પ્રકાશ સે પૂર્ણ નહીં હુઈ કિન્તુ એસી
સમાવના હોતી હૈ કિ વહ મંડલ પ્રકાશ સે પૂર્ણ સી હોગઈ હસી તરહ આલોકાદિ પદોં કે સમ્બ-
ન્ધ મેં મી જાનનાં ચાહિયે ॥૧૫॥

અર્થમા પ્રયુક્ત થયેલ છે એનાથી આમ સમભવવામાં આવ્યું છે કે તે શુદ્ધ સહજ પ્રકાશથી
પરિપૂર્ણ થી નહિ પણ એવી સંભાવના છે કે તે મહાનોના પ્રકાશથી પરિપૂર્ણ હોય એવી
દર્ષના રીતે આ દોષાદિ પદોના સબધમાં પણ ભણી લેવું જોઈએ. ॥સૂત્ર-૧૫॥

महाणईसु अणेगखंभसयसण्णिविट्ठे अयस्समकंपे अमेज्जकवए सालंब-
णबाहाए सव्वस्यणामए सुहसंकमे करेहि करेत्ता मम एअमाणत्तियं
खिप्पामेव पच्चपिणाहि तएणं से वद्धइस्यणे भरहेणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे
हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए जाव विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता खिप्पामेव
उम्मग्गजलासु महाणईसु अणेगखंभसयसण्णिविट्ठे जाव सुहसंकमे करेइ
करित्ता जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता जाव एयमा-
णत्तियं पच्चपिणइ तएणं से भरहे राया सखंधावारबले उम्मग्गणिम्मग्ग-
जलाओ महाणईओ तेहिं अणेगखंभसयसण्णिविट्ठेहिं जाव सुहसंकमेहिं
उत्तरइ, तएणं तीसे तिमिस्सगुहाए उत्तरिल्लस्स दुवारस्स कवाडा सयमेव
महया महया कौंचारवं करेमाणा रससरस्सग्गाइं ठाणाइं पच्चोसक्कित्था
॥सू० १६॥

छाया—तस्याः खलु तिमिस्सागुहायाः बहुमध्यदेशभागे अत्र खलु उन्मग्ननिमग्नजले
नाम्न्यो द्वे महानद्यौ प्रवृत्ते, ये खलु तिमिस्सागुहायाः पौरस्थात् भित्तिकटकत् प्रव्यूढे
सत्यौ पाश्चात्येन सिन्धु महानदीं समाप्नुतः, अथ केनार्येन भवन्त ! एवमुच्यते उन्मग्नजल-
निमग्नजले महानद्यौ ! इति गौतम ! यत् खलु उन्मग्नजलाया महानद्यां तृणं वा पत्रं वा
काष्ठं वा शर्करा वा अदधो वा हस्ती वा रथो वा योओ वा मनुष्यो वा प्रक्षिप्यते तत्
खलु उन्मग्नजला महानदी त्रिः कृत्वः आधूय आधूय पकान्ते स्थले छर्दयति यत् खलु
निमग्नजलायां महानद्यां तृणं वा पत्रं वा काष्ठं वा शर्करा वा यावत् मनुष्यो वा प्रक्षिप्यते
तत् खलु निमग्नजला महानदी त्रिः कृत्वः आधूय आधूय अन्तर्जले निमज्जयति अथ तेनार्येन
गौतम ! एवमुच्यते उन्मग्नजलनिमग्नजले महानद्यौ, ततः खलु स भरतो राजा चक्ररत्न
देशितमार्गः अनेकराजः महता उत्कृष्टसिंहनाद यावत् कुर्वन् कुर्वन् सिन्धुवा महानद्यः
पौरस्थे कूटे यत्रैव उन्मग्नजला महानदी तत्रैव उपागच्छति उपागत्य वर्द्धकिरत्नं शब्दयति
शब्दयित्वा एवमवादीत् क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिय ! उन्मग्ननिमग्नजलयो महानद्योः अनेक
स्तम्भशतसन्निविष्टौ अवलाकम्पौ अमेघकवचौ सालम्बनबाहौ सर्वरत्नमयी सुखसंक्रमौ
कुरुष्व, कृत्वा मम पताम् आह्वसिकां क्षिप्रमेव प्रत्यर्पय, ततः खलु तत् वर्द्धकिरत्नं भरतेन
राज्ञा एवमुक्तं सत् हृष्टतुष्टचित्तानन्वितं यावद् धिनयेन प्रतिभृनोति, प्रतिभृत्य क्षिप्रमेव
उन्मग्ननिमग्नजलयो महानद्योः अनेकस्तम्भशतसन्निविष्टौ यावत् सुखसंक्रमौ करोति, कृत्वा
यत्रैव भरतो राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य यावत् पतामाह्वसिका प्रत्यर्पयति, ततः
खलु स भरतो राजा स रुन्धावारबल उन्मग्ननिमग्नजले महानद्यौ ताभ्याम् अनेक स्त
म्भशतसन्निविष्टाभ्यां यावत् सुखसंक्रमाभ्याम् उत्तरति, ततः खलु तस्या स्तमिस्सागुहाया
उत्तराईस्य द्वारस्य कपाटी स्वयमेव महता क्रौञ्चारवं सरस्सरत्ति कुर्वाणो स्वके स्वके
स्थाने प्रवृत्तवाष्वाङ्किषाताम् ॥सू० १६॥

टीका “तीसेजं” इत्यादि ‘तीसेजं तिमिसगुहाए बहुमज्जदेसमाए एत्थणं उन्मगगणिमग्नजलाओ णामं दुवे महाणईओ पणत्ताओ’ तस्याः खलु तिमिसगुहाया बहु-मध्यदेशभागे अत्र खलु दक्षिणद्वारतः तोड्डक समेनैकविंशतियोजनेभ्यः परतः उत्तर-द्वारतः तोड्डकसमेनैकविंशतियोजनेभ्योऽर्वाक् च उन्मग्ननिमग्नजले नाम्न्यो उन्मग्नजलानिमग्नजला नाम्न्यौ द्वे महानद्यौ प्रज्जप्ते ‘जाओणं तिमिसगुहाए पुरच्छिमिल्लाओ भित्तिकडगाओ पवूहाओ समाणीओ पच्चत्थिमेण सिंधुं महाणइं समप्पेति’ ये खलु तिमिसगुहायाः पौरस्त्यात् भित्तिकटकात् भित्तिप्रदेशात् प्रव्यूढे निर्गते सत्यौ पाश्चात्येन कटकेन विभिन्नेन सिंधु महानदीं समाप्नुतः प्रविशत इत्यर्थः ‘से केणट्ठेणं मंते ! एवं वुच्चइ-उन्मगगणिमग्नजलाओ महाणईओ ?’ अथ केनार्थेन भदन्त ! एव मुच्यते उन्मग्नजलनिमग्नजले महानद्यौ इति १, ‘गोयमा ! जणं उन्मग्नजलाए महाणईए तणं वा पत्तं वा कट्टं वा सक्करं वा आसे वा हत्थी वा जोहे वा मणुस्सेवा पक्खिवइ’ गौतम ! यत् खलु उन्मग्न-

गुहा के भीतर वर्तमान उन्मग्न और निमग्नानदियों के स्वरूप का कथन

टीकायः :—‘तीसेजं तिमिसगुहाए बहुमज्जदेसमाए एत्थणं’—इत्यादि—सूत्र—१६—

(तीसेजं तिमिसगुहाए बहुमज्जदेसमाए) उस तिमिसगुहाके बहु मध्य देश में (उन्मगगणिमग्नजलाओ णामं दुवे महाणईओ पणत्ताओ) उन्मग्न और निमग्न नाम की दो महानदियां कही गई हैं ये दो नदिया दक्षिण द्वार के तोड्डक से २१ योजन आगे और उत्तर द्वार के तोड्डक से २१ योजन पहिले है । (जाओ ण तिमिसगुहाए पुरच्छिमिल्लाओ भित्तिकडगाओ पवूहाओ समाणीओ पच्चत्थिमेणं सिंधुमहाणइं समप्पेति) तिमिसा गुहा के पौरस्त्यभित्ति कटक से भित्ति प्रदेश से निकलती हुई पाश्चात्य भित्तिप्रदेश से होकर सिंधु महानदी में प्रवेश करती है (से केणट्ठेणं मंते ! एवं वुच्चइ उन्मगगणिमग्नजलाओ महाणईओ) हे भदन्त ! इन नदियों का उन्मग्न और निमग्न ऐसा नाम किस कारण से कहा गया है ? इसके उत्तर में प्रमुक्तहते है—(गोयमा ! जणं उन्मग्नजलाए महाणईए तणं वा पत्तं वा कट्टं वा सक्करं वा आसे वा हत्थी वा जोहेवा मणुस्सेवा पक्खिवइ) हे गौतम ! जिस कारण से उन्मग्न महानदी में

शुक्ष्मां (वधमान उन्मग्न) अने निमग्न नदीओना स्वरूपलु कथन :-

टीकायः—(तीसेजं तिमिसगुहाए बहुमज्जदेसमाए) ते तिमिस शुक्ष्मा अहु मध्य देशभां (उन्मग गणिमग्नजलाओ णामं दुवे महाणईओ पणत्ताओ) उन्मग्न अने निमग्न नामे ओ महानदीओ छे ओ ओ नदीओ दक्षिण द्वारना तोड्डकथी २१ योजन आगण अने उत्तर द्वारना तोड्डकथी २१ योजन पढेलां छे. (जाओण तिमिसगुहाए पुरच्छिमिल्लाओ भित्तिकडगाओ पवूहाओ समाणीओ पच्चत्थिमेणं सिंधुमहाणइं समप्पेति) तिमिस शुक्ष्मा पौरस्त्यभित्ति कटकथी—भित्ति प्रदेशथी नीकणीने ओ नदीओ पाश्चात्य (भित्ति प्रदेशभां अण्ण ते सिंधु महानदीभां प्रवेश करे छे (से केणट्ठेणं मंते ! एवं वुच्चइ उन्मगगणिमग्नजलाओ महाणईओ) हे भदन्त ! ओ नदीओना उन्मग्न अने निमग्न ओवा नामे शां करणुथी पढया छे ? ओना जवाअभां प्रमुक्तहते छे (गोयमा ! जणं उन्मग्नजलाए महाणईए तणं वा पत्तं वा कट्टं वा सक्करं वा आसे

જલાયાં મહાનદ્યાં તૂળં વા પત્રં વા કાષ્ઠં વા ગર્કરાં વા પાપાણસુખં, અશ્વો વા હસ્તી વા રથો વા યોધો વા સુમટઃ, મનુષ્યો વા પ્રક્ષિપ્યતે 'તૂળં ઉન્મગ્ગજલા મહાણં તિવસુતો આહુણિઅ એગતે થલંસિ એહે' તત્ તૂળાદિકં સ્થલુ ઉન્મગ્ગજલા મહાનદી ત્રિઃ કૃત્વઃ ત્રીન્ વારાન્ આધૂય આધૂય ભ્રમયિત્વા ભ્રમયિત્વા જલેન સદાઽઽહત્યાહત્યેત્યર્થઃ; એકાન્તે જલપ્રદેશાદ્ધવીયસિ સ્થલે સ્થાને નિર્જલપ્રદેશે સ્થાને 'એહે' હર્દયતિ તીરે પ્રક્ષિપતિ इत्यર્થઃ, તુમ્બીફલમિવ શિલાઃ ઉન્મગ્ગજલે ઉન્મજ્જતીત્યર્થઃ, અત એવોન્મજ્જતિ શિલાદિકમ્ અસ્માદિતિ ઉન્મગ્ગમ્ 'કુદ્ બહુલમિતિ અપાદાને ક્ત પ્રત્યયઃ ઉન્મગ્ગં જલં યસ્યાં સા ઉન્મગ્ગજલા, અથ દ્વિતીયા નામાન્વર્થઃ 'જળ્ણં ણિમગ્ગજલાપ મહાણંઈપ તળં વા પત્તં વા કટ્ટ

તૂળપત્ર કાષ્ઠ, પથર કે ટુકડે, અશ્વ, હાથી, યોધા અથવા સામાન્ય કોઈ મો મનુષ્ય હાથ દિયે જાવે તો વહ ઉન્મગ્ગના મહાનદી ત્રીન વાર ઉન્હેં ઇધર ઉધર ઘુમા-ર કર એકાન્ત જલ પ્રદેશ સે દૂર કિસી સ્થલ મેં-નિર્જલ પ્રદેશ મેં-હાલ દેતી હૈ તુમ્બી ફલ નિસ પ્રકાર પાની મેં ઊતરાતા ઊતરાતા તીરપર લગા જાતા હૈ इसी प्रकार इसी में गिरा हुआ हर एक पदार्थ उतराता उतराता तीर पर लग जाता है इस कारण हे गौतम । इस नदी का नाम उन्मग्गा ऐसा कहा गया है । (जण्णं णिमग्गजलाप महाणंईप तणंवा पत्तवा कट्टवा सक्करं वा जाव मणुस्सेवा पक्खिवइ) जिस कारण से निमग्गा महांनदी में तूण, पत्र, काष्ठ पथर के छोटे टुकड़े, अश्व हाथी, योधा अथवा सामान्य कोई भी मनुष्य डाल दिये जावें तो वह निमग्गा नाम की महांनदी तीन बार उन्हें इधर उधर घुमा घुमा कर अपने हो भीतर कर लेती है इस कारण इसका नाम निमग्गा ऐसा कहा गया है । यही बात (से तेणट्ठेण गोयमा । एव बुच्चइ उन्मग्गणिमग्गजलाओ महाणंईओ) इम पाठ द्वारा कहा गई है । पूर्वमें "कूदबहुलम्" सूत्र से अपादान में और यहां अधिकरण में क्त प्रत्यय हुआ है । ये दोनों नदियां तीन

વા દરથી વા જોદે વા મણુસ્સે વા પક્કિવહ) હે ગૌતમ ઉન્મગ્ગ મહાનદીમા તૂણ, પત્ર, કાષ્ઠ, પથરના કકડા, અશ્વ, હાથી, યોદ્ધા અથવા સામાન્ય કોઈ પણ મનુષ્ય નાખવામાં આવે તો તે ઉન્મગ્ગના નદી તેમને આમ-તેમ ફેરવી તે જોડાત જળ પ્રદેશમાં-ફર કોઈ સ્થળમાં-નિર્જળ પ્રદેશમાં નાખી દે છે. તૂળી ફળ જેમ પાણીમાં તરતું તરતું કિનારે પહોંચી જાય છે, તેમજ એ નદીમાં પડેલી દરેકે દરેક વસ્તુ તરતી-તરતી કિનારે પહોંચી જાય છે એથી જ હે ગૌતમ ! એ નદીનું નામ ઉન્મગ્ગના કહેવામાં આવ્યું છે (જળ્ણ ણિમગ્ગજલાપ મહાણંઈપ તળ વા પત્તં વા કટ્ટ વા સક્કર વા જાવ મણુસ્સેવા પક્કિવહ) જે કારણથી નિમગ્ગના મહાનદીમાં તૂણ પત્ર, કાષ્ઠ, પથરના નાના-નાના કકડા અશ્વ, હાથી યોદ્ધા અથવા સામાન્ય કોઈપણ મનુષ્ય નાખવામાં આવે તો નિમગ્ગના નામક મહાનદી ત્રણ વખત તેમને આમ-તેમ ફેરવીને પોતાની અંદર જ સમાવી દે છે એથી જ એ મહાનદીનું નામ નિમગ્ગના કહેવામાં આવ્યું છે. એ જ વાત (સે તેણટ્ઠેણ ગોયમા ! એવં બુચ્ચઈ ઉન્મગ્ગણિમગ્ગજલાઓ મહાણંઈઓ) એ પાઠ વડે બ્યક્ત કરવામાં આવી છે. પૂર્વમાં 'કુદ્-બહુલમ્' સૂત્રથી અપાદાનમાં અને અહીં અધિકરણમાં 'ક્ત' પ્રત્યય થયેલ છે એ બંને નદીઓ ત્રણ

४१७।३।७।३।१४७

योजन की विस्तार वाली है गुहा का आयाम और विस्तार जैसा इनका विस्तार और आयाम है तथा ये दो-२ योजन के अन्तर वाली हैं। गुहा के मध्यदेश में ये हैं। इनकी स्थापना इस प्रकार से है—॥४ १७।३।२।३१७.४॥

ચોજન જેટલી વિસ્તારવાળી છે. શુક્લાના આયામ અને વિસ્તાર જેવા જ ઝોમના વિસ્તાર અને આયામ છે. તેમજ એ મહાનદીઓ બે ચોજન જેટલા અંતરવાળી છે. શુક્લાના મધ્ય દેશમાં એ મહાનદીઓ છે ઝોમની સ્થાપના આ પ્રમાણે છે— ॥ ૪ ૧૭ । ૩ । ૨ । ૩ ૧૭ ૪ ॥ જ્યારે ભરતરાજએ બન્ને નદીઓને ॥ ૪ ૧૭ ફરસગાહ બાણી ત્યારે તેણે શું કયું એ વાતને સૂત્રકાર રૂપેટ કરતા કહે છે કે (તપ્તે સે મરહે રાયા ચક્રવર્તિ-યમગે) એણે રાયવરસદ્વસ્ત્રાનુયાયમગે) ચક્રવર્તિ જેને માર્ગ ખતાવવામાં આવી રહ્યો છે એ- ૩૫-પાછળ હબરે રાજ-મહારાજઓ ચાલી રહ્યા છે, એવો તે ભરત

કલરવેણ સમુદ્રવં ભૂતામિવ પ્રાપ્તામિવ ગુહામિતિગમ્યમ્ કુર્વન્ કુર્વન્ સિંધૂપ મહાણર્ષે પુરચ્છિમિલ્લેણ કૂઢેણ જેણેવ ઉન્મગ્ગજલા મહાણર્ષે તેણેવ ઉવાગચ્છદ્ધ' સિન્ધ્વા મહાનદ્યાઃ- પૌરસ્ત્યે કૂલે પૂર્વતટે ઉભયત્ર ણં શબ્દો વાક્યાલક્ષ્ણે અયમર્થઃ તમિસ્રાયા અધો ભાગે વહન્તી સિન્ધુસ્તમિસ્રા પૂર્વકટકમવધીકૃત્યૈવેતિ, ઉન્મગ્નાઽપિ પૂર્વકટકાન્નિર્ગતાઽસ્તી- ત્યુભયોરેકસ્થાનતાસૂચનાર્થઃ મિદં સૂત્રમ્, યત્રૈવોન્મગ્નજલા મહાનદી તત્રૈવ ઉવાગચ્છતિ 'ઉવાગચ્છિત્તા' ઉવાગત્ય 'વદ્ધરયણ સદાવેદ્ધ' વર્દકિરત્નં શબ્દયતિ આહ્યતિ 'સદા- વિત્તા એવં વયાસી' શબ્દયિત્વા આહ્ય, એવ વક્ષ્યમાણપ્રકારેણ અવાદીત્ ઉક્તવાન્ કિમ- વાદીત્ इत्याદ- 'સ્વિષ્પામેવ મો દેવાણુપિયા ! ઉન્મગ્ગણિમગ્ગજલાસુ મહાણર્ષસુ અણેગ- સ્વંમસયસણિવિદ્ધે અયલમકંપે અમેજ્જકવપ્પ સાલંવણવાહાપ્પ સવ્વરયણામપ્પ સુહસંકમે કરેહ' સિપ્રમેવ મો દેવાનુપ્રિય ! ઉન્મગ્નનિમગ્નજલયો મહાનદ્યોઃ અનેકસ્તમ્મશતસન્નિ-

ણાય જાવ કરેમાણે ૨ સિંધૂપ મહાણર્ષે પુરચ્છિમિલ્લેણ કૂઢેણ જેણેવ ઉન્મગ્ગજલા મહાણર્ષે તેણેવ ઉવાગચ્છદ્ધ) જોર-૨ સે સેનાજનકે પૂર્વ સાથ મેં ચલનેવાલે રાજા મહારાજાઓં કે સિંહનાદ કે જેસે બોલ સે અવ્યક્ત ધ્વનિ સે— એવં કલ કલ રવ સે સમુદ્ર કે જેસે રવ કો પ્રાપ્ત હુઈ ન હો માનો પેસી ગુહા કો કરતા કરતા સિંધુ મહાનદી કે પૂર્વ તટ પર જહાં ઉન્મગ્ના નદી થી વહાં પર આયા (ઉવાગચ્છિત્તા વદ્ધરયણં સદાવેદ્ધ) વહાં બાકર કે ઉસને વર્દકિરત્ન કો બુલાયા તમિસ્રાગુહા કે અધોભાગ મેં તમિસ્રા કે પૂર્વ કટક કી અવધિ કરકે હી સિન્ધુ મહાનદી વહતી હૈ તથા ઉન્મગ્ના મહાનદી મો તમિસ્રા કે પૂર્વ તટ સે નિકલી હૈ હસલિયે દોનોં નદિયોં કા સમાગમ યહાં હો જાતા હૈ (સદાવિત્તા એવં વયાસી) વર્દકી રત્ન કો બુલા કરકે 'હસમે પેસા કહા (સ્વિષ્પામેવ મો દેવાણુપિયા ! ઉન્મગ્ગણિમગ્ગજલાસુ મહાણર્ષસુ અણેગસ્વંમસય સણિવિદ્ધે અયલમકંપે અમેજ્જકવપ્પ સાલંવણવાહાપ્પ સવ્વરયણામપ્પ સુહસંકમે કરેહ) હૈ દેવાનુપ્રિય ! તુમ હી ઉન્મગ્ના ઓર નિમગ્ના મહાનદિયોં કે ઉપર અનેક સૈકહોં સ્વંમો સે યુક્ત, અચલ,

૨૧૭ (મહાયા ઉવ્વિકહ્વ સીદ્ધણાય જાવ કરેમાણે ૨ સિંધૂપ મહાણર્ષે પુરચ્છિમિલ્લેણ કૂઢેણ જેણેવ ઉન્મગ્ગ જલા મહાણર્ષે તેણેવ ઉવાગચ્છદ્ધ) સેના તેમજ ૨૧૭ મહારાજાઓની ત્રીન આલથી થતા સિંહનાદ જેવા અવ્યક્ત ધ્વનિથી તથા કલરવથી સમુદ્રની જેવા ધ્વનિને પ્રાપ્ત થયેલ ન હોય એવી શુદ્ધને મુખરિત-ધ્વાનત કરતો તે રાજા સિંધુ મહાનદીના પૂર્વ તટ ઉપર કે જ્યાં ઉન્મગ્ના નદી હતી ત્યાં આવ્યો. (ઉવાગચ્છિત્તા વદ્ધરયણં સદાવેદ્ધ) ત્યાં આવીને તેણે વર્દકિરત્નને (સુધાર) બોલાવ્યો. તમિસ્રા શુદ્ધના અધો ભાગમાં તમિસ્રાના પૂર્વકટકની અવધિ કરી ને જ સિંધુ મહાનદી વહે છે તેમજ ઉન્મગ્ના મહાનદી પણ તમિસ્રાના પૂર્વતટથી નીકળી છે. એથી બન્ને નદીઓનો અત્રે સમાગમ થઈ ગય છે. (સદાવિત્તા એવં વયાસી) વર્દકિરત્ન ને બોલાવીને તે રાજાએ તેને આ પ્રમાણે કહ્યું—(સ્વિષ્પામેવ મો દેવાણુપિયા ! નિમગ્ગજલાસુ મહાણર્ષસુ અણેગસ્વંમસયસણિવિદ્ધે અયલમકંપે અમેજ્જકવપ્પ સાલંવણવાહાપ્પ સવ્વરયણામપ્પ સુહસંકમે કરેહ) હૈ દેવાનુપ્રિય ! તમે શીઘ્ર ઉન્મગ્ના અને નિમગ્ના નદીની ઉપર અનેક હજારો સ્ત લોવાળા અથવા અકંપ તેમજ હલ કવચની જેમ અલેદ્ય એવા જે

विष्टौ सुखसंक्रमौ सेतु द्वयं कुरुष्वेत्यग्रे सम्बन्धः कीदृशौ तौ इत्याह—अनेकानि स्तम्भगतानि तेषु सन्निविष्टौ—सुसंस्थितौ अथवा अनेकानि स्तम्भगतानि सन्निविष्टानि सलग्नानि ययोः तौ तथा अत एवाचलौ महाबलाक्रान्तत्वेऽपि न स्वस्थानाच्च लतः अकम्प्यौ दृढौ अथवा अचलो गिरिस्तद्वद् अकम्प्यौ मकारोऽलाक्षणिकः अभेद्य-कवचाविव अभेद्यकवचौ दृढौ अभेद्यसन्नाहौ जलादिभ्यो न भेदं यातौ जलादिभिरपि अभेद्यौ इत्यर्थः, ननु अनन्तरोक्तविशेषणाभ्यामुत्तरतां जनानां तदुपरि पातशङ्काया अभावेऽपि उभयपार्श्वयो जलपातशङ्का स्यादेवेत्याह—सालम्बनबाहौ इति, सालम्बने—उपरिगच्छतां जनानामवलम्बनभूतेन दृढतरमित्तिरूपेण आलम्बनेन सहितौ बाहौ—उभयपार्श्वौ ययोस्तौ तथा, तथा 'सञ्चरयणामप' सर्वरत्नमयौ—सर्वात्मना रत्नमयौ यद्वा सर्वजातीय रत्नयुक्तौ तथा 'सुहसंकमे' सुखसंक्रमौ सुखेन संक्रमः—पादविक्षेपो यत्र तौ इदृशौ संक्रमौ सेतु कुरुष्व 'करिप्ता' कृत्वा 'मम एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणाहि' 'मम एताम् आज्ञप्तिकां क्षिप्रमेव शीघ्रमेव प्रत्यर्पयेति । अथ स वर्द्धकिरत्ननामः किं कृतवान् इत्याह 'तएण' इत्यादि 'तएण से वद्धइरयणे भरहेण रण्णा एव वुत्ते समाणे द्दुत्तुच्चित्तमाणदि ए जाव विणएण पडिसुणेइ' ततः खलु तत् वर्द्धकिरत्नं भरतेन राज्ञा एवम् उक्त प्रकारेण उक्त—कथितं सत् दृष्टुष्टचित्तमानन्दित यावत् विनयेन प्रतिशृणोति स्वीकरोति 'पडिसुणिप्ता' प्रतिश्रुत्य स्वीकृत्य 'खिप्पामेव उम्मगगणिम्मगगजलासु' महाण-

अकप तथा दृढकवचके जैसे अभेद्य ऐसे दो पुलों को बनाओ इनपुलों के उभयपार्श्व में आलम्बन हो जिससे उन महानदियों में उनके ऊपर से चलनेवालों में कोई गिर न सके (सञ्चरयणामप) दोनों पुल सर्वात्मना रत्नमय हों अथवा सर्वजाति के रत्नों द्वारा निर्मित हुए हों और जिन पर सुखपूर्वक गमनागमन हो सके (करेत्ता मम एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणाहि) ऐसे दो पुल जब तुम बनाकर तैयार करलो तब हमे इसकी पीछे खबर जल्दी से दो (तएण से वद्धइरयणे भरहेण रण्णा एवं वुत्ते समाणे द्दुत्तुच्चित्तमाणदि ए जाव विणएण पडिसुणेइ) उस वर्द्धकि रत्न ने अपने स्वामी भरत राजा को आज्ञा को सुना तो वह बहुत ही अधिक हर्षित एवं चित्त में आनन्दित हुआ और यावत् बड़ी विनय के साथ उसने उनकी आज्ञा स्वीकार कर ली (पडिसुणिप्ता खिप्पामेव उम्मगगणिम्मगगजलासु महाणईसु अणेग खंभसयसण्णि-

पुलो तैयार करे। ये पुलोना उभयपार्श्वोभा आलम्बनो होय के बेथी तेमनी उपर अधने पसार थनार डोयपुत्तु ते महानदीओभा पडेनहि (सञ्चरयणामप) ये भले पुलो सर्वात्मना रत्नमय होय अथवा सर्व भतिना रत्ने। द्वारा निर्मित होय के बेथी तेमनी उपरथी सुख पूर्वक गमन-आगमन थथ थके. (करेत्ता मम एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणाहि) ओवा भन्ने पुलो न्यारे तैयार थथ जाय थ्यारे तरत न् अभने सूथना आपो (तएण से वद्धइरयणे भरहेण रण्णा एव वुत्ते समाणे द्दुत्तुच्चित्तमाणदि ए जाव विणएण पडिसुणेइ) वर्द्धकिरत्ने (सुथारे) न्यारे पोताना स्वाभीनी आज्ञा आसणी तो ते अतीव हर्षित तेमन् चित्तमां आनन्दित थये। यावत् अतीव विनयताथी तेथे पोताना स्वाभीनी आज्ञा स्वीकारी वीधी (पडिसुणिप्ता खिप्पामे उम्मगगणिम्मगगजलासु महाणईसु अणेणखंभसयसण्णिविहे जाव सुहसंकमे

ઈસુ અણેગલ્લમસયસણિવિદ્ધે જાવ સુહસંકમે કરેહ' સિમમેવ ઉન્મગ્નનિમગ્નજલયો મંદાનઘોઃ અનેકસ્તમ્ભશતસન્નિવિષ્ટૌ યાવત્ અચલૌ અકમ્પૌ અમેઘઋવર્ચૌ સાલ-
મ્બનવાહૌ પર્વરત્નમયૌ સુલપંક્રમૌ સેતુ-સેતુદ્વયં કરોતિ 'કરિત્તા' કૃત્વા જેણેવ મરહે
રાયા તેણેવ ઉવાગચ્છહ' યત્રૈવ મરતો રાજા તત્રૈવ તત્ વર્દકિરત્નમ્ સ વર્દકિઃ ઉપાગ-
ચ્છતિ 'ઉવાગચ્છિત્તા' ઉપાગત્ય 'જાવ ઇયમાણત્તિયં પચ્ચપ્પિણહ' યાવત્ પૂર્વોક્તામ્
પતામ્ રાજ્ઞોક્તપ્રકારિકામ્ આશ્પતિકાં (આજ્ઞાં) પ્રત્યર્પયતિ સમર્પયતિ, નત્તુ ઉન્મગ્નજલા
જલસ્પોન્મજ્જકત્વસ્વભાવસિદ્ધત્વાત્ તથં તત્ર સંક્રમાર્થકશિલાસ્તમ્ભાદિન્યાસઃ સ્થુસ્થિરો
ભવતિ ? સચ દીર્ઘપટ્ટશાલાકારો ન ચ જલોપરિ કાષ્ઠાદિમયઃ સમ્ભવતિ તસ્યા સાર-
ત્વેન મારાસદ્વ્યાત્ ઇતિ ચેન્નવર્દકિરત્નકૃતત્વેન દિવ્યશક્તે રચિન્ત્યશક્તિકત્વાત્,
લોક ઉત્તરતિ, ગુફા ચ તાવન્તં કાલમપાવૃતૈનાસ્ને મળ્ડલાન્યપિ તથૈવ તિપ્પન્તિ ચક્રવ-

વિદ્ધ જાવ સુહસંકમે કરેહ) મરત રાજા કી આજ્ઞા કો સ્વોકાર કરકે उसने शीघ्र ही
उन्मग्ना और निमग्ना नदी के ऊपर पूर्वोक्त અનેક સૈકડો સ્તંભો આદિ વિશેષણો સે યુક્ત
દો પુલ બના દિયે (કરિત્તા જેણેવ મરહે રાયા તેણેવ ઉવાગચ્છહ) દો પુલો કો બનાકર
ફિર વહ જહાં પર મરત રાજા વિરાજમાન થે વહાં પર આયા (ઉવાગચ્છિત્તા) વહાં આકર
કે (જાવ ઇયમાણત્તિયં પચ્ચપ્પિણહ) उसने પુलों के पूर्णरूप से निर्माण हो जाने की मरत राजा
કો સ્વધર દે દી-યહાં પર એસી આશંકા નહીં કરની चाहिए कि उन्मग्ना नदी का तो स्वभाव
ऐसा है कि जो भी पदार्थ उसमें गिर जाता है वह उसके ऊपर ही रहता है डूबता
नहीं है तो फिर सेतु बनाने के लिये ढाले गये पदार्थ उसमें कैसे नीचे पहुँच गये और कैसे वहाँ
वै स्थिर होकर जम गये । ये पुल वर्द्धकिरतन ने बनाये होते हैं इसलिये उसकी शक्ति
अचिन्त्य होने के कारण वे वहाँ पर सुस्थिर रहते हैं और इनके ऊपर से लोक उतरते
रहते हैं तथा चक्रवर्ती के जीवन तक गुफा खुली हुई रही आती है. और उसमें वे सब
मण्डल व्यो के त्यों उतने ही काल तक बने रहते हैं जब चक्रवर्ती दिवंगत हो जाता है

કરેહ) મરત રાજાની આજ્ઞા સ્વીકારીને તેણે તરત જ ઉન્મગ્ના અને નિમગ્ના નદીની ઉપર
હબારે સ્તંભો વગેરેથી પૂર્વોક્ત વિશેષણથી યુક્ત એવા બે સમઘણીય પુલો બનાવ્યા (કરિત્તા
જેણેવ મરહે રાયા તેણેવ ઉવાગચ્છહ) બે પુલો બનાવીને પછી તે જ્યાં મરત રાજા વિદ્યમાન
હતા ત્યાં આવ્યો (ઉવાગચ્છિત્તા) આવીને (જાવ ઇયમાણાત્તિયં પચ્ચપ્પિણહ) તેણે બે પુલો
આજ્ઞા મુજબ જ તૈયાર થઈ ગયા છે, એવી મરત રાજાને સૂચના આપી અહીં એવી આશંકા
કરવી યોગ્ય નથી કે ઉન્મગ્ના નદી તો સ્વભાવે જ એવી છે કે જે વસ્તુ તેમાં પડી જાય
છે, તે તેની ઉપર જ રહે છે, ડૂબતી નથી. તો પછી પુલ બનાવવા માટે નાખવામાં આવેલી
વસ્તુઓ તેમાં નીચે સુધી કેવી રીતે પહોંચી અને ત્યાં કેવી રીતે સ્થિર થઈને બાકી ગઈ.
એ પુલો વર્દકિરતન બનાવે છે એથી તેની શક્તિ અચિન્ત્ય હોવાથી તેઓ ત્યાં સુસ્થિર
જ રહે છે અને તેમની ઉપર થઈને દોડકો પાર ઉતરતા રહે છે તેમજ ચક્રવર્તીના જીવન-
કાળ સુધી શુદ્ધ પ્રવૃત્તિ જ રહે છે તેમાં તે સર્વે મંડળો તેના જીવનકાળ સુધી યથાવત

તિંનિ પરલોકે ગતે સંયમે ગૃહીતે સતિ પટ્માસપર્યન્તમ્ મુગ્ધિતં સેતુદ્વયં તિષ્ઠતિ સારો-
દ્ધારવૃત્તેરભિપ્રાયઃ, ત્રિષ્ઠિયાચિત્તચરિતેતુ-

‘ઉદ્ઘાટિતં ગુહાદ્ધારં ગુહાન્તર્મળ્હલાનિ ચ ।

તાવત્ તાન્યપિ તિષ્ઠન્તિ યાવજ્જીવતિ ચક્રમૃત્ ॥૧॥

‘તપ્તં સે મરહે રાયા સંસ્થાવારવલ્લે ઉન્મગ્નિમગ્નજલાઓ મહાળઈઓ તેહિ
અળેગલ્લમસયસણિવિદ્દેહિ જાવ મુહસંકમેહિ ઉત્તરઈ’ તતઃ સ્વલ્લ સ મરતો રાજા
સસ્કન્ધાવારવલ્લઃ સ્કન્ધાવારરૂપવલ્લસહિતઃ, સૈન્યાન્વિતઃ ઉન્મગ્નિમગ્નજલે મહાનદ્યો
તામ્યામ્ અનેકસ્કન્ધશતસન્નિવિષ્ટામ્યાં યાવત્ અચલામ્યામકમ્પામ્યામ્ અમેઘકવચામ્યાં
સાલમ્બનવાહામ્યાં સર્વરત્નમયામ્યાં મુલ્લસંક્રમામ્યામ્ ઉત્તરતિ પરપાર ગચ્છતિ, એવમ્
ઉત્તરતો ગચ્છતિ, રાજરાજે મરતે ઉત્તરદ્ધારે યજ્ઞાતં તદાહ - ‘તપ્તં તીસે’ इत्यादि
તપ્ત તીસે તિમિસગુહાપ્ ઉત્તરિલ્લસ્સ દુવારસ્સ કવાડા સયમેવ મહયા મહયા કોંચારવં
કરેમાળા સરસરસ્સગાઈ સરસરસ્સગાઈ ઠાળાઈ પચ્ચોસક્કિત્થા’ તતો નદ્યતિક્રમણાન-
ન્તરં સ્વલ્લ તસ્યા સ્તમિસાગુહાયા ઔત્તરાહસ્ય દ્ધારસ્ય કપાટો સ્વયમેવ સેનાપતિ દંડ-
રત્નાધાતમન્તરેણ ‘મહયા મહયા’ इति सूत्रदेशेन पूर्वसूत्रस्मरणे तेन ‘महया महया

યા સયમ ગૃહીત કર લેતા હૈ તવ લે છહ માહ તક સુરક્ષિત રહતે હૈ. એસા સારોદ્ધાર વૃત્તિ
કા અભિપ્રાય હૈ તથા ત્રિષ્ઠિયા ચરિત્ર મેં તો-

ઉદ્ઘાટિત ગુહા દ્ધારં ગુહાન્તર્મળ્હલાનિ ચ । તાવત્ તાન્યપિ તિષ્ઠન્તિ યાવજ્જીવતિ ચક્રમૃત્ ॥૧॥

એસા કહા હૈ (તપ્તં સે મરહે રાયા સંસ્થાવારવલ્લે ઉન્મગ્નિમગ્નજલાઓ મહાળઈઓ તેહિ
અળેગલ્લમસયસણિવિદ્દેહિ જાવ મુહસંકમેહિ ઉત્તરઈ) इसके बाद भरतराजा अपनी पूर्ण सेनासहित उन
उन्मग्ना निमग्ना नामकी नदियों कोउन अनेक सैकड़ों खमो वाले पुलों के ऊपर से होकर
आनन्द पूर्वक पार कर गया यहां यावत् शब्द से पुलों के जो विशेषण ऊपर में कहे गये हैं
वे गृहीतहुए हैं (तप्तं तीसेणं तिमिस गुहाप उत्तरिल्लस्स दुवारस्सकवाडा सयमेव महयार
कोचारवं करेमाणा सरसरस्सगाइ ठाणाइ पच्चोसक्कित्था) दोनों नदियों को पार करके

પ્રકાશ પાથરતા રહે છે જ્યારે ચક્રવર્તી દિવ ગત થઇ બચ છે. અથવા સંયમ ગૃહીત કરી
લે છે ત્યારે તે ૬ માસ સુધી સુરક્ષિત રહે છે. એવો સારોદ્ધાર વૃત્તિનો અભિપ્રાય છે.
તથા ‘ત્રિષ્ઠિયા ચરિત્રમા તો-

ઉદ્ઘાટિતં ગુહાદ્ધારં ગુહાન્તર્મળ્હલાનિ ચ । તાવત્ તાન્યપિ તિષ્ઠન્તિ યાવજ્જીવતિ ચક્રમૃત્
આમ કહ્યું છે (તપ્તં સે મરહે રાયા સંસ્થાવારવલ્લે ઉન્મગ્નિમગ્નજલાઓ મહાળઈઓ તેહિ
અળેગલ્લમસયસણિવિદ્દેહિ જાવ મુહસંકમેહિ ઉત્તરઈ) ત્યાર બાદ ભરત રાજા પોતાના
સ પૂર્ણ સૈન્યની સાથે ઉન્મગ્ના અને નિમગ્ના નદીઓને તેમના અનેક સ્ત્રોતોવાળા પુલો
ઉપર થઈને આનંદપૂર્વક પાર કરી ગયા. અહીં યાવત્ શબ્દથી પુલોના જે વિશેષણો ઉપર
કહેવાયા આવ્યા છે, તે ગૃહીત થયા છે (તપ્તં તીસેણં તિમિસગુહાપ ઉત્તરિલ્લસ્સ દુવારસ્સ
કવાડા સયમેવ મહયાર કોચારવં કરેમાળા સરસરસ્સગાઈ ઠાળાઈ પચ્ચોસક્કિત્થા) અને

ઈંસુ અજેગલ્લમસયસણિવિદ્ધે જાવ સુહસંક્રમે કરેઈ' ક્ષિપ્રમેવ ઉન્મગ્નનિમગ્નજલયો મંદાનદ્યોઃ અનેકસ્તમ્ભશતસન્નિવિષ્ટૌ યાવત્ અચલૌ અકમ્પૌ અમેદ્યઋવચૌ સાલ-
મ્બનવાદૌ પર્વરત્નમયૌ સુલ્લપંક્રમૌ સેતુ-સેતુદ્વયં કરોતિ 'કરિત્તા' કૃત્વા જેણેવ મરહે
રાયા તેણેવ ઉવાગચ્છદ્' યત્રૈવ મરતો રાજા તત્રૈવ તત્ વર્દકિરત્નમ્ સ વર્દકિઃ ઉપાગ
ચ્છતિ 'ઉવાગચ્છિત્તા' ઉપાગત્ય 'જાવ ઇયમાણસિયં પચ્ચપ્પિણદ્' યાવત્ પૂર્વોક્તામ્
પ્તામ્ રાજોક્તપ્રકારિકામ્ આજ્ઞાપ્તિકાં (આજ્ઞાં) પ્રત્યર્પયતિ સમર્પયતિ, નનુ ઉન્મગ્નજલા
જલસ્થોન્મજ્જકત્વસ્વભાવસિદ્ધત્વાત્ ક્વં તત્ર સંક્રમાર્થકશિલાસ્તમ્ભાદિન્યાસઃ સુસ્થિરો
મવતિ ? સચ દીર્ઘપદ્શાલાકારો ન ચ જલોપરિ કાષ્ઠાદિમયઃ સમ્ભવતિ તસ્યા સાર-
ત્વેન મારાસદ્ભત્વાત્ ઇતિ ચેન્નવર્દકિરત્નકૃતત્વેન દિવ્યશક્તે રચિન્ત્યશક્તિકત્વાત્,
લોક ઉત્તરતિ, ગુપ્ત ચ તાવન્તં કાઠમપાઘૃતૈનાસ્ને મળ્ડલાન્યપિ તથૈવ તિષ્ઠન્તિ ચક્રવ-

વિદ્ધ જાવ સુહસકમે કરેઈ) મરત રાજા કી આજ્ઞા કી સ્વીકાર કરકે ડસને શીઘ્ર હી
ઉન્મગ્ના ખીર નિમગ્ના નદી કે ઉપર પૂર્વોક્ત અનેક સૈકડો સ્તમ્ભો આદિ વિશેષણો સે યુક્ત
દો પુલ બના દિયે (કરિત્તા જેણેવ મરહે રાયા તેણેવ ઉવાગચ્છદ્) દો પુલો કો બનાકર
ફિર વહ જહાં પર મરત રાજા ચિરાજમાન થે વહાં પર આયા (ઉવાગચ્છિત્તા) વહાં આકર
કે (જાવ ઇયમાણસિયં પચ્ચપ્પિણદ્) ડસને પુલો કે પૂર્ણરૂપ સે નિર્માણ હો જાને કી મરત રાજા
કો સ્થિર વે દી-યહાં પર દેસી આશંકા નહીં કરની ચાહિય કિ ઉન્મગ્ના નદો કા તો સ્વભાવ
દેસા હૈ કિ જો મી પદાર્થ ડસમેં મિર જાતા હૈ વહ ડસકે ઉપર હી રહતા હૈ હૂવતા
નહીં હૈ તો ફિર સેતુ બનાને કે લિયે ઢાલે ગયે પદાર્થ ડસમેં કૈસે નીચે પહુંચ ગયે ઓર કૈસે વહાં
વે સ્થિર હોકર જમ ગયે । યે પુલ વર્દકિરત્ન ને બનાયે હોતે હૈં ઇસલિયે ડસકી શક્તિ
અચિન્ત્ય હોને કે કારણ વે વહાં પર સુસ્થિર રહતે હૈ ઓર ઇનકે ઉપર સે લોક ડતરતે
રહતે હૈ તથા ચક્રવર્તી કે જીવન તક ગુપ્તા સુલી હુઈ રહી આતી હૈ ઓર ડસમેં વે સબ
મળ્ડલ ણ્યોં કે ત્યોં ડતને હી કાલ તક બને રહતે હૈ જબ ચક્રવર્તી દિવંગત હો જાતા હૈ

કરેઈ) ભરત રાજાની આજ્ઞા સ્વીકારીને તેણે તરત જ ઉન્મગ્ના અને નિમગ્ના નદીની ઉપર
હબરે સ્તંભો વગેરેથી પૂર્વોક્ત વિશેષણથી યુક્ત એવા બે સમણીય પુલો બનાવ્યા (કરિત્તા
જેણેવ મરહે રાયા તેણેવ ઉવાગચ્છદ્) બે પુલો બનાવીને પછી તે જ્યાં ભરત રાજા વિદ્યમાન
હતા ત્યાં આવ્યા (ઉવાગચ્છિત્તા) આવીને (જાવ ઇયમાણસિયં પચ્ચપ્પિણદ્) તેણે બે પુલો
આજ્ઞા મુજબ જ તૈયાર થઈ ગયા છે, એવી ભરત રાજાને સૂચના આપી અહીં એવી આજ્ઞા કા
કરવી થોડી નથી કે ઉન્મગ્ના નદી તો સ્વભાવે જ એવી છે કે જે વસ્તુ તેમાં પડી જાય
છે, તે તેની ઉપર જ રહે છે, ટૂંકતી નથી તો પછી પુલ બનાવવા માટે નાખવામાં આવેલી
વસ્તુઓ તેમાં નીચે સુધી કેવી રીતે પહોંચી અને ત્યાં કેવી રીતે સ્થિર થઈને બાકી ગઈ.
એ પુલો વર્દકિરત્ન બનાવે છે એથી તેની શક્તિ અચિન્ત્ય હોવાથી તેઓ ત્યાં સુસ્થિર
જ રહે છે અને તેમની ઉપર થઈને ઢોકો પાર ઉતરતા રહે છે તેમજ ચક્રવર્તીના જીવન-
કાળ સુધી શુદ્ધ ખુદ્દી જ રહે છે તેમાં તે સર્વે મંડળો તેના જીવનકાળ સુધી યથાવત

तिनि परलोके गते सयमे गृहीते सति पट्मासपर्यन्तम् मुग्नितं सेतुद्वयं तिष्ठति सारो-
द्धारश्चेरभिप्रायः, त्रिषष्टीयाचितचरितेतु-

“उद्धाटितं गुहाद्वारं गुहान्तं मण्डलानि च ।

तावत् तान्यपि तिष्ठन्ति यावज्जीवति चक्रभृत् ॥१॥ इत्युक्तम्

‘तपण से भरहे राया सखधावारबळे उम्मगगणिमग्नजलाओ महानईओ तेहिं
अणेगखमसयसणिविट्टेहिं जाव सुहसंकमेहिं उत्तरइ’ ततः खलु स भरतो राजा
सस्कन्धावारबलः सस्कन्धावाररूपबलसहितः, सैन्यान्वितः उन्मग्ननिमग्नजले महानद्यो
ताभ्याम् अनेकस्कन्धशतसन्निविष्टाभ्यां यावत् अचलाभ्यामरुम्पाभ्याम् अमेधकवचाभ्यां
सालम्बनवाहाभ्यां सर्वरत्नमयाभ्यां सुखसंक्रमाभ्याम् उत्तरति परपार गच्छति, एवम्
उत्तरतो गच्छति, राजराजे भरते उत्तरद्वारे यज्जातं तदाह - ‘तपणं तीसे’ इत्यादि
तपण तीसे तिमिस्सगुहाए उत्तरिल्लस्स दुवारस्स कवाडा सयमेव महया महया कौचारवं
करेमाणा सरसरस्सग्गाइ सरसरस्सग्गाइ ठाणाइं पच्चोसविकत्था’ ततो नद्यतिक्रमणान-
न्तरं खलु तस्या स्तमिसागुहाया औत्तराहस्य द्वारस्य कपाटौ स्वयमेव सेनापति दण्ड-
रत्नाघातमन्तरेण ‘महया महया’ इति सूत्रदेशेन पूर्वसूत्रस्मरणेन ‘महया महया

या सयम गृहीत कर लेता है तब वे छह माह तक सुरक्षित रहते हैं. ऐसा सारोद्धार वृत्ति
का अभिप्राय है तथा त्रिषष्टीया चरित्र में तो-

उद्धाटित गुहा द्वारं गुहान्तर्मण्डलानि च । तावत् तान्यपि तिष्ठन्ति यावज्जीवति चक्रभृत् ॥१॥

ऐसा कहा है (तपण से भरहे राया सखधावारबळे उम्मगगणिमग्नजलाओ महानईओ तेहिं
अणेगखमसयसणिविट्टेहिं जाव सुहसंकमेहिं उत्तरइ) इसके बाद भरतराजा अपनी पूर्ण सेनासहित उन
उन्मग्न निमग्न नामकी नदियों कोउन अनेक सैकड़ों खभो वाले पुलों के ऊपर से होकर
आनन्द पूर्वक पार कर गया यहां यावत् शब्द से पुलों के जो विशेषण ऊपर में कहे गये हैं
वे गृहीतहुए हैं (तपण तीसेण तिमिस्स गुहाए उत्तरिल्लस्स दुवारस्सकवाडा सयमेव महयार
कौचारवं करेमाणा सरसरस्सग्गाइ ठाणाइं पच्चोसविकत्था) दोनों नदियों को पार करके

प्रकाश पाथरता रहे छे ज्यारे यकवतीं दिवंगत थछे ज्य छे अथवा सयम गृहीत करी
छे छे त्यारे ते ६ मास सुधी सुरक्षित रहे छे. जेवे सारोद्धार वृत्तिने अभिप्राय छे.
तथा ‘त्रिषष्टीया चरित्रमा तो-

उद्धाटितं गुहाद्वारं गुहान्तर्मण्डलानि च । तावत् तान्यपि तिष्ठन्ति यावज्जीवति चक्रभृत्
आम कहु छे (तपण से भरहे राया सखधावारबळे उम्मगगणिमग्नजलाओ महानईओ तेहिं
अणेगखमसयसणिविट्टेहिं जाव सुहसंकमेहिं उत्तरइ) त्यार माह भरत राजा पोताना
सपूषं सैन्यानी साथे उन्मग्न अने निमग्न नदीयोने तेमना अनेक स्तंभोवाणा पुढे।
ऊपर थछे आनंदपूर्वक पार करी गये। अही यावत् शब्दथी पुढेना जे विशेषणोऊपर
कहेवाला आछा छे, ते गृहीत थछा छे (तपण तीसेण तिमिस्सगुहाए उत्तरिल्लस्स दुवारस्स
कवाडा सयमेव महयार कौचारवं करेमाणा सरसरस्सग्गाइ ठाणाइं पच्चोसविकत्था) अन्ने

सदेण' महता महता शब्देन इति बोध्यम्, क्रौञ्चारवम् क्रौञ्चस्य - पक्षिविशेषस्येव बहुव्यापित्वात् य आरवः शब्दः तं कुर्वाणा कुर्वन्तौ 'सरसरस्सत्ति' अनुकरणशब्दस्तेन तादृशं शब्दमनुकुर्वन्तौ कपाटौ इत्यर्थः 'सगाइं सगाइं' स्वके स्वके स्वकीये स्वकीये 'ठाणाइं' स्थाने अवष्टम्भभूततोड्ढकरूपे, 'पच्चोसविकल्था' प्रत्यवाष्ठाष्किपाताम् प्रत्यर्पससर्पत्तुः ॥सू० १६॥

अथोत्तरभरतार्द्धविजयं विवक्षुस्तत्र विजेतव्यजनस्वरूपमाह "तेणं काछेणं" इत्यादि ।

मूलम्-तेणं कालेणं तेणं समएणं उत्तरड्ढभरहे वासे बहवे आवाडाणामं चिलाया परिवसंति, अड्ढा दित्ता वित्ता विच्छिण्णविउल्लभवणसयणासणजाणवाहणाइन्ना बहुधणबहुजायरूपरयया आओगपओगसंपउत्ता विच्छड्ढिअ पउरभत्तपाणा बहुदासीदासगोमहिसगवेलगप्पभूया बहुजणस्स अपरिभूआ सूरा वीरा विकंता विच्छिण्णविउल्लबलवाहणा बहुसु समरसंपराएसु लद्धलक्खा याविहोत्था, तएणं तसिमावाडचिलायाणं अण्णया कयाई विसयंसि बहूइं उप्पाइअसयाइं पाउमवित्था, तं जहा. अकाले गज्जियं अकाले विज्जुआ अकाले पायवा पुप्फंति अभिक्खणं अभिक्खणं आगासे देवयाओ णच्चंति, तएणं ते आवाडचिलाया विसयंसि बहूइं उप्पाइअसयाइं पाउम्भूआइं पासंति पासित्ता अण्णमण्णं सदावेत्ती सदावित्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं विसयंसि बहूइं उप्पाइअसयाइं पाउम्भूयाइं तं जहा अकाले गज्जिअं अकाले विज्जुआ अकाले पायवा पुप्फंति अभिक्खणं अभिक्खणं आगासे देवयाओ णच्चंति; तं ण णज्जइ णं देवाणुप्पिया ! अम्हं विसयस्स के मन्ने उवहवे भविस्सई त्तिकट्ठु ओहयमणसंकप्पा चित्तासोगसागरं पविट्ठा करयलपल्हत्थमुहा अट्ठज्झाणोवगया भूमिगय-

तिमित्र गुफाके समीप जाने के बाद उस तिमित्रगुहा के उत्तर दिशा के द्वार के किवार सर सर शब्द जोर जोरसे क्रौंच पक्षी के जैसा सर सर करते हुए अपने आप अपने अपने स्थानसे सरक गये खुल गये ॥सू १६॥

नदीओने पार करीने पक्षी गुहाना समीप आब्या त्थार ते तिमित्र गुहाना उत्तर दिशाना द्वारना डभाडे जोर-जोरथी डौय पक्षी जेवा सर-सर क्वनि करता करता पोतानी भेजे ज पोतानी स्थान परथी सरकी गया ओटवे डे भुली गया ॥ १६ ॥

दिद्विआ झिआयंति, तएणं से भरहे राया चक्करयणदेसियमग्गे जाव
समुहरवभूअं पिव करेमाणे करेमाणे तिमिसगुहाओ उत्तरिल्लेणं दारेणं
णीति ससिव्व मेहंधरयाणिवहा तए णं ते आवाडविलाया भरहस्स रण्णे
अग्गाणीअं एज्जमाणं पासंति पासित्ता आसुरत्ता रुद्धा चंडिकिआ
कुविआ मिसिमिसेमाणा अण्णमण्णं सदावेति सदावित्ता एवं वयासी
एसणं देवाणुप्पिया ! केइअप्पत्थिअपत्थए दुसंतपतलक्खणे हीणपुण्ण-
चउदसे हिरिसिस्सिस्सिवज्जिणए जेणं अग्हं विसयस्स उवरिं विरिएणं हव्व.
मागच्छइ त तहाणं घत्तामो देवाणुप्पिआ जहाणं एस अग्हं विसयस्स
उवरिं विरिएणं णो हव्वमागच्छइ तिकदट्ठ अण्णमण्णस्स अंतिए एअमड्डं
पडिसुणेंति पडिसुणित्ता सण्णद्धवद्धवम्मियकवआ उप्पीलिअसरासण-
पट्टिआ पिणद्धगेवज्जा बद्ध आविद्धवीमलवर्राचधपट्टा गहिआउहप्प
हरणाजेणेव भरहस्स रण्णे अग्गाणीअं तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता
भरहस्स रण्णे अग्गाणीएण सद्धि संपलग्गा यावि होत्था तएणं ते आवाड-
चिलाया भरहस्स रण्णे अग्गाणीअं हयमहिअपवस्वीरघाइय विवडि-
अचिधद्धयपडागं किच्छप्पाणोवगयं दिसोदिसिं पडिसेहिंति ॥सू० १७॥

छाया—तस्मिन् काले तस्मिन् समये उत्तरार्द्धभरते वर्षे बहव आपाता नाम किराता
परिवसन्ति, आढ्याः दृप्ता वित्ताः विस्तीर्णविपुलभवनशयनासनयानवाहनाकीर्णाः
बहुधनबहुजातरूपरजताः आयोगप्रयोगसंप्रयुक्ताः विच्छिन्नितप्रचुरभक्तपाना बहुदासीदा-
सगोमहिषगवेलकप्रभृताः बहुजनेन अपरिमृताः शूराः वीराः विक्रान्ताः विस्तीर्णविपुलबल-
वाहनाः बहुषु समरसपरायेषु लब्धलक्षाभ्राप्यमवन् ततः खलु तेषाम् आपातकिरातानाम्
अन्यथा कदाचित् विषये बहूनि औत्पातिकशतानि प्रादुर्भूवन् तद्यथा अकाले गर्जितम्
अकाले विद्युतः अकाले पादपाः पुष्यन्ति अमीक्ष्णम् अमीक्ष्णम् आकाशे देवताः नृत्यन्ति,
ततः खलु ते आपातकिराताः विषये बहूनि औत्पातिकशतानि प्रादुर्भूतानि पश्यन्ति दृष्ट्वा
अन्योऽन्यं शब्दयन्ति शब्दयित्वा पवमवादिषु पवं खलु देवानुप्रिया अस्माकं विषये बहूनि,
औत्पातिकशतानि प्रादुर्भूतानि तद्यथा अकाले गर्जितम् अकाले विद्युतः अकाले पादपाः
पुष्यन्ति अमीक्ष्णम् अमीक्ष्णम् आकाशे देवताः नृत्यन्ति तन्न ज्ञायते खलु देवानुप्रियाः ।
अस्माकं विषयस्य को मन्ये उपद्रवो भविष्यति इति कृत्वा अपहृतमन संकल्पाः चिन्ताशोक
सागरे प्रविष्टाः करतलपर्यस्तमुखाः आर्त्तध्यानोपगता भूमिगतदृष्टिकाः भ्यायन्ति ततः खलु स
भक्तो राजा चक्ररत्नदेशितमार्गः यावत् समुद्ररवभूतामिव कुर्वन् तमिस्रागुहात औत्तराद्वेण

द्वारेण निरैति शशीव मेघान्धकारनिवहात् तत्र खलु ते आपातकिराता भरतस्य राज्ञः
अग्रानीकम् पङ्गमाणं पश्यन्ति दृष्ट्वा आशुरुपमा रुष्टाः चण्डिप्रियता मिसिमिलेमाणा दीप्य-
माना अग्न्योन्मं शब्दयन्ति शब्दयित्वा पद्ममवादिषु एष देवानुप्रिया कश्चिद् अप्रार्थित-
प्रार्थकः दुरन्तप्रान्तलक्षणः द्वीनपुण्यचातुर्दशः द्वी ओ परिवर्जितः योऽस्माकं विषयस्योपरि
वीर्येण हन्यम् आगच्छति तत् तथा खलु क्षिपामो देवानुप्रियाः यथा खलु पवोऽस्माकं
विषयस्योपरि वीर्येण नो शीघ्रमागच्छेत् इति कृत्वा अग्न्योऽन्यस्याऽन्तिके पतमर्थं प्रतिशृ-
ण्वन्ति प्रतिश्रुत्य सन्नद्धवद्वर्तिनकवचाः उत्पीडितशरासनपट्टिका पिनद्धप्रैवेया वस्त्राविश्र-
विमलवरचिन्हपट्टा गृहीतायुधप्रहरणाः यत्रैव भरतस्य राज्ञः अग्रानीकं तत्रैवोपागच्छन्ति
उपागत्य भरतस्य राज्ञोऽग्रानीकेन सार्द्धं संग्रह्यन्ताम्रवाप्यभूधन् ततः खलु ते आपातकिराता
भरतस्य राज्ञोऽग्रानीकं हतमथितप्रवरवीरघातितविपतितच्चिलञ्चजपताकं कृच्छ्रप्राणोपगतं
विशोविशि प्रतिषेधयन्ति ॥ सू० १७॥

तेणं कालेणं तेणं समणं उत्तरद्वभरहे वासे ” इत्यादि.

टीकार्थ - “तेण कालेणं” इत्यादि । ‘तेणं कालेणं तेणं समणं उत्तरद्वभरहे
वासे बहवे आवाहा णाम चिलाया परिवसन्ति’ तस्मिन् काले-तृतीयारक्रमान्ते तस्मिन्
समये यत्र समये भरतः उत्तरभरतार्द्धं विजेतुं तमिस्रातो निर्याति उत्तरार्द्धभरते उत्त-
रार्द्धभरतनाम्नि वर्षे क्षेत्रे अपाताः -अपाता इति नाम्ना किराताः परिवसन्ति, कीदृशा-
स्ते ? ‘अद्वा’ आद्याः धनिनः ‘दिता’ दत्ताः -दर्पवन्तः ‘वित्ता’ वित्ताः वित्तजा-
तीयेषु प्रसिद्धाः ‘विच्छिण्णविडलभवणसयणासणजाणवाहणाइन्ना’ विस्तीर्णविपुल-
भवनशयनासनयानवाहनाकीर्णाः, तत्र विस्तीर्णविपुलानि अति विपुलानि भवनानि
येषां ते तथा शयनानि शय्यादीनि, आसनानि फलकादीनि यानानि रथादीनि वाहना-
नि अश्वादीनि आक्रोर्णानि जातीगुणसम्पन्नानि येषां ते तथा ततः कर्मधारयः ‘बहुधण-

“तेणं कालेणं तेणं समण उत्तरद्वभरहे वासे” इत्यादि सूत्र-१७ ॥

(तेणं कालेणं तेणं समणं) उस काल में और उस समय में (उत्तरद्वभरहे वासे)
उत्तरार्ध भरत क्षेत्र में (बहवे आवाहा णाम चिलाया परिवसन्ति) अनेक आपात नाम के
किरात रहते थे (अद्वा दिता वित्ता विच्छिण्णविडलभवणसयणासणजाणवाहणाइन्ना) ये किरात
जन अनेक विस्तीर्ण भवनों वाले थे अनेक विस्तृत शयन और आसन वाले थे बड़े २ रथों के थे
अधिपति थे और अनेकबड़े बड़े घाड़े जो उत्तमोत्तम जाति के थे वे इनके पासमें थे (बहुधणबहु-

टीकार्थ—(तेणं कालेण तेणं समणं) ते कालमा अने ते समयमां (उत्तरद्वभरहे वासे)
उत्तरार्ध भरत क्षेत्रमां (बहवे आवाहा णाम चिलाया परिवसन्ति) अनेक आपात नामके (किरातो
रहेता हुता (अद्वा दिता वित्ता विच्छिण्ण विडलभवण सयणासणजाणवाहणाइन्ना) ये किरात
होके अनेक विस्तीर्ण भवनोवाणा हुता, अनेक विस्तृत शयनो अने आसनावाना हुता
भोटा रथाना ओओ अधिपति हुता अने अनेक उत्तमोत्तम जातिना भोटा-भोटा घोडाओ
ओमनी पासे हुता (बहुधण बहुजायकवरयया) अधिभ, धरिभ भेय अने परिच्छेदना

‘बहुजायरुवरयया’ बहुधनबहुजातरूपरजताः, तत्र बहुप्रभूतं धनम् गणिमधरिममेय-
परिच्छेधमेशत् चतुर्विधम्, जातरुवरजतानि स्मरूपानि च येषां ते तथा ‘आयोग-
पयोगसंपत्ता’ आयोग प्रयोगसंप्रयुक्ताः, तत्र आयोगः—द्विगुणादि वृद्धयर्थं प्रदान प्र-
योगश्च कञ्चान्तरं तौ संप्रयुक्तौ व्यापारितौ यैस्ते तथा ‘विच्छिद्यपउरभत्तपाणा’ वि-
च्छिदितप्रचुरभत्तपाणाः, तत्र विच्छिदिते त्यक्ते बहुजनमोजनावशेषतया विच्छिदितवती
विभूतिमती विविधमक्षयमोज्य चोप्यक्रेष्येयाहारभेदयुक्ततया प्रचुरे भक्तपाने येषां ते
तथा यद्वा विच्छिदिते-सञ्जातविच्छिदे सविस्तारे बहुप्रकात्वात् प्रचुरे प्रभूते भक्तपाने
अन्नपानीये येषां ते तथा, ‘बहुदासीदास गोमहिसगवेलगण्यभूया’ बहुदासी दासगोमहिप-
गवेलकप्रभूताः, तत्र बहवो दासीदासाः येषां ते तथा गो महिषाश्च प्रसिद्धाः गवेलकाः
उरभ्राः एते प्रभूता येषां ते तथा, अत्र पदद्वयस्य कर्मधारयः ‘बहुजनस्त अपरिभूया’
बहुजनेन अपरिभूताः—व्याप्ताः, सूत्रे पठ्यो आर्षत्वात् ‘सूरा’ शूराः प्रतिज्ञान निर्वाहणे
दाने वा ‘वीरा’ वीराः संग्रामे ‘विकंता’ विक्रान्ताः—भूमण्डलाक्रमणसमर्थाः ‘विच्छिण्ण-

जायरुवरयया), गणिमधरीम, मेय, और परिच्छेध के भेद से चार प्रकार के धन से ये युक्त
ये श्रेष्ठपुवर्ण एवं चांदी के ये माकीर ये (आयोगपयोगसंपत्ता) आयोग में धन संपत्ति आदि
के बढ़ाने में एवं अनेक कलाओं में ये विशेष पटु थे (विच्छिद्यपउरभत्तपाणा) इनके यहाँइतने
अधिक आदमी भोजनकरते थे कि उनके उच्छिष्ट प्रचुर मात्रा में भक्तपान बचा रहता था.
(बहु दासी दास गोमहिसगवेलगण्यभूया बहुजनस्त अपरिभूया) इनके पास घर पर काम करने
वाले अनेकदास एवं दासियाँ थी तथा अनेक गायें एवं अनेक महिवियाँ—मेंसे-और मेंड़े ये इनका
अनेक जन मिलकर भी परामर्श करने में समर्थ नहीं हो सकते ऐसे ये बलिष्ठये (सूरा, वीरा,
‘विकंता, विच्छिण्णविउलबलवाहणा) ये प्रतिज्ञात अर्थ के निर्वाह करने में शूर थे एवं दान देने में
अथवा संग्राम में ये वीर थे विक्रान्त — भूमण्डल के आक्रमण करने में — ये समर्थ थे इनका

बेहती बार प्रकारना धनथी तेजो युक्त होता श्रेष्ठ सुवर्ण तेमज आदीना जे सालक होता.
(आयोगपयोगसंपत्ता) आयोगमा धनस पत्ति वगेरेनी वृद्धिमा तेमज अनेक कला-
जोमा जे दोके विशेष पटु होता (विच्छिद्यपउरभत्तपाणा) जेभने त्या जेटला जधां
दोको लोअन करता होता के तेमना छिछोठमा प्रचुर मात्रामा भक्तपान पधर्तु छर्तु.
(बहुदासीदासगोमहिसगवेलगण्यभूया बहुजनस्त अपरिभूया) जेभनी पासे घर काम
करनाजोमा अनेक दासी तेमज अनेक दासीजो होती अनेक गायो, महीधीजो जेटले
जे सो होती अने बैटाजो होता अनेक दोके भणीने पषु जेभने इरावी शकता नहोता.
जेवा जे दोके भणवाजा हन (सूरा वीरा विकंता विच्छिण्णविउलबलवाहणा) जेजो
प्रतिज्ञात अर्थने निर्वाह करवा भाटे शूर होता दान करवाभा अथवा संग्राममा जे दोके
वीर होता. विक्रान्त-भूम उण पर आक्रमण करवाभां जेजो समर्थ होता जेभनी सेना अने
जवादि ३५ भलवाहन हु भथी अनाकुग होवाथी अतिविपुल होता (बहुसु समर संपरापसु

વિઝલબલવાહના' વિસ્તીર્ણવિપુલબલવાહનાઃ, તત્ર વિસ્તીર્ણવિપુલાનિ-અતિ વિશાલાનિ
 બલવાહનાનિ સૈન્યાનિ ગવાદિકાનિ ચ દુઃસ્વાડનાકુલત્વાદ્ યેષાં તે તથા 'વહુસુ સમર-
 સંપરાપ્સુ લઢ્ઢલક્ષ્ણા' વહુષુ સમરસમ્પરાયેષુ, અનેન ચાતિમયાનકત્વં સૂચિતમ્, સમર-
 રૂપેષુ સમ્પરાયેષુ યુદ્ધેષુ લઢ્ઢલક્ષ્ણાઃ અમોઘદ્વિસ્તાઃવાપ્યમવન્ સામાન્યતો યુદ્ધેષુ ચ વલ્ગના-
 દિરૂપેષુ કેચન લઢ્ઢલક્ષ્ણાઃ ભવેયુઃ પર તદ્ વ્યવચ્છેદાય સમરેષુ ઇત્યુક્તમ્ અથ યત્તેષાં
 મળદલે જાતં તદાદ્-'તર્ણ' ઇત્યાદિ । 'તર્ણ' તેસિમાવાહચિત્રાયાણ અળ્ળયા કયાઈ
 વિસયંસિ વહુઈં ઉપ્પાદ્યસયાઈં પાઝમ્ભવિત્થા' તત્ ઇતિ કથાન્તરપ્રવચ્છે સ્વલ્લુ તેપામ્
 આપાતકિરાતાનામ્ અન્યદા કદાચિદ્ ચક્રવર્ત્યાગમનકાલાત્ પૂર્વમ્, અત્ર તેપામિત્યેતાવતૈવ
 ઉક્તેન પ્રકરણાત્ વિશેષ્ય ગ્રામ્ણી યત્ આપાતકિરાતાનામિત્યુક્તમ્ તદ્વિસ્મરણશીલાનાં
 વિનેયાનાં વ્યુત્પાદનાર્યેતિ વિષયે દેશે વહુનિ ઔત્પાતિકશતાનિ ઉત્પાતસત્કશતાનિ અરિષ્ઠ
 અશુભ-સૂચકનિમિત્તશતાનોત્પર્યઃપ્રાદુરભૂવન્-પ્રકટીવભૂવુઃ પ્રકટીજાતાનિ'ત જહા અકાલે
 ગર્જિજઅ અકાલે વિઝ્જુયા અકાલે પાયવા પુપ્ફંતિ અભિક્ષણં અભિક્ષણં આગાસે દેવયાઓ
 ણચ્ચંતિ'તથથા અકાલે પ્રાવૃદ્ કાલવ્યતિરિક્તકાલે ગર્જિજતમ્ મેઘગર્જના જાતા અકાલે
 વિદ્યુતઃ વિદ્યુરજતાઃ જાતાઃ અકાલે સ્વસ્વપુષ્પકાલવ્યતિરિક્તકાલે પાદપાઃ પુષ્પન્તિ
 પુષ્પયુક્તા ભવન્તિ અમીક્ષણમ્ અમીક્ષણમ્ પુનઃ-પુનઃ આકાશે દેવતાઃ-ભૂતવિશેષાઃ નૃત્ય-

સૈન્ય ઔર ગવાદીરૂપબલવાહનદુઃસ્વ સે અનાકુલ હોને કે કારણ અતિવિપુલ થા (વહુસુ સમર-
 સંપરાપ્સુ લઢ્ઢલક્ષ્ણા યાવિહોત્થા) સમરૂપ યુદ્ધો મેં-અતિમયાનકસંપ્રાપ્તો મેં इनके हाथ अपने लक्ष
 से कभी विचलित नहीं होतेये वल્गन आदि रूप पाधारण युद्ध में कितनेकव्यक्ति लब्ध लक्ष
 बाळे होते है परन्तु ये तो भयकर से भयंकर युद्ध में भी अपने लक्ष्य को बेघने में शक्ति
 शाली थे -हस्तलाघववाळे थे. (तर्णं तेसिमावाहचिन्नायाणं अण्णया कयाई विसयंसि वहुईं
 उप्पादयसयाईं पाज्झमवित्था) एक समय की बात है कि उन आपात किरातो' के देश
 में चक्रवर्ती के आगमन से पहिले सैकड़ो अशुभ सूचकनिमित्त प्रकट होने लगे (तं जहा)
 ओ इसप्रकार से हैं -(अकाले गज्जियं, अकाले विज्जुया, अकाले पायवा पुप्फंति, अभिक्खण
 २ आगासे देवयाओ णचचंति) अकाल में वर्षाकाल के विनाकाल में मेघों का गर्जन होना,

लक्षलक्ष्णा यावિહોત્થા) સમરૂપ યુદ્ધોમા-અતિ ભયાનક સ આમોમા, એમના હાથે પોતાના
 લક્ષ્ય પરથી કદાપિ વિચલિત થતા નહિ વલ્ગન વગેરે સંધારણ યુદ્ધોમાં કેટલાક લોકો
 લબ્ધ લક્ષ્યવાળા હોય છે, પરંતુ આ આપાત કિરાતો તો ભયકરમાં ભયકર એટલે કે
 મહાભયકર યુદ્ધોમાં પણ લક્ષ્ય વેગન કરવામા પણ શક્તિ શાળી હતા. એટલે કે
 હસ્તલાઘવવાળા હતા (તર્ણં તેસિમાવાહચિન્નાયાણં અણ્ણયા કયાઈં વિસયંસિ વહુઈં
 ઉપ્પાદયસયાઈં પાઝમ્ભવિત્થા) એક વખતની વાત છે કે તે આપાત કિરાતોના દેશમા
 ચક્રવર્તિના આગમન પહેલાં હમણે અશુભસૂચક નિમિત્તો પ્રકટ થવા લાગ્યા (તં જહા)
 એ આ પ્રમાણે છે-(અકાલે ગજ્જિયં, અકાલે વિઝ્જુયા, અકાલે પાયવા.પુપ્ફંતિ અભિક્ષણં ૨
 આગાસે દેવયાઓ ણચ્ચંતિ) અકાલ મા-વર્ષાકાળ વિના જ મેઘગર્જના થવી અકાળમા વિજ-

ન્તિ, અથ તે આપાતકિરાતા: કિ કૃતવન્ત ઇત્યાહ- 'તણ્' ઇત્યાદિ 'તણ તે આવાહ-
ચિલાયા વિસયંસિ વહુઈં ઉપ્પાઇયસયાઈં પાઝમ્મ્યાઈં પાસંતિ' તત: ઉત્પાતભવનાનન્તરં
ખલ્લ તે આપાતકિરાતા: વિષયે દેશે વહુનિ ઔત્પાતિકશતાનિ પ્રાદુર્ભૂતાનિ પશ્યન્તિ
અવલોકયન્તિ 'પાસિત્તા' દ્વપ્પા 'અણમણ્ણં સદાવેતિ' અન્યોઽન્યમ્ પરસ્પરં શબ્દયન્તિ
આ ન્તિ 'સદાવિત્તા એવં વયાસી' શબ્દયિત્વા આહુય એવ વક્ષ્યમાણપ્રકારેણ અવાદિપુ:
ઉક્તવન્ત: કિમુક્તવન્ત: કીદશાશ્ચ તે અભૂવન્ ઇત્યાહ-'એવં ખલ્લ' ઇત્યાદિ 'એવં ખલ્લ
દેવાણુપ્પિયા ! અમ્હં વિસયંસિ વહુઈં ઉપ્પાઇયસયાઈ પાઝમ્મ્યાઈં તં જહા-અકાલે ગર્જિજય
અકાલે વિજ્જુઆ અકાલે પાયવા પુપ્ફતિ અમિક્ખણં અમિક્ખણં આગાસે દેવયાઓ
ણચ્ચતિ' એવં વક્ષ્યમાણપ્રકારેણ ખલ્લ નિશ્ચયે દેવાણુપ્રિયા ઋજુસ્વમાવા: ! અસ્માકં
વિષયે દેશે વહુનિ ઔત્પાતિકશતાનિ પ્રાદુર્ભૂતાનિ પ્રકટીભૂતાનિ, તથા-અકાલે ગર્જિજતમ્
અકાલે વિદ્યુત: અકાલે પાદપા: પુપ્પ્યન્તિ, અમીક્ષણમ્ અમીક્ષણમ્ આકાશે દેવતા:-ભૂતવિ
શેષા: નૃત્યન્તિ 'તં ણજ્જહં ણં દેવાણુપ્પિયા ! અમ્હં વિસયસ્સ કે મન્ને ઉવદ્ધવે ભવિસ્સહ
ત્તિકદ્દહુ ઓદ્ધયમણસકપ્પા ચિંતાસોગસાગર પવિદ્ધા કરયલપલ્લહત્થમુદ્ધા અદ્ધજ્ઞાણોવગયા

અકાલ મેં વિજ્જિયોં કા ચમકના અકાલ મેં વૃક્ષોં કા પુષ્પિત હોના, અકાલ મેં વાર ૨
ભૂતોં કા નતૈન હોના, (તણ્ તે આવાહચિલાયા વિસયંસિ વહુઈં ઉપ્પાયસયાઈં પાઝમ્મ્યાઈં
પાસંતિ) જબ ડન આપાત કિરાતોં ને અપને દેશ મેં ડન અનેક અશુભ સૂચક ઉત્પાતો કો
હોતે દેસા તો (પાસિત્તા અણમણ્ણં સદાવેતિ સદાવિત્તા એવં વયાસી) દેસકર ડન્હોને
એક દુસરે કો બુલાયા ઔર બુલાકર આપસ મેં ડમ પ્રકાર સે કહના પ્રારમ્ભ ક્રિયા ।
(એવં સલ્લ દેવાણુપ્પિયા ! અહ્મં વિસયંસિ વહુઈં ઉપ્પાયસયાઈં પાઝમ્મ્યાઈં) હે દેવાણુપ્રિયો !
દેસો હમારે દેશ મેં અનેક સૈકડો ઉત્પાત પ્રકટ હો ગયે હૈ-(તં જહા) જૈસે-(અકાલે ગર્જિજય,
અકાલે વિજ્જુયા, અકાલે પાયવા પુપ્ફતિ, અમિક્ખણ-૨ આગાસે દેવયાઓ નચ્ચંતિ) અકાલ
મેં ગર્જના હોતી હૈ, અકાલ મેં વિજ્જુલિયાં ચમકતી હૈ, અકાલ મેં વૃક્ષ પુષ્પિત હોતે હૈ, ઔર વાર-૨
આકાશ મેં મૃતાદિ દેવ નાચતે હૈ (તં ણ જજ્જહં ણં દેવાણુપ્પિયા ! અમ્હં વિસયસ્સ કે મન્ને ઉવદ્ધવે

ળીઝો ચમકેની અકાળમા વૃક્ષો પુષ્પિત થવા, આકાળમાં વાર વાર ભૂત-પ્રેતાનું નતૈન થવું (તણ્
તે આવાહચિલાયા વિસયંસિ વહુઈં ઉપ્પાયસયાઈં પાઝમ્મ્યાઈં) બીયારે તે આપાત કિરાતોએ
પોતાના દેશમાં એ અનેક ભૂતાના અશુભ સૂચક ઉત્પાતો થતા જોયા તો (પાસિત્તા અણમણ્ણ
સદાવેતિ, સદાવિત્તા એવં વયાસી) જોધને તેમણે એક બીજાને જોલાવ્યા અને જોલાવીને
પરસ્પર એવી રીતે કહેવા લાગ્યા કે (એવં સલ્લ દેવાણુપ્પિયા ! અહ્મં વિસયંસિ વહુઈં ઉપ્પાય-
સયાઈ પાઝમ્મ્યાઈં) હે દેવાણુપ્રિયો ! જુઓ, અમારા દેશમાં અનેક સૈકડો ઉત્પાતો પ્રકટ
થયા છે (તં જહા) જેમકે-(અકાલે ગર્જિજય, અકાલે વિજ્જુયા, અકાલે પાયવાપુપ્ફતિ,
અમિક્ખણ ૨ આગાસે દેવયાઓ નચ્ચંતિ) અકાળમાં મેંદોની ગર્જના થય છે, અકાળમાં
વીજળીઓ ચમકે છે અકાળમાં વૃક્ષો પુષ્પિત થાય છે અને વાર-વાર આકાશ માં ભૂતાદિ
દેવો નાચે છે (તં ણ જજ્જહં ણં દેવાણુપ્પિયા ! અમ્હં વિસયસ્સ કે મન્ને ઉવદ્ધવે ભવિસ્સહંતિ
ક્રદ્ધુ ઓદ્ધયમણસકપ્પા ચિંતાસોગસાગરં પવિદ્ધા કરયલપલ્લહત્થમુદ્ધા અદ્ધજ્ઞાણોવગયા ભૂમિ-

ભૂમિગયદિદ્વિઆ સ્થિઆયંતિ' તન્નજ્ઞાયતે દેવાનુપ્રિયાઃ ! અસ્માકં ત્રિપયસ્ય કો મન્યે
 इति वितर्कार्थे निपातः तेन मन्ये इति सम्भावयामः उपद्रवो भविष्यति इति कृत्वा अप
 हतमनःसंकल्पाः विमनस्काः चिन्ताशोकसागरे चिन्तया राज्यभ्रंशधनापहारादि चिन्तनेन
 यः शोक एव दुष्पारत्नात् सागरस्तत्र प्रणिष्टाः 'करयल पलहत्थमुहा' करतलपर्यस्तमुखाः
 करतले पर्यस्तं निवेशित मुख यैस्ते तथा, 'अट्टज्झाणोवगया' आर्त्तध्यानोपगताः 'भूमि-
 गयदिद्विआ' भूमिगतदृष्टिकाः 'स्થિઆયંતિ' ધ્યાયંતિ આર્તધ્યાનં કુર્વન્તિ આપતિતે સદ્ક્રુદે
 ક્રિક્રાન્તવ્ય મિતિ ચિન્તયન્તીતિ, અથ પ્રસ્તુતમાનં ભરતસ્ય ચરિત માહ—'તપ્પણ' इत्यादि ।
 'તપ્પણસે' મરહે રાયા ચક્રરયણદેસિઅમળે જાવ સમુદ્રવભૂઅં પિવ કરેમાણે કરેમાણે
 તિમિસગુહાઓ ઉત્તરિલ્લેખં દારેણ ણીતિ સસિવ્વ મેહ્ધયારણિવહા' તતઃ આપાતકિરા-
 તાનાં ઉત્પાતચિન્તનસમયે खल्लु स भरतो राजा चक्ररत्नादेशितमार्गः यावत् अनेकराज-
 महस्त्रानुयातमार्गः महतोत्कृष्ट सिंहनादबोलकलकलरवेण समुद्ररवभूतामिव प्राप्तामिव
 गुहां कुर्वन् कुर्वन् तमिस्रागुहातः औत्तरादेण द्वारेण निरेति निर्याति कस्मात् क इव

ભવિસ્સદ્ધિત્તિ કદ્દુ બોહ્યમળસકલ્પો ચિંતા સોગસાગરં પવિટ્ટા કરયલપલહત્થમુહા અટ્ટજ્ઞાણોવગયા
 ભૂમિગયદિદ્વિઆ સ્થિઆયંતિ) તો હે દેવાનુપ્રિયો ! પતા નહીં પડતા હૈં કિં હમારે વેશ મેં કયા
 ઉપદ્રવ હોને વાળા હૈં. હિસ પ્રકાર કહકર વે સવ કે સવ અપહત મનઃ સકલ્પવાળે હોકર
 વિમનસ્ક બન ગયે, ઔર રાજ્યભ્રંશ, ઔર ધનાપહાર હોને આદિ કી ચિન્તા સે આકુલિત હોકર
 શોક સાગર મેં દૂબ ગયે તથા આર્તધ્યાન સે હોકર વે અપનીર હયેલી પર મુલ રલ્લકર બેઠ
 ગયે ઔર નીચે કી ઔર દષ્ટિ લગાકર બિચાર કરને લગે કિં અવ હમેં કયા કરના ચાહિય
 (તપ્પણં સે મરહે રાયા ચક્રરયણદેસિઅમળે જાવ સમુદ્રવભૂઅંપિવ કરેમાણે ૨ તિમિસગુહાઓ
 ઉત્તરિલ્લેખં દરિણ ણીતિ સસિવ્વ મેહ્ધયારણિવહા) હિસકે બાદ વહ ભરત રાજા કિં
 જિસકે આગે ૨ કા રાસ્તા ચક્રરત્ન બતાતા બાતા હૈં યાવત્ જિસકે ઘીછે ૨ હનારોં રાજા
 ચલ રહે હૈં જોર જોર સે સિહનાદ કે જૈસી અવ્યક્તધ્વનિ સે ઇવં કલ કલ કે શબ્દ સે ગુહા

ગયદિદ્વિઆ સ્થિઆયંતિ) તો હે દેવાનુપ્રિયો! કંઈ પણ અખર નથી પડતી કે અમારા દેશમાં
 કંઈ ભતનો ઉપદ્રવ થવાનો છે આ પ્રમાણે કહીને તેઓ સર્વે અપહત મનઃ સકલ્પવાળા થઈ
 ને વિમનસ્ક બની ગયા અને રાજ્ય ભ્રંશ અને ધનાપહાર આદિની ચિંતા થી આકુલિત
 થઈને શોક સાગરમાં નિમગ્ન થઈ ગયા તેમજ આર્તધ્યાન થી યુક્ત થઈ ને તેઓ પોત
 પોતાની હથેળીઓ ઉપર મો રાખીને બેસી ગયા અને નીચેની તરફ ઢાંટ રાખીને વિચાર
 કરવા લાગ્યા કે હવે અમારે શુ કરવું જોઈએ (તપ્પણં સે મરહે રાયા ચક્રરયણદેસિઅ
 મળે જાવ સમુદ્રવભૂઅંપિવ કરેમાણે ૨ તિમિસગુહાઓ ઉત્તરિલ્લેખં દારેણ ણીતિ સસિ-
 વ્વ મેહ્ધયારણિવહા) ત્યાર બાદ તે ભરત રાજા કે જેનો આગળનો ભાગ ચક્રરત્ન નિર્દિષ્ટ
 કરતું બાંધ છે યાવત્ જેની પાછળ પાછળ હજારો રાજાઓ આવી રહ્યા છે—જેર—જેરથી
 સિંહ નીક જેવા અવ્યક્ત ધ્વનિથી તેમજ કલ કલના શબ્દથી શુક્રને સમુદ્રજેવા શબ્દથી

शशीव चन्द्र इव मेघान्धकार निवहात् मेघतमः समुद्रात् । 'तएण ते आवाडचिन्नाया भरहस्स रण्णो अग्गाणीअं एज्जमाणं पासंति' ततो गुहातो निर्गमनानन्तरं खलु ते आपात-
किताः भरतस्य राज्ञः अग्रानीकं सैन्याग्रभागम् 'एज्जमाणं' इत्यदागच्छन् पश्यन्ति
'पासित्ता' दृष्ट्वा 'आसुरत्ता' आशुरुत्ताः शीघ्रकुद्धाः 'रुद्धाः' तोषरहिताः 'चंडिकिका' चाण्डिकियताः रोपयुक्ताः 'मिसिमिसेमाणा' क्रोधवशात् दीप्यमानाः 'अण्णमण्ण सदावे-
ति' अन्योऽन्य शब्दयन्ति अह्वयन्ति 'सदावित्ता' शब्दयित्वा आह्वय 'एवं वयासी' एवं
वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादिपुरिति किमवादिपुरित्याह - 'एसणं' इत्यादि 'एमणं देवानु-
प्पिया ! केइ अपत्थियपत्थए दुरतपंतलक्खणे हीणपुण्णचाउइसे हिरिसिरिपरिव-
ज्जिए जेणं अम्हं विसयस्स उवरि विरिएणं हव्वमागच्छ' एषः खलु देवानुप्रियाः ।
कश्चित् अज्ञातनामकोऽप्रार्थितप्रर्थकः दुरन्तप्रान्तलक्षणः हीनपुण्यचातुर्दशः ह्री श्री परि-
वर्जितः यः खलु अस्माकं विषयस्य देशस्य उपरि वीर्येण आत्मशक्त्या 'हव्वं ति' शीघ्र-

को समुद्र के शब्द से व्याप्त हुई जैसे करता २ उम तिमिन्न गुफा के उत्तर दिशा के द्वार
से मेषकृत अंधकार कि समूह से चन्द्रमा को तरह निहत्ता (तएणं ते आवाडचिन्नाया भरहस्स
रण्णो अग्गाणीअं एज्जमाणं पासंति) उन आपात किरातोने भरत राजा की अग्रानीक को-
सैन्याग्रभाग को आते हुए देखा- (पासित्ता आसुरत्ता रुद्धा चंडिकिका कुविया मिसिमिसेमाणा
अण्णमण्ण सदावेति) देखकर वे उसी समय क्रुद्ध हो गये. रुष्ट-तोषरहित हो गये, रोष
से युक्त हो गये, और क्रोध के वश से लाल पीले हो गये इसी स्थिति में उन्होंने एक
दूसरे को बुलाया और (सदावित्ता एवं वयासी) बुलाकर इस प्रकार कहा (एसणं देवानुप्पिया !
कोइ (अपत्थियपत्थए दुरंतपंतलक्खणे हीणपुण्णचाउइसे हिरिसिरिपरिवज्जिए जेणं अम्हं
विसयस्स उवरि विरिएणं हव्व मागच्छ) हे देवानुप्रियो ! यह अज्ञात नामवाला कोई
न्यक्ति कि जो अपनी मौत का चाहना कर रहा है , तथा दुरन्त प्रान्त लक्षणों वाला है
एवं जिस का जन्म हीन पुण्यवाली कृष्णपक्ष की चतुर्दशी में हुआ है तथा जो लज्जा एवं

व्याप्त करता ते तमिन्ना शुक्ष्मा उत्तर दिशाना द्वारथी मेघकृत अंधकारना समूहमांथी अन्ध-
भानी जेम नीकंथे (तएणं ते आवाडचिन्नाया भरहस्स रण्णो अग्गाणीअं एज्जमाणं पासंति)
ते आपात किताये भरत राजानी अग्रानीकने सैन्याग्रभाग ने- आपाते जेथे. (पासित्ता
आसुरत्ता दृष्ट्वा चंडिकिका कुविया मिसिमिसेमाणा अण्णमण्ण सदावेति) जेधने तेथे तरत
क्रुद्ध थध गया, रुष्ट तोषरहित थध गया रोषथी युक्त थध गया अने क्रोधाविष्ट थधने लाल पीला
थध गया जेवी स्थितिमा तेमणे जेक जीअने गिलाव्या अने (सदावित्ता एवं वयासी) गिलावीने
परस्पर आ प्रभावे कहुं (एसणं देवानुप्पिया ! केइ अपत्थियपत्थिय दुरतपंतलक्खणे हीणपुण्ण-
चाउइसे हिरि सिरिपरिवज्जिए जेणं अम्हं विसयस्स उवरि विरिएणं हव्व मागच्छ) हे देवानु-
प्रियो जे अज्ञातनाम धारी केधं पुटुप डे जे पोताना मृत्युने आम त्री रहेल जे दुरत प्रान्त
लक्षणो वाणो डे अने जेने जन्म हीन पुण्यवाणी कृष्ण पक्षणी चतुर्दशी ना दिनसे थयेल छे
तथा जे लज्जा अने लक्ष्मी थी हीन छे- अमारा देश उपर पोतानी शक्ति वडे आकंभलु

માગચ્છન્તિ 'તં તહાણં ઘત્તામો દેવાણુપ્પિયા ! જહાણં એસ અમ્હં વિસયસ્સ ઉવરિં વિરિણં ણો હવ્વમાગચ્છહ ત્તિ કટ્ટદુ અણમણ્ણસ્સ અંતિણં એયમદ્દં પહિસુણેતિ' તત્તસ્માત્તયાં ચલ્લુ હમં મરતરાજાનમિત્યર્થઃ 'ઘત્તામો ત્તિ' ક્ષિપામો દિશોદિશિ વિકીર્ણં સૈન્યં કુર્મ્મં' इत्यर्थः हे देवानुप्रियाः ! यथा खलु एषोऽस्माकं विषयस्योपरि वीर्येण आत्मशक्त्या नो 'हव्वं' शीघ्रमागच्छेदिति कृत्वा विचिन्त्यान्योऽन्यस्यान्तिके समीपे एतमर्थं प्रतिश्रुत्य ओमिति प्रतिपाद्य 'सण्णद्धवद्धवम्मियकवचा' सन्नद्धवद्धवर्मितकवचाः, तत्र सन्नद्धशरीरारोपणात् बद्धं कषावन्धनतः वर्म्मं लोहकत्तलादिरूपं सज्जातमस्येति वर्म्मितम् एतादृशं कवचं तनुत्राणं येषां ते तथा, पुनश्च कीदृशास्ते 'उप्पील्लिअसरासणपट्टिआ' उत्पीडितशरासनपट्टकाः, तत्र उत्पीडिता - गाढ गुणारोपणात् दृढीकृता शरासनपट्टिका धनुर्दण्डो यैस्ते तथा, पुनश्च कीदृशाः 'पिणद्धगेविज्जा' पिणद्धग्रैवेयाः तत्र पिणद्धं ग्रैवेयं ग्रीवात्राणकं 'बद्ध आविद्ध विमलवरचिंधपट्टा' बद्धाविद्धविमलवरचिह्नपट्टाः, तत्र बद्धो ग्रंथ दानेन आविद्धः - परिहितो मस्तकावेष्टनेन विमलवरचिह्नपट्टो वीरातिवीरतासूचकवस्त्र

લક્ષ્મી સે રહિત હુઆ હૈ હમારે દેશ કે ઉપર અપની શક્તિ દ્વારા આક્રમણ કરને કે લિયે આ રહા હૈ (તં તહાણં ઘત્તામો દેવાણુપ્પિયા ! જહાણં એસ અમ્હં વિસયસ્સ ઉવરિં વિરિણં ણો હવ્વમાગચ્છહ) તો દેલો હમલોગ અબ હસે એસા કર દેં કિ જિસસે હસકી સેના હર એક દિશા મેં છિપ જાય અર્થાત્ હસ કી સેના હવર ઉપર મગ જાય ઔર યહ હમારે દેશ કે ઉપર આક્રમણ ન કર પાવેં (ત્તિકટ્ટદુ અણમણ્ણસ્સ અંતિણં એયમદ્દં પહિસુણેતિ) એસા વિચાર કરકે અન્હોને કર્તવ્યાર્થ કા નિશ્ચય કર લિયા (પહિસુણિત્તા સણ્ણદ્ધ વદ્ધવમ્મિય કવચા ઉપ્પીલ્લિયસરાસણપટ્ટિયા પિણદ્ધગેવિજ્જા વદ્ધિયાવિદ્ધ વિમલવરચિંધપટ્ટા) ઔર કર્તવ્યાર્થ કા નિશ્ચય કરકે વે સબકે સબ કવચ કો પહિર કર સન્નદ્ધ હો ગયે અપને ૨ હાથોં મેં અન્હોને જ્યા (દોરી) કા આરોપણ કરકે ઘનુષ લે લિયા ગ્રીવા મેં ગ્રીવા કા રક્ષક ગ્રૈવેયક પહિર લિયા તથા વીરાતિવીરતા કા

કરવા આવી રહ્યો છે. (ત તહાણ ઘત્તામો દેવાણુપ્પિયા ! જહાણ એસ અમ્હં વિસયસ્સ ઉવરિં વિરિણં ણો હવ્વમાગચ્છહ) હે દેવાનુપ્રિયો ! એ અજ્ઞાત નામવાળો કોઈ માણસ પોતાના મૃત્યુની ચાહના કરી રહ્યો છે. એ દુરંત પ્રાન્ત લક્ષણો વાળો છે એનો અન્ન હીન પુષ્યવાળી કૃષ્ણ પક્ષની અતુલ્કશીના દિવસે થયેલ છે. તેમજ એ લક્ષ્મી અને લક્ષ્મી થી રહિત થઈ ગયો છે એ અમારા દેશ ઉપર પોતાની શક્તિ વડે આક્રમણ કરવા આવી રહ્યો છે. (ત તહાણ ઘત્તામો દેવાણુપ્પિયા ! જહાણ એસ અમ્હં વિસયસ્સ ઉવરિં વિરિણં ણો હવ્વમાગચ્છહ) તો અમે આવું કરીએ કે જેથી એની સેના દિશાઓ મા અદૃશ્ય થઈ જાય એટલે કે એની સેના આમ - તેમ નાસી જાય તેથી એ અમારા દેશ ઉપર આક્રમણ કરી શકે નહિ (ત્તિકટ્ટદુ અણમણ્ણસ્સ અંતિણં એયમદ્દં પહિસુણેતિ) આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેમણે કર્તવ્યાર્થ નો નિશ્ચય કરી લીધો (પહિસુણિત્તા સણ્ણદ્ધ વદ્ધવમ્મિય કવચા ઉપ્પીલ્લિયસરાસણપટ્ટિયા પિણદ્ધ, ગેવિજ્જા વદ્ધિયાવિદ્ધ વિમલવરચિંધપટ્ટા) અને કર્તવ્યાર્થ નો નિશ્ચય કરીને તેઓ સર્વે કવચો પહેરીને તૈયાર થઈ ગયા અને પોતપોતાના હાથોમાં તેમણે જ્યાં આદ્યથ

विशेषो यैस्ते तथा, पुनश्च कीदृशास्ते किराताः 'गह्मिआउहप्पहरणा' गृहीतायुधप्रहरणाः, तत्र गृहीतानि आयुधानि प्रहरणानि च यैस्ते तथा, प्रहरणयोस्तु क्षेप्याक्षेप्यकृतो विशेषो बोध्यः, तत्र क्षेप्यानि बाणादीनि अक्षेप्यानि खन्नादीनि बोध्यगनि, अथवा गृहीतानि आयुधानि प्रहरणाय यैस्ते तथा, एवंभूता आपातकिराताः 'जेणेव भरहस्स रण्णो अग्गाणीयं तेणेव उवागच्छन्ति' यत्रैव भरतस्य राज्ञोऽग्रानीकं तत्रैवोपागच्छन्ति 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'भरहस्स रण्णो अग्गाणीएण सद्धिं सपलग्गा यावि होत्था' भरतस्य राज्ञः अग्रानीकेण सैन्याग्रभागेन सार्द्धम् योद्धुं संप्रकम्पनाश्चाप्यभूवन् 'तएणं ते आवाडचिल्लाया भरहस्स रण्णो अग्गाणीयं हयमहियपवरवीरघाइअ विवडिअ चिधद्वयपडागं किच्छप्पाणोवगयं दिसोदिसिं पडिसेहिंति' ततः तदनन्तरं खलु ते आपातकिराताः भरतस्य राज्ञः अग्रानीकं सैन्याग्रभागं कीदृशं तत् इतमथितप्रवरवीरघातितचिह्नध्वजपताकम् तत्र केचिद् हताः केचिद् मथिताः केचिद् घातिताश्च वीराः श्रेष्ठयोद्धारो यत्र तत्तथा एवं विपतिता नष्टाः ध्वजाः गरुडध्वजादयः पताकाश्च तदित्तरध्वजाः सन्ति चिह्नं यत्र तत्तथा पश्चात्पदद्वयस्य कर्मधारयः अत्र पूर्वपदे घातितशब्दस्य प्रवरवीरशब्दात् पूर्वं प्रयोक्तव्यत्वे परप्रयोगः प्राकृतत्वात् तथा कृच्छ्रप्राणोपगतम्

सूचक विमलवर चिह्नं पटं मस्तकं परं धारणं कर लिया. (गह्मिआउहप्पहरणा) और अपने अपने हाथों में उन सबने आयुध एवं प्रहरण उठा लिये । इस प्रकार से योद्धाओं के बीच से सज्जित होकर वे (जेणेव भरहस्स रण्णो अग्गाणीयं तेणेव उवागच्छन्ति) जहाँ पर भरत राजा का अग्रानीक (सैन्य) था—वहाँ पर पहुँच गये । (उवागच्छित्ता भरहस्स रण्णो अग्गाणीएण सद्धिं सपलग्गा याविहोत्था) वहाँ पर पहुँच कर उन्होंने भरत राजा के अग्रानीक के साथ युद्ध करना प्रारम्भ कर दिया (तएणं ते आवाडचिल्लाया भरहस्स रण्णो अग्गाणीयं हयमहियपवरवीरघाइअ विवडिअ चिधद्वयपडागं किच्छप्पाणोवगयं दिसोदिसिं पडिसेहिंति) उस युद्ध में उन्होंने—आपातकिरातो ने—भरत नरेश की अग्रानीक को ऐसा बना दिया—कर दिया—कि जिसमें कई श्रेष्ठवीर योधा मारे गये, कई श्रेष्ठ वीर योधाओंको जखमीकर दिये गये, एवं कई श्रेष्ठ वीर योधा आघा-

करीने धनुषो हाथमां दीधा अग्गाणीया अग्गाणीयं अवेयकं पडेरी दीधुं वीरतिवीरता सूचकं विमलवर चिह्नं पटं मस्तकं परं धारणं कथुं (गह्मिआउहप्पहरणा) तेभण्णे पोतानां हाथेमां आयुधो अने प्रहरणे दीधां आ प्रभाण्णे योद्धाणोना वेपमां सुखमं यधने तेण्णे (जेणेव भरहस्स रण्णो अग्गाणीयं तेणेव उवागच्छन्ति) न्या भरत राजाने सैन्याग्रभागं हते। त्यां पडेअथा (उवागच्छित्ता भरहस्स रण्णो अग्गाणीएण सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था) त्यां पडेअथीने तेभण्णे भरतराजाना अग्रानीकं साथे युद्धं करवानी शङ्कात करी (त एणं ते आपातचिल्लाया भरहस्स रण्णो अग्गाणीयं हयमहियपवरवीरघाइअ विवडिअ चिधद्वय पडागं किच्छप्पाणोवगयं दिसोदिसिं पडिसेहिंति) ते युद्धमां तेभण्णे भरतनरेशनी अग्रानीकना डेटहाकं श्रेष्ठ वीराने मारी नाअथा डेटहाकं वीर योद्धाणो धवाया अने डेटहाकं वीर योद्धाणोने आघातं युक्तं करी दीधा तेभण्णे तेभणी प्रधानं गरुडं चिह्नवाणी ध्वजणो अने

તત્ર કૃચ્છ્રેણ કળ્પેણ પ્રાણાન્ ઉપગતં-પ્રાપ્તમ્ કથમપિ ધૃતપ્રાણમિત્યર્થઃ દિશોદિગિ દિશઃ સકાશાદપરદિશિ સ્વામિમતદિક્ ત્યાજનેન અપરમ્યાં દિગિ इत्यર્થઃ પ્રતિષેધયન્તિ યુદ્ધાન્નિવર્તયન્તિ इत्यર્થઃ ॥૨૭૦૧૭॥

ઇતો ભરતસેન્યે કિં જાતમિત્યાહ “તણં સે” इत्यादि ।

મૂલમ્-તણં સે સેનાબલસ્સ પેઆ વેદો જાવ મરહસ્સ રણો અગ્ગાણીઅં આવાહાચેલાઈ હ્યમહિયપવરવીર જાવ દિસોદિસં પ-હિસોહયં પાસઈ પાસિત્તા અસુરુત્તે રુદ્ધે ચંડિક્કિણ કુવિણ મિસિમિસે માણે કમલામંલં આસરયણં દુરુહઈ દુરુહિત્તા તણં તં અસીઈમંગુલનૂ-સિઅં ણવણઝઈમંગુલપરિણાહં અઢ્ઢસયમંગુલમાયતં વત્તીસમંગુલમૂસિઅસિરં ચરંગુલકન્નાગં વોસઈ અંગુલ બાહાગં ચરંગુલજાણૂકં સોલસ અંગુલ-જંઘાગં ચરંગુલમૂસિઅસુર મુત્તોલોસંવત્તવાલેઅમજ્ઞં ઈસે અંગુલ-પણયપટ્ટં સંણયપટ્ટં સંગયપટ્ટં સુજાયપટ્ટં પસત્થપટ્ટં વિસિટ્ઠપટ્ટં ણી-જાણુણય વિત્થયથદ્ધપટ્ટં વિત્તલયકસણિવાય અંકેલ્લણ પહારપરિવ-જ્ઞિઅંગ તવણિજ્જથાસગાહિલાણં વરકણગસુફુલ્લથાસગવિચિત્તરયણ-રજ્જુપાસં કંચણમણિકણગપયરગણાણાવિહંઘટિઆજાલમુત્તિઆજાલઈ પર્મિહિયેણં પટ્ટેણ સોમમાણેણ સોમમાણં કક્કેયણંદંનીલમરગય ગલ્લમુહમંડણઈઅ આવેદ્ધમાણિક્કસુત્તગવિમૂસિઅં કણગામય પડમ-સુકયતિલકં દેવમઈવિકપ્પિઅં સુસ્વરિંદવાહણજોગ્ગા વયં સુરૂપં દૂઝ્જ-માણપચચારુચમરામેલગં ધેરેતં અણબ્ભવાહં અમેલણયણં કોકાસિઅ બહ્લપત્તલચ્છં સયાવરણનવકણગતવિઅતવણિજ્જેતાલુજીહાસયંસિરિયા-મિસેઅ ઘોણં પોક્કવરપત્તમિવ સલિલભિંદુજુઅં અચંચલં ચંચલસરીર વોક્કવરંગપરિવ્વાયગોવિવ હિલીયમાણં હિલીયમાણં સુરચરણચચ્ચપુહેઈ

તવાળે કર દિયે ગયે. તથા સનકા પ્રધાન ગરુડ ચિહ્નવાળો વ્હજાઈ ઓર इनसे भिन्न सामान्य व्हजार्हे भी नष्ट कर दी गई । इससे वे किसी भा तरह से कथकथमपि जीवित बने रहकर-बड़ी मुश्किल से अपने प्राणों को बचाकर-वहा से भाग गये और दूसरी ओर चले गये ॥१७॥

તેનાથી ભિન્ન સામાન્ય ધ્વજાઓને નષ્ટ કરી દીધી એથી તેમનામાંથી શેષ રૌનિકા કથ કથમપિ પ્રાણ બચાવીને ત્યાથી પલાયન થઈ ગયા અને બીજી તરફ જતા રહ્યા ॥૧૭॥

धरणिअलं अभिहणमाणं अभिहणमाणं दोविअ चलणे जमगपमगं
मुहाओ विणिग्गमंतं व सिग्घयाए सुलाणतंतु उदग्गवि णिग्गाए पक्कमंतं
जाइकुलरूवपच्चयपसत्थवारसावत्तगविसुद्धलक्खणं सुकुलप्पमृअं मेहा-
विमद्वयविणीयं अणुअतणुअसुकुमाल लोमनिच्चच्छवि सुजाय अणर-
मणपवणगरुलजइणचवलसिग्घगामि इसिमिव खंतिखमए सुसीमद्वि
पच्चक्खया विणीयं उदग्गहुतवहपासाणपंसुकदमससक्कर सवाल्लुइल्लत-
डकडेग विसमपव्भागिरिदरीसु लंघण पिल्लणणित्थारणासमत्थं अचंड-
पाडियं दंडपाति अणंसुपाति अकालतालुंच कालहेसिं जिय निद्दगवेसगं
जिअ परिसहं जच्चजातीअं मल्लिहाणि सुगपत्त सुवण्ण कोमलं मणा-
भिरामं कमलामेलं णामेणं आसग्गणं सेणावई कमण समभिरूढे कुवलय-
दलसामलं च रयणिकरमंडलनिमं सत्तुजणविणासणं कणगरयणदंडं
णवमालिअ पुष्फसुरहिगंधि णाणामणिलयभत्तिचित्तं च पद्दोतमिसि-
मिसित तिक्खधारं दिव्वं खग्गरयणं लोके अणोवमाणं तं च पुणो वंस-
रुक्खसिगड्ढिदंत कालायसविपुल्ललोहदंडकवरखइरभेदकं जाव सव्वत्थ
अप्पडिहय किं पुण देहेसु जंगमाणं पण्णासंगुलदीहो सोलससे
अंगुलाइं विच्छिण्णो । अद्धंगुलसोणीको जेड्ढर्पमाणो असो भणिओ
॥१॥ असिरयणं णरवइस्स हत्थाओ तं गहिऊण जेणेव आवाडचिलाया
तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता आवाडचिलाएहिं सद्धि संपलग्गे आवि
होत्था । तएणं से सुसेणे सेणावई ते आवाडचिलाए हयमहिअ
पवरवीरघाइअ जाव दिसो दिसिं पडिसेहेइ ॥सू० १८॥

छाया- ततः खलु स सेनाबलस्य नेता वेष्टको यावत् भरतस्य राज्ञोऽग्रानीकम् आपात-
क्रान्तिं हतमथितप्रवरवीर यावत् दिशोदिशि प्रतिषेधितं पश्यति, दृष्ट्वा आशुस्तः रूपः
चाण्डकियत कुपित मिसिमिसेमाणः कमलामेलम् अश्वरत्नं दूरोदति, दूतह्य ततः खलु-
तम् अशीत्यङ्गुलोच्छ्रितम् नवनवत्यङ्गुलपरिणाहम् अष्टशताङ्गुलायतम् द्वात्रिंशदङ्गुलोच्छ्रि-
तशिरस्क चतुरङ्गुलकर्णकं विंशत्यङ्गुलोच्छ्रितखुरं मुकोलीसंवृतवलितमध्यम् ईषदङ्गुलो-
प्रणतपृष्ठं संनतपृष्ठं संद्वतपृष्ठं सुजातपृष्ठं प्रशस्तपृष्ठं विशिष्टपृष्ठम् पणा जानूनतविस्तृत-
स्तवपृष्ठं वेत्रलताकशानिपाताद्देहलणप्रहारपरिवर्जिताङ्गम् तपनीय स्थासकाहिलाणम्
वरकनकसुपुष्पस्थासकविचित्ररत्नरञ्जुपार्श्वं कान्वनमणिकनकप्रवरक नानाविधघण्टिका-

जालमौक्तिकजालकैः परिमण्डितेन पृष्ठेन शोभमानेन शोभमानम् कर्केतनेन्द्रनीलमरकतम-
सारगल्लमुखमण्डनरचितम् आविद्धमाणिष्यसूत्रकविभूषितं कनकमयपद्मसुकृततिलकं देव-
मतिविकल्पितं सुरवरेन्द्रवाहनयोग्यावजम् सुरुपं द्रव्यपञ्चचारुचामरमेलकं धरत् मनम-
बाहम् अमेलनयनम् कोकासितवहलपत्रलाक्षं सदाधरणमधकनकतप्तपनीयतालुजिह्वाऽऽस्यं
श्रीकाऽभिवेकघोणं पुष्करपत्रमिव सलिलविन्दुयुतम् अचञ्चलं चञ्चलशरीरं चोक्षचङ्क-
परिप्राजक इव अभिलीयमानम् अभिलीयमान खुरचरणचञ्चपुटैः धरणीतलम् अभिध्न-
दभिध्नवद्वावपि चरणौ यमकसमकुसुमाद्विनिर्गमदिव शीघ्रतया मृणालतन्तूदकमपि निश्चाय
निश्चाय प्रकामत् जातिकुलरूपप्रत्ययपशस्तद्वावशावर्त्तकविशुद्धलक्षण सुकुलप्रसूतं मेघावि-
भद्रकविनीतम् अणुकतनुकुसुमारलोमस्निग्धच्छवि सुजातामरमन पवनगरुडजयिचपल,
शीघ्रगामीशृङ्गमिव क्षान्तिक्षमया सुशोभ्यमिव प्रत्यक्षताविनीतम् उदकहुतवहपापाणपा-
शकईमसशर्करसवालुकतटकटकविषमप्राग्भारगिरीदरीपु लंघणप्रेरणानिस्तारणासमर्थम् अचण्ड
पातित दण्डपाति अनश्रुपाति अकालतालु च कालहेवि जितनिद्रम् गवेषकम् जितपरि-
पहम् जात्यजातीयम्, मौल्लघाणम्, शुकपत्रसुवर्णकोमलम्, मनोऽभिरामं कमलामेलम् अवध-
रत्नं सेनापतिः क्रमेण समभिरुढ कुवलयदलश्यामल च रजनीकरमण्डलनिभम् शत्रूजन-
विनाशनम् कनकरत्नदण्डम् नभमालिकापुष्पसुरभिगन्धि नाना मणिलताभक्तिचित्रम् च
प्रघौत 'मिसिमिसित' तीक्ष्णधारम् दिव्य खड्गरत्नम् लोके अनुपमानम् तच्च पुनर्वशरु-
क्षशृङ्गास्थिदन्त कालायसविपुललोहदण्डकवरवज्रमेदकं यावत् सर्वत्राप्रतिहतम् किं पुनर्जङ्ग-
मानां देहेषु पञ्चाशदङ्गुलानि दीर्घः स षोडशङ्गुलानि विस्तारिणः । अर्द्धाङ्गुलभ्रौणिक ज्येष्ठ
प्रमाणोऽसि मंजितः ॥१॥ तत् अस्मिन् नरपते हस्तात् गृहीत्वा यत्रैव आपातकिराता
स्तत्रैव उपागच्छति उपागत्य आपातकिरातेभ्यः सार्द्धम्, संप्रलग्नश्चाप्यभवत् ॥ ततः
खलु स सुषेणः सेनापतिस्तानापातकिरातान् हतमथितप्रवरवीरघातित यावद् दिशोदिशि
प्रतिषेधयति ॥सू० १८॥

टीका—“तएणं से” इत्यादि

‘तएणं से सेण स्स णेसा वेढो जाव भरहस्स रण्णो भग्गणीयं आवाडचिळा-
एहिं ह्यमहिंयपवरवीर जाव दिसोदिसिं पडिसेहिं पासइ’ ततः स्वसैन्य प्रतिषेधनाद-
नन्तरं स सेनाबलस्य-सेनारूपस्य बलस्य नेता स्वामीवेष्टकः वस्तुमात्रविषयकोऽत्र

भरत सैन्य में क्या हुआ— इसका कथन—

‘तएणं से सेणा स णेया वेढो जाव भरहस्स’ इत्यादि—सू० १८॥

टीकार्थ—(तएणं से सेणाबलस्स णेया) जब सेना रूप बल के नेता सुषेण नामकसेनापति
ने (भरहस्स रण्णो) भरत महाराजा के (भग्गणीयं आवाडचिळाएहिं ह्यमहिंयपवरवीरघाह्यजाव
दिसोदिस पडिसेहिं पासइ) अप्रानिक को आपात किरातों के द्वारा हतमथित प्रवर वीर

भरत सैन्यमें शुं थयु ? ते अंभधमां कथन :

‘त एणं से सेणा स णेया वेढो भरहस्स’ इत्यादि—सूत्र—१८ ॥

टीकार्थ—(त एणं से सेणा स्स णेया) अर्थात् सेनाइय भगना नेता सुषेण सेनापतिजे
(भरह रण्णो) भरत राजाना (भग्गणीयं डचिळाएहिं ह्ययपवरवीरघाह्य

सेनानी सत्कः सम्पूर्ण पूर्वोक्तो ग्राह्यः स सुषेणः यावत् भरतस्य राज्ञोऽग्रानीकम् अग्र-
सैन्यसमूहम् आपातकिरातैः हतमथित प्रवरवीरघातित यावत् प्रतिपेधित यावत्पदात् 'विडिय
चिन्धयपडाग किच्छप्पाणोवगयं' इति ग्राह्यम् तथा च केचित् हताः केचित् मथिताः
ताश्च प्रवरवीरा यत्र तत्तथा, एवं विपतितचिह्नध्वजपताकम् विपतिताः भ्रष्टाः चिह्नप्रधानाः
ध्वजाः गरुडध्वजादयः पताकाः तदितरध्वजाः सन्ति यत्र तत्तथा एवं कृच्छ्रप्राणोपगतम्
कृच्छ्रेण कष्टेन प्राणान् उपगतं प्राप्तम् कथमपि धृतप्राणमित्यर्थः दिशोदिशि अभिप्रे-
तदिशोऽस्यां दिशि प्रतिपेधितम् आपातकिरातैः युद्धान्निवारितम् अग्रानीकं सैन्यसमूहं
पश्यति भरतस्य सुषेण नामा सेनापतिः 'पासित्ता' दृष्ट्वा 'आसुररुत्ते रुट्टे चंडिकिफ
कुविफ मिसिमिसेमाणे कमलामेळं आसरयणं दुरुहइ' आश्रुक्तः शीघ्रं क्रुद्धः रुष्टः
तोषरहितः चाण्डिक्रियतः रोषयुक्तः कुपितः क्रुद्धः मिसिमिसेमाणः कोपातिशयात्
दीप्यमानः-जाल्वह्यमानः कमलामेळं नामाश्वरत्नं दुरोहति आरोहति 'दुरुहिच्चा' दुरुह्य-
आरुह्य अथ अश्वरत्नवर्णनमाह-'तएणं तं असीइमंगुलमूसिअं' इत्यारभ्य 'सेणावई
क्रमेण सममिरुडे' इत्येतदन्तेन सूत्रेण पदयोजना तत इति क्रियाक्रमसूचकं वचनं तं
प्रसिद्धगुणं नाम्ना कमलामेळम् अश्वरत्नं सेनापतिः क्रमेण सन्न दि परिधानविधिना
सममिरुडः, आरुडः कीदृशम् अश्वरत्नमित्याह-'असीइमंगुलमूसिअं' इति, अशीत्यङ्गु-
लोच्छ्रितम् अशीत्यङ्गुलानि उच्छ्रितम् तित्यङ्गुप्रमाणकम् अङ्गुलं यवमानम् इति

वाला-जिसमें अनेक योधाओको मार दिये गये हैं और अनेक श्रेष्ठयोद्धाओको जिस में घायल कर
दिये गये हैं-ऐसा देखा "यहां यावत् पद से" विविडियचिन्धयपडागं, किच्छप्पाणोवगयं" इन
पूर्वोक्तविशेषणों का ग्रहण हुआ है। तो (पासित्ता) देखकर ही वह (आसुररुत्ते, रुट्टे, चंड
किफ, कुविफ, मिसिमिसेमाणे कमलामेळं आसरहं दुरुहइ) एक साथ ही अत्यंत क्रुध हो गया,
उसे थोड़ा सा भी सतोष नहीं रहा, स्वभाव में उसके रोष भर गया इस तरह वह कुपित और
कोप के अतिशय से जलता हुआ कमलामेळ नाम के अश्वरत्न पर सवार हुआ। अश्वरत्न
का वर्णन-(असीइमंगुलमूसिअं) यह अश्वरत्न ८० अस्सी अंगुल ऊंचा था। एक यव का
जितना प्रमाण होता है, उतने ही प्रमाण वाला एक अंगुल होता है ऐसा वाचस्पति का मत है

जाव दिशो दिशि पडिसेहिअं पासइ) अग्रानीकने आपात क्रिशने। वडे हतमथित प्रवर वीर
शुभ्रत डे जेभा अनेक योद्धाओ रूझाया छे तेमअ अनेक योद्धाओ धवाया छे- तेम जेथुं.
अही यावत् पदथी ("विविडियचिन्धयपडाग किच्छप्पाणोवगयं") जे पूर्वोक्त विशेषणोतु
अहंथ थथु छे. ते। (पासित्ता) जेधने ते (आसुररुत्ते, रुट्टे, किफ, कुविफ, मिस-
मिसेमाणे कमलामेळं आसरहं दुरुहइ) ते जेकहम क्रुद्ध थथु अथे। तेने थोडा पथु स'तोष
रहो नहि तेना स्वभावभा रोष भरअ थथे। आ प्रभाथे ते कुपित अने कोपना अतिशय
आवेथथी प्रवसित थते। कमलामेळ नामक अश्वरत्न उपर सवार थथे। ते अश्वरत्नछं
वधुंन आ प्रभाथे छे-(असीइ मंगुलमूसिअं) जे श्रेष्ठ अथ ८० जे'अ' अ शुद्ध जे'अ' हते।

વાચસ્પતિઃ તત્ર અક્ષે ચાંદુલકાત્ ઉલઃ અઙ્ગુલં ચાત્ર માનવિશેષઃ 'ળવળઉદમંગુલપરિણાહં, નવનવત્યઙ્ગુલપરિણાહમ્ તત્ર નવનવત્યઙ્ગુલાનિ-एकोनशताङ्गुलप्रमाणः परिणाहो मध्यपरिधिर्भ्यस्य तत्तथा पुनः कीदृशम् 'अट्टसयमंगुलमायतं' अष्टशताङ्गुलमायतम् अष्टोत्तरशताङ्गुलानि आयत दीर्घम्, सर्वत्र मकारोऽलाक्षणिकः, तुरगाणां तुङ्गात्वं खुरत आरभ्य कर्णावधि परिणाहः विशालता पृष्ठपाश्वोदरान्तरावधि आयामो मुखादापुच्छमूलम् उक्तं च परासरेण-

“मुखादापेचकं दैर्घ्यं પૃષ્ઠપાશ્વોદરાન્તરાત્ ।

આનાહ ઉચ્છ્રયઃ પાદાદ્, વિજ્ઞેયો યાવદાસનમ્ ॥૧॥

તત્રોચ્ચત્વસહસ્રયામેલનાય સાક્ષાદેવ સૂત્રકુદાહ-‘વત્તીસ મંગુલમૂસિઅસિરં’ દ્વાત્રિશદઙ્ગુલોચ્છિતશિરસ્કમ્ તત્ર દ્વાત્રિશદ્ અઙ્ગુલાનિ દ્વાત્રિશદગુલપ્રમાણમ્ ઉચ્છિતં શિરો યસ્ય તત્તથા, પુનઃ કીદૃશમ્ ‘ચતુરંગુલકન્નાગં’ ચતુરઙ્ગુલકર્ણકમ્-ચતુરઙ્ગુલપ્રમાણકર્ણકમ્ હ્રસ્વકર્ણસ્ય જાત્યતુરગલક્ષણત્વાત્, અનેન કર્ણયોરુચ્ચત્વેન અસ્યાશ્વ-

અજ્ઞ શબ્દ સે હલ પ્રત્યય કરને પર અજ્ઞુલ શબ્દ કી નિષ્પત્તિ હોતી હૈ । યહ એક પ્રકાર કા માન વિશેષ હૈ । (ળવળઉદમંગુલપરિણાહં) હસ અશ્વરત્ન કી મધ્યપરિધિ ૧૧ નન્નાણુ અંગુલ પ્રમાણથી । (અટ્ટસયમંગુલમાયત) ૧૦૮ એક મો ઝાઠ અંગુલ કો હસકાં લન્વાઈ થી । યદ્વા સર્વત્ર મકાર અલાક્ષણિક હૈ-ઘોડો કી ઝંઘાઈ કા પ્રમાણ ખુર સે લેકર કાન તક નાપો જાતી હૈ પરિણાહ વિશાલતા-પૃષ્ઠ ભાગ સે લેકર ઉદર તક માની જાતો હૈ । તથા આયામ-મુલ સે લેકર પુચ્છ કે મૂલ તક ગિની જાતી હૈ । પરાસર ને એસા હો કહા હૈ—

મુખાદાપેચકં દૈર્ઘ્યં પૃષ્ઠપાશ્વોદરાન્તરાત્ । આનાહ ઉચ્છ્રયઃ પાદાદ્ વિજ્ઞેયો યાવદાસનમ્ ॥૧॥

(વત્તીસમંગુલમૂસિઅસિરં) ૩૨ અંગુલ પ્રમાણ હસ અશ્વરત્ન કા મસ્તક થા (ચતુરંગુલકન્નાગં) ચાર અંગુલ પ્રમાણ હસકે કર્ણ થે । હોટે કાન એઠ ઘોડે હોને કે ચિન્હ માને જાતે હૈ । હસી સે ઘોડે કા યૌવન સ્થિર રહતા હુઆ કહા ગયા હૈ । યહા પર યોજના

એક યવનુ' જેટલુ પ્રમાણુ હોય છે, તેટલા પ્રમાણુવાળો એક, અશુલ હોય છે એવો વાચસ્પતિનો મત છે. અ ગ શબ્દને 'ઉલ' પ્રત્યય કરવાથી અંગુલ શબ્દની નિષ્પત્તિ થાય છે એ એક પ્રકારનું માપ વિશેષ છે. (ળવળઉદમંગુલપરિણાહ) એ અશ્વરત્નની મધ્ય પરિધિ ૯૯ નન્નાણુ અશુલ પ્રમાણુવાળી હતી (અટ્ટસયમંગુલમાયતં) ૧૦૮ એક સો આઠ અશુલ જેટલી એમની લઘાઈ હતી બહી સર્વત્ર મકાર અલાક્ષણિક છે ઘોડાઓની ઊંચાઈનું પ્રમાણુ ખરીથી કાન સુધી માપવામાં આવે છે પરિણાહ-વિશાલતા-પૃષ્ઠભાગથી માંડીને ઉદર સુધી માપવામાં આવે છે તેમ જ આયામ-સુખથી માંડીને પૂછના મૂળ સુધી માપવામાં આવે છે પરાસરે આ પ્રમાણુ જ કહ્યું છે—

મુખાદાપેચકં દૈર્ઘ્યં પૃષ્ઠપાશ્વોદરાન્તરાત્ । આનાહ ઉચ્છ્રયઃ પાદાદ્ વિજ્ઞેયો યાવદાસનમ્ ॥

(વત્તીસ મંગુલમૂસિઅસિરં) ૩૨ અંગુલ અશુલ પ્રમાણુ એ અશ્વરત્નનું મસ્તક હતું (ચતુરંગુલકન્નાગં) ૪ અંગુલ પ્રમાણુ એના કર્ણ (કાન) હતા, નાનો કાન એક ઘોડાના લક્ષણ

रत्नस्य स्थिरयौवनत्वमभिहितं शङ्कुकर्णत्वात् अत्र योजनायाः क्रमप्राधान्येन पूर्वम्
कर्णविशेषणं ज्ञेयं पश्चात् शिरसः अश्वश्रवसो मूर्ध्ने उच्चतरत्वात् पुनः कीदृशम् 'वीसइ
अंगुलवाहागं' त्रिंशत्यङ्गुलवाहाकम्, २० विंशत्यङ्गुलप्रमाणा वाग-शिरोभागाधोवर्ती
जानूरोरुपरिवर्ती प्राक्चरणभागी यस्य तत्तथा 'चउरंगुलजाणूकं' ४चतुरङ्गुलजानुकम्
तत्र चतुरङ्गुलप्रमाणं जानु बाहुजंघासन्धिरूपोऽवयवो यस्य तत्तथा, तथा 'सोल-
सअगुलजंघागं' षोडशाङ्गुलजंघाकम् तत्र १६षोडशाङ्गुलप्रमाणा जंघा-जान्वधोवर्ती खुरा-
वधिरवयवो यस्य तत्तथा, पुनश्च कीदृशम् 'चउरंगुलमूसियखुरं' चतुरगुलोच्छ्रित-
खुरम्, तत्र ४चतुरङ्गुलोच्छ्रिताः खुराः पादतलरूपाः अवयवा यस्य तत्तथा, एषामव-
यवानामुच्चत्वमीलने सवेसङ्ख्या ८० अशीत्यङ्गुलरूपा, मकारः सर्वत्रालाक्षणिकः सम्प्रति
अवयवेषु लक्षणोपेतत्वं सूचयति 'मुत्तोलीसंवत्तवलिअमज्झं' मुत्तोली संवृत्तवलितमध्यम्
तत्र मुत्तोलीनाम अथ उपरि च सङ्कीर्णा मध्येतु ईषद्विशाला कोष्ठिका तद्वत् संवृत्त
सम्यग्वर्तुलं वलितं वलनस्वभावं नतुस्तन्धं मध्यं यस्य तत्तथा परिणाहस्य मध्यपरि-
धिरूपस्यात्रैव चिन्त्यमानत्वादुचिता इयमुपमा 'ईसिं अंगुलपणयपट्टं' ईषदङ्गुलप्रण-

की क्रम प्रधानता लेकर पहिले कर्ण का विशेषण पश्चात् शिर का विशेषण जानना । क्योंकि
बोड़े के दोनों कान मस्तक की आपेक्षा उच्च होते हैं । (वीसइ अंगुलवाहागं) इसकी
शिरोभाग के अधोवर्ती और दोनों जानुओं के उपरिवर्ती ऐसा चरणों का प्रथम भाग—
गर्दन के नीचे का भाग २० वीस अंगुल प्रमाण था (चउरंगुलजाणूकं सोलसअगुल जंघागं) चार
अंगुल प्रमाण इसका जानु था—बाहु और जंघा का सन्धिरूप अवयव था । १६ सोलह अंगुल
प्रमाण इसकी जंघा थी—जानु के नीचे का खुरो तक का अवयवरूप भाग था (चउरंगुल-
मूसियखुरं) चार अंगुल ऊँचे इसके खुर थे । (मुत्तोलीस वत्तवलियमज्झं) मुत्तोली—नीचे
ऊपर में सङ्कीर्ण तथा मध्य में थोड़ी विशाल ऐसी कोष्ठिका के जैसा इसका अच्छी तरह से
गोल एवं वलित वलन स्वभाव को स्तम्भ स्वभाव का नहीं मध्य भाग था (ईसिं अंगुल

भनाय छे. जेनाथी ४ बोडानु यौवन स्थिर रहे छे, आम ठडेवाय छे अही' जेननानी
केम प्रधानता लधने पडेलां कथुं (कान)तु विशेषणु अने त्थार भाड शिरतु विशेषणु अणुवुं
जेधजे. केमके बोडाना जेने काने। शिरनी अपेक्षाजे जिया डेय छे (वीसइ अंगुलवाहागं)
जेनी भाडा— (शिरोभागना अधोवर्ती अने जेने जानुजेना उपरने अरजेना प्रथम
भाग—जीवानी नीचेने भाग) २० वीस अंशुल प्रमाणु हती. (चउरंगुल जाणूक सोलस अंगुल-
जंघागं) चार अंशुल प्रमाणु जेने जानुभाग हतो—जेठवे के भाहु अने जंघाना स धि
इय अवयव हतो १६ सोल अंशुल प्रमाणु जेनी जंघा हती—जेठवे के जानु नीचेने थुर
मुधीने। अवयव इय भाग हतो. (चउरंगुलमूसियखुरं) चार अंशुल उंची जेनी परीजे।
हती (मुत्तोलीस वत्तवलियमज्झं) मुत्तोली—नीचे—उपरमा सङ्कीर्ण तथा मध्यमा ठंछि
विशाल जेनी कोष्ठिका जेवे जेने सारीरीते जेण तेम ४ वलित—वलन स्वभावने, नहि के

तपृष्ठम् तत्र ईषदङ्गुलं यावत् प्रणतं नन्तुमारब्धम् अतिप्रणतस्योपवेष्टु दुस्त्वावहत्वात्
 पृष्ठम् पर्याणस्थानं यस्य तत्तथा आरोहकमुत्तावहपृष्ठकमित्यर्थः, पुनः कीदृशम्
 'संणयपट्टं' संनतपृष्ठम् तत्र सम्यग् अधोऽधः क्रमेण नतं पृष्ठं यस्य तत्तथा,
 तथा 'संगयपट्टं' संगतपृष्ठम् संगतदेहप्रमाणोचितं पृष्ठं यस्य तत्तथा, तथा 'सुजाय-
 पट्टं' सुजातपृष्ठम् सुजात जन्मदोषरहितं पृष्ठं यस्य तत्तथा, तथा 'पसत्थपट्टं' प्रश-
 स्तपृष्ठम् तत्र प्रशस्त शालिहोत्रलक्षणानुसारि पृष्ठं यस्य तत्तथा, किं बहुना : 'विसि-
 द्दपट्टं' विशिष्टपृष्ठं प्रधानपृष्ठम् भणितं पृष्ठे पर्याणस्थानवर्णनम्, अथ तत्रैवावशिष्ट-
 भागं विशिनष्टि 'एणीजाणुणयवित्थयथदपट्टं' एणीजानुन्नताविस्तृतस्तब्धपृष्ठम् तत्र
 एणी हरिणी तस्याः जानुवदुन्नतम् उभयपार्श्वयो विस्तृतं च चरमभागे स्तब्धं सुदृढं
 पृष्ठं यस्य तत्तथा, पुनः कीदृशम् 'वित्तलयकसणिवाय अंकेल्लणपहारपरिवज्जिअंगं' वेत्र-
 लता कशानिपाताङ्गेल्लणप्रहारपरिवर्जिताङ्गम् तत्र वेत्रो जलवंशः लता वेणुलता चर्मदण्डः
 'चावुक' इति प्रसिद्धः, तेषां निपातैस्तथा अङ्गेल्लणप्रहारैः तर्जनकप्रहारैः तर्जन-
 कविशेषाघातैश्च परिवर्जितम् अश्ववाहमनोऽनुकूलचरित्वात् अङ्गं यस्य तत्तथा, तथा 'तव-
 णिज्जयासगाहिलानं' तपनीयस्थासगाहिलानम्, तत्र तपनीयमयाः 'सुवर्णमयाः' स्था-

पणयपट्टं संणयपट्टं सुजायपट्टं पसत्थपट्टं विसिद्धपट्टं) जब आरोहक इसके ऊपर बैठता था
 तो इसका पृष्ठ भाग थोड़े से अंगुल प्रमाण तक झुक जाता था । वह पृष्ठ भाग इसका नीचे
 नीचे के क्रम से नत था, संगत था—देह प्रमाण के अनुरूप था, सुजात था—जन्म दोष
 रहित था—तथा प्रशस्त था—शालिहोत्र लक्षण के अनुसार था—अधिक क्या कहें—वह पृष्ठ
 भाग इसका एक विशिष्ट ही प्रकार का पृष्ठ था (एणुजाणुणयवित्थय थद पट्ट वित्तलयक
 सणिवाय अंकेल्लणपहारपरिवज्जिअंगं) वह पृष्ठ हमका हरिणीकी जंघाओं की तरह उन्नत
 था—और दोनों पार्श्व भागों में विस्तृत था एवं चरम भाग में स्तब्ध था—सुदृढ था । इसका
 शरीर वेत्र, या लता, या कशा—कोड़ा, इनके आघातों से तथा इसी प्रकार के और भी जो
 तर्जनक विशेष हैं उनके आघातों से परिवर्जित था । क्योंकि इसको चाल अपने ऊपर सवार

स्तब्ध स्वभावने—ओने। मध्यभाग डते। (ईसि अंगुलपणयपट्टं संणयपट्टं सुजायपट्टं
 पसत्थपट्टं विसिद्धपट्टं) न्यारे आरोहक ओनी ऊपर ओसता त्यारे ओने। पृष्ठभाग कंधे
 अंगुल प्रमाण ओटवो नअ थई ओतो डते। ते पृष्ठभाग ओ अश्वने। नीचे—नीचेना—कंधी
 नत डते। संगत डते। देह प्रमाणानुसंग डते। सुजात डते।—जन्म दोषशी रहित डते।
 प्रशस्त डते। शालिहोत्रना लक्षण अनुभव डते। वधारे शु कडीओ ते अश्वने। पृष्ठभाग
 ओके विशिष्ट प्रकारने ओ डते। (एणु जाणुणय वित्थय थदपट्टं वित्त लयकसणिवाय
 अंकेल्लणप परिवज्जिअंगं) ते अश्वने। पृष्ठभाग हरिणीनी जंघाओनी ओम उन्नत
 डते। अने अने पार्श्वभागोभा विस्तृत डते। तेम ओ चरम भागभा स्तब्ध डते। सुदृढ
 डते। ओ अश्वनु शरीर वेत्र, लता के कशा (कोड़ा) ओ सवना आघातोथी तेमओ ओ नतना
 ओनी तजनेके विशेषो डाय छे। तेमना आघातोथी परिवर्जित डतुं। केमके ओनी आल,

सत्ताः-दर्पणाकाराः अश्वालङ्कारविशेषा यत्र तदेवंविधम् अहिलाणं मुखसंयमनविशेषो यस्य तत्तथा सुवर्णमयलगामयुक्तमित्यर्थः तथा 'वरकणगसुफुल्लथासगविचित्रयणरञ्जुपासं' वरकनकसुपुष्पस्थासकविचित्ररत्नरञ्जुपाश्वम् तत्र वरकनकमयानि सृष्टु शोभमानानि पुष्पाणि स्थासकाश्च अश्वालङ्कारविशेषाः तैर्विचित्रा रत्नमयी रञ्जुः पार्श्वयोः पृष्ठोदरान्तवर्त्यवयवविशेषयोर्यस्य तत्तथा वध्यन्ते हि पट्टिकाः पर्याणद्वीकरणार्थमश्वाकनामुभयोः पार्श्वयोरिति तथा 'कंचनमणिकणगपवरगणाणाविह घटिआजालमुत्तिआजालएहि' काञ्चनमणिकनकप्रवरकनानाविधघण्टिकाजालमौक्तिकजालैः तत्र काञ्चनयुतमणिमयानि केवल कनकमयानि च प्रवरकाणि पत्रिकाभिधानभूषणानि अन्तरान्तरा येषु तानि तथाभूतानि नानाविधानि घण्टिकाजालानि मौक्तिकजालानि च तैः 'परिमंडियेणं पट्टेण सोभमाणेण सोभमाणं' परिमण्डितेन विभूषितेन पट्टेन शोभमानेन शोभमानम् 'कक्केयणइंदनीलमरगरमसारगल्लमुहमडणरइअं' कर्केतनेन्द्रनीलमरकतमसारगल्लमुखमंडलरचितम् तत्र कर्केतनः रत्नविशेषः इन्द्रनीलः इन्द्रधनुर्वत् नीलः इषत् नीलवर्णरत्नविशेषः अतसीवर्णवत्, मरकतः नील-रत्नविशेषः दुर्वावर्णवत् मरतगल्लः एकप्रकारक रत्नविशेष तैः रचितं सज्जितं निर्मितं मुखमण्डलं यस्य तत्तथा तत् अथवा अस्य स्थापि-

हुप चक्रवर्ती के मनोऽनुकूल होती थी । (तवणिज्जथासगाहिलाणं) इसके मुख ऊपर की ओर लगाम थी वह सुवर्णनिर्मित स्थासको से-दर्पणाकारके अलङ्कारों से युक्त थी, (वरकणगसुफुल्लथासगविचित्रयणरञ्जुपासं) इसकी तंगरूप जो रस्ती थी वह रत्नमय थी एवं वरकनकमय सुन्दर पुष्पों से तथा स्थासकों से अलंकारविशेषों से विचित्र थी (कंचनमणिकणगपयरगणाणाविह घटियाजालमुत्तियाजालएहि परिमंडियेणं पट्टेण सोभमाणेण सोभमाणं) काञ्चन युक्तमणिमय और केवल कनकमय ऐसे पत्रक नामके अनेक भूषण बीच-२ में जिनमें जरे हुए हैं ऐसे अनेक प्रकार के घण्टिकाजालों से तथा मौक्तिक जालों से परिमंडित सुन्दर पृष्ठ से जो सुशोभित है । (कक्केयण इंदनीलमरगरमसारगल्लमुहमडणरइअं) कर्केतन इन्द्रनीलमणि, मरकतमणि, एवं मसारगल्ल इन सबसे जिसका मुखमंडलसज्जित किया गया है ।

येनी उपर सवार थयेदा चक्रवर्तीना मन मुग्ध न थती डती (तवणिज्जथासगाहिलाणं) येनी मुग्धनी ने लगाम डती ते सुवर्ण निर्मित स्थासकोथी दर्पणाकारना अलंकारोथी युक्त डती. (वरकणव सुफुल्लथासगविचित्रयणरञ्जुपासं) येनी तंग रूप ने रस्तीडती ते रत्नमय डती तेभन वरकनकमय सुंदर पुष्पोथी तथा स्थासकोथी अलंकार विशेषोथी विचित्र डती (कंचनमणिकणगपयरगणाणाविह घटियाजालमुत्तियाजालेहि परिमंडियेणं पट्टेण सोभमाणेण सोभमाणं) काञ्चन युत मणिमय अने इकत कनकमय येवा पत्रकोना अनेक आभूषणो मध्यमा नेमनामां नडित छे, येवा अनेक प्रकारना घटिका नडोथी तेभन मौक्तिक न डोथी परिमंडित सुंदर पृष्ठथी ने सुशोभित छे (कक्केयण इंदनीलमरगरमसारगल्ल मुहमडणरइअं) कर्केतन-इन्द्रनीलमणि मरकतमणि तेभन मसारगल्ल छे सवेथी नेछु मुग्ध न डथी सज्जित करवाभा आवेल छे अथवा ये पूर्वोक्त स्थापितकर्केतनाहि रत्नोभा नेना

તેષુ ઉક્ત રત્નચિહ્નૈર્દુર્ભૂતિર્વિચ્છિન્નતાનિ અનેકમુખમણ્ડલાનિ તૈઃ રચિતં સુશોભિતમ્ પુનઃ કીદશમશ્વરત્નમ્ 'આવિદ્ધમાણિક્વકસુત્તગવિભૂસિયં' આવિદ્ધમાણિક્વ સૂત્રકવિભૂષિતમ્ તત્ર આવિદ્ધમાણિક્વં રત્નકમ્ અશ્વમુખભૂષણવિશેષસ્તેન વિભૂષિતં શોભિતમ્ 'કળગમયપ-
 ડમસુકયતિલકં' કનકમયપદ્મસુકૃતતિલકમ્ તત્ર કનકમયપદ્મેન સુષ્ટુકૃતં તિલક યસ્ય તત્તથા 'દેવમદ્વિકૃષ્ણિયં' દેવમતિવિકલ્પિતમ્ તત્ર દેવમત્યા દેવચાતુર્યેણ વિવિધપ્રકારેણ કલ્પિતં સૃષ્ટમ્ 'સુરવરિંદવાહનજોગ્ગાવયં' સુરવરેન્દ્રવાહનયોગ્યવજ્રમ્, તત્ર સુરવરેન્દ્રવાહનમ્ ઉચ્ચૈઃ શ્રવાંદ્વંદ્રસ્ય અશ્વઃ તસ્ય યોગ્યઃ મણ્ડલીકરણાભ્યાસઃ ગોલાકારભ્રમણરૂપગમનં તસ્યેતિભાવઃ તસ્યાઃ વ્રજમ્ પ્રાપકમ્ વ્રજગતાવિત્યસ્માદ્ ચ પ્રત્યયઃ તથાઃ 'સુરૂર્વં' સુરૂ-
 પમ્-સુન્દરમ્ પુનઃ કીદશમ્ 'દૂહજ્જમાણપચ્ચારુચામરામેલગં ધરેતં' દ્રવત્ પશ્ચા-
 રુચામરમેલકં ધરત્ તત્ર દ્રવન્તિ ઇતસ્તતો દોલાયમાનાનિ સહજ ચશ્ચલાન્નત્વાદ્ ગલભા-
 લમૌલિકર્ણદ્વયમૂલનિવેશિતત્વેન પશ્ચસદ્ધયકાનિ યાનિ ચારુણિ ચામરાણિ તેષાં મેલકઃ
 એકસ્મિન્ મૂર્દનિસદ્ગમસ્તં ધરત્ વહત્, મૂલે ચામરા ઇત્યત્ર સ્ત્રીનિર્દેશઃ સમયસિદ્ધ એવ

અથવા—હન પૂર્વોક્ત સ્થાપિત કર્કેતનાદિ રત્નોં મેં જિસકે અનેક મુખમંડલ પ્રતિવિમ્બિત હો રહે
 હૈં, હસે જો વડા સુહાવના લગ રહા હૈં । (આવિદ્ધ માણિક્વકસુત્તગવિભૂસિય) જિસમેં માણિક્વ
 લગે હુપ હૈં એસે સૂત્રક અશ્વમુખ ભૂષણવિશેષ સે જો વિભૂષિત હૈં (કળગમય પડમસુકયતિલકં)
 કનકમયપદ્મ સે જિસકે મુખ ઉપર અશ્ચીં તરહ સે તિલક કિયા ગયા હૈં (દેવમદ્વિકૃષ્ણિયં)
 દેવોનેં અપની બુદ્ધિ કી ચતુરાઈ સે જિસકી રચના કી હૈં (સુરવરિંદવાહનજોગ્ગાવયં સુરૂર્વં
 દૂહજ્જમાણ પચ્ચારુચામરામેલગં ધરેતં) સુરેન્દ્ર હન્દ્ર કા જો વાહનમૂત અશ્વ હૈં જિસકા કિ નામ
 ઉચ્ચૈશ્રવા હૈં । ડસકો જો યોગ્યા—મણ્ડલાકારરૂપ ભ્રમણ—ગોલાકારભ્રમણરૂપ ગમન—ડસ
 ગમન કો યહ પ્રાપ્ત કરનેવાલા હૈં । અર્થાત્ હસકી ચાલ હન્દ્ર કે ઘોડા જૈસી હૈં । યહ વડા
 સુન્દર હૈં—અશ્ચે રૂપ વાલા હૈં । પાંચ સ્થાનોં મેં ગલે મેં માલ મેં, મોલિ મેં, ઓર દોનોં કાનોં મેં
 નિવેશિત હલતે હુપ પાંચ સુન્દર ચામરોં કે મિલાપ કો જો મસ્તક પર ધારણ કરતા હૈં ।
 યહા મૂલ મેં ચામર શબ્દ કો જો લીલિજ્ઞ રૂપ સે કહા ગયા હૈં વહ સ્વ સમય મેં હસકી એસી

અનેક મુખમંડલો પ્રતિબિંબિત થઈ રહ્યા છે, એથી તે અતીવ સોહામણો લાગી રહ્યો છે
 (આવિદ્ધમાણિક્વકસુત્તગવિભૂસિયં) જેમા માણિક્ય જડિત છે, એવા સૂત્રક અશ્વમુખ ભૂષણ
 વિશેષ—થી જે વિભૂષિત છે. (કળગમય પડમસુકયતિલકં) કનકમય પદ્મથી જેના મુખ
 ઉપર સારી રીતે તિલક ડરવામા આવેલ છે. (દેવમદ્વિકૃષ્ણિયં) દેવોથી પોતાની બુદ્ધિની
 કુશલતાથી જેની રચના કરી છે (સુરવરિંદવાહનજોગ્ગા વય સુરૂર્વં દૂહજ્જમાણ પચ્ચારુ
 ચામરામેલગં ધરેતં) સુરેન્દ્ર—હન્દ્રનો જે વાહનમૂત અશ્વ છે, જેનું નામ ઉચ્ચૈ શ્રવા છે—
 તેની જે યોગ્યા—મણ્ડલાકાર રૂપ ભ્રમણ—ગોલાકાર ભ્રમણ રૂપ ગમન—તે ગમનને જે
 પ્રાપ્ત કરનાર છે. એટલે કે જે અશ્વની ચાલ હન્દ્રના અશ્વ જેવી છે. જે અશ્વ અતીવ સુદર
 છે. સુદર રૂપવાળો છે પાંચ સ્થાનોમા—ગળામા, માલમા, મોલિમાં અને બન્ને કાનોમા નિવે
 શિત હાલતા પાંચ સુદર ચામરોના મિલાપને જે મસ્તક ઉપર ધારણ કરે છે અહીં મૂળમાં

આમર શબ્દને જે સીલિંગ વાચક કહેવામાં આવેલ છે, તે તટ્કાલીન સમયમાં એની એવી જ પ્રસિદ્ધિ હતી એથી આમ કહેવામાં આવેલ છે. અથવા ગૌડના મત પ્રમાણે આમર શબ્દ આખન્ત શબ્દ છે એથી જ એને અહીં આખન્ત કહેવામાં આવેલ છે. (અળમ્ભવાદ) એ શ્રેષ્ઠ અન્ધ અનભચારી હતો. ઇન્દ્રનો ઉચ્ચો શ્રવા નામક અન્ધ અભચારી હોય છે પરંતુ એ અન્ધ આકાશચારી ન હતો. અમેલળયણ કોકાસિયવદ્વલપત્તલચ્છં, સયાવરણણવક-
 ણગતવિયતવણિજ્જનાલુજીહાસયં) એની બન્ને આખેા અસકુચિત હતી એથી તે વિશિષ્ટ હતી બહલ- દૃઢ હતી અને પત્રલ- પક્ષમવતી હતી દશ મશકાદિ ના નિવારણ માટે અથવા શોભા માટે એના પ્રચ્છાદન પટમાં નવીન સ્વર્ણના તારો અથિત હતા. એટલે કે જે પ્રચ્છાદન પટ હતું તે સ્વર્ણના તંતુઓથી નિર્મિત હતું તેમજ એના ઝુખના તાલુ અને જિહ્વા એ બન્ને તાપિત રક્ત સુવર્ણની જેમ અરુણ હતાં (સિરિયામિસેઅબોળ) લક્ષ્મીના અભિષેકનું શારીરિક લક્ષણ એની નાસિકા ઉપર હતું. (પોલ્લરપત્તમિવસલિલિંબુચુર્ય)

જલાન્તરસ્થં વાતાહતજલ્બિન્દુયુતં ભવતિ તદેવમપિ સલિલં પાનીયં લાવણ્યમિત્યર્થઃ
તસ્ય વિન્દવઃ છટાસ્તૈર્યુતમ્ અત્ર વિન્દુગ્રહણેન પ્રત્યક્ષં લાવણ્ય સૂચિતમ્ લોકેઽપિ પ્રસિ-
દ્ધમેતત્ મુલ્હેઽસ્ય પાનીયમિતિ 'અચચલં' અચચ્ચલમ્ સ્વામિકાર્યે સ્થિરમ્ સાધુવાહિત્વાત્
'ચચ્ચલસરીરં' ચચ્ચલશરીરમ્ જ્ઞાતીસ્વભાવાત્ અથ યદિ ચચ્ચલશરીરં તદાઽમેઘ્ય અગ્નિ-
વસ્તુષ્વપિ સ્વાક્ષરપ્રવર્તકં સ્થાદિત્યાહ—'ચોક્ષ્વચરગપરિવ્વાયગોવિવ હિલીયમાણં હિલી-
યમાણ' ચોક્ષચરકપરિવ્રાજક ઇવ અભિલીયમાનમ્ અભિલીયમાનમ્ તત્ર ચોક્ષઃ કૃતસ્નાના-
દિના પવિત્રઃ ચરકો—ચાદિમિશ્નાચરઃયઃ દ્વિત્રિઃ સંઘીભૂતઃ સન્ મિર્સા ચરતિ સ ત્રિદ્વંડી
સંન્યાસિ વિશેષ इत्यर्थः एतादृशः यथा पवित्रः संघीभूतः मिश्राचरपरिव्राजकः अशुचि
ससर्गशङ्कया कुस्मितस्थानतः आत्मानं पृथक् करोति तथा इदमपि अश्वरत्नम् कुत्सि-
तस्थानमार्गं परित्यजन् पवित्रस्थानसुगम्यमार्गमेवावलम्ब्यते इतिभावः परिव्राजको मस्करी
भिष्णुः, ततश्चरकसहितः परिव्राजकः चरकपरिव्राजकः प्रथमा द्वितीयार्थे तेन चरकपरिव्रा-

(પોક્ષ્વરપત્તમિવ સલિલ્લવિન્દુયુતં) જિપ પ્રકાર કનલ પત્ર સલિલ્લવિન્દુઓં સે યુક્ત હોતા હૈ । ડમી
પ્રકાર ફસકા પ્રત્યેક શરીરિક અવયવ લાવણ્ય કી વિન્દુઓં સે—છટાઓં યુક્ત થા । સલિલ શબ્દ
સે યહા અશ્વરત્ન કે પક્ષ સે પાનોય—લાવણ્ય—ગૃહીત હુઆ હૈ । લોક મેં મી “અસ્ય મુલ્હે પાનોયં”
એસા વ્યવહાર હોતા દેસા જાતા હૈ । (અચંચલં) સ્વામી કે કાર્ય મેં યહ ચચ્ચલતા સે રહિત થા
સ્થિરથા—(ચંચલસરીર) પરન્તુ જાતીસ્વભાવ સે હી યહ શરીર મેં ચચ્ચલતાવાલા થા (ચોક્ષ્વચર-
ગપરિવ્વાયગોવિવ હિલીયમાણં ૨ સુરચલણચચ્ચપુઢેહિં ચરણિમલં અમિહ્નમાણ ૨ દોવિય
ચલણે જમગસમગં) જિસ પ્રકાર ચોસા સ્નાનાદિ સે શુદ્ધશરીરવાલા—ચરક—સંન્યાસી—મસ્કરી
અશુચી પદાર્થ કે સસર્ગ હો જાને કો શકા સે—અર્થાત્ અપવિત્ર પદાર્થ કા સંસર્ગ મુલ્હે ન
હો જાવે—ફસ તરહ અપને કો સુરક્ષિત રક્ષતા હૈ કુત્સિત સ્થાન સે અપને કો દૂર રક્ષતા હૈ
ઉસી તરહ યહ અશ્વરત્ન મી ઉવહ સ્નાન અથવા કુત્સિત—અપવિત્ર—સ્થાનો કો છોડતા હુઆ
જો પવિત્ર સ્થાન ઔર સુગમ્ય સ્થાનમાર્ગ હોતે હૈ ઉન્હીં કા અવલમ્બન કર ચલતા હૈ—ચલતે

જેમ કમલપત્ર સલિલ બિન્દુઓથી યુક્ત હોય છે તેમજ જોના શરીરને કંઈકે કંઈકે અવયવ
લાવણ્યના બિન્દુઓથી—કણોથી યુક્ત હોય. સલિલ શબ્દથી અહીં અશ્વરત્નના પક્ષમાં
પાનીય—લાવણ્ય ગૃહીત થયેલ છે. લોકમાં પણ “અસ્ય મુલ્હે પાનીયં” આ જાતનો વ્યવહાર
જોવામાં આવે છે (અચંચલં) સ્વામીના કાર્યમાં જો અશ્વ આચલ્ય રહિત હોય, સ્થિર હોય
(ચંચલસરીર) પરંતુ જાતિ સ્વભાવથી જ જો અશ્વનું શરીર આચલ્ય યુક્ત હોય (ચોક્ષ્વ
ચરગ પરિવ્વાયગોવિવ હિલીયમાણ ૨ સુરચલણચચ્ચપુઢેહિં ચરણિમલ અમિહ્નમાણ ૨
દોવિય ચલણે જમગસમગ) જેમ ચોખા—સ્નાનાદિથી શુદ્ધ શરીર વાળો—ચરક—સંન્યાસી
મસ્કરી અશુચિ પદાર્થોના સસર્ગની આશંકાથી કોટલેકે અપવિત્ર પદાર્થોના સસર્ગ અને ન
થાય—આમ પોતાની જાતને સુરક્ષિત રાખે છે કુત્સિત સ્થાનોથી પોતાની જાતને દૂર રાખે
છે તેમજ જો અશ્વરત્ન પણ ઉંચા—નીચા અથવા કુત્સિત—અપવિત્ર સ્થાનોને ત્યજીને જે
પવિત્ર સ્થાન અને સુગમ્ય સ્થાન માર્ગો હોય છે તે માર્ગોને અવલમ્બીને જ ચાલે છે.

જકમિવ પ્રાકૃતશૈલયા અકાર પ્રશ્લેષાત્ અભિલીયમાનમ્ અભિલીયમાનમ્-અથુચિમંસર્ગગ-
 ક્લ્યા આત્માન સંવૃણ્વત્ સંવૃણ્વત્ સંગોપયત્ સંગોપયત્ તથા 'સુરચલણચચ્ચપુટેહિ ધરણિયલં
 અમિહયમાણં અમિહયમાણં' સુરચરણચચ્ચપુટૈઃ પ્રરણિતલમ્ અમિઘ્નદામિઘ્નન્ત્, તત્ર સુરપ્ર-
 ધાનાશ્વરણાઃ સુરચરણાસ્તેષાં ચચ્ચપુટાઃ આઘાતવિશેષાસ્તૈ ધરણિતલમ્ અમિઘ્નદમિઘ્નન્ત્
 સુરામિઘાતવિશેષૈઃ પુરોવર્તિં ભૂમિતલં ક્ષોભયત્ ક્ષોભયત્ તારયત્ તારયત્ इत्यर्थः उक्तं च
 'यः सुरैः खनेत्पृथिवीमश्वो लोकोत्तरस्मृतः' इति योऽश्वः पृथिवीं खनति स श्रेष्ठो अश्व
 उच्यते इत्यर्थः અશ્વવારપ્રયોગનર્તિતો હિ ઢ્યોઽગ્રપાદૌ ઉદસ્યતિ, તત્રાસ્યશક્તિં વિશેષણ-
 દ્વારેણ દર્શયતિ 'દો વિ અચલણે જમગસમગં મુહાઓ વિણિગમંતવ' દ્વાવપિ ચ ચરણૌ
 યમકસમકં યુગપદ્ મુલાદિર્નિર્ગમદિવ નિસ્સારયદિવ અયમર્થઃ ? इदमश्वरत्नम् अग्रपादा-
 वूर्ध्वं न यत्तया मुखान्तिकं प्रापयति यथाजन उत्प्रेक्षते इमौ चरणौ मुखान्निर्गमयतीति
 चोत्प्रेक्षा पुनः क्रियान्तरदर्शनेनैतद्विशिनष्टि 'सिग्धयाए मुलानतन्तु उदगमविणि-
 स्साए पक्कमंतं' શીઘ્રતયા મૃણાલતન્તૂદકેઽપિ નિશ્રાય પ્રક્રામત્, તત્ર શીઘ્રતયા લાઘવ
 વિશેષેણ મૃણાલં કમલનાલં તસ્યા તન્તુઃ-સૂત્રાકારોઽવયવવિશેષઃ સચ ઉદક ચ તેઽપિ
 નિશ્રાય અવલમ્બ્ય અન્યદ્ દુર્ગાદિકં પ્રક્રામત્ સશ્ચરત્ અયમર્થઃ-યથા અન્યેષાં સશ્ચ-
 રિષ્ણુનાં જલચરાદોનાં મૃણાલતન્તૂદકે પાદાવષ્ટમ્ભકેન ભવતઃ તથા નાસ્યેતિ, સૂત્રે ચૈકવ-

સમય યહ અપને સુર ટાપો - પ્રધાનતા વાલે - ચરણોં સે - પૈરોં સે - પુરોવર્તી મૂમિ કો આઘાત
 યુક્ત કરતા ૨ અર્થાત્ - ક્ષુભિત કરતા ૨ ચાલ ચલતા હૈ ઉક્તચ - " યઃ સુરૈ - સ્ખનેત્પૃથિવો-
 મશ્વો લોકોત્તરઃ સ્મૃતઃ." જબ યહ અપને ઊપર સવાર હુય પુરુષ કે દ્વારા નચાયા જાતા હૈ
 તબ યહ અપને આગે કે દો પૈરોં કો એક સાથ ઊપર કો ડઠાતા હૈ - સો ડસ સમય યેસા હી
 પ્રતીત હોતા હૈ કિ માનો ડસકે યે દોનો પૈર એક સાથ હી (મુહાઓ વિણિગમંતં વ) હસકે
 મુલ્લ સે નિકલ રહે હૈ (સિઘાપ મુણાલતત્તુ ડદગમવિ ણિસ્સાપ પવ્કમંત) હસકી ગતી હતની
 અધિક લાઘવવિશેષ સે યુક્ત હોતી હૈ કિ મૃણાલ તન્તુ ઔર જલ યે દોનોં મી હસકે ચલને મેં સહાય
 મૂત હો જાતે હૈ તાત્પર્ય યહી હૈ કિ યહ થલ કી તરહ જલ કે ઊપર મી અષ્ટિતરહ ચલ સકતા
 હૈ ઔર કમલ નાલ કે ઊપર મી સરલતા સે ચલ હેતા હૈ ન વહ ચલતે સમય પાની મેં ઢ્વલતા હૈ

આલતા-આલતા એ પોતાના ખુરાથી પુરોવર્તી ભૂમિને તાડિત કરતો-કરતો એટલે કે ભૂમિને
 કુપ્પ કરતો-કરતો આલે છે ઉક્તચ-“યઃ સુરૈ ક્ષનેત્પૃથિવીમશ્વો લોકોત્તરઃ સ્મૃતઃ”
 જ્યારે એ અશ્વ પોતાના ઉપર આડે પુરુષ વડે નચાવવામાં આવે છે ત્યારે એ પોતાના
 આગળના એ પગોને એકી સાથે ઉપર ઉઠાવે છે તે વખતે આમ પ્રતીત થાય છે કે જાણે
 કે એના એ બન્ને પગો એકી સાથે જ (મુહાઓ વિણિગમંતં વ) એના મુખમાથી નીકળી
 ન રહ્યા હોય ! (સિઘાપ મુણાલતત્તુ ડદગમવિણિસ્સાપ પવ્કમંતં) એની ગતિ આટલી
 બધી લાઘવ વિશેષ યુક્ત હોય છે કે મૃણાલ તત્તુ અને પાણી એઓ બન્ને પણ એની
 આલમા સહાયભૂત થતા હતા તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે કે એ સ્થળની જેમ પાણી ઉપર
 પણ ચાલી શકતો હતો, અને કમળનાલની ઉપર પણ ચાલી શકતો હતો તે આલતી વખતે

જઞાન્તરસ્થ વાતાહતજલ્બિન્દુયુત ભવતિ તદેવમપિ સલિલં પાનીય લાવણ્યમિત્યર્થઃ
તસ્ય બિન્દવઃ છટાસ્તૈર્યુતમ્ અત્ર બિન્દુગ્રહણેન પ્રત્યક્ષં લાવણ્ય દ્વચિતમ્ લોકેઽપિ પ્રસિ-
દ્ધમેતત્ મુલ્હેઽસ્ય પાનીયમિતિ 'અચ્ચલં' અચ્ચલમ્ સ્વામિકાર્યે સ્થિરમ્ સાધુવાહિત્વાત્
'ચચ્ચલસરીરં' ચચ્ચલશરીરમ્ જાતીસ્વભાવાત્ અથ યદિ ચચ્ચલશરીરં તદાઽમેધ્ય અવિત્ર
વસ્તુષ્વપિ સ્વાન્નપ્રવર્ત્તકં સ્પાદિત્યાહ—'ચોક્ષવરગપરિન્વાયગોવિવ હિલીયમાણં હિલો-
યમાણ' ચોક્ષવરકપરિત્રાજકુ ઇવ અભિલીયમાનમ્ અભિલીયમાનમ્ તત્ર ચોક્ષઃ કૃતસ્નાના-
દિના પત્રિત્રઃ ચરનો—ગાટિમિશ્નાચરઃયઃ દ્વિત્રિઃ સંધીભૂતઃ સન્ મિર્ષા ચરતિ સ ત્રિદંડી
સંન્યાસિ વિશેષ इत्यર્થઃ एतादृशः यथा पवित्रः संघोभूतः मिश्राचरपरित्राजकः अशुचि
ससर्गशङ्कया कुस्मितस्थानतः आत्मानं पृथक् करोति तथा इदमपि अश्वरत्नम् कुत्सि-
तस्थानमार्गं परित्यजन् पवित्रस्थानसुगम्यमार्गमेवावलम्बते इति भावः परित्राजको मस्करी
भिष्णुः ततश्चरकसहितः परित्राजकः चरकपरित्राजकः प्रथमा द्वितीयार्थे तेन चरकपरित्रा-

(પોક્ષરપત્તમિવ સલિલચિદુજ્યં) જિપ પ્રકાર કનલ પત્ર સલિલચિદુઓં સે યુક્ત હોતા હૈ । उसी
प्रकार इसका प्रत्येक शरीरिक अवयव लावण्य की बिन्दुओं से—छटाओं युक्त था । सलिल शब्द
से यहां अश्वरत्न के पक्ष से पानीय—लावण्य—गृहीत हुआ है । लोक में भी “अस्य मुखे पानीयं”
ऐसा व्यवहार होता देखा जाता है । (अचंचलं) स्वामी के कार्य में यह चञ्चलता से रहित था
स्थिरथा—(चचलसरीर) परन्तु जातीस्वभाव से ही यह शरीर में चञ्चलतावाला था (चोक्खवर-
गपरिन्वायगोविव हिलीयमाणं २ खुरचलणचच्चपुडेहिं धरणिमलं अभिहणमाणं २ दोविष
चलणे जमगसमगं) जिस प्रकार चोखा स्नानादि से शुद्धशरीरवाला—चरक—संन्यासी—मस्करी
अशुची पदार्थ के ससर्ग हो जाने की शका से—अर्थात् अपवित्र पदार्थ का संसर्ग मुझे न
हो जावे—इस तरह अपने को सुरक्षित रखता है कुत्सित स्थान से अपने को दूर रखता है
उसी तरह यह अश्वरत्न भी ठबढ खाबढ अथवा कुत्सित—अपवित्र—स्थानों को छोड़ता हुआ
जो पवित्र स्थान और सुगम्य स्थानमार्ग होते हैं उन्हीं का अवलम्बन कर चलता है—चलते

જેમ કમલપત્ર સલિલ બિન્દુઓથી યુક્ત હોય છે તેમજ એના શરીરનો દરેકે દરેક અવયવ
લાવણ્યના બિન્દુઓથી—છટ્ટોથી યુક્ત હોતો. સલિલ શબ્દથી અહીં અશ્વરત્નના પક્ષમાં
પાનીય—લાવણ્ય ગૃહીત થયેલ છે. લોકમાં પણ “અસ્ય મુલ્હે પાનીયં” આ જાતનો વ્યવહાર
જોવામાં આવે છે (અચ્ચલં) સ્વામીના કાર્યમાં જો અશ્વરત્ન ચાલત્ય રહિત હોતો, સ્થિર હોતો
(ચચ્ચલસરીર) પરંતુ જાતિ સ્વભાવથી જ જો અશ્વરત્ન શરીર ચાલત્ય યુક્ત હોતું (ચોક્ષ
વરગ પરિન્વાયગોવિવ હિલીયમાણ ૨ ખુરચલણચચ્ચપુડેહિં ધરણિમલ અભિહણમાણ ૨
દોવિષ ચલણે જમગસમગ) જેમ એખા—સ્નાનાદિથી શુદ્ધ શરીર વાળો—ચરક—સંન્યાસી
મસ્કરી અશુચિ પદાર્થના સંસર્ગની આશંકાથી એટલેકે અપવિત્ર પદાર્થનો સંસર્ગ મને ન
થાય—આમ પાતાની જાતને સુરક્ષિત રાખે છે કુત્સિત સ્થાનોથી પાતાની જાતને દૂર રાખે
છે તેમજ જો અશ્વરત્ન પણ ઉચ્ચ—નીચા અથવા કુત્સિત—અપવિત્ર સ્થાનોને ત્યજીને જે
પવિત્ર સ્થાન અને સુગમ્ય સ્થાન માર્ગો હોય છે તે માર્ગોને અવલંબીને જ ચાલે છે

જકમિવ પ્રાકૃતશૈલ્યા અકાર પ્રશ્લેપાત્ અભિલીયમાનમ્ અભિલીયમાનમ્-અશુચિસંસર્ગશ-
ક્લ્યા આત્માન સંવૃણ્વત્ સંવૃણ્વત્ સંગોપયત્ સંગોપયત્ તથા 'સુરચલણચચ્ચપુટેહિ ધરણિયલં
અમિહ્યમાણં અમિહ્યમાણં' સુરચરણચચ્ચપુટૈઃ ધરણિતલમ્ અમિહ્નદામિહ્નન્, તત્ર સુરપ્ર-
ધાનાશ્રણાઃ સુરચરણાસ્તેષાં ચચ્ચપુટાઃ આઘાતવિશેષાસ્તૈ ધરણિતલમ્ અમિહ્નદમિહ્નન્
સુરામિઘાતવિશેષૈઃ પુરોવર્તિં ભૂમિતલં ક્ષોભયત્ ક્ષોભયન્ તારયત્ તારયત્ इत्यर्थः उक्तं च
'यः सुरैः खनेत्पृथिवीमश्नो लोकोत्तरस्मृतः' इति योऽश्वः पृथिवीं खनति स श्रेष्ठो अश्व
उच्यते इत्यर्थः અશ્વવારપ્રયોગનર્તિતો હિ હ્યોઽગ્રપાદૌ ઉદસ્યતિ, તત્રાસ્યશર્ત્તિ વિશેષણ-
દ્વારેણ દર્શયતિ 'દો વિ અચલણે જમગસમગં મુહાઓ વિણિગમંતવ' દ્વાવપિ ચ ચરણૌ
યમકસમકં યુગપદ્ મુખાદ્વિનિર્ગમદિવ નિસ્સારયદિવ અયમર્થઃ ? इदमश्वरत्नम् अग्रपादा-
धूर्ध्वं न यत्तथा मुखान्तिकं प्रापयति यथाजन उत्प्रेक्षते इमौ चरणौ मुखद्विनिर्गमयतीति
चોત્પ્રેક્ષા પુનઃ ક્રિયાન્તરદર્શનેનૈતદ્વિશિનષ્ટિ 'સિઘ્યાપ મુળાણતન્તુ ઉદગમવિણિ-
સ્સાપ પક્કમંતં' શીઘ્રતયા મૃણાલતન્તુદકેઽપિ નિશ્રાય પ્રક્રામત્, તત્ર શીઘ્રતયા લાઘવ
વિશેષેણ મૃણાલં કમલનાલં તસ્યા તન્તુઃ-સૂત્રાકારોઽવયવવિશેષઃ સચ ઉદક ચ તેઽપિ
નિશ્રાય અવલમ્બ્ય અન્યદ્ દુર્ગાદિકં પ્રક્રામત્ સશ્ચરત્ અયમર્થઃ-યથા અન્યેષાં સશ્ચ-
રિણુનાં જલચરાદીનાં મૃણાલતન્તુદકે પાદાવષ્ટમ્મકેન ભવતઃ તથા નાસ્યેતિ, સૂત્રે ચૈકવ-

સમય યહ અપને સુર ટાપો - પ્રધાનતા વાલે - ચરણોં સે - પૈગે સે - પુરોવર્તો ભૂમિ કો આઘાત
યુક્ત કરતા ૨ અર્થાત્ - ક્ષુભિત કરતા ૨ ચાલ ચલતા હૈ ઉક્તચ - "યઃ સુરૈ - સ્ખનેત્પૃથિવો-
મશ્વો લોકોત્તરઃ સ્મૃતઃ" જન યહ અપને ઊપર સવાર હુપ પુરુષ કે દ્વારા નચાયા જાતા હૈ
તવ યહ અપને આગે કે દો પૈરોં કો એક સાથ ઊપર કો ઉઠાતા હૈ - સો ડસ સમય એસા હી
પ્રતીત હોતા હૈ કિ માનો ડસકે યે દોનો પૈર એક સાથ હી (મુહાઓ વિણિગમંત વ) હસકે
મુલ સે નિકલ રહે હૈ (સિઘ્યાપ મુળાલતતુ ઉદગમવિ ણિસ્સાપ પક્કમંત) હસકોં ગતી હતની
અધિક લાઘવવિશેષ સે યુક્ત હોતી હૈ કિ મૃણાલ તન્તુ ઓર જલ યે દોનોં મી હસકે ચલને મેં સહાય
મૂત હો જાતે હૈ તાત્પર્ય યહી હૈ કિ યહ થલ કી તરહ જલ કે ઊપર મી અચ્છિતરહ ચલ સકતા
હૈ ઓર કમલ નાલ કે ઊપર મી સરલતા સે ચલ હેતા હૈ ન વહ ચલતે સમય પાની મેં ઢલતા હૈ

આલતાં-આલતા એ પોતાના પુરોથી પુરોવર્તી ભૂમિને તાડિત કરતો-કરતો એટલે કે ભૂમિને
ક્ષુબ્ધ કરતો-કરતો આલે છે ઉક્તચ-“યઃ સુરૈ સ્ખનેત્પૃથિવીમશ્વો લોકોત્તર સ્મૃતઃ”
અર્થાત્ એ અશ્વ પોતાના ઉપર આરૂઢ પુરુષ વડે નચાવવામા આવે છે ત્યારે એ પોતાના
આગળના એ પગોને એકી સાથે ઉપર ઉઠાવે છે તે વખતે આમ પ્રતીત થાય છે કે જાણે
કે એના એ બન્ને પગો એકી સાથે જ (મુહાઓ વિણિગમંત વ) એના મુખમાથી નીકળી
ન રહ્યા હોય ! (સિઘ્યાપ મુળાલતતુ ઉદગમવિણિસ્સાપ પક્કમંત) એની ગતિ આટલી
અધી લાઘવ વિશેષ યુક્ત હોય છે કે મૃણાલ તતુ અને પાણી એઓ બન્ને પશુ એની
આલમા સહાયમૂત થતા હતા તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે કે એ સ્થળની જેમ પાણી ઉપર
પશુ આલી શકતો હતો, અને કમળનાલની ઉપર પશુ આલી શકતો હતો તે આલતી વખતે

ચનમાર્ષત્વાત્, તથા 'જાઙ્ કુલરૂપપચ્ચયપસત્થવારસાવત્તગવિસુદ્ધલક્ષણ' જાતિ કુલરૂપ-
પ્રત્યયપ્રશસ્તદ્વાદશાવર્ત્તકાવિશુદ્ધલક્ષણમ્ તત્ર જાતિઃ—માતૃપક્ષઃ કુલં પિતૃપક્ષઃ રૂપં મદાકાર-
સસ્થાનં તેષાં પ્રત્યયોવિશ્વાસો યેભ્યઃ તે ચ તે પ્રશસ્તાઃ પ્રદક્ષિણાવહત્વાત્ શુભસ્થાનસ્થિ-
તત્વાચ્ચ યે દ્વાદશાવર્ત્તો દેવમણિના નઃ ચક્રાકાર ગોલાકારાઃ ચિહ્નવિશેષાસ્તે સન્તિ યત્ર
તત્તથા વહુત્રીદિલક્ષણઃ ક પ્રત્યયઃ, વિશુદ્ધાનિ દોષાવર્જિતાનિ લક્ષણાનિ અશ્વશાસ્ત્ર
પ્રસિદ્ધાનિ યસ્ય તત્તથા, તતઃ પદદ્વયસ્ય કર્મધારયઃ, તત્ર દ્વાદશાવર્ત્તોશ્ચ इमे वरा-
होक्ताः—ये प्रपाणगलकर्णसंस्थिताः, पृष्ठमधनयनो परिस्थिताः । ओष्ठ सक्थि भुजकुक्षि
पार्श्वगास्ते ललाटसहिताः सुशोभनाः ॥१॥ प्रपाणम् १ गलः २ कर्णौ ३ पृष्ठम् ४
मध्यम् ५ नयने ६ ओष्ठो ७ सक्थिनी ८ भुजौ ९ कुक्षिः १० पार्श्वौ ११ ललाटम् १२
एतानि द्वादश स्थानानि तुरगस्य एतेषु स्थानेषु स्थिता अपि आवर्त्ताः द्वादशैव
सुशोभनाः भवन्ति तथाहि—अत्र चृत्तिलेशः प्रपाणम् १ उत्तरोष्ठतलम् गलः २
कण्ठः यत्रस्थित आवर्त्तो देवमणि नामा हयानां महालक्षणतया प्रसिद्धः कर्णौ ३
प्रसिद्धौ एतेषु स्थानेषु संस्थिताः तथा पृष्ठम् ४ पर्याणस्थानम् मध्यं ५ प्रसिद्धम्

और न कमल नाल तन्तु उसकी गति से छिन्न भिन्न होते हैं । (जाङ् कુલરૂપપચ્ચય પસત્થ વાર-
સાવત્તગ વિસુદ્ધ લક્ષણં સુકુલપ્પસૂઘં, મેઢાવિમદયવિળીઝં, અણુયતણુય સુકુમાલ્લોમનિદ્ધચ્છવિ)
જાતિ-માતૃ પક્ષ-કુલ-પિતૃ પક્ષ એવં રૂપ - સુન્દરાકાર સસ્થાન-इनका विश्वास जिनसे होता है
ऐसे जो प्रशस्त द्वादश आवर्त्त हैं उनसे यह युक्त था तथा अश्व-शास्त्र प्रसिद्ध विशुद्ध लक्षणों से
यह सहित होता है, एवं सुकुल प्रसूत था वराहोक्त द्वादश आवर्त्त इस प्रकार से है—ये प्रपाण
गल - कर्ण संस्थिताः पृष्ठ - मध्य नयनोपरिस्थिताः, ओष्ठ-सक्थि भुजकुक्षि पार्श्वगास्ते ललाट सहिताः
सुशोभना ॥१॥ प्रपाण - ऊपर के ओष्ठ के तल का नाम है, सो हम प्रपाण गल - कण्ठ के ऊपर
जो आवर्त्त होता है उसका नाम देवमणि है और वह आवर्त्त अश्व के सहान होने का लक्षण
माना गया है इसी तरह दोनों कानों के ऊपर, पृष्ठ भाग के ऊपर तथा पृष्ठ के मध्य में, दोनों

પાણીમાં પણ દૂબતો ન હતો અને ઠમળનાલ તત્તુ તેની ગતિથી છિન્નવિછિન્ન પણ થતા
ન હોતા (જાઙ્ કુલરૂપપચ્ચયપસત્થ વારસાવત્તગ વિસુદ્ધલક્ષણં સુકુલપ્પસૂઘં, મેઢાવિમદય
વિળીઝં, અણુય તણુય સુકુમાલ્લોમનિદ્ધચ્છવિ) જાતિ—માતૃપક્ષ-કુળ, પિતૃપક્ષ અને રૂપ-
સુન્દરાકાર સસ્થાન—એ સર્વનો જેમનાથી વિશ્વાસ થાય છે, એવા જે પ્રશસ્ત દ્વાદશ આવર્તો
છે તેમનાથી એ યુક્ત હતો. તેમજ અશ્વશાસ્ત્ર પ્રસિદ્ધ વિશુદ્ધ લક્ષણોથી એ સહિત હતો
અને એ સુકુળ-પ્રસૂત હતો વરાહ-ઉક્ત દ્વાદશ આવર્તો આ પ્રમાણે છે—

ये प्रपाण गलकर्णसंस्थिता पृष्ठ मध्य नयनोपरिस्थिता ।

ओष्ठसक्थि भुजकुक्षि पार्श्वगास्ते ललाटसहिताः सुशोभना ॥१॥

પ્રપાણ—ઉપરના ઓષ્ઠતલનું નામ છે તે. એ પ્રપાણ ગલ-કર્ણની ઉપર જે આવર્ત
હોય છે, તેનું નામ દેવમણિ છે અને એ આવર્ત અશ્વની શ્રેષ્ઠતા (મહત્તા)નું લક્ષણ માન-
વામાં આવે છે. આ પ્રમાણે બન્ને કાનોની ઉપર પૃષ્ઠ ભાગની ઉપર તેમજ પૃષ્ઠના મધ્યમાં

नयने ६ अपि प्रसिद्धे तदुपरि स्थिताः तथा ओष्ठौ ७ प्रसिद्धौ सक्थिनी ८ पाश्चा-
त्यपादयोः जानूपरिभागः श्रुजौ ९ प्राक्षपादयो जानूपरिभागः कुक्षिः १० अत्र वामो
दक्षिणकुक्ष्यावर्त्तस्य गर्दितत्वात् पार्श्वौ ११ प्रसिद्धौ तद्गताः ललाटं १२ प्रसिद्धं तेन
सहिताः अत्र कर्णनयनादि स्थानानां द्विसङ्ख्याकत्वेऽपि जात्यपेक्षया द्वादशैव स्था-
नानि स्थानभेदानुसारेण स्थानभेदा अपि आवर्त्ताः द्वादशैवेति तत् तत्स्थानेषु
स्थिताः सन्तः सुशोभनाः—सुभञ्जणा भवन्ति, अन्यत्र स्थानेषु नेत्यर्थः तथा—‘सुकुल-
प्पद्मं’ सुकुलप्रसूनम् इयशास्त्रोक्तक्षत्रियाश्चपि त्रिकम्, तथा ‘मेहाविमहयविणीं’ मेधा-
विमद्रकविनीतम् तत्र मेधावि बुद्धिमान् स्वामिपद संज्ञादि प्राप्तार्थधारकम् भद्रकम् अदु-
ष्टम् विनीत स्वामीष्टकारित्वात् अत्र समाहारद्वन्द्वत्वात् एकवद्भावः, तथा ‘अणु
अतणुअसुकुमाललोमनिद्धच्छवि’ अणुकतनुकानाम् अतिसूक्ष्माणां सुकुमाराणां सुकोम-
लानां लोम्नां स्निग्धश्लाघनीया छविः कान्ति र्यत्र तत्तथा, पुनः कीदृशम् ‘सुजाय-
अमरमणपवणगरुडजङ्घनचवलसिग्धगामी’ सुजातामरमनःपवनगरुडजयिचपलशीघ्रगामि’तत्र
सुष्ठुयार्तं गमनं यस्य तत्तथा, अमरमनः पवनगरुडाः देवचित्तत्रायुगरुडाः प्रसिद्धाः तान्
वेगाधिक्येन जयतीति अमरमनःपवनगरुडजयि, अतएव चपलशीघ्रगामि च अतिशीघ्र-
गतिकम् पश्चात्पदद्वयस्य कर्मधारयः, तथा कीदृशम् ‘इसिमिव खंतिस्वमप’ ऋषिमिव

आँखों के ऊपर, दोनों ओष्ठों के ऊपर, पीछे के दोनों पैरों के घूटना के ऊपर, आगे के पैरों
के दोनों घूटना के ऊपर, कुक्षि के ऊपर, दाई बाई ओर तथा ललाट के ऊपर ये आवर्त्त होते हैं।
ये कर्णनयनादि १२ स्थान हैं इन पर ये १२ आवर्त्त चिह्न विशेष होते कहे गए हैं. यह
अश्वरत्न मेधावि था स्वामी के पैर के सकेत से स्वामी के भाव को समझ जानेवाला था, भद्रक
था. अदुष्ट था विनीत था, अपने मालिक के इष्ट अर्थ का संपादक होने के कारण नम्र था
इसके शरीर के ऊपरजो रौमराजि थी- वहबहुत ही अधिक सूक्ष्म एव सुकुमार थी- तथा
स्निग्ध थी (सुजाय अमरमणपवणगरुडजङ्घनचवलसिग्धगामी) यह बड़ोहि सुन्दर चाल चलता
था -तथा अपने वेग की अधिकता से यह अमर- देव, मन, पवन और गरुड इनके गमन
वेग को भी जीत लेने वाला था, इस तरह यह अत्यंत चपल और शीघ्रगामी था (इति वि

अन्ने आँखोंनी ऊपर, अन्ने ओष्ठोंनी ऊपर, पाछणना अन्ने पणोना घूटणु ऊपर, आगणना
पणोना घूटणु ऊपर, कुक्षिनी ऊपर, दाणी अने नभणी तरहे तेमज ललाटनी ऊपर ओ
आवर्त्तो होय छे ओ कण्ठ-नयन वगेरे १२ स्थानो छे. ओ अधाँनी ऊपर ओ १२ आवर्त्तो
चिह्न विशेषो होय छे—ओवु कहेवाभां आवे छे. ओ अश्वरत्न मेधावी हतो. स्वामीना पणना
संकेत मात्रथी स्वामीना भावने ओ समझ जेतो हतो ओ भद्रक हतो ओ अदुष्ट हतो
ओ विनीत हतो. पोताना माँझकना छिष्ट अर्थोना सम्पादक होवाथी ओ नम्र हतो. ओना
शरीरनी ऊपर ओ रौमराजि हती, ते पूण न सूक्ष्म अने सुकुमार हती. नम्र न स्निग्ध
हती (सुजाय अमरमणपवणगरुडजङ्घन चवलसिग्धगामि) ओ सुँदर चाल चालतो हतो
पोताना वेगनी अधिकताथी ओ अमर-देव, मन, पवन अने गरुडना गमन वेगने पणु छपी

पतति इत्येवं शीलं दण्डपाति अतर्कितमेव प्रतिपक्षस्कन्वावारे पतनशीलम् अनेनास्यो-
त्पतनस्वभावोऽपि सूचितः, तथा 'अणंसुपाति' अनश्रुपाति तत्र मार्गादि चलनजनित-
श्रमेषु नाश्रुपातयतीत्येवं शीलम् अनश्रुपाति तथा 'अकालतालुं च' अकालतालु-
अश्यामतालुकम् श्यामतालुवर्जित पूर्वं रक्ततालुत्वे वर्णितेऽपि यत्पुनःकालतालु इति
विशेषणं तत्तालुनः श्यामत्वम् अतितरामपलक्षमिति तन्निषेधख्यापनार्थम् च समुच्चये
तथा 'कालहेसि' कालहेषि, तत्र काले अराजकानां राजनिर्णयार्थक अधिवासनादिके
समये हेषते—शब्दयतोत्येवं शीलं कालहेषि अशुभसमयसूचक तथा 'जियनिदं गवेसगं'
जितनिद्रं गवेषकम् तत्र जितनिद्रा आलस्यं येन तत् जितनिद्रं त्यक्तालस्य मित्यर्थः
आलस्य वर्जितम् कार्येषु अप्रमादित्वात् यथा श्रुतार्थे व्याख्यायमाने इयशास्त्रविरोधः

दण्डपाति अणंसुपाति अकालतालुं च कालहेसि जियनिदं गवेसगं) यह अचण्ड पाती-था दण्ड-
पाती था तात्पर्य यही है कि यह बिनाविचारे ही प्रतिपक्ष को सेना में दण्ड की तरह आक्रमण
करने के स्वभाव वाला था। यह अनुश्रुपाती था दुर्दान्त शत्रु सेना को भी देखकर यह कभी
आँसु नहीं बहाता था अथवा मार्गादि चलन जन्य श्रम के वशवर्ती हुआ यह कभी घब-
ड़ाहट से अपनी आँखों से आँसु नहीं निकालता था इसका तालु कृष्णता से वर्जित था
समयानुसार ही यह हिनहिनाहट करता था असमय में नहीं अथवा काल में अराजकों
के राजनिर्णयार्थक अधिवासनादिक के समय में यह अशुभ का सूचक शब्द किया करता
था (जियनिदं गवेसगं) यह निद्राविजित नहीं था किन्तु इसने ही निद्रा को आलस्य को अपने
वश में कर लिया था। अर्थात् यह आलस्य रहित था—और गवेषक था। मूत्र पुरीष के उत्सर्ग
के समय में यह उचित और अनुचित स्थान की खोज करने वाला था "जितनिद्र" का
अर्थ इसने निद्रा जीत ली थी—अर्थात् इसे निद्रा नहीं आती थी ऐसा ही अर्थ मान लिया
जावे तो फिर "सदैव निद्रावशगा, निद्राच्छेदस्य संभवः, जायते सगरे प्राप्ते कर्करस्य च मक्षणो"

होता. (अचण्डपादिय दण्डपाति अणं ति अकाल तालुं च कालहेसि जियनिदं गवेसगं) को
अथ'उपाती होता—ह'उपाती होता, ओटदे के ओ वगर विचार कथें न प्रतिपक्षिनी सेना
उपर ह'उनी जेम आक्रमण करवाना स्वभाववाणो होता ओ अनश्रुपाती होता दुर्दांत शत्रु-
सेनाने जेधने यक्षु ओ कदापि रठतो न होता. अथवा मार्गादियचलन जन्य श्रमशी पीडित
थधने ओ कदापि व्याकुण थधने रठतो न होता. जेनो तालुभाग कृष्णताथी वर्जित होता.
ओ समयानुसार न छुछुछुट करतो होता. ओटदे के असमयमा ओ छुछुछुट नहि करतो
होता अथवा कालमा अराजकेना राजनिष्ठ'यार्थक अधिवासनादिकेना समयमा ओ अशुभ
सूचक शब्द करतो होता (जियनिदं गवेसगं) ओ निद्राविजित नहोतो यक्षु ओषे न निद्राने
आलस्यने पोताना यथमा करी बीधां हतां ओटदे के आलस्यादि रहित होता. ओ गवेषक
होता मूत्र पुरीषना उत्सर्ग समये ओ उचित अने अनुचित स्थाननी शोध करनार होता.
'जितनिद्र' ने अथ' ओषे निद्रा छती बीधी हती ओटदे के आने निद्रा नहि आवती
हती, जेवो न अर्थ' मानी देवामा आवे तो—

पतति इत्येवं शीलं दण्डपाति अतर्कितमेव प्रतिपक्षरूपावारे पतनशीलम् अनेनास्यो-
त्पतनस्वभावोऽपि सूचितः, तथा 'अणंसुपाति' अनश्रुपाति तत्र मार्गादि चलनजनित-
श्रमेषु नाश्रुपातयतीत्येवं शीलम् अनश्रुपाति तथा 'अकालतालुं च' अकालतालु-
अश्यामतालुकम् श्यामतालुवर्जितं पूर्वं रक्ततालुत्वे वर्णितेऽपि यत्पुनःकालतालु इति
विशेषणं तत्तालुनः श्यामत्वम् अतितरामपलक्षमिति तन्निषेधव्यापनार्थम् च समुच्चये
तथा 'कालहेसि' कालहेषि, तत्र काले अराजकानां राजनिर्णयार्थके अधिवासनादिके
समये हेषते—शब्दयतोत्येवं शीलं कालहेषि अशुभसमयसूचक तथा 'जियनिदं गवेसगं'
जितनिद्रं गवेषकम् तत्र जितनिद्रा आलस्यं येन तत् जितनिद्रं त्यक्तालस्य मित्यर्थः
आलस्य वर्जितम् कार्येषु अप्रमादित्वात् यथा श्रुतार्थे व्याख्यायमाने ह्यशास्त्रविरोधः

दण्डपाति अणंसुपाति अकालतालुं च कालहेसि जियनिदं गवेसगं) यह अचण्ड पाती-था दण्ड-
पाती या तात्पर्यं यही है कि यह बिनाविचारे ही प्रतिपक्ष को सेना में दण्ड की तरह आक्रमण
करने के स्वभाव वाला था। यह अनश्रुपाती था दुर्दान्त शत्रु सेना को भी देखकर यह कभी
आँसु नहीं बहाता था अथवा मार्गादि चलन जन्य श्रम के वशवर्ती हुआ यह कभी घब-
ड़ाहट से अपनी आँखों से आँसु नहीं निकालता था इसका तालु कृष्णता से वर्जित था
समयानुसार ही यह हिनहिनाहट करता था असमय में नहीं अथवा काल में अराजकों
के राजनिर्णयार्थक अधिवासनादिक के समय में यह अशुभ का सूचक शब्द किया करता
था (जियनिदं गवेसगं) यह निद्राविजित नहीं था किन्तु इसने ही निद्रा को आलस्य को अपने
वश में कर लिया था। अर्थात् यह आलस्य रहित था—और गवेषक था। मूत्र पुरीष के उत्सर्ग
के समय में यह उचित और अनुचित स्थान की खोज करने वाला था "जितनिद्र" का
अर्थ इसने निद्रा जीत ली थी—अर्थात् इसे निद्रा नहीं आती थी ऐसा ही अर्थ मान लिया
जावे तो फिर "सदैव निद्रावशगा, निद्राच्छेदस्य संभवः, जायते सगरे प्राप्ते कर्करस्य च मक्षणो"

होती. (अचण्डपादिय दण्डपाति अणं ति अकाल तालुं च कालहेसि जियनिदं गवेसगं) को
अचण्डपाती होती—दण्डपाती होती, ओटदे के को वगर विचार कथें न प्रतिपक्षिनी सेना
उपर दहनी नेम आक्रमण करवाना स्वभाववाणी होती को अनश्रुपाती होती। दुर्दांत शत्रु-
सेनाने जोधने पक्ष को कदापि रहतो न होती। अथवा मार्गादियचलन जन्य श्रमशी पीडित
थधने को कदापि व्याकुण थधने रहतो न होती। जोनो तालुभाग कृष्णताथी वर्जित होती
को समयानुसार न छडुछडुट करतो होती। ओटदे के असमयमा को छडु छडुहट नहि करतो
होती अथवा कालमां अराजकेना राजनिर्णयार्थक अधिवासनादिकेना समयमां को अशुभ
सूचक शब्द करतो होती। (जियनिदं गवेसगं) को निद्राविजित नहोतो। पक्ष ओखे न निद्राने
आलस्यने पोताना वशमा करी दीधां हतां ओटदे के आलस्याहि रहित होती। को गवेषक
होती। मूत्र पुरीषना उत्सर्ग समये को उचित अने अनुचित स्थाननी शोध करना रहतो।
'जितनिद्र' नो अर्थ ओखे निद्रा लती दीधी होती ओटदे के अने निद्रा नहि आवती
होती, ओवे न अर्थ मानी देवामां आवे तो—

तथाहि—“सदैव निद्रावशगा, निद्राच्छेदस्य सम्भवः ।

जायते सङ्गरे प्राप्ते, कर्करस्य भक्षणे ॥१॥ इति,

यद्वा जितनिद्रत्वं रणावसरप्राप्तत्वाद् अश्वरत्नत्वेनाल्पनिद्राकत्वाच्च, तथागवेषकं—मूत्रपुरीषोत्सर्गादौ उचितानुचितस्थनान्वेषकम् तथा ‘जिअपरिसह’ जितपरीषहं तातपाद्यातुरत्वेपकम् तथा ‘जिअपरिसह’ शीतातपाद्यातुरत्वेऽपि अखिन्नम् रणाङ्गणे शत्रुपीडितेऽपि खिन्नतावर्जितम् तथा ‘जच्चजातीयं’ जात्यजातीयम् तत्र जात्या प्रधाना मातृ ‘क्षस्तत्र भवं जात्यजातीयम् निर्दोषमातृकमित्यर्थः, निर्दोषप्रितृकत्वं तु प्रागुक्तमेव, ईदृग्गुणयुक्ताह अश्वः समये स्वामिने न द्रुहति तथा ‘मल्लिहाणि’ मल्लिघ्राणम् तत्र मल्लिः विचकिलकुसुमं तद्वच्छुभ्रम् धवलमित्यर्थः ये श्लेष्मवर्जितं दुर्गन्धिवर्जितअश्लेष्मत्वेनानाविलमपूतिगन्धि च घ्राणं— प्रोथो यस्य तत्तथा, इकारः प्राकृत शैलीभवः तथा ‘सुगपत्सुवर्णकोमलं’ शुक्रपत्रसुवर्णकोमलम्, तत्र शुक्रपत्रवत् शुक्रपिच्छवत् सुष्ठु वर्णो यस्य तत्तथा, कोमलं च कायेन, ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः, तथा ‘मनोभिराम’ मनोऽभिः समम् अतिसुन्दरम् तथा ‘कमलामेलं णामेणं आसरयणं सेणावह कमेण समभिरूढे’

लामेलं नाम्ना अश्वरत्नं सेनापतिः क्रमेण समभिरूढः आरूढः इति पूर्ववद् व्याख्येयम् इति । ततः सेनापतिः सुषेणः किं कृतवान् इत्याह—‘कुवलय’ इत्यादि सम्प्रति खञ्जरत्नस्वरूपम् वर्णयति ‘कुवलयदलसामलं च’ कुवलयदलश्यामलम् नीलोत्पलदलं शम्भु

इस हय शास्त्र से विरोध आता है । अथवा जितनिद्रत्व का भाव ऐसा भी हो सकता है, कि समर के अवसर को प्राप्ति के समय में अश्वरत्न होने से यह अल्पनिद्रा होता था । (जित परिसहे) शीत आतप आदि जन्य क्लेशों को यह कुछ भी नहीं गिनता था, (जच्चजातीयं) यह शुद्ध मातृपक्षका था (मल्लिहाणिसुगपत्सुवर्णकोमलं मनोभिरामं) मोघरे के पुष्प के जैसे इसकी नाक थी । अर्थात् श्लेष्मा नाक के मैल आदि से विहीन थी शुक्र के पंखे के जैसा इसका सुहावन वर्ण था और यह शरीर से कोमल था तथा मनोऽभिराम—अति सुन्दर था ऐसे (कमलामेलं णामेणं आसरयणं सेणावह कमेण समभिरूढे) कमलामेलक नाम के अश्वरत्न पर सुषेण सेनापति आरूढ हुआ ।

सदैवनिद्रावशगा निद्राच्छेदस्य सम्भवः । जायते सङ्गरे प्राप्ते कर्करस्य च भक्षणे ॥
आम को हयशास्त्रधी विरुद्ध होता है । अथवा जितनिद्रत्व भाव होता है । पक्षु सङ्गरी शत्रु के समर ना अवसरनी प्राप्तिना समयमा अश्वरत्न होता है को अल्पनिद्रा होता है । (जित परिसहे) शीत, आतप वगैरे जन्य क्लेशोने को तुच्छ समझता है । (जच्चजातीयं) को शुद्ध मातृपक्षका होता है । (मल्लिहाणि सुगपत्सुवर्णकोमलं मनोभिरामं) मोघराना पुष्प होती कोनी नासिका होती कोटले के श्लेष्मा—नाकना मल आदिधी कोनी नासिका रहित होती । शुक्रना पांशु होता कोनी सोडाभवा पक्षु होता । को शरीरधी सुकामण होता—तेमज को मनोभिराम कोटले के अति सुन्दर होता कोना (कमलामेलं णामेणं आसरयणं सेणावह कमेण समभिरूढे) कमलामेलक नामक अश्वरत्न उपर से सुषेण सेनापति सवार थो,

પમાનમ્ ઉપમાર્જિતમ્ અન્યસદ્દશત્વાભાવાત્ 'તં ચ પુણો' તત્ત્વ પુનર્વહુગુણમસ્તીતિ શેષઃ
 કીદશમ્ : 'વંસરુક્ષસિંગદ્વિદંતકાલાયસ વિપુલલોહદંડકવરવજ્રમેદકં' વંશવૃક્ષશૃંગાસ્થિ-
 દન્તકાલાયસ વિપુલલોહદંડકવરવજ્રમેદકમ્, તત્ર વશાઃ પ્રસિદ્ધાઃ રુક્ષાઃ - વૃક્ષાઃ શૃંગાણિ
 મહિષાદીનામ્ અસ્થીનિ પ્રસિદ્ધાનિ દન્તાઃ હસ્ત્યાદીનાં કાલાયસં લોહં વિપુલલોહદંડ-
 કથ વરવજ્ર હોરકજાતીયં તેષાં મેદકમ્ અત્ર વજ્રકથનેન દુર્ભેદ્યાનામપિ મેદકત્વમુક્તમ્
 કિં બહુના ? 'જાવ સત્ત્વત્થ અપ્પહિદ્ધયં' યાવત્સર્વત્રાપ્રતિહતમ્ દુર્ભેદેડપિ વસ્તુનિ અમોઘ-
 શક્તિકમિત્યર્થઃ 'કિં પુણ દેહેસુ જંગમાણં' કિં પુનર્જર્જમાના ચરાણાં પથુમનુષ્યાદીનાં
 દેહેષુ, અત્ર યાવત્ત્વદો ન સદ્ગ્રાહકઃ કિન્તુ મેદકશક્તિ પ્રકર્ષોક્તયેડવધિ સૂચનાર્થમ્
 અથ તસ્ય માનમાહ— 'પણ્ણાસંગુલદીહો સોલસસે અંગુલાઈ વિચ્છિણ્ણો' પચ્ચાશદહુલાનિ
 દીર્ઘો યઃ ષોઢશાહુલાનિ વિસ્તીર્ણઃ તથા 'અદ્દંગુલસોળીકો' અદ્દાંદ્ગુલશ્રોણિકઃ તત્ર

અળોવમાળં) સસાર મેં યહ અનુમેય માના ગયા હૈ । ક્યોંકિં હસકે જૈસે ઔર કોઈ પદાર્થ નહી
 હૈ (તંચ પુણો વંસરુક્ષસિંગદ્વિ દંતકાલાયસ વિપુલ લોહદંડકવરવજ્રમેદક) યહ વંશ-વાસ, રુક્ષ-
 વૃક્ષ-શૃંગ-મહિષાદિકોં કે સીંગ, હદ્ધિયાં, હાથી આદિકોંકે દાંત, કાલાયસ રૂપાત જૈમા લોહા,
 ઔર વરં વજ્ર ઇન સબ કો મેદ દેતા હૈ । વજ્ર કે કથન સે યહા યહ પ્રગટ કિયા ગયા હૈ
 કિં યહ દુર્ભેદ પદાર્થોં કા મી મેદક હોતા હૈ । ઔર તો ક્યા—(જાવ સત્ત્વત્થ અપ્પહિદ્ધયં)
 યાવત્ યહ સર્વત્ર અપ્રતિહત હોતા હૈ । હસ દુર્ભેદ વસ્તુ કે મેદ મેં મીં હસકી શક્તિ જબ
 અમોઘ હોતી હૈ તો (કિંપુણ દેહેસુ જંગમાળં) ફિર જગમ જોવોં કે દેહ કે વિદારણ કરને
 મેં તો હસકી બાત હી ક્યા કહની યહ તો ઁંહે સ્વેત કી મૂલી કીં તરહ હી કાટ દેતા હૈ ।
 યહાં યાવત્પદ સંગ્રાહક નહીં હૈ કિન્તુ મેદક શક્તિ કો પ્રકર્ષતા કી અવધિ કા સૂચક હૈ ।
 (પણ્ણાસંગુલદીહો સોલસ અંગુલાઈ વિચ્છિણ્ણો) યહ અસિરત્ત ૫૦ પચાસ અંગુલકોં લંબા હોતા
 હૈ ઔર ૧૬ સોલહ અંગુલ કા ચોઢા હોતા હૈ । (અદ્દંગુલસેળીકો) તથા આઘે અંગુલ કી

તે દિવ્ય અસિરત્ત હતુ (લોગે અળોવમાળં) સંસારમાં એ અનુપમેય માનવામાં આવેલ
 છે કેમકે એના જેવો અન્ય કોઈ પદાર્થ છે જ નહિ (તં ચ પુણો વંસરુક્ષસિંગદ્વિદંત
 ક વિપુલલોહદંડકવરવજ્રમેદક) એ વશ-વાસ રૂક્ષ-વૃક્ષ, શૃંગ-મહિષાદિકોના
 સિંગ, અસ્થિ-હાથી વગેરેના દાંત, કાલાયસ-રૂપાત જેવું લોહક અને વરવજ્ર એ
 સર્વેનું ભેદન કરે છે વળતા કથનથી એને આ વાત સ્પષ્ટ કરવામાં આવી છે કે એ દુર્ભેદ
 પદાર્થોને પણ ભેદી શકે છે અને બીજું તો શુ (જાવ સત્ત્વત્થ અપ્પહિદ્ધયં) યાવત્ એ સર્વત્ર
 અપ્રતિહત હોય છે. આ પ્રમાણે દુર્ભેદવસ્તુના ભેદનમાં પણ એની શક્તિ બ્યારે અમોઘ
 હોય છે તો (કિં પુણ દેહેસુ જંગમાળં) યહી જંગમ જીવો ના દેહોને વિદીર્ષી કરવામાં તો
 વાત જ થી કહેવી એ તો તેમને સહેજમાંજ કાપી નાખે છે અહીં યાવત્ પદ સંગ્રાહક
 નથી પણ ભેદક શક્તિની પ્રકર્ષતાની અવધિ સૂચવે છે (પણ્ણાસંગુલદીહો સોલસઅંગુલાઈ
 વિચ્છિણ્ણો) એ અસિરત્ત ૫૦ પચાસ અંગુલ લાંબુ હોય છે. અને ૧૬ અંગુલ જેટલું
 પહોળુ હોય છે (અદ્દંગુલસેળીકો) તથા અર્ધા અંગુલ જેટલી એની ગાંઠ હોય છે (જેદ-

અર્દાઙ્ગુલપ્રમાણા શ્રોણિઃ વાહલ્યં પિળ્લો यस્ય સ તથા, તથા 'જેટ્પપમાણો અસી મણિઓ' જ્યેષ્ઠપ્રમાણોઽસિર્મણિતઃ તત્ર જ્યેષ્ઠમ્-ઉત્કૃષ્ટ પ્રમાણં यस્ય સ તથા, एवंविधः सोऽसि-र्मणितः- કથિતઃ 'અસિરયણં ણરવહસ્સ હત્યાઓતં ગહિઝ્ઞ જેણેવ આવાહચિલાયા તેણેવ ઉવાગચ્છહ' ઉક્ત વિશેષણવિશિષ્ટમ્ તત્ અસિરત્નં સેનાપતિઃ સુષેણો નરપતેઃ હસ્તાત્ શૃઙ્ગીત્રા યત્રૈવ આપાતકિરાતાઃ તત્રૈવોપાગચ્છતિ, અસ્યોત્તરવાક્યસ્ય યોજના તુ પ્રાગેવ કૃતા 'ઉવાગચ્છિત્તા' ઉપાગત્ય 'આવાહચિલાપહિં સદ્ધિં સંપલ્લગ્ને યાવિ હોત્થા' આપાતકિરાતૈઃ સાર્દ્ધં સંપ્રલગ્નાશ્વાપ્યમવત્ યોદ્ધુમિતિ શેષઃ, અથ સેનાપતેરાયોધનાદનન્તરં કિં જાતમિત્યાહ- 'તણ્ણં' इत्यादि 'तण्णं' से सुसेणे सेणावई ते आवाहचिलाप ह्यमहिय पवरवीरघाइअ जाव दिसोदिसिं पडिसेहेइ' ततः- आयोधनादनन्तरं युद्धानन्तरम् स सुषेणः सेनापतिः तान् आपातकिरातान् हतमथितप्रवरवीरघातित यावत्पदात् 'विहडिअ चिधद्धय पढागे किच्छप्पाणोवगण' इति ब्राह्मम् दिशोदिशि प्रतिषेधयति अस्य व्याख्या प्रागेव स्पष्टीकृता ॥सू. १८॥

હમકો મોટાઈ હોતી હૈં । (જેટ્પપમાણો અસી મણિઓ) હસ પ્રકાર કા યહ પ્રમાણ ઉત્કૃષ્ટ રૂપ અસિ-તલવાર-કા કહા ગયા હૈ । એસે (અસિરયણં ણરવહસ્સ હત્યાઓ ત ગહિઝ્ઞ જેણેવ આવાહચિલાયા તેણેવ ઉવાગચ્છહ) અસિરત્ન કો નરપતિ કે હાથ સે લેકર વહ સુષેણ સેનાપતિ જહાં પર આપાત કિરાત યે, વહાં પર ગયા એસે હસ ઉત્તર વાક્ય કો યોજના હમને પહિલે હી પ્રગટ કર દી હૈ (ઉવાગચ્છિત્તા આવાહચિલાપહિં સદ્ધિં સંપલ્લગ્નો યાવિહોત્થા) વહા પર જાકર આપાતકિરાતોં કે સાથે સસકા યુદ્ધ છિહ્ન ગયા (તણ્ણં સુસેણે સેણાવઈ તે આવાહચિલાપ હ્યમહિયપવરવીરઘાઇઅ જાવ દિસો દિસિં પડિસેહેઇ) યુદ્ધ છિહ્ન જાને કે બાદ સસ સુષેણ સેનાપતિ ને સન આપાતકિરાતોં કો કિ જિનકે અનેક પ્રવર વીર યોદ્ધા જન હસમથિત ઇવં ઘાતિત હો ચુકે હૈં તથા જિનકી ગરુહ આદિ ચિહ્ન વાઝી ધ્વજાઈ ઝોર પતાકાઈ જમીન કે ઉપર ગિર ચુકો હૈ । ઝોર જિહ્નો ને વહો મુશ્કિલ સે અપને પ્રાણોં કો બચા પાયા હૈ । ઇક દિશા સે દૂસરી દિશા મેં મગા દિયા—ઘર ઘર સ્વદેહ દિયા ॥૧૮॥

પ્રમાણો અસી મણિઓ આ પ્રમાણે એ પ્રમાણ ઉત્કૃષ્ટ રૂપથી અસિ-તલવારત્નના સંબંધમાં કહેવામાં આવેલ છે એવા (અસિરયણં ણરવહસ્સ હત્યાઓ ત ગહિઝ્ઞ જેણેવ આવાહ ચિલાયા તેણેવ ઉવાગચ્છહ) એ અસિરત્નને નરપતિના હાથમાંથી લઇને તે સુષેણ સેનાપતિ બધાં આપાત કિરાતો હતા ત્યાં ગયો આ પ્રમાણે અમે પહેલાં સ્પષ્ટ કર્યું જ છે (ઉવાગચ્છિત્તા આવાહચિલાપહિં સદ્ધિં સંપલ્લગ્નો યાવિ હોત્થા) ત્યાં જઇને તેણે આપાત કિરાતો સાથે યુદ્ધને આરંભ કર્યો. (તણ્ણં સે સુસેણે સેણાવઈ તે આવાહચિલાપ હ્યમહિયપવરવીરઘાઇઅ જાવ દિસો વિસિં પડિસેહેઇ) યુદ્ધ આરંભ થયા બાદ તે સુષેણ સેનાપતિએ તે આપાત કિરાતોને-કે જેમના અનેક પ્રવરવીર યોદ્ધાઓ હતા-મથિત અને ઘાતિત થઈ ગયા છે, તેમજ જેમની ગરુહ વગેરેના ચિહ્નવાળી ધ્વજાઓ અને પતાકાઓ પૃથ્વી ઉપર પડી ગયા છે અને જેમણે બહુ જ મુશ્કેલીથી પોતાના પ્રાણોની સ્વરક્ષા કરી છે-એક દિશામાંથી બીજી દિશામાં નચાડી મૂક્યા-અમ-તેમ તગડી મૂક્યા. ॥ સૂત્ર ૧૮ ॥

अथ ते किं कुर्वन्तीत्याह — 'तएण ते इत्यादि

मूलम्—तएणं ते आवाडचिलाया सुसेण सेनावइणा हयमहिया जाव पडिसेहिया समाणा भीआ तत्था वहिआ उव्विग्गा संजायभया अत्थामा अबला अवीरिआ अपुरिसक्कारपरक्कमा अधारणिज्जमिति कद्दु अणे- गाइं जोअणाइ अवक्कमंति, अवक्कमिक्का एगयओ पिलायंति, मिला- इत्ता जेणेव सिंघू महानई तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता वालुआ संथारए संथेरंति, संथरित्ता वालुआ संथारए दुरुहंति दुरुहित्ता अट्टम- भत्ताइ पगिण्हंति पगिण्हित्ता वालुआ संथारोवगया उत्ताणगा अट्टमभ- त्तिआ जे तेसिं कुलदेवया मेहमुहाणामं णागकुमारा देवा ते मणसी करेमाणा करेमाणा चिट्ठंति । तएणं तेसिमावाडचिलायाणं अट्टम भत्तंसि परिणममाणंसि मेहमुहाणं णागकुमाराणं देवाणं आसणाइं चलंति, तएणं ते मेह हा णागकुमारा देवा आसणाइं चलिआइं पासंति पसित्ता रोहिं पउंजंति पउंजित्ता आवाडचिलाए ओहिणा आभोएंति अभोइत्ता णमण्णं सदावेति सदावित्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिआ !

हीवे दीवे उत्तरद्ध भरहे वासे आवाडचिलाया सिंघूए महाणईए वालुआ संथारोवगया उत्ताणगा अवसणा अट्टमभत्तिआ अम्हे कुलदेवए मेहमुहे णाग मारे देवे मणसी करेमाणा करेमाणा चिट्ठंति, तं सेअं खलु देवा- प्पिआ ! अम्हं आवाडचिलायाणं अंतिए पाउब्भवित्तए त्तिकद्दु अण- मणस्स अंतिए एअमट्ठं पडिसुणेंति पडि नेत्ता ताए उक्किट्ठाए तुरिआए जाव वीतिवयंमाणा वीतिवयमाणा जेणेव जंबुहीवेदीवेउत्तरद्धभरहे वासे जेणेव सिंघू महाणई जेणेव आवाडचिलाया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छि- त्ता अंतलिक्खपडिवण्णा सखिखिणिआइ पंच वण्णाइं पवरपरिहिआ ते आवाडचिलाए एवं वयासी—इभो आवाडचिलाया । जण्णं तुब्भे देवाणु- प्पि । वालुआ संथारोवगया उत्ताणगा अवसणा अट्टमभत्तिआ अम्हे लदेवए मेहमुहे णागकुमारे देवे मणसी करेमाणा करेमाणा चिट्ठह

तएणं अम्हे मेहमुहा णागकुमरा देवा तुब्भं कुलदेवया तुम्हं अंति
अण्णो पाउब्भूआ तं वदह णं देवाणुप्पिआ ! किं करेमो केव मे मणसाइए
तएणं ते आवाडचिलाया मेहमुहाणं णागकुमाराणं देवाणं अंतिए एअ-
महं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिआ जाव हिअआ उट्ठाए
उट्ठेन्ति, उट्ठेत्ता जेणेव मेहमुहा णागकुमारा देवा तेणेव उवागच्छंति
उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहिं जाव मत्थए अंजलिं कददु मेहमुह
णागकुमारे देवे जएणं विजएणं वद्धावेति वद्धावित्ता एवं वयासी-एसणं
देवाणुप्पिए ! केइ अपत्थिअपत्थए दुरतपंतलक्खणे जाव हिरिसिरि-
परिवज्जिए जेणं अम्हं विसयस्स उवरिं वीरिएणं हव्वमागच्छइ, तं तहा
णं घत्तेह देवाणुप्पिआ ! जहा णं एस अम्हं विसयस्स उवरिं वीरिएणं णो
हव्वमागच्छइ, तएणं ते मेहमुहा णागकुमारा देवा ते आवाडचिलाए
एवं वयासी-एस णं भो देवा प्पिआ ! भरहे णामं राया चाउरंतचक्क-
वट्ठी महिद्धीए जाव महासोक्खे, णो खलु एस सक्को केणइ देवेण वा
दाणवेण वा किण्णरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा
सत्थप्पओगेण वा अग्गिप्पओगेण वा मंतप्पओगेण वा उट्ठवित्तए पडि-
सेहित्तए वा, तहाविअ णं तुब्भं पिअट्ठयाए भरहस्स रण्णो उवसग्गं
करेमो त्तिकददु तेसि आवाडचिलायाणं अंतिआओ अवक्कमंति,
अवक्कमित्ता वेउव्विअ समुग्घाएणं समोहणंति, सम्मोहणित्ता मेहाणीअं
विउव्वंति विउव्वित्ता जेणेव भरहस्स रण्णो विजयक्खंधावारणिवेसे तेणेव
उवागच्छंति उवागच्छित्ता उप्पि विजयक्खंधावारणिवेसस्स खिप्पामेव
पतणुतणायंति. खिप्पामेव विज्जुयायति. विज्जुयाइता खिप्पामेव जुगमु-
सलमुट्ठिप्पमाणमेत्ताहिं धाराहिं ओघमेघं सत्तरत्तं वासं वासिउं पवत्ता
यावि होत्था ॥सू० १९॥

छाया-तत खलु ते आपातकिराताः सुपेण सेनापतिना हतमथिता यावरप्रतिषेधिता.
सन्तो भीता क्रुताः व्यथिताः उद्विग्नाः सञ्जातमया अस्थामान अवलाः भवीर्याः अपुद-
पकारपराक्रमा अधारणीयमिति कृत्वा अनेकानि योजनानि अपक्रामन्ति, अपक्रम्य एकतो

मिलन्ति मिलित्वा यत्रैव सिन्धु महीनदी तत्रैवोपागच्छति उपागत्य बालुकासंस्तारकान् संस्त-
 णन्ति संस्तीर्य बालुकासंस्तारकान् दुरुहन्ति, दुरुह्य अष्टमभक्तानि प्रगृह्णन्ति, प्रगृह्य बालुका
 संस्तारोपगताः उत्तानकाः अवसनाः अष्टमभक्तिकाः ये तेषां कुलदेवता मेघमुखाः नाम्ना
 नागकुमाराः देवास्तान् मनसि कुर्वन्त स्तिष्ठन्ति । ततः खलु तेषाम् आपातकिरातानाम्
 अष्टमभक्ते परिणमति सति मेघमुखानां नागकुमाराणां देवानामासनानि चलिन्ति, ततः खलु ते
 मेघमुखाः नागकुमाराः देवाः आसनानि चलितानि पश्यन्ति, दृष्ट्वा अवधिं प्रयुञ्जन्ति प्रयुज्य
 आपातकिरातान् अवधिना आभोगयन्ति, आभोग्य अन्योऽन्यं शब्दयन्ति शब्दयित्वा पवम्
 अवादिषुः एवं खलु देवानुप्रियाः ! जम्बूद्वीपे द्वीपे उत्तरार्द्धभरते वर्षे आपातकिराताः सिन्ध्वां
 महानद्यां बालुकासंस्तारकान् उपगताः उत्तानकाः अवसनाः अष्टमभक्तिकाः अस्मान् कुल-
 देवतान् मेघमुखानामकान् नागकुमारान् देवान् मनसि कुर्वाणा मनसि कुर्वाणा स्तिष्ठन्ति,
 तत् श्रेय खलु भो देवानुप्रियाः ! अस्माकम् आपातकिरातानाम् अन्तिके प्रादुर्भवितुमिति-
 कृत्वा अन्योऽन्यस्यान्तिके पतमर्थं प्रनिश्चण्वन्ति, प्रतिश्रुत्य तया उत्कृष्टया त्वरितया यावत्
 त्र्यतिव्रजन्तो व्यतिव्रजन्तो -यत्रैव जम्बूद्वीपो द्वीपो यत्रैव उत्तरभरताद्धं वर्षं यत्रैव सिन्धु
 महीनदी यत्रैव आपातकिराताः तत्रैव उपागच्छन्ति, उपागत्य अन्तरिक्षप्रतिपन्नाः सर्कि-
 किणोक्तानि पञ्चवर्णानि वस्त्राणि प्रवराणि परिहितास्तान् आपातकिरातान् पवमवादिषुः
 हं भो आपातकिराताः ! यत् खलु यूयं देवानुप्रियाः ! बालुकासंस्तारकोपगताः नका
 अवसना अष्टमभक्तिका अस्मान् कुलदेवता मेघमुखान् नागकुमारान् देवान् मनसि कुर्वाणा
 मनसि कुर्वाणा स्तिष्ठत, ततः खलु वयं मेघमुखा नागकुमारा देवा युष्माकं कुलदेवता
 युष्माकमन्तिकं प्रादुर्भूता तद्वदत खलु देवानुप्रियाः ! किं कुर्म किं वा भवतां मनः स्वा-
 दितम्, ततः खलु ते आपातकिराताः मेघमुखानां नागकुमाराणां देवानामन्तिके पतमर्थं
 श्रुत्वा निशम्य दृष्ट तुष्ट चित्तानन्दिता यावद्दृष्ट्वा उत्थया उत्तिष्ठन्ति, उत्थाय यत्रैव
 मेघमुखा नागकुमारा देवास्तत्रैव उपागच्छन्ति, उपागत्य करतलपरिपृहीतं यावत् मस्त-
 के अञ्जलिं कृत्वा मेघमुखान् नागकुमारान् देवान् जयेन विजयेन वर्द्धयन्ति, वर्द्धयित्वा प-
 वमवादिषुः पव खलु देवानुप्रियाः ! कः अप्रार्थितप्रार्थक दुरन्तप्रान्तलक्षणः यावत् द्वी
 श्री परिवर्जितः यः खलु अस्माकं विषयस्योपरि वीर्येण हव्यमागच्छति, तं तथा खलु प्र-
 क्षिपत हे देवानुप्रिया ! यथा खलु पव अस्माकं विषयस्योपरि वीर्येण नो हव्यमागच्छति
 ततः खलु ते मेघमुखा नागकुमारा देवाः तान् आपातकिरातान् पवमवादिषुः पव खलु
 भो देवानुप्रियाः ! मरतो नाम राजा चातुरन्तचक्रवर्ती महद्भिक्षो यावन्महासौख्यं नो
 खलु पव शक्य केनचिद्देवेन वा दानेन वा किन्तरेण वा किंपुरुषेण वा महोरगेण वा
 गंधर्वेण वा शस्त्रप्रयोगेण वा अग्निप्रयोगेण वा मन्त्रप्रयोगेण वा उपव्रचयितुं वा प्रतिवे-
 चयितुं वा तथापि च खलु युष्माकं प्रियार्थतार्ये मरतस्य राष्ट्रं उपसर्गं कुर्मः इति कृत्वा
 तेषाम् आपातकिरातानाम् अन्तिकादपक्रामन्ति अपक्रम्य वैक्रियसमुद्घातेन समभवन्ति
 समवश्यं मेघानीकं विकुर्वन्ति विकुर्व्यं यत्रैव मरतस्य राष्ट्रं विजयस्कंधावारनिवेशं
 तत्रैवोपागच्छन्ति उपागत्य विजयस्कंधावारनिवेशस्योपरि क्षिप्रमेव प्रतनुस्तनायन्ते क्षि-
 प्रमेव विद्युदायन्ते विद्युदायित्वा क्षिप्रमेव युगमुसलमुष्टिपमाणमितामि चारामिः ओष-
 मेवं राष्ट्रं वर्षं वर्षितुं प्रवृत्तश्चापमवन् ॥ सू० १९ ॥

टीका- 'तए ण से' इत्यादि । 'तए णं से आवाडचिलाया मुसेण सेणावइणा हयमहिया जाव पडिसेहिया समाणा भीया तत्था वहिया उव्विग्गा संजायभया अत्थामा अबला अवीरिया अपुरिसपरक्कमा अधारणिज्जमिति कट्टु अणेगाईं जोयणाईं अवक्कमंति' ततः खलु ते आपातकिराताः सुषेणसेनापतिना हतमथिताः- केचित् हताः केचिन्मथिता इत्यर्थः यावत्पदात् केचित् घातिताश्च प्रवरवीराः येषु ते हतमथितवातितप्र-
वीराः एव विपतितचिह्नध्वजपताकाः अष्टचिह्न प्रधान महाध्वजलघुध्वजाः एवं कृच्छ्रा-
णोपगताः यावत्प्रतिषेधिताः निवारिताः सन्तो भीताः - भययुक्ताः त्रस्ताः प्रबलघात-
व्याप्तत्वात् कातरत्वं प्राप्ताः प्रबलसेनापतिपराक्रमदर्शनात् व्यथिताः- महारैरार्द्रिताः
प्रत्यङ्गव्रणव्याप्तत्वात् उद्विग्नाः, अथ पुनर्नानेन सार्द्धं युध्यामहे इत्याशयवन्तः सञ्जात-
भयाः-सम्यक् प्राप्तत्रासाः भाविसन्तानकृतविजयाशारहितत्वात् अस्थामानः- युद्धे स्थातुं

तएण ते आवाडचिलाया सुसेणसेणावइणा'— इत्यादि सूत्र-१९-

टीकार्थ- 'तएण' (ते आवाडचिलाया) इसके बाद वे आपातकिरात जो कि (सुसेणसेणा-
वइणा हयमहिया जाव पडिसेहिया समाणा) सुषेण सेनापति द्वारा हत, मथित, घातित प्रवर-
योधाओं वाले हो चुके थे और युद्ध स्थल छोड़कर अपने प्राणों को लेकर भाग गये थे वे अब
(भीमा, तरया, वहिया, उव्विग्गा, संजायभया अत्थामा, अबला, अवीरिया, अपुरिसक्कारपर-
क्कमा अधारणिज्जमिति कट्टु अणेगाईं जोयणाईं अवक्कमंति) भयभीत बनचुके थे प्रबल आघात
से व्याप्त हो जाने से सेनापति के प्रबल पराक्रम को देखने से त्रस्त हो चुके थे-कातर भाव की
प्राप्त हो चुके थे, प्रत्यङ्ग में घावों से व्याप्त होने से प्रहारों द्वारा व्यथित बने हुए थे, अब
फिर हम इसके साथ युद्ध नहीं करेंगे इस प्रकार के आशयवाले हो जाने के कारण उद्विग्न
बन गये थे । तथा भाविसन्तानकृत विजयाशा से रहित हो चुकने से उनमें अच्छी तरह
से भय समा चुका था । ऐसी सामर्थ्य अब उनमें नहीं रह गई थी जो वे युद्ध में उसके समक्ष

(तएण ते आवाडचिलाया सुसेणसेणावइणा — इत्यादि ॥ सूत्र १९ ॥

टीकार्थ- (त एणं ते आवाडचिलाया) त्थार भाड ते आपात किरातो के जेओ-सुसेण सेणा-
वइणा हयमहिया जाव पडिसेहिया समाणा) सुषेण सेनापति धञ्जान हत, मथित, घातित
प्रवर योधाओ वाणा यध युद्धा होता अने युद्ध स्थल छोडीने पोताना प्राणोनी रक्षा भाटे
नासी गया होता, जेवा तेओ (भीमा, तरया, वहिया, उव्विग्गा, संजायभया, अत्थामा, अबला,
अवीरिया, अपुरिसक्कारपरक्कमा, अधारणिज्जमिति कट्टु अणेगाईं जोयणाईं अव 'ंति)
अथत्रस्त यध गया होता, प्रणण आघाताथी व्याप्त यध जवाथी सेनापतिना प्रणण परा-
क्रमने जेवा थी-त्रस्त यध गया होता कातर यध गया होता, प्रत्यगभा घानाप्रहारो व्याप्त
हता तेथी तेओ प्रहारो द्वारा व्यथित यध युद्धा होता हवे अने ओनी साथे युद्ध नहि
करीओ आ जतना निश्चयवाणा यध जवाथी तेओ उद्विग्न जनी गया होता, तेभज भावि-
सन्तानकृत विजयाशाथी रहित यध युद्धा होता तेथी तेभनाभा सपूखुपणे अथ व्याप्त
यध युद्धा होता जेवुं सामर्थ्य हवे तेभनाभा रखु न न हतु के जेथी जीण वणत तेनी

विकलाः सर्वतो बलवर्जितत्वात् अवलाः— शारीरिकशक्तिविकलाः अवोर्याः— वीर्यरहिताः आत्मसमुत्पन्न उच्छ्वासविदाळे जुका था, सर्वसाधनों से वर्जित हो जाने के कारण वे पुरुषकार और पराक्रम से इकदम रहित हो चुके थे । और परबल का सामना करना अब सर्वथा अशक्य है इस क्क्याल से वे अनेक योजनो तक दूर भाग गये थे । (अवक्कमिक्ता एगयभो मिलायन्ति) भागकर फिर वे एक स्थान पर एकत्रित हुए (मिलाएक्ता जेजेव सिंधु महाणई तेजेव उवागच्छन्ति) और एकत्रित होकर फिर वे सबके सब जहा पर सिन्धु महानदी थी वहां पर आये । (उवागच्छिक्ता बालुकासंथारण सथरेंति) वहां आकरके उन्होंने सिकतामय संतारकों को किया, (सथरिक्ता बालुका संथारण दुरूहंति) सिकतामय सथारकों को करके फिर वे सबके सब अपने बालुकामय सथारों के ऊपर बैठ गये (दुरूहिक्ता अष्टमभक्ताई पणिहंति) बैठकर वहां पर उन्होंने अष्टम भक्त की तपस्या धारण करली । (पणिहिक्ता

शिर तक उठा सके, वे बिलकूल शारीरिक शक्ति से हीन हो गये थे । इसलिये उनसे आत्म समुत्पन्न उच्छ्वास विदाळे जुका था, सर्वसाधनों से वर्जित हो जाने के कारण वे पुरुषकार और पराक्रम से इकदम रहित हो चुके थे । और परबल का सामना करना अब सर्वथा अशक्य है इस क्क्याल से वे अनेक योजनो तक दूर भाग गये थे । (अवक्कमिक्ता एगयभो मिलायन्ति) भागकर फिर वे एक स्थान पर एकत्रित हुए (मिलाएक्ता जेजेव सिंधु महाणई तेजेव उवागच्छन्ति) और एकत्रित होकर फिर वे सबके सब जहा पर सिन्धु महानदी थी वहां पर आये । (उवागच्छिक्ता बालुकासंथारण सथरेंति) वहां आकरके उन्होंने सिकतामय संतारकों को किया, (सथरिक्ता बालुका संथारण दुरूहंति) सिकतामय सथारकों को करके फिर वे सबके सब अपने बालुकामय सथारों के ऊपर बैठ गये (दुरूहिक्ता अष्टमभक्ताई पणिहंति) बैठकर वहां पर उन्होंने अष्टम भक्त की तपस्या धारण करली । (पणिहिक्ता

साथे तेजो भांथु जे यु करी शके तेमनी शारीरिक शक्ति अ'पुष्प'पणे नाश पायी होती, जेथी तेमनाभाथी आत्मसमुत्पन्न उच्छ्वास समास थई चूक्यो होती सर्वसाधनोभी वर्जित थई जवाथी तेजो पुरुषकार अने पराक्रमथी साव रहित थई चूक्या होती परणण साथे लडवुं हवे सर्वथा अशक्य छे जे विचारथी तेजो अनेक योजनो सुधी हू नाभी गया होती. (अवक्कमिक्ता एगयभो मिलायन्ति) नासीने पछी तेजो जेक स्थाने जेकत्र थई गया (मिलाएक्ता जेजेव सिंधु महाणई तेजेव उवागच्छन्ति) अन जेकत्र थईने प'नी तेजो अवे' जयां सिन्धु महानदी होती त्या आव्या. (उवागच्छिक्ता बालुकासंथारण सथरेंति) त्या पडोथीने मथे बालुकामय संतारको जनाव्या (सथरिक्ता बालुका संथारण दुरूहंति) बाधु कामय त्या नारकोने जतायीने पछी तेजो अवे' घेतपोताना बालुकामय संतारकोने जे' जे' गया. (दुरूहिक्ता अष्टमभक्ताई पणिहंति) जेसीने त्या तेमथे अष्टम भक्तानी तपस्या धाम्ण करी. (पणिहिक्ता बालुकासंथारोवगया उत्ताणगा अवसणा अष्टमभक्तिया जे तेसि कुलदेवथा

‘तेसिं कुलदेवया मेहमुहाणामं णागकुमारा देवा ते मणसी करेमाणा करेमाणा चिट्ठंति’
तेषाम् आपातकिरातानाम् कुलदेवताः कुलवत्सलः मेघमुखः नाम्ना नागकुमाराः देवा-
स्तान् मनसि कुर्वन्तो मनसि कुर्वन्तस्तिष्ठन्तीति, अथ ते देवाः किं कृतवन्तः इत्याह—
‘तए णं तेसिमावाडचिलायाणं अट्टमभत्तांस परिणममाणसि मेहमुहाणं णागकुमाराण देवाणं
आसणाइं चलति’ ततः चेतसि चिन्तनानन्तरं खलु तेषामापातकिरातानाम् अष्टमभक्ते परि-
णमति परिपूर्णप्राये सति मेघमुखानां नागकुमाराणां देवानामासनानि सिंहासनानि चलन्ति
‘तएणं ते मेहमुहा णागकुमारा देवा आसणाइं चाळयाइं पासंति’ ततः आसनचलनानन्तरं
खलु ते मेघमुखः नागकुमारा देवा आसनानि चलितानि पश्यन्ति ‘पासित्ता’ दृष्ट्वा ‘ओहिं
पउजति’ अवधिं प्रयुज्यन्ते—अवधिज्ञानमवलम्बन्ते इत्यर्थः ‘पउजित्ता’ प्रयुज्य अवधिज्ञान-
मवलम्ब्य ‘आवाडचिलाए ओहिणा आभाएति’ अवधिना-अवधिज्ञानेन आपातकिरातान्

वाङ्मयस्यारोवगया उत्ताणया अवसणा अट्टमभत्तिया जे तेसिं कुलदेवया मेहमुहाणामं णाग-
कुमारा देवा ते मणसा करमाणा करमाणा चिट्ठंति) उस अष्टम भक्त को तपस्या को धारण
करते हुए एव वाङ्मय के सथारे पर बैठे हुए वे नग्न बन कर ऊपर की ओर मुंह करके
तीन दिन तक अनाहारावस्था में रहे । और उस तपस्या में उन्होंने जो उनके मेघमुख
नाम के कुलदेवता से उनका ध्यान करना प्रारम्भ कर दिया । (तएणं तेसिमावाड-
चिलायाण अट्टमभत्तसि परिणममाणसि मेहमुहाण णागकुमाराण देवाण आसणाइं चलति)
जब उन आपातकिरातो को अष्टम भक्त को तपस्या समाप्त होने को आह तब उन मेघ मुख
नाम के नागकुमार देवा के आसन कपायमान हुए (तएणं ते मेहमुहा णागकुमारा देवा
आसणाइं चलिआइं पासति) उन मेघमुख नाम के नागकुमारो ने जब अपने-२ आसनों
को कपित हुआ देखा-तो (पासित्ता) देखकर उन्होंने (ओहिं पउजंति) अपने-२ अव-
धिज्ञान को उपयुक्त किया (पउजित्ता आवाडचिलाए ओहिणा आभाएति) अवधिज्ञान को
उपयुक्त करके उनमेघमुख नाम के नागकुमार देवा ने अवधिज्ञान से आपातकिरातो को देखा

मेहमुहाणामं णागकुमारा देवा ते मणसी करेमाणा २ चिट्ठंति) ते अष्टमभक्तानां तपस्या
धारण करता अने वाङ्मय सथारा उपर बैठे देखा तेको नग्न यधने उपरनी तरफ में
करीने त्रष्टु द्विस मुधी अनाहार अवस्थामा रहा. अने ते तपस्यामा तमष्टे जे तेमना
मेघमुखनामे कुण देवता छता तेमनु ध्यान क्यु. (तएणं तेसिमावाडचिलायाण अट्टम
भत्तसि परिणममाणसि मेहमुहाण णागकुमाराण देवाण आसणाइं चलति) ज्यारे ते आपात
किरातोनी अष्टमभक्तानां तपस्या समाप्त थल जवा आनी त्यारे ते मेघमुखनामके नागकुमार
देवाना आसने. कपायमान थया (तएण ते मेहमुहाणागकुमारा देवा आसणाइं चलिआइं
पासति) ज्यारे ते मेघमुख नामके देवाये पोत-पोताना आसना पकषित थता जेथा तो
(पासित्ता) जेथ- तेमष्टे (ओहिं पउजंति) पोत पोतानु अवधिज्ञान सप्रयुक्त क्यु (पउ
जित्ता आवाडचिलाए ओहिणा आभाएति) अवधिज्ञानने उपयुक्त करीने ते मेघमुखना-
मके नागकुमार देवाये पोतपोताना अवधिज्ञानथा आपातकिरातो न जेथा (आभाएत्ता

આમોગ્યન્તિ જાનન્તીત્યર્થઃ 'આમોગ્ય' આમોગ્ય-તાન્ જ્ઞાત્વા 'અણમણ્ણં સદાવેતિ' અન્યો
 ઽન્યં દેવાન્ દેવાઃ શબ્દયન્તિ આહર્યન્તિ 'સદાવિત્તા' શર્દ્ધાયત્વા તાન્ આહ્રય 'एवं वयासी'
 एवं વક્ષ્યમાણરીત્યા અવાદિપુઃ ઉક્તવન્તઃ કિમુક્તવન્તઃ, इत्याह- 'एवं खलु देवाणुप्पियाः'
 एवम् इत्थमस्ति खलुः-निश्चये देवानुप्रियाः ! 'जंबुद्वीवे दीवे उत्तरद्वभरहे वासे आवाड-
 चिलाया सिधूए महाणईए वालुया संथारोवगया उत्ताणगा अवसणा अट्टमभत्तिया अम्हे
 कुलदेवए मेहमुहे णागकुमारे देवे मणसी करेमाणा करेमाणा चिट्ठंति' जम्बूद्वीपे द्वीपे उत्त-
 रार्द्ध भरते वर्षे आपातकिराताः सिन्ध्वा महानद्यां वालुकासंस्तारकान् उपगताः प्राप्ताः
 उत्तानकाः ऊर्ध्वमुखाः ऊर्ध्वमुखशायिनः अवसनाः नत्तरहिताः अष्टमभक्तिकाः दिनत्रयम-
 नाहारिणः अस्मान् कुलदेवताः मेघमुखान् मेघमुखनामकान् नागकुमारान् देवान् मनसि
 कुर्वाणाः मनसि कुर्वाणस्तिष्ठन्तीति 'तं सेअं खलु देवाणुप्पिया ?' तम् श्रेयः खलु भोदेवा
 नुप्रियाः ! 'अम्ह आवाडचिलायाणं अंतिए पाउब्भवित्तएत्तिकद्दु अण्णमण्णस्स अंतिए
 पयमट्ठं पडिमुणेंति' अस्माकम् आपातकिरातानामंतिके प्रादुर्भवितुं समीपे प्रकटीभवितु-
 मिति कृत्वा पर्यालोच्य अन्योऽन्यस्यान्तिके एतमर्थम् अनंतरोक्तमभिधेयं प्रतिशृण्वन्ति अभ्यु-

(આમોગ્યતા અણમણ સદાવેતિ) દેવકર ઝન્ટોને ફિર આપસમે એક દૂસરે કો બુલાયા (સદા-
 વિત્તા એવ વયાસો) ઔર બુલાકર આપસ મે इस प्रकार से बातचीत करी (एवं खलु देवाणु-
 प्पिया । जंबुद्वीवेदीवे उत्तरद्वभरहे वासे आवाडचिलाया सिधूए महाणईए वालुयासंथारोवगया
 उत्ताणगा अवसणा अट्टमभत्तिया अम्हे कुलदेवए मेहमुहे णागकुमारे देवे मणसी करेमाणा
 करेमाणा चिट्ठंति) हे देवानुप्रियो ! सुनो-जम्बूद्वीप नाम के द्वीप में उत्तरार्द्ध भरत क्षेत्र में आपात
 चिलात नामवाले सिधु महानदी के ऊपर वालुका निर्मित सस्तारको पर अष्टम भक्त के तपस्या करते
 हुए बैठे हैं उन्होंने वज्रों का बिलकूल त्याग कर दिया है. और आकाश की ओर वे
 अपने-अपने मुख को ऊपर करके अपने कुलदेवता हम मेघकुमार नाम के नागकुमार देवों का
 ध्यान कर रहे हैं (त सेयं खलु देवाणुप्पिया । अम्ह आवाडचिलायाणं अंतिए पाउब्भवित्तए
 त्तिकद्दु अण्णमण्णस्स अंतिए पयमट्ठं पडिमुणेंति) इसलिये हे देवानुप्रियो ! हमलोगों का

અણમણ સદાવેતિ) બોધને તેમણે પછી પરસ્પર એક-બીજાને બોલાવ્યા (સદાવિત્તા एवं
 वयासी) બોલાવીને તેમણે પરસ્પર આ પ્રમાણે વાતો કરી. (एवं खलु देवाणुप्पिया) જમ્બુ
 द्वीवे द्वीवे उत्तरद्वभरहेवासे आवाडचिलाया सिधूए महाणईए वालुया संथारोवगया उत्ता-
 णगा अवसणा अट्टमभत्तिया अम्हे कुलदेवए मेहमुहे णागकुमारे देवे मणसी करेमाणा २ चि-
 ट्ठंति) हे देवानुप्रियो ! सांभलो, जम्बूद्वीप नामके द्वीपમાં उत्तरार्द्ध भरतक्षेत्रમાં आपात-
 किरातोसिधु महानदीनी ઉપર वालुका निर्मित सस्तारको ઉપર अष्टमभक्तानी तपस्या
 કરતા બેઠા છે તેમણે વજ્રોનો સાવ ત્યાગ કર્યો છે અને આકાશ તરફ ચો કરીને પોતાના
 કુળ દેવતા એટલેકે આપણા સર્વનું ધ્યાન કરી રહ્યા છે (तं सेयं खलु देवाणुप्पिया । अम्ह
 आवाडचियाणं अंतिए पाउब्भवित्तए त्तिकद्दु अण्णमण्णस्स अंतिए पयमट्ठं पडिमुणेंति)
 એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયો ! આ સ્થિતિમાં આપણા સર્વનું આ કર્તવ્ય છે કે હવે અમે

पगच्छन्ति परस्परं साक्षीकृत्य प्रतिज्ञातं कार्यमवश्यं कर्त्तव्यमिति दृढी भवतीत्यर्थः 'पडि
मुणेत्ता' प्रतिश्रुत्य अभ्युपगत्य 'ताए' उक्किट्ठाए तुरियाए जाव वीतिवयमाणा वीतिवय-
माणा जेणेव जंबुद्वीवे दीवे उत्तरद्ध भग्देवामे जेणेव सिंधु महानई जेणेव आवाडचिलाया
तेणेव उवागच्छन्ति' तेदेवासनया उत्कृष्टया त्वरितया यावत् चपल्या चण्डया पिहया दि-
व्यया देवगत्या व्यतिव्रजन्तो यत्रैव जम्बूद्वीपो द्वीपो यत्रैव उत्तरभरतार्द्धवर्ष यत्रैव सिन्धु-
महानदी यत्रैव चापातकिगताः तत्रैवोपागच्छन्ति 'उवागच्छिता' उपागत्य 'अंतलिकख-
पडिवण्णा सखिखिणियाइ पंचवण्णाइ वत्थाइं पवरपरिहिया ते आवाडचिलाए एवं वयामी'
अंतरिक्षप्रतिपन्ना. आकाशमार्गावलम्बिनः सन्निहिणीकानि पञ्चवर्णानि शुक्लनीलादि
पञ्चवर्णयुक्तानि वस्त्राणि प्रवराणि परिहिताः सन्तः तान् आपातकिरातान् एवं वक्ष्यमाण-
प्रकारेण अवादिपुः उक्तवन्तः, किमुक्तवन्त-इत्याह 'हभो' इत्यादि 'हभो आवाडचिलाया !
जणं तुम्हे देवानुप्पिया ! बाल्यासथारोवगया उत्ताणगा अवमणा अट्टममत्तिया अम्हे

कर्त्तव्य है कि अब हमलोग उन आपातकिरातो के पास चले इस प्रकार से आपस में विचार
करके उनलोगों ने उनके पास आने का निश्चय कर लिया (पडिमुणेत्ता ताए उक्किट्ठाए
तुरियाए जाव वीतिवयमाणा-वीतिवयमाणा जेणेव आवाडचिलाया तेणेव उवागच्छन्ति) पूर्वोक्तरूप से
निश्चय करके फिर वे उस उत्कृष्ट त्वरित दिव्य देवगति से चलते २ जहाँ पर जम्बूद्वीप
नाम का द्वीप था और उसमें भी जहाँ पर उत्तरार्द्ध भरत क्षेत्र था और उसमें भी जहाँ
पर सिंधु नाम की महानदी थी वहाँ पर आये (उवागच्छिता अंतलिकखपडिवण्णा सखिखि-
णियाइ पंचवण्णाइ वत्थाइं पवरपरिहिया ते आवाडचिलाए एवं वयामी) वहाँ आकर के
नोचे नहीं उतरे किन्तु आकाश में ही रहे और वहाँ से उन्होंने जोकि क्षुद्र घंटिमाओं से
युक्त श्रेष्ठ बलों को अच्छी तरह से अपने-२ शरीर पर धारण किये हुए हैं उन आपातकिरातों
से ऐसा कहा—(ह भो ! आवाडचिलाया ! जणं तुम्हे देवानुप्पिया बाल्यासथारोवगया
उत्ताणगा अवमणा अट्टममत्तिया अम्हे कुलदेवए मेहमुहे णागकुमारे देवे मणसी करेमाण-२
चिट्ठह) हे आपातकिरातों ! जो तुम लोग देवानुप्रिय बालुका निर्मित संशारों के ऊपर नग्न

सर्वे ते आपातकिरातो पासे अधये आ प्रभाणे परस्पर विचार करीने तेभण्णे तेभनी पासे
जवानो निश्चय करी लीधो (पडिमुणेत्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए जाव वीतिवयमाणा २
जेणेव जंबुद्वीवे दीवे उत्तरद्धभरहे वासे जेणेव सिंधू महानई जेणेव आवाडचिलाया तेणेव
उवागच्छन्ति) आ प्रभाणे निश्चय करीने पछी तेणो सर्वे उत्कृष्ट त्वरित यावत् दिव्य देव-
गतिथी आसता-आसता जयां ज'ज्जुद्वीप हतो आने तेमा पण्ण जया उत्तरार्द्ध भरतक्षेत्रहत्तु'
आने तेमा पण्ण जया सिंधु नामक महानदी हती त्यां आया (उवागच्छिता अंतलिकख
पडिवण्णा सखिखिणियाइ पंचवण्णाइ वत्थाइ पवरपरिहिया ते आवाडचिलाए एवं वयामी
त्यां पडोय्थीने तेणो नीचे नहीं उतरता आकाशमा ज स्थिर रक्षा आने त्याथी ज तेभण्णे
के जेभण्णे क्षुद्रघंटिकाओथी युक्त श्रेष्ठबल्लोने सारी रीते पोताना शरीर ऊपर धारण करी
राज्या छे जेवा नागकुमारदेवोओ-ते आपात किरातो ने आ प्रभाणे कछु—(ह भो ! आवा

કુલદેવણ મેહમુદ્દે નાગકુમારે દેવે મળસી કરેમાણા કરેમાણા ચિદ્વહ્નિં હંમો ! ઇતિ સમ્બો-
ધને આપાતકિરાતાઃ યત્ત્વં નં વાક્યાલક્ષ્ણારે યુયં દેવાનુપ્રિયાઃ ! વાલુકા સસ્તારકોપગતાઃ
ઉત્તાનકાઃ અવમનાઃ અષ્ટમમત્તિકાઃ અસ્માન્ કુલદેવતાઃ મેઘમુલ્લાન્ નાગકુમારાન્ દેવાન્
મનસિ કુર્વાણાઃ મનસો કુર્વાણાસ્તિપ્ત્વત્ 'તણ્ણં અમ્હે મેહમુદ્દા નાગકુમારા દેવા તુમ્મ કુલ-
દેવયા તુમ્મં અંતિઅણ્ણ પાઽબ્બૂયા' તત્તો વયં મેઘમુલ્લા નાગકુમારા દેવા યુષ્માકં કુલદેવતા
સન્તો યુષ્માકમન્તિકં પ્રાદુર્ભૂતાઃ-પ્રકટીભૂતાઃ 'તંવદહ્નં ન દેવાણુપિયા ! કિં કરેમો કેવ મે
મળસાહ્ણ' તદ્વદત્ત સ્વલ્લ દેવાનુપ્રિયાઃ ! કિં કુર્મઃ કિં કાર્યં વિદ્ધમઃ કિંવા 'મે' મનતાં મનઃ
સ્વાદિતં મનોઽમીષ્ટમ્ અથ કુલદેવતા પ્રશ્નનન્તર તે આપાતકિરાતાઃ યદભિલપિતવન્તઃ
તદાહ- 'તણ્ણં' ઇત્યાદિ 'તણ્ણતે આવાહચિલાયા મેહમુદ્દાણં નાગકુમારાણં દેવાણં અંતિ
ણમદ્ધ સોચ્ચા ણિસમ્મ હદ્ધતુદ્ધચિત્તમાણદિયા જાવ હિયયા ઉદ્ધાણ ઉદ્ધેતિ' તતઃ સ્વલ્લ તે
આપાતકિરાતાઃ મેઘમુલ્લાનાં નાગકુમારાણાં દેવાનામન્તિકેણ તત્તમર્થે પ્રોક્તવચનં શ્રુત્વા નિશ્ચય

બનકર આકાશ કી ઓર મુંઝ કરકે અદ્ધમ મક્ક કી તપસ્યા કર રહે હો ઓર અપને કુલ-
દેવતા મેઘમુલ્લ નામ કે નાગકુમાર દેવો કા મન મેં ધ્યાન કર રહે હો (તણ્ણં અમ્હે મેહમુદ્દા
નાગકુમારા દેવા તુમ્મં કુલદેવયા તુમ્મં અતિઅણ્ણં પાઽબ્બૂયા) સો હમારે મેઘમુલ્લ નામ કે
નાગકુમાર દેવ જો કિ તુમ્હારે કુલદેવતા હૈં તુમ લોગોં કે પાસ આયે હૈં (તં વદહ્નં નં
દેવાનુપિયા ! કિં કરેમો કેવ મે મળસાહ્ણ ?) તો હે દેવાનુપ્રિયો આપલોગ કહિયે હમ લોગ
કયા કરે આપલોગોં કા મનોમીષ્ટિત કયા હૈ કયા-આપકી અમિલાષા હૈ * (તણ્ણં તે આવાહ-
ચિલાયા મેહમુદ્દાણં નાગકુમારાણં દેવાણં અતિણ્ણં ણિમમ્મ હદ્ધતુદ્ધ ચિત્તમાણદિયા
જાવ હિયયા ઉદ્ધાણ ઉદ્ધેતિ) હસ પ્રકાર કા કથન જબ ડન આપાતકિરાતોં ને ડન મેઘમુલ્લ નામ
કે નાગકુમાર દેવોં સે સુના તો યહ સુન કર ઓર ડસકા અચ્છી તરહ સે નિશ્ચય કર વે સબ
આપાતકિરાત વહે હી હર્ષિત હુણ ઓર વહે હી સંતુષ્ટ હુણ યાવત્ ડનકા હૃદય હર્ષ કે વશ

હચિલાયા જણં તુમ્મે દેવાણુપિયા વાલુકાસંચારોગયા ઉત્તાનકા અવસણા અદ્ધમમત્તિયા
અમ્હે કુલદેવણ મેહમુદ્દે નાગકુમારે દેવે મળસી કરેમાણા ૨ ચિદ્વહ્નિં હે આપાતકિરાતો !
હે જેઓ દેવાનુપ્રિય તમે વાલુકા નિર્મિત સંચારાઓ ઉપર આસીન થઇને નગ્ન અવસ્થા
માં આકાશ તરફ મો કરીને અદ્ધમમત્તની તપસ્યા કરી રહ્યા છો અને પોતાના કુલદેવતા
મેઘમુલ્લાનામક નાગકુમાર દેવાનુ મનમાં ધ્યાન કરી રહ્યા છો (ત તણ્ણં અમ્હે મેહમુદ્દા નાગ-
કુમારા દેવા તુમ્મં કુલદેવયા તુમ્મં અતિઅણ્ણં પાઽબ્બૂયા) તો અમે તમારા કુલદેવતા
મેઘમુલ્લ નામક નાગકુમાર દેવો તમારી સામે પ્રકટ થયા છીએ (તં વદહ્નં નં દેવાણુપિયા !
કિં કરેમો કેવ મે મળસાહ્ણ ?) તો હે દેવાનુપ્રિયો ! જાહો, અમે તમારા માટે શુ કરીએ
તમારો મનોરથ શો છે ? તમારી અમિલાષા અમારી સમક્ષ પ્રકટ કરો. (તણ્ણં તે આવાહ-
ચિલાયા મેહમુદ્દાણં નાગકુમારાણં દેવાણં અતિણ્ણં ણિમમ્મ હદ્ધતુદ્ધચિત્તમાણ
દિયા જાવ હિયયા ઉદ્ધાણ ઉદ્ધેતિ) આ પ્રમાણેનું કથન આપાત કિરાતોએ મેઘમુલ્લ નામક
નાગકુમાર દેવોના સુખની સાંભળીને અને તે સંબંધમાં સારી રીતે નિશ્ચય કરીને તેઓ

हृदि अवधार्य हृष्टतृप्तिचिन्तानन्दिताः यावत् हृदयाः परमसौमनस्यताः स तः उत्थया
 उत्थानम् उत्था ऊर्ध्वं भवनं तया उत्तिष्ठति ऊर्ध्वी भवन्तीत्यर्थः 'उद्धिता' उत्थाय 'जेणेव
 मेहमुहा णागकुमारा देवा तेणेव उवागच्छन्ति' ते आपातकिराता यत्रैव मेहमुखा नागकु-
 मारा देवा तत्रैव उपागच्छन्ति 'उवागच्छिता' उपागत्य 'करयलपरिग्गहिय जाव मत्थए
 अंजलिं कट्ठु मेहमुहे णागकुमारे देवे जएणं विजएणं वद्धावेंति' करतलपरिगृहीतं यावन्
 दशनखं शिरसावत्तं मस्तके अठजलिं कृत्वा मेघमुखान् नागकुमारान् देवान् जयेन विज-
 येन च जयविजयशब्दाभ्यां वर्द्धयन्ति 'वद्धावित्ता' वर्द्धयित्वा 'एवं वयासी' एव वक्ष्यमाण-
 प्रकारेण अवादिषुः उक्तवन्तस्ते आपातकिराताः, किमुक्तवन्त इत्याह-'एसणं देवाणुप्पिया!
 केइ अपत्थियपत्थए दुरंतपंतलक्खणे जाव हिरिसिरिपरिवज्जिए जेणं अम्हं विसयस्स
 उवरिं विरिएणं हव्वमागच्छइ' हे देवानुप्रियाः ! एष खलु कः अप्रार्थितप्रार्थकः अप्रार्थितम्
 अमनोरथगोचरीकृतं मरणमिति भावः तस्य प्रार्थको अभिलाषी, तथा दुरन्तणान्तलक्षणः,
 दुरन्तानि दुष्टावसानानि प्रान्तानि तुच्छानि लक्षणानि यस्य स तथा यावत्पदात् हीनपुण्य

से उल्लेखने लगा-यह यावत्पद ते "परम सौमनस्यता सन्तः" इन पदों का ग्रहण हुआ है
 वे सबके सब स्वयं खड़े हुए (उद्धिता जेणेव मेहमुहा णागकुमारा देवा तेणेव उवागच्छन्ति)
 और ऊठकर फिर वे जहां पर मेघमुख नाम के नागकुमार देव थे वहां पर आये (उवाग-
 च्छिता करयलपरिग्गहिय जाव मत्थए अंजलिं कट्ठु मेहमुहे णागकुमार देवे जएणं विजएणं
 वद्धावेंति) वहां आकरके उन्होंने दानों हाथों की अंजलि बनाकर यावन् उसे मस्तक पर धर
 कर उन मेघमुखनागकुमार देवों को जय विजय शब्दों से वधाई दी (वद्धावित्ता एव वयासी)
 और वधाई देकर फिर उन्होंने उ० से ऐसा कहा- (एसणं देवाणुप्पिए केइ अपत्थियपत्थिए
 दुरंतपंतलक्खणे जाव हिरिमिग्गिग्गिजए जेणं अम्हं विसयस्स उवरिं विरिएणं हव्वमागच्छइ)
 हे देवानुप्रिय ! यह कौन है जो हमारे देश पर जवर्दस्ती आक्रमण करके बिना मौत के अपनी
 मौत का अभिलाषी हो रहा है पता पड़ता है कि हीन पुण्य चतुर्दशी में जन्म हुआ है यह

सर्वे अतीव हर्षित तेभञ्च स तुल्यं यथा यावत् तेभनां हृदये हर्षावेशथी उल्लेखना आग्यां
 अच्छी यावत् पदथी (परमसौमनस्यता सन्तः) के पदोक्त अहंशु यथु छे तेओ सर्वे
 आभा यथा (उद्धिता जेणेव मेहमुहा णागकुमारा देवा तेणेव उवागच्छन्ति) अने आभायधने
 पछी तेओ न्यां मेघमुख नामके नागकुमारो इता त्या आग्या (उवागच्छिता करयल-
 परिग्गहिय जाव मत्थए अंजलिं कट्ठु मेहमुहे णागकुमारे देवे जएणं विजएणं वद्धावेंति) त्या
 पछोअथी ने तेभण्णे अन्ने दाओअथी अञ्जलिं धनावीने यावत् ते अञ्जलि ने मस्तके उपर भूषी
 ने ते मेघमुखनागकुमार देवाने अथ-विजय शब्दोअथी वधाभण्णी आपी, (वद्धावित्ता एव
 वयासी) अने वधाभण्णी आपीने तेभण्णे ते देवाने आ प्रभाण्णे कछु- (एसणं देवाणुप्पिए
 केइ अपत्थियपत्थिए दुरंतपंतलक्खणे जाव हिरिसिरिपरिवज्जिए जेणं अम्हं विसयस्स
 उवरिं विरिएणं हव्वमागच्छइ) हे देवानुप्रिय ! ओ कौण्णे छे ? हे ने अभाग वतन उगर
 भलात् आक्रमण करीने वगर मृत्युओ पोताना मृत्युने आभरण आपी रह छे ओम

कुलदेवण मेहमुहे णागकुमारे देवे मणसी करेमाणा करेमाणा चिह्णं हभो । इति सम्बो-
धने आपातकिराताः यत् णं वाक्यालङ्कारे यूयं देवानुप्रियाः ! बालुका सस्तारकोपगताः
उत्तानकाः अवमनाः अष्टमभक्तिकाः अस्मान् कुलदेवताः मेघमुखान् नागकुमारान् देवान्
मनसि कुर्वाणाः मनसो कुर्वाणास्तिष्ठत 'तएण अम्हे मेहमुहा णागकुमारा देवा तुम्ह कुल-
देवया तुम्हं अंतिअण्ण पाउब्भूया' ततो वयं मेघमुखा नागकुमारा देवा युष्माकं कुलदेवता
सन्तो युष्माकमन्तिकं प्रादुर्भूताः-प्रकटीभूताः 'तंवदह ण देवाणुप्पिया ! किं करेमो केव मे
मणसाइए' तद्वदत् खलु देवानुप्रियाः ! किं कुर्मः किं कार्यं विदध्मः किंवा 'मे' भनतां मनः
स्वादितं मनोऽभीष्टम् अथ कुलदेवता प्रश्नानन्तरं ते आपातकिराताः यदभिलषितवन्तः
तदाह—'तएणं' इत्यादि 'तएणते आवाडचिछाया मेहमुहाणं नागकुमाराणं देवाणं अंतिए
एयमद्व सोच्चा णिसम्म हट्टतुट्टचित्तमाणदिया जाव हियया उट्ठाए उट्टेति' ततः खलु ते
आपातकिराताः मेघमुखानां नागकुमाराणां देवानामन्तिके एतमर्थं प्रोक्तवचनं श्रुत्वा निश्चय्य

बनकर आकाश की ओर मुंह करके अष्टम भक्त की तपस्या कर रहे हो और अपने कुल-
देवता मेघमुख नाम के नागकुमार देवों का मन में ध्यान कर रहे हो (तएणं अम्हे मेहमुहा
णागकुमारा देवा तुम्ह कुलदेवया तुम्ह अतिअण्ण पाउब्भूया) सो हमारे मेघमुख नाम के
नागकुमार देव जो कि तुम्हारे कुलदेवता हैं तुम लोगों के पास आये हैं (तं वदह णं
देवानुप्पिया ! किं करेमो केव मे मणसाइए ?) तो हे देवानुप्रियो आपलोग कहिये हम लोग
क्या करे आपलोगों का मनोभीष्टित क्या है क्या—आपकी अभिलाषा है ? (तएणं ते आवाड-
चिछाया मेहमुहाणं नागकुमाराणं देवाणं अतिए एयमद्व सोच्चा णिसम्म हट्टतुट्ट चित्तमाणदिया
जाव हिययाउट्ठाए उट्टेति) इस प्रकार का कथन जब उन आपातकिरातों ने उन मेघमुख नाम
के नागकुमार देवों से सुना तो यह सुन कर और उसका अच्छी तरह से निश्चय कर वे सब
आपातकिरात बड़े ही हर्षित हुए और बड़े ही संतुष्ट हुए यावत् उनका हृदय हर्ष के वश

डचिछाया जणं तुम्हे देवाणुप्पिया बालुयासंथारोवगया उत्ताणगा अवसणा अट्ठमभक्तिया
अम्हे कुलदेवण मेहमुहे णागकुमारे देवे मणसी करेमाणा २ चिह्णं हे आपातकिरातो ।
हे जेओ देवानुप्रिय तमे बालुका निर्मित स थाराओ। उपर आसीन थछने नग्न अवस्था
भां आकाश तरङ्ग में करीने अष्टमभक्तानी तपस्या करी-रह्या छे। अने पोताना कुलदेवता
मेघमुखनामक नागकुमार देवानु मनभां ध्यान करी रह्या छे। (त एण अम्हे मेहमुहा णाग-
कुमारा देवा तुम्हं कुलदेवया तुम्ह अतिअण्ण पाउब्भूया) तो अमे तभारा कुलदेवता
मेघमुख नामक नागकुमार देवे तभारी साथे प्रकट थया छीओ (त वदह णं देवाणुप्पिया !
किं करेमो केव मे मणसाइए ?) तो हे देवानुप्रियो । जोहो, अमे तभारा भाटे शु करीओ
तभारे भनो-रथ शे। छे ? तभारी अभिलाषा अभारी समक्ष प्रकट करे। (तएणं ते आवा-
डचिछाया मेहमुहाणं नागकुमाराणं देवाणं अतिए एयमद्व सोच्चा णिसम्म हट्टतुट्टचित्तमाणं
दिया जाव हियया उट्ठाए उट्टेति) आ प्रभावेतु कथन आपात किरातोओ मेघमुख नामक
नागकुमार देवाना मुखनी साक्षणीने अने ते स ज धमा सारी रीते निश्चय करीने तेओ।

हृदि अवधार्य हृष्टतृप्तिचिन्तानन्दिताः यावत् हृदयाः परमसौमनस्यताः सन्तः उत्थया
उत्थानम् उत्था ऊर्ध्वं भवनं तत्र उत्तिष्ठति ऊर्ध्वं भवन्तीत्यर्थः 'उत्तिष्ठा' इत्याय 'जेणेव
मेहमुहा णागकुमारा देवा तेणेव उवागच्छन्ति' ते आपातकिराता यत्रैव मेहमुखा नागकु-
मारा देवा तत्रैव उपागच्छन्ति 'उवागच्छिता' उपागत्य 'करयलपरिगहिय जाव मत्थए
अंजलिं कट्ठु मेहमुहे णागकुमारे देवे जएणं विजएणं वद्धावेति' करतलपरिगृहीतं यावत्
दशनखं शिरसावर्त्त मस्तके अठजलिं कृत्वा मेघमुखान् नागकुमागन् देवान् जयेन विज-
येन च जयविजयशब्दाभ्यां वर्द्धयन्ति 'वद्धावित्ता' वर्द्धयित्वा 'एवं वयासी' एव वक्ष्यमाण-
प्रकारेण अवादिषुः उक्तवन्तस्ते आपातकिराताः, किमुक्तवन्त इत्याह- 'एसणं देवाणुप्पिया।
केइ अपत्थियपत्थए दुरंतपंतलक्खणे जाव हिरिसिरिपरिवज्जिए जेणं अम्हं विसयस्स
उवरिं विरिएण हव्वमागच्छइ' हे देवानुप्रियाः ! एष खलु कः अप्रार्थितप्रार्थकः अप्रार्थितम्
अमनोरथगोचरीकृतं मरणमिति भावः तस्य प्रार्थको अभिलाषी, तथा दुरन्तान्तलक्षणः,
दुरन्तानि दुष्टावसानानि प्रान्तानि तुच्छानि लक्षणानि यस्य स तथा यावत्पदात् हीनपुण्य

से उछलने लगा-यहा यावत्पद ते "परम सौमनस्यता सन्तः" इन १९वें का ग्रहण हुआ है।
वे सबके सब स्वयं खड़े हुए (उत्तिष्ठा जेणेव मेहमुहा णागकुमारा देवा तेणेव उवागच्छन्ति)
और ऊठकर फिर वे जहां पर मेघमुख नाम के नागकुमार देव थे वहां पर आये (उवाग-
च्छिता करयलपरिगहिय जाव मत्थए अंजलिं कट्ठु मेहमुहे णागकुमारे देवे जएणं विजएणं
वद्धावेति) वहां आकरके उन्होंने दोनों हाथों की अंजलि बनाकर यावत् उसे मस्तक पर धर
कर उन मेघमुखनागकुमार देवों का जय विजय शब्दों से बधाई दी (वद्धावित्ता एव वयासी)
और बधाई देकर फिर उन्होंने ३०.से ऐसा कहा- (एसणं देवाणुप्पिए केइ अपत्थियपत्थिए
दुरंतपंतलक्खणे जाव हिरिसिरिपरिगज्जिए जेणं अम्हं विसयस्स उवरिं विरिएणं हव्वमागच्छइ)
हे देवानुप्रिय ! यह कौन है जो हमारे देश पर जवर्दस्ती आक्रमण करके वेना मौत के अपनी
मौत का अभिलाषी हो रहा है पता पड़ता है कि हीन पुण्य चतुर्दशी में जन्म हुआ है यह

सर्वे अतीव हर्षित तेभञ्ज स तुष्ठा यथा यावत् तेभनां हृदये हृषविशयी उछलवा लाज्यां
अही यावत् पदथी (परमसौमनस्यता सन्तः) जे पढोतु अहं थयु छे तेजो भवे
जिभा थया (उत्तिष्ठा जेणेव मेहमुहा णागकुमारा देवा तेणेव उवागच्छन्ति) अने जिभाथधने
ज्ही तेजो ज्यो मेघमुख नामक नागकुमारे। इता त्या आब्था (उवागच्छिता करयल-
परिगहिय जाव मत्थए अंजलिं कट्ठु मेहमुहे णागकुमारे देवे जएणं विजएणं वद्धावेति) त्या
पढोथी ने तेभजे अने दाथोनी अज्जि पनावीने यावत् ते अज्जि ने मस्तक उपर भूकी
ने ते मेघमुखनागकुमार देवाने जय-विजय शब्दोथी वधाभषी आपी, (वद्धावित्ता एव
वयासी) अने वधाभषी आपीने तेभजे ते देवाने आ प्रभाजे कथु- (एसणं देवाणुप्पिए
केइ अपत्थियपत्थिए दुरंतपंतलक्खणे जाव हिरिसिरिपरिवज्जिए जेणं अम्हं विसयस्स
उवरिं विरिएण हव्वमागच्छइ) हे देवानुप्रिय ! जे केजु छे ? हे जे अभाग पतन उपर
पलात् आक्रमण करीने वगर मृत्युजे पाता। मृत्युने आभ तथु आपी रह्य छे जेभ

ચાતુર્દશઃ હીનાયાં પુણ્ય ચતુર્દશ્યાં જાતો હીનપુણ્ય ચાતુર્દશઃ, તન્ન ચતુર્દશી સ્વલ્પ તિથિર્જન્માશ્રિતા પુણ્યા શુભા ચ ભવતિ સાઽતિભાગ્યવતો જન્મનિ ભવતિ અત આક્રોશતા इत्य-
મુક્તા તયા હીનઃ इत्यર્થઃ, તથા હી શ્રીપાર્શ્વર્જિતઃ દ્વિયા લઙ્ગજયા શ્રિયા શોમયા પરિવ-
ર્જિત. યઃ સ્વલ્પ અસ્માકં વિષયસ્ય દેશસ્યોપરિ વીર્યેણ આક્રમણાત્મકશક્ત્યા હૃવ્યં શીઘ્રમાગ-
ચ્છતિ આક્રમતિ 'ત તદ્દાણં ઘત્તેહ દેવાણુપ્પિયા ! જદ્દાણં એસ અમ્હં વિસયસ્સ ઉવરિં વિરિ-
ણં ણો હવમાગચ્છહ' હૈ દેવાનુપ્રિયાઃ ! તત્ તથા તેન પ્રકારેણ સ્વલ્પ એનમ્ 'ઘત્તેહ' પ્રક્ષિ-
પત દૂરીકુરુન યથા સ્વલ્પ એપઃ અસ્માકં વિષયસ્યોપરિ વીર્યેણ હૃવ્યં નાગચ્છેત્ અથ યન્મે-
ધમુસ્યા ઉક્તવન્તસ્તદાહ—'ત ઇણં તે' इत्यादि'તણંતે મેહમુદ્દા ણાગકુમારા દેવા તે આવાહ-
ચિલાપ્ એવં વયાસી' તતઃ સ્વલ્પ તે મેઘમુસ્યા નાગકુમારા દેવાઃ તાન્ આપાતકિરાતાન્
એવં વક્ષ્યમાણપ્રકારેણ અવાદિષુઃ કથિતવન્તઃ 'એસણં મો દેવાણુપ્પિયા ! મરહે ણામં

શુભલક્ષણો સે હીન હૈ કેવલ દુષ્ટાવસાનવાલે તુષ્ઠ લક્ષણો સે હી યહ યુક્ત પ્રતીત હોતા હૈ. યહ નિર્લંબ હૈ એવ શ્રી—શોમા સે રહિત હૈ. નિસકે જન્મ સમય મેં ચતુર્દશી તિથિ પૂણ્યા ઔર શુભ હોતી હૈ વહ અતિ ભાગ્યવાન્ હોતા હૈ અતિભાગ્યશાલી કે જન્મ સમય મેં હી એસી ચતુર્દશી હોતી હૈ યહ શબ્દ જબ અધિક્ર ક્રોધ કા આલેગ બઢા જાતા હૈ તબ કહા જાતા હૈ, (તં તદ્દાણં ઘત્તેહ દેવાણુપ્પિયા ! જદ્દાણં એસ અમ્હં વિસયસ્સ ઉવરિં વિરિણં ણો હવમાગચ્છહ) હસલિપ્ હૈ દેવા-
નુપ્રિયો ! હસે તુમ હસ પ્રકાર સે દૂર કરો કિ નિસસે યહ હમારે દેશ કે ઉપર જબર્દસ્તી આક્ર-
મણ નહીં કર પાવે (તણં તે મેહમુદ્દા ણાગકુમારા દેવા તે અવાહચિલાપ્ એવં વયાસી એસણં મો દેવાણુપ્પિયા ! મરહે ણામં રાયા ચાઽરંતચક્કવટ્ટી મહિલ્લિપ મહજ્જુદ્દપ જાવ મહાસોક્ષ્ણે, ણો સ્વલ્પ એસ સવ્વકો કેણહ દેવેણ વા દાણવેણ વા કિણ્ણરેણ વા કિપુરિસેણ વા મહોરેણ વા ગઘવેણ વા સત્થપ્પઓગેણ વા મત્તપ્પઓગેણ વા ઉહવિત્તપ્ પહિસેહિત્તપ્વા) ડન આપાતકિરતો

લાગે છે કે એનો જન્મ હીન પુણ્ય ચતુર્દશીના દિવસે થયેલો છે એ શુભલક્ષણોથી હીન છે. શકત દુષ્ટાવસાનવાળા તુષ્ઠ લક્ષણોથી જ એ યુક્ત પ્રતીત થાય છે. એ નિર્લંબ છે તેમજ શ્રી—શોમા—થી રહિત છે એના જન્મ સમયમાં ચતુર્દશી તિથિ પુણ્યકારક અને શુભ હોય છે તે અતિ ભાગ્યવાન હોય છે. અતિ ભાગ્યશાલીના જન્મ સમયે એવી ચતુર્દશી હોય છે. એવા અર્થ વાચક એ શબ્દ જ્યારે ક્રોધાલેગ પધી જાય છે ત્યારે બ્યગ્ય માફેવામાં આવે છે. (તં તદ્દાણં ઘત્તેહ દેવાણુપ્પિયા ! જદ્દાણં એસ અમ્હં વિસયસ્સ ઉવરિં વીરિણં ણો માગચ્છહ) એથી હે દેવાનુપ્રિય ! આને તમે એવી રીતે દૂર નસાડી મૂકો કે એથી એ અમારા વતન ઉપર ફરીથી બલાત્ આક્રમણ કરી શકે નહીં. (ત ઇણં તે મેહમુદ્દા ણાગકુ-
મારા દેવા તે આવાહચિલાપ્ એવં વયાસી—એસણ મો દેવાણુપ્પિયા ! મરહે ણામ રાયા ચાઽરંતચક્કવટ્ટી મહિલ્લિપ મહજ્જુદ્દપ જાવ મહાસોક્ષ્ણે, ણો સ્વલ્પ એસ તે કેણહ દેવેણ વા દાણવેણ વા કિણ્ણરેણ વા કિપુરિસેણ વા મહોરેણ વા ગઘવેણ વા સત્થપ્પ-
ઓગેણ વા મત્તપ્પઓગેણ વા ઉહવિત્તપ્ પહિસેહિત્તપ્ વા) તે આપાત કિરાતાના સુખથી આ પ્રમાણે વાત સાંભળીને તે શ્રેષ્ઠમુખ નામક નાગકુમાર દેવાએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું

રાયા ચાતુરંતચક્રવર્ત્તોમહિદ્વીપ મહજ્જુદેપ જાવ મહાસૌલ્લે' મો દેવાનુપ્રિયાઃ એપઃ સ્ખલુ
મરતો નામ રાજા ચાતુરંતચક્રવર્ત્તો ચત્વારોઽન્તાઃ પૂર્વાપદક્ષિણસમુદ્રાસ્ત્રયઃ ચતુર્થોદિમ-
વાન્ હત્યેવં સ્વરૂપાસ્તે વચ્ચતયાઽસ્ય સન્તીતિ ચાતુરંતઃ તતશ્ચક્રવર્ત્તિપદેન કર્મધારયઃ તથા
મહદ્વિકઃ મહતી ઋદ્ધિર્નિધાનાદિર્યસ્ય સ તથા, તથા મહાધૃતિકઃ અત્યન્તકાંતિમાનઃ
આમરણરત્નાદિ સમ્પન્નઃ યાવન્મહાસૌલ્લેયઃ યાવત્પદાત્ 'મહાવલ્લે મહાજસે' મહાવલ્લશાલી-
મહાયશસ્કઃ અતિસુખસમ્પન્નઃ 'જો સ્ખલુ એસ સવ્કો કેળઈ દેવેળ વા દાળવેળ વા કિણ્ણરેળ
વા કિંપુરિસેળ વા મહોરેળ વા ગંધર્વેળ વા સત્થપ્પઓગેળ વા અગ્ગિપ્પઓગેળ વા
મત્થપ્પઓગેળ વા ઉદ્ધવિત્તપ્પ પહિસેહિત્તપ્પ વા' ઉક્તવિશેષણવિશિષ્ટઃ એપ મરતો નો સ્ખલુ
શક્યઃ કેનચિત્ દેવેન વા દાનવેન વા કિન્નરેળ વા કિંપુરુષેળ વા વ્યન્તરદેવ વિશેષેળ
મહોરેળ વા ગન્ધર્વેળ વા શસ્ત્રપ્રયોગેળ વા સ્વદ્વાદિશસ્ત્રેળ વા અગ્નિપ્રયોગેળ વા મન્ત્ર-
પ્રયોગેળ વા, ત્રયાણામપિ ઉત્તરોત્તરબલાધિકંતિ, ઉપદ્રવયિતું વા ઉપદ્રવં કર્તુમ્ના પ્રતિષે-
ધયિતું વા નિષેધયિતું વા યુગ્મદેશાક્રમણતો નિવર્તયિતુમિતિ, સર્વત્ર વા શબ્દઃ સમુચ્ચયાર્થઃ

કે મુલ્લ સે હસ પ્રકાર કી બાત સુનકર ઠન મેઘમુલ્લ નામ કે નાગકુમારો ને ઠનસે એસા કહા-
હે દેવાનુપ્રિયો ! યહ મરત નામ કા મહારાજા હૈ. યહ પૂર્વ અપર ઔર દક્ષિણ હન ત્રીન સમુદ્રો
કા ઔર ચતુર્થ હિમવાન્ હન ચાર રૂપ અન્તો કા વશ કરનેવાલા હૈ હસલિપ્પ યહ ચાતુરંત
ચક્રવર્તી કહા ગયા હૈ હસકો નિધાનાદિ ઋદ્ધિ બહુત હી ચઢો વઢી હુઈ હૈ. આમરણાદિકો કી
કાન્તિ સે સદા યહ પ્રકાશિત રહતા હૈ. યાવત્ યહ મહા સૌલ્લેય કા મોક્ષા હૈ. યહાં યાવત્પદ સે
“મહાવલ્લે, મહાજસે” હન પદો કા સંપ્રહ હુઆ હૈ યહ કિસી મો દાનવ કે દ્વારા, યા કિસી
મો કિન્નર કે દ્વારા યા કિસી મો કિંપુરુષ કે દ્વારા, યા કિસી મો મહોરગ કે દ્વારા યા કિસી
મો ગંધર્વ કે દ્વારા શસ્ત્ર પ્રયોગ સે યા અગ્નિ પ્રયોગ સે યા મન્ત્ર પ્રયોગ સે ઉપદ્રવિત નહીં ક્રિયા
જા સકતા હૈ । ઔર ન યહ યહા સે છોટાયા હી જા સકતા હૈ । “શસ્ત્રેભ્યોઽગ્નિસ્તસ્માન્મન્ત્રો
બલાધિકઃ.” હસ કથન કે અનુસાર ઉત્તરોત્તર બલાધિક્ય પ્રકટ કરને કે લિયે” શસ્ત્ર પ્રયોગ
સે યા અગ્નિ પ્રયોગ સે યા મન્ત્ર પ્રયોગ સે” એસા કહા હૈ । યહાં સર્વત્ર વા શબ્દ સમુચ્ચ

હે દેવાનુપ્રિયો ! એ મરત નામે રાજા છે. એ પૂર્વ અપર અને દક્ષિણ એ ત્રણે સમુદ્રોને
અને ચતુર્થ હિમવાન ને એ ચાર સીમા રૂપ અન્તોને વશમાં કરનાર છે એથી એને ચાતુ-
રંત ચક્રવર્તી કહેવામા આવેલ છે. એની નિધાન આદિ રૂપ ઋદ્ધિ અતીવ વિપુળ છે.
આમરણાદિકોની કાંતિથી એ સર્વદા પ્રકાશિત રહે છે. યાવત્ એ મહાસૌલ્લેયલોહિતા છે.
અહીં યાવત્ પદથી ‘મહાવલ્લે, મહાજસે’ એ પદોનુ ગ્રહણ થયું છે એ કોઈ પણ દેવ વડે
કે કોઈ પણ કિન્નર વડે કે કોઈ પણ કિંપુરુષ વડે કે કોઈ પણ મહોરગ વડે કે કોઈ પણ
ગન્ધર્વ વડે, શસ્ત્રપ્રયોગથી કે અગ્નિપ્રયોગથી તેમજ મન્ત્રપ્રયોગ થી ઉપદ્રવિત થઈ શકતો
નથી તથા એને અહીં થી પાછાપણ ફેરવી શકાતા નથી “શસ્ત્રેભ્યોઽગ્નિસ્તસ્માન્મન્ત્રોબલાધિકઃ.”
એ કથન સુજળ ઉત્તરોત્તર બલાધિક્ય પ્રકટ કરવામાટે ‘શસ્ત્ર પ્રયોગથી કે અગ્નિ પ્રયોગ
થી કે મન્ત્ર પ્રયોગથી ‘આ પ્રમાણે કહેવામાં આવ્યું છે. અહીં સર્વત્ર વા શબ્દ સમુચ્ચ-

‘तद्वाचि अ णं तुष्मं पियद्वयाए भरहस्स रण्णो उवसग्ग करेमोत्तिकद्दु तेसिं आवाडच्चिला-
याणं अंतियाओ अवक्कमंति’ तथापि इत्थमसाध्ये कार्ये सत्यपि च खलु युष्माकं प्रियार्थतायै
प्रीत्यर्थं भरतस्य राज्ञः उपसर्गं कुर्म इति कृत्वा तेषामापातकिरातानामान्तकाद् अपक्रामन्ति
यान्ति इति प्रतिज्ञातवन्तः ततः किं कृतवन्तस्ते देवा इत्याह ‘अवक्कमिन्ता’ अपक्रम्य
‘वेउव्वियसमुग्घाएण सम्मोहणति’ इत्यादि वैक्रियसमुद्घातेन उत्तरवैक्रियार्थकप्रयत्न-
विशेषेण समवघ्नन्ति आत्मप्रदेशान् विक्षिपन्ति शरीराद् बहिर्विकिरतीत्यर्थः ‘समोह-
णित्ता मेहाणीअं चिउव्वंति’ समवहत्य आत्मप्रदेशान् विक्षिप्य तैरात्मप्रदेशैर्गृहीतैः पुद्गलैः
मेघानोकम् अभ्रपटलं विकुर्वन्ति निर्मान्ति ‘विउव्वित्ता जेणेय भरहस्स रण्णो विजयक्ख-
धावारनिवेशे तेणेव उवागच्छति’ विकुर्व्य मेघपटलं निर्माय यत्रैव भरतस्य राज्ञो विजय-
स्कन्धावारनिवेशः तत्रैव उपागच्छन्ति ‘उवागच्छित्ता उप्पिं विजयक्खंधावारनिवेशस्स
खिप्पामेव पतणुतणायति खिप्पामेव विज्जुयायंति’ उपागत्य विजयस्कन्धावारनिवेश-
स्योपरि क्षिप्रमेव प्रतनु यथा स्यात् तथा स्तनायन्ते शब्दायन्ते क्षिप्रमेव विद्युदायन्ते

यार्थक है। (तद्वाचिणं तुष्मं पियद्वयाए भरहस्स रण्णो उवसग्ग करेमोत्ति कद्दु तेसिं आवाड-
चिल्लयाणं अंतियाओ अवक्कमंति) फिर भी हमलोग तुम्हारी प्रीति के लिये भरत राजा
को उपसर्गान्वित करेंगे, ऐसा कह कर वे मेघमुख नाम के नागकुमार देव उन आपातकरातों
के पास से चक्के गये। (अवक्कमिन्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं सम्मोहणति) चले जाकर उन्होंने
वैक्रिय समुद्घात द्वारा अपने आत्म प्रदेशों को शरीर से बाहर निकाला (समोहणित्ता मेहाणीअं
चिउव्वंति) शरीर से बाहिर निकाल कर फैलाए गये उन आत्म प्रदेशों द्वारा गृहीत पुद्गलों
से उन्होंने अभ्रपटल की विकुर्वणा की (विउव्वित्ता जेणेव भरहस्स रण्णो विजयक्खधावारनिवेशे
तेणेव उवागच्छति) अभ्रपटल विकुर्वणा करके फिर वे जहां भरत नरेश के स्कन्धावार का
निवेश था, वहां पर गये (उवागच्छित्ता उप्पिं विजयक्खंधावारनिवेशस्स खिप्पामेव पतणु-
तणायंति खिप्पामेव विज्जुयायंति) वहां जाकर वे विजयस्कन्धावार के निवेश के ऊपर ऊपर

यार्थक छे (तद्वाचि णं तुष्मं पियद्वयाए भरहस्स रण्णो उवसग्ग करेमोत्ति कद्दु तेसिं आवाड-
चिल्लयाणं अंतियाओ अवक्कमंति) उताओ अमे तमांरी प्रीतिने वश थधने भरतराअने
उपसर्गान्वित करीशु आम कहीने ते मेघमुख नामक नागकुमार देवो ते आपातकिरातोनी
पासेथी जाता रहा। (अवक्कमिन्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं सम्मोहणति) त्यां जधने तेभण्णे वैक्रिय
समुद्घात वडे पोताना आत्म प्रदेशोने शरीरमा थी जडाए काढया। (समोहणित्ता मेहाणीअं
चिउव्वंति) शरीरमाथी जडाए काढीने प्रसृत करेला ते आत्म प्रदेशो वडे गृहीत पुद्गलोथी
तेभण्णे अभ्रपटलनी विकुर्वणा करी (विउव्वित्ता जेणेव भरहस्स रण्णो विजयक्खधावारनिवेशे
तेणेव उवागच्छंति) अभ्रपटलनी विकुर्वणा करीने पछी तेओ जया भरतनरेशने। स्कन्धावा
निवेश छेने त्या पडोया। (उवागच्छित्ता उप्पिं विजयक्खंधावारनिवेशस्स खिप्पामेव पतणु-
तणायंति खिप्पामेव विज्जुयायंति) त्यां जधने विजय स्कन्धावारना निवेशनी उपर धीमधीमे
जगना करवा लाग्यां अने शीघ्रताथी यमकवा लाग्या विद्युत्नी जेम आथरखु करवा

विद्युदिवाचन्ति विज्जुयायति विज्जुयायित्ता खिप्पामेव जुगमुसलमुट्ठिप्पमाणमेत्ताहि धाराहि ओधमेघ सत्तरत्तं वास वासिउं पवत्ता यावि होत्था' विद्युदायित्ता खिप्पामेव जुगमुसलमुट्ठि-
प्रमाणमिताभिः धाराभिः ओधमेघ सप्तगत्रं सप्तगत्रिप्रमाणकालेन वर्षं वर्षितुं प्रवृत्ता
आप्यभवन् ॥सू. १९॥

इति व्यतिरुदरे सम्बन्धे यद्भरताधिपः करोति तदाह—“तएणं से भरहे” इत्यादि

मूलम्—तएणं से भरहे गया उप्पि विजयक्खंधावारस्स जुगमु-
सलमुट्ठिप्पमाणमेत्ताहि धाराहि ओधमेघं सत्तरत्तं वामं वासमाणं पासइ
पासित्ता चम्मरयणं परामुसइ तएणं तं सिखिच्छसरिसरूव वढो भाणि-
यव्वो जाव दुवालसजोयणाइं तिरिअं पवित्थरइ तत्थ सोहियाइं तएणं
से भरहे गया सक्खंधावारखले चम्मरयणं दुरूहइ दुरूहेत्ता दिव्वं छत्त-
रणं परामुसइ तएणं णवणउइसहस्स कंचणसलागपग्गिंधियं महरिहं
अउज्झं णिव्वणसुपसत्यविसिद्धलड्ढकंचणसुपुड्डदंढं मिउरायवट्टलट्ट अर-
विद कण्णिअ समाणरूवं वत्थिपएसे अ पंजरविगइअं विविहभत्तिचित्तं
मणिमुत्त पवाल तत्ततवणिज्ज पंचवणिअघोअग्यण रूवरइणं रयणमगीई-
समोप्पणाक्कप्पकारमणुरंजिएल्लिअं रायलच्छिचिधं अज्जुण सुवण्ण पंडुर-
पच्चत्थुअपट्टदेसभागं तहेव तवणिज्ज पट्ट धम्मंत परिगय अहिअ ससिसरीअं
सारययणिअरविमलपडिपुण्णचंदमंडलसमाणरूवं णरिंदवामप्पमाणपग-
इवित्थदं कुमुदसंडधवलं रणो संचारिमं विमाणं सूरातववायवुट्ठिदोसाण
य खयकरं तवगुणेहिं लद्धं अहयं बहुगुणदाणं उऊण विवरीअसुहकयच्छायं ।
छत्तरयणं पहाणं सुदुल्लहं अप्पपुण्णानं ॥१॥ पमाणराईण तवगुणाण
फलेगदेसभागं विमाणवासे वि दुल्लहतरं वग्घारिअमल्लदामकलावं

हल्के-२ रूप में गर्जने लगे । और शीघ्रता से चमकने लगे—विजली के जैसे आचरण करने
लगे (विज्जुयायित्ता खिप्पामेव जुगमुसलमुट्ठिप्पमाणमेत्ताहि धाराहि ओधमेघं सत्तरत्तं वासं
वासिउं पवत्तायावि होत्था) फिर वे विजलियों को चमकाकर बहुत ही शीघ्रता से जुग मुसल,
एवं मुष्टि प्रमाण परिमित धाराओं से सात दिन तक पुष्कलसर्वर्तक मेघादिको वरसाते रहे ॥१९॥

व. १५। (विज्जुयायित्ता खिप्पामेव जुगमुसलमुट्ठिप्पमाणमेत्ताहि धाराहि ओधमेघं सत्तरत्तं वासं
वासिउं पवत्तायावि होत्था) यही तेजो विद्युते। यमकावी ने ओष्ठम शीघ्रतायै जुग-मुसल,
तेम-मुष्टि प्रमाण परिमित धाराओयै सात-द्विस शत सुधी पुष्कल प्रमाद्ययै सर्वर्तक
मेघादिदेने वरसावता रक्षा ॥१६॥

साग्यधवलम्भमरग्यणिगग्गगासं दिव्वं छत्तरयणं महिवइस्स धरणियल-
पुण्णइंदो । तएणं से दिव्वं छत्तरयणे मरहेणं रण्णा परामुट्ठे समाणे
खिप्पामेव दुवालसजोयणाइं पवित्थइ साहिआइं तिरिअं ॥ सू० २०॥

छाया—ततः खलु स भरता राजा विजयस्कन्धावारस्योपरि युगमुशलमुष्टिप्रमाण-
मिताभिः धाराभिः ओघमेघ सप्तरात्रं वर्ष वर्षन् पश्यति, दृष्ट्वा चर्मरत्नं परामृशति, ततः
खलु तत् श्रोवत्सदृशरूप वेष्टको भणितव्यो यावत् द्वादशयाजनानि निर्यक् प्रविस्तृणाति
तत्र साधितानि, ततः खलु स भरतो सस्कन्धावारबलं चर्मरत्नं दूरोहति दुरूह्य दिव्यं
छत्ररत्नं परामृशति, ततः खलु नवनवतिसहस्रकाञ्चनशलाकापरिमण्डितम् महार्द्रम्
अयोध्यम् निर्वणसुप्रशस्तविशिष्टलष्टकाञ्चनसुपुष्टदण्डम् मृदुराजतवृत्तलष्टाऽरविन्दकर्णिका
समानरूप वस्तिप्रवेशश्च पञ्जरविराजितं षिविधभक्तिचित्रं मणिमुक्ताप्रवालतप्ततपनीय-
पञ्चवर्णिकं द्योतरत्नरूपपरचित्तरत्नमरीचिसमर्पणा स्वरूपकरानुगञ्जित राजलक्ष्मीचिह्नम् अर्जुन-
सुवर्णपाण्डुरप्रत्यवस्तृतपृष्ठदेशभागं तथैव तपनीय पद्मम्मायमानपारगतम् अधिक सश्रीकं
शारदरजनिकरविमलपनिपूर्णचन्द्रमण्डलममानरूपम् नरेन्द्रव्यायामप्रमाणप्रकृतिविस्तृत
कुमुदसङ्घवलं राज्ञः संचारिम सुरातपवातवृष्टिदापाणा च क्षयकरम् तपोगुणैः लब्धम्
अहत बहुगुणदानम् क्रतुविपरीत सुखकृतच्छायम् छत्ररत्नं प्रधानं सुदुर्लभमल्पपुण्यानाम् ॥१॥
प्रमाणराज्ञा तपोगुणानां फलैकदेशभागं विमानवासेऽपि दुर्लभतरं प्रलम्बितमाल्यदामकलापं
शारदधवलाभ्ररजनिकरप्रकाशं दिव्यं छत्ररत्नं भरतेन राज्ञा परामृष्टं सत् क्षिप्रमेव द्वादशयो-
जनानि साधिकानि तिर्यक् प्रविस्तृणाति ॥ सू० २०॥

टीका—“तएण से मरहे” इत्यादि । ‘तएण से मरहे राया उप्पि विजयक्खंघा-
वारस्स जुगमुसलमुट्ठिप्पमाणमेत्ताहि धाराहिं ओघमेघं सत्तरत्तं वासं वासमाणं पासइ’ ततो
दिव्यवर्षानन्तरं खलु स भरतो राजा विजयस्कन्धावारस्य स्वसैन्यानि कस्योपरि युगमु-
शलमुष्टिप्रमाणमिताभिः धाराभिः सप्तरात्रं सप्तरात्रिप्रमाणकालेन वर्षं वर्षन्तम् ओघ-
इस अवसर पर महाराजा भरत ने क्या किया इसका कथन—

टीकार्थ—(तएण से मरहे राया उप्पि विजयक्खंघावारस्स जुगमुसलमुट्ठिप्पमाणमेत्ताहि
धाराहिं ओघमेघं सत्तरत्तं वासं वासमाणं पासइ) जब भरत महाराजने अपने विजय स्कन्धावार
निवेश के ऊपर युग, मुशल एवं मुष्टि प्रमाण परिमित धाराओं से पुष्कल सवर्तक अधिकार में
कथित बरसा के माफिक सात दिन रात तक बरसते हुए मेघों को देखा तो (पासित्ता
ये सभये भरत नरेशे शु कथुं—ये सण धमा कथन

टीकार्थ—(तएण से मरहे राया उप्पि विजयक्खंघावारस्स जुगमुसलमुट्ठिप्पमाणमेत्ताहि
हि ओघमेघं सत्तरत्तं वासं वासमाणं पासइ) अर्थात् भरतराजा ने पोटाना विजय स्कन्धावार-
ना निवेश उपर, मुशल एवं मुष्टि प्रमाण परिमित धाराओं की पुष्कल सवर्तक अधिकार में
कथित वृष्टि भुज्ज सात-दिवस रात सुधी बरसता मेघों ने जेया तो (पासित्ता चम्मरयणं

મેઘ-મુશલધારવૃષ્ટિપ્રદમેઘ પશ્યતિ 'પાસિત્તા ચમ્મરયણં પરામુસહ' દૃષ્ટ્વા ચર્મરત્ન પરામૃશતિ
સ્પૃશતિ શૃઙ્ખાતિ 'તણં તં સિરિવચ્છસરિસરૂવં વેદો માણિયવ્વો જાવ દુવાલસજોયણાં
તિરિયં પવિત્થરહ તત્થ સાહિયાઈ' તતઃ પરામર્શાનન્તરં ચલુ શ્રીવત્સસદ્ગરૂપ તત્ ચર્મરત્નં
'વેદો' વેષ્ટકઃ વસ્તુમાત્રવિપયકો મણિતવ્યો યાવત્ દ્વાદશયોજનાનિ તત્ર સાધિકાનિ તિ
ર્યક્ પ્રવિસ્તૃણાતિ 'તણં સે મરહે રાયા સવલધારવલે ચમ્મરયણં દુરુહહ' તતઃ ચલુ સ
મરતો રાજા સસ્કન્ધાવારવલઃ ચર્મરત્ન દુરોહતિ 'દુરુહિત્તા દિવ્વં છત્તરયણ પરામુસહ'
દુરુહ દિવ્ય-સહસ્રદેવાધિષ્ઠિતં છત્રરત્ન પરામૃશતિ સ્પૃશતિ અથ કીદૃશં છત્રરત્નમિત્યાહ—
'તણં ણવણઉસહસ્સકંચનમલાગપરિમહિય' તતઃ ચલુ નવનવતિસહસ્રકાશ્વનશલાકા
પરિમણ્ડિતમ્, તત્ર નવનવતિસહસ્રપ્રમાણાભિઃ કાશ્વનમયશલાકાભિઃ પરિમણ્ડિતમ્, તથા
'મહરિય' મહાર્ધં बहुमूल्यकं तथा 'अउज्झ' अयोध्यम्-अस्मिन् दृष्टे सति नहि विपक्षम-
दानां शस्त्रमुत्तिष्ठते इतिभावः, पुनः कीदृशं तत् 'णिव्वणसुपसत्थविसिद्धलट्ठकंचणसुपुट्ठ-
दंडं' निर्बणसुप्रशस्तविशिष्टलष्टकाश्वनसुपुट्ठदण्डम् तत्र निर्बणः छिद्रादिदोषरहितः सुप्रशस्तः

ચમ્મરયણં પરામુસહ) દેવકર ઉસને ચર્મરત્ન કો ઉઠાયા—(તણ તં સિરિવચ્છસરિસરૂવં વેદો
માણિયવ્વો)) હસ ચર્મરત્ન કા રૂપ શ્રીવત્સ કે જૈસા હોતા હૈ. હસકા વેષ્ટક વર્ણન જૈસા
પહિલે ક્રિયા ગયા હૈ જૈસા હો યહાં પર મીં કર લેના ચાહિય—યાવત્ ઉસને હસ ચર્મરત્ન કો
કુહ અધિક ૧૨ યોજન તક તિરછે રૂપ મેં વિસ્તૃત કર દિયા—ફૈલાદિયા બિહાદિયા (તણં સે
મરહે રાયા સલ્લધાવારવલે ચમ્મરયણ દુરુહહ દુરુહિત્તા દિવ્વ છત્તરયણં પરામુસહ) હસકે બાદ
મરત મહારાજા અપને સ્કન્ધાવારરૂપવલ સહિત ઉસ ચર્મરત્ન પર ચઢ ગયા—ઔર ચઢ કરકે
ફિર ઉસને છત્રરત્ન કો ઉઠાયા—(તણ ણવણઉસહસ્સકંચનમલાગપરિમહિયં મહરિયં અઉજ્ઞ
ણિવ્વણસુપસત્થવિસિદ્ધલટ્ઠકચણસુપુટ્ઠદંડં) યહ હર્મે ત્ન ૯૯ નન્નાણુ હજાર કાશ્વન શલાકાઓ સે
પરિમણ્ડિત થા । बहुमूल्य वाला था, इसे देख लेने पर विपक्षके मटोके शस्त्र फिर उठते नहीं
थे ऐसा यह अयोध्य था, निर्बण था, छिद्रादि दोषों से रहित था—समस्त लक्षणों से युक्त
होने के कारण सुप्रशस्त था । विशिष्टलष्ट-मनोहर था । अथवा—इतना बड़ा छत्रदुर्बह हो

પરામુસહ) એઈને તેણે ચર્મરત્નને ઉપાડ્યુ (તણં તં સિરિવચ્છસરિસરૂવં વેદો માણિ-
યવ્વો) એ ચર્મરત્નતુ રૂપ શ્રીવત્સ જેવું હોય છે એના વેષ્ટક વિષે પહેલાં જે પ્રમાણે
વર્ણન કરવામા આવ્યું છે તે પ્રમાણે જ અહીં સમજી લેવું એઈએ યાવત્ તેણે તે ચર્મ-
રત્નને કંઈકે અધિક ૧૨ ખાર યોજન સુધી ત્રાસાં રૂપમા વિસ્તૃત કરી દીધું (તણ સે મરહે
રાયા સલ્લધાવારવલે ચમ્મરયણ દુરુહહ દુરુહિત્તા દિવ્વં છત્તરયણં પરામુસહ) ત્યારબાદ
મરતરાજા પોતાના સ્કન્ધાવાર રૂપ બલ સહિત તે ચર્મરત્ન ઉપર ચઢી ગયા અને ચઢીને
પછી તેણે ચર્મરત્નને ઉઠાડ્યું. (તણ ણવણઉસહસ્સકંચનમલાગપરિમહિયં મહરિયં
અઉજ્ઞ ણિવ્વણસુપસત્થ વિસિદ્ધલટ્ઠકચણસુપુટ્ઠદંડં) એ છત્રરત્ન ૯૯ નવાણુ હજાર કાશ્વન શલા-
કાઓથી પરિમણ્ડિત હતું બહુ મૂલ્યવાન હતું, એને જોયા બાદ વિપક્ષના મટોના શસ્ત્રો
ઉઠતા નથી. એવું એ અયોધ્ય હતું, નિર્બણ હતું છિદ્રાદિ દોષોથી એ રહિત હતું સમસ્ત

સર્વલક્ષણોપેતત્વાત્ વિશિષ્ટલઘુઃ મનોહરઃ યદ્વા વિશિષ્ટઃ અતિ ભારતયા એકાન્ઠેન દુર્વદત્વાત્ પ્રતિદળ્હસહિતઃ ઈદશચ્ચયો લઘુઃ કાઠ્ચનમયઃ સુપુષ્ટોઽતિધારસદ્સત્ત્વાત્ દળ્હો યત્ર તત્, તથા, તથા 'મિઝરાયયવદ્ લઘુ અરવિદકણિયસમાણરૂવં' મૃદુરાજન વૃત્તલઘારવિન્દ-કર્ણિકા સમાનરૂપમ્, તત્ર મૃદુ કોમલં ઘૃમ્મૃદૃત્વાત્ રાજતં રજતસમ્બન્ધિ વૃત્તલઘુ યદરવિન્દં તસ્ય કર્ણિકા વીજકોશસ્તેન સમાનં શ્વેતત્વાદ્વૃન્તત્વાચ્ચ રૂપમ્ આકારો યસ્ય તત્તથા, તથા 'વત્થિપપ્પસે પજરવિરાહ્યં' વસ્તિપ્રદેશે પઠ્ઠરવિરાજિતમ્ વસ્તિપ્રદેશે નામ છત્ર-મધ્યમાગવર્તી દળ્હપ્રક્ષેપ્ત્યાનરૂપઃ તત્ર પઞ્જરેણ પઠ્ઠરાકારેણ વિરાજિતમ્ ચઃ સમુચ્ચયે તથા 'વિવિદ્ધમત્તિચિત્તં' વિવિદ્ધમત્તિચિત્રમ્, તત્ર વિવિદ્ધાભિઃ મત્તિદ્ધિઃ વિચ્છિત્તિમ્નો-રચના પ્રકારૈશ્ચિત્રં ચિત્રકર્મ યત્ર તત્ તથા પુનશ્ચ કોદશમ્ 'મણિમુત્તપવાલતત્તત્તવણિજ્જ પવ્વણિયધોયરયણરૂવરહ્યં' મણિમુક્તાપ્રવાલતત્તત્તપનીય પઠ્ઠવર્ણિકધાતરત્નરૂપરચિ-તમ્, તત્ર મણયઃ ચન્દ્રકાન્તાદયઃ મુક્તાપ્રવાલે પ્રસિદ્ધે તત્ત મૂળોત્તીર્ણ યત્તપનીયં રત્ત-સુવર્ણં પઠ્ઠવર્ણિકાનિ શુક્લનીલાદિપઠ્ઠવર્ણયુક્તાનિ ધાતાનિ શાળોત્તારેણ દીપ્તિમતિ

જાને કે કારણ એક દળ્હ કે દ્વારા ધારણ યોગ્ય નહીં હો સકતા હૈં ફિસલિયે એક એક દળ્હે-વાંછા હોને સે યહ વિશિષ્ટ લઘુ થા । ફિમમેં જો દળ્હ લ્હો હુએ થે વે અતિ ભાર સહનેવાલે હોને કે કારણ અતિ સુપુષ્ટ થે ઓર સુવર્ણનિર્મિત થે (મિઝરાયયવદ્ લઘુ અરવિદકણિયસ-માણરૂવં) યહ છત્ર ઝેંચા ઓર ગોલ થા—ફિમલિયે ફિસકા આકાર ચાદી કે બને હુએ મૃદુ ગોલ કમલ કી કર્ણિકા કે જૈસા થા (વત્થિપપ્પસે અ પંજરવિરાહ્યં) યહ વસ્તિ પ્રદેશ મેં જિમમેં દળ્હ પોયા હુઆ રહતા હૈં હસ વસ્તિ પ્રદેશ મેં અનેક શલાકાઓ સે યુક્ત હો જાને કે કારણ પજર કે જૈસા—પીજરે કે જૈસા—પ્રતોત હોતા થા (વિ.વહ મત્તિચિત્ત) ફિસ છત્ર મેં અનેક પ્રકાર કે ચિત્રોં કી રચના હો હો રહી થી ઉસસે યહ બહા સુહાવના લગત થા. (મણિમુત્તપવાલતત્તત્તવણિજ્જપવ્વણિયધોયરયણરૂવરહ્યં) ફિસમેં પૂર્ણકંઠશાદિરૂપમઙ્ગલ્ય વસ્તુઓં કે જો આકાર બને હુએ થે વે ચન્દ્રકાન્ત આદિ મણિયોં સે, મુક્તાઓં સે, પ્રવાલોં

લક્ષણોથી યુક્ત હોવા ગદલ એ સુપ્રથસ્ત હતું વિશિષ્ટ લઘુ મનોહર હતું અથવા આટલું (વશાલ છત્ર દુર્વદ થઈ જવાથી એક દડ દ્વારા ધારણ યોગ્ય ન હોતું એથી એ અનેક દડવાણુ હોવાથી એ વિશિષ્ટ લઘુ હતું એમા જે દંડા હતા તે અતિભારને ખમી શકતા હોવાથી અતિ સુપુષ્ટ હતા અને સુવર્ણ નિર્મિત હતા (મિઝરાયયવદ્ લઘુ અરવિદકણિય સમાણરૂવં) એ છત્ર ઉન્નત અને ગોળ હતું એથી એનો આકાર આદીથી નિર્મિત મૃદુગોળ કમળની કક્ષિકા જેવો હતો. (વત્થિપપ્પસે અ પજરવિરાહ્યં) એ વસ્તિપ્રદેશમા જેમા દડ પડેવવામાં આવે છે. તે વસ્તિ પ્રદેશમા અનેક શલાકાઓથી યુક્ત હોવાથી પાંજરા જેવું લાગતું હતું (વિવિદ્ધમત્તિચિત્ત) એ છત્રમા અનેક પ્રકારના ચિત્રોની રચના કરવામાં આવી હતી એથી એ અતીવ સોહામણુ લાગતું હતું. (મણિમુત્તપવાલ તત્ત તવણિજ્જપવ્વ-ણિયધોયરય રહ્ય) એમા પૂણું કળશાદિ રૂપ મગળ વસ્તુઓના જે આકારો બનેલા છે તે ચન્દ્રકાંત વગેરે મણિ જે થી યુક્તાઓથી, પ્રવાલોથી તથા સંધ્યામાંથી ગદા કાઢેલા

कृतानि रत्नानि प्राग् वर्णितस्वरूपानि तैः रचितानि रूपाणि पूर्णकन्धशादि चत्वारि महा
माङ्गल्य वस्तुनामाकाराः यत्र तत्तथा, मूले रचितशब्दस्य पदव्यत्ययः प्राकृतत्वात्, तथा
'रयणमरीई समोष्पणा कप्पकारः मणुरंजिएल्लिय' रत्नमरीचिसमर्पणाकल्पकारानुरञ्जितम्
तत्र रत्नानां चन्द्रकान्तादि मणीनां मरीचि अतुलतेजः प्रभा तस्याः समर्पणा समारचना
तस्यां कल्पकाराः विधिकारिणः परिकर्मकारिण इत्यर्थः विशिष्टशोभाकारिणः 'तरनुसम्प्र-
दायक्रमं रञ्जितं यथोचितस्थाने रङ्गदानात् मकारोऽल्लक्षणिकः तथा 'रायलच्छिचिध' राजल
क्ष्मीचिन्हयुक्तम् 'अञ्जुणसुवण्णपडुरपच्चत्थुअपट्टदेसभागं' अर्जुनसुवर्णपाण्डुरप्रत्यवस्थितपट्टदेश-
भागम्' तत्र अर्जुनाभिधेयं नामकं यत्पाण्डुरसुवर्णं तेन प्रत्यवस्थितः-आच्छादितः पृष्ठभागो
यस्य तत्तथा, पाण्डुरशब्दस्य पदव्यत्ययः प्राकृतत्वात् 'तदेव तवणिज्जपट्टधम्मंतपरि-
गयं' तथैव तपनीयपट्टध्मायमानपरिगतम्, तत्र तथैव विशेषणान्तरप्रारम्भे ध्मायमानं
तत्कालध्मातं तत्कालतापितं यत्तपनीयं सुवर्णं तस्य पट्टः तेन परिगतं परिवेष्टितम् चतु-
र्ध्वपि प्रान्तेषु रक्तसुवर्णपट्टा योजिताः सन्तीतिभावः अत्र ध्मायमानशब्दस्य पदव्यत्ययः
प्राकृतत्वात् अत एव 'अहिय सस्सिरीयं' अधिक सश्रीकम्-बहुशोभापम्पन्नम्, तथा 'सार-
यरयणियरविमलपडिपुण्णचंदमंडलसमाणरूवं' शारदरजनिकरविमलप्रतिपूर्णचन्द्रमण्डल
समानरूपम्, तत्र शारदः शरत्कालिको यः रजनिकरः चन्द्रः तद्वद्विमलं निर्मलम् अतएव
प्रतिपूर्णचन्द्रमण्डलसमानरूपं शारद्यपूर्णमावदुज्ज्वल ततो विशेषणसमासः 'णरिंदवास-
प्पमाणपगइवित्थं' नरेन्द्रव्यामप्रमाणप्रकृतिविस्तृतम्, तत्र नरेन्द्रः भरतस्तस्य व्यामः

से, तस-सांचे में से निकले गये सुवर्ण से एव शुक्ल नीलपीत आदि पंचवर्णों से तथा शण
पर कसकर दीति शाली किये गये रत्नों से बनाये हुए थे. (रयणमरीई समोष्पणा
कप्पकारमणुरंजिएल्लिय) इसमें जगह जगह रत्नों की किरणों की रचना करने में दक्ष
पुरुषों से क्रमशः रंग भराहुआ था. (रायलच्छिचिध, अञ्जुणसुवण्ण पडुरपच्चत्थुअपट्टदेस-
भागं) राजलक्ष्मी के इस पर चिन्ह अंकित थे अर्जुन नाम के पाण्डुर त्वर्ण से इसका
पृष्ठ देश आच्छादित था (तदेव तवणिज्ज पट्टधम्मंतपरिगयं) इसी तरह यह चारों कोनों में
रक्तसुवर्ण पट्ट से नियोजित किया हुआ था । (अहियसस्सिरीयं) अतएव यह बहुत अधिक
सुन्दरता से युक्त बना हुआ था । (सारययणियर विमलपडिपुण्णचंदमंडलसमाणरूवं)

सुवर्णथी तेमञ्च शुक्लनील आदि पांच वर्णोंथी तेमञ्चशाष्ठी उपर धनीने हीमिश्रावी बनावे
वा रत्नोथी बनावेवा होता (रयण मरीई समोष्पणाकप्पकार मणुरंजिएल्लियं) ओभां रत्नोनी
किरणोनी रचना करवाभां कुशग पुत्रोथी स्थान-स्थान उपर क्रमशः रंगभरेवा होता
(रायलच्छिचिध अञ्जुणसुवण्णपडुरपच्चत्थुअपट्टदेसभागं) राजलक्ष्मीना ओनी उपर
चिह्नो अंकित होता अर्जुन नामके पांडुर स्वर्णथी ओना पृष्ठ भाग समान्छादित होता
(तदेव तवणिज्जपट्टधम्मंतपरिगयं) आ प्रभाओ ओ आरे आरे प्रभुओभां रक्त-सुवर्ण
पट्टथी नियोजित करवाभां आवेहुं हुं (अहिय सस्सिरीयं) ओथी ओ अनीव मौ-द्वय
युक्त भवेहुं हुं (सारययणियरविमलपडिपुण्णचंदमण्डलसमाणरूवं) शरत्काली,

સર્વલક્ષણોપેત્વાત્ વિશિષ્ટલઘ્વઃ મનોદ્વઃ યદ્વા વિશિષ્ટઃ અતિ ભારતયા એકદન્ડેન દુર્વહત્વાત્ પ્રતિદન્ડસહિતઃ ર્દિશચ્ચયો લઘ્વઃ કાઠ્ઠચનમયઃ સુપુષ્ટોડતિધારસદ્સત્ત્વાત્ દન્ડો યત્ર તત્, તથા, તથા 'મિઝરાયયવદ્ લઘ્વઃ અરવિંદકણિયસમાણરૂઘ્વં' મૃદુરાજત વૃત્તલઘ્વારવિન્દ-કર્ણિકા સમાનરૂપમ્. તત્ર મૃદુ કોમલં છૃષ્ટમૃદ્ધત્વાત્ રાજતં રજતસમ્બન્ધિ વૃત્તલઘ્વ યદરવિન્દં તસ્ય કર્ણિકા વીજકોશસ્તેન સમાનં ર્થેત્યાદૃશન્તત્વાચ્ચ રૂપમ્ આકારો યસ્ય તત્તથા, તથા 'વત્થિપપ્સે પજરવિરાહ્યં' વસ્તિપ્રદેશે પઠ્ઠજરવિરાજિતમ્ વસ્તિપ્રદેશે નામ છત્ર-મધ્યમાભવર્તી દન્ડપ્રક્ષેપમ્થાનરૂપઃ તત્ર પઞ્જરેણ પઠ્ઠજરાકારેણ વિરાજિતમ્ ચઃ સમુચ્ચયે તથા 'વિવિદ્મત્તિચિત્ત' વિવિદ્મત્તિચિત્રમ્, તત્ર વિવિદ્વાભિઃ મત્તિભિઃ વિન્ધિત્તિમો-રચના પ્રકારૈશ્ચિત્રં ચિત્રકર્મ યત્ર તત્ તથા પુનશ્ચ કોદ્દશમ્ 'મણિમુત્તપવાલતત્તત્તવણિજ્જ પવવણિયધોયરયણરૂવરહ્યં' મણિમુત્તપવાલતત્તત્તવણિય પઠ્ઠવર્ણિકધોતરત્નરૂપરચિ-તમ્, તત્ર મણયઃ ચન્દ્રકાન્તાદયઃ મુક્તાપ્રવાલે પ્રસિદ્ધે તત્ત મૂલોત્તીર્ણ યત્તપનીયં રત્ન-સુવર્ણં પઠ્ઠવર્ણિકાનિ શુક્લનીલાદિપઠ્ઠવર્ણયુક્તાનિ ધોતાનિ શાણોત્તારેણ દીપ્તિમતિ

જાને કે કારણ એક દન્ડ કે દ્વારા ધારણ યોગ્ય નહીં હો સકતા હૈં ફસલિયે એક એક દન્ડે-વાંલા હોને સે યહ વિશિષ્ટ લઘ્વ થા । ફમમેં જો દન્ડ લ્લો હુએ થે વે અતિ ભાર સહનેવાળે હોને કે કારણ અતિ પુષ્પ થે ઓર સુવર્ણનિર્મિત થે (મિઝરાયયવદ્ લઘ્વ અરવિંદકણિયસ-માણરૂઘ્વં) યહ છત્ર ઊંચા ઓર ગોલ થા—ફસલિયે ફસકા આકાર ચાદી કે બને હુએ મૃદુ ગોલ કમલ કી કર્ણિકા કે જૈસા થા (વત્થિપપ્સે અ પંજરવિરાહ્યં) યહ વસ્તિ પ્રદેશ મેં જિસમેં દન્ડ પોયા હુઆ રહતા હૈં ડસ વસ્તિ પ્રદેશ મેં અનેક શલાકાઓ સે યુક્ત હો જાને વે. કારણ પજર કે જૈસા—પીજરે કે જૈસા—પ્રતોત હોતા થા (વિવિદ્મત્તિચિત્ત) ફસ છત્ર મેં અનેક પ્રકાર કે ચિત્રો કી રચના હો હો રહી થી ડસસે યહ બઢા સુહાવના લગતઃ થા. (મણિમુત્તપવાલતત્તત્તવણિજ્જપવવણિયધોયરયણરૂવરહ્યં) ફસમેં પૂર્ણકળશાદિરૂપમઙ્ગલ્ય વસ્તુઓં કે જો આકાર બને હુએ થે વે ચન્દ્રકાન્ત આદિ મણિઓં સે, મુક્તાઓં સે, પ્રવાલોં

લક્ષણોથી યુક્ત હોવા ગદ્દલ એ સુપ્રચસ્ત હતુ વિશિષ્ટ લઘ્વ મનોદ્વર હતુ અથવા આટલુ (વશાલ છત્ર હુવંદ થઇ જવાથી એક દંડ દ્વારા ધારણ યોગ્ય ન હોતું એથી એ અનેક દંડવાળુ હોવાથી એ વિશિષ્ટ લઘ્વ હતુ એમા જે દંડા હતા ૧ અતિભારને ખમી શકતા હોવાથી અતિ સુપુષ્ટ હતા અને સુવર્ણ નિર્મિત હતા (મિઝરાયયવદ્ લઘ્વ અરવિંદકણિય સમાણરૂઘ્વં) એ છત્ર ઉન્નત અને ગોળ હતુ એથી એનો આકાર આદીથી નિર્મિત મૃદુગોળ કમળની કર્ણિકા જેવો હતો. (વત્થિપપ્સે અ પંજરવિરાહ્યં) એ વસ્તિપ્રદેશમા જેમા દંડ પડેવવામાં આવે છે. તે વસ્તિ પ્રદેશમા અનેક શલાકાઓથી યુક્ત હોવાથી પાંજરા જેવુ લાગતુ હતુ (વિવિદ્મત્તિચિત્ત) એ છત્રમા અનેક પ્રકારના ચિત્રોની રચના કરવામા આવી હતી એથી એ અતીવ સોહામણુ લાગતુ હતુ. (મણિમુત્તપવાલ તત્ત તવણિજ્જપવ-વણિયધોયરયણરૂવરહ્યં) એમા પૂર્ણ કળશાદિ રૂપ મળળ વસ્તુઓના જે આકારો અનેલા છે તે ચન્દ્રકાન્ત વગેરે મણિ જે થી યુક્તાઓથી, પ્રવાલોથી તથા મંચામાંથી ગદ્દા ગદ્દેલા

कृतानि रत्नानि प्राग् वर्णितस्वरूपाणि तैः रचितानि रूपाणि पूर्णरत्नशादि चत्वारि महा
माङ्गल्य वस्तुनामाकाराः यत्र तत्तथा, मूले रचितशब्दस्य पदव्यत्ययः प्राकृतत्वात्, तथा
'रयणमरीई समोष्पणा कप्पकारमणुरंजिएल्लियं' रत्नमरीचिसमर्पणाकल्पकारानुरञ्जितम्
तत्र रत्नानां चन्द्रकान्तादि मणीनां मरीचि अतुलतेजः प्रभा तस्याः समर्पणा समारचना
तस्यां कल्पकाराः विधिकारिणः परिकर्मकारिण इत्यर्थः विशिष्टशोभाकारिणः तरनुसम्प्र-
दायक्रमं रञ्जितं यथोचितस्थाने रङ्गदानात् मकारोऽल्लाक्षणिकः तथा 'रायलञ्जिचिंध' राजल
क्ष्मीचिन्हयुक्तम् 'अञ्जुणसुवर्णपण्डुरपच्चत्थु अपट्टदेसभाग' अर्जुनसुवर्णपाण्डुरप्रत्यवस्थितपट्टदेश-
भागम्' तत्र अर्जुनाभिधेय नामकं यत्पाण्डुरसुवर्णं तेन प्रत्यवस्थितः आच्छादितः पृष्ठभागो
यस्य तत्तथा, पाण्डुरशब्दस्य पदव्यत्ययः प्राकृतत्वात् 'तद्देव तवणिज्जपट्टधम्मंतपरि-
गयं' तथैव तपनीयपट्टध्मायमानपरिगतम्, तत्र तथैव विशेषणान्तरप्रारम्भे ध्मायमानं
तत्कालध्मातं तत्कालतापितं यत्तपनीय सुवर्णं तस्य पट्टः तेन परिगतं परिवेष्टितम् चतु-
र्ष्वपि प्रान्तेषु रक्तसुवर्णपट्टा योजिताः सन्तीतिभावः अत्र ध्मायमानशब्दस्य पदव्यत्ययः
प्राकृतत्वात् अत एव 'अहिय सस्सिरीयं' अधिक सश्रीकम्-बहुशोभापम्पन्नम्, तथा 'सार-
यरयणियरविमलपडिपुण्णचंदमंडलसमाणरूवं' शारदरजनिकरविमलप्रतिपूर्णचन्द्रमण्डल
समानरूपम्, तत्र शारदः शरत्कालिको यः रजनिकरः चन्द्रः तद्वद्विमलं निर्मलम् अतएव
प्रतिपूर्णचन्द्रमण्डलसमानरूपं शारद्यपूर्णमावदुज्ज्वल ततो विशेषणसमासः 'णरिंदवास-
प्पमाणपगइवित्थं' नरेन्द्रव्यामप्रमाणप्रकृतिविस्तृतम्, तत्र नरेन्द्रः भरतस्तस्य व्यामः

हे, तत्त-सांचे में से निकले गये सुवर्ण से एव शुक्ल नीलपीत आदि पंचवर्णों से तथा शाण
पर कसकर दीति शाळी किये गये रत्नों से बनाये हुए थे (रयणमरीई समोष्पणा
कप्पकारमणुरंजिएल्लियं) इसमें जगह जगह रत्नों की किरणों की रचना करने में दक्ष
पुरुषों से क्रमशः रंग मराहुआ था. (रायलञ्जिचिंध, अञ्जुणसुवर्ण पण्डुरपच्चत्थुपट्टदेस-
भागं) राजलक्ष्मी के इस पर चिन्ह अंकित थे अर्जुन नाम के पाण्डुर स्वर्ण से इसका
पट्ट देश आच्छादित था (तद्देव तवणिज्ज पट्टधम्मंतपरिगयं) इसी तरह यह चारों कोनों में
रक्तसुवर्ण पट्ट से नियोजित किया हुआ था। (अहियसस्सिरीयं) अतएव यह बहुत अधिक
सुन्दरता से युक्त बना हुआ था। (सारयरयणियर विमलपडिपुण्णचंदमण्डलसमाणरूवं)

सुवर्णथी तेमञ्ज शुक्लवर्णीय आदि पांच वर्णोंथी तेमञ्जथायु उपर धपीने हीमिशाली बनावे
ला रत्नोथी बनावेला होता (रयण मरीई समोष्पणाकप्पकार मणुरंजिएल्लियं) ओभा रत्नोनी
किरलोनी रचना करवाभां कुशग पुत्रोथी स्थान-स्थान उपर क्रमशः रंगभरेला होता.
(रायलञ्जिचिंध अञ्जुणसुवर्णपण्डुरपच्चत्थुपट्टदेसभागं) राजलक्ष्मीना ओनी उपर
यिहो अंकित होता अर्जुन नामक पांडुर स्वर्णथी ओना पृष्ठ भाग समाच्छादित होता.
(तद्देव तवणिज्जपट्टधम्मंतपरिगयं) आ प्रभावे ओ आरे आर भूषाओभां रक्त-सुवर्ण
पट्टथो नियोजित करवाभां आवेला हुतु (अहिय सस्सिरीयं) ओथो ओ अनीन सो-दय
युक्त अनेला हुतु. (सारयरयणियरविमलपडिपुण्णचंदमण्डलसमाणरूवं) शरत्काली-

તિર્યક્ પ્રસારિતોભયબાહુપ્રમાણો માનવિશેષસ્તેન પ્રમાણેન પ્રકૃત્યા સ્વભાવેન વિસ્તૃ-
તમ્ તથા 'કુમુદસંઢધવલં' કુમુદચ્છાયાધવલમ્ તત્ર કુમુદાનિ-ચન્દ્રવિકાશીનિ શ્વેતકમલાનિ
તેષાં ષણ્ઢો વનં તદ્વત્ ધવલમ્ 'રણ્ણો સંચારિમં વિમાણં' રાજ્ઞો ભરતસ્ય 'સંચારિમં ત્તિ'
સચ્ચરણશીલં જક્કમ વિમાનમ્ આશ્રયિણાં સુસ્થાવહત્વાત્ તથા 'સૂરાતવવાયવુદ્ધિદોસાણય-
સ્થયકરં' સૂરાતપવાતવૃદ્ધિદોષાણાં ચ ક્ષયકરમ્, તત્ર સૂરાતપવાતવૃદ્ધયઃ પ્રસિદ્ધાસ્તાસાં
યે દોષાસ્તેષાં ક્ષયકરમ્, ઇતચ્છત્રચ્છાયાસમાશ્રિતાનાં દિ વિષાદિ દોષા અપિ ન પ્રભવન્તી-
તિમાવઃ, 'તવ ગુણેદિં લલ્લં' તપોગુણૈઃ-પૂર્વજન્માર્ચીર્ણતપોગુણમહિમ્ના લ્લબ્ધં ભરતે
નેતિ, અથ ગાથા પ્રબન્ધેન વિશેષણાન્યાહ-સૂત્રકારઃ

અહયં બહુગુણદાણં ઉક્કણ વિવરીય સુહકયચ્છાયં ।

છત્તરયણં પઢાણં સુદુલ્લહ અપ્પુણ્ણાણં ॥૧॥

છાયા - અહતં બહુગુણદાનમ્ શ્રુતુનાં વિપરીતસુખકૃતચ્છાયમ્ ।

છત્રરત્નં પ્રધાનં સુદુર્લભમત્પુણ્યાનામ્ ॥૧॥

શરત્કાલીન વિમલ પ્રતિપૂર્ણ ચન્દ્રમણ્ડલ કે જૈસા इसका रूप था । (णरिंदवामप्पमाण पणहवित्थडं)
इसका स्वाभाविक विस्तार-नरेन्द्र भरत के द्वारा फैलाये गये दोनों हाथों के बराबर था ।
साधिक द्वादशयोजन का जो प्रमाण इसका कथन किया गया है वह कारण पाकर यह
इतना अधिक फैल जाता है । इस अपेक्षा कहा गया है । (कुमुदसंढधवल, रण्णो संचारिमं-
विमाणं सुरातववायवुद्धिदोसाणं य स्थयकरं तवगुणेहिलल्लं-अहयं बहुगुणदाणं उक्कण विवरीय सुह-
कयच्छायं) कुमुद के वन के जैसे धवल था महाराजा भरत का यह सचरणशील विमान
स्वरूप था सूर्य ताप वात और वृष्टि के दोषों का विनाशक था. अथवा-सूर्यताप वात और वृष्टि
का एवं विषादि जन्य दोषों का यह विनाश करने वाला था क्योंकि इसको छाया में आश्रित
हुए प्राणियों के विषादिजन्य सब दोष शान्त हो जाते हैं. वे कुछ भी अपना प्रभाव नहीं
दिखा सकते हैं. भरत ने इसे पूर्वजन्म में आचरित किये गये तपोगुण के प्रभाव से लब्ध

વિમલં પ્રતિપૂર્ણ ચન્દ્રમણ્ડળ એવું એવું રૂપ હતું (ણરિંદવામપ્પમાણપણહવિત્થડ) એનો
સ્વાભાવિક વિસ્તાર નરેન્દ્રભરત વડે પ્રસૂત બનેને હાથોની બરાબર હતો. સાધિક દ્વાદશયોજ
નનું એ પ્રમાણ છત્રરત્ન વિશેષતઃ કરવામાં આવેલ છે તે કારણ ઉપસ્થિત થતાં જ એ
આટલું બધું વિસ્તૃત થઈ બાક છે એ અપેક્ષાએ કહેવામાં આવેલ છે (કુમુદસંઢધવલં
રણ્ણો સંચારિમં વિમાણં સૂરાતવવાયવુદ્ધિદોસાણં ય સ્થયકરં તવગુણેહિલલ્લં અહયં ગુણ
દાણ ઉક્કણ વિવરીય સુહકયચ્છાય) કુમુદવન એવું એ ધવલ હતું. રાજા ભરતનું એ સચ-
રણશીલ વિમાનસ્વરૂપ હતું. સૂર્યતાપ, વાત અને વૃષ્ટિનાં દોષોનું એ વિનાશ કરનાર હતું.
અથવા સૂર્યતાપ, વાત અને વૃષ્ટિને તેમજ વિષાદિજન્ય દોષોને એ વિનષ્ટ કરનાર હતું.
કેમકે એની છાયામાં આશ્રિત થયેલાં પ્રાણીઓના વિષાદિ જન્ય સર્વદોષો શાન્ત થઈ બાક
છે તેઓ સ્વલ્પમાત્રામાં પણ પોતાનો પ્રભાવ બતાવી શકતા નથી ભરતે એને પૂર્વજન્મમાં
આચરિત કરવામાં આવેલા તપોગુણના પ્રભાવથી ઉપલબ્ધ કરેલું છે. પોતાની ભતને વિશિષ્ટ

તત્ર અહતં ન કેનાપિ રણે સ્વઙ્હિતમ્ તથા વહુગુણદાન વહૂનાં ગુણાનામ્ એશ્વર્યા-
દીનાં દાનં યસ્મૈ તત્તથા, તથા ઋતૂના વિપરીતસુખકૃતચ્છાયમ્, ઋતૂના હેમન્તાદીનાં
વિપરીતા અથવા ષષ્ઠી ષષ્ઠ્યાઃ પશ્ચમ્યર્થે વ્યાખ્યાનેન ઋતુભ્યો વિપરીતા ઉષ્ણર્ત્તો શીતા
શીતર્ત્તો ઉષ્ણા અતએવ સુખકૃતા કૃતસુખા સુખદાયિની છાયા યસ્ય તત્તથા, સ્ત્ર તાન્તસ્ય
પરિણાતો 'જાતિકાલસુખાદર્નવેત્યનેન સૂત્રેણ વિકલ્પવિધાનાત્, एतादृशं छत्ररत्नम्
छत्रेषु उत्कृष्टं प्रधानं छत्रगुणोपेतत्वात् छत्रेषु ये शुभगुणाः तैः युक्तत्वात् पुनः कीदृशम्
सुदुर्लभम् अल्पपुण्यानाम् विशिष्टपुण्यरहितानाम् ॥१॥ 'પમાણ રાઈણ તવગુણાણ ફલેગ-
દેસભાગં વિમાણવાસે વિ દુલ્લહતરં' પુનઃ કીદશમ્ પ્રમાણરાજ્ઞાં તપોગુણાનાં ફલૈકદેશ-
ભાગં વિમાણવાસેઽપિ દુર્લભતરમ્, તત્ર પ્રમાણરાજાનામ્ સ્વસ્વકાલોચિત્તશરીરપ્રમાણોપેત-
રાજ્ઞામ્, તપોગુણાનાં ફલૈકદેશભાગમ્ અયમર્થઃ— ચક્રાધિપૂર્વાર્જિતમ્ તપસાં ફલં સર્વસ્વં
નવનિધાનચતુર્દશરત્નાદિષુ વિમત્તં તસ્માત્કારણાત્ તદેકદેશભૂતમિદં છત્રરત્નં વિમાન-

ક્રિયા હૈ અપને આપકો વિશિષ્ટ યોધા માનનેવાલા કોહ મી રણવીર હસે રણ મેં સ્વઙ્હિત નહીં કર
સકતા હૈ યહી બાત સૂત્રકાર ને અહત પદ દ્વારા પ્રકટ કી હૈ. અનેક એશ્વર્ય આદિગુણોં કા
યહ દાતા હૈ હસકે ધારણ કરનેવાળે કો શીતકાલ ઋતુ જૈસા સુખ પ્રાપ્ત હોતા હૈ. (છત્ત-
રયણ પહાણં સુદુલ્લહં અલ્પપુણ્ણાણ) એસા યહ પ્રધાન છત્રરત્ન અલ્પપુણ્યવાળે જીવોં કો પ્રાપ્ત
નહીં હોતા હૈ (પમાણ રાઈણ તવગુણાણ, ફલેગદેસભાગં વિમાણવાસે વિ દુલ્લહતરં વધારિય-
મલ્લદામકલાવં સારયધવલ્લભરયણિગરપ્પગાસ દિવ્વં છત્તરયણં મહિવહસ્સ ધરણિમલ્લ-
પુણ્ણદો) અપને-અપને કાલ કે અનુસાર શરીર પ્રમાણોપેત રાજાઓં કે તપોગુણોં કા
યહ એક પ્રકાર કા ફલ માના ગયા હૈ તાત્પર્ય કહને કા યહ હૈ કિ ચક્ર કે અધિપતિઓં
દ્વારા જો પૂર્વ મેં તપસ્યાઈ કો જાતી હૈ. ડનકા ફત્ર નૌનિધિ એવ ચૌદહ રત્નાદિક કે રૂપ
સે વિમત્ત હો જાતા હૈ—અર્થાત્ ચક્રવર્તિયો કો નૌનિધિયા એવં ચૌદહરત્ન પ્રાપ્ત હોતે હૈ ડન
રત્નો મેં યહ છત્ર મી એક રત્ન માના ગયા હૈ એસા યહ છત્રરત્ન વિમાનો મેં વાસ કરનેવાળે

યોદ્ધામાનનાર કોઈ પણ રણવીર આને રણુમા ખંડિત કરી શકતો નથી સૂત્રકારે એજ વાત
'અહત' પદ વડે પ્રકટ કરી છે અનેક ઐશ્વર્ય વગેરે શુભોને એ આપનાર છે. એને ધારણ
કરનારને શીતકાળમાં ઉષ્ણ ઋતુની જેમ અને ઉષ્ણ ઋતુમાં શીત ઋતુની જેમ સુખ પ્રાપ્ત
થાય છે, (છત્તરયણં પહાણં સુદુલ્લહં અલ્પપુણ્ણાણ) એવું એ પ્રધાન છત્રરત્ન અલ્પ પુણ્યવાળા
વાળા જીવાત્માઓને પ્રાપ્ત થતું નથી. (પમાણરાઈણ તવ ગુણાણ ફલેગદેસભાગં વિમાણવાસે
વિ દુલ્લહતર વધારિયમલ્લદામકલાવં સારય ધવલ્લભરયણિગરપ્પગાસ દિવ્વં છત્તરયણં
મહિવહસ્સ ધરણિમલ્લવણ્ણદો) યોત-યોતાના કાળ સુખજન શરીર પ્રમાણોપેત રાજાઓના
તપોશુભોનું એ એક જાતનું ફળ માનવામાં આવે છે. કહેવાનું તાત્પર્ય આ પ્રમાણ છે કે
એકના અધિપતિઓ વડે જે પૂર્વમાં તપસ્યાઓ આચરવામાં આવે છે, તેમનું ફળ નવનિધિ
અને ચતુર્દશ રત્નાદિકના, રૂપમાં વિમત્ત થઈ જાય છે. એટલે કે એકવર્તીઓને નવનિધિ
ઓ અને ચતુર્દશ રત્નો પ્રાપ્ત થાય છે તે રત્નોમાં એ છત્રને પણ એક રત્ન-માનવામાં આવે

તિર્યક્ પ્રસારિતોમયબાહુપ્રમાણો માનવિશેષસ્તેન પ્રમાણેન પ્રકૃત્યા સ્વભાવેન વિસ્તૃ-
તમ્ તથા 'કુમુદસંઢધવલં' કુમુદલખંડધવલમ્ તત્ર કુમુદાનિ-ચન્દ્રવિકાશીનિ શ્વેતકમલાનિ
તેષાં ણ્ડો વનં તદ્વત્ ધવલમ્ 'રણ્ણો સંચારિમં વિમાણં' રાજો ભરતસ્ય 'સંચારિમં તિ'
સશ્ચરણશીલં જન્મ વિમાનમ્ આશ્રયિણાં સુખાવહત્વાત્ તથા 'સૂરાતવવાયવુદ્ધિદોસાણય-
સ્વયકરં' સૂરાતપવાતવૃષ્ટિદોષાણાં ચ ક્ષયકરમ્, તત્ર સૂરાતપવાતવૃષ્ટયઃ પ્રસિદ્ધાસ્તાસાં
યે દોષાસ્તેષાં ક્ષયકરમ્, એતચ્છત્રચ્છાયસમાશ્રિતાનાં હિ વિષાદિ દોષા અપિ ન પ્રભવન્તી-
તિભાવઃ, 'તવ ગુણેહિં લઘ્વં' તપોગુણેઃ-પૂર્વજન્માર્ચીર્ણતપોગુણમહિમ્ના લઘ્વં ભરતે
નેતિ, અથ ગાથા પ્રબન્ધેન વિશેષણાન્યાહ-સૂત્રકારઃ

અહયં बहुगुणदाणं उऊण विवरीय सुहकयच्छायं ।

छत्तरयणं पहाणं सुदुल्लह अप्पुण्णाण ॥૧॥

છાયા - અહતં बहुगुणदानम् ऋतुनां विपरीतसुखकृतच्छायम् ।

छत्ररत्नं प्रधानं सुदुर्लभमल्पपुण्यानाम् ॥૧॥

શરત્કાલીન વિમલ પ્રતિપૂર્ણ ચન્દ્રમણ્ડલ કે જેસાં હસકા રૂપ થા । (ખરિદવામપ્પમાણ પગહવિત્થઈ)
હસકા સ્વાભાવિક વિસ્તાર-નરેન્દ્ર ભરત કે દ્વારા ફેલાયે ગયે દોનો હાથો કે બરાબર થા ।
સાધિક દ્વાદશથેજન કા જો પ્રમાણ હસકા કથન કિયા ગયા હૈ વહ કારણ પાકર યહ
ઇતના અધિક ફેલ જાતા હૈ । હમ અપેક્ષા કહા ગયા હૈ । (કુમુદસંઢધવલ, રણ્ણો સંચારિમ-
વિમાણં સુગતવવાયવુદ્ધિદોસાણં ય સ્વયકરં તવગુણેહિલઘ્વં-અહયં बहुगुणदाणं उऊण विवरीय सुह-
કયચ્છાયં) કુમુદ કે વન કે જેસે ધવલ થા મહારાજા ભરત કા યહ સચરણશીલ વિમાન
સ્વરૂપ થા સૂર્ય તાપ વાત ઔર વૃષ્ટિ કે દોષોં કા વિનાશક થા, અથવા-સૂર્યતાપ વાત ઔર વૃષ્ટિ
કા યવં વિષાદિ જન્ય દોષોં કા યહ વિનાશ કરને વાલા થા ક્યોકિ હસકો છાયા મેં આશ્રિત
હુપ પ્રાણિયોં કે વિષાદિજન્ય સવ દોષ શાન્ત હો જાતે હૈં. વે કુલ્લ મી અપના પ્રભાવ નહીં
દિલ્લા સકતે હૈ ભરત ને હસે પૂર્વજન્મ મેં આચરિત કિયે ગયે તપોગુણ કે પ્રભાવ સે લઘ્વ

વિમલં પ્રતિપૂર્ણ ચન્દ્રમણ્ડલ જેવું એવું રૂપ હતું (ખરિદવામપ્પમાણપગહવિત્થઈ) એનો
સ્વાભાવિક વિસ્તાર નરેન્દ્રભરત વડે પ્રસૂત બને હોયોની બરાબર હતો. સાધિક દ્વાદશથેજ
નતુ જે પ્રમાણ છત્રરત્ન વિષેથન કરવામાં આવેલ છે તે કારણ ઉપસ્થિત થતાં જ એ
આટલું બધું વિસ્તૃત થઈ બાક છે એ અપેક્ષાએ કહેવામાં આવેલ છે (કુમુદસંઢધવલં
રણ્ણો સંચારિમં વિમાણં સૂરાતવવાયવુદ્ધિદોસાણં ય સ્વયકરં તવગુણેહિલઘ્વં અહયં बहुगुण
दाणं उऊण विवरीय सुहकयच्छायं) કુમુદવન જેવું એ ધવલ હતું. રાજા ભરતનું એ સચ-
રણશીલ વિમાનસ્વરૂપ હતું. સૂર્યતાપ, વાત અને વૃષ્ટિનાં દોષોનું એ વિનાશ કરનાર હતું.
અથવા સૂર્યતાપ, વાત અને વૃષ્ટિને તેમજ વિષાદિજન્ય દોષોને એ વિનષ્ટ કરનાર હતું.
કેમકે એની છાયામાં આશ્રિત થયેલાં પ્રાણીઓનાં વિષાદિ જન્ય સર્વદોષો શાન્ત થઈ બાક
છે તેઓ સ્વસ્થમાત્રામાં પણ પોતાનો પ્રભાવ બતાવી શકતા નથી ભરતે એને પૂર્વજન્મમાં
આચરિત કરવામાં આવેલા તપોગુણના પ્રભાવથી ઉપલબ્ધ કરેલું છે પોતાની બાતને વિશિષ્ટ

તત્ર અહતં ન કેનાપિ રણે સ્વઙ્હિતમ્ તથા વહુગુણદાનં વહૂનાં ગુણાનામ્ એશ્વર્વા-
દીનાં દાનં યસ્મૈ તત્તથા, તથા ઋતૂનાં વિપરીતસુખકૃતચ્છાયમ્, ઋતૂનાં હેમન્તાદીનાં
વિપરીતા અથવા ષષ્ઠી ષષ્ઠ્યાઃ પશ્ચમ્યર્થે વ્યાખ્યાનેન ઋતુભ્યો વિપરીતા ઉષ્ણર્ત્તો શીતા
શીતર્ત્તો ઉષ્ણા અતએવ સુખકૃતા કૃતસુખા સુખદાયિની છાયા યસ્ય તત્તથા, સૂત્ર તાન્તસ્ય
પરનિપાતો 'જાતિકાલસુખાદર્નવેત્યનેન સૂત્રેણ વિકલ્પવિધાનાત્, एतादृशं छत्ररत्नम्
छत्रेषु उत्कृष्टं प्रधानं छत्रगुणोपेतत्वात् छत्रेषु ये शुभगुणाः तैः युक्तत्वात् पुनः कीदृशम्
सुदुर्लभम् अल्पपुण्यानाम् विशिष्टपुण्यरहितानाम् ॥१॥ 'પમાણ રાઈણ તવગુણાણ ફલેગ-
દેસભાગં વિમાણવાસે વિ દુલ્લહતરં' પુનઃ કીદશમ્ પ્રમાણરાજ્ઞાં તપોગુણાનાં ફલૈકદેશ-
ભાગં વિમાણવાસેઽપિ દુર્લભતરમ્, તત્ર પ્રમાણરાજાનામ્ સ્વસ્વકાલોચિતશરીરપ્રમાણોપેત-
રાજ્ઞામ્, તપોગુણાનાં ફલૈકદેશભાગમ્ અયમર્થઃ— ચક્રાધિપૂર્વાર્જિતમ્ તપસાં ફલં સર્વસ્વં
નવનિધાનચતુર્દશરત્નાદિષુ વિભક્તં તસ્માત્કારણાત્ તદેકદેશભૂતમિદં છત્રરત્નં વિમાન-

ક્રિયા હૈ અપને આપકો વિશિષ્ટ યોધા માનનેવાલા કોઈ મી રણવીર હસે રણ મેં સ્વઙ્હિત નહીં કર
સકતા હૈ યહી બાત સૂત્રકાર ને અહત પદ દ્વારા પ્રકટ કી હૈ. અનેક એશ્વર્થ આદિગુણોં કા
યહ દાતા હૈ હસકે ધારણ કરનેવાળે કો શીતકાલ ઋતુ જૈસા સુખ પ્રાપ્ત હોતા હૈ. (છત્ત-
રયણ પહાણં સુદુલ્લહ અલ્પપુણ્ણાણ) એસા યહ પ્રવાન છત્રરત્ન અલ્પપુણ્ણવાળે જીવોં કો પ્રાપ્ત
નહીં હોતા હૈ (પમાણ રાઈણ તવગુણાણ, ફલેગદેસભાગં વિમાણવાસે વિ દુલ્લહતરં વગધારિય-
મલ્લદામકલાવં સારયધવલ્લભરયણિગરપ્પગાસ દિઘ્વં છત્તરયણં મહિવહસ્સ ધરણિમલ્લ-
પુણ્ણહંદો) અપને-અપને કાલ કે અનુસાર શરીર પ્રમાણોપેન રાજાઓં કે તપોગુણોં કા
યહ એક પ્રકાર કા ફલ માના ગયા હૈ તાત્પર્ય કહને કા યહ હૈ કિ ચક્ર કે અધિપતિઓં
દ્વારા જો પૂર્વ મેં તપસ્યાઈ કો જાતી હૈ. ડનકા ફત્ર નૌનિધિ એવ ચૌદહ રત્નાદિક કે રૂપ
સે વિભક્ત હો જાતા હૈ—અર્થાત્ ચક્રવર્તિયો કો નૌનિધિયા એવ ચૌદહરત્ન પ્રાપ્ત હોતે હૈ ડન
રત્નો મેં યહ છત્ર મી એક રત્ન માના ગયા હૈ એસા યહ છત્રરત્ન વિમાનો મેં વાસ કરનેવાળે

યોદ્ધામાનનાર કોઈ પણ રણવીર આને રણમાં ખડિત કરી શકતો નથી સૂત્રકારે એજ વાત
'અહત' પદ વડે પ્રકટ કરી છે અનેક ઐશ્વર્ય વગેરે શુભોને એ આપનાર છે. એને ધારણ
કરનારને શીતકાળમાં ઉષ્ણ ઋતુની જેમ અને ઉષ્ણ ઋતુમાં શીત ઋતુની જેમ સુખ પ્રાપ્ત
થાય છે, (છત્તરયણં પહાણં સુદુલ્લહં અલ્પપુણ્ણાણ) એવુ એ પ્રધાન છત્રરત્ન અલ્પ પુણ્યોદય
વાળા જીવાત્માઓને પ્રાપ્ત થતું નથી. (પમાણરાઈણ તવ ગુણાણ ફલેગદેસભાગં વિમાણવાસે
વિ દુલ્લહતરં વગધારિયમલ્લદામકલાવં સારય ધવલ્લભરયણિગરપ્પગાસ દિઘ્વં છત્તરયણં
મહિવહસ્સ ધરણિમલ્લવણ્ણહંદો) પોત-પોતાના કાળ સુખી શરીર પ્રમાણોપેત રાત્તઓના
તપોશુભોનુ એ એક જાતનુ ક્ષણ માનવામાં આવે છે. કહેવાનુ તાત્પર્ય આ પ્રમાણુ છે કે
એકના અધિપતિઓ વડે જે પૂર્વમાં તપસ્યાઓ આચરવામાં આવે છે, તેમનુ ક્ષણ નવનિધિ
અને ચતુર્દશ રત્નાદિકના, રૂપમાં વિભક્ત થઈ જાય છે. એટલે કે ચક્રવર્તીઓને નવનિધિ
ઓ અને ચતુર્દશ રત્નો પ્રાપ્ત થાય છે તે રત્નોમાં એ છત્રને પણ એક રત્ન-માનવામાં આવે

વાસેડપિ દેવત્વેડપિ દુર્લભતરમ્, તત્ર ચક્રવર્તિત્વસ્યાસમ્ભવાત્, તથા 'વગધારિઅપ-
લ્લદામકલાવં' પ્રલમ્બિતમલ્લદામકલાપમ્ તત્ર 'વગધારિઅત્તિ' પ્રલમ્બિતો લમ્બમાનાર્થવા-
ચકઃ લમ્બતયાડવલમ્બિતો માલ્યદામ્નાં પુષ્પમાલાનાં કલાપઃ સમૂહો યત્ર તત્તથા, સર્વતઃ
પુષ્પમાલાવેષ્ટિત્વં ઇત્યર્થઃ, તથા- 'સારય ધવલભરયણિગરપ્પગાસં' શારદધવલાભ્રરજનિકર-
પ્રકાશમ્, તત્ર શારદાનિ- શરત્કાલિકાનિ ધવલાનિ અભ્રાણિ વાર્દલાનિ તદ્વત્ પ્રકાશઃ-
ઉદ્ઘોતો યસ્ય તત્તથા 'દિવ્યં છત્તરયણં મહિવડ્સ ધરણિયલ્પુણ્ણદો' પૂર્વોક્ત સર્વવિ-
શેષણવિશિષ્ટમ્ દિવ્યં સહસ્રદેવાધિષ્ઠિતં છત્તરત્નં મહીપતેઃ ભરતસ્ય ધરણિતલસ્ય પૂર્ણેન્દુ-
રિવ- પૂર્ણચન્દ્ર ઇવ પૂર્ણેન્દુ વર્તતે । 'તણ્ણં સે દિવ્વે છત્તરયણે મરહેણં રણ્ણા પરામુદ્ધે સ-
માણે સ્વિપ્પામેવ દુવાલસજોયણાં પવિત્થરહ સાહિયાહં તિરિયં' તતઃ સ્વલ્લ તત્ દિવ્યં
છત્તરત્નં ભરતેન રાજા પરામુદ્ધં સ્પૃહ્યં ગૃહીત્વ સત્ સિપ્રમેય દ્વાદશયોજનાનિ અષ્ટાચત્વારિ-
ણત્ ક્રોશાન્ સાધિકાનિ તિર્યક્ પ્રવિસ્તૃણાતિ, સાધિકત્વં પરિપૂર્ણર્ચમરત્નવિધાયક-
ત્વેન, અન્યથા કિરાતકૃતવૃષ્ટ્યુપદ્રવઃ સ્વસૈન્યસ્ય દુર્વારઃ સ્યાદિતિ । સૂ. ૨૦॥

અથ છત્તરત્ન પ્રવિસ્તરણાનન્તરં ભરતો યત્ કૃતવાન્ તદાહ- "તણ્ણં સે" ઇત્યાદિ ।

દેવો કો અત્યન્ત દુર્લભ કહા ગયા છે. ક્યોંકિ વહાં પર ચક્રવર્તિત્વ પદ કો પ્રાપ્તિ હોતી નહીં
માની ગઈ છે, યહ છત્તરત્ન પુષ્પોં કી મલાઓં સે યુક્ત રહતા છે-અર્થાત્ હસકે ઉપર ચારોં
ઓર લમ્બી ૨ પુષ્પો કી માલાપં લટકતી રહતી હૈં । હસકા ઉઘોત શરત્કાલિક ધવલ મેઘોં
કે- જૈસા તથા શરત્કાલિક ચન્દ્ર કે જૈસા છે. એસા યહ પૂર્વોક્ત વિશેષણોવાલા છત્તરત્ન
મહોપતિ રાજા કા, એસા પ્રતીત હોતા થા કિ માનો યહ ધરણિતલ કા પૂર્ણચન્દ્રમણ્ડલ હી છે ।
હસ છત્તરત્ન કી રક્ષા કરનેવાળે એક દેવ હોતે હૈં । (તણ્ણં સે દિવ્વે છત્તરયણે મરહેણ રણ્ણા
પરામુદ્ધે સમાણે સ્વિપ્પામેવ દુવાલસજોયણાં પવિત્થરહ સાહિયાહં તિરિયં) જન્મ ભરત રાજા
ને હસ છત્તર કો છુઆ-તો શીઘ્ર હો કુલ્લ અધિક ૧૨ યોજન તક તિરલ્લે રૂપમેં વિસ્તૃત
હો ગયા -ઉપર તન ગયા-॥સૂ. ૨૦॥

છત્તરત્ન કે વિસ્તૃતહો જાને કે બાદ ભરત ને ક્યા કિય હસકા વર્ણન-

છ. એવુ' એ છત્તરત્ન વિમાનોમાં વાસ કરનારા દેવોને પણ અત્યંત દુર્લભ કહેવામાં આ-
વેલ છે કેમકે દેવોને ચક્રવર્તિત્વપદની પ્રાપ્તિ થતી નથી ત્યાં એ છત્તરત્ન પુષ્પમાળાઓથી
યુક્ત રહે છે એટલે કે એની ઉપર ચોમર લાંબી-લાંબી પુષ્પોની માળાઓ લટકતી રહે છે
એનો ઉઘોત શરત્ કાલિક ધવલ મેઘો જેવો તથા શરત્ કાલિક ચન્દ્ર જેવો હોય છે, એવું
એ પૂર્વોક્ત વિશેષણોવાળું મહીપતિ ભરતનું છત્તરત્ન એવું લાગતું હતું કે જાણે એ ધરણિ
તલનું પૂર્ણચન્દ્રમણ્ડલ જ ન હોય. એ છત્તરત્નની રક્ષા કરનારા એક હબાર દેવો હોય છે,
(તણ્ણં સે દિવ્વે છત્તરયણે મરહેણ રણ્ણા પરામુદ્ધે સમાણે સ્વિપ્પામેવ દુવાલસજોયણાં
પવિત્થરહ સાહિયાહં તિરિયં) ભરત રાજા એ એ છત્તરનો સ્પર્શ કર્યો કે તરત જ એ કંઈક
વધારે ૧૨ ચોજન સુધી વકાકારમાં વિસ્તૃત થઈ ગયું-ઉપર આલેખાદિત થઈ ગયું ॥૨૦॥

मूलम्- तएणं से भरहे राया छत्तरयणं खंधावारस्सुवरिं ठवेइ,
ठवित्ता मणिरयणं परामुसइ वेढो जाव छत्तरयणस्स वत्थिभागंसि ठवेइ,
तस्स य अणतिवर चारुखं सिलणिहि अत्थमंत मेत्त सालि जय गोहु
ममुग्गमासतिलकुलत्थ सड्डिग निप्फावचणगकोइव कोत्थुंभरिकंगुवरग-
रालग अणेग धण्णावरणहारिअग अल्लगमूलगहलिइलाउअतउसतुंव-
कालिगकविट्ठ अंब अंबिलिअ सव्वणिप्फायए सुकुसले गाहावइरयणेत्ति
सव्वजणवोस्सुअगुणे । तए णं से गाहावइरयणे भरहस्स रण्णो तद्वि-
सप्पइण्णणिप्फाइअपूइआणं सव्व धण्णाणं अणेगाइं कुंभसहस्साइं उवट्ठ-
वेत्ति, तए णं से भरहे राया चम्मरयणसमारुढे छत्तरयणसमोच्छन्ने मणि-
रयणकउज्जोए समुग्गयभूएणं सुहं सुहेणं सत्तरत्तं परिवसइ- 'णवि से
खुहा णविलिअं णेव भयं णेव विज्जए दुक्खं । भरहाहिवस्स रण्णो खंधा-
वारस्स वि तहव ॥सू० २१॥

छाया- ततः खलु स भरतो राजा छत्ररत्नं स्कन्धावारस्यापि स्थापयति स्थापयि-
त्वा मणिरत्नं परामुशति वेष्टको धावत् छत्ररत्नस्य वस्तिभागे स्थापयति, तस्य च अन्-
तिवर चावकूपम् शिलानिहितार्थवन्मात्रं शालि 'शिलानिहितास्तमयन्मित्रशालि' वा यावद्
गोधूममुद्गमावतिलकुलत्थषष्ठिकनिष्पावचणककोद्रवकुस्तुम्भरो कङ्क वरट्टारालकानेकधान्य
वरण हरितकार्द्रकमूलक हरिद्रालावुक त्रपुषतुम्बकलिङ्गकपित्थामाम्लिक सर्वं निष्पादकम्,
सुकुशलं सर्वजनविश्रुतगुणम् । ततः खलु तत् गृहपतिरत्न भरतस्य राज्ञः तद्वित्तप्रकार्णे
निष्पादितं पूतानां सर्वधान्यानामनेकानि कुम्भसहस्राणि उपस्थापयति, ततः खलु स भरतो
राजा चर्मरत्नसमारुढः छत्ररत्नसमोच्छन्नः मणिरत्नकृतोद्योतः समुद्गकेभूत इव सुखं
सुखेन सत्तरात्रं परिवसति नापि तस्य क्षुत् नव्यलीकं नैव भयं नैव विद्यते दुःखम्, भरता-
धिपस्य राज्ञः स्कन्धावारस्यापि तथैव ॥सू० २१॥

टीका- 'तएणं से' इत्यादि । 'तए णं से भरहे राया छत्तरयणं खंधावारस्सुवरिं
ठवेइ' ततः खलु स भरतो राजा छत्ररत्न स्कन्धावारस्य नियमितस्थानस्थितद्वादशयो-

'तएणं से भरहे राया छत्तरयणं खंधावारस्सुवरिं ठवेइ' इत्यादि सूत्र - २१-

टीकार्थ- 'तएणं से भरहे राया छत्तरयणं खंधावारस्सुवरिं ठवेइ' इस तरह भरत महाराजा

छत्ररत्न विस्तृत थथु त्याग भाव भरते शुं कथुं-ते विशे वधुंन-

'तएण से भरहे राया छत्तरयणं खंधावारस्सुवरिं ठवेइ' इत्यादि सूत्र-२१॥

टीकार्थ- (तएणं से भरहे राया रयणं खंधावारस्सुवरिं ठवेइ) भा प्रभाष्ये भरतराजो

જનાવધિકસૈન્યસમૂહસ્યોપરિ સ્થાપયતિ 'ઠવિત્તા મળિરયણં પરામુસદ્' સ્થાપયિત્વા મળિરત્નં પામૃશતિ-સ્પૃશતિ ગૃહ્ણતિ 'વેદો જાવ ત્તિ' અત્ર મળિરત્નસ્ય વેષ્ટકો વર્ણકો યા-વદિતિ સમ્પૂર્ણો વક્તવ્યઃ પૂર્વોક્તઃ, સ ચ 'તોતં ચરંગુલપ્પમાણં' इत्यादिकः 'परामु-सित्ता' परामृश्य 'छत्तरयणस्स वस्तिभाग ठवेद्' चर्मरत्नच्छत्ररत्न सम्पुटमिलननिरुद्ध सूर्यचन्द्राद्यालाके सैन्येऽहर्निशमुद्योतार्थं छत्ररत्नस्य वस्तिभागे अत्र वस्ति शब्देन अवयव-रूपोऽर्था गृह्यते तेन छत्रस्य अवयवविशेषे शलाकामध्यभागे मणिरत्नं स्थापयति, न-न्वेवं सकलैः न्यानामवराधे जाते सति कथ तेषां भोजनादि विधिरित्याशङ्कमानं प्रत्याह- गृहपतिरत्न सर्वमत्र पानादिकं निष्पाद्य सर्वा भोजनव्यवस्थां करोतीति अग्रे

ને જબ અપને સ્કન્ધાવાર કે ઊપર છત્રરત્ન કો તાન દિયા- તબ હસકે બાદ ડસને (મળિરયણં પરામુસદ્) મળિરત્ન કા ડઠાયા (વેદો જાવ છત્રરયણસ્સ વસ્તિમાગાસ ઠવેદ્) હમ મળિરત્ન કા યહાં સમ્પૂર્ણવર્ણકપાઠ " તોતં ચરંગુલપ્પમાણં " યદા તક જૈસા પઢલે કહા ગયા હૈ વૈસા હી કહઠના યાહપ- ડસ મળિરત્ન કા ડઠા કરક ડસે ડસને છત્રરત્ન કે વસ્તિ,માગ મેં-શલાકાઓ કે મધ્ય મે રલાદયા યનાકિ ચર્મરત્ન- આર છત્રરત્ન કે પરસ્પર મેં મિલ જાને સે ડસ મમય સૂર્ય આર ચન્દ્ર કા પ્રકાશ નરુદ્દ હા ગયા થા હસાલિયે સૈન્ય મેં અહર્નિશ પ્રકાશ બના હૈ હસ આમપ્રાય સે ડસને માળરત્ન કાં છત્રરત્ન કાં શલાકાઓ કે મધ્યમાગ મેં રસદિયા (તસ્સય મળાતિવરં ચારુરુવ સિલણિહિ અત્થમત મેસસાલિ જબ ગોહમ મુગમાસતિલકુલથ સ'દ્દુગાનપ્પાવચળગકોહવ કોયુમ્મરિકગુણરગરાલગ અળેગવળ્લાવરણ હારિમગઅલ્લગ મૂળગાહ-લિહિલાડમતડસ તુવ કાલિગ કવિટ્ઠ અંબ-આવાહમ સન્વણિપ્પાયપ) અત્ર સુત્રકાર ચક્રવર્તી કે-સૈન્ય કો ભોજનાદિવિધિ કી વ્યવસ્થા કરને વાલે ગૃહપતિરત્ન કે સમ્બન્ધ મેં યહાં સે યહ કથન પ્રારમ્ભ કરતે હૈ- હસમેં યેસા કહા ગયા હૈ [ક ચક્રવર્તી કે પાસ ઇક ગૃહપતિરત્ન મી હોતા હૈ

અથારે પોતાના સ્કન્ધાવારની ઉપર છત્રરત્ન તાણી હીધુ ત્યારે તેણે (મળિરયણં પરામુસદ્) મળિરત્ન ને ઊઠાવ્યું. (વેદો જાવ છત્રરયણસ્સ વસ્તિમાગંસિ ઠવેદ્) એ મળિરત્ન વિશે અહીં સંપૂર્ણ વર્ણક પાઠ 'તોતં ચરંગુલપ્પમાણં' અહીં સુધી જેમ કહેવામાં આવ્યું છે, તેવું જ સમજવું જોઈએ તે મળિરત્નને ઊઠાવીને તેણે તે મળિરત્નના વસ્તિભાગમાં-શલાકાઓના મધ્યમા મૂંઠી હીધુ કેમકે ચર્મરત્ન અને છત્રરત્નને પરસ્પર મળવાથી તે સમયે સૂર્ય અને ચન્દ્રનો પ્રકાશ શેકાધ ગયો હતો. એથી સૈન્યમાં અહર્નિશ પ્રકાશ કાયમ રહે તે માટે તેણે મળિરત્નને છત્રરત્નની શલાકાઓના મધ્યભાગમાં મૂંઠી હીધુ હતું. (તસ્સય મળાતિવરં ચારુરુવ સિલણિહિ અત્થમત મેસસાલિ જબ ગોહમ મુગમાસ તિલકુલથ સ'દ્દુગાનપ્પાવચળગકોહવ કોયુમ્મરિકગુણરગરાલગ અળેગવળ્લાવરણ હારિમગઅલ્લગ મૂળગાહલિહિલાડમતડસ તુવ કાલિગ કવિટ્ઠ અંબઅંવિલિમ સન્વણિપ્પાયપ) હવે સુત્રકાર ચક્રવર્તીના સૈન્યની ભોજનાદિ વિધિની વ્યવસ્થા કરનાર ગૃહપતિ રત્નના અંબધમાં અહીંથી કથન પ્રારંભ કરે છે એ કથનમાં આ પ્રમાણે કહેવામાં આવ્યું છે કે ચક્રવર્તીની પાસે એક ગૃહપતિરત્ન હોય છે અને એ રત્નજ ચક્રવર્તીના વિશાળ સૈન્ય

વક્ષ્યતે તાદૃશ ગૃહપતિરત્નસ્યૈવ વિશેષણાનિ દર્શયિતું પ્રથમમનતિવર વિશેષણં દર્શયન્નાહ
'તસ્ય ચ અણતિવર'ં' इत्यादि, इदं च अनतिवरम् इत्यादि पदम् अग्रे वक्ष्यमाणगृहपति रत्न-
पदस्य विशेषणम् तथा च तस्य च भग्नस्य अनतिवरम्-अतिवरम्-अतिप्रधानं वस्तु
अपरं नास्ति यस्मात् तच्चथा सर्वोत्कृष्टमित्यर्थः तथा 'चारुरूपं' चारुरूपम्-प्रसिद्धम् अतीव
सुन्दराकृतिकं गृहपतिरत्नं कतिविधानि अङ्गानि निष्पादयति तत्राह-'सिलणिहि अ अत्य-
मंत मेत्त सलि जवगोहूममुग्गमासतिलकुलत्थसद्विगनिष्पावत्तणगक्रोद्वकोत्थुंभरिकंगुवर-
गरालग अणेगधण्णावरणहारिअग अल्लगमूलग हल्लिहलाउअतउसतुंबकालिग कविट्ठ अंव
अंवल्लिअ सच्च णिष्काय' शिलानिहितार्थं यन्मात्र 'अस्तमन्मित्र' वा शलि जव गोधूम-
मुद्गमासतिलकुलत्थषष्ठिकनिष्पावचणकक्रोद्व कुस्तुम्भरीकहु 'वरा' वारु रालकाने-
कधान्यावरणहारितकार्द्रकमूलकहरिद्राऽलाबुक त्रपुपतुंबकलिङ्गकपित्थाम्र इम्लिक सर्वनिष्पा-
दकम्, तत्र शिला इव शिला अतिस्थिरत्वेन चर्मरत्नं तत्र निहितमात्राणाम् उत्समात्राणां
न तु लोकप्रसिद्ध भूमिखेटनप्रभृति कर्मसापेक्षाणाम् 'अत्यमंतं चि' अर्थवतां प्रयोजना-
र्थिनां भोजनादियोग्यानां शाल्यादीनां निष्पादकमित्यग्रे सम्बन्धः शाल्यादीनाम्
'अत्यमंतमेत्त चि' अस्तमयति मित्रे सूर्ये सायंकाले इत्यर्थः, उभयत्र व्याख्याने सूत्रे

और वही चक्रवर्ती के इस विशाल सैन्य के भोजनादिकी सुचारु रूपसे व्यवस्था करता है यह
गृहपतिरत्न अनतिवर- होता है- इसके जैसा और कोई श्रेष्ठ नहीं होता अर्थात् यह सर्वोत्कृष्ट
होता है तथा यह रूप में भी बड़ा ही सुन्दर होता है यह इतने प्रकार के अन्न को पकाता है
पैदा करता है जैसे "सिलणिहि" आदि यह पढ़िके प्रकट कर दिया गया है कि प्रातः काल तो
चर्मरत्न पर अन्न बोया जाता और शाम को बड़ काट लिया जाकर खाने के योग्य बना दिया
जाता है "सिलणिहि अत्यमंतमेत्तसालि" यहां "शिलापद" से चर्मरत्न गृहीत हुआ है क्योंकि
अतिस्थिर होने से वह शिला के जैसी एकशिला को मानलिया गया है इस चर्मरत्न पर ही
बीज बोया जाता है जैसा कि लोक में भूमिका जोतना आदिरूप- कार्य किया जाता है
ऐसा यहां कुछ भी नहीं किया जाता है यहां तो सिर्फ बीज उसमें डाला कि इतने ही

માટે ભોજનાદિની સુવ્યવસ્થિત રીતે વ્યવસ્થા કરે છે એ ગૃહપતિરત્ન અનતિવર હોય છે
એના જેવું બીજું કોઈ પણ શ્રેષ્ઠ હોતું નથી એટલે કે એ રત્ન સર્વોત્કૃષ્ટ હોય છે તેમજ
એ રૂપમાં પણ અતીવ સુંદર હોય છે એ એટલી બાતના અન્નોને પકવે છે-ઉત્પન્ન કરે
છે. એમકે-'સિલાણિહિ' વગેરે એ બધા અન્નો વિષે એ સુત્રમાં પહેલા અર્થા કરવામાં
આવી છે એ આ પ્રમાણે રત્નની એ વિશેષતા છે કે સવારે એ અર્ચરત્ન ઉપર અન્ન વાવ
વામાં આવે છે અને સંધ્યાકાળે તેની લક્ષણી કરવામાં આવે છે અને તે ભોજન થોડું થઈ
જાય છે 'સિલાણિહિ અત્યમંતમેત્તસાલિ' અહીં શિલા પદથી ચર્મરત્ન ગૃહીત થયેલું છે.
એમકે અતિસ્થિર હોવા બદલ આ શિલા એવી એક શિલા માની લેવામાં આવી છે. એ ચર્મ
રત્ન ઉપર જ બી વાવવામાં આવે છે એમ લોકમાં ભૂમિ વગેરે ને એડીને બી વાવવામાં આવે
છે, એવું કંઈ પણ અહીં કરવામાં આવતું નથી. એની ઉપર તો બી નાખ્યું કે આટલાથી

પદવ્યસ્યયેન નિર્દેશઃ પ્રાકૃતત્વાત્ પ્રથમપ્રહરે વપતિ દ્વિતીયપ્રહરે સિંચતિ તૃતીય પ્રહરે પરિપાચયતિ ચતુર્થ પ્રહરે નિષ્પાદિતમન્નપાનાદિકમુપભોગાય સર્વત્ર પ્રેષયતીતિભાવઃ । તત્ર શાલયઃ યવાઃ હયપ્રિયાઃ ગોધૂમાઃ મુદ્રાઃ માષાસ્તિલાઃ કુલ્ત્યાઃ પ્રસિદ્ધા દન ષટ્ટિકાઃ ષષ્ટ્યહોરાત્રૈઃ પરિપચ્ચમાના સ્તન્દુલાઃ નિષ્પાવાઃ ધાન્યવિશેષાઃ વલ્લાઃ ચ-
ળકાઃ કોદ્રવાઃ પ્રસિદ્ધાઃ 'કોત્યુ મરિત્તિ' કુસ્તુમ્ભર્યો ધાન્યવિશેષાઃ કઙ્ગુ- ધાન્યવિ-
શેષાઃ બૃહચ્છિરસ્કાઃ 'વરગ ત્તિ' વરદ્વાઃ રાલકાઃ ધાન્યવિશેષાઃ અલ્પશિરસ્કાઃ ઉપલક્ષ-
ણાત્ મસૂરાદયોઽન્યેઽપિ ધાન્યમેદાઃ ગ્રાહ્યાઃ, અનેકાનિ ધાન્યાં હિતિ ધાન્યાપત્રાણિ વરણો
વનસ્પતિવિશેષઃ તત્પત્રાણિ પત્તપ્રમૃતીનિ યાનિ હરિતકાનિ પત્રશાકાનિ મેઘનાદવાસ્તુલ-

માત્ર સે વહ સવ ફૂલ પક કર શામતક તૈયાર હો ગયા ઓર ફિર વહ ભોજન કે યોગ્ય
બન ગયા હસ તઘ્ઘ કા યહ સવ કામ ગૃહપતિરત્ન કે હી આધીન હોતા હૈ યહી વાંત
“ચર્મરત્ને ચ સુક્ષેત્ર હવોત્પત્તિ દિવામુલ્લે, સાય ધાન્યાન્યજાયન્ત ગૃહિરત્નપ્રભાવત્.” હસ શ્લોક
દ્વારા હૈમચન્દ્રાચાર્ય ને પ્રકટ કી હૈ યહ ગૃહપતિરત્ન હમ ચર્મરત્ન પર પ્રથમ પ્રહર મેં શાલિ
આદિ બીજોં કા વપન કરના હૈ દ્વિતીય પ્રહર મેં ઉન્હે પાની દેતા હૈ તૃતીય પ્રહર મેં ઉન્હે
પકાતા હૈ ઓર ચતુર્થ પ્રહર મેં નિષ્પાદિત ડસ અન્નાદિ સામગ્રી કો ઉપભોગ કે લિયે સર્વત્ર
સેના મેં મેજ દેતા હૈ જિસ અનાજ કો યહ ગૃહપતિરત્ન નિષ્પાદિત કરકે મેજતા હૈ- ડસ
અનાજ કે નામ હસ પ્રકાર સે હૈ— શાલિ- ધાન્ય- જિસમેં સે ચાવલ તૈયાર હોતે હૈ યવ- જો ગો-
ચૂમ- ગેદુ, મુદ્ર- મૂંગ માસ- ડહદ તિલ- તિલી- કુલ્તય- કુલથી, ષટ્ટિક-૬૦ અહોરાત મેં
પકકર તૈયાર હોનેવાલા તન્દુલ, નિષ્પાવ- ધાન્યવિશેષ, વલ્લ ચળક- ચના, કોદ્રવ- આદિવાસિયો
કા ભોજ્ય- પદાર્થ કોદો કુસ્તુમ્ભરી- ધાન્યવિશેષ, કઙ્ગુ- કાવનો વરગસ્તિ— વરદ્, રાલક
અલ્પશિરસ્ક ઉપલક્ષણ સે મસૂર આદિ ઓર મો અનેક ધાન્યવિશેષ, વરણવનસ્પતિવિશેષ, પત્ર-
શાક આદિરૂપ હરિતકાય, આર્દ્રક- આદો, મૂલક- મૂઝી, હરિદ્રા- હલ્દી, અલાબુક- તૂમઝી

જ સ્વધ્યાસાગ મુધી તે પાકીને તૈયાર થા ગયુ અને પછી તે લોજન માટે યોગ્ય થઇ ગયુ
એ પ્રમાણેનુ એ સર્વકાય ગૃહપતિ રત્નનેજ આધીન હોય છે એ જ વાત—

ચર્મરત્ને ચ સુક્ષેત્ર હવોત્પત્તિ દિવામુલ્લે । સાય ધાન્યાન્યજાયન્ત ગૃહિરત્ન પ્રભાવત્ ॥

એ શ્લોક વડે આચાર્ય હૈમચન્દ્રે પ્રકટ કરી છે. એ ગૃહપતિરત્ન એ ચર્મરત્ન ઉપર
પ્રથમ પ્રહરમાં શાલિ વગેરે બીજોનુ વપન કરે છે બીજા પ્રહરમાં તેમને પાણીથી સિંચિત
કરે છે ત્રીજા પ્રહરમાં તેમને પકવે છે અને ચતુર્થ પ્રહરમાં નિષ્પાદિત તે અન્નાદિ સામગ્રી
ને ઉપલોગ માટે સર્વત્ર સેનામાં મોકલી આપે છે. જે અન્ન ને એ ગૃહપતિરત્ન નિષ્પા-
દિત કરીને મોકલે છે, તે અન્નોના નામો આ પ્રમાણે છે—શાલિ ધાન્ય-જેમાંથી ચોખા તૈયાર
થાય છે. યવ-જવ, ગોધૂમ-ઘઉં, મુદ્ગ-મૂંગ, માષ-અડક, તિલ-તલ, કુલ્તય-કલથી, ષટ્ટિક
૬૦ અહોરાતમાં પાકીને તૈયાર થનાર તન્દુલ, નિષ્પાવ-ધાન્ય વિશેષ, વલ્લચણુક-ચણા, કોદ્રવ
આદિવાસી લોકોનુ અન્ન-કોદો, કુસ્તુભરી-ધાન્યવિશેષ કુશુ-કાંગ વરગસ્તિ-વરદ્, રાલક-
અલ્પશિરસ્ક ઉપલક્ષણથી મસૂર વગેરે અનેક ધાન્યવિશેષો વરણુ-વનસ્પતિ વિશેષ, પત્રશાક

कादीनि, पूर्वं च कुस्तुम्भरीशब्देन धान्यभेदः संगृहीतः अनेकधान्यः वरणो वनस्पति-
विशेषः इदानीं तत्पत्राणां भक्ष्यत्वेन पत्रशाखेषु सङ्ग्रह इति न पौनरुक्त्यम् 'अल्लगमूलग-
हरिदत्ति' आर्द्रकहरिद्रे प्रसिद्धे मूलक इति दन्तकम्, कन्दमूलशाके कथिते, अथ फलशा-
कान्याह-अलाबुक्तं तुम्बिः इति-कर्कटिक त्रपुशं तुम्बकं तुम्बिभेदः चिर्मटजातीयं तुम्बक
लिङ्ग कपित्थाम्रा इम्लिकः प्रसिद्धाः इदमपि फलशाकोपलक्षणम् अलाबु तुम्बयोर्लम्बत्व-
वृत्तत्वकृतो भेदः, स च तज्जातीयबीजकृत इति, सर्वशब्देन चोक्तातिरिक्तशाकादीनां संग्रहः,
एतेषां शाल्यादीनां निष्पादकम् उत्पादकं गृहपतिरत्न गाथापतिरत्नमित्यर्थः कौटुम्बिक
रत्नमित्यग्रे सम्बन्धः । ननु यदि गृहपतिरत्नम् अचिरक्रियया मन्त्रसंस्क्रियया धान्यादिकं
निष्पादयति तर्हि किं चर्मरत्ने बीजवपनेन ! तन्निरपेक्षतयैव तत् निष्पादयतुः तस्य दि-
व्यशक्तिकत्वादिति चेन्मैवम् इतरकारणकलापसंघटनपूर्वकत्वेनैव कारणस्य कार्यजनकत्व-
नियमात्, अतएव सूर्यपाकरसवतीकारा नलादयः सूर्यविद्यामहिम्ना रसवतीं परिपचन्तो-
ऽपि तन्दुलसूपशाकवेपवारादि सामग्रीरपेक्षन्ते इति अतएव सन्तोपि चर्मरत्नादयो गौण-

ककडी, त्रपुष, तुम्बक-तुम्बडा, लिङ्ग-मातुलिङ्ग, कपित्थ-कैथ आम्र-आम, अंबलिक-इमली-या-
आबला आदि इन सब पदार्थों को कन्दमूलशाकों को पत्रशाकों को फलशाकों को और
अनाजों को यह गृहपतिरत्न उत्पन्न करता है इस गृहपतिरत्न को दूसरे शब्दों में
गाथापतिरत्न और कौटुम्बिकरत्न भी कहा गया है यहा ऐसी शंका हो सकती है कि जब
यह गृहपतिरत्न बहुत ही शीघ्ररूप से मन्त्रशक्ति के बलपर धान्यादिक निष्पन्न कर लेता है तो
फिर चर्मरत्न पर बीज बोने की क्या आवश्यकता है वह तो विना चर्मरत्न के भी उन्हें उत्पन्न
कर सकता है क्योंकि ऐसी ही उसकी दिव्यशक्ति है । उत्तर इसका ऐसा है कि कार्य
का जो जनक होता है वह दूसरे कारण कलापो की संघटना पूर्वक ही विवक्षित कार्य
का उत्पादक होता है यदि ऐसा न माना जावे तो सूर्यपाक रसवती बनाने वाले नला-
दिक सूर्यविद्या के प्रभाव से रसवती को पकाते हुए भी तन्दुल-सूप-दाल-आदि सामग्री

आदि उप हरितकाय, आर्द्रक-आहु, मूलक-मूला हरिद्रा-हलहर्, आलाभुक्त-तुम्बडी, ककडी,
त्रपुष, तुम्बक-तुम्बडा, लिङ्ग-मातुलिङ्ग, कपित्थ-कैथ, आम्र-आम, अंबलिक-आमलीके
आमला वगैरे जो सब पदार्थोंने कन्दमूल शाकोने, पत्रशाकोने, फलशाकोने अने अनाजोंने
जो गृहपतिरत्न उत्पन्न करे छे जो गृहपतिरत्न ने भीजा संघटोभां गाथापतिरत्न अने कौटु-
म्बिकरत्न पक्षु कहेवाभा आवे छे अही जोवी शंका यद्य शक्य छे जथादे जो गृहपतिरत्न
अतीव शीघ्र रूपमा मन्त्रशक्तिना भजे धान्य आदि निष्पन्न करीछे छे तो पक्षी चर्मरत्न
उपर पतित करवानी शी आवश्यकता छे, ते तो अगर चर्मरत्न पक्षु भी उत्पन्न करीने
पक्षी शक्य तेम छे केमके जोवी न तेनाभा दिव्य शक्ति छे, जोना नवाभा आ प्रभाछे छे
के कार्यना न जनक होय छे, ते भीजा कारण कलापोनी संघटनापूर्वक न विवक्षित कार्य-
त्पादक होय छे, ने आ प्रभाछे मानवाभा आवे नहि तो सूर्यपाक रसवती बनावनाश
नलादिक सूर्यविद्याना-प्रभावशी रसवतीने पकवे छे छतां जो तन्दुल-सूप-दाल वगैरे साम

કારણં ભવન્તિ ગાથાપતિરત્નસ્તુ પ્રધાનમ્ નહિ પ્રધાનોઽપ્રધાનં તિરસ્કરોતિ કિન્તુ તત્સહકારૈર્નૈવ કાર્યં કરોતિ અર્થાત્ ચર્મરત્નસ્યૈકદેશે વોજવપનં કરોતિ તાવતૈવ સકલકાર્યસ્ય સિદ્ધિર્ભવતીતિભાવઃ । અતएव पुनः कीदृशम् 'सुकुसले' सुकुशलम् अतिनिपुणं निजकार्य-विधाविति 'गाहावइरयणे चि सञ्जणवीस्सुअगुणे' गृहपतिरत्नमिति सर्वजनविश्रुतशु-णम्, तत्र गृहपतिरत्नम् इति अमुना प्रकारेण सर्वजनेषु विश्रुताः विख्याताः गुणाः यस्य तत्तथा ईदृश विशेषणविशिष्टं गृहपतिरत्नं यदवमरोचितं कृतवान् तदाह—'तएणं' इत्यादि । 'तएणं' से गाहावइरयणे भरहस्स रण्णो तद्विचस्पइण्णणिप्पाइअप्पूआणं सव्वधण्णाणं अणेगाइं कुम्भसहस्साइं उवट्टवेइ" तत' चर्मरत्नच्छत्ररत्नऽसम्पुटसंघटनान-न्तरं खलु तद् गृहपतिरत्नं भरतस्य राज्ञः सएव दिवसस्तद्विचस्पस्मिन् प्रकीर्णकानाम् उप्तानां निष्पादितानां परिपाकदशाः प्रापितानां पूतानां निर्बुसीकृतानां सर्वधान्यानाम् अ-नेकानि 'कुम्भसहस्राणि' कुम्भानां राशिरूपमानविशेषाणां सहस्राणि उपस्थापयति उपढौ-

કી અપેક્ષાવાળે ક્યોં હુણે ઇસલિયે યહ માનના ચાહિયે— કિ મોજુદ મો ચર્મરત્નાદિકતો ગોળ કારણ યે ઔર ગાથાપતિ પ્રધાન કારણ યા પ્રધાન કારણ અપ્રધાન— ગોળ કારણ કા તિરસ્કાર નહીં કરતા હૈ કિન્તુ ડનકી સહાયતા કે બલ સે હો અપના કાર્ય કરતા હૈ યહ ગાથાપતિ ચર્મ-રત્ન કે ઇકદેશ મેં હી વોજવપન કરતા હૈ પરન્તુ ઇતને સે હો સકલ કાર્ય કી સિદ્ધિ હો જાતી હૈ યહ ગાથાપતિ રત્ન સુકુશલ થા ઇસી કારણ અપને કાર્યમેં બહુત અધિક નિપુણ કહા ગયા હૈ (ગાહાવઇરયણેત્તિ સવ્વજણવીસ્સુઅગુણે) ઇસ તરહ કા સર્જનનોં મેં પ્રસિદ્ધ હૈ ગુણ નિસકે ઇસા યહ ગાથાપતિ હોતા હૈ ઇન પૂર્વકત વિશેષણો સે વિશિષ્ટ ઇસ ગાથાપતિ રત્ન ને ડસ અવસર પર જો કિયા—ડસે (તણં સે ગાહાવઇરયણે) ઇત્યાદિ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકાર ને પ્રકટ કિયા હૈ—ઇસમેં યહ વતલાયા હૈ કિ જબ ચર્મરત્ન ઔર છત્રરત્ન ઇન ડોનો કા મિલાન ટો ચુકા તબ ડસ ગૃહ-પતિરત્ન ને ભરત મહારાજા કેલિયે ડસીદિન વોયે ગયે ઔર ડસીદિન પક કર તૈયાર હોને પર ફાટે ગયે તથા નિર્બુસ કિયે ગયે સમસ્ત ધાન્યો કે હજારોં કુમ્ભ અર્પણકરદિયે કુમ્ભ યહ ઇક

બીની અપેક્ષાવાળા કેમ થયા એથી આમ માનવું એટલે કે ચર્મરત્નાદિકની વિધમાનતા તો ગૌણ કારણ હતા અને ગાથાપતિ પ્રધાન કારણ હતા. પ્રધાન કારણ અપ્રધાન એટલે કે ગૌણ કારણ નો તિરસ્કાર (અનાદર) કરી શકે નહીં પણ તેમની સહાયતાનાં બળેજ પોતાનું કામ કરે છે એ ગાથાપતિ ચર્મરત્નના એક દેશમાં જ વોજવપન કરે છે પણ એટલા માત્ર થી જ સકલ કાર્યની સિદ્ધિ થઇ જાય છે એ ગાથા પતિરત્ન-(સુકુસલે) એથી જ પોતાના કાર્યમાં અતીવ નિપુણ કહેવામાં આવેલ છે. (ગાહાવઇરયણે ત્તિ સવ્વજણવીસ્સુઅગુણે) એવું સર્વજનો માં સુપ્રસિદ્ધ છે શુણ બેના છે એવો એ ગાથાપતિ હોય છે. એ પૂર્વકત વિશેષણોથી વિશિષ્ટ એ ગાથાપતિરત્ને તે અવસરે જે કંઈ કયું તેને (તણં સે ગાહા વઇરયણે) ઇત્યાદિ સૂત્ર વડે સૂત્રકારે પ્રકટ કરેલ છે એમાં એ પ્રકટ કરવામાં આવેલ છે કે જ્યારે ચર્મરત્ન અને છત્રરત્ન એ બન્ને રત્નોનું મિલાન થઇ ગયું ત્યારે તે ગૃહપતિરત્ને ભરત રાજા માટે તે જ દિવસેવાવેલ અને તે જ દિવસે પકવીને તૈયાર થયેલા તેમજ લલણી

કયતિ અર્પયતિ અનુયોગદ્વારસૂત્રોક્તં કુમ્ભમાનં ત્વેવમ્ “દો અસઈઓ પસઈઓ દોપસઈઓ
સેઈઆ ચત્તારિ સેઈઆઓ કુડઓ ચત્તારિ કુડયા પત્થો, ચત્તારિ પત્થયા આઢચ, ચત્તારિ
આઢયા દોળો, સદ્ધિ આઢયાઈ જહળ્ળણં કુંમે અસીતિ આઢયાઈ મજ્ઞિમપ કુંમે, આઢયસયં
અવકોસપ કુંમેતિ ” વ્યાખ્યાનં ચાત્ર-તથાહિ-અત્રાશતિ અવાહ્મુસહસ્તતલરૂપમુષ્ઠિઃ
તત્ત ણં ધાન્યમપિ અશતિરેવોચ્યતે, દ્વે અશતી પ્રસૃતિઃ નાવાકારતયા વ્યવસ્થાપિતા પ્રા-
જ્ઞલકરતલરૂપોચ્યતે, દ્વે પ્રસૃતી સેતિકા માગધદેશપ્રસિદ્ધો માનવિશેષ નતુ ઇહ પ્રસિદ્ધા
તસ્યાઃ પ્રસ્થ ચતુર્ણત્વાત્, ચત્તરઃ સેતિકા કુડવઃ પલ્લિકા સમાનો માપ્યમાનવિશેષઃ
ચત્તારઃ કુડવાઃ પ્રસ્થો માણક સમાનંમાપ્યમ્ ચત્તારઃ પ્રસ્થાઃ આઢકઃ સેતિકા પ્રમાણઃ
ચત્તારઃ આઢકાઃ દ્રોણઃ ચતુઃ સેતિકા પ્રમાણઃ ષષ્ઠ્યાઃ આઢકૈઃ પશ્ચદશમિઃ જઘન્યઃ
કુમ્ભઃ અશીત્યા આઢકૈઃવિંશત્યા દ્રોણૈઃ મધ્યમઃ કુમ્ભઃ, તથા આઢકાનાં શતેન પશ્ચવિંશત્યા

પ્રકાર કા નાપ હોતા હૈ અનુયોગદ્વારસૂત્ર મેં ફસકી પરિમાષા ફેસ પ્રકાર સે કહી ગઈ હૈ—
“દો અસઈઓ પસઈઓ દો પસઈઓ સેઈઆ ચત્તારિ સેઈઆઓ કુડઓ ચત્તારિ કુડયા પત્થો ચત્તારિ
પત્થયા આઢચ ચત્તારિ આઢચ—દોળો સદ્ધિ આઢચાઈ જહળ્ળણં કુંમે, અસીતિ આઢચાઈ મજ્ઞિમપ
કુંમે, આઢયસયં અવકોસપ કુંમેતિ” ફસકા તાત્પર્ય યહ હૈ—હાથ કો હથેલી કો નીચી કરકે
જો મુષ્ઠિ બાંધી જાતી હૈ ફસકા નામ અસતિ હૈ । ફસ અસતિ મેં જિતના ધાન્ય જાતા હૈ ડસે હી
યહાં અસતિ કહા ગયા હૈ । દો અસતિયોં કો—અક પ્રસૃતિ હોતી હૈ ફસકા આકાર નાવ કે આ
કાર જૈસા હોતા હૈ હથેલી સીધી કરકે ફેઝરને પર હથેલી નાવ કે આકાર કો બન જાતી હૈ ।
ફસી કા નામ અક પ્રસૃતિ હૈ । ફસ પ્રસૃતિ મેં જિતના અનાજ મરને પર બનતા હૈ ડતના હી અ-
નાજ અક પ્રસૃતિ પ્રમાણ કહા ગયા હૈ । દો પ્રસૃતિયોં કો અક સેતિકા હોતો હૈ યહ મગધ દેશ
પ્રસિદ્ધ તોલ વિશેષ કા નામ હૈ યહ યહા પ્રસિદ્ધ ની હૈ । ચાર સેતિકાઓ કા અક કુડવ હોતા
હૈ ચાર કુડવોં કા અક પ્રસ્થ હોતા હૈ ચાર પ્રસ્થોં કા અક આઢક હોતા હૈ । ચાર આઢકોં કા

કરવામા આવેલા, નિર્બુસ કરવામા આવેલા સકલ ધાન્યોના હજારો કુલો અર્પણ કરી
હીષા કુંભ એ એક પ્રકારનુ માપ છે ‘અનુયોગ દ્વાર’ સૂત્રમા એ માપની પરિભાષા આ
પ્રમાણે કરવામાં આવી છે “દો અસઈઓ પસઈઓ દો પસઈઓ સેઈઆ ચત્તારિ સેઈઆઓ કુડઓ
ચત્તારિ કુડયા પત્થો, ચત્તારિ પત્થયા આઢચ, ચત્તારિ આઢયા દોળો સદ્ધિ આઢચાઈ જહળ્ળણં
કુંમે અસીતિ આઢચાઈ મજ્ઞિમપ કુંમે આઢયસયં અવકોસપ કુંમેતિ ” આનું તાત્પર્ય આ
પ્રમાણે છે કે હાથની હથેળી ને નીચી કરીને જે મૂઠી વાળવામા આવે છે, તેનું નામ ‘અસતિ’
છે એ ‘અસતિ’માં જેટલું ધાન્ય સમાય છે, તેને જ અહીં અશતિ કહેવામાં આવેલ છે એ
અશતિઓની એક પ્રસૃતિ થાય છે એનો આકર નાવના જેવો હોય છે હથેલી સીધી કરીને
પહોળી કરીએ તો તે નાવના આકાર જેવી થઈ જાય છે એનું જ નામ એક પ્રસૃતિ છે,
એ પ્રસૃતિમા જેટલું અનાજ છે, તેટલું અનાજ એક પ્રસૃતિ પ્રમાણ કહેવામા આવે છે.
જે પ્રસૃતિઓની એક સેતિકા હોય છે એ મગધ દેશ પ્રસિદ્ધ તોલ વિશેષનું નામ છે એ
તોલ અહીં પ્રસિદ્ધ નથી ચાર સેતિકાઓ નો એક કુડવ હોય છે. ચાર કુડવોના એક-
પ્રસ્થ હોય છે ચાર પ્રસ્થોના એક આઢક હોય છે ચાર આઢકો નો એક દ્રોણ હોય છે. ૬૦

દ્રોણે: ઉત્કૃષ્ટઃ કુમ્ભઃ ઇતિ, અત્ર ચ 'સવ્વધણ્ણાણં તિ' સૂત્રમુપલક્ષણપરં તેન અન્યદપિ
યત્સૈન્યસ્ય મોજ્યોપયોગિ વસ્તુ તત્તર્વમુપનયતિ, એવ સતિ તત્ર ભરતઃ કથં ક્રિયત્કાલં ચ
સ્થિતવાનિત્યાહ—'તણ્ણં સે મરહે રાયા ચમ્મરયણસમારુદે છત્તરયણસમોચ્છન્ને મણિ-
રયણકહ્હજોણ સમુગ્ગયમૂણ્ણં સુહં સુહેણં સત્તરત્ત પરિવસહ' તતઃ ગૃહપતિરત્ન કૃતધા-
ન્યોપસ્થાપનાનન્તરં સ ભરતઃ ચર્મરત્નારુદઃ છત્તરત્તનેન સમવચ્છન્નઃ—આચ્છાદિતો મણિ-
રત્નકૃતોઘોતઃ સમુદ્ધકસમ્પુટ મૂત્ર ઇવ પ્રાપ્ત ઇવ, અત્ર મૂગતી ઇતિ સૌત્રધાતોઃ ક્ત પ્રત્યયઃ
સુખંસુખેન સપ્તરાત્રં સપ્તદિનાનિ યાવત્ પરિવસતિ, એતદેવ વ્યક્તીકુર્વન્નાહ—'ળવિ
સે સુહાણ' ઇત્યાદિ 'ળવિ સે સુહાણ વિલ્લિઝં ણેવ મયં ણેવ વિજ્જણ દુક્ખં ।

ભરહાહિવસ્સ રણ્ણો સ્વધાવારસ્સ વિ તહેવ ॥૧॥

અયમર્થઃ—નાપિ 'સે' તસ્ય ભરતાધિપસ્ય રાજ્ઞઃ 'સુહા' શુત્ ક્ષુધા બુધુક્ષા 'ળ
વિલ્લિઝં' ન વ્યલીક દૈન્યમિત્યર્થઃ નૈવ વિદ્યતે દુઃકલ્પમ્ સ્કન્ધાવારસ્યાપિ તથૈવ
યથા ભરતસ્ય ન ક્ષુદાદિ તથા સૈન્યસમૂહસ્યાપિ નૈત્યર્થઃ ॥૨૧॥

એક દ્રોણ હોતા હૈ । ૬૦ સાઠ આઢકો કા એક જઘન્ય કુમ્ભ હોતા હૈ । ૮૦ આઢકો કા એક
મધ્યમ કુમ્ભ હોતા હૈ ૧૦૦ આઢકો કા એક ઉત્કૃષ્ટ કુમ્ભ હોતા હૈ । "સવ્વધણ્ણાણ" એસા
કથન ઉપલક્ષણ રૂપ હૈ । ઇસસે ઔર મી જો સૈન્ય કે મોજન મેં ઉપયોગી વસ્તુ હોતી થી વહ
સબ વહ દેતા થા(તણ્ણ સે મરહે રાયા ચમ્મરયણસમારુદે છત્તરયણસમોચ્છણે મણિરયણકહ્હજો-
ણ સમુગ્ગયમૂણ્ણં સુહં સુહેણ સત્તરત્ત પરિવસહ) ઇસ તરહ વહ ભરત નરેશ ડસ વરસાત કે સમય
ચર્મરત્ન પર બેઠા હુઆ ઔર છત્ર રત્ન સે સુરક્ષિત હુઆ મણિરત્ન દ્વારા પ્રદત્ત ડબોત મેં સુલ
પૂર્વક સાત દિન રાત તક રહા (ળવિસે સુહાણ વિલ્લિઝં ણેવ મયં ણેવ વિજ્જણદુક્લ ભરહાહિવસ્સ
રણ્ણો સ્વધાવારસ્સ વિ તહેવ) ઇતને સમય તક ભરત કો ન ક્ષુધાને સતાયા, ન દીનતા ને સતાયા
ન મય ને સતાયા ઔર ન દુઃલ ને હો સતાયા યહો અવસ્થા ભરત કે સૈન્ય કી મી રહા ઇસ તરહ
સાત દિન તક ભરત વહાં આનન્દ કે સાથ નિર્મયપનેસે અપને સ્કન્ધાવાર મેં રહા ॥૨૧॥

સાઠ આઢકોનુ એક જઘન્ય-પ્રમાણ કુલ હોય છે. ૮૦ આઢ કોનોએક મધ્યમ કુલ હોય
છે ૧૦૦ આઢકોનો એક ઉત્કૃષ્ટ કુલ હોય છે 'સવ્વ ધણ્ણાણ" એવુ કથન ઉપલક્ષણ ૨૫
છે. કોનાથી આમ સૂચિત કરવામા આવે છે કે કોજન માટે સૈન્ય ને યીજી પણ જે વસ્તુઓ
જોઈતી હતી તે વસ્તુઓને એ આપતુ હતુ (તણ્ણ સે મરહે રાયા ચમ્મરયણસમારુદે છત્ત
રયણ સમોચ્છણે મણિરયણકહ્હજોણ સમુગ્ગયમૂણ્ણં સુહ સુહેણ સત્તરત્ત પરિવસહ) આ
પ્રમાણે તે ભરત નરેશ તે વર્ષાના સમયમા ચર્મરત્ન ઉપર બેઠેલો અને છત્રરત્નથી સુરક્ષિત
થયેલો મણિરત્ન દ્વારા પ્રદત્ત ઉઘોતમા સુખપૂર્વક સાત-દિવસ રાત્રિ સુધી રહ્યો (ળ વિ સે
સુ વિલ્લિઝં ણેવ મયં ણેવ વિજ્જણદુક્લ ભરહાહિવસ્સ રણ્ણો સ્વધાવારસ્સ વિ તહેવ)
આટલા સમય સુધી ભરતને ન બુધુક્ષા એ સતાવ્યો, ન દીનતાએ સતાવ્યો, ન ભયે સતાવ્યો
અને ન દુઃખે સતાવ્યો અને એ પ્રમાણે ભરતની સેનાની પણ સ્થિતિ રહી આ પ્રમાણે
સાત દિવસ સુધી ભરત ત્યા આનંદ પૂર્વક પોતાના સ્કન્ધાવારની સાથે રહ્યો ॥૨૧॥

ततः किं जातमित्याह—‘तएणं तस्स’ इत्यादि ।

मूलम्—तए णं तस्म भरहस्स रण्णो सत्तरत्तंसि परिणममाणंसि
इमेयारूवे अज्जत्थिए चित्थिए कप्पिए पत्थिए मणागए संकप्पे समुप्प-
ज्जित्था केसणं भो ! अपत्थियपत्थए दुरत्तपंतलक्खणे जाव परिवज्जिए
जेणं ममं इमाए एयाणुरूवाए जाव अभिसमण्णागयाए उप्पिं विजय-
खंधावारस्स जुगमुसलमुट्ठि जाव वासं वासइ । तएणं तस्स भरहस्स
रण्णो इमेयारूवं अज्जत्थियं चित्थियं कप्पियं पत्थियं मनोगयं संकप्पं समु-
प्पणं जाणित्ता सोलसदेवसहस्सा सण्णज्झिउं पव्वत्ता यावि होत्था तएणं
ते देवा सण्णद्धवद्धवम्मियकवया जाव गहिआउहप्पहरणा जेणेव ते
मेहमुहा णागकुमारा देवा तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता. मेहमुहे
णागकुमारे देवे एवं वयासी हंभो ! मेहमुहा णागकुमारा ! देवा अप्प-
त्थिएपत्थगा जाव परिवज्जिया किण्णं तुब्भि ण याणह भरहं रायं चाउरंत-
चक्कवट्ठि महिद्धियं जाव उद्वित्तए वा पडिसेहित्तए वा तहावि ण तुब्भे
भरहस्स रण्णो विजयखंधावारस्स उप्पिं जुगमुसलमुट्ठिप्पमाणमित्ताहिं
धाराहिं ओघमेघं सत्तरत्तं वासह, तं एवमवि गते इत्तो खिप्पामेव अव-
क्कमह अहव णं अज्ज पासह, चित्तं जीवलोगं, तए णं ते मेहमुहा णाग-
कुमारा देवा तेहिं देवेहिं एवं बुत्ता समाणा भीया तत्था वहिआ उव्विग्गा
संजायभया मेघानीकं पडिसाहरंति पडिसाहरित्ता जेणेव आवाडचिलाया
तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता आवाडचिलाए एवं वयासी एसणं देवाणु-
प्पिया ! भरहे राया महिद्धिए जाव णो खलु एस सक्का केणइ देवेण
वा जाव अग्गिप्पओगेण वा जाव उद्वित्तए वा पडिसेहित्तए वा
तहावि अ णं ते अम्हेहिं देवाणुप्पिया ! तुब्भं पियट्ठयाए भरहस्स रण्णो
उवसग्गे कए, तं गच्छह णं तुब्भे देवानुप्पिया ! ण्हाया कयबलिकम्मा
कयकोउयमंगलपायच्छित्ता उल्लपडसाडगा ओचूलगणिअच्छा अग्गाइ
वगइं रयणाइं गहाय पंजलिउढा पायवडिआ भरहं रायाणं सरणं उवेह,

पणिवइअवच्छला खलु उत्तमपुरिसा णत्थि मे भरहस्स रण्णोअंतिया-
 ओ भयमिति कट्ठु, एवं वदित्ता जामेव दिसि पाउब्भया तामेव
 दिसि पडिगया । तएणं ते आवाडचिलाया मेहमुहेहे णागकुमारेहि देवेहि
 एवं वुत्ता सयाणा उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयको-
 उयमंगलपायच्छित्ता उल्लपडसाडगा ओचूलगणिअच्छा अग्गाइं वराइं
 रयणाइं गहाय जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता करयल-
 परिगहियं जाव मत्थए अंजलि कट्ठु भरहं रायं जएणं विजएणं वद्धाविति
 वद्धावित्ता अग्गाइं वराइं रयणाइं उवणेंति, उवणित्ता एवं वयासी-‘वसुहर
 गुणहर जयहर हिरिसिंरि धिक्कित्तिधारकणरिंद । लक्खणसहस्सधारक
 रायमिदं णेचिरं धारे ॥१॥ हयवइ गयवइ णरवइ णवणिहि बंइ
 भरहवांस पढमवई । वत्तीस जणवयसहस्सरायसामी चिरंजीव ॥२॥
 पढमणरीसर ईसर हिअ ईसर महिलिआ सहस्साणं । देवसय साहसीसर
 चोदस रयणी सर जसंसी ॥३॥ सागर गिरि मेरागं उत्तर वाईण-ममिजिअं
 तुमए । ता अम्हे देवाणुप्पियस्स विसए परिवसामो ॥४॥ अहोणं देवाणु-
 प्पियाणं इट्ठो जुई जसेबले वोरिए पुरिसक्कारपरक्कमे दिव्वा देवजुई दिव्वे
 देवाणुमावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, तं दिट्ठाणं देवाणुप्पिया णं इट्ठो
 एवं चेव जाव अभिसमण्णागए, तं खामेम णं देवाणुप्पिया खमतु णं
 देवाणुप्पिया खंतुमरहतुणं देवाणुप्पिया ! णाइ भुज्जोभुज्जो एवं करणयाए
 त्तिकट्ठु पंजलिउडा पायवडिआ भरहं रायं सरणं उवेति । तएणं से
 भरहे राया तसिं आवाडचिलायाणं अग्गाइं वराइं रयणाइं पडिच्छंति
 पडिच्छित्ता ते आवाडचिलाए एवं वयासी गच्छहणं भो तुब्भे ममं बाहु-
 च्छाया परिगहिया णिब्भया णिरुव्विग्गा सुहं सुहेणं परिवसह, णत्थि
 मे कत्तो वि भयमत्थि त्तिकट्ठु सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारेत्ता सम्मा
 णेत्ता पडिविसज्जेइ । तएणं से भरहे राया सेणं सेणावइं सदावेइ
 हावित्ता एवं वयासी गच्छाहिणं भो देवाणुप्पिया ! दौच्चपि सिध्दए

महाणइए पचवत्थिमणिक्खुहं ससिंधुसागरगिरिमैरागं समविसम णिक्खु-
डाणि अ ओअवेहि ओअवित्ता अग्गाइं वराइं रयणाइं पडिच्छाहि
पडिच्छित्ता मम एय माणत्तियं खिप्पोमेव पचपिणाहि जहा दाहिणिलस्स
ओयवणं तहा सव्वं भाणिव्वं जाव पचवणुभवमाणो विहरंति ॥सू० २२।

छाया—ततः खलु तस्य भरतस्य राज्ञः सप्तरात्रे परिणमति अयमेतद्रूपोऽभ्यर्थित
चिन्तितः कल्पितः प्रार्थितः मनोगतः सङ्कल्पः समुदपद्यत, क स खलु भोः । अप्रार्थितप्रार्थको
दुरन्तप्रान्तलक्षणो यावत् परिवर्जितः य खलु मम अस्थामेतद्रूपाया यावदमितसमन्वाग-
तायाम् उपरि विजयस्कन्धावारस्थः युगमुसलमुष्टिं यावत् वर्षं वर्षति । ततः खलु तस्य
भरतस्य राज्ञः इदमेतद्रूपम् अभ्यर्थितं चिन्तितं कल्पितं प्रार्थितं मनोगतं संकल्पं समुत्पन्न
ज्ञात्वा षोडशदेव सहस्राः सन्नद्धं प्रवृत्ताप्यमवन्, ततः खलु ते देवा सन्नद्धयद्धवमितकवचाः
यावत् गृहीतायुधप्रहरणाः यत्रैव ते मेघमुखा नागकुमाराः देवास्तत्रैव उपागच्छन्ति,
उपागत्य मेघमुखान् नागकुमारान् देवान् पवमवादीत् हभो ! मेघमुखा नागकुमाराः !
देवाः अप्रार्थितप्रार्थकाः यावत् परिवर्जिताः किं खलु यूयं न जानीथ भरत राजानं चातु-
रन्तश्चक्रवर्त्तिनं महर्द्धिकं यावत् उपद्रवयितुं वा प्रतिषेधयितुं वा, तथापि खलु यूयं भर-
तस्य राज्ञो विजयस्कन्धावारस्योपरि युगमुसलप्रमाणमिताभिर्घाताभिः ओघमेघं सप्त-
रात्रं वर्षं वर्षत, तत् पवमपि गते इतः क्षिप्रमेव अपक्रामत अथवा खलु अथ पश्यत चित्रं
जीवलोकम्, ततः खलु ते मेघमुखा नागकुमारा देवा ते देवैः पवमुक्ताः सन्तः भीताः व्रस्ताः
वाविताः उद्विग्ना सज्जानभयाः मेघानीकं प्रतिसंहरन्ति, प्रतिसंहत्य यत्रैव आपातकिराता
तत्रैव उपागच्छन्ति उपागत्य आपातकिरातान् पवमवादिषुः पषः खलु देवानुप्रिया । भर्तो
राजा महर्द्धिको यावत् नो खलु एष शक्यते केनापि देवेन वा यावत् अग्निप्रयोजेन
वा यावत् उपद्रवयितुं वा प्रतिषेधयितुं वा तथापि च खलु अस्माभिः देवानुप्रिया । युष्माकं
प्रीत्यर्थं भरतस्य राज्ञः उपसर्गं कृतः तद्वच्छत देवानुप्रियाः ! यूयं स्नाताः कृतबलिकर्माणः
कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ताः आर्द्रपटशाटकाः अवचूलकनियत्थाः अग्न्याणि वराणि
रत्नानि गृहीत्वा प्राञ्जलिकृताः पादपतिताः भरत राजानं शरणम् उपेत प्रणिपतितवत्सलाः
खलु उत्तमपुरुषा नास्ति भवतां भरतस्य राज्ञोऽन्तिकाद् भयमिति कृत्वा पवम् उदित्वा
यामैव दिशं प्रादुर्भूता नामैव दिशं प्रतिगता । ततः खलु ते आपातकिराता मेघमुखैः
नागकुमारे देवैः पवमुक्ता सन्तः उत्थया उत्तिष्ठन्ति, उत्थाय स्नाताः कृतबलिकर्माणः कृत-
कौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ताः आर्द्रपटशाटकाः अवचूलकनियत्थाः अग्न्याणि वराणि रत्नानि
गृहीत्वा यत्रैव भरतो राजा तत्रवोपागच्छन्ति उपागत्य करतलपरिगृहीतं यावत् मस्तके
अञ्जलिं कृत्वा भरतं राजानं जयेन विजयेन वर्द्धयन्ति वर्द्धयित्वा अग्न्याणि वराणि रत्नानि
उपनयन्ति उपनीय पवमवादिषु

हे वसुधर ! गुणधर ! जयधर ! ही श्री धृति कीर्त्तिधारक !

नरेन्द्र लक्षण सहस्रधारक ! नः राज्यमिदं चिर धारय ॥१॥

पणिवइअवच्छला खलु उत्तमपुरिसा णत्थि मे भरहस्स रण्णोअंतिया-
 ओ भयमिति कट्ठु, एवं वदित्ता जामेव दिसि पाउम्भया तामेव
 दिसि पडिगया । तएणं ते आवाडचिलाया मेहमुहेहि णागकुमारेहि देवेहि
 एवं वुत्ता समाणा उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयको-
 उयमंगलपायच्छित्ता उल्लपडसाडगा ओचूलगणिअच्छा अग्गाइं वराइं
 रयणाइं गहाय जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता करयल-
 परिग्गहियं जाव मत्थए अंजलि कट्ठु भरहं रायं जएणं विजएणं वद्धाविति
 वद्धावित्ता अग्गाइं वराइं रयणाइं उवणेति, उवणित्ता एणं वयासी-‘वसुहर
 गुणहर जयहर हिरिसिरि धिकित्तिधारकणरिंद । लक्खणसहस्सधारक
 रायमिदं णेचिरं धारे ॥१॥ हयवइ गयवइ णरवइ णवणिहि बंइ
 भरहवांस पढमवई । वत्तीस जणवयसहस्सरायसामी चिरंजीव ॥२॥
 पढमणरीसर ईसर हिअ ईसर महिलिआ सहस्साणं । देवसय साहसीसर
 चोदस रयणी सर जसंसी ॥३॥ सोगर गिरिमेरागं उत्तर वाईण-मभिजिअं
 तुमए । ता अम्हे देवाणुप्पियस्स विसए परिवसामो ॥४॥ अहोणं देवाणु-
 प्पियाणं इद्धो जुई जसेबले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे दिव्वा देवजुई दिव्वे
 देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, तं दिट्ठाणं देवाणुप्पिया णं इद्धो
 एवं चेव जाव अभिसमण्णागए, तं खामेम णं देवाणुप्पिया खमंतु णं
 देवाणुप्पिया खंतुभरहतुणं देवाणुप्पिया ! णोइ भुज्जोभुज्जो एवं करणयाए
 त्तिकट्ठु पंजलिउडा पायवहिआ भरहं रायं सरणं उवेति । तएणं से
 भरहे राया तेसिं आवाडचिलायाणं अग्गाइं वराइं रयणाइं पडिच्छंति
 पडिच्छित्ता ते आवाडचिलाए एवं वयासी गच्छहणं भो तुब्भे ममं बाहु-
 च्छाया परिग्गहिया णिब्भया णिहव्विग्गा सुहं सुहेणं परिवसह, णत्थि
 मे कत्तो वि भयमत्थि त्तिकट्ठु सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारेत्ता सम्मा
 णेत्ता पडिविसज्जेइ । तएणं से भरहे राया सेणं सेणावइं सदावेइ
 सदावित्ता एवं वयासी गच्छाहिणं भो देवाणुप्पिया ! दोच्चपि सिघ्रए

महाणइए पञ्चत्थिमणिकखुडं ससिंधुसागरगिरिमैरागं समविसम णिक्खु-
डाणि अ ओअवेहि ओअवित्ता अग्गाइं वराइं रयणाइं पडिच्छाहि
पडिच्छित्ता मम एय माणत्तियं खिप्पामेव पञ्चपिणाहि जहा दाहिणिलस्स
ओयवणं तहा सव्वं भाणिव्वं जाव पञ्चणुभवमाणो विहरंति ॥सू० २२॥

छाया—ततः खलु तस्य भरतस्य राज्ञः सप्तरात्रे परिणमति अयमेतद्रूपोऽभ्यर्थित
चिन्तितः कश्चित् प्रार्थितः मनोगतः सङ्कल्पः समुदपद्यत, कः खलु भोः । अप्रार्थितप्रार्थको
दुरन्तप्रान्तलक्षणो यावत् परिवर्जितः यः खलु मम अस्थामेतद्रूपायां यावदभिसमन्वाग-
तायाम् उपरि विजयस्कन्धावारस्य, युगमुसलमुष्टिं यावत् वर्षे वर्षति । ततः खलु तस्य
भरतस्य राज्ञः इदमेतद्रूपम् अभ्यर्थितं चिन्तितं कश्चित् प्रार्थितं मनोगतं संकल्पं समुत्पन्नं
ज्ञात्वा षोडशदेव सहस्राः सन्नद्धधुं प्रवृत्ताप्यभवन्, ततः खलु ते देवा सन्नद्धवद्धवमितकवचाः
यावत् गृहीतायुधप्रहरणाः यत्रैव ते मेघमुखान् नागकुमाराः देवास्तत्रैव उपागच्छन्ति,
उपागत्य मेघमुखान् नागकुमारान् देवान् पवमवादीत् इभो ! मेघमुखान् नागकुमाराः !
देवाः अप्रार्थितप्रार्थकाः यावत् परिवर्जिताः किं खलु यूयं न जानीध भरत राजान चातु-
रन्तश्चक्रवर्त्तिनं महर्द्धिकं यावत् उपद्रवयितुं वा प्रतिषेधयितुं वा, तथापि खलु यूयं भर-
तस्य राज्ञो विजयस्कन्धावारस्योपरि युगमुसलप्रमाणमितामिधाराभिः ओघमेघं सप्त-
रात्रं वर्षं वर्षत, तत् पवमपि गते इतः क्षिप्रमेव अपक्रामत अथवा खलु अथ पश्यत चित्रं
जीवलोकम्, ततः खलु ते मेघमुखान् नागकुमारा देवा ते देवैः पवमुक्ताः सन्तः भोता व्रस्ताः
बाधिता उद्विग्ना सज्जानभयाः मेघानीकं प्रतिसंहरन्ति, प्रतिसंहृत्य यत्रैव आपातकिराता
तत्रैव उपागच्छन्ति उपागत्य आपातकिरातान् पवमवादिषुः पवः खलु देवानुप्रिया । भक्तो
राजा महर्द्धिको यावत् नो खलु एष शक्यते केनापि देवेन वा यावत् अग्निप्रयोगेण
वा यावत् उपद्रवयितुं वा प्रतिषेधयितुं वा तथापि च खलु अस्माभिः देवानुप्रिया ! युष्माकं
प्रीत्यर्थं भरतस्य राज्ञः उपसर्गं कृतः तद्रच्छत देवानुप्रियाः ! यूयं स्नाता कृतबलिकर्माणः
कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ता आर्द्रपटशाटकाः अवचूलकनियत्थाः अग्न्याणि वराणि
रत्नानि गृहीत्वा प्राञ्जलिकृताः पादपतिताः भरत राजानं शरणम् उपेत प्रणिपतितवत्सलाः
खलु उत्तमपुरुषा नास्ति भवतां भरतस्य राज्ञोऽन्तिकाद् भयमिति कृत्वा पवम् उदित्वा
यामेव दिशं प्रादुर्भूता नामेव दिशं प्रतिगता । ततः खलु ते आपातकिराता मेघमुखैः
नागकुमारे देवैः पवमुक्ताः सन्तः उत्थया उत्तिष्ठन्ति, उत्थाय स्नानाः कृतबलिकर्माणः कृत-
कौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ता आर्द्रपटशाटका अवचूलकनियत्थाः अग्न्याणि वराणि रत्नानि
गृहीत्वा यत्रैव भरतो राजा तत्रोपागच्छन्ति उपागत्य करतलपरिगृहीतं यावत् मस्तके
अञ्जलिं कृत्वा भरतं राजानं जयेन विजयेन वद्धयन्ति वद्धयित्वा अग्न्याणि वराणि रत्नानि
उपनयन्ति उपनीय पवमवादिषु

हे वसुधर ! गुणधर ! जयधर ! ही श्री धृति कीर्त्तिधारक !

नरेन्द्र लक्षण सहस्रधारक ! नः राज्यमिदं चिर धारय ॥१॥

हृदयपते ! गजपते ! नरपते ! नवनिधिपते ! भरतवर्षे प्रथमपते !
 द्वात्रिंशज्जनपदसहस्रत्रराज स्वामिन् ! चिरं जीव ॥२॥
 प्रथम नरेश्वर ! ईश्वर ! महिलिका सहस्रत्राणां हृदयेश्वर !
 देवशतसहस्रत्राणामोश्वर ! चतुर्दशरत्नेश्वर ! यशस्विन् ॥३॥
 सागरगिरिमर्यादम् उत्तरावाचीन मभिजितं त्वया ।
 तस्माद् वयं देवानुप्रियस्य विषये परिव्रजामः ॥४॥

अहो खलु देवानुप्रियाणाम् ऋद्धिं द्युतिर्यशो बलं वीर्यं पुरुषकार पराक्रमः दिव्या-
 देवद्युतिः दिव्यो देवानुभावो लब्धः प्राप्त अभिसमन्वागत तत् दृष्ट्वा खलु देवानुप्रिया-
 णाम् ऋद्धिः पवमेव यावत् अभिसमन्वागत, तत् क्षमयाम खलु देवानुप्रिया । क्षमन्तां
 खलु देवानुप्रिया । क्षन्तु मर्हन्तु खलु देवानुप्रिया । नैव भूयोभूय पवं करणतायै इति
 कृत्वा प्राञ्जलिकृता पादपतिता भरत राजानं शरणमुपयान्ति, ततः खलु स भरतो राजा
 तेषामपातकिरातानामध्याणि वराणि रत्नानि प्रतिच्छति प्रतोच्छय तानापातकिरातान्
 पवमवादीत् गच्छत खलु भो । यूय मम बाहुच्छायया परिगृहीता निर्भया निरद्विग्ना सुखं
 सुखेन परिवसत, नास्ति भवतां कुतोऽपि भयमस्तीति कृत्वा सत्कारयति, सन्मानयति
 सत्कार्यं सन्मान्य प्रतिविसर्जयति । तत खलु स भरतो राजा सुषेणं सेनापतिं शब्दयति ।
 शब्दयित्वा पवमवादीन् गच्छ खलु भो देवानुप्रिय । द्वितीयमपि सिन्धवा महानद्याः पश्चिमं
 निष्कुटं ससिन्धुसागरगिरिमर्यादं समविषमनिष्कुटानि च 'ओभवहि' साधय साधयित्वा
 अध्याणि वराणि रत्नानि प्रतीच्छति प्रतीष्य मम पतामाज्ञासिकां क्षिप्रमेव प्रत्यर्पय यथा दाक्षि-
 णात्यस्य 'ओभवणं' साधनम् तथा सर्वं भणितव्यम् यावत् प्रत्यनुभवन् विहरति ॥सू०२॥

टीका—“तएणं तस्स भरहस्स” इत्यादि । ‘तएणं तस्स भरहस्स रण्णो सत्तर-
 त्तंसि परिणममाणंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए कप्पिए पत्थिए मणोगए सकप्पे
 समुप्पज्जित्था’ ततः तदनन्तरं खलु तस्य भरतस्य राज्ञः सप्तरात्रे परिणमति सति अय-
 मेतद्रूपः सप्तसु रात्रिषु व्यतीतासु वर्षाभिरोधविषयको विचारो भरतस्य मनसि एवं
 बक्ष्यमाणप्रकारेण जातः तत्र प्रथमम् ‘अज्झत्थिए’ आध्यात्मिक आत्मनि जातोऽङ्कुर

‘तएणं तस्स भरहस्स रण्णो सत्तरत्तंसि परिणममाणंसि’ इत्यादिसूत्र-२२

टीकार्थ—(तएणं तस्स भरहस्स रण्णो) जब भरतराजा के वहां रहते २ (सत्तरत्तंसि परिणम-
 माणंसि) सात दिन रात समाप्त हो चुके तब (इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए कप्पिए पत्थिए मणो-
 गए सकप्पे समुप्पज्जित्था) उमे ऐसा मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ यहां सकल्प के ‘आध्यात्मिक,
 चिन्तित, कल्पित, प्राथित’ इन विशेषणां की जगह २ न्याख्या कर दी गई है अतः वहीं से इसे

‘तएणं तस्स भरहस्स रण्णो सत्तरत्तंसि परिणममाणंसि’ इत्यादि सूत्र २२॥

टीकार्थ—(त एणं तस्स भरहस्स रण्णो) न्याये भरत राजने त्या २ छेतां-२ छेतां (सत्त-
 रत्तंसि परिणममाणंसि) सात दिवस-अने रात्रियों पूरी थी त्याये-इमेयारूवे अज्झ-
 त्थिए चित्थिए कप्पिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था) उमे ओवे भनोगत अंक्षे

ઇવ' ૧ તદનુ 'વિતિષ્' ચિન્તિતઃ પુનર્વર્ષાનિરોધવિષયક વિચારઃ સ્મર્યમાણો દ્વિપત્રિત
 ઇવ જાતઃ ૨ તદનુ 'કલ્પિષ્' કલ્પિતઃ સ એવ વર્ષાનિરોધવિષયકો વિચારઃ વ્યવસ્થા
 યુક્ત મેવં વર્ષાનિરોધં કરિષ્યામીતિ કાર્યાઽકારેણ પરિણતઃ પલ્લવિત ઇવ જાતઃ ૩
 તતઃ 'પત્થિષ્' પ્રાર્થિતઃ સ એવ વિચાર ઇષ્ટરૂપેણ સ્વીકૃતઃ પુષ્પિત ઇવ સવૃત્તઃ ૪ તતઃ
 'મળોગણ સંકલ્પે' મનોગતઃ સકલ્પઃ મનસિ દ્વરૂપેણ નિશ્ચયઃ મયા હત્યમંવ વર્ષા-
 નિરોધઃ કર્તવ્ય ઇતિ વિચારઃ ફલિત ઇવ ૫ 'સમુપ્પજ્જિત્યા' સમુદ્પદ્યત । એતાદશો
 વિચારો વર્ષાનિરોધવિષયકઃ સમભવદિતિ । તદેવાહ- કેસળં' ઇત્યાદિ 'કેસળં મો !
 'અપત્થિયપત્થિષ્' દુરંતપંતલક્ષણે જાવ પરિવર્જિષ્ જેળં મમં ઇમાણ્ એઆણુરૂવાણ
 જાવ અમિસમળ્લાગયાણ ઉપ્પિ વિજયસંધાવારસ્સ જુગમુસલ્લમુદ્ધિ જાવ વાસ વાસઈ ?
 ફઃ ઇષઃ સ્વલ્લ મોઃ સૈનિકા' શૃણુત ! અપ્રાર્થિતપ્રાર્થકઃ તન્ન અપ્રાર્થિતમ્ અમનો-
 રથગોચરીકૃત પ્રસન્નાત્ મરણં તસ્ય પ્રાર્થકઃ મરણેચ્છુરિત્યર્થઃ, તથા દુરન્તપ્રાન્તલ-
 ક્ષણઃ દુરન્તાનિ દુશ્શવસાનાનિ પ્રાન્તાનિ તુચ્છાનિ લક્ષણાનિ યસ્ય સ તથા અર્થાત્
 અશુભલક્ષણયુક્ત. યાવત્ પદાત્ 'હીનપુણ્ણચાઉદ્દસે, હિરિસિરિપરિવર્જિષ્' ઇતિ ગ્રાહ્યમ્
 'હીનપુણ્ણચાઉદ્દસે' હીનપુણ્ણચાતુર્દશઃ હીનાયાં પુણ્ણચતુર્દશ્યાં જાતઃ જન્મ યસ્ય સ ઇતિ
 હીનપુણ્ણ-ચાતુર્દશઃ ચતુર્દશીતિથિર્જન્માશ્રિતા પુણ્યા શુભા ચ ભવતિ તયા રહિતઃ અત
 આક્રોશતા હત્યમુક્તા તથા 'હિરિસિરિપરિવર્જિષ્' હ્રીશ્રીપરિવર્જિતઃ હ્રિયા લજ્જયા
 શ્રિયા શોભયા પરિવર્જિતઃ, યઃ સ્વલ્લ મમ અસ્યામેતદ્રૂપાયાં યાવદિવ્યાયાં દેવાનામિવ
 ઋદ્ધિઃ દેવસ્ય વા રાજ્ઞ ઋદ્ધિર્દેવર્દ્ધિ સ્તસ્યાં સત્યામ્ એવં દિવ્યાયાં દેવધૃતૌ દેવસ્ય વ્રા
 રાજ્ઞો ધૃતિઃ દિવ્યેન દેવાનુભાવેન દેવાનામિવ યોઽનુભાવઃ પ્રભાવસ્તેન સહ લબ્ધાયાં
 પ્રાપ્તાયામમિસન્વાગતાયાં સત્યામ્ ઉપરિ સ્કન્ધાવારસ્ય-દ્વાદશ યોજનસ્થિતસૈન્યસમૂહસ્ય

દેસલેની ચાહિયે । (કેસળ મો ! અપત્થિયપત્થિષ્ દુરંતપંતલક્ષણે જાવ પરિવર્જિષ્ જેળં મમ
 ઇમાણ્ એ આણુરૂવાણ જાવ અમિસમળ્લાગયાણ ઉપ્પિ વિજયસંધાવારસ્સ જુગમુસલ્લમુદ્ધિ જાવ વાસ
 વાસઈ) અરે ! યહ કૌન એસા અપનો અકાલ મૃત્યુ કી ચાહના વાલા તથા દુરન્ત પ્રાન્ત લક્ષણો
 વાલા યાવત્ નિર્લેજ્જ શોભાહીન વ્યક્તિ હૈ, જો મેરી હસ કુલપરમ્પરાગત દિવ્ય દેવર્દ્ધિ કે-દેવોક્તી
 નેસી ઋદ્ધિ કે હોને પર, દિવ્ય દેવધૃતિ એવ દિવ્ય દેવાનુભાવ કે હોને પર મો સેના કે ઉપર યુગ,

ઉદ્દેશ્યો-અહીં સ કલ્પના "આધ્યાત્મિક, ચિન્તિત, કલ્પિત, પ્રાર્થિત એ વિશેષણો સ શ્રી
 હીત થયા છે એમની વ્યાખ્યા અ ગ્રંથમાં અનેક સ્થાને કરવામાં આવી છે એથી જિજ્ઞાસુ
 જનોએ ત્યાથી એ વિશેષ બાબી લેવું (કેસળ મો ! અપત્થિયપત્થિષ્ દુરંતપંતલક્ષણે જાવ
 પરિવર્જિષ્ જેળં મમ ઇમાણ્ એ આણુરૂવાણ જાવ અમિસમળ્લાગયાણ ઉપ્પિ વિજયસંધાવાર-
 સ્સ જુગમુસલ્લમુદ્ધિ જાવ વાસ વાસઈ) અરે ! એ કેાણુ પોતાની અકાળ મૃત્યુની ધ્વજા કર
 નાર તેમજ દુરંત પ્રાન્ત લક્ષણો વાળો યાવત્ નિર્લેજ્જ શોભા હીન માણસ છે કે જે
 મારી આ કુલ પરમરાગત દિવ્ય દેવર્દ્ધિને-દેવો જેવી ઋદ્ધિ હોવા છતાં, દિવ્ય
 દેવધૃતિ તેમજ દિવ્ય દેવાનુભાવ હોવા છતાં એ, મારી સેના ઉપર યુગ; મુસળ તેમજ મુદ્ધિ

‘जुगमुसलमुष्टि जाव त्ति’ युगमुसलमुष्टिप्रमाणमात्राभिधाराभिः वर्षं वर्षति वृष्टिं करोति । प्रचण्डवृष्टिं करोतीत्यर्थः ‘तए ण तस्स भरहस्स रण्णो इमेयारूवं अब्भत्थिय चित्थिय कप्पियं पत्थिय मणोगयं संकप्पं समुप्पण्णं जाणित्ता सोलसदेवसहस्सा सण्णज्झिउं पवत्ता यावि होत्था’, ततः उक्तचिन्तासमुत्पत्त्यनन्तरं खलु तस्य भरतस्य राज्ञः इममेतद्रूपम्—एतादृशम् अभ्यर्थितं चिन्तितं कल्पितं प्रार्थितमनोगतं संकल्प समुत्पन्नं ज्ञात्वा चतुर्दशरत्नाधिष्ठायकदेवसहस्राणि चतुर्दश द्वे सहस्रे स्वाङ्गाधिष्ठातृ देवभूते इत्येवं षोडश देवसहस्राः सन्नद्धं प्रवृत्ताश्चाप्यभवन् सङ्ग्रामं कर्तुम् उद्यता अभूवन् जाताः कथं सन्नद्धं प्रवृत्ता इत्याह—‘तएण ते देवाः सण्णद्धवद्धवम्मियकवया जाव गहि आउहप्पहरणा जेणेव ते मेहमुहा णागकुमारा देवा तेणेव उवागच्छति’ ततः खलु ते षोडशसहस्रसंख्यका देवाः सन्नद्धवद्धवर्मितकवचाः सन्नद्धं शरीरारोपणात् वद्ध कसा-बन्धनतः अतएव वर्म्म लोहकत्तलादि रूपं सञ्जातमस्येति वर्म्मितम् शरीरे संलग्नीकृतम् एतादृशं कवचं शरीरत्राणकं येषां ते तथा तथा यावत् पदात् उत्पीडितशरासनपट्टिकाः पिनद्धग्रैवेयबद्धाविद्धविमलवरचिह्नपट्टाश्च तत्र उत्पीडिताः गाढं गुणारो-

मुसल एवं मुष्टि प्रमाण जलधाराओं से यावत् बरसा बरसा रहा है ? (तए णं तस्स भरहस्स रण्णो इमेयारूवे अब्भत्थियं चित्थिय कप्पियं पत्थियं मणोगयं संकप्पं समुप्पण्णं जाणित्ता सोलसदेवसहस्सा सण्णज्झिउं पवत्ता यावि होत्था) इस प्रकार के आध्यात्मिक, चिन्तित, प्रार्थित मनोगत उद्भूत हुए भरत राजा के संकल्प को जान कर के १६ हजार देव—१४ रत्नों के १४ हजार और अपने शरीर के रक्षक २ हजार देव इस प्रकार से मिलकर १६ हजार देव सग्राम करने के लिये उद्यत हो गये (तए णं ते देवा सण्णद्धवद्धवम्मियकवया जाव गहिआउहप्पहरणा जेणेव ते मेहमुहा णागकुमारा देवा तेणेव उवागच्छति) तब वे देव सन्नद्धवद्ध वर्मित कवच यावत् गृहीत आयुध प्रहरण होकर जहाँ वे मेघमुख नामके नागकुमार देव थे वहाँ पर आये ‘सण्णद्धवद्धगहिआ उहप्पहरणा’ इन पदों की व्याख्या पीछे कई जगह की जा चुकी है अतः वहीं से इसे देखलेनी चाहिये यहाँ यावत्पदसे ‘उत्पीडितशरासनपट्टिकाः पिनद्धग्रैवेयबद्धाविद्धविमलवरचिह्नपट्टाश्च’ इन

प्रमाण जलधाराओंथी यावत् वृष्टि करी रहे व छे ‘त एणं तस्स भरहस्स रण्णो इमेयारूवे अब्भत्थियं चित्थिय कप्पियं पत्थियं मणोगयं संकप्पं समुप्पण्णं जाणित्ता सोलसदेवसहस्सा सण्णज्झिउं प यावि होत्था) आ जतना आध्यात्मिक शिंतित प्रार्थित मनोगत उद्भूत थयेला भरत नरेशना संकल्प ने जाली ने १६ हजार देवो—१४ रत्नोना १४ हजार अने तेमना शरीरना रक्षक छे हजार आ प्रमाणे मणीने १६ हजार देवो संग्राम करवा उद्यत थई गय। (तएणं ते देवा सण्णद्धवद्धवम्मियकवया जाव गहिआउहप्पहरणा जेणेव ते मेहमुहा णागकुमारा देवा तेणेव उवागच्छति) तारे ते देवो सन्नद्ध वद्ध वर्मित कवच यावत्-गृहीत आयुध प्रहरण वाणा थई ने जया ते मेघमुख नागे नाग कुमार देवो छता त्या पडोआ। “सण्णद्धवद्धगहिआउहप्पहरणा” ओ पडोनी व्याख्या पाछण अनेक स्थाने करवाभा आवी छे जेथी जिसासुअनोओ तथाथी जाली देवु” अही

પણાત્ દ્વીકૃતાઃ શરાસનપટ્ટિકાઃ ધનુર્દણ્ડાઃ યૈઃ તે તથા, તથા પિનદ્વં પરિધૃતં ગ્રૈવેયકં
ગ્રીવાત્રાણકં ગ્રીવામરણં વા યૈસ્તે તથા, વદ્ધો ગ્રન્થિદાનેન આવિદ્ધઃ પરિહિતો મસ્તકાવે-
ષ્ટનવિમલવરચિહ્નપટ્ટો વીરાતિવીરતાસૂચક વસ્ત્રવિશેષો યૈઃ તે તથા પશ્ચાદુભયોઃ કર્મધારયઃ
તથા ગૃહીતાયુધપ્રહરણાઃ ગૃહીતાનિ આયુધાનિ પ્રહરણાનિ ચ યૈસ્તે તથા આયુધપ્રહરણ-
યોસ્તુ ક્ષેપ્યાક્ષેપ્યકૃતો વિશેષો बोध्यः તત્ર ક્ષેપ્યાનિ વાણાદોનિ, અક્ષેપ્યાનિ સ્વજ્ઞાદીનિ
અથવા ગૃહીતાનિ આયુધાનિ પ્રહરણાય યૈસ્તે તથા, एवंभूताः सन्तः यत्रैव मेघमुखाः
નાગકુમારા દેવા આસન્ તત્રૈવ ઉપાગચ્છન્તિ 'ઉવાગચ્છિત્તા' ઉપાગત્ય 'મેહમુદે નાગકુમારે
દેવે एवं वयासी' મેઘમુખાન્ નાગકુમારાન્ દેવાન્ एवं वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादिषुः
'હંમો ! મેહમુદા નાગકુમારા ! દેવા અપ્પત્થિયપત્થગા જાવ પરિવર્જિત્તા કિર્ણં તુભિ
ળ જાણહ મરહં રાયં ચાઝરંતચ્ચકવદ્દિં મહિદ્દિયં જાવ ઉદ્ધવિત્તપ્ વા પહિસેહિત્તપ્ વા
તહાવિ ણં તુભ્મે મરહસ્સ રણ્ણો વિજયસંધાવારસ્સ ઓપ્પિં જુગમુસલમુદ્દિપ્પમાણમિત્તાહિં
ધારાહિં ઓઘમેઘ સત્તરત્તં વાસં વાસહ' હંમો ! મેઘમુખાઃ નાગકુમારાઃ ! દેવાઃ અપ્રા-
ર્યિતપ્રાર્થકાઃ મરણેચ્છવઃ યાવત્ પદાત્ દુરન્તપ્રાન્તલક્ષણાઃ હીનપુણ્યચાતુર્દશાઃ હી શ્રી
પરિવર્જિતાઃ હીનપુણ્યચાતુર્દશાઃ પુણ્ય ચતુર્દશીતિથિજન્મરહિતાઃ હી શ્રી પરિવર્જિતાઃ

પદોક્તા સમગ્ર હુઆ હૈ । इन पदों की व्याख्या यथास्थान की जा चुकी है अत वही से यह भी
देखी जा सकती है (उवागच्छिता) वहा आकर के (मेहमुदे नागकुमारे देवे एवं वयासी) उन्होने
मेघमुख नामके उन नागकुमार देवासे इस प्रकार कहा -(हंमो ! मेहमुदा नागकुमारा देवा ।
अपपत्थियपत्थगा जाव परिवर्जिता किरणं तुभि ण जाणह मरहं रायं चाउरंतचक्कवद्विं महिद्विद्यं
जाव उद्वित्तप वा पडिसेहित्तप वा तहावि ण तुभ्मे मरहस्स रण्णो विजयसंधावारस्स उप्पिं जुग-
मुसलमुद्विप्पमाणमित्ताहिं धाराहिं ओघमेघं सत्तरत्तं वास वासह) हे मेघमुख नामके नागकुमार
देवो ! हमें ज्ञात होता है कि तुम अब अकाल में ही अपनी मृत्यु के अभिलाषी बन गये हो
तुम्हारे सब के लक्षण ये अभीष्टार्थक साधन नहीं हैं । वे सर्वथा तुच्छ है तुम्हारा जन्म हीन पुण्य
चतुर्दशी का हुआ प्रतीत होता है तुम सब के सब बिल्कुल वैशरम हो और शोभा से तिरस्कृत

યાવત્ પહથી "ઉત્પીઢિતશરાસનપટ્ટિકાઃ પિનદ્વગ્રૈવેયવદ્ધાવિદ્ધવિમલવરચિહ્નપટ્ટાશ્ચ"
એ પદોનો સ્વ અર્થ થયો છે. એ પદોની વ્યાખ્યા પણ યથાસ્થાને કરવામાં આવી છે. બિજા-
સુબ્જોએ ત્યાંથી બાણી દેવુ (ઉવાગચ્છિત્તા) ત્યા પહોચીને (મેહમુદે નાગકુમારે દેવે एवं
वयासी) તેમણે મેઘમુખ નામક નાગકુમાર દેવો ને આ પ્રમાણે કહ્યું—(હ મો ! મેહ
મુદા નાગકુમારા દેવા ! અપત્થિયપત્થગા જાવ પરિવર્જિત્તા કિર્ણં તુભિ ણ જાણહ
મરહ રાય ચાઝરંતચ્ચકવદ્દિં મહિદ્દિયં જાવ ઉદ્ધવિત્તપ્ વા પહિસેહિત્તપ્ વા તહાવિ ણં
તુભ્મે મરહસ્સ રણ્ણો વિજયસંધાવારસ્સ ઓપ્પિં જુગમુસલમુદ્દિપ્પમાણમિત્તાહિં ધારાહિં
ઓઘમેઘ સત્તરત્તં વાસં વાસહ) હે મેઘમુખ નામક નાગકુમાર દેવો ! અમને ખબર છે કે
તમે હવે અવપ્રકાશમાં જ મરણ પામશો તમારા સર્વના આ લક્ષણો અભીષ્ટાર્થક સાધન
નથી આમ સર્વથા તુચ્છ છે. તમારો જન્મ હીન-પુણ્ય ચતુર્દશીના દિવસે થયેલો પ્રતીત થાય

સન્તઃ કિમિતિ પ્રશ્ને ન જાનીયેત્યત્ર કાકુપાઠેન વ્યાખ્યેયમ્ તેન ન જાનીથ કિં
યુયમ્ ! અપિ તુ જાનીથ ભરતં રાજાનં ચાતુરન્તચક્રવર્તિનમ્ આચતુઃસમુદ્રાન્તકરગ્રાહિણમ્
મહર્દિકં મહતી ઋદ્ધિર્યસ્ય સ તથા ત લક્ષ્મીસમ્પન્ન મિત્યર્થઃ યાવત્ પદાત્ 'મહઙ્જુહપ
મહાણુમાવે મહાસોઘ્વે' इति विशिष्टम् यदेप न कैश्चिदपि देवदानवादिभिः शस्त्रप्रयोगा-
दिभि रूपद्रवयितु वा प्रतिषेधयितुं वा शक्यते इति, तथापि खलु जगत्यजय्य जेतुमशक्यं
જાનતોઽપિ खलु यूय-मेघमुखाः नागकुमाराः भरतस्य राज्ञो विजयस्कन्धावारस्योपरि
युगमुसलमुष्टिप्रमाणमात्राभि धाराभिः ओघमेवं सप्तरात्रं सप्तगत्रिप्रमाणकालेन वर्ष
वर्षत 'तं एवमवि गते इत्तो खिप्पामेव अवक्कमह अहव ण अज्ज पासह चित्तं जीवलोगं'
तत् तस्मात् एवमपि गते अतोते अविचारितकार्ये कृते सत्यपि किं बहु अधिक्षिपामः ?
इतः स्थानात् क्षिप्रमेव पश्चात्तापपूर्वकं स्वापराधं क्षमापयन्तः अपक्रामत अपयात दूरम-
पसरतेत्यर्थः अथवा विकल्पान्तरे खलु यदि नापक्रामत तर्हि अद्य साम्प्रतमेव पश्यत

કિયે હુપ હો ક્યા તુમ ચાતુરન્ત ચક્રવર્તી ભરત રાજા કો નહીં જ નતે હો—તુમને નહીં સુના હૈ
કિ વહ બાહ્યસુદ્રાન્ત કરગ્રાહી હૈ । મહતી ઋદ્ધિ વાલા હૈ યાવત વહ મહાદ્યુતિ વાલા મહાપ્રભાવ
વાલા, મહાસૌખ્ય કા મોક્ષા હૈ ક્રિપી મી દેવ દાનવ બાદિ મેં એમી શક્તિ નહીં હૈ જો શસ્ત્રા-
દિકો દ્વારા ઉસે ઉપદ્રવ યુક્ત કર સકે યા યહા સે ઉસે પીછે વાપિસ કર સકે હિસ પ્રકાર સે હિસ
જગત મેં બજેય હુપ ભરત રાજા કો જાગતે હુપ મી આપલોગ ઉસકો સેના કે ઉપર યુગ મુસલ,
એવં મુષ્ટિ પ્રમાણ જૈસી જલધારાઓ સે પુષ્કલ સર્વતઃ મેઘ કો તરહ સાત દિન સે વૃષ્ટિ વરસા રહે
હો (ત એવમવિગતે ઇત્તો સ્ખિપ્પામેવ અવક્કમહ, અહવ ણ અજ્જ પાસહ ચિત્ત જોવલોગ) તુમને યહ
કામ બિના વિચારે હો કિયા હૈ અબ હમ હમ પર તુમ્હેં ! કતના તિરસ્કૃત કરે અબ તુમ્હારી મઝાઈ
હસી મે હૈ કિ તુમ સબ હિસ સ્થાન સે બળે અપરાધ કી પશ્ચાત્તાપ પૂર્વક ક્ષમા માગતે હુપ શોગ્રહી
ચલે જાઓ । યદિ નહીં જાતે હો અમી હી તુમ સબ ચિત્ર જીવ લોક કો—વર્તમાન ભવ સે અન્ય

છે. તમે સર્વે નિર્લજ્જ છો અને શોભાથી તિરસ્કૃત થયેલા છો. શુ તમે—ચાતુરન્ત ચક્રવર્તી
ભરત રાજાને બાણતા નથી તમને ખબર નથી કે તે ભરત નૃપતિ આસમુદ્રાન્ત કર ગ્રાહી
છે. તે મહતી ઋદ્ધિવાન છે યાવત્ તે મહાદ્યુતિવાન મહા પ્રભાવવાન અને મહાસૌખ્ય
લોકતા છે કેમ પણ દેવ, ડાનવ વગેરેમા એવી શક્તિ છે જ નહિ કે જે શસ્ત્રાદિકો વડે
તેને ઉપદ્રવ યુક્ત કરી શકે અથવા તે તેને અહીંથી પાછા હટાવી શકે આ પ્રમાણે આ
જગતમાં અજેય તે ભરત રાજા ને બાણવા છતાંયે તમે તે રાજાની સેના ઉપર યુગ, મુસલ
તેમજ મુષ્ટિ પ્રમાણ જેવી જળધારાઓથી પુષ્કલ સર્વતઃ મેઘની જેમ સાત-દિવસ રાત્રિ
થી વૃષ્ટિ વરસાવી રહ્યા છો. (ત એવમવિગતે ઇત્તો સ્ખિપ્પામેવ અવક્કમહ, અહવ ણ અજ્જ,
પાસહ ચિત્તંજીવલોગં) તમે આ કામ વગર વિચારે જ ક્યું છે અમે તમને કેટલા
પ્રમાણ માં તિરસ્કૃત કરીએ હવે તમારી બહાઈ એમા જ છે કે તમે સર્વે આ સ્થાનથી
પોતાના અપરાધની પશ્ચાત્તાપ પૂર્વક ક્ષમામાગના કરતા યથાર્થીજ અહીંથી પલાયન થઈ
જાઓ. જો તમે અહીંથી જશો નહીં તેા હમણાં જ સર્વે બિન્ન શુવ લોકને—એટલે કે
વર્તમાન ભવમાંથી અન્ય ભવને—અકાલે મૃત્યુ ને પામશે (તપણ તે મેહમુદા નાગકુમારા

चित्रं जीवलोकम् वर्तमानभवादन्त्यं भवम् अपमृत्युं प्राप्नुतेत्यर्थः 'तएणं ते मेहमुहा
णागकुमारा देवा तेहिं देवेहिं एवं वुत्ता समाणा भीया तत्था बहिया संजायभया मेघा-
नीकं परिसाहरंति' ततः खलु ते मेघमुखा नागकुमारा देवाः तैः षोडशसहस्रसंख्य
कैः देवैरेवमुक्ताः सन्तः भीताः त्रस्ताः वधिताः सज्जातभया मेघानीकम्-घनदं प्रति
संहरन्ति अपहरन्ति 'परिसाहरित्ता जेणेव आवाडचिलाया तेणेव उवागच्छंति' प्रतिसंहृत्य-
यत्रैव आपातकिराताः तत्रैव उपागच्छन्ति 'उवागच्छित्ता आवाडचिलाए एवं वयासी' उपा-
गत्य मेघमुखाः नागकुमाराः आपातकिरातान् एव वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादिषुः उक्तवन्तः
किमुक्तवन्त इत्याह—'एस णं देवाणुप्पिया ! भरहे राया महद्दिए जाव णो खलु एस सक्का
केणइ देवेण वा जाव अग्गिप्पआगेण वा जाव उवद्वित्तए वा पडिसोहिट्तए वा तहावि
अ णं ते अम्हेहिं देवाणुप्पिया ! तुब्भं पिअट्ठयाए भरहस्स रण्णो उवसग्गे कए' हे देवानुप्रियाः
एषः खलु भरतो राजा महर्द्धिको यावत् महासौख्यः चातुरन्तचक्रवर्ती वर्त्तते न खलु

भव को—अकाल मृत्यु को—देखते हो (तएण ते मेहमुहा णागकुमारा देवा तेहिं देवेहिं एवं वुत्ता
समाणा भीया तत्था बहिया संजायभया मेघानीकं परिसाहरंति) इस प्रकार से उन १६ हजार
देवों द्वारा डाटे गये वे मेघमुख नाम के नागकुमार देव बहुत ही अधिक रू। में भयभीत हो
गये त्रस्त हो गये व्यथित या बाधित हो गये, और सजात भयवाले बन गये अतः उसी समय
उन्होंने घनघटा को अपहृत कर लिया (परिसाहरित्ता जेणेव आवाडचिलाया तेणेव उवागच्छंति)
अपहृत करके फिर वे जहां पर आपात किरात ये वहा पर आये (उवागच्छित्ता आवाडचिलाए
एव वयासी) वहा आकर के उन्होंने उन आपात किरातों से ऐसा कहा—(एस ण देवाणुप्पिया !
भरहे राया महद्दिए जाव णो खलु एस सक्का केणइ देवेण वा जाव अग्गिप्पआगेण वा जाव उव-
द्वित्तए वा पडिसोहिट्तए वा तहावि अ णं ते अम्हेहिं देवाणुप्पिया ! तुब्भं पिअट्ठयाए भरहस्म रण्णो
उवसग्गे कए) हे देवानुप्रियो ! यह भरतराजा है और यह महर्द्धिक है यावत् महासौख्य सग्न
है । चातुरन्तचक्रवर्ती हैं यह किसी भी देव द्वारा यावत् किसी भी दानव द्वारा या किसी भी

देवा तेहिं देवेहिं एव वुत्ता समाणा भीया तत्था बहिया संजायभया मेघानीकं परिसाह-
रति) आ प्रभाणु ते १६ हजार देवो वडे धिक्कृत थयेला ते मेघमुख नामके नागकुमार
देवो अतीव भय संत्रस्त थर्ध गया, व्यथित के वधित थर्ध गया, अने सजातभय वाणा
भनी गया अथी ते~ क्षणु तेभणु घन घटाओने अपहृत करी दीधी (परिसाहरित्ता
जेणेव आवाडचिलाया तेणेव उवागच्छति) अपहृत करीने पछी तेओ नथा आपात
किरातो डता त्या गया (उवागच्छित्ता आवाडचिलाए एव वयासी) त्या नर्ध ने तेभणु
आपात किरातोने आ प्रभाणु कहुं (एसणं देवाणुप्पिया ! भरहे राया महद्दिए जाव णो
खलु एस सक्का केणइ देवेण वा जाव अग्गिप्पआगेण वा जाव उवद्वित्तए वा पडिसोहिट्त
एवा तहाविअ णं ते अम्हेहिं देवाणुप्पिया ! तुब्भं पिअट्ठयाए भरहस्स रण्णो उवसग्गे
कए) हे देवानुप्रियो ! ये भरत राजा छे ये महर्द्धिक छे यावत् महासौख्य सग्न
छे, ये चातुरन्त चक्रवर्ती छे ये केहि पणु देव वडे यावत् केहि पणु दानव वडे अथवा

एषः केनापि देवेन वा यावत् दानवेन वा किन्नरेण वा किंपुरुषेण महोरगेण वा गन्धर्वेण वा शस्त्रप्रयोगेण वा अग्निप्रयोगेण वा यावत् मन्त्रप्रयोगेण वा उपद्रवयितु वा प्रतिषेधयितुं वा युष्मद्देशाक्रमणतो निवर्त्तयितुम् तथापि इत्थमसाध्ये कार्ये सत्यपि च खलु अस्माभिर्देवानुप्रियाः ! युष्माकं प्रीत्यर्थं भरतस्य राज्ञः उत्सर्गः कृतः 'तं गच्छह णं तुम्हे देवानुप्पिया ! ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता उल्लपडसाडगा ओचूलगणिअच्छा अग्गाइं वराइं रयणाइं गहाय पंजलिउडा पायवडिआ भरह रायाणं सरणं उवेह' तत् तस्मात् गच्छत खलु देवानुप्रियाः ! यूयम् आपातकिराताः स्नाताः कृतबलिकर्माणः वायसादिभ्यो दत्तान्नभागाः कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ताः तथा आर्द्रपटशाटकाः आर्द्रौ सद्यः स्नानवशाज्जलमिश्रितौ पटशाटकौ उत्तरीयपरिधाने येषां ते तथा एतेन सेवाविधौ अविलम्बः सूचितः, तथा 'अवचूलकनियत्था' अवचूलकम् अधोमुखाञ्चलम्-मुत्कलाञ्चलम् यया स्यात् तथा नियत्थं नियमितं येषां ते तथा प्रक्षरज्जल वस्त्र परिधाय गन्तव्यमित्यर्थः अनेनावद्धकच्छत्वं सूचितं तदुपदर्शनेन स्वदन्यं सूचितमिति । बद्धकच्छत्वदर्शने हि शूरत्वसूचक उत्कटत्वसम्भावनाया जनप्रसिद्धत्वात् अश्याणि बहुमूल्यकानि वराणि श्रेष्ठानि रत्नानि गृहीत्वा प्राञ्जलिकृताः कृतप्राञ्जलयः पदपतिताः चरणन्यस्तमस्तकाः

किन्नर द्वारा या किसी भी किंपुरुष द्वारा या किसी भी महोरग द्वारा या किसी भी गन्धर्व द्वारा शस्त्र प्रयोग से या अग्नि प्रयोग से यावत् मन्त्र प्रयोग से न उपद्रवित किया जा सकता है और न आपके देश परसे आक्रमण करने से इटाया ही जा सकता है । परन्तु फिर भी हमने जो इस प्रकार के असाध्य होने पर भी इस भरतराजा के ऊपर उपद्रव किया है वह केवल आपकी प्रीति के निमित्त ही किया है (तं गच्छह णं तुम्हे देवानुप्पिया ! ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता उल्लपडसाडगा ओचूलगणिअच्छा अग्गाइं वराइं रयणाइं गहाय पंजलिउडा पायवडिआ भरह रायाणं सरण उवेह) तो अब हे देवानुप्रियो ! तुम जाओ और स्नान करो बलि कर्म करो एवं कौतुक मंगल प्रायश्चित्त करो । यह सब करके फिर तुम सबके सब गोछे घोंती दुपट्टे पहिने ही उनके प्रान्त भागो से जल जमीन पर गिरता जावे ऐसी अवस्थावाले होकर

કોઈ પણ કિન્નર વડે અથવા કોઈ પણ કિપુરુષ વડે કે કોઈ પણ મહોરગ વડે કે કોઈ પણ ગન્ધર્વ વડે કોઈ પણ શસ્ત્ર પ્રયોગ થી કે અગ્નિ પ્રયોગથી યાવત મન્ત્ર પ્રયોગથી એ ઉપદ્રવિત કરવામા આવી શકતો નથી તેમજ એ નરેશને તમારા દેશ પરથી આક્રમણ કરતા હઠાવી પણ શકાય નહિ અસાધ્ય હોવા છતાંએ અમે એ ભરત નરેશ ઉપર ઉપદ્રવ કર્યો છે, તે માત્ર તમારી પ્રીતિ ને લઈ ને જ 'તં ગચ્છહ ણં તુમ્હે દેવાણુપ્પિયા ! ણ્હાયા કયબલિકમ્મા કયકોઉયમંગલપાયચ્છિત્તા ઉલ્લપડસાડગા ઓચૂલગણિઅચ્છા અગ્ગાઈં વરાઈ રયણાઈ ગહાય પંજલિઉડા પાયવડિયા ભરત રાયાણં સરણં ઉવેહ) તો હવે હે દેવાનુ પ્રિયો ! તમે જાઓ અને સ્નાન કરો, બલિકર્મ સંપન્ન કરો તેમજ કૌતુક મંગલ પ્રાયશ્ચિત્ત કરો. એ સર્વ સંપન્ન કરીને પછી તમે બધા બીના ઘોતી-દુધદા પહેરીને જ એટલે કે જે ઘોતી-દુપટ્ટાઓના પ્રાન્ત ભાગોમા થી પાણી જમીન ઉપર ટપકી રહ્યું હોય એવી

મરતં રાજાનં શરણમુપેયાત્ સ્વીકર્તવ્યમ્ इत्यर्थः 'पणिवड्यवच्छला खलु उत्तमपुरिसा णत्थि मे भरहस्स रण्णो अंतियाओ भयमिति कट्ठु, एवं वदित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तायेव दिसिं पड्ढिगया'प्रणिपतितवत्सलाः प्रणम्रजनानुरागिणः खलु निश्चये उत्तमपुरुषा भवन्ति अतः नास्ति मे भवतां भरतस्य राज्ञोऽन्ति अद्भ्यमिति कृत्वा आपातकिरातान् प्रति उक्तरीत्या उ। दिश्य यस्याः दिशः प्रादुर्भूता आगतवन्तः तामेव दिशं प्रतिगताः प्रतिगतवन्त परावर्तिताः इत्यर्थः ते मेघमुख नागकुमाः इति अथ भग्नेच्छा म्लेच्छा आपातकिराताः यच्चक्रुः तदाह—'तएणं' इत्यादि । 'तए णं ते आवाडचिलाया मेहमुहेहिं नागकुमारेहिं देवेहिं एवंवुत्ता समाणा उट्ठाए उट्ठेति' ततः खलु ते आपातकिराताः मेघमुखैः नागकुमारैः देवैः एवमुक्ताः सन्तः उत्थया उत्थानेन उत्तिष्ठन्ति 'उट्ठित्ता ण्हाया कयवलिकम्मा' उत्थाय स्नाताः कृतवલिकमाणः वायसादिभ्यो दत्तान्नभागाः 'कयकोउय मंगलपायच्छित्ता' कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ताः 'उल्ल पडसाडगा' आर्द्रपटशाटकाः 'ओचूलगणियच्छा' अवचूलकनियत्था सन्तः प्रक्षग्जलं वस्त्रं परिधाय 'अग्गाई वराई रयणाई गहाय जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छंति' अद्याणि वराणि रत्नानि गृहीत्वा यत्रैव भरतो

તથા બહુમૂલ્ય શ્રેષ્ઠ રત્નો કો ઠેકર एवं हाशो को जोडकर भरतराजा की शरण में जाओ वहां जाकर तुम सब उनके पैरो में गिर जाना (पणिवड्यवच्छला खलु उत्तमपुरिसा णत्थि मे भरहस्सरण्णो) उत्तमपुरुष जो होते है वे प्रणिपतित वत्सल होते हैं—अपने प्रति झुकनेवाले जनो में अनुरागी होते हैं इसलिये आपलोगों को भरत नरेश के पास अब कोई भय नहीं है । इस प्रकार से आपात किरातो को समझा बुझाकर वे जिस दिशा से आये थे उसी दिशा तरफ चले गये अब जिनकी इच्छा पर पानी फिरे गया है ऐसे उन म्लेच्छ आपातकिरातों ने जो किया वह इस प्रकार से है—(तए णं ते आवाडचिलाया मेहमुहेहिं नागकुमारेहिं देवेहिं एव वुत्ता समाणा उट्ठाए उट्ठेति) अब मेघमुख नामके नागकुमारों के द्वारा पूर्वोक्त प्रकार से समझाये गये वे आपातकिरात अपने आप उठे (उट्ठित्ता ण्हाया कयवलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता उल्लपडसाडगा ओचूल-

સ્થિતિમા જ, બહુમૂલ્ય શ્રેષ્ઠ રત્નોને લઈ ને તેમજ હાથ બોડીને ભરત રાજાની શરણમાં જાઓ ત્યાં જાહે તમે સર્વ તેના પગોમાં પડી જાઓ. (પણિવડ્યવચ્છલાં ખલુ ઉત્તમ-પુરિસા ણત્થિ મે ભરહસ્સ રણ્ણો) જે ઉત્તમ પુરુષો હોય છે, તે પ્રણિપતિત વત્સલ હોય છે તેમની સામે જેઓ નમ્ર થઈ ને જાય છે તેઓ તેમના અનુરાગ ને મેળવે છે એથી તમે સર્વ ભરત નરેશ ની પાસે જાવો હવે ત્યાં કોઈ ભય તમને નથી આ પ્રમણે આપાત કિરાતોને સમજાવીને તે દેવો જે દિશામાંથી આવ્યા હતા, તે દિશા તરફ જ જતા રહ્યા. હવે જેમની ઇચ્છા ઉપર પાણી ફેરી વળ્યું છે એવા તે મ્લેચ્છ આપાતકિરાતો એ જે કંઈ કંથુ તે આ પ્રમાણે છે (તપ્પ ણં તે આવાડચિલાયા મેહમુહેહિં નાગકુમારેહિં દેવેહિં પવં વુત્તા સમાણા ઉટ્ઠાપ ઉટ્ઠેતિ) હવે મેઘમુખ નામઃ નાગકુમારો વડે પૂર્વોક્ત પ્રકારથી સમ જાણવામાં આવેલા તે આપાત કિરાતો પોતાની મેળે ઉભા થયા (ઉટ્ઠિત્તા ણ્હાયા કયવલિકમ્મા કયકોઉયમંગલપાયચ્છિત્તા ઉલ્લપડસાડગા ઓચુલગણિયચ્છા અગ્ગાઈ

રાજા તત્રૈવ ઉપાગચ્છન્તિ 'ઉવાગચ્છિતા કરયલપરિગઢિયં જાવ મત્થપ અંજલિં કદ્દુ
 મરહં રાયં જણં વિજણં વદ્ધાવિત્તિ' ઉપાગત્ય કરતલપરિગૃહીત યાવત્ત્વ દશનસં શિર-
 સાવર્તે મસ્તકે અંજલિં કૃત્વા મરતં રાજાનં જયેન વિજયેન વર્દયન્તિ 'વદ્ધાવિત્તા' વર્દયિત્વા
 'અગ્ગાઈ વરાઈં રયણં' ઉવર્ણેતિ, ઉવર્ણિત્તા એવં વયાસી' અગ્ગ્યાણિ વરાણિ રત્નાનિ ઉપનય-
 ન્તિ પ્રાપ્નતિ કુર્વન્તિ ઉગ્ગનીય પ્રાપ્નતીકૃત્ય એવમ્ વક્ષ્યમાણપ્રકારેણ તે આપાતકિરાતાઃ
 આવાદિષુ, ઉક્તવન્તઃ, કિમુક્તવન્તઃ इत्याह- 'વસુહર' इत्यादि 'वसुहर' गुणहर जयहर
 हिरिसिरिधी कित्तिधारकर्णदि । लक्ष्मणसहस्सधारक ! रायमिदं जे चिरंधारे॥१॥ हे
 वसुधर द्रव्यधर पट्खण्डवर्तिद्रव्यपते ! अथवा तेजोधर ! गुणधर औदार्यादि गुणधारक !
 जयधर विद्वेषिभिरघर्षणीयः शत्रुविजयकारक ह्री श्री धी कीर्त्तिधारक नरेन्द्र तत्र ह्रीः-

ગણિયચ્છા અગ્ગાઈં વરાઈં રયણાઈં ગઘાય જેણેવ મરહે રાયા તેણેવ ઉવાગચ્છંતે) ધીર ઉઠ કર ફિર
 ડહોને સ્નાન ક્રિયા ચલિકર્મ ક્રિયા કૌતુક મગલ, પ્રાયશ્ચિત્ત ક્રિયે ધીર ફિર વે સબકે સબ જિનકે
 અપ્રમાર્ગો સે પાની નિચુડતા હુઆ ચલા જા રહા હૈ એસે અધોવલ્લો કો પહિરે હુપ હી બહુમૂલ્ય
 શ્રેષ્ઠ રત્નો કો લેકર જહા પર મરત નરેશ થા વહા પર આયે (ઉવાગચ્છિતા કરયલપરિગઢિયં જાવ
 મત્થપ અંજલિં કદ્દુ મરહં રાયં જણં વિજણં વદ્ધાવિત્તિ) વહાં આકરકે ડહોને દોનો હાથો કો
 જોડકર ધીર ઉસકી અંજુલિ કી મસ્તક પર ઘુમાકર મરતનરેશ કો જય વિજય શબ્દો દ્વારા વધાઈ
 દી (વદ્ધાવિત્તા અગ્ગાઈ, વરાઈં રયણાઈ ઉવર્ણેતિ) ધીર વધાઈ દેકર ફિર ડહોને બહુમૂલ્ય શ્રેષ્ઠરત્નો
 કો મેટ કે રૂપ મેં ડનકે સમક્ષ રક્ષ દિયા (ઉવર્ણિતા એવ વયાસી) મેટ કે રૂપ મેં રત્નો કો રક્ષ
 કર ફિર ડહોને એમા કહા-(વસુહર ! ગુણહર ! જયહર ! હિરિસિરિ ધી કિત્તિધારક ણરિંદ-
 લક્ષ્મણસહસ્સ ધારક ! રાયમિદં જે ચિરં ધારે) હૈ વસુધર-પટ્ખણ્ડવર્તિ દ્રવ્યપતે ! અથવા હૈ તેજો
 ધર ! હૈ ગુણધર-ઔદાર્ય શૌર્યાદિગુણ ધારક ! હૈ જયધર-શત્રુઓ દ્વારા અઘર્ષણીય ! શત્રુવિજય

વરાઈ રયણાઈ ગઘાય જેણેવ મરહે રાયા તેણેવ ઉવાગચ્છન્તિ) અને ઉશા થપ ને તેમણે
 સ્નાન કર્યું, બલિકર્મ કર્યું અને કૌતુક મંગળ, પ્રાયશ્ચિત્ત કર્યા અને પછી તેઓ સર્વે
 જેમના અગ્રભાગેથી પાણી ટપકો કહ્યું છે એવા અધોવલ્લ પહેરીને જ, બહુ મૂલ્ય શ્રેષ્ઠ
 રત્નોને લઈને જ્યાં ભરત નરેશ હોતો, ત્યાં આગ્યા (ઉવાગચ્છિતા કરયલપરિગઢિયં જાવ
 મત્થપ અંજલિં કદ્દુ મરહં રાયં જણં વિજણં વદ્ધાવિત્તિ) ત્યાં પહોંચીને તેમણે બન્ને હાથ
 ભેડી ને અને તે હાથોની અંજલિને મસ્તક ઉપર ફેરવી ને જય વિજય શબ્દો વડે તેને
 વધામણી આપી, (વદ્ધાવિત્તા અગ્ગાઈં વરાઈ રયણાઈ ઉવર્ણેતિ) અને વધામણી આપીને તેમણે
 બહુમૂલ્ય શ્રેષ્ઠ રત્નો ભેટના રૂપમાં તેની મમક્ષ મૂકી હીધાં (ઉવર્ણિત્તા એવં વયાસી)
 ભેટના રૂપમાં રત્નો મૂકી ને પછી તેમણે આ પ્રમાણે કહ્યું - (વસુહર ! ગુણહર ! જયહર
 હિરિ સિરિ ધી કિત્તિધારક ! ણરિંદ-લક્ષ્મણસહસ્સધારક ! રાયમિદં જે ચિર ધારે) હૈ
 વસુધર-પટ્ખણ્ડવર્તિ દ્રવ્યપતે ! અથવા હૈ તેજોધર ! હૈ ગુણધર ! ઔદાર્યશૌર્યાદિ ગુણ
 ધારક ! હૈ જયધર ! શત્રુઓવડે અઘર્ષણીય ! શત્રુ વિજય કારક ! હૈ હ્રી, શ્રી-લક્ષ્મી, વૃત્તિ
 સંતોષ, કીર્તિ વશના ધારક ! હૈ નરેન્દ્ર લક્ષ્મણ સહસ્ત્ર ધારક ! અથવા-હૈ નરેન્દ્ર-નર સ્વા

लज्जा श्रीः-लक्ष्मीः धृतिः- धैर्यम् कीर्तिः यशः एतेषां धारकः नरेन्द्र नरस्वामिन् लक्षण-
सहस्रधारक । तत्र लक्ष्यन्ते चिह्नयन्ते यैः तानि लक्षणानि हस्तादि विद्याधनजीवितरेखा
रूपाणि तेषां तद्वत् तस्य धारकः तस्य सम्बोधने हे लक्षणसहस्रधारक ! 'रायमिदं जे
चिरंधारे' नः अस्माकम् इदम् राज्यं चिरंधारय पालय अस्मदेशाधिपतिर्भव चिरं कालं
यावदिति गाथार्थः ॥१॥

“हयवइ गयवइ णरवइ णवणिहिवइ भरहवासपढमवई ।

वत्तीस जणवय सहस्सराय सामी चिरं जीव ॥२॥”

हे हयपते ! हे गजपते ! हे नरपते ! नवनिधिपते ! हे भरतवर्षप्रथमपते !
द्वात्रिंशज्जनपदसहस्राणां द्वात्रिंशदेशसहस्राणाम् ये राजानः तेषां स्वामिन् । चिरं जीव
चिरकालं जीवनं धारय अयम् अस्या गाथाया अर्थः ॥२॥

कारक ! हे हो श्रीलक्ष्मी, धृति संतोष, कीर्ति—यश के धारक ! नरेन्द्रलक्षणसहस्रधारक !
अथवा—हे नरेन्द्र नर-स्वामिन् ! हे लक्षणसहस्रधारक ! विद्या, धन, जीवन आदि को हजारों
रेखाओं को चिह्नों को धारण करने वाले ! आप हमारे इस राज्य का चिर काल तक पालन
करो—आप हमारे देश के चिरकाल तक अधिपति बनो ॥१॥

‘हयवइ गयवइ णरवई णवणिहिवइ भरहवास पढमवई ।

वत्तीसजणवयसहस्सरायसामी चिरं जीव ॥२॥

पढमणरीसर ईसर हिअईसर महिलियासहस्साणं ।

देवसयसाहसीसर चोइहरयणीसर जसंसी ॥३॥

सागरगिरिमेरागं उत्तरवाईणमभिजिअं तुमए ।

ता अम्हे देवाणुप्पियस्स विसए परिवसामो ॥४॥

हे हयपते ! हे गजपते ! हे नरपते ! हे नवनिधिपते ! हे भरतक्षेत्रप्रथमपते ! हे द्वात्रि-
शज्जनपदसहस्र नरपति स्वामिन् ! आप चिरकाल तक इस घरा घाम पर जीवितरहे ॥२॥

भिन् ! हे लक्ष्म्य सहस्र धारक—विद्या, धन, वज्रदेवी लज्जा रेखाओं वि-डोने धारण
करना । आपश्री अमारा ये राज्यतु चिरकाल सुधी पालन करो, आपश्री अमारा देशना
चिरकाल सुधी अधिपति बने ॥१॥

“हयवइ गयवइ णरवइ णवणिहिवइ भरहवासपढमवई ।

वत्तीस जणवय सहस्सरायसामी चिर जीव ॥२॥

पढमणरीसर इसर हिअईसर महिलिया सहस्साणं ।

देवसय साहसीसर चोइहरयणीसर जसंसी ॥३॥

सागर गिरि मेराग उत्तरवाईण मभिजिअ तुमए ।

ता अम्हे देवाणुप्पियस्स विसए परिवसामो ॥४॥

हे हयपते ! हे गजपते ! हे नरपते ! हे नवनिधिपते ! हे भरत क्षेत्र प्रथमपते !
हे द्वात्रिंशज्जन पद सहस्र नरपति स्वामिन् ! आपश्री चिरकाल सुधी आ धराधाम
१०१

“પદમળરીસર ઈમર હિયઈસર મહિલિયા સહસ્તાનં ।

દેવસયસાહસીસર ચોદસ રયણીસર જસંસી ॥૩॥”

હે પ્રથમનરેશ્વર ! હે ऐश्वर्यધર ! હે મહિલિકાસહસ્તાનાં ચતુઃષ્ઠિ સ્ત્રીસહસ્તાનાં હૃદયેશ્વર પ્રાણવલ્લભ ! દેવશતસઃસ્ત્રાણાં રત્નાધિષ્ઠાત્માગધતીર્થાધિપાદિ દેવલક્ષાણા-મીશ્વર ! ચતુર્દશરત્નેશ્વર ! ચક્રરત્નચત્રરત્નાદીમધિપતે ! યશસ્વિન્ ! ઇતિ તૃતીય ગાયાર્થઃ ॥૩॥

“સાગરગિરિમેરાગં ઉત્તરવાર્દિણ મભિજિઅં તુમણ્ ।

તા અમ્હે દેવાણુપ્પિયસ્સ વિસણ પરિવસામો ॥૪॥

તથા ‘સાગરગિરિમેરાગં’ સાગરગિરિમર્યાદમ્ તત્ર સાગરઃ પૂર્વાપરદક્ષિણારૂપઃ સમુદ્રઃ, ગિરિઃ-હિમવાન્ તયોઃ મર્યાદા અવધિર્યત્ર તત્ સાગરગિરિમર્યાદમ્ પૂર્વાપરદક્ષિ-ણદિક્જયે સમુદ્રાવધિકમ્ ઉત્તરતો હિમાચલાવધિકમ્ યત્ ‘ઉત્તરવાર્દિણમભિજિઅં તુમણ્’ ઉત્તરગાચીનમ્ ઉત્તરાર્દ્ધદક્ષિણાર્ધમરતં સમ્પૂર્ણમરતમિત્યર્થઃ તત્ ત્વયાઽભિજિતમ્ સ્વાયત્તીકૃતમ્ ‘તા’ તસ્માત્ ‘અમ્હે’ વયમ્ દેવાનુપ્રિયસ્ય ત્રિપયે દેશે પરિવસામઃ યુષ્માકં પ્રજારૂપેણ નિવસામઃ ઇત્યર્થઃ ઇતિ ચતુર્થગાથાયા અર્થઃ બોદ્યવ્યઃ ॥૪॥

‘અહો ણં દેવાણુપ્પિયાણં ઇદ્દહીજુઈ જસે વલ્લે વીરિણ પુરિસક્કારપરક્કમે દિવ્વા દેવજુઈ દિવ્વે દેવાણુમાવે લલ્લે પત્તે અભિસમણ્ણાગણ’ તત્ર અહો ઇતિ આશ્ચર્યે સ્વલ્લ દેવાનુપ્રિયાણામ્ શ્રીમતાં ઋદ્ધિઃ સમ્પત્ ઘૃતિઃ પ્રમા યશઃ કીર્તિઃ બલં શારીરિકશક્તિઃ વીર્યમ્ આત્મશક્તિઃ

હે પ્રથમ નરેશ્વર ! હે શ્વર ऐश्वर्यધર ! હે ચતુષ્પઠીસહસ્રનારીહૃદયેશ્વર હે રત્નાધિષ્ઠાયક, માગધ તીર્થાધિપાદિદેવલક્ષેશ્વર ! હે ચતુર્દશરત્નાધિપતે ! હે યશસ્વિન્ ! ॥૩॥ આપને પૂર્વ, એવ પશ્ચિમ, દક્ષિણ સમુદ્ર તક કે એવ ક્ષુદ્રહિમાચલતક કે ઉત્તરાર્દ્ધ દક્ષિણાર્ધ મરત કો- પરિપૂર્ણ મરત ક્ષેત્ર કો ભાવી મેં મૂતવદુપચાર કી અપેક્ષાકર કે અપને વશ મેં કર લિયા હૈ અત અવ હમ આપ દેવાનુપ્રિય કે હી દેશ મેં રહને વાલે બન ગયે હૈ । હમ આપકી હી પ્રજા રૂપ હો ગયે હૈ ॥૪॥-‘અહો ણં દેવાણુપ્પિયાણં ઇદ્દહીજુઈ જસે વલ્લે વીરિણ પુરિસક્કારપરક્કમે દિવ્વા દેવજુઈ દિવ્વે દેવાણુમાવે લલ્લે પત્તે અભિસમણ્ણાગણ’ યહાં-અહો યહ શબ્દ આશ્ચર્ય અર્થ મેં પ્રયુક્ત હુઆ હૈ । આપ દેવાનુપ્રિય કી ઋદ્ધિ-સમ્પન્, ઘૃતિ, પ્રમા યશ-કીર્તિ, બલ શારીરિક શક્તિ, વીર્ય-આત્મશક્તિ, પુરુષકાર-પૌરુષ ઔર પરા-

ઉપર જીવિત રહો. ॥૨॥ હે પ્રથમ નરેશ્વર ! હે શ્વર ऐश्वર્યધર ! હે ચતુષ્પઠી સહસ્ત્ર નારી હૃદયેશ્વર ! હે રત્નાધિષ્ઠાયક, માગધતીર્થાધિપાદિ દેવલક્ષેશ્વર ! હે ચતુર્દશ રત્નાધિપતે હે યશસ્વિન્ ॥૩॥ આપશ્રીએ પૂર્વ, પશ્ચિમ દક્ષિણ સમુદ્ર સુધીના તેમજ ક્ષુદ્ર હિમાચલ સુધીના ઉત્તરાર્દ્ધ-દક્ષિણાર્દ્ધ ભરતને-પરિપૂર્ણ ભરત ક્ષેત્ર ને-ભાવીમાં મૂતવદુપચારની અપેક્ષાએ પોતાના વશમાં કરી લીધુ છે એથી હવે અમે સર્વે આપ દેવાનુપ્રિયના જ દેશ-વાસી થઈ ગયા છીએ અમે આપશ્રીની પ્રજા થઈ ગયા છીએ ॥૪॥ (અહોણં દેવાણુપ્પિયાણં ઇદ્દહી જુઈ જસે વલ્લે વીરિણ પુરિસક્કારપરક્કમે દિવ્વે દેવાણુમાવે લલ્લે પત્તે અભિસમણ્ણાગણ) અહીં ‘અહો’ એ શબ્દ આશ્ચર્ય અર્થમાં પ્રયુક્ત થયેલ છે. આપ દેવાનુ-

પુરુષકારઃ પૌરુષં પરાક્રમં વિક્રમઃ, ઋદ્ધ્યાદોનિ આશ્ચર્યકારકાણિ કુત્તરિત્યાહ-‘દિવ્યા દેવજુઃ’ ઇત્યાદિ । દિવ્યા સર્વોત્કૃષ્ટા દેવસ્યેવ દ્યુતિઃ યસ્ય સ દેવદ્યુતિઃ એવં દિવ્યો દેવાનુ-ભાવો દેવાનુભાગો વા લબ્ધઃ પ્રાપ્તઃ અમિસમન્વાગતો દેવધર્મપ્રસાદાદિતિ, પરતઃ શ્રુતેઽપિ ગુણાતિશયે આશ્ચર્યોત્પત્તિઃ સ્યાત્ દૃષ્ટે તુ સુતરામિત્યાશયેનાહ-‘તં દિદ્ધા’ ઇત્યાદિ ‘તં દિદ્ધા ણં દેવાણુપ્પિયાણં’ ઇદ્ધી એવં ચેવ જાવ અમિસમન્નાગપ્’ તદ્ દૃષ્ટાં ચલ્લુ દેવાનુપ્રિ-યાણામ્ ઋદ્ધિ સમ્પત્, ચક્ષુઃ પ્રત્યક્ષેણ અનુભૂતા શ્રવણતો દર્શનસ્યાતિસંવાદકત્વાત્ અદ્ભુ-તાશ્ચર્યજનકત્વાત્ એવં ચૈવેતિ ઉક્તન્યાયેન દૃષ્ટા દેવાનુપ્રિયાણાં દ્યુતિઃ, એવં યશો વલા-દિકમપિ દૃષ્ટમિત્યાદિ વક્તવ્યમ્, યાવદમિસમન્વાગત ઇતિપદે યાવત્પદસંગ્રહસ્તુ ‘ઇદ્ધી-જસે વલ્લે વીરિપ્’ ઇત્યાદિકમ્ અનન્તરોક્ત એવ વોચ્યમ્ ‘તં ચ્ચામેસુ ણં દેવાણુપ્પિયા !’ તત્ ક્ષમયામઃ ચલ્લુ દેવાનુપ્રિયાઃ ! વચમ્ ‘ચ્ચમંતુ ણં દેવાણુપ્પિયા !’ ભવદ્વાલચેષ્ટિતં ક્ષમન્તાં દેવાનુપ્રિયાઃ ! ‘ચ્ચંતુમરહતુ ણં દેવાણુપ્પિયા !’ ક્ષન્તુ મરહન્તુ ક્ષમાં કર્તુ યોગ્યા

ક્રમ વિક્રમ યે સર્વ હી વહે આશ્ચર્યકારક હૈ. ક્યોકિં આપકો સર્વોત્કૃષ્ટ દેવ કે જૈસો દ્યુતિ હૈ, સર્વોત્કૃષ્ટદેવ કે જૈસા આપકા પ્રભાવ હૈ. યહ સર્વ આપને દેવ એવં ધર્મ કે પ્રસાદ સે હી લબ્ધક્રિયા હૈ. પ્રાપ્ત ક્રિયા હૈ ઓર અમિસમન્વાગત ક્રિયા હૈ દૂમરોં કે મુખ સે ગુણાતિશય કે મુનને પર આશ્ચર્ય હોતા હૈ પરન્તુ જબ વહ ત્વય આલો સે દેખલિયા જાતા હૈ તો આશ્ચર્ય કી સીમા નહીં રહતો હૈ । (તં દિદ્ધા ણં દેવાણુપ્પિયાણં ઇદ્ધી એવ ચેવ જાવ અમિસમન્નાગપ્, તં ચ્ચામેસુ ણં દેવાણુપ્પિયા ચ્ચમંતુ ણં દેવાણુપ્પિયા । ચ્ચંતુમરહતુ ણં દેવાણુપ્પિયા ।) હમલોગોં ને આપ દેવાનુપ્રિય કી ઋદ્ધિ અપની આલો સે દેખલી હૈ ઇસી પ્રકાર સે આપ કા યશ વલ્લ ઓર વીર્ય મી દેખલિયા હૈ- યહા યાવત્પદં સે ‘ઇદ્ધી જસે વલ્લે’ ‘ઇદ્ધી પદો કા સગ્રહ હુમા હૈ ઇસલિયે હે દેવાનુપ્રિય! હમ અપને અપરાધોં કો આપ સે ક્ષમા કરવાતે હૈં ક્યોકિં હમેં પશ્ચાત્તાપ હો રહા હૈ હમારે ઇસ વાલચેષ્ટિત ક્રિયાકો આપ દેવાનુપ્રિય ક્ષમા કરોં આપ દેવાનુપ્રિય ! હમે ક્ષમા કરને કે યોગ્ય હૈ. ક્યોંકિ આપ બહુત વહે સદા-

પ્રિયની ઋદ્ધિ-સમ્પત્ દ્યુતિ, પ્રભા-યશ-કીર્તિ, બળ, શારીરિક શક્તિ, વીર્ય-આત્મશક્તિ, પુરુષકાર-પૌરુષ અને પરાક્રમ વિક્રમ એ સર્વે અતીવ આશ્ચર્ય કારક છે કેમકે આપશ્રીની સર્વોત્કૃષ્ટ દેવના જેવી દ્યુતિ છે, સર્વોત્કૃષ્ટ દેવના જેવો આપશ્રીનો પ્રભાવ છે. એ બધુ આપ શ્રીએ દેવધર્મના પ્રસાદ થી જ મેળવ્યું છે, પ્રાપ્ત કયું છે અને અમિસમન્વાગત કયું છે ‘બીજાઓના મુખથી ગુણાતિશયની વાત સાંભળવાથી આશ્ચર્ય થાય છે પણ ન્યાયે તે ગુણોના આગાર ને આખો થી નેઈ એ ત્યારે અસીમ આશ્ચર્ય થાય છે (તં દિદ્ધા ણં દેવાણુપ્પિયાણં ઇદ્ધી એવ ચેવ જાવ અમિસમન્નાગપ્, તં ચ્ચામેસુ ણં દેવાણુપ્પિયા ! ચ્ચમંતુ ણં દેવાણુપ્પિયા ! ચ્ચંતુમરહતુ ણં દેવાણુપ્પિયા ।) અમે સર્વે લોકોએ આપ દેવાનુપ્રિયની ઋદ્ધિ સ્વ ચક્ષુ-ઓથી નેઈ લીધી છે એ પ્રભાણે તમારા યશ બળ અને વીર્ય પણ અમે નેઈ લીધા છે. અહીં યાવત્ પદથી ‘ઇદ્ધી જસે વલ્લે’ એ પદોનો સંગ્રહ થયો છે. એથી હે દેવાનુપ્રિય ! અમના થયેલ અપરાધ બદલ અમે સર્વ આપ શ્રી પાસેથી ક્ષમા થાચીએ છીએ અમને બારે પશ્ચાત્તાપ થઈ રહ્યો છે અમારી બાળ-ચેષ્ટાઓને આપ દેવાનુપ્રિય ક્ષમા કરો. આપ દેવાનુપ્રિય !

भवन्तु देवानुप्रियाः ! 'णाइ भुज्जो भुज्जो एवं करणयाए त्ति कट्ठ पंजलि उडा पायवडिआ भरहं रायं सरणं उविति' 'णाइ' त्ति नैव 'आइ' इति निपातोऽवधारणे निश्चयार्थं भूयो भूय वारंवार एवं करणतायै सम्पत्स्यामहे एवमपराधं न करिष्यामः इति भावः इतिकृत्वा प्राञ्जलि-कृताः बद्धाञ्जलिपुटाः पादपतिताः भरत महाराजान शरणम् उपयान्ति प्राप्नुवन्ति ।

अथ प्रसन्नताऽभिमुखभरतकृत्यमाह—'तएणं से' इत्यादि 'तएणं से भरहे राया तेसिं आवाडचिछायाणं अग्गाइं वराइं रयणाइं पडिच्छंति पडिच्छित्ता ते आवाडचिछाए एवं वयासी' ततः खल्ल स भरतो राजा तेषामापातकिरातानाम् अग्र्याणि वराणि रत्नानि प्रतीच्छति स्वी करोति, 'पिण्य-स्वीकृत्य तानापातकिरातान् एवं वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत् उक्तवान् 'गच्छह णं भो तुम्हे ममं बाहुच्छाया परिग्गहिया णिब्भया णिरुव्विग्गा सुहं सुहेण परिवसह' गच्छत खल्ल भोः ! देवानुप्रियाः ! यूय स्वस्थानमिति शेषः, बाहुच्छायया परिगृहीताः स्वीकृताः मया शिरसि दत्तहस्ताः इत्यर्थः निर्भयाः भयरहिताः निरुद्विग्नाः उद्वेगरहिताः सन्तः सुखं सुखेन अतिशयसुखेन परिवसतः निवानं कुरुन 'णत्थि मे कत्तो वि भयमत्थि त्ति

શય વાળે હૈં । (જાહ મુજ્જો ૨ એવં કરણયાએ ત્તિ કટ્ઠ પંજલિઉડા પાયવડિયા ભરહ ૧ યં સરણં ઉવિ-તિ) અબ હમલોગ અવિશ્ય મેં એસા નહીં કરેંગે એસા કહ કરે એન આપાતકિરાતો ને દોનો હાથો કો જોક કરે એનકી અજલિ બનાઈ ઔર ફિર વે ભરત રાજા કે પૈરોં મેં પતિત હો ગયે-ગિર ગયે હસ તરહ વે ભરત કી શરણ મેં પ્રાપ્ત હો ગયે. (તપ્પ ણં સે ભરહે રાયા તેસિં આવાડચિછાયાણં અ-ગ્ગાહ વરાઈ રયણાણિ પડિચ્છંતિ, પડિચ્છિત્તા તે આવાડચિછાએ એવ વયાસી) એન ભરત રાજાને એન આપાત કિરાતોં કો મેટ સ્વરૂપ પ્રદાન કિયે ગયે અગ્ર-વદ્મૂલ્ય વર શ્રેષ્ઠ રત્નો કો સ્વીકાર કર-લિયા ઔર સ્વીકાર કરકે ફિર એસને એન આપાત કિરાતો સે એસા કહા- (ગચ્છહ ણં મો તુમ્હે મમં બાહુચ્છાયા પરિગ્ગહિયા ણિબ્ભયા ણિરુવ્વિગ્ગા સુહં સુહેણ પરિવસહ) હે દેવાનુપ્રિયો ! અબ આપ-લોગ અપને ૨ સ્થાન પર જાઓ આપ સબ મેરી બાહુ છાયા સે પરિગૃહીત હો જુકે હો નિર્ભય હોકર એવં ઉદ્વેગરહિત હોકર સુખપૂર્વક રહો (ણત્થિ મે કત્તો વિ ભયમત્થિતિ કટ્ઠ સવકારેહ, સમ્માણેહ)

અમને ક્ષમા કરવા થોગ્ય છે. કેમકે આપ શ્રી મહાન્ સદાશય સમ્પન્ન છે. (જાહ મુજ્જો ૨ એવં ક ૧૫ ત્તિકટ્ઠ પંજલિઉડા પાયવડિયા ભરહં રાય સરણં ઉવિતિ) હવે પછી અવિશ્યમાં અમે આમ નહિ કરીએ આ પ્રમાણે કહીને તે આપાતકિરાતોએ બન્ને હાથોને બોંદીને અંબલિ બનાવી અને પછી તેઓ સર્વ ભરત રાજાના ચરણોમા પડી ગયા આમ તેમણે નવેશ ભરતનુ શરણ પ્રાપ્ત કર્યું (તપ્પ ણં ભરહે રાયા તેસિં આવાડચિછાયાણં

૧૬ વરાઈ રયણાણિ પડિચ્છંતિ, પડિચ્છિત્તા તે આવાડચિછાએ એવ વયાસી) તે ભરત રાજાએ તે આપાત કિરાતોના કોટ સ્વરૂપ મૂકેલા-અગ્ર-મહુમૂલ્ય અને શ્રેષ્ઠ રત્નોને સ્વીકારી લીધાં અને સ્વીકાર કરીને પછી તેણે તે આપાત કિરાતોને આ પ્રમાણે કહ્યું—(ગચ્છહ ણં મો તુમ્હે મમં બાહુચ્છાયા પરિગ્ગહિયા ણિબ્ભયા ણિરુવ્વિગ્ગા સુહં સુહેણ પરિવસહ) હે દેવાનુ-પ્રિયો ! હવે તમે સર્વ પોત-પોતાના સ્થાને પ્રયાણ કરો તમે બધા ભારી બાહુ છાયાથી પરિગૃહીત થઈ ચૂક્યા છો. હવે નિર્ભય થઈને તેમ જ ઉદ્વેગ રહિત થઈને સુખપૂર્વક રહો.

कट्टु सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ' नास्ति 'मे' भवतां
 कुतोऽपि कस्मादपि भयमस्ति इति कृत्वा इत्युक्त्वा सत्कारयति आसनादिना सम्मानयति
 मधुरवचनादिना सत्कार्यं सम्मान्य प्रतिविसर्जयति स्वस्थानगमनाय अतिदिशति प्रेषयति ।
 'तएणं से भरहे राया सुसेणं सेणावइ सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी' ततः आपात-
 चिलातानां गमनानन्तरं खलु स पट्खंडाधिपतिः भरतो राजा सुसेणं सेनापतिं शब्दयति
 आह्वयति शब्दयित्वा आहूय एव वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत् उक्तवान् 'गच्छाहि ण भो
 देवाणुप्पिया ! दोच्च पि सिंधूए महाणईए पच्चत्थिमं णिक्खुडं ससिंधुसागरगिरिमे-
 रागं समविसमणिक्खुडाणि अ ओअवेहि, गच्छ खलु भो देवानुप्रिय ! सुपेण सेना-
 पते ! द्वितीयमपि पूर्वसाधितनिष्कुटापेक्षया अन्यं सिन्ध्वाः महानद्या पश्चिम-पश्चिमभाग-
 वर्त्ति निष्कुट कोणस्थितभरतक्षेत्ररुण्डरूपम् इदं च कैर्विभक्तमित्याह-ससिंधुसागर
 गिरिमयादम् तत्र-सिन्धुः नामा महा नदी सागरः पश्चिमसमुद्रः गिरिः उत्तरं शुल्हहिमव-
 द्गिरिः दक्षिणतो वैताल्यगिरिश्च एतैः कृता मर्यादा विभागरूपा तथा सहितं यत्त-
 तया, एतैः कृतविभागमित्यर्थः 'समविसमणिक्खुडाणि य' समविषमनिष्कुटानि च
 तत्र समानि समभूमिभागवर्त्तीनि विषमाणि च दुर्गभूमिभागवर्त्तीनि यानि निष्कुटानि

आपलोगों को किसी से भी अब भय नहीं रहा है ऐसा कह कर उन भरत राजा ने उन्हें सत्कृत
 और सम्मानित किया (सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ) सत्कृत सम्मानित करके फिर उन्हो-
 ने उन्हें अपने २ स्थानों पर चढे जाने का आदेश दे दिया (तएणं से भरहे राया सुसेणं सेणावइ
 सद्दावेइ) इसके बाद भरत राजाने सुपेण सेनापति को बुलाया-और (सद्दावित्ता एवं वयासी)
 बुलाकर उससे ऐसा कहा (गच्छाहि ण भो देवाणुप्पिया ! दोच्चपि सिंधूए महाणईए पच्चत्थिमं
 णिक्खुडं ससिंधु सागरमेरागं समविसमणिक्खुडाणि अ ओअवेहि) हे देवानुप्रिय ! अब तुम पूर्वसा-
 धित निष्कुट की अपेक्षा द्वितीय सिन्धु महानदी के पश्चिम भागवर्त्ती कोणमें स्थित भरतक्षेत्र में जाओ
 यह सिन्धु नदी पश्चिमदिग्वर्ती समुद्र तथा उत्तर में शुल्हहिमवतगिरि और दक्षिण में वैताल्यगिरि
 इनसे विभक्त हुआ है और वहां समभूमिभागवर्ती एव दुर्गभूमि भागवर्ती जो अवान्तर क्षेत्ररुण्ड-

(णत्थि मे कत्तो वि भयमत्थि ति कट्टु सक्कारेइ, सम्माणेइ) तबने हुवे डै।धने। पणु लथ
 नथी आभ कछीने भरत राजाके तेभने सत्कृत अने सम्मानित कर्या (सक्कारित्ता सम्माणित्ता
 पडिविसज्जेइ) सत्कृत अने सम्मानित करीने पछी तेबु तेभने पोतपोताना स्थाने जवाने।
 आदेश आये। (तएणं से भरहे राया सुसेणं सेणावइ सद्दावेइ) तथार भाद भरत राजाके
 सुपेण सेनापति ने बोलावी ने आ प्रभावे कछु-(गच्छाहि ण भो देवाणुप्पिया ! दोच्चपि
 सिंधूए महाणईए पच्चत्थिमं णिक्खुडं ससिंधुसागरमेरागं समविसमणिक्खुडाणि
 अ ओअवेहि) हे देवानुप्रिय ! हुवे तमे पूर्वसाधित निष्कुटनी अपेक्षा द्वितीय सिन्धु
 महानदीना पश्चिमभागवर्ती डै।धुभा स्थित भरतक्षेत्रमा जये। जे क्षेत्र सिंधु नदी पश्चिम
 दिग्वर्ती समुद्र तथा उत्तरमा शुल्ह हिमवत गिरि अने दक्षिणमा वैताल्य गिरि जेमनाथी
 से विभक्त थये। छे अने तथा समभूमि भागवर्ती तेभज दुर्गभूमि भागवर्ती जे अवान्तर

અવાન્તરક્ષેત્રસ્વળ્ડરૂપાણિ તાનિ તથા 'ઓઅવેહિ' સાધય તત્ર વિજય કૃત્વાઽસ્મદાજ્ઞાં પ્રવર્તય 'ઓઅવેત્તા અગ્ગાઈં વરાઈં રયણાઈં પહિચ્છાહિ' સાધયિત્થા વિજિત્ય અઘ્યાણિ વરાણિ પ્રધાનાનિ રત્નાનિ સ્વ સ્વજાતૌ ઉત્કૃષ્ટવસ્તુનિ પ્રતીચ્છ ગૃહાણ 'પહિચ્છિત્તા' પ્રતીપ્ય ગૃહીત્વા 'મમ ઇયમાણત્તિયં સ્વિપ્પામેવ પચ્ચપ્પિણાહિ' મમૈતામ્ ઉક્તાનુસારિણીમ્ આજ્ઞપ્તિકાં ક્ષિપ્રમેવ પ્રત્યર્પય સમર્પય 'જહા દાહિણિહસ્સ ઓઅવળં તહા સવ્વં માણિયવ્વં જાવ પચ્ચણુભવમાણે વિહરંતિ' યથા દાક્ષિણાત્યસ્ય સિન્ધુનિષ્કુટસ્ય 'ઓઅવળં' સાધન 'તહા સવ્વં માણિયવ્વં' તથા સર્વે ભણિતવ્યં તાવત્સર્વે ભણિતવ્ય વક્તવ્યમ્ 'જાવ પચ્ચણુભવમાણા વિહરંતિ' તાવદ્વક્તવ્યં યાવત્સેનાનીર્મરતવિષ્ટઃ પશ્ચવિધાન્ કામ-ભોગાન્ પ્રત્યનુભવન વિહરતીતિ ॥૬૦૨૨॥

તદનન્તર કિં જાત મિતિ નિરૂપયન્નાહ—

મૂલમ્-તણ્ણં દિવ્વે ચક્કરયણે અણ્ણયા કયાઈ આઉહવસાલાઓ પહિણિક્કમ્મહ પહિણિક્કમિત્તા અંતલિક્કપહિણે જાવ ઉત્તરપુરચ્છિમં દિસિં ચુલ્લહિમવંતપવ્વયાભિમુદ્દે પયાતે યાવિ હોત્થા, તણ્ણં સે ભરદ્દે રાયા તં દિવ્વં ચક્કરયણં જાવ ચુલ્લહિમવંતવાસહરપવ્વયસ્સ અદૂસામંતે દુવાલસજોયણાયામં જાવ ચુલ્લહિવંતગિસ્કિમાસ્સ દેવસ્સ અઢ્ઢમમત્તં પગિ-પ્પહ્હ, તદ્દેવ જહા માગહતિત્થસ્સ જાવ સમુદ્દરવમ્મૂઅંપિવ કરેમાણે કરેમાણે

રૂપ નિષ્કુટ હૈં વહા પર વિજય પ્રાપ્ત કર હમારો આજ્ઞા કો સ્થાપિતકરો (ઓઅવેત્તા અગ્ગાઈં વરાઈં રયણાઈં પહિચ્છાહિ) એસા કરકે બહુમૂલ્ય શ્રેષ્ઠ રત્નો કો અપની ૨ જાતિ મેં શ્રેષ્ઠ-ઉત્કૃષ્ટ વસ્તુઓ કો મેટરૂપ મેં સ્વીકાર કરો (પહિચ્છિત્તા મમ ઇયમાણત્તિયં સ્વિપ્પામેવ પચ્ચપ્પિણાહિ) સ્વીકાર કરકે મેરી હસ આજ્ઞા કી પૂર્તિ હો જાને કી પીછે હમેં સ્વર દો (જહા દાહિણિહસ્સ ઓઅવળ તહા સવ્વં માણિયવ્વં જાવ પચ્ચણુભવમાણા વિહરંતિ) જૈસા દાક્ષિણાત્ય-દક્ષિણદિગ્વર્તી-સિન્ધુનદી નિષ્કુટ કે વિજય કરન કા પ્રકરણ "યાવત્ પચ્ચણુભવમાણા વિહરંતિ" હસ સૂત્ર પાઠ તક કહા જા ચુકા હૈ વૈસા હી વહ સબ પ્રકરણ યહા મી કહલેના ચાહિયે ॥૨૨॥

કેત્ર ખ ઠરૂપ નિષ્કુટ છે ત્યાં વિજય પ્રાપ્ત કરી અમારી આજ્ઞા ત્યાં સ્થાપિત કરે. (ઓઅવેત્તા અગ્ગાઈં વરાઈં રયણાઈં પહિચ્છાહિ) આમ કરીને બહુમૂલ્ય શ્રેષ્ઠ રત્નોને—પોતપાતાની જાતિમાં શ્રેષ્ઠ-ઉત્કૃષ્ટ વસ્તુઓને હોટ રૂપમાં સ્વીકાર કરે. (પહિચ્છિત્તા મમ ઇયમાણત્તિયં સ્વિપ્પામેવ પચ્ચપ્પિણાહિ) સ્વીકાર કરીને મારી આ આજ્ઞાનું પાલન પૂર્ણરીતે કરીને પછી અમને સૂચના આપે. (જહા દાહિણિહસ્સ-ઓઅવળ તહા સવ્વં માણિયવ્વં જાવ પચ્ચણુભવમાણા વિહરંતિ) એવું દાક્ષિણાત્ય-દક્ષિણદિગ્વર્તી સિન્ધુ નદી નિષ્કુટના વિજય-પ્રકરણ "યાવત્ પચ્ચણુ ભવમાણા વિહરંતિ" એ સૂત્રપાઠ સુધી કહેવામાં આવેલ છે તેવું જ બધું પ્રકરણ અત્રે પણ સમજવું જોઈએ. ॥૨૨॥

उत्तरदिसाभिमुहे जेणेव चुल्लहिमवतवासहरपव्वए तिक्खुत्तो रहसिरेणं
फुसइ फुसित्ता तुरए णिगिण्हइ णिगिण्हित्ता तहेव जाव आयतकर्णायतं
च काऊण उसुमुदारं इमाणि वयणाणि तत्थ भाणीअ से णरवई जाव सव्वे
मे ते विसयवासित्ति कट्ठु उद्धं वेहासं उंसुं णिसिरइ परिगरणिगरणिअम-
ज्जे जाव तएणं से सरे भरहेणं रण्णा उद्धं वेहासं णिसट्ठे समाणे खिप्पामेव
बावत्तरिं जोयणाइं गंता चुल्लहिमवंतगिरिक्कुमारस्स देवस्स मेराए णिवइए
तएणं से चुल्लहिमवंतगिरिक्कुमारे देवे मेराए सरं णिवइअं पासइ पासित्ता
आसुरत्ते रुट्ठे जाव पीइदाणं सव्वोसहिं च मालं गोसीसचंदणं कडगाणि
जाव दहोदगं गेण्हइ गेण्हित्ता ताए उविकट्ठाए जाव उत्तरेणं चुल्लहिमवंतगि-
रिमेराए अहण्णं देवाणुप्पियाणं विसयवासी जाव अहण्णं देवाणुप्पियाणं
उत्तरिल्ले अंतवले जाव पडिविसज्जेइ ॥ सू० २३ ॥

छाया-ततः खलु तद्विषय चक्ररत्नम् अन्यदा कदाचित् आयुधगृहशालात प्रतिनि-
ष्कामति प्रतिनिष्क्रम्य अन्तरिक्षप्रतिपन्नम् यावत् उत्तरपौरस्त्या दिशि क्षुद्रहिमवत्पर्वता-
भिमुखं प्रयातं चाप्यभवत् । ततः खलु स मरतो राजा तद्विषयं चक्ररत्नं यावत्क्षुद्रहिमव-
द्गिरिकुमारस्य देवस्य अष्टमभक्तं प्रगृह्णाति तथैव यथा मागधनीर्यस्य यावत् समुद्रव-
भूतमिव कुर्वन् कुर्वन् उत्तरदिशाभिमुखं यत्रैव क्षुद्रहिमवद्बर्षधरपर्वतः तत्रैव उपाग-
च्छति उपागत्य क्षुद्रहिमवद् वर्षधरपर्वतः त्रि कृत्व रथशिरसा स्पृशति, स्पृष्ट्वा तुर-
गान् निगृह्णाति निगृह्य तथैव यावत् आयतकर्णायतं च कृत्वा इषुमुदारम् इमानि
वचनानि तत्र अभाणीत् स नरपतिः यावत् सर्वे मे ते विषयवासीति कृत्वा ऊर्ध्वं विद्वा-
यसि इषु निस्तृजति परिकरनिगडितमभ्यो यावत् ततः खलु स शर भरतेन राज्ञा ऊर्ध्वं
विद्वायसि निस्तृष्ट सन् क्षिप्रमेव द्वासप्ततिं योजनानि गत्वा क्षुद्रहिमवद्गिरिकुमारस्य देव-
स्य मर्यादायां निपतितः ततः खलु स क्षुद्रहिमवद्गिरिकुमारो देव मर्यादायां शर निपतित
पश्यति दृष्ट्वा आशुक्लो रुष्टो यावत् प्रीतिदानं सर्वौषधीश्च मालां गोक्षीर्षवन्धनं च कट-
कानि यावत् द्रहोदकं च गृह्णाति गृहीत्वा तथा उत्कृष्टया यावत् उत्तरस्यां क्षुद्रहिमव-
द्गिरिमर्यादायाम् अहं खलु देवानुप्रियाणां विषयवासी यावत् अहं खलु देवानुप्रियाणाम्
औत्तराहोऽन्तपालो यावत् प्रतिविसर्जयति ॥ सू० २३ ॥

टीका—‘तएणं’ इत्यादि

‘तएणं तं चक्करयणे अण्णया कयाइ आउडधरसालाओ पडिणिक्खमइ’ ततः

‘तएणं से दिव्वे चक्करयणे अण्णया कयाइ’ इत्यादि ॥ २३ ॥

टीकार्थ—इस तरह उत्तरदिग्वर्ती निष्कुटों का विजय रुग्ने के बाद से (दिव्वे चक्करयणे) वह दिव्य

औत्तराहसिन्धुनिष्कुटसाधनानन्तरं खलु तद्विव्यं चक्ररत्नम् अन्यदा कदाचित् अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् समये आयुष्वगृहशालातः प्रतिनिष्क्रामति निर्गच्छति निस्सरति इत्यर्थः 'पडिणिकखमिच्चा' निःसृत्य प्रतिनिष्क्रम्य वहिर्निर्गत्य 'अंतल्लिक्खपडिवण्णो जाव उत्तर-पुरत्थिम दिस्सि चुल्लहिमवत्तपण्वयाभिमुहे पयाते यावि होत्था' अन्तरिक्षप्रतिपन्नम् गगनदेशस्थितं यावत्पदात् यक्षसहस्रपरिवृतं दिव्यश्रुतिवाद्यविशेषशब्दसन्निनादेन अम्बर-तलं पूरयति एतेषां पदानां सङ्ग्रहः उत्तरपौरस्त्यायां दिशि ईशाने कोणे क्षुद्रहिमवत्पर्व-ताभिमुखं क्षुद्रहिमाचलगिरिसमुखं प्रयातं गतं चाप्यभवत् 'तएणं से भरहे राया तं दिव्यं चक्ररयणं जाव चुल्लहिमवत्तवासहरपण्वयस्स अदूरसामंते दुवालसजोयणायामं जाव चुल्लहिमवत्तगिरिकुमारस्स देवस्स अट्टममत्तं पणिण्हइ' ततः खलु स भरतो राजा तद् दि-व्यं चक्ररत्नं यावत् अभिक्षुद्रहिमवद्गिरिं प्रयातं दृष्ट्वा कौटुम्बिकपुरुषाज्ञापनं हस्तिरत्नप्रतिक-ल्पनं सेनासन्नाहनं स्नानविधानं हस्तिरत्नारोहणं मार्गागतपुरनगरदेशाधिपक्षीकरणं

चक्ररत्न (अण्णया कय ई) किसी एक समय (आउहघरसालाओ) आयुष्वगृहशाला से (पडिणिकख-मइ) निकला और (पडिणिकखमिच्चा अंतल्लिक्खपडिवण्णे जाव उत्तरपुरत्थिमं दिस्सि चुल्लहिमवत्त पण्वयाभिमुहे पयाए यावि होत्था) निकलकर वह आकाश प्रदेश से ही-ऊपर रहकर ही-यावत् उत्तर पूर्वदिशा में-ईशान विदिशा में क्षुद्रहिमवत् पर्वत की तरफ चला यहा यावत्तद से—"जक्खस-हस्स सरिबुडे दिव्व तुडियसहसणिणाएणं पूरंते चेव अंबरतल" इन पदों का सग्रह किया गया है. (तएण से भरहे राया तं दिव्यं चक्ररयणं जाव चुल्लहिमवत्तवासहरपण्वयस्स अदूर सामंते दुवालसजोयणायामं जाव चुल्लहिमवत्तगिरिकुमारस्स देवस्स अट्टममत्तं पणिण्हइ) क्षुद्र हिमवत् पर्वत की ओर जाते हुए उस दिव्य चक्ररत्न को देखकर भरत राजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाना, उन्हें आज्ञा देना, हस्तिरत्न की तैयारी करवाना, सेना की तैयारी करवाना फिर स्नान करना, हस्तिरत्न पर आरोहण करना, मार्गागत पुर के नगर के एवं देश के अधिप-

'तएणं से दिव्वे चक्ररयणे अण्णया कयाइ' इत्यादि सूत्र-॥२३॥

टीका—आ प्रभाषे उत्तर दिग्गतीं निष्कुटे। उपर विषय भेग्या भाव (से दिव्वे च यणे) ते दिव्य चक्र रत्न (अण्णया कयाइ) के। अथैक वधते (आउहघरसालाओ) आयुष्व गृहशालाभांथी (पडिणिकखमइ) गह्वर नीक्ष्युं अने (पडिणिकखमिच्चा अंतल्लिक्ख पडिवण्णे उत्तरपुरत्थिम दिस्सि चुल्लहिमवत्तपण्वयभिमुहे पयाए यावि होत्था) गह्वर नीक्षणीने ते आकाश प्रदेशयो अ ओटसे के अदूर रहने अ यावत् उत्तर-पूर्व दिशाभां-ईशान विदिशाभा-क्षुद्र हिमवत् पर्वतनी तरङ्ग याद्यु अही यावत् पड्यो—"जक्खसहस्स संपरिबुडे दिव्वतुडियसहसणिणाएणं पूरंते चेव अंबरतल" ओ पढोने अथैक थयो छे. (तएणं से भरहे राया तं दिव्यं चक्ररयणं जाव चुल्लहिमवत्तवासहरपण्वयस्स अदूरसामंते दुवालसजोयणायामं जाव चुल्लहिमवत्तगिरिकुमारस्स देवस्स अट्टममत्तं पणिण्हइ) क्षुद्र हिमवत् पर्वत तरङ्ग प्रयास करता ते दिव्यचक्ररत्नने ओधने भरत राजाओ कौटुम्बिक पुरुषोने गोलाव्या अने तेभने आज्ञा आपी-तमे हस्तिरत्नने तैयार करे। सेना तैयार करे।

त्प्राभृतस्वीकरणं चक्ररत्नानुगमनं योजनानन्तरितवसतिवसनं च करोतीत्यादि पिण्डार्थः प्रथमयावत्पदग्राह्यः, अत्र यावत्पदात् एतावद् वृत्तान्तं ज्ञातव्यम् ततः क्षुद्रहिमवद्वर्षधरपर्व- तस्य अदूरसामन्ते क्षुद्रहिमवद्गिरिसमापे द्वादश योजनायामम् अष्टाचत्वारिंशत्क्रोशपरि- मितायामम् अत्र यावत्पदं नव योजनविस्तीर्णादि विशेषणं विशिष्टं स्कन्धावारं निवेशयति वर्द्धकिं त्वं शब्दयति, पौषधशालां विधापयति पौषधं च करोतीत्यादि विज्ञेयम् क्षुद्रहिमव- द्दिरिकुमारस्य देवस्य साधनाय पौषधशालायाम् अष्टमभक्तं प्रगृह्णाति इत्यर्थः । 'तदेव जहा- मागद्वतित्थस्स जाव समुद्गरवभूर्यपिव करेमाणे करेमाणे उत्तरदिसामिमुहे जेणेव चुल्लहिमवंत- वामहरपव्वया तेणेव उवागच्छइ' अत्र 'तदेव' तथैव इति पदवाच्यम् अष्टमभक्तप्रतिजागरणं

तियों का वश में करना उनके द्वारा प्रदत्त भेट स्वीकार करना चक्ररत्न के पीछे २ चलना एक २ योजन के अन्तर से पड़ाव डालना" इत्यादिरूप से यहाँ सब कथन जैसा कि पीछे किया जा चुका है. कर लेना चाहिये यही बात यहाँ पर आगत प्रथम यावत्पद ने प्रकट की है चक्रवर्ती भरत राजा ने क्षुद्रहिमवत्पर्वत के अदूर सामन्तस्थान में अर्थात् उसके पास में १२ बारह योजन की छम्बाई वाले और नौ योजन की चौड़ाई वाले अपने कटक को ठहरा दिया यहाँ पर आगत पद से" नव योजन विस्तीर्ण आदि"पूर्वोक्तविशेषणों का ग्रहण हुआ है फिर उसने अपने वर्द्धकीरत्न को बुलाया उससे पौषधशाला बनाने को कहा- उसने पौषधशाला का निर्माण कर दिया उसमें स्थित होकर भरत ने पौषध किया इत्यादि- सब कथन जान लेना चाहिये इस तरह सर्व कार्य हो चुकने के बाद भरत राजा ने पौषधशाला में बैठ कर क्षुद्र हिमवद्दिरिकुमार देव को साधने के लिये अष्टम भक्त की तपस्या करना प्रारम्भ कर दिया (तदेव जहा मागद्वतित्थस्स जाव समुद्गरवभूर्यपिव करेमाणे २ उत्तरदिसामिमुहे जेणेव चुल्लहिमवतवासहरपव्वया तेणेव उवागच्छइ) यहाँ

भार्गवत पुराणा, नगरना तेभञ्ज देशना आधिपतियोने वशमा करो, ते आधिपतियो खेट स्वप्ने ये कथं आपे ते स्वीकार करो, यक्करत्नणी पाछण-पाछण आलो, जेक योजनना अन्तरथी तसे पडाव नाजे" इत्यादि रूपमा अत्रे अधुं कथन जेम पडेलां कडेवाभा आओ" छे तेवु समञ्जसु जेधज्ये जेञ्ज वात अही प्रयुक्त प्रथम 'यावत्' पद द्वारा प्रकट करे- वाभा आवी छे यक्कवतीं भरत राजाज्ये क्षुद्र हिमवत्पर्वतना अदूर सामन्त स्थानभां अर्थात् तेनी पासे १२ योजन जेटकीं लणार्धवाणा अने ९ योजन जेटकीं पडोणाध वाणा पोताना कटकने पडाव नाज्ये. अही आवेला आगत पदथी-"नव योजन विस्तीर्ण" वगेरे "पूर्वो- क्त विशेषणानु अहंशु यथुं छे तयार जाह तेजे पोताना वर्द्धकिरत्न ने ओलाओ. अने तेने पौषधशाणानु निर्माण करवा माटे कहुं वर्द्धकिरत्नने आज्ञा सुञ्जत तरत न पौषध शाणा बनानी आपी तेमा स्थित थपने भरत नरेशे पौषध मत कहुं. इत्यादि अधुं कथन जेवुं जेधज्ये, आ प्रभाजे सर्वकार्यो पूरा थर्ध गया पछी भरत राजाज्ये पौषधशा- णामा जेसीने क्षुद्र हिमवद् गिरि कुमार देवने साधवा माटे अष्टम भक्तनी तपस्या प्रार्थना करी (तदेव जहा मागद्वतित्थस्स जाव समुद्गरवभूर्यपिव करेमाणे २ उत्तरदिसामिमुहे जेणेव चुल्लहिमवतवासहरपव्वया तेणेव उवागच्छइ) अही प्रयुक्त 'तथैव' पद पडे "अष्ट-

तत्समापनं कौटुम्बिकाज्ञापनं सेनासज्जीकरणम् अश्वरथप्रतिकल्पन स्नानविधानम् अश्वर-
थारोहणं चक्ररत्नमार्गानुगमनं च करोतीत्यादि विज्ञेयम् तथैव मागधतीर्थस्य मागधतीर्थ-
राजदेवस्य यावद् समुद्रवभूतामिव समुद्ररवं प्राप्तमिव भूगतौ इति सौत्रो धातुः तस्मात्
क्तः सैन्यसमुत्थ कलङ्करवेण पृथिवीमण्डलं कुर्वन् कुर्वन् उत्तरदिगभिमुखो यत्रैव क्षुद्रहि-
मवद्वर्षधरपर्वतः तत्रैव उपागच्छति समीपं याति 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'सुलङ्घिमवतवा-
सहरपन्वयं तिव्रखुत्तो रहसिरेणं फुसइ' क्षुद्रहिमवद् वर्षधरपर्वतं त्रिकृत्वः त्रीन् वारान् र-
थाग्रभागेन काकमुखेन स्पृशति अतिवेगप्रवृत्तस्य वेगिपदार्थस्य पुरस्थ प्रतिबन्धकमित्या-
दि संघटने त्रिस्ताडनेन वेगपातदर्शनादत्र त्रिरित्युक्तम् 'फुसित्ता तुरप णिगिण्हइ' स्पृष्ट्वा वे-
गप्रवृत्तान् तुरगान् चतुरः अश्वान् निगृह्णाति स्थापयति 'णिगिण्हित्ता तहेव जाव आयत-
कण्णायत च काळ्ण उमुमुदारं इमाणि वयणाणि तत्थ भणीअ से णरवई जाव सव्वे

आगत "तथैव" पद के द्वारा वाच्य "अष्टमभक्त के दिनो में जगना फिर उसका समापन करना
कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाकर उन्हें आज्ञा देना, सेना को तैयारी करवाना, अश्वरथ की तैयारी
करके उसे उपस्थित करने की बात कहना, स्नान करना, अश्वरथ पर सवार होना चक्ररत्न द्वारा
प्रदर्शित मार्ग पर गमन करना इत्यादि ये सब कार्य हुए हैं अर्थात् भरत चक्रवर्ती ने पहिले कहे
गये अनुसार ही इन सब कार्यों को किया ऐसा जानना चाहिये—

यावत् सैन्य समुत्थ कल २ रव से मानो पृथिवी मंडल पर समुद्र का रव हो आकर व्याप्त
हो गया है इस तरह से पृथिवी मंडल को करता २ वह भरत राजा उत्तर दिशा को ओर बढ़ता
हुआ जहा पर क्षुद्रहिमवान् पर्वत था वहां पर आया (उवागच्छित्ता सुलङ्घिमवतवासहरपन्वयं
तिव्रखुत्तो रहसिरेणं फुसइ) चूंकि अश्वरथ का वेग तीव्र था इससे क्षुद्र हिमवत्पर्वत से रथ का
शिरोभाग तीन बार टकराया (फुसित्ता तुरप णिगिण्हइ) अश्वरथ का अग्रभाग जब क्षुद्रहिमवत्पर्वत
से तीन बार टकरा गया— तब उसने वेग से चलते हुए चारों घोड़ों को थामलिया (णिगिण्हित्ता

भ अक्षतना द्विवसोभां जगरेषु कश्चु, पछी तेनु सभापन कश्चु, कौटुम्बिक पुरुषोने भोलावी
ने तेभने आज्ञा आपवी, सेना सुसज्ज करववी, अश्वरथनी तैयारी करीने तेने उपस्थित
करवानी आज्ञा आपवी, स्नान कश्चु, अश्वरथ उपर सवारी कश्ची, अक्षरत्न द्वारा प्रदर्शित
मार्ग उपर गमन कश्चु "इत्यादि सर्व कार्यो सम्पन्न कर्था आभ सम्भज्जु भरत नरेशे
पडेलां कला सुज्ज न जे सर्व कार्यो ने सम्पन्न कर्था जेनु "तथैव शब्दनु तात्पर्य छे

यावत् सैन्य समुत्थ कल-कल निनाहथी लक्ष्मि पृथ्वीमण्डल उपर समुद्र गमन न
आवी ने व्याप्त थई न गच्छु होय आ प्रभावे पृथ्वीमण्डल ने पोताना सैन्य संचारस्थिती
सुअस्थित करतो ते भरत नरेश उत्तर दिशा तरफ प्रयाण करतो जथा क्षुद्र हिमवत् पर्वत
होतो त्यां पडेलां (उवागच्छित्ता सुलङ्घिमवतवासहरपन्वयं तिव्रखुत्तो रहसिरेणं फुसइ)
अश्वरथनी गति तीव्र होती तेथी क्षुद्रहिमवत् पर्वत थी ते अश्वरथने शिरोभाग त्रय
वार अथहायो. (फुसित्ता तुरप णिगिण्हइ) अश्वरथने अग्र भाग जथा क्षुद्र हिमवत्पर्वतने
त्रय वार अथहायो त्याने तेथे वेगथी आदता आने बोलाओने शक्या (णिगिण्हित्ता तहेव

મે તે વિસયવાસીત્તિ કદ્દુ ઉદ્ધં વેદાસં ઉસુ ણિસિરહ પરિગરણિગરિઅમજ્જે જાવ' ચતુરોપિ-
તુરગાન્ નિચ્છં તથૈવ માગધતીર્થાધિકારવદેવ યાવદ્ આયતરુર્ણાયતં હપુમુદારમિત્તિ અત્ર
'તદેવ' ત્તિ વચનાત્ રથસ્થાપનં ધનુર્ગ્રહણં વાણગ્રહણં ચ વક્તવ્યમ્ તતઃ તમ્ ઉદારમ્ ઉદ્ગટમ્
હપું વાણં યાવદાયતકર્ણાયતમ્ આયતં પ્રયત્નયુક્તં યથા ભવતિ તથા કર્ણં યાવત્ કર્ણપર્યન્ત-
મ્ આયતમ્ આકુષ્ટ કૃત્વા તત્ર હમાનિ વચનાનિ અમાણીત્ સ નરયતિઃ અત્ર યાવત્ પદેન'હં-
દિ સુણતો ભવંતો' હત્યાદિ ગાથાદ્વયં વાચ્ય સર્વે મે તે દેશવાસિનઃ હતિ પર્યન્તમ્ એતસ્ય
વિશેષતો વ્યાખ્યાનં તૃતીયવક્ષસ્કારે પદ્મસૂત્રે વિલોકનીયમ્ હતિ કૃત્વા હત્યુચ્ચાર્ય ઋધ્વમ્
ઉપરિ વિહાયસિ આકાશે શુદ્ધિમવદ્ગિરિકુમારસ્ય તત્રાવાસસંભવાત્ હપું વાણં નિસ્રજતિ
મુઠ્ઠંતિ 'પરિગરણિગરિઅમજ્જો જાવત્તિ' અત્ર યાવત્પદાત્ વાણમોક્ષપ્રકરણાધીતં પરિપૂર્ણ
ગાથાદ્વયં વક્તવ્યમિત્તિ તથા ચ—

તદેવ જાવ આયતવળાયત ચ કાઠુણ ઉસુમુદારં હમાણિ વયણાણિ તત્થ મળીઅ સે ણરવર્દે જાવ સ-
વ્વમેતે વિસયવાસીત્તિ કદ્દુ ઉદ્ધં વેદાસં ઉસુ ણિસિરહ પરિગરણિગરિઅમજ્જે જાવ) ચારો ઘોઘો
કો ચામ કર કે માગધતીર્થાધિકાર મેં કહે ગયે અનુસાર ડસને ફિર અપને ઘનુષ કો ડઠાયા
વાણ કો ડઠાયા ફિર વાણ કો ઘનુષ પર સ્થાપિત ક્રિયા ઓર ફિર ડસને ઘનુષ પર આરોપિત
કરકે ડસ ડદારઉદ્ગટ ઘનુષ કો કાન તક સેંચા કાન તક ઘનુષ સેચકર ફિર ડસને હસ પ્રકાર
કે હન વચનો કો કહા— "હંદિ સુણંતો ભવંતો" યે વચન પૂર્વોક્ત હન ડો ગાથાઓ મેં પ્રકટ કર
દિયે ગયે હેં સો વે હી વચન "સવ આપ હોગ મેરે દેશ નિવાસી હેં યહાપર મી કહહેના ચાહિય
હનકી વ્યાખ્યા તૃતીય વક્ષસ્કારમેં હટવેં સૂત્ર મેં કી ગઈ હે સો વહીં સે હસે જાનહેની ચાહિયે
એસા કહકર ડસને અપને વાણ કો ડાર આકાશમેં હોઢા ક્યોં ફે વહીં પર શુદ્ધિમવદ્ગિરિ કુમાર
કા આવાસ થા ॥ "પરિગરણિગરિઅમજ્જો જાવત્તિ" યહાં યાવત્પદ સે— "વાણમોક્ષપ્રકરણ મેં
કથિત પરિપૂર્ણગાથાદ્વય કહહેની ચાહિયે । તથા ચ—

જાવ આયતવળાયતં ચ કાઠુણ ઉસુમુદારં હમાણિ વયણાણિ તત્થ મળીઅ સે ણરવર્દે જાવ
સવ્વ મેતે વિસયવાસીત્તિ કદ્દુ ઉદ્ધં વેદાસં ઉસુ ણિસિરહ પરિગરણિગરિઅમજ્જે જાવ)
ચારે ઘોઘાઓને ચ લાવીને માગધતીર્થાધિકારમાં કહ્યા મુજબ તેણે પોતાના ધનુષ ને હાથમા
હીધુ. બાણ હાથમા હીધુ, બાણ ને ધનુષ ઉપર સ્થાપિત કયું અને પછી ધનુષ ઉપર આરો-
પિત કરીને તે ઉદાર ઉદ્ગટ ધનુષ કાન હુધી ખેંચી ને પછી તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું—'હંદિ
સુણંતો ભવંતો' એ વચનો પૂર્વોક્ત એ બે ગાથાઓમાં પ્રકટ કરવામાં આવેલ છે. તે એ જ
વચનો—'આપ સર્વે મારા દેશવાસી છો. અહીં પણ સમજવા નેહંએ. એ વચનોની વ્યાખ્યા
તૃતીય વક્ષસ્કાર'મા ૬ ઠા સૂત્રમા કહેવામાં આવી છે તે। જિજ્ઞાસુએ ત્યાંથી જ બાણવા યત્ન
કરે આમ કહીને તેણે પોતાના બાણને ઉપર આકાશમા છોડ્યું કેમકે ત્યાંજ શુદ્ધ હિમવદ્
ગિરિ કુમારનો આવાસ હતો.

'પરિગરણિગરિઅમજ્જો જાવત્તિ' અહીં યાવત્ પદથી "બાણ મોક્ષ પ્રકરણમાં કથિત
પરિપૂર્ણ ગાથાદ્વય કહેવી નેહંએ—

પરિગરણિગરિમ્મજ્જો વાઝદુમ્મ સોમમાણકોસેજ્જો ।

ચિત્તેણ સોમમ્ ધણુવરેણ હંદોવ્વ પચ્ચક્ખં ॥૧॥

ત ચ્ચલાયમાણં પંચમિચંદોવમં મહાચાવં ।

છજ્જહ વામે હત્થે નરવહ્ણો તંમિ વિજયંમિ ॥૨॥

છાયા-પરિકરનિગદિતમધ્યો વાતોદ્ધુત શોમમાણકૌશેયઃ ।

ચિત્રેણ શોમતે ધનુર્વરેણેન્દ્ર ઇવ પ્રત્યક્ષમ્ ॥૧॥

તચ્ચઠ્ઠલાયમાણં પઠ્ઠમો સન્દ્રોપમં મહાચાપમ્ ।

રાજતે વામે હસ્તે નરપતે સ્તસ્મિન્ વિજયે ॥૨॥

બાળં મુશ્ચન્ ભરતઃ ક્રીદશઃ-ઇત્યાહ-‘પરિકર’ ઇત્યાદિ । પરિકરનિગદિતમધ્યઃ-ઇતિ તત્ર પરિકરઃ મલ્લકચ્છવન્ધઃ-પુદ્ધોચિતવત્ત્વવન્ધવિશેષસ્તેન નિગદિત સુવદ્ધ મધ્ય મધ્યમાનો यस્ય સ તથા, તથા, વાતોદ્ધૂત શોમમાણકૌશેયઃ-વાતેન સમુદ્રવાતેન પવનેન ઉદ્ધતમ્ ઉત્તિષ્પત શોમમાણ કૌશેયં વસ્ત્રવિશેષો यस્ય સ તથા અવશિષ્ટપદાનિ પ્રસિદ્ધાન્યેવ’ તતઃ-કિં જાતમિત્યાહ-‘તપ્ ન સે’-ઇત્યાદિ । ‘તપ્ નં સે સરે ભરહેણં રણા ઉહં વેહાસ જિસદ્દે સમાણે સિપ્પામેવ વા-વત્તરિં જોયણાહં ગંતા ચુલ્લહિમવંતગિરિકુમારસ દેવસ મેરાણ ણિવણ્ણ’ તતઃ-સહ સ શરો-

પરિગરણિગરિમ્મજ્જો વાઝદુમ્મોમમાણ કોસેજ્જો । ચિત્તેસોમમ્ ધણુવરેણ હંદોવ્વ પચ્ચક્ખં ॥૧॥

તં ચંચલાયમાણ પંચમિચંદોવમ મહાચાવં । છજ્જહ વામે હન્યે નરવહ્ણો તમિ વિજયમિ ॥૨॥

બાળ કો છોડતે સમય ભરત મહારાજા કૈસા પ્રતીત હુઆ-યહી બાત હસ ગાથાદ્વય મેં પ્રગટ કી ગઈ-જિસ સમય ભરત રાજા ને બાળ છોડા-સસ સમય સસને મલ્લ કી તરહ અપની કચ્છા કો અચ્છી તરહ સે વાંધલિયા થા કટિયાગ કોમી ખૂબ અચ્છી તરહ સે કસકર વાધ લિયા થા-સકે દ્વારા ધારણક્રિયે કૌશેય વસ્ત્ર-સસ સમય મસુદ કી વત્થ વાયુ સે ધીમે ધીમે કપિત હો રહા થા, અતઃ વહ-સસ ધનુષદ્ધર સે એસા પ્રતીત હોતા થા, કિ માનો સાક્ષાત્-હન્દ્ર હી બહાં વપસ્થિત હુઆ હૈ । બાકી કે ગાથોક્ત પદો કો વ્યાખ્યા સુગમ હૈ । (તપ્ નં સે સરે ભરહેણં

તથા ચ-પરિગરણિગરિમ્મજ્જો વાઝદુમ્મ સોમમાણકોસેજ્જો ।

ચિત્તેણ સોમમ્ ધણુવરેણ હંદોવ્વ પચ્ચક્ખં ॥૧॥

ત ચ્ચલાયમાણ-પંચમિચંદોવમ મહાચાવં ।

છજ્જહ વામે હત્થે નરવહ્ણો તંમિ વિજયંમિ ॥૨॥

બાણુ છોડતી વખતે ભરત નરેશ દેવો મુશોભિત થયો, એજ વાત એ ઉપર્યુક્ત ગાથા દ્વયમાં પ્રકટ કરવામાં આવી છે. જે સમયે ભરત રાજાએ બાણુ છોડ્યું તે સમયે તેણે મલ્લ (પહેલેવાન) ની જેમ પોતાની કચ્છા ને સારી રીતે બાધી લીધી કમર ને પણ સારી રીતે કસીને બાધી લીધી તેણે કૌશેય વસ્ત્ર ધારણ કરેલું હતું. તે વસ્ત્ર સમુદ્રમાંથી પ્રવાહિત થતા વાયુથી મદ-મદ રૂપે કપિત થઈ રહ્યું હતું એથી ધનુષધારી તે રાજા, એમ લાગતો હતો કે બાણુ સાક્ષાત્-હન્દ્ર જ ત્યાં ઉપસ્થિત થયો ન હોય શેષ ગાથોક્ત પદોની વ્યાખ્યા સુગમ છે. (તપ્ નં સે સરે ભરહેણ રણા ઉહં વેહાસ જિસદ્દે સમાણે સિપ્પામેવ વાવત્તરિં જોયણાહ

भरतेन राज्ञा ऊर्ध्वं विहायसि निस्पृष्टो मुक्त सन् क्षिप्रमेव शीघ्रमेव द्वासप्ततिं योजनानि गत्वा क्षुद्रहिमवन्तिरिक्कुमारस्य देवस्य मर्यादायाम् अवधिभूतोचितस्थाने निपतितः 'तए-
णं से चुल्लहिमवन्तिरिक्कुमारे देवे मेराए सरं णिवड्ढं पासइ' ततः खलु स क्षुद्रहिमवन्तिरि-
कुमरो देवः मर्यादायां शरं निपतित पठ्यति 'पासित्ता' दृष्ट्वा आसुरुत्ते रुद्धे जाव पीइदाणं
सन्वोसहिं च मालं गोसीसचंदणं कडगाणि जाव दहोदगं च गेण्हडं' आसुरुत्तो रुष्ट इत्यदि
विशेषणविशिष्टो यावत्करणात् भ्रुकुटिं करोति अधिक्षिपति भरतेति नामाङ्कितं शरं गृह्णाति ना
म च वाचयति इत्यादि ग्राह्यं प्रीतिदानं सर्वोपधोः फलपाकान्तवनस्पतिविशेषान् राज्या
भिषेकादि योग्यान्, माला कल्पद्रुमपुष्पमालाम् गोशीर्षचन्दनं च हिमवत्कुञ्जमयं कटकानि
यावत्पदात् त्रुटितानि बाह्याभरणानि वस्त्राणि आभरणानि भरतेति नामाङ्कित शरं चेति-

रणा उद्ध वेहास णिसट्ठे समाणे खिप्पामेव वावत्तरि जोयणाइं गंता चुल्लहिमवन्तिरिक्कुमारस्स
देवस्स मेराए णिवड्ढं ऊपर आकाश में भरत महाराजा के द्वारा छोड़ा गया वह बाण शीघ्र हो
७२ बहत्तर योजन तक जाकर क्षुद्र हिमवन्त कुमार देव के स्थान की हद में पड़ा (तए णं से
चुल्लहिमवन्तिरिक्कुमारे देवे मेराए सरं णिवड्ढं पासइ) बाण को अपनी हदमें पड़ा हुआ जब उस
क्षुद्रहिमवन्तिरिक्कुमार देव ने देखा तो (पासित्ता आसुरुत्ते रुद्धे जाव पीइदाणं सन्वोसहिं च माल
गोसीसचंदणं कडगाणि जाव दहोदगं च गेण्हडं) देखकर वह इकदम क्रोध से लाल हो गया ।
रुष्ट हो गया यावत् शब्द से यहा ऐसा पाठ गृहीत हुआ है उसकी सृकृटी चढ़ गई, उसने बाण-
फेकने वाले का तिरस्कार किया तथा भरत इस नाम से अङ्कित उस बाण को उसने उठा लिया
और उस पर लिखे हुए नाम को उसने वांचा' इत्यादि पूर्वोक्त पाठ गृहीत हुआ है । तब फिर
उसने भरत महाराजा को भेट में देने के लिए सर्वोपधियों को फलपाकान्तवनस्पतिविशेषों को जो
कि राज्याभिषेकादि के योग्य थे । कल्पवृक्ष के पुष्पों की माला को, गोशीर्ष चन्दन को, कटकों
को यावत्पदगृहीत त्रुटितों को— बाहुओं के आभरणों को— वस्त्रों को एवं 'भरत' इस नाम से

गता चुल्लहिमवन्तिरिक्कुमारस्स देवस्स मेराए णिवड्ढं ७२ आकाशमा भरत राजा वडे
मुईत ते भाणु शीघ्र ७२ योजन मुधी जधने क्षुद्र हिमवन्तकुमार देवना स्थाननी सीमां भा
पड्युं. (तए णं से चुल्लहिमवन्तिरिक्कुमारे देवे मेरा ए सरं णिवड्ढं पासइ) जथादे ते
क्षुद्र हिमवन्त गिरि कुमारे भाणु ने पोतानी सीमाभां पडेहु जेथु ते। (पासित्ता आसुरुत्ते
रुद्धे जाव पीइदाणं सन्वोसहिं च माल गोसीसचंदण कडगाणि जाव दहोदगव गेण्हडं)
जेध ने ते जेकदम क्रोधथी राने बाण थध गथे रुष्ट थध गथे यावत् शब्द थी अही'
आ प्रभाणे पाठ स गृहीत थये छे—तेनी सुकृटी वह थध गध तेजे भाणु अदावनाःरने। तिर-
स्कार कर्था. अने भरत नामाङ्कित ते भाणुने तेजे उपाड्यु. तथा ते भाणु ७२ जेजेवा नामने
तेजे वाड्यु' इत्यादि पूर्वोक्त पाठ अने गृहीत थये छे त्थारभाह तेजे भरतराज ने बे ट
भा अर्पित करवा माटे सर्वोपधियेने इण्य कान्त वनस्पति विशेषेने के जे राज्याभिषे-
कादि विधिये माटे आवश्यक होय छे कल्पवृक्षना पुष्पोनी मागाने, गोशीर्ष च-न्दनने,
कटकेने, यावत् पदथी स गृहीत त्रुटितेने— बाहुजोना आभरणेने वस्त्रेने, भरतनामाङ्कित

ગ્રાહ્યં દ્રહોદકં ચ પદ્મ દ્રહોદકં ગૃહ્ણતિ ગિણિહત્તા' ગૃહીત્વા 'તાપ ઉક્કિટ્ટાપ જાવ ઉત્તરેણં ચુ-
લ્લહિમવતગિરિમેરાપ અહણ્ણં દેવાણુપ્પિયાણં વિસયવાસી જાવ અહણ્ણં દેવાણુપ્પિયાણં ઉત્તરિલ્લે
અતવાલે જાવ પઢિવિસજ્જઈ' તથા ઉત્કુટ્ટયા યામત્ પદેન દે.ગત્યા વ્યતિવ્રજતિ ભરતાન્તિ
કમ્પપર્વતિ વિજ્ઞાપયતિ ચેતિ વિજ્ઞેયમ્ ઉત્તરસ્યા ક્ષુદ્રહિમવદ્ધિરેઃ મર્યાદાયામ્ અહં સ્વલ્લુ દેવા-
નુપ્રિયાણં વિપયવાસી યાવત્પદાત્ અહં સ્વલ્લુ દેવાનુપ્રિયાણ ક્રિકર ઇતિ ગ્રાહ્યમ્, અહં સ્વલ્લુ
દેવાનુપ્રિયાણામ્ ઔત્તગાહો લોકપાલઃ અત્ર યાવત્પદાત્ પ્રીતિદાનમુપનયતિ તદ્ ભરતઃ
પ્રતીચ્છતિ દેવં સત્કારયતિ સમ્માનયતિ ઇતિ ગ્રાહ્યમ્, તથા કૃત્વા ચ પ્રતિવિસર્જયતિ
નિજમવનગમનાય આજ્ઞાપયતીત્યર્થઃ ॥ સૂ. ૨૩ ॥

અથ અધિકોત્સાહાત્ અષ્ટમકં તપસ્તીરયિત્યા કૃતગારણક એવ અવધિપ્રાપ્ત દિગ્વિજ-
યાઙ્ક કર્તુકામઃ શ્રી ઋપમશૂઃ ઋપમકૂટગમનાય ઉપક્રમતે “ તપ્ણ સે ” ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—તપ્ણ સે ભરહે રાયા તુરપ્ણ ણિગિણિહૃઈ ણિગિણિહત્તા રહં પરા-
વત્તેઈ પરાવત્તિત્તા જેણેવ ઉસહકૂડે તેણેવ ઉવાગચ્છઈ ઉવાગચ્છિત્તા ઉસહ-
કૂડં પવ્વયં તિક્ખુત્તો રહસિરેણં ફુસઈ ફુસિત્તા તુરપ્ણ ણિગિણિહૃઈ ણિગિ-

અક્કિત્ત વાળ કો તથા પદ્મહૃદ કો જલ કો સાથ મેં લિયા । (ગેણિહત્તા તાપ ઉક્કિટ્ટાપ જાવ
ઉત્તરેણં ચુલ્લહિમવંતગિરિમેરાપ અહણ્ણ દેવ'ણુપ્પિયાણં વિમયવાસી જાવ અહણ્ણં દેવાણુપ્પિ
યણં ઉત્તરિલ્લે અતવાલે જાવ પઢિવિસજ્જઈ) ઓર લેકર વહ ઉસ પ્રસિદ્ધ દેવગતિ સે ભરત કે
પાસ ચલા વહાં પહુંચકર ઉસને ઉસે એસા નિવેદન ક્રિયા—ઉત્તરદિશા મેં ક્ષુદ્ર હિમવત્
પર્વત કો હૃદ મેં—મેં આપ દેવાનુપ્રિય કે અધીનસ્થ દેશ કા નિવાસી હું । યહાં યાવત્પદસે
“અહ સ્વલ્લુ દેવાણુપ્રિયાણા ક્રિકર.” હમ પાઠ કા પ્રહ્ણ હુઆ હૈ । મેં આપ દેવાનુપ્રિયકા
ઉત્તર દિશા કા લોકપાલ હું યહા યાવત્ પદ સે “પ્રીતિદાનમુપનયતિ, તદ્ ભરત પ્રતીચ્છતિ,
દેવં સત્કારયતિ, સમ્માનયતિ” હન પદો કા સપ્રહ હુઆ હૈ । સત્કાર સમ્માનકર ફિર વહ
ભરત નરેશ ઉસે વિસર્જિત કર દેતા હૈ—અપને મવન મેં જાને કે લિપે ઉસે આજ્ઞા દેતા હૈ ॥૨૩॥

બાણુ ને તથા પદ્મહૃદના જળ ને સાથે લીધા (ગિણિહત્તા તાપ ઉક્કિટ્ટાપ જાવ ઉત્તરેણ
ચુલ્લહિમવંતગિરિમેરાપ અહણ્ણં દેવાણુપ્પિયાણ વિસયવાસી જાવ અહણ્ણં દેવાણુપ્પિયાણં
ઉત્તરિલ્લે અંતવાલે જાવ પઢિવિસજ્જઈ) અને લઈ ને તે પોતાની સુપ્રસિદ્ધ દેવ ગતિથી
ભરત રાજા પાસે જત્રા રવાના થયો ત્યાં પહોંચીને તેણે તે રાજાને આ પ્રમાણે વિનંતિ
કરી કે હે દેવાનુપ્રિય ! ઉત્તર દિશામાં ક્ષુદ્ર હિમવત પર્વતની સીમામાં સ્થિત તેમજ આપ
શ્રીના અધીનસ્થ દેશનો હું નિવાસી છું અહીં યાવત્ પદથી “અહ સ્વલ્લુ દેવાનુપ્રિયાણાં
ક્રિકરઃ ” આ પાઠ સ ગૃહીત થયો છે. હું આપ દેવાનુપ્રિયને ઉત્તર દિશા તરફનો દિક્ષપાલ
છું અહીં યાવત્ પદથી “પ્રીતિદાનમુપનયતિ, તદ્ ભરતઃ પ્રતીચ્છતિ, દેવં સત્કારયતિ, સમ્મા-
નયતિ” એ પદોનો સંગ્રહ થયો છે સત્કાર તથા સન્માન કરીને તે ભરતેન્દ્ર રાજા તેને
વિસર્જિત કરી દે છે પોતાના ભવિષ્યમાં જવાની તેને આજ્ઞા આપે છે ॥૨૩-૨૪॥

णिहत्ता रहं ठवेइ ठवित्ता छत्तलं दुवालसंमिअं अट्टकणिअं अहिगरणि-
संठिअं सोवणिअं कागणिरयणं परामुसइ परामुसित्ता उसभकूडस्स
पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लंसि कडगंसि णामगं आउडेइ-ओसप्पिणी इमीसे
तइआए समाइ पच्छिमे भाए । अहमंसि चक्कवट्ठी भरहो इअ नामधि-
ज्जेणं ॥१॥ अहमंसि पढमगया अहयं भरहाहिवो णस्वरिंदो । णत्थिमहं
पडिसत्तु जिअं मए भारहं वासं ॥२॥ इति कट्ठु णामगं आउडेइ णामणं
आउडित्ता रहं परावत्तेइ परावत्तित्ता जेणेव विजयखंधावारणिवेसे जेणेव
बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता जाव चुल्ल-
हिमवंतगिरिकुमारस्स देवस्स अट्ठाहिआए महामहिमाए णिवत्ताए समा-
णौए आउहवरसालाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता जाव दाहिणं
दिसिं वेअद्धपव्वयाभिमुहे पयाते यावि होत्था ॥सू० २४॥

छाया-ततः खलु स भरतो राजा तुरगान् निगृह्णाति निगृह्य रथं परावर्त्तयति परा-
वर्त्य यत्रैव ऋषभकूटं तत्रैव उपागच्छति उपागत्य ऋषभकूटं पर्वतं त्रिः कृतं रथशिरसा
स्पृशति स्पृष्ट्वा । तुरगान् निगृह्णाति निगृह्य रथं स्थापयति स्थापयित्वा पट्टतलं द्वादशा-
स्रिकम् अष्टास्रिकम् अधिकरणसंस्थितं सौवर्णिकं कोकणीरत्नं परामृशति परामृश्य
ऋषभकूटस्य पर्वतस्य पौरस्त्ये कडके नामकम् आलुडति-अवसरिण्या अस्या तृतीयाया.
समायाः पश्चिमे भागे । अहमस्मि चक्रवर्त्ती भरत इति नामधेयेन ॥१॥ अहमस्मि प्रथम
राजा अहं भरताधिपो नरवरेन्द्र । न स्ति मम प्रतिशत्रु जितं मया भारत वर्षम् ॥२॥
इति कृत्वा नामकम् आलुडति नामकम् आलुड्य रथं परावर्त्तयति परावर्त्य यत्रैव विजय-
खन्धावारनिवेशो यत्रैव बाहिरिका उपस्थानशाला तत्रैव उपागच्छति उपागत्य यावत्
क्षुद्रहिमवद् गिरिकुमारस्य देवस्य अष्टादिकायां महामहिमायां निवृत्तायां सत्याम् आयुध-
शुद्धशालातः प्रतिनिष्कामति प्रतिनिष्क्रम्य दक्षिणां दिशं वेताढ्यं रवंताभिमुखं प्रयातं चाप्य-
भवत् ॥सू० २४॥

टीका - “तएणं से” इत्यादि ।

‘तएणं से भरहे राया तुरए णिगिण्हइ णिगिण्हित्ता रह परावत्तेइ’ ततः हिमवत्सा-

भरत का ऋषभकूट की ओर गमन—

‘तएण से भरहे राया तुरए णिगिण्हइ’ - इत्यादि सू० २४

टीकार्थ— (तएणं) हिमवत् माधन करने के बाद (से भरहे राया तुरए णिगिण्हइ) उस

भरत महाराजानु ऋषभकूट तः प्रयासु

तएण से भरहे राया तुरए-णिगिण्हइ “इत्यादि ॥सू० २४

टीकार्थ—(तएण) हिमवत की अधिना कथां गाह (से भरहे राया तुरए णिगिण्हइ) ते

ગ્રાહ્યં દ્રહોદકં ચ પદ્મ દ્રહોદકં ગૃહ્ણતિ ગિગિહ્તા' ગૃહીત્વા 'તાપ ઉચ્ચિકટ્વાપ જાવ ઉત્તરેણં ચુ-
લ્લહિમવતગિરિમેરાપ અહ્ણં દેવાણુપ્પિયાણં વિસયવાસી જાવ અહ્ણં દેવાણુપ્પિયાણં ઉત્તરિલ્લે
અતવાલે જાવ પદ્ધિવિસજ્જહ' તથા ઉત્કૃષ્ટયા યાનત્ પદેન દે.ગત્યા વ્યતિવ્રજતિ ભરતાન્તિ
કમુપમર્પતિ વિજ્ઞાપયતિ ચેતિ વિજ્ઞેયમ્ ઉત્તરસ્યાં ક્ષુદ્રહિમવદ્ધિરેઃ મર્યાદાયામ્ અહં સ્વલ્લ દેવા-
નુપ્રિયાણં વિપયવાસી યાવત્પદાત્ અહં સ્વલ્લ દેવાનુપ્રિયાણ ક્રિકર इति ગ્રાહ્યમ્.અહં સ્વલ્લ
દેવાનુપ્રિયાણામ્ ઔત્તરાહો લોકપાલઃ અત્ર યાવત્પદાત્ પ્રીતિદાનમુપનયતિ તદ્ ભરતઃ
પ્રતીચ્છતિ દેવં સત્કારયતિ સમ્માનયતિ ડતિ ગ્રાહ્યમ્, તથા કૃત્વા ચ પ્રતિવિસર્જયતિ
નિજમવનગમનાય આજ્ઞાપયતીત્યર્થઃ ॥ સૂ. ૨૩ ॥

અથ અધિકૃતસાદાત્ અષ્ટમક્તં તપસ્તોરયિત્યા કૃતગારણક એવ અવધિપ્રાપ્ત દિગ્વિજ-
યાઙ્ક કર્તુકામઃ શ્રી રૂપમયઃ રૂપમકૂટગમનાય ઉપક્રમતે " તપ્ણ સે " ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્-તપ્ણ ન સે મરહે રાયા તુરપ્ણ ણિગિગિહ્તા ણિગિગિહ્તા રહં પરા-
વત્તેહ પરાવત્તિત્તા જેણેવ ઉસહકૂહે તેણેવ ઉવાગચ્છહ ઉવાગચ્છિત્તા ઉસહ-
કૂહં પવ્વયં તિક્ખુત્તો રહસિરેણં ફુસહ ફુસિત્તા તુરપ્ણ ણિગિગિહ્તા ણિગિ-

અક્ષિત વાળ કો તથા પદ્મદ્વદ કે જલ કો સાથ મેં લિયા । (ગેગિહ્તા તાપ ઉચ્ચિકટ્વાપ જાવ
ઉત્તરેણં ચુલ્લહિમવતગિરિમેરાપ અહ્ણં દેવ ણુપ્પિયાણં વિમયવાસી જાવ અહ્ણં દેવાણુપ્પિ
યણં ઉત્તરિલ્લે અંતવાલે જાવ પદ્ધિવિસજ્જહ) ઓર લેકર વહ ઉસ પ્રસિદ્ધ દેવગતિ સે ભરત કે
પાસ ચલા વહાં પહુંચકર ઉસને ઉસે એસા નિવેદન ક્રિયા-ઉત્તરદિશા મેં ક્ષુદ્ર હિમવત્
પર્વત કો હદ મે-મેં આપ દેવાનુપ્રિય કે અધીનસ્થ દેશ કા નિવાસી હું । યહા યાવત્પદસે
"અહં સ્વલ્લ દેવાણુપ્રિયાણા ક્રિકર " હમ પાઠ કા ગ્રહણ હુઆ હૈ । મેં આપ દેવાનુપ્રિયકા
ઉત્તર દિશા કા લોકપાલ હું યહા યાવત્ પદ સે "પ્રીતિદાનમુપનયતિ, તદ્ ભરત પ્રતીચ્છતિ,
દેવં સત્કારયતિ, સમ્માનયતિ" હન પદો કા સમ્મહ હુઆ હૈ । સત્કાર સમ્માનકર ફિર વહ
ભરત નરેશ ઉસે વિસર્જિત કર દેતા હૈ-અપને મવન મેં જાને કે લિપ્ ઉસે આજ્ઞા દેતા હૈ ॥૨૩॥

આણુ ને તથા પદ્મહૃદના જળ ને સ.થે લીધા (ગિગિહ્તા તાપ ઉચ્ચિકટ્વાપ જાવ ઉત્તરેણ
ચુલ્લહિમવંતગિરિમેરાપ અહ્ણં દેવાણુપ્પિયાણ વિસયવાસી જાવ અહ્ણં દેવાણુપ્પિયાણં
ઉત્તરિલ્લે અંતવાલે જાવ પદ્ધિવિસજ્જહ) અને લઈ ને તે પોતાની સુપ્રસિદ્ધ દેવ ગતિથી
ભરત રાજા પાસે જવા રવાના થયો ત્યાં પહોંચીને તેણે તે રાજાને આ પ્રમાણે વિનંતિ
કરી કે હે દેવાનુપ્રિય ! ઉત્તર દિશામાં ક્ષુદ્ર હિમવત પર્વતની સીમામાં સ્થિત તેમજ આપ
શ્રીના અધીનસ્થ દેશનો હું નિવાસી છું અહીં યાવત્ પદથી "અહં સ્વલ્લ દેવાનુપ્રિયાણાં
ક્રિકરઃ " આ પાઠ સંગૃહીત થયો છે. હું આપ દેવાનુપ્રિયનો ઉત્તર દિશા તરફનો દિક્ષપાલ
છું અહીં યાવત્ પદથી "પ્રીતિદાનમુપનયતિ, તદ્ ભરતઃ પ્રતીચ્છતિ, દેવં સત્કારયતિ, સમ્મા-
નયતિ" એ પદોનો સંગ્રહ થયો છે સત્કાર તથા સન્માન કરીને તે ભરતેન્દ્ર રાજા તેને
વિસર્જિત કરી દે છે પોતાના ભવનમાં જવાની તેને આજ્ઞા આપે છે ॥સૂ.૨-૨૩॥

णिहत्ता रहं ठवेइ ठवित्ता उत्तलं दुवालमंमिअं अट्टकणिणअं अहिगरणि-
संठिअं सोवणिणअं कागणिस्यणं परामुसइ परामुसित्ता उसभकूडस्स
पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लंसि कडगंसि णामगं आउडेइ-ओसप्पिणी इमीसे
तइआए समाइ पच्छिमे भाए । अहमंसि चक्कवट्ठी भरहो इअ नामधि-
ज्जेणं ॥१॥ अहमंसि पढमगया अहयं भरहाहिवो णस्वरिंदो । णत्थिमहं
पडिसत्तू जिअं मए भारहं वासं ॥२॥ इति कट्टु णामगं आउडेइ णामणं
आउडित्ता रहं परावत्तेइ परावत्तित्ता जेणेव विजयखंधावारणिवेसे जेणेव
बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता जाव चुल्ल-
हिमवंतगिरिक्कुमारस्स देवस्स अट्ठाहिआए महामहिमाए णिवत्ताए समा-
णौए आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता जाव दाहिणं
दिसि वेअद्धपव्वयाभिमुहे पयाते यावि होत्था ॥सू० २४॥

छाया-तत. जलु स भरतो राजा तुरगान् निगृह्णाति निगृह्य रथं परावर्त्तयति परा-
वर्त्य यत्रैव ऋषभकूट तत्रैव उपागच्छति उपागत्य ऋषभकूट पर्वतं त्रिः कृत्व रथशिरसा
स्पृशति स्पृष्ट्वा । तुरगान् निगृह्णाति निगृह्य रथं स्थापयति स्थापयित्वा पट्टतले द्वादशा-
स्तिकम् अष्टाङ्गिकम् अधिकरणसंस्थित सौवर्णिक कोकणीरत्न परामृशति परामृश्य
ऋषभकूटस्य पर्वतस्य पौरस्त्ये कडके नामकम् आजुडति-अवसरिण्या अस्या दृतीयायाः
समाया पच्छिमे भागे । अहमस्मि चक्कवट्ठी भरत इति नामधेयेन ॥१॥ अहमस्मि प्रथम
राजा अह भरताधिपो नरवरेन्द्र । न स्मि मम प्रतिश्रु जितं मया भारत वर्षम् ॥२॥
इति कृत्वा नामकम् आजुडति नामकम् आजुड्य रथ परावर्त्तयति परावर्त्य यत्रैव विजय-
स्कन्धावारनिवेशो यत्रैव बाहिरिका उपस्थानशाला तत्रैव उपागच्छति उपागत्य यावत्
क्षुद्रहिमवद् गिरिक्कुमारस्य देवस्य अष्टाहिकायां महामहिमाया निवृत्तार्या सत्याम् आयुध-
गृहशालात' प्रतिनिष्क्रामति प्रतिनिष्क्रम्य दक्षिणां दिशं वेताढय खंताभिमुखं प्रयाते चाप्य-
भवत् ॥सू० २४॥

टीका - "तएणं से" इत्यादि ।

'तएणं से भरहे राया तुरए णिगिण्हइ णिगिण्हित्ता रह परावत्तेइ' ततः हिमवत्सा-

भरत का ऋषभकूट की और गमन—

'तएण से भरहे राया तुरए णिगिण्हइ' - इत्यादि सू० २४

टीकार्थ— (तएणं) हिमवत् साधन करने के बाद (से भरहे राया तुरए णिगिण्हइ) उस

भरत भट्टारान्तु ऋषभकूट तः प्रयातु

तएण से भरहे राया तुरए-णिगिण्हइ "इत्यादि ॥सू२४

टीकार्थ—(तएणं) हिमवत की साधना करी भाद (से भरहे राया तुरए णिगिण्हइ) ते

ધનાનન્તરં ચલુ સ ભરતો રાજા તુરગાન્ ચતુરોઽપિ અથ્યાન્ નિશ્ચઘ્નાતિ ચતુર્ધુ મધ્યે દક્ષિ-
 ણપાર્શ્વસ્થતુરગૌ આકર્ષતિ વામપાર્શ્વસ્થતુરગૌ પુરમ્કરોતીત્યર્થઃ અશ્વાન્ નિશ્ચઘ્ન રથ
 પરાવર્તયતિ નિવર્તયતિ 'પરાવર્તિતા' પરાવર્ત્ય નિવર્ત્ય 'જેળેવ' ઉસહકૂઢે તેળેવ ઉવાગ-
 ચ્છઙ્' યત્રૈવ ઋષભકૂટમ્ તન્નામકઃ પર્વતઃ તત્રૈવ ઉપાગચ્છતિ 'ઉવાગચ્છિતા' ઉપાગત્ય
 'ઉસહકૂઢ' પન્વય તિલ્લુત્તો રહસિરેણ ફુસઙ્' ઋષભકૂટ પર્વતં ત્રિઃ કૃત્વઃ વારત્રયં રથ-
 શિરસા રથાગ્રભાગેન સ્પૃશતિ પરામૃશતિ 'ફુમિત્તા તુરણ ણિગિણ્ઙ્' સ્પૃષ્ટ્વા પરામૃશ્ય તુર-
 ગાન્ નિશ્ચઘ્નાતિ અનિરોધયતિ 'ણિગિણ્ઙિત્તા રહં ઠવેઙ્' અશ્વાન્ નિશ્ચઘ્ન રથં સ્થાપયતિ
 'ઠવિત્તા' સ્થાપયિત્વા 'છત્તલં દુવાલસંસિઅં અઢ્ઢકણિઅં અહિગરણિસંઠિઅં સોવણિયં
 કાગણિરયણં પરામુસઙ્' સ ભરતો રાજા કાકળીરત્ન પરામૃશતિ શૃઙ્ખાતોત્યુત્તરેણ સમ્બન્ધઃ
 કિં વિશિષ્ટં તદિત્યાદ્-'છત્તલ, યદ્તલમ્ તત્ર ચત્વારિ ચતસ્રપુ દિક્ષુ દ્વે તૂર્ધ્વમધ્યસ્થેત્યેવ
 ષડ્ પદ્ સંખ્યાઘ્નાનિ તલ્લાનિ અધોભાગા યત્ર તત્તથા તાનિ ચ અત્ર મધ્યસ્થપ્ઢરૂપાણિ ચૈ
 ર્ધુમૌ અવિષમતયા તિષ્ઠન્તીતિ, તથા 'દુવાલસંસિઅં' દ્વાદશાસ્ત્રિકમ્ દ્વાદશ અષ્ઠઃ ઉપરિ
 તિર્યક્ ચતસ્રપ્પપિ દિક્ષુ પ્રત્યેકં ચતસ્રણામસ્ત્રીણાં સદ્ભાવાત્ અસ્રયઃ કોટયઃ આકાર-

ભરત રાજા ને ઘોડો કો સજ્જા કિયા-દક્ષિણ પાર્શ્વસ્થ ઘોડો કો સેવા ઓર વામ પાર્શ્વસ્થ ઘોડો
 કો આગે કિયા-હસ તરહ સે કરકે ઉપને (રહ પરાવર્તેઙ્) રથ કો લોટાયા (પરાવર્તિતા જેળેવ
 ઉસહકૂઢે તેળેવ ઉવાગચ્છઙ્) રથ કો લોટાકર મોઢકર જહા ઋષભકૂટ થા વહ વહાં પર આયા
 (ઉવાગચ્છિતા ઉસહકૂટં પન્વય તિલ્લુત્તો રહસિરેણ ફુસઙ્) વહાં આકર કે ઉસને ઋષભકૂટ પર્વત
 કા રથ કે અગ્રભાગ સે તોન બાર સ્પર્શ કિયા (ફુમિત્તા તુરણ ણિગિણ્ઙ્) તાન બાર સ્પર્શ કરકે ફિર
 ઉસને ઘોડો કો ચલને સે રોકા- (ણિગિણ્ઙિત્તા રહ ઠવેઙ્) ઘોડો કો રોક કર ઉસને રથ સજ્જા
 કિયા (ઠવિત્તા છત્તલ દુવાલસંસિઅં અઢ્ઢકણિઅં અહિગરણિસંઠિઅં સોવણિય કાગણિરયણં પરામુ
 સઙ્) રથ સજ્જા કરકે ઉસને કાકળી રત્ન કો ઠઠાયા-ચહ કાકળીરત્ન ૬ તલો વાલા હોતા હૈ-
 ચાર દિશાઓ મેં ૪ તલ ઓર ઉપર નીચે મેં ૧-૧ તલ-હસ તરહ સે હસકે યે ૬ તલ હોતે હૈ-
 તથા હમમેં ૧૨ કોટિયા હોતા હૈ- યે કોટિયાં એક પ્રકાર કે આકાર વિશેષરૂપ હોતી હૈ । આઠ

ભરત મહારાજાએ ઘોડાઓ ને ઊભા રાખ્યા, દક્ષિણ પાર્શ્વસ્થ ઘોડાઓને યે આ અને વામ-
 પાર્શ્વસ્થ ઘોડાઓને આગળ કર્યા, આ પ્રમાણે કરીને તેણે (રહ પરાવર્તેઙ્) રથને પાછો
 ફેરવ્યો (પરાવર્તિતા જેળેવ ઉસહકૂઢે તેળેવ ઉવાગચ્છઙ્) રથને પાછો ફેરવીને તે ભરત
 નરેશ જ્યાં ઋષભકૂટ હતો ત્યાં ગયો (ઉવાગચ્છિતા ઉસહકૂટં પન્વય તિલ્લુત્તો રહસિરેણ
 ફુસઙ્) ત્યાં પહોંચીને તેણે ઋષભકૂટ પર્વતને રથના અગ્ર ભાગથી ત્રણ વખત સ્પર્શ કર્યો
 (ફુમિત્તા તુરણ ણિગિણ્ઙ્) ત્રણ વખત સ્પર્શ કરીને પછી તેણે ઘોડાઓને ઊભા રાખ્યા
 (ણિગિણ્ઙિત્તા રહ ઠવેઙ્) ઘોડાઓને શેડીને તેણે રથ ઊભો રાખ્યો (ઠવિત્તા છત્તલં દુવાલ-
 સંસિઅં અઢ્ઢકણિઅં અહિગરણિસંઠિઅં સોવણિય કાગણિરયણં પરામુસઙ્) રથ ઊભો
 રાખીને તેણે કાકળી રત્નને હાથમાં લીધું એ કાકળી રત્ન ૬ તલ વાળું હોય છે ચાર
 દિશાઓમાં ૪ તલ અને ઉપર-નીચે એક-એક તળ આ પ્રમાણે સર્વ મળીને એ રત્નને
 ૬ છ તળ હોય છે, એ રત્નમાં ૧૨ કોટિઓ હોય છે, એ કોટિઓ એક પ્રકારના આકાર

विशेषाः यत्र तत्तथा पुनःकीदृशम् 'अष्टकण्ठि' अष्टकणिकम् कर्णिका कोणा । यत्र अत्रिजयं मिलति तेषां चाध उपरि प्रत्येक चतुर्णां सद्भावात् अष्टकणिकाः यत्र तत्तथा पुनश्च 'अहिगरणिसंठि' अधिकरणिसंस्थितम् अधिकरणिः—सुवर्णकारोपकरणं 'परण' इति भाषाप्रसिद्धम् तद्वत् सस्थित-संस्थानम् आकारविशेषो अवयवसन्निवेशो यस्य तत्तथा तत् सदृशकार मित्यर्थः समचतुरस्रत्वात् पुनश्च कीदृशम् 'सोवर्णियं' सौवर्णिकं सुवर्णमयम् अष्टसुवर्णमयत्वात्, तत्र केच अष्ट सुवर्णा इत्याह—'चत्वारि मधुरतृणफलान्येकः श्वेतसर्पपः षोडशश्वेतसर्पपाः एकं धान्यमाषफलं ! द्वे धान्यमाषफले एका गुठ्ठाः एकः कर्ममापकः षोडशकर्ममापका एकः सुवर्ण इति, एतादृशैरष्टभिः सुवर्णैः काकणीरत्नं निष्पद्यते इति एतादृशविशेषणविशिष्टं काकणीरत्नं परामृशति गृह्णाति 'परामुसित्ता' परामृश्य काकणीरत्नं गृहीत्वा 'उत्तमकूटस्स पन्वयस्स पुरत्थिमिल्लसि कडगंसि णामगं आउडेइ ? ऋषभकूटस्य पर्वतस्य पौरस्त्ये पूर्वभागवर्त्तिनि कटकं मध्यभागे नामकं नामैव नामकम् स्वार्थे कः आजुडति सम्बद्धं करोति लिखतीत्यर्थः केन प्रकारेण लिखतीत्याह—गाथा-

इसके कोने होते हैं—जहाँ तीन कोटिया मिलती है । ये आठ कोने रूप कर्णिकाएँ उनके नीचे ऊपर प्रत्येक में ४-४ होती है । इस काकणी रत्न का संस्थान अधिकरणी जैसा होता है जिसे परण कहा गया है । इस पर सुवर्णकार सोनेचांदी के आभूषणों को कूट २ कर बनाता है । यह समचतुर्भुज होता है इसीलिये इसे परण के जैसा कहा गया है । (सोवर्णियं) यह अष्ट सुवर्णमय होता है । ये अष्टसुवर्ण इस प्रकार से निष्पन्न होते हैं—चार मधुर तृण फलों का एक श्वेत सर्पप होता है । सोलह श्वेतसर्पपों का एक उडद के दाने के समान का वजन होता है । दो उडदों के बराबर वजनवाली एक गुठ्ठा—रत्ति होती है । और १६ रत्तियों का एक सुवर्ण होता है—ऐसे आठसुवर्ण के बराबर इसका वजन होता है । (परामुसित्ता) इस प्रकार के विशेषणों से विशिष्ट काकणीरत्न को लेकर (उत्तमकूटस्स पन्वयस्स पुरत्थिमिल्लसि कडगंसि णामगं आउडेइ) उसने ऋषभकूट पर्वत के पूर्व भागवर्ती कटक पर— मध्यभाग में— अपना नाम लिखा— "नामकं" में

विशेष ३५ डोय छे जे रत्नने आठ भूषाओ डोय छे त्यां त्रय कोटियो भवे छे जे आठ भूषाओनां ३५भां जे द्रष्टिओ डोय छे, तेभनी नीचे जेने छपर प्रत्येक भां ४, ४ भूषाओ डोय छे. जे काकणी रत्ननु संस्थान अधिकरणी जेवु डोय छे जेने जेरण कडेवाभां आवे छे सुवर्णकार जेनी छपर सुवर्ण चांदीना आभूषणो कूटी-कूटीने तैयार करे छे. जे समचतुरस्र डोय छे. जेथी ज जे रत्नने जेरणजेवु कडेवाभा आंयु छे (सोवर्णियं) जे अष्ट सुवर्णमय डोय छे जे अष्ट सुवर्णो आ प्रमाणे निष्पन्न डोय छे चार मधुर तृण कृपोनु जेक श्वेत सरसप डोय छे. १६ श्वेत सरसपनु वजन जेक उडद भराभर डोय छे जे आठोनी भराभर वजनवाली जेक गुठ्ठा—रत्ति डोय छे १६ रत्तियोनु जेक सुवर्ण डोय छे. जेवा आठसुवर्णनी भराभर जेनु वजन डोय छे (परामुसित्ता) आ जतना विशेषणोथी विशिष्ट काकणी रत्नने लभने (उत्तमकूटस्स पन्वयस्स पुरत्थिमिल्लसि कडगंसि णामगं आउडेइ) तेणे ऋषभकूट पर्वतना पूर्वभागवर्ती कटक छपर मध्य भागभां—पोतानु नाम लभ्यु—

દ્વયમ્ 'ઓસપ્પિણી' इत्यादि 'ओसपिणी इमीसे तइयाए समाए पच्छिमे भाए' 'ओस-
पिणी' अवसर्पिण्याः अत्र पृष्ठी लोपः प्राकृतत्वात् अस्याः तृतीयायाः समाया. तृतीयार-
कस्य पश्चिमे भागे तृतीये भागे इत्यर्थः । अहमंसि चक्रवट्टी भरहो इअ नामधिज्जेण ॥१॥
द्वितीय गाथामाह—अहमस्मि चक्रवर्ती भरत इति नामधेयेन नाम्ना 'अहमंसि पढमराया,
अहयं भरहाइवो णरवरिंदो । णत्थि मह पडिसत्तु जिअं मए भारहं वास ॥२॥ अहमस्मि
प्रथमराजा प्रथमशब्दस्य प्रधानपर्यायत्वात्, अहं भरताधिपः-भरतक्षेत्राधिपः नरवराः-
सामन्तादयः तेषामिन्द्रः नास्ति मम प्रतिशत्रुः-प्रतिपक्षः जित मया भारतं वर्षम् ॥२॥
'त्ति कट्ठु' इति कृत्वा 'णामगं आउडेइ' नामकम् आजुडति लिखति अस्य सूत्रस्य
निगमार्थकत्वान्न पौनरुक्त्यम् 'णामगं आउडित्ता रह परावत्तेइ' नामकम् आजुड्य लिखि-

स्वार्थ में 'क' प्रत्यय किया गया है— अपने नामको उस भरत नरेश ने किस प्रकार से लिखा
इसे प्रगट करने वाली ये दो गाथाएँ हैं—

“ओसपिणी इमीसे तइयाए समाइ पच्छिमे भाए । अहमंसि चक्रवट्टी भरहो इअ नामधिज्जेण ॥
अहमंसि पढमराया अहयं भरहाइवो णरवरिंदो । णत्थिमहं पडिसत्तु जिअं मए भारहं वास ॥२॥

इनका अर्थ इस प्रकार से हैं—इस अवसर्पिणी काल के तृतीय आरे के पश्चिम भाग में—
तृतीय भाग में— मैं भरत नाम का चक्रवर्ती हुआ हूँ, १ और मैं ही यहाँ— भरत क्षेत्र में कर्म-
भूमि के प्रारम्भ में सर्व प्रथम राजा हुआ हूँ । यहाँ प्रथम शब्द प्रधानपर्याय का वाची है ।
सामन्त आदि का मैं इन्द्र के जैसा इन्द्र हूँ मेरा कोई शत्रु नहीं है । मेरे बट् खण्डमण्डित भरत
क्षेत्र में मेरा असूक्ष्म साम्राज्य स्थापित हो चुका है । (इति कट्ठु णामगं आउडेइ) इस प्रकार से
उसने अपना परिचयात्मक नाम लिखा (णामग आउडित्ता रहं परावत्तेइ) नाम लिख करके फिर

“नाમક” માં સ્વાર્થ માં ‘ક’ પ્રત્યય લગાડવામાં આવેલ છે, પોતાનું નામ તે ભરત નરેશે
કેવી રીતે લખ્યું આને પ્રગટ કરવા માટે આ બે ગાથાઓ છે—

ઓસપ્પિણી इमीसे तइयाए समाइ पच्छिमे भाए ।

अहमंसि चक्रवट्टी भरहो इ अ नामधिज्जेण ॥१॥

अहमंसि पढमराया अहयं भरहाइवो णरवरिंदो ।

णत्थिमह पडिसत्तु जिअं मए भारहं वास ॥२॥

બે ગાથાઓનો અર્થ આ પ્રમાણે છે— એ અવસર્પિણી કાળના તૃતીય આરકના પશ્ચિમ-
ભાગમાં— તૃતીય ભાગમાં— હું ભરત નામે ચક્રવર્તી થયો છું ॥૧॥ અને હું જ ‘અહીં’
ભરતક્ષેત્રમાં કર્મભૂમિના પ્રારંભમાં સર્વપ્રથમ રાજા થયો છું, ‘અહીં’ પ્રથમ શબ્દ પ્રધાનનો
પર્યાય વાચક છે. એટલે કે પ્રથમ શબ્દનો અર્થ પ્રધાન અથવા સુખ્ય થાય છે. સામન્ત
વગેરેમાં હું ‘ઇન્દ્ર’ જેવો છું, મારો કોઈ શત્રુ નથી, બટ ખડ મહિત આ ભરતક્ષેત્રમાં માફ
અખડ સામ્રાજ્ય સ્થપાઈ ચૂક્યું છે. (इति कट्ठु णामगं आउडेइ) આ પ્રમાણે તેણે
પશ્ચિચાત્મક પોતાનું નામ લખ્યું (ણામગં આઉડિત્તા રહ પરાવત્તેઈ) નામ લખીને પછી
તેણે ત્યાંથી પોતાના રથને પાછો વાળ્યો. (परावत्तिता जेनेव विजयसंधावारणिसे जेनेव

त्वा रथं परावर्त्तयति 'परावर्त्तित्ता' परावर्त्त्य 'जेणेव विजयखंधावारणिवेसे जेणेव बाहिरिया उवट्टाणसाला तेणेव उवागच्छइ' यत्रैव विजयस्कन्धावारनिवेशो यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला तत्रैव उपागच्छति 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'जाव' अत्र यावत्पदात् तुरगान् निगृह्णाति रथं स्थापयति ततः स्थनात् प्रत्यवरोहति मञ्जनगृहं प्रविशति प्रविश्य स्नाति मञ्जनगृहात्प्रतिनिष्क्रामति भुङ्क्ते बाह्योपस्थानशालायां सिंहासने उपविशति श्रेणी प्र-
श्रेणी शब्दयति क्षुद्रहिमवद्गिरिकुमारस्य देवस्य अष्टाहिकाकरणम् अष्टदिनपर्यन्तं महामहोत्सवं सन्दिशति ताश्च कुर्वन्ति आज्ञप्तिकां च प्रत्यर्पयन्तीति ग्राह्यम् 'चुल्लहिमवंतगिरिकुमारस्स देवस्स अट्टाहियाए महामहिमाए णिवत्ताए समाणीए आउहघरसालाओ पडिणिवस्समइ' ततश्च तद्विषय चक्ररत्नम् क्षुद्रहिमवद्गिरिकुमारस्य देवस्य अष्टाहिकायां तदेव विजयोप-
लक्षिताष्टदिनपर्यन्तायां महामहिमायां महोत्सवविशेषायां निवृत्तायां सत्याम् आयुधगृ-
हशालतः प्रतिनिष्क्रामति निर्गच्छति 'पडिणिवस्समिता' प्रतिनिष्क्रम्य 'जाव दाहिणि

उसने वहाँ से अपने रथ को लौटाया (परावर्त्तित्ता जेणेव विजयखंधावारणिवेसे जेणेव बाहिरिया उवट्टाणसाला तेणेव उवागच्छइ) रथ को लौटाकर फिर वह जहाँ पर विजयस्कन्धावार का प-
डाव पड़ा हुआ था, और उसमें भी जहाँ पर बाह्य उपस्थानशाला थी वहाँ पर आया । (उ-
वागच्छित्ता जाव चुल्लहिमवंतगिरिकुमारस्स अट्टाहियाए महामहिमाए णिवत्ताए समाणीए आउह-
घरसालाओ पडिणिवस्समइ) वहाँ आकर के उसने यावत् क्षुद्रहिमवद्गिरिकुमार नाम के देव के
विजयोपलक्ष्य में आठ दिन तक महामहोत्सव किया जब आठ दिन का महामहोत्सव समाप्त
हो चुका— तब वह चक्ररत्न आयुधशाला से बाहर निकला— यहाँ जो "यावत्" शब्द का प्र-
योग हुआ है उससे "तुरगान् निगृह्णाति,— रथं स्थापयति, ततः प्रत्यवरोहति, मञ्जनगृहं प्रवि-
शति, स्नाति, मञ्जनगृहात्प्रतिनिष्क्रामति, भुङ्क्ते बाह्योपस्थानशालायां—सिंहासने उपविशति,
श्रेणीप्रश्रेणी शब्दयति, क्षुद्रहिमवद्गिरिकुमारस्य देवस्य अष्टाहिका करणं अष्टदिनपर्यन्तं स-
न्दिशति, ताश्च कुर्वन्ति, आज्ञप्तिकां च प्रत्यर्पयन्ति" इस पाठ का ग्रहण हुआ है । इन पदों की

बाहिरिया उवट्टाणसाला तेणेव उवागच्छइ) रथने पाछे बाणीने पछी ते जथा विजय
स्कंधावारने पडाव डेतो अने तेभा पछु जथा बाह्य उपस्थान शाला डती त्या आये।
(उवागच्छित्ता जाव चुल्लहिमवंतगिरिकुमारस्स देवस्स अट्टाहियाए महामहिमाए णिवत्ता-
ए समाणीए आउहघरसालाओ पडिणिवस्समइ) त्या आणीने तेजे यावत् क्षुद्र हिमवत
गिरिकुमार नामक देवना विजयोपलक्ष्यमां आठ दिवस सुधी महामहोत्सव उजये। ज्यारे
आठ दिवसने महामहोत्सव समाप्त थछ गये। त्यारे ते चक्ररत्न आयुध शालाभांथी पहार
नीकपुंथुं अही जे 'यावत्' शब्दने। प्रयोग करवाभां आवेछे, तेनाथी 'तुरगान् निगृह्णाति
रथं स्थापयति, ततः प्रत्यवरोहति, मञ्जनगृहं प्रविशति, स्नाति, मञ्जनगृहात्प्रतिनिष्क्रामति,
भुङ्क्ते, बाह्योपस्थानशालायां सिंहासने उपविशति, श्रेणीप्रश्रेणि शब्दयति, क्षुद्रहिमवद्
गिरिकुमारस्य देवस्य अष्टाहिकाकरणं अष्टदिनपर्यन्तं सन्दिशति, ताश्च कुर्वन्ति,
आज्ञप्तिकां च प्रत्यर्पयन्ति" जे पाठ संगृहीत थये छे, जे पदोनी व्याख्या, पड़ेला यथास्थाने

दिशि वेयद्धपन्वयाभिमुखे पयाते यावि होत्था' तद्विन्यचक्ररत्नम् दक्षिणां दिशमुद्दिश्य
वैताढ्यपर्वताभिमुखं प्रयात चाप्यासीत् चाप्यभवत् ॥६०२४॥

मूलम्—तए णं से भरहे राया तं दिव्वं चक्कस्यवणं जाव वेअद्धस्स
पन्वयस्स उत्तरिल्ले णितंबे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता वेअद्धस्स
उत्तरिल्ले णितंबे दुवालजौयणायामं जाव पोसहसालं अणुपविसइ जाव
णमिविणमीणं विज्जाहराईणं अट्टमभत्तं पणिण्हइ पणिण्हित्ता पोसह-
सालाए जाव णमिविणमि विज्जाहरायाणो मणसी करेमाणे २ चिद्धइ,
तए णं तस्स भरहस्स रण्णो अट्टमभत्तंसि पणिममाणंसि णमिविणमी वि-
ज्जाहरायाणो दिव्वाए मईए चोइअ मई अण्णमण्णस्स अतिअं पाउब्भवति,
पाउब्भवित्ता एवं वयासी उप्पण्णे खलु भो देवाणुप्पिया ! जंबुद्वीवे दीवे भरहे
राया चाउरंतचक्कवट्ठी तं जीअमेयं तीयपच्चुप्पण्णमणागयाणं विज्जाहर-
राइणं चक्कवट्ठीणं उवत्थाणिअं करेत्तए, तं गच्छमो णं देवाणुप्पिया !
अम्हे वि भरहस्स रण्णो उवत्थाणिअं करेमो इति कट्ठु विणमीणाऊणं
चक्कवट्ठीं दिव्वाए मईए चोइअमई माणुम्माणप्पमाणजुत्तं तेअस्सि ख-
लक्खणजुत्तं ठिअजुव्वणक्केसवट्ठिअण्हं सव्वरोगणासणि वलकरिं
इच्छिअसोउण्हकासजुत्तं-तिसु तणुअं तिसु तंबं तिवलीगतिउण्णयं
तिगंभीरं । तिसु कालं तिसु सेअं तिआयतं तिसुअविच्छिण्णं ॥१॥
समसरीरं भरहे वासंमि सव्वमहिलप्पहाणं सुंदरथणजघणवरक्खलण ण-
यण सिरसिजदसणजणहिअस्मणमणहरिं सिंगारागार जाव जुत्तो-
वयारक्कुसलं अमरवट्ठणं सुरूवं रूवेणं अणुहरति सुमदंमि जोव्वणे वट्ठमाणि
इत्थीरयणं णमी अ रयणाणि य कडमाणि य तुडिआणि य गेण्हइ, गेण्हित्ता

व्याख्या पूर्व में यथास्थान की जा चुकी है । अत वही से ज्ञात कर लेनी चाहिये । (पडिणि-
क्खमित्ता जाव दाडिणिं दिशि वेयद्धपन्वयाभिमुखे पयाए यावि होत्था) आयुधगृहशाला से बा-
हर निकल कर वह चक्ररत्न दक्षिण दिशा की ओर वैताढ्यपर्वत की तरफ चल दिया ॥२४॥

स्थप्ट करवाभा आवी छे. जोधी विज्ञासुजोओ त्यांथी नाली देडु जोधजे. (पडिणिक्खमित्ता
जाव दाडिणिं दिशि वेयद्धपन्वयाभिमुखे पयाए यावि होत्था) आयुधगृहशालाभाथी अडार
नीकणीने ते अकरत्त दक्षिण दिशा तरफ वैताढ्य पर्वतनी तरफ रवाना थयु ॥२४॥

ताए उक्किट्ठाए तुरिआए जाव उद्धूआए विज्जाहरगइए जेणेव भरहे राया
तेणेव उवागच्छति उवागच्छिता, अंतलिक्खपडिवण्णा सखिखिणीयाइं जाव
जएणं विजएणं वद्धावेति वद्धावित्ता एवं वयासी अभिजिएणं देवाणुप्पि-
या ? जावअम्हे देवाणुप्पिआणं आणत्तिकिकरा इति कदटु तं पडिच्छंतु णं
देवाणुप्पिआ ! अम्हं इमं जाव विणमी इत्थीरयणं णमी रयणाणि समप्पेइ ।
तएणं से भरहे राया जाव पडिवेसज्जेइ पडिविसज्जिता पोसहसालाओ
पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता मज्जणघरं अणुपविमइ अणुपविसित्ता
भोअणमंडवे जाव नमीविनमीणं विज्जाहरगइणं अट्ठाहिअ महामहिमा, तए
णं से दिव्वे चक्कस्यणे आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ जाव उत्तरपुरित्थमं
दिसि गंगादेवी भवणाभिमुहे पयाए यावि होत्था, सच्चेव सव्वा सिधुव-
त्तव्वया जाव नवरं कुंभट्टसहस्सं रयणचित्तं णाणामणि कणगरयणभत्ति-
चित्ताणि अ दुवे कणगसीहासणाइं सेसं तंचेव जाव महिमत्ति ॥सू० २५॥

छाया- ततः खलु तद्दिव्यं चक्ररत्नं यावद् वैतादथस्य पर्वतस्योत्तरादौ नितम्ब तत्रैव उपाग-
च्छति उपागत्य वैतादथपर्वतस्योत्तरादे नितम्बे द्वादशयोजनायाम् यावत्पौषधशालामनु प्रविश-
ति, यावत् नमिबिनम्यो विद्याधरराक्षोः अष्टमभक्तं प्रगृह्णाति प्रगृह्य पौषधशालायां यावत् नमि-
विनमि विद्याधरराजानौ मनसि कुर्वाणो मनसि कुर्वाणस्तिष्ठति, ततः खलु तस्य भरत-
स्य राक्षः अष्टमभक्ते परिणमति नमिबिनमि विद्याधरराजानौ दिव्यया मत्या चोदितमती
अन्योऽन्यस्यान्तिकं प्रादुर्भवत् प्रादुर्भूय पवमवादिष्टाम् उत्पन्नः खलु भो देवानुप्रियाः जम्बूद्वीपे
द्वीपे भरते वर्षे भरतो राजा चातुरन्तचक्रवर्त्ती तस्माज्जीतमेतत् अतीतवर्तमानानागतानां
विद्याधरराक्षां चक्रवर्त्तिनामुपस्थानिकं कर्तुं तद्गच्छामः खलु देवानुप्रिया । वयमपि भरत-
स्य राक्ष उपस्थानिकं कुर्म इति कृत्वा विनमि राजान चक्रवर्त्तिनं दिव्यया मत्या चोदित-
मतिः मानोन्मानप्रमाणयुक्ता तेजस्विनीं रूपलक्षणयुक्तां स्थितयौवनकेशावस्थितनखाम्
सर्वरोगनाशिनीं बलकरीम् इच्छितशीतोष्णस्पर्शयुक्तां त्रिषु तनुकां त्रिषु ताम्रां त्रिवलीक
त्र्युन्नतां त्रिगम्भीराम् । त्रिषु कृष्णां त्रिषु श्वेतां त्रिषु आयतां त्रिषु च विस्नीर्णां समशरीरां
भरते वर्षे सर्वमहिलाप्रधानां सुन्दरस्तनजघनकरचरणनयनसिरसिज दशनजनहृदयरमण
मनोहरां शृङ्गारागार यावत् युक्तोपचारकुशलां अमरवधूनां सुरूपं रूपेण अनुहरन्तीं
सुमद्रां भद्रे यौवने वर्त्तमानां स्त्रीरत्न नमिश्च रत्नानि कटकानि च शुद्धिकानि च गृह्णाति
गृहीत्वा तया उत्कृष्टया त्वरितया यावदुद्धृतया विद्याधरगत्या यत्रैव भरतो राजा तत्रैव
उपागच्छतः उपागत्य अन्तरिक्षप्रतिपन्नो सकिकिणीकानि यावत् जयेन विजयेन वर्द्धयतः
वर्द्धयित्वा पवमवादिष्टाम् अभिजित खलु देवानुप्रिया । यावत् आबाम् देवानुप्रियाणामा-
हतिकिङ्करावितिकृत्वा तत्प्रतीच्छन्तु देवानुप्रिया ! अस्माकमिदं यावत् विनमि स्त्रीरत्न
नमिश्च रत्नानि समर्पयति तत खलु स भरतो राजा यावत् प्रतिविसर्जयति प्रतिविस्ज्य

પૌષધાશાલાતઃ પ્રતિનિષ્ક્રામતિ પ્રતિનિષ્ક્રમ્ય મજ્જનગૃહમનુપ્રવિશતિ અનુપ્રવિશ્ય ભોજનમ-
ખંડપે યાવત્ નમિવિનમ્યો- વિદ્યાધરરાજો અપ્રાદિકાં મહામહિમામ્, તતઃ ચ્છુ તદ્દિવ્યં ચક્ર-
રત્નમ્ આયુઘગૃહશાલાત પ્રતિનિષ્ક્રામતિ યાવદુત્તરપૌરસ્ત્યાં દિશ ગદ્ગાદેવી ભવનાભિમુખં
પ્રયાતં ચાપ્યમ્બવત્ સૈવ સર્વા સિન્ધુવક્તવ્યતા યાવત્ નવરં કુમ્ભાષ્ટસદૃશં રત્નચિત્રં નાનામણિ-
કનકરત્નમત્કિચિત્રાણિ ચ દ્વે કનકસિંહાસને શેપં તદેવ યાવત્ મહિમેતિ ॥સૂ. ૨૫॥

ટીકા—‘તણં સે મરહે’ इत्यादि ।

‘તણં સે મરહે રાયા તં દિવ્યં ચક્રરયણં જાવ વેયદ્ધસ્સ પવ્વયસ્સ ઉત્ત-
રિલ્લે ણિતંવે તેણેવ ઉવાગચ્છહ’ તતઃ ચ્છુ સ મરતો રાજા તદ્દિવ્યં ચક્રરત્નં યાવદ્ યાવત્
પદાત્ દક્ષિણસ્યાં દિશિ વૈતાલ્યપર્વતાભિમુખં પ્રયાતં પશ્યતિ દૃષ્ટા હૃષ્ટતુષ્ટિચિત્તાનન્દિતઃ
इत्यादि सर्वं वक्तव्यम् । ततः वैताल्यस्य पर्वतस्य औत्तराहो नितम्बः उत्तरपार्श्ववर्ती कटकः
अधोभाग. तत्रैव उपागच्छति ‘उवागच्छित्ता’ उपागत्य ‘वेयद्वस्स पव्वयस्स उत्तरिल्ले
નિતંવે દુવાલસજોયણાયમ જાવ પોસહસાલં અણુપવિમહ જાવ’ વૈતાલ્યસ્ય પર્વતસ્ય
औत्तराहो-उत्तरपार्श्ववर्तिनि नितम्बे गिरेः समीपभागे अधः प्रान्ते द्वादशयोजनाऽऽ-
यामम् द्वादशयोजनदैर्घ्यम् अत्र यावत्पदात् नवयोजनविस्तीर्णं वरनगरसदृशम् स्कन्धावार-

‘तण ण से मरहे राया त दिव्व चक्ररयण’— इत्यादि सू. २५॥

ટીકાર્થ—(તણ ણં સે મરહે રાયા તં દિવ્ય ચક્રરયણ જાવ વેયદ્ધસ્સ પવ્વયસ્સ ઉત્તરિલ્લે ણિતંવે
તેણેવ ઉવાગચ્છહ) इसके बाद जब भरत राजा ने उस दिव्य चक्ररत्न की यावत् दक्षिण दिशा में
वैताल्यगिरि की ओर जाते हुए देखा तो देखकर वह बहुत ही अधिक हृष्ट एवं तुष्ट चित्त हुआ ।
इसके बाद वहाँ वैताल्य पर्वत का उत्तरदिग्वर्ती नितम्ब था—अधोभाग था— वहाँ पर वह आया
(उवागच्छित्ता वेयद्वस्स पव्वयस्स उत्तरिल्ले णितंवे दुवालसजोयणायाम जाव पोसहसालं अणुपवि-
सह) वहाँ आकर के उसने वैताल्य पर्वतके उत्तरदिग्वर्ती नितम्ब पर गिरिसमीप में—अधः प्रान्त
में—द्वादश योजन की लम्बाई वाले एवं नौयोजन की चौड़ाई वाले श्रेष्ठनगर के जैसे अपने स्कन्धा

‘तणं से मरहे राया तं दिव्वं चक्ररयण’ ॥ इत्यादि सूत्र. २५ ॥

ટીકાર્થ—(તણ ણં સે મરહે રાયા તં દિવ્ય ચક્રરયણ જાવ વેયદ્ધસ્સ પવ્વયસ્સ ઉત્ત-
રિલ્લે ણિતંવે તેણેવ ઉવાગચ્છહ) त्थार भाह त्थारे भरत राजा ने ते दिव्य चक्ररत्नने यावत्
दक्षिण दिशामा वैताल्य गिरि तरङ्गं अणु णेयु तो णेधने ते णहुं च ह्ठं तेभं तुष्ट चित्त-
वाणे थये। त्थार भाह त्थार वैताल्य पर्वतने। उत्तर दिशा तरङ्गं ने। नितंभ हतो—अधो भाग
होतो, त्थां ते आये। (उवागच्छित्ता वेयद्वस्स पव्वयस्स उत्तरिल्ले णितंवे दुवालसजोयणायाम
जाव पोसहसालं अणुपविसह) त्थां आवीने तेथे वैताल्य पर्वतना उत्तर दिग्वर्ती नितंभ उपर
गिरि समीप—अध प्रान्त भां—द्वादशयोजन अटली लम्बाई वाणा अने नवयोजन प्रमाण वाणा
श्रेष्ठ नगर जेवा पोताना स्कन्धावार ने। पडाव नाथ्ये। पछी पौषधशालामा श्रीमहोशं भरत

નિવેશમિતિ કરોતીતિ વાચ્યમ્, પૌષધશાલાં સ ભરતોઽનુપ્રવિશતિ । અત્ર યાવત્પાદાત્ પૌષધ-
વિશેષણાનિ સર્વાણિ વક્તવ્યાણિ 'જમિવિણમિણં વિજ્ઞાહરરાઈણં અદ્દમમત્તં પગિણ્હઈ' નમિવિ-
નમ્યોઃ પ્રથમતીર્થકર શ્રીઋષભસ્વામિ મહાસામન્તકચ્છમઠાકચ્છપુત્રયોઃ વિદ્યાધરરાજોઃ સાધ-
નાય અદ્દમમત્તં પ્રગૃહ્ણતિ 'પગિણ્હિત્તા' પ્રગૃહ્ય અદ્દમમત્તમવધાર્ય 'પોમહસાલાણ જાવ જમિ
વિણમિ વિજ્ઞાહરરાયાણો મણસી કરેમાણે કરેમાણે ચિદ્દઈ' પૌષધશાલાયાં યાવત્પદાત્
અવસ્તૃતકુશાસનોપવિષ્ટો મુક્તભૂષણાલઙ્કારો વ્રહ્મચારી પૌષધિક્ક ઇત્યાદિ વિશેષણત્રિવિષ્ટો
ભરતઃ નમિવિનમિ વિદ્યાધરરાજાનો મનસિ કુર્વાણો મનસિ કુર્વાણસ્તિષ્ઠતિ અનયોરુપરિ
બાણમોક્ષણેન પ્રાણઘાતન ન ક્ષત્રિયધર્મ ઇતિ બુદ્ધ્યા સિન્ધ્વાદિ દેવીનામિવ અનયોર્મનસિ

વાર કા પહાવ ઢાલા ફિર उस पौषधशाला में भरत नरेश ने प्रवेश किया । यहा पर जो यावत्
शब्द आया है उससे इस पाठ में पौषध के जितने विशेषण पहिछे कहे जा चुके हैं, वे सब कह-
लैना चाहिये यह प्रगट किया है "जमि विणमिणं विज्ज्ञाह्ररराईणं अदुममत्तं पगिण्हई" पौषधशा-
ला में प्रविष्ट होकर उस भरत राजा ने श्री ऋषभ स्वामी के महासामन्तकच्छ के पुत्र एवं विद्या-
धरो के राजा ऐसे नमि और विनमिको अपने वश में करने के लिये अष्टम भक्त की तपस्या धा-
रण करली । (पगिण्हित्ता पोसहसालाए जाव जमिविणमिविज्ज्ञाह्रररायाणो मणसो करेमाणे २ चि-
दुइ) अष्टमभक्त की तपस्या धारण करके पौषधशाला में यावत्पदगृहीत वे भरत राजा कुशासन
पर उबविष्ट हो गये । समस्त भूषण एवं अलङ्कारो का उन्होंने परित्याग कर दिया । वे ब्रह्म-
चारी बन गये । इत्यादि पूर्वोक्त समस्त विशेषणां से विशिष्ट हुए उन भरत राजा ने नमि विन-
मिराजाओ को जो कि विद्याधरो के स्वामी थे, किस प्रकार से वश में किया जावे क्योंकि इनके
ऊपर बाण का छोड़ना और उससे इनका प्राणघात करना यह क्षत्रिय धर्म नहीं है, अतः सिन्धु-
आदि देवियां की तरह इन दोनों के इन्हे अपने मन में करने रूप साधनोपाय में वे प्रवृत्त हो

नरेश प्रवेश कर्छो, अही ने यावत् शब्द आवेल छे तेनाथी जे पाठमा पौषध अंगेना जेटलां
विशेषणो पछेला छेलेवांमा आल्या छे ते भधा अही पणु अडुषु कर्वां जेधं जे "जमि विणमिण
विज्ज्ञाह्ररराईणं अदुममत्तं पगिण्हई" पौषधशालांमा प्रविष्ट थधं ने ते भरत राजा जे श्रीऋषभ
देवस्वामी ना महासामन्त कच्छना पुत्र तेभज विद्याधरोना राजा जेवा नमि अने विनमिने
पोताना वशमां कर्वा भाटे अष्टमभक्तनी तपस्या धारणु करी (पगिण्हित्ता पोसहसालाए
जाव जमिविणमि विज्ज्ञाह्रररायाणो मणसी करेमाणे २ चिदुइ) अष्टमभक्तनी तपस्या धारणु
करीने पौषधशालांमा यावत् पद गृहीत ते भरत राजा कुशना आसन उपर उपविष्ट थधं गया
समस्त भूषण अने अलंकारोना तेभजे परित्याग कर्छो तेजो ब्रह्मचारी जनी गया इत्यादि
पूर्वोक्त समस्त विशेषणोथी विशिष्ट थयेला त भरत राजा जे नमि-विनमि राजाजोने छे
जेजो विद्याधरोना स्वामी छता तेभनेकेवी रीते वशमा करी सकाय ? केभ के तेभनी उपर
आणु वगेरे शस्त्रोना प्रयोग करी तेभने छुषवा, ते क्षत्रियोचित धर्म नथी जेथी सिन्धु वगेरे
देवीजोनी जेभज जे जन्ने ने पोताना वशमां कर्वा भाटे जे साधनोना उपयोग थधं थके

નિવેશમિતિ કરોતીતિ વાચ્યમ્, પૌષધશાલાં સ ભરતોઽનુપ્રવિશતિ । અત્ર યાવત્પાદાત્ પૌષધ-
વિશેષણાનિ સર્વાણિ વક્તવ્યાણિ ‘ળમિવિળમિળં વિજ્ઞાહરરાઈળં અદ્દમમત્ત પગિળ્હઈ’ નમિવિ-
નમ્યોઃ પ્રથમતીર્થકર શ્રીઋષભસ્વામિ મહાસામન્તકચ્છમહાકચ્છપુત્રયોઃ વિદ્યાધરરાજોઃ સાધ-
નાય અદ્દમમત્તં પ્રગૃહ્ણાતિ ‘પગિળ્હિત્તા’ પ્રગૃહ્ય અદ્દમમત્તમવધાર્ય ‘પોમહસાલાણ જાવ ળમિ
વિળમિ વિજ્ઞાહરરાયાળો મળસી કરેમાળે કરેમાળે ચિદ્દઈ’ પૌષધશાલાયાં યાવત્પદાત્
અવસ્તૃતકુશાસનોપવિષ્ટો મુક્તભૂષણાલ્કારો વ્રહ્મચારી પૌષધિક્ક ઇત્યાદિ વિશેષણવિશિષ્ટો
ભરતઃ નમિવિનમિ વિદ્યાધરરાજાનો મનસિ કુર્વાળો મનસિ કુર્વાળસ્તિષ્ઠતિ અનયોરુપરિ
બાળમોક્ષણેન પ્રાણઘાતનં ન ક્ષત્રિયધર્મ ઇતિ બુદ્ધ્યા સિન્ધ્વાદિ દેવીનામિવ અનયોર્મનસિ

વાર કા પઢાવ ઢાલા ફિર उस पौषधशाला में भरत नरेश ने प्रवेश किया । यहां पर जो यावत्
शब्द आया है उससे इस पाठ में पौषध के जितने विशेषण पहिले कहे जा चुके हैं, वे सब कह-
केना चाहिये यह प्रगट किया है ‘‘णमि विणमिणं विज्जाहररार्हणं अदुममत्तं पगिण्हई’’ पौषधशा-
ला में प्रविष्ट होकर उस भरत राजा ने श्री ऋषभ स्वामी के महासामन्तकच्छ के पुत्र एवं विद्या-
धरो के राजा ऐसे नमि और विनमिको अपने वश में करने के लिये अदुम मत्त की तपस्या धा-
रण करली । (पगिण्हित्ता पोसहसालाए जाव णमिविणमिविज्जाहररायाणो मणसो करेमाणे २ चि-
दुई) अदुममत्त की तपस्या धारण करके पौषधशाला में यावत्पदगृहीत वे भरत राजा कुशासन
पर उबविष्ट हो गये । समस्त भूषण एवं अलङ्कारो का उन्होंने परित्याग कर दिया । वे ब्रह्म-
चारी बन गये । इत्यादि पूर्वोक्त समस्त विशेषणा से विशिष्ट हुए उन भरत राजा ने नमि विन-
मिराजाओ को जो कि विद्याधरो के स्वामी थे, किस प्रकार से वश में किया जावे क्योंकि इनके
ऊपर बाण का छोड़ना और उससे इनका प्राणघात करना यह क्षत्रिय धर्म नहीं है, अतः सिन्धु-
आदि देविया की तरह इन दोनों के इन्हें अपने मन में करने रूप साधनोपाय में वे प्रवृत्त हो

નરેશ પ્રવેશ કર્યો. અહીં જે યાવત્ શબ્દ આવેલ છે તેનાથી એ પાઠમાં પૌષધ અંગેના બેટલાં
વિશેષણો પહેલાં કહેવામાં આવ્યા છે તે ગદ્યા અહીં પણ અહણ કર્યાં બેઈ એ “ળમિ વિળમિળ
વિજ્ઞાહરરાઈળં અદુમમત્તં પગિળ્હઈ” પૌષધશાળામાં પ્રવિષ્ટ થઈને તે ભરત રાજાએ શ્રીઋષભ
દેવસ્વામી ના મહાસામન્ત કચ્છના પુત્ર તેમજ વિદ્યાધરના રાજા એવા નમિ અને વિનમિને
પોતાના વશમાં કરવા માટે અદ્દમમત્તની તપસ્યા ધારણ કરી. (પગિળ્હિત્તા પોસહસાલાણ
જાવ ળમિવિળમિ વિજ્ઞાહરરાયાણો મળસી કરેમાળે ૨ ચિદ્દઈ) અદ્દમમત્તની તપસ્યા ધારણ
કરીને પૌષધશાળામાં યાવત્ પદ ગૃહીત તે ભરત રાજા કુશના આસન ઉપર ઉપવિષ્ટ થઈ ગયા
સમસ્ત ભૂષણ અને અલકારો ના તેમણે પરિત્યાગ કર્યો તેઓ બ્રહ્મચારી બની ગયા હતા
પૂર્વોક્ત સમસ્ત વિશેષણોથી વિશિષ્ટ થયેલા તે ભરત રાજાએ નમિ- વિનમિ રાજાઓને કે
જેઓ વિદ્યાધરના સ્વામી હતા તેમનેકેવી રીતે વશમાં કરી શકાય ? કેમ કે તેમની ઉપર
બાણ વગેરે શસ્ત્રોનો પ્રયોગ કરી તેમને હણવા, તે ક્ષત્રિયોચિત ધર્મ નથી એથી સિન્ધુ વગેરે
દેવીઓની જેમજ એ બન્ને ને પોતાના વશમાં કરવા માટે જે સાધનોનો ઉપયોગ થઈ શકે

કરણમાત્રરૂપે સાધનોપાયે પ્રવૃત્ત इत्यर्थः 'तए णं तस्स भरहस्स रण्णो अट्टममत्तसि परिण-
ममाणंसि णमि विणमि विज्जाहररायाणो दिव्वाए मईए चोइयमई अण्णमण्णस्स अंतिअं
पाउब्भवंति' ततः तदनन्तर खलु तस्य भरतस्य राज्ञः अष्टमभक्ते परिणमति सति परिपू-
र्णप्राये जायमाने सति नमी विनमी विद्याधरराजाનો दिव्यया दिव्यानुभावजनितत्वात्
मत्या ज्ञानेन चोदितमती प्रेरितमतिकौ अवधिज्ञानाद्यभावेऽपि यत्तपो भरतमनोविषयक-
ज्ञानं तत्सौधर्मेज्ञानदेवीनां मन प्रविचारीदेवानां कामानुषक्तमनोज्ञानमिव दिव्यानुभावा-
दवगन्तव्यम्, अन्यथा तासामपि स्वविमानचूलिकाध्वजादि विषयकावधिमतोनां रमणेच्छा
ज्ञानासम्भवेन सुरतानुकूलचेष्टोन्मुखत्वं न सम्भवेदिति, एतादृशौ सन्तौ तौ अन्योऽन्यस्य
अन्तिकं समीप प्रादुर्भवत 'पाउब्भवित्ता एवं वयासी' प्रादुर्भूय प्रकटीभूय एवं वक्ष्यमाणप्रका-
रेण अवादिष्टाम् उक्तवन्तौ किमुक्तवन्तौ इत्याह—'उत्पण्णे खलु' इत्यादि । 'उत्पण्णे खलु भो

गये । (तए णं तस्स भरहस्स रण्णो अट्टममत्तसि परिणममाणंसि परिणममाणंसि णमिविणमी
विज्जाहररायाणो दिव्वाए मईए चोइयमई अण्णमण्णस्स अंतिअं पाउब्भवंति) भरत राजा की अष्टम
भक्त की तपस्या जब पूर्ण होने की आई तब नमि और विनमि दोनों विद्याधर राजा दिव्यानु-
भावजनित होने से दिव्य ऐसे अपने ज्ञान के द्वारा प्रेरित मतिवाले बन कर आपस में एक दूसरे
के समीप आये । यहाँ दिव्य ज्ञान से भरत के मन की बात जानने का जो उल्लेख किया गया
है । सो इनके अवधिज्ञान तो था ही नहीं फिर भी उन्होंने जो उसके मन की बात जानली वह
सौधर्मेज्ञान की देविया जिस प्रकार मनः प्रविचारि देवो के दिव्यानुभाव से (कामानुषक्तमनोवि-
ज्ञान वाली होती है । उसी तरह से उन्होंने भी दिव्यानुभाव से भरत के मन के भाव को जान-
लिया ऐसा समझना चाहिये । यदि ऐसा बात न मानी जावे तो फिर अपने विमान की चूलि-
का की ध्वजमान जाननेवाले अवधिज्ञान वाली उन देवियों में उनके रिरंसा ज्ञान के अभाव से
सुरतानुकूल काम चेष्टा के प्रति उन्मुखना नहीं बन सकती है । (पाउब्भवित्ता एव वयासी)

તેમા પ્રવૃત્ત થયા (તપ ણ તસ્સ ભરહસ્સ રણ્ણો અટ્ટમમત્તસિ પરિણમમાણંસિ ણમિ વિણમી
વિજ્જાહરરાયાણો દિવ્વાપ મઈપ ચોइयमई अण्णमण्णस्स अंतिअं पाउब्भवंति) શ્રીભરત
મહારાજાની અષ્ટમ ભક્ત ની તપસ્યા જ્યારે પૂરી થવા આવી ત્યારે નમિ અને વિનમિ બન્ને
વિદ્યાધર રાજાઓ દિવ્યાનુભાવજનિત હોવાથી દિવ્ય એવા પોતાના જ્ઞાન વડે પ્રેરિત થઈ ને
પરસ્પર એક-બીજાની પાસે આવ્યા અહીં દિવ્ય જ્ઞાનથી ભરતરાજાના મનની વાત જાણવા
અગેનો જે ઉદ્દેશ્ય કરવામા આવે છે તો તેમને અવધિજ્ઞાનનો હટુ નહિ છતાંજે જે તેમણે
તેના મનની વાત જાણી લીધી તે સૌધર્મેજ્ઞાનની દેવીઓ જેમ મન પ્રવિચારિ દેવોના દિવ્યા-
નુભાવથી કામાનુષકૃત મનો વિજ્ઞાનવાળી હોય છે, તે પ્રમાણે જ એમણે પણ દિવ્યાનુભાવથી
ભરતના મનનો ભાવ જાણી લીધો આમ સમજી લેવું એજ એ આ પ્રમાણે જ્ઞાનવામા
આવે નહીં તો યહી પોતાના વિમાનની ચૂલિકાથી ધ્વજમાન જાણનાર અવધિજ્ઞાનવાળી તે
દેવીઓમાં તેમના રિરસાજ્ઞાનના અભાવથી સુરતાનુકૂલ કામચેષ્ટા પ્રત્યે ઉન્મુખતા સંભળી
શકે તેમ નથી (પાઉબ્ભવિત્તા એવ વયાસી) આ પ્રમાણે તેઓ બન્ને પાસે આવી ને

देवानुप्पिया ! जंबुद्विपे दीपे भरहे वासे भरहे राया चाउरंतचक्रवट्टी त जीअमेअ-
तीअपच्चुप्पणमणागयाण विज्जाहरराईणं चक्रवट्टीणं उवत्थाणीयं करेत्तए' उत्पन्न
खल्ल भो देवानुप्पिया ! जम्बूद्वीपे द्वीपे जम्बूद्वीपनामक मध्यजम्बूद्वीपे भरते वर्षे भर-
तखण्डे श्रीभरतो नाम महाराजा चातुरन्तचक्रवर्ती चत्वारोऽन्नाः त्रयः पूर्वापग्दक्षिणमुद्राः
चतुर्थो हिमालय गिरवर इत्येव रूपास्ते वश्यतया सन्ति यस्य न चातुरन्तः स चाभी चक्रवर्ती
च इति चातुरन्तचक्रवर्ती तत् तस्माज्जीतमेतत् एष आचारक्रमः अतीतवर्तमानानागनानां
विद्याधरराज्ञां चक्रवर्तीनामुपस्थानिकं रत्नादिना प्राप्तं कर्तुम् अर्पयितुम् 'तं गच्छ मो ण
देवानुप्पिया । अम्हे वि भरहस्स रण्णो उवत्थाणियं करेमो' तत् तस्मात्कारणान् गन्धमः
खल्ल देवानुप्पिया ! वयमपि भरतस्य राज्ञ उपस्थानिकं कुर्म 'इतिकट्टु' इति कृत्वा इति
अन्योऽयं भणित्वा 'विणमी' विनमिः उत्तरश्रेण्यधिपतिः सुभद्रां नाम्ना खीरत्नं नमिश्च
दक्षिणश्रेण्यधिपतिः रत्नानि कटकानि त्रुटिकानि च गृह्णाति इत्यग्रेऽन्वयः अथ विनमिः
कोट्टः सन् किं कृत्वा सुभद्रां क-यागत्तं गृह्णाति इत्याह—'णऊण चक्रवट्टिं दिव्वाए मईए
चोइअमई' दिव्यया मत्या दिव्येन ज्ञानेन नोदितमतिः प्रेरितः सन् चक्रवर्तीं राजान

इस तरह वे एक दूसरे के पास आकर विचार करने लगे (उप्पण्णे खल्ल भो देवानुप्पिया ! जंबु-
द्वीपे दीपे भरहे वासे भरहे राया, चाउरंतचक्रवट्टी तं जीअमेअं) हे देवानुप्पिय ! जम्बूद्वीप
नाम के द्वीप में भरत क्षेत्र में चातुरन्त चक्रवर्ती भरत नाम के राजा उत्पन्न हुए हैं । तो यह
आचार है । (तीअपच्चुप्पणमणागयाण विज्जाहरराईणं चक्रवट्टीणं उवत्थाणियं करेत्तए) अ-
तीत वर्तमान और अनागत विद्याधरराजाओं का कि वे चक्रवर्तियों के लिये भेट में रत्नादिक
प्रदान करे । (तं गच्छामो देवानुप्पिया ! अम्हे वि भरहस्स रण्णो उवत्थाणियं करेमो) तो हे
देवानुप्पिय चलो— हमलोग भी भरत राजा के लिये भेट दें (इति कट्टु) इस प्रकार से प स्पर
में विचार विनिमय करके (विणमी) उत्तर श्रेणी के अधिपति विनमी ने सुभद्रा नाम का खीरत्न
को प्रदान किया और दक्षिण श्रेणी के अधिपति नमि ने रत्न को कटक और त्रुटिक प्रदान
किये ऐसा यहाँ सम्बन्ध लगा लेना चाहिये । (णाऊण चक्रवट्टिं दिव्वाए मईए चोइअमई)

विचार करवा लगे। (उप्पण्णे खल्ल भो देवानुप्पिया ! जंबुद्विपे दीपे भरहे वासे भरहे राया,
चाउरंतचक्रवट्टी तं जीअमेअं) हे देवानुप्पिय ! जम्बूद्वीप नामक द्वीपमें अन्तर्क्षेत्रभा
चातुरन्त चक्रवर्ती भरत नामे राजा उत्पन्न भयाछे तो आपणो ये आचार छे (तीअपच्चुप्पण-
मणागयाण विज्जाहरराईणं चक्रवट्टीणं उवत्थाणियं करेत्तए) अतीत, वर्तमान अने
अनागत विद्याधर राजाओंने के तेणो चक्रवर्तीओ भाटे छे। इयभां रत्नादिक प्रदान करे-
(तं गच्छामो देवानुप्पिया ! अम्हे वि भरहस्स रण्णो उवत्थाणियं करेमो) तो हे देवानु-
प्पिय, आपो, अमे लोको पण भरत महाराज भाटे भेट अर्पिओ (इति कट्टु) आ प्रभाणे
परस्पर विचारविनिमय करीने (विणमी) उत्तर श्रेणीना अधिपति विनमीने सुभद्रा नामक
खीरत्न प्रदान कथुं अने दक्षिण श्रेणीना अधिपति नमिने रत्नना कटक अने त्रुटिको प्रदान
कथो ओयो अथ अही लगाओये नोर्थ ओ (णाऊण चक्रवट्टिं दिव्वाए मईए चोइ-
१०५

ભરતં જ્ઞાત્યા તસ્મૈ ઉપહારં પ્રદાતું તદનુરૂપાં સુભદ્રાં સ્ત્રીરત્નં ગૃહ્ણાતીત્યર્થઃ । અતएव अनन्त-
 रोक्तसूत्रतः चक्रवर्तित्वे लब्धेऽपि यत् 'णाऊण चक्रवर्ति' इत्याद्युक्तं तत् सुभद्रा स्त्री-
 त्नमस्यैवोपयोगि इति योग्यता व्यापनार्थमवसेयम्, तत्र कीदृशीं सुभद्रामित्याह—'माणु-
 म्माणप्पमाणजुत्तं' मानोन्मानप्रमाणयुक्तम्, तत्र मानं जलद्रोणप्रमाणता उन्मानम् तुला-
 रोपितस्यार्द्धभारप्रमाणता, यश्च स्वमुखानि नव समुच्छ्रितः स प्रमाणोपेतः स्यात् अय-
 म्भात्र जलपूर्णायां पुरुषप्रमाणादीपदतिरिक्तायां महत्यां कुण्डीकायां प्रवेशितो यः पुरुषः
 सारपुद्गलोपचितो जलस्य द्रोणं त्रिटङ्क सौवर्णिक गणनापेक्षया द्वात्रिंशत्सेरप्रमाणं निष्का-
 शयति जलद्रोणोनावा तां पूरयति स मानोपेतः, तथा सारपुद्गलोचितत्वादेव यस्तुलायामारो-
 पितः सन् अर्द्धभारं तुल्यति स उन्मानोपेतः, तथा यद्यस्य स्वकीयेन अङ्गुलेन द्वादशाङ्गु-

क्योकि विનમિને यह बात अपने दिव्यानुभाव जनित ज्ञान से जान ली थी, कि भरत नाम
 का चक्रवर्ती राजा उत्पन्न हुआ है और उसके लिये विधाधर राजा भेंट देते हैं । इसी कार-
 ण उसने स्त्रीरत्न चक्रवर्ती के लिये दिया अतः अब जिस स्त्रीरत्न को चक्रवर्ती के लिये भेंट
 स्वरूप में विनमि ने प्रदान किया वह स्त्रीरत्न कैसा था इस बात को सूत्रकार प्रगट करते हुए
 कहते हैं— (माणुम्माणप्पमाणजुत्तं तेअस्सि रुवलक्खणजुत्तं ठियजुव्वणकेसवट्ठियणहं सव्वरोगणा-
 सणिं वलकरिं, इच्छिंअसीउण्हफासजुत्तं) किं वह सुभद्रा नाम का स्त्रीरत्न मान उन्मान एवं
 प्रमाण से युक्त था तात्पर्य इसका ऐसा है कि सार पुद्गलों से उपचित पुरुष का जितना प्रमाण
 होता है, उससे भी कुछ अधिक प्रमाण वाली एक बड़ी कुण्डिका में जल भर दो और उसमें
 उस पुरुष को प्रवेश कराओ उसके प्रवेश करने पर उसके मोतर से त्रिटङ्क सौवर्णिक गणना की
 अपेक्षा यदि ३२ सेर जल बाहर निकल आता है तो वह पुरुष मानोपेत माना जाता है । और
 वही सार पुद्गलोपचित पुरुष तराजू पर तौलने व हजार पल प्रमाण वजन में तुल्यता है तो वह
 उन्मानोपेत कहा जाता है । तथा जिस व्यक्ति का जितना अंगुल है उस अंगुल से १२ अंगुल

અમદ્ર) કેમકે વિનમિએ - એ વાત પોતાના દિવ્યાનુભાવ જનિત જ્ઞાનથી જાણી લીધી કે
 ભરત નામક ચક્રવર્તી રાજા ઉત્પન્ન થયો છે અને તેને વિધાધર રાજા ભેટ આપે છે - એથી
 જ તેણે ચક્રવર્તી માટે સ્ત્રી-રત્ન આપ્યું હવે જે સ્ત્રી-રત્ન ચક્રવર્તી માટે ભેટ સ્વરૂપમાં
 વિનમિએ અર્પિત કર્યું તે સ્ત્રીરત્ન કેવું હતું, તે વાતને 'સૂત્રકાર આ પ્રમાણે પ્રગટ કરે
 છે- (માણુમ્માણપ્પમાણજુત્તં તેઅસ્સિ રુવલક્કણજુત્તં ઠિયજુવ્વણકેસવટ્ઠિયણહં સવ્વ
 રોગણાંસણિં વલકરિં, ઇચ્છિંઅ સીઉણ્હફાસજુત્તં) કે તે સુભદ્રા નામક સ્ત્રી-રત્ન માન
 ઉન્માન અને પ્રમાણથી યુક્ત હતું. તાત્પર્ય આમ છે કે સાર પુદ્ગલોથી ઉપચિત પુરુષ
 જેટલું પ્રમાણ હોય છે તેની કરતાં પણ કંઈક વધારે પ્રમાણવાળી એક મોટી કુડિકામાં પાણી
 ભરી અને તેમાં તે પુરુષને પ્રવિષ્ટ કરાવો, તે પ્રવિષ્ટ થાય અને તેની અદરથી ત્રિટક સૌવ-
 ર્ણિક ગણનાની અપેક્ષાએ જે ૩૨ સેર જેટલું પાણી બહાર-ડીકળી આવે તો તે પુરુષ ને-
 માનોપેત માનવામાં આવે છે અને તે જ સાર પુદ્ગલોપચિત પુરુષ ને ત્રાજવા ઉપર તોલવા-
 માં આવે તો તેનું વજન ૧ હજાર પલ પ્રમાણ જેટલું થાય તો તેને ઉન્માનોપેત કહેવામાં

છાનિ મુલં પ્રમાણ યુક્ત એનેન ચ મુલપ્રમાણેન નવમુલ્લાનિ સમુચ્છિત: પુરુષ: પ્રમાણયુક્ત: સ્યાત્, પ્રત્યેકં દ્વાદશાંગુલૈર્નર્વમિર્મુલૈર્મુલ્લાનામષ્ટોત્તરશતં સમ્પદ્યતે, તતશ્ચૈતાવદુચ્ચય: પુરુષ: પ્રમાણયુક્ત સ્યાત્, एवं सुभद्रापि मानोन्मानप्रमाणयुक्ता तथाभूताम् पुनश्च कीदृशीम् 'तेजस्विनी' तेजस्विनीम् विलक्षणतेज: सम्पन्नां तथा 'रुक्मलवखणजुत्तं' रूपलक्षणयुक्ताम् तत्र रूपम्, अतीव सुन्दराकार: लक्षणानि च छत्रादीनि तैर्युक्ताम्, तथा 'ठिअजुव्वण-केसवट्ठिअणहं' स्थितयौवनकेशावस्थितनखाम् तत्र स्थितम् अविनाशित्वाद्यौवनं यस्या: सा तथा एवं केशवदवस्थिता: अवर्धिष्णवो नखा: यस्या: सा तथा तत: पदद्वयस्य कर्मधारये तां तथा 'सन्वरोगणासणि' सर्वरोगनाशनीम् तदीय स्पर्शमहिम्ना सर्वरोगा: नश्यन्तोत्यर्थ: तथा 'बलकरि' बलकरीम्-बलवृद्धिकरीम् नापरस्त्रीणामिव अस्या: परिभोगे परिभोक्त बलक्षय इत्यर्थ: तथा 'इच्छिय सीउण्हफासजुत्तं' इच्छित शीतोष्णस्पर्शयुक्ताम् तत्र इच्छित्ता: इप्सिता: ऋतुविपरीतत्वेन इच्छागोचरीकृता: ये शीतोष्णस्पर्शास्तैर्युक्ताम्-उष्णतौ शीतस्पर्शम् शीतऋतौ उष्णस्पर्शम् मध्यमतौ मध्यमस्पर्शमिति भाव: । 'तिसु, तणुअं तिसु तंव तिवल्लिगतिउण्णय तिगंभीर । तिसु कालं तिसु सेअं ति आयतं तिसु अ विच्छिण्णं ॥१॥' त्रिषु तनुकां त्रिषु ताम्रां त्रिवल्लिकञ्चुन्नतां त्रिगम्भीराम् । त्रिषु कृष्णां, त्रिषु श्वेतां त्रयायतां त्रिषु च विस्तोर्णां ॥१॥ तत्र- त्रिषु तनुकां त्रिषु स्थानेषु मध्यो-

કા નિસકા મુલ્લ હોતા હૈ:- વહ મુલ્લ પ્રમાણ સે જો ૧ મુલ્લ કા હોતા હૈ । અર્થાત્ ૧૦૮ અંગુલ કા ઝેંચા હોતા હૈ । વહ પ્રમાણોપેન કહા જાતા હૈ । એસે માન, અન્માન ઔર પ્રમાણ સે યુક્ત વહ સુમદ્રારત્ન થા. તથા વહ સુમદ્રારત્ન તેજસ્વી થા વિલક્ષણ તેજ સે યુક્ત થા. સુન્દર આકાર વાલા થા છત્રાદિ પ્રશસ્તલક્ષણો સે યુક્ત થા. સ્થિર યૌવન વાલા થા. કેજ કો તરહ્ હસકે નલ્લ અવર્ધિષ્ણુ યે- સમસ્ત રોગ હસકે સ્પર્શમાત્ર સે નષ્ટ હો જાતે યે. વલકી વૃદ્ધિ કરને વાલા થા. દુઃસરી સ્ત્રિયો કો તરહ્ યહ સુમદ્રા અપને મોક્ષા પુરુષ કે વલ્લ કો ક્ષય કરને વાલો નહીં થી. શીત કાલ મેં યહ સુમદ્રારત્ન ઉષ્ણસ્પર્શવાલા રહતા થા ઔર ઉષ્ણકાલ મેં યહ શીતસ્પર્શવાલા હો જાતા થા. તથા મધ્યમ ઋતુ મેં યહ મધ્યમસ્પર્શવાલા બન જાતા થા યહ સુમદ્રારત્ન તોન સ્થાનો મેં આવે છે તેમને જે પુરુષને જેટલા પ્રમાણવાલો અંગુલ હોય છે, તે અંગુલથી ૧૨ અંગુલ જેટલું જેટલું સુખ હોય છે તેને સુખપ્રમાણ માનવામાં આવે છે એવા સુખપ્રમાણથી જે પુરુષ ૬ સુખ જેટલો હોય છે એટલે કે ૧૦૮ અંગુલ જેટલો જ એ હોય છે, તેને પ્રમાણોપેન કહેવામાં આવે છે એવા માન, ઉન્માન અને પ્રમાણથી યુક્ત તે સુમદ્રા નામક સ્ત્રી-રત્ન હતું. તેમજ તે સુમદ્રા સ્ત્રી-તેજસ્વી હતું તે વિલક્ષણ તેજથી સમ્પન્ન હતું આકારે તે સુમદ્રા સ્ત્રી-રત્ન સુન્દર હતું છત્રાદિ પ્રશસ્ત લક્ષણોથી તે યુક્ત હતું સ્થિર યૌવનવાળું હતું. વાળની જેમ એના નખો અવર્ધિષ્ણુ હતાં એના સ્પર્શમાત્રથી જ સમસ્ત રોગો નાશ પામતા હતા તે બળવૃદ્ધિ કરનાર હતું, બીજી સ્ત્રીઓની જેમ તે સુમદ્રા પોતાના ઉપલોકતા પુરુષના બળને ક્ષય કરનાર ન હોતી શીત કાળમાં તે સુમદ્રારત્ન ઉષ્ણ સ્પર્શવાળું રહેતું હતું અને ઉષ્ણકાળમાં એ શીતસ્પર્શ વાળું થઈ જતું હતું તેમજ મધ્યમ ઋતુમાં એ મધ્યમ સ્પર્શ

આવે છે તેમને જે પુરુષને જેટલા પ્રમાણવાલો અંગુલ હોય છે, તે અંગુલથી ૧૨ અંગુલ જેટલું જેટલું સુખ હોય છે તેને સુખપ્રમાણ માનવામાં આવે છે એવા સુખપ્રમાણથી જે પુરુષ ૬ સુખ જેટલો હોય છે એટલે કે ૧૦૮ અંગુલ જેટલો જ એ હોય છે, તેને પ્રમાણોપેન કહેવામાં આવે છે એવા માન, ઉન્માન અને પ્રમાણથી યુક્ત તે સુમદ્રા નામક સ્ત્રી-રત્ન હતું. તેમજ તે સુમદ્રા સ્ત્રી-તેજસ્વી હતું તે વિલક્ષણ તેજથી સમ્પન્ન હતું આકારે તે સુમદ્રા સ્ત્રી-રત્ન સુન્દર હતું છત્રાદિ પ્રશસ્ત લક્ષણોથી તે યુક્ત હતું સ્થિર યૌવનવાળું હતું. વાળની જેમ એના નખો અવર્ધિષ્ણુ હતાં એના સ્પર્શમાત્રથી જ સમસ્ત રોગો નાશ પામતા હતા તે બળવૃદ્ધિ કરનાર હતું, બીજી સ્ત્રીઓની જેમ તે સુમદ્રા પોતાના ઉપલોકતા પુરુષના બળને ક્ષય કરનાર ન હોતી શીત કાળમાં તે સુમદ્રારત્ન ઉષ્ણ સ્પર્શવાળું રહેતું હતું અને ઉષ્ણકાળમાં એ શીતસ્પર્શ વાળું થઈ જતું હતું તેમજ મધ્યમ ઋતુમાં એ મધ્યમ સ્પર્શ

દરતન્તુલક્ષણેષુ તન્તુકામ્ કૃણામ્ પુનઃ કીદૃશી વર્તતે તદાહ ત્રિપુ તામ્રાં ત્રિપુ દગન્તાવરયો-
નિલક્ષણેષુ સ્થાનેષુ તામ્રામ-રક્તામ્ તથા-ત્રિવલિકામ્-ત્રયો વલયો મધ્યવર્તિ રેસારૂપાઃ
યસ્યાઃ મા તથા તામ્ ત્રિવલિકૃત્વં સ્ત્રોણા મતિ પ્રશસ્યં પુંસાં તુ ન તથાવિચમ્ । તથા યુ-
ક્તામ્-ત્રિપુ સ્થાનેષુ સ્તનજઘનયોનિલક્ષણેષુ ઝન્નતામ્ તથા ત્રિગમ્ભીરામ્ ત્રિપુ નામિ-
સત્ત્વ સ્વરૂપેષુ ગમ્ભીરાં ધૃતગામ્ભીર્યામ્ તથા ત્રિપુ કૃષ્ણામ્ ત્રિપુ રોમરાજી ચૂચુક
કનીનિકારૂપેષુ અવયવેષુ કૃષ્ણાં કૃષ્ણવર્ણામ્ તથા ત્રિપુ શ્વેતાં ત્રિપુ દન્તસ્મિત-
ચક્ષુર્લક્ષણેષુ શ્વેતવર્ણામ્ તથા જ્યાયતામ્ ત્રિપુ વેળીબાહુલતા લોચનેષુ આયતાં દોર્ધામ્
તથા ત્રિપુ ચ વિસ્તીર્ણામ્ ત્રિપુ શ્રોણિચક્રજઘનસ્થલી નિતમ્બસ્થાનેષુ વિસ્તીર્ણામ્ ॥૧॥
તથા 'સમસરીર' સમશરીરામ્ સમ ચતુરસ્ત્રં સંસ્થાનં યસ્યા સા સમચતુરસ્ત્રા સમસંસ્થા-
નત્વાત્ તથા-'ભરહે વાસંમિ સ સન્વમહિલ્પ્પહાણં' ભારતે વર્ષે ભરતક્ષેત્ર સમમહિલા-
પ્રધાનામ્ પુનઃ કીદૃશી સુમદ્રામ્ સુદરથણજઘનવરકરચલણયણસિરસિજદસર્ણજન

મધ્યમે કટિભાગમે, ઉદર મેં એવં શરીર મે કૃશ થા ત્રીન સ્થાનો મેં નેત્ર કે પ્રાન્ત ભાગાં મેં, અઘ-
રોષ્ઠ મેં, એવ યોનિસ્થાન મેં રક્ત-ઝાલ યા, ત્રિવલિયુક્ત યા ત્રીન સ્થાનો મેં સ્તન જઘન એવ યોનિરૂપ
સ્થાનો મેં ઝન્નત થાં. ત્રીન સ્થાનો મેં નાભિ મેં, સત્ત્વ મેં ઔર સ્વર મેં ગંભીર યા ત્રીન સ્થાનો મેં
રોમરાજી ચુચુક, ઔર કનિનોકા મે કૃષ્ણવર્ણોપેત યા ત્રીન સ્થાનો મેં દન્ત સ્મિત ઔર ચક્ષુરૂપ સ્થા-
નો મેં શ્વેતવર્ણોપેત યા. ત્રીન સ્થાનો મેં વેળી, બાહુલતા ઔર લોચન રૂપસ્થાનો મેં— યહ લમ્બાઈ
યુક્ત યા તથા ત્રીન સ્થાનો મેં— શ્રોણિચક્ર, જઘનસ્થલી ઔર નિતમ્બ ઇનમેં ચૌદાઈ સે યુક્ત યા. ઇસ
સબ વિશેષોં કા કથન કરને વાલી ગાથા ઇસ પ્રકાર સે હૈ—

“તિસુ તણુઅં તિસુ તંવં તિવલીગ તિ ઝણ્ણય તિ ગંભીરં । તિસુ કાલં તિસુ સેઅં તિમાયત
તિસુય વિચ્છિણ્ણ ॥૧॥ (સમસરીરં) સમચતુરસ્રસંસ્થાનવાલા હોને સે યહ સુમદ્રારત્ન બહુસમર-
ણીય શરીરવાલા યા (ભરહે વાસમિ સન્વમહિલ્પ્પહાણં) ભરત ક્ષેત્ર મેં યહ રત્ન સમસ્ત મહિલાઓં

વાળુ થઈ જતું. હંતુ. એ સુભદ્રા સ્ત્રી રત્ન મધ્યમા-કટિ ભાગમા ઉદરમાં અને શરીરમા
એ ત્રણ સ્થાનો માં કૃશ હંતુ ત્રણ સ્થાનોમાં-નેત્રના પ્રાન્ત ભાગોમા, અધરોષ્ઠમા તેમજ
યોનિસ્થાનમાં એ લાલ હંતુ તે ત્રિવલિ યુક્ત હંતુ ત્રણ સ્થાનોમાં-સ્તન જઘન અને
યોનિ રૂપ સ્થાનોમાં તે ઝન્નત હંતુ. ત્રણ સ્થાનોમા નાભિમાં સત્ત્વમાં અને સ્વરમા એ
ગંભીર હંતુ. ત્રણ સ્થાનોમાં-રોમરાજી, ચુચુક અને કનીનિકામાં એ કૃષ્ણવર્ણોપેત હંતુ,
ત્રણ સ્થાનોમા દન્ત, સ્મિત અને ચક્ષુ રૂપ સ્થાનોમાં એ શ્વેતવર્ણોપેત હંતુ ત્રણ સ્થાનોમા
વેળી, બાહુલતા અને લોચન રૂપ સ્થાનોમા એ લમ્બાઈ યુક્ત હંતુ. તેમજ ત્રણ સ્થાનો મા
શ્રોણિચક્ર જઘન સ્થલી અને નિતમ્બ એ સ્થાનોમાં એ પહોળાઈયુક્ત હંતુ એ સર્વે
વિશેષોંતુ કથન પ્રકટ કરનારી ગાથા આ પ્રમાણે છે —

“તિસુ તણુઅં તિસુ તંવં તિવલીગ તિ ઝણ્ણય તિ ગંભીરં ।

તિસુ કાલં તિસુ સેઅં તિ માયતં તિસુય વિચ્છિણ્ણ ॥૨॥

(સમસરીર) સમચતુરસ્ર સંસ્થાન વાળું હોવાથી એ સુભદ્રારત્ન સમશરીર વાળું હંતું
(ભરહે વાસંમિ સન્વ મહિલ્પ્પહાણં) ભરત ક્ષેત્રમાં એ રત્ન સમસ્ત મહિલાઓની જે

हिअयरमणमणहरि' सुंदरस्तनजघनवरकरचरणनयनसिरसिजदशनजनहृदयरमणमनोहरीम्, तत्र सुन्दर मनोहरम् स्तनजघनवरकरचरणनयनं यस्याः सा तथा शिरसि जायन्ते ये ते शिरसिजाः केशाः दशना दन्तास्तैः जनहृदयरमणीं द्रष्टृपुरुषचित्तप्रसन्नकरी अतएव मनोहरो चित्तहारिका पश्चात् धर्मधारयः एवंभूता या सा तथा ताम् तथा— 'सिंगारागार जाव जुत्तावयारकुसलं' शृङ्गारागार यावद् युक्तोपचारकुशलाम् अत्र यावत्पदात् शृङ्गारागारचारुवेपां सङ्गतगतहसित मणितर्चेष्टितविलाससललितसंलापनिपुणामिति संग्राह्यम् तथा च शृङ्गारागारचारुवेपाम् शृङ्गारस्य प्रथमरसस्यागार गृहमित्र चारुः सुन्दरां वेषो यस्याः सा तथा ताम्, तथा सङ्गताः उचिताः गतहसितमणितर्चेष्टितविलासाः यस्याः सा तथा ताम् तत्र गतं गमनं हसितं स्मितं मणितर्चाणी चेष्टितं च नेत्रचेष्टा तथा सह ललितेन प्रसन्नतया ये संलापाः परस्परमापणलक्षणास्तेषु निपुणा या सा तथा ताम्, तथा युक्तोपचारकुशलाम् युक्तः—संगताः ये उपचाराः लोकव्यवाहारास्तेषु कुशलानिपुणा या सा तथा ताम् तथा 'अमरवहूणं मुरुवं रूपेण अणुहरन्ती' अमरवधूनां देवाङ्गनानां मुरुपं सौन्दर्यं रूपेण निजेन अनुहरन्तीम् अनुकुर्वन्तीम् तथा

के बीच में प्रधान रत्न था. (सुन्दरथनजघनवरकरचरणनयनसिरसिजदशनजनहृदयरमणमणहरि) इसके स्तन, जघन, एवं कर द्वय ये सब सुन्दर थे दोनों चरण बड़े ही मनोज्ञ थे. नेत्र दोनों बहुत अधिक लुभावने वाले थे मस्तक के केश एवं दन्तपङ्क्ति द्रष्टृ पुरुष के चित्त को आनन्दकारी थे. अतः यह सुभद्रारत्न बड़ा ही मनोहर था (सिंगारागार जाव जुत्तावयारकुसलं) इसका सुन्दर वेष प्रथमरसरूप शृङ्गार ही का घर था. यावत् सगत लोक व्यवहारों में यह सुभद्रारत्न बहुत ही अधिक कुशलता पूर्ण था यहां यावत्पद से— "चारुवेपा, सगनगतहसितमणितर्चेष्टितविलाससललितसंलापनिपुणाम्" इन पदों का प्रहण हुआ है इनकी व्याख्या इस प्रकार से है— इसका गमन, इसका हास्य, इसको सुस्वयान, इसका बोलना, इसको वाणी, इसका चेष्टित—नेत्र चेष्टा, और प्रसन्नता पूर्वक किये आलाप ये सब ही अनोखे थे अर्थात् यह सुभद्रारत्न. इन सब गमनादिरूप कार्यों में बहुत ही उत्तमतालिये हुए था (अमरवहूण मुरुवंरूपेण

प्रधान रत्न હતુ (સુંદરથનજઘનવરકરચળનયનસિરસિજદશનજનહૃદયરમણમણહરિ) એના સ્તનો, જઘન અને કરદ્વય એ સર્વે સુદર હતાં બન્ને અરણ્યો ખૂબજ મનોહર । હતા બન્ને નેત્રો અતીવ આકર્ષક હતા મસ્તકના વાળ અને હાથ પરિત દેહ સુસુષના ચિત્તને આનંદ આપનારા હતા આ પ્રમાણે એ સુભદ્રારત્ન અતીવ મનોહર હતુ (સિંગારાગાર જાવ જુત્તાવયારકુસલં) એનો સુદર વેષ પ્રથમ રસ રૂપ શૃંગારનું ઘર હતુ યાવત સગત લોક વ્યવહારમાં એ સુભદ્રારત્ન અતીવ કુશળતા પૂર્ણ હતુ. અહીં યાવત પદ્યો 'ચારુવેષા, સંગતગતહસિતમણિ, ચેષ્ટિતવિલાસસલલિતસંલાપનિપુણામ્') એ પદોનું અર્થ થયું છે. પદોની વ્યાખ્યા આ પ્રમાણે છે—એ સુભદ્રાસ્ત્રીરત્ન નું ગમન, હાસ્ય સુસકાન, બોલવું, આ વાણી, ચેષ્ટિત, નેત્ર-ચેષ્ટા અને પ્રસન્નતાપૂર્વક કરવામાં આવેલા આલાપો એ સર્વે અદ્ભુત હતા એટલે કે એ સુભદ્રારત્ન એ સર્વે ગમનાદિક રૂપ કાર્યોમાં અતીવ ઉત્તમતા યુક્ત હતું

‘સુમદ્મંદમિ જોવ્વળે વટ્ઠમાણિં હ્થીરયણં’ મદ્દે કલ્યાણકારિણી યૌવને વર્તમાનાં સુમદ્રાં તત્ નામકં સ્ત્રીરત્નમ્ વિનમિઃ ગૃહ્ણાતિ ‘નમીઅ રયણાણિ અ કઢગાણિ ય તુહિયાણિ ય ગેણ્હઈ’ નમિશ્ચ રત્નાનિ ચ કટકાનિ ચ ત્રુટિકાનિ ચ ગૃહ્ણાતિ એતત્પદસ્યાર્થઃ પ્રાક્કથિત એવેત્યલં પુનરુપાદાનેન ‘ગિણ્હિત્તા’ ગૃહીત્વા ‘તાપ ઉક્કિટ્ટાપ તુરિયાપ જાવ ઉદ્દુયાપ વિજ્ઞાહરગઈપ જેણેવ મરહે રાયા તેણેવ ઉવાગચ્છંતિ’ તયા ઉત્ક્રુષ્ટયા ત્વરિતયા યાવદુદ્ધુતયા વિદ્યાધરગત્યા યત્રૈવ મરતો રાજા તત્રૈવ દ્વૌ ઉપાગચ્છતઃ તત્ર તયા ઉત્ક્રુષ્ટયા ઉત્કર્ષયુક્તયા ત્વરયા આકુલયા ન સ્વાભાવિન્યા યાવત્પદાત્ ચપલયા અતિવેગેન ચણ્ડયા પ્રવલયા રૌદ્રયા અત્યુત્કર્ષયોગેન સિંહયા સિંહસદ્દશદાઢ્ય સિંહસદ્ગપરાક્રમશાલિ ગત્યા ઉદ્ધૂતયા દર્પાતિશયેન જયિન્યા વિપક્ષજેતૃત્વેન છકયા નિપુણયા દિવ્યયા વિદ્યાધરગત્યા ઉત્તરશ્રેણ્યાધિપતિ દક્ષિણશ્રેણ્યાધિપતી વિનમોનમી યત્રૈવ મરતો રાજા તત્રૈવ ઉપાગચ્છતઃ ‘ઉવાગચ્છિત્તા’ઉપાગત્ય ‘અંતલિખલ્પહિવળ્લા સર્લિલિણીયાઈ જાવ જણ

અણુહરંતી સુમદ મદમિ જોવ્વળે વટ્ઠમાણિં હ્થીરયણં, ણમીય રયણાણિ ય કઢગાણિ ય, તુહિયાણિ ય ગેણ્હઈ) યહ અપને રૂપ સે દેવાક્ષનાઓ કે સૌન્દર્ય કા અનુભવ કરતા થા એસે વિશેષણો સે વિશિષ્ટ તથા મદ્ર-કલ્યાણકારી-યૌવન મેં સ્થિત એસે સ્ત્રીરત્નરૂપ સુમદ્રારત્ન કો વિનમિને લિયા ઔર નમિને અનેકરત્નોં કો કટકો કો ઔર ત્રુટિકો કો લિયા (ગિણ્હિત્તા જેણેવ મરહે રાયા, તેણેવ ઉવાગચ્છઈ) इन सबको लेकर फिर वे जहा पर भरतमहाराजा ये वहा पर आये. (ताप उक्किट्टाप तुरियाप जाव उदुयाप विज्जाहर्गईप) आते समय वे साधारणगति से नहीं चले किन्तु उत्कृष्ट गति से ही चले. वह—उनकी उत्कृष्ट गति भी ऐसी थी कि जिसमें त्वरा-भरी हुई थी. शीघ्रता से युक्त थी इससे उन्होने मार्ग में कहीं पर भी विश्राम नहीं किया. त्वरा युक्त होने पर भी वह ऐसी नहीं थी कि जिसमें अनुद्धतता हो किन्तु उद्वृत्तता से—छद्मगो से—वह युक्त थी अतः जैसी विद्याधरो की गति होती है इसी प्रकार की गति से चलकर वे भरत

(अमरवद्भूज सुरुवं रुवेणं अणुहरतो सुमद् मद्मि जोव्वणे वट्ठमाणिं ह्थीरयण, णमीय रयणाणि य कडगाणि य तुडियाणि य गेण्हइ) એ સુમદ્રાસ્ત્રીરત્ન રૂપમા દેવાગનાઓના સૌંદર્યનું અણુકરણ કરનાર હવુ એવા વિશેષણોથી વિશિષ્ટ તેમજ મદ્ર-કલ્યાણકારી યૌવનમા સ્થિત એવાસ્ત્રી-રત્નરૂપ સુમદ્રારત્નને વિનમિએ સાથે લીધુ અને નમિએ અનેક રત્નોને, કટકોને અને ત્રુટિકોને લીધા (ગિણ્હિત્તા જેણેવ મરહે રાયા તેણેવ ઉવાગચ્છઈ) એ સર્વને લઈને પછી તેઓ જ્યાં ભરત રાજા હતા ત્યાં ગયા. (તાપ ઉક્કિટ્ટાપ તુરિયાપ જાવ ઉદ્દુયાપ વિજ્ઞાહરગઈપ) જેતિ વખતે તેઓ એ સાધારણ ગતિથી ગમન કર્યું નહિ પણ ઉત્ક્રુષ્ટ ગતિથી ગમન કર્યું તે તેમની ઉત્ક્રુષ્ટ ગતિ પણ એવી હતી કે જેમા ત્વરા હતી, શીઘ્રતા હતી. એથી તેમણે માગ મા કોઈ પણ સ્થાને વિશ્રામ લીધો નહિ ત્વરા યુક્ત હોવા છતાં એ તે એવી નહોતી કે જેમા અનુદ્વૃત્તતા હોય પણ ઉદ્વૃત્તતાથી છલકાતી—તે યુક્ત હતી આ પ્રમાણે એવી વિદ્યાધરની ગતિ હોય છે, એવી જ ગતિથી આલીને તેઓ ભરતરાજાની પાસે ગયા. અહીં યાવત્ પદ્યો “ચપલયા ચણ્ડયા, રૌદ્રયા, સિંહયા, જયિન્યા” એ વિશેષણો

विजयणं वद्धाविति' तत्र अन्तरिक्षप्रतिपन्नौ गगनस्थितौ चिनमी नमी सर्किक्किणीकानि
क्षुद्रघण्टिका युक्तानि यावत्पादात् पञ्चवर्णानि शुक्लनीलपीतरक्तहरितपञ्चवर्णमिश्रितानि
वस्त्राणि प्रवराणि परिहितौ धारितवन्तौ जयेन विजयेन जयविजयशब्दाभ्यां वर्द्धयतः
'वद्धावित्ता एव वयासी' वर्द्धयित्वा एवं वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादिष्टाम् उक्तवन्तौ
किमुक्तवन्तावित्याह—'अभिजिणं देवाणुप्पिया ! जाव अम्हे देवाणुप्पियाणं आणत्तिकिरा
इति कट्ठु तं पडिच्छतु णं देवाणुप्पिया ! अम्ह इमं जाव विणमी इत्थीरयणं णमी
रयणाणि समप्पेइ' अभिजितं स्ववशे कृतं खलु भो देवानुप्रियाः ! यावत्पादात् सर्वे

राजा के पास आये. यहा यावत्पद से "चपलया चण्डया, रोइया सिंहया जयिन्या" इन
विशेषणां का ग्रहण हुआ है (उवागच्छित्ता अंतलिक्खपडिक्खन्ना सख्खिणीयाहं जाव जणं
विजयणं वद्धावेति) वहा आकर वे नोचे नहीं उतरे किन्तु आकाश में हो वे ठहर रहे. जिन
वस्त्रों को ये उस समय धारण किये हुए आये थे वे, वस्त्र उनके क्षुद्र घटिकाओं से युक्त थे
और पांचवर्णों से—शुक्ल, नील, पीतरक्त और हरित इन पांच प्रकार के रंगों से—रंगे हुए थे.
अतएव प्रवर—श्रेष्ठ थे आकाश में ठहरे हुए ही इन विनमि और नमिने भरत को जय विजय
शब्दों से बघाया (वद्धावित्ता एवं वयासी) और वधाकर-वधाई देकर फिर इस प्रकार से कहा—
(अभिजिणं देवाणुप्पिया ! जाव अम्हे देवाणुप्पियाणं आणत्ति किरा इति कट्ठु तं पडिच्छतु
णं देवाणुप्पिया ! अम्ह इमं जाव विणमी इत्थीरयणं णमी रयणाणि समप्पेइ) हे देवानुप्रिय !
आपने विजय प्राप्त कर लिया है. यहा आगत यावत्पद मागधगम को वक्तव्यता प्रकट करता
है. इसलिये मागध प्रकरण में जो कहा गया है वह सच यहा पर कह लेना चाहिये इस प्रकार
से हम आपके आज्ञाति 'किं करे' कहकर फिर उन्होंने ऐसा कहा कि हे देवानुप्रिय ! आप
हमारी इस भेंट को स्वीकार करें इस प्रकार कहकर विनमि ने खोरत्तन को और नमिने रत्तादिकों

अहं यथुं छे (उवागच्छित्ता अंतलिक्खपडिक्खन्ना सख्खिणीयाहं जाव जणं विजयणं
वद्धावेति) त्या पडोत्थीने तेओ नीये उतर्या नहीं पणु आकाशभां न स्थिर रह्या. न वस्त्राने
तेमणे ते वथते धारणु करेला हतां, ते वस्त्रे क्षुद्रघटिकाओधी युक्त हतां अने पांच
वर्णोत्थी-शुक्ल, नील, पातरक्त अने हरित ओ पांच प्रकारना रंगोत्थी रंगेला हतां ओथी
ओ वस्त्रे श्रेष्ठ हतां आकाशभ स्थिर रहीने न ओ विनमि अने नमिने भरत महाराजने
नय-विजय शब्दोधी वधाभणी आवी (वद्धावित्ता एवं वयासी) अने वधाभणी आपी ने
पछी आ प्रभावे कहु (अभिजिणं देवाणुप्पिया ! जाव अम्हे देवाणुप्पियाणं आणत्ति-
किरा इति कट्ठु तं पडिच्छतु णं देवाणुप्पिया ! अम्ह इमं जाव विणमी इत्थीरयणं णमी
रयणाणि समप्पेइ) हे देवानुप्रिय ! आपशीने विजय प्राप्त कर्यो छे अही आवेला
यावत् पदशी मागध गमनी वक्तव्यता प्रकट करवासा आवी छे, ओथी मागध प्रकरणभां
ने कहेवासा आव्युं छे ते पणु अही कहेपु ओधो ओ प्रभावे अये आपशीना आज्ञासि
किं करे आज्ञा पावके छीने आ प्रभावे कहीने पछी तेमणे आ प्रभावे कहु छे हे
देवानुप्रिय ! आपशी आभारी आ ओठने स्वीकारे. आ प्रभावे कहीने विनमिने खरी-रत्तन अने

मागधगमवद् वाच्यम् 'नवरं उत्तरेणं चुल्लहिमवतमेगाए' उत्तरतः क्षुद्र हिमवद्विरिमर्यादम् इति 'अम्हे णं देवाणुप्पियाणं विसयवासिणोत्ति' आवां देवानुप्रियाणाम् आज्ञासिक्कुराविति कृत्वा तत्प्रतीच्छन्तुअङ्गीकुर्वन्तु खलु देवानुप्रियाः । अस्माकमिदं यावत्पदात् एतद्रूप प्रीतिदानमिति कृत्वा विनमिः उत्तरश्रेण्याधिपतिः स्त्रीरत्न समर्पयति नमिः दक्षिणश्रेण्याधिपतिः विविधप्रकाराणि रत्नानि नग्मं राज्ञे उपहाररूपेण ददातीत्यर्थः 'तए णं से भरहे राया जाव पडिविसज्जेइ' ततः स्त्रीरत्न रत्नसमर्पणानन्तरं खलु स भरतो राजा यावत् पदात् प्रीतिदानग्रःणसत्कारसम्मानादि ग्राह्यम् प्रतिविसर्जयति तौ विनमि नमी स्वस्व गृहगमनाय आदिशति 'पडिविसज्जित्ता' तौ विद्याधराधिपौ प्रतिविसृज्य आदिश्य 'पोसह सालाओ पडिणिकखमड, पडिणिकखमित्ता मज्जनघरं अणुप्पविसइ' स भरतो राजा पौषधशालातः प्रतिनिष्क्रामति निर्गच्छति प्रतिनिष्क्रम्य निर्गत्य मज्जनगृह स्नानगृहम् अनुप्रविशति 'अणुपविसित्ता' मज्जनगृहम् अनुप्रविश्य स्नानविधिः पूर्णोऽत्रवाच्यः, ततः 'भोयणमंडवे

को भरत राजा के लिये भेंट में दे दिया (नवर उत्तरेणं चुल्लहिमवतमेगाए अम्हे देवाणुप्पियाण विसयवासिणोत्ति) भेंट देने के साथ २ उन्होंने" हम दोनों क्षुद्रहिमवत्पर्वत की हड में आगत उत्तरश्रेणिके अधिपति विनमि और नमि विद्याधराधिपति हैं और अब आपके ही देश के निवासी बन चुके हैं" इस प्रकार से अपना परिचयदिया (तएणं से भरहे राया जाव पडिविसज्जेइ) इस प्रकार उनके द्वारा भेंट में प्रदत्त स्त्रीरत्न एवं रत्नादिक को स्वीकार करके भरत राजा ने उनका सत्कार किया और सम्मान किया बाद में उन्हें अपने अपने स्थान पर जान का आदेश दे दिया (पडिविसज्जित्ता पोसहसालाओ पडिणिकखमड) इस प्रकार उन्हें विसर्जित करके भरत राजा पौषधशाला से बाहर निकले (पडिणिकखमित्ता मज्जनघरं अणुप्पविसइ) बाहर निकल कर वे स्नान घर में गये (अणुपविसित्ता भोयणमंडवे जाव णमि विनिमीण विज्जाहरराईणं अट्ठाहिय महामहिमा) वहाँ पहुँच कर उन्होंने स्नान किया-यद्वा पर स्नानविधि का पूर्णरूप से वर्णन कर लेना चाहिये

नभिञ्जे रत्नादिके भरत राजा ने भेंटभा आया (नवर उत्तरेण चुल्लहिमवतमेगाए अम्हे देवाणुप्पिया णं विसयवासिणोत्ति) भेंट आपवानी साथे-साथे तेमए "अमे अन्ने क्षुद्रा-भवत्पर्वतनी सीमाभा आवेसा उत्तर श्रेष्ठिना अधिपति विनमि अने नमि विद्याधराधिपति ओछीअे अने डवे अमे आपश्रीना देशना ज निवासीओ थछ गया छीअे "आ प्रभाओ पोतानी ओणभाओ आपी (तएण से भरहे राया जाव पडिविसज्जेइ) आ प्रभाओ तेमना वडे भेटभां प्रदत्त स्त्रीरत्न तेमज रत्नादिके ने स्वीकारी ने भरत महाराजअे तेओ अन्नेनो सत्कार क्यौ अने तेओ अन्नेनु सम्मान क्यु' तयार अन्ने अन्नेने पोत-पोताना स्थाने जवानो राजा अे आदेश अ प्ये। (पडिविसज्जित्ता पोसहसालाओ पडिणिकखमई) आ प्रभाओ तेओ अन्नेने विसर्जितकडरीने भरत राजा पौषध शाला भाथी अडार नीकअ्ये। (पडि-णिकखमित्ता मज्जनघरं अणुप्पविसइ) अडार नीकणी ने ते राजा स्नान घरभा गयो। (अणुप विसित्ता भोयणमंडवे जाव णमि विनिमीण विज्जाहरराईणं अट्ठाहिय महामहिमा)

जाव नमिविनमीणं विज्जाहरराईणं अट्ठाहिय महामहिमा' ततो भोजनमण्डपे पारणं वाच्यम् यावच्छब्दादेव श्रेणिप्रश्रेणिशब्दनम् अट्ठाहिकाकरणाज्ञापनमिति ततः नमिविनम्यो विद्याधरराज्ञोरट्ठाहिकां महामहिमां कुर्वन्तीति आज्ञां च राज्ञे भरताय प्रत्यर्पयन्तीति बोध्यम् 'तए से दिव्वे चक्करयणे आउधरसालाओ पडिणिकखमइ जाव उत्तपुरत्थिमं दिसिं गंगादेवीभवणाभिमुहे पयाए यावि होत्था' ततः नमिविनमिसाधनानन्तरं खलु तद्विषयं चक्ररत्नम् आयुधगृहशालातः प्रतिनिष्क्रामति निर्गच्छतीत्यादिकं प्राग्वत् यावत्पदादवसेयम् अयं विशेषः उत्तरपौरस्त्यां दिशम् ईशानदिशं वैताद्व्यतो गङ्गादेवी भवनाभिमुखं गच्छतः ईशानकोणगमनस्य ऋजुमार्गत्वात् गङ्गादेवी भवनाभिमुखं प्रयातं चाप्यभवत् 'सच्चेव सच्चा सिंधुवत्तव्या जाव नवरं कुंभद्वसदस्स रयणचित्तं णाणाम- णिकणगरयणभत्तिचित्ताणि य दुवे कणगसीहासणाईं सेसं त चेव जाव महिमत्ति' सैव

फिर वहा से वे भोजन मंडप में गये, वहा उन्होंने पारणा को यहां यावत् शब्द से इस कथनका समग्र हुआ जाना चाहिए— कि फिर उन्होंने श्रेणी प्रश्रेणी करने को बुझाय, उन्हें आठ दिन तक लगातार महामहोत्सव करने की आज्ञा दी उन्होंने भरत राजा की आज्ञा से नमिविनमिविद्याधर राजाओं के विजयोपलक्ष्य में आठ दिन तक ठाठ वाटसे महोत्सव किया और उस महोत्सव के पूर्णरूप से संपादन हो जानेकी खबर राजा को कर दी" (तए ण से दिव्वे चक्करयणे आउधर-सालाओ पडिणिकखमई) इसके बाद वह चक्ररत्न आयुधगृहशाला से बाहरनिकला (जाव उत्तर-पुरत्थिम दिसिं गंगादेवीभवणाभिमुहे पयाए यावि होत्था) और यावत् वह ईशानदिशा में गंगा देवी के भवन को ओर चला क्योंकि वैताद्व्य से गङ्गादेवी के भवन की ओर जाने वाले को ईशान दिशा में जाने का मार्ग सरल है, (सच्चेव सच्चा सिंधुवत्तव्या जाव नवरं कुंभद्वसदस्स रयणचित्तं णाणामणिकणगरयणभत्तिचित्ताणि य दुवे कणगसीहासणाईं सेसं त चेव जाव महिमत्ति) वही पूर्वोक्त समस्त सिंधु प्रकरण में कहा गई वक्तव्यता अब यहां पर कह लेनी चाहिये, परन्तु

त्या पडोथीने तेमणे स्नान कथुं, अही स्नानविधिनु संपूर्ण रूपमा पणुं न करवुं नोईओ, पछी ते त्याथी लोअन भठपमां अथा त्या तेमणे पारणा कथां अही यावत् शब्दथी ओ कथन सगृहीत थयेओ छे के पछी तेमणे श्रेणी-प्रश्रेणी जनोने जेतोआथी अने आठ दिवस सुधी सतत भडामहोत्सव करवानी तेमने आज्ञा आपी तेमणे भरत महाराजानी आज्ञाथी नमि-विनमि विद्याधर राजाओ उपर विजय मेणओ ते विजयोपलक्ष्यमा आठ दिवस सुधी ठाठ साठथी महोत्सव कथी अने ते महोत्सव पूर्ण रूपे संपादित थयेओ छे ओनी सूअना राजाने आपी (तए ण से दिव्वे चक्करयणे आउधरसालाओ पडिणिकखमई) त्पार पड ते चक्ररत्न आयुधगृह शालाभाथी पहार नीकथुं, (जाव उत्तरपुरत्थिमं दिसिं गंगा देवी भवणाभिमुहे पयाए यावि होत्था) अने यावत् ते ईशान दिशा मा गंगा देवीना भवननी तरफ रवाना थयुं केमके वैताद्व्यथी गंगादेवीना भवन तरफ जनाराने ईशान दिशाभां जवु ओ पधारे सरल पडे छे, (सच्चेव सच्चा सिंधु वत्तव्या जाव नवरं कुंभद्वसदस्स रयणचित्तं णाणामणिकणगरयण भत्ति चित्ताणि य दुवे कणगसीहासणाईं सेसं त चेव

સર્વા સિન્ધુવક્તવ્યતા સિન્ધુદેવી વક્તવ્યતા ગદ્ગામિત્થાપેન વિજેયા इयं च वक्तव्यता अस्मि-
 न्नेव तृतीयवक्षस्कारे एकादशसूत्रे विशेषरूपेण द्रष्टव्या यावत्प्रोतिदानमिति गम्यम्.
 तात्पर्यः तं वाच्यं नवरम् अयं विशेषः-कुम्भाष्टसहस्रं कुम्भानाम् अष्टोत्तरसहस्रं अष्टोत्तरं
 सहस्रं कुम्भ रत्नचित्रं रत्नविचित्रम्, नानामणिकनकरत्नभक्तिचित्रे च-नानामणिकनक-
 रत्नमयी भक्तिः-विच्छित्तिः तथा चित्रे विचित्रे च द्वे कनकसिंहासने शेषं प्राभृतग्रङ्ग-
 सम्मानदानादिकं तथैव-पूर्ववदेव यावदष्टाहिका मशमहिमेति बोध्यम् ॥ सू. २५ ।

अथाग्रतो दिग्ग्यात्रामाह-‘तएणं से दिव्वे’ इत्यादि ।

मूलम्—तए णं से दिव्वे चक्करयणे गंगाए देवीए अट्टाहियाए
 महामहिमाए निव्वत्ताए समाणीए आउहधरसालाओ पडिणिक्खमइ पडि-
 णिक्खमित्ता जाव गंगाए महाणईए पच्चत्थिमिल्लेणं कूलेणं दाहिणदिसि
 खंडप्पवायगुहाभिमुहे पयाए यावि होत्था, त एणं से भरहे राया जाव
 जेणेव खंडप्पवायगुहा तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सव्वा कयमालक-
 वत्तव्वया णેયव્વા णवरि णट्टमालगे देवे पीतिदाणं से अलंकारिअ મુંડ
 કહગાણિ ય સેસં સવ્વં તદેવ જાવ અટ્ટાહિયા મહામહિમા । તए णं से भरहे

સિન્ધુ કે સ્થાન મેં ગદ્ગા પદ લગાકર અભિલાપ કરના યાહિયે યહ વક્તવ્યતા હસી પ્રન્થ મેં તૃતીય
 વક્ષસ્કાર કે ૧૧ વેં સૂત્ર મેં વિશેષરૂપ સે પ્રતિદાન પર્યન્ત કહી ગઈ હૈ—સો વહી પ્રતિદાન પર્યન્ત
 કી વક્તવ્યતા યહા પર મો સમજલેનો યાહિયે. હાં ઉસ વક્તવ્યતા સે જો હસ વક્તવ્યતા મેં અન્તર હૈ
 વહ એસા હૈ કિ ગંગા દેવી ને મરન નરેશ કે લિયે મેંટ મેં ૧૦૦૮ કુમ્ભ જો રત્નો સે વિચિત્ર હો
 રહે યે. દિયે તથા અનેક મણિયો સે એવં કનક તથા રત્નો સે જિનમેં રચના હો રહી હૈ એસે દો
 કનક સિંહાસન દિયે. વાકી કા ઓર મવ કથન પ્રામૃત કા સ્વીકાર કરના સમ્માન કરના આદિરૂપ
 જો હૈ વહ સવ આઠ દિન કે મહોત્સવ પર્યન્ત જૈમા પડિલે કહા ગયા હૈ વૈસા હો હૈ । ॥સૂ.૨૫॥

જાવ મહિમત્તિ) પૂર્વોક્ત સિન્ધુ પ્રકરણમા જે વક્તવ્યતા કહેવામા આવી છે તે અહીં કહેવી
 નેહીએ. પણ અહીં સિન્ધુના સ્થાને ગંગાપદ લગાડી ને અભિલાપ કરવો નેહીએ જે વક્ત-
 વ્યતા આ જ ગ્રન્થમા તૃતીય વક્ષસ્કારમા ૧૧ મા સૂત્રમાં વિશેષ રૂપ માથી પ્રીતિ દાન સુધી
 કહેવામાં આવી છે તે પ્રીતિદાન સુધીની વક્તવ્યતા અહીં પણ બાણી લેવી નેહીએ તે વક્ત-
 વ્યતા અને આ વક્તવ્યતામા અતર આ પ્રમાણે છે કે ગંગાદેવીએ ભરત નરેશ માટે લેટમા
 ૧૦૦૮ કુલો કે જેઓ રત્નોથી વિચિત્ર પ્રતીત થતા હતા, આબ્યા તેમજ અનેક માણીએ
 થી, કનક તથા રત્નોથી જેમનામાં રચના થઈ રહી છે, એવા જે કનક સિંહાસનો આબ્યા શેષ
 સર્વ કથન પ્રામૃત (લેટ) સ્વીકાર કરવી, સન્માન કરવું વગેરે છે તે સર્વ આઠ દિવસ મહો-
 ત્સવ સુધીનું કથન પહેલા પ્રકટ કરવામા આવ્યું છે અહીં પણ ને પ્રમાણે જ સમજી લેવું
 બેહીએ. ॥સૂત્ર૨૫॥

राया णट्टमालगस्स देवस्स अट्टाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए
सुसेणं सेणावइं सद्दावेइ सद्दावित्ता जाव सिंधुगमो णेयव्वो जाव गंगाए
महाणईए पुरत्थिमिल्लं णिक्खुडं सगंगासागरगिरिमेरागं समविसमणिक्खु-
डाणि य ओअवेइ ओअवित्ता अग्गाणि वराणि स्यणाणि पडिच्छइ
पडिच्छित्ता जेणेव गंगा महाणई तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता दोच्चंपि
सखंधावाखले गंगामहाणई विमलजलतुंगवीइं णावाभूएणं चम्मस्यणेणं
उत्तरइ उत्तरित्ता जेणेव भरहस्स रण्णो विजयखंधावारनिवेसे जेणेव
बाहिरिया उव्वट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता आभिसेक्काओ
हत्थिस्यणाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता अग्गाइं वराइं स्यणाइं गहाय जेणेव
भरहे राया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कस्यलपरिग्गहियं जाव अंजलिं
कट्टु भरहं रायं जएणं विजएणं वद्धावेइ वद्धावित्ता, अग्गाइ वराइं स्य-
णाइ उवणेइ । तए णं से भरहे राया सुसेणस्स सेणावइस्स अग्गाइं वराइं
स्यणाइं पडिच्छइं पडिच्छित्ता सुसेणं सेणावइं सक्कारेइ सम्माणेइ सक्का-
रित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ । तए णं से सुसेणे सेणावई भरहस्स
रण्णो सेसंपि तहेव जाव विहरइ, तए णं से भरहे राया अण्णया कयाइ
सुसेणं सेणावइस्यणं सद्दावेइं सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छणं भो देवाणु-
प्पिया । खंडगप्पवायगुहाए उत्तरिल्लस्स दुवारस्स कवाडे विहाडेइ विहा-
दित्ता जहा तिमिसगुहाए तहा भाणियव्वं जाव पियं मे भवउ, सेसं
तहेव जाव भरहो उत्तरिल्लेणं दुवारेणं अईइ, ससिन्व मेहंधयारनिवहं तहेव
पविसंतो मंडलाइं आलिहइ, तीसेणं खंडगप्पवायगुहाए बहुमज्झदेसभाए
जाव उम्मग्गणिमग्गजलोओ णामं दुवे महाणईओ तहेव नवरं पच्चत्थि-
मिल्लाओ कडगाओ पबूढाओ समाणीओ पुरत्थिमेणं गंगं महाणईं समप्पे-
ति सेसं तहेव णवरि पच्चत्थिमिल्लेण कूलेणं गंगाए संकमवत्तव्वया तहेव
त्ति, तएणं खंडगप्पवायगुहाए दाहिल्लस्स दुवारस्स कवाडा सयमेव मह-
या महया कांचाखं करेमाणा करेमाणा सरसर स्सगाइं ठाणाइं पच्चोसक्कि-

त्था, तएणं से भग्हे राया चक्ररयणदेसियमग्गे जाव खंडप्पवाय गुहाओ
दक्खिणिल्लेणं दारेणं णीणेइ ससिब्ब मेहंधयारनिवहाओ ॥सू० २६॥

छाया—ततः खलु तद्विव्यं चक्ररत्नं गङ्गाया देव्या अष्टाहिकायां महामहिमाया निवृत्ता-
यां सत्याम् आयुश्चगृहशालात प्रतिनिष्कामति प्रतिनिष्क्रम्य यावद् गङ्गायाः महानद्याः पश्चिमे
कूले दक्षिणदिशि खण्डप्रपातगुहाभिमुखं प्रयातं चाप्यभवत्, ततः खलु स भरतो राजा
यावत् यत्रैव खण्डप्रपातगुहा तत्रैव उपागच्छति उपागत्य सर्वा कृतमालवक्तव्यता नेतव्या
नवरं नात्यमालको नृत्तमालको वा देवः प्रीतिदानं तस्य अलाङ्कारिकभाण्डं कटकानि च
शेषं सर्वं तथैव यावत् अष्टाहिका महामहिमा । ततः खलु स भरतो राजा नात्यमालकस्य
नृत्तमालकस्य वा देवस्य अष्टाहिकाया महामहिमाया निवृत्तायां सत्या सुपेणं सेनापतिं
शब्दयति शब्दयित्वा यावत् सिन्धुगमो नेतव्यः, यावद् गङ्गाया महानद्या पौरुस्थं निष्कुटं
सगङ्गासागरगिरिमिश्राद समविषमनिष्कुटानि च प्रोधयेति साधयति साधयित्वा अग्न्याणि
वराणि रत्नानि प्रतीच्छति प्रतीप्य, यत्रैव गङ्गामहानदी तत्रैव उपागच्छति उपागत्य द्वितीय
मपि सस्कन्धावारबलं गङ्गामहानदी विनलजलतुङ्गवीचि नौभूतेन चर्मरत्नेन उत्तरति,
उत्तीर्य यत्रैव भरतस्य राज्ञो विजयस्कन्धाधारनिवेशो यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला तत्रैव
उपागच्छति उपागत्य अग्न्याणि वराणि रत्नानि गृहीत्वा यत्रैव भरतो राजा तत्रैव उपाग-
च्छति उपागत्य करतलपरिगृहीतं यावदब्जलिं कृत्वा भरत राजान जयेन विजयेन वर्द्धयति
वर्द्धयित्वा अग्न्याणि वराणि रत्नानि उपनयति, ततः खलु स भरतो राजा सुपेणस्य सेना-
पतेः अग्न्याणी वराणि रत्नानि प्रतीच्छति प्रतीप्य सुपेणं सेनापतिं सत्कारयति सन्मानयति
सत्कार्यं सन्मान्य प्रतिविसर्जयति, ततः खलु स सुपेणः सेनापतिः भरतस्य राज्ञः शेषमपि तथैव
यावत् विहरति, ततः खलु स भरतो राजा अन्यदा इदञ्चित् सुपेणं सेनापतिरत्नं शब्दयति
शब्दयित्वा पवम् अवादीत् गच्छ खलु भो देवानुप्रियः खण्डप्रपातगुहायाः औत्तराहस्य
द्वारस्य कपाटीं विधाट्य विधाट्य यथा तमिखगुहाया तथा भणितव्यं यावत् प्रियं
भवतां भवतु शेषं तथैव यावत् भरत औत्तराहेण द्वारेण गच्छति, शशीव मेघान्धकार-
निवहम् तथैव प्रविशन् मण्डलानि आलिखति तस्या खलु खण्डप्रपातगुहाया बहुमध्यदेशभागे
यावत् उन्मग्ननिमग्नजले नाम्भ्यौ द्वे महानद्यौ तथैव नवरं पाश्चात्यात् कटकात् प्रव्यूहे,
पौरुस्थेन गङ्गां महानदीं समाप्नुत, शेषं तथैव नवरं पाश्चात्येन कूलेन गङ्गाया संक्रम-
वक्तव्यता तथैव इति ततः खलु खण्डप्रपातगुहायाः दक्षिणात्यस्य द्वारस्य कपाटीं स्वयमेव
महता महता क्रौवारवं कुर्वाणौ 'सरसरस्स' अनुकरणशब्दं कुर्वाणौ स्वके स्थाने प्रत्यवाष्-
वकिषाताम्, ततः खलु स भरतो राजा चक्ररत्नदेशिमागो यावत् खण्डप्रपातगुहातो दक्षि-
णात्येन द्वारेण निरेति शशीव मेघान्धकारनिवहात् ॥सू २६॥

टीका "तएणं से दिब्बे" इत्यादि !

'तएण से दिब्बे चक्ररयणे गंगाए देवीए अष्टाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए
समाणीए आउहगरसालाओ पडिणिक्खमइ' ततः खलु गङ्गादेवी साधनानन्तरं खलु तद्विव्यं

ચક્રરત્ન ગજાયાઃ તન્નામ્ન્યાઃ દેવ્યાઃ અષ્ટાદિકાયાં મહામહિમાયમ્ ઉત્સવરૂપાયાં મહાન્ મહિમા અસ્તિ યસ્યાં સા તથા તસ્યાં નિવૃત્તાયાં સત્યામ્ આયુષ્ઘગૃહશાળાતઃ- શસ્ત્રાગારમ્બનતઃ પ્રતિનિષ્ક્રમાન્તિ ચક્રરત્નં નિર્ગચ્છતિ 'પદિણિક્લમિત્તા' પ્રતિનિષ્ક્રમ્ય નિર્ગત્ય 'જાવ ગંગાપ મહાણર્ષેપ પચ્ચત્થિમિલ્લેણ કૂલેણ દાહિગદિસિ સ્વંડપ્પવાયગુહામિ- મુદ્ધે પયાપ યાવિ હોત્થા' યાવત્ ગજાયાઃ મહાનદ્યાઃ પાશ્ચાત્યે પશ્ચિમે કૂલે દક્ષિણ- દિશિ સ્વંડપ્રપાતગુહામિમુલ્લં પ્રયાત પ્રસ્થાતું ચાપ્યમવત્ આસીત્ અત્ર યાવત્ અન્તરિક્ષ- પ્રતિપન્નં યક્ષસહસ્રસંપરિવૃત્ત દિવ્યચુરિતવાદ્યવિશેષશબ્દસન્નિનાદેન આપૂરયદિવ અમ્બગતલં ચક્રરત્નમિતિ ગ્રાહ્યમ્ 'તપ્પણં' સે મરહે રાયા જાવ જેણેવ સ્વંડપ્પવાયગુહા તેણેવ ઉવાગચ્છઈ' તતઃ સ્વલ્લ સ મરતો નામ મહારાજા યાવત્ અત્ર યાવત્પદાત્ ચક્રરત્ન પશ્યતિ દૃષ્ટ્વા દૃષ્ટતુષ્ટચિત્તાનન્દિતઃ, નન્દિત પ્રીતિમનાઃ પરમસૌમનસ્યિતઃ હર્ષવશવિમર્ષદ્ હૃદય ઇતિ, દ્વાદશસૂત્રે અસ્મિન્નેવ તૃતીયવક્ષસ્કારે ઇયં વક્તવ્યતા દ્રષ્ટવ્યા સર્વં તાવદ્ વાચ્યમ્

'તપ્પણં સે દિવ્વે ચક્કરયણે ગંગાપ દેવીપ અટ્ટાહિયાપ' " ઇત્યાદિ ૨૬॥

ટીકાર્થ- 'તપ્પણં સે દિવ્વે ચક્કરયણે ગંગાપ દેવીપ અટ્ટાહિયાપ મહામહિમાપ નિવૃત્તાપ સમાણીપ) જબ ગંગા દેવી કે વિજયોપલક્ષ્ય મેં ક્રિયા ગયા આઠ દિન કા મહોત્સવ સમાપ્ત હો ચુકા તબ વહ દિવ્ય ચક્રરત્ન 'આઠહરમાલ'ઓ' આયુષ્ઘગૃહ શાળા સે (પદિણિક્લમમ્) નિકલા ઔર (પદિ- ણિક્લમિત્તા જાવ ગંગાપ મહાણર્ષેપ પચ્ચત્થિમિલ્લેણ કૂલેણ દાહિગદિસિ સ્વંડપ્પવાયગુહામિમુદ્ધે પયાપ યાવિ હોત્થા) મિલકર વહ યાવત્ ગંગા મહાનદીકે પશ્ચિમ કૂલ સે હોતા હુઆ દક્ષિણ દિશા મેં સ્વંડપ્રપાત ગુહા કી તરફ ચલને લગા યહા યાવત્ શબ્દસે અન્તરિક્ષ પ્રતિપન્ન યક્ષ સહસ્ર પરિ- વૃત્ત આદિપાઠ ગૃહીત્ હુઆ હૈ. (તપ્પણં સે મરહે રાયા જાવ જેણેવ સ્વંડપ્પવાયગુહા તેણેવ ઉવાગચ્છઈ) જબમરત મહારાજા ને ચક્રરત્ન કો સ્વંડપ્રપાત ગુહા કી ઔર જાતે દેસા તો યાવત્ વહ મી જહા સ્વંડપ્રપાત નામ કો ગુફા થી. ઉસો ઔર પહુચા. યહાં યાવત્પાઠ સે "પશ્યતિ દૃષ્ટ્વા દૃષ્ટ તુષ્ટ ચિત્તાનન્દિત પ્રીતિમના પરમસૌમનસ્યિત હર્ષવશવિસર્પદ્ હૃદય " યહ પાઠ તૃતીય વક્ષસ્કાર મેં

'તપ્પણં સે દિવ્વે ચક્કરયણે ગંગાપ દેવીપ અટ્ટાહિયાપ' " ઇત્યાદિ-સૂત્ર, ૨૬॥

ટીકાર્થ-(તપ્પણં સે દિવ્વે ચક્કરયણે ગંગાપ દેવીપ અટ્ટાહિયાપ મહામહિમાપ નિવૃત્તાપ સમાણીપ) અથારે ગંગાદેવીના વિજયોપલક્ષ્યમા આયોજિત આઠ દિવસ નો મહોત્સવ સમાપ્ત થઈ ચૂક્યો. ત્યારે તે દિવ્ય ચક્રરત્ન 'આઠહરમાલ'ઓ આયુષ્ઘરશાળા માંથી (પદિણિક્લમમ્) બહાર નીકળ્યું અને (પદિણિક્લમિત્તા જાવ ગંગા મહાણર્ષેપ પચ્ચત્થિમિલ્લેણ કૂલેણ દાહિગદિસિ સ્વંડપ્પવાયગુહામિમુલ્લે પયાપ યાવિ હોત્થા) નીકળીને તે યાવત્ ગંગા મહાનદીના પશ્ચિમ કૂલ પર થઈ ને દક્ષિણ દિશામા ખડ પ્રપાત ગુહા તરફ ચાલવા લાગ્યું. અહીં યાવત્ શબ્દથી અન્તરિક્ષ પ્રતિપન્ન યક્ષ સહસ્ર પરિવૃત્ત વગેરે પાઠ ગૃહીત થયેલ છે (તપ્પણં સે મરહે રાયા જાવ જેણેવ સ્વંડપ્પવાયગુહા તેણેવ ઉવાગચ્છઈ) અથારે ભરત રાજાએ ચક્રરત્નને ખડ પ્રપાત ગુહા તરફ જતું જોયું તો તે પશ્ય અથા ખડ પ્રપાત નામક શુદ્ધ હેતી તે તરફ પડેાગો. અહીં યાવત્ પાઠથી "પશ્યતિ દૃષ્ટ્વા દૃષ્ટતુષ્ટચિત્તાનન્દિત પ્રીતિમનાઃ પરમસૌમનસ્યિત હર્ષવશવિસર્પદ્ હૃદયઃ" એ પાઠ તૃતીય વક્ષસ્કારમા જેમ કહેવામાં

યાવત્ સ્વપ્નપ્રપાતગુહાયા માગચ્છતીતિ પિન્હાર્યઃ, તતઃ યત્રૈવ સ્વપ્નપ્રપાતગુહા તત્રૈવ
 ઉપાગચ્છતિ 'ઉવાગચ્છિત્તા' ઉપાગત્ય 'સન્વા કયમાલકવત્તન્વયા ણેયન્વા' સર્વા કૃત-
 માલકવત્તવ્યતા તમિસ્સાગુદાધિપસુરવત્તવ્યતા નેતવ્યા જ્ઞાતવ્યા 'ળવરં ણટ્ટમાલગે દેવે
 પીઠ્ઠાણ સેઆલંકારિયમંઢ કઢગાણિ ય સેસં સન્વં તહેવ જાવ અટ્ટાહિયમહામહિમા'
 નવામ્ અયં વિશેષઃ નાટચમાલકો દેવઃ પ્રીતિદાનં 'સે' તસ્ય અલંકારિકમાળકમ્ આમ-
 રણમ્રતમાજનમ્, કટકાનિ ચ શેષમ્ ઉક્તવિશેષાતિરિક્ત મર્વમ્ તથૈવ પૂર્વવદેવ સત્કાર-
 સન્માનાદિકં કૃતમાલકવત્તાવદ્ વત્તવ્યમ્ યાદદટ્ટાહિકા મહામહિમેતિ 'તણ્ણં સે મરહે
 રાયા ણટ્ટમાલગસ્સ દેવસ્સ અટ્ટાહિયાપ મહિમાપ ણિવ્વત્તાપ સમાણીપ સુસેણં સેનાવૈં
 સદાવેઈ' તતઃ સ્વલ્લુ સ મરતો રાજા નાટ્યમાલકસ્ય દેવસ્ય અટ્ટાહિકાયાં મહામહિમાયાં
 નિવૃત્તાયાં પરિપૂર્ણાયાં સત્ત્યા સુપેણં સેનાપતિં શબ્દયતિ આહ્વયતિ 'સદાવિત્તા' શબ્દ-

જેસા કહા ગયા હૈ વૈસા હી યહા પર સમૂહીત હુમા હૈ (ઉવાગચ્છિત્તા સન્વા કયમાલકવત્તવ્યયા
 ણેયન્વા ણવરિ ણટ્ટમાલગે દેવે પીઠ્ઠાણં સે આલંકારિયમંઢ કઢગાણિ ય સેસં સન્વં તહેવ અટ્ટાહિયા
 મહા મહિમા) વહા પહુંચકર ઉસને જો કાર્ય વડા પર ક્રિયા વડ કૃતમાલક દેવ કો વત્તવ્યતા મેં જેસા
 કહા ગયા હૈ વૈસા હી યહાપર જાનના ચાહિયે. કૃતમાલક દેવ તમિસ્સા ગુહા કા અધિપતિ દેવ હૈ.
 ઉસ વત્તવ્યતા મેં ઓર હસ વત્તવ્યતા મેં યદિકોઈ અન્તર હૈ તો વહ એસા હૈ કિ નાટચમાલક દેવને
 મરતકે હિયે પ્રોતિદાન મેં આમરણો સે મરા હુઆ માજન ઓર કટકદિયે હસસે અતિરિક્ત ઓર સબ
 અવશિષ્ટ કથન સત્કારસન્માન આદિ કરને કા કૃતમાલક દેવ કી તરહ સે હી આઠદિન તક મહા-
 મહોત્સવ કરને તક કા હૈ (તણ્ણં સે મરહેરાયા ણટ્ટમાલગસ્સ દેવસ્સ અટ્ટાહિયાપ મહિમાપ
 ણિવ્વત્તાપ સમાણીપ સુસેણં સેનાવૈં સદાવેઈ) જબ નાટચ માલક દેવ કે વિજયોપલક્ષ્ય મેં કૃત
 આઠ દિન કા મહોત્સવ સમાપ્ત હો ચુકા-તવ મરત મહારાજા ને અપને સુપેણ સેનાપતિ કો બુલાયા
 (સદાવિત્તા જાવ સિધુગમો ણેયન્વો) બુઝાકર ઉસને જો ઉસસે કહા વહ સબ સિંધુનદી કે પ્રકરણ

આવેલ છે, તે પ્રમાણે અત્રે પણ સમૂહીત થયે છે (ઉવાગચ્છિત્તા સન્વા કયમાલકવ-
 ત્તવ્યયા ણેયન્વા ણવરિ ણટ્ટમાલગે દેવે પીઠ્ઠાણ સે અલંકારિયમંઢ કઢગાણિય સેસં સન્વ
 તહેવ અટ્ટાહિયા મહામહિમા) ત્યા પડેલી ને તેણે જે કાર્ય ત્યા ક્યાં તે વિષે કૃતમાલક
 દેવની વત્તવ્યતાનાં જેમ પણ વપામા આવેલ છે તેમ અહીં પણ બાણી દેવે જેમણે
 કૃતમાલક દેવ તમિસ્સા ગુહાનો અધિપતિ દેવ છે તે વત્તવ્યતામાં અને આ વત્તવ્યતામાં
 તક્ષવત આટલો જ છે કે નાટચમાલક દેવે ભરત મહારાજા માટે પ્રીતિદાનમાં આભરણો થી
 પૂરિત ભાજન અને કટકો આપ્યા એના સિવાયજુ શેષ બધું કથન સત્કાર, સન્માન વગેરે
 કરવા અગેનું કૃતમાલક દેવની જેમ જ આઠ દિવસ સુધી મહામહોત્સવ કરવા સુધીનું છે
 (તણ્ણં સે મરહે રાયા ણટ્ટમાલગસ્સ દેવસ્સ અટ્ટાહિયાપ મહિમાપ ણિવ્વત્તાપ સમાણીપ સુસેણં
 સેનાવૈં સદાવેઈ) જનારે નાટ્ય માલક દેવના વિજયોપલક્ષ્યમાં આવેલિત આઠ દિવસ સુધીનો
 મહોત્સવ સંપૂર્ણ થઈ ચૂક્યો ત્યારે ભરત રાજાએ પોતાના સુપેણ નામક સેનાપતિ ને બોલા
 વ્યો. (સદાવિત્તા જાવ સિંધુગમો ણેયન્વો) બોલાવી ને તેણે જે કંઈ તે સેનાપતિ ને કહ્યું તે

यित्या आह्वय 'जाव सिंधुगमो जेयव्यो' यावत् परिपूर्णः सिन्धुगमः नेतव्यः ज्ञातव्यः
'एवं वयासी गच्छाहिणं भो देवाणुप्पिया । सिंधुए' इत्यादिकः सिन्धुनदी निष्कुट-
साधनपाठो गङ्गाभिलापेन नेतव्यः ग्रहीतव्यः अस्मिन्नेव वक्षस्कारे त्रयोदशसूत्रे सिन्धु
नदी निष्कुटसाधनपाठो द्रष्टव्यः 'जाव गंगाए महाणईए पुरत्थिमिल्लं णिकखुड
सगंगासागरगिरिमेरागं समविसमणिकखुडाणि य ओअवेइ' यावत् गङ्गाया महानद्याः
पौरस्त्यं पूर्वदिग्वर्त्ति निष्कुटं कोणस्थितभरतक्षेत्रखण्डरूपम् इदं च कैर्विभाजकैः
विभक्तमित्याह सगंगामागरगिरिमर्यादम्, तत्र पश्चिमतः गङ्गाः पूर्वतः सागरः दक्षिणतः
गिरिः वैताड्यगिरिः उत्तरतश्च क्षुद्रहिमवद् गिरिः एतैः कृता या मर्यादा विभागरूपाः
तया सह वर्तते यत्तत्तथा, एतैः कृतविभागमित्यर्थः 'समविसमणिकखुडाणि य' समविषम-
निष्कुटानि च, तत्र समानि च समभूमिभागवर्त्तीनि विषामाणि च दुर्गभूमिभागवर्त्तीनि
यानि निष्कुटानि अवान्तरक्षेत्रखण्डरूपाणि तानि तथा 'ओअवेइ'साधय तत्र प्रयाणं कृत्वा
विजयं कुरु 'ओअवेत्ता' साधित्वा विजित्य 'अग्गाणि वराणि रयणाणि पडिच्छेहि'
अग्न्याणि अग्नेगण्याणि वराणि श्रेष्ठानि रत्नानि स्वस्वजातौ वत्कृष्टवस्तूनि प्रतीच्छ गृहाण
'तए ण से सेणावई जेणेव गंगामहाणई तेणेव उवागच्छई' ततः खलु स सेनापतिः सुषेण
नामकः यत्रैव गङ्गा महानदी तत्रैव उपागच्छति उवागच्छित्ता'उपागत्य'दोच्चंपि सख्खधा-

में जैसा कहा गया है वैसा ही जानना चाहिये. परन्तु यहा वह प्रकरण सिंधु नदी के स्थान
में गङ्गा शब्द को जोड़कर कहा जावेगा-जैसे "गच्छाहि ण भो देवाणुप्पिया ।" हे देवानुप्रिय ।
सुषेण ! तुम जाओ और गंगामहानदीके 'पुरत्थिमिल्ल णिकखुड सगंगासागरगिरिमेरागं सम-
विसमणिकखुडाणि य ओअवेइ " । पूर्वदिग्वर्त्ती निष्कुट-भरत क्षेत्र को-जो कि पश्चिम में
गङ्गासे पूर्व में समुद्र से दक्षिण में वैताड्यगिरि से और उत्तर में क्षुद्र हिमवत्पर्वत से विभक्त
हुआ है उसे साधो और उसके सम विषमरूप जो अवान्तर क्षेत्र खंड है. उन्हें साधो अपने
वश में करो और उन्हें वश में करके वहां से प्राप्त अपनी अपनी जाति में उत्कृष्ट वस्तुओं को
प्रीतिदान में प्राप्त करो (तए ण से सेणावई जेणेव गंगा महाणई तेणेव उवागच्छई) इस तरह से
भरत राजा द्वारा कहा गया वह सुषेण सेनापति जहां गंगा महानदी थी वहां पर गया (उवा-

अधु सिंधु नदीना प्रकरणभां जेम छडेवाभा आंधु छे तेवुं ज अत्रे पधु समजपु पधु
अडी सिन्धु नदीना स्थाने गंगा शब्द जोडवे पडसे जेम छे-"गच्छाहि ण भो देवाणुप्पिया ।"
हे देवानुप्रिय । सुषेण तमे जाओ आने गंगा महानदीना (पुरत्थिमिल्ल णिकखुड सगंगा-
सागरगिरिमेरागं समविसमणिकखुडाणिय ओअवेइ) पूर्व दिग्वर्त्ती निष्कुट-भरत क्षेत्रने छे
जे पश्चिमभा गंगामहानदीथी पूर्वभा समुद्रथी, दक्षिणभां वैत द्र्य गिरिथी आने उत्तरभा क्षुद्र
हिमवत् पर्वतथी विभक्त थयेछ छे तेने साधो आने तेना सम-विषम रूप जे अवान्तर क्षेत्र-
अड छे, तेभने साधो, पोताना वशभां करे आने तेभने वशभा करीने त्याथी प्राप्त पोत-
पोतानी अतिभा उत्कृष्ट छेथ तेवी वस्तुज्योने प्रीतिदानभा प्राप्त करे । (तएणं से सेणावई
जेणेव गंगा महाणईते जेव उवागच्छई) आ प्रभाषे भरत राजा वडे आसम थयेछे ते सुषेण

યાવત્ સ્વર્ણપ્રપાતગુહાયા માગચ્છતીતિ પિણ્ડાર્થઃ, તતઃ યત્રૈવ સ્વર્ણપ્રપાતગુહા તત્રૈવ
 ઉપાગચ્છતિ 'ઉવાગચ્છિત્તા' ઉપાગત્ય 'સન્વા કયમાલકવત્તવ્વયા ણેયવ્વા' સર્વા કૃત-
 માલકવત્તવ્યતા તમિસ્સાગુહાધિપસુરવત્તવ્યતા નેતવ્યા જ્ઞાતવ્યા 'ણવરં ણટ્ટમાલગે દેવે
 પીહ્દાણ સેઆલકારિયમંડ કહગાણિ ય સેસં સન્વં તહેવ જાવ અટ્ટાહિયમહામહિમા'
 નવામ્ અયં વિશેષઃ નાટ્યમાલકો દેવઃ પ્રીતિદાનં 'સે' તસ્ય અલંકારિકમાળકમ્ આમ-
 રણઘ્રતમાજનમ્, કટકાનિ ચ શેષમ્ ઉક્તવિશેષાતિરિક્ત મર્થમ્ તથૈવ પૂર્વવદેવ સત્કાર-
 સન્માનાદિકં કૃતમાલકદેવતાવદ્ વત્તવ્યમ્ યાદટ્ટાહિકા મહામહિમેતિ 'તણં સે મરહે
 રાયા ણટ્ટમાલગસ્સ દેવસ્સ અટ્ટાહિયાણ મહિમાણ ણિવ્વત્તાણ સમાણીણ સુસેણં સેણાવંઈ
 સદાવેઈ' તતઃ સ્વલ્લુ સ મરતો રાજા નાદ્યમાલકસ્ય દેવસ્ય અટ્ટાહિકાયાં મહામહિમાયાં
 નિવૃત્તાયાં પરિપૂર્ણાયાં સત્યા સુપેણં સેનાપતિં શબ્દયતિ આહ્વયતિ 'સદાવિત્તા' શબ્દ-

જેસા કહા ગયા હૈ વૈસા હો યહા પર સગૃહીત હુમા હૈ (ઉવાગચ્છિત્તા સન્વા કયમાલગવત્તવ્યયા
 ણેયવ્વા ણવરિ ણટ્ટમાલગે દેવે પીહ્દાણં સે આલંકારિયમંડ કહગાણિ ય સેસ સન્વં તહેવ અટ્ટાહિયા
 મહા મહિમા)વહા પહુંચકર ડસને જો કાર્ય વડા પર ક્રિયા વડ કૃતમાલક દેવ કો વત્તવ્યતા મેં જૈસા
 કહા ગયા હૈ વૈસા હો યહાપર જાનના ચાહિયે. કૃતમાલક દેવ તમિસ્સા ગુહા કા અધિપતિ દેવ હૈ.
 ડસ વત્તવ્યતા મે ઓરહસ વત્તવ્યતા મેં યદિકોઈ અન્તર હૈ તો વહ એસા હૈ કિ નાટ્યમાલક દેવને
 મરતકે હિયે પ્રીતિદાન મેં આમરણો સે મરા હુઆ માજન ઓર કટકદિયે હસસે અતિરિક્ત ઓર સબ
 અવશિષ્ટ કથન સત્કારસન્માન આદિ કરને કા કૃતમાલક દેવ કી તરહ સે હી આઠદિન તક મહા-
 મહોત્સવ કરને તક કા હૈ. (તણ સે મરહેરાયા ણટ્ટમાલગસ્સ દેવસ્સ અટ્ટાહિયાણ મહિમાણ
 ણિવ્વત્તાણ સમાણીણ સુસેણ સેણાવંઈ સદાવેઈ) જબ નાટ્ય માલક દેવ કે વિજયોપલક્ષ્ય મેં કૃત
 આઠ દિન કા મહોત્સવ સમાપ્ત હો જુકા-તવ મરત મહારાજા ને અપને સુપેણ સેનાપતિ કો બુલાયા
 (સદાવિત્તા જાવ સિધુગમો ણેયવ્વો) બુઝકર ડસને જો ડસસે કહા વહ સબ સિધુનદી કે પ્રકરણ

આવેલ છે, તે પ્રમાણે અત્રે પણ સમૂહીત થયો છે (ઉવાગચ્છિત્તા સન્વા કયમાલગવ-
 ત્તવ્વયા ણેયવ્વા ણવરિ ણટ્ટમાલગે દેવે પીહ્દાણ સે અલંકારિયમંડ કહગાણિય સેસં સન્વ
 તહેવ અટ્ટાહિયા મહામહિમા) ત્યા પહોચી ને તેણે જે કાર્યો ત્યા કયા તે વિષે કૃતમાલક
 દેવની વત્તવ્યતામાં જેમ વર્ણવવામાં આવેલ છે તેમ અહીં પણ બાણી દેવે જેમ
 કૃતમાલક દેવ તમિસ્સા ગુહાનો અધિપાત દેવ છે તે વત્તવ્યતામાં અને આ વત્તવ્યતામાં
 તક્ષવત આટલો જ છે કે નાટ્યમાલક દેવે ભરત મહારાજા માટે પ્રીતિદાનમાં આભરણો થી
 રત ભાજન અને કટકો આપ્યા એના સિવાયજુ શેષ બધું કથન સત્કાર, સન્માન વગેરે

કૃતમાલક દેવની જેમ જ આઠ દિવસ સુધી મહામહોત્સવ કરવા સુધીનું છે
 ણટ્ટમાલગસ્સ દેવસ્સ અટ્ટાહિયાણ મહિમાણ ણિવ્વત્તાણ સમાણીણ સુસેણં
 નારે ન દ્ય માલક દેવના વિજયોપલક્ષ્યમાં આયોજિત આઠ દિવસ સુધીનો
 ઈ ચૂક્યો ત્યારે ભરત મહારાજાએ પોતાના સુપેણ નામક સેનાપતિ ને બોલા
 સિધુગમો ણેયવ્વો) બોલાવી ને તેણે જે કઈ તે સેનાપતિ ને તે

यित्वा ब्राह्म 'जात्र सिंधुगमो जेयव्यो' यावत् परिपूर्णः सिन्धुगमः नेतव्यः ज्ञातव्यः
'एवं वयासी गच्छाहिणं भो देवाणुप्पिया ! सिंधुए' इत्यादिरुः सिन्धुनदी निष्कुट-
साधनपाठो गङ्गाभिलापेन नेतव्यः ग्रहीतव्यः अस्मिन्नेव वक्षस्कारे त्रयोदशखुत्रे सिन्धु
नदी निष्कुटसाधनपाठो द्रष्टव्यः 'जात्र गंगाए महाणईए पुरत्थिमिल्ल णिक्खुड
सगंगासागरगिरिमेरागं समविसमणिकखुडाणि य ओअवेड' यावत् गङ्गाया महानद्याः
पौरस्त्यं पूर्वदिग्वर्त्ति निष्कुटं कोणस्थितभरतक्षेत्रखण्डरूपम् उदं च कैर्विभाजकैः
विभक्तमित्याह सगंगामागरगिरिमर्यादम्, तत्र पश्चिमतः गङ्गाः पूर्वतः मागरः दक्षिणतः
गिरिः वैताव्यगिरिः उत्तरतश्च क्षुद्रहिमवद् गिरिः एतैः कृता या मर्यादा विभागरूपाः
तथा सह वर्तते यत्तत्तथा, एतैः कृतविभागमित्यर्थः 'समविसमणिकखुडाणि य' समविषम-
निष्कुटानि च, तत्र समानि च समभूमिभागवर्त्तीनि विषामाणि च दुर्गभूमिभागवर्त्तीनि
यानि निष्कुटानि अवान्तरक्षेत्रखण्डरूपाणि तानि तथा 'ओअवेहि'माध्व तत्र प्रयाणं कृत्वा
विजयं कुरु 'ओअवेत्ता' साधित्वा विजित्य 'अग्गाणि वराणि रयणाणि पडिच्छेहि'
अत्रयाणि अग्नेगण्याणि वराणि श्रेष्ठानि रत्नानि स्वस्वजातौ उत्कृष्टवस्तूनि प्रतीच्छ गृह्णाण
'तए ण से सेणावई जेणेव गंगामहाणई तेणेव उवागच्छई' ततः खलु स सेनापतिः सुषेण
नामकः यत्रैव गङ्गा महानदी तत्रैव उपागच्छति उवागच्छित्ता'उपागत्य'दोच्चंपि सखधा-

में जैसा कहा गया है वैसा ही जानना चाहिये. परन्तु यहा वह प्रकरण सिन्धु नदी के स्थान
में गङ्गा शब्द को जोड़कर कहा जावेगा-जैसे "गच्छाहि ण भी देवाणुप्पिया !" हे देवानुप्रिय !
सुषेण ! तुम जाओ और गंगामहानदीके 'पुरत्थिमिल्ल णिक्खुड सगंगासागरगिरिमेरागं सम-
विसमणिकखुडाणि य ओअवेहि " । पूर्वदिग्वर्ती निष्कुट-भरत क्षेत्र को-जो कि पश्चिम में
गङ्गासे पूर्व में समुद्र से दक्षिण में वैताव्यगिरि से और उत्तर में क्षुद्र हिमवत्पर्वत से विभक्त
हुआ है उसे साधो और उसके सम विषमरूप जो अवान्तर क्षेत्र खंड है. नन्हे साधो अपने
वश में करो और उन्हें वश में करके वहां से प्राप्त अपनी अपनी जाति में उत्कृष्ट वस्तुओं को
प्रीतिदान में प्राप्त करो (तए ण से सेणावई जेणेव गंगा महाणई तेणेव उवागच्छई) इस तरह से
भरत राजा द्वारा कहा गया वह सुषेण सेनापति जहां गंगा महानदी थी वहां पर गया (उवा-

अधु सिंधु नदीना प्रकरणुमां जेम ठडेवाभां आंधु छे तेवुं ज अत्रे पणु समजणु पणु
अही सिन्धु नदीना स्थाने गंगा शब्द जोडवे पडथे जेम ठे-"गच्छाहि ण भी देवाणुप्पिया !" हे देवानुप्रिय !
सुषेण तमे जाओ अने गंगा महानदीना (पुरत्थिमिल्ल णिक्खुड सगंगा
सागरगिरिमेरागं समविसमणिकखुडाणिय ओअवेहि) पूर्व दिग्वर्ती निष्कुट-भरत क्षेत्रने ठे
जे पश्चिमभा गंगामहानदीथी पूर्वभा समुद्रथी, दक्षिणभा वैत द्वा गिरिथी अने उत्तरभा क्षुद्र
हिमवत् पर्वतथी विभक्त थयेछ छे तेने साधो अने तेना सम-विषम रूप जे अवान्तर क्षेत्र-
अठ छे, तेभने साधो, पैताना वशमा करे अने तेभने वशमा करीने त्याही प्राप्त पैत-
पैतानी जातिमा उत्कृष्ट डोय तेवी वस्तुज्जेने प्रीतिदानमा प्राप्त करे. (तएणं से सेणावई
जेणेव गंगा महाणईते जेव उवागच्छई) आ प्रमाणे भरत राजा वडे आशंस थयेदी. ते सुषेण

वारबले गंगामहान् ई विमलजलतुंगवीडं णावाभूएणं चम्मरयणेणं उत्तरइ' सस्कन्धावारबलः स्कन्धावारसैन्यसहितः सेनापतिः सुषेणः सेनापतिः द्वितीयमपि गङ्गायाः महानद्याः विमलजलतुङ्गवीचिम् निर्मळोदकोत्थितकल्लोलम् अतिक्रम्य नौभूतेन चर्मरत्नेन उत्तरति पारं गच्छति 'उत्तरित्ता' उत्तीर्य पारं गत्वा 'जेणेव भरहस्म रण्णो विजयखंधावारणिवेसे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ' यत्रैव भरतस्य राज्ञो विजयस्कन्धावारनिवेशः यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला तत्रैव उपागच्छति 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुइ' आभिषेकपात् अभिषेकयोग्यात् प्रधाना हस्तिरत्नात् प्रत्यवरोहति अधस्तात् अवतरति 'पच्चोरुहित्ता' प्रत्यवरुह्य 'अग्गाइ वराइ' रयणाइ गहाय जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छइ' अट्ठाणि वराणि श्रेष्ठानि रत्नानि गृहीत्वा यत्रैव भरतो राजा तत्रैव उपागच्छति 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'करयलपरिगहिय जाव अंजलिं कट्ठु भरहं राय जएण विजएणं वट्ठावेइ' करतलरिगृहीतं यावत्पदात् दशनखं शिरसावर्त्तं मस्तके अञ्जलिं कृत्वा भरतं राजानं जयेन विजयेन जय-

गच्छित्ता दोच्चपि सखंधावारबले गंगा महान् ई विमलजलतुंगवीडं णावा भूएणं चम्मरयणेणं उत्तरइ) वहा जाकर उसने अपने स्कन्धावाररूप बलसहित होकर जिसमें विमल जल की बड़ी २ लहरे उठ रही है ऐसी उस गंगामहानदी को नौका भूत हुए चर्मरत्न के द्वारा पारकिया (उत्तरित्ता जेणेव भरहस्म रण्णो विजयखंधावारणिवेसे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणमाला तेणेव उवागच्छइ) पार करके फिर वह जहां पर भरत महागजा का विजयस्कन्धावार का पडाव था. और जहां पर बाह्य उपस्थानशाला थी वहा पर आया (उवागच्छित्ता अभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुइ) वहां आकर वह अभिषेक्य-आभिषेक योग्य-प्रधान-हस्तिरत्न से नीचे, उतरा (पच्चोरुहित्ता अग्गाइ वराइ' रयणाणि गहाय जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छइ) नीचे उतर कर वह श्रेष्ठ रत्नो को लेकर जहा भरत राजा थे वहां पर आया, (उवागच्छित्ता करयलपरिगहिय जाव अंजलिं कट्ठु भरहं रायं जएण विजएणं वट्ठावेइ) वहा आकर के उसने दोनो हाथों को जोड़कर और

सेनापति तथा गंगा महानदी डूनी तथा गये। (उवागच्छित्ता दोच्चपि सखंधावारबले गंगा महान् ई विमलजलतुंगवीडं णावाभूएणं चम्मरयणेणं उत्तरइ) तथा जेने तेणे पोताना स्कंधावार इय बलसहित सुप्रभं यधने-जेभा विमल जलानी विद्याण तर गो लहेराइ रही छे जेथी ते गंगा महानदीने नौकाभूत थयेला ते यमरत्न वडे पार करी (उत्तरित्ता जेणेव भरहस्म रण्णो विजयखंधावारणिवेसे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ) पार करीने पत्ती ते तथा भरत राजानो विजय स्कंधावार-पडाव-इतो अने तथा बाह्य उपस्थान शाला डूनी तथा आये। (उवागच्छित्ता अभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुइ) तथा आवीने ते आभिषेक्य-अभिषेक योग्य-प्रधान हस्तिरत्न उपरथी नीचे उतरा (पच्चोरुहित्ता अग्गाइ वराइ रयणाणि गहाय जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छइ) नीचे उतराईने ते श्रेष्ठ रत्नोने लई ने तथा भरत महाराज इतो तथा आये। (उवागच्छित्ता करयलपरिगहियं जाव अंजलिं कट्ठु भरहं रायं जएण विजएणं वट्ठावेइ) तथा आवीने तेणे

विजयशब्दाभ्यां वर्द्धयति 'वद्धावित्ता' वर्द्धयित्वा स सेनापतिः 'अग्गाइ वराइं रयणाइं उवणेइ' अग्र्याणि वराणि रत्नानि उपनयति अर्पयति राज्ञः समीपम् आनयति इत्यर्थः 'तए णं से भरहे राया सुसेणस्स सेणावइस्स अग्गाइ वराइं रयणाइं पडिच्छइ' ततः आनयनानन्तरं खलु स भरतो राजा सुषेणस्य सेनापतेः अग्र्याणि वराणि रत्नानि प्रतीच्छति गृह्णाति 'पडिच्छित्ता' प्रतीक्य गृहीत्वा 'सुसेणं सेणावइं सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ' स भरतो राजा सुषेणं सेनापतिं सत्कारयति वस्त्रालङ्कारादि पुरस्कारैः सन्मानयति मधुरवचनादिभिः, सत्कार्यं सन्मान्य च प्रतिविसर्जयति निजनिवासस्थानम् प्रतिगन्तुमाज्ञापयतीत्यर्थः 'तएणं से मुसेणे सेणावइं भरहस्स रण्णो सेसपि तहे व जाव विहरइ' ततः खलु भरतस्य राज्ञः सेनापतिः स सुषेणः शेषमपि अवशिष्टमपि तथैव पूर्वोक्तं सिन्धुनिष्कुटसाधनवदेव यावत् स्नातः, कृतवल्किर्मा, कृतकौतुकमद्गलप्रायश्चित्तं इत्यारभ्य यावत्प्रासादवरं प्राप्तः सन् इष्टान् इच्छाविषयीकृतान् गन्धस्पर्शरूपगन्धान् पञ्चविधान् मानुष्यकान् मनुष्यसम्बन्धिनः कामभोगान् तत्र शब्दरूपे कामौ स्पर्शरसगन्धाः भोगाः

उन्हें अंजलि के रूपमें कर भरतमहाराजा को जय विजय शब्दों से वधाई दी (वद्धावित्ता अग्गाइ वराइं रयणाइ उवणेइ) वधाई देकर फिर उसने श्रेष्ठ रत्नों को उसके लिये अर्पित किया—राजा के पास उन्हें रक्खा (तएणं से भरहे राया सुसेणस्स सेणावइस्स अग्गाइ वराइ रयणाइ पडिच्छइ) भरतनरेश ने उस सुषेण सेनापति के उन प्रदत्त श्रेष्ठ रत्नों को स्वीकार कर लिया. (पडिच्छित्ता सुसेण सेणावइं सक्कारेइ सम्माणेइ) स्वीकार करके फिर उसने सुषेण सेनापति का सत्कार और सन्मान किया—(सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ) सत्कार सन्मान कर फिर भरत नरेश ने उसे विमर्जित कर दिया. (तएण से मुसेणे सेणावइं भरहस्स रण्णो सेसपि तहेव जाव विहरइ) इसके बाद भरत नरेश के पास से आकर वह उस सुषेणसेनापति ने स्नान किया बलि कर्म किया कौतुकमगल प्रायश्चित्त किये यावत् वह अपने श्रेष्ठ प्रासाद में पहुँचकर. इच्छानुसार शब्द, स्पर्श, रस रूप और गंध विषयक पाँच प्रकार के कामभोगों को भोगने लगा. शब्द रूप

अन्ने हाथो ने जेडी ने अने तेमने अन्नदि रूपमा अनापीने भरत भट्टाराजने जय-विजय शब्दो वडे वधामल्ली आपी (वद्धावित्ता अग्गाइ वराइं रयणाइ उवणेइ) वधामल्ली आपी ने पछी तेछे ते भरत भट्टाराजने श्रेष्ठ रत्नो अर्पित कयो—राजनी साथे श्रेष्ठ रत्नो भूक्यां (तएणं से भरहे राया सुसेणस्स सेणावइस्स अग्गाइ वराइ रयणाइ पडिच्छइ) भरत नरेशे ते सुषेण सेनापति वडे प्रदत्त रत्नोने स्वीकार कयो (पडिच्छित्ता सुसेण सेणावइं सक्कारेइ सम्माणेइ) स्वीकार करीने पछी तेछे सुषेण सेनापतिने सत्कार कयो अने सन्मान कयो. (सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ) सत्कार अने सन्मान करीने पछी भरत नरेशेते सुषेण सेनापति ने आहरणपूर्वकविसर्जित कयो (तएण से मुसेणे सेणावइं भरहस्स रण्णो सेसपि तहेव जाव विहरइ) तयार बाद भरत नरेश पासोछी पोताना आवास-स्थान उपर आपी ने सुषेण सेनापतिजे स्नान कयो, अलिकभं कयो, कौतुक भगण, प्रायश्चित्त कयो यावत् ते पोताना श्रेष्ठ प्रासादमां पछोछीने इच्छानुसार शब्द, स्पर्श, रस रूप अने गंध विषयक पाँच प्रकारना

इति तान् श्रुजान्! अनुभवन् विहरति तिष्ठति 'तण्णं से भरहे राया अण्णया कयाइ सुसेणं सेनावहरयण सद्दवेइ' ततः गङ्गानिष्कुटसाधनानन्तरं खलु स भरतो राजा सुषेणं सेनापतिरत्नं शब्दयति आह्वयति 'सद्दावित्ता' शब्दयित्वा आहूय 'एवं वयासी' एवं -वक्ष्यमाणप्रकारेण अगादीत् उक्तवान् किमवादीत् इत्याह- 'गच्छ ण भो देवानुप्पिया ! खंडगप्पवायगुहाए उत्तरिल्लस्स दुवारस्स कवाढे विहाडेइ ? गच्छ खलु देवानुप्रिय ! खण्डप्रपातगुहायाः औत्तराहस्य द्वारस्य कपाटी विघाटय उद्घाटय 'विहाडित्ता' विघाटय उद्घाटय 'जहा तिमिसगुहाए तहा भाणियव्व जाव पियं मे भवउ' यथा तमिस्रागुहायाः तथा महतिविशालाया खण्डप्रपातगुहाया अपि भणितव्यं तावत्पर्यन्तं यावत् प्रियं भवतां भवतु तमिस्रागुहाविषय अस्मिन्नेव वक्षस्कारे चतुर्दशसूत्रे त्रिलोकनीयम् 'सेसं तहेव जाव भरहो उत्तरिल्लेणं दुवारेणं अईइ ससिच्च मेहंधयारनिवह' शेषम् अवशिष्टं तथैव पूर्ववदेव तावत् भणितव्यम् यावत् मेघान्धकारनिवहं-मेघान्धकारसमूहं शशीव चन्द्रइव स भरत औत्तराहेण द्वारेण तमिस्रागुहाम् अत्येति प्रविशति 'तहेव पविसंतो मंडलाइ'

ये काम माने गये हैं और स्पर्श रस गन्ध ये भोग माने गये हैं । (तण्ण से भरहे राया अण्णया कयाइ सुसेण सेनावहरयणं सद्दवेइ) गंगा के निष्कुटो के साधने के बाद किसी एक समय भरत राजाने सुषेण सेनापति रत्न को बुलाया (सद्दावित्ता एवं वयासी) बुलाकर उससे ऐसा कहा- (गच्छ ण भो देवानुप्पिया खंडगप्पवायगुहाए उत्तरिल्लस्स दुवारस्स कवाढे विहाडेइ) हे देवानुप्रिय तुम जाओ और खण्डप्रपात गुहा के उत्तर दिग्वर्ती द्वार के किवाड़ो को खोलो. (जहा तिमिस गुहाए तहा भाणियव्वजाव पिय मे भवउ) यहां जैसा कथन तमिस्रागुहा के सम्बन्ध में कहा जा चुका है वैसा ही कथन खण्डप्रपात गुहाके सम्बन्ध में भी आकरा कल्याण हो यहां तक के पाठ का कर लेना चाहिये. तमिस्रागुहा के सम्बन्ध में कथन इपी वक्षस्कार के १४ वे सूत्र में किया गया है. सो वहां से यह विषय जाना जा सकता है (सेसं तहेव जाव भरहो उत्तरिल्लेण दुवारेणं अईइ ससिच्च मेहंधयारनिवहं) इससे आगे का कथन पूर्वोक्त जैसा है यावत् जिस प्रकार चन्द्र मेघवत् अन्धकार में प्रवेश करता है उसी प्रकार उम भगत ने उत्तर द्वार से

કામ ભોગો ભોગવવા લાગ્યો. શબ્દ અને રૂપ એ કામો માનવામાં આવ્યા છે અને સ્પર્શ, રસ, ગન્ધ એ ભોગો માનવામાં આવ્યા છે (તણ્ણં સે મરહે રાયા અણ્ણયા કયાઈ સુસેણં સેનાવહરયણં સદ્દાવેઈ) ગ ગાના (નિષ્કુટને) છતાં પછી કોઈ એક વખતે જ ત મહારાજાએ સુષેણ સેનાપતિને બોલાવ્યો (સદ્દાવિત્તાં એવં વયાસી) બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું-ગચ્છ ણ મો દેવાણુપ્પિયા ! ક્ષંડગપ્પવાયગુહાપ્પ ઉત્તરિલ્લસ્સ દુવારસ્સ કવાઢે વિહાઢેઈ) હે દેવાનુપ્રિય ! તમે ત્વરાથીજાઓ અને ખંડપ્રપાત ગુહાના ઉત્તર દિગ્વર્તી દ્વારના કવાડો ખોલો. (જહા તિમિસ ગુહાપ્પ તહા ભાણિયવ્વ જાવ પિયં મે ભવઑ) જેવું કથન તમિસ્રા ગુહાના સંબંધ મા કહેવામાં આવ્યું છે, તેવું જ કથન અત્રે ખંડપ્રપાત ગુહાના સંબંધમાં પણ તમારું કલ્યાણ થાઓ અહીં સુધી સમજી લેવું જોઈએ. તમિસ્રા ગુહાના સંબંધમાં કથન આજ વક્ષસ્કારના ૧૪ માં સૂત્રમાં કરવામાં આવેલ છે તે ત્યાંથી એ વિષય બહુી શકાય તેમ છે. (સેસં તહેવ જાવ મરહો ઉત્તરિલ્લેણં દુવારેણં અઈઈ સસિચ્ચ મેહંધયારનિવહ) આના પછીનું કથન પૂર્વોક્ત જેવું

આલિહર' તથૈવ ભરતસ્ય રાજઃ તમિસ્ત્રાગુહાપ્રવેશાનુમારેણૈવ મ સુપેગઃ સેનાપતિઃ ચ્વણ્ડ-
પ્રપાતગુહાં પ્રવિશન્ મળ્ડલાનિ ઇકોનપશ્ચાશત્ સંખ્યાકાનિ આલિસતિ, અત્ર ગુહાક-
પાટોદ્ધાટનાજ્ઞાપનાદિકમ્ ઇકોનપશ્ચાશન્મળ્ડલાલેખનાન્તં સર્વં તમિસ્ત્રાગુહાયામિવ વિજ્ઞેયમ્
અત્ર વિશેષમાહ—'તીસેણં' ઇત્યાદિ । 'તીસેણં' ચ્વણ્ડગપ્પવાયગુહાપ્ત્વમ્ જ્ઞદેસમાપ્ત્વં જાવ
ઉન્મગ્ગણિમગ્ગજલાઓ જામં દુવે મહાણઈઓ તદેવ જવર પચ્ચત્થિમિલ્લાઓ કડગાઓ
પવૂહાઓ સમાણીઓ પુરત્થિમેણં ગગં મહાણઈં સમપ્પેતિ' તસ્યાઃ ચ્વણ્ડપ્રપાતગુહાયાઃ
વહુમધ્યદેશમાગે યાવત્પદાત્ 'અથ જં' ઇતિ પદમાત્રમવસેયમ્ ઉન્મગ્ગનિમગ્ગજલે નામ્ની
દ્વે મહાનદીયો સ્તઃ તથૈવ તમિસ્ત્રાગુહાગતોન્મગ્ગનામિમગ્ગના નદીગમેન જ્ઞાતવ્યે અસ્મિન્નેવ
તૃતીયવક્ષસ્કારે પોહણસૂત્રે દ્રષ્ટવ્યમ્ નવરમ્ અર્થં વિશેષઃ ચ્વણ્ડપ્રપાતગુહાયાઃ પાચ્ચાત્યાત્
પશ્ચિમમાગકટકાત્ દ્વે અપિ ઉક્તઉન્મગ્ગનિમગ્ગજલેનામ્નો મહાનદીયો પ્રવ્યૂદેનિર્ગમે સત્યો પૌર-
સ્ત્યેન-પૂર્વેણ ગજ્ઞામહાનદીં સમાપ્નુતઃ પ્રાપ્નુતઃપ્રવિશતઃ 'સેમં તદેવ જવર પચ્ચત્થિમિલ્લેણ

તમિસ્ત્રાગુહા મેં પ્રવેશ િયા (તદેવ પવિસતો મ ડહાઈ આચ્છિહ)ભરત મહારાજાકે ચ્વણ્ડ પ્રપાત ગુહા
મેં પ્રવેશ કે અનુસાર હી સુપેણ સેનાપતિ ને વહા પવિષ્ટ હોકર ૪૯ મંડલ લિખે યહા ગુહા કે કપાટો
કો સ્લોલને સે ઢેકર ૪૯ મંડલોં કે લિખને તક કા જિતના વર્ણન હૈવહ સબ જૈસા તમિસ્ત્રાગુહા કે
પ્રકરણ મેં ક્રિયા ગયા હૈ—વૈસે હી હૈ (તીસે ણ ચ્વણ્ડગપ્પવાયગુહાપ્ત્વમ્ જ્ઞદેસમાપ્ત્વં જાવ ઉન્મગ્ગ-
ણિમગ્ગજલાઓ જામ દુવે મહાણઈઓ તદેવ જવર પચ્ચત્થિમિલ્લાઓ કડગાઓ પવૂહાઓ સમાણીઓ
પુરત્થિમેણ ગગં મહાણઈં સમપ્પેતિ) ડસ ચ્વણ્ડપ્રપાત ગુહા કે વહુમધ્યદેશમાગમેં યાવત્—આગત
—ઠીક હીસીસ્થાન પર—ઉન્મગ્ગના ઔર નિમગ્ગના નામ કી દો મહાનદિયાં વહતી હૈ इनका स्वरूप
તમિસ્ત્રાગુહા કી હીસી નામ કી નદિયો કે જૈસા હૈ ૧૬ વેં સૂત્ર મેં હીસો વક્ષસ્કાર કે વર્ણન મેં
યહ કથન ક્રિયા ગયા હૈ પરન્તુ જો ડસ—વર્ણન સે હમ વર્ણન મેં વિશેષતા હૈ વહ ડસ પ્રકાર સે
હૈ ચ્વણ્ડપ્રપાતગુહા કે પશ્ચિમમાગ મેં જો કટક હૈ ડસ કટક સે યે દોનોં મહાનદિયા નિકલી હૈ
ઔર પૂર્વ દિશા કી ઔર સે યે ગજ્ઞા નામકી મહાનદી મેં મિલી હૈ । (સેસ તદેવ જવરં પચ્ચ-

જ છે યાવત્ જેમ ચન્દ્ર મેધાવૃત્ત અધિકારમાં પ્રવેશે છે તેમજ તે ભરત મહારાજાએ ઉત્તર
દશરથી તમિસ્ત્રાગુહામાં પ્રવેશ કર્યો (તદેવ પવિસતો મળ્ડલાઈ આલિહર) ભરત મહારાજાએ જેમ
ખડ પ્રપાત ગુહામાં પ્રવેશ કર્યો તેમ જ સુપેષુ સેનાપતિએ પણ ત્યાં પ્રવિષ્ટ થઈ ને ૪૯
મંડલો લખ્યા અહીં ગુહાના ઠમાડો જોલવાથી માંડીને ૮૯ મંડલો લખવા સુધી જેટલું વર્ણન
છે, તે બધું જેવું તમિસ્ત્રા ગુહાના પ્રકરણમાં કરવામાં આવેલું છે તેવું જ છે (તીસેણં ચ્વણ્ડગપ્પવાય-
ગુહાપ્ત્વમ્ જ્ઞદેસમાપ્ત્વં જાવ ઉન્મગ્ગણિમગ્ગજલાઓ જામ દુવે મહાણઈઓ તદેવ જવર પચ્ચ-
ત્થિમિલ્લાઓ કડગાઓ પવૂહાઓ સમાણીઓ પુરત્થિમેણ ગગ મહાણઈ સમપ્પેતિ) તે ખડ
પ્રપાત ગુહાના બહુ મધ્ય દેશ ભાગમાં યાવત્—જરાબર જો જ સ્થાન પર ઉન્મગ્ગના અને
નિમગ્ગના નામક બે મહાનદીઓ વહે છે. બે નદીઓનું સ્વરૂપ તમિસ્ત્રા ગુહાની જો જ નામની
નદીઓ જેવું જ છે ૧૬ માં સૂત્રમાં આજ વક્ષસ્કારના વર્ણનમાં જો કથન ઠહેવામાં આવેલ
છે પણ તે વર્ણનથી આ વર્ણનમાં બે વિશેષતા છે, તે આ પ્રમાણે છે —ખડપ્રપાત ગુહાના

કૂલેણં ગંગાપ સંક્રમવત્ત્વયા તદેવ ત્તિ' શેષમ્ અવશિષ્ટં વિસ્તારાયામો દ્વેધાન્તરાદિક તથૈવ
 પૂર્વપદર્શિતાનુસારૈવ તમિસ્રાગતોક્ત નદી દ્વયપ્રકારેણ વિજ્ઞેયમ્ નવર વિશેષસ્તુ ગઙ્ગાયાઃ
 પાશ્ચાત્યકૂલે સક્રમવત્ત્વયા-સેતૂરુણાઙ્ગાદાનતદ્વિધાનોત્તરણાદિકં જ્ઞેય તથૈવ પ્રાગ્વત્
 વિજ્ઞેયમ્ इति પોઢશદ્ધત્રે અસ્મિન્નેવ વક્ષસ્વારે દ્રષ્ટવ્યમ્ 'તણ્ ણં સ્વહગપ્પવાયગુહાપ
 દાહિણિલ્લસ્સ દુવારસ્સ કવાઢા સયમેવ મહયા મહયા કોંચારવં કરેમાણા કરેમાણા
 સરસરસ્સગાઈ ઠાણાઈ પચ્ચોસવિકત્થા' તતઃ સ્વહ સ્વહપ્રપાતગુહાયાઃ દાક્ષિણાત્યસ્ય
 દ્વારસ્ય કપાટૌ સ્વયમેવ સેનાપતિ દળ્હરત્નાઘાતમન્તરેણૈવ 'મહયા મહયા' इति દેશેન
 પૂર્વસૂત્રસ્મરણ તેન 'મહયા મહયા સદેણં' મહતા મહતા શબ્દેનેતિ બોધ્યમ્ ક્રોઞ્ચારવ ક્રોઞ્ચ-
 સ્ય પક્ષિવિશેષસ્યેવ વહુવ્યાપિત્વાત્ ય આરવઃ શબ્દઃ તં કુર્વાળી કુર્વન્તૌ 'સરસરસ્સત્તિ'
 અનુકરણશબ્દસ્તેન તાદૃશ શબ્દમનુકુર્વન્તૌ 'સગાઈ સગાઈ' સ્વકે સ્વકે 'ઠાણાઈ' સ્થાને
 પચ્ચોસવિકત્થા' પ્રત્યવાપ્ત્વિક્ષિપાતામ્ પ્રત્યપસર્પતુઃ પ્રત્યવસર્પિતવન્તૌ સ્વયમ્ ઉદ્ધા-
 ટિતવન્તૌ 'તણ્ ણં સે મરહે' રાયા ચક્કરયણદેસિયમગ્ગે જાવ સ્વહગપ્પવાયગુહાઓ દક્ષિ
 ણિલ્લેણં દારેણં ણીણેઈ સસિન્ધ મેહધયારનિવહાઓ'તતઃસ્વહ સ પહસ્વહાધિપતિર્મરતો

ત્થિમિલ્લેણં કૂલેણં ગંગાપ સક્રમવત્ત્વયા તદેવંતિ) इन दोनो नदियों के आयाम विस्तार
 उद्देश अन्तर आदि का सब कथन तमिस्रा गुहागत उक्त नदीद्वय के जैसा ही है यहा की इन
 दोनो नदियों का प्रवेश गंगा के पश्चिम तट में हुआ है अर्थात् तमिस्रा गुहा को इन दोनो
 नदियों का प्रवेश सिन्धु नदि से हुआ है और यहा की इन दोनो नदियों का प्रवेश गंगा नदी
 में हुआ है । बाकी का और सेतु आदि बनाने आदि का सब कथन पहिले जैसा किया गया
 है वैसा ही है । (तण् णं स्वहगप्वायगुहाप दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडा सयमेव महया महया
 कोंचारवंकरेमाणा करेमाणा सरसरस्सगाइ ठाणाइ पच्चोसविकत्था)स्वहप्रपात गुहा का दक्षिण द्वार
 के किवाड कौचपक्षी के जैसा शब्द करते हुए अपने आप सेनापति के दण्डरत्नके आघातके
 बिना अपने २ स्थान से सरक गये (तण् णं से मरहे राया चक्करयणदेसियमग्गे जाव स्वहगप्प-

પશ્ચિમ ભાગમાં જે કટક છે, તે કટકથી એ બન્ને નદીઓ નીકળી છે અને પૂર્વ દિશા તરફ
 થી એ બન્ને નદીઓ ગંગા નામક મહાનદી માં મળી છે. (સેસં તદેવ જવર પચ્ચત્થિ
 મિલ્લેણં કૂલેણં ગંગાપ સક્રમવત્ત્વયા તદેવંતિ) એ બન્ને નદીઓના આયામ-વિસ્તાર, ઉદ્દેશ-
 અન્તર વગેરે સર્વ કથન તમિસ્રા ગુહાગત પૂર્વોક્ત નદી દ્વય જેવું જ છે અહીંની બન્ને
 નદીઓનો પ્રવેશ ગંગાના પશ્ચિમ તટમાં થયેલ છે. એટલે કે તમિસ્રા શુદ્ધાની એ બન્ને નદી-
 ઓનો પ્રવેશ સિન્ધુનદીઓમાં થયેલ છે અને અહીંની બન્ને નદીઓનો પ્રવેશ ગંગા નદીમાં
 થયેલો છે શેષ સેતુ વગેરે બનાવવા સબધી સર્વ કથન પહેલા જેવું જ આગે પણ સમ-
 જવું (તણ્ ણં સ્વહગપ્પવાયગુહાપ દાહિણિલ્લસ્સ દુવારસ્સ કવાઢા સયમેવ મહયા ૨ કોંચારવં
 કરેમાણા ૨ સરસરસ્સગાઈ ઠાણાઈ પચ્ચાસવિકત્થા)ખડ્ગપ્રપાત શુશના દક્ષિણ દ્વારના કમાડો
 ક્રોચ-પક્ષીના શબ્દ જેવા શબ્દ કરતા પોતાની મેળે જ સેનાપતિના હડરતના પ્રહાર વિના
 જ પોતાના સ્થાન ઉપર થી ખસી ગયા (તણ્ ણં સે મરહે રાયા ચક્કરયણદેસિયમગ્ગે જાવ

નામમહારાજા ચક્રરત્નદેશિતમાર્ગઃ યાવત્પદાત્ અનેકરાજવરસહસ્રાનુયાતમાર્ગઃ મહતોત્કૃષ્ટ-
સિંહનાદવોલકલકલારવેણ પ્રક્ષુભિતમહાસમુદ્રવપૂતામિવ પ્રતામિવ ગુહાં ભૂગતૌં હિતિ
સૌત્રધાતોઃ ક્તઃ કુર્વાણઃ કુર્વાણઃ સ્ખંડપ્રપાતગુહાતો દાક્ષિણાત્યેન દ્વારેણ મેઘાન્ધકાર-
નિવહાત્ મેઘાન્ધકારસમુદ્ધાત્ શશીવ ચન્દ્રાદિવ નિરેનિ નિર્ગચ્છતિ નનુ ચક્રવર્તિનાં તમિસ્રયા
ગુહયા પ્રવેશઃ સ્ખંડપ્રપાતયા ગુહયા નિર્ગમઃ, તત્ર કિં કારણમ્ ?, સ્ખંડપ્રપાતયા પ્રવેશઃ
તમિસ્રયા નિર્ગમોઽસ્તુ, પ્રવેશનિર્ગમરૂપસ્ય કાર્યસ્ય ડમયત્ર તુલ્યત્વાત્ ઇતિ ચેન્ન
તમિસ્રયા પ્રવેશે સ્ખંડપ્રપાતયા નિર્ગમે ચ સ્પૃષ્ટિઃ, તયા ચ ક્રિયમાણસ્ય તસ્ય પ્રગસ્તો
દર્કત્વાત્, અન્યચ્ચ સ્ખંડપ્રપાતયા પ્રવેશે આસન્નોપસ્થીયમાનઋપમકૂટે ચતુર્દિક્
પર્યન્ત માધનમન્તરેણ નામન્યાસોઽપિ ન સ્યાદિતિ ॥સૂ.૨૬॥

વાયુગુહાઓ દક્ષિણિલ્લેખ દારેણ ણોણેઽ સસિચ્ચ મેહધયારનિવહાઓ) ઇમકે વાદ ચક્રરત્ન
જિસે ગન્તવ્યમાર્ગ પ્રકટ કર રહા હૈ એસા વહ ભરત નરેણ યાવત્ સ્ખંડપ્રપાતગુહા સે દક્ષિણ કે
દ્વાર સે હોકર ઇંધકાર સમૂહ સે ચન્દ્ર કી તરહ નિકળા યહાં યાવત્પાઠ સે “અનેકરાજવરસહસ્ત્રા-
નુયાતમાર્ગ” હ્યાદિ વિશેષણો દ્વારા “મહાસમુદ્રવપૂતામિવ” હસ વિશેષણ તક વર્ણન જૈસા પીછે
તમિસ્રાગુહા કૈ પ્રકરણ મૈં ક્રિયા ગયા હૈ—વૈસા હી વહ સવ વર્ણન યહા પર મો કર લેના ચાહિયે
એસા સૂચિત ક્રિયા ગયા હૈ । વહા એસી આશકા હોતી હૈ કિ ચક્રવર્તિયો કા જો તમિસ્રાગુહા સે
પ્રવેશ ઔર સ્ખંડપ્રપાત ગુહા સે નિર્ગમ હોતા હૈ હસકા ક્યા કારણ હૈ ? એસા ક્યોં નહીં હોતા
હૈ કિ સ્ખંડપ્રપાત ગુહા સે ડનકા પ્રવેશ હો ઔર તમિસ્રાગુહા સે ડનકા નિર્ગમ હો । ક્યોંકિ પ્રવેશ
ઔર નિર્ગમ રૂપ કાર્યોં કી ડમયત્ર તુલ્યતા હૈ તો હમકા સમાધાન એસા હૈ—એસા જો કહા સો
હનમૈં યહ કારણ હૈ કિ હસ તરહ સે પ્રવેશ ઔર નિર્ગમ જો કરતા હૈ વહ ચક્રો પ્રશસ્ત ફલ વાલા

સ્ખંડગપ્પવાયગુહાઓ દક્ષિણિલ્લેખ દારેણ ણીણેઽ સસિચ્ચ મેહધયારનિવહાઓ) ત્યારબાદ ચક્ર
રત્ન જેને ગન્તવ્ય માર્ગ પ્રકટ કરી રહ્યું છે એવોતે ભરત નરેશ યાવત્ ખંડ પ્રપાત ગુહાના
દક્ષિણ દ્વારથી પસાર થઈ ને ચન્દ્રની જેમ અવકાર સમૂહ માથી નીકળ્યો અહીં યાવત્
પઠનાપાઠથી “અનેક રાજવરસહસ્રાનુયાતમાર્ગ” ઇત્યાદિ વિશેષણો વડે “મહાસમુદ્રરત્ન
મૂતામિવ” એ વિશેષણ સુધી વધુન પહેલાં તમિસ્રા ગુહાના પ્રકરણમા કરવામા આવેલ છે,
તેવુ જ સર્વ વધુન અહીં પણ કરી દેવુ જોએ. આમ સૂચિત કરવામા આવે છે અત્રે એવી
આશકા થાય છે કે ચક્રવર્તીઓનો જે તમિસ્રા ગુહામા પ્રવેશ અને ખંડપ્રપાત ગુહામાંથી
નિર્ગમ હોય છે, એવુ કારણ શુ છે ? એવુ કેમ થતુ નથી કે ખંડપ્રપાત ગુહામાંથી તેમનો
પ્રવેશ થાય અને તમિસ્રા ગુહામાંથી તેમનુ નિર્ગમન થાય કેમ કે પ્રવેશ અને નિર્ગમન રૂપ
કાર્યોની ઉભયત્ર તુલ્યતા છે તો આ શકાતુ સમાધાન આ પ્રમાણે છે કે એવુ જે કહેવામા
આવ્યું છે તો તેમા એ કારણ છે કે આ પ્રમાણે પ્રવેશ અને નિર્ગમન જે કરે છે તે ચક્રી
પ્રશસ્ત ફળવાન થાય છે બીજી વાત એ છે કે ખંડપ્રપાત ગુહાથી પ્રવિષ્ટ થઈએ તો ઋષ
ભક્ટ આપના પડે છે તે તેની ઉપર ચતુર્દિક્ પર્યન્ત સાધ્ય વગર નામન્યાસ એટલે કે—નામ
લખવુ પણ શક્ય હોતુ નથી ॥સૂત્ર-૨૬॥

अथ दक्षिणभरतार्द्धागतो भरतो यत्कृवान् तदाह—“तएण से भरहे” इत्यादि ।

मूलम्—तएण से भरहे राया गंगाए महाणईए पच्चत्थिमिल्ले कूले
दुवालसजोयणायामं णव जोयणविच्छिण्णं जाव विजयखंधावारणिवेसं
करेइ अवसिद्धं तं चेव जाव निहिस्यणाणं अट्टमभत्तं पगिण्हइ, तएण से
भरहे राया पोसहसालाए जाव निहिस्यणे मणसि करेमाणे करेमाणे
चिद्धइत्ति, तस्स य अपरिमियरत्तस्यणा धुअमक्खयमच्चया सदेवा लोको
पचयंकरा उवगया णव निहिओ लोगविस्सुयजसा, तं जहा—“नेसप्पे
पंडुअए२, पिंगलए३, सब्बरयण४, पहपउमे४ । काले६, अ महाकाले७,
माणवगे महानिही८, संखे ॥१॥”

‘णेसप्पंमि णिवेसा गामागरणगरपट्टणाणं च ।

दोणमुहमडंवाणं खंधावारावणगिहाणं ॥१॥

गणिअस्स य उप्पत्ती माणुग्माणस्स जं पमाणं च ।

धण्णस्स य वीआण य उप्पत्ती पंडुए भणिया ॥२॥

सब्बा आभरणविही पुरिसाणं जा य होइ महिलाणं ।

आसाण य हत्थीण य पिंगलगणिहिंमि सा भणिया ॥३॥

रयणाइं सब्बरयणे चउदस विवराइं चक्कवट्टिस्स ।

उप्पज्जंते एगिंदियाइं पंचिंदियाइं च ॥४॥

वत्थाणय उप्पत्ती णिप्फत्ती चेव सब्बभत्तीणं ।

रंगाणय धोव्वाणय सब्बा एसा महापउमे ॥५॥

कले कालणाणं सब्बपुराणं च तिसु वि वंसेसु ।

सिप्पसयं कम्माणि य तिण्णि पयाए हिय कराणि ॥६॥

लोहस्स य उप्पत्ती होइ महाकालि आगराणं च ।

रूपस्स सुवण्णस्स य मणिमुत्तसिलप्पवालाणं ॥७॥

जोहाणय उप्पत्ती आवरणाणं च पहरणाणं च ।

सब्बाय जुद्धणीइ माणवगे दंडणीइ य ॥८॥

होता है दूसरी बात यह है कि खण्डप्रपात गुहा से प्रवेश करने पर ऋषभकूट आसन्न पड़ता है सो उस पर चतुर्दिक पर्यन्त साधते ने बिना नामन्यास नाम लिखना भी नहीं होता है सु०॥२६॥

णट्टविही णाडगविही कब्बस्म य चउव्विहस्स उणत्ती ।
 संखे महाणिहिमी तुडिअंगाण च सव्वेसि ॥९॥
 चक्कट्ट पइड्डाणा अट्टुस्सेहाय णव य विक्खमा ।
 बारस दीहा मंजूससंठिआ जण्हवीइ मुहे ॥१०॥
 वेरुलिअ मणि कवाडा कणगमया विविहिरयणपडिपुण्णा ।
 ससिसुरचक्कलक्खण अणुसम वयणोववत्ती वा ॥११॥
 पलिओवमट्ठिईआ णिहि सरिणामा य तत्थ खलु देवा ।
 जेसि ते आवासा अक्किज्जा आहि वच्चाय ॥१२॥
 एए णव णिहि रयणा पभूय घणरयण संचय समिद्धा ।
 जेव समुपगच्छति भरहाविव चक्कवट्ठीणं ॥१३॥

तएणं से भरहे राया अट्टमभत्तंसि परिणममाणंसि पोसहसाला-
 ओ पडिणिक्खमइ एवं मज्जणघरपवेसो जाव सेणिपसेणि सदा वण-
 या जाव गिहिरयणाणं अट्टाहियं महामहिमं करेइ, तएणं से भरहे राया
 गिहिरयणाणं अट्टाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणोए सुसेणं
 सेणावइरयणं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छणं भो देवाणुप्पि
 या ! गंगा महाणइए पुरत्थिमिल्लं णिक्खुडं दुच्चंपि सगंगासागागिरि-
 मेरागं समविसमणिक्खुडाणि य ओअवेहि ओअवित्ता एयमाण-
 त्तियं पच्चप्पिणाहित्ति । तएणं से सुसेणे तंचेव पुव्ववणियं भाणियव्वं
 जावओअवित्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणइ पडिविसज्जेइ जाव भोगभो-
 गाइ भुज्जमाणे विहरइ । तएणं से दिव्वे चक्करयणे अन्नया कयाइ
 आउह घरसालाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता अंतलिक्खपडिवण्णे
 जक्खसहस्स संपरिवुडे दिव्वतुडिय जाव आपूरेते चेव विजयखंधावार
 णिवेसे मज्झं मज्झेणं णिगच्छइ, दाहिणपच्चत्थिमं दिसिं विणीयं
 रायहाणि अभिमुहे पयाए यावि होत्था । तएणं भरहे राया जाव पासइ पसि-
 ताहइतुइ जाव कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव
 भो देवाणुप्पिया ! आमिसेक्कं जाव पच्चप्पिणंति ॥ सू०२७॥

छाया-ततः खलु स भरतो राजा गङ्गायाः महानद्या पाप्रचात्ये कूले द्वादशयोजनायाम् नवयोजनविस्तीर्णं यावत् विजयस्कन्धावारनिवेशं करोति, अवशिष्टं तदेव यावत् निधिरत्नानाम् अष्टमभक्तं प्रगृह्णाति, ततः खलु स भरतो राजा पौषघशालायां यावत् निधिरत्नानि मनसि कुर्वन् तिष्ठतीति, तस्य च अपरिमितरक्तनयनाः ध्रुवाक्षया व्ययाः सदेवाः लोकोपचयकरा उपगताः नवनिधयो लोकाविश्रुतयशस्काः, तद्यथा-नैसर्प्यं १, पाण्डुक २, पिङ्गलकः ३, सर्वरत्नम् ४, महापद्मम् ५, कालश्च ६ महाकालः ७, माणवको मङ्गानिधिः ८, शङ्खः ९ ॥१॥ नैसर्प्यं निवेशाः ग्रामाकर नगरपत्तनानां च । द्रोणमुखमडम्बानां स्कन्धावारापण गृहाणाम् १ गणितस्य चोत्पत्तौ मानोन्मानस्य यत्प्रमाणं च । धान्यस्य च बीजानां चोत्पत्तिः पाण्डुके भणिता सर्व आभरणविधि पुरुषाणां यश्च भवति महिलानाम् ।

अश्वानां च हस्तिनां च स पिङ्गलकनिधौ भणितः ३ ॥

रत्नानि सर्व रत्ने च चतुर्दशापि वराणि चक्रवर्त्तिनः । उत्पद्यन्ते एकेन्द्रियाणि पञ्चेन्द्रियाणि च ४ ॥ वस्त्राणां चोत्पत्तिः निष्पत्तिश्चैव सर्वभक्तीनाम् । रत्नानां च प्रक्षालनानां सर्वा चैषा महापद्मे ५ ॥

काले कालज्ञानं सर्वं पुराणं च त्रिष्वपि वशेषु ।

शिल्पशत कर्माणि च त्रिणि प्रजाया हितकराणि ६ ॥

लोहस्योत्पत्तिं भवति महाकाले चाकराणाम् ।

रूप्यस्य सुवर्णस्य च मणिमुकाशिला प्रवालानाम् ७ ॥

योधानां चोत्पत्तिरावरणानां च प्रहरणानां च । सर्वा च युद्धनीति माणवके दण्डनीतिश्च ८ ॥

नृत्यविधिः नाटकविधिः नाट्यस्य च चतुर्विधस्योत्पत्तिः ।

शङ्खे महानिधौ वृष्टिताङ्गानां च सर्वेषाम् ११ ॥

चक्राष्टप्रतिष्ठानां कष्टोत्सेधाश्च नव च विष्कम्भाः ।

द्वादश दीर्घा मञ्जुषावत्संस्थिताः जाह्नव्याः मुखे १० ॥

वैदूर्यमणिकपाटाः कनकमयाः विविधरत्नप्रतिपूर्णाः ।

शशि सूर चक्रलक्षणा अनुसम वदनोत्पत्तिकाः ११ ॥

पद्मोपमस्थितिका निधिसङ्गनामान तत्र च खलु देवाः ।

येषां ते आवासा अक्रेया आधिपध्याय १२ ॥

एते नव निधिरत्नाः खलु प्रभूत धनरत्न सञ्चयसमृद्धाः ।

ये वशमुपगच्छन्ति भरताधिप चक्रवर्त्तिनाम् १० ॥

ततः खलु स भरतो राजा अष्टमभक्ते परिणमति पौषघशालातः प्रतिनिष्क्रामति, एवं मञ्जनगृहप्रवेशो यावत् श्रेणि प्रश्रेणि शब्दपनया यावत् निधिरत्नानाम् तष्टादिकां महामहिमां करोति, ततः खलु स भरतो राजा निधिरत्नानाम् अष्टादिकायां महामहिमायां निवृत्तायां सत्यां सुषेणं सेनापतिरात्न शब्दयति शब्दयित्वा पद्मम् अवादीत् गच्छ खलु भो देवानुप्रियाः ! गङ्गायाः महानद्याः पौरस्त्य निष्कुटं द्वितीयमपि सगङ्गासागरगिरीमर्यादं समविषमनिष्कुटानि च 'ओमवेहि' साधय साधयित्वा पतामाङ्गितिकां प्रत्यर्पय इति । ततः खलु स सुषेण तदेव पूर्ववर्णितं भणितव्यं यावत् साधयित्वा ताम् आङ्गितिकां प्रत्यर्पयति प्रतिविसर्जयति यावत् भोगभोगान् भुञ्जानो विहरति । ततः खलु तद्विव्य चक्ररत्नम् अन्यथा कदाचिद् प्रायुषगृहशालान् प्रतिनिष्क्रामति प्रतिनिष्क्रम्य अन्तरिक्षं प्रतिपन्न यश्च सङ्ख्यं संपरिवृत्तं दिव्यवृद्धितं यावत् आपूरयदिव विजयस्कन्धावारनिवेशं गङ्गामध्येन निर्गच्छति दाक्षिणात्यं प्राञ्चात्यौ

विशि विनीतां राजधानीमभिमुखं प्रयातं चाप्यभन्तु तत खलु स भरतो राजा याचन पश्यति
दृष्ट्वा हृष्टतुष्ट यावत् कीदृम्यिक पुरुषान् शब्दयिन शब्दयिषा पञ्चमवादीन् क्षिप्रमेव भो
देवानुप्रिया ! अभिपेक्ष्य यावत्प्रत्यर्पयन्ति ॥सू० २७॥

टीका—“तए णं से भरहे गया” इत्यादि । ‘तए णं से भरहे गया गंगाए महाणईए
पच्चत्थिमिल्ले कूले दुवालसजोयणायाम णवजोयणविच्छिण्णं जान विजयवखंधावारणि-
वेसं करेइ’ ततो गुहानिर्गमानन्तर खलु स श्रीभरतो महाराजा गङ्गाया महाजघाः पाश्चात्ते
पश्चिमे कूले—तटे द्वादशयोजनायामम् द्वादशयोजनानि अष्टाचत्वारिंशत् क्रोश परिमितानि
आयामो दैर्घ्यं यस्य स तथा तम् एवं नवयोजनविस्तीर्णम् नवयोजनानि पट्त्रिंशत्
क्रोशपरिमितानि विस्तीर्णानि विष्कम्भानि यस्य स तथा तम् यावत् पदात् वरनगर
सदृशं विजयस्कन्धावारनिवेश विजयाय यः स्कन्धावारः ‘छौनी’ इति भाषा प्रसिद्धः
तस्य निवेशः योजना तं करोति ‘अवसिद्धं तचेव जाव निहिरयणाणं अट्टमभत्तं पणिण्ड-
इ’ अवशिष्टम् वर्द्धकिरत्तनशब्दज्ञापनादिकं तदेव यन्मागधदेवसाधनावसरे प्रोक्तमिति
अस्मिन्नेव तृतीयवक्षस्कारे सप्तमसूत्रे मागधदेवसाधनपाठो द्रष्टव्यः यावत् शब्दात् पौष-

‘तएण से भरहे राया गंगाए महाणईए’—इत्यादि सूत्र—२७॥

टीका—(तए णं से भरहे राया गंगाए महाणईए पच्चत्थिमिल्ले कूले दुवालसजोयणायाम णव-
जोयणविच्छिण्णं जाव विजयवखंधावारनिवेश करेइ) गुहा से निकलने के बाद भरत राजा ने गंगा
महानदी के पश्चिम दिग्बर्ती तट पर १२ योजन प्रमाण लम्बी और ९ योजन प्रमाण चौड़ी अतएव
एक सुन्दर नगर जैसी दिखने वाली विजय सेना का निवास पड़ाव छावनी डाला—(अवसिद्धं
तं चेव जाव निहिरयणाणं अट्टमभत्तं पणिण्डइ) यहां से आगे का और सब कथन जैसा
मागधदेव के साधन प्रकरण में कहा गया है वैसा पौषवशाला में दर्भ के आगन पर
बैठने आदि तर्क का यहां पर जानना चाहिए मागध देव के साधन करने का प्रकरण
इसी तृतीयवक्षस्कार के सप्तम सूत्र में कहा गया है इस प्रकार से सब कुछ पूर्वोक्तरूप से

(तए णं से भरहे राया गंगाए महाणईए) इत्यादि—‘सूत्र—२७’

टीका—(तए णं से भरहे राया गंगाए महाणईए पच्चत्थिमिल्ले कूले दुवालसजोय-
णायाम णवजोयणविच्छिण्णं जाव विजयवखंधावारनिवेशं करेइ) शुद्धाभाषी नीकल्या भाई
भरतराजने गंगा महानदीना पश्चिम दिग्बर्ती तट पर आर योजन प्रमाण लांबी अने
९ योजन प्रमाण पडोणी अथी ४ अक्ष सुहरनगर जेवी सुशोबिन देभाती विजय सेनाने
निवास पडाव नाथे। (अवसिद्धं तं चेव जाव निहिरयणाणं अट्टमभत्तं पणिण्डइ) अही
थी आगलतु अथु कथन जेम मागधदेवना साधन प्रकरणा स्पष्ट करवामा आवेल छे,
तेनु अ पौषवशालामा दर्भना आसन उपर भेजवा सुधीनु अही लांबी देवु जेधने मागध
देवने साधन करवा अ जेतु प्रकरणा आर तृतीय वक्षस्कारना सप्तम सूत्रमा स्पष्टकरवामा
आवेछु छे आ प्रमाणे सर्व कथन पूर्वोक्त रूपमा संपन्न करीने भरत महाराजने ६ निधिने
अने १४ रत्नाने साधन भाटे अष्टम अक्षानी तपस्या धारयकरी (तएण से भरहे राया
१०७

ધશાલાં દર્મસંસ્તારક સસ્તરણાદિ સર્વ વિજ્ઞેયમ્ નિધિરત્નાનાં સાધનાય અષ્ટમમક્ત પ્રગૃહ્ણાતિ કરોતિ 'તપ્ત્વં સૈ ભરહે રાયા પોસહસાલાપ જાવ નિહિરયણે મળસિ કરેમાણે કરેમાણે ચિદ્દહ ત્તિ' તતઃ खलु स भरतो महाराजा पौषधशालायां यावत् निधिरत्नानि मनसि कुर्वन् मनसि कुर्वन् मनसि ध्यायन् मनसि ध्यायन् तिष्ठति यावत्पदात् पौषधिक इत्यारभ्य एकः अद्वितीय इति पर्यन्तं पदकदम्बक संग्राहम् । इत्थमनुतिष्ठतः तस्य भरतस्य किं जातमित्याह—'तस्स' इत्यादि 'तस्स य अपरिमियरत्तरयणा ध्रुवमवस्त्रयमव्वया सदेवा लोकोपचयकरा उवगया णवणिहिओ लोगविस्सुअजसा' तस्य भरतस्य च शब्दोऽर्थान्तरारम्भे नवनिधयः उपागताः समीपमागताः इत्यग्रेण सम्बन्धः क्रीदशास्ते निधयः अपरिमितरत्तरत्नाः अपरिमितानि असीमितानि अपाराणीत्यर्थः रत्नानि रक्तवर्णानि उपलक्षणात् कृष्णनीलपीतशुक्लाद्यनेकवर्णानि येषु ते तथा, पदार्थाः साक्षादेव उत्पद्यन्ते

કરકે ભરત મહારાજા ને નૌ નિધિયાં એવં ચૌદહ રત્નો કો સાધન કે લિયે અષ્ટમમક્ત કી તપસ્યા ધારણ કરલી(તપ્ત્વં સૈ ભરહે રાયા પોસહમાલાપ જાવ નિહિરયણે મળસિ કરેમાણે ૨ ચિદ્દહ) उस अष्टम मक्त(तेछे)क्रीतपस्यामें उस चक्रवर्ती श्रीभरत नरेशने नौ निधियो का और १४ रत्नों का अपने मन में ध्यान करना प्रारम्भ कर दिया यहां यावत् शब्द से—“पौषधिकः” इस पद से लेकर “एकः अद्वितीयः” पद तक का पदसमूह गृहीत हुआ है (तस्स अपरिमियरत्तरयणा ध्रुवमवस्त्रयमव्वया सदेवा लोकोपचयकरा उवगया णवणिहियो लोगविस्सुअजसा) उस भरत राजा के पास अपरिमित रक्तवर्ण के, कृष्णवर्ण के, नीलवर्ण के पीतवर्ण, के, शुक्लवर्ण के और हरितवर्ण के इत्यादि अनेक वर्ण के रत्नों वाली तथा जिनका यश लोक में व्याप्त हो रहा है ऐसे नौ निधियां अपने अपने अधिष्ठापक देवों सहित उपस्थित हुई यहां अनेक वर्णों वाले रत्न जिनमें रहते हैं ऐसा जो कहा गया है वह उनके मत की अपेक्षा से कहा गया है जो ऐसा मानते हैं कि नौ निधियो में ये वक्ष्यमाण पदार्थ साक्षात् उत्पन्न होते हैं शाश्वति कल्प पुस्तक इन

પોસહસાલાપ જાવ-નિહિરયણે મળસિ કરેમાણે ૨ ચિદ્દહ તે અષ્ટમમક્ત(તેલા) તપસ્યામા તે ભરત નરેશે ૯ નિધિઓનું અને ૧૪ રત્નોનું પોતાના મનમાં ધ્યાન શરૂકર્યું આજ અહીં યાવત્ પદ્ધતી-પૌષધિકઃ “આ પદ્ધતી માંડીને ઇકઃ ‘અદ્વિતીય-’ પદ સુધીના પદ સમૂહો ગૃહીત થયા છે. (તસ્સ અપરિમિયરત્તરયણાધ્રુવમવસ્ત્રયમવ્વયા સદેવા લોકોપચયકરા ઉવગયા ણવ નિહિઓ લોગવિસ્સુઅજસા) તે ભરત મહારાજાની પાસે અપરિમિત રક્તવર્ણના, કૃષ્ણવર્ણના, નીલવર્ણના, પીતવર્ણના, શુદ્ધ વર્ણના અને હરિત વર્ણના વગેરે અનેક વર્ણના રત્નોવાળી તેમજ જેમના યશ લોકમાં વ્યાપ્ત થઈ રહ્યો છે એવા ૯ નિધિઓ પોત-પોતાના અધિષ્ઠાપક દેવો સહિત ઉપસ્થિત થયા અહીં અનેક વર્ણોવાળા રત્નો જેમા રહે છે, આમ જે કહેવામા આવ્યું છે તે તેમના મતની અપેક્ષાએ કહેવામા આવેલ છે જે આ પ્રમાણે માને છે કે નવ નિધિઓમાં જો વક્ષ્યમાણ પદાર્થો સાક્ષાત્ ઉત્પન્ન થાય છે શાશ્વતિ કલ્પ પુસ્તક વગેરે પુસ્તકોમાં વિશ્વની સ્થિતિ પ્રકટ કરવામાં આવી છે કેટલાકના મત મુજબ કલ્પ પુસ્તક પ્રતિપાદ્ય પદાર્થો સાક્ષાત્ જો નિધિઓમાં ઉત્પન્ન થાય છે તેમજ એઓ

इति, कल्पपुस्तकप्रतिपाद्याः अर्था साक्षादेव तत्रोत्पद्यन्ते इति तथा ध्रुवाः निश्चलाः तथाविधपुस्तक रूप स्वरूपस्यापरिहाणेः अक्षयाः अविनश्यराः अवयविद्रव्यस्य अपरिहाणेः अव्ययाः तदारम्भकप्रदेशापरिहाणेः अत्र प्रदेशापरिहाणि युक्तिः समयमंवादिनी पद्मवरवेदिका व्याख्या समये निरूपितेति ततोऽवसेया अत्र पदद्वये मकारोऽलाक्षणिकः ततः पदत्रयस्य कर्मधारयः सदेवाः अधिष्टायकदेवकृतसान्निध्या इत्यर्थः लोकोपचयङ्कुरा अस्य तीर्थकरादिवत् साधुत्वम् यद्वा अनुस्वारः आर्पत्वात् लोकोपचयङ्कुराः वृत्तिकल्पककल्पपुस्तकप्रतिपादनेन लोकानां पुष्टिकारकाः लोकविश्रुतयशस्काः लोकविख्यात कीर्त्तयः 'एवं विशेषणविशिष्टा नवनिधयः उपागताः' अथ नामतः तान् नवविधीन् उपदर्शयति 'तं जहा' इत्यादिना-

नैसर्प्ये १ पंडुअए २ पिंगलए ३ सव्वरयण ४ महपउमे ५ काले ६ अ महाकाले ७ माणवगे महानिही ८ संखे ९। १। तत्र नैसर्प्यः नैसर्प्यस्य देवविशेषस्यायं नैसर्प्यः

पुस्तकों में विश्व की स्थिति कही गई है किन्ही २ के मतानुसार कल्प पुस्तक प्रतिपाद्य पदार्थ साक्षात् उन निधियों में उत्पन्न होते हैं तथा ये ध्रुव हैं क्यों कि तथाविध पुस्तक वैशिष्ट्य रूप स्वरूप इनका नष्ट नहीं होता है, अवयवी द्रव्य की अविनाशिता को लेकर ये अक्षय हैं, तदारम्भक प्रदेशों की अविनाशिता को लेकर ये अव्यय हैं, प्रदेशों की अपरिहीनता के सम्बन्ध में युक्ति सिद्धान्त के अनुसार पद्मवरवेदिका की व्याख्या करते समय कही जा चुकी है, इसलिये जिज्ञासु जनको वही से इसे देखलेनी चाहिए, "ध्रुवमक्षयं" में मकार का प्रयोग अलाक्षणिक है, "लोकोपचयङ्कुर" पद की निष्पत्ति "तीर्थकर" पद की निष्पत्ति की तरह से ही जाननी चाहिये अथवा आर्ष होने के कारण यहाँ अनुस्वार कर दिया गया है वृत्तिकल्पक कल्पपुस्तक के प्रतिपादन से ये लोकों की पुष्टि कारक होती हैं उन नौ निधियों के नाम इस प्रकार से कहा गया है-नैसर्प्ये १, पंडुअए २, पिंगलए ३, सव्वरयण ४, महपउमे ५। काले ६ महाकाले ७ माणवगे महानिही ८ संखे ९॥१॥

(१) नैसर्प्यनिधि-यह नैसर्प्यनामक देव से अधिष्ठित होती है (२) पाण्डक निधि. यह निधि पाण्डक नामक देव से अधिष्ठित होती है (३) पिंगलक निधि-यह पिंगलक नामक देव से अधि-

ध्रुव छे डेभ डे तथाविध पुस्तक वैशिष्ट्य रूप स्वरूप अक्षय नाश पामतु नथी अवयवी द्रव्यनी अविनाशिताने लधने अक्षय छे तदारम्भक प्रदेशानी अविनाशिताने लधने अव्यय छे, प्रदेशानी अपरिहीनताना स लधमां युक्ति सिद्धान्त अनुसार पद्मवरवेदिकानी व्याख्या करती वभते कडेनामा आवी छे अथी जिज्ञासुअो त्याथी न लक्षुवा प्रयत्न करे "ध्रुवमक्षयं" भा मकारने प्रयोग अलाक्षणिक छे. 'लोकोपचयङ्कुर' पदनी निष्पत्ति "तीर्थकर" पदनी निष्पत्तिनी अभेभ लक्षुवी अर्थअे अथवा आर्ष डेवाथी अही अनुस्वार करवामा आवेल छे वृत्तिकल्पक कल्पपुस्तकना प्रतिपादनथी अे डेके भाटे पुष्टि कारक डेय छे ते नव निधियो ना नाभे आ प्रमाणे छे-नैसर्प्ये-पंडुअए-२, पिंगलए-३, सव्वरयण-४, महपउमे-५, काले-६, महाकाले-७, माणवगे महानिही-८, संखे ९॥१॥

પ્રથમગ્રેઽપિ इत्थमेव विज्ञेयम् अथ यत्र नित्री यदाख्यायते तदाह-तत्र प्रथमे नैसर्पाधि-
ष्ठातृदेवस्य नैसर्पाख्यनिधौ 'णे सप्पमि' इत्यादि

तत्र-नैसर्प्ये-नैसर्पाख्ये निधौ निवेशाः स्थापनानि स्थापनविधयो ग्रामादीनां गृहप-
र्यन्तानां व्याख्यायन्ते तत्र ग्रामः-वृत्तिवेष्टितः, आकरः-सुवर्णरत्नाद्युत्पत्तिस्थानम् नगरम्
अष्टादशकरवर्जितम्, पत्तनं समस्तवस्तुप्राप्तिस्थानम्, शकटादिभिः नौभिर्वा यद्गम्यं
तत्पत्तनं यत्केवलं नौभिरेव गम्यं तत् पट्टनम् उक्तञ्च-पत्तनं शकटैर्गम्यं घोटकैर्नौभिरेव च
नौभिरेवच यद्गम्यं पट्टनं तत्प्रचक्षते । द्रोणमुखम्-जल-स्थलमार्गगमनयोग्यस्थानम्, मडम्बम्

ષ્ઠિત હોતો છે. (૪) સર્વરત્નનિધિ-યહ સર્વરત્ન નામક દેવ સે અધિષ્ઠિત હોતી છે (૫) મહા
પદ્મ નિધિ. યહ મહાપદ્મનામક દેવ સે અધિષ્ઠિત હોતી છે (૬) કાલનિધિ-યહ કાલ નામક દેવ
સે અધિષ્ઠિત હોતી છે. (૭) મહાકાલ નિધિ-યહ મહાકાલ નામક દેવ સે અધિષ્ઠિત હોતી
છે (૮) માણવકનિધિ યહ માણવક નામક દેવ સે અધિષ્ઠિત હોતો છે ઓર (૯) શંખનિધિ યહ
શંખ નામક દેવ સે અધિષ્ઠિત હોતી છે.

‘નેસર્પમિ ણિવેસા ગામાગરણગર પટ્ટણાણ ચ દોણમુદ્ મહંબાણં સંધાવારાવણગિહાણં ૧

નૈસર્પ્ય નામકી નિધિ મેં ગ્રામ, આકર, નગર, પટ્ટણ, દ્રોહમુલ, મહવ, સ્કન્ધાવાર, આપણ
ઓર ભવન ડનકી સ્થાપન વિધિ રહતી છે વૃત્તિ-વાડ સે જો આવેષ્ટિત હોતા છે ડસકા નામ ગ્રામ
છે. જહાં પર સુવર્ણ રત્ન આદિકોં કી ઉત્પત્તિ હોતી છે ડસકા નામ આકર છે અઠારહ પ્રકાર કે
ટેક્સ સે જો રહિત છે ડસકા નામ નગર છે. સમસ્ત વસ્તુઓં કી પ્રાપ્તિ કા જો સ્થાન છે ડસકા
નામ પત્તન છે. અથવા વેલગાડો દ્વારા યા નૌકાઓં દ્વારા જહાં પર જાને કા માર્ગ હોતા છે.
ડસકા નામ પત્તન છે. અથવા જલયાન દ્વારા હો જહા પર જાયા જા સકતા છે વહ પટ્ટણ છે

ઉક્તંચ—પત્તન શકટૈર્ગમ્યં ઘોટકૈર્નૌભિરેવ ચ । નૌભિરેવચ યદ્ગમ્યં પટ્ટન તત્પ્રચક્ષતે ૧

(૧) નૈસર્પનિધિ-એ નિધિનૈસર્પનામક દેવથી અધિષ્ઠિત હોય છે (૨) પાંડુનિધિ-એ નિધિ
પાંડુક નામના દેવથી અધિષ્ઠિત હોય છે (૩) પિંગલક નિધિ- એ પિંગલક નામક દેવથી
અધિષ્ઠિત હોય છે (૪) સર્વરત્નનિધિ-એ સર્વરત્નનામક દેવથી અધિષ્ઠિત હોય છે (૫)
મહાપદ્મનિધિ-એ મહાપદ્મનામક દેવથી અધિષ્ઠિત હોય છે (૬) કાલનિધિ-એ કાલ નામક
દેવથી અધિષ્ઠિત હોય છે. (૭) મહાકાલ નિધિ-એ મહાકાલ નામક દેવથી અધિષ્ઠિત હોય
છે (૮) માણવકનિધિ- એ માણવક નામક દેવથી અધિષ્ઠિત હોય છે અને (૯) શંખનિધિ
એ શંખ નામક દેવથી અધિષ્ઠિત હોય છે

નેસર્પમિ ણિવેસા ગામાગરણગર પટ્ટણાણ ચ । દોણમુદ્ મહંબાણ સંધાવારાવણ ગિહાણં ॥૧॥
નૈસર્પ નામક નિધિમાં ગ્રામ આકર, નગર, પટ્ટણ, દ્રોહમુખ, મહંબ, સ્કન્ધાવાર, આપણ
અને ભવન એમની સ્થાપના વિધિ રહે છે વૃત્તિ-વાડ-થી જે આવેષ્ટિત હોય છે, તેને ગ્રામ
કહેવામાં આવે છે જ્યાં સુવર્ણરત્ન વગેરેની ઉત્પત્તિ હોય છે, તેનું નામ આકર છે અઠાર
પ્રકારના કારોથી જે રહિત હોય છે તે નગર કહેવાય છે સમસ્ત વસ્તુઓની પ્રાપ્તિનું જે
સ્થાન છે તે પત્તન કહેવાય છે અથવા જળાન દ્વારા જે જ્યાં વડે કે નાવો વડે જ્યાં જઈ શકાય છે
તેનું નામ પટ્ટણ છે અથવા જ લયાન દ્વારા જે જ્યાં જઈ શકાય છે તે પત્તન છે-

—सार्द्धक्रोशद्वयान्तरेण ग्रामान्तररहितम् वसतिरिति । स्कन्धावार-कटकम् आपणो हट्टः
गृहम्-भवनम् उपलक्षणात् खेटकर्वटादि परिग्रह खेट-धुलिकाप्राकारवेष्टितम् नदी
पर्वतवेष्टितं च नगरम्, कर्वटम् क्षुद्रप्राकारवेष्टितं कुत्सितनगरम्, एतेषां स्थापनविधयो
नैसर्गिके निधौ भवन्तीत्यर्थः ॥ १ ॥ अथ द्वितीयं पाण्डुकाधिष्ठानदेवस्य पाण्डुकना-
मक निधिस्वरूपं तत्र यानि उत्पद्यन्ते तान्याह—

तत्र गणितस्य संख्याप्रधानतया व्यवहर्त्तव्यस्य दीनागदेः नारिकेलदेर्वा च
शब्दात्परिदृश्यस्य भौक्तिकादे रूपात्तिप्रकारः वर्णनम्, तथा मानं सेतिकादि तद्विषयो यः
सोऽपि मानमेव मेयं पाठ्येन पाइतीति लोकप्रसिद्धेन मातुं योग्यम्, तथा उन्मानं

जलमार्ग से भी और स्थलमार्ग से भी जहाँ पर सुविधासे जाया जाता है वह द्रोणमुख है
जहाँ पर ढाई कोश पर्यन्त आस पास में कोई भा प्रामान्तर नहीं होते हैं उसका नाम
महम्म है । स्कन्धावार नाम कटक का है । जिसे भाषा में-छावनी कहा गया है । आपण नाम
बाजार का है, और गृह नाम भवन का है । उपलक्षण से यहाँ पर खेट कर्वट आदि स्थानों
का भी ग्रहण हुआ है । धुलिका के प्राकार कोट से परिवेष्टित हुए स्थान का नाम खेट
है । नदी एवं पर्वत से वेष्टित हुये स्थान का नाम नगर है, क्षुद्र प्राकारसे परिवेष्टित कुत्सि-
तनगर का नाम कर्वट है इन सब की स्थापना करने की विधियाँ नैसर्ग नाम की निधि में
होती हैं । दूसरी पाण्डुकनिधि है—इसके सम्बन्ध में ऐमा कथन है ।

गणितस्य य उप्पत्ती माणुस्माणस्स जं पमाणं च घण्णस्स य बीजाण य उप्पत्ती पट्ठप्प भणिया ।
संख्या प्रधान होने से व्यवहर्त्तव्य दीनार आदि का अथवा नारिकेल आदि का तथा
परीक्ष्य भौक्तिकादि का कथन तथा मान-सेतिका आदि रूप तोल का तथा इस तोल के विषय-
भूत पदार्थ का उन्मान तुला, कर्ष-तौल इनका और इनके द्वारा जो तोले जाते पदार्थ है,

ઉત્તમ-પત્તનં શકદેર્ગમ્યં ઘોટકે નૌમિરેચ ચ । નૌમિરેષ્વચ યદ્ગમ્ય પટ્ટન તત્પ્રચક્ષતે ॥૧॥
જળમાર્ગથી અને સ્થલ માર્ગથી પણ જ્યાં જઈ શકાય છે, તે દ્રોણ મુખ છે. જ્યાં
અહીં ગાઉ સુધી બીજા ગ્રામો હોતા નથી. તેનું નામ મડંગ છે સ્કધાનાર નામ કટકનું છે. જેને
હિન્દી ભાષામાં ‘છાવની’ કહે છે આપણુ જળારનું નામ છે અને ગૃહ ભવનનું નામ છે.
ઉપલક્ષણથી અહીં ખેટ, કર્વટ વગેરે સ્થાનો નું પણ શ્રક્ષુ થયું છે ધૂલિકાના પ્રાકાર-
કોટ-થી પરિવેષ્ટિત થયેલા સ્થાનનું નામ ખેટ છે નહીં અને પર્વત થી વેષ્ટિત સ્થાનનું
નામ નગર છે. ક્ષુદ્ર પ્રાકારથી પરિવેષ્ટિત થયેલા કુત્સિત નગરનું નામ કર્વટ છે એ
સર્વની સ્થાપના કરવાની વિધિઓ નૈસર્ગનામક નિધિમાં હોય છે

ગણિતસ્ય ય ઉપ્પત્તી માણુસ્માણસ્સ જ પમાણ ચ ।

ઘણ્ણસ્ય ય બીજાણય ઉપ્પત્તી પટ્ઠપ્પ મણિયા ॥૨॥

સંખ્યા પ્રધાન હોવાથી વ્યવહર્તવ્ય દીનાર વગેરેનું અથવા નારિકેલ વગેરેનું તેમજ
પરીક્ષ્ય ભૌક્તિકાદિનું કથન તેમજ માન-સેતિકા આદિ રૂપ તોલનું તેમજ એ તોલના
વિષયભૂત પદાર્થનું ઉન્માન, તુલા કર્ષ-તોલા એમનું અને એમના વડે જે તોલવામાં આવે
છે એવા જે પદાર્થો છે તેમનું તથા ધાન્ય શાલિ વગેરે અને બીજાનું આ પ્રમાણે એ સર્વની

પ્રથમગ્રેડપિ इत्यमेव विज्ञेयम् अथ यत्र नित्री यदाख्यायते तदाह-तत्र प्रथमे नैसर्पाधि-
ष्ठातृदेवस्य नैसर्पाख्यनिधौ 'जे सत्पंमि' इत्यादि

તત્ર-નૈસર્પ્યે-નૈસર્પાલ્યે નિત્રી નિવેશાઃ સ્થાપનાનિ સ્થાપનવિધયો ગ્રામાદીનાં ગૃહપ-
ર્યન્તાનાં વ્યાખ્યાયન્તે તત્ર ગ્રામઃ-વૃત્તિવેષ્ટિઃ, આકરઃ-સુવર્ણરત્નાધુત્પત્તિસ્થાનમ્ નગરમ્
અષ્ટાદશકરવર્જિતમ્, પત્તનં સમસ્તવસ્તુપ્રાપ્તિસ્થાનમ્, શકટાદિભિઃ નૌભિર્વા યદ્ગમ્યં
તત્પત્તન યત્કેવલ નૌભિરેવ ગમ્ય તત્ પટ્ટનમ્ ઉક્તશ્ચ-પત્તનં શકટૈર્ગમ્યં ઘોટકૈર્નૌભિરેવ ચ
નૌભિરેવચ યદ્ગમ્યં પટ્ટનં તત્પ્રચક્ષતે । દ્રોણમુખમ્-જલ-સ્થલમાર્ગગમનયોગ્યસ્થાનમ્, મહમ્બમ્

ખિંત હોતો છે. (૪) સર્વરત્નનિધિ-યહ સર્વરત્ન નામક દેવ સે અધિષ્ઠિત હોતો છે (૫) મહા
પદ્મ નિધિ. યહ મહાપદ્મનામક દેવ સે અધિષ્ઠિત હોતો છે (૬) કાલનિધિ-યહ કાલ નામક દેવ
સે અધિષ્ઠિત હોતો છે. (૭) મહાકાલ નિધિ-યહ મહાકાલ નામક દેવ સે અધિષ્ઠિત હોતો
છે (૮) માણવકનિધિ યહ માણવક નામક દેવ સે અધિષ્ઠિત હોતો છે ઓર (૯) શંખનિધિ યહ
શંખ નામક દેવ સે અધિષ્ઠિત હોતો છે.

‘જેસત્પંમિ જિવેસા ગામાગરનગર પટ્ટનાણ ચ દોણમુહ મહંબાળં સંધાવારાવણગિહાણં ૧

નૈસર્પ્ય નામકી નિધિ મેં ગ્રામ, આકર, નગર, પટ્ટણ, દ્રોહસુલ, મહંબ, રુન્ધાવાર, આપણ
ઓર ભવન ડનકી સ્થાપન વિધિ રહતો છે વૃત્તિ-વાહ સે જો આવેષ્ટિત હોતા છે ડસકા નામ ગ્રામ
છે. જહાં પર સુવર્ણ રત્ન આદિકોં કી ઉત્પત્તિ હોતી છે ડસકા નામ આકર છે અઠારહ પ્રકાર કે
ટેક્સ સે જો રહિત છે ડસકા નામ નગર છે. સમસ્ત વસ્તુઓં કી પ્રાપ્તિ કા જો સ્થાન છે ડસકા
નામ પત્તન છે. અથવા વેલગાડો દ્વારા યા નૌકાઓં દ્વારા જહાં પર જાને કા માર્ગ હોતા છે.
ડસકા નામ પત્તન છે. અથવા જલયાન દ્વારા હો જહા પર જાયા જા સકતા છે વહ પટ્ટણ છે

ઉક્તંચ—પત્તન શકટૈર્ગમ્ય ઘોટકૈર્નૌભિરેવ ચ । નૌભિરેવચ યદ્ગમ્ય પટ્ટન તત્પ્રચક્ષતે ૧

(૧) નૈસર્પ્યનિધિ-એ નિધિનૈસર્પ્યનામક દેવથી અધિષ્ઠિત હોય છે (૨) પાંડુનિધિ-એ નિધિ
પાંડુક નામના દેવથી અધિષ્ઠિત હોય છે (૩) પિંગલક નિધિ- એ પિંગલક નામક દેવથી
અધિષ્ઠિત હોય છે (૪) સર્વરત્નનિધિ-એ સર્વરત્નનામક દેવથી અધિષ્ઠિત હોય છે (૫)
મહાપદ્મનિધિ-એ મહાપદ્મનામક દેવથી અધિષ્ઠિત હોય છે (૬) કાલનિધિ-એ કાલ નામક
દેવથી અધિષ્ઠિત હોય છે. (૭) મહાકાલ નિધિ-એ મહાકાલ નામક દેવથી અધિષ્ઠિત હોય
છે (૮) માણવકનિધિ- એ માણવક નામક દેવથી અધિષ્ઠિત હોય છે અને (૯) શંખનિધિ
એ શંખ નામક દેવથી અધિષ્ઠિત હોય છે

જેસત્પંમિ જિવેસા ગામાગરનગર પટ્ટનાણં ચ । દોણમુહ મહંબાળં સંધાવારાવણ ગિહાણં ॥૧॥
નૈસર્પ્ય નામક નિધિમાં ગ્રામ આકર, નગર, પટ્ટણ, દ્રોણમુખ, મહંબ, રુન્ધાવાર, આપણ
અને ભવન એમની સ્થાપના વિધિ રહે છે વૃત્તિ-વાહ-થી જે આવેષ્ટિત હોય છે, તેને ગ્રામ
કહેવામાં આવે છે જ્યાં સુવર્ણરત્ન વગેરેની ઉત્પત્તિ હોય છે, તેનું નામ આકર છે અઠાર
પ્રકારના કૌશથી જે રહિત હોય છે તે નગર કહેવાય છે સમસ્ત વસ્તુઓની પ્રાપ્તિ જે
સ્થાન છે તે પત્તન કહેવાય છે અથવા ગળક ગાડી વડે કે નાવો વડે જ્યાં જઈ શકાય છે
તેનું નામ પટ્ટણ છે અથવા જ લયાન દ્વારા જ જ્યાં જઈ શકાય છે તે પત્તન છે-

—सार्द्धक्रोशद्वयान्तरेण ग्रामान्तररहितम् वसतिरिति । स्फुग्वावर-कटकम् आपणो हट्टः
गृहम्-भवनम् उपलक्षणात् खेटकर्षटादि परिग्रह खेट-धुलिकाप्राकारवेष्टितम् नदी
पर्वतवेष्टितं च नगरम्, कर्षटम् क्षुद्रप्राकारवेष्टितं कुत्सितनगरम्, एतेषां स्थापनविधयो
नैसर्पाख्ये निर्धौ भवन्तीत्यर्थः ॥ १ ॥ अथ द्वितीयं पाण्डुकाधिष्ठातृदेवस्य पाण्डुकना
मक निधिस्वरूपं तत्र यानि उत्पद्यन्ते तान्याह—

तत्र गणितस्य संख्याप्रधानतया व्यवहर्तव्यस्य दीनागदेः नारिकेलदेर्वा च
शब्दात्परिदृश्यस्य मौक्तिकादे रूपात्तिप्रकारः वर्णनम्, तथा मानं सेतिकादि तद्विषयो यः
सोऽपि मानमेव मेयं पाट्येन पाइलीति लोकप्रसिद्धेन मातुं योग्यम्, तथा उन्मान

जलमार्ग से भी और स्थलमार्ग से भी जहां पर सुविधासे जाया जाता है वह द्रोणमुख है
जहां पर ढाई कोश पर्यन्त आस पास में कोई भा ग्रामान्तर नहीं होने हैं उसका नाम
महम्ब हैं । स्फुग्वावर नाम कटक का है । जिसे भाषा में-छावनी कहा गया है । आपण नाम
बाजार का है. और गृह नाम भवन का है । उपलक्षण से यहाँ पर खेट कर्षट आदि स्थानों
का भी ग्रहण हुआ है । धुलिका के प्राकार कोट से परिवेष्टित हुए स्थान का नाम खेट
है । नदी एवं पर्वत से वेष्टित हुये स्थान का नाम नगर है, क्षुद्र प्राकारसे परिवेष्टित कुत्सि-
तनगर का नाम कर्षट है इनसब की स्थापना करने की विधिया नैसर्प नाम की निधि में
होती हैं । दूसरी पाण्डुकनिधि है—इसके सम्बन्ध में ऐसा कथन है ।

गणितस्य य उत्पत्ती माणुस्माणस्स जं पमाणं च घणस्स य बीजाण य उत्पत्ती पंडुप मणिया ।
संख्या प्रधान होने से व्यवहर्तव्य दीनार आदि का अथवा नारिकेल आदि का तथा
परीक्ष्य मौक्तिकादि का कथन तथा मान-सेतिका आदि रूप तौल का तथा इस तौल के विषय-
भूत पदार्थ का उन्मान तुला, कर्ष-तौल इनका और इनके द्वारा जो तौल जाते पदार्थ है,

उत्पत्त्य-उत्पत्तं शकटैर्गम्यं घोटकै नौमिरेव च । नौमिरेवच यद्गम्य पट्टन तत्प्रचक्षते ॥१॥
जणभागेथी अने स्थल भागेथी पणु जथा जध शक्य छे, ते द्रोणु भुण छे. जथा
अही गाढ सुधी पीअ आओ होता नथी. तेनुं नाम मडंअ छे स्कंधावर नाम कटकनु छे. जेने
हिन्दी भाषाभा 'छावनी' कहे छे आपणु गजारनुं नाम छे अने गृह भवननु नाम छे.
उपलक्षयुथी अही 'जेट, कर्षट' वगेरे स्थानो तु पणु अडणु यथुं छे धुलिकाना प्राकार-
कोट-थी परिवेष्टित यथेला स्थाननुं नाम जेट छे नही अने पर्वत थी वेष्टित स्थाननु
नाम नगर छे. क्षुद्र प्राकारथी परिवेष्टित यथेला कुत्सित नगरनु नाम कर्षट छे. जे
सर्वणी स्थापना करवानी विधियो नैसर्पनामक निधिमा होय छे

गणितस्य य उत्पत्ती माणुस्माणस्स ज पमाण च ।
घणस्स य बीजाणय उत्पत्ती पणुप मणिया ॥२॥

संख्या प्रधान होवाथी व्यवहर्तव्य दीनार वगेरेनु अथवा नारिकेल वगेरेनु तेमज
परीक्ष्य मौक्तिकादि कथन तेमज मान-सेतिका आदि रुप तौलनु तेमज जे तौलना
विषयभूत पदार्थनु उन्मान, तुला कर्ष-तौल जेमनु अने जेमना वडे जे तौलनाभां आवे
छे जेवा जे पदार्थो छे तेमनु तथा धान्य शादि वगेरे अने पीअनुं आ प्रमाणे जे सर्वणी

તુલારૂપાદિ તદ્વિપયં યત્તદપિ ઝન્માન ધરિમજાતીયધનમિત્યર્થઃ તસ્ય ચ યત્પ્રમાણં હિઙ્ગવિપરિણામેન તત્પાણ્ડુકે મણિતમિતિ સમ્બન્ધઃ, ધાન્યસ્ય શાલ્યાદે વીજાનાં ચ વાપયોગ્યધાન્યાનામુત્પત્તિઃ પાણ્ડુકે નિધૌ મણિતા ॥૨॥

અથ તૃતીયં પિઙ્ગલકાધિષ્ઠાતૃદેવસ્ય પિઙ્ગરુકનામકનિધિરૂપં તત્ર સર્વાભરણ-વિધિં ચ આહ—“સન્વા” ઇત્યાદિ

તત્ર સર્વા આભરણવિધિઃ યઃ પુરુષાણાં યશ્ચ મહિલાનાં તથા શ્વાનાં હસ્તિનાં ચ સ યથૌચિત્યેન પિઙ્ગલનામનિ નિધૌ મણિતા મૂલે સા મણિતેતિ સ્ત્રીલિંગપ્રયોગઃ નિધેઃ પ્રાકૃતભાષાયમાર્પત્વાત્ ઇતિ પદે આભરણસ્ય પ્રયોજન મવતિ તદા તથાભૂતાનિ આભર-ણાનિ નિષ્કાશ્યતે । સર્વા રત્નાધિષ્ઠાતૃદેવસ્ય ચતુર્થ સર્વરત્નાખ્યનિધિસ્વરૂપમાહ ‘રયણાઈ’ ઇત્યાદિ । તત્ર રત્નાનિ ચતુર્દશાપિ વરાણિ ચક્રવર્તિનશ્ચક્રાદીનિ ચક્રદણ્ડાસિહચર્મ-મણિકાકેળીતિ સપ્ત એકેન્દ્રિયાણિ સેનાપતિ ગાથાપતિ વર્ડકી પુરોહિત અશ્વ હસ્તિ સ્ત્રી સમાખ્યાનિ સેનાપત્યાદીનિ ચ સપ્ત પન્ચેન્દ્રિયાણિ સર્વરત્ને સર્વરત્નાખ્યે મહાનિધૌ ઉત્પદ્યન્તે ઇત્યર્થઃ ॥૪॥ અથ પઠ્ચમે મહાપદ્માધિષ્ઠાતૃદેવસ્ય મહાપદ્મનિધૌ યેષાં યા

ઝનકા તથા ધાન્ય શાલિ આદિ કા ઓર બીજ કા ઇસ તરહ ઇન સબ કે નાપને તોલને કી વિધિ કા પરિમાણ ઇસ દુસરી નિધિ મેં રહતા હૈ * અર્થાત કૌન વસ્તુ કિતની હૈ * કિતને વજન કી હૈ * ઇત્યાદિ કા સબ હિસાબ કિતાબ યહી નિધિ કરતી હૈ .

તૃતીય નિધિ—સન્વા આભરણ વિહી પુરિસાણં જા ય હોઈ મહિલાણં ।

આસાણ ય હૃત્યીળ ય પિંગલગિર્હિમિ સા ય મળિયા “૩”

સર્વ પ્રકાર કે પુરુષો કે એવં મહિલાઓ કે ઘોડો કે એવં હાથિયોં કે આભરણોં કી વિધિ ઇસ તૃતીય પિઙ્ગલ નિધિ મેં રહતી હૈ .

ચતુર્થ નિધિ—રયણાઈ સન્વરયણે ચઢહસ વિ વરાઈ ચક્રકવદ્વિસસ ઉત્પજ્જંતે પર્ગિદિયાઈ પર્ગિદિયાઈ ચ “૪” સર્વ રત્નનામ કી નિધિમેં ચૌદહ રત્ન જો કો ચક્રવર્તી કો પ્રાપ્ત હોતે હૈં ઉત્પન્ન હોતે હૈં ઇન

માપવા—તોલવાની વિધિનુ પરિમાણુ બીજ નિધિમા રહે છે. એટલે કે કઈ વસ્તુ કેટલી, છે, કેટલા વજનવાળી છે, વગેરેનો હિસાબ—કિતાબ એ નિધિકરે છે. તૃતીયનિધિ—

સન્વા આભરણવિહી પુરિસાણં જા ય હોઈ મહિલાણં ।

આસાણ ય હૃત્યીળ ય પિંગલગિર્હિમિ સા મળિયા ॥૩॥

અર્વ પ્રકારના પુરુષોનાસ્ત્રીઓના, ઘોડાઓના અને હાથીઓના આભરણોની વિધિ એ ત્રીજી પિંગલ નિધિમા રહેલી છે.

ચતુર્થનિધિ—રયણાઈ સન્વરયણે ચઢહસ વિ વરાઈ ચક્રકવદ્વિસસ । ઉત્પજ્જંતે પર્ગિદિ-યાઈ, પર્ગિદિયાઈ ચ ॥૪॥

અર્વ રત્ન નામક નાધમા ચતુર્દશરત્નો કે જે ચક્રવર્તી ને પ્રાપ્ત હોય છે તે ઉત્પન્ન થાય એ ૧૪ રત્નોમાં સાત રત્નો—ચક્રરત્ન, હંકરત્ન, અસિરત્ન, હ્રત્તરત્ન, અમરત્ન, મહિરત્ન અને કાકલી રત્ન એ બધા રત્નો એકેન્દ્રિય હોય છે. અને એમના, સિવાય સેનાપતિ

ઉત્પત્તિઃ યેષાં યા નિષ્પત્તિશ્ચ સા ઉચ્યતે સાધારણાન્યપિ ચક્રાદીનિ સેવનાપત્યાદીનિ
 એતાનિ પ્રભાવાત્ વિશિષ્ટતરાણિ ભવન્તિ રત્નપદં વાચ્યાનિ ભવન્તીતિ 'વત્થાણ ય' ઇત્યાદિ ।

તત્ર સર્વેષાં વસ્ત્રાણાં ચ યા ઉત્પત્તિ તથા સર્વમત્કીનાં વસ્ત્રગત સર્વરચનાર્ના
 રક્ષાનાં ચ માઢિજગ્ઘા રાગાણાં 'ધોવ્વણય' ત્તિ સર્વેષાં પ્રક્ષાલનત્રિધીનાં ચ યા નિષ્પત્તિઃ
 સા સર્વા મહાપદ્ધે મહાપદ્ધનામકનિધૌ વર્તતે મહાપદ્ધનિધેઃ શુક્લરક્તાદિ ગુણોપેતત્વાત્
 વસ્ત્રાદીનાં સ નિધિઃ સ્વચ્છરક્તાદિભાવં વસ્ત્રાદીનાં કરોતિ ચતુરશીતિ લક્ષાણા હસ્તીના-
 મશ્વાના ધ્વણવતિ કોટિસખ્યાવતા મનુષ્યાણા વસ્ત્રાણિ સમુત્પાદ્ય સમર્પયતીતિ ।

અથ પશ્ચો નિધિઃ અથ કાલાધિષ્ઠાતૃદેવસ્ય કાલનિધિસ્વરૂપ કાલનામનિ નિધૌ ચ
 યાનિ વસ્તૂનિ સન્તિ તાન્યાહ—'કાલે કાલણ્ણાણં' ઇત્યાદિ ।

તત્ર કાલે કાલનામનિ નિધૌ કાલજ્ઞાનં સમસ્ત જ્યોતિઃ શાસ્ત્રાનુવન્ધિજ્ઞાનમ્ તથા
 ત્રિષ્વપિ વશોષ્ટ્ર ત્રયો વંશા તીર્થઙ્કરવંશશ્ચક્રવર્તિવંશાઃ બલદેવવાસુદેવવંશાશ્ચ ઇત્યેતેષુ ત્રિષ્વપિ

૧૪ રત્નો મેં સાત રત્ન ચક્રરત્ન, ઢળરત્ન, અસિરત્ન, છત્રરત્ન ચર્મરત્ન, મણિરત્ન એવં કાક-
 ણીરત્ન યે સાત-રત્ન એકેન્દ્રિય હોતે હૈં . ઓર इनके अतिरिक्त सेनापति गाथापति, वर्द्धकी,
 पुरोहित अश्व हस्ति, एव जी ये सात रतन पञ्चेन्द्रिय होंते हैं पंचमी निधि—

વત્થાણય ઉત્પત્તી ણિપ્પત્તી ચેવ સવ્વમત્તીણં રંગાણ ય ધોચ્ચ ણ ય સવ્વા એસા મહાપદ્ધમે '૫'
 હસ મહાપદ્ધ નામ કી પાંચવીં નિધિ મેં સમસ્ત પ્રકાર કે વલ્લો કી ઉત્પત્તિ તથા વલ્લગત રચનાઓ
 કી રંગોફી, ઓર વલ્લો કે ધોને કી વિધિ નિષ્પન્ન હોતી હૈં । ક્યોંકિ યહ મહાપદ્ધનિધિ શુક્લ રક્ત
 આદિ ગુણો સે યુક્ત હોતી હૈં. હસલિયે યહ નિધિ વલ્લો કી મિન્ન ૨ પ્રકાર કે રંગોં સે રંગના તથા
 હન્ટે ઘોકર સાફ કરના, એવ ચૌરાસી લાખ હાથિયોં કે ઓર ઘોઢોં કે તથા ૧૬ કરોડ મનુષ્યોં
 કે વલ્લો કી બનાકર હન્ટેં સમર્પણ કરના યહ સવ કામ હસી નિધિ કા હૈં ।

છઠી નિધિ—કાલે કાલણ્ણાણં સવ્વપુરાણં ચ તિસુ વિ વંસેસુ ।

સિપ્પસયં કમ્માણિ ય તિણિ પયાપ્પ હિયકરાણિ "૬"

હસ કાલ નામ કી છઠી નિધિ મેં સમસ્ત જ્યોતિઃ શાસ્ત્રાનુવન્ધો જ્ઞાન તથા તીર્થંકર
 વંશ ચક્રવર્તિવંશ ઓર બલદેવ વાસુદેવ વંશ इन तीन वशो में जो शुभाशुभ हो चुका है .होने

गाथापति, वर्द्धकी पुरोहित, अश्व, हस्ति અને जी એ સાત રત્નો પંચેન્દ્રિય હોય છે.

પંચમી નિધિ—વત્થાણય ઉત્પત્તી ણિપ્પત્તી ચેવ સવ્વમત્તીણં ।

રંગાણ ય ધોવ્વાણ ય સવ્વા એસા મહાપદ્ધમે ॥૫॥

એ મહાપદ્ધનામક પાંચમી નિધિમા સર્વ પ્રકારના વસ્ત્રોની ઉત્પત્તિ તેમજ વસ્ત્રગત
 સમસ્ત રચનાઓની ૨ ગોની અને વસ્ત્રોવિગેરેને ધોવાની વિધિ નિષ્પન્ન હોય છે. કેમ કે એ
 મહાપદ્ધનિધિ શુક્લ-રક્ત વગેરે શુદ્ધોથી યુક્ત હોય છે. એથી આ નિધિ વસ્ત્રોને કિન્ન-કિન્ન
 પ્રકારના ૨ ગોથી રંગવા તેમજ તેમને પ્રક્ષાલિત કરવા ૮૪ લાખ હાથીઓના અને ઘોડાઓના
 તથા ૯૬ કરોડ મનુષ્યોના વસ્ત્રોને ધોવાની તેમને અર્પવા, એ બધું કામ એ નિધિનું છે.

છઠીનિધિ-કાલે કાલણ્ણાણં સવ્વપુરાણં ચ તિસુ વિ વંસેસુ ॥

સિપ્પસય કમ્માણિય તિણિ પયાપ્પ હિયકરાણિ ॥૬॥

એ કાલ નામક છઠી નિધિમાં સમસ્ત જ્યોતિઃ-શાસ્ત્રાનુવન્ધી જ્ઞાન તીર્થંકર ભગવાનનો
 વંશ, ચક્રવર્તી વંશ અને બલદેવ-વાસુદેવ એ ત્રણ વંશોમાં જે શુભાશુભ થઈ ચૂક્યું છે થવાનું છે,

તુલારુર્ણાદિ તદ્વિષયં યત્તદપિ ઝન્માન સ્વપ્નગુહાદિ ધરિમજાતીયઘનમિત્યર્થઃ તસ્ય ચ યત્પ્રમાણં ક્ષિપ્તવિષયરિણામેન તત્પાણ્ડુકે મણિતમિતિ સમ્બન્ધઃ, ધાન્યસ્ય શાલ્યાદે વીજાનાં ચ વાપયોગ્યધાન્યાનામુત્પત્તિઃ પાણ્ડુકે નિર્ધૌ મણિતા ॥૨॥

અથ તૃતીયં પિઙ્ગલકાષિષ્ઠાતૃદેવસ્ય પિઙ્ગરુનામકનિધિરૂપં તત્ર સર્વાભરણ-વિધિં ચ આહ—“સન્વા” इत्यादि

તત્ર સર્વા આભરણવિધિઃ યઃ પુરુષાણાં યશ્ચ મહિલાનાં તથા શ્વાનાં હસ્તિનાં ચ સ યથૌચિત્યેન પિઙ્ગલનામનિ નિર્ધૌ મણિતા મૂલે સા મણિતેતિ સ્ત્રીલિંગપ્રયોગઃ નિધેઃ પ્રાકૃતભાષાયમાર્પત્વાત્ इति पदे आभरणस्य प्रयोजनं भवति तदा तथाभूतानि आभरणानि निष्काश्यते । सर्वा रत्नाधिष्ठातृदेवस्य चतुर्थं सर्वरत्नाख्यनिधिस्वरूपमाह ‘रयणाह’ इत्यादि । तत्र रत्नानि चतुर्दशापि वराणि चक्रवर्तिनश्चक्रादीनि चक्रदण्डासिछत्रचर्म-मणिकाક્રેणीति सप्त एकेन्द्रियाणि सेनापति गाथापति वर्द्धकी पुरोहित अश्व हस्ति स्त्री समाख्यानि सेनापत्यादीनि च सप्त पञ्चेन्द्रियाणि सर्वरत्ने सर्वरत्नाख्ये महानिर्धौ उत्पद्यन्ते इत्यर्थः ॥४॥ अथ पठ्चमे महापद्माधिष्ठातृदेवस्य महापद्मनिर्धौ येषां या

उनका तथा धान्य शालि आदि का और बीज का इस तरह इन सब के नापने तौलने की विधि का परिमाण इस दूसरी निधि में रहता है : अर्थात् कौन वस्तु कितनी है : कितने वजन की है : इत्यादि का सब हिसाब किताब यही निधि करती है .

તૃતીય નિધિ—સન્વા આભરણ વિદી પુરિસાણં જા ય હોહ મહિલાણં ।

આસાણ ય હત્થીણ ય પિંગલણિહિમિ સા ય મણિયા “૩”

સર્વ પ્રકાર કે પુરુષો કે एवं મહિલાઓ કે ઘોડો કે एवं હાથિયો કે આભરણોં કી વિધિ इस तृतीय पिङ्गल निधि में रहती है .

चतुर्थे निधि—रयणाहं सर्वरयणे चउहस वि वराहं चक्रवह्निस्सउप्पज्जंते. पग्गिदियाहं पग्गिदियाहं च “४”

સર્વ રત્નનામ કી નિધિમેં ચૌદહ રત્ન જો કો ચક્રવર્તી કો પ્રાપ્ત હોતે હૈં ઉત્પન્ન હોતે હૈં इन

આપવા—તોલવાની વિધિનું પરિમાણ બીજા નિધિમાં રહે છે. એટલે કે કઈ વસ્તુ કેટલી, છે, કેટલા વજનવાળી છે, વગેરેનો હિસાબ—કિતાબ એ નિધિકરે છે. તૃતીયનિધિ—

સન્વા આભરણવિદી પુરિસાણં જા ય હોહ મહિલાણં ।

આસાણ ય હત્થીણ ય પિંગલણિહિમિ સા મણિયા ॥૩॥

સર્વ પ્રકારના પુરુષોના સ્ત્રીઓના, ઘોડાઓના અને હાથીઓના આભરણોની વિધિ એ ત્રીજી પિંગલ નિધિમાં રહેલી છે.

ચતુર્થનિધિ—રયણાહં સર્વરયણે ચઉહસ વિ વરાહ ચક્રવહ્નિસ્સ । ઉપ્પજ્જંતે પગ્ગિદિ-યાહ, પગ્ગિદિયાહં ચ ॥૪॥

સર્વ રત્ન નામક નાધમાં ચતુર્દશરત્નો કે જે ચક્રવર્તી ને પ્રાપ્ત હોય છે તે ઉત્પન્ન થાય એ ૧૪ રત્નોમાં સાત રત્નો—ચક્રરત્ન, દંડરત્ન, અસિરત્ન, છત્રરત્ન, ચમરરત્ન, મશ્ચિરત્ન અને કાકણી રત્ન એ બધા રત્નો એકેન્દ્રિય હોય છે. અને એમના, સિવાય સેનાપતિ

ઉત્તપત્તિઃ યેષાં યા નિષ્પત્તિશ્ચ સા ઉચ્યતે સાધારણાન્યપિ ચક્રાદીનિ સેવનાપત્યાદીનિ
 એતાનિ પ્રભાવાત્ વિશિષ્ટતરાણિ ભવન્તિ રત્નપદં વાચ્યાનિ ભવન્તીતિ 'વત્થાણ ય' ઇત્યાદિ ।

તત્ર સર્વેષાં વસ્ત્રાણાં ચ યા ઉત્પત્તિ તથા સર્વભક્તીનાં વસ્ત્રગત સર્વરચનાનાં
 રક્ષાનાં ચ માઢિજઘ્ઠા રાગાણા 'ધોવ્વણય' ત્તિ સર્વેષાં પ્રક્ષાલનવિધીનાં ચ યા નિષ્પત્તિઃ
 સા સર્વા મહાપદ્ધે મહાપદ્ધનામકનિધૌ વર્તતે મહાપદ્ધનિધેઃ શુક્લરક્તાદિ ગુણોપેતત્વાત્
 વસ્ત્રાદીનાં સ નિધિઃ સ્વચ્છરક્તાદિભાવં વસ્ત્રાદીનાં કરોતિ ચતુરશીતિ લક્ષાણાં હસ્તીના-
 મશ્વાનાં ષ્ણવતિ કોટિસંખ્યાવતા મનુષ્યાણા વસ્ત્રાણિ સમુત્પાદ્ય સમર્પયતીતિ ।

અથ પઠ્ઠો નિધિઃ અથ કાલાધિષ્ઠાત્તદેવસ્ય કાલનિધિસ્વરૂપ કાલનામનિ નિધૌ ચ
 યાનિ વસ્તુનિ સન્તિ તાન્યાહ—'કાલે કાલણ્ણાણં' ઇત્યાદિ ।

તત્ર કાલે કાલનામનિ નિધૌ કાલજ્ઞાનં સમસ્ત જ્યોતિઃ શાસ્ત્રાનુબન્ધિજ્ઞાનમ્ તથા
 ત્રિષ્વપિ વંશેષુ ત્રયો વંશા તીર્થદ્વરવંશશ્ચક્રવર્તિવંશાઃ બલદેવવાસુદેવવંશાશ્ચ ઇત્યેતેષુ ત્રિષ્વપિ

૧૪ રત્નો મેં સાત રત્ન ચક્રરત્ન, દળહરત્ન, અસિરત્ન, છત્રરત્ન ચર્મરત્ન, મળિરત્ન એવં કાક-
 ધીરત્ન યે સાત-રત્ન એકેન્દ્રિય હોતે હૈં . ઓર इनके अतिरिक्त सेनापति गाथापति, वर्द्धकी,
 पुरोहित अ.स्व हस्ति, एव स्त्री ये सात रत्न पञ्चेन्द्रिय हોते हैं पंचमी निधि—

વત્થાણય ઉપ્પત્તી ણિપ્પત્તી ચેવ સવ્વભક્તીળં રંગાણ ય ધોવ્વ ણ ય સવ્વા એસા મહાપડમે '૫'
 હસ મહાપદ્ધ નામ કી પાંચવીં નિધિ મેં સમસ્ત પ્રકાર કે વર્ણો કી ઉત્પત્તિ તથા વક્ષગત રચનાઓ
 કી રંગોકી, ઓર વર્ણો કે ઘોને કી વિધિ નિષ્પન્ન હોતી હૈં ! ક્યોંકિ યહ મહાપદ્ધનિધિ શુક્લ રક્ત
 આદિ ગુણો સે યુક્ત હોતી હૈં. હસલિયે યહ નિધિ વર્ણો કો ભિન્ન ૨ પ્રકાર કે રંગોં સે રંગના તથા
 ંહે ઘોંકર સાફ કરના, એવં ચોરાસી લાસ હાથિયોં કે ઓર ઘોઠોં કે તથા ૯૬ કરોડ મનુષ્યોં
 કે વર્ણો કો બનાકર ંહેં સમર્પણ કરના યહ સબ કામ હસી નિધિ કા હૈં ।

છઠી નિધિ—કાલે કાલણ્ણાણ સવ્વપુરાણં ચ તિસુ વિ વંસેસુ ।

તિષ્પસયં કમ્માણિ ય તિણ્ણિ પયાપ હિયકરાણિ "૬"

હસ કાલ નામ કી છઠી નિધિ મેં સમસ્ત જ્યોતિઃ શાસ્ત્રાનુબન્ધી જ્ઞાન તથા તીર્થકર
 વંશ ચક્રવર્તિવંશ ઓર બલદેવ વાસુદેવ વંશ इन तीन वशों में जो शुभाशुभ हो चुका है .होने

ગાથાપતિ, વર્ધકી પુરોહિત, અસ્ત્ર, હસ્તિ અને સ્ત્રી એ સાત રત્નો પંચેન્દ્રિય હોય છે.

પંચમી નિધિ—વત્થાણય ઉપ્પત્તી ણિપ્પત્તી ચેવ સવ્વભક્તીળં ।

રંગાણ ય ધોવ્વાણ ય સવ્વા એસા મહાપડમે ॥૫॥

એ મહાપદ્ધનામક પાંચમી નિધિમા સર્વ પ્રકારના વસ્ત્રોની ઉત્પત્તિ તેમજ વક્ષગત
 સમસ્ત રચનાઓની રંગોની અને વસ્ત્રોવિશેરેને ધોવાની વિધિ નિષ્પન્ન હોય છે. કેમ કે એ
 મહાપદ્ધનિધિ શુક્લ-રક્ત વગેરે શુભેાથી યુક્ત હોય છે. એથી આ નિધિ વસ્ત્રોને બિન્ન-બિન્ન
 પ્રકારના રંગોથી રંગવા તેમજ તેમને પ્રક્ષાલિત કરવા ૮૪ લાખહાથીઓના અને ઘોડાઓના
 તથા ૯૬ કરોડ મનુષ્યોના વસ્ત્રોને ધનાવીને તેમને અર્પવાં, એ બધુ કામ એ નિધિનું છે.

છઠીનિધિ-કાલે કાલણ્ણાણં સવ્વપુરાણં ચ તિસુ વિ વંસેસુ ॥

તિષ્પસય કમ્માણિય તિણ્ણિ પયાપ હિયકરાણિ ॥૬॥

એ કાલ નામક છઠી નિધિમાં સમસ્ત જ્યોતિઃ-શાસ્ત્રાનુબન્ધી જ્ઞાન તીર્થકર ભગવાનનો
 વંશ, અક્ષતી વંશ અને બલદેવ-વાસુદેવ એ ત્રણ વંશોમાં જે શુભાશુભ થઈ ચૂકયું છે થવાનું છે,

વંશેષુ સર્વપુરાણં ચ યદ્વાઘ્યં યત્ચ પુરાણં વ્યતીતમ્ ઉપલક્ષણાત્ વર્તમાનં ચ શુભાશુભં તત્સર્વમ્ અત્ર કાલાલ્પનિધૌ વર્તતે ઇતો મહાનિધિતઃ જ્ઞાયતે इत्यर्थः તંથા શિલ્પશતં વિજ્ઞાનશતમ્ ઘટલોહચિત્રરસ્ત્રનાપિતશિલ્પાનાં પશ્ચાનામપિ પ્રત્યેકં વિંશતિભેદાત્ કર્માણિ ચ કૃષ્યાદોનિ જઘન્યમધ્યમોત્કૃષ્ટભેદમિન્નાનિ ત્રીણિ એતાનિ પ્રજાયાઃ દ્વિતકરાણિ નિર્વાહાભ્યુદયહેતુત્વાત્ એતત્ સર્વમ્ અત્ર કાલનામનિ નિધૌ અમિધીયતે । અત્ર કાલનિધૌ મૂલોક્તાનિ સર્વાણ્યપિ વસ્તુજ્ઞાનાનિ વિદ્યન્તે તાનિ ચ પુણ્યપ્રભાવાત્ ચક્રવર્તિનઃ સમીપે સમુપસ્થાપિતાનિ ભવન્તીત્યર્થઃ । અથ સપ્તમો નિધિઃ મહાકાલાધિષ્ઠાતૃદેવસ્ય સપ્તમં મહાકાલનિધિસ્વરૂપં તત્ર ચ યેષામુત્પત્તિઃ તામાહ—‘લોહસ્સ ય इत्यादि ।

મૂલમ્—લોહસ્સ ઉપ્પત્તી હોઈ મહાકાલિ આગરાણં ચ ।

રુપ્પસ્સ સુવર્ણસ્સ ય મણિમુત્તસિલ્પવાલાણં ॥૭॥

છાયા—લોહસ્ય ચોત્પત્તિર્ભવતિ મહાકાલે ચાકરાણામ્ ।

રુપ્યસ્ય સુવર્ણસ્ય ચ મણિમુક્તાશિલા પ્રવાલાનામ્ ॥૭॥

તત્ર લોહસ્ય ચ નાનાવિધસ્ય ઉત્પત્તિર્ભવતિ મહાકાલે મહાકાલનામનિ નિધૌ’ તત્ર તદુત્પત્તિરાખ્યાયતે इत्यर्थः, તથા રુપ્યસ્ય સુવર્ણસ્ય ચ મણિમુક્તાશિલાપ્રવાલાનામ્ તત્ર મળયઃ—ચન્દ્રકાન્તાદયઃ મુક્તાઃ મુક્તાફલાનિ શિલાઃ સ્ફટિકાદયઃ પ્રવાલાશ્ચ इति

વાંછા હૈ એવં હો રહા હૈ વહ સબ રહતા હૈ . તાત્પર્યં યહ હૈ કિં હમ નિધિ સે સમસ્ત શુભાશુભ જાના જાતા હૈ શિલ્પશત—ધર-લોહ, ચિત્ર, વસ્ત્ર એવં નાપિત્ત્વં ઇન પાંચ શિલ્પો કે પ્રત્યેક શિલ્પ કે ૨૦ - ૨૦ ભેદ હૈ હસ તરહ સે યહ શિલ્પશત તથા કૃષિ વાણિજ્ય આદિ ત્રીન કર્મ—જો કિં ઉત્તમ, મધ્યમ એવ જઘન્ય કે ભેદ સે ત્રીન પ્રકાર કે હૈં ઓર જિન સે પ્રજાજનોં કા નિર્વાહ હોતા હૈં ઉનકા અભ્યુદય હોતા હૈં—જાને જાતે હૈં ।

સપ્તમનિધિ-લોહસ્સય ઉપ્પત્તી હોઈ મહાકાલિ આગરાણં ચ રુપ્પસ્સ સુવર્ણસ્સ ય મણિમુત્તસિલ્પવાલાણં ।

હસ મહાકાલ નામકી નિધિ મેં નાના પ્રકાર કી લોહ કી ઉત્પત્તિ બતાઈ ગઈ હૈ . તથા ચાંદો, સોના મણિ, મુક્તા શિલા-સ્ફટિક આદિ, એવં પ્રવાલ-મૂંગા इत्यादि કી સ્થાનોં કી ઉત્પત્તિ બતાઈ ગઈ હૈં ।

થઈ રહયુ છે તે બધુ રહે છે તાત્પર્યં આ પ્રમાણે છે એ નિધિથી અમસ્ત શુભ-અશુભ અણુવામા આવે છે શિલ્પશત ઘટ-લોહ, ચિત્ર, વસ્ત્ર તેમજ નાપિત્ત્વં એ પાંચ શિલ્પોના હરેકે હરેક શિલ્પના—૨૦ ૨૦ ભેદો છે આ પ્રમાણે આ શિલ્પશત તેમજ કૃષિ, વાણિજ્ય વગેરે ત્રણ કર્મ કે જે ઉત્તમ મધ્યમ અને જઘન્યના ભેદથી ત્રણ પ્રકારના છે અને જેમનાથી પ્રભાવો-નો નિર્વાહ થાય છે, તેમનો અભ્યુદય થાય છે—અણુવામા આવે છે

સપ્તમનિધિ-લોહસ્સ ય ઉપ્પત્તી હોઈ મહાકાલિ આગરાણં ચ ।

રુપ્પસ્સ સુવર્ણસ્સ ય મણિમુત્તસિલ્પવાલાણં ॥૮॥

એ મહાકાલ નામક નિધિમાં અનેક પ્રકારના લોહાંકની ઉત્પત્તિ બતાવવામાં આવી છે. તેમ ચાંદી, સોનામણિ, મુક્તાશિલા સ્ફટિક વગેરે તેમજ પ્રવાલ-મૂંગા વગેરેની ખાણોની ઉત્પત્તિ બતાવવામાં આવી છે.

ते तथा तेषां च सम्पन्निनाम् आकराणां 'स्वानि' इति प्रमिद्धानामुत्पत्तिर्भवति महाकाल-
नाम्निनिधौ इति योगा ।

अथाष्टमो निधिः अष्टमे माणवकाधिष्ठातृदेवस्य माणवकनिधिस्वरूपं तत्र च
यानि सन्ति तान्याह — 'जोहाण य' इत्यादि ।

तत्र योधानां शूराणां च शत्रूनां कातराणामुत्पत्तिरभिधीयते तथा आवरणाणां
च शरीररक्षकाणां वस्तूनां कवचादीनामुत्पत्तिर्ज्ञानं च यत्र प्रहरणानां शूरादीनां च सर्वा
च युद्धनीतिः गरुड शकटचक्रव्यूहरचनादि लक्षणा सर्वापि च दण्डनीतिः दण्डेन उप-
लक्षिता नीतिर्दण्डनीतिः सामदामदण्डभेदतत्त्वतुविधा माणवकनाम्नि निधौ अभिधीयते
ततः प्रवर्त्तते ज्ञायते इत्यर्थः । अथ नवमो निधिः अथ नवमे शङ्खाधिष्ठातृदेवस्य
शङ्खनामक महानिधिस्वरूपं तत्र च येषामुत्पत्तिस्तामाह—'णट्ट विही' इत्यादि ।

तत्र सर्वोऽपि मनोहादजनक नृत्यविधिः द्वात्रिंशत्सहस्रभेदभिन्नगात्रसचालनलक्षण-
नाट्यकरणप्रकारः' सर्वोऽपि च नाटकविधिः द्वात्रिंशत् भेदभिन्न अभिनेयप्रवचन-

अष्टम निधि-जोहाण य उत्पत्ति आवरण णं च पहरणं च सन्ना य जुद्धणीई माणवगे दं डणीइय' ८'

इस माणवक नामकी आठवीं निधि में योद्धाओं की कायरा को आवरणो-शरीररक्षक
कवचादि वस्तुओं की समस्त प्रकार के प्रहरणों-हथियारों की युद्ध नीति-गरुड, शकट, चक्रव्यूह
आदिरूप से रचना वांछे युद्धों की नीति की तथा साम-दाम, दण्ड, एव भेद इन चार प्रकार
की राजनितियों की उत्पत्ति कहो गई होती है . अर्थात् इस निधि से इन समस्त वस्तुओं की
उत्पत्ति का ज्ञान चक्रवर्ती की प्राप्त होता है ।

नववीं निधि-णट्टविहीणाडगविहो कव्वस्स य चउव्विहस्स उत्पत्ति

सखे महाणिहिम्मि तुडिअंगार्णं च सर्वेसि "९"

इस शङ्खनाम की निधि में नाट्यविधि की ३२ हजार नाटकाभिनयरूप अंग सचालन
करने के प्रकार की नाटक विधि ३२ प्रकार के नृत्य गीत वाजों का अभिनेय वस्तु से मिलता

अष्टमनिधि-जोहाण य उत्पत्ति आवरणं च पहरणं च ।

सन्ना य जुद्धणीई माणवगे दं डणीइ य ॥८॥

ये भाष्यक नामक आठवीं निधिमा योद्धाओंनी, कायदेनी-आवरणोंनी शरीर रक्षक
कवचादि वस्तुओंनी समस्त प्रकारना प्रहरणो शस्त्रो नी युद्धनीति गरुड, शकट, चक्र-
व्यूह वगैरे रूपमा रचनावाणा युद्धोनी नीतिनी तेसअ साम, दाम दण्ड अने वेद ओ या
प्रकारनी नीतिओनी उत्पत्ति कहेवाभा आवे छे ओटवे के ओ निधिणी ओ समस्त वस्तुओंनी
उत्पत्तिनु ज्ञान चक्रवर्तीने प्राप्त थाय छे

नवमी निधि-णट्टविहीणाडगविहो कव्वस्स य चउव्विहस्स उत्पत्ति ।

सखे महाणिहिम्मि तुडिअंगार्णं च सर्वेसि ॥९॥

ये शङ्ख नामक निधिमा नाट्यनिधिनी ३२ सहस्र नाटकाभिनय रूप अंग संचालन
करवाना प्रकारोनी नाट्यविधि ३२ प्रकारना नृत्य-गीतवाजोनी अभिनय वस्तुथी से अर्द्ध प्रदर्श-
१०८

વંશેષુ સર્વપુરાણં ચ યદ્ભાવ્યં યત્ચ પુરાણં વ્યતીતમ્ ઉપલક્ષણાત્ વર્તમાનં ચ શુભાશુભં તત્સર્વમ્ અત્ર કાલાલ્પનિધૌ વર્તતે હતો મહાનિધિતઃ જ્ઞાયતે હત્યર્થઃ તથા શિલ્પશતં વિજ્ઞાનશતમ્ ઘટલોહચિત્રવસ્ત્રનાપિતશિલ્પાનાં પશ્ચાનામપિ પ્રત્યેક વિંશતિમેદાત્ કર્માણિ ચ કૃષ્યાદોનિ જઘન્યમધ્યમોત્કૃષ્ટમેદમિન્નાનિ ત્રીણિ એતાનિ પ્રજાયાઃ હિતકરાણિ નિર્વાહાભ્યુદયહેતુત્વાન્ એતત્ સર્વમ્ અત્ર કાલનામનિ નિધૌ અભિધીયતે । અત્ર કાલનિધૌ મૂલોક્તાનિ સર્વાણ્યપિ વસ્તુજ્ઞાનાનિ વિદ્યન્તે તાનિ ચ પુણ્યપ્રભાવાત્ ચક્રવર્તિનઃ સમીપે સમુપસ્થાપિતાનિ ભવન્તીત્યર્થઃ । અથ સપ્તમો નિધિઃ મહાકાલાધિષ્ઠાતૃદેવસ્ય સપ્તમં મહાકાલનિધિસ્વરૂપ તત્ર ચ યેષામુત્પત્તિઃ તામાહ-‘લોહસ્સ ય હત્યાદિ ।

મૂલમ્-લોહસ્સ ઉપ્પત્તી હોહ મહાકાલિ આગરાણં ચ ।

રૂપ્પસ્સ સુવર્ણસ્સ ય મણિમુત્તસિલ્પવાલાણં ॥૭॥

છાયા-લોહસ્ય ચોત્પત્તિર્ભવતિ મહાકાલે ચાકરાણામ્ ।

રૂપ્યસ્ય સુવર્ણસ્ય ચ મણિમુક્તાશિલા પ્રવાલાનામ્ ॥૭॥

તત્ર લોહસ્ય ચ નાનાવિધસ્ય ઉત્પત્તિર્ભવતિ મહાકાલે મહાકાલનામનિ નિધૌ’ તત્ર તદુત્પત્તિરાખ્યાયતે હત્યર્થઃ, તથા રૂપ્યસ્ય સુવર્ણસ્ય ચ મણિમુક્તાશિલાપ્રવાલાનામ્ તત્ર મળયઃ -ચન્દ્રકાન્તાદયઃ મુક્તાઃ મુક્તાફલાનિ શિલા’ સ્ફટિકાદયઃ પ્રવાલાશ્ચ હતિ વાલા હૈ એવં હો રહા હૈ વહ સવ રહતા હૈ . તાત્પર્યં યહ હૈ કિં ઇમ નિધિ સે સમસ્ત શુભાશુભ જાના જાતા હૈ શિલ્પશત-ઘટ-લોહ, ચિત્ર, વસ્ત્ર એવં નાપિજ્ઞ ઇન પાંચ શિલ્પો કે પ્રત્યેક શિલ્પ કે ૨૦ - ૨૦ મેદ હૈ ઇસ તરહ સે યહ શિલ્પશત તથા કૃષિ વાણિજ્ય આદિ ત્રીન કર્મ-જો કિં ઉત્તમ, મધ્યમ એવં જઘન્ય કે મેદ સે ત્રીન પ્રકાર કે હૈં ઓર જિન સે પ્રજાજનોં કા નિર્વાહ હોતા હૈં ઇનકા અભ્યુદય હોતા હૈં-જાને જાતે હૈં ।

સપ્તમનિધિ-લોહસ્સ ય ઉપ્પત્તી હોહ મહાકાલિ આગરાણં ચ રૂપ્પસ્સ સુવર્ણસ્સ ય મણિમુત્તસિલ્પવાલાણં

ઇસ મહાકાલ નામકી નિધિ મેં નાના પ્રકાર કી લોહે કી ઉત્પત્તિ બતાઈ ગઈ હૈ . તથા ચાંદો, સોના મણિ, મુક્તા શિલા-સ્ફટિક આદિ, એવં પ્રવાલ મૂંગા હત્યાદિ કી સ્થાનોં કી ઉત્પત્તિ બતાઈ ગઈ હૈં ।

થઈ રહ્યુ છે તે બધુ રહે છે તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે એ નિધિથી સમસ્ત શુભ-અશુભ અણુવામા આવે છે. શિલ્પશત ઘટ-લોહ, ચિત્ર, વસ્ત્ર તેમજ નાપિત એ પાંચ શિલ્પોના હરેકે હરેકે શિલ્પના-૨૦ ૨૦ મેદો છે આ પ્રમાણે આ શિલ્પશત તેમજ કૃષિ, વાણિજ્ય વગેરે ત્રણ કર્મ કે જે ઉત્તમ મધ્યમ અને જઘન્યના મેદથી ત્રણ પ્રકારના છે અને જેમનાથી પ્રજાઓ નો નિર્વાહ થાય છે, તેમનો અભ્યુદય થાય છે-અણુવામા આવે છે

સપ્તમનિધિ-લોહસ્સ ય ઉપ્પત્તી હોહ મહાકાલિ આગરાણં ચ ।

રૂપ્પસ્સ સુવર્ણસ્સ ય મણિમુત્તસિલ્પવાલાણં ॥૮॥

એ મહાકાલ નામકે નિધિમાં અનેક પ્રકારના લોખંડની ઉત્પત્તિ બતાવવામા આવી છે તેમ ચાંદી, સોનામણિ, મુક્તાશિલા સ્ફટિક વગેરે તેમજ પ્રવાલ-મૂંગા વગેરેની ખાણોની ઉત્પત્તિ બતાવવામાં આવી છે,

ते तथा तेषां च सम्बन्धिनाम् आकराणां 'स्त्रानि' इति प्रमिद्धानामुत्पत्तिर्भवेति महाकाल-
नाम्ननिनिधौ इति योगा ।

अथाष्टमो निधिः अष्टमे माणवकाधिष्ठातृदेवस्य माणवकनिधिस्वरूपं तत्र च
यानि सन्ति तान्याह — 'जोहाण य' इत्यादि ।

तत्र योधानां शूराणां च शत्रूणां कातराणामुत्पत्तिरभिधीयते तथा आवरणानां
च शरीररक्षकाणां वस्तूनां कवचादीनामुत्पत्तिर्ज्ञानं च यत्र प्रहरणानां खट्वादीनां च सर्वा
च युद्धनीतिः गरुड शकटचक्रव्यूहरचनादि लक्षणा सर्वापि च दण्डनीतिः दण्डेन उप-
लक्षिता नीतिर्दण्डनीतिः सामदामदण्डभेदतत्त्वविधा माणवकनाम्नि निधौ अभिधीयते
ततः प्रवर्तते ज्ञायते इत्यर्थः । अथ नवमो निधिः अथ नवमे शङ्खाधिष्ठातृदेवस्य
शङ्खनामक महानिधिस्वरूपं तत्र च येषामुत्पत्तिस्तामाह — 'णट्ट विही' इत्यादि ।

तत्र सर्वोऽपि मनोहादजनक नृत्यविधिः द्वात्रिंशत्सहस्रभेदभिन्नगात्रसंचालनलक्षण-
नाट्यकरणप्रकारः' सर्वोऽपि च नाटकविधिः द्वात्रिंशत् भेदभिन्न अभिनेयप्रवचन-

अष्टम निधि-जोहाण य उत्पत्ती आवरणं च पहरणार्णं सन्ना य जुद्धणीई मणवगे दंडणीदय' ८'

इस माणवक नामकी आठवीं निधि में योद्धाओं की कायरों को आवरणों-शरीररक्षक
कवचादि वस्तुओं की समस्त प्रकार के प्रहरणों हथियारों की युद्ध नीति-गरुड, शकट, चक्रव्यूह
आदिरूप से रचना बाँटे युद्धों की नीति की तथा साम-दाम, दण्ड, एव भेद इन चार प्रकार
की राजनितियों को उत्पत्ति कहा गई होती है । अर्थात् इस निधि से इन समस्त वस्तुओं की
उत्पत्ति का ज्ञान चक्रवर्ती को प्राप्त होता है ।

नववीं निधि-णट्टविहीणाडगविहो कव्वस्स य चउव्विहस्स उत्पत्ती
सखे महाणिहिम्मि तुडिअंगार्णं च सर्वेसि "९"

इस शङ्खनाम की निधि में नाट्यविधि की ३२ हजार नाटकाभिनयरूप अंग संचालन
करने के प्रकार की नाटक विधि ३२ प्रकार के नृत्य गीत वाजों का अभिनेय वस्तु से मिलता

अष्टम निधि-जोहाण य उत्पत्ती आवरणं च पहरणार्णं च ।
सन्ना य जुद्धणीई माणवगे दंडणीह य ॥८॥

ये माणवक नामके आठवीं निधिमा योद्धाओंनी, कायरोंनी-आवरणोंनी शरीर रक्षक
कवचादि वस्तुओंनी समस्त प्रकारना प्रहरणों शस्त्रों नी युद्धनीति गरुड, शकट, चक्र-
व्यूह वगैरे रूपमा रचनावाणा युद्धोंनी नीतिनी तेमज साम, दाम दण्ड अने भेद जो या
प्रकारनी नीतिओंनी उत्पत्ति कहेवाभा आवे छे अट्टवे के जो निधिधी जो समस्त वस्तुओंनी
उत्पत्तिनु ज्ञान चक्रवर्तीने प्राप्त थाय छे

नवमी निधि-णट्टविहीणाडगविहो कव्वस्स य चउव्विहस्स उत्पत्ती ।
सखे महाणिहिम्मि तुडिअंगार्णं च सर्वेसि ॥९॥

ये शङ्ख नामके निधिमा नाट्यनिधिनी ३२ सहस्र नाटकाभिनय रूप अंग संचालन
करवाना प्रकारनी नाट्यविधि ३२ प्रकारना नृत्य-गीतवाजोंनी अभिनय वस्तुथी से अष्ट प्रदर्श-
१०८

પ્રપञ्चનપ્રકારઃ નૃત્યવાદ્યગીતાદિ યાવન્નાટકમ્ પ્રકારઃ इत्यर्थः तथा चतुर्विधस्य काव्यस्य ग्रन्थस्य धर्मः १ अर्थः २ काम ३ मोक्ष ४ उद्देशगपुरुषार्थनिबद्धस्य अथवा संस्कृत १ प्राकृता २ पञ्चश ३ सकीर्ण ४ भाषानिबद्धस्य गद्य १ पद्य २ गेय ३ चौर्ण ४ पदबद्धस्य ना उत्पत्तिः निष्पत्तिः तद्विधिः, तत्र आद्यं काव्यचतुष्कं धर्मार्थादि प्रमिद्धम् द्वितीयचतुष्के संस्कृतप्राकृतद्वयं प्रसिद्धमेव अपञ्चशः तत्तद्देशेषु शुद्धतया भाषितम् सङ्कीर्णभाषा शौरसैन्यादि भाषा तन्निबद्धस्य तथा तृतीयचतुष्के गद्यस्य अञ्छन्दोबद्धं शस्त्रपरिज्ञाध्ययनवत्, पद्यं-छन्दोबद्धं विमुक्त्यध्ययनवत् गेयम् निषाध-ऋषभ-गान्धार-षड्ज-मध्यम-धैवत, परिशाधित तन्त्रीलयसमन्वितं गेयं भवति तत्र गान्धाररीत्या बद्ध परिशोधितं गानयोग्यम्, गेयमिति, चौर्णम् बाहुलकविधिवहुलं गमपाठबहुलं निपातबहुलं निपाताव्ययबहुलम् ब्रह्मचर्याध्ययनप-

हुઆ પ્રદર્શન કે પ્રકાર કો તથા ધર્મ અર્થ નામ ઓર મોક્ષ इन पुरुषार्थों के प्रतिपादन करने वाले ग्रन्थों को अथवा-संस्कृत, प्राकृत अपञ्चश और सकीर्ण इन चार प्रकार की भाषाओं में निबद्ध ग्रन्थों को अथवा गद्य, पद्य, गेय और चौर्ण पदों से बद्ध ग्रन्थ-इनको और समस्त प्रकार के नृटिताङ्गों की निष्पत्ति होती है. इन में धर्मार्थादि पुरुषार्थ चतुर्थष्टय से निबद्ध जो चतुर्विध काव्य है वह तो प्रसिद्ध है तथा द्वितीय प्रकार का चतुर्विध काव्यभी जो कि संस्कृत प्राकृत भाषाओं में निबद्ध हुआ है. प्रसिद्ध है, अपञ्चश काव्य निबद्ध होता है. तथा शौरसैन्य आदि भाषाओं में जो काव्य निबद्ध होता है वह सकीर्ण भाषा निबद्ध काव्य है। तृतीय चतुष्क वह है जो भिन्न भिन्न देशों की भाषाओं में जो काव्य शस्त्र परिज्ञाध्ययन की तरह छन्दो रचना से निबद्ध नहीं होता है वह पद्य काव्य है। निषाध, ऋषभ गान्धार षड्ज मध्यम और धैवत इन स्वरो में निबद्ध होता है और इन्हीं के अनुरूप तन्त्रीलय आदि से समन्वित होता हुआ गाने के लायक होता है वह गेय काव्य है जो काव्य ब्रह्मचर्याध्ययन पद की तरह बाहुलक विधि बहुल होता है। गम पाठ बहुल होता है। निपात बहुल होता है निपात अव्यय

નના પ્રકારની તેમજ ધર્મ, અર્થ, કામ અને મોક્ષ એ પુરુષાર્થોનું પ્રતિપાદન કરનારા ગ્રન્થોની અથવા સંસ્કૃત, પ્રાકૃત અપ્પ્ચશ અને સકીર્ણ એ ચાર પ્રકારની ભાષાઓમાં નિબદ્ધ ગ્રન્થોની અથવા ગદ્ય-પદ્ય, ગેય, અને ચૌર્ણ પદો થી બદ્ધ ગ્રન્થ-એમની અને સમસ્ત પ્રકારના નૃટિતાંગોની નિષ્પત્તિ હેતુ છે એમ જે ધર્માર્થાદિ પુરુષાર્થ ચતુષ્ટયથી નિબદ્ધ ચતુર્વિધ કાવ્યો છે તે તો પ્રસિદ્ધ છે તેમજ દ્વિતીય પ્રકારના ચતુર્વિધ કાવ્યો પદ્ય કે જે સંસ્કૃત, પ્રાકૃત ભાષાઓમાં નિબદ્ધ થયેલાં છે, પ્રસિદ્ધ છે અપ્પ્ચશ કાવ્ય તે છે કે જે ભિન્ન ભિન્ન દેશોની ભાષાઓમાં નિબદ્ધ હોય છે તથા શૌરસેની વગેરે ભાષાઓમાં જે કાવ્યો નિબદ્ધ હોય છે તે સકીર્ણ ભાષા નિબદ્ધ કાવ્ય છે. તૃતીય ચતુષ્કમાં જે કાવ્ય શાસ્ત્ર પરિજ્ઞા-ધ્યયનની જેમ છન્દોરચનાથી નિબદ્ધ હોતુનથી તે પદ્ય કાવ્ય છે નિષાધ, ઋષભ, ગાંધાર, ષડ્જ, મધ્યમ અને ધૈવત એ સ્વરોમાં નિબદ્ધ હોય છે અને એમના અનુરૂપ તન્ત્રીલય વગેરેથી સન્નિવિધ થઈને ગાતાલાયક હોય તે ગેયકાવ્ય કહેવાય છે. જે કાવ્ય બ્રહ્મચર્યાધ્યયન પદની જેમ બાહુલક બહુલ હોય છે ગમ પાઠ બહુલ હોય છે નિપાત

दवत् एतावद्गद्यादि चतुष्पदवद्धस्य वा उत्पत्तिः गङ्गनामनि महानिधौ भवति ।
तथा वृत्तिनाङ्गानां च तूर्याङ्गानां सर्वेषां गेयपदेन कथितानां वा तथा वाद्यभेदभिन्नाना
मुत्पत्तिः शङ्खे महानिधौ भवतीति । यदा चक्रार्त्तिं स्र विजयं करोति तदनन्तरं गंगा-
मुखवासिनो नवनिधयश्चक्रवर्त्तिनो भाग्योदयात् पातालमार्गेण चक्रप्रतमधिष्ठितग्रामे आगत्य
वसति तथा यदा चक्रवर्त्तिनां प्रयोजनं जायते तदा ते निधयश्चक्रवर्त्तिं पार्श्वं भजन्ते
तानेव निधीन् साधारणप्रकारेण अतः पर निरूपयन्नाह - 'चक्रद्व' इत्यादि ।

तत्र चक्राष्टप्रतिष्ठाः प्रत्येकमष्टसु चक्रेषु प्रतिष्ठानम् अवस्थानं येषां ते तथा,
यत्र यत्र वाहयन्ते तत्र तत्र अष्टचक्रप्रतिष्ठिता एव वहन्ति, अत्र अष्टपद चक्रगन्धान् पूर्वं
प्रयोक्तव्य पर प्रयोगः प्राकृतत्वादवसेयः अष्टोत्सेधाश्च अष्टां योजनानि उत्सेध उच्चैस्त्वं
येषां ते तथा नव च योजनानीति गम्यते विष्णुस्मृतिः विष्णुस्मृत्येण विस्तारेण नवयोजन
विस्तारा इत्यर्थः, द्वादशयोजनानि दीर्घाः आयामाः मञ्जुभावत्संस्थिता जाह्नव्याः

बहुल होता है । वह चौर्णकाव्य है । इस आठवीं गङ्गा निधि में हो समस्त प्रकार के वार्जों की
उत्पत्ति होती है । जब चक्रवर्ती विजय प्राप्त करने को निकलता है तब गंगा मुखवासी ये नौ
निधिया चक्रवर्ती के भाग्योदय से पाताल मार्ग से आकर चक्रवर्ती के रास्ते में आनेवाले ग्राम में
आकर वस जाती है । और जब चक्रवर्ती को कोई मतलब हांसिल करना होता है काम पड़ता है -
तो फिर ये चक्रवर्ती के पाम आ जाती है ।

चक्रद्व पट्टाणा अट्टदुस्सेहा य णवय विक्खंभा । बारह दीहा मंजूस सठिया जणहवी मुहे ॥१०॥

ये प्रत्येक निधिका अवस्थान आठ २ चक्रके ऊपर रहता है, जहा २ ये छेजाई जाती हैं
वहा वहां वे आठ चक्रों के ऊपर प्रतिष्ठित हुए हो जाती हैं । इनका उत्सेध-उँचाई आठ २ यो-
जन का होता है, विस्तार इनका नौ योजन का होता है बारह योजन की इनकी लम्बाई-
होती है तथा इनका आकार मञ्जूषा के जैसा होता है जहां से गंगा समुद्र में प्रवेश करती है
वहां पर ये नौनिधिया रहती है ।

अहुल डाय छे निपात अव्यय अहुल डाय छे ते चौर्णकाव्य छे ओ आठमी शय निधि-
मा सर्व प्रकारना वाद्योनी उत्पत्ति डाय छे न न्यारे चक्रवर्ती विजय प्राप्तकरवा नीकणे
छे त्थारे गंगामुखवासी ओ नव निधियो चक्रवर्तीना भाग्योदयथी पाताण मार्गथी आवीने
चक्रवर्तीना भर्गमा पडनारा आभोभा आवीने वसी जय छे अने न्यारे चक्रवर्तीने कौर्ण-
पक्षु कार्यनी सिद्धि भेजववी डाय छे कौर्ण काम आवी जय छे-त्यारे ओ सिद्धियो चक्रवर्ती
पासे आवी जय छे.

चक्रद्व पट्टाणा अट्टदुस्सेहा य णव य विक्खंभा । बारहदीहा मंजूस सठिया जाणहवीमुहे॥१०॥
ओभाथी इरेक निष्ठितु अवस्थान आठ-आठ चक्रनी उपर रहै छे न्यां न्यां ओ-
निधियो वरज्जवाभा आवे छे त्या-त्या तेओ आठयो नी उपर प्रतिष्ठित थर्धनेज जय
छे ओभनी उँचाय (उत्सेध) आठ आठ योजन जेटवी डाय छे, ओभनी विस्तार ९
योजन जेटवी डाय छे १२ योजन जेटवी ओभनी ल पार्श्व डाय छे तेभज ओभनी आकार

ગજ્ઞાયા મુખે યત્ર મહાનદીગજ્ઞા સમુદ્રં પ્રવિશતિ તત્ર एते नवनिधयः सन्तीत्यर्थः तथा तत्र वैदूर्यमणिकपाटाः वैदूर्यमणिमयाः खचिताः कपाटाः येषां ते तथाभूताः, कनकमयाः सौवर्णाः, पुनः कथंभूताः विविधरत्नप्रतिपूर्णाः विविधैः अनेकप्रकारकैः रत्नैः प्रति- पूर्णाः शशिस्रचक्रलक्षणाः शशिस्रचक्राकाराणि लक्षणानि चिह्नानि येषां ते तथाभूताः अनु- समबदनोपपत्तिकाः अनुरूपा, समा अविपमा, वदनोपपत्तिः द्वाररचना येषां ते तथाभूताः नवनिधयः । तथा—

ત્ર પલ્યોપમસ્થિતિકા પલ્યોપમા સ્થિતિ યેષાં તે તથાભૂતાઃ, નિધિસદ્ગનામાનઃ નિધિસદ્ગજ્ઞાનિ નામાનિ યેષાં તે તથાભૂતાઃ સ્વલુ નિશ્ચયે યત્ર ચ નિધિષુ તે દેવાઃ યેષાં દેવાનાં તે એવ નિધયઃ આવાસાઃ આશ્રયાઃ કીદૃશાસ્તે અક્રેયાઃ અક્રયણીયાઃ કિમથ- મિત્યાહ—આધિપત્યાય આધિપત્યદેતવે કોઽર્થ તેપામાધિપત્યાર્થી કાશ્ચિત્ મૂલ્યદાનાદિભિઃ ક્રાંતું ન શક્નોતિ ઇતિ કિન્તુ પૂર્વસુચરિતમહિમ્નૈત્યેત્યર્થઃ

वेरुलिय मणिकवाडा कणगमया विविहरयणपडिपुण्णा ।

ससिस्र चकलक्षण अणुसमवयणोववत्तीया ॥११॥

इनके किवाड वैदूर्यमणि के बने हुए होते हैं ये स्वयं स्वर्णमय होती है अनेक रत्नो से ये प्रतिपूर्ण होती हैं. इनमें जो चिह्न होते हैं वे शशि के सूर्य के और चक्र के आकार के होते हैं. इनके द्वारों की रचना अनुरूप और सम-अविपम होती है ।

પલિઓવમદ્વિર્દયા ણિહિસરણામા ય તત્થ સ્વલુ દેવા । જેસિતે આવાસા અવિકજ્ઞા આહિવચ્ચા ય ॥૧૨॥

प्रत्येक निधि के रक्षक देव की स्थिति एक पल्योपम की होती है जैसा निधि कानाम है वैसा ही रक्षक देवों का भी नाम होता है ये देव उन्हीं निधियों के सहारे पर रहते हैं. अतः ये निधियां उसके आवासरूप होती है. इन्हें कोई आधिपत्य के लिये खरीद नहीं सकता है ये तो भाग्यशाली चक्रवर्तियों को पूर्वचरित पुण्य प्रभाव से ही प्राप्त होती है ॥१२॥

મજ્જા (પેટી) જેવો હોય છે જ્યાથી ગગા સમુદ્રમાં પ્રવેશ કરે છે ત્યાં એ નવ- નિધિઓ રહે છે

वेरुलियमणिकवाडा कणगमया विविहरयणपडिपुण्णा ।

ससिस्रचकलक्षण अणुसमवयणोववत्तीया ॥११॥

એમના કમાડો વૈદૂર્યમણિના બનેલા હોય છે. એ સ્વર્ણમય હોય છે. અनेक रत्नोથી એ પ્રતિपूर्ण હોય છે એમનામાં જે ચિહ્નો હોય છે તે શરી, સૂર્ય અને ચક્રાકાર હોય છે એમની દ્વારોની રચના અનુરૂપ અને સમ-અવિપમ હોય છે

पलिओवमद्विर्दया णिहिसरणामाय तत्थस्वलु देवा ।

जैसिते आवासा अविकज्ज्ञा आहिवच्चा य ॥१२॥

प्रत्येक निधिना रक्षक देवनी स्थिति एक पल्योपम जैसी होंगी है जो नाम निधिनुं है ते नाम थी तेना रक्षक देवोपणु संज्ञोपाय है जो देवो ते निधिओना सहारे पर रहे है, जोथी जो निधिओ तेमना आवास रूप होंगी है आधिपत्य भोगवानी धृष्टीथी है। धृष्टीथी जोमने भरीही शक्तुं नहीं जो तो मात्र भाग्यशाली चक्रवर्तीओने पूर्वचरित पुण्य प्रभावथी पर प्राप्त थाय है ॥१२॥

તત્ર એતે નવનિચયઃ પ્રભૂતધનરત્નસંચયમમૃદ્ધા યે ભરતાગ્રિપાનાં પટ્સણ્ડભરતશ્ચે-
ત્રોધિપાનાં ચક્રવર્તિનઃ વજ્રમુપગચ્છન્તિ રચ્યતા યાન્તિ, એનેન વામૃદેયાનાં ચક્રવર્તિત્વેઽ
પિ એતદ્વિશેષણપ્રતિપેદ્યો ભવતિ ॥૧૩॥

અર્થ પટ્સણ્ડદત્તદષ્ટિ ભરતો યથોત્તમહતે તથા પ્રાહ-‘તપ્ ણ’ ઇત્યાદિ । ‘તપ્ ણ’
સે મરહે રાયા અટ્ટમમત્તસિ પરિણમમાણંમિ પોસહસાલાઓ પહ્લિણિક્ષમહ’ તતઃ’ સ્વલુ-
મ શ્રીમદ્ભરતો મહારાજા અટ્ટમમત્તે પરિણમતિ-પરિપૂર્ણે જાયમાને સતિ પૌષધશાલાતઃ
પ્રતિનિસ્ક્રામતિ નિર્ગચ્છતિ’ એવંમજ્જનઘરપ્પવેસો જાવ સેણિપ્પસેણી સદાવળયા જાવ ણિદ્ધિ-
રયણાં અટ્ટાદિયં મઃમહિમં કરેઽ’ એવં મજ્જનગૃહપ્રવેગઃ મજ્જનગૃહે મ્નાનાર્થે પ્રવેગો
યસ્ય સ તથા યાવત્પાદાત્ કૃતસ્નાનઃ તતો નિર્ગચ્છતીત્યાદિ બોધ્યમ્ તતઃ; શ્રેણિપ્રશ્રેણિ-
શબ્દાપનતા શ્રેણિપ્રશ્રેણયઃ આદ્વાનં યાવત્ નિધિરત્નાના પ્રોક્તનગાનામ્ અટ્ટાદિકાં મહોમહિમાં

પપ્ ણવણિહિરયણા પમૂય ઘનરયણસમિદ્ધા । જેવ સમુવગચ્છન્તિ મરહાવિવ ચક્રવર્તીણં ॥૧૩॥

હન નવનિચયોં કે પ્રભાવ સે હનકે અધિપતિ કો અપાર ધન રત્નાદિરૂપ સમૃદ્ધિ કા સચય હોતા
રહતા હૈ, ક્યોંકિ યે નિધિયાં સ્વયં અપાર ધન રત્નાદિ સચય સે સમૃદ્ધહોતો હૈ । યે ભરતક્ષેત્ર કે છહ
સંદોં કા વિજય કરનેવાલે ચક્રવર્તિયોં કે હી વશ મે રહતી હૈ હસ તહર વાસુદેવ મી અર્ધચક્રી હોતે
હૈ. પરંતુ વે હનકે વશ મે નહીં હોતી હૈ । ક્યોંકિ યે તો પૂર્ણ ચક્રવર્તી રાજા કે હી વશ મેં રહતી
હૈ । (તપ્ ણ સે મરહે રાયા અટ્ટમમત્તસિ પરિણમમાણંમિ પોસહસાલાઓ પહ્લિણિક્ષમહ) જબ મરત
નરેશ કો અટ્ટમ મત્ત કી તપસ્યા પરિપૂર્ણ હો ગહ તવ વઝ પૌષધશાલા સે બાહિર નિકલા (એવં
મજ્જનઘરપ્પવેસો જાવ સેણિપ્પસેણી સદાવેહ પહાયા જાવ ણિદ્ધિરયણાણ અટ્ટાદિય મહામહિમં કરેહ)
ઔર નિકલ કર વહ સ્નાન ઘર મેં ગયા-વહાં અચ્છી તરહ સે સ્નાન કિયા ફિર વહાં સે નિકલ
કર વહ મોજનશાલા મેં ગયા ઇત્યાદિ રૂપ સે અબ કથન પૂર્વોક્ત જૈસા હી યહાં પર કહ હેના
વાહિયે હસકેવાદ હસને શ્રેણિ પ્રશ્રેણિજનો કો બુલાયા ઔર નિધિરત્નો કી વચ્યતા કે ઉપલક્ષ્ય

પપ્ ણવણિહિરયણા પમૂયઘનરયણસંમિદ્ધા ।

જેવ સમુવગચ્છન્તિ મરહાવિવ ચક્રવર્તીણ ॥૧૩॥

એ નવનિધિઓના પ્રભાવથી એમના અધિપતિને અપરિમિત ધન-રત્નાદિ રૂપ સમૃદ્ધિનું
સંચયન થતુ રહે છે કેમકે એ નિધિઓ બાતે અપારધન-રત્નાદિ સંચયથી સમૃદ્ધ હોય છે
એ ભરતક્ષેત્રના ૬ ખંડે ઉપર વિજય મેળવ નારા ચક્રવર્તીઓના વશમાં રહે છે આ પ્રમાણે
વાસુદેવપણુ અર્ધચક્રી હોય છે, પણ એ તેમના વશમાં રહેતી નથી કેમકે એઓતો પૂર્ણ-
ચક્રવર્તીરાજાના વશમાં જ રહે છે (તપ્ ણ સે મરહે રાયા અટ્ટમમત્તસિ પરિણમમાણંમિ
પોસહસાલાઓ પહ્લિણિક્ષમહ) બપારે ભરતનરેશની અટ્ટમમત્તની તપસ્યા પરિપૂર્ણ થઈ
ગઈ ત્યારે તે પૌષધશાળામાંથી બહાર નીકળ્યા (એવ મજ્જનઘરપ્પવેસો જાવ સેણિપ્પસેણી
સદાવેહ પહાયા જાવ ણિદ્ધિરયણાણ અટ્ટાદિયં મહામહિમં કરેહ) અને નીકળીને સ્નાન-
ઘરમાં ગયા ત્યાં તેણે સારીરીતે સ્નાન કર્યું પછી ત્યાંથી નીકળી ને તે લોજનશાળામાં ગયા
ઇત્યાદિ રૂપથી બધુ કથન પૂર્વોક્ત બેસુ જ અહીં પણ અધ્યાહુત કરી લેવું બેધએ, ત્યારબાદ

કરોતિ 'તદ્દેવેણં સે મરહે રાયા ણિહિરયણાણ અદ્ધાદિયાણ મહામહિમાણ ણિવ્વત્તાણ સમાણીણ સુસેણં સેનાવરયણં સદ્ધાવેદિ' તતઃ સ્વલુ સ મરતો રાજા નિધિરત્નાનાં પ્રોક્તનવાનાં વચ્ચ તા જનિતોપલક્ષિતાયામ્ અદ્ધાદિકાયાં મહામહિમાયાં નિવૃત્તાયામ્ સમ્પન્નાયામ્ સત્યાં સુષેણં તન્નામાન સેનાપતિરત્નં સેનાપતિશ્રેષ્ઠ શબ્દયતિ આદ્યપતિ સદ્ધાવિત્તા એવં વયાસી' શબ્દયિત્વા તમ્ આદ્ય એવં વક્ષ્યમાણપ્રકારેણ અવાદીત્ ઉક્તવાન્ કિમુક્તવાન્ इत्याह—'ગચ્છણ્ણં મો દેવાણુપ્પિયા ! ગંગા મહાગર્દ્દેપ પુરત્થિમિલ્લં ણિક્કલુદ્દં દુચ્ચંપિ સર્ગંગાસાગરગિરિમેરાગ સમવિસમણિક્કલુહાણિ ય ઓઅવેદિ ઓઅવેત્તા એયમાણત્તિય પચ્ચપ્પિણાદિત્તિ' ગચ્છ સલુ મો દેવાનુપ્રિય ! સુષેણ ! સેનાપતે ગંગાયાઃ તન્નામ્ન્યાઃ મદ્ધાનઘ્યાઃ પૌરસ્ત્યં પૂર્વ ભાગવર્તિત્તિ દ્વિતીયમપિ નિષ્કુટં કોણસ્થિતમરતક્ષેત્રસ્વલ્પરૂપમ્ ઇદ ચ કેર્વિમાજિતમિત્યાહ—સગંગામાગરગિરિમેરાગં સગંગાસાગરગિરિમર્યાદગ્ તત્ર પશ્ચિમાયાં દિશિ ગંગા પૂર્વદક્ષિણયોર્દિશોઃ સાગરો ઉત્તરસ્યા દિશિ ગિરિઃ વૈતાદ્યપર્વતઃ ક્રુતાયા મર્યાદા ક્ષેત્રવિભાગરૂપઃ તયા સદ્ વર્તતે યત્તત્થાવિધમ્, તથા 'સમવિસમણિક્કલુહાણિ ય' સમવિષમનિષ્કુટાણિ ચ તત્ર મમાણિ સમભૂમિભાગવર્તીણિ નિપમાણિ ચ ઉન્નતાવ્રનતદુર્ગભૂમિભાગવર્તીણિ ચ યાણિ નિષ્કુટાણિ અવાન્તરમરતક્ષેત્રસ્વલ્પરૂપાણિ તાણિ 'ઓઅવેદિ' સાધય વિજયી ભૂત્વા તત્ર સ્વાજ્ઞાં પ્રવર્તય इत्यर्थઃ 'ઓઅવેત્તા' સાધયિત્વા વિજયં પ્રાપ્ય એતામ્ ઉક્તપ્રકારામ્ આજ્ઞપ્તિકાં મહચં પ્રત્યર્પય इति 'તદ્દેવેણં સે સુસેણે ત ચેવ પુવ્વવણિયં

મેં આઠ દિનોં તક ઝડસવ કરને કા ઉન્હે આદેશદિયા જબ યહ મહોત્સવ સમાપ્ત હો ચુકા તબ ડસને સુષેણ સેનાપતિરત્ન કો બુલાકર ડસસે એસા કહા—(ગચ્છણ્ણં મો દેવાણુપ્પિયા ગંગા મહાગર્દ્દેપ પુરત્થિમિલ્લનિક્કલુદ્દં દુચ્ચંપિ સર્ગંગાસાગરગિરિમેરાગં સમવિસમણિક્કલુહાણિ ય ઓઅવેદિ ઓઅવેત્તા એયમાણત્તિયં પચ્ચપ્પિણાદિ) હે દેવાનુપ્રિય ! સુષેણ સેનાપતે ! તુમ ગંગાનદી કે પૂર્વ ભાગવર્તી મરત ક્ષેત્ર સ્વલ્પરૂપ નિષ્કુટ પ્રદેશ મેં જો કિ પશ્ચિમદિશા મેં ગંગા સે પૂર્વ દક્ષિણાદિશા મેં દો સાગરો સે ઔર ઉત્તર દિશામેં ગિરિ વૈતાદ્ય સે વિમક્ત હુઆ હૈ જાઓ—તથા વહાં કે જો સમવિષમ અવાન્તર ક્ષેત્રરૂપ નિષ્કુટ પ્રદેશ હૈ ઉન્હેં અપને વશ મેં કરો વહાં અપની આજ્ઞા ચલાઓં ઔર યહ મબ કામ કર કે ફિર હમેં ઇસકો સ્વર દો (તદ્દેવેણં સે સુસેણે તંચેવ પુવ્વ-

તેણે ઔણી—પ્રઔણીજનેને બોલાવ્યા અને નિધિરત્નાની વશ્યતાના ઉપલક્ષ્યમા આઠ દિવસ સુધી ઉત્સવ કરવાને તેમને આદેશ આપ્યો. બ્યારે તે મહોત્સવ સમપન્ન થઈ ગયો. ત્યારે તેણે સુષેણ સેનાપતિ રત્નને બોલાવ્યો અને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું (ગચ્છણ્ણં મો દેવાણુપ્પિયા ગંગામહાગર્દ્દેપ પુરત્થિમિલ્લં ણિક્કલુદ્દં દુચ્ચંપિ સર્ગંગાસાગરગિરિમેરાગં સમવિસમણિક્કલુહાણિ ય ઓઅવેદિ ઓઅવેત્તા એયમાણત્તિયં પચ્ચપ્પિણાદિ) હે દેવાણુપ્રિય સુષેણ સેનાપતે તમે ગંગા નદીના પૂર્વભાગવર્તી મરતક્ષેત્ર ખડકીય નિષ્કુટ પ્રદેશમાં—કે જે પશ્ચિમ દિશામાં ગંગાથી, પૂર્વદિશામાં બે સાગરોથી, અને ઉત્તર દિશામાં ગિરિ વૈતાદ્યથી, વિભક્ત થયેલ છે—જાઓ તથા ત્યાના જે સમ-વિષમ અવાન્તર ક્ષેત્ર રૂપ નિષ્કુટ પ્રદેશો છે તે પ્રદેશોને તમે ચેતાના વશમાં કરો ત્યા તમે ચેતાની આજ્ઞા પ્રચલિત કરો—

भाणियव्वं' ततः स्वामिनो पदखंडाधिपनिश्री मयूरतराजस्य आज्ञात्यनन्तरं सत्सु संगृहेणः
सेनापतिं तं निष्कुट साधयतीत्यादि, तदेव पूर्ववर्णितम्-दाक्षिणान्यमिन्धुनिष्कुट-
वर्णितं तत्सर्वम् अत्रापि भणितव्यं वक्तव्यम् त्रित्यर्पयन्तमित्याह-'जाव ओअवित्ता'
इत्यादि 'जाव ओअवित्ता तमाणत्तिय पन्नप्पिण्ड पडिक्खिमज्जेड' यावन्निष्कुटम्
साधयित्वा विजित्य ताम् उकानुमारिणीम् आज्ञप्तिकां स्वामिने भरताय प्रत्यर्पयति
समर्पयति प्रतिविस्तर्जयति च तं गुपेण सेनापतिं निजनिवासस्थानगमनाय स राजा
भरतः आज्ञापयतीत्यर्थः 'जाव भोगभोगाड भुजमाणे विहरड' विमृष्टः सन् स गुपेणः
यावत्पदात् स्नातः इत्यारभ्य यावत्प्रासादवर प्राप्नः सन् इष्टान् गन्धस्पर्शमरूपगन्धान्
पञ्चविधान् मानुष्यकान् भोगभोगान् कामभोगान् तत्र शब्दरूपे कामो स्पर्शरसगन्धा-
भोगाः इति तान् मुञ्चानः अनुभूयन् विहरति तिष्ठति 'तएण से दिव्वे चक्रायणे
अन्नया कयाइ आउडवरमालायो पडिणिकखमड' ततो गङ्गादक्षिणनिष्कुटविजयानन्तरं
खलु तद् दिव्यं चक्ररत्नम् अन्यदा कदाचिद् आयुवगृहशालातः प्रतिनिष्क्रामति
निर्गच्छति 'पडिणिकखमित्ता' प्रतिनिष्क्रम्य बहिर्निर्गत्य 'अंतलिकखपडिवण्णे नदखसदस्म-

वणिय भाणियव्वं) इस प्रकार की आज्ञा जब भरतमहाराजा ने अपने सुपेण सेनापति को दी तब
उस सुपेण सेनापति ने उस निष्कुट को अपने वश में कर लिया इत्यादि रूप से जैसा वर्णन
पीछे किया गया है वैसा ही वह सब वर्णन यहाँ पर पीछे उसने इस बात की भरत राजा को
खबर दी यहाँ तक का कर लेना चाहिये भरत नरेश ने उस सुपेण सेनापति को सत्कार एवं
सन्मानित कर विसर्जित किया (जाव भोगभोगाड भुजमाणे विहरड) यावत्पद से यहाँ "उस
सुपेण सेनापति ने घर पर पहुँच कर स्नान किया आदि रूप पीछे कहा गया सब पाठ यहाँ
गृहीत हुआ है" इस तरह वह अपने श्रेष्ठ प्रासाद में रहता हुआ भोग भोगों को भोगने लगा
(तएण स दिव्वे चक्रायणे अन्नया कयाइ आउडवरमालायो पडिणिकखमड) गंगानदी के
दक्षिण निष्कुट प्रदेशों को विजित कर लिया गया तब इसके बाद वह चक्ररत्न किसी

अने ओ भु सभन्न करी तमे अभने सुथना आपो (तएण से सुपेणे तं चैव पुव्व-
वणिय भाणियव्वं) आ प्रभरनी आशा ज्यारे भरत राजाओ पोताना सुपेण सेनापतिने
आपी त्थारे ते सुपेण सेनापतिओ ते निष्कुट प्रदेशने पोताना वशभां करी दीधो, वगेरे
ने वण्ण पडेला करवाभा आओ छे तेवु न भु वण्ण अही पणु सभज्जु ओओ
त्थाराह ते सुपेण सेनापतिओ ओ वातनी भरत राजाओ सुथना आपी, भरत नरेशे ते
सुपेण सेनापतिओ सत्कार अने तेनु सन्मान कथुं अने त्थाराह तेने ज्वानी आशा
आपी. (जाव भोगभोगाड भुजमाणे विहरड) य वत् पन्थी अही 'ते सुपेण सेनापति ओ
घेर पडोअनीने स्नान कथुं वगेरे इयभा पाठ पडेला वण्णवभा आवेल छे ते अही स गृहीत
थयो छे आ प्रभाओ ते पोताना श्रेष्ठ प्रासादभा रडेनो अनेक लोगोने लोगववा लाग्यो.
(तएण से दिव्वे चक्ररयणे अन्नया कयाइ आउडवरमालायो पडिणिकखमड)
गंगानदी ना दक्षिण निष्कुट-प्रदेशोने ज्यारे छती दीधो त्थार आह ते दिव्य अकरत्न केअ

સંપરિવુદે દિવ્યતુહિય જાવ આપૂરેતે ચેવ વિજયક્ષંધાવારણિવેસ મજ્ઞ મજ્ઞેણં
 ગિગ્ઞહ્ દાહિણપચ્ચત્થિમ દિસિં વિણોયં રાયદ્દાણિં અભિમુદ્દે પયાપ યાવિ હોત્થા'
 તદ્ દિવ્યં ચક્રરત્નમ્ અન્તરિક્ષપ્રતિપન્નમ્ ગગનતલસ્થિતમ્, યક્ષસહસ્તસંપરિવૃત્તમ્ યક્ષ-
 સહસ્રૈઃ યુક્તમ્, દિવ્ય ત્રુટિત યાવત્ અત્ર યાવત્પદેન દિવ્યત્રુટિતતલતાલધનમૃદ્ધ-
 પદુપ્રગાદિતદિવ્યાવેણ વાદ્યવિશેષમન્નિનાદેન શબ્દવાહુલ્યેન ગગનતલમિતિ ગ્રાહ્યમ્
 આપૂરયદિત્ર વિજયસ્ફન્ધાવારણિવેશં મધ્યમધ્યેન-વિજયસ્ફન્ધાવારણસ્ય મધ્યમાગેન નિર્ગ-
 ષ્ઠતિ દક્ષિણપાશ્ચાત્યાં દક્ષિણપશ્ચિમાં દિશં નૈઋતીંદિશં પ્રતે વિનીતાં રાજધાનીં લક્ષીકૃત્ય
 અભિમુલં પ્રયાતં ચાપ્યમયત્ આસીત્ 'તણ સે મરહે રાયા જાવ પાસહ, પાસિત્તા હદ્દતુદ્દજાવ
 કાહુંવિય પુરિસે સદ્દાવેહ સદ્દાવિત્તા એવં વયાસી સ્થિપામેવ મો દેવાણુપ્પિયા । આમિસેવકં
 જાવ પચ્ચપ્પિણંતિ' તતઃ ચક્રરત્નપ્રસ્થાનાનન્તરં સ્થુ સ મરતો મહારાજા યાવન્ પશ્યતિ
 દૃષ્ટ્વા હૃષ્ટતુષ્ટ યાવત્ સ રાજા પદ્મલ્પટ્ટાધિપતિર્ભરતઃ કૌટુમ્બિકપુરુષાન્ શબ્દયતિ આહ્વયતિ
 શબ્દયિત્વા આહૂય એવં વક્ષ્યનાણપ્રકારેણ અવાદીત્ ઉક્તવાન્ ક્ષિપ્રમેવ શીઘ્રમેવ મો દેવા-
 નુપ્રિયા ! આમિપેક્ષ્યમ્ અમિપેક્ષ્યોગ્યં યાવત્પ્રત્યર્પયન્તિ । અથ પ્રથમ યાવત્પદાત્

પ્રથમમય આયુધગૃહશાળા સે વાહર નિકલા ઔર (પહિણિક્ષમિત્તા) નિકલ કર (અંતલિક્ષપહિ-
 વણ્ણે જક્ષસહસ્તસંપરિવુદે દિવ્યતુહિય જાવ આપૂરેતે ચેવ વિજયક્ષંધાવારણિવેસ મજ્ઞ મજ્ઞેણં
 નિગ્ગહ્ દાહિણપચ્ચત્થિમ દિસિં વિણોય રાયદ્દાણિં અભિમુદ્દે પયાપ યાવિ હોત્થા) આકાશ માર્ગ સે
 જાતા હુઆ વહ ચક્રરત્ન જો ફિ એક હજાર યક્ષો સે સુરક્ષિત થા । દિવ્યત્રુટિત યાવત્ રવ સે
 આકાશ મંડલ કો વ્યાપ્ત કરતા વિજયસ્ફન્ધાવાર નિવેશ કે ઠીક બીચ મેં સે હોર નિકલા
 ઔર નૈઋતી દિશા તરફ જો વિનીતા નામકી રાજધાની હે ઉસ ઓર ચલ દિયા (તણ સે મરહે-
 રાયા જાવ પાસહ) ભરત નરેશ ને વિનીતા રાજધાની કો ઓર ચક્રરત્ન કો જાતે હુએ જબ દેલા
 તો (પામિત્તા હદ્દ તુદ્દ જાવ કોહુંવિય પુરિસે મદાવેહ) દેલ્લકર ઉમકો હર્ષકા ઠિકાના નહીં રહા ક-
 સને ડસી વહત કૌટુમ્બિક પુરુષો કો બુલાયા (સદ્દાવિત્તા એવં વયાસી) ઔર બુલાકર ઉનસે એસા
 કહા (સ્થિપામેવ મો દેવાણુપ્પિયા ! આમિસેવકં હત્થિરયણ જાવ પચ્ચપ્પિણંતિ) હે દેવાનુપ્રિયો.

સમયે આયુધગૃહશાળામાથી બહાર નીકળ્યું અને (પહિણિક્ષમિત્તા) નીકળીને (અંત
 લિક્ષપહિવણ્ણે જક્ષસહસ્તસંપરિવુદે દિવ્યતુહિય જાવ આપૂરેતે ચેવ વિજયક્ષંધા
 વારણિવેસ મજ્ઞ મજ્ઞેણં નિગ્ગહ્ દાહિણપચ્ચત્થિમં દિસિં વિણોયં રાયદ્દાણિં અભિમુદ્દે
 પયાપ યાવિ હોત્થા) આકાશમાર્ગથી પ્રયાણ કરતું તેચક્રરત્ન કે જે એક સહસ્ર યક્ષો
 થી સુરક્ષિત હતું-અન્ત-ત્રુટિત યાવત્ રવથી આકાશ મંડળ ને વ્યાપ્ત કરતું વિજય સ્ફન્ધા-
 વાર નિવેશની ઠીક મધ્યમાથી પસાર થઈ ને નીકળ્યું અને નૈઋત્ય દિશા તરફ વિનીતા
 નામક રાજધાની છે, તે તરફ રવાના થયું (તણ સે મરહે રાયા જાવ પાસહ ભરત
 નરેશ વિનીતા રાજધાની તરફ ચક્રરત્નને જતું બોલ્યું તો (પાસિત્તા હદ્દ-તુદ્દ જાવ કોહુંવિય
 પુરિસે સદ્દાવેહ) બોધને તેઓ પરમ હર્ષિત થયા તેમણે તરતજ કૌટુમ્બિક પુરુષોને
 બોલાવ્યા (સદ્દાવિત્તા એવં વયાસી) અને બોલાવીને તેમને તે ભરત નરેશ આ પ્રમાણે કહ્યું
 -(સ્થિપામેવ મો દેવાણુપ્પિયા આમિસેવક હત્થિરયણ જાવ પચ્ચપ્પિણંતિ) હે દેવાનુપ્રિય!

गगनत आदि विशेषणयुक्तं तद्विषयं चक्रगन्मिति ग्राह्यम् । द्वितीय यावत्पदात् हृष्टतुष्ट-
चित्तानन्दितः प्रोत्तिमनाः परममौमनस्यित हर्षवशविमर्षद् हृदयः इति ग्राह्यम् । तृतीय
यावत्करणात् हस्तिरत्नं प्रतिकल्पयत, सेना सन्नाहयत इति आज्ञापयति स भरत तेच
कौटुम्बिकपुरुषाः सर्वे कुर्वन्ति आज्ञां च प्रत्यर्पयन्ति समर्पयन्ति इतिग्राह्यम् ॥२७॥

अथाक्तमेवार्थं दिग्विजयकालाद्यधिकार्थविवक्षया विस्तराचनया चाह—
“तएणं से,, इत्यादि ।

मूलम्—तए णं से भरहे राया अज्जिअरज्जो णिज्जिअसत्तू
उप्पण्ण सम्मत्तरयणे चक्करयणप्पहाणे णवणिहिर्वई समिद्धकोसे वत्तीस-
रायवस्सहस्साणुयायमग्गे सट्ठीए वरिससहस्सेहिं केवलकप्पं भरहं वासं
ओयवेइ ओयवेत्ता कोडुंविपुुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी
खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिस्यणं हयगयरह तहेव
अंजणगिरिक्कडसण्णिमं गयवइं णरवई दुरुढे । तएणं तस्स भरहस्स
रण्णो आभिसेक्कं हत्थिस्यणं दुरुढस्स समाणस्स इमे अट्ठट्ठ मंगलगा
पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिआ तं जहा—सोत्थिअ सिखिच्छ जाव
दप्पणे, तयणंतरं च णं पुण्णकलसभिगार दिव्वा य छत्तपडागा जाव
संपट्ठिआ, तयणंतरं च वेरुलिअभिसंत विमलदंडं जाव अहाणुपुव्वीए
संपट्ठिअं, तयणंतरं च णं सत्त एगिदियरयणा पुरओ अहाणुपुव्वीए
संपत्थिया, तं—चक्करयणे १, छत्तरयणे २, चम्मरयणे ३, दंडरयणे ४,
असिरयणे ५, मणिरयणे ६, कागणिरयणे ७, । तयणंतरं च णं णव
महाणिहिओ पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिआ, तं जहा णेसप्पे
पंडुयए जाव संखे, तयणंतरं च णं सोलस देवसहस्सा पुरवो अहाणु-

जुम लोगों शीघ्र ही आभिषेक्य हस्तिरत्न को एव सेना को सुसज्जित करो यावत् भरत नरेश
के द्वारा आज्ञात हुए उन कौटुम्बिक पुरुषों ने आभिषेक्य हस्तिरत्न का एव सेनाको सुसज्जित कर
दिया. इसके बाद भरत नरेश के पास उनको आज्ञा को पूर्ति हो जाने की खबर मेज दी॥२७॥

तमे शीघ्र आभिषेक्य हस्तिरत्नने तेमञ्ज सेनाने सुसज्जित करे, यावत् भरत नरेश वडे
आज्ञप्त थयेदा ते कौटुम्बिक पुरुषोन्मे आभिषेक्य हस्तिरत्न तेमञ्ज सेनाने सुसज्जित करी
त्यारणाह भरत नरेशनी पासे तेमनी आज्ञा पूरी थई चूकी छे, ते अगे नी सूचना भोक्षी
॥ सूत्र २७ ॥

पुन्वीए संपट्टिआ, तयणंतरं च णं वत्तीसं रायवरसहस्सा अहाणुपु-
 न्वीए संपट्टिआ, तयणतरं च णं सेणावइस्यणे पुरओ अहाणुपुन्वीए
 संपट्टिए, एवं गाहावइस्यणे वद्धइस्यणे पुरोहिअस्यणे, तयणंतरं च
 णं इत्थिस्यणे पुरओ अहाणुपुन्वीए संपट्टीए तयणंतरं च णं वत्तीसं
 उडुकल्लाणिआ सहस्सा पुरओ अहाणुपुन्वीए संपट्टिआ तयणंतरं च णं
 बत्तीसं बत्तीसइवद्धा णाडगसहस्सा पुरओ अहाणुपुन्वीए संपट्टिया
 तयणंतरं च णं तिण्णि सट्ठा सुअसया पुरओ अहाणुपुन्वीए संपट्टिया
 तयणंतरं च णं अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ पुरओ अहाणुपुन्वीए संपट्टिया
 तयणंतरं च णं चउरासीइं आससयसहस्सा पुरओ अहाणुपुन्वीए संपट्टिया
 तयणंतरं च णं चउरासीइं हत्थिसयसहस्सा पुरओ अहाणुपुन्वी संपट्टिया
 तयणंतरं च छण्णउई मणुस्स कोडिओ पुरओ अहाणुपुन्वीए संपट्टिआ
 तयणंतरं च णं बहवे राईसरतलवर जाव सत्थवाहप्पभिईओ पुरओ
 अहाणुपुन्वीइ संपट्टिया तयणंतरं च णं बहवे असिग्गाहा लट्ठिग्गाहा
 कुंतग्गाहा चावग्गाहा चामरग्गाहा पासग्गाहा फल्लग्गाहा परसुग्गाहा
 पोत्थयग्गाहा वीणग्गाहा कअग्गाहा इडप्फग्गाहा दीविअग्गाहा सएहिं
 सएहिं रूवेहिं, एवं वेसेहिं चिंघेहिं निओएहिं सएहिं२ वत्थेहिं पुरओ
 अहाणुपुन्वीए संपत्थिया तयणंतरं च णं बहव दंडिणो मुंडिणो सिंहंडिणो
 जडिणो पिच्छिणो हासकोरगा खेड्डुकारगा दवकारगा चाड्डुकारगा कंदप्पि-
 आ कुकुइआ मोहरिआ गायंता य दीवंता य (वायंता) नच्चंताय हसंता
 य रमंता य कीलंता य सासेंता य सोवेंता य जावेंतायरावेंताय
 सौभेता य सोभावेता य अलोअंता य जयजयसहं च पउंजमाणा पुरओ
 अहाणुपुन्वीए संपट्टिआ, एवं उववाइअगमेण जाव तस्स रण्णो पुरओ मह
 आसा आसधरा उमओपासि णागा णागधरा पिट्ठओ रहा रहसंगेल्ली
 अहाणुपुन्वीए संपट्टिआ इति । तए णं से भरहाहिवे णरिंदे हारोत्थए
 सुकयरइयवच्छे जाव अमरवइ सण्णिभाए इद्धीए पहियकित्ती चक्कर-
 यणदेसियमग्गे अणेगरायवरसहस्साणुयायमग्गे जाव समुद्दस्व भूओंपव

करेमाणे करेमाणे सव्विद्धीए मव्वज्जुईए जाव णिग्घोसणाइयरवेणं गामा-
गणगरखेहकव्वडमंडव जाव जोयणंतस्सिाहि वसहीहि वसमाणे वसमाणे
जेणेव विणीआ रायहाणी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता विणीआए राय-
हाणीए अदूरसामंते दुवालसजोयणायामं णवजोयणवित्थिणं जाव खंधा-
वारणिवेसं करेइ करित्ता वद्धइरणं सदावेइ, सदावित्ता जाव पोसहसालं
अणुपविसइ अणुपविसित्ता विणीयाए रायहाणीए अट्टमभत्तं पगिण्हइ पगि-
ण्हित्ता जाव अट्टमभत्तं पडिजागरमाणे पडिजागरमाणे विहरइ ॥ सू. २८ ॥

छाया-तत खलु स भरतो राजा अर्जितराज्य निर्जितगुह्य उत्पन्नसमस्तरत्नः चक्ररत्न-
प्रधानः नवनिधिपतिः समृद्धकोशः द्वात्रिंशद्वाजवरसहस्रानुयातमार्गं पट्टया वर्षसहस्रै-
केवलकल्प भरतर्ष साधयति साधयित्वा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा एवम्
अवादीत् क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः । आभिषेक्यं हस्तिरत्न ह्यगजरथ तथैव अंजनगिरिकूट
सन्निभं गजपतिं नरपतिः दुरुढः । तत खलु तस्य भरतस्य राज्ञः आभिषेक्यं हस्तिरत्न
दुरुढस्य सतः इमानि अष्टाष्ट मङ्गलकानि पुरतो यथानुपूर्व्यां संप्रस्थितानि तद्यथा-स्वस्तिक
ओवत्स यावत् दर्पणः, तदनन्तरं च खलु पूर्णकलशभृद्धारविद्या च छत्रपताका यावत्
संप्रस्थिता, तदनन्तरं च वैडूर्यं दीप्यमानं विमलदेडयावत् यथानुपूर्व्यां संप्रस्थितम्, तदनन्तरं
च खलु सप्त पकेन्द्रियरत्नानि पुरतः यथानुपूर्व्यां संप्रस्थितानि तद्यथा चक्ररत्नम् १ छत्ररत्नम्
चर्मरत्नम् ३ वण्डरत्नम् ४ असिरत्नम् ५ मणिरत्नम् ६ काकणीरत्नम् ७ तदनन्तरं च खलु नव
महानिधयः पुरतो यथानुपूर्व्यां संप्रस्थिताः, तद्यथा नैसर्ग्यं पाण्डकः यावच्छङ्ख तदनन्तरं
खलु षोडशदेवसहस्राः पुरतो यथानुपूर्व्यां संप्रस्थिता, तदनन्तरं च खलु द्वात्रिंशद्वाजव-
रसहस्राः यथानुपूर्व्यां संप्रस्थिता तदनन्तरं च खलु सेनापतिरत्नं पुरतो यथानुपूर्व्यां संप्र-
स्थितम् एवं गाथापतिरत्नं वर्द्धकिरत्नं पुरोहितरत्नं च, तदनन्तरं च खलु क्षीररत्नं पुरतो यथानु-
पूर्व्यां संप्रस्थितम्, तदनन्तरं च खलु द्वात्रिंशत् क्रतु कर्याणिकाः सहस्रा यथानुपूर्व्यां पुरतः,
संप्रस्थिता, तदनन्तरं च खलु द्वात्रिंशत् जनपदम्व्याणिकसहस्राः पुरतः यथानुपूर्व्यां संप्र-
स्थिता, तदनन्तरं च खलु द्वात्रिंशत् द्वात्रिंशत् वक्त्रा नटकसहस्रा पुरतः यथानुपूर्व्यां संप्र-
स्थिताः तदनन्तरं च खलु त्रीणि पट्टानि रूपयतानि पुरतो यथानुपूर्व्यां संप्रस्थितानि, तद-
नन्तरं च खलु अष्टादश श्रेणिप्रश्रेणय पुरतो यथानुपूर्व्यां संप्रस्थिताः, तदनन्तरं च खलु
चतुरशीतिरश्वशतसहस्राः पुरतो यथानुपूर्व्यां संप्रस्थिता तदनन्तरं च खलु चतुरशीति हस्ति-
शतसहस्रा पुरतो यथानुपूर्व्यां संप्रस्थिता, तदनन्तरं च खलु षण्णवति मनुष्याणां कौटु-
पुरतः यथानुपूर्व्यां संप्रस्थिताः, तदनन्तरं च खलु बहवो राजेश्वर तलवर यावत् सार्थवाह
प्रभृतयः पुरतो यथानुपूर्व्यां संप्रस्थिताः तदनन्तरं च खलु बहवः असिग्राहा, यष्टिग्राहाः
कुन्तग्राहा, चापग्राहा, चामरग्राहा, पाशग्राहा, फलकग्राहा परशुग्राहा, पुस्तकग्राहाः,
वीणाग्राहा, कुतग्राहा, हडङ्गग्राहाः, दीपिकाग्राहा स्वकै स्वकै रूपे एव वेषं चिह्नं नि-
योगै स्वकै स्वकैः पुरतो यथानुपूर्व्यां संप्रस्थिता तदनन्तरं च खलु बहवो दण्डिनो मुण्डि-
न शिखण्डिन जटिन पिच्छिन हास्यकारका खेडुकारका द्रवकारका चाटुकारका
कान्दर्पिकाः कौकुच्यकारिणः मुखरा गायन्तश्च वाद्यन्तश्च नृत्यन्तश्च हसन्तश्च रममाणा

અશ્રીઘ્યન્તશ્ચ શાસયન્તશ્ચ શ્રાવયન્તશ્ચ રાવયન્તશ્ચ શોભમાનાશ્ચ શોભયન્તશ્ચ આલોકમાનાશ્ચ જયજયશબ્દં ચ પ્રયુજ્ઞાના પુરતો યથાનુપૂર્વ્યા સમ્પ્રસ્થિતાઃ પવમ્ ઔપપાતિકગમેન યાવત્ તસ્ય રાજા પુરતો મહાશ્વા અશ્વધરા ઉભયતઃ પાર્શ્વયો નાગા નાગધરા પૃષ્ઠતઃ રથાઃ રથસન્નેહ્યઃ યથાનુપૂર્વ્યા સંપ્રસ્થિતાઃ ઇતિ । તત સ્વલુ સ ભરતાધિપો નરેન્દ્ર દ્વારાવસ્તુતઃ સુકૃતરતિદવક્ષસ્કો યાવત્ અમરપતિસન્નિભયા ક્રદ્ધયા પ્રથિતકીર્તિં ચક્રરત્નવેશિતમાર્ગઃ અનેકરાજવરસહસ્રાનુયાતમાર્ગ યાવત્ સમુદ્રરવભૂતામિવ કુર્વન્ કુર્વન્ સર્વદ્વર્થા સર્વદ્યુત્યા યાવન્નિર્ઘોષનાદિતરવેણ ગ્રામાગરનગરચેટકર્વટમહમ્ યાવત્ યોજનાન્તરિતામિ વંસતિમિ વસન્ વસન્ યત્રૈવ વિનીતા રાજધાની તત્રૈવોપાગચ્છતિ ઉપાગત્ય વિનીતાયા રાજધાન્યા અદૂરસામન્તે દ્વાદશયોજનાયામ નવયોજનવિસ્તીર્ણ યાવત્ સ્કન્ધાવારનિવેશ કરોતિ કૃત્વા વર્દ્ધેકિરત્નં શબ્દયતિ શબ્દયિત્વા યત્ વત્ પૌષ્પવશાલા મનુપ્રવિશતિ અનુપ્રવિશ્ય વિનીતાયા રાજધાન્યા અષ્ટમમક્ત પ્રગૃહ્ણતિ પ્રગૃહ્ય યાવત્ અષ્ટમમક્ત પ્રતિજાગ્રદ્ પ્રતિજાગ્રદ્ વિહરતિ ॥૨૦૮॥

ટીકા—‘તણ્ણ સે’ इत्यादि । ‘तण्णं से भरहे राया’ ततः तदनन्तरं स्वलु स भरतो राजा ‘अज्जियरज्जो’ अर्जितराज्यः तत्र अर्जित बाहुबलाद् उपार्जितं राज्यं येन स तथाभूतः तथा ‘णिज्जिय सत्तु’ निर्जितशत्रुः तत्र निर्जिताः वशीकृताः शत्रवो रिपवो येन स तथाभूतः, तथा ‘चक्करयणप्पहाणे’ चक्ररत्नप्रधानः तत्र चक्ररत्नं प्रधानं सर्वरत्नेषु श्रेष्ठं यस्य स तथाभूतः तथा ‘णव णिहिवइ’ नवनिधिपति तत्र नवानां नैसर्प्यपाण्डुकादि नामकानां निधीनां पतिः तथा ‘समिद्धकोसे’ समृद्धकोशः न्तत्र समृद्धः सम्पन्न कोशः भाण्डागारः यस्य स तथाभूतः तथा ‘वत्तीसरायवरसहस्साणुयायमग्गे’ द्वात्रिंशद्राजवरसहस्रानुयातमार्गः तत्र द्वात्रिंशद्राजवरसहस्रैरनुयातः अनुगतः मार्गो यस्य स तथाभूतः महाराजाश्रीभरतस्य पृष्ठभागे अनेके राजसु प्रवरा मुकुटधारिणो राजानः भरतप्रदर्शितमार्गे प्रचलन्तीत्यर्थः एवभूतः

(तण્ણં સે ભરહે રાયા અજ્જિ અરજ્જો ણિજ્જિયસ ત્તુ)—इत्यादि

ટીકાર્થ—(તણ્ણં ભરહે રાયા અજ્જિયરજ્જો ણિજ્જિયસત્તુ) इसके बाद जिसने अपने बाहु बल से राज्य को उपार्जित किया है और शत्रुओं को जिसने परास्त कर अपने वश में कर लिया है ऐसे उस भरतमहाराजा ने (चक्करयणप्पहाणे) कि जिसके समस्त रत्नो में एक चक्ररत्न तो प्रधान है (णवणिहिवइ) तथा जो नौ निधियों का अधिपति बन चुका है (समिद्धकोसे) कोश—भाण्डागार—जिसका कोष बहुत सम्पन्न है । (वत्तीसरायवरसहस्साणुयायमग्गे) ३२ वत्तीस हजार मुकुटबद्ध उत्तमराजवशी राजा जिसके पीछे २ चलते हैं । (सट्ठीए वरिससहस्सेहिं केवल

ટીકાર્થ—તણ્ણં સે ભરહે રાયા અજ્જિઅરજ્જો ણિજ્જિયસત્તુ) ત્યારબાદ જે ભરત રાજાએ પોતાના બાહુબળથી રાજ્યોપાર્જિત કર્યું છે અને શત્રુઓને જેણે પરાસ્ત કર્યા છે અને પોતાના વશમાં કર્યા છે, એવા તે ભરત મહા રાજાએ. (ચક્કરયણપ્પહાણે) કે જેના સમસ્ત રત્નોમાં એક ચક્રરત્નની પ્રધાનતા છે. (ણવણિહિવઈ) તથા જે નવનિધિઓનો અધિપતિ થઈ ચૂક્યો છે, (સમિદ્ધકોસે) કોશ ભાણ્ડાગાર જેનો પથપિત-સમ્પન્ન છે. (વત્તીસરાયવર સહસ્સાણુયાયમગ્ગે) ૩૨ હજાર મુકુટ બદ્ધ રાજ્ય શીરાળ જેની પાછળ-પાછળ ચાલે છે (સટ્ઠીય વરિસ સહસ્સેહિં કેવલરૂપે ભરદ્ વાસં ઓમવેદ) ૬૦ હજાર વર્ષ સુધી વિન્ય યાત્રા કરીને સ પૂર્ણ

सन् स षट्स्रण्डाधिपति भरतो राजा 'सद्वीए वरिससदस्सेहि केवलकप्पं भरह वामं ओअवेइ' पष्ठया वर्षसहस्रैः पष्ठिसदस्ससख्यकवर्षे केवलकल्पम्-परिपूर्णं भरतवर्षं साधयति शत्रून् गिजित्य स्वाधीनं करोतीत्यर्थः 'ओअवेत्ता' साधयित्वा 'कोहुंभियपुरिसे सद्वीएइ' कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति आह्वयति 'सद्वीचित्ता एव वयासी' शब्दयित्वा आहूय एव वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत् उक्तवान् 'खिप्पायेव भो देवाणुप्पिया !' क्षिप्रमेव शीघ्रमेव भो देवाणुप्पियाः ! 'आभिसेक्कं हत्थिरयणं हयगयरह तहेव अंजणगिरिकूडसण्णिभं गयवई णरवई दुरूढे' आभिषेक्यम् पट्टहस्तिरत्नम् हस्तिश्रेष्ठम् इदं च पदं हस्तिवर्णकस्मारकम्, तथा हयगजरथेति पदं सेनासन्नाहस्मारकम् तथैव पूर्ववदेव तेनैव प्रकारेण स्नानविधि भूषणविधि सैन्योपस्थितहस्तिरत्नोपागमनानि वक्तव्यानि अञ्जनगिरिकूटसन्निभम्—अञ्जनपर्वतशृङ्गसदृशम् सादृश्यं च कृष्णवर्णत्वेन उच्चत्वेन च बोध्यम् एवंविधं गजरत्नं हस्तिश्रेष्ठं नरपतिः भरतो राजा दुरूढः आरूढवान् 'तएण तस्स भरहस्स रण्णो आभिसेक्कं हत्थिरयणं दुरूढस्स समाणस्स इमे अट्ठह मगलगा पुरओ अहाणु-

कप्प भरह वास ओअवेइ) ६० हजार वर्ष तह विजय यात्रा कर सम्पूर्ण इस भारत क्षेत्र को अपने वश मे किया (ओअवेत्ता कोहुंभियपुरिसे सद्वीएइ) इस प्रकार से सम्पूर्ण भारत को साध कर—अपने वश कर भरत राजा ने अपने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया (सद्वीचित्ता एवं वयासी) और बुलाकर उनसे ऐसा कहा—(खिप्पायेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं हयगयरह तहेव अंजणगिरिकूडसण्णिभं गयवई णरवई दुरूढे) हे देवानुप्पियो ! तुम लोग शीघ्र ही आभिषेक्य हस्तिरत्न को और हयगजरथ एवं प्रवर सैन्य को इत्यादि रूप से पूर्व की तरह यहाँ पर स्नानविधि, भूषणविधि सैन्योपस्थिति, एवं हस्तिरत्नोपस्थिति कहेली चाहिये । भरत महाराजा अंजनगिरि के शिखर जैसे गजरत्न पर आरूढ हो गये । यहा हस्तिरत्न को जो अंजनगिरि के कूट जैसे कहा गया है, उसका कारण हस्तिरत्न को कृष्णता और ऊँचाई है । (तएण तस्स भरहस्स रण्णो आभिसेक्कं हत्थिरयणं दुरूढस्स समाणस्स इमे अट्ठह मगलगा पुरओ अहाणुपुण्वीए सपट्ठिया) जब हस्तिरत्न पर आरूढ हुए भरत राजा चलने की तैयार

ओ भरतक्षेत्र ने पोताना वशमां कथुं. (ओअवेत्ता कोहुंभियपुरिसे सद्वीएइ) आ प्रभाणु स पृथुं भारतने साधीने—पोताना वशमा करीने भरत राजाओ पोताना कौटुम्बिक पुरुषोने भेलाओ. (सद्वीचित्ता एवं वयासी) अने भोलावीने ते कौटुम्बिक पुरुषोने ते राजाओ आ प्रभाणु कथुं (खिप्पायेव भो देवाणुप्पिया आभिसेक्कं हत्थिरयणं हयगयरह तहेव अंजणगिरिकूडसण्णिभं गयवई णरवई दुरूढे) हे देवानुप्पियो तमे यथाशीघ्र आभिषेक्य हस्तिरत्न ने अने हय गजरथ तेमज प्रणव सैन्यने सुसज्ज करे. इत्यादिइयमा अहाँ पढेलाणी जेमज स्नानविधि, सैन्योपस्थिति तेमज हस्तिरत्नोपस्थिति जलपी देवी जेधओ भरत महा राजा अञ्जन गिरिना शिखर जेवा गजरत्न उपर आरूढ थई गथा अहाँ हस्तिरत्नने जे अञ्जन गिरिना इह जेवु कहेवाभा आयु छे, तेनु कारणु हस्तिरत्ननी कृष्णता अने ऊँचाईने लधने कहेल छे (तएण तस्स भरहस्स रण्णो आभिसेक्कं हत्थिरयणं दुरूढस्स समाणस्स इमे

पुष्पी सपट्टिया' ततः खलु भरतस्य राज्ञ आभिषेक्यम् अभिषेकयोग्यं हस्तिरत्नं दुरुढस्य आरूढस्य सतः इमानि स्वस्तिकादीनि अष्टाष्टमङ्गलकानि पुरतः अग्रे यथानुपूर्व्या यथाक्रमं सप्रस्थितानि चलितानि कानि च तानि इत्याह— 'तं जहा' इत्यादि 'त जहा-सो-त्थिय सिरिवच्छ जाव दप्पणे' तद्यथा-स्वस्तिक, १ श्रीवत्स, २, यावत् दर्पणाः ३। अत्र यावत्पदात् नन्दिकावर्त्त, वर्धमानक, भद्रासन, मत्स्य, कलशः, ८, इति ग्राह्यम् 'तयणंतरं च ण पुण्णकलसभिगार दिव्वा य छत्तपडागा जाव सपट्टिया' तदन्तरं च खलु पूर्णकलशभृङ्गाराः तत्र पूर्णजलभृतः कलशः भृङ्गाराश्चेत्यर्थः तत्र कलशाः लोकप्रसिद्धाः भृङ्गाराः पात्रविशेषाः ज्वारी' इति भाषाप्रसिद्धाः समाहारद्वयादेकवद्भावः नपुसकत्वञ्च इयं कलशादि जलपूर्णत्वेन चित्रलिखितकल्पादिना भिन्ना तेन चित्रलिखित कलशादिभ्यो न पौनरुक्त्यमित्यर्थः। दिव्या प्रधाना चः समुच्चये 'स च व्यवहितसम्बन्धः छत्रपताका च यावत्पदात् 'सचामरा दंसणरइय आलोयदरिसणिज्जा वाउद्धूयविजयवेजयती अण्भुस्सिया गगणतलमणुलिहंती पुरओ अहाणुपुष्पीए' इति ग्राह्यम् तेन तत्र सचामरा—चामरयुक्ता दर्शने प्रस्थातुं दृष्टिपथे रचिता मङ्गल्यत्वात् अतएव आलोके शकुनानुकूल्यदर्शने दर्शनीया द्रष्टुं योग्या वातोद्धूत विजयवैजयन्ती वातेन वायुना उद्धता कम्पिता विजयसूचिका वैजयन्ती पार्श्वतो लघुपताकाद्वययुक्तः पताका विशेषः

हुए तो उनके आगे आठ आठ की संख्या में आठ मंगल द्रव्य सर्वप्रथम प्रस्थित हुए (तं जहा) वे आठ मंगल द्रव्य नामतः इस प्रकार से हैं—(सोत्थिय, सिरिवच्छ जाव दप्पणे) स्वस्तिक श्रीवत्स, यावत् नन्दिकावर्त्त, वर्धमानक, भद्रासन, मत्स्य, कलश, एवं दर्पण (तयणंतरं च ण पुण्णकलसभिगार दिव्वाय छत्तपडागा जाव सपट्टिया) इनके बाद पूर्णकलश—निर्मल जल से भरा हुआ कलश भृङ्गार—ज्वारी एव दिव्य प्रधान छत्रयुक्त पताकाएँ यावत् प्रस्थित हुई। यहाँ यावत्पद से "सचामरा दंसणरइय आलोय दरिसणिज्जा वाउद्धूय विजयवेजयति अण्भुस्सिया गगणतलमणुलिहंती पुरओ अहाणुपुष्पीए" इस पाठ का समग्र हुआ है (तयणंतरं च वेरुल्लिय भिसत विमल दंड जाव अहाणुपुष्पीए सपट्टिय) इनके बाद वैदूर्यमणि निर्मित विमल दण्ड वाला छत्र प्रस्थित हुआ यहा यावत्पद से—"पल्लव कोरंट मल्लदामोवसोहिय चंदमहलनिभं ससित्तुयं विमलं आयवत्त पवरं सिंहासणं च मणिरयणपायपीडं स पाउआ जोगसमाउत्त बहुकिंकर कम्मकर पुरिसपायत्त परिविस्स-

अद्भुतमंगलगा पुरओ अहाणुपुष्पीए सपट्टिया) अथारै हस्तिरत्न उपर समाइड थयेला भरत भडे राजा आइया प्रस्तुत थया तो तेमनी आगम आठ-आठनी संख्याभां आठ मंगल द्रव्यो सर्वप्रथम प्रस्थित थयां (तं जहा) ते आठ मंगल-द्रव्यो ना नाये। आ प्रभाणे छे—(सोत्थिय सिरिवच्छ जाव दप्पणे) स्वस्तिक, श्रीवत्सयावत् नन्दिकावर्त्त वर्धमानक, भद्रासन, मत्स्य कलश अने दर्पण (तयणंतरं च ण पुण्णकलसभिगार दिव्वा य छत्तपडागा जाव सपट्टिया) तथारआड पुरुष कलश अण संप्रति कलश अणार आरी तेमन दिव्य प्रधान छत्रयुक्त पताकाओ यावत् प्रस्थित थय अही यावत् पदथी (सचामरा दंसणरइय आलोय-

सर्वत्र विशेषण समासः 'अम्भुस्सिया' अत्युच्छ्रिता अत्युन्नता अतएव गगनतलमनुक्ति-
खन्ति पुरतः अग्रतः यथानुपूर्व्या यथाक्रम सम्प्रस्थिता प्रचलिता पूर्णघटादयो विजय-
वैजयन्ती च उक्तविशेषणविशिष्टा सत्यः अत्युच्चतया पुरतः यथाक्रमं सम्प्रस्थिता इत्यर्थः
'तयणंतरं च वेरुलिय भिसतविमलदंड जाव अहाणुपुव्वीए सम्पट्टिय' तदनन्तरं च
वैदूर्यमयः रत्ननिर्मितः 'भिसंतत्ति' दीप्यमानो विमलो दण्डो यस्मिन्सत्तथा भूतम् वैदूर्य-
मणिरत्नमिति खचितदण्डविशिष्टं छत्रमित्यर्थः । इदं च पदं यावत्पदान्तरगताऽतपत्र
विशेषणम् यावत्पदात् 'पलंबकोरंटमल्लदामोवसोहिय चंदमंडलनिभं समूसियं विमल
आयवत्तं पवरं सीहासनं च मणिरयणपायपीढं सपाउआजोगसमाउत्तं बहुक्किरकम्म-
करपुरिसपायत्तपरिक्खितं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्टियं ति' इति ग्राह्यम् पुनः कीदृ-
शमात्तपत्रं छत्रम् प्रलम्बकोरंटमाल्यदामोपशोभितम् प्रलम्बेन लम्बमानेन कोरंटस्य
कोरंटनामकपुष्पस्य माल्यदाम्ना-पुष्पमालया उपशोभितं पुनः कीदृशं चन्द्रमण्डल-
निभं चन्द्रमण्डलसदृशम् उज्ज्वलत्वात् समुच्छ्रितम् ऊर्ध्वीकृतं विमलं धवलमात्तपत्रं छत्रम्,
प्रवरं श्रेष्ठं सिंहासनं च ततः सिंहासनविशेषणानि प्रोच्यन्ते मणिरत्न इत्यादीनि तत्र
मणिरत्नमयं पादपीठं यत्र चरणौ निक्षिप्य सिंहासनोपरि समानीतो भवति तत्पा-
दपीठमुच्यते पुनः कीदृशम्-स्वपादुकायोगसमायुक्तम्-स्वः-स्वकीयो यो पादुकायोगः-

त्तं पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्टियं ति" इस पाठ का समग्र हुआ है इस पाठगतपदों की व्याख्या
इस प्रकार से है जो छत्र प्रस्थित हुआ वह कोरंट पुष्पों की लम्बी २ दो मालाओं से सुशोभित
था । चन्द्रमण्डल के जैसा उज्ज्वल था तथा वह बन्द नहीं था । खुला हुआ था और ऊँचा था
एवं आगन्तुक मैल से यह रहित था । इसलिए विमल था । इसके बाद सिंहासन प्रस्थित हुआ
यह सिंहासन मणिरत्न के बने हुए पादपीठ से युक्त था । इसी पर पैर रखकर राजा उस सिंहासन
पर चढ़ता था तथा यह सिंहासन पादुकायोग से समायुक्त था । सड़ाउ रखने के स्थानद्वय से
सहित था । अनेक किङ्कर एवं पदातिर्या के समूह से परिक्षिप्त था । चारों ओर से घिरा हुआ

दरिस्सिज्जा वाउद्धय विजयवेजयति अम्भुस्सिया गगनतलमणुलिहंति पुरओ अहाणुपुव्वीए"
जो पाठने स अहं थये। छे (तयणंतरं च वेरुलिय भिसंत विमल दंड जाव अहाणुपुव्वीए
संपट्टियं) त्थार पाठ वैदूर्यमणि निर्मित विमल दंडयुक्त छत्र प्रस्थित थयु. अही
थावत् पदं " (पलंबकोरंटमल्लदामोवसोहिय चंदमंडलनिभं समूसियं विमलं आयवत्तं
पवरं सीहासनं च मणिरयणपायपीढं सपाउआजोगसमाउत्तं बहुक्किरकम्मकरपुरिस
पायत्तपरिक्खितं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्टियं ति) जो पाठने स अहं थये। छे. जो
पाठगत पदोनी व्याख्या आ प्रभाषे छे जे छत्र प्रस्थित थयु ते कीदृशं पुष्पोनी लांभी-
लांभी भाणाओथी सुशोभित हंतु, ते चन्द्रमण्डल जेपुं उज्ज्वलण हंतु तेमज ते अंध
नहोतु प्रस्फुटित हंतु अने उच्यु हंतु अने आगन्तुक मैलथी जो रहित हंतु, ओथी जो
विभण हंतु. त्थार पाठ सिंहासन प्रस्थित थयु जो सिंहासन मणिरत्न निर्मित पादपीठ

પાદરક્ષણયુગ તેન સમાયુક્તમ્, પુનઃ કીદશં તત્ વહુકિઙ્કર કર્મકર પુરુષપાદાત પરિક્ષિતમ્, વહુકિઙ્કરાઃ પ્રતિકર્મપૃચ્છાકારિણઃ સ્વામીનમાપૃચ્છય કાર્યકારિણ इत्यर्थः મૃત્યાઃ કર્મકરાઃ કાર્યકર્મિણ તતો ડન્યથાવિધાસ્તે ચ તે પુરુષાશ્ચેતિ વહુકિઙ્કરકર્મકરપુરુષાસ્તૈઃ પદાતીનાં સમૂહઃ પાદાતં પદાતિસમૂહસ્તેન ચ પરિક્ષિતં સર્વતો વેદિત તૈ ધૃતત્વાદેવ પુરતો યથાનુપૂર્વ્યાં યથાક્રમં સપ્રસ્થિતમ્ 'તયણતર ચ ણ સત્ત ઇગિંદિયરયણા પુરઓ અહાણુ-પુવ્વીણ સંપત્થિયા' તદન્તરં ચ સ્વલ્લ સત્ત એકેન્દ્રિયરત્નાનિ પૃથિવી પરિણામરૂપાણિ પુરતઃ સંપ્રસ્થિતાનિ ચલિતાનિ કાનિ ચ તાનિ ઇત્યાહ 'તં જહા' ઇત્યાદિ 'તં જહા ચક્રરયણે૧, છત્રરયણે૨, ચમ્પરયણે૩, દહરયણે૪, અસિરયણે૫, મણિરયણે૬, કાગિણિરયણે૭' તદ્યથા ચક્રરત્નમ્૧, છત્રરત્નમ્૨, ચર્મરત્નમ્૩, દણ્ડરત્નમ્૪, અસિર ત્નમ્૫, મણિરત્નમ્ ૬, કાકળીરત્નમ્૭, । 'તયણંતરં ચ ણં ણવ મહાણિહિઓ પુરઓ અહાણુપુવ્વીણ સંપત્થિયા' તદન્તરં ચ સ્વલ્લ નવ મહાનિધય નૈસર્પાદિ શઙ્ખાન્તાઃ પુરતઃ અગ્રતો યથાનુપૂર્વ્યાં યથાક્રમં સંપ્રસ્થિતાઃ પાતાલમાર્ગેણેતિ ગમ્યમ્ અન્યથા તેષાં નિધિ-વ્યવહાર એવ ન સઙ્ગચ્છતે, તદેવ નિધિનાં નિધિત્વ યત્ ભૂમ્યામધોઽવસ્થાયિત્વં તદ્ યદિ ચક્રવર્તિના સહ ઉપરિ ચલેત્તદા તેષાં નિધિત્વમેવ અતસ્તે નિધય ઉપરિ ચચ્છત્રચક્ર-

યા । (તયણંતર ચ ણંમત્ત ઇગિંદિયરયણા પુરઓ અહાણુપુવ્વીણ સંપત્થિયા) ઇસકે બાદ સાત એકેન્દ્રિય રત્ન-ચક્રરત્ન, છત્રરત્ન, ચર્મરત્ન, દણ્ડરત્ન, અસિરત્ન, મણિરત્ન ઓર કાકળીરત્ન —યે, સવ રત્ન યથાનુર્વાં ચલે (તયણંતર ચ ણં ણવ મહાણિહિઓ અહાણુપુવ્વીણ સંપત્થિયા) ઇત્તકે બાદ પાતાલ માર્ગ સે હોકર નૌ મહાનિધિયા પ્રસ્થિત હુઈ । નિધિયોં મે યહી નિધિત્વ હૈ । કિ વે ભૂમિ કે નીચે રહતી હૈ યે અગર ચક્રવર્તી કે સાથ ઊપર હોકર દિશ્વતી હુઈ ચલે તો ડનકા નિધિત્વ હી સમાત્ત હો જાવેગા । ઇસલિખે યે ચક્રવર્તી કો લક્ષ્ય કરકે મીતર ૨ હો ચલતી હૈ । ઇન નિધિયોં કે નામ નૈસર્પ પાણ્ડુક યાવત્ શશ્વ હૈ, યહાં યાવત્પદ સે યે અવશિષ્ટ છહ નિધિયાં ગૃહીત હુઈ હૈ—ડનકે નામ ઇસ પ્રકાર સે હૈ—પિંગલક, સર્વરત્ન મહાપદ્મ, કાલ, મહાકાલ, માળવક ઓર

થી યુક્ત હંતુ' એની ઉપર જ પગ મૂકી ને રાજા તે સિંહાસન ઉપર આરૂઢ થતો હતો એ સિંહાસન પાંદકાયોગ થી પશુ સમાયુક્ત હતુ એટલે કે ખડાઉ મૂકવાના સ્થાનકથી યુક્ત હતુ એને કિંકરો, કમંકરો તેમજ પદાતીઓના સમૂહોથી પરિક્ષિત હતું એમર એ સર્વથી વ્યાપ્ત હતું (તયણંતરંચ ણં સત્ત ઇગિંદિયરયણા પુરઓ અહાણુપુવ્વીણ સંપત્થિયા) ત્યાર બાદ સાત એકેન્દ્રિયરત્ન —ચક્રરત્ન, છત્રરત્ન, ચર્મરત્ન, દહરત્ન, અસિરત્ન મણિરત્ન, અને કાકળી રત્ન એ સર્વરત્નો યથાનુપૂર્વી આલ્યા—(તયણંતરંચ ણં ણવ મહાણિહિઓ પુરઓ અહાણુપુવ્વીણ સંપત્થિયા) ત્યારબાદ પાતાળ માર્ગથી થઇને નવ મહાનિધિઓ પ્રસ્થિત થયા નિધિઓમાં એજ નિધિત્વ છે કે તેઓ ભૂમિની નીચે રહે છે એ નિધિઓ ચક્રવર્તીની સાથે ઉપર થઇને બધા જઈ શકે એવી રીતે આલે તો તેમનુ નિધિ-ત્વજ સમાપ્ત થમ જશે એથી ચક્રવર્તીને લક્ષ્ય કરીને તેઓ અદર જ આલે છે, અ નિધિઓ-ના નામો—નૈસર્પ, પાંડુક યાવત્ શશ્વ છે અહીં યાવત્ પદથી અવશિષ્ટ નિધિઓ સ ગૃ-

वर्त्तिन लक्षीकृत्य भूम्यामधोभागे एव प्रचलति इतिभावः । केचने इत्याह—
 'तं जहा' इत्यादि 'तं जहा—णेसप्ते पंडुयए जाव संखे' नैसर्पः१ पाण्डुकः२ यावच्छंखः
 अत्र यावत्पदात् पिङ्गलकः३, सर्वरत्नम्४, महापद्मम्५, कालश्च६, महाकालः७, माणव-
 को महानिधिः८, शङ्खः९ एतेषा ग्रहणे एतेषामर्थाः पूर्वसूत्रे द्रष्टव्याः 'तयणंतरं च णं
 सोलस देवसहस्सा पुरओ अहाणुपुण्वीए सपट्टिया' तदन्तरं च खलु पोडशदेवसहस्सा-
 णि पुरतो यथानुपूर्व्या सम्प्रस्थितानि 'तयणंतरं च णं वत्तीसं रायवरसहस्सा अहाणुपु-
 ण्वीए संपट्टिया' तदन्तरं च खलु द्वात्रिंशदाजदरसहस्साणि-द्वात्रिंशत्संख्यकाः मुकुटधारिणो
 राजश्रेष्ठाः पुरतो यथानुपूर्व्या सम्प्रस्थितानि 'तयणंतरं च णं सेणावडरयणे पुरओ अहाणु-
 पुण्वीए संपट्टिए' तदन्तरं च खलु सेनापतिरत्नं सुपेणनामकम् यथानुपूर्व्या पुरतः सम्प्र-
 स्थितम् 'एवं गाहावडरयणे वड्डइरयणे पुरोहियरयणे' एवम् अमुना प्रकारेण गाथापति-
 रत्नम्, वर्द्धकिरत्नं पुरोहितरत्नम् एतत् त्रयं पुरतो यथानुपूर्व्या संप्रस्थितम् तत्र अयं वि-
 शेषः पुरोहितरत्नं-शान्तिकर्मकारकः सङ्ग्रामे प्रहारार्हितानां मणिरत्नजलच्छटया वेदनो-
 पशामकमितिभावः । हस्त्यश्चरत्नगमनं तु हस्त्यश्चसेनाभिः सहैव तेन नात्र कथनम्

शङ्ख इनके सम्बन्ध में कथन अभी अभी किया जा चुका है । (तयणतरं च सोलस देवसहस्सा
 पुरओ अहाणुपुण्वीए सपट्टिया) इनके बाद सोलह हजार देव १४ चौदह रत्नों के १४ हजार देव
 और चक्रवर्ती शरीर के रक्षक २ हजार देव मिलकर १६ हजार देव यथानुपूर्वी चले (तयणतरं
 च ण वत्तीस रायवरसहस्सा अहाणुपुण्वीए सपट्टिया) इनके बाद ३२ हजार मुकुट वद्ध राजा
 जन चले (तयणतरं च णं सेणावडरयणे पुरओ अहाणुपुण्वीए सपट्टिए) इनके बाद सेनापतिरत्न
 प्रस्थित हुआ (एवं गाहावडरयणे वड्डइरयणे पुरोहियरयणे) बाद में गाथापतिरत्न उसके बाद वर्द्ध-
 किरत्न, बाद में पुरोहितरत्न ये ३ रत्न चले । यह पुरोहित रत्न शान्ति कर्म कारक होता है ।
 संग्राम में प्रहार आदि से पीड़ित हुए सैनिक जनों की मणिरत्न के जल के छीटे से यह वेदना
 को शान्त करता है इतिरत्न और अश्व रत्न सेना के साथ ही चले है । इसलिए इनके गमन का

हीत था । छे ओ, अवशिष्ट निधिया ना नाभो आ प्रभाष्टे छे (य गलक, सर्वरत्न, महापद्म
 काण, महाकाण, माणवक अने श ण ओना स भधमां हंभण्ण पडेलां स्पष्टता करवाभां आवी
 छे (तयणतरं च सोलस देवसहस्सा पुरओ अहाणुपुण्वीए सपट्टिया) त्थारभाह सोण हंभर,
 देवे अतुहंशरत्नोना १४ हंभर देवे अने अकंप्ती-शरीरना रक्षक ओ हंभर देवे आभ
 भधा भणीने १६ हंभर नेटला देवे यथानुपूर्वी आह्या (तयणंतरं च ण वत्तीस रायवर-
 सह अहाणुपुण्वीए सपट्टिया) त्थार भाह ३२ हंभर मुकुट भद्ध राजओ आह्या (तय-
 णंतरं च णं सेणावडरयणे पुरओ अहाणुपुण्वीए सपट्टिया) त्थारभाह सेनापति रत्न
 प्रस्थित थयु (एवं गाहावडरयणे वड्डइरयणे पुरोहियरयणे) त्थारभाह गाथापतिरत्न
 ओना पछी वर्द्ध किरत्न, ओना पछी पुरोहितरत्न ओ त्रय रत्नो आह्या. ओ पुरोहितरत्न
 शान्ति कर्मकारक होय छे स आभमा प्रहार आहिथी पीडित थयेला सैनिकोनी मणिरत्नना
 जणना छाटाथी ओ रत्न वेदनाने शान्त करे छे इतिरत्न अने अश्वरत्न, सेनानी साथे

‘तयणंतरं च णं इत्थिरयणे पुरओ अहाणुपुब्बीए०’ तदन्तरं च खलु स्त्रीरत्नं सुभद्रा-
 जामकम् पुरतो यथानुपूर्व्या संप्रस्थितम् ‘तयणंतरं च णं वत्तीसं उडकल्लाणिया सह-
 स्सा पुरओ अहाणुपुब्बीए०’ तदन्तरं च खलु द्वात्रिंशद् ऋतु कल्याणिका सहस्राणि द्वात्रिं-
 शत् ऋतुकल्याणिकाः-ऋतुषु पदस्वपि कल्याणिकाः ऋतुविपरीतस्पर्शत्वेन शीतकाले
 उष्णस्पर्शः उष्णकाले शीतस्पर्शः इत्यादिरूपेण सुखम्पर्शाः अथवाऽमृतकन्यात्वेन सदा
 कल्याणकारिण्यः राजकन्यास्तासां सहस्राणि पुरतो यथानुपूर्व्या यथा ज्येष्ठलघुपर्यायं
 सम्प्रस्थितानि जन्मान्तरोपचितप्रकृष्टपुण्यप्रकृतिमहिम्ना राजकुलोत्पत्तिवद् यथोक्तलक्ष-
 णगुणसम्भवात् ‘तयणंतरं च णं वत्तीस जणवय कल्लाणिया सहस्सा पुरओ अहाणुपु-
 व्बीए सपट्ठिए’ तदन्तरं च खलु द्वात्रिंशज्जनपदकल्याणिका सहस्राणि । भरतचक्र-
 वर्तिनः चतुः पष्ठिसहस्रसंख्यका स्त्रियो भवन्ति ताम्र एता द्वात्रिंशत् सहस्र संख्यकाः
 कल्याणिका इति । तत्र द्वात्रिंशज्जनपदाः जनपदाग्रागण्य इत्यर्थः पदैकदेशे पदसमुदायो-
 पचारात् ‘तावतीभिर्जनपदाग्रणी कन्याभिरावृतः’ इति, एवंविधाः कल्याणिका कल्याण-
 कारिण्यो राजकन्यकाः इत्यर्थः समर्थविशेषणेन विशेष्यं लभ्यते इति लक्षणगुणयो-
 गात् तासां सहस्राणि पुरतः यथानुपूर्व्या यथाज्येष्ठलघ्वनुक्रमेण सम्प्रस्थितानि चळितानि

कथन नहीं किया (तयणंतरं च इत्थिरयणे पुरओ अहाणुपुब्बीए) बाद में स्त्रीरत्न चला (तयण
 तरं च णं वत्तीसं उडकल्लाणिया सहस्सा पुरओ अहाणुपुब्बीए) बाद में ३२ हजार ऋतुकल्याण
 कारिणियां—राजकुलोत्पन्न कन्याएँ—चली जिनका स्पर्श ऋतुविपरीत—शीतल काल में उष्णस्पर्शरूप
 और उष्णकाल में—शीतस्पर्शरूप हो जाता था—चली इनमें ऐसा गुण जन्मान्तरोपचित—प्रकृष्ट
 पुण्य प्रकृति की महिमा से राजकुल में उत्पत्ति हो जाने की तरह उत्पन्न हो जाता है । (तय णं
 तरं च णं वत्तीस जणवयकल्लाणिया सहस्सा पुरओ अहाणुपुब्बीए सपट्ठिया) इनके बाद ३२
 हजार जन पद कल्याण कारिणिया चली चक्रवर्ती के १४ हजार लिया होती हैं । उनमें ये ३२
 हजारहोती हैं । इनके साथ जनपद के अग्रिणियों की- मुखियाओं को- इतनी ही कन्याएँ और
 साथ रहती है इसलिए इन्हें जनपद कल्याण कारिणिया कहा गया है । (तयणंतरं च ण वत्तीसं

४ व्याख्यां એથી એમના ગમનનું કથન અને કરવામાં આવ્યું નથી (તયણતરં ચ
 इत्थिरयणे पुरओ अहाणुपुब्बीए) त्थार भाद स्त्री रत्न आह्वय (तयणंतरं च वत्तीसं
 उडकल्लाणिया सहस्सा पुरओ अहा०) त्थार भाद ३२ हजार ऋतुकल्याणकारिणियों—राजकुलो-
 त्पन्न कन्याओं आली जेमने स्पर्श ऋतु विपरीत—शीतकालमा उष्ण स्पर्शरूप અને उष्ण
 कालमा शीत स्पर्शरूप થઇ જાય છે—આલી, એ સર્વકન્યાઓમા એ શુભજન્માન્તરોપચિત-
 પ્રકૃષ્ટ પુણ્ય પ્રકૃતિના મહિમાથી જેમ રાજકુળમાં ઉત્પત્તિ થઈ છે તેમજ ઉત્પન્ન થઈ જાય
 છે, (તયણતરં ચ વત્તીસ જણવયકલ્લાણિયા સહસ્સા પુરઓ અહાણુપુવ્વીપ સપટ્ઠિય) ત્થાર-
 બાદ ૩૨ હજાર જનપદ કલ્યાણ કારિણીઓ આલી ચક્રવર્તીને ૧૪ હજાર સ્ત્રીઓ હોય છે
 તેમાં એ ૩૨ હજાર યશુ હોય છે એમની સાથે જનપદના અગ્રણીઓની—મુખિયાઓની—
 એટલી જ કન્યાઓ બીજા સાથે રહે છે, એથી જ એમને જનકલ્યાણ કારિણીઓ કહેવામાં

‘तयणंतरं च णं वत्तीसं वत्तीसह वद्धा णाडगसहस्सा पुरओ अहाणुपुन्वीए’ तदनतरं च खलु द्वात्रिंशद् द्वात्रिंशद् वद्धानि द्वात्रिंशता पात्रै र्वद्धानि संयुक्तानि नाट रुमहस्वाणि पुरतः अग्रतो यथानुपूर्व्या यथाक्रमं प्रथमं प्रथमोद्घाटितप्राभृतीकृतनाटक ततस्तदनन्तरोद्घा नाट रुमित्यादि- सम्प्रस्थितानि एतेषां चोक्तसख्याकृतं द्वात्रिंशता राजवत्सहस्रैः स्वस्वकन्यापार्ष्णिग्रहण- हेतौ प्रत्येक करमोचनसमयसमर्पितैकैकनाटकसद्भावात् ‘तयणंतरं च णं तिन्निमट्टासूअ- सया पुरओ अहाणुपुन्वीए संपट्टिया’ तदन्तरं च खलु त्रीणि पट्टानि पट्टचित्रिकानि सूपजता नि सूपानां पदैकदेशे पदसमुदायोपचारात् सूपकाराणाम् शतानि त्रिपट्टर्यावकशतानीत्यर्थः पूरतो यथानुपूर्व्या सम्प्रस्थितानि ‘तयणंतरं च णं अट्टारससेणिप्पसेणीओ संपट्टिया’ तदन्तरं च खलु अष्टादश कुम्भकाराद्याः श्रेणयः तदन्तरेण प्रश्रेणयः पुरतो यथानुपूर्व्या सम्प्रस्थिताः अष्टादश श्रेणयश्चेमाः

मूळम्-कुम्भकार १, पट्टइल्ला २, सुवण्णकाराय ३, सूवकाराय ४ ।

गंधव्वा ५ कासवगा ६ मालाकाराय ७ कच्छकरा ८ ॥ ९ ॥

तंबोलिया ९ य एए नवप्पयारा य नारुआ भणिया ।

अहण णवप्पयारे कारुअवण्णे पवक्खामि ॥ १० ॥

वत्तीसहवद्धा णाडगसहस्सा पुरओ अहाणुपुन्वीए सट्टिया) बाद-३२-३२-पात्रो से वद्ध ३२ ह- जारनाटक चले । ये ३२ हजार राजाओं द्वारा अपनी कन्याओं के पाणिग्रहणोत्सव में करमोचन के समय में चक्रवर्ती को एक २ नाटक दिया जाता है । इसलिए ये ३२ हजार हो जाते हैं (तयणतरं च णं तिन्निमट्टा सूपसया पुरओ अहाणुपुन्वीए सपट्टिया) इन नाटको के बाद ३६० सूपकार- पाचक जन प्रस्थित हुए । (तयणतरं च णं अट्टारससेणिप्पसेणीओ सपट्टिया) इनके बाद १८ श्रेणो प्रश्रेणिजन प्रस्थित हुए । २८ प्रश्रेणियां ३५ प्रकार से हैं-कुम्भकार १ पट्टइल्ला सुवण्णकाराय ३ सूवकाराय ४ गंधव्वा ५ कासवगा ६ मालाकाराय ७ कच्छकरा ८ ॥ ९ ॥ तंबोलिया ९ य एए नवप्पयाराय नारुआ भणिया अहणं णवप्पयारे कारुअवण्णे पवक्खामि ॥ १० ॥

आवेद्ये (तयणंतरं च ण वत्तीसं वत्तीसहवद्धा णाडग सहस्सा पुरओ अहा० स पट्टिया) त्थार आह ३२-३२ पात्रोथी आ अह ३२ हजार नाटके आह्या ये ३२ हजार राजाओं वडे पोतानी कन्याओंना पाणिग्रहणमहोत्सवमां करमोचनना समयमां अक्वत्ती ने ओक-ओक नाटक आपवामां आवे छे, आभ ये ३२ हजार थाय छे (तयणतरं च ण तिन्निमट्टा सूपसया पुरओ अहाणुपुन्वीए सपट्टिया) ये नाटके पओ ३६० सूपकारे-पाचकजनो-प्रस्थित थ्या. (तयणतरं च ण अट्टारस सेणिप्पसेणीओ सपट्टिया) त्थार आह १८ श्रेणि-प्रश्रेणिजनो प्रस्थित थ्या. १८ प्रश्रेणिओ आ प्रभाष्य छे-कुम्भकार १, पट्टइल्ला-२, सुवण्णकाराय ३, सूवकाराय-४, गंधव्वा-५, कासवगा ६, मालाकाराय-७, कच्छकरा-८, ॥ ९ ॥ तंबोलिया ९, य एए नवप्पयाराय नारुआ भणिया । अहणं णवप्पयारे कारुअवण्णे पवक्खामि ॥ १० ॥

ચમ્મયરુ ૧ જંતપીલગ ૨ ગચ્છિઅ ૩ છિપાય ૪ કંસકારે ૫ ય ।

સીવગ ૬ ગુઆર ૭ મિલ્લા ૮ ધીવર ૯ વળ્ણાઈ અદ્દસા ॥ ૩ ॥

છાયા-કુમ્મકાર: ૧ પટેલાશ્વ(ગ્રામ મુલિકા:) ૨ સ્વર્ણકારા: ૩ સૂપકારાશ્વ ૪ ।

ગન્ધર્વા(ગાયકા) ૫ કાશ્યપકાશ્વ નાપિતા: ૬ માલાકારાશ્વ ૭ કક્ષકારા ૮ ॥ ૧ ॥

તામ્બૂલિકાશ્વતે ૯ સ્વલ્લેતે નવ પ્રકારાશ્વ નારુકા: મણિતા ।

અથ સ્વલ્લુ નવ પ્રકારાન્ કારુકવર્ણાન્ પ્રવક્ષ્યામિ ॥ ૨ ॥

ચર્મકાર ૧ જન્ત્રપીલકર ગ્રન્થિક ૩ છિપક ૪ કંશકારાશ્વ ૫ ।

સીવક ૬ ગોપાલ ૭ મિલ્લ ૮ ધીરવાન્ ૯ અઠ્ઠાદશવર્ણાન્ ॥ ૩ ॥

‘તયણંતરં ચ ણં ચરસીઈ આસસય સહસ્સા પુરઓ અહાણુવ્વીપ સંપટ્ટિયા’

તદન્તરં ચ સ્વલ્લુ ચતુર્શીતિશ્ચ શતસહસ્રાણિ ચતુર્શીતિલક્ષસંખ્યકહસ્તિન: પુરતો યથાનુ-
પૂર્વ્યા સંપ્રસ્થિતાનિ ‘તયણંતર ચ ણં છળ્ણઝઈ મણુસ્સ કોહીઓ પુરઓ અહાણુપુવ્વીપ
સંપટ્ટિયા’ તદન્તરં ચ સ્વલ્લુ પળ્ણવતિ મેનુષ્યાણાં પદાતીનાં કોટય: પળ્ણવતિ કોટિસ-
ખ્યકા: પદાતય: પુરતો યથાનુપૂર્વ્યા સંપ્રસ્થિતા: ‘તયણંતરં ચ ણં વહવ રાઈસર તલ્લવર

ચમ્મયરુ ૧ જંતપીલગ ૨ ગચ્છિઅ ૩ છિપાય ૪ કંસકારે ૫ ય સીવગ ૬ ગુઆર ૭ મિલ્લા
૮ ધીવર ૯ વળ્ણાઈ અદ્દસ ॥ ૩ ॥ કુંમકાર-મિટ્ટી કે વર્તન બનાવેવાલા પટેલ ૨ ગામ કા મુલિયા
સ્વર્ણકાર ૩ સુનાર. સૂપકાર-રસોઈ-બનાવેવાલા ૪, ગધર્વ ૫ ગાયક કાશ્યપક-નાપિત નાઈ-વાલ-
બાનાવેવાલા ૬, માલાકાર-માલી ૭, કચ્છકર ૮ ઓર તામ્બૂલિક-પાનવેચેવાલા તંબોલી ચે ૯
પ્રકાર કે નારુક કહે ગયે હૈં । તથા ચર્મકાર-ચમાર-જૂતે-બનાવેવાલા ૧, યન્ત્રપીલક-તેલી ૨
ગ્રન્થિક ૩, છિપક-છોપા ૪, કંશકરતમેરા ૫, સીવક-દર્જી ૬, ગોપાલ-ગ્વાલ ૭ મિલ્લ ૮
ઓર ધીવર ચે ૯ પ્રકાર કે કારુક કહે ગયે હૈં । (તયણંતરચ ણવ ચરસીઈ આસસયસહસ્સા
પુરઓ અહાણુપુવ્વીપ સંપટ્ટિયા) ડનકે વાદ ૮૪ લાસ ઘોડે પ્રસ્થિત હુણ (તયણંતરંચળ્ણઝઈ
મણુસ્સ કોહીઓ અહાણુપુવ્વીપ સંપટ્ટિયા) ડનકે વાદ ૬ કરોડ મનુષ્યરાશિ પદાતિયો કા

ચમ્મયરુ ૧, જંત પીલગ ૨ ગચ્છિઅ ૩, છિપાય ૪, કંસકારે ૫ ય સીવગ ૬, ગુઆર
૭, મિલ્લા ૮, ધીવર ૯, વળ્ણાઈ અદ્દસ ॥ ૩ ॥

કુંભકાર-૧, કુંભાર માટીના વાસણો બનાવનાર, પટેલ-૨, ગામનો મુખી, સુવર્ણકાર
-૩ સોની, સૂપકાર-રસોઈ ચે ૪, ગધર્વ-૫, ગાયક, કાશ્યપક નાપિત-નાઈ-વાળ બનાવ-
નાર વાળંદ ૬ માલાકાર-માળી-૭, કચ્છકર-૮ અને તાંબૂલિક-પાન વિકેતા ત બોળી, જે નવ
પ્રકારના નારુકે કહેવામાં આવ્યા છે તેમજ ચર્મકાર-ચમાર જેડા બનાવનાર-મેચી ૧, યન્ત્ર
પીલક ૧, -તેલીર, ગ્રન્થિક ૩, છિ પક-છીપા-૪, કંશકર-તમેરા ૫, સીવક-દર્જી ૬, ગોપાલ-ગ્વાલ
કારવાડ ૭, મિલ્લ-મીલ ૮ અને ધીવર-મચ્છોમાર જે ૯ પ્રકારના નારુકે કહેવામાં આવ્યા છે

(તયણંતરં ચ ણ ચરસીઈ આસસયસહસ્સા પરઓ અહાણુપુવ્વીપ સંપટ્ટિયા)
ત્યારબાદ ૮૪ લાખ ઘોડાઓ પ્રસ્થિત થયા (તયણંતર ચ ણ છળ્ણઝઈ મણુસ્સ કોહીઓ
પુરઓ અહાણુપુવ્વીપ સંપટ્ટિયા) ત્યારબાદ ૬૬ કરોડ જેટલી માનવ મોહની પદાતી ઓની

જાવ સત્યવાહપ્પમિદ્ધો પુરઓ અહાણુપુવ્વીપ સંપટ્ઠિઆ' તદન્તરં ચ ચલુ વહવો રાજાનો માળલિકા, ईश्वराः-युवराजाः तलवराः नगररक्षका यावत्सार्थवाहप्रभृतयः पुरत' यथानुपूर्व्या संप्रस्थिताः अत्र-यावत्पदा, માહમ્બિક કોટુમ્બિક મન્ત્રિ મહામન્ત્રિ ગણક દૌવારિક અમાત્ય ચેટપીઠમર્દકનગરનિગમ શ્રેષ્ઠ સેનાપતિ સાર્થવાહાઃ ઇતિ ગ્રામ્યમ્ । તત્ર-માહમ્બિકાઃ મહવો ગ્રામવિવેશઃ યસ્ય ગ્રામસ્ય ચતુર્દિશ્વ સાર્દ તૃતીય, ક્રોગદ્વય-પર્યન્તઃગ્રામાન્તરં ન ભવતિ સઃ તસ્યાધિપતિઃ તદ્વહુવચને-મહંવાધિપતયઃ, કૌટુમ્બિકાઃ-પરિવારસ્થાયિનો માતા પિતાઆત્મગિન્યાદયઃ, મન્ત્રિણઃ, સચિવા અમાત્યાઃ, મહામન્ત્રિ ણઃ, - સર્વોચ્ચામાત્યાઃ પ્રધાનમન્ત્રિણઃ, ગણકાઃ - જ્યોતિષિકાઃ, દૌવારિકાઃ - દ્વારપા-લકાઃ, અમાત્યા - રાજ્યાધિષ્ઠાયકાઃ, ચેટાઃ - દાસા વા, પીઠમર્દાઃ - આસ્થાને આસન્ના-સન્નસેવકાઃ સમવયસ્યા इत्यर्थः, નગરમ્ પ્રસિદ્ધમ્, નિગમાઃ - કારણિકા વણિજો

સમૂહ ચલી (તયળંતરંવળં વહવે રાઈસર તલવર જાવ મત્યવાહપ્પમિદ્ધો પુરઓ અહાણુપુવ્વેપ સપટ્ઠિયા) હસ જનસમૂહ કે વાદ બનેક રાજા-માહલિકજન, ईश्वर युवराज, तलवर नगर रक्षक यावत् सार्थवाह आदिजन चले यहाँ यावत्पद में माहम्बिक, कौटुम्बिक मन्त्री महामन्त्री गणक-ज्योतिषी' दौवारिक, अमात्य चेट पीठमर्द अंगरक्षक नगरनिगम के श्रेष्ठजन, सेनापति' इन सबका ग्रहण हुआ है । जिम ग्राम के आस पाम द्वाई कोश तक दूसरा ग्राम नहीं होता है उसका नाम मडंब है इस मडव ग्राम रूप विशेष-का जो अधिपति होता है वह माह-म्बिक कहा गया है कौटुम्बिकजन-माता पिता आदि-कौटुम्बिक कहे गये हैं, मन्त्री महामन्त्री प्रधान ये भिन्न २ पद के अनुसार होते हैं गणक नाम ज्योतिर्विद का है जिसे भाषा में ज्योतिषी कहा गया है द्वारपाल का नाम दौवारिक है राज्य के अधिष्ठापक हाते हैं उन्हें अमात्य कहा जाता है दासी दास आदि चेट कहलाते है पीठमर्द अंगरक्षक को कहते है जिसे अंग्रेजी में बोडीगार्ड कहा गया है अथवा जा समानवय के होते हैं वे भी पीठमर्द कहे जाते हैं ।

આહી (તયળંતરં ચળં વહવે રાઈસરતલવર જાવ સત્યવાહપ્પમિદ્ધો પુરઓ અહાણુ-પુવ્વીપ સંપટ્ઠિયા) એ જનસમૂહ પછી અનેક રાજઓ-માંલિકજનો, ईश्वरयुवराज तलवर, नगर रक्षक यावत् सार्थवाह वगेरे दोऊो आत्या आही यावत् पदथी माहम्बिक कौटुम्बिक, मन्त्रीओ, महामन्त्रीओ गणको-ज्योतिषीओ दौवारिको अमात्यो चेटो-पीठमर्दो, अंग-रक्षको, नगरनिगमना श्रेष्ठजनो, सेनापतिओ ओ सर्वानुग्रहेषु ययु छे जे ग्रामनी आस-पास आही गाछ सुधो अन्य ग्राम डोय नहि तेनु नाम मडण छे. ओ मडण विशेष ने ओ अधिपति डोय छे ते माहम्बिक कहेवाय छे कौटुम्बिकजन, माता पिता वगेरे ने कौटु-म्बिको कहेवाभा आव्या छे मन्त्री, महामन्त्री प्रधान ओ ओ। बिषय पद. ग्रहण डोय छे गणक नाम ज्योतिर्विदनु छे, जेने हिन्दी बाषाभां ज्योतिषी कहेवाभां आवे छे द्वारपाल दुं नाम दौवारिक छे. राज्यना ओ अधिष्ठापको डोय छे तेने अमात्यो कहेवाभा आवे छे. दासी-दास वगेरेने चेट कहेवाभां आवे छे, पीठमर्द अंगरक्षक ने कहे छे जेने अंग्रेज-बाषाभां बोडीगार्ड कहेवाभा आवे छे. अथवा जेओ समानवयना डोय छे तेओनेपीठमर्द

ચમ્મયરુ ૧ જંતપીલગર ગચ્છિમર ૩ છિપાય ૪ કંસકારે ૫ ય ।

સીવગ ૬ ગુમાર ૭ મિલ્લા ૮ ધીવર ૯ વળ્ણાદ અદ્વદસ ॥ ૩ ॥

છાયા-કુમ્ભકાર ૧ પટેલાશ્વ(ગ્રામ મુલિકાઃ) ૨ સ્વર્ણકારાઃ ૩ સૂપકારાશ્વ ૪ ।

ગન્ધર્વા(ગાયકા) ૫ કાશ્યપકાશ્વ નાપિતાઃ ૬ માલાકારાશ્વ ૭ કક્ષકારા ૮ ॥ ૧ ॥

તામ્બૂલિકાશ્વતે ૯ ચલ્લેતે નવ પ્રકારાશ્વ નારુકાઃ મણિતા ।

અથ ચલ્લ નવ પ્રકારાન્ કારુકવર્ણાન્ પ્રવક્ષ્યામિ ॥ ૨ ॥

ચર્મકાર ૧ જન્ત્રપીલકર ગ્રન્થિક ૩ છિપક ૪ કક્ષકારાશ્વ ૫ ।

સીવક ૬ ગોપાલ ૭ મિલ્લ ૮ ધીરવાન ૯ અષ્ટાદશવર્ણાન્ ॥ ૩ ॥

‘તયણતરં ચ ણં ચરસીઈં આસસય સહસ્સા પુરઓ અહાણુવ્વીપ સંપટ્ટિયા’

તદન્તરં ચ ચલ્લ ચતુરશીતિશ્ચ શતસહસ્રાણિ ચતુરશીતિલક્ષસંખ્યકહસ્તિનઃ પુરતો યથાનુ-
પૂર્વ્યાં સંપ્રસ્થિતાનિ ‘તયણંતર ચ ણં છળ્ણઁઁ મણુસ્સ કોહીઓ પુરઓ અહાણુપુવ્વીપ
સંપટ્ટિયા’ તદન્તરં ચ ચલ્લ પળ્ણવતિ મેનુષ્યાણાં પદાતીનાં કોટયઃ પળ્ણવતિ કોટિસ-
ખ્યકાઃ પદાતયઃ પુરતો યથાનુપૂર્વ્યાં સંપ્રસ્થિતાઃ ‘તયણંતરં ચ ણં વહવં રાઈસર તલ્લવર

ચમ્મયરુ ૧ જંતપીલગ ૨ ગચ્છિમ ૩ છિપાય ૪ કંસકારે ૫ ય સીવગ ૬ ગુમાર ૭ મિલ્લા
૮ ધીવર ૯ વળ્ણાદ અદ્વદસ ॥ ૩ ॥ કુમ્ભકાર-મિટ્ટી કે વર્તન બનાવનાર પટેલ ૨ ગામ કા મુલિયા
સ્વર્ણકાર ૩ સુનાર. સૂપકાર-રસોઈબનાવનાર ૪, ગંધર્વ ૫ ગાયક કાશ્યપક-નાપિત નાઈ-વાલ-
બાનાવનાર ૬, માલાકાર-માલી ૭, કચ્છકર ૮ ઓર તામ્બૂલિક-પાનવેચનાર તલોહી યે ૯
પ્રકાર કે નારુક કહે ગયે હૈં । તથા ચર્મકાર-ચમાર-જૂતેરનાવનાર ૧, યન્ત્રપીલક-તેલી ૨
ગ્રન્થિક ૩, છિપક-છોપા ૪, કંશકરતમેરા ૫, સીવક-દર્જી ૬, ગોપાલ-ગ્વાલ ૭ મિલ્લ ૮
ઓર ધીવર યે ૯ પ્રકાર કે કારુક કહે ગયે હૈં । (તયણંતરચ ણચ રસીઈં આસસયસહસ્સા
પુરઓ અહાણુપુવ્વીપ સપટ્ટિયા) ઇનકે વાદ ૮૪ લાસ ઘોડે પ્રસ્થિત હુણ (તયણંતરંચ ણં છળ્ણઁઁ
મણુસ્સ કોહીઓ અહાણુપુવ્વીપ સપટ્ટિયા) ઇનકે વાદ ૬ કરોડ મનુષ્યરાશિ પદાતિયો કા

ચમ્મયરુ ૧, જંત પીલગ ૨ ગચ્છિમર ૩, છિપાય ૪, કંસકારે ૫ ય સીવગ ૬, ગુમાર
૭, મિલ્લા ૮, ધીવર ૯, વળ્ણાદ અદ્વદસ ॥ ૩ ॥

કુમ્ભકાર-૧, કુભાર માટીના વાસણો બનાવનાર, પટેલ-૨, ગામનો સુખી, સુવર્ણકાર
-૩ સોની, સૂપકાર-૨સોઈ યો ૪, ગંધર્વ-૫, ગાયક, કાશ્યપક નાપિત-નાઈ-વાળ બનાવ-
નાર વાળંદ ૬ માલાકાર-માળી-૭, કચ્છકર-૮ અને તામ્બૂલિક-પાન વિકેતા ત બોળી, એ નવ
પ્રકારના નારુકે કહેવામાં આવ્યા છે તેમજ ચર્મકાર-ચમાર બેડા બનાવનાર-મોચી ૧, યન્ત્ર
પીલક ૧, -તેલીર, ગ્રન્થિક ૩, છિ પક-છોપા-૪, કંશકર-તમેરા ૫, સીવક-દર્જી ૬, ગોપાલ-ગ્વાલ
ભરવાડ ૭, મિલ્લ-ભીલ ૮ અને ધીવર-મચ્છોમાર એ ૯ પ્રકારના નારુકે કહેવામાં આવ્યા છે

(તયણતરં ચ ણ ચરસીઈં આસસયસહસ્સા પુરઓ અહાણુપુવ્વીપ સપટ્ટિયા)
ત્યરબાદ ૮૪ લાખ ઘોડાઓ પ્રસ્થિત થયા (તયણંતર ચ ણ છળ્ણઁઁ મણુસ્સ કોહીઓ
પુરઓ અહાણુપુવ્વીપ સંપટ્ટિયા) ત્યરબાદ ૬૬ કરોડ બેટલી માનવ મોહની પહાતી બોની

जाव सत्थवाहप्पभिइओ पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिआ' तदन्तर च एल्लु बहवो राजानो माण्डलिका, ईश्वराः-युवराजाः तलवराः नगररक्षका यावत्सार्थवाहप्रभृतयः पुरत यथानुपूर्व्या संप्रस्थिताः अत्र-यावत्पदा, माहम्बिक कोटुम्बिक मन्त्रि महामन्त्रि गणक दौवारिक अमात्य चेटपीठमर्दकनगरनिगम श्रेष्ठि सेनापति सार्थवाहाः इति ग्राह्यम् । तत्र-माहम्बिकाः मडवो ग्रामविषेशः यस्य ग्रामस्य चतुर्दिक्षु सार्द्धं तृतीय, क्रोशद्वय-पर्यन्तग्रामान्तरं न भवति सः तस्याधिपतिः तद्वहुवचने-मडवाधिपतयः, कोटुम्बिकाः-परिवारस्थायिनो माता पिताभ्रातृभगिन्यादयः, मन्त्रिणः, सचिवा अमात्याः, महामन्त्रि णः, - सर्वोच्चामात्याः प्रधानमन्त्रिणः, गणकाः - ज्योतिषिकाः, दौवारिकाः - द्वारपालकाः, अमात्या - राज्याधिष्ठायकाः, चेटाः - दासा वा, पीठमर्दाः - आस्थाने आसन्नासन्नसेवकाः समवयस्या इत्यर्थः, नगरम् प्रसिद्धम्, निगमाः - कारणिका वणिजो

समूह चली (तयणंतरं वणं बहवे राईसर तलवर जाव सत्थवाहप्पभिइओ पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिआ) इस जनसमूह के बाद अनेक राजा-माण्डलिकजन, ईश्वर युवराज, तलवर नगर रक्षक यावत् सार्थवाह आदिजन चले यहाँ यावत्तद में माहम्बिक, कोटुम्बिक मन्त्री महामन्त्री गणक-ज्योतिषी' दौवारिक, अमात्य चेट पीठमर्द अंगरक्षक नगरनिगम के श्रेष्ठिन, सेनापति' इन सबका प्रहण हुआ है । जिस ग्राम के आस पास दाईं कोश तक दूसरा ग्राम नहीं होता है उसका नाम मडव है इस मडव ग्राम रूप विशेष-का जो अधिपति होता है वह माहम्बिक कहा गया है कुटुम्बिकजन-माता पिता आदि-कोटुम्बिक कहे गये हैं, मन्त्री महामन्त्री प्रधान ये भिन्न २ पद के अनुसार होते हैं गणक नाम ज्योतिर्विद का है जिसे भाषा में ज्योतिषी कहा गया है द्वारपाल का नाम दौवारिक है राज्य के अधिष्ठापक हाते हैं उन्हें अमात्य कहा जाता है दासी दास आदि चेट कहलाते हैं पीठमर्द अंगरक्षक को कहते हैं जिसे अंग्रेजी में बोडीगार्ड कहा गया है अथवा जो समानवय के होते हैं वे भी पीठमर्द कहे जाते हैं ।

आधी (तयणंतर च णं बहवे राईसरतलवर जाव सत्थवाहप्पभिइओ पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिआ) ये जनसमूह पछी अनेक राज्या-माण्डलिकजन, ईश्वरयुवराज तलवर, नगर रक्षक यावत् सार्थवाह वगेरे लोके आस्था आधी यावत् पछी माहम्बिक कोटुम्बिक, मन्त्रीयो, महामन्त्रीयो गणको-ज्योतिषीयो दौवारिको अमात्यो चेटा-पीठमर्दो, अंगरक्षको, नगरनिगमना श्रेष्ठिजेना, सेनापतियो ये सर्वानुअहसु थयु छे जे ग्रामनी आस-पास आधी गाछ सुधो अन्य ग्राम डोय नहि तेनु नाम मडव छे जे मडव विशेष ने जे अधिपति डोय छे. ते माहम्बिक कहेवाय छे कोटुम्बिकजन, माता पिता वगेरे ने कोटुम्बिको कहेवाभा आया छे मन्त्री, महामन्त्री प्रधान जे जे क्षिप पद. मज्जण डोय छे गणक नाम ज्योतिर्विदु छे, जेने हिन्दी भाषामा ज्योतिषी कहेवाभा आवे छे द्वारपाल उं नाम दौवारिक छे राज्यना जे अधिष्ठापको डोय छे तेने अमात्यो कहेवाभा आवे छे. दासी-दास वगेरेने चेट कहेवाभा आवे छे, पीठमर्द अंगरक्षक ने कहे छे जेने अंग्रेजी भाषामा बोडीगार्ड कहेवाभा आवे छे. अथवा जेजो समानवयना डोय छे तेजोनेपीठमर्द

વા, શ્રેષ્ઠિનઃ પ્રસિદ્ધાઃ, સાર્થવાહ પ્રમૃતયઃ પ્રમૃતિપદાત્ દૂતસન્ધિપાલેતિ ગ્રાહ્યમ્ । દૂતાઃ પ્રસિદ્ધાઃ સન્ધિપાલાઃ - રાજ્યસન્ધિરક્ષકાઃ એવાં દ્વન્દ્વઃ એતે પુરતો અગ્રતઃ યથાનુપૂર્વ્યાં સમ્પ્રસ્થિતાઃ 'તયણતરં ચ ણ વહવે અસિગ્ગાહા લહિગ્ગાહા કુતગ્ગાહા ચાવગ્ગાહા ચામરગ્ગાહા પાસગ્ગાહા ફલગ્ગાહા પરસુગ્ગાહા પોત્થયગ્ગાહા વીણગ્ગાહા કૂબ્બગ્ગાહા હહ્પ્ફગ્ગાહા દીવિઅગ્ગાહા સપહિં સપહિં રૂવેહિં એવં વેસેહિં ચિચ્ચેહિં નિમ્મોપહિં સપહિં ૨ વત્થેહિં પુરઔ અઘાણુપુવ્વોપ સંપત્થિયા' તદનન્તરં ચ ચલ્લ વહ્વઃ અસિગ્ગાહાઃ, -ચલ્લગ્ગાહિણઃ, તથા કેચિદ્ યષ્ટિગ્ગાહાઃ - યષ્ટિકાગ્ગાહિણઃ, ધણ્ડગ્ગાહિણ ઇત્યર્થઃ કુન્તાઃ મલ્લધારિણઃ કેચિત્ત્વાપગ્ગાહાઃ ધનુર્ગાહિણઃ ચામરગ્ગાહાઃ, પાશગ્ગાહાઃ-પાશાઃ દ્યૂતોપકરણાનિ તદ્ગ્ગાહાઃ, પરશુગ્ગાહાઃ પરશ્વઃ કુઠારાઃ તદ્ગ્ગાહા પુસ્તકગ્ગાહાઃ - પુસ્તકાનિ શુભાશુભપરિજ્ઞાનહેતુ-ભૂતપુન્તરાદિ તદ્ગ્ગાહાઃ વીણાગ્ગાહા 'કુબ્બગ્ગાહા' કુતપગ્ગાહાઃ કુતપા તૈલાદિ માજનાનિ તદ્ગ્ગાહાઃ, હહ્પ્ફગ્ગાહાઃ- હહ્પ્ફઃ તામ્બૂલાર્થે પૂર્ણિકાદિમાજનં તદ્ગ્ગાહાઃ દીપિકાગ્ગાહાઃ પ્રસિદ્ધાઃ એતે ચ સ્વકીયૈઃ રૂપૈઃ આકારૈઃ એવં સ્વકીયૈઃ સ્વકીયૈઃ વૈઃ

નિગમનામ વણિક્કજનોં કા હૈ વાહીં કે શબ્દોં કા અર્થ સ્પષ્ટ હૈ યહાં પ્રમૃતિ શબ્દ સે દૂતસન્ધિ-પાલ કા પ્રહણ હુઆ હૈ દૂત-રાજા કે સંદેશવાહક હોતે હૈ એવં સન્ધિપાલ રાજ્ય કી સધિ કે રક્ષક હોતે હૈ । (તયણંતરચણં વહવે અસિગ્ગાહા લહિગ્ગાહા કુતગ્ગાહા ચાવગ્ગાહા ચામરગ્ગાહા પાસગ્ગાહા ફલગ્ગાહા પરસુગ્ગાહા પોત્થયગ્ગાહા, વીણગ્ગાહા કૂબ્બગ્ગાહા, હહ્પ્ફગ્ગાહા, દીવિ-અગ્ગાહા સપહિં સપહિં, રૂવેહિં એવં વેસેહિં, ચિચ્ચેહિં, નિમ્મોપહિં સપહિં સપહિં વત્થેહિં પુરઔઅઘાણુપુવ્વોપ સંપત્થિયા) इनके बाद अनेक असि तलवारग्राही जन अनेक यष्टि ग्राही जन, अनेक मल्लधारी जन अनेक धनुर्धारीजन, अनेक ध्वजोपहरण धारीजन, अनेक फलकग्राहीजन, अनेक परशुग्राहीजन अनेक शुभाशुभ परिज्ञान के जानने के लिये पुस्तको को लेकर चलने वाले जन अनेक वीणाधारीजन अनेक तैल आदि के रखने के कुतुप को लेकर चलने वालेजन अनेक सुपारो आदिरूप पानकी सामग्री से भरे हुए हिम्बो को लेकर चलने वाले जन एवं अनेक

કહેવામાં આવે છે. નિગમ નામ વણિક્કજનોંનું છે શેષ શબ્દોનો અર્થ સ્પષ્ટ જ છે, અહીં પ્રમૃતે શબ્દથી દૂતસન્ધિપાલક નું અહેવાલ થયું છે, દૂતો-રાજાના સંદેશવાહકો હોય છે. તેમજ સન્ધિપાલ રાજ્યની સન્ધિના રક્ષક હોય છે (તયણતર ચ ણ વહવે અસિગ્ગાહા લહિગ્ગાહા, કુતગ્ગાહા ચાવગ્ગાહા ચામરગ્ગાહા, પાસગ્ગાહા, ફલગ્ગાહા, પરસુગ્ગાહા, પોત્થયગ્ગાહા, વીણગ્ગાહા, કૂબ્બગ્ગાહા, હહ્પ્ફગ્ગાહા, દીવિઅગ્ગાહા, સપહિં સપહિં, રૂવેહિં એવં વેસેહિં ચિચ્ચેહિં, નિમ્મોપહિં સપહિં ૨ વત્થેહિં પુરઔ અઘાણુપુવ્વોપ સંપત્થિયા) ત્યાર બાદ અनेक असि तलवार आहीजने, अनेक यष्टि-(बाण्ड) आहीजने, अनेक मल्लधारी जने, अनेक धनुर्धारीजने, अनेक ध्वजोपकरणधारीजने, अनेक फलक आहीजने, अनेक परशुआही जने, अनेक शुभाशुभ परिज्ञानने लक्षणमाटे पुस्तकोने लक्ष ने आलनाराजने, अनेक वीणाधारीजने, अनेक तेल आदिना कुतुपो लक्ष ने आलनारा जने, अनेक सुपारो वगेदइय पाननी सामग्री भरने उपायो लक्ष ने आलनारा जने, तेमज अनेक हीवाओ ने लक्ष ने

वस्त्रालङ्काररूपै चिधैः - अभिजनैः 'चिन्हे' नियोगः व्यापारः स्वकीयैः स्वकीयैः वस्त्रैः नेपथ्यै सहिताः सन्तः पुरतो यथानुपूर्व्या सम्प्रमिताः 'तयणंतर च णं ब्रह्मे दंडिणो मुडिणो सिहंडिणो जडिणो पिच्छिणो हासकारगा खेडुकारगा दवकारगा चाडुकारगा कंदपिआ कुकुइआ मोहरिआ गायता य दीवता य(वायता) नच्चंता य इसंता य रमता य कीलता य सासेता य सावेता य जावेता य रावेता य सोभेता य सोभावेता य आलोअंता य जयजयसहं च पउजमाणा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्टिया' तदनन्तर च खलु ब्रह्मो दण्डधारिणः केचित् मुण्डिनः अपनी तक्रेशः शिखण्डिनः जिखाधारिणः केचित् जटिनः जटाधारिणः तथा पिच्छिनः मयूरान् पिच्छादिधारकाः तथा हास्यकारकाः तथा खेडुकारकाः खेडं धृतविशेष स्तत्कारकाः तथा द्रवकारकाः, केलिकराः चाडुकारकाः प्रियवादिनः कान्दपिकाः कामकथाकारिणः 'कच्छुइआ' कोत्कुच्यकारिणो भाण्डाः भाण्डचेष्टाकारिण इत्यर्थः 'मोहरिया'

दीपो को लेकर चलने वाले जन जा कि अपने २ कार्य के अनुरूप वेश भूषा से सज्जित थे एवं अपने नियोग में अशून्य थे चले (तयणतरं चणं ब्रह्मे दंडिणो, मुडिणो, सिहंडिणो, जडिणो पिच्छिणो हासकारगा, खेडुकारगा, दवकारगा चाडुकारगा, कंदपिआ कुकुइआ, मोहरिआ, गायताय दीपता (वायताय) नच्चंताय इसंतः य कीलताय सासेताय सावेताय, जावेताय रावेताय सोभेताय सोभावेताय आलोअंताय जयजयसहं च पउजमाणा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्टिया) इनके बाद अनेक दंडधारीजन, अनेक शिखंडी-जिनके मस्तकके बाल मुड़ाये जा चुके हैं-ऐसेजन अनेक शिखंडी जिनके मस्तक पर केवल एकचोटी ही है ऐसे जन, अनेक जटाधारीजन अनेक मयूर आदि के पिच्छो को धारण करनेवाले जन अनेक हैंमी उत्पन्न करानेवाले जन अनेक धृत आदि में प्रवृत्ति कराने वाले ऐसे खेडुकारक जन अनेक द्रवकारक कोड़ा आदि में प्रवृत्ति कराने वाले जन, अनेक चाडुकारी खुशामद करनेवाले जन, अनेक कामकथा करनेवालेजन, अनेक कोत्कुच्य-कायकी कुचेष्टा करनेवाले-भाण्डजन, अनेक भाण्ड-

आधनारा जनो के केओ पोत-पोताना कार्य ने अनुत्पे वेशभूषाया सुसज्ज हता अने पोताना नियोग भां अशून्य हता-आध्या. (तयणंतरं च ब्रह्मे दंडिणो मुडिणो, सिहंडिणो, जडिणो पिच्छिणो, हासकारगा, खेडुकारगा, दवकारगा, चाडुकारगा, कंदपिआ, कुकुइआ मोहरिआ, गायताय दीवताय (वायताय) नच्चंताय, इसंताय, सासेताय, सावेताय, जावेताय, रावेताय सोभेताय सोभावेताय आलोअंताय, जयजयसहं च पउजमाणा, पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्टिया) त्यागमाह अनेक दंडधारी जनो, अनेक मुंडीजनो-जे ना मस्तक-ना वाणी मुंडित करवाया आया छे ओवादीको, अनेक शिख-डीओ-जेना मस्तक उपर ओकर पोटाही छे ओव दीको, अनेक जटाधारी जनो, अनेक मयूर वगेरेना पिच्छेने धारण कराना दीको अनेक हसावनारा दीको अनेक धृत आदि भा प्रवृत्ति कराना दीको अर्थात् खेडुकारक जनो अनेक द्रवकारक कीड़ा वगेरेभा प्रवृत्ति कराना दीको, अनेक चाडुकारी खुशामद कराना दीको अनेक कामकथा कराना, दीको,

મુખ ૧: વાચાલાઃ અસમ્બદ્ધપ્રલાપિન इत्यर्थः, ગાયન્તશ્ચ દીવ્યન્તશ્ચ ક્રોડયન્ત વાદયન્તશ્ચ વાદિત્રાણિ નૃત્યન્તશ્ચ, હસન્તશ્ચ રમમાણાશ્ચ અક્ષાદિભિઃ ક્રોડયન્ત પ્રમોદજનક્રોડયા ક્રોડાં કુર્વન્તઃ શાસયન્તશ્ચ પરીભ્યો ગાનાદી શિક્ષયન્તઃ શ્રાવયન્તશ્ચ મનોભિરોચકવચનાદિ શ્રાવયન્તઃ જલ્પન્તશ્ચ કલ્યાણપ્રદવાક્યાનિ રાવયન્તઃ શબ્દાન્ કારયન્તઃ સ્વપ્રોક્તવાક્યા-
નિ અનુવાદયન્ત इत्यर्थः શોભમાનાશ્ચ મનોજ્ઞવેષાદિના સ્વયમ્ શોભયન્તશ્ચ પરાન્ મનો-
જ્ઞવેષાદિના આલોકમાનાશ્ચ પુણ્યશાલિન ભરતચક્રિણ રાજરાજસ્યાવલોકન કુર્વન્તઃ જય-
જયશબ્દં ચ પ્રયુઠ્ઠજાનાઃ પુરતો યથાનુપૂર્વ્યા પૂર્વોક્તપાઠક્રમેણ સમ્પ્રસ્થિતા 'एवं उववाइय
गमेण जाव तस्स रण्णो पुरओ महआसाआसधरा उभओ पासि णागा णागधरा पिट्ठओ रहा
रहसंगेल्ली अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया' इति एवम् उक्तक्रमेण औपपातिकगमेन प्रथमोपाङ्गत
पाठेन तावद्वक्तव्य यावत् तस्य भरतस्य राज्ञ पुरतः महाश्याः बृहत्तुरङ्गाः अश्वधरा
अश्वधारकपुरुषाः गजरत्नारूढभरतस्य उभयतः द्वयोः पश्वयोः नागाः हस्तिनः नागधराः
हस्तिधारकपुरुषाश्च पृष्ठतः पृष्ठभागे रथारथसङ्गेल्ली रथसमुदाय देशीयोऽयं शब्दः

જન, અનેક વાચાલજન-અસમ્બદ્ધ પ્રલાપોજન, ગાતે હુଏ મિન્ન ૨ પ્રકાર કો ક્રોડા કરતે હુଏ, અનેક વાદિત્રો કો વજાતે હુଏ નૃત્યકરતે હુଏ, હૈંસતે હુଏ, અક્ષ આદિ કે દ્વારા લેલતે હુଏ પ્રમોદજનક ક્રોડા કરતે હુଏ, દુમરોં કો ગાન આદિ સિલાતે હુଏ, મનોભિરોચક વચનોં કો સુનાતે હુଏ, મીઠે ૨ શબ્દોં કો દૂસરોં કે પ્રતિ ઢચ્ચારણ કરતે હુଏ, અપને હી દ્વારા કહે ગયે વચનાં કા અનુવાદ કરતે હુଏ મનોજ્ઞવેષ આદિ સે અપને કો ઔર દૂસરોં કો સંજિત કરતે હુଏ, એવં રાજાઓ કે રાજા પુણ્યશાલી ભરત ચક્રોં કા અવલોકન કરતે તથા જય જય શબ્દ કા પ્રયોગ કરને હુଏ પ્રસ્થિત હુଏ (એવં ઉવવાઈયગમેણ જાવ તસ્સ રણ્ણો પુરઓ મહ આસા આસધરા ઉમઓ પાસિ ણાગા ણાગધરા પિટ્ઠઓરહા રહસંગેલ્લી અહાણુપુવ્વીએ સપટ્ઠિયા) હસ તરહ પ્રથમ ઉપાઙ્ગ ઔપપાતિક સૂત્ર કે પાઠ કે અનુસાર યહોં “ઉસ ભરત રાજા કે આગે બફેર ઘોઢે, અશ્વ ધારક પુરુષ દોનોં ઔર હાથી, હસ્તિધારક પુરુષ, પીછે રથ ઔર રથોં કા સમૂહ ચલા”

અનેક કૌતુક્ય-કાયાની કુચેષ્ટા કરનારા-ભાડજનો, અનેક વાચાલ જનો, અસંબદ્ધ પ્રલાપી-
જનો, ગાતા-ગાતાં સિદ્ધ પ્રકારની ક્રોડાઓ કરતા, અનેક વાદ્યો વગાડતા, નૃત્ય કરતા,
હસતા, અક્ષ વગેરે દ્વારા રમતા, પ્રમોદકારી ક્રોડાઓ કરતા બીજાઓને સંગીત વગેરે
કલાઓ શીખવતા, મનોભિરોચક વચનો સંભળાવતા. બીજાઓના માટે મધુર શબ્દો બોલતા
પોતેકહેલા વચનોને અનુવાદિત કરતા મનોજ્ઞવેષ વગેરેથી પોતાની બાતને અને બીજાઓને
સુખજિજ્ઞાસ કરતા, રાજાઓના યજ્ઞ રાજા પુણ્યશાળી ભરતચક્રીના દર્શન કરતા તથા જય
જય શબ્દોને ઉચ્ચારતા પ્રસ્થિત થયા. (એવં ઉવવાઈયગમેણ જાવ તસ્સ રણ્ણો પુરઓ
મહઆસા આસધરા ઉમઓ પાસિ ણાગા ણાગધરા પિટ્ઠઓ રહા રહસંગેલ્લી અહાણુપુવ્વીએ
સંપટ્ઠિયા) આ પ્રમાણે પ્રથમ ઉપાંગ ઔપપાતિક સૂત્ર ના પાઠ સુખ્ય અહીં “ તે ભરત
રાજાની આગળ મોટા-મોટા ઘોડાઓ, અશ્વધારક પુરુષો, બન્ને તરફ હાથીઓ હસ્તિધારક
પુરુષો પાછળ રથ અને અનેક રથોના સમૂહો ચાલ્યા, એ પાઠ સુધી” કથન અર્પેક્ષિત છે.

च समुच्चये यथानुपूर्व्या संप्रस्थिताः अत्र यावत् पदेन सवर्णक सेनाङ्गानि संशृङ्गन्ते ।
 'तयणंतरं च णं तरमल्लिहायणाणं हरिमेला मउलमल्लिअच्छाणं चचुच्चिअ लल्लिअ
 पुल्लिअ चलचवल चंचलगईणं लघणवगणधावण धोवण तिवडजडण मिक्खियगईणं
 ललत लामगललायवरभूसराणं मुहमंडगओचूलग-थासग अहिल्लाणचामरगडपरिमडि
 यकड्डीणं किंकरवरतरुणपरिगडिआ अट्टमयं वरतुरगाणं पुरओ अहाणुपुन्नीए सपट्ठिय'
 तदनन्तरं च सल्ल तरमल्लिहायनाना तत्र च तरो वेगो वालं वा इति 'मल्ल मल्लिधा णे'
 इत्यस्मात् धातोः भवति तथा च तरमल्ली तरधारकः वेगादि कारकः हायनं सम्ब-
 त्सरोऽस्ति येषां ते तथाभूताः नवतरुणा इत्यर्थः तेषाम् इदं च वक्ष्यमाणं वरतुरगा-
 णमित्यस्य विशेषणम् पुनश्च कीदृशानाम् 'हरिमेलामउलमल्लिअच्छाणं' हरिमेला मुल-
 मल्लिकाक्षणां हरिमेला वनस्पति विशेषस्तस्याः मुकुला कुहमलं कलिका मल्लिका च
 विचकिल नामक शुभ्रपुष्पं तद्वद् अक्षिणी नेत्राणि येषां ते तथाभूताः तेषां शुक्लाक्षणा-
 मित्यर्थः, पुनश्च कीदृशानाम् 'चचुच्चिय लल्लिय पुल्लिय चल चवल चंचलगईणं' चचु-
 च्चित् चलित पुलित चल चपलचञ्चलगतीनाम् चञ्चुरितम् कुटिलगमनम् अथवा चठचुः
 शुकचञ्चुः तद्वद् वक्रतया इत्यर्थ उच्चितम् उच्छ्रिताकरणम् पादस्योत्पाटनं चठचुच्चितं
 तच्चलितं च विलासयुक्ता गतिः पुलितं च गतिविशेषः एवंविधा तथा चल धायु-
 तद्वत् शीघ्रगामित्वात् तद्वच्चपला चञ्चला अतीव चपला गति येषां ते तथा अतीव
 इस पाठ तक कथन करना चाहिये यहाँ यावत् पद से सवर्णक सेनाङ्गों का ग्रहण हुआ है ।

(तयणनरंचण तरमल्लिहायणाणं हरिमेला मउलमल्लिअच्छाणं चचुच्चिअलल्लिअपुल्लिअ
 चलचवलचंचलगईणं लघणवगण धावण धोवण तिवड जडण सिक्खियगईणं ललंतलामगललाय
 वरभूसराणं मुहमंडगओचूलगथासग अहिल्लाण चामरगडपरिमडियकड्डीणं किंकरवरतरुणपरिगडिआ
 अट्टमयं वरतुरगाणं पुरओ अहाणुपुन्नीए सपट्ठिय) इनके बाद तरमल्लिहायन वेग धारण कराने-
 वाला है वर्ष जिन्हो के ऐसे नवान-तरुण तथा हरिमेला नामक वनस्पति विशेष की कलिका
 के जैसे एवं मोघरों के पुष्प जैसी शुभ्र आसों वाले, तथा वायु के जैसे शीघ्र गामी होने से
 पुलितगति से चल चलनेवाले, टापों का आस्फोटन करते हुए चलनेवाले विलासयुक्त गतिवाले,
 अर्द्धी यावत् पदार्थी सवर्णक सेनांगोनु अहं यथु छे

(तयणतरं च णं तरमल्लिहायणाणं हरिमेला मउलमल्लिअच्छाणं चचुच्चिअलल्लिअ
 पुल्लिअचलचवलचंचलगईणं लघणवगणधावणधोवणतिवडजडण सिक्खियगईणं ललंतलामगललाय
 वरभूसराणं मुहमंडगओचूलग थासग अहिल्लाण चामरगडपरि-मडियकड्डीणं
 किंकर वरतरुण परिगडिआ अट्टमयं वरतुरगाणं पुरओ अहाणुपुन्नीए सपट्ठिय)
 तयणमाह तरमल्लिहायः-वेगधारण करनेवाले छे वर्ष केना ओवा नवीन, तरुण तथा
 हरिमेला नामक वनस्पति विशेषनीशुद्ध कलिका ओवी अने मोघराना पुष्प ओवी शुभ्र
 आओवाणा तथा वायुनी नेम' शीघ्रगामी होवाथी पुलित गतिथी आल आल-तरो,
 टापोंनु आस्फोटन करता आधनारा, विलास युक्त गतिवाणा, अथन क्रियाभा-भाडा आदिने,
 १११

ચપલ-તુરગા તેષાં પુનઃ કીદશાનામ્ વરતુરક્ષાનામ્ 'લંઘણવગ્ગણધારણધોરણતિવદ્જજ્ઞ
 સિક્ષિત્યર્ગર્ણ' લંઘનવલ્લાન-ધારણધોરણત્રિપદિજયિશિક્ષિતગતીનામ્ સૂત્રે પ્રકૃતત્વાત્
 પદવ્યત્યાસઃ તત્ર શિક્ષિતમ્ અભ્યસ્તં લંઘનં ગતીદેરતિક્રમણં ઉલ્લંઘનં વલ્ગનમ્ ઉત્કૃદ્ધનમ્
 ધાવનમ્-શોઘ્રગમનમ્ ત્વરિતં વેગેન ગમનમ્ ધોરણં ગતિચાતુર્યમ્ તથા ત્રિપદી ભૂમૌ ત્રિપદા
 સ્થાનમ્ જયિની અન્યસ્ય ગતિ જયનશીલા ગતિશ્ચ યેષામ્ તે તથા અત્ર શિક્ષિતપદં સર્વતઃ
 આદૌ પ્રયોક્તવ્યં મૂળે પદવ્યત્યયઃ પ્રાકૃતત્વાત્ પુનઃ કીદશાનામ્ 'લલ્લતલામગલલાયવર-
 ભૂમણાણ' લલ્લદ્રમ્ય ગલલાતવરભૂષણાનામ્ લલન્તિ દોલાયમાનાનિ 'લામ' इति
 રમ્યાણિ ગલલાતાનિ કળ્પે ન્યસ્તાનિ વરભૂષણાનિ શ્રેષ્ઠાલક્ષારા યેષાં તે તથા તેષામ્ તથા
 'મુદ્મહગ ઓચૂલગ યાસગ અહિલાણ ચામરગંડપરિમહિયકહીણં' મુખભાણ્ડકાવચૂલ-
 સ્થાસકાહિલાણ ચામર ગણ્ડપરિમહિતકટીનામ્ તત્ર મુખમણ્ડકં મુખાભરણમ્ અવચૂલા
 પ્રલમ્બગુચ્છાઃ સ્થાસકાઃ દર્પ્પણાકારા અશ્વાલક્ષારા અહિલાણં મુખસંયમનમ્ એતાનિ
 સન્તિ યેષામિતિ મુખભાણ્ડકાવચૂલસ્થાસકાહિલાણાઃ અત્ર મત્વર્થીયલોપો દ્રષ્ટવ્યઃ
 તથા ચામરગણ્ડૈ ચામરગણ્ડૈ પરિમહિતા શોભિતા કટિઃ કટિપ્રદેશો યેષાં તે તથા
 ભૂતાસ્તેષામ્ બહુવ્રીહેઃ પશ્ચાત્ કર્મધારયઃ પુનઃ કીદશાનામ્ 'કિંકરવરતરુણપરિગાહિયાણં'
 કિંકર-વરતરુણપરિગૃહીતાનામ્ કિંકરારા અશ્વાનાં કિંકરભૂતાં યે વરતરુણાં વર
 યુવપુરુષાસ્તૈ પરિગૃહીતાનામ્ અવલમ્બિતાનામ્ 'અદ્વસય વરતુરગાણં પુરઓ અઠાણુપુચ્વીષ
 સંપદ્વિય' ત્તિ અષ્ટશતમ્ અષ્ટોત્તર શતમ્ ઉક્તવિશેષણવિશિષ્ટાનાં વરતુરગાણાં પુરતઃ ઐ
 યથાનુપૂર્વ્યા યથાક્રમં સંપ્રસ્થિતમ્ અત્રાષ્ટાશતમિત્યુપલક્ષણં તેન ચતુરશીત્યશ્વાનામન્યત્ર કથિ-
 તાનાં સંગ્રહો ભવતીતિ જ્ઞાતવ્યમ્ । અથ ગજા. 'તયણંતર ચ ણં ઈસિદંતાણ ઈસિમત્તાણં
 લંઘન ક્રિયા મેં ગર્ત આદિ કે લંઘન કરને મેં શિક્ષિત, કૂદને કી ક્રિયા મેં શિક્ષિત, ધાવન ક્રિયા
 મેં શિક્ષિત મૃમિ મેં ત્રીન પૈરાં સે સ્વહે હોને કી ક્રિયા મેં શિક્ષિત, તથા અન્ય કી ગતિ કી
 પરાસ્ત કરનેવાલી ગતિવાળે, ગલો મેં લટકતે હુએ રમ્ય શ્રેષ્ઠ આભૂષણોં વાળે, મુખ કે આભૂષણોં
 સે, અવચૂલોં સે લમ્બે ૨ ગુચ્છોં સે, સ્થાસકોં સે-દર્પણ કે જેણે અશ્વાલક્ષારોં સે અહિલાણ-
 લગામોં સે યુક્ત, તથા ચામર ગણ્ડોં સે મુશોભિત કટિ પ્રદેશવાળે, કિંકર ભૂત શ્રેષ્ઠ યુવા પુરુષ
 જિન્હેં પઠહે હુએ હૈં એસે ૧૦૮૯૬૦ માઠ ઘોઢે પ્રસ્થિત હુએ યહ ૧૦૮૫૬ ઉપલક્ષણરૂપ હૈં ઈસલિયે
 યહાં ૮૪ લાસ ઘોઢોં કા સંગ્રહ હુઆ જાનતાં ચાહિયે (તયણંતરંચણં ઈસિદતાણ ઈસિમત્તાણં
 ઝોણ ગવામા શિક્ષિત થયેલા, કૂદવાની ક્રિયામાં શિક્ષિત ધાવન ક્રિયામાં શિક્ષિત, મૃમિમા
 ત્રણ પગ ઉપર ઉભા રહેવાની ક્રિયામાં શિક્ષિત તેમજ ધોળઝોની ગતિઓને પરાસ્ત
 કરનારી ગતિ વાળા, ઝીવાઓમાં જૂલતા રમ્ય શ્રેષ્ઠ આભૂષણો વાળા, મુખના આભૂષણોથી,
 અવચૂલોના લાંબા-લાંબા ગુચ્છોથી, સ્થાસકોથી-દર્પણ જેવા અશ્વાલક્ષારોથી અહિ-
 લાણ-લગામોથી યુક્ત તથા ચામર ૬૬૦થી મુશોભિત કટિ પ્રદેશ વાળા કિંકર ભૂત શ્રેષ્ઠ
 યુવા પુરુષોએ જેમને ૫૬૬૬ રાખ્યા છે એવા ૧૦૮ લોકો પ્રસ્થિત થયા. આ ૧૦૮
 ૫૬ ઉપલક્ષણ રૂપ છે એ ૫૬થી અત્રે ૮૪ લાખ લોકોનો સંગ્રહ થયો છે (તયણંતર

ईसितुंगाणं ईसि उच्छगउन्नयविसालधवलदताणं कंचणकोसीपविट्टदंताणं कंचणमणि
रयणभूसियाण वरपुरिसारोहणसंपउत्ताण गयाण अट्टसयं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपत्थिय
त्ति' तदनन्तर च खलु ईषद्वान्तानाम्-मनाग्राहितगिक्षाणम् इदं च वक्ष्यमाणगजाना
मित्यस्य विशेषणम् पुनश्च कीदृशानाम् ईपन्मत्तानाम्-मनाग् युवत्वमापन्नानं यौवनार-
म्भवर्तित्वात् पुनः कीदृशानाम् इपतुङ्गानाम् ईषदुच्छानाम् तस्मादेव 'ईसि उच्छंग उन्नय
विसालधवलदताणं, ईषदुच्छङ्गोन्नतविशालधवलदन्तानाम् ईषदुच्छङ्ग, उत्सङ्ग पृष्ठदेश
तस्मिन् ईषदुत्सङ्गे ऋत्विचत्पृष्ठदेशभागे उपरि उन्नता मेरुदण्डा अधो भागे च विशालाश्च
उदरापरपर्यायावयव विशेषा यौवनारम्भवर्तित्वादेव ते च ते धवलदन्ताश्च ते सन्ति येषां ते
तथा भूतास्तेषाम् पुनः कीदृशाना गजानां काञ्चन कोशी प्रविष्टदन्तानाम्-काञ्चनकोश्यः
सुवर्णखोला. ताम्र प्रविष्टा दन्ता येषां ते तथाभूता तेषाम् तथा काञ्चनमणिरत्न
भूषितानां काञ्चनानि सुवर्णानि मणय चन्द्रकान्तादय रत्नानि च अन्ये बहुमूल्यकरत्न-
विशेषास्तै मृषिता शोभिताः ये ते तथाभूता तेषाम् पुनः कीदृशानाम् वरपुरुषो-
हकसप्रयुक्तानाम् वरपुरुषाः श्रेष्ठपुरुषाः ये रोहकाः आरोहकाः निपादिनस्तैः सम्प्रयुक्ता

ईसितुंगाणं ईसिउच्छग उन्नविशालधवलदंताण कंचणकोडीपविट्टदंताणं कंचणमणिरयणभू-
सियाणं वरपुरिसारोहणसंपउत्ताण गयाण अट्टसयं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपत्थियत्ति) इनके
बाद हाथियो का छुण्ड प्रस्थित हुआ ये हाथी जिनके अभी पूर्णरूप से दात बाहर नहीं निकल
पाये थे-किन्तु कुछ २ रूप में ही जिनके दात बाहर निकले थे ऐसे थे इसी कारण जो
पूर्णरूप से युवावस्था सपन्न नहीं थे-युवत्व की ओर बढ़ रहे थे पूरी ऊँचाई जिनमें अभी
प्रकट नहीं हो सकी था, पृष्ठ देश भी जिनका पूरा ऊँचा नहीं हो पाया था, ऐसे उस
ईषदुन्नतपृष्ठ देश में जिनका मेरुदण्ड कुछ २ ऊँचा था तथा अधोभाग में उदरापरपर्यायरूप
अवयव विशेष विशाल थे दांत इनके बिलकुल शुभ्र थे वे सुवर्णनिर्मित सलोही से आवृत थे ये
सुवर्णों से चन्द्रकान्त आदि मणियों से एवं बहुमूल्य रत्नविशेषों से शोभित थे इनके ऊपर अथ

च णं ईसिदंताणं ईसिमत्ताणं ईसितुंगाणं ईसिउच्छंग उन्नविसाल धवल दताणं कंचण
कोसीपविट्टदंताणं कंचणमणिरयणभूसियाणं वरपुरिसारोहणसंपउत्ताणं गयाणं अट्टसयं
पुरओ अहाणुपुव्वीए संपत्थियत्ति) त्थारभाह्म ढाथीओनो सभूह्म प्रस्थित थये ओ ढाथीओह्म
जेमना हातो ढल्ल पृष्ठ ईपमा अहार पणु नीकल्या नहाता, पणु थोडा-थोडा हातो जेमना
अहार नीकल्या छे जेवा हाता, जेथी ओ ढाथीओ पृष्ठ ईपमां युवावस्था सम्पन्न थया न
हाता युवावस्था तरक्क ओ ढाथीओ वधी रह्याहाता पूरे-पूरी उयाह्म पणु ओ ढाथीओनी
ढल्ल प्रकट थह्म न हाती, ओ ढाथीओनो पृष्ठभाग पणु ढल्ल संपृष्ठईपमां ओथो थये
न हातो, जेवा ओ धपह्म उन्नत पृष्ठ देशमा जेमना मेरुदण्ड थोडा-थोडा उया हातो
तथा अधो भागमा ओह्म उपर पर्यायइय अवयव विशेषो विशाण हाता ओ ढाथीओना
हातो ओकह्म शुभ्र हाता ओ हातो सुवर्ण निर्मित पत्रथी आवृत हाता ओ ढाथीओ सुव-
र्णोथी, चन्द्रकान्त वगेरे मणियोथी तेमण अहुभूत्थ रत्नविशेषो थो शोभित हाता, जेमनी

યે તે તથાભૂતાઃ તેષામ્ એવં ભૂતાના ગજાનાં હસ્તિનામ્ અષ્ટશતમ્ અષ્ટોત્તરશતં પુરતો
 યથાનુપૂર્વ્યાં ક્રમેણ સમ્પ્રસ્થિતમ્ । અથ રથાઃ 'તયણંતર ચ ણ સછત્તાણ સઙ્ગયાણ સઘંટાણ
 મરઢાગાણ સતોરણવરાણં સર્ણદિષોસાણ સર્ણિલ્લિણીજાલપરિલ્લિલ્લત્તાણ દિમવંત કંદ-
 રતરણિલ્લવાય સંવદ્ધિય ચિત્તતિણિસ કણગમણિજુત્તદારુગાણં કાલાયસમુકયણેમિજંત
 કમ્માણં સુસિલિલ્લવત્તમંડલધુરણ આણ્ણવરતુરગ સંપત્તાણં કુસલણરચ્છેઅ સારહિસુ
 સંપગ્ગહિયાણં ચત્તીસતોરણપરિમંડિયાણ સર્કકલ્લવહેંસગાણં સચાવસરપહ્ણાવરણ મરિથ
 જુદ્ધ સઙ્ગાણ અટ્ટસયં રહાણ પુરમા અઢાણુપુવ્વીપ સપટ્ઠિય'ઈતિ રથાનાં વિશેષણાનિ આહ-
 નદનન્તર ચ સ્થલુ રમણીયાતિ રમણીય સચ્છત્રાણા છત્રયુક્તાનાં સધ્વજાનાં મહાધ્વજ-
 સહિતાનાં સઘણ્ટાનામ્ ઘણ્ટિકાયુક્તાનાં સપતાકાના લધુધ્વજસહિતાના સતોરણવરાણા
 શ્રેષ્ઠતોરણયુક્તાનામ્ અત્ર તોરણ દ્વારસ્ય અવયવવિશેષઃ યદ્વા તોરણમ્ 'મેહરાવ' ઈતિ
 ભાષાપ્રસિદ્ધં તદ્યુક્તાનાં સનન્દિધોષાણા નન્દિધોષા યુગપદ્ દ્વાદશપ્રકારક વાદ્યોત્થિ-
 તધ્વનિવિશેષા તે સહિતાનાં સર્કિલ્લિગીજાલપરિલ્લિપ્તાનાં પરિલ્લિલ્લધુદ્રઘણ્ટિકાપટ્ઠકિ-
 વિશેષયુક્તાના હિમવત્ કન્દરાન્તરનિર્વાતસંવદ્ધિતચિત્રતિણિશ કનકમણિયુક્તદારુકા-
 ગામ્' તત્ર હિમવત શુદ્રહિમવતઃશુદ્રહિમવદ્ધિરે નિર્વાતાનિ વાતરહિતાનિ યાનિ કન્દરાન્ત-
 રં ચાત્રન ક્રિયા મે પટુતર વિષાદોજન વૈટે હુપ્થે એસ યે હાથી ૧૦૮૯૬૬૦ આઠ યે (તયણંતરંચણ
 સછત્તાણં સઙ્ગયાણ સઘંટાણ, સપઢાગાણ, સતોરણવરાણં સર્ણદિષોસાણં સર્ણિલ્લિણીજાલપરિલ્લિલ્લત્તાણં
 હિમ-વનકદર તરણિલ્લવાય સંવદ્ધિય ચિત્તતિણિસકણગ મણિજુત્તદારુગાણ) इनके बाद रथ सप्र
 स्थित हुए ये रथ छत्रों सहित थे, ध्वजाभां सहित थे घंटाओं सहित थे पताकाओं-लधुध्वजाओं-
 सहित थे श्रेष्ठ तोरणों से युक्त थे द्वार के अवयवविशेष का नाम तोरण है जिसे भाषा में मेहराव
 कहा जाता है । नदिधोष से समन्वित थे एक साथ जो बारह प्रकार के बाजे बजते हैं और
 उनसे जो ध्वनिका अबार निकलता है उसका नाम नन्दिधोष है छोटी २ घंटियों का
 जाल तरतीव बार इनके ऊपर बिछा हुआ था इनमें जो फलक-विशेष प्रकार के पट्टिये
 लगाये गये थे-वे क्षुद्र हिमवद्गिरि को निर्वात कन्दरा के बीच में-भीतर संवद्वित हुए विविध
 उपर अथ स आलन कियाभा पटुतर ढोके करता पद्य विशेष पटु ओवा विषाही जने।
 બેઠા હતા. એવા એ હાથીઓ ૧૦૮ હતા. (તયણંતરંચણ સછત્તાણં સઙ્ગયાણં સ
 સપઢાગાણં, તોરણવરાણં, સર્ણદિષોસાણ સર્ણિલ્લિણીજાલપરિલ્લિલ્લત્તાણં હિમવંતકંદ-
 રતરણિલ્લવાયસંવદ્ધિય ચિત્તગિતિણિસકણગમણિજુત્તદારુગાણ) ત્યારબાદ રથે સ પ્રસ્થિત
 થયા. એ રથે છત્રો સહિત હતા. ધ્વજાઓ સહિત હતા, ઘંટાઓ સહિત હતા, પતાકાઓ-
 લધુધ્વજાઓ-સહિત હતા. તોરણોથીયુક્તહતા દ્વારના અવયવ વિશેષનું નામ તોરણ છે જેને
 હિન્દી ભાષામાં 'મેહેરાવ' કહેવ મા આવે છે. નદિધોષથી સમન્વિત હતા એકી સાથે જે બાર
 પ્રકારના વાદ્યો વગાડવામાં આવે અને તેમાંથીજે ધ્વનિ નીકળે છે તેનું નામ નદિધોષ છે
 નાની-નાની ઘંટડીઓનો સમૂહ ક્રમશઃ એમની ઉપર આસ્તુત હતા. એમની આદર જે
 ફલક વિશેષ પ્રકારના પાટિયાઓલગાડવામાં આવ્યા હતા-તે ક્ષુદ્ર હિમવદ્ ગિરિની નિર્વાત

राणि दरीमध्यानि तत्र सर्वर्द्धिता वृद्धि प्राप्ता चित्रा विविधा अनेकप्रकारकाः तिनिशाः
तन्नामक वृक्षविशेषा तेषामेव कनकमणिपुक्तानि दारुणि काष्ठविशेषकल्पाणि येषु
तेतथा तेषाम् पुनः कीदृशानाम् कालायस सुकृतनेमियन्त्रकर्मकाणाम् कालायस लोहविशेषः
तेन सुकृतं सुरचितं नेमियन्त्र नेमिः चक्रपरिधिः तस्योपरि भागे वर्तमान यन्त्रं तस्य
कर्म गतिक्रिया येषां ते तथा पुनः कीदृशानाम् सुलिष्टवृत्तमण्डलधुराणां सुलिष्टं सुसङ्गत
वृत्तमण्डलं चक्रोपरिभागेवर्तुल्यकाररूप धुर धुरायेषां ते तथा तेषाम् पुनः आकीर्णं वरतुरग-
सप्रयुक्तानाम् आक्रोयेन्ते व्याप्यन्ते जवादि गुणैरिति आकीर्णाः वरतुरगाः श्रेष्ठाश्वाः ते
सुसप्रयुक्ताः सुष्ठुसम्यग्योजिताः येषु ते तथा पुनः कीदृशानाम् कुशलनरच्छेकसारथि
सुसंप्रगृहीतानां कुशलाः निपुणाः नरच्छेकाः मनुष्येषु चतुरा तैः सुसंप्रगृहीताः सुष्ठु
सञ्चालिताः ये ते तथा तेषाम् पुनः कीदृशानां द्वात्रिंशत्तूणपरिमण्डितानां द्वात्रिंशत्
द्वात्रिंशत्सख्यकाः तूणाः बाणाधारभूताः तैः मण्डिताः शोभिताः ये ते तथभूतास्तेषाम्
पुनः कीदृशानाम् सकङ्कटावतंसकानां सकङ्कटाः कवचाः अवतंसकः शिरस्त्राणभूताः
शिरोवेष्टनरूपा आभरणविशेषा स्ते सन्ति येषु ते तथाभूतस्तेषाम् पुनः कीदृशानाम्
सचापशर प्रहरणावरणभरितयुद्ध सज्जानाम् चापाः धनुषि तैः सहिताः शराः बाणाः तथा
तिनिस वृक्षो के बने दुर ये और कनक एवं मणियोंसे सज्जित ये, (कालायस सुकृतने-
मिजंतकम्माण सुसिलिष्टवृत्तमण्डलधुराण आङ्गणवरतुरगसुसंप्रयुक्तानां) कालायसलोहवि-
शेष-से सुरचित चक्रपरिधि के उपर वर्तमान यन्त्र को गतिक्रिया से युक्त थे इनकी धुरा
सुलिष्ट सुसंगत एवं गोल मंडल वाली थी, अपने वेग से युक्त ऐसे श्रेष्ठ बाड़े इनमें जुते
हुए थे, (कुशलनरच्छेक सारथि सुसंप्रगृहीतानां) कुशल सारथियों द्वारा जो कि रथ स-
चालक मनुष्यों के बीच में श्रेष्ठ माने जाते थे ये संचालित हो रहे थे, (वत्तीसतूणपरिमण्डिया-
ण सकंकटवहैसगाण सचावसरप्रहरणावरणभरिअजुद्धसज्जानां अद्वयसं रह्याण पुरओ अहाणु-
पुव्वीय संपट्टियं) ३२ बाणों के धरने के स्थान मूल तीलों से-भागों से परिमंडित थे ये सकङ्कट
कवच और अवतंसक-शिरस्त्राणभूत-आवरणविशेषों से भरे हुये थे, धनुष-बाण-प्रहरण, और
कंदराना मध्यमा-अर्द्धर सर्वर्द्धित थयेवा विविध तिनिस वृक्षोंना बनावेवा होता, तेमअ
कनक अने मणियों थी ओ जडित होता, (कालायस सुकृतनेमिजंतकम्माणं सुसिलिष्ट-
वृत्तमण्डलधुराण आङ्गणवरतुरगसुसंप्रयुक्तानां कालायस-लोहविशेष थी सुरचित चक्र
परिधिनी उपर विद्यमान यन्त्रना गति क्रिया थी ओओ युक्त होता, ओ रथानी धुरा
सुलिष्ट, सुसंगत तेमअ गोल-मंडलवाली होती योताना वेगथी युक्त ओवा श्रेष्ठ
बांडाओ ओ रथोमा लेतदेवा होता (कुशलनरच्छेकसारथि सुसंप्रगृहीतानां) कुशल सारथियो
वडे के ओओ रथ संचालक मनुष्यामा श्रेष्ठ मानवामा आगता होता ओ रथो संचालित थर्थ
रह्या होता (वत्तीसतूणपरिमण्डियाण सकंकटवहैसगाण सचावसरप्रहरणावरणभरिअजुद्ध-
सज्जाना अद्वयसं रह्याण पुरओ अहाणुपुव्वीय संपट्टियं) उर अत्रीश पाणोने भूकवाना स्थान
भूत तीलो थी तीलीदेथी ओ रथोमा मंडित होता, ओ रथो सकंकट, कवच अने अवतंसक

प्रहरणानि आयुधानि अस्यादीनि आवरणानि कवचानि तैः भरिताः परिपूरिताः अतएव युद्धसज्जाः सङ्ग्रामसज्जिताः ये ते तथाभूतास्तेषां रथानाम् अष्टशतम् अष्टोत्तरशतम् पुरतो यथानुपूर्व्या यथाक्रमं संप्रस्थितं संचलितम् ।

अथ पदातयः—‘तयणंतरं च ण असिसत्ति कुंत तोमरसूललउडभिडिपालधणुपाणिसज्जं पाइत्त णीयं पुरओ अहाणुपुव्वोए संपत्थियं च्चि’ तदनन्तरं च खलु असिशक्ति कुन्ततोमरसूलभूडभिन्दिपाल धनुःपाणिसज्जं पदात्यनीकं पादचारी सैन्यसमूहः पुरतो यथानुपूर्व्या सम्प्रस्थितमिति तदनन्तरं च खलु पदात्यनीक पादचारकसैन्यसमूहः पुरतो यथानुपूर्व्या सम्प्रस्थितं तत् इत्याह—‘असि’ इत्यादि । ‘असिशक्तिकुन्ततोमरसूललउडभिन्दिपालधनुःपाणिसज्जम्—तत्र आसः खड्गः, शक्तिः त्रिशूलं कुन्त प्रसिद्धः तोमरः बाणविशेषः शूलम् एकशूलं लघुः प्रसिद्धः भिन्दिपाल शस्त्रविशेषः धनुः प्रसिद्धम् एते पाणौ इस्ते यस्य तत् यथा सज्ज सङ्ग्रामादि स्वामिकार्ये तत्परम् एवभूत सत् तत् संप्रस्थितमित्यर्थः । ‘तएणं से भरहाडिवे णरिदे हारोत्थय सुकयरइयवच्छे जाव अमरवइ सण्णिभाए इद्धीए पहियकित्ती चक्करयणदेसिमग्गे अणेगरायवरसहस्साणुयायमग्गे’ ततः खलु स महाराजो भरतात्रिपो नरेन्द्रः हारावस्तुतसुकुतरतिदवक्षस्को यावत् आयुध इनमें जगह जगह पर रखे गये थे अतएव ऐसा प्रतीत होता था कि मानो ये रथ युद्ध के निमित्त ही सज्जित करने में आये हैं ऐसे ये रथ १०८ थे

(तयणतरंचणं. असि. सत्ति कुंत तोमर. सूल लउड, भिडियालधणुपाणिसज्जपाइत्ताणीयं पुरओ अहाणुपुव्वोए संपत्थिय) इनके बाद अगे पदात्यनीक—पैदल सेना समूह चला इसमें प्रत्येक सैनिक के हाथ में असि—तलवार शक्ति—त्रिशूल, कुन्त, भाला, तोमर बाणविशेष, शूललघुलडाठी, भिन्दिपाल—शस्त्रविशेष एवं धनुष ये सब थे (तएण से भरहाडिवे णरिदे हारोत्थयसुकयरइयवच्छे जाव अमरवइ सण्णिभाए इद्धीए पहियकित्ती, चक्करयणदेसियमग्गे, अणेगरायवरसहस्साणुयायमग्गे जाव समुदरवमूयंपिव करेमाणे २ सन्विद्धीए सवज्जुईए जाव णिग्गो-शिरआणुभूत आपरखु विशेषो थी अलकृत होता. धनुष, बाण प्रहरण अने आयुध ओ रथो ना स्थान स्थान उपर भूकवाभा अव्याहता ओथी ओनी प्रतीती थती होती है अण्णे ओ रथो युद्ध माटे ए सुसज्जित करवाभा आव्या न होथ ! ओ रथो १०८ होता

(तयणतर चणं असिसत्तिकु ततोमर , लउड, भिडियाल धणुपाणिसज्ज पाइत्ताणीय पुरओ अहाणुपुव्वोए संपत्थिय) तयारणाह आगण आगण पदात्यनीक पदाति सेनाने समूह आह्ये ओ पदाति सेनाना दरेक दरेक सैनिकना हाथमा असि तलवार, शक्ति—त्रिशूल, कुंत—भाला, तोमर बाण विशेष, शूल, लघु—लडाडी, भिन्दिपाल शस्त्र विशेष तेभ ए धनुष ओ गधां अस्त्र—शस्त्रो होता (तएण से भरहाडिवे णरिदे हारोत्थयसुकयरइयवच्छे जाव अमर वइ सण्णिभाए इद्धीए पहियकित्ती चक्करयणदेसियमग्गे, अणेगरायवर सहस्साणुयायमग्गे जाव समुदरवमूयंपिवकरेमाणे २ सन्विद्धीए सवज्जुईए जाव णिग्गोस-

तत्र हारेण-मुक्ताहारेण अवस्तृतम् आच्छादितम् अतएव मृकृतगतिद मृदुर्गचिततया
 आनन्दजनकं वक्षो वक्षःस्थलं यस्य स तथा, अत्र यावत्पदात् कुण्डलोद्द्योति-
 ताननः प्रलम्बप्रालम्बमानसुकृतपटोत्तरीयः इति ग्राह्यम्, पुनः रीदृशः सः तत्राह-
 'अमरवह' इत्यादि 'अमरवड सण्णिभाए' अमरपतिसन्निभया उन्मत्तुल्यया ऋद्ध्या भव-
 नाभरणादि लक्षणया सम्पदा (युक्तः), तथा प्रथितकीर्तिः विख्याः यशाः तथा चक्ररत्न-
 देशितमार्गः चक्ररत्नेन देशितः प्रदर्शितो मार्गो यस्मै स तथा, तथा अनेक राजवरसदृश-
 नुयातमार्गः-अनेकराजवरसदृशैः अनुयातः अनुगतो मार्गो यस्य भरतस्य स तथा तस्य
 मृकृतधारिणोऽनेकसदृशा राजप्रवरा राजानः पद्मस्रण्डाधिपतिर्भगवत्प्रदर्शितमार्गं प्रचलन्ती-
 त्यर्थः दिग्विजयार्थं गमनसमये सेनादिकानां शब्दमुपमानेन दर्शयन्नाह-'जाव ममुद्रवभूयं-
 पिव करेमाणे करेमाणे सव्वज्झुए सव्वज्झुए जाव णिग्घोमणाइयरवेण' यावत्समुद्र-
 वभूतामिव समुद्रशब्द प्राप्तमिव मेदिनीमिति गम्यम् अत्र यावत्पदात् वृटित वार्धाविशेष
 शब्दसन्निनादेन अश्वगज सैन्यादि शब्दबाहुल्येन च समुद्रव प्राप्तमिव मेदिनीं कुर्वन्
 सणाइयरवेण गामागरणगरखेडकव्वडमडंब जाव जोयणंतरियाहि वसहीहि वसमाणे २ जेणेव
 विणीया रायहाणी तेणेव उवागच्छइ) इस तरह के ठाठ बाट से सज्जित हुआ जिसका ममस्त
 राजवैभव जिसके आगे २ चल रहा है ऐसे वे भरत जहाँ पर अपनी विनीता नाम की राजधानी
 भी वहाँ पर आये ऐसा सम्बन्ध यहाँ पर लगाकेना चाहिये, अपने ममस्त राजसी ठाठ बाट
 से चलने वाले भरत राजा का वक्षस्थल मुक्ताहार से आच्छादित था अत एव वह देखने
 वालों को आनन्द दायक बना हुआ था यावत् कुण्डल की कान्ति से मुखको आभा दिगुणित
 होकर बाहर फैल रही थी, बहुत हो सुन्दर रंग से लम्बे अधोवस्त्र और उत्तरायवस्त्र इन्होंने
 पहिरे हुए थे अमरपति जैसा ऋद्धि से युक्त थे, इनका यश चारो दिशाओं में प्रख्यात हो
 चुका था विनीता राजधानी का और जानेवाले निष्कण्टक मार्ग को बतानेवाला चक्ररत्न इनके
 आगे २ जा रहा था अनेक श्रेष्ठ राजाओं का सहस्र इनके पीछे २ चल रहा था, सेना
 आदिजनों के उत्थित हुए शब्दों से उस समय यह भूमण्डल को, समुद्र के नूफानी शब्दों से
 णाइयरवेण गामागर णगरखेड कव्वडमडंब जाव जोयणतरियाहि वसहीहि वसमाणे
 २ जेणेव विणीया रायहाणी तेणेव उवागच्छइ) आ जतना ठाठ-भाठ थी आलनारा भरत
 राजनु वक्षस्थल मुक्ताहार थी समस्त कृत हुतु जेथी दृष्टि के माटे ते आहल दृष्ट जनी गधुं
 हुतु यावत् कुण्डली कान्ति थी सुधनी आशादिशुद्धित यध ने पक्षार प्रचरी रकी हुती
 अतीव सुंदर रंग थी जे राजजे अधोवस्त्र अने उत्तरीय वस्त्रो धारण करेला हुता जे नृपति
 अमर पति (भन्द्र) जेपी ऋद्धि थी युक्त हुता जेमने। यश योमैर दिशाजो भा प्रख्यात
 यध चूड़यो हुतो। विनीता राजधानी तरई जतु अने निष्कण्टक मार्ग जतावनीइ अक्षरत्न
 जेमनी आगण-आगण आदी रह्यु हुतु अनेक श्रेष्ठ राजजो ने समूह जेमनी पाछण-
 पाछल आदी रकी हुतो पोतानी सेना वजेरे थी उत्थित शब्दो थी ते समये भूमंडलने
 जेणे अमुद्रना तोशन थी वार शब्द थयेन जेथ, आभ जतावतो ने नृप भरत आदी

રહ્યો હતો તેમજ હસ્તિ અશ્વગાદિ રૂપ પોતાની સમ્પત્તિ થી, મધિ સુકુટાદિની દ્યુતિ થી તેમજ શાશ્વરીક કાંતિ થી દિગ્મહદ ને આશ્ચર્ય અકિત બનાવે તો ચાહો રહેયો હતો તેની સાથે અનેક પ્રકારના વાઘો વગાડનારાયો વાઘો વગાડતા ચાહો રહ્યા હતા આ પ્રમાણે તે ભરત રાજા ગ્રામ, આકર, નગર, ખેડ, કળાંડ, વગેરે સ્થાનોમા ચાર-ચાર ગાઉના અંતર થી પોતાની સેનાનો પડાવ નાખતો નાખતો અને ત્યાંના નિવાસીઓ દ્વારા પ્રદત્ત પ્રીતિકાનને સ્વીકારતો સ્વાકારતો જ્યા વિનીતા નામે રાજધાની હતી ત્યા પહોંચ્યો ગ્રામ, આકર વગેરે પહોંની વ્યાખ્યા આ પ્રકરણમા જ રૂઢમા સૂત્રમા હમણા જ કરવામાં આવી છે તે 'નિશાસુ' જનો ત્યાંથી બહારી હે (ઉત્તરગચ્છિત્તા વિખીયાપ મદૂરસામંતે દુવાલસજોયણાયમ જવજોયણવિથિમ્ન જાવ સંઘાવારનિવેસ' કરેહ) વિનીતા રાજધાની પાસે પહોંચીને તે રાજા એ પોતાની સેનાનો ૪૮ ગાઉ દાઘા અને ૩૬ ગાઉ પહેળો પડાવ નાખ્યો એ

शमिनि ग्राह्यम् । 'करित्ता' कृत्वा 'वद्धद्वरयणं सदावेड सदावित्ता जाव पोसहसाल
अणुपविसइ' वर्द्धकिरत्नं शब्दयति आह्वयति शब्दयित्वा आह्वय यावत् पौषधशालामनु-
प्रविशति, अत्र यावत्पदात् पौषधशाला निर्माणार्थं वर्द्धकिं आज्ञापयति स च पौषधशालां
करोति कृत्वा उक्तामाज्ञप्तिकां राज्ञे भरताय समर्पयतीति ग्राह्यम् 'अणुपविसित्ता' अनु-
प्रविश्य 'विणीयाए रायहाणोए अट्टमभत्तं पणिण्डइ' विनीतायां राजधान्याम् अष्टमभक्त
प्रगृह्णाति अत्र विनीताधिष्ठायकदेवमाधनाय । ननु इदमष्टमानुष्ठानम् अनर्थकं विनीता
नगराधिकवर्तिनो भरतस्य पूर्वमेव तदधिकारे स्थितत्वादिति चेन्नैव निरूपद्रवेण वामस्य-
र्यार्थमित्यभिप्रायात् 'पणिण्डित्ता' प्रगृह्य 'जाव अट्टमभत्तं पडिजागरमाणे २ विहरइ'
यावत् अष्टमभक्तं प्रतिजाग्रत् विहरति तिष्ठति स मृतः इति भावः ॥सू० २८॥

और ३६ कोश तक को चौड़ी श्रवणो डाली यह छावनी का स्थान विनीतानगर के पास ही था
यह एक श्रेष्ठ नगर है जैसा उस समय प्रतीत होना था (करित्ता वद्धद्वरयण सदावेड) सेना का पडाव
डाल कर फिर भरत नरेशने अपने वर्द्धकिरत्न को बुलाया (सदावित्ता जाव पोसहसाल अणुपविसइ) और
बुलाकर उसे पौषधशाला के निर्माण करने की आज्ञा प्रदान की आज्ञानुसार उसने पौषधशाला का
निर्माण कर दिया और पीछे पौषध शाला के निर्माण हो जाने की खबर श्रीभरत नरेश के पास पहुंचा
दा भरतनरेश उस पौषधशालामें आ गये (अणुपविसित्ता विणीयाए रायहाणोए अट्टमभत्तं पणिण्डइ)
वहाँ आकर उन्होंने विनीता नगरके अधिष्ठायक देव को वशमें करने केलिये अष्टमभक्तकी तपस्या
धारण क (पणिण्डित्ता जाव अट्टमभत्तं पडिजागरमाणे २ विहरइ) और धारण करके यावत् वे उसमें
अच्छो तरहसे सावधान होगये यहा ऐसी आशंकाहो सकती है कि यहा पर जो भरत नरेशने अट्टम
भक्तकी तपस्याधारण का वह तो एक प्रकार से अनर्थक जैसी ही प्रतीत होती है क्योंकि विनीता
राजधानी तो पहिले से उनके सर्वाधिकार में स्थित थी सो इसका समाधान ऐसा है कि विनीता
पडाव विनीता नगरीनी पास ७ डाली ओ पडाव इशंकजनाने ओके श्रेष्ठ नगर जेवो ७
प्रतीत थतो डाली (करित्ता वद्धद्वरयण सदावेड) सेनाने पडाव नाथीने पछी भरत नरेश
पोताना वर्द्धकिरत्नने ओलाओ (सदावित्ता जाव पोसहसाल अणुपविसइ) अने ओलावीने
तेने पौषधशाला निर्माण करवानी आज्ञा आपी आज्ञा सुश्रव ते वर्द्धकिरत्नने पौषधशाला
बनावी अने पछी पौषधशाला निर्मित थई गई छे ओवी सूचना भरत नरेश पास पडोआडी
अनरेश ते पौषधशालाभा जतो रझो (अणुपविसित्ता विणीयाए रायहाणोए अट्टमभत्तं
पणिण्डइ) त्या पडोआवीने भरत नरेशे विनीता नगरीना अधिष्ठायक देवने वशभाकरवा भाटे
अष्टम भक्तनी तपस्या धारण करी (पणिण्डित्ता जाव अट्टमभत्तं पडिजागरमाणे २ विहरइ)
अने धारण करीने यावत् ते तेमा सारी रीते सावधान थई गये अत्र ओवी
आशंका विद्भवो शके तेम छे के, अडी ओ भरत नरेशे अष्टम भक्तनी तपस्या धारण करी
ते तो ओके रीते अनर्थक जेवी ७ प्रतीत थाय छे, केमके विनीता राजधानी तो पडोवे
थी ७ तेमना सर्वाधिकारभा डनी ७ तो आ शंकास समाधान आ प्रमाण छे के वगर अई

यदा स भरतो दिग्विजयं कृत्वा आगच्छति स्वराजधानीं तदा तत्र किं करोति तत्राह—“तएणं से” इत्यादि ।

मूलम्—तए णं से भरहे राया अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमिच्चा कोडुंविय पुरिसे सदावेई सदाविच्चा तहेव जाव अंजणगिरिकूडसण्णिभं गयवइं णरवईं दुरूढे तचेव सव्वं जहा हेट्ठा णवरिं णव महाणिहिओ चत्तारिं सेणाओ ण पविसंति सेसो सोचेव गमो जाव णिग्घोसणाइएणं विणीयाए रायहाणीए मज्झं मज्झेण जेणेव सए गिहे जेणेव भवणवरखडिसगपडिदुवारे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएणं तस्स भरहस्स रण्णो विणीयं रायहाणिं मज्झं मज्झेणं अणुपविसमाणस्स अप्पेगइया देवा विणीयं रायहाणिं सब्भंतरबाहिरियं आसिअसम्मज्जिओ-वलित्तं करेति अप्पेगइया मंचाइमंचकलियं करेति एवं सेसेसु वि पए अप्पेगइया णाणाविहरागवसणुस्सिय घय पडागामंडितभूमियं अप्पेगइया लाउल्लोइयमहियं करेति अप्पेगइया जाव गंधवट्ठिभूयं करेति, अप्पे गइया हिरण्णवासं वासिंति सुवण्णस्यणवइरआभरणवासं वासेंति, तएणं तस्स भरहस्स रण्णो विणीयं रायहाणीं मज्झं मज्झेणं अणुपविसमाणस्स सिंघाडग जाव महापहेसु बहवे अत्थत्थिआ कामत्थिआ भोगत्थिआ लाभत्थिआ इद्धिसिआ किब्बिसिआ कारबाहिआ कारोडिआ संखिआ चक्किआ णंगलिआ मुहमंगलिआ वद्धमाणया लंख मंख माइआ ताहिं ओरालाहिं इट्ठाहिं कंताहिं पिआहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं धण्णाहिं सिवाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरीआहिं हिअयगमणिज्जाहिं हिअयपल्हायणिज्जा-हिं वग्गहिं अणुवरयं अभिणंदंता य अभिथुणंताय एवं वयासी-जय जय णंदा जय जयमहा । महंते अजियं जिणाहिं जिअं पालयाहिं

उपद्रव के वहां पर वास बना रहे तथा प्रजाजन सुख शांति से रहें—इसके लिये यह तपस्या उन्होंने धारण की अतः इसमें सार्थकता ही है निरर्थकता नहीं । ॥२८॥

पशु जातना उपद्रवे त्या पीताना वास रहे तथा प्रजा सुख शान्ति पूर्वक रही शकें—अर्थात् माटे आ तपस्या तेमणे धारण करी. जोथी आ तपस्या सार्थक न ठहेवाच, निरर्थक नही ॥२८॥

जिअमज्झे वसाहि इंदोविव देवाणं चंदोविव ताराणं चमरोविव अमुगणं
 धरणोविव नागाणं वह्हिं पुव्वसयसहस्साणं वह्हिंओ पुव्वकोडीओ वह्हिं-
 ओ पुव्वकोडाकोडीओ विणीयाए गयहाणीए चुल्लहिमवंतगिरिसागरमे-
 रागस्स य केवलकप्पस्स भरहस्स गामागरणगर खेड-कव्वड दोणमुह
 पट्टणासमंसणिवेसेसु सम्मं पयापालणोवज्जिअ लच्छजसे जाव आहे-
 वच्चं पोरेवच्चं जाव विहराहि त्तिकट्टु जय जय सइं पउंजंति, तए णं से
 भरहे राया णयणमाला सहस्सेहिं पिच्छिज्जमाणे २ वयणमाला सहस्सेहिं
 अभिथुव्वमाणे २ हिअयमाला सहस्सेहिं उण्णं दिज्ज माणे मणोरह-
 मालासहस्सेहिं विच्छिप्पमाणे २ कंतिरुवसोहग्गगुणेहिं पिच्छिज्जमाणे
 २ अंगुलिमालासहस्सेहिं दाइज्जमाणे २ दाहिणहत्येणं वह्णं णरणारी-
 सहस्सेणं अजलिमालासहस्सेहिं पडिच्छमाणे पडिच्छमाणे भवणपंती
 सहस्साणं समइच्छमाणे २ तती तल तुडिय गीय वाइयरवेणं मधुरेणं
 मणहरेणं मंजुमंजुणा घोसेणं अपडिबुज्जमणे २ जेणेव सए गिहे जेणेव
 सए भवणवरवडिसयदुवारे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता आभिसेक्कं
 हेत्थिरयणं ठवेइ ठवित्ता हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता सोलस-
 देवसहस्से सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता बत्तीसं रायस-
 हस्से सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता सेणावइरयणं सक्कारेइ
 सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता एवं गाहावइरयणं वद्धइरयणं पुरोहियर-
 यणं सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता तिण्णिसट्ठे सूअसए
 सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता-सम्माणित्ता अट्टारससेणिप्पसेणीओ
 सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता अण्णे वि बहवे राईसर
 जाव सत्थवाहप्पभिईओ सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता
 पडिविसज्जेइ इत्थिरयणेणं बत्तीसाए उड्डकल्लणिया सहस्सेहिं बत्तीसाए
 जणवयकल्लणिया सहस्सेहिं बत्तीसाए बत्तीसइबद्धेहिं णाड्यसहस्सेहिं

सद्धि संपरिवुडे भवणवरवडिसंगं अईइ जहा कुबेरोव्व देवराया केलास-
 सिहरिसेग भूअंति तए णं से भरहे राया मित्तणाइणिअगसयणसंबंधिप-
 रिअणं पच्चुवेक्खइ पच्चुवेक्खिता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ
 उवागच्छिता जाव मज्जणघराओ पडिक्खमइ पांडणिक्खमित्ता जेणेव
 भोअणमंडवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता भोयणमंडवंसि सुहासणवर-
 गए अट्टमभत्तं पारेइ पारित्ता उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थ-
 एहिं बत्तीसइबद्धेहिं णाडएहिं उवलालिज्जमाणे २ उवणच्चिज्जमाणे
 २ उवगिज्जमाणे २ महया जाव भुंजमाणे विहरइ ॥ सू० । २९॥

छाया-तत खलु स भरतो राजा अष्टमभक्ते परिणमति पौषघशालात प्रतिनिष्का-
 मति प्रतिनिष्कस्य कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा तथैव यावत् अज्जनगिरिकूट-
 सन्निभं गजपतिं नरपतिः दुरुद्ध । तथैव सर्वं यथा अधः नवर नव महानिधयः चतस्रः
 सेनाः न प्रविशन्ति शेषः स एव गमो यावत् निघोषनावितेन विनीताया राजधान्या मध्य
 मध्येन यत्रैव स्वकं गृहं यत्रैव भवनधरावतंसकस्य प्रतिद्वारं तत्रैव । अयं प्रचारितवान् ततः
 खलु तस्य भरतस्य राज्ञो विनीतां राजधानीं मध्यमध्येन अनुप्रविशत' अध्येके देवा विनीतां
 राजधानीं साम्यन्तरवाह्याम् आसिक्तसम्मानितोपलक्षितां कुर्वन्ति अध्येके मञ्चातिमञ्च-
 कलिता कुर्वन्ति अध्येके नानाविधरागवसनोच्छ्रितध्वजपताकामण्डितभूमिकां लापितोल्लोचित
 महितां कुर्वन्ति अध्येके एव शेषेऽपि पदेषु, अध्येके यावत् गन्धवतिभूतां कुर्वन्ति अध्येके
 हिरण्यवर्ष वर्षन्ति सुवर्णरत्नवज्राभरणवर्ष वर्षन्ति तत खलु तस्य भरतस्य राज्ञो-
 विनीता राजधानीं मध्यमध्येन अनुप्रविशत' श्रृङ्गाटक यावत् महापथेषु सहवोऽर्थार्थिनः
 कामार्थिनो भोगार्थिनो लाभार्थिनः ऋद्धयेषाः किन्चिद्विकाः कारोटिकाः कारवाहिकाः शान्ति-
 काः चाक्रिकाः लाङ्गलिकाः क्षुमटाः मुखमाङ्गलिका पुण्यमानकाः वर्द्धमानकाः लङ्कमन्त्रमा-
 दिकाः तामि उवाराभिः इष्टाभिः कान्ताभिः प्रियाभिः मनोहाभिः मनोमाभिः शिवाभिः
 चम्याभिः मङ्गलाभिः सश्रोकाभिः हृदयगमनीयाभिः हृदयप्रव्हादनीयाभिः चाग्निं अनुपरतम्
 अभिनन्दन्तश्च अभिष्टुवन् एवम् अवादिषु, जय जय नन्दा ! जय जय भद्रा ! भद्र ते
 अनितं जय जितं पालय जितमध्ये चस इन्द्र इव देवानाम्, चन्द्रइव ताराणाम् चमर इव
 असुराणाम्, धरण इव नागानाम्, बह्वनि पूर्वशतसहस्राणि बह्वीः पूर्वकोटी बह्वी पूर्वकोटाकोटी
 विनीतायाः राजधान्याः क्षुद्रहिमवद्भिरिसागरमर्यादाकस्य च केवलकल्पस्य भारतवर्षस्य ग्रामा-
 करनगरखेडकर्बटमडम्बद्राणमुज्जयिन्तनाश्रमसन्निवेशेषु सम्यक् प्रजापालनोपाजितलब्धयशस्क
 महता यावत् आधिपत्यं यावत् विहर इति कृत्वा जय जय शब्दं प्रयुज्जन्ति, ततः खलु
 स भरतो राजा नयनमालासहस्रैः प्रेक्ष्यमाणः प्रेक्ष्यमाणं बचनमालासहस्रैरभिष्टुवन्त, अभि-
 ष्टुवन्तः हृदयमालासहस्रैः पूर्णपुन पुनर्वा-दीयमानं पूर्णं दीयमानं मनोरथमालासहस्रैः वि-
 क्षिप्यमाणं विक्षिप्यमाणं, कान्तिरूपसौभाग्यगुणैः प्रेक्ष्यमाणं प्रेक्ष्यमाणं अङ्गुलिमालासहस्रैः

दृश्यमान दक्षिणहस्तेन वहता नरनारी महस्त्राणाम् अञ्जलिमालासहस्राणि प्रतीच्छन् प्रतीच्छन्
भवनपङ्क्ति सहस्त्राणि समतिक्रमन् समतिक्रमन् तन्त्रोतलनालवुद्धितगीतवादिनरवेण मधुरेण
मनोहरेण मञ्जुञ्जुनाघोषेण अप्रतिबुध्यमान अप्रतिबुध्यमान. यत्रैव स्वक गृहं यत्रैव
भवनवरावतंसकस्य द्वारं तत्रैवोपागच्छति उपागत्य आभिषेक्य हस्तिरत्न स्थापयति स्थोप-
यित्वा आभिषेकयात् हस्तिरत्नात् प्रत्यवरोहति प्रत्यवरुह्य पोंडपदेव सहस्त्रान् सत्कारयति
सम्मानयति सत्कार्यं सम्मान्य द्वात्रिंशतं राजसहस्त्रान् सत्कारयति सम्मानयति सत्कार्यं
सम्मान्य सेनापतिरत्नं सत्कारयति सम्मानयति सत्कार्यं सम्मान्य पथ गाथापतिरत्न
वर्द्धकिरत्नं पुरोहितरत्न सत्कारयति सम्मानयति सत्कार्यं सम्मान्य त्राणि पट्टानि सूयशतानि
सत्कारयति सम्मानयति सत्कार्यं सम्मान्य अष्टादश श्रेणिप्रश्रेणी सत्कारयति सम्मानयति
सत्कार्यं सम्मान्य अन्यानपि बहून् राजेश्वर यावत् सार्धं वाहप्रभृतीन् सत्कारयति सम्मानयति
सत्कार्यं सम्मान्य प्रतिविसर्जयति । स्त्रीरत्नेन द्वात्रिंशता ऋतुकल्याणिकासहस्रैः द्वात्रिंशता
जनपदकल्याणिका सहस्रैः द्वात्रिंशता द्वात्रिंशद्वै नटिकसहस्रैः सार्धं सम्परिवृतो भवनव-
रावतंसकम् अत्येति यथाकुबेरो देवराज इव कैलासशिखरिश्रगभूतमिति । तत खलु स भरनो
राजा मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनं प्रत्युपेक्ष्यते प्रत्युपेक्ष्य यत्रैव मञ्जनगृह तत्रैव
उपागच्छति उपागत्य यावत् मञ्जनगृहात् प्रतिनिष्कामति प्रातर्निष्क्रम्य यत्रैव भोजनमण्ड
पस्तस्त्रैव उपागच्छति उपागत्य भोजनमण्डप सुखासनवरगतः अष्टमभक्त पारयति पारावित्वा
उपरिभासाश्चरगतः स्फुटञ्चि मृदङ्गमस्तकै द्वात्रिंशद्वै नटिकै रूपलाट्यमान उपलाट्यमानः उप
नृत्यमान. उपनृत्यमान उपगीयमान उपगीयमान महता यावत् भुञ्जानो विहरति॥ सू० २९ ॥

टीका—“तएणं से” इत्यादि । ‘तएण से भरहे राया अट्टमभत्तंसि परिण-
ममाणंसि पोसहसालाओ पडिणिकखमइ’ ततः खलु तदनन्तरं किल पड्डखण्डाधिपति स
भरतो राजा अष्टमभक्ते परिणमति सति परिपूर्णं जायमाने सति पौषधशालातः प्रति-
निष्कामति निर्गच्छति ‘पडिणिकखमिच्छा’ प्रतिनिष्क्रम्य निर्गत्य ‘कोडुं बियपुरिसे सदावेइ’

राजधानी में भरत का कर्तव्य—

(तएण से भरहे राया अट्टमभत्तंसि परिणममाणंसि—इत्यादि सूत्र—२९—

टीकार्थ—(तएणं से भरहे राया) इसके बाद वह श्री भरत महाराजा (अट्टमभक्तास परिणम-
माणंसि) अष्टमभक्तको तपस्या समाप्त हो जाने पर (पोसहसालाओ पडिणिकखमइ) पौष-
धशाला से बाहर निकला (पडिणिकखमिच्छा) और बाहर निकल कर (कोडुं बियपुरिसे सदावेइ)
उपने अपने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया (सदावित्त एव वयासी) बुलाकर उनसे ऐसा कहा

राजधानी में भरत का कर्तव्य

(तएण से भरहे राया अट्टमभत्तंसि परिणममाणंसि) इत्यादि सूत्र — २९॥

टीकार्थ—(तएण से भरहे राया) त्थार भाद ते भरत राजा (अट्टमभत्तंसि परिणममाणंसि)
अष्टम भक्तानी तपस्या पूरी थई ते पछी (पोसहसालाओ पडिणिकखमइ) पौषधशालाभांथी
पछार नीकल्यो (पडिणिकखमिच्छा) अने पछार नीकलीने (कोडु बियपुरिसे सदावेइ) तेणे

कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति आह्वयति 'सद्वावित्ता' शब्दयित्वा आह्वय 'तदेव जाव' तथैव पूर्ववदेव यावत् अत्र यावत्पदात् आभिषेक्यगजपतिसङ्गीकरणमञ्जनगृहस्नानकरणादिरूपं सर्वो आकापको ग्राह्यः तदनन्तरम् 'अञ्जनगिरिकूडसणिगमं गयवड णरवई दूरुढे' अञ्जनगिरिकूटसन्निभम्—अञ्जनपर्वतशृङ्गसदृश्यं मादृश्यं च उच्चत्वेन कृष्णवर्णत्वेन च बोध्यम् गजपतिम्, पट्टहस्तिनं नरपतिः राजा भरतः दूरुढः आरूढः 'तं चेव सव्वं जहा हेट्ठा' तदेव सर्वं तथा वक्तव्यम् यथा 'हेट्ठा' अवस्तनपूर्वसूत्रे यादृशसामग्री-विशिष्टस्य विनीतातो गमनसमये वर्णनं कृतं तथाऽत्रापि प्रवेशे वक्तव्यम् इत्यर्थः, अत्र विशेषमाह 'णवर णव महाणिहिओ चत्तारि सेणाओ ण पविससि सेसो सोचेव गमो जाव णिग्घोसणाइएणं विणीयाए रायहाणीए मज्झ मज्झेण जेणेव सए गिहे जेणेव भवणवरवडिसगपडिदुवारे तेणेव पहारेत्थ गमणाए' नवरम् अयं विशेषः नैसर्पादिशब्दान्ताः नव महानिधयो न प्रविशन्ति तेषां मध्ये एकैकस्य निधेर्विनीताप्रमाणत्वात् भो देवानुप्रियो । तुम आभिषेक्य हरिन्गत्न को सज्जित करो इत्यादि पूर्वकथितं सव कथनं जैसा कि पहिले कहा जा चुका है वह सभी कथन यथा पर मञ्जनगृह प्रवेश, स्नान करने तक का ग्रहण कर लेना चाहिये उसके बाद वड (अञ्जनगिरिकूडमणिगमं गयवड णरवई दूरुढे) नरपति श्री भरत महाराजा उस अञ्जनगिरि के जैसे गजपति पर आरूढ हो गया (तं चेव सव्वं जहा हेट्ठा) यहाँ अब सब वर्णन जैसा विनीता राजधानी से विजय करने को निकलने समय पीछे किया जा चुका है इसी तरह का वह सब कथन यहाँ प्रवेश करते समय भी कह लेना चाहिये. (णवरं णवमहा-णिहिओ चत्तारि सेणाओ ण पविससि सेसो सो चेव गमो जाव णिग्घोसणाइएण विणीयाए रायहाणीए मज्झं मज्झेण जेणेव सए गिहे जेणेव भवणवरवडिसगपडिदुवारे तेणेव पहारेत्थ गमणाए) परन्तु प्रवेश करते समय इतनी विशेषता हुई कि विनीता राजधानी में महानिधियो ने प्रवेश नहीं किया—क्यों कि एक एक महानिधि का प्रमाण विनीता राजधानी के बराबर था. अतः वडा उन्हें स्थान पोटाना औट्टु णिक पुग्घेने ओलाव्वा (सद्वावित्ता एव वयासी) ओलावीने तेभने आ प्रभाषेकळुं हे देवानुप्रियो तमे आभिषेक्य हरिन्गत्न ने सज्जित करे। वगेरे सर्वकथन पछेलां सुण्णअ अने पणु समञ्जुं अहीं मज्जन गृहमा प्रवेश तथा स्नान करवा सुप्पीने पाठं स'गृहीत थयेदी। छे, ओपु समञ्जुं त्थारणाए ते (अञ्जनगिरिकूडसणिगमं गयवडं णरवई दूरुढे) नरपति भरत ते अञ्जन गिरि सदृश गजपति उपर आरूढ थई गया (तं चेव सव्वं जहा हेट्ठा) अहीं छेव अधु वणुं न ओपु विनीता राजधानी थी निकलती वणते—विजय भेगववा भाटे पछेलां स्पष्ट करवाभा ओपु छे, तेपु न ते अधु कथन अहीं प्रवेशकस्ती वणते पणु पूर्वकथन प्रभाषे यथार्थं समञ्जसेपु ओपु छे (णवरं णव महाणिहिओ चत्तारि सेणाओ ण पविससि सेसो सो चेव गमो जाव णिग्घोसणाइएणं विणीयाए रायहाणीए मज्झ मज्झेण जेणेव सए गिहे जेणेव भवणवरवडिसगपडिदुवारे तेणेव पहारेत्थ गमणाए) पणु प्रवेश करती वणते आट्ठी वात विजय थई के विनीता राजधानीमा भडा तिधिओओ प्रवेश कर्यो नही. केमके ओक-ओक महानिधियु प्रभाषे विनीता राजधानीनी भराभर

कस्मात्तेषां तत्रावकाशः तथैव चतस्रः सेना अपि न प्रविशन्ति जेपः स एव गमः अर्जित-
राज्यो निर्जितशत्रुरित्यादि ममग्रोऽपि पाठो वक्तव्यः यावन्निर्ग्रोपनादिनेन अत्र याव-
त्पदात् मेरी झल्लरी मृदङ्गादीनां ग्रहः तेषां निर्ग्रोपनादिनेन मङ्गलप्रतिशब्देन
(युक्तः) स भरतो विनीताया राजधान्याः मध्यमध्येन यत्रैव भवकं स्वकीय गृह राज-
भवनम्, यत्रैव भवनवरावतसकप्रतिद्वार तत्रैव गमनाय गन्तु प्रधारितवान् प्रवृत्तवान् ।
प्रविशति भरते चक्रवर्त्तिनि आभियोगिकदेवाः यथा २ वासमवनं परिपुर्वन्ति तथा
आह—‘तएणं’ इत्यादि ‘तए णं’ तस्म भरहस्स रण्णो विणीय रायहाणि मज्झं मज्झेणं
अणुपविसमाणस्स अप्पेगइया देवा विणीयं रायहाणि सम्भतरवाहिरियं आसिसम्म-
ज्जियोवल्लित्त करेति’ ततः खलु तदनन्तरं किल, तस्य भरतस्य राज्ञो विनीतां
राजधानीं मध्यमध्येन अनुप्रविशतोऽपि बाह्यम् एके केचन आभियोगिका आज्ञाकारिणो
व्यन्तरदेवाः साभ्यतरबाह्याम् अभ्यन्तरे बाह्य च विनीतां राजधानीम् आसित् सम्मा-
ही कैसे प्राप्त होता। इसी तरह चार सेनायां ने भी वहाँ प्रवेश नहीं किया, बाकी का और सब
कथन यहाँ पर पूर्व के ही पाठ जैसा जानलेना चाहिये है इस प्रकार पूर्वोक्त जो कि गडगडाहट
ध्वनि के साथ वह भरत राजा विनीता राजधानी के बीचों बीच से होते हुए जहाँ पर अपना
गृह था राज भवन था और उसमें भी जहाँ पर प्रामादावर्त्त सक द्वार था उसी ओर चले। भरत
चक्रवर्ती के प्रवेश द्वार पर प्रवेश करने पर आभियोगिक देवों ने क्या किया इस बात को प्रकट
करते हुए सूत्रकार कहते हैं—(तएण तस्स भरहस्स रण्णो विणीय रायहाणि मज्झं मज्झेणं अणुपवि-
समाणस्स अप्पेगइया देवा विणीय रायहाणि सम्भतरवाहिरियं आसियसम्मज्जियोवल्लित्तं करेति) जब
भरत राजा विनीता राजधानी में प्रवेश करने के लिये उसके ठीक बीचों बीच के मार्ग से आ रहे
थे उस समय कृतनेक आज्ञाकारी व्यन्तररूपदेव आभियोगिक देवों ने उस विनीता राजधानी को
भीतर बाहर से जल से सिञ्चित कर तर कर दिया कूड़ा करकट हो झड़ बुझारकर साफ कर दिया
हुं। जैसी तेमने त्या स्थान भवे ७ केवीरीते आ प्रभाण्णे आर प्रधारनी सेना पण्ण तेमां प्रविष्ट
यधं नथी शेषं अणु कथन अहि पूर्व पाठवत् समञ्जसु जेमजे आ प्रभाण्णे पूर्वोक्त के ७ गड-
गडाहटध्वनि साथे ते भरत नरेश विनीता राजधानी वर्ये थध ने जथा पोतातु भवन हुं
राज भवन हुं अने तेमा पण्ण जथा प्रासादावत सकद्वार हुं ते तरश्च खाना थये। भरत
चक्रवर्ती जे जय रे प्रवेश द्वारमा प्रवेशमेणजे। ते वणते आभियोगिक देवा जे थु कथुं
जे वातने प्रकट करवा भाटे सूत्रकार कहे छे— (तएणं तस्स भरहस्स रण्णो विणीय राय-
हाणि मज्झं मज्झेण अणुपविसमाणस्स अप्पेगइया देवा विणीय रायहाणि सम्भतरवाहिरियं
आसियसम्मज्जियोवल्लित्तं करेति) जयरे भरत राजा विनीता राजधानीमा प्रवेश करवा भाटे ते
राजधानीना ठीक मध्यमा आवेशा मार्ग उपर थर्चने जध रह्यो हुतो ते समये केटलाक आज्ञाकारी
व्यतर ईप देवा, आभियोगिक देवा जे ते विनीता राजधानीने अहर अने गहर जल सिञ्चित
करी तरमेण करी दीधी हुती कथराने सावरणीधी साक्ष कर्यो अने गोभयादिधी लिप्त करीने राजा
धानीने स्वस्थ भनावी दीधी हुती, आ प्रभाण्णे ते राजधानीने ते देवा जे साक्ष करी नाथी हुती हैं

कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति आह्वयति 'सद्वाविता' शब्दयित्वा आह्वय 'तदेव जाव' तथैव पूर्ववदेव यावत् अत्र यावत्पदात् अभिषेक्यगजपतिसञ्जीकरणमञ्जनगृहस्नानकरणादिरूपः सर्वो आलापको ग्राह्यः तदनन्तरम् 'अंजणगिरिकूटसणिमं गयवडं णरवई दूरूढे' अञ्जनगिरिकूटसन्निभम्—अञ्जनपर्वतशृङ्गसदृश्यं सादृश्यं च उच्चत्वेन कृष्णवर्णत्वेन च बोध्यम् गजपतिम्, पट्टहस्तिनं नरपतिः राजा भरतः दूरूढः आरूढः 'तं चेव सर्व्वं जहा हेट्टा' तदेव सर्व्वं तथा वक्तव्यम् यथा 'हेट्टा' अयस्तनपूर्व्वसूत्रे यादृशसामग्री-विशिष्टस्य विनीतातो गमनसमये वर्णनं कृतं तथाऽत्रापि प्रवेशे वक्तव्यम् इत्यर्थः, अत्र विशेषमाह 'णवरं णव महाणिहिओ चत्तारि सेणाओ ण पविसंति सेसो सोचेव गमो जाव णिग्घोसणाइएणं विणीयाए रायहाणीए मज्झं मज्झेण जेणेव सए गिहे जेणेव भवणवरवडिसगपडिदुवारे तेणेव पहारेत्थं गमणाए' नवरम् अयं विशेषः नैसर्पादिशब्दान्ताः नव महानिधयो न प्रविशन्ति तेषां मध्ये एकैकस्य निधेर्विनीताप्रमाणत्वात् भो देवानुप्रियो ! तुम अभिषेक्य हस्तिनं को सञ्जित करो इत्यादि पूर्व्वकथितं सत्रं कथनं जैसा कि पहिले कहा जा चुका है वह सभी कथन यज्ञ पर मञ्जनगृह प्रवेश, स्नान करने तक का ग्रहण कर लेना चाहिये उसके बाद वः (अञ्जनगिरिकूटसणिमं गयवडं णरवई दूरूढे) नरपति श्री भरत महाराजा उस अञ्जनगिरि के जैसे गजपति पर आरूढ हो गया (तं चेव सर्व्वं जहा हेट्टा) यहां अब सब वर्णन जैसा विनीता राजधानी से विनय करने को निकलने समय पीछे किया जा चुका है इसी तरह का वह सब कथन यहां प्रवेश करते समय भी कह लेना चाहिये. (णवरं णवमहा-णिहिओ चत्तारि सेणाओ ण पविसंति सेसो सो चेव गमो जाव णिग्घोसणाइएणं विणीयाए रायहाणीए मज्झं मज्झेण जेणेव सए गिहे जेणेव भवणवरवडिसगपडिदुवारे तेणेव पहारेत्थं गमणाए) परन्तु प्रवेश करते समय इतनी विशेषता हुई कि विनीता राजधानी में महानिधियों ने प्रवेश नहीं किया—क्यों कि एक एक महानिधि का प्रमाण विनीता राजधानी के बराबर था. अतः वडा उन्हें स्थान पोटाना कौटुम्बिक पुरुषाने ओलाव्या (सद्वाविता एवं वयासी) ओलावीने तेभने आ प्रभाषेकधुं हे देवानुप्रियो तमे अभिषेक्य हस्तिनं ने सञ्जित करो वगेरे सर्व्वकथन पडेलां सुवण्णं अने पणुं समञ्जु अहो मञ्जन गृहमा प्रवेश तथा स्नान करवा सुधीना पाठं स गृहीत थयेदो छे, ओवुं समञ्जुं त्याग्याह ते (अञ्जनगिरिकूटसणिमं गयवडं णरवई दूरूढे) नरपति भरत ते अञ्जन गिरि सदृश गजपति उपर आरूढ थई गया (तं चेव सर्व्वं जहा हेट्टा) अहो हुवे अधु पणुं न ओवुं विनीता राजधानी थी निकलती वधते—विजय भेजववा माटे पडेलां स्पष्ट करवाभा अःओ छे. तेवुं ज ते अधु कथन अहो प्रवेशकस्ती वधते पणुं पूर्व्वकथन प्रमाणे यथार्थं समञ्जुदेवुं नेछे (णवरं णव महाणिहिओ चत्तारि सेणाओ ण पविसंति सेसो सो चेव गमो जाव णिग्घोसणाइएणं विणीयाए रायहाणीए मज्झं मज्झेण जेणेव सए गिहे जेणेव भवणवरवडिसगपडिदुवारे तेणेव पहारेत्थं गमणाए) पणुं प्रवेश करती वधते आटली वात विशेष थई हे विनीता राजधानीमा भडा निधिओओ प्रवेश कथ्यो नही. हेमहे ओक-ओक महानिधियु प्रमाणे विनीता राजधानीनी जराजर

कस्मात्तेषां तत्रावकाशः तथैव चतस्रः सेना अपि न प्रविशन्ति शेषः स एव गमः अर्जित-
राज्यो निर्जितशत्रुरित्यादि ममग्रोऽपि पाठो वक्तव्यः यावन्निर्गोपनादिनेन अत्र याव-
त्पदात् मेरी झल्लरी मृदङ्गादीनां ग्रहः तेषां निर्गोपनादिनेन महाशब्दप्रतिशब्देन
(युक्तः) स भरतो विनीताया राजधान्याः मध्यमध्येन यत्रैव गवकं स्वकीय गृह राज-
भवनम्, यत्रैव भवनवरावतसकप्रतिद्वार तत्रैव गमनाय गन्तु प्रधारितवान् प्रवृत्तवान् ।
प्रविशति भरते चक्रवर्त्तिनि आभियोगिकदेवाः यथा २ वासभवन परिष्कुर्वन्ति तथा
आह—‘तपणं’ इत्यादि ‘तप ण’ तस्म भरहस्स रण्णो विणीय रायहाणि मज्झं मज्झेणं
अणुपविसमाणस्स अप्पेगइया देवा विणीयं रायहाणि सम्भतरवाहिरियं आसियसम्म-
ज्जियोवल्लितं करेति’ ततः खलु तदनन्तरं किल, तस्य भरतस्य राज्ञो विनीतां
राजधानीं मध्यमध्येन अनुप्रविशतोऽपि बाढम् एके केचन आभियोगिका आज्ञाकारिणो
व्यन्तरदेवाः साभ्यतरवाह्याम् अभ्यन्तरे बाह्य च विनीता राजधानीम् आसित सम्मा-
ही कैसे प्राप्त होता. इसी तरह चार सेनायां ने भी वहां प्रवेश नहीं किया. बाकी का और सब
कथन यहां पर पूर्व के ही पाठ जैसा जानलेना चाहिये है इस प्रकार पूर्वोक्त जो कि गडगडाहट
ध्वनि के साथ वह भरत राजा विनीता राजधानी के गोचों बीच से होते हुए जहां पर अपना
गृह या राज भवन या और उसमें भी जहां पर प्रामादावत सक द्वार था उसी ओर चले. भरत
चक्रवर्ती के प्रवेश द्वार पर प्रवेश करने पर आभियोगिक देवों ने क्या किया इस बात को प्रकट
करते हुए सूत्रकार कहते हैं—(तपणं तस्म भरहस्स रण्णो विणीय रायहाणि मज्झं मज्झेणं अणुपवि-
समाणस्स अप्पेगइया देवा विणीय रायहाणि सम्भंतरवाहिरियं आसियसम्मज्जियोवल्लितं करेति) जब
भरत राजा विनीता राजधानी में प्रवेश करने के लिये उसके ठीक बीचो बीच के मार्ग से आ रहे
थे उस समय कितनेक आज्ञाकारी व्यन्तरूपदेव आभियोगिक देवों ने उस विनीता राजधानी को
भीतर बाहर से जल से सिंचित कर तर कर दिया कूड़ाकरकट हो सड़ बुझाकर साफ कर दिया
हुतुं जेथी तेमने त्यां स्थान भई ज केवीरीते आ प्रभाणुं चार प्रकारनी सेना पणु तेमां प्रविष्ट
थई नथी शेष भणु कथन अहि पूर्व पाठवत् समज्जु जेमजे आ प्रभाणुं पूर्वोक्त के जे गड
गडाहटध्वनि साथे ते भरत नरेश विनीता राजधानी वर्ये थई ने जथा पोतानु भवन हुतुं
राज भवन हुतुं अने तेमा पणु जथा प्रामादावत सकद्वार हुतुं ते तरई खाना थये. भरत
चक्रवर्ती जे जय रे प्रवेश द्वारमा प्रवेशमेणये ते वभते आभियोगिक देवाजे शुं कथुं ?
जे वातने प्रकट करवा भाटे सूत्रकार कहे छे— (तपणं तस्म भरहस्स रण्णो विणीय राय-
हाणि मज्झं मज्झेण अणुपविसमाणस्स अप्पेगइया देवा विणीय रायहाणि सम्भंतरवाहिरियं
आसियसम्मज्जियोवल्लितं करेति) जयरे भरत राजा विनीता राजधानीमा प्रवेश करवा भाटे ते
राजधानीना ठीक मध्यमा आवेसा मार्ग उपर थईने जई रह्यो हुतो ते समये कटलाक आज्ञाकारी
व्यतर ईप देवो, आभियोगिक देवाजे ते विनीता राजधानीने अहर अने भहार जल सिंचित
करी तरमेण करी दोधी हुती कथराने सावरणीथी साइं कथी अने गोभयादिथी बिस करीने राज
धानीने स्वयं भनावी दोधी हुती आ प्रभाणुं ते राजधानीने ते देवाजे साइं करी नाथी हुती है

जितोपलिप्तां कुर्वन्ति जलसेचनेन सम्मार्जिकया सम्मार्जनेन गोमयाद्युपलेपनेन च परिष्कुर्वन्तोत्पथः, 'अप्येगइया मंचाइमंचकलियं करेति' अप्येके केचन देवाः दर्शनार्थिनामुपवेशनाय मञ्चानिमञ्चकलितां मञ्चाः प्रसिद्धाः तेषामुपरि स्थिताः ये मञ्चाः ते अतिमञ्चा स्तैः कलितां युक्तां, विनीतां कुर्वन्ति एवं सेसेसु वि पएसेसु एवम् अमुना प्रकारेण शेषेष्वपि अवशिष्टेष्वपि त्रिचतुष्कचत्वरमहापथसहितराजधानीपर्यन्तेषु, प्रदेशेषु बोध्यम् 'अप्येगइया णाणाविह रागवसणुस्सिय घयपडागामंइयभूमियं अप्येगइया लाउल्लोइयमहियं करेति' अप्येके केचन देवा नानाविधरागव मनोच्छ्रित-ध्वजपताकामण्डितभूमिकाम् तत्र नानाविधः रागो-रञ्जनं येषु तानि मञ्जिष्ठादि रूपाणि वसनानि वस्त्राणि तेषु उच्छ्रिताः ऊर्ध्वीकृताः ध्वजाः सिंहरूडादि रूपयुक्त बृहत्पट्टरूपाः पताकाश्च तैः मण्डिता-सुशोभिता भूमिः यस्यां सा तथा ता कुर्वन्ति अप्येके देवाः लापितोल्लोचितमहितां तत्र लापितं छगणादिना लेपनम् उल्लोचितं सेटिकादिना कुह्यादिषु धवलनं महितमिव महितं युक्तम् अतिप्रशस्तं प्राप्तादादि यस्यां सा तथा तां कुर्वन्ति 'अप्येगइया जाव और गोमयादि से लिप्तकर उसे सुथराकर दिया इस तरह से उसे ऐसा बिल्कुल परिष्कृत कर दिया कि जिसे वहाँ घूँल एवं कचरा का निशान भी देखने को न आवे और गोमयादि से लिपपोत कर जमीनको इतनी परिष्कृत कर दी कि जिससे उसमें कहीं पर भी गर्त आदि के होने का चिन्ह तक दिखाई न पड़े तथा (अप्येगइया मंचाइमंचकलियं करेति) कितनेक आभियोगिक देवों ने उस विनीता राजधानी को मंचातिमंचों से युक्त कर दिया जिससे अपने प्रिय नरेश को देखने के लिये उपस्थित हुई जनमंडली इन पर बैठकर सुस्ता ले (एवं सेसेसु वि पएसु) इसी प्रकार से त्रिक चतुष्क चत्वर और महापथ सहित राजधानी के समस्त रास्तों में सफाई आदि का काम कर आभियोगिक देवों ने उन २ स्थानों को भी मंचातिमञ्चों से युक्त कर दिया (अप्येगइया णाणाविहरागवसणुस्सिय घयपडागामंइयभूमियं, अप्येगइया लाउल्लोइयमहियं करेति) कितनेक देवों ने उस राजधानी को अनेक रंगों के वस्त्रों से बनाई गई ऊँची २ ध्वजाओं से और पताकाओं से मण्डित भूमिवाला कर दिया कुछ पक्ष स्थाने क्यारे देखाते न हतो, ते देवाः गोमयादिथी दीधीने जमीनने ओवी रीते परिष्कृत करी नाभी हनी के जेथी तेमा कुछ पक्ष स्थाने गर्तवगेरेना बिहो पक्ष देखाता नहोता. तेमज्ज(अप्येगइया मंचाइ मंचकलियं करेति)केटलाक आभियोगिक देवाः ते विनीता राजधानीने मंचातिमञ्चोथी युक्त बनावी दीधी हती. जेथी पोताना प्रिय नरेशना दर्शन भाटे उपस्थित थयेलो जन मंडली जे मंचो उपर जेसी ने विश्राम लई शके (एवं सेसेसु वि पएसु) आ प्रभावे ज त्रिक चतुष्क चत्वर अने महापथ सहित राजधानीना समस्त रस्ताओमां स्वच्छता पगेरेनुं काम संपन्न करीने आभियोगिक देवाः ते स्थाने उपर पक्ष मंचातिमञ्चो बनावी दीधा (अप्येगइया णाणाविहरागवसणुस्सिय घयपडागामंइयभूमियं, अप्येगइया लाउल्लोइयमहियं करेति) केटलाक देवाः ते राजधानीने अनेक रंगाना-वस्त्रोथी निर्मित जेथी जेथी ध्वजओथी अने पताकाओथी विभूषित भूमिवाणी बनावी दीधी तेमज्ज केटलाक देवाः ते स्थान-स्थान उपर चदरवाओ ताणीने ते भूमिने सुसज्जित करी

ગંધવદ્ધિભૂયં કરેતિ' અપ્યેકે દેવાઃ યાવદ્ ગન્ધવર્તિભૂતાં ગન્ધવોત્તયુક્તાં કુર્વન્તિ' અન્ન
 યાવત્પદાત્ 'ગોસીસસરસરત્તચંદનકલસં, ચંદનઘડસુકય જાવ ગંધુદ્ધ્યામિરામ મુગંધ-
 વરગંધિયં' इति गोशीर्षससरसक्तचन्दनकलशाम्, तत्र गोशीर्षं सुगन्धितचन्दनविशेषः तस्य
 सरसं जलयोगेन घर्षणद्वारा आर्द्रीभूतं यद्रक्तचन्दनं तेन युक्ताः कलशाः घटाः शोभार्थं सन्ति
 यस्यां सा तथा ताम् पुनः चन्दनघटं सुकृत-यावद्वन्धोद्धृताभिरामाम् सुकृताः मुगचिताः चन्दन-
 घटाः चन्दनयुक्तकलशाः अतएव यावद्वन्धोद्धृताः समस्तगन्धैः व्याप्ताः अतएव अभिरामाः
 मनोहराः ते सन्ति यस्यां सा तथा ताम् सुगन्धवरगन्धितां श्रेष्ठमुगन्धै सुवासितां सुगन्धि-
 तां च गन्धवर्त्ति भूतां कर्त्तुन्ति इत्यर्थः' 'अप्येगइया हिरण्णवास वासिति' અપ્યેકે દેવાઃ દિર
 ણ્યવર્ષ-રજતવર્ષણં વર્ષન્તિ 'સુવર્ણરયણવહરઆમરણવાસં વાસેતિ' સુવર્ણરત્નવજ્રાભમણવર્ષ
 વર્ષન્તિ સુવર્ણવર્ષં ચન્દ્રકાન્તાદિ રત્નવર્ષં વજ્રવર્ષમ્ અન્ન વજ્રપદેન હીરકાદોનિ વૌધ્યાનિ
 કટકાષ્ટાદશસરિક નવસરિક યાવત્ત્રિસરિકાદયામરણવર્ષં કેચિદ્દેવાઃ વર્ષન્તીત્યર્થઃ 'તए
 त्था कितनेक देवो ने जगह २ चदोवा तानकर उसे सुसज्जित कर दिया अथवा लोपकर
 और फिर कलई से पोतकर प्रासादादिको' की भित्तियोको' अतिप्रशस्त कर दिया (अप्येगइया
 जाव गंधवद्विभूयं करेति) कितनेक देवों ने उसे गन्ध की वर्ती जैसा बना दिया
 यहां के यावत्पद से "गोसीससरसरत्तचंदनकलसं, चंदनघडसुकयजाव गंधुद्ध्यामिरामं सुगन्धवर-
 गंधियं" इस पाठ का संग्रह हुआ है इस पाठ का अर्थ ऐसा है कि शोभा के लिए
 गोशीर्षं चन्दन से उपलिप्त सरसरक्त चन्दन के कलश राजद्वार पर कितनेक देवों ने रख
 दिये थे जगह २ देवों ने चन्दन के कलशों को तोरण के रूप में सजाकर स्थापित कर
 दिया था. इससे इन सुगन्धि से यह विनीता नगरी गंधकीवर्तिका रूप जैसी बन गई थी
 (अप्येगइया हिरण्णवास वासिति, सुवर्णरयणवह्रआमरणवास वासिति) कितनेक देवोंने उस
 विनीता नगरी में रजत चांदी की वर्षा की, कितनेक देवोंने सुवर्ण, रत्न वज्र और आभ-
 रणों की-अठारह छरवाले हारों की, नौ छरवाले हारों की एवं तीन छरवाले हारों
 छींधी. अथवा छीपीने અને પછી ચુનાથી ઘોળી ને પ્રાસાદાદિકોની બીતોને અતિ પ્રશસ્ત
 કરી છીંધી (અપ્યેગइया जाव गंधवद्विभूयं करेति) કેટલાક દેવોએ તે ભૂમિને ગંધની
 વર્તી જેવી બનાવી છીંધી અહીંજે યાવત્ પદ આવેલ છે તેનાથી-"ગોસીસસરસરત્તચંદન
 ચંદનઘડસુકય ગંધુદ્ધ્યામિરામં મુગધવરગંધિયં" એ પાઠને સંપ્રદાયે છે
 એ પાઠને અર્થ આ પ્રમાણે છે કે શોભા માટે ગોશીર્ષ ચંદન થી ઉપલિપ્ત સરસરક્ત
 ચંદનના કળશો રાજદ્વાર ઉપર કેટલાક દેવોએ મૂકી છીંધાહતા સ્થાન-સ્થાન ઉપર દેવો-
 એ ચંદનના કળશોને ત્રણેણા આકારમાં સુસજ્જ કરીને સ્થાપિત કરી છીંધા હતા. એવી
 એ સુગંધિત પદાર્થો થી એ વિનીતા નગરી ગન્ધની વર્તિકા જેવી બની ગઈ હતી (અપ્યે
 ગइया हिरण्णवासं वासिति, सु रयणवह्र रणवासं वासिति) કેટલાક દેવોએ
 તે વિનીતા નગરીમાં રજત ચાંદીની વર્ષા કરી. કેટલાક દેવે એ સુવર્ણ, રત્ન વજ્ર, અને
 આભરણોની વર્ષા કરી, અઠાર લડીવાલા હારોની, નવ લડીવાલા હારોની, અને ત્રણ લડી-

णं तस्स भरहस्स रण्णो विणीयं रायहाणीं मज्झं मज्झेण अणुप्पविसमाणस्स सिंघाडगं जाव महापद्देसु' ततः खलु तदनन्तरं किल तस्य भरतस्य राज्ञः विनीतां तन्माभ्नीं राजधानीं मध्यं मध्येन मध्यभागेन अनुप्रविशतः शृङ्गाटक-यावन्महापथेषु महापथपर्यन्तेषु स्थानेषु अत्र यावत्पदात् त्रिकचतुष्कादि परिग्रहः 'बहवे अत्थत्थिया' बहव अर्थार्थिकाः अर्थार्थिनः द्रव्यार्थिनः 'कामत्थिया' कामार्थिनः मनोहरशब्दरूपार्थिनः 'भोगत्थिया' भोगार्थिकाः मनोह गन्धरसस्पर्शार्थिनः 'लामत्थिया' लामार्थिकाः भोजनमात्रादि-प्राप्त्यर्थिनः 'इद्धिसिया' ऋद्धि-पिकाः ऋद्धिं गवादि संपदम् इच्छन्ति एपयन्ति वा श्रद्धयेषाः तेष्व ऋद्धयेपिकाः स्वार्थे इक् प्रत्ययविधानात् 'किब्बिसिया' किल्बिपिकाः परविद्रोहकत्वेन माडचेष्टाकारिणो भाण्डादयः 'कारोडिया' कारोटिकाः ताम्बूलसमुद्रवाहकाः 'कारवाहिया' कारवाहिकाः करं राजदेयं द्रव्यं वहन्त्येवं शीलाः कारवाहिन इत्यर्थः 'संखिया' शांखिकाः शंखग्राहिणः शंखवादका इत्यर्थः 'च-क्किया' चाक्रिकाः चक्रग्राहिणो भिक्षुका 'णंगलिया' लाङ्गलिकाः हलावलम्बन काष्ठसदृश-स्त्रधारिण सुभटाः 'मुहमंगलिया, मुखमाङ्गलिकाः चारणादयः 'पूसमाणया' पुष्यमानकाः शा-

की तथा और भी आभरणो की-आभूषणों की-वर्षा की (तए ण तस्स भरहस्स रण्णो विणीयं रायहाणीं मज्झं मज्झेण अणुप्पविसमाणस्स सिंघाडगं जाव महापद्देसु) जब वह श्री भरत महाराजा ने विनीता राजधानी में मध्य के मार्ग से प्रवेश किया-तब वहाँ के त्रिक चतुष्क आदि महापथ के मार्गों में (बहवे अत्थत्थिया भोगत्थिया कामत्थिया लामत्थिया इद्धिसिया किब्बिसिया कारोडिया) अनेक अर्थामिलाषी जनो ने, अनेक भोगामिलाषी जनो ने, अनेक कामामिलाषी जनो ने, अनेक लामार्थीजनो ने, अनेक गवादिसंपत्ति की अमिलाषावालेजनो ने अनेक किल्बिषिक-भाण्ड आदि-जनो ने, अनेक कारोटिका-ताम्बूल समुद्रवाहकजनो ने (कार-वाहिया) अनेक कारवाहिक राजदेय द्रव्यको बकाया रखनेवाले-जनो ने, अनेक (संखिया) शांखिक-शंखबजाने वाले जनो ने, अनेक (चक्किया) चाक्रिक-भिक्षुक जनो ने, अनेक (णंग-लिया) लाङ्गलिक-हलके अवलम्बन भूत काष्ठ के जैसे अलवारो सुभटों ने, (मुहमंगलिया)

वाला क्षात्रेणी, तथा अन्य पशु आभरणोणी-आभूषणोणी वर्षा करी. (तएण तस्स भरहस्स रण्णो विणीयं रायहाणीं मज्झं मज्झेण अणुप्पविसमाणस्स सिंघाडगं जाव महापद्देसु) जयारे भरत राजाओ विनीता राजधानीना मध्यमार्गभा प्रवेश कयो' तयारे त्याना त्रिक, अतुष्क पगेरे महापथना मार्गोभा (बहवे अत्थत्थिया भोगत्थिया कामत्थिया लामत्थिया, इद्धिसिया किब्बिसिया कारोडिया) अनेक अर्थामिलाषी जनोओ, अनेक भोगामिलाषी जनोओ अनेक कामार्थी जनोओ, अनेक लामार्थी जनोओ, अनेक गवादिनी संपत्ति भेगव-वानि अमिलाषा राभनारा जनोओ, अनेक किल्बिषिक-भाण्डादि' जनोओ, अनेक कारोटिक तांभूल समुद्रवाहक जनोओ (कारवाहिया) अनेक कारवाहिक-राजदेय द्रव्य आप्पु नथी-ओवा जनोओ, अनेक (संखिया) शांखिक शंख वगाडनारा जनोओ, अनेक (चक्किया) चाक्रिक भिक्षुक जनोओ, अनेक (णंगलिया) लाङ्गलिकोओ अवलम्बन भूत काष्ठना ओवा अलवारु करनारा सुभटोओ, (मुहमंगलिया) अनेक सुभभागलिकोओ आशु

कुनिकाः शकुनशास्त्रज्ञाः 'वद्धमाणया' वर्द्धमानकाः मगलघटधात्रका 'लंखमखमाइया' ल-
ह्मह्ममादिकाः तत्र वशादेरुपरि ये वृत्त नृत्यं दर्शयन्ति ते लङ्का नटादय गह्वाश्वित्रफलक-
हस्ता भिक्षुकाः गौरीपुत्रनाम्ना प्रमिद्धाः मायिका मायाविनः प्रोक्ता एते पुरुषा 'ताहि'
ताभिः 'ओरालाहि' औदाराभि उदारगुक्ताभिः, 'इट्टाहि' इष्टाभिः अमिप्रेताभिः, 'कताहि'
कान्ताभि मनोहराभिः, 'पियाहि' प्रियाभिः प्रीतियुक्ताभि 'मणुन्नाहि' मनोज्ञाभिः, 'म-
णामाहि' मनोऽमाभिः मनसाऽभ्यन्ते प्राप्यन्ते पुन पुनः स्म णतो यास्ताभि मनोऽनुकू-
लाभिरित्यर्थः, 'सिवाहि' शिवाभि, कल्याणयुक्ताभि 'धण्णाहि' धन्याभिः, प्रशसायु-
क्ताभिः 'मंगलाहि' मंगलाभिः मङ्गलयुक्ताभिः, 'सस्सिरीयाहि', 'मश्रीकाभिः लालित्यौदा-
र्यादिगुणशोभिताभिः 'हिययगमणिज्जाहि' हृदयमगनीयाभि हृदयङ्गमाभि, 'हिययपल्हा-
यणिज्जाहि' हृदयप्रह्लादनीयाभि हृदयप्रमोदनीयाभि, 'वग्गूहि' वाग्भि इति अध्या-
हार्यम्, 'अणुवरयं' अनुपरतम् उपरतस्य विरामस्य अभाव अनुपगतम् यथा स्यात्तथा न
विरम्येत्यर्थः 'अभिणंदताय' अभिनन्दन धन्यासि अभिनन्दन, 'अभियुणंताय' अभिष्टुव-
न्तश्च अभिष्टुतिं कुर्वन्तश्च एवं वक्षरपागप्रकारेण अदिपु उक्तवन्त किमुक्तवन्त इत्याह-

अनेक मुलमाङ्गलिको ने, चारणादिको ने-(पूसमाणया) अनेक शकुन शास्त्रज्ञों ने (वद्धमाणया)
अनेक वर्द्धमानको ने मङ्गलघटधात्रों ने, (लंखमखमाइया) वंशादि के ऊपर जो तमाशे को
दिखाते हैं ऐसे अनेक नटों ने अनेक लोगो ने-चित्रफलको को हाथ में लेकर भिक्षा
मागने वाले भिक्षुको ने एवं अनेक 'मायाविनो ने-इन्द्रनालको ने-जादूगरो ने (ताहि-
ओरालाहि इट्टाहि) उन उदार, इष्ट (कंताहि) कान्त मनोहर (पियाहि) प्रीतियुक्त (मणुन्नाहि)
मनोज्ञ (मनोमाहि) एवं बारबार याद करने योग्य ऐसी (वाग्गूहि) वाणियो द्वारा-वचनो
द्वारा-जो कि (मिवाहि) कल्याण युक्त थी (धण्णाहि) प्रशंसायुक्त थी, (मंगलाहि) मंगलयुक्त
थी, (सस्सिरीयाहि) लालित्य औदार्य आदि गुणों से शोभित थी (हिययपल्हायणिज्जाहि)
एवं हृदय को प्रमुदित करनेवाली थी (अणुवरयं) बिनाविराम लिये ही-बिना रुके ही (अभि-
णंदताय अभियुणंताय जयजयणदा, जयजय महा) अभिनन्दन करते हुए, अभिष्टुति-

हिकोओ, (पूसमाणया) अनेक शकुन शास्त्रज्ञोओ, (वद्धमाणया) अनेक वर्द्धमानकोओ मगल
घटधारकोओ, (लंखमखमाइया) वंशादि' ऊपर ने ओल बनावे छे ओवा अनेक नटोओ,
अनेक दोकोओ-चित्रफलकोने, हथिमा लधने भिक्षा मागनारोभिक्षुकोओ अने अनेक
मायावीओओ ईन्द्रनालकोओ-जादूगरोओ(ताहिओरालाहि इट्टाहि)ते उदार, इष्ट(कंताहि) कान्त,
मनोहर (पियाहि) प्रीतियुक्त (मणुन्नाहि) मनोहर (मनोमाहि) तेमअ वांरवार याद करवा-
वाओओ (वाग्गूहि) वाणीओ वडे-वयने। वडे के ने (सिवाहि) कल्याण युक्त होती (धण्णाहि)
प्रशसा युक्त होती, (मंगलाहि) मगलयुक्त होती (सस्सिरीयाहि) लालित्य, औदार्य, आदि
गुणोओ सुशोभित होती (हिययपल्हायणिज्जाहि) तेमअ हृदयने प्रमुदित करनारी होती
(अणुवरय) वगर विराम दोधां अ सतत (अभिणंदताय अभियुणताय जय जयणदा जय
महा) अभिनन्दन करतां, अभिष्टुति-स्तुति करतां आ प्रभाणे कहुं छेनन्द ! आनन्द

‘जय जय जंदा’ इत्यादि ‘जय जय जंदा’ हे नन्द हे आनन्द स्वरूप । भरत । ‘जय जय भद्रा’ हे भद्र ! कल्याणकर चक्रवर्तिन् जय जय अजितशत्रून् विजयस्व विजयस्व ‘जय जय-भद्रा !’ हे भद्र ! कल्याणस्वरूप ! जय जय ‘भदंते’ ते तुभ्यं भद्र कल्याण भूयात्-‘अजिय जिणाहि’ अजितम् अपराजितं प्रतिशत्रु जय विजयस्व ‘जियं पालयाहि’ जितम् आज्ञावशवद् पालय रक्ष ‘जियमज्जे वसाहि’ जितमध्ये आज्ञावशवदमध्ये वस-तिष्ठ जितपरिजनैः परिवृतो भव इत्यर्थः ‘इंदोवि देवाणं’ इन्द्र इव देवाना वैमानिकानां मध्ये सर्वत ऐश्वर्यवान् इत्यर्थः ‘चंदोवि ताराणं’ चन्द्र इव ताराणां नक्षत्राणां मध्ये चन्द्रमा इव ‘चमरो विव असुराणं’ चमर इव असुराणां दाक्षिणात्यानामपुराणां मध्ये चमर नामकासुरेन्द्र इव ‘धरणो विव नागाणं’ धरण इव नागानाम्-नागानां मध्ये धरण-नामक नागकुमार इव ‘बहूइं पुव्वसयसइस्साइं’ बहूनि पूर्वशतसदस्त्राणि बहूनि पूर्वल-क्षाणि ‘बहूइंओ पुव्वकोडीओ’ बहूनि पूर्वकोटीः ‘बहूइंओ कोडाकोडीओ’ बहूनि पूर्व कोटाकोटीः ‘विणीयाए रायहाणीए’ विनीतायाः राजधान्याः प्रजाः पालयन् ‘बुल्ल हिमवंतगिरिसागरमेरागस्स य’ क्षुल्लहिमवद्गिरिसागरमर्यादाकस्य च क्षुल्लहिमवद्गिरिः उत्तरस्या दिशि क्षुद्रहिमवत्पर्वतः अपरत्र च दिशात्रये त्रयः सागराः तैः कृताया स्तुति करते हुए ऐसा कहा—हे नन्द ! आनन्द स्वरूप भरत चक्रवर्तिन् ! तुम्हारा जय हो तुम अजित शत्रुओं पर विजय पाओ हे भद्र—कल्याणस्वरूप भरत ! तुम्हारी बारंबार जय हो (भदंते) तुम्हारा कल्याण हो (अजिय जिणाहि) जिसे दूसरा वीर परास्त नहीं कर सके ऐसे शत्रु को तुम परास्त करो, (जियं पालयाहि) जो तुम्हारी आज्ञा माननेवाले हैं उनकी तुम रक्षा करो (जियम-ज्जे वसाहि) जित व्यक्तियों के बीच में आप रहो—अर्थात् परिजनों से आप सदा परिवृत बने-रहो (इंदोवि देवाणं) वैमानिक देवों के बीच में इन्द्र की तरह (चंदोवि ताराणं) ताराओं के बीच में चन्द्र की तरह (चमरोवि असुराणं) असुरों के बीच में असुरेन्द्र असुरराज चमर की तरह (धरणोवि नागाणं) नागकुमारों के बीच में धरण नामक नागकुमार की तरह तुम (बहूइं पुव्वसयसइस्साइं) अनेक लाख पूर्वतक (बहूइंओ कोडाकोडीओ) अनेक कोटाकोटी पूर्वतक (विणीयाए रायहाणीए) विनीता राजधानी की प्रजा का पालन करते हुए (बुल्लहि-स्वरूप भरत चक्रवर्ती’ । तमारे जय थाओ, तमे अजित शत्रुओ उपर विजय भेजवो. हे भद्र, कल्याण स्वरूप भरत ! तमारे बारंवार जय थाओ, (भदंते) तमाउ’ कल्याण थाओ. (अजिय जिणाहि) जेने ओणे वीर डरावी शत्रु नहि ओवा शत्रु ने तमे परास्त करे। (जियं पालयाहि) जेवो तमारी आज्ञातु पालनकरेओ तेमनी तमे रक्षा करे. (जियमज्जे वसाहि) जे व्यक्तियों ने आपे छती दीधेओ तेमनी वज्जे तमे रहे। ओटवेके यस्सिनोथी तमे सर्वदा परिवृत रहे। (इंदोवि देवाणं) वैमानिक देवोमा तमे इन्द्रनी जेम (चंदोवि ताराणं) ताराओनी वज्जे चन्द्रनी जेम, (चमरोवि असुराणं) असुरोनी वज्जे असुरेन्द्र = सुरराज यमरानी जेम (ध-रणो विव नागाणं) नागकुमारो नी वज्जे धरण नामक नागकुमारनी जेम (बहूइं पुव्वसयसइ-स्साइं) अनेक लाख पूर्व सुधी (बहूइंओ कोडाकोडीओ) अनेक कोटा कोटी पूर्व सुधी (विणीयाए

मर्यादा अवधिः सा अस्ति यस्मिन् तत्तथा तस्य एवभूतस्य च 'केवलकल्पस्य' केवल
कल्पस्य सम्पूर्णस्य 'भरहस्स वासस्स' भारतवर्षस्य 'गामागरणगरखेडकम्बडमडंबदोण-
मुहपट्टणासमसणिवेसेसु' ग्रामाकरनगरखेटकर्बटमडम्बद्रोणमुखपत्तनाश्रमसन्निवेशेषु तत्र
ग्रामः प्रसिद्धः आकरः यत्र सुवर्णाद्युत्पद्यते नगरम्-प्रसिद्धम् खेटः धूलिका
प्राकारसहित नदी पर्वतवेष्टितं च नगरम्, कर्बट कुत्सितनगरम् मडम्बम् एकयोज
नान्तरग्रामरहितम् द्रोणमुखम् जलस्थलपवेशम् पत्तनम् प्रसिद्धम् आश्रमं तापमानां
निवासस्थानम् नगरवाह्यप्रदेशः आभीरादि निवासस्थानम् सन्निवेशः आगन्तु निवास-
स्थानानि तेषु 'सम्मं' सम्यक् 'पयापालणोवज्जियलद्धजसे' प्रजापालनोपार्जितलब्धय-
शक्तः सम्यक् प्रजापालनेन उपार्जितम् एकत्रीकृत यल्लब्ध निजभुजपराक्रमै प्राप्तं
यशो येन स तथा पुनः कीदृशः 'महया जाव आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरइ' महता
यावत् आधिपत्यं पौरपत्यं यावत् विहर विचर, अत्र प्रथमयावत्पदात् 'महयाहयण-
मवतगिरिसागरमेरागस्स य केवलकल्पस्स भरहस्स वासस्स गामागरणगरखेडकम्बडमडंब
दोणमुहपट्टणासमसणिवेसेसु) उत्तर दिशा में क्षुद्रहिमवत्पर्वत एवं तीन दिशाओं में तीन
सागरों द्वारा जिसकी मर्यादा की गई है ऐसे इस केवल कल्प-सम्पूर्ण भरत क्षेत्र के ग्राम,
आकर नगर खेट कर्बट, मडम्ब, द्रोणमुख, पत्तन, और सन्निवेश इन सबस्थानों में (सम्मं)
अच्छो तरह से (पयापालणोवज्जियलद्धजसे महयाजाव आहेवच्च पोरेवच्च जाव विहरइ)
प्रजापतियों के पालन से उपार्जित किये हुए तथा अपने भुज पराक्रम से प्राप्त हुए यश से सम-
न्वित हुए दक्ष बजानेवालों के हाथों से जोर २ से जिनमें समस्त प्रकार के बाजे बजावे जा रहे
हैं ऐसे विविध नाटकों को एवं गीतों को देखते हुए सुनते हुए विपुल भोग भोगों का भोग-
भोग पद की व्याख्या पीछे की जा चुकी है, ग्राम आकर आदि स्थानों का स्वरूप भी पीछे के
स्थलों में प्रकट कर दिया है एवं "महया के जाव" से गृहीत नाट्यगीत वादिततन्त्रीतल०" परे
(रायहाणीप) विनीता राजधानी नी प्रजापति पालन करता (क्षुद्रहिमवतगिरिसागरमेरा
गस्स य केवलकल्पस्स भरहस्स वासस्स गामागरणगरखेडकम्बडमडंबदोणमुहपट्टणास-
मसणिवेसेसु) उत्तर दिशा में क्षुद्र हिमवत्पर्वत और त्रय दिशाओं में त्रय सागरों वडे
जेनी सीमा निश्चित करवाया आवी छे, जेवा जो केवलकल्प स पूर्ण भरतक्षेत्रना ग्राम,
आकर, नगर, खेट, कर्बट, मडम्ब, द्रोणमुख, पत्तन और सन्निवेश जो सबस्थानोमा
(सम्मं) सारीरीते (पयापालणोवज्जियलद्धजसे महया जाव आहेवच्च पोरेवच्च जाव
विहरइ) प्रजापति पालनशी समुपार्जित तेमज्ज पोताना भुज पराक्रमशी प्राप्त यशशी समन्वित
थेथेला अतुर बाध वगाडनाराज्योना हाथोथी जेर-जेरथी जेमां सब प्रकारना बाधो वगा-
डवाया आवी रह्या छे, जेवा विविध नाटकोने तेमज्ज गीताने जेतानां, साबणतां विपुल भोग
लोकोने लोगवता 'लोग' पदनी व्याख्या पूर्व करवाया आवी छे आन आकर आदि स्थानोनु
स्पष्ट पक्ष पूर्व प्रकरणा स्पष्ट करवाया आवेले छे तेमज्ज "महया जाव" थी गृहीत
'नाट्यगीतवादित तन्त्रीतल०' पदोनी व्याख्या पक्ष उल्लेख स्थानों में करवाया आवी छे.

दृगोयवाडयतंतीतलतालतुडिषणमुदंगपडुप्पगाडयवेण विउळाडं भोगभोगाडं भुंजमाणे' इति संग्रहः महताऽहतनादयगीतवादित तन्त्रीतलतालतूर्यधनमृदङ्गपटुप्रवादितरवेण विपुलान् भोगभोगान् भुञ्जान्, तत्र महता प्रधानेन बृहता वा रवेणेत्यग्रे सम्बन्धः, अहतः अनुवद्धो रवस्येति विशेषणम् नाट्यं नृत्तं तेन युक्तं गीतं तच्च वादितानि च तानि शब्दयुक्तानि कृतानि तन्त्री च वीणा तलौ च हस्तौ तालाश्च कंशिकाः- 'तुडियत्ति' तूर्याणि च पटहादीनि यानि तानि अहत नाट्यगीतवादिततन्त्रीतलतालतूर्याणि इति इतरेतरद्वन्द्वः तानि च तथा घनो मेघः तत्सदृशो यो मृदङ्गो ध्वनि गाम्भीर्य-साधर्यात् न चासौ पटुना दक्षेण प्रवादितश्च यः स घनमृदङ्गपटुप्रवादितः सचेति अहत नाट्यगीतवादिततन्त्रीतलतालतूर्यधनमृदङ्गपटुप्रवादिता इति पुनः इतरेतर द्वन्द्वः तेषां रवः शब्दः तेन रुग्णधूनेन अत्र मृदङ्गग्रहणं वाद्येषु मध्ये प्रधानमिति बोध्यम् त्रिपुञ्जानि प्रचुराणि भोगभोगान् भुञ्जान् भुञ्जन् आधिपत्यं पौरपत्यं यावत् अत्रापि यावत्पदात् 'सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसर सेणावच्च कारेमाणे पालेमाणे' चि स्वामित्वं भर्तृत्वं महत्तरत्वम् आङ्गेश्वरसेनापत्यं कारयन् पालयन् इति ग्राह्यम्, विहर विचरणं कुरु 'त्तिकददु जय जय सहं पउजंति' इति कृत्वा-इत्युक्तं जय जय शब्दं प्रयुज्जन्ति प्रयुज्जन्ते वदन्तोत्यर्थः 'तएणं से भरहे राया णयणमालासहस्सेहि पिच्छिज्जमाणे २' ततः खलु स भरतो राजा दर्शकप्रजागणानाम् नयनमालासहस्रैः प्रेक्ष्यमाणः २ अवलोक्यमानः २ 'वयणमाला सहस्सेहि अभियुज्जमाणे २' वचनमाला क व्याख्या भी कई स्थलो पर लिखी चुकी है, अतः वहीं से इसे जान लेनी चाहिये 'हर एक जगह इन की व्याख्या लिखने से ग्रन्थ का कलेवर वदजाने का भय रहता है, यहा मृदङ्ग का ग्रहण वाद्यो में प्रधान होने से किया गया है, और अपने साम्राज्य के अन्तर्गत मनुष्यों का आधिपत्य पौरपत्य यावत् करते हुए आनन्द के साथ अपने समय का सदुपयोग करो, यहाँ पद यावत् शब्द से 'सामित्तं, भट्टित्तं, महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्च कारेमाणे' इन पदों का संग्रह हुआ है, (त्तिकददु जयजयसह पउजंति) इस प्रकार कहकर उन सबनेपुनः आपकी जय हो जय हो इस प्रकार से जय जय शब्द का उच्चारण किया (तएणं से भरहे राया णयणमाला-सहस्सेहि अभियुज्जमाणे २) बारंबार हजारों वचनावलियों से स्तुत होते हुए (हिययमालासह-ओथी त्याथीन ओ स भ ध मा भणी देवु ओधंओ. दरेठ स्थाने ओनी व्याख्या लभवाथी अथं तुं कवेवर विस्तुत थं नय तेवा लयनी स आपना रहे छे अही भूद गनुं अहंषु व धोभा प्रधान होवाथी करवाभा आवेध छे अने पोताना साम्राज्यनी अहर मनुष्योनु आधिपत्यं, पौरपत्य यावत् करता आनंद पुरंठ पोताना सभयनो सदुपयोग करे। अही यावत् शब्द थी 'सामित्तं, भट्टित्तं, महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्च कारेमाणे' ओ पढोने अअहं थयो छे (त्तिकददु जय-जयसह पउजंति) आ प्रभाषे कहीने तेओ। सर्वं करीथी 'आपने। नय थाओ, नय थाओ।' आ प्रभाषे नय-नय शब्दने उक्त रवा लाग्या. (तएण से भरहे राया णयणमालासहस्सेहि अभियुज्जमाणे २) बार वर हजारों वचनमालाओथी स्तुति करता (हिययमाला सहस्सेहि पिच्छिज्जमाणे २) आ प्रभाषे ते करता राजा हजारों नेत्र

सहस्रैः अभिष्टुयमानः २ 'ह्रियमानासहस्मेहि उष्णं दिङ्जमाणे' ह्रियमानासहस्मेहि
पूर्ण दीयमानः पूर्ण दीयमान दशैकप्रजागणहृदयमहस्त्रेषु पूर्णतया निजवासस्थान दीय-
मानः इत्यर्थः मनोरहमालासहस्मेहि विच्छिज्यमाणे' मनोरथमानः सैः विच्छिज्यमान -
विशेषेण स्पृश्यमान 'कन्तिरुवमोहगगुणेहि पिच्छिज्यमाणे पिच्छिज्यमाणे कान्ति'
रूप सौभाग्यगुणैः प्रेक्ष्यमाणः २ 'अंगुलिमालासहस्मेहि दाङ्जमाणे २' अङ्गुलि-
मालासहस्रैः दृश्यमान २ 'दाहिणहृत्थेणं बहूणं णरणारीः सहस्साण अजलि मालामहस्साङ्
पडिच्छेमाणे पडिच्छेमाणे' दक्षिणहस्तेन बहूनां नरनारी सहस्राणाम् अजलिमालासह-
स्राणि प्रतीच्छन् प्रतीच्छन्स्वीकुर्वन् स्वीकुर्वन् 'भवणपंती स'हस्साङ् समङ्छमाणे २'
भवनमालासहस्राणि सप्ततिक्रमन् सप्ततिक्रमन् उल्लङ्घयन् र अनेक भवनानि तंतीतल
तुडियगीयवाइयरवेणं' तन्त्रीतलतूर्य गीतवादितरवेण तत्र गीतम् गानविशेषः तच्च
वादितानि च शब्दवन्ति कृतानि तन्त्री च वीणा तलो च सौ तूर्याणि च पटहादि
वाद्यविशेषाः यानि तानि गीतवादित तन्त्रीतलतूर्याणि मूले प्राकृतत्वान् आपत्वाद्वा
पदव्यत्ययः तेषां स्वः-शब्दस्तेन 'मधुरेण' मधुरेण 'मणहरेण' मनोहरेण मनोज्ञेन
स्मेहि पिच्छिज्यमाणे २) इम तरह वे भरत राजा हजारों नेत्रपंक्तियो द्वारा बारबार देखे जाते
हुए (वयणमालासहस्मेहि अभिष्टुयमाणे २) बारबार हजारों वचनावलियों से स्तुत होते हुए
(ह्रियमानासहस्मेहि उष्ण दिङ्जमाणे २) हजारों दर्शक जनो के हृदयों में अपना पूर्णरूप से
स्थान बताते हुए (मनोरहमालासहस्मेहि विच्छिज्यमाणे) जनता के हजारों मनोरथों द्वारा विशेष
रूप से स्पष्ट होते हुए (कन्तिरुव सोहगगुणेहि पिच्छिज्यमाणे २) कान्तिरूप एव सौभाग्य गुणों
को लेकर जनता के द्वारा अपने २ नेत्रों को पसार २ कर देखे गये (अंगुलिमाला सहस्मेहि
दाङ्जमाणे २) हजारों अंगुलियों द्वारा बारबार दिखाये गये (दाहिणहृत्थेण बहूणं णरणारी-
सहस्साणं अजलिमालासहस्साङ् पडिच्छेमाणे पडिच्छेमाणे) अपने दक्षिण हाथ से अनेक हजारों नर
नारी जनो द्वारा कृत हजारों अंजुलियों को बारं बार स्वीकार करते २ (भवणपंती सहस्साङ्
समङ्छमाणे २) हजारों भवनों की श्रेणि को पार करते २ (तंतीतलतुडियगीयवाइयरवेणं) गीतों में
५ कृतियों वडे बारबार दृश्यमान यथा (वयणमालासहस्मेहि अभिष्टुयमाणे २) बारबार
हजारों वचनावलाओं थी स स्तुतमानयथा, (ह्रियमाना सहस्मेहि उष्ण दिङ्जमाणे २) हजारों
हृदयैः जनानां हृदयेषां स पूर्ण पक्षे पोतानु स्थान भनानता, (मनोरहमाला सहस्मेहि
विच्छिज्यमाणे) प्रजनता हजारों मनोरथों वडे विशेष रूपमा स्पष्ट यथा, (कन्तिरुव सोहगग
गुणेहि पिच्छिज्यमाणे २) कान्ति, रूप अने सौभाग्य गुणोने लभने प्रभ वडे साश्चर्यं दृष्टिथी
नेवायेत, (अंगुलिमालासहस्मेहि दाङ्जमाणे २) हजारों आंगुलीओं वडे बारबार
निच्छिज्यमाणे (दाहिणहृत्थेण बहूणं णरणारी सहस्साणं अजलिमालासहस्साङ् पडि-
च्छेमाणे २) पोताना व मध्या हाथथी हजारों नर-नारीओं वडे जो अजलिओं भन.ववाभा
अपी छे, तेना बारबार स्वीकार करते, (भवणपंती सहस्साङ् समङ्छमाणे २) हजारों भवनों की
रमणीयश्रेणी ओने पार करते (तंतीतलतुडियगीयवाइयरवेणं) गीतों में वागता, तन्त्री, तल

मंजुमंजुणा' मञ्जुमञ्जुना अतिसरत्तेन 'घोसेणं' घोषेण शब्देन "अपडिबुज्झमाणे
 २' अप्रतिबुध्यन्तर अन्यद्वस्तु अजानन् अजानन् तत्रैव शब्दे लीनत्वात् 'जेणेव सए गिहे
 जेणेव सए भवणवडिसयदुवारे तेणेव उवागच्छइ' यत्रैव स्वकं गृहम् पैत्र्यं राजभवनं यत्रैव
 स्वकं भवनावतंसकद्वार जगद्धर्ति वासगृहशेखरी भूतराज योग्यवासगृहप्रतिद्वारमित्यर्थः तत्रैव
 उपागच्छति स भरतः 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'आभिसेक्क हत्थिरयण ठवेइ' आभिषेक्यम्
 हस्तिरत्नम् प्रमुखपट्टहस्तिनं स्थापयति 'ठवित्ता' स्थापययित्वा 'आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ
 पच्चोरुइ' आभिषेक्यात् पट्टहस्तिनः हस्तिरत्नात् प्रत्यवरोहति उत्तरति 'पच्चोरुहित्ता
 प्रत्यवरुद्ध ऊत्तीर्य 'सोलसदेवसहस्से सक्कारेइ सम्मानेइ' षोडशदेवसहस्राणि सत्कारयति
 अंजलिप्रभृतिभिः सम्मानयति अनुगमनदिना 'सक्कारित्ता संमानित्ता' सत्कार्यं सम्मान्य
 'वत्तीसं रायसहस्से सक्कारेइ सम्माणेइ' द्वात्रिंशत् राजसहस्राणि सत्कारयति सम्मानयति
 'सक्कारित्ता सम्माणित्ता' सत्कार्यं सम्मान्य 'सेणावइरयणं सक्कारेइ सम्माणेइ' सेनापतिरत्न
 वजते हुए तन्त्री तल झुटित-वाद्य विशेष-इनकी तुमुल गडगडाहट के साथ २ (मधुरेणं मणहरेण मंजु
 मंजुणा घोसेणं अपडिबुज्झमाणे अपडिबुज्झमाणे जेणेव सए गिहे जेणेव सए भवणवडिसयदुवारे । तेणेव
 उवागच्छइ) तथा होते हुए मधुर मनोहर, अत्यंत कर्णाप्रिय घोष में तल्लीन होने के कारण अन्य
 किसी दूसरी वस्तु की ओर ध्यान नहीं देते हुए वे भरत नरेश जहां पर पैतृक राजभवन था
 और उस में भी जहां पर जगद्धर्ती वासगृहों में मुकुट रूप अपना निवासस्थान था उसके द्वार
 पर आये (उवागच्छित्ता आभिसेक्कं हत्थिरयणं ठवेइ) वहां आकर उन्होंने अपने आभिषेक्य हस्ति
 रत्न को खड़ा कर दिया (ठवित्ता आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुइइ) आभिषेक्य हस्तिरत्न
 को खड़ा करके फिर वे उससे नीचे उतरे (पच्चोरुहित्ता सोलसदेवसहस्से सक्कारेइ सम्माणेइ)
 नीचे उकर उन्होंने ने सोलह हजार देवों का अनुगमनादि द्वारा सत्कार किया और सम्मान किया
 (सक्कारित्ता सम्माणित्ता वत्तीस रायसहस्से सक्कारेइ, सम्माणेइ) देवों का सत्कार और स
 न्मान करके फिर उन्होंने ने ३२ हजार राजाओं का सत्कार एवं सम्मान किया (सक्कारित्ता
 सम्माणित्ता सेणावइरयणं सक्कारेइ समाणेइ) सत्कार सम्मान करके फिर अपने सेनापतिरत्न का
 झुटित-वाद्यविशेष-ओ सर्वना तुमुल गडगडाहट युक्त शब्द साथे (मधुरेणं मणहरेणं मंजु
 मंजुणा घोसेणं अपडिबुज्झमाणे अपडिबुज्झमाणे जेणेव सए गिहे जेणेव सए भवणवडिसयदुवारे
 तेणेव उवागच्छइ) तेमञ्जु मधुर, मनोहर, अत्यंत कर्णाप्रिय घोषमा तल्लीन होवाथी भीम
 कौपीयण्य वस्तु तरङ्ग नेनु ध्यान नहीं ओवा ते भरत नरेश न्या पैतृक राजभवन इतुं अने
 तेमा पथु न्या जगद्धर्ती वास गृहोमा मुकुटरूप पोतानु निवासस्थान इतुं, तेना द्वारसाथे
 पडेअयां (उवागच्छित्ता आभिसेक्क हत्थिरयणं ठवेइ) त्या आवीने तेमथे पोताना आभि-
 सेक्क हत्थिरयण ने उलोराभीने पथी तेओ नीचे उतर्यां (पच्चोरुहित्ता सोलसदेवसहस्से
 सक्कारेइ सम्माणेइ) नीचे उतरीने तेमथे सोलसहजार देवाने अनुगमनादि वडे सत्कार क्यो
 अने सम्मान क्युं (सक्कारित्ता सम्माणित्ता वत्तीस रायसहस्से सक्कारेइ सम्माणेइ) देवाने।
 सत्कार अने सम्मान करीने पथी तेमथे उर उलोरा राजओ ने। सत्कार तेमञ्जु सम्मान

सत्कारयति सम्मानयति 'सक्कारित्ता सम्माणित्ता' मत्कार्य सम्मान्य 'एवं गाथावहरयण
वद्धहरयणं पुरोहितरयणं सक्कारेइ सम्माणेइ' एवम् अमुना प्रकारेण गाथापतिगन्तं वद्धकि-
रत्न पुरोहितरत्नं च सत्कारयति सम्मानयति 'सक्कारित्ता सम्माणित्ता' सत्कार्य सम्मान्य
'तिणिण सट्ठे सूअसए सक्कारेइ सम्माणेइ' त्रीणि पट्ठानि पट्ठयधिकानि सूपशतानि रसवती-
कारशतानि सत्कारयति सम्मानयति 'सक्कारित्ता सम्माणित्ता' सत्कार्य सम्मान्य 'अट्टारम
सेणिप्पसेणीओ सक्कारेइ सम्माणेइ' अष्टादश श्रेणिः प्रश्रेणीः सत्कारयति सम्मानयति
'सक्कारित्ता सम्माणित्ता' सत्कार्य सम्मान्य 'अण्णे वि बहवे राईसर जाव सत्थवाहप्पभि
ईओ सक्कारेइ सम्माणेइ' अन्यानपि बहून् राजेश्वर यावत्सार्थवाहप्रभृतीन् सत्कारयति
सम्मानयति अत्र यावत्पदात् माडम्बिक कौटुम्बिक मन्त्रि महामन्त्रि गणकदौवारिकाऽमा-
सत्कार और सम्मान किया (सक्कारित्ता सम्माणित्ता एवं गाथावहरयण वद्धहरयण पुरोहितरयणं
सक्कारेइ सम्माणेइ) सेनापतिरत्न के सत्कार और सम्मान हो जाने के बाद फिर उन्होंने गाथापति
रत्न का वद्धकिरत्न का एव पुरोहितरत्न का सत्कार और सम्मान किया (सक्कारित्ता सम्माणित्ता
तिणिणसट्ठे सूअसए सक्कारेइ सम्माणेइ) इन सबके सत्कार और सम्मान हो चुकने पर उम भरत
नरेशने तीनसौ १० रसवती कारको का रसोईयो का—सत्कार एव सम्मान किया (सक्कारित्ता
सम्माणित्ता अट्टारमसेणिप्पसेणीओ सक्कारेइ, सम्माणेइ) इन का सत्कार सम्मान हो जाने के
बाद फिर भरत राजा ने अठारह श्रेणिप्रश्रेणि जनों का सत्कार और सम्मान किया (सक्कारित्ता
सम्माणित्ता अण्णे वि बहवे राईसर जाव सत्थवाहप्पभिईओ सक्कारेइ, सम्माणेइ) इनका सत्कार
सम्मान हो जाने पर फिर भरत राजा ने और भी अनेक राजेश्वर आदि से लेकर सार्थवाहो
तक के जनसमूह का सत्कार और सम्मान किया यहां यावत्पदसे "माडम्बिक, कौटुम्बिक,
ठु" (सक्कारित्ता सम्माणित्ता सेनावहरयणं सक्कारेइ सम्माणेइ) सत्कार तेमहु सम्मान करी
ने पछी पोताना सेनापति ने तेण्ण सत्कार कथो' अने तेनु सम्मान कथु' (सक्कारित्ता
णिता एव गाथावह रयणं वद्धहरयणं पुरोहितरयणं सक्कारेइ सम्माणेइ) सेनापति
रत्नने। सत्कार अने सम्मान करीने पछी तेण्ण गाथापति रत्नने। वद्धकिरत्न ने। अने
पुरोहित रत्न ने। सत्कार अने सम्मान कथु' (सक्कारित्ता सम्माणित्ता तिणिण सट्ठे सूअसए
सक्कारेइ सम्माणेइ) ओ सर्वेना सत्कार अने सम्माननी विधि समाप्त थई त्थार भाइ ते
भरत नरेशे त्रिषुसो साधठ रसवतीकारकोने—सोअथिओने। सत्कार कथो' अने तेमहु
सम्मान कथु' (सक्कारित्ता सम्माणित्ता अट्टारम सेणिप्पसेणीओ सक्कारेइ, सम्माणेइ) ओ
सर्वेनी सत्कार अने सम्मान विधि समाप्त थई त्थार भाइ भरत महाराजने अठार श्रेणि
प्रश्रेणिओने। सत्कार कथो' अने तेमहु सम्मान कथु' (सक्कारित्ता सम्माणित्ता अण्णे वि
बहवे राईसर जाव सत्थवाहप्पभिईओ सक्कारेइ सम्माणेइ) ओ सर्वेना सत्कार अने
सम्मान विधि पूरी कथो पछी अकपती श्री भरत राजने गीला पणु अनेक राजेश्वर आदिथी
भाडी ने सार्थवाहो सुधीना जन समूहोने। सत्कार कथो' अने तेमहु सम्मान कथु'
अही यावत् पदथी "माडम्बिक, कौटुम्बिक मन्त्री, महामन्त्री, गणक, दौवारिक, अमात्य

कोटशो भरतः कीदृशश्च राजभवनमित्याह—‘जहा कुवेरोव्व’ इत्यादि । यथा कुवेर इव देवराजः कैलासशिखरशृङ्गभूतमिति यथा कुवेरः तथा देवराजः लोकपालो भरतोऽपि संपत्तिशालीतिभावः यथा कैलासं—स्फटिकाचलं किं स्वरूपं भवनावतसकं शिखरि शृङ्गे पर्वतशिखरं तद्वत् तत्सदृशं भरतस्य राजभवनमपि सादृश्यं च उच्चत्वेन सुन्दरत्वेन चेतिभावः ‘तएणं से भरहे राया मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिअण पच्चुवेक्खइ’ ततः खलु स भरतो महाराजा मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनं प्रत्युपेक्षते, ततः खलु तदनन्तरं किल स महाराजा भरतः मित्राणि मुहूढं निजका मातापितृभ्रात्रादयः । स्वजनाः पितृव्यादयः, सम्बन्धिनः—श्वसुरादयः परिजनाः—दासादयः अत्र एकवद्भावात् एकवचनं द्वितीयान्तं समस्तपदं बोध्यम् प्रत्युपेक्षते कुशलप्रश्नादिभिरापृच्छय संभाषते इत्यर्थः अथवा चिरकालाददृष्टत्वेन मित्रादीन् स्नेहदृशा पश्यतीत्यर्थः ‘पच्चुवेक्खित्ता’ प्रत्युपेक्ष्य ‘जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ’ यथैव मज्जनगृहं स्नानगृहं तत्रैव उपागच्छति ‘उवागच्छित्ता’ उपागत्य ‘जाव मज्जणघराओ पडिणिकखमइ’ यावत् मज्जनगृहात् स्नानगृहात् प्रतिनिष्क्रामति निर्गच्छति स भरतः, अत्र यावत्पदात् तत्रैव कृतस्नानः सन् इति बोध्यम् ‘पडिणिकखमित्ता’ प्रतिनिष्क्रम्य—निर्गत्य ‘जेणेव भोयणमंडवे तेणेव उवागच्छइ’ यत्रैव भोजनमण्डपः भोजनालयः तत्रैव ‘उपागच्छति’ ‘उवागच्छित्ता’ उपागत्य ‘भोय- (तएणं से भरहे राया मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिअण पच्चुवेक्खइ) वहां जाकर उस भरत महाराजा ने अपने मित्र जनो से अपने माता पिता भाई आदि जनो से, स्वजनोसे काका आदि जनो से असुर आदि सम्बन्धी जनो से, और दाम आदि परिजनो से कुशलता पूछी अथवा चिरकाल के बाद देखने से मित्रादिको को उसने स्नेह को दृष्टि से देखा (पच्चुवेक्खित्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ) सब के साथ संभाषण करने या स्नेहाद्रि दृष्टि से देखने के अनन्तर वह भरत नरेश जहां पर स्नानगृह था वहां पर गया (जाव मज्जणघराओ पडिणिकखमइ) वहां पर जाकर के उसने — यावत्— स्नान किया, और स्नान करके फिर वह स्नान था से (पडिणिकखमित्ता) बाहिर आकरके (जेणेव भोयणमंडवे तेणेव उवागच्छइ) जहां पर भोजन मंडप था वहां पर आया (उवागच्छित्ता भोयणमंडवसि सीहासणवरगए अट्टममत्त पारेइ) वहां आकर पोताना प्रधान राजभवननी अंदर प्रविष्ट थयो। (तएणं से भरहे राया मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिअण पच्चुवेक्खइ) त्यां पडोत्थीने ते भरत राजाओ पे ताना मित्रजने नी पोताना माता—पिता, भाई वगैरानी, स्वजनोनी काकावगैरानी अथुरावगैरे सबधी जनो नी अने दास—दासी परिजनोनी कुशलता पूछीअथवा जेभने ते चिरकाण पछी जेध थकथो छे जेवा ते मित्रादिकोने ते महाराज श्री भरते स्नेह दृष्टिथी जेया। (पच्चुवेक्खित्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ) सर्पनी साथे संभाषण कर्या भाइ अथवा सर्वने स्नेह दृष्टिथी जेया भाइ ते भरत नरेश जया स्नान गृह छटु त्यां गथो (जाव मज्जणघराओ पडिणिकखमइ) त्यां जधने तेथे यावत् स्नान कथुं अने स्नान कराने पछी ते स्नान घरथी (पडिणिकखमित्ता) पडार आवीने (जेणेव भोयणमंडवे तेणेव

ત્યચેટપીઠમર્દક નગરનિગમ શ્રેષ્ઠિ સેનાપતિ તથા સાર્થવાહ પ્રમુતિ પદાત્ દૂતસન્ધિપાલ
 પૂતાનિ પદાનિ ગ્રાહ્યાનિ એતેષાં વ્યાખ્યાનમ્ પતત્ સૂત્રાન્યવહિતે સપ્તવિંશતિતમે સૂત્રે
 દ્રષ્ટવ્યમ્ 'સત્કારિત્તા સમ્માણિત્તા' સત્કાર્ય સમ્માન્ય 'પદિવિમજ્જેઈ' પ્રતિવિસર્જયતિ નિજ-
 વાસગમનાય સર્વાન્ આદિશતીત્યર્થઃ, અથ સ પદખંડાધિપતિ શ્રી ભરતો મહારાજા યાવત્
 પરિચ્છદઃ યથા વાસગૃહં પ્રવિશતિ તથા બાહ 'ઇત્થીરયણેણં' इत्यादि 'इत्थीरयणेणं' वत्तीसाए
 उडुकल्लाणिया सहस्सेहि वत्तीसाए जणवयःल्लाणिया सहस्सेहि वत्तीसाए वत्तीस-
 इवद्धेहि णाडयसहस्सेहि सद्धिं संपरिवुडे भवणवरवहिसंगं अईइ जहा कुवेरोव्व देवराया
 केलाससिहरिसिगभूर्यति' स्त्रीरत्नेन सुमद्रया तथा द्वात्रिंशत्संख्याका ऋतुकल्याणिका
 सहस्रैः द्विंशत् सहस्रसंख्यायुक्ताभिः अमृतकन्यात्वेन सदा ऋतुषु पदसु कल्याणीभिः
 राजकन्याभिः तथा द्वात्रिंशता जनपदकल्याणिका सहस्रैः द्वात्रिंशत्सहस्र संख्यायुक्ताभिः
 जनपदाग्रणी कल्याणिकाभिः राजकन्याभिः, तथा द्वात्रिंशता द्वात्रिंशद् बद्धै द्वात्रिंशत्पात्र
 युक्तैः नाटकसहस्रैः द्वात्रिंशत्पात्रवद्ध द्वात्रिंशत्सहस्रसंख्यकनाटकैः सार्द्धं संपरिवृत्तः वेष्टितः
 भवनवरावतंसकं श्रेष्ठभवनावतंसकं स्वप्रधानाजभवनम् अत्येति प्रविशति स भरतः तत्र
 मंत्री महामंत्री गणक दौवारिक, अमात्य, चेटपीઠમર્દક, નગર નિગમ શ્રેષ્ઠી, સેનાપતિ દૂત સન્ધિપાલ
 इन सबका ग्रहण हुआ है इन पदों की व्याख्या २७ वे सूत्र में कर दी गई है ।

(સત્કારિત્તા સમ્માણિત્તા પદિવિમજ્જેઈ) સત્કાર સન્માન કરકે ફિર ભરત રાજા ને
 इन्हें अपने २ स्थान पर जाने की आज्ञा दे दी (इत्थीरयणेण वत्तीसाए उडुकल्लाणिया सहस्सेहि
 वत्तीसाए जणवयःल्लाणिया सहस्सेहि वत्तीस इवद्धेहि णाडयसहस्सेहि सद्धिं संपरिवुडे भवण-
 वरवहिसंगं अईइ जहा कुवेसेव्व देवराया केलाससिहरिसिगभूर्यति) इसके अनन्तर सुमद्रा नामक
 स्त्रीरत्न एव ३२ हजार ऋतुकल्याणिकाओं से छ हो ऋतुओं में आनन्ददायनी राजकन्याओं
 से ३२ हजार जनपदाग्रणियों की कन्याओं से एवं ३२-३२ पात्रों से सवद्धित ३२
 हजार नाटकों से युक्त हुआ वहकुवेर के जैसा भरत राजा ने कैऋसगिरि के शिखर के तुल्य
 अपने श्रेष्ठ भवनावतंसक के भीतर अपने - प्रधान राजभवन के भीतर प्रवेश किया
 चेट, પીઠમર્દક, નગરનિગમ શ્રેષ્ઠિ સેનાપતિ સન્ધિપાલ એસર્વપદોઅહુષ થયા છે. એ
 પદોની વ્યાખ્યા ૨૭મા સુત્રમાં કરવાના આવી છે

(સત્કારિત્તા સમ્માણિત્તા પદિવિમજ્જેઈ) સર્વને સત્કૃત તેમજ સન્માનિત કરીને શ્રીભરત
 રાજાએ તેમને પોતપોતાનાં સ્થાન ઉપર જવાની આજ્ઞા આપી. (इत्थीरयणेण वत्तीसाए
 उडुकल्लाणियासहस्सेहि वत्तीसाए जणवयःल्लाणियासहस्सेहि वत्तीसइवद्धेहि णाडय
 सहस्सेहि सद्धिं संपरिवुडे भवणवरवहिसंगं अईइ जहा कुवेरोव्व देवराया केलाससिहरि
 सिगभूर्यति) ત્યાર બાદ સતિ સુભદ્રા નામક સ્ત્રી રતનથી, ૩૨ હજાર ઋતુકલ્યાણિકાઓથી ૬
 ઋતુઓમાં આનંદદાયિની રાજકન્યાઓથી, ૩૨ હજાર જનપદાગ્ર ઓની કન્યાઓથી
 તેમજ ૩૨-૩૨ પાત્રોથી સંબદ્ધ ૩૨ હજાર નાટકોથી સમન્વિત થયેલો અને કુબેર જેવો
 લાગતો તે ભરત રાજા કેલાસ ગિરિના શિખર તુલ્ય પોતાના શ્રેષ્ઠ ભવનાવતંસકની અંદર-

कोटशो भरतः कीदृशश्च राजभवनमित्याह—‘जहा कुवेरोन्व’ इत्यादि । यथा कुवेर इव देवराजः कैलासशिखरशृङ्गभूतमिति यथा कुवेरः तथा देवराजः लोकपालो भगतोऽपि संपत्तिशालीतिभावः यथा कैलास-स्फटिकाचलं किं स्वरूप भवनावतसक शिखरि शृङ्गे पर्वतशिखरं तद्वत् तत्सदृशं भरतस्य राजभवनमपि सादृश्यं च उच्चत्वेन सुन्दरत्वेन चेतिभावः ‘तएणं से भरहे राया मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिअण पञ्चुवेक्खइ’ ततः खल्ल स भरतो महाराजा मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनं प्रत्युपेक्षते, ततः खल्ल तदनन्तरं किल स महाराजा भरतः मित्राणि सुहृद् निजका मातापितृभ्रात्रादयः । स्वजनाः पितृव्यादयः, सम्बन्धिनः—असुरादयः परिजनाः—दासादयः अत्र एकवद्भावात् एकवचनं द्वितीयान्तं समस्तपदं बोध्यम् प्रत्युपेक्षते कुशलप्रश्नादिभिरापृच्छय सभापते इत्यर्थः अथवा चिरकालाददृष्टत्वेन मित्रादीन् स्नेहदृशा पश्यतीत्यर्थः ‘पञ्चुवेक्खित्ता’ प्रत्युपेक्ष्य ‘जेणेव मज्जनघरे तेणेव उवागच्छइ’ यथैव मज्जनगृहं स्नानगृहं तत्रैव उपागच्छति ‘उवागच्छित्ता’ उपागत्य ‘जाव मज्जनघराओ पडिणिकखमइ’ यावत् मज्जनगृहात् स्नानगृहात् प्रतिनिष्क्रामति निर्गच्छति स भरतः, अत्र यावत्पदात् तत्रैव कृतस्नानः सन्न इति बोध्यम् ‘पडिणिकखमित्ता’ प्रतिनिष्क्रम्य—निर्गत्य ‘जेणेव भोयणमंडवे तेणेव उवागच्छइ’ यत्रैव भोजनमण्डपः भोजनालयः तत्रैव ‘उपागच्छति’ ‘उवागच्छित्ता’ उपागत्य ‘भोय- (तएणं से भरहे राया मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिअण पञ्चुवेक्खइ) वहां जाकर उस भरत महाराजा ने अपने मित्र जनो से अपने माता पिता भाई आदि जनो से, स्वजनोसे काका आदि जनो से असुर आदि सम्बन्धी जनो से, और दास आदि परिजनो से कुशलता पूछी अथवा चिरकाल के बाद देखने से मित्रादिको को उसने स्नेह को दृष्टि में देखा (पञ्चुवेक्खित्ता जेणेव मज्जनघरे तेणेव उवागच्छइ) सब के साथ सभाषण करने या स्नेहाद् दृष्टि से देखने के अनन्तर वह भरत नरेश जहां पर स्नानगृह था वहां पर गया (जाव मज्जनघराओ पडिणिकखमइ) वहां पर जाकर के उसने — यावत्— स्नान क्रिया, और स्नान करके फिर वह स्नान था से (पडिणिकखमित्ता) बाहिर आकरके (जेणेव भोयणमंडवे तेणेव उवागच्छइ) जहां पर भोजन मंडप था वहां पर आया (उवागच्छित्ता भोयणमंडवंसि सीहासणवरगए अट्टममत्त पारेइ) वहां आकर पौताना प्रधान राजभवननी अहर प्रविष्ट थयो (तएणं से भरहे राया मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिअण पञ्चुवेक्खइ) त्हां पडोयीने ते भरत राजाये पौताना मित्रजने नी पौताना माता-पिता, भाई वगेरनी, स्वजनोनी काकाविगेरनी अशुरावगेरे सबधी जनो नी अने दास-दासी परिजनोनी कुशलता पूछीअथवा जेभने ते चिरकाण पछी जेध थअथो छे जेवा ते मित्रादिकोने ते महाराज श्री भरते स्नेह दृष्टिथी जेथा. (पञ्चुवेक्खित्ता जेणेव मज्जनघरे तेणेव उवागच्छइ) सर्वनी साथे सभाषण कर्था भाइ अथवा सर्वने स्नेह दृष्टिथी जेथा भाइ ते भरत नरेश जेथा स्नान गृह छत्तु त्हां जेथा (जाव मज्जनघराओ पडिणिकखमइ) त्हां जेधने तेथे यावत् स्नान कर्तुं अने स्नान करीने पछी ते स्नान घरथी (पडिणिकखमित्ता) गहार आवीने (जेणेव भोयणमंडवे तेणेव

ખમંડવંસિ સુદાસનવરગણ અદ્વમમત્તં પારેઈ' મોજનમણ્ડપે સુદાસનરવગતઃ સન્ ૫ મરતઃ
અદ્વમમત્ત પારયતિ અહોરાત્રં દિનત્રયમુપોષ્ય તતઃ પરં પારણાં કરોતીત્યર્થઃ 'પારિત્તા'
પારયિત્વા પારણાં કૃત્વા 'ઉપ્પિ પાસાયવરગણ ફુટ્ટમાણેહિં મુદ્ગમત્થપ્પહિં વત્તીમહ્વદ્દેહિં
ણાહપ્પહિં ઉવ્વલાલિજ્જમાણે ઉવ્વલાલિજ્જમાણે ઉવ્વણચ્ચિજ્જમાણે ઉવ્વણચ્ચિજ્જમાણે ઉવ્વગિ-
જ્જમાણે ઉવ્વગિજ્જમાણે મહયા જાવ મુંજમાણે વિહરઈ' ઉપરિ પ્રાસાદવરગતૈ સ્ફુટન્નિઃ
મુદ્દક્કમસ્તકૈઃ દ્વાન્નિશ્વદ્દેહૈઃ નાટકૈરુપલાલ્યમાનઃ ૨ ઉપનૃત્યમાનઃ ૨ ઉપગીયમાનઃ ૨
મહતા યાવત્ શુરુજાનો વિહરતિ તિષ્ઠતિ સ મરતઃ અત્ર યાવત્ આહતનાટ્યગીતવાદિત
તન્ત્રીતલ્લાલતૂર્યધનમુદ્દક્કપદુપ્રવાદિતરવેણ વિપુલાન્ મોગમોગાન્ इति ગ્રાહ્યમ્ एषां
વ્યાખ્યાનમ્ અસ્મિન્નેવ સૂત્રે પૂર્વે દ્રષ્ટવ્યમ્ ॥૨૯॥

મૂલમ્—તણ તસ્સ મરહસ્સ રણ્ણો અણ્ણયા કયાઈ રજ્જધુરં ચિંતેમાણ-
સ્સ ઇમેયારૂવે જાવ સમુપ્પજ્જિતથા, અભિજિણં મણિઅગબલવીરિઅ-
પુરિસક્કાર પર્વકમેણ ચુલ્લહિમવંતગિરિસાગરમેણ કેવલકપ્પે મરહે વાસે,

વહ એક શ્રેષ્ઠ સુદાસન પર બેઠ ગયા ઓર उसने अपने द्वारा गृहीत अद्वममक्त की तपस्या को
पारणा क्रिया (पारित्ता उप्पि पासायवरगण फुट्टमाणेहिं मुदगमत्थपपहिं वत्तीसइवद्वेहिं णाहपहिं
उव्वलालिज्जमाणे २ उव्वणच्चिज्जमाणे २ उव्वगिज्जमाणे २ महया जाव मुंजमाणे विहइ) पारणा
करके वह मरत अपने श्रेष्ठ प्रासाद के भीतर चला गया और वहा वह जिनमें मृदङ्गो को अविरलध्वनि
हो रही है ऐसे ३२ पात्रो से बद्ध नाटको द्वारा, बारंवार उपलालित होता हुआ, बारं नृत्यों
का अवलोकन करता हुआ बारंवार गायकों के गानो द्वारा स्तुत होता हुआ यावत् भोगभोगो
को भोगने लगा यहा यावत्पद से "अहत नाट्यगीतवादित तन्त्री तल्लालवुटतवनमृदङ्गः
पदुप्रवादितरवेण विपुलान् भोगभोगान्" इस पाठ का समग्र हुवा है । नाट्य गीत आदि पदो
की व्याख्या पीछेकई स्थलो पर लिखी जा चुकी है अतः उसे वहाँ से जानलेनी चाहिये ॥२९॥

उवागच्छइ) त्याં ભોજન મંડપ હતો, ત્યાં ગયા (उवागच्छित्ता भोजणमंडवंसि सीहासन
वरगण अद्वममत्तं पारेइ) त्यां जईने ते अेष्ठ श्रेष्ठ सुधासन उपर ऐसी गया अने तेणे
पोतानी वडे गृहीत अष्टम अक्त तपस्थाना पारणु कर्था (पारित्ता उप्पि पासायवरगण
फुट्टमा णेहिं मुदगमत्थपपहिं वत्तीसइवद्वेहिं णाहपहिं उव्वलालिज्जमाणे २ उव्वणच्चिज्जमाणे २
उव्वगिज्जमाणे २ महया जाव मुंजमाणे विहइ) पारणु' કરીને પછી તે ભરત મહારાજ
પોતાના શ્રેષ્ઠ પ્રાસાદ ૧ અહર ગયા, અને ત્યા તે જેમાં મૃદગોનો અવિરલ ધ્વનિ થઇ રહ્યો છે
એવા ૩૨ પાત્રોથી બદ્ધ નાટકો વડે વરવાર ઉપલાલિત થતો વારવાર નૃત્યોનું અવલોકન
કરતો વારંવાર ગાયકોના સ ગીતથી સ સ્તુત થતો યાવત્ ભોગભોગો ભોગવવા લાગ્યા અહીં
યાવત્ પદથી "અહતનાટ્યગીતવાદિત તન્ત્રીતલ્લાલતૂર્યધનમુદ્દક્કપદુપ્રવાદિતરવેણ વિપુલાન્
મોગમોગાન્" એ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે. નાટ્ય ગીત વગેરે પદોની વ્યાખ્યા પહેલાં અનેક
સ્થલો પર કરવામાં આવી છે. એથી જિજ્ઞાસુ જનો ત્યાથી બાંધી લે. ॥૨૯॥

तं सेयं खलु मे अप्पाणं महया रायाभिसेएणं अभिसेएणं अभिमिन्त्रावित्त-
 एत्तिकद्दु एवं संपेहेति संपेहित्ता कल्लं पाउप्पभाए जाव जलंते जेणेव
 मज्जणघरे जाव पडिणिक्खपइ पडिणिक्खमित्ता जेणेव वाहिरिया उवट्ठाण-
 साला जेणेव सीहामणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सीहामणवरगए
 पुरत्थाभिमुहे णिसीयति णिसीइत्ता सोलसदेवसहस्से वत्तीसं रायवरसह-
 स्से सेणावइरणे जाव पुरोहियरणे तिण्णि सट्ठे सूअसए अट्ठारस
 सेणिप्पसेणीओ अण्णेअ वहवे राईसर तलवर जाव संत्थवाहप्पभियओ
 सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी अभिजिएणं देवाणुप्पिया! मए णिअग-
 बल वीरिअ जाव केवलकप्पे भरहे वासे तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया! ममं
 महया महया रायाभिसेयं वियरह, तए णं से सोलसदेवसहस्सा जाव-
 प्पभियओ भरहेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ करयल मत्थए अंजलि
 कद्दु भरहस्स रण्णो एयमइं सम्मं विणएणं पडिसुणेंति तए णं से भरहे
 राया जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता जाव अट्ठम-
 भत्तिए पडिजारमाणे विहरइ । तए णं से भरहे राया अट्ठमभत्तंसि परि-
 णममाणंसि आभिओगिए देवे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी खिप्पा-
 मेव भो देवाणुप्पिया! विणीयाए रायहाणीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एगं
 महं अभिसेयमण्डवं विउव्वेह विउव्वित्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।
 तए णं ते आभिओगा देवा भरहेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा जाव
 एवं सामित्तिआणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति पडिसुणित्ता विणी-
 याए रायहाणीए उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति अवक्कमित्ता-
 वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति समोहणित्ता संखिज्जाइं जोयणाइं दंडं
 णिसिरति, तं जहा रयणाणं जाव रिट्ठाणं अहाबायरे पुग्गले परिसाडेंति
 परिसाडित्ता अहासुहुमे पुग्गले परिआदिअंति, परिआदित्ता दुच्चंपि
 वेउव्वियसमुग्घाएणं जाव समोहणंति समोहणित्ता बहुसयरमणिज्जं भूमि-
 भाग विउव्वंति, से जहानामए आलिगपुक्खरेइ वा० तस्सणं बहुसरम-

‘तएणं तस्स भरहस्सरण्णो अण्णया कयाइं । इत्यादि

टीकार्थ—तएण तस्स भरहरस रण्णो अण्णया कयाइ रउजघुरं चित्तेमाणस्स इमेयारूवे जाव
 समुप्पजित्था) एक दिन की बात है कि जब श्री भरत राजा अपने राज्य शासन के

णिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थणं महं एगं अभिसेयमंडवं
 विउव्वंति अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं जाव गंधवट्ठिभूयं पेच्छाघरमंडवं-
 वण्णगो त्ति, तस्सणं अभिसेयमंडवस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थणं महं एगं
 अभिसेयपेः विउव्वंति अच्छं सण्हं, तस्स णं अभिसेयपेढस्स तिदिसिं
 तओ तिसोवाणपडिख्वए विउव्वंति तेसिण तिसोवाणपडिरूपगाणं
 अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते जाव तोरणा, तस्स णं अभिसेय-
 पेढस्स बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते तस्सणं बहुसमरमणिज्जस्स
 भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थणं महं एगं सीहासण विउव्वंति
 तस्सणं सीहासणस्स अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते जाव दामवण्णं
 समत्तंति तए णं ते देवा अभिसेयमंडवं विउव्वंति विउव्वित्ता जेणेव भरहे
 राया जाव पच्चप्पिणंति । तए णं से भरहे राया आभिओगाणं देवाणं
 अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठ जाव पोसहसालाओ पडिणि-
 कखमइ, पडिणिकखमित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं
 वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिक्कपेह
 पडिक्कपित्ता हयगय जाव सण्णाहेत्ता एयमाणत्तिवं पच्चप्पिणह जाव पच्च-
 प्पिणंति तएणं से भरहे राया मज्जणघरं अणुपविमइ जाव अंजणगिरि-
 कूडसंण्णिमं गयवइं णखवईदूरूढे तए णं तस्स भरहस्स रण्णो अभिसेक्कं
 हत्थिरयण दूरूढस्स समाणस्स इमे अट्ठमंगलगा जो चेव गमो विणीयं
 पविसमाणस्स सोचेव णिकखममाणस्स वि जाव अप्पडिबुज्झमाणे विणीयं
 रायहाणीयं मज्झेणं णिगच्छइ णिगगच्छित्ता जेणेव विणीयाए राय-
 हाणीए उत्तर रत्थिमे दिसीभाए अभिसेयमंडवे तेणेव उवागच्छइ उवाग-
 च्छित्ता अभिसेयमंडवदुवारे आभिसेक्कं हत्थिरयणं ठावेइ ठावित्ता आभि-
 सेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहए पच्चोरुहित्ता इत्थीरयणेणं बत्तीसाए
 उडुकल्लणिया सहस्सेहि बत्तीसाए जणवयकल्लाणिया सहस्सेहि बत्तीसाए
 बत्तीसइ बट्ठेहि णाडगसहस्सेहि सद्धिसंपखिउडे अभिसेयमंडवं अणुपविसइ,

अणुपविसिता जेणेव अभिसेयपेढे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता अभि-
सेयपेढं अणुपदाहिणी करेमाणे करेमाणे पुरत्थिमिल्लेणं तिसोवाण
पडिरूवणं दूरूहइ दूरूहिता जेणेव सीहामणे तेणेव उवागच्छइ उवाग-
च्छिता पुरत्थाभिमुहे साण्णसण्णेत्ति । तएण तस्स भरहस्स रण्णो वत्तीसं
रायसहस्सा जेणेव अभिसेयमंडवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता अभि-
सेयमंडवं अणुपविसंति अणुपविसिता अभिसेयपेढं अणुपयाहिणी करे-
माणा अणुपयाहिणी करेमाणा उत्तरिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवणं जेणेव
भरहे राया तेणेव उवागच्छंति उवागच्छिता कस्यलजाव अंजलिं कददु
भरहं रायाणं जणेणं विजएणं बद्धावेत्ति बद्धावित्ता णच्चासण्णे नाइदूरे
सुस्सूसामाणाजाव पज्जुवासंति । तएणं तस्स भरहस्स रण्णो सेणाव-
इस्यणे जाव सत्थवाहप्पभिईओ तेऽवि तहचेव णवरं दाहिणिल्लेणं
तिसोवाणपडिरूवणं जाव पज्जुवासंति ॥ सू० ३० ॥

छाया-तत. खलु तस्य भरतस्य राज्ञोऽन्यदा कदाचित् राज्यधुर चिन्तयत. अयमेत-
द्रूपो यावत् समुद्रपद्यत अभिजित खलु मया निजकबलवीर्यपुरुषकारपरक्रमेण क्षुल्लहिमवद्वि-
रिसागरमर्यादया केवलकल्प भरत वर्षे मृतच्छेयः खलु मे आत्मान महता राज्याभिषेकेण अभि-
षेकेण अभिषेचयितुमिति कृत्वा पवं सम्प्रेक्षते सम्प्रेक्ष्य कल्पे प्रादुर्ध्रभाते यावत् ज्वलिते यत्रैव
मज्जनगृहं यावत् प्रतिनिष्क्रमति प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला यत्रैव सिंहासनं

उपागच्छति उपागत्य सिंहासनवरगतः पौरस्त्याभिमुखः निषीदति निषद्य षोडशदे-
वसद्वन्द्वान् द्वात्रिंशत् राजवरसद्वन्द्वान् सेनापतिरत्न यावत् पुरोहितरत्न त्रीणि षष्ठानि
सुपशतानि अष्टादश श्रेणि प्रश्रेणीः अन्यान् च बहून् राजेश्वर तलवर यावत् सार्थवाहप्रभृतीन्
शब्दयति शब्दयित्वा पवमवादीत् अभिजित खलु देवानुप्रिया । मया निजकबलवीर्यं यावत्
केवलकल्प भारत वर्षे तत् यूय खलु देवानुप्रिया । मम महाराज्याभिषेकं वितरत । ततः
खलु षोडशदेवसद्वन्दा यावत्प्रभृतयो भरतेन राज्ञा पवमुकाः सन्त दृष्टुष्ट करतल याव
स्मस्तके अञ्जलिं कृत्वा भरतस्य राज्ञमपतमर्थं सन्ध्यां विनयेन प्रतिशृण्वन्ति, ततः खलु स
भरतो राजा यत्रैव पौषधशाला तत्रैव उपागच्छति उपागत्य यावत् अष्टममक्त प्रतिनाम्रत्
विहरति तत खलु स भरतो राजा अष्टममक्ते परिणमति आभियोग्यान् देवान् शब्दयति
शब्दयित्वा पवम् अवादीत् क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः । विनीताया राजधान्या उत्तरपौरस्त्ये
दिग्भागे एक महातन्त्रम् अभिषेकमण्डपं विकुर्वत विकुर्व्यं मम पनामाकृतिकां प्रत्यर्पयत ततः
ते आभियोग्या. देवा भरतेन राज्ञा पवमुका सन्त दृष्टुष्टा. यावत् एवं स्वामिन् !
इति आम्नाया विनयेन वचनं प्रतिशृण्वन्ति प्रतिश्रुत्य विनीताया राजधान्या उत्तरपौरस्त्ये

दिग्भागे अपकर्मन्ति अपकर्म्य वैक्रियसमुद्घातेन समवध्नन्ति समवहृत्य संख्येयानि योजनानि दण्ड निस्तृजन्ति नद्यथा रत्नानां यावत् रिष्टानां यथा वादरान् पुष्टान् परिशातयन्ति परिशात्य यथा सूक्ष्मान् पुद्गलान् पर्यादते पर्यादाय द्वितीयमपि वैक्रियसमुद्घातेन यावत् समवध्नन्ति समवहृत्य बहुसमरमणीयं भूमिभागं विकुर्वन्ति तद्यथानामक आल्लियपुष्कर इति वा, तस्य खलु बहुसमरमणीयस्य भूमिभागस्य बहुमध्यदेशभागे अत्र खलु एक महान्तम् अभिषेकमण्डपं त्रिकुर्वन्ति, अनेकस्नग्मशतपन्निविष्टं यावद् गन्धवर्त्तिभूतं प्रेक्षागृहमण्डपवर्णक इति, तस्य खलु अभिषेकमण्डपस्य बहुमध्यदेशभागे अत्र खलु महान्तमेकम् अभिषेकपीठं विकुर्वन्ति अच्छं श्लक्ष्णम्, तस्य खलु अभिषेकपीठस्य त्रिदिश त्रीन् त्रिसोपानप्रतिरूपकान् विकुर्वन्ति तेषां खलु त्रिसोपानप्रतिरूपकाणाम् अयमेतद्रूपो वर्णकव्या ३. प्रज्ञप्तः यावत् तोरणम् तस्य खलु अभिषेकपीठस्य बहुसमरमणीयो भूमिभागः प्रज्ञप्तः तस्य खलु बहुसमरमणीयस्य भूमिभागस्य बहुमध्यदेशभागे अत्र खलु एकं सिंहासनं विकुर्वन्ति तस्य खलु सिंहासनस्य अयमेतद्रूपो वर्णकव्यास प्रज्ञप्तो यावदामवार्णक समाप्तमिति । ततः खलु ते देवा अभिषेकमण्डपं विकुर्वन्ति विकुर्व्य यत्रैव भरतोराजा यावत् प्रत्यर्पयन्ति । ततः खलु स भरतो राजा आभियोग्यानां देवानामन्तिके पतमर्गं श्रुत्वा निशम्य दृष्टतुष्टयावत् पौषधशालातः प्रतिनिष्क्रामति प्रतिनिष्क्रम्य कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा एवमवासीत् क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिया । अभिषेक्य हस्तिरत्नं प्रतिकल्पयत प्रतिकल्प्य ह्यगज यावत् सन्नाहयत, एतामाज्ञप्तिं प्रत्यर्पयत यावत्प्रत्यर्पयन्ति । ततः खलु स भरतो राजा मञ्जनगृहम् अनुप्रविशति यावद् अञ्जनगिरिकूटसन्निभं गजपतिं नरपतिं दुरुढ । ततः खलु तस्य भरतस्य राज्ञा अभिषेक्यं हस्तिरत्नं दुरुढस्य सतः इमानि अष्टावष्टौ मङ्गलकानि य एव गमो विनीता प्रविशतः स एव निष्क्रामतोऽपि यावत् अप्रतिबुध्यन् २ विनीता राजधानीं मध्यमध्येन निर्गच्छति निर्गत्य यत्रैव विनीताया राजधान्या उत्तरपौरस्थे दिग्भागे अभिषेकमण्डपस्तत्रैव उपागच्छति उपागत्य अभिषेकमण्डपद्वारे अभिषेक्यं हस्तिरत्नं स्थापयति स्थापयित्वा अभिषेकशतं हस्तिरत्नात् प्रत्यवरोहति पत्यवरुह्यं स्त्रीरत्नेन द्वात्रिंशता ऋतुकल्याणिकासहस्रैः द्वात्रिंशता जनपदकल्याणिकासहस्रैः द्वात्रिंशता द्वात्रिंशद् बह्वैर्नाटकसहस्रैः सार्धं संपरिवृतोऽभिषेकमण्डपम् अनुप्रविशति अनुप्रविश्य यत्रैव अभिषेकपीठं तत्रैव उपागच्छति उपागत्य अभिषेकपीठमनुप्रदक्षिणी कुर्वन् अनुप्रदक्षिणी कुर्वन् पौरस्थेन त्रिसोपानकप्रतिरूपकेन दूरोहति दुरुह्य यत्रैव सिंहासनं तत्रैव उपागच्छति उपागत्य पौरस्थामिमुखं सन्निषण्ण इति । ततः खलु तस्य भरतस्य राज्ञा द्वात्रिंशद्वाज नह् स्त्राणि यत्रैव अभिषेकमण्डपः तत्रैव उपागच्छन्ति उपागत्य अभिषेकमण्डपम् अनुप्रविशन्ति अनुप्रविश्य अभिषेकपीठम् अनुप्रदक्षिणी कुर्वन्तः अनुप्रदक्षिणी कुर्वन्तः उत्तरेण त्रिसोपानप्रतिरूपकेण यत्रैव भरतो राजा तत्रैव उपागच्छन्ति उपागत्य करतलं यावद् अञ्जलिं कृत्वा भरतं राजानं जयेन विजयेन वर्द्धयन्ति वर्द्धयित्वा भरतस्य राज्ञो नात्यासन्ने नातिदूरे शुश्रूषमाणाः यावत् पर्युपासते ततः खलु तस्य भरतस्य राज्ञो सेनापतिरत्नं यावत्सार्धंवाहप्रभृतयस्तेऽपि तथैव नवर दाक्षिणात्येन त्रिसोपानप्रतिरूपकेण यावत् पर्युपासते ॥सू० ३०॥

ઇષ્ટરૂપેણ સ્વીકૃત પુષ્પિત ઇવ૪ 'મનોગત' મનોગતઃ મનસિ દદ્ધ રૂપેણ નિશ્ચયઃ 'સંકલ્પે' સંકલ્પઃ इत्थमेव मया कर्तव्यमिति राज्यभारविषयको विचारः फलित इव सामुत्पन्न ५, સ ચ ક.સંકલ્પ इत्याह—'अभिजिण् णं'इयादि । 'अभिजिण्ण मण्णिअगबलवीरियपुरिसक्कारपरक्कमेणं चुल्लहिमवंतगिरिसागरमेराए केवलकप्पे भरहे वासे तं सेय खलु मे अप्पाणं महया रायाभिसेएणं अभिसेएण अभिसिंचावित्तए त्तिकद्दु एव संपेहेइ' अभिजित खलु मया 'राज्ञा' चक्रवर्तिना भरतेन निजकबलवीर्यपुरुषकारपराक्रमेण निजकं-स्वकीय बलम्-शरीरशक्तिः वीर्यम्-आत्मशक्तिः पुरुषकारः- पौरुषम् पराक्रमः- परेषु शत्रुषु आक्रमणशक्तिः परपराजयशक्तिरित्यर्थः अत्र समाहारद्वन्द्वः तत् निजकव'वीर्यपुरुषकारपराक्रमम् तेन कारणभूतेन अत्र समाहारद्वन्द्वाद् एकवचनं नपुंसकत्वञ्च बोध्यम् क्षुल्लहिमवद्गिरिसागरमर्यादया उत्तरस्यां दिशि क्षुल्लहिमवद्गिरि क्षुद्रहिमवत्पर्वतः अपरत्र च दिशात्रये सागराः त्रयः समुद्रास्तैः कृतायाः मर्यादा अवधिः तथा केवलकल्प सम्पूर्ण भारत वर्षम् अभिजित मिति पूर्वेण सम्बन्धः तच्छ्रेय खलु मे ममात्मानं महता राज्याभिषेकेण राज्याभिषेकरूपेण अभिषेकेन अभिषेचयितुम् अभिषेकं कारयितुम् इतिकृत्वा भारतं क्षेत्रं पदखण्डरूपमभिजितमिति एवं प्रकारेण सम्प्रेक्षते- राज्याभिषेकं विचारयति स भरतः ।

ચક્રવર્તી ને કિસી સે કહા નહીં ઇસલિયે મન મેં હી વર્તમાન હોને કે કારણ ઇસે મનોગત કહા ગયા હૈ । જો ભરતચક્રી કો સંકલ્પ ઉત્પન્ન હુઆ વહ ઇસ પ્રકાર સે હૈ—(અભિજિણં મણ્ણિયગબલવીરિયપુરિસક્કારપરક્કમેણં ચુલ્લહિમવંતગિરિસાગરમેરાए કેવલકપ્પે ભરહે વાસે તં સેયં કલ્હુ મે અપ્પાણં મહયા રાયામિસેएणં અભિસેए ण અભિસિંચાવિત્તए ત્તિ કદ્દુ एवं સંપેહેइ) મૈને અપને બલ સે— શારીરિક શક્તિ સે, ઔર વીર્ય સે, આત્મબલ સે તથા પુરુષકાર પરાક્રમ સે— શત્રુઓ કો પરાજિત કરને કી શક્તિ સે— ઉત્તર દિશા મેં જિસકી મર્યાદારૂપ ક્ષુદ્રહિમવત્પર્વત પડા હુઆ હૈ ઔર ત્રીન દિશાઓ મેં જિસકી ત્રીન સમુદ્ર પડે હુए હૈ એસે ઇસ સંપૂર્ણ ભરત ક્ષેત્ર કો મૈને અપને બશ મેં કર લિયા હૈ. ઇસલિયે અબ મુક્કે યહી યોગ્ય હૈ કિ મેં રાજ્ય મેં અપના અભિષેક કરાકું ઇસ પ્રકાર કા વિચાર કર ફિર ડસને એસા સોચા—(કલ્હં પાઠપ્પમાए જાવ જલતે) કલ્હ જન રજની પ્રભાત પ્રાય હો જાવેગી ઔર સૂર્ય કી પ્રમા ચારો ઔર ફૈલ

એથી મનમાજ વિદ્યમાન હોવાથી આને મનાગત કહેવામા આવેલ છે ભરત ચક્રીને જે સંકલ્પ ઉદ્ભવ્યો તે આ પ્રમાણે છે—(અભિજિણં મણ્ણિયગબલવીરિયપુરિસક્કારપરક્કમેણં ચુલ્લહિમવંતગિરિસાગરમેરાए કેવલકપ્પે ભરહે વાસે તં સેયં કલ્હુ મે અપ્પાણં મહયા રાયામિસેएणં અભિસેए ण અભિસિંચાવિત્તए ત્તિકદ્દુ एवं સંપેહેइ) મેં પોતાના બલથી શારીરિક શક્તિથી અને વીર્યથી આત્મબલથી તેમજ પુરુષકાર પરાક્રમથી શત્રુઓને પરાજિત કરવાની શક્તિથી ઉત્તરદિશામા જેની મર્યાદા રૂપ ક્ષુદ્રહિમવત્ પર્વત છે અને ત્રણ દિશાઓમાં સમુદ્ર છે. એવા આ સંપૂર્ણ ભરત ક્ષેત્રને મેં પોતાના વશમાં કરી લીધું છે એથી હવે મારા માટે એજ યોગ્ય છે કે હું રાજ્ય પર મારો અભિષેક કરાવડાવું, આ પ્રમાણે વિચાર કરીને પછી તેણે આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો (કલ્હં પાઠપ્પમાए જાવ જલતે) કાલે પ્રભાત

अथ विचारोत्तरकालिककार्यमाह—‘संपेक्षिता’ इत्यादि

‘संपेक्षिता’ सम्प्रेक्ष्य विचार्य ‘कल्ल पाउप्पभाअए जाव जल्लते’ कल्पे आगामिनि प्रभाते प्रादुष्प्रभाते प्रभायुक्ते यावद् ज्वलिते सूर्ये प्रकाशिते सतीत्यर्थः ‘जेणेव मज्जणघरे जाव पडिणिकल्लमइ’ यत्रैव मज्जनगृहं स्नानगृहं यावत् प्रतिनिष्क्रामति निर्गच्छति स भरतः, अत्र यावत्पदात् प्रविशति निमज्जति निमज्ज्य इति ग्राह्यम् ‘पडिणिकल्लमिता’ प्रतिनिष्क्रम्य निर्गत्य, ‘जेणेव बाहिरिया उवट्टाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ’ यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला सभामण्डपः यत्रैव सिंहासनं तत्रैव उपागच्छति ‘उवागच्छिता’ उपागत्य ‘सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे णिसीयइ’ सिंहासनवरगतः पौरस्त्याभिमुखो निषीदति सिंहासने उपविशति स भरतः ‘णिसोइत्ता’ निषद्य—उपविश्य “सोलसदेवसहस्से” षोडशदेवसहस्राणि देवानित्यर्थः ‘वत्तीसं रायवरसहस्से’ द्वात्रिंशत् राजवरसहस्राणि द्वात्रिंशत् सहस्राणि राजवरान् इत्यर्थः ‘सेणावहरयणे जाव’ सेनापतिरत्नं यावत् पुरोहितरत्नम् अत्र यावत्पदाद् गाथापतिरत्नं बद्धकिरत्नं मितिग्राह्यम् ‘तिण्णि सट्ठे सुअसए’ त्रीणि पट्टानि—पट्टयधिकानि स्रपशतानि अत्र

जावेगी, तब यह राज्याभिषेक का कार्य प्रारम्भ कराजंगा (जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ जाव पडिणिकल्लमइ) दूसरे दिन जब प्रातः काल हो गया और सूर्य की प्रभा फैल गई तब वे भरत राजा जहा पर स्नान गृह था वहां पर गये वहा जाकर उन्होंने अच्छी तरह से स्नान किया और स्नान करके फिर वे स्नानशाला से बाहर आगये बाहर आकर के वे (जेणेवबाहिरिया उवट्टाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ) जहां पर बाह्य उपस्थानशाला थी और जहा पर सिंहासन था वहा पर गये (उवागच्छिता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे णिसीयइ) वहा जाकर वे पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बैठ गये (णिसोइत्ता सोलसदेवसहस्से वत्तीस रायवरसहस्से सेणावहरयणे जाव तिण्णिसट्ठिसूअसए अट्टारससेणिप्पसेणिओ अण्णेय बहवे राईसर तल्लवर जाव सत्थवाहप्पमिइओ) बैठ कर उन्होंने १६ हजार देवों को ३२ हजार श्रेष्ठ राजाओं को सेनापति रत्न को, यावत् पुरोहित रत्न को गाथापति रत्न को तीनसौ ६० रसवतीकारको

थये अने सूर्यना किरणे। येअेर असरी अथे त्यादे आ राअ्याभिषेकु कार्य प्रारंभ करावीस (जेणेव मज्जणघर तेणेव उवागच्छइ जाव पडिणिकल्लमइ) भील द्विसे न्यादे सवार थयु अने सूर्यनी प्रभा असरी गछ त्यादे ते भरत राज न्यां स्नान गृह छेत्तु त्या गया त्या अछने तेछे सारी रीते स्नान कथुं स्नान करीने पछी ते स्नान शालाभाथी अछार आये। अछार आवी ने (जेणेव बाहिरिया उवट्टाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ) न्या आह्य उपस्थान शालाहती अने न्या सिंहासन छेत्तु त्य गया (उवागच्छिता सीहासण वरगए पुरत्थाभिमुहे णिसीयइ) त्या अछने ते पूर्व दिशा तरक्ष युअ करीने भेसी गया (णिसोइत्ता सोलसदेवसहस्से वत्तीस रायवरसहस्से सेणावहरयणे जाव तिण्णि सट्ठिसूअसए अट्टारस सेणिप्पसेणिओ अण्णेय बहवे राईसर तल्लवर जाव सत्थवाहप्पमिइओ) भेक्षीने तेभछे १६ हजार देवाने, ३२ हजार श्रेष्ठ राजाओंने, सेनापति, रत्नेने, यावत् पुरोहित

સુપશબ્દસ્ય સ્વપકારશતानि त्रिपट्याधिकशतानि स्वपकारान्-रसवतीकारान् इत्यर्थः 'अट्टा-
रस सेणिप्पसेणीओ' अष्टादश श्रेणिप्रश्रेणीः 'अण्णेय वहवे राईसर तलवर जाव सत्थवाह-
प्पभियओ' अन्यांश्च बहून् राजेश्वर तलवर यावत् सार्थवाहप्रभृतीन् शब्दयति आह्वयति
अत्र यावत्पदात् माडम्बिककौटुम्बिकमन्त्रिमहामन्त्रि गणकदौवारिकामात्य चेटपीठमर्द-
नगरनिगमश्रेष्ठिसेनापतिसार्थवाहदूतसन्धिपालपदानि ग्राह्यानि एतेषा व्याख्यानम् अस्मि-
न्नेव तृतीयवक्षस्कारे सप्तविंशतितमे सूत्रे द्रष्टव्यम् 'सदावित्ता' शब्दयित्वा आह्वय एवं
वयासी' एवं वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत् उक्तवान् किमुक्तवान् इत्याह-'अभिजिण्ण'
इत्यादि 'अभिजिण्ण देवाणुप्पिया ! मए णिअगबलवीरिय जाव केवलकप्पे भरहे
वासे त तुम्भेणं देवाणुप्पिया ! मम महया रायाभिसेयं वियरह' अभिजितं खलु देवानु-
प्रिया ! मया निजकवलवीर्यं यावत्-निजकवलवीर्यपराक्रमेण क्षुद्रहिमवद्भिरिसागरमर्या-
दया केवलकल्पम् सम्पूर्णं भारत वर्षम् तत्-तस्मात् यूयं खलु देवानुप्रियाः मम महाराज्या-
भिषेकं वितरत-कुरुत 'तएणं से सोलसदेवसहस्सा जाव प्पभिइओ भरहेणं रण्णा एवं
वुत्ता समाणा इट्ठतुट्ठ करयल मत्थए अंजलि कट्ठु भरहस्स रण्णो एयमट्ठं सम्मं विणएणं

को, अठारह श्रेणिप्रश्रेणि जनो को दूसरे और भी अनेक राजेश्वर, तलवर यावत् सार्थ-
वाह आदि कौ-को बुलाया यहां आगत यावत्पद से" कौटुम्बिक मंत्री, महामंत्री, गणक
दौवारिक अमात्य चेट, पीठमर्द, नगर निगम श्रेष्ठिजन सेनापति, सार्थवाह दूत, सन्धिपाल"
इन सबका ग्रहण हुआ है. (सदावित्ता एवं वयासी) बुलाकर भरत महाराजा ने उन से
ऐसा कहा-(अभिजिण्ण देवाणुप्पिया ! मए णियगबलवीरिय जाव केवलकप्पे भरहे वासे) हे
देवानुप्रियो ! मैंने अपने बलवार्थ एव पुरुषकार पराक्रम से इस सम्पूर्ण भरत खण्ड
को अपने वश में कर लिया है (त तुम्भेण देवाणुप्पिया ! मम महया रायाभिसेयं
वियरह) इसलिये हे देवानुप्रियो ! आप सब बड़े ठाट जाट से मेरा राज्याभिषेक करो.(तएणं से
सोलसदेवसहस्सा जाव प्पभिइओ भरहेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा इट्ठ तुट्ठ करयलमत्थए अंजलि
कट्ठु भरहस्स रण्णो एयमट्ठं सम्मं विणएणं पडिमुणोत) इस प्रकार श्री भरत महाराजा द्वारा

रत्नने, गथापति रत्नने ૩૬૦ રસવતી કારકેને ૧૮ શ્રેષ્ઠિ પ્રશ્રેષ્ઠિ જનોને ઘીના અનેક રાજે-
શ્વરે તલવરે યાવત્ સાર્થવાહો વિગેરે ને બોલાવ્યા અહીં આવેલા યાવત્ પદથી "માડં-
બિક, કૌટુમ્બિક, મંત્રી, મહામંત્રી, ગણક, દૌવારિક, અમાત્ય, ચેટપીઠમર્દ, નગરનિગમ
શ્રેષ્ઠિજન, સેનાપતિ, સાર્થવાહ, દૂત, સન્ધિપાલ" એ સર્વ પદોનું ગ્રહણ થયું છે (સદાવિ-
ત્તા एवं वयासी) બોલાવીને ભરત રાજાએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું (અભિજિણ્ણં દેવાણુપ્પિયા !
મમ ણિયગબલવીરિય જાવ કેવલકપ્પે ભરહે વાસે) હે દેવાનુપ્રિયે ! મે સ્વબલવીર્ય તેમજ
પુરુષકાર પરક્રમથી આ સમ્પૂર્ણ ભરત ખડને વશમાં કરી લીધો છે (તં તુમ્ભેણં દેવાણુ
પ્પિયા ! મમ મહયા રાયાભિસેય વિયરહ) એથી હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે સર્વે ખૂબજ ઠાઠ-મા-
ઠથી મારો રાજ્યાભિષેક કરો (તણ સે સોલસદેવસહસ્સા જાવપ્પભિइओ भरहेणं रण्णा एवं
वुत्ता समाणा इट्ठ-तुट्ठ करयल मत्थए अंजलि कट्ठु भरहस्स रण्णो एयमट्ठं सम्मं विणएणं

पडिमुणेंति' ततः खलु तदनन्तरं किल तानि षोडशदेवसहस्राणि यावत्प्रभृतयः यावत्पदा
द्वात्रिंशत् राजवरसहस्राणि सेनापतिरत्नगाथापतिरत्न वर्द्धकिरत्न पुरोहितरत्नानि त्रीणिप-
ष्ठ्यधिकानि सूपकारशतानि अन्ये च बहवो राजेश्वर तलवर यावत् सार्थवाहप्रभृतय भर-
तेन राज्ञा एवम् उक्तप्रकारेण उक्ताः आज्ञप्ता सन्तः 'हृद्वतुद्र' चि इहैकदेगभूतमपि इदं पदं
पूर्णतया तदधिकारसूत्रार्थस्मारकम् तेन हृष्टतुष्टचित्तानन्दिता नन्दिता सुमनसः परमसौम-
नस्यिताः हर्षवशविसर्पद् हृदयाः सन्तः एवमेव अग्रेऽपि करतलपरिगृहीत दशनख शिरसावर्त्त
मस्तके अञ्जलिं कृत्वा भरतस्य राज्ञः एतम् अनन्तरोदितम् अर्थम् सम्यग् विनयेन
विनयपूर्वकं प्रतिशृण्वन्ति स्वीकुर्वन्ति अथ यथा जलात् लब्धाऽऽत्मलाभा कृषिर्जलेनैव
वर्द्धते तथा तपसा प्राप्तं राज्यं तपसैव अभिनन्दतीति चेत्तसि चिन्तयन् भरतो यत्कृत-

कहे गये वे सोलह हजार देव बहुत ही अधिक हर्षित एवं सतुष्ट चित्त हुए और
उन्होंने दोनों हाथों की अंजुलि करके एवं उसे मस्तक पर धारण करके भरत महाराजा-
राजाका इस कथन को अच्छी तरह से विनय पूर्वक स्वीकार कर लिया। यहा यावत्पद
से "इसी प्रकार से भरतमहाराजाद्वारा कहे गये ३२ हजार राजा जन, सेनापतिरत्न, गाथा
पतिरत्न, वर्द्धकिरत्न, पुरोहितरत्न, तीनसौ साठ सूपकारजन, तथा-और भी दूसरे राजेश्वर तलवर
यावत् सार्थवाह आदिजन-भी बहुत ही अधिक हर्षित, एवं सतुष्ट चित्त हुए और उन्होंने
भी दोनों हाथों की अंजुलिबना करके एवं उसे मस्तक पर धारण करके भरत महाराजा के इस
कथन को अच्छी तरह से विनय पूर्वक स्वीकार कर लिया" इस पाठ का समग्र हुआ है "हृद्व
तुद्र" इस कथित पद से ऐसा "हृष्ट तुष्टचित्तानन्दिता", सुमनसः परमसौमनस्यिता हर्षवशवि-
सर्पद् हृदयाः " यह पाठ यहां लगा लेना चाहिये इसी प्रकार "करतलपरिगृहीत दशनख शिर-
सावर्त्त" इतना पाठ करतल के साथ और लगा लेना चाहिये, जिस प्रकार जल से प्राप्त आत्म
लाभ वाली कृषि जल से ही वर्द्धित होती है, उसी प्रकार तप से ही प्राप्त हुआ राज्य

पडिमुणेंति) आ प्रभाषे भरत महाराज वडे आज्ञप्त थयेला ते सोल हजार देवे अतीव
अधिक हर्षित तेमज स'तुष्ट चित्त थया अने तेमजे पोताना अन्ने हाथोनी अजलि अनावीने
अने तेने मस्तके भूझीने भरत राजाणी जे आज्ञानो सारीरीते अने विनयपूर्वक स्वीकार करी
लीधी. अही यावत् पढथी आ प्रभाषे भरत राजा द्वारा आज्ञप्त थयेला उर हजार राजाजो
सेनापति रत्नो गाथापतिरत्न, वर्द्धकिरत्न. पुरोहितरत्न, उ६० सूपकारजने तेमज भीजपण
राजेश्वर तलवर यावत् सार्थवाह वगेरे दोडोपण अतीव अधिक हर्षित तेमज स तुष्ट चित्त
थया अने तेमजेपण पोताना अन्ने हाथोनी अजलि अनावीने अने तेने मस्तके उपर
धारण करीने भरत राजाणी जे आज्ञाने सारी रीते विनय स्वीकारी लीधी. "जे पाठने
संग्रह थये छे "हृद्वतुद्र" जे कथित पढथी जेवे "हृष्ट तुष्ट चित्तानन्दिताः सुमनस परम-
सौमनस्यिता हर्षवशविसर्पद् हृदया" आ पढथीनेपाठ अही दगाडवे. नेधजे आप्रभाषे
"करतलपरिगृहीत दशनख शिरसावर्त्त" आटवे. पाठ 'करतल' साथे दगाडवे. नेधजे
जेम पाणीथी प्राप्त आत्मलाभवाणी जेतीनी उपज पाणीथी म वर्द्धित थाय छे तेमज

વાન તદાહ 'તણં સે' इत्यादि 'तणं से भरहे राया जेणेव पोसहसाला तेणेव उवा-
गच्छइ' तदनन्तरं खलु स भरतो राजा यत्रैव पोषधशाला तत्रैव उपागच्छति 'उवागच्छिता'
उपागत्य 'जाव अट्टमभत्तिण पडिजागरमाणे विहरइ' यावत् अष्टमभक्तिकः सन् अष्टम-
भक्तं प्रतिजाग्रत् विहरति तिष्ठति अत्र यावन्पदात् त्यक्तालङ्कारशरीरः त्यक्तस्नानः
विस्तारितदर्भासनोपविष्टः ब्रह्मचारी इति ग्राह्यम् 'तणं से भरहे राया अट्टमभत्तंसि
परिणममाणंसि आभिओगिए देवे सदावेइ सदावित्ता एव वयासी' ततः खलु स भरतो
राजा अष्टमभक्ते परिणमति परिपूर्णे जायमाने सति आभियोग्यान् आज्ञाकारिणः देवान्
शब्दयति आह्वयति शब्दयित्वा आह्वय एव वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत् उक्तवान्
कुमुक्तवान् इत्याह- 'खिप्पामेव' इत्यादि 'खिप्पामेव भो देवानुप्पिया ! विणीयाए
रायहाणीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एग महं अभिसेयमंडव विउव्वेह विउव्वित्ता मम
एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह' क्षिप्रमेव जीघ्रमेव भो देवानुप्पियाः ! विनीतायाः

તપ સે હી વૃદ્ધિગત હોતા હૈ इस प्रकार चित्त में सम्यक् विचार करते हुए भरतमहाराजा ने जो कि-
या उसे अब सूत्रकार प्रकट करते हुए कहते हैं— (तणं से भरहे राया जेणेव पोसहसाला
तेणेव उवागच्छइ) इसके बाद भरतमहाराजा जहां पर पौषध शाला थी वहां पर आये— (उवाग-
च्छिता जाव अट्टमभत्तिण पडिजागरमाणे विहरइ) वहां आकरके अष्टमभक्तिक- बन गये और
सावधानी से गृहीत व्रत को आराधना करने लगे यहां यावत् शब्द से (त्यक्तालङ्कारशरीरः,
त्यक्तस्नानः विस्तारितदर्भासनोपविष्टः ब्रह्मचारी) इस पाठ का ग्रहण हुआ है । (तणं से
भरहे राया अट्टमभक्तं परिणममाणंसि आभिओगिए देवे सदावेइ) इसके बाद भरतमहाराजा ने
अट्टम भक्त की तपस्या समाप्त होनेपर आभियोगिक देवों को बुलाया. (सदावित्ता एवं वयासी)
और बुलाकर उनसे ऐसा कहा—(खिप्पामेव भो देवानुप्पिया । विणीयाए रायहाणीए उत्तर
पुरत्थिमे दिसीभाए एग महं अभिसेयमंडव विउव्वेह) हे देवानुप्पियो ! तुमलोग बहुत शीघ्र विनीता
राजधानी के ईशान कोन में एक विशाल अभिषेक मण्डप निर्मित करो (विउव्वित्ता मम एय-

તપથી પ્રાપ્ત રાજ્ય તપથીજ વૃદ્ધિગત હોય છે. આ પ્રમાણે ચિત્તમાં વિચાર કરતા શ્રી ભરત
મહા રાજાએ એક ઝંકરું તે. વિષદેવે સૂત્રકાર સ્પષ્ટતા કરતા કહે છે—(તણં સે ભરહે
રાયા જોણેવ પોસહસાલા તેણેવ ઉવાગચ્છઇ) ત્યાર બાદ ભરત મહારાજા જ્યાં પૌષધ-
શાળા હોતી ત્યાં ગયા (ઉવાગચ્છિતા જાવ અટ્ટમભત્તિણ પડિજાગરમાણે વિહરइ) ત્યાં
આવીને તા અટ્ટમ ભક્તિકથઇ ગયા અને સાવધાની પૂર્વક ગૃહીત વ્રતની આરાધના કરવા
લાગ્યા અહીં યાવત શબ્દથી (ત્યક્ત્તાલંકારશરીર ત્યક્તસ્નાન, વિસ્તારિતદર્ભાસનો પવિષ્ઠઃ
બ્રહ્મચારી) “આ પાઠગ્રહણ થયું છે (તણં સે ભરહે રાયા અટ્ટમભત્તસિ પરિણમમાણસિ
આભિઓગિણ દેવે સદાવેહ) ત્યાર બાદ ભરત મહારાજાએ જ્યારે અષ્ટમભક્તની તપસ્યા પૂરી થઈ
ત્યારે આભિઓગિદેવો ને બોલાવ્યા (સદાવિત્તા એવ વયાસી) અને બોલાવી ને તે દેવોને
આ પ્રમ.ણે કહ્યું (ખિપ્પામેવ મો દેવાણુપ્પિયા ! વિણીયાએ રાયહાણીએ ઉત્તરપુરત્થિમે વિસી
માપે પગ મહં અભિસેયમંડવં વિઉવ્વેહ) હે દેવાણુપ્પિયો ! તમે અતીવ શીઘ્ર વિનીતા રાજ-
ધાની નાઈશાન કોણમાં એક વિશાલ અભિષેક મંડપ નિર્મિત કરો (વિઉવ્વિત્તા મમ પય

રાજધાન્યાઃ ઉત્તરપૌરસ્ત્યે દિગ્ભાગે ઈશાનકોણે તસ્મ્યાત્યન્ત પ્રશન્તત્વાત પદ્મ મહાન્ત મહત્વપૂર્ણમ્ અભિષેકમણ્ડપમ્ અભિષેકાય ગજ્યભિષેકાય મણ્ડપો ડભિષેક મણ્ડપસ્તમ્ યદ્વા રાજ્યાભિષેકયોગ્યમણ્ડપં વિકુર્વત રચયત વિકુર્ચ્ય રચયિત્વા મમેતામ્ આજ્ઞાપ્તિકા પ્રત્યર્પયત સમર્પયત 'તદ્દુષ્ટાં તે આભિઓગા દેવા ભરહેણ રણ્ણા एवं વુત્તા સમાણા હદ્દતુદ્ધા જાવ एवं સામિત્તિ આણાપ્ વિણપણં વયણ પહિસુણેતિ' તતઃ સ્વલુ તે આભિયોગ્યાઃ દેવા ભરતેન રાજા એવમ્ ઉક્તપ્રકારેણ રક્તાઃ આદિષ્ટાઃ સન્તઃ હષ્ટતુષ્ટાચિત્તાનન્દિતા સુમનસઃ પરમસૌમનસ્યિતાઃ હર્પવગ્નવિસર્પદ્ હૃદયાઃ એવ સ્વામિન ! યથૈવ ગૂચમાદિશત આજ્ઞાયાઃ સ્વામિનામનુસારેણ કૂર્મ હત્યેવ રૂપેણ ત્રિનયેન વચનં પ્રતિગ્રન્થન્તિ અઙ્ગીકુર્વન્તિ, 'પહિસુણિત્તા' પ્રતિશ્રુત્ય સ્વીકૃત્ય 'વિણીયાપ રાયહાણીપ ઉત્તરપુરત્થિમં દિસીમાગં અવક્કમંતિ' તે દેવાઃ વિનીતાયા રાજધાન્યાઃ ઉત્તરપૌરસ્ત્ય દિગ્ભાગમ્ ઈશાનકોણમ્ અપક્રામન્તિ ગચ્છન્તિ 'અવક્કમિત્તા' અપક્રમ્ય ગત્વા 'વેડવિવસમુઘાણં સમોહણંતિ' વૈક્રિયસમુદ્ધાતેન ઈશાનકોણ વૈક્રિયકરણાર્થક પ્રયત્નવિશેષેણ સમવધ્વન્તિ આત્મપ્રદેશાન્ દૂરતો વિક્ષિપન્તિ તત્ સ્વરૂપમેવ વ્યનક્તિ 'સમોહણિત્તા સંસ્થિજ્જાઈ' इत्यादि 'સમોહણિ. ત્તા' સમવહત્ય આત્મપ્રદેશાન્ દૂરતો વિક્ષિપ્ય 'સંસ્થિજ્જાઈ જોયણાઈ દંઢં ણિસિરંતિ' સંસ્થેયાનિ યોજનાનિ દંઢં દંઢ ઇવ દંઢઃ ઝઘ્ઘાંધ આયતઃ શરીરવાહત્યો જીવપ્રદે-

માણત્તિયં પચ્ચપ્પિણહ) ઔર નિર્મિત કરકે મેરી હસ આજ્ઞા કો પીછે મુઝે વાપિસ કરો અર્થાત્ મહ-પનિર્મિત હો જાને કી સ્વર મેજો । (તદ્દુષ્ટાં તે આભિઓગા દેવા ભરહેણ રણ્ણા एवं વુત્તા સમાણા હદ્દ તુદ્ધા જાવ એવ સામિત્તિ આણાપ્ વિણપણં વયણ પહિસુણેતિ) હસ પ્રકાર સે ભરતમહારાજા દ્વારા કહે ગયે વે આભિયોગિક દેવ હદ્દ હુદ્દ આદિ વિશેષણો સે વિશિષ્ટ હુપ ઔર કહને છગે—હે સ્વા-મિન્ ! જૈસા આપને આદેશ દિયા હૈ ડસીકે 'અનુસાર હમ સબ કાર્ય કરેગે' હસ પ્રકાર કહ-કર ડન્હેને વિનયપૂર્વક ભરત મહારાજા કીઆજ્ઞા કો સ્વીકાર કર લિયા (પહિસુણિત્તા વિણીયાપ રાયહાણીપ ઉત્તરપુરત્થિમં દિસીમાગં અવક્કમંતિ) ભરત મહારાજા કી આજ્ઞા કો સ્વીકાર કરકે વે વિનીતા રાજધાની કે ઈશાન કોને મેં ચલે ગયે (અવક્કમિત્તા વેડવિવસમુઘાણં સમોહણંતિ) વદ્ધા જાકરકે ડન્હેને વૈક્રિયસમુદ્ધાતદ્વારા અપને આત્મપ્રદેશો કો બાહર નિકાલા—(સમોહણિત્તા સંસ્થિ-

માણત્તિયં પચ્ચપ્પિણહ) અને નિર્મિત કરીને પછી એ આજ્ઞાપૂરી થયાની મને ખબર આપો. (તદ્દુષ્ટાં તે આભિઓગા દેવા ભરહેણ રણ્ણા एवं વુત્તા સમાણા હદ્દ-હુદ્દજાવ એવ સામિ-ત્તિ આણાપ્ વિણપણ વયણ પહિસુણેતિ) આ પ્રમાણે ભરત મહારાજા વડે આજ્ઞામ થયેલા તે આભિયોગિક દેવો હુદ્દ હુદ્દ વિગેરે વિશેષણોથી વિશિષ્ટ થયા અને કહેવા લાગ્યા હે સ્વામિન્ ! એ પ્રમાણે આપનીએ અમને આજ્ઞા કરી છે તે સુજ્ઞ અમે તમામ કાર્ય સંપૂર્ણ કરીશું. આ પ્રમાણે કહેને તેમણે સવિનય શ્રીભરતરાજાની આજ્ઞાને શિરોધાર્ય કરી (પહિસુણિત્તા વિણીયાપ રાયહાણીપ ઉત્તરપુરત્થિમં દિસીમાગં અવક્કમંતિ) ભરત રાજાની આજ્ઞા શિરોધાર્ય કરીને તેઓ બધા વિનીતા રાજધાની ના ઈશાન કોણમા જતા રહ્યા (અવક્કમિત્તા વેડ-વિવસમુઘાણ સમોહણતિ) ત્યાં જઈને તેમણે વૈક્રિય સમુદ્ધાતદ્વારા પોતાના આત્મ

શસ્તં નિસૃજન્તિ-શરીરાદ્બહિર્નિષ્કાશયન્તિ નિસૃજ્ય ચ તથાવિધાન પુદગલાન્ આદદતે
 इति एतदेव दर्शयति 'तं जहा रयणाण' इत्यादि 'तं जहा रयणाण जाव रिट्ठाण अहा
 वायरे पुग्गळे परिसाडेंति' तथा रत्नानां कर्केतनादीनां यावद् रिट्ठानां रत्नविशेषाणां
 सम्बन्धिनो यथावादरान् असारान् पुद्गलान् परिशातयन्ति त्यजन्ति अत्र यावन्पदात्
 'वइराणं वेरुलियाणं लोहि अक्खाणं मसारगल्लाणं हंसगम्भाणं पुलयाणं सोगंधिआणं जोईर-
 साणं अंजणाणं अंजणपुलयाणं जायरूवाणं अक्काणं फलिहाणं' इति सङ्ग्रहः वज्राणां हीरकाणां
 वैद्युर्याणां लोहिताक्षाणां मसारगल्लानां हंसगम्भाणां पुलकानां सौगन्धिकानां ज्योतिरसानाम्
 अञ्जनानाम् अञ्जनपुलकानाम् जातरूपाणाम् सुवर्णरूपाणाम् अङ्गानाम् स्फटिकानाम् एतेषां
 तत्तद् रत्नविशेषाणां सङ्ग्रहः 'परिसाडित्ता' परिशात्य असारान् पुद्गलान् परित्यज्य 'अहा-
 सुद्धुमे पुग्गळे परिआदिअंति' यथा सूक्ष्मान् सारान् पुद्गलान् पर्याददते गृह्णन्ति 'परिआदि-
 इत्ता' पर्यादाय-सूक्ष्मान् पुद्गलान् गृहीत्वा 'दुच्चपि वेउन्वियसमुग्घाएणं जाव समोहणंति'
 'चिकीर्षिताभिषेक मण्डपनिर्माणार्थम् द्वितीयमपि वार वैक्रियसमुद्घातेन यावत् समव-
 द्धन्ति आत्मप्रदेशान् दूरतो विक्षिपन्ति 'समोहणित्ता' समवहत्य विक्षिप्य 'बहुसमरमणिज्जं
 भूमिभागं विउव्वति' बहुसमरमणीयं भूमिभागं विकुर्वन्ति 'से जहानामए आळिगपुक्ख-

જાઈ જોયणाઈ દંડં નિસિરંતિ,) उन्हें बाहर निकाल कर सत्यातयोजनो तक उन्हें दण्डके आ-
 कार में परिणमाया (तं जहा-रयणाण जावरिट्ठाण अहावायरे पुग्गळे परिसाडेंति) और इनके द्वारा
 उन्हेने रत्नों के यावत् रिष्टों के रत्न विशेषों के-सम्बन्धी जो असार बादर पुद्गल ये उन्हे
 छोड़ दिया-यहा यावत्पद से "वइराणं, वेरुलियाणं, लोहिअक्खाणं, मसारगल्लाणं, हंसगम्भाणं,
 पुलयाणं, सोगंधियाणं, जोईरसाणं, अंजणाणं, अजणपुलयाण, जायरूवाणं, अंकाण, फलिहाणं"
 इस पाठका संग्रह हुआ है (पडिसाडित्ता अहासुद्धुमे पुग्गळे परिआदिअंति) उन्हे छोड़कर उन्हेने
 यथासूक्ष्मसार पुद्गलों को ग्रहण कर लिया (परिसाडित्ता दुच्चपि वेउन्वियसमुग्घाएण जाव स-
 मोहणति) सारपुद्गलों को ग्रहण करके उन्हेने चिकीर्षित मण्डप के निर्माण के निमित्त द्वितीय
 वार भी वैक्रियसमुद्घात किया (समोहणित्ता बहुसमरमणिज्ज भूमिभागं विउव्वति,) द्वितीयवार

પ્રદેશોને બહાર કાઢ્યા (સમોહણિત્તા સંસ્થિજ્ઞાઈ જોયણાઈ દંડ નિસિરંતિ) તે પ્રદેશોને બહાર
 કાઢીને તેમને સંજ્યાતયોજનો સુધી દ કારમાં પરિણત કર્યા (તં જહા રયણાણ જાવ રિટ્ઠાણં
 અહા વાયરે પુગ્ગલે પરિસાદિતિ) અને તેમના વડે તેમણે રત્નો યાવત્ રિટ્ઠો-રત્નવિશેષોથી
 સમબદ્ધ જે અસાર બાદર પુદ્ગલો હતા તેમને છોડ્યા અહીં યાવત્ પદથી 'વइराणं, वेरुलि-
 याणं, लोहिअक्खाणं, मसारगल्लाणं हंसगम्भाणं जोईरसाणं अंजणाणं, अजणपुलयाण,
 जायरूवाण, अक्काण, फलिहाणं" એ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે (પડિસાડિત્તા અહાસુદ્ધુમે
 પુગ્ગલે પરિઆદિઅંતિ) તેમને છોડીને તેમણે યથા સૂક્ષ્મસાર પુદ્ગલોને ગ્રહણ કરી લીધા.
 (પરિઆદિત્તા દુચ્ચપિ વેઊન્વિયસમુગ્ગાપ્પ જાવ સમોહણતિ) સાર પુદ્ગલોને ગ્રહણ કરીને
 તેમણે ચિકીર્ષિત મંડપનાનિર્માણ માટે બીજી વખતે પણ વૈક્રિય સમુદ્ઘાત કર્યો (સમોહ-
 ણિત્તા बहुसमरमणिज्ज भूमिभागं विउव्वति) બીજી વખતે સમુદ્ઘાત કરીને તેમણે બહુસ-

रेखा' तद्यथानामकः आलिङ्ग्यपुष्कर इति वा, आलिङ्गितुं योग्यः कमलबीजकोशः कमलमध्यभाग इत्यर्थः ननु रत्नादीनां पुद्गला औदारिकास्ते वैक्रियसमुद्भाते कथं ग्रहणयोग्याः ? इति चेत् उच्यते औदारिका अपि ते पुद्गला गृहीताः सन्तो वैक्रिय-तया परिणमन्ते, पुद्गलानां तत्तत्सामग्रीवशात् तथा तथापरिणमनात् अतो न कश्चिद्दो-षलेशोऽपीति, पूर्ववैक्रियसमुद्भातस्य जीवप्रयत्नरूपत्वेन क्रम क्रम मन्दमन्दतरभा-वापन्नत्वेन क्षीणशक्तिकत्वात् इष्टकार्यसिद्धेः । अथ समभूमिभागे आभियोग्यास्ते देवाः यत्कृतवन्तः तदाह—'तस्मिन् बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगं अभिसेयमण्डवं विउव्वंति' तस्य खलु बहुसमरमणीयस्य भूमिभागस्य बहुमध्यदेशभागे अत्र खलु महान्तस्य एकमभिषेकमण्डपं विकुर्वन्ति निर्मान्ति मण्डपस्य विशेषमाह 'अणेगखंमसयसण्णिविट्ठ जाव गंधवट्ठिभूयं पेच्छाघरमंडववण्णगोत्ति' अनेक-

समुद्भात करके उन्होंने बहुसमरमणीय भूमिभाग की विकुर्वणा की—(से जहानामए आलिगपुक्खरे इवा) वह बहुसमरमणाय भूमिभाग आलिङ्ग पुष्कर के जैसा प्रतीत होता था—कमलबीज का नाम आलिङ्गपुष्कर है. शंका—रत्नादिकों के पुद्गल औदारिक होते हैं वे वैक्रियसमुद्भात द्वारा ग्रहण योग्य कैसे हो सकते हैं ? तो इस आशंका का उत्तर ऐसा है कि औदारिक भी वे पुद्गल गृहीत होते हुए वैक्रियरूप से परिणम जाते हैं, क्योंकि तत्तत्सामग्री के वश से पुद्गलों का उस उस स्वभावरूप से परिणमन हो जाता है. इसलिए यहाँ कोई भी दोष समवित नहीं होता है पूर्व वैक्रियसमुद्भात जीवका एक प्रकार का प्रयत्न विशेषरूप था. इसलिए उसमें क्रम क्रम से मन्द मन्दतर रूपता आने के कारण वह क्षीण शक्तिवाला हो जाता है इसलिये इससे इष्ट कार्य सिद्ध नहीं होता है (तस्मिन् बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं एगं महं अभिसेयमण्डवं विउव्वंति) उस बहुसमरमणीय भूमिभाग के ठीक मध्यभाग में एक विशाल अभिषेक मंडप की उन्होंने विकुर्वणा की—वैक्रियशक्ति द्वारा एक विशाल अभिषेक मंडप बनाया

भरमणीय भूमिभागनी (विकुर्वणा करी (से जहानामए आलिगपुक्खरे इवा) ते बहुसम-रमणीय भूमिभाग आलिङ्ग पुष्कर जैसा प्रतीत थोता होता. कमल बीज पु नाम आलिङ्ग पुष्कर छे. शंका—रत्नादिकोंना पुद्गलौ औदारिक होय छे. ते वैक्रिय 'समुद्भात द्वारा आद्य केवीरीते यथशक्ते छे' तो आ आश्रमनो जवान आ प्रभावे छेके ते पुद्गलौ औदारिक छे छत्तांछे गृहीत यथ ने वैक्रियरूपमा परिणम यथ जाय छे केमके तत् तत् सामर्थीना वशथी पुद्गलौतु' तत् तत् स्वभाव रूपथी परिणमन यथ जाय छे ओटलाभाटे अही कोषपथु जातना होवनी सभावना उत्पन्न थती नथी 'पूर्व' वैक्रिय समुद्भात एवमु' ओके प्रकारतु' अयत्न विशेष रूपतु' ओथी तेमां कमशः मन्दमन्दतर रूपता आववथी ते क्षीण शक्तियुक्त यथ जाय छे ओथी ओनाथी धृष्टकार्य' सिद्ध थतु नथी (तस्मिन् बहुसमरमणिज्जस्स भूमि-भागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं एगं महं अभिसेयमण्डवं विउव्वंति) ते बहुसमरमणीय भूमिभागना ठीक मध्यभागमा ओके विशाल अभिषेक मंडपनी तेमणे विकुर्वणा करी ओटलेके वैक्रिय शक्ति वडे तेमणे ओके विशाल अभिषेक मंडपनु' निर्माण कथु' (अणेगखंमस यण्ण-

સ્તમ્ભશતસન્નિવિષ્ટમ્ અનેકાનિ સ્તમ્ભશતાનિ અનેકશતાનિ સ્તમ્ભાઃ સન્તિ યત્ર સ તથાભૂતસ્તમ્, યાવદ્ ગન્ધવર્ત્તિભૂતમ્ ગન્ધવર્ત્તિયુક્તમ્ અત્ર યાવત્પદાત્ રાજપ્રશ્રીયોપાદ્રગત સૂર્યામદેવયાનવિમાનવર્ણકો ગ્રાહ્યઃ સ ચ ક્રિયત્પર્યન્તમિત્યાહ—યાવદ્ગન્ધવર્ત્તિભૂતમિતિ વિશેષણમ્ અતएव સૂત્રકાર एव સાક્ષાદાહ—‘પેચ્છાઘરમંડવવળ્લગોત્તિ’ ‘પ્રેક્ષાગૃહમંડપ વર્ણકો ગ્રાહ્ય इति ‘तस्स णं अभिसेयमंडवस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थणं महं एगं अभिसेयपेढं विउव्वति अच्छं सण्हं’ तस्य खलु अभिषेकमण्डपस्य बहुमध्यदेशभागे अत्र खलु महान्तम् एकमभिषेकपीठं विकुर्वन्ति अच्छम् अस्तरजस्कत्तात् श्लक्ष्णं निर्मलमित्यर्थः सूक्ष्मपुग्दलनिर्मितत्वात् ‘तस्स णं अभिसेयपेढस्स तिदिंसि तओ तिसोवाण- पडिरूवए विउव्वन्ति’ तस्य खलु अभिषेकपीठस्य त्रिदिशि त्रीन् तिसोपानप्रतिरूपकान विकुर्वन्ति ‘तेसिं णं तिसोवाणपडिरूवगाणं अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते जाव तोरणा’ तेषां खलु तिसोपानप्रतिरूपकाणाम् अयमेतद्रूपं वापी तिसोपानप्रतिवर्णनादि प्र- तिपादयन्नाह—‘तस्स णं’ इत्यादि ‘तस्स णं अभिसेयपेढस्स बहुसमरमणिज्जे भूमिभाए पण्णत्ते’ तस्य खलु अभिषेकपीठस्य बहुसमरमणियो भूमिभागः प्रज्ञातः ‘तस्स णं

(અનેગસંભસયસણ્ણવિટ્ઠં જાવ ગંધવટ્ઠિમૂયં પેચ્છાઘરમંડવવળ્લગોત્તિ)યહ મંડપ સે કઢેા સંભોં સે યુક્ત થાં. યાવત્ સુગન્ધિત ધૂપવત્તિયોં સે યહ મહક રહા થા. યાવત્ પદ સે યહાં રાજપ્રશ્નીય ઉપાદ્ર મેં વર્ણિત સૂર્યામદેવકી વિમાન વક્તવ્યતા યાવત્ ગંધવર્તી ભૂત હસ વિશેષણ તક ગૃહીત હુઈ હૈ. હસી બાત કો સૂત્રકાર ને “પ્રેક્ષાગૃહમંડપવર્ણક” હસ પદ દ્વારા સાક્ષાત્ કહા હૈ. (તસ્સ ણં અભિસેય-મંડવસ્થ બહુમજ્ઞદેસમાપ્ એત્થ ણ મહ ણં અભિસેયપેઢં વિઉવ્વન્તિ) હસ અભિષેક મંડપ કે ઠોક મધ્યભાગ મેં એક વિશાલ અભિષેક પીઠ જો (અચ્છં સળ્હં) અચ્છા ધૂલિ વિહીન થા ઓર સૂક્ષ્મ પુદ્ગલોં સે નિર્મિત હોને કે કારણ શ્લક્ષ્ણ થા. (તસ્સણ અભિસેયપેઢસ્સ તિદિસિં તઓ તિસોવાણપરિ-રૂવપ્ વિઉવ્વન્તિ) હસ અભિષેક પીઠ કી ત્રીન દિશાઓ મેં ડન્હેની ત્રીન ત્રિસોપાન પ્રતિરૂપક-વિકુ-ર્વિતક્રિયે (તેસિ ણ તિસોવાણપડિરૂવગાણ અયમેયારૂવે વળ્ણાવાસે પળ્ણત્તે જાવ તોરણા) હન ત્રિસો-પાન પ્રતિરૂપકો કા હસ પ્રકાર સે વર્ણન તોરણો તક ઢિયા ગયા હૈ “તસ્સ ણં બહુસમરમણિજ્જ-

વિટ્ઠ જાવ ગંધવટ્ઠિમૂય પેચ્છાઘરમંડવ વળ્લગોત્તિ) એ મંડપ હજારે થાકલાઓથી યુક્ત હતો. યાવત્ સુગંધિત ધૂપવર્તિકાઓથી એ મહેકી રહ્યો હતો. યાવત્ ગંધવર્તિભૂત એ વિશેષણ પ્રશ્નીય ઉપાંગમા વર્ણિત સૂર્યામદેવની વિમાન વક્તવ્યતા યાવત્ ગંધવર્તિભૂત એ વિશેષણ સુધી ગૃહીત થઇ છે એ વાતને સૂત્રકારે— “પ્રેક્ષાગૃહમંડપવર્ણક” એ પદવડે સાક્ષાત્ રૂપ-મ કરી છે. (તસ્સ ણં અભિસેયમંડવસ્સ બહુમજ્ઞદેસમાપ્ એત્થ ણ મહ ણં અભિસેયપેઢં વિઉવ્વન્તિ) તે અભિષેક મંડપના એકદમ મધ્યભાગમા એક વિશાળ અભિષેકપીઠની તેમણે વિકુર્વણ કરી એ અભિષેક પીઠ (અચ્છં સળ્હં) અચ્છા-ધૂલિ વિહીન હતું અને સૂક્ષ્મ પુદ્ગલોથી નિર્મિત હોવા પ્રદર્શ શ્લક્ષ્ણ હતું (તસ્સ ણ અભિસેયપેઢસ્સ તઓ તિસોવાણપરિરૂવપ્ વિઉવ્વન્તે) તે અભિષેક પીઠની ત્રણ દિશાઓમા તેમણે ત્રણ ત્રિસોપાન પ્રતિરૂપકો વિકુર્વિત કર્યાં (તેસિ ણ તિસોવાણપડિરૂવગાણ અયમેયારૂવે વળ્ણાવાસે પળ્ણત્તે જાવ તોરણા) તે ત્રિસો-

बहुसमरमणिज्जस्त भूमिभागस्त बहुमज्जदेसभाए एत्थ णं मढं एग सीहामणं विउव्वं-
ति' तस्य खलु बहुसमरमणीयस्य भूमिभागस्य बहुमध्यदेशभागे अत्र खलु मढत् एकं
सिंहासनं विकुर्वन्ति 'तस्स णं सीहाणस्म अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते जाव दाम-
वण्णगं सम्मत्तन्ति' तस्य खलु सिंहासनस्य अयमेतद्रूपो वर्णव्यामः प्रज्ञप्नः कथितः सच
विजयदेवसिंहासनस्यैव ज्ञातव्यः यावद्दामवर्णकम् यावद्दाम्नां वर्णकी यत्र तत्तथाभूतम्
समस्तम् सम्पूर्णं सूत्रं वाच्यमिति शेषः । 'तएणं ते देवा अभिसेयमंडवं विउव्वन्ति'
ततः खलु ते देवाः उक्तविशेषणविशिष्टम् अभिषेकमण्डपं विकुर्वन्ति 'विउव्वत्ता'
विकुर्व्यं निर्माय 'जेणेव भरहे राया जाव पच्चप्पिणत्ति' यत्रैव भरतो राजा यावत्प्रयर्पय-
न्ति—यावत्पदात् यत्रैव भरतो राजा तत्रैव ते देवा उपागच्छन्ति उपागत्य उक्ताम् आज्ञ-
प्तिकां भरताय राज्ञे समर्पयन्तोत्यर्थः ।

'तए णं से भरहे राया आभिओगाणं देवाणं अतिए एयमढं सोच्चा णिसम्म हट्ट-
वुट्ट जाव पोसहसाळाओ पडिणिक्खमइ' तत् खलु स भरतो महाराजा आभियोग्यानामाज्ञा-
कारिणां देवानाम् अन्तिके एतम् उक्तप्रकारकम् अर्थं विषयं श्रुत्वा निश्चिन्त्य सम्यक्प्रकारेण

स्त भूमिभागस्त बहुमज्जदेसभाए एत्थणं एग मह सीहासण विउव्वन्ति, तस्स णं सीहासणस्स-
अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते जाव दामवण्णगं सम्मत्तन्ति" विजयदेव के सिंहासन का जैसा वर्णन
किया गया है वर्णन वही सब दामवर्णन तक का यहां पर भी ग्रहण कर लेना चाहिये "तएणं
ते देवा अभिसेयमंडव विउव्वन्ति" इस तरह का जब अभिषेक मंडप विकुर्वित हो चुका—
तब (विउव्वत्ता जेणेव भरहे राया जाव पच्चप्पिणत्ति") उन देवों ने मंडप की पूर्णरूप से
विकुर्वणा हो जाने की खबर महाराजा भरत के पास भेज दी यहां यावत्पद से "तेणेव ते देवा
उवागच्छन्ति, उवागच्छन्ति अणत्तिथि" इस पाठ का ग्रहण हुआ है ।

(तए णं से भरहे राया आभिओगाणं देवाणं अतिए एयमढं सोच्चा णिसम्म हट्टवुट्ट
जाव पोसहसाळाओ पडिणिक्खमइ) श्री भरत महाराजा ने आभियोग्य देवों से जब यह
सब समाचारज्ञात किये तो वह छलंडोंके अधिपति श्री भरत महाराजा बहुत ही हर्षित एवं

पान प्रतिष्पठेत्तु आ प्रभाषे वरुणं नोऽरुणो मुधी कर्वाभा आवेक्ष्ये "तस्स णं बहुसम-
रमणिज्जस्त भूमिभागस्त बहुमज्जदेसभाए एत्थणं एगं महसीहासण विउव्वन्ति तस्स णं
सीहासणस्स अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते जाव दामवण्णगं सम्मत्तन्ति" (विजयदेवना शि-
ंहासनं ते प्रभाषे वरुणं कर्वाभा आवेक्ष्ये तेभ्यः 'हाम' सुधीनु वरुणं अहो पणु
अहं वरुणो अहं, अहं "तएणं ते देवा अभिसेयमंडव विउव्वन्ति" आ प्रभाषे जयारे अ-
क्षिपेक मध्य विकुर्वितं यथं युक्त्ये त्यारे (विउव्वत्ता जेणेव भरहे राया जाव पच्चप्पि-
णत्ति) ते मंडपानी पूषंश्च यथैव यथैवानी सूच्यता ते देवोऽरे राजा पासे पडोयाही
अहो यावत् पदं "तेणेव ते देवा उवागच्छन्ति उवागच्छन्ति" अहं पदं अहं यथो अहं

(तए से भरहे राया आभिओगाणं देवाणं अतिए एयमढं सोच्चा णिसम्म हट्ट वुट्ट
जाव पोसहसाळाओ पडिणिक्खमइ) श्री भरत महाराजा अहं दे आभियोजिष्ठ देवे पासेथी

ज्ञात्वा हृदि अवधार्य हृष्टतुष्ट यावत् पौषधशालातः प्रतिनिष्क्रामति निर्गच्छति अत्र याव-
त्पदात् हृष्टतुष्टचित्तानन्दितः प्रीतिमनाः परमसौमनस्यतः हर्षवशसिर्षद् हृदय इति ग्राह्यम्
'पण्डिणिक्लमिता' पौषधशालातः प्रतिनिष्क्रम्य बहिर् निर्गत्य 'कोटुम्बिकपुरिसे सदावेह
सदावित्ता एव वयासी' कोटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति आह्वयति शब्दयित्वा आहूय एवं
वक्ष्यमाण प्रकारेण अवादीत् उक्तान् 'क्लिप्पामेव भो देवानुप्पिया' आभिसेक्क इत्थिरयणं
पण्डिकप्पेह' क्षिप्रमेव शीघ्रातिशीघ्रमेव भो देवानुप्पियाः! आभिषेक्यम् अभिषेकयोग्यं
हस्तिरत्न प्रधानपट्टहस्तिरत्नमित्यर्थः प्रतिकल्प्य सज्जीकृत्य, 'हयगय जाव सण्णाहेह' हय
गज यावत् सन्नाहयत अत्र यावत्पदात् हयगजरथप्रवरयोधकलितां चातुरङ्गिणीं चत्वा-
रि हयादीनि अङ्गानि यस्याः सा तथाभूता तां सेनां सन्नाहयत सज्जीकुरुत 'सण्णा-
हेत्ता' सन्नाहयित्वा सज्जीकृत्य 'एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह जाव पच्चप्पिणंति' ए-
ताम् उक्तप्रकाराम् आङ्गप्तिका प्रत्यर्पयत समर्पयत यावत्प्रत्यर्पयन्ति । कार्यं सम्पाद्य-
कथयन्तीत्यर्थः अत्र यावत्पदात् ते देवानुप्पियाः राज्ञ आज्ञानुसारेण हयादि सज्जीकरण-

सत्तुष्ट चित्त हुआ और पौषधशाला से बाहर आया यहा यावत्पद "हृष्टतुष्टचित्तानन्दितः
प्रीतिमनाः परमसौमनस्यतः हर्षवशसिर्षद् हृदयः" यह पूरा पाठ यहा पर लिया गया है ।
(पण्डिणिक्लमिता कोटुम्बिकपुरिसे सदावेह) पौषधशाला से बाहर आकर उसने कौटुम्बिक
पुरुषो को बुलाया (सदावित्ता एव वयासी) बुलाकर उनसे भरत महाराजा ने ऐसा कहा—
(क्लिप्पामेव भो देवानुप्पिया आभिसेक्क इत्थिरयणं पण्डिकप्पेह) हे देवानुप्पियो तुम लोग जितनी
जल्दी हो सके उतनीजल्दी अपने आभिषेक्य हस्तिरत्न को सज्जित करो (पण्डिकप्पिता हय
गय जाव सण्णाहेह) सज्जितकरके हयगज एवं प्रवर योवानों से कलित-चतुरङ्गिणी सेना को भी
सज्जित करो (सण्णाहेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह) सज्जित करके फिर मुझे स्वर दो यहा
यावत्पद से—ऐसाप्रकरण समझ लेना चाहिये—कि उन कौटुम्बिक पुरुषो ने महाराजा भरत के
कहे अनुसार आभिषेक्य हस्तिरत्न को एव चतुरङ्गिणी सेना को सज्जित कर दिया और

ये सभाचार सांकेत्या ते ते अतीव हर्षित तेभञ्च सत्तुष्ट चित्तवाणे। यथे। अने पौषध-
शालाभा थी अहार आये। अही। यावत् प० थी "हृष्टतुष्टचित्तानन्दितः प्रीतिमना
परमसौमनस्यतः हर्षवशसिर्षद् हृदयः" ये पूरा पाठ स गृहीत यथे। छे। (पण्डिणिक्लमिता
कोटुम्बिकपुरिसे सदावेह) पौषधशालाभा थी अहार आये। तेथे। कौटुम्बिक पुरुषो ने आवा
या। (सदावित्ता एव वयासी) आवाये। ते पुरुषो ने तेथे। आ प्रभाषे। कहु—(क्लिप्पामेव भो
देवानुप्पिया। आभिसेक्क इत्थिरयणं पण्डिकप्पेह) हे देवानुप्पियो। तमे शीघ्रातिशीघ्र आ-
भिषेक्य हस्तिरत्न ने सुसज्जित करो। (पण्डिकप्पिता हय गय जाव सण्णाहेह) सज्जित
करीने हय-गज तेभञ्च प्रवर योवानो थी कलित अतुरङ्गिणी सेनाने पछु सज्जित करे।
(सण्णाहेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह) सज्जित करीने पछी अने अण्णर आपो। अही
यावत् पदथी आमानु प्रकरण समझ लेवुं ओई ओई ते कौटुम्बिक पुरुषो ने राजा भर-
ताने आदेश सुञ्ज आभिषेक्य हस्तिरत्न तेभञ्च अतुरङ्गिणी सेनाने सुसज्जित करी

रूप कार्य सम्पादितं कृत्वा उक्ताम् आर्ज्ञप्तिकां राज्ञे समर्पयन्तीत्यर्थः 'तए णं से भग्हे राया मज्जनघरं अणुपविसइ जाव अंजनगिरिकूडसण्णिभ गयवइं णरवइ दुरूढे' तनः खलु स भरतो राजा मज्जनगृहं स्नानगृहम् अनुप्रविशति यावत् अत्र यावत्पदात् अनुप्रविश्य स्नानविधिः ततो मज्जनगृहात् निर्गत्य इति ग्राह्यम् 'अञ्जनगिरिकूटगन्निभम् अञ्जनपर्वतशृङ्गसदृशम् सादृश्यञ्च उच्चत्वेन कृष्णत्वेन च बोध्यम् गजपतिं प्रधानपट्टहस्तिन नरपति दुरूढः आरूढः 'तएण तस्म भरहस्स रण्णो आभिसेक्कं हत्थिरयणं दुरूढस्स समाणस्स इमे अट्टट्टमंगलगा जो चेव गमो विणीय पविसमाणस्स सोचेव णिक्खममाणस्स वि जाव अपडिबुज्झमाणे विणीयं रायहाणीं मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ' तत खलु तदनन्तरं किल तस्य भरतस्य राज आभिषेक्यम् पट्टहस्तिरत्नं दुरूढस्य आरूढस्य सत्त इमानि अष्टावष्टौ मङ्गलकानि पुरत अग्रे सम्प्रस्थितानीति शेषः, य एव गमो विनीता तन्नाम्नीं राजधानीं प्रविशतः स एव गमः निष्क्रामनोऽपि निर्गच्छ

सञ्जित कर देने की खबरभरत नरेश के पास भेज दी (तएणं से भग्हे राया मज्जनघरं अणुपविसइ) खबर पाते ही वहभरत नरेश स्नान गृहमें गये (जाव अंजनगिरिकूडसण्णिभ गयवइं णरवइ दुरूढे) यावत्-वहा जाकर उसने स्नान किया फिर वह मज्जनगृह से बाहर आया बाहर आकर वह नरपति भरत महाराजा अंजनगिरि के सदृशगजपति पर आरूढ होगये (तए णं तस्स भरहस्स रण्णो आभिसेक्कं हत्थिरयणं दुरूढस्स समाणस्स इमे अट्टट्टमंगलगा जो चेव गमो विणीयं पविसमाणस्स सोचेव णिक्खममाणस्स वि जाव अपडिबुज्झमाणे विणीयं रायहाणियं मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ) जब भरत महाराजा आभिषेक्यहस्तिरत्न पर आरूढ हो रहे थे उस समय उनके आगे सबसे पहले आठ आठ की सख्या में आठ महा मंगल द्रव्यप्रस्थित हुए इस तरह जैसा पाठ विनीता राजधानी से भरतके निकलने के प्रकरण में और फिर विनीता राजधानी में विजय करके वापिस आने के प्रकरण में प्रतिपादित किया जाचुका है वही सब पाठ यहा "बजते हुए बाजोकी मञ्जुष्वनि से जिनका चित्त अन्यत्र नही लगा है उन्हीं के शब्दो के

अने सञ्जित करीने पछी राजा पासो जो अंजेनी सूचना भेकवावी दीधी (तएणं से भग्हे राया मज्जनघर अणुपविसइ) सूचना भणतांजे ते भरत नरेश स्नान घर तरङ्ग गया (जाव अंजनगिरिकूडसण्णिभ गयवइं णरवइं दुरूढे) यावत् त्यां जधने स्नान कथुं अने पछी ते मज्जन गृहमा थी पढार आब्या पढार आवीने ते नरपति अंजनगिरि सदृश गजपति उपर आइठ थरु गया (तएण तस्स भरहस्स रण्णो आभिसेक्क हत्थिरयण दुरूढस्स समाणस्स इमे अट्टट्ट मंगलगा जो चेव गमो विणीय पविसमाणस्स सो चेव णिक्खममाणस्स वि जाव अपडिबुज्झमाणे विणीयं रायहाणीय मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ) अथारे श्री भरतराज आभिषेक्य हस्तिरत्न उपर आइठ थरु रक्षा डता, ते सभये तेमनी आगण सर्व प्रथम आठ आठनी स जयाभा आठ मंगल द्रव्यो प्रस्थित थया आसीते जेवे। पाठ विनीता राजधानी थी भरत महाराजनीकल्या ते प्रकरणमा आवेल छे, तेमज्ज जेवे। पाठ विनीता राजधानी भां विजय स्थापितकरीने पछी पुनः प्रविष्ट थया ते प्रकरणमा आवेल

તોડપિ તસ્ય ભરતસ્ય કિયદન્તમિત્યાહ યાવદ્પ્રતિબુધ્યન્ અપ્રતિબુધ્યન્ વિનીતાં રાજ-
ધાનીં મધ્ય મધ્યેન મધ્યમાગેન નિર્ગન્ઠતિ નિષ્ક્રામતિ 'ગિગચ્છિત્તા' નિર્ગત્ય નિષ્ક્રા-
મ્ય 'જેનેવ વિળીયાપ રાયદાળીપ ઉત્તરપુરતિથમે દિસીમાપ અભિસેયમંડવે તેનેવ
ઉવાગચ્છહ' સ ભરતઃ યજૈવ વિનીતાયા રાજધાન્યાઃ ઉત્તરપૌરસ્ત્યે દિગમાગે ઈશ્વાનકો-
ળે અમિપેકમણ્ડપઃ તત્રેવ ઉપાગચ્છતિ 'ઉવાગચ્છિત્તા' ઉપાગત્ય 'અભિસેયમંડવદુવારે
આમિસેકકં હત્થિરયણં ઠાવેહ' અમિપેકમણ્ડપર્વાદિદ્વાર આમિપેક્ય પટ્ટહસ્તિરત્નં સ્થાપ-
યતિ 'ઠાવિત્તા' સ્થાપયિત્વા 'આમિસેકકાઓ હત્થિરયણાઓ પચ્ચોરુહહ' આમિપેકયાત્
અમિપેકપટ્ટહસ્તિરત્નાત્ પ્રત્યવરોહતિ અતરતિ 'પચ્ચોરુહિત્તા' પ્રત્યવરુહથ અવતીર્ય
'ઇત્થીરયણેણં વત્તીસા' ઉડુરુલ્લાણિયા સહસ્સેહિ વત્તીસાપ જળવયકલ્લાણિયા સહ-
સ્સેહિ વત્તીમાપ વત્તીસહસ્રદ્ધેહિ ણાહગમહસ્સેહિ સદ્ધિં સપરિવુદે અભિસેયમંડવં

શ્રવણ મેં આસક્ત હૈ" રૂપ કથિન પાઠ તક યહા પર મી પ્રહણ કરલેના ચાહિયે રૂપ તરહ કી
સ્થિતિ મેં હોતે હુપ વે ભરત નરેશ વિનીતા રાજધાનો કે ઠીક નોંચ કે માર્ગ સે હોકર નિકલે
(ગિગચ્છિત્તા જેનેવ વિળીયાપ રાયદાળીપ ઉત્તરપુરતિથમે દિસીમાપ અભિસેયમંડવે તેનેવ ઉવાગચ્છહ)
બાહર નિકલ કરવે ચક્રવર્તી શ્રી ભરત મહારાજા નિસ ઔર વિનીતા રાજધાની કા રૂશાન કોળ
પવ જહા પર રમણીય અમિપેક મંડપ થા વહા પર આયે (ઉવાગચ્છિત્તા અભિસેયમંડવદુવારે આ-
મિસેકક હત્થિરયણં ઠાવેહ). વહાંઆકર ઉન્હોને આમિપેક્ય મંડપ કે દ્વાર પર અપને આમિ-
પેક્ય હસ્તિરત્ન કો. સ્વહાંકરદિયાં (ઠાવિત્તા આમિસેકકાઓ હત્થિરયણાઓ પચ્ચોરુહહ) સ્વહાં
કરકે વે ડસ આમિપેક્યહસ્તિરત્ન સે નીવે. ઉતરે (પચ્ચોરુહિત્તા ઇત્થીરયણેણં વત્તીસાપ
કલ્લાણિયાસહસ્સેહિ વત્તીસાપ જળવયકલ્લાણિયાસહસ્સેહિ વત્તીસાપ વત્તીસહસ્રદ્ધેહિ) ણાહગસ-
હસ્સેહિ સદ્ધિં સપરિવુદે) નીચે ઉતરે કર જીરત્ન સુમદ્રા આદિ વત્તીસ હજાર ઋતુકલ્યાણિકા
રાજકન્યાઓ સે ૩૨ હજારે વનપદ કે મુલિયાઓ કો કલ્યાણકારિણિ' કન્યાઓ' સે

છે, તે પાઠ એટલે કે "વાગતા વાધોના મબુધ્વનિ થી એવુ ચિત્ત અન્યત્ર સંલગ્ન થયુ નથી,
તેવા વાધોને સાંભળવામાજ એ આસક્ત છે" એ કથિત પાઠ સુધી અત્રે પણ પાઠ સંગૃહીત
થયો છે આ પ્રમાણે ઠાક-ગાઠ થી ભરત નરેશ વિનીતા રાજધાની ના ઠીક મધ્યમાં આવેલા
માર્ગમા થઇને નીકળ્યા (ગિગચ્છિત્તા જેનેવ વિળીયાપ રાયદાળીપ ઉત્તરપુરતિથમે દિસી
માપ અભિસેયમંડવે તેનેવ ઉવાગચ્છહ) બહાર નીકળીને તેઓ વિનીતા રાજધાની ના
ઇશ્વાન કોળમાં કે જ્યાં આમિપેક મંડપ હતો, ત્યાં પહોંચ્યા. (ઉવાગચ્છિત્તા અભિસેયમંડવ-
દુવારે આમિસેકક હત્થિરયણ ઠાવેહ) ત્યાં પહોંચીને તેમણે આમિપેક્ય મંડપના દ્વારની
સપે આમિપેક્ય હસ્તિરત્નને ઝીણુરાખ્યુ (ઠાવિત્તા આમિસેકકાઓ હત્થિરયણાઓ પચ્ચોરુહહ)
ઝીણુ રાખીને તે રાજા ને આમિપેક્ય હસ્તિરત્ન ઉપર થી નીચે ઉતર્યા (પચ્ચોરુહિત્તા-ઇત્થી-
રયણેણં વત્તીસાપ જળવયકલ્લાણિયાસહસ્સેહિ વત્તીસહસ્રદ્ધેહિ ણાહગસહસ્સેહિ સદ્ધિ
સપરિવુદે) નીચે ઉતરીને સ્ત્રી રત્ન સુમદ્રા, અને ૩૨ હજાર ઋતુ કલ્યાણિકા રાજ કન્યાઓ
૩૨ હજાર વનપદના સુખીઓની કલ્યાણકારિણી કન્યાઓ અને ૩૨-૩૨ પાત્રીથી બંધ

अणुपविसद् ? ततः स भरतो राजा स्त्रीरत्नेन। सुमद्रया द्वात्रिंशता ऋतुः कल्याणिका सहस्रैः ऋतुविपरीनस्पर्शत्वेन शीतकाले उष्णस्पर्शः ग्रीष्मकाले शीतस्पर्श इत्यादि रूपेण ऋतुषु सुखस्पर्शदायिकानां स्त्रीणां द्वात्रिंशता सहस्रैरित्यर्थः यद्वाऽमृतकन्यात्वेन सदा कल्याणकारिकाकन्यासहस्रैरित्यर्थः तथा द्वात्रिंशता जनपदकल्याणिकासहस्रैः जनपदाः पदैकदेशे पदसमुदायोपचारात् जनपदाग्रगण्यः याः कल्याणिकाः सदा कल्याणकारिण्यो राजकन्या इत्यर्थः तासां द्वात्रिंशतासहस्रैरित्यर्थः तथा द्वात्रिंशता द्वात्रिंशद्बद्धैर्नाटकमहस्रैर्द्वात्रिंशद्बद्धैः द्वात्रिंशता पात्रैर्बद्धैः समुक्तैः द्वात्रिंशता नाटकमहस्रैः सार्द्धं सम्परिवृतः सम्परिवेष्टितः सन् स भरत अभिषेकमण्डपम् अनुप्रविशति 'अणुपविसिद्धा, अनुप्रविश्य 'जेणेव अभिसेयपेढे तेणेव उवागच्छद्' यत्रैव अभिषेकपीठं तत्रैव उपागच्छति स भरत 'उवागच्छिद्धा' उपागत्य 'अभिसेयपेढ अणुपदाहिणी करेमाणे अणुपदाहिणी करेमाणे पुरत्थिमिल्लेणतिसोवाणपडिरूवण

और ३२-३२ पात्रों से बद्ध ३२ हजार नाटकों से सहित हुए वे (अभिसेयमंडव अणु-पविसद्) अभिषेक मंडप में प्रविष्ट हुए (अणुपविसिद्धा) अभिषेक मंडप में प्रविष्ट होकर (जेणेव अभिसेयपीढे तेणेव उवागच्छद्) फिर वे जहां अभिषेक पीठ था वहां पर गये (उवागच्छिद्धा अभिसेयपेढ अणुपदाहिणी करेमाणे २ पुरत्थिमिल्लेण तिसोवाणपडिरूवणं दुरुहद्) वहां जाकरके उन भरत राजा ने उस अभिषेकपीठ को तीन प्रदक्षिणाएँ की फिर वे पूर्वभागावस्थित तिसोपान प्रतिरूपक से होकर उस पर चढ़ गये (दुरुहिद्धा) वहां चढ़कर वे (जेणेव सीहासणे तेणेव उवाग-च्छद्) जहांपर सिंहासन था वहां पर आये—(उवागच्छिद्धा) वहां आकर (पुरत्थामिमुहे सण्णिसण्णेत्ति) वे पूर्वदिशाकी ओर मुँह करके उम पर अच्छी तरह से बैठ गये (तए णं तस्स भरहस्स रण्णो बत्तीस रायसहस्सा जेणेव अभिसेयमंडवे तेणेव उवागच्छति) इसके बाद उस भरतराजा के ३२ हजार राजा जन जहां पर अभिषेक मण्डप था वहां पर आये (उवागच्छिद्धा अभिसेयमंडवं अणुपविसिद्धा) वहां आकर के वे अभिषेक मंडप में प्रविष्ट

उर हजार नाटकों थी परिवेष्टित थेवाते भरत राजा (अभिसेयमंडवं अणुपविसिद्धा) अभिषेक मंडपमा प्रविष्ट थया (अणुपविसिद्धा) अभिषेक मंडपमा प्रविष्ट थयने (जेणेव अभिसेय पीढे तेणेव उवागच्छद्) पछी तेओ नया अभिषेक पीठ छत त्या पडोआ (उवागच्छिद्धा) अभिसेयपेढ अणुपदाहिणी करेमाणे २ पुरत्थिमिल्लेण तिसोवाणपडिरूवणं दुरुहद्) त्या ते नधने श्री भरत राजाओ ते आभिषेक पीठनी त्रय प्रदक्षिणाओ करी. पछी तेओ पूर्व भागावस्थित तिसोपान प्रतिरूपक उपर आइड थय ने ते पीठ उपर थडी गया. (दुरुहिद्धा) त्या थडीने तेओ (जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छद्) नया सिंहासन छत त्या आओ. (उवागच्छिद्धा) त्या आवीने (पुरत्थामिमुहेसण्णिसण्णेत्ति) तेओ पूर्व दिशा तरङ्ग मुथ करीने सिंहासन उपर सारी रीते बैसी गया (तए णं तस्स भरहस्स रण्णो बत्तीस राय सहस्सा जेणेव अभिसेयमंडवे तेणेव उवागच्छति) त्यार भाड ते भरत महा राजाना उर हजार राजाओ नया आभिषेक मंडप छतो त्या आओ. (उवा गच्छिद्धा अभिसेयमंडवं अणुपविसिद्धा) त्या आवीने तेओ। अभिषेक मंडपमा प्रविष्ट

दूरुद्द' अभिषेकपीठम् अनुप्रदक्षिणी कुर्वन् अनुप्रदक्षिणी कुर्वन् पौरस्त्येन पूर्वभागावस्थितेन त्रिसोपानप्रतिरूपकेण दुरोहति-आरोहति दूरुद्द आरुद्द 'जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छि' यत्रैव सिंहासन तत्रैव उपागच्छति स भरतः 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'पुरत्याभिमुखे मणिसण्णेत्ति' पौरस्त्याभिमुखः पूर्वाभिमुखो भूत्वा सन्निपण्णः सम्यक्तया यथोचित्येन उपविष्टः । 'तएण तस्स भरहस्स रण्णो वत्तीसं रायसहस्सा जेणेव अभिसेयमडवे तेणेव उवागच्छति तत् खल्ल तस्य भरतस्य राज्ञो द्वात्रिंशद्वाजसहस्राणि द्वात्रिंशत्सहस्राणि राजानः यत्रैव अभिषेकमण्डपः तत्रैव उपागच्छन्ति, 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'अभिसेयमडवं अणुपविसति' ते राजानः अभिषेकमण्डपम् अनुप्रविशन्ति 'अणुपविसित्ता' अनुप्रविश्य 'अभिसेयपेढ अणुप्पयाहिणी करेमाणे अणुप्पयाहिणी करेमाणे उत्तरिल्लेण तिसोवाणपडिरूवणं जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छति' अभिषेकपीठम् अनुप्रदक्षिणी कुर्वन् अनुप्रदक्षिणी कुर्वन् औत्तराहेण त्रिसोपानप्रतिरूपकेण यत्रैव भरतो राजा तत्रैव उपागच्छन्ति 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'करयत्त जाव अंजलिं कट्ठु भरह रायाणं जएण विजएण वद्धावेत्ति' करतल परिगृहीतं दशनख शिरसावर्त्त मस्तके अठ्जलिं कृत्वा भरत राजानं जयेन विजयेन च जयविजयशब्दाभ्यां ते द्वात्रिंशत्सहस्राणि राजानो वर्द्धयन्ति 'वद्धावित्ता' वर्द्धयित्वा 'तस्स भरहस्स रण्णो णच्चासण्णे णाहदूरे सुस्ससमाणा जाव पज्जुवासति' तस्य भरतस्य राज्ञेनात्या सन्ने नातिदूरे शुश्रूषमाणाः सेवमानाः सन्तो

हुए (अणुपविसित्ता अभिसेयपेढ अणुप्पयाहिणीकरेमाणा उत्तरिल्लेण तिसोवाणपडिरूवणं जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छति) प्रविष्ट होकर उन्होंने अभिषेक पीठ की तीन प्रदक्षिणाएँ दो और फिर वे उत्तरदिग्वर्ती त्रिसोपान से होकर उसपर चढ़ गये एवं जहाँ पर भरत महाराजा थे वहाँ पर आये (उवागच्छित्ता) वहाँ पर आकरके उन्होंने (करयत्त जाव अंजलिं कट्ठु भरह रायाणं जएण विजएण वद्धावेत्ति) दोनों हाथों की अंजलि बनाकर और उसे मस्तक पर धरकर भरत राजा को जय विजय शब्दों द्वारा वधाई दी (वद्धावित्ता तस्स भरहस्स रण्णो णच्चासण्णे णाहदूरे सुस्ससमाणा जाव पज्जुवासति) वधाई देकर फिर वे ३२ हजार राजा भरत महाराजा के पास यथोचित स्थान पर सेवा करतेहुए बैठ गये यहाँ पर यावत् शब्द से १६ हजार देवोंका ग्रहण हुआ है क्योंकि ये देव भी चक्रवर्ती की

थ्या. (अणुपविसित्ता अभिसेयपेढ अणुप्पयाहिणी करेमाणा उत्तरिल्लेण तिसोवाणपडिरूवणं जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छति) प्रविष्ट यधने तेभ्यो अभिषेक पीठनी त्रय प्रदक्षिणा करी अने त्यारभाडे तेज्यो उत्तरदिग्ग त्रिसोपान उपर यधने तेनी उपर गढी गथा. अने ज्या भरत राजा होता त्या गथा (उवागच्छित्ता) त्यां आधीने तेभ्यो (करयत्त जाव अंजलिं कट्ठु भरह रायाणं जएण विजएण वद्धावेत्ति) अने हाथानी अ अंजलिनापी, अने तेने मस्तक उपर मूळीने भरत राजाने जय-विजय शब्दो वडे वधाभक्षी आपी (वद्धावित्ता तस्स भरहस्स रण्णो णच्चासण्णे णाहदूरे सुस्ससमाणा जाव पज्जुवासति) वधाभक्षी आपीने पळी ते उर हजार राजा भरत राजानी यासे यथोचित स्थान उपर सेना करतायेसी गथा अढी यावत्पह थी १६ हजार देवांसु ग्रहण ग्रहणे हेमहे जे देवा पक्ष अह-

યાવત્પર્યુપાસતે અત્ર યાવત્પદાત્ પોદશદેવસદસ્રાણિ ઇતિગ્રામ્યમ્ પતે દેશા અપિ પર્યુપાસતે
'તણ્ણ તસ્સ મરહસ્સ રણ્ણો સેનાવહરયણે જાવ સત્થવાહપ્પમિદ્ધો તેડવિ તદ્ધચેવ ણવરં
દાહિણિલ્લેણં તિસોવાણપહિરૂવણં જાવ પઙ્ગુવાસતિ'તત્ત' સ્વલ્લુ તદનન્તર કિલ્લ તસ્ય
મરતસ્ય રાજ્ઞઃ સેનાપતિરત્તનં યાવત્ સાર્થવાહપ્રમૃતયઃ તેડપિ તથૈવ પૂર્વવદેવ યથા
દ્વાત્રિંશત્સહસ્રસંહપકાઃ રાજાન પ્રથમં યત્ર અભિષેકમ્પઢપઃ તત્ર ઉપાગચ્છન્તિ તત્તોડમિ
ષેકમ્પઢપમજ્જુપ્રવિશન્તિ તથા તેડપીતિમાયઃ નવરં પૂર્વાપેક્ષયાડયં વિશેષઃ દાક્ષિણાત્યેન
દ્વારેણ ત્રિસોપાનપ્રતિરૂપકેણ યાવત્ પર્યુપાસતે અત્ર યાવત્પદાત્ દક્ષિણદ્વારેણ ત્રિસોપાન
પ્રતિરૂપકેણ યત્ર મરતો રાજા તત્ર ઉપાગચ્છન્તિ તત્તોડજ્જલિમુક્તવિશેષણવિશિષ્ટં કૃત્વા
જયવિજયશબ્દાભ્યાં વર્દયન્તિ, તતઃ તસ્ય રાજ્ઞો નાતિદૂરે નાતિ સમીપે શુશ્રૂપમાણાઃ
સન્તઃ તે પર્યુપાસતે ઇતિ ક્રમો બોધ્યઃ 'સેનાવહરયણે જાવ' અત્ર યાવત્પદાત્ સેના પતિ-
રત્તન, ગાથાપતિરત્તન વર્દકિરત્તન પુરોહિતરત્તનાનિ ત્રીણિ પઠ્ઠચધિકાનિ સ્વપકારશતાનિઅષ્ટા-
દશશ્રેણિપ્રશ્રેણયઃ, અન્યે ચ વહવો રાજેશ્વરતલવર યાવત્ સાર્થવાહપ્રમૃતયો ગ્રાહ્યાઃ ॥સૂ. ૩૦॥

સેવા કરતે હૈં (તણ્ણ તસ્સ મરહસ્સ રણ્ણો સેનાવહરયણે જાવ સત્થવાહપ્પમિદ્ધો તેડવિ
તદ્ધ ચેવ— ણવરં દાહિણિલ્લેણં તિસોવાણપહિરૂવણં જાવ પઙ્ગુવાસતિ) હસકે વાદ ડસ મરત
મહારાજા કા સેનાપતિરત્તન સુષેણ યાવત્ પાર્થવાહ આદિ જન યે સવ મી પૂર્વ કી તરહ હી
અમિષેક મન્હપ મેં આયે યહા પર ઇન કે આનેકા ઔર આકરકે યથોચિત્ત સ્થાન પર વૈઠ
જાનેક કા સવ કથન જૈસા ૨૨ હજાર રાજાઓ કે આને કે ઔર યથોચિત્તસ્થાન પર
વૈઠને તક કે સમ્બન્ધ મેં ક્રિયા ગયા હૈ—વૈમા હી કર હેનાચાદિયે પરન્તુ હમ કથન મેં ડસ
કથન કી અપેક્ષા યહી વિશેષતા હૈ કિ યે સવ સેનાસતિ આદિ જન દક્ષિણ દિગ્વર્તી ત્રિસોપાન
સે હોકર અમિષેક પીઠ પર ચઢે સેનાપતિરત્તનકે સાથ જો યાવત્પદ આયા હૈ ડસસે ગાથાપતિરત્તન
વર્દકિરત્તન, પુરોહિતરત્તન હન ત્રી રત્નો કા, ૩૬૦ રસોઈયો કા મોજન પકાને વાલોકા
શ્રેણિપ્રશ્રેણિજનો કા તથા અન્ય ઔર મી અનેક રાજેશ્વર/તલવર આદિકા પ્રહ્ણ હુઆહૈં ॥સૂ. ૩૦॥

વર્તીની સેવામા રહે છે (તણ્ણ તસ્સ મરહસ્સ રણ્ણો સેનાવહરયણે જાવ સત્થવાહપ્પમિદ્ધો
તેડવિ તદ્ધચેવ—ણવરં દાહિણિલ્લેણં તિસોવાણપહિરૂવણં જાવ પઙ્ગુવાસતિ)ત્યાર બાદતે શ્રીમરત
રાજાના સેનાપતિરત્તન સુષેણ યાવત્ સાર્થવાહ વગેરે હોડે પશુ પૂર્વવત્ અમિષેક મન્હપમાં આબ્યા.
અહીં જો સવે હોડે આબ્યા અને આવીને યથોચિત્ત સ્થાન ઉપર બેસી ગયા જો અજો બે
પ્રમાણે ૩૨ હજાર રાજાઓ અજો બે પ્રમાણે કહેવામાં આબ્યા છે તેવું જ કથન સમજી
લેવું જોઈ જો પશુ આ કથન મા તે કથન ॥ અપેક્ષાએ જોજ વિશેષતા છે કે જો સવે સેના
પતિ વગેરે હોડે દક્ષિણ દિગ્વર્તી ત્રિસોપાન ઉપર થઈને અમિષેક પીઠ ઉપર બેસી ગયા.
સેનાપતિ રત્તનની સાથે જો યાવત્ પદ આવેલ છે, તેનાથી ગાથાપતિ રત્તન, વર્દકિરત્તન પુરોહિત
રત્તન, જો ત્રણ રત્નો તું ૩૬૦ સૂપકારોનું—ભોજન બનાવનારા રસોઈઆઓનું, શ્રેણિ—પ્રશ્રેણિ
જનોનું તેમજ અન્ય પશુ અનેક રાજેશ્વર તલવર વગેરેનું ગ્રહણ થયું છે ॥સૂ. ૩૦॥

मूलम-तएणं से भरहे राया आभिओगे देवे सदावेइ सदावित्ता एवं
 वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! ममं महत्थं महग्घं महरिहं महा-
 रायाऽभिसेयं उवड्डवेह तएणं ते आभिओगिका देवा भरहेणं रण्णा एवं
 वुत्ता समाणा हड्डतुड्ड चित्ता जाव उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति
 अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणंति. एवं जहा विजयस्स तहा
 इत्थंपि जाव पंडगवणे एगओ मिलायति एगओ मिलाइत्ता जेणेव
 दाहिणद्धभरहे वासे जेणेव विणीया रायहाणी तेणेव उवागच्छंति उवाग
 च्छित्ता विणीयं रायहाणी अणुप्पयाहिणी करेमाणा २ जेणेव अभिसेय-
 मंडवे जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता तं महग्घं मह-
 रिहं महारायाभिसेयं उवड्डवेति, तएणं तं भरहं रायाणं बत्तीसं रायसहस्सा
 सोभणंसि तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहुत्तंसि उत्तरपोड्वंयाविजयंसि तेहिं
 साभाविएहि य उत्तरवेउव्विएहि य वरकमलपइट्ठाणेहिं सुरभिवरवारि
 पडिपुण्णेहिं जाव महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचंति अभिसेओ
 जहा विजयस्स अभिसिंचित्ता पत्तेअं २ जाव अंजलिं कट्ठु ताहिं इट्ठाहिं
 जहा पविसंतस्स भणिया जाव विहराहीत्तिकट्ठु जयजयसदं पउंजंति। तए
 णं तं भरहं रायाणं सेणावइश्यणे जाव पुरोहियस्यणे तिण्णिय सट्ठा सूयसया
 अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ अण्णेय बहवे जाव सत्थवाहप्पभिइओ एवं
 चेव अभिसिंचति तेहिं वरकमलपइट्ठाणेहिं तहेव जाव अभियुणंति य
 सोलसदेवसहस्सा एवं चेव णवरं पम्हसुकुमालए जाव मउडं पिण्छेति, तय-
 णंतरं च णं ददरमलयसुगंधिएहिं गंधेहिं गायाहिं अब्भुक्खेति दिव्व च
 मणोदामं पिण्छेति, किं बहुणा ! गंठिम वेढिम जाव विभूसियं करेति,
 तएणं से भरहे राया महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचिए समाणे
 कोडुंबियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवा-
 णुप्पिया ! हत्थिखंधवरगया विणीयाए रायहाणीए सिंघाड्ढा चउक्क
 चच्चर जाव महापहपहेसु महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा

उस्सुक्कं उक्करं उक्किट्ठं अदिज्जं अमिज्जं अब्भट्ठपवेसं अदंडकुदंडिमं
जाव सपुरजणवयं दुवालससंवच्छरिअं पमोय घोसेह ममेय माणत्तियं
पच्चप्पिणहत्ति, तएणं ते कोडुंवियपुरिसा भरहेणं रण्णा एवंवुत्ता समाणा
हट्ठतुट्ठचित्तमाणदिया पीइमणा हरिसवसविसप्पमाणहियया विणएणं वयणं
पडिसुणेति पडिसुणित्ता खिप्पामेव हत्थिखंधवरगया जाव घोसंति घोसि-
त्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणंति तएणं से भरहे राया महयामहया रायाभि-
सेएणं अभिसित्ते समाणे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता इत्थीरयणेणं
जाव णाडगसहस्सेहि सद्धि संपरिवुडे अभिसेयपेढाओ पुरत्थिमिल्लेणं
तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहइ, पच्चोरुहत्ता अभिसेयमंडवाओ पडि-
णिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता जेणेव अभिसेक्के हत्थिरयणे तेणेव उवाग-
च्छइ, उवागच्छित्ता अंजणगिरिकूडसण्णिमं गयवइं जाव दूरुढे। तएण
तस्स भरहस्स रण्णो बत्तीसं रायसहस्सा अभिसेयपेढाओ उत्तरिल्लेणं ति-
सोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहंति, तएणं तस्स भरहस्स रण्णो सेणावइरयणे
जाव सत्थवाहप्पभिईओ अभिसेयपेढाओ दाहिणील्लेणं तिसोवाण-
पडिरूवएणं पच्चोरुहंति, तएणं तस्स भरहस्स आभिसेक्कं हत्थिरयणं
दूरुढस्स समाणस्स इडे अट्ठमंगलगा पुरओ जाव संपत्थिया जोऽवि य
इगच्छमाणस्स गमो पढमो कुबेरावसाणो सोचेव इहंपि कमो स-
क्कारजढो जेयव्वो जाव कुबेरोव्व देवराया केलाससिहरिसिंभूयंति।
तएणं से भरहे राया मज्जणघरं अणुपविसइ अणुपविसित्ता जाव भोयण-
मंडवंसि सुहासणवरगए अट्ठमभत्तं पारेइ पारित्ता भोयणमंडवाओ पडि-
णिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता उप्पि पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थ-
एहिं जाव मुंजमाणे विहरइ तएणं से भरहे राया दुवालससंवच्छरियंसि
पमोयंसि णिव्वत्तंसि समाणंसि जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ उ-
वागच्छित्ता जाव मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता जेणेव
बाहिरिया उवट्ठाणसाला जाव सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे णिसीअइ

मूलम-तएणं से भरहे राया आभिओगे देवे सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! ममं महत्थं महग्घं महरिहं महा-रायाऽभिसेयं उवड्डवेह तएणं ते आभिओगिका देवा भरहेणं रण्णा एवं बुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ चित्ता जाव उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणंति. एवं जहा विजयस्स तहा इत्थंपि जाव पंडगवणे एगओ मिलायंति एगओ मिलाइत्ता जेणेव दाहिणद्धभरहे वासे जेणेव विणीया रायहाणी तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता विणीयं रायहाणीं अणुप्पयाहिणी करेमाणा २ जेणेव अभिसेय-मडवे जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता तं महग्घं मह-रिहं महारायाभिसेयं उवड्डवेति, तएणं तं भरहं रायाणं वत्तीसं रायसहस्सा सोभणंसि तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहुत्तंसि उत्तरपोडंवयाविजयंसि तेहिं साभाविएहिं य उत्तरवेउव्विएहिं य वरकमलपइट्ठाणेहिं सुरभिवस्वारि पडिपुण्णेहिं जाव महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचंति अभिसेओ जहा विजयस्स अभिसिचित्ता पत्तेअं २ जाव अंजलिं कट्ठुं ताहिं इट्ठाहिं जहा पविसंतस्स भणिया जाव विहराहीत्तिकदट्ठु जयजयसदं पउंजंति। तए णं तं भरहं रायाणं सेणावइस्यणे जाव पुरोहियस्यणे तिण्णिय सट्ठा सूर्यसया अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ अण्णेय बहवे जाव सत्थवाहप्पभिइओ एवं चेव अभिसिंचति तेहिं वरकमलपइट्ठाणेहिं तहेव जाव अभिथुणंति य सोलसदेवसहस्सा एवं चेव णवरं पम्हसुकुमालए जाव मउडं पिण्छेति, तय-णंतरं च णं ददस्मलयसुगंधिएहिं गंधेहिं गायाहिं अब्भुक्खेति दिव्व च मणोदामं पिण्छेति, किं बहुणा ! गंठिम वेढिम जाव विभूसियं करेति, तएणं से भरहे राया महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचिए समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सदावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवा-णुप्पिया ! हत्थिखंधवरगया विणीयाए रायहाणीए सिंघाड्ढा चउक्क चच्चर जाव महापहपहेसु महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा

उस्सुक्कं उक्करं उक्किट्ठं अदिज्जं अमिज्जं अज्मडपवेसं अदंडकुदंडिमं
जाव सपुरजणवयं दुवालससंवच्छरिअं पमोयं घोसेह ममेय माणत्तियं
पच्चप्पिणहत्ति, तएणं ते कोडुंवियपुरिसा भरहेणं रण्णा एवंवुत्ता समाणा
हडुतुडुचित्तमाणदिया पीइमणा हरिसवसविसप्पमाणहियया विणएणं वयणं
पडिसुणेति पडिसुणित्ता खिप्पामेव हत्थिखंधवरगया जाव घोसंति घोसि-
त्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणंति तएणं से भरहे राया महयामहया रायाभि-
सेएणं अभिसित्ते समाणे सीहासणाओ अज्मुड्डेइ अज्मुड्डित्ता इत्थीरयणेणं
जाव णाडगसहस्सेहि सद्धि संपरिवुडे अभिसेयपेढाओ पुरत्थिमिल्लेणं
तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहइ, पच्चोरुहत्ता अभिसेयमंडवाओ पडि-
णिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता जेणेव आभिसेक्के हत्थिरयणे तेणेव उवाग-
च्छइ, उवागच्छित्ता अंजणगिरिकूडसण्णिमं गयवइ जाव दूरूडे। तएण
तस्स भरहस्स रण्णो बत्तीसं रायसहस्सा अभिसेयपेढाओ उत्तरिल्लेणं ति-
सोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहंति, तएणं तस्स भरहस्स रण्णो सेणावइरयणे
जाव सत्थवाहप्पमिईओ अभिसेयपेढाओ दाहिणील्लेणं तिसोवाण-
पडिरूवएणं पच्चोरुहंति, तएणं तस्स भरहस्स आभिसेक्कं हत्थिरयणं
दूरूढस्स समाणस्स इहे अड्डमंगलगा पुरओ जाव संपत्थिया जोऽवि य
इगच्छमाणस्स गमो पढमो कुबेरावसाणो सोचेव इहंपि कमो स-
क्कारजढो जेयव्वो जाव कुबेरोव्व देवराया केलाससिहरिसिगभूर्यंति।
तएणं से भरहे राया मज्जणघरं अणुपविसइ अणुपविसित्ता जाव भोयण-
मंडवंसि सुहासणवरगए अट्ठमभत्तं पारेइ पारित्ता भोयणमंडवाओ पडि-
णिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता उप्पि पासायवरगए फुट्टमाणेहि मुइंगमत्थ-
एहि जाव मुंजमाणे विहइ तएणं से भरहे राया दुवालससंवच्छरियंसि
पमोयंसि णिव्वत्तंसि समाणंसि जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ उ-
वागच्छित्ता जाव मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता जेणेव
बाहिरिया उवट्ठाणसाला जाव सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे णिसीअइ

णिसीइत्ता सोलसदेवसहस्से सकारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता
 पडिविसज्जेइ पडिविसज्जित्ता वत्तीसं रायवरसहस्सा सक्कारेइ सम्माणेइ
 सक्कारित्ता सम्माणित्ता सेणावइरणं सकारेइ सम्माणेइ सकारित्ता
 सम्माणित्ता जाव पुरोहियरणं सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता
 सम्माणित्ता एवं तिण्णि सट्ठे सुवयारमए अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ स-
 क्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता अण्णे य वहवे राइसर तलवर
 जाव सत्थवाहप्पभिइओ सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता
 पडिपिसज्जेइ पडिविसज्जित्ता उप्पिपासायवरगए जाव विहरइ ॥सू०३१॥

छाया-ततः खलु स भरतो राजा आभियोग्यान् देवान् शब्दयति शब्दयित्वा पवं अ-
 धादीत्क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिया । मम महार्थम् महार्घम् महार्हम् महाराज्याभिषेकमुपस्थाप-
 यत् । ततः खलु ते आभियोग्या देवा भरतेन राज्ञा एवमुक्ताः सन्त दृष्टुष्ट चित्तं यावत्
 उत्तरपौरस्त्यं दिग्भागम् अपकामन्ति अपकम्य वैक्रियसमुद्घातेन समवभ्रन्ति, एव यथा
 विजयस्य तथा इत्थमपि यावत् पण्डकवने एकतो मिलन्ति एकतो मिलित्वा, यत्रैव दक्षि-
 णार्द्धभारतवर्षवर्षं यत्रैव विनीता राजधानी तत्रैव उपागच्छन्ति उपागत्य विनीतां राज-
 धानीमनुप्रदक्षिणी कुर्वन्तः अनुप्रदक्षिणी कुर्वन्तः यत्रैव अभिषेकमण्डपो यत्रैव भरतो राजा तत्रैव
 उपागच्छन्ति उपागत्य तत् महार्थं महार्घं महार्हं महाराज्याभिषेकम् उपस्थापयन्ति, ततः खलु
 त भरत राजानं द्वात्रिंशद्राजसहस्राणि शोभने तिथिकरणदिवसनक्षत्रमुहूर्तं उत्तरपौष्टपदा
 विजये तैः स्वाभाविकैश्च उत्तरवैक्रियैश्च वरकमलप्रतिष्ठानैः सुरभिवरवारिप्रतिपूणैः यावत् म
 हता महता राज्याभिषेकेण अभिषिञ्चन्ति अभिषेको यथा विजयस्य, अभिषिञ्च्य प्रत्येकं प्रत्येकं
 यावत् अञ्जलिं कृत्वा तामिरिष्टाभिः यथा प्रविशतो भणिता यावत् विरह इति कृत्वा जय
 जय शब्दं प्रयुञ्जन्ति । ततः खलु तं भरतं राजानं सेनापतिरत्नं यावत् पुरोहितरत्नम्
 त्रीणि च षष्ठानि सूपशतानि अष्टादश श्रेणिप्रश्रेणयः अन्ये च बहवो यावत् सार्थवाहप्रभृतयः
 एवमेव अभिषिञ्चन्ति तैः वरकमलप्रतिष्ठानैः तथैव यावत् अभिष्टुवन्ति च षोडशदेवस
 हस्राणि एवमेव नवरं पद्मसुकुमारया यावत् मुकुटं पिनहन्ति । तदनन्तरं च खलु वर्द्ध-
 मलयसुगान्धतैः गन्धैः गात्राणि अभ्युक्षन्ति दिव्यं च सुमनोदामं पिनहन्ति किं बहुना ?
 ग्रन्थिमवेष्टिमं यावत् धभूषितं कुर्वन्ति ततः खलु स भरतो राजा महता महता राज्या-
 भिषेकेण अभिषिक्तः समानः कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा एवम् अवादीत्-क्षिप्रमेव
 भो देवानुप्रिया । इस्तिस्कन्धवरणताः विनीताया राजधान्या शृङ्गाटकं त्रिकचतुष्कचत्वर
 यावत् महापथस्थेषु महता महता शब्देन उद्घोषयन्त उच्छुल्बकम् उत्करम् उत्कृष्टम् अवेयम्
 अमेयम् अभटप्रवेशम् अवण्डकुदडिमम् यावत् सपुरजनजानपदम् द्वावशसंघत्सरिकं प्रमोद
 घोषयत, घोषयित्वा मम यनामाज्ञासिकां प्रत्यर्पयत इति ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः

भरतेन राज्ञा एवमुक्ता सन्तः हृद्यतुष्टचित्तानन्दिता प्रीतिमनस हर्षवशविसर्पद् हृदया विनयेन वचनं प्रतिशृण्वन्ति प्रतिश्रुत्य क्षिप्रमेव हस्तिस्कन्धवरगताः यावद् घोषयन्ति घोषयित्वा पतामाज्ञातिकाम् प्रत्यर्पयन्ति । तत खलु स भरतो राजा महता महता राज्याभिषेकेण अभिषिक्तः सन् सिंहासनाद् अभ्युत्तिष्ठति अभ्युत्थाय स्त्रीरत्नेन यावत् नाटक-सहस्रैः सार्द्धम् संरिवृतोऽभिषेकपीठात् पौरस्त्येन त्रिसोपानप्रतिरूपकेण प्रत्यवरोहति प्रत्य-वरुह्य अभिषेकमण्डपात् प्रतिनिष्कामति प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव अभिषेक्यं हस्तिरत्नं तत्रैव उपागच्छति उपागत्य अञ्जनगिरिकूटसन्निभं गजपतिं यावद् दुरुद्ध । ततः खलु तस्य भरतस्य राज्ञो द्वात्रिंशद्वाजसहस्राणि अभिषेकपीठात् औत्तराहेण त्रिसोपानप्रतिरूपकेण प्रत्यवरोहन्ति । तत खलु तस्य भरतस्य राज्ञः सेनापतिरत्नं यावत् सार्थवाहप्रभृतय अभिषेकपीठात् दक्षिणात्येन त्रिसोपानप्रतिरूपकेण प्रत्यवरोहन्ति । ततः खलु तस्य भरतस्य राज्ञः अभिषेक्यं हस्तिरत्नं दुरुद्धस्य सत इमानि अष्टाष्टपङ्कलानि पुरतो यावत् सम्प्रस्थितानि योऽपि च अतिगच्छतो गमः प्रथमं कुबेरावसानं स एव क्रमः इदमपि स त्कारवर्जितो नैतव्यो यावत् कैलासशिखरिशृङ्गभूतमिति । तत खलु स भरतो राजा मञ्जनगृहम् अनुप्रविशति अनुप्रविश्य यावत् भोजनमण्डपे सुखासनवरगतं अष्टमभक्त पारयति पारयित्वा भोजनमण्डपात् प्रतिनिष्कामति प्रतिनिष्क्रम्य उपरि प्रासादवरगतः स्फुटञ्जिर्द्वन्द्वमस्तकैः यावद् भुञ्जानो विहरति । तत खलु स भरतो राजा द्वादश सम्बत्सरिके निर्वृते सति यत्रैव मञ्जनगृहं तत्रैव उपागच्छति उपागत्य यावद् मञ्जनगृहात् प्रतिनिष्कामति प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला यावत् सिंहासनवरगतः पौरस्त्याभिमुखो नि-षोदति निषद्य षोडशदेवसहस्राणि सत्कारयति सम्मानयति सत्कार्यं सम्मान्य प्रतिविसर्जयति प्रतिविसृज्य द्वात्रिंशद्वाजवरसहस्राणि सत्कारयति सम्मानयति सत्कार्यं सम्मान्य यावत् सेनापतिरत्नं सत्कारयति सम्मानयति सत्कार्यं सम्मान्य यावत् पुरोहितं तं सत्कारयति सम्मानयति सत्कार्यं सम्मान्य त्रीणि पद्याणि सूपकारशतानि अष्टादशश्रेणिप्रश्नेणी सत्का-रयति सम्मानयति सत्कार्यं सम्मान्य अन्याश्च बहून् राजेश्वरं तलवरं यावत् सार्थवाहं प्रभृतीन् सत्कारयति सम्मानयति सत्कार्यं सम्मान्य प्रतिविसर्जयति प्रतिविसृज्य उपरि प्रासादवरगतो यावत् विहरति ॥सू० ३१॥

‘टीका-‘तणं से’ इत्यादि । ‘तणं से भरहे राया आभिओगे देवे सहावेइ’ ततः खलु तदनन्तरं किल स भरतो राजा आभियोग्यान् आज्ञाकारिणो देवान् शब्दयति आह्वयति

‘तणं से भरहे राया आभियोगे देवे सहावेइ’ इत्यादि

टीकार्थ- (तण से भरहे राया आभिओगे देवे सहावेइ) इसके बाद उस मात महाराजा ने आभियोग्यदेवों को बुलाया (सहावित्ता एवं वयासी) और बुलाकर उन आज्ञाकारी

‘तणं भरहे राया आभिओगे देवे सहावेइ’ इत्यादि

टीकार्थ- (तण से भरहे राया आभिओगे देवे सहावेइ) त्थार बाद भरत राजाये आभि-योगिह देवाने बुलाव्या (सहावित्ता एवं वयासी) अने बुलावीने ते आज्ञाकारी आभियोगिह

‘સદ્વાવિત્તા’ શબ્દયિત્વા આહૂય ‘एवं वयामी’ एव वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत् उक्तवान्
 ‘खिप्पामेव भो देवानुप्पिया ! मम महत्थं महग्घं महग्घिं महारायाऽभिसेयं उवट्ठवेह’
 क्षिप्रमेव शीघ्रातिशीघ्रमेव भो देवानुप्पियाः ! मम ‘महत्थं’ महार्थम् महान् अर्थः मणि-
 कनकरत्नादिक उपयुज्यमानो व्याप्रियमाणो यस्मिन् स तथाभूतस्तम्, तथा महार्थम्
 महान् अर्थः यत्र स तथा भूतस्तम् तथा महार्थम् महत् उत्सवमर्हतीति महार्हः-उत्स-
 वयोग्यवाद्यविशेषस्तम् एवभूत महाराज्याभिषेक उपरथापयत सम्पादयत ‘तए ण ते
 आभिओइया देवा भरहेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठत्तु चित्त जाव उत्तरपुत्थिमं
 दिसीभाग अवक्कमति’ ततो भरतस्य राज्ञ आज्ञप्त्यनन्तरं खल्वेते आभियोग्या देवा
 भरतेन राज्ञा एवमुक्ताः सन्तो हृष्टतुष्ट चित्त यावद् उत्तरपोरस्त्यं दिग्भागम् ईशानकोणम्
 अपक्रामन्ति गच्छन्ति, अत्र यावत्पदात्-हृष्टतुष्ट चित्तानन्दिताः प्रीतिमनसः परमसौमनस्यताः
 हर्षवशतिर्षद् हृदयाः करतलपरिगृहीतं दशनखं शिरसावर्त्त मस्तके अठजलिं कृत्वा एवं
 स्वामिनः ! यथैव यूयम् आदिशथ तथैव आज्ञया अनुसारेण वयं कुर्म इत्येवं रूपेण विनयेन
 वचन प्रतिशृण्वन्ति प्रतिश्रुत्य इति ग्राह्यम् । ‘अवक्कमिप्ता’ अपक्रम्य गत्वा ‘वेउन्विय-
 समुग्घाएणं’ समोहन्ति ‘वैक्रियसमुद्घातेन वैक्रियकरणार्थकप्रयत्नविशेषेण समवध्नन्ति

આભિયોગ્યદેવો સે એસા કહા— (खिप्पामेव भो देवानुप्पिया, मम महत्थं महग्घं महरियं
 महारायाभिसेय उवट्ठवेह) हे देवानुप्पियो ! तुमलोग शीघ्र ही माणि कनकादिरूप पदार्थ
 जिसमें सम्मिलित हों, तथा जिसमें आई हुई वस्तुएं सब विशेष मूल्यवाली हों एव जिसमें उत्सव
 के योग्य व.धविशेष हों ऐसे महाराजाभिषेक के योग्य सामग्री का प्रवन्ध करो (तएणं ते
 आभिओगिया देवा भरहेणं रण्णा एव वुत्ता समाणा हट्ठत्तुचित्तजाव उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं
 अवक्कमंति) इस प्रकार श्रीभरत महाराजा के द्वारा कहे गये वे आभियोगिक देव बहुत अधिक
 हर्षित एव सतुष्ट चित्त हुए यावत्—वे ईशान कोने में चले गये यहां यावत्पद से “चित्तानन्दिताः
 प्रीतिमनसः” आदि पूर्वोक्त पाठगृहीत हुआ है और यह पाठ “पडिसुणिप्ता” पद तक गृहीत हुआ
 है (अवक्कमिप्ता - वेउन्वियसमुग्घाएणं समोहन्ति) ईशानदिशा में जाकर—उन्होंने वैक्रियसमुद्घात द्वारा

દેવો ને આ પ્રમાણે કહ્યું— (खिप्पामेव भो देवानुप्पिया ! मम महत्थं महग्घं महरियं महा-
 रायाभिसेयं उवट्ठवेह) हे देवानुप्पियो ! तुम લોકે શીઘ્ર મણી રત્નાદિ રૂપ પદાર્થો જેમાં
 સમ્મિલિત હોય, તથા જેમાં આવેલ સર્વ વસ્તુઓ મૂલ્યવાન હોય, તેમજ જેમાં ઉત્સવ
 યોગ્ય વાદ્ય વિશેષ હોય એવી મહારાજ્યાભિષેક માટે યોગ્ય સામગ્રીની વ્યવસ્થા કરો. (તएणं
 તે આભિओगिया देवा भरहेण रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठ-तुट्ठ चित्त जाव उत्तरपुर-
 त्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति) આ પ્રમાણે ભરત મહારાજા વડે આજ્ઞાપ્રયોગે દેવો
 ખૂબ અધિક હર્ષિત તેમજ સતુષ્ટ ચિત્ત થયા યાવત્ તેઓ ઈશાન કોણ તરફ જતા
 રહ્યા અહીં આવેલા યાવત્ પદથી ‘चित्तानन्दिताः प्रीतिमनसः’ આદિ પૂર્વોક્ત પાઠનો સ ગૃહ
 થયો હોય છે અને એ પાઠ “पडिसुणिप्ता” પદ સુધી ગૃહીત થયેલો છે. (अवक्कमिप्ता
 वेउन्वियसमुग्घाएणं समोहन्ति) ઈશાન કોણમાં જઈને તેમણે વૈક્રિય સમુદ્ઘાત વડે

આત્મપ્રદેશાન્ વહિઃ દૂરતો વિક્ષિપન્તિ 'एवं जहा विजयस्स तहा इत्थंपि जाव पडगवणे एगओ मिलायंति' एवम् इत्थ પ્રકારમભિષેકસૂત્રમ્ यथा विजयस्य—जम्बूद्वीपविजयद्वारा धिपदेवस्य तृतीयोपाङ्गे प्रोक्तम् 'तहा इत्थंपि' तथाऽत्रापि विजयम् यावत् पण्डकवने एकतः एकत्र मिलन्ति अत्र च यावत्पदात् सर्वापि अभिषेक सामग्री वक्तव्या साचोत्तराज जिनजन्माधिकारे पञ्चमवक्षस्कारे पत्राकाररीत्या विंशत्युत्तरशते सूत्रे निरुदत्ताङ्करीत्या पञ्चमवक्षस्कारे अष्टमसूत्रे वक्ष्यते तत्र तत्सूत्रस्य साक्षाद्वर्णितत्वात् तत एव सर्वं द्रष्टव्यम् । 'एगओ मिलाइत्ता' एकतः- एकत्र मिलित्वा 'जेणेव दाहिणद्धमरहे चासे जेणेव विणीया रायहाणी तेणेव उवागच्छंति' यत्रैव दक्षिणार्द्धभारतवर्ष यत्रैव विनीता राजधानी तत्रैव ते देवाः उवागच्छन्ति 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'विणीयं रायहाणि अणुप्पयाहिणी करेमाणा अणुप्पयाहिणी करेमाणा जेणेव अभिसेयमंडवे जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छंति' विनीतां राजधानीम् अनुप्रदक्षिणी कुर्वन्तः अनुप्रदक्षिणी कुर्वन्तः यत्रैव अभिषेकमण्डपो

અપને આત્મપ્રદેશો કો બાહર—નિકાલા (एव जहा विजयस्स तहा इत्थंपि ज व पंडगवणे-एगओ मिलायंति) इस तरह जम्बूद्वीप के विजयद्वारके अधिपति देव—विजय के प्रकरण में तृतीय उपाङ्ग में अभिषेक—सूत्र कहा गया है उसी प्रकार से यहां पर भी वही अभिषेक—सूत्र, यावत् वे सबके सब पण्डक वन में एकत्रित होजाते हैं यहां तक का कहलेना चाहिये । यहां यावत् पद से समस्त अभिषेक समारंग्गृहीत हुई है वह आगे जिनजन्माधिकार में पंचम वक्षस्कार में पत्राकाररीत्या १२० सूत्रमें और और द्वारा दत्त अङ्करीति से पञ्चमवक्षस्कार में आठवे सूत्रमें कहा जावेगी अतः वही से यह सब जानने में आजावेगी (एगओ मिलित्ता) पंडक वन में एकत्रित होकर (जेणेव दाहिणद्धमरहे चासे जेणेव विणीया रायहाणी तेणेव उवागच्छंति)वे सब के सब देव जहा दक्षिणार्द्ध भरतक्षेत्र था, और इसमें भी जहां विनीता राजधानी थी वहां पर आये (उवागच्छित्ता विणीयं रायहाणी—अणुप्पयाहिणी करेमाणे २ जेणेव अभिसेयमंडवे जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छंति) वहां आकर के उन्होंने उस विनीता राजधानी की तीन प्रदक्षिणाएं की बाद में जहां अभिषेक

પોતાના આત્મપ્રદેશોને શરીરથી બહાર કાઢ્યા. (एव जहा विजयस्स तहा इत्थंपि जाव पंडगवणे एगओ मिलायति)आ प्रमाणे जम्बूद्वीपना विजयद्वारना अधिपति देव—विजयना प्रकरणे मा तृतीय उपाङ्गमा अभिषेक सूत्र कहेवाभां आवेल छे ते प्रमाणे ज अहो पक्ष अभिषेक सूत्र यावत् ते सब पंडक वनमा ओकेत्र थईलय छे. अहो सुधी पाठ अहंषु करेवा नैछे अहो यावत् पदथी समस्त अभिषेक सामग्री गृहीत थयेली छे. ते आगण जिन जन्माधिकारमा, पञ्चमवक्षस्कारमां, पत्राकार रीत्या १२० मा सूत्रमा अने मात्रा पडे हए अ क रीतिथी पञ्चमवक्षस्कारना आठमा सूत्रमा कहेवामा आवेशे अथी जिज्ञासुओ अ ओ त्याथी ज नबुवा प्रयत्न करे (एगओ मिलित्ता) पंडक वनमां ओकेत्र थईने (जेणेव दाहिणद्धमरहे चासे जेणेव विणीया रायहाणी तेणेव उवागच्छंति) तेने सब देवा जयां विनीता राजधानी हती त्यां आय्या. (उवागच्छित्ता विणीयं रायहाणीं अणुप्पयाहिणी करेमाणे २ जेणेव अभिसेयमंडवे जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छंति) त्यां आवीने तेभणे

યત્રૈવ શ્રી ભરતો રાજા તત્રૈવ ઉપાગચ્છન્તિ 'ઉત્તાગચ્છિત્તા' ઉપાગત્ય ત મહર્થં મહર્થં મહરિદં મહારાયામિસેયં ઉવદ્ધવેતિ' તે દેવાઃ તત્ પૂર્વોક્ત મહાર્થ મહાર્થ મહાર્થ મહાર્થ મહારાજ્યામિષેક મહારાજ્યામિષેકોપયોગિક્ષીરોદકાદ્યુપસ્કરણમિત્યર્થઃ ઉપસ્થાપયન્તિ ઉપદૌકયન્તિ રાજાઃ સમીપે આનયન્તીત્યર્થઃ વૈક્રિયશક્ત્યા નિષ્પાદિતાનિ સર્વાણિ રત્નગજાશ્વાદીનિ बहुमूल्यानि वस्तूनि आनीय समर्पयन्तीति। अथ पूर्वकृत्य पूर्वमुच्चा उत्तरकृत्यमाह-'तएण' इत्यादि 'तएण तं भरहं रायाण वत्तीस रायसहस्सा सोभणंसि तिहि करणदिवसणक्खत्तमुहुत्तंसि उत्तरपोट्टवया विजयंसि तेहिं सामाविण्हिय उत्तरवे उच्चिण्हिय वरकमल पड्डाणेहिं सुरभिचरवारिपडिपुण्णेहिं जाव महया महया रायामिसेएणं अभिसिंचंति' ततः खलु त भरत राजानंद्वान्निश-द्राजसहस्राणि शोभने निर्दोषगुणयुक्ते तिथिकरणदिवसनक्षत्रमुहूर्ते अत्र समाहारद्वन्द्वः ततः सप्तम्येकवचनम् तत्र तिथिः रिक्ताकेन्दुदग्धादिदृष्टतिथिभ्यो भिन्ना जयादितिथिः । करणं विशिष्ट दिवसः दुर्दिनग्रहणोत्पातदिनादिभ्यो भिन्नदिवसः नक्षत्रं राज्यामिषेको-

મંડપ ધીર ઉસમેં મી જહાં ચક્રર્ત્તિ શ્રી ભરત મહારાજા થે વહા પર વે આયે(ઉવાગચ્છિત્તા તં મહર્થં મહર્થ મહરિદં મહારાયામિસેયં ઉવદ્ધવેતિ) વહા આકર કે ઉન્હો ને ઉસ મહર્થ મહાર્થ એવં મહાર્થ મહારાજામિષેક કો સમસ્ત સામગ્રી કો રાજાકે સમક્ષ ઉપસ્થિત કર દિયા અર્થાત વૈક્રિયશક્તિ દ્વારા નિષ્પાદિત—સમસ્ત રત્ન ગજ, અશ્વ આદિરૂપ बहुमूल्य वस्तुओं को लाकर समर्पित करदिया (तए णं तं भरहं रायाणं वत्तीस रायसहस्सा सोभणंसि तिहिकरणदिवस-णक्खत्तमुहुत्तंसि उत्तरपोट्टवया विजयंसि तेहिं सामाविण्हिय उत्तरवेउच्चिण्हिय वरकमल पड्डाणेहिं सुरभिचरवारिपडिपुण्णेहिं जाव महया २ रायामिसेएणं अभिसिंचंति) इस के बाद श्रीभरत महाराजा का उन ३२ हजार गजाओं ने निर्दोषगुणयुक्त तिथि करण दिवस—नक्षत्र समन्वित मुहूर्त में अमिषेक किया रिक्ता आदि दृष्ट तिथिओं से भिन्न जो जयादितिथियां होती हैं वे शुभतिथियां माने जाते हैं करण नाम विशिष्ट दिवस का है यह दिवस दुर्दिन, ग्रहण, उत्पात आदि से भिन्न-रहित-होना है. राज्य में अमिषेक—के योग्य जो भ्रवण आदि वर नक्षत्र

તે વિનીતા રાજધાનીની ત્રણ પ્રદક્ષિણાઓ કરી ત્યાર બાદ જ્યાં અભિષેક મંડપ અને તેમાં પશુ જ્યાં ભરત રાજા હતા ત્યાં આગળ (ઉવાગચ્છિત્તા તં મહર્થં મહર્થ મહરિદં મહારાયામિસેયં ઉવદ્ધવેતિ) ત્યાં આવીને તેમણે તે મહાર્થ, મહાર્થ અને મહાર્થ મહારાજ્યામિષેકની સમસ્ત સામગ્રીને રાજાની સામે મૂકી દીધી. અર્થાત વૈક્રિય શક્તિ વડે નિષ્પાદિત સમસ્ત રત્ન, ગજ અશ્વ, આદિ રૂપ बहुमूल्य वस्तुઓને લાવીને સમર્પિત કરી. (તપ્પણં તં મરહં રાયાણ વત્તીસં રાયસહસ્સા સોમણંસિ તિહિકરણદિવસણક્કલ્લત્તમુહુત્તંસિ ઉત્તરપોટ્ટવયા વિજયંસિ તેહિં સામાવિણ્ઠિય ઉત્તરવેઉચ્ચિણ્ઠિય વરકમલપડ્ડાણેહિં સુરભિચરવારિપડિપુ-ણેહિં જાવ મહયા ૨ રાયામિસેણં અભિસિંચંતિ) ત્યારબાદ ભરત રાજાને તે ૩૨ હજાર રાજાઓએ નિર્દોષ ગુણ યુક્ત તિથિ, કરણ દિવસ નક્ષત્ર—સમન્વિત મુહૂર્ત માં અભિષેક કર્યો. રિક્તા વગેરે દૃષ્ટ તિથિઓથી ભિન્ન જે જય આદિ તિથિઓ હોય છે તેને શુભતિથિઓ માનવામાં આવે છે. કરણ નામ વિશેષ દિવસનું છે એ દિવસ દુર્દિન, ગ્રહણ, ઉત્પાત

પયોગિ શ્રવણાદિ ત્રયોદશ નક્ષત્રાણામન્યત્રત્ ઉક્તચ્ચ" અભિષિક્તો મહીપાલઃ શ્રુતિ જ્યેષ્ઠો લઘુદ્યુવૈઃ । મૃગાનુરાધા પૌષ્ણૈશ્ચ ચિરં શાસ્તિ વસુન્ધરામ્ ॥૧॥ ઇતિ મુહૂર્તઃ અભિષેકોક્તનક્ષત્ર સમાનદૈવત ઇતિ તસ્મિન્ ઉત્તરપ્રૌઠપદાવિજયે-ઉત્તરપ્રૌઠપદા ઉત્તરભાદ્રપદા નક્ષત્રં તસ્ય વિજયો નામ મુહૂર્તઃ અભિજિદાદ્યઃ ક્ષણ તસ્મિન્ અયં ભાવઃ- મુહૂર્તપરપર્યાયઃ પઞ્ચદશક્ષણાત્મકે દિવસેઽષ્ટમક્ષણઃ, તલ્લક્ષણ ચેદં જ્યોતિઃ શાસ્ત્રે પ્રસિદ્ધમ્ દ્વૈયામૌ ઘટિકા ન્યૂનો દ્વૈયામૌ ઘટિકાઽધિકૌ । વિજયોનામ યોગોઽયં સર્વકાર્યપ્રસાધકઃ ॥૧॥ ત- તસ્તૈઃ પૂર્વોક્તૈઃ સ્વાભાવિકૈ રુત્તરવૈક્રિયૈશ્ચ વરકમલપ્રતિષ્ઠાનૈઃ વરકમલે પ્રતિષ્ઠાનં સ્થિતિ ર્થેષાં તે તથા ભૂતાસ્તૈઃ અષ્ટ સહસ્રઘટૈરિતિગમ્યં પુનઃ કીદૃશૈઃ સુરભિ વરવારિપ્રતિપૂર્ણૈઃ શ્રેષ્ઠ નિજલઘ્યાત્તૈઃ યાવદ મહતા મહતા ગરીયસા રાજ્યાભિષેકેણ અભિષિજ્ઞન્તિ અત્ર

હૈં ઉનમેં સે કોઈ એક નક્ષત્ર કા હોના હી શુભ નક્ષત્ર કહા ગયા હૈ. ઉક્તચ- અભિષિક્તો મહીપાલઃ શ્રુતિ જ્યેષ્ઠાલઘુદ્યુવૈઃ । મૃગાનુરાધા પૌષ્ણૈશ્ચ ચિરં શાસ્તિ વસુન્ધરામ્ ॥૧॥ અભિષેક કે સમય ઉક્ત નક્ષત્રોં કા સમાન દેવતા વાલે હોના-યહ મુહૂર્ત કહા ગયા હૈ. ઉત્તર પ્રૌઠપદા વિજય કા તાત્પર્ય-હૈ ઉત્તરભાદ્રપદા નક્ષત્ર કા વિજય-અભિજિતનામકા ક્ષણ મેં યહ અભિષેક ક્રિયા ગયા તાત્પર્ય યહ હૈ દિન પઞ્ચદશક્ષણાત્મક દિવસ હોતા હૈ ઇસમેં અષ્ટમ ક્ષણરૂપ મુહૂર્ત હોતા હૈ. ડસકા લક્ષણ જ્યોતિશશાસ્ત્ર-મેં એસા કહા ગયા હૈ-

દ્વૈયામૌ ઘટિકાન્યૂનો, દ્વૈયામૌ ઘટિકાધિકૌ । વિજયોનામ યોગોઽયં સર્વકાર્ય પ્રસાધકઃ ॥૧॥ મરત મહારાજા કા જો રાજ્યાભિષેક ક્રિયા ગયા વહ સુરમિજલ-સે પરિપૂર્ણ હુપ સ્વાભાવિક કલશોં દ્વારા તથા ઉત્તરવિક્રિયા સે દેવોં ને જિન્હેં વિકુર્વિત ક્રિયા હૈ. એંસે એંસે કલશોં દ્વારા ક્રિયા ગયા । યે કલશ શ્રેષ્ઠ કમલોં કે ઉપર સ્થાપિત ક્રિયે હુપ થે તથા સંક્રયા મેં ૧૦૦૮, યે. યહ અભિષેક સાધારણ રૂપ સે કરને મેં નહીં આયા કિન્તુ વહે મારી ઠાઠ બાટ સે હી કરને

વગેરથી ભિન્ન-રહિત-હોય છે. રાજ્યમા અભિષેક થોજ્યજે શ્રવણ આદિ ઉત્તર નક્ષત્રો છે, તેમનામાંથી કોઈ એક નક્ષત્ર હોય તો જ શુભ કહેવાયછે ઉક્તચ-

અભિષિક્તો મહીપાલઃ શ્રુતિજ્યેષ્ઠાલઘુદ્યુવૈઃ । મૃગાનુરાધા પૌષ્ણૈશ્ચ ચિરં શાસ્તિ વસુન્ધરામ્ ॥૧॥ અભિષેક વખતે ઉક્ત નક્ષત્રોના સમાન દેવતાવાળા થયુ એ મુહૂર્ત કહેવામાં આવે છે. ઉત્તર પ્રૌઠપદા વિજયનું તાત્પર્ય છે, ઉત્તરભાદ્રપદા નક્ષત્રનો વિજય-અભિજિત નામકક્ષણ તે ક્ષણમાં અભિષેક કરવામાં આવ્યો. તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે કે દિવસ-પંચદશ ક્ષણાત્મક દિવસ હોય છે એમાં અષ્ટમ ક્ષણ રૂપ મુહૂર્ત હોય છે. એનું લક્ષણ જ્યોતિષ શાસ્ત્રમાં આ પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે

દ્વૈયામૌ ઘટિકા ન્યૂનો, દ્વૈયામૌ ઘટિકાધિકૌ । વિજયોનામ યોગોઽયં સર્વકાર્ય પ્રસાધકઃ ॥૧॥ બરતને જે રાજ્યાભિષેક કરવામાં આવ્યો તે સુરભિ જલથી પરિપૂર્ણ થયેલા સ્વાભાવિક કળશે વડે તેમજ ઉત્તરવિક્રિયાથી જેમને દેવોં એ વિકુર્વિત કર્યાં છે એવા કળશેવડે કરવા- માં આવ્યો એ કળશે શ્રેષ્ઠ કમળોની ઉપર સ્થાપિત કરવામાં આવ્યા હતા. સંક્રયા માં એ કળશે ૧૦૦૮ હતા. એ અભિષેક સાધારણ રૂપમાં આવ્યોજિત થયો નહિ પણ બારે ઠાક- ૧૧૮

યાવત્પદાત્ 'ચંદનકચચ્ચેહિ આવિદ્ધકંઠેગુણેહિ પઠમુપ્પલપિહાણેહિ કરયલપરિગ્ગ-
હિપ્પિહિ અદ્દસહસ્સેણ સોવણિયકલસાણં જાવ અદ્દસહસ્સેણં મોમેઝ્જાણં' इत्यादि पाठो
ग्राह्यः अयं च विस्तररूपेण उत्तरत्र जिनजन्माभिपेक्षप्रकरणे पञ्चमवर्षस्कारे एकविंशत्युत्तर-
शते सूत्रे १२१ निजदत्ताङ्करीत्या पञ्चमवर्षस्कारे दशमसूत्रे १० द्रष्टव्यः । तत्रैव अस्य साक्षा
दर्शितत्वात् सर्वेषां प्रत्येकं व्याख्यानमपि तत्रैव द्रष्टव्यम् । तथा च पुनः कीदृशैः चन्दन-
कृतव्यत्ययैः चन्दनकृतव्यतिक्रमैः चन्दनचर्चितदेहैः पुनः आविद्वकण्ठेगुणैः गुणैराविद्वकण्ठै-
रित्यर्थः पद्मोत्पलपिधानैः कमलोत्पलाच्छादनैः करतलपरिगृहीतैः हस्ततलपरिगृहीतैः एवमुक्तप्र-
कारेण विशेषणविशिष्टैः अष्टसहस्रेण सौवर्णिककलशानाम् यावद्व्यष्टसहस्रेण भोमेयानां च
अष्टसहस्रसंख्यक सौवर्णिककलशैः अष्टसहस्रसंख्यकभोमेयकलशैश्च सर्वोदकः सर्वमृत्सर्वोपधि
प्रभृति वस्तुभिर्महता महता राज्याभिषेकेण अभिषिञ्चतीत्यर्थः 'अभिसेओ जहा विजयस्स'
अभिषेको यथा विजयस्य जम्बूद्वीपविजयद्वाराधिपदेवस्य जीवाभिगमोपाङ्गे प्रोक्तस्तथाऽ-
त्रापि बोद्धव्यः 'अभिसिचित्ता' अभिषिच्य 'पत्तेयं पत्तेयं जाव अंजलिं कददु ताहि' इत्यादि-
जहा पविसंतस्स भणिया जाव विहराहि तिकददु जय जय सहं पडंजंति' प्रत्येकं प्रत्येकंप्रातिवृत्त

में आया—इसी बात को प्रकट करने के लिये “महया २ रायाभिसेएणं” ये पद यहां प्रयुक्त हुए
हैं यहां प्रयुक्त हुए यावत्पद से “चंदनकचच्चेहि, आविद्वकंठे गुणेहि, पठमुप्पलपिहाणेहि,
करयलपरिगगहिपिहि अद्वसहस्सेणं सोवणियकलसाण, जाव अद्वसहस्सेणं भोमेज्जाण” इत्यादि
पाठ गृहीत हुआ है यदि इसपाठ को देखना हो तो यह विस्ताररूप से आगे जिन-
जन्माभिषेक के प्रकरण में पंचमवर्षस्कार में १२१ वें सूत्रमें और मेरे द्वारा प्रदत्त अङ्करीति
के अनुसार १० वें सूत्र में आनेवाला है वहीं से इसे देखलेना चाहिये । (अभिसेओ
जहा विजयस्स) इस तरह महाराजा भरत का अभिषेक इस प्रकार से हुआ कि जैसा
अभिषेक जम्बूद्वीप के द्वारके अधिपति विजय देवका हुआ कहा गया है यह अभिषेक
जीवाभिगम उपाङ्ग में वर्णित हुआ है (अभिसिचित्ता पत्तेयं पत्तेयं जाव अंजलिं कददु ताहि
इत्यादि जहा पविसंतस्स भणिया जाव विहराहि तिकददु जय २ सहं पडंजंति) भरत महाराजा का

માઠથી સમ્પન્ન થયેા હતા એ જ આશયને પ્રગટ કરવા માટે 'મહયા ૨ રાયાભિસેણં'
એ પદ અને પ્રયુક્ત થયેલ છે. અહીં પ્રયુક્ત થયેલ યાવત્ પદથી “ચંદનકચચ-
ચ્ચેહિ આવિદ્ધકંઠેગુણેહિ, પઠમુપ્પલપિહાણેહિ, કરકમલપરિગ્ગહિપ્પિહિ અદ્દસહસ્સેણં સોવ-
ણિયકલસાણં, જાવ અદ્દસહસ્સેણં મોમેઝ્જાણં” ઇત્યાદિ પાઠ સંગૃહીત થયેા છે, એ એ
ણિયકલસાણં, જાવ અદ્દસહસ્સેણં મોમેઝ્જાણં” ઇત્યાદિ પાઠ સંગૃહીત થયેા છે, એ એ
પાઠ અંગે ભણુકારી ભેળવવી હોય તેા આગળ જિનજન્માભિષેક પ્રકરણમાં, પચમવર્ષસ્કા-
રમાં, ૧૨૧ માં સૂત્રમાં અને મારા વડે પ્રદત્ત અંકરીતિ મુજબ ૧૦ માં સૂત્રમાં આપવામાં
આવેલ છે તેથી તે સંબંધ માં ત્યાથી સમજી લેવું બધું એ ત્યાં એ અંગે સવિસ્તર વર્ણન કરવા
માં આવેલું છે. (અભિસેઓ જહા વિજયસ્સ) રાજા ભરતનેા અભિષેક આ પ્રમાણે સમ્પન્ન
થયેા કે એ રીતે જંબુદ્વીપના દ્વારના અધિપતિ વિજય દેવનેા થયેા એ અભિષેકનું વર્ણન
'જીવાભિગમ ઉપાંગમાં કરવામાં આવેલું છે. (અભિસિચિત્તા પત્તેયં પત્તેયં જાવ અંજલિ કદ્દુ

यावद् अञ्जलिं कृत्वा ताभिरिष्टाभिः अत्रापि 'कंठाहिं जाय वग्गूहिं अभिणंदता य अभिथुणंताय एव वयासी-जय जय णदा । जय जय मद्दा । मद्दं ते अजियं जिणाहि' इत्यादि पाठो तथा ग्राह्यः 'जहा पविसंतस्स मणिया जाव विहराहि' यथा विनीतां प्रविशतो भरतस्य अर्थाभिलाषि प्रमुखपाचकजनैर्भणिता आशीरिति गम्यम् कियत्पर्यन्त मित्याह 'यावद् विहर' इति विहरेति पर्यन्तमित्यर्थः इति कृत्वा जय जय शब्दं प्रयुज्जन्ति 'तए णं तं भरहं रायाणं सेणावहरयणे जाव पुरोहियरयणे तिणिण य सट्ठा सुमसयाद्वारस अ सेणि प्पसेणीओ अण्णे य बहवे जाव सत्थवाहप्पमिद्दओ एवंचेव अभिसिचंति' ततोद्वात्रिंशद्वाजसह- स्राभिषेकानन्तरं खलु तं भरत सेनापतिरत्न यावत्पुरोहितरत्नं त्रीणि च पष्ठानि पष्ठचधिकानि

अभिषेक करके फिर प्रत्येक ने यावत् अंजलि करके उन उन इस कान्त यावत् वचनों द्वारा उन का अभिनन्दन एवं सस्तवन करते हुए इस प्रकार से कहा (जय जय णदा । जय जय मद्दा । मद्दं ते अजियं जिणाहि) हे नन्द-आनन्दस्वरूप भरत । तुम्हारी जय हो जय हो हे मद्द । कल्याण स्वरूप-भरत । तुम्हारी बारबार जय हो तुम्हारा कल्याण हो वीरो द्वारा भी परास्त नहीं किये जा सकने वाले ऐसे शत्रु को तुम परास्त करो० इत्यादि रूप से जैसा यह पाठ २९वें सूत्र में इसी वक्षस्कार के कथन में कहा गया है वैसा ही यहाँ पर भी वह ग्रहण करना चाहिये (जहा पविसंतस्स मणिया जाव विहराहि) जिस प्रकार से विनीता में प्रवेश करते समय भरत के प्रति "यावत् विहर" इसपाठ तक अर्थाभिलाषी से लेकर पावक तक के जनों ने शुभाशीर्वाद प्रकट किया उसी प्रकार से यहाँ पर भी वही आशीर्वाद उसी रूप में प्रत्येक रूपने प्रकट किया ऐसा जानना चाहिये (तएणं मद्दं रायाणं सेनावहरयणे जाव पुरोहियरयणे तिणिणय सट्ठा सुमसया अद्वारससेणिप्पसेणीओ अण्णेय बहवे जाव सत्थवाहप्पमिद्दओ एवं चेव अभिसिचंति) इसके बाद भरत राजा का सेनापतिरत्न ने यावत् पुरोहित रत्न ने, ३६० रसवती-

ताहिं इट्ठाहिं जहा पविसंतस्स मणिया जाव विहराहि चि कट्ठु जय २ सहं पडंजति) भरत राजानो अभिषेक करीने पछी दइके-यावत् अञ्जलि जनावीने ते-ते छंष्ट-कान्त यावत् वचने। वडे तेमनुं अभिनन्दन तेमज स्तवन करतां करताआ प्रमाणे कट्ठु- (जय-जय णदा । जय जय मद्दा । मद्दं ते अजियं जिणाहि) हे नन्द । आनन्द स्वरूप मद्दाशब्द भरत । तमादेश जय थाओ, जय थाओ हे मद्द । -कट्ठयाणु स्वरूप भरत । तमादेश बारबार जय थाओ, तमद्दं कट्ठयाणु थाओ । वीरो द्वारा पणु अपराजित शत्रुने तमे परास्त करे। वगेरे ३५ भां जेवो आ पाठ २६ भा सूत्रमां आ 'वक्षस्कर' मां कट्ठेवाभा आवेक्ष छे, तेवो ज पाठ अत्रे पणु समजवे। (जहा पविसंतस्स मणिया जाव विहराहि) जेम विनीतामां प्रवेश करती वचते भरत प्रत्ये "यावत् विहर" जे पाठ सुधी अर्थाभिलाषी थी मांहीने पायकसुधीना जनो जेम शुभाशीर्वादे प्रकट कथां तेम ज अत्रे पणु ते प्रमाणे ज आशीर्वादे दइके राजा जे प्रकट कथां जेम जाणु जे छे। (तएणं तं भरहं रायाणं सेनावहरयणे जाव पुरोहियरयणे तिणिणय सट्ठा सुमसया अद्वारससेणिप्पसेणीओ अण्णेय बहवे जाव सत्थवाहप्पमिद्दओ एवं चेव अभिसिचंति) त्यागनाह भरत राजा सेनापति रत्न यावत् पुरो-

સૂપશતાનિ સૂપકારશતાનિ અષ્ટાદશ શ્રેણિપ્રશ્રેણયઃ અન્યે ચ વહ્વો યાવત્સાર્થવાહપ્રમૃતયઃ
 एवमेव उक्तप्रकारेण राजान इव अभिषिञ्चन्ति 'सेणावहरयणे जाव पुरोहियरयणे' अत्र या-
 वत्पदात् 'गाहावहरयणे वहदहरयणे' इति ग्राह्यम् तथाच सेनापतिरत्नं पुरोहितरत्नं गा-
 यापतिरत्नं वर्द्धकिरत्नं पुरोहितरत्नं चेति बोध्यम् द्वितीय यावत्पदात् राजेश्वरतलवरमाड-
 म्बिक कौटुम्बिकमन्त्रि महामन्त्रि गणकदौवारिकामात्यचेटपीठमर्दननगरनिगमश्रेष्ठिसेनाप-
 तयो ग्राह्याः यावत्सार्थवाहप्रमृतयः अत्र प्रमृतिपदात् सार्थवाहदूतसन्धिपालाः, अस्मिन्नेव
 वक्षस्कारे सप्तविंशतितमे सूत्रे एतेषां व्याख्यानं द्रष्टव्यम् 'तेहिं वरकमलपट्टाणेहिं तहेव'
 तैः पूर्वोक्तैः वरकमलप्रतिष्ठानैः-वरकमले प्रतिष्ठानं स्थितिर्येषां ते तथाभूतास्तैः तयैव
 पूर्वोक्तप्रकारेणैव कलशविशेषणादिकं विज्ञेयम् 'जाव अभिभुण्ति य' यावद् अभिभुवन्ति च
 यावत्पदात् अभिनन्दन्ति इति ग्राह्यम् 'सोलसदेवसहस्रा एवंचेव' ततः सर्वतः
 पश्चात् षोडशदेवसहस्राणि षोडशसहस्रसंख्यकदेवाः एवमेव उक्तप्रकारेणैव अभि-
 पिञ्चन्ति अभिनन्दन्ति अभिभुवन्ति च आभियोग्यसुराणाम् अन्तिमोऽभिषेकस्तु तद्भरतस्य
 मनुष्येन्द्रत्वेन मनुष्याधिकाराद् मनुष्यकृताभिषेकानन्तरभावित्वेन बोध्यं यद्वा देवानां
 चिन्तितमात्र तदात्वसिद्धिकारकत्वेन अन्ते तथाविधोत्कृष्टाभिषेकविधानार्थम् अत्र यो

ફારકોં ને ૧૮ શ્રેણિપ્રશ્રેણિજનો ને તથા અન્ય ઔર મી અનેક સાર્થવાહ આદિજનો ને હસી
 પ્રકાર સે અભિષેક ક્રિયા "સેનાવહરયણે જાવ પુરોહિયરયણે" આગત યાવત્પદ સે "ગાહાવહરયણે
 વહદહરયણે" હન દો રત્નોં કા પ્રહણ હુઆ હૈ. તથા દ્વિતીય યાવત્પદ સે રાજેશ્વર તલવર માડમ્બિક
 કૌટુમ્બિકમન્ત્રી, મહામન્ત્રી, ગણક, દૌવારિક અમાત્ય, ચેટ પીઠમર્દ, નગર નિગમ શ્રેષ્ઠી,
 સેનાપતિ તથા સાર્થવાહકે પ્રમૃતિપદ સે દૂત ઔર સન્ધિપાલ હનકા પ્રહણ હુઆ હૈ. હનકા વ્યાખ્યા
 ન હસી વક્ષસ્કાર કે પ્રકરણ મેં ૨૭ વેં સૂત્ર મેં ક્રિયા જાચુકા હૈ. (તેહિં વરકમલપટ્ટાણેહિં) સેના
 પતિ સે ઠેકર દૂત ઔર સન્ધિપાલ તક કે હન સમસ્ત જનોને શ્રેષ્ઠકમલ પર સ્થાપિત ક્રિયે ગયે
 કલશોં દ્વારા હી ભરત નરેશ કા અભિષેક ક્રિયા ઔર પૂર્વોક્તરૂપ સે હી ટનકા અભિનન્દન ઔર
 સસ્તવન ક્રિયા (સોલસદેવસહસ્રા એવંચેવ) હસી પ્રકાર સે ૧૬ હજાર દેવોં ને મી અભિષેક

હિતરત્નથી માંડીને ૩૬૦ રસવતી કારકોએ, ૧૮ શ્રેણિ પ્રશ્રેણિ તેમજ અન્ય પણ
 અનેક સાર્થવાહ આદિ જનો એ આ પ્રમાણે જ અભિષેક કર્યો. "સેનાવહરયણે પુરો-
 હિયરયણે" આ વાક્ય મા આવેલ યાવત્ પદ થી "ગાહાવહરયણે વહદહરયણે" કૌટુમ્બિક મન્ત્રી
 શ્રદ્ધા થયેલું છે. તેમજ દ્વિતીય યાવત્ પદથી 'રાજેશ્વર, તલવર, માડમ્બિક, કૌટુમ્બિક મન્ત્રી
 મહામન્ત્રી, ગણક, દૌવારિક, અમાત્ય, ચેટ, પીઠમર્દ, નગર નિગમ શ્રેષ્ઠિ, સેનાપતિ તેમજ
 સાર્થવાહ સાથેના 'પ્રમૃતિ' પદથી દૂત અને સન્ધિપાલ એ સર્વપક્ષે શ્રદ્ધા થયા છે એ સર્વદુ
 વ્યાખ્યાન આજ વક્ષસ્કારના પ્રકરણમાં ૨૭માં સૂત્રમાં કરવામાં આવેલ છે. (તેહિં વરકમલ
 પટ્ટાણેહિં) સેનાપતિથી માંડીને દૂત અને સન્ધિપાલ સુધીના એ સર્વ જનોએ શ્રદ્ધા કરમલો
 પર પ્રસ્થાપિત કરવામાં આવેલા કાશો વડે ભરત નરેશ નો અભિષેક કર્યો અને પૂર્વોક્ત
 રૂપમાં જ તમનું અભિનંદન અને સસ્તવન કર્યું. (સોલસ દેવસહસ્રા પર્વ ૭ - આ

विशेषस्तमाह ‘णवरं पम्हलसुकुमालाप जाव मउडं पिणद्धेति’ नवरं अयं विशेषः पक्ष्मलसुकुमा-
रया पक्ष्मलया पक्ष्मवत्या सुकुमारया अतिकोमल्या च अस्य च पदस्य यावत्पदगृहीते गन्ध-
कापायिक्या लघुशाटिक्या गात्राणि रूक्षयन्ति इत्यग्रे सम्बन्धः यावत् पिनहयन्ति अस्य च
पदस्य यावत्पदगृहीतं विचित्ररत्नोपेतं मुकुटमित्यत्राग्रे सम्बन्धः अत्र यावत्पदात् ‘गंधकासाइ
एहिं गायान् ल्हैति सरसगोसीसचंदणेणं गायान् अणुलिपंति अणुलिपित्ता नासाणीसास वा-
यवोज्झं वण्णफरिसजुत्तं हयलालापेलवाइरेगं धवलं कणगखइअंतकम्म आगासफलिहसरिसप्पमं
अहय दिव्वं देवदूसजुयल णिअंसावेति णिअंसावित्ता हारं पिणद्धेति पिणद्धित्ता एवं अद्धहारं
एगावलिं मुत्तावलिं रयणावलिं पालवं अंगयाइं तुडियाइं कडयाइं दसमुद्धियाणंतं कडिसुत्तगं
वेअच्छगसुत्तगं मुरविं कंठपुरविं कुडलाइं चूडामणिं चित्तरयणुककंडत्तिगन्धकापायिक्या
सुरभिगन्धकषायद्रव्यपरिकर्मितया लघुशाटिक्या इति गम्यं गात्राणि भरतदेहावयवान्
रूक्षयन्ति ते देवाः प्रोच्छन्तीत्यर्थः रूक्षयित्वा सरलेन गोशीर्षचन्दनेन गात्राणि अनुलिम्प-

आदि किया (णवरं पम्हलसुकुमालाप जाव मउडं पिणद्धेति) परन्तु देवो ने इतना विशेषकार्य और
किया कि भरत नरेश के शरीर का उन्होंने प्रोच्छन्न अतिसुकुमार-पक्ष्मल-रुक्मोवाली तौलिया,
से किया. और उनके मस्तकपर मुकुट रखा यहां यावत्पदसे गृहीत पाठका इस प्रकार से सम्बन्ध
है-“गंधकापायिक्या लघुशाटिक्या गात्राणि रूक्षयन्ति” इसके बाद “गंधकामाहएहिं गायान्
ल्हैति, सरसगोसीसचंदणेणं गायान् अणुलिपंति अणुलिपित्ता नासाणीसासवायवोज्झं चक्खुहरं
वण्णफरिसजुत्तं हयलालापेलवाइरेगं धवलं, कणगखइअंतकम्म आगासफलिहसरिसप्पमं अहयं
दिव्वं देवदूसजुयलं णिअंसावेति णिअंसावित्ता हारं पिणद्धेति पिणद्धित्ता एवं अद्धहारं एगावलिमुत्ता
वलि रयणावलिं पालवं अंगयाइं तुडियाइं कडयाइं दसमुद्धियाणंतं कडिसुत्तगं वेअच्छगसुत्तगं
मुरविं कंठपुरविं कुण्डलाइं, चूडामणिं, चित्तरयणुककंडत्ति” यह पाठ है इसका तात्पर्य ऐसा
है कि जब इन देवों ने सुगंधित सुकुमार तौलिया-से भरत महाराजा के शरीर को पोछ दिया

प्रमाणे अ १६ उल्लेख देवेअणे पक्ष्म अविशेष वगेरे विधि सम्पन्न करी (णवरं पम्हलसुकु-
मालाप जाव मउडं पिणद्धेति) पक्ष्म देवेअणे आट्ठुं विशेष रूपमां पधारे क्खुं के भरत नरेश
ना शरीरसुं तेमणे प्रोच्छन्न-अति सुकुमार-पक्ष्मल रुक्मोवाली अंगोछा थी-क्युं. अने
भरतकी उपर मुकुट भूक्यो. अडो यावत् पदथी संगृहीत पाठ आ प्रमाणे छे-गंधकापायिक्या
लघु शाटिक्या, गात्राणि रूक्षयन्ति” त्थारणाह “गंधकासाइएहिं गायान् ल्हैति, सरस
गोसीसचंदणेणं गायान् अणुलिपंति, अणुलिपित्ता नासाणीसासवायवोज्झं चक्खुहरं
वण्णफरिसजुत्तं हयलालापेलवाइरेगं धवलं, कणगखइअंतकम्म आगासफलिह
सरिसप्पमं अहयं दिव्वं देवदूसजुयलं णिअंसावेति णिअंसावित्ता हारं पिणद्धेति,
पिणद्धित्ता एवं अद्धहारं एगावलिं मुत्तावलिं, रयणावलिं पालवं अंगयाइं तुडियाइं कडयाइं
दसमुद्धियाणंतं कडिसुत्तगं वेअच्छग - सुत्तगं मुरविं कंठपुरविं कुडलाइं, चूडामणिं
चित्तरयणुककंडत्ति” अने तात्पर्य आ प्रमाणे छे के ते देवेअणे सुगंधित, सुकुमार अंगोछा
थी भरत राजा ना शरीर ने पोछ्युं त्थारणाह तेमणे तेमना शरीर उपर गोशीर्षचंदन सुं

ન્તિ અનુલિપ્ય દેવદૂષ્યયુગલં દેવવસ્ત્રયુગમ નિવાસયન્તિ-પરિધાપયન્તિ ઇતિ યોગઃ કીદૃશં તદિત્યાહ 'નાસાણીસાસવાયવોજ્ઞં'નાસિકાનિઃશ્વાસવાતવાહચમ્ નાસિકાનિઃશ્વાસવાતેન વા-
હ્યં દૂરાપનેયં *લક્ષણતરમિત્યર્થઃ અયમ્ભાવઃ મહાવાતસ્ય કા કથા નાસિકા વાતોઽપિ સ્વસ્ત્રસ્મ
વલ્લેન તદ્ વસ્ત્રયુગલમ્ અન્યત્ર પ્રાપયતિ, તથા ચહ્નુર્હરમ્-નયનમુલ્લકરમ્ રૂપાતિશયત્વાત્
તથા વર્ણસ્પર્શયુક્તમ્ અતિશાયિના વર્ણેન સ્પર્શેન ચ યુક્તમ્ પુનઃ કીદૃશં તત્ 'હયલાલા-
પેલવાહરેગં' હયલાલાપેઠવાતિરેકમ્-હયલાલા-અશ્વમુલ્લજલં તસ્માદપિ પેલવ કોમલમ્
અતિરેકમ્ અતિરેકેણ અતિશયેન અતિવિશિષ્ટમૃદુત્વલઘુત્વગુણોપેતમિતિભાવઃ, તથા ધવલ
નિર્મલં કનકલલચિતાન્નકર્મ-કનકેન સુવર્ણેન લલિતાનિ વિચ્છુરિતાનિ અન્તકર્માણિ
અશ્વજયો વાં ન લક્ષણાનિ યસ્ય તત્તથાભૂતમ્ તથા આકાશસ્ફટિકસદૃશપ્રભમ્ આકા-
શસ્ફટિકો નામ અતિસ્વચ્છસ્ફટિકવિશેષસ્તત્સદૃશો પ્રમા દીપ્તિ ર્યસ્ય તત્તથાભૂ-
તમ્ અદૃતં છિદ્રરહિતં નવીનમિત્યર્થઃ દિવ્યં દિવ્યક્રાન્તિમત્ ઇત્યમુક્તવિશેષણવિશિષ્ટમ્
-દેવદૂષ્યયુગલં નિવાસયન્તિ-પરિધાપયન્તિ નિવાસ્ય 'હાર પિણદ્દેતિ' હારં-પિણદ્દેતિ-તે
દેવાઃ ચક્રવર્તિનો ભરતસ્ય કણ્ઠપ્રદેશે હારમ્ અષ્ટાદશસરિકં વદ્ધન્તિ 'પિણદ્દેત્તા' હારં

તથા ઉસકે બાદ ડહોને ફિર ઉનકે શરીરપર ગોશીર્ષવન્દન કા લેપ કિયા લેપકરકે ફિર ડહોને
દેવદૂષ્ય યુગલ પહિરાયા. યહ દેવદૂષ્ય-યુગલ ઇતના અધિક વજન મેં કમ થા કિ વહ નાક
કી વાયુ સે મો હલને લગ જાતા ઇસ તરહ સે યહાં દેવદૂષ્ય યુગલ કા પતલાપન પ્રકટ કિયા હૈ.
જો અધિક પતલા હોતા હૈ વહી વજન મેં કમ હોતા હૈ તથા યહ દેવદૂષ્ય યુગલ રૂપાતિશય
વાલા હોનેસે નયનોંકો સુલ્લ ઉપજાને વાલા થા વર્ણસ્પર્શ સે-અતિશાયી વર્ણ સે ઓર અતિશાયી
સ્પર્શ સે યુક્ત થા હય-અશ્વ કે મુલ્લકી લાલા-જૈમી કોમલ હોતી હૈ એસા હી કોમલ યહ થા
આગન્તુક મલ સે વિહીન હોને કે કારણ યહ નિર્મલ થા. ઇસકી જો ફિનાર થી વહ સુવર્ણ- સે
લલિત થી આકાશસ્ફટિક અતિસ્વચ્છસ્ફટિક વિશેષ કી તરહ ઇસકો દીપ્તિ થી, યહ અદૃત
છિદ્રરહિત થા, અર્થાત્ નવોન થા ઓર દિવ્ય થા-દિવ્યક્રાન્તિ સે સુશોભિત થા. ઇસ તરહ કે
.ઇન વિશેષણો સે યુક્ત દેવદૂષ્ય યુગલ કો પહિરાકર ફિર ડહોને ઉનકે ગલે મેં હાર પહિરાયા

લેપન કર્યું લેપન કરીને પછી તેમણે દેવદૂષ્ય યુગલ ધારણ કરાવ્યું. એ દેવદૂષ્ય યુગલ વજનમાં
ઓટલું હલકું હતું કે તે નાકના શ્વાસોચ્છવાસથી પણ હાલતુ હતું આપ્રમાણે અહીં દેવદૂષ્ય
યુગલનું ઝીણું પણ પ્રકટ કરવામાં આવેલ છે એ વધારે ઝીણું હોય છે તેજ વજનમાં
ઓછું હોય છે. તેમજ એ દેવદૂષ્ય યુગલ રૂપાતિશયવાળું હોવાથી નયનોં ને સુખ આપનારું
હતું તથા સ્પર્શથી-અનિશ થી વર્ણ થી અને અતિશાયી સ્પર્શ થી-એ યુક્ત હતું. હય-
અશ્વનામુખની લાળ જેવી કોમલ હોય છે, એવું જ કોમલ એ હતું આગન્તુક મળથી
વિહીન હોના બદલ એ નિર્મલ હતું એની જે 'ઓડરકતી તે સુવર્ણ' અગ્નિ હતી
આકાશ સ્ફટિક અતિ સ્વચ્છ સ્ફટિક-વિશેષની જેમ એની દીપ્તિ હતી એ અદૃત છિદ્ર રહિત
હતું. ઓટલે કે નવીન હતું અને દિવ્ય હતું. દિવ્ય ક્રાન્તિથી સુશોભિત હતું આ પ્રમાણેના
એવિશેષણોથી યુક્ત દેવદૂષ્ય યુગલ ને ધારણ કરાવીને પછી તેમણે તેમના ગળામાં હાર

પિનદ્ધ 'एवं अद्धहारं एगावलि' इत्यादि । एवम् एतेन अभिलापेनार्द्धद्वारादीनि वक्तव्यानि यावन्मुकुटमिति तत्र अर्द्धहारं नवसरिकम् एकावलीम् मुक्तावलीम् मुक्ताफलमयीम्, कनकावलीं कनकमणिमयीं रत्नावलीम् रत्नमयीम् प्रालम्बं तपनीयमयं विचित्रमणिरत्नमयवितचित्रं शरीरप्रमाणम् आभरणविशेषम् अङ्गदे त्रुटिके च बाहुभूषणे कटके हस्तभूषणे दशमुद्रिकानन्तक-हस्ताङ्गुलिमुद्रिकादशकम्, कटिसूत्रिकं पुरुषरुदयाभरणम् वैकश्यसूत्रकम् उत्तरासङ्गम् दुपष्टा इति भाषाप्रसिद्धम् मुरवीं मृदङ्गाकारमाभरणम्, कण्ठ-मुरवीं-कण्ठासन्नं तदेव, कुण्डले प्रसिद्धे, चूडामणिं शिरोविशिष्टभूषणम् चित्ररत्नोत्कटम् विचित्ररत्नोपेतं मुकुटं ते देवाः पिनद्वन्ति इति 'तयणंतरं च णं दहरमलयसुगन्धिहिं गंधेहिं गायार्इं अम्मुक्खेंति' तदनन्तरं च खलु दर्दरमलयसुगन्धितः दर्दरमलय-

हार पहिराकर फिर अर्धहार एकावली मुक्तावली रत्नावली इन गङ्गे के आभूषणों को पहिराया १८ छर का हार होता है ९ नवछरका अर्ध हार होता है प्रालम्ब पहिराया यह प्रालम्ब एक प्रकार का आभरणविशेषरूप होता है. तपनीय सुवर्ण का यह बना हुआ होता है. और अनेक प्रकार के मणियों और रत्नों के द्वारा इसमें चित्र बने रहते हैं । तथा यह जितना शरीर होता है उसी प्रमाण में बना हुआ होता है । इसके पहिराने के बाद फिर उसे अङ्गद पहिराये गये त्रुटित बाहु के आभूषण पहिराये गये. कटक हाथके आभूषण बलय पहिराये गये दश अंगुलियों में दश मुद्रिकाएं पहिराई गई कटि में कटिसूत्र करधौनी पहिराया शरीर पर-दुपष्टा उड़ाया, कानों में मुरवी पहिराई कंठ में मुरवी-कानों के चारों ओर कानों को घेरनेवाला आभूषण-पहिराया यह कान से निकल जाने पर कंठ तक छटकने लगता है इसलिये इसे कंठमुरवी कहा गया है, पुनः कानों में कुंडल भी पहिराये साथे पर चूडामणि शिरोभूषण-पहिराया (तयणंतरं च ण दहरमलयसुगन्धिहिं गंधेहिं गायार्इं अम्मुक्खेंति) इन सब आभूषणों

પહેરાવ્યા. હાર પહેરાવીને પછી અર્ધહાર, એકાવલી મુક્તાવલી, રતનાવલી અને ગણના આભૂષણો પહેરાવ્યા. ૧૮ લડીનો હાર હોય છે. ૯ લડીનો અર્ધ હાર હોય છે. પ્રાલમ્બ પહેરાવ્યો-એ પ્રાલમ્બ એક પ્રકારનું આભરણ વિશેષ ૧૫ હોય છે. તપનીયસુવર્ણ નિર્મિત એ હોય છે. અનેક પ્રકારના મણિઓ અને રત્નો વડે એમાં ચિત્રો બનેલા હોય છે. તેમજ એ શરીરના પ્રમાણના આધારે બનેલા હોય છે. એ પહેરાવ્યા પછી તે રાખને 'અગદો' ધારણ કરાવવામાં આવ્યા ત્રુટિત બાહુના-આભૂષણો પહેરાવવામાં આવ્યા. કટક હાથના આભૂષણો, વલયો પહેરાવવામાં આવ્યા દશ આંગળો એમાં દશ મુદ્રિકાઓ પહેરાવી. કટિમાં કટિસૂત્ર એટલે કે કટોરો પહેરાવવામાં આવ્યો. શરીર ઉપર એ ૫ મૂકવામાં આવ્યો. કાનોમાં કુંડલ પહેરાવવામાં આવ્યા. કંઠમાં મુરવી એટલે કે કાનોમાં કાનોને ચોમેરથી આવૃત કરી લે એવું આભૂષણ પહેરાવવામાં આવ્યું એ કાનમાંથી નીકળી જાય ત્યારે કંઠ સુધી લટકવા માટે છે એથી જ એ આભૂષણ ને કંઠમુરવી કહેવામાં આવેલ છે ફરી કાનોમાં કુંડળો પહેરાવ્યા મસ્તક ઉપર ચૂડામણિ-શિરોભૂષણ પહેરાવ્યું. અને ત્યાર બાદ વિચિત્ર રત્નોથી મુક્તા, મુકુટ, પહેરાવવામાં આવ્યો (તયણતરં ચ ણ દર્દરમલયસુગન્ધિપર્હિં ગંધેર્હિં ગાયાર્इં અમ્મુક્ખેંતિ)

सम्बन्धिनो ये सुगन्धा शोभनवासाः चन्दनवृक्षादयस्तेषां गन्धो येषु द्रव्येषु ते तथा भूतास्तैः गन्धैः काश्मीरकर्पूरकस्तुरीमध्वृत्ति गन्धवद्भवैः गात्राणि अभ्युक्षन्ति सिञ्चन्ति ते देवाः भरतस्य । अयं माणः दर्दरमग्न्य गिरिसम्बन्धिवचन्दनादिमिश्रितानेकसुमिद्रव्यघुसृणरसच्छटकान् कुर्वन्ति भरतवासंसीति भरतशरीरे च 'दिव्यं च सुमणोदामं पिण्डेति' च पुनः दिव्यं सुमनोदामं कुसुममालां पिनशन्ति परिधापयन्ति किं बहुना ? उक्तेनेति शेषः 'गंठिमवेष्टिम जाव विभूसिय करेति' ग्रन्थिमवेष्टिम यावद् विभूषितं कुर्वन्ति अत्र यावत्पदात् 'पुरिमसघाट्मेण चउच्चिहेण मल्लेण कप्पवृक्षयं पिव समलंकिय' त्ति ग्राह्यम् ग्रन्थनं ग्रन्थः ते निवृत्तं ग्रन्थिमम् यत् सूत्रादिना ग्रन्थयते तद् ग्रन्थिममिति भावः, ग्रथितं सद् वेष्टयते यत्तद् वेष्टिमम् येन वंशशलाहादिमय पठजरादि पूर्यते तद्वत् पूर्यते इति पूरिमम्, यत्परस्परं नालं संघात्यते तत् सघातिमम् एवंविधेन तेन ग्रन्थिमवेष्टिमपूरिमसंघातिमेन चतुर्विधेन मालयेन कल्पवृक्षमिव समलंकृतविभूषितं भरतचक्रिवर्तिनं कुर्वन्ति ते देवाः अथ कृताभिषेको भरतो यत्कृतवान् तदाह— 'तएणं से भरहे राया महया महया रायाभिसेएण अभिसिंचिए समाणे कोड्डु बियपुरिसे सदावेइ' ततः खलु तदन्तरं किल स भरतो राजा महता महता राज्याभिषेकेण अभिषिक्तः सन् कौटुम्बिकपुरुषान् शन्दयति आह्वयति 'सदावित्ता' शब्दयित्वा आहूय 'एवं वयासी' एवं वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत् उक्तवान् 'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया' इत्थिखंधवरगया

द्वारा भरतचक्र की शरीर की सजावट हो जानेके बाद फिर उन देवों ने उनके शरीर पर चन्दन वृक्ष आदि का गंध जिन्हो में संमिलित हैं ऐसे काश्मीर केशर, कर्पूर और कस्तूरी आदि सुगन्धित द्रव्यों को छिड़का (दिव्यं च सुमणोदामं पिण्डेति) और फिर पुष्पों की मालाएँ उन्हें पहिराई अधिक क्या कहा जाय—(गंठिमवेष्टिम जाव विभूसियं करेति) उन देवों ने उस भरत चक्र की को ग्रन्थिम, वेष्टिम, पूरिम और सघातिम इन चारों प्रकार की मालाओं से ऐसा सुशोभित एवं अलंकृत कर दिया कि मानो यह कल्पवृक्ष ही है । (तएणं से भरहे राया महया २ रायाभिसेएण अभिसिंचिए समाणे कोड्डु बियपुरिसे सदावेइ) जब भरत नरेश पूर्वोक्त प्रकार से राज्याभिषेक की संमस्त सामग्री से अभिषिक्त हो चुके—तब उन्होंने कौटुम्बिक पुरुषों को

अभ्युक्षन्ति) को सब आभूषणों वडे भरतयक्षीना शरीर ने समलंकृत करीने पछी ते देवा को तेमना शरीर पर चन्दन-वृक्ष आदिनी सुगन्धि जेमां सम्मिलित छे जेवा काश्मीर केशर कर्पूर अने कस्तूरी वगेरे सुगन्धित द्रव्यों छोट्या (दिव्यं च सुमणोदामं पिण्डेति) अने पछी पुष्पोंनी मालाओं ते शान्ते धारण करवाभा आनी वधाई शु कहीजे (गंठिमवेष्टिम जाव विभूसिय करेति) ते देवाओं ते भरत यक्षीने ग्रन्थिम, वेष्टिम, पूरिम अने संघातिम जे थारे प्रकारनी मालाओंथी जेवी रीते सुशोभित तेमन समलंकृत करी दीधा छे जेणे ते कल्पवृक्ष जे न होय ! (तएणं से भरहे राया महया २ रायाभिसेएण अभिसिंचिए समाणे कोड्डु बियपुरिसे सदावेइ) ज्यारे भरत नरेश पूर्वोक्त प्रकारथी राज्याभिषेकनी सब सामग्री वडे अभिषिक्त यई चुक्या थारे तेमणे कौटुम्बिक पुरुषोंने जालाव्या । (सदावित्ता

વિળીયાણ રાયહાળીણ સિંઘાઢગતિગચઠ્ઠકચચ્ચરજાવ મહાપદપદેસુ મહયા મહયા સદેણ
ઊઘોસેમાળા ઊઘોસેમાળા ડસુવકં ઠકર ઠકિઠ્ઠ અદિઙ્ગ અમિઙ્ગ અઢમહપવેસં અદં-
હકુદંઢિમં જાવ સપુરજનજાણવયં દુવાઞ્મ સવચ્છરિયં પમોય ઘોસેઃ ઘોસિત્તા મમેય માળ-
સિયં પચ્ચપ્પિણહત્તિ' તત્ર ક્ષિપ્રમેવ શીઘ્રાતિ શીઘ્રમેવ મો દેવાનુપ્રિયા'। યૂયં હસ્તિસ્કન્ધવર-
ગતાઃ શ્રેષ્ઠહસ્તિસ્કન્ધેષુ આરૂઢા. સન્તઃ વિનીતાયા રાજધાન્યાઃ શૃંગાટકત્રિકચતુષ્કચત્ત્વર
યાવદ્ મહાપથપથેષુ સ્થાનેષુ મહતા મહતા શબ્દેન ડદ્ધોપયન્ત' ડદ્ધોપયન્તઃ જલ્પન્તઃ
જલ્પન્તઃ આમીક્ષ્યે દ્વિર્વચનમ્ ઠચ્છલ્કમ્ ઠત્ક-મ્ ઠત્કપ્પમ્ અદેયમ્ અમેયમ્ અમટપ્રવેશમ્
અદણ્ઢકુદણિઢમમ્ યાવત્ સપુરજનજાણપદમ્ દ્વાદશસંવત્સરિકમ્ પ્રમોદ ઘોષયત ઘોષયિત્વા
મમ ણ્તામાઞ્જ્ઞિકાં પ્રત્યર્પયત ઇતિ તત્ર દ્વાદશસંવત્સરિકમ્ દ્વાદશસંવત્સરાઃ વર્ષાણિ
કાલો માનં યસ્ય સ દ્વાદશસંવત્સરિકસ્તં પ્રમોદહેતુત્વાત્ પ્રમોદઃ ઠત્સવસ્તં ઘોષયત
ઠચ્ચસ્વરેણ પ્રકાશયત કીદશ પ્રમોદં તત્રાહ-ઠચ્છલ્કમિત્યાદિ । ઠન્મુક્તં ત્યવતં શુલ્ક
વિક્રેતવ્ય વસ્તુ પ્રતિ રાજદેયં દ્રવ્યં યસ્મિન્ પ્રમોદે સ તથાભૂતસ્તમ્ તથા ઠત્કરમ્ ઠન્મુક્તઃ
ત્યકઃ કરઃ ગવાદીન્ પ્રતિ પ્રતિવર્ષ રાજદેય દ્રવ્ય યસ્મિન્ સ તથાભૂતસ્તમ્, તથા ઠત્ક-

જુલાયા-(ક્ષિપ્પામેવ મો દેવાનુપ્પિયા । હત્થિસ્થંધવરગયા વિળીયાણ રાયહાળીણ સિંઘાઢગતિગચ-
ઠ્ઠકચચ્ચર મહયા ૨ સદેણ ઊઘોસેમાળા ૨) હે દેવાનુપ્રિયો । તુમ સબ હાથી કે ડપર વૈઠકર
ઞ્ઞે જોર સે વિનીતા રાજધાની કે જિતને મી શૃંગાટક, ત્રિક, ચતુષ્ક, ચત્ત્વર, ઘાદિ મહા-
પથ તત્ર કે માર્ગે હૈં ડનમેં સબ મેં ઇસી ઘોષણા કરો કિ (ઠસુવક ઠકરં ઠકિઠ્ઠ અદિઙ્ગ
અમિઙ્ગ અઢમહપવેસ અદંહકુદંઢિમં જાવ સપુરજનજાણવયં દુવાલસસંવચ્છરિયં પમોયં)
પુરવાસી સમસ્ત જન ઓર મેરે રાજ્ય મેં રહનેવાઠે જન સબ ૧૨ વર્ષ તક ઠત્સવ કરે-ઠસ
ઠત્સવ મેં વિક્રેતવ્યવસ્તુ પર જો રાજ્ય કી ઓર સે ટેક્સ લિયા જાતા હૈ વહ માફ ક્રિયા ગયા
હૈ ગાય ઓદિ જાનવરો પર જો પ્રતિવર્ષ કર રાજ્ય કી ઓર સે નિર્ધારિત કિયા હુઘા હૈ
વહ મી માફ કર દિયા ગયા હૈ, બેચને પર જો સરકારી ટેક્સ લિયા જાતા હૈ વહ મી માફ
કર દિયા ગયા હૈ તથા મુનાફા સે વસ્તુ બેચકર જો દ્રવ્ય અર્જિત કિયા જાતા હૈ, વહ

પદ વયાસી) અને ઝોલાવીને આ પ્રમાણે કહ્યું (ક્ષિપ્પામેવ મો દેવાનુપ્પિયા । હત્થિસ્થંધવર-
ગયા વિળીયાણ રાયહાળીણ, સિંઘાઢગતિગચઠ્ઠકચચ્ચર મહયા ૨ સદેણ ઊઘોસેમાળા
૨) હે દેવાનુપ્રિયો । તમે સવે હાથી ડપર ઝેસીને ખૂબ ઝેરથી વિનીતા રાજધાની ના
ઝેટલાંશૃંગાટકો, ત્રિકો, ચતુષ્કો, ચત્ત્વરો વગેરે મહાપથોના માર્ગો છે, તે સર્વમાં ઝોવી
ઘોષણા કરે. હે (ઠસુવકં ઠકર ઠકિઠ્ઠ અદિઙ્ગ અમિઙ્ગ અઢમહપવેસં અદંહકુદંઢિમં
જાવ સપુરજનજાણવયં દુવાલસસંવચ્છરિયં પમોયં) હે પુરવાસી સર્વજનો । મારા રાજ્યમાં
રહેનારા જનો સવે ૧૨ વર્ષ સુધી ઠત્સવ કરે તે ઠત્સવ માં વિક્રેય વસ્તુ ડપર જે રાજ્ય
તરફ થી ટેક્સ (કર) લેવામાં આવે છે, તે માફ કરવામાં આવેલ છે ગાય વગેરે પશુઓ
ડપર જે દર વર્ષે રાજ્ય તરફ થી કર નિર્ધારિત કરવામાં આવેલ છે તે પણ માફ કરવામાં
આવેલ છે વસ્તુના વિક્રેય ડપર જે સરકારી ટેક્સ લેવામાં આવે છે તે પણ માફ કરવામાં

मुनाफा भी माफ कर दिया है अर्थात् जिस मूल्य से जो वस्तु बाहर से आवे—वह वस्तु उसी मूल्य से बेची जावे' इसमें क्षतिकी पूर्ति राज्य की ओर से होगी नाप तौलसे कोई वस्तु नहीं बेची जावेगी तथा कुटुम्बी जनों के घरों में १२ वर्ष तक राज्य के किसी भी कर्मचारी का प्रवेश नहीं होगा क्योंकि वह वर्जित कर दिया गया है किसी भी प्रज्ञानन पर या राजनकर्मचारी पर अपराध के होने पर या जो जुर्माना लिया जाता है वह १२ वर्ष तक नहीं लिया जावेगा अपराध के होने पर अपराध की मात्रा के अनुसार राजप्राप्त द्रव्य का नाम दण्ड है और राजनकर्मचारी की भूल होने पर बड़े अपराध में थोड़ा राज्यप्राप्त लेना और थोड़े से अपराध हो जाने पर अधिक द्रव्य लेना—जुर्माना कर देना यह कुदण्ड है—ये दोनों प्रकार के दण्ड राज्य की तरफ से १२ वर्ष तक स्थगित (माफ) कर दिये गये हैं। इस प्रकार की घोषणा करके" मुझे इसकी पीछे स्वर दो यहाँ पर यावत्पद से—“अधरिमस्, गणिका-

આવે છે. એટલે જે કિંમતમાં જે વસ્તુ બહારથી આવે તે વસ્તુ તેજ કિંમતમાં વેચવામાં આવે. એમાં ક્ષતિ પૂર્તિ રાજ તરફથી કરવામાં આવશે. આપ-તોલ થી કોઈ પણ વસ્તુ વેચવામાં આવશે નહિ. તેમજ કૌટુંબિક માણસોના ઘરોમાં ૧૨ વર્ષ સુધી રાજ્યના કોઈ પણ કર્મચારીનો પ્રવેશ થશે નહીં કેમકે એ અગે આજ્ઞા કરવામાં આવી છે કોઈ પણ પ્રજાજન અથવા રાજકર્મચારી ઉપર અપરાધ હોવા બદલ જે જુમીનો કે અર્થકંડ લેવામાં આવે છે તે ૧૨ વર્ષ સુધી લેવામાં આવશે નહીં અપરાધ થાય અને તે અપરાધની માત્રા સુજળ રાજગ્રાહી દ્રવ્યનું નામ કંડ છે. અને રાજકર્મચારીની બૂલ થાય ત્યારે મોટા અપરાધ બદલ કમ રાજગ્રાહી લેવો. અને નાનો અપરાધ થાય ત્યારે વધારે દ્રવ્ય લેવું-કંડ કરવો એ કંડ છે એ બંને પ્રકારના કંડો રાજ્ય તરફ થી ૧૨ વર્ષ માટે સ્થગિત કરવામાં આવે છે એટલે કે માફ કરવામાં આવે છે. આ પ્રમાણે ઘોષણા કરીને અને એ અંગેની ખબર આપો અહીંં યાવત પદ થી “અચરિમમ્, ગણિકાવરનાડકીયકલિ

लितम् अनेक तालाचरानुचरितम् अनुद्धूतमृदङ्गम् अम्लानमाल्यदामानम् प्रमुदित प्रकी-
डितसपुरजनजानपदम् विजयवैजयिकम् इति ग्राह्यम् पुनः कीदृशमुत्सवम् अधरिमम्
न विद्यते धरिमम् कस्यापि ऋणद्रव्यं यस्मिन् स त भूतस्तम् अयम्भावः उत्तमर्णाघम-
र्णाभ्यां परस्परम् ऋणनयनार्थं न विवदनीयम् उत्सवेऽस्मिन् गजगृहात् देयद्रव्यं नीत्वा
अधमर्णेन उत्तमर्णाय दातव्यमिति, पुनः कीदृशम् गणिकावरनाटकीयकलितम् गणिका-
वरैः विलासिनीप्रधानैः नाटकीयैः नाटकप्रतिबद्धपात्रैः कलितः शोभितो यः स तथा
भूतस्तम् चतुर्गणिकायुस्तमुत्सव कुरुत न तु व्यभिचारार्थम् अनेकतालाचरानुचरितम्
अनेके ये तालाचरा प्रेक्षाकारि विशेषास्तैरनुचरितः आसेवितो यः उत्सवः स तथाभूत-
स्तम् तथा अनुद्धूतमृदङ्गम् अनु आनुरूप्येण मृदङ्गसम्बन्धिविविना उद्धूताः कलाकौशल-
दर्शनार्थम् ऊर्ध्वं सिप्ताः मृदङ्गाः यस्मिन् स तथा भूतस्तम् मृदंगादिवाद्ययुक्तम् तथा
अम्लानमाल्यदामानम् अम्लानानि म्लानरहितानि माल्यदामानि पुष्पमालाः यस्मिन् स
तथाभूतस्तम् अभिनवमालायुक्तमुत्सवं कुरुत इत्यर्थः पुनः कीदृशम् प्रमुदितप्रकीडित
सपुरजनजानपदम् प्रमुदिता. सानन्दा प्रकीडिता तत्र क्रीडितुमारब्धाः सपुरजनाः अयो-

वर नाटकीयकलितम्, अनेकतालाचरानुचरितम्, अनुद्धूतमृदङ्गम्, अम्लानमाल्यदामानम्, प्रमुदित-
प्रकीडितसपुरजनजानपदम्, विजयवैजयन्तिकम् " इस पाठ का ग्रहण हुआ है इस गृहोत्सव पाठ
का भाव यह है ऋणदाता और ऋणगृहीता इन दोनों को अपना ऋण वसूल करने के लिये
परस्पर में लड़ाई झगडा करना या उसपर कचहरी में जाकर अभियोग दायर करना ये सब
बाते १२ वर्ष तक बन्द कर दी गई है कर्जदार अपने कर्ज को चुकाने के लिये राज्य कोष से
पैसा ले जावे और ऋण दाता के ऋण की पूर्ति कर देवे गणिकाजनो द्वारा १२ वर्ष तक
जनता इस उत्सव में मनमाना उत्सव करावे कोई इनके साथ व्यभिचारक्रिया न करें अनेक
प्रेक्षाकारी विशेषो से यह उत्सव आसेवित होता रहे. अपनी अपनी कला मे कुशलता दिखाते के लिये
मृदङ्गवादक जन खूब जिस प्रकार से बजाने में उनको वादन कुशलता प्रगट होसके इस प्रकार
प्रकट करने में स्वतन्त्र हैं. इस उत्सव में पुष्प मालाओ का प्रचुर मात्रा में उपयोग किया

तालाचरानुचरितम्, अनुद्धूतमृदङ्गम्, अम्लानमाल्यदामानम्, प्रमुदितप्रकीडितसपुरजन-
पदम् विजयवैजयन्तिकम् " ये पाठ अक्षुण्ण थे। ये गृहीत पाठोने भाव आ
प्रभावे थे-ऋण दाता अने ऋण गृहीता जेओ। जेनेने ऋण वसूली माटे परस्पर लड़वु,
ढोटीमां इरिय ह करवी अने केस हाथल करवो, जे सव पातो १२ वर्ष सुधी स्थगित
करवामां आवी थे. कर्जदार पोताना कर्जने चुकरवा माटे राज्य कोषथी नाष्ठा लध जहशके
छे अने आम ऋण दाताना ऋणनी पूर्ति करी देवी. गणिकाओ वडे १२ वर्ष सुधी जनताना
जे उत्सवमा धरिछा सुजण उत्सवा आयोजित करावडावे केछे तेमनी साथे व्यभिचार
करे नही अनेक प्रेक्षाकारी विशेषोथी जे उत्सव आसेवित थाय. पोत पोतानी कणामां
कुशलता बताववा माटे मृदंग वादको ने रीते बगाडवाथी तेमनी कुशलता प्रकट थाय ते
रीते बगाडीने कुशलता बतावी शके छे. जे उत्सवमा ईदनी भाण.जोने प्रचुर मात्राभा उपयोग

ધ્યાવાસિનનસહિતાઃ જનપદાઃ કોશલદેશવાસિનો જનાઃ યત્ર સ તથાભૂતસ્તમ્, તથા વિજયવૈજન્યિકમ્ અતિશયેન વિજયો વિજયઃ સ પ્રયોજનં યસ્મિન્ સ તથાભૂતસ્તમ્ પતા-
વંદ્વિગેષણવિશિષ્ટ દ્વાદશસંવત્સરિકં પ્રમોદમ્ ઉત્સવમુદ્ધોપયત ઉચ્ચસ્વરેણ સર્વપ્રજાજનાન્
અવબોધયત ઇતિ ઘોષયિત્વા મમૈતામાજ્ઞપ્તિકાં પ્રત્યર્પયત સમર્પયત ઇતિ, અથ તે કૌટુમ્બિક-
પુરુષાઃ રાજા આજાનુસારેણ યથા પ્રવૃત્તવન્ત સ્તથાઽઽહ 'તણ' ડત્યાદિ । 'તણ' તે કો-
હંચિયુરિસા મરહેણ રણા એવં વુત્તા સમાણા હટ્ટુટ્ટુચિત્તામણંદિયા પીડમણા હરિસવસ-
ગ્મિષ્પમાગદિયયા વિણણં વયણ પહિણુણંતિ' તત સલ્લુ તદનન્તર કિલ્લ તે કૌટુમ્બિક-
પુરુષા મરતેન રાજા એમ્ ઉક્તપ્રકારેણ ઉક્તાઃ આજ્ઞપ્તાઃ સન્ત' હટ્ટુટ્ટુચિત્તાનન્દિતાઃ
પ્રીતમનસઃ પરમસૌમનસ્યિતા હર્પવશવિસર્પદ્ હૃદયાઃ ભૂત્તા વિનયેન વિનયપૂર્વકમ્ વચનં
પ્રતિશૃણ્વન્તિ સ્વીકુર્વન્તિ 'પહિણુણંતિ' પ્રતિશ્રુત્ય સ્વીકૃત્ય 'સ્તિપ્પામેવ હત્થિસલ્લવરગયા
જાવ ઘોસંતિ' ક્ષિપ્રમેવ શીઘ્રમેન હસ્તિસ્કન્ધવરગતાઃ શ્રેષ્ઠહસ્તિસ્કન્ધેષુ સમારુઢાઃ સન્તઃ
તે કૌટુમ્બિકપુરુષાઃ યાવદ્ ઘોષન્તિ અત્ર યાવત્પદાત્ વિનીતાયાઃ રાજધાન્યાઃ શૃંગ્ગાટક
ત્રિરુવત્પુરુષચત્વરચતુર્ધ્વસમગ્રપથયેષુ મહતા મહતા શબ્દેન ઉદ્ઘોષયન્ત ઉદ્ઘોષયન્તઃ

જાવે કોશલ દેશવાસી સમસ્ત જન અયોધ્યા વાગી જનો કે સાથ મિલકર આનન્દ પૂર્વક બિન્ન
'૨ પ્રકાર કી કોહાઓ સે खेल तमाशो से इस उत्सव को सफ़र करें—जगह २ इस उत्सव की
आराधनामें विजय वैजन्तिया फहराई जावे इस प्रकार के इन पूर्वोक्त विशेषणो वाले उत्सव होने की
जुम घोषणा करो (तण ते कोहुबियपुरिसा मरहेण रणा एवं वुत्ता समाणा हट्ट तुट्ट चित्तामणंदिया
पंडिमणा हरिसवसविसप्पमाणदियया विणणं वयणं पडिणुणंति) इस प्रकार भरत राजा द्वारा आज्ञा
हुए वे कौटुम्बिक पुरुष बहुत अधिक हष्ट और तुष्ट चित्त हुए उनका मन प्रीतियुक्त हो गया
उनका हृदय आनन्द से उछलने लगा वही विनय के साथ उन्होंने ने अपने स्वामी की आज्ञा के
बचनों को स्वीकार किया (पडिणुणित्ता स्तिप्पामेव हत्थिसल्लवरगया जाव घोसेति) स्वीकार
करके वे शीघ्र ही हाथी पर बैठकर अयोध्या राजधानी के शृङ्गाटक आदि मार्गोपर गये
और जोर २ से उल्लुल्ल आदि पूर्वोक्त विशेषण संपन्न उत्सव होने को घोषणा करने लगे

કરવામા આવે કોશલ દેશ વાસી સમસ્ત જનો અયોધ્યાવાસી જનો સાથે મળીને આનંદ પૂર્વક
બિન્ન બિન્ન પ્રકારની કોહાઓથી—રમતો થી એ ઉત્સવને સફળ બનાવે ઠેક-ઠેકાણે એ ઉત્સવની
આરાધનામા વિજયવૈજન્યનીઓ, હાડેરાવવામા આવે, આ પ્રમાણે એ પૂર્વોક્ત વિશેષણો
વાળા ઉત્સવ અંગેની તમે ઘોષણા કરો. (તણ તે કોહુ બિયપુરિસા મરહેણ રણા એવ
વુત્તા સમાણા હટ્ટ-તુટ્ટ ચિત્તામણંદિયા પીડમણા હરિસવસવિસપ્પમાણદિયયા વિણણ વયણ
પહિણુણંતિ) આ પ્રમાણે ભરત રાજા વડે આજ્ઞા થયેલા કૌટુમ્બિક પુરુષો અત્યધિક હૃષ્ટ અને
તુષ્ટ રીતિવાળા થયા તેમજ મન પ્રીતિયુક્ત થયું અને તેમજ હૃદય આનંદ થી ઉછળવા લાગ્યું
અતીવ નમ્રતાપૂર્વક તેમણે પોતાના સ્વામીની આજ્ઞાના વચનો સ્વીકારી લીધા. (પહિણુણિત્તા
સ્તિપ્પામેવ હત્થિસલ્લવરગયા જાવ ઘોસંતિ) સ્વીકાર કરીને તેઓ શીઘ્ર હાથી પર બેસીને
અયોધ્યા રાજધાનીના શૃંગાટક આદિ માર્ગો ઉપર ગયા અને જોર જોરથી ઉલ્લુલ્લ આદિ

ઉચ્છુલ્કમ્ ઉત્કરમ્ ઉત્કૃષ્ટમ્ અદેયમ્ અમેયમ્ અમટપ્રવેશમ્ અદણ્ડકુદણ્ડિમમ્ અધર્મિમ્ ગણિકાવરનાટકીયકલિતમ્ અનેકતાલાચરાનુચરિતમ્ અનુધ્વૂતમૃદન્નમ્ અમ્જાનમાલ્ય-
દામાનમ્, પ્રમુદિતપ્રકીડિતસપુરજનજાનપદમ્, વિજયવૈજયિકમ્ ઇતિ ગ્રાહ્યમ્, તત્ર શૃંગા-
ટકં 'મિષાઢા' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધ જલજફલં તદાકાર સ્થાન ત્રિકોણમિત્યર્થઃ, ત્રિકમ્-
મિલિતત્રિમાર્ગસ્થાનમ્ ૨, ચતુષ્કમ્ યત્ર ચત્વારો માર્ગાઃ મિલિન્તિ તત્ 'ચોગઢા' ઇતિ ભાષા-
પ્રસિદ્ધમ્ ૩, ચત્વરમ્ - વહુમાર્ગસંમેલનસ્થાનમ્ ચતુર્ધુલ્લમ્-ચતુર્ધારસ્થાનમ્ આગત્તુકા
દીનાં વિશ્રામસ્થાનમ્ ૫, મહાપથઃ-રાજમાર્ગઃ ૬, પન્થા-રથ્યામાર્ગઃ તેષુ સપ્તસુ સ્થાનેષુ
તે કૌટુમ્બિકપુરુષાઃ પટ્ટસ્તિસ્કન્ધારૂઢા. સન્ત ઉચ્છુલ્કમિત્યાદિ વિશેષણવિશિષ્ટ
દ્વાદશસંવત્સરિકં રાજ્યાભિષેકોપન્નકં પ્રમોદમ્ ઉત્સવં ધોષયન્તિ ઉચ્ચસ્વરેણ સર્વજ-
નાન્ અવબોધયન્તીત્યર્થઃ 'ધોસિત્તા' ધોષયિત્વા 'પ્રમાણતિય પચ્ચપ્પિણતિ' તે કૌટુ-
મ્બિકપુરુષાઃ પતામ્ ઉક્ત પ્રકારિકામ્ આજ્ઞાપ્તિકાં રાજે ભરતાય પ્રત્યપ્પર્યન્તિ સમર્પયન્તિ।

અથ ભરતો યત્કૃતવાન્ તદાહ 'તણ્ ણં સે' ઇત્યાદિ । 'તણ્ સે ભરહે રાયા મહયા
મહયા રાયાભિસેણં અભિસિત્તે સમાણે સોહાસણાઓ અન્નુદ્દેહ' તત્ સ્વલ્પ તદનન્તરં
કિલ સ ભરતો રાજા મહતા મહતા રાજ્યાભિષેકેણ અભિષિત્તઃ સન્ સિંહાસનાત્ અન્નુ-
ત્તિષ્ઠતિ 'અન્નુદ્દિત્તા' અન્નુત્થાય 'ઇત્થિરયણેણ જાવ ણાહગસહસ્સેહિં સદ્ધિં સપરિવુદ્ધે
અભિસેયપેઢાઓ પુરત્થિમિલ્લેણ તિસોવાણપહિલ્લવણં પચ્ચોરુહંતિ' સ્ત્રીરત્નેન સુમ-
દ્રયા યાવત્ નાટકસહસ્ત્રૈઃ ભાર્દ્વે સંપરિવૃત્તઃ સંપરિવેષ્ટિતઃ સન્ સ ભરતો રાજા અભિષેક-

સિંહાસને કે બાકર કા જો માર્ગ હોતા હે ઉસકા નામ શૃંગાટક હૈ જહા પર ત્રીન માર્ગ બાકર
મિલતે હૈં ઉમકા નામ ત્રિક હૈ જહા પહ ચાર રાસ્તા બાકર મિલતે હૈં ઉસકા નામ ચતુષ્ક હૈ.
હસે ચૌરાહા કહતે હૈં । અનેક માર્ગ જહા પર બાકર મિલતે હૈં ઉસકા નામ ચત્વર હૈ જિસ
સ્થાનમેં ચાર દ્વાર હોતે હૈં ઉસકા નામ ચતુર્ધુલ્લ હૈ રાજમાર્ગ કા નામ મહાપથ હૈ ગલિમાર્ગ
કા નામ પથ હૈં (તણ્ સે ભરહે રાયા મહયા ૨ રાયાભિસેણં અભિસિત્તે સમાણે સોહાસણાઓ
'અન્નુદ્દેહ') ભરત રાજા જબ ઉનકા રાજ્ય કે યોગ્ય અભિષેક સે અભિષેક હો જુકા તબ વેં સિંહા-
સન સે ડઠે બૌર (અન્નુદ્દિત્તા ઇત્થિરયણે ણં જાવ ણાહગ સહસ્સેહિં સદ્ધિં સપરિવુદ્ધે અભિસેયપીઢાઓ-
'પુરત્થિમિલ્લેણં તિસોવાણપહિલ્લવણં પચ્ચોરુહંતિ) ડઠકર સ્ત્રીરત્ન કે સાથ ૨ યાવત્ હજારોં

પૂર્વોક્ત વિશેષણ સંપન્ન ઉત્સવ યોજવાની ધોષણ કરવા લાગ્યા. શિંધોઢાના બેવે બાકર
બે માર્ગના હોય તેનું નામ શૃંગાટક કહેવામા આવે છે જ્યા ત્રણ માર્ગો આવીને મળે
છે, તેનું નામ ત્રિક છે, અને ચારમાર્ગ મળે તેનું નામ ચતુષ્ક છે. એને ચક્રો પથ-કહે
છે. અનેક માર્ગો જ્યા આવીને મળે છે તેનું નામ ચત્વર છે જે સ્થાનમાં ચાર
દ્વાર હોય છે, તેનું નામ ચતુર્ધુલ્લ છે રાજમાર્ગનું નામ મહાપથ છે. ગલીના
માર્ગનું નામ પથ છે (તણ્ સે ભરહે રાયા મહયા ૨ રાયાભિસેણં અભિસિત્તે
સમાણે સોહાસણાઓ અન્નુદ્દેહ) રાજાને યોગ્ય એવી અભિષેક વિધેથી ભરત રાજાને રાજ્યા-
ભિષેક થઈ ગયો ત્યારે તેઓ સિંહાસન ઉપરથી ઊભા થયા અને (અન્નુદ્દિત્તા ઇત્થિરયણે ણ
જાવ ણાહગસહસ્સેહિં સદ્ધિં સપરિવુદ્ધે અભિસેયપીઢાઓ પુરત્થિમિલ્લેણેણ તિસોવાણ

ધ્યાવાસિનનસહિતાઃ જનપદાઃ કોશલદેશવાસિનો જનાઃ યત્ર સ તથાભૂતસ્તમ્, તથા વિનયવૈજયિકમ્ અતિશયેન વિજયો વિજયઃ સ પ્રયોજનં યસ્મિન્ સ તથાભૂતસ્તમ્ एता-
વંદિગેષણવિશિષ્ટ દ્વાદશસંવત્સરિકં પ્રમોદમ્ ઉત્સવમુદ્ધોપયત ઉચ્ચસ્વરેણ સર્વપ્રજાજનાન્
અવબોધયત ઇતિ ઘોષયિત્વા મમૈતામાજ્ઞપ્તિકાં પ્રત્યર્પયત સમર્પયત ઇતિ, અથ તે કૌટુમ્બિક-
પુરુષાઃ રાજા આજ્ઞાનુસારેણ યથા પ્રવૃત્તવન્ત સ્તથાऽऽહ 'તएण' इत्यादि । 'तएणं ते को-
डुंबियपुरिसा भरहेण रणा एवं वुत्ता समाणा हट्टवुट्टचित्तमाणंदिया पीइमणा हरिसवस-
प्पिमाणाहियया विणएणं वयणं पडिमुणंति' तत खलु तदनन्तरं क्लि ते कौटुम्बिक-
पुरुषा भारतेन राजा एवम् उक्तप्रकारेण उक्ताः आज्ञप्ताः सन्त हट्टमुट्टचित्तानन्दिताः
प्रीतिमनसः परमसौमनस्यिता हर्षवशविसर्पद् हृदयाः भूत्वा विनयेन विनयपूर्वकम् वचनं
प्रतिशृण्वन्ति स्वीकुर्वन्ति 'पडिमुणित्ता' प्रतिश्रुत्य स्वीकृत्य 'खिप्पामेव हत्थिखंधवरगया
जाव घोसति' क्षिप्रमेव शीघ्रमेव हस्तिस्कन्धवरगताः श्रेष्ठहस्तिस्कन्धेषु समारूढाः सन्तः
ते कौटुम्बिकपुरुषाः यावद् घोषन्ति अत्र यावत्पदात् विनोतायाः राजधान्याः शृङ्गाटक
त्रिकवत्कुचचत्वरचतुर्मुल्लमडापथपथेषु महता महता शब्देन उद्घोषयन्त उद्घोषयन्तः

જાવે કોશલ દેશવાસી સમસ્ત જન અયોધ્યા વાળી જનો કે સાથ મિલકર આનન્દ પૂર્વક બિન્ન
'૨ પ્રકાર કી કોડાઓ સે खेल तमाशो से इस उत्सव को सफ़्फ़ करें—जगह २ इस उत्सव की
आराधनामें विजय वैजयंतिया फइराई जावे इस प्रकार के इन पूर्वोक्त विशेषणों वाले उत्सव होने की
जुम घोषणा करो (तएणं ते कोडुंबियपुरिसा भरहेण रणा एवं वुत्ता समाणा हट्ट वुट्ट चित्ताणंदिया
प.इमणा हरिसवसविसप्पमाणहियया विणएणं वयणं पडिमुणंति) इस प्रकार भरत राजा द्वारा आज्ञित
'हुए वे कौटुम्बिक पुरुष बहुत अधिक हट्ट और मुट्ट चित्त हुए उनका मन प्रीतियुक्त हो गया
उनका हृदय आनन्द से उछलने लगा बड़ी विनय के साथ उन्होंने ने अपने स्वामी की आज्ञा के
बचनों को स्वीकार किया (पडिमुणित्ता खिप्पामेव हत्थिखंधवरगया जाव घोसेति) स्वीकार
करके वे शीघ्र ही हाथी पर बैठकर अयोध्या राजधानी के शृङ्गाटक आदि मार्गोंपर गये
और जोर २ से उल्लुल्ल आदि पूर्वोक्त विशेषण संपन्न उत्सव होने को घोषणा करने लगे

કરવામાં આવે કોશલ દેશ વાસી સમસ્ત જનો અયોધ્યાવાસી જનો સાથે મળીને આનન્દ પૂર્વક
બિન્ન બિન્ન પ્રકારની કીડાઓથી—રમતો થી એ ઉત્સવને સફળ બનાવે ઠેકઠેકાણે એ ઉત્સવની
આરાધનામાં વિજયવૈજયન્તીઓ, લહેરાવવામાં આવે, આ પ્રમાણે એ પૂર્વોક્ત વિશેષણો
વાળા ઉત્સવ અંગેની તમે ઘોષણા કરો (તएण ते कोडुंबियपुरिसा भरहेण रणा एवं
वुत्ता समाणा हट्ट-मुट्ट चित्ताणंदिया पीइमणा हरिसवसविसप्पमाणहियया विणएण वयणं
पडिमुणंति) આ પ્રમાણે ભરત રાજા વડે આજ્ઞા થયેલા કૌટુમ્બિક પુરુષો અત્યધિક હટ્ટ અને
મુટ્ટ ચિત્તવાળા થયા તેમજ મન પ્રીતિયુક્ત થયું અને તેમજ હૃદય આનન્દ થી ઉછળવા લાગ્યું
અતીવ નમ્રતાપૂર્વક તેમણે પોતાના સ્વામીની આજ્ઞાના વચનો સ્વીકારી લીધા (पडिमुणित्ता
खिप्पामेव हत्थिखंधवरगया जाव घोसेति) સ્વીકાર કરીને તેઓ શીઘ્ર હાથી પર બેસીને
અયોધ્યા રાજધાનીના શ્રુંગાટક આદિ માર્ગો ઉપર ગયા અને જોર-જોરથી ઉલ્લુલ્લ આદિ

ઉચ્છુલ્કમ્ ઉત્કરમ્ ઉત્કૃષ્ટમ્ અદેયમ્ અમેયમ્ અમટપ્રવેશમ્ અદળદ્કુદળિડમ્ અધર્મિમ્
ગણિકાવરનાટકીયકલિતમ્ અનેકતાલાચરાનુચરિતમ્ અનુદ્ધૂતમૃદદ્ધમ્ અમ્બાનમાલ્ય-
વામાનમ્, પ્રમુદિતપ્રકીડિતસપુરજનજાનપદમ્, વિજયવર્જાયકમ્ ઇતિ ગ્રામ્યમ્, તત્ર શૃંગા-
ટકં 'મિઘાઢા' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધ જલજફલં તદાકાર સ્થાન ત્રિકોણમિત્યર્થઃ, ત્રિરૂપ-
મિલિતત્રિમાર્ગસ્થાનમ્ ૨, ચતુષ્કમ્ યત્ર ચત્વારો માર્ગાઃ મિલિન્તિ તત્ 'ચોરાઢા' ઇતિ ભાષા-
પ્રસિદ્ધમ્ ૩, ચત્વરમ્ - વહુમાર્ગસમેલનસ્થાનમ્ ચતુર્મુખમ્-ચતુર્દ્વારમ્થાનમ્ આગન્તુકા
દીનાં વિશ્રામસ્થાનમ્ ૫, મહાપથઃ-રાજમાર્ગઃ ૬, પન્થા-રથ્યામાર્ગઃ તેષુ સપ્તસુ સ્થાનેષુ
તે કૌટુમ્બિકપુરુષાઃ પદ્મસ્તિસ્કન્ધારૂઢા. સન્ત ઉચ્છુલ્કમિત્યાદિ વિશેષણત્રિગિષ્ટ
દ્વાદશસંવત્સરિકં રાજ્યાભિષેકોપલક્ષકં પ્રમોદમ્ ઉત્સવં ઘોષયન્તિ ઉચ્ચસ્વરેણ સર્વજ-
નાન્ અવબોધયન્તીત્યર્થઃ 'ઘોસિત્તા' ઘોષયિત્વા 'પ્રયમાણતિય પચ્ચપ્પિણતિ' તે કૌટુ-
મ્બિકપુરુષાઃ एताम् उक्त प्रकारिकाम् आह्वयित्वा रात्रौ भरताय प्रत्युत्तरयन्ति समर्पयन्ति।

અથ ભરતો યત્કતવાન્ તદાહ 'તણ ણં સે' ઇત્યાદિ । 'તણં સે ભરહે રાયા મહયા
મહયા રાયામિસેણં અમિસિત્તે સમાણે સોહાસણાઓ અન્નુદ્દેહ' તત્ સ્વલ્લુ તદનન્તરં
કિલ્લ સ ભરતો રાજા મહતા મહતા રાજ્યાભિષેકેણ અભિષિત્તઃ સન્ સિંહાસનાત્ અમ્બુ-
ત્તિષ્ઠતિ 'અન્નુદ્દિત્તા' અમ્બુત્થાય 'ઈત્થિરયણેણ જાવ ણાહગસહસ્સેહિં સદ્ધિં સપરિવુઢે
અમિસેયપેઢાઓ પુરત્થિમિલ્લેણ તિસોવાણપહિરૂવણં પચ્ચોરુહંતિ' સ્ત્રીરત્નેન સુમ-
દ્રયા યાવત્ નાટકસહસ્ત્રૈઃ સાર્દ્ધં સંપરિવૃતઃ સંપરિવેષ્ટિતઃ સન્ સ ભરતો રાજા અભિષેક-

સિંધાઢે કે બાકર કા જો માર્ગ હોતા હે ઉસકા નામ શૃંગાટક હૈ જહા પર ત્રીન માર્ગ બાકર
મિલતે હૈં ઉમકા નામ ત્રિક હૈ જહા પહ ચાર રાસ્તા બાકર મિલતે હૈં ઉસકા નામ ચતુષ્ક હૈ
હસે ચૌરાહા કહતે હૈં । અનેક માર્ગ જહા પર બાકર મિલતે હૈં ઉસકા નામ ચત્વર હૈ જિસ
સ્થાનમેં ચાર દ્વાર હોતે હૈં ઉસકા નામ ચતુર્મુખ હૈ રાજમાર્ગ કા નામ મહાપથ હૈ ગલિમાર્ગ
કા નામ પથ હૈં (તણ સે ભરહે રાયા મહયા ૨ રાયામિસેણં અમિસિત્તે સમાણે સોહાસણાઓ
'અન્નુદ્દેહ' ભરત રાજા જબ ઉનકા રાજ્ય કે યોગ્ય અભિષેક સે અભિષેક હો જુકા તબ વે સિંહા-
સન સે ડહે ઔર (અન્નુદ્દિત્તા ઇત્થિરયણે ણં જાવ ણાહગ સહસ્સેહિંસદ્ધિં સપરિવુઢેઅમિસેયપેઢાઓ-
'પુરત્થિમિલ્લેણં તિસોવાણપહિરૂવણં પચ્ચોરુહંતિ) ડઠકર સ્ત્રીરત્ન કે સાથ ૨ યાવત્ હજારોં

પૂર્વોક્ત વિશેષણ સંપન્ન ઉત્સવ યોજવાની ઘોષણા કરવા લાગ્યા. સિંધાઢાના બેવે બાકર
જે માર્ગના હોય તેનું નામ શૃંગાટક કહેવામા આવે છે જ્યા ત્રણ માર્ગો આવીને મળે
છે, તેનું નામ ત્રિક છે, અને ચારમાર્ગ મળે તેનું નામ ચતુષ્ક છે. જોને ચક્રહો પણ કહે
છે અનેક માર્ગો જ્યા આવીને મળે છે તેનું નામ ચત્વર છે જે સ્થાનમા ચાર
દ્વાર હોય છે, તેનું નામ ચતુર્મુખ છે રાજમાર્ગનું નામ મહાપથ છે. ગલીના
માર્ગનું નામ પથ છે (તણ સે ભરહે રાયા મહયા ૨ રાયામિસેણં અમિસિત્તે
સમાણે સોહાસણાઓ અન્નુદ્દેહ) રાજાને યોગ્ય જોવી અભિષેક વિધિથી ભરત રાજાને રાજ્યા-
ભિષેક થઈ ગયો ત્યારે તેજો સિંહાસન ઉપરથી ઊભા થયા અને (અન્નુદ્દિત્તા ઇત્થિરયણે ણં
જાવ ણાહગસહસ્સેહિં સદ્ધિં સંપરિવુઢે અમિસેયપેઢાઓ પુરત્થિમિલ્લેણ તિસોવાણ

પોઠાત્ પૌરસ્ત્યેન ત્રિસોપાનપ્રતિરૂપકેણ પ્રત્યવરોહતિ અવતરતિ અત્ર યાવત્પદાત્ દ્વાત્રિ-
શતા ઋતુકલ્યાણિકા સહસ્ત્રૈ દ્વાત્રિશતા નનપદકલ્યાણિકાસહસ્ત્રૈઃ દ્વાત્રિશતા દ્વાત્રિ-
શબ્દદ્વૈઃ એતેપાં સંગ્રહઃ વ્યાખ્યાન તુ એતેપામ્ અવ્યવહિતપૂર્વસૂત્રે એવ દ્રષ્ટવ્યમ્ 'પચ્ચો-
રુહિતા' પ્રત્યવરુહ્ય અવતીર્ય 'અભિસેયમંડવાઓ પહિણિક્ષમહ' સ મરતઃ અભિષેક-
મણ્ડપાત્ પ્રતિનિષ્કામતિ નિર્ગચ્છતિ 'પહિણિક્ષમિત્તા' પ્રતિનિષ્ક્રમ્ય નિર્ગત્ય 'જેણેવ
આભિસેકકે હતિથરયણે તેણેવ ઉવાગચ્છહ' યત્રૈવ અભિષેકયમ્ અભિષેકયોગ્યં હસ્તિરત્નં
પ્રધાનપદ્મહસ્તિત્વં તત્રૈવ ઉપાગચ્છતિ 'ઉવાગચ્છિત્તા' ઉપાગત્ય 'અંજનગિરિકૂડસન્નિમં
ગયવહ જાવ દુરુદે , અંજનગિરિકૂડસન્નિમમ્-અઞ્જનપર્વશૃંગસદ્દશમ્ સાદૃશ્યઠ્થ કૃષ્ણ-
વર્ણત્વેન ઉચ્ચત્વેન ચ બોધ્યમ્ ગનપતિં પદ્મહસ્તિત્વં યાવદ દુરુદઃ આરુઢઃ અત્ર યાવત્પદાત્
નરપતિરિતિ ગ્રાહ્યમ્ 'તણ્ ણં તસ્સ મરહસ્સ રણ્ણો વત્તોસં રાયસહસ્સા અભિસેયપેઢાઓ
ઉત્તરિલ્લેખં તિસોવાણપહિરૂવણં પચ્ચોરુહંતિ' તતઃ સ્વલ્લુત્તદનન્તરં કિલ તસ્ય મરતસ્ય
રાજઃ દ્વાત્રિશદ્રાજસહસ્રાણિ અભિષેકપોઠાત્ ઔત્તરાદેણત્રિસોપાનપ્રતિરૂપકેણપ્રત્યવરોહન્તિ

નાટકો કે સાથ ૨ વે ઉસ અભિષેક પોઠાત્ પૂર્વ કે ત્રિસોપાન પ્રતિરૂપક સે હોકર નીચે
ઉતરે યહા યાવત્ પદ સે જિતના મી ઋતુકલ્યાણિકા કન્યાજન આદિરૂપ પરિકર ઉનકે
સાથ થા વહ સવ ગૃહીત હુઆ હૈ । (પચ્ચોરુહિતા અભિસેયમંડવાઓ પહિણિક્ષમહ) ઔર
ઉતર કર વે ઉસ અભિષેક મંડપ સે બાહર આયે (પહિણિક્ષમિત્તા જેણેવ આભિસેકકે હ-
તિથરયણે તેણેવ ઉવાગચ્છહ) ઔર બાહર આકર વે જહા પર આભિષેક્ય હસ્તિરત્ન સ્વહા થા-
વહાં પર આયે (ઉવાગચ્છિત્તા અંજનગિરિકૂડસન્નિમં ગયવહ જાવ દુરુદે) વહાં આકર વે
ઉસ અંજન ગિરિ કે શિશ્વર જૈસે હસ્તિરત્ન પર યાવત્ ચઢાયે-બૈઠ ગયે યહાં યાવત્પદ સે
“નરપતિ” પદ કા મૃણ હુઆ હૈ । (તણ્ તસ્સ મરહસ્સ રણ્ણો વત્તોસ રાયસહસ્સા અ-
ભિસેયપેઢાઓ ઉત્તરિલ્લેખં તિસોવાણપહિરૂવણં પચ્ચોરુહંતિ) હસકે બાદ ૩૨ હજાર રાજા-
જન ઉસ અભિષેકપોઠાત્ ઉત્તર દિગર્તી ત્રિસોપાન પ્રતિરૂપક સે હોકર નીચે ઉતરે ॥ (તણ્

પહિરૂવણં પચ્ચોરુહંતિ) ઉભાયર્ધને સ્ત્રી-રત્નની સાથે-સાથે યાવત્ હબરો નાટકોની સાથે-
સાથે તેઓ તે અભિષેક પીઠ ઉપરથી પૂર્વના ત્રિ-સોપાન પ્રતિરૂપક ઉપર થઈને
નીચે ઉતર્યા. અહીં યાવત્ પદથી બેટલો ઋતુ કલ્યાણિકાઓ વગેરે પરિકર તેમની સાથે હતા
તે સંગૃહીત થયેલ છે. (પચ્ચોરુહિતા અભિસેયમંડવાઓ પહિણિક્ષમહ) અને ઉતરીને તેઓ
તે અભિષેક મંડપમાંથી બહાર આયા (પહિણિક્ષમિત્તા જેણેવ આભિસેકકે હતિથરયણે
તેણેવ ઉવાગચ્છહ) અને બહાર આવીને તેઓ બધા આભિષેક્ય હસ્તિરત્ન ઊભુંહોતુ ત્યાં
આયા. (ઉવાગચ્છિત્તા અંજનગિરિકૂડસન્નિમં ગયવહ જાવ દુરુદે) ત્યાં આવીને તેઓ તે
અંજનગિરિના શિખર સદૃશ હસ્તિરત્ન ઉપર યાવત્ આરુઢ થયા-બેસી ગયા. અહીં યાવત્
પદથી “નરપતિ” પદનું શ્રદ્ધુ થયું છે (તણ્ તસ્સ મરહસ્સ રણ્ણો વત્તોસ રાય સહસ્સા-
પદથી અભિસેયપેઢાઓ ઉત્તરિલ્લેખં તિસોવાણપહિરૂવણં પચ્ચોરુહંતિ) ત્યાર બાદ ૩૨ હબર
રાજાઓ તે અભિષેક પીઠ ઉપરથી ઉત્તર દિગર્તી ત્રિસોપાન પ્રતિરૂપક ઉપર થઈને નીચે

અવતરન્તિ 'તપ્પણં તસ્સ મરહસ્સ રણ્ણો સેનાવહરયણે જાવ સત્થવાહપ્પભિર્ઁઓ અભિ-
સેયપેદાઓ દાહિણિલ્લેણ તિસોવાણપહિરૂવણં પચ્ચોરુહંતિ'તતઃ સ્વલુ તસ્ય શ્રીભરતસ્ય
મહારાજઃ સેનાપતિરત્નં યાવત્ સાર્થવાહપ્રમૃતયઃ અભિષેકપીઠાત્ દાક્ષિણાત્યેન ત્રિસોપાન-
પ્રતિરૂપકેણ પ્રત્યવરોહન્તિ અવતરન્તિ અત્ર યાવત્પદાત્ ગાથાપતિ વર્દ્ધકિ પુરોહિતરત્નાનિ,
ઝોણિ ષષ્ટ્યધિકાર્ણિ ૩૬૦ સૂપકારણતાનિ અષ્ટાદશશ્રેણિપ્રશ્રેણયઃ અન્યે ચ વહ્વો રાજેશ્વર-
તલવરમાહમ્બિકકૌટુમ્બિકમન્ત્રિમહામન્ત્રિગણકદૌવારિકાઽઽમાત્યચેટપીઠમર્દનગરનિગમ --
શ્રેષ્ઠિસેનાપતિસાર્થવાહદૂતસન્ધિપાલા ગ્રાહ્યાઃ રાજેશ્વરગદ્ધિ સન્ધિપાલાન્તાનાં વ્યાખ્યાનમ્
અસ્મિન્નેવ વક્ષસ્કારે સપ્તવિંશતિતમે સૂત્રે દ્રષ્ટવ્યમ્ । અથ યયા રીત્યા પદસ્વખંડાધિપતિષ્વક્ર-
વર્ત્તી ભરતો મહારાજા વિની તારાજધાનોપ્રવિષ્ટવાનનાંરીતિમાહ'તપ્પણં તસ્સ'ઇત્યાદિ । 'તપ્પણં
તસ્સ મરહસ્સ રણ્ણો આભિસેવકં હત્થિરયણ દૂરુહસ્સ સમાણ સ ઇમે અદ્દુ મંગલગા પુરઓ
જાવ સંપત્થિયા' તતઃ સ્વલુ તદનન્તર કિલ્લ તસ્ય ભરતસ્ય રાજઃ આભિષેક્યમ્ અભિષેક-
યોગ્યં હસ્તિરત્નં શ્રેષ્ઠપટ્ટહસ્તિનં દુરુહસ્ય આરુહસ્ય સતઃ ઇમાનિ સ્વસ્તિક ૧ શ્રીવત્સ ૨

તસ્સ મરહસ્સ, રણ્ણો સેનાવહરયણે જાવ સત્થવાહપ્પભિર્ઁઓ અભિસેયપેદાઓ દાહિણિલ્લેણ તિસો-
વાણ પહિરૂવણં પચ્ચોરુહંતિ) ઇસકે બાદ ડસ ભરત નરેશ કા સેનાપતિરત્ન યાવત્ સાર્થવાહ
આદિજન ડસ અભિષેક પીઠ સે દક્ષિણદિગ્વર્તી ત્રિસોપાન સે હોકર નીચે ડતરા યહાં યા-
વત્પદસે "ગાથાપતિરત્ન, વર્દ્ધકિરત્ન, પુરોહિતરત્ન, ૩૬૦ સૂપકારજન તથા શ્રેણિપ્રશ્રેણિ જન
ઇવં અન્ય ઔર મી રાજેશ્વર તલવર, માહમ્બિક, કૌટુમ્બિક, મત્રી, મહામત્રી, ગણક, દૌવા-
રિક, અમાત્ય, ચેટ, પીઠમર્દ, નગર નિગમ શ્રેષ્ઠિ જન, સેનાપતિ, સાર્થવાહ દૂત ઔર સ-
ન્ધિપાલ" ઇન સવકા પ્રહ્ણ હુઆ હૈ ॥ (તપ્પણ તસ્સ મરહસ્સ રણ્ણો આભિસેવકં હત્થિરયણં
દુરુહસ્સ સમાણસ્સ ઇમે અદ્દુ મંગલગા પુરઓ જાવ સંપત્થિયા) ભરત રાજા જાવ આભિષેક્ય
હસ્તિરત્ન. પર અઝી તરહ સે બૈઠ ચૂકે તવ ડનકે આગે સવસે પહિલે સે આઠ આઠ કી
સંખ્યા મેં આઠ મગજ દ્રવ્ય પ્રસ્થિત હુઇ-યહાં યથાક્રમ જાવ શબ્દ યાવત્પદ સે ગૃહીત

ઉત્તરો(તપ્પણં તસ્સ મરહસ્સ, રણ્ણો સે રયણે જાવ સત્થવાહપ્પભિર્ઁઓ અભિસેય પેદાઓ
દાહિણિલ્લેણ તિસોવાણપહિરૂવણં પચ્ચોરુહંતિ) ત્યારબાદ તે ભરત નરેશનું સેનાપતિરત્ન
યાવત્ સાર્થવાહ વગેરે જનો તે અભિષેક પીઠ ઉપરથી દક્ષિણ દિગ્વર્તી ત્રિસોપાન ઉપર થઈ
ને નીચે ઉતર્યા અહીં યાવત્ પદથી "ગાથાપતિરત્ન, વર્દ્ધકિરત્ન પુરોહિતરત્ન, ૩૬૦ સૂ-
પ " જનો તેમજ શ્રેણિ-પ્રશ્રેણિ જનો અને બીજા પાંચ રાજેશ્વર, તલવરો, માહમ્બિકો, કૌટુ-
મ્બિકો, મંત્રીઓ, મહામંત્રી, ગણકો, દૌવારિકો, અમાત્યો, ચેટો, પીઠમર્દો, નગરનિગમ શ્રેષ્ઠિ-
જનો, સેનાપતિઓ, સાર્થવાહો, દૂતો અને સન્ધિપાલો એ સર્વનું અહંથ થયું છે. (તપ્પણં ત
મરહસ્સ રણ્ણો આભિસેવકં હત્થિરયણં હુ સ સમાણસ્સ ઇમે અદ્દ મંગલગા પુરઓ
સંપત્થિયા) ભરત રાજા જ્યારે આભિષેક્ય હસ્તિરત્ન ઉપર સારી રીતે આસેઠ થઈ ગયા
ત્યારે તેમની આગળ સર્વ પ્રથમ આ પ્રમાણે આઠ-આઠની સંખ્યામાં આઠ મંગળ દ્રવ્યો
પ્રસ્થિત થયા. અહીં યાવત્ પદથી જે આઠ દ્રવ્યો સ ગૃહીત થયા છે તે આઠ મંગળ દ્રવ્યોના

નન્ધાવર્ત ૩ વર્ધમાનક ૪ મદ્રાસન ૫ મત્સ્ય ૬ કલશ ૭ દર્પણ ૮ નામકાનિ અષ્ટાઠ્ઠ મહાલકાનિ પ્રત્યેકમ્ અષ્ટૌ અષ્ટૌ સંપેઠને સતિ ચતુઃ પષ્ટિતમસંખ્યકાનિ મદ્રાલકાનિ इत्य-
 ર્યઃ પુરતો યાવત્ સંપ્રસ્થિતાનિ યાવત્પરાત્ યથાનુપૂર્વ્યાં યથાક્રમમિતિ ગ્રાહ્યમ્ 'જોડવિ ય
 અહગચ્છમાણસ્સ ગમો પદમો કુવેરાવસાણો સોચેવ હંપિ કમો સવકારજહો ણેયવ્વો'
 યોડપિ ચ અતિગચ્છતઃ વિનીતાં પ્રવિશતો ભરતસ્ય ક્રમઃ પરિપાટી પ્રથમઃ અધસ્તનસૂત્રો-
 ક્તો ભરતવિનીતા પ્રવેશવર્ણકઃ કુવેરાવસાનઃ કુવેરદૃષ્ટાન્તમાવિતસૂત્રાવસાનઃ સ એવ ક્રમઃ
 હૃષાપિ સત્કારવિવર્જિતો--મત્કારાદિરહિતો નેતવ્યઃગ્રાહ્યઃ અય ભાવઃ પૂર્વ પ્રવેશે ષોડશદેવ-
 સહસ્તદ્વાત્રિંશદા જસહસ્રારીનાં સત્કારો યથા ભરતેન રાજ્ઞા વિહિતસ્તથા નાત્રેતિ, અસ્ય ચ
 સત્કારસ્ય દ્વાદશવાર્ષિકોત્સવનિર્વત્તનોત્તરકાલે એવ અવસરપ્રાપ્તવાત્ લોકપાલઃ સ ભરતો
 રાજા નિજરાજભવનપ્રતિદ્વારમાગત્ય હસ્તિરત્નાત્ પ્રત્યવરુચ સ્ત્રીરત્નેન સુમદ્રયા દ્વાત્રિ-
 શતા ઋતુકલ્યાણિકાસહસ્રૈ, દ્વાત્રિંશતા જનપદકલ્યાણિકાસહસ્રૈઃ દ્વાત્રિંશતા દ્વાત્રિંશદૂર્વદૈઃ

હુઆ ડન અષ્ટ મંગલ દ્રવ્યો કે નામ—સ્વસ્તિક, શ્રીવત્સ, નન્ધાવર્ત વર્ધમાનક, મદ્રાસન, મત્સ્ય, 'કલશ, એવં દર્પણ" હસ પ્રકાર સે હૈં (જે વિ ય અહગચ્છમાણસ્મ ગમો પદમો કુવેરા-
 વસાણો સો ચેવ હંપિ કમો સવકારજહો ણેયવ્વો) ભરત કે અયોધ્યા મેં પ્રવેશ કરને
 સમય જૈસા પાઠ કુવેર કી ઉપમા તકકા કહા ગયા હૈ વૈસા હો વહ પાઠ યહાં પર મો
 કહહેના ચાહિયે પરન્તુ યહાં કેવલ હતની સી હી વિશેષતા હૈ કિ યહા પર સમ્મિલિત જ-
 નોં કા સત્કાર નહી કહા ગયા હૈ અર્થાત્ ભરત ને અયોધ્યા મેં પ્રવેશ કરતે સમય સોહહ
 હજાર દેવો કા એવં હજારોં રાજા આદિ જનોં કા સત્કાર કિયા એસા કથન કિયા જા ચુકા
 હૈ—પર યહાં વહ કથન નહીં કિયા ગયા હૈ ક્યોંકિ વહ કથન તો ૧૨ વર્ષ કે ઉત્સવ કી પરિ
 સમાપ્તિ કે વાદ હી કિયા જાયગા હસ તરહ ચલતે ૨ લે લોકપાલ ભરત અપને રાજભવન કે
 પ્રતિદ્વાર પર આકર હસ્તિરત્ન સે નોત્રે ડનરે ઓર સ્ત્રીરત્ન સુમદ્રા ૩૨ હજાર ઋતુકલ્યાણ
 કારિકા કન્યાઓં ૩૨ હજાર જનપદાપ્રણિયોં કી કલ્યાણકારિણિ કન્યાઓં એવં ૩૨—

નામો આ પ્રમાણે છે - સ્વસ્તિક, શ્રીવત્સ, નન્ધાવર્ત, વર્ધમાનક, મદ્રાસન, મત્સ્ય, કલશ,
 તેમજ ૬૫ંથુ. (જે વિ ય અહગચ્છમાણસ્મ ગમો પદમો કુવેરાવસાણો સો ચેવ હંપિ કમો
 સવકારજહો ણેયવ્વો) ભરતના અયોધ્યા પ્રવેશ અગેના પાઠ બેવો પાઠ કુવેરની ઉપમા
 સુધી કહેવામાં આવેલ છે, તેવોજ પાઠ અગે પણ સમજવો પણ અહીં આટલી વિશેષતા
 છે કે અહીં સમ્મિલિત થયેલા લોકોના સત્કાર અગે કહી પણ કહેવામાં આવ્યું નથી
 એટલે કે ભરત રાજાએ અયોધ્યામાં પ્રવેશ કરતી વખતે સોળ હજાર દેવો તેમજ સહસ્રો
 રાજાં વગેરે લોકોના સત્કાર કર્યો, પરન્તુ આવું કથન અહીં કરવામાં આવ્યું નથી કેમકે તે
 કથન તો ૧૨ વર્ષીય ઉત્સવની પરિસમાપ્તિ પછી જ કરવામાં આવશે આ પ્રમાણે આશતા આશતા
 તે લોકપાલ ભરત પોતાના રાજભવનના પ્રતિદ્વારની સામે આવીને હસ્તિરત્ન ઉપરથી નીચે
 ઉતર્યા અને સ્ત્રી રત્ન સુમદ્રા, ૩૨ હજાર ઋતુ કલ્યાણકારિકા કન્યાઓ, ૩૨ હજાર જન
 પદાપ્રણિયોની-કલ્યાણ કારિણી કન્યાઓ તેમજ ૩૨-૩૨ યાત્રા - બદ્ધ ૩૨ હજાર નાટકોથી

નાટકસહસ્રૈઃ સાર્દ્ધં સપરિવૃત્તો મવનવરાવતંમકં સ્વરાજમ્બનં પ્રવિશતિ તત્ર કીદૃશો રાજા
કીદૃશં ચ રાજમ્બનં તત્રાહ-‘જાવ કુવેરોન્વ દેવરાયા કેલાસ મિહરિ સિંગમૂર્ઝંતિ’ યાવત્
સર્વેતો માવેન કુવેરો દેવરાજ ઇવ-યથા કુવેરો દેવરાજઃ તથા અયમપિ ઓકપાલો
મરતો દેવરાજઃ યથા ચ કેલાસં સ્ફટિકાચલ કિં લક્ષણં મવનવરાવતમકં શિશ્વરિશ્વદ્રં
પર્વતશિશ્વરં તદ્ભૂતં તત્સદૃશમુચ્ચત્વેન મરતસ્ય રાજમ્બનમિત્યર્થઃ ‘તણ ણં સે મરહે
રાયા મઝ્જણઘર અણુપવિસદ’ તતઃ સ્વલ્લુ સ મરતો રાજા મઝ્જનગૃહં સ્નાનગૃહમ્ અનુ-
પ્રવિશતિ ‘અણુપવિસિત્તા જાવ’ અનુપવિશ્ય યાવત્ અત્ર યાવત્પદાત્ કૃતસ્નાનઃ સન્
તતો નિઃસૃત્ય મોજનમણ્ડપમુપાગચ્છતિ ઉપાગત્ય ‘મોયણમંડવંસિ સુહાસણવરગણ અટ્ટમ-
મત્તં પારેદ’ મોજનમણ્ડપે મોજનશાલાયાં સુહાસનવરગતઃ સન્ અષ્ટમમત્તં પારયતિ
અહોરાત્રત્રયાત્મકં દિનત્રયમુપવાસં કૃત્વા તતઃ પરમ્ અષ્ટમમત્તેન પારણાં કરોતિ સ
મરત ઇત્યર્થઃ ‘પારેત્તા’ પારયિત્વા પારણાં કૃત્વા ‘મોયણમંડવામો પહિણિક્સમિદ’ મો-
જનમણ્ડપાત્ મોજનશાલાતઃ પ્રતિનિષ્ક્રામતિ નિર્ગચ્છતિ ‘પહિણિક્સમિત્તા’ પ્રતિનિષ્ક્ર-
મ્ય નિર્ગત્ય ‘ઉપ્પિ પાસાયવરગણ ફુટ્ટમાણેહિ મુદ્દમત્થપ્પહિ જાવ મુંજમાણે વિહરદ’
ઉપરિ પ્રાસાદવરગતઃ શ્રેષ્ઠપ્રાસાદમવસ્થિતઃ સન્ સ મરતો રાજા સ્ફુટન્નિઃ મુદ્ગમસ્તકૈઃ

૩૨ પાત્રવદ્ ૩૨ હજાર નાટકો, સે યુક્ત હુપ મવનવરાવતંસક સ્વરાજમ્બન મેં પ્રવિષ્ઠ
હુપ (જાવ કુવેરોન્વ દેવરાયા કેલાસ મિહરિસિંગમૂર્ઝંતિ) જિમ પ્રકાર કુવેર કૈલાસ પર્વત
કે મીતર પ્રવિષ્ઠ હોતા હૈ ઉપી પ્રકાર વે મરત રાજા કૈલાસ કે શિશ્વર જૈસે ડંચે અપને
રાજમ્બન મેં પ્રવિષ્ઠ હુપ (તણં સે મરહે રાયા મઝ્જણઘરં અણુપવિસદ) રાજમ્બન મેં પ્રવેશ
કરને કે બાદ વે મરત મહારાજા સ્નાનગૃહ મેં ગયે ઓર વહાં અચ્છી તરહ સે સ્નાન
ક્રિયા ફિર વે વહાં સે નિકલે ઓર નિકલ્લર (મોયણમંડવંસિ સુહાસણવરગણ અટ્ટમમત્તં
પારેદ) મોજન મન્ડપ મેં ગયે વહાં જાકર ઉન્હોને સુહાસન સે વૈઠ કર અષ્ટમ મત્ત તપસ્યા
કી પારણા કી (પારેત્તા મોયણમંડવામો પહિણિક્સમિદ) પારણા કરકે ફિર વે વહાં સે
ચલે આયે ઓર આકર (પહિણિક્સમિત્તા ઉપ્પિ પાસાયવરગણ ફુટ્ટમાણેહિ મુદ્દમત્થપ્પહિ
જાવ મુંજમાણે વિહરદ) અપને મવનાવતંમક સ્વરાજમ્બન મેં આયે ઓર વહાં આકરકે વે

યુક્ત થયેલા મવનવરાવત સહ સ્વરાજ મ્બનમા પ્રવિષ્ઠ થયા (જાવ કુવેરોન્વ દેવરાયા
કૈલાસમિહરિસિંગમૂર્ઝંતિ) જેમ કુવેર કૈલાસ પર્વતમા પ્રવિષ્ઠ થાય છે, તેમજ તે ભરત
રાજા કૈલાસના શિખર જેવા ઉચ્ચ પોતાના રાજ મ્બનમાં પ્રવિષ્ઠ થયા (તણં સે મરહે રાયા
મઝ્જણઘરં અણુપવિસદ) રાજમ્બનમાં પ્રવિષ્ઠ થયા બાદ તે ભરત રાજા સ્નાન ગૃહમાં ગયા
અને ત્યાં તેમણે સારી રીતે સ્નાન કર્યું પછી તેઓ ત્યાંથી નીકળ્યાં અને નીકળીને (મોયણ
મંડવામો સુહાસણવરગણ અટ્ટમમત્તં પારેદ) મોજન મંડપા ગયા ત્યાં બંધને તેમણે સુખા-
સનમા બેસીને અષ્ટમ ભક્ત તપસ્થાના પારણા કર્યા. (પારેત્તા મોયણમંડવામો પહિણિક્સ
મિદ) પારણા કરીને પછી તેઓ ત્યાંથી આવ્યા અને આવીને (પહિણિક્સમિત્તા ઉપ્પિ પાસાયવર
ગણ ફુટ્ટમાણેહિ મુદ્દમત્થપ્પહિ જાવ મુંજમાણે વિહરદ) પોતાના મવનાવત સહ સ્વરાજમ્બન
૧૨૦

नन्धावर्त्त ३ वर्धमानक ४ भद्रासन ५ मत्स्य ६ कलश ७ दर्पण ८ नामकानि अष्टाष्ट
मङ्गलकानि प्रत्येकम् अष्टौ अष्टौ संमेलने सति चतुः पण्डितमसंख्यकानि मङ्गलकानि इत्य-
र्थः पुरतो यावत् सप्रस्थितानि यावत्परात् यथानुपूर्व्या यथाक्रममिति ग्राह्यम् 'जोऽवि य
अङ्गच्छमाणस्स गमो पढमो कुवेरावसाणो सोचेव इहंपि कमो सक्कारज्जदो णेयव्वो'
योऽपि च अतिगच्छतः विनीता प्रविशतो भरतस्य क्रमः परिपाटी प्रथमः अधस्तनसूत्रो-
क्तो भरतविनीता प्रवेशवर्णकः कुवेरावसानः कुवेरदृष्टान्तभाषितसूत्रावसानः स एव क्रमः
इहापि सत्कारविवर्जितो-मत्कारादिरहितो नेतव्यः ग्राह्यः अयं भावः पूर्वं प्रवेशे षोडशदेव-
सहस्रद्वान्निशदा जसहस्रादीनां सत्कारो यथा भरतेन राज्ञा विहितस्तथा नात्रेति, अस्य च
सत्कारस्य द्वादशवर्षिकोत्सवनिर्वृत्तनोत्तरकाले एव अवसरप्राप्तत्वात् लोकपालः स भरतो
राजा निजराजभवनप्रतिद्वारमागत्य हस्तिरत्नान् प्रत्यवरुण स्त्रीरत्नेन सुभद्रया द्वात्रि-
ंशता ऋतुकल्याणिकासहस्रैः, द्वात्रिंशता जनपदकल्याणिकासहस्रैः द्वात्रिंशता द्वात्रिंशद्वर्षैः

हुआ उन अष्ट मण्ड द्रव्यों के नाम-स्वस्तिक, श्रीवत्स, नन्धावर्त्त वर्द्धमानक, भद्रामन,
मत्स्य, 'कलश, एवं दर्पण" इस प्रकार से हैं (जे वि य अङ्गच्छमाणस्स गमो पढमो कुवेरा-
वसाणो सो चेव इहंपि कमो सक्कारज्जदो णेयव्वो) भरत के अयोध्या में प्रवेश करने
समय जैसा पाठ कुवेर की उपमा तकका कहा गया है वैसा हो वह पाठ यहाँ पर भी
कहलेना चाहिये परन्तु यहाँ केवल इतनी सी ही विशेषता है कि यहाँ पर सम्मिलित ज-
नों का सत्कार नहीं कहा गया है अर्थात् भरत ने अयोध्या में प्रवेश करते समय सोलह
हजार देवों का एवं हजारों राजा आदि जनों का सत्कार किया ऐसा कथन किया जा चुका
है-पर यहाँ वह कथन नहीं किया गया है क्योंकि वह कथन तो १२ वर्ष के उत्सव की परि-
समाप्ति के बाद ही किया जायगा इस तरह चलते २ वे लोकपाल भरत अपने राजभवन के
प्रतिद्वार पर आकर हस्तिरत्न से नीचे उतरे और स्त्रीरत्न सुभद्रा ३२ हजार ऋतुकल्याण
कारिका कन्यायों ३२ हजार जनपदाप्रणियों की कल्याणकारिणि कन्यायों एवं ३२-

नामो आ प्रमाणे छे - स्वस्तिक, श्रीवत्स, नन्धावर्त्त, वर्द्धमानक, भद्रासन, मत्स्य, कलश,
तेमन् ८५५. (जे वि य अङ्गच्छमाणस्स गमो पढमो कुवेरावसाणो सो चेव इहंपि कमो
सक्कारज्जदो णेयव्वो) भरतना अयोध्या प्रवेश अजेना पाठ जेवो पाठ कुवेरनी उपमा
सुधी कहेवामा आवेल छे, तेवोअ पाठ अत्रे पक्ष समजवो पक्ष अहाँ आटवी विशेषता
छे के अहाँ सम्मिलित यथेहा छोडैना सत्कार अत्रे कहीं पक्ष कहेवामा आयुं नथी.
जेठवे के भरत राजाजे अयोध्यामा प्रवेश करती वपने सोण छेनर देवो तेमन् सहस्रो
राजा वजेरे छोडैना सत्कार करी, परन्तु आयु कथन अहाँ करवामा आयुं नथी. केनके ते
कथनुते १२ वर्षीय उत्सवनी परिसमाप्ति पत्रीअ करवामा आवशे आ प्रमाणे आगतता आगतता
ते लोकपाल भरत पोताना राजभवनना प्रतिद्वारनी सामे आयीने हस्तिरत्न उपरभी नीचे
उतरा अने स्त्रीरत्न सुभद्रा, उर छेनर ३२ कल्याणकारिका कन्याओ, उर छेनर ३२
जनपदकल्याणकारिणी-कल्याण कारिणी कन्याओ तेमन् ३२-३२ पात्र. अछे उर छेनर नाटकी

द्वादशसम्प्रसरिके द्वादशसम्प्रसरः वर्षाणि कालो मानं यस्य स तथा भूतस्तस्मिन् प्रमोदे महाराज्याभिषेकजनितमहोत्सवे समाप्ते व्यतीते सति यत्रैव मञ्जनगृहम् स्नानगृहं तत्रैव उपागच्छति 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'जाव मञ्जघराओ पडिणिकखमइ' यावद् मञ्जनगृहात् स्नानगृहात् प्रतिनिष्क्रामति निर्गच्छति स भरतः, अत्र यावत्पदात् कृतस्नानः इति बोध्यम् 'पडिणिकखमित्ता' प्रकृतिनिष्क्रम्य निर्गत्य' जेणेव बाहिरिया उवट्टाणसाला जाव सीहासणवरगण पुरत्थाभिमुहे णिसीयइ' यत्रैव बाह्या उपस्थान-शाला सभामण्डपः यावत् सिंहासनवरगतः पौरस्त्याभिमुखः पूर्वाभिमुखः निपीदति सिंहासने उपविशति स भरत इत्यर्थः, अत्र यावत्पदात् यत्रैव च सिंहासनं तत्रैव उपागच्छति उपागत्य इति बोध्यम् 'णिसीयित्ता' निपद्य उपविश्य 'सोलसदेवस-हस्से सक्कारेइ सम्माणेइ' षोडशदेवसहस्राणि-षोडशसहस्रसंख्यकान् देवान् इत्यर्थः सत्कारयति सम्मानयति 'सक्कारित्ता सम्माणित्ता' सत्कार्यं सम्मान्य च 'पडिविसज्जेइ' तान् देवान् प्रतिविसर्जयति स्वनिवासस्थानं गन्तुम् आज्ञापयतीत्यर्थः 'पडिविसज्जित्ता' प्रतिविसर्ज्य तथाऽऽदिश्य 'वत्तीसं रायवरसहस्सा सक्कारेइ सम्माणेइ' द्वात्रिंशद् राजवरसह-

जेणेव मञ्जणघरे तेणेव उवागच्छइ) जब १२ वर्ष तक किया गया उत्सव समाप्त हो चुका तब वे भरत नरेश जहां पर मञ्जन-स्नान-गृह-था वहां पर आये। (उवागच्छित्ता जाव मञ्जघराओ पडिणिकखमइ) वहां आकरके उन्होंने अच्छी तरह से स्नान किया (पडिणिकख-मित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्टाणसाला जाव सीहासणवरगण पुरत्थाभिमुहे णिसीयइ) फिर वहां से बाहर आये और बाहर आकर यावत् वे पूर्वदिशा की ओर मुख करके श्रेष्ठ सिंहासन पर बैठ गये यहाँ आगत यावत्पद से "जहाँ सिंहासनथा वहां पर वे आये" इन पदों का समग्र किया गया है (णिपीयित्ता सोलसदेवसहस्से सक्कारेइ, सम्माणेइ,) वहां बैठ कर उन्होंने उन १६ हजार देवों का सत्कार और सम्मान किया (सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिवि-सज्जेइ) सत्कार सम्मान करके उन्हें विसर्जित कर दिया (पडिविसज्जित्ता वत्तीस रायवर-सहस्सा सक्कारेइ सम्माणेइ) देवों को विसर्जित करके फिर भरत नरेश ने ३२ हजार

राया दुवाससवच्छरिजसि पमोयसि समाणसि जेणेव मञ्जणघरे तेणेव उवागच्छइ) अर्थात् १२ वर्ष सुधी थे। ११मा आवेस उत्सव समाप्त થઈ ગયો। त्याने ते भरत महाराज अर्थात् मञ्जन-स्नान गृह-हट्टु' त्यां गथा. (उवागच्छित्ता जाव मञ्जघराओ पडिणिकखमइ) त्यां आवीने तेमणे सारी रीते स्नान कथुं. (पडिणिकखमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्टाणसाला जाव सीहासणवरगण पुरत्थाभिमुहे णिसीयइ) पछी त्यांथी णडार आव्या अने णडार आवीने यावत् तेथो पूर्वदिशा तरइ अणु करीने श्रेष्ठ सिंहासन उपर भेसी-गया. अर्थात् आवेसा यावत् पछथी अर्थात् सिंहासन हट्टु तेथो त्या आव्या 'ओ पढो अणु थया छे.' (णिपीयित्ता सोलसदेवसहस्से सक्कारेइ, सम्माणेइ) त्या भेसीने तेमणे ते १६-हजार देवानो सत्कार अने तेमणु सम्मान कथुं (सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ) सत्कार अने सम्मान करीने ते देवाने ते भरत राजाणे विसर्जित करी दीधा (पडिविसज्जित्ता

યાવદ્ મુઝ્જાનો વિહરતિ તિષ્ઠતિ અત્ર યાવત્પદાત્ દ્વાત્રિશદ્બદ્ઘૈઃ નાટકૈઃ વરતરુણીસં-
પ્રયુક્તૈઃ ઉપનૃત્યમાનઃ ૨ ઉપગીયમાનઃ ૨ ઉપલાલિજ્યમાનઃ ૨ મહતાઽહતનાદ્યગીત-
વાદિતતન્ત્રીતલતાલતૂર્યધનમૃદંગપટુપ્રવાદિતરવેણ ઇષ્ટાન્ શબ્દસ્પર્શસરુપગન્ધાન્ પચ્ચ
વિધાન્ માનુષ્યકાન્ કામભોગાન્ इति ગ્રાહ્યમ્ । અત્ર સ્ફુટદ્ઘિઃ અતિરમસા સ્ફાલનવશાત્
વિદદ્ધિઃ મૃદંગમસ્તકૈઃ મૃદંગાનાં મૃદંગનામકવાદ્યવિશેષાણાં મસ્તકાનિ ઉપરિતનમા-
ગાસ્તૈઃ તથા દ્વાત્રિશદ્બદ્ઘૈઃ દ્વાત્રિશતા અભિનેતવ્યપ્રકારૈઃ પાત્રૈઃ વાં વદ્ઘૈઃ ઉપસમ્પન્નૈ-
નાટકૈઃ તથા વરતરુણીસંપ્રયુક્તૈઃ વરતરુણોભિઃ સુષ્ટુ યુવતિસ્ત્રીભિઃ મમ્પ્રયુક્તૈ કૃત-
સંપ્રયોગૈ ઉપનૃત્યમાનઃ ૨ નૃત્યવિષયી ક્રિયમાણઃ ૨ તદભિનયપુરસ્સરં નર્તનાત્ તથા
ઉપગીયમાનઃ ૨, તદ્ગુણગાનાત્, તથા ઉપલાલિજ્યમાનઃ ૨, તદીપ્સિતાર્થસમ્પાદનાત્
તથા મહતાઽહત નાદ્યગીતવાદિતતન્ત્રીતલતાલતૂર્યધનમૃદંગપટુપ્રવાદિતરવેણ તત્ર-મહતા
પ્રધાનેન બૃહતા વા હત્યસ્ય રવેણેત્યગ્રે સમ્બન્ધઃ અહતઃ-અનુવદ્ધો રવસ્યેતિ વિશેષણમ્
નાદ્યં નૃત્તં તેન યુક્ત ગીતં તચ્ચ વાદિતાનિ ચ શબ્દવન્તિ કૃતાનિ તન્ત્રી ચ વીણા
તલો ચ હસ્તૌ તાલાશ્ચ કશિકાઃ તૂર્યાણિ ચ પટહાદીનિ, इति વાદિતતન્ત્રીતલતાલ-
તૂર્યાણિ તાનિ ચ તથા ધનો મેઘ. તદાકારો યો મૃદંગો ધ્વનિગામ્ભીર્યસાધમર્યાત્ સ
ચાસૌ પટુના દક્ષેણ પ્રવાદિતશ્ચ યઃ સ ધનમૃદંગપટુપ્રવાદિતઃ સચેતિ અહતનાદ્યગીત-
વાદિતતન્ત્રીતલતાલતૂર્યધનમૃદંગપટુપ્રવાદિતા इति इતરેતરદ્વન્દ્વઃ તેષાં રવઃ તેન કરણ-
ભૂતેન મહતા રવેણ શબ્દેન અત્ર ચ મૃદંગપ્રહણં વાદ્યેષુ પ્રધાનં બોધ્યમ્ । ઇષ્ટાન્-ઇચ્છા
વિષયી કૃતાન્ શબ્દસ્પર્શસરુપગન્ધાન્ પચ્ચવિધાન્ માનુષ્યકાન્ કામભોગાન્ તત્ર શબ્દ-
રુપે કામૌ સ્પર્શસરગન્ધા ભોગા इति સમયપરિભાષાઃ મુઝ્જાનઃ અનુભવન્ વિહરતિ
તિષ્ઠતિ સ ભરતઃ इति ‘તણં સે ભરહે રાયા દુવાલસસંવચ્છરિઅંસિ પમોઅસિ
સમાણસિ જેણેવ મજ્જણધરે તેણેવ ઉવાગચ્છહ’ તતઃ સ્વલ્પ તદન્તર કિલ્લ સ ભરતો રાજા

વજતે હુણ મૃદંગાદિકો કી તુમુલ ધ્વનિ પૂર્વક સાંસારિક વિવિધ પ્રકાર કે કામભોગોં કે
સુખો કો ભોગતે હુણ અપના સમય વ્યતીત કરને લગે યહાં યાવત્પદ સે” દ્વાત્રિશદ્બદ્ઘૈઃ ના
ટકૈઃ વરતરુણીસંપ્રયુક્તૈ ડાનૃત્યમાનઃ ૨ ઉપગીયમાનઃ ૨ ઉપલાલિજ્યમાન. ૨ મહતાઽહત
નાદ્યગીતવાદિતતન્ત્રીતલતાલતૂર્યધનમૃદંગપટુપ્રવાદિતરવેણ ઇષ્ટાન્ શબ્દસ્પર્શસરુપગન્ધાન્ પચ્ચવિ
ધાન્ માનુષ્યકાન્ કામભોગાન્” હસ પાઠ કા પ્રહણ હુમા હૈ હન પદોં કી વ્યાખ્યા યથા-
સ્થાન કંઈ વાર કી જા જુકી હૈ (તણં ભરહે રાયા દુવાલસસંવચ્છરિઅંસિ પમોઅંસિ સમાણંસિ

માં આબ્યા. અને ત્યા આવીને તેઓ વાગતા મૃદંગાદિકોના તુમુલ ધ્વનિ સાથે સાંસારિક
વિવિધ પ્રકારના કામભોગોને, સુખોને ભોગવતા ૨ પોતાનો સમય પસાર કરવાલાગ્યા. અહીં
યાવત્ પદથી “દ્વાત્રિશદ્બદ્ઘૈઃ નાટકૈઃ વરતરુણીસંપ્રયુક્તૈઃ ઉપનૃત્યમાનઃ ૨ ઉપગીયમાન
૨ ઉપલાલિજ્યમાન ૨ મહતાઽહતનાદ્યગીતવાદિતતન્ત્રીતલતાલતૂર્યધનમૃદંગપટુપ્રવાદિ-
તરવેણ ઇષ્ટાન્ શબ્દસ્પર્શસરુપગન્ધાન્ પચ્ચવિધાન્ માનુષ્યકાન્ કામભોગાન્”
એ પાઠ શ્રદ્ધુ થયો છે. એ પદોની બ્યાખ્યા યથાસ્થાન કરવામાં આવી છે, (તણ. ભરહે

द्वादशसम्बत्सरिके द्वादशसम्बत्सराः वर्षाणि कालो मानं यस्य स तथा भूतस्तस्मिन् प्रमोदे महाराज्याभिषेकजनितमहोत्सवे समाप्ते व्यतीते सति यत्रैव मञ्जनगृहम् स्नानगृहं तत्रैव उपागच्छति 'उपागच्छित्ता' उपागत्य 'जाव मञ्जवराओ पडिणिक्लमड' यावद् मञ्जनगृहात् स्नानगृहात् प्रतिनिष्क्रामति निर्गच्छति स भरतः, अत्र यावत्पदात् कृतस्नानः इति बोध्यम् 'पडिणिक्लमित्ता' प्रकृतिनिष्क्रम्य निर्गत्य 'जेणेव बाहिरिया उवट्टाणसाला जाव सीहासणवरगण पुरत्थाभिमुहे णिसीयड' यत्रैव बाह्या उपस्थान-शाला समामण्डपः यावत् सिंहासनवरगतः पौरस्त्याभिमुखः पूर्वाभिमुखः निपीदति सिंहासने उपविशति स भरत इत्यर्थः, अत्र यावत्पदात् यत्रैव च सिंहासनं तत्रैव उपागच्छति उपागत्य इति बोध्यम् 'णिसीयित्ता' निषद्य उपविश्य 'सोलसदेवस-हस्से सक्कारेइ सम्माणेइ' षोडशदेवसहस्राणि-षोडपसहस्रसंख्यकान् देवान् इत्यर्थः सत्कारयति सम्मानयति 'सक्कारित्ता सम्माणित्ता' सत्कार्यं सम्मान्य च 'पडिविसज्जेइ' तान् देवान् प्रतिविसर्जयति स्वनिवासस्थानं गन्तुम् आह्वापयतीत्यर्थः 'पडिविसज्जित्ता' प्रतिविसर्ज्य तथाऽऽदिश्य 'वत्तीसं रायवरसहस्सा सक्कारेइ सम्माणेइ' द्वात्रिंशद् राजवरसह-

जेणेव मञ्जनघरे तेणेव उपागच्छइ) जब १२ वर्ष तक किया गया उत्सव समाप्त हो चुका तब वे भरत नरेश जहां पर मञ्जन-स्नान-गृह-था वहां पर आये। (उपागच्छित्ता जाव मञ्जवराओ पडिणिक्लमड) वहां आकरके उन्होंने अच्छी तरह से स्नान किया (पडिणिक्ल-मित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्टाणसाला जाव सीहासणवरगण पुरत्थाभिमुहे णिसीयड) फिर वहां से बाहर आये और बाहर आकर यावत् वे पूर्वदिशा की ओर मुख करके श्रेष्ठ सिंहासन पर बैठ गये यहां आगत यावत्पद से "जहां सिंहासनथा वहां पर वे आये" इन पदे का समझ किया गया है (णिसीयित्ता सोलसदेवसहस्से सक्कारेइ, सम्माणेइ,) वहां बैठ कर उन्होंने उन १६ हजार देवों का सत्कार और सम्मान किया (सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिवि-सज्जेइ) सत्कार सम्मान करके उन्हें विसर्जित कर दिया (पडिविसज्जित्ता वत्तीस रायवर-सहस्सा सक्कारेइ सम्माणेइ) देवों को विसर्जित करके फिर भरत नरेश ने ३२ हजार

राया दुवाससंवच्छरिअंसि पमोयसि समाणसि जेणेव मञ्जनघरे तेणेव उपागच्छइ) जयादे १२ वर्ष मुधी येजाभा आवेव उत्सव समाप्त थइ गये। त्यादे ते भरत महाराज जया मञ्जन-स्नान गृह-छटु त्या गया। (उपागच्छित्ता जाव मञ्जवराओ पडिणिक्लमड) त्या आदीने तेमणे सारी रीते स्नान कथुं. (पडिणिक्लमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्टाणसाला जाव सीहासणवरगण पुरत्थाभिमुहे णिसीयड) पथी त्यांथी गहारे आन्था अने गहारे आदीने यावत् तेजो पूर्वदिशा तरफ मुख करीने श्रेष्ठ सिंहासन उपर गेसी-गया. अही आवेवा यावत् पदथी जया सिंहासन छटु तेजो त्या आन्था 'जे पढो अछथु थया छे' (णिसीयित्ता सोलसदेवसहस्से सक्कारेइ, सम्माणेइ) त्या गेलीने तेमणे ते १६ हजार देवाने सत्कार अने तेमनु सम्मान कथुं (सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ) सत्कार अने सम्मान करीने ते देवाने ते भरत राजाणे विसर्जित करी दीधा (पडिविसज्जित्ता

સાણિ દ્વાત્રિંશત્સહસ્રસંખ્યકાન્ રાજવરાન્ સત્કારયતિ સન્માનયતિ 'સવકારિત્તા સન્માણિત્તા' સત્કાર્ય સન્માન્ય 'પઢિવિસજ્જેઈ' પ્રતિવિસર્જયતિ સ્વવાસગમનાય આજ્ઞાપયતિ સ ભરતઃ 'સવકારિત્તા સન્માણિત્તા' તાન્ રાજવરાન્ સત્કાર્ય સન્માન્ય ચ 'સેનાવહરયણં સવકારેઈ સન્માણેઈ' સેનાપતિરત્ન સત્કારયતિ સન્માનયતિ 'સવકારિત્તા સન્માણિત્તા' સત્કાર્ય સન્માન્ય ચ 'જાવ પુરોહિયરયણે સવકારેઈ સન્માણેઈ' યાવત્ પુરોહિતરત્ન સત્કારયતિ સન્માનયતિ ઇત્ર યાવત્પદાત્ ગાથાપતિરત્ન વર્દકિરત્ન ચ ગ્રાહ્યમ્ 'સવકારિત્તા સન્માણિત્તા' સત્કાર્ય સન્માન્ય ચ 'એવં તિણ્ણિસદ્દે સુવયારસણ અટ્ટારસસેણિપ્પસેણીઓ સવકારેઈ સન્માણેઈ' એવમ્ ઉત્તરીત્યા ત્રીણિ પટ્ટાણિ ષષ્ઠચ-ધિકાણિ સૂપકારશતાણિ ત્રિપટ્ઠચધિકશનસંખ્યકાન્ સૂપકારાન્ इत्यर्थः तथा अष्टादश-श्रेणिप्रश्रेणीः च सत्कारयति सम्मानयति 'सवकारित्ता सम्माणित्ता' सत्कार्य सम्मान्य च 'अण्णे य बहवे राईसरतलवर जाव सत्थवाहप्पभिइओ सवकारेई सम्माणेई' अन्यांश्च

રાજાઓં કા સત્કાર એવં સન્માન ક્રિયા (સવકારિત્તા સન્માણિત્તા પઢિવિસજ્જેઈ) ડનકા સત્કાર સન્માન કરકે ફિર વિસર્જિત કર દિયા (પઢિવિસજ્જિત્તા) ઇન્દે વિસર્જિત કરકે (સેનાવહરયણં સવકારેઈ, સન્માણેઈ) ફિર ડમ ભરત નરેશ ને સેનાપતિરત્ન કા સત્કાર ઔર સન્માન ક્રિયા (સવકારિત્તા સન્માણિત્તા જાવ પુરોહિયરયણે સવકારેઈ સન્માણેઈ) મત્કાર સન્માન કરકે ડસે વિસર્જિત કર દિયા ઇસકે બાદ ડખને ગાથાપતિરત્ન કા ઔર વર્દકિરત્ન કા સત્કાર સન્માન ક્રિયા ઇન્દે સત્કૃત ઔર સન્માનિત કર વિસર્જિત કર દિયા બાદ મેં ડસને પુરોહિત રત્ન કા સત્કાર ઔર સન્માન ક્રિયા ફિર ડપે મી વિસર્જિત કર દિયા (એવં તિણ્ણિસદ્દે સુવયારસણ અટ્ટારસ સેણિપ્પસેણીઓ સવકારેઈ, સન્માણેઈ) ઇસી તરહ ડસને ૩૬૦ સૂપકારોં કો સત્કૃત ઔર સન્માનિત ક્રિયા ઔર ડન્હેં વિસર્જિત કર દિયા ૧૮ શ્રેણિ પ્રશ્રેણો-જનો કો સત્કૃત સન્માનિત કર વિસર્જિત કર દિયા (અણ્ણેય બહવે રાઈસર તલવર જાવ

જત્તીસં રાયવરસહસ્સા સવકારેઈ સન્માણેઈ) દેવોને વિસર્જિત કરીને પછી ભરત નરેશે ડર હંબર રાજાઓનો સત્કાર અને તે સર્વંતુ સન્માન કર્યું (સવકારિત્તા સન્માણિત્તા પઢિ વિસજ્જેઈ) તેમનો સત્કાર અને તે સર્વંતુ સન્માન કરીને ભરત રાજાએ તેમને વિસર્જિત કરીદીધા (પઢિવિસજ્જિત્તા) અને તેમને વિસર્જિત કરીને (સેનાવહરયણ સવકારેઈ, સન્મા-ણેઈ) પછી તે ભરત નરેશે સેનાપતિરત્ન નો સત્કાર અને તેમતુ સન્માન કર્યું અને (સવકારિ-ત્તા સન્માણિત્તા જાવ પુરોહિયરયણે સવકારેઈ સન્માણેઈ) યાવત્સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તેમને વિસર્જિત કરી દીધા ત્યાર બાદ તેણે ગાથાપતિ રત્ન અને વર્ધકિરત્ન અને પુરોહિત રત્નનો સત્કાર અને સન્માન કર્યું અને તેમને સત્કૃત અને સન્મા-નિત કરીને વિસર્જિત કરી દીધા (એવ તિણ્ણિસદ્દે, સુવયારસણ અટ્ટારસ સેણિપ્પસેણીઓ સવકારેઈ, સન્માણેઈ) બા પ્રમાણે તેણે ૩૬૦ સૂપકારોને સત્કૃત અને સન્માનિત કર્યા અને ત્યાર બાદ તેમને વિસર્જિત કરી દીધા બા પ્રમાણે ૧૮ શ્રેણિ પ્રશ્રેણીઓને સત્કૃત અને સન્માનિત કર્યા અને ત્યાર બાદ તેમને વિસર્જિત કરી દીધા (અણ્ણેય બહવે

बहून् राजेश्वर तलवर यावत् सार्थवाहप्रभृतीन् सत्कारयति मम्मनयति' सत्कारित्ता सम्माणित्ता' सत्कार्य मम्मन्य च 'पडिविसज्जेइ' प्रतिविसर्जयति स्वनिवासस्थान गमनाय आज्ञापयति स भरत इत्यर्थः 'पडिविसज्जित्ता' प्रतिविसर्ज्य तथाऽऽज्ञाप्य 'उप्पि पासायवरगण जाव विहरइ, उपरि प्रासादवरगत. श्रेष्ठप्रासादं प्राप्तः सन् स भरतो राजा यावद् विहरति तिष्ठति अत्र यावत्पदात् स्फुटद्धि' मृदङ्गैः द्वात्रिंशद्बद्धैर्नाटकैः धरतरुणी संप्रयुक्तैः उपनृत्यमानः २ उपगीयमानः २ उपलालिज्यमान २ महताऽऽहतनादयगीतवादिततन्त्रीतलतालतूर्यघनमृदङ्गपटुप्रवादितरवेण इष्टान् शब्दस्पर्शरसरूपगन्धान् पञ्चविधान् मानुष्यकान् कामभोगान् एतेषां पदानां संग्रहः व्याख्यानं तु अस्मिन्नेव सूत्रे पूर्वं विलोकनीयम् ॥सू० ३१॥

अथ चतुर्दशरत्नाधिपते भरतस्य यानि रत्नानि यत्रोत्पद्यन्ते तत्तथाऽऽह—“भरहस्स” इत्यादि ।

मूलम्—भरहस्स रण्णो चक्करयणे १ दंडयणे २ असिरयणे ३ छत्तयणे ४ एते णं चत्तारि एगिंदियरयणा आउहघरसालाए समुप्पण्णा चम्मरयणे १ मणिरयणे २ कागणिरयणे ३ णव य महाणिहओ एएणं सिरिघरंसि समुप्पण्णा सेणावइरयणे १, गाहोवइरयणे २ वद्धइरयणे ३ पुरोहियरयणे ४ एए णं चत्तारि मणुअरयणा विणीयाए रायहाणीए समुप्पण्णा, आसरयणे १ हत्थिरयणे २ एए णं दुवे पंचिंदियरयणा वेयद्ध-

सत्यवाहपमिहओ सक्कारेइ सम्माणेइ) इसी तरह अन्य और भी अनेक राजेश्वर तलवर यावत् सार्थवाह आदिको को सत्कृत किया और सम्मानित किया (सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ) सत्कृत सम्मानित कर उन्हें फिर उसने विसर्जित कर दिया (पडिविसज्जित्ता उप्पि पासायवरगण जाव विहरइ) विसर्जित करके फिर वह भरत नरेश अपने प्रासादवरावतंमक राजभवन में चला गया और वहां जाकर उसने मनुष्यमव सम्बन्धी इष्ट कामभोगो को भोगते हुए अपने समय को व्यतीत किया यहां यावत्पद से पूर्व की तरह “स्फुटद्धिः मृदङ्गैः द्वात्रिंशद्बद्धैर्नाटकैः” इत्यादिरूप से पाठ का संग्रह हुआ है ॥सू० ३१॥

राईसरतलवर जाव सत्यवाहपमिहओ सक्कारेइ सम्माणेइ) आ प्रमाणे जीन् पण्ण अनेक राजेश्वर, तलवर यावत् सार्थवाह आदिको को सत्कृत करने सम्मानित किया (सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ) सत्कृत तेमने सम्मानित करीने तेमने विसर्जित करी दीया. (पडिविसज्जित्ता उप्पि पासायवरगण जाव विहरइ) विसर्जित करीने पछी ते भरत नरेश पोताना प्रासादवरगण सक्काराजनमा जतरहा त्या जधने तेमणे मनुष्यमव सम्बन्धी छत्तम भोगेने भोगवता भोगवता पोतानो समय पसर कर्ये अही यावत् पठथी पूर्वणी जेम “स्फुटद्धि मृदङ्गै द्वात्रिंशद्बद्धैर्नाटकै” वगेरे पाठ संगृहीत थयो छे ॥सू० ३१॥

ગિરિપાયમૂલે સમુપ્પણ્ણા સુમદ્દા ઇત્થીરયણે ઉત્તરિલ્લાણ વિજ્ઞાહરસેઢીણ સમુપ્પણ્ણે ॥સૂ.૦૩૨॥

હાયા-ભરતસ્ય રાજ ચક્રરત્નમ્ ૧ દંડરત્નમ્ ૨ અસિરત્નમ્ ૩ છત્રરત્નમ્ ૪ પતાનિ સ્થલ ચત્વારિ એકેન્દ્રિયરત્નાનિ આયુધગૃહશાલાયાં સમુત્પન્નानि, ચર્મરત્નમ્ ૧ મણિરત્નમ્ ૨ કાકળિરત્નમ્ ૩ નવ ચ મહાનિધય' પતે સ્થલ ધ્રોગૃહે સમુત્પન્ના સેનાપતિરત્નમ્ ૧ ગાથા પતિરત્નમ્ ૨ વર્દ્ધકિરત્નમ્ ૩ પુરોહિતરત્નમ્ ૪, પતાનિ સ્થલ ચત્વારિ મનુજરત્નાનિ વિની- તાયાં રાજધાન્યાં સમુત્પન્નानિ, અશ્વરત્નમ્ ૧, હસ્તિરત્નમ્ ૨, એતે સ્થલ દ્વે પચ્ચેન્દ્રિયરત્ને વૈતાહ્યગિરિપાદમૂલે સમુત્પન્ને સુમદ્દા ઓરત્નમ્ ઔત્તરાહ્યા વિદ્યાધરશ્રેણ્યાં સમુત્પન્નમ્ ॥સૂ.૩૨॥

ટીકા—“ભરહસ્સ રણો” ઇત્યાદિ । ‘ભરહસ્સ રણો ચક્રરયણે ૧ દંડરયણે ૨ અ- સિરયણે ૩ છત્રરયણે ૪ એતેણં ચત્તારિ ઇર્ગિદિયરયણે આહરસાલાણ સમુપ્પણ્ણા’ ભરતસ્ય રાજઃ ચક્રરત્નમ્ ૧ દંડરત્નમ્ ૨ અસિરત્નમ્ ૩ છત્રરત્નમ્ ૪, પતાનિ સ્થલ ચત્વારિ એકેન્દ્રિયરત્નાનિ આયુધગૃહશાલાયાં સમુત્પન્ન નિ ‘ચમ્પરયણે ૧ મણિરયણે ૨ કાગળિરયણે ૩ ણવ મહાનિધયો ઇણં સિરિધરસિ સમુપ્પણ્ણા’ ચર્મરત્નમ્ ૧ મણિરત્નમ્ કાકળિ રત્નમ્ ૩ નવ ચ મહાનિધયઃ નૈમર્પ ૧ પાણ્ડુ ૨ પિટ્થક ૩ સર્વરત્ન ૪ મહાપદ્મ ૫ કાલ ૬ મહાકાલ ૭ માળવકમહાનિધિ ૮ સ્વદ્ગ ૯ નામધેયાઃ નૈસર્પાદિદેવવિશેષાધિષ્ઠિતાઃ એતે સ્થલ ચર્મરત્નાદિ ત્રયં નૈસર્પાદિ નવ મહાનિધયશ્ચ શ્રીગૃહે માળ્ડાગારે સમુત્પન્નાનિ એતેન ચ પ્રોક્તા નવ મહાનિધયઃ શાશ્વતમાદરૂપાઃ કથમુત્પદ્યન્તે ઇત્યાશ્કમાનોઽપિ પરાસ્તતાં ગતઃ “સેનાહરયણે ૧ ગાહાવરયણે ૨ વદ્ધરયણે ૩ પુરોહિસરયણે ૪ ઇણં ચત્તારિ

અવ ભરત રાજા કે જો કિ ચૌદહ રત્નો કા અધિપતિ હોતા હૈ, કૌન કૌન રત્ન કહાં કહાં ઉત્પન્ન હોતે હૈં યહ પ્રકટ કિયા જાતા હૈ—‘ભરહસ્સ રણા ચક્રરયણે ૧ દંડરયણે અસિરયણે’ ઇત્યાદિ સૂત્ર-૩૨

ટીકા—‘ભરહસ્સ રણો ચક્રરયણે, દંડરયણે, અસિરયણે, છત્રરયણે’ ભરતચક્રવર્તી કે ચક્રરત્ન, દંડરત્ન ૨ અસિરત્ન ૩ છત્રરત્ન (એતે ણં ચત્તો) યે ચાર રત્ન જોકિ(ઈર્ગિદિયરયણા) એકેન્દ્રિય રત્ન હૈ (આહરસાલાઓ સમુપ્પણા) આયુધ ગૃહ શાલામૈં ઉત્પન્ન હોતે હૈં (ચમ્પરયણે, મણિરયણે, કાગ- ળિરયણે, ણવ મહાનિધિઓ ઇણં સિરિધરસિ સમુપ્પણા) ચર્મરત્ન મણિરત્ન, કાકળિરત્ન, તથા નૌ મહાનિધિયા યે સવ શ્રીગૃહ મૈં-માળ્ડાગાર મૈં-ઉત્પન્ન હોતે હૈં । (સેનાવરયણે, ગાહાવરયણે, વદ્ધરયણે,

હવે ભરતમહારાજા કે જે ચૌદરત્નોના અધિપતિ છે, તેમના કયા કયા રત્નો કયા કયા ઉત્પન્ન થાય છે તેખતાવવામા આવે છે—

‘ભરહસ્સ રણો ચક્રરયણે ૧ દંડરયણે ૨ અસિરયણે’ ઇત્યાદિ સૂત્ર-૩૨ ॥

ટીકા— ભરત ચક્રવર્તીના ચક્રરત્ન ૧, દંડરત્ન ૨, અસિરત્ન ૩, અને છત્રરત્ન (એતેણં ચત્તો) એ ચાર રત્નો કે જે (ઈર્ગિદિયરયણા) એકેન્દ્રિય રત્નો છે, (આહરસાલાઓ સમુપ્પણા) આયુધ ગૃહશાલામા ઉત્પન્ન થયા છે (ચમ્પરયણે, મણિરયણે, કાગળિરયણે, ણવ મહાનિધિઓ ઇણં સિરિધરસિ સમુપ્પણા) અમરત્ન, અશ્વિરત્ન, કાકળિરત્ન તથા નવ

મણુઅરયણા વિળીયાણ રાયહાળીણ સમુપ્પણ્ણા' સેનાપતિરત્તન ૧ ગાથાપતિરત્તન ૨ વર્દકિ-
રત્તન ૩ પુરોહિતરત્તનમ્ ૪ એતાનિ સ્વલુ ચત્તારિ મનુજરત્તનાનિ વિનીતાયા રાજધાન્યાં
સમુત્પન્નાનિ 'આસરયણે ૧ હત્થિરયણે ૨ એણ દુવે પંચિદિયરયણા વેઅદ્ધગિરિપાય-
મૂલે સમુપ્પણ્ણા' અશ્વરત્તનમ્ ૧ હસ્તિરત્તને ૨ એતે સ્વલુ દ્વે પચ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્ગત્તને વૈતા-
દ્યગિરેઃ પાદમૂલે મૂલધૂમો સમુત્પન્ને જાતે । 'સુમદ્દા' ઇત્થી રયણે ઉત્તરિલ્લાણ વિજ્ઞા-
હાર સેદ્ધીણ સમુપ્પણ્ણે' સુમદ્દા સુમદ્દાનામકં સ્ત્રીરત્તનમ્ ઔત્તગહાયામ્ ઉત્તરસ્યા વિદ્યાધર-
શ્રેણ્યાં સમુત્પન્નમ્ ॥સૂ. ૩૨॥

અથ પદચ્છન્દ ભરતં પાલશન્ ચક્રવર્તી ભરતો યથા પ્રવૃત્તવાન્ તથાઽઽહ—“તણ ન
સે ભરહે' ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—તણ નં સે ભરહે રાયા ચડસણ્ણં રયણાણં નવણ્ણં મહાણિ-
હીણં સોલસણ્ણં દેવસાહસસીણં વત્તીસાણ રાયસહસસાણં વત્તીસાણ ઉડ-
કલ્લાણિયા સહસસાણં વત્તીસાણ જળવયકલ્લાણિયાસહસસાણં વત્તીસાણ
વત્તીસદ્ધવદ્ધાણં નાહગસહસસાણં તિણ્ણં સદ્ધીણં સૂવયારસયાણં અદ્ધાસણ્ણં
સેણિપ્પસેણીણં ચડરાસીણ આસસયસહસસાણં ચડરાસીણ દંતિસયસહ-
સસાણં ચડરાસીણ રહસયસહસસાણં છળ્ણણુણ્ણં મણુસસકોડીણં વાવત્તરીણ
પુરવરસહસસાણં વત્તીસાણ જળવયસહસસાણં છળ્ણણુણ્ણં ગામકોડીણં નવણ-
ણુણ્ણં દોળમુહસહસસાણં અદ્ધયાલીસાણ પદ્ધણસહસસાણં ચડવ્વીસાણ કલ્લ-
હ-

પુરોહિયરયણે એણ ચત્તારિ મણુઅરયણા વિળીયાણ રાયહાળીણ સમુપ્પણ્ણા) સેનાપતિરત્તન, ગાથાપતિ-
રત્તન, વર્દકિરત્તન, ઔર પુરોહિતરત્તન એ ચાર મનુજરત્તન વિનીતા રાજધાની મેં ઉત્પન્ન હોતે હૈં (આ-
સરયણે, હત્થિરયણે એણ દુવે પંચિદિયરયણા વેઅદ્ધગિરિપાયમૂલે સમુપ્પણ્ણા) અશ્વરત્તન,
ઔર હસ્તિરત્તન, એ દો પંચેન્દ્રિયતિર્યગ્ગત્તન વૈતાદ્યગિરિ કી તલ્હટી મેં ઉત્પન્ન હોતે હૈં (સુમદ્દા-
હત્થીરયણે ઉત્તરિલ્લાણ વિજ્ઞાહારસેદ્ધીણ સમુપ્પણ્ણે) તથા સુમદ્દા નામ કા જો સ્ત્રીરત્તન હૈ
વહ ઉત્તરવિદ્યાધરશ્રેણી મેં ઉત્પન્ન હોતા હૈ ॥સૂ. ૩૨॥

મહાનિધિઓ એ સર્વે શ્રીગૃહમા-ભાડાગાર માં ઉત્પન્ન થયા છે. (સેનાપતિરયણે, ગાથાવ-
હરયણે, વર્દકિરયણે, પુરોહિયરયણે, એણ ચત્તારિ મણુઅરયણા વિળીયાણ રાયહાળીણ
સમુપ્પણ્ણા) સેનાપતિરત્તન, ગાથાપતિરત્તન વર્દકિરત્તન અને પુરોહિતરત્તન એ ચાર મનુજરત્તનો
વિનીતા રાજધાનીમાં ઉત્પન્ન થયા છે (આસરયણે, હત્થિરયણે, એણ દુવે પંચિદિયરયણા વે-
અદ્ધગિરિપાયમૂલે સમુપ્પણ્ણા) અશ્વરત્તન અને હસ્તિરત્તન એ એ પંચેન્દ્રિય તિર્યગ્ગત્તન
વૈતાદ્ય ગિરિની તળેટીમાં ઉત્પન્ન થયા છે (સુમદ્દા હત્થીરયણે ઉત્તરિલ્લાણ વિજ્ઞાહાર
સેદ્ધીણ સમુપ્પણ્ણે) તથા સુમદ્દા નામક એ સ્ત્રી રત્તન છે તે ઉત્તર વિદ્યાધર શ્રેણીમાં ઉત્પન્ન
થયેલ છે સૂત્ર-૩૨ ॥

सहस्साणं चउव्वीसाए मडंवसहस्साणं वीसाए आगरसहस्साणं सोलसहं
 खेडसहस्साणं चउदसहं संवाहसहस्साणं छप्पण्णाए अंतरोदगाणं
 एगूणपण्णाए कुरज्जाणं विणीयाए रायहाणीए चुल्लहिमवंतगिरिसागरमे-
 रागस्स केवलकप्पस्स भरहस्स वासस्स अण्णेसिं च बहूणं राईसरतलवर
 जाव सत्थवाहप्पभिईणं आहेवच्चं पोरेवच्चं भट्ठितं सामित्तं महत्तरगत्तं
 आणारईसरसेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे ओहयणिहएसु कंटएसु उद्धि-
 अमल्लिएसु सव्वसत्तुसु णिज्जिएसु भरहाहिवे णरिंदे वरचंदणचच्चिअंगे
 वरहारइयवच्छे वरमउडविसिद्धए वरवत्थभूसणधरे सव्वोउअसुरहि कुसु-
 मवरमल्लसोभियसिरे वरणाडगनाडइज्जवरइत्थिगुम्भसद्धि संपरि-
 वुडे सव्वोसहि सव्वरयण सव्वसभिइसमग्गे संपुण्णमणोरहे हयामित्त-
 माणमहणे पुव्वकयतवप्पभावनिविट्ठसंचियफले भुंजइ माणुस्सए सुहे
 भरहे नामधेज्जे त्ति ॥सू० ३३॥

छाया-ततः खलु स भरतो राजा चतुर्दशानां रत्नानां नवानां महानिधीनां षोडशानां
 देवसहस्रानां द्वात्रिंशतो राजसहस्राणाम्, द्वात्रिंशत् ऋतुकल्याणिका सहस्राणाम्, द्वात्रि-
 शतो जनपदकल्याणिका सहस्राणाम् द्वात्रिंशतो द्वात्रिंशद्भक्षानां नाटकसहस्राणां त्रयाणां
 षष्ठानां सूपकारशतानाम् अष्टादशानां श्रेणिप्रश्रेणीनाम्, चतुरशीते अश्वशतसहस्राणाम्.
 चतुरशीते. दन्तिशतसहस्राणाम्, चतुरशीते. रथशतसहस्राणाम् षण्णवतेः मनुष्यकोटीनाम्,
 द्वासप्ततेः पुरवरसहस्राणाम् द्वात्रिंशतो जनपदसहस्राणाम्, षण्णवतेः ग्रामकोटीनाम् नवनवतेः
 द्रोणमुखसहस्राणाम्, अष्टाचत्वारिंशतः पत्तनसहस्राणाम् चतुर्विंशते कर्बटसहस्राणाम्, चतु-
 र्विंशतेः मडम्बसहस्राणाम् विंशतेराकरसहस्राणाम् षोडशानां खेटसहस्राणाम् चतुर्दशानां
 सं सहस्राणाम् षट्पञ्चाशतोऽन्तरोदकानाम् एकोनपञ्चाशतः कुराज्यानाम् विनीताया
 राजधान्या. कुल्लहिमवद् गिरिसागरमर्यादाकस्य केवलकल्पस्य भारतवर्षस्य अन्येषां च
 बहूनां राजेश्वरतलवर यावत् नार्थवाहप्रभृतीनाम् आधिपत्यं पौरपत्यं मर्त्यत्वं स्वामित्वं
 महत्तरत्वम् अश्वेश्वरसेनापत्यं कारयन् पालयन् उपहतनिहतेषु कण्टकेषु उद्धृतमर्दितेषु
 सर्वशत्रुषु निर्जितेषु भरताधिपो नरेन्द्र वरचन्दन-चञ्चिताङ्ग वरदाररतिदवक्षस्क वरमुकुट
 विशिष्टक वरवस्त्राभूषणधर सर्वर्तुक सुरमिकुसुमवरमात्यशोमितशिरस्क वरनाटकनाट-
 कीय वरस्त्री गुल्मसार्द्ध संपरिवृतः सर्वोषधिसर्वरत्नसर्वसमितिसमग्र सम्पूर्णमनोरथ
 हतामित्रमानमघन पूर्वकृततप प्रमात्रनिविष्टसंचिनफकानि भुक्ते मानुष्यकानि क्षुन्नानि भरतो
 नामधेय इति ॥सू० ३३॥

टीका-“तए णं से” इत्यादि ‘तए णं से भरहे राया चउदसण्हं रयणाणं’ ततः पद-
खण्डभरतसाधनानन्तर खलु स भन्तो मदाराना चतुर्दशरत्नादीनां सार्थवाहप्रभृत्यन्ताना-
माधिपत्यादिकं कारयन् पालयन् मानुष्यकानि सुखानि भुङ्क्ते इत्यग्रे सम्बन्धः तथाहि
चतुर्दशानां रत्नानाम् एकेन्द्रियाणां चक्ररत्नादि काकणीरत्नान्तानां सप्तानाम् पञ्च-
न्द्रियाणां सेनापतिरत्नादि सुभद्रारत्नान्तानां सप्तानाम् संमीलने च चतुर्दशरत्नानामित्य-
र्थः अधिपत्यादिकम् तथा ‘णवण्हं महाणिहीणं’ नवानां नैसर्पादि शङ्खान्तानां तत्तदे-
वाधिष्ठितानां महानिधीनाम् आधिपत्यादिकम् तथा ‘सोलसण्हं देवसाहस्सीणं’
षोडशानां देवसाहस्रीणाम् षोडशसहस्रमण्ड्यकानां देवानामित्यर्थः आधिपत्यादिकम्
तथा ‘बत्तीसाए रायसहस्साणं’ द्वात्रिंशतो राजसहस्राणाम् द्वात्रिंशत्सहस्रसंख्यकानां
राशामित्यर्थः आधिपत्यादिकम् तथा ‘बत्तीसाए उड्डकल्लाणियासहस्साणं’ द्वात्रिंशतः
ऋतुकल्याणिकासहस्राणाम् द्वात्रिंशसंख्यक ऋतुकल्याणिकास्त्रीणामित्यर्थः आधिपत्यं
स्वामित्वादिकम् अत्र ऋतुकल्याणिकाः इत्यस्य ऋतुविपरोतस्पर्शत्वेन शीतकाळे उष्णस्पर्शः
उष्णकाळे शीतस्पर्शः इत्यादि रूपेण मुखस्पर्शः अथवाऽमृतकन्यात्वेन सदा सर्वऋतुषु कल्या-
णकारिण्यो राजकन्यकाः इत्यर्थो बोध्यः। तथा ‘बत्तीसाए जणवयकल्लाणियासहस्साणं’ द्वा-
त्रिंशतः जनपदकल्याणिका सहस्राणाम् द्वात्रिंशत्सहस्रसंख्यायुक्तानां जनपदाग्रणी कल्याणि-
कानां राजकन्यकानामित्यर्थः आधिपत्यादिकम् तथा ‘बत्तीसाए बत्तीसइवद्दाणं णाडग-
सहस्साणं’ द्वात्रिंशतो द्वात्रिंशदवद्दानां नाटकसहस्राणाम् द्वात्रिंशतो द्वात्रिंशतापात्रैः
वद्दानां युक्तानां नाटकसहस्राणाम् द्वात्रिंशत्सहस्रसंख्यकानां द्वात्रिंशत्पात्रवद्दानां नाटकाणां
मित्यर्थः तथा ‘तिण्हं सट्ठीणं सुवयारसयाणं’ त्रयाणां षष्ट्यानां षष्ठ्यधिकानां सूयकारशता-

‘तएणं से भरहे राया चउदसण्हं रयणाणं णवण्हं’ इत्यादि सूत्र-३३

टीकार्थ- (तए णं से भरहे राया) षट्खण्डात्मक भरतक्षेत्र के साधन करने के बाद वे भरत चक्र
वर्ती (चउदसण्हं रयणाणं णवण्हं महाणिहीणं सोलसण्हं देवसाहस्सीणं बत्तीसाए रायसहस्साणं
बत्तीसाए उड्डकल्लाणियासहस्साणं बत्तीसाए जणवयकल्लाणियासहस्साणं बत्तीसाए बत्तीस-
इवद्दाणं णाडगसहस्साणं) चौदह रत्नों का नौ महानिधियों का सोलह हजार देवों का
बत्तीस हजार राजाओं का बत्तीस हजार ऋतुकल्याणकारिणी कन्याओं का ३२-३२
पात्र वद्ध ३२ हजार नाटकों का (तिण्हं सट्ठीणं सुवयारसयाणं अट्टारसण्हं सेणिप्पसेणीणं चउ-

(तएण से भरहे राया चउदसण्हं रयणाणं णवण्हं) इत्यादि-सूत्र ३३ ॥

टीकार्थ- (तएण से भरहे राया) ५६ भूभाग के भरतक्षेत्रने साधन ३५ भूभागों को
(स्वधीन भूभागों को) ते भरत अकेलती (चउदसण्हं रयणाणं णवण्हं महाणिहीणं
सोलसण्हं देवसाहस्सीणं बत्तीसाए रायसहस्साणं बत्तीसाए उड्डकल्लाणिया सहस्साणं बत्ती-
साए जणवयकल्लाणिया सहस्साणं बत्तीसाए बत्तीसइवद्दाणं णाडगसहस्साणं) चतुर्दशरत्नो,
नव महानिधियों, सोल सहस्र देवों, ३२ सहस्र राजाओं, ३२ सहस्र ऋतुकल्याणकारिणी
कन्याओं, ३२ सहस्र जनपदाग्रणीयों की कन्याओं, ३२-३२ पात्र वद्ध ३२ सहस्र नाटकों (तिण्हं
३२१

सहस्साणं चउव्वीसाए मडंवसहस्साणं वीसाए आगरसहस्साणं सोलसहं
 खेडसहस्साणं चउदसहं संवाहसहस्साणं छप्पणाए अंतरोदगाणं
 एगूणपण्णाए कुरज्जाणं विणीयाए रायहाणीए चुल्लहिमवंतगिरिसागरमे-
 रागस्स केवलकप्पस्स भरहस्स वासस्स अण्णेसिं च वहुणं राईसरतलवर
 जाव सत्थवाहप्पभिईणं आहेवच्चं पोरेवच्चं भट्ठितं सामित्तं महत्तरात्तं
 आणारईसरसेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे ओहयणिहएसु कंठएसु उद्धि-
 अमलिएसु सव्वसत्तुसु णिज्जिएसु भरहाहिवे णरिंदे वरचंदणचच्चिअंगे
 वरहारइयवच्छे वरमउडविसिड्डए वरवत्थभूसणधरे सव्वोउअसुरहि कुसु-
 मवरमल्लसोभियसिरे वरणाडगनाडइज्जवरइत्थिगुम्भसद्धिं संपरि-
 वुडे सव्वोसहि सव्वरयण सव्वसभिइसमग्गे संपुण्णमणोरहे हयामित्त-
 माणमहणे पुव्वकयतवप्पभावनिविट्ठसंचियफले भुंजइ माणुस्सए सुहे
 भरहे नामधेज्जे त्ति ॥सू० ३३॥

छाया-ततः खलु स भरतो राजा चतुर्दशानां रत्नानां नवानां महानिधोनां षोडशानां
 देवसहस्रानां द्वात्रिंशतो राजसहस्रत्राणाम्, द्वात्रिंशत् ऋतुकल्याणिका सहस्रत्राणाम्, द्वात्रिं-
 शतो जनपदकल्याणिका सहस्रत्राणाम्, द्वात्रिंशतो द्वात्रिंशद्दधानां नाटकसहस्रत्राणां त्रयाणां
 षष्ठानां रूपकारशतानाम् अष्टादशानां श्रेणिप्रश्रेणीनाम्, चतुरशीते अश्वशतसहस्रत्राणाम्,
 चतुरशीते दन्तिशतसहस्रत्राणाम्, चतुरशीते रथशतसहस्रत्राणाम् षण्णवतेः मनुष्यकोटीनाम्,
 द्वासप्तते पुरवरसहस्रत्राणाम् द्वात्रिंशतो जनपदसहस्रत्राणाम्, षण्णवतेः ग्रामकोटीनाम् नवनवते
 द्रोणमुखसहस्रत्राणाम्, अष्टाचत्वारिंशतः पत्तनसहस्रत्राणाम् चतुर्विंशते कर्बटसहस्रत्राणाम्, चतु-
 र्विंशतेः मङ्गलसहस्रत्राणाम् विंशतेराकरसहस्रत्राणाम् षोडशानां खेटसहस्रत्राणाम् चतुर्दशानां
 स सहस्रत्राणाम् षट्पञ्चाशतोऽन्तरोदकानाम् पकोनपञ्चाशतः कुराज्यानाम् विनीताया
 राजधान्यां क्षुल्लहिमवद् गिरिसागरमर्यादाकस्य केवलकल्पस्य भारतवर्षस्य अन्येषां च
 बहूनां राजेश्वरतलवर यावत् नार्थवाहप्रभृतीनाम् आधिपत्यं पौरपत्यं मर्त्यत्वं स्वामित्वं
 महत्तरस्वम् आश्वेश्वरसेनापत्यं कारयन् पालयन् उपहतनिहतेषु कण्टकेषु उद्धृतमर्दितेषु
 सर्वशत्रुषु निर्जितेषु भरताधिपो नरेन्द्र वरचन्दनचक्षितः वरहाररतिदवक्षस्क वरमुकुट
 विशिष्टक वरषस्त्राभूषणधर सर्वर्तुक सुरमिकुसुमवरमाल्यशोभितशिरस्क वरनाटकनाट-
 कीय वरस्त्री गुल्मसार्द्धं संपरिवृतः सर्वौषधिसर्वरत्नसर्वसमितिसमग्र सम्पूर्णमनोरथ
 हतामित्रमानमयनः पूर्वकृततप प्रभावनिविष्टसंवेनफलानि भुङ्क्ते मातुष्यकानि सुत्रानि भरतो
 नामधेय इति ॥सू० ३३॥

टीका-“तए ण से” इत्यादि ‘तए ण से भरहे राया चउदसण्हं रयणाणं’ ततः पद-
खण्डभरतसाधनानन्तर खलु स भवतो मङ्गराजा चतुर्दशरत्नादीनां सार्थवाहप्रभृत्यन्ताना-
माधिपत्यादिकं कारयन् पालयन् मानुष्यकानि सुखानि भुङ्क्ते इत्यग्रे सम्बन्धः तथाहि
चतुर्दशानां रत्नानाम् एकैन्द्रियाणां चक्ररत्नादि काकणीरत्नान्तानां सप्तानाम् पञ्च-
न्द्रियाणां सेनापतिरत्नादि सुभद्रारत्नान्तानां सप्तानाम् संमीलने च चतुर्दशरत्नानामित्य-
र्थः अधिपत्यादिकम् तथा ‘णवण्हं महाणिहीणं’ नवानां नैसर्पादि शङ्कान्तानां तत्तदे-
वाधिष्ठितानां महानिधीनाम् आधिपत्यादिकम् तथा ‘सोलसण्हं देवसाहस्सीणं’
षोडशानां देवसाहस्सीणाम् षोडशसहस्रमण्ड्यकानां देवानामित्यर्थः आधिपत्यादिकम्
तथा ‘बत्तीसाए रायसहस्साणं’ द्वात्रिंशतो राजसहस्राणाम् द्वात्रिंशत्सहस्रसंख्यकानां
राशामित्यर्थः आधिपत्यादिकम् तथा ‘बत्तीसाए उडुकल्लाणियासहस्साणं’ द्वात्रिंशतः
ऋतुकल्याणिकासहस्राणाम् द्वात्रिंशसंख्यक ऋतुकल्याणिकास्त्रीणामित्यर्थः आधिपत्यं
स्वामित्वादिकम् अत्र ऋतुकल्याणिकाः इत्यस्य ऋतुविपरीतस्पर्शत्वेन शीतकाळे उष्णस्पर्शः
उष्णकाळे शीतस्पर्शः इत्यादि रूपेण सुखस्पर्शाः अथवाऽमृतकन्यात्वेन सदा सर्वऋतुषु कल्या-
णकारिण्यो राजकन्यकाः इत्यर्थो बोध्यः। तथा ‘बत्तीसाए जणवयकल्लाणिया सहस्साणं’ द्वा-
त्रिंशतः जनपदकल्याणिका सहस्राणाम् द्वात्रिंशत्सहस्रसंख्यायुक्तानां जनपदाग्रणी कल्याणि-
कानां राजकन्यकानामित्यर्थः आधिपत्यादिकम् तथा ‘बत्तीसाए बत्तीसइवद्धाणं णाडग-
सहस्साणं’ द्वात्रिंशतो द्वात्रिंशदवद्धानां नाटकसहस्राणाम् द्वात्रिंशतो द्वात्रिंशतापात्रैः
बद्धानां युक्तानां नाटकसहस्राणाम् द्वात्रिंशत्सहस्रसंख्यकानां द्वात्रिंशत्पात्रबद्धनाटकाना-
मित्यर्थः तथा ‘तिण्हं सट्ठीणं सूवयारसयाणं’ त्रयाणां षष्ठानां षष्ठ्यधिकानां सूपकारशता-

‘तएणं से भरहे राया चउदसण्हं रयणाणं णवण्हं’ इत्यादि सूत्र-३३

टीकार्थः-(तए णं से भरहे राया) षट्सण्डात्मक भरतक्षेत्र के साधन करने के बाद वे भरत चक्र
वर्ती (चउदसण्हं रयणाणं णवण्हं मङ्गाणिहीणं सोलसण्हं देवसाहस्सीणं बत्तीसाए रायसहस्साणं
बत्तीसाए उडुकल्लाणियासहस्साणं बत्तीसाए जणवयकल्लाणियासहस्साणं बत्तीसाए बत्तीस-
इवद्धाणं णाडगसहस्साणं) चौदह रत्नों का नौ महानिधियों का सोलह हजार देवों का
बत्तीस हजार राजाओं का बत्तीस हजार ऋतुकल्याणकारिणी कन्याओं का ३२-३२
पात्र बद्ध ३२ हजार नाटकों का (तिण्हं सट्ठीणं सूवयारसयाणं) अट्टारसण्हं सेणिप्पसेणीणं चउ-

(तएण से भरहे राया चउदसण्हं रयणाणं णवण्हं) इत्यादि-सूत्र ३३ ॥

टीकार्थः-(तएण से भरहे राया) पद अक्षरभक्त भरतक्षेत्रने साधन ३५ अनाया ओह
(स्वधीन अनाया ओह) ते भरत यक्षवर्ती (चउदसण्हं रयणाणं णवण्हं महाणिहीणं
सोलसण्हं देवसाहस्सीणं बत्तीसाए रायसरस्साणं बत्तीसाए उडुकल्लाणिया सहस्साणं बत्ती-
साए जणवयकल्लाणिया सहस्साणं बत्तीसाए बत्तीसइवद्धाणं णाडगसहस्साणं) चतुर्दशरत्नो,
नव-महानिधियो, सोल सहस्र देवो, ३२ सहस्र राजाओ, ३२ सहस्र ऋतुकल्याणकारिणी
कन्याओ, ३२ सहस्र जनपदाग्रणीओनी कन्याओ, ३२-३२ पात्र बद्ध ३२ सहस्र नाटको (तिण्हं
१२१

नाम् त्रिषष्ठ्याधिकसहस्रसंख्यरूपकाणां पाचकानामित्यर्थः तथा 'अट्टारसण्हं सेणि-
प्पसेणीणं' अष्टादशानां श्रेणीप्रश्रेणीनाम् अत्र अष्टादश कुम्भकाराद्याः श्रेणयः तदवा-
न्तरभेदाः प्रश्रेणयो बोध्याः तथा 'चउरासीइए आससयसहस्साणं' चतुरशीतेरश्वशतस-
हस्राणाम्—चतुरशीतिलक्षसंख्यकानामथानामित्यर्थः तथा 'चउरासीइए दंतिसयसहस्साणं'
चतुरशीते दन्तिशतसहस्राणाम् चतुरशीतिलक्षसंख्यक इस्तिनामित्यर्थः तथा 'चउरासीइए
रहसय सहस्साणं' चतुरशीतेः रथशतसहस्राणाम् चतुरशीतिलक्षसंख्यकरथानाम् प्रोक्तानामेते-
षामाधिपत्यादि क्रमु तथा 'छण्णउइए माणुस्सकोडीणं' पणवते मनुष्यकोटीनाम् पणवतिको-
टिसंख्यकमनुष्याणामाधिपत्यादिकम् तथा 'वावत्तरीए पुरवरसहस्साणं' द्वासप्ततैः पुरवर-
सहस्राणाम् द्वासप्ततिसहस्रसंख्यकानां श्रेष्ठनगराणाम् आधिपत्यादिकम् तथा 'वत्तीसाए ज-
णवयसहस्साणं' द्वात्रिंशतो जनपदसहस्राणाम्—द्वात्रिंशत्सहस्रसंख्यक—जनपदानां देशानाम्
आधिपत्यादिकम्, तथा 'छण्णउइए गामकोडीणं' पणवनेः ग्रामकोटीनाम् पणवति-
कोटिसंख्यकानां ग्रामाणाम् आधिपत्यादिकम्, तथा 'णवणउइए दोणमुहसहस्साणं'
नवनवतैः द्रोणमुखसहस्राणाम् नवनवतिसहस्रसंख्यकानाम् द्रोणमुखानाम् पाटलिपुत्रवत्
जलस्थलमार्गोपेतानां जननिवासस्थानानाम् आधिपत्यादिकम्, तथा 'अडयालीसाए
पट्टणसहस्साणं' अष्टाचत्वारिंशतः पत्तनसहस्राणाम्—अष्टाचत्वारिंशत्सहस्रसंख्यकानां
पत्तनानां समस्तवस्तुप्राप्तियोग्यस्थानानाम् । उक्तञ्च-शकटादिभि नौभिर्वा, यद्भूम्यं
तत्पत्तनं हि इति । आधिपत्यादिकम् तथा 'चउव्वीसाए कब्बडसहस्साणं' चतुर्विंशतेः
कर्बटसहस्राणाम्—चतुर्विंशतिसहस्रसंख्यककर्बटानाम् सुद्राकारवेष्टितकुत्तिसतनगराणाम्
आधिपत्यादिकम्, तथा 'चउव्वीसाए मडंबसहस्साणं' चतुर्विंशतेः मडम्बसहस्राणाम्

रासीइए आससयसहस्साणं चउरासीइए दंतिसयसहस्साणं चउरासीइए रहसयसहस्साणं छण्णउइए
माणुस्सकोडीणं वावत्तरीए पुरवरसहस्साणं वत्तीसाए जणवयसहस्साणं) ३६० सूफकारो का १८
श्रेणी प्रश्रेणीजनो का ८४ लाख घोडो का ८४ लाख हाथियो का ८४ लाख रथो का ९६ करोड़
पैदल मनुष्यो का ७२ हजार पुरवरो का ३२ हजार जनपदो का (छण्णउइए गामकोडीणं णवणउइए
दोणमुहसहस्साणं, अडयालीसाए पट्टणसहस्साणं, चउव्वीसाए कब्बडसहस्साणं, चउव्वीसाए मड-
बसहस्साणं) ९६ करोड़ ग्रामो का, ९९ हजार द्रोणमुखो का, ४८ हजार पट्टणो का,
२४ हजार कर्बटो का, २४ हजार मडंबो का, (वीसाए आगरसहस्साणं, सोलसण्हं

सडीणं सुवयार सयारारणं अट्टारसण्हं सेणिप्पसेणीणं चउरासीइए आससय सहस्साणं चउरा-
सीइए दंतिसयसहस्साणं चउरासीए रहसयसहस्साणं छण्णउइए माणुस्सकोडीणं वावत्तरीए पुर-
वरसहस्साणं वत्तीसाए जणवयसहस्साणं) ३६० सूफकारो १८ श्रेणी—प्रश्रेणी जनो ८४ लाख घो-
डाओ ८४ लाख हाथीओ, ८४ लाख रथो, ९६ करोड़ मनुष्यो, ७२ हजार पुरवरो, ३२ हजार जनपदो,
(उइए गामकोडीणं णवणउइए दोणमुहसहस्साणं, अडयालीसाए पट्टणसहस्साणं, चउव्वीसा-
ए कब्बडसहस्साणं, चउव्वीसाए मडंबसहस्साणं) ९६ करोड़ ग्रामो, ९९ हजार द्रोणमुखो, ४८ हजार
पट्टणो, २४ हजार कर्बटो, २४ हजार मडंबो (वीसाए आगरसहस्साणं सोलसण्हं खेडसहस्साणं

ચતુર્વિંશતિસહસ્રસંખ્યકમહસ્વાનામ્ સાર્દક્રોશદ્વયાન્તરેણ ગ્રામાન્તરરહિતવસતીનામ્ આધિપત્યાદિકમ્, તથા 'વોસાણ આગરસહસ્તાણ' વિંશતેઃ આકરસહસ્તાણામ્-વિંશતિ-સહસ્રસંખ્યકાનામ્ આકરાણામ્ સુવર્ણરત્નાદ્યુત્પત્તિસ્થાનાનામ્ આધિપત્યાદિકમ્, તથા 'સોલસપ્તંદ્રં સ્વેદસહસ્તાણ' પોલશાનાં સ્વેદસહસ્તાણામ્ પોલશસહસ્રસંખ્યકસ્વેદાનામ્ ધૂલિકાપ્રાકારનદીપર્વતૈઃ વેષ્ટિતનગરાણામ્ આધિપત્યાદિકમ્, તથા 'ચંદ્રસપ્તંદ્રં સંવાહ-સહસ્તાણં' ચતુર્દશાનાં સમ્વાહસહસ્તાણામ્ ચતુર્દશસહસ્રસંખ્યકસમ્વાહાનામ્ દુર્ગમસ્થા-નાનામ્ આધિપત્યાદિકમ્, તથા 'હ્રસ્વપ્પણાણ અંતરોદગાણં' પદ પશ્ચાશ્વતોઽન્તરોદકાનામ્ પદ પશ્ચાશ્વત્સંખ્યકાનામ્ અન્તરોદકાનાં જલોન્તર્વર્તિતસન્નિવેશવિશેષાણામ્ આધિપત્યાદિકમ્, તથા 'પગૂણપ્પણાણ કુરજ્જાણં' ઇકોનપશ્ચાશ્વતઃ કુરાજ્યાનાં મિલ્લાદિરાજ્યાનામ્ આધિપત્યા-દિકમ્, તથા 'વિળીયાણ રાયહાણીણ ચુલ્લહિમવંતગિરિસાગરમેરાગસ્સ કેવલકપ્પસ્સ મરહ વાસસ્સ' વિનીતાયાઃ રાજધાન્યાઃ ક્ષુદ્રહિમવદ્ગિરિસાગરમર્યાદાકસ્ય ઉત્તરસ્યાં દિશિ ક્ષુદ્રહિમ-વદ્ગિરિઃ શ્વેષ પૂર્વાદિદિશાત્રયે ત્રયઃ સાગરાઃ તૈઃ કૃતા મર્યાદા અવધિર્યસ્ય યત્ર વા તત્ત-થાશ્રુતં તસ્ય કેવલકલ્પસ્ય સમ્પૂર્ણસ્ય ભારતવર્ષસ્ય ચ આધિપત્યાદિકમ્, તથા 'અળ્લેસિંસિં ચ બહુળં રાઈસરત્તલવર જાવ સત્થવાહપ્પમિર્ઝિણં' અન્યેષાં ચ બહુળાં રાજેશ્વરતલવર યાવ-ત્સાર્થવાદપ્રશ્નવીનામ્ અત્ર યાવત્પદાત્ માહમ્બિકકૌડુમ્બિકમન્ત્રિમહામન્ત્રિ ગણક દૌવારિકામાત્યચેટપોઠમર્દનગરનિગમશ્રેષ્ઠિસેનાપતિસાર્થવાહદૂતસન્ધિપાલપદાનિ ગ્રાહ્યાણિ એતેષાં વ્યાખ્યાનમ્ અસ્મિન્નેવ વક્ષસ્કારે સપ્તવિંશતિતમે સૂત્રે દ્રષ્ટવ્યમ્' 'આહેવચ્ચં

સ્વેદસહસ્તાણં, ચંદ્રસપ્તંદ્રં સંવાહસહસ્તાણં, હ્રસ્વપ્પણાણ અંતરોદગાણં, પગૂણપ્પણાણ કુર-જ્જાણં વિળીયાણ રાયહાણીણ ચુલ્લહિમવંતગિરિસાગરમેરાગસ્સ કેવલકપ્પસ્સ મરહસ્સ વાસ-સ્સ) ૨૦ હજાર આકરો કા, ૧૬ હજાર સ્વેદો કા, ૧૪ હજાર સંવાહો કા ૫૬ અંતરોદકો, કા, ૪૯ કુરાજ્યો કા વિનીતા રાજધાની કા તથા ઉત્તરદિશા મે ક્ષુદ્રહિમવદ્ગિરિ એવ પૂર્વા-દિદિશાત્રય મે સમુદ્રમર્યાદાવાલે સમ્પૂર્ણ ભરતક્ષેત્ર કા (અળ્લેસિંસિં ચ બહુળં રાઈસરત્તલવર જાવ સત્થવાહપ્પમિર્ઝિણં આહેવચ્ચં પૌરેવચ્ચં મદ્દિત્તં સામિત્તં મહત્તરગત્તં આળાઈસરસેણા-

ચંદ્રસપ્તંદ્રં સંવાહસહસ્તાણ, હ્રસ્વપ્પણાણ અંતરોદગાણ, પગૂણપ્પણાણ, કુરજ્જાણં વિળી-યાણ રાયહાણીણ ચુલ્લહિમવંતગિરિસાગરમેરાગસ્સ કેવલકપ્પસ્સ મરહસ્સ વાસસ્સ) ૨૦ સહસ્ત્ર આકરો, ૬ હજાર સ્વેદો, ૧૪ હજાર સંવાહો, ૫૬ અંતરોદકો, ૪૯ કુરાજ્યો, વિનીતા રાજધાની તેમજ ઉત્તર દિશામાં ક્ષુદ્ર હિમવદ્ ગિરિ અને પૂર્વાદિ દિશાત્રયમાં સમુદ્ર મર્યાદાવાળું સમૂહ ભરત ક્ષેત્ર (અળ્લેસિંસિં ચ બહુળ રાઈસરત્તલવર જાવ સત્થવાહપ્પમિર્ઝિણં

(૧) જલોન્તર્વર્તિત સન્નિવેશો કા નામ હૈ । (૨) મિલ્લાદિકો કે રાજ્ય કા નામ કુરાજ્ય હૈ । (૩) જન સ્વકા સ્વરૂપ એવં ગ્રામ, આકર, જનપદ, દ્રોણમુખ, સંવાહન આદિ કા સ્વરૂપીકે સ્પષ્ટ કિયા જા ચુકા હૈ । (૧) જલોન્તર્વર્તિત સન્નિવેશોત્તુ નામ છે (૨) મિલ્લાદિકોના રાજ્યત્તુ નામ કુરાજ્ય છે (૩) એ સર્વત્તુ સ્વરૂપ તેમજ ગ્રામ, આકર, જનપદ, દ્રોણમુખ, સંવાહ વગેરેત્તુ સ્વરૂપ પહેલા સ્પષ્ટ કરવામાં આવેલ છે.

પોરેવચ્ચં મઠ્ઠિતં સામિતં મહત્તરગત્ આણાઈસરસેણાવચ્ચં કારેમાણે પાલેમાણે' આધિ-
પત્યમ્ અધિપતે ભાવઃ મુખ્યત્વમ્ પૌરોઘૃત્યમ્ પુરોવર્તિત્વમ્ અગ્રેસરતા મર્ત્ત્વ પતિત્વમ્
સ્વામિત્વમ્ નાયકત્વમ્ મહત્તરત્વમ્ અતિશયમહત્વમ્ આજ્ઞેશ્વરત્વમ્ સેનાપત્યં સેનાનેતૃત્વમ્
કારયન્ પાઠ્યન્ રક્ષયન્ સુખાનિ શુદ્ધેસ ભરતઃ કેપુ સત્સુ સ સુખાનિ શુદ્ધેસેત્યાહ
'ઓહયણિહણ્સુ' इत्यादि 'ओहयणिहण्सु कंटण्सु' उपहतनिहतेषु कण्टकेषु तत्र उपह-
तेषु विनाशितेषु निहतेषु च अपहतसकलसमृद्धिषु कण्टकेषु तत्स्वरूपेषु गोत्रजशत्रुषु
तथा 'उद्धियमलिण्सु सन्वसत्सु' उद्ध्रतमर्दितेषु सर्वशत्रुषु तत्र उद्धृतेषु देशान्निर्वासि-
तेषु मर्दितेषु च मानहानिं प्रापितेषु सर्वशत्रुषु अगोत्रजवैरिषु एतत्सर्वं कृतोभवतीत्याह
'णिज्जिण्सु' निर्जितेषु भग्नवलेषु सर्वशत्रुषु भोक्तप्रकारद्वयशत्रुषु, अत्र सर्वशत्रुषु इति
पदं देहली प्रदीपन्यायेन उभयत्र सम्बन्धः, कीदृशो भरतः सुखानि शुद्धे इत्याह—'भरहा-
हिवे' इत्यादि 'भरहाहिवे णरिंदे' भरताधिपो नरेन्द्रः 'वरचदणचच्चिअंगे' वरचन्दन-

વચ્ચં કારેમાણે પાલેમાણે) તથા ઔર મો અનેક રાજેશ્વર તલ્લવર આદિ સે કેકર સાર્થવાહ
તક કે બનેાં કા આધિપત્ય કરતે હુણ અગ્રેમરપના કરતે હુણ મર્ત્ત્વ—સ્વામોપના કરતે
હુણ ઉનકા સંરક્ષણત્વ કરતે હુણ ઉનકા નેતૃત્વ કરતે હુણ, ઉનકા સેનાપત્ય કરતે હુણ
ઔર અપનો બાજ્ઞા કા ઉન સબ સે પાઠન કરવાતે હુણ, (માણુસ્સે સુદ્ધે સુંજહ) મનુષ્યભવ
સબંધો સુખો કો ભોગતે હુણ અપના મમય શાન્તિ કે સાથ વ્યતીત કરને છો (ઓહ-
ય-નિહણ્સુ કંટણ્સુ) ક્યોકિ ઉનકે ગોત્રજ એવ અગોત્રજ સમસ્ત શત્રુ નષ્ટ હો ચુકે
થે એવં વે શત્રુ સમ્પત્તિ વિહીન હો ચુકે થે (ઉદ્ધિયમલિણ્સુ સન્વસત્સુ) દેશ સે નિર્વાસિત હો ચુકે
થે માનહાનિ યુક્ત હો ચુકે થે (ણિજ્જિણ્સુ) સેના વિહીન હો ચુકે થે (મરહાહિવે ણરિંદે) હસ
કારણ સમ્પૂર્ણ ૬ લંઘવાલે મરત ક્ષેત્ર કે અધિપતિ થે બન ચુકે થે ઔર નરોં મેં—પ્રજાજનો
મેં—થે હન્દ્રકે જૈસે ચક્રવર્તિત્વ કી અનુપમ અસાધારણ વિમૂતિ સે યુક્ત હોને કે કારણ
માન્ય હો ચુકે થે હર સમય (વરચંદણચચ્ચિઅંગે) હનકા શરીર શ્રેષ્ઠ ચન્દન સે ચર્ચિત બના

આદિવચ્ચં પોરેવચ્ચં મઠ્ઠિતં સામિતં મહત્તરગત્ આણાઈસર-સેણાવચ્ચં કારેમાણે પાલે
માણે) તેમજ ણીજ પશુ અનેક રાજેશ્વર તલ્લવરથી માંડીને સાર્થવાહ સુધીના લોકો ઉપર
આધિપત્ય કરતાં, અગ્રગામિત્વ કરતાં, ભર્તૃત્વકરતા, સેનાપત્ય કરતાં અને પોતાના
આદેશનું સર્વને પાલન કરાવતા (માણુસ્સે સુદ્ધે સુંજહ) મનુષ્યભવ સબંધી સુખોને
લોગતા પોતાનો સમય શાન્તિપૂર્વક વ્યતીત કરવા લાગ્યા. (ઓહયણિહણ્સુ કંટણ્સુ) કેમકે
તેમના ગોત્રજ અને અગોત્રજ સમસ્ત શત્રુઓ નાશ પામ્યા હતા અને તેઓ સમ્પત્તિ
વિહીન થઈ ગયા હતા (ઉદ્ધિયમલિણ્સુ સન્વસત્સુ) દેશથી બહાર તેઓ નિર્વાસિત
થઈ ચૂક્યા હતા, માન હોનિ યુક્ત થઈ ચૂક્યા હતા (ણિજ્જિણ્સુ) સેના વિહીન થઈ ચૂક્યા
હતા (મરહાહિવે ણરિંદે) એથી સપૂર્ણ ૬ ખંડ વાળા ભરતક્ષેત્રના એઓ અધિપતિ થઈ
ચૂક્યા હતા અને નરેશ—પ્રજાજનોમા—એ ભરત નૃપતિ હન્દ્ર જેવા ચક્રવર્તીત્વની
અનુપમ—અસાધારણ વિમૂતિથી યુક્ત હોવા બદલ સન્માન્ય થઈ ચૂક્યા હતા હર વખતે

चर्चिताङ्गः वरचन्दनेन श्रेष्ठचन्दनेन चर्चितं समण्डलं कृतम् अङ्गं यस्य स तथाभूतः.
 पुनः कीदृशः ‘वरहाररङ्गवच्छे’ वरहाररतिद्वयस्कः वरहारेण श्रेष्ठमुक्तादिहारेण रतिद-
 द्रष्टृणां नयनसुखकारकं वक्षो वक्षस्थलं यस्य स तथाभूतः पुनः कीदृशः ‘वरमण्डविशि-
 ष्ट’ वरमुकुटविशिष्टकः श्रेष्ठशिरोभूषणमुकुटधारणेन विशेष शोभामापन्नः तथा ‘वरवत्थ-
 भूषणधरे’ वरवत्तभूषणधरः, पुनः कीदृशः ‘सन्वोडयसुराहिकुसुमवरमल्लसोमियसिरे’
 सर्वर्तुक सुरभिकुसुमवरमाल्यशोभितशिरस्कः सर्वर्तुकसुरभिकुसुमाना वरमाल्यैः श्रेष्ठ
 मालाभिः शोभितशिरस्कः, पुनः कीदृशः ‘वरणाडगणाडज्जवरइत्थिगुम्मसद्धिं सपरि-
 वुडे’ वरनाटक वरनाटकीय वरस्त्रीगुल्मसार्द्धं संपरिवृतः तत्र वरनाटकानि पात्रादि समुदाय-
 रूपाणि नाटकीयानि च नाटकप्रतिबद्धं पात्राणि तैः तथा वरस्त्रीणां गुल्मम् अव्यक्ता-
 वयवविभागवृन्दं तेन च सार्द्धं संपरिवृतः युक्तः गुल्मेत्यत्र तृतीयालोप आर्पत्वात्, पुनः
 कीदृशः ‘सन्वोसहि सन्वरयण सन्वसमिहसमग्गे’ सर्वोषधि सर्वरत्नसर्वसमितिसमग्रः
 सर्वोषध्यः पुनर्नवाद्याः, सर्वरत्नानि कर्केतनादीनि सर्वसमितयः अभ्यन्तरे बाह्ये च
 पर्वदस्ताभिः समग्रः सम्पूर्णः अतएव ‘संपुण्णमणोरहे’ सम्पूर्णमनोरथः सर्वमनोरथैः
 पूर्णः पुनः कीदृशः ‘इयामित्तमाणमहणे’ हतामित्रमानमथनः हतानां बलवीर्यपराक्रम-

रहता था (वरहाररङ्गवच्छे) वक्षस्थल पर दृष्टाजन को आनन्दप्रद श्रेष्ठ हार विराजित
 रहता था (वरमण्डविशिष्ट) मस्तक श्रेष्ठ मुकुट से विशेष से शोभा संपन्न बना रहता
 था (वरवत्तभूषणधरे) अतिसुन्दर वक्षो को एव भूषणो को ये धारण किये हुए रहते थे
 (सन्वोडयसुराहिकुसुमवरमल्लसोमियसिरे) इनका मस्तक समस्त ऋतुओं के सुरमित
 कुसुमों की श्रेष्ठ मालाओं से विभूषित रहता था, (वरणाडगणाडज्जवरइत्थिगुम्मसद्धिं सप-
 रिवुडे) श्रेष्ठ नाटको, श्रेष्ठ नाटकीय अभिनयो, और श्रेष्ठ स्त्रियों के अव्यक्त अवयव विभाग-
 समूह से ये सदा घिरे हुए रहते थे (सन्वोसहिसन्वरयणसन्वसमिहसमग्गे) सर्व प्रकार की
 पुनर्नवा आदि औषधियों से, कर्केतनादि समस्त रत्नों से और बाह्य आभ्यन्तर परिषदारूप
 समिति से ये हरे भरे बने रहते थे अतएव (संपुण्णमणोरहे) कोई भी इनका मनोरथ अधूरा

(वरचंदनचच्चियंगे) अभ्यन्त शरीर श्रेष्ठ चन्दनशी व्यर्थित (विभ) रहते हुं (वरहाररङ्ग-
 वच्छे) वक्षस्थल उपर दृष्टां को भाटे आनन्द प्रद श्रेष्ठ हार विराजित रहते हुं हुं। (वरमण्ड-
 विशिष्ट) मस्तक श्रेष्ठ मुकुट थी अनिवेश शोभासम्पन्न रहते हुं (वरवत्तभूषणधरे) अति
 सुंदर वस्त्रो अने आभूषणोने ओओ। पहेरी रागता हुं। (सन्वोडय सुराहिकुसुमवरमल्ल-
 सोमियसिरे) अभ्यन्त मस्तक सर्व ऋतुओंना सुरमित कुसुमोंनी श्रेष्ठभाजाओथी विभूषित
 रहते हुं (वरणाडगणाडज्जवरइत्थिगुम्मसद्धिं संपरिवुडे) श्रेष्ठ नाटको, श्रेष्ठ नाटकीय
 अभिनयो अने श्रेष्ठ स्त्रीओंना अव्यक्त अवयव विभाग समूहथी ओओ सर्वदा परिवृत
 रहते हुं। (सन्वोसहिसन्वरयण सन्वसमिहसमग्गे) सर्व प्रकारनी पुनर्नवा वगेरे
 औषधीओथी, कर्केतनादि समस्त रत्नोंथी अने बाह्य आभ्यन्तर परिषदाङ्ग समितिथी
 ओओ प्रकुलबभन रहते हुं। ओथी (संपुण्णमणोरहे) ओभने कोर्धपथ मनोरथ अधूरा रहते हुं।

रहितत्वेन जीवन्मृतानाम् अमित्राणां शत्रूणां मानमथनः मथिताभिमानः एवं प्रोक्तविशेषणविशिष्टः स भरतो राजा कीदृशानि सुखानि भुङ्क्ते इत्याह 'पुण्वकयतवप्पभावनिविट्टसंचियफले' पूर्वकृततपःप्रभावनिविट्टसंश्रितफलानि पूर्वकृततपःप्रभावेण पूर्वं पूर्वजन्मनि कृत सम्पादितं यत्तपः तपस्या तस्य यः प्रभावो महिमा तेन निविट्टसंश्रितस्य निष्काचिततया संचितस्य तस्यैव ध्रुवफलत्वान् फलानि फलभूतानि 'भुज्ज माणुस्सए सुहे भरहे णामधेज्जेत्ति' भुङ्क्ते मानुष्यकानि सुखानि भरतो नामधेय इति-कीदृशो भरतः ? अस्मिन् भरतक्षेत्रे प्रथम भरताधिपत्वेन प्रसिद्धं नामधेय नाम यस्य स नामधेयो भरतो भरत नाम्ना प्रसिद्धो राजा उक्तविशेषणविशिष्टानि मानुष्यकानि मनुजसम्बन्धीनि सुखानि कामभोगादीनि भुङ्क्ते इत्यर्थः ॥सू० ३३॥

अथ अस्य नरदेवस्य भरतस्य धर्मदेवत्वप्राप्तिमूलमाह- तएणं से' इत्यादि ।

मूलम्-तए णं से भरहे राया अणया कयाइं जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता जाव ससिन्व पियदंसणे णस्वई मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता जेणेव आदंसघरे जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सीहासणवग्गए पुरत्थाभिमुहे णिसीअइ णिसीइत्ता आदंसघरंसि अत्ताणं देहमाणे चिट्ठइ तएणं तस्स भरहस्स रण्णो सुमेणं परिणामेणं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं लेसाहि विसुज्झमाणीहिं विसुज्जमाणीहिं इहापोहमग्गणगवेसण करेमाणस्स तयावरणिज्जाणं कम्माणंखएणं

नहीं रहता था सब ही मनोरथ इनके परिपूर्ण होते रहते थे (हयामित्तमाणमहणे) बलवीर्य एवं पराक्रम से रहित हो जाने के कारण जीते हुए भी मरे के जैसे बने हुए शत्रुओं के ये मानरूपीनशा के उतारने वाले ये ऐसे इन विशेषणों से युक्त भरत चक्रवर्ती (पुण्वकयतवप्पभावनिविट्टसंचियफले) इन्हे जो इच्छानुसार निरन्तर मनुष्यभाव सम्बन्धी भोगों की प्राप्ति हुई थी वह सब इनके द्वारा पूर्वभव में संपादित तप के प्रभाव का निष्काचित रूप फल है । (भुज्जमाणुस्सए सुहे भरहे णामधेज्जेत्ति) ये भरत राजा भोगभूमिकी समाप्ति होने पर सर्वप्रथम ही भरतक्षेत्र के चक्रवर्ती हुए हैं ॥सू० ३३॥

नंदतो जेमना सउं मनोरथो परिपूर्णं धर्भजता इता (हयामित्तमाणमहणे) बलवीर्यं तेमभ्र पराक्रमथी हीन धर्भजवा भटव अर्थात् पराजित थयेला होवा छता जे मृतपत्थयेला शत्रुजोना मानइपी भटने जेजो उतारनार इता। जेवा जे विशेषणथी युक्त भरतचक्रवर्ती इता। (पुण्व कयतवप्पभावनिविट्टसंचियफले) जेमने जे धर्भज सुभ्र सतत मनुष्यभव सम्बन्धी भोगोती प्राप्ति थयेली, ते जेमना वडे पूर्वभवमा संपादित तपना प्रभावपु निष्काचित रूप इग छे; (भुज्ज माणुस्सए सुहे भरहे णामधेज्जेत्ति) जे भरत राजा भोगभूमि पराप्ति भविष्यमाप्ति धर्भ ते पछी सर्वा प्रथमज भरतक्षेत्रना चक्रवर्ती थया छे ॥सू० ३३॥

कम्मरयविकिरणकरं अपुव्वकरणं पविट्टस्स अणंते अगुत्तरे निव्वाघाए
निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणाणदंसणे समुप्पण्णे, तएण से
भरहे केवली सयमेवाभरणालंकारं ओमुअइ ओमुइत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं
लोअं करेइ करित्ता आयसघगओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता अंते
उरमज्झंमज्झेणं णिगच्छइ णिगच्छित्ता दसहिं रायवरसहस्सेहिं सच्छिं
संपरिवुडे विणीयं रायहाणिं मज्झं मज्झेणं णिगच्छइ णिगच्छित्ता
मज्झदेसे सुहं सुहेणं विहरइ विहरित्ता जेणेव अट्ठावए पव्वए
तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अट्ठावयं पव्वयं सणिअं सणिअं दुरूहइ
दुरूहित्ता मेघघणमणिकासं देवसणिवायं पुट्ठविसिलापट्टयं पडिलेहेइ
पडिलेहित्ता संलेहणाद्धसणाद्धसिए भत्तपाणपडिआइक्खिए पाओव-
गए कालं अणवकंखमाणे अणवकंखमाणे विहरइ। तएण से भरहे केवली
सत्ततरिं पुव्वसयसहस्साइं कुमारवासमज्झे वसित्ता एगं वाससहस्सं मंड-
लियरायमज्झे वसित्ता छपुव्वसयसहस्साइं वाससहस्समूणगाइ महाराय-
मज्झे वसित्ता तेसीइ पुव्वसयसहस्साइं अगारवासमज्झे वसित्ता एगं
व्वसयसहस्सं देसूणं केवलिआउं पाउणित्ता तमेव बहुपडिपुण्णं
सामन्नपरिआयं पाउणित्ता चउरासीइपुव्वसयसहस्साइं सव्वाउयं पाउ-
णित्ता मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं सवणेणं णक्खत्तेणं जोगमुवागएणं
खीणे वेअणिज्जे आउए णामे गोए कालगए वीइक्कते समुज्जाए
छिण्णजाइजरामरणबंधणे सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिणिवुडे अंतगडे सव्व-
दुक्खप्पहीणे ॥सू. ३४॥

छाया-तत. खलु स भरतो राजा अन्यथा कदाचित् यत्रैव मज्जनगृहं तत्रैव उपागच्छति
उपागत्य यावत् शशीव प्रियदर्शनो नरपतिः मज्जनगृहात् प्रतिष्क्रामति प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव
आदर्शगृहं यत्रैव सिंहासने तत्रैव उपागच्छति उपागत्य सिंहासनवरगतः पौरस्त्याभिमुखो
निषीदति, निषद्य आदर्शगृहे आत्मानं पश्यन् पश्यन् तिष्ठति । ततः खलु तस्य भरतस्य राज्ञः
शुभेन परिणामेन प्रशस्तैः अय्यवसानैः लेख्यामि विंशुद्धयन्तीमि । इहापोहमार्गणगवेषणं
कुर्वत तदावरणीयानां कर्मणां क्षयेन कर्मरजोविकरणकरम् अपुव्वकरणं प्रविष्टस्य न्तम्
अनुत्तरम् निर्व्याघातं निरावरणं कृत्स्नं प्रतिपूणं केवलवरज्ञानदर्शनं समुत्पन्नम् : खलु

स भरतः केवली स्वयमेव आभरणालङ्कारम् अवमुञ्चति अवमुच्य स्वयमेव पञ्चमुष्टिकं लोचं करोति, कृत्वा आदर्शगृहात्प्रतिनिष्क्रामात् प्रनिनिष्क्रम्य अतः पुरमध्यमध्येन निर्गच्छति निर्गत्य दशभिः राजवरसहस्रैः सार्द्धं संपरिवृतो विनोता राजधानीं मध्यमध्येन निर्गच्छति निर्गत्य मध्यदेशे सुखं सुखेन विहरति विहृत्य यत्रैव अष्टापदं पर्वतस्तत्रैव उपागच्छति उपागत्य अष्टापदं पर्वतं शनैः शनैः दुरोहति दुरुह्य मेघधनसन्निकाशं देवसन्निपातं पृथिवीं शिलापट्टकं प्रतिलेखयति प्रनिलिख्य संलेखनाजोपणाशुष्टो ह्युपितो वा भक्तपान-प्रत्याख्यातं पादपोषगतं कालम् अनवकाङ्क्षन् अनवकाङ्क्षन् विहरति, ततः खलु स भरतः केवली सत्नसप्ततिं पूर्वशतसहस्राणि कुमारवासमध्ये उपित्वा एकं वर्षसहस्रं माण्ड-लिकराजमध्ये उपित्वा पट् पूर्वशतसहस्राणि वर्षसहस्रोनां महागजमध्ये उपित्वा त्र्य-शीतिं पूर्वशतसहस्राणि अगारवासमध्ये उपित्वा एकं पूर्वशतसहस्रं देशेन केवलपर्यायं प्राप्य तदेव बहुप्रतिपूर्वं श्रामण्यपर्यायं प्राप्य चतुरशीतिं पूर्वशतसहस्राणि सर्वांश्च प्राप्य मासिकेन भक्तेन अपानकेन श्रवणेन नक्षत्रेण योगमुपागतेन क्षीणे वेदनीये आयुषि नाम्नि गोत्रे कालगते व्यतिक्रान्ते समुद्यात छिन्नजातिनरामरणवन्धनः सिद्धो बुद्धो मुक्तः अन्तगतः सर्वदुःखप्रहीणः ॥ सू० ३४ ॥

टीका "तएणं से" इत्यादि । 'तएण से भरहे राया अण्णया कयाइं जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ' ततः वर्षसहस्रोत्पट्पूर्वलक्षावधिसाम्राज्यानुभवानन्तरं खलु स भरतो राजा अन्यदा कदाचित् अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् काले यत्रैव मज्जणगृहं स्नानगृहम् तत्रैव उपागच्छति 'उवागच्छिता' उपागत्य 'जाव ससिब्व पियदंसणे णरवई मज्जणघराओ पडिणिकखमइ' यावच्छीव प्रियदर्शनो नरपतिः भरत राजा मज्जणगृहात्प्रतिनिष्क्रामति निर्गच्छति अत्र यावत्पदात् यथा चन्द्रः स्वच्छ-

नरदेव भरतः को धर्मदेवत्व की प्राप्ति होने का कारण

'तएणं से भरहे राया अण्णया कयाइं जेणेव मज्जणघरे' इत्यादि सूत्र-३४

टीकार्थ (तएणं से भरहे राया अण्णया कयाइं जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ) एक दिन की बात है कि १ हजार वर्ष कम ६ लाख पूर्व तक साम्राज्य पद भोगने के बाद वे भरत राजा जहाँ पर स्नान गृह था वहाँ पर गये (उवागच्छिता जाव ससिब्व पियदंसणे णरवई मज्जणघराओ पडिणिकखमइ) वहाँ जाकर शशि के जैसे प्रियदर्शनवाले वे भरत राजा मज्जणगृह से वापिस बाहर निकले यहाँ यावत्पद से" यथा स्वच्छमेघान्निर्गच्छन् सन् चन्द्रः

नरदेव भरतः धर्मदेवत्व की प्राप्ति का कारण यहाँ ? ते स'अधमा कथन-

(तएण से भरहे राया अण्णया कयाइं जेणेव मज्जणघरे) इत्यादि सूत्र-३४॥

टीकार्थ-(तएण से भरहे राया अण्णया कयाइं जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ) जेठ दिवस की रात छे के जेठ सठस्र वर्ष कम ६ लाख पूर्व सुधी साम्राज्य पद भोग्या आइ ते भरत राजा जहाँ स्नान गृह छे तु त्या गये (उवागच्छिता जाव ससिब्व पियदंसणे णरवई मज्जणघराओ पडिणिकखमइ) त्या जहने शशी जेवा प्रियदर्शी ते भरत राजा मज्जण गृहमाँशी, पाछा आइए नीकलमा, अइही यावन पइथी "यथा स्वच्छ मेघान्निर्गच्छन् सन् चन्द्रः"

મેઘાન્નિર્ગચ્છન્ સન્ પ્રિયદર્શનો ભવતિ તથાડ્યમપિ ભરતઃ સુધાધવલિતમઙ્ગનગૃહા-
ન્નિર્ગચ્છન્ પ્રિયદર્શન ઇતિ ' પહિણિક્ષમિત્તા ' પ્રતિનિષ્ક્રમ્ય નિર્ગત્ય ' જેનેવ આદં-
સધરે જેનેવ સીહાસણે તેનેવ ઉવાગચ્છઈ ' યત્રૈવ આદર્શગૃહ દર્પણગૃહમ્ યત્રૈવ ચ સિંહા-
' તત્રૈવ ઉપાગચ્છતિ ' ઉવાગચ્છિત્તા ' ઉપાગમ્ય ' સીહાસણવરગણ પુરત્યામિમુદે ણિ-
સીયઈ ' સિંહસનવરગતઃ શ્રેષ્ઠસિંહાસને ઉપવિશ્યેત્યર્થઃ પૌરસ્ત્યામિમુલ્લઃ પૂર્વામિમુલ્લો
ભૂત્વા નિષીદતિ ઉપવિશતિ સ ભરતઃ ણિસીદત્તા' નિષદ્ય ઉપવિશ્ય 'આદંસધરંસિ અત્તાણં
પેહમાણે પેહમાણે ચિદ્દઈ' આદર્શગૃહે આત્માન પડ્યન્ પડ્યન્ તત્ર પ્રતિવિમ્બિતં સર્વા-
ન્નૃત્સ્વરૂપં સ્વશરીર પ્રેક્ષમાણઃ પ્રેક્ષમાણઃ તિષ્ઠતિ આસ્તે સ ભરતઃ । 'તપ્ણં'ઇત્યાદિ । 'તપ્ણં

પ્રિયદર્શનો ભવતિ, તથાડ્યમપિ ભરતઃ સુધાધવલિતમઙ્ગનગૃહાન્નિર્ગચ્છન્ પ્રિયદર્શનઃ" હસ કથન કા
સમ્રહ ક્રિયા ગયા છે. હસકા અર્થ સુગમ છે. (પહિણિક્ષમિત્તા જેનેવ આદંસધરે જેનેવ સીહાસણે
તેનેવ ઉવાગચ્છઈ) વાહુ નિકલ કર ફિર વે જહાં પર આદર્શ ગૃહ (અરિસા ભવન) થા ધીર
હસમેં બી જહા પર સિંહાસન થા, વહાં પર આયે. (ઉવાગચ્છિત્તા સીહાસણવરગણ પુરત્યામિમુદે
ણિસીયઈ) વહા આકર વે પૂર્વદિશા કો ઓર મુંદ કર કે મિંહાસન પર વૈઠ ગયે (ણિસીદત્તા
આદંસધરંસિ અત્તાણં પેહમાણે ચિદ્દઈ) વહા વૈઠે ૨ વે અપને પડે હુઈ-પ્રતિવિમ્બ કો વાર ૨ નિહાર
ને છગે અપને પ્રતિવિમ્બ કો નિહારતે ૨ ડનકી દૃષ્ટિ અપની અજુલી સે ગિરિ મુદ્રિકા-અંશુલી-
પર-પડ ગઈ. હસે-દેલકર ડન્હોને અપની-અંશુલી કો દિન મેં ડ્યોત્સના સે ફીકી પડી હુઈ શશિ-
કલા કે સમાન દેલા-દેલકર ડન્હોને વિવાર ક્રિયા કિ ઓહ-યહ અજુલી અંશુલી સે વિરહિત
હોકર શોમા વિહીન હોગઈ છે. હસ પ્રકાર વિચાર કરતે હુઈ ડન ભરત ને અપને શરીર કે- ૨
૨ અવયવોં કો આમરણ વિહીન કર દિયા તો યે સબ-અવયવ ઓ શોમા સે વિહીન હુઈ ડન્હે
દિલ્લને છગે. તબ, ડન્હોને સમસ્ત અજુલોં સે આભૂષણોં કો ઉતારના પ્રારમ્ભ કર દિયા. (તપ્ણં

પ્રિયદર્શનો ભવતિ તથાડ્યમપિ ભરતઃ સુધાધવલિતમઙ્ગનગૃહાન્નિર્ગતઃ પ્રિયદર્શનઃ" આ
કથનનો સંબંધ કરવામાં આવેલ છે. આનો અર્થ સુગમ છે, (પહિણિક્ષમિત્તા જેનેવ આદં-
સધરે જેનેવ સીહાસણે તેનેવ ઉવાગચ્છઈ) બહારનીકળીને પછી તેઓ જ્યાં આદર્શ ગૃહ
(દર્પણભવન) હતું અને તેમાંપણ જ્યાં સિંહાસન હતું ત્યાં આવ્યા (ઉવાગચ્છિત્તા સીહાસણ-
વર પુરત્યામિમુદે ણિસીયઈ) ત્યાં જઈને તેઓ પૂર્વ દિશા તરફ મુખ કરીને સિંહાસન
ઉપર સમાસીન થઈ ગયા (ણિસીદત્તા આદંસધરંસિ ણં પેહમાણે ચિદ્દઈ) ત્યાં બેસીને
તેઓ પોતાના પ્રતિબિંબ ને વારે વારે જોવા લાગ્યા પોતાના પ્રતિબિંબને જોતાં-
જોતાં તેમની દૃષ્ટિ પોતાની આંગળીથી ચરી પડેલી મુદ્રિકા-અંશુલી-ઉપર પડી ગઈ. તેને
જોધને તેમણે પોતાની આંગળીને દિવસમા જ્યોત્સ્ના રહિત શશિકલાની જેમ કાંતિહીન
જોધ તેરીતે જોધને તેમણે વિચાર કર્યો કે અરે ! જો આંગળી અંશુલીથી વિરહિત થઈને શોમા
વિહીન થઈ ગઈ છે. આ પ્રમાણે વિચાર કરતા કરતાં તે ભરતે પોતાના શરીરના બીજા અંગોને
પણ આમરણ વિહીન કરી હીંધાં આમ સર્વ અંગો પણ શોમા વિહીન થઈ ગયાં ત્યાર
બાદ તેમણે પોતાના સમસ્ત અંગો ઉપરથી આભૂષણો ઉતારી હીંધાં (તપ્ણં તસ્સ મરહં

તસ્સ મરંહસ્સ' તતઃ ક્ષણ તસ્ય ભરતસ્ય રાજઃ 'સુમેળં પરિણામેળં' શુમેન પરિણામેન-માંસ-
 મૂત્રવિષ્ણાદ્યર્મલં પરિપૂર્ણમિદં શરીરં કિં સુશોભમ્ ઇદં કર્પૂરકસ્તૂરીપ્રશુભીન્યપિ
 દૃષ્યત્યયેવ । યત્પ્રાતઃ સંસ્કૃત ધાન્ય તન્મધ્યાહ્ને વિનશ્યતિ । તદીયરસનિષ્પન્ને, કાચે
 કાં નામ સારતા ॥ ૧ ॥ इति शरीरासारत्वभावनारूपया जीवपरिणत्या 'पसत्येहि
 अञ्जवसाणेहि' प्रशस्तैः अध्यवसानैः - प्रोक्तस्वरूपैः मनः परिणामैः 'छेत्साहि' छेद्या-
 भिः शुक्लादि द्रव्योपहितजीवपरिणतिरूपामिः 'विसृज्यमाणीहि' विसृज्यमाणीहि'
 विशुद्ध्यन्तीभिर्विशुद्ध्यन्तीभिः - उत्तरोत्तरविशुद्धिमापद्यमानाभिरापद्यमानाभिः 'ईहा-
 पोहमगणगवेषणं करेमाणस्स' निरावरणवपुर्वैरूप्यविषयकम् ईहापोहमार्गणगवेषणं
 कुर्वत तत्र ईहादिपदेभ्यः प्रथमम् अवग्रहस्य उल्लेखः तथा च अग्रहेहापोहमार्गणगवेष-
 णमिति, तत्र लोके अवग्रहो यथा दूरस्थ पुरोवर्तिनि वस्तूनि किमिदमिति ज्ञानम् । ततः
 ईहास्वरूपमाह - ईहनम् ईहा नामजात्यादि कल्पनारहित सामान्यज्ञानोत्तरं विशेषनि-
 श्चयार्थं विचारणा इहा यथा स्पर्शनेन्द्रियेण स्पर्शसामान्ये ज्ञाते सति स्पर्शः ? इति
 गाढान्धकारे चक्षुष्मतोऽपि विचारणा प्रवर्तते, एव स्थाणुर्वा पुरुषो वा इति विचारणा
 तथा प्रकृते सा शोभा अलङ्कारसन्नियोगशिष्टशरीरे अलङ्कारजन्या औपाधिकी
 अथवा स्वभाविकीति ईहा ततोऽपोहस्वरूपमाह - अपोहनम् अपोह' मतिज्ञानस्य

તસ્સ મરંહસ્સ રણો સુમેળં પરિણામેળં પસત્યેહિ અજ્ઞવસાણેહિ છેસાહિ વિસુજ્ઞમાણીહિ વિસુજ્ઞ-
 માણીહિ ઈહાપોહમગણગવેસણં કરેમાણસ્સ) જવ વે સમસ્ત અંગો સે આમૂષણો કો ઉતાર
 જુકે તવ ડસકે બાદ-ડનકે અન્તરક્ષ મેં એસા શુભ પરિણામ બગા કિં યહ શરીર માંસ, મૂત્ર,
 વિષ્ણા આદિ મલોં સે પરિપૂર્ણ હૈ, હસમેં શોભા જૈસી વસ્તુ કયા હૈ ? યહ તો એસા હૈ. કિં કર્પૂર
 કસ્તૂરી આદિ વસ્તુઓં કો મો દૂષિત બના દેતા હૈ જો ધાન્ય પ્રાતઃ સસ્કૃત-પકાયા જાતા
 હૈ-વહ મધ્યાહ્ન-મેં વિનષ્ટ હો જાતા હૈ. ડસકે રસસે નિષ્પન્ન હુએ- હસ કાર્ય મેં સારતા જૈસી
 જીન કયા હૈ, હસ પ્રકાર કી શરીર કી અસારતાકા ચિન્તવન કરને રૂપ જીવપરિણતિ સે-તથા
 પ્રશસ્ત અધ્યવસાયોં સે-મનોવિચાર ધારાઓં સે-એવં પ્રતિક્ષણ વિશુદ્ધ હોતી જાતીં છેડ્યાઓં સે
 યોગ કી-પ્રવૃત્તિઓં સે-નિરાવરણ શરીર કી વિરૂપતા વિષયક ઈહા અપોહ, માર્ગણ ઝીર ગવે-

રણો સુમેળં પરિણામેળં પસત્યેહિ અજ્ઞવસાણેહિ છેસાહિ વિસુજ્ઞમાણીહિ વિસુજ્ઞમાણીહિ
 ઈહાપોહમગણગવેસણ કરેમાણસ્સ) બચારે સમસ્ત અંગો ઉપરથી આમૂષણો ઉતારો ચૂક્યા
 ત્યારે તેમના અંતરમાં જેવી શુભભાવના ઉદ્ભવી કે આ શરીર, માંસ, મૂત્ર, વિષ્ણા વગેરે
 મનોથી પરિપૂર્ણ છે એમા શોભા જેવી વસ્તુ કઈ છે ? આતો એવું છે કે કર્પૂર કસ્તૂરી
 વગેરે સુગંધિત વસ્તુઓને પણ દૂષિત બનાવી દે છે જે ધાન્ય સવારે પકવવામાં
 આવે છે, તે મધ્યાહ્નમાં વિનષ્ટ થઈ જાય છે તેના રસથી નિષ્પન્ન થયેલા આ કાર્યમાં
 સારવાન જેવી વસ્તુ કઈ છે ? આ પ્રમાણે શરીરની અસારતાનું ચિન્તવન કરવા રૂપ જીવપરિ-
 ણતિથી તેમજ પ્રશસ્ત અધ્યવસાયોથી-મનોવિચારધારાઓથી તેમજ પ્રતિક્ષણ વિશુદ્ધ
 થતી છેડ્યાઓથી-યોગની પ્રવૃત્તિઓથી-નિરાવરણ શરીરની વિરૂપતા વિષયક ઈહા, અપોહ

અવગ્રહાદિ મેદચતુષ્ટયે તૃતીયમેદે યોડપાયઃ સ એવ અપોહઃ, સ ચ સામાન્ય જ્ઞા-
નોત્તરં કાલં વિશેષનિશ્ચયાર્થં વિચારણાયાં પ્રવૃત્તાયા તદનુગુણદોષવિચારણાજનિતો
નિશ્ચયઃ । યથા લોકે કિમયં કમલનાલસ્પર્શઃ . આહોસ્વિત શુભ્રસ્પર્શઃ । इति वि-
ચારણાયાં મૃણાલસ્યેવ સ્પર્શઃ એવં સ્થાણુરેવ ન પુરુષઃ વલ્લી ઉત્સર્પણાદિ ધર્માણાં તત્ર
સમ્બાવાત્ इत्ययं निश्चयः પુરુષમપનુદતિ । અત્યન્તગીતત્વાદિ ગુણવત્ત્વાત્ इत्यस्यै-
વાયमिति निश्चयोऽन्य श्रुजङ्गस्पर्शम् અપનુદતિ તથા પ્રકૃતે સા શોભા ઔપધિક્યેવ ન
સ્વાભાવિકી તસ્યાઃ અલક્ષારાદિ વાહ્યનસ્તુસંસર્ગજન્યત્વસ્ય પ્રત્યક્ષસિદ્ધત્વાત્ ।
તતો માર્ગણા સ્વરૂપમાહ - અસ્યાઃ શોભાયાઃ પ્રકર્પાપકર્પો વાહ્યવસ્તુ પ્રકર્પાપકર્પોન્નુ-
વિધાયિનો इत्यन्वयधर्मालोचनं માર્ગણા યથા લોકે સ્થાણૌ નિશ્ચેતવ્યે તત્ર વલ્લી
ઉત્સર્પણાદયો ધર્માઃ સંભવન્તિ । તતો ગવેષણસ્વરૂપમાહ-પ્રવૃતસ્યાઃ તસ્યાઃ શોભાયાઃ
સ્વાભાવિકત્વે ઉત્તાનદશા ભારમૂતસ્ય આમરણસ્ય વપુષિ ધારણબુદ્ધિર્ન સ્યાદિતિ વ્યતિ-
રેકધર્માલોચનમ્ ગવેષણમ્, યથા સ્થાણૌ શિરઃ કણ્ઠ્યનાદયઃ પુરુષધર્માઃ ન દૃશ્યન્તે

ષણ કરતે ૨ (તયાવરણિજ્ઞાણ કમ્માણં સ્વર્ણ કમ્મરયવિકિરણ કરં અપુન્નવર્ણ પવિટ્તસ અળંતે
અણુત્તરે નિઘ્વાઘાપ નિરાવરણે કમિણે પહિપુણે કેવલવરનાણદંસણે સમુપ્પણે) તદા વરણીય
કર્મો કે ક્ષય સે કર્મરજ કો-વિકીર્ણ કરને વાલે અપૂર્વ કરણરૂપ શુદ્ધ્યાન મેં વે 'ભરત-
મહારાજ પ્રવિષ્ટ હો ગયે સો' ઉસો સમય ઉનકે અનન્ત અનુત્તર, વ્યાઘાત રહિત નિરાવરણ,
કૃત્સન એવં પ્રતિપૂર્ણ એસે-કેવલજ્ઞાન ઔર કેવલદર્શન ઉત્પન્ન હો ગયે. યહાં જો 'ઈહાપોહ
આદિ પદ આયે હૈં સો' ઉનકે સમ્બન્ધ મેં એસા વિચાર હૈં સઘ સે પહિલે અવગ્રહ રૂપ
જ્ઞાન હોતા હૈં, જો' યહ "યહ કુઠ્ઠ હૈં" ઇસ રૂપ હોતા હૈં અવગ્રહ મેં અવાન્તર' મર્ત્તા
વિશિષ્ટ વસ્તુ કા પ્રદ્શન હોતા હૈં જૈસે દૂરસ્થ-મામને રહી હુદ્ વસ્તુ કો દેસકર એસા વિચાર
ઓતા હૈં કિ-યહ કુઠ્ઠ હૈં. ઇસકે બાદ અવગ્રહ ગૃહીત અર્થ મેં વિશેષ જાનને કો આકાંક્ષા
જગતી હૈં-નવ વિચાર હોતા હૈં કિ યહ જો-કુઠ્ઠ રૂપ મેં પ્રતિભાસિત હો રહા હૈં સો' વ્યા

માર્ગણુ અને ગવેષણુ કરતા કરતા (તયાવરણિજ્ઞાણ કમ્માણં સ્વર્ણ કમ્મરયવિકિરણ કરં અપુ-
ન્નવર્ણ પવિટ્તસ અળંતે અણુત્તરે નિઘ્વાઘાપ નિરાવરણે કમિણે પહિપુણે કેવલવરનાણ-
દંસણે સમુપ્પણે) તદાવરણીય કર્મોના ક્ષયથી કર્મરજ ને વિશીલું કરનારા અપૂર્વ કરણુ રૂપ
શુદ્ધ્યાનમા તે ભરત નૃપતિ મહારાજ મળત થઈ ગયા. અને તેજ ક્ષણે તેમના અતંત
અનન્તર વ્યાઘાત રહિત નિરાવરણુ, કૃત્સન તેમજ પરિપૂર્ણ એવા કેવળજ્ઞાન અને કેવળ
દર્શન ઉત્પન્ન થયા. અહીં જે 'ઈહાપોહ વગેરે પદો આવેલા છે તેો ને સંબંધમાં આ વિચાર
છે કે સર્વ પ્રથમ અવગ્રહ રૂપ જ્ઞાન હોય છે અને આ " જો કંઈક છે " એ રૂપમાં હોય
છે અવગ્રહમાં અવાન્તર સત્તા વિશિષ્ટ વસ્તુઓનું ગ્રહણ થાય છે જે મ દૂરસ્થ પણુ સોમે
જ દેખાતી વસ્તુને જોઈને આમ વિચાર થાય છે કે 'જો કંઈક છે ત્યારણાહ અવગ્રહ
ગૃહીત અર્થમાં વિશેષ બાણુવાની આકાંક્ષા બાગત થાય છે. તે વખતે વિચાર 'હુદ્ સર્વ છે કે
જો જે કંઈક પ્રતિભાસિત થઈ રહ્યું છે તે શુ છે ? શુ' તે બકપડિત છે કે 'ખવળ છે ?' આ

હૈં ? क्या चक्रवृत्ति—है या ध्वजा है ? इम प्रकार के जायमान सदेह को दूर करने के लिये निश्चय की ओर झुकते हुए ज्ञान का नाम ईहा है. जैसे यह ध्वजा होनी चाहिये, ईहा के बाद बिल्कुल निश्चय—करने वाले ज्ञान का नाम अवाय—अपोह है—जैसे—यह—ध्वजा ही है. तथा अन्यान्य धर्म का आलोचन करना—इसका नाम गवेषण है. टीकाकार ने अवग्रह आदिकों के—रूप को इस प्रकार से समझाया है. जैसे—चक्रवर्ती ने—विचारा—शरीर में शोभा है. यह अवग्रह उसे ज्ञान हुआ—पर इसके बाद उसे ऐसा संशय ज्ञान हुआ कि यह शारीरिक शोभा अलङ्कार जन्य है. या स्वाभाविकी है ? संशय को दूर करने के लिये निश्चय की ओर झुकता हुआ ईहा—ज्ञान उसे इस प्रकार से हुआ कि यह अलङ्कार विशिष्ट शरीर की शोभा अलङ्कार जन्य होनी चाहिये. इसके बाद फिर उसे ऐसा अवाय—अपोह—ज्ञान हुआ कि यह शारीरिक शोभा औप-
 धिकी ही है स्वाभाविकी नहीं है। मतिज्ञान के जो सिद्धांतकारों ने अवग्रह आदि ४ भेद प्रकट किये हैं और उनमें एक अवाय नामका भेद प्रकट किया है उसी का नाम यहां अपोह कहा गया है। यह शारीरिक शोभा औपधिकी इसलिये निश्चित हुई कहि गई है कि यह अलंकारादि-
 रूप बाह्य वस्तु के संसर्ग से जन्य हुई है. यह प्रत्यक्ष प्रमाण से सिद्ध हो रही है। इस शारीरिक शोभा के जो प्रकर्ष और अप्रकर्ष धर्म हैं वे बाह्य वस्तु के प्रकर्ष और अप्रकर्ष के अनुविधायी हैं इस तरह अन्वयरूप धर्म की आलोचना करने का नाम मार्गण है व्यतिरेक धर्म का आलोचन करना इसका नाम गवेषण है। और वह इस प्रकार से है—यदि उप शारीरिक शोभा को स्वाभा-

પ્રમાણે જે સંદેહ ઉત્પન્ન થાય તેને દૂર કરવા માટે નિશ્ચય તરફ ઉન્નુય થતા જ્ઞાનનું નામ ઈહા છે. જેમ કે જો ધ્વજા જ હોવી જોઈએ. ઈહા પછી જોઈકમ નિશ્ચય કરાવનારું જ્ઞાન — અવાય—અપોહ છે જેમકે — જો ધ્વજા જ છે. તથા અન્ય ધર્મનું આલોચન કરવું ગવેષણ છે. ટીકાકારે અવગ્રહ વગેરેના સ્વરૂપને આ પ્રમાણે સમજાવ્યું છે—કે જેમ ચક્રવર્તીએ વિચાર કર્યો કે શરીરમાં શોભા છે. જો અવગ્રહ રૂપ તેને જ્ઞાન થયું પણ ત્યારબાદ તેને આવું સંશય જ્ઞાન થયું કે જો શારીરિક શોભા અલંકારજન્ય છે—કે સ્વાભાવિકી છે ? જો સંશયને દૂર કરવા માટે નિશ્ચય તરફ ઉન્નુય થતું ઈહાજ્ઞાન તેને આ રીતે થયું કે જો અલંકાર વિશિષ્ટ શરીરની શોભા અલંકાર જન્ય જ હોવી જોઈએ ત્યારબાદ તેને એવું અવાય—અપોહ—જ્ઞાન થયું કે જો શારીરિક શોભા ઔપધિકી જ છે—સ્વાભાવિકી નથી. સિદ્ધાન્તકારેએ મતિજ્ઞાનના જે અવગ્રહ વગેરે ૪ લેહો પ્રકટ કર્યા છે અને તેમનામાં એક અન્તકારેએ મતિજ્ઞાનના જે અવગ્રહ વગેરે ૪ લેહો પ્રકટ કરેલ છે, તેનું જ નામ અહીં અપોહ છે જો શારીરિક શોભા ઔપધિકી વાચનામક લેહ પ્રકટ કરેલ છે, તેનું જ નામ અહીં અપોહ છે જો શારીરિક શોભા સ્વાભાવિકી જોટલા માટે નિશ્ચિત થયેલી પ્રકટ કરવામાં આવી છે કે જો અલંકારાદિ રૂપ બાહ્ય વસ્તુના સંસર્ગથી જન્ય છે જો વાત પ્રત્યક્ષ પ્રમાણથી સિદ્ધ થઈ રહી છે જો શારીરિક શોભાના પ્રકર્ષ અને અપ્રકર્ષ ધર્મો છે તે બાહ્ય વસ્તુના પ્રકર્ષ અને અપ્રકર્ષના અનુવિધાયી છે આ પ્રમાણે અન્વય રૂપ ધર્મની આલોચના કરવાનું નામ માર્ગણ છે — વ્યતિરેક ધર્મનું આલોચન કરવું જો ગવેષણ છે અને તે આ પ્રમાણે છે—જો જો શારીરિક શોભા સ્વાભાવિક રૂપમાં માનવામાં આવે તો પછી બારણૂત આબૂપણ શરીર ઉપર શામાટે ધારણ કરવામાં

इति ईहादीनां व्यख्यानम् । पुनः कीदृशस्य भरतस्य 'तयावरिज्जाण कम्माण खण्णं' तदावरणीयानां केवलज्ञानदर्शननिबन्धकानां चतुर्णां ज्ञानावरणीय १ दर्शनावरणीय २ मोहनीय ३ अन्तराय ४ रूपाणां घातिकर्मणां क्षयेण सर्वथा जीवप्रदेशेभ्यः तदीय पुद्गलपरिशादनेन 'कम्मरयविकिरणकरं' कर्मरजसां विकिरणकरं विक्षेपकरम् निवारकमित्यर्थः 'अपुव्वकरणं' अपूर्वकरणम् अनादौ संसारे अप्राप्तपूर्वं ध्यान शुक्लध्यानं प्रविष्टस्य प्राप्तस्य एवंभूतस्य भरतस्य 'अणते अनुत्तरे निव्वाधाए निगवरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणाणदंसणे समुपण्णे' अनन्तम् अप्रतिपादितत्वेन पर्यवसानरहितत्वात् अनुत्तरम् न विद्यते उत्तरम् उच्चतरं (प्रधानम्) यस्मात्तदनुत्तरम् अनन्यसदृशम् निर्व्याघातं व्याघातरहितम् निरावरणम् कटकुड्यादिआवरणसहितं प्रतिबन्धकीभूतावरणरहितम् क-

विक्रि मानા જાવે તો ફિર ભારમૂત ગહનેાં કો ધારણ કયોં ક્રિયા જાતા હૈ । ઇસસે યહ જાના જાતા હૈ કિ યહ ત્વામાવિક નહોં હૈ । ઇસતરહસે યહ અવગ્રહાદિકોં કા સ્વરૂપ યહાં હમને પ્રકટ ક્રિયા હૈ । ઇસસે ટીકાકાર કા અભિપ્રાય જો ટીકા મેં લિખા ગયા હૈ, વહ સ્પષ્ટરૂપ સે હરયંગમ ક્રિયા જા સકતા હૈ । ટીકાગત વિચારધારા વિકલ્પ રૂપ હૈ । અત ઇસકા ભાવ લેકર યહ સ્પષ્ટીકરણ ક્રિયા ગયા હૈ । કેવલજ્ઞાન ઔર કેવલદર્શન કો આવરણ કરને વાલે જ્ઞાનાવરણીય, દર્શનાવરણીય, મોહનીય ઔર અન્તરાય, યે ચાર કર્મ હૈ । ઇન્હેં ઘાતિકર્મ મી કહા ગયા હૈ । ઇનકા અવ સર્વથા ક્ષય હો જાતા હૈ । અર્થાત્ યે જીવ કે પ્રદેશોં સે બિલ્કુલ નષ્ટ હો જાતે હૈ ।—તવ કેવલજ્ઞાન ઔર કેવલદર્શન ઉત્પન્ન હોતે હૈ । યહાં “અપુવ્વકરણ ” પદ શુક્લધ્યાન કા વાચક હૈ । ઇસ અનાદિ સંસારમેં યહ ધ્યાન અગ્રાપ્ત પૂર્વ હોતા હૈ યે કેવલજ્ઞાન ઔર કેવલદર્શન અપ્રતિપાતી હોતે હૈ ઇમલિયે એક વાર પ્રાપ્ત હોને પર ફિર છૂટતે નહોં હૈ ઇસલિયે ઇન્હેં અનન્ત કહા ગયા હૈ ઇનકે જૈસા ઔર કોઈ ઉત્કૃષ્ટ જ્ઞાન દર્શન નહોં હૈ ઇમલિયે ઇન્હેં અનુત્તર કહા ગયા હૈ । ઇનકા કટકુડ્યાદિ સે આવરણ નહોં હોતા હૈ । ઇસલિયે ઇન્હેં નિર્વ્યાધાત કહા ગયા હૈ ।

આવેછે. એથી એનિશ્ચય થાય છે કે એ સ્વાભાવિક નથી આ પ્રમાણે એ અવગ્રહાદિકોં સ્વરૂપ અત્રે અમે પ્રકટ કર્યું છે એથી ટીકાકારે પોતાનો જે અભિપ્રાય ટીકામાં સ્પષ્ટ કર્યો છે તે હરયંગમ થઈ જાય છે ટીકાગત વિચારધારા એકદમ સ્પષ્ટ જ છે. એથી તેનો ભાવ લઇને જ એ સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવેલ છે કેવલજ્ઞાન અને કેવલદર્શનને આવૃત્ત કરનારા જ્ઞાનાવરણીય, દર્શનાવરણીય, મોહનીય અને અતશય એ ચાર કર્મો છે. એમને ઘાતિકર્મો પણ કહેવામાં આવેલ છે એમનો બ્યારે સર્વથા ક્ષય થઈ જાય છે એટલે કે એ જીવોના પ્રદેશોથી એકદમ નષ્ટ થઈ જાય છે ત્યારે કેવલજ્ઞાન અને કેવલદર્શન ઉત્પન્ન થાય છે અહીં “અપુવ્વકરણ” પદ શુક્લ ધ્યાન વાચક છે એ અનાદિ સંસારમાં એ ધ્યાન અગ્રાપ્ત પૂર્વ હોય છે એ કેવલજ્ઞાન અને કેવલદર્શન અપ્રતિપાતી હોય છે. એથી એક વાર પ્રાપ્ત થઈ જાય તે પછી છૂટતા નથી એથી જ એમને ‘અનન્ત’ કહેવામાં આવેલ છે. એમના જેવું અન્ય કોઈ પણ ઉત્કૃષ્ટ જ્ઞાન-દર્શન નથી, એથી જ એમને અનુત્તર કહેવામાં આવેલ છે એમનું કટ-કુડ્યાદિથી આવરણ થતું નથી એથી જ એમને નિર્વ્યાધાત કહેવામાં

ત્સન સમસ્તં સકલરદાર્થવિપયત્વાત્ પ્રતિપૂર્ણમ્ સૂત્રતોઽક્ષરમાત્રાદિ ન્યૂનતયા રહિતં સર્વપ્ર-
માણોપેતમ્ एतावच्चतुष्टयविशेषणविशिष्टं केवलवरजानदर्शन समुत्पन्नम् । अथोत्पन्न-
केवलः किं करोतीत्याह - तए णं' इत्यादि । 'तए णं' से भरहे केवली सयमेवामरणा-
लंकार ओमुअइ' ततः केवलज्ञानानन्तर खल्लु स भरतः केवली स्वमेव आभरणालंकारं
वस्त्रमाल्यरूपम् अवमुञ्चति त्यजति अत्र भूषणालङ्कारस्य वस्त्रमाल्यालंकारयोरवग्रहः 'ओमुअ-
त्ता' अवमुच्य त्यक्त्वा 'सयमेव पचमुट्ठियं लोअं करेइ' स्वयमेव पञ्चमुष्टिकं लोचं करोति
करित्ता । कृत्वा उपलक्षणात् सन्निहितदेवतयाऽर्पितं साधुलिङ्गं 'भरहे केवली सदोरय मुह
'पत्तिं रयहरणं गोच्छग पडिग्गह देवदस वत्थं पडिच्छइ' भरतः केवली सदोरकमुखवत्ति-
कां रजोहरणं गोच्छक पात्रं देवदूष्यं वस्त्रं गृहीत्वा साधुवेपं धृत्वा 'आयसघराओ
पडिणिकखमइ' आदर्शगृहात्प्रतिनिष्क्रामति निर्गच्छति स भरतः केवली 'पडि-
णिकखमित्ता' प्रतिनिष्क्रम्य निर्गत्य 'अतेउरमज्झमज्झेण निग्गच्छइ' अन्तः पुरमध्य
मध्येन निर्गच्छति प्रतिनिष्क्रामति 'णिग्गच्छित्ता' निर्गत्य 'दस सहस्सरायवरे
'पडिबोहिय पव्वज्जं देहि तओ पच्छा तेहिं सद्धिं विहारं करीय, लक्खपुव्वं संजमं
पालिय' दशसहस्रारजवरसहस्रान् प्रतिबोध्य, प्रव्रज्या ददाति, ततःपश्चात् तैः सार्द्धं वि-
हारं कृतवान् । 'दसहिं रायवरसहस्सेहिं सद्धिं सपरिवुडे विणीय रायहाणीं मज्झं मज्झेण-

સકલ ત્રિકાલવર્તિ પદાર્થો કો યે ઉનકો અનન્ત પર્યાયો સહિત હસ્તામલકવત્ જાનતે હૈં હસલિયે
હન્દે કૃત્સન કહા ગયા હૈ । સૂત્ર કી અપેક્ષા યે અક્ષર માત્રા આદિ ક ન્યૂનતા સે રહિત હોતે હૈં
હસલિયે હન્દે પ્રતિપૂર્ણ કહા ગયા હૈ (તણ સે ભરહે કેવલી સયમેવામરણાલંકારં ઓમુઅઈ)
હસકે બાદ જસ ભરત કેવલી ને અપને આપ હો અવશિષ્ટ માલ્યાદિરૂપ આભરણો કો ઈવં વસ્ત્રા-
દિકો કો છોડ દિયા (ઓમુઅત્તા સયમેવ પચમુટ્ઠિયં લોઅ કરેઈ) છોડફર ફિર ઠન્હોને પંચમુષ્ટિક
કેશોકા લોચ ક્રિયા (કરિત્તા આયંસઘરાઓ પડિણિક્કલમઈ) પંચમુષ્ટિક કેશલોચ કરકે સન્નિ-
હિત પાસ મેં રહે હુપ દેવ દ્વારા અર્પિત માધુલિંગ્ગ કો ગ્રહણ કરકે ધારણ—કરકે વે આદર્શ અવન
સે બાહર નિકળે (પડિનિક્કલમિત્તા અંતેરમજ્ઝમજ્ઝેણ નિગ્ગચ્છઈ) બાહર નિકળકર વે અપને

આવેલ છે સકલ ત્રિકાલવર્તિ પદાર્થોને ઓઓ તેમની અનન્તપર્યાયો સહિત હસ્તામલકવત્
અણે છે. એથી જ એમને કૃત્સન કહેવામાં આવે છે સૂત્રની અપેક્ષાએ ઓ અક્ષર માત્રા વગે
રેની ન્યૂનતાથી રહિત હોય છે એથી જ એમને પ્રતિપૂર્ણ કહેવામાં આવે છે (તણ સે
ભરહે કેવલી સયમેવામરણાલંકાર ઓમુઅઈ) ત્યારબાદ તે ભરત કેવલી એ પોતાની મેળે
જ અવશિષ્ટ માલ્યાદિ રૂપ આભરણો તેમ જ વસ્ત્રાદિકોને પણ તથા દીધાં (ઓમુઅત્તા
સયમેવ પચમુટ્ઠિય લોઅં કરેઈ) ત્યજીને પછી તેમણે પંચમુષ્ટિક કેશલુચન કર્યું. (કરિત્તા
આયંસઘરાઓ પડિણિક્કલમઈ) પંચમુષ્ટિક કેશલુચન કરીને સન્નિહિત નિઠર મૂકેલા દેવ દ્વારા
અર્પિત સાધુલિંગને ગ્રહણ કરીને—ધારણ કરીને તેઓ આદર્શ અવનમાથી બહાર નીકળી
ગયા. (પડિણિક્કલમિત્તા અંતેરમજ્ઝમજ્ઝેણ નિગ્ગચ્છઈ) બહાર નીકળીને તેઓ પોતાના
અંતરપૂર્ણીવચ્ચે થઇને રાજાઅવનમાથી બહાર નીકળી ગયા 'દસસહસ્સ રાયવરે પડિબોહિય
પવ્વજ્જં દેહિ તમો પચ્છા તેહિં સદ્ધિં વિહારં કરિય લક્કપુવ્વં સંજમં પાલિય' હસહસર

णिगच्छद्' दशमी राजवरसहस्रैः संपरिवृतो सार्द्धं विनीतायाः राज्ञश्च न्याः मध्यममध्येन नि-
र्गच्छति 'निगच्छित्ता' निर्गत्य 'मज्झदेसे सुहं सुहेणं विहरइ' मध्यदेशे कोशलदेशस्य मध्ये मुखं
मुखेन विहरति स केवली भरतः 'विहरित्ता' विहत्य 'जेणेव अट्ठावण पच्चण तेणेव उवाग-
च्छइ' यत्रैव अष्टापदः पर्वतः तत्रैव उपागच्छति 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'अट्ठावणं पच्चयं
सणियं सणियं दुरुहइ' अष्टापद पर्वतं शनैः शनैः दुरोहति आरोहति 'दुरुहित्ता' दुरुह्य
आरुह्य 'मेघघणसणिकासं देवसण्णियायं पुढवि सियावट्ठयं पडिलेहेइ' मेघघनसन्निकाशं—
घनमेघसन्निकाशम् सान्द्रजलदश्यामम् मूले पदव्यत्ययः प्राकृतत्वात् देवमन्निपातम्
'देवानां सन्निपातः आगमनं रम्यत्वात् यत्र स तथा भूतस्तम् पृथिवीशिलापट्टकम् आसन-
विशेषं प्रतिलेखयति केवलित्वे सत्यपि व्यवहारप्रमाणीकरणार्थं दृष्ट्या निभाळयति

अतःपुर के बीच से होकर राजभवन से चले गये (णिगच्छित्ता दससहस्ररायवरे पडिवोहिय
पच्चणं देह तओ पच्छा तेहिं सद्धि विहार करिअ लक्खपुव्व संजम पालिय'दस हजार राजाओ
को प्रतिबोधित करके उन सबको दीक्षादी तदन्तर उनके साथ विहार करके लास पूर्व पर्यन्त
संयमका पालन किया 'दसहिं रायवरसहस्सेहिं सद्धि सपरिवुडे विणोय राजधानी मज्झं मज्झेण
णिगच्छइ' उस समय उनके साथ १० हजार राजा थे उनके साथ साथ ये विनीता राजधानी
के ठीक बीचों बीच के रास्ते से होकर निकले थे (णिगच्छित्ता मज्झनेसे सुहं
सुहेणं विहरइ) और निकलकर इन्होंने मध्य देश में कोशल देश में मुख पूर्वक विहार किया
(विहरित्ता जेणेव अट्ठावण पच्चण तेणेव उवागच्छइ) विहार करके ये फिर जहां पर
अष्टापदपर्वत था, उसके पास आये । (उवागच्छित्ता अट्ठावणं पच्चयं सणियं सणियं दुरुहइ) वहां
आकर ये उस पर बड़ी सावधानी से चढ़े (दुरुहित्ता मेघघणसणिकास देवसण्णियायं पुढविसि-
लापट्टयं पडिलेहेइ) चढ़कर इन्होंने पृथिवीशिलापट्टक को जो कि सान्द्र जलधर के जैसा-श्याम
था और रम्य होने से जहां देवगण आया करते थे, प्रतिलेखना की । यद्यपि ये केवली-ये, परन्तु
फिर भी व्यवहारधर्म को प्रमाणित करने के लिये इन्होंने अपनी दृष्टि से उसे अच्छी तरह

शान्त्योने प्रतिबोधित करीने तेओ ने दीक्षा आपी ते पछी मना साथे विहार करीने साथ
पूर्व पर्यन्त संयमनु पालन क्यु' (णिगच्छित्ता दसहिं रायवरसहस्सेहिं सद्धि संपरिवुडे
विणोयं रायधानी मज्झं मज्झेण णिगच्छइ) ते वणते तेनी साथे १० हजार शान्त्यो
हता ते सर्व शान्त्योनी साथे-साथे ओ विनीता राजधानीना ठीक मध्यभाग माथी
'पसार यथा (णिगच्छित्ता मज्झदेसे सुहं सुहेण विहरइ) अने पसार गछ ने तेमणे
मध्यदेशमां कोशलदेशमां सुभपूर्वक विहार करी। (विहरित्ता जेणेव अट्ठावण पच्चण
तेणेव उवागच्छइ) विहार करीने ओ अष्टापद पर्वतनी पासे आब्या, (उवागच्छित्ता
अट्ठावणं पच्चयं सणियं सणियं दुरुहइ) त्यां आवीने ओ तेनी उपर सावधानी पूर्वक यद्धा,
(दुरुहित्ता मेघघणसणिकासं देवसण्णियायं पुढविसिलापट्टयं पडिलेहेइ) यही ने ओमने
पृथिवी शिलापट्टनी के ओ सान्द्र जलधरवत् श्याम हतु अने रम्य होवाथी कथा देव
ओ आब्या करता हता-प्रतिबोधना करी ओ के ओओ केवली हता हता ओ व्यवहार
धर्मने प्रमाणित करवा भाटे तेमणे पोतानी दृष्टि थी पृथ्वीशिलापट्टने सारी रीते ओहु

‘इत्स्न समस्तं सकलदार्थविषयत्वात् प्रतिपूर्णम् सूत्रतोऽक्षरमात्रादि न्यूनतया रहितं सर्वप्रमाणोपेतम् एतावच्चतुष्टयविशेषणविशिष्टं केवलवरज्ञानदर्शन समुत्पन्नम् । अथोत्पन्न-केवलः किं करोतीत्याह - तए णं’ इत्यादि । ‘तए णं से भरहे केवली सयमेवाभरणालंकार ओमुअइ’ ततः केवलज्ञानानन्तर खलु स भरतः केवली स्वमेव आभरणालंकारं वस्त्रमाल्यरूपम् अवमुञ्चति त्यजति अत्र भूषणालङ्कारस्य वस्त्रमाल्यालंकारयोरवग्रहः ‘ओमुअइ-त्ता’ अवमुच्य त्यक्त्वा ‘सयमेव पचमुट्ठियं लोअं करेइ’ स्वयमेव पञ्चमुष्टिकं लोचं करोति करित्ता । कृत्वा उपलक्षणात् सन्निहितदेवतयाऽर्पितं साधुलिङ्ग ‘भरहे केवली सदोरय मुह पत्ति रयहरणं गोच्छग पडिगगह देवदस वत्थं पडिच्छइ’ भरतः केवली सदोरकमुखवस्त्रिकां रजोहरणं गोच्छकं पात्रं देवदूष्य वस्त्रं गृहीत्वा साधुवेपं धृत्वा ‘आयसघराओ पडिणिकखमइ’ आदर्शगृहात्प्रतिनिष्क्रामति निर्गच्छति स भरतः केवली ‘पडि-णिकखमिता’ प्रतिनिष्क्रम्य निर्गत्य ‘अतेउरमज्झंमज्झेण निगगच्छइ’ अन्तः पुरमध्यं मध्येन निर्गच्छति प्रतिनिष्क्रामति ‘णिगगच्छित्ता’ निर्गत्य ‘दस सहस्सरायवरे पडिबोहिय पन्वज्जं देहि तओ पच्छा तेहि सद्धि विहारं करीय, लक्खणुव्वं सज्जमं पालिय’ दशसहस्रारजवरसहस्रान् प्रतिबोध्य, प्रव्रज्या दर्शयति, ततः पश्चात् तैः सार्द्धं विहारं कृतवान् । ‘दसहिं रायवरसहस्सेहिं सद्धिं सपरिवुडे विणीय रायहाणीं मज्झ मज्झेण-

सकल त्रिकालवर्ति पदार्थो का ये उनक’ अनन्त पर्यायो सहित इत्स्नामलकवत् जानते हैं इसलिये इन्हें इत्स्न कहा गया है । सूत्र की अपेक्षा ये अक्षर मात्रा आदि क न्यूनता से रहित होते हैं इसलिये इन्हें प्रतिपूर्ण कहा गया है (तएण से भरहे केवली सयमेवाभरणालंकार ओमुअइ) इसके बाद उस भरत केवली ने अपने आप ही अवशिष्ट माल्यादिरूप आभरणो को एवं वस्त्रादिकों को छोड़ दिया (ओमुअत्ता सयमेव पचमुट्ठियं लोअ करेइ) छोड़कर फिर उन्होंने पंचमुष्टिक केशोंका लोच किया (करित्ता आयसघराओ पडिणिकखमइ) पंचमुष्टिक केशलोच करके सन्निहित पास में रहे हुए देव द्वारा अर्पित साधुलिङ्ग को ग्रहण करके धारण-करके वे आदर्श भवन से बाहर निकले (पडिनिक्खमिता अंतेउरमज्झमज्झेण निगगच्छइ) बाहर निकलकर वे अपने

आवेस छ सकल त्रिकालवर्ति पदार्थोने ओओ तेमनी अनन्तपर्यायो सहित इत्स्नामलकवत् जानते हैं ओओ छ ओथी न ओमने इत्स्न कडेवाभां आवे छ सूत्रनी अपेक्षाओ ओ अक्षर मात्रा वजे रेनी न्यूनताथी रहित होय छ ओथी न ओमने प्रतिपूर्ण कडेवाभां आवे छ (तए णं से भरहे केवली सयमेवाभरणालंकार ओमुअइ) त्यारमाह ते भरत केवली ओ पोतानी भणे न ओ अवशिष्ट माल्यादि रूप आभरणो तेम न वसाहिकेने पखु तए दीधां (ओमुअत्ता सयमेव पचमुट्ठिय लोअं करेइ) त्यलने पछी तेमणे पचमुष्टिक केशधुवन कथुं (करित्ता आयसघराओ पडिणिकखमइ) पचमुष्टिक केशधुवन करीने सन्निहित निकट भूईला देव द्वारा अर्पित साधुलिङ्गने अडणु करीने-धारणु करीने तेओ आदर्श भवनमाथी गडार नीकणी गया। (पडिणिकखमिता अंतेउर मज्झं मज्जेण निगगच्छइ) गडार नीकणीने तेओ पोताना अतः पुरनी चउथे थडने राअभवनमाथी गडार नीकणी गया ‘दससहस्स रायवरे पडिबोहिय पन्वज्जं देहि तओ पच्छा तेहि सद्धि विहारं करिय लक्खणुव्वं सज्जमं पालिय’ इससंभार

‘પહિલેહિતા’ પ્રતિલિરૂપ સિંહાવલોકનન્યાયેન અત્રાપિ આરોહતીતિ બોધ્યમ્ ‘સંલેહણા ઘ્રસણાઘ્રસિષ્’ સંલેહણા જોષણાજુષ્ટઃ સલિહ્યતે-કુશી ક્રિયતે શરીરકપાયાધનયાં હિતિ સંલેહણા તપો વિશેષલક્ષણા તસ્યાઃ જોષણા સેવના તયા જુષ્ટઃ સેવિતઃ શ્રુપિતો વા સપિતો યઃ સ તથાભૂતઃ ‘મત્તપાણપહિઆહિલિષ્’ મત્તપાણપ્રત્યારૂપાતઃ—પ્રત્યારૂપાતમત્તપાણઃ પ્રત્યારૂપાતે મત્તપાણે યેન સ તથાભૂતઃ મૂલે ક્તાન્તસ્ય પરનિપાતઃ પ્રાકૃતત્વાત્ ‘પાઓવગપ્’ ‘પાદપોષગતઃ—પાદો વૃક્ષસ્ય ભૂગતો મૂલભાગઃ તસ્યૈવ અપ્રકમ્પતયા ઉપગતમ્ અવસ્થાનં યસ્ય સ તથાભૂત ‘કાલ અણવકંસમાણે ૨ વિહરહ’ કાલં મરણમ્ અનવકાંક્ષન્ અવાચ્છન્ વિહરતિ’તપ્તે સે મરહ કેવલી સત્તતરિ પુન્વસયસહસ્સાઈ કુમારવાસમજ્ઞે વસિત્તા’ તત્ત. ખલ્લુ સ મરતઃ કેવલી સપ્તસપ્તતિ પૂર્વશતસહસ્ત્રાણિ સપ્તસપ્તતિ લક્ષાણિ કુમારવાસમધ્યે કુમારભાવે ઉપિત્વા ‘એગં વાસસહસ્સ મંડલિયરાયમજ્ઞે વસિત્તા’ એકં વર્ષસહસ્સં માળ્ડલિકરાજા એકદેશાધિપતિઃ ભાવગ્રધાનત્વાન્નિર્દેશસ્ય માળ્ડલિકત્વં તન્મધ્યે ઉષિત્વા ‘છ-પુન્વસયસહસ્સાઈ વાસસહસ્સૂણગાઈ મહારાયમજ્ઞે વસિત્તા’ પદ્મપૂર્વશતસહસ્ત્રાણિ વર્ષસહ-નોનાનિ મહારાજમધ્યે ચક્રવર્તિત્વે ઉપિત્વા ‘તેસીહ પુન્વસયસહસ્સાઈ અગારવાસમજ્ઞે

સે દેસા । (પહિલેહિતા સંલેહણાઘ્રસણાઘ્રસિષ્ મત્તપાણપહિઆહિલિષ્) અછી તરહ સે દેસને રૂપ પ્રતિલેહના કરકે યે ડસ પર ચઢ ગયે ઔર કાય એવં કષાય જિસકે દ્વારા કુશ કી જાતી હૈં એસો સંલેહના કો ડન્હોને વઢે આદર ભાવ સે ઘારણ કર લિયા ઔર મત્તપાણ કા પ્રત્યાધ્યાન કર દિયા । (પાઓવગપ્ કાલં અણવકંસમાણે ૨ વિહરહ) એવં પાદપોષગમન સન્થારા અંગીકાર કર લિયા પાદપોષગમન સન્થારે મેં જીવ વૃક્ષ કી તરહ અપ્રકમ્પ રૂપ સે અવસ્થિત હો જાતા હૈં । ઇસ સન્થારા કો ઘારણ કરલેને પર ડન્હોને અપને મરણ કી આકાંક્ષા નહીં કી (તપ્તે સે મરહે કેવલી સત્તતરિ પુન્વસયસહસ્સાઈ કુમારવાસમજ્ઞેવસિત્તા એગં વાસસહસ્સ મંડલિયરાયમજ્ઞે વસિ-ત્તા છ પુન્વસયસહસ્સાઈ વાસસહસ્સૂણગાઈ મહારાયમજ્ઞે વસિત્તા તેસીહ પુન્વસયસહસ્સાઈ અગારવાસમજ્ઞે વસિત્તા) ઇસ તરહ વે મરત કેવલી ૭૦ લાસ પૂર્વ તક કુમાર કાલ મેં રહે એક લાસ પૂર્વ તક માંડલિક રાજા રહે ૧ હજાર વર્ષ કમ છ લાસ પૂર્વ તક મહારાજ પદ

(પહિલેહિતા સંલેહણા ઘ્રસણાઘ્રસિષ્ મત્તપાણપહિઆહિલિષ્) આરી રીતે ઇર્થન રૂપ પ્રતિ લેખના કરીને એ એ. તેની ઉપર ચઢી ગયા, અને કય તેમજ કષાય જેનં વડે કુશ કર વામાં આવે છે, એવી સંલેખનાને એમણે ખૂબ જ આદરપૂર્વક ધારણ કરી અને ભક્ત પાનનું પ્રત્યાધ્યાન કર્યું. (પાઓવગપ્ કાલ અણવકંસમાણે ૨ વિહરહ) તેમજ પાદપોષ-ગમન સન્થારે અંગીકૃત કર્યો. પાદપોષગમન સન્થારામા છપ વૃક્ષની જેમ અપ્રકમ્પ રૂપથી અવસ્થિત થઈ અથ છે. એ સન્થારાને ધારણ કર્યો પછી તેમણે પોતાના મૃત્યુની આકાંક્ષા કરી નહીં. (તપ્તે સે મરહે કેવલી સત્તતરિ પુન્વસયસહસ્સાઈ કુમારવાસમજ્ઞે વસિત્તા એગં વાસસહસ્સ મંડલિયરાયમજ્ઞે વસિત્તા છ પુન્વસયસહસ્સાઈ વાસસહસ્સૂણગાઈ મહારાયમજ્ઞે વસિત્તા તેસીહ પુન્વસયસહસ્સાઈ અગારવાસમજ્ઞે વસિત્તા) આ પ્રમાણે તે મરત કેવલી ૭૦ લાખ પૂર્વ સુધી કુમાર કાળમાં રહ્યા. એક લાખ પૂર્વ સુધી માંડલિક રાજા રહ્યા,

वसित्ता' व्यतीति पूर्वशतसहस्राणि लक्षाणि अगारवाममध्ये उपित्वा गृहीत्वेत्यर्थः 'एवं पुण्यसयसहस्रं देवगणं केवलपरिआयं पाउणिता' एकं पूर्वशतसहस्रम् अन्तर्गृह्णन्तं केवलपरिआयं प्राप्य पूरयित्वा 'तमेव बहुपडिपुण्णं सामन्नपरिआयं पाउणिता' तदेव पूर्वशतसहस्रं बहुप्रतिपूर्णम् -संपूर्णम् तेन अन्तर्गृह्णन्तं नाधिकमित्यर्थः आमण्यपर्यायं यत्तत्त्वं प्राप्य 'चउरासीइ पुण्यसयसहस्राइ सन्वाउअ पाउणिता' चतुरशीति पूर्वशतसहस्राणि लक्षाणि सर्वायु परिपूर्णं मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं सवणेणं णक्खत्तेणं जोगमुवागएणं' मासिकेन भक्तेन मासोपवासैरित्यर्थः, अपानकेन पानकाहारवर्जितेन श्रवणेन नक्षत्रेण योगमुवागएतेन चन्द्रेण सहेति गम्यम् 'खीणे वेअणिज्जे आउए णामे गोए' क्षीणे वेदनीये आयुषि नाम्नि गोत्रे च भवोपग्राहि कर्मचतुष्टयक्षये इत्यर्थः 'कालगए वीइक्कते समुज्जाए छिण्णजाइजरामरणवंधणे' कालगतः मरण प्राप्तः व्यतिक्रान्त व्यतीतः समुधातः निगतः छिन्नजातिजरामरणबन्धन 'सिद्धे बुद्धेमुत्ते परिणिव्वुडे अंतगडे सव्वदुक्खप्पहीणे' सिद्धो

में-चक्रवर्ति पद में रहे और तेईस लाख पूर्व तक गृहस्थावस्था में रहे, (एवं पुण्यसयसहस्रं देवगणं केवलपरिआयं पाउणिता तमेव बहुपडिपुण्णं सामन्नपरिआयं पाउणिता चउरासी पुण्यसयसहस्राइ सन्वाउअ पाउणिता मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं सवणेणं णक्खत्तेणं जोगमुवागएणं खीणे वेअणिज्जे आउए णामे गोए कालगए वीइक्कते समुज्जाए छिण्णजाइजरामरणवंधणे सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिणिव्वुडे अन्तगडे सव्वदुक्खप्पहीणे) कुछकम अर्थात् अन्तर्गृह्णन्तं एक लाख पूर्व तक केवल पर्याय में रहे इस प्रकार से अपनी पूरी ८४ लाख पूर्व की आयुको भोग करके वे भरत केवली एक मास के पूरे सत्थारों से भक्तपान का सर्वथा परिवर्जन करने रूप सन्धारे से -श्रवण नक्षत्र के साथ योग को प्राप्तचन्द्र के समय में वेदनीय आयु, नाम गोत्र इन चार भवोपग्राही चार अवातिया कर्मों के क्षय हो जाने पर कालगत हो गये अर्थात् सिद्ध अवस्थायुक्त बन गये मोक्ष में विराजमान हो गये, जाति जरा और मरण के बन्धन से रहित हो गये सिद्ध हो

१ ७०२ वर्ष ४३ ६ लाख पूर्व सुधी भट्टाराज पदमा अक्षवर्ती पदे रह्या अने २३ लाख पूर्व सुधी गृहस्थावस्थाभा रह्या । (एवं पुण्यसयसहस्रं देवगणं केवलपरिआयं पाउणिता तमेव बहुपडिपुण्णं सामणपरिआयं पाउणिता चउरासी पुण्यसयसहस्राइ सन्वाउअ पाउणिता मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं सवणेणं णक्खत्तेणं जोगमुवागएणं खीणे वेअणिज्जे आउए णामे गोए कालगए वीइक्कते समुज्जाए छिण्णजाइजरामरणवंधणे सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिणिव्वुडे अन्तगडे सव्वदुक्खप्पहीणे) ४४६ ४३ अटले के अन्तर्गृह्णन्तं ४३ ६ लाख पूर्व सुधी तेजा देवति पर्यायभा रह्या पूरा अक्ष लाख वर्ष सुधी आभय पर्यायभा रह्या आ प्रभावे पोतानी सपूथ ८४ लाख पूर्वना आयुध्यने योगवीने ते भरत केवली अक्ष मासना पूरा सत्थाराथी-भक्तपानय स पूथ ३३भां परिवर्जन करवा ३३ सत्थाराथी-श्रवण नक्षत्रनी साथे योग प्राप्त अ-द्वना समयभा वेदनीय, आयु, नाम, गोत्र के आर-भवोपग्राही आर अवातिया कर्मों व्यापे क्षय थई गथा त्यारे कालगत थया अटलेके सिद्धावस्था भुक्ता जनी गथा-भोक्षभां विराजमान थई गथा जाति, जरा अने भक्षणा भवनथी रहित थई गथा, १२३

બુદ્ધો મુક્તઃ પરિનિવૃત્તઃ અન્તગતઃ સર્વદુઃસ્વપ્રહીણઃ ।

‘इति भरतचक्रिचरियं’ इति भरतचक्रिचरितम् । अत्र इति शब्दोऽधिकारं-
परिसमाप्तिद्योतकः, स चायम् ‘से केणट्टेणं मते एवं बुच्चइ भरहे वासे २’ इति सूत्रेण ना-
मान्वर्थं पृच्छतो गौतमस्य प्रतिवचनाय ‘तत्थणं विणीयाए रायहाणीए भरहे णाम राया चाउ-
रंतचवक्कवट्ठी समुप्पज्जित्था’ इत्यदि सूत्रे भरतचरितं प्रपञ्चितम् तच्च परिसमाप्तमित्यर्थः,
तेन भरतः स्वामित्वेन अस्यासतीति निरुक्तवशाद् भरतं क्षेत्रमिति तात्पर्यार्थः ॥ सू० ३४ ॥

अर्थ प्रकारान्तरेण नामान्वर्थमाह - “भरहे अ इत्थ” इत्यादि ।

મૂલમ્- મરહે અ ઇત્થ દેવે મહિહીએ મહજ્જુઈએ જાવ પલિઓવમે-
હિહીએ પરિસહ સે એણટ્ટેણં ગોયમા ! એવં બુચ્ચઈ મરહે વાસે ૨ ઇતિ ।
અદુત્તરં ચ ણં ગોયમા ! મરહસ્સ વાસસ્સ સાસાએ ણામધિજ્જે પણ્ણત્તે,
જે ણં કયાઈ ણં આસિં ણ કયાઈ ણત્થિં ણં કયાઈ ણ મવિસ્સાઈ મુવિંચ
મવઈઅ મવિસ્સાઈઅ ધુવે ણિઆંએ સાસાએ અક્કલેએ અવ્વએ અવહિએ
ણિચ્ચે મરહે વાસે ॥ સૂ૦ ૩૫ ॥

गये—कृतकृत्य हो गये. बुद्ध हो गये—लोकलोक के ज्ञाता हो गये. मुक्त हो गये—अन्तरङ्ग ब-
हिरङ्ग कर्मकलंक से रहित हो गये. परिनिवृत्त हो गये—शीतिभूत निरञ्जन हो गये । अन्तर्गत हो
गए । और सर्व दुःखो से सर्वथा रहित हो गये । ऐसा यह भरतचक्रो का चरित्र है । यहां इति
शब्द अधिकार की परिसमाप्ति का सूचक है । वह अधिकार ऐसा है कि “से केणट्टेणं मते । एवं
बुच्चइ भरहे वासे २” जब गौतमस्वामी ने पूछा था कि हे भदन्त । इस क्षेत्र का नाम भरत
ऐसा क्यों हुआ है । तो उसके उत्तर में ही प्रभु ने यह “तत्थ ण विणीयाए रायहाणीए भरहे णाम
राया चाउरंतचक्कवट्ठी समुप्पज्जित्था ” ऐसा कथन सूत्रो द्वारा किया है । अर्थात् इस क्षेत्र का
भरतक्षेत्र नाम पडने का कारण भरत राज का यहां का अधिपति होना है । इसी कारण भरत
राजा का यहां चरित्र विस्तार से कहा गया है । भरत चरित्र समाप्त ॥ सू० ३४ ॥

સિદ્ધ થઈ ગયા. કૃતકૃત્ય થઈ ગયા. બુદ્ધ થઈ ગયા. લોકલોકના જ્ઞાતા થઈ ગયા. મુક્ત
થઈ ગયા. અંતરંગ બહિરંગ કર્મકલંકથી રહિત થઈ ગયા. પરિનિવૃત્ત થઈ ગયા. શીતિભૂત
નિરંજન થઈ ગયા. અંતર્ગત થઈ ગયા. અને સર્વ દુઃખોથી સર્વથા રહિત થઈ ગયા. એવું
આ ભરતચક્રોનું ચરિત્ર છે. અહીં ‘ઇતિ’ શબ્દ અધિકારની પરિસમાપ્તિ ને સૂચવે છે. એ અધિ-
કારી આ પ્રમાણે છે કે “સે કેણટ્ટેણં મતે । એવં બુચ્ચઈ મરહે વાસે ૨ ” જ્યારે ગૌતમસ્વામીએ પ્રશ્ન
કર્યો કે હું ભદ્રત આ ક્ષેત્રનું નામ ભરત એવું શા કારણથી પડ્યું તો એના ઉત્તરમાં પ્રભુએ
આ “તત્થ ણ વિણીયાપ રાયહાણીપ મરહે ણામ રાયા ચાઉરંતચક્કવટ્ઠી સમુપ્પજ્જિત્થા”
એવું કથન સૂત્રો દ્વારા કર્યું છે. એટલે કે ભરત રાજા આ ક્ષેત્રના અધિપતિ હતા. એથી આ
ક્ષેત્રનું નામ ભરત ક્ષેત્ર પડ્યું છે. એટલા માટે જ અહીં ભરતના ચરિત્રનું વિસ્તારિ પૂર્વક
વર્ણન કરવામાં આવેલું છે. ભરત ચરિત્ર સમાપ્ત— ॥ સૂ૦ ૩૪ ॥

છાયા-ભરતશ્ચાત્ર દેવો મહર્દિકો મહાદ્યુતિકો યદત્ પલ્યોપમસ્થિતિક પરિવસતિ તત્ પતેનાર્થેન ગૌતમ ! એવમુચ્યતે ભરત વર્ષ ૨ ઇતિ । અદુત્તર ચ સ્વલુ ગૌતમ ! ભરતસ્ય વર્ષસ્ય શાશ્વતં નામધેયં પ્રજ્ઞપ્તમ્ યન્ન કદાચિત્ નાસીત્ ન કદાચિત્ નાસ્તિ ન કદાચિન્ન ભવિષ્યતિ અમૃચ્ચ ભવતિ ચ ભવિષ્યતિ ચ ધ્રુવમ્ નિયતમ્ શાશ્વતમ્ અક્ષયમ્ અવ્યયમ્ અવસ્થિતમ્ નિત્ય ભરત વર્ષમ્ ॥ સુ. ૦૧૫ ॥

ટીકા— “ભરહે અ ઇત્ય” ઇત્યાદિ । ‘ભરહે અ ઇત્ય દેવે’ ભરતશ્ચાત્ર અસ્મિન્ ભારતે દેવઃ ‘મહિહ્વીષ મહજ્જુષ જાવ પલિયોવમદ્વિષ પરિવસઈ’ મહર્દિકા— મહતી ઋદ્ધિઃ— વિભવાદિ સમ્પત્તિ યસ્ય મ તથાભૂત, તથા— મહાદ્યુતિક— મહતી દ્યુતિ કાન્તિ ર્યસ્ય સ તથાભૂત, યાવત્ પલ્યોપમસ્થિતિકઃ— પલ્યોપમસ્થિતિ ર્યસ્ય સ તથાભૂતઃ પરિવસતિ, અત્ર યાવત્પદાત્ મહાયશસ્કઃ મહામૌહ્યો મહાવલઃ ઇતિ ગ્રાહ્યમ્ ‘સે ઇણદ્દેણ ગોયમા’ । તદ્ ભરતેતિ નામ ‘પતેનાર્થેન ગૌતમ’ ‘એવ વુચ્ચઈ ભરહે વાસે ૨ ઇતિ’ એવમુચ્યતે ભરત વર્ષ ભરત વર્ષમિતિ । યૌગિકયુક્ત્યા નામ ઉત્તમ્ । અથ તદેવ રુદ્યા દર્શયતિ ‘અદુત્તર ચ ણં ગોયમા’ અદુત્તરમ્ અથાપરમ્ ચઃ સમુચ્ચયે ‘ણં’ વાક્યાલંકારે હે ગૌતમ ! ‘મરહસ્સ વાસસ્સ સાસંપ ણામધિજ્જે પળ્ણત્તે’ ભરતસ્ય વર્ષસ્ય શાશ્વતં નામધેયં

પ્રકારાન્તરેણ “ભરતક્ષેત્ર નામ હોને કા કથન—

‘ભરહે અ ઇત્ય દેવે મહિહ્વીષ મહજ્જુષ જાવ’—ઇત્યાદિ સુ. ૩૫

ટીકા—‘ભરહે અ ઇત્ય દેવે’ । ‘ભરત ક્ષેત્ર’ મેં ભરત નામ કા દેવ જો કિ (મહિહ્વીષ મહજ્જુષ જાવ પલિયોવમદ્વિષ પરિવસઈ) મહતી વિભવાદિરૂપ સમ્પત્તિવાળા હૈ । મહતી શારીરિક ક્રાન્તિ ઓર્ આમરણો કી પ્રમા સે જો સદા પ્રકાશશીલ રહતા હૈ યાવત્ જિસકી ૧ પલ્યોપમ કી સ્થિતિ હૈ—રહતા હૈ । યહાં યાવત્પદ સે મહાયશસ્કઃ મહામૌહ્ય, મહાવલઃ” । ‘સે ઇણદ્દેણ ગોયમા’ । ‘એવ વુચ્ચઈ ભરહે વાસે ૨’) હસ કારણ હે ગૌતમ । ભરતક્ષેત્ર એસા નામ મૈને હસ ક્ષેત્ર કા કહા હૈ । હસ તરહ યૌગિક રીતિ સે નામ પ્રકટ કર અથ સૂત્રકાર રુદો સે હસકા એસા નામ પ્રકટ કરતે હૈ (અદુત્તરં ચ ણં ગોયમા । મરહસ્સ વાસસ્સ

પ્રકારાન્તરેણ “ભરત ક્ષેત્ર નામ પ્રસિદ્ધ થયું—તે અગે—કથન ”

“ભરહે અ ઇત્ય દેવે મહિહ્વીષ મહજ્જુષ જાવ’ ઇત્યાદિ સૂત્ર—૩૫ ॥

ટીકા—(‘ભરહે અ ઇત્ય દેવે’) એ ભરત ક્ષેત્ર માં ભરત નામક દેવ કે જે (મહિહ્વીષ મહજ્જુષ જાવ પલિયોવમદ્વિષ પરિવસઈ) મહતી વિભવાદિ રૂપ સમ્પત્તિથી સુદૃઢ છે, મહતી શારીરિક ક્રાન્તિ અને અભરણોની પ્રમાથી જે સંપદા પ્રકાશીન રહે છે યાવત્ જે ની પલ્યોપમ મી સ્થિતિ છે—નિવાસ કરે છે અહીં યાવત્ પદથી ‘મહાયશસ્ક, મહામૌહ્ય, મહાવલઃ’ એ વિશેષણ પહોંતુ અહીં થયું છે (સે ઇણદ્દેણ ગોયમા । એવ વુચ્ચઈ ભરહે વાસે ૨) એથી હે ગૌતમ ! ભરત ક્ષેત્ર એવું નામ મેં આ ક્ષેત્રનું કહ્યું છે આ પ્રમાણે યૌગિક રીતિથી નામ પ્રકટ કરીને હવે સૂત્રકાર રુદિથી એવું નામ પ્રકટ કરે છે (અદુત્તરં ચ ણં ગોયમા । મરહસ્સ વાસસ્સ સાસંપ ણામધિજ્જે પળ્ણત્તે) હેગૌતમ ! ભરતક્ષેત્ર એવું નામ

નિર્નિમિત્તકમ્ અનાદિ સિદ્ધત્વાદેવલોકાદિવત્ પ્રજ્ઞાપ્તમ્, તત્ર શાશ્વતત્ત્વમેવ વ્યક્ત્યા દર્શય-
તિ—‘જં ણ કયાઈ ણ આસિ ણ કયાઈ ણ ભવિસ્સઈ’યન્ન કદાચિત્ નાસીત્, ન કદાચિત્ નાસ્તિ
ન કદાચિત્ ન ભવિષ્યતિ ‘ઘુર્વિ ચ ભવઈ અ ભવિસ્સઈ અ’ અભૂચ્ચ ભવતિ ચ ભવિષ્યતિ ચ
‘ધુવે ણિઅપ્પ સાસપ્પ અક્કપ્પ અવ્વપ્પ અવટ્ઠિપ્પ ણિચ્ચે ભરહે વાસે’ ધ્રુવં નિત્યં શાશ્વતમ્
અક્ષયમ્ અવ્યયમ્ અવસ્થિતમ્ સ્થિરમ્ નિત્યં ભરત વર્ષમિતિ । एतेन भूत नाम्नश्चक्रिणो
देवाच्च भरतवर्षनाम प्रवृत्तं भरतवर्षाच्च तयोर्नाम भरतं स्वकीयेन अस्यातीति निरुक्त-
वशेन प्रावर्त्ततेति अन्योऽन्याश्रय दोषो दुर्निवार इति वचनीयता निरस्ता ॥ सू० ३५ ॥
इति श्री विश्वविख्यात-जगद्गुरु-प्रसिद्धवाचक पञ्चदशभाषाकलित-ललितकलापाल-
पक प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापकवादिमानमर्हक श्री-शाहू छत्रपति कोल्हा-
पुरराजप्रदत्त—‘जैनशास्त्राचार्य’ पदभूषित-कोल्हापुरराजगुरु बालब्रह्मचारी
जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्रोधासीलाल-प्रतिविरचितायां श्री
जम्बूद्वीपप्रज्ञासिद्धस्य प्रकाशिकाख्यायां व्याख्यायां
तृतीयो वक्षस्करः समाप्तः ॥३॥

સાસપ્પ ણામધિજ્ઞે પળ્લણ્ણે) હે ગૌતમ । ભરતક્ષેત્ર કા ભરતક્ષેત્ર એસા નામ દેવલોક હસ નામ કી
તરહ નિર્નિમિત્તક હૈ—શાશ્વત હૈ । ક્યોકિ (જં ણ કયાઈ ણ આસિ ણ કયાઈ ણ ભવિસ્સઈ)યહ નામ
પહિલે ભૂતકાલ મેં નહીં થા એસી વાત નહીં હૈ, વર્તમાન મેં એસા હસકા નામ નહીં હૈ યહ વાત
મી નહીં હૈ ઓર આગે મી હસકા એસા નામ નહીં રહેગા યહ વાત મી નહીં હૈ । (ઘુર્વિ ચ ભવઈ
અ ભવિસ્સઈ અ) ક્યોકિ એમા હસકા નામ રહા હૈ, હૈ, ઓર આગે મી રહેગા (ધ્રુવે, ણિઅપ્પ,
સાસપ્પ અક્કપ્પ, અવ્વપ્પ, અવટ્ઠિપ્પ, ણિચ્ચે ભરહે વાસે) હસકા કારણ યહી હૈ કિ યહ ભરત ક્ષેત્ર
ધ્રુવ હૈ, શાશ્વત હૈ, અક્ષય હૈ, અવ્યયરૂપ હૈ, અવસ્થિત હૈ, ઓર નિત્ય હૈ । હસ પ્રકાર કે હસ
કથન સે અન્યોન્યાશ્રય દોષ કા પરિહાર હો જાતા હૈ ॥ સૂ૦ ૩૫ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલપ્રતિવિરચિત જમ્બૂદ્વીપપ્રજ્ઞાપ્તિ
સૂત્ર કી પ્રકાશિકા વ્યાખ્યા મેં તોસરા વક્ષસ્કાર સમાપ્ત ॥ ૩ ॥

દેવલોક એ નામ મુજબ જ નિમિત્તક છે. — શાશ્વત છે. કેમકે (જ ણ કયાઈ ણ આસિ ણ
કયાઈ ણ ભવિસ્સઈ)એ નામ પહેલા ભૂતકાળમાં ન હોતું એવું નથી, વર્તમાનકાળમાં એવું એવું
નામ નથી, એવું પણ નથી અને ભવિષ્યમાં પણ એવું એવું જ નામ રહેવાતું નથી, એવું
પણ નથી. (ઘુર્વિ ચ ભવઈ અ ભવિસ્સઈ અ) કેમકે એવું આતું નામ રહ્યું છે. છે અને
ભવિષ્યમાં પણ રહેશે (ધ્રુવે ણિઅપ્પ, સાસપ્પ, અક્કપ્પ, અવ્વપ્પ, અવટ્ઠિપ્પ, ણિચ્ચે ભરહેવાસે)
એવું કારણ આ છેકે આ ભરતક્ષેત્ર ધ્રુવ છે, શાશ્વત છે, અક્ષય છે, અવ્યય ૩૫ છે, અવસ્થિત
છે અને નિત્ય છે આ પ્રકારના આ કથનથી અન્યોન્યાશ્રય દોષનો પરિહાર થઈ જાય છે
॥ સૂત્ર-૩૫॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલપ્રતિવિરચિત જમ્બૂદ્વીપ
પ્રજ્ઞાપ્તિ સૂત્રની પ્રકાશિકા વ્યાખ્યાનો ત્રીજો વક્ષસ્કાર સમાપ્ત ॥ ૩ ॥